112580

शुभ

यदि किसी को अपना मुक़द्दर बनाना हो

लाभ

यदि गई हुई इज्ज़त और खोया हुआ धन पुनः वापस होने की इच्छा हो, यदि धन-धान्य, स्त्री-संतान-प्राप्ति का स्वर्गीय आनंद भोगने की उत्सुकता हो, और यदि ऊँचे दरबारों में इज़्ज़त हासिल कर, दुश्मन को परास्त कर, अपनी शान का सिक्का जमाना हो, तो आज ही और अभी शक्तिशाली अद्भुत—

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र

मँगाइए। इसके अलौकिक गुणों की प्रशंसा बड़े-बड़े ज्योतिषी व धुरंधर पंडितों ने ही नहीं, बल्कि शास्त्र-पुराणों तक ने की है। प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने के पचास-पचास हज़ार प्रशंसा-पत्र इस यंत्र की सचाई के पक्के प्रमाण हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या अविश्वास की रत्ती-भर की गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र वा शास्त्रविधि पर अविश्वास करता है, वह जीवन में कभी सुख को प्राप्त नहीं होता, ऐसा कृष्ण भगवान् ने स्वयं कहा है। देखो गीता १६-२३।

इस नवग्रह यंत्र से रोज़गार में लाभ, इम्तहान में पास, मुक़दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजसम्मान, नौकरी मिलना, संतान-लाभ, तनख़्वाह में तरक़्क़ी, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, इच्छानुसार शादी, अचानक आफ़तों से बचना, किसी को वश करना, रेस व लाटरी में धन-प्राप्ति वग़ैरह-वग़ैरह हर काम पूरा होता है। जो पूछोगे, इस बात का बाब स्वप्न में लिपि-सहित बताएगा। आप जिसका ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में से बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकलकर उस कार्य को पूरा करेगी।

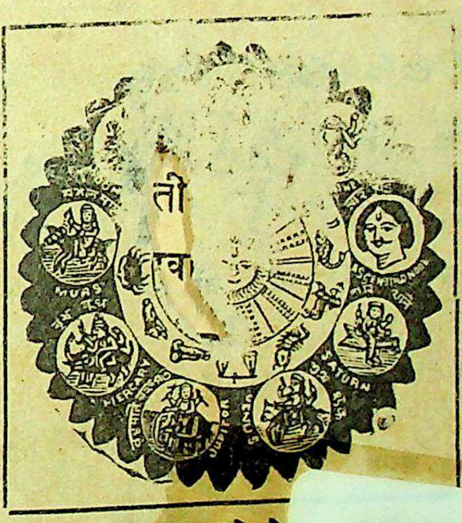

हर मनुष्य विश्वास रक्खे कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, वह इसके चमत्कार को देख वाह-वाह कर उठता है, और बार-बार मँगाता है। बहुतों ने तो छ-छ और आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह यंत्र तक मँगाए हैं। अगर विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अब भी विश्वास न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। लाभ न हो, तो दाम वापस मँगाइए।

झूठा साबित करने से

112580

इतने पर भी अगर विश्वास नहीं हुआ, तो अपनी च [illegible] य होनेवाले भाग्य को धक्का पहुँचाने के दोषी आप ही हैं। एक बेयक़ीनी व तु [illegible] गए, तो जीवन-भर पछताना ही हाथ लगेगा। शास्त्र का कहना है कि—

सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्महीन नर पावत नाहीं।

जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक नवग्रह यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह यंत्र मँगावें। पुरुष के लिये दो नीलमणि और स्त्री को दो लालमणि से युक्त यानी कंपलीट। एक नवग्रह यंत्र का मूल्य २), एक साथ तीन यंत्र लेने से ५।।), चाँदी का ३), सोने का ६।।-)

मि० बी० अर्जुनबाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज, सांगली (सतारा)— आपके यहाँ से मुझे बेहद लाभ पहुँचा। मैं इम्तहान में पास हो गया हूँ। एक यंत्र वी० पी० से और भेज दें।

मि० ए० डी० एस० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना— आपका यंत्र पहले एक मँगवाया था, उससे मेरा कार्य सिद्ध हो गया है। अब कृपया एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता S. S. L. बंबई नं० ४

लेख-सूची

पृष्ठ

१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश' ५२१

२. मानव-जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति-मार्ग की उपयोगिता—[लेखक, श्रीयुत पं० उमाशंकरजी वाजपेयी एम्० ए० ... ... ५२२

३. कुंदमाला-नाटक की समालोचना—[लेखक, प्रो० कैलासनाथ भटनागर एम्० ए०, सनातन धर्म-कॉलेज, लाहौर ५२८

४. नेत्र और सूर्योपासना (स्वास्थ्य)—[लेखक, श्रीयुत डॉ० आर० एस० अग्रवाल नेत्र-चिकित्सक, दिल्ली ... ५३३

सर्वत्र विजय

योगेंद्र कवच

योगेंद्र कवच के केवल धारण करने-मात्र से ही कठिन-से-कठिन कामों में सफलता मिलती है, यानी इसके चमत्कारी प्रभाव से पुत्र धन, नौकरी की प्राप्ति, तरक़्क़ी, मुक़द्दमे में जीत, मनचाही स्त्री या पुरुष के ऊपर वशीकरण, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, नवग्रहों तथा कठिन-से-कठिन रोगों से मुक्ति, लॉटरी तथा घुड़दौड़ में जीत होकर भाग्योदय होता है। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम। मूल्य प्रति यंत्र २), चाँदी का ३), सोने का १२॥)

पता—श्रीमहाशक्ति आश्रम नं० १५
पो० परबलपुर (पटना)

पेलिकन

Pelican

हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो [illegible]भी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

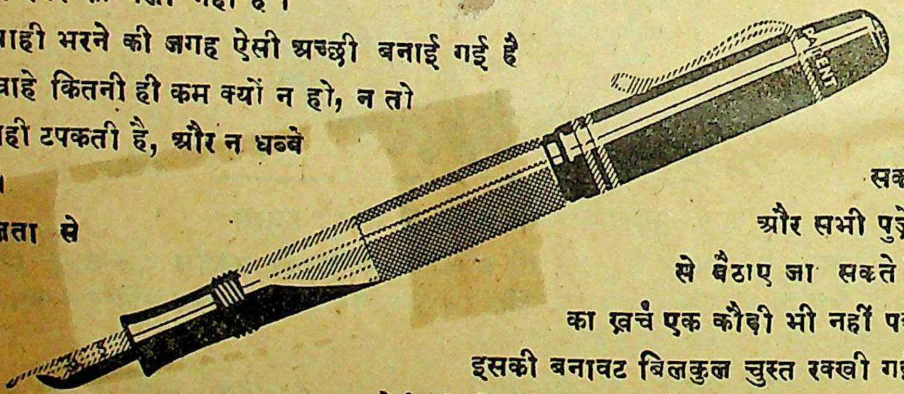

यह सरलता से खोली जा सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है।

कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है।

साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है।

स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—

गौथेर वागनेर हानोवर

Pelican

सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।

पारदर्शक

लोकल स्टॉकिस्ट—कौशला जनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

115840

पृष्ठ

५. चाचा की अँगूठी (कहानी)—[लेखक, श्रीयत मज़हर अंसारी बी० ए० (ऑनर्स) ५३७
६. गुलहज़ारा (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'बच्चन' ५४३
७. संयुक्त-प्रदेश का नाम-परिवर्तन—[लेखक, श्रीयुत सीताराम पांडेय एम्० ए०, साहित्यरत्न ५४५
८. शांति का संदेश-वाहक धर्म—[लेखिका, कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न ५४८
९. जीत की हार (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ... ५५३
१०. स्वागत (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ५५६

बवासीर की दवा

चाहे जैसी ख़ूनी-बादी, नई-पुरानी बवासीर हो, 'अर्शोहर' को खाने से दर्द, सूजन एक दिन में आराम हो जाती है। यही खाव, और जल में घिसकर लगावें। धर्मार्थ मूल्य ॥-), पोस्टल ऑर्डर या डाक के टिकटों से पेशगी भेजिए।

औरतों के बाँझपन की दवा ३) शीशी।

योगेंद्र-फ़ार्मेसी (Regd.)

अमृतसर

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-विंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक़्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह ओषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।≡)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

पृष्ठ

११. सुखद संस्मरण (कविता)—[लेखक, पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न ... ५६०

१२. श्रीमद्वल्लभाचार्य (जीवनी)—[लेखक, श्रीपो० कंठमणिजी शास्त्री, विशारद, संचालक विद्या-विभाग, कांकरोली ... ५६१

१३. योरप से अंतिम पत्र (सचित्र, भ्रमण) [लेखक, डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय ... ५६८

१४. स्वर्गीय राजा कालाकाँकर के संस्मरण (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत पं० ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ... ५७४

१५. सुधा-चित्रावली ५८५

१६. चयन—[लेखकगण;श्रीनगेंद्र एम्०ए०, कुमारी कंचनलता सब्बरवाल 'सरिता' प्रभाकर, विदुषी आदि, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, - एल्-एल्० बी०

धातुपौष्टिक व शक्तिवर्द्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, क़ब्ज़ियत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाती हैं, और निर्बलता को भगाकर दांपत्य जीवन का पूरा आनंद प्राप्त कराती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का १) एक रुपया। रसिक विषयों से भरपूर 'वैद्यविद्या' पुस्तक मुफ़्त मँगावें।

मदनमंजरी-फ़ार्मेसी, जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—निगम मेडिकल हाल
अमीनाबाद-रोड

बनारस-एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी गुरुकुल कांगड़ी की
कुछ मशहूर औषधियाँ

भीमसेनी सुरमा खुजली, कुकरे, फोला, सुर्ख़ी और आँखों से पानी बहना आदि सब रोगों पर जादू का असर करता है। मूल्य ३) तोला

च्यवनप्राश—हर मौसम में सेवन करने योग्य उत्तम रसायन है। पुरानी खाँसी, नज़ला, दिल की धड़कन आदि को जड़ से खो देता है। मूल्य ४) सेर

भीमसेनी मकरध्वज—स्वर्णभस्म, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर आदि के योग से तैयार की गई मकरध्वज की ये गोलियाँ नाताक़ती के लिये अक्सीर हैं। कुछ ही दिन के इस्तेमाल से शरीर में नवजीवन और स्फूर्ति का संचार होता है। मूल्य १२) तोला

भीमसेनी मंजन—मसूढ़े का फूलना, दाँतों से ख़ून व पीप का आना आदि रोगों के लिये बहुत लाभदायक है। मूल्य ॥) शीशी

सूर्यतापी सत शिलाजीत—लगातार दो मास तक खाने से सब प्रकार के प्रमेह, वीर्य-दोष, सुस्ती, कमज़ोरी आदि को दूर कर नया ख़ून व नया जोश पैदा करता है। मूल्य ॥।) तोला

ब्राह्मी तैल—सिर पर लगाने के लिये ब्राह्मी का यह तैल बहुत उत्तम है। इससे दिमाग़ को ठंडक तथा तरावट पहुँचती है, और आँखों की ज्योति बढ़ती है। हिस्टीरिया, सिर-दर्द के लिये भी बहुत फ़ायदेमंद है। मूल्य ॥) शीशी

अध्यक्ष आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, पो० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

पृष्ठ
और श्रीयुत ब्रजेंद्रनाथ श्रीवास्तव ... ५८६
१७. परीक्षा—[लेखकगण, श्रीयुत सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०, श्रीयुत 'उमेश' और श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल० बी० ... ... ५६८
१८. नए फल ६०२
१६. सुधा-पहेली-प्रतियोगिता ६०३
२०. सौरभ (संपादकीय विचार) ... ६०६

❀ खिजाब को छोड़ो ❀

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो २।), इससे अधिक पका हो, तो ४) या कुल पका हो, तो ६) का तेल मँगवा लें।

पता—बालकाला डिपो नं० १०१
पो० कतरीसराय (गया)

※ स्त्री-रोग की अक्सीर दवा ※

मासिक धर्म के हरएक दोषों को दूर करने में रामबाण है। मासिक धर्म के समय कमर में पीड़ा, सिर में दर्द, आँखों में जलन, हाथ-पैर के तलवों में लहर, मासिक धर्म प्रमाण से अधिक या थोड़ा होना, गर्भ न रहना, गर्भपात या अल्पायु संतान का होना, या होकर मर जाना इत्यादि समस्त दोष दूर कर गर्भ धारण की शक्ति लाकर संतान पैदा करने योग्य बनाती है। मूल्य २)

प्रशंसा-पत्र—श्रीमती बाबू किशोरीमोहनलालजी श्रीवास्तव्य, दौलतगंज लश्कर (ग्वालियर) से लिखती हैं—"मुझे इस दवा से बहुत ही लाभ हो रहा है। कृपा कर एक शीशी और वी० पी० द्वारा शीघ्र भेजने का प्रबंध करें।"

पता—श्रीकृष्ण-केमिकल वर्क्स नं० ५४, पो० कतरीसराय (गया)।

हमारी कृषि-संबंधी पुस्तकें पढ़कर आप एक-एक बीघे में सहस्रों रुपए कमा सकते हैं

मक्का की खेती (सचित्र)………	१)	ज़ीरा………	=)
गेहूँ की खेती (,,)………	॥=)	पपीता………	।-)
कपास की खेती (,,)………	३)	मूँगफली………	।=)

उक्त पुस्तकें उर्दू-भाषा में भी हैं। सब पुस्तकों के ग्राहकों के लिये डाक-व्यय माफ़।

लेखक व प्रकाशक—
रामप्रसाद सूबा ऐंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट
रिटायर्ड एग्रीकल्चरल डिप्लोमिस्ट (लंदन), मुरार छावनी, ग्वालियर

❀ श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों ❀

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चरक) सब प्रकार के ३ दिन में पूरा लाभ। यदि अनेक दवा लगाकर आप निराश हो चुके हैं, तो एक बार इसे लगाकर नीरोग होवें। बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस। जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १॥)

पता—राजवैद्य। परमेश्वरदयालजी
नं० १०२, पो० कतरीसराय (गया)

चित्र-सूची

(क) तिरंगा

पृष्ठ

१. जगद्गुरु श्रीवल्भाचार्यजी ... ५२०

(ख) दुरंगे

२. कविता-नागरी और जगत् ... ५६०
३. रायबहादुर श्यामनंदनसायजी ... ५६१

(ग) सादे

४. श्रीयुत पं० उमाशंकरजी वाजपेयी एम्० ए० ... ... ५२२
५. कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता, साहित्य-रत्न ५४८
६-११. योरप से अंतिम पत्र-संबंधी ६ चित्र ... ... ५६८ और ५७०-५७२

डॉ० केंट, फैरिंगटन, बोरिक प्रभृति के जोड़ का ग्रंथ

होमियोपैथिक

कॉम्पैरेटिव मेटिरिया-मेडिका

यह उसी विख्यात होमियोपैथिक मेटिरिया-मेडिका का हिंदी-भाषांतर है, जिसके बँगला में ६ संस्करण और २५००० प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मेटिरिया-मेडिका-संबंधी समस्त विषय और तुलना के साथ चिकित्सा इस उत्तमता से बताई है कि किसी भी रोगी के पास बैठकर दो-तीन मिनटों में ही ठीक दवा चुन लीजिए। एक साथ मेटिरिया-मेडिका, थेराप्युटिक्स, रेपर्टरी प्रभृति से संपन्न ऐसा दूसरा होमियो-ग्रंथ किसी भाषा में नहीं है। एक इसे अपने पास रखने पर किसी दूसरे की ज़रूरत नहीं है। १५४६ पृष्ठों की सुंदर, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ६॥), डाक-ख़र्च ॥।≡)

कलकत्ते के प्रसिद्ध होमियोपैथिक औषध
और पुस्तक-विक्रेता—
प्रकाशक—हैनिमैन पब्लिशिंग कंपनी
१६५, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता

दैवी शक्तियों का साक्षात् प्रभाव
दिखलानेवाला
राजों, महाराजों तथा सिटी मैजिस्ट्रेट साहब
बहादुर लखनऊ द्वारा परीक्षित
जगत्-विख्यात
चिंता-हरण सिद्ध यंत्र 'रजिस्टर्ड'

समस्त मनोरथों को पूरा करनेवाला, धन, धान्य, रोज़ी, पुत्र-सुख, वशीकरण, मुक़द्दमा, परीक्षा, तरक़्क़ी, तब्दीली, घुड़दौड़, लाटरी आदि में उत्तीर्ण करानेवाला। केवल २) में मँगाकर लाभ उठावें।

गारंटी हम बजरंगबली को साक्षी देकर लिखते हैं, यदि हमारे लेखानुसार आपका मनोरथ पूरा न हो, तो दूना मूल्य वापस करेंगे।

पता—मैनेजर रमलाचार्य आश्रम (सु)
पोस्ट कमलापुर, जिला सीतापुर [यू० पी०]

AMRUTANJAN
SOVEREIGN-REMEDY
AMRUTANJAN
Best Indian
Pain Balm
Amrutanjan Depots
BOMBAY, MADRAS

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड
बंबई, कलकत्ता, मदरास
पो० बॉ० नं० ६८२५

पृष्ठ
१२. सुप्रसिद्ध देश-भक्त स्वर्गीय श्रीमान् राजा अवधेशसिंहजी ५७५
१३. श्रीमती रानी साहबा लक्ष्मीकुमारीदेवीजी ५७८
१४. कुँवर सुरेशसिंह ५८०
१५. चिरंजीव श्रीमान् राजा दिनेशसिंहजी ५८२
१६. श्रीपुरोहित प्रतापनारायण कविरत्न ... ५८५
१७. श्रीराजरत्न जनरल नाना साहब शिंदे, बड़ौदा ५८६
१८. मिस प्रोफ़ीलिया स्टेक ५८७
१९. सीने को चौड़ा बनाने का व्यायाम ... ५८८
२०. श्रीवज़ीरुद्दौला रायबहादुर सरदार एम्० वी० किबे ५८८
२१-२४. चाय की उपयोगिता - संबंधी ४ चित्र ५९३-५९५
२५. श्रीव्रजेंद्रनाथ श्रीवास्तव ५९६

विवाहित आनन्द

आप समझते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और इसी भूल के कारण बीसवीं सदी की सर्वोत्तम पुस्तक के स्वाध्याय से वञ्चित हैं। सच समझिए 'विवाहित आनन्द' पांच हज़ार विवाहित पुरुषों की आप-बीतियों का निचोड़ है। क्रियात्मक उपदेशों, रहस्य की बातों और अत्यन्त लाभदायक शिक्षाओं का भण्डार है। इसके अतिरिक्त गुप्त रोगों की बिना औषधि के चिकित्सा भी लिखी गई है।

मूल्य सचित्र व सजिल्द का ॥)

सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

पता—कविराज हरनामदास बी.ए., लाहौर

हमारे सर्वसिद्ध अनुभूत प्रयोग

५००) रु० इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफ़ेदी) की अद्भुत वनौषधि। तीन दिन में पूरा आराम। यदि आप सकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं की दवा कर थक गए हों, तो इसे लगावें। बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, -)॥ का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २।)

कामप्रभाकर

धातु-क्षीणता, नामर्दी, कमज़ोरी, सुस्ती, स्वप्नदोष आदि को बहुत शीघ्र दूर कर एक शीशी व्यवहार करते-करते ग़ज़ब की शक्ति पैदा करती है। बंधेज-शक्ति बढ़ाने में अद्भुत गुणशाली है। मूल्य १५ दिन सेवन योग्य ३० गोली का १॥) रुपया।

पता—वैद्यराज अखिलकिशोरराम (सुधा), पोस्ट कतरीसराय (गया)

सम्मन बिनाबर मुद्दाअलेह हाज़िरी असालतन बग़रज़ इनफ़िसाल मुक़दमा

(ऑर्डर ५, कायदा ३)

बहुक्म जनाब बाबू हरीशंकर विद्यार्थी साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम सहारनपुर

बअदालत ख़फ़ीफ़ा स्पेशल जज दरजा दोयम मुकाम सहारनपुर ज़िला सहारनपुर

मुकद्दमा नंबर २११२ सन् १९३७ ई०

मौलवी मक़बूलअहमद वल्द हाजी निसारअहमद कौम शेख साकिन सहारनपुर मुहल्ला टोली कलाँ
मुद्दई

बनाम

लछमीनारायन
मुद्दाअलेह

बनाम—लछमीनारायन वल्द गोविंदराम कौम ब्राह्मण साकिन सहारनपुर मुहल्ला खुली दरवाजा मुद्दाअलेह

हरगाह कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत वापसी रुपए के दायर की है, लिहाज़ा तुमको हुक्म दिया जाता है कि तुम बतारीख़ १ माह जनवरी सन् १९३८ बवक्त १० बजे दिन के अदालत हाज़ा में असालतन हाज़िर हो, और जवाबदेही दावा की करो। और हरगाह वही तारीख़, जो तुम्हारे हाजिर के लिये मुकर्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है। पस, तुमको लाजिम है कि उसी रोज़ जुमला गवाहों को हाजिर करो व नीज़ जुमला दस्तावेज़ात, जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदेही के इस्तदलाल करना चाहते हो, उसी रोज़ पेश करो।

तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे, तो मुक़द्दमा बगैर हाजिरी तुम्हारे मसमू और फैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ २४ माह नवंबर सन् १९३७ ई० जारी किया गया।

मुंसरिम

"...... जब वह गाड़ी में उसे उतारने के लिये झुके थे, तब उनका मुख पद्मा के मुख के अत्यंत निकट आ गया था, और पद्मा उनकी साँसों को अपने कपोलों पर स्पर्श कर रही थी, यह जीवन में एक अत्यंत सुखकर अनुभव था। उसका हाथ सेठजी के हाथ में था, उसके मन में आया कि वह उठे न, और लक्ष्मीचंद उसे बल-पूर्वक उठाएँ, तथा उनकी बलिष्ठ बाँहों में इस प्रकार आबद्ध होने का मज़ा ले, पर उनकी साँस का स्पर्श होते ही उसके शरीर में रोमांच-सा हो आया......।"

फिर क्या हुआ ?

जानने के लिये क्रांतिकारी उपन्यास 'जागरण' मँगाकर पढ़िए। मूल्य २)

पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

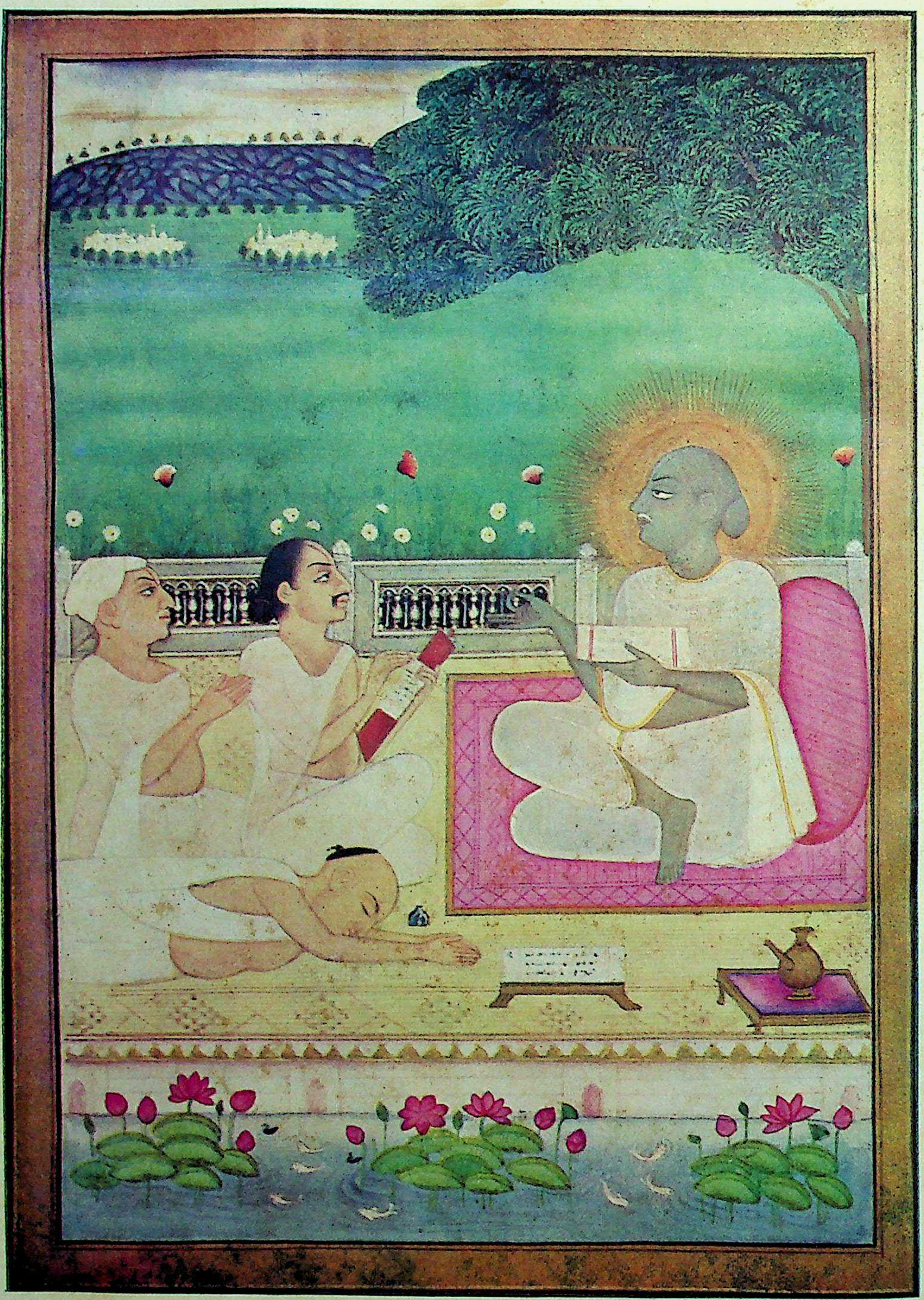

जगद्गुरु श्रीवल्लभाचार्यजी

(प्रा० सं० १५३५, वैशाख कृ० ११)

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

112580

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समै सब काँहि।

(दुलारेलाल भार्गव)

वर्ष ११ खंड १ | पौष, ३१५ तुलसी-संवत (१९९४ वि०)— जनवरी, १९३८ | संख्या ६ पूर्ण संख्या १३८

R-0673

गीत

[श्रीयुत 'वचनेश']

कब लौं छिपि रहौ रमन, कबहूँ खुलि जैहौ।

चाहैं जितनी दिखाय
माया लीजै सताय,
ब्यापक प्रति रोम, हमैं छाँड़ि नाहिं पैहौ।

हम हैं अघ-ओघ-लीन,
होत पतित, दलित, दीन,
सहज प्रेम पुलकि गात आपुहिं उर लैहौ।

बिनती करि गए हारि,
बैठे अब मौन धारि,
मनिहैं 'बचनेस' हमहुँ, तबहिं जब मनैहौ।

मानव-जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति-मार्ग की उपयोगिता

[श्रीयुत पं० उमाशंकरजी वाजपेयी एम्० ए०]

"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः"

(कणाद)

भारतीय संस्कृति के सूक्त-संचालक महर्षियों ने, अपने गहन शास्त्रों में, मनुष्य-जीवन को सर्वांश में परिपूर्ण बनाने के लिये अनेक विधि-विधानों का प्रतिपादन किया है। अधिकारिभेद से प्रत्येक वर्ग के लिये तत्तत् कर्तव्य कर्मों का निर्देश करके मानव-समाज में चिर-सुख-शांति और साम्य-भाव के स्थापना-मूलक अनेक सनातन सिद्धांतों का स्थान-स्थान पर अनुशासन किया है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिये विशाल वर्णाश्रम-धर्म की ज्ञापक व्यवस्था की गई है।

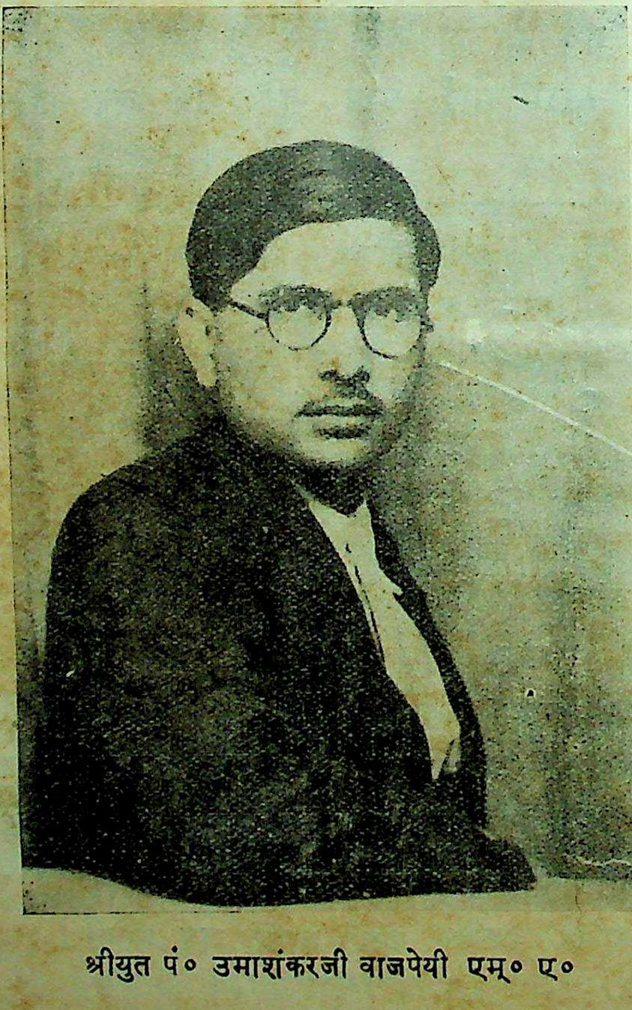

श्रीयुत पं० उमाशंकरजी वाजपेयी एम्० ए०

नाना प्रकार के कर्तव्य मार्गों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है—एक को श्रेय, निवृत्ति या निःश्रेयस् कहते हैं, और दूसरे को प्रवृत्ति, प्रेय अथवा अभ्युदय कहा है। मानव-जीवन की पूर्णता के लिये अधिकारिभेद और अवस्थाभेद से दोनो आवश्यक हैं। इसी तत्त्व को परम प्रसिद्ध वाजसनेयि याजुषी श्रुति ने अत्यंत स्पष्ट भाषा में इस प्रकार द्योतित किया है—

विद्यां चाविद्यां च
यस्तद्वेदोभयꣳ सह ;
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा
विद्ययामृतमश्नुते ।

अर्थात् विद्या (ज्ञान या श्रेय-मार्ग) और अविद्या (कर्म या प्रेय-मार्ग), इन दोनो

को जो समान भाव से अधिगत करता है, वह अविद्या से मृत्यु को तैरकर विद्या से अमृतत्व प्राप्त करता है। इस श्रुति में सबसे अधिक महत्त्व के शब्द "उभयꣳ सह" हैं, जिनका प्रयोजन यह है कि ज्ञान और कर्म, श्रेय और प्रेय, निवृत्ति और प्रवृत्ति, निःश्रेयस् और अभ्युदय अथवा त्याग और भोग का समन्वय होने पर ही मनुष्य-जीवन की पूर्णता है। इसके विपरीत आचरण से अनेक विषाक्त, अकल्याणकर और क्षयिष्णु विपथों में मानव-जीवन-धारा का प्रवाह प्रवाहित हो जाता है। सांकेतिक भाषा में प्रसिद्ध याजुषी श्रुति ने बड़ी ओजस्वी वाणी में इस प्रकार इस तत्त्व को प्रकट किया है—

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ;
ततो भूयऽ इव ते तमो यऽउ विद्यायाꣳ रताः ।

अर्थात् जो अविद्या (कर्म या प्रवृत्ति-मार्ग) की ही उपासना करते हैं, वे घोर अंधकारमय (अज्ञान-प्रधान) अवस्थाओं को प्राप्त होते हैं। और जो विद्या (ज्ञान अथवा निवृत्ति-मार्ग) का एकांततः अनुसरण करते हैं, वे और भी अधिक अज्ञानांधकारमय जीवन की अवस्थाओं को प्राप्त होते हैं। इसका निष्कर्ष यह है कि जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में जिन-जिन कर्तव्य कर्मों का महर्षियों ने अपने अनुभव के आधार पर विधान किया है, उन-उनका उस-उस समय में आचरण मानव-जीवन को सुख-शांति का आगार बना सकता है, और इसके विपरीत आचरण करने से विरुद्ध परिणाम होना अनिवार्य है।

वर्तमान युग की कौतूहल-पूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और मौलिक समाज-शास्त्र के सिद्धांतों (Theories) या वादों (Issues) पर विवेचनात्मक दृष्टि से विचार करने पर यह प्रकट होगा कि प्रत्येक सिद्धांत या वाद शेष सिद्धांतों अथवा वादों को व्यतिरेकी (Exclusive) दृष्टि से देखता है। अर्थात् उस एक सिद्धांत या वाद का विकास अन्यों के ह्रास पर निर्भर है। उदाहरणार्थ आज यदि पूँजीवाद उन्नत होना चाहे, तो यह अनिवार्य है कि कृषक और श्रमजीवियों का अनवरत शोषण व्यापार चलता रहे, और यदि कृषक तथा श्रमिक-वर्ग अपनी अवस्था का सुधार करना चाहे, तो यह आवश्यक है कि पूँजीपति, धनपति और बड़े-बड़े व्यापारी अपने अनेक अधिकारों और स्वत्वों से हाथ धो बैठें। महत्त्वाकांक्षाओं के साक्षात् मूर्तिमान् अवतार निरंकुश डिक्टेटरों की निरंकुश तानाशाही तभी तक वृद्धिंगत रह सकती है, जब तक उनकी क्रूरता और उद्दंडता का सर्व-साधारण प्रजा सहज आखेट बनने के लिये नत-शिर रहना स्वीकार करे। इसी प्रकार वर्तमान समय में जीवन के प्रायः सर्वक्षेत्रों के मौलिक सिद्धांतों की अवस्था है। इसका सबसे अधिक परिचित उदाहरण देश-भक्ति है। देश-भक्ति का यही अर्थ समझा जाता है कि किसी देश में रहनेवाले व्यक्तियों का यह मुख्य कर्तव्य है कि उचित-अनुचित किसी भी प्रकार से केवल अपने संकुचित भू-खंड (देश) की श्री-वृद्धि अन्य भू-खंडों

(देशों) में रहनेवालों के साथ कुत्सित और पाशविक व्यवहारों के द्वारा भी करते रहना सर्वथा श्लाघ्य है।

इन सब व्यतिरेकी मानवीय भावनाओं और वादों के व्यापक प्रचार का यह कटु परिणाम हो रहा है कि आज संसार के अग्रणी, सभ्यतम राष्ट्र परस्पर स्पर्धाग्नि की ओर द्रुतगति के साथ दौड़े जा रहे हैं। वैयक्तिक संघर्ष, वर्गीय संघर्ष, श्रेणिसंघर्ष, वाद-संघर्ष, राष्ट्र-संघर्ष, संप्रदाय-संघर्ष, जाति-संघर्ष, धर्म-संघर्ष, साहित्य-संघर्ष, दर्शन-संघर्ष, विज्ञान-संघर्ष, सभ्यता-संघर्ष और संस्कृति-संघर्ष वर्तमान युगवर्ती मानव-जीवन को सच्चे अर्थों में श्मशान-जीवन या मरण बना रहे हैं।

प्रवृत्ति(अविद्या)-पथ पर व्यतिरेकी (एकांगी) चाल से चलने पर जो भयंकर परिणाम हो सकता है, उसका सांकेतिक चित्र ऊपर खींचा जा चुका है। मर्मज्ञ पाठक वर्तमान युग की दशा से उसकी तुलना स्वयं विस्तार के साथ कर सकते हैं।

निवृत्ति(ज्ञान या श्रेय)-मार्ग पर भी व्यतिरेकी-विधि से चलने से मानव-जीवन और भी अधिक अपावन, अनाचार-पूर्ण एवं सर्वथा अवांछनीय हो जाता है। इसका अनुमान भी कतिपय उदाहरणों से सहज ही किया जा सकता है। तपोधन महर्षियों के परमपावन देश में सहस्रों वर्षों से ब्रह्म, मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति, स्वर्ग, परमपद, पुण्य, धर्म, आचार, वेद, यज्ञ, दान, तप, वर्ण, आश्रम, दर्शन, नीति, साहित्य, जाति और संप्रदाय-विषयक विविध बाह्याडंबर-बहुल असद्विचारों और आचरणों के कारण आज भारतवर्ष अनेक अर्थों में एक अकिंचनतम, विद्या-हीन, धन-हीन, बल-हीन और साख(Credit)-हीन बनकर दासता के जीवन को ही अपना सौभाग्य-चिह्न समझ रहा है। तथापि इस अभागे देश में अपने को ब्रह्म कहनेवालों की संख्या लक्षों में, अपने को वीतराग परमहंस समझनेवालों की गणना सहस्रों में, और अपने को सिद्ध योगी, ज्ञानी, भक्त, मुमुक्षु, संन्यासी, त्यागी एवं संप्रदायाचार्य माननेवालों की संख्या सैकड़ों में है। किंतु इन महापुरुषों के विचित्र जीवनों से पैंतीस कोटि मानवों का किस प्रकार अभ्युदय और निःश्रेयस् सिद्ध होता है, यह बात सूर्य की तरह स्पष्ट है। वस्तुतः हमारे देश में यदि निवृत्ति का ऐसा विसूचिका-सदृश प्रकोप न हुआ होता, तो कदाचित् भारतवर्ष का स्वरूप आज अधिक ओजस्वी होता।

यह है व्यतिरेकी दृष्टिकोण से निवृत्ति-मार्ग पर अग्रसर होने का अनिवार्य परिणाम।

उपर्युक्त उभयविध कटु परिणामों की घातकता के स्वरूप को सम्यक्तया ध्यान-योग से हृदयंगम करनेवाले साक्षात् कृतधर्मा तपोधन महर्षियों ने व्यतिरेकी मार्गों का निषेध करते हुए अन्वयी (Inclusive or Comprehensive) मार्ग का

प्रतिपादन किया। इस अन्वयी दृष्टिकोण से प्रवृत्ति और निवृत्ति परस्पर एक दूसरे के विरोधी (Contradictory) न होकर एक दूसरे के पूरक (Supplimentary) बन जाते हैं। इसी लक्ष्य का संकेत महादेव-स्वरूप को वर्णन करते हुए शिव और रुद्र, इन दो शब्दों का प्रयोग है। शिव (अघोर अथवा कल्याणकारी) और रुद्र (घोर अथवा रोदनकारी), ये दो धर्म एक ही व्यक्ति में रहकर अवस्था और अवसर के अनुसार कार्य करते रहते हैं। मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान रामचंद्र के विषय में महाकवि भवभूति की यह उक्ति "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि" भी इसी तत्त्व का प्रतिपादन करती है।

विराट् भारतीय साहित्य में ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जिनमें भारतीय संस्कृति के अन्वयी (Exclusive) स्वरूप को अनुष्ठित किया गया है। पाठकों के परिचयार्थ, लेख के इस अंतिम भाग में, हम पुण्य-श्लोक, तपोधन रघु और कीर्तिमान् महाराज अज, इन दोनो श्रेय और प्रेय मार्ग-प्रशस्त पथिकों के पावन चरित्रांश को विश्व-वंद्य महाकवि कालिदास के शब्दों में प्रस्तुत करते हैं।

महात्मा रघु राज्य-श्री से सर्वथा विरक्त होकर तपोवन की ओर निःश्रेयस्-प्राप्ति के लिये समुद्यत हो रहे हैं, और सर्व-गुण-संपन्न, धनुर्वेदज्ञ, नीति-विशारद, प्रजा-पालक युवा अज राज्य-श्री-उपलब्ध्यर्थ अभ्युदय-मार्ग पर आरूढ़ हो रहे हैं। देखिए—

यदि पार्थिवलिङ्गधारिणौ ददृशाते रघुराघवौ जनैः ;
अपवर्गमहोदयार्थयोः भुवमंशाविव धर्मयोर्गतौ ।

उस समय रघु को यति-वेष और अज को राजाओं के चिह्न धारण किए देख सब लोगों को ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे मोक्ष और ऐश्वर्य-रूपी भिन्न-भिन्न दो फल देनेवाले धर्म के दो अंश पृथ्वी पर अवतरित हुए हों।

अजिताधिगमाय मन्त्रिभिः युयुजे नीतिविशारदैरजः ;
अनपायिपदोपलब्धये रघुराप्तैः समियाय योगिभिः ।

अज की यह इच्छा हुई कि मैं सभी को जीत लूँ, ऐसा एक भी राजा न रह जाय, जिसे मैंने न जीता हो। अतएव, इस उद्देश की सिद्धि के लिये, उसने तो बड़े-बड़े नीति-विशारदों को अपना मंत्री बनाया, और अपना अधिकांश समय उन्हीं के समागम में व्यतीत करने लगा। उधर रघु ने मोक्ष-पदवी पाने के निमित्त आप्त महात्माओं और योगियों की संगति करके ब्रह्मज्ञान की चर्चा और योग-साधन में अपना जीवन व्यतीत करना आरंभ किया।

नृपतिः प्रकृतीरवेक्षितुं व्यवहारासनमाददे युवा ;
परिचेतुमुपांशुधारणां कुशपूतं प्रवयास्तु विष्टरम् ।

युवा अज ने प्रजा की प्रार्थनाएँ सुनने तथा उनके विग्रहों का निर्णय करने के लिये न्यायासन पर आरोहण किया। वृद्ध रघु ने, चित्त की एकाग्रता संपादन करने के लिये, एकांत में पवित्र कुशासन ग्रहण किया।

अनयत्प्रभुशक्तिसम्पदा वशमेको नृपतीननन्तरान् ;
अपरः प्रणिधानयोग्यया मरुतः पञ्चशरीरगोचरान् ।

एक ने तो अपने प्रभुत्व और बल की महिमा से पास-पड़ोस के सारे राजाओं को जीत लिया, दूसरे ने ध्यान-योग से शरीरांतर्वर्ती प्राण, अपान और समान आदि पाँचो पवनों को अपने वश कर लिया।

अकरोदचिरेश्वरः क्षितौ द्विषदारम्भफलानि भस्मसात् ;
इतरो दहने स्वकर्मणां ववृते ज्ञानमयेन वह्निना।

नए राजा अज ने पृथ्वी पर वैरियों के उद्योगों के फल भस्म किए, और महात्मा रघु ने ज्ञानाग्नि से अपने जन्म-जन्मांतर के कर्मों के बीज भस्म किए।

पणबन्धमुखान्गुणानजः षडुपायुङ्क्त समीक्ष्य तत्फलम् ;
रघुरप्यजयद्गुणत्रयं प्रकृतिस्थं समलोष्टकाञ्चनः।

राजनीति में कहे गए संधि, विग्रह आदि छहो प्रकार के गुणों-व्यवहारों का अज को पूरा-पूरा ज्ञान था। किस तरह के व्यवहार का कैसा परिणाम होगा, यह पहले ही से अच्छी तरह सोचकर उन्होंने इनमें से जिस व्यवहार की जिस समय आवश्यकता समझी, उसी का उस समय प्रयोग किया। रघु ने भी मिट्टी और सोने को तुल्य समझकर प्रकृति के सत्व, रज और तम तीनो गुणों पर विजय प्राप्त की।

न नवः प्रभुराफलोदयात्स्थिरकर्मा विरराम कर्मणः ;
न च योगविधेर्नवेतरः स्थिरधीरापरमात्मदर्शनात्।

नवीन राजा रघु बड़े ही दृढ़कर्मा थे। कोई काम आरंभ कर विना उसे पूरा किए उन्होंने कभी विराम नहीं लिया। जब तक कार्य-सिद्धि न हुई, तब तक वह बराबर उद्योगशील रहे। राजा रघु भी बड़े ही स्थिर-बुद्धि और दृढ़-निश्चय थे। जब तक उन्हें ब्रह्म का साक्षात्कार न हो गया, तब तक वह योगाभ्यास करते ही रहे।

इति शत्रुषु चेन्द्रियेषु च प्रतिषिद्ध प्रसरेसु जाग्रतौ ;
प्रसितावुदयापवर्गयो उभयीं सिद्धिमुभाववापतुः।

इस प्रकार दोनो ही ने अपने-अपने कर्तव्यों का दृढ़ता से अनुष्ठान किया। एक ने तो अपने वैरियों की चालों को ध्यान से देखते हुए उनके सारे उद्योगों को निष्फल किया। दूसरे ने अपने इंद्रिय-रूपी शत्रुओं पर अपना अधिकार जमाकर उनकी वासनाओं का समूल नाश कर दिया। एक ने लौकिक अभ्युदय की इच्छा से यह सब काम किया, दूसरे ने आत्मा को सांसारिक बंधनों से सदा के लिये मुक्त कर मोक्ष-प्राप्ति की इच्छा से किया। अंत में दोनो के मनोरथ सिद्ध हो गए। दोनो ने अपनी-अपनी अभीष्ट-सिद्धि पाई। अज ने अजेय पद पाया, रघु ने मोक्ष-पद।

प्रवृत्ति और निवृत्ति अथवा अभ्युदय और निःश्रेयस् मार्गों की साधना करने के लिये दीक्षित मुमुक्षु रघु और सम्राट् अज अपने-अपने निर्दिष्ट पथों पर अन्यमनस्कता के साथ अग्रसर हुए, और शास्त्र-विधानोक्त समस्त साधनों के साथ अनेक प्रकार के प्रलोभनों एवं विघ्न-बाधाओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करते हुए एक ने अंत में परब्रह्म की प्राप्ति की, और दूसरा अपने प्रजा-पालन-कार्य में सफल हुआ। अज के अनेक प्रकार से अनुनय-

विनय करने पर भी तपोधन रघु ने सर्प-केंचुल की भाँति त्यक्त राज्य-श्री को स्पर्श नहीं किया, और इंद्रिय-जय-साधना में वैसी ही तन्मयता दिखलाई, जैसी अज ने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिये वीरता प्रदर्शित की।

भारतीय संस्कृति का यह एक स्तुत्य उदाहरण है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि अधिकारिभेद से अपने-अपने धर्मानुष्ठान में चरम सीमा तक पहुँचने के लिये किसी प्रकार की भी संघर्ष और घात-प्रतिघात की भावना को अवकाश नहीं है; क्योंकि अधिकारिभेद से धर्म के दोनो मार्गों का स्वरूप तत्त्वतः अन्वयी और ओत-प्रोत अभिन्न है।

इसलिये तुलनात्मक दृष्टि से मानव-जीवन की वर्तमान अवस्था और उससे संबंध रखनेवाले सिद्धांतों की विवेचना करने पर यही अधिक उपयोगी और समयोचित प्रतीत होगा कि मानव-समाज के विभिन्न वर्गों के अधिकारिभेद से जो-जो कर्तव्य समष्टि के लिये योग-क्षेमदायक हों, उन्हीं के अंतर्गत व्यष्टि-विषयक अनुशासन निश्चित किए जायँ। प्रत्येक व्यक्ति का यह अनिवार्य औचित्य हो कि वह सर्व-साधारण की सुख-शांति की मात्रा बढ़ाने की ओर अपने कार्यों में दृष्टि रक्खे, और एकांत स्वेच्छाचार अपने और समाज के लिये नितांत घातक समझे। समाज भी वैयक्तिक जीवन की पवित्रता और उचित अधिकारों का समादर करते हुए समान भाव से सबके साथ व्यवहार करे। इस आदर्श समाज-संगठन-सिद्धांत के आधार पर प्राचीन भारतवर्ष में मानव-समाज का निर्माण किया गया था, और भारतवर्ष उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच सका था। वर्तमान समय में भी यह उच्च आदर्श आदरणीय है।

शारीरिक संपत्ति के न रहने पर आर्थिक संपत्ति नहीं प्राप्त हो सकती।
अगर किसी भी प्रकार के रोग से निर्बलता आई हुई हो, तो अवश्य
"आतंक-निग्रह गोलियों" का सेवन करें
क़ीमत—३२ गोलियों की एक डिब्बी का १) एक रुपया
विशेष हाल जानने के लिये सूचीपत्र देखें।
आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड को०, चौक

कुंदमाला-नाटक की समालोचना

(गत संख्या से सम्मिलित)

[प्रो० कैलासनाथ भटनागर एम्० ए०, सनातनधर्म-कॉलेज, लाहौर]

अब हम नाटक की उन बातों का उल्लेख करते हैं, जो दोष हैं। नाटक में दोष देखते समय कई बातों का ध्यान रखना होता है। कुछ दोष तो कथा के आधार पर होते हैं, कुछ नाट्यकला के आधार पर। कथा-संबंधी दोष इतने नहीं खलते, जितने नाट्यकला-संबंधी। तथापि दोष दोष ही है, दोष गुण नहीं हो सकता। अतएव हम यहाँ दोनो प्रकार के दोषों का निरूपण करते हैं—

(१)

मूल-कथा में लक्ष्मण सीता को नाव द्वारा नदी के पार ले जाते हैं, परंतु नाटकीय कथा में इसका उल्लेख नहीं। इससे यह भी मान लिया जा सकता है कि वाल्मीकि का आश्रम नदी के इसी ओर था, अतएव नदी-पार जाने की आवश्यकता न थी। परंतु इस विषय पर रामायण अधिक माननीय है। नाटककार ने नाटक में कदाचित् भूल की हो, या उस प्रांत के भूगोल से परिचय ही न हो। परंतु नाट्य-दृष्टि से इस दोष का कुछ महत्त्व नहीं।

(२)

सीता राम के लिये संदेश देती हुई कहती हैं—"यह तुम्हारे लिये उचित न था कि मुझ निरपराधिनी को सहसा हृदय से निर्वासित कर देना क्या, अपने देश से भी निकाल देना।"

[न युक्तं तव निरपराधमिमं जनं सपदि हृदयतो निर्वासयितुं किं पुनर्विषयत इति।]

इस पर लक्ष्मण कहते हैं—"जो संदेश आपने देना है, वह कह दिया। कदाचित् हमारे महाराज ने आपको अपने हृदय से निकाल दिया है, अन्यथा किस कारण घर से, घर से क्या कहना, देश से भी निकाल दिया।"

[संदेष्टव्यमार्यया संदिष्टम्।
आर्या निर्वासिता नाम हृदयात्प्रभविष्णुना ;
कथं गृहाद्गृहं नाम कथं जनपदादपि। (१. १५)]

लक्ष्मण का यह उत्तर असंगत जान पड़ता है। इससे पहले एक श्लोक में लक्ष्मण ने राम का संदेश सीता को सुनाया है, जिसमें कहा है—"तुम देवि ...." जब लक्ष्मण को राम के ये भाव विदित हैं, तब उक्त विचार के लिये स्थान कहाँ? डॉक्टर बुलनर ने कुंदमाला के अँगरेज़ी-अनुवाद में "जो संदेश आपने देना है, वह कह दिया" के आगे 'जनान्तिकम्' शब्द समझकर 'Aside' अनुवाद किया है। परंतु यह भी दोष को हटाने में असमर्थ है। इससे तो अंतर यही पड़ा कि सीता ने यह श्लोक न सुना, परंतु लक्ष्मण के हृदय में यह विचार तो उठा ही। यदि यह श्लोक हटा दिया जाय, तो कथा-क्रम में कोई बाधा नहीं पड़ती, और पूर्वापर-संबंध ठीक बना रहता है। देखिए—

लक्ष्मण "आपने जो संदेश देना था, दे दिया?"

सीता—"मेरी ओर से यह भी कहना—इस प्रकार दोष सर्वथा हट सकता है।"

(३)

मूल-कथा में लक्ष्मण वाल्मीकि द्वारा तपोवन

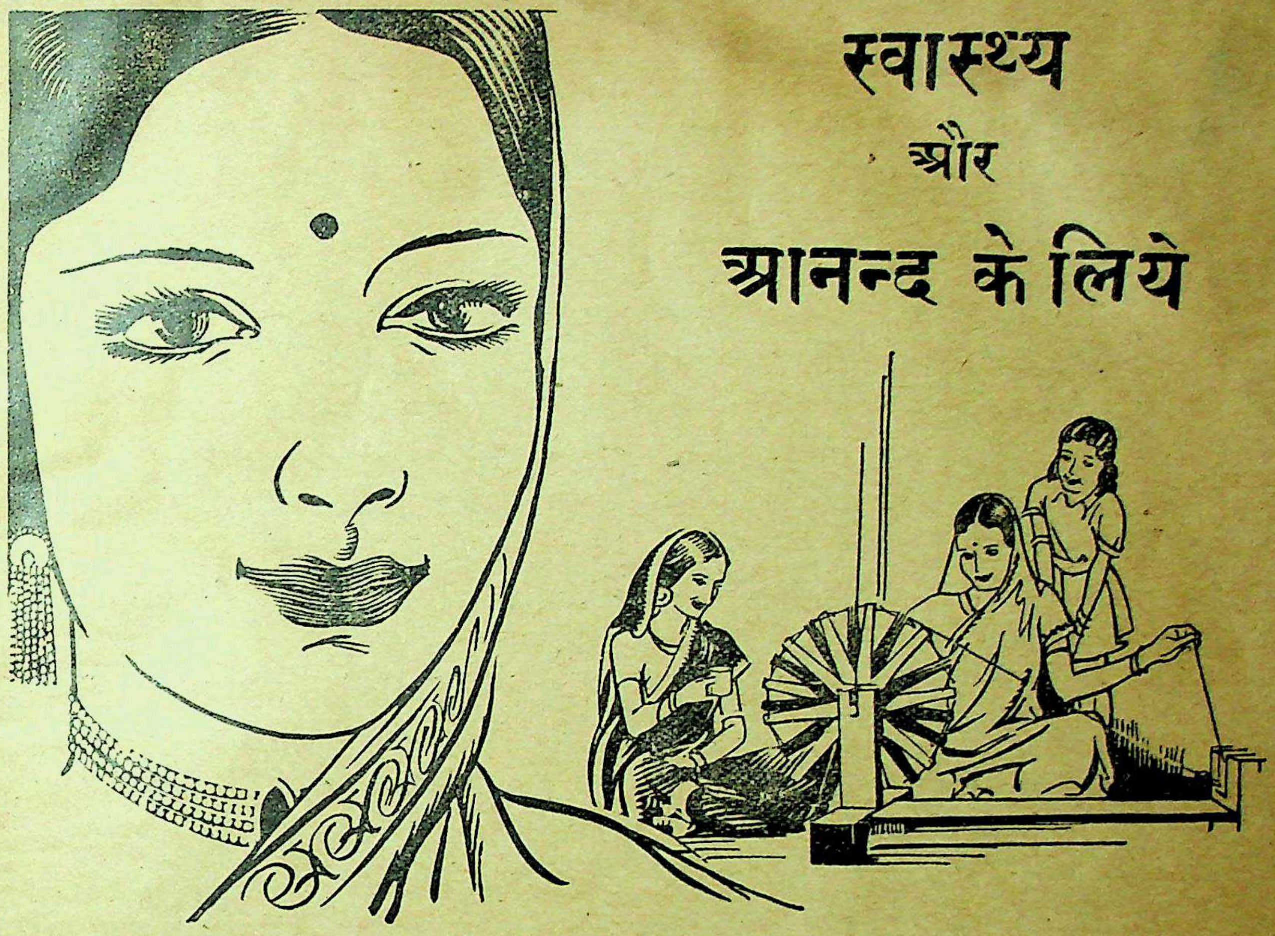

स्वास्थ्य
और
आनन्द के लिये

"यह स्वास्थ्य और आनन्द देनेवाले पेयों का राजा है !"

क्या इससे भी बढ़कर चाय के सम्बन्ध में कोई दूसरा महान सत्य कहा गया है ? बढ़िया बने चाय के प्याले से बढ़कर उपभोग सामग्री और हो क्या सकती है ? इसके नियमित व्यवहार से बढ़कर और क्या स्वास्थ्य प्रदान कर सकता है ? नित्य नियमित रूप से सबेरे और शाम चाय पिलाकर अपनी गृहस्थी को और भी आनन्द-भरी तथा उज्ज्वल बनाइये और अपने परिवार के मनुष्यों के स्वास्थ्य की रक्षा कीजिये।

चाय तैयार करनेका तरीका

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइये।

एकमात्र पारिवारिक पेय—भारतीय चाय

IK58

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए ।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
—हरएक घर में रहना चाहिए—

(जूड़ी ज्वर)
मलेरिया का महान् शत्रु

झंडु-मलेरिया मिक्श्चर

सेवन करके
मलेरिया की जड़ को
नेस्तनाबूद कर दीजिए।

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४
यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।
लखनऊ के ,, ,, —माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।

विश्वासार्थ सच्ची प्रतिज्ञा

जो सज्जन ईश्वर-साक्षी-पूर्वक यह लिखेंगे कि आपकी औषधि ने कुछ भी गुण नहीं किया, उन्हें दूसरी औषधि विना मूल्य भेजेंगे।

सुंदरी-सुखजीवन

"सुंदरी-सुखजीवन" के नियम-पूर्वक सेवन करने से सब तरह के प्रदर, सोमरोग यानी सफ़ेद या सुर्खी लिए हुए बदबूदार पानी का निकलते रहना, धोती पर हलका रंगबिरंगा धब्बा आना, विना समय जल्दी-जल्दी माहवारी का-सा ढंग होना या ज़्यादा दिन तक जारी रहना, आलस्य मंदाग्नि, शरीर निर्बल हो जाना, चक्कर आना, इन्हीं कारणों से गर्भ न ठहरना आदि स्त्री-रोग नाश होते हैं, और शरीर सुंदर बलवान् हो जाता है। ११ दिन की दवा का मूल्य १), डाक-व्यय ।।)

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

स्वादिष्ट आसव के रूप में तैयार की हुई

बालरक्षा घुटी

बालकों के ज्वर, अजीर्ण, दस्त, पेट के कीड़े, खाँसी, पसली उलटी, निर्बलता और दाँत निकलने के विकारों का नाश कर उन्हें पुष्ट बनाने के लिये खूब प्रसिद्ध है। मूल्य फ़ी शीशी ।।), डाक-व्यय ।।), दर्जन का ४।।), रेल-महसूल माफ़। हज़ारों एजेंट बन चुके हैं, आप भी लाभ उठावें। एजेंसी के नियम और रंगीन सचित्र केलेंडर मुफ़्त भेज रहे हैं।

कामकल्याण

वैद्यकशास्त्र की विधि से शुद्ध शिलाजीत, सुवर्ण बंग, कस्तूरी, मोती-भस्म, असगंध, विधारा, ब्राह्मी आदि बल-बर्द्धक औषधियों द्वारा बनाई हुई धातुपौष्टिक ३६ वर्ष की अनुभूत औषधि है। इसके सेवन से २० प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्र-पतन, नपुंसकता, नसों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता, अंगों की शिथिलता और दिमाग़ी कमज़ोरी दूर होकर शुद्ध रक्त बनता है, शरीर पुष्ट होता है, और बल, वीर्य की वृद्धि होती है। २० दिन का बक्स मूल्य २), डाक-व्यय ।)

अग्निकल्पद्रुम

इस चूर्ण के सेवन से अजीर्ण, अजीर्ण के दस्त, मंदाग्नि, संग्रहणी, पेचिस, हैज़ा, अम्लपित्त, क्षय होना, अफरा, वायुगोला, पेट में छोटे-छोटे क्रृमि पड़ जाना, अरुचि आदि रोग नाश होकर दस्त साफ़ आता है, भूक बढ़ती है, और भोजन का शुद्ध रस बनकर बल बढ़ता है। मूल्य फ़ी शीशी ।–), डाक-ख़र्च ३ शीशी तक ।।)

पता—पंडित रामचंद्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्षक औषधालय नं० ३, अलीगढ़ सिटी

काया-पलट

बूढ़े ने तीन विवाह किए

नासमझी के कारण छहो मात्राएँ एक साथ खा लेने से जब उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई, और योगिराज रत्नागिरि के परिश्रम-पूर्वक दवा इलाज करने पर भी उस बूढ़े को तीन विवाह करने पड़े, तथा जो दशा हुई, उसे लिखने को सभ्यता मना करती है, तो बड़े-बड़े रसिक रईस, राजा, नवाब बाबाजी से इस महान् परोपकारी, महान् योग को पूछने के लिये लालायित हुए। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदख़ाँ साहब ने तो बाबाजी की बहुत सेवा-सुश्रुषा करके इसे प्राप्त भी कर लिया। उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इस योग को प्रथम तथा दो अन्य योग लिखकर इन तीन से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा कर दी, जैसा कि अनेक समाचार-पत्रों से मालूम हुआ है। इसे आज १६ साल के लगभग बीता, और इस पुरस्कार को कोई प्राप्त न कर सका। फिर मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुण, चमत्कार देखकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठावें।

योग

शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। ठंडा होने पर दुबारा एक तोला हरताल वर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर शुद्ध १ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँच भस्म करें, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रबधू डाल दें, और नीचे आग जलावें। जब इंद्रबधू जलकर खाक हो जाय, तो हवा देकर रख दें। बस अपूर्व शक्ति-दाता महावाजीकरण तैयार है।

इसी योग की प्रशंसा में मथुरा के बा० हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, और दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता, और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड, शीघ्र गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के संपादक श्रीश्यामबिहारीलाल वैद्य-भूषण ने कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आए।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आयगा। २६ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा, और ४० दिन में तो कैसा ही नपुंसक क्यों न हो, निर्बलता रुक नहीं सकती। इससे स्त्रियों का हर प्रकार का प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-सी उड़ती देखना, गले की खसखसाहट, बार-बार थूक गिरना, बवासीर, दमा तथा हर प्रकार की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नव-जीवन संचार करता है। भाइयो, विश्वास करो और इसे बनाकर अवश्य सेवन करो। ऊपर का योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें, तो बनी बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-खर्च-सहित ५।) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूप-विलास कंपनी (रसायनशाला)
नं० ३, कंचौसी, इटावा

में जाती हुई सीता को देखकर अयोध्या वापस लौटते हैं।

(रा० उ० ५०-१)

नाटकीय कथा में लक्ष्मण को कुछ पता नहीं होता कि सीता वाल्मीकि के तपोवन में चली जाती हैं, या हिंसक पशुओं का खाद्य होती हैं। मूल-कथा में राम लक्ष्मण को आदेश देते हैं—"गंगा के पार, तमसा-नदी के किनारे, वाल्मीकि का आश्रम है, वहाँ निर्जन वन में कहीं सीता को छोड़ आओ।" (उत्तरकांड ४५—१७-१८)। इसका अभिप्राय यह है कि लक्ष्मण सीता को वाल्मीकि के आश्रम के पास छोड़ दें, जिससे वह चाहे वाल्मीकि की शरण में चली जायँ। राम का यह विचार कभी न होगा कि सीता हिंसक पशुओं का आहार बनें। इसलिये उन्होंने लक्ष्मण को ऐसा आदेश दिया होगा। लक्ष्मण भी यह देखने के लिये रुक जाते हैं कि सीता वाल्मीकि के आश्रम में जाती हैं या नहीं। जब वह वहाँ चली जाती हैं, तब लक्ष्मण भी लौट जाते हैं। नाटकीय कथा में तो नाटककार ने पहले ही लक्ष्मण द्वारा राम का यह संदेश कहलवाया है कि वह सीता को गंगा के पार किसी वन में छोड़ आवें।

[तस्मात्त्वमनेन गङ्गागमनव्याजेन कस्मिंश्चिद्वनोद्देशे परित्यज्य निवर्तस्व।]

अतएव लक्ष्मण सीता को छोड़कर चले जाते हैं, और फिर नहीं देखते कि सीता का क्या हुआ। क्या लक्ष्मण इतने कठोर-हृदय थे कि सीता को बिना किसी आश्रम में पहुँची देखकर अयोध्या वापस चले गए? यह ठीक है कि नाटकीय कथा में लक्ष्मण जाते समय भागीरथी तथा लोकपाल आदि से सीता की रक्षा के लिये अनुरोध करते हैं। परंतु यह उत्तम होता, यदि लक्ष्मण छिपकर उन्हें तब तक देखते रहते, जब तक वह वाल्मीकि के साथ आश्रम की ओर चली न जातीं।

(४)

मूल-कथा में सीता वाल्मीकि के साथ चुपचाप चली जाती हैं, कोई मानता नहीं मानतीं। नाटककार ने नाटक में सीता द्वारा यह कहलवाया है—"(गंगा को देखकर हाथ जोड़ती हुई) हे भागीरथी देवी! यदि मेरा प्रसव सकुशल होगा, तो मैं प्रतिदिन तुम्हारी सेवा में कुंद-पुष्पों की अच्छी गुँथी हुई माला चढ़ाया करूँगी।"

[(गङ्गायामवलोक्याञ्जलिं बध्वा) भगवति भागीरथी! यद्यहं सुखेन गर्भमभिनिवर्तयामि तदा तव दिने सुष्ठु ग्रथितया कुन्दमालयोपहारं करिष्यामि।]

इस परिवर्तन पर नाटक का जीवन-तत्त्व है। इस कुंद-पुष्पों की माला के कारण ही नाटक का नाम कुंदमाला है। परंतु यहाँ एक शंका होती है। क्या सीता को इस प्रकार अपने प्रसव का वर्णन करते वाल्मीकि के सामने तनिक संकोच न हुआ? नाटक में ऐसा कोई संकेत नहीं कि सीता की यह उक्ति वाल्मीकि न सुनें। अच्छा था, यदि इस उक्ति से पहले 'आत्मगतम्' या 'स्वगतम्' संकेत दे दिया होता। नाटककार ने, संभव है, इस पर कुछ आपत्ति न मानी हो। इस स्थल से पहले भी वाल्मीकि के सामने सीता ने कहा है—"यदि राम से निर्वासित होने के कारण मैं आपकी दया की पात्री नहीं हूँ, तो मेरे गर्भ में स्थित रघु, सगर, दिलीप, दशरथ आदि महानुभावों की संतान की तो रक्षा करनी चाहिए।"

[यदि रघुवरेण निर्वासितेति भवता नानुकम्पनीया, एषा पुनर्गर्भगता रघुसगरदिलीपदशरथप्रभृतीनां तादृशानां सन्ततिरितीदानीं प्रतिपालनीया।]

इस उक्ति के लिये सीता की विवशता कारण हो सकती है। परंतु दूसरी उक्ति में कोई ऐसा कारण नहीं मिलता।

(५)

चौथा अंक भी नाटककार की अपनी कल्पना का फल है। तीसरे अंक के समान इस अंक में भी सीता और राम का वियोग के कारण दुःख अनुभव करना ही दिखाया गया है। कुंदमाला और पदचिह्न द्वारा राम को सीता की स्मृति और दुःख देने लगती है। राम को सीता का स्पर्श भी प्राप्त होता ह, जिससे राम का शरीर रोमांचित हो जाता है। नाटककार ने इस अंक में अपनी कल्पना-शक्ति की अच्छी उड़ान दिखाई है, परंतु कहीं-कहीं लड़खड़ा पड़ा है।

इस अंक के आरंभ में वेदवती और यज्ञवती का संवाद है। संवाद के अंत में यज्ञवती पूछती है—"क्या तुम्हें पता है कि राम यहाँ तपावन में आए हैं?"

वेदवती कहती है—"उनका कहाँ से आना हुआ है?"

यज्ञवती इस प्रश्न का उत्तर दिए विना कह देती है—"तुम तिलोत्तमा के पास जाओ; मैं सीता के पास जाती हूँ।"

यहाँ दोनो का प्रस्थान दिखाया है। वेदवती का प्रश्न विना उत्तर दिए ही रह गया। वास्तव में वेदवती का प्रश्न ही असंगत है। उस स्थान (नैमिषारण्य) में यज्ञ रचा हुआ है। अनेक मुनिजन पधारे हैं। राम उनके दर्शनों के लिये इधर-उधर आते-जाते रहते हैं। इसमें पूछना ही क्या कि "उनका कहाँ से आना हुआ है?" यदि पछना था, तो इसका उत्तर दे देना भी आवश्यक था।

(६)

इसी अंक में जब धुएँ से राम के नेत्र व्याकुल हो जाते हैं, तो वह कहते हैं—

"सीता के विरह से उत्पन्न आँसुओं के बहाने से मेरे नेत्र सदा दुःखी रहे हैं, और फिर धुएँ से ये और भी अधिक दुःखी हो रहे हैं।"

[सीताविरहवाष्पेण क्षरता नित्यदुःखिते; बाढमायासिते भूयो धूमेन मम लोचने। (४। १२)]

कण्व राम से आश्रम के पुष्करिणी-शीतल जल में स्नान कर और नेत्रों को खूब धोकर विश्राम करने को कहते हैं, और स्वयं होम में सम्मिलित होने चले जाते हैं। राम आश्रम-पुष्करिणी में उतरते हैं, तो एक छाया दिखाई देती है। इस छाया को देखते ही राम कह उठते हैं—"क्या सीता भी यहाँ हैं?"

[कथं ? सीताप्यत्रैव]

छाया से ही सीता को पहचान लेना कुछ कठिन दिखाई देता है। यदि सीता किसी ऐसे ढंग से खड़ी हों कि उनकी छाया में नाक, होठ आदि सब कुछ प्रतिबिंबित हो रहा हो, तो कदाचित् नाटककार की कल्पना सत्य प्रमाणित हो सके। परंतु यह तो किसी प्रकार भी नहीं माना जा सकता कि छाया को देखकर राम ने यह भी देख लिया कि सीता का मुख पीतवर्ण हो रहा है। छाया तो श्यामवर्ण ही थी, नाटककार ने उसमें सीता के मुख का पीतवर्ण कैसे देखा? हाँ, क्षीण अवश्य कहा जा सकता है, परंतु इन दोनो शब्दों में महान् अंतर है।

[आपाण्डरेण मयि दीर्घवियोगखेदं
लम्बालकेन वदनेन निवेदयन्ती।]

(७)

चौथे अंक के आरंभ में नाटककार ने दिखाया है कि महर्षि वाल्मीकि के प्रताप से आश्रम-पुष्करिणी पर स्त्रियाँ पुरुषों की दृष्टि से अदृश्य रहा करेंगी। जब इस वर का प्रताप हम अभी देख चुके हैं कि पुष्करिणी पर राम की दृष्टि में सीता अदृश्य हैं, तो सीता राम को मूर्च्छित हुए देखकर उनके पास जाने की इच्छा से कल्पना क्यों करती हैं कि "यदि आर्यपुत्र मुझे देख लेंगे, तो फिर क्रोध

करेंगे। तब मुनिजन मुझे ढीठ समझेंगे। सो जाती हूँ। (लौटकर) अथवा युक्तायुक्त विचार करने का यह समय नहीं है, मुझ पर आर्यपुत्र चाहे क्रोध करें, मुनिजन ढीठ कहें...।"

यहाँ यह कहा जा सकता है कि सीता को आवेश के कारण यह स्मरण नहीं रहा होगा कि वह अदृश्य हैं। इसलिये वह ऐसा कहती हैं। इसका उत्तर यही है कि या सीता को स्मरण नहीं रहा, या नाटककार यह बात भूल गया।

(८)

इस अंक के अंत में जब सीता जाना चाहती हैं, और तत्काल कौशिक आ जाता है, तब कौशिक की उक्ति युक्त नहीं जँचती। कौशिक कहता है—"आज सूर्योदय से लेकर आपको ढूँढ़ते हुए सारा दिन व्यतीत हो गया।"

क्या राम इतनी दूर कहीं चले गए थे कि कौशिक ने सारा दिन ढूँढ़ा, परंतु राम न मिले? वास्तव में बात यह है कि तिलोत्तमा का रहस्य, जो कौशिक अब राम को बताएगा, नाटककार उन्हें पहले बताना नहीं चाहता, अन्यथा इस अंक की कल्पना अधूरी रह जाती। नाटककार ने इसलिये यह उत्तम समझा कि कौशिक और राम का सारा दिन साक्षात् ही न हो, जिससे कौशिक राम को रहस्य बता न सके। परंतु यह बात बहुत खलती है कि थोड़े-से स्थान में राम-जैसे व्यक्ति को कौशिक सारा दिन ढूँढ़ता रहे, और दिन समाप्त होने के समय ढूँढ़ सके। इससे तो यह अच्छा रहता कि कौशिक और राम का साक्षात् पहले हो गया होता, परंतु कौशिक तब राम से रहस्य के विषय में कहने को भूल जाता। विदूषक की संस्कृत-नाटक में विस्मरण-शक्ति तो अति तीव्र है ही, यहाँ ऐसा कर देने से कुछ दोष न रहता। इस समय जब कौशिक मिलता और राम स्वयं इस छाया आदि की घटना के संबंध में बात करते, तो कौशिक कह देता कि अहो! मैं भूल गया था। तिलोत्तमा ने यह रचना रची होगी। मैंने यह रहस्य सुना था, परंतु कहना भूल गया था।

(९)

छठे अंक में नाटककार ने मूल-कथा को ही आधार बनाकर कुछ परिवर्तन किए हैं। परंतु इन परिवर्तनों के कारण कुछ स्थानों पर स्खलन हो गया है।

इस अंक के प्रारंभ में बताया गया है कि सभा-मंडप में राम की तीनो माताएँ तथा तीनो भाइयों की वधुएँ भी उपस्थित हैं। परंतु इस उल्लेख के अतिरिक्त सारे अंक में न किसी माता का ही प्रसंग आता है, न किसी भाई की वधू का ही। कम-से-कम कौशल्या का उल्लेख तो अवश्य होता। सीता को पुनः प्राप्त कर राजमाताओं और राजवधुओं का हृदय टस से मस न हुआ। यह बात हम स्वीकार करते हैं कि इन सबको संवाद में भाग देकर नाटककार को पात्र-संख्या बढ़ानी पड़ती। परंतु कुछ पात्र बढ़ जाने में क्या दोष था? अथवा किसी अन्य पात्र द्वारा ही कौशल्या आदि की अवस्था का संकेत कर दिया होता। इसी मूल-कथा के आधार पर रचे गए उत्तर रामचरित में नाटककार भवभूति ने सभा-मंडप में इन स्त्रियों का पहले ही से प्रवेश नहीं दिखाया। परंतु तब भी शंका होती है कि और सब पौरजानपद की प्रजा, सुरासुर आदि को वाल्मीकि महर्षि ने बुलाया, किंतु कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी तथा राजवधुओं को न बुलाया। उत्तर-रामचरित के चौथे अंक में भी कौशल्या का प्रवेश है। क्या इस सभा-मंडप में राजस्त्री-वर्ग अभीष्ट न था? अस्तु, इस विषय पर उत्तर-रामचरित में फिर विस्तार से लिखेंगे।

इस दोष का उत्तरदायित्व केवल हमारे

नाटककार पर ही नहीं है, वरंच मूल-कथा रामायण के उत्तरकांड पर भी है। वहाँ भी कौशल्या आदि का उल्लेख नहीं। उत्तर-रामचरित के नाटककार ने इसमें परिवर्तन नहीं किया, दिङ्नाग ने किया, पर ठीक नहीं हुआ।

(१०)

इसी अंक के प्रारंभ में नाटककार ने कुश-लव द्वारा रामायण का संगीत करवाया है। यहाँ रामायण के संगीत द्वारा ही सारा रहस्य खुलता है। मूल-कथा में तो राम कई दिनों तक रामायण-गान सुनते रहे, तब उन्हें रहस्य का ज्ञान हुआ। नाटककार ने यहाँ परिवर्तन आवश्यक समझकर किया तो है, पर ठीक नहीं हुआ। जब वारंवार यह कहा गया है कि यह रामायण महर्षि वाल्मीकि ने रची है, और अपने शिष्यों को सिखाई है, तब यह क्या आवश्यक न था कि यहाँ जो रामायण का संगीत हो, उसमें रामायण के ही श्लोक गाए जायँ? इसका उत्तर हमारा नाटककार ही दे सकता है। एक श्लोक भी तो नहीं, जो मूल-रामायण से मिलान किया जा सके। उत्तर-रामचरित के नाटककार ने यहाँ जो परिवर्तन किया है, वह अत्युत्तम है। उन्होंने मूल-कथा के समान रामायण-संगीत द्वारा रहस्य-भेदन न कर अंतिम दृश्य में एक छोटे-से नाटक द्वारा सारा रहस्य खोला है। नाटककार दिङ्नाग भी कुछ ऐसा उपाय सोच सकता था।

(११)

नाटककार ने नाटक में कौशिक नाम का विदूषक रक्खा है। प्रायः सभी नाटकों में विदूषक पात्र होता है। कुंदमाला-नाटक में कौशिक का चरित्र ठीक नहीं बना। इसमें एक दोष तो यही है कि पहले आधे नाटक में तो विदूषक प्रकट ही नहीं होता, और जब अंतिम भाग में प्रकट होता है, तब भी यह चरित्र अधूरा रह जाता है। वास्तव में नाटककार ने कौशिक को इस नाटक में केवल दो कारणों से रक्खा है। चौथे अंक में कौशिक द्वारा तिलोत्तमा का सीता बनकर राम से हँसी करने का रहस्य प्रकट करवाया है, और पाँचवें अंक में कौशिक ने राम के सीता के प्रति आंतरिक प्रेम की थाह लेकर दर्शक जनों को बताया है। छठे अंक के प्रारंभ में नाटककार ने "कौशिक के मुख से सुनी महाराज की आज्ञा पालन कर दी…………" इत्यादि कंचुकी से कहलवाया तो है, पर शोक है, कौशिक को इस दृश्य से वंचित रक्खा गया! आश्चर्य होता है कि पौरजानपद सब तो यह दृश्य देखें, और राम का परममित्र कौशिक कहीं खो जाय! (समाप्त)

गर्भ-निवारक प्रयोग

जो स्त्री बच्चा पैदा करते-करते थक गई हो, वह अपने शरीर को सुंदर और सुकोमल तथा सुडौल रखने के लिये गर्भ धारण करना नहीं चाहती, उसके लिये गर्भ-निवारक प्रयोग है। इस प्रयोग को मासिक धर्म (रजस्वला, माहवारी) के समय फ़क़त ४ ही दिन कर लेने से न रहेंगे बाँस और न बजैगी बाँसुरी, याने आजन्म के लिये वंध्या (बाँझ) रह जावेगी। यदि फिर भी गर्भ धारण करने की इच्छा हो, तो इस प्रयोग को उलटा दीजिए। गर्भ रह जायगा। क़ीमत सिर्फ़ ५) । साथ में एक प्रयोग और दिया जाता है, जिससे मासिक धर्म होना बंद नहीं होता, क्योंकि मासिक धर्म के बंद होने से दूषित ख़ून शरीर में जमा होकर अनेक प्रकार की अन्यान्य व्याधि उत्पन्न कर देता है। अतः यह साथ में ज़रूर मँगाना चाहिए, जिसका दाम ५) पृथक् देना होगा। ऑर्डर देने के वक़्त यह लिख देना होगा कि १०) के दोनो प्रयोग भेजिए। वी० पी० से मँगानेवालों को दोनो मय ख़र्च के ११) में घर बैठे मिलेंगे। १०) अगाड़ी भेज देने से ख़र्चा माफ़। जवाब -) का टिकट आने से ही दिया जायगा।

भारत-भैषज्य-भंडार—नं० १०८, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता

नेत्र और सूर्योपासना

[श्रीयुत डॉ० आर० एस्० अग्रवाल, नेत्र-चिकित्सक, दिल्ली]

आजकल नेत्र-रोग बहुत ही बढ़ता जा रहा है। कोई घर ऐसा नहीं, जिसमें नेत्र-रोगी न हों। आँख दुखने तथा रोहों की एक आम शिकायत हो गई है। सूबा देहली के स्कूलों के विद्यार्थियों में २४ फ़ीसदी रोहों से बीमार हैं। अनेक शफ़ाख़ाने भी खुले हैं, डॉक्टर और 'स्पेशलिस्ट' की संख्या भी अधिक होती जा रही है, तो फिर क्या कारण है कि नेत्र-पीड़ा बढ़ती ही जा रही है?

नेत्र-पीड़ा बढ़ने के ख़ास कारण डॉक्टर ही हैं। वे रोगियों को ऐसा पढ़ाते हैं कि धूप की ऐनक लगाओ, अँधेरे मकान में रहो, बच्चों के चेहरे पर धूप न पड़ने दो। आपको शायद यह मालूम हो कि मछलियाँ, जो अँधेरे गड्ढों में रहती हैं, अंधी हो जाती हैं। खानों में रहनेवाले आदमी, जो अँधेरी जगहों में रहते हैं, नेत्र-रोग से आम तौर से बीमार रहते हैं। बच्चे, जवान या बूढ़े, ग़रज़ हर कोई, जो अपनी आँखें रोशनी से बचाने के वास्ते धूप की ऐनक, पट्टी या अँधेरे कमरे इस्तेमाल करते हैं, अक्सर नेत्र-रोग की शिकायतों में फँसे रहते हैं। नेत्रों की रोशनी बरदाश्त करने की शक्ति कम होती चली जाती है, नेत्र की ताक़त गिर जाती है, जिसकी वजह से कीटाणु जल्दी से अपना असर करके नेत्र-रोग पैदा कर देता है, और इसी कारण रोहों की आम शिकायत हो गई है।

हमारे हिंदू-शास्त्रों, वेद-उपनिषदों में सूर्य को नेत्रों का देवता माना गया है। हमारे ऋषि यह बताते हैं कि सुबह-शाम नेत्र सूर्य की ओर करके संध्या करनी चाहिए। बहुत-से हिंदू-घरों में आज भी ऐसा रिवाज है कि स्नान के बाद सूर्य की तरफ़ मुँह करके जल चढ़ाते हैं। याद रखिए, नेत्रों का स्वास्थ्य ठीक रखने के वास्ते सूर्य की रोशनी की आवश्यकता है। बिना रोशनी के नेत्रों का स्वास्थ्य अच्छा रह ही नहीं सकता। सूर्य की किरणों में नेत्र-रोग दूर करने की पूर्ण शक्ति है। नेत्रों के वास्ते सूर्य से ज्यादा लाभदायक वस्तु और कोई नहीं। अनेक रोगियों को सूर्य-व्यायाम से जादू-जैसा असर होता है। नेत्र-पीड़ा, चौंध का लगना एक बार में ही कम हो जाते हैं। रोहें बहुत ही जल्दी अच्छे होते हैं। ख़ास बात तो यह है कि हानि तो किसी को होती ही नहीं। यदि आप किसी का इलाज भी करते हों, तो भी सूर्य-व्यायाम से अधिक फ़ायदा होता है। नेत्रों में एक प्रकार की शक्ति पैदा हो जाती है, जो उनमें तेज पैदा करती और उन्हें

स्वस्थ रखती है। मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाती है, और सूर्य के ज़रिए भगवान् के दर्शन होते हैं। सूर्य अमृत-समान है, इसलिये बच्चों से बूढ़ों तक को सूर्य-व्यायाम करना चाहिए। मैं ख़ुद भी एक घंटा नेत्र बंद कर और खोलकर सूर्य-व्यायाम करता हूँ।

छोटे बच्चों के वास्ते सूर्य-व्यायाम

बच्चे को गोद में इस प्रकार लो कि सूर्य की किरणें उसके चेहरे पर पड़ें, और उसे गोद में आहिस्ता-आहिस्ता हिलाओ। बच्चा पहले तो रोएगा, परंतु फिर चुप हो जायगा। यदि बच्चा रोता भी रहे, तो ५ या ७ मिनट हिलाते ही रहो। बच्चे के नेत्रों को तुरंत आराम मिलेगा, नेत्र-पीड़ा कम हो जायगी। सुबह-शाम सूर्य के सामने बच्चे को हिलाना काफ़ी है। यदि नेत्रों से किसी प्रकार का मैल, कीचड़ या गाद निकलती हो, तो नेत्र पहले जाड़ों में गरम पानी से और गरमी में ठंडे पानी से धो लो, तब सूरज के सामने बच्चे को हिलाकर कोई ओषधि इस्तेमाल करना हो, तो करो। यदि बच्चे को पालने में रक्खा ज़ाय, तो धूप नेत्रों पर पड़ती रहे। ग़रज़ बच्चे के नेत्रों को ५ या ७ मिनट तक धूप देते रहना चाहिए। इससे बच्चे के नेत्र स्वस्थ रहेंगे।

बड़े बच्चों के वास्ते सूर्य-व्यायाम

धूप में झूले में झुलाओ। मुँह सूर्य की ओर रहे, या जमीन अथवा कुर्सी पर बिठा दो, और सूर्य की ओर मुँह रक्खो।

बड़ों के वास्ते सूर्य-व्यायाम

आराम से कुर्सी या ज़मीन पर सूर्य की ओर मुँह करके, नेत्र बंद रखकर १० से ३० मिनट तक बैठो। सुबह-शाम या किसी समय भी, जब सूर्य में तेज़ी न हो, बैठ सकते हो। यदि चाहो, तो सिर को एक रूमाल से ढक लो। यदि सूर्य बादलों से ढका हो, तो २०० से १००० पावर की बिजली की बत्ती के सामने, ६ इंच की दूरी पर, बैठ जाओ, या जलती आग के सामने बैठो। सूरज, बिजली या आग के सामने बैठकर अपने बदन को इस प्रकार हिलाते रहो, जैसे घड़ी का पैंडलम हिलता है, या साँप बीन के सामने अपना फन हिलाता है।

यदि सूर्य-व्यायाम करते समय ध्यान-शक्ति भी ठीक रहे, तो बहुत लाभ होता है। अक्सर सूर्य के सामने बैठते समय दिमाग़ व्यर्थ की बातें सोचा करता है। ध्यान ठीक रखने का हम एक सरल साधन बतलाते हैं।

अपने अँगूठे को अपनी शुरू की उँगली पर धीरे से रक्खो, और $\frac{3}{4}$ इंच के चक्र में अँगूठा उँगली पर घुमाओ। एक चक्र में एक बार ओ३म् कहो। अब अपने बदन को भी चक्र में घुमाना शुरू करो। बदन को अँगूठे के साथ-साथ घुमाओ। अब बदन और अँगूठा साथ-साथ चक्र में घूमें, और मन में हर चक्र पर ओ३म् कहते रहो। यदि ठीक प्रैक्टिस होगी, तो १० या १५ मिनट में नींद के झोंके आने लगेंगे, या सिर में बड़ा हलकापन मालूम होगा। कुछ दिन के अभ्यास के बाद बदन का चक्र छोटा करते जाओ। आहिस्ता-आहिस्ता

इतना छोटा हो जायगा कि दूसरों को शरीर स्थिर मालूम होगा, परंतु वह तेज़ी के साथ, बिजली के पंखे की तरह, घूमता रहेगा। तुमको अपनी सुध न रहेगी, दिमाग़ शांत होगा, और एक तरह का आनंद मालूम होगा।

आँखें खोलकर सूर्य-व्यायाम

आँखें खोलकर सूर्य-व्यायाम करना और भी अधिक लाभदायक है। परंतु यह व्यायाम स्वस्थ नेत्रवालों को करना उचित है, या जिन्होंने कुछ समय तक नेत्र बंद करके प्रैक्टिस कर ली है, और जिनको चौंध-लाली नहीं सताती। ख़राब आँखवालों को यह प्रैक्टिस नहीं करनी चाहिए।

विधि

१—यह व्यायाम सिर्फ़ सुबह-शाम ही करना उचित है। जिस समय सूर्य में लाली न रहे, और उसमें तेज़ी न आवे, उस समय यह व्यायाम ठीक होता है।

२—आराम से बैठ जाओ। नत्र खोलकर ज़मीन की तरफ़ देखो; और इस प्रकार नेत्र ऊपर ले जाओ कि पलकें न उठें, केवल ठोड़ी ऊँची होती जाय, सिर पीछे को चलता जाय, और ठोड़ी इतनी ऊँची करते जाओ कि नेत्र सूर्य के क़रीब एक गज़ नीचे आसमान को देखें। अपनी पलकें हलके-हलके झपकाते रहो।

३—अब साँप या घड़ी के पैंडलम की तरह आहिस्ता-आहिस्ता हिलना शुरू करो। हिलने से सामने की वस्तु, मकान, पेड़ इत्यादि चलते मालूम होंगे। जब तुम दाईं ओर को हिलोगे, तो चीज़ें बाईं ओर को हिलेंगी; और जब तुम बाईं ओर को हिलोगे, तो वस्तुएँ दाईं ओर को। इस प्रकार सूर्य भी दिखाई देता रहेगा; और नेत्रों को किसी प्रकार की हानि भी न होगी।

४—सूर्य को टकटकी बाँधकर न देखना, वरना सूर्यांध (Sun-blindness) होने की संभावना है। बीच-बीच में हर दो-चार मिनट के बाद एक या दो मिनट को नेत्र बंद कर लो।

कुछ समय इस तरह अभ्यास करते रहो। नेत्रों में शक्ति बढ़ती जायगी, तेज टपकने लगेगा। पूर्ण रीति से व्यायाम करने की पहचान यह है कि सूर्य-व्यायाम होने के बाद नेत्रों के सामने धुँधलापन नहीं आवेगा, दृष्टि साफ़ रहेगी। यदि धुँधलापन आवे, तो थोड़ी देर, क़रीब ५ मिनट, आँखें बंद करके नेत्रों को अपनी हथेलियों से ढक लो। यदि नेत्र कमज़ोर हों, तो साथ-साथ और दूसरे नेत्र-ज्योति बढ़ाने के साधन भी करो। यदि आपका प्रेम किसी देवता में है, तो ऐसा ध्यान करना शुरू कर दो कि सूर्य में उस देवता का स्वरूप है, जिसके तुम उपासक हो। वह स्वरूप चमकता प्रतीत होने लगेगा। उस स्वरूप से किरणें निकलती और हृदय में नेत्र द्वारा जाती मालूम होने लगेंगी। हृदय के स्थान पर सूर्य-चक्र है, इस चक्र में

जागृति होगी, और हृदय के स्थान का सूर्य चमकने लगेगा। इसकी चमक धीरे-धीरे बढ़ने लगेगी, किरणें निकलने लगेंगी। इस सूर्य में भी अपने देवता का स्वरूप प्रतीत होने लगेगा। यह समय बड़े आनंद का होगा, हृदय दैवी प्रकाश (Divi-light) से भरा होगा, नेत्रों से प्रेम और आनंद के आँसुओं की झड़ी लगी होगी, तथा शरीर पुलकायमान होगा। जितना इस सूर्य में तेज बढ़ता जायगा, उतना ही ईश्वर-प्रेम बढ़ता जायगा, और उतनी ही पवित्रता शरीर में आती जायगी।

अब आप अपने शरीर के दोषों को देखिए। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार इत्यादि एक-एक दोष को लीजिए, और उस पर इन किरणों को डालिए, ये दोष जलते चले जायँगे। शरीर का जो हिस्सा कमज़ोर हो, उस पर भी इन किरणों के डालने से तेज पैदा होने लगेगा।

इस अभ्यास से आपके अंदर की ज्योति चमकने लगेगी, आपकी मानसिक शक्ति बढ़ेगी, और एक आकर्षण-शक्ति पैदा होगी। जो आपसे बातें करेंगे, वे आपके हो जायँगे। आप जो काम करेंगे, वह ठीक तरह से होगा। भगवान् स्वयं उस काम को आप द्वारा करेंगे।

मृत संजीवनी सुधा
सूतिका, पौरुषहीनता. अजीर्ण और ज्वर को दूर करनेवाला
सर्वश्रेष्ठ टॉनिक वाइन
पता—ढाका आयुर्वेदीय फ़ार्मेसी
लिमिटेड
एक पिंट का दो रुपए आठ आने
क्वार्टर का चार रुपए आठ आने
स्थानीय एजेंटों से लीजिए
या
सीधे हेड ऑफ़िस ढाका (बंगाल) से मँगाइए

चाचा की अँगूठी

[श्रीयुत मज़हर अंसारी बी० ए०, (ऑनर्स)]

चाचाजी जा चुके हैं। आशा है, कुछ दिनों में हम दोनो भाई रूठे हुए मित्रों से मित्रता के उस संबंध को दुबारा जोड़ लेंगे, जो चाचाजी के कारण टूट गया। हमें विश्वास है, और हमारे मित्रों को भी इसमें कोई संशय न होना चाहिए कि जब वे दुबारा हमारे घर आकर उसे सुशोभित करेंगे, तो हम उन्हें सिर-आँखों पर लेंगे। असल में हमसे तो वे यों ही बिगड़ बैठे, हमारा तो इसमें लेश-मात्र भी दोष न था। जो कुछ किया, चाचाजी ने किया। हुआ क्या था, हम सुनाए देते हैं। आप ही ज़रा न्याय कीजिए।

हम ग्रामीण हैं। दस वर्ष हुए, हम घर-बार-सहित नगर में आ बसे। अब यदि नौ-दस वर्ष के दीर्घ समय के पश्चात् हमारे ग्रामीण चाचा अपने दोनो भतीजों, अर्थात् मैं और मेरे छोटे भाई, से मिलने आ गए, तो क्या हम दोनो भाइयों और हमारी स्त्रियों को हर्ष न होगा? यह ठीक है कि चाचाजी के विषय में भाँति-भाँति की बातें भिन्न-भिन्न मनुष्यों से हमारे कानों में ऐसी पड़ती रहती थीं, जिनसे हम इनके आने का सूचना-पत्र पाकर घबराए अवश्य (वैसे तो वह बड़े भारी कार्यकर्ता भी नहीं थे। बस, यह कहा जाता था कि वह बिना विचारे झट झूठ बोल देते हैं, और बेतुकी बातों से यों ही दूसरों को दुःखी किया करते हैं।), परंतु चाचाजी ने हमारे घर विराजमान होने के बाद पहले दिन जो बर्ताव किया, उससे मालूम पड़ने लगा कि असल में वह ऐसे ग़प्पी नहीं, जैसे कहे जाते हैं। मामला इसी ढब चलता रहता, तो चाचाजी के क्या कहने थे। मैं पहला मनुष्य होता, जो उनकी बदनामी करनेवालों में बैठकर यह कहता कि तुम चाचाजी का अपमान करते हो, वह बड़े सज्जन हैं। परंतु यह तो उस समय होता, जब वास्तव में वह ऐसे होते। वह तो बस चाचा ही जो ठहरे। दूसरे ही दिन चचापने का कर्तव्य कर बैठे। रविवार था। हमारे पड़ोस एक ईसाई-फ़ैमिली (कुनबा) थी, जिसकी हमारे साथ अच्छी बैठक-उठक थी। गिरजे से लौटने पर मिस साहबा के साथ एक और स्त्री और पुरुष आ पधारे। चाचाजी भी टहलते-टहलते उसी जगह आ निकले। भाईजी भी थे। अच्छा-खासा समाज-सा जुड़ गया। चाचाजी भी कभी-कभी बातचीत में भाग ले लेते। हम दोनो को संतोष था कि वह हम पढ़े-लिखे और जेंटिलमैनों के चाचा की पदवी पर कुछ बुरे नहीं दिखाई देते थे। बातचीत होते-होते अंधों पर आ गई। चाचाजी ने कहा—"जब मैं स्कूल में पढ़ता था,..."

मैंने भाई को देखा और भाई ने मुझे। "वह कौन-सा दिन था, जब चाचाजी स्कूल में पढ़ते थे!"

चाचाजी बोले—"जब मैं स्कूल में पढ़ता था, तो, मुझे याद है, एक मास्टर साहब थे, जो बेचारे जवानी में ही नेत्र-हीन हो चुके थे।"

सुननेवालों ने 'च-च्' करके शोक प्रकट किया।

मैंने फिर भाई की ओर देखा। भाई के होठों पर मुस्किराहट-सी देख पड़ी, मानो वह सोच रहे हों कि चाचाजी कैसे सत्यवादी बनकर बेपर की उड़ा रहे हैं।

मिसेज़ डेविड (हमारी पड़ोसिन) ने पूछा—"दोना आँखें जाती रहीं बेचारों की ?"

चाचाजी बोले—"जी हाँ, मेम साहबा ! उन्हें शीशे की आँखें चढ़वानी पड़ीं।"

मिसेज़ डेविड के मुख से निकला—"अरे !"

मिसेज़ डेविड तो स्त्री होने के कारण चुप हो रहीं, परंतु डेविड साहब पढ़े-लिखे थे, चाचाजी के सफ़ेद झूठ को कैसे सुन लेते। मेरी ओर देखने लगे। मैंने अपनी हँसी रोकने के लिये मुख पर रूमाल लगा लिया, और अपनी जगह से उठकर दरवाज़े पर जा खड़ा हुआ, जैसे नाक साफ़ कर रहा होऊँ।

मिसेज़ डेविड के साथ जो मिस साहबा थीं, उन्होंने पूछा—"तो उन बेचारों को नौकरी तो छोड़ देनी पड़ी होगी ?"

चाचाजी बोले—"जी नहीं, यही तो सुनने की बात है।"

मिस साहबा ने पूछा—'यह कैसे ?"

कहने लगे—"वह बराबर स्कूल में काम करते रहे।"

मिस साहबा ने फिर पूछा—"यह कैसे ?"

बोले—'कुछ दिनों में उन्हें काँच की आँखों से दिखाई देने लगा।"

मिस्टर डेविड चाचाजी के ये शब्द सुन ऐसे हो गए, जैसे किसी ने उनके सिर पर पानी का भरा मटका उँडेल दिया हो। बोले—"आपका कहना यह है कि वह मास्टर साहब काँच की आँखों से चीज़ों को साफ़-साफ़ देख लेते थे, और लिखा हुआ भी पढ़ लेते थे।"

चाचाजी ने कहा—"जी हाँ।"

मिस्टर डेविड अचंभे में रह गए। समझ गए कि रोग असाध्य है। उन्होंने झट बातचीत का रुख बदल दिया, और जाते समय अच्छी तरह नमस्कार भी नहीं किया। उस दिन से हमें आज तक अपने पड़ोसियों के दर्शनों तक का अवसर प्राप्त न हुआ। संभव है, वे यह जानकर हमसे नाराज़ हो गए हों कि जान-बूझकर हमने उन्हें एक बूढ़े से भिड़ा दिया, और उनकी हँसी उड़वाई।

अब इससे भी बड़ी घटना का ज़िक्र सुनिए—हुआ ऐसा कि जिस दिन चाचाजी पधारे, उसके चौथे ही दिन मेरे घर मेरे मित्रों का भोज था। मैंने सोचा, यदि चाचाजी ने उनके आगे भी अपने स्वभावानुसार गपाड़े उड़ाने आरंभ किए, तो वे अवश्य समझेंगे कि मैंने जान-बूझकर उनका अपमान कराने के लिये चाचाजी को ऐसे अवसर पर बुलाया है। भोज से दो दिन पहले मैंने अपने लड़के को चाचाजी के आगे झूठ बोलने पर बुरी तरह पीटा। झूठी मार खाकर वह रोया। मैंने उसे पहले ही सिखा दिया था कि ये सब ढोंग चाचाजी के लिये हैं। सो उसने पिट-पिटाकर अपने झूठ की क्षमा चाही, और कहा—"अब कभी झूठ न बोलूँगा।" चाचाजी ने भी उसे समझाया—"बेटा, झूठ बोलना बड़ा बुरा है।"

परंतु तीसरे ही दिन पता चल गया कि मेरा लड़के को पीटना भी निष्फल ही रहा। जहाँ तक चाचाजी की बुद्धि का अपने चलन से संबंध है, उनके झूठ बोलने की वही दशा रही, जो अब से पहले कभी थी।

संध्या को भोजन आदि से निश्चिंत होकर सब यार-दोस्तों की जत्थाबंदी हो गई। कुछ तो ब्रिज खेलने लगे, कई एक कैरम में लग गए, दूसरों ने चौपत्ती ही शुरू कर दी, कुछ ऐसे भी थे, जिन्हें केवल इधर-उधर की बातें करने ही में मज़ा आता था, वे गप्पें लड़ाने लगे। इसी टोली में चाचाजी भी आ मिले। मेरे एक मित्र की निगाह एकाएकी चाचाजी की हरे नग की अँगूठी पर पड़ गई। (न-मालूम हरे रंग की क्या अलाय-बलाय इसमें नग की जगह

लगी हुई थी, परंतु चाचाजी इसे पुखराज कहते थे।) वह पूछ बैठे—"क्यों जी, यह आपके हाथ कहाँ से लगी ?"

चाचाजी ने जवाब में एक लंबी साँस ली, जिसने लगभग सभी को चौकन्ना कर दिया। फिर बोले—"इसकी न पूछो, इसकी तो एक लंबी कथा है।"

मैं करम खेल रहा था, परंतु चाचाजी का यह वाक्य सुनते ही उनकी ओर देखने लगा। मेरी भाँति और भी लोग चाचाजी के ये शब्द सुनकर, अपना अपना काम छोड़, उनकी ओर ताकने लगे। अब अँगूठी की कथा सुनाई जाने के लिये चारो ओर से प्रार्थनाओं की वर्षा होने लगी, पर चाचाजी मौन बैठे मुस्किरा रहे हैं, मानो कहते हैं—"क्यों भाई, हमारे भतीजे ने बना दिया न तुम्हारे सब जेंटिलमैनों को उल्लू ?"

अंत में जब प्रार्थनाओं की वर्षा तनिक कम हुई, तो चाचाजी ने अँगूठी की कथा आरंभ की। कहने लगे—"यह पुखराज की अँगूठी मुझे उस समय मिली, जब मैं मिस्र में था, ..."

चाचाजी का यह वाक्य अभी पूर्ण रूप से समाप्त भी न हुआ था कि दरवाज़े पर किसी चीज़ के गिरने का ज़ोर से खड़का हुआ। पता लगा कि छोटे भाई के हाथों से पानों की थाली छूट गई है। परंतु यह खड़का सुननेवालों में से किसी एक का ध्यान भी क्षण-भर को इधर न बटा सका। क्योंकि मुझ-समेत सभी चाचाजी की मिस्री कथा सुनने में लीन थे।

एक ने कहा—"अच्छा, क्या आप मिस्र भी हो आए हैं ?"

चाचाजी बोले—"जी हाँ, मैं मिस्र गया था।"

उन्होंने बड़ा अचरज प्रकट किया, और मुझसे बोले—"अरे यार, तुमने तो आज तक हमें यह नहीं बतलाया कि हमारे एक चचा हैं, जो घाट-घाट का पानी पिए हुए हैं !"

मैंने उनकी बात अनसुनी कर दी। चाचाजी मिस्र गए होते, तो मैं बतलाता भी। मैं चाचाजी की तरह ग़प्पी तो हूँ नहीं, जो यारों में अनहुई और व्यर्थ बातों की डींगें मारता रहूँ।

चाचाजी बोले—"हाँ, तो मैं अपनी आयु के बीसवें वर्ष में मिस्र गया था। सच पूछो, तो मैं सारी दुनिया का पैदल सफ़र कर रहा था। सफ़र करते-करते वहाँ भी जा पहुँचा।"

अचंभे से सबके मुख खुले और दीदे फटे हुए थे। चाचाजी कहने लगे—"एक दिन मैं पौ फटने से पहले जागा, और किराए के ऊँट पर चढ़कर बुलहौल देखने चला।"

सुननेवालों के मुँह अब देखने-योग्य थे। हर मस्तक पर लिखा हुआ था कि क्या ही अच्छा होता, हम भी मिस्र जाते, और एक दिन पौ फटने से पहले जागते, और किराए के ऊँट पर चढ़कर बुलहौल देखने चलते।

चाचाजी ने कहा—'केवल एक-दो ही घंटे मरुस्थल में चला था कि मैंने अपने आगे रेत पर एक अजीब चित्र देखा। जब मेरा ऊँट उसके पास पहुँचा, तो मालूम हुआ कि यह तो मनुष्य है। मुझे देखकर वह लड़खड़ाता हुआ आगे आया, और बोला—'ओ पूजनीय भारतवासी, भयभीत न हो।'"

मैंने पूछा—"आप क्या चाहते हैं ?"

बोला—"अज़ बराए-ख़ुदा एक घूँट पानी।"

"मेरे पास बोतल में थोड़ा-सा पानी था, मैंने उसे पिला दिया। वह पानी पीकर मेरे पाँवों पर पड़ गया और ईश्वर से मेरे लिये कुछ प्रार्थना की। फिर यह अँगूठी मुझे दी, जो आप लोग अब मेरी उँगली में देख रहे हैं।"

मैंने सोचा, यदि इस समय सुननेवालों का

ध्यान चाचाजी की ओर से न हटा लिया गया, तो न-मालूम वे इनका पीछा कब तक न छोड़ें, और क्या-क्या जोड़ें। मैं मित्रों से कहने लगा—"अच्छा, ता अब चाय का एक दौर चले।"

मेरे वाक्य के 'तो अब' ने चाचाजी की 'गप्प' पर ऐसी करारी चोट की कि यदि वह झट-पट ढाल न सँभाल लेते, तो मैंने उनकी गप्प का काम ही तमाम कर दिया था। आप झट बोले—"भाई, इस कथा को तो हम समाप्त कर दें।"

मैं समझ गया कि अब तो वह ख़तम ही करके छोड़ेंगे। क्यों बुरा बनूँ। बोला—"हाँ, कथा तो आप कह ही रहे हैं, साथ-साथ चाय का दौर भी चलता रहेगा।"

संतुष्ट होकर बोले—"हाँ, यह ठीक है।"

इधर नौकर चाय लेने गया, उधर चाचाजी फिर अपनी हाँकने लगे। बोले—"हाँ, तो मैं उस अरब को अँगूठी देने पर धन्यवाद दे रहा था कि उसने अँगूठी को इस प्रकार छुआ, जैसे इसमें कोई भेद छिपा हो। बोला—'इसमें एक बड़ा भारी गुण है।'"

मैं बड़ा भिन्नाया, सुननेवालों में सब पढ़े-लिखे लोग थे। कोई भी जादू आदि में विश्वास नहीं रखता था। यह सोचकर कि चाचाजी की यह बकवास मुझे इनकी निगाहों में नीचा कर देगी, मैं कुछ कहने ही को था कि चाचाजी ने फिर अपनी कथा आरंभ कर दी—"उस अरब ने यह भी कहा कि जब कभी तुम चाहो कि तुम्हारे पास के सब मनुष्य ग़ायब हो जायँ, तो इसके पुखराज को अपनी ठोड़ी से छुआ देना, सब-के-सब उसी क्षण ग़ायब हो जायँगे।"

मेरे सब मित्र उनकी यह बात सुन हँसने लगे। वे इसे चाचाजी का मज़ाक़ समझे। परंतु चाचाजी ने निराश-से होकर उनकी ओर देखा। कहने लगे—"मैं भी आप ही की तरह इस बात को हँसी समझता था। इसलिये मैं उस अरब की ओर देखकर हँसा, और अँगूठी को ठोड़ी से छुआते हुए कहा—'इस प्रकार?' मुझे यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह अरब ग़ायब हो चुका था।"

सुननेवाले चाचाजी का यह वाक्य सुनते ही गंभीर-से हो गए। मैं चाचाजी के इस साहस पर बड़ा अचरज कर रहा था। बोला—"ग़ायब हो गया!"

चाचाजी ने मेरी ओर देखते हुए कहा—"हाँ, बिलकुल……। कहाँ तो मैं बुलहौल देखने जा रहा था, कहाँ उलटे पाँवों फिरा, और अपने कमरे में आकर अँगूठी को झटपट संदूक़ में छिपा दिया।"

मेरे एक हँसमुख मित्र ने चाचाजी के स्वभाव को भाँप लिया, और उन्हें टोका—"और फिर आपकी आँख खुल गई?"

चाचाजी ने कहा—"नहीं जनाब; पहलेपहल तो मुझे भी यह क़िस्सा एक स्वप्न ही प्रतीत हुआ, परंतु बाद की परख और प्रयोग ने सही कर दिखाया। कोई दस-पंद्रह दिन बाद मैंने संदूक़ की झाड़-पोंछ की, तो अँगूठी मुझे कोने में पड़ी मिली।"

मैं और भाई, दोनो प्रार्थना-युक्त दृष्टि से उनको देख रहे थे कि वह अपनी कथा यहीं समाप्त कर दें। परंतु वह कब ऐसा करनेवाले थे। पल-भर दम लेकर फिर अपनी अलिफ़-लैला आरंभ कर दी—"मेरे बड़े भाईजी ने, परमात्मा उन पर कृपा-दृष्टि रक्खे, यह पूछा कि यह अँगूठी कहाँ से और कितने में मिली? परतु मैंने उन्हें यों ही इधर-उधर की बातें बनाकर टाल दिया। फिर भी मैं अपने मन में कई प्रकार की चुभन-सी अनुभव कर रहा था कि एक बार अपने उसी कार्य को दुहराऊँ, जिसने उस अरबवासी को क्षण-भर में आँखों से ओझल कर दिया था। एक रात सोते समय मैंने चाहा कि

अँगूठी की जाँच करूँ, परंतु फिर मैंने विचारा कि कमरे में अकेला हूँ, कहीं आप ही अपनी नज़र से ग़ायब न हो जाऊँ। अंत में मेरी खटक मुझसे परीक्षा कराकर ही रही। यह मैं आपको बता दूँ कि अब मैं अपने देश पहुँच चुका था। एक दिन एक मनुष्य स्लोलाइड के खिलौने बेचता हुआ हमारे मोहल्ले में आ गया। मुझसे कहने लगा—'बाल-बच्चों के लिये कुछ ले लो।' मैंने इनकार कर दिया। वह और भी हठ करने लगा। जब मेरे बहुत कहने पर भी वह न माना, तो मैंने अपने दाएँ-बाएँ देखा। दूर तक गली में कोई भी न था। मैंने झट अपनी अँगूठी उँगली से निकाल ठोड़ी से छुआ दी। आप विश्वास करके जानिए कि छुआने की देर थी कि वह खिलौनेवाला....''

चाचाजी ने अपना हाथ रूमाल की खोज में जेब में डाला। सुननेवाले बेचैन थे। एक ने असंतुष्ट हो चाचाजी से पूछा—''हाँ, तो फिर खिलौनेवाले को क्या हुआ?''

चाचाजी बोले—''होता क्या, बस, वह ग़ायब हो गया।''

किसी ओर से एक आश्चर्य-युक्त आवाज़ आई—''ग़ायब!''

चाचाजी ने कहा—''हाँ, ग़ायब! मैं भागा-भागा गली के नुक्कड़ तक आया। बाज़ार में चारो ओर दृष्टिपात करके खिलौनेवाले की खोज की, शायद बाज़ार में आ धमका हो, परंतु जनाब, वह वहाँ हो, तो दिखाई दे।''

मैं हक्का-बक्का-सा रह गया। सुननेवाले भी अचरज में थे। वैसे तो चाचाजी का एक भी शब्द विश्वास-योग्य न था, परंतु कथा कुछ ऐसी थी कि उसने मुझ-समेत सभी को मुग्ध कर लिया था। चाचाजी ने फिर बोलना शुरू कर दिया—''मित्रो! मुझे इस घटना से भय-सा लगने लगा, और कोई दो सप्ताह तक तो ज्वर भी रहा। ज्यों-त्यों अच्छा हुआ। अब यह अँगूठी मेरे डर का कारण बन चुकी थी। यदि अँगूठी हाथ से पृथक् कर देता, तो एक प्रकार की चुभन-सी होती, और यदि पहने रहता, तो जहाँ मुझे कोई अधिक देर रोकता या मुझे व्यर्थ की बातों में लगाता, तो मेरा अँगूठीवाला हाथ आप ही आप ठोड़ी की ओर जाने लगता। और, कभी-कभी तो अँगूठी ठोड़ी से छू ही जाती।''

एक घबराई हुई आवाज़ आई—''तो फिर नतीजा क्या होता?''

चाचाजी ने हौले-हौले अपना अँगूठीवाला हाथ अपने मुख की ओर उठाना आरंभ किया। इधर मेरी हवा सरकी। (मेरी ही क्या, शायद सभी की यही दशा होगी)। असल में चाचाजी का कोई और अभिप्राय न था, जैसा क्षण-भर बाद मालूम हो गया। वह केवल रूमाल से अपनी आँखों में आया हुआ पानी पोंछना चाहते थे। इस काम से अवकास मिलने पर कहने लगे—''एक बार मेरे मित्रों ने एक नाटक का प्रबंध किया। इसका रिहर्सल कर रहे थे। मैं भी इसमें था। मेरी नाक में खुजली-सी उठी। मैंने खुजाने को अपना सीधा हाथ उठाया, तो एकाएकी यह अँगूठी ठोड़ी से छू गई। छूने की देर थी कि सब-के-सब ऐक्टर्स ग़ायब हो गए!''

किसी के मुख से निकला—''हाँ!''

चाचाजी ने पूरे ज़ोर के साथ कहा—''हाँ साहब, नाटक ही न हो सका। इसके बाद मैंने पब्लिक-मीटिंगों में जाना ही छोड़ दिया कि कहीं मैंने भूलकर अँगूठी ठोड़ी से छुआ दी, तो सारी जनता, ऐक्टर्स-सहित, ग़ायब हो जायगी। इस तरह अपने ही घर, नगर में बंद पड़े रहने से मेरा जी उकताने लगा। सोचा, चलो, बंबई की सैर को चलें। वहाँ जाकर एक बड़े प्रसिद्ध होटल में ठहरा। उसी होटल में एक सुंदर, मालदार फ़िल्म-ऐक्ट्रेस भी ठहरी हुई थी। मित्रो, आप मुझसे बहुत छोटे हैं।

यह आपसे कहने की बात नहीं, परंतु अब विषय के बीच में आ गई, तो ख़ैर । मुझे उससे और उसे मुझसे प्रेम हो गया ।"

सुननेवालों पर आश्चर्य का पर्दा पड़ा हुआ था कि इस रोमांस के छींटों से भी उनके होठों पर नाम-मात्र को भी मुस्किराहट न आई ।

चाचाजी ने कहा—"मैं वहाँ गया था कुछ दिनों के लिये, परंतु ठहरा कई महीने । हमने एक दूसरे के प्रेमी बनने के वचन लिए-दिए । अंत में एक दिन ऐसा आया कि मैं उसे साथ ले अपने घर आने लगा ।"

इतना कहकर चाचाजी ने अपना सिर झुका अपनी दोनो हथेलियों में रख लिया । सुननेवालों के मुख भय से पीले पड़ गए थे । दो-एक आवाज़ें "फिर क्या हुआ ?" की आईं ।

चाचाजी ने एक ट्रेजिक हीरो की भाँति अपना सिर उठाया । बोले—"बंबई ठहरने के अंतिम दिन हम दोनो एक ही कमरे में थे, और सौगंदें खा-खाकर एक दूसरे को अपने सच्चे प्रेमी होने का विश्वासी बना रहे थे कि मेरी प्रिया ने मुझसे कहा—'क्यों प्यारे, तुम मुझसे सदैव इसी प्रकार प्रेम रक्खोगे ?' बेसुध में मैंने अपनी ठोड़ी अपने सीधे हाथ पर रख ली । कुछ समय पश्चात् मैंने बड़ी नम्रता से कहा—'मेरा प्रेम सदैव इसी प्रकार स्थित रहेगा ।' और, मैं अपनी भुजाएँ फैलाकर उसे गोद में लेने को बढ़ा । देखता क्या हूँ कि मेरी प्रिया ग़ायब !"

सुननेवाले सब-के-सब भयभीत-से हो गए थे । सबकी दृष्टि अँगूठी पर थी । चाचाजी ने अपनी अँगूठी को ज़रा देखा, और अँगड़ाई लेने की तरह दोनो भुजाएँ फैलाईं, और हौले-हौले उन्हें मुख की ओर लाने लगे । मेरे मित्रों में से एक घबराकर कुर्सी पर से उठा (इतनी घबराहट में कि कुर्सी उलट गई ।), और झट बाहर निकल गया । बाक़ी मित्र भी भयभीत-से हो कुर्सियों से उठ खड़े हुए । पंद्रह सेकंड में ही कमरा ख़ाली था सिवा मेरे भाई और चाचाजी के । चाचाजी अपने किसी विचार में लीन थे । निगाह उठाकर देखा, तो सब ग़ायब !

बोले—"ऐं ! अच्छा भई, अब हमें नींद आ रही है, चलें ।" द्वार से निकलते समय मुझसे कहने लगे—'अच्छी संगति रही ।"

कैंथरडाइन
केश-तैल
अत्युत्तम केश-शृंगार तथा औषधि
ख़ारिश, बाल के गिरने
समय के पहले बाल सफ़ेद होने तथा
बालों व मग़ज़ की अन्य सभी बीमारियों में
लाभदायक है ।
बेंगाल केमिकल्स
कलकत्ता : : बंबई

गुलहज़ारा

[श्रीयुत 'बच्चन']

(१)

एक आँधी पश्चिमी नभ से
चली इस ओर आई;
जल-भरे, काले, गरजते
बादलों को साथ लाई।
मुस्किराई चंचला फिर,
एक लहरा नीर बरसा,
गंध सोंधी उठ धरा से
कह गई बरसात आई!
भूमि कर तैयार खुरपी से
बनाकर क्यारियों को,
बीज कर में, स्वप्न आँखों में
लिए माली हमारा
आज उपवन में हमारे
बो रहा है गुलहज़ारा।

(२)

उस दिवस हर बीज से था
फूट निकला एक अंकुर;
दूसरे दिन दो हुए दल,
जो रहे थे साथ में जुड़,
और दो दिन बाद निकलीं
पत्तियाँ दो-दो सभी में,
देखते-ही-देखते लो,
हो उठी क्यारी हरित-उर!
आज के सुकुमार पौधे
कल सुमन देंगे बड़े हो,
हे मृगी! इनको कहीं तुम
चर न जाना जान चारा;
आज उपवन में हमारे
उग रहा है गुलहज़ारा।

(३)

उस दिवस प्रत्येक पौधे में
मृदुल कलियाँ लगी थीं;
रूप में वे मोतियों की
लग रही बहनें सगी थीं।
दूसरे दिन खोल घूँघट
झाँकने जग को लगीं वे,
हर कली अपने अनोखे
रंग में, रस में रँगी थी।
हँस पड़ीं सब साथ सहसा
हो उठे बलिहार पौधे,
सज गई क्यारी हमारी
ख़ुश हुआ माली हमारा;
आज उपवन में हमारे
खिल रहा है गुलहज़ारा।

(४)

चढ़ गए कुछ पुष्प मंदिर-
देवता पर, देवियों पर,
पितृगण की वेदियों पर
कुछ गए रक्खे सजाकर,
लड़कियों की सांध्य क्रीड़ा में
कुसुम कुछ काम आए,

राम-लीला में हुए कुछ
राम-लक्ष्मण पर निछावर,
शेष झर-झरकर अवनि को
फूल की चादर उढ़ाते,
इस तरह से जा रहा है
मातृभू का ऋण उतारा;
आज उपवन में हमारे
लुट रहा है गुलहज़ारा।

(५)

बीज के जो कोष बाक़ी
थे, गया ले तोड़ माली,
पीत होकर अब ठिठुरती
पत्तियाँ हैं नोकवाली;
मृत्यु-शय्या पर पड़े अति
रुग्ण की अंतिम हँसी-सी,
यत्न करके खिल रही है
एक लघु कलिका निराली!
साँस ठंडी ले प्रकृति अब
प्राण उसके ले रही है,
हाथ से अपने उसी ने
था जिसे कल तक सँवारा!
आज उपवन से हमारे
मिट रहा है गुलहज़ारा!

हिंदी-काव्य-साहित्य में नई धारा बहानेवाले
कविवर 'बच्चन'जी की नई रचना

मधु-कलश

इस काव्य-संग्रह में 'बच्चन'जी के नए भाव हैं, नए छंद हैं, नया स्वर है, और है एक नया संदेश! इसे शीघ्र पढ़िए! मूल्य १) मात्र

'बच्चन'जी की अन्य रचनाएँ

मधुबाला—मधुशाला स संबंध रखनेवाले विषयों पर लिखित गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत आपको उन्मत्त कर देगा। मूल्य १) मात्र

मधुशाला—मधुशाला पर लिखित रुबाइयों का संग्रह है। दूसरा संस्करण समाप्त हो रहा है। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो तीसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य १) मात्र

ख़ैयाम की मधुशाला—जगत्प्रसिद्ध रुबाइयात उमर ख़ैयाम का ऐसा सुंदर अनुवाद हिंदी में नहीं प्रकाशित हुआ। मूल्य ।।।) मात्र

तेरा हार—यह 'बच्चन'जी की प्रारंभिक कविताओं का संग्रह है। प्रथम संस्करण समाप्त ही होने को है। शीघ्रता कीजिए। मूल्य १) मात्र

सुषमा-निकुंज, प्रयाग
मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

संयुक्त-प्रदेश का नाम-परिवर्तन

[श्रीयुत सीताराम पांडेय एम्० ए०, साहित्यरत्न]

स्थान का नाम उसके इतिहास की प्रतिमा है; उसकी संस्कृति का प्रतिबिंब है; उसके गौरव की शाब्दिक मूर्ति है; उसके निवासियों की राष्ट्रीय भावनाओं का आधार है। देश का नाम मृतप्राय जाति की धमनियों में भी स्फूर्ति का संचार करता है; वीरों को उत्साह दिलाता है; निराश को आशा बँधाता है। नाम वह मंत्र है, जो सोतों को जगाता और मुर्दों को जिलाता है।

भारतवर्ष के सभी प्रांतों के नाम पुरातन तथा ऐतिहासिक होते हुए उसके अतीत गौरव का प्रकाश फला रहे हैं। कर्नाटक, आंध्र, महाराष्ट्र, गुजरात, वंग, बिहार, सिंध, पंचनद इत्यादि सभी ऐतिहासिक शब्द हैं। इन नामों से उक्त प्रांतों के पतन तथा उत्थान के चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। केवल दो ही नाम हैं, जो अभी हाल के हैं—मध्य-प्रदेश तथा संयुक्त-प्रदेश। ये नाम हमारे पतन के स्मारक हैं, हमारी ग़ुलामी के चिह्न हैं, हमारी स्वतंत्रता की क़ब्र हैं। अतएव हमारे राष्ट्रीय पुनरुज्जीवन के साथ-साथ नाम-परिवर्तन की भावना उदय होना स्वाभाविक है। उत्तरी मध्य-प्रदेश ने अपना नाम 'महाकोशल' तथा संयुक्त-प्रदेश ने अपना नाम बदलकर 'हिंद' रक्खा है।

उत्तरी मध्य-प्रदेश या हिंदुस्थानी मध्य-प्रदेश का नाम महाकोशल रक्खा गया है। यह नाम उसके इतिहास पर दृष्टि डालने से कुछ उपयुक्त ही मालूम होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से इस प्रांत के दो ही भाग महत्त्व-पूर्ण हैं—उत्तरी और पूर्वी। प्राचीन काल में पूर्वी भाग (छत्तीसगढ़) महाकोशल या दक्षिण-कोशल के नाम से विख्यात था, और उत्तरी भाग चेदि के नाम से। इन्हीं दो नामों में से एक अर्थात् 'महाकोशल' ही के नाम से प्रांत का पुनर्नामकरण किया गया है।

किंतु संयुक्त-प्रदेश का नाम 'हिंद' रखना मेरी समझ में सर्वथा अनुपयुक्त है। 'हिंद'-शब्द 'सिंधु'-शब्द का अपभ्रंश है। भला, संयुक्त-प्रदेश का 'सिंधु'-से क्या संबंध?

पारसियों ने सिंधु-तटवर्ती प्रांतों को 'हिंद' तथा वहाँ के निवासियों को 'हिंदु' कहना शुरू किया। धीरे-धीरे सारा देश 'हिंद' या 'हिंदुस्थान' कहलाने लगा। इसी 'हिंद' से 'इंड' और 'इंडिया' बना। इस प्रकार बहुत प्राचीन काल से पूरा भारतवर्ष 'हिंद' या 'इंड' के नाम से पुकारा जाता है, और आज भी पुकारा जाता है।

इंडियन पेनल कोड या ताज़ीरात हिंद का अर्थ भारतीय दंड-विधान है, संयुक्त-प्रदेश का नहीं। हिंदू जनता या हिंदी-भाषा-भाषी जिसे 'भारत माता' कहते हैं, उसे उर्दू वाले 'मादरे-हिंद' ही कहते हैं। हिंदी-साहित्य में भी 'हिंदुआन', 'हिंदवान', 'हिंदुस्थान', 'हिंद' आदि शब्द संपूर्ण भारतवर्ष के लिये ही प्रयुक्त किए जाते हैं। प्राचीन काल में भी ये शब्द संपूर्ण भारत के लिये ही प्रयुक्त होते थे। कहते हैं, जिस समय महर्षि व्यास ईरान गए, उस समय वहाँ के लोगों ने उनका परिचय पूछा। उत्तर में उन्होंने कहा—'मन मरदे अम् हिंदी निजादे" अर्थात् मैं हिंद में पैदा हुआ एक पुरुष हूँ।

इस प्रकार महर्षि व्यास के समय से आज तक—पाँच हज़ार वर्ष से—'हिंद' अथवा 'इंड'-शब्द सारे भारत के लिये प्रयोग में आ रहा है। चंदबरदाई ने पृथ्वीराज को 'हिंदुआन' का राजा कहकर वर्णित किया है। किंतु संयुक्त-प्रदेश कहलानेवाले भू-भाग पर उनका कोई प्रभुत्व न था।

अब यदि यह निर्विवाद है कि 'हिंद'-शब्द संपूर्ण भारतवर्ष के लिये प्रयुक्त होता रहा और है, तो हम संयुक्त-प्रदेश का नाम 'हिंद' रखकर एक महान् साहित्यिक, राजनीतिक तथा व्यावहारिक गड़बड़ी पैदा कर रहे हैं। 'हिंद'-शब्द का अर्थ संयुक्त-प्रदेश कर देने पर विद्यार्थियों को छंदों के अर्थ समझने में महान् कठिनाई होगी। इतिहास के विद्यार्थियों को इतिहास की घटनाएँ उल्लेख करने में कठिनाई होगी, और व्यवहार में आपस में बातचीत करने में जनता को भी महान् अड़चनें होंगी।

हाँ, कुछ लोग किसी तरह यह सिद्ध करने का प्रयत्न कर सकते हैं कि 'हिंद'-शब्द कभी या कहीं संयुक्त-प्रदेश के लिये भी प्रयुक्त हुआ है। उन सज्जनों से मेरी यह प्रार्थना है कि वे इस बात पर अच्छी तरह विचार करें।

यदि यह हो भी, यह सिद्ध है कि 'हिंद'-शब्द सारे भारत के लिये प्रयुक्त होता है। ऐसी स्थिति में जो नाम सारे देश का हो चुका है, जो राष्ट्रीय संपत्ति है, जो हम राष्ट्र को दे चुके हैं, उसे हम राष्ट्र से छीन लें, यह हमारी संकीर्णता के सिवा क्या होगा? हमारा कर्तव्य है कि हम राष्ट्र के हित को पहले देखें, पीछे प्रांत के। जिस कार्य से राष्ट्र का अहित हो, वह कभी न करें, चाहे उससे प्रांत का कितना भी अधिक लाभ क्यों न हो। अच्छा, तो संयुक्त-प्रदेश का नाम क्या रक्खा जाय, इसके लिये हमें एक बार इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी।

प्राचीनतम काल में यह भाग 'मध्य-देश' कहलाता था। बहुत समय तक इस भाग में कोशल, काशी, शूरसेन, पांचाल इत्यादि राज्य थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध उत्तर-कोशल का राज्य था, जिसकी राजधानी अयोध्या थी। इसके राजाओं में इक्ष्वाकु, सगर, दिलीप, हरिश्चंद्र, दशरथ तथा भगवान् राम-सरीखे महान् तेजस्वी, चक्रवर्ती सम्राट् हुए। उत्तर-कोशल का राज्य भगवान् बुद्ध के समय तक एक प्रसिद्ध राज्य था। उसके बाद वह मौर्य-साम्राज्य में सम्मिलित हो गया। मौर्यों के बहुत समय बाद गुप्त-साम्राज्य की स्थापना हुई।

गुप्तों के बाद देश पुनः छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया। संयुक्त-प्रदेश कहलानेवाले भू-भाग में मौखरियों की श्री-वृद्धि हुई। मौखरियों की राजधानी का नगर क़न्नौज था। क़न्नौज लगभग ६०० वर्ष तक इस भू-भाग की राजधानी रहा। महाराज जयचंद के दिवंगत होने के पश्चात् इस नगर की अवनति हुई, और यह भू-भाग दिल्ली की पठान-सल्तनत का एक भाग बन गया। दिल्ली-सल्तनत के पतन के पश्चात् इस भाग में जौनपुर-राज्य की स्थापना हुई। यह राज्य कुछ समय तक उत्तरी भारत का एक प्रधान राज्य रहा। इसका अंत लोदी बादशाहों ने किया। लोदी-साम्राज्य के बाद यह मुग़ल-साम्राज्य में शामिल रहा। मुग़ल-साम्राज्य के पतन के फलस्वरूप यह पुनः स्वतंत्र हो गया। अकबर के समय में इस भू-भाग में आगरा, अवध तथा इलाहाबाद के प्रांत थे, किंतु औरंगज़ेब के समय में इलाहाबाद अवध के सूबे में ही शामिल कर दिया गया था। औरंगज़ेब के मरने पर अवध स्वतंत्र हो गया। अवध के नवाब ने अँगरेज़ों की मदद से रुहेल-

खंड भी जीत लिया। इस प्रकार अवध का सूबा बहुत बड़ा हो गया।

इसी अवध के सूबे का बहुत-सा भाग लॉर्ड वेलेज़ली ने, १८०१ में, सहायक सेना के खर्च के लिये, ले लिया। इसके साथ १८०४ में सिंधिया से जीता आगरा तथा कुछ अन्य ज़िले मिलाए। सन् १८१६ में नैपाल से कुमाऊँ का भू-भाग लिया गया, और वह भी इसी भाग में जोड़ दिया गया।

इन्हीं सबको लेकर १८३३ में आगरा-प्रांत की रचना हुई। इस प्रांत का नाम 'आगरा' रक्खा जाना कदापि उचित न था, क्योंकि इसका $\frac{3}{4}$ भाग अवध का हिस्सा है। दूसरे, प्रांत की राजधानी का नगर आगरा नहीं था, और न है; वह इलाहाबाद था, और अब भी माना जाता है। संभव है, इसीलिये वह पश्चिमोत्तर-प्रदेश कहा जाने लगा हो। अवध का शेष भाग भी सन् १८५६ ई० में अँगरेज़ी राज्य में मिलाया गया। किंतु वह अलग ही रक्खा गया। सन् १९०१ में लॉर्ड कर्ज़न ने पश्चिमोत्तर-सीमा-प्रांत की रचना की, इसलिये पश्चिमोत्तर-प्रदेश का नाम पुनः आगरा रक्खा गया, और वह अवध के साथ मिला दिया गया। इस प्रकार वर्तमान आगरा-अवध के संयुक्त-प्रदेश की सृष्टि हुई।

उपर्युक्त इतिहास पर दृष्टि डालने से वर्तमान संयुक्त-प्रदेश के निम्न-लिखित नाम सामने आते हैं—

प्राचीन काल—मध्य-देश, उत्तर-कोशल
माध्यमिक काल—क़न्नौज, जौनपुर
आधुनिक काल—अवध

अब इन नामों से ही हमें एक नाम चुनना चाहिए। 'मध्य-देश' बहुत प्राचीन नाम है। आजकल मध्य-देश कहने से मध्य-भारत का भ्रम होने की संभावना है, इसलिये यह नाम वर्तमान समय के अनुकूल नहीं है।

क़नौज तथा जौनपुर नगरों के नाम हैं। जिस समय ये नगर राजधानी के नगर थे, उस समय इनके नाम से पूरे राज्य का नाम था। आजकल इन नगरों की दशा इतनी अच्छी नहीं है कि ये प्रांत की राजधानी हो सकें। इनकी गणना प्रांत के प्रधान नगरों में भी नहीं है। ऐसी दशा में इनके नाम से प्रांत का नाम रक्खा जाना कौन पसंद करेगा?

रह गए उत्तर-कोशल और अवध। ये दोनो नाम समानार्थी हैं। उत्तर-कोशल प्राचीन नाम है और अवध प्रचलित। इसलिये सारे प्रांत का नाम अवध ही रक्खा जाना चाहिए। 'अवध'-शब्द में हिंदू-मुसलमान, दोनो की भावनाओं का एकीकरण होता है। अवध के यदि हमें मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान् राम का स्मरण होता है, तो नवाब आसफ़उद्दौला का भी। यदि हमें अयोध्या के चक्रवर्ती सम्राटों का स्मरण होता है, तो लखनऊ के नवाबों का भी। अवध हमारी राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक भावनाओं का भांडार है। इसलिये मैं संयुक्त-प्रदेश के बंधुओं से अनुरोध करता हूँ कि वे पूरे सूबे का नाम 'अवध' रखने की कृपा करें।

योरप में सात मास
लेखक—श्रीधर्मचंद सरावगी
लेखक महोदय स्वाभाविक जिज्ञासुओं में हैं, इसलिये इन्होंने काफ़ी छान-बीन करके अनेकों जाननेवाली बातों को खोज निकाला है, और साथ में मुख्य-मुख्य स्थानों के चित्र भी लेते गए जिससे पुस्तक और भी उपयोगी बन गई है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको ऐसा ज्ञात होगा, मानो आप इस समय योरप भ्रमण कर रहे हैं। २३४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य २।)
पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

शांति का संदेश-वाहक धर्म

[कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न]

"धियो यो नः प्रचोदयात्"

मानव एक अपूर्ण रूप है, उसका लक्ष्य पूर्णता है। यह पूर्णता की भावना मनुष्य को धर्म से ही वरदान-रूप में प्राप्त हुई है। इसी से मैत्रेयी ने एक बार अपने स्वामी से प्रश्न किया था—"येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम् ?" तो ऋषि ने उत्तर दिया—"यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति।" अर्थात् संपूर्णता में ही सुख है, अपूर्णता में नहीं। अतः शाश्वत आनंद की उपलब्धि संपूर्णता में लय होने पर ही हो सकती है। जिस प्रकार अंकगणित म इकाई अपने आपमें पूर्ण है, उसी प्रकार हमें भी एक ही बनना होगा। संपूर्ण विश्व में एकता की भावना, नानात्व में एकत्व और मैं-तू के अनेकत्व में विश्व-प्रेम की अमर भीख हमें धर्म के द्वार पर ही मिल सकेगी। जीव, प्रकृति तथा परमात्मा का एकीकरण धर्म के मस्तिष्क की त्रिपुटी में ही होगा। इससे धर्म उपेक्षणीय विषय नहीं।

कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न

पर आज संसार वैज्ञानिकता के अंतर्द्वंद्व में उलझ न-जाने क्यों धर्म के विरुद्ध आवाज़ उठा रहा है! वैज्ञानिक जगत् से ध्वनि निकल रही है—"परमात्मा कोई नहीं, परमात्मा के मानने की आवश्यकता ही क्या है, जब कि हम वैज्ञानिक विज्ञान द्वारा सब कुछ कर सकते हैं। उनका कथन है—Man has conquered the nature. हमने प्रकृति को जीत लिया है, अब हम सर्वतंत्र स्वतंत्र हो गए हैं, हमें परमात्मा को मानने की आवश्यकता ही क्या है, अतः परमात्मा कुछ नहीं।" निटशे ने घोषणा की—"विज्ञान के युग में ईश्वर की मृत्यु हो चुकी है।" मेकाइल बेकुनिन ने लिखा—"If God really existed it would be necessary to abolish him. यदि सचमुच कोई ईश्वर मौजूद है, तो उसे ढूँढ़कर मार डालना चाहिए।"

रूस के अंदर तो एक ईश्वर-विरोधी मंडल की ही स्थापना कर दी गई, जिसका उद्देश्य ही समस्त रशिया से धर्म का बहिष्कार करना था। यह प्रभाव सिर्फ़ योरप तक ही सीमित नहीं रहा, एशिया पर भी इसके छींटे पड़े। आज धर्म-प्राण

भारत—जिसके लिये योरप का एक विख्यात लेखक लिखता है—यदि भारतवर्ष नष्ट हो जाय, तो संसार से धर्म ही नष्ट हो जायगा, जिसकी नस-नस में धर्म का ख़ून प्रवाहित हो रहा था, जिसके जीवन का आधार ही धर्म था, "धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः", जिसकी महत्ता की नींव ही धर्म पर रक्खी गई थी, वह धर्माधार भारत— भी इस प्रभाव से शून्य न रहा। यहाँ भी आज धर्म को न माननेवालों की एक काफ़ी अच्छी संख्या तैयार हो गई है। अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता, स्वदेश-प्रेमी नवयुवक भी धर्म को एक उलझन समझकर अपने आपको धार्मिक उलझनों से दूर रखने की चेष्टा किया करते हैं। उन लोगों का विचार है कि यह धर्म ही लड़ाइयों की जड़ है। इसी के नाम पर आए दिन कलह हुआ करते हैं। हिंदू मुसलमानों से लड़ते हैं। कैथोलिक प्रोटेस्टेंटों से झगड़ते हैं। एक धर्मवाला दूसरे धर्मी की उन्नति नहीं सह सकता। हिंदू मुसलमानों से घृणा करता है। मुसलमान हिंदुओं को फूटी आँखों नहीं भाता। इस धर्म ने ही हिंदू-मुस्लिम-एकता में विशाल दीवार बना रक्खी है, जो उन दोनो को गले मिलने से रोके खड़ी है। धर्म ने ही इतने मनुष्यों की हत्याएँ कराई हैं। धर्म की आड़ में ही न-जाने कितने निरीह प्राणियों के गलों पर छुरी फेरी गई है। आज इस धर्म के नाम पर होनेवाली हत्याओं के ख़ून से संसार के इतिहास के असंख्य पृष्ठ रँगे पड़े हैं। उस प्राकृतिक सत्य के आविष्कर्ता, पृथ्वी गोल है, इस सत्य को खोज निकालनेवाले गैलिलियो की आत्मा फाँसी के तख्ते पर की गई अन्याय-पूर्ण बेरहमी की स्मृति में क्या धर्म के नाम पर ख़ून के आँसू न बहा रही होगी!

सच है। ये सब लीलाएँ धर्म के ही नाम पर की गईं। पर क्या सचमुच इसी का नाम धर्म है? क्या उन सब हत्याओं का अभिशाप धर्म के ही सिर पर है? क्या धर्म हमें अपने से भिन्न धर्मवालों के गले पर छुरी फेरने की आज्ञा देता है? क्या धर्म ही इन सब सांप्रदायिक कलहों की जड़ है? क्या धर्म हमें ईर्षा-द्वेष की शिक्षा देता है? क्या एक धर्म को माननेवाला दूसरे धर्मवाले को घृणा की निगाह से देखे, यह भी धार्मिक सत्य है? क्या सचमुच ही धर्म इतने भागों में विभक्त है? जो इतने भागों में विभक्त है, वह धर्म हो सकता है? यदि यही बात है, तो धर्म की भी हमें सीमाबंदी करनी पड़ेगी। पर वह धर्म ही क्या, जो हमें सार्वभौमिकता से परे हटाकर सीमाबंदी के निकट लाता हो। धर्म के लिये तो हमारे पूर्वज कह गए हैं—"धारणाद्धर्ममित्याहुः", जो हमें धारण करे, वही धर्म है। फिर यह सांप्रदायिकता तथा सीमाबंदी की दलदल में फँसा धर्म धारक क्योंकर हो सकता है? यह संप्रदाय रूप धर्म जन-समाज को धारण नहीं कर रहा है, इसकी आड़ में तो समाज को नष्ट किया जा रहा है। ये सब धर्म नहीं; ये तो धर्म के ठेकेदारों के द्वारा स्थापित मठ हैं, जिनकी ओट में रह वे अपना उल्लू सीधा किया करते हैं। धर्म के नाम पर किए गए भीषण, बीभत्स कृत्यों का अभिशाप उन धर्माचार्य नामधारियों के ही सिर पर है, जिन्होंने इसके विशुद्ध स्वरूप को नष्ट कर इसे ईर्षा की खाड़ी और दलबंदी की दलदल में फँसा दिया।

जब किसी बात की अति हो जाती है, तब उसमें प्रतिक्रिया होना भी अवश्यंभावी है। पहले धर्माचार्यों ने अनेकों अत्याचार किए, अनेकों वैज्ञानिकों को धर्म के नाम पर बेरहमी से मौत के घाट उतारा। इसी से आज के वैज्ञानिक धर्म को मौत के घाट उतारने के प्रयत्न में हैं। यह धर्म के विरुद्ध आंदोलन उन धर्म के ठेकेदारों द्वारा किए गए अत्याचारों की अति का ही परिणाम है। पर क्या कभी संभव है कि संसार से धर्म का

बहिष्कार कर दिया जाय ? मुझे तो उस दिन की कल्पना ही बड़ी भयानक जान पड़ती है, जिस दिन संसार धर्म-शून्य हो जायगा। आज संसार के संपूर्ण व्यवहार धर्म के आधार पर ही क़ायम हैं। क्या पति-पत्नी का संबंध धर्म की नींव पर नहीं ? यदि धर्म ही न रहा, तो क्या पारिवारिक जीवन इसी प्रकार शांति-पूर्वक चल पाएगा ? क्या कोई प्राकृतिक नियम या वैज्ञानिक सिद्धांत धर्म के स्थान की पूर्ति कर सकेगा ? पिता-पुत्री, भाई-बहन, इनके संबंधों में पवित्रता की दीवार खड़ी करनेवाला धर्म ही है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति मृदुता तथा सहानुभूति का भाव धर्म ही सिखाता है। "मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्", सबको मित्र की आँख से देखने का पुण्य संदेश हमें धर्म के मंगल मुख से ही प्राप्त हुआ है। ये सब पारस्परिक संबंधी तथा आचार-संबंधी ज्ञान हमें विज्ञान न दे सकेगा, इन सबके लिये हमें धर्म की शरण में ही आना होगा। जहाँ, जिन राष्ट्रों से धर्म का बहिष्कार किया जा रहा है, वहाँ के पारिवारिक संबंधों की शिथिलता तथा सामाजिक अशांति के समाचार आए दिन सुनाई पड़ते ही रहते हैं।

इसके अतिरिक्त मनुष्य को पाप से बचाने की शक्ति भी धर्म में ही है। बड़े-बड़े क़ानून भी मनुष्य को छिपकर पाप करने से नहीं बचा सकते। जिस मनुष्य को प्रभु पर विश्वास है, वह चाहे कहीं भी हो, पाप कृत्य करते समय उसके देखते होने का भय उसे पाप से विमुख कर सकता है।

आत्मा का ज्ञान भी धर्म के द्वारा ही हो सकता है। आज विज्ञान ने अन्य बड़े-बड़े आविष्कार किए; जल, थल, नभ सबको जीत लिया; पर आज तक भी वह आत्मा का पता न लगा सका। आज बड़े-बड़े डॉक्टरों ने शरीर की नस-नाड़ियों, स्नायुओं, मज्जाओं, अस्थियों, सबको जाना, पर 'मैं' को न जान सके। कैसे आश्चर्य की बात है कि हम सूर्य-चंद्र को जानते हैं, नक्षत्र, समुद्र, नदी, पर्वत और प्रकृति की रग-रग को जान सकते हैं, पर अपने आपको नहीं जान पाते! एक आदमी फूल को देखता है; दूसरा खिड़की में बैठा हुआ उस फूल देखनेवाले को देखने-समझने का प्रयत्न करता है। बंधुगण! फूल को जानना सरल है; पर फूल जाननेवाले को जानना बड़ा कठिन काम है। इसी प्रकार हम पदार्थों को जान सकते हैं, पर पदार्थों के जाननेवाले आत्मा को जानना बड़ा कठिन है। किसी शायर ने क्या ही सुंदर कहा है—

हम कहते हैं मंदिरों व मस्जिदों में ख़ुदा मिलता नहीं;
सच तो यह अपने आपको अपना पता नहीं।

कैसा अंधेर है कि हम सब कुछ जानते हुए भी अपने आपको—उन सबके जाननेवाले को—ही नहीं जानते! पर प्रश्न यह है कि क्यों नहीं जानते? क्या उसका ज्ञान कहीं बाहर छिपा हुआ है? नहीं। क्यों? इसका उत्तर भी बड़ा सरल-सा है। जिस प्रकार पृथ्वी के अंदर सब कुछ मौजूद है, तेल, शक्कर आदि, पर उसे चाहे हम कितना ही खोदते जायँ, क्या हमें तेल, शक्कर मिल जायगी? नहीं। वह कब मिलेगी? जब हम उसके बीज का पता लगाएँगे। हमें यदि तेल चाहिए, तो सरसों का बीज पृथ्वी में डालेंगे। वह बीज ही पृथ्वी से तेल खींचकर वृक्ष के रूप में हमारे सामने तेल की धाराएँ बहा देगा। यदि मीठा चाहिए, तो गन्ने का बीज डालो, वह पृथ्वी से मीठा खींच लाएगा। इसी प्रकार आत्मज्ञान के लिये भी बीज की आवश्यकता है। उस बीज के विना हम आत्मा का पता न पा सकेंगे। वह बीज है धर्म का। इस धर्म-बीज द्वारा ही हम आत्मा का ज्ञान कर सकेंगे। प्राचीन ऋषि-मुनि इस बीज को जानते थे, इसी से वे हमारे सामने आत्मा के ज्ञान को उपनिषद्-ग्रंथों के रूप में रख गए। आज हम

भी उनके द्वारा आत्मतत्त्व को जानने में समर्थ हो गए हैं। जिस प्रकार प्रकृति का ज्ञान हमें साइंस से प्राप्त होता है, उसी प्रकार इस अंतरात्मा (पिंड तथा ब्रह्मांड) की आत्मा का ज्ञान हमें धर्म से ही प्राप्त होगा। अतः हम धर्म की उपेक्षा नहीं कर सकते।

सच तो यह कि विज्ञान भी धर्म का विरोधी नहीं, उसका पक्षपाती ही है। ज्यों-ज्यों विज्ञान नए-नए करिश्मे हमारे सामने उपस्थित करता जाता है, त्यों-त्यों उस सृष्टिकर्ता की महिमा द्विगुणित होती जाती है। आज विज्ञान ने रेडियो का आविष्कार किया। उसके द्वारा हम दूर-दूर की बातें घर बैठे ही सुन सकते हैं; तो ऐसी चामत्कारिक शक्तिवाला ईथर के रचयिता के प्रति हमारे हृदय में क्यों न प्रवाह उमड़ पड़ेगा? वैज्ञानिक तो केवल-मात्र सृष्टि-रचयिता के द्वारा रचे गए रहस्यों का पता-मात्र लगा सकता है, उनका बनाना उसकी शक्ति से बाहर है। ऐसी स्थिति में यदि हमने पाँच-छ रहस्य जान लिए, तो उससे इतने अहंकारी न बन जाना चाहिए कि हमने प्रकृति को जीत लिया है, इससे परमात्मा को मानने की आवश्यकता नहीं। भाई! तुमने प्रकृति को जान लिया, तो क्या बड़ा काम किया। उसे जानने की शक्ति भी तो उस देवाधिदेव से ही पाई है न? फिर उसी की चीज़ से उसी की चीज़ जानकर फिर उसी दाता की उपेक्षा करना कैसी हास्यास्पद बात है? अभी तो असंख्यों ऐसे रहस्य होंगे, जिन्हें जानना सर्वथा हमारी शक्ति के बाहर का विषय है। यह विश्व भी एक महाकाव्य है। महाकाव्य जितनी बार पढ़िए, उतनी ही बार उससे नई-नई बातें मिलती जायँगी। इस विश्व-काव्य में भी यही बात है। पर हम बेचारे तो इस विश्व-महाकाव्य को पढ़ने के लिये उसकी भाषा ही अभी नहीं जानते। जिस प्रकार एक पत्र, जो ऐसी भाषा में लिखा गया हो, जिसे हम न जानते हों, किंतु हो बड़े मार्के का, भावुकता से भरा, पर क्या हम उसे देखकर आनंदित हो सकेंगे? नहीं क्योंकि हम उसकी भाषा से अनभिज्ञ हैं। पर जो उसे समझ सकता है, वह उसे पढ़कर मस्त हो जायगा। शायद उसकी मस्ती देख हमें आश्चर्य होगा कि यह असर हम पर क्यों न हो सका? पर कैसे होता। हमें तो उसे पढ़ सकने की भाषा ही न आती थी। जो उसे पढ़ सका, उसी ने आनंद पाया। इस विश्व-काव्य में भी यही रहस्य है। जो आप्त पुरुष इसे पढ़ सके, समझ सके, मस्त हो गए। मीरा ने पढ़ा, ईसा ने पढ़ा, बुद्ध ने पढ़ा, ऋषि दयानंद ने पढ़ा। इन सबने पढ़ा, और पढ़कर तन्मय हो गए। 'मीरा जगत देखि रोई।' लोग व्यावहारिक दुःखों से संतप्त होकर रोते हैं, पर ये महात्मा पारमार्थिक दुःखों के लिये रोए। वे विश्व-काव्य की भाषा को जानते थे, अतः इसका महत्त्व समझ सके। पर हम लोगों के निकट विश्व नीरस हैं; मिट्टी, पत्थर तथा झाड़-झंखाड़ तक ही सीमित है। हम उसकी भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण उसका रहस्य नहीं समझ सके। समझने के लिये हमें उन महान् आत्माओं से वह भाषा सीखनी होगी। धर्म की शरण में आना पड़ेगा।

पर यह सब ज्ञान हमें सांप्रदायिक कलहों में फँसे रहने से न हो सकेगा। हमें धर्म को इन सब सीमाबंदियों से ऊपर रखना होगा। धर्म कोई सीमित पदार्थ नहीं। न हिंदू उसे बाँधे रख सकते हैं, न मुसलमान, न ईसाई ही। ये सब संप्रदाय भी धर्म के खंड न कर पाए। धर्म तो एक अखंड, सर्वतंत्र स्वतंत्र सार्वभौम कला है। इसका संबंध हमारे व्यावहारिक जीवन से है। धर्म कोई जटिल सैद्धांतिक विषय नहीं, जिसे बड़े-बड़े प्रतिभाशाली

ही समझ सकें। एक बड़े विज्ञानी की अपेक्षा एक साधारण बुद्धि का मनुष्य भी अधिक धर्मात्मा हो सकता है। Science teaches us to know; but art teaches us to do. धर्म को इसी से ऊपर 'कला' कहा है। यह भी हमें 'to do' की शिक्षा देता है। हमें परस्पर, प्राणिमात्र के साथ, अपने प्रति किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, इसकी शिक्षा धर्म देता है। धर्म हमें मनुष्यत्व का पाठ पढ़ाता है। किसी भी धर्म की महत्ता इसी में है कि वह मनुष्य को मनुष्य का कितना हमदर्द बनाता है। उसमें मानवता का कितना ऊँचा आदर्श है, तथा उस आदर्श पर कितना अमल होता है। यदि हमारा धर्म हमें यह सिखाता है कि प्रेम, दया, सहानुभूति, सब अपने ही धर्मवालों के लिये है, उस सीमा से बाहर जितने भी हैं, सभी ग़ैर हैं, उन्हें ज़िंदा रहने का कोई अधिकार नहीं, तो मैं उस धर्म से अलग होकर विधर्मी होना अधिक पसंद करूँगी।

धर्म नाम है उस कला का, जो बिंदु को सिंधु में मिल जाने का उपाय बताती है। जो हमारी जाति को विश्वजाति में, हमारी आत्मा को विश्वात्मा में मिले होने की अनुभूति या विश्वास कराती है।

हमारी भिन्न-भिन्न रुचियाँ, भिन्न-भिन्न संस्कार तथा विभिन्न परिस्थितियाँ होने से ही हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये विभिन्न मार्गों का अवलंबन किया करते हैं। इन्हीं के परिणाम-स्वरूप भिन्न-भिन्न धर्मों की उत्पत्ति हुई है। भिन्न-भिन्न मार्गों से सब एक ही ओर जा रहे हैं। "यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय।" जिस प्रकार नदियाँ भिन्न-भिन्न मार्गों से आती हुई अंत में नाम-रूप का भेद छोड़, समुद्र में लय हो एक हो जाती हैं, हमें भी उसी प्रकार भिन्न-भिन्न पथों से आते हुए अंत में अपने हिंदू, मुस्लिम नामों को छोड़ उस महासमुद्र में लय हो जाना है। जब इस नाना का परिणाम अनाना है, इस अनेकत्व का अंत एकत्व में है, तब यह सांप्रदायिक कलह क्यों? यदि कोई मुझसे धर्म की परिभाषा करने के लिये कहे, तो मैं कहूँगी, जो कुछ सत्य है, वही धर्म है। सचाइयाँ कभी एक दूसरे की विरोधिनी नहीं होतीं। जो धर्म दूसरे धर्मवालों का विरोध करना सिखाता है, वह धर्म नहीं। महाभारतकार ने क्या ही सुंदर कहा है—

धर्मं यो बाधते धर्मो ; न स धर्मः कुधर्मकः ;
अविरोधी तु यो धर्मः, स धर्मो राजसत्तम !

दूसरे धर्म को बाँधनेवाला धर्म धर्म नहीं। अविरोधी किसी दूसरे को न बाँधनेवाला धर्म ही धर्म है। यह कितने दुःख का विषय है कि आज सभी धर्मोंवाले एक दूसरे को बाँधने के लिये तुले हुए हैं। क्या यही धर्म का उद्देश्य है? नहीं। हमें अब इन सबसे ऊपर उठना होगा। क्रांति के इस युग में अपने पुराने अंधविश्वासों में भी क्रांति करनी होगी। रूढ़ियों के गले-सड़े परदे को फाड़ धर्म की विश्वजनीनता तथा सार्वभौमिकता का अनुभव करना होगा। तथा, धर्म के इस विशाल प्रकाश से मानवों के अंतःकरणों में इकट्ठे हुए ईर्षा-द्वेष के अंधकार को दूर कर प्राणिमात्र के साथ स्नेह-संबंध स्थापित करना होगा। तभी संसार में शांति तथा विश्व-शांति की समस्या हल हो सकेगी, और हम देश, काल तथा वर्ण के कृत्रिम बंधनों को तोड़ विशाल से अपना नाता जोड़ सकेंगी। अखिलेश मंगल करें। हमें उन्नत कर हमारी अभिलाषा पूर्ण करें।

जीत की हार

(गतांक से आगे)

[श्रीयुत पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी]

दूसरे वर्ष—

कहावत है, पुरुष पारस होता है। त्रिवेणी केदार के घर पारस बनकर आया था। वह जब चला गया, तो अकेला केदार व्यवसाय को सँभाल न सका। उसने अपने एक निकट संबंधी को भी बुलाया; किंतु उसके द्वारा परिस्थिति और भी बिगड़ गई। उसने जी खोलकर ग़बन किया। केदार ठहरा सीधा-सादा व्यक्ति, बेचारा उसके विश्वास में पड़कर मारा गया। बढ़े हुए खर्चों को तो वह कम कर न सका, किंतु आय बराबर घटती गई, और एक दिन ऐसा भी आ गया कि पूँजी के अभाव में केदार को व्यवसाय बंद कर देना पड़ा।

सुख के दिनों का अनुभव कली ने बहुत थोड़े दिन कर पाया था कि उसे दुःख के दिन देखने पड़े। त्रिवेणी की मूर्ति उसके हृदय-पटल से एक क्षण को न टलती थी। रात-दिन उसके संपर्क में रहते-रहते वह उसका आत्मीय हो गया था। नित्य के वार्तालाप में, विमल मन से, जब वह कली नाम से संबोधन करता, तो उसका रोम-रोम विहँस उठता था। कितने भोले, निर्विकार स्नेह से वह बातें करता था! घंटों बातें-ही-बातें हुआ करतीं, तो भी वह न थकती, न ऊबती। बीच-बीच में, दो-दो, तीन-तीन घंटों के अंतर से ही, चाय, मिठाई, फल और पान-सिगरेट का क्रम कभी भंग ही न होने पाता था। सिनेमा-सरकस, मेला-प्रदर्शनी से लेकर खान-पान तक तो साथ-साथ चलता ही था। ग़रज़ कि त्रिवेणी हौले-हौले उसके हृदय-तल में बस गया था। कभी कली को यह सोचने का अवसर ही न मिला कि एक दिन ऐसा भी आ सकता है, जब त्रिवेणी बात-की-बात में उसे छोड़कर चला जायगा। हाय! वह यह भी तो न अनुभव करने पाई कि वह उसे कितना चाहने लगी है! और, उस दिन जब त्रिवेणी उसे त्यागकर चल दिया, तो अभी कल ही जीवन उसके लिये एक स्वप्न बन गया।

किंतु उसे स्वप्न भी कैसे कहा जाय?

स्वप्न भंग होने पर तुरंत चेतनता आती है, और हम सोच लेते हैं कि चलो, कोई बात नहीं। यह सब तो एक नाटक था, एक कल्पना; अपने ही आप उठकर छलक पड़ी हुई जल-धारा की-सी एक मछली। पल-भर बाद उसका पता क्या? निरा स्वप्न ही तो है वह।

किंतु इस त्रिवेणी को कली स्वप्न कैसे मान ले, जब कि वह अभी कल तक अपना था। वह तो उसकी जान पर आ गया है, उसकी छाती पर सवार है। वह स्वप्न कैसे है?

नहीं, किसी प्रकार वह स्वप्न नहीं हो सकता। वह तो सत्य है—अमिट सत्य।

देर तक यही सब सोचती हुई कली एक दिन रो पड़ी।

हम प्रायः इस बात का दावा किया करते हैं कि हम बड़े ज्ञानी हैं—दूरदर्शी इतने कि सदा कोसों आगे का पथ देखते हैं, कोई बात हमसे छिपी नहीं

रह सकती। किंतु हाय! कभी-कभी हम कितने भ्रम में रहते हैं कि यह भी नहीं जान पाते कि हम किसी को किस हद तक चाहने लगे हैं।

कली की भी यही गति हुई। वह यह जान ही न सकी कि वह अपने आपको खो रही है। और, आज जब उसके जीवन के अभावों ने उत्थित होकर अपने पैर फैला दिए, तब वह यह सोचती रह गई कि अरे, यह हो क्या गया! जिस वस्तु की उसने इतनी रक्षा की, आखिरकार उसे एक चोर चुरा ही ले गया। अब?

कली का रहन-सहन भी अब बदल गया था। कई-कई दिनों तक वह एक ही साड़ी पहने रहती। न साबुन से शरीर मलकर स्नान करती, न केशों में तेल-कंघी का स्पर्श होने देती। खुली, बिखरी, शुष्क कुंतल-राशि उसके शिथिल गात पर पड़ी रहती; उसका वक्ष भी कभी-कभी दिगंबर बन जाता। किंतु कली अपने इस स्वरूप को जैसे देख ही न पाती थी।

अब कभी-कभी स्वामी के साथ कली की खटपट भी हो जाती। कारण, यह निर्मम दरिद्रता एक दृष्टि से जैसी पापनाशिनी और पुण्यमयी है, दूसरी दृष्टि से उससे भी अधिक कुलटा, कुभाषिणी और कलमुँही भी है। तभी तो केदार में वह पुराना मर्ज़ फिर उभड़ आया। वह फिर असंगत बातें बकने लगा।

एक दिन त्रिवेणी की बात उठते ही वह आग हो गया। बोल उठा—"तो वही तेरा स्वामी था। मैं कोई नहीं हूँ। मैं तो श्वान हूँ—एक-एक टुकड़े के लिये दूसरों का मुँह ताकने को मजबूर! आज मालूम हुआ, इस दुर्दशा का तुझे दुःख नहीं है। तुझे तो त्रिवेणी के वियोग की ही व्यथा है।"

कली ने उस दिन तक के जीवन में कभी केदार के मुँह से ऐसे कटु वचन नहीं सुने थे। वह तो उसे एक सीधा-सादा, सात्त्विक और वरेण्य स्वामी मानती थी। किंतु अब उसे प्रतीत हुआ कि वह तो पिशाच है। तभी उसके लंबे-लंबे, पैने नखों ने उसका हृत्पिंड तक विदीर्ण कर डाला।

कली उस दिन रो न सकी। दारुण आघात आँसुओं तक का अपहरण कर लेता है।

किंतु चांडालिनी आपत्तियाँ आखिरकार हैं तो आपस में सगी बहन ही। एकाएक कली अस्वस्थ हो गई, और उन्हीं दिनों उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। कली यह सोचती ही रह गई- काश ऐसे समय त्रिवेणी उसके घर होता, उसके वे स्वर्ण-दिवस होते.....।

और, दुर्दशा-ग्रस्त काल में पुत्र-जन्म! दैन्य को पाकर, सौख्य-वृद्धि न करके, वह तो और भी अधिक उत्पीड़क हो उठता है।

केदार की बहन ने आकर किसी प्रकार उस नवजात शिशु का पालन किया। उसकी गोद में एक बच्चा था। वह उसे दूध पिलाती ही थी, इस बच्चे को भी पिलाने लगी। वह उत्तरोत्तर पनपता गया। किंतु कली की अस्वस्थता उसका शुष्क-प्रशांत मानस पाकर क्रमशः इतनी बढ़ गई कि अंत में केदार को उसके स्वास्थ्य-लाभ के लिये ज़नाने हास्पिटल की शरण लेनी पड़ी।

त्रिवेणी केदार का गृह त्यागकर फिर कानपुर में रह नहीं सका। कलकत्ते में उसके बहनोई सूत का व्यापार करते थे। त्रिवेणी कलकत्ता जाकर उन्हीं के साथ रहने लगा।

गिरधारी बाबू थे रिते-घिसे आदमी, सांसारिक अनुभव में ही उनके बाल सफ़ेद हुए थे। दस-पंद्रह दिनों के ही संपर्क से उन्हें त्रिवेणी का यथार्थ परिचय मिल गया। वह यह जान गए कि है तो यह काम का आदमी। व्यवसाय की नीति को समझता ही नहीं, उसकी तह तक पहुँच जाता है। किंतु अपने इस गुण के साथ ही उच्छृंखल प्रकृति में भी वह कम अग्रसर नहीं। किसी भी दिन नौ-दो

ग्यारह हो सकता है। उन्होंने एक दिन—जब दोनों खाना खाकर उठे, पान खाए गए, और सिगरेट के दो-दो कश लिए जा चुके—यों ही हँसते-हँसाते कह डाला—"भई, इस तरह नहीं चलेगा। यों चलने को चल भी सकता है, पर मैं यह नहीं चाहता कि एक दिन तुम यहाँ से रफ़ूचक्कर हो जाओ, और अवसर आने पर किसी से भी कह सको कि इतने दिन मैंने जीजाजी के साथ काम किया, पर पैसे के नाम पर फूटी कौड़ी का भी स्पर्श नहीं किया। यों रहने को यह तुम्हारा घर है, पर घर में भी तो इस तरह काम नहीं चला करता। वेतन के रूप में न सही—क्योंकि तुम मेरे यहाँ नौकरी तो भला क्या करते!—एक साझेदार के रूप में ही सही, मैं तुम्हें विना एक दमड़ी भी लगाए इस दूकान में पाँच आने की पत्ती देता रहूँगा।"

त्रिवेणी ने बहुत कुछ इधर-उधर किया, किंतु गिरधारी बाबू, साफ़ तबियत के आदमी थे, टस-से मस न हुए।

इस प्रकार त्रिवेणी के निर्वाह की समस्या तो अपने आप हल हो गई। अब रह गई बात जीवन और उसके भीतर से उमड़ते हुए अभिभोग की।

त्रिवेणी हठी व्यक्ति है, दुस्साहसी एक नंबर का। कोई भी काम वह पलक मारते कर सकता है। वह क्षमा बहुत कम माँगता है। माँगता है, तो उसका आडंबर नहीं रचता। सच्चे हृदय से माँगता है, और फिर तदनुरूप आचार-व्यवहार रखने की चेष्टा भी करता है। किंतु अपने आप झुककर किसी को क्षमा करना तो वह क़तई नहीं जानता। और, उन दशाओं में, जब कि वह जानता है कि उसकी ग़लती नहीं है, वह अपने प्यारे-से-प्यारे के आगे भी झुक नहीं सकता। जो प्यारा है, उसके आगे उठना क्या, और झुकना क्या—यह विचार उसके मन में कभी नहीं आया। न कभी इस पर विचार करने का उसे अवसर मिला। अतएव इस विचार से अगर कोई उसे निर्मोही कहना चाहे, तो यह उसकी इच्छा पर निर्भर है। वह चाहे, तो उसे ऐसा कह भी सकता है।

तो इस अर्थ में त्रिवेणी पाषाण से भी अधिक कठोर है।

किंतु यह त्रिवेणी आज तक का है। आगे का त्रिवेणी कैसा है, ज़रा-सा इसको भी देखा न जाय।

रात को बारह बजे से पहले वह घर नहीं लौटता, और दिन को बारह बजे से पहले घर से निकलता नहीं। बारह से छ बजे तक घनघोर व्यस्तता—दूकानदारी। फिर सिनेमा-थिएटर, ताश-कैरम, गाना-बजाना, नशा-पानी, बहस-मुबाहसा और गाली-गलौज।

घर के संबंध में गिरधारी बाबू ने जो कभी पूछ दिया, तो चौकन्ना होकर उनकी ओर स्थिर दृष्टि से देखता और चुप। इच्छा हुई तो कह दिया, मुझे नहीं मालूम; नहीं तो इसकी भी ज़रूरत क्या? बेकार की बात का जैसा कहना, वैसा न कहना। ग़रज़ कि अगर गिरधारी बाबू ने ही लिख दिया कि त्रिवेणी मज़े में है, तो उसके माता-पिता भले ही थोड़े निश्चिंत हो जायँ, अन्यथा वह अपने मन से उन्हें एक शब्द तक नहीं लिखता।

अब यहाँ प्रश्न उठना है कि यह बात क्या है?

हाँ, है बात। और वह यह कि जो किसी ने कानपुर नगर का नाम भी ले लिया, तो त्रिवेणी का हृत्खंड घड़ी के पेंडुलम-सा डोल उठता है। वे सड़कें, वे मकान, वह पान की दूकान, जहाँ से वह नित्य पान खाता और सिगरेट पीता था; वे गलियाँ, जहाँ से वह निकलता था; वे सिनेमा-हाउसेज़, जहाँ वह कली को साथ लेकर उसे सिनेमा दिखलाने जाया करता था; वे दूकानदार, जिनसे उसका संबंध रहता था—सब-के-सब जैसे

उसे काटने दौड़ते हैं। वह गिरधारी बाबू के पास लगे हुए कमरे में सोता है। उसकी बहन सुशीला जान गई है कि वह स्वप्न में भी इतना उत्तेजित हो उठता है कि चारपाई से गिर पड़ता है।

वह स्वप्न में प्रायः बर्राया करता —

'तुम इतना संकोच क्यों करते हो ? मुझे तुम्हारे हाथ-पैर दाबने में भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती। ...अब समझी, तुमने पागलपन की बातें सोच डालीं ! राम-राम ! ऐसा भी कोई सोचता है।... मैं तुम्हें देवता की भाँति पूजनीय मानती हूँ।...... पर तुमने तो मुझे मार डाला, यह न सोचा कि मैं हिंदू-नारी हूँ, स्वामी ही मेरा सब कुछ है।"

स्वप्न देखने के अनंतर वह व्याकुलता के साथ उठकर, अतिशय भाव-गर्वित होकर रो पड़ता। सिनेमा देखते-देखते भी कभी-कभी बीच में ही उठ आता। फिर चुपचाप पार्क में, एकांत पाकर जी भरकर, जब रो लेता, तब कहीं उसे कुछ संतोष और शांति मिलती।

दूकान में उसके नाम कभी कोई पत्र नहीं आता था। वह ख़ुद भी कभी किसी को कोई पत्र नहीं लिखता। किंतु तो भी डाक आते समय वह क्षण-भर को सशंकित, आतुर और पता देखते क्षण चरम अधीर हो उठता। कभी-कभी तो पोस्टमैन के हाथ से इतनी जल्दी चिट्ठियाँ पाने को वह लपक जाता कि गिरधारी बाबू ताकते रह जाते। सोचने लगते, क्या बात है कि इस क्षण यह त्रिवेणी बिलकुल बदल जाता है।

वह आजीवन शाकाहारी रहा था। किंतु अब उसे किसी भी खाद्य और पेय वस्तु से कोई आपत्ति नहीं थी। इस दृष्टि से मानो स्वीकार-मात्र ही त्रिवेणी का रूप है, और अस्वीकार त्रिवेणी से भिन्न कोई दूसरी वस्तु हो गई है।

दिन चल रहे हैं, और इन दिनों के साथ-साथ त्रिवेणी का स्वास्थ्य भी गिर रहा है। यद्यपि अपने आवास के आदमक़द आईने में अपने आप को सदेह देखकर रोज़ ही सोच लेता है कि वह ज्यों-का-त्यों बना है, उसमें कोई परिवर्तन अब तक न हुआ है, न आगे कभी संभव है।

त्रिवेणी ने जीवन को सदा प्यार किया है। किंतु अब मानो उसने एक नया विचार टटोल पाया है। वह मानने लगा है कि मृत्यु भी जीवन का ही एक रूप है। तभी तो वह एकदम निर्भय हो गया है। वह ख़ूब खाता है, ख़ूब गाता है, ख़ूब हँसता है। वह रोता भी है, किंतु रुदन के खाते में वह चोर है—अपराधी; क्योंकि वह उसमें ग़बन करता है।

पागल कहीं का ! ग़बन भी करने चला, तो रुदन-जैसी अशुभ और प्राण-पीड़क वस्तु का !

ऐसा है यह त्रिवेणी ! आशाओं से हीन, आकांक्षाओं से परे, स्वार्थों से मुक्त, कथाओं का विजयी और आघातों का विध्वंसक। किंतु यह सब वह सचमुच है कि नहीं, कौन जाने ? हाँ, त्रिवेणी अपने आपको इसी रूप में देख रहा है।

एक दिन त्रिवेणी ने एक स्वप्न देखा। देखा, वह फिर बीमार पड़ गया है, और कली उसके सिर में तेल मल रही है। तेल मलते-मलते उसे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ, मानो त्रिवेणी सो गया है। किंतु वास्तव में तब तक वह सोया नहीं था। उसने सो जाने की-सी चेष्टा-भर की थी। कली उठकर जाने को हुई कि सजग होकर त्रिवेणी ने उसका अंचल थाम लिया। वह बोला—कहाँ जाती हो कली ? ज़रा देर और बैठो, देखो, अभी मेरे सिर का दर्द नहीं गया।

कली कहती है—छोड़ो जी मुझे ! तुम्हारे सिर में दर्द-वर्द कहीं कुछ नहीं है। यह सब तुम्हारी बहानेबाज़ी है—शैतानी ! मैं क्या इतना भी नहीं जानती ?

वह अपने अंचल को पकड़कर बल-पूर्वक खींचती है, और त्रिवेणी उसे छोड़ता नहीं। फलतः वह अंचल उस स्थान पर फट जाता है।

तब कली वहीं उसे ध्यान से देखती हुई बैठ जाती है। उसकी मुद्रा एकदम विवर्ण हो उठती है। वह अतिशय दुखी होकर कह उठती है - यह तुमने क्या किया जीजा ! मेरा अंचल फट गया।

उसी दिन पहली ट्रेन से त्रिवेणी ने कानपुर को प्रस्थान कर दिया।

* * *

"ये स्वप्न वप्न कोई चीज़ नहीं हैं जी ! ये सब मानवात्मा के भावोन्माद-मात्र हैं। पागल मन की चित्रित कल्पनाएँ। कहीं ऐसा भी हो सकता है कि वह ..। छिः-छिः, कैसी अशुभ कल्पना !" त्रिवेणी रेल के रास्ते-भर यही सोचता रहा।

वह सीधा अपने घर गया। कुछ नोट उसने मा के हाथ पर रख दिए, और बोला—"सौ रुपए-वाले हैं। यहाँ का क्या हाल-चाल है ?"

प्रफुल्लित होकर मा बोली—"चलो, तुझे कुछ समझ तो आई। मैं रात-दिन इसी सोच में रहती थी कि मेरा तिरबेनी क्या जाने किस तरह हो ! लेकिन तू कुछ दुबला दिखाई देता है ! खाना सुशीला ख़ुद बनाती थी कि महराजिन ?... लेकिन मुझे हो क्या गया ? तू भूखा होगा, तुझे पहले कुछ खाने को ताज़ा बना दूँ, तो और बातें करूँ। अच्छा, तू तब तक नहा तो सही। मैं अभी तेरे लिये हलुआ बनाए देती हूँ।'

मा का सोया हुआ प्यार उमड़ उठा। हर्षातिरेक से उसकी आँखें भर आईं !

किंतु त्रिवेणी का वह प्रश्न ज्यों-का-त्यों रह गया। उसे वह बिलकुल भूल गई। तब त्रिवेणी चल खड़ा हुआ; बस, इतना कहकर कि "अभी आया।"

वह झट से केदार के यहाँ दौड़ गया।

दूर से ही उसने देखा, द्वार पर एक तरह की शून्यता छाकर रह गई है, जैसे श्मशान का-सा भयानक सन्नाटा हो। द्वार के निकट पहुँचा, तो उसे भीतर से बंद पाया। कुंडी खटखटाई, तो भीतर से एक अपरिचित-सा स्वर मिला—"कौन है ?...दद्दा घर में नहीं हैं।"

त्रिवेणी बोला—"एक बात सुन जाना।"

उत्तर—"पहले यह बतलाओ, तुम हो कौन ? मैं घर में अकेली हूँ, और बच्चा सो रहा है।"

"मैं हूँ त्रिवेणी। कलकत्ते से आ रहा हूँ।"

"अच्छा, मैंने अब जाना। बच्चा होने के बाद से भाभी सख्त बीमार हैं. और अस्पताल में हैं। दादा भी वहीं हैं ... बैठना चाहो, तो आके किवाड़ खोल दूँ।"

त्रिवेणी प्रकंपित हो उठा। लौटा, तो पैर भारी हो गए। फिर साहस सृजन कर जल्दी से चल पड़ा। इक्का पाते ही उस पर बैठकर इक्केवान से बोला—"ज़नाना-अस्पताल।"

उस क्वार्टर में सबसे पहले उसे केदार नज़र आया—रूखे-बिखरे केश, गड्ढों में धँसी, कुछ-कुछ लाल, उनींदी आँख और मलिन वस्त्र। नज़र मिलते ही बोला—"कैसी तबियत है ?"

केदार रो पड़ा। बोला—"अब तबियत पूछने आए हो ?"

उसके मन में आया कि कह दे ज़िद्दी, महज़ एक ज़रा-सी बात पर मरनेवाले, नृशंस और हृदय-हीन ! किंतु मालूम नहीं, क्यों वह इस बात को निगल गया।

त्रिवेणी ने देखा, वह एक मामूली चारपाई पर लेटी हुई है। न वह सुमन-शोभन मुख है, न वह कोमल, मांसल देह-यष्टि। उसे तब वही स्वप्न याद आ गया—तुमने यह क्या किया जीजा ! मेरा अंचल फट गया।

केदार भी तब तक पास आ गया।

त्रिवेणी ने उसे भी एक नोट देकर कहा—"यह लो खर्चे के लिये, और तुरंत सिविल सर्जन को ले तो आओ।"

केदार आज्ञाकारी की भाँति चल दिया। इधर बहुत दिनों से सौ रुपए का नोट उसके हाथ नहीं आया था। उसे उलट-पलटकर वह मन-ही-मन सोचता रहा—

एक त्रिवेणी है, संपत्ति जिसकी चेरी है, और एक मैं हूँ, जिसके पास इतना भी पैसा नहीं कि कली के लिये जी खोलकर कुछ कर सकता, जब कि मैं उसका स्वामी हूँ, और वह…!

हाँ, त्रिवेणी भी उसका है। नहीं तो इस समय अकस्मात् आ कैसे मिलता?

अच्छा, यह भी माना कि कली के योग्य मैं न था, इसलिये वह मुझे त्यागकर चली जा रही है। किंतु, किंतु त्रिवेणी तो उसके योग्य है। तब उसी के लिये वह क्यों नहीं जीवित रहती। मेरे लिये न सही, उसी के लिये सही।

किंतु त्रिवेणी! अः! वह तो तीर्थ सलिल है! उसके लिये उस प्रकार कुछ सोचना भी पाप है!

केदार यही सब सोचता हुआ सिविल सर्जन के यहाँ जा रहा है। उसे आशा हुई कि कली को वह फिर प्राप्त कर लेगा। वह जाने न पाएगी। नहीं तो यह त्रिवेणी ऐसे समय क्यों आ जाता!

* * *

"रोओ मत कली, रोने से तो तुम्हारा जीवन और भी खतरे में पड़ेगा!"

"आह! कैसा जीवन जीजा! तुम अब मेरे जीवन को देखना चाहते हो!"

"हाँ, कली! मैं तुम्हें स्वस्थ और सुखी देखना चाहता हूँ।"

"स्वप्न है।"

त्रिवेणी ने अपने आपको बहुत रोक रक्खा था। उसे विश्वास था कि वह अंत तक अपने को संयत रख सकेगा, किंतु अब वह अपने को न सँभाल सका। उसका कंठ भर आया। आँखों से आँसू निकलकर फ़र्श पर टपकने लगे।

धीरे-धीरे कली बोली—"मैं जानती थी, तुम आओगे। मुझे कुछ इस तरह की आशा हो गई थी। तुम्हें देखने की मेरी बड़ी लालसा भी थी। किसी से कुछ भी कह नहीं सकती थी। कैसे तुम्हें खबर पहुँचाती? कैसे तुम्हें बुलवाती? लेकिन वह अंतर्यामी जो हैं। तुम आप-ही-आप आ गए! अब मैं सुख से मरूँगी।"

त्रिवेणी की आँखें भरी ही रहीं। कली की बात का एक-एक शब्द उसके प्राणों से लिपट जाता, और वह फूटकर रो पड़ता! रुदन के ज्वार में उसकी साँस ही पूरी न होती थी।

कली बोली—"तुम जो इस तरह रोए, तो मैं अपने जी की कसक भी न निकाल पाऊँगी।"

त्रिवेणी ने तब आँसू पोछते हुए, रुद्ध कंठ से कहा—"तो अब तुम चुप रहो कली!"

वह कुछ उत्तेजित-सी हो उठी। बोली—"कैसे चुप रहूँ? घुल-घुलकर ही तो मैं इस दशा को प्राप्त हुई। चलते-चलाते जी की दो बातें भी न करूँ, अब यह नहीं हो सकता।… हाँ, तो मैं कुछ भ्रम में थी जीजा! मैं नहीं जानती थी, तुम मेरे इतने निकट पहुँच गए हो। जब तुम चले गए, तब मेरी आँखें खुलीं। मुझे अनुभव हुआ कि मैं अपने आपको ग़लत समझी थी…। याद है उस दिन की बातें, जब तुमने मुझसे क्षमा माँगी थी?"

"उस दिन की याद मत दिलाओ कली!" त्रिवेणी मर्माहत होकर बोला।

कली तब और भी भाव-गर्वित हो उठी। उस क्षण मालूम नहीं, बोलने की ऐसी अद्भुत शक्ति उसमें कहाँ से आ गई थी। वह बोली—"क्यों न याद दिलाऊँ? वही दिन तो मेरे

जीवन का सबसे सुंदर दिन—जैसे सोने का दिन था। उस दिन को मैं भुला न सकी, किसी तरह न भुला सकी। तुमने जो अपना प्रेम-भाव प्रकट किया, तो मैंने अपने आदर्श के अनुसार तुम्हें तीखा उत्तर दिया। मैं तब सती-धर्म की अभिमानिनी जो थी। और, जब तुमने क्षमा माँग ली, तब तो मैं गर्व से जैसे फूल उठी। मैंने समझा, वह मेरी जीत है। किंतु आगे चलकर जब तुमने अपने यथार्थ रूप का परिचय दिया, तब मैं तुम्हारे लिये तरस गई। मालूम नहीं, मैंने कितनी रातें तारे गिन-गिनकर, करवटें बदल-बदलकर बिता दीं। आख़िरकार वह भी समझ गए, और एक दिन खुल पड़े। अब मैं उनके हृदयासन से भी वंचित हो गई, मैं कहीं की न रही। तब मुझे अनुभव हुआ कि यह मेरी हार है!"

कली बातें करते-करते अतिशय थक गई थी। उसके भाल और मुख के साथ-साथ समस्त शरीर में पसीने की लहर-सी दौड़ गई। त्रिवेणी ने एक मुलायम चद्दर से उसकी देह-भर को पोंछ दिया। उसे प्रतीत हुआ कि ज्वर उतार पर है; क्योंकि उस समय उसका बदन कुछ अधिक गरम नहीं प्रतीत हो रहा था।

कुछ स्थिर, किंतु चेतन होकर कली बोली—"मैं नहीं जानती, धर्म क्या चीज़ है; मैं यह भी नहीं जानती कि पाप क्या चीज़ है; किंतु मैं इतना जान सकी कि प्रेम क्या चीज़ है! उस दिन जिस भाव के लिये तुमने मुझसे क्षमा चाही थी, आज उसी भाव के लिये मैं तुमसे क्षमा चाहती हूँ। आह! यहाँ बड़ा दर्द हो उठा! हाँ, यहाँ।"

कली ने एक हाथ हृदय पर रखकर दूसरे से संकेत किया। त्रिवेणी ने तदनुसार उसके हृदय-स्थल को स्पर्श करके यह जानना चाहा कि दर्द कहाँ है। किंतु क्षण-भर में ही उसे बोध हुआ कि कहीं कुछ भी शेष नहीं है सभी कुछ समाप्त हो चुका है। शेष है भी, तो केवल होठों पर मंद हास और नयनों में चिर अनुरंजित अनुरक्ति!

कली का शांति-संस्कार कर देने के बाद एक दिन केदार मालूम नहीं, कहाँ चला गया। फिर उसका कहीं कोई पता ही न चल सका। उसका पुत्र यह गोपाल-भर रह गया है।

* * *

और त्रिवेणी ने तब गोपाल को पुनः अपने निकट बुलाकर उससे कह दिया—"आज तुमने मुझसे पैसे माँगे, सो माँगे, पर अब कभी न माँगना। पिताजी नेत्रों से हीन हो गए, और मैं भी बहुत दिनों से बेकार हूँ। कभी-कभी मेरे पास सिगरेट पीने को भी पैसे नहीं रह जाते! कभी माँग उठने पर जो मेरे पास दो पैसे भी न निकले, तो!"

(समाप्त)

स्वागत

[श्रीदुलारेलाल भार्गव]

जनु आवत लखि तन-सदन जोबन-कंत प्रबीन—
स्वागत सिसुता-धन करति लै कुच-कुंभ नबीन।

सुखद संस्मरण

[पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न]

अमर गंध-मकरंद कमलजन्मा से लेवे ;
कमला का जो कमल बंद होना तज देवे ।
नाच दिखावे नित्य चाँदनी भी मनमाना ;
हो अकलंक मयंक नहीं कुछ होना जाना ।
भवसागर के बीच में पर तव मुख को देखकर
सतनु-नाव बचना नहीं जन-मन-नाविक चतुरतर ॥ १ ॥

भोला-भोला, बड़ा सलोना यह बालकपन
कर लेता है हरण चपलता का भी जो मन ।
आकर्षणता - शक्ति - हृदय का सारा बल-धन
खिंच जाता है जिसे देख वह शोभन यौवन ।
इन दोनो के फंद में बंद हो रही तव सु छवि ;
ये तो धोखेबाज़ हैं, किंतु नहीं यह हिंद-कवि ॥ २ ॥

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए! बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ৶ डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥-)
२५ ,, ,, ,, ५≡)
} श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

श्रीमद्वल्लभाचार्य

[श्रीप्रो० कंठमणि शास्त्री, विशारद, संचालक विद्या-विभाग, कांकरोली]

पुण्य-भूमि भारत के दक्षिण-भाग में तैलंग (आंध्र)-नामक एक प्रांत पुण्य-सलिला गोदावरी के तट पर शोभमान है। इस देश के निवासी विप्र-कुल वैदिक धर्मानुष्ठान में सदा तत्पर रहकर एक प्रकार से कलि का पराभव करते आए हैं। जहाँ के विशाल यज्ञ-कुंडों में नानाविध हविष्य-सामग्री के हवन से समुद्भूत धूम-राशि से विकल-दृष्टि होकर कलियुग दूर पलायन कर जाता है। जहाँ आज भी वेदविद् ब्राह्मणों के मुख से यथावत् उद्घोषित चारो वेद प्रभावशाली स्वरूप में दृष्टिगोचर होते हैं। उसी प्रांत के 'काँकर वाड' ग्रामवासी, आदर्श विप्र, पंडित-प्रवर, प्रसिद्ध सोमयाजी, कंभम-पाटिवारु उपनामक श्रीलक्ष्मण भट्टजी के पुत्र-रूप से कुलोदधिसुधाकर, भगवद्वदनानलावतार श्रीमद्वल्लभाचार्य का प्रादुर्भाव हुआ था।

अनुमानतः संवत् १५३३-३४ के पूर्व लक्ष्मण भट्टजी सपत्नीक, जातीय बंधु-बांधवों के साथ, तैलंग-देश से उत्तर-भारत में आकर काशी में शास्त्राध्ययनाध्यापन, यजन-याजनादि विप्र-वृत्ति द्वारा जीविका-निर्वाह करते हुए निवास करने लगे थे। उन्होंने वंश-परंपरागत सोम-यज्ञानुष्ठान द्वारा सौ सोम यज्ञों की यथाविधि पूर्ति की थी। इसके फल-स्वरूप उनके यहाँ किसी अलौकिक महापुरुष का पुत्र-रूप से प्रकट होना अवश्यंभावी था। कुछ समय के अनंतर, गर्भाधान-संस्कार हो जाने पर, उनकी द्वितीय पत्नी श्रीमती इल्लम्मागारु अंतर्वत्नी हुईं। यद्यपि उस समय प्रांत में जहाँ-तहाँ यवनों के अत्याचार के समाचार श्रुतिगोचर होने लगे थे, तो भी लक्ष्मण भट्टजी ने काशी में रहकर ही शांति-पूर्वक छ मास और व्यतीत किए। गर्भिणी की अवस्था में पत्नी को लेकर उपद्रव के समय अन्यत्र जाना यद्यपि आपत्ति-जनक था, तथापि यवनों के प्रतिदिन निकटातिनिकट होनेवाले आक्रमण के समाचारों ने लक्ष्मण भट्टजी को अंततोगत्वा अन्यत्र चले जाने के लिये विवश कर दिया।

सं० १५३५ के प्रारंभ में विश्वनाथपुरी काशी में भी जब यवनों के आक्रमण की पूर्ण आशंका हो गई, तो नगर-निवासी स्वधर्म एवं प्राणों की रक्षा के लिये काशी छोड़कर जहाँ-तहाँ भागने लगे। लक्ष्मण भट्टजी भी पत्नी को लेकर जाति-बंधुओं के साथ स्वदेश जाने को निकल पड़े। इल्लम्मागारु उस समय सात मास का गर्भ धारण किए हुए थीं। लक्ष्मण भट्टजी सपरिकर यात्रा करते हुए तीर्थराज प्रयाग जा पहुँचे। वहाँ स्नान, दानादि तीर्थ-कृत्य कर वह दक्षिण की ओर प्रस्थानित हो गए। दिन में यात्रा और रात्रि में किसी

सुरक्षित ग्राम में विश्राम करते हुए कुछ दिनों तक चलते-चलते जब वह मध्यप्रदेशांतर्गत रायपुर-ज़िले के चंपारण्य-नामक घोर जंगल को पार कर रहे थे, तब सहसा इल्लम्मागारु के उदर में विकट पीड़ा होने लगी। दैनिक यात्रा के कठोर श्रम से उनके शरीर के अत्यंत शिथिल हो जाने के कारण वैशाख कृष्ण ११ को, शमी-वृक्ष के नीचे, सप्तम मासिक गर्भ से अलौकिक तेजोवेष्टित एक मनोहर बालक का प्राकट्य हो गया।

गर्भ की अपरिपक्वावस्था से नवजात बालक को निश्चेष्ट एवं मृत जानकर लक्ष्मण भट्टजी ने उसी शमी-वृक्ष के नीचे, पत्तों के ढेर में, बड़े दुःख के साथ, उसे छिपाकर रख दिया।

स्वजन-संबंधियों के साथ काशी लौटते हुए दूसरे दिन लक्ष्मण भट्टजी चंपारण्य में उसी स्थल पर पहुँचे, जहाँ बालक को छिपाकर रख आए थे। शमी-वृक्ष को देखते ही इल्लम्मागारु का वात्सल्य भाव उमड़ पड़ा, वह शिशु की परिस्थिति जानने को अत्युत्कंठित हो उठीं। साथियों से थोड़ी देर ठहर जाने की प्रार्थना कर अपने पति के साथ जाकर इल्लम्मागारु ने देखा, तो जाज्वल्यमान पावक-पुंज के मध्यभाग में एक तेजस्वी, सुंदर बालक को अपने पैर का अँगूठा चूसते और मंद मुसकान करते हुए पाया। इस असंभव दृश्य को देखकर दंपति को बड़ा कुतूहल हुआ। उन्होंने ईश्वर का असीम अनुग्रह समझकर, बड़े प्रेम-भाव से उस बालक को उठाकर छाती से लगाया। स्वजन-संबंधियों से शिशु के जीवित रह जाने एवं भगवान् की विचित्र माया का वर्णन करते हुए लक्ष्मण भट्टजी यात्रा में सावधानी से बालक का पोषण करते हुए कुछ दिनों में काशी जा पहुँचे।

जनक-जननी के योग्य निरीक्षण, लालन-पालन तथा धर्मशील व्यक्तियों के सदाचरण से प्रभावित होते रहने से स्वल्पावस्था में ही बालक में अनेक सद्गुण और अलौकिक बुद्धि-चातुर्य का प्रकाश होने लगा। सर्वप्रिय होने के कारण लक्ष्मण भट्टजी ने बालक का नाम वल्लभ रक्खा। श्रीवल्लभ को ब्रह्मवर्चस्वी बनाने की इच्छा से प्रेरित होकर लक्ष्मण भट्टजी ने पंचम वर्ष उनका यज्ञोपवीत-संस्कार कराया, और स्वयं गायत्री-मंत्र का उपदेश कर उन्हें वेदाध्ययन में प्रवृत्त कर दिया। कुछ वर्षों में ही वेदाध्ययन से जाग्रत् हुई श्रीवल्लभ की प्रतिभा ने सबको आश्चर्य-निमग्न कर दिया।

यज्ञोपवीत के ४-५ वर्षों बाद, शास्त्राध्ययन-काल में ही, श्रीवल्लभ के पिता लक्ष्मण भट्टजी का गोलोक-वास हो गया। पिता की और्ध्वदैहिक क्रिया समाप्त कर प्रायः चार-पाँच महीनों में ही श्रीवल्लभ ने अपना अवशिष्ट वेदों का सांगोपांग अध्ययन संपूर्ण कर लिया। सर्वतोमुखी, विशाल प्रतिभा के कारण गुरु-मुखोच्चारण के श्रवण-मात्र से उन्होंने पतंजलि के महाभाष्य और व्यास-जैमिनि-कणाद-कपिल-गौतम-प्रणीत सूत्र-स्वरूप षड्दर्शनों के भाष्यों का आपाद-चूड परिशीलन किया। इसके अनंतर उपनिषद्-गीता-व्यास-सूत्र-

भागवतादि शास्त्रों पर भूतपूर्व आचार्यों का अभिप्राय जानने के लिये श्रीवल्लभ ने विष्णुस्वामी, शंकर, रामानुज, मध्व आदि आचार्यों के निर्णीत श्रुत्यर्थ-प्रतिपादक वेदांत-भाष्यों का अवलोकन भी किया।

प्रचलित सिद्धांत-ग्रंथों के पर्यालोचन के अनंतर जब सर्वोपरि निष्कर्ष-स्वरूप वास्तविक वेदांत के रहस्य को तत्त्वज्ञ पंडितवर्ग के समक्ष स्थापित करने की श्रीवल्लभ को आवश्यकता प्रतीत हुई, तब वह किसी शास्त्रार्थ-सभा की प्रतीक्षा करने लगे। उन दिनों ऐसे शास्त्रार्थ-संघर्ष की संभावना भगवती सरस्वती की विहारस्थली वाराणसी-नगरी में नहीं थी। हाँ, उस समय दक्षिण-देश में वेदांत-विषयक चर्चा की अच्छी चहलपहल सुनाई पड़ रही थी। वहीं जाकर अपने वैदुष्य द्वारा शास्त्रार्थ-निर्णय का सुअवसर उपस्थित जानकर श्रीवल्लभ दाक्षिणात्य प्रदेश के लिये प्रस्थानित हो गए।

दक्षिण-प्रांत के अनेक तीर्थ-स्थलों का पर्यटन करते हुए कुछ समय बाद श्रीवल्लभ दक्षिण की राजधानी विद्यानगर में जा पहुँचे। उस समय राजा कृष्णदेवराय अपने विद्या-बुद्धि-बल तथा नीति-चातुर्य से लोक-प्रसिद्ध होकर समग्र दक्षिण-देश का एकच्छत्र शासन कर रहा था। उन दिनों राजा कृष्णदेव ने वेदादि शास्त्रों के ऐकमत्य द्वारा वास्तविक सिद्धांत के निर्णयार्थ अखिल भारतवर्षीय महती पंडित-सभा का आयोजन किया था। सभा के अध्यक्ष-पद पर मध्वाचार्य-संप्रदायानुयायी, सर्वतंत्र-स्वतंत्र, निखिलशास्त्र-निष्णात व्यासतीर्थ-नामक एक वृद्ध संन्यासी विराजमान थे, जो मायावादिकरींद्रों के दर्पदलनार्थ सिंह-विक्रम एवं कलियुग में अपर कृष्ण द्वैपायन आदि विशेषणों से विश्व-विदित हो रहे थे। मायावादी और तत्त्व (ब्रह्म)-वादियों के शास्त्रार्थ के सातवें दिन शास्त्रसभा का समाचार सुनकर श्रीवल्लभ भी राजसभा के द्वार पर जा पहुँचे।

श्रीवल्लभ ने मायावाद-समर्थक पंडितों को ललकारते हुए कहा—"मेरे साथ शास्त्रार्थ में जय प्राप्त कर लेने पर ही तुम्हारी वास्तविक जय मानी जा सकती है, अतः हम दोनो का शास्त्रार्थ हो जाना परम आवश्यक है।" मायावादी-प्रधान पंडित ने अट्टहास द्वारा इस गर्वोक्ति का उत्तर देते हुए शास्त्रार्थ करना स्वीकार कर लिया। राजा कृष्णदेव की अनुमति से, व्यासतीर्थ के तत्त्वावधान में, दोनो प्रकांड पंडितों में नए प्रकार से पुनः शास्त्र-चर्चा का प्रारंभ हुआ, जो कितने ही दिनों तक बराबर चलती रही। अंततोगत्वा प्रतिखंडन और प्रतिमंडन के उपरांत श्रीवल्लभ ने किसी प्रकार की क्लिष्ट कल्पना किए विना ही, प्रस्थान-ग्रंथों की संगति लगाते हुए, विपक्ष की युक्तियों का तिलशः खंडन किया, और मायावाद की धज्जियाँ उड़ा दीं। इसके अनंतर उन्होंने शुद्ध ब्रह्माद्वैतवाद का उत्तम प्रकार से प्रतिपादन कर पंडित-मंडली को चकित कर दिया। सभा के अंतिम निर्णायक व्यासतीर्थ ने भी वेद-शास्त्रों

में श्रीवल्लभ की अप्रतिभ प्रतिभा से संतुष्ट होकर उनके ही पक्ष का दृढ़ समर्थन किया, जिसके कारण सर्वसमुदाय के समक्ष राजाज्ञा से ब्रह्मवाद की जय और मायावाद की पराजय उद्घोषित कर दी गई।

शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद की विजय से आह्लादित होकर राजा कृष्णदेव ने वर्णनातीत समारंभ तथा अनुपम उत्साह के साथ रजत-सुवर्णादि निर्मित विविध कलशों में अधिवासित, केशर-मिश्रित तीर्थ-जलों से वेद के अभिषेक-सूक्त द्वारा श्रीवल्लभ का विधिवत् कनकाभिषेक किया, और महती श्रद्धा-भक्ति के साथ पूजन कर उनके चरण-कमलों में प्रचुर हेम-राशि समर्पित की। पंडित-मंडल ने जय-घोष के साथ सुमन-वृष्टि करते हुए एक स्वर से श्रीवल्लभ को आचार्य-रूप से स्वीकार किया। श्रीमदाचार्य चक्र-चूड़ामणि वल्लभाचार्य ने उपायन में प्राप्त हुई उस अतुल हेम-राशि को वादी-प्रतिवादी उभय पक्ष के ब्राह्मण-वर्ग में वितीर्ण कराकर अपनी उज्ज्वल त्याग-वृत्ति का परिचय दिया। इस निःस्पृहता को देखकर उपस्थित समुदाय के हृत्पटल पर वल्लभाचार्य के प्रति अटल श्रद्धा स्थायी रूप से अंकित हो गई। इस अद्वितीय समारंभ के उपरांत वल्लभाचार्य बिदा होकर अन्यत्र जाने का विचार करने लगे।

श्रीवल्लभाचार्य काशी जाकर, उक्त भाष्यों का परिशीलन समाप्त कर कुछ दिनों बाद वेद-व्यास से मिलने बदरिकाश्रम पधारे। वहाँ एक दिन साक्षात्कार होने पर व्यासजी ने वल्लभाचार्य से कहा कि अब आपमें भगवान् श्रीकृष्ण का आवेश हो जाने से सर्वज्ञता प्राप्त हो गई है। अब आप मेरे तथा विष्णुस्वामी के मतानुकूल प्रस्थान-ग्रंथों की भाष्य-रचना कर मायावाद का उन्मूलन तथाच शुद्ध अद्वैत-वाद की प्रतिष्ठा कर सकते हैं। इतना कहकर वेदव्यासजी अपने स्थान पर चले गए।

बदरिकाश्रम से चलकर वल्लभाचार्य हरिद्वार की यात्रा करते हुए कुरुक्षेत्र आए। वहाँ से चलकर, स्थानेश्वर-नामक नगर में आकर रामानंद-नामक एक यांत्रिक वैष्णव के घर में उसका आतिथ्य स्वीकार कर रहने लगे। एक दिन शास्त्रीय चर्चा छिड़ जाने पर रामानंद के प्रश्न का उत्तर श्रीवल्लभाचार्य ने भागवत के एक श्लोक की व्याख्या करते हुए दिया, जिससे समस्त भागवतार्थ के श्रवण करने की प्रबल उत्कंठा रामानंद के हृदय में जागरूक हो उठी। उसके विज्ञप्ति करने पर वल्लभाचार्य ने इस विषय को भगवदिच्छा पर छोड़कर इस चर्चा को स्थगित कर दिया।

स्थानेश्वर से चलकर श्रीवल्लभाचार्य ने तीर्थाटन रूप से पाँच सौ योजन की प्रथम परिक्रमा छ वर्षों में समाप्त की। इसी प्रकार अपने जीवन में क्रमशः दो और परिक्रमाएँ कीं। इन तीनो परिक्रमाओं के द्वारा स्थल-स्थल पर भागवत की सप्ताह-पारायण *, भक्ति (पुष्टि)-मार्ग

---

* सप्ताह-पारायण के स्थल ८४ बैठकों के नाम से प्रख्यात हैं।

का प्रचार और शास्त्रार्थ द्वारा शुद्धाद्वैत-मत की स्थापना ही उनका उद्देश था।

वह आवश्यक, साधारण वस्त्र धारण कर, पाद-त्राण आदि साधनों से रहित होकर, शालग्राम, गीता, भागवत को लेकर कृष्णदास-मेघन-नामक अपने सेवक के साथ पैदल ही यात्रा करते थे। आहारार्थ किसी वस्तु को पास न रखने पर भी मरुस्थल, पार्वत्य प्रदेश तथा गहन अरण्यों में भी उन्हें प्रभु-इच्छा से आवश्यक भोजन-सामग्री प्रतिदिन उपलब्ध हो जाती थी। वह निःस्पृह, निर्भय तथा भगवद्भक्ति-परायण होकर स्थान-स्थान पर जीवों को शाश्वत सुख के साधन-रूप भक्ति का उपदेश देते हुए यात्रा करते थे।

एक दिन यात्रा के विश्रांति-स्थान में जब रात्रि को वह शयन कर रहे थे, स्वप्न में भगवान् कृष्ण ने प्रकट होकर पुनः उन्हें विवाह करने की आज्ञा दी। विषय-बंधन में न पड़कर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य और भक्ति द्वारा ही कृतार्थता प्राप्त करने की विज्ञप्ति करने पर वल्लभाचार्य को भगवान् श्रीकृष्ण ने पुनः आदेश दिया कि यद्यपि तुम्हारा कथन उपयुक्त है, तथापि मैं तुम्हारे घर में श्रीगोपीनाथ तथा श्रीविट्ठलनाथ-नाम से पुत्र-रूप में प्रकट होकर आगे भी भक्ति का विस्तार करना चाहता हूँ, इसलिये तुम्हें विवाह करने की आवश्यकता है।

इस आज्ञा के कारण वल्लभाचार्य ने काशी जाकर स्वजातीय आत्रेय गोत्री पं० देव भट्टजी की कन्या का शुभ समय में पाणिग्रहण करते हुए गार्हस्थ्य धर्म के साथ अग्निहोत्र का भी ग्रहण किया, और इस प्रकार यथासमय पुण्य स्थलों में नानाविध यज्ञानुष्ठानों से यज्ञ-पुरुष भगवान् श्रीकृष्ण का यजन करते हुए लोक में गृहस्थ-धर्म का आदर्श स्थापित किया।

विवाह हो जाने के कुछ समय बाद श्रीवल्लभाचार्य ने मायावाद के उन्मूलन तथा अद्वैत-वाद के प्रतिरोपण का आयोजन किया। काशी-नगरी—जिसे सरस्वती-मंदिर कहते हैं—में उस समय मायावाद-सिद्धांत का विशेष प्राबल्य था, अतः उन्होंने उसके खंडन और शुद्धाद्वैतवाद के मंडन के लिये अनेक श्लोकों की रचना की। अपने सिद्धांत की सत्यता एवं दृढ़ता पर काशीपति भगवान् विश्वेश्वर को साक्षी बनाकर वल्लभाचार्य ने वे श्लोक लिखकर उनके मंदिर के प्रधान द्वार पर लगवा दिए। यह श्लोक-रचना क्या थी, मायावादियों को शास्त्रार्थ के लिये डिंडिम-घोष द्वारा स्पष्ट आह्वान और सन्मार्ग-रक्षक पंडितों से ब्रह्मवाद की रक्षा करने का आग्रह-पत्र था। यही रचना आगे चलकर 'पत्रावलंबन' नाम से प्रसिद्ध हो गई।

इस प्रकार अनेक स्थलों पर श्रीमद्वल्लभाचार्य ने भागवत-प्रवचन, शुद्धाद्वैत-मत-स्थापन तथा भक्ति (पुष्टि) की दिव्य सुरसरित् के पुण्य प्रवाह द्वारा समस्त आर्यावर्त को आप्लावित कर दिया। जिसके लोक-पावन दर्शन, सुखद आस्वादन तथा त्रिविध-संतापहारक अभिषेक से कृतार्थ होकर श्रद्धालु समस्त जातीय जन

उनके मार्ग की दीक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को सफल करने लगे। उन असंख्य वैष्णवों के निर्मल चरित्र और गुणावली का कथन वास्तव में अशक्य है।

एक समय जीवों को भगवदभिमुख करने के विचार में वल्लभाचार्य को निमग्न देखकर भगवान् पूर्ण पुरुषोत्तम ने साक्षात् प्रकट होकर श्रीमुख से "ब्रह्मसंबन्धकरणान्" इत्यादि सिद्धांत-रहस्योक्त श्लोकों का उपदेश दिया, और ब्रह्म-संबंध-दीक्षा का प्रकार बतलाकर जीवों के उद्धार का मार्ग सरल कर दिया।

एक बार श्रीवल्लभाचार्य गोकुल से चलकर प्रयागादि स्थलों की यात्रा करते हुए श्रीपुरुषोत्तम-क्षेत्र—जगन्नाथपुरी—में पधारे। उस समय परमभागवत श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु कीर्तनानंद का रस लेते हुए वहीं निवास कर रहे थे। वल्लभाचार्य के दर्शन होने पर उन्होंने भगवद्बुद्धि से ही उनका सत्कार कर उनके भक्ति-सिद्धांतों का श्रवण-मनन किया था। दोनो महापुरुषों के भगवत्संकीर्तनात्मक वार्तालाप से वैष्णवों को अत्यंत आनंद उपलब्ध होता था।

जिस प्रकार वल्लभाचार्य के विषय में श्रीकृष्णचैतन्य भगवद्बुद्धि रखते थे, उसी प्रकार उनके विषय में श्रीवल्लभाचार्य की भी वैसी ही बुद्धि थी।

द्वारका-नगरी में शुद्धाद्वैत-सिद्धांत और भक्ति-संप्रदाय की स्थापना कर श्रीवल्लभाचार्य जब अन्यत्र जाने लगे, तब मायावादियों ने शास्त्रार्थ का झगड़ा उठाया। अंत में कुछ दिनों तक शास्त्र-चर्चा द्वारा विपक्षियों को पूर्ण पराजित कर वल्लभाचार्य ने भक्ति-मार्ग की पुनः विजय-वैजयंती फहराई।

इस प्रकार श्रीमद्वल्लभाचार्य ने तीन बार भारत-भूतल की प्रदक्षिणाओं द्वारा अपने जीवन में विद्या-वैभव तथा भगवन्निष्ठता से सर्वत्र भक्ति-मार्ग की दृढ़ स्थापना की, और शुद्धाद्वैत-ब्रह्मवाद की विजय-दुंदुभी बजाकर, अज्ञान-प्रसुप्त कोटिशः जीवों को जागरूक बनाकर सन्मार्ग पर आरूढ़ किया। अपने जीवन-कर्तव्य को समाप्त कर भगवदाज्ञानुसार जब वल्लभाचार्य को मृत्यु-लोक-परित्याग-पूर्वक भगवद्धाम पधारने का आंतरिक विचार हुआ, तो वह प्रयाग के समीप त्रिवेणी-तट पर अलर्कपुर (अडेल) में आकर निवास करने लगे।

इसके पूर्व आपके पुत्र श्रीगोपीनाथजी तथा श्रीविट्ठलनाथजी का जन्म सं० १५६७ और १५७२ में हो चुका था। संन्यासाश्रम स्वीकार करने के पूर्व कुछ दिनों पहले श्रीवल्लभाचार्य ने अपने वयस्क ज्येष्ठ पुत्र श्रीगोपीनाथजी से इस प्रकार आज्ञा की कि मेरे लोक-त्यागानंतर तुम भी कुछ समय बाद नित्यलीला में प्रविष्ट हो जाओगे, क्योंकि तुम्हारे द्वारा बलदेवांश का कार्य समाप्त हो चुका है। तुम्हारे स्थान पर तुम्हारे लघु भ्राता श्रीकृष्णांशावतार श्रीविट्ठलनाथ इस वंश के प्रवर्तक एवं पुष्टि-मार्ग के संचालक होंगे। भगवदनुग्रह से श्रीभागवत

का रहस्य बीजरूपेण उनके ही हृदय में प्रतिष्ठापित हो चुका है।

इस समय श्रीवल्लभाचार्य निबंध-त्रय, षोड़श-ग्रंथ तथा अणुभाष्य एवं अनेक प्रकीर्ण ग्रंथों की रचना कर भागवत के तृतीय स्कंध तक श्रीसुबोधिनी टीका का प्रणयन कर चुके थे।

स्वकीय प्राकट्य का ध्येय पूर्ण हो जाने पर श्रीवल्लभाचार्य ने वर्णाश्रम-धर्म की मर्यादा के परिपालनार्थ एक दिन अपनी पत्नी से संन्यास लेने की आज्ञा माँगी, परंतु स्नेह-वश वह उन्हें प्राप्त नहीं हुई। एक समय जब वह अडेल में अपनी अग्निहोत्रशाला में विराजमान थे, सहसा आश्रम के चतुर्दिक् अग्नि का प्रकोप हो गया। इस उत्पात से भयभीत होकर उनकी पत्नी ने गृह त्यागकर बाहर निकल जाने की प्रार्थना की। पत्नी के इस कथन को ही संन्यास के लिये आज्ञा मानकर उन्होंने सर्वस्व परित्याग करते हुए मनसा संन्यास धारण कर लिया। गंगा के पवित्र तट पर आकर, उन्होंने त्रिदंड-संन्यास-दीक्षा लेकर 'संन्यास-निर्णय'-नामक ग्रंथ का शिष्यों को उपदेश दिया।

प्रयाग में संन्यास लेकर श्रीवल्लभाचार्य श्रीविष्णुस्वामी के समान यतिवेश धारण कर काशी आए, और वहाँ हनुमानघाट पर निवास कर भगवद्भजन करने लगे। इक्कीसवें दिन उन्होंने गोपीनाथजी तथा विट्ठलनाथजी को उद्देश्य कर 'शिक्षा-श्लोक' द्वारा अंतिम लेखिक उपदेश प्रदान किया, और अपना अवशिष्ट नित्य-नियम समाप्त किया।

मध्याह्न के समय श्रीमद्वल्लभाचार्य पुण्य-सलिला, भगवच्चरण-विनिःसृता भगवती भागीरथी की मध्य धारा में पधारे, और वहीं भगवच्चरणारविंदों का स्मरण करते हुए लोक-दृष्टि से अंतर्हित हो गए। एक क्षण बाद ही उपस्थित समुदाय ने जल-राशि से विनिर्गत ऊर्ध्वगामिनी, मनोहर, अलौकिक, उज्ज्वल ज्योति के दर्शन कर अपने को कृतकृत्य माना।

इस प्रकार आचार्य-चक्र-चूड़ामणि, जगद्गुरु, वैश्वानरावतार श्रीमद्वल्लभाचार्य ने भूतल पर अवतार लेकर विष्णुस्वामिसंप्रदाय-प्रतिपादित सगुण भक्ति के स्थान पर निर्गुण (अहैतुकी-निष्काम) भक्ति तथा शुद्धाद्वैत-ब्रह्मवाद की स्थापना की। मायावादांधकार से पथ-भ्रष्ट दैवी सृष्टि को निर्भ्रांत बनाकर कलिकाल में सर्वश्रेष्ठ, सर्वसुलभ साधन-स्वरूप भक्ति के द्वारा कोटिशः जीवों को भगवच्चरणारविंद-मकरंद का लोलुप भ्रमर बनाकर उन्होंने उनके उद्धार का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

योरप से अंतिम पत्र

[डा० धीरेंद्र वर्मा एम० ए०, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय]

लगभग तीन सप्ताह नीस में आराम करने के बाद कल सुबह ७½ बजे वहाँ से चलकर रात ११ बजे मैं अच्छी तरह पेरिस आ गया। सफ़र काफ़ी लंबा है। रेल सीधी आई, और डाक थी, तब इतना वक़्त लगा। इलाहाबाद से सहारनपुर तक का सफ़र समझिए। रास्ते में प्रसिद्ध बंदरगाह मारसेइ (Marseille) और फ़्रांस का दूसरा बड़ा शहर लियों (Lyon) पड़े थे। नीस के आगे समुद्र का किनारा २०-२५ मील तक अच्छा है, उसके बाद तो लाल चट्टानी ज़मीन और पहाड़ियाँ शुरू हो जाती हैं। दक्षिणी हिस्सा कुल चट्टानी और सूखा था, मध्य फ़्रांस ज़रूर काफ़ी हरा, लेकिन वही छोटी-छोटी पहाड़ियों-वाला था।

3660 HEUREUSES VENDANGES

अंगूर की फ़सल

नीस में भी एक-दो दिन से कुछ-कुछ मौसम बदलता-सा मालूम हो रहा था, लेकिन यहाँ पेरिस

में तो काफ़ी मौसम बदल चुका है। कुछ-कुछ ठंड शुरू हो गई है। दिवाली का-सा मौसम मालूम होता है। एक हफ़्ते से बादल रहने लगे हैं, और जब-तब बूँदाबाँदी हो जाती है। कुछ-कुछ पतझड़ भी शुरू हो गया है। वैसे अभी पार्क वग़ैरह ख़ूब हरे और फूलों से भरे हैं। बहरहाल यहाँ अब गरमी का मौसम बिलकुल नहीं मालूम होता। इकहरे, गरम कपड़े हम सबने निकाल लिए हैं। नीस में तो क़मीज़, धोती पहने दिन-भर धूप में कटता था।

पिछले डेढ़ महीने योरप के लगभग आधे दर्जन देशों में घूमने के बाद मैं तो इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि वास्तव में यहाँ कोई नई बात कहीं कुछ भी नहीं है। वैसे ही देश हैं वही पहाड़, नदी, मैदान, खेत, वैसे ही आदमी हैं—अमीर, ग़रीब, आदर्शवादी, धूर्त और वैसी ही लोगों की अंदरूनी ज़िंदगी है। अगर भेद दिखलाई पड़ता है, तो बाहरी गौण बातों में। जैसे भाषा, पहनावे और रहन-सहन आदि में। जिस तरह इन्हीं छोटे-छोटे भेदों के कारण एक आदमी दूसरे से भिन्न दिखलाई पड़ता है, वैसे ही एक देश भी दूसरे से भिन्न मालूम पड़ता है। यहाँ के लोगों का चरित्र भी भिन्न नहीं है। अंतर केवल इतना है कि बहुत दिनों की ग़ुलामी के कारण हम लोग अपने पर भरोसा करना खो बैठे हैं।

इस यात्रा में मुझे दो भिन्न योरप स्पष्ट दिखलाई पड़े—शायद तीन योरप हैं। मेडीटेरेनियन के किनारे के देशों—इटली, फ़्रांस, स्पेन, ग्रीस आदि—का लैटिन या सनातनी रोमन-कैथलिक योरप एक है। वास्तव में यह सच्चा आधुनिक योरप नहीं है। यहाँ के लोगों की शकलें, ज़िंदगी, रहन-सहन, खाना-पीना वग़ैरह टर्की, मिस्र आदि से मिलता-जुलता है। यहाँ की प्राचीन सभ्यता ईसाई नहीं थी, और बाद का ईसाई-धर्म भी तो मेडीटेरेनियन के किनारे के ही एक देश (पैलेस्टाइन) का ही एक धार्मिक सुधार था। अब लोग अवश्य सब ईसाई हैं, और कोट-पतलून पहनते हैं। लेकिन अगर ये ही लोग मुसलमान हो गए होते, तो तुर्कों से भिन्न न दिखलाई पड़ते। इस योरप से भविष्य में कोई आशा नहीं की जा सकती। योरप के ये देश बूढ़े और थके हुए हैं। इनमें सबसे अधिक बूढ़ा इटली है, जिसे मुसोलिनी अपने प्रयत्न से च्यवन ऋषि के समान फिर से युवा करना चाहते हैं। पुरानी सभ्यता के खँडहरों के बीच में बसे और सनातनी रोमन-कैथलिक धर्म के प्रभाव से जकड़े हुए ये लोग किस तरह अपना दृष्टिकोण बदल सकेंगे, यह मेरी समझ में नहीं आ सका।

आधुनिक सच्चा योरप उत्तर-सागर (North Sea) के किनारे का प्रोटेस्टेंट योरप है, जो दक्षिण-योरप की सभ्यता के समय जंगली था, और बाद को ईसाई हुआ। इन देशों में प्रधान जर्मनी और इँगलैंड हैं। हालैंड, डेनमार्क, स्वेडिन, नार्वे आदि नगण्य छोटे-छोटे देश हैं। यह युवा और स्फूर्ति-पूर्ण योरप है। सनातनी रोमन-कैथलिक धर्म इन असंस्कृत लोगों की प्रकृति के अनुकूल नहीं हो सकता था, इसीलिये इन सरहदी पंजाबियों ने गुरु नानक या स्वामी दयानंद के चलाए-जैसे सुधारों को अपनाया। १९वीं और २०वीं शताब्दी की आधुनिक योरपियन सभ्यता का वास्तविक केंद्र जर्मनी है। यह आधुनिक काल का रोम है। बुद्धि-बल, चरित्र-बल और संगठन-बल में जर्मनी को कोई नहीं पहुँचता। इँगलैंड को अगर भाग्य से कामधेनु भारत-भूमि न मिल गई होती, तो इस टापू के लोग आयर्लैंड या नार्वे-स्वेडिन की तरह गुमनामी में पड़े होते। इस कामधेनु के कारण वैभव और समृद्धि में इँगलैंड इस समय योरप के सब देशों से आगे हो गया है, लेकिन वैसे जर्मनी का और इसका कोई मुक़ाबला नहीं। जर्मनी और इँगलैंड के संपर्क के कारण उत्तर-फ़्रांस में कुछ जागृति है,

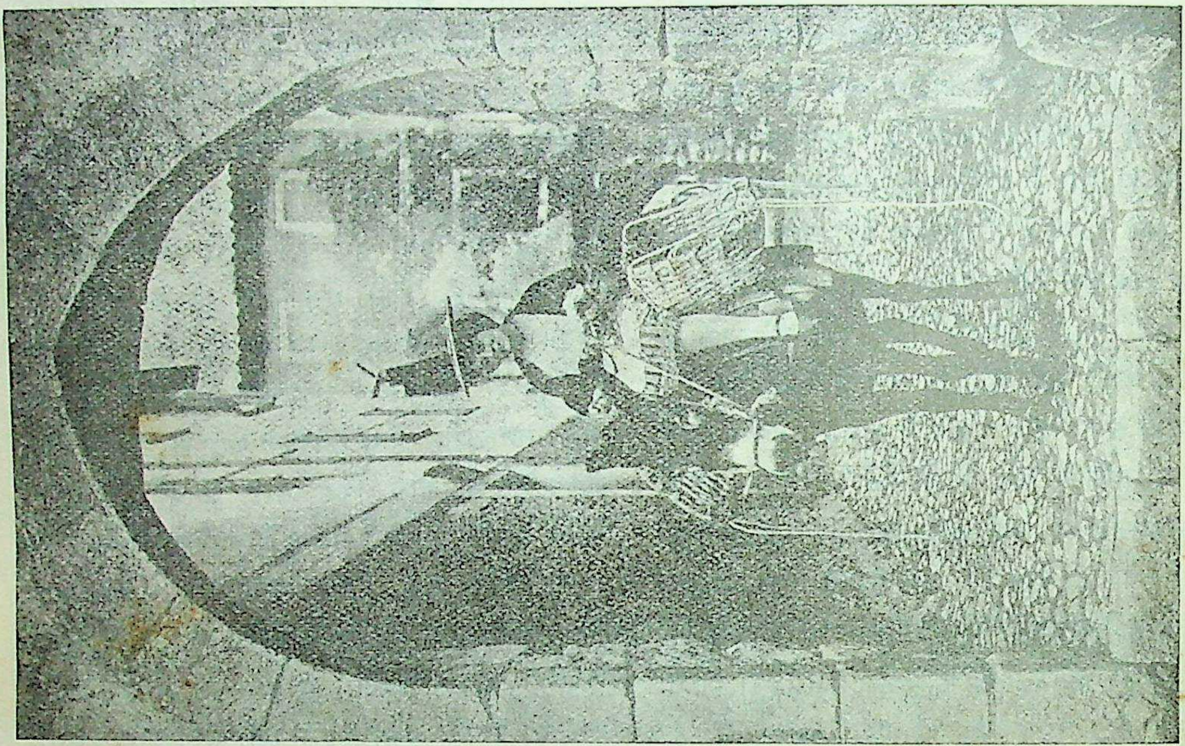

एक गाँववाली अपने खच्चर पर

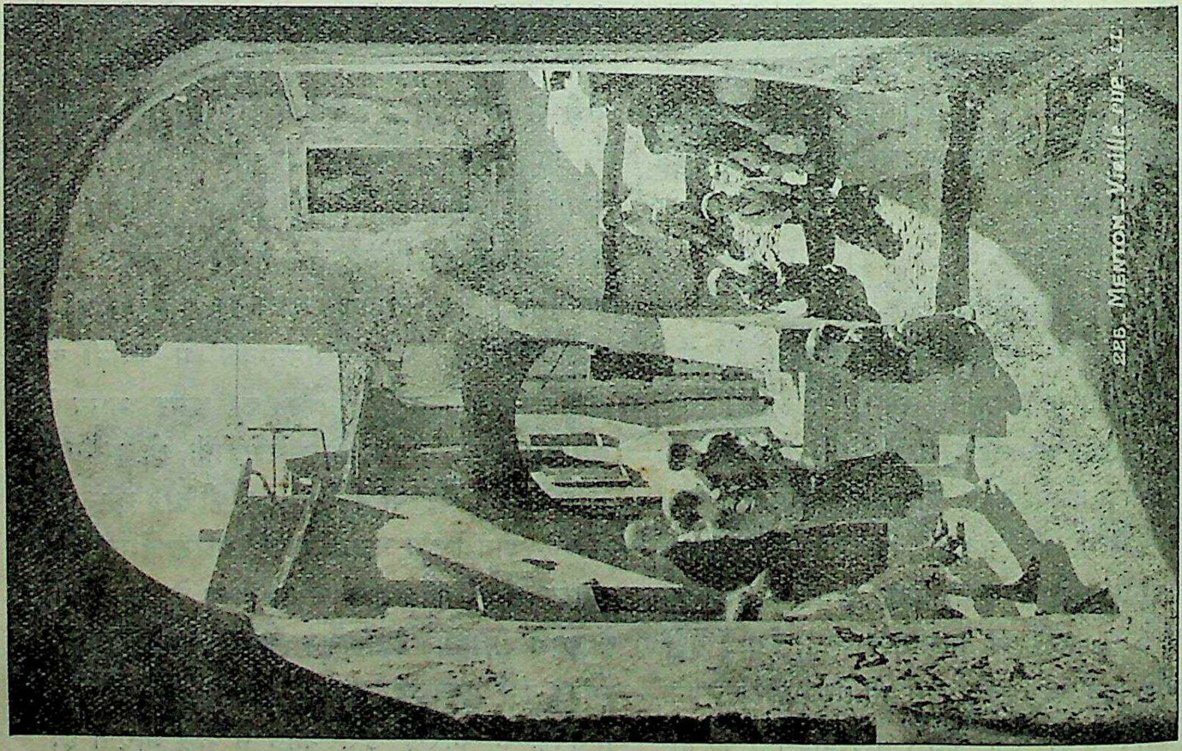
225. MENTON - Vieille Rue - LL.

योरप के एक गाँव की बस्ती

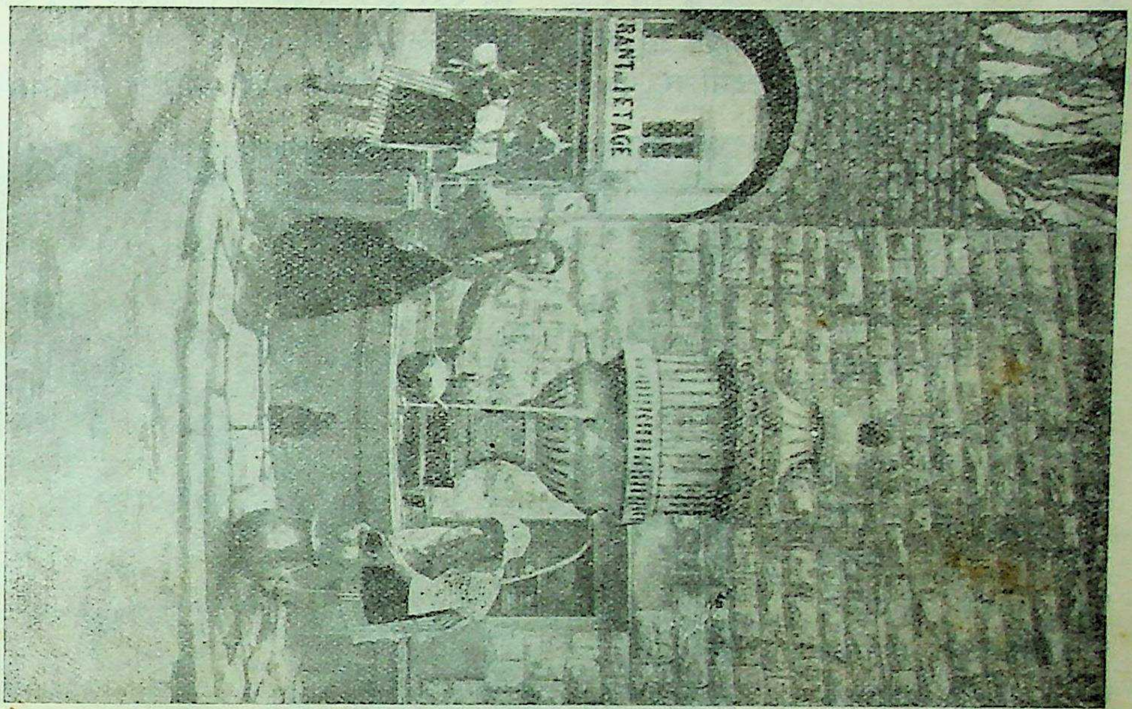

गाँव का पनघट

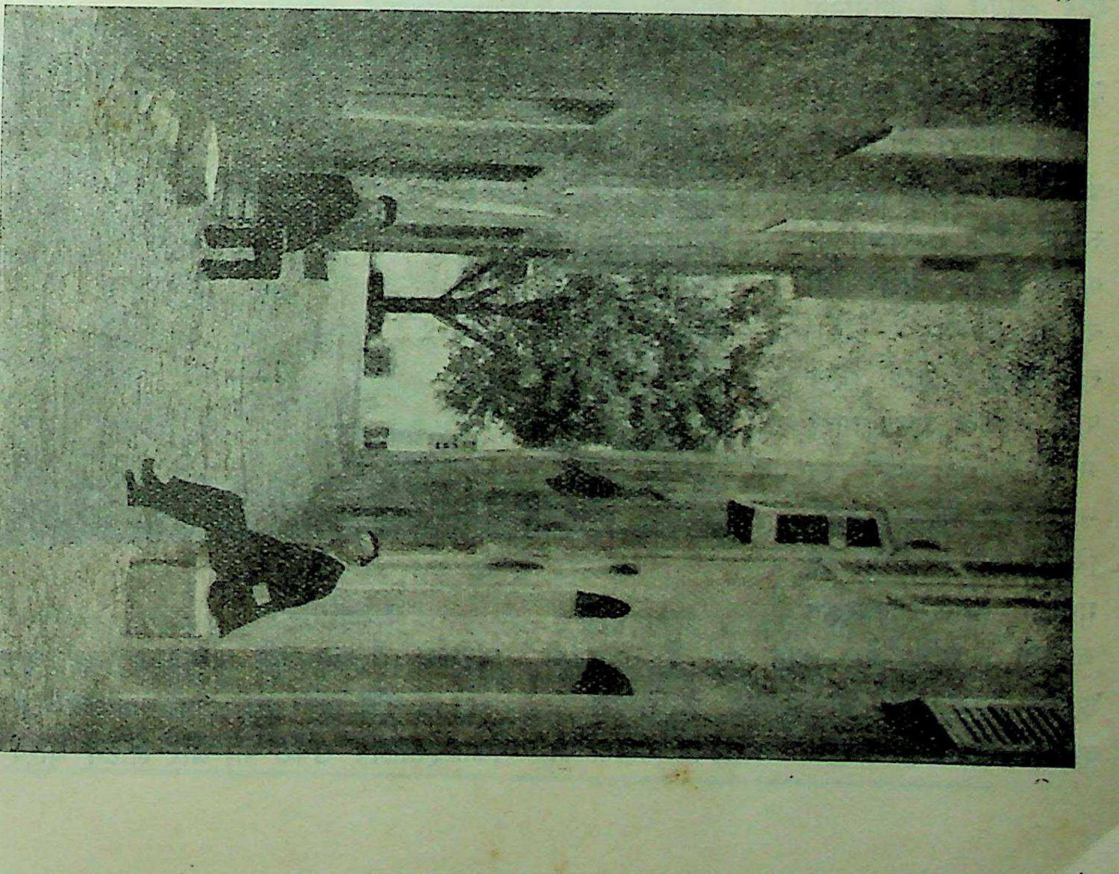

योरप के एक गाँव की गली

नहीं तो इनकी अपनी सभ्यता तो वही पुरानी राम-वाली है। इँगलैंड और जर्मनी की नई बस्ती संयुक्त अमेरिका इन्हीं देशों के क़दमों पर चलने-वाला है, और स्वयं समृद्धि-शाली है। अमेरिका के मूल-निवासियों का सारा देश इन लोगों के हाथ आ गया है। इँगलैंड को तो भारत-कामधेनु को केवल दुहने-भर का मौक़ा हाथ लग सका। योरप में केवल जर्मनी मुझे ऐसा देश दिखलाई पड़ा, जिसके निवासियों की नवीन स्फूर्ति, ज्ञान-बल और अध्यवसाय भविष्य के योरप पर अपनी छाप छोड़ जायँगे। आधुनिक योरपियन सभ्यता का मूल-केंद्र वास्तव में जर्मनी है।

एक तीसरा योरप रूस आदि की बड़ी छोटी स्लाव(Slav)-जातियों का है। इस योरोप की बानगी-स्वरूप मैं चेकोस्लैवोकिया-मात्र देख पाया। इस समय योरप में इन देशों का कोई महत्त्व नहीं। यहाँ के लोग कदाचित् मध्य-एशिया की मंगोल आदि असंस्कृत जातियों से अधिक मेल खाते हुए हैं। जर्मनी आदि उत्तरी योरप की जातियों के शिथिल हो जाने पर, संभव है, भविष्य में योरपियन सभ्यता का केंद्र इधर पूरब को हट जाय। लक्षण कुछ ऐसे ही दिखलाई पड़ते हैं।

27 NICE - Niçoises Vendant du Poisson aux Halles.

मछलीवाली

संक्षेप में इँगलैंड-जर्मनी आदि के लोग भारत में पश्चिमोत्तरी सीमा और पंजाब से मिलते-जुलते हैं, जहाँ की भूमि और जनता दोनो ही असंस्कृत थीं, किंतु इसीलिये उर्वरा थीं, और लैटिन योरप मध्य

देश के समान समझिए—प्राचीन सभ्यताओं का केंद्र—इसीलिये बूढ़ा, शिथिल और आवश्यकता से अधिक संस्कृत और सभ्य। रूस आदि पूर्वी योरपियन देशों की तुलना विंध्य के मध्य भारत आदि प्रदेशों से की जा सकती है। ज़रा भी ध्यान देने से ये भेद देखनेवाले को स्पष्ट दिखलाई पड़ते हैं। योरप के इतिहासों को पढ़कर ये बातें ठीक समझ में नहीं आतीं, न ठीक ढंग से समझाई ही जाती हैं।

योरप के इन समस्त देशों को देखकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि राष्ट्र भी व्यक्ति के समान ही बाल, युवा और वृद्ध होते हैं। इस स्वाभाविक गति को कोई रोक नहीं सकता। नख-दंत-हीन सिंह अगर चुपचाप गुफा में पड़ा रह सके, तो ठीक है, नहीं तो दुर्भाग्य से अगर चार गीदड़ भी गुफा की तरफ़ आ निकले, तो उसकी मर्यादा का कायम रह सकना असंभव है। अपने देश की पिछली दुर्गति का कारण अपनी सभ्यता का वृद्ध हो जाना था। अगर विदेशियों ने इधर मुँह न उठाया होता, तो चीन आदि की तरह हम लोग चुपचाप पीनक में पड़े रह सकते थे। टक्कर आ पड़ने पर नए हाथों के मुक़ाबले बूढ़े हाथ बहुत देर नहीं टिक सके, लेकिन मृत्यु के बाद अपने यहाँ तो पुनर्जन्म में विश्वास है। राष्ट्र का भी पुनर्जन्म संभव है। मुसोलिनी भी तो ऐसे ही पुनर्जन्म करवाने का उद्योग कर रहे हैं। प्रश्न केवल यह हो सकता है कि पुनर्जन्म का समय आया भी है या नहीं? नया बीज तभी उगेगा, जब उसकी ऋतु आ जाय, और ठीक भूमि और जल-वायु मिल सके।

लूटिए !
कैसा ?

❀ पुरस्कार ❀
१०००) रुपए

लूटिए !!
कितना ?

किस प्रकार मिलेगा ?

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्० आदि द्वारा प्रणीत पुस्तकों की मदद से।

सैकड़ों तरह के सुगंधित साबुन बनाने की पुस्तक	१)	१२६ क़िस्म की रोशनाई बनाने की पुस्तक	१)
रंग की पुस्तक	१)	वार्निश और पेंट	१)
सुगंधित तेल की पुस्तक	१)	विद्युत्-शास्त्र (Electricity)	॥)
सरल रसायन (Chemistry)	१) } साथ लेने	आरोग्य-विद्या द्वितीय भाग (छपनेवाला है)	
हिंदी-केमिस्ट्री	१) } से १॥) में	अयोध्या-गाइड	-)॥
आरोग्य-विद्या (Hygiene)	॥)	तंतु-कला (सूत का हुनर) और माड़ी चढ़ाने की पुस्तक	१)
रिसाला साबुनसाज़ी (उर्दू-संस्करण)	॥)	अनुवाद-कला (Sanskrit Teacher)	१)
इत्र की पुस्तक	१)	हस्त-रेखा	=)
देशी जड़ी-बूटी और उनके गुण (छप रही है)		चुंबकत्व और फ़ोटोग्राफ़ी (छपनेवाली है)	
तद्धित-प्रयोग-सूची	=)		

जनवरी तक आधे मूल्य में

पता—प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए० (इलाहाबाद), एम्० एस्-सी० टेक्० (विक्टोरिया, इँगलैंड), एफ़्० सी० ए० (लंदन), एस्० एम्० एस्० टी० (मैनचेस्टर) इत्यादि (मेडलिस्ट सिटी ऐंड गिल्ड्स ऑफ़् लंदन इंस्टिच्यूट), विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, शकरकंद की गली, बनारस सिटी

स्वर्गीय राजा कालाकाँकर के संस्मरण

[श्रीपं० ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल']

कालाकाँकर (अवध) के नवयुवक राजा अवधेशसिंह के असामयिक स्वर्गवास की वेदना आज भी हमारे प्रांत के साधारण, शिक्षित और राष्ट्रवादी व्यक्तियों के हृदय-पटल पर अंकित है। राजा अवधेशसिंह अवध के ताल्लुक़ेदारों में एक आदर्शवादी, देश-भक्त और नवीन जीवन का संचार करनेवाले व्यक्ति थे। कुछ ही वर्षों में उन्होंने अपने विचारों और कार्य-शैली से इतनी लोक-प्रियता प्राप्त कर ली थी, जिसकी पूर्ति फ़िलहाल नहीं हो सकती। सादगी की वह सजीव मूर्ति थे। निर्भीकता उनमें कूट-कूटकर भरी थी। क्षत्रियत्व के जीते-जागते नमूने थे। अनेक कठिनाइयाँ आने पर भी उन्होंने अपने विचारों में परिवर्तन नहीं किया, वरन् वह सामयिक राष्ट्रीय प्रवाह में अनवरत गति से बहते चले गए, और अंत समय तक अपने उसूल पर क़ायम रहे।

चरित्र-चित्रण

राजा अवधेशसिंह में उनके पूर्वजों की एक अपूर्व छाप थी, वह पुश्तैनी राजा थे। 'ख़िताब' ने उन्हें राजा नहीं बनाया। उनके सामने स्वर्गीय राजा रामपालसिंह का आदर्श था। राजा रामपालसिंहजी कांग्रेस के संस्थापकों में से थे, और हिंदी के इतिहास में भी उनका एक महत्त्व-पूर्ण स्थान है। किंतु स्वर्गीय राजा अवधेशसिंह समय के अनुसार उनसे भी आगे बढ़े हुए थे। यद्यपि उन्हें ऐसी किसी प्रकार की शिक्षा नहीं दी गई कि वह देश-भक्त बनें, या सामयिक प्रगति में भाग लें, क्योंकि वह ताल्लुक़ेदार थे, और ताल्लुक़ेदारों के लड़कों के लिये शिक्षा का जो प्रबंध है, वह सबको मालूम है। उनमें जितने गुण थे, प्राकृतिक थे, और अपने पूर्व-पुरुषों की महत्ता से सभी सुंदर गुण आप-ही-आप वर्तमान थे। राजा साहब का सबसे बड़ा गुण था चरित्र-बल। आजकल अनेक ताल्लुक़ेदार और उनके लड़के चरित्र की दृष्टि से किस नतीजे पर पहुँचे हैं, इसके उदाहरण अक्सर हमें अख़बारों में पढ़ने को मिल जाते हैं। किंतु राजा अवधेशसिंह नवयुवक नरेशों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते थे। राज्य में वह प्रायः घूमा करते थे। कहीं भी उनके चरित्र के विरुद्ध एक शब्द नहीं सुनाई पड़ता था।

राजा साहब का जीवन बिलकुल सादा था। खादी का कुर्ता, गांधी टोपी, धोती और चप्पल उनकी पोशाक थी। जाड़े में ऊनी ओवर-कोट। बस, इसके सिवा वह कुछ भी नहीं पहनते थे। खाने-पीने में बड़े सादे थे। पूड़ी-पकवान उन्हें क़तई प्रिय न था। लाल मिर्च से घोर नफ़रत थी, केवल काली मिर्च खा लेते थे। रोटी, चावल, दाल तथा तरकारी उनका नियमित भोजन था। मांस-मदिरा के सख्त विरोधी थे। यहाँ तक कि राज्य में उनकी जानकारी में कोई इन चीज़ों का उपभोग नहीं कर सकता था। गंगाजी के किनारे उनकी कोठी है। कोठी का कुछ हिस्सा गंगा की ओर निकला हुआ है। उसी स्थान पर एक चारपाई बिछाकर सोते थे। चारपाई पर गद्दा, उसके ऊपर खादी की चादर और खादी का तकिया। शाम को अपने मित्रों के साथ ज़मीन पर कंबल बिछवाकर बैठते थे। इधर-उधर की बातें होती

थीं, विशेषकर सामयिक प्रगति पर। सवेरा होते ही फिर अपने प्रोग्राम के अनुसार काम में लग जाते थे। यही उनकी दिनचर्या थी। एक बार मैंने उनसे कहा—"राजा साहब, आप आराम भी करते हैं या नहीं? इस प्रकार आपका स्वास्थ्य खराब हो जायगा।" राजा साहब बोले – "अरे, आपको

सुप्रसिद्ध देश-भक्त स्वर्गीय श्रीमान् राजा अवधेशसिंहजी
(कालाकाँकर-राज्य, अवध)

मालूम नहीं। इस वक़्त मेरी उम्र २२ वर्ष की है। जब से मैंने होश सँभाला है, तब से, मुझे मालूम है, अधिकांश समय मेरा मोटर पर बीता है।" बात यह है कि वह अक्सर किसी-न-किसी काम में लगे रहते थे। आज कालाकाँकर में हैं, तो कल प्रयाग में, परसों लखनऊ में, नरसों रायबरेली या प्रतापगढ़ में। कभी महात्माजी से मिलने जा रहे हैं कभी स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू को देखने। कभी कांग्रेस में शामिल होने जा रहे हैं, कभी आर्य-समाज के किसी अधिवेशन में। कभी नवयुवकों की सभा का सभापतित्व करने जा रहे हैं, कभी राज्य के बखेड़ों को निबटाने के लिये अधिकारियों के पास। इस प्रकार वह अपने समय को बड़ी सुंदरता के साथ उपयोग में लाते थे, और उनके सामने एक ख़ास 'स्पिरिट' काम करती थी।

यात्रा के बड़े शौक़ीन थे। बंबई, कलकत्ता, पुरी, अहमदाबाद, साबरमती-आश्रम तथा लाहौर, यहाँ तक कि भारत के प्रायः सभी दर्शनीय स्थानों की यात्रा उन्होंने की थी। एक मोटर लॉरी इसी के लिये मँगवाई थी। यात्रा में अपने साथ लगभग दो दर्जन व्यक्तियों को लेकर चलते थे। उन व्यक्तियों से उनका एक ख़ास शर्तनामा होता था। वह कहते थे—"मैं कालाकाँकर में राजा ज़रूर हूँ, लेकिन यात्रा में हम और आप सब बराबर हैं। मुझे कोई भी महाराज-वहाराज न कहे। यात्रा में हम लोग सब काम बाँटकर करेंगे।" यही होता भी था। सब लोग सम भाव से आनंद-पूर्वक यात्रा करते थे। भोजन बनाते समय अक्सर तरकारी काटने का काम उन्हें मिलता था। ऐसे समय छोटे-बड़े, कर्मचारी या राजा की भावना किसी में न रहती थी। यद्यपि राजा साहब की आज्ञा ऐसी थी, तो भी अक्सर उनके साथी उनका ख़याल करते ही थे, किंतु राजा साहब को इससे दुःख होता था। इन सब बातों से उनके व्यवहार, हृदय की विशालता और विचार-स्वातंत्र्य का सुंदर परिचय मिलता है।

राज्य की व्यवस्था और संगठन

राजा साहब ने अपनी छोटी-सी अवस्था में राज्य-संचालन की बड़ी सुंदर व्यवस्था की थी। राज्य के प्रधान-प्रधान व्यक्तियों की एक परिषद् थी, जिसकी साल में दो बार मीटिंग होती थी। उन मीटिंगों में छमाही बजट बनता, और पास होता था। मैं स्वयं कई बार ऐसे अवसरों पर उपस्थित रहा हूँ। मैंने देखा, राजा साहब प्रजा की संपत्ति विना उसकी मर्ज़ी के उपयोग में न लाते थे। यद्यपि वह राजा थे, उन्हें सारे अख़्तियारात स्वाभाविक रूप से थे, किंतु उनके विचार कितने ज़बरदस्त और आदर्श थे। उन्होंने एक हज़ार स्वयंसेवकों की एक सेना संगठित की थी। राज्य-भर में, स्थान-स्थान पर, घूमकर एक-एक स्वयंसेवक वहाँ के अन्यायों, अत्याचारों तथा ज़्यादतियों को राजा साहब के कानों तक पहुँचाता था। राजा साहब समुचित रूप से व्यवस्था करते थे।

राजा साहब अपने राज्य में जाति-भेद के प्रपंच को एकदम नष्ट करने पर तुल गए थे। इसके लिये उनकी एक ख़ास आज्ञा थी। यह काम ज़िलेदारों को सौंपा गया था, और उनसे साप्ताहिक रिपोर्ट ली जाती थी। मुक़द्दमा पंचायतों के ज़रिए होता था। अक्सर जब कोई बात तय न हो पाती थी, तो स्वयं फ़ैसला करते थे। मुझे एक घटना स्मरण है। एक बार किसी ठाकुर ने, जो राज्य के प्रतिष्ठित ज़मीदार थे, किसी चमार को ख़ूब पीटा। वह रोता हुआ राजा साहब के पास आया। उस समय राजा साहब बाहर से आए हुए किसानों की फ़रियाद सुनने राज्य के कार्यालय में जा रहे थे। जैसे ही फाटक पर पहुँचे, वैसे ही वह चमार उनका पैर पकड़कर रोने लगा। उन्होंने खड़े होकर सब हाल पूछा। फिर मैनेजर से उन

ज़मींदार सिंहजी को बुलाने के लिये कहा। किंतु सिंहजी कई दिन तक न आए। एक दिन वह चमार फिर आया। पता लगाने पर मालूम हुआ कि मारनेवाले सिंहजी का कहीं पता नहीं। राजा साहब ने चमार से कहा—"जा, मुक़दमा दायर कइ द्या। जौन खर्चा परी, हम सब देब।" यह ख़बर दूसरे दिन फैल गई। सिंहजी ने भी सुना। वह डर के मारे स्वयं राजा साहब के पास दौड़े आए। राजा साहब ने उन्हें देखते ही पूछा—"कहो, तुहईं एका मारेया है। जा, अब काहे आया। तु जान्या कि राजउ साहब ठाकुर हैं, और हम हूँ ठाकुर अही, एसे राजा साहब कुछ न बोलिहीं।" मारतेखाँ सिंहजी गिड़गिड़ाने लगे। बड़ी मिन्नत के बाद राजा साहब ने चमार को उनसे १००) दंड दिलवाया।

वह स्वयं मोटर से राज्य में दौरा करते थे। स्वयंसेवकों और ज़िलेदारों को जो काम सौंपे गए थे, उनकी जाँच करते थे। इससे सभी स्वयंसेवक बड़ी तत्परता से अपने काम में लगे रहते थे। उन्हें हर समय यह भय रहता था कि पता नहीं, किस समय राजा यहाँ आ पहुँचें। इस प्रकार राज्य को सुसंगठित और व्यवस्थित बनाने में उन्होंने बड़ी कुशलता का परिचय दिया, और शासन में एक नई जान पैदा कर दी।

सामाजिक विचार और सुधार

राजा साहब आर्य-समाजी विचार के थे। स्वामी दयानंद सरस्वती के भक्त थे। कालाकाँकर का आर्य-समाज-भवन बड़ा सुंदर बना है। साल में एक बार वह समाज का बृहत् अधिवेशन करते थे, और प्रसिद्ध आर्य-समाजी नेताओं को व्याख्यान और उपदेश के लिये आमंत्रित करते थे। बाल-विवाह के विरोधी तथा विधवा-विवाह के ज़बरदस्त पक्षपाती थे। वह केवल दिखावटी आर्य-समाजी न थे, वरन् आर्य-समाज के नियमों तथा सिद्धांतों को कार्य-रूप में परिणत करके उन्होंने यश कमाया था। राज्य में कितनी ही बाल-विधवाओं और विधवाओं का पुनर्विवाह कराया था। जाति-भेद, खान-पान, छुआछूत तथा शादी-ब्याह-संबंधी उनके विचार क्रांतिकारी थे। हिंदू-जाति में प्राचीन रूढ़ियों और अंध-विश्वास की जो प्रवृत्ति चली आती है, उसे दूर करने के लिये उन्होंने राज्य की ओर से अच्छी व्यवस्था की थी। गाँवों में फैले हुए अंध-विश्वास को जड़-मूल से ख़त्म करने में उन्होंने ख़ास निगाह रक्खी थी। इस विषय में उनके स्वयंसेवक बड़ा काम करते थे। वह ऐसे ही क़िस्म के सामाजिक सुधारों के लिये प्रायः गाँवों का दौरा करते थे।

बालिकाओं का छोटी उम्र में विवाह करने की प्रथा को उन्होंने अपने राज्य में बंद करा दिया था। यदि कोई चुपचाप ऐसा करता था, तो उसे पंचायत द्वारा दंड दिया जाता था, जाति-बहिष्कृत किया जाता था, और किसी प्रकार फ़ैसला नहीं होता था, तो राजा साहब स्वयं निर्णय करते थे। इस बात की जाँच-पड़ताल करने के लिये भी काफ़ी दिलचस्पी ली जाती थी। कितने ही पथ-भ्रष्ट रँडुओं के गले उन्होंने विधवाओं को बाँधा, और उन्हें भी कुमार्ग से बचाया। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से देखा, अनाचार काफ़ी बंद हो गया है। नीच जाति में स्त्रियों को भगा ले जाने की प्रवृत्ति पर भी उन्होंने निगरानी रक्खी। राज्य में काफ़ी आतंक छा गया। लोग डरने लगे कि इस प्रकार के कार्य की खबर राजा तक ज़रूर पहुँचेगी, और खबर ली जायगी।

शुद्धि और संगठन के वह ज़बरदस्त पक्षपाती थे। कालाकाँकर का आर्य-समाज इस बात के लिये प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। कितने ही विजातियों को उन्होंने शुद्ध किया, और प्रीति-भोज में

बड़ी प्रसन्नता से शरीक हुए। हिंदू-संगठन में उन्होंने काफ़ी दिलचस्पी ली। इस ओर उनकी ख़ास प्रवृत्ति थी, और सदैव लोगों को उत्साह मिलता था।

प्रजा-वत्सलता

श्रीमती रानी साहबा लक्ष्मीकुमारीदेवीजी
(कालाकाँकर-राज्य, अवध)

राजा साहब अपनी रियाया के साथ समान व्यवहार करते थे। ऊँच-नीच, छोटे-बड़े का कभी उन्होंने ख़याल नहीं किया। उन्होंने अपने कर्मचारियों — विशेषकर ज़िलेदारों, कारिंदों और पटवारियों को—यह आदेश दे रक्खा था कि लगान-वसूली में सख़्ती न की जाय। कर्मचारियों और ज़िलेदारों को व्यक्तिगत रूप से कुछ भी लेने की सख़्त मनाही थी। कर्मचारी भी ऐसा काम करते हुए डरते थे, क्योंकि छोटे-से-छोटा व्यक्ति भी राजा साहब तक पहुँचकर अपनी फ़रियाद सुना सकता था। उन्होंने किसानों को अच्छी छूट दी थी। अपनी भलमंसी और दयालुता के कारण ही कभी-कभी उन्हें ख़ज़ाने से सरकारी मालगुज़ारी भेजनी पड़ती थी। सख़्ती होती न थी, इसलिये वसूलयाबी में प्रायः दिक़्क़त पड़ती थी। लेकिन सरकार अपनी मालगुज़ारी ले ही लेती थी। एक बार तो उनका काफ़ी सामान क़ुर्क़ हो गया था। बाद को प्रांतीय कौंसिल में मिस्टर चिंतामणि ने अधिकारियों की काफ़ी ख़बर ली, और क़ुर्क़ किया हुआ सामान वापस मिला। एक तो राजा साहब सुधारक थे, दूसरे कांग्रेसवादी और महात्मा गांधी के अन्यतम भक्त; इसलिये उनकी नीति प्रजा के साथ अन्याय करने की न थी। उन्हें यह अच्छी तरह मालूम था कि लोगों के पास पैसा नहीं है, तो कहाँ से दें। राज्य के कुछ किसान कभी-कभी रो-गाकर राजा साहब से राज्य के मैनेजर के नाम चिट्ठी लिखवा ले जाते थे कि अमुक व्यक्ति से अभी लगान न लिया जाय। मैनेजर की यह ज़िम्मेदारी थी कि वह लगान वसूल-तहसील करे, इसलिये वह तो अपने काम में जिस तरह होता, साम, दाम, दंड, भेद से प्रयत्न करता था। क्योंकि उसे एक ख़ास तारीख़ तक सरकारी मालगुज़ारी दे देनी पड़ती थी। लेकिन जब राजा साहब की वह

उक्त प्रकार की चिट्ठियाँ पाते, तो चुप रह जाते। एक बार मैनेजर महोदय ने इसी संबंध में बात करते हुए कहा—"क्या बतावें, महाराज तो बेचारे ऐसे सीधे और भावुक हैं कि जिसे देखो, उनसे चिट्ठी लिखाए चला आ रहा है। बताइए, इसी तरह सभी चिट्ठी ले आवें, तो क्या किया जाय। मेरी हालत नाज़ुक हो जाती है। लोग गए, रोए-गाए, और लिखवा लाए। इधर मालगुज़ारी की तड़-तड़ी है। मैं तो स्वयं सहूलियत से लगान-वसूली करता हूँ, लेकिन कुछ बाह्य कड़ाई की भी ज़रूरत होती है। इससे लोग देने में आनाकानी नहीं करते। मैं महाराज से कहता हूँ, तो टाल देते हैं।"

एक बार की एक घटना है। मैं राजा साहब के साथ था। लालगंज घूमकर वापस आ रहा था। खेतों के बीच सड़क से मोटर चली आ रही थी। दूर से दिखाई पड़ा, कोई व्यक्ति बीच रास्ते में खड़ा है। राजा साहब ने कई बार मोटर का हार्न बजाया, लेकिन वह व्यक्ति नहीं हटा। आखिर-कार मोटर उस व्यक्ति के पास आकर खड़ी हो गई। देखा, तो एक बुढ़िया सामने खड़ी थी। राजा साहब ने पूछा—"क्या है?" बुढ़िया ने अपनी देहाती भाषा में रोकर कहा—"महराज, आज मनीजर साहेब आएन रहा। लगान देय के बरे डाटत रहेन। सरकार, हमरे कुछ नाहीं न। होत, तौ का हमका तंग करै का रहा। महराज, आपै तौ अन्नदाता हैं। अन्नदाता से हम झूठ न बोलब।" इतना कहकर बुढ़िया ने अपने खेत की तरफ़ इशारा करके कहा—"महराज, चार महीना और गम खा। जहाँ खेत कटा, माँड़ के और अनाज बेच के हम लगान देब। महराज, मनीजर साहेब नाहीं मनतेन। का करी।" राजा साहब का उस बुढ़िया पर दया आ गई। उन्होंने फ़ाउंटेन पेन निकाला, और एक चिट पर मैनेजर साहब को लिख दिया कि इसे चार महीने की मोहलत दी जाय। चिट देते हुए राजा साहब ने उस बुढ़िया से कहा—"ई चिट्ठी मैनेजर साहब का दै दिह्या। सब ठीक होइ जाई। मुदा और केहू से जनि कह्यो कि राजा साहब हमका अस चिट्ठी दिहेन हैं, नाहीं तो और बहुत जने अइहीं।" बुढ़िया बड़ी ख़ुशी से बोली—"नाहीं महराज, हम काहे का कहब।" ऐसा कह पैरों पर गिर पड़ी।

राजा साहब इसी तरह की चिट्ठियाँ कितने ही लोगों को मैनेजर साहब के नाम लिख देते, और लिखते वक़्त सबसे ऊपरवाली 'न कहने' की बात कह देते थे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रजा-वत्सलता उनमें किस दर्जे की थी। उनका स्वभाव कितना कोमल था। उन्हें किसी की उचित प्रार्थना मंज़ूर करते हिचक न होती थी। इनकार करने से उन्हें दुःख होता था। यह काम राजा साहब प्रजा की भलाई के लिये ही करते थे। किंतु उन्हें काफ़ी कठिनाइयों में पड़ जाना पड़ता था, यहाँ तक कि अंत में कालाकाँकर पर कुछ क़र्ज़ भी हो गया।

राष्ट्रीय विचार और देश-सेवा

राजा साहब राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे। कांग्रेस के प्रायः सभी अधिवेशनों में शामिल होने जाते थे। प्रांत में कांग्रेस के ख़ास व्यक्ति थे। कांग्रेस के आदेशों का भली भाँति पालन करते, और अपने राज्य में उसकी नीति का प्रचार करते। उनकी इस नीति से प्रायः अफ़सर और अधि-कारी नाराज़ रहते थे, लेकिन वह किसी की परवा न करते। राज्य के सभी कर्मचारी खद्दर की पोशाक पहनते थे, गांधी टोपी तो उनके यहाँ के लोगों की खास निशानी थी। राजमहल में पूर्ण रूप से खद्दर का व्यवहार होता था। वह धुन के बड़े पक्के थे। अपने राज्य और अवध के ज़िलों में उन्होंने कांग्रेस की नीति का अच्छा प्रचार किया। मनकापुर के राजकुमार श्रीराघवेंद्रसिंह एम्०

एल्० ए० तथा अमेठी के राजकुमार श्रीरणंजयसिंह उनके राष्ट्रीय विचारों के समर्थक थे। श्रीराघवेंद्रसिंहजी तो राजा साहब के प्रभाव से इतने प्रभावित थे कि विलायत से पढ़ना छोड़कर चले आए, और महात्मा गांधी के साथ डांडी-सत्याग्रह में शामिल होने के लिये गए। राजा साहब के अनुज कुँवर सुरेशसिंहजी सत्याग्रह-आंदोलन में जेल गए। अन्य भी कितने ही कार्यकर्ता महात्माजी के आंदोलन में गिरफ़्तार हुए, और राजा साहब ने उनके घरवालों की सहायता की।

Suresh Singh
1931.

कुँवर सुरेशसिंह

(स्वर्गीय राजा साहब कालाकाँकर के अनुज)

मुझे वह समय स्मरण है, जब युक्तप्रांत में नए गवर्नर की नियुक्ति हुई थी। राजा साहब के कुटुंबवालों ने—जो ताल्लुक़ेदारी तरीक़े के रईस हैं—कहा कि नए गवर्नर को बुलाकर उनका स्वागत किया जाय। पर राजा साहब ने इस बात को नामंज़ूर किया, और कहा—"नहीं, मैं तो महात्मा गांधी को बुलाऊँगा, और उनका स्वागत करूँगा।" आखिरकार वही हुआ। राजा साहब ने महात्मा गांधी को आमंत्रित किया। महात्माजी ने उनका निमंत्रण स्वीकार किया, और वह दल-बल-सहित आए। महात्माजी ने राजा साहब की 'नवजीवन' में बड़ी प्रशंसा की। राजा साहब ने महात्माजी को तीन हज़ार रुपए भेंट किए, तथा आस-पास के धनियों ने भी महात्माजी को थैली दी।

प्रतापगढ़-ज़िले में राष्ट्रीय जागृति का बहुत कुछ श्रेय राजा साहब को प्राप्त है। वह राजनीति में गरम विचारों के समर्थक थे, लेकिन महात्मा गांधी के बड़े भक्त थे। वह प्रायः राष्ट्रवादियों को सहायता दिया करते थे। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि असहयोग और सत्याग्रह के ज़माने में जब उनके कई मित्र जेलखाने गए, तो वह उनके घर जाकर स्वयं रुपए से सहायता कर आते थे। अछूतोद्धार के बड़े पक्षपाती थे। इसके लिये उन्होंने अपने राज्य में बहुत सुधार किए। राष्ट्रीय विचारों के कारण ही रायबरेली प्रतापगढ़ तथा अवध के अन्य ज़िलों में उनका इतना काफ़ी प्रभाव था कि अन्य राजा कुछ सहमे-से रहते थे। मि० सी० वाई० चिंतामणि प्रायः प्रतापगढ़ से ही युक्तप्रांतीय कौंसिल के लिये उम्मीदवार होते रहे, और राजा साहब की सहायता से सदा कौंसिल के सदस्य निर्वाचित हो जाते थे।

राजा साहब महामना पंडित मदनमोहन मालवीय के बड़े भक्त थे। मालवीयजी का कालाकाँकर से उनके विद्यार्थी-जीवन से ही अन्यतम संबंध है। उनकी उन्नति में कालाकाँकर के स्वर्गीय राजा रामपालसिंह का विशेष हाथ रहा है। राजा अवधेशसिंह भी इसीलिये पूज्य मालवीयजी का बड़ा आदर करते और उनकी आज्ञाएँ न टालते थे। हिंदू-संगठन और शुद्धि के वह विशेष पक्षपाती थे। इस संबंध में उनके ऊपर मालवीयजी का

प्रभाव पड़ा था। वह अंत समय तक इस पक्ष के समर्थन में दृढ़ रहे।

हास्य-प्रियता

राजा अवधेशसिंह नवयुवक थे। हँसी-मज़ाक़ में अक्सर भाग लिया करते थे। बड़े ज़ोर की हँसी हँसते थे। गंभीरता उनमें थी, लेकिन मौक़े की। हर समय वह व्यर्थ का मुँह नहीं बनाए रहते थे। अक्सर अपने भाइयों से भी बेतकल्लुफ़ी से मज़ाक़ करते थे। राजकर्मचारियों, नौकर-चाकरों से भी हँसी की बातें अक्सर करते थे। इससे वह सभी के बड़े प्रिय हो गए थे। 'भड़ौओं' के बड़े प्रेमी थे। पं० जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी' के भड़ौओं और हास्य-पूर्ण कविताओं की बड़ी दाद देते थे। मेरा स्नेह उनसे अधिक था। वह मेरे साथ खूब हँसते और मज़ाक़ करते थे। मैं जब कालाकाँकर पहुँचता था, तो मिलते ही कहते—"हाँ भाई, पहले ज़ोर से हँसो, जिससे लोग जान जायँ कि इलाहाबादी आ गए।" यों तो राजा साहब की हास्य-प्रियता के सैकड़ों संस्मरण हैं, किंतु दो-एक का उल्लेख यहाँ किया जाता है—

एक बार श्रीएन्० सी० मेहता आई० सी० एस्० कलेक्टर वहाँ इंस्पेक्शन के लिये आए हुए थे। मैं भी वहाँ मौजूद था। पं० दुलारेलाल भार्गव के हास्य-पूर्ण दोहों की काफ़ी चर्चा रही। एक प्राइवेट कवि-सम्मेलन भी हुआ, उसमें भी प्रायः हास्य-पूर्ण रचनाओं का ही ज़िक्र होता रहा। मेहता साहब स्वयं बड़े हास्य-प्रेमी हैं, और श्रीमती मेहता भी काफ़ी पार्ट लेती हैं। हम लोगों ने नाव पर सैर की। वहाँ भी प्रायः हास्य की ही बहार रही। सबेरे का समय था, श्रीमान् मेहता साहब और श्रीमती मेहता नाव पर गंगा-स्नान को जा रहे थे। रानी साहबा भी स्नान को जा रही थीं (यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि रानी साहबा पर्दा नहीं करती थीं।)। मेहता साहब वग़ैरह आगे बढ़ गए। रानी साहबा को महल से निकलने में देर हो गई, इससे वह पिछड़ गईं। रानी साहबा आगे बढ़ीं, तब तक मेहता साहब वग़ैरह बोट पर बैठ गए थे। रानी साहबा झुँझलाकर आधे रास्ते से ही लौट आईं। राजा साहब बैठे हुए यह सब देख रहे थे। रानी साहबा ज्यों ही लौटकर महल के पास आईं, राजा साहब ने व्यंग्य से कहा—"हाँ भाई, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट की बिटिया हैं न, चला थोड़े ही जाता है।" (रानी साहबा बाँसी-राज्य की राजकुमारी हैं।) वह प्रायः इसी प्रकार के मज़ाक़ करते रहते थे।

प्रसन्न-चित्त रहना उनका स्वभाव था। नाराज़ होते उन्हें कम देखा गया। उनके यहाँ जो जाता, उसे वह प्रायः कई दिन तक रोक रखते थे। जिससे बोलते, हँसकर बोलते थे। जो उनके पास बैठ जाता, उसे अक्सर ताल्लुक़ेदारों के संबंध में हँसी की बातें सुनाया करते थे। राजा रामपालसिंह के ज़माने की ऐसी हास्य-पूर्ण बातें सुनाते कि हँसते-हँसते पेट फूल जाता। उनकी इस विनोद-प्रिय आदत से अक्सर ताल्लुक़ेदार घबराते थे। उनके दरबार में अक्सर दो-चार हँसोड़ भी रहते थे, जो प्रायः उन्हें हँसाते रहते थे। शाम को एक अच्छा-खासा दरबार लगता था। कुछ बाहर और कुछ राज्य के लोग एकत्र होते थे। मनोरंजन होता था। मनोरंजन के लिये प्रायः सैर भी होती थी। राजा साहब में हमने एक ख़ास गुण देखा। वह काम के समय डटकर काम करते थे, और विनोद के समय अपने को भूल जाते थे।

हिंदी-प्रेम

राजा साहब में, अपने पूर्वजों के गौरव के अनुरूप, प्रशंसनीय हिंदी-प्रेम था। कविता के बड़े रसिक थे। प्रायः हर साल बृहत कवि-सम्मेलन करते और प्रतिष्ठित कवियों को बुलाकर उनका आदर तथा उन्हें पुरस्कृत करते थे। कितने ही

राष्ट्रीय पत्रों की वह मदद करते थे। साल में तीन-चार दिन कालाकाँकर में बड़ा समारोह रहता था। बड़े-बड़े नेता, समाज-सुधारक और हिंदी-प्रेमी इकट्ठा होते थे। कई साहित्य-सेवी उनके यहाँ से सहायता प्राप्त करते थे। इन अधिवेशनों में राज्य के कर्मचारियों के अतिरिक्त सरकारी अफ़सरों को भी वह बुलाते थे। पंडित पद्मसिंह शर्मा, सनेहीजी आदि कवि-सम्मेलनों के सभापति हुए थे। कवि-सम्मेलनों में राष्ट्रीय कविताओं को अधिक महत्त्व दिया जाता था। राजा साहब स्वयं उपस्थित होकर कवियों की कविताओं की खूब प्रशंसा करते थे। श्रीविष्णुसहाय आई० सी० एस्० और श्रीएन्० सी० मेहता आई० सी० एस्० भी कुछ कवि-सम्मेलनों में पधारे थे। उन दिनों उक्त सज्जन प्रतापगढ़ में डिप्टी-कमिश्नर थे।

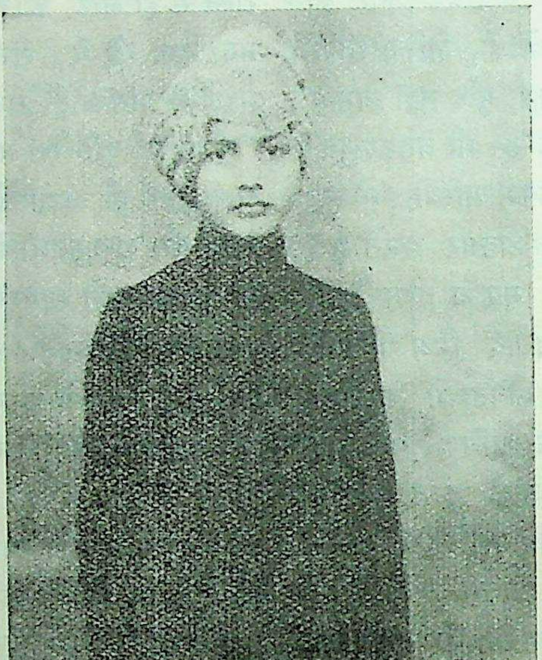

चिरंजीव श्रीमान् राजा दिनेशसिंहजी
(कालाकाँकर के बालक राजा)

स्वर्गीय राजा रामपालसिंह ने अपने समय में 'हिंदुस्थान' का प्रकाशन किया था। उस समय प्रेस भी था। राजा अवधेशसिंह ने उस प्रेस का जीर्णोद्धार कराया, और 'दरिद्रनारायण'-नामक एक साप्ताहिक पत्र निकाला। इस पत्र का नामकरण महात्मा गांधी ने किया था। दरिद्रनारायण में किसानों के हित की बातें छपती थीं, और कालाकाँकर की प्रजा में उसका ख़ासा प्रचार था। 'कुमार'-नामक एक पत्र भी, कुँवर सुरेशसिंहजी की इच्छा के अनुसार, निकाला, और उसे भी काफ़ी घाटे से चलाया। प्रेस में यदा-कदा बहुत-से ट्रैक्ट भी छपते थे, जो किसानों के लिये हितकर थे। अपने भाई कुँवर सुरेशसिंहजी के इच्छानुसार हिंदी के छायावादी महाकवि पं० सुमित्रानंदन पंत को अपने यहाँ बुलाया। उन्हें बड़े प्रेम और आदर के साथ रक्खा। राजा साहब ने पंतजी को अपने परिवार का एक व्यक्ति समझ रक्खा था। जहाँ जाते थे, प्रायः उन्हें अपने साथ ले जाते थे। अब भी उनके अनुज सुरेशसिंहजी उन्हें अपने साथ रखते हैं।

प्रयाग में द्विवेदी-मेला बड़े समारोह के साथ हुआ। उसके वह उप-सभापति थे। हम लोगों ने ख़ास तौर से

उनसे आर्थिक सहायता ली थी । वह उसमें शामिल हुए, और उसके कार्यों में पूरी तरह दिलचस्पी ली । इसमें संदेह नहीं, यदि राजा साहब जीवित रहते, तो हिंदी और हिंदी-सेवियों का उनके द्वारा बड़ा हित होता, किंतु दुर्भाग्य को कौन रोक सकता है !

अवध के आदर्श

राजा साहब अवध के नरेशों में आदर्श व्यक्ति थे । उनमें जो ख़ूबियाँ थीं, इस समय किसी में दिखाई नहीं पड़तीं । राष्ट्रीय दृष्टि से उनका बड़ा महत्त्व था । एक नेता के सभी गुण उनमें विद्यमान थे । राजा साहब का बाह्य रूप से जो प्रभाव और नाम था, उसी प्रकार भीतरी रूप से भी वह बड़े नम्र, सद्गुणी और सरल थे । वह अपने भाइयों को बहुत चाहते थे । उनके सुख-दुख के पूर्ण साथी थे । कुँवर ब्रजेशसिंह के राष्ट्रीय विचार उग्र थे । यद्यपि राजा साहब उनके विचारों से सहमत न थे, तो भी वह उनके भाई ही थे—प्रायः विपत्तियों से उनकी रक्षा करते थे । भाइयों में इतना स्नेह हमने बहुत कम देखा है । उनका प्रतिदिन का नियम था कि वह अपनी माता (मा साहबा) का सायंकाल दर्शन करके तब सोने जाते थे । राजकुमार और राजकुमारी को साधारण पोशाक में रखते थे । उन्हें एक विशेष प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा दिलाने की उनकी चिंता थी ।

राजा साहब का स्वास्थ्य मृत्यु के कई मास पूर्व कुछ गिरने लगा था । रानी साहबा का भी स्वास्थ्य खराब रहता था । इसी कारण उन्हें योरप जाना पड़ा । विलायत जाने पर उन्होंने वहाँ स्वर्गीय विट्ठल भाई पटेल से, आयर्लैंड में, भेंट की । पटेलजी उस समय विलायत में ही थे । विलायत में उन्हें बड़े विचित्र अनुभव हुए । अपने अनुभवों को अक्सर सुनाया करते थे ।

राजा साहब ने भविष्य के लिये अनेक सुंदर काम करने के लिये सोच रक्खे थे । यदि वह जीवित होते, तो उन्हें अवश्य करते । एक दिन की बात है । वह विलायत से लौटे थे । मैं उनसे मिलने कालाकाँकर गया । उन्होंने विलायती विवाह-समस्या पर ज़िक्र करते हुए वहाँ की कुरीतियों का वर्णन किया, और पूछा—“आजकल लड़कियों की शादी किस प्रकार होनी चाहिए ?” मैंने कहा—“अपनी समानता का तो ख़याल रखना ही चाहिए, धन और मानवाला घराना हो, तो अच्छा है, जिससे लड़की सुखी रहे ।” राजा साहब ने कहा—“नहीं, अब ज़माना बदल गया है । दुनिया में उथल-पुथल हो रही है । ताल्लुक़ेदारों का हाल आपको नहीं मालूम । एक-एक ताल्लुक़ेदार के कई-कई रानियाँ होती हैं । रखेलियों का हाल न पूछिए । ताल्लुक़ेदारों की शादी की महिमा निराली है । भाई, यदि मैं ज़िंदा रहा, तो राजकुमारी का विवाह किसी ताल्लुक़ेदार के यहाँ न करूँगा । किसी शिक्षित, देश-भक्त, उन्नतिशील व्यक्ति से करूँगा, जो आराम और सुख से रह सके, और लड़की को भी रख सके, साथ ही देश का भी काम करे । यदि किसी ताल्लुक़ेदार के यहाँ कर दूँगा, तो यही होगा कि जहाँ उसके चार-छ स्त्रियाँ होंगी, एक सातवीं और बढ़ जायगी । निकलने पाएगी नहीं, लड़की बेचारी महल की कोठरी में बंद रहेगी !” यह सुनकर मैं तो दंग रह गया । राजा साहब के ऐसे ही क्रांतिकारी विचार थे । यदि वह होते, तो न-जाने कितने काम ऐसे कर जाते, जो राजाओं में आदर्श कहे जाते ।

राजा साहब अपने सिद्धांत पर अंत समय तक अटल रहे । उन्हें संग्रहणी की बीमारी हो गई थी । काफ़ी दवा-दारू हुई । कितने ही डॉक्टरों ने उन्हें मांस-मदिरा-सेवन की भी सलाह दी । किंतु उन्होंने कहा—“मर जाना अच्छा, लेकिन इन चीज़ों का सेवन मैं नहीं करूँगा ।” और, उन्होंने

आख़िर इन चीज़ों का सेवन नहीं किया। स्वर्गवास हो जाने पर देश में हाहाकार मच गया, और राज्य के कर्मचारी तथा प्रजा पर विपत्ति का बादल उमड़ आया।

आज भी कालाकाँकर-निवासी अपने प्रिय राजा की याद करके बड़े दुखी होते हैं। कई बार मेरी दो-चार तत्कालीन कर्मचारियों से भेंट हुई, उनकी आँखों में आँसू थे। बोले—"भाई, अब वे दिन कहाँ! महाराज के चले जाने से कालाकाँकर सूना हो गया। भाग्य की बात है!"

महात्माजी का अद्भुत चमत्कार

पाठको! यह महात्माजी का वह चामत्कारिक योग है, जिसके ७ दिन सेवन से शरीर में रक्त दौड़ने लगता है, २१ दिन में चेहरा लाल हो जाता तथा ४० दिन में कैसी ही निर्बलता, नपुंसकता हो, दूर होकर अपार बल-वीर्य बढ़ जाता है। प्रमेह, स्वप्नदोष, बवासीर, खाँसी, दमा, नज़ला, जिगर, तिल्ली के रोग, स्त्रियों का प्रदर, मूत्र में शकर जाना (डायबिटीज़) आदि अनेक रोग दूर होकर देह कुंदन बन जाती है। कल्लाती पहाड़ी के रत्नागिरि साधु ने यही कुछ दवा एक ग्वाला को दी थी, जो सब एक बार में ही खा गया, जिससे उसने बुढ़ापे में तीन विवाह किए थे। साधु से योग नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदख़ाँ को मिला, फिर आपसे प० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य को। शर्माजी ने परीक्षा कर देशोपकारक में छापा, तथा इससे उत्तम योग देनेवाले को उसके अपने ३ योगों के लिये १०००) का इनाम मय सार्टीफ़िकेट के देने को लिखा था, जिसे किसी ने न पाया है। वास्तव में यह बड़ा ही उत्तम योग है। यह क़ब्ज़ भी नहीं करता, बल्कि दूनी भूख लगाता है तथा हर मौसम में युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष को एक-सा लाभ करता है। इसकी प्रशंसा मथुरा के वैद्य बाबू हरिदासजी ने छापी है कि एक आदमी का वज़न इससे एक सप्ताह में ५ पौंड बढ़ा, तथा दूसरे का चेहरा सुर्ख़ हुआ। भूपाल के वैद्यराज बालकृष्ण शर्मा लिखते हैं—मैंने इ० १७० लोगों पर बरता और पूर्ण गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक वैद्य छोटेलाल जैन ने छापा है कि हमने ऐसा गुणकारी दूसरा योग नहीं देखा। गोताना के डॉ० रामेश्वरदयाल लिखते हैं कि इससे ३३० रोगी मैंने अच्छे किए हैं। पाठको! ४० दिन सेवन कर चमत्कार देखो।

योग यह है—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, को प्रथा १ तोला शुद्ध श्वेत मल्ल १॥ माशा, शुद्ध कपूर के साथ कुमारी के रस में घोट ५ सेर कंडा में फूके, दुबारा हरताल वर्क़ी शुद्ध १ तोला, कपूर १॥ माशा, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर १॥ माशा, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा के साथ पूर्ववत् फूँके। इसी क्रम से १६ आँचें दें, फिर दवा ज़मीन में गाड़ दें, और ४ मास बाद चार चावल प्रातः-सायं मक्खन-मलाई से खावें। इतना बल बढ़ेगा कि आप हैरान हो जायँगे। अगर कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी पत्र भेज उत्तर मँगा सकते हो। यह दवा हमारे यहाँ बनी मिलती है; चाहें, तो ४० दिन के लिये ८० मात्रा दवा डाक-ख़र्च-सहित ५।॥) में मँगा लें।

सेवक—श्यामविहारीलाल वैद्यभूषण

श्यामचक्र-कार्यालय (रजिस्टर्ड), ५५३ बी०, शाहजहाँपुर (यू० पी०)

सुधा-चित्रावली

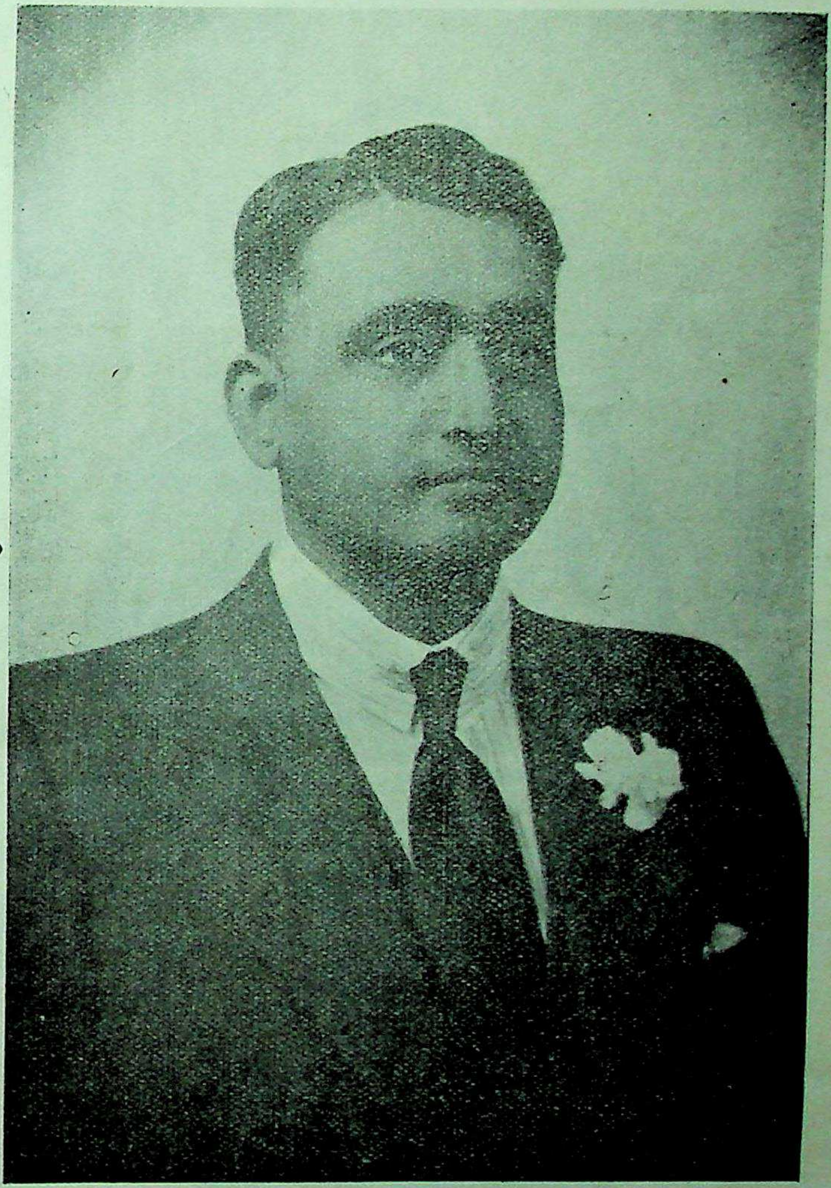

श्रीपुरोहित प्रतापनारायण कविरत्न

[आपकी 'सुखद संस्मरण'-शीर्षक रचना ५६० पृष्ठ पर प्रकाशित है।]

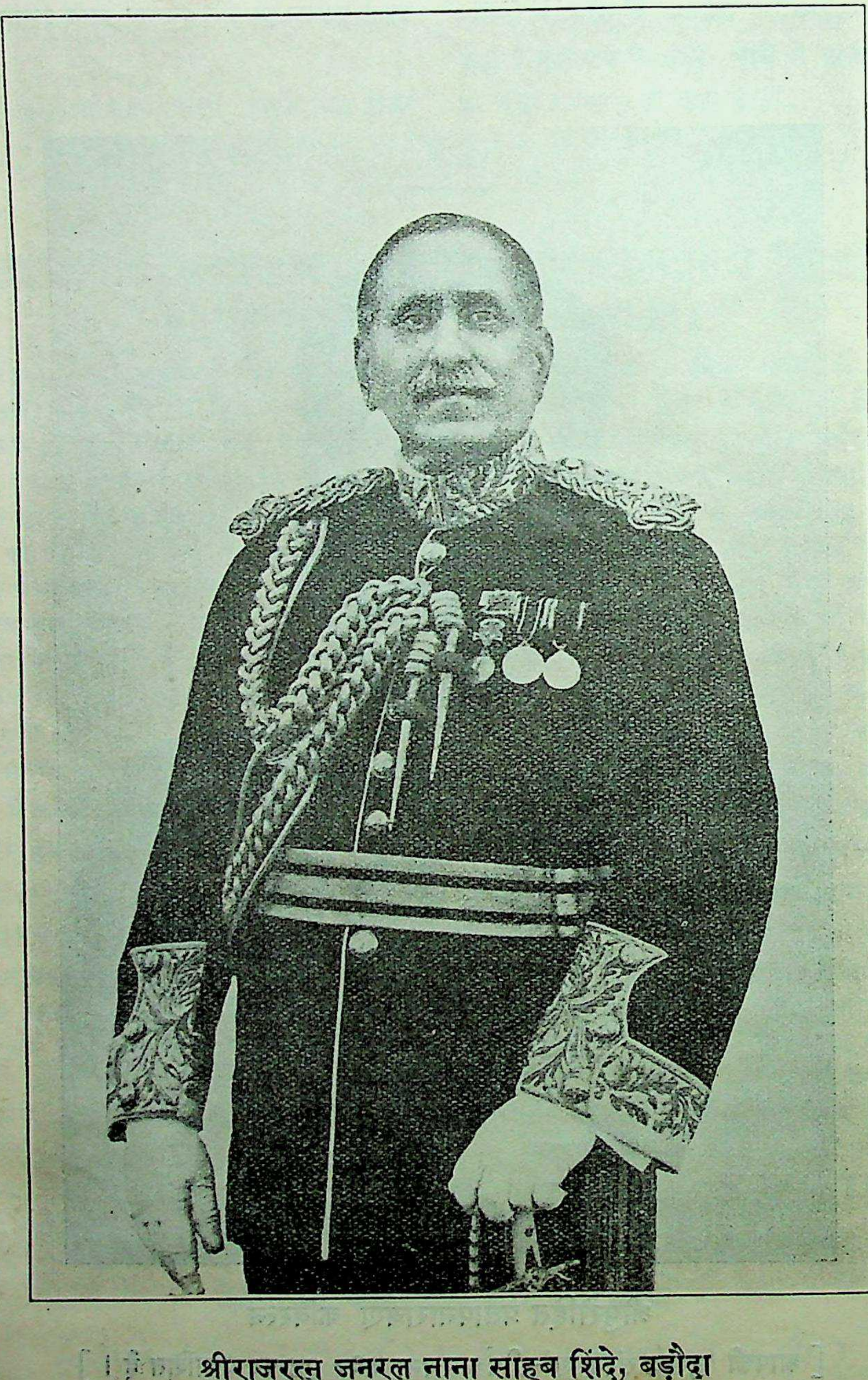

श्रीराजरत्न जनरल नाना साहब शिंदे, बड़ौदा

[आप विगत वर्ष अहल्योत्सव के सभापति थे ।]

मिस आफ़ीलिया स्टेक

[आप पंद्रह हज़ार सौंदर्येच्छुक स्त्रियों की नेत्री हैं ।]

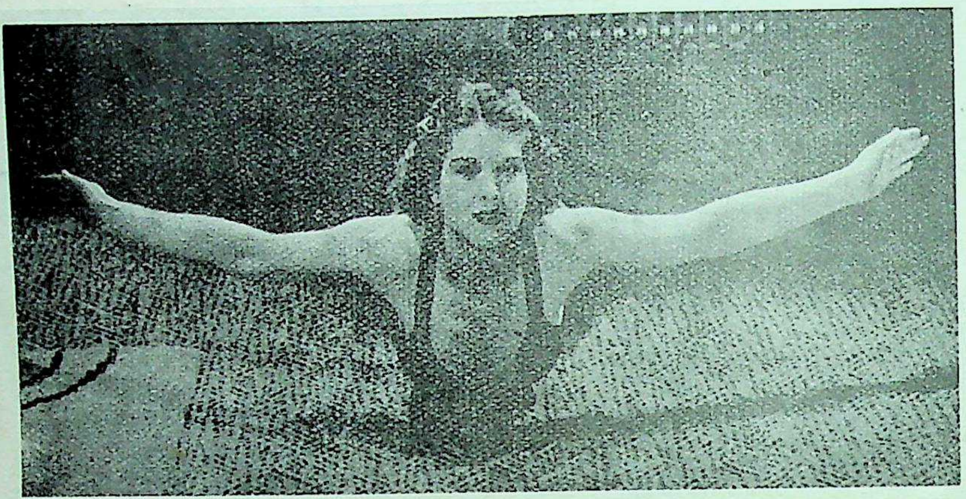

सीने को चौड़ा बनाने को व्यायाम

श्रीवज़ीरुद्दौला रायबहादुर सरदार एम्० वी० किंबे

चयन

१. 'गुप्तजी की काव्य-धारा' और 'गुप्तजी की कला' पर एक तुलनात्मक दृष्टि

श्रीमैथिलीशरण गुप्त इस युग के सार्वभौम कवि हैं। अपने जीवन के प्रभात से ही उन्होंने भारती-मंदिर-निर्माण की योजना प्रारंभ कर दी थी। उनका यह 'साकेत-भवन' अब बन चुका है। उसमें मूर्ति-प्रतिष्ठा भी गत वर्ष महात्मा गांधी के कर-कमलों से हो गई। यों तो विश्वासी लोग बहुत दिनों से ही मार्ग चलते-चलते एक आध पत्र-पुष्प यहाँ चढ़ाते रहे हैं, किंतु अभी तक कोई भक्त सम्यक् भेंट-सामग्री लेकर उपस्थित नहीं हुआ था। इसका कारण कुछ तो उक्त भवन की अपूर्णता और कुछ हमारे युग का अविश्वास ही था।

अभी हाल ही में अपने-अपने थालों को सजाए हुए दो विद्वान्—श्रीगिरीशजी एवं श्रीसत्येंद्रजी—कवि के मंदिर में प्रविष्ट हुए हैं। इनमें पहले सज्जन तो हिंदी-साहित्य के विख्यात समालोचक हैं, दूसरे बेचारे 'मौन-साधक' ही हैं। स्वभावतः दोनो के उद्देश्य भी भिन्न-भिन्न हैं। गिरीशजी का लक्ष्य है कि "उन क्षुद्र मनोविकार-ग्रस्त समालोचनाओं का बल घटे, जो आजकल अनुत्तरदायित्व-पूर्ण लेखकों की लेखनी से प्रसूत होकर हिंदी-साहित्य के कलेवर को दूषित कर रही हैं।" अर्थात् उन्होंने श्रद्धा-पूर्वक भेंट चढ़ाने के लिये नहीं, वरन् कवि के कला-भवन को प्रकाशित करने के लिये ही पदार्पण किया है। दूसरे सज्जन श्रीसत्येंद्रजी हैं। इन्होंने तो यह अनुभव करके कि "ऐसे कुशल कवि की कृतियों पर कितनी ही आलोचनात्मक पुस्तकों के प्रकाशन की आवश्यकता है", प्रस्तुत पुस्तक द्वारा उसी दिशा में एक 'क्षुद्र प्रयास'-मात्र किया है।

गिरीश महोदय विख्यात व्यक्ति ठहरे। अतः आपकी पूजा का थाल भी अपेक्षाकृत लंबा-चौड़ा और सजा-बजा है। सत्येंद्रजी के हाथ में जो छोटा-सा संपुट है, वह भी बाहर से यथेष्ट आकर्षक है। दोनो के आच्छादित होने के कारण हम उनमें सन्निहित सामग्री नहीं देख सकते। आओ, अंदर चलकर जब वे स्वयं आच्छादन हटावें,

ता हम भी उनकी उपचार-सामग्री पर एक दृष्टि डालें।

हाँ, तो प्रवेश करने पर हमने देखा कि गिरीशजी के थाल में २९ तरह के सामान हैं, और सब बढ़िया-बढ़िया चिट लगे हुए, जिनमें मुख्य-मुख्य हैं—(१) गुप्तजी की रचनाओं की प्रवृत्तियाँ, (२) सामाजिक और साहित्यिक प्रवृत्तियों की घनिष्ठता, (३) गुप्तजी समाज की उत्पत्ति या उसके निर्माता, (४) गुप्तजी की कला और (५) गुप्तजी की कल्पना और अनुभूति का संगमस्थल और गुप्तजी का प्रबंध-काव्य (जिसमें रंग में भंग से लेकर यशोधरा तक सभी प्रबंध-काव्यों की समीक्षा है)। सत्येंद्रजी के संपुट से केवल नौ प्रकार की ही सामग्री निकली—(१) मैथिलीशरण के विषय, (२) विषयों में दृष्टि-कोण, (३) गुप्त-शैली की विशेषताएँ, (४) वस्तु-विवेचन, (५) कथावस्तु में उद्देश्य, (६) कवि का जीवन-संदेश, (७) धार्मिक अभिव्यक्ति, (८) स्त्रियों का स्थान और (९) गुप्तजी की कला।

अब हम अधिक पास जाकर देखने लगे। गिरीश बाबू ने पहले ही समालोचनात्मक आदर्शों का एक गट्ठर रख छोड़ा है, जिससे यह धारणा होती है कि शायद लेखक ने ये ही आदर्श अपने सम्मुख रक्खे होंगे। परंतु जब उनके लेखों का अध्ययन किया गया, तो बात उलटी ही निकली। आकर्षक नामावली से युक्त उनके लेख थोथे और वाग्जाल-मात्र ही प्रतीत हुए। गिरीशजी पढ़े-लिखे तो काफ़ी मालूम पड़ते हैं, किंतु एक समालोचक के लिये जिस अन्वीक्षण-शक्ति और स्थिर प्रज्ञा की आवश्यकता होती है, वह आपकी गाँठ में नाम-मात्र को नहीं। बड़े-बड़े शीर्षक देकर लिखे हुए आपके लेखों में न कोई संबद्धता है, और न संगीत। उदाहरणार्थ 'गुप्तजी और कला'-शीर्षक आपका लेख देखिए। उसमें आपने गुप्तजी की कला के विषय में कितना और क्या लिखा है? बारह पृष्ठों में केवल डेढ़ पृष्ठ, उसमें भी एक पृष्ठ से अधिक स्वयं कवि के गद्य-पद्य के उद्धरणों से भरा पड़ा है। शेष भाग में आपने या तो कला के विषय में अनर्गल बातें भर दी हैं, या इधर-उधर कवियों पर प्रहार किया है। इसी प्रकार तनिक 'साकेत का कथा-संगठन' देखने की कृपा कीजिए। उसमें आपने महात्मा गांधी के दशरथ-चरित्र-संबंधी उद्धरणों का ही विवेचन किया है। यदि मैं यह कह दूँ कि इस पुस्तक के सभी निबंध निरपवाद-रूप से, कतिपय छायावादी (?) नाम से प्रचलित कविताओं की भाँति, शीर्षक से सर्वथा असंबद्ध हैं, तो अणु-मात्र भी अत्युक्ति न होगी। गिरीशजी में विचार-शक्ति की कमी नहीं है, किंतु यह विचार-धारा (आपकी 'गुप्तजी की काव्य-धारा' की तरह) विषय से कोसों दूर बहक जाती है। इसके अतिरिक्त उनकी समस्त पुस्तक पढ़ लेने के उपरांत क्या कोई उनकी मनोवृत्ति की शुद्धता पर संदेह नहीं कर सकता? क्या आपने इस आलोचना में उन आदर्शों पर तनिक भी दृष्टि-पात किया है, जिनका हवाला आपने प्रारंभ में बड़े ज़ोरों से दिया है? आपने पथ-प्रदर्शक रचनात्मक (?) आलोचना की ओर ही हाथ बढ़ाया है, और कवि के काव्य में सर्वत्र ही दूषण निकालते हुए संशोधन-विषयक सम्मतियाँ देने की कृपा की है। आरंभ में कुछ प्रशंसात्मक वाक्य तो आप अवश्य दे दिया करते हैं, परंतु अंत सदैव ही निंदात्मक रहता है, और गुप्तजी की कोई कृति आपके स्टैंडर्ड में (जिसका सम्यक् परिचय आपने हमें 'महाकवि हरिऔध' में स्पष्ट रूप से दे दिया है) नहीं आती। 'साकेत'-जैसी अमर कृति पर आपकी सम्मति देखिए—

"…साकेत में प्रकृति-वर्णन भी प्रचुर नहीं है। प्रकृति के लिये उन्माद का अनुभव करानेवाली पंक्तियों के हमें दर्शन नहीं मिलते। ईश्वर-भावना

का एक हलका विकास रामचंद्रजी के चित्रण में मिलता है, किंतु ईश्वर में लीन हो जाने का नशा साकेत के किसी पात्र में नहीं दिखाई पड़ता। लक्ष्मण, उर्मिला, भरत आदि पात्रों के द्वारा ईश्वर-भक्ति का एक आकर्षक रूप खड़ा किया जा सकता था; किंतु कवि ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। गुप्तजी के अधिकांश काव्यों का विषय समाज ही रहा है, और साकेत में भी वह ज्यों-का-त्यों बना रहा। इस क्षेत्र में भी कवि ने साकेत द्वारा वह विस्तृत, उपयागिता-पूर्ण संदेश नहीं दिया, जो हमारे वर्तमान युग की भूख को मिटा सके।"

संक्षेप में गिरीशजी की दूषित मनोवृत्ति सदा 'क्या नहीं है?' यही खोजने में रत रही है, और इसमें भी उनका दृष्टि-कोण विकार-ग्रस्त है। लेखक ने कवि के चिर-संचित यश पर धब्बे लगाने का व्यर्थ प्रयत्न किया है।

उधर श्रीसत्येंद्रजी का क्षुद्र प्रयास उतना ही मूल्यवान् है। आप वास्तव में 'साहित्य के एक ठोस विद्वान्' हैं। आपकी कृति में सर्वत्र ही संगीत, स्थिरता और सुरुचि के दर्शन होते हैं। आपके सभी निबंधों में गंभीर अध्ययन का प्रसाद मिलता है। सत्येंद्रजी की विचार-धारा में वांछित श्रद्धा और सहानुभूति का एक अंतःप्रवाह बह रहा है, और आपने सदैव कवि के दृष्टि-कोण को ही महत्त्व दिया है—कहीं भी अपनी निरर्थक सम्मतियों का भार नहीं लादा। उदाहरणार्थ 'गुप्तजी की शैली'-शीर्षक निबंध को लीजिए—उसमें आपने शब्दों, भावों और व्याकरण (वाक्य-संगठन) के विचार से भाषा, कथोपकथन (अभिनेयता), दृश्य-चित्रण, अलंकार आदि सभी आवश्यक शैली-अंगों का विस्तृत विवेचन तो किया ही है, साथ ही अन्य गूढ़ सौंदर्य-तत्त्वों की ओर भी 'वस्तु में आकर्षण लाने की शैलियाँ' नाम से यथार्थ संकेत कर दिया है। आपका 'वस्तु-विवेचन' लेख अपूर्ण होते हुए भी बड़े संगत आधार पर स्थित है, जिसमें आपने प्राप्त कथानकों में कवि द्वारा की हुई मौलिक उद्भावनाओं का विश्लेषण किया है। हाँ, उन्होंने यह न दिखलाकर कि सभी घटनाएँ किस प्रकार एक सूत्र में संबद्ध हैं, और कहाँ तक मुख्य कार्य की ओर अग्रसर होती हैं, एक बड़ी त्रुटि की है। आपकी परिपुष्ट विचार-धारा का परिचय हमें चौथे निबंध में मिलता है, जिसमें आपने कवि की कथा-वस्तु में उद्देश्य का अन्वेषण किया है।

सत्येंद्रजी में एक अस्फुट समालोचनात्मक प्रतिभा के दर्शन यों तो हमें सर्वत्र ही मिलेंगे, परंतु उनकी सूक्ष्मदर्शिता यदि देखनी हो; तो २६ पृष्ठ पर किए हुए उनके 'पुनरुक्ति-प्रकाश' के विवेचन पर दृष्टि-पात कीजिए। कहने की आवश्यकता नहीं कि लेखक को शब्दों के अंतर्बाह्य सौंदर्य का सम्यक् बोध है, और वह गहरे में प्रवेश कर मोती निकालने की कला से अभिज्ञ है। 'गुप्तजी की कला' अपूर्ण नहीं है, उसकी सबसे बड़ी अपूर्णता विस्तार की अपूर्णता है। जिस कवि ने अपनी कृतियों द्वारा भारती का इतना विस्तृत भांडार भर दिया हो, उसके लिये इतना संक्षिप्त विवरण सर्वथा अपर्याप्त है। पुस्तक का एक और बड़ा दोष यह है कि लेखक ने साकेत की अपेक्षा पंचवटी को अधिक महत्त्व दिया है। वास्तव में कवि के जीवन का प्रतिनिधि-ग्रंथ साकेत ही है। अस्तु।

अंत में मुझे पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्र-भाषा के सरस्वती-मंदिर में इस 'मौन साधक' की यह भेंट—उसकी श्रद्धा और दैन्य के कारण ही—सबसे पूर्व स्वीकृत की जायगी, और झूठी आस्तिकता का अभिमान करनेवाले व्यक्ति निराश ही लौटेंगे।

नगेंद्र (एम्० ए०)

× × ×

२. नीरव में

नीरवतामय जीवन - वन में,
सुख के, दुख के क्षण में,
भूल रहा तू मानव-तन में,
हृदय-रहित निज मन में।
जग में यहाँ न कुछ भी तेरा,
तम - ही - तम का घेरा;
मान रहा उद्भ्रांत क्षणों में
पर तू तेरा - मेरा।
विश्व-शांति के मधुर गान में,
प्रेम-भ्रांति के विकल ज्ञान में,
निर्ममतामय स्वार्थ - ध्यान में
क्यों भूला जग-विभव-भान में।
मैं तुझको, तू मुझको देखे,
मध्य न कोई आवे;
मैं तुझमें, तू मुझमें, प्यारे,
नीरव लय हो जावे।

(कुमारी) कंचनलता सव्वरवाल 'सरिता'
(प्रभाकर, विदुषी आदि)

× × ×

३. चाय की उपयोगिता तथा उसका आरंभिक इतिहास

पाठकों ने आजकल चाय का बहुत अधिक प्रचार होते देखा होगा। प्रत्येक छोटे-छोटे नगर, गाँव तथा बड़े-छोटे मेलों में चाय की चलती-फिरती दूकान आप अवश्य पाएँगे, जहाँ चाय लोगों को मुफ़्त पिलाई जाती है। पर उसका कुछ अपना इतिहास भी है।

'यूनाइटेड इंपायर' के पिछले जुलाई-अंक में सर एलफ़्रेड पिकफ़ोर्ड, प्रेसीडेंट इंटर-नेशनल टी-मार्केट एक्सपेंशन बोर्ड, ने चाय के इतिहास की रूप-रेखा खींची है। उनके अनुसार चाय सर्वप्रथम सन् १८३० ई० में आसाम के जंगलों में पाई गई थी। यह खोज उस समय की टी-कमेटी की, जो तत्कालीन गवर्नर - जनरल लॉर्ड विलियम कैवेंडिश वेंटिक द्वारा स्थापित हुई थी, रिपोर्ट के अनुसार की गई। इस कमेटी का काम इस चाय के पौधे को पूरा उपयोग में लाना था। उस समय के वैज्ञानिक इसकी खोज में तुरंत लग गए। पर उस समय इसका उपयोग उनकी समझ में नहीं आया, क्योंकि वे चीन के इसी तरह के पौधे के फ़ायदे उठाने में पड़े हुए थे। उन्होंने बहुत-सा रुपया व्यर्थ ही शत्रु चीन से पौधे का बीज मँगाने में तथा विद्वानों को उत्पादन-कार्य सीखने के लिये भेजने में ख़र्च कर दिया। अंत में सर्वप्रथम १८३९ में आसामी चाय के दो जहाज़ लंदन में नीलाम किए गए, और चाय के बड़े-बड़े व्यापारियों ने एक स्वर से स्वीकार किया कि यह चाय चीन की चाय से कहीं अच्छी और सस्ती है।

योरप में चाय का प्रवेश बहुत पहले ही हो गया था, और सन् १६५० तक उसने अपना स्थान एक पूर्वीय मूल्यवान् वस्तु के रूप में योरप में कर लिया था। डच लोगों ने आरंभ में इसके व्यापार से पूर्ण लाभ उठाया, पर सन् १६६९ तक इँगलिश ईस्ट-इंडिया-कंपनी ने इस व्यापार में हाथ बँटाना शुरू किया।

इँगलैंड में चाय का प्रवेश धनी-समाज में चार्ल्स द्वितीय की पोर्चुगीज़-महारानी मैथरीन ऑफ् ब्रैगैंज़ा द्वारा हुआ, जब उनकी शादी हुई। महारानी अपने साथ चाय भी लेती गईं। यह सन् १६६२ की बात है। इसके दो वर्ष बाद इँगलिश ईस्ट-इंडिया-कंपनी ने सम्राट् को कोई सेर-भर चाय ३० रुपए सेर के हिसाब से उपहार में दी।

कोई १७० वर्ष बाद ईस्ट - इंडिया - कंपनी का

चीन का चाय-कंट्रैक्ट खत्म हो गया, और फिर उन्हें यह व्यापार न मिला। फ़ौरन् ही चाय के लिये स्वर्ण-काल का आगमन हुआ। उस समय के जहाज़ों में चाय को योरप पहुँचाने की प्रतियोगिता शुरू हो गई, और इसके ले जाने के लिये ख़ास तरह के जहाज़ बनाए गए। प्रतिवर्ष इन प्रतियोगिताओं

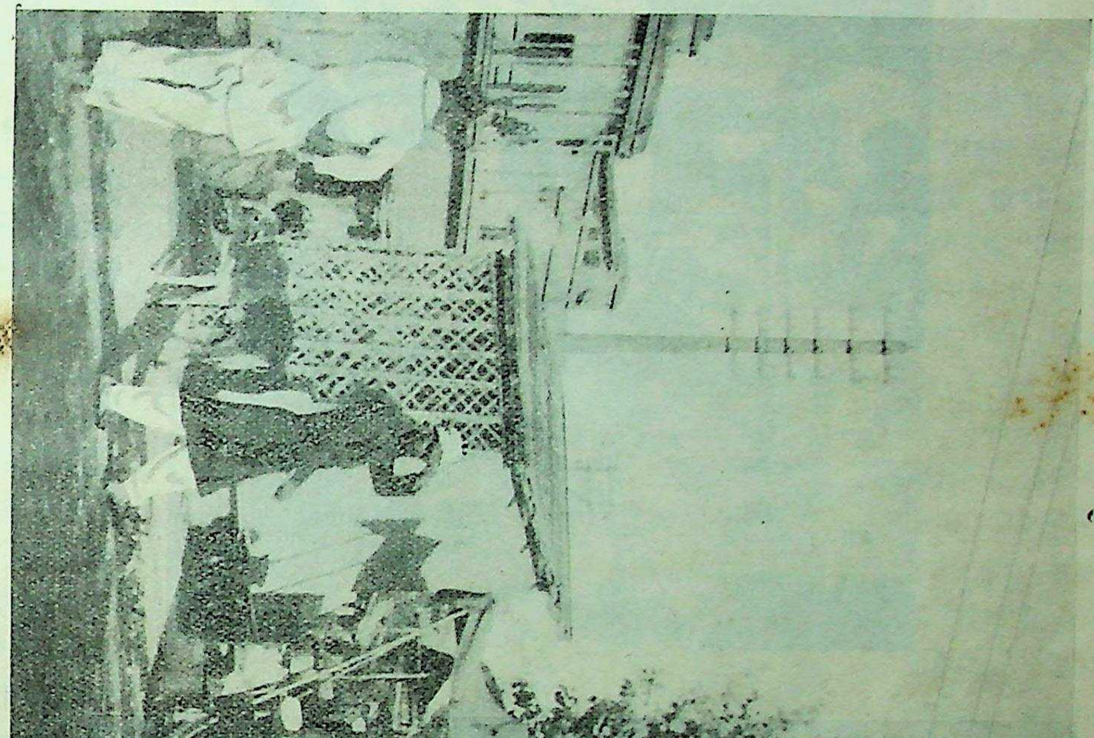

कानपुर में एक मंदिर के पास चाय-वितरण के लिये स्थायी चाय-स्टाल।

को पारितोषिक भी दिए जाने लगे, और इन प्रतियोगिताओं का महत्त्व भी बहुत बढ़ गया । पर सन् १८६६ में, स्वेज़ की नहर खुलने पर, यह प्रतियोगिता ख़त्म हो गई ।

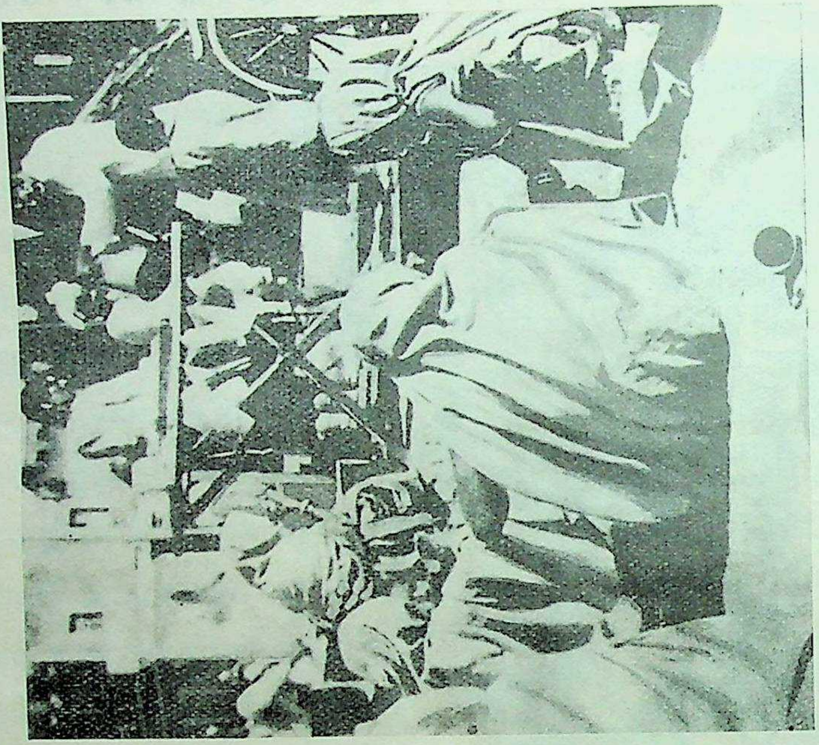

गया में मुफ़्त चाय पीनेवाली स्त्रियों का एक दृश्य ।

एक दक्षिणी ग्रामीण स्त्री, जो ७० वर्ष की अवस्था में भी प्रातःकालीन चाय बड़े चाव से पी रही है ।

आज भारत में लगभग ८,४०,००० एकड़ ज़मीन में चाय की खेती होती है, और कोई ४०,००,००,००० पौंड चाय प्रतिवर्ष पैदा होती है। इसके लाभ तथा व्यापार में भारतीयों का भी काफ़ी हाथ है, और इसका व्यापार देश-देशांतर में करके भारत को काफ़ी लाभ होता है। इधर इस व्यापार को अधिक विकसित करने के लिये भारतीय सरकार ने एक संस्था बना दी है, जो इंडियन टी-मार्केट-एक्सपैंशन-बोर्ड के नाम से काम कर रही है। इस संस्था का ध्येय भारतवासियों में चाय के गुण प्रकट करके उसका प्रचार बढ़ाना है। इसके सतत परिश्रम तथा उद्योग का परिणाम तो अभी से व्यापक है, यहाँ तक कि कुछ स्थानों में—जैसे बंबई, नागपुर, कलकत्ता में—लोग इसे पान के स्थान में व्यवहार करने लगे हैं, और उनके लिये चाय आवश्यक हो गई है। नागपुर में तो मैंने मेहतरों तथा भिक्षुओं को भी दिन में तीन-चार कप पीते देखा है।

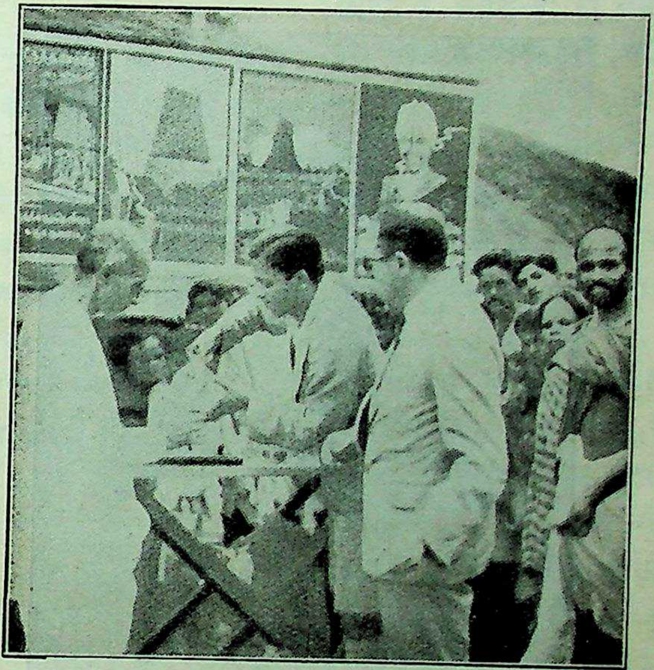

मदरास-प्रांत के सलेम-ज़िले में, जहाँ पहले ताड़ी की दूकान थी, अब चाय का स्टाल खुल गया है। मदरास-प्रांत के माननीय चीफ़ मिनिस्टर श्रीराजगोपालाचार्य स्वयं पहला चाय का प्याला पी रहे हैं।

परंतु चाय का असली गुण और लाभ तो एक और प्रकार से प्रकट होनेवाला है। और, यदि इसमें चाय सफल हुई (और आशा भी ऐसी ही है), तो भारत के लिये वह अतीव लाभकारी सिद्ध होगी, और इसका परिणाम यहाँ की जनता के लिये अत्यंत सुखकर होगा। मदरास-प्रांत के सलेम-ज़िले में माननीय श्रीराजगोपालाचार्य ने सर्वप्रथम शराब और ताड़ी का क़ानूनन् निषेध किया। तदनुसार वहाँ की चार दूकानें बंद कर दी गईं, और उनका स्थान लिया साफ़-सुथरे सजे हुए चाय के स्टालों ने, जो इंडियन टी-मार्केट-एक्सपैंशन-बोर्ड के द्वारा स्थापित किए गए थे। पहली ऑक्टोबर, १९३७ को श्रद्धेय श्रीराजाजी ने शराब-बंदी अनुष्ठान शुरू किया। ताड़ी के कुंज ग़ायब हो गए, और उनकी जगह आनंददायक चाय के प्यालों ने ली। श्रीराजाजी ने पहला चाय का प्याला स्वयं ख़रीदा, और उसके गुण पर व्याख्यान दिया। पहले ही पक्ष में कोई ५०,००० प्याले मुफ़्त दिलाए गए। बहुत-से ताड़ी पीनेवालों ने, जिन्होंने अपने जीवन में कभी

चाय नहीं पी थी, सर्वप्रथम चाय पी, और कोई ९०,००० स्त्री-पुरुषों ने चाय-पान किया। १५,००० चाय के पैसेवाले पैकेट बिके, और चाय बनाने के प्रदर्शन के समय २,५०० मनुष्य उपस्थित थे। प्रयत्न तो यह हो रहा है कि ताड़ी की जगह चाय ले ले। और, यह प्रयत्न सराहनीय भी है, क्योंकि चाय एकदम स्वदेशी है, और ताड़ी-पान के पाप को समूल नष्ट कर सकती है। आशा है, और छ प्रांतों में भी—जहाँ कांग्रेस-राज्य है, तथा शराब-बंदी शुरू होनेवाली है—यही चाय रिक्त स्थान की पूर्ति करेगी।

ज्योतिलाल भार्गव
(बी० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

४. बाबू जयशंकर 'प्रसाद'

इतना सुख ले पल-भर में
जीवन के अंतस्तल से—
तुम खिसक गए धीरे से,
रोते अब प्राण विकल-से।

(आँसू)

आज यह हिंदी-जगत् के लिये अत्यंत शोक का दिवस है कि जयशंकर 'प्रसाद'जी हम लोगों को छोड़कर सदैव के लिये चल दिए! काशीराज का एक चमकता हुआ तारा सदैव के लिये अस्त हो गया!

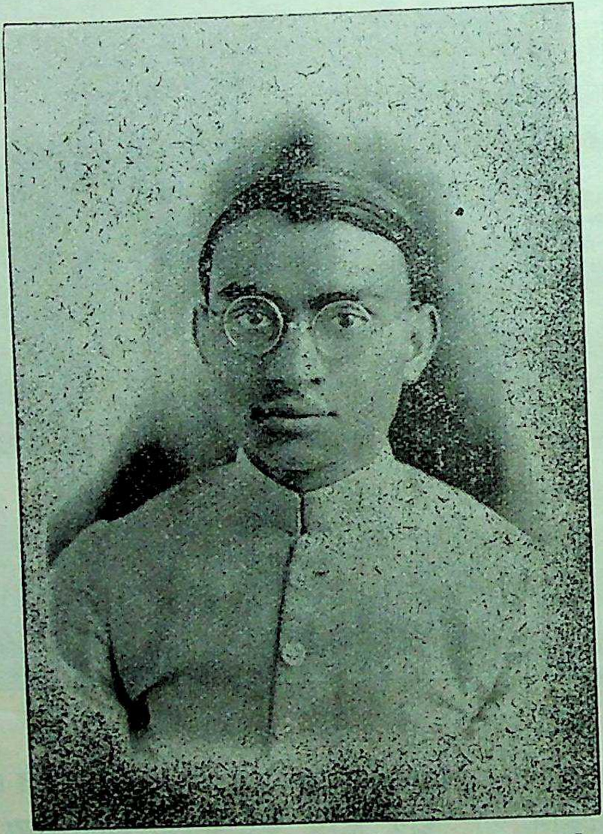

श्रीव्रजेंद्रनाथ श्रीवास्तव

श्रीयुत जयशंकर 'प्रसाद'जी का जन्म सं० १९४६ में, काशी के एक प्रसिद्ध तथा उच्च सद्वंश में, हुआ था। आपके पिता देवीप्रसादजी अपने समय में बनारस के सबसे विख्यात सुँघनी और तमाखू के व्यापारी थे, तथा सुँघनी साहु के नाम से विख्यात थे।

दुर्भाग्य-वश जिस समय होनहार 'प्रसाद'जी ने, क्वींस कॉलेज में, मिडिल तक अँगरेज़ी पढ़ पाई थी, आपके पूज्य पिता का स्वर्गवास हो गया। इस कारण आपने घर पर ही कई अध्यापक रखकर संस्कृत, अँगरेज़ी, फ़ारसी, उर्दू आदि में अच्छी योग्यता प्राप्त की। पर अभी संकट और दुःख के मेघ आपके ऊपर अपनी वर्षा करने के हेतु व्याकुलता के साथ मँडरा रहे थे। जिस समय आपकी आयु केवल सत्रह वर्ष की थी, आपके भाई की भी मृत्यु हो गई। इस दुर्घटना के कारण घर तथा व्यापार, सबका भार आप ही पर आ पड़ा। पर 'प्रसादजी', जो एक असाधारण मनुष्य थे, इससे तनिक भी न घबराए। उन्होंने बड़ी योग्यता से सब काम सँभाला, और अपनी पैत्रिक मर्यादा पर किसी प्रकार का भी आघात न लगने दिया। 'होनहार बिरवान के

होत चीकने पात ।' इस जंजाल में ग्रस्त रहकर भी 'प्रसाद'जी ने साहित्य के अनेक क्षेत्रों में कार्य-कलाप का क्रम निरंतर जारी रक्खा ।

जयशंकर'प्रसाद'जी सीधे-सादे और विचारशील पुरुष थे । उन्होंने घोर अध्ययन के पश्चात् भारत के प्राचीन इतिहास का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था । इसीलिये उन्होंने जो भी नाटक लिखे, वे सब इतिहास-संबंधी हैं—कौशांबी, चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य, स्कंदगुप्त आदि ।

प्रारंभ से अंत तक 'प्रसाद'जी की कहानियों, उपन्यासों, नाटकों और कविताओं में एक ही प्रवाह है । उनकी सरिता-रूपी भाषा मंद-मंद वायु-रूपी संस्कृत-शब्दों से लदी हुई बहती है । स्थान-स्थान पर उनकी भाषा दुरूह अवश्य हो गई है, पर बाबू जयशंकर'प्रसाद'जी की लेखनी से इससे कम आशा भी न करनी चाहिए । "संस्कृत-शब्दों से विभूषित 'प्रसाद'जी की शैली में संस्कृत-शैली के दोष नहीं हैं, न उसमें आवश्यकता से बड़े वाक्य हैं, और न लंबे-लंबे समस्त पद ।"

पंडित केदारनाथ पाठक का भी 'प्रसाद'जी पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा । यह केवल उन्हीं के संसर्ग का फल था कि 'प्रसाद'जी बँगला का अच्छा अध्ययन कर सके । बँगला की स्पष्ट छाप उनकी शैली पर दिखलाई देती है । उनकी कोई भी ऐसी रचना नहीं, जिसमें यह छाप विद्यमान न हो, पर किसी कोण से देखने पर भी वह बाहरी कदापि नहीं प्रतीत होती ।

गत एक वर्ष से 'प्रसाद'जी का स्वास्थ्य बिगड़ गया था । आपको क्षय-रोग हो गया था । जिस समय से उनको अपने रोग का ज्ञान हुआ, वह जीवन से हताश-से हो गए । उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया था कि उन्हें शरीर छोड़ना है, और जल्दी ही छोड़ना है । साधारण औषधियों का प्रयोग भी वह अपने इष्ट-मित्रों के कहने से ही करते थे । उनका कथन था कि यदि विश्वात्मा की यही क्रीड़ा है, तो उसकी क्रीड़ा पूर्ण हो—वह विजयी हो, मैं उसे निराश करने का प्रयास न करूँगा ।

हम लोग उनका समुचित आदर न कर सके, किस मुँह से क्षमा माँगें, और किस शरीर से प्रायश्चित्त करें । उनका मूल्य हिंदी-साहित्य न जान सका, और न पूर्ण रूप से उन्हें समझ ही सका । वह थी एक शुद्ध और पवित्र आत्मा ।

व्रजेंद्रनाथ श्रीवास्तव

बाँसुरी की तान !

इसका जादू-भरी तान सुनकर मित्रों ने मुझे घेर लिया । यह 'मोहिनी बाँसुरी नं० ५१' पीतल और काली पाइप से जोड़कर बनाई गई है, तभी तो इसकी आवाज़ मधुर और सुरीली है । प्रत्येक बाजे के साथ मिल जाती है, क्योंकि ट्यूंड की हुई है । स्कूल और कॉलेजों में इसके बैंड तैयार हो रहे हैं । सीधी बजती है, इसके २ टुकड़े करके पाकेट में भी रख सकते है । मूल्य १।), डाक-ख़र्च २ तक ।≡), ३ मँगाने से ख़र्चा माफ़ । 'हारमोनियम-तबला-बाँसुरी-मास्टर' पुस्तक १)

नाच और गाने

की महफ़िल में आपकी खुशामद कोई क्यों करेगा ? जब कि आप एक गाना तक नहीं गा सकते ! इस कमी की पूर्ति के लिये मासिक पत्र 'संगीत' निकला है । इससे आपको घर बैठे संगीत-शिक्षा मिलेगी । २०० पृष्ठ के विशेषांक (विष्णुदिगंबर-अंक)-सहित वार्षिक मूल्य २) है । नमूना मुफ़्त मँगा देखिए । 'म्यूज़िक-मास्टर' पुस्तक भी सातवीं बार छप गई है । इसमें एक नए ढंग से हारमोनियम, तबला, बाँसुरी बजाना बताया गया है, तभी तो थोड़े समय में १२००० बिक चुकी है ! मूल्य १)

पता—गर्ग ऐंड कंपनी, संगीतशाला, १७, हाथरस (यू० पी०)

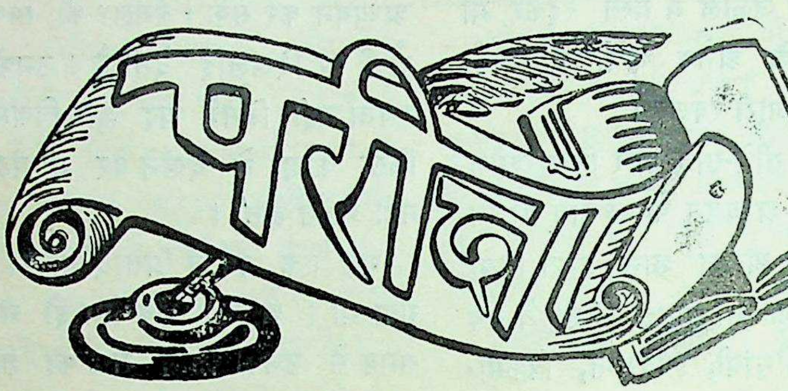

फल-संरक्षण—लेखक, डॉ० गोरखप्रसाद डी० एस्-सी० ; प्रकाशक, विज्ञान-परिषद्, प्रयाग ; पृष्ठ-संख्या १७५; १७ चित्र ; कपड़े की सुंदर जिल्द ; मूल्य १)

हमारे इस प्रांत में बहुत दिनों से फल-संरक्षण की चर्चा चल रही है। फल-संरक्षण-पद्धति का अमेरिका में बड़ा प्रचार है। एक ऋतु के फल दूसरी ऋतु तक सुरक्षित रखने की बहुत-सी वैज्ञानिक विधियाँ निकाली गई हैं। भारतवर्ष के आम, अमरूद और बहुत-से फल इन विधियों द्वारा सुरक्षित रखकर देश-विदेशों में बेचे जा सकते हैं। बड़े हर्ष की बात है कि डॉ० गोरखप्रसादजी ने इस संबंध में एक बड़ी उपयोगी पुस्तक लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक में फलों के सड़ने के कारण, डिब्बाबंदी का व्यवसाय, फल और तरकारियों को सुरक्षित रखने की विधियाँ, डिब्बे में बंद करने की विधि का विस्तार, जेली, जैम, मारमलेड, मुरब्बा, सूखे फल आदि, सभी विषयों पर उचित सामग्री दी गई है। इस पुस्तक में ऐसी विधियाँ दी गई हैं, जो सभी आसानी से उपयोग में ला सकते हैं। योग्य लेखक ने अपने अनुभव से बहुत-सी बातें लिखी हैं, जिससे पुस्तक का महत्त्व और बढ़ जाता है। पुस्तक सरल और सुगम है, और फल-संरक्षण-कोर्स के विद्यार्थियों एवं व्यापारियों के बड़े काम की चीज़ है।

सत्यप्रकाश (डी० एस्-सी०)

× × ×

युगांत—रचयिता, कविवर श्रीसुमित्रानंदनजी पंत; प्रकाशक, इंद्र-प्रिंटिंग वर्क्स, अलमोड़ा; छपाई-सफ़ाई उत्तम; मूल्य ॥।)

'युगांत' पंतजी की नवीन कविताओं का संग्रह है। आरंभ में उनके जीवन की छोटी-सी चित्र-रेखा दी गई है। प्रायः कविताएँ सन् ३५ और ३६ की लिखी हुई हैं। कुछ साहित्यिकों का कहना है कि पंतजी की लेखनी पल्लव तथा गुंजन लिखने के बाद 'युगांत' में कुछ शिथिल-सी पड़ गई है, लेकिन उनका यह कथन ठीक नहीं।

'युगांत' में कवि कविता के नए क्षेत्र में अवतरित हुआ है। उसकी विचार-धारा पहले से विचित्र है। वह अब रहस्यवाद से हटकर यथार्थवाद की ओर झुक रहा है। यही कारण है, लोग 'युगांत' को ठीक-ठीक नहीं समझ रहे।

पल्लव, गुंजन और 'युगांत' कवि की पृथक्-पृथक् विचार-धाराओं के द्योतक हैं। उनमें साम्य ढूँढ़ना और एक दूसरे को घटकर बताना भूल होगी।

मुझे तो 'युगांत' पसंद आया। यद्यपि यह और अच्छा होता, यदि कवि ने इसमें अपने दृष्टिकोण को और भी विस्तृत किया होता।

कवि ने 'युगांत' में जो Term लिया है, उसमें यदि वह और स्पष्ट, परिष्कृत और परिपूर्ण होता, तो ज़्यादा अच्छा था। 'युगांत' में कवि यथार्थवाद की ओर झुक रहा है, लेकिन उसकी दृष्टि रहस्यवाद के आवरण से मुक्त नहीं हो सकी।

उदाहरणार्थ 'बापू के प्रति'वाली कविता की ये पंक्तियाँ पढ़ें—

तुम मांस-हीन, तुम रक्त-हीन,
हे अस्थि-शेष ! तुम अस्थि-हीन,
तुम शुद्ध-बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिर पुराण, हे चिर नवीन।

आगे बढ़कर कवि फिर उन्हीं के लिये ऐसा कहता है—

तुम मांस, तुम्हीं हो रक्त-अस्थि।

इस प्रकार के पृथक्-पृथक् दो वर्णन करके कवि अपने लक्ष्य से दूर हट गया। गांधीजी को कभी मांस-हीन और कभी मांस-युक्त कहना यथार्थ वर्णन नहीं हुआ। यह अधिक समीचीन होता, यदि कवि ने उनके जीवन के उद्देश्यों तथा कार्यों को सामने रखकर उनका चित्रण एक पुरुषोत्तम के समान किया होता। किसी वस्तु-विशेष का वर्णन करते हुए वास्तविकता से दूर हो जाना और उसमें Absolute का चिंतन करने लगना एक सिद्ध कवि के लिये उचित नहीं। संग्रह में ऐसे कई स्थल हैं, जहाँ कवि अपने नवीन लक्ष्य से अलग हट गया है, परंतु फिर भी उस में पंतजी का नवीन उद्देश्य स्पष्ट है। उनकी सब कविताएँ अच्छी हैं, और कुछ तो बहुत ही सुंदर।

ताज के ऊपर लिखते हुए जहाँ अन्य कवियों ने उसे प्रेम-भावना के रूप में ही देखा है, वहाँ पंतजी उसे अन्य रूप में देखते हैं। देखिए, कितनी मार्मिक पंक्तियाँ हैं—

हाय ! मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन,
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन।
संग-सौध में हो शृंगार मरण का शोभन,
नग्न, क्षुधातुर, वास-विहीन रहें जीवित जन।

* * *

प्रेम-अर्चना यही, करें हम मरण को वरण,
स्थापित कर कंकाल भरें जीवन का प्रांगण।
शव को दें हम रूप, रंग, आदर मानव का,
मानव को हम कुत्सित चित्र बना दें शव का।
भूल गए हम जीवन का संदेश अनश्वर,
मृतकों के हैं मृतक, जीवितों का है ईश्वर!

कवि की वाणी कहीं-कहीं कितनी ओजस्विनी है—

गर्जन कर मानव-केसरि ! मर्मस्पृह गर्जन,
जग जावे जग में फिर से सोया मानवपन!

* * *

गा कोकिल, बरसा पावक-कण !
नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण-पुरातन,
ध्वंस-भ्रंस जग के जड़ बंधन,
पावक-पग धर आवे नूतन,
हो पल्लवित नवल मानवपन।

'प्रथम मिलन' पर लिखते हुए कवि की लेखनी रस में डूब गई है—

मंजरित आम्र-वन-छाया में
हम प्रिये, मिले थे प्रथम बार,
ऊपर हरीतिमा नभ - गुंजित,
नीचे चंद्रातप वनस्फार।
तुम मुग्धा थीं, अति भाव-प्रवण,
उकसे थे अँबियों-से उरोज,
चंचल, प्रगल्भ, हँसमुख, उदार,
मैं सलज, रहा था तुम्हें खोज।
छनती थी ज्योत्स्ना शशि-मुख पर,
मैं करता था मुख-सुधा-पान—
कूकी थी कोकिल, हिले मुकुल,
भर गए गंध से मुग्ध प्राण!

तुमने अधरों पर धरे अधर,
मैंने कोमल वपु भरा गोद,
था आत्मसमर्पण सरल, मधुर,
मिल गए सहज मारुतामोद !
मंजरित आम्र-द्रुम के नीचे
हम प्रिये, मिले थे प्रथम बार,
मधु के कर में था प्रणय-बाण,
पिक के उर में पावक-पुकार।

संग्रह में एक गीत मुझे बहुत पसंद है, पाठक सुनें—

बाँधोऽ, छवि के नव बंधन बाँधो !
नव-नव आशाऽकांक्षाओं में
तन-मन-जीवन बाँधो।
छवि के नव—
भाव रूप में, गीत स्वरों में,
गंध कुसुम में, स्मिति अधरों में,
जीवन की तमिस्र वेणी में,
निज प्रकाश-कण बाँधो।
छवि के नव—
सुख से दुख औ' प्रलय से सृजन,
चिर आत्मा से अस्थिर रजतन,
महामरण को जग-जीवन का
दे आलिंगन बाँधो।
छवि के नव—
बाँधो जलनिधि लघु जल-कण में,
महाकाल को कवलित क्षण में,
फिर-फिर अपनेपन को मुझमें
चिर जीवन-धन ! बाँधो।
छवि के नव—

अंत में मैं यही कहूँगा कि लोग पंतजी को समझने का प्रयत्न करें। उनका यह संग्रह पल्लव अथवा गुंजन से किसी प्रकार कम नहीं। इसमें उनकी नवीन परिवर्तित विचार-धारा का संकेत-मात्र है। आधुनिक प्रकाशित काव्य-संग्रहों में पंतजी का 'युगांत' अपना पृथक् स्थान रखता है। मैं ऐसी मनोरम कृति का हृदय से आदर करता हूँ।

× × ×

कालिंदी (काव्य-संग्रह)—लेखक, श्रीप्रणयेश शुक्ल; प्रकाशक, श्रीरामदयाल-प्रकाशचंद्र चौक, कानपुर; पृष्ठ-संख्या ७९ ; मूल्य ॥=)

हिंदी के नवीन कवियों में प्रणयेशजी एक विशेष प्रतिभाशाली कवि हैं। उनके इस संग्रह में २४ कविताएँ हैं। सब-की-सब सुंदर हैं। परंतु 'वासंती', 'चित्रलेखा', 'उद्भ्रांत', 'अयि तरंगिनि', 'नाविक से' और 'जीवन गान', ये कविताएँ अधिक अच्छी बन पड़ी हैं। सुंदर भावों को कवि ने अपनी सरल भाषा में अंकित किया है। देखिए—

ले जीवन-घट कर में डोरी, उन पर फंदा डाल,
जीवन के स्थिर शून्य सदन में करने को भूचाल।
जब आती हो तुम पनघट पर लेता है जग साँस,
प्यासा अमृत पान कर बेसुध हो जाता तत्काल।

* * *

गगन पट पर बादलों के रंग में,
अचिर विद्युत्-तूलिका ले संग में,
सरलता से विश्व-छवि आकर किए—
स्वप्न-संगिनि मुग्ध मलय तरंग में,
ज्ञात होती नवप्रभा की मित्र-सी,
चित्रलेखा चित्र-चित्रित चित्र-सी।

इत्यादि-इत्यादि।

इस संग्रह में प्रणयेशजी की कविता मुझे

बहुत पसंद आई। सहृदय पाठकों को चाहिए कि पुस्तक खरीदकर इसका आनंद लें।

× × ×

शंखनाद (काव्य-संग्रह)—लेखक, श्रीसाहित्यरत्न सुधींद्र बी० ए०; प्रकाशक, प्रलय-पुस्तकमाला चार विश्वबंधु भारती मंदिर कोटा; मूल्य ॥)

सुधींद्रजी का संग्रह अच्छा है। उन्होंने अच्छी कविता लिखने की कोशिश की है। 'क़ैदी और होली'-नामक कविता अच्छी बन पड़ी है।' इसकी दो-चार पंक्तियाँ देखिए—

इस आधुनिक कृष्ण-मंदिर में
होली कहाँ, गुलाल कहाँ?
जलती है प्रतिक्षण प्रिय होली
प्राणों की विकराल यहाँ।
आँखों की पिचकारी में है भरा
रक्त जल लाल यहाँ
प्रिये! उधर तुम हो वियोगिनी,
मैं वियोग बेहाल यहाँ।

पुस्तक छोटी, किंतु सुंदर है।

'उमेश'

× × ×

मनहर वीरज्योति—लेखक, श्रीरसिकेंद्रजी; प्रकाशक, रसिकेंद्र-पुस्तकालय, कालपी (यू० पी०); मूल्य सजिल्द १।), अजिल्द ॥।)

रसिकेंद्रजी हिंदी के पुराने कवियों में एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। इनकी प्रतिष्ठा तो उसी समय हो गई थी, जब आपने गंगा-पुस्तकमाला से प्रकाशित धारावाहिक काव्य 'आत्मार्पण' लिखा था। कदाचित् ऐसी ओजमयी, वीर-रस की कविता आधुनिक काल में नहीं लिखी गई है। अस्तु।

मनहर वीरज्योति आपके यदा-कदा लिखित कवित्तों का संग्रह है। इस संग्रह में प्रायः सभी विषयों के छंद हैं, जिनमें सभी रसों का समावेश है। पर मुझे तो आपकी वीर-रस की कविताएँ ही अधिक प्रिय जान पड़ीं। प्रारंभ में सनेहीजी-ऐसे काव्य-मर्मज्ञ की भूमिका है, और उन्हीं के शब्दों में "पुस्तक की भाषा सरल तथा सुबोध है। अर्थालंकारों और शब्दालंकारों की भी कमी नहीं। इन रचनाओं के लिये आपने घनाक्षरी-छंद (मनहरन) चुना है। यह छंद हिंदी में इतना प्रचलित है कि इसका नाम ही कवित्त (कवित्व) प्रसिद्ध हो गया है। अब से पचास वर्ष पहले तो यह दशा थी कि जो कवि घनाक्षरी की रचना में असमर्थ हो, उसे कवि मानने में लोग संकोच करते थे। इस छंद को सकड़ों वर्ष में सैकड़ों कवियों ने ऐसा माँजा है कि अब उनसे आगे बढ़ना तो दूर की बात है, इसे सफलता के साथ निभा ले जाना ही कमाल की बात है। इसकी बंदिश में जहाँ ज़रा भी ढीलापन आया कि मज़ा किरकिरा हो जाता है, और कवि की कलई भी खुल जाती है।" इस पुस्तक में कोमल-कांत पदावली की तलाश तो मूर्खता ही होगी। इसमें तो ओजस्विनी भाषा में वीर-रस के फ़ुहारे छूटते दिखाई देते हैं। मैं सनेहीजी के विचारों से सर्वथा सहमत हूँ।

परंतु एक विनती मेरी भी रसिकेंद्रजी से है। मेरे विचार से फुटकर कवित्त लिखने से कोई लाभ नहीं। ऐसे लाखों छंद हमारे भारत में विना उपयोग नष्ट हो गए हैं। हमारे यहाँ महाकाव्यों की कमी है। रसिकेंद्रजी में प्रतिभा है, और है कौशल। क्यों नहीं आप हमारे यहाँ के महाराना रंजीतसिंह, प्रताप, शिवाजी, लक्ष्मीबाई आदि पर वीर-रसमय काव्य-धारा बहाकर अपने को तथा उन महात्माओं को अजर-अमर भाषा में पिरो देते? देश को इसकी आवश्यकता है, और हमारे अन्यतम कवियों का यह कर्तव्य है।

छपाई-सफ़ाई गुप्तजी के प्रेस के अनुरूप ही सुंदर है। पुस्तक संग्रह योग्य है।

ज्योतिलाल भार्गव
(बी० ए०, एल्-एल० बी०)

नए फूल

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं । पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'संसार की समाज-क्रांति और हिंदुस्तान' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीडॉ० गजानन श्रीपत खरे ; मूल्य १।।)

(२) 'समाजवाद' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीसंपूर्णानंद ; मूल्य १।।)

(३) 'सौंदर्य-विज्ञान' (काम-शास्त्र)—लेखक, श्रीहरिवंशसिंहजी शास्त्री ; मूल्य ।।।)

(४) 'सुहाग' (काव्य)—लेखक, श्री-महेश्वरीसिंहजी 'महेश' एम्० ए० ; मूल्य ।।)

(५) 'विजयी पुरुष' (नवयुवकोपयोगी)—अनुवादक, श्रीकपिलदेवजी उपाध्याय ; मूल्य ।-)

(६) 'निर्झरिणी' (काव्य)—लेखिका, श्री-सूर्यदेवी दीक्षित 'उषा' ; मूल्य १)

(७) 'मीठी-मीठी कहानियाँ' (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीबैजनाथ केडिया ; मूल्य ।=)

(८) 'आदर्श निबंध' (निबंध) लेखक, श्रीउपेंद्रशंकर द्विवेदी कविभूषण ; मूल्य ।।।)

(९) 'अमर-कीर्ति' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीगंगाधर शर्मा साहित्य-भूषण ; मूल्य १)

(१०) 'कल्लोलिनी' (काव्य)—लेखक, श्री-पं० जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी' ; मूल्य २)

(११) 'प्रेम-संगीत' (काव्य)—लेखक, श्री-भगवतीचरण वर्मा ; मूल्य १।।)

(१२) 'शुक-पिक' (काव्य)— लेखिका, श्रीमती तारा पांडेय ; मूल्य ।।।)

(१३) 'त्याग-पत्र' (उपन्यास)—लेखक, श्रीजैनेंद्रकुमार ; मूल्य १)

(१४) 'साहित्य-शिक्षा' (निबंध) — संपादक, श्रीपदुमलाल बख्शी और हेमचंद्र मोदी ; मूल्य १।।)

(१५) 'हिंदी-गद्य-निर्माण' — लेखक, श्रीलक्ष्मीधर वाजपेयी ; मूल्य १।।)

(१६) 'कबीर-पदावली' (काव्य) — लेखक, श्रीरामकुमार वर्मा एम्० ए० ; मूल्य ।।।)

(१७) 'कवितावली' (काव्य)—लेखक, श्री-माताप्रसादजी गुप्त एम्० ए० ; मूल्य १)

चतुर्थ सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

३००) का पुरस्कार लीजिए !

१७५) शुद्ध पूर्ति पर

१२५) न्यूनतम अशुद्धियों पर

नियम—(१) पहेली-नं० ४ की पूर्ति करनेवालों को प्रथम पारितोषिक—संपूर्णतया शुद्ध पूर्ति पर १७५)। द्वितीय पारितोषिक—न्यूनतम अशुद्धियों पर १२५)। जो पूर्ति बंद करके रख दी गई है, उससे जो पूर्ति मिलेगी, वही सही मानी जायगी।

(२) पहेली के रिक्त कोष्ठों में ऐसे अक्षर लिखने चाहिए, जिनसे 'निर्दिष्ट शब्द' बन जाय। उसका संकेत अंक-परिचय में दिया गया है। प्रत्येक शब्द उस घर से आरंभ होता है, जिस पर कोई-न-कोई अंक लगा हुआ है, और इस चिह्न (■) के पहले समाप्त होता है। अंक-परिचय में ऊपर से नीचे और बाएँ से दाहनी ओर पढ़े जानेवाले शब्दों के अंक अलग-अलग कर दिए गए हैं।

(३) प्रत्येक वर्ग की पूर्ति स्याही से की जाय। पेंसिल से की गई पूर्तियाँ स्वीकार न की जायँगी। अक्षर सुंदर, सुडौल और छापे के सदृश स्पष्ट लिखने चाहिए। जो अक्षर पढ़ा न जा सकेगा, अथवा बिगाड़कर या काटकर दूसरी बार लिखा गया होगा, वह अशुद्ध माना जायगा।

(४) प्रतियोगिता में शामिल होने के लिये जो फ़ीस ।।) वर्ग के ऊपर छपी है, देनी होगी। फ़ीस टिकटों या मनीऑर्डर द्वारा या सुधा-पहेली-प्रतियोगिता के प्रवेश-शुल्क-पत्र द्वारा भेजी जा सकती है। इन प्रवेश-शुल्क-पत्रों की किताबें हमारे कार्यालय से २) में मँगाई जा सकती हैं। २) की किताब में ४ आठ आने मूल्य के पत्र बँधे हैं। एक ही कुटुंब के अनेक व्यक्ति, जिनका पता-ठिकाना भी एक ही हो, एक ही मनीऑर्डर द्वारा अपनी-अपनी फ़ीस भेज सकते हैं, और उनकी वर्ग-पूर्तियाँ और टिकट भी एक ही लिफ़ाफ़े या पैकेट में भेजे जा सकते हैं। टिकट, मनीऑर्डर और वर्ग-पूर्तियाँ "मैनेजर सुधा, पहेली-प्रतियोगिता-विभाग लखनऊ" के पते से आनी चाहिए।

(५) लिफ़ाफ़े में वर्ग-पूर्ति के साथ मनीऑर्डर की रसीद या प्रवेश-शुल्क-पत्र नत्थी होकर आना अनिवार्य है। रसीद या प्रवेश-शुल्क-पत्र न होने पर वर्ग-पूर्ति की जाँच न की जायगी। लिफ़ाफ़े की दूसरी ओर अर्थात् पीठ पर मनीऑर्डर भेजनेवाले का नाम और पूर्ति-संख्या लिखनी आवश्यक है। पूर्ति यथासंभव रजिस्ट्री से भेजनी चाहिए। सादे लिफ़ाफ़ों में भेजनेवाले व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी पर ऐसा कर सकते हैं।

(६) किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह जितनी पूर्तियाँ भेजना चाहे, भेजे। किंतु प्रत्येक वर्ग-पूर्ति ऑक्टोबर, नवंबर या दिसंबर की 'सुधा' में छपे हुए फ़ार्म पर होनी चाहिए। इस प्रतियोगिता में एक व्यक्ति को केवल एक ही इनाम मिल सकता है। वर्ग-पूर्ति की फ़ीस किसी भी दशा में नहीं लौटाई जायगी।

(७) जो वर्ग-पूर्ति १० मार्च तक नहीं पहुँचेगी, जाँच में नहीं शामिल की जायगी। स्थानीय पूर्तियाँ १० मार्च को ६ बजे तक बक्स में पड़ जानी चाहिए, और दूर के स्थानों से भेजनेवालों की पूर्तियाँ २ दिन बाद तक ली जायँगी। मैनेजर 'सुधा' का निर्णय सब प्रकार से और प्रत्येक दशा में मान्य होगा। शुद्ध वर्ग-पूर्ति की प्रतिलिपि फ़रवरी-मास की 'सुधा' में प्रकाशित होगी। इसे पूर्ति करनेवाले सज्जन मँगाकर अपनी वर्ग-पूर्ति की शुद्धता-अशुद्धता जाँच लें।

वर्ग-नं० ४ **सुधा-पहेली** फ़ीस ।।)

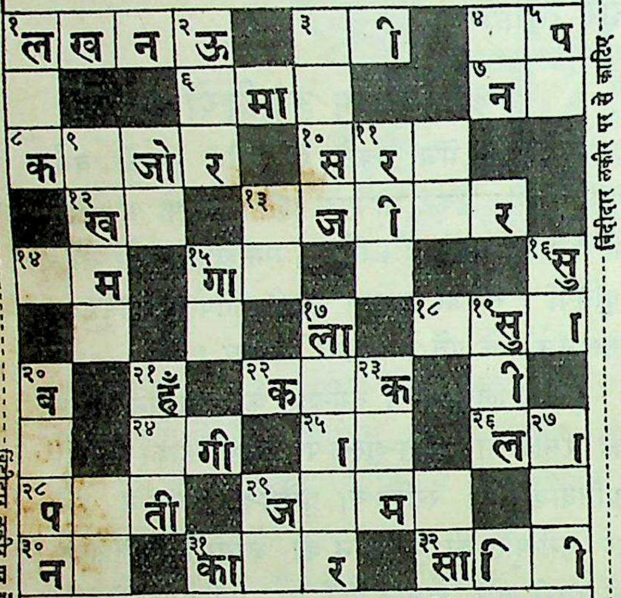
ल ख न ऊ ा प
मा न
क जो र स र
ख ज ा र
म गा सु
ला सु ा
ब हँ क क ा
गी ा ल ा
प ती ज म
न का र सा ि ा

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा ।

नाम

पूर्ति-नं० पता

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

वर्ग-नं० ४ **सुधा-पहेली** फ़ीस ।।)

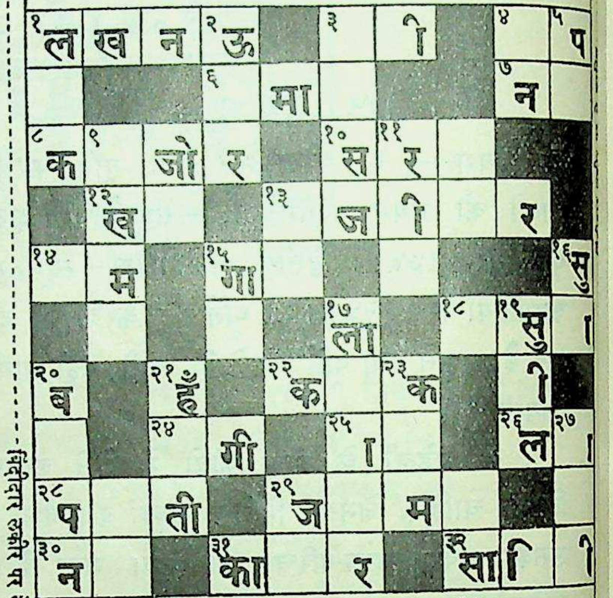
ल ख न ऊ ा प
मा न
क जो र स र
ख ज ा र
म गा सु
ला सु ा
ब हँ क क ा
गी ा ल ा
प ती ज म
न का र सा ि ा

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा ।

नाम

पूर्ति-नं० पता

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

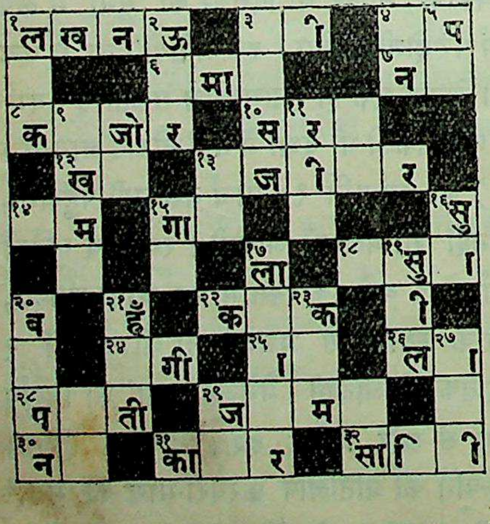
ल ख न ऊ ा प
मा न
क जो र स र
ख ज ा र
म गा सु
ला सु ा
ब हँ क क ा
गी ा ल ा
प ती ज म
न का र सा ि ा

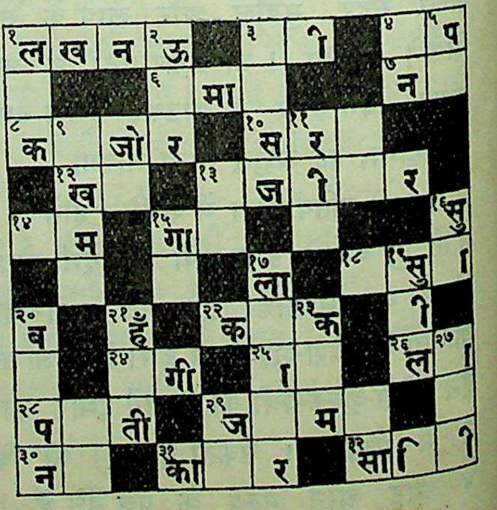
ल ख न ऊ ा प
मा न
क जो र स र
ख ज ा र
म गा सु
ला सु ा
ब हँ क क ा
गी ा ल ा
प ती ज म
न का र सा ि ा

अपनी याददाश्त के लिये वर्ग-नं० ३ की पूर्तियों की प्रतिलिपि यहाँ कर लीजिए,
और निर्णय प्रकाशित होने तक अपने पास रखिए ।

वर्ग-नं० ३ की शुद्ध पूर्ति

नीचे दी जा रही है । पारितोषिक जीतनेवालों के नाम भी अन्यत्र प्रकाशित किए जा रहे हैं—

१ क	२ म	ला	प	३ ति	■	४ रा	ह	■	५ ज
६ ल	म	धी	■	७ त	ड़ा	ग	■	८ ल	ड़ी
९ क	ता	■	१० क	ली	■	■	११ क	ब	■
■	■	१२ घा	ट	■	■	१३ अ	सा	■	१४ दु
१५ ग	१६ ट	क	ना	■	१७ स	च	■	१८ चा	ह
■	१९ स	र	■	२० ग	म	क	ना	■	■
२१ व	र	■	२२ ता	ला	■	न	■	२३ म	न
च	■	२४ घ	न	ना	२५ द	■	२६ सि	य	■
२७ न	२८ ह	र	■	■	२९ म	ल	या	नि	३० ल
■	ठ	■	३१ र	ज्ञ	न	■	र	■	ट

जाँच का फ़ार्म

यदि आपको यह संदेह हो कि आप भी इनाम पाने-वालों में से एक हैं, पर आपका नाम नहीं छपा है, तो १) फ़ीस के साथ नीचे दिए फ़ार्म की ख़ानापुरी करके १ मार्च तक भेजें । आपकी पूर्ति की हम फिर से जाँच करेंगे । यदि आपकी पूर्ति आपकी सूचना के अनुसार ठीक निकली, तो पुरस्कारों में से जो आपकी पूर्ति के अनुसार होगा, वह फिर से बाँटा जायगा, और आपकी फ़ीस लौटा दी जायगी । पर यदि ठीक न निकली, तो फ़ीस लौटाई न जायगी । जिनका नाम छप चुका है, उन्हें इस फ़ार्म के भेजने की ज़रूरत नहीं ।

वर्ग-नं० ३ (जाँच का फ़ार्म)

मैंने सुधा में छपे वर्ग-नं० ३ के आपके उत्तर से अपना उत्तर मिलाया । मेरी पूर्ति

नं० ....में
- कोई अशुद्धि नहीं है
- एक अशुद्धि है
- दो अशुद्धियाँ हैं
- ३, ४, ५, ६ हैं

मेरी पूर्ति पर जो पारितोषिक मिला हो, उसे तुरंत भेजिए । मैं १) जाँच की फ़ीस भेज रहा हूँ ।

हस्ताक्षर ————————

पता ————————

इस पते को काटकर लिफ़ाफ़े पर चिपका दीजिए ।

मैनेजर 'सुधा'
(पहेली-प्रतियोगिता-विभाग)
लखनऊ

सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

में आप
निःशुल्क भाग ले सकते हैं !

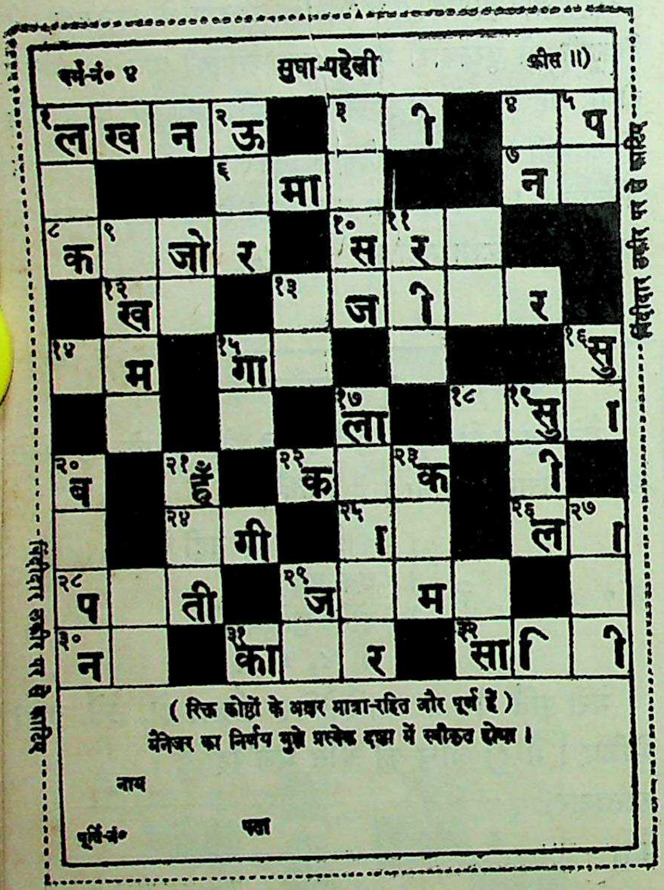

वर्ग-नं० ४ सुधा-पहेली फ़ीस ॥)

१ ल	ख	न	२ ऊ	■	३	ा	■	४	५ प
	■	■	६	मा		■	■	७ न	
८ क	९	जो	र	■	१० स	११ र		■	■
■	१२ ख		■	१३	ज	ा		र	■
१४	म	■	१५ गा		■		■	■	१६ सु
■		■		■	१७ ला	■	१८	१९ सु	ा
२० ब	■	२१ हैं	■	२२ क		२३ क	■	ा	■
	■	२४	गी	■	२५ ा		■	२६ ल	२७ ा
२८ प		ती	■	२९ ज		म		■	
३० न		■	३१ का		र	■	३२ सा	ि	ा

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा ।

नाम

पूर्ति-नं० पता

निर्दिष्ट लकीर पर से काटिए

निर्दिष्ट लकीर पर से काटिए

सूचना—

वर्ग-पूर्तियाँ भेजते समय नीचे दिया कूपन काट-कर लिफ़ाफ़े पर (पते की जगह) चिपका दीजिए ।

मैनेजर 'सुधा'
(पहेली-प्रतियोगिता-विभाग)
लखनऊ

कैसे ?

जनवरी-मास की 'सुधा' में प्रकाशित पहेली-प्रतियोगिता-नं० ४ में जो देवी या सज्जन (अकेले और एक ही नाम से) ३ पूर्तियाँ और उनका प्रवेश-शुल्क १॥) नियमानुसार भेज देंगे, वे साथ में इस पृष्ठ पर दिए हुए वर्ग पर एक पूर्ति निःशुल्क भेजने के भी अधिकारी होंगे । ऐसी निःशुल्क भेजी जानेवाली पूर्ति अन्य ३ पूर्तियों-सहित एक ही लिफ़ाफ़े में भेजनी चाहिए ।

ध्यान रहे—

भिन्न-भिन्न नामों से भिन्न व्यक्तियों द्वारा (चाहे वे एक ही परिवार के क्यों न हों) भेजी गई पूर्तियों के विषय में उपर्युक्त नियम लागू न होगा, और उनकी भेजी हुई कोई भी पूर्ति निःशुल्क स्वीकार न की जायगी ।

इस नियम से लाभ उठाइए । यह किसी भी पत्रिका में नहीं है !

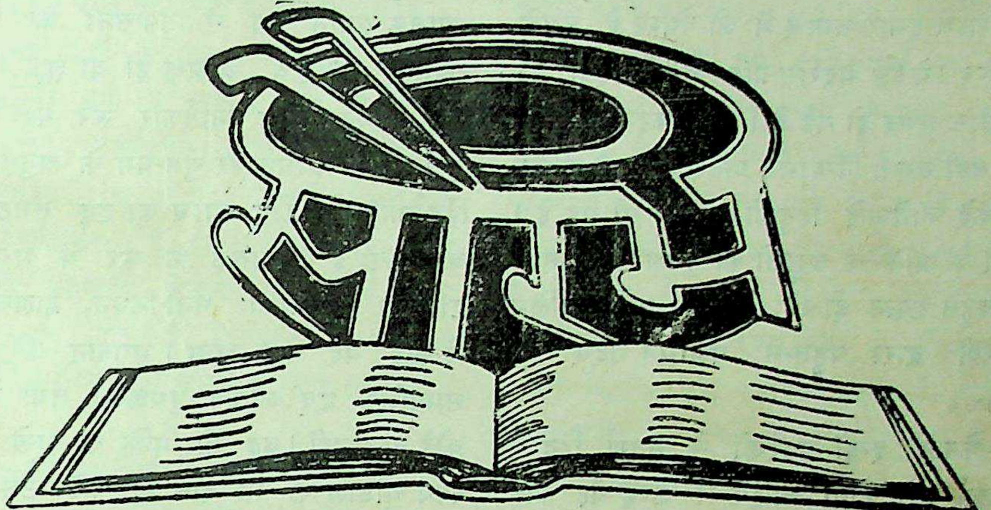

[संपादकीय विचार]

१. गुरुवयूर-मंदिर का सत्याग्रह

अभी हाल में ही मदरास-प्रांत के गुरुवयूर-नामक स्थान में मंदिर-प्रवेश-सम्मेलन हुआ था। सम्मेलन के सभापति श्रीपी० कुंडू पनिक्कर-नामक एक अवसर-प्राप्त डिस्ट्रिक्ट जज थे। सभा का उद्घाटन मदरास के सुप्रसिद्ध हरिजन-नेता और कांग्रेसी मिनिस्टर डॉक्टर टी० एस्० राजन द्वारा हुआ।

सम्मेलन के विद्वान् सभापति ने अपने विद्वत्ता-पूर्ण अभिभाषण में स्वामी दयानंद सरस्वती और डॉक्टर एनीबेसेंट के समय से ट्रावनकोर-महाराज के मंदिर-प्रवेश की घोषणा तक हरिजन-आंदोलन का इतिहास बतलाया। तदुपरांत अन्य आवश्यक प्रस्तावों के साथ इस आशय का एक अत्यंत महत्त्व-पूर्ण प्रस्ताव पास हुआ कि मदरास-प्रांत की कांग्रेस-सरकार छ महीने के भीतर क़ानूनी कार्रवाई के द्वारा अवर्णों के लिये मंदिर-प्रवेश का क़ानूनी अधिकार दे दे, अन्यथा गुरुवयूर-मंदिर के सम्मुख मंदिर-प्रवेश-सत्याग्रह की पुनरावृत्ति की जायगी।

कहना न होगा कि मदरास-प्रांत के हरिजन भाइयों की यह माँग सर्वथा उचित एवं धार्मिक है। प्रत्येक सवर्ण हिंदू का यह धर्म है कि वह हिंदू-जाति तथा हिंदू-धर्म में होनेवाले वैषम्य को दूर करे। आज हिंदू-समाज की दुर्बलताओं से अनुचित लाभ उठाकर विधर्मी हमारी जातीय, सामाजिक एवं धार्मिक नींव खोखली कर रहे हैं। जिस जाति ने वेद, वेदांत, गीता और उपनिषदों को जन्म दिया, जिस जाति ने पहलेपहल संसार के सामने सुंदर और व्यापक धर्म के उपदेश दिए, जिस जाति ने संसार को पहलेपहल सभ्यता और संस्कृति का दान दिया, आज वही जाति अपनी सामाजिक दुर्बलताओं के प्रतिकूल एवं युग-धर्म के अनुकूल अपने को बनाने के अभाव

में प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है । हरिजन भाइयों के प्रति आज हमारे समाज में जो वैषम्य है, उसके फल-स्वरूप केवल मदरास-प्रांत में ईसाइयों की संख्या साठ लाख हो गई है । और, कहना न होगा कि यह बड़ी संख्या निन्यानबे प्रतिशत से भी अधिक अछूत कहे जानेवाले हिंदुओं से ही ली गई है । ईसाइयों के अतिरिक्त अछूतों को मुसलमान बनाने के भी बहुत प्रयत्न हो रहे हैं, और उन्हें मुसलिम मिशनरियों द्वारा बहुत-से प्रलोभन दिए जा रहे हैं ।

पर केवल इन्हीं कारणों से सवर्ण हिंदुओं को सतर्क नहीं होना चाहिए । उन्हें यह बात समझनी चाहिए कि भगवान् के दरबार में सवर्ण और अवर्ण का कोई भेद-भाव नहीं । भगवान् के मंदिर में भक्ति की भावना से जानेवाले सभी उपासक समान रूप से उपासना का अधिकार रखते हैं ; चाहे वे ब्राह्मण हों या शूद्र । धर्म का शुद्ध, सात्त्विक एवं निर्विकार रूप यही है, और इसी रूप के आधार पर युग-धर्म के अनुसार आज हिंदू-जाति एवं हिंदू-समाज का दृढ़ संगठन किया जा सकता है । उपासक के रूप में भगवान् की दृष्टि में राजा-प्रजा, धनी-निर्धन, ब्राह्मण-चांडाल में कोई भेद नहीं रहता । भगवान् की दृष्टि में सामाजिक एवं जातीय पृथक्करण तथा भेद-भाव कोई वस्तु नहीं । वह तो भक्ति के भूखे हैं, और स्वयं चांडाल के भी दास हैं, यदि उसमें गहरी भक्ति हो । इस कारण भक्ति-भावना से उत्प्रेरित किसी भी हिंदू को मंदिर-प्रवेश से रोकना भगवान्

मदनमंजरी पोस्ट-ऑफ़िस

और फ़ार्मेसी के ऑफ़िस की नई बिल्डिंग की उद्घाटन-क्रिया
हिज़ हाइनेस महाराजा जाम श्रीदिग्विजयसिंहजी साहब बहादुर
के० सी० एस्० आई० के शुभ हस्तक होने की ख़ुशी में

ता० १७—१—३८ से ग्राहकों को ख़ास लाभ ता० २८—२—३८ तक

मदनमंजरी गोलियाँ—स्वप्नदोष और कमज़ोरी की अचूक औषधि फ़ी डि०	रु० १)
रमणविलासनी वटिका—वीर्यस्तंभन के लिये चामत्कारिक दवा फ़ी डि०	रु० १)
वंगामृत वटी—प्रमेह व मूत्राशय के तमाम रोगों के लिये फ़ी शीशी	रु० ३)
अनंगप्रभा याकूती—पुरुषत्व-प्राप्ति के लिये राजवंशी उपाय फ़ी शीशी	रु० १०)
गर्भामृत चूर्ण—गर्भाशय-संबंधी तमाम रोगों के लिये अद्वितीय फ़ी डि०	रु० २)

☞ एक रु० से पाँच रु० तक की दवाएँ मँगाने पर १२॥ प्रतिशत और इसके उपरांत के ऑर्डर पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा ।

मदनमंजरी फ़ार्मेसी, हेड ऑफ़िस जामनगर [काठियावाड़]

की सेवा नहीं, उनका अपमान करना है। सवर्ण हिंदुओं को यह बात सदा स्मरण रखनी चाहिए।

इस प्रसंग में हम हरिजन भाइयों से भी एक बात कहे बिना नहीं रह सकते, और वह यह कि उन्हें भी अपनी सामाजिक बुराइयों का परित्याग करना चाहिए। अपनी गंदी आदतों तथा भक्ष्याभक्ष्य का त्याग कर उन्हें इतना साफ़-सुथरा रहना चाहिए कि समाज में मिलते-जुलते समय न तो दूसरों को उनके प्रति कोई शिकायत हो, और न स्वयं उनकी आत्मा उन्हें आंतरिक व्यथा पहुँचावे।

× × ×

७. डॉक्टर जगदीशचंद्र बोस का देहांत !

अभी उस दिन, गत २४वीं नवंबर को, विश्व-विश्रुत विज्ञानाचार्य डॉक्टर जगदीशचंद्र बोस की अचानक मृत्यु का समाचार सुनकर हम सहसा अवाक् रह गए ! मृत्यु के समय उनकी अवस्था उनहत्तर वर्ष की थी। जीवन की इस अवधि में उन्हें पर्याप्त यश, मर्यादा एवं प्रतिष्ठा मिली। डॉक्टर बोस केवल भारत के ही नहीं, वरन् विश्व की विभूति थे—ऐसी विभूति, जो संसार की रंगभूमि में सदा नहीं उतरती।

डॉक्टर बोस संसार के बहुत प्रसिद्ध विज्ञानाचार्य थे, परंतु उनकी महत्ता केवल इसी एक बात में सीमित नहीं की जा सकती। प्रकांड विद्वान् एवं विज्ञान के प्रकाश-स्तंभ होने के अतिरिक्त वह महान् साधक, संत और सत्यान्वेषी थे। राग-द्वेष तथा संसार की चहल-पहल से दूर, प्रकृति की गोद में संतों की निष्ठा एवं निःस्पृहता के साथ सत्य का उपासनामय अन्वेषण ही उनके महान् जीवन का रहस्य था। उनकी उदारता और दानशीलता भी उन्हीं के योग्य थी। अपने जीवन-काल तक उन्होंने लगभग अठारह लाख रुपए दान किए थे !

डॉक्टर बोस पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उद्भिद्-संसार में प्राण के अस्तित्व को सिद्ध कर जड़ और चेतन-जगत् को परस्पर एक दूसरे के निकट ला दिया था। उनके इस महत्त्व-पूर्ण अन्वेषण का परिणाम यह हुआ कि संसार ने और विशेषकर पाश्चात्य संसार ने पहलेपहल उपनिषदों के इस महान् सत्य को जाना और समझा कि भगवान् की सत्ता प्राणी तथा वनस्पति-संसार में समान रूप से परिव्याप्त है, तथा मौन एवं गति-हीन देख पड़नेवाले इन वृक्ष तथा पौधों में भी प्राणों का स्पंदन जाग्रत् है। वनस्पति-विज्ञान के अतिरिक्त विद्युत्-शक्ति के संबंध में भी डॉक्टर बोस ने आश्चर्यजनक आविष्कार किए थे।

डॉक्टर बोस का जन्म बंगाल-प्रांत में, सन् १८५८ में, हुआ था, और प्रारंभिक शिक्षा कलकत्ते में हुई थी। पर अंत में उनकी ऊँची शिक्षा कैंब्रिज के क्राइस्ट्स कॉलेज में हुई। वहाँ आप अत्यंत प्रतिभाशाली छात्रों में थे। कैंब्रिज से लौटकर आपने कलकत्ते के विख्यात प्रेसिडेंसी-कॉलेज में प्रोफ़ेसरी आरंभ की। प्रारंभ में कुछ बाधाओं का सामना करने के बाद थोड़े ही दिनों में आपकी कीर्ति फैल गई, और आपके विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। फल यह हुआ कि कुछ समय बाद ही एक सफल प्रोफ़ेसर के रूप में आपका यश चारो ओर फैल गया। परंतु इस यश से आपको संतोष न हुआ। आपकी आत्मा अत्यंत उत्कृष्ट आकांक्षाओं के लिये लालायित थी, और इसीलिये आप कॉलेज की तथा अपनी प्रयोगशाला में रात-दिन प्रकृति-विज्ञान के भिन्न-भिन्न अनुसंधानों में व्यस्त रहने लगे।

थोड़े ही दिनों में संसार ने आपकी प्रतिभा को स्वीकार कर लिया। आपका यश भारत के बाहर संसार के अन्य देशों में फैलने लगा। फलतः सन् १९०० ई० में आप अंतरराष्ट्रीय विज्ञान-सम्मेलन के प्रतिनिधि चुने गए। तत्पश्चात्

सन् १६०७, १६१४ तथा १६१६ ई० में योरप तथा अमेरिका के वैज्ञानिक डेपुटेशन की सदस्यता के पद पर आप प्रतिष्ठित किए गए। सन् १६२७ ई० में भारतीय विज्ञान-परिषद् का सभापतित्व स्वीकार करने के लिये आपसे प्रार्थना की गई। आपको ब्रिटिश विश्वविद्यालय (Cantab) की एफ़० आर० एस०, एम्० ए० डिगरी मिली। लाहौर और कलकत्ता-विश्वविद्यालयों ने डी० एस्-सी० की उपाधि से आपको विभूषित किया, और पुनः एक ब्रिटिश विश्वविद्यालय (Aberdeen) ने आपको एल्-एल० डी० की उपाधि देकर अपनी प्रतिष्ठा की। भारत-सरकार ने आपकी विद्या और असीम प्रतिभा को स्वीकार कर सन् १६०३ ई० में सी० आई० ई० तथा सन् १६११ ई० में सी० एस्० आई० और 'सर' की उपाधि से आपको विभूषित किया।

आप बड़े विद्वान् ही न थे, वरन् प्रकांड लेखक भी थे। दर्जनों पुस्तकें आपने लिखी हैं, जिनमें से कुछ प्रसिद्ध पुस्तकों के नाम ये हैं —

(1) Response in the Living and Non-Living (2) Plant Response (3) Irritability of Plants (4) The Physiology of the Ascent of Sap (5) Live Movements in Plants (6) The Nervous Mechanism of Plants (7)

दुनिया में हलचल मचा देनेवाली

अद्भुत पुस्तक

(आसामी, बंगाली तिलस्मी राज़ या ख़ज़ाना करामात)

यह वही अद्भुत पुस्तक है, जिसने भारत के कोने-कोने में हलचल मचा दी है, और जिसका पहला संस्करण हज़ारों की तादाद में, ५) मूल्य होते हुए भी, हाथोहाथ ख़त्म हो गया था। पहले एडीशन पर हज़ारों आदमियों का यह कहना है कि यह पुस्तक नहीं, बल्कि नामर्दों को मर्द, बाँझों को संतान, रोगियों को नीरोग और हज़ारों प्राणियों को प्रतिवर्ष काल के मुख से बचानेवाली भारत के पूज्य महात्माओं की अद्भुत शक्ति का भंडार सचमुच (ख़ज़ाना करामात) ही है। इन सब अद्भुत प्रयोगों के अलावा कामरूप देश (आसाम), बंगाल और नैपाल की तराई में जादू और वशीकरण विद्या की अद्भुत लीलाएँ, जिनसे आपको आश्चर्य ही नहीं, बल्कि एक अद्भुत शक्ति का भंडार हाथ लगेगा, और इन विद्याओं की सचाई शीशे की तरह प्रकट हो जायगी। पुस्तक के बारे में हमारी गारंटी है। यदि किसी तरह आपको नापसंद हो, तो ३ दिन देखकर वापस कर सकते हैं। हम तुरंत मूल्य लौटा देंगे। इससे बढ़कर और क्या सचाई होगी? अब नए संस्करण में दसों अद्भुत वशीकरण आदि के परीक्षित, कभी न फ़ेल होनेवाले, प्रयोग बढ़ाए गए हैं। पृष्ठ-संख्या भी पहले से अधिक लगभग ६५० हो गई है। परंतु मूल्य वही ५), सजिल्द ५॥) और डाक-महसूल ॥) अलग है। परंतु ऑर्डर के साथ पेशगी रुपया भेजनेवालों को महसूल माफ़ होता है।

नोट—अब की बार पुस्तक का सस्ता एडीशन भी निकाला गया है। मूल्य ३॥), सजिल्द ४), महसूल अलग है। ऑर्डर में सजिल्द व सस्ता एडीशन के बारे में स्पष्ट लिखें, जिसमें भूल न हो।

पता—मैनेजर इंडियन स्टोर्स (१६), जेनरल मर्चेंट ऐंड बैंकर्स, शीलांग (आसाम)

वर्ग-नं० ३ का नतीजा

२४७ व्यक्तियों ने इनाम पाए !

इनमें ५१ महिलाएँ भी हैं !!

शुद्ध पूर्ति किसी की न होने पर भी ३००) बाँटे गए !!!

शुद्ध पूर्ति पर १७५) मिलना था !

प्रथम पुरस्कार ११०) (३-४ अशुद्धियों पर)

यह ११ व्यक्तियों में बँटा । प्रत्येक को १०) मिले—

(१) श्रीश्याममोहन, लखनऊ
(२) कुमारी कृष्णाजी, पिहानी
(३) श्रीबालकृष्णजी, पिहानी
(४) कुमारी गायत्रीदेवी, बनारस
(५) श्रीगिरिधारीनाथ मिश्र, अयोध्या
(६) पं० जवाहरनाथ सप्रू ,,
(७) श्रीदुबरी मिश्र, अयोध्या
(८) श्रीफूलचंद गुलबानी, लखनादौन
(९) श्रीकृष्णकुमारजी, पंचमढ़ी
(१०) श्रीत्रिवेणीदेवी ,,
(११) श्रीसावित्रीजी, लखनऊ

द्वितीय पुरस्कार ८०) (५ अशुद्धियों पर)

यह पुरस्कार १६ व्यक्तियों में बँटा । प्रत्येक को ५) मिले—

(१) श्रीसूर्यकुमार त्रिपाठी, जहाँगीराबाद
(२) पांडेय तारकेश्वरनाथराम, राँची
(३) श्रीरामसेवकजी तिवारी, लखनादौन
(४) जी० आर० रेरकर, बोकारू
(५) जुगुलकिशोर जोशी, लखनादौन
(६) हरिकृष्णजी, पिहानी
(७) राजा जगदंबिकाप्रपातसिंहजी, अयोध्या
(८) यमुनाप्रसादजी मिश्र, अयोध्या
(९) श्रीगंगारामजी, लखनादौन
(१०) उमाशंकर गौड़, लखनादौन
(११) राजाबख्शसिंहजी, रेवड़ी
(१२) हुलासजी, रेवड़ी
(१३) राममोहन, लखनऊ
(१४) माधोप्रसादजी, इलाहाबाद
(१५) ठा० भगतसिंहजी, दमोह
(१६) श्रीजगभूषणसिंहजी, दमोह

तृतीय पुरस्कार ११०) (६-७ अशुद्धियों पर)

यह पुरस्कार २२० व्यक्तियों में बँटा । प्रत्येक को ॥) मिले--

(१) श्रीप्रतापनारायणजी, शिवराजपुर
(२) ,, शिवमाधव मिश्र, कानपुर
(३) ,, विजयेंद्रशंकर तिवारी, बनारस
(४) ,, रमणलाल के० सुखाडिया, हांसोट
(५) ,, राजकुमार शाह, बनारस
(६) ,, चंद्रपालजी शास्त्री, कांगड़ा
(७) श्रीदेवी कलावतीजी, हिसार
(८) मिस संतबक्सजी, बनारस
(९) श्रीकिरणदेवीजी, बनारस
(१०) ,, गुरदयालदासजी, मेरठ
(११) मिस प्रेमश्रृंगारीजी, मेरठ
(१२) श्रीविद्यानंद शर्मा, डालटनगंज

(१३) श्रीधमदत्तजी शर्मा, सोनीपत
(१४) ,, हीरालालजी श्रीवास्तव, इलाहाबाद
(१५) ,, संतोषकुमारजी, दिल्ली
(१६) ,, सुशीलाकुमारीजी, दिल्ली
(१७) ,, सोहनलाल शर्मा, दिल्ली
(१८) ,, राधाविनोद वाजपेयी, इलाहाबाद
(१९) ,, त्रिवेणीशंकर वाजपेयी, इलाहाबाद
(२०) ,, राजदेवसिंहजी, पटना
(२१) ,, शकुंतलादेवीजी, कांगड़ी
(२२) ,, गजानंद सिनहा, सरगुजा
(२३) ,, नलिनीकुमारजी, आगरा
(२४) ,, प्रकाशवती, बुलंदशहर
(२५) ,, बद्रीप्रसाद भारद्वाज, भोपालगढ़
(२६) ,, रमेशजी, भोपालगढ़
(२७) ,, विद्यावती शर्मा, ग़ाज़ियाबाद
(२८) ,, व्रजमोहनसहाय, बस्ती
(२९) ,, भैरवलाल वर्मा, अंटा
(३०) ,, प्यारेलाल त्रिपाठी, चाँदगंज कलाँ
(३१) ,, महेशचंद्रसिंह, लखनऊ
(३२) ,, सत्यप्रकाशजी, इलाहाबाद
(३३) ,, चंद्रप्रकाशलाल, लखनऊ
(३४) श्रीशिवसुंदरप्रसाद, बनारस
(३५) श्रीबाबूरामजी, कानपुर
(३६) श्रीमंगलप्रसाद द्विवेदी, औरंगाबाद कैंट
(३७) श्रीविद्यावती विशारदा, पूरावासगढ़
(३८) श्रीगौरीशंकर त्रिवेदी, इंदौर
(३९) श्रीमिश्रीलालजी, बनारस
(४०) श्रीमुकुंदलालजी, बनारस
(४१) श्रीजवाहरलालजी, बनारस
(४२) श्रीएस० ठाकुर, कचड़ापाड़ा
(४३) श्रीकौशल्याबाई, पंचमढ़ी
(४४) वैद्यराज पं० प्रेमनारायण तिवारी, पंचमढ़ी
(४५) श्रीजी० एल्० शृंगी, कोटा (राज्य)
(४६) श्रीबी०ओ० राठौर, कोटा (राज्य)
(४७) श्रीनिवासजी कौशिक, सोनीपत
(४८) श्रीप्रेमप्रकाशजी, लखनऊ
(४९) श्रीवेदप्रकाशजी, लाहौर
(५०) कुमारी शारदाबाई, कौप
(५१) श्रीरामलाल गुप्त, इलाहाबाद
(५२) मिस भगवतीप्रसाद, बनारस छावनी
(५३) प्रोफ़ेसर जगन्नाथ तिवारी, आगरा
(५४) श्रीगंगासिंहजी, सिंदौस
(५५) श्रीअरविंदकुमारजी, मालीनगर
(५६) श्रीनंदनजी, सोमेश्वर
(५७) श्रीभारती ब्रादर्स, सोमेश्वर
(५८) ठाकुर माधोसिंहजी, सामंदसर
(५९) श्रीरामचंद्र तिवारी, हाजीपुर
(६०) श्रीश्यामलाल अग्रवाल, आगरा
(६१) श्रीमुरारीलालजी, आगरा
(६२) श्रीचुन्नीलालजी लोया, पुष्कर
(६३) ,, सोमकला मेहता, इलाहाबाद
(६४) ,, रमाशंकरसिंहजी, ढिंगवास
(६५) ,, गौरीशंकर उपाध्याय, पवाँरखेड़ा
(६६) ,, महेंद्रनाथ सुखाडिया, हांसोट
(६७) मुंशी पंखराज अध्यापक, कुलपहाड़
(६८) श्रीमदनमोहन शाह, काशी
(६९) कुमारी सुशीलाजी, बड़ौत
(७०) श्रीकृष्णकुमारजी, बड़ौत
(७१) डॉक्टर गिरिजाशंकर त्रिपाठी, बनारस
(७२) श्रीभगवतीप्रसादजी, सेजोयल
(७३) श्रीगोपाललालवर्मन, बनारस
(७४) श्रीविश्वंभरदत्त लोहुमी, ताकुला
(७५) श्रीरामेश्वरी सिनहा, अयोध्या
(७६) श्रीशशिकांतिप्रभा सक्सेन, गोंडा
(७७) श्रीचंद्रशेखर शर्मा, करौंदी
(७८) श्रीबुलाकी सरदार, बनारस
(७९) श्रीसूर्यकुमार त्रिपाठी, जहाँगीराबाद
(८०) श्रीरघुनाथप्रसादजी, काशी
८१) पं० रमाशंकर त्रिपाठी, कानपुर
(८२) देवी पी० के० एल्० अम्मा, वनियमकोल
(८३) श्रीअवधनाथजी तिवारी; गोरखपुर
(८४) श्रीगजराजकुँवारीजी, बनारस
(८५) श्रीशिवभानुप्रसाद खरे, रीवाँ
(८६) श्रीजोगेंद्रनाथ शर्मा, इलाहाबाद

(८७) श्रीसूर्यप्रकाशजी, बरेली
(८८) श्रीरामप्रकाशजी, बरेली
(८९) श्रीवासुदेवप्रसादजी, बभनान
(९०) श्रीरामसेवक शर्मा, राँची
(९१) श्रीउत्तमानंद उपाध्याय, फ़ैज़ाबाद
(९२) श्रीवेदानंद शर्मा, डालटनगं
(९३) श्रीवेदवती शर्मा, डालटनगं
(९४) श्रीआनंदाबाई सिनहा, आगरा
(९५) श्रीजितेंद्रनारायण सिनहा, चाऊथाम
(९६) श्रीदेवेंद्रप्रसाद वर्मा, राँची
(९७) श्रीजयभगवानदत्त, सोनीपत
(९८) श्रीराजविशंभरजी, वैथा
(९९) श्रीकृष्णकुमारजी, दिल्ली
(१००) श्रीसुरेंद्रकृष्ण वाजपेयी, इलाहाबाद
(१०१) श्रीप्रयागनारायण वाजपेयी, इलाहाबाद
(१०२) श्रीराधाकृष्ण वाजपेयी, इलाहाबाद
(१०३) श्रीवचनसिंहजी, जौनपुर
(१०४) श्रीराजाराम श्रीवास्तव, बनारस
(१०५) श्रीउदयकुमारीजी, कांगड़ी
(१०६) श्रीसरलाजी, कांगड़ी
(१०७) श्रीसरस्वतीजी, कांगड़ी
(१०८) श्रीजीवनलाल गुप्त, पेंडरा रोड
(१०९) श्रीलालताप्रसाद वर्मा, बद्दोसरांय
(११०) श्रीछेदीलाल वर्मा, बद्दोसराय
(१११) श्रीमहेशचंद्र अग्रवाल, प्रयाग
(११२) श्रीतपेश्वरीदेवी, सरगुजा
(११३) मुं० व्रजनारायणजी, दिल्ली
(११४) श्रीदीपचंद गुप्त, अलीगढ़
(११५) श्रीरामस्वरूप गुप्त, अलीगढ़
(११६) श्रीरामचंद्र गुप्त, अलीगढ़
(११७) श्रीतेजस्वरूप गुप्त, अलीगढ़
(११८) श्रीफूलचंद्र जैन 'सारंग', भूपालगढ़
(११९) श्रीशांतिस्वरूप वैश्य, बरेली
(१२०) श्रीरंगाराम बरनवाल, कटरासगढ़
(१२१) कुमारी मैत्रेयीजी, बनारस
(१२२) श्रीसुखदेईजी, सीसामऊ
(१२३) श्रीरामसहाय मिस्त्री, हट्टा
(१२४) श्रीनारायणसिंह मिस्त्री, हट्टा
(१२५) श्रीगणेशप्रसादजी मिस्त्री, हट्टा
(१२६) श्रीधर्मजंगबहादुरसिंह, बस्ती
(१२७) श्रीरामनिवासजी कक्षा १०, ब्यावर
(१२८) श्रीशिवदयाल गुप्त, ब्यावर
(१२९) श्रीकस्तूरमल वाकलीवाल, ब्यावर
(१३०) श्रीचाँदमल अग्रवाल, औरंगाबाद
(१३१) श्रीआत्माराम गुप्त, लखनऊ
(१३२) मिसेज़ चंद्रप्रकाशलाल, लखनऊ
(१३३) श्रीविद्यावती श्रीवास्तव, लखनऊ
(१३४) श्रीनाथूसिंहजी, धार
(१३५) श्रीएल्० पी० अग्रवाल, लखनऊ
(१३६) पं० अवधविहारीलाल, अजगैन
(१३७) पं० शिवगोविंद वाजपेयी, अजगैन
(१३८) पं० शिवप्रसाद वाजपेयी, अजगैन
(१३९) पं० बद्रीप्रसाद वाजपेयी, अजगैन
(१४०) डॉक्टर शिवदत्तप्रसाद, अजगैन
(१४१) श्रीचंद्रभान वाजपेयी, अजगैन
(१४२) श्रीवासुदेवप्रसाद माहेश्वरी, ललितपुर
(१४३) श्रीअर्जुनकुमार गुप्त, काशीपुर
(१४४) श्रीगयाप्रसादजी, कानपुर
(१४५) श्रीपुरुषोत्तमलालजी, सिवनी
(१४६) श्रीअतरसिंजी नरेंद्र, आगरा
(१४७) श्रीश्यामसुंदरप्रसाद, बनारस
(१४८) श्रीव्रजरानीजी, शिवराजपुर
(१४९) श्रीदेवीचंदजी, शिवराजपुर
(१५०) श्रीअनंतरामजी, शिवराजपुर
(१५१) कुमारी क्रांतिदेवी सेठ, आगरा
(१५२) श्रीहरनंदनप्रसादजी सेठ, आगरा
(१५३) कुमारी शीलादेवी, आगरा
(१५४) श्रीश्यामलालजी, आगरा
(१५५) श्रीहीरालालजी, विरदोपुर
(१५६) श्रीचंपालालजी, विरदोपुर
(१५७) श्रीकन्हैयालालजी, विरदोपुर
(१५८) श्रीदुर्गाप्रसादजी, विरदोपुर
(१५९) श्रीछबीलदास सेठ, दमोह
(१६०) श्रीअखिलेशचंदजी, कटरी सराय

(१६१) श्रीनंदकिशोरसिह, सिकंदरपुर
(१६२) ठा० नागेश्वरसिंह, गौरा
(१६३) श्रीसरोजकुमारीजी, सैलाना
(१६४) ला० गोपालशाह ओखलिया, बागेश्वर
(१६५) श्रीसरोजिनीदेवी पंत, इंदौर
(१६६) ,, दीनानाथजी, पंचमढ़ी
(१६७) ,, जी० ओ० राठौर, कोटा-राज्य
(१६८) ,, ओ० एच्० राठौर, कोटा-राज्य
(१६९) ,, हरीलालजी पटेल, बालाघाट
(१७०) ,, लक्ष्मीदेवीजी, सोनीपत
(१७१) ,, गोपीचंदजी, सोनीपत
(१७२) ,, राजदेवीजी ,,
(१७३) ,, धनपालजी, आगरा कैंट
(१७४) ,, टीकारामजी, देहरादून
(१७५) ,, ओंकारमलजी, चूरू
(१७६) ,, सरजूप्रसादजी, राँची
(१७७) कुमारी शारदा शर्मा, आगरा
(१७८) श्रीगोपालकृष्ण शर्मा, आगरा
(१७९) ,, कुमारी भारती शर्मा, आगरा
(१८०) ,, गिरिजाशंकर गौड़, बनारस
(१८१) ,, मुसद्दीलाल गुप्त, भिवानी
(१८२) ,, सूरजभान शर्मा, भिवानी
(१८३) ,, श्यामसुंदर पाठक, बरेली
(१८४) कुमारी सरोजिनी पाठक, बरेली
(१८५) श्रीशैलकुमारीजी, इलाहाबाद
(१८६) श्रीजगन्नाथप्रसादजी, अलीगढ़
(१८७) श्रीसम्मनलाल गुप्त, लखीमपुर
(१८८) टी० सी० जींदगर, सिरसा
(१८९) श्रीलक्ष्मीदेवी अटल, अमीनाबाद
(१९०) बाबू सरस्वतीशरणजी, इलाहाबाद
(१९१) मिस लछमनप्रसादजी, बनारस
(१९२) ला० दुर्गाशाह जगाती, बागेश्वर
(१९३) श्रीरामचंद्र तिवारी, आगरा
(१९४) श्रीचंद्रभारती, सोमेश्वर
(१९५) मिसेज़ लक्ष्मीदेवी, बरेली
(१९६) श्रीसोहनलाल शर्मा, न्यू देहली
(१९७) श्रीसच्चिदानंदजी, मालीनगर
(१९८) श्रीअद्भुत तिवारी, मालीनगर
(१९९) श्रीरामचंद्रजी, दिल्ली
(२००) श्रीनरसिंहदासजी, दिल्ली
(२०१) श्रीकालूरामजी, ब्यावर
(२०२) श्रीत्रिलोकचंदजी, सिरसा
(२०३) श्रीबी० के० नागर, लश्कर
(२०४) श्रीबिहारीलाल खन्ना, कलकत्ता
(२०५) श्रीमहेंद्रशंकर पांडे, चूरू
(२०६) श्रीशांतिरानी सेठ, बरेली
(२०७) मिस पत्तो सेठ, बरेली
(२०८) श्रीलीलावती बी० ए०, न्यू दिल्ली
(२०९) श्रीदयालचंद जैन, इलाहाबाद
(२१०) श्रीकेदारनाथ बरनवाल, इलाहाबाद
(२११) कुमारी शकुंतलादेवी, बीकानेर
(२१२) श्रीकीर्तिनारायणजी, इस्लामपुर
(२१३) श्रीनौबतरायजी, देहरादून
(२१४) श्रीनत्थीलालजी, देहरादून
(२१५) श्रीमुंशीलालजी, देहरादून
(२१६) श्रीमिट्ठनलालजी, देहरादून
(२१७) श्रीरघुनंदनसिहजी, सोनपुर
(२१८) श्रीअनूपदेवीजी, सोनपुर
(२१९) श्रीभानुदत्त शर्मा, बनारस
(२२०) श्रीसुंदरलालजी, सिधौली

नोट—(१) जिन सज्जनों के जाँच के फ़ार्म ठीक समय पर आ जायँगे, और उनमें से किन्हीं सज्जन के पुरस्कार पाने का अधिकार सिद्ध हो गया, तो यह पुरस्कार उन्हें भी बाँटा जायगा।

(२) जिन सज्जनों के नाम नहीं छपे हैं, पर जिन्हें संदेह है कि हम पुरस्कार पाने के अधिकारी हैं, केवल वे ही सज्जन जाँच का फ़ार्म भरकर भेजें।

Plant Autographs and their Revelations.

भारतीय सभ्यता एवं भारतीय संस्कृति में डॉक्टर बोस का पूर्ण विश्वास एवं असीम निष्ठा थी। इसका प्रमाण आपके विज्ञान-मंदिर (Temple of Science) में मिलता है। वह विज्ञान-मंदिर भी, जिसके आप संस्थापक और संचालक थे, संसार के वैज्ञानिकों के लिये तीर्थ-धाम है।

डॉक्टर जगदीशचंद्र अब इस संसार में नहीं हैं, पर आपने अपने अनुसंधानों के रूप में संसार के कल्याण के लिये बहुत-से अमर सत्य रख छोड़े हैं। भगवान् आपकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

× × ×

३. रायबहादुर श्रीयुत श्यामनंदनसहायजी

आपका जन्म आरा-ज़िले के अंतर्गत धमार-नामक ग्राम के एक प्रसिद्ध, धनाढ्य कायस्थ-परिवार में, ता० १ जनवरी, १९०० ई० को, हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्रीयुत बाबू यदुनंदनसहायजी था। मुज़फ़्फ़रपुर-ज़िले में बी० ए०, बी० एल्० की उपाधि प्राप्त करनेवाले आप सर्वप्रथम ज़मींदार व्यक्ति थे। समय की गति के साथ "होनहार बिरवान के होत चीकने पात"-वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए आज के रायबहादुर और तब के 'श्याम'जी बढ़ते गए। बचपन से ही आपकी बुद्धि की प्रखरता, सूझ की सूक्ष्मता तथा व्यवहार और शिष्टाचार की सरलता ने यह दिखलाया कि आपका भविष्य उज्ज्वल एवं महत्त्व-पूर्ण है। अभी शैशव कुछ दूर नहीं निकल सका था कि पिताजी बीमार पड़े। समय की प्रबलता तथा विधान की गंभीरता कभी-न-कभी सबको महसूस करना ही पड़ती है। बीमारी क्रमशः चिंता में डालने लगी, और एक दिन—ता० २ मई, १९१५ को—आपके पूज्य पिताजी की आत्मा स्वर्ग सिधारी। परिवार की सारी ज़िम्मेदारी एक बार अपने कंधों पर अनुभव कर रायबहादुरजी घबरा नहीं गए, बल्कि उस नाज़ुक परिस्थिति में आपने अपने धैर्य, अपनी दूरदर्शिता, स्थिरता और सहिष्णुता का जो परिचय दिया, वह न केवल प्रशंसनीय ही है, वरन् अनुकरणीय भी।

उन दिनों आप स्कूल में पढ़ते थे। पढ़ाई के साथ-साथ इस्टेट की देख-रेख और अपने दो छोटे भाइयों की निगरानी में आपने जो कुशलता दिखलाई, वह आश्चर्य में डालती है। १९१६ में आपने प्रथम श्रेणी में कलकत्ता-विश्वविद्यालय से प्रवेशिका परीक्षा पास की। संस्कृत के बहुत ही अच्छे विद्यार्थी होने के कारण आपको विश्वविद्यालय ने एक रजत-पदक देकर आपका सम्मान किया।

१९१७ में आपका विवाह छपरा-निवासी श्रीयुत बाबू विष्णुदेवनारायणजी की सौभाग्यवती कन्या के साथ हुआ। १९२१ में आपने पटना-विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा पास की, और फिर ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट बनाए गए। साथ ही उसी साल स्थानीय डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के सदस्य चुने गए, और अब तक हैं। १९२१ से १९२३ तक आप लोकल-बोर्ड के वायस-चेयरमैन भी रहे। सार्वजनिक कामों में आपकी सफलता ही आपकी प्रसिद्धि का कारण बनी। स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के आप वायस-चेयरमैन बनाए गए, और १९३० में तो म्युनिसिपैलिटी आपको चेयरमैन बनाए बिना नहीं रह सकी। उन्हीं दिनों स्थानीय को-ऑपरेटिव बैंक की भी स्थिति अच्छी नहीं थी, अतएव उसके उद्धार का एकमात्र उपाय आपको उसका मंत्री बनाना निश्चय किया गया, और आप बनाए भी गए। बहुत दिनों तक आप उक्त बैंक के डाइरेक्टर तथा डिप्टी-चेयरमैन भी रहे। और, १९३५ में टाटानगर में होनेवाले बिहार-उड़ीसा-प्रांतीय को-ऑपरेटिव-कांग्रेस के सभापति बनाए गए थे।

इतना ही नहीं, हिंदी-साहित्य से भी आपको अत्यंत प्रेम है। आपकी सहानुभूति तथा उत्साह के आधार पर ही मुज़फ़्फ़रपुर में अखिल भारतवर्षीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का अष्टादश अधिवेशन, स्वर्गीय श्रीयुत पद्मसिंहजी शर्मा के सभापतित्व में, हुआ था। आप उस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। साथ ही १९२५ में डालटनगंज में जो अखिल भारतवर्षीय कायस्थ-कान्फ़्रेंस हुई थी, उसके भी आप स्वागताध्यक्ष थे। आज भी स्थानीय कितनी ही साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्राण हैं। १९३५ में बिहार के प्रसिद्ध Unemployment Committee तथा Delimination

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये
एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने
सूज़ाक़ (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—
'गोनोकिलर'

GONO
REGD
ORIGINAL
TRADE MARK
KILLER

[रजिस्टर्ड]

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा और इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में फ़िज़ूल पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४
लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

Committee के प्रमुख थे। उसी वर्ष Co-operative Enquiry Committee के भी सदस्य बनाए गए। मोतीहारी में होनेवाली प्रादेशिक कायस्थ-कान्फ्रेंस के सभापति तथा मुज़फ़्फ़रपुर में स्वर्गीय लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में होनेवाली प्रादेशिक हिंदू-महासभा के स्वागताध्यक्ष थे।

फिर आपका कौंसिल जीवन आरंभ हुआ। कौंसिल में आप केवल एक प्रसिद्ध वक्ता ही न रहे, वरन् समय-समय पर प्रांत में होनेवाली घटनाओं पर प्रकाश भी डालते रहे। प्रसिद्ध बिहार-टेनंसी-ऐक्ट के आप ही जन्मदाता हैं।

इन दिनों आप घर पर ही रहकर अपने काम को देखते हैं। इस साल भी स्थानीय नवयुवक-समिति की रजत-जयंती के अवसर पर काका कालेलकर की अध्यक्षता में होनेवाले उत्सव के आप ही स्वागताध्यक्ष थे।

पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन में आप बहुत अधिक दिलचस्पी रखते हैं। सार्वजनिक कामों के कारण आपका स्वास्थ्य कुछ गिर-सा गया था, किंतु इन दिनों आप पूर्ण स्वस्थ हैं।

× × ×

४. प्रवासी वंग-साहित्य-सम्मेलन

विगत २७वीं और २८वीं दिसंबर को पटने के ह्वीलर सिनेट हॉल में प्रवासी वंग-साहित्य-सम्मेलन का पंद्रहवाँ अधिवेशन, अंतरराष्ट्रीय ख्याति के प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय की अध्यक्षता में, बड़े समारोह के साथ संपन्न हुआ। प्रधान सम्मेलन के अधीन महिला-सम्मेलन, अर्थशास्त्र-सम्मेलन, संगीत-सम्मेलन, साहित्य-विभाग का सम्मेलन तथा अन्य कई सम्मेलन हुए। इस सम्मेलन की एक बहुत बड़ी विशेषता यह थी कि देश-रत्न बाबू राजेंद्रप्रसाद ने इसका उद्घाटन किया था। राजेंद्र बाबू का उद्घाटन-भाषण ठोस, सारगर्भित एवं उपयोगिता से सर्वथा पूर्ण था। आपने कहा कि और मामलों में हम भले ही अलग-अलग कार्य करें, पर साहित्य-सेवा में हमारा प्रयत्न सम्मिलित होना चाहिए। इसी प्रकार के प्रारंभ से आगे चलकर हम और मामलों में सम्मिलित प्रयत्न कर सकेंगे, और मातृ-भूमि की सेवा में पूर्ण समर्थ हो पावेंगे। हिंदी और बँगला-साहित्य की चर्चा करते हुए राजेंद्र बाबू ने कहा कि ये दोनो भाषाएँ गंगा-यमुना की भाँति हैं, जिनका उद्गम-स्थान एक ही है, और जो कुछ दूर तक भले ही एक दूसरे से पृथक् बहती हैं, पर अंत में एक साथ मिलकर एक बड़ी धारा में परिणत हो जायँगी। हम उस दिन की प्रार्थनामय प्रतीक्षा में हैं, जब राजेंद्र बाबू के ये शब्द हिंदी और बँगला तथा अन्य प्रांतीय भाषाओं के संबंध में सत्य निकलेंगे। अस्तु।

सम्मेलन के सभापति आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय ने साहित्य की महत्ता बतलाते हुए कहा कि साहित्य के अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तु से किसी राष्ट्र अथवा जन-समाज की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक दशा का पता नहीं चलता। कहना न होगा कि आचार्य राय के ये शब्द उन्हीं के योग्य हैं। वास्तव में साहित्य वह दर्पण है, जिसमें किसी देश, जन-समाज अथवा राष्ट्र के उत्थान और पतन, उत्कर्ष और अपकर्ष का प्रतिबिंब देखा जाता है। रोम और ग्रीस, प्राचीन भारत और चीन तथा अन्य प्राचीन सभ्यतावाले देशों की उन्नति की जाँच उन देशों के साहित्य से ही होती है। आगे चलकर आचार्य राय ने बँगला में वैज्ञानिक शब्दों के अभाव तथा उन शब्दों के नामकरण के लिये प्रांतीय तथा अंतःप्रांतीय विद्वानों के सम्मिलित निर्णय के अभाव की बात कही। यद्यपि उनका निर्देश केवल बँगला-शब्दों के ही लिये था, तथापि आज हिंदी, मराठी, गुजराती, आसामी, उड़िया तथा अन्य प्रांतीय भाषाओं की वही अथवा उससे

भी बुरी दशा है। और, जब हम इस कटु सत्य का अनुभव करते हैं, तो हमारे क्षोभ की सीमा नहीं रहती। हम तो चाहते हैं कि भारत के सभी प्रांतीय भाषाओं के विद्वान् हिंदी-साहित्य के विद्वानों के साथ एक परिषद् में बैठें, और अपनी सम्मिलित चेष्टा तथा प्रयत्नों से वैज्ञानिक शब्दों का निर्णय करें। इससे लाभ यह होगा कि भारत की सभी प्रांतीय भाषाओं के वैज्ञानिक शब्द एक होने के कारण विभिन्न प्रांतीय भाषाएँ एक दूसरे के और भी अधिक निकट हो जायँगी, तथा एक भाषा के जानकार को अन्य प्रांतीय भाषाओं की वैज्ञानिक पुस्तकों के पढ़ने में बड़ी सुगमता होगी। आचार्य राय ने अपने उपयोगी भाषण में प्रवासी तथा बंगाल-प्रांतीय बंगालियों से अंतरप्रांतीय एवं अंतरजातीय विवाह करने के लिये कहा। हिंदुओं की सामाजिक समस्या पर ध्यान देते हुए कोई भी समाज-सेवी, आचार्य राय की इन बातों से सहमत हुए बिना न रह सकेगा। अंतरप्रांतीय एवं अंतरजातीय हिंदुओं में परस्पर विवाह होने से एक बहुत बड़ा लाभ यह होगा कि हमारी बिखरी हुई शक्तियाँ एक हो जायँगी, और हमारी बहुत-सी सामाजिक समस्याएँ आप-ही-आप हल हो जायँगी। साथ ही हिंदू-जाति एवं हिंदू-समाज की सभी विशृंखलताएँ एक साथ ही दूर हो जायँगी, और उनके स्थान पर एक नवीन स्फूर्ति एवं शक्ति जाग्रत् होगी, जो भारत के समस्त हिंदुओं को एकता के सूत्र में बाँधकर उन्हें अपने तथा जगत् के कल्याण के निमित्त प्रेरित करेगी। पर हमारी यह शुभ कामना तभी पूर्ण होगी, जब इस प्रकार के अंतरजातीय एवं अंतरप्रांतीय विवाह इक्के-दुक्के न होकर बहुत बड़ी संख्या में होंगे। भगवान् आचार्य राय की इन कल्याण-कामनाओं को शीघ्र ही पूर्ण करें, यही हमारी हार्दिक इच्छा है।

कविविनोद, वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य
आविष्कारक अमृतधारा
रचित

मूल्य **काम व रतिशास्त्र** ६ रु०

(प्रथम भाग)

पाँचवीं बार छपकर तैयार है, शीघ्र मँगवाइए, नहीं तो
छठे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।
(विद्यार्थियों को यह पुस्तक नहीं भेजी जाती)

इसमें २४५ साधारण और ५० फ़ोटो ब्लॉक चित्र हैं !

यदि पुस्तक पसंद न आए, तो हम वापस ले लेते हैं।

अर्थात् यदि पुस्तक पहुँचने पर पसंद न आए, तो दो दिन के अंदर रजिस्ट्री करके वापस कर दें। चित्र आदि ठीक देखकर उसका मूल्य हम मनीऑर्डर द्वारा आपको लौटा देंगे। और क्या चाहिए ?

पत्र-व्यवहार व तार का पता—**अमृतधारा १३, लाहौर**

गोविंदवल्लभ पंत

के

रत्न

मदारी

(सचित्र उपन्यास)

प्रस्तुत पुस्तक में पहाड़ियों के जीवन की छटा और पर्वतराज हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का पूरा आभास मिलेगा। इस उपन्यास का नायक एक पहाड़ी किसान का बेटा 'नवाब' और नायिका लोहार-किसान-कन्या कुमारी तितली। किंतु तितली के साथ विवाह करने के लिये नवाब को आठ सौ रुपए चाहिए। नवाब धन की प्राप्ति के लिये मदारी बनता है, फिर दवाफ़रोश होकर 'ताइजो'-नामक चाकूवाली के चक्कर में फँसकर हवालात की हवा खाता है। घटना-क्रम से ताइजो नवाब के पेट में छुरा भोंककर ग़ायब हो जाती है। भाग्य से नवाब बच जाता है, और अंत में अनेक आशा और निराशाओं के बाद वह अपने जीवन के स्वप्न को सच्चा करता है। मूल्य १।।), सजिल्द २)

संध्या-प्रदीप

लेखक, हिंदी के श्रेष्ठ नाट्यकार पं० गोविंदवल्लभजी पंत। इस पुस्तक में पंतजी की मौलिक कहानियाँ ऐसी परिमार्जित और सरल भाषा में लिखी गई हैं, जो अत्यंत रोचक हैं। मूल्य १), सजिल्द १।।)

वरमाला

यही प्रथम हिंदी-नाटक है, जिसे रेडियो में ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अनुवाद गुजराती और तैलगू में भी हो चुका है। चारु चित्रों से सुसज्जित।

मूल्य ।।=), १=)

राजमुकुट

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानिक विकास। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर है, जब किसी नाटककार ने रसावेश को स्थायी रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट नहीं होने दिया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना का कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खेला जा चुका है। छठे संस्करण का मूल्य ।।।), १।)

प्रतिमा

(सचित्र-उपन्यास)

पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण।

मूल्य सादी १।।), सजिल्द २)

अंगूर की बेटी

प्रस्तुत पुस्तक रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ।।।≈), सजिल्द १।=)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

मनुष्य के लिये सुख-शांति

ही सब कुछ है

वह निम्न-लिखित पुस्तकों से ही प्राप्त हो सकती है।

आप पढ़िए, और अपने बाल-बच्चों व स्त्रियों को पढ़ने को दीजिए

दीर्घ जीवन

आप क्यों रोगी हो जाते हैं, और दीर्घ जीवन प्राप्त नहीं कर सकते। इसका कारण सिर्फ़ आप प्राकृतिक नियमों को नहीं जानते। वह नियम कुछ नए नहीं हैं। हैं तो वही, जिन्हें आप रोज़ काम में लाते हैं। पर ग़लती करते हैं। कब सोना, सोने का स्थान, शयन के कार्य, उनका समय, स्त्री-सहवास की शिक्षा, प्रातः कब उठना, क्या-क्या और कब-कब, कौन पहले और पीछे करना, व्यायाम, तैलमर्दन, स्नान, जप, पूजन, भोजन, विहारादि, कैसा और कब, कैसा होना, कौन वस्तु किसके साथ मिलने से हानिकर होती है, इस प्रकार के १२५ नियमों की शिक्षा देनेवाली यह अपूर्व पुस्तक है, जो शिक्षा-कोसों में भी सम्मिलित हो चुकी है। आपके लिये बहुत उपयोगी है। मूल्य ॥)

कर्तव्य-शिक्षण

मनुष्य का जन्म ही कर्म के लिये हुआ है। इसी के अधीन सुख-शांति है। हम लोग अपने कर्तव्यों से च्युत हुए ही नित्य तरह-तरह की वेदनाओं का अनुभव करते रहते हैं। कोई पैसे के लिये, कोई कलह से या राजकीय भीति से दुखी है। कोई स्त्री के लिये, कोई कटुवादिनी स्त्री से खिन्न है, तो कोई कुकर्मी पुत्रों के कृत्यों से दुखी है इत्यादि मनुष्योपयोगी सभी विषयों पर विचारकर यह ग्रंथ रचा गया है। घर को स्वर्ग बनाना हो, आत्मा को सुखी करना हो, संतानों को विनम्र देखना हो, तो इस पुस्तक को आद्योपांत पढ़िए और स्त्री तथा बच्चों को पढ़ाइए फिर देखो, क्यों शांति नहीं मिलती। बड़े-बड़े विद्वानों से प्रशंसित हो चुका है। आज ही मँगाइए। मूल्य ॥)

मनुष्योपयोगी अनेक उत्तम पुस्तकें हमारे यहाँ मिलती हैं। सूचीपत्र मँगाकर पढ़िए। फ़िज़ूल के उपन्यासादि में द्रव्य और समय का उपयोग करना व्यर्थ है।

पुस्तकें सार्थक न हों, तो दाम वापस देने की शर्त है।

पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला, बरालोकपुर, इटावा (यू॰ पी॰)

देशी राज्यों की मूक प्रजा का सच्चा प्रतिनिधि, भारतीय
नरेशों की नीति का निष्पक्ष समालोचक
एवं
नवयुग का संदेश-वाहक
'सचित्र दरबार'
(संपादक—ऋषभचरण जैन, संयुक्त संपादक—चंद्रधर)
(देशी राज्य-संबंधी एक-मात्र सचित्र साप्ताहिक)
इसके वार्षिक ग्राहकों को सभी विशेषांक मुफ़्त दिए जाते हैं। पिछले विशेषांक में आर्टपेपर के ३२५ पृष्ठ और सैकड़ों इकरंगे और बहुरंगे चित्र थे।
साधारण संस्करण का वार्षिक मूल्य ७), आजीवन का २५०) मात्र
राज-संस्करण का वार्षिक मूल्य २०), आजीवन का ५०१)
तार का पता—'दरबार' टेलीफ़ोन ६४५२
व्यवस्थापक—सचित्र 'दरबार' सिविल लाइंस, दिल्ली।

हिंदी-संसार की एक अनुपम काव्य-कृति
निर्झरिणी
लेखिका—श्रीमती सूर्यदेवी दीक्षित विदुषी 'ऊषा'
प्राक्कथन-लेखक—
समालोचक-प्रवर पं० रामचंद्रजी शुक्ल
(हिंदी-युनिवर्सिटी, बनारस)
निर्झरिणी अल्प काल में ही हिंदी के प्रमुख विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर चुकी है। इसकी एक-एक कविता में सहज स्वाभाविक काव्य-प्रवाह, सरल अनुभूतियों की मनोरमता एवं 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की पूर्ण अभिव्यक्ति है।
मूल्य १६२ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का १) एक रुपया।
दो अमूल्य सम्मतियाँ—
आचार्य-प्रवर श्रीमहावीरप्रसादजी द्विवेदी लिखते हैं—
"निर्झरिणी की कविताओं की यत्र-तत्र सैर करके मुझे परमानंद हुआ। रचना सरस, सुंदर और भाव-भरी है। भाषा भी परिमार्जित है। उषादेवी को बधाई!"
म० प्र० द्विवेदी
महाकवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं—
"आपकी रचना आपके योग्य ही है निर्झरिणी में प्रवाह है, सरलता है, किंतु कुटिलता नहीं। प्रभु की कृपा है।"
मैथिलीशरण
प्रकाशक—रविशंकर दीक्षित, डिप्टी का पड़ाव, कानपुर।
स्थानीय विक्रेता—रामदयाल प्रकाशचंद, चौक, कानपुर।

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकम्बर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला सीतापुर
मुकदमा नंबर २४७ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १०—२—१९३८ ई०

१—रघुबरसिंह
२—बजरंगबख़्शसिंह } पिसरान हरिपालसिंह
३—रामसिंह नाबालिग वल्द रघुबरसिंह बविलायत रघुबरसिंह पिदर खुद
४—लछिमनसिंह नाबालिग वल्द बजरंगबख़्शसिंह बविलायत बजरंगबख़्शसिंह पिदर खुद } अकवाम ठा सा० मौ कुंडी प० व बिसवाँ ज़ि० सीता

सायलान

बनाम

१—शिवदीन वल्द जोधे कौम कुर्मी सा० पंडरिया मशमूले रेवान प० व त० बिसवाँ ज़ि० सीतापुर
२—पराग वल्द नामालूम कौम ब्राह्मण सा० लालपुर प० तंबौर त० बिसवाँ जिला सीतापुर
३—गोकरन वल्द बेनीमाधो कौम ब्राह्मण साकिन कमलापुर प० व त० बिसवाँ जिला सीतापुर
४—सुखदेव वल्द शिवरतन
५—लक्ष्मीनारायण वल्द रामदयाल } अकवाम ब्राह्मण साकिनान भैसहर परगना व तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर
६—बलरामसिंह वल्द ठाकुर शिवराजसिंह कौम ठाकुर साकिन अहिरोरी बाजार परगना व तहसील बिसवाँ जिला सीतापुर
७—रघुवीरसिंह वल्द साँवलसिंह कौम ठाकुर साकिन धन्नाग परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापुर
८—कन्हैयाप्रसाद वल्द कुंजबिहारीलाल कौम ब्राह्मण साकिन भैसहर प० व त० बिसवाँ ज़िला सीतापुर

फरीकसानियान

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहे ज़ैल दरख़्वास्तकुनिंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराहत क़र्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स का कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल हासिल हो, तो अंदर मीयाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद फेहरिस्त (अलिफ़)

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवैयत हकीयत	मालगुजारी	खोकल
१	मौजा कुंडी परगना व तहसील बिसवाँ ज़िला सीतापुर थोक मुन्नूसिंह		खाता नं० ९ १ बिस्वा ६ बिस्वांसी ५ कचवांसी	हकीयत जमींदारी हक़ आला मौरूसी	२६।)	२॥=)
२	मौजा इस्मायलपुर प० व तह० बिसवाँ ज़िला सीतापुर	मुन्नूसिंह	खाता नं० ५ १ बिस्वा ५ बिस्वांसी	,,	८॥।)	॥=)
				मीज़ान	३५)	३॥)

फर्द (ब)

१—गाय	१ रास	७)
२—भैंस मय पड़िया	४ रास	८०)
३—घोड़ा	१ अदद	४०)
४—बैल	२ रास	५०)
५—तख़्त चोबी	१ अदद	५)
	मीज़ान	१८२)

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू जगवंशकिशोर टंडन साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर

मुक़द्दमा नं० ८२८ सन् १९३६ ई०

हरगाह करमाराम व सूरतसिंह नाबालिग़ान वल्द मुल्हा बविलायत मुसम्मात मुख्तारी वली वालदा ख़ुद क़ौम शूद्र साकिन मौज़ा सम्भालकी परगना पुरछपार ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर खेवट	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले के मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
५	मुज़फ़्फ़रनगर		मौ० सम्भालकी प० पुरछपार मुहाल मधा	कुल	२१ बी० ६ बि०	३२॥।–)

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत की वसाअत (विस्तार)

एक मंज़िल मकान शर्करुया तामीरा ख़ाम अहाते के अंदर दो कोठे जनूबरुया पशोपेश मय सहन मय हक़ आमद-रफ़्त वाके सम्भालकी परगना पुरछपार

शर्की	गर्बी	जनूबी	शुमाली
सहन व रास्ता	मकान कुंदन वग़ैरह	मकान लछमन वग़ैरह	मकान वारू

एक मंज़िल घेर शर्करुया मुश्तमिल एक कोठा ग़र्बरुया तामीरा ख़ाम मय छप्पर घास पोटा वाके सम्भालकी परगना पुरछपार

शर्की	गर्बी	जनबी	शुमाली
सहन व रास्ता	मकान संदल वग़ैरह	रास्ता	मकान शादो व तुलसी वग़ैरह

एक मंज़िल घेर ग़र्बरुया ख़ाम मुश्तमिल एक कोठा ग़र्बरुया व दहलीज़ ग़र्बरुया वाके सम्भालकी परगना पुरछपार

शर्की	गर्बी	जनूबी	शुमाली
मकान संदल वग़ैरह	सहन व रास्ता	मकान कल्लनमली	आराज़ी उफ़्तादा व चाह पुख़्ता

१

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दर्जा दोयम मुकाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी न० ४२१ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १९ फरवरी सन् १९३८ ई०

ठाकुरप्रसादसिंह वल्द नोखेसिंह व यदुनाथसिंह बालिग़ व विक्रमसिंह व सोमसिंह नाबालिग़ान बविलायत ठाकुरप्रसादसिंह पिसरान ठाकुरप्रसादसिंह अक़वाम ठाकुर साकिन मौजा बंजरिया परगना आलमनगर जिला हरदोई

कर्ज़दार सायलान

बनाम—नेतराम

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान मजकूरेवाला साकिन बंजरिया जिला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख़्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे ।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

(फेहरिस्त) अलिफ़

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नं० खेवट व मुहाल	दरख़्वास्तदिहिंदा की मुतालिक़ क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसदीक़	बमाफ़िक़ हक़ीयत दरख़्वास्त दिहिंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदिहिंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	मालिकाना	मौजा बंजरिया परगना आलमनगर वाक़ै खाता खेवट नं० १ मुहाल बख़्तावरसिंह	५ बिस्वा मिनजुमला २० बिस्वा	कुल	२६।)	
२	,,	,,	मौज़ा बंजरिया परगना आलमनगर वाक़ै खाता खेवट नं० १ मुहाल ठाकुरप्रसादसिंह	६ बिस्वा ४ बिस्वांसी १६ कचवांसी $२\frac{५}{५}\frac{२}{२}$ह	,,	४२।)	
३	,,	,,	मौजा बंजरिया परगना आलमनगर वाक़ै पट्टी नं० २	११ बिस्वांसी १२ कचवांसी $११\frac{७}{४५}$	,,	८॥।≡)	

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराजी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नं० सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाबत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	बैल	दो रास	
२	लहढू	एक	
३	गाय	दो रास	
४	भैंस	एक रास	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ३ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ७८४ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १९—१—१९३८ ई०

रघुवरदयाल वल्द मैकूलाल क़ौम कायस्थ पेशा ज़मींदारी साकिन क़स्बा साँडी वारिदहाल शहर सीतापुर मुहल्ला गीरकगंज परगना खैराबाद ज़िला सीतापुर क़र्ज़दार सायल

बनाम—श्यामबिहारी वग़ैरा

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायल मज़कूरे बाला साकिन साँडी ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तफ़सील	बसाबत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	×	मौज़ा दाऊदनगर परगना शाहाबाद	२ बिस्वा १० बिस्वांसी मिनजुमला २० बिस्वा	कुल	२४-) ६ पाई	

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुतालिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	२ किता ऊफतादा आराजी आबादी नंबरी $\frac{१०४२}{८६५}$ व $\frac{६६२}{५९१}$ साबिक वाके था मौजूवा कस्बा साँडी परगना साँडी		
२	दस्तावेज रेहननामा नविश्ते हाफिज रमजान वल्द कादिरबख्श बहक रघुबरदयाल तादादी ८००) जिसका दावा है		जिसका दावा दायर है
३	३ किता मकान पुख्ता वाके मुहल्ला कचेहरी रोड शहर लखनऊ नंबरी ५३८, ५३९ व ५४०		
४	बर्तन खानेदारी इस्तेमाली	१० सेर पुख्ता	
५	चारपाई	२ अदद	
६	लालटेन	२ ,,	
७	कुर्सी	२ ,,	
८	मेज खुर्द	१ ,,	
९	तख्त चौबी	१ ,,	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २७ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० व्रजनाथ ज़ुतशी साहब स्पेशल जज साहब बहादुर खीरी दरजा दोयम मुक़ाम लखीमपुर

इनकमबर्ड मुक़द्दमा नंबरी नंबर १८७ सन् १९३७ ई०

तारीख़ पेशी ८ फ़रवरी सन् १९३८ ई०

कप्तान एल० डी० डब्लू० हरसी साहब व एल० डी० हरसी कौम अँगरेज़ एंग्लो इंडियन सा० ज़िमींदार मौ० किशनपुर-हरीपुर परगना खुटार ज़िला शाहजहाँपुर

कर्ज़दार सायल

१—सेठ व्रजबिहारीलाल व सेठ मथुराप्रसाद
२—अमरनाथ सेठ नाबालिग बविलायत सेठ श्यामकिशोर पिदर खुद
३—बा० मुनेश्वरदत्त व बा० सीताराम ऐडवोकेट कौम कायस्थ

} अक़वाम खत्री } साकिनान लखीमपुर परगना व ज़िला खीरी

चूँकि कप्तान एल० डी० डब्लू-हरसी वल्द लायनल डगलस हरसी साकिन किसनपुर-हरीपुर परगना खुटार ज़िला शाहजहाँपूर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेह की मुस्तकिल काबिल व विरासत काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाबत हकीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	
१	खीरी	हकीयत ज़मींदारी	मौज़ा पतेरा परगना पलिया कलाँ तहसील निघासन	हकूक सायल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल	२० बिस्वा मुसल्लम	मालगुज़ारी २५) अबवाब १॥)	
२	,,	,,	मौज़ा चोका परगना पलिया कलाँ तहसील निघासन	,,	,,	मालगुज़ारी १) अबवाब -)७॥०	
३	शाहजहाँपुर	,,	मौज़ा किशनपुर-हरीपुर पर० खुटार ज़िला शाहजहाँपुर	,,	,,	मालगुज़ारी १२०) अबवाब २२॥)	

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो हस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	बमाग्रत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	बँगला फूस मय बाग (फुलवाड़ी) वाक़ै मौज़ा किशुनपुर-हरीपुर परगना खुटार ज़िला शाहजहाँपुर जो कि सायल के रहने का मकान है	१ मय जुमला हुक़ूक़	कीमत तख़मीनन २००)
२	एक बे० हिंदोस्तानी घोड़ी उम्र १४ साल ऊँचाई १४ × २ हाथ	१	क़ीमत तख़मीनी १५०)
३	एक हरी हिंदोस्तानी पोनी उम्र ४ साल ऊँचाई १२ हाथ	१	कीमत तख़मीनी ६०)
४	भैंसे	२ रास	कीमत तख़मीनी ३०)
५	गाएँ	४ रास	कीमत तख़मीनी १०)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २२ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(ऑर्डर ५, कायदा १ व ५)

ब अदालत जनाब बाबू गिरवरचरन साहब मुंसिफ़ बस्ती ज़िला बस्ती

नंबर मुक़द्दमा १०६० सन् १९३७ ई०

जगनारायन ओझा वल्द रामरतन ओझा साकिन ककुवा ओझागंज तप्पा नवाईज परगना नगर पछु मुंसि बस्ती ज़िला बस्ती

मुद्दई

बनाम

रामदुलार उर्फ़ दुलार ओझा वल्द भुलई ओझा साकिन ककुवा ओझागंज तप्पा नवाईज परगना नगर प मुंसफ़ी बस्ती

मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत तमस्सुक के दायर की है, लिहाज़ा आपको हुक्म होता है आप बतारीख़ ५ माह जनवरी सन् १९३८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के मुक़द्दमे के हालात से वाक़ई वाकिफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़दमा का जवाब सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हों और जवाबदि दावा की करें। और हरगाह वही तारीख़ जो आपके इहज़ार, लिये मुक़र्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द के तजवीज़ हुई है। पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर व तमाम दस्तावेज़ात को जिन पर आप अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आप इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू फ़ैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ ४ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी किया गया

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ७५४ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २१ जनवरी सन् १९३८ ई०

चंदिकासिंह वल्द रघूसिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा राघौपुर परगना कछंवऊ तहसील बिलग्राम ज़िला हरदोई

बनाम

शंकरबख्शसिंह वग़ैरा

क़र्ज़्ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि चंदिकासिंह वल्द रघूसिंह क़ौम ठाकुर साकिन राघौपुर ज़िला हरदोई ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़्ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मयनंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत मुंदर्जा रजिस्टर दफ्तर कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
	हरदोई		राघौपुर पट्टी रघुसिंह खाता नंबर १४ मुहाल सीमावा	मौरूसी	१ बिस्वा	७८=)	
	,,		राघौपुर खाता नं० १ मुहाल दंसावा	,,	१ बिस्वा मिनमजुमला १० बिस्वा	४१)	

फेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद, जो बहस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवा
सन् १९०८ क़ुर्क़ व नीलाम हो सकती है।

नं० सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाअत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	गाय दो रास	क़ीमत २०)	
२	लढ़ी १	क़ीमत १०)	
३	घोड़ा १	क़ीमत १५)	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १९ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये

नमूना नंबर १६६

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ८ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम अलीगढ़
मुक़द्दमा नं० ४२१ सन् १९३६ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट १
सन् १९३४ ई०) जैसा कि बज़रिय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

रामचरनसिंह व बदरीसिंह व कल्यानसिंह व देवेंद्रसिंह व महेंद्रसिंह पिसरान भोलासिंह सहर सा० मउ
ज़िला अलीगढ़

ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस
लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ८ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४
जैसा कि बज़रिय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो साय
मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए नि
क़रज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर
दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए
और ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ सायल मज़कूर जुमला
व मौरकामात के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाक़ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० दाताराम साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम लखनऊ
मुकदमा नंबरी नंबर १६६ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ४-१-१९३८ ई०
प्रभूदयाल वल्द बचई ब्राह्मण साकिन मौज़ा बुढ़ौना परगना काकोरी ज़िला लखनऊ क़र्ज़दार सायल
बनाम
मु० हजारा बेवा नबीउलहसन कौम शेख साकिन काकोरी ज़िला लखनऊ
क़र्ज़ख्वाह फरीकसानी

चूँकि प्रभूदयाल वल्द बचई साकिन बुढ़ौना ज़िला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िम्नी (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० प्रभूदयाल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नाम जिला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदिहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसायत हकीयत दरख्वास्त दिहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वस्तदिहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
लखनऊ	ज़मींदारी	मौज़ा बुढ़ौना प० काकोरी ज़िला लखनऊ	हिस्सा ६ पाई मिनजुमला सोलह आना	हक आला	मालगुज़ारी अबवाब	

दीगर जायदाद

एक क़िता मकान वाक़ै मौज़ा बुढ़ौना परगना काकोरी ज़िला लखनऊ महदूदा ज़ैल
पूरब सहन पच्छिम खँडहर भिखारी कोंध दक्खिन रास्ता उत्तर मकान शिवदयाल

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

बर सिल-वार	किस्म जायदाद	बसायत हकीयत दरख्वास्तदिहंदा	कैफियत
१	चारपाई	३ अदद	
२	कलसा बिरंजी	१ अदद	
३	गाय मय बछा	२ रास	
४	बछिया	१ रास	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख १७ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम एटा बइजलास जनाब मि० नीरजनाथ मुकर्जी

मुकद्दमा नं० ३०७ सन् १९३६ ई०   तारीख पेशी १—२—१९३८ ई०

हरगाह मक्खनलाल वल्द मु० चिरौंजीलाल कायस्थ साकिन सहावर जिला एटा ने एक दरख़्वास्त हस्ब द ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की है, लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा जिम्नो १ दफ़ा ११ ऐ मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख़्वा देनेवाले हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह उस तारीख से, जो इस इश्तिहा संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख है, तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम आगे अपनी अर्जी पेश करे. जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क)

कर्जदार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक

१—हक़ीयत जमींदारी मौजा हरनाथपुर परगना सोरों मुहाल बादुल्ला खे० नं० विस्त बिस्वा र ८१-८६ मालगुजारी ७४)

२—,, ,, ,, मुहाल शादीलाल खेवट नं० १ पट्टी प्रभूलाल मवाजी ४ पन

३—,, ,, ,, ,, ,, नं० ३ पट्टी चिरौंजीलाल ६ कच० ११ त १० तन० १६½ पन० जम० ≡)

४—मुआफ़ी मुंदरजा खे० नं० ५ मौजा प्रभूपुरा मुहाल शिवनाथ परगना सहावर—३४

जमीमा (ख)

५—सीर वाके मौजा हरनाथपुर मुहाल बादुल्ला रकबा ११४ बीघा

६—काश्त दखीलकारी वाकै मौजा खितौली व गनेशपुर व पहाड़पुर खेड़ा व शाहपुर मुआफ़ी एक सौ

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बाबू भगवतीप्रसाद स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुकाम उन्नाव

मुकद्दमा नंबरी नंबर ७७ सन् १९३६ ई०   तारीख पेशी २९—३—१९३८ ई०

देशराजसिंह वल्द चंद्रिकासिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा बेहटामुजावर परगना बाँगरमऊ जिला उन्नाव

कर्ज़दार सायल

बनाम

१. भूधरसिंह वल्द तिलकसिंह
२. सहदेवसिंह बालिग
३. मुनेश्वरसिंह
४. रामेश्वरसिंह
५. सिकंदरसिंह
६. अनूपसिंह
} नाबालिगान बविलायत सहदेवसिंह } पिसरान केवलसिंह

७. रिखनाथसिंह
८. महासिंह
९. सरदारसिंह पिसरान } दिगपालसिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा हसुवापुर परगना बाँगरमऊ ज़िला हरदोई
१०. बाबू उद्देशनरायन साहब वकील रिसीवर हरदोई
११. राधेलाल वल्द भवानी कौम वैश
१२. विश्वनाथसिंह वल्द सूरतसिंह उर्फ़ मुन्नासिंह
१३. हरदेवसिंह वल्द शिवबरनसिंह
१४. भूधरसिंह वल्द सूरतसिंह

१५. रामभजन
१६. परमेश्वरदीन
} पिसरान गुरप्रसाद
१७. गंगादीन वल्द बंदी कौम ब्राह्मण सा भटामजावर परगना बाँगरमऊ जिला
१८. राजकुमार
१९. तेजकुमार
} नाबालिगान पिसरान बाबू नरायन भार्गव बविलायत मु० जानकी दादी खुद साकिन लखनऊ मुहल्ला
२०. भभूतीप्रसाद वल्द नामालूम कौम साकिन काशीरामखेड़ा परगना जिला उन्नाव
२१. बद्री
२२. रामचरन
} पसरान नन्हू कौम कुरमी बेहटा मुजावर परगना बाँगरमऊ ज़िला
२३. सीताराम वल्द नामालूम कौम साकिन मौजा हिया परगना जिला हरदोई

कर्जख्वाह फरीकैन

चूँकि देशराजसिंह वल्द चंद्रिकासिंह साकिन भटामजावर जिला उन्नाव ने एक दरख्वास्त हस्ब

ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा मुमाजिक मुतहद्दा कर्जदार के हुकूक मालिकाना मु० माराजी

फेहरिस्त (अलिफ)

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदिहिंदा की मुस्तकिल व काबिल विरासत व काबिल इंत-काल हकीयत की तसरीह	वसाहतहकीयत दर-ख्वास्त दिहिंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा मशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
१	उन्नाव	हकीयत जमींदारी तादादी ।-) ८ पाई १७ डि० मुसल्लम मुहाल लाखतासिंह मौजा बेहटा मुजावर परगना बाँगरमऊ जिला उन्नाव	बेहटा मुजावर मुहाल लाखतासिंह				

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २६ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

اهتمام سرسری اطلاع نامه بنام دائنان

بعدالت جناب منشی همایوں مرزا صاحب ڈسٹرکٹ جج بهادر باره‌بنکی—

درخواست امور دفعه ۵۶ سنه ۱۹۳۷ع

منوں بنام کهیاپرشاد وغیره

بمقدمه قرار دئے جانے دیوالیه مسمی منوں ولد رام‌پرشاد قوم هلوائی ساکن کوتو
جگجیون داس پرگنه دریاآباد تحصیل رام‌سنیهی گهاٹ ضلع باره‌بنکی—

بنام جمله قرضخواهان متعلقه مقدمه هذا—

اطلاع دیجاتی هے که بتاریخ ۶ نومبر سنه ۱۹۳۷ع مدیون مذکورالصدر نے ایک قطعه
درخواست اس عدالت میں بدیں غرض پیش کی هے که وه دیوالیه قرار دیا جاوے—اور
یه که بتاریخ ۲۹ نومبر سنه ۱۹۳۷ع عدالت هذا نے اس امر کا اتمینان کرکے که مدیون کی
جائداد کا اهتمام سرسری طریقه پر کیا جاوے اور بتاریخ ۲۹ جنوری سنه ۱۹۳۸ع بنابر
فریق سماعت درخواست و اظهار مدیون مذکور مقرر کی هے اس امر کی بهی اطلاع دیجاتی
هے که عدالت تاریخ مذکورالصدر پر بقبضه و تقسیم جائداد مدیون مذکور کی فوراً کارروائی
شروع کر سکتی هے—تم کو اختیار هے که تم حاضر هوکر اس تاریخ پر ثبوت دو—ثبوت
کسی دعوی کا جو تم کرنا چاهو تاریخ مذکور پر یا اس کے قبل داخل عدالت کرنا لازمی
هوگا—میرے دستخط اور مهر عدالت کے آج بتاریخ ۲۱ دسمبر سنه ۱۹۳۷ع جاری کیا گیا—

منصرم

به اجلاس جناب بابو مہارادہ بہادر لال صاحب بہادر اسپیشل جج درجہ دوم
ہجہانپور—

نمبر مقدمہ ۳۱۲ سنہ ۱۹۳۶ع　　　تاریخ پیشی ۲۷ جنوری سنہ ۱۹۳۸ع

لو غیر صحیح العقل ولد پنڈت بہاری لال قوم برہمن ساکن سایل موضع مونڈگواں پرگنہ
پور ضلع شاہجہانپور—　　　سائل

بنام

پنڈت برج ناتھ وغیرہ　　　فریق ثانیان

بنام پنڈت برج ناتھ ولد پنڈت کاشی ناتھ قوم برہمن ساکن شہر دہلی واردحال اندور
علہ پارسی و مسماۃ کملاجی رانی زوجہ پنڈت برج ناتھ قوم برہمن ساکن
ال اندور محلہ پارسی بر مکان پنڈت برج ناتھ و بہاری ولد گوبند قوم اہیر ساکن موضع
ونڈگواں پرگنہ جمور ضلع شاہجہانپور—

ہرگاہ جائداد مصرقہ ذیل درخواست قرضخواہان نے اپنی بیان تحریری درخواست قرضہ
یں دفعہ ۸ و ۱۰ یو-پی ایکٹ ۲۵ سنہ ۱۹۳۴ع میں ظاہر کی ہے—لہذا ہر خاص و عام کو
طلاع دیجاتی ہے کہ اگر کسی شخص کو کوئی حق نسبت جائداد مقروضہ ذیل حاصل ہو تو
ادر میعاد ۳ ماہ شایع ہونے نوٹس گورنمنٹ گزٹ عدالت ہذا میں پیش کرے—

حقیت زمینداری موضع مونڈگنواں محال تفصیل دویم پٹی رنگیلے لال پرگنہ جمور ضلع
شاہجہانپور تعداد بسوہ رقبہ ۶۱—۲۸۴ جمعی ۲۸۲ روپیہ معہ ابواب کے رقبہ ۱۴—۲۴
جمعی ۲۱ روپیہ—

ایکقطعہ مکان واقع موضع مونڈگنواں پرگنہ جمور ضلع شاہجہانپور محدودہ ذیل

شرقے	غربے	جنوبے	شمالے
مکان ڈوری لال	راستہ	مکان کنہئی لال وغیرہ	راستہ و چوپال

پلنگ	لوٹا	پتیلی	توا	تھالی
یک	یک	یک	یک	یک

منصرم

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा मुमालिक मुत्तहदा (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुकाम हरदोई
मुकद्दमा नं० ५८९ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १८ फरवरी १९३८ ई०

हुलास वल्द सिवकी
पराग़ी
रामचरन } पिसरान हुलास
छोटेलाल
परमेश्वरदीन } नाबालिग़ान पिसरान रामचरन बविलायत
मथुरा } पिदर खुद
} अक़वाम ब्राह्मण साकिनान मौज़ा सारी
छछेटा परगना गोपामऊ डाकखा
टडमावाँ तहसील व ज़िला हरदोई

साइलान

जंगूसिंह वग़ैरा

बनाम

फ़रीक़सानियान

चूँकि सायलान साकिनान सारीपुर छछेटा ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐ
जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि
जायदाद की तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने
दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद ज़ाहिर की है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के गज़ट मुमालिक मुत्तहदा में शाया होने की तारीख़ से तीन माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे ।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुतज़किरा क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई		मौज़ा गुलरहा मुहाल ख़ास परगना गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई	मालिकाना	४ बिस्वा २ बि० १६ कचवांसी ५ ननवांसी खाता खेवट नं० १२	८३।)॥	

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो ब इस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	बहडू शिकस्ता	१	
२	चारपाई	२	
३	गाय	६ रास	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ४ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ । मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम आगरा

मुक़द्दमा नं० ६६१ सन् १९३६ ई०

हरगाह इरशादअलीख़ाँ वल्द मक़सूदअलीख़ाँ व मु० सरफ़राज़ी बेगम बेवा मक़सूदअलीख़ाँ व फ़ातिमा बेगम व ख़ातून बेगम दुख़्तर मक़सूदअलीख़ाँ साकिन मुहम्मदाबाद परगना एतमादपुर ज़िला आगरा ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान् मज़कूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह ता० मुश्तहरी से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के अंदर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं ।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	आगरा	ज़मींदारी	मौज़ा मुहम्मदाबाद मुहाल शफ़ात-अलीख़ाँ परगना एतमादपुर कब्ज़ा नंबर १	३३६ बीघा ७ बिस्वा	११२ हिस्से में से ३४ हिस्से सायलान नं० २ के	मालगुज़ारी ५८५) अबवाब ५८॥)

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर $\frac{१५१}{\frac{२२३}{४१२}}$ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १४—१—१९३८ ई०

अनसारहुसेन नेवासा गुलामहुसेन साकिन रुदौली मुहल्ला टेढ़ी बाज़ार परगना रुदौली बाराबंकी

क़र्ज़दार सायल

लाला रामलखनलाल वल्द लाला पुरुषोत्तमदास अगरवाल कस्बा रुदौली क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँ कि अनसारहुसेन नेवासा गुलामहुसेन साकिन रुदौली ज़िला बाराबंकी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, वह वो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बमायत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बारबंकी	ग़ैरमनक़ूला	मौज़ा मेखसंडा मु० बरई प० रुदौली तहसील रामसनेहीघाट जि० बाराबंकी	हक़ीयत आला	हिस्सा ।-) मिनजुमला १६ आना मो० बरई	मालगुज़ारी २१५॥=) अ० २१/०५	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २१ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम एटा इजलासी जनाब मि० एन० एन० मुकुर्जी साहब

मुकद्दमा नं० १८७ सन् १९३६ ई०

हरगाह लछमीनरायन पिसर मुतवफ़्फ़ा गंगाविशुन, भगवानदास व बाबूराम बालिग़ान व प्यारेलाल नाबालिग़ बविलायत लछमीनरायन पिसरान लछमीनरायन क़ौम लोध साकिन पर्थो ज़िला अलीगढ़ की ओर से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या इक़रारों के हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुतालिक़

नंबर खेवट	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	एटा	हक़ीयत ज़मींदारी	देवरी पहलादपुर परगना सोरों मुहाल शिवलाल खाता खेवट नं० १	२० बिस्वा ३३८—१२	२० बिस्वा रक़बा३३८—१२	४७०।)

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० ब्रजनाथ जुत्शी स्पेशल जज साहब बहादुर खीरी दरजा दोयम मुकाम लखीमपुर
इनकमर्ड मुकद्दमा नंबरी नंबर १६८ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २३ दिसंबर सन् १९३७ ई०

१—रामलाल वल्द शहजादे कौम ब्राह्मण साकिन अलियापुर परगना औरंगाबाद जिला खीरी
क़र्ज़दार सायल

बनाम

१—बालकराम वल्द रघुबरदयाल कौम ब्राह्मण साकिन संसरा परगना चड़रा जिला सीतापुर
कर्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि रामलाल वल्द शहजादे साकिन अलियापुर ज़िला खीरी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से २ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे ।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मयनंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल व काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हक़ीयत की तसरीह	दरख्वास्तदेहंदा की वसाअत हक़ीयत मुंदर्जा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफियत
१	खीरी	जमींदारी	मौजा अलियापुर मुहाल रामसहाय पर० औरंगाबाद जिला खीरी	हकआला	५ बिस्वा १८ बिस्वांसी	मालगुजारी १६॥=)॥। अबवाब १॥।=) ८ पाई	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १५ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ ।

मुंसरिम

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम एटा इजलासी जनाब मि० एन० एन० मुकुर्जी साहब बहादुर

मुक़द्दमा नं० ४२९ सन् १९३६ ई०

हरगाह अलीमुद्दीनखाँ उर्फ छिद्दूखाँ वल्द नईमुद्दीनखाँ व हकीमुन्निसा जौजे नईमुद्दीनखाँ क़ौम चौधरी नौमुसलिम साकिन बिलराम परगना बिलराम ज़िला एटा ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह उस तारीख से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख है, तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क)

कर्ज़दार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक़

१. हकीयत जमींदारी वाकै जखड़ा महेशपुर मुहाल अलीमुद्दीनखाँ पट्टी नईमुद्दीनखाँ खाता खेवट नं० २ परगना बिलराम जिला एटा हकीयत मवाजी १९ बिस्वांसी १० कच० रकबा ४०—२८ मिनजुमला ८ हिस्सा के १ हिस्सा जमई ५५)

२. हकीयत जमींदारी मवाजी रकबई०—८६ $\frac{1}{2}$ डि० वाकै बिलराम मुहाल राजा शंकरसिंह खाता नं० ४९ परगना बिलराम जिला एटा जमई २।−)॥

३. हकीयत जमींदारी मवाजी मिनजुमला रकबई ५—२८ डि० वाकै ताजिबपुर सराय मुहाल लालचंद खाता खेवट नं० ४ परगना बिलराम जमई =)१ के ८४ डिस्मिल

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक्कों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

१. एक मंजिला मकान तामीरा खाम वाकै बिलराम मुहल्ला चौधरियान पूरब रास्ता यानी गली पश्चिम मकान जहूरअलीखाँ उत्तर रास्ता व सड़क दक्खिन मकान अहमदनूरखाँ

मुंसरिम

نمونہ نمبر ۱۷۰

فارم اطلاع‌نامہ حسب دفعہ ۱۱ ایکٹ جائدادہائے مقروضہ ممالک متحدہ

بعدالت اسپشل جج درجہ دویم شاہجہانپور

بہ اجلاس جناب بابو مہاراجہ بہادرلعل صاحب بہادر اسپشل جج شاہجہانپور درجہ دویم

مقدمہ نمبر ۱۲۳ ۱۹۳۶ع

تاریخ پیشی ۲۹
۱
۳۸

کنوربہادر وغیرہ سائلان بنام راملال وغیرہ فریق ثانیان

ہرگاہ مسمیان کنور بہادر ولد کنگاسہائے ولد منشی کرپارام و بھگوتی پرشاد پسر نابال
کنور بہادر بولایت کنوربہادر مذکور پدر خود قوم کایستھ ساکنان موضع پرسدھیو
پرگنہ سلیم‌پور ضلع بدایوں وارد حال موضع جونرا پرگنہ کھیرہ کھیرہ ڈاکخانہ جیتی پو
سائلان
ضلع شاہجہانپور
نے ایک درخواست حسب دفعہ ۴ ایکٹ جائدادہائے مقروضہ پیش کی ہے

لهذا اِس تحریر کی رو سے حسب دفعه ضمنی ۱ دفعه ۱۱ ایکٹ مذکور اِطلاع دی جاتی
که اُس جائداد کو جس کي تفصیل ضمیمه‌هاے منسلکه میں درج هے درخواست دهنده
حسب دفعه ۸ یا حقداران نے حسب دفعه ۱۰ سایلان مذکور کی جائداد بتایا هے*

اگر کوئي شخص جائداد مذکور پر کوئي دعویٰ رکھتا هو تو وه تاریخ شایع هونے نوٹس
ٹ سے جو اِس اِشتهار کے گزٹ ممالک متحده میں ثائع هونے کی تاریخ هے ۳ ماه کے
ر اپنے اِستحقاق کے باره میں اُس حاکم کے روبرو اپنی عرضی پیش کرے جس کے دستخط
ل میں ثبت هیں—

ضمیمه (الف)

قرضدار کے اِستحقاق مالکانه متعلقه آراضي

پرگنه	موضع	محال	پٹی	نمبر کهاته کهیوٹ	تعداد کل حصه	رقبه کل	مالگزاری معه ابواب کل	تعداد حصه سائلان
کهیڑه کهیڑه	جوفرا پٹی تا ڈنڈاباد	بانگر	کنور بهادر	۱	۲ بسوه ۱۰ بسوانسی	۱۲—۱۶	۲۶ روپیه ۱۵ آنه	کل کهاته ملکیتی سائلان
,,	,,	کهادر	,,	۱	۲ بسوه ۱۰ بسوانسی	۰۳—۱۷	۱۸ روپیه ۹ آنه	کل کهاته ملکیتی سائلان
,,	نوگنواں نروتم	تهوک تمر سنگه	عالم سنگه	۴	۳ بسوه ۱۳ ک ۱۸ ط ۶ ع ۱۵ ن	۳۴—۱	۳ روپیه ۱۲ آنه	منجمله کل کهاته کے دو ثلث
,,	,,	,,	,,	۵	۱۱ بسوانسی ۱ ک ۱۵ ط	۸۳—۳	۱۱ روپیه ۵ آنه ۶ پائی	منجمله کل کے دو ثلث میں تین چهارم خالص و بقیه ایک ثلث راهنی
,,	,,	,,	,,	۶		۰۱—۱		شاملات حسب حصص
,,	,,	,,	,,	۷				منجمله کل پٹی کے ۱۷

ضمیمه (ب)

قرضدار کی جائداد جو به اِستثناء حقوق مالکانه متعلق آراضي حسب دفعه ۶۰ ضابطه
انی سنه ۱۹۰۸ ع قرق اور نیلام هو سکتی هے*
باغ نمبری ذیل واقعه نوگنواں نروتم پرگنه کهیڑه کهیڑه تحصیل تلهر ضلع شاهجهانپور

نمبر خسره	رقبه	نمبر پٹی	حصه سایلان
۳۱	۳۹—۰	۷	منجمله کل کے نصف
۳۲ (ب)	۱۳—۰	۶	کل

اسپشل جج

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० व्रजनाथ जुत्शी स्पेशल जज साहब बहादुर जिला खीरी दरजा दोयम मुकाम लखीमपुर

मुकद्दमा नंबरी नं० १६९ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १२ जनवरी सन् १९३८ ई०

१—जगन्नाथसिंह
२—शिवसागरसिंह
} पिसरान बरबंडसिंह क़ौम ठाकुर साकिन हैरमखेरा परगना औरंगाबाद तहसील महमदी जिला खीरी

कर्ज़दार सायलान

बनाम

कन्हैयालाल वल्द रामसेवक क़ौम ब्राह्मण साकिन बायकुवाँ परगना औरंगाबाद तहसील महमदी जिला खीरी

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि जगन्नाथसिंह व शिवसागरसिंह पिसरान बरबंडसिंह साकिन हैरमखेरा ज़िला खीरी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल काबिल विरासत व काबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तफ़सील	तादाद हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफ़ियत
	खीरी	हकीयत जमींदारी	मौज़ा हैरमखेरा परगना औरंगाबाद पट्टी जगन्नाथसिंह जिला खीरी	काबिल इंतकाल	खाता नंबर ७ ७½ बिस्वांसी मि० १५ बिस्वांसी पट्टी जगन्नाथसिंह मिनजुमला १६आना मुसम्मा मौज़ा हैरमखेरा परगना औरंगाबाद	मालगुजारी १२=) अबवाब १=) ९ पाई	
	,,	,,	,,	,,	नंबर १५४/६४, १५५/५५ १—२६		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख १० दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह साहब स्पेशल जज बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ८३ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १०—१—१९३८ ई०

मिर्जा हसनयूसुफ वल्द हाजी अहमदमिर्जा साकिन करबलाय मुअल्ला मुल्क ईराक साकिन मौजे खरका परगना बिजनौर तहसील व ज़िला लखनऊ
कर्ज़दार सायल

बनाम

१—लाला रामसरूप वल्द लाला परसोत्तमदास रस्तोगी साकिन अशरफाबाद शहर लखनऊ

२—रायसाहब पंडित जयनरायन मिश्रा साकिन ग्रेन मारकेट गनेशगंज शहर लखनऊ
क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि मिर्जा हसनयूसुफ वल्द हाजीअहमद मिर्जा साकिन करबलाय मुअल्ला मुल्क ईराक़ जिला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नं० बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदिहिंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्त दिहिंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदिहिंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१	लखनऊ	जमींदारी	मौजा खरका परगना बिजनौर तहसील ज़िला लखनऊ मुहाल मिर्ज़ा हसनयूसुफ	१६ आना	मिलकियत आला	६६१॥=)	यह मुहाल पे ।-) मि० १) खरका मजकू था, अब यह १६ आ० करार पाया है
२	,,	,,	,,	,,	,,	२३७)	यह हिस्सा मुहाल ॥=) सूमा मुहाल मेंहदी में शामि था, अब बटवारा जदीद १६ आ० कायम हो

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बहस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताबिक आराज़ी हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क व नीलाम हो सकती है।

नं० सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	१ किता मकान महदूदा जैल वाकै मौजा खरका पर० बिजनौर तहसील व ज़िला लखनऊ		
	पूरब फुलवारी मिर्ज़ा मुहम्मदतक़ी पच्छिम मकान जगन्नाथ मुतअल्की व रघुनाथ बनिया दक्षिण तालाब की नाली उत्तर मकान चुन्नू व खेत बैजनाथ मुराऊ	मुसल्लम	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ११ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम अलीगढ़

मुक़द्दमा नंबर १७९ सन् १९३६ ई०

हरगाह खंगारसिंह वल्द यादरामसिंह व टीकमसिंह वल्द यादरामसिंह व सुजानसिंह व हरसिंह पिसरान टीकमसिंह व नेमसिंह व राजपालसिंह नाबालिग पिसर नेमसिंह बविलायत खंगारसिंह कौम ठाकुर साकिनान बसई बाबस परगना व तहसील सिकंदराराऊ ज़िला अलीगढ़ की ओर से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायबान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह १—१०—३७ से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपना अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क)

कर्ज़दार के हक मालिकाना आराजी के मुताल्लिक

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	२	३	४	५	६	७	८
१	अलीगढ़	जमींदारी	मौजा बसई बाबत मुहाल खंगारसिंह खेवट नंबर१		१८७ बीघा १ बिस्वा १० बिस्वांसी आराजी पुख्ता हिस्सा रसदी	जमई १८५॥।=) ५ पाई	
२	,,	,,	नूरपुर				

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला सीतापुर
मुक़द्दमा नं० २१३ सन् १९३६ ई०
अर्जुनसिंह वल्द सुरजबलीसिंह साकिन मौजे सुर्जनपुर परगना बाड़ी तहसील सिधौली ज़िला सीतापुर

बनाम

१—रामदत्त वल्द ईश्वरदीन
२—हरदयाल वल्द बद्रीप्रसाद ब्राह्मण
३—पुत्तूलाल वल्द सूरजबली ब्राह्मण
४—मुन्नूसिंह वल्द भूपसिंह ठाकुर
साकिन मौजे चौबिया मज्जूपुर परगना बाड़ी तहसील सिधौली ज़िला सीतापुर

५—सवितादीन वल्द जनार्दन ब्राह्मण साकिन डिकोली परगना बाड़ी तहसील सिधौली ज़िला सीतापुर
६—राजाबहादुर सूरजबख़्शसिंह ओ० बी० आई० तालुक़दार कसमंडा साकिन कमलापुर परगना पीरनगर तहसील सिधौली जिला सीतापुर

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह ज़ैल दरख्वास्तकुनिंदा व क़र्ज़ख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराह क़र्ज़ों में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रह ज़ैल हासिल हो, तो मीआद तीन माह तारीख़ जारी होने नोटिस हज़ा के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद मुन्दर्जा बयान तहरीरी सायल दरख़्वास्तकुनिंदा (फ़ेहरिस्त ब)

नं० शुमार	मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवैयत हक़ीयत	मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	मौ० सुरजनपुर परगना बाड़ी तहसील सिधौली ज़िला सीतापुर		हिस्स =) मिल० ।) खाता खेवट ६, १२, १४	ज़मींदारी		
२	मौ० मदारपुर परगना बाड़ी तहसील सिधौली ज़िला सीतापुर	दुर्गाबख़्श	हिस्सा -) ४ पाई खाता खेवट नं० १	,,		

(फ़ेहरिस्त ज) बाग़ दो रास, बाग़ दो क़िता वाक़े मजरा बसावन मौज़ा सुर्जनपुर मुंसरिम

नमूना नंबर १७० [बवक़्त नीलाम फ़रोख़्त के लिये

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू जगवंशकिशोर टंडन साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर

मुक़द्दमा नं० ८५६ सन् १९३६ ई०

हरगाह देवीसिंह पिसर कूड़ा कौम जाट साकिन मौज़ा सलीमपुर परगना पुरछपार हाल मीरापुर परगना जौली जानसठ व राजाराम बालिग़ पिसर देवीसिंह व तिलकराम, वेदराम व धरमपाल नाबालिग़ान पिसरान बविलायत देवीसिंह साकिनान मीरापुर परगना जौली जानसठ व मीरसिंह पिसर कूड़ा व ओमप्रकाश, महावीर व रुद्देवीर नाबालिग़ान पिसरान बविलायत मीरसिंह साकिनान मौज़ा सलीमपुर परगना पुरछपार ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने एक दरख़्वास्तहस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क) क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर खेवट	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुतअल्लिक़ व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा सरकारी मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
५	मुज़फ़्फ़रनगर		मौज़ा सलीमपुर परगना पुरछपार मुहाल गेरदाई पाम	¼ हिस्सा अज़ कुल खेवट	१६ बी० २ बि०	२१।=)
१०	,,		,,	शामिलात मुहाल	१४ बी० ७ बि०	२॥=)

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुरादाबाद

मुकद्दमा नं० ६७ सन् १९३६ ई०   तारीख़ पेशी ४ जनवरी सन् १९३८ ई०

फ़ज़लुररहमानखाँ   कर्ज़दार सायल

बनाम—रायबहादुर बाबू छोटेलाल वग़ैरा   कर्ज़ख्वाहान फ़रीकसानी

हरगाह फ़ज़लुरहमानखाँ वल्द मुहम्मद अबदुलक़रीमखाँ पठान साकिन मुरादाबाद घेरसय्यदख़ाँ जिला मुरादाबाद ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदाद हाय मकरूजा पेश की है। लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नाथी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायला मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह ता० मुश्तहरी से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गजट में छपने की तारीख है, तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के गज़ट मुमालिक मुत्तहदा में शाया होने की तारीख़ से तीन माह के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

जमीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेह् दा की मुतल्लिक़ क़ाबिल क़िरा-सत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बमाक्षत हक़ीयत दरख़्वास्त देह् दा मु० दर्ज रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेह् दा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	मालगुज़ारी व अबवाब
१	२	३	४	५	६	७	
१	मुरादाबाद	सहराई	मौज़ा ऐंपाड़ा कम्बोह परगना सम्भल मुहाल सुर्ख खेवट नं० २	७२ सेहाय मि० जु० ४३२ सेहाय बाबत २० बिस्वा रक़बई ३३३ एकड़ ५२ डि०	मुन्दर्जा खाना नं० ५	मा० कु० अ० कु० ५७१।), ५७=)	११।) ११।)
२	,,	,,	मौजा पापड़ी परगना अमरोहा मुहाल आसमानी खाता खेवट नं० १	३$\frac{1}{2}$ सेहाय मि० जु० २४ सेहाय बाबत २० बिस्वा रक़बई १२० ए० ६१ डि०	,,	नजराना २६)	अबवाब २२।)

तफ़सील आराजी सीर व खुदकाश्त व काश्त

५७८—१ बीघा ११ बि० रकबई २ एकड़ ४१ डि० वाके मौजा ऐंचेड़ा कमबोह मुहाल सुर्ख नं० २

२७ क़िता ३११ बीघा १५ बिस्वा रक़बई ३७ एकड़ १७ डि० खुदकाश्त

३४ क़िता १०५ बीघा ६ बिस्वा काश्त

मुंसरि

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशायत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मुमालिक मुत्तहिदा
(ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम हरदोई
मु० नंबर ५४१ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ११ जनवरी सन् १९३८ ई०

१ भारतसिंह } पिसरान मर्दनसिंह
२ सूरतसिंह
३ श्रीपालसिंह } पिसरान भारतसिंह
४ शिवरतनसिंह
५ दुर्गाशंकरसिंह } नाबालिगान पिसरान
६ नन्हासिंह } भारतसिंह बविलायत भारतसिंह
७ शिवराजसिंह } पिसरान सूरतसिंह
८ गयाबख्शसिंह
९ गिर्जासिंह } नाबालिगान पिसरान
१०जगन्नाथसिंह } सूरतसिंह बविलायत सूरतसिंह
} अक़वाम ठाकुर साकिन मौज़ा बोहरई परगना कलियानमल तहसील संडीला ज़िला हरदोई

कर्ज़दार सायलान

बनाम

बच्चूसिंह वग़ैरा
क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि भारतसिंह वग़ैरा सायलान ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मज़कूरा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमनी १ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुनसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० मातहत मज़कूर की जायदाद ज़ाहिर की है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तहार के गज़ट मुमालिक मुत्तहिदा में शाया होने की तारीख़ से तीन माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में मुताबिक़ ज़ाब्ता में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा मुमालिक मुत्तहिदा

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ अराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल निकास व क़ाबिल [illegible] हकीयत की तसरीह	[illegible] हकीयत दरख्वास्तदेहंदा [illegible] रजिस्टर [illegible] ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत [illegible] मालगुज़ारी	
१	हरदोई	हकीयत ज़मींदारी	मौज़ा बोहरई मु० कलियानमल परगना कलियानमल	[illegible]	[illegible]		
२	”	”	[illegible]	[illegible]			

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बहस्तिसनाय हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क व नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	नौइयत जायदाद		वसायत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	लहड़ू १ मंजिल कीमत	१५)		
२	बैल काश्तकारी २ रास कीमत	२०)		
३	गाय १ रास कीमत	४)		

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ११—११—१९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरि

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व दरयाफ्त हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० ब्रजनाथ जुतशी स्पेशल जज साहब बहादुर खीरी दरजा दोयम मुकाम लखीमपुर

मुकद्दमा नंबरी नंबर १८१ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी १८—१—१९३८ ई०

१—रामेश्वरसिंह
२—पुत्तानसिंह } पिसरान रनजीतसिंह
३—सरदारसिंह
४—अहलादसिंह
५—बचानसिंह
६—श्रीपालसिंह } पिसरान रघुबरसिंह
७—महाराजसिंह वल्द बेनीसिंह
} कौम ठाकुर साकिनान बस्तौली परगना भूड़ जिला खी

दरख्वास्तदेहंदगान

बनाम

१—मुकुंदराम नाबालिग वल्द रहसबिहारीलाल ब्राह्मण बविलायत मुसम्मात सवितादेवी मादर खुद साकिन अलीगंज परगना भूड़ जिला खीरी
२—श्रीराधाकृष्ण महाराज स्थापित मंदिर गोला गोकरनाथ ठाकुरद्वारा पंडित कालकाप्रसाद व सरबराहकारी रामचरन व श्रीचंद्र व रामअधार व कृष्णदत्त व छोटकऊ व रामनरायन व लक्ष्मीनरायन साकिनान गोला परगना हैदराबाद जिला खीरी
३—छुंगामल वल्द छुन्नूलाल कौम खत्री साकिन मुहल्ला मनीराम की बाग कानपुर
४—कन्हैयालाल
५—मुन्नालाल
६—फतेहचंद } पिसरान लाला गुदुरूमल कौम खत्री साकिनान लखीमपुर परगना व जिला खीरी
७—हजारीसिंह
८—कुंवरसिंह
९—गोबरधनसिंह } पिसरान दुलारसिंह कौम खत्री साकिनान मौजा पौथेपुरवा परगना भूड़ जिला खीरी
१०—चंद्रधर वल्द बालीलाल कौम ब्राह्मण साकिन मौजा पूजागाँव परगना भूड़ जिला खीरी

कर्जख्वाहान

चूँ कि रामेश्वरसिंह वल्द रनजीतसिंह साकिन बस्तौली परगना भूड़ जिला खीरी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा [illegible] फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायवान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त [illegible] अखबार में छपने की तारीख से ३ माह के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा [illegible] हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा [illegible] तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हक मालिकाना आराजी के मुतालिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर मुन्दर्जे साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा बदस्तूर मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	खीरी	जमींदारी	मुकारिमपुर मुहाल छत्तासिंह पट्टी २ व ३ व ५ परगना भूड़	मातहतदारी	ए० डि० १८८—८२	२०६।) २२॥=)	मालगुज़ारी अदवाब
२	,,	,,	गढ़ियानी मुहाल छत्तासिंह पट्टी १ व ३ व ५ परगना भूड़	,,	ए० डि० २२६—१	२०१।) २०॥=)	,,
३	,,	,,	मूंडा बुज़ुर्ग मु० बरियारपुर परगना भूड़	,,	ए० डि० ३—२०	बिला लगानी	
४	,,	,,	छत्रपुर गुलरिहा मुहाल बरियारपुर परगना भूड़	,,	ए० डि० ३—१२	,,	
५	,,	,,	मझौली परगना भूड़	,,	२० एकड़	,,	आराजी तादादी २०—३८ डिसिमल दरख्वास्तदेहंदगान नंबर ३ लगायत ६ की ज़ाती है, जोकि कर्ज़ा पिदरी से साफ है और ज़िम्मेवारी अदाय कर्ज़ा नहीं है।

फेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद, जो बहुस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुतालिक आराजी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिल-सिलेवार	किस्म जायदाद	तादाद मय हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	मकानात मसकूना	४ किता	वाक़े मौज़ा मझौली व मुकारिमपुर परगना भूड़ ज़िला खीरी
२	बंदूक कारतूसी	१ अदद	मकबूज़ा दरख्वास्तदेहंदा नं० २ है

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १२ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसिफ़

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इत्तिला हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० ब्रजनाथ ज़ुतशी स्पेशल जज साहब बहादुर खीरी दरजा दोयम मुक़ाम लखीमपुर
मुक़द्दमा नंबरी नंबर १७६ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी १४-१-१९३८ ई०
ज़हीरहसन वल्द अमीरहसन क़ौम सैयद साकिन मौज़े तुरकेहटा हटहटपुर परगना मोहम्मदी ज़िला खीरी
क़र्ज़दार सायल

बनाम—१ मथुराप्रसाद वल्द नंदराम क़ौम बाथम वैश्य साकिन मोहम्मदी परगना मोहम्मदी ज़िला खीरी
२ हुसेनबख़्श वल्द अँगने क़ौम शेख साकिन हैदराबाद परगना हैदराबाद ज़िला खीरी
क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि ज़हीरहसन वल्द अमीरहसन साकिन मौज़े तुरकेहटा हटहटपुर ज़िला खीरी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िम्नी (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० ज़हीरहसन मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुतअल्लिक़ क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तफ़सील	बसायत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	खीरी	ज़मींदारी	मौज़ा तुरकेहटा हटहटपुर मुहाल अली-हुसेन पर० मुहम्मदी ज़िला खीरी	हक़ आला	एक सुल्स हिस्सा मिनजुमला १० बिस्वा मुसल्लम मुहाल	मालगुज़ारी २९॥-)४ अबवाब २॥-)	
२	,,	,,	मौज़ा इसलामाबाद मुहाल बमदाबेगम परगना मोहम्मदी ज़िला खीरी	,,	एक सुल्स हिस्सा मिनजुमला निस्फ़ हिस्सा आराज़ी तादादी ५ एकड़ ७४ डिसमिल	मालगुज़ारी १=)८ पाई	

फ़ेहरिस्त (बे) क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	बसायत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	मकान ख़ाम मसकूना वाक़े तुरकेहटा हटहटपुर परगना मोहम्मदी ज़िला खीरी	१ मंज़िल	
२	[illegible]	२ रास	
३	भैंस	१ रास	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख ११ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

इश्तिहारनामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

१८६
मुकद्दमा नंबरी नंबर ८३ सन् १९३६ ई०
६६४

तारीख़ पेशी १५ फरवरी सन् १९३८ ई०

हाफिज मुहम्मद अब्दुल्ला वल्द कुदरतउल्ला साकिन मौजा मिटौली कलाँ परगना देवा ज़िला बाराबंकी
क़र्ज़दार सायल

बनाम

जुमला क़र्ज़ख्वाहान
क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि हाफिज मुहम्मद अब्दुल्ला वल्द कुदरतउल्ला साकिन मिटौली कलाँ ज़िला बाराबंकी की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुन्सलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से २ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हुकूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ अराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मयनंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	दरख्वास्तदेहंदा की बसाबत हक़ीयत मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	गैरम०	मिटौलीकलाँ मु० अब्दुल्ला	हक आला	७२।९१-१७-३-	१३१)	
२	„	„	„ मुहम्मद इबराहीम	„	खाता खेवट १० व १४	१॥=)	
३	„	„	„ „	„	„ व १८	१।=)६	
४	„	„	„ „	„	„ १० व १४	१)	
५	„	„	„ „	„	„ व १५	२॥)	
६	„	„	„ „	„	„ १८ व ३	१)	
७	„	„	„ „	„	„ ३ व १६	१॥।=)	
८	„	„	„ „	„	„ १६	२०)	
९	„	„	„ „	„	„ १७ व १	१।)	
१०	„	„	„ „	„	„ २६ व ६	६)	
११	„	„	„ „	„	„ २ व ६	२॥)	
१२	„	„	„ „	„	„ २९ व २	२॥)	
१३	„	„	„ „	„	„ १२ व २	१।-)	
१४	„	„	„ „	„	„ २६ व २	१०)	

फेहरिस्त (बे) कर्जदार की जायदाद, जो बहुस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	लोटा	२ अदद	
२	कटोरा	३ अदद	
३	चारपाई बाँस	४ अदद	
४	पलँग	२ अदद	
५	दरी	१ अदद	
६	कालीन	१ अदद	
७	पतीली अलमोनियम	१ अदद	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख २२ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसि

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा मुमालिक मुत्तहदा (ऐ नं० २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पंडित दाताराम साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम लखनऊ

मुकद्दमा नंबरी नंबर २१६ सन् १९३६ ई०   तारीख पेशी १५—१—१९३८ ई०

निसार अहमदखाँ वल्द सिकंदरखाँ कौम पठान साकिन कस्बा निगोहाँ जिला लखनऊ

कर्जदार सायल

बनाम

(१) मज्जूखाँ उर्फ अमीरखाँ वल्द गालिबहीन कौम पठान साकिन मुहल्ला भजऊलाल का पु शहर लखनऊ

(२) शिवराम } पिसरान रामसेवक ब्राह्मण
(३) बैजनाथ }
(४) गजोधर वल्द अयोध्या ब्राह्मण तेवारी
(५) अब्दुलहमीदखाँ वल्द बादलखाँ पठान
(६) गंगाप्रसाद वल्द फुरसतलाल कौम कायस्थ
(७) साजिदखाँ वल्द ग़नीखाँ कौम पठान

साकिनान निगोहाँ तहसील मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ

(८) रामकिसुन वल्द रघुनाथ ब्राह्मण
(९) रघुनाथ वल्द मातादीन ब्राह्मण } साकिन पुरहिया परगना निगोहाँ ज़िला लखनऊ

(१०) बल्लू वल्द भद्दू कौम भाट साकिन निगोहाँ ज़िला लखनऊ
(११) पिरथीपाल वल्द रज्जनलाल कौम कायस्थ साकिन निगोहाँ ज़िला लखनऊ
(१२) निजामुद्दीन वल्द जमालुद्दीन साकिन नगराम परगना निगोहाँ ज़िला लखनऊ
(१३) कापरेटिव सुसाइटी बैंक कुर्री सुदौली जरिए राजा रामपालसिंह साहब मुहल्ला अरहैया टोला ज़िला रा

(१४) काशीप्रसाद वल्द सरजूप्रसाद
(१५) मु० रामप्यारी } बेवगान सीतलादीन
(१६) मु० मातादेवी }

अकवाम ब्राह्मण साकिन कस्बा शेखपुर परगना नि ज़िला लखनऊ

चूँकि निसारअहमदखाँ वल्द सिकंदरखाँ कौम पठान साकिन निगोहाँ ज़िला लखनऊ की जानिब से दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहं हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानी हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद ज़ाहिर की है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के गजट में छपने की तारीख से २ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा [illegible]

फेहरिस्त (अलिफ)
कर्ज़दार के हक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल व काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बमाफ़त हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
(१)	लखनऊ	हकीयत आला	निगोहाँ पट्टी गुलाबसिंह	हिस्सा ≡) ८ पाई ११ किरांट १२ बिस्मिल ८ जौ	हक आला		
(२)	,,	हकीयत मुतफर्रिका	निगोहाँ मुहाल बिसरामसिंह	१ बीघा १८ बिस्वा	,,		
(३)	,,	मातहतदारी	निगोहाँ मुहाल गुलाबसिंह	१० बिस्वा	मातहतदारी		
(४)	,,	हकीयत मुतफर्रिका	निगोहाँ मुहाल बिसरामसिंह	६ बिस्वा	हक आला		
(५)	,,	,,	निगोहाँ मुहाल जगन्नाथसिंह	१६ बिस्वा	,,		
(६)	,,	मातहतदारी हिस्सा =)	निगोहाँ मुहाल मनसबखाँ	१५ बिस्वा १० बिस्वांसी	मातहतदारी		
(७)	,,	मातहतदारी	निगोहाँ मुहाल रामप्रसाद	२ बीघा ११ बिस्वा	,,		
(८)	,,	,,	निगोहाँ मुहाल शिवरानीकुँवरि	७ बिस्वा	,,		
(९)	,,	हकीयत मुतफर्रिका	निगोहाँ मुहाल भगवानबख्श	२ बीघा ७ बिस्वा	हक आला		
(१०)	,,	मातहतदारी	निगोहाँ मुहाल गुलाबसिंह	६ बिस्वा १० बिस्वांसी	मातहतदारी		
(११)	,,	,,	निगोहाँ मुहाल भगवानबख्शसिंह	२ बीघा	,,		
(१२)	,,	हकीयत मुतफर्रिका	निगोहाँ मुहाल गुलाबसिंह	४ बी० १० बि०	हक आला		

जायदाद मुजरही गंगाप्रसाद कर्जख्वाह नं० ६

१ लखनऊ जमींदारी जिगोहीं मुहाल मनसबखाँ हिस्स ।।/ हक आला तादादी ६९ बीघा १ बिस्वा १३ ½ बि॰

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बहैसियतमजमूअी हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा १० ज़ाब्ता दीवानी सन १६०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बतलाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	अशाशउलबैत	मालियततख़मीनन १०)	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १ नवंबर सन् १६३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

नमूना नं० १७०

फ़ार्म इश्तिहारनामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू जगवंशकिशोर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर

मुकद्दमा नंबरी नंबर ७०७ सन् १६३६ ई०

दलीपसिंह पिसर दाताराम, अतरसिंह, छत्तरसिंह कदमसिंह पिसरान दलीपसिंह, महेंद्रसिंह नाबालि बविलायत अतरसिंह, चरनसिंह, संतोषसिंह, रामेश्वरसिंह, नाबालिग़ान पिसरान बविलायत छत्तरसिंह अकवा जाट साकिन मौजा हुसेनपुर कुपाड़ा परगना पुरछपार जिला मुजफ्फ़रनगर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐ जायदादहाय मकरूजा पेश की है। लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ११ ज़िम्नी (१) ऐक्ट मज़कूर इश्ति दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने ह दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के ग में छपने की तारीख़ के तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश क जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	नाम मौज़ा व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तिकल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तश-
१	२	३	४	५	६	७
१	मुज़फ़्फ़रनगर		मौ० हुसेनपुर कुपाड़ा परगना बालौकी मुहाल गुलाबसिंह	१ मुरब्बा यक मुस्तरक ६ मिल्की यक रकबाई ७२१बी० ५ बि०	७२१ बी० ५ बि०	७२१।।=)

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

तफ़सील जायदाद रुकनाई जो मुसम्मात शरबतीदेवी कर्ज़ख़्वाह ने ज़ाहिर की है—

एक हवेली शर्करुया तामीरा पुख़्ता वाक़े मौ० हुसैनपुर बुपाड़ा, परगना खातौली मय अंदरूनी एक मंजिल कोठा मय बालादान पेशान दालान मय कुल हक़ हक़ूक मुताल्लिका उसके

शर्क़ी	ग़र्बी	जनूबी	शुमाली
रास्ता सहन	रास्ता मकान छुटेमूला वग़ैरा	मकान शिवदयाल वग़ैरा जोगी	रास्ता

एक मंजिल हवेली जनूबरुया पुख़्ता द्वार मय मकानात अन्दरूनी

शर्क़ी	ग़र्बी	जनूबी	शुमाली
मकान दीवान	मकान लालसिंह	रास्ता	मकान भैपाल

६ रास बैल मालियत ३००) रु०
४ रास भैंस मालियत २००) रु०
२ गाड़ी मालियत ४०) रु०
एक रास गाय मालियत १५) रु०

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २६ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ६९२ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ११—१—१९३८ ई०

१—रामपालसिंह बालिग़ } पिसरान ठाकुर पंटैसिंह साकिन पखिया परगना साँडी तहसील बिलग्राम
२—श्रीपालसिंह नाबालिग़ } जिला हरदोई क़र्ज़दार सायल

बनाम

श्रीसानसिंह वग़ैरह

कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि सायलान मज़कूरे बाला साकिन पखिया जिला हरदोई ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब दफ़ा तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत—

का० ५

फेहरिस्त (अलिफ) क़र्ज़दार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नं० हदबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	मालिकाना	पलिया पूरब मु० सेसाला पर० सांडी	१५.१० बिसवांसी ११ क० १ ३/७ नन०	कुल	१६०॥=)	
२	,,	,,	पलिया पूरब मु० पंचसाला पर० सांडी	१५ १० बिसवांसी ११ क० १ ३/७ नन०	कुल	२२॥)	
३	,,	,,	पलियापच्छिम मु० सेसाला पर० सांडी	४ बिसवांसी ३ ३/४ कच०	कुल	२७॥≡) ४ पाई	

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइश्तिहार हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवा १९०८ कुर्क और नीलाम हो सकती है।

फेहरिस्त (बे)

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीअत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	तख़्त चोबी	एक अदद	
२	कुर्सी	,,	
३	मेज़	,,	
४	क़ालीन	,,	
५	लहडू	एक मंज़िल	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १० नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसि

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू भगवंशकिशोर टंडन साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर

मुकद्दमा नं० ४४० सन् १९३६ ई०

हरगाह अभयराम पिसर कल्लू व रघुवीरसिंह व ज्ञानसिंह पिसरान अभयराम मज़कूर कीरतसिंह नाबालि पसरान बविलायत अभयराम मक़बाम जाट साकिनान मौज़ा सलावर परगना शामली ज़िला मुज़फ़्फ़ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायबान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना आराज़ी के मुताबिक़

नंबर खेवट	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का बिस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
८	मुज़फ़्फ़रनगर		मौ० सलावर परगना शामली	कुल	२७ बी० १७ बि०	८६)
९	,,		मुहाल चंदन	,,	५ बी० १२ बि०	८॥=)
१०	,,		,,	हस्ब रसद	४ बी० १ बि०	२।-)
१४	,,		मुहाल गैरदायपान	१२ हिस्सा मिनजुमला ७२ ,, अज कुल खेवट	६ बी० ३ बि०	१५॥=)
२३	,,		,,	हस्ब रसद	२ बी० १३ बि०	१।-)
३१	,,		,,	,,	१४	।=)
३६	,,		,,	,,	१८	-) पा०
३७	,,		,,	,,	० बी० १३ बि०	२।=)
५२	,,			,,	३ बि०	
३	,,		मौ० महरमपुर परगना शामली पट्टी जारान	कुल खेवट	७ बी० १७ बि०	१२॥-)
१०	,,		,,	निस्फ़ी	३ बी०	४।=)
२४	,,		,,	हस्ब रसद	१०३ बी० ३ बि०	१६॥=)
४०	,,		,,	,,	१० बी० ११ बि०	१६॥=)
४१	,,		,,	,,	६ बी० १४ बि०	१०॥=)

कर्जदार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क व नीलाम हो सकती है।

ज़मीमा (ख)

मकानात मालियत तख़मीनन	१५००)
फ़सल रबी मालियत	१०००)
फ़ाराफत नैशकर मालियत	२०००)
ज़ेवर नुक़ई व तिलाई मालियत	२०००)
सामान बैल, भैंस, व गाय, मालियत	८००)

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम बाराबंकी

मुकद्दमा नंबरी नंबर १७७/१५०/४९९ सन् १९३६ ई०

पेशी ता० २१—२—१९३८ ई०

चंद्रिकाप्रसाद वल्द रामजियावन
माताप्रसाद
देवकीनंदन } नाबालिगान बविलायत } छत्रपालसिंह } क़ौम कुरमी साकिन इसरौलीसा(रि)
देवइंद्रनाथ } माताप्रसाद बिरादर खुद } परगना सिद्धौर जिला बाराबंकी

कर्ज़दार सायलान

बनाम

जुमला कर्जख्वाहान कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि सायलान की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से तीन माह के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह
हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
फेहरिस्त (अलिफ) कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नंबर सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुतल्लिक काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसायत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१	बाराबंकी		मौजा इसरौलीसारि पर० सिद्धौर खाता खेवट नं० ५ पट्टी छत्रपाल		हिस्सा -) ३ पाई ७ किरांट मिन० मौजा बहुस्तसनाय १३ बीघा १६ बिस्वांसी खाता खेवट नं० ५		
२	,,		मौज़ा पर० मजकूर खाता खेवट नं० ५ पट्टी रामनवीन		जमीमा १ हिस्सा १० किरांट मिनजमला ८ पाई		
३	,,		मौजा पर० मज़कूर खाता खेवट ५४ पट्टी हुबलाल		१० किरांट हिस्सा १¾ मिन० ४ पाई		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम बहराइच

मुक़द्दमा नंबरी नं० १९ सन् १९३६ ई०

ठाकुर लालबहादुरसिंह — क़र्ज़दार सायल

बनाम

बच्चूसिंह वग़ैरह — क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि ठा० लालबहादुरसिंह वल्द ठा० छत्रपालसिंह साकिन बेदौरा ज़िला बहराइच ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल व क़ाबिल-विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तफ़सील	बसाबत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बहराइच	हक़ आला	भैंसहा पर० हिसामपुर मु० बेदौरा	=)	=)		
२	,,	,,	,,	=)	=)		
३	,,	,,	मेदवापूर	=)	≡)		
४	परतापगढ़	पुख़्तेदारी	अंतामऊ मु० मातापलट नं० २ परगना मानिकपूर	=)	=)		
५	,,	,,	,, मु० माताप्रसाद नंबर ४	=)	=)		
६	,,	,,	,, मु० जुगुलकिशोर पट्टी रानी राधादेवी	=)	=)		
७	,,	,,	,, पट्टी शिवचरन	=)	=)		
८	,,	,,	,, मु० राजा अवधेशसिंह	=)	=)		
९	,,	बाग नंबर ५७०	मिरगढ़वा मु० सैयद नाज़िमहुसेन	=)	=)		
१०	,,	बाग रियायती नं० ५७५	,, मु० सैयद जहूरहुसेन	=)	=)		
११	,,	बाग नं० ५२६	अंतामऊ मु० मातापलट नं० १	=)	=)		
१२	,,	बाग	काठतारा मु० क़ाज़ीपूर पश्चिम	=)	=)		

१३ बहराइच एक किता मकान मसकूना सायल मौजा बेदौरा परगना हिसामपूर तहसील कैसरगंज ज़िला बहराइच कीमत तख़मीनन २००)

हदूदअरबा

पूरब	पश्चिम	उत्तर	दक्खिन
परती	कुवाँ आबनोशी	मकान बक्लू कोनियाँ	परती

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहुस्तसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदहंदा	कैफ़ियत
१	बैल	२	३०)
२	भैंस मयपड़िया	१	८०)
३	गाय	३	१५)
४	गाड़ी	१	२५)
५	सामान ख़ानगी वग़ैरह		२००)
			३३०)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ११ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इश्तिहारनामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत गिरिवरचरन अगरवाल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल बस्ती
नंबर मु० ८३८ सन् १९३६ ई०

हरगाह अचूतानंद, सतनरायन, रामऔतार, रामजी, माहरनाथ पिसरान बलिभद्र, गनेशप्रसाद लक्ष्मीनरायन, गोमतीप्रसाद, उमादत्त नाबालिग़ान बविलायत अचूतानंद पिसरान अचूतानंद पांडे, नाबालिग़ वल्द गनेशप्रसाद बविलायत गनेशप्रसाद, चंद्रसेखर नाबालिग़ वल्द गोमतीप्रसाद बविलायत गोमतीप्रसाद साकिन मौज़ा टीकुर तपा बीसो परगना बाँसी पूरब ज़िला बस्ती की ओर से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसका ब्योरा नाथी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह तारीख़ मुश्तहरी से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में इस हाकिम के अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे किए हुए हैं।

जमीमा (क) कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा सरकारी मालगुज़ारी
१	बस्ती	मौरूसी	टीकुर तपा बीसों प० बाँसीपूरब	क़ाबिल इंतकाल	।)	४४।=)
२	,,	,,	टीकुर तपा व परगना मज़कूर	,,	६ पाई ६ सवा	=)१० पाई
३	,,	,,	महर्वानानकार तपा परगना मज़कूर	,,	१ पाई २१ नहम ४ तिल	६।।=) १० पाई
४	,,	,,	कुड़जनाथ तपा परगना मज़कूर	,,	६ पाई ६ सवा	३३।।)
५	,,	,,	झुड़या खुर्द तपा परगना मज़कूर	,,	५ पाई १५ जौ	५।=)१० पाई
६	,,	,,	मेड़वईताल तपा परगना मज़कूर	,,	६ पाई ६ सवा	१९।=)
७	,,	,,	चौरीताल तपा परगना मज़कूर	,,	६ पाई ६ सवा	४७।≡)
८	,,	,,	टेढ़वाताल तपा परगना मज़कूर	,,	६ पाई ६ सवा	११।≡)

जमीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म		दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाअत (विस्तार)
१	भैंस २ अदद	४०)	
२	बैलगाड़ी १ अदद	५०)	
३	बैल गाड़ीवाले २ अदद	१२५)	
४	बछवा १ अदद	२५)	
५	गाय २ अदद	३०)	
६	जाजिम १ अदद	१०)	
७	कालीन २ अदद	४०)	
८	ओहार १ अदद	१०)	
९	बाग़ात व सीसम मौज़ा टेढ़वाताल	२५०)	

एक किता पुरनोट तादादी मुबलिग़ १०५) नविश्ते रामचरन पांडे मौसूमा रामजी पांडे, दूसरा किता पुरनोट नविश्ते भोलानाथ पांडे मौसूमा रामजी पांडे तादादी ६५)

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत सैयद अख़्तर अहसन साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम रायबरेली

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ६७ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी २९—१—१९३८ ई०

१—भगवानबख़्शसिंह वल्द शिवपालसिंह } मुक़ाम ठाकुर साकिन अंगुरी परगना इन्हौना ज़िला
२—म० रघुराजकुँवरि बेवा चंदीसिंह } रायबरेली कर्ज़दार सायलान
बनाम शिवनारायन वग़ैरह क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि म० रघुराजकुँवरि व भगवानबख़्शसिंह साकिन अंगुरी ज़िला रायबरेली ने एक दरख्वास्त

हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इश्ति दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत गजट में छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वा पेश करे। फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह

तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर वहीवट व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफियत
१	रायबरेली	हिस्सा हक आला	अंगुरी मुहाल शिवप्रसादसिंह खाता नं० ५	हक़ूक़ आला मौरूसी	मिनजुमला ३२ हि० के ११ ,,	९५॥।)॥	(नो खाता ५,६,७, १२,२१, २३,२७ शामिला पट्टी बीर है, जिस मालगुज़ २३७।-) व बका २३।३) सालाना
	,,	,,	,, ,, ६	,,	निस्फ हिस्सा	९३॥।≡)	
२	,,	,,	अंगुरी थोक ठाकुरान पट्टी बीरभान खाता नं० ७	,,	,, ,,	२≡)	
	,,	,,	,, ,, ८	,,	म० १६ हि० के ७ ,,		
	,,	,,	,, ,, १२	,,	,, ४८ ,, के ८ ,,		
	,,	,,	,, ,, २१	,,	,, १५९ ,, के १६ ,,		
	,,	,,	,, ,, २२	,,	,, ६१ ,, के १५ ,,		
	,,	,,	,, ,, २	,,	शामलात थोक ठाकु-	४।-)।।।	
	,,	,,	,, ,, २७	,,	रान म० २० हि० के ६ ,,	।-)	
	,,	,,	,, ,, ५५	,,	शामिलातदेह	४०।≤)	

फेहरिस्त (बे) कर्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकता है

१—बैल काश्तकारी	ज़ाती २ रास	२—भैंस	ज़ाती १ रास
३—मकान ख़ाम	,, १ किता	४—पलँग	,, २
५—बटुई	,, २	६—थारी	,, १
७—लुटिया	,, १	८—कटोरा	,, १
९—हँसुली नुक़रई	,, १	१०—कड़ा नुक़रई	,, १
११—दरी पलँग	,, १	१२—कमली	,, १

तफ़सील जायदाद जो महाजनान ने ज़ायद दिखलाया है

भैंस १ रास, परात पीतल २, पलंग २, थारी फूल २, लुटिया ४, डोल १, मय तिवाई १, लटकन ति १, हुक्का तिवाई १, ग़ल्ला २०० मन ख़ाम

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज तारीख़ १२ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

नमूना नं० १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुरादाबाद
मुकद्दमा नंबरी नंबर ३ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी ४—१—१९३८ ई०

हरगाह बाबू रघुनंदनप्रसाद व रामचंद्र व जैकिशनदास व चंदीप्रसाद पिसरान दाताकिसन साकिन मुरादाबाद ज़िला मुरादाबाद ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायबान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक के बारे में अदालत हाज़ा में उस हाकिम के आगे अपनी दरख्वास्त पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल व काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाकत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी
१	मुरादाबाद	२० बि० ६५६ ए०२६डि०	सीलपुर	२० बि० रकबई ६५६ ए० १६ डि०		१०४५)
२	,,	पट्टी $\frac{1}{3}$ १७ ए० ८४ डि०	टकवा मुहाल जर्द	पट्टी $\frac{1}{3}$ १७ ए० ८४ डि०		६६)
३	,,	२० बिस्वा १६ ए० ७० डि०	बसड़ा पट्टी मुहाल जर्द	२० बि० रकबई १६ ए० ७० डि०		१०८) २ पाई
४	,,	२० बि० ३६ ए० २१ डि०	बाघरी पट्टी मु०रुकमिनकुमरि	२० बि० ३६ ए० २१ डि०		१११) १ पाई
५	,,	मिनजुमला ३ए० ८६ डि०	चतुपुर मुहाल सबज	मिनजुमला ३ ए० ८६ डि०		१०॥) १ पाई
६	,,	२० बि० ६७ ए० ७७ डि०	हसनपुर पट्टी	२० बि० ६७ ए० ७७डि०		१०२॥)
७	,,	२० बि० ११०ए०७७ डि०	दुलबखेड़ा करीलपुर	२० बि० ११० ए० ७७ डि०		१२२)
८	,,	६८ डि०	कुदरखी	६८ डि०		१॥।=)
९	,,	२० बि० २६ ए० ८१ डि०	मकरंदपुर	२० बि० २६ ए० ८१ डि०		२६=)
१०	,,	२ ए० ५२ डि० मिनजुमला	भुजियापुर	२ ए० ५२ डि०		७-)
११	,,	२१ए०२०डि०	मगद सावार	२१ ए० २० डि०		२४)
१२	,,	२० बि० ६५६ए०२६डि०	मखवाजैत	२० बि० ६५६ ए० २६ डि०		१०२५)

जायदाद मकफूला

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक्रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू रामस्वरूपलाल साहब स्पेशल जज दरजा दोयम हमीरपुर

मुक़द्दमा नं० १५८ सन् १९३७ ई०

तारीख़ पेशी ६—१—१९३८ ई०

शिवप्रसाद बनाम बाबू लछमीनरायन वग़ैरह

हरगाह शिवप्रसाद वल्द पुत्ती क़ौम अहीर साकिन गिमुहाँ परगना व तहसील व ज़िला हमीरपुर ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक्रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब १० सायल मज़कूर की जाय बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश क जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तिकिल व काबिल विरासत और काबिल इन्तकाल हकीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा सर-
१—	हमीरपुर	ज़मींदारी	मौज़ा गिमुहाँ दरिमा मुहाल गंगू खाता नं० १	काबिल इतिकाल	१० आना ८ पाई ३४ ए० ७१ डि०	३०)
२—	,,	,,	मौज़ा गिमुहाँ डाँडा मुहाल बहादुर खाता नं० १	,,	१०३ ए० ७६ डि०	३३)
३—	,,	,,	,, खाता नं० ७	,,	४२ ए० ३८ डि०	१९)
४—	,,	,,	मौज़ा गिमुहाँ मुहाल बहादुर खाता नं० १	,,	२ ए० ७२ डि०	८॥)
५—	,,	,,	मौज़ा गिमुहाँ मुहाल गंगू खाता नं० १	,,	१० आना ८ पाई १६३ एकड़ ७२ डिसमिल	६३॥)

ज़मीमा (ख) कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है ।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत की वसाहत (विस्तार)
१	गाय ४ रास	
२	भैंस २ रास	
३	पड़वा २ रास	
४	घोड़ा १ रास	
५	बछवा ४ रास	
६	गल्ला ३०० मन	
७	मकान १	

मुंसरिम

नमूना नं० १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम कानपुर

मुकद्दमा नंबर ४३२ सन् १९३७ ई०

हरगाह मुसम्मात फूलकुँवरि व मुसम्मात ज्ञानकुँवरि बालिगान बेवगान व शिवरामसिंह नाबालिग पिसर मुतवफ़्फ़ा साँवलसिंह मुतवफ़्फ़ी बविलायत कन्हैयासिंह वल्द बद्रीसिंह क़ौम ठाकुर साकिनान रामपुर मजरा अगरहा परगना देरापुर ज़िला कानपुर सायलान ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ११ ज़िम्नी (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने हक़ों के बारे में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं ।

ज़मीमा (क) कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले के मुतल्लिक व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर बमूजब साबिक बंदोबस्त में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	कानपुर	ज़मींदारी	जगनपुर मु० चतुरसिंह पर० अकबरपुर	काबिल विरासत इंतकाल	।।।) बारह आना	मालगुज़ारी सरकार २२२।।), १२।)
२	,,	,,	जगनपुर मु० देवकीनंदन पर० अकबरपुर	,,	५ पाई ५ फिस ६ किरांट	
३	,,	,,	लखिमनपुर मु० उमरावसिंह परगना अकबरपुर	,,	-) २ पाई १ फिस १० किरांट ८ देहे बौ	१२।-)२, १।=)१०

ज़मीमा (ख)

कर्जदार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१	एक किता मकान सकूनती वाक़ै रामपुर मज़रा डगरहा परगना देरापुर ज़िला कानपुर	कुल
२	एक किता हाता मवेशियान वाक़ै मौज़ा मज़कूर	,,
३	बाग़ात नंबरी ५८४ व ५०० वाक़ै मज़कूर	,,
४	,, ,, ६२ व १८१ व १९९ व २२१ व २६३ वाक़ै जगनपुर मु० चतुरसिंह परगना अकबरपुर ज़िला कानपुर	,,
५	निबहरा नंबरी ६१५ वाक़ै मौज़ा रामपुर मज़कूर	,,
६	निबहरा नंबरी ५६६ ,, ,,	,,
७	फुलवारी ,, ५६८ ,, ,,	,,
८	तीन रास भैंस, दो रास भैसा, तीन रास बैल, दो रास गाय	,,

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बइजलास बाबू गिरवरचरन अगरवाल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम बस्ती

मुक़द्दमा नंबर २६४ सन् १९३६ ई०

हरगाह झिन्नूसिंह उर्फ़ चंद्रिकासिंह व राजासिंह पिसरान मनराजसिंह व विश्वनाथसिंह वल्द गनपतिसिं बालिग़ व अवधेशसिंह नाबालिग़ वल्द रामदुलारेसिंह मुतवफ्फ़ी बविलायत राजासिंह दादा चचेरा साकिन बनकटिया तप्पा ओन परगना मगहर पूरब ज़िला बस्ती ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रू पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि जायदाद का, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क) कर्जदार के हक़ूक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व महाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल काबिल विरासत व काबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बमाक़्त हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मु० दर्ज रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौज़ूदा तख़्मीना मालगुज़ारी
						माल०
१	बस्ती	ज़मींदारी	बनकटिया तप्पा ओन प० मगहरपूर्व		-)७पाई१२दंत	४२।)
२	,,	,,	मनई तप्पा ओन प० ,,		-)७पाई१२दंत	२२।)
३	,,	,,	जंगल ओन मुहाल सेठस तप्पा ओन		।)६पाई२४ दंत	४०।।।-)
४	,,	,,	ओन तप्पा ओन प० मगहर पूरब		-) ४८ दंत	२।।=)
५	,,	,,	आज़मपुर तप्पा ओन प० ,,		१पाई ४० दंत	१।।-)
६	,,	,,	कुसमही डीही मुहाल ५ तप्पा ओन परगना मगहर पूरब		११पाई१७दंत २८ कंत	१।)
७	,,	,,	मसजिदया तप्पा ओन प० ,,		४ पाई २४दंत	१।।-)२

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	तादाद जायदाद			बसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	बैलगाड़ी	२ रास	७०)		
२	भैंस	२ रास	६०)		
३	भोसर	१ रास	८)		
४	गाय	२ रास	२५)		
५	बछवा	३ रास	३०)		
६	घोड़ा	१ रास	१५)		
७	घोड़ी	१ रास	१२)		
८	मकान १ किता सिफालापोश मय बारी व				

घरनी हस्ब चौहद्दी ज़ैल—पूरब आराज़ी मज़रूआ, पश्चिम आराजी मजरूआ, उत्तर बाग़ व कुँआ दक्खिन आराजी मज़रूआ कीमत १०००)

मुंसरिम

इश्तिहारनामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा मुमालिक मुत्तहदा (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम बाराबंकी

मुकद्दमा नंबरी नंबर ६२१ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी १७—३—१९३८ ई०

१—जगमोहनसिंह वल्द अमकसिंह }
२—शिवबहादुरसिंह वल्द जगमोहनसिंह } अकवाम ठाकुर साकिनान कल्यापुर मजरे रेख परगना मवई मोजारा जिला बाराबंकी

कर्ज़दार सायलान

बनाम

जुमला कर्ज़ख्वाहान — कर्ज़ख्वाह फरीकसानियान

चूँकि सायलान मज़कूरेबाला साकिन मज़कूरेबाला जिला बाराबंकी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िम्नी (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ के तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मयनंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	दरख्वास्तदेहंदा की वसाअत हकीयत मुंदर्जा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	गैरमन०	चाकौरा परगना सुबेहा खेवट नं० १ मुहाल चाकौरा	हकीयत आला	४५ बीघा १० बि० ११ बिस्वांसी	६०॥)	
२	"	"	चाकौरा परगना सुबेहा खाता खे० नं० ६ मुहाल चाकौरा	"	२२ बीघा १५ बि० १० बिस्वांसी	२५)।	
३	"	"	चाकौरा परगना सुबेहा खाता खेवट नं० २१ मुहाल चाकौरा	"	१० बिस्वा ४ बि०	॥=)	
४	"	"	रतनपुर प० मवई मौलहुरा खाता खेवट नं० ३ मुहाल प्रागदत्त	"	१८ किराट	२-)८॥	
५	"	"	इसराजपुर पर० मवई मौलहुरा खाता खेवट नं० ६ मुहाल समगडहा	"	१६ बिस्वा १० बिस्वांसा	१॥-)	मजहूलिसनाय आराज़ी ३ बीघा ८ बि० ८॥ बि०
६	"	"	नौगवाँ पर० मवई मौलहुरा खाता खेवट नं० ६ मु० सहदेवसिंह	"	२३ बीघा १० बि० १३ बिस्वांसी	११॥-)	
७	"	"	नौगवाँ पर० मवई मौलहुरा खाता खेवट नं० २ मु० सहदेवसिंह	"	२६ बीघा ५ बि० १५ बिस्वांसी		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १७ नवंबर सन् १९२७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई
नंबरी मुक़द्दमा ९३१ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १८ फ़रवरी १९३८ ई०

१ शंकरसिंह वल्द उमरावसिंह
२ भैयासिंह उर्फ़ साँवलसिंह नाबालिग़ बविलायत
शंकरसिंह पिदर ख़ुद
} क़ौम ठाकुर साकिन असेठवी परगना बंगर तहसील व ज़िला हरदोई
क़र्ज़दार सायल

बनाम

गोकुल वग़ैरह
क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि सायलान सा० असेठवी ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर को जायदाद बताया है

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई हक़ रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे ।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा मुताबिक़ मुसव्वदा

फ़ेहरिस्त (अ)
क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतअल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिला	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर खेवट व मुहाल	तफ़सील हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा की मुतल्लिक़ा ज़िरायत व क़ाबिल इंतक़ाल क़ीमत की तख़मीना	तफ़सील हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर साहब कलेक्टर ज़िला	मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	मालिकाना	मौज़ा असेठवी परगना बंगर पट्टी इंदरकुँवरि खाता नं० ११	१ बिस्वांसी	कुल		
२	,,	,,	मौज़ा असेठवी परगना बंगर पट्टी कुबेरसिंह खाता नं० १२	१ बिस्वांसी २ क० ४$\frac{३}{८}$ नवांसी	,,		
३	,,	,,	मौज़ा असेठवी परगना बंगर पट्टी लायक़सिंह खाता नं० २४	१५ बिस्वांसी १२ कचवांसी २$\frac{१}{२}$ न०	,,		
४	,,	,,	मौज़ा असेठवी प० बंगर पट्टी काने खाता नं० १८	१८ बिस्वांसी ४ क० ८ नवांसी	,,		
५	,,	,,	मौज़ा फ़दीपुर प० बंगर खाता खेवट नं० १ थोक असेठवी	५ बिस्वांसी ६$\frac{१}{१६}$ न०	,,		
६	,,	,,	मौज़ा फ़दीपुर प० बंगर बाक़ै खेवट नं० १ थोक असेठवी	२ बिस्वांसी	,,		
७	,,	,,	मौज़ा असेठवी परगना बंगर पट्टी सदाकुँवरि बाक़ै खाता खेवट नं० २२	ऽ।-१-६-१२$\frac{३}{४}$	,,		

फेहरिस्त (ब) कर्जदार की जायदाद, जो बहुस्तनाय हुकूक मालिकाना मुतअल्लिक आराजी हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर	नवैयत जायदद	हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा
१	बैल	दो रास
२	भैंस	एक रास
३	लहढ़ू	एक

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ४ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० ब्रजनाथ जुतशी स्पेशल जज बहादुर जिला खीरी दरजा दोयम मुक़ाम लखीमपुर

इनकम्बर्ड मुक़दमा नंबरी नंबर १९१ सन् १९३६ई०   तारीख पेशी ३१ जनवरी सन् १९३८ ई०

१ मनीराम } पिसरान रघुबरदयाल
२ रामराखन }
३ मुसम्मात कोकिला बेवा बेनीमाधो
} अक़वाम ब्राह्मण साकिन बाछेपारा परगना व जिला खीरी

क़र्ज़दार सायलान

बनाम १—प्यारेलाल वल्द सरजूप्रसाद क़ौम वैश्य साकिन लखीमपुर
२—गिरजादयाल वल्द इस्म नामालूम क़ौम कायस्थ साकिन बेहजम
३—रामचरन वल्द औसेरो क़ौम ब्राह्मण साकिन बाछेपारा
४—बलभद्रप्रसाद वल्द रामचरन क़ौम कुरमी साकिन बसारह
} परगना व जिला खीरी

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि मनीराम व रामराखन वल्द रघुबरदयाल मु० कोकिला बेनीमाधो साकिन बाछेपारा ज़िला खीरी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुन्सलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

ज़मीमा (क) कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतकाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	खीरी	हक़ीयत ज़मीदारी	मौज़ा बाछेपारा बंदोबस्त नं० १० पट्टी नं० ५ परगना व ज़िला खीरी	हक़ आला काबिल इन्तकाल व क़ाबिल विरासत	१ आना ६ [illegible] पा० मिनजुमला १६ आना	रु० आ० पा० ३४—३—४ अबवाब १॥≡)	व कब्ज़ा सायलान नं० २, व हिस्सा मसावी है

×

२	खीरी	,,	,,	,,	१आ०६ २/३ १०८/६६६ पा० मिनजुमला १६आ०	रु० आ० पा० २१—३—१ अबवाब ३।॥≡)	यह बकब्ज़ा सायला नं० २ मुसम्मात कोकला है जो कि हिन्दू बेवा है
३	खीरी	,,	मौज़ा पाछेपारा बंदोबस्त नं० ३० पट्टी नं० ६ परगना व ज़िला खीरी	,,	१ आना ४ पाई मिनजुमला १६ आना	रु० आ० पा० ३३—५—१ अबवाब ३।-)	बकब्ज़ा सायलान नं० १, २, बहिस्सा मसावी है और रेहन दख़ली पास गिरिजादयाल वारिस व नाबी छेदीलाल मौज़ा बेहज़म के है

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हक़ूक मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाअत हक़ीयत दरख़्वास्त देहंदा	कैफ़ियत
१	गाड़ी एकमंज़िला	मुसल्लम	जायदाद मज़कूर के मालिक सायलान नं० १, २ हैं बहिस्सा मसावी
२	डिगरी बमुक़दमा मनीराम बनाम मुसम्मात रामदुलारी इजलासी सबजजी खीरी तादादी १८००) रु० नं० मुक़दमा १७ सन् ३५ ता० फ़ैसला १९-१०-३५	,,	जायदाद मज़कूर के मालिक सायलान नं० १, २ हैं बहिस्सा मसावी
३	एक क़िता दस्तावेज़ रेहननामा बिला दख़ली नविश्ता मुसम्मात कोकला सायला नं० २ बहक़ मनीराम तादादी मुबलिग़ २१२) रु० मय सूद मवर्ख़ा० १ अगस्त २७	,,	जायदाद मज़कूर का मालिक सिर्फ़ सायल नं० १ है
४	एक क़िता डिगरी तादादी मुबलिग़ १७) रु० बमु० छेदीलाल बनाम रघुबरदयाल इजलासी आनरेबिल चीफ़कोर्ट लखनऊ अवध, नं० अपील ७१ सन् १९३१ ता० फ़ैसला २३-२-१२	,,	मतालिबा डिगरी वसूल हो गया है
५	गाय एक रास	,,	गाय बाद दाख़िल करने बयान तहरीरी सायल हस्ब दफ़ा इनकम्बर्ड स्टेट्स ऐक्ट मर गई

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पंडित दाताराम मिश्रा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम लखनऊ
मुक़दमा नंबरी नंबर ११६ सन् १९३६ ई० पेशी १५-१-३८

१—रामसरूपसिंह २—केवलसिंह	पिसरान मुन्नूसिंह	ठाकुर सा० मौजे कमालपुर प० त० ज़ि० लखनऊ कर्ज़दार सायलान
३—चंद्रभालसिंह वल्द लछमनसिंह		
४—कँधईसिंह ५—महादेवसिंह	नाबालिगान पिसरान लछमनसिंह बविलायत चंद्रभालसिंह बिरादर खुद	

बनाम

१—कामताप्रसाद वल्द कालकाप्रसाद कौम ब्राह्मण साकिन हीवेट रोड शहर लखनऊ
२—मु० मुला बेवा बुदूधूलाल कौम ब्राह्मण सा० तिनमिनीगंज लखनऊ क़र्ज़ख्वाह फ़रीकसानियान
३—पंडित मनोहरलाल तेवारी एडवोकेट वल्द भगोले ब्राह्मण सा० तिनमिनीगंज लखनऊ

चूँकि रामसरूपसिंह वगैरह साकिन कमालपूर जिला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़-सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १०. ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हक़ूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल व काबिल विरासत व काबिल इंत-काल हकीयत की तसरीह	तादाद हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	ज़मींदारी	मौ० धुबैला मुहाल ऊपर हाट प० त० ज़िला लखनऊ	हिस्सा ४ कांट ६ बिसमिल	हक आला	मालगुज़ारी	
			मुहाल सराई हाट	हि० ४ कांट ६ बिसमिल	हक आला	,,	
२	लखनऊ	ज़मींदारी	मौ० कमालपुर परगना व तहसील व ज़िला लखनऊ	हिस्सा २ पाई ३ कांट १० बि०	हक आला	,,	

१ एक किता मकान खाम वाके मौज़ा कमालपुर परगना व तहसील ज़िला लखनऊ महदूदे जैल—

शरक़ी खँडहल बहादुरसिंह, ग़र्बी दीवार मकान हाता वादहू रास्ता, जनूबी रास्ता, शुमाली दरवाज़ा मकान हाता वादहू रास्ता

(नोट) जायदाद जो कि कामताप्रसाद ने अपनी बयान तहरीरी में दिखलाया है हिस्सा मौ० कमालपुर परगना व तहसील जिला लखनऊ बक़दर २ आना २ पाई १६ क्रांट ५ डि० १७ जौ हस्ब तफ़सील जैल है—

	(१) रामसरूपसिंह	केवलसिंह	चंद्रपालसिंह व कँधई व महादेव
१—बखतावरसिंह वल्द मदनसिंह	६ पा० ३ क्रांट	२ पा० ७ डि०	१० जौ १ पा० ११ क्रांट
२—पट्टी नं० ४ मु० महरानी	१४ डि० १२ जौ		
३—पट्टी नं० १३ बिकईसिंह	१० क्रांट १ डि० ५ जौ ११ पा० १६ क्रांट	×	×
	१ आ० ६ पा० १२ क्रांट १५ डि० १७ जौ	२ पा० ११ क्रांट १८ डि० १५ जौ	१ पा० ११ क्रांट ११ डि० ५ जौ

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफा ६० ऐक्ट दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क व नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्त दिहंदा	कैफ़ियत
१	चारपाई	४ अदद	
२	स्टील बकस शिकस्ता	२ अदद	
३	लोटा कसकुट	३ अदद	
४	बटुई कसकुट	२ अदद	
५	थार बिरंजी	१ अदद	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख १० नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम।

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला सीतापुर
मुकद्दमा नंबर १९४ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ८ दिसंबर सन् १९३७ ई०
अहमदहुसैन वल्द मु० तजम्मुलहुसैन साहब साकिन कसबा लहरपुर त० जि० सीतापुर

साइल मुद्दई

बनाम

१—बेचारीलाल
२—महेशप्रसाद
३—शंकरदयाल
पिसरान माताबख्श अक़वाम खत्री साकिन मोहल्ला मेहटा कस्बा लहरपुर
४—बिसरामलाल वल्द उमरावलाल क़ौम कुर्मी साकिन इब्राहमपुर
५—मो० अनीसअहमद वल्द मो० हजूरअहमद साहब साकिन कस्बा लहरपुर मुहल्ला शेखटोला
६—अबदुलअज़ीज वल्द डॉक्टर इनायतहुसेन साहब साकिन कस्बा लहरपुर मुहल्ला मीराटोला।
परगना लहरपुर
त० जि० सीतापुर

फरीकसानी मुद्दाअलेहम

हरगाह कि जायदाद मुसर्हे जैल दरख्वास्तकुनिंदा व क़र्ज़ख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत क़र्ज़ों में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्हे जैल हासिल हो अंदर मीयाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करें।

तफ़सील जायदाद

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	कवइयत हकीयत	मालगुजारी	लोकल
१	मुसल्लम ककरामऊ सरैयाँ हदबस्त ४७४ परगना लहरपुर त० व ज़ि० सीतापुर	...	हि० $\frac{२}{५}$ मिनजुमला खाता नं० १ व ४ व खाता नं० २ व ४	खेवट मालिकाना मातहती	१२४॥।≡)६$\frac{३}{४}$	२२।≡)॥
२	मुसल्लम ऊलकपुर हदबस्त नं० ५७ प० लहरपुर त० व ज़ि० सीतापुर	...	$\frac{२}{५}$ मिनजुमला ।≈) खाता नं० १	मालिकाना	५५≡)२$\frac{३}{५}$	५॥)१
३	मुसल्लम पट्टी दानियालपुर हदबस्त नं० २८८ प० लहरपुर त० व ज़ि० सीतापुर	...	१३ बिस्वा १० बिस्वांसी को १६ आ० मानकर $\frac{२}{५}$ मिनजुमला ।≈) खाता नं० २ व १$\frac{१}{२}$ मलाती	,,	२२।)४$\frac{४}{५}$	२≡)७
४	चकटांडा सालार हदबस्त नं० २१२ प० लहरपुर त० व ज़ि० सीतापुर	...	$\frac{२}{५}$ मिनजुमला ।≈) खाता नं० १	,,	३।॥)	।≈)
५	चक पूरनपुर हदबस्त	...	खाता नं० २	,,	३)	।)१$\frac{३}{४}$
६	चक दारानगर हदबस्त २८६ प० लहरपुर त० व ज़ि० सीतापुर	कालिकाप्रसाद	,,	मातहती	२॥≈)३$\frac{६}{१०}$	।)७$\frac{४}{५}$
७	,,	...	$\frac{३}{५}$ मिनजुमला ॥≈) बतौर बय बिलवफ़ा मु० २०००) खाता नं० २	मालिकाना	...	...
८	चकमुआफी रूदामौनाथपुर हदबस्त ३२७ परगना त० व ज़ि० सीतापुर	...	हि० $\frac{२}{५}$ मिनजुमला ।≈) व $\frac{३}{५}$ मि०जु० ॥≈) मालिकाना बतौर बय बिलवफ़ा २०००) बशमूले दारानगर नं० ७	खे० मातहती	...	...
९	आराजी मौज़ा गोपामऊ परगना गोपामऊ ज़ि० हरदोई	मु० अब्दुल-अहद	$\frac{२}{५}$ मिनजुमला $\frac{१}{२}$ खाता $\frac{३}{४}$ व $\frac{२}{५}$ मिनजुमला $\frac{१}{२}$ मिनजुमला $\frac{१}{३}$ खाता $\frac{३६}{१}$	मातहती	१≈)	≡)॥।
१०	बाग़ अंबा तुख़्मी नं० १४३ रूदा मौनाथपुर परगना लहरपुर बिला आराज़ी त० व ज़ि० सीतापुर	तादादी ३ प० ७२ डि० बाक़े हि० $\frac{२}{५}$ मिनजुमला ।≈)				

तफ़सील जायदाद फ़ेहरिस्त (बे)

तफसील जायदाद जो दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी के तहेत में आ सकती है

मेज़ चोबी १, मेज़ आहिनी १, कुर्सियाँ चोबी ४, कपड़े की कुर्सी आहिनी २, चारपाई बांस ४, पलँग आहिनी
तख़्त २, तिपाई चोबी १, लालटेन २, छतुरी १, डेस्क चोबी २, बुकसेल्फ़ ३, रेकटीन १, रेक आहिनी
ट्रंक २, गिलास मुरादाबादी १, गिलास शीशा १, अटैचीकेस चिरमी १, न्यामतखाना जालीदार १, न्यामत-
खाना अलम्यूनियम १, ग्लास स्टैंड आहिनी २, टी-कप-स्टैंड आहिनी १, क्लाक २, टाइमपीस २, जेबघड़ी
रिस्टवॉच १, गुलदान पीतल २, गुलदान चीनी १, लोटा १, कलमदान २, पिन स्टैंड शीशी १, फ्रेम
शीशा व तसवीर १५, फ़र्श रंगीन १, दरी पलँग २, पतेली ७, कापी आहिनी १, पतेली फूल १,
आहिनी १, पतेली अलम्यूनियम १, कफ़गीर १, टी-सेट २, आधा हिस्सा $\frac{२}{५}$ मिनजुमला ।≈) १ अदद
हि० $\frac{२}{५}$ मिनजुमला ।≈) १ अदद नरगावन आधा हि० $\frac{२}{५}$ मिनजुमला ।≈) एक जोड़

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल बाराबंकी
मुकद्दमा नंबर १२७ सन् १९३६ ई०
ता० पेशी १४—२—१९३८ ई०

ताजदार फ़ातिमा बिंत सैयद मुहम्मद असकरी ताल्लुकेदार साकिन जैदपूर परगना सतरिख तहसील नवाबगंज ज़िला बाराबंकी

कर्ज़दार सायल

बनाम

राजा मुहम्मद एज़ाज़रसूलखाँ

कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि ताजदार फ़ातिमा मुहम्मद असकरी साकिन जैदपूर ज़िला बाराबंकी की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त-प्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से तीन माह के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह
हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
फ़ेहरिस्त (अलिफ़) कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	मिकदार हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	ग़ैरमनकूला	सतरिख	आधा खाता खेवट नं० १	-) ४ पाई $\frac{१}{०}$ जौ	२२४—१०—६	
२	,,	,,	दौलतपुर	,,	,,	१२३—१२—१	
३	,,	,,	मीनापुर	,,	=)। २ किरांट $२\frac{६}{०}$ जौ	३०—१५—११	
४	,,	,,	हलछत्त	,,	-) ४ पाई $\frac{१}{६}$ जौ	१०६—६—५	
५	,,	,,	,,	नं० खाता ७	,,		
६	,,	,,	कस्बा जैदपूर	नं० खाता १	,,	४८२—१—६	
७	,,	,,	मुबारकपूर हकीम	,, ,,	१ पाई १६ कि० $२\frac{१}{०}$ जौ	२५—१४—६	
८	,,	,,	उबीउद्दीनपूर	,, ,,	-) २ पाई १६ कि० $४\frac{१}{३}\frac{२}{३}$ जौ	१२४—७—६	
९	,,	,,	भगवानपूर	,, ,,	-) ४ पाई $\frac{१}{६}$ जौ		
१०	,,	,,	बतरौली	हकीयत मुतफ़र्रिक़ा	२बी० १७ बिस्वा० १२ बिस्वांसी $१८\frac{१}{२}$ कचवांसी	०—१—१०	
११	,,	,,	प्यारेपूर सरैयाँ	,,	० बी० ६ बि० १५ बि० १७ कच०		

१२	बाराबंकी	गौरमनकूला	जैदपुर	पुख़्तैदारी नं० २०	१ पाई २ किरांट	सा० रकबा मा
१३	,,	,,	,,	खाता नं० ४९	७ पाई १३ किरांट ७ जौ ५ $\frac{3}{4}$ तिल	,,
१४	,,	,,	,,	,, ५३	३ पाई ५ किरांट ७ जौ ५ $\frac{3}{4}$ तिल	,,
१५	,,	,,	,,	,, ५५	८ पाई १६ किरांट	,,
१६	,,	,,	,,	,, ९८	४ पाई ८ ,,	,,
१७	,,	,,	,,	,, १०१	३ पाई ४ जौ ३$\frac{1}{2}$ तिल	,,
१८	,,	,,	,, ,,	,, १०२	११ किरांट ५ जौ ३$\frac{3}{4}$ तिल	,,
१९	,,	,,	,,	,, १९६	मुस्तरका सादात	,,
२०	,,	,,	,,	,, ६ ब ८	२ पाई ८ किरांट	,,
२१	,,	,,	,,	,, १९	५ बिस्वा	,,
२२	,,	,,	,,	,, ३८	—) ४ पाई	,,
२३	,,	,,	,,	,, ३९	२ बी० ७ बि० ४ कच.	,,
२४	,,	,,	,,	,, २५	५ पाई ६ कि० ६ जौ	,,
२५	,,	,,	,,	,, ४०	।)	,,
२६	,,	,,	,,	,, ४१	९ पाई १२ किरांट	,,
२७	,,	,,	,,	,, ४२	,,	,,
२८	,,	,,	,,	,, ४३	=)	,,
२९	,,	,,	,,	,, ४६	३ बीघा ८ बिस्वा १० कचवांसी	,,
३०	,,	,,	,,	,, ४५	७ पाई १९ किरांट	,,
३१	,,	,,	,,	,, ४७	४ पाई १९ किरांट	,,
३२	,,	,,	,,	,, ४८	९ पाई १२ किरांट	,,
३३	,,	,,	,,	,, ५०	२ पाई १९ किरांट	,,
३४	,,	,,	,,	,, ५१	४ पाई १६ किरांट	,,
३५	,,	,,	,,	,, ५२	६ पाई १२ किरांट	,,
३६	,,	,,	,,	,, ५४	४ पाई १६ किरांट	,,
३७	,,	,,	,,	,, ६९	—)	,,
३८	,,	,,	,,	,, ७४	१२ किरांट	,,
३९	,,	,,	,,	,, ७७	८ पाई	,,
४०	,,	,,	,,	,, ९९	३ पाई १५ किरांट ७ जौ ६$\frac{3}{4}$ जौ	,,
४१	,,	,,	,,	,, १२५	६ पाई ८ किरांट	,,
४२	,,	,,	,,	,, १३६	९ किरांट	,,
४३	,,	,,	,,	,, १८२	३ पाई ४ किरांट	,,
४४	,,	,,	,,	,, साकिना रियाया	तखमीनन ६००	,,
४५	,,	,,	बलखत	खाता नं २	।) हिस्सा	,,
४६	,,	,,	,,	मातहतदारी नं० १	३ बि० ३ बि० १५) बिस्वांसी	नकदी १२५
४७	,,	,,	,,	,, ६	११ बि०	,,
४८	,,	,,	,,	,, ८	२ बिस्वा ४	,,
४९	,,	,,	,,	,, १२	११ बि० १२ बि० १३ कचवांसी	,,
५०	,,	,,	,,	,, ४७	७पाई ६ कि० ६ जौ	,,
५१	,,	,,	देवपर पर० सिद्धौर	मातहतदारी नं० १	६बि०२२बि०२क०	,,

५२	बाराबंकी	ग़ैरमनकूला	भगवानपूर	हक़ मुरतहनी	-)४ पाई	
५३	,,	,,	अकबरपूर धूनेठी	खाता नं० १	१) हिस्सा	१०४-१२-०
५४	,,	,,	प्यारेपूर मुहाल टीकाराम	मातहत खाता नं० ११	३ बि० १६ बि०	
५५	,,	,,	बलछुत्त मुहाल साजिदअली	आला खेवट नं० १	१/१० हिस्सा	१३—२—५
५६	,,	,,	क़स्बा जैदपूर	मकान ख़ास क़दीम	जायदाद मय हसन दर्वाज़ा	
५७	,,	,,	बावर्चीख़ाना	इमामबाड़ा	,,	

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

१—ज़रिए इक़रारनामा मु० २३७॥ ≡) सालाना ज़रिए इक़रारनामा नविश्ते सैयद हसनजाकिर वग़ैरह ता० २ मई सन् १९०२ ई० मु० सैयद मुहम्मद असकरी व मुसम्मियान सैयद हसन जाकिर वग़ैरह से मिलना चाहिए और यह रक़म मवाज़ियात प्यारेपुर सरैयाँ व सेखपूर व बलछुत मुक़र्रर है बमोजिब खाता मिन० २३७॥≡) से हिस्सा सायलान १६॥|-)२ पाई होता है।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडिशनल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम बाराबंकी

तारीख़ पेशी २६—२—१९३८ ई०

मुक़द्दमा नंबर $\frac{२२५}{२३८}$ ४८८

श्यामबिहारी वल्द साहबदीन
जानकीसरन नाबालिग़ बविलायत श्यामबिहारी पिदर खुद } क़ौम कुरमी साकिन सतरिख परगना सतरिख तह० नवाबगंज ज़िला बाराबंकी क़र्ज़दार सायलान

बनाम

जुमला क़र्ज़ख़्वाहान

चूँकि श्यामबिहारी वग़ैरह साकिन सतरिख ज़िला बाराबंकी ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाहार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेश करदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत—

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुश्तकिल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	मालियत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
	बाराबंकी	...	सतरिख पर० खुद	मालगुज़ारी	आराज़ी २२४।|८२-२	७२।|ड)१	खाता १५

२	,,		,,	,,	,,४।ऽ१४क० ३/४	२॥।-)६	,,
३	,,		,,	आला	६॥।ऽ३-८	३८॥।३ ३/४	,,
४	,,		,,	मातहतदारी	,,॥ऽ१-१०क० १/१२	।-)६	,,
५	,,		,,	,,	,,२ऽ२क० १/८	१॥≡)।	,,
६	,,		,,	,,	८।ऽ१-१२ क० १/८	२≡)	,,
७	,,		,,	आला	३।ऽ३-१८	१६।-)१ १/८	,,
८	,,		भरावापुर परगना सतरिख	मातहतदारी	१ऽ१-५	५॥।)	,,
९	,,		शरीफाबाद परगना सतरिख	,, आला	३ऽ२-१	१४।)३	,,
१०	,,		करौंदी कलाँ परगना सतरिख		।)	१३४।≡)६	,,
			मु० मातादीन साह	,,	≡)	१२३≡)६	
११	,,		करौंदी खुर्द परगना सतरिख				
१२	,,		बंदगीपुर परगना सतरिख	मातहतदारी मुर०	२॥।ऽ२-६ क० १/४	२।)	
१३	,,		सेठमऊ परगना सतरिख	मातहतदारी	६ऽ१० क० १/४	६॥)	
१४	,,		,,	मातहतदारी मुर०	१०॥ऽ२ क० १/४	१०॥-)८	

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बहुस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवा सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	बाग़ात	अलिफ $\frac{५१५}{२।ऽ३}$ व $\frac{८८}{७।ऽ२-६}$ व $\frac{८८}{ऽ६}$ व $\frac{३३५}{।ऽ२-४}$ $\frac{५०५}{३।ऽ३}$ व $\frac{२०१२}{२ऽ१}$ का चहारुम	वाके मौजा सतरिख परगना सतरिख तह नवाबगंज ज़िला बाराबंकी
२	बाग़	$\frac{११६}{।ऽ४-१०}$ का १/४ व बनिस्फ हिस्सा ११ दरख़्त आम व मुतफर्रिक मुत्तसिल बाग़ दशहरा	वाके जलालपुर मज़रा बड़ेल परगना व तह नवाबगंज ज़िला बाराबंकी
३	मकान	एक किता मकान मसकूने	वाके क़सबा सतरिख ज़िला बारा मय गोशाजात बमूजिब बंदोबस्त
४	दूकानात व मकान	वाके अहाता मकान $\frac{३३२५}{२७७४}$	म्युनिसिपल नवाबगंज वाके मुहल्ला गोयान कसबा नवाबगंज परगना व त नवाबगंज ज़िला बाराबंकी

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १३ नवंबर, १९३७ ई० जारी हुआ।

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअ़त हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम लखनऊ
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ६४ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २० दिसंबर सन् १९३७ ई०
मिरज़ा आबिदहुसैन वल्द मिरज़ा सादिक़हुसैन साकिन बंजारी टोला लखनऊ क़र्ज़दार सायल

बनाम

१—गिरिधारीलाल } पिसरान मदनमोहनलाल }
२—दामोदरदास } साकिनान रस्तोगी टोला लखनऊ
३—गोबरधनदास वल्द व्रजमोहनलाल }
४—फ़तेहचंद } पिसरान थलूचंद साकिन झवाई टोला लखनऊ थाना चौक
५—अमीनचद }

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि मिरज़ा आबिदहुसैन वल्द मिरज़ा सादिक़हुसैन साकिन बंजारी टोला ज़िला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुतल्लिक़ा व क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बक़ामत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	त० प० ज़िला लखनऊ	मौज़ा गजलहार	मुहाल नवाब हाशिमअलीख़ाँ	क़ाबिल विरासत क़ाबिल इंतक़ाल	।=) २ पाई मिनजुमला बमूजिब १) हिस्सा बंदो०	१४१)	बवजह ११७) माफ़ी
२	,,	मौज़ा आराज़ी महताब बाग़	,,	,,	।॥) ११ पाई मिन० १)	४२५)	४२॥)
३	,,	मौज़ा कलवर गाढ़ा भागदोरी	,,	,,	।=) ५ पाई ११ किरांट मिन० १) हिस्सा मिन० बंदोबस्त	१२१॥≈)	१२८)
४	,,	घैला	,,	,,	।=) २ पाई ८ किरांट १० हि० मिनजुमला १)	११५।)	

५	त० प० जि लखनऊ	जागीरदार मौजा दाऊदनगर	मुहाल नवाब हाशिमअलीखाँ	काबिल विरासत काबिल इंतकाल	।/ ८ पाई मिन० १) नक़द	२६५।=) ८ पाई	
६	,,	मौज़ा बरी खुर्द	,,	,,	,,	२७।=) ८ पाई	
७	,,	जागीर० बरक़िला जागीरदारी मौज़ा बरामऊ	,,	,,	,,	६३॥≋) ४ पाई	
८	,,	मौज़ा ककरेली	मु० कालीचरन मातहतदारी	,,	।=)। ३ किरांट ७ डि० मि० १६ आ०		
९	,,	,,	मु० लछमनदास मातहतदारी	,,	॥) ४ पाई मिन-जुमला १)		
१०	,,	मौज़ा भटगवाँ	मुहाल माधोदास मातहतदारी	,,	२ पाई मिन-जुमला १)		
११	,,	,,	,,	,,	।=)२ पाई १३ किरांट ७ डिसमिल		
१२	,,	,,	मुहाल रानी सरफ़राज बेगम	,,	॥)४ पाई मिन-जुमला १)		
१३	,,	मौज़ा ग़ाज़ीपुर बलराम	मुहाल नवाब इनायतउलदौला	,,	।=) २ पाई १३ किरांट	१५)	१॥)
१४	तहसील सनेहीघाट परगना रुदौली ज़िला बाराबंकी	मौज़ा खजनपुर	मुहाल सादिक़हुसैनख़ाँ	,,	मुसल्लम		२१)
१५	,,	मौज़ा खजनपुर मातहतदारी	मुहाल हरनरायन	,,	४० बीघा १६ बि० १ बिस्वांसी मुसल्लम	१२५)	११६)
१६	,,	मौज़ा जोनिया-मऊ	मुहाल मिरज़ा सादिक़हुसैनख़ाँ	,,		१४६६)	१४२॥ २पा
१७	,,	माज़ा कदा	मु० अलीजामिन	,,	।॥) मि० १)	१७०)	१६॥/
१८	,,	,,	मुहाल मिरज़ा सादिक़हुसैन	,,	मुसल्लम	१६०)	१२॥/
१९	,,	,,	मुहाल वलीफ़रसूल	,,	३/१ मिनजुमला १)	१६०)	॥≡/
२०	,,	,,	मुहाल खलीलउद्दीन	,,	,,	१३४।≡)	१६/
२१	,,	कसबा रुदौली	मुहाल मिरज़ा सादिक़हुसनख़ाँ	,,	मुसल्लम	११॥।=)	१०/
२२	,,	,,	मुहाल खलीलुलरहमान	,,	,,	२०)	११०
२३	,,	,,	मुहाल अली-मोहम्मद	,,	,,		नं०१ सा हा १४
२४	,,	दरख़्तअमरूदबाग कसबा रुदौली	,,	,,	रक़बा २ बीघा २ बिस्वा ५ बिस्वांसी		
२५	त० व प० लखनऊ	बाग़ा हसीनगंज	,,	,,	मुसल्लम		

२६	प०परतापगंज त० नवाबगंज ज़िला बाराबंकी	मौज़ा दादरा	मुहाल सादिक़हुसैन	क़ाबिल विरासत क़ाबिल इंतक़ाल	मुसल्लम		
२७	,,	मौज़ा कद्दा	,,	,,	,,		
२८	प०बसवाई त०सनेहीघाट ज़िला बाराबंकी	मौज़ा बचलू	,,	,,	,,		

नंबर २६ लगायत २८ को सायल बय कर चुका है। और मिलकियत सायल है, मगर अज़रूये इक़रारनामा नविश्ते वल्लभदास वल्द दामोदरदास व मदनमुरारी वल्द गोबरधनदास अक़्वाम रस्तोगी साकिनान बाज़ार राजा लखनऊ मुवर्रिख़े १० नवंबर सन् ३३। सायल को इस्तहक़ाक़ हासिल है कि सायल जायदादहाय मज़कूर क़ीमत देकर वापस ले लेवे या बदस्त अशख़ास दीगर फ़रोख़्त कराकर उसकी रकम ख़रीदारी वसूल हो उसके पास मुस्तहक़ है।

हस्ब फेहरिस्त मदख़ला रूपनारायन वग़ैरा उज़्रदारान क़र्ज़ख़्वाहान

परगना सनेहीघाट ज़िला बाराबंकी मौज़ा बरी मोहाल मिरज़ा सादिक़हुसैनख़ाँ [illegible] मिनजुमला १)

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो अलावा इस जायदाद के जिसमें उसकी हक़ीयत हो, जो कि कुर्क या बिक सकती है दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी

नंबर शुमार	क़िस्म जायदाद	हक़ दरख़्वास्त देहंदा	कैफ़ियत
१	मकान पुख़्ता मय आराज़ी महदूदा वाक़े बंजारी टोला थाना चौक लखनऊ—शर्क़ी मकान मौसूमा हकीमुद्दीन, ग़रबी कूचए नाफ़िज़ा जनूबी कूचए नाफ़िज़ा मौसूमा हकीमुद्दीन शुमाली कूचए नाफ़िज़ा।	मुसल्लम	पुख़्ता अहाता, १०२, ११०, १२०, १२१, १२३, १२४, १२७, ५२, १०३, १४, ६१, १०, ५१, ५८, जो सायलान ने अपनी फेहरिस्त मुल्हिक़ में नंबर २५ पर बतौर बाग़ दर्ज की है।
२	अहाता मौसूमा अस्तबल वाक़े बंजारी टोला लखनऊ—शरक़ी मकान सुल्तानजहाँ बेगम मग़रबी मकान मौसूमा डॉक्टर असग़रबेग, जनूबी मकान मिरज़ा आबिदहुसैन शुमाली कूचए नाफ़िज़ान मसजिद	,,	
३	एक क़िता मकान पुख़्ता वाक़े विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ—शरक़ी मकान मसकूना सुल्तानजहाँ बेगम मग़रबी सड़क जनूबी मकान मिलकियत ज़कीअलीख़ाँ शुमाली मकान डॉक्टर असग़रबेग	,,	
४	एक क़िता मकान मय आराज़ी वाक़ा कज़ना दरियाबाद तहसील रामसनेहीघाट ज़िला बाराबंकी हस्ब फेहरिस्त मदख़ला सोहनलाल व लालचंद क़र्ज़ख़्वाहान जायदाद हस्ब फ़ेहरिस्त संदरलाल वग़ैरह मकानात वाक़े तहसीनगंज लखनऊ नंबर १२—शरक़ी सड़क पुख़्ता मग़रबी रास्ता व मकान क़मरजहाँबेगम जनूबी मकान मु० नवाब सड़क पुख़्ता शुमाली नाला आराज़ी ममलूका वंदी	हिस्सा बक़दर [illegible] मिनजुमला १६ मुसल्लम	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २ सितंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा अव्वल बमुकाम लखनऊ

नंबर मुक़द्दमा ४८ सन् १९३६ ई०

पेशी १८ ऑक्टोबर सन् १९३७ ई०

नवाब मेहँदी बेगम ताजदार बहू साहबा बेवा सय्यद शहंशाहहुसैन साहब वकील साकिन मुहल्ला नख़ास थाना चौक, लखनऊ

कर्ज़दार सायलान

बनाम

लाला मुरलीमनोहर रस्तू मुतवल्ला लाला गिराहगोपाल क़ौम रस्तोगी साकिन मुहल्ला अशरफ़ाबाद थाना चौक लखनऊ

चूँकि नवाब मेहँदी बेगम ताजदार साहबा बेवा सय्यद शहंशाहहुसैन साहब वकील साकिन मुहल्ला नख़ास थाना चौक, लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है। दरख़्वास्तदिहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ व फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० मज़कूर की जायदाद ज़ाहिर की है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के गज़ट संयुक्तप्रांत में शाया होने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालतहाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा मुंदरजा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिला	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुतल्लिक़ क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर लाइक कलेक्टर ज़िला	मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१—	लखनऊ	ज़मींदारी माफ़ी	मौ० रूपपूर खदरा मुहाल व मुकाम खा० खेवट नं० २ प० त० लखनऊ	मारूसी हिस्सा ७ आ० १ पा० १६ किरांट १६ डिसमिल	७६ बी० ५ बि० १० बि०	माफ़ी	
२—	,,	,,	मौ० रूपपूर खदरा मुहाल कुतुबुद्दौला खा० खे० नं० १ प० लखनऊ	हिस्सा ८ आना	६ बी० १६ बि० १० बि०	,,	
३—	,,	,,	मौ० रूपपूर खदरा मुहाल खा० खे० नं० २	हिस्सा १६ आना	२५ बी० १६ बि०	,,	
४—	,,	,,	मौ० दारानगर जागीर पट्टी सैयद शहंशाहहुसैन खा० खे० नं० २	१ आना ७ पाई ४ किरांट	५६ बी० १० बि० १२५ बि०	,,	
५—	,,	,,	जागीरदार दीगर पट्टी शहंशाहहुसैन खाता खेवट नं० ४	२ आना १० पाई ११ किरांट	१०० बी० ५ बिस्वा १६ बिस्वांसी	,,	

६—	लखनऊ	ज़मींदारी माफ़ी	दारानगर वीगर पट्टी शहंशाहहुसैन खाता खेवट नं० २	१ आ० ७ पा० ४ कि०	३१ बीघा १६ बिस्वा	माफ़ी
७—	"	"	दारानगर पट्टी चर्ख़हुसैन खा० खे० नं० ५	२ आना १० पाई ११ किरांट	२६ बी० ३ बि० ८ बि०	"
८—	कानपुर	"	मौजा फतेहपुर परगना भगौतीपुर	१ आना ७ पाई ४ किरांट	मुस्तरका बक़दर १/१०	१११॥)
९—	उन्नाव	"	मौ० नवाबगंज मड़ियावँ प० मोहान त० हसनगंज	१० पाई १३ किरांट १७ डिसमिल	"	४२)
१०—	बाराबंकी	"	मौ० खनकदास प० देवाँ त० जि० बाराबंकी	६ ४ किरांट	"	२८)
११—	"	"	मौ० इबराहीमपुर खुर्द प० देवाँ	"	"	२६)
१२—	लखनऊ	"	मौ० देवपूर पर० त० ज़ि० लखनऊ	३ पाई ७ किरांट ११ डिसमिल	"	२२॥)
१३—	"	"	मौ० जलालपुर परगना तहसील जिला लखनऊ	३ पाई १७ किरांट ११ डिसमिल	"	७)
१४—	"	"	मौ० अमौसी परगना तहसील लखनऊ	६ बीघा ८ बिस्वा ३ बिस्वांसी	"	४६-)
१५—	"	"	खटगंज परगना तहसील जि० लखनऊ	१० बिस्वा १३ किरांट ७ डिसमिल	"	४८)
१६—	"	"	मौ० मोहम्मदपूर पर० तह० जिला लखनऊ	१० बिस्वा १३ किरांट ७ डिसमिल	"	३)
१७—	"	"	मौ० अजमतनगर पर० तह० जिला लखनऊ	५ बिस्वा ६ किरांट १३ डिसमिल	"	३॥)
१८—	"	"	बलवाहर परगना तहसील लखनऊ	२० बिस्वा १३ किरांट	"	२२।-)
१९—	"	"	मौ० चिकइयामगंज पर० तह० लखनऊ	८ पाई १० किरांट १३ डिसमिल	"	१॥=)
२०—	"	"	शहर सायखानी देवपुर	८ पाई १० किरांट १३ डिसमिल	"	"
२१—	कानपुर	"	मिलकियत हरौनी फतेहपुर पर० मौकीपुर त० बछरावाँ	१ आना ७ पाई ४ किरांट	"	४॥-)
२२—	लखनऊ	"	मौजा देवपूर परगना तहसील लखनऊ	६ पाई २ किरांट	"	माफ़ी
२३—	"	"	मौ० जलालपूर	"	"	"
२४—	"	", मय बाग व कोठी	मौ० अहिरनपूर खा० ४ प० त० लखनऊ	मुसल्लम ४० बीघा १० बिस्वा	मुसल्लम	१४॥)
२५—	"	", मय बाग	मौ० हरादतनगर खा० ६ प० त० जि० लखनऊ	४ बीघा ३ बिस्वा	"	७॥।-)

फेहरिस्त जायदाद, जो हस्ब दफ़ा ६० आव्ता दीवानी काबिल कुर्क व नीलाम है—

१—एक क़िता मकान पुख़्ता दोमंज़िला वाके मुहल्ला नख़ास थाना चौक शहर लखनऊ

उ०	प०	द०	पू०
आराज़ी मकान हाजा मु० फुल-बाग सरकारी विक्टोरिया स्ट्रीट	कूचा नाक़िसा सरकारी	आराज़ी मकान हाजा सुरयेश्वरी	मकान दीगर दफ़्तर

२—एक क़िता मकान पुख़्ता मसकूना व दस क़िता दूकानात वाके सड़क विक्टोरिया स्ट्रीट व कमरा [illegible] व बालाई कोठी मशरिक बालाई दूकानात मौसूमा दफ़्तर वाके मुहल्ला नखास चौक लखनऊ [illegible]

१० किता दूकानात दरीना व विक्टोरिया स्ट्रीट दरीना कमरा फाटक दरवाज़ा खुद	कमरा नशिश्ते	दीवार दीगर मकान हाजा	दीवार कमरा नशिश्त दीवार दूकानात मका

३—एक किता मकान वाक़ै मोहल्ला नखास थाना चौक शहर लखनऊ

४ किता दूकानात आराजी मकान हाजा मुलहक विक्टोरिया स्टेट	वल अलवाब व कूचा नाफ़िज़ा	दीवार हाजा मसजिद	दीवार मकान खुरशेदअली मरहूम खँडहर हो गया

४—एक किता आराजी ख़रीदकरदह अज़ इंप्रूवमेंट ट्रस्ट लखनऊ बनाम सैयद शहंशाहहुसैन साहब वा नादान महल रोड लखनऊ नंबरी ५५ मुवर्रिख़ा २६ मई सन् १९११ मुक़द्दमा ६ जून सन् १९१७

५—एक किता आराजी अज़ म्युनिसिपलबोर्ड लखनऊ बनाम सैयद शहंशाहहुसेन साहब मरहूम वा विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ महदूदा जैल

मकान मुक़ाबल	फुटपाथ विक्टोरिया स्ट्रीट	आराजी सरकारी	नादानमहल रोड

६—एक किता आराजी दीगर अज़ म्युनिसिपल बोर्ड बहक सैयद शहंशाहहुसैन साहब मरहूम वा विक्टोरिया स्ट्रीट शहर लखनऊ

विक्टोरिया स्ट्रीट	मकान मुद्दइया	आराजी सरकारी	आराजी सरकारी

७—एक किता आराजी मौसूमा मोहल्ला नखास कदीम थाना चौक लखनऊ महदूदा जैल

आराजी कूचा ग़ैर नाफ़िज़ा	बाज दीवार मकान मक़बूज़ा सज्जाद मिर्ज़ा बाज़ मकान मुद्दइया	इमामबाड़ा नवाब इकरामउल्लाख़ाँ मरहूम	कूचा ग़ैर नाफ़िज़ा

८—किता दूकानात पुख़्ता ज़ेर इमामबाड़ा नवाब इकरामउल्लाख़ाँ मरहूम वाक़ै नखास कदीम महदूदा जैल

दीवार मकान हाजा मुलहक दूकान नवाब साहब मरहूम	दीवार दूकानात हाजा मुलहक दूकान नवाब साहब	सड़क नखास कदीम	दीवार दूकानात हाजा

९—एक किता दूकान ज़ेर इमामबाड़ा वाक़ै नखास कदीम थाना चौक शहर लखनऊ महदूदा जैल

दीवार मकान सैयद मेंहदी	सड़क नखास कदीम	दीवार दूकानहाजा मुलहक दूकान नवाब साहब मरहूम	दीवार मकान हाजा मुल दूकान नवाब साहब मरहू

१०—एक किता मकान मौसूमी छोटी, जवंला व कोठरी मौजूदा जानिब सड़क मकान व आराजी जिस कमरा तामीर हुआ है व तहख़ाना जानिब जनूब इमामबाड़ा वाक़ा नखास कदीम

(मकान पुख़्ता छोटी) हदूदरुबा

दीवार मकान हाजा व आराजी व कोठी जिस पर कमरा तामीर है	दीवार मकान हाजा व सड़क नखास कदीम	सहंची फाटक इमामबाड़ा	दीवार मकान ख़रीदकर्दा

(हदूदरुबा तहख़ाना जानिब जनूब इमामबाड़ा)

दीवार व दरवाज़ा मकान सैयद आगाहहुसेन	दीवार दरवाज़ा मरसतु कफश दूकान	दीवार दरवाज़ा दूकानात मुद्दइया	तहख़ाना इमामबाड़ा इकरामउल्लाख़ाँ

११—एक किता मकान मय सहंची व दो किता दूकानात मौक़ूआ मुहल्ला नखास कदीम थाना चौक लखनऊ महदूदा जैल

(हदूदरुबा सहंची मकान)

दीवार मकानहाजा व दीवार इमामबाड़ा इकरामउल्लाख़ाँ मरहूम	दीवार मकान हाजा व सड़क नखास कदीम	दीवार मकान हाजा व दीवार दूकानात मुद्दइया	दीवार मकान हाजा व फाटक इमामबाड़ा इकरामउल्लाख़ाँ

(हदूदरुबा दूकानात)

दीवार दूकान हाजा मुलहक इमामबाड़ा	दीवार दूकानहाजा व सड़क नखास	दीवार दूकान मुद्दइया	दीवार दूकान मुलहक दीवार मकान मुद्दइया

१२—चार किता दूकानात मौक़ूआ मुहल्ला नखास कदीम थाना चौक शहर लखनऊ महदूदा जैल

दीवार दूकान हाजा	दरवाज़ा दूकान सड़क नखास	दीवार दूकान हाजा व दीगर दूकान मुद्दइया	दीवार दूकान मु दीगर दूकान मु

हदूदरुबा तीन किता दूकानात मौक़ूआ नखास ज़ेर इमामबाड़ा इकरामउल्लाख़ाँ मरहूम

दीवार दूकानात हाजा मुलहक व दीगर दूकान मुद्दइया	दीवार दूकान हाजा मुलहक व दीगर दूकान मुद्दइया	सड़क नखास कदीम	दीवार दूकानात हाजा चप व दीवार इमाम

१३—चार किता दूकानात मौकूआ नखास कदीम थाना चौक शहर लखनऊ महदूदा जैल

दीवार दूकान हाजा जेर मकान मुद्दइया	दर दूकान पेश आई मुहरी व सड़क	दीवार दूकान हाजा मुलहक व दीवार दीगर दीवार मुद्दइया	दीवार दूकान हाजा मुलहक दीवार दूकान दीगर मुद्दइया
दीवार दूकान हाजा मुलहक दूकान दीगर मुद्दइया	दीवार मकानात हाजा मुलहक दूकान दीगर मुद्दइया	दरवाजा व दीवार दूकानात सड़क सरकारी	दीवार दूकानात हाजा मुलहक व दीवार इमामबाड़ा इकरामउल्लाखाँ

फेहरिस्त जायदाद, जो हस्ब दफा २५ सन् १९३४ ई० कुर्क व नीलाम से मुस्तसना करार दिए जायँ—

१—मकान मसकूना

एक किता मकान पुख्ता दोमंजिला व इमामबाड़ा नवतामीर मौसूमा शहंशाह बिल्डिंग मय आराजियात मुलहक वाके मुहल्ला नखास थाना चौक शहर लखनऊ महदूदा जैल

श०	ग०	ज०	शु०
दीवार मकान हाजा अंदर मकानात व कुफया	आराजी दीवार मकान हाजा व फुटपाथ विक्टोरिया स्ट्रीट	दीवार मकान हाजा व मकान नवाब कब्जा सैयद खुरशेद हुसेन है	दीवार व आराजी मकान दूसरा मुलहक नादानमहल रोड

२—असबाब खानादारी—

१—मेटकी मिसी	३ अदद
२—देग मिसी	१ अदद
३—पतीली मिसी	५ अदद
४—पतीलियाँ मिसी	१० अदद
५—लोटे मिसी	६ अदद
६—बधने मिसी	५ अदद
७—गिलास	५ अदद
८—कटोरा मय थाली जोड़	१
९—थाली गिलास	७ अदद
१०—जरूफ चीनी मुख्तलिफ	१०० अदद
११—पानदान	२ अदद
१२—पिटारी	१ अदद
१३—तख्ता चोबी	८ अदद
१४—पलँग	६ अदद
१५—संदूक चोबी कलाँ	२ अदद
१६—संदूक चोबी खुर्द	७ अदद
१७—मेज कलाँ	१ अदद
१८—मेज खुर्द	२ अदद
१९—संदूकची आहिनी	१ अदद
२०—दरियाँ कलाँ	४ अदद
२१—कुर्सियाँ	१० अदद
२२—नियामतखाना	३ अदद
२३—लालटेन	२ अदद
२४—बक्स आहिनी	१
२५—चाँद नया	४ अदद
२६—दरियाँ खुर्द	४ अदद
२७—चादर	४ अदद
२८—दस्तरख्वान	४ अदद
२९—घड़ियाँ	२ अदद
३०—पचास पोशीदनी	
३१—पैजामे	८ अदद
३२—लुगड़े	८ अदद
३३—सलूका	१२ अदद
३४—कमीज	८ अदद
३५—कुर्ते	८ अदद
३६—रजाई	२ अदद
३७—दुलाई	२ अदद

मुंसरिम

بعدالت اسپشل جج درجہ دویم شاہجہانپور
نمبر مقدمہ ۱۰۶ ۱۹۳۶ء
تاریخ پیشی ۲۱ جنوری سنہ ۱۹۳۸
۱—نثار احمد ولد گھورا } قوم شیخ ساکن موضع ملکی پور پرگنہ و تحصیل تلہر
۲—نسبت اللہ ولد نعمت اللہ } ضلع شاہجہانپور
فریق ثانیان

فریق ثانیان

بنام ۱—جگناتھ } پسران ٹھکارام قوم مہاجن ساکن قصبه تلہر محله داتاگنج
۲—سیاملال }
۳—بھگوانداس ولد سیاملال قوم مہاجن ساکن قصبہ تلہر محله داتاگنج
۴—محمد عظیم اللہخاں ولد کریم اللہخاں قوم پٹھان ساکن موضع ملکی‌پور پرگنه و تحصیل تلہر ضلع شاہجہانپور
۵—مسماۃ مقبولا زوجه عظیم اله قوم پٹھان ساکن موضع ملکی‌پور پرگنه و تحصیل تلہر ضلع شاہجہانپور
۶—زہیرالدین ولد غلام محی‌الدین قوم شیخ ساکن تلہر محله نت‌گئی ضلع شاہجہانپور—

ہرگاہ که جائداد مندرجه ذیل درخواست کنندہ و قرضخواہان نے اپنی بیان تحریری درخواست صراحت قرضه میں حسب دفعات ۸ و ۱۰ یوپی ایکٹ نمبر ۲۵ سنه ۳۴ ء میں ظاہر کی ہے لہذا ہر خاص و عام کو اطلاع دیجاتی ہے که اگر کسی شخص کو کوئی حق جائداد مندرجه ذیل حاصل ہو تو اندر میعاد ۳ ماہ تاریخ شایع ہونے نوٹس گورنمنٹ گزٹ کے عدالت ہذا میں پیش کرے—

تفصیل جائداد

حقیت زمینداری موضع ہرپور محال اول پرگنه و تحصیل تلہر رقبی ۲۷—۸۷ میں منجمله کل کے ایک ثلث کے ۱۲ حصه میں ۲ حصه پٹی کل کا $\frac{1}{18}$ حصه

حقیت زمینداری موضع پھکڑاپور پٹی نیازاحمد نمبر ۵ رقبی ۵۶—۶۱ کے ۶۸—۱۲ حصه

حقیت زمینداری موضع پھکڑاپور پٹی نعمت اله نمبر ۵ منجمله ۶۹—۱۷ کے ۷—۱۰ حصه

ایک حصه باغ محدودہ ذیل واقع موضع ملکی‌پور پرگنه و تحصیل تلہر ضلع شاہجہانپور

پورب	پچھم	اتر	دکھن
باغ حاجی برکت	کھیت سائلان	کھیت نصیح اله حبیب اله	کیھت کریم علی شاہ

ایک حصه باغ محدودہ ذیل واقعه موضع ملکی‌پور پرگنه و تحصیل تلہر ضلع شاہجہانپور تعدادی ۱۶ بیگھه

پورب	پچھم	اُتر	دکھن
کھیت حمیدخاں	باغ اسمعیل	کھیت نعمت اُله	باغ حبیب اُله شفیع اُله

فریق ثانیان اول نے موضع پھکڑاپور پٹی نعمت اُله نمبر ۵ میں رقبه ۶۹—۱۷ کے بجاے ۸۹—۱۷ ظاہر کیا ہے— صراحت باغات مرہونه

نعمت اُله رسید اُله
$\frac{۹۴}{۴}$ ۲۴—۰
$\frac{۹۵}{۲}$ ۵—۰
$\frac{۱۳۳}{۲}$ ۱—۰
۳ قطعه ۳۰—۰

نثاراحمد وغیرہ
۹۳ ۸۱—۰
$\frac{۹۵}{۱}$ ۲۶—۰
۹۶ ۲۷—۰
۹۷ ۲۳—۰
$\frac{۱۳۳}{۵}$ ۷—۰
۲ ۶۴—۱

حقیت زمینداری موضع ملکی‌پور محال اول کھاته نمبر ۲۱ تعدادی ۱۰—۹ منقسم ۱۸۲ حصه بحق ۲ حصه سائلان نے اپنی درخواست میں ظاہر نہیں کیا ہے—

منصرم

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदाद हाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जजी दर्जा दोयम एटा इजलासी जनाब मि० ओ३मूप्रकाश साहब बहादुर स्पेशल जजी दर्जा दोयम एटा

मु० नं० १७३ सन् ३६ ई०

१—मुसम्मात शबरातिन बेवा } जुल्फिकारअली
२—बहारअलीशाह पिसर }
३—मुसम्मात मरियम बालिग़ा
४—मुसम्मात बुद्धो दुख्तर } नाबालिग़ान मरियम व रिफाकत मुसम्मात मरियम मादर खुद
५—ब्याजअलीशाह उर्फ़ खचेडा पिसर }
६—मुसम्मात अख्तरी बेगम ज़ौजे नन्नू
७— ,, ग़फूरन ज़ौजे बख्शअली
८—रहमनअली } नाबालिगान मु० ग़फूरन बरिफाकत मु० गफूरन मादर खुद
९—हाफिज़अली }
१०—मेहरबान अलीशाह }
११—चुन्नूशाह } पिसरान लल्लन
१२—मन्नूशाह }
१३—मुसम्मात अकुआ } नाबालिग़ान बरिफाकत चुन्नूशाह बिरादर हक़ीक़ी खुद
१४— ,, शकूरन }

अकवाम फ़क़ीर साकिन मारहरा परगना मारहरा ज़िला एटा

सायलान

ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्बदफ़ा १० सायलान मज़कूर को जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो उस तारीख़ से, जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क) कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

१ हक़ियत ज़मींदारी वाक़ै मौजा नीलगिरीं मुहाल ज़ुबैदाख़ान परगना मारहरा मुंदर्जा खाता खेवट नं ०३ रकबई —५०
२ ,, ,, हार ,, ,, ,, ,, नं० ५ रकबई २ —१०
३ ,, ,, ,, ,, ,, ,, नं० १२ रकबई —७
४ ,, ,, अहमदनगर बमनोई ,, १३ बिस्वा ,, ,, नं० ७० रकबई —८२
५ ,, ,, ,, ,, ,, ,, नं० १३५ रकबई —२०

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है—

	शर्की	गर्बी	जनूबी	शुमाली
१. एकमंजिला मकान तामीर खाम वाक़ै कस्बा मारहरा महदूदा जैल—	महकमा अरायत	दरवाजा	महकमा अरायत	थाना
२. ,, ,, ,, ,,	,,	सड़क पुख्ता	दरवाजा सड़क सरकारी	जमीन उफ़्तादा
३. ,, ,, ,, ,,	मकान बरकातअली	मकान हुसैनशाह	तकिया	दरवाजा सड़क पुख्ता
४. ,, ,, ,, ,,	मकान हुसैन शाह	हवेली बरकातअली	,,	सड़क पुख्ता

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब बाबू शिवगोपाल माथुर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल ज़िला सीतापुर
मुक़दमा नंबर १२६ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २९ । १ । ३८ ई०

१—ठाकुर गनेशबख़्श वल्द ठाकुर रतनसिंह
२—ठाकुर पुत्तानसिंह वल्द गनेशबख़्शसिंह बवलायत गनेशबख़्शसिंह
} क़ौम ठाकुर सा० खुर्द मशमूला जीतामऊ प० लहरपुर त०व ज़ि० सीतापुर
सायलान

बनाम

१—रामऔतार
२—लक्ष्मीनारायण
} पिसरान नन्दूलाल बवलायत मु० शरबती मादर खुद साकिन लहरपुर मु० नवागाँव बेहटी

३—लक्ष्मीनारायण
४—रामप्रसाद
} पिसरान सीतलाबख़्श खत्री सा० लहरपुर

५—संकटाप्रसाद
६—सुखदेवप्रसाद
} पिसरान शंकरप्रसाद ,, ,,

७—गदाधरप्रसाद
८—प्रेमनाथ
९—सोहनलाल
} पिसरान जुगुलकिशोर ,, ,,

१०—शिवनरायन
११—रूपनरायन
१२—श्याममनोहर
१३—प्रयागनरायन
} पिसरान कालकाप्रसाद ,, ,,

१४—सोनेलाल वल्द मचलाराम
१५—काशीराम वल्द दीनबंधु
१६—रामरतन वल्द रघुबरदयाल
१७—रामकृष्ण वल्द गुरचरन
} क़ौम कुर्मी साकिन सफीपुर कसमंडा

मु० हरौरी ठीका परगना लहरपुर त० व ज़ि० सीतापुर महाजनान

हरगाह कि जायदाद मुसर्रहे ज़ैल दरख़्वास्त कुनिंदा व कर्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराहत कर्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रहे ज़ैल हासिल हो अंदर मियाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत हक़ीयत	मालगुज़ारी	बोक
१	जीतामऊ व लहरपुर ज़िला सीतापुर		हिस्सा ५ आ० ३ पाई पट्टी मुसल्लम खाता नं० ४ हि० १/६ मि० मु० खा० नं० २ तादादी हि० ५ आ० ४ पा० हि० १/२ तादादी ५ आ० ४ पा० हि० मि० खा० नं० ३ तादादी १ एकड़ ६ डि०	मालिकाना	६८६॥-) १पा०	१८॥)
२	बाकरनगर ,, ,,	गनेशबख़्शसिंह	हि० ४ आ० मुहाल गनेशबख़्शसिंह मौ० बाकरनगर पाती २=) ८ पा० मि० मु० मौ० बाकरनगर इजाफ़ा निस्फ़ आराजी ५२ डि० महफ़ूज़ रेहन	,,	३१=)।	१।=)

३	मानपुर	,,	,,	रतनसिंह	हि० ॥) मि० १९ आ० खाता नंबर १	,,	४३०)	४३)
४	कल्यानपुर	,,	,,	गनेशबख्श-सिंह	मुसल्लम मुहाल गनेशबख्शसिंह खाता नं० १	,,	३६७)	३६॥≡) ५५५)५ ३
५	शेरपुर	,,	,,	,,	हि० ½ मि० ॥=) ८ पा० खाता नंबर १	,,	४८३।-)॥	४८।-)
६	कंधेलिया	,,	,,	,,	हि० ½ मि० ॥=) ८ पा० खाता नंबर १	,,	१८२।≈) ८पा०	१३)।

दीगर जायदाद, जो हस्ब दफ़ा ६० काबिल कुर्की व नीलाम है

बैल काश्तकारी	भैंस	ऊँट	घोड़ी	अद्धा गाड़ी	पलँग चारपाई	तखत	तरुफ़खतदि
२० राम	३	१	१	१	१०	२	५०)

कर्जा याफतनी सायलान ज़िम्मगी दीगर अशखास ११००)

१—निस्फ़ मकान पुख्ता वाकै आलमनगर प० खैराबाद

२—मकान मसकूना वाकै खुर्द मशमूले सीतामऊ

नोट—महाजनान ने जायदाद सायल पर कोई एतराज़ नहीं किया।

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब एन० पी० सान्याल स्क्वायर स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम बिजनौर

मुकद्दमा नं० १०६ सन् १९३५ ई०

तारीख पेशी २०—१—१९३८ ई०

चौ० प्रतापसिंह बनाम सेठ लायकराम

हरगाह चौ० प्रतापसिंह व चौ० धनीराम वल्द चौ० आलमनदास व चौ० रेवाराम बालिग व जैनारायण नाबालिग बविलायत चौ० प्रतापसिंह पिदर खुद व चौ० देवराज पिसर चौ० धनीराम कौम राजपूत साकिन गजरौला अचपल परगना व ज़िला बिजनौर की ओर से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताबिक़ ज़ाहिर करदा बिद्याधर: फ़रीकसानी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नं० बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्यौरा	बसाबत हकीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	बिजनौर	सेहराई	मौ० बरमपुर परगना कीरतपुर मुंदरजे खेवट नंबर ७	२ बिस्वा मिनजुमला १२ बि० खसरा नं० ५०८६	२ बिस्वा मिनजुमला १२ बिस्वा खसरा नंबर ५०८६	

२	,,	,,	गजरौला अचपल मुहाल सुफेद प० बिजनौर	२ बि० १० बि० मुंदरजे खेवट नंबर ४	२ बिस्वा १० बिस्वांसी मुंदरजे खेवट नं० ४
३	,,	,,	,,	३ बीघा ४ बिस्वे मिनजुमला ६ बी० ९ बिस्वा पुख़्ता खे० नं० ६	३ बीघा ४ बिस्वा मिनजुमला ६ बीघा ९ बिस्वा पुख़ता खेवट नं० ६
४	,,	,,	औरंगपुर क़लाँ मुहाल आसमानी पर० कीरतपुर	हक मुरतहनी १३ बीघा ९ बि० मिनजुमला २६ बी० १८ बि०खे० १,२,३	हक मुरतहनी १३ बीघा ९ बिस्वा मिनजुमला २६ बीघा १८ बिस्वा खेवट नंबर १, २, ३

जमीमा (ख)
तफसील जाहिरकरदा विद्याधर फरीकसानी

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० आक्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१	हकूक	मालिकाना	१/२	मिनजुमला	४	१३	०	मौजा	बेगमपुर	मुहाल	सुर्ख	खेवट नं० २	पर०	बिजनौ
२	,,	,,	,,	,,	६	८	०	,,	,,	,,	जर्द	,,	,,	,,
३	,,	,,	,,	,,	२३	१०	०	,,	मधुसूदनपुर नगरी	मुहाल	१५ बिस्वा		,,	,,
४	,,	,,	,,	,,	६	०	९	,,	,,	,,	५	,,	,,	,,
५	,,	,,	,,	,,	७	५	०	,,	शाहपुर नगला	मुहाल	सब्ज़		,,	,,
६	,,	,,	,,	,,	१५	६	०	,,	,,	,,	जर्द		,,	,,
७	,,	,,	,,	,,	५	७	०	,,	,,	,,	सुर्ख		,,	,,
८	,,	,,	,,	,,	२४	२	०	,,	,,	,,	सफेद		,,	,,
९	,,	,,	,,	,,	११	७	६	,,	गजरौला अचपल	मुहाल	सुर्ख परतापसिंह			,,
१०	,,	,,	,,	,,	२२	२	९	,,	,,	,,	सब्ज़ नौबतराय			,,
११	,,	,,	,,	,,	१८	९	९	,,	,,	,,	सफेद		,,	,,
१२	,,	,,	,,	,,	५	०	०	,,	गजरौला सेव	मुहाल	गुलाबी		,,	,,
१३	,,	,,	,,	,,	७	०	०	,,	,,	,,	आसमानी		,,	,,
१४	,,	,,	,,	,,	१०	०	०	,,	,,	,,	सब्ज़		,,	,,
१५	,,	,,	,,	,,	३	०	०	,,	,,	,,	ज़र्द		,,	,,
१६	,,	,,	,,	,,	५५	०	०	,,	,,	,,	सफेद		,,	,,
१७	,,	,,	,,	,,	४	१४	०	,,	,,	,,	जानुनी		,,	,,

१८ एक कोठी एकमंजिला १ मंज़िल पुख़्ता महदूदा जैल वाके मौज़ा गजरौला अचपल परगना बिजनौ
पूरब मकान पूरब-पश्चिम कुआँ, पश्चिम मकान छोला दक्खिन मकान शिवलाल, उत्तर मकान बेला

१९ तमाम अहाता मकान पश्चिम-दक्खिनरुवा वाके मौजा गजरौला अचपल परगना बिजनौर
पूरब अहाता हरबंससिंह, पश्चिम रास्ता कोठी, दक्खिन मकान मुरारी, उत्तर मकान उमेदा

२० एक मकान पक्का वाके मौजा गजरौला अचपल परगना बिजनौर
पूरब भरभूजा पश्चिम मेदा खाँ दक्खिन बनवारी बढ़ई उत्तर रास्ता

२१ एक रहैदरी वाके मौजा गजरौला अचपल परगना बिजनौर
पूरब रास्ता, पश्चिम कटेहरा खाँ दक्खिन आराज़ी उफ़्तादा, उत्तर रास्ता

२ बैल (सवारी के), ४ कालीन, २ तख्त, २ जाजिम

मुंसरिम

नमूना नंबर १९९

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत पं० ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड जौनपुर
नंबर मुकद्दमा ५२ सन् १९३७ ई०
तारीख़ मुक़र्ररा २९—१—३८ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है

बाबू किशुनदास व बाबू परसोत्तमदास व बाबू व्रजमोहनदास पिसरान गोपालदास साकिन गासीटोला शहर बनारस ने इस गरज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूय ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो सायलान मज़कूर की जात या जायदाद के खिलाफ हर दो डिगरी किए हुए और बिना डिगरी किए हुए निज के कर्ज़ों के मुताल्लिक दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तखत नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हर एक दावा डिगरीशुदा या ग़ैर डिगरीशुदा खिलाफ सायल मज़कूर जुमला अगराज व मौक़ाओं के लिये ज़ेर दफा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम सुलतानपुर
मुकद्दमा नंबरी नंबर ५० सन् १९३७ ई०
पेशी १९ फरवरी १९३८ ई०
गोपी पांडे वग़ैरह — कर्ज़दार सायल

बनाम

१—मु० पुट्टी तवायफ दुख़्तर कुरबानअली साकिन कुड़वार २—भागीरथी वल्द रामअधीन पांडे साकिन पूरे भौरीलाल मजरे कुड़वार ३—छेदी तेवारी वल्द रामलाल साकिन पूरे दयाराम मजरे कुड़वार ४—माताभीख तेवारी वल्द लछमन तेवारी साकिन पूरे दयाराम मजरे कुड़वार ५—लछमीनारायन वल्द सतराम तेवारी साकिन पूरे भौरीलाल मजरे कुड़वार परगना मीरापुर तहसील व ज़िला सुलतानपुर

कर्ज़ख्वाह फरीक़सानी

१—गोपी पांडे २—रतीपाल पांडे पिसरान गदाधर पांडे ३—जगन्नाथ ४—रामफेर पांडे नाबालिगान पिसरान रतीपाल बरिफ़ाक़त रतीपाल पिदर खुद ५—मु० फुलझारी पँड़ाइन बेवा माधो पांडे साकिनान पूरे जैकिशन पांडे मजरे कुड़वार परगना मीरापुर तहसील व ज़िला सुलतानपुर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीक़सानी ने हस्ब दफा १० इंकमबर्ड इस्टेट्स ऐक्ट मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

सराहत नंबरवारी

१९८०	१९८३	१९८४	१९८५	१९८६	१९८७	११९९	१९८८	१९८९	१९९२	१९९३	१९९५
।)१	ऽ१	ऽ४	।)	ऽ२	)४	१।।)१	ऽ३	ऽ२	।।)	ऽ३	।)१
१९९९	२००१	२००२	२००३	२००४	२००५	२००६	१००७	२०११	२०१२	२०१३	२०११
।)१	।।)	।।)१	।।)३	।)२	।)	ऽ४	।)४	।।)१	।)३	।)२	।)४
२०१७	२०१८	२०२०	२२२१	२०२२	२०२३	२०२४	२०२५	२०२६	२०२७	२०२८	२०३२
।)१	।ऽ१	ऽ४	ऽ४	।)	)४	।)३	ऽ४	।)	।)	।)	।।)१
२०३३	२०८१	२०८४	२०८८	२०८९	२१०१	२१०२	२११६	२०९८	२११७	२१२१	२१२२
।।)३	।।)३	ऽ२	।)	।)	।)	।।)३	।)३	।।।)	।)२	।)४	।।)१
२१२३	२१२४	२१२५	२१२६	२१२८	२१३४	२१३५	२१३६	२१३७	२१४०	२१४१	२१४२
।।)	।।)	।।)१	।।)	।)१	।)	।)२	।)४	।)३	।)३	।)४	।)३
२१४९	२१६२	२१८६	२१९०	२१९२	२१९४	२१९५	२१९६	२१९७	२१९८	२१९९	२२००
।।)२	।)४	।।)१	।)४	।)३	।।)	।।)१	।।)२	ऽ३	।)२	।)४	।)१
२२०१	२२०२	२२०३	२२०४	२२०५	२२०६	२२०७	२२०८	२२०९	२२१०	२२११	२२१२
)४	।)२	ऽ३	।।)	।।)१	ऽ३	ऽ३	।)१	ऽ२	।ऽ२	ऽ२	।।ऽ३
२२१७	२२१८	२२१९	२२२०	२२२१	२२२२	२२२३	२२२४	२२२५	२२५२	२२५३	२२५४
।ऽ४	।ऽ३	।ऽ३	।ऽ२	।ऽ	।।।)३	।)१	।ऽ१	।ऽ१	।।।)३	१ऽ	।।)१
२२५५	२२५६	२२५७	२२५८	२२५९	२२६०	२२६१	२२६२	२२६३	२६०५	२६०७	२६०८
।)१	।)	ऽ४	ऽ४	ऽ४	।ऽ४	ऽ४	।ऽ२	१।।ऽ१	।ऽ	।)	।)१
२६०९	२६१०	२६११	२६१३	२६१४	२६१८	२६१९	२६२०	२६२१	२६२२	२६२३	२६२४
ऽ४	।ऽ	।ऽ२	।)४	।।।)४	।ऽ	।ऽ२	।)२	ऽ२	ऽ४	ऽ४	ऽ२
२६२५	२६२९	२६३१	२६३५	२६३६	२६३८	२६६९	२६७०	२६७१	२६७२	२६७३	२६७४
।।।)	।।।)	२ऽ	१)४	।)	।)३	)१	ऽ२	ऽ१	।।)	ऽ२	ऽ४
२६७५	३३६२	३३६३	३३६४	३३६५	३३६६	३३६७	३३६८	३३६९	३३७०	३३७१	३३७२
।)३	ऽ४	ऽ१	ऽ०	ऽ२	।ऽ२	ऽ३	ऽ३	।ऽ१	ऽ२	ऽ२	ऽ२
३३७३	३३७४	३३७५	३३७६	३३७७	३३७८	३३७९	३३८०	३३८१	३३८२	३३८३	३३८४
ऽ२	ऽ४	ऽ१	ऽ१	ऽ३	ऽ२	ऽ२	।)	१ऽ१	ऽ१	।ऽ२	ऽ२
३३८५	३३८६	३३८७	३३८८	३३८९	३३९०	३३९१	३३९२	३३९३	३३९४	३३९५	३३९६
ऽ२	ऽ२	।।ऽ२	ऽ२	ऽ२	ऽ३	।।)	।ऽ	ऽ३	ऽ३	ऽ३	ऽ१
३३९७	३३९८	३३९९	३४००	३४०१	३४०२	३४०३	३४०४	३४०५	३४०६	३४०७	३४०८
ऽ४	ऽ४	।)२	ऽ४	।)	ऽ१	ऽ२	।ऽ१	।ऽ२	।ऽ	ऽ२	ऽ२
३४०९	३४१०	३४११	३४१२	३४१३	३४१५	३४१६	३४१७	३४१८	३४२३	३४२४	३४२५
२।ऽ४	।ऽ	।)	ऽ२	।)	।)	ऽ२	ऽ४	।।)२	ऽ४	ऽ४	।ऽ
३४२६	{३४१४	२६७३	२३७४	३३७८	३३७९	२४०७		बागात	२०३०	२४९९	आबादी
ऽ२	।)	१।ऽ२	।।ऽ३	।)	।।)२	।ऽ१			६)१	४।ऽ१	
२६०५	२६६३	+									
१।ऽ	६।)३										

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १९ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

سمن بغرض قرارداد امور تنقیح طلب

مقدمہ نمبر ۲۰۸ سنہ ۱۹۳۸ع
بعدالت منصف صاحب بہادر شمالی مقام ضلع سلطانپور
رام ہت مصر مدعی
بنام
رام سمجھہ وغیرہ مدعاعلیہم

بنام متھرا اہیر ولد دیبی اہیر بولایت جھرکھو اہیر ساکن اوسرفی پرگنہ اونگلی ضلع جون پور—

واضح ہو کہ مدعی نے تمہارے نام ایک نالش بابت ۸۲ روپیہ ۱۳ آنہ ۹ پائی کے دائر کی ہے لہذا تمکو حکم ہوتا ہے کہ تم بتاریخ ۹ ماہ فروری سنہ ۱۹۳۸ع وقت دس بجے اصالتاً یا معرفت وکیل کے جو مقدمہ کے حال سے قرار واقعی واقف کیا گیا ہو اور جو کل امورات اہم متعلقہ مقدمہ کا جواب دے سکے یا جس کے ساتھہ کوئی اور شخص ہو جو جواب ایسے سوالات کا دے سکے حاضر ہو اور جوابدہی دعوی مدعی مذکور کی کرو اور تمکو ہدایت کی جاتی ہے کہ جملہ دستاویزات کو جنپر تم بتائید اپنی جوابدہي کے استدلال کرنا چاہتے ہو پیش کرو۔

مطلع رہو کہ اگر بروز مذکور تم حاضر نہ ہوگے تو مقدمہ تمہاري غیر حاضري میں مسموع اور فیصل ہوگا۔

اطلاع

(۱) اگر تمکو یہہ اندیشہ ہو کہ تمہارے گواہ اپنی مرضی سے حاضر نہ ہونگے تو تم عدالت هذا سے سمن بہئیت سراد جاری کر سکتے ہو کہ جو گواہ حاضر نہ ہو وہ جبراً حاضر کرایا جاے اور جس دستاویز کو کسي گواہ سے پیش کرانے کا تم استحقاق رکھتے ہو وہ اُس سے پیش کرائی جاے بشرطیکہ تم اُسکے واسطے زرخوراک جو ضروری ہو عدالت میں داخل کرکے اِس امر کی درخواست گذرانو۔

(۲) اگر مطالبہ مدعی کو تسلیم کرتے ہو تو تمکو لازم ہے کہ روپیہ مع خرچہ نالش عدالت میں داخل کرو تاکہ ڈگري کا اجراء جو تمہاری ذات یا مال یا دونوں پر ہو کرنا نہ پڑے۔

تنبیہہ—اگر بیانات تحریری کی ضرورت ہو تو لکھنا چاہیئے کہ تم کو (یا فلاں فریق کو یعنی جیسی کہ صورت ہو) حکم دیا جاتا ہے کہ بیان تحریري بتاریخ ۲ دوسری فروری سنہ ۱۹۳۸ع تک گذرانو۔

آج بتاریخ ۱۷ ماہ جنوری سنہ ۱۹۳۸ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا۔

جج

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

अपराधी कौन ?

(लेखक—श्री० इंद्र विद्यावाचस्पति)

पृष्ठ-संख्या ४२५ मूल्य केवल १॥)

यह एक ग़रीब मज़दूर के अनाथ बच्चे की कहानी है, जो स्वभाव से भला और बहादुर था, परंतु जिसे परिस्थितियों ने चोर, डाकू और .खूनी बनाया, और अंत में वह समाज के षड्यंत्र का शिकार हुआ ।

इस पुस्तक में निम्न-लिखित प्रश्नों का उत्तर पूछा गया है—

अपराधी कौन ?

बेकार मुजरिम या ग़लत क़ानून ?

निर्दय अत्याचारी या मासूम शिकार ?

लोभी मालिक या ईमानदार मज़दूर ?

पढ़ा-लिखा शैतान या ग़रीब प्रेमी ?

अधिकार में मस्त गुनहगार या अवस्थाओं का ग़ुलाम ?

इस रोमांचकारिणी कहानी को पढ़ो, और ऊपर लिखे प्रश्नों का उत्तर दो ।

मैनेजर, विजय-पुस्तक-भंडार

अर्जुन-कार्यालय, देहली

धातुपौष्टिक योग

इसके प्रताप से हज़ारों नामर्द मर्द बन चुके हैं। यह बहुत वर्षों से प्रचलित हो रहा है,
क्योंकि इस औषधालय को इस कलकत्ता महानगर में स्थापित हुए
६० वर्ष से अधिक हो गए हैं—

यह योग तीन दिन के भीतर ही अपना गुण दिखा देता है। पानी के समान पतले-वीर्य को एकदम गाढ़ा कर देता है, पेशाब की समस्त बीमारियों को हटाकर दस्त साफ़ करता है, तथा गिरती हुई धातु को रोकता है। उपदंश (गर्मी), मेह, प्रमेह (गनोरिया-सूज़ाक) रोगों को यह जड़ से खो देता है, तथा शरीर को बलवान् करके स्मरण-शक्ति को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, हस्तमैथुन से उत्पन्न कमज़ोरी (शिथिलता), रगों की सुस्ती, धातु-क्षीणता, स्मरण-मात्र से ही पतन (शीघ्र वीर्य का पात होना), पाख़ाना व पेशाब के साथ धातु का गिरना, अधिक विलासिता के कारण कमर में दर्द, हाथ-पैर का काँपना, चक्कर आना, आँखों के आगे चिनगारियाँ निकलना, कलेजे का धड़कना, नामर्द हो जाना इत्यादि रोगों को दूर कर रक्त शुद्ध करता है, और भूख, शक्ति तथा वज़न को बढ़ाता है। जिससे शरीर वज्र के समान मज़बूत हो जाता है। जिसमें पुरुषत्व न हो, उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त कराकर उनके वीर्य को गाढ़ा और गर्भ धारण करने के योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक़ पूर्ण गुणकारी १ डिब्बे की क़ीमत ५), डाक - पैकिंग - ख़र्च ।॥) यदि गुप्तेंद्रिय की भी शिकायत होवे, तो रोग़न मदन - मस्ताना को भी इस धातुपौष्टिक योग के साथ में ही मँगाकर उपयोग (मालिश) करिए, संपूर्ण शिकायतें दूर होंगी।

जैसा इसका नाम है, वैसा ही इसका गुण है—जिस प्रकार कवियों ने लिखा है—यथा नामस्तथा गुणाः। विशेष खुलासा हाल अश्लीलता के कारण नहीं लिख सकते हैं। मालिश करने में किसी प्रकार का झंझट या परहेज़ तथा तकलीफ़ नहीं होती। साधारण रीति से प्रतिदिन मालिश करना होता है। दाम ५) प्रति शीशी। विश्वास रखिए, ये दोनो दवाएं बहुत ही शीघ्र फ़ायदा दिखानेवाली हैं।

कितने नामर्द (नपुंसक), जो निराश हो चुके थे, शर्म से मुँह छिपाए चलते थे, घर में नित्य कलह रहती थी, दवा सेवन कर अब ताल ठोंक बाज़ी मार रहे हैं। चेहरे पर हँसी है। बूढ़े तक को भी यह दवा नया वीर्य, नया ख़ून, नई ताक़त और नया जोश ला देती है। नामर्द होना पाप ही नहीं है, बल्कि संतान नहीं होने से मानव-जीवन में कलंक भी है। अतः एक बार ज़रूर लेकर देखिए।

औरतों के लिये

स्त्री-रोग-निवारक तथा गर्भदाता योग

इस योग के सेवन से औरतों की क्षीणता तथा सब तरह का प्रदर, मासिक धर्म के समय पेट या कमर में दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनों से होना, बिलकुल ही न होना, असमय में मासिक धर्म होना, ख़ून के क़तरे गिरना, गर्भाशय में दोष होने के कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल संतति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगों पर २१ दिन योग को सेवन करने से गर्भाशय तथा शरीर के सब दोष दूर होकर मासिक धर्म समय पर होगा, और गर्भपात न होकर संतति नीरोग उत्पन्न होगी, यहाँ तक कि ४० वर्ष की स्त्री को भी इसके सेवन से निश्चय ही गर्भ धारण हो जाता है। २१ दिन तक सेवन करने योग्य दवा के एक डिब्बे की क़ीमत ५), डाक-पै०-ख़र्च ।॥), ऋतु(स्त्री)-धर्म के समय पेट (गर्भाशय) साफ़ करने को ८ पुड़िया काढ़ा का देना होता है, जिसका दाम और १) देना होगा।

स्त्रियों को भी धातुक्षीण होता है, जिसके कारण बार-बार पेशाबका उतरना, जलन होना, बूँद-बूँद पेशाब का गिरना, मूत्र-नली से पानी के समान या गाढ़ा मवाद के समान दुर्गंध-युक्त स्राव निकलना आदि तुरंत इस दवा से आराम होते हैं।

इन दवाओं को स्त्री और पुरुष हर मौसम में खा सकते हैं। परहेज़ वग़ैरह कुछ भी नहीं है। संतान की इच्छावालों को ये दोनो ही दवा स्त्री और पुरुष दोनो ही को एक साथ खाने से अच्छा होगा। ये दवाएँ तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इन्हें अवश्य मँगावें।

भारत-भैषज्य-भांडार, सु १०८, तुलापट्टी, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता।

छप गया !   ऑर्डर दीजिए !!

आलोचना-साहित्य का अपूर्व ग्रंथ

नवयुग-काव्य-विमर्ष

हिंदी के वर्तमान रहस्यवादी कवियों के काव्यों का मार्मिक विवेचन तथा आलोचन

रचयिता

हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, लेखक और संपादक

पंडित ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल'

(भूतपूर्व सं० 'मनोरमा' और 'भारत')

हिंदी के वर्तमान आलोचना-साहित्य में यह एक अपूर्व ग्रंथ है। छायावादी या रहस्यवादी कवियों के साधारण परिचय के साथ उनके समस्त काव्य का मनन-पूर्वक, मार्मिक विवेचन किया गया है। काव्य की भाषा, भाव, अलंकार, रस, गुण और दोष का आकर्षक प्रतिपादन हुआ है। पुस्तक तीन खंडों में विभाजित की गई है—

प्रथम खंड (भाव-प्रधान कवि)—पं० माखनलाल चतुर्वेदी, राय कृष्णदास, बा० सियारामशरण गुप्त, पं० बालकृष्ण शर्मा, बाबू भगवतीचरण वर्मा और श्रीजगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद'।

द्वितीय खंड (कल्पना-प्रधान कवि)—बाबू जयशंकर 'प्रसाद', पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', पं० सुमित्रानंदन पंत, श्रीमती महादेवी वर्मा, प्रो० रामकुमार वर्मा और पं० मोहनलाल महतो 'वियोगी'।

तृतीय खंड—सर्वश्री द्विज, प्रेमी, दिनकर, बच्चन और नरेंद्र आदि वर्तमान हिंदी के कई उदीयमान कवियों की कविताओं पर प्रकाश डाला गया है।

इस ग्रंथ में प्रकाशित कविताओं के चुनाव में यह विशेषता है कि उनका चुनाव उन्हीं कवियों द्वारा कराया गया है। यह ग्रंथ वर्तमान हिंदी-साहित्य में अपूर्व है, और इससे ऐसी आलोचनात्मक रचना की पूर्ति होती है, जिसका हिंदी में बिलकुल अभाव था। इसके द्वारा छायावादी कवियों की भाव-पूर्ण मनोरम रचनाओं के मनन करने के एक सुंदर साधन की पूर्ति होगी।

विवेचना-पूर्ण भूमिका

पुस्तक के प्रारंभ में हिंदी के वर्तमान काव्य-साहित्य का काफ़ी विस्तृत और विद्वत्ता-पूर्ण विवेचन हुआ है; रहस्यवाद क्या है, संसार की अन्य भाषाओं में उसका क्या स्थान है, हिंदी-साहित्य में रहस्यवाद या छायावाद का क्या स्थान है, और वर्तमान छायावादी कवियों से हिंदी की क्या गौरव-वृद्धि हुई है, इस संबंध में पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक बड़ी आकर्षक, रोचक और विद्वत्ता-पूर्ण रीति से लिखी गई है। प्रत्येक हिंदी-प्रेमी का यह कर्तव्य है कि ऐसी उपादेय पुस्तक की एक प्रति अपने पास रक्खे। मूल्य २)

संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

गा-फाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव ([illegible]) [illegible]

Approved by the Directors of Public Instruction U. P., C. P., Bombay, Behar & Punjab.

माघ, १९९४
February, 1938

पुस्तकालय
८-३-३८ गुरुकुल कांगड़ी

मूल्य ।।)
Price -/8/-

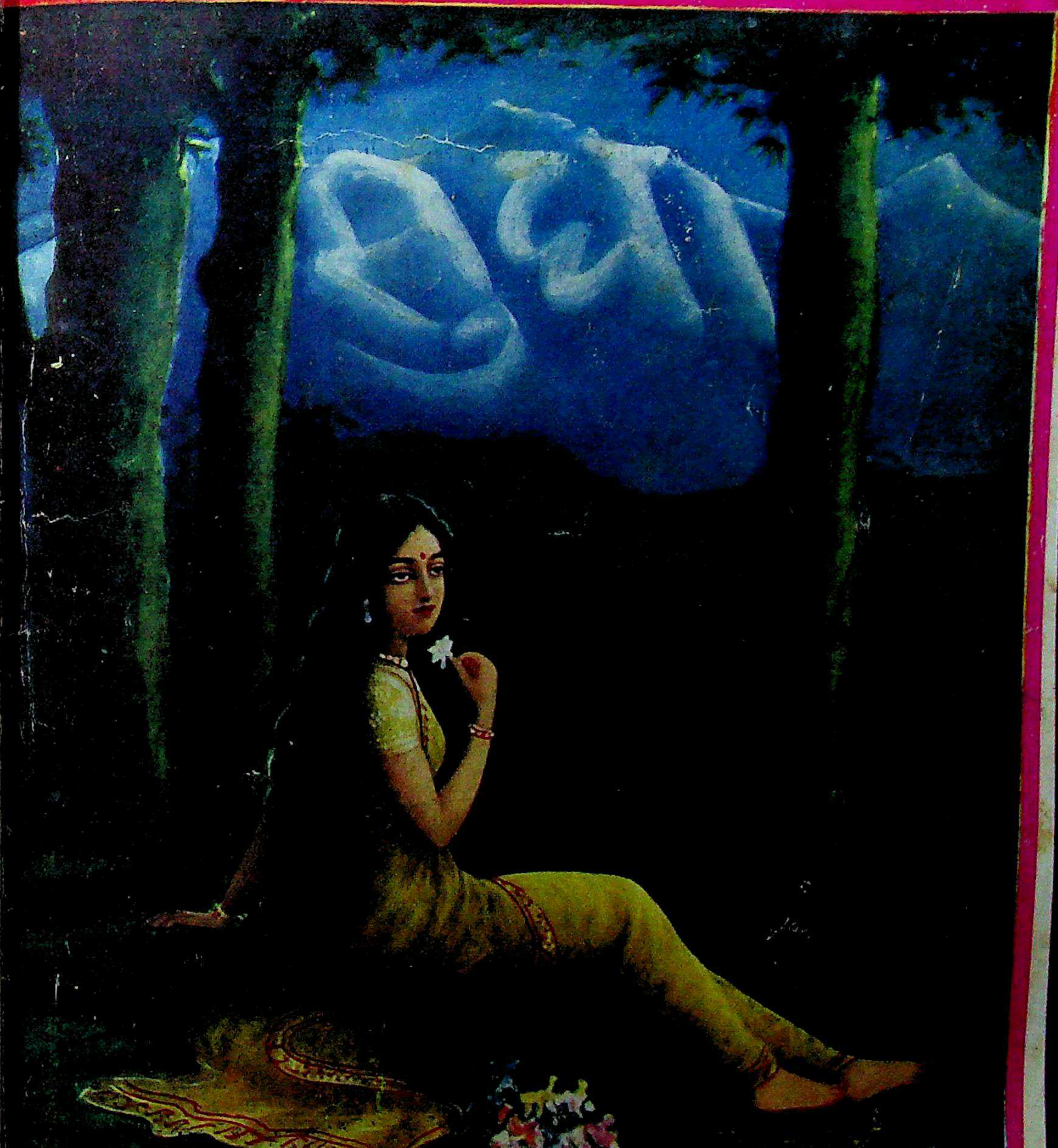

धारण संस्करण] संपादक—श्रीदुलारेलाल भार्गव [Ordinary Edition

STAR
TRADE S.K.B. MARK
(REGD.)
ष्टार ट्रेड मार्क

डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰

५० वर्ष से अधिक का सुप्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेंट दवाओं का
बृहत् भारतीय कार्यालय !
विभाग नं॰ (४६) पोष्ट-बाक्स ५५४, कलकत्ता ।

दंत-मुक्ता

(Regd.)

यह दाँतों की जड़ को मज़बूत करता है, और दाँतों को मोती के समान चमकीले बनाता है।

इसके व्यवहार से पाइरिया, मसूड़ों के फूलने और उनसे पीब व ख़ून जाने आदि रोगों के होने का भय नहीं रहता।

दंत-रोग-
नाशक सुगंधित मंजन।

सब जगह मिलता है।

लखनऊ शहर के सोल एजेंटः—किंग मेडिकल हाल, २५ अमीनाबाद-पार्क

शुभ

यदि किसी को अपना मुकद्दर बनाना हो

लाभ

यदि गई हुई इज़्ज़त और खोया हुआ धन पुनः वापस लेने की इच्छा हो, यदि धन-धान्य, स्त्री-संतान-प्राप्ति का स्वर्गीय आनंद भोगने की उत्सुकता हो, और यदि ऊँचे दरबारों में इज़्ज़त हासिल कर, दुश्मन को परास्त कर, अपनी शान का सिक्का जमाना हो, तो आज ही और अभी शक्तिशाली अद्भुत—

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र

मँगाइए। इसके अलौकिक गुणों की प्रशंसा बड़े-बड़े ज्योतिषी व धुरंधर पंडितों ने ही नहीं, बल्कि शास्त्र-पुराणों तक ने की है। प्रत्यक्ष दया और शीघ्र फल देने के पचास-पचास हज़ार प्रशंसा-पत्र इस यंत्र की सचाई के पक्के प्रमाण हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या अविश्वास की रत्ती-भर की गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र वा शास्त्रविधि पर अविश्वास करता है, वह जीवन में कभी सुख को प्राप्त नहीं होता, ऐसा कृष्ण भगवान् ने स्वयं कहा है। देखो गीता १६-२३।

इस नवग्रह यंत्र से रोज़गार में लाभ, इम्तहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजसम्मान, नौकरी मिलना, संतान-लाभ, तनख़्वाह में तरक़्क़ी, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, इच्छानुसार शादी, अचानक आफ़तों से बचना, किसी को वश करना, रेस व लाटरी में धन-प्राप्ति वग़ैरह-वग़ैरह हर काम पूरा होता है। जो पूछोगे, हर बात का जवाब स्वप्न में विधि-सहित बतलाएगा। आप जिसका ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में से बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकलकर उस कार्य को पूरा करेगी।

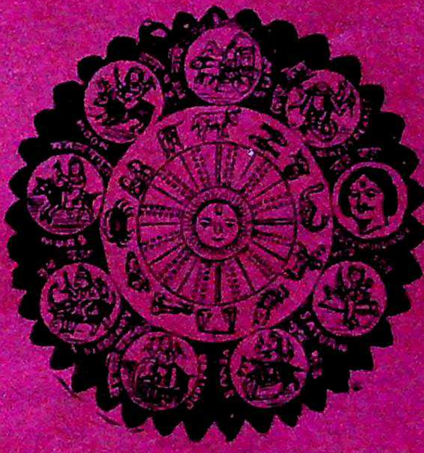

हर मनुष्य विश्वास रक्खे कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, वह इसके चमत्कार को देख वाह-वाह कर उठता है, और बार-बार मँगाता है। बहुतों ने तो छ-छ और आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह यंत्र तक मँगाए हैं। अगर विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अब भी विश्वास न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। काम न हो, तो दाम वापस मँगाइए।

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

इतने पर भी अगर विश्वास नहीं हुआ, तो अपनी चमकानेवाली तक़दीर और उदय होनेवाले भाग्य को धक्का पहुँचाने के दोषी आप ही हैं। एक बेवक़ूफ़ी व तुच्छ पैसे के लालच-वश यदि चूक गए, तो जीवन-भर पछताना ही हाथ लगेगा। शास्त्र का कहना है कि—

सकल पदारथ हैं जग माहीं ; कर्महीन नर पावत नाहीं।

जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक नवग्रह यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह यंत्र मँगावें। पुरुष के लिये तो नीलमणि और स्त्री को दो लालमणि से युक्त यानी कंपलीट। एक नवग्रह यंत्र का मूल्य २), एक साथ तीन यंत्र लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ४॥-)

मि० बा० अर्जुनवार बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज, सांगली (सतारा)— आपके यहाँ से मुझे बेहद लाभ पहुँचा। मैं इम्तहान में पास हो गया हूँ। एक यंत्र वी० पी० से और भेज दें।

मि० ए० डी० वसु० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना— आपका यंत्र पहले एक मँगवाया था, उससे मेरा कार्य सिद्ध हो गया है। अब कृपया एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता S. S. L. बंबई नं० ४

लेख-सूची

पृष्ठ

१. उपहार (कविता)—[लेखक, श्रीपं० उमाशंकरजी वाजपेयी एम्० ए० (ऑनर्स) … १
२. आवाहन (कविता)—[लेखक, श्री-पं० सुमित्रानंदन पंत … … २
३. संतों ने हमारे लिये क्या किया?—[लेखक, श्रीयुत प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए० … … ३
४. कुसुम की कामना (गद्य काव्य)—[लेखक, श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल० बी० … … ८
५. लखनऊ का कान्यकुब्ज-कॉलेज (सचित्र)—[लेखक, श्रीपं० गंगा-नारायणजी द्विवेदी … … ९

बवासीर की दवा

चाहे जैसी ख़ूनी-बादी, नई-पुरानी बवासीर हो, 'अर्शोहर' को खाने से दर्द, सूजन एक दिन में आराम हो जाती है। यही खावें, और जल में घिसकर लगावें। धर्मार्थ मूल्य ॥=), पोस्टल ऑर्डर या डाक के टिकटों से पेशगी भेजिए।

औरतों के बाँझपन की दवा ३) शीशी।

योगेंद्र-फ़ार्मेसी (Regd.)

अमृतसर

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक़्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह औषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।=)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ूब तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगातार लगाना लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी [illegible])

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

पृष्ठ

६. मना (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' बी० ए० ... १७
७. वंदना (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'प्रणयेश' शुक्ल २४
८. 'तक्षशिला' की आलोचना—[लेखक, अध्यापक चेतरामजी शर्मा २५
९. वर्तमान काव्य-साधना—[लेखक, श्रीयुत दीनानाथ व्यास विशारद ... ३२
१०. दवाई (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत मुंशी ज़हूरबख्श 'हिंदी-कोविद' ... ३६
११. भाट लोग ब्राह्मण हैं या नहीं ?—[लेखक, रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० तथा रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ... ... ४७

धातुपौष्टिक व शक्तिवर्द्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, कटिक्षयत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाती हैं, और निर्बलता को भगाकर दांपत्य जीवन का पूरा आनंद प्राप्त कराती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का १) एक रुपया। रसिक विषयों से भरपूर 'वैद्यविद्या' पुस्तक मुफ़्त मँगावें।

मदनमंजरी-फ़ार्मेसी, जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—निगम मेडिकल हाल
अमीनाबाद-रोड
बनारस-एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

पेलिकेन

Pelican

हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

यह सरलता से खोली जा सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है।

कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है।

साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है।

स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—

गौथेर वागनेर हानोवर

पारदर्शक

Pelican

सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।

लोकल स्टॉकिस्ट—कौशल जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

१२. सुधा-चित्रावली ५३

१३. चयन—[लेखकगण, श्रीकमलाकुमारी, श्रीमहेशचंद बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद, श्रीलक्ष्मीचंद्र वाजपेयी 'चंद्र', पं० राजाराम संगीताध्यापक महिला-विद्यालय, लखनऊ और श्रीसंतराम बी० ए० ... ... ५७

१४. परीक्षा—[लेखकगण, श्रीयुत दीनानाथ व्यास विशारद, श्रीयुत 'उमेश', श्री०, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल-एल्० बी० और साहित्याचार्य श्रीपं० गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि' ... ६४

१५. सुधा-पहेली-प्रतियोगिता ६७

१६. नए फूल ७१

१७. सौरभ (संपादकीय विचार) ... ७२

AMRUTANJAN
SOVEREIGN-REMEDY
AMRUTANJAN
Best Indian Pain Balm
Amrutanjan Depots
BOMBAY, MADRAS

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉ० नं० ६८२५

हिंदी-संसार की एक अनुपम काव्य-कृति

निर्झरिणी

लेखिका—श्रीमती सूर्यदेवी दीक्षित विदुषी 'ऊषा'

प्राक्कथन-लेखक—

समालोचक-प्रवर पं० रामचंद्रजी शुक्ल

(हिंदी-युनिवर्सिटी, बनारस)

निर्झरिणी अल्प काल में ही हिंदी के प्रमुख विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर चुकी है। इसकी एक-एक कविता में सहज स्वाभाविक काव्य-प्रवाह, सरल अनुभूतियों की मनोरमता एवं 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की पूर्ण अभिव्यक्ति है।

मूल्य १६२ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का १) एक रुपया।

दो अमूल्य सम्मतियाँ—

आचार्य-प्रवर श्रीमहावीरप्रसादजी द्विवेदी लिखते हैं—

"निर्झरिणी की कविताओं की यत्र-तत्र सैर करके मुझे परमानंद हुआ। रचना सरस, सुंदर और भाव-भरी है। भाषा भी परिमार्जित है। ऊषादेवी को बधाई!"

—म० प्र० द्विवेदी

महाकवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं—

"आपकी रचना आपके योग्य ही है। निर्झरिणी में प्रवाह है, सरलता है, किंतु कुटिलता नहीं। प्रभु की कृपा है।"—मैथिलीशरण

प्रकाशक—रविशंकर दीक्षित, डिप्टी का पड़ाव, कानपुर।

स्थानीय विक्रेता—रामदयाल-प्रकाशचंद, चौक, कानपुर।

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. गो० श्रीबालकृष्णजी महाराज ... १

(ख) दुरंगे

२. सुंदर—[चित्रकार, श्रीअसितकुमारजी हाल्दार २४

३. प्रथम किरणें—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी २५

(ग) सादे

४. श्रीपं० श्रीनारायणजी चतुर्वेदी ... १०

५. स्व० जस्टिस गोकर्णनाथजी मिश्र एम्० ए० ... ... १०

६. रावराजा डॉ० पं० श्यामविहारी मिश्र ... ११

७. कान्यकुब्ज-कॉलेज-हॉल १२

८. कान्यकुब्ज-कॉलेज का छात्रावास ... १३

९. कान्यकुब्ज-कॉलेज-भवन १४

डॉ० कंट, फैरिंगटन, बोरिक प्रभृति के जोड़ का ग्रंथ

होमियोपैथिक

कॉम्पैरेटिव मेटिरिया-मेडिका

यह उसी विख्यात होमियोपैथिक मेटिरिया-मेडिका का हिंदी-भाषांतर है, जिसके बँगला में ४ संस्करण और २५००० प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मेटिरिया-मेडिका-संबंधी समस्त विषय और तुलना के साथ चिकित्सा इस उत्तमता से बताई है कि किसी भी रोगी के पास बैठकर दो-तीन मिनटों में ही ठीक दवा चुन लीजिए। एक साथ मेटिरिया-मेडिका, थेराप्युटिक्स, रेपर्टरी प्रभृति से संपन्न ऐसा दूसरा होमियो-ग्रंथ किसी भाषा में नहीं है। एक इसे अपने पास रखने पर किसी दूसरे की ज़रूरत नहीं है। १२४१ पृष्ठों की सुंदर, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ६॥), डाक-ख़र्च ॥≡)

कलकत्ते के प्रसिद्ध होमियोपैथिक औषध और पुस्तक-विक्रेता—

प्रकाशक—हैनिमैन पब्लिशिंग कंपनी

१६५, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता

विवाहित आनन्द

आप समझते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और इसी भूल के कारण बीसवीं सदी की सर्वोत्तम पुस्तक के स्वाध्याय से वञ्चित हैं। सच समझिए 'विवाहित आनन्द' पांच हज़ार विवाहित पुरुषों की आप-बीतियों का निचोड़ है। क्रियात्मक उपदेशों, रहस्य की बातों और अत्यन्त लाभदायक शिक्षाओं का भण्डार है। इसके अतिरिक्त गुप्त रोगों की बिना औषधि के चिकित्सा भी लिखी गई है।

मूल्य सचित्र व सजिल्द का ॥)

सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

पता—कविराज हरनामदास बी.ए., लाहौर

दैवी शक्तियों का साक्षात् प्रभाव दिखलानेवाला

राजों, महाराजों तथा सिटी-मैजिस्ट्रेट साहब बहादुर लखनऊ द्वारा परीक्षित

जगत्-विख्यात

चिंता-हरण सिद्ध यंत्र 'रजिस्टर्ड'

समस्त मनोरथों को पूरा करनेवाला, धन, धान्य, रोज़ी, पुत्र-सुख, वशीकरण, मुकदमा, बीमारी, तरक्की, नौकरी, घुड़दौड़, लाटरी आदि में उत्तीर्ण करानेवाला। केवल ३) में मँगाकर लाभ उठावें।

गारंटी हम यंत्रधारकों को साक्षी देकर लिखते हैं, यदि हमारे लेखानुसार आपका मनोरथ पूरा न हो, तो हम पूरा दाम वापस कर देंगे।

पता—मैनेजर रमलाचार्य-आश्रम (हु)

पोस्ट कमलापुर, जिला सीतापुर [यू० पी०]

पृष्ठ
१०. श्रीपं० बालकृष्णजी पांडेय १५
११. श्रीयुत दीनानाथ व्यास विशारद ... ३३
१२. टेनिस की खिलाड़िनें ५३
१३. कुछ बालिकाएँ ५४
१४. श्रीयुत डॉ० आर० एस्० अग्रवाल ...
१५. श्रीजगदीशनारायणजी बख्शी ...
१६. कमर और टाँग का व्यायाम ...
१७. लोकमान्य तिलक ... ...

खुफ़िया तसवीरदार कार्ड

अगर आप आशिक़ाना हुस्न व जमाल के साफ़-साफ़ और गुप्त दृश्य देखना चाहते हैं, तो हमारे यहाँ से एक सेट तसवीरदार कार्ड मँगाकर देखें। ये वे कार्ड हैं, जिनकी शौक़ीन-मिज़ाज सज्जनों को हर समय ज़रूरत रहती है। पूरा सेट १०० कार्ड ६), नमूना २५ कार्ड २॥), डाक-ख़र्च अलग। दूकानदारों को ख़ास रियायत।

पता—सेक्सोल बुकडिपो (२४) नरायन स्ट्रीट, ग्वालमंडी, लाहौर

हमारी कृषि-संबंधी पुस्तकें पढ़कर आप एक-एक बीघे में सहस्रों रुपए कमा सकते हैं

मक्का की खेती (सचित्र)............ १)
गेहूँ की खेती (,,)............ ॥=)
कपास की खेती (,,)............ ३)
ज़ीरा............ =)
पपीता............ ।-)
मूँगफली............ ।=)

सब पुस्तकें उर्दू-भाषा में भी हैं। सब पुस्तकों के ग्राहकों के लिये डाक-व्यय माफ़।

लेखक व प्रकाशक—
रामप्रसाद सूरा ऐंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट
रिटायर्ड एग्रीकल्चरल डिप्लोमिस्ट (लंदन), मुरार छावनी, ग्वालियर

❀ श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों ❀

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चरक) सब प्रकार के ३ दिन में पूरा आराम। यदि अनेक दवा लगाकर आप निराश हो चुके हैं, तो एक बार इसे लगाकर नीरोग होवें। बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस। जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १।)

पता—राजवैद्य परमेश्वरदयालजी
नं० १०२, पो० कतरीसराय (गया)

अक्षर का नमूना

अधि
२

नागर-पत्ता
ताश के खेल में
अभूतपूर्व आविष्कार

अक्षर का नमूना

उप
४

यह एक अत्यंत ही नवीन ढंग का ताश है, जिसके द्वारा शब्दों की जानकारी एवं उनके ठीक-ठीक अर्थ जानने में बड़ी सुविधा होती है।

हिंदी-भाषा-भाषियों और राष्ट्र-भाषा प्रचारकों के लिये यह अत्यंत लाभदायक खेल है।

इसे हरएक श्रेणी के स्त्री-पुरुष बच्चे से लेकर बुड्ढे तक सभी खेल सकते हैं। हरएक सभ्य परिवार में यह ताश रहना चाहिए। एक जोड़ी खरीदकर परीक्षा करके देखिए। खेलने के नियम की सुंदर पुस्तिका गड्डी के साथ है।

दाम ८ आना।

इस पते पर पत्र लिखकर मँगाइए—

हिंदी-मंदिर, प्रयाग

हमारे सर्वसिद्ध अनुभूत प्रयोग

५००) रु० इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफेदी) की अद्भुत वनौषधि। तीन दिन में पूरा आराम। यदि आप सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं की दवा कर थक गए हों, तो इसे लगावें। बेफायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २।)

कामप्रभाकर

धातु-क्षीणता, नामर्दी, कमजोरी, सुस्ती, स्वप्नदोष आदि को बहुत शीघ्र दूर कर एक शीशी व्यवहार करते-करते गजब की शक्ति पैदा करती है। बधेज-शक्ति बढ़ाने में अद्भुत गुणशाली है। मूल्य १५ दिन सेवन योग्य ३० गोली का १॥) रुपया।

पता—वैद्यराज अखिलकिशोरराम (सुधा), पोस्ट कतरीसराय (गया)

※ स्त्री-रोग की अक्सीर दवा ※

मासिक धर्म के हरएक दोषों को दूर करने में रामबाण है। मासिक धर्म के समय कमर में पीड़ा, सिर में दर्द, आँखों में जलन, हाथ-पैर के तलवों में लहर, मासिक धर्म समय से अधिक या थोड़ा होना, गर्भ न रहना, गर्भपात या अल्पायु संतान का होना, या होकर मर जाना इत्यादि समस्त दोष दूर कर गर्भ-धारण की शक्ति लाकर संतान पैदा करने योग्य बनाती है। मूल्य २)

प्रशंसा-पत्र — श्रीमती बाबू किशोरीमोहनलालजी श्रीवास्तव्य, [illegible] (ग्वालियर) से लिखती हैं — 'मुझे इस दवा से बहुत ही लाभ हो रहा है। कृपा कर एक शीशी और वी० पी० द्वारा शीघ्र भेजने का प्रबंध करें।"

पता—श्रीकृष्ण-केमिकल वर्क्स नं० ४५, पो० कतरीसराय (गया)

हिस्टीरिया और मृगी का
शर्तिया इलाज

रोग कैसा ही पुराना क्यों न हो, और दिन में कितने ही बार दौरे क्यों न आते हों, एक सप्ताह में सारे कष्ट जड़ से नष्ट हो जाते हैं। १५ दिन की औषधों का मूल्य केवल ५।) है। डाक-ख़र्च पृथक्।

प्राणाचार्य पं० गयाप्रसाद शास्त्री राजवैद्य
"क्षय तथा हिस्टीरिया स्पेशलिस्ट"
गणेशगंज, लखनऊ।

ऑटोमेटिक अलार्म पिस्तौल

बहुत ख़ूबसूरत लोहे की बनी हुई। चोर-डाकुओं और जंगली जानवरों आदि को डराकर भगाने में बहुत उपयोगी। लाइसेंस की ज़रूरत नहीं। अपने बचाव के लिये तथा खेल आदि के लिये बहुत बढ़िया। यह ६ इंच लंबी और ४ इंच ऊँची है। हरएक इसे आसानी से चला सकता है। इसको सरकस के लोग, वाचमैन तथा महकमा जंगलात के अफ़सर लोग अपने पास रखते हैं।

क़ीमत २॥) मय १०० छर्रों के। अलग से १) के ५० छर्रे मिलेंगे। डाक-ख़र्च ॥/)

पता—ईस्टर्न ट्रेडिंग कंपनी (S. H.) पोस्ट-बॉक्स नं० १२२०५, कलकत्ता

असली स्तंभन की गोलियाँ

औरत की ख़ुशी न बज़ाज़ की दूकान पर बिकती है, और न सराफ़ की दूकान से ख़रीदी जा सकती है। औरत को ख़ुशी पुरुष की ताक़त (स्तंभन) में छिपी है। स्तंभन से कमज़ोर-से-कमज़ोर मर्द भी ज़बरदस्त-से-ज़बरदस्त औरत को अपने वश में कर सकता है। अधिक प्रशंसा करना सभ्यता के विरुद्ध है। आवश्यकता से एक घंटा पूर्व एक गोली खाई जाती है। आप तजुर्बे के लिये एक गोली खाएँ, और फिर इसका करिश्मा देखें। रोज़ाना डाक में बेशुमार प्रशंसा-पत्र आते हैं। क़ीमत फ़ी शीशी १२ गोली १॥), तीस गोली ३), डाक-ख़र्च अलग।

पता—कृष्णा जनरल फ़ार्मेसी (२४) नार्दन-स्ट्रीट, ग्वालमंडी, लाहौर।

संयुक्तप्रांतीय शिक्षा-विभाग की ओर से प्रचलित

हिंदी-विशेष-योग्यता-परीक्षा

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद, तथा पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

जनवरी-मास में प्रकाशित होनेवाली नवीन पुस्तकें

नीचे लिखी पुस्तकें बहुत थोड़ी संख्या में छपाई गई हैं, ऑर्डर भेजकर मँगा लें, अन्यथा वर्षों इंतज़ार करना पड़ेगा।

(१) **नवयुग-काव्य-विमर्श**—आलोचना-साहित्य का अपूर्व ग्रंथ, हिंदी के वर्तमान रहस्यवादी कवियों के काव्य का विवेचनात्मक ग्रंथ। रचयिता, हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, लेखक और संपादक पं० ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल' भूतपूर्व संपादक 'मनोरमा', 'भारत' आदि। लगभग मूल्य २)

(२) **शिशु-पालन**—लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार भिषग्रत्न। इसमें पाश्चात्य और पूर्वीय मतों की छान-बीन करके बच्चों के पालन-पोषण के विषय में ज्ञातव्य बातें लिखी गई हैं। लगभग मूल्य २)

(३) **सुघर गँवारिन**—लेखक, ताजिरुलमुल्क लाला रामजीदास वैश्य। इस पुस्तक का पढ़कर कल्पना-सौंदर्य की रोचकता और जासूसी वर्णन आपको चकित कर देगा। इसमें चित्रित आजकल का सामाजिक जीवन आपकी आँखों के सामने एक अबला का जीता-जागता चित्र खींचकर रख देगा। यदि डॉक्टरों की लीला, ज़मींदारों और उनके कारिंदों की करतूत, दीन-दुखियों का सरल हृदय, गाँववालों का मेल-जोल का चित्र देखना हो, तो इस पुस्तक को एक बार पढ़ें। लगभग मूल्य १॥)

(४) **हृदय-भार**—लेखक, श्रीदीनानाथजी व्यास। इसमें लेखक की समय-समय पर लिखी गई सरस और सुंदर कविताएँ संगृहीत हैं। कविता के विषयों का चुनाव हृदयग्राही है। लगभग मूल्य ॥), १)

(५) **विचित्र जीव-जंतु**—लेखक, श्रीकन्हैयालाल दीक्षित। इस पुस्तक में उन अजीब जानवरों का परिचय सचित्र और ऐसी मनोरंजक भाषा में दिया गया है कि बच्चे एक बार हाथ में लेने पर बिना खत्म किए न छोड़ेंगे। लगभग मूल्य ॥), १)

सब प्रकार की हिंदी पुस्तकों का सूचीपत्र =) टिकट भेजकर मँगाएँ

खेलने योग्य नाटक और प्रहसन

आहुत या जयपाल

देश-प्रेम के भावों से ओत-प्रोत ऐतिहासिक नाटक। अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। मूल्य १), १॥)

कीचक

लेखक, पं० भगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी०। पांडवों के अज्ञातवास का कथानक, हास्य-रस की पुट-सहित। मूल्य १।), १॥।)

पतिव्रता

अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। स्त्री-पुरुषों के देखने और पढ़ने-योग्य सामाजिक नाटक। दो रंगीन और दो सादे चित्र। मूल्य १।=), १॥।=)

प्रबुद्ध यामुन

लेखक, श्रीवियोगी हरि। अहिंसा, दीन-वत्सलता और भगवद्भक्ति-भरा नाटक। मूल्य १), १॥)

अचलायतन

मूल-लेखक, कवींद्र रवींद्र। हिंदू-धर्म की छुआछूत और आडंबर की पोल खोलनेवाला प्रहसन। मूल्य ॥), ॥=)

रावबहादुर

मूल-लेखक, मोलियर। उपाधि-व्याधि-ग्रस्त घरफूँक बहादुर वा खासा खाका। मूल्य ॥), १)

मैनेजर

गंगा-ग्रंथागार, २०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

पहेली-पूर्तिकार ध्यान दें

सुधा के पुराने अंक

चौथाई मूल्य में

अक्सर देखा गया है कि पहेली भरनेवालों को पहेलियों के कूपनों के लिये सुधा के प्रत्येक अंक की तीन-तीन, चार-चार, आठ-आठ प्रतियाँ खरीदनी पड़ती हैं, पर वे पहेली भरने के बाद बेकार हो जाती हैं, क्योंकि उन सबमें एक ही लेख और चित्र रहते हैं। उनकी सहूलियत के लिये हमने सुधा के नीचे लिखे अंकों में भी यही तृतीय पहेली लगा दी है। अब जो चाहें, नवीन अंक की कई प्रतियाँ ।)-।) में न खरीदकर इस सूची में से जो पिछले अंक पसंद करें, वह =)-=) आने में मँगा लें। पहेली भरनेवालों से इनका मूल्य केवल =) ही लिया जायगा, यद्यपि ।।)-।।=) हैं, आशा है, ग्राहक इससे लाभ उठाएँगे, और मनमाने अंक खरीदेंगे। इस तरह गत १० वर्षों की सुधा का सुंदर सेट भी, उनके पास, उनके और उनकी स्त्री-बच्चों के लाभ के लिये, धीरे-धीरे तैयार हो जायगा। डाक-व्यय पृथक्।

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्तिकारों से	पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्तिकारों से
१	अगस्त	१६२७	।।=)	=)	२५	अगस्त	१६२६	।।=)	=)
२	सितंबर	,,	,,	,,	१६	सितंबर	,,	,,	,,
३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,	२७	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
४	नवंबर	,,	,,	,,	२८	नवंबर	,,	,,	,,
६	जनवरी	१६२८	,,	,,	३१	फ़रवरी	१६३०	,,	,,
७	फ़रवरी	,,	,,	,,	३२	मार्च	,,	,,	,,
८	मार्च	,,	,,	,,	३३	एप्रिल	,,	,,	,,
६	एप्रिल	,,	,,	,,	३४	मई	,,	,,	,,
१०	मई	,,	,,	,,	३५	जून	,,	,,	,,
११	जून	,,	,,	,,	४२	जनवरी	१६३१	,,	,,
१२	जुलाई	,,	,,	,,	४३	फ़रवरी	,,	,,	,,
१४	सितंबर	,,	।।।)	≡)	४४	मार्च	,,	,,	,,
१५	ऑक्टोबर	,,	।।=)	=)	४५	एप्रिल	,,	,,	,,
१६	नवंबर	,,	,,	,,	४७	जून	,,	,,	,,
१७	दिसंबर	,,	,,	,,	४८	जुलाई	,,	,,	,,
१८	जनवरी	१६२६	,,	,,	५१	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
१६	फ़रवरी	,,	,,	,,	५२	नवंबर	,,	,,	,,
२०	मार्च	,,	,,	,,	५३	दिसंबर	,,	,,	,,
२१	एप्रिल	,,	,,	,,	५५	फ़रवरी	१६३२	,,	,,
२२	मई	,,	,,	,,	५६	जून	,,	,,	,,
२३	जून	,,	,,	,,	६०	जुलाई	,,	,,	,,
२४	जुलाई	,,	,,	,,	६१	अगस्त	,,	,,	,,

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्ति-कारों से	पूर्ण सं०	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्ति-कारों से
६२	सितंबर	१६३२	॥=)	=)	६८	अगस्त १६	३४	।)	-)॥
६३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,	६६	सितंबर १	,,	,,	,,
६४	नवंबर	,,	,,	,,	१००	नवंबर	,,	,,	,,
६५	दिसंबर	,,	१॥)	॥)	१०१	दिसंबर	,,	,,	,,
६६	जनवरी	१६३३	॥=)	=)	१०२	जनवरी	१६३५	,,	,,
६७	फ़रवरी	,,	,,	,,	१०३	फ़रवरी	,,	,,	,,
६८	मार्च	,,	,,	,,	१०४	मार्च	,,	,,	,,
६६	एप्रिल	,,	,,	,,	१०५	एप्रिल	,,	,,	,,
७०	मई	,,	,,	,,	१०६	मई	,,	,,	,,
७१	जून	,,	,,	,,	१०७	जून	,,	,,	,,
७२	जुलाई	,,	,,	,,	१०८	जुलाई	,,	,,	,,
७३	अगस्त १	,,	,,	,,	१०६	अगस्त	,,	॥=)	=)
७४	अगस्त १६	,,	,,	,,	११०	सितंबर	,,	।=)	,,
७६	सितंबर १६	,,	,,	,,	१११	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
७७	ऑक्टोबर१	,,	,,	,,	११२	नवंबर	,,	,,	,,
७८	ऑक्टोबर१६	,,	।।।), ।=)	≡)	११३	दिसंबर	,,	,,	,,
७६	नवंबर १	,,	।)	-)॥	११४	जनवरी	१६३६	॥)	,,
८०	,, १६	,,	,,	,,	११५	फ़रवरी	,,	,,	,,
८१	दिसंबर १	,,	,,	,,	११६	मार्च	,,	।-)	,,
८२	दिसंबर १६	,,	,,	,,	११७	एप्रिल	,,	,,	,,
८३	जनवरी १	३४	,,	,,	११८	मई	,,	,,	,,
८४	,, १६	,,	,,	,,	११६	जून	,,	,,	,,
८५	फ़रवरी १	,,	≡)	,,	१२०	जुलाई	,,	,,	,,
८६	,, १६	,,	,,	,,	१२१	अगस्त	,,	,,	,,
८७	मार्च १	,,	,,	,,	१२२	सितंबर	,,	,,	,,
८८	,, १६	,,	,,	,,	१२३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
८६	एप्रिल १	,,	,,	,,	१२४	नवंबर	,,	,,	,,
६०	,, १६	,,	,,	,,	१२५	दिसंबर	,,	,,	,,
६१	मई १	,,	,,	,,	१२६	जनवरी	१६३७	,,	,,
६२	,, १६	,,	,,	,,	१२७	फ़रवरी	,,	,,	,,
६३	जून १	,,	,,	,,	१२८	मार्च	,,	,,	,,
६४	,, १६	,,	,,	,,	१३०	मई	,,	,,	,,
६५	जुलाई १	,,	,,	,,	१३१	जून	,,	,,	॥)
६६	,, १६	,,	,,	,,	१३२	अगस्त	,,	२)	
६७	अगस्त	,,	।)	,,					

मैनेजर सुधा, लखनऊ

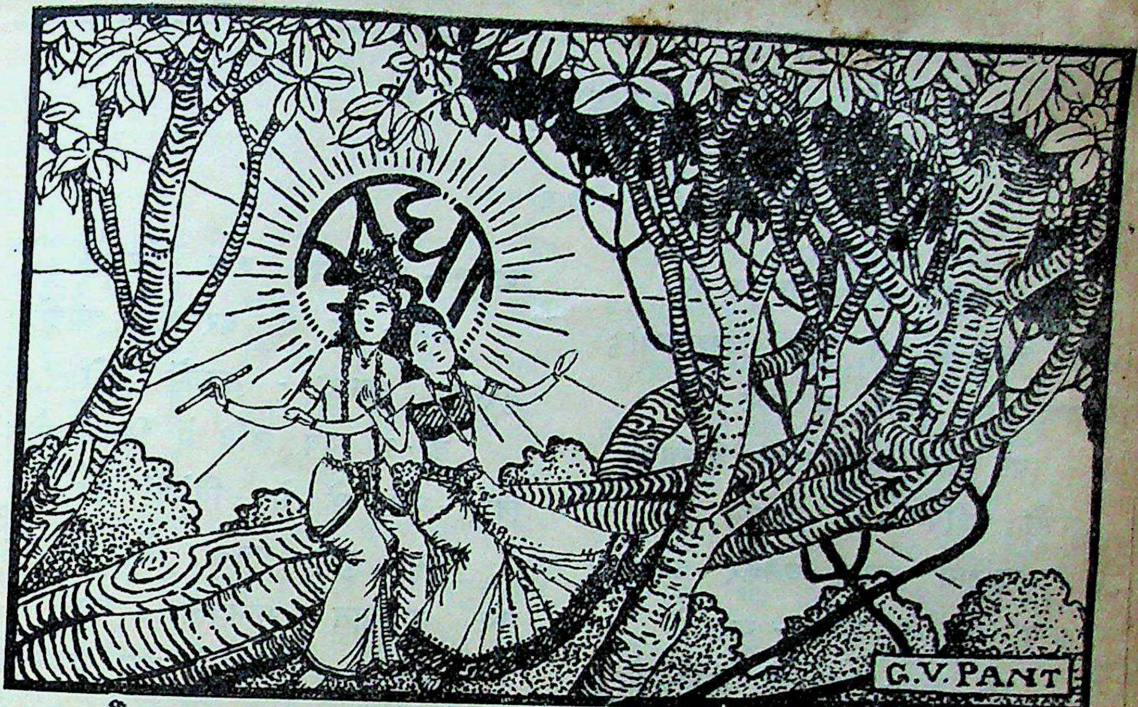

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समै सब काँहि।

(दुलारेलाल भार्गव)

वर्ष ११ खंड २ — माघ, ३१५ तुलसी-संवत् (१९९४ वि०)— फ़रवरी, १९३८ — संख्या १ पूर्ण संख्या १३६

उपहार

[श्रीपं० उमाशंकरजी वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)]

कुमुद-सी थीं तब तुम द्युतिमान,
शरद की पूनो में अम्लान।

यूथिका के उपवन के पास
तुम्हारा था कुसुमित आवास,
वहीं पर मुझे बुला हे देवि!
दिया था तुमने कंगन-दान।
न-जाने कैसा था सम्मान,
और कैसी थी वह पहचान।

अभी तक उर की शोणित-धार
विकल हो बहती वलयाकार,
बन गया जीवन का शृंगार
तुम्हारा दिया हुआ उपहार।
आज पलकों में आकर प्राण
तुम्हारी छवि का करते ध्यान।

आवाहन

[श्रीपं० सुमित्रानंदन पंत]

आओ प्रकाश, इस युग-युग के
अवगुंठन से मुख दिखलाओ;
आओ हे, मानव के घट के
पट खोल मधुर छवि बरसाओ।
आओ, जीवन के आँगन में
स्वर्णिम प्रभात बनकर आओ;
मानव-उर के प्रस्तर-युग के
इस अंध-तमस को बिखराओ।

विज्ञान-ज्ञान की शत किरणें
जन-पथ में बरसाते आओ;
मुरझाए मानस-मुकुलों को
छू-छू नव छवि में विकसाओ।
दिशि-पल के भेद-विभेदों को
तुम डुबा एकता में आओ;
नव मूर्तिमान मानवता बन
आओ, जन-मन में बस जाओ।

हिंदी-काव्य-साहित्य में नई धारा बहानेवाले
कविवर 'बच्चन'जी की नई रचना

मधु-कलश

इस काव्य-संग्रह में 'बच्चन'जी के नए भाव हैं, नए छंद हैं, नया स्वर है, और है एक नया संदेश ! इसे शीघ्र पढ़िए ! मूल्य १।) मात्र

'बच्चन'जी की अन्य रचनाएँ

मधुबाला—मधुशाला से संबंध रखनेवाले विषयों पर लिखित गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत आपको उन्मत्त कर देगा। मूल्य १) मात्र

मधुशाला—मधुशाला पर लिखित रुबाइयों का संग्रह है। दूसरा संस्करण समाप्त हो रहा है। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो तीसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी। मूल्य १) मात्र

खैयाम की मधुशाला—जगत्प्रसिद्ध रुबाइयात उमर खैयाम का ऐसा सुंदर अनुवाद हिंदी में नहीं प्रकाशित हुआ। मूल्य ॥।) मात्र

तेरा हार—यह 'बच्चन'जी की प्रारंभिक कविताओं का संग्रह है। प्रथम संस्करण समाप्त ही होने का है। शीघ्रता कीजिए। मूल्य १। मात्र

सुषमा-निकुंज, प्रयाग
मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

संतों ने हमारे लिये क्या किया ?

[श्रीयुत प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए०]

मानव-जीवन आसक्तियों का समाहार है। अनुरक्ति और विरक्ति के मूल में यही आसक्ति काम करती है। प्राणी जन्म लेते ही विश्व के नाना रूपों से संपर्क-लाभ करने लगता है। अशेष सृष्टि के किसी अंश में उसे अनुकूलता और किसी में प्रतिकूलता मिलती है। अनुकूलता में सुख और प्रतिकूलता में दुःख होता है। सुख का परिणाम अनुरक्ति और दुःख का विरक्ति है। परंतु अनुकूलता और प्रतिकूलता, सुख और दुःख सापेक्षिक प्रत्यय हैं। किसी एक ही वस्तु में किसी को सुख और किसी को दुःख मिलता है। अथवा एक ही व्यक्ति को स्थान और समय के अंतर से सुख-दुःख का विपर्यय हो सकता है। तात्पर्य यह कि अनुरक्ति विभेद है, और सम-स्वरूप आसक्ति।

आसक्तियों का विस्तार मानव-जीवन का विस्तार समझा गया है। आसक्तियों के स्वरूप और आदर्श मनुष्य-जीवन के आदि काल से परिवर्तित होते आए हैं। पहले और अब भी जीवन की व्यस्तता में परिणाम विभेद संख्या के परिगणन में रहा है, संकुलता में नहीं। महात्मा गांधी और आफ्रिका का हबशी, दोनो एक प्रकार से समान रूप से व्यस्त रहते हैं, यद्यपि दोनो की आसक्तियों में आकाश-पाताल का अंतर है।

मानव-जीवन आसक्तियों का समाहार तो है ही, पर तो भी मानवता की चरमता इन्हीं आसक्तियों के प्रति आसक्ति का परित्याग है। यह एक विरोध है, पर इसमें विश्व के साम्य का महान् रूप अंतर्हित है। उन्नतिशील व्यक्ति समाज-रूढ़ि, धर्म-रूढ़ि, कला-रूढ़ि, राष्ट्र-रूढ़ि आदि न-जाने कितनी रूढ़ियों से निरंतर कितने युद्ध करता रहता है। पुरानी आसक्तियाँ निर्मूल होती चलती हैं, और उनके स्थान में नई आसक्तियों का स्वीकार स्वतः होता चलता है। ये ही आसक्तियाँ आगे चलकर रूढ़ि बनती चलती हैं, और इनका ध्वंस अथवा पुनर्निर्माण होता चलता है। इस ध्वंस और निर्माण के रहस्य को समझना विश्व की गत्यात्मकता का समझना है, और उसमें योग देना विधि-विधान का अनुसरण करना है। जगत् की गति-विधि में वही व्यक्ति उपयोगी सिद्ध होता है, जो प्रिय-से-प्रिय ममतामयी आसक्ति में भी अनुरक्ति न रक्खे, और सुनिश्चित, सुस्वीकृत तथा सुदृढ़ सिद्धांतों का भी पुनः निरीक्षण, पुनः मूल्य-निरूपण तथा पुनः स्थिरीकरण करने के लिये प्रस्तुत रहे।

वास्तव में सत्य के स्वरूप-निरूपण में इयत्ता नहीं होती, और न सत्य की अभिव्यक्ति में चिरंतन टिकाव ही होता है। इस गतिमान् विश्व में गति-ही-गति है। गति में स्थायित्व की स्थापना करना—चाहे वह सत्य की यथार्थता की ही हो अथवा स्वयं ईश्वर की हो – जान-बूझकर भ्रम में पड़ना है। विश्व की बड़ी-से-बड़ी विभूति में अखंड शक्ति के अंशों और कलाओं का निर्धारण करना सदैव एकदेशीय और एककालीन ही हो सकता है, सार्वभौमिक और सर्वकालीन नहीं। विश्व अपने सारे वैभव को लेकर क्षण-प्रतिक्षण बदल रहा है। उसका आकार-प्रकार, उसकी रूप-रेखा, उसका विधान, उसका नियमन, उसका सर्वस्व बदलता रहता है। वह भी उसी प्रकार, जैसे बूँद समुद्र में अथवा समुद्र बूँदों में। कौन किसका क्या करता है, यह कौन जानता है। गहरी उड़ान भरते हुए इस अखिल चमत्कार के किसी परमाणु के किसी ओर का किसी अधिकारी के नेत्रों में कौंधा हुआ, कोई आलोक-खंड अथवा उसके कानों में पड़ा हुआ गत्यात्मकता की घरघराहट का कोई नाद-कण विश्व में न-जाने कितने सत्यों की सृष्टि करता है। इन सत्यों में सत्यता की उतनी ही अवधि है, जितने काल तक वे तद्रूप आसक्तियों पर अपना अधिकार रख सकते हैं। उनका पुनः निरीक्षण और पुनः मूल्य-निर्धारण हुआ करता है। नई आसक्तियाँ आती-जाती रहती हैं। फिर नया आलोक, फिर नया शब्द, फिर नया आधेय, फिर नया निरूपण, फिर नया सत्य और फिर नया ईश्वर। यह निरंतर का धर्म है। यदि सत्य सत्य ही रहे, उसमें परिवर्तन और परिवर्धन न हो, यदि ईश्वर में गति अगति से आगे न रहे, तो उन्नतिशील मन का तर्क असंतुष्ट ही बना रहेगा। प्रगतिशील जगत् से संबंध रखनेवाले प्रत्येक प्रत्यय का प्रगतिशील होना ही उसका धर्म और उसकी शोभा है, चाहे वह प्रत्यय सत्य हो, चाहे सुंदर हो, चाहे शिव हो, और चाहे स्वयं ईश्वर ही क्यों न हो।

बस, इसी सूत्र को समक्ष रखकर हमें विश्व की समीक्षा करनी चाहिए। हम स्थिर कर चुके हैं कि आदर्श व्यक्ति किसी भी आसक्ति (Prejudice) में अनुरक्ति नहीं रखता। भारतवर्ष के चिंतकों और दर्शनकारों ने अपनी इस अनासक्ति बुद्धि और निर्मल विवेक का परिचय विश्व को पर्याप्त मात्रा में दिया है। ईश्वर तक की उन्होंने अनासक्ति भाव से परीक्षा की है। अतएव प्रस्तुत लेख में संतों के संबंध में जो कुछ लिखा जायगा, उसे रूढ़ि और परंपरा के निर्माण किए हुए वातावरण को ध्वंस करके समझने का प्रयास करना चाहिए।

इस लेख के लेखक का यह विश्वास दृढ़ होता आता है कि भारतवर्ष पर संतों ने उपकारों की अपेक्षा अपकार अधिक किए हैं। संतों की जो परिभाषा गोस्वामी तुलसीदासजी ने दी है, अथवा जो अन्यत्र मिलती है, वह तो

विश्व के उदात्त गुणों की तालिका है, परंतु व्यवहार-जगत् में संतों का क्या प्रभाव पड़ा, इससे उनकी उपयोगिता आँकनी है। शताब्दियों के प्रयोग के बाद जो आचरण आचरण-शास्त्र तक पहुँच सके हैं, जो धर्म-तत्त्व धर्म-ग्रंथों में संगृहीत हो सके हैं, जो विकसित चिंतना दर्शन-पुस्तकों में लिखी जा सकी है, अथवा मानवता का जो सभ्य स्वरूप अपनी कला, साहित्य तथा समाज का आदर्श स्थिर कर सका है, जब-जब ये संत हुए हैं, इन्होंने एक ही उच्छ्वास में सबको धराशायी करने का प्रयास किया। चिंतनशील जन-समुदाय की अपेक्षा मूर्खों की संख्या वैसे ही अधिक होती है। विश्व की यह महान् विभूति—मूर्ख-मंडली—मूढ़ ज्ञान के स्वाभाविक रूप से अधिक चिपकती है, अतएव उसे इस ध्वंस-कार्य में बड़ी सहायता मिली। इतिहास इसका साक्षी है कि बड़े-से-बड़े संत-पंथ में मूर्खों की ही भरती अधिक मिली।

प्राचीनपन से युद्ध करना स्वाभाविक ही नहीं, आवश्यक है; रूढ़ियां को तोड़ना सुधार ही नहीं, धर्म है; दलितों को उठाना कर्तव्य ही नहीं, पुण्य है; परंतु संतों की कार्य-विधि सदोष थी। उन्होंने पतितों को उकसाया, उन्होंने धर्म के सड़े अंगों की दुर्गंध नासिका तक पहुँचाई, उन्होंने समाजवाद, साम्यवाद और जन-सत्तात्मकवाद का संदेश जनता तक पहुँचाया, तथा जीवन को पवित्र बनाने का प्रयास किया, परंतु देश में, साथ-ही-साथ, उन्होंने एक ऐसी लक्ष्य-हीनता उपस्थित कर दी कि उनके जागरण-संदेश का आदर्श ही नष्ट हो गया। उनकी क्रांति में सुधारवाद का नियंत्रण था, और जो कुछ भी उसमें वेग था, वह लक्ष्य-हीन था। अधिकांश संतों में लोक-संग्रह का कोई भाव न था। समष्टि के स्थान पर उन्होंने व्यक्ति पर अधिक ज़ोर दिया। स्वार्थी-वर्ग का समाज का किस प्रकार शोषण समाज को खोखला बनाता है, उसे समझकर दलितों में जो भेद-भाव मिटाने का जोश उत्पन्न हुआ, वह अध्यात्म की ओर मोड़ देने के कारण पंगु हो गया। बड़े वेग और घरघराहट के साथ बहनेवाली कबीर की क्रांति-सरिता भी अध्यात्म के मरुस्थल में पहुँचकर विलीन हो गई। इन संतों ने ठोस जगत् के अभावों को काल्पनिक जगत् के स्वर्ण-विहान से चकाचौंध करके भुलाने का प्रयास किया। ऐहिक जगत् की घुस-पठ, जीवन-संग्राम का संघर्ष, मानवता के स्वत्वों की माँग, ये सब सांसारिकता कहकर कोसी गईं। परलोक-वाद, इतरलोक-वाद, जन्मांतर-वाद, पुण्य-पाप-वाद, माया-वाद, संसार-प्रपंच-वाद, रहस्य-वाद और न-जाने कितने लोक-विरोधी वादों का प्रचार हुआ, तथा इस जगत् से उदासीन होना सिखाया गया। पाप और पुण्य के मनमाने आदर्श स्थिर करके सब प्राणियों को अध्यात्म की सँकरी गली में खदेड़ने का काम तो संतों ने ही किया। उन्हें संसार की ओर मुड़कर देखने की आज्ञा भी न थी। इतरलोक-वाद तर्क के समक्ष इहलोक-वाद

नास्तिकता का विषय हो गया। अतींद्रिय जगत का भाव-विभोर-वर्णन, विचारातीत परिस्थितियों के ज्वलंत चित्र, रहस्य-वाद के अटपटे वचन जनता के पार्थिव अभाव केवल थोड़े काल के लिये भुला सकते थे, परंतु नमक, तेल-लकड़ी की माँग, भूखे, बिलबिलाते हुए रुग्ण बच्चे की सूखी आकृति न घंटों के सत्संग में और न सुरति-शब्द-योग में भूल सकती थी। 'त्रिकुटी', 'भंगर गुफा', 'सुन्न', 'महासुन्न', सभी का ध्यान और योग भूखा मन अधिक काल तक नहीं कर सकता। संतों ने लोक को लोक में रहकर सुधारने का अवकाश ही नहीं दिया। अभावों से त्रस्त व्यक्ति में ऐहिक स्वत्वों के प्रति दैवी प्रेरणा का भाव उत्पन्न करके उसे परावलंबी बना दिया। स्वावलंबन में जो अपने भाग्य को स्वयं निर्माण करने का बल होता है, वह शिथिल कर दिया गया, और सब रोगों की एकमात्र ओषधि अध्यात्म की घूँटी सब भक्तों को पिलाई गई। अपने पर भरोसा कैसे रहता, जब—

"हानि-लाभ, जीवन-मरन, जस-अपजस विधि-हाथ।"

पार्थिव अभावों का सम्यक् परिचय भी नहीं होने पाया, भक्त चट उस महान् अभाव, भगवद्भक्ति की ओर खिंच गए। संसार जैसे-का-तैसा छोड़ दिया गया।

यह कोई न कहेगा कि विश्व में पार्थिव अभावों की कमी है, अथवा इति है। उनकी तालिका घटती-बढ़ती रहती है। वह सापेक्ष है। यदि हम अपने अभावों का कोष बढ़ाते जायँगे, तो जीवन बड़ा असंतोषमय हो जायगा। कहीं तो विराम करना ही होगा। परंतु यह भी न भूलना चाहिए कि जहाँ एक वर्ग की साधारण-से-साधारण आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं, और शोषण द्वारा दूसरा वर्ग उससे अनुचित लाभ उठाता, वहाँ शासन में महान् दोष है। ऐसे शासन और ऐसी व्यवस्था को उखाड़ फेकना प्रत्येक लोक-संग्रही संत और महात्मा का सबसे पवित्र काम है। असंतुष्ट-वृत्ति के मत्थे मढ़कर ऐसे समाज-जनित अभावों की ओर उपेक्षा करना अन्याय का परोक्ष रूप से समर्थन करना है। अनिवार्य स्वत्वों के लिये झगड़ना अशांति का बर्बर निदर्शन नहीं है। वैसे तो सबसे बड़ी और घोर अशांति संत लोग भक्तों के हृदय में भगवत्साक्षात्कार की बलवती उत्कंठा के रूप में स्वयं उत्पन्न कर देते हैं। अशांति अपने नग्न रूप में निंद्य नहीं; केवल प्रयोग पर उसकी उपादेयता निर्भर है। संतों ने उसकी समूची उपयोगिता की ओर ध्यान न देकर एक अनुचित और अशुद्ध मार्ग भारतवासियों के समक्ष रक्खा। इससे अधिक निंदनीय बात क्या हो सकती है कि दलित-वर्ग में अभावों से परितुष्ट रहने की वृत्ति जागरित करके शोषण करनेवालों का अन्याय आध्यात्मिकता की मुहर लगाकर सही कर दिया गया। वर्गों के समीकरण की आवश्यकता पर बहुत-सी 'साखी' और 'शब्द' कहे गए, परंतु व्यवहार-जगत् में वे नितांत ही असफल रहे। आध्यात्मिकता

पवित्रता दिखाकर ईश्वर को आवश्यकता से अधिक साकार करके हमारे हाथ-पैर जकड़ दिए गए। भारतीयों में विचित्र संकोच उत्पन्न हो गया। हम जीवन-संग्राम के लिये नपुंसक हो गए।

इस लेख को पढ़कर किसी को यह भ्रम न होना चाहिए कि इसके लेखक को संतों से कोई व्यक्तिगत विरोध है। जीवन को पवित्र करने के लिये, स्वरूप-दर्शन के लिये, चिंतना उकसाने के लिये, साहित्य और कला को नवीन रूप में लाने के लिये और एक महान् परार्थता उत्पन्न करने के लिये संतों ने जो प्रयास किया, वह सर्वथा स्तुत्य है। संत लोग हमारी श्रद्धा के भाजन हैं। परंतु संसार से सदैव भागनेवाली वृत्ति, उसके प्रस्वेद-पूर्ण संघर्षों के प्रति कायरता-पूर्ण उपेक्षा तथा जीवन के नितांत और एकरंगेपन पर अधिक जोर आदि-आदि कुछ ऐसी बातें हैं, जिन्होंने संतों को भारतवर्ष के लिये विफल सिद्ध किया। संत-समाज एवं भक्तगण मुझे इस स्पष्टोक्ति के लिये क्षमा करेंगे। मेरे ये भाव सब संतों के विषय में नहीं हैं। मुझे वैसे भी संतों के जीवन से बहुत कुछ मिला है। परंतु किसी भी परिस्थिति में मनुष्य को विवेक न खोना चाहिए। अब रूढ़ि आसक्तियों से झगड़ा कर सकते हैं। और प्राचीनता से जब हम युद्ध करते हैं, तो श्रद्धा-भक्ति से भी युद्ध कर सकते हैं। यदि हम दानवत्व को झकझोरने का साहस करते हैं, तो हमें ईश्वरत्व की समीक्षा करने का भी साहस होना चाहिए। आसक्ति प्रत्येक कोण की ओर सम होती है, अतएव अनासक्ति भी सम भाव से ही होनी चाहिए*।

---

* यह लेख कल्याण के संतांक के लिये लिखा गया था, परंतु संपादक महोदय ने इसे अपने पत्र की नीति के प्रतिकूल समझ वापस कर दिया।

—लेखक

शारीरिक संपत्ति के न रहने पर आर्थिक संपत्ति नहीं प्राप्त हो सकती।
अगर किसी भी प्रकार के रोग से निर्बलता आई हुई हो, तो अवश्य
"आतंक-निग्रह गोलियों" का सेवन करें
क़ीमत—३२ गोलियों की एक डिब्बी का १) एक रुपया
विशेष हाल जानने के लिये सूचीपत्र देखें।
आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड को०, चौक

कुसुम की कामना

[श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्० बी०]

गेंदे के फूलों पर ओस के कण कुछ कह-से रहे थे। सुनहली पंखड़ियाँ संध्याकालीन रश्मियों से होड़ लगा रही थीं। पवन का एक झकारा आया। गेंदे झूल गए। मानो समर्पण के लिये प्रस्तुत।

मैं उन्हें चुनने लगा, अतृप्त होकर। जब मेरी झोली भर गई, मैंने सोचा, जहाँ के लिये इनका विकास हुआ, इन्हें वहीं भेज दूँ।

लेकर मंदिर की ओर बढ़ा। मेरे मन में जैसी उमंग थी, वैसी ही देवता के मन में भी होगी। फूलों ने देवता के लिये जन्म लिया है, तो क्या देवता उसके उत्सर्ग के लिये मन में कोई ललक न रखते होंगे?

मैं पैर बढ़ाए चला गया। झोली ओस-कणों से गीली हो गई। फलों के चढ़ाते ही देवता सरस हो जायँगे।

परंत जैसे ही मंदिर में धँसा, देखा कि पट बंद हैं। बहुत हिलाए, झकझोरे, परंतु पट न खुले।

झाली में से एक-एक करके मैं पटों पर ही फूलों को चढ़ाने लगा। जिन पटों के भीतर देवता विराजमान हैं, वे पट भी मेरे लिये आराध्य हैं, परंत कुसुम अपने ओस-कणों से पटों को भिगो-भिगोकर नीचे गिरने लगे। और, धीरे-धीरे उनका एक ढेर लग गया। खिली हुई, झुकी हुई पंखड़ियाँ हिलने लगीं। उनके रहे-सहे ओस-कण भूमि पर छितरा गए।

उन हिलती हुई पंखड़ियों के भीतर क्या कोई आ बैठा था? पटों की परवा न करके क्या देवता ने पंखड़ियों में वास किया था? अथवा क्या मेरा कुतूहल बढ़ाने के लिये उनका यह प्रयास था?

मैं चिंतित हो उठा।

गेंदे में फिर प्रसून लगेंगे। संध्याकालीन किरणों के रंगवाली पंखड़ियाँ उनमें फिर आवेंगी। ओस-कण उन पर फिर छिटक जावेंगे। उनमें फिर स्फुरण होगा। वे देवता से भेंट करने के लिये फिर लालायित होंगे। वे किसी के हाथ में पड़कर फिर मंदिर की ओर अग्रसर होंगे। उनमें ललक होगी और उमंग। परंतु, क्या देवता के पट उनको फिर बंद मिलेंगे? फिर बंद!

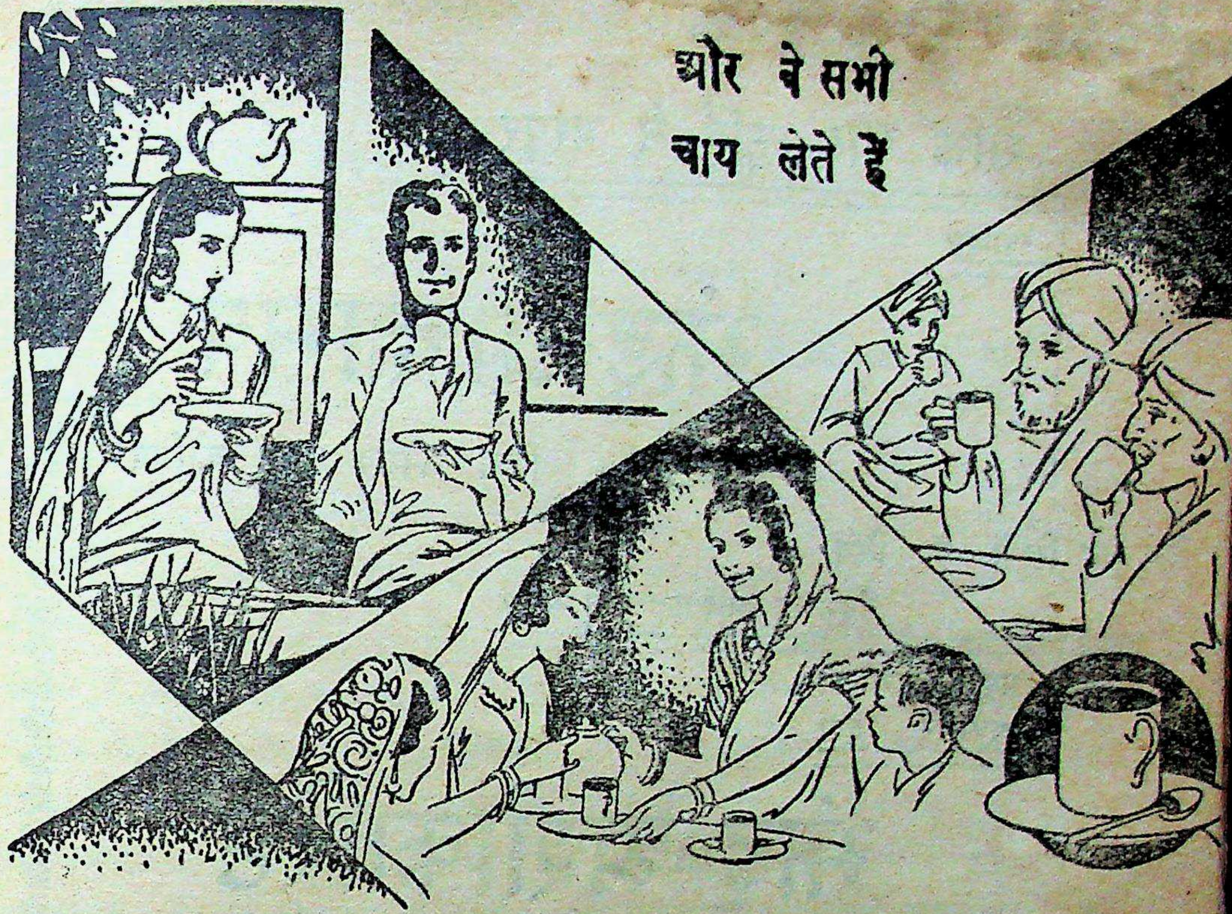

हरएक समझदार गृहिणी जानती है, कि जब वे सब चाय पिए रहते हैं, तो घर-बाहर सर्वत्र शांति से र
हैं। जीवन का भार हलका रहता है, और जीवन सुखद मालूम होता है। इसीलिये स्वयं तथा अपने प
वारवालों को जीवन से संतुष्ट रखने के लिये वह इसे एक पारिवारिक पेय बना रखती है।

चाय तैयार करने का तरीक़ा

ताज़ा पानी खौलाइए। साफ़ बर्तन ज़रा गरम कर लीजिए। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्म
अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिए। पानी खौल जाते ही चाय पर डाल दीजिए। पाँच मिनट तक चाय
सीझने दीजिए। इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइए।

एकमात्र पारिवारिक पेय—भारतीय चाय

IK 54.

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
—हरएक घर में रहना चाहिए—

(जूड़ी-ज्वर)

मलेरिया का महान् शत्रु

झंडु-मलेरिया मिक्श्चर

सेवन करके
मलेरिया की जड़ को
नेस्तनाबूद कर दीजिए।

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४
यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।
लखनऊ के ,, ,, —माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।

लखनऊ का कान्यकुब्ज-कॉलेज

[श्रीपं० गंगानारायणजी द्विवेदी]

जन्म

जिन पवित्र उद्देश्यों को लेकर शिक्षा-संस्थाएँ जन्म लेतीं और लोक-कल्याण-कार्य में प्रवृत्त होती हैं, उन्हीं उद्देश्यों को लेकर इस कॉलेज ने अष्टम कक्षा तक के छोटे स्कूल के रूप में, सन् १९१८ ई० में, जन्म ग्रहण किया था। इस स्कूल का उद्घाटन-कार्य स्वर्गीय लेफ्टिनेंट पं० कालीचरणजी मिश्र के कर-कमलों द्वारा संपादित हुआ था। जुलाई सन् १९२१ ई० में यह स्कूल हाईस्कूल हुआ, और दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता हुआ सन् १९२३ ई० में इंटरमीजिएट कॉलेज हो गया। इस कॉलेज ने अपने छोटे-से जीवन में ही आशातीत उन्नति की है।

कॉलेज के जन्म-दाताओं में ९०,०००) के आदर्श दानी स्वर्गीय पं० दीनदयालुजी मिश्र, स्वर्गीय न्यायमूर्ति जस्टिस पं० गोकर्णनाथजी मिश्र एम्० ए०, हमारे पुराने मंत्री और मैनेजर पं० श्रीनारायणजी मिश्र, कॉलेज के प्रथम प्रिंसिपल पं० श्रीनारायणजी चतुर्वेदी एम्० ए० (लंदन), एल० टी० और वर्तमान सेक्रेटरी रायसाहब पं० जयनारायणजी मिश्र मुख्य हैं।

पं० गोकर्णनाथजी के व्यक्तित्व का प्रभाव, पं० श्रीनारायणजी मिश्र की कार्य-तत्परता, पं० श्रीनारायणजी चतुर्वेदी की लगन तथा शिक्षोन्नति-संबंधी अनोखी सूझ और रायसाहब पं० जयनारायणजी का शीघ्रातिशीघ्र कॉलेज की इमारत तैयार करा देना आदि बातें कॉलेज को जन्म देने में पूर्ण सहायक हुईं। कॉलेज का शिलान्यास - संस्कार स्वर्गीय पं० गोकर्णनाथजी के कर - कमलों द्वारा हुआ था।

कॉलेज की स्थिति

यह कॉलेज लखनऊ के प्रसिद्ध स्टेशन चारबाग़ से आनेवाली प्रधान सड़क स्टेशन-रोड पर, ग़ाज़ीउद्दीन-नहर के किनारे, शान के साथ खड़ा हुआ कान्यकुब्ज-जाति की गौरव-गरिमा का प्रदर्शन कर रहा है। सौभाग्य से कॉलेज को ५० बीघे से अधिक विस्तृत भूमि प्राप्त हो गई है। कॉलेज में एक विशाल हॉल और ऊपर-नीचे ३२ कमरे हैं, जिनमें ३ कमरे अभी बनना शेष हैं। ९० छात्रों के रहने योग्य एक छात्रावास है, जो सदा विद्यार्थियों से भरा रहता है। कॉलेज और बोर्डिंग सब जगह बिजली लगी हुई है। खेल के लिये ६ बड़ी-बड़ी फ़ील्डें हैं, जो विद्यार्थियों के खेल के लिये पर्याप्त हैं। जगह-जगह पुष्प-वाटिकाएँ और उद्यान हैं। कॉलेज के ठीक सामने संगमरमर का उत्तम फ़ौवारा

ककुआजी (पं० स्वामीदयालुजी तिवारी) के सर्वस्व त्याग का स्मरण सदा दिलाता रहता है।

दोपहर की छुट्टी में जिस समय ६०० विद्यार्थी कॉलेज से बाहर निकलकर खेल के मैदानों

स्व० जस्टिस गोकर्णनाथजी मिश्र एम्० ए०

(कान्यकुब्ज-कॉलेज के भूतपूर्व प्रधान)

श्रीपं० श्रीनारायणजी चतुर्वेदी

(कान्यकुब्ज-कॉलेज के भूतपूर्व प्रथम प्रिंसिपल और अब इंस्पेक्टर ऑफ़ स्कूल्स)

और उद्यानों में दौड़ते-कूदते तथा बाल-क्रीड़ा करते हुए दिखलाई देते हैं, तब दर्शक के मन को एक अद्भुत आनंद प्राप्त होता है।

कॉलेज में हॉकी, फ़ुटबाल, क्रिकेट, टेनिस, वालीवाल आदि विविध प्रकार के खेलों का समुचित आयोजन है। खेलों की शिक्षा और प्रबंध के लिये एक योग्य अध्यापक नियत हैं।

प्रबंधकर्त्री समिति

कॉलेज की एक कार्यकारिणी कमेटी है, जिसके वर्तमान सभापति प्रसिद्ध अनुभवी विद्वान रावराजा डॉक्टर श्यामविहारीजी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० और मंत्री रायसाहब पं० जयनारायणजी मिश्र हैं। कार्यकारिणी के सदस्य भी अनुभवी और विचारशील सज्जन हैं। कमेटी के प्रथम सभापति पं० गोकर्णनाथजी मिश्र और द्वितीय पं० शीतलाप्रसादजी वाजपेयी रहे हैं।

रावराजा डॉ० पं० श्यामविहारी मिश्र
(वर्तमान प्रधान कान्यकुब्ज-कॉलेज कमेटी)

शिक्षा

कॉलेज में इंटरमीजिएट तक की शिक्षा दी जाती है। इस वर्ष विज्ञान, राजनीति और भूगोल के विषय इंटर क्लासों में और बढ़ गए हैं। इंटर में जितने विषय यहाँ हैं, उतने शायद ही यहाँ के किसी इंटर कॉलेज में हों।

संगीत की शिक्षा के लिये यहाँ ख़ास प्रबंध है, और इसके लिये दो योग्य अध्यापक हैं।

कॉलेज के सब अध्यापक अपने-अपने विषय के विद्वान्, अनुभवी, शिक्षा देने में चतुर और सादगीपसंद हैं। इसी कारण विद्यार्थियों में भी सादगी के भाव घर कर लेते हैं। हाईस्कूल और इंटर, दोनो का परीक्षा-फल सदा श्रेष्ठ और उत्साह-वर्द्धक रहता है। इस वर्ष तो यहाँ का परीक्षा-फल सर्वोत्कृष्ट रहा है। शिक्षा की उत्तमता के कारण विद्यार्थियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है।

इस समय लगभग ६०० छात्र यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जुलाई में, कॉलेज खुलते ही, सारी कक्षाएँ भर जाती हैं। बहुतों को स्थानाभाव के कारण निराश होकर लौटना पड़ता है। कॉलेज की शिक्षा की ख्याति होने के कारण अच्छे और प्रतिष्ठित घरानों के बालक भी अधिक संख्या में आते हैं। कॉलेज में पढ़ाई आरंभ होने के पूर्व सब छात्र मिलकर हॉल में एक साथ ईश्वर-प्रार्थना करते हैं।

यह कॉलेज हाईस्कूल, वर्नाक्यूलर मिडिल, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन और रामायण-प्रचारिणी परीक्षाओं का केंद्र है। पार्लियामेंट, हिंदी-सभा और कीर्तन-मंडल आदि समितियों का संचालन विद्यार्थी स्वयं करते हैं। इन सभाओं में बाहर से आनेवाले प्रसिद्ध विद्वानों के व्याख्यान हुआ करते हैं। हिंदी-सभा कवि-सम्मेलन की और नाट्य-परिषद् नाटक की आयोजना प्रतिवर्ष करती है। कॉलेज से एक

कान्यकुब्ज-कॉलेज-हॉल

त्रैमासिक पत्रिका हिंदी और अँगरेज़ी में निकलती है, जिसमें विद्यार्थियों और अध्यापकों के सुरुचिपूर्ण और सुपाठ्य लेख रहते हैं। इस पत्रिका को मासिक कर देने का आयोजन हो रहा है।

वर्तमान वर्ष में कॉलेज के संचालकों का ध्यान औद्योगिक शिक्षा की ओर आकृष्ट हुआ है, यह अत्यंत शुभ लक्षण है। इस वर्ष टाइपराइटिंग, दर्ज़ीगीरी, बढ़ईगीरी आदि की शिक्षा का समुचित प्रबंध हो गया है। अगले वर्ष से और भी घरेलू धंधों की शिक्षा का प्रबंध करने का विचार संचालक लोग कर रहे हैं। इस समय कॉलेज की आय लगभग ७०,०००) है, और इतना ही व्यय।

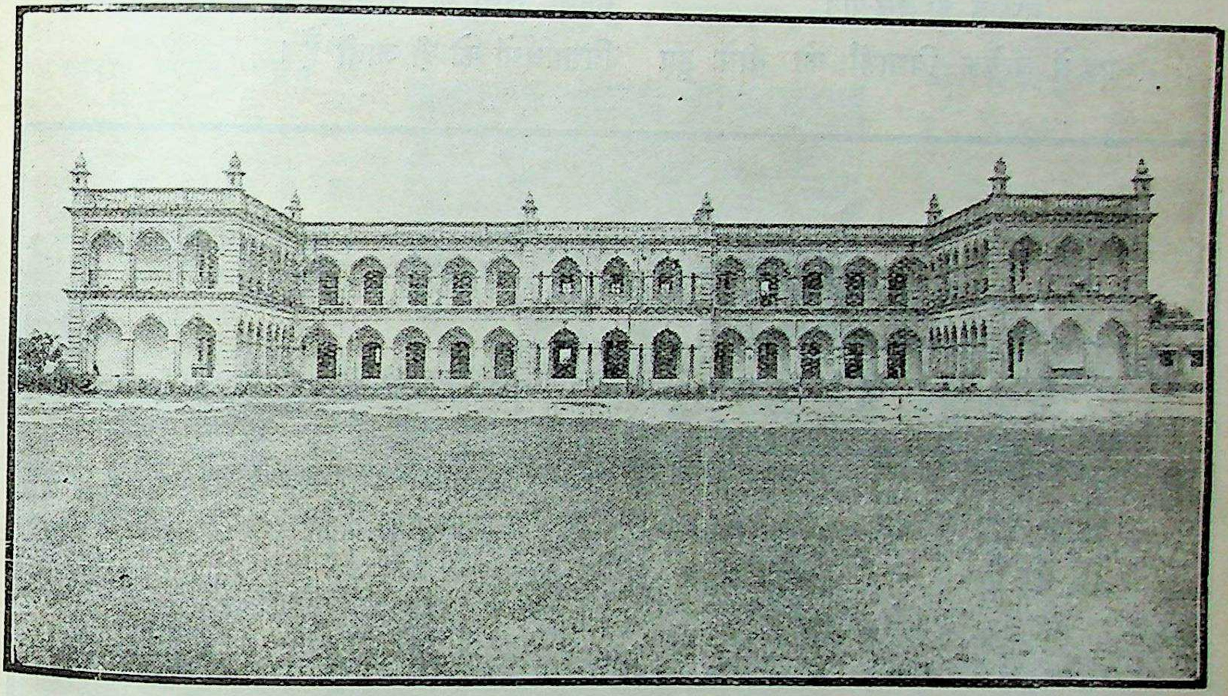

कान्यकुब्ज-कॉलेज का छात्रावास

पुस्तकालय

कॉलेज का पुस्तकालय एक बृहत् पुस्तकालय के रूप में है। हिंदी, अँगरेज़ी, संस्कृत और उर्दू की पुस्तकें पर्याप्त संख्या में मौजूद हैं। प्रत्येक विषय की आवश्यक और मूल्यवान् पुस्तकें इसमें मौजूद हैं। इसके प्रबंध के लिये एक पुस्तकाध्यक्ष नियत हैं, जो सुचारु रूप से अपना कार्य संपादन करते हैं। विद्यार्थी और अध्यापक पुस्तकालय द्वारा काफ़ी ज्ञान संचय करते हैं। छोटे-छोटे बच्चों के मनोरंजन और ज्ञानार्जन के लिये भी अनेक पुस्तकों का संग्रह किया गया है।

वाचनालय

वाचनालय में हिंदी-अँगरेज़ी के दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक आदि अनेक प्रसिद्ध पत्र आते हैं, जिनमें लीडर, पायनियर,

हिंदुस्तान टाइम्स, भारत, हिंदुस्तान, सुधा, सरस्वती, माधुरी, विश्वमित्र, विशाल भारत, वीणा, कान्यकुब्ज, बालक, बालसखा आदि मुख्य हैं। वाचनालय में सदा विद्यार्थियों की भीड़ लगी रहती है।

मध्याह्न का जल-पान

मध्याह्न में प्रत्येक विद्यार्थी को भीगे हुए चने, जिनमें नमक, मिर्च, अदरक़ और नीबू का रस मिला रहता है, दिए जाते हैं। जो विद्यार्थी दूध पीना चाहते हैं, उन्हें गवर्नमेंट डेरी से मँगाया हुआ पैस्टराइज्ड दूध दिया जाता है।

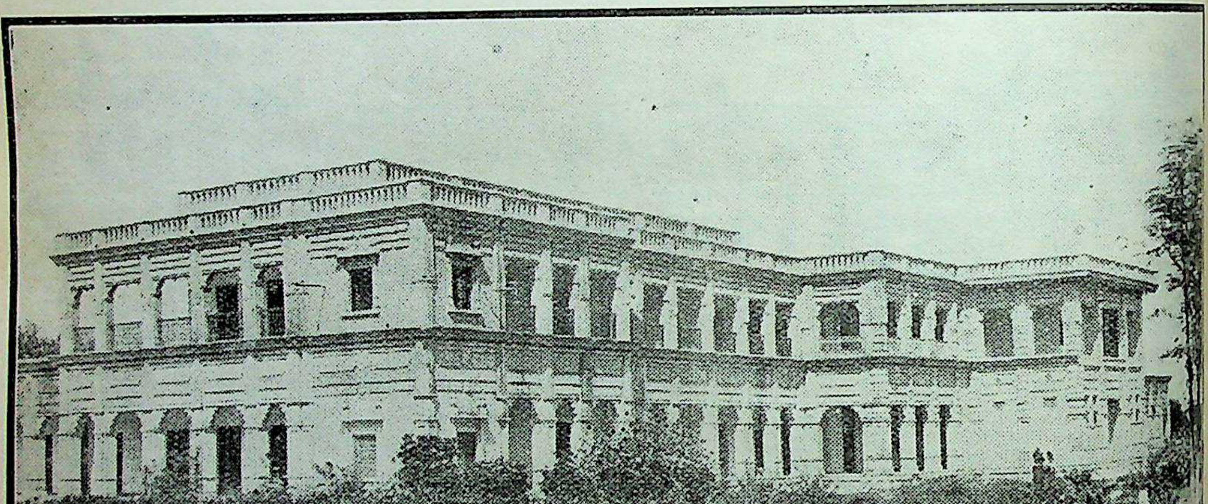

कान्यकुब्ज-कॉलेज-भवन

छात्रवृत्ति

राजकीय छात्रवृत्ति के अतिरिक्त पं० स्वामीदयालुजी तिवारी, पं० शीतलाप्रसादजी वाजपेयी, पं० अर्जुनप्रसादजी मिश्र, सरदार गुरुबख़्शसिंहजी और कान्यकुब्ज महती सभा की छात्रवृत्तियाँ कॉलेज के योग्य विद्यार्थियों को दी जाती हैं।

स्व० पं० स्वामीदयालुजी तिवारी (ककुआजी)

कान्यकुब्ज-कॉलेज के संबंध में कुछ लिखते समय आदर्श दानी ककुआजी को भूल जाना बड़ी कृतघ्नता होगी। ककुआजी कठेरुआ (ज़िला कानपुर) के निवासी और रायसाहब

पं० शुकदेव तिवारी बी० ए०, रिटायर्ड इंस्पेक्टर के चाचा थे। इन्होंने अपनी सर्वस्व कमाई कान्यकुब्ज-कॉलेज को दान कर दी थी। ६,०००) की निधि जमा है, जिसके ब्याज से कान्यकुब्ज विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। एक कमरा और फ़ौवारा आपने अपने व्यय से बनवाया है। २-३ वर्ष से आप कॉलेज में हा निवास करते थे। कॉलेज का बच्चा-बच्चा आपसे परिचित था। आपका कॉलेज-प्रेम सराहनीय और अनुकरणीय था। कॉलेज में ही उनका स्वर्गवास हुआ है। मृत्यु के दिन ८०० विद्यार्थियों और अध्यापकों ने उनके शव को प्रयाग के लिये बिदा किया था। ककुआजी मरकर भी कान्यकुब्ज-कॉलेज में बनी हुई स्मृतियों द्वारा सदा अमर रहेंगे।

श्रीपं० बालकृष्णजी पांडेय
(वर्तमान प्रिंसिपल कान्यकुब्ज-कॉलेज)

उपसंहार

कान्यकुब्ज-कॉलेज की इस सर्वांगीण उन्नति का श्रेय कान्यकुब्ज-कॉलेज-कमेटी की कार्य-तत्परता, संगठन और बुद्धि-चातुर्य का है। कमेटी के अध्यक्ष रावराजा डॉक्टर श्यामबिहारीजी मिश्र उच्च कोटि के विद्वान्, हिंदी-साहित्य-रत्नाकर के एक उत्कृष्ट रत्न और राजनीति में अनुभवी व्यक्ति हैं। कमेटी के अन्य सदस्य भी विवेकशील, विद्वान् और दलबंदी के दलदल से परे हैं। कमेटी के मंत्री रायसाहब पं० जयनारायणजी मिश्र न्यायशील और निष्पक्षपात व्यक्ति हैं। आपके व्यक्तित्व से कॉलेज को विशेष लाभ हुआ है। कॉलेज के भूतपूर्व मंत्री पं० श्रीनारायणजी मिश्र अब भी कॉलेज की उन्नति में पूर्ववत प्रयत्नशील रहते हैं।

कमेटी की योग्यता के साथ-ही-साथ कॉलेज की उन्नति का मुख्य आधार प्रिंसिपल होता है, क्योंकि कॉलेज के संचालन का पूर्ण भार उसी के कंधों पर पड़ता है। हम निःसंकोच भाव से कह सकते हैं कि कॉलेज की उन्नति के जिस प्रवाह को कॉलेज के प्रथम प्रिंसिपल पं० श्रीनारायणजी चतुर्वेदी एम्० ए०, एल० टी० ने अपने भगीरथ प्रयत्न से, पं० गोकर्णनाथजी मिश्र और पं० श्रीनारायणजी मिश्र की सहायता से, प्रवाहित किया था, उसे हमारे

वर्तमान प्रिंसिपल पं० बालकृष्ण पांडेय एम्० ए० ने, वर्तमान कमेटी की सहायता से, अत्यंत प्रशस्त कर दिया है । आपके कार्य-काल में कॉलेज ने प्रत्येक दिशा में आशातीत और आश्चर्य-जनक उन्नति की है । विद्यार्थियों की संख्या, कॉलेज की इमारत, कॉलेज का फ़र्निचर, पुस्तकालय की पुस्तकें, बिजली का आना, इंटर क्लासों में पढ़ाई के विषयों की वृद्धि, परीक्षा-फल सर्वोत्तम होना आदि-आदि प्रत्येक दिशा की उन्नति आपके ही अध्यवसाय का फल है । आप अँगरेजी, हिंदी और संस्कृत के जैसे उद्भट विद्वान् हैं, उसी प्रकार सुंदर वक्ता और उत्कृष्ट अध्यापक भी ।

उपर्युक्त उन्नतियों के होते हुए भी कॉलेज-कमेटी और प्रिंसिपल साहब के सम्मुख अभी विस्तीर्ण कार्य-क्षेत्र पड़ा है। आशा है, अधिकारीगण विघ्न-बाधाओं का सामना करते हुए साहस और धैर्य के साथ उन्नति के पथ पर अग्रसर होते ही जायँगे, और कॉलेज को भारतीय संस्कृति के साँचे में ढालकर, एक आदर्श संस्था बनाकर कान्यकुब्ज-जाति की गौरव-पताका अवश्य फहरावेंगे । तथास्तु ।

ओषधियाँ ख़रीदने में

असल-नक़ल की परख करो

नक़ली मोती, असली मोती के रंग-रूप में तो दे सकते हैं, परंतु दवाई के रूप में सेवन नहीं किए जा सकते । नक़ली ओषधि प्रयोग में लाना अपने धन और स्वास्थ्य का नाश करना है ।

स्मरण रखिए

नक़ल, थोड़े-थोड़े गुण दिखाती हुई भी, किसी कठिन समय पर ऐसा धोखा देगी कि फिर पछताए कुछ न बनेगा । कविविनोद वैद्य-भूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा, वैद्य, संपादक 'देशोपकारक', लाहौर की बनाई हुई—

अमृतधारा

ही सैकड़ों रोगों के लिये रामबाण है । कुछ लोग इसकी बढ़ती बिक्री देखकर इसकी नक़लों से जनता को धोखा देने का प्रयत्न करते रहते हैं । जनता के स्वास्थ्य व माल की हानि न हो, इसलिये यह चेतावनी दी जाती है कि अब सदा पंडितजी का नाम आदि देखकर केवल अमृतधारा ही ख़रीदा करें । मूल्य बड़ी शीशी २।), अर्ध १।), नमूना ।) 'अमृत' पुस्तक मुफ़्त मँगवा लें ।

पत्र-व्यवहार तथा तार का पता—**अमृतधारा, १३ लाहौर ।**

खंडवा में एजेंट चौहान स्टोर्स, बंबई बाज़ार ।

विश्वासार्थ सच्ची प्रतिज्ञा

जो सज्जन ईश्वर-साक्षी-पूर्वक यह लिखेंगे कि आपकी औषधि ने कुछ भी गुण नहीं किया, उन्हें दूसरी औषधि विना मूल्य भेजेंगे।

सुंदरी-सुखजीवन

"सुंदरी-सुखजीवन" के नियम-पूर्वक सेवन करने से सब तरह के प्रदर, सोमरोग यानी सफ़ेद या सुर्ख़ी लिए हुए बदबूदार पानी का निकलते रहना, धोती पर हलका रंग-बिरंगा धब्बा आना, विना समय जल्दी-जल्दी माहवारी का-सा ढंग होना या ज़्यादा दिन तक जारी रहना, आलस्य, मंदाग्नि, शरीर निर्बल हो जाना, चक्कर आना, इन्हीं कारणों से गर्भ न ठहरना आदि स्त्री-रोग नाश होते हैं, और शरीर सुंदर बलवान् हो जाता है। ११ दिन की दवा का मूल्य १।), डाक-व्यय ।।)

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

स्वादिष्ठ आसव के रूप में तैयार की हुई

बालरक्षा घुटी

बालकों के ज्वर, अजीर्ण, दस्त, पेट के कीड़े, खाँसी, पसली उछटी, निर्बलता और दाँत निकलने के विकारों का नाश कर उन्हें पुष्ट बनाने के लिये ख़ूब प्रसिद्ध है। मूल्य फ़ी शीशी ।।), डाक-व्यय ।।), दर्जन का ४।।), रेल-महसूल माफ़। हज़ारों एजेंट बन चुके हैं, आप भी लाभ उठावें। एजेंसी के नियम और रंगीन सचित्र कैलेंडर मुफ़्त भेज रहे हैं।

कामकल्याण

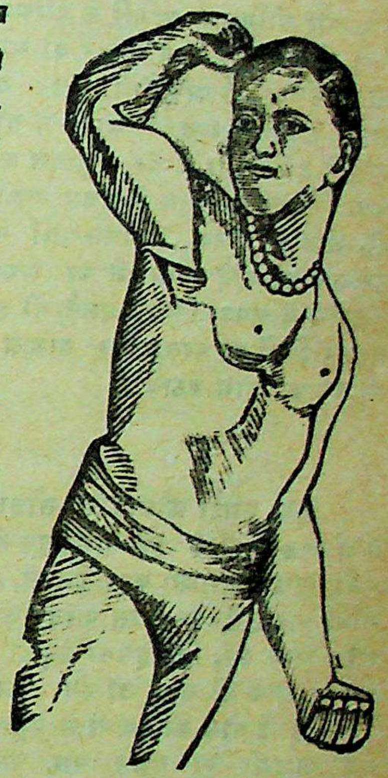

वैद्यकशास्त्र की विधि से शुद्ध शिलाजीत, सुवर्ण बंग, कस्तूरी, मोती-भस्म, असगंध, बिधारा, ब्राह्मी आदि बल-वर्द्धक औषधियों द्वारा बनाई हुई धातुपौष्टिक २६ वर्ष की अनुभूत औषधि है। इसके सेवन से २० प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्र-पतन, नपुंसकता, नसों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता, अंगों की शिथिलता और दिमाग़ी कमज़ोरी दूर होकर शुद्ध रक्त बनता है, शरीर पुष्ट होता है, और बल-वीर्य की वृद्धि होती है। २० दिन का बक्स मूल्य २), डाक-व्यय ।।)

अग्निकल्पद्रुम

इस चूर्ण के सेवन से अजीर्ण, अजीर्ण के दस्त, मंदाग्नि, संग्रहणी, पेचिश, हैज़ा, अम्लपित्त, क़ब्ज़ होना, अफरा, वायुगोला, पेट में छोटे-छोटे कृमि पड़ जाना, अरुचि आदि रोग नाश होकर दस्त साफ़ आता है, भूख बढ़ती है, और भोजन का शुद्ध रस बनकर बल बढ़ता है। मूल्य फ़ी शीशी ।-), डाक-ख़र्च ३ शीशी तक ।।)

पता—पंडित रामचंद्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्षक औषधालय नं० ३, अलीगढ़ सिटी

काया-पलट

बूढ़े ने तीन विवाह किए

नासमझी के कारण छःहो मात्राएँ एक साथ खा लेने से जब उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई, और योगिराज रत्नागिरि के परिश्रम-पूर्वक दवा इलाज करने पर भी उस बूढ़े को तीन विवाह करने पड़े, तथा जो दशा हुई, उसे लिखने को सभ्यता मना करती है, तो बड़े-बड़े रसिक रईस, राजा, नवाब बाबाजी से इस महान परोपकारी, महान योग को पूछने के लिये लालायित हुए। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदखाँ साहब ने तो बाबाजी की बहुत सेवा-सुश्रुषा करके इसे प्राप्त भी कर लिया। उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इस योग को प्रथम तथा दो अन्य योग लिखकर इन तीन से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा कर दी, जैसा कि अनेक समाचार-पत्रों से मालूम हुआ है। इसे आज १६ साल के लगभग बीता, और इस पुरस्कार को कोई प्राप्त न कर सका। फिर मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुण, चमत्कार देखकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठावें।

योग

शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। ठंडा होने पर दुबारा एक तोला हरताल वर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर शुद्ध १ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँच भस्म करें, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रवधू डाल दें, और नीचे आग जलावें। जब इंद्रवधू जलकर खाक हो जाय, तो हवा देकर रख दें। बस अपूर्व शक्ति-दाता महावाजीकरण तैयार है।

इसी योग की प्रशंसा में मथुरा के बा० हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, और दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता, और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड, शीघ्र गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के संपादक श्रीश्यामबिहारीलाल वैद्य-भूषण ने कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आए।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आयगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा, और ४० दिन में तो कैसा ही नपुंसक क्यों न हो, निर्बलता रुक नहीं सकती। इससे स्त्रियों का हर प्रकार का प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ़, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-सी उड़ती देखना, गले की खसखसाहट, बार-बार थूक गिरना, बवासीर, दमा तथा हर प्रकार की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नव-जीवन संचार करता है। भाइयो, विश्वास करो और इसे बनाकर अवश्य सेवन करो। ऊपर का योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें, तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-खर्च-सहित ५।) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूप-विलास कंपनी (रसायनशाला)

नं० ३, कंचौसी, इटावा

मैना

[श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' बी० ए०]

मेरे पास एक मैना है, जो कुछ दिन पहले किसी दूसरे की थी, किंतु अब मेरी है । इन थोड़े-से दिनों में ही वह मुझसे इतनी अधिक हिल गई है कि मैं उसे पिंजड़े में बंद करके नहीं रखता । एक छोटी-सी, चंचल बालिका की तरह वह घर-भर में फुदकती फिरती है । जब कभी मैं उसे 'मैना' कहकर पुकारता हूँ, वह उड़कर फ़ौरन् मेरी गोद में आ बैठती है, और एक अजीब अंदाज़ से, किसी मुग्धा नायिका की तरह, अपनी पतली गर्दन में बल देकर बोल उठती है—"किशोर !" उसे केवल यही एक शब्द बोलना आता है ; किंतु इस एक शब्द में ही वह अपने कंठ का सारा माधुर्य मिसरी की तरह घोल देती है । इसे सुनते ही मेरी आँखों के कोने किसी की याद में भीग जाते हैं, और मैं उसके मखमल-जैसे मुलायम परों पर घंटों बड़े प्यार से हाथ फेरता रहता हूँ । कभी उसे धीरे से चूम लेता हूँ, तो कभी उसकी छोटी-सी देह को अपनी दोनो मुट्ठियों में भरकर पागलों की तरह छाती से चिपका लेता हूँ । वह भी अपनी गर्दन के श्यामल बाल फुलाकर, आकाश के उर से लिपटी हुई संध्या की तरह, आत्मविस्मृत-सी चुपचाप पड़ी रहती है, और उसकी अधखुली, रक्तिम आँखों में संध्या की लालिमा के समान उसकी नन्ही-सी आत्मा का अनुराग जैसे छलकने लगता है । मेरी पत्नी अनेक बार उसे अपने हाथों से दाना खिलाने का प्रयत्न कर चुकी हैं, किंतु वह मेरे सिवा और किसी के हाथ का दाना नहीं खाती, न किसी के पुकारने पर बोलती है । किंतु अभी उन दिनों को बीते बहुत दिन नहीं हुए—केवल कुछ महीनों की ही बात है—जब इसकी देख-भाल करनेवाला कोई दूसरा ही व्यक्ति था । जब यह किसी के मक्खन-जैसे मुलायम हाथों का स्पर्श पाते ही आनंद से सिहर उठती थी, और किन्हीं परिचित ओठों का मधुर संबोधन सुनते ही अपनी वाणी में प्राणों का कंपन भरकर पुकार उठती थी—"किशोर !"

आज मेरे जीवन के दिन जितने वेदनामय हैं, लगभग दस वर्ष पहले वे उतने ही सुखमय थे । उन दिनों मेरे पिता झाँसी में सरकारी नौकर थे, तथा मेरी अवस्था कोई आठ-नौ वर्ष की रही होगी । हमारे घर से बिलकुल सटा हुआ एक छोटा-सा मकान था, जिसमें मेरी ही तरह एक छोटी-सी लड़की रहा करती थी । उसका नाम भी उसी तरह बिलकुल छोटा-सा था—केवल दो अक्षर का—मैना । उसका रंग साँवला अवश्य था, किंतु उसकी मैना-सी बोलती हुई बड़ी-बड़ी आँखें मुझे इतनी प्यारी लगती थीं कि मैं स्कूल का सब काम छोड़कर हमेशा उसी के साथ खेला करता था । वह उम्र में मुझसे कुछ छोटी अवश्य थी, किंतु स्वभाव की बड़ी चंचल थी । मैं उसे ज़रा-सा छेड़ देता, तो चट कुट्टी करके, मुँह फुलाकर घर के एक कोने में बैठ जाती, और सारे दिन मनाने पर भी न बोलती । किंतु दूसरे ही दिन, सबेरा होते ही, हम दोनो फिर इस प्रकार खेलने लगते, जैसे कल कुछ हुआ ही न था ।

मैना के पिता एक मिडिल-स्कूल में अध्यापक थे, और जाति के कायस्थ थे । उनकी पत्नी का देहांत हुए चार वर्ष हो गए थे, इसलिये मैना बहुत

छोटी अवस्था से ही मेरी माता के पास आने-जाने लगी थी। मेरी माता भी उसे मेरी ही तरह प्यार किया करती थीं। और, मुझे अच्छी तरह याद है कि मैना के कुछ बड़े होने पर उन्होंने अपने मुहल्ले की औरतों से कई बार कहा था—"अगर जाति का झगड़ा न होता, तो मैं अपने किशोर के साथ इसका विवाह करके घर की शोभा बढ़ाती।" किंतु उस समय मैं विवाह का अर्थ केवल अच्छे-अच्छे कपड़े पहनना और खूब पेट भरकर मिठाई खाना ही समझता था। कुछ ही दिन पहले मेरे पिता के एक मित्र ने मुझे जो बड़ा-सा रबड़ का गुड्डा दिया था, उसकी शादी मैंने बड़ी धूमधाम से मैना की गुड़िया के साथ की थी। और, मुझे ठीक याद है, शादी के दूसरे दिन ही हम दोनो में किसी बात पर झगड़ा हो गया था, और मैना बिगड़कर मेरे यहाँ से अपनी गुड़िया उठा ले गई थी।

इस घटना के कुछ ही वर्ष बाद एक दिन मैं स्कूल से लौटते समय सीधा मैना के घर जा पहुँचा। सर्दी के दिन थे। आँगन की धूप में चारपाई पर बैठी हुई मैना, दरवाज़े की ओर पीठ किए, एक बिल्ली के बच्चे के साथ खेल रही थी। मैं चुपके से दबे पाँवों उसकी पीठ के पीछे जाकर खड़ा हो गया, और उसके कान के साथ अपना मुँह सटाकर बड़े ज़ोर से 'कुई' करके चिल्ला पड़ा। वह एकदम चौंककर उठ खड़ी हुई, और मेरी ओर आँखें तरेरकर बोली—"आप बड़े शैतान हैं, मुझे डरा दिया; जाइए, हम आपसे नहीं बोलते!"

एकदम घबरा जाने के कारण उसकी साड़ी का अंचल खिसककर कंधे पर गिर गया था, और उसके सलोने मुख पर बदहवासी की हलकी गुलाबी दौड़ आई थी। मैंने उसे कुछ और छेड़ने की ग़रज़ से ज़रा मुँह बनाकर कहा—"अच्छी बात है; जाइए, हम भी आपसे नहीं बोलते!"

वह तनक उठी। मुँह फुलाकर बोली—"आप न बोलेंगे, तो हमारा क्या बिगड़ जायगा? मत बोलिए। आज ही बाबूजी कह रहे थे कि थोड़े दिन बाद हम यहाँ से बहुत दूर किसी दूसरे शहर में चले जायँगे, और अगले साल मेरी शादी होनेवाली है। जब मैं ससुराल चली जाऊँगी, तो तुम यहीं अकेले पड़े रहना!"

मेरे कलेजे के भीतर जैसे कुछ चोट-सी लगी। मैना को तंग करना भूलकर मैं बड़ी शीघ्रता से बोल उठा—"यह क्या कह रही हो मैना! तुम्हारी शादी होनेवाली है?"

"जी हाँ, अगले साल हमारी शादी होनेवाली है। देखते नहीं—ये मखमली काम की लाल साड़ी, ये कानों में पहने हुए जड़ाऊ झुमके, ये सोने की चूड़ियाँ—ये सब चीज़ें मेरी ससुराल से आई हैं। और, पिटारी भरके गहने और कपड़े भीतर कमरे में रक्खे हैं। मैं तुम्हें क्यों दिखाऊँ? जाइए, मत बोलिए हमसे!"

मैं कुछ रुआसा-सा होकर मैना के मुख की ओर देखता रहा। फिर न-जाने क्यों, बिना कुछ कहे ही, बड़ी शीघ्रता से घर की ओर लौट पड़ा। आँगन में खेलता हुआ बिल्ली का बच्चा मेरे पाँवों-तले कुचलते-कुचलते बच गया। द्वार की चौखट से इतने ज़ोर से ठोकर लगी कि पैर के अँगूठे में ख़ून निकल आया। घर पर श्यामू फ़ुटबॉल के मैच में चलने के लिये बड़ी देर से इंतज़ार कर रहा था, उसे पैर का घायल अँगूठा दिखाकर बड़ी कठिनाई से पिंड छुड़ाया। माता नाश्ते की तश्तरी लिए बुलाती ही रहीं, किंतु मैं पेट के दर्द का बहाना करके सीधा अपने सोने के कमरे में जा पहुँचा। बग़ाल की किताबें मेज़ पर फेक दीं, और तकिए में मुँह छिपाकर चारपाई पर पड़ रहा। रात को भोजन के दो कौर खा लेने के लिये मेरी ख़ुशामद की गई, पुचकारा गया, डाँट

बताई गई, किंतु मैं अपनी चारपाई पर से हिला तक नहीं। सारी रात बड़ी बेचैनी से करवटें बदलते हुए काटी।

दूसरे दिन सबेरा होते ही जब मैं हाथ-मुँह धोकर स्कूल जाने के लिये घर से बाहर निकला, तो मैना अपने मक़ान के दरवाज़े पर खड़ी हुई थी। जब मैं उसके पास से होकर आगे निकलने लगा, तो वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गई, और मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोली—"कल तुम नाराज़ हो गए किशोर!"

मैंने उसकी ओर देखे विना ही, नीची गर्दन किए हुए, कुछ रुखाई से उत्तर दिया—"हाँ, नाराज़ हो गया।"

"तो मुझे माफ़ कर दो। मेरी बातों से तुम्हारे दिल को बहुत सदमा पहुँचा होगा।"

मैंने धीरे से अपनी गर्दन ऊपर उठाई। देखा, मैना की बड़ी-बड़ी आँखें, रात-भर जगने के कारण, लाल हो रही थीं, और उनमें आँसू छलछला आए थे, जैसे किसी ने बड़ी निर्दयता से दो सीपियों के दिल चीरकर कुछ गोल-गोल मोती बाहर ढुलका दिए हों।

मेरे हृदय का भार जैसे कुछ हलका-सा हो गया। रुँधे हुए कंठ से बोला—"छिः! तुम रो रही हो मैना! क्या मैं कभी तुमसे नाराज़ हो सकता हूँ? आज स्कूल से लौटते समय सीधा तुम्हारे पास आऊँगा। अपनी ससुराल से आए हुए कपड़े और गहने दिखाओगी न?"

"नहीं, मैं अब तुम्हें वे चीज़ें नहीं दिखाऊँगी। मैंने उन्हें बक्स में बंद करके भीतर रख दिया है। उन्हें देखकर अब मुझे रुलाई आती है। अपनी ससुराल में मैं तुम्हारे विना कैसे रह सकूँगी? किशोर! वहाँ मेरे साथ खेलेगा कौन? क्या तुम मेरे साथ नहीं चलोगे?"

आज मैना का वह भोलाभाला प्रश्न याद करके मुझे कुछ वेदना-मिश्रित हँसी आती है। किंतु उस दिन मुझे कितनी ख़ुशी हुई थी, जब मैं दौड़ता हुआ अपनी माता के पास जा पहुँचा था, और उन्होंने हँसते हुए कहा था—"हाँ-हाँ, तुम मैना की ससुराल क्यों नहीं जा सकते। वहाँ तो तुम्हारी बड़ी ख़ातिर होगी।"

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद मैं अपनी माता के साथ छोटे मामू की शादी में कानपुर चला आया। जब पूरे डेढ़ महीने अपनी ननिहाल में रहकर घर लौटा, तो मालूम हुआ कि मैना के पिता को इलाहाबाद में कोई अच्छी नौकरी मिल गई है, और वह अपना मक़ान छोड़कर वहीं चले गए हैं। उस समय मेरे छोटे-से दिल पर क्या बीती थी, मैं नहीं बता सकता। मुझे ऐसा मालूम होता था, जैसे मेरी सबसे प्यारी चीज़ कोई हमेशा के लिये छीन ले गया हो। कई महीने तक मेरा जी न खेलने में लगता था, न पढ़ने में। सब दिन यार-दोस्तों के साथ आवारागर्दी में बीतते थे, और रात के अँधेरे में जैसे घर की दीवारें गला घोटकर मार डालना चाहती थीं। किंतु धीरे-धीरे, ज्यों-ज्यों मेरी आयु बढ़ती गई, मैना का वियोग कम होता गया। फिर भी उसकी याद कभी न मिटनेवाली, मीठी-मीठी टीस की तरह हमेशा बनी रहती।

जैसे-तैसे मैंने तीन वर्ष बाद इंट्रेंस की परीक्षा पास कर ली। मेरे पिताजी की आज्ञा हुई कि मैं इलाहाबाद जाकर एफ़० ए० पढ़ूँ, किंतु मेरे घर से रवाना होते समय मुझे मैना से मिलने की जितनी ख़ुशी हुई थी, इलाहाबाद पहुँचकर मुझे उतना ही दुःख हुआ। बहुत खोज-ढूँढ़ करने पर मुझे पता चला कि पिछली गर्मियों में मैना के पिता हैज़े से पीड़ित होकर चल बसे, और उन्होंने यहाँ आने के सात-आठ महीने बाद ही लखनऊ के किसी कायस्थ से मैना का विवाह कर दिया था। वह

आजकल कहाँ है, और कैसी है, यह मुझे कोई न बता सका। किंतु मैंने जैसे भी हो, मैना से एक बार मिलने का दृढ़ निश्चय कर लिया था, और इसी भावना से प्रेरित होकर मैं दशहरे की छुट्टियों में अपने चचेरे भाई के यहाँ लखनऊ जा पहुँचा।

भाभी मुझे देखकर बड़ी प्रसन्न हुईं। उनसे मालूम हुआ कि भाई साहब कल ही अपने साहब के साथ कहीं दौरे पर चले गए हैं, और इस समय वह घर में बिलकुल अकेली हैं। कुछ इधर-उधर की बातें करने के बाद जब मैं अपनी अटैची से कपड़े निकालकर नहाने के लिये ग़ुसलखाने की ओर बढ़ रहा था, तो पासवाले मकान की खिड़की से झाँककर किसी ने पूछा—"जीजी, तेरे कौन आए हैं री ?" भाभी ने हँसते हुए कहा—"तेरे वे।" मुझे आवाज़ कुछ पहचानी हुई-सी जान पड़ी। मैंने ठिठककर ज्यों ही पीछे की ओर गर्दन घुमाई, किसी युवती का चाँद-सा मुखड़ा बिजली की तरह चमककर छिप गया। मुझसे अधिक देर तक चुप न रहा गया। मैंने अपनी उत्सुकता को दबाते हुए पूछा—"भाभी, ये कौन थीं ?" भाभी इस बार बड़े ज़ोर से हँस पड़ीं। बोलीं—"तेरी वो।" मैं कुछ झेंप-सा गया, तथा कोई और प्रश्न किए विना ही चुपचाप ग़ुसलख़ाने में घुस गया। उस दिन मुझे भाभी से इस विषय में कुछ और पूछने की हिम्मत न पड़ी।

दूसरे दिन सबेरे चार बजे ही सहसा मेरी आँख खुल गई। हम दोनो बाहर छत पर ही सो रहे थे। मैंने साफ़-साफ़ सुना, पास ही के मकान में कोई स्त्री बड़ी ही दर्द-भरी आवाज़ में धीरे-धीरे गुनगुना रही थी—

"हे री, मैं तो प्रेम-दिवानी,
मेरो दरद न जाने कोय।"

इस गीत के एक-एक शब्द में जैसे गानेवाले की आत्मा सिसक रही थी। मैं बड़ी देर तक पलँग पर पड़ा-पड़ा सुनता रहा—पत्थर की मूर्ति की तरह तन्मय होकर। लगभग पंद्रह मिनट बाद जब गाना बंद हुआ, तो मैं कुछ चौंक-सा पड़ा, जैसे किसी ने मेरे कलेजे का गहराई में पैठकर मुझे बहुत ज़ोर से झकझोर दिया हो। मैंने भाभी की ओर दृष्टि घुमाई, शायद वह भी मेरी ही तरह जगी हुई गाना सुन रही थीं, और अब उसके बंद हो जाने पर बेचैनी से करवटें बदल रही थीं। थोड़ी देर बाद उन्होंने बड़े ग़ौर से मेरी ओर देखकर कहा—"अरे, तुम भी जग गए, किशोर ! यह वही लड़की है, जिसने तुम पर कल जादू कर दिया था। रोज़ सबेरे चार बजे यह हमेशा यही गीत गुनगुनाया करती है। कैसी प्यारी आवाज़ है, जैसे अमराई के झुरमुट में छिपी हुई कोकिल वसंत के आने पर कूक उठती हो !"

"हाँ, बड़ा अच्छा गाती है, भाभी ! पर ……यह है कौन ?"

"यह बड़ी अभागिन है, भैया ! लोग इसके विषय में तरह-तरह की बातें करते हैं, किंतु मुझे इस दुःखिनी पर हमेशा बड़ी दया आया करती है। अभी साल-भर के भीतर ही इसके पिता और पति दोनो की मृत्यु हो गई। अब इस संसार में शायद इसका कोई नहीं। फिर भी यह हमेशा बड़ी प्रसन्न रहा करती है, सुहागिनों की तरह माँग में सिंदूर भरती है, और ख़ूब अच्छे-अच्छे कपड़े पहनती है। यही कारण है कि इसकी इस मुहल्ले-भर में मेरे सिवा और किसी से नहीं पटती। इसने एक छोटी-सी मैना पाल रक्खी है, दिन-रात उसी के साथ माथापच्ची किया करती है, किंतु अभी तक उसे केवल एक छोटा-सा नाम बोलना ही सिखा पाई है। जानते हो, वह किसका नाम है ?"

मैं उस समय भाभी के उस प्रश्न का कोई उत्तर न दे सका। मेरे दिल को भीतर-ही-भीतर जैसे कोई चाक़ू से कुरेद रहा था। मैं चुपचाप उठ खड़ा हुआ, और हाथ-मुँह धोने के लिये नीचे

उतर आया। बहुत प्रयत्न करने पर भी दिन-भर मेरा किसी काम में मन न लगा। भाभी मुझे उदास देखकर कभी ग्रामोफ़ोन बजाने लगतीं, तो कभी कैरम लेकर बैठ जातीं। किंतु मैं उसी प्रकार मुँह लटकाए अनमना-सा बैठा रहता। कई बार बड़ी उत्कट इच्छा हुई कि भाभी से उस लड़की का नाम तो पूछ लूँ, किंतु हर बार किसी अज्ञात भय की आशंका से पूछने का साहस न होता।

उसी दिन शाम को भाभी अपनी किसी सहेली के यहाँ मिलने चली गईं। मैं मन मारे आँगन में बिछे हुए तख्त पर पड़ा हुआ था। सहसा किसी की चूड़ियों की झीनी झनक सुनाई दी, और आँगन का भिड़ा हुआ द्वार धीरे-से खोलकर कोई भीतर घुस आया। मैं एकदम उठ खड़ा हुआ। धड़कते हुए दिल से देखा, मैना मेरे सामने खड़ी थी। हम दोनो कुछ देर तक चुपचाप खड़े हुए एक दूसरे को देखते रहे। मना अब काफ़ी लंबी हो गई थी, चेहरे का रंग पहले से निखर आया था, और उसकी वे बड़ा-बड़ी आँखें अब बहुत रसीली हो गई थीं, जैसे शराब की दो छलकती हुई प्यालियाँ हों।

थोड़ी देर बाद मैना धीरे से मुस्किराकर बोली—"अरे, तुम इतने बड़े हो गए, किशोर!"

मैंने बड़ी कठिनाई से अपने कलेजे में उमड़ते हुए दर्द को दबाते हुए कहा--"हाँ, इतना बड़ा हो गया।"

वह मेरे पास आकर खड़ी हो गई, और मेरा हाथ पकड़कर बोली—"यह क्या? तुम पहले की तरह फिर नाराज़ होने लगे! आज तो मैंने तुम्हें कुछ कहा भी नहीं। आओ, क्या मेरे घर न चलोगे? वहाँ मैंने एक छोटी-सी मैना पाल रक्खी है। वह तुम्हारा नाम बोलती है, बिलकुल मेरी ही तरह।"

"इस समय भाभी बाहर गई हुई हैं मैना! यहाँ मेरे सिवा और कोई नहीं है। इस वक़्त घर अकेला छोड़कर तुम्हारे साथ चलना ठीक नहीं। मैं फिर कभी आऊँगा।"

"जी नहीं, मैं आपकी बातों में नहीं आ सकती। मैं ख़ूब जानती हूँ कि आप मेरे साथ न चलने का बहाना कर रहे हैं, मगर आज आपको मेरे घर चलना ही पड़ेगा।"

यह कहकर मैना मेरा हाथ पकड़े हुए मुझे घसीटती हुई अपने घर की ओर ले चली। मेरे सौभाग्य से बाहर गली में उस समय कोई न था। अगर मुझे कोई उस दशा में देख लेता, तो कह नहीं सकता, उस समय शरम के मारे किसी के सामने मेरी गर्दन, उठ सकती अथवा नहीं। अपने जीवन में यदि मैं मैना से थोड़ी देर के लिये कभी सचमुच नाराज़ हुआ था, तो इस समय।

मैना ने अपने घर के आँगन में पहुँचकर मेरा हाथ छोड़ दिया, और एक कोने में लोहे की कुर्सी पर धरे हुए पिंजड़े की ओर देखकर बोली—"मैना, देख, यह कौन आए हैं? क्या तू इन्हें पहचानती है?"

पिंजड़े के झूले पर झूलती हुई मैना ने अपनी गर्दन मटकाकर जैसे कुछ क्षणों के लिये मेरी ओर देखा, और फिर बड़ी मीठी आवाज़ में बोल उठी—"किशोर!"

मेरी झल्लाहट अभी मिटी नहीं थी। मैं मैना के सामने जाकर खड़ा हो गया, और कुछ कड़ी आवाज़ में बोला—"क्या पागल हो गई हो, मैना? अब तुम लड़की नहीं हो। क्या तुम्हें किसी का डर नहीं लगता? क्या तुम नहीं जानतीं कि विधवाओं के लिये हिंदू-समाज के नियम कितने कड़े हैं?"

मैना का गुलाब-सा खिला हुआ चेहरा सहसा गंभीर हो गया। कुछ देर तक ठहरकर, मेरे पैरों की ओर देखती हुई, वह धीरे-धीरे कहने लगी—

'हाँ, मैं पागल हो गई हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं अब लड़की नहीं हूँ। फिर भी मैं किसी से डरती नहीं। मगर तुम मुझे विधवा क्यों कह रहे हो, किशोर! देखते नहीं, मेरी माँग में सिंदूर भरा हुआ है!" इतना कहते-कहते मैना का गला रुँध गया। वह मेरे सामने खड़ी न रह सकी। आँगन में बिछी हुई चारपाई के एक कोने पर धम् से बैठ गई।

मैं कुछ देर तक किंकर्तव्य-विमूढ़-सा ज्यों-का-त्यों खड़ा रहा। फिर पास ही रक्खी हुई कुर्सी पर धीरे से बैठ गया। दिल में जैसे किसी ने चुटकी भरकर कहा—"आज तू मैना के साथ अन्याय कर रहा है।"

न-जाने कितनी देर तक हम दोनो चुपचाप उसी प्रकार बैठे रहे। फिर मैना धीरे से अपनी जगह से उठी, और अंचल के छोर से आँखें पोंछती हुई मेरे पास आकर बोली—"मेरी एक बात मानोगे, किशोर!"

"हाँ, मानूँगा।" मैंने रुँधे हुए कंठ से उत्तर दिया, और मेरी आँखों से दो बूँद आँसू ढलक पड़े।

"मेरे देवता! मैं तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपना जीवन सफल न बना सकी; किंतु तुम मुझ अभागिनी के लिये अपना जीवन क्यों नष्ट कर रहे हो? मैं और सब कुछ सह सकती हूँ, किंतु तुम्हें दुखी नहीं देख सकती। मेरी तुमसे यह आखिरी आरज़ू है, यह आखिरी तमन्ना है, तुम अपना विवाह कर लो। मुझे अब इसी में सुख है, मैं और कुछ नहीं चाहती।"

मुझे ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कलेजे पर सैकड़ों छुरियाँ चल रही हों। फिर भी मैंने अपने प्राणों की बिखरी हुई शक्ति बटोरकर भर्राई हुई, आवाज़ में कहा—"अच्छी बात है, मैना! अगर तुम्हारी खुशी इसी में है, तो मैं अपने सब अरमानों का ख़ून करके भी तुम्हें सुखी बनाने की चेष्टा करूँगा।"

मैना के भाग्य में शायद यह थोड़ा-सा सुख भी न बदा था।

दूसरे ही दिन मैं भाभी के बहुत रोकने पर भी मैना से बिदा लेकर इलाहाबाद चला आया। मेरे होस्टल के कमरे में माताजी की दो चिट्ठियाँ पड़ी हुई थीं। दोनो में इलाहाबाद के एक संपन्न, सजातीय कुल की लड़की को किसी तरह देखकर पसंद कर लेने की बात लिखी थी। मैंने लड़की को विना देखे ही माताजी को उत्तर लिख भेजा—"बहुत अच्छी है, मुझे पसंद है।" और, दूसरे ही सप्ताह में वहाँ मेरी शादी पक्की हो गई।

उसी साल बड़े दिनों की छुट्टियों में जब मैं घर जाने के लिये सामान बाँध रहा था, तो मेरी लखनऊवाली भाभी का एक पत्र मिला। मेरी शादी की मुबारकबादी देने के बाद उन्होंने लिखा था—"मैना को एक हफ़्ते से डबल निमोनिया हो गया है! बेचारी बहुत कमज़ोर हो गई है, बचने की उम्मीद कम है।" मैं पागलों की तरह टाँगे पर बैठकर स्टेशन की ओर उड़ चला, और लखनऊ जानेवाली पहली गाड़ी पकड़कर शाम को दिया-बत्ती के समय ही मैना के घर जा पहुँचा। ……किंतु घर के भीतर पाँव रखते ही मेरे प्राण रो पड़े। घर के आँगन में बैठी हुई पड़ोस की कुछ स्त्रियाँ धीरे-धीरे कानाफूसी कर रही थीं। मैं समझ गया, मैना की आत्मा इस देह के नश्वर पिंजड़े को छोड़कर मेरे पहुँचने के पहले ही उड़ चुकी थी। उसका कमरा ख़ाली पड़ा था, और उसकी पालतू मैना चारो ओर के बढ़ते हुए अंधकार से भयभीत होकर अपने पिंजड़े में बड़ी व्याकुलता से फड़फड़ा रही थी, और बार-बार मेरा नाम लेकर जैसे चीख़ उठती थी—"किशोर! किशोर!"

आज इस घटना को बीते सात महीने हो चुके हैं। मैंने उस मैना को बड़े प्यार से अपने घर में पाल लिया है। इसी बीच में मेरा विवाह भी हो गया है। किंतु अब भी जब यह पालतू मैना मेरी गोद में आकर बैठ जाती है, और मैं उसकी छोटी-सी देह को अपनी दोनो मुट्ठियों में भरकर पागलों की तरह छाती से चिपका लेता हूँ, तो मुझे ऐसा ज्ञात होने लगता है, मानो उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से मेरी मैना की आत्मा झाँककर बड़े प्यार से कह रही है—"किशोर!" *

---

* प्रयाग-विश्वविद्यालय के १९३५ के वार्षिक गल्प-सम्मेलन में प्रथम पुरस्कार-प्राप्त कहानी।

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये
एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद! याने
सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—'गोनोकिलर'

GONO REGD ORIGINAL TRADE MARK KILLER

[रजिस्टर्ड]

नक़ली से सावधान!
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा और इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में फ़िज़ूल पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, बिट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४
लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

वंदना

[श्रीयुत 'प्रणयेश' शुक्ल]

(१)

कैधौं अंधकार पै प्रकास-पुंज छायो मंजु,
कैधौं बिलसति आभा निसि मैं मयंक की;
माया के संघन, स्याम अंचल मैं राजति है
मूरति मनोग्य कैधौं ब्रह्म अकलंक की।
'प्रनयेस' कैधौं सुबरन मुकतावलि लै
डोलत बिबेक अगवानी करि अंक की।
कैधौं हंस-बाहन उड़्यो है गगनांगन लौं,
जापै है सवार 'रस-रानी' राव-रंक की।

(२)

कंदुक उछार्यो कै उछार्यो मंजु मोदक को,
कैधौं लघु मानि बिस्व नभ लौं उड़ायो है;
खेल-खेल ही मैं बगरायो सृष्टि कौतुक यों,
कछु मुख मेलि आप, आप मैं मिलायो है।
'प्रनयेस' ऐसो समरथ सखा संगी पाइ
गोपद-सो काब्य-सिंधु ठीकु ठहरायो है;
मंगल-बिधायक बिनायक की बानि जानि
कबि को मनोरथ मनो-रथ पै आयो है!

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।॥-)
२५ ,, ,, ,, ५=) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

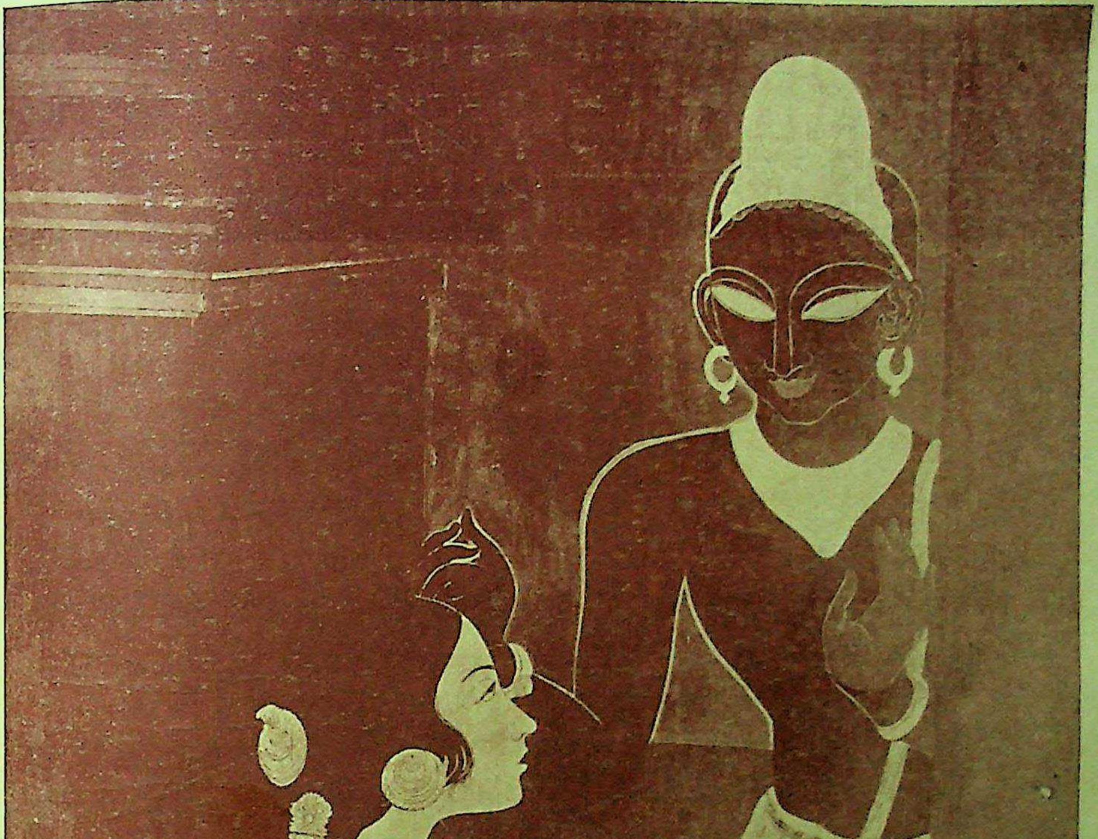

सुंदर

(लकड़ी के ऊपर लाख से बनाई गई तसवीर)

[भारत के सुप्रसिद्ध चित्रकार श्रीअसितकुमारजी हाल्दार की कृति]

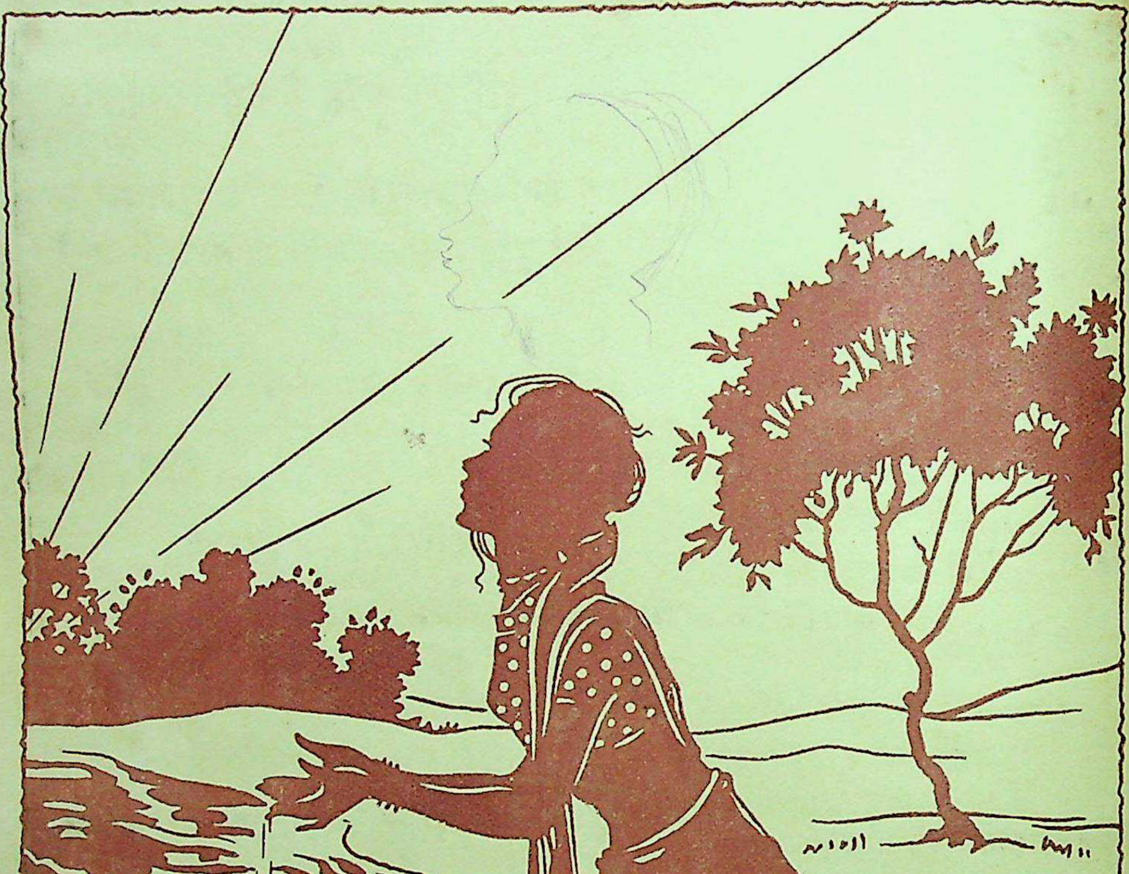

प्रथम किरणें

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

LECIVIN
RECUPERATIVE
TONIC

लेसीवीन

एक अत्यंत गुणकारी, उत्तेजक, पुष्टिकारक और खोई हुई शक्ति को पुनः वापस लानेवाली

टॉनिक

इसमें जौ, लेसीथीन और चिरायता के सत्त और विटामिन प्राप्य हैं।

बंगाल केमिकल—कलकत्ता

कामदेव वटी

इससे हर तरह की कमज़ोरी, सुस्ती, नामर्दी, समस्त धातु-विकार दूर होकर अटूट बल तथा स्तंभन होता है; और हस्तमैथुन आदि से हुई शिकायतें शर्तिया दूर होती हैं। मू० १), स्पेशल तिला-हस्तमैथुन आदि से पैदा हुई नसों की कमज़ोरी की रामबाण दवा, मूल्य २), डाक-ख़र्च जुदा, विवरण मुफ़्त। चमत्कार पुस्तक मुफ़्त मँगाइए।

निश्चय पुत्र ही होगा

शंकर-स्टैमबौंड पिल—यह गर्भाधान में दी जाती है। सौ फ़ीसदी लड़का ही होता है, बशर्ते कि गर्भ दो मास से ज़्यादा न हो। मू० ५), डाक-ख़र्च जुदा।

शंकर-रिसर्च (वर्थ-कंट्रोल)

इसके केवल एक ही दफ़ा खाने से सदा को या इच्छित समय तक गर्भ नहीं रहेगा। मूल्य २), डाक-ख़र्च जुदा।

पता—डॉक्टर हरिशंकर शर्मा एम्० बी० एच्० (s) कचौसी, यू० पी०

करवाई। यह आलोचना कुछ अंश तक पहले आलोचक—ने) नौसिखे लेखकों की तरह केवल

लूटिए !
कैसा ?

✻ पुरस्कार ✻
१०००) रुपए
किस प्रकार मिलेगा ?

लूटिए !!
कितना ?

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्० आदि द्वारा प्रणीत पुस्तकों की मदद से।

सैकड़ों तरह के सुगंधित साबुन बनाने की पुस्तक	१)	१२६ क़िस्म की रोशनाई बनाने की पुस्तक	।।)
रंग की पुस्तक	१)	वार्निश और पेंट	१)
सुगंधित तेल की पुस्तक	१)	विद्युत्-शास्त्र (Electricity)	।।)
सरल रसायन (Chemistry)	१) } साथ लेने	आरोग्य-विद्या द्वितीय भाग (छपनेवाला है)	
हिंदी-केमिस्ट्री	१) } से १।।) में	अयोध्या-गाइड	-)॥
आरोग्य-विद्या (Hygiene)	।।)	तंतु-कला (सूत का हुनर) और साड़ी चढ़ाने की पुस्तक	१)
रिसाला साबुनसाज़ी (उर्दू-संस्करण)	।।)	अनुवाद-कला (Sanskrit Teacher)	१)
इत्र की पुस्तक	१)	हस्त-रेखा	=)
देशी जड़ी-बूटी और उनके गुण (छप रही है)		चुंबकत्व और फ़ोटोग्राफ़ी (छपनेवाली है)	
तद्धित-प्रयोग-सूची	=)		

फ़रवरी तक आधे मूल्य में

पता—प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए० (इलाहाबाद), एम्० एस्-सी० टेक० (विक्टोरिया, इँगलैंड), एफ़्० सी० ए० (लंदन), एस्० एम्० एस्० टी० (मैनचेस्टर) इत्यादि (मेडलिस्ट सिटी ऐंड गिल्ड्स ऑफ् लंदन इंस्टिच्यूट), विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, शकरकंद की गली, बनारस सिटी

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र

जगत्-विख्यात

Registered "कॉनटैक्स" रजिस्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करके और अधिक संतान उत्पन करके अपने स्वास्थ्य और सुंदरता को मिट्टी में मिलाना और अकाल-मृत्यु के मुख में जाना नहीं चाहतीं, तथा दासों और अनाथों की संख्या बढ़ाना महापाप समझती हैं, वे कॉनटैक्स के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १।।), डाक-ख़र्च ।=)

आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

प्रथम किरण

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

'तक्षशिला' की आलोचना

[अध्यापक चेतरामजी शर्मा]

अपने एक मद्रासी विद्यार्थी (मदुरा-निवासी चि० कृपाकरण) को सन् १९३६ ई० की भूषण-परीक्षा के लिये हमें 'तक्षशिला' काव्य पढ़ाना पड़ा। कृपाकरण हमसे संगीत भी सीखते थे। एक दिन वह हमसे 'प्रभो, तव लीला कौन बखाने।' ('तक्षशिला' का एक पद — २०२ पृष्ठ देखिए) भैरवी में सीखने लगे। पुस्तक में इस पद को 'राग भैरवी, तीन ताल' लिखा है। हमने इसे भैरवी में तो रख दिया, पर इसे तीन ताल में न रख सके। विचारने पर ज्ञात हुआ कि छंद अथवा पद-रचना के विचार से उक्त पद्य या पद शुद्ध नहीं है। उल्लिखित स्थायी की १७ मात्राएँ हैं, और अंतरों की अट्ठाईस-अट्ठाईस। अंतिम चरण को छोड़कर अन्य सबमें १६-१२ पर यति है। 'चक्रवर्ति सुत निर्वासित अंधा यह क्योंकर जाने' ('तक्षशिला' में यह चरण दो पंक्तियों में लिखा हुआ है।) इसमें यतिभंग-दोष भी है। 'अंधा' के 'अं' और 'धा' को छिन्न-भिन्न कर दें, तो अर्थ भी छिन्न-भिन्न हो जाता है, और यदि सारा ही 'अंधा' निर्वासित के साथ रक्खें, तो १६ के बदले १८ मात्राओं से यतिभंग-दोष आ कूदता है। पढ़ाते-पढ़ाते हमें 'तक्षशिला काव्य' के सैकड़ों दूषित छंद खटके। दो-चार मित्र-अध्यापकों और कुंजी लिखने-वाले सज्जनों ने भी हमें तक्षशिला काव्य की सर्वांगीण स्वच्छंदता और निरंकुशता की निंदा सुनाई। तब विद्यार्थियों के हित से प्रेरित होकर हमने 'तक्षशिला काव्य की आलोचना' प्रकाशित करवाई। यह आलोचना कुछ अंश तक पहले 'खरी बात' में प्रकाशित हुई, पश्चात्, सन् १९३७ में, 'दैनिक शक्ति' में। सारी आलोचना 'खरी बात' में ही क्यों न प्रकाशित हुई ? इसका उत्तर भी रहस्य-पूर्ण है ; पर यहाँ उसके उल्लेख की न आवश्यकता है, न उसके लिये स्थान। पाठक, हमारी लिखी सारी आलोचना पढ़ जाइए, आप उसमें 'तक्षशिला काव्य' की ही आलोचना पाएँगे। भट्टजी की—उनकी वैयक्तिकता या उनके आत्म-चरित की नहीं। हमने काव्य की आलोचना की है, कवि की नहीं। सार्वजनीन वस्तु होने से काव्य की आलोचना करने का हमें वादिसम्मत अधिकार है। भट्टजी को सार्वजनीन वस्तु नहीं मान सकते, अतएव उनकी आलोचना भी नहीं की। पर भट्टजी को देखिए, रविवार २३ चैत्र के 'विश्वबंधु' में आपने हमारी लिखी आलोचना पर अपने विचार 'वि० ब०' के प्रतिनिधि से प्रकाशित किए हैं। आलोचना की कुछ भी आलोचना न कर भट्टजी ने हमारी ही आलोचना कर डाली है। भट्टजी ने हम पर अनेक लांछन लगाए हैं। चमत्कार यह कि अपनी किसी स्थापना के लिये हम पर लगाए किसी लांछन का भट्टजी किसी प्रकार का कोई प्रमाण न दे सके। अपनी लिखी आलोचना में हमने कोई बात प्रमाण-रहित नहीं दी। युक्ति-प्रमाण-हीन आक्षेपों का उत्तर देना यद्यपि अधिक आवश्यक नहीं, तथापि सत्य की रक्षा और अपने कथन एवं लिखित आलोचना की प्रामाणिकता के अनुरोध से हम नीचे भट्टजी के प्रत्येक आक्षेप का युक्ति-प्रमाण-पूर्वक उत्तर देते हैं।

भट्टजी का पहला आक्षेप है—"उन्होंने (हम—आलोचक—ने) नौसिखे लेखकों की तरह केवल

लिखास उतारने के लिये उसे लिखा है।" हमें अतिशय खेद है कि 'विश्वबंधु' की इस भेंट और प्रश्नोत्तर का ज्ञान हमें उन्हीं दिनों, विगत चैत्र, में न हुआ। अब हुआ, जब अनेक विद्वान्, साहित्यानुरागी सज्जन ग्रीष्मावकाश के कारण लाहौर छोड़ चुके हैं। रसिक दर्शकों के सामने अपना समालोचना-लेखाभिनय प्रदर्शन करने में हमें अतिशय उल्लास और उत्साह होता है।

हमने पहले भी कहा, और अब भी हम अपनी अंतरात्मा को साक्षी कर कहते हैं कि भट्टजी से हमारा कोई वैयक्तिक द्वेष नहीं। वह हमारे प्रतिद्वंद्वी नहीं, हम उनके सपत्न नहीं, हमें उनसे कोई ईर्ष्या नहीं। उनके तक्षशिला काव्य के साथ पुरस्कार-प्राप्ति में सपत्नत्व रखनेवाला हमारा कोई ग्रंथ नहीं था। हमारी लिखी आलोचना से बहुत पहले वह पुरस्कार प्राप्त कर चुके थे। भाषा और साहित्य के नाते ही हमने आलोचना की है, किसी कुत्सित विकार-वश नहीं। उनका नाम हमने सर्वत्र आदर-पूर्वक लिया है। (हमारी लिखी आलोचना के प्रारंभ में देखिए 'श्रीपं० उदयशंकर भट्ट।') हमारी हिंदी दूषित रचना से लादी जाय, यह हमें स्वीकार नहीं, सह्य नहीं। पंजाब से प्रकाशित अनेक हिंदी-ग्रंथ आलोच्य हैं, पर समयाभाव से अब तक हम दो-चार की ही आलोचना कर पाए हैं। भट्टजी हिंदी की सेवा करते हैं, इसलिये, हमें कोसने पर भी, हम उन्हें अपना समझते हैं। कल यदि वह कोई अच्छा ग्रंथ प्रकाशित करें, तो हम मुक्त कंठ से उनकी रचना का गुण-गान करेंगे। "शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि।" भाषा-साहित्य के संबंध में हम धाँधली, लीपा-पोती और लिहाज़-विचार के पक्षपाती नहीं। हमें अपनी लिखी आलोचना की सत्यता पर दृढ़ विश्वास है। उसे हमने अपने हृदय के रक्त से पुष्ट किया है। वह कोरा मनोरंजन नहीं, वाग्देवी की पूजा है। पूजा हम कुत्सित भावना से नहीं करते। ऐसा करना हमारी प्रकृति और प्रवृत्ति के प्रतिकूल है। भट्टजी ने हम पर जो दोष लगाए हैं, उनके निराकरण के लिये हमें विवश होकर आत्मचर्चा करनी पड़ी है। पर यह केवल सत्य की रक्षा के लिये है, आत्मश्लाघा के लिये नहीं। इस पर भी हम पाठकों से क्षमा-प्रार्थना करते हैं।

विगत पचीस वर्षों से हम पंजाब में निरंतर हिंदी की पूजा और सेवा कर रहे हैं। अध्यापन, पत्र-संपादन, भाषण, लेखन और आलोचन हमारी हिंदी-पूजा के उपकरण हैं। भट्टजी जब विद्यार्थी ही थे, तब हम गुजराँवाला-गुरुकुल में अध्यापक थे, और 'श्रीवेंकटेश्वर-समाचार' आदि में हिंदी के पक्ष में लेख लिखा करते थे। गुरुकुल के एक हस्त-लिखित पत्र का संपादन करते थे। लाहौर के 'पंजाब-प्रिंटिंग-वर्क्स' से साप्ताहिक 'प्रभात' और मासिक 'चाँद' नाम के दो पत्र प्रकाशित होते थे। दोनो का संपादन हम तीन-चार वर्ष तक करते रहे। यह सन् १९१४ से पहले की बात है। इस दशा में आपका हमें 'नौसिखे लेखक' कहना युक्ति-संगत नहीं। आप चाहें, तो 'अयोग्य लेखक' कह सकते हैं; 'नौसिखे' नहीं। पर तब आपको हमारी लेखन-अयोग्यता का प्रमाण देना होगा।

लाहौर के नेशनल कॉलेज में अध्यापकी करते हुए भी हम हिंदी-सेवा करते रहे। तब पंजाब में हिंदी-कवि-सम्मेलन की चर्चा भी न थी। हमने और हमारे विद्यार्थियों ने लाहौर में हिंदी-सेवा को अपनी शिक्षा और कर्तव्य का अंग बनाया था। नेशनल कॉलेज के अनेक विद्यार्थी भी हिंदी के प्रसिद्ध और प्रौढ़ लेखक हैं। उक्त कॉलेज से भी हम एक हस्त-लिखित पत्र का संपादन करते थे। इस 'नौसिखे लेखक' की अनेक

रचनाएँ जालंधर की 'भारती', लाहौर की 'ज्योति', 'सत्यवादी', 'नवयुग' और 'हिंदी-संदेश' में आदर-पूर्वक, संपादकीय टिप्पणियों-सहित, स्थान पाती रही हैं। हमने भी ग्रंथ-रचना की है। भट्टजी अपनी दस-बारह वर्ष पूर्व की कोई (गद्य-पद्य) रचना नहीं बता सकते। हम उन्हें दस-बारह वर्ष से भी अधिक पुरानी अपनी अनेक रचनाएँ दिखा सकते हैं। पाठक ही निर्णय करें, 'नौसिखे' कौन हैं?

लिखास हो—सच्ची लिखास हो, तो उसे उतारना न हम अनुचित समझते हैं, न पाप। जैसे उचित उपाय से भूख-प्यास बुझाना धर्म है, ऐसे ही सच्ची-अच्छी लिखास उतारना भी धर्म है। ऐसी लिखास न उतारी जाय, तो ग्रंथ-रचना ही नहीं हो सकती। हृदय की प्रेरणा और लोक-कल्याण-कामना के विना केवल स्वार्थ-सिद्धि के लिये जो अशुद्ध और भ्रष्ट रचना की जाती है, वही 'लिखास उतारना' निंद्य है। हमारी ऐसी निंद्य रचना का प्रमाण दीजिए।

दूसरा आक्षेप यह है कि भट्टजी के मत से हम उन लोगों में हैं, जो "साहित्य में प्रसिद्धि पाने के लिये जब किसी विभाग में सफलता नहीं पा सकते, तब दूसरों (!) पर कीचड़ उछालकर ही यश के भागी होना चाहते हैं।"

यह लांछन भी निर्मूल-निराधार है। केवल प्रसिद्धि और पैसे के लिये हमने आज तक कभी कोई कार्य नहीं किया। 'तक्षशिला काव्य' की आलोचना लिखने से पहले—बहुत पहले—हम प्रसिद्ध अँगरेज़ी मासिक पत्र 'माडर्न रिव्यू' और साप्ताहिक 'सोशल रिफ़ॉर्मर' के हिंदी-विषयक विचारों की मीमांसा प्रकाशित कर चुके थे। यह मीमांसा ८ सप्ताह तक लाहौर के 'सत्यवादी' में 'ग़ुलामी के सींग'-शीर्षक से प्रकाशित होती रही। इसके पश्चात् प्रो० सूर्यकांतजी के 'हिंदी-विलास' और 'हिंदी-साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास' की आलोचना लिखी। यदि आलोचना लिखने से प्रसिद्धि मिलती है, तो उसे हम बहुत पहले पा चुके होंगे। इनके अतिरिक्त काव्य-व्याकरण-नाटक की सात-आठ अन्य पुस्तकों पर भी हमने आलोचना लिखी, जो 'हिंदी-संदेश' में प्रकाशित हुई।

हमारा संबंध अच्छी-प्रसिद्ध संस्थाओं से रहा है। उनकी कृपा से हमें प्रसिद्धि तो वैसे ही प्राप्त हो गई। हमारे सैकड़ों शिष्य और शिष्याएँ हमारी प्रसिद्धि को सुदूर आफ़्रिका और फ़ीजी-द्वीप तक ले गई हैं। हम वर्षों तक नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी के सदस्य रहे, इससे भी प्रसिद्धि हुई। प्रांतीय और अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सदस्य अब भी हैं। इनके कारण भी प्रसिद्धि होती होगी। आर्य-प्रतिनिधि-सभा के सदस्य रहे, व्याख्यान दिए, प्रचार किया, अब भी करते हैं; सभा-समितियों में सम्मिलित होते हैं। इन सबसे पर्याप्त प्रसिद्धि हो चुकी होगी। प्रसिद्धि के लिये 'तक्षशिला की आलोचना' लिखने की हमें कुछ भी आवश्यकता न थी। यदि इन आलोचनाओं से हमारी प्रसिद्धि हुई है, तो हमने इनके द्वारा आपको भी प्रसिद्धि दे दी। तब आप हमें धन्यवाद दें। हमें प्रसिद्धि की इच्छा होती, तो ये सब आलोचनाएँ हम अपने प्रांत के प्रसिद्ध पत्रों में प्रकाशित करवाते। हमारी प्रसिद्धि की परीक्षा के लिये गढ़वाल के 'क्षत्रिय वीर' की ८ वर्ष पहले संपादकीय टिप्पणियाँ, हमारी रचना पर 'ज्याति' और 'हिंदी-संदेश' की पाद-टीका और प्रयागीय 'विज्ञान' के मिथुनार्क १९९४ का ११९वाँ पृष्ठ देखिएगा। मथुरा-दयानंद-अर्धशताब्दि-कवि-सम्मेलन में भी हम पुरस्कृत हो प्रसिद्धि पा चुके हैं।

श्रीभट्टजी की संतुष्टि के लिये, पाठक, मान लीजिए, हम 'नौसिखे', 'लिखास उतारनेवाले', 'प्रसिद्धि के भूखे', 'सफलता के मारे', 'कीचड़

उछालनेवाले', 'यशोलोलुप' और 'उद्दंड' हैं। पर क्या इससे भट्टजी की रचना दोष-मुक्त हो जाती है? बात तब थी, जब भट्टजी हम पर लगाए गए आक्षेपों के लिये युक्ति-प्रमाण-पुरःसर साक्ष्य संग्रह करते। हमारा ऐसा कौन व्यवहार है, जिसके आधार पर वह हमें 'उद्दंड' और 'कीचड़ उछालनेवाला' कहते हैं? "मुखमस्तीति वक्तव्यं दशहस्ता हरीतकी।" भट्टजी का यह दूसरा लांछन भी व्यर्थ है।

न-जाने हमारा ऐसा कौन-सा कार्य है, जिसमें हम सफल नहीं हुए। अध्यापन, लेखन और भाषण—साहित्य-संबंधी ये तीन कार्य हम करते हैं। जिनसे हमारे इन तीन कार्यों का संबंध है, उन हमारे सैकड़ों विद्यार्थियों और साहित्यिक मित्रों ने आज तक हमें इनमें असफल नहीं कहा। अब तक तो हम असफल हुए नहीं, भविष्य की बात भट्टजी भी नहीं कर रहे हैं। जान पड़ता है, वह किसी जन्मांतर की चर्चा कर रहे हैं।

कीचड़ हमने न कभी बनाया, न उछाला; होलियों में भी नहीं। होली हम अवश्य गाते हैं, पर कीचड़ कभी नहीं उछालते। हाँ, चंदन-पंक सेवन करना हमारी परंपरा अवश्य है। नित्य वस्त्र-प्रक्षालन करनेवाला कीचड़ कैसे उछालेगा?

तीसरा आरोप—"उन्हें (हमें अर्थात् आलोचक को) काव्य की साधारण बातों का भी ज्ञान नहीं।" भट्टजी के 'तक्षशिला काव्य' से हमने उस (काव्य) के रस-दोष, अलंकार-दोष, समास-दोषादि अनेक काव्य-दोष दिखाए हैं। दोष की पहचान वही कर सकता है, जो काव्य और उसके गुणों को जानता-पहचानता हो। भट्टजी कोई प्रमाण दें, जिससे हमारी काव्यानभिज्ञता प्रकट होती हो। क्योंकि "लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिर्न तु प्रतिज्ञामात्रेण।"

हम पर भट्टजी का चौथा आक्षेप यह है—"लेखक महाशय (आलोचक) घोर रूढ़िवादी और शायद अपने ज्ञान का दंभ भरनेवाले हैं।" हमें जाननेवाले जानते हैं कि हम धोती धारण करने पर भी खद्दर का टोप लगाते हैं, और क्रांतिवादी हैं। (कोई चाहे, तो हमारी इस स्वीकारोक्ति के आधार पर हमें पकड़वाकर लाभ उठा सकता है।) जिस समाज-संप्रदाय से हमारा संबंध है, उसमें बुद्धि-हीन रूढ़िवाद के लिये न स्थान है, न अनुकूलता। हम तो कालिदास की इस सूक्ति के अनुयायी हैं—"पुराणमित्येव न साधुसर्वम्, न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।" 'दम भरना' तो हमें आता है, पर 'दंभ भरना' हमने अब तक नहीं सीखा।

भट्टजी का पाँचवाँ लांछन—भट्टजी हमें "ज्ञानलवदुर्विदग्धः" कहते हैं; पर हमारी ज्ञान-लव-दुर्विदग्धता का कोई प्रमाण भट्टजी नहीं दे सकते। हमने अपने ज्ञान के अभिमान पर कोई अनधिकार चेष्टा नहीं की। उनका 'तक्षशिला काव्य' उनकी ज्ञान-लव-दुर्विदग्धता का प्रत्यक्ष और प्रबल प्रमाण है। प्रमाण-पूर्वक दोष दिखाने पर भी भट्टजी अपने दोषों को नहीं मानते—हठ करते जाते हैं। अतएव "ब्रह्मापि तं जनं न रञ्जयति" भट्टजी पर ही घटता है, हम पर नहीं। 'ब्रह्मापितरान्रञ्जयति' यह विचित्र वाक्य भट्टजी के उत्तर में न-जाने कहाँ से आ टपका।

हम पर छठा दोष है, "पत्थर और हीरे में पहचान न कर सकना।" यह सच है, सारा हीरा हमने अब तक नहीं देखा; पर पहाड़ी होने के कारण हम शिला और प्रस्तर के सभी भेदों और रहस्यों से भली भाँति परिचित हैं। अपने काव्य-ज्ञान और पत्थरों की पहचान के कारण हीरा पहचानने में हमें कोई कठिनाई न होगी। पर भट्टजी को देखिए, "कांचन में काठिन्य, गुणी में दारिद बसा हुआ है।" (तक्षशिला-काव्य के ६४वें पृष्ठ पर तृतीय स्तर का तीसरा पद्य) यहाँ आप सोने में

काठिन्य देख रहे हैं। काच और कांचन में भट्टजी अंतर ही नहीं समझते।

हम तो 'नौसिखे लेखक' हैं। प्रौढ़ और पुराने लेखक भट्टजी हैं। इस प्रश्नोत्तर के उत्तर यदि भट्टजी के ही हैं, तो भट्टजी की 'प्रौढ़ता' बहुत कची है। ये वाक्य देखिए—"यद्यपि कई मित्रों ने अनुरोध किया कि मैं उनकी बातों का जवाब दूँ, परंतु मुझे उसमें कोई सार नहीं देख पड़ा।" 'यद्यपि' के साथ 'तथापि' न लाकर भट्टजी 'परंतु' लाए हैं। इस वाक्य में 'जवाब' मुख्य पद है, 'उनकी बातों का' 'जवाब' का विस्तार या परिचायक है। भट्टजी का आशय तो है कि आलोचक की बातों में मुझे कोई सार नहीं देख पड़ा; पर उनके इस वाक्य का अर्थ है उसमें अर्थात् 'जवाब' में कोई सार नहीं देख पड़ा। जवाब और 'उसमें' दोनो ही एकवचन में हैं। 'उसमें' के बदले 'उनमें' बहुवचन पद होता, तब कुछ हो भी सकता। बहुवचन के बल से 'उनमें' का अर्थ 'उनकी बातों में' कर लेते। दूसरा वाक्य देखिए—"यह ठीक है कि 'तक्षशिला' में कहीं-कहीं कठिन शब्दों का प्रयोग हुआ है, परंतु वह रस के उपयुक्त ही है, इसलिये उसे दोष नहीं कहा जा सकता।" तीसरा वाक्य—"युद्ध-वर्णन में स्थान-स्थान पर विद्रोह की चिनगारियाँ फूट पड़ने के कारण उस अवस्था से दुखी लेखक के हृदय में जो प्रचंड भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं, वे ही मुझे भी उन्हीं शब्दों को यहाँ रखने के लिये बाधित कर रही थीं।" जान पड़ता है, 'तक्षशिला काव्य' उस समय 'विश्वबंधु' के प्रतिनिधि महाशय के पास न था। अन्यथा वह पूछते, 'रस के उपयुक्त कठिन शब्दों का प्रयोग' कहाँ हुआ है? रस का तो लेश भी 'तक्षशिला' में नहीं है। भट्टजी यह क्या कह गए हैं? शिला में रस कहाँ! 'तक्षशिला काव्य' में कौन रस है? कहाँ है? कांचनमाला और कुणाल की विपत्ति का, उनकी दयनीय दशा का करुणापूर्ण वर्णन रस-परिपाक के योग्य था, पर ऐसा वर्णन तक्षशिला में ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलता। (छठा स्तर देखिए।) अस्तु। इस तीसरे वाक्य का क्या अर्थ है? हम नौसिखे तो पत्थर और हीरे में पहचान ही नहीं कर सकते; आशा है, भट्टजी हमें भी पहचान का ज्ञान दान करने की कृपा करेंगे। 'युद्ध-वर्णन में विद्रोह की चिनगारियाँ' कहाँ से फूट पड़ीं; क्यों फूट पड़ीं? किस 'अवस्था से दुखी', कौन प्रचंड भावनाएँ? सेना में तो विद्रोह की चिनगारियाँ फूटती ही हैं; पर युद्ध-वर्णन में कैसे फूटती हैं? फूटती हैं, तो युद्ध-दर्शन में भी फूटती होंगी? 'युद्ध-वर्णन' में कौन किससे विद्रोह करता है? लेखक, लेखनी, मसिपात्र और काग़ज़ में विद्रोह की चिनगारियाँ फूटती हैं!

यदि भट्टजी को हमारी आलोचना का उत्तर नहीं देना था, तो चुप रहते। चुप न रह सकते थे, तो हमारी लिखी आलोचना के उदाहरण-प्रमाण-पूर्वक दोष दिखाते। अब भी यदि भट्टजी को अपनी रचना और अपने कथन की सत्यता पर विश्वास है, तो हमें भला-बुरा कहे बिना सौजन्य-पूर्वक उन्हें हमारी आलोचना के दोष गिन-गिनकर दिखाने चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं कर सकते, तो हमारी आलोचना के अनुसार उन्हें तक्षशिला में संशोधन कर देना चाहिए।

भट्टजी तो हमें 'अच्छी तरह जानते भी नहीं'; पर हम उन्हें भली भाँति जानते हैं। जानते हैं तब से, जब हमारे स्व० प्रिय शिष्य भगवतीचरण लाहौर के नेशनल कॉलेज में पढ़ते थे। उन्हीं के 'शिव-निवास' पर कई बार भट्टजी के दर्शन हमने किए। जब वह ओ० टी० में पढ़ते थे, तब कभी-कभी उनके दर्शन हो जाते थे। प्रांतीय सम्मेलनों में तो दर्शन-स्पर्शन-कथनोपकथन एवं भ्रमण घंटों

होता रहा। गुजराँवाला और लायलपुर में तो हम लोग पेट भरकर मिले। अच्छी बातचीत हुई। भट्टजी को स्मरण होगा, एक बार लाहौर-स्टेशन पर उन्होंने मुझसे 'सूर' के 'दृष्टिकूट' के विषय में सरदार कवि की टीका को लेकर कुछ कहा था। तब हम लोग कदाचित् गुजराँवाला-सम्मेलन से इधर आ रहे थे। भट्टजी जानते हैं, 'तक्षशिला काव्य' उन्होंने जल्दी-जल्दी लिखा, इसलिये वह अच्छा न बन पड़ा। उसके अनेक पद्यों को वह स्वयं भी समझ-समझा नहीं सकते। हम कोई युक्ति-प्रमाण-रहित बात न कहेंगे। 'तक्षशिला काव्य' की दो कुंजियाँ लाहौर से प्रकाशित हुई हैं। अपने स्नेहियों की दया से हमें दोनो की एक-एक प्रति 'तक्षशिला काव्य' की आलोचना लिखने से पहले ही मिल गई थी। हमने दोनो को भली भाँति पढ़ा-देखा है। कुंजी लिखनेवाले सज्जन स्वयं भट्टजी से मिले, 'तक्षशिला' पर उन्होंने शंकाएँ कीं; पर भट्टजी उनकी शंकाओं का समाधान न कर सके। एक-दो अध्यापक सज्जन भी इसी संबंध में भट्टजी से मिले; पर बैरंग ही लौटे। ये दोनो कुंजियाँ और सज्जन अभी जीवित हैं। आवश्यकता हो, तो इनका साक्ष्य लिया जा सकता है। कुंजियाँ भी 'तक्षशिला काव्य' की बड़ाई नहीं करतीं।

हम हादियाबाद-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन में सम्मिलित न हो सके। हमारे कुछ मित्र और शिष्याएँ वहाँ गई थीं। हमारे इन आत्मीयों द्वारा भट्टजी ने हमें संदेश भेजा था। संदेश-वाहक अभी जीवित हैं। क्या संदेश था, इसकी चर्चा अनावश्यक है। भट्टजी और हम एक ही वाग्देवी के भक्त हैं; अतएव भट्टजी हमारे बंधु हैं। बंधु का मानापमान अपना ही मानापमान है। भट्टजी हमें भी जानते हैं, और अपनी रचना को भी।

'विश्वबंधु' के प्रतिनिधि महाशय से भट्टजी कहते हैं—"परंतु लेखक महाशय (हम) ने जो दोष दिखलाने की चेष्टा की है—मेरा ऐसा विश्वास है कि ये दुर्गुण तो हो ही नहीं सकते।" (हमें 'नौसिखे' कहनेवाले पुराने, प्रौढ़ लेखक भट्टजी की वाक्य-योजना कितनी बढ़िया है! पाठक, रेखांकित वाक्य का विश्लेषण कीजिएगा।) अच्छी बात, आप अपनी रचना में दोष न मानिए। हम उसे दोषों से ओत-प्रोत, सर्वांग-दूषित समझते हैं। तक्षशिला में न धारावाहिकता, न छंदों की विशदता, न अलंकार-चमत्कार, न रस-संचार, न भाव-विहार, न ध्वनि-व्यंग्य-प्रकार, न सूक्ति-सौंदर्य। कुछ है, तो दोष-भूलों की भरमार। जिसे संदेह हो, हमारी लिखी आलोचना के साथ 'तक्षशिला काव्य' पढ़े। पाठक किसकी बात मानें—भट्टजी की या हमारी? इसका निर्णय हो सकता है—उपाय है। पाठक महाशय स्वयं 'तक्षशिला काव्य' पढ़ें, और अपनी सम्मति—तक्षशिला के गुण-दोष—समाचार-पत्रों में प्रकाशित करवा दें। भूषण-परीक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ानेवाले अध्यापक-अध्यापिका जन और कुंजी-लेखक भी कृपा कर 'तक्षशिला काव्य' के संबंध में अपनी सम्मति दें।

भट्टजी स्वीकार करें, तो मैं हिंदी-प्रेमियों के सामने एक प्रस्ताव रक्खूँ। सर्वश्री पंडित परमेश्वरानंद, पं० रामचंद्र 'कुशल', पं० जगदीश हरि, पं० श्रीधरानंद, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, ठाकुर मोहनसिंह सेंगर, संतरामजी बी० ए०, हरिकृष्ण 'प्रेमीजी', माधवजी और करुणाजी का एक निर्णायक 'फ़ुलबेंच' बैठे। साहित्य-प्रेमी दर्शकों को भी आमंत्रित किया जाय। सर्व-साधारण के लिये प्रवेशाधिकार हो; पर दो-चार आने के टिकट पर। आय हिंदी-समाज को प्रचार के लिये सौंप दी जाय। कचहरी या 'फ़ुलबेंच' की सारी व्यवस्था हिंदी-समाज की ओर से लाजपतराय-भवन में हो। इस 'बेंच' के सामने लिखी 'तक्षशिला की आलोचना'

पर भट्टजी हमें क्रॉस करें—हमसे असालतन या वकालतन जिरह करें। इससे ठीक-ठीक निर्णय के अतिरिक्त हिंदी-प्रचार, साहित्य-चर्चा और मनोरंजन भी होगा। हमारी आलोचना अनुचित, झूठी और ईर्ष्या-द्वेष-जनित सिद्ध हुई, तो हम उसे लौटा लेंगे, फाड़कर फेंक देंगे, और स्वयं सलज्ज विनीत होकर भट्टजी से क्षमा-प्रार्थना करेंगे, एवं अपनी लिखित क्षमा-प्रार्थना समाचार-पत्रों में प्रकाशनार्थ भी भेज देंगे। आशा है, भट्टजी को हमारे इस प्रस्ताव पर कोई आपत्ति न होगी।

भट्टजी ने हमारी आलोचना का युक्ति-युक्त उत्तर क्यों न दिया? या तो वह हमसे सहमत हैं कि 'तक्षशिला' दोषमय है, वह उनका परिहार नहीं कर सकते, अथवा वह वीतराग हैं—कोई कुछ कहे, उन पर इसका कुछ प्रभाव नहीं होता। 'विश्वबंधु' के प्रतिनिधि से हमारी लिखी आलोचना पर भट्टजी ने जो विचार व्यक्त किए, उनसे स्पष्ट है कि वह वीतराग नहीं हैं। आलोचना के कारण भट्टजी हमसे अप्रसन्न हैं। वह उत्तर देना भी चाहते हैं, पर दे नहीं सकते—उनके पास प्रमाण नहीं। ऐसा न होता, तो वह हमें 'उद्दंड', 'अभिमानी', 'नौसिखे', 'काव्य-ज्ञान-हीन', 'प्रसिद्धि का भूखा', 'कीचड़ उछालनेवाला', 'दंभ भरनेवाले' आदि उपाधियाँ न देते। ये उनके चिढ़े हृदय के उद्गार हैं। अपनी ओर से तो उन्होंने हमारी लिखी आलोचना का निराकरण कर ही दिया। वह वीतराग होते, तो 'विश्वबंधु' के प्रतिनिधि के प्रत्येकप्रश्न पर कहते, 'मुझे कुछ नहीं कहना है।' 'मैं उत्तर नहीं दूँगा।' 'होंगे, ईश्वर जाने।' 'कोई लिखे, मुझे क्या?' इत्यादि।

सूचना—इस लेख में हमने सर्वत्र अपने लिये जान-बूझकर 'हम' प्रयोग किया है। कोष्ठांतर्गत पद-वाक्य हमारे हैं।

मदनमंजरी पोस्ट-ऑफ़िस
और फ़ार्मेसी के ऑफ़िस की नई बिल्डिंग की उद्घाटन-क्रिया
हिज़ हाइनेस महाराजा जाम श्रीदिग्विजयसिंहजी साहब बहादुर
के० सी० एस्० आई० के शुभ हस्तक होने की ख़ुशी में
ता० १७—१—३८ से ग्राहकों को ख़ास लाभ ता० २८—२—३८ तक
मदनमंजरी गोलियाँ—स्वप्नदोष और कमज़ोरी की अचूक ओषधि फ़ी डि० रु० १)
रमणविलासनी वटिका—वीर्यस्तंभन के लिये चामत्कारिक दवा फ़ी डि० रु० १।
वंगामृत वटी—प्रमेह व मूत्राशय के तमाम रोगों के लिये फ़ी शीशी रु० ३।
अनंगप्रभा याक़ूती—पुरुषत्व-प्राप्ति के लिये राजवंशी उपाय फ़ी शीशी रु० १०।
गर्भामृत चूर्ण—गर्भाशय-संबंधी तमाम रोगों के लिये अद्वितीय फ़ी डि० रु० २)
☞ एक रु० से पाँच रु० तक की दवाएँ मँगाने पर १२॥ प्रतिशत और इसके उपरांत के ऑर्डर पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा।
मदनमंजरी फ़ार्मेसी, हेड ऑफ़िस, जामनगर [काठियावाड़]

वर्तमान काव्य-साधना

[श्रीयुत दीनानाथ व्यास विशारद]

वर्तमान हिंदी-काव्य-साहित्य तीन प्रमुख धाराओं की त्रिवेणी-रूप में प्रवाहित हो रहा है। तीन प्रमुख धाराएँ १—वीर-काव्य, २—भक्ति और ३—शृंगार हैं। इन्हीं की त्रिवेणी बनकर वर्तमान हिंदी की काव्य-धारा प्रवाहित हो रही है।

वीर-गाथा-काल में एक नरेश दूसरे नरेश पर अधिकार प्राप्त करने की कामना में अग्रसर एवं तन्मय दिखाई देता था, और उस काल का कवि उसे अधिकार करने के लिये प्रोत्साहन दिलाने का कार्य करता था। तात्पर्य यह कि वीर-गाथा-काल के कवि की कविता का क्षेत्र हृदय नहीं, वरन् रणक्षेत्र था। किंतु आज का कवि संतप्त एवं पराधीन देश की कराह से व्याकुल है, और उसके हृदय में गांधी की अहिंसा तथा करुणा की अत्यंत कोमल एवं विनम्र भावनाएँ हैं। वर्तमान काव्य में इसीलिये मानवीय अधिकारों से हीन प्राणियों की संतप्त आत्मपुकार है। इसीलिये तो वर्तमान कवि का हृदय कह उठता है—

बहा नर-शोणित मूसलधार,
रुंड-मुंडों की कर बौछार,
प्रलय-घन-सा घिर भीमाकार
गरजता है दिगंत संहार;
छेड़ खर शस्त्रों की झंकार
महाभारत गाता संसार!
कोटि मनुजों के निहत अकाल,
नयन-मणियों से जटित कराल,
अरे! दिग्गज सिंहासन जाल,
अखिल मृत देशों के कंकाल,
मोतियों के तारक-लड़-हार,
आँसुओं के शृंगार!

वर्तमान कवि मानवीय हाहाकार से बहुत ही बेचैन हो गया है। इस समस्या के सुलझाने का एकमात्र उपाय वह बतलाता है—

सुख-दुख के मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरन;
फिर घन में ओझल हो शशि,
फिर शशि से ओझल हो घन।
जग पीड़ित है अति दुख से,
जग पीड़ित रे अति सुख से;
मानव-जग में बँट जाए
दुख सुख से औ' सुख दुख से।

कवि का यह बतलाया हुआ उपाय केवल भारत के लिये ही नहीं, वरन् संपूर्ण विश्व के लिये सर्वोत्तम उपाय है। संपूर्ण विश्व की पीड़ित मानवता की एकमात्र यही

अभिलाषा है। यह योरप के भौतिक वादों का साम्यवाद नहीं, वरन् भारतीय गांधी के आध्यात्मिक ऐक्य का शाश्वत संदेश है। विश्व में जहाँ शुष्क भौतिकवाद के आधारभूत संघर्ष की कठोरता में मानव-जीवन पिस रहा है, वहाँ वर्तमान हिंदी-कविता इस कठोर अग्नि को अपने आँसुओं के जल से ही शीतल कर देना चाहती है। इसीलिये इस संघर्ष-काल में भी हमारी कविता परुष न होकर नितांत कोमल है। व्रजभाषा की तरह की वर्तमान काव्य-धारा में भी प्रेम एवं सौंदर्य की ही अभिव्यक्ति हो रही है। व्रजभाषा में प्रेम और सौंदर्य का बाह्य निरूपण ही अभीष्ट था, किंतु वर्तमान काव्य-धारा का प्रेम और सौंदर्य सीधे मानव-हृदय के अंतरतम एवं जीवन से संबंध रखता है। चर्म - चक्षुओं से परे यह आंतरिक चक्षुओं का विषय है। व्रजभाषा के शृंगार-काल की मानवीय सौंदर्य-कल्पना एवं भक्तिकाल की आत्मचिंतना के सामंजस्य से ही वर्तमान कविता ने स्वतंत्र धारा ग्रहण की है।

श्रीयुत दीनानाथ व्यास विशारद

प्राचीन कवियों का प्रकृति-वर्णन इस प्रकार हुआ है—

मल्लिकान मंजुल मलिंद मतवारे मिले,
मंद-मंद मारुत मुहीम मनसा की है;
कहै 'पदमाकर' त्यों नादत नदीन नित,
नागर नवेलिन की नजर निसा की है।
दौरत दरेरे देत दादुर सुदूँ दै दीह,
दामिनी दमंकनि
दिसानि में दिसा की है;
बद्दलनि बुंदनि
बिलोको बगुलानि बाग
बंगलनि बेलिन
बहार बरसा की है।

अर्थात् उन्होंने प्रकृति - वर्णन में काव्य के बाह्य सौंदर्य के उपकरणों के साथ-ही-साथ प्रकृति-जनित वस्तुओं की एक सूची पेश कर दी है, और अनुप्रासों के जमघट में कविता को इतना बोझिल कर दिया है कि उसमें यत्र-तत्र दुरुहता का भी समावेश हो गया है। किंतु वर्तमान कवि प्रकृति-वर्णन को इस प्रकार लिखेगा—

धीरे-धीरे उतर क्षितिज से
आ वसंत - रजनी!
तारकमय नव वेणी-बंधन,
शीशफूल कर शशि का नूतन,

रश्मि-वलय सित घन-अवगुंठन,
मुक्ताहल अविराम बिछा दे
चितवन से अपनी।
पुलकती आ वसंत-रजनी!

इसमें हमारी दृष्टि क्षितिज तक पहुँचती है। हमारी दृष्टि केवल शारीरिक प्रतिमा पर ही नहीं, वरन् समस्त विश्व में व्याप्त प्राकृतिक सौंदर्य तक जा पहुँचती है। इस प्रकार मानव हृदय की भाव-साधना से सौंदर्यानुभूति करने लगता है। छायावाद की कविता हमें ठीक इसी तरह विश्व में व्याप्त सौंदर्य की भाषा समझाने की चेष्टा करती है, और फिर शेष प्रकृति के साथ हमारा रागात्मक संबंध स्थापित करती है। श्रीमती महादेवी वर्मा ने 'सांध्य गीत' की भूमिका में लिखा है—

"छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए, जो प्राचीन काल से बिंब-प्रतिबिंब के रूप में चला आ रहा था, और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी। छायावाद की प्रकृति घट-कूप आदि में भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई। अतः अब मनुष्य के अश्रु-मेघ के जल-कण और पृथ्वी के ओस-बिंदुओं का एक ही कारण, एक ही मूल्य है। प्रकृति के लघु तृण और महान् वृक्ष, कोमल कलियाँ और कठोर शिलाएँ, अस्थिर जल और स्थिर पर्वत, निविड़ अंधकार और उज्ज्वल विद्युत्-रेखा मानव की लघुता-विशालता, कोमलता-कठोरता, चंचलता-निश्चलता और मोह-ज्ञान का केवल प्रतिबिंब न होकर एक ही विराट् से उत्पन्न सहोदर हैं। जब प्रकृति की अनेकरूपता में, परिवर्तनशील विभिन्नता में कवि ने ऐसा तारतम्य खोजने का प्रयास किया, जिसका एक छोर किसी असीम चेतन और दूसरा उसके ससीम हृदय में समाया हुआ था, तब प्रकृति का एक-एक अंश एक अलौकिक व्यक्तित्व लेकर जाग उठा।

"........मनुष्य को बाह्य सौंदर्य से हटाकर उसे प्रकृति के साथ अपने अविच्छिन्न संबंध की स्मृति दिलाने का श्रेय भी छायावाद को ही है। स्मृति दिलाई इसलिये कहती हूँ कि यह संबंध शाश्वत है। केवल हम लोग उसे भूल-से गए थे। हममें से प्रायः सभी बचपन में तितलियों के साथ दौड़े हैं, चिड़ियों के साथ गाते रहे हैं, कोई फूल खिला देखकर ऐसे प्रसन्न होते रहे हैं, मानो वह हमारे हृदय में ही फूला हो। परंतु बड़े होने पर हमारा जीवन ऐसे कृत्रिम बंधनों में जकड़ जाता है कि उस ओर ध्यान देने की न तो इच्छा होती है, न अवकाश मिलता है। वास्तव में प्रकृति में सांत्वना और आनंद देने की अपूर्व शक्ति होती है। तारों से जड़ी चाँदनी रात रोगी को नर्स से अधिक सुख दे सकती है, यदि वह उसकी भाषा समझने में समर्थ हो।"

वेदांत तथा संत कवियों ने मानवीय जीवन को असार कहा है। इसीलिये उन्होंने वैराग्य की शिक्षा दी है। तुलसीदासजी इसके अपवाद

अवश्य हैं, क्योंकि उन्होंने भक्ति-भावना का लोक-धर्म के साथ समन्वय एवं सामंजस्य दिखाया है। किंतु अधिकांश में संत कवियों ने प्रभुमय जीवन को ही प्राधान्य दिया है। उनकी दृष्टि में मानव कोई वस्तु नहीं, वह परमात्मा की ही कृपा पर अवलंबित है। उस समय इस विचार-धारा से हिंदू-जाति की लाज अवश्य बची रही। आज भौतिकवाद का युग है, इसमें मानव लौकिक प्रभुता के पीछे पागल हो रहा है। ऐसे समय उसे परमात्मरूप का बोध कराने की सबसे अधिक आवश्यकता है। इसके विना मानव अपने अस्तित्व की अनुभूति कर लोक-जीवन को मधुर एवं मनोहर बना ही नहीं सकता। इसीलिये कवि कहता है—

हम अन्य न और कुटुंबी,
हम केवल एक हमी हैं;
तुम सब मेरे अवयव हो,
जिसमें कुछ नहीं कमी है।

वैसे अभेद सागर में
प्राणों का सृष्टि-क्रम है;
सबमें घुल-मिलकर रसमय
रहता यह भाव चरम है।
अपने दुख-सुख से पुलकित
यह मूर्त विश्व सचराचर
चिति का विराट वपु मंगल
यह सत्य सतत चिर सुंदर।
(कामायनी)

मणिमय प्रदीप में दीपित हम
शाश्वत प्रकाश की शिखा सुखम,
हम एक ज्योति के दीप अखिल,
ज्योतित जिनसे जग का आँगन।
— त

"चिति का विराट वपु मंगल यह सत्य सतत चिर सुंदर" एवं "हम एक ज्योति के दीप अखिल" इत्यादि के द्वारा ही हम अपने अस्तित्व की विराट् सार्थकता समझकर पारस्परिक प्रेम-भाव एवं साहचर्य रख सकते हैं, तभी विश्व में "हम केवल एक हमी हैं" का वास्तविक बोध हो सकता है। वर्तमान कवि की यह आत्मप्रवृत्ति की भावना ही हमें छायावाद या रहस्यवाद की ओर ले जाती है।

वर्तमान छायावाद या रहस्यवाद हमारे लिये, वास्तव में देखा जाय तो, बिलकुल नई चीज़ नहीं; प्राचीन काव्य में भी यह विद्यमान है। हाँ, यह मान लिया जा सकता है कि उस समय इसी सामग्री को प्रस्तुत करने की प्रणाली भिन्न थी। आज यही भिन्नता नवीनता के नाम से पुकारी जा रही है।

वर्तमान नवीनता की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों के अनेक मत हैं, किंतु यह तो निर्विवाद मान्य है कि योरपीय साहित्यिक प्रभाव, कबीर-वाणी का असर तथा बंगाली छायावाद ही ने हिंदी में इस नवीनता को सहायता प्रदान की है।

यह छायावाद या रहस्यवाद है क्या? कुछ समय पूर्व छायावाद और रहस्यवाद पर्यायवाची शब्द माने जाते थे, और आज भी कई विद्वान् वैसा ही मानते हैं। किंतु हमारी राय में

छायावाद और रहस्यवाद भिन्न-भिन्न हैं। दोनो एक नहीं। श्रीमती महादेवी वर्मा ने लिखा है—

"……मानवीय संबंधों में जब तक अनुराग-जनित आत्मविसर्जन का भाव नहीं घुल जाता, तब तक वे सरस नहीं हो पाते। और, जब तक यह मधुरता सीमातीत नहीं हो जाती, तब तक हृदय का अभाव दूर नहीं होता। इसी से इस अनेकरूपता के कारण पर एक मधुरतम व्यक्तित्व का आरोपण कर उसके निकट आत्मनिवेदन कर देना इस काव्य का दूसरा सोपान बना, जिसे रहस्यमय रूप के कारण ही रहस्यवाद का नाम दिया गया।" (सांध्य गीत)

उपयुक्त अवतरण से ही सिद्ध है कि रहस्यवाद छायावाद से भिन्न है। छायावाद में आत्मा का आत्मा के साथ, एक जीवन का दूसरे जीवन के साथ संबंध है, किंतु रहस्यवाद में आत्मा का केवल परमात्मा के साथ ही संबंध स्थापित होता है। तात्पर्य यह कि छायावाद में मानवीय अभिव्यक्ति रहती है, और रहस्यवाद में पारलौकिक या अलौकिक की अभिव्यक्ति। उदाहरण के लिये दूर्वादल पर बिखरे हुए नीहार-कणों को लीजिए। उन नीहार-बिंदुओं में जब कवि मानवीय दुख से पीड़ित हृदय से निकले हुए अश्रुओं को स्थापित कर देता है, तो यह छायावाद की आत्माभिव्यक्ति हुई, किंतु इन्हीं नीहार-कणों में जब हम विश्वव्यापी परम चेतन को प्रतिष्ठित पाते हैं, तो यह रहस्यानुभूति हो जाती है। कवि कहता है—

खोलो! मुख से घूँघट खोलो,
हे चिर-अवगुंठनिमयि बोलो!
है स्पृश्य—स्पर्श का नहीं पता,
है दृष्य - दृष्ट पर सके बता!

कवि छाया से कहता है कि छाया! अपने मुख से घूँघट खोलकर बोलो तो। तुम स्पृश्य हो, किंतु स्पर्श कैसे किया जाय, तुम्हें तो केवल दृष्टि ही बता सकती है। कवि छाया को साकार मानकर अपनी आत्मा के साथ उसकी आत्मा को जोड़ता है, किंतु इतने में ही उसका सूक्ष्मतम कवि उदित होकर छाया के विराट् रूप का आह्वान करता है—

तुम अतल गर्त अविगत अकूल,
फैली अनंत में बिना मूल।
अज्ञेय गुह्य अग जग छाई,
मायामोहिनि सँग - सँग आई!
तुम कुहुकनि जग की मोह-निशा,
मैं रहूँ सत्य, तुम रहो मृषा!

यहाँ कवि उसकी आत्मा से बाहर निकलकर संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त होता है। छाया के व्यापक स्वरूप की कल्पना करता हुआ छाया से अंत में चिरंतन सत्य के रूप में कह देता है कि तुम हमेशा मृषा ही रहो, और मैं हमेशा सत्य ही रहूँ। पहले अवतरण में छाया के प्रति कवि-दृष्टि सीमित थी, दूसरे में वह विशाल होकर विश्व के समस्त व्यापार में समाविष्ट हो गई। अंत में जाकर कवि ने चिरंतन सत्य का स्वरूप

बताया कि "मैं" सत्य हूँ, और छाया केवल भ्रम। यह हुई रहस्यवाद की अनुभूति। योगी को रहस्यवाद की प्राप्ति साधना द्वारा होती है, और कवि को भावना द्वारा। संपूर्ण विश्व में एक अदृश्य सत्ता का आभास ही रहस्यवाद माना जायगा। इसलिये रहस्यवाद छायावाद से ऊँची वस्तु है। छायावाद व्रजभाषा-काव्य की तरह वर्णनात्मक नहीं होता, वरन् जीवन को स्पर्श करनेवाला होता है। वर्णन उस विषय के विज्ञान के सन्निकट की वस्तु है, और जीवन की अभिव्यक्ति भावों से संबद्ध है। वर्णन सांगोपांग होता है, जीवन की अभिव्यक्ति सार-तत्त्व होती है। वर्णनात्मक कविता की सीमा भौतिक शरीर तक रहती है, छायावाद की सीमा सूक्ष्म शरीर तक। इस प्रकार की काव्यानुभूति विश्व की अखिल सृष्टि के साथ कवि-हृदय को एकाकार—एकात्म—कर देती है। यहाँ तक तो रहता है छायावाद, और अनेक में एक ही चेतन के आभास से जो द्वैतता का नाश होकर अलौकिक अभिव्यक्ति होती है, वही रहस्यवाद है।

वर्तमान काव्य-धारा में एक और विशेष बात दिखाई देने लगी है। वर्तमान कवि अपनी-अपनी भावनाओं पर दर्शन का पुट चढ़ाने लगे हैं। काव्य में रहस्यवाद और दर्शन दोनो एक ही लक्ष्य पर पहुँचनेवाले होकर भी दोनो की गतियाँ भिन्न-भिन्न हैं। कविता में कवित्व के विना दर्शन व्यर्थ है। वर्तमान काव्य-धारा में जो गीतों का प्रचार हो रहा है, उसका बहुत कुछ यही कारण है कि शुष्क दार्शनिकता पद्य-बद्ध होकर गेय हो जाय, और गेय होकर मनोरम। शुष्क आध्यात्मिक तत्त्वों का गुणानुवाद कविता का विषय नहीं। बौद्धिक दर्शन का रचयिता कवि अंत में पाता है शून्य अर्थात् निर्गुण-निराकार। दार्शनिक जिस वस्तु को चिंतन द्वारा प्राप्त करता है, कवि उसे भावना द्वारा साकार करता है। यही कारण है कि दार्शनिक का निर्गुण-निराकार कवियों में मूर्त होकर राधा के रूप में प्रकट होता है। इस तरह दार्शनिकों का शून्य रहस्यवादियों की सगुण देह के भीतर व्याप्त हो गया है, सीमित होकर भी असीम है। कविता में दार्शनिकता एक बोझ-सी प्रतीत होती है, किंतु रहस्यवादिता भाव-प्रधान होकर मानवीय हृदय को प्लावित कर देती है। दर्शन में भाषण या उपदेश-सा जान पड़ता है, किंतु रहस्यवाद में कवित्व। दर्शन अपनी गूढ़ता के कारण ही चरम सीमा पर पहुँचता है, और रहस्यवाद संवेदनात्मकता के कारण सूक्ष्म गहराई को प्राप्त करता है। दर्शन एवं कवित्व के लिये हिंदी में संत-साहित्य का उदाहरण सर्वश्रेष्ठ है। संत-साहित्य में निर्गुण-उपासकों एवं सगुण-उपासकों की कविता विद्यमान है। निर्गुण-उपासक संतों ने नश्वर देह से विरक्त होकर संसार से अपना नाता ही तोड़ दिया, किंतु सगुण-उपासक संतों ने ईश्वर की सदेह भक्ति द्वारा अपनी आत्मीयता को क़ायम रक्खा। सगुणोपासक कवि सूर

और निर्गुणोपासक कबीर क्रमशः भावना-प्रधान एवं दर्शन-प्रधान कवि थे। कहीं-कहीं कबीर ने भी जीव और माया के रूपकों में सगुणोपासकों के माधुर्य भाव को बड़ी ही मधुरता से अभिव्यक्त किया है। देखिए—

झीनी - झीनी बीनी चदरिया ।
काहे का ताना, काहे कै भरनी,
कौन तार से बीनी चदरिया ।
इँगला - पिंगला ताना - भरनी,
सुषमन - तार से बीनी चदरिया ।
आठ कमल दल चरखा डोले,
पाँच तत्त, गुन तीनी चदरिया ।
साईं को सियत मास दस लागे,
ठोक - ठोक कै बीनी चदरिया ।
सो चादर सुर - नर - मुनि ओढ़ी,
ओढ़िकै मैली कीनी चदरिया ।
दास 'कबीर' जतन से ओढ़ी,
ज्यों-की-त्यों धरि दीनी चदरिया ।

—कबीर

कबीर के ऐसे कवित्वमय पद विशेष नहीं हैं, बहुत थोड़ी संख्या में ही हैं।

हमारे संतों की वाणियाँ रहस्यवाद से भरी पड़ी हैं, जिनमें उनकी यौगिक अनुभूतियों के गान हैं, जिनका सीधा संबंध परमात्मा से है। प्राचीन संत-साधना विशेषतया धर्ममूलक थी। वर्तमान काव्य-धारा भी निर्विकार परम चेतन की ओर ही लक्ष्य रखती है। किंतु यह धर्ममूलक नहीं, सौंदर्य अर्थात् कलामूलक है। संत-साहित्यांतर्गत रहस्यवाद धर्म-मूलक था, और वर्तमान रहस्यवाद कलामूलक है। इसीलिये दोनो की अभिव्यक्ति में विशेष अंतर है।

योरप में सात मास

लेखक—श्रीधर्मचंद सरावगी

लेखक महोदय स्वाभाविक जिज्ञासुओं में हैं, इसलिये इन्होंने काफ़ी छान-बीन करके अनेकों जाननेवाली बातों को खोज निकाला है, और साथ में मुख्य मुख्य स्थानों के चित्र भी लेते गए जिससे पुस्तक और भी उपयोगी बन गई है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको ऐसा ज्ञात होगा, मानो आप इस समय योरप भ्रमण कर रहे हैं। २३४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य २॥)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०. अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

दवाई

[श्रीयुत मुंशी ज़हूरबख़्श 'हिंदी-कोविद']

मियाँ रहमत ने चेहरे पर तौलिया रगड़ते - रगड़ते फ़रमाया—"अब तो ख़ुदा के वास्ते बिस्तर छोड़ो । देखतीं नहीं, कितना दिन चढ़ आया है । सहन पर धूप चमक रही है । हाथ-मुँह धो डालो, एक प्याला चाय पी लो, ऊपर से दो बीड़े खा लो । तबियत तरो-ताज़ा हो जायगी । यों सोने को दिन-भर सोया करो, सुस्ती ही बढ़ेगी । और, तुम्हें है क्या, ज़ुकाम ही न ? दो-एक रोज़ में आप ही पच जायगा । चाहो, तो अंडे की एक टिकिया खा लो । मगर तुम्हें कौन समझाए; मानो, तब न ? ज़रा सर-दर्द हुआ, और खाट पकड़ ली । हमारी अम्माजान चढ़े बुख़ार में चक्की पीसा करती थीं । उनका कहना था, चक्की सौ बीमारियों की दवा है । एक तुम हो, जैसे लाजवंती का पौधा, उँगली दिखाई, और कुम्हला गया । मेरी बात मानो, एक महीने चक्की पीसो, चेहरा सेब के माफ़िक़ सुर्ख़ न हो जाय, तो मेरा ज़िम्मा । मज़दूरिनों को देखो, दिन-भर मेहनत मशक़्क़त करती हैं, रूखा-सूखा खाती हैं, मगर उनकी तंदुरुस्ती रश्क के क़ाबिल होती है । तो इसकी वजह क्या ? यही कि ......"

बेगम साहबा शायद छत की कड़ियाँ गिन रही थीं । एकदम भनभनाकर बैठ गईं, और मियाँ रहमत की तरफ़ तेज़ नज़र से ताकती हुई बोलीं—"तो तुम्हारी यही मंशा है कि मैं मज़दूरी करूँ—चक्की चलाऊँ ? अच्छी बात है, यही करूँगी । मगर एक बात बतलाओ । जब-जब मेरी तबियत बिगड़ती है, तुम आपे से बाहर क्यों हो जाते हो ? मुझे बीमार बनने का शौक़ नहीं है । मगर अपने फूटे नसीबे को क्या करूँ ? तीन दिन से तड़प रही हूँ, जैसे मछली । मारे दर्द के सर फटा जाता है, हड्डी-हड्डी टूटी जाती है, भीतर-ही-भीतर बुख़ार तमाम जिस्म को तोड़ रहा है, नाक से साँस लेते तो बनती नहीं; और ज़ुकाम तुम्हारे लेखे कोई मर्ज़ नहीं है । तबियत का हाल पूछना दूर रहा, दवा-दारू की फ़िक्र भाड़ में गई; चक्की और मज़दूरी का तराना लेकर बैठ गए । लगे अपनी अम्मीजान की तारीफ़ मारने । कोई मरे, चाहे जिए, तुम्हारी बला से । एक मैं हूँ, तुम्हारी तबियत ज़रा बिगड़ जाती है, तो दम फूल उठता है । अल्लाह से दुआ माँगती हूँ, मन्नतें मानती हूँ । मगर तुम्हें इन बातों से क्या मतलब । तुम्हारी तो वही मसल है कि 'अपने लिये पाँच का गंडा, ग़ैर के लिये तीन का गंडा' । पारसाल की ही बात है, हज़रत को तीन-चार रोज़ बुख़ार आ गया था । घर-भर को सिर पर उठा लिया था । यह डॉक्टर कुछ नहीं जानता, हकीम साहब को बुलाओ । हकीमजी तो परले दर्जे के गधे हैं; दवा करना तो बस, वैद्य जानते हैं । कह दो, मैं झूठ कहती हूँ । कहीं उस वक़्त मालूम होता चक्की का नुस्ख़ा, तो मैं तुम्हें चक्की पर ही बैठालती और फिर बैठालती ।" यह कहते कहते बेगम साहबा के होठों पर मुस्किराहट आ गई ।

मियाँ रहमत भी मुस्किराकर बोले—"ए लो, तुम तो इल्ज़ाम-पर-इल्ज़ाम लगाने लगीं । मैं, और तुम्हारी फ़िक्र न करूँ । भला, कभी ऐसा हुआ है ? ज़रा तो सच बोला करो । तुम्हीं कहो, साल में कितने मर्तबा हकीमों और वैद्यों की चौखटों पर

एड़ियाँ रगड़ा करता हूँ; तुम्हारे ही लिये या किसी ग़ैर के लिये ? अच्छा भई, ख़ता माफ़ करो, अभी किसी को बुलाए लाता हूँ।”

बेगम साहबा ने कहा—‘तो मैं यह कहाँ कहती हूँ कि तुम मेरी फ़िक्र नहीं करते। मगर तुम्हारी फ़िक्र ऐसी है कि मियाँ, खिलाते तो बहुत हो, मगर जूतियाँ बुरी मारते हो। और, तुम इस सिकंदर को क्यों नहीं डाँटते ? घड़ी में आठ बज रहे होंगे, और वह मुई अब तक लापता है। इसने तो मेरा जी जला डाला। न बातचीत करने का शऊर, न काम-काज का सलीक़ा। घंटों एक ही काम लिए बैठी रहेगी। तुम्हें और अच्छी नौकरानी नहीं मिलती क्या ? क्या कहा, बेचारी बहुत ग़रीब है ? ग़रीब है, तो क्या उससे मुफ़्त काम लेते हैं ? खाना-कपड़ा देते हैं, ऊपर से महीने-के-महीने चार रुपए अलग। बीबी और कहीं होतीं, तो आटे-दाल का भाव मालूम पड़ जाता। मगर यहाँ तो ‘मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त’वाला मज़मून है। और, यह ठीक भी है, परेशान तो वह मुझे करती है, तब तुम्हें उससे क्या मतलब ? अरे, तो अब आइना-कंघा लेकर बैठ गए। क्या कहा, बालों में कंघा न करूँ ? नहीं साहब, ख़ूब शौक़ से माँग-पट्टी सँभालो, मगर इसके क्या मानी कि औरतों के माफ़िक़ घंटों सिंगार-पटार में बिता दिए। तीन महीने से वह किताब लिख रहे हैं; और पूछो, लिखा कितना, केवल पचास सफ़े। लिखा भी कैसे जाय ? सात बजे सोकर उठे, डेढ़ घंटे हाथ-मुँह धोते रहे. डेढ़ घंटे तक बाल सँवारते और कपड़े पहनते रहे। लीजिए साहब, दस बज गए। हबर-हबर खाना खाया, और ताबड़तोड़ मदरसे का रास्ता लिया। लौटेंगे आप किस वक़्त—कभी आठ बजे, कभी नौ बजे। अब पूछती हूँ कि छुट्टी तो चार बजे हो जाती है, अब तक आप कहाँ रहे, तो जवाब देते हैं—रास्ते में पंडितजी मिल गए थे, उन्होंने पीछा ही न छोड़ा। गोया वह इनको बाँधकर बिठा लेते हैं। जोड़ी ख़ूब जुड़ी है—जैसी रूह, वैसे फ़रिश्ते। दोनो जहाँ खड़े हो जायँगे, तो धरती हाय-हाय करेगी; ख़ुदा जाने, काहे के मुँह बनाए हैं कि घंटों बातें करते हैं, मगर थकना नहीं जानते। जब प्रकाशक तक़ाज़ा करेगा, तो मेरी बीमारी का बहाना बना-बनाया है, गोया मैं हमेशा बीमार बनी रहती हूँ, और आप चौबीसो घंटे मेरी तीमारदारी में लगे रहते हैं।”

इसी समय वहाँ सिकंदर ने दबे पाँवों प्रवेश किया। हवा का रुख़ एकबारगी तबदील हो गया, और तमाम बौछार उसी पर जा पड़ी—“अख़्ख़ाह! आप हैं! आईं तो बहुत जल्दी। अभी आठ ही तो बजे होंगे। क्या कहा—कौन बहुत देर हो गई है ? जी नहीं, बिलकुल देर नहीं हुई। देर तो तब कहलाती, जब आपकी सवारी दस बजे तशरीफ़ लाती। सुनो बीबी, साफ़ बात है, तुम्हें काम न करना हो, इनकार कर दो। कुछ ज़बरदस्ती नहीं है। मगर मुझे रोज़-रोज़ की यह माथा-पच्ची पसंद नहीं। हज़ार मर्तबा समझा दिया कि बीबी जल्द आया करो, बात-की-बात में दस बजते हैं, उन्हें मदरसे जाना पड़ता है, मगर तुम्हारे कानों पर जूँ भी नहीं रेंगती। भले घोड़े को एक चाबुक, और शरीफ़ आदमी को एक बात की ज़रूरत रहती है, मगर यहाँ तो जब देखा, कुत्ते की दुम टेढ़ी-की-टेढ़ी। अरे, तो अब खड़ी ही रहोगी ? पैरों में मेहँदी तो रची नहीं है। लोटे में पानी ले लो, उनको धोकर भीतर आ जाओ।”

मियाँ रहमत जूते पहनने लगे, तो बेगम साहबा बोलीं—“अब कहाँ चले ? नीमवालों को बुलाने ? मगर ऐसी भी क्या जल्दी, चाय तो पी लो। अभी दम-भर में तैयार होती है। सिकंदर, जल्दी से आग सुलगा दो, और चूल्हे पर पतीली चढ़ा दो। अरे, तो तुम मानोगे नहीं, तुम्हारी यही ज़िद मुझे अच्छी नहीं लगती। मगर लौटना जल्दी। मैं तुम्हें ख़ूब

बेकारों के लिये स्वर्ण-संयोग !

धनियों के लिये अपूर्व अवसर !!

भारत-भर में एजेंसियों का आयोजन !!!

गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकें भारत के कोने-कोने में प्रसिद्ध हैं। सुदूरवर्ती मद्रास, बलोचिस्तान, नैपाल, आसाम, ब्रह्मा, फ़िजी तथा जर्मनी तक से हमारी पुस्तकों की धड़ाधड़ माँग आ रही है। इसीलिये ग्राहकों की सुविधा के विचार से भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत के प्रसिद्ध नगरों में हम अपनी एजेंसियाँ खोलना चाहते हैं। अतएव इस पृष्ठ पर इधर-उधर, दोनो ओर, लिखे हुए या अन्य नगरों में जो सज्जन १ हज़ार रुपया लगाकर दूकान खोलना चाहें, वे शीघ्र ही हमें पत्र लिखें। अधिक-से-अधिक रुपया कमाने के इस अवसर को न चूकें। नियम मँगाइए।

नगरों के नाम

कलकत्ता - -
पटना - - -
मुज़फ़्फ़रपुर -
बनारस - - -
कानपुर - - -
दिल्ली - - -
लाहौर - - -
अमृतसर - -
जयपुर - - -
ग्वालियर - -
इंदौर - - -
जोधपुर - -

नगरों के नाम

प्रयाग - - -
आगरा - - -
शिमला - - -
मंसूरी - - -
नैनीताल - -
गोरखपुर - -
बंबई - - -
देहरादून - -
मुरादाबाद -
बरेली - - -
मेरठ - - -
झाँसी - - -

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

सुधा के नियम

मूल्य

सुधा के तीन संस्करण निकलते हैं, और उनका डाक-व्यय-सहित मूल्य इस प्रकार है—

राजसंस्करण	
वार्षिक मूल्य	१२)
एक प्रति का	१)
साधारण संस्करण	
वार्षिक मूल्य	६)
एक प्रति का	॥)
सस्ता संस्करण	
वार्षिक मूल्य	४)
एक प्रति का	।)

वी० पी० से मँगाने में ।) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीआर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। वर्षारंभ अगस्त (श्रावण) से होता है, और प्रतिमास के अंत में पत्रिका प्रकाशित हो जाती है। ग्राहक चाहे जिस संख्या से ग्राहक बन सकते हैं। विदेशों के लिये भी वही मूल्य है, जो भारतवर्ष के लिये। सुधा में यह ख़ास बात है।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो १५ दिन के अंदर कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उनको उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन १५ दिन बाद सूचना मिलने से ध्यान नहीं दिया जायगा, और वह संख्या ग्राहक टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १० दिन पेश्तर उसकी सूचना हमें देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखे चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक बड़े लेख आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्रका करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का तथा लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपादक है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर क टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं। लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्रका पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के प्रका रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और सु अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेख चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल भार्गव

कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बदल हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेशगी जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण : पृष्ठ या २ कालम की छपाई १८) प्रति
,, ½ ,, या १ ,, ,, ,, १०) ,,
,, ¼ ,, या ½ ,, ,, ,, ६) ,,
,, ⅛ ,, या ¼ ,, ,, ,, ३) ,,

विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती है।

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ रहता कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गुज़र है। सबसे सस्ती, सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय पत्रिका के कारण इसका प्रचार भी ख़ूब है, और बढ़ता रहा है।

कृपया शीघ्र ही विज्ञापन छपवाकर लाभ उठा कम-से कम एक बार परीक्षा तो कीजिए!

मैनेजर सुधा, लखनऊ

बेकारों के लिये अपूर्व अवसर !

आवश्यकता है

हमें भारत के प्रत्येक छोटे-बड़े क़स्बे, नगर और शहर में ऐसे प्रचारकों की, जो अपने स्थान की जन-संख्या के अनुसार हमारी नई पुस्तकों की ५ से २५ प्रतियाँ तक बेच दिया करें। हम उन्हें प्रत्येक मास ४-५ नई पुस्तकें दिया करेंगे। अपनी पुरानी सैकड़ों पुस्तकें भी उन्हें बेचने को दी जायँगी। इसके अलावा भारतवर्ष-भर की हिंदी-पुस्तकें उन्हें भेजी जा सकेंगी। सिर्फ़ २५) की नक़द जमानत ज़रूरी है। ज़्यादा की जमानत दे सकेंगे, तो और भी ज़्यादा किताबें दी जायँगी। हमारी शाखाएँ और सोल एजेंसियाँ कई जगह खुल गई हैं। प्रचारक भी बीसों जगह नियुक्त हो चुके हैं। अब जहाँ-जहाँ और प्रचारकों की ज़रूरत है, उनमें से मुख्य-मुख्य स्थानों के नाम नीचे लिखे जा रहे हैं। जो सज्जन इन स्थानों में प्रचारक बनना चाहें, हमें लिखें—

बर्दवान
भागलपुर
मुंगेर
पूर्णियाँ
पटना
गया
चंपारन
दरभंगा
मुज़फ़्फ़रपुर
सारन
हज़ारीबाग़
मानभूमि
पालामऊ
राँची
मेरठ
देहरादून
गोरखपुर
बुलंदशहर
मैनपुरी
अलीगढ़
बरेली

बदाऊँ
मुरादाबाद
झाँसी
बलिया
अलमोड़ा
नैनीताल
हरदोई
बहराइच
प्रतापगढ़
अंबाला
जालंधर
होशियारपुर
लुधियाना
फ़ीरोज़पुर
लाहौर
अमृतसर
रावलपिंडी
स्यालकोट
गुजरात
मुलतान
कानपुर

दिल्ली
सागर
दमोह
सिवनी
मंडला
होशंगाबाद
छिंदवाड़ा
बैतूल
नीमार
अकोला
यवतमाल
नागपुर
वर्धा
रायपुर
बिलासपुर
अहमदाबाद
सूरत
नासिक
पूना
कराँची
मद्रास

अजमेर
मांडले
काश्मीर
हैदराबाद
मैसूर
बड़ौदा
ग्वालियर
इंदौर
भूपाल
रीवाँ
धार
भरतपुर
अलवर
जोधपुर
टोंक
किशनगढ़
बूँदी
कोटा
झालरापाटन
बीकानेर
जामनगर

नियम निम्नांकित पते से मँगाइए—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हृदय-भार

रचयिता—पंडित दीनानाथ व्यास 'विचित्र'

कविरत्न, विशारद आदि

वर्तमान हिंदी-काव्य-धारा विशेषतया दुःखवाद की ओर ही प्रवाहित हो रही है। यह दुःखवाद हमारे जीवन की संघर्षमय विकट परिस्थितियों का परिणाम है। वर्तमान काल के हिंदी-कवियों ने अपनी मुक्त एवं गेय रचनाओं में दुःखवाद के केवल एक पहलू को ही चित्रित किया है, किंतु व्यासजी ने समस्त विश्व के चेतन-अचेतन सभी पदार्थों में उसकी सत्ता स्वीकार करते हुए प्रत्येक पंक्ति में उसके मनोहर दर्शन भी कराए हैं। प्रकृति-सौंदर्य से लेकर जीवन के सुख-दुख तक में दार्शनिकता की पुट देकर तो व्यासजी ने वास्तव में सोने में सुगंध का काम किया है। वेदनाओं, व्यथाओं, अरमानों, स्मृतियों आदि के, रूपकों और उपमाओं के सहारे, इतने सुंदर चित्र चित्रित किए हैं कि वे काव्य-रसिकों को मुग्ध किए बिना रह ही नहीं सकते। विस्मय-विमुग्ध करनेवाली चमक-दमक, तड़क-भड़क, शब्दाडंबर, क्लिष्टता एवं निरर्थकता आदि—जिसके कारण वर्तमान छायावाद बदनाम हो रहा है—इस काव्य में खोजने पर भी नहीं मिलेगी। हमारे जीवन की उस विडंबना का इस काव्य में बड़े ही सुंदर ढंग से सजीव वर्णन किया गया है, जो अतृप्त आत्माओं को एक भार सी प्रतीत होती है। हृदय-भार में कवि ने अपना हृदय ही खोलकर रख दिया है। बात तो यह है कि कविवर गोपालसिंह नैपाली के शब्दों में "यह दुख की कथा है, दर्द की कहानी है।" वास्तव में देखा जाय, तो हृदय-भार दुखी आत्माओं को सुख पहुँचानेवाली अनुपम कृति है। काव्य-प्रेमियों को इसकी एक प्रति अवश्य ही मँगाकर अवलोकन करना चाहिए। मूल्य लगभग ॥)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

जानती हूँ। जहाँ गए, वहीं के हो रहे। रास्ते में कोई दोस्त-आशना मिल गया, उसी से गप्पें हाँकने लगे। सिकंदर, तुम्हीं बताओ, मैं झूठ तो नहीं कहती!"

"झूठ से तुम्हें वास्ता ही क्या! अच्छा, घबराओ नहीं, तुम्हें ज़्यादा इंतज़ार न करना पड़ेगा।" कहते हुए मियाँ रहमत लपककर बाहर चले गए। मगर बेगम साहबा की तक़रीर ज्यों-की-त्यों जारी रही—"इनसे तो बात करना मुश्किल है। दवा-दारू का ज़िक्र किया, बस, दौड़ पड़े नीमवालों को बुलाने। पूछो, उनके पास रक्खा क्या है—हर्रे, बहेड़े और आँवले का चूरन। भला आदमी दुनिया-भर का तो परहेज़ बतलाता है। आलू और चावल बादी होते हैं; गोश्त और अंडे गर्मी करते हैं; दूध, दही और घी से कफ पैदा होता है। तब खाओ क्या—सिर्फ़ मूँग की दाल और रोटी। तौबा-तौबा! अच्छा-भला आदमी भी दस-पाँच रोज़ बँधकर खाय, तो बीमार पड़ जाय। मगर वह तो नीमवालों के मुरीद हैं। और, इन डॉक्टरों से तो ख़ुदा बचाए। बदमाश दोनो हाथों से लूटते हैं। नब्ज़ देखने की तमीज़ नहीं, आँखें बनाओ, जीभ दिखाओ; बस, बीमारी की शिनाख्त हो गई। अब लाओ दो रुपए फ़ीस के, आठ आने ताँगे के, और छ आने तीन ख़ूराक दवा के। इन सबके एवज़ मिलेगा क्या बिस का घूँट। दिन-भर मुँह कड़ुवा रहे, और थू-थू करते बीते। अलबत्ता बैद-हकीम ऐसे डाके नहीं डालते। बेचारे एक रुपया फ़ीस लेते हैं, और दवा मुफ़्त देते हैं। सच है, दुनिया में मुफ़्ती चीज़ की क़दर नहीं होती। क्यों सिकंदर, तुम तो कभी-कभी नीमवालों के यहाँ जाती हो, कैसी चलती है उनकी बैदक? बहुत मरीज़ आते हैं? हैं भी तो बेचारे बहुत शरीफ़ और तजुरबेकार। नब्ज़ की जाँच तो इतनी अच्छी करते हैं कि वाह! तीन चार साल हुए, मैं मलेरिया से सख़्त बीमार हो गई थी। उन्हीं की दवा से सेहत पाई थी। अरे, तो तुम बातें ही सुन रही हो, या कुछ काम भी कर रही हो! अब तक आग भी नहीं सुलगी! इस 'फू-फू' के क्या मानी, बोतल उठाओ, थोड़ा-सा तेल छिड़क दो, और दियासलाई रगड़कर फेंक दो, अभी भक्-से जल उठेगी। जल्दी करो मेरी बहन, जल्दी। बस, ठीक है। अब पतीली चढ़ा दो। और हाँ, अभी चाय न छोड़ देना। पहले अदरक़ के पतले-पतले कतले डाल दो, और ख़ूब उबलने दो। क्या कहा—अदरक़ नहीं मिलता? तो अल्लाह ने ये बड़े-बड़े दीदे किसलिये दिए हैं? इनसे तलाश करो। अरे हाँ, ख़ूब याद आया। अदरक़ तुम्हें मिलेगा कहाँ से! वह तो आलुओं-वाली उस टोकनी में पड़ा है—आलुओं के नीचे। अब तुम अदरक़ लेने गईं, तो वहीं की हो रहीं। बुआ, तुम्हारे माफ़िक़ काहिल शायद ही कोई हो। यह क्या कर रही हो; नहीं, कतलों की ज़रूरत नहीं है। कुचलकर डालो। इससे अर्क़ ख़ूब उतर आएगा। ज़ुक़ाम के लिये अदरक़ का अर्क़ बहुत मुफ़ीद होता है। ज़रा चाय में दूध और शकर ज़्यादा डाल देना। दस-पाँच लौंगें भी छोड़ दो। और सुनो, दो अंडों की टिकियाँ भी बना लो। प्याज़ ज़रा महीन कतरना, और नमक-मिर्च ख़ूब बारीक पीसना। तब तक मैं हाथ-मुँह धोए डालती हूँ।"

जिस समय बेगम साहबा ग़ुसलखाने से बाहर आईं, पतीली पर भाफ के बादल मँडरा रहे थे, सिकंदर ज़ोरों से सिल पर लोढ़ा रगड़ रही थी। बेगम साहबा ने उससे कहा—"चाय तैयार हो गई? अंडों में प्याज़ मिला दिया है, या ख़ाली नमक-मिर्च पर ही ज़ोर आज़मा रही हो? क्या कहा, अभी तो अदरक़ ही उबल रहा है! ऐ वाह! तो अदरक़ न हुआ, बुड्ढी बकरी का गोश्त हो गया! बुआ, तुम्हारे किए कभी कोई काम हुआ है, या आज ही

होगा ! ख़ुदा ने नाहक़ ही तुम्हें इंसान का जिस्म दिया । उमर तो तुम्हारी तीस से ऊपर ही होगी, मगर तुम्हें चाय बनाने का भी शऊर न आया । बुरा मानने की ज़रूरत नहीं । 'खाने को रोटी दस-बारा, काम करने को नन्हा बेचारा'वाले मज़मून से मुझे सख्त नफ़रत है । वह बैद को लेकर आ रहे होंगे, और यहाँ चाय भी तैयार नहीं ! वाह ! क्या ख़ूब ! ऐ ख़ुदा की नेक बंदी, मैं क्या कह रही हूँ, तुम्हारी समझ में कुछ आता है या नहीं ? नमक-मिर्च का पीछा छोड़ो । चाय केटली में भर दो, दूध अंगारों पर रख दो. जब तक वह गर्म होगा, मैं प्याले और तश्तरियाँ साफ़ करती हूँ । प्याज़ कतर दिया होता, तो मैं अंडों में मिला देती । खैर, अब कतर डालो । अरे, पानदान में तो डलियाँ हैं ही नहीं, और चुनौटी भी साफ़ है । बुआ, लपककर ज़रा-सा चूना दे जाओ, और पाँच-छ डलियाँ भी लेती आओ । ऐसी बुरी लत पड़ गई है कि हाथ-मुँह धोने पर जब तक दो बीड़े न खा लूँ, चैन ही नहीं पड़ती । ए लो, अब तुम्हें डलियाँ नहीं मिलतीं । वह क्या रक्खी हैं उस गरम मसाले-वाले डिब्बे के पास ! सिकंदर, ऐ बुआ, तुमसे कौन काम करने को कहे; चूना लेने क्या गईं, सात समंदर पार करने लगीं । अफ़सोस ! पैसे-भर चूना लाने में इतनी देर ! एक घंटे में चूना लेकर लौटीं । तुम्हें तो बस, बहाना चाहिए, ज़रा-सा काम बतला दो, हमारी सिकंदर बुआ घंटे-दो घंटे उसी में उलझी रहेंगी । अरे भई, जो काम तुमको न करना हुआ करे, कह दिया करो । लो, वह आ गए । मेरी अच्छी बुआ, जल्दी से झाड़ फेरकर वह दरी बिछा दो । नौ बजने को आए, और घर अब तक नहीं झड़ा । बैदजी मन में क्या कहेंगे । इसी से तो मुसलमान बदनाम हैं ! मगर जहाँ बीमारी हो, वहाँ सफ़ाई अच्छी तरह हो भी तो नहीं सकती । रहने भी दो, इतनी होशियारी की ज़रूरत नहीं है । हिंदुओं में ही ऐसी कहाँ सफ़ाई रहती है । पंडितजी की नौकरानी बतलाती थी कि उनका घर हमारे घर से भी बदतर रहता है । बस, अब जल्दी से दरी बिछा दो, और उनको भीतर बुला लो । बेचारे कब से बाहर खड़े हैं ।''

वैद्यजी नब्ज़ टटोलकर बोले—''सर्दी की शिकायत है । बुख़ार है तो, मगर बहुत खफ़ीफ़ । हाँ, सुस्ती अलबत्ता ज़्यादा है । आराम-तलब आदमी सुस्त हुआ ही चाहे । अगर यह मेहनत-मशक्कत करें, तो तमाम शिकायतें काफ़ूर हो जायँ । खैर, मैं तीन दिन के लिये दवा देता हूँ । तबियत ठीक हो जायगी । मगर सर्द और बादी चीज़ों से बचाव करना पड़ेगा । दवा शहद के साथ खाई जायगी । भुना हुआ सुहागा मिला लेने से और भी अच्छा होगा—चने-भर काफ़ी होगा । हाँ, लौंग का तो मुझे खयाल ही न रहा; एक ठो भूनकर मिला लेना ।''

वैद्यजी तो दवा का अनुपान बतलाकर और फ़ीस गाँठकर लंबे हुए, पर मियाँ रहमत और सिकंदर पर एक साथ क़यामत बरपा होने लगी । वह इस तरह कि सिकंदर ज्यों ही बेगम साहबा के पास से हटकर बावर्चीख़ाने में पहुँची, बिल्ली वहाँ से बाहर की तरफ़ भागी । बेगम साहबा बेताब हो गईं । पहुँचीं बावर्चीख़ाने के दरवाज़े पर, तो क्या देखती हैं कि दूध चौके में नदी-नालों की शक्लें बना रहा है, और अंडों का प्याला उलटा पड़ा है । उनके जिस्म में एड़ी से चोटी तक आग धधक उठी । वह दाँत पीसकर बोलीं—''बीबी, यह किस जनम के बदले चुका रही हो ? मैं तो भला, बैदजी को हाथ दिखला रही थी, तुम वहाँ दाल-भात में मूसलचंद बनने के लिये क्यों पहुँचीं ! अगर तुम्हारे यही लच्छन रहे, तो यहाँ तो एक दिन दिवाला ही पिट जायगा । जी हाँ, आपका

कोई क़ुसूर नहीं है । आप नेक-ख़सलत ही ऐसी हैं कि आपसे .क़ुसूर हो ही नहीं सकता । क़ुसूर तो मेरा है बीबी, जो बैद को नब्ज़ दिखलाने बैठ गई, और बावर्चीख़ाने के दरवाज़े को बंद करने का खयाल न रक्खा । सोचा था कि अदरक़ की चाय पिएँगे, अंडे की टिकिया खायँगे, तो तबियत कुछ हलकी हो जायगी, मगर तुम्हें यह बात कहाँ पसंद ? तुम तो अपने ही मन की करोगी । तुमसे तो बुआ, मेरा जी खट्टा हो गया । गो उमर में तुमसे छोटी हूँ, मगर तुम्हें तोते की तरह पढ़ाती हूँ ! पर वाह ! सिकंदर बुआ हैं कि चिकने घड़े का पानी । एक कान से बात सुनी, दूसरे कान से बाहर निकाल दी । ऐ कहाँ गए, कुछ सुना तुमने ? अब हमारी सिकंदर बुआ धन्ना सेठ हैं । कहती हैं कि दूध और अंडों के पैसे हमारी तनख्वाह से काट लेना । बस बीबी, बस, अब चुप ही रहो । ग़ैरत नहीं मालूम होती । चुल्लू-भर पानी में डूब मरो । क़ुसूर-का-क़ुसूर करो, और ऊपर से ज़बान लड़ाने की जुर्रत ! मैं तो तुम्हारी उमर का लिहाज़ करती हूँ, और तुम सिर चढ़ी जा रही हो । आइंदा इस तरह ज़बाँ-दराज़ी की, तो याद रखना, मेरा मिज़ाज बुरा है । सब लिहाज़-विहाज़ धरा रहेगा । बस, अब खड़ी ही रहो, घर में और काम……"

मियाँ रहमत ने कहा—"अरे तो इस परेशानी से अब क्या फ़ायदा ? चार ही पैसे का दूध गया है या और कुछ ? ख़्वाहमख़्वाह बेचारी की जान चीथ रही हो ।"

बेगम साहबा तिनककर बोलीं—"ऐ वाह ! तो मैं इंसान नहीं, बिल्ली हूँ ! क्यों ? लो सिकंदर, ख़ुशियाँ मनाओ, आज से तुम आज़ाद हो । कान पकड़े, बीबी, जो आइंद तुमसे कुछ कहूँ । जब वह शह देते हैं, तो मेरी ही जूतियों को क्या ग़रज़ पड़ी है, जो फ़िक्र में घुल-घुलकर मरूँ । मगर मियाँ, एक बात कहे देती हूँ—गाँठ में बाँध रखना । यह दुनिया है, यहाँ हमेशा सीधे का मुँह कुत्ते चाटा करते हैं । यही सिकंदर कल को अलग की जायँगी, तो घर-घर तुम्हारा दुखड़ा रोती फिरेंगी ।" यह कहकर बेगम साहबा पलँग पर जा गिरीं, और मुँह फेरकर पड़ रहीं ।

पाँच मिनट तक सन्नाटा छाया रहा । वह चहकता हुआ मकान गोया वीरान-सा हो गया । मियाँ रहमत ने सोचा, यह तो बुरा हुआ । चिड़िया रूठ गई । वह चहके, उसकी चहक से मकान गूँजे, तभी तो बहार है । आख़िर लोग चिड़ियों को पालते किस मतलब से हैं ? इसीलिये न कि आँखें उनकी सलोनी सूरत देखें, और कान उनकी मीठी आवाज़ सुनें । बस, उन्होंने सिकंदर से कहा—"यही तो तुम में बड़ा ऐब है सिकंदर, जो तुम उनका कहना नहीं मानतीं । तुम्हें सोचना चाहिए कि वह इस घर की सरकार हैं, हमारी सरकार हैं, तुम्हारी सरकार हैं, फिर क्या वजह कि तुम उनकी बातों को कानों पर उड़ाओ ? जो कहो कि हमेशा नाराज़ हुआ करती हैं, तो तुम्हें इसका ख़याल न करना चाहिए । देखतीं नहीं कि वह जब-तब तो बीमार बनी रहती हैं, और बीमार आदमी के मिज़ाज में चिड़चिड़ापन होना ताज्जुब की बात नहीं । बैदजी कब के चले गए, मगर तुमने उनको दवा खिलाने का कुछ ख़याल किया ? जाओ, लपककर दो पैसे का शहद ले आओ । वह अल्मोनियम-वाली कटोरी ले लो । यह लो इकन्नी, और हाँ, एक पैसे का अच्छा-सा सुहागा भी लेती आना ।"

बेगम साहबा उसी तरह पड़ी हुई ज़रा कड़ी आवाज़ में बोलीं—"दवा खाती कौन निगोड़ी है । कोई ज़रूरत नहीं है शहद-वहद की । मैं मरूँ चाहे जिऊँ, मगर तुम लोग मिलकर मुझे जलाए जाओ । देखो, तुम्हें क़सम है, कसर न रखना ।"

मगर जब सिकंदर कटोरी लेकर चलने ही लगी,

तो बेगम साहबा से न रहा गया, वह उठकर बैठ ही गईं, और कहने लगीं—"बुआ, मैंने क्या कहा ? सुना नहीं तुमने ? जब मुझे दवा खानी ही नहीं है, तब तुम शहद लेने क्यों जाओ। देखो, मैं जो बात कहा करूँ, उसे चुपके से मान लिया करो। इस ज़िद के क्या मानी ? तो तुम शहद लेने जाओगी ही—मानोगी नहीं ? अच्छी बात है, जाओ, मगर गुड़ का शीरा न ले आना। इन पंसारियों का एतबार न किया करो, मुए ईमान को ताक़ पर रखकर तो डंडी पकड़ते हैं। सूँघकर और चखकर देख लेना, और साफ़ कह देना कि दवा के लिये है; अगर ख़राब निकला, तो यही कटोरी खींचकर तेरे सर पर मारी जायगी। मगर आना बुआ जल्दी। मैं तुम्हारी आदत जानती हूँ, जहाँ जाती हो, वहीं बातों का बग़ीचा लगाने लगती हो। ता अब सुन क्या रही हो, जातीं क्यों नहीं।"

सिकंदर ने पीठ फेरी, तो मियाँ रहमत बोले—"अभी तो दिन है हुज़ूर, उठ बैठिए न !"

बेगम साहबा आँखों में आँसू भरकर बोलीं—"यहाँ जी जला जाता है, तुम्हें मज़ाक़ सूझ रहा है। आज मालूम हुआ कि तुम्हारे पेट में दाँत हैं, दमड़ी की नौकरानी के पीछे मेरी आबरू ले ली। मेरा ही ख़ून पियो, जो अब मुझसे बोलो।"

मियाँ रहमत बेगम साहबा के क़रीब पहुँचे, और उनका हाथ पकड़ते हुए बोले—"ख़ून पीनेवाले कोई और होंगे, यहाँ तो पिलानेवाले हैं। तुम्हें मेरी क़सम, ले उठ तो बैठो झट से अल्लाह का नाम लेकर, और ग़ुस्से को थूक दो। न कुछ बात, मगर मानिंद बच्चों के मचलकर पड़ रहीं। ऐसा कोई करता है। नौकरानी के साथ इस तरह माथा-पच्ची करना तुम्हारी शान के खिलाफ़ है। इसीलिये उतनी बात मुँह से निकल गई।"

सुलह हो गई, तो बेगम साहबा बावर्चीख़ाने में पहुँचीं। वहाँ का नज़्ज़ारा देखा, तो उनकी आग फिर भभक उठी, और बोलीं—"ग़ज़ब ख़ुदा का ! नालायक़ ने तमाम दूध ख़ाक में मिला दिया। चाय तक नसीब न हुई। इस मुई से ख़ुदा समझे। बुआ तीस को तो पार कर चुकी हैं, मगर खोदती घास ही रहीं। अगर इनके भरोसे रही, तो इंशा अल्लाह, क़यामत तक तो खाना पकेगा नहीं। दिल में तो यही इरादा कर लिया था कि आज हज़रत भूखे ही मदरसे जायँ, मगर फिर सोचा, वहाँ दिन-भर टँगे रहेंगे, और आँतें क़ुलहू-अल्लाह ! पढ़ा करेंगी, तो रहम आ गया। अच्छा, तो अब थोड़ा-सा आँटा गूँध लूँ, और दो पराठे सेंक दूँ। दस बजने में देर भी तो नहीं है। इन छोटे-छोटे दिनों ने अलग ही आफ़त कर रक्खी है। बी सिकंदर तो ऐसी गईं कि आने का नाम भी नहीं लेतीं। पंसारी से रिश्ता जोड़ रही होंगी, और क्या। इतने पर आप फ़रमाते क्या हैं कि उससे माथा-पच्ची न किया करो। भला बताओ तो, अगर उसका यही हाल रहेगा, तो काम कैसे चलेगा। ज़रा लपककर देखो तो कि ज़िंदा है मुई, या अल्लाह की प्यारी हुई। मैंने आज सबेरे-सबेरे दवाई का ज़िक्र क्या छेड़ा, अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मार ली। दस बज रहे हैं, और अभी यहाँ न पराठे सिके हैं, न सालन तैयार है। अब मैं क्या-क्या करूँ; न हो, मदरसे में बाज़ार से कुछ मँगाकर खा लेना।

"अल्लाह ख़ैर करे। हमारी सिकंदर सही-सलामत वापस तो आ गई। ऐ बुआ, तुम तो ऐसी गईं कि लापता ही हो रहीं। शहद लाना क्या हुआ, लाहौर लादना हो गया। यहाँ मैंने आँटा गूँध रक्खा है। तुम्हारे भरोसे रहती, तो कुछ न होता। अब खड़ी क्या हो, शहद उनको दे दो, वह दवा तैयार कर देंगे, और तुम यहाँ आओ। झट से कुछ आलू काट लो, और मसाला पीस डालो। कड़ाही मुझे दे दो, तब तक मैं पराठे सेंकती हूँ।

अभी दम-भर में खाना तैयार होता है। ऐं, कड़ाही मँजी नहीं है। तब तो पक चुका खाना, और खा चुके वह ! ऐ बीबी, अब तुमसे क्या कहूँ ! जब तुमसे कड़ाही भी नहीं मँज सकती, तब तुम हो किस मर्ज़ की दवा ? इंसान का काम प्यारा होता है या चाम ? मुई, देर-पर-देर हुई जाती है। जल्दी करो बीबी, जल्दी। कड़ाही माँजने में बरसें नहीं लगतीं। तब तक मैं दवाई ही ले लूँ।

"तुम यह दवा तैयार कर रहे हो कि खेल रहे हो ? होशियारी बघारेंगे दुनिया-भर की, और एक गोली पीसते बनती नहीं। लाओ, मुझे दो। तुम लौंग और सुहागा भून लो। सुहागा ज़रा होशियारी से भूनना। एक बड़े से अंगार पर छोटी-सी डली रख देना। जब मानिंद बताशे के फूल जाय, उठा लेना।"

"जी सरकार" कहते हुए मियाँ रहमत चले, तो कटोरी उनके पाजामे के पाँयचे में उलझ गई, और सारा शहद ज़मीन पर जा रहा। बेगम साहबा हाथ मलकर बोलीं—"वाह री क़िस्मत ! सिकदर की बदौलत चाय और अंडों से हाथ धोया, एक दवाई बच रही थी, वह इन्होंने न पीने दी। बैठे-बिठाए एक रुपए का .खून हो गया।"

मियाँ रहमत ने कहा—"तुम्हारी होशियारी के मारे तो नाक में दम है। मज़े से दवा तैयार कर रहा था। बीच में तुम्हारे आने की क्या ज़रूरत थी। अच्छा-भला पाजामा खराब हो गया।"

बेगम साहबा चिढ़कर बोलीं—"तो मैंने तुमसे कह दिया था कि कटोरी से उलझ पड़ो ? ग़लती करेंगे आप, और क़ुसूर थोपेंगे दूसरे के सर। इतना बड़ा तो मकान, पर आपको देखिए—कभी किवाड़ों से भिड़ रहे हैं, कभी खूँटियों से टकरा रहे हैं। गोया बेहोश रहते हैं।"

मियाँ रहमत मुस्किराकर बोले—"हाँ, यह तो सच है। मगर इसमें मेरा क्या क़ुसूर, तुम्हें देखता हूँ, तो यहाँ कच्चे घड़े की चढ़ जाती है।"

"जी हाँ ! बड़े वह हैं आप।" कहती हुई बेगम साहबा भी मुस्किरा दीं। फिर धीरे-धीरे बावर्चीख़ाने में पहुँचीं, और बोलीं—"माँज लाईं बुआ कड़ाही। अच्छा, तो अब चूल्हे पर चढ़ा दो, और वह घी-वाली डेगची उठाओ। जब तक मैं पराठे सेंकती हूँ, तब तक तुम मसाला तैयार कर रक्खो। अरे, तुम तो कपड़े पहनने लगे। क्या कहा, दस बज चुके ? इतनी जल्दी ! अच्छी तुम्हारी घड़ी है। तो क्या भूखे ही चले जाओगे ? यह भी कोई बात है। खाना तैयार है। खाकर जाओ। पराठे सिंक ही रहे हैं, सिर्फ़ सालन तैयार होना है। दम-भर में सब हुआ जाता है। बुआ, जल्दी करो, जल्दी। तुम्हारी ही बदौलत आज यह देर हुई। मेरी तबियत अच्छी होती, तो कब का खाना पक गया होता। मैं तो चुटकी बजाते कुल काम करती हूँ; तुम्हारे माफ़िक़ रो-रोकर काम करूँ, तो यह घर-गिरस्ती कल धूल में मिल जाय। आख़िर अल्लाह ने हाथ-पैर क्यों दिए हैं, काम करने के लिये ही या और कुछ ? मसाला पिस तो चुका है। अब झट से वह पतीली और धो लाओ, तो लगे हाथ आलू भी बघार दूँ।

"ए लो, वह तो कपड़े पहनकर तैयार ही हो गए। .खुदा के वास्ते ज़रा तो ठहर जाओ। अब तुम्हें कौन समझाए कि खाना पकाना कुछ हथेली पर सरसों जमाना तो है नहीं। हाँ, मैं बेकार बैठी होती, तो तुम अलबत्ता शिकायत कर सकते थे। चूल्हे से सिर मारना कैसी मुसीबत है, यह तुम मरद क्या जानो। तुम्हें क्या, खाना सामने आया, लंबे-लंबे हाथ फटकारे, मूछों पर ताव दिया, और रफ़ूचक्कर हुए। एक दिन दस मिनट की देर ही हो गई, तो कुछ हरज हो जायगा ? ऐसा डर है तुम्हें हेडमास्टर का ? हेडमास्टर न हुआ, कहीं की तोप हो गया। क्या उस निगोड़े के बाल-बच्चे नहीं हैं ? ऐ सिकंदर, तुम्हारे काम से मैं आजिज़ आ गई। अब घंटे-भर से पतीली ही धुल रही है।"

यह कहते-कहते बेगम साहबा ने जो पराँठा उलटा, तो उँगलियाँ जल गईं। बेचारी आँखों में आँसू भरकर बाहर निकल आईं, और चीख़कर बोलीं—"लो, हो गई तुम्हारे मन की! तीन घंटे से हाथ जोड़ रही हूँ कि जल्दी का काम शैतान का होता है, मगर तुम क्यों मानने लगे। ख़ुदा जाने, आज सबेरे-सबेरे किसका मुँह देखकर उठी थी। सिकंदर ने दूध और अंडों पर बत्ती रक्खी, बैदजी आए, तो एक रुपया झटक ले गए, तुमने शहद पर ठोकर जमाई, और इन मुए पराठों ने तो जान ही ले डाली।"

"हाँ, ख़ूब याद आया। आज सुबह तुम्हारा मुँह आइने की तरफ़ था। इसी से तो कहा करता हूँ कि आइने की तरफ़ मुँह करके न सोया करो। पर तुम मानो, तब न!" यह कहते-कहते मियाँ रहमत जूते पहनकर बाहर हो गए।

महात्माजी का अद्भुत चमत्कार

पाठको! यह महात्माजी का वह चामत्कारिक योग है, जिसके ७ दिन सेवन से शरीर में रक्त दौड़ने लगता है, २१ दिन में चेहरा लाल हो जाता तथा ४० दिन में कैसी ही निर्बलता, नपुंसकता हो, दूर होकर अपार बल-वीर्य बढ़ जाता है। प्रमेह, स्वप्नदोष, बवासीर, खाँसी, दमा, नज़ला, जिगर, तिल्ली के रोग, स्त्रियों का प्रदर, मूत्र में शकर जाना (डायबिटीज़) आदि अनेक रोग दूर होकर देह कुंदन बन जाती है। कल्लाती पहाड़ी के रत्नागिरि साधु ने यही कुछ दवा एक ग्वाला को दी थी, जो सब एक बार में ही खा गया, जिससे उसने बुढ़ापे में तीन विवाह किए थे। साधु से योग नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदख़ाँ को मिला, फिर आपसे पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य को। शर्माजी ने परीक्षा कर देशोपकारक में छापा, तथा इससे उत्तम योग देनेवाले को उसके अपने ३ योगों के लिये १०००) का इनाम मय सार्टीफ़िकेट के देने को लिखा था, जिसे किसी ने न पाया है। वास्तव में यह बड़ा ही उत्तम योग है। यह क़ब्ज़ भी नहीं करता, बल्कि दूनी भूक लगाता है, तथा हर मौसम में युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष को एक-सा लाभ करता है। इसकी प्रशंसा मथुरा के वैद्य बाबू हरिदासजी ने छापी है कि एक आदमी का वज़न इससे एक सप्ताह में ४ पौंड बढ़ा, तथा दूसरे का चेहरा सुर्ख़ हुआ। भूपाल के वैद्यराज बालकृष्ण शर्मा लिखते हैं—मैंने इन १७० लोगों पर बरता और पूर्ण गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक वैद्य छोटेलाल जैन ने छापा है कि हमने ऐसा गुणकारी दूसरा योग नहीं देखा। गोताना के डॉ० रामेश्वरदयाल लिखते हैं कि इससे २३० रोगी मैंने अच्छे किए हैं। पाठको! ४० दिन सेवन कर चमत्कार देखो।

योग यह है—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला को प्रथम १ तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १॥ माशा, शुद्ध कपूर के साथ कुमारी के रस में घोट ५ सेर कंडा में फूँके, दुबारा हरताल बर्क़ी शुद्ध १ तोला, कपूर १॥ माशा, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर १॥ माशा, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा के साथ पूर्ववत् फूँके। इसी क्रम से १६ आँचें दें, फिर दवा ज़मीन में गाड़ दें, और ४ मास बाद चार चावल प्रातः-सायं मक्खन-मलाई से खावें। इतना बल बढ़ेगा कि आप हैरान हो जायँगे। अगर कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी पत्र भेज उत्तर मँगा सकते हो। यह दवा हमारे यहाँ बनी मिलती है; चाहें, तो ४० दिन के लिये ८० मात्रा दवा डाक-ख़र्च-सहित ५।॥) में मँगा लें।

सेवक—श्यामविहारीलाल वैद्यभूषण

श्यामचक्र-कार्यालय (रजिस्टर्ड), ५५३ बी०, शाहजहाँपुर (यू० पी०)

भाट लोग ब्राह्मण हैं या नहीं ?

[रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० तथा रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०]

कुछ मास हुए हमने सुधा-पत्रिका में एक लेख महाकवि सूरदास की जाति के संबंध में लिखा, जिसमें भाटों को अब्राह्मण माना। हाल में अखिलभारतीय भट्ट-ब्राह्मण-महासभा के प्रचार-मंत्री पं० सुखदयालुजी भट्ट ने पं० मनूजी भट्ट (उक्त सभा की कार्यकारिणी समिति के सदस्य) तथा श्रीपं० गोविंदप्रसाद शर्मा, मंत्री स्थानीय ब्रह्मभट्ट-सभा, लखनऊ के साथ हमारे पास पधारने की कृपा करके कहा कि इस जाति-संबंधी विषय पर कुछ भट्ट महाशय हमारे कथनों से उद्विग्न हुए हैं। हमने उत्तर दिया कि केवल उद्विग्नता से कोई मनुष्य मत-परिवर्तन नहीं करेगा ; हाँ, यदि कोई प्रमाण लाइए, तो पुनः विचार हो सकता है। उपर्युक्त भट्ट महाशय कई और विद्वानों को भी हमारे पास लाए। इन सब लोगों ने प्रचुर परिश्रम करके हमारे सामने बहुतेरे प्रमाण उपस्थित किए। इधर हमने भी नवीन प्रमाण खोजे, तथा एकाध पंडित से भी प्राप्त किए। इस प्रकार इस विषय पर बहुतेरे प्रमाण उपस्थित हो गए, जिन पर ध्यान देकर फिर से विचार किया जाता है। हम तो साहित्यिक पुरुष हैं, न कि जातीय उच्चता के अभिमानी। भारतीय इतिहास पर भी हमने कुछ परिश्रम अवश्य किया है, किंतु हमारे मुख्य विषय साहित्यिक, इतिहास और आलोचना हैं। हमारी समझ में जाति-पाँति-संबंधी भावों से हिंदुओं का किसी समय अवश्य कल्याण हुआ, किंतु अब इनसे हानि-ही-हानि है। जाति-संबंधी विषय पर विचार हम केवल ऐतिहासिक दृष्टि से करते हैं। फिर भी कुछ भट्ट महाशयों को हमारी जाति-संबंधी उदासीनता पर विश्वास नहीं होता, क्योंकि उन्हें हमारे प्राचीन लेखों में कहीं-कहीं ब्राह्मण-वंश पर अहंकार तथा भाटों की अनुचित निंदा की दुर्गंध आती है। यह जाति-संबंधी दर्पोक्ति यदि कहीं हो, तो इच्छा पर आधारित न होकर कुलज संस्कार-भव होगी। ब्राह्मणों के घर उत्पन्न तथा पालित होने से जैसे विचार हमारे मन में आए, और स्वभावतः विना सोचे-समझे साधारणरीत्या हमने लिख दिए, उनसे, संभव है, कहीं-कहीं ब्राह्मण-वंश के प्रति अहंकार आ गया हो, तथा भट्टों की अनुचित निंदा हो गई हो। अब हम समझ-बूझकर इस विषय पर अपने विचार लिखते हैं। यहाँ यह भी लिख देना आवश्यक है कि जाति-संबंधी विषयों पर व्यवस्था देने की योग्यता हम अपने में नहीं पाते, क्योंकि इस विषय पर

हमारी रुचि नहीं है, न अध्ययन ही हुआ है। अतएव हमारे लिये इसका निर्णय अनधिकार चर्चा है। फिर भी हमारे उपर्युक्त मित्रों का विचार है कि जब हमने, साधारणतया ही सही, ऐसे विचार लिखे, जिनसे उनके जातीय गौरव का अनादर समझा जाता है, तो हमारा धर्म है कि समझ-बूझकर इस पर अपना अंतिम निर्णय लिख दें। उनके इस कथन में बहुत कुछ सार है, इसलिये हम यह विषय उठाते हैं; यद्यपि किसी से यह अनुरोध नहीं करते कि हमारे कथन सर्वमान्य अंतिम निर्णय के रूप में हैं। संभव है, बहुतेरे प्रमाण छूट गए हों। फिर भी जहाँ तक हमें मिल सके, हमने संग्रह कर लिए हैं।

इस विषय पर प्राप्त प्रमाणों का कथन करके हम अपना मत पीछे लिखेंगे।

(१) Tribes and Castes of Bombay Vol. I (३०३७) पृष्ठ १२३ और १३३ से निम्नांकित विचार प्राप्त हैं—

ब्रह्मवैवर्त भाट को शूद्र पिता और वैश्या माता या क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता की संतान मानता है। जातिविवेक भाट को मागध मानकर वैश्य पिता और क्षत्रिया माता से उत्पन्न कहता है। यह सब मिलाकर भाट ब्राह्मण समझ पड़ते हैं। ब्रह्मभट्ट भाटों की एक शाखा है। सीदी अली-कपुदन (१५३३ ई०) गुजराती भाटों को ब्राह्मण बतलाते हैं। उपर्युक्त ग्रंथ भूषण को भी भाट मानता है। इसके अनुसार अन्य ब्राह्मण लोग भाटों को पतित समझते हैं। बहुतेरे भाट जनेऊ नहीं पहनते। ब्रह्मभट्ट सब भाटों में ऊँचे हैं। भाटों में कुलिया और अकुलिया होते हैं। कुलिया अकुलियों के साथ खाते हैं, किंतु उन्हें लड़की नहीं देते। एक शाखा 'राना' है। मराज भाट अपने को मूलतः क्षत्रिय मानते हैं। भाटों में कुछ अपने मुर्दे गाड़ते भी हैं। लेखक के मतानुसार पृथ्वीराज के कवि और पुरोहित चंद्र भाट-ब्राह्मण थे। इसी ग्रंथ के पृष्ठ १२६ पर लिखा है कि कच्छ के भाट पहले कनौजिया ब्राह्मण थे। उनमें से डोंगरे जनेऊ नहीं पहनते, परंतु ब्रह्मभट्ट समाज में अपना उच्चतम स्थान रखते हैं।

(२) युक्तप्रांत के क्रुक महाशय-कृत सन् १८९६ के Tribes and Castes, भाग दो के पृष्ठ २२ पर भाटों की शाखाओं में से कुछ के नाम ये हैं—आचार्य, भारद्वाज, दीक्षित, गंगापुत्र, कनवजिया, सरवरिया, मथुरिया, भटनागर, जैसवार, राना, बड़गूजर, बड़गैया, भदौरिया, बुंदेल, चंद्रवंशी, कछवाह, राठौर, सकरवार आदि। इसी पृष्ठ पर उनकी ६ मुख्य शाखाओं के नाम हैं—भारद्वाज, बिरम या ब्रह्मभट्ट, दसौंधी, गजभीम, जाग, कैलिया, महापात्र, राय और राजभाट। यह ग्रंथ सरकार ने जाँच करके (४ भागों में) बनवाया था। इसके अतिरिक्त पृष्ठ २१ पर लिखा है—

भाट जनेऊ पहनते हैं, और निम्न जातियों से महाराज (जो ब्राह्मणों के लिये प्रयुक्त होता

है-शब्द द्वारा संबोधित किए जाते हैं। भाट याजक कहलाते हैं, और उनके आश्रयदाता यजमान।

पृष्ठ २३ और २४ पर यह लिखा है कि हिंदू भाटों के कुछ गोत्रों के नाम वे ही हैं, जो ब्राह्मणों के।

(३) योगेंद्रनाथ भट्टाचार्य एम्० ए०, डी० एल्०-कृत Hindu Castes and Sects के सन् १८९६ के संस्करण के पृष्ठ ११४ में लिखा है कि भाट और चारण लोग मूलतः ब्राह्मण समझ पड़ते हैं, क्योंकि वे जनेऊ पहनते और अन्य जाति के लोग उन्हें पवित्र मानते हैं। इसमें कोई प्रमाण नहीं दिया हुआ है, किंतु लेखक महाशय भारी विद्वान् थे।

(४) Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and the N. W. F. P., Vol. II के पृष्ठ ९७ पर लिखा है कि भाट ब्राह्मणों की एक शाखा है।

(५) Tribes and Castes of C. P. by R. V. Russell, assisted by R. B Hiralal (in 4 Parts, 1916) के दूसरे भाग के पृष्ठ २५१ पर लिखा है कि निस्संदेह ब्रह्मभट्ट ब्राह्मणों की एक शाखा है। उनका नाम ब्राह्मण से बिगाड़कर बना है। पृष्ठ २५३ पर लिखा है कि चारण राजपूत भाटों की एक शाखा है, परंतु ब्रह्मभट्ट और राजपूत चारणों के अलावा भाट-जाति का एक बड़ा भाग मिश्र-मूल का है, जो नीची जाति के लोगों में भाट का काम करता है, और शायद अधिकांश उन्हीं जाति के लोगों से बना हुआ है। यह ग्रंथ कहता है कि आगे ब्राह्मण पीछे भाट, ताके पीछे और जात।

(६) The Ain-i-Akbari by Abul Fazal Allami, translated from the original Persian by H. Blochmann M. A., 1873, Vol. I के पृष्ठ ४०४ पर लिखा है कि बीरबल भाट-ब्राह्मण थे।

(७) शास्त्रीय प्रमाण—

(अ) महा० अनुशासन-पर्व, अ० ८५—

पुरुषा वपुषा युक्ताः स्वैः स्वैः प्रसवजैर्गुणैः ;
भृगित्येव भृगुः पूर्वमङ्गारेभ्योऽङ्गिराभवत् ॥१०५॥
अङ्गारसंश्रयाच्चैव कविरित्यपरोऽभवत् ;
सहज्वालाभिरुत्पन्नो भृगुस्तस्माद्भृगुः स्मृतः ॥१०६॥

इस प्रकार कवि भृगु और अंगिरा के साथ उत्पन्न होने से ब्राह्मण हुए, ऐसा ज्ञात होता है।

(आ) वर्ण-धर्म-विवेक धर्मशास्त्र, प्रथम तरंग—

अपरः कविसम्भूतो ब्रह्मभट्टेति विश्रुतः ;
त्रयस्ते लोकविख्याताः सच्छास्त्रेण प्रकीर्तिताः ।

यहाँ से प्रकट होता है कि कविऋषि ब्रह्मभट्ट कहलाए।

(इ) स्कंदपुराण ब्रह्मखंड—

सजातमात्रो हि विधेरेवं कृत्वा स्तुतिं जगौ ;
ब्राह्मणस्त्वमितः ख्यातो ब्रह्मरावोऽपि स श्रुतः ।

इस आधार से ब्रह्मराव ब्राह्मण सिद्ध होते हैं।

(ई) ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखंड, अ० १०—

वैश्यायां सूतवीर्येण पुमानेको बभूव ह ;
स भट्टो वावदूकश्च सर्वेषां स्तुतिपाठकः ॥ १२६ ॥

यही श्लोक हमने पिछले लेख में, सर राधाकांतदेव के कोष से, उद्धृत किया था। किंतु वहाँ 'सूतवीर्येण' के स्थान पर 'शूद्रवीर्येण' लिखा था। मूल ब्रह्मवैवर्तपुराण देखने से मालूम हुआ कि कोष का पाठ शूद्रवीर्येण ग़लत है।

(उ) क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो भवति जातितः ;
वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्राङ्गनासुतौ।
(मनुस्मृति, अध्याय १०, श्लोक ११)

इस प्रकार मनु के अनुसार क्षत्रिय से विप्र-कन्या में सूत होता है, वैश्य से राज कन्या में मागध तथा विप्र-कन्या में वैदेह।

(ऊ) ब्राह्मण्यां वैश्यसंसर्गाज्जातो मागध उच्यते ;
वैश्यायां शूद्रसंसर्गाज्जातो वैदेहकः स्मृतः।
(औशनसस्मृति)

अतएव औशनसस्मृति मागधों और वैदेहों की थोड़ी-सी भिन्न उत्पत्ति कहती है।

(ए) नृपाद्ब्राह्मणकन्यायां विवाहेषु समन्वयात् ;
जातः सूतोऽत्र निर्दिष्टः प्रतिलोमविधिद्विजः।
(औशनसस्मृति)

यहाँ विवाह द्वारा राजा (क्षत्रिय) से ब्राह्मण-कन्या में उत्पन्न पुत्र को भी सूत कहते हैं, और उसे प्रतिलोम विधि का द्विज बताया है।

(८) रघुवंश, पंचम सर्ग, श्लोक ६५—

सूतात्मजाः सवयसः प्रथितप्रबोधम्।

(९) मल्लिनाथ 'सूतात्मजाः' को वन्दिपुत्राः कहते हैं।

(१०) कौटिल्य - कृत अथशास्त्र महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री की टीका-सहित सन् १९२४ का संस्करण, पृष्ठ ४२ और ४३—

क्षत्रियात्सूतः।

पौराणिकस्त्वन्यः सूतो मागधश्च ब्रह्मक्षत्राद् विशेषतः। त एते प्रतिलोमा इ स्वधर्मातिक्रमाद्राज्ञः सम्भवन्ति।

ऊपर के वचन मूल के हैं, जिनमें वर्णसंकर सूनों से भिन्न पौराणिक सूत माने गए हैं। टीकाकार ने इसके समर्थन में विष्णुपुराण, अग्निपुराण और कूर्मपुराण से प्रमाण उद्धृत किए हैं, जिनमें पौराणिक सूतों की उत्पत्ति 'सूत्या' यज्ञ से बतलाई गई है।

(११) शब्दस्तोम - महानिधि कोष में श्रीतारानाथ तर्कवाचस्पति सूत के विषय में लिखते हैं—

क्षत्रियजाते ब्राह्मणीगर्भे वर्णसंकरभेदे, त्वष्टरि, सारथौ, वंदिनि, मागधे, लोमहर्षणाख्ये पुराणवक्तरि च।

(१२) अमरकोषकार ने सूत को शूद्र वर्ग में, क्षात्र वर्ग में और नानार्थ-वर्ग में लिखा है—

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः।

यह श्लोक शूद्र-वर्ग में है।

सूतस्त्वष्टरि सारथौ।

यह क्षत्रिय-वर्ग का है।

एक सूत भाटों के पूर्व-पुरुष भी कहे गए हैं। इसीलिये इस लेख में सूतों का विवरण आया है।

(अ) मेदिनीकोष—

सूतस्तु सारथौ तक्षिण क्षत्रियाद् ब्राह्मणीसुते ;
वन्दिपारदयोः पुंसि प्रसूते प्रेरिते त्रिषु ।

(१३) पंडितवर आप्टे-कृत कोष के अनुसार भट्ट एक मिश्रित जाति है, जिसका पेशा वंदी या वैतालिक का है। Barel को आप वंदिन या वैतालिक कहते हैं। सूत के विषय में अपने कोष में आप लिखते हैं कि सूत विप्र-कन्या में क्षत्रिय से उत्पन्न है, या क्षत्रिय-कन्या में वैश्य से। उसका व्यापार वंदी का है।

(१४) सर राधाकांत देव ने अपने कोष-ग्रंथ शब्द-कल्पद्रुम में यह भी लिखा है—

ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं सच्छूद्रं गणकं शुभम् ;
भट्टं वैद्यं पुष्पकारं स्थापयेत् शिविरान्तिके ।
(ब्रह्मवैवर्त, श्रीकृष्णजन्म, अध्याय १०१)

इससे प्रकट है कि भट्ट, गणक, वैद्य आदि ब्राह्मणों से पृथक् समझे जाते थे।

सूत के विषय में इसी ग्रंथ में "क्षत्रियाद् ब्राह्मणीसुतः" लिखा है, अथच 'सूत्या' से भी उत्पत्ति कही गई है। पृथ्वी से मनुष्य उत्पन्न हो नहीं सकता, इससे यही प्रकट होता है कि सूत की किसी प्रकार यज्ञ में महिमा होकर पदोन्नति हुई, जिससे वह सूत्या से उत्पन्न माना गया। इस प्रकार शारीरिक उत्पत्ति के विषय में ये याज्ञिक प्रमाण कोई कथन नहीं।

(१५) महाभारत में जब कर्ण ने द्रोणाचार्य से ब्रह्मास्त्र की शिक्षा माँगी, तब उन्होंने सूत होने के कारण कर्ण को शूद्र कहकर ब्रह्मास्त्र की शिक्षा देने से इनकार किया। यथा—

ब्रह्मअस्त्र ब्राह्मण कहँ योग ;
अथवा क्षत्रिहि उचित प्रयोग।
नहिं शूद्रहि ताको अधिकार ;
निज लायक गुनि लेहु उदार।

यह छंद काशी के एक वंदीजन द्वारा महाभारत के उलथा में लिखा गया है।

अब उपर्युक्त १५ प्रमाणों पर विचार किया जाता है। पहले ९ प्रमाणों में कुछ शाखाएँ ब्राह्मण मानी गई हैं, कुछ क्षत्रिय और कुछ इतर। नेस्फ़ील्ड सब भाटों को ब्राह्मण कहते हैं, किंतु रिसली आदि इन्हें मिलित वर्ण का मानते हैं। नंबर १२ और १५ में अमरकोष और महाभारत सूतों को शूद्रवर्ण में लिखते हैं। नंबर १० में कौटिल्य पौराणिक सूतों को ब्राह्मणों से उत्कृष्ट तो कहते हैं, किंतु ब्राह्मण नहीं। नं० १४ में दिखलाया गया है कि सूत्या से उत्पत्ति के कथन वास्तविक उत्पत्ति के विषय में मौन हैं, अथच केवल माहात्म्य का वर्णन करते हैं। इससे उत्पत्ति के विषय में केवल ब्राह्मणी में क्षत्रियवाला प्रमाण रह जाता है, या क्षत्रिया में वैश्य से। कोई इतर प्रमाण अप्राप्त है। नं० ८ और ९ में सूत वंदिन कहे गए हैं। तोरेस में भाट मूलतः ब्राह्मण स्वीकार किए गए हैं। पाँचवें में कई प्रकार के भाटों के कथन हैं, जिनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं शूद्र सब इस जाति में आ जाते हैं। उसमें भाट-जाति ब्राह्मण से पीछे, किंतु इतर जातियों से श्रेष्ठ कही गई है। सातवें प्रमाण में, जो स्वयं ब्रह्म-

भट्टों ने एकत्र किए हैं, कवि ब्रह्मभट्ट कहे गए हैं, और ब्राह्मण भी। राव भी ब्राह्मण हैं, किंतु 'राव' भाटों की कोई शाखा न होकर वास्तव में सब भाटों का पद-मात्र है। भट्ट वैश्या में सूत-वीर्य से उत्पन्न हैं, तथा सूत क्षत्रिय से ब्राह्मण-कन्या में उत्पन्न पुत्र हैं। एक स्थान पर क्षत्रिय से विवाहित ब्राह्मण-कन्या से उत्पन्न पुत्र भी 'सूत' है। नं० १३ में भी सूतों की ऐसी ही उत्पति है। ११वें का भी ऐसा ही मत है। १४वें में भट्ट ब्राह्मण से पृथक्-से हैं, और १५वें में सूत शूद्र हैं।

सब बातों का सार यह समझ पड़ता है कि भाट एक मिश्रित जाति है, जिसमें कई जातियों के लोग हैं। वास्तव में मूलतः यह एक व्यापारिक वर्ग-मात्र समझ पड़ता है, जिसमें समय के साथ बहुतेरी जातियाँ मिलती रहीं। ब्रह्मभट्ट-मात्र मूलतः ब्राह्मण थे, और इतर भाटों से संबंध न करने से अब भी हैं, किंतु शेष ब्राह्मणों का इनसे रोटी-बेटी का संबंध शेष नहीं। ब्रह्मभट्ट मूलतः ब्राह्मण होकर भी व्यापार एवं अन्य घटनाओं के कारण शेष ब्राह्मणों से पृथक् हो गए। कुछ प्रमाण भाटों के ब्राह्मण होने के विषय में मिलते हैं, और कुछ सूत-वंशी होने के भी। पौराणिक सूतों का मान तो कौटिल्य इतना करते हैं कि उनको ब्राह्मणों से भी बढ़कर कह डालते हैं, किंतु ब्राह्मण नहीं, सो पार्थक्य यहाँ भी प्रस्तुत है। हम सूतों को अब्राह्मण समझते हैं, और कुल भाटों को सूतात्मज नहीं मानते, प्रत्युत केवल कुछ को मानते हैं। ब्रह्मभट्ट मूलतः ब्राह्मण हैं, और शेष इतर। ब्रह्मभट्टों के विषय में ब्राह्मणत्व के प्रमाण भी मिलते हैं। स्वयं गोस्वामी गोकुलनाथजी तक चौरासी वार्ता में ब्रह्मभट्टों को ब्राह्मण-वर्ग में मानते हैं। ब्रह्मभट्ट महाशयों का कथन है कि इतर भाटों से हमारा रोटी-बेटी का संबंध नहीं है, विशेषतया सूतज भाटों से। ब्रह्मभट्ट अपने को कान्यकुब्ज भट्ट कहते और समझ भी पड़ते हैं।

यहाँ तक जाति के विषय में कथन हुए। हमारे सुधावाले उपर्युक्त लेख * में सूरदास, बिहारीलाल और भूषण को ब्राह्मण माननेवाले जो विचार हैं, वे अब भी जैसे-के-तैसे हैं।

---

* यह लेख श्रावण, १९९४ की संख्या में छपा है। सं०

हिंदी-प्रेमियों से प्रार्थना !

हिंदुस्थान-भर के प्रकाशकों की पुस्तकें आपको यदि एक जगह से लेकर रुपए तथा समय बचाना हो, तो -) का टिकट भेजकर हमारा बड़ा सूचीपत्र मँगा लीजिए। इतना बड़ा सूचीपत्र किसी भी प्रकाशक या बुकसेलर ने नहीं छपवाया। आप देखकर दंग रह जायँगे!

योग्य सेवा के लिये सदा मुस्तैद—

संचालक गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सुधा-चित्रावली

टेनिस की खिलाड़िनें

['उत्तर-भारत-लॉन-टेनिस-प्रतियोगिता' (लाहौर) में भाग लेनेवाली कुमारियाँ—(बाईं ओर से) मिस एम्० जी० दिनशा (कराची), मिस होमन, मिस पी० जी० दिनशा, मिस एम्० जी० दिनशा (कराची) और मिस कुँजरू (लाहौर)।]

प्रतिच्छविकार (फ़ोटोग्राफ़र)—श्रीराजगोपालजी, लाहौर

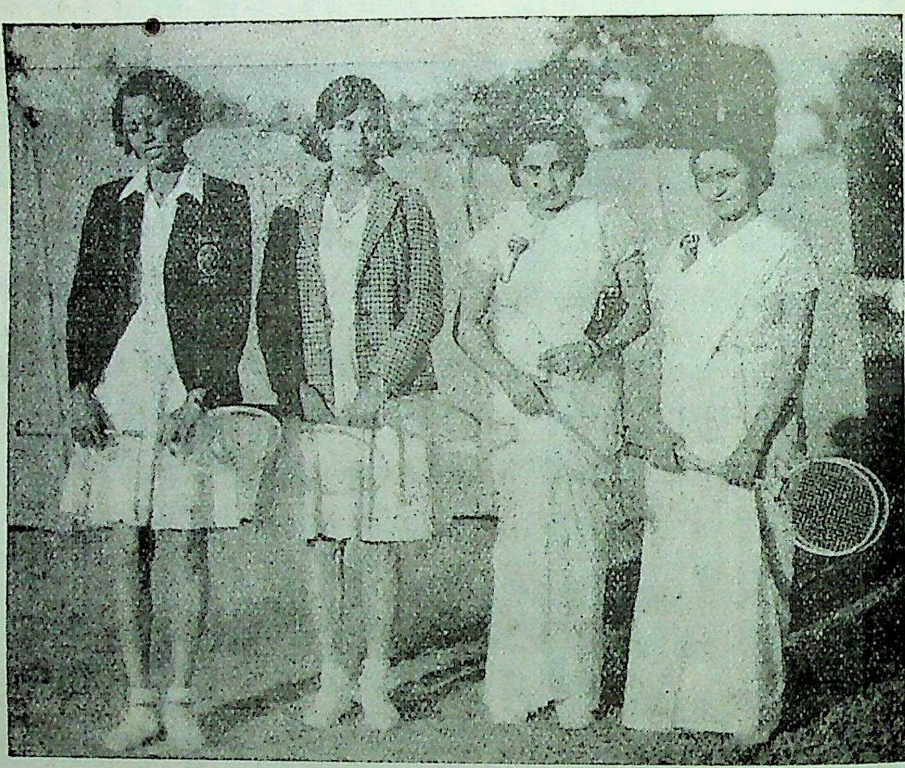

कुछ बालिकाएँ
[इन्होंने पंजाब-बैडमिंटन-टूर्नामेंट, लाहौर की प्रतियोगिता में भाग लिया
है—(बाईं ओर से) एक ओर मिस ड्यूक और मिसेज़
लेविस विजेत्री और दूसरी ओर मिस सुरी तथा
मिस कौल पराजिता ।]
प्रतिच्छविकार—श्रीराजगोपालजी, लाहौर ।

श्रीयुत डॉ० आर० एस्० अग्रवाल (दिल्ली)

[आप नेत्र-रोगों के विशेषज्ञ हैं। आपका 'नेत्र और सूर्योपासना'-शीर्षक लेख गत जनवरी-संख्या में प्रकाशित हुआ है।]

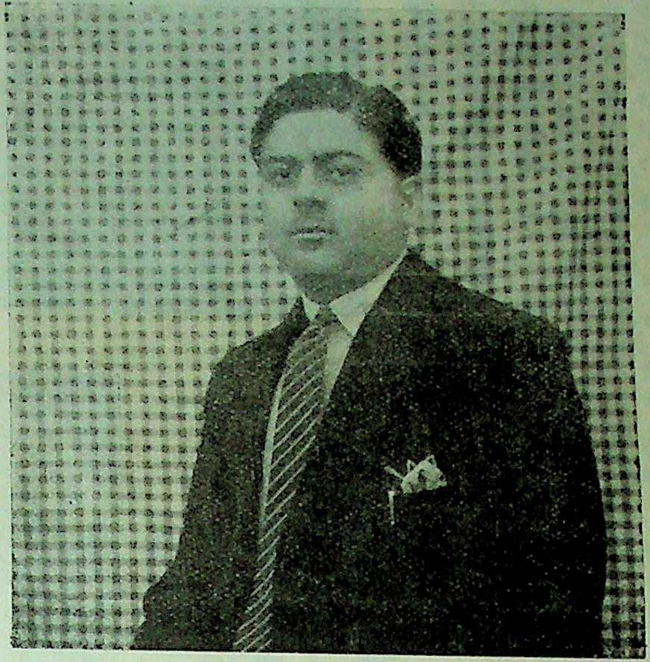

श्रीजगदीशनारायणजी बख़शी

[आप लखनऊ विश्वविद्यालय के बी० ए० (तृतीय वर्ष, ऑनर्स) के कुशाग्रबुद्धि विद्यार्थी और विश्वविद्यालय-संघ की पत्रिका के उर्दू-भाग के संपादक हैं।]

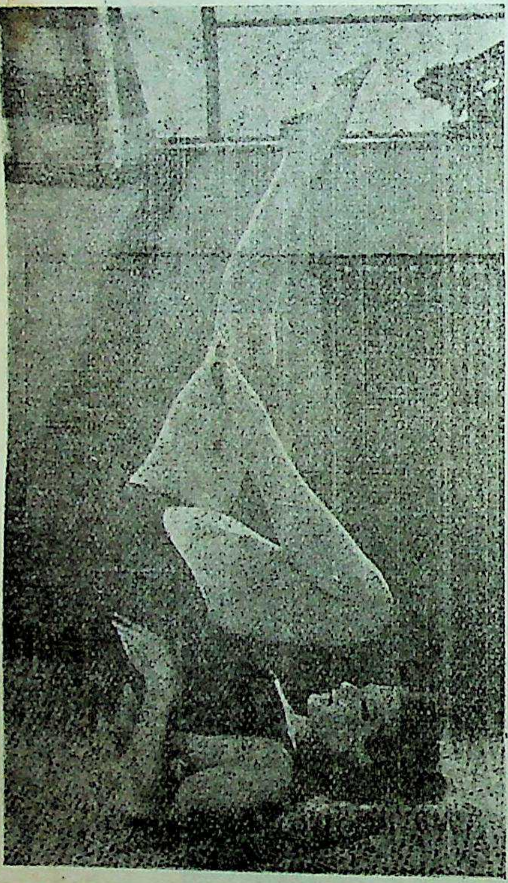

कमर और टाँग का व्यायाम

[यह व्यायाम मिस प्रोफ़ीलिया ने अपनी शिष्याओं को बताया है।]

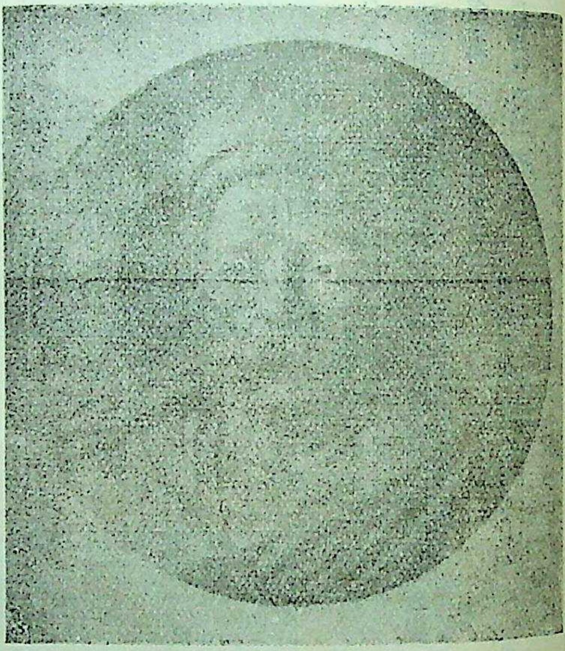

लोकमान्य तिलक

[लोकमान्य तिलक की यह बस्ट सुधा के प्रसिद्ध चित्रकार श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू के दामाद श्रीरघुनाथ-गणेश बाष्टे ने बनाई है। इसका उद्घाटन मध्यप्रांत के प्रधान मंत्री डॉक्टर खरे के कर-कमलों द्वारा हुआ है।]

चयन

१. वसंत की कोकिला से

मेरे व्याकुल नयनों से जो
सरि-धाराएँ मचल बहीं,
ढूँढ़ रही हैं निज प्रियतम को,
जो हिमकर से स्वच्छ कहीं।
अरी, कोकिले! कूक-कूककर
तू भी मनमानी कह ले;
तेरा भी यह विषमय ताना
मधुमय-सा दुखिया सह ले।
रोएगी, तज तुझे यहाँ पर
यह वसंत न रहेगा जब;
मेरे ही सम बिरहिन बाला
तुझको जगत् कहेगा तब।
तब मैं पूछूँगी पिक-बाले!
कैसा तुझे सुहाता है;
अरी! किसी का मधुमय गाना
क्या तुझको अब भाता है?
बार-बार मैं चुप करती हूँ,
तब भी तू है बोल रही;
छिप-छिपकर कोमल पल्लव में
क्यों विष-रस है घोल रही?
सुन वसंत का मधुर आगमन
जैसे तू है सुख पाती,
उसी भाँति मैं हर्षित होती,
यदि उनकी आहट आती।

कमलाकुमारी

× × ×

२. यू० पी०-सरकार और शिक्षा-संबंधी खर्च

संयुक्तप्रांत की एक लाख वर्गमील भूमि पर भारत की पाँच करोड़ जनता रहती है, परंतु इनमें से पढ़नेवालों की संख्या है केवल १६·६५ लाख, अर्थात् कुल जन-संख्या का ३·३५ प्रतिशत। स्कूल जाने योग्य बच्चों को ही ले लीजिए। १३·५ प्रतिशत बच्चों में ५·५ प्रतिशत लड़के और १·४ प्रतिशत लड़कियाँ स्कूल भेजी जाती हैं। अर्थात् जहाँ

चार लड़के पाठशाला जाते हैं, वहाँ केवल एक लड़की को पढ़ने का अवसर मिलता है। सन् १९३६ में लड़कों के लिये २०,३५८ स्कूल थे, जिनमें १४ लाख विद्यार्थी शिक्षा पाते थे, और २,१५६ स्कूलों में २ लाख लड़कियाँ पढ़ती थीं। सन् १९३५-३६ में शिक्षा पर १·९८ करोड़ रुपया ख़र्च हुआ था, परंतु इस साल यह रक़म बढ़कर २ करोड़ से अधिक हो गई। शिक्षा पर ख़र्च होनेवाली कुल १·८९ करोड़ रुपए की रक़म का ब्योरा इस प्रकार है—

युनिवर्सिटी-शिक्षा	कॉलेज और स्कूल-शिक्षा	प्रारंभिक शिक्षा	ट्रेनिंग	बिल्डिंग	वज़ीफ़ा	अन्यमद
१२·१%	३६·५%	२४·२%	६·६%	५·१%	११·१%	४·४%

देखने से ज्ञात होता है कि युनिवर्सिटी और कॉलेज-शिक्षा पर ४८·६% ख़र्च किया जाता है, और प्रारभिक शिक्षा पर केवल २४·२%। परंतु ज़रूरत इस बात की है कि प्रारंभिक शिक्षा पर अधिक ख़र्च किया जाय। संसार के अन्य देशों में इस शिक्षा पर कहीं अधिक व्यय होता है—

इँगलैंड	स्कॉटलैंड	आयर्लैंड	कनाडा	आस्ट्रेलिया
६२%	५०%	७४%	८०%	७८%

यह तो हुआ प्रतिशत का हिसाब। अब व्यय की असली रक़में लीजिए। सन् १९२५-२६, १९३०-३१ और १९३७-३८ के लिये इनका वितरण इस प्रकार है—

ख़र्च की मद	ख़र्च (लाख रुपए में)		
	१९२५-२६	१९३०-३१	१९३७-३८
युनिवर्सिटी-शिक्षा	२६	२७·५	२७·५
सेकेंडरी शिक्षा	४७	६०	६४·४
प्राइमरी शिक्षा	७२	८१	८४
स्पेशल शिक्षा	४·९	७·१	७
अन्य मद	२०	२४	२४

उपर्युक्त आँकड़ों से ज्ञात होता है कि १९२५-२६ की अपेक्षा सेकेंडरी शिक्षा में तृतीयांश बढ़ा है, स्पेशल शिक्षा को ड्योढ़ी मदद मिलने लगी है, परंतु प्राइमरी शिक्षा के ७२ लाख रुपए में केवल छठे हिस्से से रक़म बढ़ाई गई है।

कुछ भी हो, संयुक्तप्रांत भारत के अन्य सब प्रांतों की अपेक्षा अपने रेवन्यू का सबसे बड़ा हिस्सा शिक्षा पर ख़र्च कर रहा है—

प्रांत	मद्रास	बंगाल	बंबई	संयुक्त-प्रांत	पंजाब
रेवन्यू का हिस्सा, जो शिक्षा पर ख़र्च होता है	१५·३%	११%	१५·३%	१७·२%	१५·२%

यदि हम संसार के अन्य देशों को भी देखें, तो २·९% (आस्ट्रिया) से लेकर २१% (हालैंड) तक का ख़र्च पाते हैं। कर्नल आर० एस० विश्नर के मुताबिक़ पचीस देशों का औसत लगभग १०·४% आता है। यदि इँगलैंड को देखा जाय, तो वह ८५ करोड़ पौंड के रेवन्यू में से केवल ५ करोड़ अर्थात् १७वाँ हिस्सा शिक्षा पर ख़र्च करता है। अतएव यू० पी०-सरकार संसार-भर से बढ़कर शिक्षा-विभाग को ही अपने रेवन्यू का भाग

दे रही है। अभी से नहीं, गत पंद्रह साल से ऐसा हाल चला आ रहा है।

अब यदि हम भिन्न प्रकार की शिक्षाओं पर होनेवाले व्यय पर दृष्टि डालें, तो कुछ अद्भुत बातें देखने को मिलें। युनिवर्सिटी में एक विद्यार्थी को साल-भर पढ़ने के लिये निम्न-लिखित रूप से ख़र्च होता है—

युनिवर्सिटी	इलाहाबाद	लखनऊ	आगरा
कुल ख़र्च	६२६ रु०	७६० रु०	३७० रु०
टैक्स देने-वाला देता है	४४० रु०	५१८ रु०	१९० रु०

युनिवर्सिटी-शिक्षा पर ख़र्च होनेवाली कुल रक़म का ५३·८% तो सरकार से आता है, और २०% अन्य सहायता से। फ़ीस से केवल २६·२% मदद मिलती है। किसी देश में सरकारी मदद और फ़ीस का ऐसा अनुपात नहीं है। इँगलैंड में तो ३४% सरकार से, ३३% फ़ीस से और बाक़ी अन्य सहायता से रुपया आता है।

एक विद्यार्थी को एक साल तक पढ़ाने के लिये कॉलेज में ७५ रु०, हाईस्कूल में ६५ रु०, वर्नाक्यूलर स्कूल में २१ रु० और गाँव में केवल ७।=) ख़र्च होते हैं। इसका मतलब हुआ कि लखनऊ-ऐसी युनिवर्सिटी में पढ़नेवाले प्रति लड़के की जगह सौ ग्रामीण शिक्षा पा सकते हैं। इँगलैंड और स्कॉटलैंड आदि में यह अनुपात कहीं कम है—

देश	प्रारंभिक शिक्षा	युनिवर्सिटी-शिक्षा	अनुपात
इँगलैंड	१३ पौंड	१२० पौंड	१:९·२
स्कॉटलैंड	१५ पौंड	६० पौंड	१:४

यह नितांत आवश्यक है कि हमारे यहाँ की युनिवर्सिटी-शिक्षा और प्रारंभिक शिक्षा पर प्रति व्यक्ति पीछे होनेवाले व्यय कुछ-कुछ समान किए जायँ। यह कहा जा सकता है कि सन् १९२५ की अपेक्षा आजकल युनिवर्सिटी में दुगुने लड़के पढ़ते हैं, तिस पर युनिवर्सिटी को मिलनेवाली सरकारी ग्रांट में केवल १·५ लाख की बढ़ती हुई है। इसलिये यह सिद्ध होता है कि आदमी-पीछे युनिवर्सिटी की पढ़ाई का ख़र्च कम हो रहा है। परंतु इस निर्णय पर पहुँचनेवाले सज्जन यह भूल जाते हैं कि लड़कों से ली जानेवाली फ़ीस बढ़ रही है। विश्वविद्यालय सरकार से मदद नहीं लेते, तो क्या? वह अपनी माँग की पूर्ति फ़ीस बढ़ाकर करते हैं।

सेकेंडरी शिक्षा देने के लिये ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर और वर्नाक्यूलर स्कूलों की कुल संख्या लगभग एक करोड़ है, और उनमें पढ़नेवालों की संख्या तथा ख़र्च आदि इस प्रकार है—

	ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर	वर्नाक्यूलर
विद्यार्थी	१,०५,०००	८०,०००
कुल ख़र्च	८१·५ लाख रु०	१९ लाख रु०
सरकारी मदद	४२·५ ,, ,,	१०·५ ,, ,,

स्कूल और कॉलेजों की संख्या हद से ज़्यादा बढ़ रही है। जहाँ सन् १९२४ में कुल २३८ स्कूल और कॉलेज थे, वहाँ अब २५७ तो हाईस्कूल ही हैं—

	सन् १९२४	सन् १९३७
स्कूल	१८६	
कॉलेज	५२	
सरकारी मदद	४९ लाख रु०	६४·७ लाख रु०
सरकारी बजट	१४ करोड़ रु०	१२ करोड़ रु०

देखने से ज्ञात होता है कि इन स्कूलों पर १½ लाख प्रतिवर्ष के हिसाब से खर्च बढ़ रहा है। बताइए, सरकार, जिसकी बजट-आय घट रही है, कहाँ से अधिक मदद दे।

बाक़ी बची प्रारंभिक शिक्षा। यू० पी० में इस हेतु २०,००० स्कूल हैं—ऐसे स्कूल जिनमें कर्नल विग्रर कुत्तों को भी नहीं रखना चाहेंगे। पर इन्हीं में हमारे बारह लाख बच्चे शिक्षा पाते हैं! और लगभग ८५ लाख रुपया खर्च होता है, जिसमें से ५८ लाख सरकार से, १८ लाख डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड से, ६ लाख म्युनिसिपल-बोर्ड से और बाक़ी ३ लाख फ़ीस से आता है।

हमारे प्रांत में प्रारंभिक शिक्षा पाने योग्य लगभग ३० लाख लड़के और इतनी ही लड़कियाँ हैं परतु इनमें से केवल १० लाख लड़के और १·४ लाख लड़कियाँ पढ़ने आती हैं। यही नहीं, इन पढ़नेवाले हर ४ लड़कों और २० लड़कियों में केवल एक लड़का और एक लड़की को छोड़कर बाक़ी सब फिर अनपढ़ बन जाते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि ८५ लाख रुपए में से ६० लाख रुपया बिलकुल बेकार जाता है। २० साल पहले सरकार प्रारभिक शिक्षा के हेतु १४ लाख रुपए की मदद देती थी। सन् १९२३ में यह रक़म एकदम बढ़ाकर ६४ लाख कर दी गई। फल-स्वरूप डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के पास इतना रुपया हो गया कि इसे खर्च करना एक समस्या हो गई। रुपया मनमाना लुटाया गया। नतीजा यह हुआ कि शिक्षा तो बढ़ी नहीं, पर रक़म ग़ायब हो गई। इसका प्रधान कारण था किसी उपयुक्त योजना की अनुपस्थिति। अब भी कोई योजना ठीक नहीं है, और इसकी नितांत आवश्यकता है। प्रयाग-निवासी बाबू संगमलाल अग्रवाल की 'छ सप्ताह में शिक्षा' में बहुत कुछ सार है। इस पर सरकारी प्रयोग भी हो रहा है। दर असल इसके द्वारा जनता को बहुत जल्दी और कम खर्च में शिक्षित बनाया जा सकता है। परंतु साथ-ही-साथ यह भी सवाल है कि कौन-सा उपाय किया जाय जिससे पढ़ना-लिखना जान गए लोग फिर से उसे न भूल जायँ?

कतिपय सज्जनों का मत है कि प्रारंभिक शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य कर देनी चाहिए। कर्नल विग्रर के कथनानुसार कोई भी शिक्षा 'फ़्री' नहीं हो सकती। यह तो ठीक है कि किसी प्रकार की शिक्षा देने में खर्च अवश्य होगा परतु निःशुल्क से हमारा मतलब है कि शिक्षा पानेवाले वर्ग से कुछ न लिया जाय। सन् १९२७ में एक कमेटी ने जाँच करके बतलाया था कि इस प्रांत के प्रत्येक मनुष्य को प्रारभिक शिक्षा देने के लिये १.६ करोड़ और प्रत्येक लड़की या स्त्री को प्रारंभिक शिक्षा देने के लिये २·४ करोड़ रुपए की ज़रूरत पड़ेगी। सरकार कुल शिक्षा के लिये तो मुश्किल से २ करोड़ दे सकती है, फिर केवल प्रारंभिक शिक्षा के लिये ही ४·५ करोड़ कहाँ से आवें। रहा शिक्षा को अनिवार्य बनाने का सवाल। ३६०० म्युनिसिपैलिटियों में इस पर प्रयोग करने से यह पता चलता है—

साल	१९३१-३२ दर्जा ब	१९३२-३३ दर्जा एक	१९३३-३४ दर्जा दो	१९३४-३५ दर्जा तीन	१ ३५-३६ दर्जा चार
पढ़नेवालों की संख्या	३३,६००	१२,०००	७,०००	३,८००	१,६५०

इससे मालूम पड़ता है कि अनिवार्य शिक्षा पानेवालों की संख्या अपने आप पढ़नेवालों से भी कम है।

अंत में कहना पड़ता है कि हमें इस समय न केवल अतिरिक्त धन की आवश्यकता है, बल्कि एक सुव्यवस्थित शिक्षा-योजना की भी। हर्ष है, हमारी सरकार योजना के लिये कमेटी बैठानेवाली है! शिक्षा के खर्च में कमी करने का एक साधन यह है कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी इसमें हाथ बँटावें। यों तो कम खर्च उस समय भी होता है, जब स्कूल और कॉलेज की देख-रेख प्राइवेट कमेटियों के हाथ रहती है। अंदाज़ा किया गया है कि जितने खर्च में गवर्नमेंट स्कूल में एक लड़का पढ़ता है, उतने में सरकारी मदद पानेवाले स्कूलों में दो। कर्नल विम्रर के कथनानुसार अच्छा होगा, यदि हमारे सेठ-साहूकार, जो लाखों की थैली बग़ल में दवाए हैं, कुछ धन दान-स्वरूप उन संस्थाओं को दे दें, जिनमें वे पढ़ चुके हैं। परंतु यह नहीं हो सकता कि सरकार शिक्षा को और अधिक मदद न दे। डॉक्टर बेनीप्रसादजी के मतानुसार सरकार से उस समय अधिक सहायता मिल सकती है, जब उसकी रेवन्यू-आय बढ़े। इसके लिये प्रांतीय धन बढ़ाना चाहिए। यह उस समय तक नहीं हो सकता, जब तक कृषि और दस्तकारी की उन्नति न हो। और, यह तभी संभव है, जब अधिक शिक्षा-प्रचार हो। प्रश्न उठता है कि इसको कहाँ से काटा जाय? मैं डॉक्टर साहब से सहमत हूँ कि इस हेतु सरकारी सहायता ही पहले बढ़ानी पड़ेगी। माननीय प्रधान मंत्री ने अपने बजट-वक्तव्य में कहा था—"कम-से-कम मैं ज़रूरत पड़ने पर इस (उधार लेने के) रास्ते पर चलने से न घबराऊँगा। सावधानी सिर्फ़ इतनी रखनी होगी कि एक पैसे का भी ग़लत या फ़िज़ूल खर्च न हो।" लोगों के पास काफ़ी रुपया बेकार पड़ा है, और सस्ते दामों में क़र्ज़ मिल सकता है। अतएव यह आशा की जाती है कि उपयुक्त शिक्षा योजनाओं के साथ-साथ अतिरिक्त सरकारी मदद भी हमें मिलती जायगी *।

महेशचंद (बी० एस्-सी० [ऑनर्स], विशारद)

× × ×

३. पवन से

पवन!

यदि तू वहाँ, पिया के उस दूरस्थ देश, जा रहा है, तो मेरी हृद्-वीणा के ये टूटे-फूटे तार उन्हें चुपके से, धीरे से सौंप देना।

यह आरोह-अवरोह का मयूर-नर्तन मेरे हृदय में, विकल विद्रोही की भाँति, अशांति की सृष्टि करता है। इस निष्ठुरता को उन्होंने कब से ग्रहण कर लिया है?

मेरा एकाकी जीवन आज मुझे काट-सा रहा है, मुझे खाए-सा जाता है।

मेरे पवन, कह देना उनसे कि तेरे वियोग में वह अश्रु-मुक्ता का हार गूँथा करती है।

क्या उसे, उस तुच्छ अश्रु-हार को, सादर स्वीकार न करेंगे?

लक्ष्मीचंद्र वाजपेयी 'चंद्र'

× × ×

४. हा 'प्रसाद'जी!

अब तक शंकर घर रहे, अब हैं घर-घर माँझ;
दीपक बनि जग जगमग्यो करि निज कुल में साँझ।
हिंदी-द्रुम चाहत रहे मूल्यवान बहु खाद;
जयशंकर बनि भस्म अब तिन्हें दियो अह्लाद।

राजाराम

× × ×

---

* कर्नल आर० एस० विम्रर के लेक्चर के आधार पर।

५. जिज्ञासा

एक राजा के तीन रानियाँ थीं। तीनो ही इतनी सुंदर थीं कि चाँदनी रात में कोई नहीं कह सकता था कि इनमें से कौन-सी को देखकर चंद्रमा लज्जित होता है। ग्रीष्म की ऋतु थी। एक रात राजा अपने राजप्रासाद की छत पर अपनी तीनो रानियों के पास सो रहा था। अचानक उसकी आँख खुल गई। उसने चंद्रमा की चाँदनी में अपनी रानियों की ओर देखकर, मन-ही-मन, कहा — इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि नारी-सौंदर्य की ये तीनो मूर्तियाँ अतीव सुंदर और अनुपम रूपवती हैं, परंतु मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी कौन-सी रानी सबसे अधिक सुंदर है। वह उठकर एक-एक के निकट गया, और बड़े ध्यान से देखता रहा। एक रानी चाँदनी में चित लेटी थी। उसकी एक बाँह सिर पर रक्खी थी, और उसकी छाती पर से उसका अंचल मंद-मंद पवन से कभी उड़ता, और कभी फिर गिर पड़ता था। दूसरी रानी जाली की आड़ में सो रही थी। जाली के तारों की छाया और चाँदनी की रेखाओं से उसकी देह आबनूस और हाथी-दाँत की बनी जान पड़ती थी। तीसरी सघन छाया के नीचे गहरी नींद में सो रही थी। चंद्रमा की केवल एक किरण उसके सुंदर कान पर पड़ रही थी। राजा रात-भर एक पलँग से दूसरे पलँग के इर्द-गिर्द चक्कर काटता रहा। जिसके निकट जाता, वही पहली की अपेक्षा अधिक सुंदर जान पड़ती। वह अभी किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाया था कि सूर्योदय का समय हो गया।

जब राजा नित्य-कर्म और संध्या-वंदन से निवृत्त होकर राजसभा में आया, तो सत्यशोधक-नामक उसके मंत्री ने नम्रता-पूर्वक पूछा—"राजन्, आज आपके नेत्रों से उनींदा क्यों टपक रहा है!"

राजा ने उत्तर दिया—"हे सत्यशोधक, गत रात्रि को मेरे मन में विचार उत्पन्न हुआ कि मैं इस बात का निर्णय करूँ कि मेरी रानियों में कौन रानी सबसे अधिक सुंदर है। इसी चिंता में मुझे नींद न आई। अभी तक भी मैं यह मालूम नहीं कर सका कि इनमें सर्वाधिक सुंदर कौन है।"

इस पर मंत्री ने कहा—"राजन्, निश्चय रखिए, आपकी तीनो रानियाँ एक-सी सुंदर हैं। इस कारण डाह की कोई संभावना नहीं। व्यर्थ जिज्ञासा मन को अशांत करती है, जिससे हानि होती है।"

राजा ने उत्तर दिया—"परंतु मैं इस बात की प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। इसलिये अब चाहे कुछ भी हो, इस प्रश्न का उत्तर अवश्य मिलना चाहिए।"

राजा को अपने संकल्प पर दृढ़ देख मंत्री ने कहा—"राजन्, मंत्री तो आज्ञाकारी सेवक एवं चाबुक-सवार होता है। जिस घोड़े को मंत्री रूपी चाबुक-सवार रोक नहीं सकता, उसे वह उसी मार्ग पर डाल देने के लिये विवश हो जाता है। यदि रानियों के रूप के संबंध में निर्णय करना आप अतीव आवश्यक समझते हैं, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि आजकल आपके राज्य में कांतिसागर नाम का एक ब्राह्मण-कुमार आया हुआ है। यह लड़का नारी-सौंदर्य को परखने के लिये सारे संसार में प्रसिद्ध है। उसे बुलाकर उसे रानियों को देख लेने का अवसर दीजिए। वह अवश्य बता सकेगा कि इनमें सबसे अधिक रूपवती कौन है। सुना है, हंस भी उतने सुचारु रूप से नीर-क्षीर-विवेक नहीं कर सकता, जितनी अच्छी तरह यह नवयुवक सौंदर्य की गुण-दोष-परीक्षा कर सकता है।"

राजा यह सुन बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कांतिसागर को उपस्थित करने की आज्ञा दी। जब वे आपस में वार्तालाप कर रहे थे, तो राजा ने रानियों को एक दूसरे के बाद कमरे में से होकर निकाला। जब पहली रानी वहाँ से होकर निकली, तो ब्राह्मण-

कुमार इस प्रकार मूर्तिवत् खड़ा रहा, मानो उसे भूमि में गाड़ रक्खा है। इसके बाद जब दूसरी रानी वहाँ से होकर निकली, तो नवयुवक के शरीर में किंचिन्मात्र कँपकँपी हुई। तदनंतर जब तीसरी रानी उसके सामने से होकर निकली, तो लड़के के मुख-मंडल की रंगत बदल गई। इस प्रकार जब सब सामने से होकर निकल चुकीं, तो राजा ने जिज्ञासा की—"कांतिसागर, बताओ, इनमें कौन सबसे अधिक सुंदरी है?" परंतु कांतिसागर ने मन में सोचा कि मेरे बतलाने से कहीं राजा अपनी चहेती रानी का अपमान समझ मुझसे रुष्ट न हो जायँ, और साथ ही जब दूसरी रानियों को पता लगे, तो कहीं वे मेरी हत्या ही न करा दें। इसलिये उसने प्रणाम करके प्रार्थना की—"अन्नदाता, मुझे कल तक की मुहलत दी जाय।" राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। कांतिसागर घर लौट आया। उसने मन में निश्चय कर लिया कि मैं रात-ही-रात नगर छोड़ जाऊँगा।

परंतु सत्यशोधक बाहरी लक्षणों से मन की अवस्था मालूम कर लिया करता था। उसने राजा से निवेदन किया कि इस ब्राह्मण की नीयत धोखा देने की है; वह डरता है, इसलिये भाग जाने का विचार रखता है। सत्यशोधक ने राजा को कांतिसागर की सम्मति मालूम करने की विधि बताई। इससे राजा को ज्ञान हो गया कि उसकी कौन-सी रानी सबसे अधिक सुंदर है। फिर उस रानी को वह बहुत अधिक प्यार करने लगा। इसका फल यह हुआ, दूसरी दोनो उससे द्वेष करने लगीं। अंत में उन दोनो ने षडयंत्र रचकर उस चहेती रानी को विष दिला दिया। जब राजा को इस बात का ज्ञान हुआ, तो उसने दोनो को फाँसी पर लटकवा दिया। इस प्रकार, जैसी सत्यशोधक की धारणा थी, राजा तीनो रानियाँ खो बैठा।

अब प्रश्न होता है कि वह कौन विधि थी, जिसके द्वारा राजा ने कांतिसागर की राय मालूम कर ली?

इसका उत्तर यही है कि सत्यशोधक को कांतिसागर के आचरण से ज्ञात हो गया था कि तीसरी रानी ही सबसे अधिक सुंदर है। परंतु वह इस संबंध में निश्चयात्मक होना चाहता था। पहली रानी के रूप ने ब्राह्मण को आश्चर्य-चकित कर दिया था। दूसरी के रूप ने उसे आकंपित किया था। परंतु तीसरी के सौंदर्य ने उसके हृदय में हलचल उत्पन्न कर दी थी, जिसके कारण उसके मुख-मंडल की रंगत बदल गई थी। मन की अवस्था शब्दों की अपेक्षा मनुष्य के मुखमंडल से अधिक प्रकट हो जाती है।

सत्यशोधक कांतिसागर की सौंदर्योपासक प्रकृति को जानता था। उसने तीनो रानियों की ओर से उसे बनावटी प्रेम-पत्र भिजवाए। तीनो पत्रों में कांतिसागर के रूप-यौवन की प्रशंसा करते हुए प्रेम प्रदर्शित किया गया था, और उसे एक ही नियत समय पर अपने यहाँ निमंत्रण दिया गया था। कांतिसागर एक समय में एक ही रानी का निमंत्रण स्वीकार कर सकता था, इसलिये वह स्वभावतः उसी रानी के आवास पर पहुँचा, जिसे वह तीनो में सबसे अधिक सुंदर समझता था। परंतु वहाँ तो पहरेदार खड़े थे*।

संतराम (बी० ए०)

---

* बेन-विरचित 'डिजिट ऑफ़ दि मून'-नामक पुस्तक से।

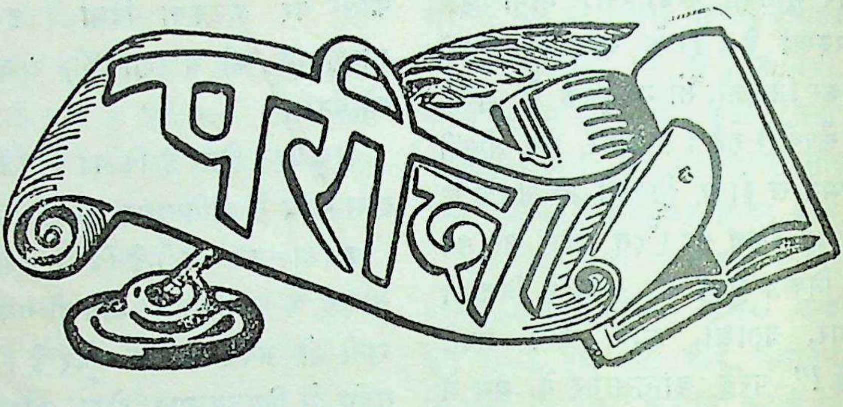

पृथ्वीराज की आँखें—लेखक, द्वितीय देव-पुरस्कार-विजेता प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा एम्० ए०; प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय लखनऊ; मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक में छ एकांकी नाटक हैं। हिंदी में एकांकी नाटकों की प्रथा सबसे प्रथम प्रो० रामकुमार वर्मा ने ही डाली है। एकांकी नाटकों में एक ही घटना रहती है, वही घटना नाट्य-कौशल द्वारा चरम सीमा पर पहुँचाई जाती है। इसमें नाटकों की तरह अप्रधान प्रसगों का प्राधान्य नहीं रहता। एकांकी नाटकों का प्रत्येक शब्द आवश्यक होता है, इसीलिये मनोरंजन की सामग्री इसमें समाविष्ट नहीं हो पाती। एकांकी नाटकों में वर्णनात्मक कला की अपेक्षा अभिनयात्मक विशेष रहती है। एकांकी नाटकों में आंतरिक संघर्षों की ओर विशेष लक्ष्य रहता है। आंतरिक संघर्ष-प्रदर्शन नाटकों की आत्मा है। विद्वान् लेखक ने अपनी इस सुंदर पुस्तक में इसी आंतरिक संघर्ष की ओर विशेष लक्ष्य रक्खा है, और यही विशेषता इन नाटकों की चरम सुंदरता है। 'चंपक' में किशोर की मानसिक उथल-पुथल, 'पृथ्वीराज की आँखें' में पृथ्वीराज चौहान का बलशाली चरित्र, 'बादल की मृत्यु' में बादल का मनोवेग वास्तव में दर्शनीय है। इन नाटकों में यत्र-तत्र काव्य की भी मनोहर छटा है। वास्तव में ये नाटक जीवन के भिन्न-भिन्न पहलू पर लिखी गई अमर कृतियाँ हैं। इन नाटकों में जीवन के उन महान् सत्यों का वर्णन है, जो स्पष्ट एवं स्वाभाविक हैं। हमारी राय में यह सुंदर कृति अभिनयात्मक एवं वर्णनात्मक दृष्टियों से सर्वोत्तम एवं अद्वितीय है।

साहित्य-सम्मेलन एवं भारतीय विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के नाटकीय पाठ्य क्रम में इसे अवश्य स्थान देना चाहिए। इतनी सुंदर कृति के लिये हम श्रीयुत वर्माजी को हृदय से धन्यवाद देते हैं! पुस्तक के बाह्य आकर्षण, मुद्रण एवं संपादन के लिये पं० दुलारेलाल भार्गव का नाम ही काफ़ी है।

दीनानाथ व्यास विशारद

× × ×

गीत—लेखक और प्रकाशक, श्रीबालकृष्ण बलदुआ बी० ए०, एल्-एल्० बी०, बेलदार फाटक, चौरस्ता, ५७।१२३ मिरकी मुहाल, कानपुर।

इस छोटी-सी पुस्तिका में लेखक के कुछ करुणा-मय गीतों का संग्रह है। उनमें पद्य का पूर्ण निर्वाह नहीं, लेखक के उद्गार जैसे निकले हैं, वैसे ही, विना परिवर्तन के, रख दिए गए हैं। अधिकतर उनमें निराशा तथा पीड़ा का प्रदर्शन हुआ है। उन्हें किसी रूप में अर्ध-गद्य-पद्य-गीत कह सकते हैं। उदाहरण देने की ज़रूरत नहीं। पाठक स्व पुस्तक पढ़कर आनंद लें। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

'उमेश'

× × ×

प्रेम-पत्रिका—लेखक, श्रीकवि खूबरामजी अग्रवाल; प्रकाशक, श्रीचंदूलाल वर्मा, भिवानी ; पृष्ठ-संख्या ४८; मूल्य ≡)

प्रेम-पत्रिका में भक्तों के गाने-योग्य पद हैं। लेखक ने अपनी असमर्थता तथा कृष्ण-चरित्र के वर्णन पर अधिक ज़ोर दिया है। कहीं-कहीं नैतिक शिक्षा से पूर्ण पद भी दिए गए हैं। इन लक्षणों को देखते हुए मालूम होता है, पुस्तक धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर लिखी गई है। लेखक ने साहित्यिक सौंदर्य की ओर ध्यान कम दिया है, यद्यपि वह दिखला देना चाहता है कि वह कविता के लक्षणों से अपरिचित नहीं। पर दो-चार स्थलों को छोड़कर, जहाँ शाब्दिक चमत्कार दिखलाया गया है, पुस्तक में कोई विशेष गुण नहीं। पदों में वर्णनात्मक अंश प्रधान है, और भाव-पक्ष की न्यूनता। भाषा राजस्थानी है, और शैली प्राचीन संत-कवियों की-सी। यह पुस्तक साधारण श्रेणी के भक्तों के लिये श्रेयस्कर हो सकती है। लेखक का उद्देश्य पवित्र और सराहनीय है।

× × ×

ब्रज-माधुर्य-दर्पण—लेखक, भक्त-भूषण बाँकेविहारीलाल ; प्रकाशक, बाबू मुकुंदविहारीलाल बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट, लखनऊ ; पृष्ठ-संख्या ३८। प्रेमी पाठकों को केवल डाक-ख़र्च भेजने से पुस्तक प्राप्त हो सकती है।

ब्रज-माधुर्य-दर्पण एक छोटी-सी पुस्तिका है। इसके अंदर तीन भाग हैं। पहले भाग में भक्त-भूषण बाँकेविहारीलालजी ने नंद-नंदन श्रीकृष्ण की लीला-भूमि ब्रज का परिचय बड़ा सरस और मनोहर दिया है। वहाँ के प्रत्येक तीर्थ का संक्षिप्त वर्णन पढ़ने-योग्य है। किन्हीं-किन्हीं तीर्थों के संबंध में उनके नामकरण के कारण भी दिए गए हैं। पुस्तक ऐसे ढंग से लिखी गई है कि ब्रज-वर्णन के साथ ही कृष्ण-चरित्र का चित्रण भी संक्षिप्त रूप से हो जाता है। इस भाग में लेखक ने दोहा, चौपाई और सोरठा छंदों का प्रयोग किया है। भाषा सरल और भाव-पूर्ण है।

अन्य दो भागों में अष्टसखियों की स्तुति और नवद्वीप का वर्णन है। अष्टसखियों की स्तुति में कीर्तन और संगीत की छटा है। नवद्वीप का वर्णन साधारण है।

पुस्तक से लेखक की भावना और तल्लीनता प्रकट होती है। भक्त लोग भी इसका गान कर रसास्वादन कर सकते हैं।

× × ×

भक्त नरसिंह मेहता—लेखक, श्री'मंगल' ; मुद्रक और प्रकाशक, श्रीघनश्यामदास जालान, गीता-प्रेस, गोरखपुर; पृष्ठ-संख्या १६८ ; मूल्य ।≡)

भक्त-प्रवर नरसिंह मेहता के जीवन से बहुत लोग परिचित होंगे, पर श्री'मंगल'जी ने उसे जिस ढंग से इस पुस्तक के अंदर चित्रित किया है, वह बड़ा सुंदर और मार्मिक है। आज धर्म की ओर से लोगों की श्रद्धा उठी जा रही है, और लोग ईश्वर तथा धर्म को ढोंग या जाल समझने लगे हैं, पर मेरा ख़याल है, नरसिंह मेहता की जीवनी का अध्ययन बड़े-बड़े नास्तिकों को भी एक बार आस्तिक बना देगा। मेहताजी गृह-कलह से पीड़ित होकर ईश्वर की शरण में जाते हैं, और जो शांति तथा सुख उन्हें वहाँ प्राप्त होता है, वह सर्वथा अलौकिक और प्रत्येक गृहस्थ के लिये वांछनीय है। मेहताजी ने उसको कैसे प्राप्त किया, यह पुस्तक पढ़कर ही ज्ञात हो सकता है। लेखक के चरित्र-चित्रण में कौशल है। भाषा पर उसका अधिकार है। शैली रोचक है। पाठक के सम्मुख मेहताजी तथा उनके इष्टदेव का चित्र-सा खिंच जाता है। भक्तों या संसार से उद्विग्न मनुष्यों को इस पुस्तक से अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

हाँ, एक त्रुटि भी पुस्तक में दिखाई पड़ती है। वह है नागर-जाति पर आक्षेप। उसको लेखक ने

'स्वार्थी' और 'लोभी' ठहराया है। ऐसे आक्षेप दो-चार व्यक्तियों पर किए जा सकते हैं, पर उनको व्यापक बनाना अनुचित है। संभव है, उक्त जाति में ये अवगुण उस समय रहे हों, पर मैं ऐसे कथन को अनुचित समझता हूँ।

श्री०

× × ×

हिंदी के कवि और उनका काव्य (भाग १)—संपादक, श्रीगणेशप्रसादजी द्विवेदी; प्रकाशक, हिंदुस्थानी एकेडेमी, संयुक्तप्रांत, प्रयाग; मूल्य ४॥) अजिल्द; पृष्ठ-संख्या ५२०; साइज $\frac{२०×२६}{८}$।

प्रस्तुत पुस्तक हिंदी-साहित्य के वैषयिक विभाग-क्रम से लिखी हुई प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों की कवित्व-बानगी का संग्रह है। कवियों के ऐतिहासिक क्रम के अनुसार हिंदी-काव्य के जो संग्रह-ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं, और हो रहे हैं, उनसे कविता और उसके वैषयिक विकास के तुलनात्मक अध्ययन में अभी तक बड़ी अड़चन पड़ती रही है। अनेक कवियों की एकविषयिनी कविताओं का एक भी संग्रह-ग्रंथ अभी तक हमारे साहित्य में न था। तीन वर्ष के अनवरत परिश्रम से श्रीद्विवेदीजी ने जो यह संग्रह प्रकाशित किया है, वह वास्तव में अभिनंदनीय है।

इस पुस्तक में नरपति नल्हे, जगनिक, चंद, तुलसीदास, केशवदास, मान, जोधराज, सबलसिंह चौहान, लाल कवि, भूषण, श्रीधर, पद्माकर, सूदन, गोकुलनाथ और चंद्रशेखर की वीर-गाथामयी कविताएँ संगृहीत हैं। साथ-ही-साथ प्रत्येक कवि की विवेचनात्मक गवेषणा-पूर्ण जीवनी भी दी हुई है। ये जीवनियाँ केवल घटना-चक्र का वर्णन-मात्र नहीं हैं, अपितु साहित्यिक सत्यान्वेषण से पूर्ण, टिप्पणियों से ओत-प्रोत भी हैं। उनके पढ़ने से काव्य-विवेचन में पर्याप्त सहायता मिलती है।

पुस्तक का यह पहला ही भाग है। दूसरे भाग में संत-कवियों की कविताओं का संग्रह होगा। वह भाग भी साहित्य की एक सुंदर चीज़ होगी। आशा है, द्विवेदीजी उसे तुरंत प्रकाशित करेंगे।

पुस्तक की छपाई-सफ़ाई उत्तम है। मूल्य भी कुछ अधिक नहीं प्रतीत होता। पुस्तक वास्तव में संग्रहणीय है। विस्तृत विवेचना अन्यत्र लिखी जायगी। परिचय के लिये इतना ही पर्याप्त है।

सुधींद्र वर्मा (एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

बिजली—लेखक, श्रीपं० देवीदयालजी चतुर्वेदी 'मस्त'; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या २१; साइज डबल क्राउन १६ पेजी। क़ाग़ज़, छपाई आदि उत्तम। पुस्तक प्रकाशक से प्राप्य।

बिजली एक छोटी-सी सुंदर काव्य-पुस्तिका है। इसमें भारत की दो वीर रमणियों के उज्ज्वल चरित्र का एकांगी वर्णन है। जिनमें एक हैं महाराजा दलपतिसिंह की राजमहिषी, गढ़मंडल की अधीश्वरी श्रीमती रानी दुर्गावतीदेवी और दूसरी हैं हमारे राष्ट्रपति पं० जवाहरलालजी नेहरू की धर्मपत्नी स्वर्गीया कमला नेहरू। रानी दुर्गावती की वीरता की कथा से प्रायः सभी लोग परिचित हैं। प्रतिभाशाली कवि ने उसी वीर-गाथा को अपनी काव्य-वस्तु बनाकर एक वीर रमणी के अपूर्व आत्मसम्मान, अद्भुत वीरता तथा आदर्श बलिदान के सजीव चित्र को काव्य-कला की भित्ति पर चित्रित किया है। इसी प्रकार स्व० कमलाजी के संबंध में भी छ छंद लिखे गए हैं। दोनो रचनाओं में काव्य-गुणों की प्रचुरता है। भाषा प्रांजल, प्रसाद-गुण-संपन्न तथा सुबोध है। पुस्तक बालोपयोगी तथा विद्यालयों में पाठ्य पुस्तक होने के योग्य है।

(साहित्याचार्य) गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि'

वर्ग-नं० ४ का अंक-परिचय

बाएँ से दाहने

१. इस शहर के खरबूज़े मशहूर हैं।
३. ऐसे मनुष्यों की सब खुशामद करते हैं।
४. कामना-पूर्ति के लिये किया जाता है।
६. इसके बंधनों के कारण कभी-कभी मृत्यु की शरण लेनी पड़ती है।
७. इससे प्राणियों को पानी प्राप्त होता है। ८. दुर्बल।
१०. ऐसी कविता सब पसंद करते हैं।
१२. इसकी बोली सभी नापसंद करते हैं। १३. चंद्रमा।
१४. इसके आक्रमण से बचना असंभव है।
१५. विश्वविजयी पहलवान। १८. पृथ्वी।
२२. दोनो ओर कलक ही है।
२४. ...मा ही पुत्री से उचित प्रेम कर सकती है।
२५. पति की म
२६. ऐसा चाँटा 'लगा' कि 'गाल' उलट गया
२८. गरिष्ठ चीज़ें देर में ही...हैं। २९. चमकीला
३०. इसका रंग नीला होता है। ३१. डरपोक।
३२. महाकाल को भी हरानेवाली दृढ़प्रतिज्ञ सती।

ऊपर से नीचे

१. वृद्ध अवस्था में प्रायः कमर...ही जाती है।
२. जो उपजाऊ न हो।
३. यहाँ पर सज-धज बिगड़ गई है।
४. निज...को कौन प्यार नहीं करता?
५. बुद्धिमान् पुरुष ही इसका सदुपयोग करते हैं।
९. एक कपड़ा, जो अंदर से रूखा और कड़ा, पर बाहर से मुलायम और चिकना होता है।
११. यहाँ पनीर उलट गया है।
१३. विष्णु की स्त्री।
१५. मनोहर...सभी को मोहता है।
१६. पहले देवताओं को प्यारी थी, अब हिंदी-प्रेमियों को।
१७. एक प्रसिद्ध सागर।
१९. सास...बहू को चाहती है।
२०. मनुष्य की सबसे अच्छी अवस्था।
२१. ...सूरत सभी को भाती है।
२३. शपथ।
२७. एक मंत्र। २९. जीत।

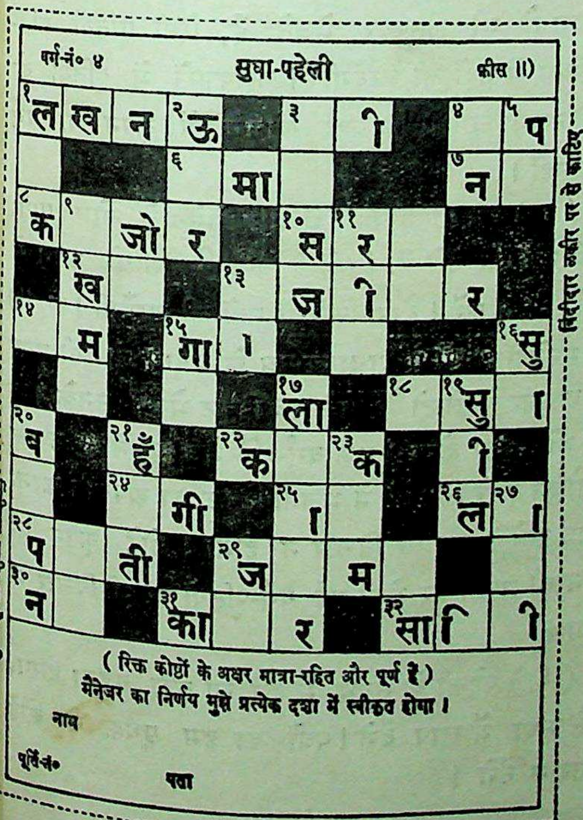

वर्ग-नं० ४ सुधा-पहेली फ़ीस ॥)

१ ल	ख	न	२ ऊ	■	३	ा	■	४	५ प
	■	■	६	मा		■	■	७ न	
८ क	९	जो	र	■	१० स	११ र		■	■
■	१२ ख		■	१३	ज	ा		र	■
१४	म	■	१५ गा	ा	■		■	■	१६ सु
■		■		■	१७ ला	■	१८	१९ सु	ा
२० ब	■	२१ हँ	■	२२ क		२३ क	■	ा	■
	■	२४	गी	■	२५ ा		■	२६ ल	२७ ा
२८ प		ती	■	२९ ज		म		■	
३० न		■	३१ का		र	■	३२ सा	ि	ा

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।

नाम

पूर्ति-नं०

पता

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

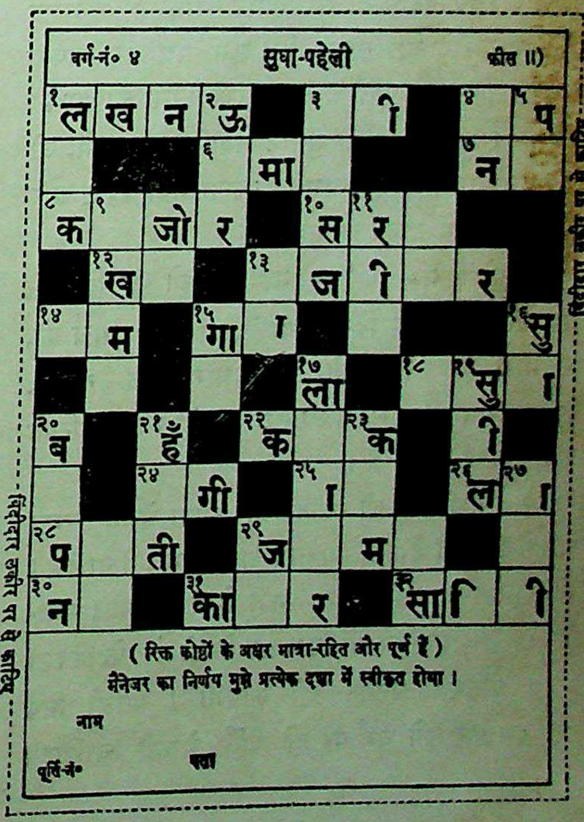

वर्ग-नं० ४ सुधा-पहेली फ़ीस ॥)

१ ल	ख	न	२ ऊ	■	३	ा	■	४	५ प
	■	■	६	मा		■	■	७ न	
८ क	९	जो	र	■	१० स	११ र		■	■
■	१२ ख		■	१३	ज	ा		र	■
१४	म	■	१५ गा	ा	■		■	■	१६ सु
■		■		■	१७ ला	■	१८	१९ सु	ा
२० ब	■	२१ हँ	■	२२ क		२३ क	■	ा	■
	■	२४	गी	■	२५ ा		■	२६ ल	२७ ा
२८ प		ती	■	२९ ज		म		■	
३० न		■	३१ का		र	■	३२ सा	ि	ा

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।

नाम

पूर्ति-नं०

पता

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

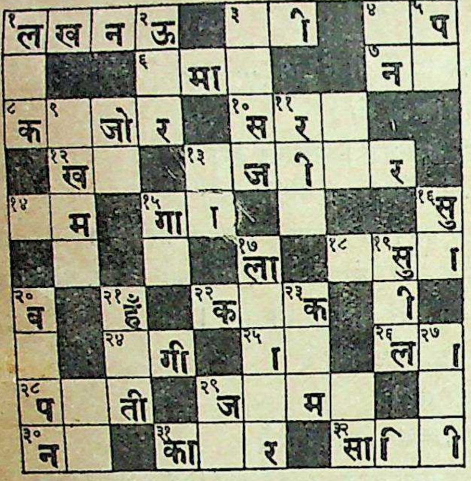
१ ल ख न २ ऊ ३ ी ४ ५ प
६ आ ७ न
८ क ९ जो र १० स ११ र
१२ ख १३ ज ी र
१४ म १५ गा ा १६ सु
१७ ला १८ १९ सु ा
२० ब २१ हँ २२ क २३ क ी
२४ गी २५ ा २६ ल २७ ा
२८ प ती २९ ज म
३० न ३१ का र ३२ सा ि ी

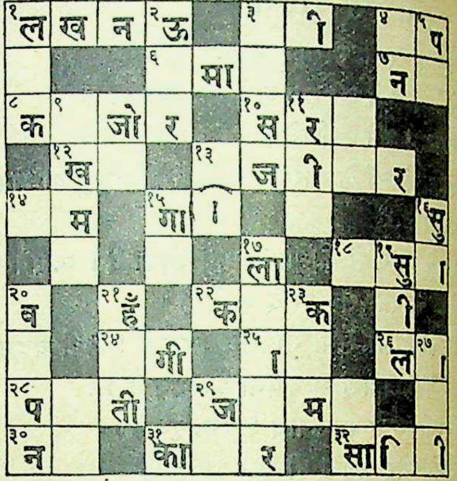
१ ल ख न २ ऊ ३ ी ४ ५ प
६ आ ७ न
८ क ९ जो र १० स ११ र
१२ ख १३ ज ी र
१४ म १५ गा ा १६ सु
१७ ला १८ १९ सु ा
२० ब २१ हँ २२ क २३ क ी
२४ गी २५ ा २६ ल २७ ा
२८ प ती २९ ज म
३० न ३१ का र ३२ सा ि ी

अपनी याददाश्त के लिये वर्ग-नं० ४ की पूर्तियों की प्रतिलिपि यहाँ कर लीजिए,
और निर्णय प्रकाशित होने तक अपने पास रखिए।

आवश्यक सूचनाएँ

(१) प्रतियोगियों की सुविधा के लिये हमने प्रवेश-शुल्क-पत्र छाप दिए हैं, जो हमारे कार्यालय से नक़द दाम देकर खरीदे जा सकते हैं। उस पत्र पर अपना ाम स्वयं लिखकर पूर्ति के साथ नत्थी करना चाहिए।

(२) स्थानीय पूर्तियाँ सुधा-प्रतियोगिता-बक्स में, जो ांगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस में, सामने, रक्खा गया है, ९ और ६ बजे के बीच में डाली जा सकती हैं।

(३) पहेली-नं० ४ का नतीजा, जो बंद लिफ़ाफ़े में मुहर लगाकर रख दिया गया है, ता० ११ मार्च को, सुधा-विभाग में, ११ बजे, सर्वसाधारण के सामने, खोला जायगा, उस समय जो सज्जन चाहें, स्वयं उपस्थित होकर उसे देख सकते हैं।

(४) मनीऑर्डर की रसीद, जो रुपया भेजते समय डाकघर से मिलती है, पूर्ति के साथ अवश्य भेजनी चाहिए। पूर्तियों की प्राप्ति की सूचना नहीं भेजी जायगी। मनी-ऑर्डर, प्रवेश-शुल्क-पत्र या डाकघर के दो पैसे के टिकटों ारा ही प्रतियोगिता-फ़ीस ली जायगी। पतली निब े साफ़ बनाकर छपे वर्ग पर ही पूर्ति भेजनी चाहिए। वर्ग को काटकर जो काग़ज़ पर चिपका देते हैं, अलग से भी लिखकर भेजते हैं, ऐसी पूर्तियाँ प्र योगिता में नहीं ली जायँगी। लिफ़ाफ़ों में पूर्तियाँ ऐसे रखना चाहिए कि यहाँ खोलने में कूपन या फटें नहीं।

(५) इस प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले लोग प्रा ऐसी भूलें कर देते हैं, जिन्हें वे यदि नियमों को ध्यान देखें, तो न करें। बैरंग चिट्ठियाँ नहीं ली जायँगी। हाँ, के मनीऑर्डर या प्रवेश-शुल्क-पत्र के बजाय जो इसी मु के डाकघर के दो-दो पैसेवाले १६ टिकट भेजेंगे, उनके उ पर भी विचार होगा। एक वर्ग-पूर्ति भेज चुकने पर उस संशोधन दूसरे लिफ़ाफ़े में भेजना टिकट का अपव्यय कर होगा, क्योंकि उस पर विचार न होगा। छोटे कूपन कूपन की नक़ल पर भेजी गई वर्ग-पूर्तियों पर भी विचार होगा।

(६) पहेली के संबंध में हमें जो कुछ कहना हो उसे सुधा में छाप देंगे। पत्रों का हम पृथक् उत्तर न देंगे।

संयुक्तप्रांतीय शिक्षा-विभाग की ओर से प्रचलित

हिंदी-विशेष-योग्यता-परीक्षा

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद, तथा पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

जनवरी-मास में प्रकाशित होनेवाली नवीन पुस्तकें

नीचे लिखी पुस्तकें बहुत थोड़ी संख्या में छपाई गई हैं, ऑर्डर भेजकर मँगा लें, अन्यथा वर्षों इंतज़ार करना पड़ेगा।

(१) **नवयुग-काव्य-विमर्ष**—आलोचना-साहित्य का अपूर्व ग्रंथ, हिंदी के वर्तमान रहस्यवादी कवियों के काव्य का विवेचनात्मक ग्रंथ। रचयिता, हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, लेखक और संपादक पं० ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल' भूतपूर्व संपादक 'मनोरमा', 'भारत' आदि। लगभग मूल्य २)

(२) **शिशु-पालन**—लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार भिषग्रत्न। इसमें पाश्चात्य और पूर्वीय मतों की छान-बीन करके बच्चों के पालन-पोषण के विषय में ज्ञातव्य बातें लिखी गई हैं। लगभग मूल्य २)

(३) **सुघर गँवारिन**—लेखक, ताजिरुलमुल्क लाला रामजीदास वैश्य। इस पुस्तक का पढ़कर कल्पना-सौंदर्य की रोचकता और जासूसी वर्णन आपको चकित कर देगा। इसमें चित्रित आजकल का सामाजिक जीवन आपकी आँखों के सामने एक अबला का जीता-जागता चित्र खींचकर रख देगा। यदि डॉक्टरों की लीला, ज़मींदारों और उनके कारिंदों की करतूत, दीन-दुखियों का सरल हृदय, गाँववालों का मेल-जोल का चित्र देखना हो, तो इस पुस्तक को एक बार पढ़ें। लगभग मूल्य १॥)

(४) **हृदय-भार**—लेखक, श्रीदीनानाथजी व्यास। इसमें लेखक की समय-समय पर लिखी गई सरस और सुंदर कविताएँ संगृहीत हैं। कविता के विषयों का चुनाव हृदयग्राही है। लगभग मूल्य ॥), १)

(५) **विचित्र जीव-जंतु**—लेखक, श्रीकन्हैयालाल दीक्षित। इस पुस्तक में उन अजीब जानवरों का परिचय सचित्र और ऐसी मनोरंजक भाषा में दिया गया है कि बच्चे एक बार हाथ में लेने पर विना खत्म किए न छोड़ेंगे। लगभग मूल्य ॥।), १।)

सब प्रकार की हिंदी पुस्तकों का सूचीपत्र =) टिकट भेजकर मँगाएँ

खेलने योग्य नाटक और प्रहसन

आहुत या जयपाल

देश-प्रेम के भावों से ओत-प्रोत ऐतिहासिक नाटक। अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। मूल्य १), १।)

कीचक

लेखक, पं० भगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी०। पांडवों के अज्ञातवास का कथानक, हास्य-रस की पुट-सहित। मूल्य १।), १।।)

पतिव्रता

अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। स्त्री-पुरुषों के देखने और पढ़ने-योग्य सामाजिक नाटक। दो रंगीन और दो सादे चित्र। मूल्य १।=), १।।=)

प्रबुद्ध यामुन

लेखक, श्रीवियोगी हरि। अहिंसा, दीन-वत्सलता और भगवद्भक्ति-भरा नाटक। मूल्य १), १।)

अचलायतन

मूल-लेखक, कवींद्र रवींद्र। हिंदू-धर्म की छुआछूत और आडंबर की पोल खोलनेवाला प्रहसन। मूल्य ।।), ।।=)

रावबहादुर

मूल-लेखक, 'मोलियर'। उपाधि-व्याधि-ग्रस्त घरफूँक बहादुर का खासा खाका। मूल्य ।।।), १)

मैनेजर

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

पहेली-पूर्तिकार ध्यान दें

सुधा के पुराने अंक

चौथाई मूल्य में

अक्सर देखा गया है कि पहेली भरनेवालों को पहेलियों के कूपनों के लिये सुधा के प्रत्येक अंक की तीन-तीन, चार-चार, आठ-आठ प्रतियाँ ख़रीदनी पड़ती हैं, पर वे पहेली भरने के बाद बेकार हो जाती हैं, क्योंकि उन सबमें एक ही लेख और चित्र रहते हैं। उनकी सहूलियत के लिये हमने सुधा के नीचे लिखे अंकों में भी यही तृतीय पहेली लगा दी है। अब जो चाहें, नवीन अंक की कई प्रतियाँ ।)-।) में न ख़रीदकर इस सूची में से जो पिछले अंक पसंद करें, वह =) =) आने में मँगा लें। पहेली भरनेवालों से इनका मूल्य केवल =) ही लिया जायगा, यद्यपि ॥)-॥=) हैं, आशा है, ग्राहक इससे लाभ उठाएँगे, और मनमाने अंक ख़रीदेंगे। इस तरह गत १० वर्षों की सुधा का सुंदर सेट भी, उनके पास, उनके और उनकी स्त्री-बच्चों के लाभ के लिये, धीरे-धीरे तैयार हो जायगा। डाक-व्यय पृथक्।

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्ति-कारों से	पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्ति-कारों से
१	अगस्त	१९२७	॥=)	=)	२५	अगस्त	१९२९	॥≠)	=)
२	सितंबर	,,	,,	,,	१६	सितंबर	,,	,,	,,
३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,	२७	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
४	नवंबर	,,	,,	,,	२८	नवंबर	,,	,,	,,
६	जनवरी	१९२८	,,	,,	३१	फ़रवरी	१९३०	,,	,,
७	फ़रवरी	,,	,,	,,	३२	मार्च	,,	,,	,,
८	मार्च	,,	,,	,,	३३	एप्रिल	,,	,,	,,
९	एप्रिल	,,	,,	,,	३४	मई	,,	,,	,,
१०	मई	,,	,,	,,	३५	जून	,,	,,	,,
११	जून	,,	,,	,,	४२	जनवरी	१९३१	,,	,,
१२	जुलाई	,,	,,	,,	४३	फ़रवरी	,,	,,	,,
१४	सितंबर	,,	।।।)	≡)	४४	मार्च	,,	,,	,,
१५	ऑक्टोबर	,,	॥=)	=)	४५	एप्रिल	,,	,,	,,
१६	नवंबर	,,	,,	,,	४७	जून	,,	,,	,,
१७	दिसंबर	,,	,,	,,	४८	जुलाई	,,	,,	,,
१८	जनवरी	१९२९	,,	,,	५१	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
१९	फ़रवरी	,,	,,	,,	५२	नवंबर	,,	,,	,,
२०	मार्च	,,	,,	,,	५३	दिसंबर	,,	,,	,,
२१	एप्रिल	,,	,,	,,	५५	फ़रवरी	१९३२	,,	,,
२२	मई	,,	,,	,,	५९	जून	,,	,,	,,
२३	जून	,,	,,	,,	६०	जुलाई	,,	,,	,,
२४	जुलाई	,,	,,	,,	६१	अगस्त	,,	,,	,,

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्ति-कारों से	पूर्ण सं०	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पू कारों
६२	सितंबर	१९३२	॥=)	=)	९८	अगस्त १६	३४	।)	-
६३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,	९९	सितंबर १	,,	,,	
६४	नवंबर	,,	,,	,,	१००	नवंबर	,,	,,	
६५	दिसंबर	,,	१॥)	॥)	१०१	दिसंबर	,,	,,	
६६	जनवरी	१९३३	॥=)	=)	१०२	जनवरी	१९३५	,,	
६७	फ़रवरी	,,	,,	,,	१०३	फ़रवरी	,,	,,	
६८	मार्च	,,	,,	,,	१०४	मार्च	,,	,,	
६९	एप्रिल	,,	,,	,,	१०५	एप्रिल	,,	,,	
७०	मई	,,	,,	,,	१०६	मई	,,	,,	
७१	जून	,,	,,	,,	१०७	जून	,,	,,	
७२	जुलाई	,,	,,	,,	१०८	जुलाई	,,	,,	
७३	अगस्त १	,,	,,	,,	१०९	अगस्त	,,	॥=)	
७४	अगस्त १६	,,	,,	,,	११०	सितंबर	,,	।=)	
७६	सितंबर १६	,,	,,	,,	१११	ऑक्टोबर	,,	,,	
७७	ऑक्टोबर१	,,	,,	,,	११२	नवंबर	,,	,,	
७८	ऑक्टोबर१६	,,	।॥), ।=)	≡)	११३	दिसंबर	,,	,,	
७९	नवंबर १	,,	।)	—)॥	११४	जनवरी	१९३६	॥)	
८०	,, १६	,,	,,	,,	११५	फ़रवरी	,,	,,	
८१	दिसंबर १	,,	,,	,,	११६	मार्च	,,	।-)	
८२	दिसंबर १६	,,	,,	,,	११७	एप्रिल	,,	,,	
८३	जनवरी १	३४	,,	,,	११८	मई	,,	,,	
८४	,, १६	,,	,,	,,	११९	जून	,,	,,	
८५	फ़रवरी १	,,	≡)	,,	१२०	जुलाई	,,	,,	
८६	,, १६	,,	,,	,,	१२१	अगस्त	,,	,,	
८७	मार्च १	,,	,,	,,	१२२	सितंबर	,,	,,	
८८	,, १६	,,	,,	,,	१२३	ऑक्टोबर	,,	,,	
८९	एप्रिल १	,,	,,	,,	१२४	नवंबर	,,	,,	
९०	,, १६	,,	,,	,,	१२५	दिसंबर	,,	,,	
९१	मई १	,,	,,	,,	१२६	जनवरी	१९३७	,,	
९२	,, १६	,,	,,	,,	१२७	फ़रवरी	,,	,,	
९३	जून १	,,	,,	,,	१२८	मार्च	,,	,,	
९४	,, १६	,,	,,	,,	१३०	मई	,,	,,	
९५	जुलाई १	,,	,,	,,	१३१	जून	,,	,,	
९६	,, १६	,,	,,	,,	१३३	अगस्त	,,	२)	
९७	अगस्त	,,	।)	,,					

मैनेजर सुधा, लखनऊ

आगामी कांग्रेस के अवसर पर

हिंदी के सर्वश्रेष्ठ दैनिक और साप्ताहिक

लोकमान्य

का

भारतीय वाणिज्य-व्यवसाय

विशेषांक

बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा

जिसमें

भारत के विविध वाणिज्य-व्यवसायों की
पिछले ५० वर्षों की परिस्थिति का
सिंहावलोकन किया जायगा।

भारतीय वाणिज्य - व्यवसाय पर विशेषज्ञों
के खोज-पूर्ण, ज्ञातव्य लेखों का
अपूर्व संकलन

अपनी प्रति के लिये आज ही लिखिए
विज्ञापनदाता इस अवसर से लाभ उठायें—

मैनेजर 'लोकमान्य'
१६०, हैरिसन रोड
कलकत्ता

चार नए रत्न

१—फूलों की सेज

[लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०]

इस अपूर्व पुस्तक में युवक-युवतियों एवं नवविवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक और वैज्ञानिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक नई तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। अश्लीलता का लेश-मात्र नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

२—ब्रज-भारती

[लेखक, कविवर पं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०]

ब्रजभाषा-साहित्य में युगांतर करनेवाला परमोत्कृष्ट ग्रंथ है। ब्रजभाषा में नवीन शैली के छंदों और आधुनिक ढंग के विषयों का सुंदर समावेश करने का सुंदर साधन। इस काव्य ने यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजभाषा में जो लोच और लचक है, वह आधुनिक काल की उष्णता और भार को सहन कर सकती है। जो लोग ब्रजभाषा के प्रेमी हैं, वे यह प्रमाणित करने के लिये कि ब्रजभाषा अब भी जीवित-जाग्रत् तथा शक्तिशाली है, लेखक के चिर-कृतज्ञ रहेंगे। मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १।)

३—अतीत के चित्र

[लेखिका, श्रीकुमारी सुशीला आगा बी० ए०]

कुमारी सुशीला आगा बी० ए० हिंदी की प्रसिद्ध कहानी-लेखिका हैं। इस पुस्तक में आपकी ६ कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर और भाव-पूर्ण हैं। भाषा बड़ी ही सुंदर, सरस और हृदय-स्पर्शी है। घटना-क्रम और हृदय की आंतरिक वृत्तियों का ऐसा मार्मिक चित्रण हुआ है कि पढ़ना आरंभ करने पर समाप्त किए विना छोड़ने को जी नहीं चाहता। नारी-सुलभ सौंदर्य एक-एक पद से विकसित हो रहा है। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

४—बिहारी-दर्शन

[लेखक, साहित्याचार्य पं० लोकनाथ द्विवेदी
सिलाकारी, साहित्यरत्न]

इसमें एक सर्वथा नूतन और अत्यंत रोचक शैली से हिंदी-भाषा के पीयूषवर्षी महाकवि श्रीबिहारीलालजी की कविता पर प्रकाश डाला गया है। इस एक ही ग्रंथ में सरसता का सागर, पांडित्य का पीयूष, काव्य की कलित कौमुदी, भाषा की भव्यता, समालोचना का सौष्ठव, मनोभावों की मनोरमता, प्रकृति-वर्णन में पूर्ण पर्यवेक्षण, भक्ति, नीति, गणित, दर्शन, ज्योतिष, राजनीति और मनोविज्ञान की मनोहर मीमांसा का जमघट देखकर आप इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा किए विना रह ही नहीं सकते। मूल्य २), सजिल्द २॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

उषा

६ सुंदर चित्रों
से सुशोभित
मनोहर
खंडकाव्य
लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त
'कुसुम'

बाण-नंदिनी उषा और कृष्णचंद्र के पौत्र अनिरुद्ध के प्रणय-परिणय की पौराणिक कथा।

तुकांतहीन
नई शैली
चारु चरित्र-चित्रण
भव्य, ओजस्वी वर्णन।

मूल्य
॥=), १=)

लतिका

लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी
'गुलाब'

चुनी हुई
उत्कृष्ट
एक से एक
अनूठी
मनोहर और
भाव-पूर्ण
कविताएँ।
अवश्य पढ़िए।

मूल्य
१), १॥)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

कुछ नई पुस्तकें

चंद हसीनों के ख़तूत

[लेखक—श्रीबेचन शर्मा 'उग्र']

उग्रजी की लेखनी से हिंदी-संसार काफ़ी परिचित है। यह उन्हीं की उग्र लेखनी द्वारा लिखी पुस्तक है। यह मनचले पाठकों के मनोरंजन के लिये एक तोहफ़ा है। ख़त क्या हैं, सजीव चुलबुलाती घटनाओं का वर्णन है। भाषा इतनी मज़ेदार है कि पढ़ते ही बनता है। मूल्य १)

प्रेम-निकुंज

[लेखक—पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय]

यह सामाजिक उपन्यास है। इसमें समाज के पतित और उन्नत, दोनो प्रकार के जीवनों का हृदयग्राही वर्णन है। पतित मनुष्य समाज का कितना अनिष्ट कर सकता है, और उन्नत विचारों का व्यक्ति समाज का किस प्रकार हित कर सकता है, यही इस पुस्तक का मूल विषय है। मूल्य १।)

घंटा

[लेखक—श्रीबेचन शर्मा 'उग्र']

यह उग्रजी की नई कृति और सूझ है। फड़कती भाषा और मज़ेदार कहानियों का मज़ा लूटना हो, तो इस पुस्तक को मँगाकर एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)

जागृति

(सामाजिक नाटक)

[मूल-लेखिका—श्रीमती अनुरूपादेवी]

यह नाटक बँगला-स्टेज और स्क्रीन पर अपूर्व सफलता प्राप्त कर चुका है। हिंदी-रूपांतर में बँगलापन नहीं आने दिया गया है, और स्टेज पर खेले जाने के लिये ही लिखा गया है। प्लाट (कथानक) सामाजिक, भाषा ज़ोरदार और गाने भाव-पूर्ण हैं। मूल्य १)

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

नए फूल

इस शीर्षक में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'नवयुग-काव्य-विमर्ष' (आलोचना)—लेखक, श्रीज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव; मूल्य २॥), सजिल्द ३)

(२) 'विजय' (दो भाग, उपन्यास)—लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०; संपादक, उपर्युक्त; प्रत्येक का मूल्य २), सजिल्द २।)

(३) 'शिवाजी' (नाटक)—लेखक, श्रीमिश्र-बंधु; संपादक, उपर्युक्त; मूल्य १।), सजिल्द १॥)

(४) 'निरंकुशता-निदर्शन' (आलोचना)—लेखक, श्रीपं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी; मूल्य ॥।), सजिल्द १।)

(५) 'विचित्र जीव-जंतु' (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीकन्हैयालाल दीक्षित; मूल्य ॥), ॥=)

(६) 'ग्राम-सुधार' (ग्रामोपयोगी)—लेखक, श्रीपं० अश्विनीकुमार शुक्ल बी० ए०, एल्-एल्० बी०; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव; मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

(७) 'वनमाला' (काव्य)—लेखक, श्रीनगेंद्र एम्० ए०; मूल्य ।)

(८) 'ज़ेबुन्निसा के आँसू' (साहित्य)—लेखकगण, श्रीओम्प्रकाश भार्गव बी० एस्-सी०, विशारद और ईश्वरीप्रसाद माथुर बी० ए०; मूल्य १।)

(९) 'केदार का राजा' (जासूसी उपन्यास)—लेखक, श्र० गिरीशचंद्रजी शर्मा; मूल्य १॥)

(१०) 'भग्न वीणा' (काव्य)—लेखक, श्रीरामदेनी तिवारी; मूल्य ॥।)

(११) 'पिपासा' (उपन्यास)—लेखक, श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी; मूल्य १।)

(१२) 'अहंकार' (उपन्यास)—अनुवादक, स्व० प्रेमचंद्र; मूल्य १)

(१३) 'स्त्री-दर्शन' (स्त्र्युपयोगी)—लेखकद्वय, स्व० श्रीमती मुहम्मदी बेगम और श्रीहरिहरनाथ बी० ए०; मूल्य १)

(१४) 'आधी रात' (मौलिक, ऐतिहासिक नाटक)—लेखक, श्रीजनार्दनराय; मूल्य १॥)

(१५) 'बरगद' (नाटक)—लेखक, कृष्णलाल श्रीधराणी; मूल्य ॥।)

[संपादकीय विचार]

१. विश्व युद्ध की ओर

उस दिन सोशलिस्ट नेशनल कौंसिल की एक सभा में भाषण देते हुए फ्रांस के प्रधान मंत्री और वहाँ के समाजवादियों के नेता श्रीब्लूम ने वर्तमान संसार की दशा पर कहा—"जगत् की वर्तमान अवस्था में शांति के लिये यह आवश्यक है कि लंदन और मास्को में मैत्री बनी रहे। जो स्थिति सन् १९१४ में थी, लगभग वैसी ही स्थिति संसार के सम्मुख आज उपस्थित है। उस समय भी फ्रांस का काम यही था कि वह ज़ारशाही रूस और इँगलैंड को एक सूत्र में बाँध रक्खे।"

श्रीब्लूम के इन शब्दों से संसार के आधुनिक राष्ट्रों की मनोवृत्ति पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है। सच बात ता यह है कि योरपियन राजनीति आज गुटबंदियों से गुज़रती हुई विध्वंस के अभिनय की ओर जा रही है, और उस अभिनय का प्रत्यक्ष श्रीगणेश यदि अभी तक नहीं हो सका है, तो इसका एकमात्र कारण यह है कि योरप की वर्तमान राजनीति इस प्रकार जटिल हो गई है कि अभी तक गुटबंदियाँ भली भाँति न हो सकीं।

संसार की राजनीतिक चालों की संक्षेप रूप-रेखा इस प्रकार है कि आज विश्व में दो महान्, परंतु विरोधी शक्तियाँ एक दूसरे के साथ संघर्ष कर रही हैं। वे शक्तियाँ हैं फ़ासिज़्म और सोशलिज़्म की। दोना शक्तियों का ध्येय संसार के अन्य सभी राष्ट्रों में अपनी विचार-धारा का प्रचार करना ही है। इस प्रकार योरप आज दो प्रमुख दलबंदियों में विभक्त है। एक गुट है इटली और जर्मनी का और दूसरा फ्रांस और रूस का। इटली और जर्मनी जहाँ एक ओर अपनी साम्राज्य-पिपासा के लिये संसार में फ़ासिज़्म का प्रचार कर तथा समस्त फ़ासिस्ट राष्ट्रों को एक सूत्र में बाँध अपनी गुटबंदी दृढ़ कर रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर रूस

तथा फ्रांस साम्यवादी शक्तियों को दृढ़ करने में भरपूर प्रयत्नशील हैं। अभी कुछ ही वर्ष हुए, फ्रांस और रूस में इसी विचार से एक संधि हुई थी। इस संधि के विरोध में टक्कर लेने के लिये जर्मनी और जापान की संधि हुई थी। परंतु उस समय की परिस्थितियों से आज की परिस्थिति बहुत बदल गई है। आज जापान, जर्मनी और इटली एक साथ मिल गए हैं, और अभी उसी दिन सोवियट रूस के विरुद्ध इन तीनो की एक संधि हुई। परंतु यह समझ लेना कि उक्त संधि केवल सोवियट रूस के ही विरुद्ध हुई, सत्य पर आवरण डालना ही होगा। वर्तमान संसार की राजनीतिक प्रगति में यह संधि अत्यंत ही महत्त्व-पूर्ण है। कारण, इस संधि के भीतर वे शक्तियाँ काम कर रही हैं, जो ब्रिटेन तथा अमेरिका-जैसे प्रजातंत्रवादी राष्ट्रों को भी, जो फ़ासिज़्म और सोशलिज़्म, दोनो के ही विरोधी हैं, भावी समर में निर्विकार नहीं छोड़ सकतीं।

मुसोलिनी ने इस बात की प्रतिज्ञा कर ली है कि वह प्रजातंत्रवाद का नाश कर उसके शव पर फ़ासिज़्म के अधिनायक तंत्रवाद की स्थापना करेगा। बार-बार उसने अपने लेखों तथा भाषणों में इस बात की पुनरावृत्ति की है कि हम स्वतंत्रता के नाम पर फूलने-फलनेवाले निकम्मे प्रजातंत्रवाद की हत्या करके उसके शव को कुचलते हुए आगे बढ़ने की चेष्टा करेंगे। उन भाषणों और लेखों का परिणाम यह हुआ है कि आज तक इटली और जर्मनी के अतिरिक्त आस्ट्रिया, हंगरी, पुर्तगाल तथा बालकन के कतिपय राष्ट्र फ़ासिस्ट हो गए। स्पेन में जनरल फ्रैंको के द्वारा गृह-युद्ध की आग भड़काई गई, और यदि उस युद्ध की गति-विधि इसी भाँति बनी रही, तो वह दिन दूर नहीं, जब मुसोलिनी की अधीनता में समस्त स्पेन एक फ़ासिस्ट शक्ति के रूप में भूमध्यसागर के द्वार पर खड़ा होकर ब्रिटेन को उसके आफ्रिकन तथा एशियाई अधिकारों से दूर करने में समर्थ हो जायगा।

परंतु इधर स्पेन का ही संकट नहीं। अभी फ्रांस में भी फ़ासिस्ट षड्यंत्रकारियों के एक सुदृढ़ संगठन का पता वहाँ के अधिकारियों को लगा है। यदि फ्रांस-सरकार उस षड्यंत्र को आरंभ से ही सफलता-पूर्वक कुचल डालने में समर्थ न हो सकी, तो फ्रांस का गृह-कलह अंतरराष्ट्रीय वातावरण एवं परिस्थितियों के लिये भयावह प्रमाणित होगा। इस प्रकार जहाँ योरप में मुसोलिनी और हिटलर के द्वारा फ्रांस और इँगलैंड के विरुद्ध परिस्थितियाँ तैयार की जा रही हैं, वहाँ इटली और फ्रांस का मित्र राष्ट्र जापान समस्त चीन को हड़प रहा है। यदि उसकी विजय की गति इसी प्रकार बनी रही, तो वह दिन दूर नहीं, जब समस्त चीन जापान की तलवार के नीचे आ जायगा। उस समय ब्रिटेन का सिंगापुरवाला हवाई और नाविक अड्डा तथा आस्ट्रेलिया, बर्मा और भारत जापान की बढ़ती हुई साम्राज्य-पिपासा के संकट से खाली नहीं रहेंगे। जापान की यह विजय अमेरिका के प्रशांत सागरवाले हितों के भी विरुद्ध होगी। ब्रिटेन और अमेरिका अपने भावी संकटों को नहीं समझते, यह बात नहीं। वे अपना पासा बैठाने में संलग्न हैं।

संसार की परिस्थिति आज बहुत पेचीली हो गई है। जापान की चीन-विजय से तीन राष्ट्रों के हित खतरे में पड़ जाते हैं। वे तीन राष्ट्र हैं ब्रिटेन, रूस तथा अमेरिका। यह तो एशिया-खंड को लेकर। उधर योरप में इटली और जर्मनी की गुटबंदी का उत्तर फ्रांस और रूस है। इटली, जर्मनी तथा जापान की सम्मिलित गुटबंदी ब्रिटेन, फ्रांस, रूस तथा अमेरिका के लिये समान रूप से हानिकर है। परंतु सोवियट रूस

ब्रिटेन श्रौर श्रमेरिका के लिये जर्मनी तथा इटली से भी श्रधिक खतरनाक है । श्रँगरेज़ श्राज से पहले रूस को श्रत्यंत घृणा की दृष्टि से देखते थे। कारण, बोल्शेविक राज्य-सत्ता उनके साम्राज्यवाद की नींव जड़ से हिला देगी। रूस भी ब्रिटेन को दिल से नहीं चाहता ; परंतु श्राज दोनो ही इटली, जर्मनी श्रौर जापान के गुट को समान संकट समझकर एक दूसरे के अधिक निकट श्रा गए हैं।

श्रब तक श्रमेरिका योरप के श्रापसी युद्ध में किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था। योरप के श्रापसी झगड़ों में उसकी नीति सदा निष्पक्ष रही है; पर योरप की राजनीति में जापान का सम्मिलित होना तथा जापान की चीन-विजय उसके हितों के लिये सुरक्षित नहीं । इस प्रकार हम देखते हैं, ब्रिटेन श्रौर श्रमेरिका, दोनो ही एक दूसरे के श्रत्यंत समीप श्रा रहे हैं। पर श्रागे चल कर रूस का प्रश्न श्रा जाता है। ब्रिटेन श्रौ श्रमेरिका, दोनो ही राष्ट्रों को रूस श्रपनी बोल्शेवि नीति के लिये वांछनीय नहीं । इधर ब्रिटे श्रपनी योरपियन स्थिति तथा श्राफ़्रिका श्रौर एशिय के श्रधिकारों को सुदृढ़ रखने के लिये फ़्रांस को छोड़ना नहीं चाहता, श्रौर फ़्रांस श्रपने पुरा शत्रु जर्मनी के श्राक्रमण से श्रपने को सुरक्षित कर के लिये रूस को नहीं छोड़ना चाहता। ब्रिटेन, श्रमेरिका श्रौर फ़्रांस का गुट इटली, जर्मनी श्रा जापान को विध्वस्त करने के लिये पर्याप्त था; प फ़्रांस किसी प्रकार रूस को छोड़ नहीं सकता, श्रौ ब्रिटेन केवल श्रमेरिका के श्राधार पर श्रपने पूर्णतया सुदृढ़ नहीं समझता।

श्रभी उस दिन डॉक्टर सैयद हुसैन ने योरपिय राजनीति पर व्याख्यान देते हुए कलकत्ते में कह

मृत संजीवनी सुधा

सूतिका, पौरुषहीनता, श्रजीर्ण श्रौर ज्वर को दूर करनेवाला
सर्वश्रेष्ठ टॉनिक वाइन

पता—ढाका श्रायुर्वेदीय फ़ार्मेसी लिमिटेड

एक पिंट का दो रुपए श्राठ श्राने
क्वार्टर का चार रुपए श्राठ श्राने
स्थानीय एजेंटों से लीजिए
या
सीधे हेड श्रॉफ़िस ढाका (बंगाल) से मँगाइए

था कि भावी युद्ध कब होगा, यह सबसे अधिक दो ही आदमी बतला सकते हैं—हिटलर और मुसोलिनी। हम डॉक्टर सैयद हसन के इन शब्दों को महत्त्व-हीन समझते हैं। भावी युद्ध तथा फ़ासिज़्म की विषैली शक्तियों के सर्वनाश की कथा केवल ब्रिटेन, अमेरिका, रूस और फ़्रांस की राजनीतिक चालों और संधियों पर ही निर्भर है। यदि ये चारो राष्ट्र चाहें, तो योरप एवं समस्त संसार को त्राण दे सकते हैं, और युद्ध की ओर अत्यंत वेग से भागता हुआ आज का संसार भयानक नरसंहार से बच सकता है। पर ये बातें केवल मानवीय कल्पनाएँ हैं। भगवान् को क्या अभीष्ट है, यह भविष्य बतलाएगा।

× × ×

२. संयुक्तप्रांतीय सरकार की ग्राम-सुधार-योजना

हम संयुक्तप्रांत की कांग्रेस-सरकार को, उसकी ग्राम सुधार-योजना के लिये, साधुवाद देते हैं! भारत गाँवों का देश है, और इस कारण जब तक गाँवों की सुधार-योजना हम पूरी तरह सफल नहीं कर पाते, तब तक देश के स्थायी कल्याण की आशा मृगतृष्णा के समान है। भारत का वास्तविक कल्याण तभी हो सकेगा, जब इस विशाल देश के लगभग सात लाख गाँवों की नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, स्वास्थ्य तथा सफ़ाई-संबंधी सुधार-स्कीम को हम कार्यान्वित करें। इसी पवित्र उद्देश को सामने रखकर संयुक्तप्रांतीय सरकार ने प्रांत के गाँवों की एक सुधार-योजना तैयार की है।

इस ग्राम-सुधार-योजना की संक्षिप्त रूप-रेखा इस प्रकार है—भारत-सरकार ने संयुक्तप्रांत के गाँवों के सुधार के निमित्त सन् १९३५ ई० में पंद्रह लाख रुपए की रक़म इसलिये दी थी कि वह पाँच वर्षों तक सुधार-कार्य में व्यय की जाय। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष संयुक्तप्रांतीय सरकार को ग्राम-सुधार के लिये तीन लाख रुपए मिलते थे। पिछली गवर्नमेंट ने अपने ख़ज़ाने से इस मद में एक लाख रुपया और दिया था, और इस प्रकार पिछले साल चार लाख रुपयों से ग्राम-सुधार का काम चलाया गया था। परंतु संयुक्तप्रांत की कांग्रेसी सरकार ने इस कार्य के लिये दस लाख रुपए और भी दिए हैं। इस प्रकार सन् १९३८ के मार्च-महीने तक संयुक्तप्रांत के गाँवों के संगठन और उनकी सुधार-योजना में चौदह लाख रुपए ख़र्च किए जायँगे।

इस संबंध में ऐसा विचार किया गया है कि प्रांत के प्रत्येक गाँव में एक सभा बनाई जाय, और कई ऐसी सभाओं को मिलाकर एक यूनियन बनाया जाय, जिसमें तीस, पचास, साठ सभाएँ होंगी। प्रत्येक तहसील में इस प्रकार के एक या दो यूनियन स्थापित किए जायँगे, और हरएक तहसील के लिये एक कार्यकर्ता, जिसे इंस्पेक्टर कहा जायगा, रक्खा जायगा। इन कार्यकर्ताओं या इंस्पेक्टरों का काम यह होगा कि सभाओं और यूनियनों को पूरी-पूरी सहायता दें। गवर्नमेंट इन यूनियनों को पूरी-पूरी सहायता देगी—आर्थिक भी। यहाँ तक कि यूनियन यदि बड़ा हो, तो उसे दो-तीन हज़ार रुपयों की रक़म दी जायगी। आवश्यकतानुसार इस रक़म से गाँवों की सड़कें दुरुस्त कराई जायँगी, और शुद्ध जल के लिये कुएँ खुदवाए जायँगे। गाँवों में सफ़ाई की बड़ी आवश्यकता है। वहाँ गंदगी इतनी है कि स्वस्थ रहना कठिन है। इसलिये सरकार की यह सहायता सफ़ाई में लगेगी। पत्रों और पुस्तकों के लिये भी यूनियनों को सहायता दी जायगी। प्रत्येक कार्य नियमानुकूल और संगठित रूप से, इंस्पेक्टरों की देख-रेख में, होगा। इंस्पेक्टरों के ऊपर असिस्टेंट डाइरेक्टर और डाइरेक्टर होंगे।

साथ ही संयुक्तप्रांतीय सरकार इस बात का

विचार कर रही है कि थोड़ी-थोड़ी पूँजी से छोटी-छोटी ज्वाइंट स्टॉक-कंपनियाँ बनाई जायँ, और ये कंपनियाँ ग्राम-सुधार का काम अपने हाथ में लें।

ग्राम-सुधार की योजना इस प्रकार है कि प्रत्येक गाँव की सभा वहाँ के ग्रामवासियों द्वारा स्थापित की जाय। इस सभा के सदस्य सभी जाति तथा धर्म के मनुष्य हो सकते हैं। गाँववाले अपना एक पंचायत-घर क़ायम करें। सभा आप-ही-आप इन पंचायत-घरों के लिये उत्साही कार्यकर्ताओं की सृष्टि करेगी, और ये कार्यकर्ता उसी गाँव के होंगे, और अपने त्याग तथा सेवा के बल से गाँववालों के मित्र, साथी, सहायक, पथ-प्रदर्शक तथा नेता बन जायँगे। इन त्यागी कार्यकर्ताओं के हाथ में दवा का एक बक्स और एक अथवा दो अख़बार रहने चाहिए, जिससे वे गाँववालों को देश और संसार में होनेवाली घटनाओं को सुना तथा समझा सकें। इन कार्यकर्ताओं के हाथों में बालक-बालिकाओं की शिक्षा का भार भी रहे। ये लोग सुविधानुसार रात्रि-पाठशाला स्थापित करें, और गाँववालों को शिक्षित करें। साथ ही ये कार्यकर्ता गांधी-चरखा-संघ या खादी-केंद्रों के लिये ग्रामीण उद्योग-धंधों के या हाथ से कते और बुने कपड़े के स्वयं एजेंट बन सकते हैं, या जो एजेंट बनें, उनकी सहायता कर सकते हैं।

कहना न होगा, संयुक्तप्रांत की कांग्रेस-सरकार ने इस दिशा में जो स्तुत्य प्रयत्न किया है, वह भारत की अन्य प्रांतीय सरकारों के लिये अनुकरणीय है। यद्यपि हम यह मानते हैं कि इस योजना में अभी और भी सुधारों की बहुत कुछ गुंजाइश है, तथापि इस योजना के श्रीगणेश के साथ ही आगेवाली सभी आवश्यकताएँ आप-ही-आप स्पष्ट हो जायँगी, और साथ-ही-साथ मार्ग की कठिनाइयों का अनुभव भी हो जायगा, जिससे

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये "संगीत-सागर"-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गी, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक़्शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≥) में दिया जा रहा है, शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर "संगीत", हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र "संगीत" का इस वर्ष २०० पृष्ठ का "भातखंडे - अंक" [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए ! गाना-बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

सरकार तथा कार्यकर्तागण भविष्य के लिये अपने कार्य-क्रम का पथ प्रशस्त कर सकेंगे। हमें यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि बिहार की कांग्रेस-सरकार ने भी संयुक्तप्रांतीय सरकार की ग्राम-योजना को अपने हाथ में लिया है। उसके इस पवित्र उद्देश के लिये हम उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। भगवान् से हमारी प्रार्थना है कि इन सरकारों को इस योजना में पूरी सफलता मिले, तथा साथ ही अन्य प्रांतीय सरकारें भी इनका अनुकरण करें।

× × ×

३. मुसलिम महिला को हिंदी-पुस्तक पर पुरस्कार!

बड़े हर्ष का विषय है कि इधर कुछ समय से मुसलिम महिलाएँ भी हिंदी-भाषा को अपनाने और उसका प्रचार करने के लिये जिस लगन के साथ अग्रसर हो रही हैं, उससे तो यही पता चलता है कि अब वह समय बहुत निकट है, जब हिंदी राष्ट्र-भाषा के उच्चासन पर आसीन हो जायगी। बरार और मध्यप्रांत की हिंदी-साहित्य-एकेडेमी ने नरसिंहपुर-निवासी श्रीक़ासिमअली की पत्नी को 'सहेली का पत्र'-नामक हिंदी-पुस्तक लिखने के लिये २५) का पुरस्कार प्रदान किया है!

उदार और हिंदी-प्रेमी स्त्री-पुरुषों तथा संस्थाओं से हमारा अनुरोध है कि वे इसी प्रकार के छोटे-मोटे पुरस्कारों द्वारा हिंदी-भाषा का प्रचार करना अपना एकांत कर्तव्य समझें।

वह समय हम लोगों के लिये बड़े गौरव का होगा, जब हिंदी-भाषा का प्रचार भारत के कोने-कोने में—हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सभी जातियों में—हो जायगा, और प्रत्येक भारतीय बच्चे की ज़बान पर हिंदी-भाषा के सुमधुर शब्द होंगे!

× × ×

४. रीवाँ का स्तुत्य कार्य

हमें यह लिखते अत्यंत प्रसन्नता होती है कि हाल में ही रीवाँ की स्टेट-कौंसिल ने भीख माँगने की प्रथा के विरुद्ध एक प्रस्ताव पास किया है। इधर रीवाँ-नरेश अपनी स्टेट में नए-नए सुधारों का समावेश करने में प्रयत्नशील हैं, यह बात हमारे लिये कम संतोष की नहीं। इस संबंध में हम भारत की सभी प्रांतीय सरकारों तथा स्टेटों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। उस समय हमारी प्रसन्नता की सीमा न रहेगी, जब ये सब अपने यहाँ से इस दूषित प्रथा को क़ानून द्वारा निर्मूल करने में प्रयत्नशील होंगी।

आज भारत में बड़ी-बड़ी आबादियाँ भीख माँगने का पेशा कर रही हैं। नगरों और ग्रामों में जाइए, आपको हट्टे-कट्टे, जवान, स्वस्थ और सभी प्रकार हृष्ट-पुष्ट भिखमंगों की सेना दिखाई पड़ेगी। इन निठल्लुओं को यदि भीख माँगने की दूषित प्रथा से विमुख कर इनकी शक्ति किसी सार्वजनिक कल्याण के कार्य में लगाई जाय, तो देश का अत्यंत उपकार हो। आज भारत में भिखमंगों की संख्या एक करोड़ से अधिक है। इन भिखमंगों में वे लोग भी सम्मिलित हैं, जो स्वयं अपना कोई काम नहीं करते, परंतु भीख द्वारा धन-संग्रह करना ही अपनी प्रधान वृत्ति समझते हैं।

साथ ही हम जहाँ भारत की सभी देशी रियासतों तथा प्रांतीय सरकारों का ध्यान रीवाँ के इस अनुकरणीय दृष्टांत की ओर आकर्षित करते हैं, वहाँ यह भी चाहते हैं कि क़ानून द्वारा इस प्रथा के अवरोध के साथ ही प्रत्येक सरकार अपनी सीमा में कोई ऐसी योजना तैयार करे, जिसमें इस प्रकार के लोगों की सुसंगठित शक्ति का उपयोग, सार्वजनिक लाभ के लिये, किसी भी सत्कार्य में किया जाय। इस प्रकार जहाँ एक ओर क़ानून द्वारा भिखमंगों पर अनुशासन किया जायगा, वहाँ दूसरी ओर इस योजना द्वारा उनकी प्रवृत्ति को इस दूषित कार्य की ओर से रोकने के साधन उपस्थित किए जायँगे।

क्या हमारा यह स्वप्न निकट भविष्य में पूर्ण होगा ?

× × ×

५. बिहार-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

विगत २४वीं और २५वीं दिसंबर को आरा में बिहार-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का पंद्रहवाँ अधिवेशन, बिहार-प्रांत के प्रसिद्ध मुसलमान साहित्यिक श्रीपीरमुहम्मद मूनिस की अध्यक्षता में, अत्यंत सफलता-पूर्वक समाप्त हो गया। पर इसके पहले कि सम्मेलन के संबंध में कुछ कहा जाय, यह बतलाना आवश्यक है कि आज बिहार-प्रांत की सुंदर वसुंधरा में हिंदी-साहित्य-सेवा और साधना की जा प्रगति चली है, वह भारत के अन्य हिंदी-प्रांतों के लिये ईर्ष्या एवं अनुकरण की वस्तु हो गई है। राष्ट्रीय आंदोलन के साथ ही और उसी की भाँति, प्रायः उसके समानांतर ही, आज बिहार-प्रांत में नवयुवक साहित्य-साधकों और सेवकों द्वारा हिंदी-साहित्य के जिस अभूतपूर्व दुर्ग का नव-निर्माण हो रहा है, वह सदा स्तुत्य है, और इसके लिये हम बिहारी बंधुओं को साधुवाद देते हैं!

श्रीपीरमुहम्मद मूनिस देश के उन इने-गिने मुसलमानों में हैं, जिनके हृदय में वर्तमान मुसलिम समाज का स्वाभाविक विष नहीं है। आपके निर्माण में राष्ट्रीय एवं साहित्यिक सेवाओं का एक अद्भुत मिश्रण और सहयोग है। सन् १९१७ ई० से, जब महात्मा गांधी निलहे गोरों के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाने पहलेपहल चंपारन आए, आप राष्ट्रीय सेवा में संलग्न हैं। और, राष्ट्रीय सेवा का श्रीगणेश हिंदी-साहित्य के द्वारा और कानपुर के सहयोगी साप्ताहिक 'प्रताप' के 'कालमों' से हुआ था। मूनिसजी यद्यपि हिंदी-साहित्य एवं कला के मर्मज्ञ नहीं, तथापि आप उन कतिपय व्यक्तियों में हैं, जिनके प्रयास और उत्साह से बिहार-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का जन्म हुआ है। अतएव अच्छा तो यह होता कि सम्मेलन के अधिकारिगण मूनिसजी की सेवाओं पर ध्यान रखते हुए आज से बहुत पहले उन्हें सभापति बनाकर बिहार-प्रादेशिक साहित्य-सम्मेलन को गौरवान्वित करते। फिर भी हमें इस बात का हर्ष है कि इस वर्ष बिहारी भाइयों ने मूनिसजी को प्रादेशिक साहित्य-सम्मेलन का अध्यक्ष बनाकर अपनी पिछली भूलों का प्रायश्चित्त किया है। अस्तु।

इस वर्ष के बिहार-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में उसके अन्य सम्मेलनों से कुछ विशेषता रही। पहली विशेषता यह थी कि उसका सभापतित्व एक पुराने साहित्य-सेवी और विशेषकर एक मुसलमान हिंदी-सेवक को दिया गया था। दूसरी विशेषता यह थी कि सभापति का भाषण पिछले सभापतियों के भाषणों से एक विशेषता रखता था। उस भाषण में रचनात्मक कार्य-क्रम की ओर निर्देश किया गया था। तीसरी विशेषता अब की बार लोक-शिक्षणकारी साहित्य-निर्माण में उसकी प्रगतिशीलता थी। मूनिसजी ने अपने सरल और सुबोध भाषण में छोटा नागपुर में हिंदी-प्रचार के लिये ज़ोर दिया था। साथ ही उन्होंने देहाती पाठशालाओं के अध्यापकों तथा रामायण-मंडलियों के द्वारा ग्रामीण जनता में हिंदी-प्रचार का जो सरल साधन बतलाया है, वह केवल बिहार के लिये ही नहीं, अपितु सभी हिंदी-भाषा-भाषी प्रांतों के लिये अनुकरण करने की वस् है। हम सभापति श्रीमूनिसजी और स्वागतकारि के सभापति महोदय के भाषणों के हिंदोस्ता प्रचार अर्थात् हिंदी-उर्दू की खिचड़ीवाली बात सहमत नहीं। हिंदी और उर्दू केवल दो भिन्न-भि भाषाएँ ही नहीं, वरन् दो भिन्न-भिन्न सभ्यता और संस्कृतियों की प्रेरक धाराएँ हैं। ये दो भि भिन्न कलाओं की द्योतिका हैं। इस दृश्य में इन मिश्रण केवल दो साहित्यों और कलाओं का

अवरोध नहीं, वरन् दो सभ्यताओं और संस्कृतियों की हत्या करना होगा। हमारा विश्वास है कि कला और साहित्य के प्रश्रय के लिये उसकी स्वाभाविक गति और विकास का रोकना उसकी नींव को दुर्बल करना ही है। हिंदी में उर्दू और उर्दू में हिंदी घसीटने का कुत्सित कार्य करना और उस पर देश-सेवा और देश-प्रेम की मुहर लगाना साहित्य और कला के विकास तथा उन्नति के नाम पर उनका जड़-मूल से नाश करना ही है। बहुत-से लोगों ने हिंदोस्तानी के प्रचार का फ़ैशन बना लिया है। हमें इस फ़ैशन के भूत से बचना और हिंदी को बचाना है। और, जहाँ तक इस समस्या का प्रश्न है, वहाँ बिहार-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन को हम असफलता के ही रूप में देखते हैं।

सम्मेलन के उस महत्त्व-पूर्ण प्रस्ताव का हम हृदय से स्वागत करते हैं, जिसमें उसने लोक-शिक्षणकारी साहित्य के निर्माण की ओर संकेत किया है। उस प्रस्ताव में उसने जहाँ उच्च कोटि के ग्रंथों द्वारा हिंदी-साहित्य के भांडार को पूरा करने की कामना की है, वहाँ साधारण जनता के शिक्षण तथा उसमें उपयोगी विषयों के ज्ञान की वृद्धि के निमित्त सरल साहित्य की सृष्टि करने के लिये प्रत्येक उचित उपाय के अवलंबन करने की बात कही है। इस प्रस्ताव में उसने प्रांत के विविध कॉलेजों के हिंदी-भाषा-भाषी अध्यापकों तथा अन्य विद्वानों से इस बात का अनुरोध किया है कि अपने-अपने विषय पर कम-से-कम एक-एक पुस्तक लिखकर उच्च साहित्य की सृष्टि में सहायता दें। साथ ही उसने उन विद्वानों से इस बात का भी अनुरोध किया है कि उच्च साहित्य के निर्माण के साथ-ही-साथ वे जनता-जनार्दन के समझने योग्य कुछ ऐसे व्याख्यान तैयार करें, जिनसे उसे उस विषय की मुख्य बातों की जानकारी सरलता से हो जाय। ये व्याख्यान क्रम से किसी परिषद् में पढ़े जायँ, और अंत में पुस्तक-रूप में प्रकाशित कर दिए जायँ, जिसमें लोक-शिक्षण के लिये उस विषय की एक पूरी पुस्तक तैयार हो जाय। स्वयं सम्मेलन ने ग्रामीण जनता के लिये एक पुस्तकमाला निकालने की योजना की है। इस पुस्तकमाला में योग्य विद्वानों द्वारा लिखी गई सभी विषयों पर सस्ती और छोटी पुस्तकें होंगी। इस पुस्तकमाला और लोक-शिक्षण-संबंधी तथा उच्च साहित्य-संबंधी किसी भी पुस्तकमाला की आर्थिक सहायता के लिये सम्मेलन ने प्रांतीय सरकार से अनुरोध करने का निश्चय किया है। साथ ही उसका यह भी निश्चय है कि वह प्रांतीय सरकार से इस बात का अनुरोध करे कि वह अपने अधीनस्थ शिक्षा-संस्थाओं तथा शिक्षा-विभाग के अधिकारियों को आदेश दे कि वे इन पुस्तकों के प्रचार में पूर्ण सहयोग दें। इसके अतिरिक्त सम्मेलन ने यह भी निश्चय किया है कि वह बिहार-सरकार के ग्राम-सुधार के अफ़सरों तथा म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट-बोर्डों से इस बात का अनुरोध करे कि लोक-शिक्षण-माला की पुस्तकों के प्रचार में वे उसे पूरी सहायता दें।

कहना न होगा कि ऐसे महत्त्व-पूर्ण कार्य का दायित्व अपने ऊपर लेकर बिहार-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने अन्य प्रांतों के लिये भी हिंदी-साहित्य-सेवा और उसकी श्री-वृद्धि का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। हम चाहते हैं, जिन हिंदी-भाषा-भाषी प्रांतों में प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन हों, वे अपने लिये भी इसी प्रकार कोई रचनात्मक कार्य-क्रम रक्खें। और, जिन हिंदी-प्रांतों ने अब तक अपने यहाँ कोई हिंदी-साहित्य-सम्मेलन स्थापित नहीं किया है, वे शीघ्र ही ऐसा कर अपने को हिंदी-साहित्य-सेवा एवं लोक-शिक्षण के लिये तत्पर करें। जो प्रांतीय सम्मेलन सोए हुए हैं, उन्हें भी जग जाना चाहिए। साथ ही हम बिहार-प्रांतीय साहित्य-सम्मेलन के अधिकारियों से इस बात का अनुरोध करेंगे कि

वे इस महत्त्व-पूर्ण योजना को केवल प्रस्ताव के रूप में ही रखकर निश्चिंत न हो जायँ, वरन् इसे कार्यान्वित करने के लिये कोई भी उचित युक्ति उठा न रक्खें। ऐसा कर वे हिंदी-सेवा-संबंधी उस कार्य-क्रम को पूरा करेंगे, जिसकी आवश्यकता केवल बिहार-प्रांत को ही नहीं, वरन् संपूर्ण देश को है। हमारी हार्दिक इच्छा है, और हम भगवान् से प्रार्थी हैं कि बिहार-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन को इस पुण्य कार्य में पूर्ण सफलता हो।

× × ×

६. हवाई आक्रमण

इतिहास की पुस्तकें कहती हैं कि भारत में उत्तर में नगाधिराज हिमालय तथा दक्षिण में समुद्र के होने से आक्रमणकारियों का आतंक पश्चिमोत्तर-प्रदेश से ही अधिक है। पुराने ज़माने में यह बात बहुत कुछ ठीक थी, पर आज दिन यह स्थिति नहीं। जहाज़ और हवाई जहाज़ों ने समुद्र का गांभीर्य और हिमालय का गौरव बहुत कुछ विनष्ट कर यह सिद्ध कर दिया है कि पश्चिमोत्तर-प्रांत से ही क्या, सभी ओर से यहाँ आक्रमण हो सकता है। जापान की निरंकुशता ने आक्रमण की आशंका और भी बढ़ा दी है।

भारत-सरकार भावी आक्रमण के इस रूप से कुछ चिंतित है। कराची, कलकत्ते और बंबई में इस भावी हवाई आक्रमण से बचने की चेष्टाएँ की जाने लगी हैं। इससे यह भली भाँति स्पष्ट होता है कि आज दिन हमारे ऊपर भी कैसी भयानक आपत्ति के आ पड़ने की आशंका है!

कुछ लोगों का कहना है कि भारत-सरकार का प्रथम कार्य लोगों में अन्न-वस्त्र के दुःखमय प्रश्न को हल करना है, न कि किसी अनिश्चित और भावी आक्रमण की आशंका से चिंतित हो उसके निराकरण में धन का प्रचुर व्यय करना। हम ऐसों के मत से सहमत नहीं। हम यह तो मानते हैं कि भारत की अपनी आर्थिक कठिनाइयाँ अलग हैं। अन्न वस्त्र का प्रश्न अवश्य महत्त्व-पूर्ण है, पर इसका यह मतलब नहीं कि हम अन्य गंभीर प्रश्नों की ओर ध्यान ही न दें, और संसार में जो अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति है, उसकी ओर से सर्वतोभावेन उदासीन रहें। अब वह ज़माना नहीं रहा, जब कोई देश सांसारिक और अंतरराष्ट्रीय चक्र से अपने को मुक्त रख सके। रॉ मेटीरियल, मार्केट और विस्तार-संबंधी प्रश्न इतने जटिल और गहन हो गए हैं कि इनकी कोई अवहेलना ही नहीं कर सकता।

आज दिन जो देश कमज़ोर है, उसी पर सबकी आँखें गड़ी हैं। अबीसीनिया का सर्वस्व हरण अभी कल ही की तो बात है, और अबीसीनिया की इस पराजय में हवाई जहाज़ों ने कितनी सहायता दी थी, यह सभी जानते हैं। अतः हम तो यह चाहते हैं कि बड़े-बड़े शहरों के अतिरिक्त छोटे-छोटे शहरों, यहाँ तक कि ग्रामों में भी हवाई आक्रमण से बचने की पूरी-पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। ऐन वक्त फिर क्या हो सकता है? आज दिन योरप, अमेरिका एवं अन्य देशों में हवाई जहाज़ों के आक्रमण होने पर क्या करना चाहिए, यह सब जानते हैं। विदेशों की जनता में साक्षरों की संख्या अधिक है, अतः उन्हें हवाई आक्रमण से बचने के साधन समझाने उतने कठिन नहीं। पर भारत में अधिकांश जनता के निरक्षर होने के कारण स्थिति कठिन है। और यदि अभी से इस भावी आशंका की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित न किया जायगा, तो कभी ऐसे हवाई आक्रमण के होने पर धन-जन की जो क्षति होगी, वह अचिंतनीय है। इटली और जापान ने जिस नृशंसता के साथ निरीह बच्चों और असहाय अबलाओं तथा मनुष्यों पर भीषण गोला-बारी की है, उस

पर विचार करते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और आधुनिक युद्ध-क्रिया की भीषणता स्पष्ट हो उठती है।

युद्ध महायुद्ध अवश्यंभावी है। उसके छिड़ते ही अग्नि बरसने लगेगी, यह भी निश्चित है। पिछले महायुद्ध में भारतवर्ष तक युद्ध-ज्वाला नहीं पहुँची थी। हाँ, चिनगारी के रूप में 'एमडन' जहाज़ ने मदरास को कुछ परिचय दिया था, पर अगले महायुद्ध में भी भारत बच सकेगा या नहीं, यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। इटली, जर्मनी और जापान, तीनो ऐसे देश हैं, जिन्हें विस्तार की आवश्यकता है। इटली अबीसीनिया को पचाकर संतुष्ट नहीं, उसी प्रकार जापान भी चीन के अंग-भंग से तृप्त नहीं। रहा जर्मनी, वह अभी तो सिर्फ़ उपनिवेशों के लिये ही कह रहा है, पता नहीं, कहीं आजिज़ आ बखेड़ा ही न खड़ा कर दे। इटली की आँखों और जापान की तृषा, इन दोनो पर ध्यान रखना आवश्यक है। एक ब्रिटिश जनरल ने हाल में लिखा था कि जापान तोक्यो से निकल नानकिंग में ही दम न लेगा, वरन् हांगकांग और सिंगापुर को हथियाने का मौक़ा ढूँढ़ेगा। नानकिंग तो हथिया ही चुका है, और दक्षिणी प्रांतों की ओर आगे बढ़ने की भी उसने घोषणा कर दी है। पता नहीं, हांगकांग पर भी क़ब्ज़ा करने की ठहरा ले। आशा तो नहीं कि जापान अँगरेज़ों से लड़ने का साहस करेगा, क्योंकि हांगकांग पर क़ब्ज़ा करने के यही माने होंगे। पर कल को क्या होगा, यह ठीक नहीं कहा जा सकता। जापान से किसी भाँति भी लड़ाई छिड़ने पर यह निश्चित है कि भारत में भी हवाई आक्रमण होगा। अतः हम तो यही समझते हैं कि जो इस दिशा में शंकित हो हवाई आक्रमण से बचने के प्रयत्न कर रहे हैं, वे काफ़ी दूरदर्शिता का परिचय दे रहे हैं।

× × ×

७. मुसलमानों को चेतावनी

यह लिखते हमें अत्यंत हर्ष होता है कि भारतीय मुसलमानों के एक बहुत बड़े अंश में राष्ट्रीयता की भावनाएँ काफ़ी तेज़ी से ज़ोर पकड़ रही हैं, और पठित मुसलिम समाज यह खूब अच्छी तरह समझने लग गया है कि उसका श्रेय किसमें है। जहाँ मिस्टर जिन्ना और मुसलिम-लीगवाले पार्थक्य (Separation) पर ज़ोर दे रहे हैं, और कहते हैं कि हिंदुओं से अलग रहने में ही मुसलमानों का भला है, वहाँ सर वज़ीरहसन, मौलाना आज़ाद, ख़ाँ अब्दुलग़फ़्फ़ारख़ाँ आदि ने अपने भाषणों द्वारा यह भली भाँति समझाने की चेष्टा की है कि मुसलमानों का हित किसमें है। हाल में डॉक्टर सैयद हुसैन ने, जो लगभग १७ वर्ष के उपरांत भारत लौटे हैं, स्थान-स्थान पर जो भाषण दिए हैं, वे बड़े ही सार-गर्भ हैं। आपने खुले शब्दों में मुसलमानों की पार्थक्य मनोवृत्ति की निंदा की है, और कहा है कि यदि मुसलमान अपने भावी हिताहित पर विचार न कर पार्थक्य पर ही ज़ोर देंगे, तो भविष्य में उन्हें गहरी हानि उठानी पड़ेगी, और आज की दुर्वृत्ति कल घातिनी सिद्ध होगी।

यह कहना व्यर्थ है कि विना हिंदू-मुसलिम-प्रेम के राष्ट्रीय स्वाधीनता का कुछ भी महत्त्व नहीं। हिंदू और मुसलमान भारतमाता के दो नेत्रों के सदृश हैं, अतः सभी हितैषियों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि भारतमाता के सपूतों के बीच सच्चे सौहार्द और स्नेह की सृष्टि करें। डॉक्टर सैयद हुसैन का कहना है कि यद्यपि कई कारणों से भारत की इन दो महान् शक्तियों के बीच मनमुटाव है, फिर भी यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि हिंदू और मुसलमानों का कोई भी प्रश्न ऐसा नहीं, जो शांति और प्रेम के वातावरण में भली भाँति सुलझाया न जा सके।

डॉक्टर साहब ने एक बात बड़े मार्के की कही, और वह यह कि मुसलमानों का भविष्य हिंदुओं के भविष्य के साथ पूर्णतया संबद्ध है । हम कई बार लिख चुके हैं कि भारतीय मुसलमान यह नहीं समझते कि हिंदुओं के हित में उनका हित और उनके अहित में उनकी भी हानि है । यह भारत का दुर्भाग्य है कि यहाँ के मुसलमान दैशिक बंध से धार्मिक बंध को अधिक महत्त्व-शाली मानते हैं, और अपने को भारतवासी नहीं, प्रत्युत अरबवासी-सा समझते हैं । संसार के अन्य भागों के मुसलमानों में यह भावना नहीं । चीन, टर्की, ईजिप्ट आदि देशों में मुसलिम और ग़ैर-मुसलिम का, मस्जिद और बाजे का प्रश्न है ही नहीं । इन देशों में भी भारत को भाँति भिन्न-भिन्न मतानुयायी बसते हैं, पर वहाँ धर्म को लेकर बखेड़ा नहीं किया जाता । भारतवर्ष में "धर्म खतरे में है" की आवाज़ छोटी-छोटी बातों के लिये भी उठाई जाती है, यही भारतवासियों की कमज़ोरी है । यह स्थिति देख सहसा यह प्रश्न उठता है कि क्या वास्तव में भारतवासी इतने धार्मिक हैं कि उन्हें धर्म पर किंचित् भी आघात सहन नहीं हो सकता ? और, क्या वास्तव में जिसे ये लोग अपना धर्म समझ बैठे हैं, वही इनका धर्म है ? क्या धर्म प्रेम और सौहार्द की दिव्य भावनाओं का प्रचार नहीं करते ? यदि हाँ, तो फिर ऐसी दुःखदायक स्थिति आज दिन क्यों है ? हमारी समझ में इसका एक ही उत्तर है, और वह यह कि हम वास्तव में अपने धर्म का अनुशीलन नहीं करते, और उच्च आदर्शों से गिरते जा रहे हैं ।

कई वर्ष बीत चुके, कलकत्ते के प्रख्यात नेता श्रीश्यामसुंदर चक्रवर्ती ने भी अपने एक भाषण में यही बतलाने का उद्योग किया था कि भारत में जो धर्म कहा जा रहा है, वह धर्म नहीं, प्रत्युत उसकी विकृति है । धर्म केवल-मात्र सैद्धांतिक ही नहीं, व्यावहारिक भी है । हम आज न सिद्धांतों का ही अनुसरण करते हैं, न धार्मिक व्यवहार का ही। और, इस अव्यवस्थित स्थिति का जो प्रतिफल होना चाहिए, वह भारत के कोने-कोने में स्पष्ट है । इसी विषम स्थिति को लक्ष्य कर डॉक्टर सैयद हुसैन कहते हैं, क्या निरंतर एक दूसरे की जान का गाहक बनना ही हिंदू-मुसलमानों का धर्म रह गया है ?

डॉक्टर सैयद हुसैन ने जिन ज़ोरदार शब्दों में मुसलमानों को चेतावनी दी है, और अपने पत्र में जिन महत्त्व-पूर्ण विचारों को प्रस्तुत किया है, उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम है । स्वतंत्र भारत का स्वप्न तब तक एक दिवा-स्वप्न है, जब तक हमारे हिंदू-मुसलमान आपस में मिल-जुलकर कार्य करने के लिये तैयार न हों, और देश-हित की आदरणीय भावना को हर समय प्राधान्य न देने लगें ।

हम डॉक्टर हुसैन के भाषणों की ओर देश के सभी हितैषियों का ध्यान आकर्षित करते और आशा करते हैं कि डॉक्टर साहब की चेतावनी से प्रभावान्वित हो, देश के मुसलमान अपने कर्तव्य को समझ देश-हित के लिये प्राण-पण से यत्नशील होंगे ।

संयुक्त-प्रांतीय शिक्षा-विभाग की ओर से प्रचलित
हिंदी-विशेष योग्यता-परीक्षा
हिंदी-साहित्य-सम्मेलन महिला विद्यापीठ, (इलाहाबाद) तथा पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट नं० २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम उन्नाव

मुक़द्दमा नं० ५१ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी ५—३—३८ ई०

१—जगन्नाथप्रसाद वल्द देवकरनदास
२—हीरालाल वल्द कल्लूमल } क़ौम अग्रवाल साकिन नाका हिंडोला, लखनऊ
कर्ज़दार सायलान

बनाम

१—बाबू दयाकृष्ण सेठ
बाबू राजेश्वरीप्रसाद } ऐडवोकेट व ट्रस्टियान जायदाद फ़तेहनारायणदास रकाबीगंज, लखनऊ
२—मु० गंगा बेवा जानकीदास क़ौम अग्रवाल साकिन नाका हिंडोला, लखनऊ
कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि १—जगन्नाथप्रसाद वल्द देवकरनदास २—हीरालाल वल्द कल्लूमल साकिन नाका हिंडोला ज़िला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बक़ाया हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा वसूलीय मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	उन्नाव	हिस्सा १/६	कटघरा				सायल नं० १
२	,,	,, ,,	,,				,, २
	,,	,, =)८ पाई	देवरामऊ				,, १
३	,,	,,	,,				,, २
	,,	,, १/६	सालेपुर				,, १
४	,,	,, ,,	,,				,, २
	,,	,, =)८ पाई	तालिबपुर				,, १

फ़ेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद, जो ब इस्तिसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

१. इस्टील ट्रंक ४, २. सूटकेस २, ३. बक्स २, ४. ट्रंक १

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ११ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (
२५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० ब्रजनाथ जुतशी स्पेशल जज साहब बहादुर खीरी दरजा दोयम मुक़ाम
जिला खीरी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ८ सन् १९३७ ई०
तारीख़ पेशी २५ फ़रवरी सन् १९३८ ई०
पं० चंद्रधर उर्फ़ बाबूराम वल्द पं० बाजीलाल ब्राह्मण साकिन पूजागाँव वारिद हाल लखीमपुर जिला
क़र्ज़दार सायल

बनाम

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

भोलानाथ वगैरह
१—भोलानाथ } पिसरान सालिकराम कौम खत्री टंडन दूकानदार पारचाफ़रोश लखीमपुर प० व
२—शंभूनाथ } जिला खीरी
३—लाला बाबूराम वल्द सीताराम कौम बाथम वैश्य दूकानदार पारचाफ़रोश लखीमपुर प० जिला खीरी
४—पं० देवदत्त वल्द नामालूम } अक़वाम ब्राह्मण साकिन लखीमपुर प० व जि० खीरी
५—पं० पुत्तूलाल } पिसरान जागीदत्त
६—खन्नूलाल }
७—तिरबेनीसहाय } नाबालिगान पिसरान वंशीधर ब्राह्मण बविलायत मुसम्मात सहोदरा
८—लालबहादुर } दादीखुद बेवा मातादीन साकिन सिसौरा परगना भूड़ जिला खीरी
९—मुरलीधर }
१०—द्वारका भगत वल्द नामालूम } कौम बाथम वश्य साकिन लखीमपुर परगना वा जिला खीरी
११—दिल्लीपत वल्द नामालूम }

चूँकि पं० चंद्रधर उर्फ़ बाबूराम वल्द पं० बाजीलाल साकिन पूजागाँव वारिद हाल जिला लखीमपुर
एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१)
मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है,
देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त
गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाजा में
दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह
तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)
क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बमाप्त हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा मालगुज़ारी मजमूआ
१	खीरी	मातहती	मेंहदी परगनाभूड़	क़ाबिल इंतक़ाल	एकड़ डि. ४ २ हि.सा. २ए. १डि.	लगानी ४०/) हि० २-)
२	,,	,,	पूजागाँव ,,	,,	१ एकड़ ८८ डि.	,, ४॥।/)

३	खीरी	आला	उलरापुर परगना औरंगाबाद	काबिल इंतकाल	२बि०२बि०१७ क०२ ५/६ अनवांसी	मालगुज़ारी २१।≡) अबवाब १≈)३
४	,,	,,	,,	,,	१०बि० १४कच० ५ ३/४ अनवांसी	५।–)६ अबवाब ।।)७
५	,,	मालहती	मालपुर परगना भूड़	,,	७एकड़२१डि०	लगानी ८)
	,,	,,	,,	,,	६—३२	७)
	,,	,,	,,	,,	३—७१	५)
६	,,	,,	गुजारा जौहरा परगना भूड़	,,	३—१२	३≡) ३ ५।।।–)५
७			बड़ागाँव परगना भूड़	,,	४—७३ हि० सायल ४--३१ १/२	हि०सायल, २।।≡)
८	,,	आला	दुधवामियनिया परगना श्रीनगर	,,	(३५-५१)हि० सायल७—१०	२३≡) हि० सा० ४।।=)।।)
९	,,	,,	खेरिया मिसिर तहसील महमदी पट्टी मु०भगवाना	,,	५—५८	×

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहस्तिपनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ९० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्त देहंदा	कैफ़ियत
१	गाय मय शीरखोरा	२५ रास	
२	भैंस	२ ,,	
३	पड़िया	३ ,,	
४	बैल	४ ,,	
५	भैंसा	३ ,,	
६	अद्दा	१ मंजिल	
७	गाड़ी	१ ,,	
८	सायकिल	१	
९	मकान पुख्ता वाक़ै लखीमपुर	१	मु० भोलानाथ व शंभूनाथ महाजनान ने अपने बयान तहरीरी में हस्ब दफ़ा ९ व १० दिखलाया है।
१०	मकान पुख्ता मय शिवाला वाक़ै लखीमपुर मुहल्ला संकटादेवी मरकूना सायलान	१	
११	कोठरी पुख्ता वाक़ै अहाता संकटादेवी	१	,, ,, ,,
१२	मकान खाम वाक़ै पूजागाँव	१	
१३	मकान पुख्ता वाक़ै मिदनिया प०खीरी	१	
१४	बाग नं०२९१५ वाक़ै पूजागाँव हिस्सा ५/६	१	

१५	बाग़ नंबरी २२७८, २२८४, २२८०वाक़े पूजागाँव	३	
१६	बाग़ नं० २२७१ वाक़े पूजागाँव हिस्सा ½	१	
१७	बाग़ नं० १११२ वाक़े पूजागाँव	१	
१८	बाग़ नं० ११२५ वाक़े दाऊदपुर हिस्सा ½	१	
१९	बाग़ नं० १७३२, १७३३, १९८४ वाक़े बरौला	३	

२० दरख़्तान मुतफ़र्रिक़ वाक़े पूजागाँव परगना भूड़

२१ तफ़सील कर्ज़जात जो बनाम दीगराँ बज़रिए रहननामाजात व तमस्सुकात व प्रोनोट बहिर्गा
दौरान मुक़द्दमा इनकमबई ख़फ़ीफ़ा व दीवानी तख़मीनी २०,०००)

२२ तफ़सील जायदाद जो महाजनान ने अपनी बयान तहरीरी में दिखलाई है । एक क़िता मकान
मु० घसयारी मंडी लखीमपुर मश्कूनान हुआ

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २३ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ ।

मुंसरिम

नोटिस हस्ब आॅर्डर १, क़ायदा ८ ज़ाब्ता दीवानी

बअदालत जनाब मिस्टर प्रतापशंकर साहब सिविल जज लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी नंबर १३५।२२।१४ सन् १९३२ ई०

तारीख़ पेशी २४ फ़रवरी सन् १९३८ ई०

डिप्टी कमिश्नर प्रतापगढ़ इंचार्ज कोर्ट आफ़ वार्ड्स कालाकाँकर स्टेट ज़िला परतापगढ़

मुद्दई

बनाम

कमिश्नर साहब बहादुर लखनऊ डिवीज़न बहैसियत प्रेसीडेंट क्षत्रिय-कालिज-कमेटी लखनऊ वग़ैरह

मुद्दाअलेहम

नोटिस बनाम जुमला अशख़ास जिसको कि मुक़द्दमे हाज़ा से ताल्लुक हो चूँकि मुद्दई मज़कूरेबाला ने दावा वापसी मुबलिग़ ३६५९७॥) का दायर किया है, जो रुपया उसने क्षत्रिय कालिज लखनऊ में क़ायम के वास्ते दिया था, जो वह क़ायम नहीं हुआ है ।

लिहाज़ा बज़रिए नोटिस हाज़ा तमाम व कमाल चंदादारान मुतज़किरे बाला को इत्तिला दी जाती कि वह असालतन या मार्फ़त किसी वकील के जो मुक़द्दमे से बख़ूबी वाक़िफ़ हो, बवक़्त १० बजे दिन ब २४ फ़रवरी सन् १९३८ ई० अदालत में हाज़िर हों और दरख़्वास्त हस्ब आर्डर १, क़ायदा ८ ज़ाब्ता दी बाबत बनाए जाने फ़रीक़ मुक़द्दमा अदालत में पेश करें, वरना मुक़द्दमा उनकी ग़ैरहाज़िरी में स किया जावेगा ।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ७ जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम बमुकाम हरदोई

नंबर मुक़द्दमा नंबरी ५०४ सन् १९३६ ई०   पेशी २—३—१९३८ई०

१—सरदारसिंह
२—शिवराजसिंह
३—पहलादसिंह नाबालिग़ बविलायत सरदारसिंह
} पिसरान बलदेवसिंह ठाकुर साकिन मौज़ा धूरा परगना गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

महाजनान

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान मज़कूरा बाला साकिन धूरा ज़िला हरदोई ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ व फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के गज़ट संयुक्तप्रांत में शाया होने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदरजा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिला	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल काबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर कलेक्टर साहब ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	मालिकाना	धूरा परगना गोपामऊ खाता नं० ४	६ बिस्वा १२ बि० ६ क० १२ नन० ६⅔ अधवासी	कुल	१८७।≡)४	
२	,,	,,	धूरा परगना गोपामऊ खाता नं० ८ शामिलात	रकबा ७१ बीघा ६ बिस्वा	१/३		

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सं० १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	भैंस	१ रास	
२	गाय	१ रास	
३	लहडू	१ मंज़िल	
४	असबाब ख़ानादारी	की० ४०)	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ११ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[क़ाबिल क़रो

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐ
२५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम बाराबंकी
मुक़द्दमा नंबरी नंबर १३७ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १—३—१९३८ ई०

(१) मु० उम्महबीबा ज़ौजा काज़ी नियाज़अहमद
(२) मु० मरहमततुज़्ज़हरा ज़ौजा काज़ी इफ़्तिख़ारअहमद
} अक़वाम सैयद सा० व परगना दरिया
त० रामसनेहीघाट ज़िला बाराबंकी
क़र्ज़दार सायलान

बनाम

अयोध्याप्रसाद वग़ैरह

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सा

चूँकि सायलान मज़कूरे बाला ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सी फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सा मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रां गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वा पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	बाराबंकी	ज़मींदारी गैरममक़ूला	नवाबपुर कुंडरी प० सिद्धौर त० हैदरगढ़	आला		११४६।।।=)
२	,,	,,	ज़ैतपुर परगना सतरिख त० नवाबगंज पट्टी आगाअली व हैदर अब्बास	पुख़्तादारी		५८।।)
३	,,	मकान मसकूना वाक़ै क़स्बा ज़ैदपुर प० सिद्धौर त० नवाबगंज ज़िला बाराबंकी				
४	,,	गैरमनक़ूला मकान नंबरी ६३१/७३४ वाक़ै क़स्बा ज़ैतपुर परगना सतरिख तहसील नवाबगंज ज़िला बारा				

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १२ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरि

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम बाराबंकी मुकाम बाराबंकी

मुकद्दमा नंबरी नंबर $\frac{\text{२३०}}{\text{१४३}}$ सन् १९३६ ई०
४९२

तारीख पेशी ७—३—१९३८ ई०

शिवदरशन वल्द जगनाथ ब्राह्मण साकिन मुहम्मदपुर परगना खुद जिला बाराबंकी

कर्ज़दार सायल

बनाम—जुमला कर्ज़ख़्वाहान

कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि शिवदरशन वल्द जगनाथ साकिन मुहम्मदपुर ज़िला बाराबंकी ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बमाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	ग़ैर मनकूला	पिपरी मुनहाला खाता खेवट नं० १६	हक़ीयत पुख़्तेदारी	हिस्सा १ पाई पट्टी बलदेव	२।-)	महफूज़ुल-रहन
२	,,	,,	पिपरी मुनहाला खाता २२	,,	हिस्सा ४ पाई पट्टी सरजूदीन	२३।॥)	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १ दिसंबर १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

بعدالت اسپشل جج شاهجہاں پور درجه دوئم شاهجہاں پور
حسب دفعه ۱۱ ایکٹ ۲۵ سنه ۱۹۳۴ع

نمبر مقدمه ۴ سنه ۱۹۳۷ع تاریخ پیشی ۶ مارچ سنه ۱۹۳۸ع

سندر لال و رگھونندن پسران سیو سہائے و دیا سنکر و سیو سنکر و رام سنکر و اسرے پسران نابالغان سندر لال مذکور قوم برهمن ساکنان سہرامئو جنوبی پرگنه و لع شاهجہاں پور
سائلان

بنام

ردار سنگه و سوبرن سنگه و اننت سنگه پسران اوجاگر سنگه قوم ٹھاکر ساکنان موضع ررا پرگنه و ضلع شاهجہاں پور
فریق ثانی

هر خاص و عام کو بذریعه نوٹس هذا اطلاع دی جاتی هے که جائداد مندرجه نوٹس هذا نسبت جو کوئی اپنا دعوی رکھتا هو وه اپنے دعوے کی نسبت گزٹ میں نوٹس شائع ونے کی تاریخ سے اندر ۳ ماه روبرو عدالت هذا درخواست پیش کرے ورنه کوئی عذر سی شخص کا (اگر قانوناً اسکو اپنے اوخال درخواست کا حق باقی نه رهے) بعد میں قابل اعت نه هوگا۔ اور مقدمه بعدم حاضری دعویدار مسموع اور فیصل هوگا—

تفصیل جائداد

حقیت زمینداری موضع سہرامئو جنوبی محال هرسہائے سنگھه کھاته کھیوٹ نمبر ایک قبعی ۴۰—۸۱ جسمیں ۱۴۱ روپیه ۱۳ آنه ۱ پائی مال میں منجمله کل ۱۸ حصه کے ۳ حصه
” ” ” کھاته نمبر ۲ رقبعی ۹۲—۳ جسمیں
روپیه ۱۲ آنه میں بموجب حصص بالا

حقیت زمینداری موضع بانسکھیڑه پرگنه کانت کھاتھه نمبر ۱۰ تعدادی ۲ بسوه ۱۳ سوانسی ۶ کچوانسے ۱۵ نفوانسی رقبعی ۲۶—۱۲۲ جسمیں ۱۱۳ روپیه ۵ آنه مال نصف حصه

حقیت زمینداری موضع اکبرپور علاقه سہرا مئو جنوبی ۱۳۴۴ف کھاته نمبر ۱۰ تعدادی ایک
۲ ۱۵ بسوانسے رقبعی ۷۱—۱۶ جسمیں ۱۵ روپیه ۱۰ آنه مال میں $\frac{۷}{۸}$ حصه

حقیت زمینداری موضع مرگھور محال نرنجن سنگھه پٹی سدھا سنگھه تعدادی ۵ بسوه ۹ وانسے ۷ عنوانسے ۱۴ نفوانسے رقبعی ۸۵—۱۶ جسمیں ۶۴ روپیه ۲ آنه مال میں منجمله ۸ صه کے ۴ حصه منقسم هے ۱۹ حصه میں ایک حصه—

تفصیل جائداد جو فریق ثانی نے ظاهر کی هے—

حقیت زمینداری موضع سہرا مئو جنوبی محال هرسہائے سنگه سنه ۱۳۴۵ف معه بار عث و معافی عطیه سرکار نمبر کھاته کھیوٹ ۳۹،۴۰ مالکان سندرلال و رگھونندن پرشاد

حقیت زمینداری موضع سہرا مئو جنوبی انتخاب کھتونی سنه ۱۳۴۴ف محال الدیو بخش پٹی نمبر ۱، ۱۰، ۱۱، ۱۲ نمبران خسره ۹۱۱، ۸۳۶، ۱۰۴۷ ا—ب—د—ج ۵۲۴ الف

حقیت زمینداری موضع اکبرپور پرگنه شاهجہانپور کھاته کھیوٹ نمبر ۱۵ معافی عطیه رکار موضع اکبرپور مذکور کھاته نمبر ۱۹، ۲۰، ۲۱، ۲۲، ۲۳، ۲۴، ۲۵ مالکان رگھونندن شاد و سندرلال—

مکانات مقبوضه سائلان واقعه سہرا مئو جنوبی
کاشت سیر و دخلکاری ” ” ”

منصرم

इश्तिहारनामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ६२७ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ५—३—१९३८ ई०

१—सुखवासिंह
२—लायकसिंह उर्फ़ नन्हेंसिंह
३—भारतसिंह
} पिसरान हज़ारीसिंह
४—नीमपालसिंह नाबालिग़ वल्द लायकसिंह बविलायत पिदर ख़ुद
५—शंभूमानसिंह उर्फ़ दर्शनसिंह वल्द बलवंतसिंह
६—छुट्टेलालसिंह
७—तुल्लासिंह
} पिसरान भारतसिंह
८—शिवराजसिंह नाबालिग़ वल्द बलदेवसिंह बविलायत सुखवासिंह
} अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा पलिया रायसिंह परगना कल्यानमल तहसील संडीला ज़िला हरदोई

कर्ज़दार सायलान

बनाम

महाजनान

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान मज़कूरा बाला साकिन पलिया रायसिंह ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे ।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तादाद	बमाअ़त हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	मालिकाना	कवराली परगना कलयानमल	६ बिस्वांसी ५ कचवांसी	कुल	८—२—०	
२	,,	,,	पलिया रायसिंह मु० किरपालसिंह	१ बिस्वा १३ बि० ६ कचवांसी ११३ नववांसी	,,	२१—१४—०	
३	,,	,,	पलिया रायसिंह मु० दिलगंजनसिंह खाता नं० २	हक़ीयत मुतफ़र्रिक़ा ८ बीघा १४ बिस्वा	,,	१२—०—०	
४	,,	,,	पलिया रायसिंह मु० दिलगंजनसिंह खाता नं० ३	६ बिस्वा ३ बि० १० कचवांसी	,,	२१- ०—०	

५	हरदोई	मालिकाना	पलिया रायसिंह मु० नि'बलसिंह	१० बिस्वा	कुल	५१॥≡)
६	,,	,,	भैनगाँव मुहाल लोचनसिंह	३ बिस्वा ११ बि० १ कचवांसी ५ ननवांसी बशमूला आराजी नंबरी १६१८ ॥३५	,,	

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

१— ६ बिस्वांसी ५ कचवांसी ३ $\frac{५}{२}\frac{१}{७}$ ननवांसी हक़ मुरतहनी वाक़ै मौ० पलिया रायसिंह मुहाल किरपाव
परगना कल्यानमल

२—डिगरी ख़फ़ीफ़ा मुंसिफ़ी जनूबी मुकाम हरदोई छोटेलालसिंह बनाम गुरबख़्शसिंह तादादी २०)

३—भैंस दो रास

४—गाय दो रास

५—बैलगाड़ी एक मंज़िल

६—लेहड़ू एक मंज़िल

७—तख़्त चोबी एक अदद

८—दीगर सामान खानादारी क़ीमती १००)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १३ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिज़ानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ७५१ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ५—३—१९३८ ई०

१—महराजसिंह वल्द बख़्तावरसिंह
२—रघुनाथसिंह } बालिग़ान पिसरान महराजसिंह
३—सिरीपालसिंह
४—बिसरामसिंह } नाबालिग़ान पिसरान महराजसिंह बविलायत महराजसिंह पिदर ख़ुद
५—दिरगजसिंह
} अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा डाभा परगना व तहसील बिलग्राम ज़िला हरदोई
क़र्ज़दार सायला

बनाम

रामभरोसे वग़ैरह

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान मज़कूरे बाला मौज़ा डाभा परगना व तहसील बिलग्राम ज़िला हरदोई की जानिब से ए दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा वसूलीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	...	मौज़ा मोतमदपुर मुहाल सेहसाला खाता खेवट नं० ३ पट्टी बख्तावरसिंह	हक़ीयत ज़मींदारी तादादी १५ बिस्वांसी	कुल	१८॥।)	
२	,,	...	मौज़ा मोतमदपुर मुहाल पंजसाला खाता खेवट नं० ४	हक़ीयत ज़मींदारी तादादी १५ बिस्वांसी	,,	२।-)	
३	,,	...	मौज़ा डाभा मुहाल बख्तावरसिंह खाता खेवट नं० १	हक़ीयत ज़मींदारी तादादी १० बिस्वा	,,	१४४॥=)॥१	

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहैसियत हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	हक़ीयत ज़मींदारी मुरतहनी तादादी १० बिस्वा वाक़े मौज़ा डाभा मुहाल बख्तावरसिंह खाता-खेवट नं० १	कुल	हक़ मुरतहनी
२	४ क़िता बाग़ात वाक़े मौज़ा डाभा परगना व तहसील बिलग्राम ज़िला हरदोई मुहाल बख्तावरसिंह	,,	
३	एक क़िता रेहननामा बिला क़ब्ज़ा नविश्ते हुई बहक़ बख्तावरसिंह तादादी १९९)	,,	बमोजिब बयान तहरीरी फ़रीक़सानी नंबर ८१

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १५ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला सीतापुर

मुक़द्दमा नंबर ४३७ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ४—२—१९३८ ई०

हकीम सय्यद आफ़ाक़हुसैन वल्द हकीम सय्यद औलादहुसैन क़ौम सय्यद साकिन सीतापुर मुहल्ला
सराय परगना व तहसील व ज़िला सीतापुर सायल

बनाम

१. खेमानचंद } साकिन व दूकानदारान बाज़ार तामसेनगंज परगना खैराबाद तहसील व
२. हरप्रसाद } सीतापुर

फ़रीक़सानियान

हरगाह कि जायदाद मुन्दर्जे ज़ैल दरख़्वास्तकुनिंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्
सराहत क़र्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हा
व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुन्दर्जे ज़ैल
हो, अंदर मीयाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद ग़ैरमनक़ूला

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत हक़ीयत	मालगुज़ारी	लोक
१.	मौज़ा सीतापुर ख़ास प० व त० व ज़िला सीतापुर	सीतापुर	हिस्सा १०$\frac{2}{3}$ पाई मिनजुमला ४ एकड़ १८ डि० खाता नं० ३	हक़ीयत आला	३॥-)	।)
२.	,,	,,	हिस्सा $\frac{2}{9}$ मिनजुमला ४ एकड़ २८ डि० खाता नंबर ७	,,	५॥।≡)	॥)
३.	,,	,,	हिस्सा $\frac{2}{10}$ मिनजुमला ४ एकड़ ३९ डि० खाता नं० ११	,,	३॥-)	।)
४.	,,	,,	हिस्सा $\frac{2}{9}$ मिनजुमला ५९ डिसमिल खाता नं० २१	,,	१॥-)॥	=)
५.	मौज़ा पचैनापुर परगना हरगाम त० व ज़िला सीतापुर	,,	हिस्सा $\frac{2}{9}$ मिनजुमला ११० एकड़ १ डि० खाता नं० १	,,	१२०)	१३)

जायदाद मनक़ूला, जो हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी क़ाबिल क़ुर्क़ व नीलाम है—
मोटरकार, मकान मसक़ूना पुख़्ता व ख़ाम, पलँग, कुरसी, तख़्त, बेंच, अलमारी, ज़रूफ़ व पारचाजा
१ १ १० १० ६ ३ ४ बक़दर ज़रूरत
मुंसरि

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत मिस्टर हरप्रसाद ग.सा साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम इलाहाबाद
नंबर मुक़द्दमा नं० ५१ सन् १९३६ ई०

१—ठाकुर बेनीबहादुरसिंह वल्द शिवसंपतिसिंह
२—प्रह्लादसिंह वल्द बेनीबहादुरसिंह
३—भाईलालसिंह पिसर नाबालिग बेनीबहादुरसिंह
} अक़वाम छत्री साकिन बसवार परगना अरैल ज़िला इलाहाबाद

सायलान

हरगाह बेनीबहादुरसिंह वल्द शिवसंपतिसिंह छत्री साकिन बसवार परगना अरैल ज़िला इलाहाबाद ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुतअल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर खेवट व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुन्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तहसील मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	इलाहाबाद	ज़मींदारी	बसवार प० अरैल मो० कमरअलीख़ाँ	क़ाबिल विरासत	−)	१८≡)
२	"	"	बसवार प० अरैल मोहाल आबाद-हुसेनख़ाँ	"	[illegible]) १० पा० १० का०	१३८।−)॥।

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद जो भूमि संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का वसाअत (विस्तार)
१	२	३
१	आम	५
२	महुवा	१
३	भैंस	१
४	गाय	२

मंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब चौधरी विश्वंभरनाथ साहब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दर्जा दोयम मुक़ाम

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ७०४ सन् १९३८ ई०

तारीख़ पेशी १९—३—३८

१—मूलचंद वल्द देवीप्रसाद } अक़वाम ब्राह्मण साकिनान मौज़ा कनथरी परगना मल्लावाँ
२—बासदेव वल्द मूलचंद } बिलग्राम ज़िला हरदोई

सायलान

बनाम

रामसेवक वग़ैरह

फ़रीक़सानियान

चूँकि मूलचंद व बासदेव साकिन मौज़े कनथरी ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा १ जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती उस जायदाद को जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयु गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तेहक़ाक़ के बारे में अदालतहाज़ा में अपनी दरख़ पेश करे

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	हरदोई	—	मौज़ा कनथरी प० मल्लावाँ	हक़ीयत ज़मींदारी	६ बिस्वांसी १ कचवांसी १६$\frac{४}{५}$ ननवांसी	२७≡)

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो इस्तसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा		कैफ़ियत
१	गाड़ी शिकरता	१	१५)	
२	बैल	२	२०)	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १५ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरि

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुक़दमा नंबरी नंबर ६२९ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ८—४—३८ ई०

कर्ज़दार सायल

१—निजासिंह वल्द मर्दनसिंह
२—मथुरासिंह वल्द जगरूपसिंह
३—बहादुरसिंह
४—शिवराजसिंह नाबालिग़ बविलायत मथुरासिंह
५—जवाहरसिंह वल्द मोहनसिंह
६—छोटेसिंह वल्द उदयसिंह
७—जोधासिंह वल्द गंगाबख़्शसिंह
८—खड्गसिंह वल्द उमरावसिंह

पिसरान जगरूपसिंह

साकिनान मौज़े शाहपुर
परगना व तहसील संडीला
ज़िला हरदोई

बनाम

१—देवीसहाय वग़ैरह

फरीक़सानियान

सायलान

चूँकि सायलान मज़कूरे बाला साकिन शाहपुर ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतअल्लिक़ कोई दावा रखता हो तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह
हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतअल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुतअल्लिक़ा क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तशरीह	बसाबत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
	हरदोई		मौजा चमरहा परगना व तहसील संडीला	क़ाबिल विरासत क़ाबिल इंतक़ाल मालिकाना	$\frac{2}{3}$ हिस्सा मिनजुमला २५ कि० २८॥≤२	लगानी ७०॥≡)	
	,,		मौजा देवारी परगना व तहसील संडीला	,,	$\frac{1}{3}$ हिस्सा मिन जुमला ३ किता ५।≤३	बिला लगानी	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १५ जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[क़ाबिल

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐज़ान व इशाअत हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट नंब सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब सैयद अख़्तरअहसन स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुक़ाम रायबरेली

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३६ सन् १९३७ ई० तारीख़ पेशी १४—४—१९३८

रामशंकर नाबालिग़ बवलायत मुसम्मात भगाना मादर ख़ुद क़ौम कलवार साकिन तोतानगर जुगराजपुर परगना हुन्होना ज़िला रायबरेली

क़र्ज़दार

बेनी वग़ैरा

बनाम

क़र्ज़ख़्वाह फ़री

चूँकि एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३ जिसकी तरमीम अज़रुए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, रामशंकर नाबालिग़ बवलायत मुसम्मात साकिन तोतानगर ज़िला रायबरेली ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा के उस पर लगाए जावें।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयु सन् १९३४ ई० जिसकी तरमीम अज़रुए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है इत्तिला दी जाती कि जुमला जो सायल मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा ख़ानगी ज़ात के मुताल्लिक़ दावा रखते हों वह गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात से उस हाकिम के रूबरू पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दर्ज हैं वरना तामील में हरएक दावा उसके ख़िलाफ़ ख़्वाह डिगरीशुदा हो या ग़ैर डिगरीशुदा तरमीम अग़राज़ और के लिये इस ऐक्ट की दफ़ा १३ की रू से बाज़ाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २३दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी

स्पेशल ज

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम ज़िला सीतापुर

मुक़द्दमा नं० ४७२ सन् १९३६ ई० ता० पेशी १मार्च सन् १९३८ ई०

१—कुबेरसिंह वल्द सेवासिंह
२—सीतलसिंह वल्द कुबेरसिंह } अक़वाम ठाकुर साकिन घरनाग परगना खैराबाद ज़िला सीतापुर

बनाम

शंकटाप्रसाद वल्द विष्णुदयाल ब्राह्मण सा० परेट नई बस्ती परगना खैराबाद तहसील व ज़िला सीतापु

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह ज़ैल दरख़्वास्त कुनिंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी दरख़्वास्त क़र्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रह ज़ैल हासिल मीयाद तीन माह ता० शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

नं० शुमार	नाम मौज़ा व प० व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवैयत हक़ीयत	मालगुज़ारी
१	मौज़ा घरनाग परगना खैराबाद ज़िला सीतापुर		हिस्सा $\frac{1}{3}$ रक़बा ७५ बीघा खाम एकड़ डिसमिल २३४ ३०	मालिकाना	२०॥)

तफ़सील जायदाद मुंदर्जा बयान तहरीरी महाजनान

गाड़ी	भद्दा	तख़्त चोबी	बैल	गाय
१ मंज़िल	१	०	४ रास	१ रास

भैंस	बरफ़्त मुतफ़र्रिक	बाग़ात बाके	बरतन बिरंजी
१ रास	बाके घरनाग १०	घरनाग २ किता	एक मन

मुंसि

[बदस्त अवाम फ़रोख्त के लिये

नमूना नं० १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बअदालत पं० ठाकुरप्रसाद दुबे साहब स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड जौनपुर

मुकद्दमा नं० ३२ सन् १९३७ ई० तारीख पेशी १९—३—३८ ई०

हरगाह मु० हफ़ीज़ुन्निसाँ बीबी जौजा वासितअली साकिन कस्बा मछलीशहर जिला जौनपुर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है,

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय के गजट में छपने की तारीख से तीन माह के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

जमीमा (क)

कर्जदार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर तौजी बहत व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी
१	२	३	४	५	६	७
१	जौनपुर	जमींदारी	ऊँचडीह मुहाल हफ़ाज़ुन्निसाँ	१६ आना मय सीर १०—६६	१६ आना मय सीर १०—६६	२६३)
२	,,	,,	सराय मलिकगद्दो मुहाल मीर सखावतअली	१६ आना मय सीर ५—३०	१६ आना मय सीर ५—३०	१२३)
३	,,	,,	नरसिंहपुर	।-)४ पाई मय सीर ४—०	।-)४ पाई मय सीर ४—०	
४	,,	,,	बसिरहा मु० हफ़ीज़ुन्निसाँ	१६ आना मय सीर १४—३	१६ आना मय सीर १४—३	

ज़मीमा (ख)

कर्जदार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का वसाअत (विस्तार)
१	२	३
	तीन किता मकानात	वाके कस्बा मछली शहर पर० घिसुवा जौनपुर

फ़ा० ३

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत अडीशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर $\frac{\frac{१४}{६४}}{६१८}$ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी २३—३—१९३८ ई०

जगमोहनसिंह वल्द भवानीदीनसिंह क़ौम ठाकुर साकिन जाटा परगना देवाँ ज़िला बाराबंकी

बनाम

जुमला क़र्ज़ख़्वाहान

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि जगमोहनसिंह वल्द भवानीदीनसिंह साकिन जाटा ज़िला बाराबंकी क़र्ज़दार सायल की जानिब से दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है,

लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिला	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाक़त हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीना मालगुज़ारी
१—	बाराबंकी	ग़ैरमनक़ूला	मौज़ा जाटा पट्टी बेचूसिंह मुहाल जाटा परगना देवाँ तह० नवाबगंज मुंदर्जे खाता खेवट नं० १	हक़ीयत आला	हिस्सा २०ʃ=४¼	६५॥–)॥
२—	,,	,,	मौज़ा जाटा पट्टी भवानीदीनसिंह परगना देवाँ तह० नवाबगंज मुंदर्जे खाता खेवट नं० १	,,	हिस्सा ४१॥ʃ२=१४½	१७१॥)॥
३—	,,	,,	मौज़ा जाटा पट्टी मुसम्मात सुमिरता मुंदर्जे खाता खेवट नं० ६	,,	हिस्सा १६॥ʃ१–५ मि० हिस्सा ३३।ʃ२–१०	५४ ॥=)

४—	बाराबंकी	गैर मन-कूला	मौजा गेहदवर मुंदर्जे खाता खेवट नं० १०२ परगना सतरिख	मातहतदारी	हिस्सा ६ पाई मिन-जुमला हिस्सा १६ आना	६)
५—	,,	,,	मौजा जाटा परगना देवाँ तहसील नवाबगंज	,,	॥ऽ	

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहुस्तसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	तख्त चोबी	२ अदद	
२	कुरसी चोबी	२ अदद	
३	गाड़ी	१ मंजिल	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १६ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम बहराइच

मुकदमा नंबरी नंबर २१ सन् १९३६ ई० — ता० पेशी ३० मार्च सन् १९३८ ई०

फतेहजंगसिंह वग़ैरा — क़र्ज़दार सायलान

बनाम

कैलासबख़्शसिंह वग़ैरा — क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि फतेहजंगसिंह वग़ैरा साकिन नौगयाँ जिला बहराइच ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० साजयान मज़कूर की जायदाद बताया है ।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़िहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त दिहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाअत हकीयत दरख्वास्त दिहिंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त दिहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बहराइच	ज़मींदारी	नौगयाँ	मातहतदारी	बिला लगान	बिला लगान	

जायदाद जो कि मुद्दआलेहुम ने अपने बयान तहरीरी मे दर्ज किया है—

मकान पुख़्ता व ख़ाम व बाग व दरख्तान मनक़ूलाहाय वाक़े नौगयाँ परगना हिसामपुर ज़िला बहराइच ।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ५ जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ । मुंसरिम

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लि

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब मिस्टर हरिप्रसाद गुप्ता साहब स्पेशल जज साहब बहादुर सेकंड ग्रेड इलाहाबाद

मुक़द्दमा नंबर २२५ सन् १९३६ ई०

हरगाह अज़ीज़ुन्निसाँ बीबी जौजे सैयद अब्दुलमजीद साकिन सराय अब्दुलमलिक परगना सिं
ज़िला इलाहाबाद

बनाम

लेफ़्टिनेंट राजाबहादुर राजा रामगोपालसिंह राजा माड़ा परगना खैरागढ़ ज़िला इलाहाबाद डाकख़ाना मां
की ओर से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू
हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी कि
हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जाय
बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़
छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिस
हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बन्दोबस्त व तहसील	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	इलाहाबाद	ज़मींदारी	सराय अब्दुलमलिक मु० अलीबहादुर परगना सिकंदरा	सोलह आना १९८।।ऽ२	खाता नं० १	१६१≡)४
२	"	"	मु० मुहम्मदरज़ा	सोलह आना ११६।।।ऽ३	"	७९)
३	"	"	मु० दिलगंजनसिंह	आठ आना १०३।ऽ२	"	७०)
४	"	"	मु० बिसेसरदयाल	२०।ऽ:१५	"	४०।≡)६
५	"	"	मु० मुदितनरायन	सोलह आना	"	१४८।।।≡)२

मुंसरिम

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इश्आअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा मुमालिक मुत्तहदा ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह साहब स्पेशल जज साहब बहादुर मुक़ाम लखनऊ

मुक़द्दमा नं० १०७ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी २५—२—१९३८ ई०

मुहम्मदमुक़ीमख़ाँ वल्द मुहम्मदनसीमख़ाँ पठान जमींदार साकिन मिर्ज़ागंज मुताल्लिक़ क़स्बा व तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ कर्ज़दार सायल

बनाम

१—रामदास वल्द मन्नूलाल रस्तोगी साकिन रस्तोगी टोला शहर लखनऊ

२—अब्दुलक़ादिरख़ाँ

३—अब्दुलहाफ़िज़ख़ाँ

४—मुसम्मात हसीबजहाँ बेगम

५— ,, नसीरजहाँ बेगम

६— ,, अशफ़ाक़जहाँ बेगम

७— ,, मुश्ताक़जहाँ बेगम

(२ से ७ तक) पिसरान व दुख़्तरान नाबालिग़ान अब्दुलअलीख़ाँ बविलायत मुसम्मात हाजरा बेगम मादर बविलायत दौरान मुक़द्दमा

८— ,, हसीबजहाँ बेगम बिंत

९— ,, हाजरा बेगम बेवा

(८ व ९) अब्दुलअलीख़ाँ

१०—नवाब मुहम्मदअलीख़ाँ वल्द मुहम्मदनसीमख़ाँ

११—नवाब हसनख़ाँ वल्द अलीहसनख़ाँ

(२ से ११ तक) साकिनान मिर्ज़ागंज क़स्बा व तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ

१२—प्रीमियर साइकिल व मोटर एजेंसी लखनऊ बज़रिए रामदास मालिक फ़र्म वाक़े क़ैसरबाग शहर लखनऊ

१३—फ़ज़लअहमदख़ाँ वल्द नियाज़अहमदख़ाँ पठान साकिन मिर्ज़ागंज मलिहाबाद मुहर्रिर सैयद मुहम्मदहुसेन ऐडवोकेट साकिन गोलागंज शहर लखनऊ कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि मुहम्मद मुक़ीमख़ाँ वल्द मुहम्मदनसीमख़ाँ पठान साकिन मिर्ज़ागंज ज़िला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी हस्ब दफ़ा १० मुहम्मद मुक़ीमख़ाँ मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताअल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के मुताबिक़ मुत्तहदा के गज़ट में छपने की तारीख़ से अंदर तीन माह अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा मुमालिक मुत्तहदा

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ अराज़ी

नंबर शुमार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल व क़ाबिल इंतक़ाल व क़ाबिल विरासत हक़ीयत की तफ़सील	बसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	जमींदारी	थोक बादशाहअली क़स्बा मलिहाबाद ख़ास	मिलकियत आला	१बी०१४बि०	३॥।)	
२	,,	,,	,, मुहम्मदनसीमख़ाँ ,, ,, ,,	,,	३बी०१९बि०	२॥)	

३	लखनऊ	जमींदारी	थोक मुहम्मदअहमदखाँ कस्बा मलीहाबाद ,, मुहम्मद नसीरखाँ	,,	१बी० १३बि० ५ बि०	२॥)
४	,,	,,	,, महफूजअली ,, ,, ,,	,,	६ बिस्वा	॥≈)
५	,,	,,	मुसल्लम मौजा इब्राहिमपुर त० मलिहाबाद	,,	१६ आना	५६१)
६	,,	मकान	मकान मसकूना वाके मिर्जागंज कस्बा व तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ			

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हकूक मालिकाना आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी १९०८ कुर्क व नीलाम हो सकती है।

नं० शुमार	नवैयत जायदाद	वसाअत व हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	एक जरब बंदूक दोनली	मुसल्लम	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख १६ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रां

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुकाम हरदोई

मुकद्दमा नंबरी ६०१ सन् १९३१ ई० तारीख पेशी २—५—१९३८ ई०

१—तारासिंह
२—निर्मलसिंह
३—गुलाबसिंह } पिसरान बलदेवसिंह
४—डालसिंह
५—सूबेदारसिंह
६—लालबहादुरसिंह बालिग
७—उजागरसिंह } नाबालिगान बविलायत तारासिंह पिदर खुद } पिसरान तारासिंह
८—अछिबरनसिंह
९—पूरनसिंह बालिग
१०—भारथसिंह } नाबालिगान बविलायत निर्मलसिंह पिदर खुद } पिसरान निर्मलसिंह
११—पुत्तूसिंह
१२—बल्लूसिंह नाबालिग वल्द बलदेवसिंह
१३—आपालसिंह } नाबालिगान पिसरान गुलाबसिंह बविलायत गुलाबसिंह पिदर खुद
१४—रामपालसिंह
१५—भइयाबख्शसिंह } नाबालिगान पिसरान डालसिंह बविलायत डालसिंह पिदर खुद
१६—शिवबरनसिंह

} अकवाम ठाकुर साकिनान आ
परगना गोपामऊ तहसील
जिला हरदोई

१७—देवीसिंह वल्द बलदेवसिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा आसा परगना गोपामऊ हाल मुकैयद सेंट्रल जे बनारस

१८—बलवंतसिंह वल्द बलदेवसिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा आसा परगना गोपामऊ हाल मुलाजिम कांस्टेबिल पुलिस थाना कैसरगंज जिला बरेली

कर्जदार सायलान

बनाम

लाला भुजा साह वगैरा

कर्जख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि तारासिंह वगैरा मजकूर जिला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदा

मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बतलाया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा क़र्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

(फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंत-काल हक़ीयत की तसरीह	वसाहत हक़ीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीना माल-गुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई		मौजा आसा परगना गोपामऊ	१ बिस्वा	कुल	१०)	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २७ जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुकाम बहराइच

मुकद्दमा नंबरी नंबर ३६ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी २१ मार्च सन् १९३८ ई०

ठाकुर जदुनाथबख़्शसिंह नाबालिग

कर्जदार सायल

बनाम

ठाकुर हरसरनसिंह वगैरह

कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि ठाकुर जदुनाथबख़्शसिंह वल्द ठाकुर मुनेशरसिंह साकिन बेंदौरा ज़िला बहराइच की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायल मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत—

फेहरिस्त (अलिफ) कर्जदार के हक़ूक़ मालकाना मुतालिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाअ्रत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुन्दर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा
				हिस्सा सायल		
१—	बहराइच	हक आला अतिया सरकार	भैंसहा मुहाल बेंदौरा	-)॥		
२—	,,	,,	बेंदौरा ,,	-)।॥		
३—	,,	,,	मेदबापुर ,,	-)॥		
४—	परतावगढ़	मातहतदारी	अंतामऊ मुहाल मातापलट नं० २	=)		
५—	,,	,,	,, ,, ,, नं० ४	=)		
६—	,,	,,	,, मुहाल जुगलकिशोर पट्टी रानी राधादेवी	=)		
७—	,,	,,	,, ,, पट्टी शिवचरन	=)		
८—	,,	,,	,, मु० राजा अवधेशसिंह	=)		
९—	,,	,, बाग	,, मु० सैयद नाजिमहुसेन	=)		
१०—	,,	बाग रियायती	मिरगढ़वा मु० सैयद जहूरहुसेन	=)		
११—	,,	,,	अंतामऊ मु० मातापलट नं० १	=)		
१२—	,,	,,	लाठतारा मुहाल काजीपुर पच्छिम	=)		

१३—मकान मसकूना सायल वाके बेंदौरा परगना हिसामपुर जिला बहराइचह दूद अर्बा

पूरब	पच्छिम	उत्तर	दक्षिण
मकान बदलू लोनिया	मकान नरायन कांदू	खँडहर	मकान जुगुनू लोध

(फेहरिस्त बे) कर्जदार की जायदाद, जो बहस्तिसनाय हक़ूक मालिकाना मुतालिक़ आराजी हस्ब जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	बसाअ्रत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१—	बैल	२ रास	३०)
२—	गाय	४ रास	२०)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ४ जनवरी १९३८ ई० जारी हुआ। मुंसरि

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (२५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई

मुकद्दमा नंबरी नंबर ६१२ सन् १९३६ ई० तारीख पेशी २६—३—१९३८ ई०

रामलाल वल्द मुं० मुक्ताप्रसाद कौम कायस्थ साकिन गोठवा मज़रा गाजू परगना संडीला ज़िला हर

कर्ज़दार सा

बनाम

केहरीसिंह वग़ैरह कर्ज़ख्वाह फ़रीक़

चूँकि रामलाल वल्द मुं० मुक्ताप्रसाद साकिन गोठवा जिला हरदोई ने एक दरख्वास्त हस्ब

जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुतफ़र्रिक काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तफ़सील	बमाप्रत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर पुख्ता साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	....	टिकारी	१४१ऽ ४ बिस्वा १२¼ बिस्वांसी	कुल	८७॥)	
२	,,	...	बहदिन व गोठवा व फत्तेपुर मजरा गाँजू	७ बिस्वांसी १ कचवांसी १२⅓ ननवांसी	,,	५३–)	
३	,,	...	रुकनापुर मुहाल रुकनापुर	१११ऽ	,,		

फ़ेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	बमाप्रत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	मु० २००) बइज़ाफ़ा सूद बाबत ज़र सिमन ग़ैरमौदा मिनजुमला ज़र सिमन मुंदर्जा इंतकालनामा नविश्ता सायल इस्मी फ़रीकसानी नं० ६ तादादी ८३०) मौरख़ा १५ जनवरी सन् १९३४ ई०	कुल	
२	एक मुरतहिनी रेहननामा नविश्ता सोबरनसिंह इस्मी दिकइतराय तादादी २००) मौरख़ा २१ ऑक्टोबर सन् १९१० ई०	,,	
३	मस० १ राम	कुल	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख ७ जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

ार्म नं० ४

मुंसरिम

[क़ाबिल फरोख्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब सैयदअख़्तरअहसन स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम रायबरेली
मुक़द्दमा नंबरी न० ३२ सन् १९३७ ई० इनकमबर्ड
तारीख़ पेशी ६ मई १९३८ ई०
मु० रुकमिन बेव गजाधर कुर्मी सा० सराय कुर्मी प० सरेनी जिला रायबरेली

कर्जदार सायल

बनाम

अलोपीदीन सा० जगदीशपुर प० मगरायर जिला उन्नाव कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि मु० रुकमिन बेवै गजाधर साकिन सराय कुर्मी जिला रायबरेली ने एक दरख़्वास्त हस्ब
ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी
है कि उस जायदाद को जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्त देहंदा ने हस्ब
या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० मु० रुकमिन मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त
गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दर
पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह
हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)
कर्जदार के हक़ूक़ मालिकान मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	जिला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बमाप्त हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा सरकारी मालगुज़ारी
१	रायबरेली	मातहती	सराय कुर्मी पर० सरेनी	क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल	खाता नं० ३ नं० ६ ४,१२ २॥ऽ १२ १३ ३५ ऽ२'५' २ऽ१'१२' ४ऽ३, ३६ ३७ ३८ २॥ऽ१'२' ऽ४'७' ऽ३'१०' ३९, ४४ ४६ १ऽ२'१०' २॥ऽ'१२' १॥ऽ४'७' ५७ ५६ ६३ ६४अ ऽ१' १ऽ'६' १ऽ१'२' ऽ२'१२, २४१ २४३ २४६ २ऽ' १ऽ२'६' ॥ऽ३'१०' २४८ २५२ आ० २५ १ऽ'४' ऽ६' १ऽ'२'	

				२९३/२॥)१'४, २९५/१)'१६', ३४९/२॥)'२' ३२वें/)२.१७, ३१ वें/१॥).६', ६१/)'१७, ६४/॥)१'१२, ६५/२)'१०', ३२२वें/)'१८ ६६/॥)१'५, ६७/)१'१२', ३२४ अ०/॥)'१२ २०/॥)४'८, २१/२॥)२.१८ ४६)४.१	१४७) बिला लगान

जायदाद जो अलोपीदीन महाजन ने अपनी बयान तहरीरी में ज़ाहिर किया है—

बाग नं० ४१/)'१५　　मीज़ान ४७)'११

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहैसियतसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	भैंस	१	
२	पड़िया	१	

जायदाद जो अलोपीदीन महाजन ने अपनी बयान तह[illegible]म ज़ाहिर किया है—

१—दरख़्तान मुतफ़र्रिक़ ६१

२—अंबा १

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २० जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब सैयद अख़्तरअहसन स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम रायबरेली

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ८७ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ३१—३—१९३८ ई०

१—अकराम अलीख़ाँ वल्द आज़म अलीख़ाँ } क़ौम भरमर्या साकिनान मौज़ा ज़ियापुर परगना इन्हौना
२—साहबज़ादख़ाँ वल्द हसनख़ाँ } तहसील महराजगंज ज़िला रायबरेली

बनाम

गुलामहुसेन वग़ैरा।　　　　क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि साहबज़ादख़ाँ वल्द हसनख़ाँ वग़ैरा साकिन ज़ियापुर ज़िला रायबरेली की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० मायक़ान मज़कूर को जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से २ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देहंदा की मुतअल्लिक़ क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	रायबरेली	हक आला	जियापुर मुहाल खैरखवा इंदुगान व शामिलात मुहाल	हक आला मौरूसी	।) चार आना हिस्सा	११-)।।	

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहुस्तिसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिल-सिलेवार	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	क़िस्म जायदाद	कैफ़ियत
१	मकान मसकूना मौज़ा जियापुर	१	
२	बैल	१ रास	
३	गाय	१ ,,	
४	बछिया	१ ,,	
५	घोड़ी	२ रास	
६	चारपाई	२	
७	बाल्टी	२	
८	गगरा	२	
९	लोटा	१	
१०	गिलास	१	
११	कुरसी	२	

अलावा जायदाद सायलान के हस्ब जैल जायदाद के यारमोहम्मदख़ाँ महाजनान ने ज्यादा दिखलाया है।

१	चारपाई	४	
२	भैंस	१	
३	पड़वा	१	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १७—१२—१९३७ ई० जारी हुआ।

[बदस्त प्रचाम फ़रोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम कानपुर
मुक़द्दमा नं० ३१२ सन् १९२६ ई०

बब्बूसिंह वल्द प्रागसिंह व बदनसिंह व नंदलालसिंह व परतापसिंह बविलायत मु० बतासीकुँवरि जौजा बब्बूसिंह ठाकुर रसूलपुर परगना भोगनीपुर व द्वारिकासिंह वल्द प्रागसिंह व गोपालसिंह नाबालिग़ बविलायत द्वारिकासिंह पिदर खुद साकिन घनजुवा परगना अकबरपुर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायबान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, उससे तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क) क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर पट्टी-बस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	कानपुर	ज़मींदारी	मौज़ा रसूलपुर भुरँडा परगना भोगनीपुर पट्टी नं० ३	बक़दर ५ पाई ४ फ़िरव	५ पा० ४ फ़िट	मालगुज़ारी कुल १९।)=
२	,,	,,	मौज़ा देवकलिया परगना अकबरपुर	बक़दर ४ पाई सीर बक़दर रक़बा ९ बिस्वा द्वारकासिंह गोपालसिंह	बक़दर ४ पा० सीर बक़दर रक़बा १९ बिस्वा	
३	,,	,,	मौज़ा रसूलपुर भुरँडा पट्टी नं० ३ परगना भोगनीपुर	बक़दर ४ पाई ४ फ़ि०	४ पा० ४ फ़िट	१९।)= व अबवाब १९।)=
४	,,	,,	मौज़ा देवकलिया परगना अकबरपुर	साबतुल मिल्कियत	बक़दर रक़बा १९ बिस्वा	
५	,,	सीर	मौज़ा रसूलपुर परगना भोगनीपुर	रक़बा व सीर	१३ बीघा ९ बिस्वा	

ज़मीमा (ख) क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

१—२ क़िता बाग़ात मौज़ा घनजुवा परगना अकबरपुर ज़िला कानपुर
२—८ क़िता बाग़ात मौज़ा चिरौंरा परगना अकबरपुर ज़िला कानपुर
३—१ रास गाय, १ रास बछड़ा, २ रास भैंस, २ रास पड़िया

मुंसरिम

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जजी दरजा अव्वल मुरादाबाद

मुकद्दमा नंबर ७५ सन् १९३६ ई०

हरगाह इंद्रमन, भीमसैन, लक्ष्मीनरायन, गिरधरनरायन, शिवनरायन, रामस्वरूप, जगदीशप्रसाद, मु० देवी, मु० गंगादेवी, मु० सावित्रीदेवी साकिन बिलारी ज़िला मुरादाबाद ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह उस तारीख़ से, जो इस संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुतालिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर खेवट व मोहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुश्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा [illegible]
१	२	३	४	५	६	७
१	मुरादाबाद	ज़मींदारी	अहमदाबादपुर कारार मुहाल जर्द खाता १ ,, ,, ८ ,, ,, ३	२८८ एकड़ ५६ डि० १ ,, ५२ १ ,, १२		मालगु० ५६०) २॥) १)
२	,,	,,	कुरी मानक मु०सुर्ख खा० १ ,, सफेद ,, २ ,, ,, ,, ३	६६ ,, ४६ ४ बिस्वा १४ बिस्वां० १० कच० १० नन० है मिन० ३५ एकड़ ६२ डिसमिल		१४५) २४।≤)॥ ८।≶)
३	,,	,,	सकंदा मुहाल भूपसिंह मिलक मुनज़बता नं० ५	आधा १७ एकड़ ६० डिसमिल का		५५)
४	,,	,,	आलापुर मुहाल सफेद खाता नं० २ ,, ,, आसमानी खाता नं० १	१२ एकड़ ८ डिसमिल २८ ,, ७० ,,		७५)

						माल०	अबवाब
५	मुरादाबाद	ज़मींदारी	खावरी अव्वल मु० जंगारी खाता नं० १	२५८ एकड़ १९ डि० का ⅔ भाग		२९३)	२११)
			,, ,, ,, ३	७४ डिसमिल		१=)	=)
			,, ,, ,, ४	३८ ,,		॥-)	-)
			,, ,, ,, ५	३७ ,,			
			,, ,, ,, ७	२ एकड़ १७ ,,		२)	≡)
६	,,	,,	बिलारी मु० बादामी खाता नं० १	२ ,, का आधा भाग		२)	≡)
७	,,	,,	धनूपुर तुर्खेड़ा मु० आसमानी खा० १	४७ एकड़ ४४ डिस० का ⅔ भाग		९९)	६॥-)८
			,, मुर्खे ,, २	६३ डिस० ,, ⅔ भाग		॥=) ८	-)१
			,, ,, ,, ६	४ ए० १७ ,, ⅔ ,,		१०)	१)
			,, ,, ,, १०	३ ,, ४२ ,, ⅔ ,,		४॥)१	॥)४
			,, ,, ,, १७	७/१० भाग मिन० ३ बी० ६ बि० अज़ २ एकड़ ७ डिसमिल		१।≡)४	≡)४

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत की वसाहत (विस्तार)
१	क़र्ज़ा याफ़्तनी सायलान	१—दस्तावेज़ ता० १७—२—२६ इक़रारी हरदेव मौसूमा इंद्रमन ३२) २— ,, ,, १७—६—२६ ,, चेतराम ,, ,, ५०) ३— ,, ,, २४—८—१६ ,, सुखानंद ,, रामस्वरूप २१) ४— ,, अक्टोबर २६ ई० ,, गिरधारीलाल, भीमसेन २००) ५— ,, ,, २१—४—२१ ,, नारायनी ,, इंद्रमणि ७५०) ६—डिगरी ख़फ़ीफ़ा चंदौसी ८२४ सन् २२ ई० इंद्रमन बनाम नंदराम ४२०) ७— ,, मुंसफ़ी चंदौसी ३० सन् १६ ई० इंद्रमन बनाम फूलसिंह ७१≡) ८— ,, मुंसफ़ी ख़फ़ीफ़ा चंदौसी रामस्वरूप बनाम बुधिया १२०॥≡) ९— ,, ख़फ़ीफ़ा मुंसफ़ी ,, ११२ सन् २४ रामस्वरूप बनाम अयोध्याप्रसाद [illegible]

मुंसरिम

[ज़ाबिता [illegible]

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब मिस्टर हरीशंकर विद्यार्थी साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा अव्वल सहारनपुर

मुक़द्दमा नं० ३ सन् १९२७ ई०

[illegible] सेठ किशनलाल वि० सेठ गोवर्धनदास हासल व वली जगदीशप्रसाद बउम्र १६ साल, लक्ष्मीचंद बउम्र १३ साल व हरप्रसाद बउम्र ११ साल व छोटेलाल बउम्र ७ साल नाबालिग़ान सेठ किशनलाल मज़कूर क़ौम वोहरा साकिन सहारनपुर ज़िला सहारनपुर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि

उस जायदाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा
हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय
में छपने की तारीख़ है, उससे ३ मास के भीतर अपने हकों के बारे में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी
करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क) क़र्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नं० खिवट सिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर खेवट व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा
१	सहारनपुर	सहराई	मौजा करौंदी मुहाल नरायनदास खेवट ७	३७६ बीघा ११ बिस्वा	कुल	कुल मा०
	,,	,,	,, ,, ८	३१ बीघा ४ बिस्वा	हिस्सा रसदी	
	,,	,,	मुहाल जीवनसिंह १	१२ ,, १३ ,,	५ बी. ७ बि. ७ बि. मि. १२बी. १३बि.	कुल मा०
	,,	,,	,, ,, ७	१६ ,, २ ,,	११ बी. १८ बि. मि. १६ ,, २ ,,	,, ,,
	,,	,,	,, ,, ९	११ ,, २ ,,	४ हि० मि० ५ हि० अज़ ११ बी. २ बि.	,, ,,
२	,,	,,	मौ. कनखौली महमूदपुर मु० दूलसिंह खेवट २	४६ ,, १८ ,,	६७ ,, १७ ,, मि. १८९,, १८ ,,	,, ,,
	,,	,,	,, ,, ३	५ ,, १२ ,,	कुल	,, ,,
३	,,	,,	मौ. मिरजापुर पूरन की मुहालकूड़ खेवट ३	५२ ,, ३ ,,	,,	,, ,,
	,,	,,	,, ,, ४	० ,, १४ ,,	शामिलात बक़दर	
	,,	,,	,, ,, १४	६० ,, १० ,,	हिस्सा कुल	,, ,,
	,,	,,	,, ,, १५	८ ,, ० ,,	शा० मु० बक़दर हि.	
	,,	,,	,, ,, १६	२५ ,, ४ ,,	,, ,, ,,	
	,,	,,	मुहाल नरायनदास ४	१५६ ,, १६ ,,	१५१बी. १० बि.मि. १५६,, १६ ,,	,, ,,
४	,,	,,	मौज़ा मुसील मुहाल नरायनदास १ खेवट	४८ ,, १८ ,, बिस्त बिस्वा	कुल में हक मुरतहनी	,, ,,

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी
१९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

प्यारेलाल व सनातमल कर्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी हस्ब दफ़ा १० में जायदाद मुंदरजा ज़ैल
मिलकियत सायलान ज़ाहिर की है—

छ रास बैल, दो गाड़ी, एक घोड़ी, मकान मसकूना, फरनीचर, चार रास भैंस, दो रास गाय, दो रास

हरीलाल वग़ैरः कर्ज़ख़्वाहान ने जायदाद मुंदरजा ज़ैल को मिलकियती सायलान अपने बयान तहरीरी
ज़ाहिर की है—बाग़ वाके क़स्बा सरसावा मुहाल गैरवाज़याम मुताबिक खेवट नं० २० खसरा नं० २०
११ बीघा १० बिस्वा इस बाग़ में उसका ½ हिस्सा है, नीज़ मकान सकनाई वाके क़स्बा सरसावा
नहीं किया है। मुं

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत पं० दाताराम मिश्रा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम लखनऊ
मुक़द्दमा नंबरी नं० ४ सन् १९३७ ई०
तारीख़ पेशी ३०—३—१९३८ ई०
मुहम्मदबख़्श वल्द मदारबख़्श शेख़ साकिन महोना पर० ख़ुद तह० मलिहाबाद ज़िला लखनऊ
कर्ज़दार सायल

बनाम

१—रामगिरि नाबालिग़ बविलायत मातादीनगिरि उर्फ़ मतेगिरि पिदर ख़ुद सा० गोविंदपुरी पर० महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ
२—मन्नालाल वल्द मातादीन क़ौम बक्क़ाल सा० कैसरमऊ कलाँ } पर० महोना तह० मलिहाबाद
३—ख़ुरशेदअली वल्द वज़ीरअली शेख़ सा० पक्करयाटोला महोना } ज़िला लखनऊ
क़र्ज़ख़्वाहान फ़रीक़सानी

चूँकि मुहम्मदबख़्श वल्द मदारबख़्श साकिन महोना ज़िला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने हुक़ूक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	मसाहत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	जमींदारी	शेखपुर पर० महोना पट्टी केवलकिशुन	हिस्सा ६ आना मिनजुमला १६ आना	हक़ आला	२८।)	
२	,,	,,	,, पट्टी बिशुनदयाल	हिस्सा ४ आना मिनजुमला १६ आना	,,	२८।)२	
३	,,	,,	नरायनपुर पर० महोना पट्टी लालताप्रसाद	हिस्सा २ पाई १० किराँत	,,	१०।=)	
४	,,	,,	,, पट्टी मूलचंद	हिस्सा ८ पाई	,,		
५	,,	बाग़ात	शेखपुर पर० महोना	३ क़िता बाग़ात नं० १०८—२ बिस्वा, १२१—२ बिस्वांसी, १२३—२ बिस्वा	चकदारी	...	

६	लखनऊ	बागात	महोना पर खुद	४ किता बाग़ात नं० ३१९—४ बि० ४७३—१ बीघा २ बि० ५३९—१ बीघा ६ बि० ५५६—२ बीघ ३ बि०	मातहतदारी	...
७	,,	,,	,,	एक किता बाग नं० ४७४ १ बीघा ६ बि० १०बि०	,,	...

जायदाद मुजहिरा कर्जख्वाह नं० १

१ लखनऊ मातहतदारी शेखपुर प० महोना आराजी नं० १०८/२बि०, १२१/४बि०, १२२/१बी०६बि० आ १२३/२बि० मुलहिक़ एक कुएँ

जुमला ४ किता मीजान १ बीघा १२ बिस्वा

२ ,, बाग महोना पर० खुद बाग नं० ३१९—१ बीघा २ बिस्वा, ४३३—२ बी० ३ बि० मय दरख्तान

३ ,, एक किता मकान मस्कूना वाकै कस्बा महोना पर० खुद

४ ,, ,, ,, ,, ,, गोविंदपुरी पर० महोना

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ६ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[काबिल फरोख्त

इत्तिलानामा बनाम अशख़ास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाए मकरूजा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बाबू सुरेंद्रभूषन बनर्जी स्पेशल जज साहब बहादुर गोंडा दरजा दोयम मुकाम गोंडा

मुकद्दमा नंबरी नंबर २१३ सन् १९३६ ई० इनकमबर्ड

तारीख़ पेशी २८—३—१९३८ ई०

१—बुधैराजसिंह }
२—जयप्रसादसिंह } पिसरान बिंद्रासिंह
३—शंभूदत्तसिंह }
४—राजबहादुरसिंह वल्द मरजादसिंह
५—हंसबहादुरसिंह वल्द बलवंतसिंह
६—गजेंद्रबहादुरसिंह वल्द बुधैराजसिंह
७—किशुनकुमारसिंह }
८—रामबहालसिंह } पिसरान जैप्रसादसिंह
९—देवबख्शसिंह नाबालिग बविलायत जैप्रसादसिंह
१०—भगवानबख्शसिंह }
११—सुरेंद्रबहादुरसिंह } नाबालिगान
१२—सियावरसिंह } बविलायत शंभूदत्तसिंह
१३—रामनरायनसिंह }
१४—रामदेवसिंह }
१५—शंकरसहायसिंह } नाबालिगान बविलायत राजबहादुरसिंह
१६—रामभिलनसिंह नाबालिग बविलायत किशुनकुमारसिंह
१७—छैलबहादुरसिंह नाबालिग बविलायत रामबहालसिंह

} अकवाम छत्री साकिन मुंडेरवा परगना गवारिच जिला गोंडा कर्जदार सायलान

बनाम

रमेसरसिंह वगैरह कर्जख्वाह फरीकसानी

चूँकि बुधैराजसिंह वगैरह वल्द बिंद्रासिंह साकिन मुंडेरवा जिला गोंडा वगैरह की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाए मकरूजा पेश हुई है, और चूँकि जायदाद, जिसकी तफसील

मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर जायदाद मजकूर पर तुम कोई दावा रखते हो, तो संयुक्तप्रांतीय गजट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से ३ मास के अंदर एक दरख्वास्त अदालत हाजा में असालतन या बजरिए मुख्तार मजाज पेश करो।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुतअल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुतअल्लिका काबिल बिला सत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१	गोंडा	हकीयत जमींदारी	मौजा पांडेचौरा मु० कमियार पर० गवारिच		हिस्सा १ आना ९ पाई १२ किरांत	२४।॥)९	
२	,,	,,	मौजा मुडेरवा परगना गवारिच		हिस्सा १ आना ९ पाई १२ किरांत	१६३।=)	
३	,,	मकान खाम	वाके मौजा मुडेरवा परगना गवारिच		एक किता		

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुतअल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफियत
१	बैल	२ रास	२०)
२	भैंस	२ रास	१००)
३	बैलगाडी	१ मंजिल	३०)
४	गाय मय बछवा	४ रास	१५)

मुंसरिम

[बदस्त नीलाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू जगतकिशोर टंडन साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुजफ्फरनगर

मुकदमा नंबरी नंबर ७५९ सन् १९३६ ई०

हरगाह चौधरी मानसिंह वल्द चौ० अमीरसिंह कौम जाट साकिन मौजा बनत पर० शामली जिला मुजफ्फरनगर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है।

लिहाजा हम तहरीर की रू से हस्ब दफा जिम्नी १ दफा ११ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए जमीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय

गजट में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अर्जी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर खेवट	ज़िला ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुश्तर्कि व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा मालगुज़ारी
३	मुज़फ़्फ़रनगर		मौज़ा बनत परगना शामली मुहाल गैरदाई मीरसिंह पट्टी गिरधारी	$३\frac{१}{९}$ व $\frac{१}{३}$ और क़र्ज़ख़्वाह $\frac{५}{९}$ हिस्सा कहता है	१५ बी० ७ डि०	२५।≡)
५६	,,		मौज़ा बनत म० गैरदाई बिंद्रावन	$\frac{२}{९}$	२ बी० १३ डि०	२-)
१	,,		मौज़ा बनत पट्टी सवाईसिंह	११ बी० १६ डि०	८१ बी० ८ डि०	१२१)
७	,,		मौज़ा गोरहनी परगना शामली	एक चहारुम और क़र्ज़ख़्वाह निस्फ़ी कहता है	४ बी० १६ डि०	११)
२	,,		,, ,,	$१\frac{१}{८}$	१४ बी० १८ डि०	२४॥)
१४	,,		मौज़ा बनत परगना शामली मुहाल मीरसिंह	हिस्सा रसदी	१ बी० १२ डि०	॥-)
२५	,,	,,	मौज़ा बनत मुहाल गैरदाईयान	,,	६ डिस०	
२७	,,	,,	,,	,,	५ डिस०	
२९	,,	,,	,,	,,	३ डिस०	
२१ १	,,	,,	,,	,,	१० बी० ५ डि०	

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१—चहारुम हिस्सा एक मंज़िला मकान शर्करुया वाक़े बनत परगना शामली मय कुल हक़ूक़ पुख़्ता व ख़ाम

शर्क़ी	ग़र्बी	शुमाली	जनूबी
रास्ता मकान अरगरान	रास्ता	रास्ता	मकान नैनसिंह व हरीराम

२—निस्फ़ी एक मंज़िला घेर गर्बरुया वाक़े बनत पर० शामली

शर्क़ी	ग़र्बी	शुमाली	जनूबी
प्यारेलालसिंह व गोधू जाट	रास्ता व मकान शिवनारायन	मकान लछमन घटे जाट	रास्ता व लालसिंह

३—निस्फ़ी अज़ एक मंज़िला घेर उफ़्तादा गर्बरुया वाक़े मौज़ा बनत पर० शामली

शर्क़ी	ग़र्बी	शुमाली	जनूबी
रास्ता	रास्ता	गोधू जाट	रास्ता

४—एक रास भैंस रंग स्याह मालियत ६०) रु०

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम उन्नाव

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ६१ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी २१—२—१९३८ ई०

चौधरी अबरारमुहम्मद वल्द विलदारमुहम्मद क़ौम शेख़, साकिन आसीवन परगना आसीवन रसूलाबाद तहसील हसनगंज ज़िला उन्नाव
क़र्ज़दार सायल

बनाम—परागदत्त वग़ैरह
क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि चौधरी अबरारमुहम्मद वल्द विलदारमुहम्मद साकिन आसीवन ज़िला उन्नाव ने एक दरख्वास्त हस्ब फ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला ी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब फ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० मुद्दई मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय ज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी रख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब फ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत—

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

न० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तफ़सील	मालगुज़ारी हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीनी मालगुज़ारी	कैफ़ियत
	उन्नाव	हक़ीयत जमींदारी	नोहाई बुज़ुर्ग मुहाल बक़ाया	खेवट खाता नं० १	१)	मै मालगुज़ारी	
	,,	,,	,,	,,	१)	बज़रिए बैनामा २६-१-२१ मिनजानिब ज़ियाउद्दीन मु० नं० २४	
	,,	,,	बालाखेड़ा मु० बक़ाया	,,	१)	,,	
	,,	,,	आसीवन तरफ़ कटरा मुहाल बक़ाया	,,	१)	,,	
	,,	,,	पनाहपुर कलाँ	,,	)	,,	
	,,	,,	आसीवन तरफ़ पैमा	खेवट खाता ५	१४॥)४-१०	,,	

उन्नाव हक़ीयत जमींदारी मौज़ा असीवन पट्टी अंसारमुहम्मद $\frac{१२९२}{११)}$, $\frac{१२०१}{॥)१}$, $\frac{२८८४}{१)१}$, $\frac{१३१०}{१)३}$, $\frac{१२८३}{१)१}$

जुमला ६१)३ में ¼ हिस्सा १०॥)

,,	,,	अरसो तरफ़ क़ादिरपुर मुहाल मोहनकिशुन				२॥)२ में हि० ३ बि० ७॥ बि०
,,	,,	,,	,,			३)२ ,, ६ बि० १०
,,	,,	,,	,,			२॥)१ ,, ७ बि० १२ बि०

११ उन्नाव हकीयत जमींदारी अरसी तरफ कादिरपुर मुहाल मोहनकिशुन ४)२में हि० ११ बि, १० बि,

१२ ,, ,, ,, ,, १)४ ,, ३ बिस्वा० ५

(फेहरिस्त बे)

क़र्ज़दार की जायदाद बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१—एक किता मकान पुख़्ता वाकै आसीवन जिसमें हिस्सा ¼ सायल

२—डिगरी खेवट नं० १६३८ से ३१ चौधरी अबरारमुहम्मद बनाम तजम्मुलहुसेन फ़ैसला २४·१· सब जज उन्नाव ५२७-)।।।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ८—११—१९३७ ई० जारी हुआ। मुंसि

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (२५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर ७० सन् १९३७ ई० तारीख़ पेशी ३१—३—१९३८ ई०

१—गजराजसिंह वल्द बख़्तावरसिंह कौम ठाकुर साकिन मौज़ा पूरा महुआ परगना शरहशुमाली त शाहाबाद जिला हरदोई

कर्ज़दार सायल

बनाम

१—ऊधौसिंह वग़ैरह

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़

चूँकि सायल ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब ११ जिमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलि में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयु प्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से तीन माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सी मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़) कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	हरदोई	।5 बिसुआ	मौजा पूरा महुआ परगना शरह शुमाली	५ बिस्वा	कुल	
२	,,	११।।।5	मौजा मझोखा प० आलमनगर	११ बीघा १५ बिस्वा	कुल	

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो इस्तसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१	बैल	४ रास	क़ीमत १५०)
२	गाय	३ ,,	२०)
३	बछिया वग़ैरह	३ ,,	१५)
४	भैंस	२ ,,	८०)
५	हाथी	१ ,, जिसमें सायल १/३ हिस्सा का मालिक है	४००)
६	बरतन	२० अदद	२०)
७	चारपाई	५ ,,	५)
८	लहड़ू	१ ,,	१०)

जायदाद ज़ाहिर करदह फ़रीक़सानी नंबर १व२

१	बैल	८ रास	
२	भैंस	२ ,,	
३	हाथी	१ ,, अदद जिसमें सायल १/३ हिस्सा का मालिक है	
४	गाय	४ ,,	
५	बरतन	अलावा खानादारी के	१००)
६	जेवर		क़ीमती १०००)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज ५—१—१९३८ई० तारीख़ जारी हुआ। मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४)

अदालत जनाब बाबू बिश्वंभरनाथ चौधरी साहेब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर ११ सन् १९३७ ई०

तारीख़ पेशी २९ मार्च सन् १९३८ ई०

१—अर्जुनसिंह } पिसरान मुन्नूसिंह
२—हरिनामसिंह }
३—मु० कृष्णकुमारी बेवा बलभद्रसिंह
४—इंद्रपालसिंह वल्द अर्जुनसिंह
५—जसपालसिंह } नाबालिग़ान पिसरान रामसिंह
६—रामपालसिंह } बविलायत अर्जुनसिंह चाचा
७—कृष्णपालसिंह } हक़ीक़ी खुद
८—मदनपालसिंह नाबालिग वल्द हरिनामसिंह बविलायत हरिनामसिंह

अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा बसापुर परगना बंगर तहसील व ज़िला हरदोई

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

गिरवरसिंह वग़ैरह क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि अर्जुनसिंह वग़ैरह अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा बसापुर परगना बंगर तहसील व ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्त हाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद ज़ाहिर की है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने हुक़ूक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व-पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदो-बस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल बिना-मत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बसाबूत हक़ीयत दरख़्वास्त देहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेह या की हक़ीयत पर मौजूदा
१	हरदोई	जमींदारी	मौ० बक्षापुर मु० कुस्मा खा० खे० नं० १ प० बंगर	२० बिस्वा	मालिकाना	१२०)
२	,,	,,	मौ० बक्षापुर मु० रूदनपुरवा खा० खे० नं० ६ पट्टी अर्जुनसिंह व मुन्ना-सिंह प० बंगर	३ बिस्वा १२ कचवांसी २$\frac{1}{3}\frac{4}{3}$ ननवांसी	,,	७१॥)
३	,,	,,	मौ० भेलावाँ मु० अदलापुर खा० खे० नं० १० पट्टी अ-र्जुनसिंह व मुन्ना-सिंह प० बंगर	१ बिस्वा १३ बिस्वांसी ६ कचवांसी १३ नन-वांसी ७ अधवांसी	,,	६०)
४	,,	,,	मौजा भेलावाँ मुहाल भेलावाँ पट्टी रघुबरसिंह व रामपालसिंह खा० खे० नं० १ प० बंगर	२ बिस्वा ४ बिस्वांसी ५ कचवांसी १४ नन-वांसी	,,	२३१)
५	,,	,,	मौजा पहुँतेरा पट्टी मुन्नासिंह खा० खे० नं० १ प० बंगर	२० बिस्वा	,,	१८१)
६	,,	,,	मौजा पहुँतेरा मुहाल भीखमसिंह खा० खे० नं० १ प० बंगर	२० बिस्वा		१८१)

फेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१—हक़ मुरतहनी मौजा पहुँतेरा मुहाल भीखमसिंह परगना बंगर २ बिस्वा ८ बिस्वांसी २ कचवांसी ननवांसी

२—एक डिगरी तादादी ६०) बमुक़दमे अर्जुनसिंह बनाम मुन्नासिंह इजलासी मुंसफ़ी जनूबी हरदोई मु० १८ फ़रवरी सन् १९३६ ई०

३—एक डिगरी तादादी १९३≡) ९ मय खरचा व सूदआइंदा ६) फ़ीसदी माहवारी बमुकदिमे अर्जुनसिंह बनाम रामदयाल इजलासी तहसीलदार साहब हरदोई मुंफसिले ३० जून सन् १९३१ ई०

४—एक डिगरी तादादी २५॥≡) बमुकदमे अर्जुनसिंह बाम गज्जू इजलासी बाबू योगेंद्र नाथ म० फ० द० जिला हरदोई मुंफसिले २१ अगस्त सन १९३६ ई०

५— बैल ४ रास
६— गाय २ ,,
७— भैंस १ ,,
८— पलँग १० अदद
९— लहडू १ मंजिल
१०— गाड़ी १ ,,
११— बरतन खाना दारी २०)
१२— बाग़ एक किता वाके मौजा बझापुर प० बंगर ७ बीघा पुख़्ता

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ५ जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

بعدالت اسپشل جج صاحب بہادر سکنڈ گریڈ شاہجہانپور
مقدمہ نمبر ۱۴۵ سنہ ۱۹۳۶ ع
تاریخ پیشی ۲۴ فروری سنہ ۱۹۳۸ ع

۱—اپربل سنگھ ولد رام سنگھ
۲—سری پال سنگھ } نابالغان پسران اپربل سنگھ } اقوام ٹھاکر ساکن موضع چوکی اعظم پور
۳—ششپال سنگھ } بولایت اپربل سنگھ پدر خود } پرگنہ جلال آباد ضلع شاہجہانپور

بنام

جوالا پرشاد

ہرگاہ و جائداد مصرحہ ذیل درخواست کنندہ نے اپنے بیان تحریری میں درخواست قرضہ میں حسب دفعہ ۸ و ۱۰ یو پی ایکٹ ۲۵ سنہ ۳۴ ع میں ظاہر کی ہے لہذا ہر خاص و عام کو اطلاع دیجاتی ہے کہ اگر کسی شخص کو کوئی حق نسبت جایداد مصرحہ ذیل حاصل ہو تو اندر میعاد ۳ ماہ شایع ہونے نوٹس و گورنمینٹ گزٹ کے عدالت ہذا میں پیش کرے—

تفصیل جایداد

نام موضع	نمبر کھاتہ کھیوت	رقبہ	مالگزاری	تعداد حصہ سایلان
			روپیہ آنہ پائی	
موضع چوکی اعظم پور پرگنہ جلال آباد	۱	۱—۲۸	۲۵ ۱	۱۶ حصہ کے ۶ حصہ
,,	۲	۲۵—۱۱	۲۱ ۴	۷۲ حصہ کے ۱۵ حصہ
,,	۷	۸۴—۳	۵ ۱۰	۳۶ حصہ کے ۹ حصہ
,,	۸	۸۵—۳		شاملات حسب حصص
,,	۱۰	۷۸—۵	۸ ۲	کل کھاتہ
,,	۱۴	۶۹—۱۵		شاملات حسب حصص

फ़ार्म नं० ९

ں سر نیه چوکی پورپرگنه جلال اباد	١	٦—٥	٣			کل کا ١/٤
,,	٢	٢—١٧	١			٧٢ حصه کے ٦ حصه
,,	٤	٢—١٨		١٢		منجمله کے ایک ذات
,,	٨	٤—٢٨	١	٨		کل کے نصف
,,	١٤	١٩—٨٤				شاملات حسب حصص
نیاں قاع چوکی پورپرگنه جلال اباد	١٧	٣—١٨	٤	٢		کل کے نصف میں ٢ ذات
,,	١	١١—١٤	١٨	١٣		١٢ حصه کے ٣ حصه
,,	٣	١٣—٧٢				شاملات حسب حصص
,,	٤	١٢—٨٦	١٤	١		٢٤ حصه میں ٤ حصه
,,	٦	١٤—٣٧	١٣	١٥		٣٦ حصه کے ٤ حصه میں ٣ حصه
,,	١٢	٨—٩٢	٨	١٣		کل کھاته
کرتاپور	١	٢٢—٣٦	٤٣	١٢		٢٤٠٠ حصه کے ٨٩١ حصه
,,	١٣	٩٣—٢٩				شاملات حسب حصص
بواده	٢	٤—٦٩	٤	١١		٧٢ حصه کے ١٢ حصه
,,	٦	١٣—١٠	١٤	٤	٣	٢٤ حصه کے ٦ حصه
نرائن پور	١	٢٤—٨٤	٢٢	٨		٤٨ حصه کے ١٢ حصه
,,	١٣	١٥—٥١	١١	٤		کل کھته
,,	١٥	١٨—٥٥				شاملات حسب حصص
,,	١٦	١٣—٥٤				
,,	١٧	١١٣—١٦				
پور محل سویم گنه جلال آباد محال درگاسنگه بھوا تحصیل باله ضلع هردوئی	١	٤٦—٧٣	٥٥			٣٦ حصه میں ٢٤ حصه
,,	,,	٣ بسوه ٨ بسوا نسی ٤ کچھوانسی ٩ ٩/١٧٩ ن	١٠٣	١٠		٤١ حصه کے ٢٣ حصه
,,	١٨	٤ بسوا ٥ بسوا نسی ٢ کچھوانسی ١٥ ١٥٥/١٧٩ ن	٣٤	٥		٥ حصه میں ٤ حصه

جایداد بموجب دفعه ٦٠ ضابطه دیوانی

دو راس بھینس رنگ سیاه قیمت ٨٥ روپیه
چار راس گائے رنگ سیاه ,, ٤٠
دو راس گائے رنگ سرخ ,, ٢٠ روپیه
٣ راس بچھڑه رنگ سفید ,, ٢٥ روپیه

تاریخ ١٧ ماه جنوری سنه ١٩٣٨ ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا —

منصرم

[बदस्त अवाम फ़रोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बहुक्म जनाब बाबू जगवंशकिशोर टंडन साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर
मुक़द्दमा नं० ६०६ सन् १९२६ ई०

हरगाह सय्यद नाज़िरअली वल्द माहिरअली कौम सैयद साकिन थाना भवन ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर
दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा इस तहरीर की रू से इस

ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर खेवट	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा मालगुज़ारी
२५४	मुज़फ़्फ़रनगर	मौ० थाना भवन	मुहाल मज़बत	हस्ब रसद	३ बी० ११ बि०	२॥)
६६	,,	,,	,,	,,	२७ बी० १३ बि०	१८।-)
१०२	,,	,,	,,	निस्फ़ी	८ बी० ४ बि०	१७॥)
२४७	,,	,,	,,	हस्ब रसद	६ बी० ८ बि०	१०॥=)
२३०	,,	,,	,,	,,	६ बी० ६ बि०	२≡)
२३६	,,	,,	,,	४० सहाम	५ बी० १७ बि०	६॥≡)
५२	,,	,,	,,	हस्ब रसद	३१ बी० ६ बि०	४३॥।)
५३	,,	,,	,,	२ हिस्से मिनजुमला ५ हिस्से	२८ बी० ११ बि०	६०≡)
६२	,,	,,	,,	हस्ब रसद	६ बी० ८ बि०	२≡)
६३	,,	,,	,,	,,	३ बी० १२ बि०	५॥=)
१३३	,,	,,	,,	,,	४ बी० ६ बि०	५)
२१	,,	,,	मुहाल ग़ैरदाइमान अज़ ख़ालसा	,,	१ बी० ११ बि०	२॥)
२१७	,,	,,	मुहाल मज़बत	,,	३ बी० ८ बि०	१०-)

मुंसरिम

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ पेशान व इसबात हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई

मुक़दमा नंबरी नंबर ४४३ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी २४—२—१९३८ ई०

१—भवानीसिंह वल्द बलदेवसिंह
२—भजराजसिंह
३—रघुनंदनसिंह } नाबालिग़ान पिसरान भवानीसिंह बविलायत पिदर ख़ुद | ठाकुर साकिन मनवाँ परगना कल्यानमल तहसील संडीला ज़िला हरदोई
क़र्ज़दार सायलान

बनाम

रामलाल वग़ैरा

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि भवानीसिंह वग़ैरा सायलान मज़कूरुलसदर ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा

४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी है कि इस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्त गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिला	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर खेवट व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल काबिज़ विरासत व काबिज़ इंतक़ाल हक़ीयत की तसदीक़	मिसाल हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की डिक्री-
१	हरदोई		मैनगाँव मुहाल बलदेवसिंह खाता खेवट १२ पट्टी बलदेवसिंह		ऽ३:६:१३:६$\frac{२}{३}$ न०	२१७)
२	,,		पकरी दीवान पट्टी मल्लासिंह खाता खेवट ३		ऽ१:१३:६:१३$\frac{१}{८}$ न०	२१॥-)
३	,,		काकूपुर मुहाल आदमपुर खाता खेवट १		,,	१६॥॥=)
४	,,		थाना खाता खेवट १ पट्टी बलदेवसिंह		ऽ४।१२:८$\frac{७}{५}\frac{२}{१६}$ न०	११)
५	,,		कमलापुर पट्टी मल्लासिंह		।ऽ१:१३:६:१३$\frac{१}{३}$ न०	१४८॥)
६	,,		कुसमनखेड़ा खाता खेवट १ पट्टी भोजेसिंह		ऽ१:१३:६:१३$\frac{१}{३}$ न०	२६७)
७	,,		,,		ऽ१:५ जुमला ऽ२:१८:६:१३$\frac{४}{३}$ न०	
८	,,		,,		ऽ३:६:१३:६$\frac{२}{३}$ न०	४८॥)

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१—भैंस एक रास १

२—गाय मै बछड़ा एक रास १

३—घोड़ी खुर्द एक रास १

४—दो किता बागात मै कुआँ मौजा आदमपुर दोनों एक तादादी २०ऽ खाम दूसरा तादादी १ मै दरख़्तान

५—एक किता बाग मै दरख़्तान नं० १९६५ तादादी १९ बिस्वा मौजा मैनगाँव परगना कछियानी

६—एक किता बाग मै दरख़्तान तादादी ऽ४ मौजा मैनगाँव

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २१ दिसंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १६३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुकाम बाराबंकी

मुकद्दमा नंबरी नंबर ६८ सन् १६३६ ई०

तारीख पेशी ३१ मार्च सन् १६३८ ई०

१—राजा श्रीप्रतापबहादुरसिंह वल्द राजा रघुराजबहादुरसिंह } साकिनान इराहा परगना दरियाबाद

२—कुँवर साहब नाबालिग बविलायत राजा श्रीप्रतापबहादुरसिंह } तहसील रामसनेहीघाट

कर्ज़दार सायलान

बनाम

राजा बरखंडी महेशप्रतापनारायणसिंह वग़ैरह

कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि राजा श्रीप्रतापबहादुरसिंह वल्द राजा रघुराजबहादुरसिंह साकिन इराहा ज़िला बाराबंकी की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाबत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस माल-गुज़ारी	कैफियत
१	बाराबंकी	गैरमनकूला	अखा मुहाल इराहा पर० दरियाबाद	मुसल्लम १६ आना मुंदर्जे खा०खे० ०१	आला		
२	"	"	उफरौली "	" " "	"		
३	"	"	कमौली "	" " "	"		
४	"	"	खुरौली "	" " "	"		
५	"	"	पुराखुवा "	" " "	"		
६	"	"	गिदरापुर "	" " "	"		
७	"	"	टिकवामऊ "	" " "	"		
८	"	"	कौंड़ियामऊ "	" " "	"		
९	"	"	हूंकी "	" " "	"		
१०	"	"	नैपुरा "	" " "	"		
११	"	"	बरगौरा "	" " "	"		

१२—	बाराबंकी	गैरमन-कूला	नसिमपुर मु० हड़ाहा	पर० दरियाबाद	मुसल्लम १६ आना मुंदर्ज खा० खे० नं १	आला
१३—	,,	,,	पिपरौली	,,	,, ,, ,,	,,
१४—	,,	,,	पानापुर	,,	,, ,, ,,	,,
१५—	,,	,,	तेलवारी	,,	,, ,, ,,	,,
१६—	,,	,,	परसावल	,,	,, ,, ,,	,,
१७—	,,	,,	बिनौक	,,	,, ,, ,,	,,
१८—	,,	,,	विद्यानगर	,,	,, ,, ,,	,,
१९—	,,	,,	दरौलीभव	र,,	,, ,, ,,	,,
२०—	,,	,,	भसौली	,,	,, ,, ,,	,,
२१—	,,	,,	मरौचा	,,	,, ,, ,,	,,
२२—	,,	,,	रमसहाय	,,	,, ,, ,,	,,
२३—	,,	,,	सिसयोना	,,	,, ,, ,,	,,
२४—	,,	,,	सहरी	,,	,, ,, ,,	,,
२५—	,,	,,	मखलूकापुर	,,	,, ,, ,,	,,
२६—	,,	,,	नवाँ	,,	,, ,, ,,	,,
२७—	,,	,,	सिहोखी	,,	,, ,, ,,	,,
२८—	,,	,,	हड़ाहा	,,	,, ,, ,,	,,
२९—	,,	,,	महमूदाबाद	,,	२६०ऽ हकीयत मुतफ़रिका जमीमा नं १	,,
३०—	,,	,,	मीममऊ मुहाल राजा नरेंद्रबहादुर सिंह	पर० बदोसराय	मुसल्लम मुहाल सोलह आना मुंदर्ज खाता नं० १	,,

फ़र्द (ज, ब)

१—	बाराबंकी	गैरमन-कूला	सराय सुरजन मजरा सनावाँ	पर० दरियाबाद	मुसल्लम १६ आना खा० खे० नं० १	पुख्तेदारी

—	बाराबंकी	गैरमनकूला	महलूचालपुर मु० राजा श्रीप्रतापबहादुरसिंह	हिस्सा ।) मिनजुमला सोलह आना हाल में राजा श्रीप्रतापबहादुरसिंह	साबिक पुख़्तेदारी
—	,,	,,	दुरजनपुर मजरा त्रिधानगर	मुसल्लम मौजा सोलह आना मुंदरजे खा० नं० १	,,
—	,,	,,	सारापुर गुमान मु० हड़ाहा	,,	आला
—	,,	,,	गोबिंदपुर मुहाल सरजूप्रसाद	हिस्सा ॥) मिनजुमला सोलह आना मुंदर्जे खाता नं० १	हक़ मुरतेहनी
—	,,	,,	दरशबेपुर पट्टी नरेंद्रबहादुरसिंह	मुसल्लम मुहाल १६ आना मुंदरजे खा० खेवट नं० १६	आला
—	,,	,,	नेवली पट्टी सतगुरबक्ससिंह परगना दरियाबाद	हिस्सा =)८ मिनजुमला सोलह आना खाता खेवट नं० १	,,
—	,,	,,	महम्मदपुर बाहूँ मु० हड़ाहा प० दरियाबाद	मुसल्लम मुहाल १६ आना खाता खेवट नं० १	,,
—	गोंडा	,,	घरकुइयाँ मु० धनावाँ परगना गवारिच	,,	मालहससारी
—	,,	,,	प्रतापपुर मु० शाहपुर	एकड़ डिसमिल २११-४६ मिनजुमला ४७३-१४ खा० नं० १	आला
—	,,	,,	प्रतापपुर मु० धनावाँ	५८-½ मिनजुमला २८४-६० मुंदरजे खाता खेवट नं० १	,,

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहुस्तिसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ऐक्ट दीवानी सन १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाहत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१—	मनकूला	भैंस २ रास गाय ४ रास कुरसी ८ मेज़ २० मसहरी २ घड़ी बड़ी २ क़ालीन ऊनी १ तख़्त २ उगालदान २ क़ालीन सूती ६	

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार कुनिंदा अलावा इस जायदाद के जो सायल ने खुद किया है, हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की सूरत क़िस्म काबिज़ नियाबत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
१—	बाराबंकी	गैरमनकूला	महमूदाबाद परगना दरियाबाद	आला	२०० बीघा हकीयत मुतफर्रिका		जमीमा नं खाता नं
२—	,,	,,	खोखरपुर मजरे महमूदाबाद परगना दरियाबाद	,,	मुसल्लम मौज़ा		
३—	गोंडा	,,	घरकुइयाँ परगना ग्वारिच तहसील तरफगंज	,,	,,		
४—	,,	,,	प्रतापपुर परगना ग्वारिच मज़कूर मुहाल शाहपुर	,,	हिस्सा २११ एकड़ ४६ डिसमिल मिनजुमला ४७३ एकड़ १४ डिसमिल		खाता नं० १
५—	,,	,,	,,	,,	२६० बी० १४ बि० १६ बि० हकीयत मुतफर्रिका		

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा १० दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

१—आराजी मौसूमा अस्तबल वाके ख्यालीगंज शहर लखनऊ महदूदा पूरब मकान शेख महम्मद काज़ि आगाखाँ, पश्चिम छुटीलाल बनिया व कुंदनलाल, उत्तर सड़क ख्यालीगंज, दक्खिन ज़मीन उफतादा चौधरी

२—जायदाद मनकूला मुफस्सिले जल

भैंस गाय हाथी ऊँट घोड़ा बैल भैंसा बछड़ा बकरी जमनापारी बकरा सांड़
१६ २० १ १ १ ११ ४ १० १० १
कौंच चारपाई पलँग नेवाड़ कालीन ऊनी तख्त चौकी मेज़ें कालीन सूती जाजिम शामियाना
६ ३० ८ १० ४ २० २० २०
शीशा छोलदारी कनात मसनद तकिया उगालदान फूल चौगड़ा गंगाजमुनी गुलाबपाश
१ ३ ५ १ ३ १० १
इत्रदान गंगाजमुनी पानदान गंगाजमुनी तश्तरी गंगाजमुनी पिचकारी चाँदी कटोरी चाँदी उगालदान
१ ४ २ १ १

ी चांदी कटोरा चांदी गिलास चांदी लोटा चांदी फ़र्शी मय चिलम चांदी मोटरगाड़ी
३ १२ ५ ४ १ ३
ड़ा पुल्का साइकिल मोटरकार हंडा घड़ी क्लाक रिस्टवाच घंटा बंदूक रिवाल्वर कलम संगीन
१ १ २ २ २ ४ २ १ १० २ १० १
न मय मशीन शकर मशीन आटा मशीन धान कूटने की मशीन कटिया काटने की मशीन पानी की
१ १ १ १ १
शीन रोशनी की चना अरहर उर्द सार्सों शकर शीरा संदूक लोहा जाल मछली घड़ी
१ १००) ५०) ५०) ८०) १६००) ५०) २ २ ३
ी कली रेडियो सेट ग्रामोफोन रहट टंका पानी पट मम्प लालटेन गैस इंजन बिजुली पंखा पंखा मेज
७ १ ४ १० ६ २ १० ४०
हूँ चावल
०) १५०)

हक मुर्तहनी रेहननामा नविश्ते चौधरी हरनामसिंह वल्द चौधरी शिवरतनसिंह साकिन गनेशपुर बहक श्रीमती रानी सरताजकुँवरि औजे राजा श्रीप्रतापसिंह साहब तादादी ३५२००) मुवर्रिखे व मुवहक २२ सितम्बर ई०

रानी सरताजकुँवरि का नाम महज फ़र्ज़ी है, दरहकीकत मुर्तहनी राजा श्रीप्रतापसिंह साहब हैं।

मुंसरिम

[काबिल फ़ोकस

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २ सन् १९३४ ई०)

बअदालत ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ८२ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी २१ मार्च सन् १९३८ ई०

१—हरदामकुमार नाबालिग वल्द राजकुमार बविलायत मुसम्मात हररई मादर हक़ीक़ी खुद क़ौम खत्री साकिन बजाजगंज शहर लखनऊ

२—प्रेमकुमार वल्द बिहारीलाल क़ौम खत्री साकिन बजीरगंज शहर लखनऊ

३—जवाहिरलाल बविलायत मुसम्मात ठकुराइन वल्द बाबू बिहारीलाल क़ौम खत्री साकिन बजीरगंज शहर लखनऊ

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

लाला गिरधारीलाल वग़ैरह

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

नाम क़र्ज़ख़्वाहान हस्ब ज़ैल हैं

१—लाला गिरधारीलाल } पिसरान मदनमोहनलाल क़ौम रस्तोगी साकिनान रस्तोगी टोला
२—लाला दामोदरदास } शहर लखनऊ

३—महाराज ठाकुर राधाकृष्णजी स्थापित ठाकुरद्वारा के बाज़ार [illegible] शहर लखनऊ

४—बाबू गंगादयाल वल्द बाबू हरदयाल ऐडवोकेट साकिन [illegible] शहर लखनऊ

५—बाबू प्रभूदयाल साहब ऐडवोकेट वल्द बाबू मदनमोहनलाल रस्तोगी साकिन रस्तोगी टोला शहर लखनऊ

६—लाला जुगलकिशोर वल्द लाला मूलचंद रस्तोगी साकिन बाग़ मक्का शहर लखनऊ

७—लाला गौरीशंकर वल्द सीताराम क़ौम रस्तोगी साकिन [illegible] शहर लखनऊ

८—सरकार कंपनी बाके कैसरबाग़ शहर लखनऊ

९—[illegible] नाबालिग वल्द गंगाप्रसाद बविलायत श्रीकृष्ण चचा हक़ीक़ी खुद

१०—[illegible] वल्द दुल्लीराम क़ौम कुर्मी साकिन [illegible] तहसील व ज़िला लखनऊ

चूंकि हरदामकुमार वल्द राजकुमार वग़ैरह साकिन बजीरगंज ज़िला शहर लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, जिसका हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी

फ़ार्म नं० ०

जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयु गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने हुक़ूक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपना पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख्वाह

तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बन्दोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुतअल्लिक़ा क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हकीयत की तफ़सील	तमामत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	पट्टी बाबू प्यारेलाल	मौज़ा रसूलपुर सादात परगना महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ	हिस्सा ज़मींदारी ॥=) १ पाई १५ किरांत	मुसल्लम पट्टी ॥=) १ पाई १५ किरांत	१५७२॥) मालगुज़ारी १५०।) रकम सिवाय १७२२॥।) मीज़ान रकम	
२	,,	मुहाल बाबू प्यारेलाल	मौज़ा अमराई गांव परगना व तहसील ज़िला लखनऊ	हिस्सा ज़मींदारी ।−) १० पाई १४ किरांत	मुसल्लम पट्टी	१०२६॥≈) मालगुज़ारी १०२१≡) रकम सिवाय ११२४॥−) मीज़ान	
३	,,	मुहाल अमजदअली पट्टी अहमद बख्श नं० २	,,	मातहतदारी खाता नं० ४ मुंफसला जैल नंबरान खेत ३४७०८ब=४बि० ४८६ ब=७बि० ८८२म=१४बि० १३३१=१६बि०	,,	३≡) मालगुज़ारी	
,,	,,	मुहाल अमजदअली पट्टी मुसम्मात जमारतुन्निसा नंबर १२	,,	मातहतदारी खाता नं० १२ मुफसले जैल नं० खेत ७६३ अ २ बिस्वा	,,	बिला लगानी	
,,	,,	मुहाल अमजदअली पट्टी रौनकअली नं० १४	,,	मातहतदारी मुंफसले जैल खाता नं० १४ नं० ४७८ ओम = ५ बिस्वा	,,	,,	

२ लखनऊ मुहाल मौजा अमराईगाँव प० मातहतदारी मुसम्मम पट्टी बिला लगानी
व त० व जिला लखनऊ अमजदअली खाता नं० २०
पट्टी सज्जाद- मुंफ़पला खेत नं०
हुसैन नं० २० ७६१ ब=२बि०
„ „ मुहाल अमजद- „ मातहतदारी „ „
अली पट्टी खाता नं० २५
महमूदउल- ७६२ज = ३ बि०
निसा नं० २५

„ मुहाल मौजा अमराई मातहतदारी „ „
गजाधरप्रसाद गाँव परगना खाता नं० १
महोना तहसील खेत नं० ७८३
व जि० लखनऊ = १३ बि०

४ „ मुहाल मौजा रसूलपुर मातहतदारी निस्फ़ हक़दारी लगानी २॥)
ज़ुल्फ़िक़ार- सादात परगना खाता नं० ८ रेहन खेत
अली महोना तहसील खेत नं० ५१० प = ५बि०५बि० नंबरी व
मलिहाबाद ११२४प= मिल्कियत
जिला लखनऊ ११ बि० हक़दारी निस्फ़ी
१० बिस्वांसी

५ „ मुहाल मौजा अमराई- मातहतदारी
प्यारेलाल गाँव परगना हुक़ूक़ मुर्तहनी
व तहसील खेतों में नं०
जिला लखनऊ २५३ व ५२५
व ६७४ व ११७६
व ६३२ व
६२१ व ६२६
फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहैसियत हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ऐक्ट दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	तादाद हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	एक किता मकान कच्चा व पुख्ता दो मंजिला ५ कताआत मकानात पुख्ता दो मंजिला आराज़ी वाके मुहल्ला फ़क़ीरगंज थाना फ़क़ीरगंज शहर लखनऊ		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ८ नवंबर सन् १९२७ ई० जारी हुआ।

मुंसिफ़

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत
बहुक्म जनाब बाबू हरिशंकर विद्यार्थी साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा अव्वल सहारनपुर
मुक़द्दमा नंबर २६ सन् १९३५ ई०

मदनमोहनलाल पिसर मुनवला ब्रजभूषन व ब्राह्मण मु० घमीटी दुख्तर रामजीदास साकिन
ज़िला सहारनपुर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा हुक्म तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िमन १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती
जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किये हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८
ने हस्ब दफ़ा १० मायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह तारीख़ मुश्तहरी से जो इस
के संयुक्त प्रांतीय के गज़ट में छपने की तारीख़ है, ३ मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम
अपना अर्ज़ी पेश करे, जिसके नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतकाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की
			ममलूका पं० मदनमोहनलाल			
१	सहारनपुर	सहराई	हिराहेरी खे०(१) मुहाल उमर दराज	½	½ मय १४२॥)	
२	,,	,,	,, ,, खे० (२) मुहाल असगर	,,	,, मय ३॥)२	
३	,,	,,	घाना खंडमुहाल इसमाइल ख० ½	४८॥)४	४८॥)४	
४	,,	,,	,, ,, ,, असगर ख० (२)	½	½ मय ११)४	
५	,,	,,	,, ,, ,, शरीफ ख०(१)	२१)१-२	२१)१-२ मय १०८॥)२	
६	,,	,,	चक बोदकी ख० (४)	२॥)१-२-६	२॥)२-१-६ मय १७॥)	
७	,,	,,	,, ,, ,, ख० (१८)	½	½ मय २॥)१	
८	,,	,,	बोदकी ख० (१) मुहाल फतेमोहम्मद	४)	४) मय ६४)१	
९	,,	,,	,, ,, ख० (४)	४॥)१	४॥)१	
१०	,,	,,	खदवा मुहाल गैरधाई ख० (१)	२	½ मय ६)२-१२	

११	सहारनपुर	सहराई	चाँदुरपुर ख० (१)	८८)२	८८)२
१२	,,	,,	मोहम्मदपुर कुम-हारा ख० (२)	७१२॥)४	७१२॥)४
			ममलूका मु० घसीटी		
	,,	,,	शिकारी ख० (१) मुहाल उमर दराज	½	½ मय १४२॥)
	,,	,,	घानाखेड़ा ख० (१)	२१)१-२	२१)१-२ मय १०८॥)३
	,,	,,	चकबोद की ख० (१८)	½	½ मय २॥)१
	,,	,,	लडवा ख० (१) मुहाल गैरदाई	½	½ मय ६१)२-१२

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क और नीलाम हो सकता है।

जायदाद मिलकियत मदनमोहनलाल

१—मकान वाके हरद्वार मुहल्ला माईपोता जो लीज़ पर लेकर तामीर किया है
२—निस्फ बँगला सिविल लाइन सहारनपुर नं० ७१, ५७
३—मकान सकनाई मुहल्ला चौंताला सहारनपुर
४—⅓ हिस्सा अज राइस मिल सहारनपुर
५—¼ हिस्सा अज बर्मा शेल कंपनी सहारनपुर

६—डिगरी ख० स० जज सहारनपुर	३२/१६८	ब० मेवाराम बनाम वलीमोहम्मद ७६)
७—,, ,, ,, ,,	२६/२४५०	,, ,, ,, मजराबहादुर ४४६)
,, ,, ,, ,,	६०/७००	,, ,, ,, सदीकहसन ६२॥)
,, ,, ,, ,,	३०/६६२	,, ,, ,, अमरसिंह ६१२॥)
,, स० जज अव्वल सहारनपुर	२७/१२७	,, ,, ,, जियालाल ६२४६।)।
,, ख० स० जज सहारनपुर	३२/७७२	ब्रजभूषणलाल ,, मंजूरहसन ६०६८)
,, मुं० शहर सहारनपुर	३१/१०८	ब० मेवाराम बनाम वीरेंद्रबिहारी गोयल ६२०॥।)॥
,, ,, ,,	२५/११८०	,, ,, ,, रूपचंद १६७)
,, ,, ,,	२५/११८६	,, ,, ,, जे० एम० डे ६१)
,, १६२७ एस० डी० ओ० सहारनपुर १६२७		,, ,, ,, हनीफ ३६०)
,, तहसीलदार सहारनपुर		,, ,, ,, यूसुफ ६)
,, कुँवर दामोदरलाल सहारनपुर		,, ,, ,, मेहर १२०)
,, गंगाप्रसाद सहारनपुर		,, ,, ,, १६००)

ठेका मुकदमा मदनमोहनलाल बनाम रामस्वरूप जिसकी अपील हो रही है १०००)

जायदाद जिसकी मालिक घसीटी है

डिगर मु० शहर सहारनपुर	२७/२८१	घसीटी बनाम मुल्लासिंह	२११)
,, खफीफ़ा सहारनपुर	३२/५६	,, ,, मोहरसिंह	१०४)
½ हिस्सा ,, एस० डी० ओ० सहारनपुर	१६३४	ब० मेलाराम बनाम शरीफ	१२०)
,, ,, तहसीलदार सहारनपुर	×	,, ,, ,, यूसुफ	६)
,, ,, कुँवर दामोदरलाल सहारनपुर	×	,, ,, ,, ज़हूर	१२०)
,, ,, गंगाप्रसाद सहारनपुर	×	,, ,, ,, ,,	१३००)

,, बँगला सिविल लाइन सहारनपुर नं० ७१, ५१ रुक्का इक़रारी करतारसिंह मौसूमा घसीटी तादादी
भगत नरास कंपनी लिमिटेड बैंक सहारनपुर क़र्ज़ख्वाह ने अपने बयान तहरीरी में जायदाद ज़ेल को मा
की बताते हैं—

(१) जायदाद रसी कैश (२) रुक्का इक़रारी करमचंद मौसुमे मुसम्मात घसीटी वगैरह (
दस्तावेज़ इकरारा पं० जगन्नाथ मासुमे मु० घसीटी मुंसि

[बहदूत अयाम फ़राख्त के लिये

नमूना नं० १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब मिस्टर हरीशंकर विद्यार्थी साहब बहादुर स्पेशल जज दरजा अव्वल सहारनपुर

मुकद्दमा नं० ७ सन् १९३७ ई०

हरगाह हाफ़िज़ मुहम्मदइसहाक़ वल्द मु० निसारअली साकिन मौज़ा मंडी शोपुरी सहारनपुर ज़िला सहा ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है,

लिहाजा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि जाय दाद को, जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के गज़ छपने की तारीख से तीन माह के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपना अर्ज़ी पेश जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्जदार के हक मालिकाना अराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम तहसील	मौज़ा मय नंबर खेवट व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुतअल्लिक़ा व क़ाबिज़ मिलकियत और क़ाबिज़ [illegible] कीमत का रक़बा	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का किस्म जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की
१	२	३	४	५	६	७
१	सहारनपुर	सदराई	खेवट नं० ५/६	४० बीघा १६ बिस्वा १६ बिस्वांसी	पुख्ता मालकी	(६
२	,,	,,	खेवट नं० ४/५	१० बिस्वा	,,	×
३	,,	,,	,, ,, ५/१	२ बीघा १८ बिस्वा ७ बिस्वांसी	,,	

४	सहारनपुर	सहराई	खेवट नं०	५/४	१ बिस्वा	इरफ़क मालक्राइयान बाकै मौज़ा सुनैटी गाड़ा प० सहारनपुर	×
५	"	"	" "	५३	३३ बीघा १५ बिस्वा १५ बिस्वांसी	पुख्ता आराज़ी हिस्सा रसदी यक इक्के मुश्तर्की	१८॥~)
६	"	"	" "	५१	१३ बिस्वा	पुख्ता आराज़ी	॥≡)
७	"	"	" "	५०	२० बीघा १७ बिस्वा १५ बिस्वांसी	"	१०॥≡)
८	"	"	" "	१७	६१ बीघा ४ बिस्वा १५ बिस्वांसी	"	६१॥≤)
९	"	"	" "	१०	१२ बिस्वा	"	×
१०	"	"	" "	१५	२१ बीघा १ बिस्वा १७ बिस्वांसी	बाकै मौ० सुनैटी गाड़ा परगना सहारनपुर	३१)
११	"	"	" "	१/३	६० बीघा २ बिस्वा ३ बिस्वांसी	बाकै मुहम्मदपुर-महमोद पुर पख्ता आराज़ी	१२१)
१२	"	"	" "	१/६	१ बीघा ३ बिस्वा	" "	×
१३	"	"	" "	२	५१ बीघा ४ बिस्वा	हिस्सा रसीदी " मौ० मंगलपुर	२७) मोट बक़दरे हिस्सा मालगुज़ारी माफ़
१४	"	"	" "	१	७६५ बीघा १७ बिस्वा ११ बिस्वांसी	बाकै मौ० शेरपुर " खानाआबाद व परगना मुज़फ़्फ़राबाद	७२५॥~) ७ पाई
१५	"	"	" "	२/१	२३ बीघा ५ बिस्वा ११ बिस्वांसी	हिस्सा रसदी मौ० " करौंदी प० सहारनपुर	३३॥≡)१
१६	"	"	" "	१५०/१	३ बीघा १६ बिस्वा १६ बिस्वांसी	बाकै दरे कोटला " सवार सहारनपुर	६≈)८ पाई
१७	"	"	" "	६५	५ बीघा १६ बिस्वा	" " "	२२)
१८	"	"	" "	३८०/१	१४ बिस्वा १० बि०	बाकै दरे माजी " सवाद सहारनपुर	२≈)४ पाई
१९	"	"	" "	११/१	२ बीघा ७ बिस्वा १४ बिस्वांसी	" "	८)
२०	"	"	" "	४०४	१बीघा २ बि० ११ बि०	" "	८७~)४
२१	"	"	" "	३७५/१	४ बीघा ६ बिस्वा	" "	१६~)
२२	"	"	" "	४३०	२ बीघा १४ बिस्वा	" "	१२०)
२३	"	"	" "	७३	२ बीघा १४ बिस्वा	बाकै दरा शेरपुरी " मवाद सहारनपुर	२॥≈)३
२४	"	"	" "	६३	६ बीघा ८ बिस्वा	हिस्सा रसीदी "	१२॥≈)
२५	"	"	" "	६५	१ बीघा ३ बिस्वा	" "	×
२६	"	"	" "	६६	१८ बिस्वा	" "	×

(१) एक हिस्सा मिनजुमला ३ हिस्से व १७ मिहाम मिन० ४८ मिहाम व १ मुकाम मकान मसकूना पुख्ता दोमंज़िला तामीर पुख्ता मज़दूरा जैन बाके मुहल्ला खोपुरी मंडी शहर की वाकिफ़ बाहदू मकान नानू धोबी व बाहद मकान कुआ, शर्की कूचा खास व बाद मकान मकमबास मदेसा खातून व हबीब कोठार, शुमाली एक मकान मसकूना ममलूका मो० अहमदइसहाक व मोहम्मदअहमद वगैरा, जनूबी मकान मुतहदमा ममलूका मोहम्मदइसहाक वा मोहम्मदअहमद

(२) एक हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ एक कोठी नशिस्तगाह दोमंजिला मै बहलख़ाना
व दुकानात वाक़े शोपुरी मंडी

शरक़ी मकान अब्दुलरहमान व बाद मकान फ़ैज़मोहम्मदख़ाँ, ग़रबी मसजिद, शुमाली मकान मुनहदमा
लूका मोहम्मदइसहाक़ वा मोहम्मदअहमद वग़ैरा, जनूबी सड़क सरकारी

(३) १ हिस्सा मिनजुमला २ हिस्सेदार मवेशियान एकमंजिला तामीर पुख़्ता महदूदा जैल वाक़े शोपुरी

शरक़ी रास्ता आमद-बरामद व बाद मकान ममलूका मोहम्मदइसहाक़ व मोहम्मदअहमद वग़ैरा,
कूचा नाक़िज़ा मोहल्ला ख़ाकरोबान, शुमाली सड़क सरकारी, जनूबी मकान ख़ाकरोबान व बाद मकान
कमबोह

(४) एक हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ मकान एकमंजिला तामीर पुख़्ता ज़ेर कोठी जनूबरुया
वाक़े ज़ैल शोपुरी मंडी

शरक़ी मकान अब्दुलरहमान व बाद मकान फ़ैज़मोहम्मदख़ाँ, ग़रबी मकान मुनहदमा ममलूका
इसहाक़ वा मोहम्मदअहमद, शुमाली मकान नानू धोबी, जनूबी सड़क सरकारी

(५) एक हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ मकान एकमंजिला, मसकूना मुनहदमा ग़र्बरुया
वाक़े जैल शोपुरी मंडी

शरक़ी मकान ज़ेर कोठी ममलूका ख़ुद व मालिकान व बाद मकान नान्हू धोबी, ग़रबी चौक व कूचा
बरामद, शुमाली मकान ममलूका मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा, जनूबी कोठी ममलूका मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा

(६) एक हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ एक मकान एकमंजिला तामीर पुख़्ता अक़ब मसजिद
रुया महदूदा जैल वाक़े शोपुरी मंडी

शरक़ी पुश्त मसजिद, ग़रबी मकान मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा तामीर ख़ाम, शुमाली कूचा आमद-
जनूबी सड़क सरकारी

(७) एक हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ एक मकान एकमंजिला तामीर ख़ाम शुमालरुया महदूदा
वाक़े शोपुरी मंडी

शरक़ी मकान मालिकान तामीर पुख़्ता, ग़रबी मकान मुनहदमा तामीर ख़ाम ममलूका
मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा, शुमाली मकान मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा, जनूबी सड़क सरकारी

(८) एक हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ एक मकान मुनहदमा तामीर ख़ाम ग़र्बरुया महदूदा
वाक़े शोपुरी मंडी

शरक़ी मकान मालिकान तामीर ख़ाम नं० (७), ग़रबी आराज़ी ताल ममलूका मोहम्मदइसहाक़
मोहम्मदअहमद वग़ैरा, शुमाली मकान तामीर पुख़्ता ममलूका मालिकान मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा, जनूबी
सरकारी

(९) एक हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ मकान शर्क़रुया तामीर पुख़्ता महदूदा जैल वाक़े शोपुरी

शरक़ी कूचा आमद-बरामद, ग़रबी आराज़ी ताल ममलूका मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा, शुमाली मकान
मालिकान तामीर पुख़्ता, जनूबी मकान तामीर ख़ाम नं० (७) ममलूका मालिकान मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा

(१०) १ हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ मकान एकमंजिला तामीर पुख़्ता शर्क़रुया महदूदा
वाक़े शोपुरी मंडी

शरक़ी कूचा आमद-बरामद, ग़रबी आराज़ी ताल ममलूका मालिकान मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा,
मकान ममलूका बाबू अफ़ज़ालुलहक़ मुख़्तार, जनूबी मकान पुख़्ता ममलूका मोहम्मदइसहाक़ वग़ैरा नं०

(११) शरक़ी १ हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ एकमंजिला मकान तामीर पुख़्ता
महदूदा जैल वाक़े शोपुरी मंडी

शरक़ी मकान बनवारीलाल व बाद मकान गुरुद्वारा, ग़रबी घेर मवेशियान ममलूका मोहम्मदइसहाक़
शुमाली कूचा आमद-बरामद, जनूबी मकान धूमी वग़ैरा

(१२) १ हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ एक मकान तामीर ख़ाम ग़र्बरुया महदूदा
शोपुरी मंडी

शरक़ी मकान गुरुद्वारा, ग़रबी कूचा आमद-बरामद, शुमाली मकान इलाहीबख़्श वग़ैरा,
ममलूका मालिकान नं० (९)

(१३) १ हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज़ एकमंजिला मकान दोमंजिला मै दुकानात व
तामीर पुख़्ता ग़र्बरुया वाक़े कोह मसूरी बाज़ार कंधौर महदूदा जैल

शरकी सड़क सरकारी गरबी सड़क सरकारी शुमाली मकान शेख खलीलअहमद जनूबी मकान शेख खलीलअहमद

(१४) १ हिस्सा मिनजुमला २ हिस्से अज एकमंजिला मकान दोमंजिला मय दूकानात व बालाखाना तामीर पुख्ता शुमालरुया व मस्जिद, वाके कोट मंसूरी बाजार लखौर

शरकी रास्ता आमद-बरआमद व बाद मकान लाला भगवानदास, गरबी मकान वारस जरगर, शुमाली सड़क सरकारी, जनूबी सड़क सरकारी

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

मोहम्मदयासीन कर्ज़ख्वाह ने अपने बयान तहरीरी में हस्ब दफा १० में जायदाद मुंदर्जा जैल को मिल्कियत सायल जाहिर किया है।

गाय २ भैंस २ घोड़ी १ बैल १ तांगा तकरीबन १०-१२ बैल काश्तकारी मालियती तकरीबन ४८०) एक मकान पुख्ता व खाम जो बतौर डेरा के मौजा शेरपुर-खानाजादपुर परगना मुज़फ़्फ़राबाद में वाके है, जो मालियती तकरीबन दो हज़ार रुपए है, नीज़ खेवट १५० व १९५ वाके दरा कंटसला सवाद मो० सहारनपुर में है, उसमें दो बाग़ हैं, जो मालियती तकरीबन २०००)

मुसम्मात चंदाकुँवरि व मुंशी अहसानखाँ कर्ज़ख्वाह ने बयान तहरीरी हस्ब दफा १० में जायदाद मुंदर्जा जैल को मिल्कियती सायल जाहिर किया है—

(अ) (१) बाग दरा कंटताला सवाद सहारनपुर

(२) निस्फी हिस्सा जनूबरुया वाके मोहल्ला शाह विलायत। इस जायदाद को सायल बाद निफ़ाज़ इनकमबर्ड स्टेट ऐक्ट के बज़रिए बैनामा मुवर्रिखा १९ जून सन् ३५ बदस्त मुसम्मात रईसाखातून बिंत मोहम्मद हनीफ़ ज़ौजा मोहम्मदआशिक साकिनान सहारनपुर प्राप्त कर ली है और बैनामा कल अदम व नाजायज़ है और यह जायदाद सायल की मुतसव्विर होनी चाहिए।

(ब) मकान रिहायशी सायल बहुत बड़ी मालियत का है और उसमें बहुत-से कमरे वगैरा हैं, जो सायल की रिहायश से बहुत ज़्यादा है और बाहर के हिस्से बहुत-सी दुकानात व मकानात व बहलखाना व नशिस्तगाह वगैरा बने हुए हैं, जो रिहायशी मकान से बिलकुल अलग हैं। सायल का बयान कि यह नीलाम न होने चाहिए, बिलकुल गलत है। इसी तरह से दूसरे मकानात की निस्बत सायल का बयान कि वह नीलाम न होने चाहिए, बिलकुल गलत है। कुल मकानात यानी जायदाद सकनाई मजहरा सायल क़ाबिल नीलाम है।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इश्तिहार हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बाबू गुलाबचंद्र श्रीमाल स्पेशल जज साहब बहादुर रायबरेली दरजा अव्वल मुकाम रायबरेली

तारीख पेशी १४ एप्रिल, १९३८ ई०

मुकद्दमा नंबरी नंबर २५ सन् १९३६ ई०

बद्रीनाथ पांडे वल्द अजोध्याप्रसाद पांडे साकिन सिविल लाइन शहर रायबरेली — कर्ज़दार सायल

बनाम

मास्टर गुरनामसिंह वगैरा ८ नफ़र — कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि बद्रीनाथ पांडे वल्द अजोध्याप्रसाद पांडे साकिन सिविल लाइन ज़िला रायबरेली ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफा ८ या फ़रीकसानी ने हस्ब दफा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से २ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ार्म नं० ८

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्त प्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दस्तावेज़देहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसाप्रत हकीयत दस्तावेज़देहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दस्तावेज़देहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
१	रायबरेली	हक पुख्तादारी	मौजा सनई मुहाल बैजनाथ पांडे परगना व जिला रायबरेली	काबिल वरासत व काबिल इंतकाल	खेवट मातहती १६ आना मुसल्लम	१६८१॥≡)	लगान माता
२	,,	,,	मौजा सनई मुहाल किशुनसिंह परगना व जिला रायबरेली	,,	।-) १० पा० ५ किरांट १ जौ २$\frac{13}{16}$ तिल	१२६११)	लगान माता हिस्सा सा अलहिदा त खीय नहीं व शराकत हिस्सेदारान मुस्तर्कन मुनफर्दन जि दार हैं
३	,,	,,	मौजा सनई मुहाल दसई परगना व जिला रायबरेली	,,	=) १ पा० १२ किरांट	३१)	
४	,,	,,	असईपुर परगना सलोन मुहाल विशुनाथकुँवर	,,	।≡) ८ पाई १२ किरांट ७ जौ २ तिल	११८≈)	
५	,,	,,	बछरवारा परगना रायबरेली	,,	५८५७.२	४७।≡)	
६	रायबरेली	हक पुख्तादारी	कर्धनामऊ परगना रायबरेली	काबिल वरासत व काबिल इंतकाल	८५१६	२१।)	
७	,,	मातहती	मौजा सनई मुहाल किशुनसिंह परगना रायबरेली	नाकाबिल इंतकाल	=) ११ पाई १७ किरांट ५ जौ २$\frac{1}{4}$ तिल	१२६११)	लगान माता
८	,,	,,	मौजा सनई मुहाल दसई परगना व जिला रायबरेली	,,	।-) १० पाई ८ किरांट		

९	रायबरेली	बागात	मौजा जरैला परगना रायबरेली	,,	≡)० पाई ५ किराट	८२।=)॥	१०१॥-)
१०	,,	,,	मौजा बघई परगना रायबरेली	,,	≡)७ पाई ५ किराट	१२६-) ११ पाई	
११	,,	,,	मौजा तुराबनगर परगना व तहसील रायबरेली	,,	≡) १० पाई ५ किराट	३४॥=)।	
१२	,,	,,	मौजा थरैया बदरावाँ परगना व तहसील व जिला रायबरेली	,,	मुसल्लम १६ आ०	११६१।=)॥	
१३	,,	,,	मौजा सनई परगना रायबरेली मुहाल बैजनाथ पांडे	,,			
	,,	,,	१२७ ऽ१३	,,			
	,,	,,	५४३ १ऽ४.१८	,,			
	,,	,,	५७२ अलिफ़ऽ१९.९	,,			
	,,	,,	५७४ ऽ५.८	,,			
	,,	,,	५७५ १ऽ१.१७	,,			
	,,	,,	५७८ ऽ११.१७	,,			
	,,	,,	५९५ ऽ४.६	,,			
	,,	,,	५९६ १ऽ१९.९	,,			
	,,	,,	५९८ ऽ१८.८	,,			
	,,	,,	६१५ ऽ६.१०	,,			
	,,	,,	६१९ ऽ८.११	,,			
	,,	,,	६३० ऽ३.१८	,,			
	,,	,,	६४४ ऽ१९.४	,,			
	,,	,,	९५३ ऽ१५.१८	,,			
	,,	,,	११०३ ऽ१५.१३	,,			
	,,	,,	१२०४ ऽ७.१३	,,			
	,,	,,	१२१२ ऽ७.१६	,,			
	,,	,,	१९१९ १ऽ१.१२	,,			
	,,	,,	१२२० व ऽ१९	,,			
	,,	,,	१२२३ व ऽ६.३	,,			
	,,	,,	१२२५ १ऽ७.१०	,,			
	,,	,,	१२२७ ऽ५.१२	,,			
	,,	,,	१२३३ १ऽ१४.१७	,,			
	,,	,,	१२४० ऽ१४.८	,,			
	,,	,,	१२७३ ऽ९.४	,,			
	,,	,,	१२७६ ऽ१२.८	,,	सेवट मालहवी १६ आना मुसल्लम		बगाय मवासी
	,,	,,	१२७८ १ऽ१०.९	,,			
	,,	,,	१२८६ ऽ४.१५	,,			
	,,	,,	१२९२ ऽ१९.३	,,			
	,,	,,	१२९५अ १ऽ५.९	,,			
	,,	,,	१३१४ ऽ१७	,,			
	,,	,,	१३८९ ऽ१९	,,			

,,	,,	१४८१	१ऽ१७.३	,,
,,	,,	१५८९	ऽ२.१२	,,
,,	,,	१५५२	ऽ३	,,
,,	,,	१८३८	ऽ९.७	,,
,,	,,	२१०५	ऽ१६.१६	,,
,,	,,	२१३९	ऽ७.१६	,,
,,	,,	२१२४	१ऽ	,,
,,	,,	२१४७	ऽ१२.१९	,,
,,	,,	२१९३	ऽ१६.१२	,,
		२७ किता	२१ऽ१२.५	
१४ ,,	,,	मौ० सुलतानपुर अइया परगना रायबरेली		
१५ ,,	,,	मौजा मधपुरी परगना रायबरेली		

फ़ेहरिस्त (बे) क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहुस्तसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुन्दर्जिक़ आराज़ी हस्ब ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकता है—

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत	
१	बँगला नं० २१५३	४ऽ७.१८ लगानी १०)॥	वाक़े सिविल लाइन रायबरेली	जरिए रेहननामा मि कब्ज़ा मुवर्रिख़े १७ सन् ३३ बहक़ गं प्रसाद रेहन है
			,,	
२	,, नं० २१६४	२ऽ१३.१० १४॥=)॥	वाक़े सिविल लाइन रायबरेली	
३	,,	५ऽ.१० ख़िलालगान	चाह पुख़्ता मय हक़ आबपाशी	
४	,, नं० २१८६	५ऽ५.१६ लगानी १५) ४ पाई	वाक़े सिविल लाइन रायबरेली	
५	मकान मय अहाता १६२६	ऽ३.१०	मकानात मय चक अख़्तयारपुर परगना व ज़िला रायबरेली	जरिए रेहननामा मि कब्ज़ा मुवर्रिख़े ८ मि सन् ३३ बहक़ मा गुरनामसिंह
६	,, मय चाह पुख़्ता १६२७	ऽ१७		
७	,, १६२८	ऽ४		
८	,, १६२९	ऽ१३.१९		
९	,, १६२५	ऽ१९		
१०	मकान दो मंज़िला १२८ ,, मिनजुमला ११० ,, २०५ ,, २०६ ,, २०७ ,, २०८ ,, २१५	ऽ१९.१	नं० बंदोबस्त सोयम हाल ख़सरा किस्तवार व नंबर साबिक़ बंदोबस्त सोयम वाक़े चक अख़्तयारपुर परगना व ज़िला रायबरेली	जरिए रेहननामा मि कब्ज़ा मुवर्रिख़े १ जनवरी सन् ३१ हक़ मुसम्मात
११	घोड़ा	१ रास		
१२	घोड़ी	१ रास		
१३	भैंस	२ रास		
१४	कुर्सी	१		
१५	गाड़ी घोड़ी शिकस्ता	१		
१६	ताँगा शिकस्ता	१		

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १६ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

इश्तिहारनामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन १९३४ ई०) [क़ाबिल फ़राफ़्त

बअदालत जनाब सैयद अख्तरहसन स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम रायबरेली
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ४३ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १६ मई सन् १९३८ ई०
ला० लछमनप्रसाद वग़ैरा क़ौम रस्तोगी सा० क़सबा सलोन ज़िला रायबरेली क़र्ज़दार सायल

बनाम

रामनाथसिंह व महेशसिंह क़ौम ठाकुर सा० मौ० सिधौर परगना डलमऊ ज़िला रायबरेली क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि ला० लछमनप्रसाद वग़ैरा साकिन क़सबा सलोन ज़िला रायबरेली ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर हल्के बस्त व मुहाल	दरख्वास्त दिहंदा की मुत्तफ़िक़ा क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तफ़सील	बक़ाया हक़ीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त देहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीन मालगुज़ारी	कैफ़ियत
रायबरेली	दो आना खास	अमरूपुर	खास	≡)	११॥≡)॥	
,,	=) मुरतहनी	,,	मुरतहनी	=)	११।≡)॥	
,,	≡) खास	,,	खास	≡)	२०॥-)॥	
,,	≡) मुरतहनी	,,	मुरतहनी	=)	२४॥-)॥	
,,	१७ऽ२-१०	सलोन आपमा	,,	१७ऽ२-१०	२१-)	
,,	=)	पट्टी फ़िरोज़	,,	,,	७८=)	
,,	४।ऽ१-१२ निस्फ़	सलोन आपमा खाता नं० १०३	,,	४।ऽ१-११	जायदाद को महाजन ने दिखाया है	
,,	५ पाई १८ क्रांत ८ जौ	मखदूमपुर पट्टी ला० लछमन प्र०	,,	५ पाई १८ क्रांत ८ जौ		
,,	।=) १० पा० ५ क्रांत ६ जौ ५½ तिल	शहबाज़पुर	,,	।=) १० पाई ५ क्रांत ६ जौ ५½ तिल		
,,	२२ऽ३-४	पारी	मफ़रूज़ रेहन	२२ऽ३-४		
,,	७५६।ऽ४-१२	,,	मुरतहनी	७५६।ऽ४-१२		
,,	ऽ-६	मखदूमपुर	,,	ऽ-६		
,,	ऽ३-१८	मखदूमपुर पट्टी ला० लछमनप्रसाद	,,	ऽ३-१८		

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० आक्ट सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा		कैफ़ि
१	चारपाई बाँस	१०		
२	पलँग चोबी	४		
३	तख़्त चोबी	२		
४	गगरी आहिनी	२		
५	गगरी पीतल	२		
६	गगरी ताँबा	२		
७	हंडा पीतल	१		
८	संदूक चोबी	२		
९	अलमारी चोबी	२		
१०	कुर्सी चोबी	१		
११	मेज़ चोबी	१		
	मोटर लारी	१	१०००)	
	आटा पीसने की चक्की मय इंजिन		६००)	
	साइकिल	८ अदद	२००)	
	मकान पुख़्ता ३ वाके सलोन ख़ास कीमती		७०००) रुपया	
	„ ख़ाम २ „ „		२००) रुपया	
	दुकान पुख़्ता ४ „ बाज़ार सलोन „		६००) रुपया	
	„ ख़ाम ४ „ बाज़ार सलोन „		१२५) रुपया	
	„ सराफ़ा ४ जिसमें माल		५०००) रुपया का होगा	
	„ बज़ाज़ा ६ „		३०००) रुपया का होगा	

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व शकरदा क़र्ज़ख़्वाह
सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिला	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	रायबरेली	पट्टीदारी	पट्टी महमदखाँ	२॥ऽ४-४	२॥ऽ४-४	३॥) माल ।=)
२	„	„	पट्टी बा० बलदेव-सहाय	४॥ऽ२-१८	४॥ऽ२-१८	१०।-) माल १॥)
३	„	„	पट्टी खुदाबख़्शखाँ	२८ऽ-४	२८ऽ-४	६६।) माल ६॥)
४	„	„	पट्टी शहूरखाँ	८ पाई ४ कौड़ ४ की	८१॥ऽ२-१०	

५	रायबरेली	पट्टीदारी	पट्टी.अब्दुल वाहिदखाँ	२ पाई १३ कांठ ३ जौ	१७॥ऽ४.४	२६॥।=) माल० § ५॥-)॥। अब०
६	,,	,,	पट्टी ला० लछमनप्रसाद	७ पाई १८ कांठ ८ जौ	३४ऽ२-१३	३४।=) माल० × ३।=)। अबवाब
७	,,	,,	पट्टी मज़हर- हुसेनखाँ			१६-) माल० + १॥।=) अबवाब
८	,,	,,	पट्टी खुदा- बख़्शखाँ	।=)	४२॥ऽ४	१०४।=) माल० ÷ १०।-) अबवाब

✻ मु० रमदेई जौ० रामसरन ।) व मु० हरदीकुँवरि जौ० महावीरप्रसाद ।=) व मु० चंपादेवी जौ० बैजनाथप्रसाद व मु० रामप्यारी जौ० श्यामसुंदर व छेदीलाल व अयोध्याप्रसाद बहिस्सा बराबर कौम रस्तोगी सा० देह ।≠) कुल २ऽ-१६

लाला हनोमानप्रसाद व मुरलीधर रस्तोगी सा० फतेहपर खास ॥ऽ.१० लाला लछमनप्रसाद व देवकीनंदन व म० रमदेई जौ० रामसरन व म० हरदीकुँवरि जौ० महावीरप्रसाद बहिस्सा बराबर ३ रुबा, व मु० चंपादेवी जौ० बैजनाथप्रसाद व म० रामप्यारी जौ० श्यामसुंदर व छेदीलाल व अयोध्याप्रसाद बहिस्सा बराबर १ रुबा, कौम रस्तोगी सा० देह

† मु० रमदेई जौ० रामसरन ।-) व मु० हरदीदेवी जौ० महावीरप्रसाद ।≠) व चंपादेवी जौ० बैजनाथप्रसाद व मु० रामप्यारी जौ० श्यामसुंदर व छेदीलाल व अयोध्याप्रसाद बहिस्सा बराबर कौम रस्तोगी सा० देह ।≠)

ला० हनोमानप्रसाद व मुरलीधर कौम रस्तोगी सा० फतेहपुर खास ३।ऽ१.६

‡ मु० जनकदुलारी जौ० रघुवरदयाल व मु० महादेवी जौ० कुंजबिहारीलाल मु० राधाप्यारी जौ० गनेसीलाल व मु० सहोदरादेवी जौ० बालगोबिंद बहिस्सा बराबर १ रुबा व मु० रमदेई जौ० रामसरन १ रुबा व मु० हरदीदेवी जौ० महावीरप्रसाद १ रुबा व मु० चंपादेवी जौ० बैजनाथप्रसाद व मु० रामप्यारी जौ० श्यामसुंदर व छेदीलाल व अयोध्याप्रसाद बहिस्सा बराबर कौम रस्तोगी सा० देह १ रुबा

$ इस पट्टी की सिर्फ़ हकीयत मुतफर्रिका ऽ२-१२ बनाम मु० जनकदुलारी वगैरा मिनजुमला मु० जनकदुलारी जौ० रघुवरदयाल व मु० महादेवी जौ० कुंजबिहारीलाल मु० राधाप्यारी जौ० गनेसीलाल व सहोदरादेवी जौ० बालगोबिंद बहिस्सा बराबर १ रुबा व मु० रमदेई जौ० रामसरन व मु० हरदीदेवी जौ० महावीरप्रसाद १ रुबा व मु० चंपादेवी जौ० बैजनाथप्रसाद व मु० रामप्यारी जौ० श्यामसुंदर व छेदीलाल व अयोध्याप्रसाद बहिस्सा बराबर कौम रस्तोगी सा० देह १ रुबा कुल ऽ२-१२

§ इस पट्टी में सिर्फ़ ।ऽ१ आराज़ी हकीयत मुतफर्रिका बनाम मु० जनकदुलारी वगैरा मुंदर्जे ज़ैल है—

मु० जनकदुलारी जौ० रघुवरदयाल व मु० महादेवी जौ० कुंजबिहारीलाल व मु० राधाप्यारी जौ० गनेसीलाल व मु० सहोदरादेवी जौ० बालगोबिंद बहिस्सा बराबर १ रुबा

मु० रामदेई जौ० रामसरन १ रुबा व मु० हरदेईदेवी जौ० महावीरप्रसाद १ रुबा व चमनादेवी जौ० बैजनाथप्रसाद व मु० रामप्यारी जौ० श्यामसुंदर व छेदीलाल व अयोध्याप्रसाद बहिस्सा बराबर १ रुबा कौम रस्तोगी सा० देह

× मु० जनकदुलारी जौ० रघुवरदयाल व मु० महादेवी जौ० कुंजबिहारीलाल व मु० राधाप्यारी जौ० गनेसीलाल व मु० सहोदरादेवी जौ० बालगोबिंद बहिस्सा बराबर कौम रस्तोगी सा० देह हरएक में १६ कांठ जौ ६ तिल व लाला लछमनप्रसाद व देवकीनंदन कौम रस्तोगी सा० देह १ पाई १६ कांठ ६ जौ ६ तिल व मु० रमदेईदेवी जौ० रामसरन कौम रस्तोगी सा० देह १ पाई १६ कांठ ६ जौ ६ तिल ज्वालाप्रसाद व देवप्रसाद व बलभद्रप्रसाद व प्यारेलाल पि० रामसरन कौम रस्तोगी सा० देह बहिस्सा बराबर १ पाई कांठ ६ जौ ६ तिल हकीयत मुतफर्रिका

+ लाला रघुवरदयाल व ला० लछमनप्रसाद कौम रस्तोगी सा० देह ६॥ऽ१-१ का ½ व लाला हनोमानप्रसाद व लाला मुरलीधर कौम रस्तोगी सा० फतेहपुर खास ६॥ऽ१-१ का ½

÷ लाला गनेसलाल व ला० लछमनप्रसाद कौम रस्तोगी सा० सकीन खालसा २ आना ३ पाई २ कांठ जौ ७½ तिल बाक़ी हिस्सा दीगर हिस्सादारान

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २१ जनवरी, १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तलानामा बग़रज़ ऐतराज़ व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत (
सन् १९३४ ई०) [काबिल

बअदालत चौधरी विश्वंभरनाथ साहब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुक़ाम हर
मुकद्दमा नंबरी नंबर ३७१ सन् १९३७ ई० पेशी २—४—३८ ई०

हकीम मो० मेहदीहुसैन वल्द फ़रज़ंदअली कौम सैयद जमींदार मौज़ा भटपुर परगना गोंडवा
संडीला ज़िला हरदोई हालवारिद मुसाहबगंज शहर लखनऊ क़र्ज़दा

बनाम

केदारनाथ वगैरा

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़

चूँकि हकीम मो० मेहदीहुसैन वल्द फ़रज़ंदअली कौम सैयद साकिन मुहल्ला मुसाहबगंज लखनऊ दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुसल्लिका में दर्ज है, देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के गजट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालतहाजा दरख्वास्त पेश करें।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त दिहिंदा व मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तशरीह	बयाबत हकीयत दरख्वास्त दिहिंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदिहिंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	हरदोई	मातहतदारी	मजरा कटका मौजा भटपुर प० गोंडवा खाता खेवट मुहाल सूरजबख्शशाह व केदारनाथ नं० खमगामुंदर्जा फ़र्द मुसल्लिका	मौरूसी काबिल इंतकाल	एक सुलुस मिनजुम्ला १३३।/१-१३ मुताबिक ४००)	६६॥)८

फ़ेहरिस्त (बे) क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	बयाबत हकीयत दरख्वास्त दिहिंदा	कैफ़ियत
१	एक किता अहाता वाके रकाबगंज लखनऊ महदूदा जैल—पूरब मकान मु० वफ़ातन, पच्छिम मकान भोला, उत्तर मकान मुरतज़ा-हुसैन, दक्खिन मकान हुसैनी वग़ैरह		

मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से आज बतारीख़ १८ जनवरी, ३८ ई० जारी हुआ।

नंबर खसरा	रकबा	नंबर खसरा	रकबा	नंबर खसरा	रकबा	नंबर खसरा	रकबा
२०३९	१ऽ१	२६४७	।ऽ१	२८९५	।ऽ	३२४८ अ	१।ऽ२
२०५२	॥।ऽ२	२६५६	१ऽ१	२९०१	ऽ३	३३३४	॥ऽ१
२०६६	ऽ३	२६५७	१ऽ३	२९०२	ऽ३	३३५७	॥ऽ४
२०६८	ऽ२	२६५८	।॥ऽ	२९०७	॥ऽ३	३३५८	१ऽ५
२०६९	ऽ४	२६७२	।ऽ२	२९०८	१॥ऽ३	३३५९	।ऽ
२०७३	॥।ऽ४	२६७८	॥ऽ	२९१३	ऽ४	३३६०	।ऽ२
२०८८	१ऽ३	२६७९	।ऽ१	२९१४	ऽ२	३३६४	१ऽ४
२०९१	॥ऽ२	२६८१	।ऽ	२९१५	।ऽ१	३३६५	॥ऽ३
२१००	।॥ऽ२	२६८२	ऽ०	२९१६	॥ऽ१	३३६६	॥ऽ४
२१०१	।॥ऽ३	२६८३	।ऽ१	२९३४	।ऽ४	३३७१	॥ऽ४
२१०५	॥ऽ१	२६८४	।ऽ	२९३६	॥ऽ३	३३९५	।॥ऽ२
२१०६	॥ऽ२	२६८५	ऽ१	२९३७	ऽ४	३३९६	॥ऽ१
२११७ बे	ऽ	२७१७	॥ऽ	२९३८	।ऽ४	३४०९	१ऽ१
२१३१	ऽ४	२७१८	॥ऽ	३०२३	॥ऽ२	३४१४ अ	।ऽ
२१३४	१।ऽ१	२७१९ अलिफ	॥ऽ	३०२४	१ऽ	३४१४ ब	।ऽ
२१३८	॥ऽ	२७२२	।ऽ१	३०२५	।ऽ	३४१८	।॥ऽ४
२१३९ अलिफ	।ऽ	२७२३	ऽ३	३०२६	।ऽ३	३४१९	।॥ऽ३
२१३९ बे	ऽ२	२७२४	ऽ२	३०५९	२ऽ	३४३९	१।ऽ२
२१७२	।॥ऽ४	२७२५ अलिफ	१।ऽ२	३०६०	।ऽ३	३४४१	१।॥ऽ१
२१७३	१ऽ	२७२५ बे	।ऽ३	३०६१	।ऽ२	३४४६	१।ऽ
२१८१	।ऽ१	२७३८ अलिफ	ऽ३	३०६२	।ऽ४	३४४७	॥ऽ
२१८२	ऽ३	२७४९	।ऽ	३०७५	॥ऽ१	३४४८	।॥ऽ२
२२०१	।ऽ१	२७५३	॥ऽ४	३०७६	॥ऽ३	३४५३	१ऽ२
२२११	१ऽ	२७५४	१ऽ१	३०७७	॥।ऽ१	३४६२	॥ऽ
२२०२	॥ऽ२	२७९९	।ऽ	३०७८	१ऽ२	३४९३	॥ऽ२
२२१९ अलिफ	ऽ४	२८००	।ऽ४	३१६२	१ऽ	३४९४	॥ऽ४
२२१९ बे	।ऽ१	२८०५	१ऽ४	३१६३	।ऽ	३४९५	॥ऽ४
२२४०	॥ऽ	२८१८	१ऽ२	३१७२	१ऽ१	३४९६	॥ऽ३
२२७८	१ऽ४	२८२१	।॥ऽ३	३२२३	।ऽ१	३५१६	।ऽ३
२२८६	१ऽ१	२८२२ अलिफ	।॥ऽ	३२२४	।ऽ२	३५२५	१।ऽ२
२२८७	॥।ऽ१	२८२२ बे	॥ऽ	३२७९	।ऽ२	३५२७ अलिफ	॥ऽ४
२३०७	।ऽ३	२८३०	।ऽ४	३२८१	।ऽ३	३५२८	१।ऽ१
२३०८	।ऽ२	२८३१	।ऽ४	३२८२	।ऽ४	३५४० अलिफ	।ऽ
२३१४	।ऽ४	२८३२	॥ऽ२	३२८५	।ऽ	३५४८ बे	ऽ२
२३४२	॥ऽ	२८३५	॥ऽ१	३२८७	॥ऽ	३३१९	॥ऽ१
२४३१	१ऽ३	२८३६	।ऽ४	३२८८	।ऽ४		
२६०३	{ १ऽ	२८३७	।ऽ३	३२८९	।ऽ४		
	॥ऽ२	२८४०	॥ऽ१	३२९०	।ऽ२		
२६२५ अलिफ	।ऽ२	२८४१	॥ऽ३	३२९३	।ऽ४		
२६२५ बे	।ऽ२	२८६१	१॥ऽ	३३०१	१ऽ१		
२६२६	॥ऽ	२८६९	१ऽ१	३३०२	१।ऽ२		
२६२७	।ऽ४	२८८१	१।ऽ२	३३१४	१॥ऽ		
२६४० अलिफ	१॥ऽ२	२८९१	॥।ऽ३	३३१८	॥ऽ१		
२६४० बे	ऽ३	२८९२	ऽ४	३३२२	॥ऽ		
२६४५	ऽ३	२८९३	ऽ४	३३२३	॥ऽ१		
२६४६	।ऽ३	२८९४	ऽ३				

नंबरान मुताल्लिक़ रेहन, जो कि दरियाबुर्द थे, अब दरिया बरार होकर शामिल ख़ालसा हो गए, बक़्ज़े
सानी नंबर १३ हैं—

नंबर खसरा बंदोबस्त साबिक़	रक़बा बीघा	बिस्वा	बिस्वांसी
२०२०	—	९	६
२०२१	—	७	१५
२०३२	—	४	१०
२०३३	—	१४	५
२०३४	—	९	१५
२०३५	—	१६	८
२३६१	—	१७	११
२३४५	—	९	०
२३४७	१	१	१४
२३४८	—	९	१२
२३५९	—	१२	१५
२३६०	—	१८	१३
२३७०	२	१	८
२७८६	—	१५	०
२७८७	१	५	०
२८३६	१	०	०
२८३७	२	१	०
२९०६	—	१६	०
२९१६	—	१९	०
२९१७	—	१३	०
२९१९	—	१९	०
२९७५	—	१४	०
५७८१	३	४	०
	१३३	६	११

मुंसरिम

सोल एजेंट चाहिए

हमें दिल्ली, लाहौर, कलकत्ता, पटना, जबलपुर, बनारस, कानपुर, इलाहाबाद तथा भारत के प्रत्येक अन्य बड़े-बड़े शहरों में ऐसे आदमियों की आवश्यकता है, जो केवल २ हज़ार रुपया लगा सकें। हम उन्हें सोल एजेंट बना लेंगे। अब जहाँ-जहाँ हमें शाखाएँ और खोलना हैं, उनके नाम नीचे दि जा रहे हैं। जो सज्जन इन स्थानों में हमारे साझे में या हमारी सोल एजेंसी लेकर काम करना चाहें, हमें लिखें—

कलकत्ता
कानपुर
जयपुर
इलाहाबाद
करांची

रायपुर
पटना
दिल्ली
ग्वालियर
मुज़फ़्फ़रपुर

बरेली
गोरखपुर
लाहौर
इंदौर
जबलपुर

मदरास
बनारस
जोधपुर
बंबई
बिलासपुर

विस्तृत नियम निम्नांकित पते से मँगाइए—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

[नमूना काबिल फ़रोख्त

(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

बइजलास जनाब बाबू गिरिवरचरन अग्रवाल जज खफ़ीफा बस्ती ज़िला बस्ती
नंबर मुक़द्दमा १२६४ सन् १९२७ ई०
अंबिकाप्रसाद दुबे मुद्दई बनाम रामचरित्र दुबे मुद्दाअलेह
रामचरित्र दुबे वल्द जगरूप दुबे साकिन दुवौली तप्पा कलवारी परगना नगर पुरब मुंसिफी ज़िला बस्ती
मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत पुरोनोट के दायर की है, लिहाज़ा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख २६ फरवरी सन् १९२८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो, और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हों और जवाबदिही दावा की करें। और हरगाह वही तारीख़, जो आपके इहज़ार के लिये मुक़र्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज हुई है। पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को, जिनकी शहादत पर व नीज़ तमाम दस्तावेज़ात को, जिन पर आप अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ २१ माह जनवरी सन् १९२८ ई० जारी किया गया।

मुंसरिम

इत्तिला तारीख़ बग़रज़ तसफ़िया मरातिब इश्तिहार नीलाम

(हस्ब आर्डर ५—२० ज़ाब्ता दीवानी)

बअदालत जनाब पं० दाताराम मिश्रा साहब बहादुर मुंसिफ़ जनूबी मुक़ाम लखनऊ
मुक़द्दमा नंबर ३८८१ सन् १९२४ ई०
मुक़द्दमा इजराय डिगरी नंबर २५६ सन् १९२७ ई०
पं० राजाराम वल्द पं० महावली क़ौम ब्राह्मण साकिन हसनगंज थाना हज़रतगंज शहर लखनऊ डिगरीदार
बनाम

बाबूलाल
बनाम—बाबूलाल वल्द ठकुरी क़ौम जैवार साकिन व मुलाज़िम ख़ासाबागगिरी स्टेशन रोड बँगला नं० ५ शहर मुरादाबाद
मद्यून डिगरी

हरगाह कि मुक़द्दमा मुंदर्जा बाला में डिगरीदार ने नीलाम जायदाद ग़ैरमनक़ूला की दरख़्वास्त की है। तुमको इस इत्तिलानामा के ज़रिए मुत्तिला किया जाता है कि तारीख़ ४ मार्च सन् १९२८ ई० वास्ते तय करने मरातिब इश्तिहार नीलाम के मुक़र्रर की गई है।

आज बतारीख़ १५ माह फ़रवरी सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त व मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूला संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह साहब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल लखनऊ
मुक़द्दमा नंबरी ६५ सन् १९२६ ई० तारीख़ पेशी ४ मार्च सन् १९२८ ई०
नवाब क़मरजहाँ बेगम बेवा सैयद अमजदअलीख़ाँ मरहूम साकिन ख़ासमंज़िल वज़ीरगंज लखनऊ
क़र्ज़दार सायल

बनाम

१—नवाब मुहम्मदहसनख़ाँ साकिन देवढ़ी आग़ामीर मुत्तसिल चौकी पुलिस लखनऊ
२—नवाब सैयदअलीख़ाँ ताल्लुक़दार साकिन शीशमहल लखनऊ
३—महाराजकुमार महमूदहसनख़ाँ साकिन ख़ासमंज़िल वज़ीरगंज लखनऊ नाबालिग़ बविलायत शेख़ मुहम्मद हबीबउल्ला मैनेजिंग ट्रस्टी महमूदाबाद-ट्रस्ट
क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

फ़ार्म नं० ६

चूंकि क़मरजहाँबेगम बेवा सैयद अमजदअलीख़ाँ साकिन ख़ाक़ानमंज़िल वज़ीरगंज लखनऊ ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट म इत्तला दी जाती है कि उस जायदाद की तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० क़मरजहाँबेगम मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयु प्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से तीन माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर खेवट व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसायक़ हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मु० दर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	ज़मींदारी	मौज़ा अहमामऊ परगना व तहसील लखनऊ	क़ाबिल इंतिक़ाल	हक़ आला	१५००)	निकासी
२	बाराबंकी	,,	मौज़ा गढ़ी तहसील नवाबगंज	,,	,,	७१०)	,,
३	,,	,,	मौज़ा बस्ती परगना देवा तहसील नवाबगंज	,,	,,	१४५०)	,,
४	,,	,,	मौज़ा बस्ती मुहाल जंगबहादुर परगना देवा तहसील नवाबगंज	,,	,,	५३)	,,
५	,,	,,	मौज़ा बस्ती मुहाल संतबख़्शसिंह मुस्तरका परगना देवा तहसील नवाबगंज	,,	,,	५२)	,,
६	लखनऊ	जायदाद ग़ैरमनक़ूला	बाज़ार फ़तेहगंज मय दूकानात व आराज़ी उफ़्तादा	,,	मालियती मुबलिग़ा पचास हज़ार रुपया	•	
७	,,	,,	दूकानात व कमराजात वाक़े नज़ीराबाद व अमीनाबाद व ख़ियालीगंज व गुईन रोड मय आराज़ी उफ़्तादा	,,	मालियती मुबलिग़ा १ लाख २५ हज़ार	•	

जायदाद मज़हिरा चौधरी बंसीधर

१	लखनऊ		एक क़िता कोठी ख़ाक़ान मंज़िल वाक़े वज़ीरगंज

जायदाद मुर्क़हिरा महाराजकुमार महमूदहसनख़ाँ

१—१/९६ हिस्सा मकान ख़ाक़ान मंज़िल न० १७११ वाक़े वज़ीरगंज मुत्तसिल थाना वज़ीरगंज लखनऊ

२—डिगरी बअदालत अडीशनल जज ख़फ़ीफ़ा लखनऊ ख़िलाफ़ करीमबख़्श वल्द मुहम्मद नानफ़रोश साकिन अमीनाबाद मुवर्रिख़ा २० जनवरी सन् १९३७ ई० मुकद्दमा नंबरी ५००/३६ सन् ३६ ई० तादादी ३६२॥=) ॥

३—डिगरी बअदालत सबजज मलिहाबाद लखनऊ बाबत खर्चा तादादी १११७) मुवर्रिख़ा २० ऑक्टोबर सन् २७ ई० मुकद्दमा नंबरी २१५/२६ सन् १९२६ ई० ख़िलाफ़

१—मु० रफ़ीक़ुन्निसा बेगम जौजे नवाब अब्दुल्लाख़ाँ साकिन रफ़ीक़मंज़िल विक्टोरियागंज लखनऊ

२—लाला अमरनाथ वल्द राजा परभूदयाल साकिन सोंधीटोला थाना चौक लखनऊ

३—राधेश्याम-भगवादास दूकानदार चौक लखनऊ

४—शेख़ एजाजअली साकिन रफ़ीक़मंज़िल थाना चौक लखनऊ

४—एक किता रेहननामा नविश्ता सज्जादीख़ानम उर्फ़ आबादीख़ानम बाबत मकान मय दरख़्तान वाक़े बाग़ मक्का लखनऊ मुवर्रिख़ा १० मई सन् १९१२ ई० तादादी ५००)

५—२ बीघा १६ बिस्वा आराज़ी वाक़े मौज़ा इनदवा पथरी महाल कनीज़ फ़ातिमाबेगम परगना देवा तहसील नवाबगंज ज़िला बाराबंकी मय १ दरख़्त आम व १ किता मकान पुख़्ता

६—जवाहरात व ज़ेवरात मालियती तख़मीनन २ लाख

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २ फ़रवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

[आफ़िस क़रीक्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम लखीमपुर ज़िला खीरी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ४९ सन् १९३७ ई०

१—कुँवर नागेश्वरसहाय पिसर मुतवफ़्फ़ा कुँवर नरेंद्रबहादुर क़ौम कायस्थ ताल्लुक़दार साकिन हाल ए० पी० सेन रोड लखनऊ चारबाग़ ज़िला लखनऊ

२—कुँवर विश्वनाथसहाय पिसर नागेश्वरसहाय बविलायत पिदर ख़ुद सायल सा० हाल ए० पी० सेन रोड लखनऊ चारबाग ज़िला लखनऊ

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

१—सेक्रेटरी ऑफ़् स्टेट जरिए नज़ूल ऑफ़िसर लखनऊ

२—रायबहादुर साहू हरप्रसाद

३—राजा राधारमन

४—कुँवर हरिश्चंद्र

५—कुँवर कृष्णचंद्र

६—कुँवर रामरघुबीर

७—कुँवर जोतास्वरूप

(३—७) पिसरान राजा लालतप्रसाद

(२—७) साकिन पीलीभीत मुहल्ला साहूकारा

८—रामाधान वल्द शिवप्रसाद क़ौम कलवार साकिन मौज़ा मझनपुर परगना नघासन ज़िला खीरी

९—जगन्नाथप्रसाद वल्द हीरालाल

१०—बरातीलाल वल्द शंकरराम

(९—१०) क़ौम वैश्य साकिन सआदतगंज हसनबारी शहर लखनऊ

११—लाला राधेमोहन वल्द रघुबीरसरन

१२—रानी ताराकुँवरि बेवा बाबू राधेश्याम

(११—१२) क़ौम कायस्थ साकिन मुहल्ला मालती सराय लखनऊ

१३—लाला अमरनाथ वल्द बाबू महेशप्रसाद खत्री साकिन मुहल्ला कटारीटोला लखनऊ

१४—रायबहादुर बाबू मकुंदलाल वल्द बाबू दामोदरदास साकिन भवानगढ़ ज़िला आज़मगढ़

१५—पं० शिवनारायण वल्द राधाकृष्ण ब्राह्मण साकिन रनजीतपुरवा परगना व ज़िला कानपुर

१६—बिंद्राप्रसाद वल्द रामदयाल क़ौम कलवार साकिन गुदरिया परगना धौरहरा ज़िला खीरी

१७—मु० जसोदा दुख़्तर बलदेव बारी साकिन मुहल्ला महलवाना संडीला ज़िला हरदोई

१८—परागीशाह वल्द चंदी क़ौम वैश्य साकिन अशराफ़ टोला संडीला ज़िला हरदोई

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि कुँवर नागेश्वरसहाय ताल्लुक़दार पिसर मुतवफ़्फ़ा कुँवर नरेंद्रबहादुर क़ौम कायस्थ साकिन हाल ए० पी० सेन रोड लखनऊ ज़िला लखनऊ की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसको

तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब
मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांती
में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने हस्तिहकाक के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पे

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्जख्वाह
हस्ब तफसील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
फेहरिस्त (अलिफ) कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हक़ीयत की तसरीह	वसाहत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मु'दर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
						मालगुजारी	अबवा
१	हरदोई	ताल्लुकदारी	मांझगांव	मिल्कियती	मुसल्लम मौज़ा २० बि०	१५१४॥।-)।	१२३-)।
२	,,	,,	गदोरा	,,	,, ,,	१३१०)	११२॥-)
३	,,	,,	उत्तर कोध	,,	,, ,,	१५२८॥।-)	१५४॥)
४	,,	,,	पहतोइया	,,	मुहाल रानी चंद्रकुँवरि पट्टी	१३०)	१३॥)॥
५	,,	,,	परसा	,,	मुहाल रानी चंद्रकुँवरि २० बि०	१८०२ड)	१८१ड)
६	,,	,,	कोधौरा	,,	मुहाल रानी चंद्रकुँवरि ७ बि० १० बि०	२८५॥=)	२३॥।-)
७	,,	,,	सागरमदी	,,	मुहाल रानी चंद्रकुँवरि १५ बि०	१३३॥।)	१३॥-)
८	,,	,,	काज़ीपुर	,,	मुसल्लम मौज़ा २० बि.	६३०)	६३॥)
९	,,	,,	डखवा	,,	,, ,,	४१५)	४१)
१०	,,	,,	अटका	,,	,, ,,	५०५)	४१॥)
११	,,	,,	चमरहा	,,	,, ,,	३४५)	३४॥-)
१२	,,	,,	बेहदर कलाँ	,,	,, ,,	१६६८॥ड)४	१६८॥-)
१३	,,	,,	पिलखनी	,,	,, ,,	११००)	११०-)
१४	,,	,,	रहीमाबाद गिरंट	,,	,, ,,	४६०)	४६॥-)
१५	,,	,,	मुसलमानाबाद	,,	,, ,,	६२८≡)२	६२॥ड)
१६	,,	,,	बांढ	,,	,, ,,	८४०)	८५)
१७	,,	,,	रेजा मिल्कियत संडीला	मुहल्ला महलसराय मंडी बेगमगंज तिलोया	मातहतदारी	१२=)	६)
			मवाज़ियात पुख्तादारी				
१८	,,	हक मालिकाना	विरमऊ	पुख्तादारी	मुसल्लम २० बि०	माल० ६७५)	हक मालि २४०)
१९	,,	,,	गोशा मुहाल गदोरा	,,	,, ,,	५००)	१४८)
२० ½	,,	,,	कंमौली	,,	,, ,,	१५०)	६२)
२१	,,	,,	कमोरा घाट	,,	,, ,,	१३६०)	२०८)
२२	,,	,,	बदागाँव	,,	,, ,,	२८९५)	१०४

२३	,,	,,	कनसुआ	,,	,, ,,	११५)	११२)
२४	,,	,,	कोरौनी	,,	,, ,,	७००)	२३२)
२५	,,	,,	कोंडरी	,,	,, ,,	६००)	४५०)
२६	,,	,,	कठगरा	,,	,, ,,	६१५)	१३५)
२७	,,	,,	चाँदू	,,	,, ,,	६६३≡) ४	२४६=)
२८	,,	,,	दुलारेपुर	,,	,, ,,	७६०)	१६४)
२९	,,	,,	आंट	,,	,, ,,	४६०)	२३०)
३०	,,	,,	घोसपाही	,,	,, ,,	११४०)	२०४)
३१	,,	,,	परसा	,,	,, ,,	७२५)	२५१)
३२	,,	,,	पहतोइया	,,	,, ,,	६८०)	२७४)
३३	,,	,,	बहुती मय मज़राजात	,,	,, ,,	४७७२≡) ५)	११६०=) २
३४	,,	,,	बलनापुर	,,	,, ,,	६२०) २	३१५)
३५	,,	,,	मलय्याँ	,,	,, ,,	११२०)	२६०)
३६	,,	,,	पंढरी दाखिली बेंहदर	,,	,, ,,	२२५)	५६)
३७	,,	,,	सुंदरपुर चक मुहल्ला खखपेड़ा	,,	मुहाल रानी चंद्रकुँवरि पट्टी	८५)	४०)
३८	,,	,,	सागरगदी	,,	,, ,,	५१)	
३९	खीरी	ताल्लुक़दारी	वाली परगना धौरहरा	,,	मुसल्लम मौज़ा २०बि०	११००)	११०)
४०	,,	,,	चक नाथूपुर परगना धौरहरा	,,	निस्फ़ मुहाल अमीरनगर १० बि०	१०)	१)
४१	,,	,,	करहुँआँ परगना धौरहरा	,,	मुहाल कुँवर नागेश्वरसहाय १० बि०	४००)	४०)
४२	,,	,,	खगियापुर	,,	मुसल्लम मौज़ा२०बि०	३००) मालगुज़ारी	३०)
४३	,,	,,	हरदी परगना धौरहरा	,,	मुसल्लम मौज़ा२०बि०	५६८)	५६॥-)
४४	,,	,,	गुदरिया	,,	मुहालअमीरनगरनिस्फ़	५२५)	५२॥)
४५	,,	,,	वेलहौरा परगना श्रीनगर निस्फ़	,,	,, ,,	४००)	४०)
४६	,,	,,	जिगनियाँ ,,	,,	,, ,,	१६०)	१६)
४७	लखनऊ	,,	बिहारीपुर	,,	मुहाल रानी चंद्रकुँवरि निस्फ़	६२०)	६२)

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	तादाद हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत

१-बैलों गाड़ी १, २-फ़िटन गाड़ी १, ३-घोड़ी १ रास, ४-बैल ४ रास, ५-गाय ४ रास, ६-गाड़ी १, -मघा १, ८-मकान पुख़्ता दुमंज़िला मौसूमे पीली कोठी नंबर ४१ मुहल्ला पान्नेवाली गली अमीनाबाद लखनऊ १, -दूकानात वाक़े अमानीगंज क़स्बा संडीला ज़िला हरदोई ७, १०-कोठी मसकूना वाक़े ए० पी० सेन रोड चार-ाग लखनऊ १, ११-दूकान पिटरौल वाक़े चारबाग लखनऊ १, १२-तमस्सुक ता० २१ ऑक्टोबर २६ विश्वनाथ

बहक सायलान २००), १३-पुरोनोट २१-२-३५ विश्वनाथ बहक सायलान ७५), १४-रेहननामा बिला ७-१-३० कल्लूसिंह बहक सायलान १९२), १५-रेहननामा बिला कब्ज़ा ७-१-३० इंद्रजीतसिंह बहक १४३), १६-रेहननामा बिला कब्ज़ा ७-१-३० सतीसिंह बहक सायलान ३६१।॥≈)॥, १७-रेहननामा ८-७-८९ नूरअली बहक सायलान ९६≡)॥, १८-रेहननामा दखली २-७-८८ नविश्ते हरीसिंह बहक २००), १९-तमस्सुक ता० ८-४-३० ज्वालाप्रसाद वग़ैरा बहक सायलान १३२), २०-तमस्सुक ता० ज्वालाप्रसाद बहक सायलान १२४), २१-तमस्सुक मं०खा २-९-३० सधारीलाल वग़ैरा बहक सायलान २२-रेहननामा दखली ता० ७-५-८७ बलदेवसिंह बहक सायलान ५०००), २३-रहेन मा दखली ता० बेनीसिंह बहक सायलान २८६१॥≈)॥, २४-दस्तावेज़ जर मजीद ता० १-७-८० ई० बगोसिंह बहक २००), २५-तमस्सुक रजिस्ट्रीशुदा ता० २-१-३७ रामेश्वर बहक सायलान १६१॥), २६-रेहननामा कब्ज़ा ता० ११-१२-३३ पुत्तूलाल बहक सायलान ९६), २७-रेहननामा बिला कब्ज़ा शिवसहाय बहक १६०), २८-पुरोनोट ता० १० दिसंबर ३५ ई० गोबिंदप्रसाद बहक सायल १५०), २९-रेहननामा कब्ज़ा ता० १२-१२-३६ सरदारसिंह बहक सायल ३६०), ३०-तमस्सुक म० रजिस्ट्री २१ $\frac{९}{२९}$ अजोध्या बनाम सायल ३७०), ३१-डिगरी दीवानी कुँवर नागेश्वरसहाय खिलाफ़ श्रीराम लखनऊ ३२-रेहननामा दखली मकान वाक़ै गन्नावाली देवीदीन बहक सायल ४५००), ३३-तमस्सुक रजिस्ट्री सतीदीन बहक सायल ३४०)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ३ जनवरी, १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरि

तैयार है ! तैयार है !!

तुलसीदास और उनकी कविता

तीन भागों में। पहला भाग, पृष्ठ ४१०; मूल्य दो रुपए ; **दूसरा भाग,** पृष्ठ ५५०, मूल्य रुपए; तीसरा भाग प्रेस में। पहले दो भाग तैयार हैं। छपाई-सफ़ाई बहुत सुंदर, काग़ज़ सफ़ेद ; कपड़े की सुवर्णांकित जिल्द से सुसज्जित।

लेखक

रामनरेश त्रिपाठी

तुलसीदास की स्वकथित जीवनी, उनके जन्म-स्थान आदि की नवीन खोज, उनका असली चित्र, हस्तलिपि तथा उनकी रचनाओं के काल-क्रम आदि का बहुत प्रामाणिक विवरण जानना हो, उनकी का मर्म समझना हो, कहाँ-कहाँ से उन्होंने अपनी कविता की सामग्री ली है, उसे देखना हो; उनके में सरस वर्णन कौन-कौन-से हैं, उनका साहित्यिक आनंद लेना हो, तो इस पुस्तक का अध्ययन कीजिए तुलसीदास पर अभी तक ऐसी विवेचना-पूर्ण पुस्तक कोई नहीं लिखी गई थी। यह पुस्तक अपने ढंग बिलकुल नई और अनोखी है। कॉलेज और युनिवर्सिटियों के विद्यार्थी, जो तुलसीदास का अध्ययन चाहते हैं, इस पुस्तक को अवश्य ख़रीदें। तुलसीदास के संबंध की कोई भी जानने-योग्य बात इसमें नहीं पाई है।

मिलने का पता—

हिंदी-मंदिर, प्रयाग

धातुपौष्टिक योग

इसके प्रताप से हज़ारों नामर्द मर्द बन चुके हैं। यह बहुत वर्षों से प्रचलित हो रहा है,
क्योंकि इस औषधालय को इस कलकत्ता महानगर में स्थापित हुए
६० वर्ष से अधिक हो गए हैं—

यह योग तीन दिन के भीतर ही अपना गुण दिखा देता है। पानी के समान पतले वीर्य को एकदम गाढ़ा कर देता है, पेशाब की समस्त बीमारियों को हटाकर दस्त साफ़ करता है, तथा गिरती हुई धातु को रोकता है। उपदंश (गर्मी), मेह, प्रमेह (गनोरिया-सुज़ाक) रोगों को यह जड़ से खो देता है, तथा शरीर को बलवान् करके स्मरण-शक्ति को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, हस्तमैथुन से उत्पन्न कमज़ोरी (शिथिलता). रगों की सुस्ती, धातु-क्षीणता, स्मरण-मात्र से ही पतन (शीघ्र वीर्य का पात होना), पाखाना व पेशाब के साथ धातु का गिरना. अधिक विलासिता के कारण कमर में दर्द, हाथ-पैर का काँपना, चक्कर आना, आँखों के आगे चिनगारियाँ निकलना, कलेजे का धड़कना, नामर्द हो जाना इत्यादि रोगों को दूर कर रक्त शुद्ध करता है, और भूख, शक्ति तथा वज़न को बढ़ाता है। जिससे शरीर वज्र के समान मज़बूत हो जाता है। जिसमें पुरुषत्व न हो, उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त कराकर उनके वीर्य को गाढ़ा और गर्भ धारण करने के योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक पूर्ण गुणकारी १ डिब्बे की क़ीमत ५), डाक - पैकिंग - ख़र्च ।॥) यदि गुप्तेन्द्रिय की भी शिकायत होवे, तो रोग़न मदन - मस्ताना को भी इस धातुपौष्टिक योग के साथ में ही मँगाकर उपयोग (मालिश) करिए, संपूर्ण शिकायतें दूर होंगी।

जैसा इसका नाम है, वैसा ही इसका गुण है—जिस प्रकार कवियों ने लिखा है—यथा नामस्तथा गुणाः। विशेष ख़ुलासा हाल अश्लीलता के कारण नहीं लिख सकते हैं। मालिश करने में किसी प्रकार का झंझट या परहेज़ तथा तकलीफ़ नहीं होती। साधारण रीति से प्रतिदिन मालिश करना होता है। दाम ५) शीशी। विश्वास रखिए ये दोनों दवाएँ बहुत ही शीघ्र फ़ायदा दिखानेवाली हैं।

कितने नामर्द (नपुंसक), जो निराश हो चुके थे, शर्म से मुँह छिपाए चलते थे, घर में नित्य कलह रहती थी, दवा सेवन कर अब ताल ठोंक बाज़ी मार रहे हैं। चेहरे पर हँसी है। बूढ़े तक को भी यह दवा नया वीर्य, नया ख़ून, नई ताक़त और नया जोश ला देती है। नामर्द होना पाप ही नहीं है, बल्कि संतान नहीं होने से मानव-जीवन में कलंक भी है। अतः एक बार ज़रूर लेकर देखिए।

औरतों के लिये

स्त्री-रोग-निवारक तथा गर्भदाता योग

इस योग के सेवन से औरतों की क्षीणता तथा सब तरह का प्रदर, मासिक धर्म के समय पेट या कमर में दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनों से होना, बिलकुल ही न होना, असमय में मासिक धर्म होना, ख़ून के क़तरे गिरना, गर्भाशय में दोष होने के कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल संतति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगों पर २१ दिन योग को सेवन करने से गर्भाशय तथा शरीर के सब दोष दूर होकर मासिक धर्म समय पर होगा, और गर्भपात न होकर संतति नीरोग उत्पन्न होगी, यहाँ तक कि ४० वर्ष की स्त्री को भी इसके सेवन से निश्चय ही गर्भ धारण हो जाता है। २१ दिन तक सेवन करने योग्य दवा के एक डिब्बे की कीमत ५), डाक-पै०-ख़र्च ।॥), ऋतु(स्त्री)-धर्म के समय पेट (गर्भाशय) साफ़ करने को ८ पुड़िया काढ़ा का देना होता है, जिसका दाम और १) देना होगा।

स्त्रियों को भी धातुक्षीण होता है, जिसके कारण बार-बार पेशाब का उतरना, जलन होना, बूँद-बूँद पेशाब का गिरना, मूत्र-नली से पानी के समान या गाढ़ा मवाद के समान दुर्गंध-युक्त स्राव निकलना आदि तुरंत इस दवा से आराम होते हैं।

इन दवाओं को स्त्री और पुरुष हर मौसम में खा सकते हैं। परहेज़ वग़ैरह कुछ भी नहीं है। संतान की इच्छावालों को ये दोनों ही दवा स्त्री और पुरुष दोनों ही को एक साथ खाने से अच्छा होगा। ये दवाएँ तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इन्हें अवश्य मँगावें।

भारत-भैषज्य-भांडार, सु १०८, तुलापट्टी, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता।

विजय (दूसरा भाग)

(उपन्यास)

[इस ग्रंथ का पहला भाग जिन ग्राहकों के पास हो, वे कृपया यह दूसरा भाग भी मँगा लें ।]

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० । बिदा-उपन्यास लिखकर श्रीवास्तवजी ने जो ख्याति प्राप्त की है, वह अवर्णनीय है । जिसने उसे पढ़ा, वही मुग्ध होकर रहा । सभी के हृदय से वाह-वाह की आवाज़ निकली ! यह नवीन उपन्यास बिलकुल अप-टु-डेट, शिक्षाप्रद, मौलिक और सामाजिक है । कथा-प्रसंग इतना मनोरंजक है कि एक बार पुस्तक हाथ में लेने से फिर विना समाप्त किए जी नहीं मानता, और पढ़कर भी पुनः पढ़ने की लालसा बनी रहती है । मनोभावों की व्यंजना में लेखक कितना सफल हुआ है, यह पुस्तक पढ़ने पर ही ज्ञात होगा । मूल्य दूसरा भाग २), सजिल्द २॥)

प्रथम भाग का मूल्य सादी २) और सजिल्द २॥) है । जिन ग्राहकों के पास न पहुँचा हो, शीघ्र मँगा लें । अब केवल १०० प्रतियाँ ही शेष हैं । फिर दूसरे संस्कर की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । ऐसे उच्च कोटि के उपन्यास प्रत्येक हिंदी-प्रेमी के पा रहने चाहिए ।

शिवाजी

(मौलिक, ऐतिहासिक नाटक)

इसके लेखक हैं हिंदी-संसार के प्रख्यातनामा समालोचक श्रीडॉक्टर श्यामविहा मिश्र एम्० ए० और श्रीपं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० । यह एक ऐतिहासिक ना है, जिसमें ३ अंक एवं २८ दृश्य हैं । कई भिन्न-भिन्न प्रकार के चरित्र लेकर यो कलाकार ने अपनी नाटकीय सामाजिक कला का प्रदर्शन किया है । कथानक पूरा-पू पूरा महाराष्ट्र-इतिहास पर अवलंबित है । यह पुस्तक कवित्व से कमनीय, नाटकत्व निर्मल, सद्भावों से सुंदर और मौलिकता से मंडित है । इस नाटक को विद्यार्थी वि किसी कठिनाई के स्टेज पर खेल सकते हैं । मूल्य १।), सजिल्द १।।।)

संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्री

21-3-38 गुरुकुल

Approved by the Directors of Public Instruction U. P., C. P., Bombay, Behar & Punjab.

फाल्गुन, १९९४
March, 1938

मूल्य ॥)
Price -8/-

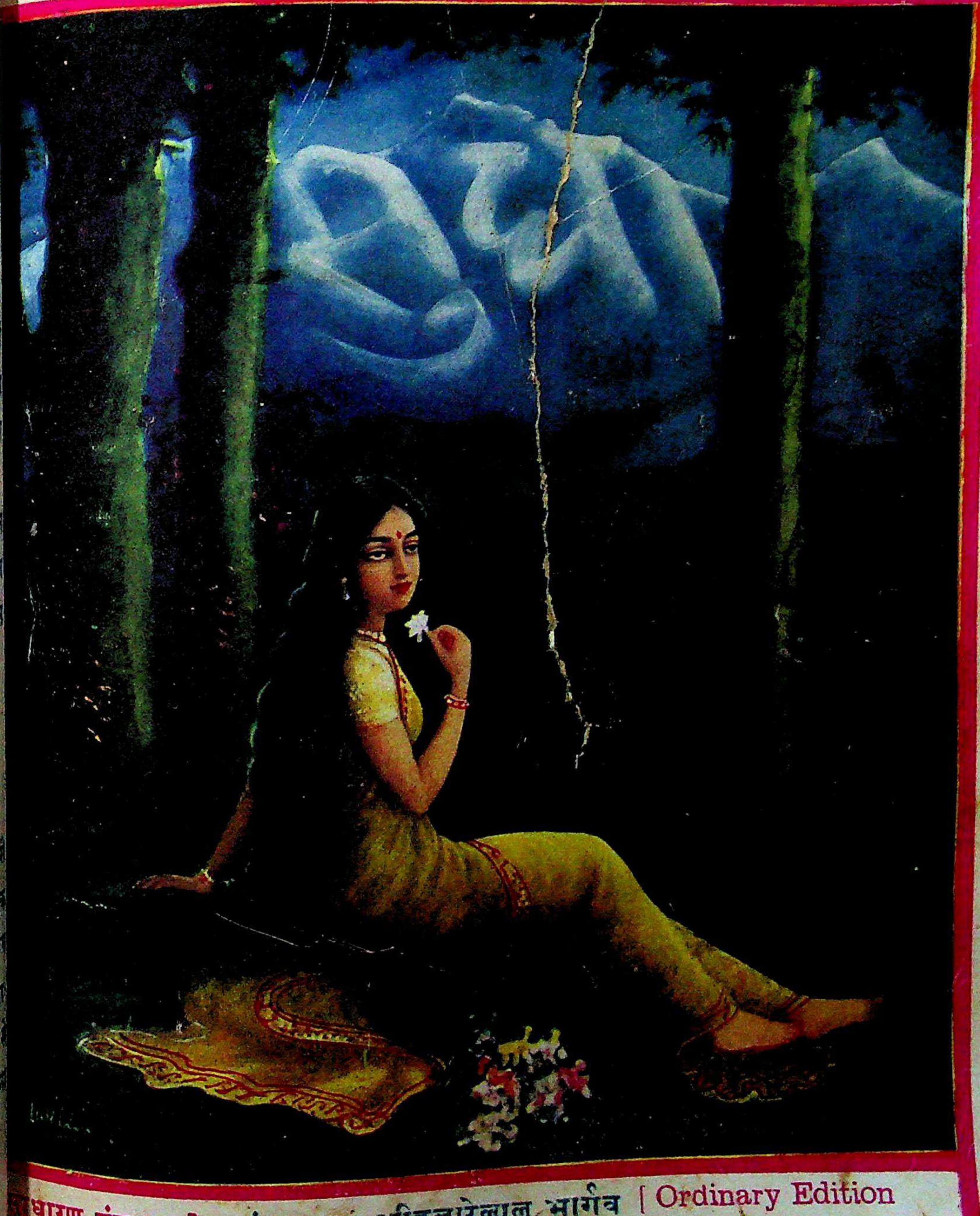

धारण संस्करण] संपादक—श्रीदुलारेलाल भार्गव [Ordinary Edition

एव [illegible] यकीय वस्तु !

इसे

गृहस्थी

ना ज़रूरी है ।

न - जाने कब इसकी आवश्यकता पड़े ।

मरहम (REGD.)
STAR
TRADE S.K.B. MARK
(REGD)
यह वनस्पतियों से बना है
Healex OINTMENT

चोट, कटना, जलना आदि आकस्मिक दुर्घटना से तत्क्षण अच्छे होने के लिये सर्वदा इसे अपने पास रखिये ।

डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰
बिभाग नं॰ ४६ पो॰ बक्स नं॰ ५५४ कलकत्ता

क्योंकि दुर्घटना क ह क नहीं आती

सब जगह मिलता है ।

लखनऊ शहर के सोल एजेंटः—किंग मेडिकल हाल, २५ अमीनाबाद-पार्क ।

शुभ

यदि किसी को अपना मुक़द्दर बनाना हो

लाभ

यदि गई हुई इज़्ज़त और खोया हुआ धन पुनः वापस लेने की इच्छा हो, यदि धन-धान्य, स्त्री-संतान-प्राप्ति का स्वर्गीय आनंद भोगने की उत्सुकता हो, और यदि ऊँचे दरबारों में इज़्ज़त हासिल कर, दुश्मन को परास्त कर, अपनी शान का सिक्का जमाना हो, तो आज ही और अभी शक्तिशाली अद्भुत—

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र

मँगाइए। इसके अलौकिक गुणों की प्रशंसा बड़े-बड़े ज्योतिषी व धुरंधर पंडितों ने ही नहीं, बल्कि शास्त्र-पुराणों तक ने की है। प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने के पचास-पचास हज़ार प्रशंसा-पत्र इस यंत्र की सचाई के पक्के प्रमाण हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या अविश्वास की रत्ती-भर की गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र वा शास्त्रविधि पर अविश्वास करता है, वह जीवन में कभी सुख को प्राप्त नहीं होता, ऐसा कृष्ण भगवान् ने स्वयं कहा है। देखो गीता १६-२२।

इस नवग्रह यंत्र से रोज़गार में लाभ, इम्तहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजसम्मान, नौकरी मिलना, संतान-लाभ, तनख़्वाह में तरक़्क़ी, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, इच्छानुसार शादी, अचानक आफ़तों से बचना, किसी को वश करना, रेस व लाटरी में धन-प्राप्ति वग़ैरह-वग़ैरह हर काम पूरा होता है। जो पूछोगे, हर बात का जवाब स्वप्न में विधि-सहित बताएगा। आप जिसका ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में से बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकलकर उस कार्य को पूरा करेगी।

हर मनुष्य विश्वास रक्खे कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, वह इसके चमत्कार को देख वाह-वाह कर उठता है, और बार-बार मँगाता है। बहुतों ने तो छः-छः और आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह यंत्र तक मँगाए हैं। अगर विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अब भी विश्वास न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। काम न हो, तो दाम वापस मँगाइए।

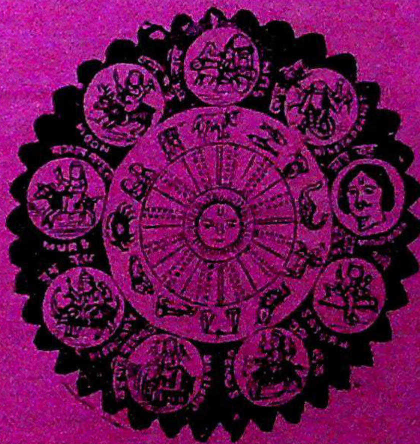

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

इतने पर भी अगर विश्वास नहीं हुआ, तो अपनी चमकानेवाली तक़दीर और उदय होनेवाले भाग्य को धक्का पहुँचाने के दोषी आप ही हैं। एक बेक़ीमती व तुच्छ पैसे के लालच-वश यदि चूक गए, तो जीवन-भर पछताना ही हाथ लगेगा। शास्त्र का कहना है कि—

सकल पदारथ है जग माहीं; कर्महीन नर पावत नाहीं।

जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक नवग्रह यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह यंत्र मँगावें। पुरुष के लिये तो नीलममणि और स्त्री को तो लालमणि से युक्त यानी कंपलीट। एक नवग्रह यंत्र का मूल्य २), एक साथ तीन यंत्र लेने से ५), चाँदी का ३), सोने का ११-)

मि० बा० अर्जुनप्रसाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज, सांगली (सतारा)—आपके यहाँ से मुझे बेहद लाभ पहुँचा। मैं इम्तहान में पास हो गया हूँ। एक यंत्र वी० पी० से और भेज दें।

मि० ए० बी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—आपका यंत्र पहले एक मँगवाया था, उससे मेरा कार्य सिद्ध हो गया है। अब कृपया एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता S.S.L. बंबई नं० ४

ऑटोमेटिक अलार्म पिस्तौल

बहुत ख़ूबसूरत लोहे की बनी हुई। चोर-डाकुओं और जंगली जानवरों आदि को डराकर भगाने में बहुत उपयोगी। लाइसेंस की ज़रूरत नहीं। अपने बचाव के लिये तथा खेल आदि के लिये बहुत बढ़िया। यह ६ इंच लंबी और ४ इंच ऊँची है। हरएक इसे आसानी से चला सकता है। इसको सरकस के लोग, वाचमैन तथा महकमा जंगलात के अफ़सर लोग अपने पास रखते हैं।

क़ीमत २॥) मय १०० छर्रों के। अलग से १) के ५० छर्रे मिलेंगे। डाक-ख़र्च ॥)

पता—ईस्टर्न ट्रेडिंग कंपनी (S. H.) पोस्ट बॉक्स नं० १२२०४, कलकत्ता

❀ श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों ❀

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चरक) सब प्रकार के ३ दिन में पूरा लाभ। यदि अनेक
लगाकर आप निराश हो चुके हैं, तो एक बार इसे लगाकर नीरोग होवें। बेफ़ायदा साबित करने
दूना मूल्य वापस। जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १॥)

पता—राजवैद्य। परमेश्वरदयालजी
नं० १०२, पो० कतरीसराय (गया)

असली स्तंभन की गोलियाँ

औरत की ख़ुशी न बज़्ज़ाज़ की दूकान पर बिकती है, और न सराफ़ की दूकान से ख़रीदी जा
है। औरत की ख़ुशी पुरुष की ताक़त (स्तंभन) में छिपी है। स्तंभन से कमज़ोर-से-कमज़ोर मर
ज़बरदस्त-से-ज़बरदस्त औरत को अपने वश में कर सकता है। अधिक प्रशंसा करना सभ्यता के
है। आवश्यकता से एक घंटा पूर्व एक गोली खाई जाती है। आप तजुर्बे के लिये एक गोली खाएँ,
फिर इसका करिश्मा देखें। रोज़ाना डाक में बेशुमार प्रशंसा-पत्र आते हैं। क़ीमत फ़ी शीशी १२
१॥), तीस गोली ३), डाक-ख़र्च अलग।

पता—कृष्णा जनरल फ़ार्मेसी (२४) नार्टन-स्ट्रीट, ग्वालमंडी, लाहौर।

खिज़ाब को छोड़ो

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला
तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो २॥); इससे अधिक पका हो,
या कुल पका हो, तो ६) का तेल मँगा लें।

पता – बाल काला डिपो नंबर १०१ पो० कतरीसराय, गया

लेख-सूची

पृष्ठ
१. आँखों का जल (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ८३
२. लुई पाश्चियर—[लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीपं० देवीदत्त शुक्ल ... ८४
३. स्पेन और योरप के महाराष्ट्र—[लेखक, श्रीरामनाथ 'सुमन' ... ६३
४. दुबेजी के संस्मरण (हास्य)—[लेखक, श्रीयुत विजयानंद (दुबेजी) १०२
५. कविता के प्रति (कविता)—[लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ... १०७
६. कौन बँटाए उर की पीर ? (कविता)—[लेखक, श्रीयुत नीलकंठ तिवारी 'ज़ख़मी' बी० ए०, साहित्यरत्न ... १०८

धातुपौष्टिक व शक्तिवर्द्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, क़ब्ज़ियत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाती हैं, और निर्बलता को भगाकर दांपत्य जीवन का पूरा आनंद प्राप्त कराती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का १) एक रुपया। रसिक विषयों से भरपूर 'वैद्यविद्या' पुस्तक मुफ़्त मँगावें।

मदनमंजरी-फ़ार्मेसी, जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—निगम मेडिकल हाल
अमीनाबाद-रोड
बनारस-एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

पेलिकेन

Pelican

हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

यह सरलता से खोला जा

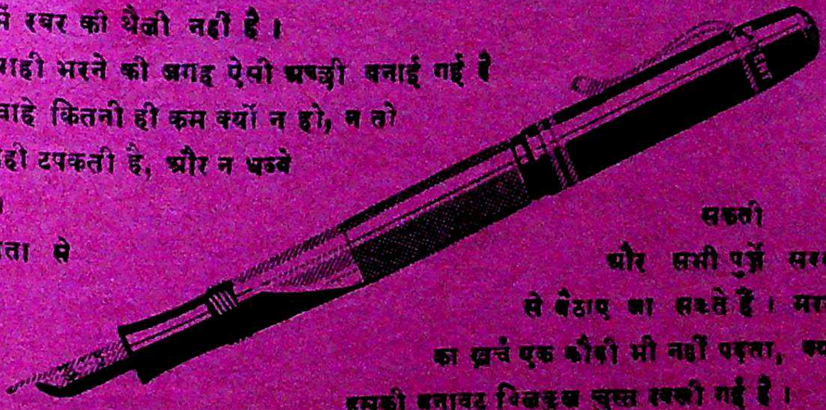

सकता है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है।

कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है।

साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है।

स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—

पारदर्शक

गोथेर वागनेर हानोवर

Pelican

सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।

लोकल स्टॉकिस्ट—कोशला जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

पृष्ठ

७. निःशुल्क, अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा-प्रचार—[लेखक, श्रीयुत महेशचंद बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद ... १०६

८. नंदा (कहानी)—[लेखिका, श्रीमती विद्या ठाकुर ११५

९. रैम्ज़े मैकडोनाल्ड का अंत (सचित्र, जीवनी)—[लेखक, श्रीसतीशचंद्र काला बी० ए० ... ... १२३

१०. दो कांग्रेसी मंत्रिमंडलों द्वारा पद-परित्याग—[लेखक, रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० तथा रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० ... ... १२८

११. प्रेम-मिलन (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश' १३२

बवासीर की दवा

चाहे जैसी ख़ूनी-बादी, नई-पुरानी बवासीर हो, 'अर्शोहर' को खाने से दर्द, सूजन एक दिन में आराम हो जाती है। यही खावें, और जल में घिसकर लगावें। धर्मार्थ मूल्य ॥-), पोस्ट ऑर्डर या डाक के टिकटों से पेशगी भेजिए।

औरतों के बाँझपन की दवा ३) शीशी।

योगेंद्र-फ़ार्मेसी (Regd)

अमृतसर

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी औषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह ओषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारता और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।=)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभ नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधि लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौकी इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ूब तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का २), ८ गोली का १॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापि नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अ संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे गर्भ-निवारक सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य की शी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालि से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिल वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगाकर लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

पृष्ठ
१२. मेरी काश्मीर-यात्रा (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, श्रीबलदेवप्रसाद गुप्त ... १३३
१३. सुधा-चित्रावली १४३
१४. चयन—[लेखकगण, श्रीमती विद्यावती 'कोकिल', श्रीपं० चंद्रशेखर पांडेय 'निराश', कुमारी विद्या भार्गव और श्रीभागवत शुक्ल 'पाथोद' साहित्यरत्न, आयुर्वेद-शास्त्री १४७
१५. सुधा-पहेली-प्रतियोगिता १५३
१६. परीक्षा—[लेखकगण, साहित्याचार्य श्रीपं० गयाप्रसाद शास्त्री, 'श्रीहरि', श्रीकालिदास कपूर, श्रीयुत 'श्री०' और श्रीसुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० १५७
१७. हमारी डाक १६०
१८. नए फूल १६२
१९. सौरभ (संपादकीय विचार) ... १६३

दैवी शक्तियों का साक्षात् प्रभाव
दिखलानेवाला
राजों, महाराजों तथा सिटी-मैजिस्ट्रेट साहब
बहादुर लखनऊ द्वारा परीक्षित
जगत्-विख्यात
चिंता-हरण सिद्ध यंत्र 'रजिस्टर्ड'
समस्त मनोरथों को पूरा करनेवाला, धन, धान्य, रोज़ी, पुत्र-सुख, वशीकरण, मुक़द्दमा, परीक्षा, तरक़्क़ी, तब्दीली, घुड़दौड़, लाटरी आदि में उत्तीर्ण करानेवाला। केवल २) में मँगाकर लाभ उठावें।
गारंटी हम बजरंगबली को साक्षी देकर लिखते हैं, यदि हमारे लेखानुसार आपका मनोरथ पूरा न हो, तो दूना मूल्य वापस करेंगे।
पता—मैनेजर रमलाचार्य-आश्रम (सु)
पोस्ट कमलापुर, ज़िला सीतापुर [यू० पी०]

हिंदी-संसार की एक अनुपम काव्य-कृति
निर्झरिणी
लेखिका—श्रीमती सूर्यदेवी दीक्षित विदुषी 'उषा'
प्राक्कथन-लेखक—
समालोचक-प्रवर पं० रामचंद्रजी शुक्ल
(हिंदी-युनिवर्सिटी, बनारस)
निर्झरिणी अल्प काल में ही हिंदी के प्रमुख विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर चुकी है। इसकी एक-एक कविता में सहज स्वाभाविक काव्य-प्रवाह, सरल अनुभूतियों की मनोरमता एवं 'सत्यं शिव सुन्दरम्' की पूर्ण अभिव्यक्ति है।
मूल्य १६२ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का १) एक रुपया।
दो अमूल्य सम्मतियाँ—
आचार्य-प्रवर श्रीमहावीरप्रसादजी द्विवेदी लिखते हैं—
"निर्झरिणी की कविताओं की यत्र-तत्र सैर करके मुझे परमानंद हुआ। रचना सरस, सुंदर और भाव-भरी है। भाषा भी परिमार्जित है। उषादेवी को बधाई !"
—म० प्र० द्विवेदी
महाकवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं—
"आपकी रचना आपके योग्य ही है। निर्झरिणी में प्रवाह है, सरलता है,, किंतु कुटिलता नहीं। प्रभु की कृपा है।"—मैथिलीशरण
प्रकाशक—रविशंकर दीक्षित, डिप्टी का पड़ाव, कानपुर।
स्थानीय विक्रेता—रामदयाल-प्रकाशचंद, चौक, कानपुर।

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. पतझड़—[चित्रकार, श्री हकीम मुहम्मदख़ाँ ८३

(ख) दुरंगे

२. कुमार गंगानंदसिंह १०६
३. श्री 'निराला' जी १०७

(ग) सादे

४. श्रीमती विद्या ठाकुर ११५
५. श्रीसतीशचंद्र काला बी० ए० ... १२३
६. स्व० मि० रैम्ज़े मेकडानाल्ड ... १२४
७. श्रीयुत बलदेवप्रसाद गुप्त १३३
८-२०. मेरी काश्मीर-यात्रा-संबंधी १३ चित्र १३४-१४१

विवाहित आनन्द

आप समझते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और इसी भूल के कारण बीसवीं सदी की सर्वोत्तम पुस्तक के स्वाध्याय से वञ्चित हैं। सच समझिए 'विवाहित आनन्द' पांच हज़ार विवाहित पुरुषों की आप-बीतियों का निचोड़ है। क्रियात्मक उपदेशों, रहस्य की बातों और अत्यन्त लाभदायक शिक्षाओं का भण्डार है। इसके अतिरिक्त गुप्त रोगों की बिना औषधि के चिकित्सा भी लिखी गई है।

मूल्य सचित्र व सजिल्द का ॥)

सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

पता—कविराज हरनामदास बी.ए., लाहौर

AMRUTANJAN
SOVEREIGN-REMEDY
AMRUTANJAN
Best Indian Pain Balm
Amrutanjan Depots
BOMBAY, MADRAS

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दना
भारतीय महौषध
सिर-दर्द, जलन, पी
फोड़ा, सूजन,
घाव, वात,
कमर का दर्द,
खाँसी, कीड़ों का
आदि सभी वेदना
में 'अमृतां

आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड
बंबई, कलकत्ता, मदरास
पो० बॉ० नं० ६८२५

जरमनी पिस्तौल

देखने में यह भयंकर अस्त्र मालूम होती
और आवाज़ में यह घोर दुष्ट को भी कंपा देती
तथापि किसी भी प्रकार के लाइसंस की
श्यकता नहीं है। इसकी गर्जना असली
की तरह है। इसमें एक साथ १० गोलियाँ
और चलाई जा सकती हैं। गोलियों सहित
पिस्तौल का मूल्य ३); डाक-ख़र्च
गोलियों का अलग से मूल्य १) की १००

ग्लोब ट्रेडिंग कंपनी
११६, फोर्ट स्ट्रीट, फोर्ट

	पृष्ठ
२१. श्रीमान् बरिस्टर बी० एम्० पँवार साहब	१४३
२२. श्रीकुँवर सोमेश्वरसिंह बी० ए०, एल्० एल्० बी०	१४४
२३. श्रीमान् सरदार त्र्यंबकराव पँवार साहब	१४४
२४. श्रीपं० हरिश्चंद्रजी शर्मा	१४५
२५. श्रीमान् बी० डी० देशपांडेय साहब ...	१४६
२६. श्रीरमेशचंद्र और श्रीमज़हरअली ...	१४६

पहनिए नहीं, खाइए।

जवाहिरात पहनने में जानोमाल का खतरा है।

मगर

जवाहिरात से विधि-पूर्वक बना हुआ

—जवाहर मोहरा—

निर्बलों को बलवान् और बूढ़ों को जवान बनाता है। बदन, दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी दूर करता है। किसी भी अवस्था में गिरी हुई नब्ज़ को उभारता है। जहाँ अन्य ओषधियाँ निष्फल होती हैं, वहाँ भी यह चमत्कार दिखाता है। १० ख़ूराक की १ शीशी २॥), फ़ी तोला ६०) रुपए।

सब प्रकार की आयुर्वेदिक ओषधियों और बहुमूल्य रसों के मिलने का पुराना और विश्वास-पात्र स्थान—

वैद्यराज हकीम बनारसीदास वैद्यशास्त्री, आयुर्वेदाचार्य

शारदा-फार्मेसी

लाठीमोहाल, कानपुर

कामदेव वटी

इससे हर तरह की कमज़ोरी, सुस्ती, नामर्दी, समस्त धातु-विकार दूर होकर अटूट बल तथा स्तंभन होता है; और हस्तमैथुन आदि से हुई शिकायतें शर्तिया दूर होती हैं। मू० १), स्पेशल तिला—हस्तमैथुन आदि से पैदा हुई नसों की कमज़ोरी की रामबाण दवा, मूल्य २), डाक-ख़र्च जुदा, विवरण मुफ़्त। चमत्कार पुस्तक मुफ़्त मँगाइए।

निश्चय पुत्र ही होगा

शंकर-स्टैन्डर्ड पिल—यह गर्भाधान में दी जाती है। सौ फ़ीसदी लड़का ही होता है, बशर्ते कि गर्भ दो मास से ज़्यादा न हो। मूल्य ४), डाक-ख़र्च जुदा।

शंकर-रिसर्च (बर्थ कंट्रोल)

इसके केवल एक ही दफ़ा खाने से सदा को या इच्छित समय तक गर्भ नहीं रहेगा। मूल्य २), डाक-ख़र्च जुदा।

पता—डॉक्टर हरिशंकर शर्मा एम्० बी० एच्० (s) कचौसी, यू० पी०

खुफिया तसवीरदार कार्ड

अगर आप आशिक़ाना हुस्न व जमाल के साफ़-साफ़ और गुप्त दृश्य देखना चाहते हैं, तो हमारे यहाँ से एक सेट तसवीरदार कार्ड मँगाकर देखें। ये वे कार्ड हैं, जिनकी शौक़ीन-मिज़ाज सज्जनों को हर समय ज़रूरत रहती है। पूरा सेट १०० कार्ड ६), नमूना २५ कार्ड २॥), डाक-ख़र्च अलग। दूकानदारों को ख़ास रियायत।

पता—सेक्सोल बुकडिपो (२४) नरायन स्ट्रीट, ग्वालमंडी, लाहौर

हमारे सर्वसिद्ध अनुभूत प्रयोग

५००) रु० इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफ़ेदी) की अद्भुत वनौषधि। तीन दिन में पूरा आराम। यदि आप सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं को दवा कर थक गए हों, तो इसे लगावें। बेक़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, ≈) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २॥)

कामप्रभाकर

धातु-क्षीणता, नामर्दी, कमज़ोरी, सुस्ती, स्वप्नदोष आदि को बहुत शीघ्र दूर कर एक शीशी व्यवहार करते-करते ग़ज़ब की शक्ति पैदा करती है। बधेज-शक्ति बढ़ाने में अद्भुत गुणशाली है। मूल्य १५ दिन सेवन योग्य ३० गोली का १॥) रुपया।

पता—वैद्यराज अखिलकिशोरराम (सुधा), पोस्ट कतरीसराय (गया)

हमारी कृषि-संबंधी पुस्तकें पढ़कर आप एक-एक बीघे में सहस्रों रुपए कमा सकते हैं

मक्का की खेती (सचित्र)	१)	जीरा	=)
गेहूँ की खेती (,,)	॥=)	पपीता	।-)
कपास की खेती (,,)	२)	मूँगफली	।=)

उक्त पुस्तकें उर्दू-भाषा में भी हैं। सब पुस्तकों के ग्राहकों के लिये डाक-व्यय माफ़।

लेखक व प्रकाशक—
रामप्रसाद सूबा ऐंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट
रिटायर्ड एग्रीकल्चरल डिप्लोमिस्ट (लंदन), मुरार छावनी, ग्वालियर

* स्त्री-रोग की अक्सीर दवा *

मासिक धर्म के हरएक दोषों को दूर करने में रामबाण है। मासिक धर्म के समय कमर में पीड़ा, पेट में दर्द, आँखों में जलन, हाथ-पैर के तलवों में लहर, मासिक धर्म प्रमाण से अधिक या थोड़ा होना, गर्भ न रहना, गर्भपात या अल्पायु संतान का होना, या होकर मर जाना इत्यादि समस्त दोष दूर कर गर्भाशय की शक्ति लाकर संतान पैदा करने योग्य बनाती है। मूल्य २)

प्रशंसा-पत्र—श्रीमती बाबू किशोरीमोहनलालजी श्रीवास्तव्य, दौलतगंज लश्कर (ग्वालियर) लिखती हैं—"मुझे इस दवा से बहुत ही लाभ हो रहा है। कृपा कर एक शीशी और वी० पी० शीघ्र भेजने का प्रबंध करें।"

पता—श्रीकृष्ण-केमिकल वर्क्स नं० ५४, पो० कतरीसराय (गया)

सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक

मासिक पत्रिका

सुधा

राजसंस्करण	वार्षिक मूल्य १२)	विदेश के लिये १२)	प्रति संख्या १)
साधारण संस्करण	,, ,, ६)	,, ,, ६)	,, ॥)
सस्ता संस्करण	,, ,, ४)	,, ,, ४)	,, ।)

इस अंक के विशेष लेख

१. लुई पाश्चियर—श्रीदेवीदत्तजी शुक्ल, संपादक सरस्वती पृष्ठ ८४
२. स्पेन और योरप के महाराष्ट्र—श्रीरामनाथ 'सुमन' ९३
३. दुबेजी के संस्मरण—श्रीविजयानंद (दुबेजी) १०२
४. निःशुल्क, अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा-प्रचार—श्रीमहेशचंद बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद १०९

प्रकाशक—
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

में आप

निःशुल्क भाग ले सकते हैं !

कैसे ?

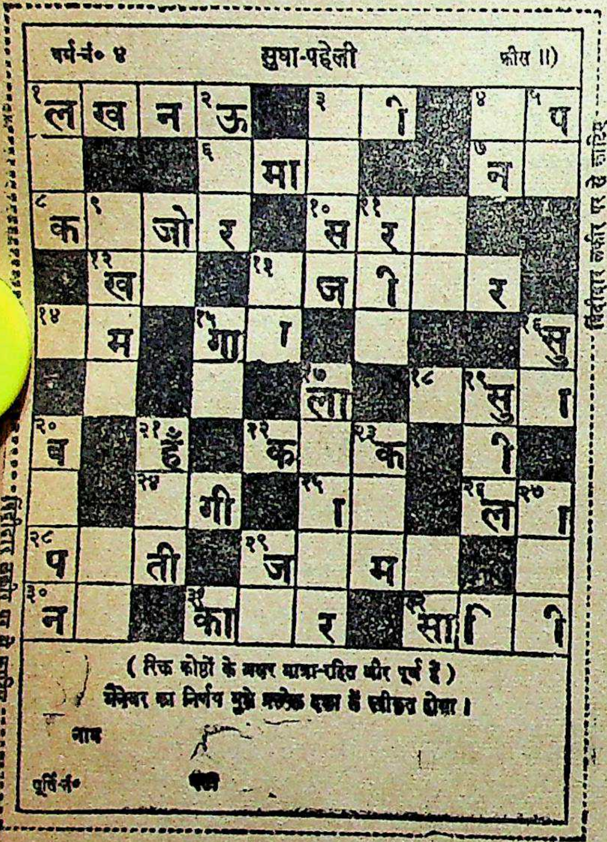

फ़ार्म-नं० ४ सुधा-पहेली फ़ीस ।।)

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।

नाम

पूर्ति-नं० पता

चिह्नित लकीर पर से काटिए

फ़रवरी या मार्च-मास की 'सुधा' में प्रकाशित पहेली-प्रतियोगिता-नं० ४ में जो देवी या सज्जन (अकेले और एक ही नाम से) ३ पूर्तियाँ और उनका प्रवेश-शुल्क १।।) नियमानुसार भेज देंगे, वे साथ में इस पृष्ठ पर दिए हुए वर्ग पर एक पूर्ति निःशुल्क भेजने के भी अधिकारी होंगे। जो पहले अपनी १ या २ पूर्ति भेज चुके हों, वे बाक़ी पूर्ति भेजकर इस नियम से लाभ उठाएँ। अब भी समय है। पूर्ति भेजने की अंतिम ता० ३१ मार्च है।

ध्यान रहे—

भिन्न-भिन्न नामों से भिन्न व्यक्तियों द्वारा (चाहे वे एक ही परिवार के क्यों न हों) भेजी गई पूर्तियों के विषय में उपर्युक्त नियम लागू न होगा, और उनकी भेजी हुई कोई भी पूर्ति निःशुल्क स्वीकार न की जायगी।

इस नियम से लाभ उठाइए। यह किसी भी पत्रिका में नहीं है !

सूचना—

वर्ग-पूर्तियाँ भेजते समय नीचे दिया कूपन काटकर लिफ़ाफ़े पर (पते की जगह) चिपका दीजिए।

मैनेजर 'सुधा'
(पहेली-प्रतियोगिता-विभाग)
लखनऊ

* * *

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समै सब काँहि।
(दुलारेलाल भार्गव)

वर्ष ११
खंड २
फाल्गुन, ३१५ तुलसी-संवत् (१९९४ वि०)—
मार्च, १९३८
संख्या २
पूर्ण संख्या १४०

आँखों का जल

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

पास अपने कोई पापी नहीं पाता पावन सोता;
बड़े ही बुरे-बुरे धब्बे अधम प्राणी कैसे धोता?
कालिमामय कोई कैसे कालिमाएँ अपनी खोता;
जलन कैसे जी की जाती, जो न आँखों का जल होता?

लुई पाश्चियर

[सरस्वती-संपादक श्रीपं० देवीदत्त शुक्ल]

जब हम खोज-संबंधी बातचीत करने लगते हैं, तब हमें कैप्टन कुक, कोलंबस, स्टैन्ले, लिविंगस्टन, वास्को डि गामा, कैप्टन हड्सन, बर्टन, स्पेकी, डॉक्टर स्वेन हेडिन और सर हंफ़्रे गिल्बर्ट ऐसन-जैसे साहसी यात्रियों तथा खोजियों की याद आ जाती है। इन लोगों ने समुद्रों को छान डाला है, अज्ञात देशों का पता लगाया है, और प्राचीन सभ्यताओं के छिपे हुए प्रमाणों को भू-गर्भ से खोज निकाला है। अथवा हम गैलिलो, बाल, हर्शल या फ़्लेमेरियन-जैसे पैनी बुद्धि के लोगों की याद करते हैं, जिन्होंने आजीवन रात-रात-भर नक्षत्र-मंडल का निरीक्षण और खगोल-संबंधी मनुष्य के ज्ञान को विकसित किया है। कभी-कभी हम स्टेफ़ेंसन, आर्कराइट, वाट, एडीसन, पार्सेस या मर्कोनी की बात सोचने लगते हैं, और उनके आविष्कारों से संसार में जो विलक्षण परिवर्तन हुए हैं, उन्हें देखकर चकित होते हैं। परंतु जिन लोगों ने मनुष्य-शरीर-संबंधी अनोखी बातों का पता लगाया है, उनकी ओर तो हमारा ध्यान बहुत ही कम जाता है।

एक बूँद गंदे पानी के भीतर का रहस्य जानने और उसमें के कीड़ों के स्वभाव के आजीवन अध्ययन की ओर लोगों का ध्यान शायद ही कभी गया हो। तो भी इन नन्हे-नन्हे जीवों का रहस्य जानना एक महत्त्व-पूर्ण विषय हो गया है। यह पता लग चुका है कि इनमें से कुछ जीव चिड़ियों, पशुओं और मनुष्यों के भयंकर शत्रु होते हैं, साथ ही ये उनके आक्रमणों के वारण करने के उपाय भी जानते हैं।

लोग ज़माने से रोगों और उनके दूर करने का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करते आए हैं, परंतु अनेक साधारण तथा कुछ अत्यंत भयंकर रोगों का सच्चा रूप केवल हाल में ही ज्ञात हुआ है। रोगों के लक्षणों का अधिकाधिक ज्ञान धीरे-धीरे ही हुआ है। यह ज्ञान उन्होंने नहीं पूर्ण किया है, जो आजीवन रोगियों की ही देख-भाल में लगे रहे हैं, जैसे कुछ आश्चर्य-जनक बातें तो लुई पाश्चियर-नामक फ़्रांसीसी रसायन-शास्त्री ने खोज निकाली हैं। उसकी खोजों का अनेक रोगों की चिकित्सा पर महत्त्व-पूर्ण प्रभाव पड़ा है, और वे मानव-जाति के लिये इतनी उपयोगी सिद्ध हुई हैं कि वह वर्तमान समय का एक श्रेष्ठ चमत्कारी पुरुष कहा जा सकता है। उसने बहुत ही नन्ही वस्तु के संबंध में खोज की है, तो भी वह ऐसी मनोरंजक है कि पाश्चियर का नाम कभी नहीं भूलने का।

लुई पाश्चियर एक चमार का पुत्र था, और स्वीज़रलैंड के सीमावर्ती फ़्रांस के जूरा-नामक ज़िले का निवासी। उसके पिता की इच्छा थी कि उसका पुत्र पढ़-लिखकर फ़्रांस के किसी कॉलेज या स्कूल का अध्यापक बने, अतएव उसने यथा-शक्ति उसे उत्कृष्ट शिक्षा दी। पेरिस के नार्मल-स्कूल में अध्ययन करते समय पाश्चियर का ध्यान एक ऐसे विषय की ओर आकृष्ट हुआ, जिसका अध्ययन वह आजीवन करता रहा। वह विषय था लघुतम वस्तुओं के संबंध का ख़ुर्दबीन द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। उसने अपना कार्य निरीक्षण से प्रारंभ किया, और उन वस्तुओं के संबंध में ऐसी नई बातें खोज निकालीं, जिन्हें जानकर उस समय के विद्वान् चकित हो गए। उस समय वह एक शांत

और गंभीर युवक था। अपरिचितों के आगे वह प्रायः झेंपता-सा रहता था। वह पढ़ने में ही लगा रहता था।

पाश्चियर का बीस से तीस वर्ष की वय का समय उपर्युक्त प्रकार की खोजें तथा भिन्न-भिन्न कॉलेजों में शिक्षा देने का कार्य करने में व्यतीत हुआ। परंतु जब वह लिले के विज्ञान के नए स्कूल में अध्यापक के पद पर नियुक्त हुआ, तब उसका ध्यान उन विशेष बातों के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुआ, जिनके कारण वह प्रसिद्ध हुआ।

लिले एक प्रधान व्यवसायी नगर था। वह अपने सूती-ऊनी वस्त्रों के कारबार तथा तंबाकू और साबुन के कारख़ानों के लिये प्रसिद्ध था। वहाँ चुक़ंदर से चीनी बनाने के कारखाने भी थे। इस चीनी से वहाँ स्पिरिट या एलकोहाल भी अधिक परिमाण में तैयार किया जाता था।

सन् १८५६ में, पाश्चियर की ३५ वर्ष की वय में, लिले के एलकोहाल के एक व्यवसायी ने उससे एक दिन कहा कि जो एलकोहाल यहाँ तैयार होता है, वह निम्न श्रेणी का होता है, क्या किसी उपाय से वह उच्च श्रेणी का बनाया जा सकता है? यह प्रस्ताव उसके मन का था। उस दिन से वह अपना कुछ समय एलकोहाल के कारखाने में लगाने लगा, और ख़ुर्दबीन से निरीक्षण करने के लिये 'लीकर' और खमीर के नमूने अपने साथ घर ले आने लगा। उसने शीघ्र ही यह जान लिया कि अच्छे उठे हुए खमीर के 'ग्लोब्यूलों' की रूप-रेखा अच्छे नहीं उठे हुए खमीर के 'ग्लोब्यूलों' की रूप-रेखा से भिन्न होती है, और ये ही एक समय 'लीकर' को खट्टा करना शुरू करते हैं। उसने यह सब भट्ठीवालों को ख़ुर्दबीन द्वारा दिखला दिया। भट्ठीवाले जान गए, खमीर के अमुक स्थिति पर पहुँचने के बाद वह बिगड़ने लगता है। इस जानकारी से वे ख़मीर की देख-भाल रखने लगे, और वह बिगड़ने न पाता था। इससे भट्ठीवालों को हज़ारों का लाभ हुआ।

ख़मीरों की प्रकृति की जाँच और दूध को बैठा देनेवाले ख़मीर की भी परीक्षा करते समय पाश्चियर ने एक महत्त्व-पूर्ण नई बात खोज निकाली। उसने बताया कि सभी ख़मीर भिन्न-भिन्न प्रकार के 'ईस्ट' के कारण उठते हैं, और इन 'ईस्टों' के ग्लोब्यूल बढ़कर और खिलकर 'लीकर' में छा जाते हैं। उसने यह भी बताया कि 'ईस्ट' के जिन पुनरुत्पादक बीजों से ख़मीर उठता है, वे ख़मीर की स्थिति में प्राप्त दूसरे बीजों से पहुँचाया जाता है। वे किसी उपयुक्त पदार्थ में अपना बीज डालने के लिये प्रतीक्षा करते रहते हैं। इस खोज से देश के एक बड़े भारी कारबार को बड़ा प्रोत्साहन मिला। उक्त धंधा करनेवाले पाश्चियर के बहुत कृतज्ञ हुए। फ़्रेंच एकेडमी ऑफ़् साइंस-जैसी संस्था ने पदवी प्रदान करके उसका सम्मान किया।

इसके बाद पाश्चियर एक विकट उलझन के प्रश्न की मीमांसा करने में लग गया। प्राचीन काल से लोगों का विश्वास रहा है कि अनुकूल परिस्थितियों में नवीन जीव का जन्म हो सकता है। और, सोलहवीं सदी में एक वैज्ञानिक ने एक चुहिया पैदा करके दिखला भी दी। इसके कुछ वर्ष बाद एक इटली-वासी ने कहा कि एक प्रकार की लकड़ी है, जो समुद्र में सड़ जाने पर कीड़ों को जन्म देती है। वे कीड़े पहले तो तितलियों का रूप धारण करते हैं, उसके बाद पक्षी हो जाते हैं। अनेक लोगों को विश्वास था कि सड़े हुए मांस में जो कीड़े पड़ जाते हैं, दिखाई देने लगते हैं, उनका जन्म उसी में होता है। परंतु रेडी-नामक एक इटली-वासी ने लोगों के इस विश्वास को भ्रम-पूर्ण सिद्ध कर दिया। तरह-तरह के प्रयोग कर लेने के बाद दूसरे लोग भी इसी निश्चय पर पहुँचे। परंतु

जब ख़ुर्दबीन का आविष्कार हुआ, और उसके द्वारा मेह की एक बूँद में अगणित नन्हे-नन्हे जीव दिखाई दिए, तब लोगों का पहले-जैसा विश्वास फिर हो गया, और वे किसी जीव के उत्पन्न हो सकने की बात फिर मानने लगे।

इस विषय का वाद-विवाद वर्ष-प्रति-वर्ष पाश्चियर के समय तक होता रहा। ख़मीर-संबंधी जाँच करते समय उसका ध्यान इस विषय की ओर भी गया था। यदि इन नन्हे-नन्हे जीवों या पौधों के कीटाणु वायु में हैं, तो क्या उन्हें फाँसकर पकड़ लेना संभव नहीं? इस विचार के उठने पर उसने एक यंत्र बनाया। इसके द्वारा वायु की धारा रुई-ऊन के सूत्रों से होकर बहाई जा सकती थी। ऐसा करके देखने पर रुई-ऊन पर धूल के दाग़ पड़ गए। वायु की धारा उनसे होकर प्रवाहित होते समय अपने पीछे उनमें धूल के दाग़ छोड़ती गई थी। इस धूल में ख़ुर्दबीन की सहायता से तरह-तरह के असंख्य कीटाणु दिखाई दिए।

इसके बाद उसने जल्द ख़राब हो जानेवाला कोई तरल पदार्थ लिया—जैसे ख़ून की एक बूँद, मांस का कुछ पतला रस या कुछ दूध—और उसकी इस प्रकार रक्षा की कि उसमें धूल के कण न गिर सकें। उसने जान लिया, यदि तरल पदार्थों की रक्षा की जाय, तो अधिक समय तक ख़राब हो जाने से बचे रहेंगे। परंतु यदि उनमें धूल पड़ा ऊन का एक टुकड़ा डाल दिया जाय, तो उनमें तुरंत ही कुछ-न-कुछ ख़राबी आ जायगी। इसी समय उसे इस बात का भी अनुभव हुआ कि इस प्रकार पकड़े गए जर्म या कीटाणु 'लीकर' में भी ख़राबी पैदा करते हैं।

परंतु अनेक प्रसिद्ध विद्वानों को पाश्चियर का सिद्धांत स्वीकृत नहीं हुआ। अतएव वे तथा पाश्चियर भी वर्षों तक इस विषय के प्रयोग करते रहे। सर्व-साधारण जनता भी उससे सहमत न थी। परंतु वह अपने निश्चय से नहीं डिगा। यही नहीं, वह यह भी सोचने लगा कि कहीं हवा में उड़नेवाले धूलि-कण हमारी कुछ बीमारियों के कारण न हों।

इसके बाद पाश्चियर ने ख़मीर के निरीक्षण में अपना ध्यान फिर दिया। उसने इस बात का भी पता लगाया कि ख़मीर की नन्ही-नन्ही सजीव चीज़ों में से कुछ 'लीकर' में नीचे गहराई में विना हवा के भले प्रकार अपना अस्तित्व क़ायम रख सकती हैं।

इसी बीच में पाश्चियर ने एक दूसरी बहुमूल्य खोज की। इस समय वह ३६ वर्ष का था। उसने यह पता लगाया कि शराब छोटे-छोटे कीटाणुओं के द्वारा सिरके में परिणत हो जाती है। इन छोटे-छोटे कीटाणुओं में हवा से ऑक्सीजन ग्रहण करने की शक्ति होती है। इसे वे शराब के 'एलकोहाल' में छोड़ देते हैं, जिससे वह खट्टी हो जाती है। इस खोज ने शराब से सिरका के निर्माण-संबंधी विचारों को उलट-पलट दिया।

इस खोज के बाद शराब के रोगों की परीक्षा का काम सावधानी के साथ शुरू हुआ। पाश्चियर को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि शराब के तैयार हो जाने पर उसमें उन कीटाणुओं के कारण विकार उत्पन्न होते हैं, जो विना ख़ुर्दबीन की सहायता से नहीं दिखाई देते। वनस्पतियों के छोटे-छोटे रूपों के जर्म शराब की सतह पर ठहरकर अनुकूल परिस्थितियों में बढ़ते हैं, और तब उसे खट्टी या कड़ुई बना देते हैं।

पाश्चियर का जन्म जूरा-ज़िले में हुआ था। फ़्रांस के जिन भू-भागों में अधिक शराब तैयार होती है, उनमें से एक यह भी है। उसका पिता ज़िले के अर्बोए-नामक क़स्बे में रहता था, वह भी अपने

गुलाबी और भूरी शराब के लिये प्रसिद्ध था। वहाँ के निवासियों को जब यह मालूम हुआ कि पाश्चियर शराब के ख़राब हो जाने के कारणों की जाँच करना चाहता है, तब उन्होंने उसकी छुट्टी के दिनों के उपयोग के लिये एक रसायन-शाला खोलने का निश्चय किया। परंतु उसने उनके इस प्रस्ताव को नहीं स्वीकार किया, और एक कारीगर से आवश्यक औज़ार बनवाकर वह स्वतंत्र रूप से अपनी खोज के काम में जुट गया।

पाश्चियर कहता था कि खमीर ज़्यादा न उठने पावे, तो शराब कभी खराब न हो। अनेक प्रयोग करने के उपरांत उसने मालूम किया कि यदि शराब एक विशेष हद तक गरम की जाय; और उसी ताप-क्रम में वह कुछ देर तक रक्खी रहे, तो फिर कभी न बिगड़े। ऐसा करने से उसके जर्म मर जायँगे, और तब उसमें किसी तरह का विकार न उत्पन्न होगा। कितनी सरल बात थी, पर किसी के भी ध्यान में न आई। जब लोगों को उसने अपनी खोज का परिणाम बतलाया, तब वे उसकी हँसी उड़ाने लगे, और उसकी बतलाई हुई प्रक्रिया का उन्होंने तिरस्कार कर दिया।

जब पाश्चियर अपनी इस खोज के महत्त्व को समझाने के प्रयत्न में लगा हुआ था, तब एकाएक एक दिन उसे अपने नार्मल-स्कूल के शिक्षक डूमा का पत्र मिला। उसमें उसने रेशम के कीड़ों के रोग की जाँच करने का आदेश किया था। यह रोग फ़्रांस में प्रकट होकर उन सभी देशों में फैल गया था, जहाँ रेशम उत्पन्न होता था। केवल जापान में वह नहीं फैल पाया था। जिस कीड़े को यह रोग होता था, वह ऐसा दिखाई देता था, मानो उस पर मिर्च छिड़की गई हो। उसकी मृत्यु निश्चित थी। यदि संयोग-वश वह मरने से बच गया तो उसके अंडे से वैसा कीड़ा उत्पन्न होगा, जो रेशम पैदा करने के पहले ही मर जायगा। फ़्रांस के लिये यह बड़ी विकट समस्या थी। सन् १८५३ में जिस रेशम से १३ करोड़ फ़्रांक की आय हुई थी, वह सन् १८६५ में घटकर २ करोड़ ही रह गई।

यद्यपि पाश्चियर ने रेशम के कीड़े को कभी हाथ से स्पर्श तक न किया था, तो भी उसने अपने शिक्षक के आदेश को शिरोधार्य किया। वह तत्काल अले-नामक नगर गया, जहाँ रेशम का कारबार अधिक होता था। उसने रेशम के कारबारियों से पूछ-ताछ की। मालूम हुआ कि अपनी शक्ति-भर उन्होंने कोई उपाय बाक़ी नहीं रक्खा है। फलतः पहली बात उसने यह खोज निकाली कि रोग न तो अंडे को होता है, न कीड़े को, किंतु उसने सैकड़ों कीड़ों की खुर्दबीन से परीक्षा की, परंतु वे प्रायः सभी रोग-ग्रस्त मिले। तो भी उसने दो या तीन जोड़े कीड़े बिलकुल तंदुरुस्त प्राप्त कर लिए। इनके सिवा चार जोड़े उसे और भी मिल गए। परंतु ये सब अंडे देकर मर गए। अतएव उसे दूसरे वसंत की प्रतीक्षा करनी पड़ी। क्योंकि उसे यह जानना था कि स्वस्थ कीड़ों के इन अंडों से स्वस्थ रेशम के कीड़े निकलते हैं या नहीं।

उसी साल पाश्चियर ने हैज़े के रोग के कारणों को जानने का भी प्रयत्न किया। उस समय हैज़ा मिस्र में फूटकर पेरिस तक आ पहुँचा था, जहाँ वह ऑक्टोबर में प्रतिदिन दो सौ से भी अधिक लोगों को काल का कलेवा बना रहा था।

इस तरह जब पाश्चियर खोज के महत्त्व-पूर्ण कार्य में संलग्न था, तब उसकी ओर फ़्रांस के सम्राट् और सम्राज्ञी का ध्यान आकृष्ट हुआ। उन्होंने उसे बुलाकर भेंट की, और उसकी खोजों के बारे में बातचीत करके उसका सम्मान

किया। इसी समय, साल-भर के भीतर ही, उसके पिता और उसकी दो छोटी-छोटी पुत्रियों की मृत्यु हो गई।

परंतु पाश्चियर इन दुर्घटनाओं से ज़रा भी विचलित न हुआ। वह अपने काम में दूने उत्साह से लगा रहा। उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि वह ठीक रास्ते पर जा रहा है। उसे अभी एक वर्ष तक और प्रतीक्षा करनी थी, क्योंकि तभी रेशम के नए कीड़ों का जन्म होने पर उसका निश्चय लोगों को प्रत्यक्ष होगा। उसने कह दिया था कि १८६७ का साल रेशम के कारबारियों की शिकायतों का अंतिम साल होगा।

इस बीच में पाश्चियर की बताई हुई शराबों को निर्विकार बनाए रखने की प्रक्रिया अनेक लोगों ने ग्रहण कर ली थी। उसकी सफलता के कारण वह प्रक्रिया उसी के नाम पर प्रसिद्ध हुई थी। अतएव सन् १८६७ में पेरिस की प्रदर्शनी में 'ग्रैंड प्राइज़ मेडल'-नामक तमग़ा देकर उसका सम्मान किया गया।

रेशम के कीड़ों को नीरोग रखने के लिये पाश्चियर ने बड़ी सरल क्रिया निर्धारित की थी। प्रत्येक मादा अंडे देने के लिये एक छोटे-से चौकोर कपड़े पर रख दी जाती थी। इसके बाद वह उस कपड़े के एक कोने में सी दी जाती थी, जहाँ वह धीरे-धीरे सूखती रहती थी। बाद को उसी वर्ष वह सूखी हुई थोड़े-से पानी में तर की जाती थी। फिर उसकी और तब अंडों की ख़ुर्दबीन से परीक्षा की जाती थी। यदि ज़रा-सा भी मिर्च-जैसा दाग़ दिखाई दे जाता था, तो वह कपड़ा अंडों के सहित जला दिया जाता था। केवल नीरोग अंडे ही पकने के लिये रख छोड़े जाते थे।

परंतु यह सरल क्रिया उन लोगों को रुचिकर नहीं हुई, जो केवल अंडे बेचने का धंधा करते थे। अतएव उन लोगों ने पाश्चियर की निंदा करने में अपनी शक्ति-भर कुछ भी बाकी न रक्खा। परंतु जो कीड़े उनके बेचे हुए अंडों से निकले, उनमें अधिकांश रोगी थे, और जिन लोगों ने उनके अंडे मोल लिए, उन्हें अधिक घाटा उठाना पड़ा।

रेशम के कीड़ों के रोग की जाँच के साथ-साथ पाश्चियर ख़मीर का भी निरीक्षण करता रहता था। उस काम को वह छोड़ नहीं बैठा था। इसी समय अर्लियंस के मेयर ने उसे ख़मीर-संबंधी अपने अनुभवों पर सार्वजनिक सभा में व्याख्यान देने को बुलाया। यह नगर अपने यहाँ की शराब, ब्रांडी आदि के लिये प्रसिद्ध था।

यदि शराब हवा में खुली रख दी जाय, तो वह ख़राब हो जायगी, परंतु यदि वह अधिक देर तक वैसी ही रक्खी रहे, तो और भी अधिक बिगड़ जायगी। पाश्चियर ने प्रयोग करके दिखला दिया कि यह परिवर्तन उसमें एक अत्यंत ही नन्हे पौधे या कीड़े के होने से होता है। इस पौधे के कीड़े हवा में उड़ते रहते हैं, जो शराब में अपने आप गिर जाते हैं। उसने बताया कि यह पौधा हवा से ऑक्सीजन ग्रहण कर लेता है, जो शराब के एलकोहाल को सिरके में परिणत कर देता है। परंतु यदि यह क्रिया ज्यों-की-त्यों जारी रहने दी जाय, तो स्वयं वह सिरका भी एसिड और पानी हो जायगा। इस प्रकार सिरका भी ख़राब हो जाता है। पाश्चियर ने यह भी दिखला दिया है कि यदि सिरका गरम कर दिया जाय, और हवा से बचाकर रक्खा जाय, तो फिर उसके गुण में कोई भी परिवर्तन न होगा। उसने सिरके का व्यवसाय करनेवालों को उनकी दूसरी अनेक भूलें भी बताईं, जिनके कारण उन्हें बड़ी हानि उठानी पड़ती थी।

दूसरे वर्ष वसंत-ऋतु में पाश्चियर फिर 'एलें' गया। वहाँ वह यह देखकर बहुत ख़ुश हुआ कि जिन रेशम के कीड़े पालनेवालों ने उसके बता

लाए उपाय का अवलंबन किया था, उन्हें अपने प्रयत्न में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। शराब की रक्षा करने के संबंध में उसके उपाय की सत्यता की जाँच का अनुभव लगभग इस समय किया गया। इन अनुभवों से प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को संतोष हुआ।

पाश्चियर-जैसे परिश्रमी कुछ ही लोग होते हैं। वह दिन-रात खोज के काम में महीनों लगा रहा। फलतः उसे लक़वा मार गया। वह देर में इस रोग से छुटकारा पा सका। परंतु ज्यों ही उसमें चलने-फिरने की शक्ति आई, वह अपने प्रयोगों का परिणाम देखने के लिये 'एले' दौड़ा गया। रेशम के कीड़ों के रोग का जो उपाय उसने निर्दिष्ट किया था, धीरे-धीरे वह सर्व-स्वीकृत हुआ। उसे प्रयोग में लाने से फ़्रांस का रेशम का कारबार फिर चमक उठा।

जिस समय पाश्चियर उपर्युक्त खोज में व्यस्त था, उसका ध्यान इससे भी अधिक महत्त्व-पूर्ण प्रश्न की मीमांसा करने में लगा हुआ था। उसकी इच्छा कीटाणुओं के संबंध में और भी अधिक ज्ञान प्राप्त करने की थी। वह समझता था, अनेक भयंकर रोगों के कारण ये ही जर्म या कीटाणु हैं। घावों को भरने की अपेक्षा उन्हें ज़हर देकर अच्छा करने की उसकी नई क्रिया की ओर अँगरेज़ डॉक्टर सर जोसेफ़ लिस्टर का ध्यान गया, जिससे घावों की सड़न रोकनेवाली चिकित्सा का आविष्कार हो गया। इसके आविष्कार से घावों की चिकित्सा में अभिनव परिवर्तन हो गया। वे ऐसी वस्तु से धोए जाने लगे, जिससे हानिकर जर्म मर जायँ। उन पर पट्टियाँ भी उसी वस्तु में भिगोकर बाँधी जाने लगीं। इस नई चिकित्सा-प्रणाली का प्रचलन सभी अस्पतालों में हो गया, जिससे हज़ारों मनुष्यों की प्राण-रक्षा हुई।

सन् १८७० में फ़्रांस को भयंकर संकट का सामना करना पड़ा। उसकी जर्मनी से लड़ाई छिड़ गई, जिसमें उसकी बुरी तरह से हार हुई। इस समय पाश्चियर यद्यपि भले प्रकार नीरोग नहीं हुआ था, फिर भी अपने देश के प्रति कर्तव्य-पालन से विमुख नहीं हुआ। उसका पुत्र स्वयंसेवक-दल में भर्ती हो गया था। युद्ध में अगणित सैनिक मारे गए थे, परंतु जो सैनिक अपने घावों के कारण बाद को मरे थे, उनकी संख्या और भी अधिक थी।

अंत में, चार महीने के घेरे के बाद, पेरिस पर जर्मनों का, सन् १८७१ की जनवरी के अंत में, अधिकार हो गया। इस घटना के बाद ही युद्ध भी समाप्त हो गया। पेरिस पर शत्रु का अधिकार हो जाने से स्वाभिमानी फ़्रांसीसियों के हृदयों को गहरी चोट पहुँची। पाश्चियर भी ऐसा ही स्वाभिमानी फ़्रांसीसी था। बोन के विश्वविद्यालय से उसे जो डिप्लोमा मिला था, उसे उसने लौटा दिया। यही नहीं, शत्रुओं से अपने क्रोध की कसर निकालने के लिये उसने जर्मनों से बढ़िया बियर-शराब तैयार करने की नई तरकीब निकालने का निश्चय किया। इसके लिये वह इँगलैंड गया। वहाँ उसने लंदन की श्रेष्ठ भट्टियों में से एक भट्टी का निरीक्षण करके बियर और उसके ख़मीर की जाँच की। इस प्रकार अपने अनुभवों से वह इस परिणाम पर पहुँचा कि बियर में जो विकारात्मक परिवर्तन होते हैं, उनका मूल-कारण जर्म हैं, और ये जर्म हवा के द्वारा उसमें जा पहुँचते हैं। ये जर्म विनष्ट किए जा सकते हैं, और कुछ क्षण तक बियर को एक निश्चित ताप-क्रम में रखने से वह अधिक समय तक अच्छी हालत में रक्खी जा सकती है।

परंतु पाश्चियर का ध्यान उन रोगों के कारण खोजने तथा उन्हें निर्मूल करने का उपाय सोचने में तब भी लगा हुआ था, जो मानव-जाति के लिये 'महामारी' के रूप में थे। यद्यपि फ़्रांस तथा अन्य देशों में डॉक्टरों ने घायलों की चिकित्सा

करने में लिस्टर की प्रणाली ग्रहण कर ली थी, तो भी भयंकर रोगों को दूर करने का उपाय खोज निकालना अभी बाक़ी था।

इन रोगों में एक रोग ऐंथ्राक्स था, जिससे प्रत्येक वर्ष अकेले फ़्रांस में ही हज़ारों भेड़ें, गाएँ, बैल और घोड़े काल के ग्रास होते थे। जिस पशु पर इस भयंकर ज्वर का आक्रमण होता था, वह प्रायः कुछ ही घंटों के भीतर मर जाता था। और, भेड़ तो इसके आक्रमण से गल्ले के पीछे रह जाती थी, सिर नीचा किए काँपती हुई ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगती थी, और कभी-कभी गड़रिए के उसका बीमार हो जाना जानने के पहले ही मर जाती थी। सन् १८७० के पहले रूस में सिर्फ़ तीन वर्ष के भीतर इस रोग से हज़ारों भेड़ों और घोड़ों तथा पाँच सौ मनुष्यों के सिवा पचास हज़ार गाय-बैल भी मृत्यु को प्राप्त हुए थे। इस रोग से मरे हुए पशुओं की लाशों की जाँच करके कुछ डॉक्टरों ने बताया था कि उनके रक्त में इस रोग के कीटाणु हैं, परंतु लोगों ने उनके कथन को हँसकर उड़ा दिया। कोच-नामक एक जर्मन डॉक्टर ने उन छोटे-छोटे कीटाणुओं को यत्न-पूर्वक पाला था, और उनसे युक्त तरल पदार्थ को खरहे की खाल के नीचे प्रविष्ट करके उसका रोग-ग्रस्त हो जाना सिद्ध किया था।

पाश्चियर ने केवल यही बात नहीं सिद्ध की कि ये कीटाणु ही उक्त रोग के मूल-कारण हैं, बल्कि यह भी प्रमाणित किया कि चिड़ियों को, जिनका ख़ून पशुओं की अपेक्षा अधिक गरम होता है, यह बीमारी नहीं होती। हाँ, यदि उनके ख़ून का ताप-क्रम कुछ देर तक उनको ठंडे पानी में रखकर कम कर दिया जाय, तो इसका शिकार वे भी हो सकती हैं।

इन निष्कर्षों से एक मुर्ग़ी पालने का धंधा सुरक्षित प्रकट हुआ। तथापि उक्त रोग से घरेलू पशुओं की मृत्यु से जो हानि हुई, वह बहुत अधिक थी। अकेले एक ज़िले की वार्षिक हानि लगभग दस लाख पौंड के थी। पाश्चियर उस ज़िले के निवासियों को यह बात समझा देने में समर्थ हुआ कि जिस ज़मीन के नीचे इस रोग से मरे हुए पशु वर्षों पहले गाड़े गए थे, उस पर उगी हुई घास चरनेवाले पशुओं को भी यह बीमारी हो जाना संभव है। इसी समय उसने मुर्ग़ियों को होनेवाले कॉलरा के कारणों के जानने की ओर भी ध्यान देना शुरू किया। इससे प्रतिवर्ष हज़ारों की संख्या में मुर्ग़ियाँ मृत्यु को प्राप्त होती थीं। इस रोग पर विचार तथा जिन कीटाणुओं से यह रोग होता था, उनकी परीक्षा करते समय संयोग-वश उसने वह खोज कर डाली, जो उसकी सबसे बड़ी खोज मानी गई।

पाश्चियर रोग के कीटाणुओं को ऐसे तरल पदार्थ में पालता था, जिसमें उनकी वृद्धि होती थी। फिर इन कीटाणुओं को दूसरी मुर्ग़ियों के शरीर में प्रविष्ट करके उनके प्रभाव का निरीक्षण करता था। एक बार उसने ऐसे पाले गए एक पुराने कीटाणु का उपयोग किया। यह कीटाणु भूल से पड़ा रह गया था। जिस मुर्ग़ी पर इसका प्रयोग किया गया था, उसे अल्प ही रोग हुआ, और वह शीघ्र ही नीरोग हो गई। और, जब ताज़े तैयार किए हुए कीटाणु का उसने उन पर उपयोग किया, तब उस भी उन पर वैसा अधिक प्रभाव न पड़ा, यद्यपि व उन पक्षियों के लिये प्राणनाशक था, जिन पुराने कीटाणु का पहले प्रयोग नहीं किया ग था। उसके ध्यान में यह बात तत्काल आ गई मुर्ग़ियों के भयंकर रोग के दूर करने का यही उ है। पहले उन पर पुराने पाले हुए कीटाणु प्रयोग किया जाय, उसके बाद ताज़े तैयार हुए कीटाणुओं का क्रम-पूर्वक प्रयोग किया ऐसा करके उसने देखा, तब यही प्रकट हुआ

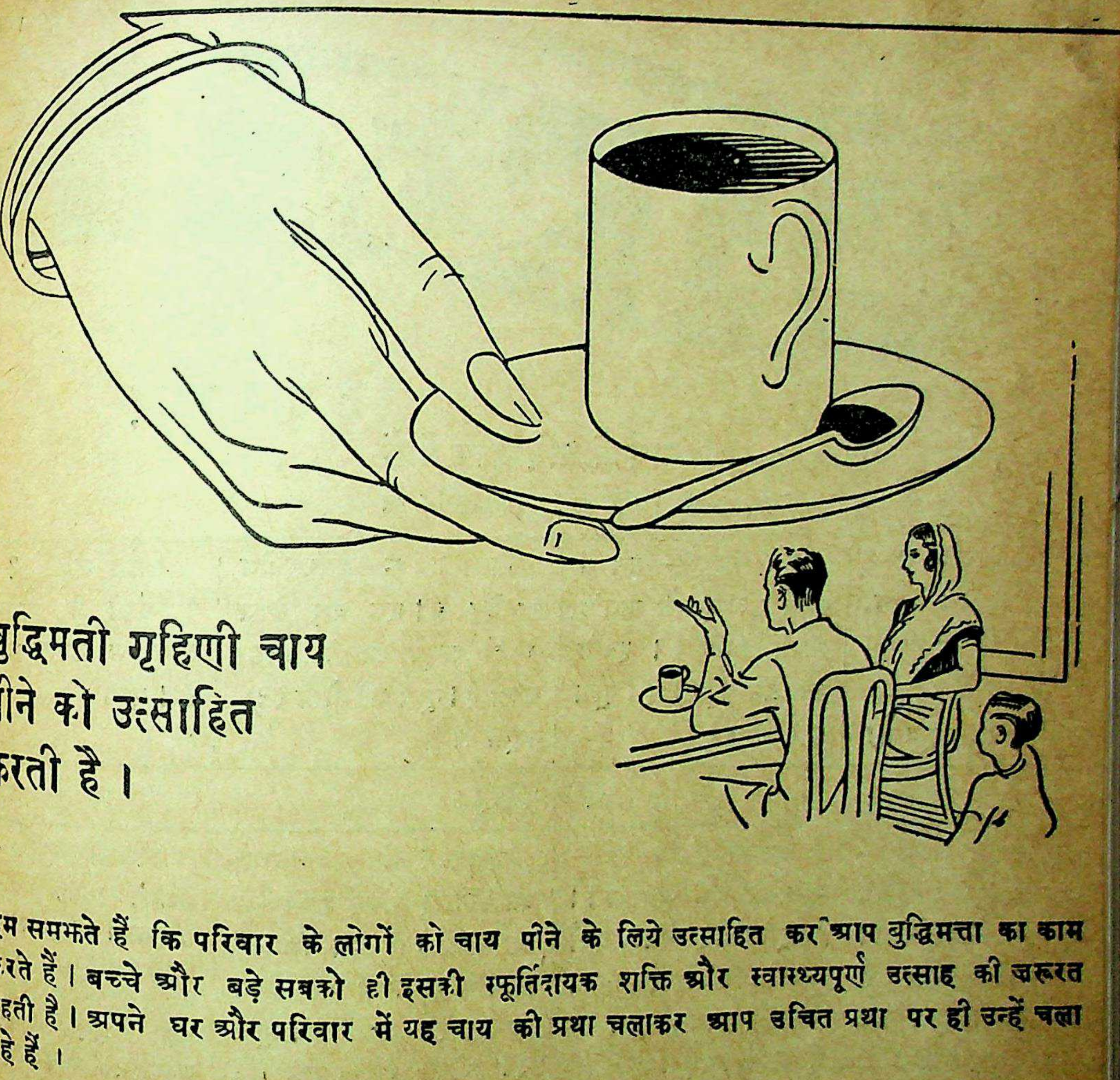

बुद्धिमती गृहिणी चाय
पीने को उत्साहित
करती है।

हम समझते हैं कि परिवार के लोगों को चाय पीने के लिये उत्साहित कर आप बुद्धिमत्ता का काम करते हैं। बच्चे और बड़े सबको ही इसकी स्फूर्तिदायक शक्ति और स्वास्थ्यपूर्ण उत्साह की जरूरत रहती है। अपने घर और परिवार में यह चाय की प्रथा चलाकर आप उचित प्रथा पर ही उन्हें चला रहे हैं।

चाय तैयार करने का तरीक़ा

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर डाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालों में डालकर दूध और चीनी मिलाइये।

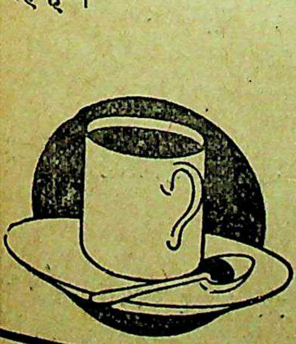

एकमात्र पारिवारिक पेय—भारतीय चाय

IK55

ये दिन गुज़र न जायँ !

अमूल्य

से लाभ उठाएँ

मार्च में आधे मूल्य में लें

❁ विवाहित सुख-सेतु ❁

अकसीर नं० ४४—स्तम्भक है। मन में हर्ष, आह्लाद उत्पन्न करती है। इसका नाम फ़लकसैर इसीलिये है। मूल्य २ तोला २), नमूना ।।)

दत्त याकूती—मन में स्फूर्ति, उत्साह और आनंद उत्पन्न करती है। इच्छा और प्रेम बढ़ाती है। मूल्य प्रति तोला १)

तिला नं० ८—अत्यंत प्रेम का हेतु है। एक बार सेवन से ही अपूर्व आनंद प्रदान करता है। मूल्य प्रति तोला १२), नमूना १=)

तिला नं० ११ पति-पत्नी में आ तथा प्रेम उत्पन्न है। मूल्य

वाजीकरण

अकसीर नं० १—साधारणतः सबके लिये नपुंसकता में हितकारी। वात-रोगों में लाभ पहुँचाती है। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना ८ गोली ।।)

अकसीर नं० १०—नपुंसकता में लाभकारी। कस्तूरी आदि मिश्रित, दर्जा अव्वल, विशेष गुणकारी। बल-वीर्य-वर्धक। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना ।।)

अकसीर नं० २०—रसायन की तरह संपूर्ण शरीर को बल-कांति देती है। निरंतर सेवन से बुढ़ापे में भी यौवन का बल स्थिर रखती है। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना ।।), दर्जा अव्वल ३२ गोली ६)

अकसीर नं० अमीरों के तोहफ़ा। अत्युत्तम बहुत शक्तिशाली करण है। काम की विशेष मूल्य ३० गोली ८ गोली ४)

बस यही नहीं

सर्वप्रथम सर्व-रोगघ्न विचित्र अमृतधारा और उसके (बाम, लोशन, मरहम इत्यादि) भी मार्च में ¾ मूल्य पर मिल सकते हैं।

एक निराली योजना

मार्च में कुछ रुपया जमा करवा देने से आप साल-भर जब-जब चाहें, अपनी और अपने कुटुं चिकित्सा के लिये इसी रियायती मूल्य पर आवश्यकतानुसार जो ओषधि चाहें, मँगवा सकते हैं, ज कि आपका रुपया ख़त्म न हो जाय।

बड़ा सूचीपत्र और "नपुंसकत्व" मुफ़्त मँ

डाक व तार का पता

अमृतधारा

लाहौर

मुर्ग़ियों को रोग ही नहीं हुआ, और यदि हुआ भी, तो नाम-मात्र को।

अब पाश्चियर को विश्वास हो गया कि उसने ऐंथ्राक्स-रोग से पशुओं की रक्षा करने का उपाय मालूम कर लिया है। अनेक भेड़ों और गाय-बैलों पर प्रयोग करके उसने प्रमाणित कर दिया कि जिस ढंग से उसने अपने प्रयोग मुर्ग़ियों पर किए हैं, और उनकी कॉलरा से रक्षा की है, उसी ढंग से गाय, बैल आदि पशुओं पर प्रयोग करके ऐंथ्राक्स से उनकी रक्षा की जा सकती है।

यह प्रक्रिया यद्यपि अब बहुत सरल प्रतीत होती है, परंतु अपने उद्देश की सिद्धि के लिये ऐंथ्राक्स का कीटाणु तैयार करने में पाश्चियर को हफ़्तों तक लगातार परिश्रम करना पड़ा था।

इस खोज के बाद पाश्चियर ने हैड्रोफ़ोबिया-रोग के मसले को अपने हाथ में लिया। पागल कुत्ते से काटे हुए को यह रोग होता है। इस रोग के रोगी की मृत्यु बहुत ही कष्टप्रद और भयंकर होती है।

यह न समझ लेना चाहिए कि पाश्चियर की खोजों का सभी लोग बड़े आदर के साथ स्वागत करते थे। उसे अपने विरोधियों की कटूक्तियों से अपनी रक्षा करने के लिये अपने निष्कर्षों की सत्यता समय-समय पर प्रमाणित करनी पड़ती थी। अपने प्रयोगों में उसे जानवरों को कष्ट देने, रोग-ग्रस्त करने एवं मार डालने तक को बाध्य होना पड़ता था, और अनेक दयालु लोग इन प्रयोगों के कार्य में परिणत किए जाने पर यथाशक्ति बाधा देने में अपनी ओर से कुछ उठा नहीं रखते थे।

जब पाश्चियर 'हाइड्रोफ़ोबिया'-रोग की दवा खोजने के प्रयत्न में लगा हुआ था, तब उसे उपर्युक्त ढंग के दयालु लोगों का कटु अनुभव हुआ था। उसने पता लगाया कि इस रोग का संबंध ज्ञान-तंतुओं तथा मस्तिष्क से है। अतएव उसका कीटाणु प्राप्त करने के लिये उसे अनेक कुत्तों तथा खरगोशों के मस्तिष्क में टीका लगाना पड़ा था। और जब तक वह अनेक लोगों की प्राण-रक्षा करने में समर्थ नहीं हुआ, तब तक दयालु लोग उसके प्रयोगों से बराबर घृणा करते रहे।

पाश्चियर का उद्देश सदा ऐसा ही कीटाणु प्राप्त करना रहा, जो शक्ति में इतना निर्बल रहे कि उससे रोग अति अल्प रूप में ही प्रकट हो। उसने कहा कि इस तैयार किए हुए कीटाणु का जिस मनुष्य या पशु को टीका लगाया जायगा, वह रोग के आक्रमण से बहुत अंशों तक बचा रहेगा।

हैड्रोफ़ोबिया-संबंधी कीटाणु प्राप्त कर लेने पर पाश्चियर ने उसका प्रयोग पहले अनेक कुत्तों पर किया। उसे मालूम हुआ, पागल कुत्ते द्वारा काट लिए जाने पर भी वे पागल नहीं हुए। इस संबंध की दूसरी खोज और भी महत्त्व की हुई। उसने मालूम किया कि पागल कुत्ते से काटे गए दो कुत्तों में से एक को उक्त कीटाणु का टीका लगाया गया; जिसके टीका लगाया गया, वह बच गया और पागल नहीं हुआ, पर जिसके टीका नहीं लगा, उसकी मृत्यु हो गई। तो भी उसने अपने इस प्रयोग का उपयोग मनुष्य पर नहीं किया। वह डरता था, कहीं उसका प्रयोग सफल न हो, और रोगी मर जाय, तो उसकी बड़ी अपकीर्ति हो जायगी।

परंतु सन् १८८५ की ५वीं जुलाई को पाश्चियर के पास एक लड़का लाया गया। उसकी देह पर पागल कुत्ते ने चौदह जगहों पर काटा था। उसने निर्भय होकर उस पर अपना प्रयोग किया। दस दिन के भीतर उसने उसके बारह बार टीका लगाया। इसके बाद हफ़्तों तक उसके फलाफल की प्रतीक्षा की गई। लड़का पूरी तरह स्वस्थ बना रहा। उसे विश्वास हो गया कि मानव-जाति के एक बड़े भारी शत्रु को जीतने का उपाय उसने खोज लिया।

ज्यों ही इस आश्चर्य-जनक खोज की प्रसिद्धि हुई, पागल कुत्ते के काटे हुए लोग चारो ओर से उसकी रसायन-शाला में आने लगे, और जिन लोगों ने उसके पास पहुँचने में देर नहीं की, वे प्रायः सब-के-सब नीरोग होकर अपने-अपने घर लौट गए। जर्मनी, ब्रिटेन, रूस और अमेरिका तक से लोग उसके पास आए, और हँसते हुए अपने-अपने देश गए।

'पाश्चियर-इंस्टिट्यूट' की इमारत बनवाने के लिये सभी राष्ट्रों ने धन प्रदान किया। सभी श्रेणियों के लोगों ने यथाशक्ति चंदा दिया। यही इच्छा प्रकट की गई कि इस संस्था का अध्यक्ष स्वयं पाश्चियर ही बनाया जाय। अपने दीर्घ जीवन में उसे सभी राष्ट्रों का सम्मान प्राप्त रहा। सन् १८८१ में जब वह लंदन की 'मेडिकल कांग्रेस' में शामिल हुआ था, तब उसका बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया गया था। सभा की बैठक के बाद प्रिंस ऑफ् वेल्स और जर्मनी के युवराज ने उससे भेंट की। सन् १८८४ में वह एडिनबरा फ्रांसीसी प्रतिनिधि के रूप में गया था। यह अवसर वहाँ के विश्वविद्यालय की तीन सौवीं वर्ष-गाँठ का था। वहाँ भी उसका बड़े उत्साह के साथ स्वागत हुआ था।

स्वदेश में भी पाश्चियर का सभी प्रकार से आदर किया गया था। उसे छोड़कर वैसा आदर प्राप्त करने का कोई दूसरा नागरिक अधिकारी भी नहीं था। लंदन-रॉयल सोसायटी के एक सार्वजनिक व्याख्यान में ब्रिटेन के प्रमुख वैज्ञानिक प्रोफ़ेसर हैक्सले ने कहा था कि सन् १८७० के युद्ध के हरजाने के रूप में जर्मनी ने फ्रांस से जो रुपया वसूल किया था, उसकी भरपाई अकेले पाश्चियर की खोजों से हो जाती है। यह बात उक्त प्रोफ़ेसर महोदय ने पाश्चियर की उन खोजों को लक्ष्य करके कही थी, जो उसने शराब और बियर के बनाने और उनकी रक्षा करने तथा सिरका के बनाने, रेशम के धंधे को पुनः संपन्न करने, पशुओं और भेड़ों का रोगों से, जिनके कारण किसानों की बड़ी हानि हुई थी, बचाने, अस्पतालों से उन रोगों को लोप करने, जो घावों और चीर-फाड़ के कारण होते थे, ऐंथ्राक्स और मुर्गियों के कॉलरा-रोगों को रोकने, पागल कुत्तों से काटे हुए लोगों को हैड्रोफोबिया से बचाने के संबंध में की थीं।

पाश्चियर की ७३ वर्ष की उम्र में, सन् १८९५ में, मृत्यु हो गई, पर जो काम उसने शुरू किया था, वह वहीं नहीं समाप्त हुआ। जिन युवकों को उसने शिक्षा दी थी, उन्होंने तथा संसार के दूसरे कुशल डॉक्टरों ने उसके उदाहरण से उत्साहित होकर, उसकी पद्धतियों का अनुसरण करके एक रोग के बाद दूसरे रोग को निर्मूल करने के उपाय ढूँढ़ निकाले। अतएव फ्रांस ही नहीं, सारा संसार आज पाश्चियर का कृतज्ञ है। वह वास्तव में फ्रांस का एक सर्वश्रेष्ठ पुत्र तथा वास्तविक अर्थ में सच्चा देश-भक्त था।

संयुक्त-प्रांतीय शिक्षा-विभाग की ओर से प्रचलित
हिंदी-विशेष योग्यता-परीक्षा
हिंदी-साहित्य-सम्मेलन महिला विद्यापीठ, (इलाहाबाद) तथा पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

स्पेन और योरप के महाराष्ट्र

[श्रीरामनाथ 'सुमन']

“सारी मुसीबत यह है कि हम पिछले पाँच वर्षों से एक स्थिति से दूसरी स्थिति पर पीछे हटते गए हैं, यहाँ तक कि इन डिक्टेटरों ने यह नतीजा निकाल लिया—यह समझ लिया कि हम किसी भी स्थान पर न रुकेंगे। यदि सरकार उन प्रधान शक्तियों—रूस और फ्रांस—को, जो हमारा साथ दे रही हैं, लेकर साफ़-साफ़, अगर आप पसंद करें, तो मैं कहूँगा कि उजड्डपन से, बात करे, तो इन तीनो राष्ट्रों के पास इतनी सम्मिलित शक्ति है कि योरप में कोई इनके विरुद्ध खड़ा होने का साहस न करेगा। पर हुआ क्या है? ये डिक्टेटर बड़े चालाक लोग हैं, बड़े दुस्साहसी, बड़े सयाने, असल में ये असाधारण लोग हैं। इन्होंने फ्रांस और यहाँ की सरकार की कमज़ोरियों का फ़ायदा उठाया है।……… इस वक्त ये हमारी सरकार के साहस और विवेकशीलता के बारे में बड़ा अपमानजनक—नीचा—खयाल रखते हैं—बहुत ही नीचा!”

— लॉयड जॉर्ज

(पार्लियामेंट की साधारण सभा में दिए गए भाषण से)

(१)

स्पेन के गृह-युद्ध का आरंभ हुए डेढ़ साल होने को आया। जब वह आरंभ हुआ था, तो किसी ने न सोचा था कि इतने दिन चलेगा। चलने का कोई कारण भी न था। पर हम देख रहे हैं कि दिन-दिन उसकी भीषणता बढ़ती जा रही है। उसने न केवल स्पेन को उजाड़ दिया है, वरन् समस्त योरप को ख़तरे में डाल दिया है। इस युद्ध का—जिसने योरप के महाराष्ट्रों में बदगुमानियाँ पैदा कर दी हैं, और जिसे लेकर सब ग़ुर्राते हैं, जो ज्वालामुखी-सा फूट नहीं पड़ता है—सिर्फ़ एक ही कारण ब्रिटेन की पर-राष्ट्र-नीति की शिथिलता है। यह शिथिलता क्यों है, और इसका योरप की राजनीति पर क्या असर पड़ रहा है, इसका ज़िक्र करने के पूर्व, थोड़े में, उस पार्श्व चित्र की एक झलक मुझे पाठक को देनी चाहिए, जिस पर स्पेन का गृह-युद्ध एक नया रंग लेकर आया है।

जर्मनी या इँगलैंड की तरह स्पेन आधुनिक औद्योगिक देश नहीं। उसमें बड़े-बड़े कल-कारख़ानों का प्राधान्य नहीं। उन्नीसवीं सदी की औद्यागिक क्रांति का उस पर बहुत ही कम असर पड़ा है। स्पेनियार्ड सदा से अपनी वीरता, अपनी प्रतिहिंसक वृत्ति, अपनी साहसिकता और अपनी मध्ययुगीन प्रेम-लता के लिये प्रसिद्ध रहा है, वह पठान की भाँति रंगीन सपने देखने का आदी रहा है। अभी ८-९ वर्ष पहले तक, सम्राट् अलफ़ैंसो के काल तक, वहाँ वही पुराना रवैया चला जा रहा था। पश्चिमी योरप का यह कृषि-प्रधान देश औद्योगिक विकास एवं फलतः औद्योगिक क्रांति की धारा से शून्य था, और अपने राजतंत्र और उसकी मौज एवं राग-रंग को लिए चल रहा था। देश में अशिक्षा का साम्राज्य था। पुरानी कुरीतियाँ एवं अंध-विश्वास प्रचलित थे। लड़कियों का स्कूल जाना तक कुछ अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता था, और 'सिनोरिटा' (स्पेनी श्रीमती) अपने गृह एवं बच्चों तथा अपने रूप और शृंगार में मस्त रहती थी। बहुत जगह तो स्नान करना और मोज़े पहनना भी फ़ैशन और प्रचलित प्रथा के ख़िलाफ़ थे। लड़के-लड़कियों को, विवाह के पूर्व, मिलने

की स्वतंत्रता न थी। इस सामंती और मध्ययुगीन वातावरण में एक ओर तो सम्राट् और सामंतों का विलास और स्वेच्छाचार था, और दूसरी ओर सामान्य प्रजा की गहरी पीड़ा थी। एक तरफ़ बादशाह के महल विलास एवं वैभव की क्रीड़ा-भूमि बने हुए थे। वही नाच-रंग, वही शान-शौकत, वही रोमांस, जिसे मध्ययुगीन नृपतियों में हम देखते आए हैं, और आज भी अपने देश, विशेषतः देशी रियासतों के अभागे और आत्म-विस्मृत नरेशों में देख सकते हैं, वहाँ किलकता था। सरदारों और ज़मींदारों का प्रजा पर भीषण आतंक था। वे ग़रीब प्रजा का शोषण करके गुलछर्रे उड़ाते थे। ग़रीबी बढ़ी हुई थी; किसान तबाह हो रहे थे। किसानों और सामान्य लोगों में बेकारी का दौरदौरा था। विश्व के अर्थ-संकट-काल में, जो प्रधानतः १९३० से शुरू हुआ, किसान बिलकुल बेहाल हो गए। उपज के दाम घट गए, और किसानों के सामने बिलकुल अँधेरा छा गया।

इसी समय, १९३१ ई० में, पार्लियामेंट का जो चुनाव हुआ, उसमें सुधारवादियों की विजय हुई। उनकी सरकार बन गई। पार्लियामेंट ने बहुमत से राजतंत्र का अंत कर देने का निर्णय किया, और राजा अलफैंसो सिंहासन से उतार दिए गए; उन्हें देश से निर्वासित कर दिया गया। स्पेन की मध्ययुगीन परिस्थिति को देखते हुए इसे हम अत्यंत महत्त्व-पूर्ण, रक्त हीन क्रांति कह सकते हैं। जेल में पड़े हुए सिनोर ज़मोरा को जेल से छुड़ाकर प्रथम प्रजातांत्रिक सरकार का राष्ट्रपति बनाया गया। पर यह कोई गहरी सामाजिक क्रांति न थी। यह क्रांति लगभग वैसी ही थी, जैसी रूस की प्रथम क्रांति जिसमें करेंस्की की सरकार की स्थापना हुई थी। ज़मोरा की सरकार पर पूँजी-पतियों और सेनावादियों का बड़ा प्रभाव था, इसलिये वह किसानों की स्थिति सुधार न सकी। नई सरकार एवं नई पद्धति होने पर भी सर्वसाधारण की स्थिति वैसी ही बनी रही। राजनीतिक अधिकार आए, पर सुख न आया, शांति न आई, और रोटी का सवाल हल न हुआ। तब लोगों ने अनुभव किया कि आर्थिक या सामाजिक समानता लानेवाली क्रांति के बिना कोरी राजनीतिक क्रांति का कोई विशेष मूल्य नहीं। इसलिये बहुत शीघ्र ज़मोरा की सरकार के विरुद्ध भी देश में असतोष फैल गया। किसानों एवं श्रमिकों ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया। सरकार ने इनका घोर दमन किया, पर दमन से भूखों के पेट से उठती हुई ज्वाला रोकी नहीं जा सकती। स्थिति और ख़राब हो गई, और सरकार को इस्तीफ़ा देना पड़ा। जेनरल प्राइमो डि रिवेरा की अध्यक्षता में दूसरी सरकार क़ायम हुई। रिवेरा का दृष्टिकोण भी क्रांतिकारी न था; हाँ, उसकी सरकार ने परिस्थिति सुधारने का यत्न अवश्य किया, पर स्थिति इतनी ख़राब हो चुकी थी कि कोई विशेष सुधार न हो सका। असंतोष वैसे ही बढ़ता गया। फलतः उग्र प्रजातंत्र-वादियों ने गत वर्ष फ़रवरी में मिलकर 'पापुलर फ़्रंट' नाम से नई सरकार की स्थापना की। सिनोर अज़ाना इसके अध्यक्ष हुए। तब से अध्यक्ष और राष्ट्रपति बदले भी हैं, और आजकल सिनोर नेगरीन के हाथ में नेतृत्व है। सच्चे अर्थ में यह भी समाजवादी सरकार नहीं। यह वस्तुतः उग्र दलवालों की एक संयुक्त सरकार है, और इसमें समाजवादी, साम्यवादी और उग्र मध्यमवर्गीय, सभी तरह के लोग हैं। इनमें परस्पर नीति एवं उद्देश्य का भी झगड़ा है, पर वे सब सामाजिक और आर्थिक समतामयी क्रांति के पक्षपाती हैं। किसानों, मज़दूरों एवं शोषित वर्गों के हित को प्रधानता देने के उद्देश्य को लेकर वह बनी है। इसके नेताओं पर मार्क्सवाद का ख़ूब प्रभाव पड़ा है।

* * *

मार्क्स ने अपने सिद्धांतों की चरितार्थता के विषय में बिलकुल ग़लत कल्पना की थी। उसका बिश्वास था, योरप में जर्मनी औद्योगिक दृष्टि से बहुत उन्नत है, और वहाँ मज़दूरों के भी अच्छे संगठन हैं, इसलिये सामाजिक अथवा आर्थिक क्रांति पहले वहीं होगी। रूस का तो उसे खयाल भी न था, क्योंकि रूस औद्योगिक देश न था, और उसकी अवस्था बिलकुल मध्ययुगीन थी। पर इतिहास में घटनाएँ प्रायः इस तरह घटित होती हैं कि गणित के सिद्धांत उन पर लागू नहीं होते। किसानों के पिछड़े देश रूस में सामाजिक क्रांति हुई, और जर्मनी तथा इँगलैंड, जो योरप के सबसे मुख्य उद्योग-प्रधान देश हैं, इस सामाजिक क्रांति से आज भी उतनी दूर हैं, जितनी दूर मार्क्स के समय थे। स्पेन इस दृष्टि से दूसरा आश्चर्य-जनक उदाहरण उपस्थित करने जा रहा था। इस क्रांति से न केवल देश के अंदर के प्रतिक्रियावादी घबरा उठे, वरन् योरप के राष्ट्रों के सामने भी एक समस्या उपस्थित हो गई। रूस तो ज़रा दूर था, पर स्पेन तो पश्चिमी योरप के राष्ट्रों की छाती पर ही समाजवादी क्रांति की ओर बढ़ रहा था। भला जर्मनी, पुर्तगाल और इटली इत्यादि फ़ासिस्ट देश इस आस्तीन के साँप को कैसे फन उठाने दे सकते थे। उनकी कथित सभ्यता का रूस के साथ एक नया शत्रु और पैदा हो रहा था, इसलिये वे स्वभावतः इसे कुचल देने को उत्सुक थे।

उन्हें शीघ्र ही मौक़ा मिल गया। इस सरकार की स्थापना से प्रतिक्रियावादियों को बड़ा धक्का लगा। उन्होंने देखा, स्पेन में एक नई प्रवृत्ति आ रही और एक नई शक्ति का उदय हो रहा है, और अगर यह शक्ति बढ़ने दी गई, तो हमारा सर्वनाश हो जायगा। उनमें हलचल मच गई। उनका संगठन हुआ; जागीरदार, पूँजीपति, पादरी, सेनावादी, सामंत और वे सब लोग मिल गए, जो इसके चंद दिनों पहले तक सरकार के प्रधान अंग और समर्थक थे। इनके पास धन था, बुद्धि थी, और सैनिक अनुभव था। फिर इन्हें विदेशी शक्तियाँ भी उकसा रही थीं। समय पाकर इन्होंने बलवा कर दिया। जेनरल फ्रैंको इस विद्रोही सेना का प्रधान है। सरकार और विद्रोही दल में बराबर लड़ाई जारी है। इस गृह-युद्ध में स्पेन की करोड़ों की संपत्ति तबाह हो गई है, और दिन-दिन तबाह हो रही है। विद्रोहियों ने स्पेन के कई बड़े प्रांतों पर अधिकार जमा लिया है, और अपनी सैनिक सरकार भी क़ायम कर ली है। इस सरकार को इटली, जर्मनी और पुर्तगाल ने स्वीकार कर लिया है। और, सबसे ताज़ी खबर यह है कि ब्रिटिश सरकार भी वहाँ अपना एक एजेंट रखने जा रही है, जो एक प्रकार की अर्द्ध-स्वीकृति ही है।

(२)

अंतरराष्ट्रीय राजनीति यद्यपि इस समय भी बड़ी अस्थिर अवस्था में है, पर इस अस्थिरता के बीच भी कुछ साफ़-साफ़ शकल उभरती हुई दिखाई दे रही हैं। दलबंदियाँ स्पष्ट होती जाती हैं, और विभिन्न गुट दिन-ब-दिन ठोस रूप धारण करते जा रहे हैं। यह कहा जा सकता है कि स्पेन और चीन में आज भी ये विभिन्न दल या गुट अप्रत्यक्ष रूप से लड़ रहे हैं। स्पेन ने योरप की राजनीति को खतरे में डाल दिया है, और मेरा तो खयाल है, चीन-जापान-संघर्ष भी इस गुटबंदी के सिलसिले में ही हो रहा है, पर उसकी आलोचना करना इस लेख का उद्देश्य नहीं।

किसी भी दृष्टि से स्पेन के युद्ध को शुद्ध गृह-युद्ध नहीं कह सकते। सच पूछें, तो इस युद्ध को इतने लंबे समय तक चलाने की ज़िम्मेदारी योरप के राष्ट्रों पर है। लड़ाई गृह-युद्ध की अवस्था के बहुत आगे निकल चुकी है, और अब तो वह केवल इसलिये चल रही है कि ब्रिटेन और फ्रांस

की वैदेशिक नीति का कोई नैतिक आधार नहीं रह गया। स्पेन के कथित गृह-युद्ध के साथ इटली, जर्मनी, पुर्तगाल, रूस, फ्रांस एवं इँगलैंड के स्वार्थ गुँथे हुए हैं। यह बात तो पहले से ही मालूम पड़ रही थी कि बिना बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप और सहायता के यह गृह-युद्ध इतने समय तक नहीं चल सकता था। अब तो यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गई है।

शांति के नाम पर इस गृह-युद्ध के प्रति उदासीन रहने का जो जीर्ण-शीर्ण समझौता योरप के कतिपय राष्टों में हुआ, और जिसे 'नॉन-इंटरवैंशन' या हस्तक्षेप न करने की नीति का नाम दिया गया, उसने समस्या को और जटिल कर दिया। इसने गृह-युद्ध को ख़ूब बढ़ाया, और उसे ख़तरे की सीमा तक पहुँचा दिया। यह राष्ट्र-संघ और उसके आस-पास फूलने-फलनेवाले इस तरह के प्रयत्न दुर्बल एवं विश्वासी राष्ट्रों के लिये सदा घातक सिद्ध हुए हैं, क्योंकि अतरराष्ट्रीय राजनीति में आज गुंडई का जैसा बोलबाला है, वैसा शायद ही कभी रहा हो। ज़बरदस्त राष्ट्रों पर तो राष्ट्र-संघ का कुछ चलता नहीं, कमज़ोर राष्ट्र पिस जाते हैं। सच पूछिए, तो सारी अंतरराष्ट्रीय राजनीति अधिकार नहीं, शक्ति की धुरी पर घूम रही है, और हमारे कूटनीतिज्ञों द्वारा सहभोजों में दिए जानेवाले ज़बरदस्त भाषणों एवं सुसंस्कृत शब्द-जाल के होते हुए भी 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' से अधिक सत्य दूसरा सिद्धांत आज भी दुनिया में दिखाई नहीं देता। एथियोपिया या एबीसीनिया इतनी जल्द कभी न पिसता, यदि राष्ट्र-संघ को उसने फ़रिश्तों का गिरोह न समझ लिया होता। वह संघवाले राष्ट्रों के एहसान का बोझ सिर पर लिए बग़ैर एकाध बंदरगाह और कुछ हिस्से इटली को देकर उससे समझौता कर सकता था। कल इटली का विरोध करने का दम भरनेवाले राष्ट्र आज उसका मुँह जोह रहे हैं। फिर अतरराष्ट्रीय राजनीति का क्या नैतिक प्रभाव जन-समूह अथवा किसी देश पर पड़ सकता है। राष्ट्र-संघ और उसके हिमायती राष्ट्रों ने जैसे एथियोपिया की आज़ादी का अंत कर दिया, वैसे ही अब स्पेन को तबाह कर रहे हैं। यह 'नॉन-इंटरवेंशन' की नीति स्पेन की सरकार के लिये बड़ी घातक सिद्ध हुई है, और इससे विद्रोहियों को बल मिला है। यह सब लोग जानते हैं, स्पेन की अधिकांश जनता सरकार के साथ है, इसलिये सरकार को आदमियों की और धन की कमी न थी, किंतु उसके पास युद्ध-सामग्री की बड़ी कमी थी। उधर विद्रोहियों के पास सुगठित सेना और आधुनिक ढंग की युद्ध-सामग्री थी, इसलिये तटस्थता की इस नीति ने सरकार को सैनिक दृष्टि से बहुत कमज़ोर कर दिया। सरकार जो इतने अरसे तक ठहर सकी है, उसका कारण जनता की गहरी निष्ठा है।

'नॉन-इंटरवेंशन' की नीति ने और भी कई महत्त्व-पूर्ण नैतिक प्रश्न हमारे सामने खड़े कर दिए हैं। पहली बात तो यह कि इस समझौते ने जनता के मतपत्र यानी राय का महत्त्व नष्ट कर दिया है। जनता के निर्बंध मत (free vote) के आधार पर निर्वाचन में विजयी दल द्वारा बनाई गई क़ानूनी सरकार एवं विद्रोहियों को एक ही धरातल पर रखकर और दोनो के प्रति तटस्थता की बात पर ज़ोर देकर इन शक्तियों ने प्रजातंत्र के भविष्य को खतरे में डाल दिया है। जो इँगलैंड बड़े अभिमान से एक दिन प्रजातंत्र (डेमोक्रैसी) का संरक्षक होने का दावा करता था, वह आज उसके प्रति ऐसी उपेक्षा की नीति से काम क्यों ले रहा है? इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय राजनीति में न्याय और ज़बरदस्ती को एक-सा महत्त्व क्यों दिया जा रहा है? इससे स्पष्टतः यह प्रश्न उठता है कि एक देश में वहाँ की प्रजा के बहुमत के अनुसार स्थापि

सरकार के प्रति विद्रोह करनेवाले दल की अंतरराष्ट्रीय स्थित क्या है ?

पर आश्चर्य तो यह है कि निरपेक्षिता की नीति भी बिलकुल सफल नहीं हुई । हाँ, इँगलैंड ने अपनी अनिश्चित वैदेशिक नीति पर उसके द्वारा परदा ज़रूर डाल दिया । सच पूछिए, तो यह उस मशहूर मुर्दे को क़ब्र से खोदकर मंच पर जीवित की भाँति सजाने की एक कोशिश थी, जिसे राष्ट्र-संघ के नाम से पुकारा जाता है । निरपेक्षिता-कमेटी अत्यंत अपमानित होकर स्थगित हो गई थी ; अब उसे फिर से जिलाया गया है । और, यद्यपि इटली और जर्मनी कोई उचित निर्णय मानना नहीं चाहते, तथा उनकी नीति स्पष्टतः किसी तरह अड़ंगा डालने और देर करने की है, फिर भी फ़्रांस, इँगलैंड इत्यादि बार-बार उनके सामने झुकते जा रहे हैं ।

यह आश्चर्य की बात है कि किस मूढ़ता से ब्रिटेन इत्यादि निरपेक्षिता का ढोल पीटते रहे हैं, जब अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक साधारण विद्यार्थी भी जानता है कि निरपेक्षिता-नीति का नाटक होते हुए भी अनेक राष्ट्र खुले आम स्पेन के इस विद्रोह को बढ़ाने का आरंभ से प्रयत्न करते रहे हैं । जानकार क्षेत्रों में बहुत पहले से कहा जाता रहा है कि जर्मनी के साथ विद्रोही दल के नेता जेनरल फ़्रैंको ने कोई गुप्त समझौता कर रक्खा है, जिसके अनुसार गृह-युद्ध में विजयी होने पर जर्मनी को मोरक्को के दक्षिण का कोई प्रदेश दिया जायगा । इसी प्रकार का गुप्त समझौता इटली के साथ भी होने की बात कही जाती है । मैं आगे चलकर इन राष्ट्रों के स्वार्थों एवं हितों की परीक्षा करूँगा । यहाँ मैं कहना यह चाहता हूँ कि निरपेक्षिता-नीति के मामले में जिस ढिलाई से काम हुआ है, उससे साफ़ प्रकट होता है कि यह सिर्फ़ ब्रिटेन इत्यादि राष्ट्रों ने अपने मुँह की कालिमा छिपाने के लिये किया, और अधूरे तथा शिथिल हृदय से किया । दिन-पर-दिन, महीने-पर-महीने बीतते गए, और निरपेक्षिता-कमेटी की बैठकें यों होती रहीं, मानो दर्शन-शास्त्र के अंतिम तत्त्वों की विवेचना की जा रही है । कभी एक राष्ट्र कमेटी की बात सुनने को राज़ी होता, तो दूसरा रूठता, और जब तक उसे मनाया जाता, तब तक तीसरा बिगड़ खड़ा होता । लॉयड जॉर्ज ने पार्लियामेंट की सामान्य सभा में भाषण देते हुए इसका बड़ा मनोरंजक वर्णन किया था । उन्होंने कहा—"……क्या हुआ ? पहले उन्होंने किसी-न-किसी बहाने से देर की । उन्होंने सिद्धांत तो स्वीकार किया, पर ब्योरे की बातों से मत-भेद प्रकट किया । दिन-पर दिन और सप्ताह-पर-सप्ताह समझौते की बातें चलती रहीं । अंत में जर्मनी ने उसे स्वीकार किया, पर इटली ने इनकार कर दिया । फिर उसे छोटी-छोटी बातों पर समझाने-बुझाने और मनाने का काम चलता रहा । अंत में जब इटली ने स्वीकार किया, तो पुर्तगाल ने कहा—'नहीं, हम इसमें शामिल नहीं हो सकते ।' इन सब बातों का क्या मतलब है ? ब्रिटिश सरकार ने इस घटना के कारण अपने को बँधा हुआ समझा कि उसी ने सैनिक सामग्री न भेजने का प्रस्ताव पेश किया था । फ़्रेंच सरकार ने भी यही किया । तब इन दूसरी शक्तियों ने कहा—'वायुयान, तोप, बंदूक़, बारूद इत्यादि भेजने में हमें इस देर से फ़ायदा उठा लेना चाहिए ।' पुर्तगाल सबके अंत में राज़ी हुआ, क्योंकि युद्ध-सामग्री सीधे स्पेन न जाकर पुर्तगाल जाती थी, और पुर्तगाल उसे स्पेन भेजता था । .....समझौते पर हस्ताक्षर हुए । पर क्या हुआ ? जर्मनी अपने हस्ताक्षर से बँधा था ; इटली अपने हस्ताक्षर से । तब फ़्रैंको ने कहा—'जब तक मुझे और युद्ध-सामग्री न मिले, मैं सफलता नहीं प्राप्त कर सकता ।' बस, विना किसी हिचकिचाहट के दोनो (जर्मनी-इटली)

मिल पड़े, और उन्होंने आदमी और सामग्री दोनो, ज़ोरों के साथ, भेजना शुरू कर दिया।......जो आदमी भेजे गए, वे उनकी सेना में वेतन-भोगी सैनिक थे। उन्हें स्पेन जाने की स्वीकृति ही नहीं मिली, हुक्म मिला। सामग्री सरकारी सैनिक-भंडारों से भेजी गई। यह ठीक वैसी ही सरकारी कार्रवाई थी, जैसी एबीसीनिया पर होनेवाली चढ़ाई थी। हमने क्या किया? हम निरपेक्षिता-कमेटी की बैठकें करते रहे।..... तब हमारे मित्र वैदेशिक सचिव ने कहा—'इसमें सुधार करना पड़ेगा; हमें स्वयंसेवकों को रोकना पड़ेगा।' पर ये स्वयंसेवक न थे; ये इटालियन सेना के दल (Units) थे। इसी तरह जर्मनी से भेजे गए वायुयान और तोपें भी सरकारी सेना की तरफ़ से भेजी गई थीं। ख़ैर, उन्होंने स्वयंसेवकों को न भेजने का वादा किया। जब हमने पूछा—'तुमने स्वयंसेवक न भेजने का वादा किया था?' तब उन्होंने जवाब दिया—'हाँ, हमने स्वयंसेवक नहीं भेजे हैं। अपनी सेना में भरती किए हुए आदमियों को भेजा है।'''

लॉयड जॉर्ज का सारा भाषण तीव्र व्यंग्य से भरा हुआ है, जिसके वह बादशाह हैं। पर इन डेढ़ वर्षों में बराबर यही घृणित खेल होता रहा है। एक तरफ़ बातें होती रही हैं, और दूसरी तरफ़ प्रतिदिन सैकड़ों आदमी मरते रहे हैं। फ़्रांस और ब्रिटेन की ढीली नीति का इटली, जर्मनी और पुर्तगाल शुरू से फ़ायदा उठाते रहे हैं। बिलवाव का पतन कैसे हुआ? वहाँ रहनेवाले अँगरेज़ों की गवाही के आधार पर सिद्ध हो चुका है कि वहाँ फ़्रैंको की तरफ़ से जर्मनी के २०० वायुयान भेजे गए थे। बेचारे बास्कों के पास इसके विरुद्ध एक पुरानी, वायुयानों को निशाना मारकर गिरानेवाली बंदूक़ थी। एक दर्शक ने लिखा था कि उसने ऐसी बम-वर्षा कभी न देखी थी। ये सब वायुयान जर्मन थे; उनमें काम आनेवाले बम जर्मन थे, और इनके पीछे उस इटली की सेना थी, जिसने निरपेक्षिता के समझौते पर दस्तख़त किए थे।

इसमें संदेह नहीं, रूस ने भी स्पेन-सरकार को काफ़ी युद्ध-सामग्री भेजी है, और सैकड़ों स्वयंसेवक सरकार की तरफ़ से लड़ने के लिये भी विदेशों से आए हैं। पर रूस बहुत दूर है, इसलिये स्वभावतः, इच्छा होने पर भी, उतनी मदद नहीं कर सकता, जितनी करना चाहता है। इस दूर देश में उसका कोई विशेष स्वार्थ भी नहीं। जो कुछ सहानुभूति है, वह केवल सिद्धांतों की एकता के कारण। दूसरी तरफ़ पुर्तगाल बिलकुल स्पेन से लगा हुआ है। इन दोनो देशों में सदा से प्रतियोगिता का भाव रहा है। पुर्तगाल में फ़ासिस्ट सरकार है। इधर जर्मनी भी नज़दीक है, और इटली भी दूर नहीं, इसलिये स्पेन-सरकार के विरोधी ये राष्ट्र विद्रोहियों को कहीं ज़्यादा सहायता पहुँचाने की अवस्था में हैं। उन्होंने सहायता पहुँचाई भी ख़ूब है। आज विद्रोहियों की तरफ़ से लगभग एक लाख विदेशी सैनिक स्पेन की भूमि पर लड़ रहे हैं। इनमें ज़्यादातर इटालियन हैं। इन फ़ासिस्ट शक्तियों ने सामग्री से भी ख़ूब सहायता पहुँचाई है। सरकार की तरफ़ मुश्किल से २५ हज़ार विदेशी होंगे, और इनमें ज़्यादातर स्वयंसेवक हैं। मुसोलिनी ने कई बार इस पर अभिमान प्रकट किया है कि इटली के सैनिक स्पेन की सरकार को पराजित करने में सहायक हो रहे हैं। जब-जब फ़्रैंको की विजय हुई है, उसने सार्वजनिक रूप से हर्ष प्रकट किया है। 'पोपोला द इटालिया' में, जो इटली का नीम-सरकारी पत्र है, एक लेख कई महीने पूर्व निकला था। लोगों का खयाल है कि यह लेख मुसोलिनी का ही लिखा हुआ था। अँगरेज़ी-पत्रों में इस लेख का जो अनुवाद छपा है, उसका एक अंश यह है—

"In this great fight which has brought face to face two types of civilisation, Fascist Italy has not been neutral but has fought, and Victory will be ours."

अर्थात् "इस महान् युद्ध में, जिसने दो प्रकार की सभ्यताओं को एक दूसरे के समक्ष ला खड़ा किया है, फ़ासिस्ट इटली तटस्थ नहीं रहा है, वरन् लड़ा है, और विजय हमारी ही होगी।"

बिलबाओ में इटालियन सेना की वीरता एवं सफलता की उसने खुल्लमखुल्ला तारीफ़ की है।

जिस तरह इटली, जर्मनी और पुर्तगाल ने विद्रोही पक्ष की बराबर सहायता की है, उस तरह न सही, यदि फ़्रांस और इँगलैंड शस्त्र-निर्यात पर बंधन न लगाते, तो भी अब तक इस युद्ध का फ़ैसला हो जाता, और स्पेन-सरकार कभी की विजयी हो चुकी होती। पर हुआ उलटा है, और निरपेक्षिता का यह तमाशा स्पेन-सरकार के विरुद्ध विद्रोहियों का पक्ष मज़बूत करने में सहायक हुआ है। आश्चर्य तो यह है कि ब्रिटिश सरकार इस बात को भली भाँति जानती है कि किस प्रकार इटली, जर्मनी इत्यादि फ़ासिस्ट राष्ट्र इस युद्ध में क्रियात्मक भाग ले रहे हैं, फिर भी वह प्रश्न को टालती जाती है। विद्रोह खड़ा होने के बाद ही बार्सिलोना में एक नात्सी प्रधान प्रचार-विभाग का पता लगा, और वहाँ से लगभग ४००० काग़ज़-पत्र पकड़े गए। इनमें से बहुत-से महत्त्व-पूर्ण काग़ज़ात बाद में एक प्रसिद्ध अँगरेज़ी-पुस्तक 'The Nazi Conspiracy in Spain' में प्रकाशित हुए हैं। इसमें बहुतों के फ़ोटो लेकर और ब्लॉक बनवाकर छापे गए हैं। इस पुस्तक से पता चलता है कि १९३० से ही उपर्युक्त नात्सी संस्था स्पेन के अख़बारों, राजनीतिज्ञों तथा वायु-सेना और फ़ौज के अफ़सरों को घूस देकर तथा अन्य अनेक प्रकार से प्रभावित कर रही थी। फ़ासिस्ट देशों के दूतावासों की आड़ में चोरी-चोरी अस्त्र-शस्त्र भी आते थे।

सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि आज ब्रिटेन दोनो पक्षों के युद्ध करनेवाले दो स्वतंत्र दलों या देशों के अधिकार को स्वीकार करने पर भी राज़ी होता हुआ दिखाई पड़ रहा है। यदि यह हुआ, तो स्पष्टतः स्पेन - सरकार के विरुद्ध एक भयानक षड्यंत्र को सफलता प्राप्त होगी, क्योंकि उस हालत में स्पेन की सरकार के पास जानेवाले व्यापारिक तथा सब तरह की सामग्री को विद्रोही पक्ष रोक सकेगा। रोक-थाम तो अब भी है, पर अभी वह अंतरराष्ट्रीय राजनीति की भाषा में ग़ैर-क़ानूनी है; तब क़ानूनी हो जायगी। इस अधिकार को स्वीकार करने के पूर्व ब्रिटेन का प्रस्ताव था कि एक अंतरराष्ट्रीय कमीशन स्पेन जाकर दोनो पक्षों के विदेशी सैनिकों की संख्या का पता लगावे, और फिर दोनो पक्षों के विदेशी सैनिक स्पेन से हटा लिए जायँ। पर इटली, जर्मनी इत्यादि ने इसे स्वीकार न किया। इससे उनकी दुरभिसंधि स्पष्ट हो गई है। पर इसके साथ एक और आश्चर्य-जनक बात नवंबर के आरंभ में हुई है। ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ने कहा है कि स्पेन में फ़्रैंको या किसी फ़ासिस्ट सरकार की स्थापना से ब्रिटेन के स्वार्थों को कोई धक्का न लगेगा, बल्कि भौगोलिक परिस्थिति को देखते हुए इससे उलटे परिणाम की ही संभावना है। इस अत्यंत महत्त्व-पूर्ण बात पर अभी तक अख़बारों का ध्यान नहीं गया, यह आश्चर्य की बात है। इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि ब्रिटेन फ़्रैंको या विद्रोही दल की सरकार को स्वीकार करने की भूमिका बाँध रहा है, और प्रजातंत्र के विनाश की तरफ़ से वह सर्वथा उदासीन है।

(३)

ब्रिटेन की इस ढिलाई और इटली तथा जर्मनी

की इस स्पष्टतः विद्रोहियों की सहायता करने की नीति का क्या रहस्य है ?

सबसे पहली बात, जो ब्रिटेन की वैदेशिक नीति की आलोचना करते समय याद रखनी चाहिए, यह है कि अब अंतरराष्ट्रीय राजनीति में ब्रिटेन का वह स्थान नहीं रह गया है, जो महायुद्ध के पहले था। अब ब्रिटिश साम्राज्य के खतरे बहुत बढ़ गए हैं। ये खतरे आंतरिक और बाह्य, दोनो हैं। आंतरिक ख़तरा यह है कि स्वतंत्र उपनिवेशों की प्रजा तथा सरकारों को अब ब्रिटेन के प्रति बहुत ज़्यादा वफ़ादार रहने में कोई उत्साह नहीं रह गया है। स्वतंत्रता के साथ इन उपनिवेशों की अपनी ही समस्याएँ काफ़ी पैदा हो गई हैं। इनके अतिरिक्त जो अर्द्ध-स्वतंत्र या परतंत्र देश हैं, उन सबमें ब्रिटेन के शासन के विरुद्ध गहरा असंतोष है। फ़िलस्तीन, इराक़, भारतवर्ष तथा अन्य देशों में निरंतर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलन हो रहा है। बाह्य ख़तरे तो बहुत ज़्यादा हैं। महायुद्ध के पूर्व केवल जर्मनी और आंशिक रूप से रूस ब्रिटेन के प्रतिद्वंद्वी थे; आज जर्मनी, रूस, इटली, जापान इत्यादि अनेक प्रतिद्वंद्वी पैदा हो गए हैं। इनके अलावा तुर्की, अरब, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, मिस्र इत्यादि देश भी ब्रिटेन से जले-भुने हैं। पूर्व के समस्त बाज़ारों से जापान ब्रिटेन को तेज़ी से खदेड़ रहा है; फिर पूर्व के देशों में राष्ट्रीयता की प्रबल लहर उठ खड़ी हुई है, और सर्वत्र स्वदेशी उद्योग-धंधे तेज़ी से खड़े हो रहे हैं। इसलिये संसार में ब्रिटेन का आर्थिक और राजनीतिक भविष्य दिन-दिन ख़राब होता जाता है।

भारतवर्ष ब्रिटिश वदेशिक नीति की धुरी है। भारत की रक्षा के लिये ही ब्रिटेन ने पश्चिमी एशिया के अनेक देशों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर रक्खा है। आज भारत को जानेवाला भूमध्यसागर का जल-मार्ग ब्रिटेन के लिये उतना सुरक्षित नहीं रह गया है, जितना १० वर्ष पहले था। भूमध्यसागर से लेकर फ़ारस की खाड़ी तक का सारा मार्ग ख़तरों से भरा हुआ है। भूमध्यसागर में इटली इतना प्रबल हो उठा है कि वह उसे 'इटली की झील' कहता है। और, मुसोलिनी ने तो एक बार कहा था—

"Italy could close the mediterranean to the British Navy within three hours."

अर्थात् "इटली सिर्फ़ ३ घंटे में भूमध्यसागर को ब्रिटिश जल-सेना के लिये रुद्ध कर सकता है।"

किसी समय अजेय समझा जानेवाला जिब्राल्टर आज बहुत दुर्बल हो गया है, और उसके पीछे, अलजेसिरा की खाड़ी के पास, स्पेन की भूमि पर, लगी हुई जर्मनी की हाविटज़र तोपें जिब्राल्टर की क़िलेबंदी को आसानी से ध्वंस कर सकती हैं।

इसलिये ब्रिटेन इटली, जर्मनी या योरप के किसी प्रधान शक्ति से लड़ाई करके अपने पूर्वी साम्राज्य को ख़तरे में नहीं डालना चाहता। इसी लिये वह इटली से मित्रता करने को उत्सुक भी है। दूसरी बात यह है कि वह इटली, जर्मनी और जापान के त्रिगुट्ट को इसलिये कमज़ोर नहीं करना चाहता कि उसके कारण रूस से पूर्वी साम्राज्य अपेक्षाकृत सुरक्षित है। यदि ये देश कमज़ोर हो जायँ, तो रूस प्रबल हो उठेगा। इस तरह ब्रिटेन का पूर्वी साम्राज्य इन दो दलों की प्रतिद्वंद्विता के बने रहने में ही सुरक्षित है। ब्रिटेन की अपेक्षाकृत शांति की नीति का भी यही कारण है कि वह अपने साम्राज्य के बढ़े हुए ख़तरों के बीच युद्ध के परिणाम के विषय में बिलकुल निश्चिंत और आश्वस्त नहीं है।

जर्मनी और इटली ब्रिटेन की इस दयनीय परिस्थिति और विवशता को ख़ूब समझते हैं, इसलिये उसका ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा उठाते जा रहे हैं। अबीसीनिया-कांड तथा राष्ट्र-संघ की विफलता

उनके हौसले बढ़ा दिए हैं। स्पेन के मामले में इटली और जर्मनी की दिलचस्पी का राजनीतिक कारण तो है ही, पर मुख्य कारण आर्थिक है। राजनीतिक कारण तो यह है कि ये दोनो देश (जिनके साथ अब जापान भी शामिल हो गया है) अपने सामान्य शत्रु रूस के विरुद्ध एक ज़बरदस्त संगठन कर रहे हैं, और स्पेन में .फ्रैंको की विजय से फ़ासिस्ट सरकार की स्थापना होगी, तथा उनका बल बढ़ जायगा। भूमध्यसागर में इटली की ताक़त .खूब बढ़ जायगी। आर्थिक कारण दो हैं—मामूली कारण तो इटली के लिये यह था कि अबीसीनिया से लौटी सेना बेकार हो रही थी, और बेकारी फैल रही थी। सैनिकों की बेकारी से आंतरिक स्थिति ख़राब होने की आशंका थी, इसलिये उन्हें स्पेन में लड़ने भेजकर एक तरफ़ उसने एक गृह-समस्या सुलझा ली, और दूसरी तरफ़ .फ्रैंको-दल को कृतज्ञता के पाश में बाँध लिया। पर मुख्य आर्थिक कारण और है। बात यह है कि स्पेन में खनिज और प्राकृतिक संपत्ति की अधिकता है। बिलबाओ और मोरक्को में लोहे की बड़ी खानें हैं। अलमेडन में पारा है, रिपोटिंटो में ताँबा, गंधक इत्यादि पाए जाते हैं, इनमें मैंगनीज़ भी काफ़ी है, तथा सीसे और जस्ते की खानें भी पाई जाती हैं। दुनिया में सबसे ज़्यादा पारा अलमेडन में है। बार्सिलोना से थोड़ी ही दूरी पर, विस्तृत भूखंड में, पोटाश पाया जाता है। यदि स्पेन पर विद्रोहियों की फ़ासिस्ट सरकार की स्थापना हो गई, तो यह खनिज संपत्ति इटली और जर्मनी के लिये, विशेषतः युद्ध की तैयारी के लिये, बड़ी उपयोगी साबित होगी। बिलबाओ पर जेनरल .फ्रैंको का क़ब्ज़ा होने के बाद से जर्मनी को कच्चा लोहा .खूब जा रहा है। इसलिये जर्मनी और इटली जो स्पेन के मामले में इतनी दिलचस्पी ले रहे हैं, उसे आसानी से समझा जा सकता है। यह भी कहा जाता है कि ब्रिटेन के मुँह में भी पानी भर रहा है, और उसके बदलते हुए रुख़ का यही कारण है।

इस तरह स्पेन के इस कथित गृह-युद्ध ने दुनिया के सामने अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अँधेरे पक्ष को ला खड़ा किया और साथ ही ब्रिटेन की दुर्बलता को भी स्पष्ट कर दिया है। पर इस कमी की पूर्ति के लिये आज या कल पश्चिमी एवं भूमध्यसागर की शक्तियों से ब्रिटेन को लड़ना ज़रूर पड़ेगा। एक म्यान में तीन तलवारें (इटली, जर्मनी और ब्रिटेन) कैसे रह सकती हैं, जब दो का ही उसमें अँट सकना असंभव है। पश्चिमी योरप में ब्रिटेन अपनी प्रधानता को कभी जाने न देगा, क्योंकि इसी पर उसका भविष्य निर्भर है, और इस प्रधानता के लिये उसे युद्ध करना ही पड़ेगा। इस दृष्टि से उसकी तैयारी जारी है, और स्पेन के प्रश्न ने भयानकता के साथ उसका स्वप्न तोड़कर उसे वास्तविक परिस्थिति के प्रति जाग्रत् कर दिया है।

योरप में सात मास
लेखक—श्रीधर्मचंद सरावगी
लेखक महोदय स्वाभाविक जिज्ञासुओं में हैं, इसलिये इन्होंने काफ़ी छान-बीन करके अनेकों जाननेवाली बातों को खोज निकाला है, और साथ में मुख्य-मुख्य स्थानों के चित्र भी लेते गए, जिससे पुस्तक और भी उपयोगी बन गई है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको ऐसा ज्ञात होगा, मानो आप इस समय योरप भ्रमण कर रहे हैं। २३४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य २।)
पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

दुबेजी के संस्मरण

चौंघट चाचा

[श्रीयुत विजयानंद (दुबेजी)]

संसार में अनेक प्रकार की विचित्रताएँ हैं। विचित्रता होना बुरा नहीं। विचित्रताएँ ही मनुष्य का मन बहलाए रखती हैं, अन्यथा मनुष्य एक ही प्रकार की चीज़ें देखते-सुनते ऊब जाय। परंतु कभी ऐसा भी होता है कि विचित्रताएँ मन बहलाने के स्थान पर. कष्टदायक प्रतीत होने लगती हैं — विशेषतः मनुष्य की विचित्रता तो कभी-कभी बहुत ही परेशान कर देती है। चौंघट चाचा भी ऐसे ही मनुष्य थे।

चाचा चौंघट अपने राम के दूर के रिश्तेदार थे। नाम तो उनका दूसरा था, पर अपने राम तथा अपने राम के कुछ रिश्तेदार उन्हें इसी नाम से पुकारा करते थे—उनके पीठ-पीछे, उनके मुँह पर नहीं। चाचा चौंघट पुराने ख़यालात के आदमी थे। नई रोशनी की बातें उन्हें बहुत कम पसंद थीं। आधुनिक काल की अधिकांश बातें उन्हें बहुत ही सदोष दिखाई पड़ती थीं। जब वह अपने बाल्यकाल का वर्णन करने लगते थे, तो ऐसा प्रतीत होता था — सुननेवालों को नहीं, स्वयं उन्हीं को—मानो सत्ययुग का वर्णन कर रहे हैं। जब वह अपनी जवानी का ज़िक्र करते थे, तो ऐसा मालूम होता था—इस बार केवल सुननेवालों ही को, स्वयं उन्हें नहीं—कि उनकी जवानी के समय लोगों की पूरी जवानी हिमाक़त में ही व्यतीत हो जाती थी। यद्यपि चौंघट चाचा की उम्र पचास से अधिक नहीं थी, परंतु वह बातें इस ढंग से करते थे, मानो कम-से-कम तीन-चार बार काया-कल्प क चुके हैं।

सबसे बड़ा गुण (स्वयं उनके लिये) य अवगुण (दूसरों के लिये) जो उनमें था, व उनके अपने स्वास्थ्य का था। अपने स्वास्थ्य क उन्हें हर समय ध्यान रहता था। लोगों का स्वास्थ्य गिरने या उचकने में हफ़्ते तथा महीने लगते हैं परंतु चौंघट चाचा का स्वास्थ्य दिन में तीन बार गिरता और उचकता था। प्रातःकाल के सम तो प्रायः नित्य ही उनका स्वास्थ्य गिर जाता थ फिर जैसे-जैसे सूर्य आकाश में ऊँचा उठता थ उनका स्वास्थ्य भी उचकने लगता था। बार एक बजे तक, भोजन करने के पश्चात् त उनका स्वास्थ्य ऊर्ध्वगामी रहता था; परंतु तीन बजे के बाद से सूर्यास्त तक उनका स्वास्‍ पुनः गिरने लगता था। खैरियत इतनी ही र थी कि सूर्यास्त होते ही उनका स्वास्थ्य स्थायी जाता था। इस प्रकार उनका स्वास्थ्य एक हि से सूर्यावर्त्ती था। अंतर केवल इतना था कि को भोजन करने के समय से कुछ पहले से ले शयन करते समय तक उनका स्वास्थ्य आधि ज़ोर मारता था। उस समय चाचा चौंघट ज़िंदादिली देखने योग्य होती थी, जवानों के काटने लगते थे। परंतु उनके चारपाई पर लि ही उनका स्वास्थ्य उनकी चारपाई के नीचे अ बिस्तर जमा देता था। इस प्रकार उनका स्वा अधिक समय तक उनसे वियुक्त न रहता यही सबसे बड़ी खैरियत थी। दूसरी विशेषता

चौंघट चाचा में थी, यह थी कि उन्हें पथ्य-कुपथ्य का बड़ा ध्यान रहता था। भोजन की थाली जब सामने आती थी, तो सबसे पहले वह इस बात की खोज करते थे कि थाली में कौन-सी चीज़ पथ्य है, और कौन कुपथ्य। परंतु उनके पथ्यापथ्य को दैनिक निरीक्षण करनेवाला भी निश्चय-पूर्वक यह नहीं बता सकता था कि उनके लिये कौन-सी चीज़ पथ्य है, और कौन-सी कुपथ्य। केवल एक वस्तु के संबंध में तो निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि वह चौंघट चाचा के लिये कुपथ्य प्रमाणित हुई। वह थी मूली की भुजिया। मूली की भुजिया खाकर ही चौंघट चाचा का स्वास्थ्य ऐसा गिरा कि फिर नहीं उचका, कदाचित् परलोक में फिर सुधर गया हो। हालाँकि इस निश्चय में भी इतनी कमज़ोरी अवश्य है कि जीवन में न-जाने कितनी बार वह मूली की भुजिया खा चुके थे। जो भी हो, परंतु जीवन में कम-से-कम एक वस्तु तो कम-से-कम एक बार उनके लिये अवश्य ही कुपथ्य प्रमाणित हुई। अस्तु।

चौंघट चाचा के सत्संग का सौभाग्य बहुधा उसी समय प्राप्त होता था, जब कभी किसी रिश्तेदारी में ब्याह-शादी होती थी। क्योंकि वैसे, बिना किसी कारण, वह अपना घर छोड़कर नाते-रिश्तेदारों के यहाँ बहुत ही कम जाते थे। उनके पास इतनी संपत्ति थी कि अपने घर में आराम से पड़े रहते थे। संतान कोई थी नहीं, केवल पति-पत्नी थे, इससे उनका गुज़र बहुत थोड़े में हो जाता था। अतएव निर्द्वंद्व रहते थे। चाचा में एक गुण तो स्पष्ट था। अपनी संतानहीनता का उन्हें ज़रा भी अफ़सोस न था। कभी कोई इस संबंध में खेद प्रकट करता, तो उसे डाँट देते थे, और कहते थे—"आजकल की कलियुगी संतान से परमात्मा बचावे। आजकल तो वही सुखी है, जिसके संतान नहीं।"

चौंघट चाचा का नख-शिख भी कुछ विचित्र-सा ही था, या कदाचित् अपने राम को ही वह विचित्र दिखाई पड़ता था। मध्याकार, दोहरा बदन, गौर वर्ण—साधारण गौर से कुछ अधिक गौर, आँखें छोटी-छोटी—जब ग़ौर से देखते या क्रोध में होते थे, तो आधी से अधिक बंद हो जाती थीं, चीनियों की तरह पतली-पतली तथा लटकती हुई मूछें, नाक का अग्रभाग मोटा, ओठ भी मोटे। चाचा फ़ारसी के विद्वान् थे, संस्कृत भी जानते थे, अँगरेज़ी का ज्ञान उन्हें बहुत थोड़ा था। साधारणतया तो खड़ीबोली ही बोलते थे, कभी शुद्ध उर्दू तथा कभी संस्कृतमय हिंदी; परंतु उन्हें प्रेम व्रजभाषा से ही अधिक था। वह कुछ दिनों व्रज में रहे थे, इसलिये व्रजभाषा (ग़लत-सही जैसी भी बन पड़ी) बोल लेते थे। जब विनोद या क्रोध में होते थे, तो बहुधा व्रज-भाषा ही बोलने लगते थे। जब क्रोध में आकर लड़कों को डाँटते थे, तो "चौंबे, नाँयँ मानेगो।" कहा करते थे। यह उनका बड़ा प्रिय वाक्य था। इस 'चौंबे' के कारण ही युवक-मंडली ने उनका नाम 'चौंघट चाचा' रख दिया था।

नाम तो अपने राम ने उनका बहुत दिनों से सुन रक्खा था; परंतु उनके दर्शन पहलेपहल एक रिश्तेदारी की बरात में हुए थे। नवयुवक-मंडली में से एक बड़ी प्रसन्नता-पूर्वक आकर बोला—"कल प्रातःकाल चौंघट चाचा आ रहे हैं, अभी चिट्ठी आई है।"

अपने राम ने पूछा—"चौंघट चाचा कौन?"

"अरे, तुम नहीं जानते! श्यामसुंदर शर्मा!"

"अच्छा, उनका नाम 'चौंघट चाचा' है।"

"हाँ, लेकिन कहीं उनके मुँह पर न कह देना।"

"क्यों, उनका यह नाम क्यों पड़ा?" अपने राम ने पूछा।

"उन्हें आने दो। उन्हें देखकर तुम स्वयं समझ जाओगे कि उनका यह नाम क्यों पड़ा।"

अपने राम बड़ी उत्सुकता से उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे।

दूसरे दिन प्रातःकाल अपने राम शौचादि से निवृत्त होकर स्नान करने जा रहे थे, इसी समय हल्ला मचा—"चौंघट चाचा आ गए!"

अपने राम स्नान का इरादा छोड़कर बाहर की ओर दौड़े। चौंघट चाचा ताँगे से उतर रहे थे। रुई का कोट, रुई का पाजामा, सिर पर रुई का कनटोप, उस पर सफ़ेद साफ़ा! हाथ में बाँस की लाठी लिए थे।

युवक-मंडली 'चाचा! चाचा!' कहकर-दौड़ पड़ी। किसी ने उनका बिस्तर उठाया, किसी ने ट्रंक। असबाब लाकर अपने ही कमरे में रक्खा।

वृद्ध-मंडली बोली—"अरे, तुम लोगों के बीच में वह कहाँ रहेंगे।"

एक युवक बोला—"वाह! चाचा को हम अपने कमरे में रक्खेंगे।"

वृद्ध ने चाचा से, जो ताँगेवाले को पसे दे रहे थे, कहा—"ये लड़के आपका असबाब अपने कमरे में लिए जा रहे हैं।"

चाचा बोले—"सो तो ले ही जायँगे।"

"आप लड़कों के बीच में रहिएगा?"

"हाँ! हाँ! क्या लड़कों से हम डरते हैं? लड़कों के बीच में तो आनंद ही है, तुम बुड्ढों के बीच में रहकर क्या करेंगे। तुम लोग घोर निराशावादी हो। लड़कों के बीच में ही आनंद है, जीवन है।" यह कहते हुए चाचा मुस्किराए। सामने के, ऊपर के, दो दाँत ग़ायब थे। युवक-मंडली उन्हें अपने कमरे में लाई। एक बोला—"देखो चाचा, तुम्हारी चारपाई इधर रहेगी, ठीक है न?"

"सब ठीक है। तीन-चार रोज़ गुज़र करना है।"

"चाचा, आजकल आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं मालूम होता?"

"हाँ बेटा! सबेरे से कुछ स्वास्थ्य ख़राब है। रेल का सफ़र स्वास्थ्य बिगाड़ देता है। देखो, ज़रा पाख़ाने-वाख़ाने जायँ, और स्नान-वस्नान करें, तो ठीक हो।"

"चाचा, बरात तो चलोगे न?" एक ने पूछा।

"और नहीं तो आए क्यों हैं।"

"मैंने सोचा, शायद यहीं से लौट जाओ।"

"तुम तो ऐसी ही सोचोगे। जेठ-मास की भद्दर दुपहरिया की पैदाइस हौ न! जे सारे जिते दुपहरिया के हैं, सब ऐसी ही औंधी बातें सोचतु हैं।"

इतना कहकर चाचा आँखें सिकोड़कर मुस्किराए। उनकी बात से अधिक उनकी मुखभंगी हास्यप्रद थी। युवक-मंडली ने अट्टहास किया।

युवक-मंडली ने अपने राम का परिचय दिया—"चाचा, इन्हें तो जानते होगे?"

चाचा अपने राम को ध्यान-पूर्वक देखकर बोले—"इसे तो कहीं देखा नहीं—कौन है?"

युवक ने अपने राम का परिचय दिया। चाचा प्रसन्न होकर बोले—"अच्छा! नाम तो बहुत दिनों से मालूम था, पर देखा नहीं था। आज दर्शन हो गए। और, घर में सब आनंद-मंगल है न?"

अपने राम बोले—"सब आपकी दया है।"

चाचा बोल उठे—"जौ अच्छो रवाज चलो है। जासें पूछो 'सब आनंद-मंगल?' बस, झट कहि देतु है—'सब आपकी दया है।' पूछो, हम ससुर काहे में हैं, जो हमारी दया होयगी—'तीन में, न तेरा में, मृदंग बजावें डेरा में।'"

एक युवक ने पूछा—"तो फिर क्या कहा करें?"

"परमात्मा की दया है, ईश्वर की कृपा है, भगवान् की अनुकंपा है, रामजी की कृपा है।"

"कोई कृष्ण का उपासक हो, तो क्या कहे ?"

"तो कृष्ण भगवान्, कृष्ण महाराज की कृपा कहे ।"

"और, शिवजी का उपासक हो, तो क्या कहे ?" दूसरे ने पूछा ।

"अब तुम तौ हिंदी की चिंदी निकारतु हौ । एक नमूना बता दीना, वाही से सबका मतलब समझ लेओ । अच्छा, अब हम जरा शौच जायँगे, फिर स्नान करेंगे, तब जाकर स्वास्थ्य ठीक होगा । अभी स्वास्थ्य ठीक नहीं है । ज्यादा बात नहीं माँगता । मालम ?"

चाचा ने शौचादि से निवृत्त होकर स्नान किया । अपने लोग भी स्नानादि से निवृत्त हो गए । चाचा जिस समय स्नान करके आए, तो उनके गालों पर हल्की सुर्ख़ी आ गई थी ।

एक पूछ बैठा—"चाचा, क्या गालों पर झावाँ फेरा था ?"

चाचा झट बोले—"गालन पर झावाँ तेरी अम्मा फेरतु होयगी । गालनऊ पर कहूँ झावाँ फेरो जातु है ।"

"तो चाचा, यह गालों पर सुर्खी कैसी है ? जैसे छिल गया हो—खून-सा छलछला रहा है ।"

"जौ सारो हिंदू-मुसलिम-दंगा के दिन की पैदा-इस को दीखतु है । सारे कूँ सब कटो-छिलोई दिखाई परतु है ।" चाचा अपनी अदा से मुस्किराकर बोले ।

"तो ये लाल-लाल क्यों हैं ?"

"अब स्वास्थ्य ठीक हुआ है, इसलिये सुर्खी आई है । समझे गदहाचंद !"

दूसरे महाशय सिर हिलाकर बोले—"यह बात तो चाचा नहीं है । स्वास्थ्य ठीक होने से इस उम्र में इतनी सुर्खी नहीं आ सकती । ज़रूर दाल में कुछ काला है ।"

"तुमने तो उनहूँ के कान काट लीन्हें, गाल की दाल बनाय दई, और लाल कूँ कारो कर दीन्हो । लंका में सब बावनै गज के हैं ।"

"चाचा, इतना तो मैं भी कहूँगा कि इतनी सुर्खी इस उम्र में वाक़ई नहीं आ सकती । आपको कुछ 'ब्लड-प्रेशर' अवश्य है ।"

अब चाचा को भी कुछ शंका हुई । गंभीर होकर बोले—'ब्लड-प्रेशर ! ब्लड-प्रेशर में गाल सुर्ख रहते हैं क्या ?"

"हाँ ! ब्लड-प्रेशर की यही तो पहचान है, हर समय गाल लाल रहते हैं ।"

चाचा ने झटपट दर्पण उठाया । थोड़ी देर तक ध्यान-पूर्वक अपना चेहरा देखने के बाद बोले—"हाँ, कुछ ज़्यादा लाल हैं । स्वास्थ्य कई दिनों से गड़बड़ चल रहा है । तो इस ब्लड-प्रेशर की दवा क्या है ? ब्लड-प्रेशर होता क्या है ?"

"जब बदन में ख़ून ज़्यादा बढ़ जाता है, तो ब्लड-प्रेशर हो जाता है । दवा ? इंजेक्शन लगवाइए ।"

"क्या सुई ! अरे राम ! सुई तो मैं मर जाऊँ, तब भी न लगवाऊँ । हमारे ज़माने में तो इसकी दवा 'फ़स्द खुलवाना' थी ।"

"वाह वा, सबसे बढ़िया । यह इलाज तो सुई से भी बढ़िया है । बस, फ़स्द खुलवा डालिए । जितना ज़्यादा ख़ून है, वह निकल जायगा, स्वास्थ्य ठीक हो जायगा ।"

"तो अब घर जाकर खुलवायँगे । यहाँ कहाँ इंतज़ाम हो सकता है ?"

"अगर आप चाहें, तो यहाँ भी हो जाय । किसी डॉक्टर को बुलवाकर खुलवा देंगे ।"

"यहाँ नहीं, घर पर ही ठीक रहेगा । फ़स्द खुलवाने के बाद कमज़ोरी आती है, परहेज़ करना पड़ता है, वह सब यहाँ कहाँ हो सकेगा । ऊँह ! यह सब तो घर पर ही हो सकता है ।"

इसी समय हम सबों का नाश्ता आ गया। कुछ मिठाई तथा नमकीन और चाय।

चाचा ने नमकीन चीज़ों को ग़ौर से देखा। देखकर बोले—"यह तिकोना निकाल लो, हम नहीं खायँगे। इसमें मिर्चें होंगी। ये हलवाई कमबख़्त हर चीज़ में मिर्चें घुसेड़ देते हैं। पूछो, तिकोनों में मिर्चों का क्या काम।"

"चाचा, मिर्चें नहीं खाते क्या ?"

"मिर्चें ! हर्गिज़ नहीं। निहायत नाक़िस चीज़ है। स्याह मिर्च नुक़सान नहीं करती। मगर वह कमबख़्त इतनी लज़ीज़ नहीं होती। और, क्यों भई, ब्लड-प्रेशर में चाय पीनी चाहिए या नहीं ?"

"चाय पीजिए ; लेकिन बिला दूध और शकर की।"

"तो, इससे तो न पीना ही अच्छा है। बेज़ायक़ा चाय पीने से फ़ायदा ?"

"नहीं, आप पीजिए। वह प्रेशर को घटाएगी।"

"विना दूध-शकर की चाय ?"

"हाँ !"

"और ख़ाली दूध पिएँ, तो कैसा ?"

"वह तो और भी बुरा है।"

अपने राम ने देखा, यार लोग चाचा को विना दूध-शकर की चाय पिलवाए विना मानेंगे नहीं, अतएव अपने राम बोल उठे—"नहीं, दू नुक़सान नहीं करेगा, बल्कि फ़ायदा करेगा।"

युवक-मंडली ने अपने राम को घूरकर देखा। एक बोला—"आप क्या जानें।"

अपने राम बोले—"मैं जानता हूँ। मैंने ए का इलाज कराया था, तब से मुझे इसका सब हाल-चाल मालूम है।"

चाचा प्रसन्न होकर बोले—"बस-बस ! त तो इसका कहना ठीक है। ज़रा किसी से कह दो एक गिलास दूध दे जाय।"

युवक-मंडली अपने राम को घूरकर रह गई।

(असमाप्त)

अवसर न चूकिए ! लाभ उठाइए !!

प्रचारकों की आवश्यकता है !!!

हमारी सुंदर, सस्ती और लोक-प्रिय

पुस्तकों को बेचने तथा सुधा का काफ़ी प्रचार करने के लिये

पंजाब, यू० पी०, बिहार, सी० पी० आदि के

सभी बड़े-बड़े शहरों में

सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों और स्थानीय एजेंटों की आवश्यकता है।

एजेंसी लेने के लिये आवेदन-पत्र में योग्यता, अनुभव और आयु का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। वेतन या कमीशन या दोनो काम के अनुसार काफ़ी मिलेंगे।

शीघ्र पत्र-व्यवहार कीजिए

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

सुधा

विहार के प्रसिद्ध साहित्यसेवी
कुमार गंगानंदसिंह एम्० ए०

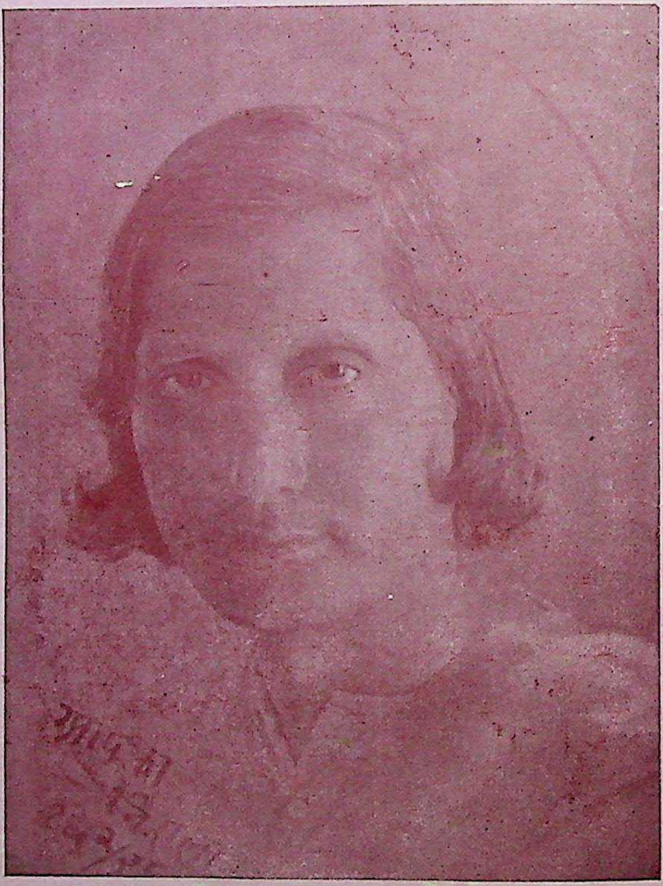

युगांतरकारी कवि
श्री 'निराला'

कविता के प्रति

[श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला']

ऐ, कहो,
मौन मत रहो !

(१)

सेवक इतने कवि हैं—इतना उपचार—
लिए हुए हैं दैनिक सेवा का भार ;
धूप, दीप, चंदन, जल,
गंध - सुमन, दूर्वादल,
राग - भोग, पाठ - विमल मंत्र,
पटु - करतल - गत मृदंग,
चपल नृत्य, विविध भंग,
वीणा - वादित सुरंग तंत्र।
गूँज रहा मंदर - मंदिर का दृढ़ द्वार,
वहाँ सर्व - विषय - हीन दीन नमस्कार
दिया भू-पतित हो जिसने, क्या वह भी कवि ?
सत्य कहो, सत्य कहो, बहु जीवन की छवि !

(२)

पहनाए ज्योतिर्मय, जलधि-जलद-भास
अथवा हिल्लोल-हरित-प्रकृति-परित वास,
मुक्ता के हार हृदय,
कर्ण कीर्ण हीरकद्वय,
हाथ हस्ति-दंत-वलय मणिमय,
चरण स्वर्ण - नूपुर कल,
जपालक्त श्रीपदतल,
आसन शत-श्वेतोत्पल-संचय।
धन्य-धन्य कहते हैं जग-जन मनहार,
वहाँ तुच्छ दीन हृदय ने दुर्वह भार—
'मेरे कुछ भी नहीं'—कह जो अर्पित किया,
कहो, विश्ववंदिते, उसने यह क्या दिया ?

(३)

कितने वन-उपवन-उद्यान कुसुम-कलि-सजे
निरुपमिते, सहज-भार-चरण-चार से लजे ;
गईं चंद्र - सूर्य - लोक,
ग्रह - ग्रह - प्रति गति अरोक,
नयनों के नवालोक से खिले
चित्रित बहु धवल धाम
अलका के - से विराम
सिहरे ज्यों, चरण वाम जब मिले।
हुए कृती रचना - व्रत राजकविसमूह,
किंतु जहाँ पथ-बीहड़ कंटक-गढ़-व्यूह,
कवि कुरूप, बुला रहा वन्य हार थाम,
कहो, वहाँ जाने को कैसे हैं प्राण ?

(४)

कितने ये भाव रसस्राव पुराने - नए
संसृति की सीमा के अपर पार जो गए,
गढ़ा इन्हीं से यह तन,
दिया इन्हीं से जीवन,
देखे हैं स्फुरित नयन इन्हीं से
कवियों ने परम कांति
दी जग को चरम शांति,—
अपनी की दूर भ्रांति इन्हीं से।
होगा इन भावों से हुआ तुम्हारा जीवन,
कमी नहीं रही कहीं कोई, कहते सब जन,
किंतु वहीं जिसके आँसू निकले,—हृदय हिला,—
कुछ न बना; सत्य कहो, उससे क्या भाव मिला ?

कौन बँटाए उर की पीर ?

[श्रीयुत नीलकंठ तिवारी 'ज़खमी' बी० ए०, साहित्यरत्न]

कौन बँटाए उर की पीर ?
किसके प्राणों के तरकश में रख दूँ अपने उर के तीर ?
किसको मैं दिखलाता भटकूँ अपने प्राणों के अंगारे ?
किसकी आँखों की डिबिया में रख दूँ अश्रु-कणों के तारे ?
किसकी सुरभित साँसें जकड़ूँ फैला आहों की जंजीर ?
किस वीणा के तारों में मैं अपनी सिसकी के स्वर भर दूँ !
किस कोकिल की कूकों में मैं अपनी हूकों को भर-भर दूँ !
किस चकई को मुग्ध करेगी मेरे शोलों की तासीर !
अश्रु-जड़ित मुख पोछूँ अपना दूर क्षितिज के किस अंचल से ?
क्षणिक सांत्वना माँगूँ जीवन के किस उड़ते कोमल पल से ?
माखन-प्राणा किस साड़ी से बाँधूँ टीसों की मैं भीर ?
किस खँडहर की 'साँय-साँय' को मूक शून्यता सौंप चलूँ मैं !
किस मरु-तप्त बवंडर को निज पीड़ा-थाती सौंप टलूँ मैं !
किस काँटे को मैं दे डालूँ अपनी कसकन की जागीर !
किस वन के मैं अंतराल में भर दूँ हृदय-विदारक क्रंदन ?
किस अंबुधि में मैं तैराऊँ तूफ़ानों का पागल कंपन ?
पंचतत्त्व के पात्रों में क्या भर दूँ प्रलयी आँसू-नीर ?
भार स्वयं का हाय ! स्वयं ही नहीं सँभाले मैं हूँ पाता!
कहो, कौन मानवता मेरे दुख से जोड़ेगी फिर नाता !
उर-सागर में दुःख-तरी यह डूब लगेगी अब तो तीर !
मक्खी के पंखों-सा लिपटा सुख-दुख के भ्रम-मधु में जग यह ;
किसी और का विष निज मधु में फिर घोले क्यों कौन विकल रह ?
नीलकंठ तू विष पी अपना अब तो समझ-समझकर क्षीर !
कौन बँटाए उर की पीर ?

निःशुल्क, अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा-प्रचार

[श्रीयुत महेशचंद बी० एस-सी० (आनर्स), विशारद]

किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ की शिक्षा-प्रणाली पर होती है। जिस देश, जिस प्रांत और जिस नगर के लोग अनपढ़ एवं अशिक्षित हैं, उनसे यह आशा करना कि वे अपने आप उन्नतिशील बन जायँगे, हवा में घर बनाने और मन के लड्डू खाने से किसी प्रकार कम नहीं। ऐसी जनता सदैव दूसरे देशों द्वारा त्रस्त की जायगी। वे कभी स्वाधीन न हो सकेंगे। और, तुलसीदासजी कह ही गए हैं—"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।" क्या राजनीतिक, क्या आर्थिक, क्या सामाजिक, सब प्रकार की स्वतंत्रताएँ और समृद्धियाँ उनसे कोसों दूर रहेंगी।

हमारे देश का अधिकांश, अर्थात् नब्बे प्रतिशत, बिलकुल अनपढ़ है। और, जो दस प्रतिशत पढ़े-लिखे लोग हैं, उनमें ऐसे भी शामिल हैं, जिनके लिये नाम के अक्षरों के अतिरिक्त और सब अक्षर भैंस-बराबर हैं। हमारे देश के दुखी तथा दरिद्र होने का कारण है हमारी शिक्षा का उपयुक्त न होना। जब तक हमें समुपयुक्त शिक्षा न मिलेगी, तब तक हम स्वतंत्र नहीं हो सकते। विजयी नेपोलियन के शिकंजों में पड़कर विजित जर्मनी की वही दशा थी, जो आज भारत की है। वह फिर कैसे स्वतंत्र हुआ? देश पर बलिदान होनेवाले विज्ञ विशेषज्ञों तथा विद्वानों ने पहली बात जो की, वह थी तत्कालीन शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन। नई शिक्षा-प्राप्त नवयुवकों की टोली ने नेपोलियन का बना-बनाया राज्य मिट्टी में मिला दिया। आज यदि हम चाहते हैं कि पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करें, तो हमें चाहिए कि हम भी शिक्षा-सुधार के काम को हाथ में लें।

आज बच्चों को लोअर प्राइमरी तक जिस प्रणाली से शिक्षा दी जाती है, उससे बालकों को स्वतंत्रता तथा स्वाध्याय का पाठ तो तनिक भी नहीं मिलता। जो कुछ भली-बुरी शिक्षा मिलती भी है, उसी से कितने बच्चे लाभ उठाते हैं। जापान में बच्चों के लिये प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य है। वे धर्म और राष्ट्र-भाव को धारण करते हुए उद्योगी शिक्षा पाते हैं। यही कारण है कि जापान, जो कुछ समय पहले भारत से भी बुरी हालत में था, आज उन्नतिशील राष्ट्रों में गिना जाता है।

भारत में प्रारंभिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिये वायसराय की कौंसिल में, पहलेपहल प्रस्ताव-रूप में, रखने का श्रेय स्वर्गीय गोखले को है। तब से आज तक इस पर काफी विचार हो चुका है, और देश-

हित चाहनेवाले किसी सज्जन ने यह नहीं कहा कि प्राइमरी शिक्षा को अनिवार्य बनाना बुरा होगा। कतिपय सज्जनों का तो मत है कि प्रारंभिक शिक्षा को न केवल अनिवार्य, प्रत्युत निःशुल्क भी बना देना चाहिए। परंतु "जाके पायँ न फटी बेंवाई, सो का जानै पीर पराई।" किसी बात को कह देना तो बड़ा आसान होता है, परंतु कर दिखाना बड़ा मुश्किल। यही उक्ति प्रारंभिक शिक्षा को अनिवार्य तथा निःशुल्क बनाने के संबंध में भी घटती है।

सबसे पहली कमी तो है पैसे की। जैसा कि अभी हाल में संयुक्त प्रांत के शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर कर्नल विअर ने कहा था कि कोई भी शिक्षा फ़्री नहीं हो सकती, अर्थात् हम चाहे जिस प्रकार की शिक्षा दें, उसमें ख़र्च अवश्य पड़ेगा। अंदाज़ लगाया गया है कि यू० पी० में हरएक मनुष्य को प्राइमरी शिक्षा देने के लिये लगभग चार करोड़ रुपए की आवश्यकता पड़ेगी। प्रांतीय सरकार सारे शिक्षा-विभाग के लिये तो मुश्किल से दो करोड़ रुपए देती है, फिर केवल प्राइमरी शिक्षा के लिये चार करोड़ कहाँ से आवें

कुछ दिन हुए, बंबई में इस बात पर प्रयोग हुआ। दो-तीन मुहल्लों में प्रारंभिक शिक्षा निःशुल्क तथा अनिवार्य कर दी गई थी। प्रयोग द्वारा मालूम पड़ा, ग़रीब विद्यार्थियों को स्लेट, पेंसिल और किताबें देने की आवश्यकता पड़ती है। परंतु धनाभाव के कारण अधिक समय तक पढ़ाई की ये चीज़ें नहीं दी जा सकीं। देश की सबसे बड़ी कठिनाई है शिक्षा-संबंधी ख़र्च कम करना। इस संबंध में कुछ सज्जनों का मत है कि विश्व विद्यालयों के छात्रों के लिये यह अनिवार्य कर देना चाहिए कि वे शिक्षा-काल में कम-से-कम एक वर्ष तक किसी गाँव में जाकर वहाँ के रहनेवालों को प्रारंभिक शिक्षा देने का प्रयत्न करें। यदि डिग्री प्राप्त करने के पहले युनिवर्सिटी के छात्रों के लिये ही यह नियम बना दिया जाय, तब भी एकोद्देश्य रखनेवाले इन नव युवकों द्वारा ग्राम-शिक्षा-प्रचार में चमत्कार हो जाय। परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रौढ़ लोगों को तो ये विद्यार्थी प्रारंभिक शिक्षा दे सकते हैं, क्योंकि बड़ों को पढ़ाना आसान होता है, परंतु छोटे बच्चों को क-ख-ग पढ़ाना बड़ा मुश्किल होता है। और, यदि युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों से इन बालकों के पढ़ाने का काम लिया जायगा, तो कोई लाभ न होगा।

शिक्षा-व्यय उस समय भी कम किया जा सकता है, जब प्रारंभिक शिक्षा देने के लिये आवश्यक समय में कमी की जाय। प्रयाग निवासी बाबू संगमलालजी ने अपनी नई शिक्षा-प्रणाली द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि केवल छ सप्ताह के अंदर कोई भी नागरी-अक्षर पढ़ना-लिखना सीख सकता है। संयुक्त प्रांत की सरकार स्वयं उनकी प्रणाली पर प्रयोग कर रही है। यदि उसे सफलता मिली,

यह प्रणाली सरकारी तौर पर काम में लाई जायगी। परंतु यह प्रणाली भी बड़ों को प्रारंभिक शिक्षा देने के लिये है। और, यदि निःशुल्क, अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा न केवल बच्चों, बल्कि बड़े अपढ़ आदमियों के लिये भी जरूरी मानी जाय, तो अवश्य यह प्रणाली हमारी कुछ मदद करेगी। परंतु अधिकतर निःशुल्क प्राइमरी शिक्षा बच्चों के लिये अनिवार्य बनाई जाती है। अस्तु।

संयुक्त प्रांत में ही ३६०० म्युनिसिपल-स्कूलों में, जहाँ अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध हुआ था, पढ़नेवालों की संख्या इस प्रकार रही है—

साल	१९३०-३१	१९३१-३२	१९३२-३३	१९३३-३४	१९३४-३५
दर्जा	ब	१	२	३	४
पढ़नेवालों की संख्या	३३,६००	२१,०००	१२,०००	७,०००	१,६५६

इससे साफ़ प्रकट होता है कि अनिवार्य शिक्षा में कितना समय, धन और मेहनत व्यर्थ जाती है। चौथे दर्जे से पहले ही भाग जानेवाले ३२,००० लड़के साल-छ महीने में ही फिर से गँवार-के-गँवार बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त उपरि-लिखित आँकड़ों से यह भी सिद्ध होता है कि यदि धन-संबंधी कठिनाइयाँ दूर भी हो जायँ, तब भी सफलता-प्राप्ति में कुछ अड़ंगे पड़ेंगे। विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि माता-पिता की ग़ैरहाज़िरी में घर के सात से ग्यारह साल के बच्चे अपने छोटे भाई-बहनों की अच्छी तरह देख-रेख करते हैं। बच्चों के स्कूल और माता-पिता के काम पर जाने का समय एक ही साथ आरंभ होता है। अतएव माता-पिता नहीं चाहते कि बच्चे स्कूल जायँ, क्योंकि उनकी अनुपस्थिति में छोटी लड़के-लड़कियों की देख-भाल कौन करेगा। बंबई की ओर यह प्रस्ताव किया जा रहा है कि मिल-मालिकों के लिये यह अनिवार्य कर दिया जाय कि वे छोटे बच्चों के लिये क्रेश (Crech.) खोलें। इससे छोटे बच्चे घर पर नहीं रह सकेंगे। तब नौ से ग्यारह साल के लड़कों के लिये म्युनिसिपल-स्कूल ही उपयुक्त स्थान होंगे। परंतु जिस जगह मिल और मिल-मालिक नहीं हैं, वहाँ क्या होगा। हमारे संयुक्त प्रांत में कुछ शहरों में तो क्रेश का इंतज़ाम हो सकता है, किंतु हमारी समस्या तो अधिकतर गाँवों से संबंध रखती है, और वहाँ की कठिनाइयाँ शहर से कहीं भिन्न हैं। माननीय मंत्रियों ने इच्छा प्रकट की है कि स्वयं सरकार की ओर से क्रेश का इंतज़ाम हो।

यह देखा गया है कि स्कूल घर से जितना ही अधिक पास होता है, उतना ही अधिक माता-पिता लड़कों को स्कूल भेजने के लिये राज़ी रहते हैं। इसलिये यह बहुत जरूरी है कि शहरों के जितने मुहल्लों या जितने गाँवों में हो सके, स्कूल खोले जायँ, जिससे लड़कों में स्कूल जाने का प्रलोभन बढ़े। इसके अलावा शिक्षकों को

चाहिए कि वे प्रतिदिन घंटा-दो घंटा लड़कों को स्कूल आने के लिये और उनके माता-पिता को उन्हें स्कूल भेजने के लिये उकसाया करें। प्रतिदिन उन्हें अपने साथ स्कूल लाने के लिये भरसक कोशिश करें। यह तरीक़ा अख़्तियार करने से बंबई में अनिवार्य निःशुल्क प्राइमरी शिक्षा पानेवाले लड़कों की संख्या में काफ़ी वृद्धि हुई है, जो निम्न-लिखित आँकड़ों से ज्ञात होती है—

साल	१९२५	१९२६	१९३५
पढ़ने न आनेवालों की संख्या	११.५ हज़ार	५.६ हज़ार	१.६ हज़ार
पढ़ने आनेवालों की संख्या	५.६ ,,	१२ ,,	१७ ,,
फ़ी सैकड़ा पढ़नेवालों की संख्या	३२	६६	८५

परंतु सारी मुसीबतों का कारण हमारी दरिद्रता है। इसी के कारण शिक्षा-प्रणाली सुधर भी जाय, तब भी आफ़त का सामना करना पड़ेगा। हम भूखे हैं, दरिद्र हैं, और हम पढ़ाते भी इसीलिये हैं, क्योंकि हम भूखे हैं। सार्वजनिक संस्थाओं में ही अधिक शिक्षक काम करते हैं। उनका सिद्धांत है, भाड़ में जायँ शिक्षा के सिद्धांत, और उनका प्रयोग। जो हमारे 'भाई-बाप'—स्कूल के संरक्षक कहेंगे, वही हम करेंगे। मान लिया, निःशुल्क, अनिवार्य शिक्षा-प्रणाली में सरकार की ओर से देख-रेख होगी, परंतु वहाँ भी यह बुराई हमारा पिंड नहीं छोड़ेगी। और, यही समस्या हमारे पढ़ने आनेवाले बच्चे के साथ है। आठ-नौ साल के बालक स्वयं कुछ-न-कुछ कमाते हैं। कम-से-कम शहरों में तो यह बात अवश्य देखने में आती है। शहरों में मामूली तौर पर ये दो-तीन आने रोज़ पैदा कर लेते हैं, जिससे उनके माता-पिता को घर-ख़र्च में बड़ी मदद मिलती है। ऐसे बच्चे बहुधा दूकानों और होटलों में काम करते हैं। बड़े शहरों में कुछ अख़बार बेचते हैं, और बहुत-से तो घरों में नौकरी कर लेते हैं। गाँवों में तो छोटे बच्चे गाय-बकरियों को चराते हैं, उन्हें नदी या पोखरे में पानी पिलाने ले जाते हैं, इत्यादि। इनके पढ़ने चले जाने पर गोरू चरानेवाले को पैसे देने के लिये कहाँ से आवेंगे? पढ़ना शुरू करने से लड़के पैसे लाना तो शुरू कर ही न देंगे। कहीं-कहीं तो उन बेचारों को ही कमाकर अपना और अपनी बूढ़ी दादी या मा का पालन-पोषण करना पड़ता है। अब यदि वे स्कूल जाने लग जायँ, तो कुछ के माता-पिता के हाथ बहुत तंग हो जायँ, कुछ के घरों में जब-तब चूल्हा ठंडा पड़ जाय, और कुछ भिखमंगों की संख्या बढ़ाने में सहायता पहुँचावें। आज यदि पेट का प्रश्न हल हो जाय तो हमारे मार्ग से बहुत बड़ा रोड़ा हट जाय।

कुछ सज्जनों का कहना है—बहुत हाय-हाय करने से कुछ न होगा। सब ओर काम फैलाने से किसी तरफ़ भी सफलता नहीं

मिलेगी। प्रारंभिक शिक्षा-प्रचारवालों को चाहिए, वे पहले शहरों में ही इसका पूर्ण प्रचार कर लें, तब गाँवों की ओर बढ़ें। और, यदि पूरे शहर में एक साथ काम न शुरू हो सके, तो शहर के कुछ मुहल्लों से ही कार्यारंभ करें। इनका कहना ठीक है, मैं इस मत से सहमत हूँ, परंतु यह ऐसी समस्या है, जिसे यदि थोड़ी-सी जगह के लिये ही पहले हल किया जाय, तो कठिनाइयाँ और बढ़ जाती हैं।

यह भी पाया जाता है कि बहुत-से देहात के रहनेवाले वहाँ काम न रहने पर शहरों में चले आते हैं। कलकत्ता-ऐसा शहर हुआ, तो माता-पिता किसी मिल में काम कर लेते हैं, और लड़का किसी दूकान पर। कोई छोटा शहर हुआ, तो आदमी किसी दूकान पर नौकरी कर लेता है, और औरत चौका-बर्तन करने का काम कर लेती है। फ़सल का समय आने पर वे लोग फिर गाँवों की ओर उड़नछू हो जाते हैं। इससे उनके बच्चों को पूरी तौर पर अनिवार्य शिक्षा नहीं प्रदान की जा सकती। पूरे शहर को छोड़कर उसके कुछ मुहल्लों में ही काम शुरू करने की एक विचित्र कठिनाई का उदाहरण लीजिए—बंबई में इस प्रकार की शिक्षा का प्रयोग दो-तीन मुहल्लों में किया गया था। बहुत-से मनुष्य तो इसकी दिक़्तों से बचने के लिये उन मुहल्लों को छोड़कर दूसरों में जा बसे, और, वैसे भी काम करनेवाले उठाईगीर तो होते ही हैं, वे जब-तब मुहल्ला बदलते ही रहते हैं। मान लिया जाय कि दूसरे मुहल्ले में भी अनिवार्य शिक्षा दी जाती है, तब भी क्या पता, मुहल्ला बदलने के समय पहले में कुछ और पढ़ाया जाता हो, और दूसरे में कुछ और। यदि दूसरे मुहल्ले की कक्षा में उस समय पहले मुहल्ले की उसी कक्षा से आगे पढ़ाई हो रही है, तो लड़का क्लास में बुद्धू-सा बैठा रहेगा, या फिर उसकी ओर मास्टर साहब कुछ समय तक विशेष ध्यान दें।

रहा लड़कियों को पढ़ने भेजने का प्रश्न। पहले तो यह कहना अत्युक्ति न होगी कि हर तरह के क़ानून और ऐक्ट रहते हुए भी लड़कियों का विवाह छोटी उम्र में हो जाता है। स्वभावतः उनके माता-पिता उन्हें स्कूल भेजने में एतराज़ करते हैं। यदि क़ानून का तनिक भी भय दिखाया जाता है, तो दूसरे ही दिन लड़कियाँ गाँव या ससुराल को पार्सल कर दी जाती हैं।

इसके अलावा लड़कियाँ घर में मा को काम करने में मदद देती हैं। अम्मा और दादा की ग़ैर-हाज़िरी में लड़के तो चीज़ बिगाड़ने के फेर में रहते हैं, और लड़कियाँ अधिकतर उन्हें ऐसा करने से रोकती हैं। यह तो ठीक है, गाँव में दिन को लड़कियों को गोरू नहीं चराने पड़ते, परंतु इसका यह मतलब नहीं कि वे खेत में पक्षियों को उड़ाने या घर पर घर की रखवाली करने का काम नहीं करतीं। फिर छोटे भाई-बहनों की देख-रेख लड़के उतनी नहीं करते, जितनी लड़कियाँ करती हैं।

प्रश्न यह उठता है कि क्या तब निःशुल्क तथा अनिवार्य करने पर भी प्रारंभिक शिक्षा सबको नहीं दी जा सकती ? क्या इस ओर सफलता मिल ही नहीं सकती ? कहना न होगा, चाहे जिस तरह हो, सरकार को इस ओर अवश्य मदद करनी चाहिए । विना इसके सफलता प्राप्त नहीं हो सकती । वर्धा में होनेवाली शिक्षा-कन्फ़्रेंस में महात्माजी की जो स्कीम पास हुई है, यदि उसे सफलता-पूर्वक व्यावहारिक रूप दिया जा सके, तब तो प्रारंभिक शिक्षा-प्रचार में कोई कठिनाई ही नहीं रहेगी । उसमें सबसे अधिक खटकनेवाली बात यह है कि उसके लिये उपयुक्त अध्यापक कहाँ मिलेंगे । प्रो० दयाशंकरजी दुबे बतलाते थे कि कुछ दिन हुए, जब इलाहाबाद के पास कुछ ज़मीन तथा सरकार से सहायता दिलाकर यह इंतज़ाम किया गया था कि मास्टर बच्चों को खेत-संबंधी बातें सिखाएँ, और खेत से उत्पन्न होनेवाली उपज से पढ़ाई का काम चलाएँ, परंतु साल-भर में ही सब चौपट हो गया । दस-पंद्रह हज़ार रुपए बेकार गए, और योजना में कुछ भी सफलता नहीं मिली । हो सकता है, उक्त योजना में कुछ ऐसी त्रुटियाँ हुई हों, जिनसे सफलता नहीं मिली । अस्तु ।

यह आशा की जाती है, महात्माजी की कृपा से वर्धा-स्कीम को व्यावहारिक रूप देने में विशेष कठिनाई न होगी ।

---

२५) लगाकर १००) कमाइए !

आवश्यकता है

हमें भारत के प्रत्येक छोटे-बड़े क़स्बे, नगर और शहर में ऐसे प्रचारकों की, जो अपने स्थान की जन-संख्या के अनुसार हमारी नई पुस्तकों की २ से ५ प्रतियाँ तक बेच दिया करें । हम उन्हें प्रत्येक मास में ७-८ नई पुस्तकें दिया करेंगे । अपनी पुरानी सैकड़ों पुस्तकें भी उन्हें बेचने को दी जायँगी । इसके अलावा भारतवर्ष-भर की हिंदी-पुस्तकें उन्हें भेजी जा सकेंगी । कम-से-कम २५) की नक़द ज़मानत ज़रूरी है । सुधा और माला के प्रेमी ग्राहकों से निवेदन है कि अपने यहाँ के लिये कोई प्रचारक हमारे लिये तजवीज़ करें । हम सब जगह—भारत-भर में कोई ४०० प्रचारकों का जाल बिछा देना चाहते हैं, जो निकलते ही नई पुस्तकों की १-२ हज़ार प्रतियाँ, दो महीने में, खपा देंगे । नियम निम्नांकित पते से मँगावें—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए ।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
—हरएक घर में रहना चाहिए—

(जूड़ी-ज्वर)

मलेरिया का महान् शत्रु

झंडु-मलेरिया मिक्श्चर

सेवन करके
मलेरिया की जड़ को
नेस्तनाबूद कर दीजिए।

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४
यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली ।
लखनऊ के „ „ —मातावदल पंसारी, अमीनाबाद ।

मार्च
मंगलवार
१

से

मार्च
बृहस्पतिवा
३१

तक

औषध-रत्नों का निधि

उत्तरीय भारत का चमत्कारी अमृतधारा-औषधालय अपनी सिलवर जुबली की यादगार में
के आग्रह पर मार्च महीने में समस्त औषधियाँ तथा पुस्तकें आधे मूल्य पर और अमृतधारा तथा
(मरहम, बाम, लोशन आदि) मिश्रण ३/४ मूल्य पर प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी जनता की भेंट

साल-भर में एक मौक़ा

अपने स्वास्थ्य, बल तथा यौवन की उन्नति के लिये, अपने परिवार की स्वास्थ्य-रक्षा के लिये तथा डायबिटीज, बवासीर, पायोरिया, दमा, बूढ़ों और स्त्रियों-बच्चों के रोगों के लिये इस औषधालय की सुप्रसिद्ध चमत्कारी औषधियों का बड़ा सूचीपत्र और नपुंसकत्व मुफ़्त मँगाकर अपने लिये उपयुक्त औषधियाँ आप स्वयं चुन सकते हैं। ये—

साल-भर बचत

मार्च-मास में अपने आवश्यकतानुसार
जमा करवा देने से साल-भर तक आप
इलाज तथा जो दवाई चाहें, आधे मूल्य
अमृतधारा तथा उसके मिश्रण ३/४ मूल्य पर
जब चाहें, मँगवा सकते हैं। इस उपाय से
चिकित्सा-संबंधी साल-भर के खर्च में
बचत हो सकती है।

मार्च में ही **मिल सकती हैं** **आधे मूल्य**

डाक व तार
का पता

अमृतधारा

लाहौर

नंदा

[श्रीमती विद्या ठाकुर]

(१)

एक जल-धारा के तट पर, सघन तरु-श्रेणी में, छाया-पथ नदी के कूल पर जाकर मिल गया है। वकुल-फूलों की सघन छाया में, उसकी धूप-छाँह के ताने-बानों में, एक छोटी नौका तीर पर पड़ी है निश्चल ! मौन !! सामने शैल-माला की चोटी पर हरियाली मोहिनी के रूप-पाश-सी फैल रही है। जल-धारा में पड़े हुए एक शिला-खंड पर एक बालिका बैठी धारा की लहरों में अपने पैरों को हिला रही है। उसकी नीलम-सी सुंदर, हिरन-सी भोली, प्यार-सी कोमल, दूध की तरह स्वच्छ भावना-राशि-भरी आँखें एकटक देख रही हैं गगनांचल !

एक आम्र-कुंज से सीटी की ध्वनि कर्ण-गोचर हुई, और धीरे-धीरे वहाँ एक पंद्रह-वर्षीय कुमार ने पदार्पण किया। बालिका को बालक के आने की सुध भी न थी, वह तो नीलांचल में निहार रही थी, मानो कुछ खोज रही है।

बालक ने पीछे से उसके नेत्र बंद कर लिए। बालिका चौंकी ! फिर बोली—"पहचान गई सुधा !"

कहना न होगा, सुधा उसकी सहचरी थी।

उसकी आँखें खुलीं नहीं, बंद ही रहीं। बालिका ने बालक के हाथों को टटोला, और हर्ष से उछलकर बोली—"ओह, तुम हो कुमार !"

"पहचान नहीं सकीं नंदा !"

श्रीमती विद्या ठाकुर

उसके नेत्र खुल गए। नंदा उन्हें मलने लगी, और बोली—"सोच रही थी, शायद तुम न आओ।"

कुमार उसके निकट ही बैठ गया, और बोला—"तुमने तो मुझसे यहाँ मिलने को कहा था, क्या फिर भी मैं न आता ?"

कुमार के हृदय पर एक हल्की चोट लगी।

"उदास क्यों होते हो राजकुमार ?"

"नहीं तो।" कुमार धीरे से बोला।

नंदा ने अपने वस्त्रों से अपनी बाँस की बाँसुरी, जिस पर उसका नाम अंकित था, निकाली। उसे वह कुमार के हाथ में देती हुई बोली—"कुमार ! आज तुम्हें वंशी बजाकर सुनानी होगी।"

बालक वंशी देखकर उछल पड़ा, और बोला—'एक शर्त है।"

"कहो।"

"वंशी फिर मेरी होगी।"

"सहर्ष।"

"किंतु नंदा, इसे तुमने कहाँ पाया ?"

"पिता से कहा था, मैं कुमार से बाँसुरी बजाना सीखूँगी। पिता ने मँगवाई है।"

"किंतु अब तो मेरी हो गई।"

"तुम्हें ही देने को मँगाई थी कुमार !"

"सच ?"

"सच।"

कुमार ने वंशी में फूँक मारी। उसकी ध्वनि हवा में, जल-धारा में और नंदा में गूँज गई। नंदा वंशी की रागिनी से पागल-सी होकर कुमार की वंशी में अपने को भूल गई।

इतने में एक निकटवर्ती आवाज़ आई—"नंदा !"

"आई पिता !"

"राजकुमार, जा रही हूँ।" कहकर नंदा भाग गई।

(२)

नंदा राजकुमार के गुरु की, उनके कुल-गुरु की, कन्या थी। वह महल से थोड़ी ही दूर एक बग़ीचे में रहते थे, वहीं उनकी एक झोपड़ी थी। बग़ीचे के पास ही एक निर्झरिणी अपने कलकल-नाद से बहती थी। वहीं नंदा अक्सर बैठा करती थी। वह उसका प्रिय स्थान था, और वहीं उसे हमने पहली बार देखा।

नंदा राजगुरु की कन्या न थी। बहुत दिनों की बात है, वसंत के दिनों में एक दिन गुरुजी उसी जल-धारा में नहा रहे थे कि उनके पैरों में कोई चीज़ आकर अटक गई। उन्होंने उसे उठाया, तो सुंदर, रेशमी, मुलायम गद्दों में लिपटा हुआ एक सुंदर, सुकुमार, मोहक शिशु था। वह कुछ क्षण तक सोचते रहे, यह अभागा बच्चा न जाने किस कुल की मणि है ! किंतु मैं इसे पालूँगा और अपनी पुत्री के नाम से प्रसिद्ध कर दूँगा। हवा लगने से बच्चा रो उठा। वह उसे उठा लाए और दिन-रात परिचर्या कर उसे जिलाया। उसके लिये पहाड़-से दिन और काटे न कटनेवाली रातें जागकर उनींदी आँखों से बिता दीं। व बालक अब १२ साल की नंदा के रूप में परिवर्ति है। गुरुजी उसे लेकर जंगल से राजधानी के निक आ गए।

गुरुजी ने नंदा को किस तरह इतना ब कर पाया था, यदि आप यह जानना चाहते ह तो किसी विधवा माता से पूछिए कि व किस तरह अपने शिशु-रूपी वैभव की रक्षा कर है, किस तरह अपनी उजाड़ फुलवारी में ए सौरभ और भोलेपन के अवतार शिशु की वसंत के समान परिचर्या करती है ? बस, इसी त गुरुजी ने अपने प्राणों की तलहटी में के नाम की जो वस्तु है, उससे नंदा के जी रूपी पौधे को सींचा, और अपने गुरुत्व की छ शीतल छाया में सुरक्षित रक्खा।

नंदा के लिये उन्होंने अपनी सारी उपा भुला डाली। उस दिन से उनकी जीवन- पलट गई, वह एक बार फिर मायावी संसार उन्हें बरबस खींच लाई। वह नंदा के लि सोचते थे—हर घड़ी, हर पल। वह इसलिये चिं रहते कि कहीं यह स्वर्गीय कुसुम सांसारिक पड़ झुलस न जाय।

राजकुमार उनके निकट पूर्व-ग्रंथों की श के लिये आता था। नंदा भी राजकुमार के विद्याध्ययन करती। फिर दोनो बाग़ में मिट्टी का घर बनाते, नौका पर सवार होते। उसे प्रसन्न देख आनंद के अथाह

डगमगाने लगते, मानो उन्हें अपनी तपस्या का वरदान मिल गया हो।

यही नंदा के बचपन की कहानी है।

(३)

चार साल बाद—

उस दिन से नंदा के जीवन का क्रम बदल-सा गया। वह प्रतिपल, प्रति घड़ी राजकुमार के ही ध्यान में रहने लगी। उसे बाँसुरी की याद न भूलती। उसके हृदय में उसे सुनने की कितनी आकुलता थी, और कितना उन्माद था!

वह रोज़ कुमार की वंशी सुनते रहना चाहती थी, किंतु राजकुमार बेचारा अनेक कार्यों में व्यस्त रहता। उसे रोज़ इतना समय ही न मिलता कि वह नंदा को अपनी बाँसुरी सुना सके—चाहते हुए भी। वह तो फँसा था राजकाज में! किंतु उसे जब ज़रा-सा भी समय मिलता, वह गुरुजी के यहाँ आ जाता, और अपनी वंशी में फूँक मार देता। नंदा दूर से सुनती। वह सोती हुई जाग जाती, उसके प्राण कुमार के निकट जाने को हाहाकार कर उठते। वे वंशी की ध्वनि के सहारे कुमार के निकट जा पहुँचते। बस, फिर क्या! कुमार वंशी बजाता, और नंदा पागल बनी कुमार में खो जाती। उसे अपनी सुध न रहती।

(४)

प्रातःकालीन वायु चित्त को एकाग्रता का संदेश दे बही जा रही थी। आज कुमार ऐसे मनोरम प्रभात में उदास-सा जल-धारा के निकट खड़ा था। कुमार अब पंद्रह साल का बालक नहीं, किंतु ओजस्वी और वीरता के मद में मदांध युवक है। विशाल ललाट और चौड़े कंधे उसे राजकुमार उद्घोषित कर रहे थे। कुमार चुपचाप जल-धारा की लहरों को देख रहा था, मानो उनमें कोई नई बात हो। बड़ी देर तक वह मौन हो देखता रहा, किंतु अचानक ही उसे मानो कोई बात याद आ गई। उसने अपनी छाती के निकट से वही पूर्व-परिचित वंशी निकाली, और उसे अपने ओठों तक ले जाते-ले जाते एक फूँक मार ही तो दी।

प्रातःकालीन विभावरी में शिशु के कोमल कपोल की भाँति कोमल, किंतु करुण बाँसुरी बज उठी। नंदा ने सुना।

नंदा के नेत्रों से प्रेम का झरना-सा बह निकला। वह उसी समय सोकर उठी थी, और अपने उनींदे नेत्रों को मल रही थी। वह जल-धारा की ओर दौड़ी—बेतहाशा, पागलों की तरह! देखा, कुमार वंशी बजा रहा है।

मधुर! किंतु पीड़ा-विगलित!!

वह चिल्ला पड़ी। हर्ष के कारण अपनी स्थिति भी भूल गई।

"कुमार!"

कुमार सिहर उठा। उसने वंशी बंद कर दी। नंदा ने फिर कहा—"कुमार!"

"हाँ।"

"कब जा रहे हो?" उसका स्वर काँप-सा रहा था।

"........................"।

"क्या न बताओगे कुमार?"

"क्या न बताऊँगा?" दीर्घ स्वर में उत्तर मिला।

"कब जा रहे हो?"

"कहाँ?"

"यह भी कहूँ! हाँ, तो फिर युद्ध में।"

"तुम्हें कैसे ज्ञात हुआ नंदा?"

"पिता ने कहा था।"

"अच्छा! हाँ राजे, जाऊँगा, उस पुण्य तीर्थ में अवश्य जाऊँगा। वही तो हम क्षत्रियों का पावन पर्व है।"

नंदा कुछ न बोली, मानो उसके पास कोई उत्तर ही न था।

"नंदा ! आज बिदा लेने आया हूँ।"

नंदा फिर चुप थी ! वह पागल-सी खड़ी रही।

"नंदा ! आओ, आज एक बार फिर हम नौका पर आरूढ़ हो जीवन की मनोरम बेला में अरमानों का महल बना लें। ज्ञात नहीं, फिर भेंट होगी या नहीं।" कहते हुए कुमार ने नौका जल-धारा में खोल दी। नंदा चुपचाप डाँड़ खेने लगी, कुमार ने वंशी में करुण रागिनी भरी।

आज कुमार की बाँसुरी से एक ऐसी रागिनी निकली, जिसे सुन नंदा, बाँसुरी से अतृप्त नंदा, तन-मन उसमें भूल गई ! वह चुपचाप डाँड़ चला रही थी, और लहरों में कुछ पाने की आकांक्षा से उन्हें जल्दी-जल्दी दूर फेंक रही थी।

नंदा ने आज एक शब्द भी अपने मुँह से न निकाला। कुमार ने वंशी बंद कर दी। वह भी उन उन्मादिनी लहरों को देखने लगा। अब नंदा बोली—"कुमार !"

"हाँ।"

"बजाना क्यों बंद कर दिया ?"

"आज कोई सुननेवाला नहीं।"

"मैं तो सुन रही हूँ कुमार !"

"नहीं नंदा ! आज तुम्हारा मन वंशी में नहीं लग रहा।"

नंदा चुप रही। हाय, वह अपना हृदय कैसे दिखलाती कि वह वंशी सुनने की कितनी आकांक्षा है ! क्या कुमार क जान सकेंगे ?

"नंदा ! आज उदास क्यों हो ?"

"नहीं तो।"

"मुझे धोखा न दे सकोगी।"

नंदा एक बरबस की मुस्किराहट हँसी। उसमें कितनी पीड़ा थी, क्या कुमार जान सका ?

राजकुमार ने फिर कहा—"एक अनुरोध है नंदा !"

"......" नंदा के नेत्र कुमार पर बिछ गए।

"पूरा कर दोगी ?"

"प्राण देकर।"

"लाओ, पतवार मुझे दे दो, मैं खेऊँगा।"

नंदा ने पतवार कुमार के हाथ में थमा दी।

"अब ?"

"आज एक गाना गा दो नंदा !"

"राजकुमार ! आज यह मुझसे न होगा।"

"नंदा ! आह ! मेरी आकांक्षा पूरी कर शायद फिर तुम्हारा कुमार युद्ध-भूमि से न लौटे गा दो नंदा, एक बार गा दो।"

राजे ने एक साँस ली। उसके ओठ गीत बुदा उठे।

नंदा गा रही थी, कुमार सुन रहा था। गुरु उसे शिवालय में न पाकर इधर चले आ यहाँ उन्होंने नंदा को गाते देखा।

कुमार ने गुरुजी को साष्टांग प्रणाम किया। ने आशीर्वाद दिया—"विजयी हो कुमार !"

"नंदा !"

"पिताजी !" वह पिता के निकट जाकर हो गई।

"पिताजी ! कुमार कब जायँगे ?"

"कल ही तो बेटी !"

"सच ?"

"हाँ।"

"कुमार ! मैं महल से आ रहा हूँ, राज तुम्हें याद कर रही हैं।"

"जाता हूँ। नंदा ! बिदा !!"

"जाओ कुमार ! विजयी होकर लौटो।" के नेत्रों में आँसू भर आए।

गुरुजी चलने लगे। वे दोनो पीछे ही गए। कुमार ने अस्फुट स्वर में "नं......दा !"

"कुमार !" नंदा रो पड़ी।

कुमार ने अपनी रत्न-जटित अँगूठी नंदा

कोमल हथेलियों पर रख दी, और चल दिया। नंदा एकटक उसे आँखें बिछाए देखती रही।

(५)

अपनी श्यामल साड़ी ओढ़कर रजनी विश्व को ढकने के लिये अपना आँचल फैलाने लगी। आकाश के दीप टिमटिमाने लगे। चंद्र क्षितिज में अपनी किरणों का जाल फेकने लगे। प्रकृति हँस रही थी। दीपमालाएँ आपस में हिल-मिलकर कुछ मौन-भाषा में इंगित कर रही थीं। मंद समीर के झोंके वातायन में आकर भागे जा रहे थे। किंतु नंदा को इन सबकी सुध ही न थी। वह तो चुपचाप अपना मस्तक नत किए सोच रही थी। क्या? क्या यह भी बताना होगा। उसके हृदय में तो बस, कुमार की मूर्ति थी। उसके प्राणों की तलहटी में कुमार वंशी बजाता था। किंतु वह जब उसे सशरीर देखने को आकुल नेत्र पसारती, तो कुमार उसे स्वप्न हो जाता।

वह सोचती थी, कुमार के विना मेरा जीवन सूना है। अपने जीवन में वह कुमार ही-सा एक सहायक प्राणी चाहती थी। बाह्य संसार की बात उसकी कल्पना के परे थी। उसकी दुनिया में मानो गुरुजी, कुमार, शिवालय और उस जल-धारा के सिवा कुछ न था। आह! कितनी भोली थी नंदा!

बरसात की रात में जब रिमझिम-रिमझिम पानी बरसता, और आठ-आठ दिन तक बंद न होता, तो नंदा, भोली नंदा, भीगते में ही जल-धारा के निकट जाती। वह स्थान उसे बड़ा प्रिय था, उसे देखे विना उसके प्राण हाहाकार कर उठते।

नंदा के भोले, स्वच्छ, निर्मल हृदय में अब टीसों की सारिणी उठा करती थी। वह भोली चुपचाप अनुभव करती थी, पर जान न पाती थी कि यह सब क्या है? उसके इस मौन में कितना विषाद रहता था, उसकी दृष्टि में कितनी पीड़ा होती थी। वह सोचती, पर समझ कुछ भी न पाती।

गुरुजी यह सब अनुभव करते थे, देखते थे। उन्होंने तो प्राण-पण से चेष्टा की थी, उनकी नंदा विश्व को जान भी न पाए, किंतु जो होना था, वह होकर रहा। नंदा के हृदय की कोमल, सुगंधित मिट्टी में प्रेम नाम का अंकुर जम ही तो गया। वह बेचारी विना जाने आग की लपटों में कूद पड़ी, जिनसे निकलना असंभव था। गुरुजी नंदा की विषादमयी मूर्ति देखते, तो उनके हृदय में कोई बिच्छू-सा डंक मार देता था। वह नंदा को हँसती हुई, फूल की तरह खिलती हुई, आकाश-दीपों की तरह झलमलाती हुई, पवन की तरह चंचल और जल-धारा की तरह भोली देखना चाहते थे, किंतु ये सब उनकी प्रारब्ध में न था।

गुरुजी कुटिया में कुछ सोच ही रहे थे कि नंदा दौड़ी हुई आई, और गुरुजी के निकट बैठकर बोली—"पिता! युद्ध में मरने से मुक्ति होती है?"

"हाँ बेटी!"

"पिता! मुक्ति क्या है?" प्रश्न में जिज्ञासा थी।

"जीवन के निर्वाण-पद पर आरूढ़ होना ही मुक्ति है नंदा!"

"पिता! मरने पर सब कहाँ जाते हैं?"

"स्वर्ग में।"

"स्वर्ग क्या है?"

"जीवन के शुभ कर्मों का अंतिम रूप है स्वर्ग, बेटी!"

"पिता! मरने के बाद सब एक जगह मिलते हैं? मरने पर वहीं कुमार से भेंट होगी?"

"बेटी, राजपरिवार के लिये ये अशुभ शब्द मत निकालो। कुमार दीर्घजीवी हों।"

दोनो एक क्षण मौन रहे। थोड़ी देर बाद गुरुजी ने कहा – "नंदा !"

"हाँ पिता !"

"मैंने तुम्हें एकाग्रता का पाठ सिखाया था। अनंत के रूप की व्याख्या की थी, कुछ याद किया ?"

"किया था पिता ! किंतु वहाँ तो अनंत की मूर्ति के स्थान पर कुमार की मूर्ति थी, उनकी लीला की जगह कुमार की लीला थी !" नंदा ने उत्तर दिया।

"बेटी ! तुम्हारी साधना का रूप कुमार नहीं होना चाहिए। तुम योगी-बाला हो, तुम्हें योग-साधना करनी चाहिए।"

"पिता ! मैं आपकी बातों पर विचार करती हूँ, किंतु हृदय तो मानता ही नहीं। ऐसा ज्ञात होता है, कुमार ही जीवन की साधना है, कुमार ही जीवन की परम निधि !"

इसके बाद नंदा बहुत-से प्रश्न गुरुजी से करती रही। वह यथासाध्य उत्तर देते रहे। किंतु वे सब प्रश्न कुमार के ही विषय के थे।

आखिर उन्होंने कहा—"जाओ, नंदा ! एक घड़ी रात्रि व्यतीत हो चुकी, सोओ।"

नंदा चली गई।

(६)

युद्ध बंद हो चुका है। राजकुमार को यहाँ वन में पड़ाव डाले क़रीब दो बरस होने को आ रहे हैं। वह अभी-अभी युद्ध से लौटकर आ रहे हैं। वह उस अंधकार को देखने लगे, जो निर्जन शैल-माला पर फैलता आ रहा है। आसमान में टूटी मुक्ता-माला के मोतियों की भाँति तारे बिखर-से रहे हैं। निकट ही एक मुक्त झरना अपने कलकल नाद से बहता हुआ किसी अज्ञात दिशा की ओर जा रहा है—चंचल, किंतु सुंदर !

क़ुमार एक शिला-खंड पर बैठ गए—नीरव ! उदास ! उनके लिये मानो विश्व की कोई वस्तु कोई महत्त्व ही न रखती थी। उनके हृदय में तो एक चीज़ थी, फूल-सी कोमल, प्यार-सी सुंदर, आकाश-सी अप्राप्य नंदा !! उनके हृदयाकाश में भावों के बादल टकरा-टकराकर नंदा ! नंदा !! की सृष्टि कर जाते थे। कुमार बुदबुदा उठते—नंदा ! नंदा !!

इस निर्जनता में कुमार को नंदा की याद आ-आकर व्यथित करती थी, किंतु उन्हें अपना कार्य तो करना ही पड़ता। वह क्षत्रिय हैं। युद्ध से विमुख होना मरने से ज़्यादा भयंकर है। वह सोचने लगे—नंदा ! नंदा !! आह ! वह देव-कन्या ! क्या मैं कभी उसे अपनी नंदा कहकर पुकार सकूँगा ! आह ! मैं क्या कह गया। वह देव-कन्या है, गुरु-कन्या है, उसक़ी ओर आँख उठाकर देखना भी मेरे लिये पाप है, किंतु हाय, भगवान्, मैंने उसे प्यार किया है, उसके लिये ही तो हिमालय-सी वेदना को गले बाँध लिया है, राजगुरु की कन्या नंदा ! नंदा !! उफ़् ! बड़ी पीड़ा है। युद्ध में जिस समय लड़ता हूँ, तो मानो नंदा की ही छाया मेरी रक्षा करती है, मानो नंदा की मूर्ति मुझे युद्ध में लड़ने को तत्पर करती है। जिस समय घायल होता हूँ, तो मानो नंदा ही मेरे अपने कोमल हाथों से पट्टी बाँधती है। आह !

दुनिया सोचती है, कुमार सुखी है। वह क्या जाने कि कुमार ने अपने हृदय में कौन-सी वेदना पाल रक्खी है, जो अमर है, अखंड है, अटूट है। आह भगवान् ! विश्व ! क्या ने कुमार के हृदय को देखा है ? आह ! यदि तू एक बार यहाँ की झाँकी कर पाता ! देखो, यहाँ हृदय-मंदिर में अर-मानों का यज्ञ हो रहा है, आकांक्षाओं की आहुति पड़ रही है, और तिल-तिलकर जल रहा है कुमार ! अच्छा हुआ, पिता ने यहाँ युद्ध में भेज दिया, नहीं तो न-जाने क्या होता !

हाँ, क्या नंदा भी मुझे चाहती है ! उफ़् ! क्या कहूँ ? मेरी वह युद्ध-यात्रा और उसकी वे लज्जाकर भोली आँखें ? भगवान् ! तू ही रक्षक है सबका ।

उन्होंने अपने हृदय के निकट से वंशी निकाली, और उसे चूमा । प्यार से पागल हो उसे हृदय से लगाए रहे । फिर उस नीरव रजनी में दीर्घ निःश्वास की भाँति कुमार की वंशी बज उठी—उच्छ्वसित, किंतु मोहक !

कुमार की वंशी की मधुर-विकल रागिनी सुन हिंसक जीव अपनी प्रवृत्ति छोड़कर कुमार के निकट आ जाते । रात्रि के वनचर मौन, अचल भावना से उनकी वंशी की स्वर सुनते, मानो वे भी उन्हीं की तरह व्याकुल हैं, और उनके दुख में सहानुभूति दिखाने आए हैं । धन्य हैं पशु । उन्हें भी प्रेम है मनुष्य की करुणा से, उसकी बेकली से !

(७)

दो साल होने को आ गए । नंदा इन दिनों प्रायः अस्वस्थ-सी ही रही । गुरुजी ने नंदा के लिये कोई बात उठा न रक्खी । वह नंदा को स्वस्थ करने के लिये जी-जान लगा रहे थे, किंतु व्यर्थ ! नंदा ने चारपाई पकड़ ली ।

भादों की संध्या थी—सुंदर और नीरव । रिम-झिम-रिमझिम बूँदें पड़ रही थीं, चिड़ियाँ अपने जीवन का उल्लास पा गा रही थीं—इस डाली से उस डाली पर—चंचल और सोल्लास ।

नंदा चुपचाप चारपाई पर पड़ी यह प्रकृति का खेल देख रही थी—चुपचाप, वेदना-मूर्ति बनी ! वह उसे देखती रही, जब तक कि सांध्यप्रदीप जल न उठे । वह उठ बैठी । गुरुजी ने निकट आकर कहा—"नंदा ! कैसी तबियत है ?"

"अच्छी हूँ पिता !"

पिता के नेत्रों में आँसू भर आए । उन्होंने दूसरी ओर मुँह करके आँसू पोछ लिए । नंदा ने सब कुछ देखा ।

"पिता ! कुमार कब आएँगे ?"

"आने ही वाले हैं बेटी !" उनके स्वर में उदासी थी ।

"पिता ! मुझे ऐसा ज्ञात होता है, मानो आज की रात्रि ही अंतिम रात्रि है । आज ही रात्रि को कुमार आवेंगे । मैं आज उनसे मिल लूँगी ।" नंदा की वाणी काँप उठी ।

"नहीं बेटी ! तुम स्वस्थ हो जाओगी ।"

"आह ! पिता, यह तो आश्वासन है । झूठा, बिलकुल झूठा !"

वृद्ध की आँखों से आँसू बहने लगे । वह बोले—"बेटी ! तुम्हारे लिये ही तो मैं एक बार संसार में फिर प्रविष्ट हुआ ! तुम्हारे लिये ही सारी उपासना भुला दी, नंदा ! अब कहाँ जाओगी मुझ बुड्ढे को छोड़कर बेटी !" आँसू नंदा के मुख पर टपकने लगे ।

"रोओ मत पिता ! स्वर्ग में हम सब मिलेंगे ! कुमार भी होंगे ।" उसके नेत्र बंद थे ।

इतने में ही कुमार कुटिया में घुसे । उन्होंने चारपाई पर नंदा के अस्थि-पंजर को देखा । उसमें अब कुछ भी न था सिवा एक कंकाल के, जिस पर चमड़ा मढ़ा हो । वह पागल हो बोले—'नंदा !"

नंदा की पलकें धीरे-धीरे उठीं । वह ओठों पर मुस्कान लाती हुई बोली—"कुमार ! अब तो जा रही हूँ, शायद स्वर्ग में मिलूँ ।" उसका कंठ भर आया ।

कुमार पागल हो रहे थे । वह प्राण देकर भी यदि कुछ कर पाते । जिसे यह प्यार करते थे, वही नंदा उनके सामने तड़प-तड़पकर मर रही थी, और वह चाहते हुए भी कुछ न कर सकते थे । आह रे यही तो उनके लिये भयानक पीड़ा थी । आह रे राजकुमार !

नंदा ने धीरे से अपने ओठ खोले, और धीमे-धीमे बोली—"कुमार... वंशी !"

कुमार ने वंशी में फूँक मारी !

नंदा ने अपने अतृप्त नेत्र कुमार पर बिछा दिए, और फिर धीरे-धीरे सर्वदा के लिये बंद कर लिए।

* * *

नंदा की मृत्यु पर कुमार रोए नहीं, सिसके भी नहीं ! उन्हें विश्व की दृष्टि से रोने का किंचित् भी अधिकार न था।

नंदा के पिता ने जल-धारा के निकट, जहाँ वह बहुत बैठा करती थी, उसकी एक समाधि बनवा दी। जल-धारा का शीतल जल उस समाधि से टकरा-टकराकर लौट जाता है, मानो वह नंदा के व्यथित, प्यासे हृदय को तृप्त करने आया हो !

गुरुजी ने देखा है, कुमार नित्य रात्रि को नंदा की समाधि पर आता और अपनी वंशी की एक तान फूँक जाता है। वंशी की ध्वनि आर्त स्वर में हाहाकार कर उठती है, जिससे वहाँ का वायुमंडल काँप उठता है। कुमार का विश्वास है, नंदा की प्रेतात्मा यहाँ रोज़ उसकी वंशी सुनने आती है।

* * *

वहाँ के गाँववाले कहते हैं, अब भी अर्ध-रात्रि को जल-धारा में एक नौका बहती है, और उसमें एक पुरुष और एक स्त्री की प्रतिच्छाया विहार करती है, और थोड़ी ही देर में वंशी की एक करुण ध्वनि वहाँ के वायमंडल में गूँज जाती है, और सुनाई देती है एक कोमल स्त्री-कंठ की वाणी —"कुमार !"

उत्तर मिलता है —"नंदा !"

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये "संगीत-सागर"-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गी, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक्शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≡) में दिया जा रहा है, शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर "संगीत", हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र "संगीत" का इस वर्ष २०० पृष्ठ का "भातखंडे-अंक" [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए ! गाना-बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

रैम्ज़े मैकडोनाल्ड का अंत

[श्रीसतीशचंद्र काला बी० ए०]

मज़दूरों का एक बार सर्वप्रिय मैकडोनाल्ड आज संसार से उठ गया ! उस समय वह सभी का विश्वास-पात्र था, आज उसके रोनेवाले इने-गिने ही हैं । उसकी आत्मा विशुद्ध थी, वह सिद्धांती था, क्रांति से उसे चिढ़ थी । समाज में वह विशाल परिवर्तन करने के स्वप्न देखा करता था । कितु राजनीति दलबंदी के आधार पर चला करती है । उसके कार्यों को एक दल ने जड़ से उखाड़ डाला । परिणामतः इँगलैंड का एक बार प्रधान मंत्री सदैव के लिये अंधकार में विलीन हो गया । संसार ने उसके जीवन से एक बहुत बड़ा सबक़ सीखा, और वह था संशोधन भावना की निष्फलता । संसार से जिस दिन अंतर्वेगता तथा अविचार-पूर्ण भावना मिट जायगी, उस दिन लोग मैकडोनाल्ड की सच्ची सेवाओं का अनुभव करेंगे ।

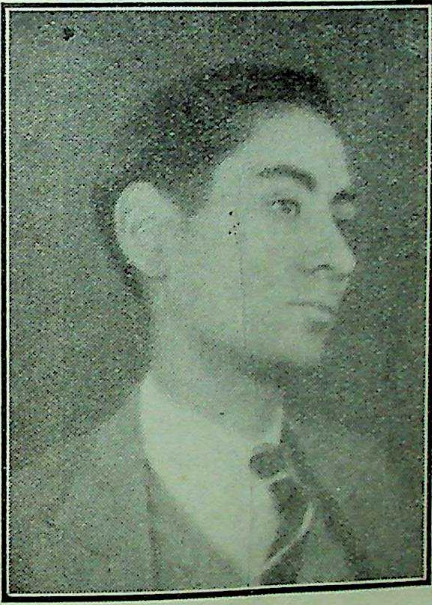

श्रीसतीशचंद्र काला बी० ए०

मैकडोनाल्ड का जन्म १८६६ ई० में, स्कॉटलैंड में, हुआ था । एक ग़रीब हलवाहे का पुत्र होते हुए भी वह बहुत ऊँचा उठा । इसका कारण अवसर न थे, बल्कि यह सम्मान ख़ून तथा परिश्रम के आधार पर उपार्जित किया गया था । शिक्षा का कुछ प्रबंध न होने पर भी उसमें कुछ ऐसे गुण थे, जिनके कारण वह बड़ा विद्वान् हुआ । उसने राजनीति और अर्थ-शास्त्र का बड़ा अच्छा मनन किया । नेपोलियन की भाँति उसे अपने भाग्य पर बड़ा विश्वास था । शीघ्र ही वह लंदन पहुँच गया । उस समय राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण करने के लिये लंदन के अतिरिक्त कोई अन्य उत्तम क्षेत्र न था । लंदन पहुँचने पर उसकी जेब में कुल एक शिलिंग था ।

लंदन में रैम्ज़े का जीवन सुखप्रद न था । कभी-कभी तो उसे बिलकुल भूखा रहना पड़ता । रात्रि में वह बरबेक-इंस्टीच्यूट में शिक्षा ग्रहण

करता और प्रातःकाल होते ही फिर पैसा कमाने बाहर निकलता । इस बीच उसने साम्यवाद और विज्ञान का अध्ययन भी किया । लोगों को उसका साहस और लगन देखकर आश्चर्य होता था । सभी को विश्वास था, उसका भविष्य इतनी कठोर तपस्या के बाद बहुत उज्ज्वल रहेगा ।

किसी प्रकार वह पार्लियामेंट के एक मेंबर का प्राइवेट सेक्रेटरी हो गया । इस पद पर रहकर उसने खूब ज्ञानोपार्जन किया । उसने पहले 'फेबियन - आंदोलन' में भाग लिया, किंतु शीघ्र ही जान गया कि मज़दूर - आंदोलन में वह अधिक यशोपार्जन और कार्य कर सकता है । अपने सुललित भाषण और योग्यता से सन् १९०६ में वह पार्लियामेंट का मेंबर चुना गया । वह अब एक शिलिंग की हैसियतवाला व्यक्ति न था । उसे अब सभ्यता प्राप्त करने का अवसर मिल गया । उसने शीघ्र ही शादी भी कर ली, किंतु खेद ! वह बहुत दिन तक अपनी पत्नी का सहयोग प्राप्त न कर सका ।

एक स्थान पर उसने लिखा है—"...... निराश होकर तथा थकावट के पश्चात् जब मैं अपने बकिंघमशायर-नामक घर पर पहुँचता था, तो वह मुझे सांत्वना देती । मुझमें फिर जीवन आता, और मैं दूसरे दिन और बलवान् बनकर फिर बाहर निकलता ।" उसमें आदर्शवाद तथा यथार्थवाद का विचित्र मिश्रण था ।

मैकडोनाल्ड ने समस्त संसार का भ्रमण किया था । राजनीतिक विचारों के कारण संभवतः वह किसी भी देश का प्रिय पात्र न बन सका, फिर भी अपने भ्रमण में उसने सैकड़ों मित्र बनाए । इन भ्रमणों में उसने मज़दूर-आंदोलन का भी प्रचार किया था । सन् १९१० ई० में वह भारत आया । उसने भारत की दशा का 'जाग्रत् भारत'-नामक पुस्तक में बड़ा मनोरंजक विवरण लिखा है । रॉयल कमिश्नर की हैसियत से उसे भारत की गूढ़तम समस्याएँ समझने का अवसर मिला था । एक बार उसने भारतवासियों को साइमन - कमीशन स्वीकार करने के लिये प्रेरित किया । राउंड टेबुल कान्फ्रेंसों में भी उसने महत्त्व-पूर्ण मान प्राप्त किया । इन कारणों से भारत की उसकी ओर सहानुभूति जाती रही । फिर भी, जैसा सुभाषचंद्र बोस ने कहा

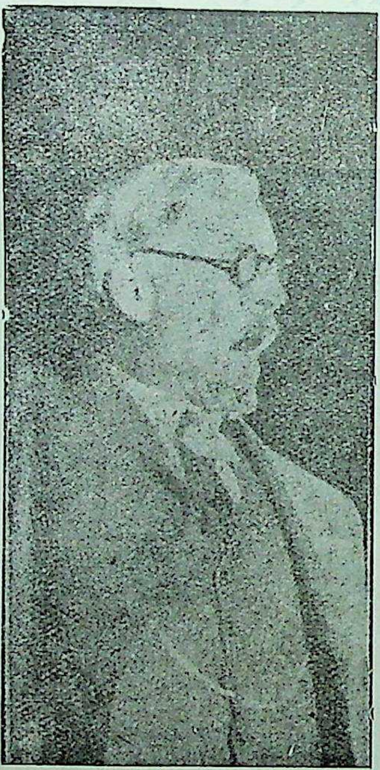
स्व० मि० रैम्ज़े मैकडोनाल्ड

है, रैम्ज़े 'जाग्रत् भारत' के कारण भारतीयों का प्रिय पात्र अवश्य रहेगा।

सन् १९११ में, हाउस ऑफ़् कॉमन्स में, मैकडोनाल्ड लेबर-पार्टी का लीडर चुना गया। किंतु यश के दिन अब बीत चुके थे। संसार की घटनाएँ उसे चेतावनी दे रही थीं कि शीघ्र ही उसका पतन होनेवाला है। योरपीय महायुद्ध छिड़ा, और उसने इसका विरोध किया। चारो ओर से उस पर धिक्कार के छींटे पड़े। कुछ दिन तक 'तू-तू मैं-मैं' चलती रही, अख़बारों और संपादकों ने ख़ूब विष उगला। धीरे-धीरे उसके गौरव, यश तथा ख्याति पर कलंक का झीना आवरण चढ़ गया। वह धूल में मिल गया था। उसे लेबर-पार्टी की लीडरी से त्याग-पत्र देना पड़ा। किंतु इतने से ही उसका पीछा न छूटा। अभी उसे अंधकारमय जगत् में पैरों से चलना था। सन् १९१७ में उसने स्टॉक हॉल्म में एक 'सोशलिस्ट कान्फ़्रेंस' की योजना की। इस कान्फ़्रेंस ने लोगों को और भी चौंका दिया। सब कुछ खोकर वह स्टॉक हॉल्म जाना चाहता था; किंतु ब्रिटिश जहाज़ों ने ऐसे अपवित्र आदमी को ले जाना स्वीकार न किया। सन् १९१८ को 'ख़ाकी'-निर्वाचन में वह बुरी तरह हारा। इन आघातों का उसके चरित्र पर बड़ा प्रभाव पड़ा। महायुद्ध ने उसके चरित्र की परीक्षा ली। वह अपने सिद्धांतों में फ़ेल हो गया था। कुछ दिन पहले वह 'पैसिफ़िस्ट' था, और कुछ दिन बाद 'नव-सेना-संचालक' बना।

वातावरण अब शांत हो चुका था। संसार के इतिहास में यह एक आश्चर्य-जनक घटना थी। धूल में मिला हुआ जीव भी फिर ऊपर उठ सकता है, यह रैम्ज़े मैकडोनाल्ड के केस से ही मालूम हुआ। सार्वजनिक मत वास्तव में ऐसी चंचल, अस्थिर प्रेमिका के समान है, जो क्षण-भर में एक प्रेमी से और क्षण-भर में दूसरे प्रेमी से प्रेम करने लगती है। दो दिन पहले उसने मैकडोनाल्ड पर तीव्र बाणों की वर्षा की थी। आज वह फिर उसकी उपासिका बन गई थी। ब्रिटिश लेबर-पार्टी फिर उसे अपनी ओर खींचने की चेष्टा कर रही थी। महायुद्ध का उन्माद अब समाप्त हो चुका था। सभी मैकडोनाल्ड की सलाह की प्रशंसा कर रहे थे। मज़दूरों ने सोचा, वह फिर उनके स्वत्वों के लिये पार्लियामेंट में लड़ेगा, किंतु यह उनकी केवल धारणा-मात्र थी। सन् १९२३ ई० में वह लेबर-पार्टी का लीडर बना। लेबर-पार्टी बहुसंख्य मत में थी ही। सम्राट् ने शीघ्र मैकडोनाल्ड को 'केबिनेट'-निर्माण की आज्ञा दे दी। यह मिनिस्ट्री सब दिशाओं में असफल रही। उधर अनुदार-दलवाले यह ख़बर फैला रहे थे कि लेबर-पार्टी कम्यूनिस्ट सिद्धांतों की ओर बढ़ती जा रही है। दूसरे निर्वाचन में लेबर-पार्टी हार गई। मैकडोनाल्ड एक बार फिर लोगों का शत्रु बना। लेबर-मेंबर आर्थर

हैंडरसन को अपना लीडर बनाना चाहते थे, किंतु उसने यह अस्वीकार किया। जब खुले आम रैम्ज़े पर समालोचना की गई, तो आर्थर हैंडरसन ने लेबर-पार्टी के मेंबरों को यह कहकर दुत्कारा कि हारे हुए लीडर का विरोध करना ठीक नहीं।

सन् १६२६ ई० में लेबर-पार्टी फिर शक्ति में आई। इस समय संसार एक भयंकर अर्थ-संकट का अनुभव कर रहा था। ब्रिटिश गवर्नमेंट किसी भी दशा में स्थिति नहीं सँभाल सकती थी। मैकडोनाल्ड के असाधारण दृष्टिकोण का अनुभव लोगों को इस समय हुआ। उसने अनुदार-दल के साथ मिलकर 'राष्ट्रीय सरकार' की स्थापना की। कुछ दिन तक यह सरकार बड़ी अच्छी तरह संचालन करती रही। इस बीच में भारत का नवीन शासन भी केबिनेट के द्वारा स्वीकार किया गया। मि० बाल्डविन रैम्ज़े के कार्य में सदैव हार्दिक सहयोग देते रहे।

रैम्ज़े के जीवन की निशा धीरे-धीरे निकट आ रही थी। आखिर अस्थि-मांस का शरीर कब तक जीवन के घात-प्रतिघातों तथा छिद्रान्वेषियों के आक्षेपों को सहता। रैम्ज़े हृदय से कमज़ोर, किंतु आत्मा से बहुत बड़ा आदमी था। दिन-रात केबिनेट की फ़ाइलें उलटते-उलटते उसका मस्तिष्क शून्य हो गया था। सन् १६३२ की संसार-अर्थ-शास्त्र-कान्फ़्रेंस में उसका भाषण बड़ा संकीर्ण और शुष्क था। निरस्त्रीकरण-सम्मेलन में उसने बड़ी कमज़ोरी दिखलाई। वह अपने योरपीय महायुद्ध के सिद्धांतों को छोड़कर सैनिक तथा वायु-शक्ति बढ़ाने के पक्ष में हो गया। मज़दूरों में इससे बड़ी सनसनी फैली। सन् १६३५ में रैम्ज़े ने प्रधान मंत्रिपद से इस्तीफ़ा दे दिया। इसके बा वह लॉर्ड प्रेसीडेंट ऑफ़् कौंसिल चुना गया। मई सन् १६३७ में उसने स्वास्थ्य के कार इस पद से भी इस्तीफ़ा दे दिया। राजनीतिक जीवन का अब अस्त हो चुका था।

रैम्ज़े मैकडोनाल्ड ने अन्य लोगों के साथ निष्फल औदार्य तथा अस्थिरता का अनुभव किया था। वह २०वीं शताब्दी के निराशावाद से प्रभावित लोगों की ही तरह था। अपने जीवन के अंतिम भाग में उसने दुर्दिन देखे, किंतु वह वीर था। शायद दुनिया की ठोकरों ने उसका दिल और भी मज़बूत बन दिया था। समस्त मज़दूर-दल ने उसे धोखेबाज़ बतलाया। वैदेशिक संबंधों में कुछ सम के लिये ब्रिटेन सबका प्यारा बन गया। किं यह कुछ ही समय तक के लिये था।

मैकडोनाल्ड की बौद्धिक तथा नैतिक श बहुत ऊँची थी। उसमें पटुता कम थी, कि वह बड़ा परिश्रमी था। बाल्डविन की ही त उसकी भाषण-शक्ति बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। भाषा जानते हुए भी वह अंतरराष्ट्रीय स लनों को निस्तब्ध-सा बना देता था। जिनेवा निरस्त्रीकरण-सम्मेलन में युद्ध-नीति-विरो जो भाषण मैकडोनाल्ड ने दिया था, मानव-जाति की रक्षा की सबसे बड़ी अ था। ब्रसेल्स-कान्फ़्रेंस के मेंबरों का कहना

संसार के इतिहास में ऐसी करुणा-जनक और ज़ोरदार अपील कभी नहीं की गई।

पारसाल मैकडोनाल्ड को जागीर-स्वरूप कोई पैत्रिक सम्मान मिलनेवाला था, किंतु उसने इस भेंट को धन्यवाद-सहित अस्वीकार किया। वह जानता था, धन या इज़्ज़त होते हुए भी वह अब अपने देशवासियों का विश्वास-पात्र नहीं रहा है।

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—

'गोनोकिलर'

[राजस्टर्ड]

GONO
REGD
ORIGI-NAL
TRADE MARK
KILLER

नक़लों से सावधान !
खरीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा और इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में फ़िज़ूल पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

दो कांग्रेसी मंत्रिमंडलों द्वारा पद-परित्याग

[रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० तथा रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०]

गत १५ फ़रवरी को युक्तप्रांत और बिहार के मंत्रिमंडलों ने अपने-अपने पदों से त्याग-पत्र दे दिए। इस विषय का हाल समझाने के लिये भारतीय राज्य-विधान (Constitution) का भी थोड़े में कथन उचित है। सन् १९३५ के ऐक्ट द्वारा जो राज्य-विधान पहली एप्रिल सन् १९३७ को भारत में जारी हुआ, उसके तीन मुख्य विभाग हैं—रियासती, प्रांतीय और केंद्रीय। रियासती विधान में अब तक शासकों को प्रायः पूरे अधिकार थे, किंतु आगे से वे प्रसन्नता-पूर्वक अपने बहुतेरे अधिकार सुरक्षित रखकर शेष फ़ेडेरल एसेंबली और कौंसिल को दे देंगे। इन केंद्रीय न्याय-सभाओं में भारतीय प्रांतों तथा रियासतों से प्रतिनिधि आएँगे, जिनमें से प्रांतीय प्रतिनिधि तो निर्वाचित होंगे, तथा रियासती मनोनीत भी हो सकते हैं, और बहुत करके होंगे भी। रियासती आंतरिक प्रबंध में भी इस क़ानून द्वारा प्रायः कोई हस्तक्षेप नहीं हुआ। इन कारणों से कांग्रेसी विचारवाले रियासती लोग भी बहुत असंतुष्ट हुए हैं। प्रांतीय प्रतिनिधि भी प्रजा द्वारा सीधे न चुने जाकर उनके प्रतिनिधियों द्वारा चुने जायँगे। फ़ेडेरल कौंसिल में धनियों के प्रतिनिधि अधिकता से हैं ही, उस एसेंबली का भी गठन ऐसा होगा, जिसमें कांग्रेस या सर्व-साधारण के प्रतिनिधियों का बल कभी नहीं हो सकता, ऐसा भय है। केंद्रीय शासन-विधान में और भी बहुतेरे दोष हैं, जिनके कारण हिंदू-मुसलमान दोनो को वह नापसंद है। प्रांतीय शासन-विधान में जो मंत्री हैं, उन्हें नियम द्वारा बहुत कम अधिकार हैं, किंतु बर्ताव में काम ठीक-ठीक चलता रहा। निर्वाचन में पहले यह आशा थी कि प्रांतों में ज़मींदार तथा अन्य धनिक मिलकर ऐसे प्रतिनिधि चुनवाने में समर्थ होंगे, जिनमें कांग्रेस का विशेष बल न होगा, और पूँजी-पतियों का प्राधान्य रहेगा। यह विचार इतना दृढ़ था कि चुनवाने के लिये प्रतिनिधि मनोनीत करने को जो ज़मींदारों की समितियाँ बनीं, उनके निर्णयों में भी उम्मेदवारों के प्रभाव पर कभी-कभी इतना ध्यान न दिया गया, जितना चुननेवालों से मित्रता आदि पर। ऐसा बहुतों का विचार है। फल यह हुआ कि कांग्रेस को आशातीत सफलता प्राप्त हुई, और ११ प्रांतों में से ७ में उनका बहुमत हो गया। फिर भी भावी अधिकारों के बहुत सीमित होने से कांग्रेस मंत्री-पद-ग्रहण से इनकार करती रही, और इन सातों प्रांतों में भी लघुमत-वाले दलों के सदस्यों से मंत्रिमंडल बन गए।

पीछे, तीन-चार महीने में, कांग्रेस का सरकार से समझौता हो गया, जिसके अनुसार आह्निक कार्य-क्रम आदि में हस्तक्षेप न होने का सरकार से वचन पाकर ही कांग्रेस ने छ प्रांतों में मंत्रिमंडल बनाया, और फिर एक प्रांत और उनके हाथ लगा।

पहले भय था कि कांग्रेसी लोग ऐसा अनियमित या असंभव कार्य-क्रम चलाने का प्रयत्न करेंगे, जिससे उनके मंत्रिमंडल आप-से-आप ध्वस्त हो जायँगे। किंतु इस विचार के प्रतिकूल उन लोगों ने बड़ी उत्तमता-पूर्वक कार्य संपादित किया, जिससे विलायत तक में उनकी प्रशंसा होने लगी। कुछ बातों में गवर्नरों एवं ब्रिटिश सरकार से कांग्रेस का मनमुटाव स्वाभाविक था ही, किंतु गवर्नर अपने विचारों के प्रतिकूल भी बहुतेरी बातों में कांग्रेसी मंत्रियों का समर्थन करते रहे, ऐसा समझ पड़ता है। इधर दो प्रधान बातों में भारी मतभेद समझ पड़ा। एक तो जब तिलकोत्सव के लिये सम्राट् की भारत में अवाई की ख़बर आई, तब कांग्रेस ने उसके प्रति अश्रद्धा प्रकट की, और ऐसा समझ पड़ा कि उस संबंध में जो व्यय होगा, उसके विषय में भी काफ़ी वाद-विवाद उठाया जायगा। सम्राट् ने कुछ दिनों के लिये भारत में पधारने का विचार स्थगित कर दिया। समझ ऐसा पड़ता है, इस बात से सरकार को बुरा अवश्य लगा होगा। दूसरी बात यह कि राज्य-विधान का केवल प्रांतीय विभाग अभी तक कार्य-रूप में आया है, और सरकार केंद्रीय विभाग को भी शीघ्र-से-शीघ्र चलाना चाहती है, किंतु कांग्रेस उसे ऐसा बुरा समझती है कि उसके प्रतिकूल सत्याग्रह तक करने की धमकी देती है। जिन सात प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल हैं, वहाँ भी ऐसे केंद्रीय विचारों से असहयोग रहा है। भारत-सरकार को यह भय होना स्वाभाविक हो सकता है कि केंद्रीय राज्य-विधान के स्थापित होने में कांग्रेसी असहयोग से सातों कांग्रेसी प्रांतों के कारण पूरी अड़चन हो सकती है। ऐसी दशा में श्रीमान् बड़े लाट साहब ने सोचा होगा कि यदि ये सातों मंत्रिमंडल इस समय आप-से-आप अलग हो जायँ, तो क्या बुरा है, क्योंकि ऐसी दशा में केंद्रीय नवीन शासन-पद्धति निर्विघ्नता-पूर्वक स्थापित हो चुकने के अनंतर केंद्रीय, प्रांतीय और रियासती, तीनो विषयों के लिये समय पर समुचित समझौता किया जा सकता है। बहुतों का विचार है, लॉर्ड लोदियन तथा लॉर्ड सैमुएल, जो इन दिनों भारत में आए थे, वे वास्तव में विलायती सरकार द्वारा गुप्तरूपेण नियोजित होकर इसी समझौते का डौल डालने आए थे। चलते समय लॉर्ड लोदियन ने जो अपने विचार प्रकट किए, वे भी इसी भाव को पुष्ट करते हैं।

इधर कांग्रेस में दक्षिण और वाम-विचारस्थ दो प्रधान दल हैं। दक्षिण विचारवाले कांग्रेसी संख्या में भी प्रायः तीन चौथाई हैं, और कांग्रेस के बाहरवाले तो इनसे भी अधिक नरम विचाराश्रयी हैं। दक्षिण-मार्गस्थ कांग्रेसियों

ने ही सातों मंत्रिमंडल बनाए, और उनका विचार शांति-पूर्वक राज्य चलाने का है। मज़दूरों, किसानों आदि से जो भारी-भारी उन्नतियों के वादे करके इन लोगों ने उनके वोट चुनाव के समय प्राप्त किए थे, उनके विषय में कुछ कर दिखाकर ही समय पड़ने पर आवश्यकतानुसार वे लोग मंत्रिपद छोड़ना चाहते हैं, उससे पूर्व नहीं, क्योंकि उनका विचार है कि प्रजा की कुछ भी उन्नति किए विना ही यदि हम किसी ऐसे प्रश्न पर पद-त्याग कर देंगे, जिससे प्रजा के हित का विशेष लगाव न होगा, तो प्रजा भविष्य में हमें केवल ऐसा अकर्मण्य, बतोलेबाज़ समझेगी, जो सिद्धांत तो भारी-भारी फटकारते हैं, किंतु कार्य-कौशल में कोरे हैं। यदि ग़रीब प्रजा के विचार ऐसे हुए, तो भविष्य के निर्वाचनों में कांग्रेस को वोट मिलना भी कठिन हो जायगा।

उधर वाम-विचाराश्रयी कांग्रेसी लोग सिद्धांतों पर विशेष ज़ोर देते और ऐसा समझते हैं कि कांग्रेस में इतना बल है कि सरकार, देशी रईसों, ज़मींदारों, मिलों के स्वामियों तथा इतर धनाढ्यों के संयुक्त बल को भी वह अंत में चूर कर देगी। दस-बीस वर्षों तक अधिकार न पाने से भी इन लोगों के उत्साह में कमी नहीं आने की। इन्हें आशा है, और ये समझते हैं कि देश भी ऐसे ही विचारों को मान्य समझकर सदा हमारे साथ रहेगा। जब से कांग्रेसी मंत्रियों ने अधिकार ग्रहण किया, तभी से ये वाम-विचाराश्रयी लोग पूरी उन्नति को अति शीघ्र प्राप्त करने के लिये उन पर दबाव डाल रहे हैं, और मंत्रियों के विचारों तथा कार्यों की घोर निंदा करते आए हैं। मंत्रियों को पुराने स्पष्ट विरोधियों से उसका आधा भी कष्ट न हुआ, जितना इन मित्रों से। ये लोग किसानों को भड़काकर किसान-सभाएँ बनवा रहे हैं, जिनमें उनके द्वारा ऐसी-ऐसी माँगें उपस्थित की जाती हैं, जो इतरों को वर्तमान भारतीय स्थिति देखते हुए असंभव समझ पड़ती हैं। मंत्रियों ने विहार-प्रांत में ऐसी सभाओं में कांग्रेसियों का जाना वर्जित कर दिया। इससे सारे वाम-मार्गस्थ लोगों को भारी क्षोभ उत्पन्न हुआ है। इन्हीं दिनों हरिपुरा में कांग्रेस की जो ५१वीं वार्षिक बैठक हुई है, उसमें इन गरम दल-वालों ने मंत्रिपार्टी के प्रतिकूल बहुतेरे दोष लगाए। इसी प्रकार मज़दूरों के उभाड़ में भी लोग इन लोगों का हाथ देखते हैं।

महात्मा गांधी ने बंगाल में राजनीतिक क़ैदियों को छुड़ाने का बहुत कुछ सफल प्रयत्न किया। बंगाल कांग्रेसी प्रांत नहीं। कांग्रेसी प्रांतों में क़ैदी प्रायः सब-के-सब छूट चुके हैं। फिर भी जो थोड़े-से छूटने को रह गए हैं, उनके विषय में गरम दलवाले कांग्रेस के भीतर और बाहर घोर आंदोलन मचाए हुए हैं। युक्तप्रांत में ऐसे १५ क़ैदियों के छूटने का प्रश्न पेश हुआ, तथा बिहार में भी ऐसा प्रश्न २६ क है। हरिपुरा में जब यह प्रश्न उठाया गया, त

गंगा-पुस्तकमाला की छ नई पुस्तकें

[संपादक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव]

१. नवयुग-काव्य-विमर्ष

(आलोचना)

आलोचना-साहित्य का अपूर्व ग्रंथ, हिंदी के वर्तमान रहस्यवादी कवियों के काव्य का विवेचनात्मक ग्रंथ। रचयिता, हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, लेखक और संपादक पं० ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल', भूतपूर्व संपादक 'मनोरमा', 'भारत' आदि। मूल्य २।), सजिल्द ३)

२. विजय

(उपन्यास)

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्० एल्० बी०। विदा-उपन्यास लिखकर श्रीवास्तवजी ने जो ख्याति प्राप्त की है, वह अवर्णनीय है। जिसने उसे पढ़ा, वही मुग्ध हो गया। सभी के हृदय से वाह-वाह की आवाज़ निकली। यह नवीन उपन्यास बिलकुल अप-टु डेट, शिक्षाप्रद, मौलिक और सामाजिक है। कथा-प्रसंग इतना मनोरंजक है कि एक बार पुस्तक हाथ में लेने से फिर बिना समाप्त किए जी नहीं मानता, और पढ़कर भी पुनः पढ़ने की लालसा बनी रहती है। मनोभावों की व्यंजना में लेखक कितना सफल हुआ है, यह पुस्तक पढ़ने पर ही ज्ञात होगा। मूल्य प्रत्येक भाग का २), सजिल्द २॥); दोनो भाग ४), सजिल्द ५)

३. शिवाजी

(मौलिक, ऐतिहासिक नाटक)

इसके लेखक हैं हिंदी-संसार के प्रख्यातनामा समालोचक श्रीरावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० और रायबहादुर श्रीपं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०। यह एक ऐतिहासिक नाटक है, जिसमें ३ अंक एवं २८ दृश्य हैं। कई भिन्न-भिन्न प्रकार के चरित्र लेकर योग्य कलाकार ने अपनी नाटकीय कला का प्रदर्शन किया है। कथानक पूरा-का-पूरा महाराष्ट्र-इतिहास पर अवलंबित है। यह पुस्तक कवित्व से कमनीय, नाटकत्व से निर्मल, सद्भावों से सुंदर और मौलिकता से मंडित है। इस नाटक को विद्यार्थी विना किसी कठिनाई के स्टेज पर खेल सकते हैं। मूल्य १।), सजिल्द १॥)

४. ग्राम-सुधार

(ग्रामोपयोगी)

लेखक, श्रीपं० अश्विनीकुमार शुक्ल बी० ए०, एल्-एल्० बी०, मेंबर कौंसिल, उदयपुर। प्रस्तुत पुस्तक देहातियों और ग्राम-सेवकों के लिये परमोपयोगी है। इसमें लेखक ने ग्राम-सुधार की सभी आवश्यक और ज्ञातव्य बातें, बड़ी ख़ूबी तथा खोज के साथ, सरल भाषा में बतलाई हैं। पुस्तक की भाषा सरल, मुहाविरेदार और दिलचस्प है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

५. निरंकुशता-निदर्शन

(आलोचना)

लेखक, हास्य-रसावतार श्रीपं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी (लाहौर के अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति)। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'कालिदास की निरंकुशता'-शीर्षक जो निबंध 'सरस्वती' में लिखा था, उसका मुँहतोड़ जवाब लेखक ने मनसाराम के नाम से 'भारत-मित्र' में दिया था। यह उन्हीं दोनो लेखों का संग्रह है। यदि दो साहित्यिक महारथियों की पैंतरेबाज़ी देखनी हो, तो इसे अवश्य पढ़िए। सारांश यह कि पुस्तक पढ़ने से ज्ञानोपार्जन के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

६. विचित्र जीव-जंतु

(बालकोपयोगी)

लेखक, श्रीकन्हैयालाल दीक्षित। इस पुस्तक में उन अजीब जानवरों का परिचय सचित्र और ऐसी मनोरंजक भाषा में दिया गया है कि बच्चे एक बार हाथ में लेने पर विना ख़त्म किए न छोड़ेंगे मूल्य ॥=), सजिल्द ॥)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

खेलने योग्य नाटक और प्रहसन

आहुति या जयपाल

देश-प्रेम के भावों से ओत-प्रोत ऐतिहासिक नाटक । अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय। मूल्य १), १।)

कीचक

लेखक, पं० भगवन्नारायण भार्गव बी० ए०, एम्० एल्० सी० । पांडवों के अज्ञातवास का कथानक, हास्य-रस की पुट-सहित । मूल्य १।), १॥)

पतिव्रता

अनुवादक, श्रीरूपनारायण पांडेय । स्त्री-पुरुषों के देखने और पढ़ने-योग्य सामाजिक नाटक। दो रंगीन और दो सादे चित्र । मूल्य १।=), १॥।=)

प्रबुद्ध यामुन

लेखक, श्रीवियोगी हरि । अहिंसा, दीन-वत्सलता और भगवद्भक्ति-भरा नाटक। मूल्य १), १।)

अचलायतन

मूल-लेखक, कवींद्र रवींद्र । हिंदू-धर्म की छुआछूत और आडंबर की पोल खोलनेवाला प्रहसन । मूल्य ॥), ॥=)

रायबहादुर

मूल-लेखक, मौलियर । उपाधि-व्याधि-ग्रस्त घरफूँक बहादुर का खासा खाका। मूल्य ॥।, १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हृदय-भार

रचयिता—पंडित दीनानाथ व्यास 'विचित्र'

कविरत्न, विशारद आदि

वर्तमान हिंदी-काव्य-धारा विशेषतया दुःखवाद की ओर ही प्रवाहित हो रही है। यह दुःखवाद हमारे जीवन की संघर्षमय विकट परिस्थितियों का परिणाम है। वर्तमान काल के हिंदी-कवियों ने अपनी मुक्त एवं गेय रचनाओं में दुःखवाद के केवल एक पहलू को ही चित्रित किया है, किंतु व्यासजी ने समस्त विश्व के चेतन-अचेतन सभी पदार्थों में उसकी सत्ता स्वीकार करते हुए प्रत्येक पंक्ति में उसके मनोहर दर्शन भी कराए हैं। प्रकृति सौंदर्य से लेकर जीवन के सुख-दुख तक में दार्शनिकता की पुट देकर तो व्यासजी ने वास्तव में सोने में सुगंध का काम किया है। वेदनाओं, व्यथाओं, अरमानों, स्मृतियों आदि के, रूपकों और उपमाओं के सहारे, इतने सुंदर चित्र चित्रित किए हैं कि वे काव्य-रसिकों को मुग्ध किए बिना रह ही नहीं सकते। विस्मय-विमुग्ध करनेवाली चमक-दमक, तड़क-भड़क, शब्दाडंबर, क्लिष्टता एवं निरर्थकता आदि—जिसके कारण वर्तमान छायावाद बदनाम हो रहा है—इस काव्य में खोजने पर भी नहीं मिलेगी। हमारे जीवन की उस विडंबना का इस काव्य में बड़े ही सुंदर ढंग से सजीव वर्णन किया गया है, जो अतृप्त आत्माओं को एक भार-सी प्रतीत होती है। हृदय-भार में कवि ने अपना हृदय ही खोलकर रख दिया है। बात तो यह है कि कविवर गोपालसिंह नैपाली के शब्दों में "यह दुख की कथा है, दर्द की कहानी है।" वास्तव में देखा जाय, तो हृदय-भार दुखी आत्माओं को सुख पहुँचानेवाली अनुपम कृति है। काव्य-प्रेमियों को इसकी एक प्रति अवश्य ही मँगाकर अवलोकन करना चाहिए। मूल्य लगभग ॥)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

कुछ नई पुस्तकें

चंद हसीनों के ख़तूत

[लेखक—श्रीबेचन शर्मा 'उग्र']

उग्रजी की लेखनी से हिंदी-संसार काफ़ी परिचित है। यह उन्हीं की उग्र लेखनी द्वारा लिखी पुस्तक है। यह मनचले पाठकों के मनोरंजन के लिये एक तोहफ़ा है। ख़त क्या हैं, सजीव चुलबुलाती घटनाओं का वर्णन है। भाषा इतनी मज़ेदार है कि पढ़ते ही बनता है। मूल्य १)

प्रेम-निकुंज

[लेखक—पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय]

यह सामाजिक उपन्यास है। इसमें समाज के पतित और उन्नत, दोनो प्रकार के जीवनों का हृदयग्राही वर्णन है। पतित मनुष्य समाज का कितना अनिष्ट कर सकता है, और उन्नत विचारों का व्यक्ति समाज का किस प्रकार हित कर सकता है, यही इस पुस्तक का मूल विषय है। मूल्य १।)

घंटा

[लेखक—श्रीबेचन शर्मा 'उग्र']

यह उग्रजी की नई कृति और सूझ है। फड़कती भाषा और मज़ेदार कहानियों का मज़ा लूटना हो, तो इस पुस्तक को मँगाकर एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)

जागृति

(सामाजिक नाटक)

[मूल-लेखिका—श्रीमती अनुरूपादेवी]

यह नाटक बँगला-स्टेज और स्क्रीन पर अपूर्व सफलता प्राप्त कर चुका है। हिंदी-रूपांतर में बँगलापन नहीं आने दिया गया है, और स्टेज पर खेले जाने के लिये ही लिखा गया है। प्लाट (कथानक) सामाजिक, भाषा ज़ोरदार और गाने भाव-पूर्ण हैं। मूल्य १)

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

बालोपयोगी उत्तमोत्तम सुंदर, सचित्र और सरल पुस्तकें

बाल-नीति-कथा

(दो भाग)

यह पुस्तक हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रोवाइस-चांसलर श्रीए० बी० ध्रुव एम्० ए०, एल्० एल्० बी० की लिखी हुई है। पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०, अध्यापक लखनऊ-युनिवर्सिटी ने इसका हिंदी-अनुवाद किया है। पुस्तक कितनी उच्च कोटि की है, और बालकों के चरित्र पर इसका कितना अच्छा असर पड़ेगा, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि विद्वान् लेखक इस विषय के प्रकांड पंडित हैं, और चरित्र-गठन-संबंधी पुस्तकें लिखने के लिये आपसे बड़ा अधिकारी इस देश में मुश्किल से मिलेगा। आपने इस पुस्तक में सभी प्रधान मतों और देशों से उत्तम कथाएँ चुनकर संग्रह की हैं, और हरएक कथा से निकलनेवाले उपदेश भी नोट-रूप में दे दिए हैं, जिससे यह पुस्तक पाठ्य-क्रम में रक्खे जाने के लिये बहुत ही उपयुक्त हो गई है। भाषा सरल और मुहाविरेदार है। 'चरित्र' मानव-जीवन का रत्न और हरएक प्रकार की उन्नति का मूल-मंत्र है। इस दृष्टि से यह पुस्तक अमूल्य है। पुस्तक दो भाग में है। प्रत्येक भाग का मूल्य १) है। दोनों का मूल्य २॥)

नटखट पाँड़े

एक नटखट लड़के की आत्मकथा। आदि से अंत तक एक भी पृष्ठ ऐसा नहीं, जो नीरस और रूखा हो। एक-एक शब्द में हास्यरस भरा हुआ है। नटखट पाँड़े का विद्यारंभ, डॉक्टर महोदय की दुर्दशा, बोर्डिंग हाउस के अध्यक्ष महोदय की दुर्गति, नटखट पाँड़े का रात को भाग जाना, गाने की मजलिस, सारी कहानी इतनी अनूठी और दिलचस्प है कि जिस लड़के ने किताब खोलने की क़सम खा ली हो, वह भी इसे समाप्त किए बिना नहीं रह सकता। कितने ही प्रसंग तो ऐसे हैं, जहाँ मारे हँसी के पेट में बल पड़ जायँगे। इसके लेखक भी वही पं० भूपनारायणजी दीक्षित हैं। पुस्तक में १४ तिरंगे और हाफ़टोन चित्र हैं, जिनसे उनकी सुंदरता और भी बढ़ गई है। मू० १), सजिल्द १॥)

खेल-पच्चीसी

लेखक, श्रीप्रतिपालसिंहजी। इस पुस्तक में उन २५ खेलों का संग्रह किया गया है, जो लड़के साधारणतः खेलते हैं, या यों कहिए, खेलते थे। अँगरेज़ी-शिक्षा के फैलने से हमारे पुराने खेल दिन-दिन मिटते चले जा रहे हैं। शायद कुछ दिनों बाद उन खेलों के जानकार भी न रहेंगे। हमने यहाँ ऐसे खेलों के खेलने की विधि बताई है, जिन्हें लड़के शौक़ से खेल सकें, और खेल के साथ उनकी कुछ कसरत भी हो जाय। सचित्र ; मूल्य ।)

गधे की कहानी

पं० भूपनारायणजी दीक्षित ने यह 'गधे' की कहानी' लिखकर बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। गधे ने अपनी कथा बड़े रोचक ढंग से कही है। भाषा खूब सरल और मुहाविरेदार है। गधे ने अपनी भाषा में मानव-समाज पर कैसी हास्यजनक आलोचनाएँ की हैं, यह देखने ही योग्य है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

सब प्रकार की बालकोपयोगी पुस्तकें मिलने का पता—
संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिंदी की उत्तमोत्तम पढ़ने-योग्य पुस्तकें

उपन्यास

रंगभूमि (दो भाग) (प्रेमचंद)	५), ६)
बहता हुआ फूल (चारुचंद)	२।।), ३)
विजया (शरद्चंद)	१।।), २)
पवित्र पापी (ब्र० कु० गुर्टू)	३), ३।।)

कहानियाँ

प्रेम-द्वादशी (सचित्र) (प्रेमचंद)	।।।), १।)
प्रेम प्रसून („)	१=), १।।=)
चित्रशाला (दो भाग) (कौशिक)	३।), ४।)
नंदन-निकुंज (हृदयेश)	१), १।।)
मंजरी (रू० ना० पांडेय)	१।), १।।।)
अद्भुत आलाप (द्विवेदीजी)	।।।), १।)
प्रेम-गंगा (ई० प्र० शर्मा)	१), १।।

नाटक और प्रहसन

दुर्गावती (ब० ना० भट्ट)	१),
बुद्ध-चरित्र (रू० ना० पांडेय)	।।।),
वरमाला (गो० ब० पंत)	।।=),
पूर्व भारत (मिश्रबंधु)	।।।=),
खाँजहाँ (रू० ना० पांडेय)	१=),
कृष्णकुमारी (मधुसूदनदत्त)	१),
कर्बला (प्रेमचंद)	१।),
मूर्ख-मंडली (रू० ना० पांडेय)	।।=),
रायबहादुर (मौलियर)	।।।),
ईश्वरीय न्याय (स्व० रा० दा० गौड़)	।।),
प्रायश्चित्त-प्रहसन (रू० ना० पांडेय)	≡),
मध्यम व्यायोग (स्व० बदरीनाथ भट्ट)	
लबड़धोंधों (स्व० बदरीनाथ भट्ट)	।।।),

डाक-व्यय के लिये एक आने का टिकट भेजकर हमारा बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

महिला-माला की सर्वोत्तम नई पुस्तक

गुप्त संदेश (दो भाग)

(भारतीय ललनाओं को)

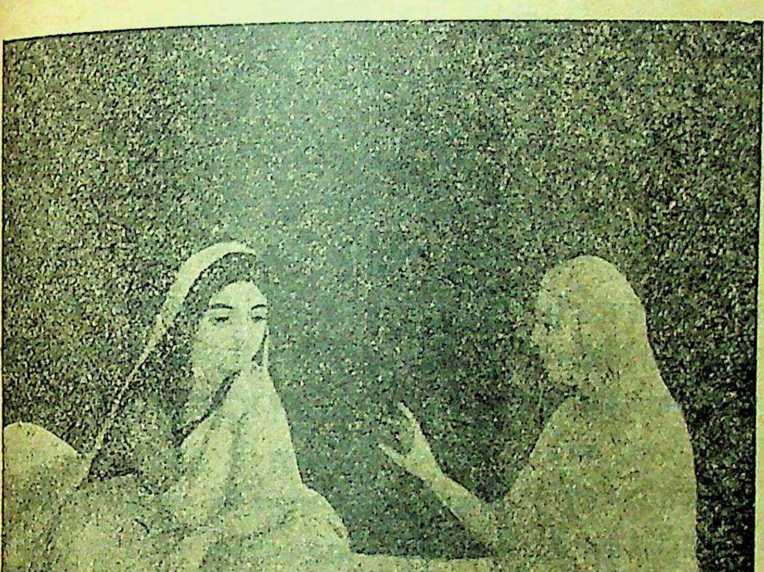

लेखक, डॉ० युद्धवीरसिंह। यह पुस्तक भारतीय ललनाओं के लिये लिखी गई है, झूठी लज्जा के वश होकर न वे जननेंद्रिय-संबंधी रोगों का पूरा हाल ही जान सकती हैं, और न उनका कुछ उपाय ही कर सकती हैं, जिसके कारण संसार के अलौकिक आनंद का अनुभव करना तो दूर रहा, वे अकाल ही मृत्यु का शिकार बन जाती हैं। इस अनोखी पुस्तक में डॉक्टर साहब ने बड़ी सरल भाषा में जननेंद्रिय-संबंधी सभी ज्ञातव्य विषय लिखे हैं। पुस्तक अपने ढंग की निराली है। प्रत्येक घर में इसकी एक-एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। युवतियों, भारत की भावी माताओं, को इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठाना चाहिए। मूल्य प्रत्येक ।।=)

हिंदी की सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

गोविंदवल्लभ पंत
के
रत्न

मदारी

(सचित्र उपन्यास)

प्रस्तुत पुस्तक में पहाड़ियों के जीवन की छटा और पर्वतराज हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का पूरा आभास मिलेगा। इस उपन्यास का नायक एक पहाड़ी किसान का बेटा 'नवाब' और नायिका लोहार-किसान-कन्या कुमारी तितली। किंतु तितली के साथ विवाह करने के लिये नवाब को आठ सौ रुपए चाहिए। नवाब धन की प्राप्ति के लिये मदारी बनता है, फिर दवाफ़रोश होकर 'ताइजो'-नामक चाकू-वाली के चक्कर में फँसकर हवालात की हवा खाता है। घटना-क्रम से ताइजो नवाब के पेट में छुरा भोंककर ग़ायब हो जाती है। भाग्य से नवाब बच जाता है, और अंत में अनेक आशा और निराशाओं के बाद वह अपने जीवन के स्वप्न को सच्चा करता है। मूल्य १॥), सजिल्द २।)

संध्या-प्रदीप

लेखक, हिंदी के श्रेष्ठ नाट्यकार पं० गोविंद-वल्लभजी पंत। इस पुस्तक में पंतजी की मौलिक कहानियाँ ऐसी परिमार्जित और सरल भाषा में लिखी गई हैं, जो अत्यंत रोचक हैं। मूल्य १), सजिल्द १॥)

वरमाला

यही प्रथम हिंदी-नाटक है, जिसे रेडियो
ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है
इसका अनुवाद गुजराती और तैलगू में
हो चुका है। चारु चित्रों से सुसज्जित।

मूल्य ॥=), १

राजमुकुट

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानि
विकास। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर
जब किसी नाटककार ने रसावेश को स्था
रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट न
होने दिया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना
कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खे
जा चुका है। छठे संस्करण का मूल्य ।।।),

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार
धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेख
का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास
रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंत
कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने
उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—
अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण।

मूल्य सादी १।), सजिल्द १

अंगूर की बेटी

प्रस्तुत पुस्तक रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी कि
सकता है। मूल्य ॥।=) सजिल्द १।=)

पता गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

मंत्रिदल ने पद-त्याग तक जाने में संकोच प्रकट किया, क्योंकि उनके विचार में अभी तक कांग्रेस मज़दूरों और किसानों का कोई उचित लाभ नहीं करा सकी है, न अन्य भारी-भारी प्रश्नों को ही हल कर सकी है। इन कारणों से अभी त्याग देने में भविष्य के लिये कांग्रेस के प्रभाव-संकुचन का भय है। उधर गरम दलवाले ऐसे विचारों को तुच्छ मानकर अपने हठ पर डटे रहे। भूतपूर्व राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू तथा नवीन राष्ट्रपति श्रीयुत सुभाषचंद्र बोस ने भी गरम दल का ही साथ दिया। अंत में, मामला महात्माजी के सामने लाया गया, तो उन्होंने गरम दल के पक्ष में ही निर्णय कर दिया। बंगाल के क़ैदियों पर वह एक अकांग्रेसी सरकार पर ज़ोर डाल ही रहे हैं, सो कांग्रेसी सरकारों पर भी पूरा दबाव डालना उनके लिये स्वाभाविक हो गया। निदान: युक्तप्रांत और बिहार के कांग्रेसी मंत्रियों ने जब देखा कि क़ैदियों के छोड़ने के प्रतिकूल बड़े लाट साहब ने सारे भारतवर्ष के लिये आज्ञा दे दी है, तब उन्होंने अपने-अपने पदों से त्याग-पत्र दे दिए।

अब सरकार के सामने नए मंत्रिमंडल बनाने का प्रश्न उपस्थित हो गया, और बहुतों को समझ पड़ने लगा कि संभवतः सरकार साल-दो साल के लिये कुछ प्रांतीय राज्य-विधानों को स्थगित करके वहाँ सलाहकारों के द्वारा काम चलावेगी। समझ पड़ता है, श्रीमान् बड़े लाट साहब ने विना विलायत से पूछे ही यह आरंभ कर दिया था, किंतु वहाँ इस समय बहुत ही भारी प्रश्न उपस्थित हो गए हैं। ब्रिटिश सरकार इस वक़्त जर्मनी और इटली से विरोध करना नहीं चाहती। बहुतों को समझ पड़ता है कि ईडिन साहब के इस्तीफ़े के भीतर बड़ी भारी अंतरराष्ट्रीय पॉलिसी का समावेश है। कुछ लोग विचारते हैं कि सरकार फ्रांस की मदद से इटली और जर्मनी से लड़ जाती, तो विशेष मंगल की आशा थी। सरकार का यह मत नहीं। उधर आस्ट्रिया का मामला उठ खड़ा हुआ है, जो इसी प्रश्न से संबद्ध है। यदि इटली से मेल करने में जिब्राल्टर, सुयज़, माल्टा और अलेक्ज़ेंड्रिया में सरकारी बल की कमी आ गई, और इधर जापान प्रबल पड़ गया, तो भारत के लिये कल्याण की कम आशा है। समझ ऐसा पड़ता है कि सरकार यदि भारत को वास्तव में सबल करे, तो भी थोड़ा-बहुत भय शेष रहेगा, किंतु ऐसा न होने में पूरा भय है। बहरहाल ब्रिटिश सरकार ने इस समय भारत में हलचल मचाना पसंद नहीं किया, और दोनो कांग्रेसी प्रांतों से संधि होकर त्याग-पत्र वापस हो गया।

फिर भी भविष्य का प्रश्न सामने है। यदि भविष्य में किसानों के लिये विना कुछ किए ही कांग्रेस कभी पद-त्याग करेगी, तो यही प्रश्न फिर उपस्थित हो जायगा। किसानों की वर्तमान आशाओं के टूटने या उनके अनिश्चित भविष्य में निर्णयार्थ जा पड़ने से उन पर कांग्रेस के प्रतिकूल बुरा प्रभाव पड़

सकता है, यद्यपि देख यही पड़ता है कि वे कांग्रेस के प्रतिकूल फिर भी न जायँगे। ज़मींदार इस समय सरकार की भविष्य-सहायता की आशा में कांग्रेस का सामना जो कर रहे हैं, उसमें उन्हीं का भविष्य संदिग्ध समझ पड़ता है। मुख्य प्रश्न केंद्रीय शासन-विधान का अब भी शेष है। या तो सरकार उस संबंध में भी कांग्रेस से संधि करेगी, या फिर पद-त्याग का प्रश्न उपस्थित हो जायगा। अभी तो बंगाल भी कांग्रेस-मिनिस्टरी में आता दिखलाई पड़ रहा है। समझ यही पड़ता है कि न केवल शेष केंद्रीय शासन-विधान का, वरन् उसके मुख्य भाग सेना का भी प्रश्न दो ही तीन साल में हल हो जायगा, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय दशा ऐसी है कि सरकार भारत को अवश्य सबल बनाने का प्रयत्न करेगी।

प्रेम-मिलन

[श्रीयुत 'बचनेश']

प्रेम को मिलन अनोखी बात।
नैन मिलत मिलि जात उभै मन,
एक हृदय ह्वै जात।

* * *

जड़ तन, सुधि-बुधि बिगत, अचल पल
अँसुअन ललक लखात ;
अबिकच स्वरन साँस सँग अ-ह बनि
बरन-सार कढ़ि जात।

* * *

बिबरन ह्वै दोउ गिरत दोउन दिसि
प्रान - रहित - से गात
लहत प्रलय में महत मोद मनु
अमृत - पान रसरात

* * *

चहत न हौं सुख आन जगत को,
कह भव-बिभव बिसात
बँधि 'बचनेस' प्रनय के बंधन
बिष-सी मुकति जनात

मेरी काश्मीर-यात्रा

[श्रीयुत बलदेवप्रसाद गुप्त]

बहुत दिनों से मेरी काश्मीर देखने की लालसा थी। मित्रों से सुना करता था, काश्मीर संसार का स्वर्ग है। इस वर्ष गर्मियों की छुट्टियों में सौभाग्य से ऐसा सुअवसर हाथ लग ही गया। अखिल भारतवर्षीय सेवा-समिति के प्रांतीय कमिश्नर श्रीयुत आनंदरावजी से एक दिन इस विषय में बातचीत हो गई। मैं शिमला जाने की बात सोच रहा था। श्रीयुत राव ने मुझसे कहा कि सेवा-समिति का एक छोटा-सा दल काश्मीर जा रहा है। अच्छा हो, आप इस दल के साथ चले जायँ। मैंने भी सोचा, यात्रा का आनंद संग-साथ में विशेष आता है। कहा, अच्छी बात है।

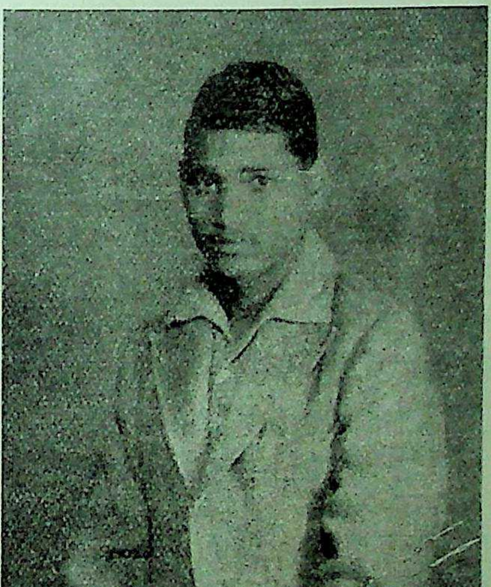

श्रीयुत बलदेवप्रसाद गुप्त

तारीख़ १५ मई को हमारी पार्टी काश्मीर देखने के लिये चल पड़ी। हम लोगों के नेता बने श्रीयुत सी॰ एल्॰ दास महोदय। आप सेवा-समिति के अच्छे कार्यकर्ता हैं, और स्थानीय ऐंग्लो-बंगाली-कॉलेज में अध्यापक हैं। अन्य व्यक्तियों में प्रमुख थे एक तो कविवर गोपालशरणसिंहजी के आत्मज कुँवर चंद्रभूषणसिंह, दूसरे स्थानीय डॉक्टर रायबहादुर आर॰ एन्॰ बनर्जी के अनुज श्रीयुत रमेशचंद्र बनर्जी तथा श्रीयुत हेमंतकुमारजी। यों तो हम लोगों में से सभी के पास हैंड कैमरे थे, परंतु हमारे हेमंत बाबू का कैमरा फ़ोटोग्राफ़ी में विशेष अच्छा प्रमाणित हुआ। उनके चित्र भी सबसे अच्छे निकले। हेमंत बाबू बड़े मज़े के आदमी हैं, और सहज ही आत्मीयता स्थापित कर लेते हैं।

दिल्ली से जब हम लोग लाहौर जाने के लिये तैयार हुए, तो प्लेटफ़ार्म पर अचानक मिल गए सेवा-समिति के कर्णधार श्रीयुत श्रीराम वाजपेयी। पहली ही दृष्टि में उनका हँसता हुआ चेहरा देखकर हमारी मंडली-की-मंडली हँस पड़ी। वाजपेयीजी तपाक से बोले—"सबसे पहले मैं आपको ख़ुशख़बरी सुनाना चाहता हूँ कि मैंने अपने लड़के का विवाह कलकत्ते की एक पढ़ी-लिखी कन्या से किया है। आप लोग इस नवदंपति के दर्शन चाहें, तो अभी थोड़ी देर बाद कर सकते हैं।" मैंने कहा—"सचमुच आपका यह कार्य समाज के लिये एक आदर्श का काम करेगा।"

दल के लोग

लाहौर में हम लोग दो दिन भारत-प्रसिद्ध सेठ रामकृष्ण डालमिया के भारत-भवन में ठहरे। लाहौर में बालचरों ने हम लोगों का बड़ा स्वागत किया। पत्र-प्रतिनिधियों ने भी हम लोगों के चित्र लिए। लाहौर में दर्शनीय स्थानों का पर्यटन कर तीसरे दिन हम लोग आगे बढ़े। रास्ते में अमृतसर में तीन-चार घंटे के लिये उतर पड़े*। यहाँ हमें जलियानवाला बाग़ और सिक्खों का स्वर्ण-मंदिर विशेष रूप से देखना था। स्वर्ण-मंदिर में मैंने एक बात विशेष देखी, जो इधर युक्तप्रांत के मंदिरों में नहीं मिली। देखा, वहाँ का वातावरण नितांत प्रशांत था। दर्शकों की संख्या तो अधिक थी ही, परंतु किसी प्रकार का कोलाहल न था। इससे मुझे मालूम हुआ कि यह प्रभाव मंदिर की प्रसिद्धि, उसकी अमर कीर्ति और आगंतुकों के श्रद्धा-भाव से उत्पन्न हुआ है। हम लोगों के पहुँचते ही मंदिर के अधिकारिगण सतर्कता और सहृदयता-पूर्ण भावों से ओत-प्रोत हो उठे।

जलियानवाला बाग़ हमारे राष्ट्रीय जीवन की अमर निशानी है। उसका नाम-मात्र हमारी मांस-पेशियों में सहज ही गर्मी उत्पन्न कर देता है। वहाँ पहुँचने पर साथियों की मुद्रा

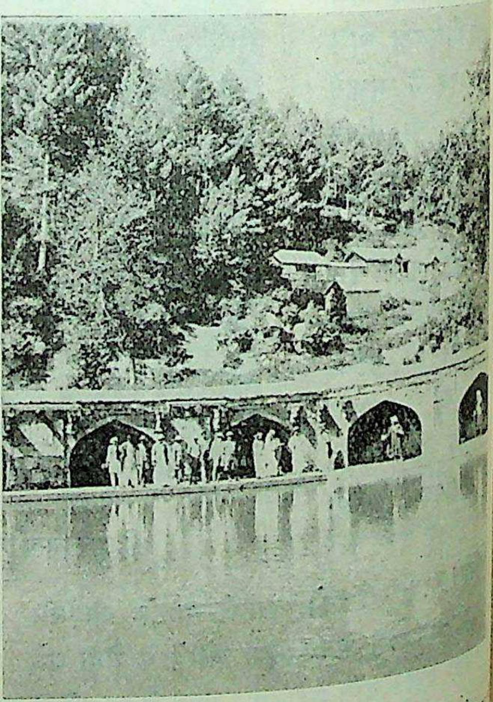

झेलम-नदी का उद्गम-स्थान

---

* अमृतसर तो लाहौर जाते समय रास्ते में पड़ा होगा।
—सुधा-संपादक

को जो देखा, तो स्पष्ट प्रतीत हुआ कि सबकी आकृतियाँ बात-की-बात में परिवर्तित हो गई हैं। भाव तो बदल ही गए हैं, भावों के साथ मिलकर कंठ स्वर भी आर्द्र हो उठा है। श्रद्धा-सहित उस भूमि को प्रणाम कर आगे बढ़े।

दूसरे दिन जम्मू पहुँच गए। यह काश्मीर की जाड़े की राजधानी है। यहाँ कोई उल्लेखनीय बात नहीं। यहाँ से श्रीनगर २०० मील पड़ता है। आगे बढ़ने पर थोड़ी दूर पर वितस्ता-नदी बहती है। उसका उद्गम बेरीनाग है। वहाँ का उद्यान और सरोवर दर्शनीय है। यहाँ एक पक्का कुंड है, जो जहाँगीर के समय का बना हुआ है। उसके सुयोग्य इंजीनियर हैदर के निरीक्षण में इसका निर्माण हुआ है। इस कुंड की गहराई ५८ फ़ीट है। इसमें ७२ फ़ीट पानी प्रति सेकंड आता है, और यही झेलम-नदी का उद्गम है। यहाँ कई झरने मिलकर एक होते हैं, और वही नदी का उद्गम होता है। इस कुंड के सम्मुख ही शाहजहाँ का बनवाया सुंदर उद्यान है, जहाँ उसके काल का एक झरना आज भी झर रहा है।

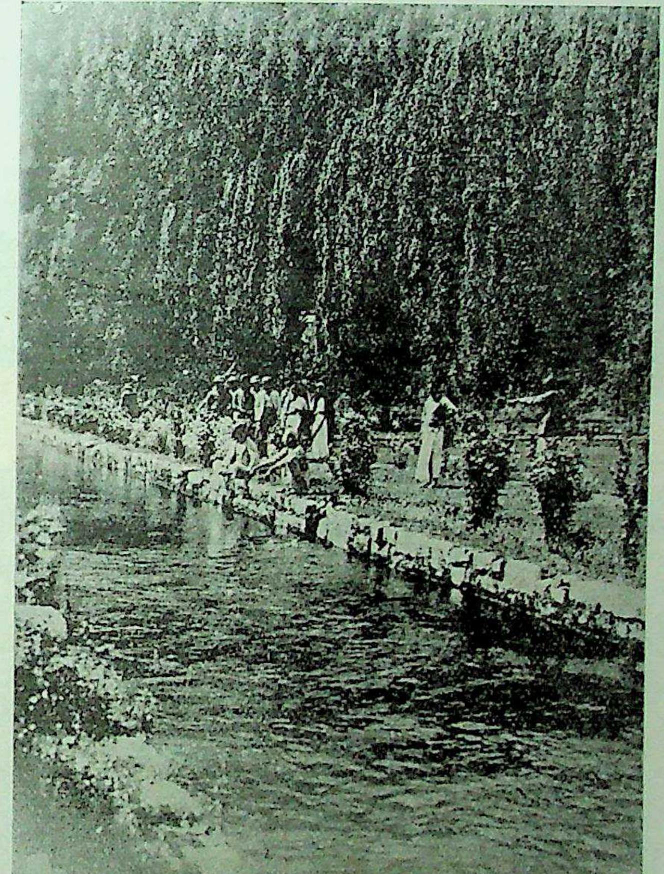

बेरीनाग का दृश्य

दूसरे दिन हम लोग श्रीनगर पहुँच गए। श्रीनगर काश्मीर की राजधानी है। श्रीनगर-शहर के हृदय से ही झेलम-नदी बहती है। इससे शहर की सुंदरता और भी बढ़ जाती है। श्रीनगर में कई नहरें भी बहती हैं, जिनमें यात्री जल-जीवन का आनंद लेते हैं। यात्री, जो काश्मीर-यात्रा करते हैं, या तो जल में, किसी हाउस-बोट में, जीवन व्यतीत करते हैं, या किसी होटल में। हम लोगों ने दोनो का आनंद लेना उचित समझा। श्रीनगर में डल-झील है। इस झील में बहुत-से हाउस-बोट सजे पड़े रहते हैं, जो किराए पर मिल जाते हैं। भारी वेतन पानेवाले कर्मचारी या रईस, जो श्रीनगर जाते हैं, यहीं कोई हाउस-बोट किराए लेकर वहाँ के जीवन का उपभोग करते हैं। यों तो और भी

श्रीनगर का दृश्य

हाउस-बोट का एक दृश्य

बहुत-से हाउस-बोट झेलम-नदी तथा अन्य नहरों में भी रहते हैं, जहाँ साधारण स्थिति के मनुष्य कम मूल्य पर ही जल-जीवन का आनंद ले सकते हैं।

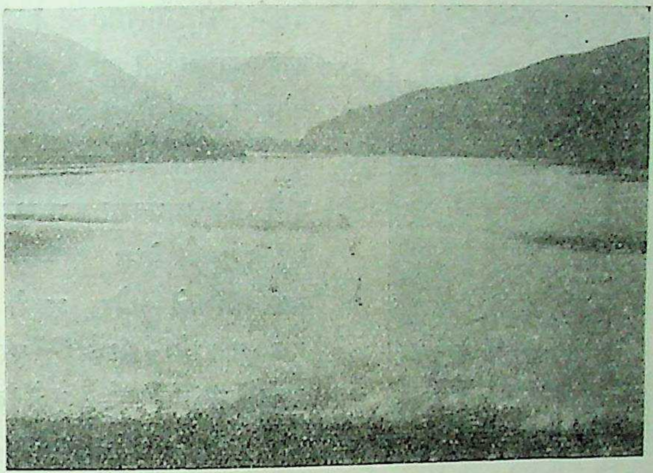

ऊलर-झील

श्रीनगर की बस्तियाँ बहुत गंदी हैं। मकान भी काठ और ईंट के मिश्रण से भद्दे बने हुए हैं। वर्तमान समय में कुछ उन्नति अवश्य हुई है, पर वह नहीं के बराबर है। यहाँ झेलम-नदी के ऊपर ७ पुल हैं, जो पुराने नवाबों के नाम पर हैं। उन पुलों के नाम अमीरकदल, हब्बाकदल, फ़तेहकदल, जनाकदल, अलीकदल, नवाकदल और सफ़ाकदल हैं। इनमें से एक पुल टूट गया है, एक पुल बहुत कमज़ोर है, और अन्य पाँचो पुल काठ के बने हुए बहुत मज़बूत हैं। इन पुलों के दोनो ओर बस्तियाँ बसी हुई हैं। इन पुलों में अमीरकदल-पुल सबसे सुंदर और बढ़िया है। इस पुल के एक ओर अमीरकदल-बाज़ार है, जहाँ की सड़क सीमेंट की बनी हुई बहुत सुंदर है। इस सड़क के दोनो ओर विशाल भवन हैं। अधिकतर इन इमारतों के नीचे के हिस्से में दूकानें हैं, और ऊपर के हिस्से में ठहरने के होटल। दूकानों में भी मोटर-कंपनियों की दूकानें अधिक हैं, और कपड़ों की कम। श्रीनगर के बढ़िया-से-बढ़िया होटल भी यहाँ की ऊपरी इमारतों में हैं।

अमीरकदल-पुल के दूसरी ओर हरीसिंह-हाईस्ट्रीट है। यहाँ की भी सड़क अमीरकदल की तरह है। पुल को पार करने के पश्चात् चार रास्ते मिलते हैं। एक तो सीधी सड़क है, जो वर्तमान महाराजा हरीसिंह के नाम पर हरीसिंह-स्ट्रीट कहलाती है। दाहनी ओर महाराजा साहब के पुराने महल का मार्ग है, जिसमें अब महाराजा साहब के मंत्रियों का कार्यालय है। बाईं ओर साग-भाजी की मंडी है। हरीसिंह-स्ट्रीट में अच्छी-अच्छी इमारतें हैं। ऊपर और नीचे दोनो हिस्सों में दूकानें ही हैं। यहाँ कपड़े की दूकानें अधिक हैं। इसके अतिरिक्त काश्मीर की अन्य कारीगरी की चीज़ों का भी क्रय-विक्रय यहाँ होता है। काश्मीर की प्रसिद्ध केशर की भी दूकानें इधर ही हैं।

रात को जब हम लोग होटल में बैठे काश्मीर के अन्य स्थान में घूमने का कार्य-क्रम बना रहे थे, उसी समय मेरी दृष्टि सामने पहाड़ की ओर गई। देखा, एक ऊँचे स्थान पर प्रकाश हो रहा है। पूछने पर मैनेजर ने बतलाया कि यह शंकराचार्य का पुराना मंदिर है। इसी सिलसिले में उसने और भी श्रीनगर के दर्शनीय स्थान बतलाए, जो शहर के आस-पास थे। हम लोगों की इच्छा थी कि काश्मीर के गाँव-गाँव में घूमें, वहाँ की वास्तविक स्थिति से परिचित हों। पर सीमा-प्रांत के पर्यटन का भी विचार था, इसलिये समय कम था। हम लोग शीघ्र ही पर्यटन करने का कार्य-क्रम कार्य-रूप में परिणत करने का विचार करने लगे।

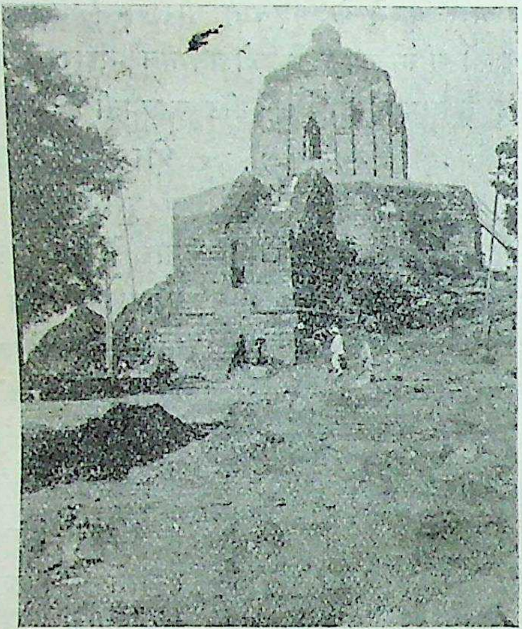

शंकराचार्य का मंदिर

श्रीनगर से डेढ़-दो मील की दूरी पर शंकराचार्य का मंदिर है। पहाड़ की चोटी पर यह देवस्थान है। हम लोग जब पहलेपहल पहाड़ पर चढ़े, तो थकावट मालूम हुई। पर मंदिर देखने की अभिलाषा हम लोगों को आगे बढ़ाती गई। मंदिर बहुत पुराना है। इसके नीचे एक छोटी-सी जगह है, जहाँ आदमी बैठकर चारो ओर के प्रकृति-निरीक्षण का आनंद ले सकता है। एक ओर श्रीनगर का दृश्य दिखलाई पड़ता है। सैकड़ों मकान छोटी-छोटी घास-फूस की झोपड़ियों की तरह दिखलाई पड़ते हैं। बीच-बीच में नहरों का प्रवाह और भी सुंदरता प्रदान करता है। दूसरी ओर महाराजा साहब के विशाल भवन का दृश्य देखने को मिलता है। तीसरी ओर नदी कल-कल-नाद करती हुई बही जा रही है, और चौथी ओर प्राकृतिक दृश्य का वास्तविक चित्र मिलता है। वास्तव में उस समय काश्मीर के स्वर्ग होने की सार्थकता मालूम होती है। मैं यहाँ यह बतला देना उचित समझता हूँ कि जहाँ तक बस्तियों और शहरों का संबंध है, वहाँ तक काश्मीर नरक है, पर जहाँ तक प्राकृतिक दृश्य का संबंध है, वहाँ तक पूर्ण स्वर्ग है।

श्रीनगर से तीन मील पर चश्मशाही-नामक एक चश्मा है। यहाँ से उतनी ही दूर निशात-बाग़ है। निशात-बाग़ से तीन मील

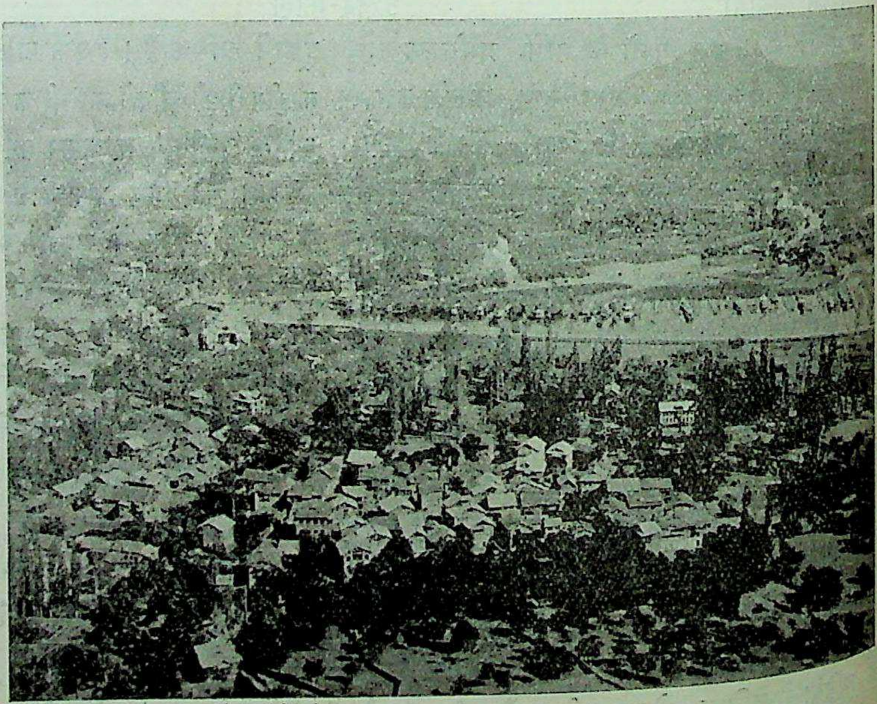

शंकराचार्य-पर्वत से श्रीनगर का दृश्य

शालामार-बाग़ है, और यहाँ से तीन मील पर हरवान लेक। श्रीनगर में ये ही चारो स्थान दर्शनीय हैं।

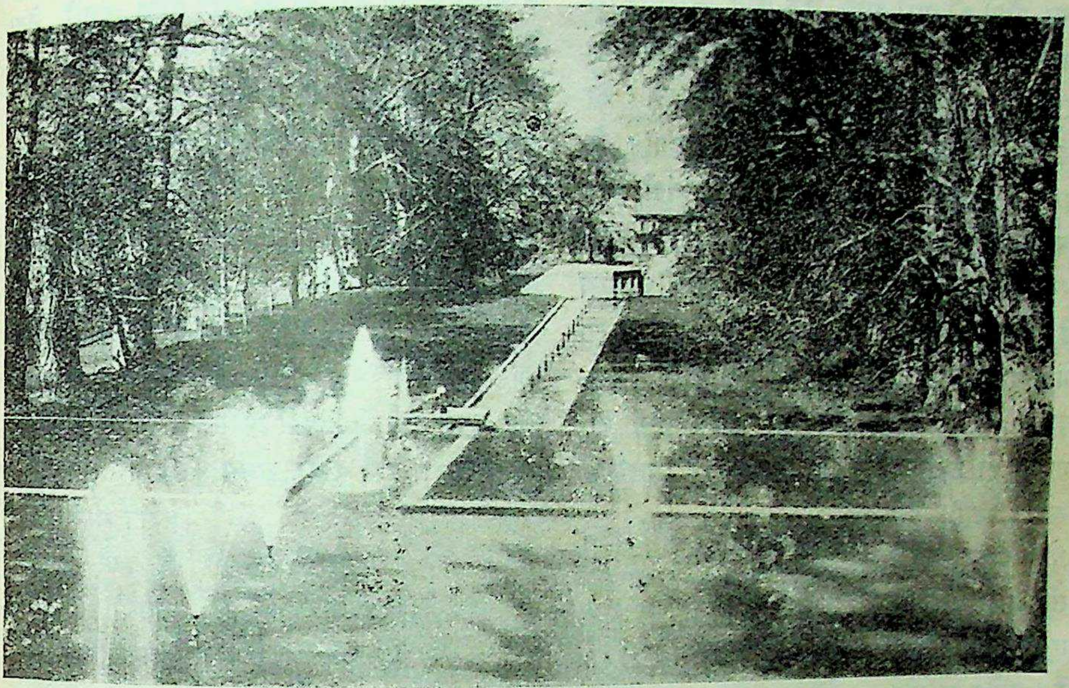

निशात-बाग़

शालामार-बाग़ शाहजहाँ के काल का है। लोगों का कहना है, यह बाग़ संसार के सर्वश्रेष्ठ बाग़ों में है। पुराने बादशाहों के कला-कौशल का दिग्दर्शन इन बाग़ों के देखने से होता है। प्रत्येक रविवार को हज़ारों नर-नारी इन स्थानों में इकट्ठा होते और किलोल करते हैं। भारतीयों से ज़्यादा संख्या उन गौरांग महाप्रभुओं की होती है, जो दूर-दूर स्थानों से काश्मीर का आनंद लेने आते हैं। इसी दिन उन बाग़ों में फ़ौवारे खोल दिए जाते हैं, जिससे उनकी सुंदरता और भी बढ़ जाती है। हम लोगों ने इन स्थानों की यात्रा जल और थल दोनो मार्ग से की। जल-मार्ग से जो यात्रा होती है, वह बहुत ही आनंददायक होती है।

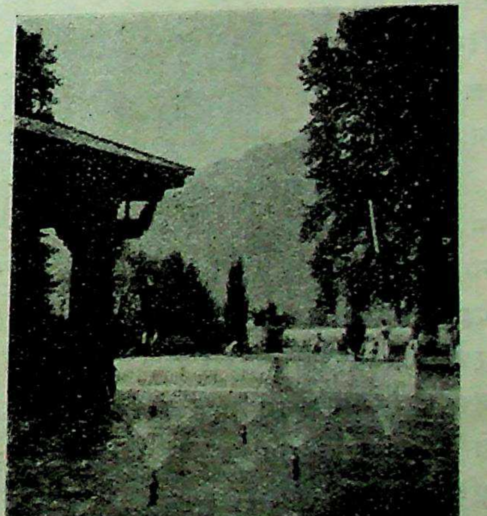

शालामार-बाग़ (श्रीनगर)

श्रीनगर तथा उसके आस-पास के स्थानों को जब

हम लोग देख चुके, तब काश्मीर के अन्य शहरों तथा गाँवों की बारी आई। हम लोग लारी द्वारा अनंतनाग के लिये रवाना हुए। अनंतनाग को उर्दू में इसलामाबाद कहते हैं। यह काश्मीर का द्वितीय शहर है। इसकी तुलना संयुक्तप्रांत के हमीरपुर-ज़िले से की जा सकती है। यहाँ एक चश्मा है; जो देखने लायक़ है। यहाँ से ६¾ मील पर अच्छयबल-स्थान है। यहाँ एक रमणीक बाग़ है, जिसमें बहुत-से झरने झरते हैं। इसी बाग़ में बादशाही ज़माने की बहुत-सी इमारतों के भग्नावशेष भी हैं, जिन्हें देखकर हृदय एक बार गद्गद हो उठता है। यहाँ चश्मों में मछलियाँ खूब रहती हैं। थोड़ा खाना देने से सैकड़ों मछलियाँ एकत्र हो जाती हैं। प्रत्येक काश्मीर-यात्री को यहाँ कुछ दिन रहकर जीवन का आनंद लेना चाहिए।

अनंतनाग से ८ मील मार्तंड-नामक स्थान है। यह हिंदुओं का एक तीर्थ-स्थान है। जब हम लोग मार्तंड पहुँचे, तो पंडों ने आकर घेर लिया। यहाँ के पंडे चाहते हैं कि यात्री उनके रजिस्टर में कम-से-कम हस्ताक्षर कर दे, जिससे फिर यदि कोई उसका संबंधी आवे, तो उन्हीं के यहाँ ठहरे। मेरे दल के प्रत्येक व्यक्ति ने हस्ताक्षर कर दिए, परंतु मैंने नहीं किया। जब पंडों से पिंड छुड़ाना असंभव-सा हो गया, तो मैंने भी हस्ताक्षर कर दिए—रायसाहब घसीटा। मेरे इस नामकरण का भी विशेष इतिहास है। एक स्थान में मोटर-कंपनी को किराया देते समय हमारे नेता ने मेरा नाम लिखवाया गुप्ता, जिसे बाद में मोटर-कंपनी के कर्मचारियों ने पढ़ा घसीटा। घसीटा नाम देहाती जँचा, इसलिये इसके पहले रायसाहब जोड़ दिया गया। इसके पश्चात् मैं उसी नाम से दल के व्यक्तियों द्वारा पुकारा जाने लगा। अस्तु। यहाँ दो मंदिर हैं। एक मंदिर के सामने छोटा-सा कुंड है। इसी कुंड में स्नान करा यहाँ के पंडे स्वर्ग पहुँचाने और पुराने पाप धुलाने का शुल्क लेते हैं। यहीं पास में अवंतीपुर नामक स्थान है। यहाँ पुराने समय की इमारतों के भग्नावशेष भी हैं। कहते हैं, इसी स्थान पर पांडवों ने अज्ञातवास के दिन बिताए थे।

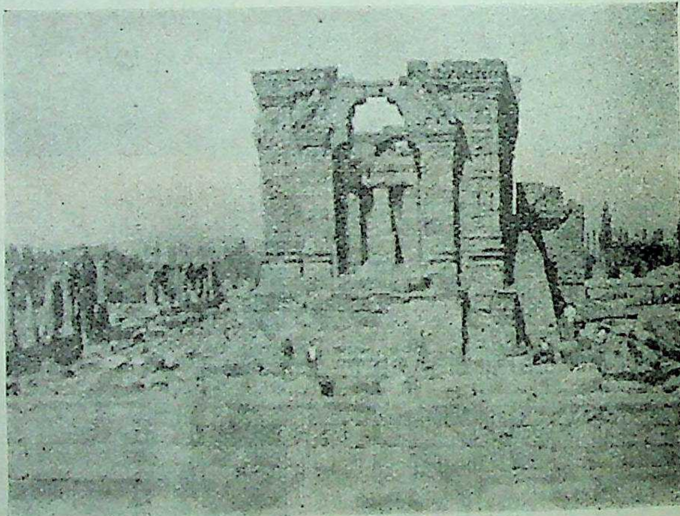

अवंतीपुर का खँडहर

मार्तंड से हम लोग पहलगाँव गए। यह स्थान बहुत रमणीक और सुंदर है। यहाँ पंडे अधिक रहते हैं। वे अमरनाथ के यात्रियों की बाट बड़ी उत्सुकता से जोहते हैं। यहाँ पंडों के ऐसे मकान बने हुए हैं, जिससे यहाँ की ग़रीबी का परिचय मिलता है। दो-चार होटल भी अच्छे काठ के उ यात्रियों के लिये बने हैं, जो पहलगाँव में रहकर प्रकृति का निरीक्षण करते हैं। एक ओर नदी बह रही है, दूसरी ओर पहाड़ है, तीसरी ओर श्रीनगर का रास्ता है, और चौथी ओर अमरनाथ-तीर्थ का मार्ग। हम लोगों की भी इ

अमरनाथ-यात्रा की थी, पर बर्फ़ जमी रहने के कारण विचार बदल देना पड़ा ।

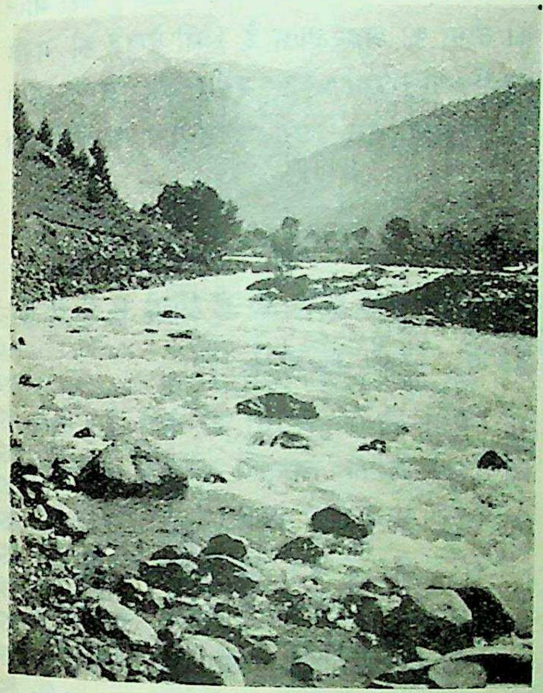

लदाक-नदी की घाटी (पहलगाँव)

अमरनाथ के मार्ग में चंदनबाड़ी-स्थान है। यह पहलगाँव से ८ मील है । यहाँ जाने के लिये पैदल रास्ता है। सवारी के लिये टट्टू मिलते हैं। हम लोगों ने भी टट्टुओं द्वारा ही यात्रा तय की । चंदनबाड़ी में बर्फ़ का पुल बना हुआ है, जिसे पार करना कठिन है। यहीं काश्मीर के डिप्टी-गवर्नर से भेंट हुई । आपने हम लोगों को और भी स्थान दिखलाए । इसके पश्चात् हम लोग श्रीनगर वापस लौट आए ।

बाद में हम लोगों ने ऊलर-लेक की भी यात्रा की । यह यात्रा हाउस-बोट द्वारा तय हुई। रास्ते में गंधरबल और मानसबल स्थानों को देखते गए ; गंधरबल छोटा-सा गाँव है। यहाँ के जीवन में ग्रामीणता है। रास्ते में कई स्टेट प्राइमरी स्कूलों का भी निरीक्षण किया । ऊलर-लेक के चारो ओर का दृश्य तो सचमुच बहुत ही मनोहारी है ।

ऊलर-लेक के पश्चात् हम लोग गुलमर्ग, खिलनवर्ग आदि स्थानों को देखने गए । गुलमर्ग में सैकड़ों अँगरेज़ आकर रहते हैं । इस स्थान को इस प्रकार की स्थिति मिली है, और बाहरी आडंबरों से इस प्रकार सजाया गया है कि सचमुच यह बिलकुल स्वर्ग मालूम होता है । जब मैं गुलमर्ग के अंदर घुसा, तो मेरा हृदय एक अलौकिक आनंद से आह्लादित होने लगा । इसके ऊपर खिलनवर्ग है । यहाँ एक बड़ा मैदान है । प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुंदर है । इसके ऊपर ही आलापत्थर-स्थान है । आलापत्थर का मार्ग बहुत ही दुर्गम है । पहाड़ की चढ़ाई है । घोड़े आदि भी नहीं जा सकते । बर्फ़ का पहाड़ अधिक है । इसलिये पगडंडियों द्वारा रास्ता तय करना पड़ता है । यदि कहीं कोई फिसल गया, तो आफ़त ही है ।

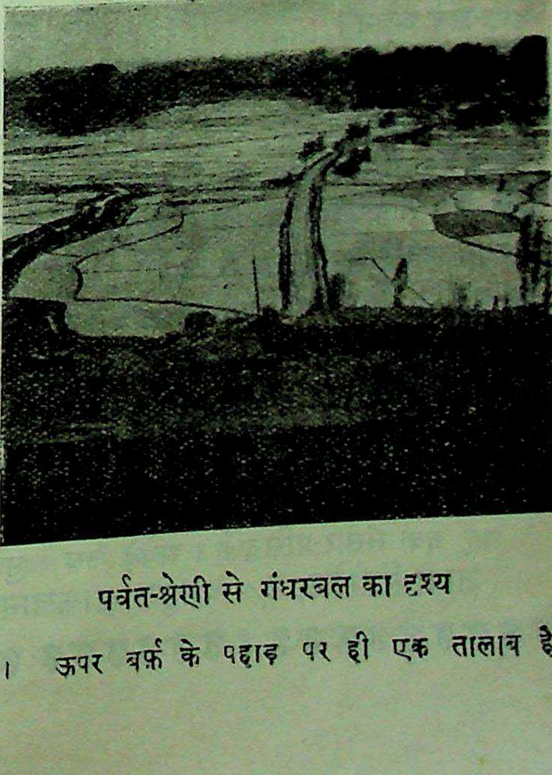

पर्वत-श्रेणी से गंधरबल का दृश्य

ऊपर बर्फ़ के पहाड़ पर ही एक तालाब है ।

उसमें पानी है, और उसी में बर्फ़ के पत्थर दिखलाई पड़ते हैं। इसी समय बड़े ज़ोरों से ओलों की वर्षा हुई। हम लोगों ने हैट लगा लिए, और बर्फ़ पर फिसलना शुरू कर दिया। जब खिलनबर्ग पहुँचे, तो पानी का सामना करना पड़ा। वास्तव में उस समय जीवन-मरण का प्रश्न था, पर ईश्वर ने हम लोगों की रक्षा की।

डॉक्टर खान साहब (वर्तमान प्रधान मंत्री सीमा-प्रांत) को देखने की लालसा बहुत थी, इसके अतिरिक्त लंडीखाना और लंडीकोटल (जहाँ भारत की सीमा का अंत होता है) भी देखने की प्रबल इच्छा थी। इसलिये काश्मीर का भ्रमण करने के पश्चात् हम लोग सीमा-प्रांत के लिये चल दिए।

नामर्द मर्द जवाँमर्द हो गया !

शर्तिया लड़का होगा

यदि झूठा हो, तो पूरा मूल्य वापस होगा। फलदाता १४ वर्षों का अनुभूत नुस्खा है, सहस्त्रों बार का आज़माया है। जिनके सदैव लड़कियाँ ही होती हों, वे इसे ऋतुमास के दूसरे-तीसरे महीने के बाद खिला दें। शर्तिया लड़का होगा। यदि लड़की हो, तो पूरी क़ीमत वापस कर दी जाती है। मूल्य ५) डाक-ख़र्च अलग।

सेक्सोलीन गोलियाँ व सेक्सोलीन तिला

ये तिला व गोलियाँ जादू का असर रखती हैं। घोर नपुंसक को भी ये पुरुषत्व देती हैं। शीघ्र-पतन, वीर्यदोष, इंद्रिय का टेढ़ापन आदि-आदि को दूर करके शरीर को लोहे के समान बना देती हैं। मूल्य ३० गोलियों का २॥), तिला की शीशी का मूल्य ३), क़ीमत नामर्दी-यंत्र ६), पूरा सेट केवल १५) में लीजिए, डाक-ख़र्च माफ़।

ब्रेटेशन

यह दवा संसार-प्रसिद्ध है। अधेड़ उम्र की स्त्रियों को भी युवती कर देती है। ढीले स्तनों को उनका असली रूप दे देती है। मूल्य ३), डाक-ख़र्च अलग।

दूसरी शादी उर्फ़ जादू का पाउडर

इस पाउडर की एक चुटकी ज़रूरत के सिर्फ़ २ मिनट पहले स्त्री को खिला दें, और जीवन का आनंद देखें। मूल्य प्रति शीशी १॥)

काले गोरे हो गए

फ़्रेंच ब्यूटी लोशन कील, झाइयाँ, मुँहासे, चेचक के दाग़ आदि को ठीक करके खाल को नरम, मुलायम और चमकदार बनाता है। मूल्य फ़ी शीशी २) डाक-महसूल अलग। तीन शीशी के ऑर्डर पर डाक-महसूल माफ़ होगा।

मुफ़्त

पोशीदा और पेचीदा बीमारियाँ जैसे जरियान, शीघ्र-पतन, नामर्दी, ख़ूबसूरती व अन्य मामलात के लिये हमारा सूचीपत्र मुफ़्त मगावें और आनंद उठावें।

जावा सैंडीकेट, ३० धर्मपुरा, डाकखाना मुग़लपुरा (N. W. R.)

सुधा-चित्रावली

श्रीमान् बैरिस्टर वी० एम्० पँवार साहब
फ़ेडरेशन-मेंबर, देवास-राज्य (जूनियर ब्रांच)
[आप संघ-व्यवस्था-संबंधी सेंट्रल इंडिया-ग्रूप के ज्वाइंट सेक्रेटरी हैं। आप बड़े योग्य और मिलनसार व्यक्ति हैं। फ़ेडरेशन के संबंध में अच्छा कार्य करके देशी राज्यों में आपने अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली है।]

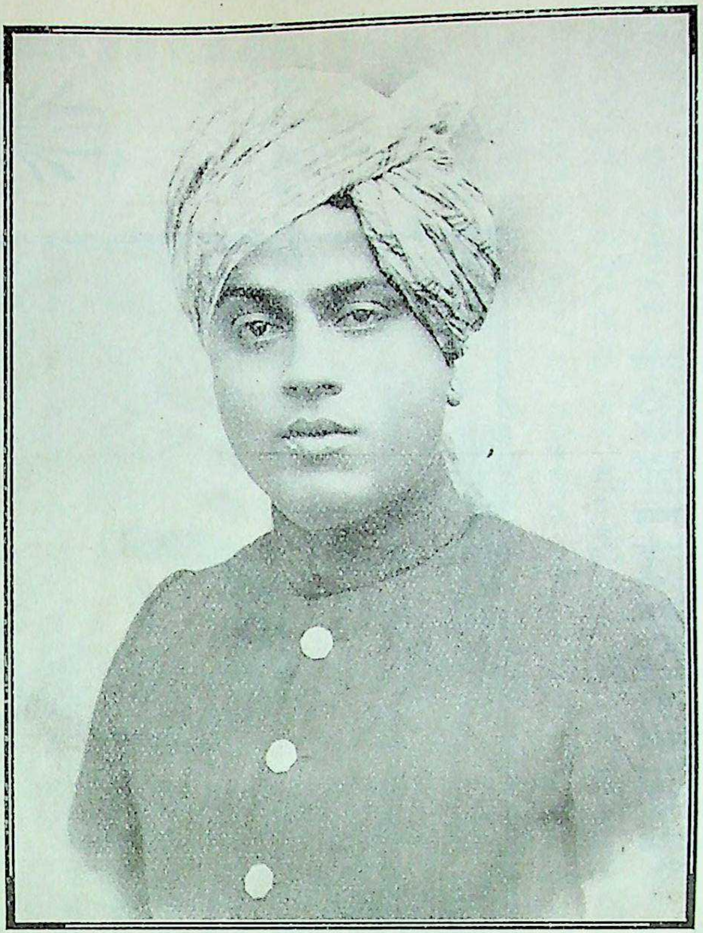

श्रीकुँवर सोमेश्वरसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी०

[आप नईगढ़ी (रीवाँ-राज्य) के भावुक कवि हैं। आपकी 'रत्ना'-नामक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। आप हिंदी के प्रसिद्ध कवि ठाकुर गोपालशरणसिंह के सुपुत्र हैं।]

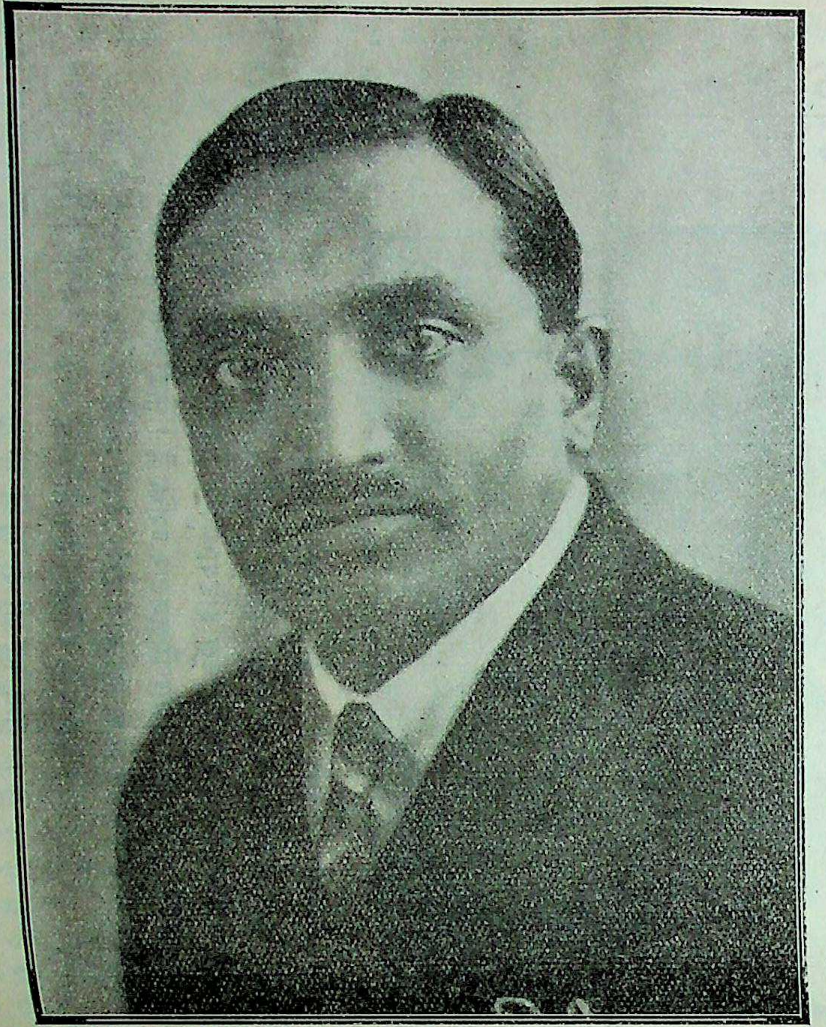

श्रीमान् सरदार त्र्यंबकराव पँवार साहब

रेवन्यू-मेंबर, देवास-राज्य (जूनियर ब्रांच)

[आप अपनी योग्यता के कारण रेवन्यू-मेंबर का कार्य भली

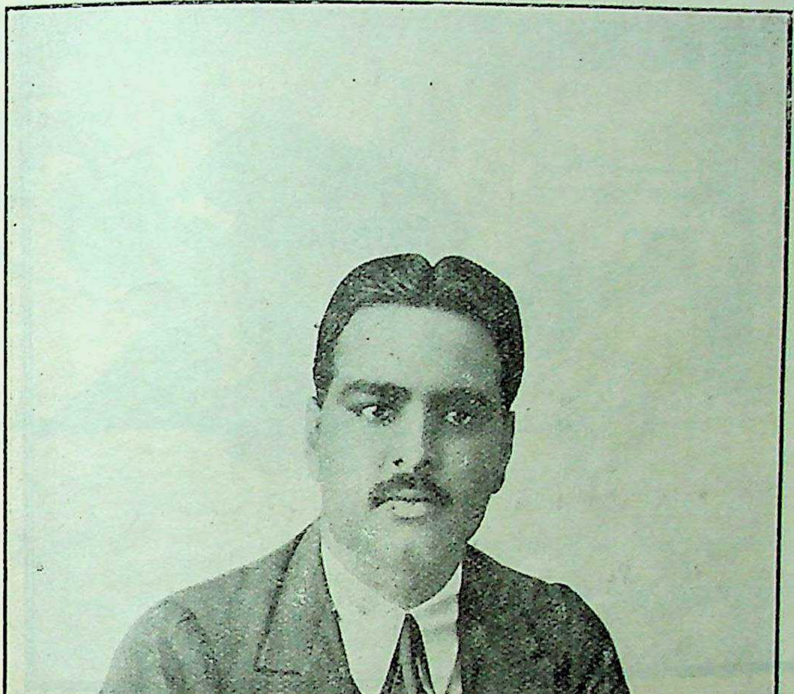

श्रीपं० हरिश्चंद्रजी शर्मा

[आप होल्कर-स्टेट-प्रेस, इंदौर के सुपरिंटेंडेंट हैं। वहाँ के वार्षिक अहल्योत्सव का, सेक्रेटरी की हैसियत से, कई वर्ष से सुंदर कार्य कर रहे हैं।]

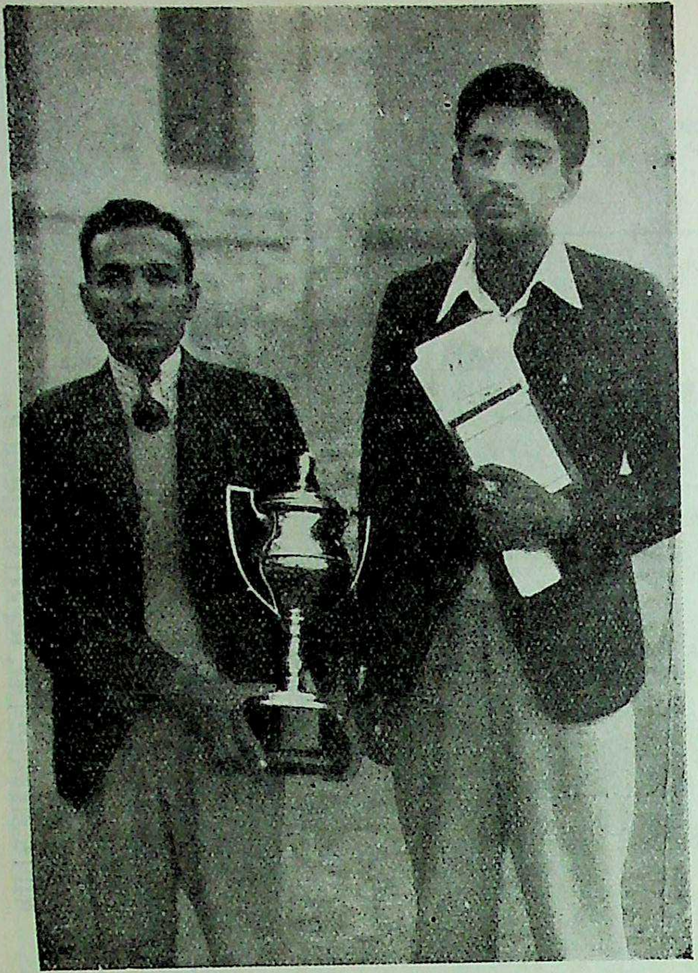

श्रीरमेशचंद्र और श्रीमज़हरअली

(गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर)

[इन्होंने अखिलभारतवर्षीय विश्वविद्यालय-वाद-विवाद-प्रतियोगिता की ट्राफ़ी, लखनऊ में, २७ नवंबर को विजय की है। साथ ही प्रथम और तृतीय व्याख्यानदाता का पुरस्कार भी

श्रीमान् वी० डी० देशपांडेय साहब

[आप देवास-राज्य (जूनियर ब्रांच) के फ़ाइनेंस-मेंबर हैं। आप बड़े ही उदार और योग्य व्यक्ति हैं। राज्य की आर्थिक स्थिति सुधारने का

चयन

१. क्यों ?

सुखदा रे, दुर्बलता क्यों ?
सागर की उद्दाम तरंगें
तट-पुष्पिल-भुज में बँध जातीं,
सिमट-सिमट तुंगिल ज्वालाएँ
नभ-उर की निधियाँ कहलातीं।
क्यों रवि-चुंबन स्वर्णिम, उसमें
हीरक प्रात थिरकता क्यों ?
सुखदा रे, दुर्बलता क्यों ?
बल के प्रमाद का वर पाकर
झंझा क्यों क्रंदिल हो आती ?
वाणी-शाप लिए मधुवन की
सुषमा क्यों बढ़ती ही जाती ?
बँधते-बँधते क्यों पराग यह ?
खुल सुरभित स्वतंत्रता क्यों ?
सुंदरि रे, दुर्बलता क्यों ?
प्रलय शासन में क्यों अप्रवीण,
विश्व-संचालक क्यों पटु शांति ?
बस चला क्यों मानव-संसार,
पिघल ढल चली पाशविक क्रांति ?
छिपी स्नेह-सीपी में जाती
यह लोहित मानवता क्यों ?
विजयिनि रे, दुर्बलता क्यों ?
वादक उर दुर्बल तारों पर
मचला ही क्यों रह जाता है ?
उँगली के किन संकेतों पर
वीणा का स्वर भर आता है ?
ठुकराया अतीत गीतों में
फिर-फिर गाया जाता क्यों ?
व्यापक रे, दुर्बलता क्यों ?

(श्रीमती) विद्यावती 'कोकिल'

× × ×

२. चाह

एक बार तो हँस दे निष्ठुर, इतना ही कहना ले मान;
नहीं चाहिए मुझे और कुछ, वही मधुर - मादक मुसकान।
प्रलय मची हो पूर्ण विश्व में, चाहे आया हो तूफ़ान;
अथवा ज्वालामुखी भभककर भस्म करे यह विश्व महान।
बरस रहे हों अंगारे चाहे भूतल पर मूसलधार;
अथवा जलनिधि एक लहर में जलमय करता हो संसार।
त्राहि-त्राहि प्राणी चिल्लाते हों, लेकिन होगी मम तान—
नहीं चाहिए मुझे और कुछ, वही मधुर-मादक मुसकान ॥ १ ॥

जाड़ा

बिच्छू के-से डंक मारती हो चाहे अति शीत समीर;
तन पर वस्त्र न हो कोई, ठिठुरा जाता हो पूर्ण शरीर।
लकड़ी पर दे टेक द्वार पर खड़ा रहूँगा थर्राता;
यही सँदेश कहूँगा, कोई यदि होगा आता-जाता।
कह दो उनसे—तनिक निकलकर हँस दें, दे दें जीवन-दान;
नहीं चाहिए मुझे और कुछ, वही मधुर-मादक मुसकान ॥ २ ॥

गर्मी

पूर्ण शक्ति से रवि तपता हो सन-सन चलती जेठ-पवन;
कंठ प्यास से सूख रहा हो, झुलस रहा हो चाहे तन।
नंगे पैर, शीश भी नंगा, ऊपर कोई छाँह न हो;
टप-टप बहे पसीना तन से, फिर भी कुछ परवाह न हो।
उसी झुलसते में टेरूँगा—कुछ तो सुन निर्दय पाषाण!
नहीं चाहिए मुझे और कुछ, वही मधुर-मादक मुसकान ॥ ३ ॥

बरसात

घिरी घटा घनघोर गगन में हो, घन गरज रहे हों घोर;
विद्युत् दमक रही हो, ओले बरस रहे हों चारो ओर।
सावन की हो रात्रि अमा, कितना भी दृश्य भयंकर हो;
दीन भाव से मगर कहूँगा — कितना यह प्रिय, सुखकर हो;
अंधकार में यदि दाँतों की विद्युत् चमका दे हे प्राण!
नहीं चाहिए मुझे और कुछ, वही मधुर-मादक मुसकान ॥ ४ ॥

चंद्रशेखर पांडेय 'निराश'

× × ×

३. आत्मविश्वास

हमारे हृदय में आत्मविश्वास होना अत्यधिक आवश्यक है। जिसे अपनी आत्मा पर विश्वास है, उसके लिये किसी पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता नहीं। उसकी आत्मा ही उसे अच्छे-बुरे कार्यों की सूचना दे देती है।

आत्मविश्वास रखकर हम जो भी कार्य प्रारंभ करते हैं, वह भले ही बाधाओं की टक्कर खाय, परंतु अंत में अवश्य ही पूरा होता है। जो कुछ आवश्यकता है, वह है धैर्य, दृढ़ता और सत्यता की। धैर्य जीवन का सच्चा सहचर है, दृढ़ता के सम्मुख बड़ा कार्य भी छोटा प्रतीत होता है, और सत्यता का साथ रहना हमें निर्भीक एवं पवित्र बनाता है।

किसी भी कठिन-से-कठिन समस्या को सुलझाने में आत्मध्वनि एक सच्चे शिक्षक का कार्य करती है। अपनी आत्मा पर विश्वास का स्थायी होना तभी संभव है, जब कुछ दिन के बराबर के अभ्यास से मनुष्य को अपनी आत्मध्वनि पर विश्वास होने लगे।

प्राचीन इतिहास में हमें ऐसे अनेक महापुरुष मिलेंगे, जिन्हें अपनी आत्मा पर दृढ़ विश्वास था। वे अपनी आत्मध्वनि के बल पर मार्ग में आनेवाली भयंकर बाधाओं को केवल विश्वास के सहारे दूर कर देते थे। इसमें संदेह नहीं, यदि वे आत्मविश्वास, सत्यता और धैर्य का सहारा न लेते, तो आज उनके नाम इतिहास के पृष्ठों पर इतने आदर और गौरव के साथ न लिखे होते। हम्मीर, शिवाजी आदि अनेक ऐसी महान् आत्माएँ हो गई हैं, जिन्होंने आत्मविश्वास के बल पर निश्चित ध्येय को छू लिया। आज वे महापुरुष संसार में जीवित नहीं, किंतु उनकी आत्मा अब भी हम निरुत्साहियों के हृदय में दृढ़ता, सत्यता, धीरता और पवित्रता जाग्रत् करती है।

इस संसार में मनुष्य अबोध शिशु की भाँति है। उसे जब तक संसार का अनुभव प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक यह समझ बैठना कि मैं संसार से परिचित हूँ, भूल है, भयंकर भूल है!

यद्यपि आत्मा तब भी पथ बतलाती है, परंतु जब मनुष्य अंधकार में रहता है, अबोध होता है, उसे आत्मा की चेतावनी भी व्यर्थ प्रलाप प्रतीत होती है। हमारे हृदय में विश्वास की उत्पत्ति धीरे-धीरे होती है। और, जहाँ आत्मा अर्थात् परमात्मा पर पूरा विश्वास हो गया, वहाँ अपनी भूलें मनुष्य के सम्मुख स्वयं नाचने लगती हैं। यदि देखा जाय, तो इसी समय उसे वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है।

मानव-जीवन ठोकर खाकर ही कुछ सीख सकता है। तभी वह परमात्मा पर विश्वास करता है, और उसी समय से प्रतिक्षण एक दीपक (जिसे आत्मविश्वास या प्रभु का प्रतिबिंब कहें) साथ रखता है। किसी आत्मा की ध्वनि है—

जो त्रिभुवन के संग है, वाहि कहाँ ते क्लेश ;
विपदा ज्यों छूवन चली, द्वार मिल्यो राकेश।

वास्तव में प्रभु का दृढ़ विश्वास ही मनुष्य को एक दिन मनुष्य बना देता है।

(कुमारी) विद्या भार्गव

× × ×

४. मारवाड़ी-भाषा

हिंदी की प्रांतीय बोलियों का आपस में कुछ बातों में सामंजस्य होने पर भी उनका आकारादि देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। प्रांतीय बोलियों में जिस प्रकार व्रजभाषा और अवधी का साहित्य है, उसी प्रकार मारवाड़ी साहित्य भी है। मारवाड़ की भाषा ही से यहाँ मेरे मारवाड़ी-शब्द का तात्पर्य है।

आज भोजपुरी का लोक-गीतों के अतिरिक्त और साहित्य कुछ भी नहीं, इसलिये पाठ्य पुस्तकों तथा प्रकाशकों द्वारा उसकी रचनाएँ न प्रकाशित

होने के संबंध में कुछ विशेष बातें नहीं कही जा सकतीं, किंतु मारवाड़ी-भाषा और उसके साहित्य की ओर का उपेक्षा-भाव ठीक नहीं। खड़ी बोली के प्रचार में आने के पूर्व ही से मारवाड़ी एक अत्यंत सुसंगठित भाषा है। यह अपनी निजी विशेषताएँ, अपना साहित्य रखती है। आज मैं उसी के वर्तमान रूप की कुछ बातें आप लोगों के समक्ष रखने की धृष्टता करने जा रहा हूँ।

खड़ी बोली के साथ-साथ उच्च शिक्षित कहलानेवाले प्रत्येक हिंदी-भाषा-भाषी का कर्तव्य है कि वह अपने देश की प्रांतीय बोलियों का भी कुछ-न-कुछ ज्ञान अवश्य रक्खे।

मारवाड़ी-भाषा एक छोर पर गुजराती से, दूसरे छोर पर सिंधी से और एक ओर जयपुरी से मिलती है। जयपुरी हिंदी-भाषा की ही बोली होने के कारण जोधपुरी से अधिक मिलती है, किंतु सिंधी तथा गुजराती हिंदी से एक प्रकार अलग-अलग भाषाएँ हैं, अतः मारवाड़ी पर उक्त दोनो भाषाओं का भी प्रभाव पड़ा है। मुसलमानी साम्राज्य-काल में राजभाषा फ़ारसी होने के कारण फ़ारसी-अरबी की भी कुछ पुट है, किंतु केवल शिक्षित जनता की भाषा पर।

सर्व-साधारण में प्रचलित भाषा का, सिंधी तथा गुजराती के प्रभाव-क्षेत्रों के पासवाले स्थानों में, इन दोनो भाषाओं से कुछ अधिक संबंध है, तथा इनमें भी व्यापारियों के गुजरात से अधिक आवागमन होने के कारण पढ़े-लिखे व्यापारियों की भाषा पर गुजराती की स्पष्ट छाप है।

मारवाड़ी के संज्ञा-शब्द अधिकांश अपभ्रंश के शब्द हैं। ग्रामीणों के उपयोग में आनेवाली भाषा में नब्बे प्रतिशत संज्ञाएँ अपभ्रंश की ज्यों-की-त्यों हैं। पाँच प्रतिशत अरबी, फ़ारसी, गुजराती आदि के और पाँच प्रतिशत देशज तथा दूसरे शब्द हैं।

इनके घरों में व्यवहृत होनेवाले कुछ शब्दों
देखने से यह बात स्पष्ट हो जायगी—

संस्कृत	मारवाड़ी	संस्कृत	मारवा
अरण्य	अरणों	मत्कुण	माक
शय्या	सेज		(खटम
तृण	कण	मंच	माँचा
पेटिका	पेटी	वर्षा	बिरख
कृषक	करसा	मार्ग	मारग
श्रेष्ठि	सेठ	वापी	बावड़ी

आदि सहस्रों शब्द हैं। इन संज्ञाओं में दू
भाषाओं की संज्ञाएँ नाम को ही हैं। देशज श
अवश्य पृथक् हैं। शाक-शब्द यहाँ अब तक शा
रूप में ही है, तरकारी नहीं बन पाया है।
अवश्य है कि 'स' का 'ह' करके हाग उच्चारण में
ही किया जाय।

देशज संज्ञा-शब्दों में अधिकांश संस्कृत-शब्दों
अनुकरण पर ही रचे गए हैं। जैसे वारणा आदि
कुछ शब्द कूकड़ा, मुंडा आदि अवश्य विशिष्ट
से विचित्र ज्ञात होते हैं, फिर भी थोड़ा-सा ही सो
पर इनकी विशिष्टता ज्ञात हो जाती है।

बाह्य भाषाओं के शब्दों में गुजराती के अ
कांश शब्द प्रयुक्त हुए हैं। फिर भी उन शब्दों
यहाँ आते-आते कुछ-न-कुछ रूप परिवर्तित अव
हो गया है। जसे गुजराती का छोकरा छोरा त
छोकरी छोरी हो गए हैं। गुजरात में प्रयुक्त सं
शब्दों के साथ-साथ विशेषण, सर्वनाम आदि
शब्द भी यहाँ प्रयुक्त होते हैं, जैसे का
(पांगल), सयाना (चतुर) आदि।

सर्वनामों में मारवाड़ी की निम्न-लिखित रीति
गुजराती के उत्तम पुरुष सर्वनाम 'हूँ' का प्र
इसमें होता है, मध्यम पुरुष में 'थे' और अन्य पु
में 'वो' का प्रयोग होता है। बहुवचन में अ
'म्हाँ', 'थाँलोक' और 'वे' का प्रयोग होता है।

सामान्य सर्वनाम-शब्दों का रूप भी हिंदी

भाँति न होकर गुजराती-ढंग पर ही होता है। पुरुष-वाचक सर्वनामों के कुछ रूप यहाँ विशिष्ट रूप से लिख देता हूँ—

उत्तम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
	मैं	हम
कर्ता	हूँ	म्हाँ
कर्म	म्हेन	म्हाँने
करण	म्हारा सुँ	म्हाँती
संप्रदान	म्हारे वास्ते	म्हाँरे वास्ते
अपादान	म्हारा सुँ	म्हाँ सुँ
संबंध	म्हारो	म्हाँरो
अधिकरण	म्हारे ऊपर	अमोरे ऊपर

मध्यम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	थूँ	थाँलोक
कर्म	थने	थाँने
करण	थारा सूँ	थाँरा सूँ
संप्रदान	थारे सारूँ	थाँरे सारूँ
अपादान	थारा सूँ	थाँरा सूँ
संबंध	थारो	थाँरो
अधिकरण	थारे से	थाँरे से

आदि।

इसी प्रकार दूसरे रूपों का भी दर्शन होता है। सर्वनामों में गुजराती की भाँति ही परिवर्तन होता है।

मारवाड़ी-भाषा की विभक्तियाँ भी गुजराती की ही भाँति हैं। जैसे 'ने' विभक्ति कर्म में प्रयुक्त होती है। कर्ता की कोई भी विभक्ति इस भाषा में व्यवहृत नहीं होती। 'ने' का कर्म में प्रयोग गुजराती की एक प्रधान विशेषता है। जैसे 'राम को मारा' का गुजराती-रूप 'राम ने मारयो' होगा, और मारवाड़ी-रूप भी यही होगा। 'ने' का प्रयोग गुजराती में करण कारक में विशेष होता है, किंतु करण कारक में मारवाड़ी-विभक्ति 'सूँ' हिंदी के 'से' से मिलती-जुलती है।

संप्रदान की विभक्ति के लिये मारवाड़ी-भाषा में प्रायः वास्ते या सारूँ आदि प्रयुक्त होते हैं, जो हिंदी की छाया है। अपादान की विभक्ति 'सूँ' है, जो 'से' की स्थानापन्न है। संबंध की विभक्तियाँ जहाँ खड़ी बोली में रा, री, रे, ना, नी, ने, का, की, के होती हैं, मारवाड़ी में केवल रा, री, रो ही प्रयुक्त होते हैं। अधिकरण कारक की विभक्ति भी 'ऊपर', 'पर', 'माँ' हैं, जो हिंदी की भाँति ही हैं।

विभक्तियों के अतिरिक्त शब्द-संगठन का क्रम विभिन्न है, फिर भी वाक्य-विन्यास हिंदी की ही भाँति होता है।

गुजराती में 'है' का रूप 'छे' होता है, किंतु मारवाड़ी में 'छे' न होकर 'है' ही होता है, जैसे गुजराती में 'करे छे' हिंदी के 'करता है' का रूप होगा, मारवाड़ी में 'करे है' होगा। ऐसे ही व्रजभाषा की भाँति हुयो, होने आदि का प्रयोग होता है।

भूतकाल में मारवाड़ी-भाषा की क्रियाओं में 'था' के स्थान पर 'हा' प्रयुक्त होता है, और गुजराती में 'हता'; जैसे हिंदी में 'करता था' मारवाड़ी में 'करता हा' और गुजराती में 'करता हता' होगा।

भविष्यत्कालीन क्रियाओं में, मारवाड़ी-भाषा में, गा, गी, गे के स्थान में ला, लो का प्रयोग होता है। जैसे करूँगा का मारवाड़ी-रूप 'करूँला' होगा।

इसके अतिरिक्त क्रियाओं के संस्कृत के बिगड़े हुए रूपों-जैसे भी रूप चलते हैं।

संज्ञाओं के बहुवचनों का सर्वनामों के बहुवचनों में भी कुछ हिंदी की भाँति विशेष संबंध नहीं है। पश्चिमी हिंदी में जहाँ 'घोड़ो' होता है, वहाँ मारवाड़ी में भी 'घोड़ो' रूप ही होगा, किंतु बहुवचन में 'घोड़न' के स्थान पर 'घोड़ाँ' रूप हो जायगा।

कुछ विशेषण-शब्द गुजराती से तथा कुछ पश्चिमी हिंदी से अवश्य मिलते हैं, किंतु इनके कुछ स्वतत्र विशेषण भी हैं, जैसे लीला छय, ठढा टीप, लाल भक, मीठा अमरत, खारो जरे, सफेद भक आदि।

प्रायः अव्यय-शब्दों का विशेष रूप है, जैसे अठे (अत्र), वठे (तत्र), जठे (यत्र), कठे (कुत्र), जदी (यदा), तदी (तदा)।

'इस' के लिये 'इण', 'उस' के लिये 'उण' आदि का प्रयाग सामान्यतया होता है। पूर्वकालिक क्रियाओं में भी ये लोग 'ने' विभक्ति लगाकर पूर्वकालिक क्रियाएँ बनाते हैं, जैसे खायने, पीयने, सोयने अर्थात् खाकर, पीकर, सोकर आदि।

यह तो सामान्यतया वर्तमान प्रयुक्त भाषा के रूप का कुछ संक्षिप्त दिग्दर्शन हुआ। मारवाड़ी-भाषा का नादात्मक विश्लेषण भी कुछ कर देना यहाँ अनुचित न होगा।

(१) मारवाड़ी-भाषा में प्रायः हिंदी के 'स' का 'ह', 'च' का 'स' और कहीं-कहीं 'स' का 'च' और 'छ' का 'स'-सा उच्चारण होता है, जैसे साग का हाग, संगीत का चंगीत और चश्मा का ससमा आदि।

(२) टवर्ग का बाहुल्य है। न का 'ण' प्रयोग भी अधिकतर होता है, जैसे स्टेशन का 'ठेशण' आदि प्रयोग।

(३) जहाँ 'स' के स्थान पर उच्चारण करना होगा, प्रायः बंगालियों की भाँति 'श' ही होगा।

(४) ओकारांत तथा दीर्घ-पदांत शब्द ही अधिक मिलेंगे।

इसके सिवा कुछ और छोटी-छोटी बातें हैं, जो मारवाड़ी-भाषा की विशेषताएँ हैं, फिर भी हैं बहुत सूक्ष्म। उपर्युक्त बातें उस वर्तमान मारवाड़ी-भाषा की हैं, जो सर्व-साधारण जनता में प्रयुक्त होती है, और जो यहाँ के लिये स्टैंडर्ड मानी जानी चाहिए।

मारवाड़ी-भाषा बहिरंग भाषाओं की श्रेणी की भाषा की भूमि पर अंतरंग भाषा-क्षेत्र का प्रभाव होने से बनी है, अतः अंतरंग भाषाओं के दर्शन के साथ-साथ बहुत-सी बातें बहिरंग भाषाओं की अब भी अपने में रखती है। मारवाड़ी-भाषा में कर्मणि प्रयोग खूब पश्चिमी हिंदी की भाँति मिलता है, किंतु साथ ही ए, ऐ आदि के उच्चारण कुछ पृथक् रीति से होते हैं।

इस प्रकार मारवाड़ी-भाषा गुजराती और पश्चिमी हिंदी के बीच की शृंखला की भाषा है। इसके संबंध में, आशा है, इन थोड़ी-सी बातों के प्रकाश से काफ़ी परिचय प्राप्त हो जायगा। शिक्षा-विभाग को इस ओर अग्रसर होना चाहिए।

श्रीभागवत शुक्ल 'पाथोद'
(साहित्यरत्न, आयुर्वेद-शास्त्री)

शारीरिक संपत्ति के न रहने पर आर्थिक संपत्ति नहीं प्राप्त हो सकती।
अगर किसी भी प्रकार के रोग से निर्बलता आई हुई हो, तो अवश्य
"आतंक-निग्रह गोलियों" का सेवन करें
क़ीमत—३२ गोलियों की एक डिब्बी का १) एक रुपया
विशेष हाल जानने के लिये सूचीपत्र देखें।
आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड को०, चौक

चतुर्थ सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

३००) का पुरस्कार लीजिए !

१७५) शुद्ध पूर्ति पर !!

१२५) न्यूनतम अशुद्धियों पर !!!

नियम—(१) पहेली-नं० ४ की पूर्ति करनेवालों को प्रथम पारितोषिक—संपूर्णतया शुद्ध पूर्ति पर १७५)। द्वितीय पारितोषिक—न्यूनतम अशुद्धियों पर १२५)। जो पूर्ति बंद करके रख दी गई है, उससे जो पूर्ति मिलेगी, वही सही मानी जायगी।

(२) पहेली के रिक्त कोष्ठों में ऐसे अक्षर लिखने चाहिए, जिनसे 'निर्दिष्ट शब्द' बन जाय। उसका संकेत अंक-परिचय में दिया गया है। प्रत्येक शब्द उस घर से आरंभ होता है, जिस पर कोई-न-कोई अंक लगा हुआ है, और इस चिह्न (■) के पहले समाप्त होता है। अंक-परिचय में ऊपर से नीचे और बाएँ से दाहनी ओर पढ़े जानेवाले शब्दों के अंक अलग-अलग कर दिए गए हैं।

(३) प्रत्येक वर्ग की पूर्ति स्याही से की जाय। पेंसिल से की गई पूर्तियाँ स्वीकार न की जायँगी। अक्षर सुंदर, सुडौल और छापे के सदृश स्पष्ट लिखने चाहिए। जो अक्षर पढ़ा न जा सकेगा, अथवा बिगाड़कर या काटकर दूसरी बार लिखा गया होगा, वह अशुद्ध माना जायगा।

(४) प्रतियोगिता में शामिल होने के लिये जो फ़ीस ।।) वर्ग के ऊपर छपी है, देनी होगी। फ़ीस टिकटों या मनीऑर्डर द्वारा या सुधा-पहेली-प्रतियोगिता के प्रवेश-शुल्क-पत्र द्वारा भेजी जा सकती है। इन प्रवेश-शुल्क-पत्रों की किताबें हमारे कार्यालय से २) में मँगाई जा सकती हैं। २) की किताब में ४ आठ आने मूल्य के पत्र बँधे हैं। एक ही कुटुंब के अनेक व्यक्ति, जिनका पता-ठिकाना भी एक ही हो, एक ही मनीऑर्डर द्वारा अपनी-अपनी फ़ीस भेज सकते हैं, और उनकी वर्ग-पूर्तियाँ और टिकट भी एक ही लिफ़ाफ़े या पैकेट में भेजे जा सकते हैं। टिकट, मनीऑर्डर और वर्ग-पूर्तियाँ "मैनेजर सुधा, पहेली-प्रतियोगिता-विभाग, लखनऊ" के पते से आनी चाहिए।

(५) लिफ़ाफ़े में वर्ग-पूर्ति के साथ मनीऑर्डर की रसीद या प्रवेश-शुल्क-पत्र नत्थी होकर आना अनिवार्य है। रसीद या प्रवेश-शुल्क-पत्र न होने पर वर्ग-पूर्ति की जाँच न की जायगी। लिफ़ाफ़े की दूसरी ओर अर्थात् पीठ पर मनीऑर्डर भेजनेवाले का नाम और पूर्ति-संख्या लिखनी आवश्यक है। पूर्ति यथासंभव रजिस्ट्री से भेजनी चाहिए। सादे लिफ़ाफ़ों में भेजनेवाले व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी पर ऐसा कर सकते हैं।

(६) किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह जितनी पूर्तियाँ भेजना चाहे, भेजे। किंतु प्रत्येक वर्ग-पूर्ति मार्च की 'सुधा' में छपे हुए फ़ार्म पर होनी चाहिए। जो जनवरी या फ़रवरी की सुधा के फ़ार्म पर भेज चुके हैं, वह भी ठीक है। इस प्रतियोगिता में एक व्यक्ति को केवल एक ही इनाम मिल सकता है। वर्ग-पूर्ति की फ़ीस किसी भी दशा में नहीं लौटाई जायगी।

(७) जो वर्ग-पूर्ति १० मार्च तक नहीं पहुँचेगी, जाँच में नहीं शामिल की जायगी। स्थानीय पूर्तियाँ १० मार्च को ६ बजे तक बक्स में पड़ जानी चाहिए, और दूर के स्थानों से भेजनेवालों की पूर्तियाँ २ दिन बाद तक ली जायँगी। मैनेजर 'सुधा' का निर्णय सब प्रकार से और प्रत्येक दशा में मान्य होगा। शुद्ध वर्ग-पूर्ति की प्रतिलिपि एप्रिल-मास की 'सुधा' में प्रकाशित होगी। इसे पूर्ति करनेवाले सज्जन मँगाकर अपनी वर्ग-पूर्ति की शुद्धता-अशुद्धता जाँच लें।

वर्ग-नं० ४ **सुधा-पहेली** फ़ीस ।।)

१ ल	ख	न	२ ऊ	■	३ ध्व	नी	■	४	५ प
ट	■	■	६ स	मा	ज	■	■	७ न	ल
८ क	९ म	जो	र	■	१० स	११ र	स	■	■
■	१२ ख	र	■	१३ र	ज	नी	श्व	र	■
१४	म	■	१५ गा	मा	■	प	■	■	१६ सु
■	ल	■	त	■	१७ ला	■	१८ प	१९ सु	पा
२० ब	■	२१ हँ	■	२२ क	ल	२३ क	■	शी	■
च	■	२४ स	गी	■	२५ ना	म	■	२६ ल	२७ गा
२८ प	च	ती	■	२९ ज	ग	म	गा	■	य
३० न	दे	■	३१ का	य	र	■	३२ सा	वि	त्री

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)

मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा ।

नाम

पूर्ति-नं० पता

वर्ग-नं० ४ **सुधा-पहेली** फ़ीस

१ ल	ख	न	२ ऊ	३	ी	■	४	
■	■	६	मा		■	■	७ न	
८ क	९	जो	र	■	१० स	११ र		■
■	१२ ख		■	१३	ज	ी		र
१४	म	■	१५ गा	ा	■		■	■
■		■		■	१७ ला	■	१८	१९ सु
२० ब	■	२१ हँ	■	२२ क		२३ क	■	ी
	■	२४	गी	■	२५ ा		■	२६ ल
२८ प		ती	■	२९ ज		म		■
३० न		■	३१ का		र	■	३२ सा	ि

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)

मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा ।

नाम

पूर्ति-नं० पता

१ ल	ख	न	२ ऊ	■	३	ी	■	४	५ प
	■	■	६	मा		■	■	७ न	
८ क	९	जो	र	■	१० स	११ र		■	■
■	१२ ख		■	१३	ज	ी		र	■
१४	म	■	१५ गा	ा	■		■	■	१६ सु
■		■		■	१७ ला	■	१८	१९ सु	ा
२० ब	■	२१ हँ	■	२२ क		२३ क	■	ी	■
	■	२४	गी	■	२५ ा		■	२६ ल	२७ ा
२८ प		ती	■	२९ ज		म		■	
३० न		■	३१ का		र	■	३२ सा	ि	ी

१ ल	ख	न	२ ऊ	■	३	ी	■
	■	■	६	मा		■	■
८ क	९	जो	र	■	१० स	११ र	
■	१२ ख		■	१३	ज	ी	
१४	म	■	१५ गा	ा	■		■
■		■		■	१७ ला	■	१८
२० ब	■	२१ हँ	■	२२ क		२३ क	■
	■	२४	गी	■	२५ ा		■
२८ प		ती	■	२९ ज		म	
३० न		■	३१ का		र	■	३२ सा

अपनी याददाश्त के लिये वर्ग-नं० ४ की पूर्तियों की प्रतिलिपि यहाँ कर लीजिए, और निर्णय प्रकाशित होने तक अपने पास रखिए ।

वर्ग-नं० ४ का अंक-परिचय

बाएँ से दाहने

१. इस शहर के ख़रबूज़े मशहूर हैं ।
३. ऐसे मनुष्यों की सब ख़ुशामद करते हैं ।
४. कामना-पूर्ति के लिये किया जाता है ।
६. इसके बंधनों के कारण कभी-कभी मृत्यु की शरण लेनी पड़ती है ।
७. इससे प्राणियों को पानी प्राप्त होता है । ८. दुर्बल ।
१०. ऐसी कविता सब पसंद करते हैं ।
१२. इसकी बोली सभी नापसंद करते हैं । १३. चंद्रमा ।
१४. इसके आक्रमण से बचना असंभव है ।
१५. विश्वविजयी पहलवान । १८. पृथ्वी ।

ऊपर से नीचे

१. वृद्ध अवस्था में प्रायः कमर...ही जाती है ।
२. जो उपजाऊ न हो ।
३. यहाँ पर सज-धज बिगड़ गई है ।
४. निज...को कौन प्यार नहीं करता ?
५. बुद्धिमान् पुरुष ही इसका सदुपयोग करते हैं ।
९. एक कपड़ा, जो अंदर से रूखा और कड़ा, पर बाहर से मुलायम और चिकना होता है ।
११. यहाँ पनीर उलट गया है ।
१३. विष्णु की स्त्री ।
१५. मनोहर...सभी को मोहता है ।

ी, अब हिंदी-प्रेमियों को ।

नोट

नवंबर की सुधा हमने ठीक वक़्त पर निकाल दी थी, और आशा थी, सुधा आगे ठीक समय पर निकलती रहेगी । किंतु गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस और गंगा-पुस्तकमाला-संबंधी विविध कार्यों में हमारे व्यस्त रहने तथा अनेक सुप्रसिद्ध कवियों के साथ काँकरोली-यात्रा को चले जाने के कारण सुधा फिर लेट हो गई ! प्रवास से लौटने पर हमने जनवरी और फ़रवरी की संख्याएँ एक ही महीने में निकाल दीं । अब मार्च और एप्रिल की संख्याएँ भी शीघ्र निकालने के लिये प्रयत्नशील हैं । हमें आशा न थी कि संपादन-भार अकेले ही सँभालते हुए हम मार्च की सुधा भी जल्द निकाल सकेंगे । पर यह १५ मार्च को ही निकल रही है । अतएव मार्च की संख्या जो सज्जन मोल लेंगे, उन्हें भी मौक़ा देने की ग़रज़ से हमने पहेली की पूर्ति करके भेजने की अंतिम ता० ३१ मार्च कर दी है । प्रेमी प्रतियोगी कृपया फ़रवरी या मार्च किसी भी संख्या के छपे फ़ार्म पर पहेली की पूर्ति करके, इस मास के अंत तक, भेजें, और अपने इष्ट-मित्रों से भिजवाएँ ।

दुलारेलाल भार्गव

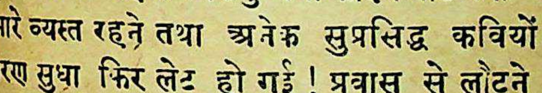

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा ।

नाम
पूर्ति-नं०
पता

लकीर पर ही काटिए

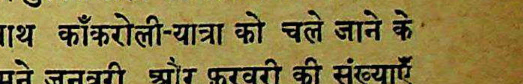

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा ।

नाम
पूर्ति-नं०
पता

लकीर पर ही काटिए

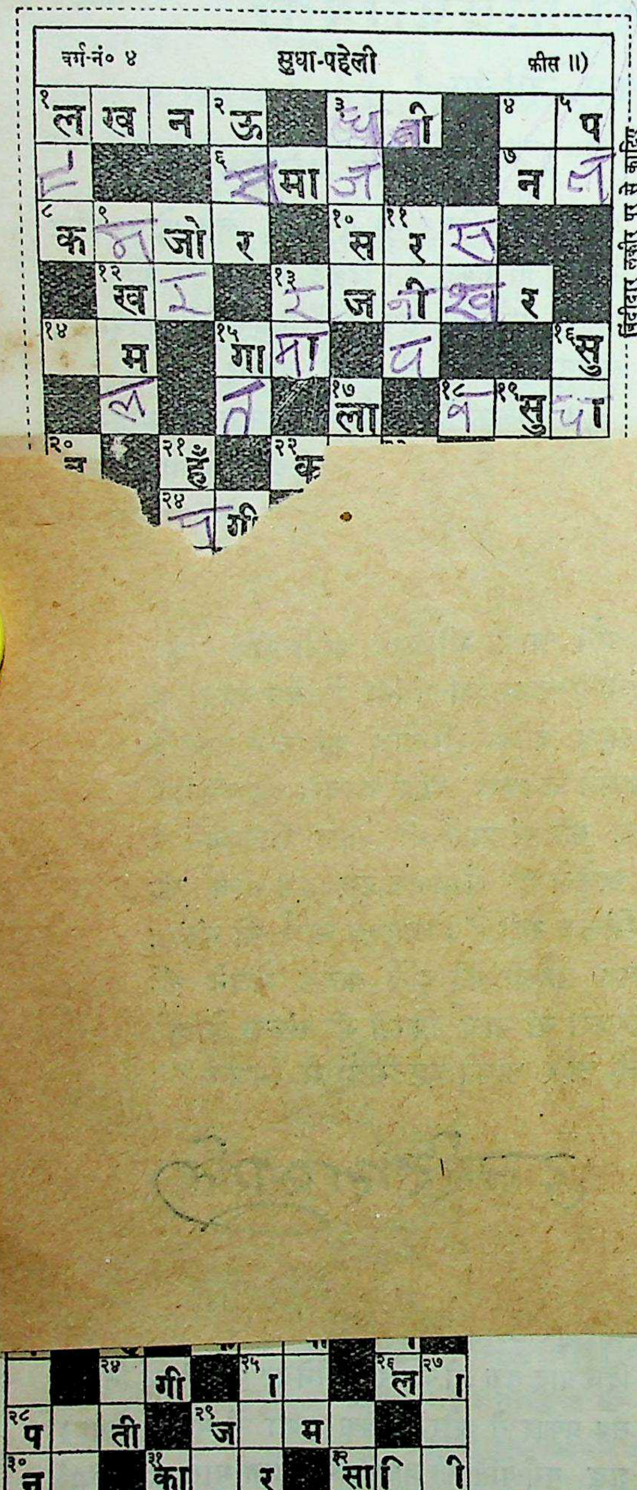
वर्ग-नं० ४
सुधा-पहेली
फ़ीस ।।)
बिंदीदार लकीर पर से काटिए

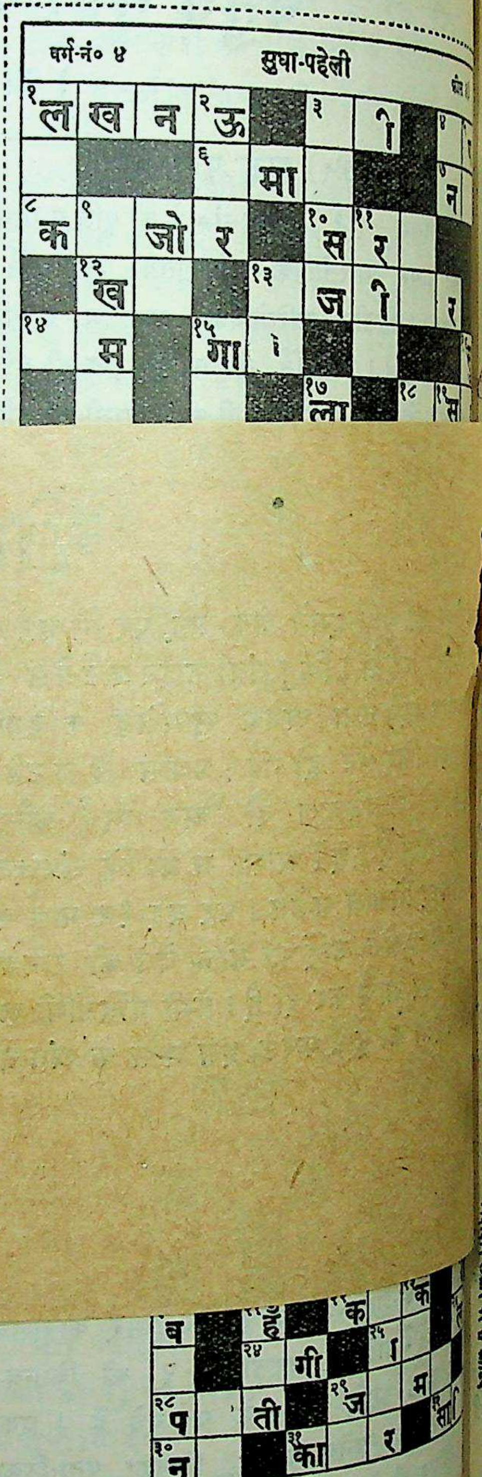
वर्ग-नं० ४
सुधा-पहेली

अपनी याददाश्त के लिये वर्ग-नं० ४ की पूर्तियों की प्रतिलिपि यहाँ कर लीजिए, और निर्णय प्रकाशित होने तक अपने पास रखिए।

वर्ग-नं० ४ का अंक-परिचय

बाएँ से दाहने

१. इस शहर के खरबूजे मशहूर हैं।

३. ऐसे मनुष्यों की सब खुशामद करते हैं।

४. कामना-पूर्ति के लिये किया जाता है।

६. इसके बंधनों के कारण कभी-कभी मृत्यु की शरण लेनी पड़ती है।

७. इससे प्राणियों को पानी प्राप्त होता है। ८. दुर्बल।

१०. ऐसी कविता सब पसंद करते हैं।

१२. इसकी बोली सभी नापसंद करते हैं। १३. चंद्रमा।

१४. इसके आक्रमण से बचना असंभव है।

१५. विश्वविजयी पहलवान। १८. पृथ्वी।

२२. दोनो ओर कलक ही है।

२४. ...मा ही पुत्री से उचित प्रेम कर सकती है।

२५. पति की म।

२६. ऐसा चाँटा 'लगा' कि 'गाल' उलट गया।

२८. गरिष्ठ चीजें देर में ही...हैं। २९. चमकीला।

३०. इसका रंग नीला होता है। ३१. डरपोक।

३२. महाकाल को भी हरानेवाली दृढ़प्रतिज्ञ सती।

ऊपर से नीचे

१. वृद्ध अवस्था में प्रायः कमर...ही जाती है।

२. जो उपजाऊ न हो।

३. यहाँ पर सज-धज बिगड़ गई है।

४. निज...को कौन प्यार नहीं करता?

५. बुद्धिमान् पुरुष ही इसका सदुपयोग करते हैं।

९. एक कपड़ा, जो अंदर से रूखा और कड़ा, पर बाहर से मुलायम और चिकना होता है।

११. यहाँ पनीर उलट गया है।

१३. विष्णु की स्त्री।

१५. मनोहर...सभी को मोहता है।

१६. पहले देवताओं को प्यारी थी, अब हिंदी-प्रेमियों को।

१७. एक प्रसिद्ध सागर।

१९. सास...बहू को चाहती है।

२०. मनुष्य की सबसे अच्छी अवस्था।

२१. ...सूरत सभी को भाती है।

२३. शपथ।

२७. एक मंत्र। २९. जीत।

वर्ग-नं० ४ सुधा-पहेली फ़ीस ।।)

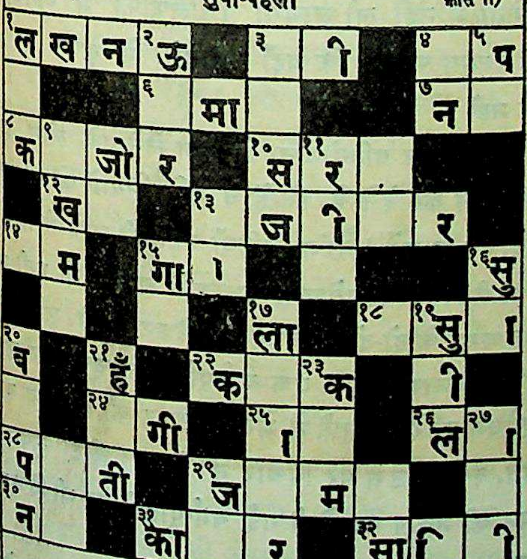

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।

नाम

पूर्ति-नं०

पता

निर्दिष्ट लकीर पर से काटिए

वर्ग-नं० ४ सुधा-पहेली फ़ीस ।।)

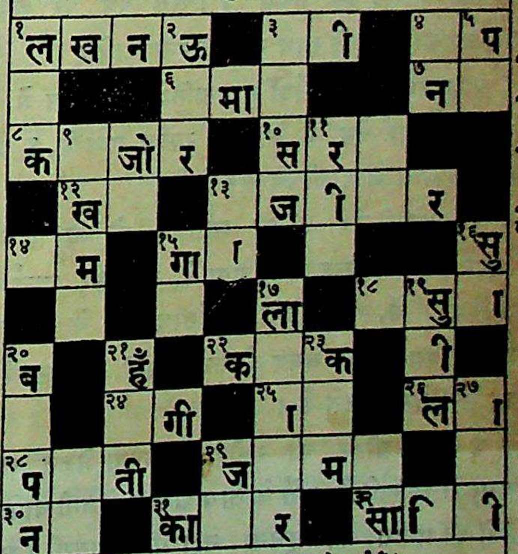

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।

नाम

पूर्ति-नं०

पता

निर्दिष्ट लकीर पर से काटिए

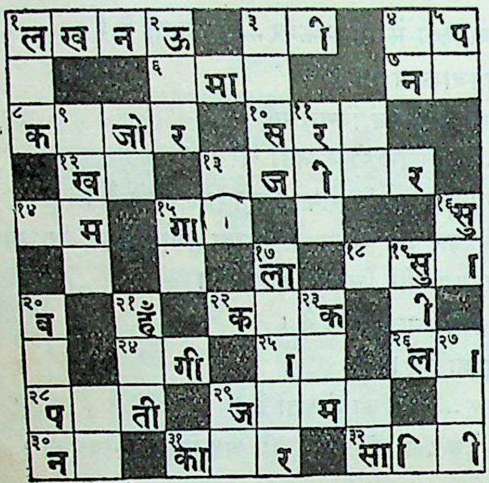

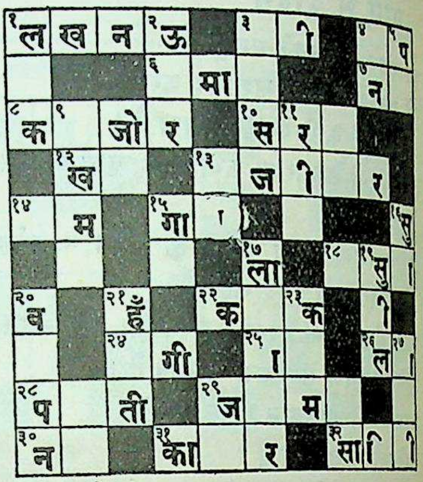

अपनी याददाश्त के लिये वर्ग-नं० ४ की पूर्तियों की प्रतिलिपि यहाँ कर लीजिए,
और निर्णय प्रकाशित होने तक अपने पास रखिए ।

आवश्यक सूचनाएँ

(१) प्रतियोगियों की सुविधा के लिये हमने प्रवेश-शुल्क-पत्र छाप दिए हैं, जो हमारे कार्यालय से नक़द दाम देकर खरीदे जा सकते हैं । उस पत्र पर अपना नाम लिखकर पूर्ति के साथ नत्थी करना चाहिए ।

(२) स्थानीय पूर्तियाँ सुधा-प्रतियोगिता-बक्स में, जो गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस में, सामने, रक्खा गया है, ६ और ६ बजे के बीच में डाली जा सकती हैं ।

(३) पहेली-नं० ४ का नतीजा, जो बंद लिफाफ़े में मुहर लगाकर रख दिया गया है, ता० ११ मार्च को, सुधा-विभाग में, ११ बजे, सर्वसाधारण के सामने, खोला जायगा । उस समय जो सज्जन चाहें, स्वयं उपस्थित होकर उसे देख सकते हैं ।

(४) मनीऑर्डर की रसीद, जो रुपया भेजते समय डाकघर से मिलती है, पूर्ति के साथ अवश्य भेजनी चाहिए । पूर्तियों की प्राप्ति की सूचना नहीं भेजी जायगी । मनीऑर्डर, प्रवेश-शुल्क-पत्र या डाकघर के दो पैसे के टिकटों द्वारा ही प्रतियोगिता-फ़ीस ली जायगी । पतली निब से साफ़ बनाकर छपे वर्ग पर ही पूर्ति भेजनी चाहिए । वर्ग को काटकर जो कागज़ पर चिपका देते हैं, अलग से भी लिखकर भेजते हैं, ऐसी पूर्तियाँ योगिता में नहीं ली जायँगी । लिफ़ाफ़ों में पूर्ति ऐसे रखना चाहिए कि यहाँ खोलने में कूपन फटें नहीं ।

(५) इस प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले लोग ऐसी भूलें कर देते हैं, जिन्हें वे यदि नियमों को देखें, तो न करें । बैरंग चिट्ठियाँ नहीं ली जायँगी । के मनीऑर्डर या प्रवेश-शुल्क-पत्र के बजाय जो इसी के डाकघर के दो-दो पैसेवाले १६ टिकट भेजेंगे, उनके पर भी विचार होगा । एक वर्ग-पूर्ति भेज चुकने पर संशोधन दूसरे लिफ़ाफ़े में भेजना टिकट का अपव्यय होगा, क्योंकि उस पर विचार न होगा । छोटे कूपन कूपन की नक़ल पर भेजी गई वर्ग-पूर्तियों पर भी विचार होगा ।

(६) पहेली के संबंध में हमें जो कुछ कहना है, उसे सुधा में छाप देंगे । पत्रों का हम पृथक् उत्तर न देंगे ।

सुदामा-चरित्र—रचयिता, कविवर श्रीनरोत्तमदासजी; संपादक, पं० ललिताप्रसादजी सुकुल एम्० ए०; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य - सम्मेलन, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या ४५; साइज़, डबल क्राउन १६पेजी; काग़ज़, छपाई-सफ़ाई अत्युत्तम: पुस्तक प्रकाशक से प्राप्य।

यह एक छोटा-सा काव्य-ग्रंथ है। इसमें सब मिलाकर छंदों की संख्या १२० है। इसके छंद अत्यंत ललित, रोचक तथा मानवीय भावनाओं के जीते-जागते चित्र हैं। किसी समय, और अब भी, न केवल युक्तप्रांत के कथावाचक ही सुदामा-चरित्र के छंदों को पढ़कर श्रोताओं का मन हर लेते हैं, प्रत्युत इसके कुछ छंद तो, अपनी भाव प्रवणता तथा मधुरता के कारण, अत्यंत आदर के साथ सभी कविता-प्रेमियों द्वारा गाए, पढ़े और सुने जाते हैं। इसमें ग़रीब ब्राह्मण सुदामा और द्वारकाधीश भगवान् कृष्ण की मैत्री का अपूर्व वर्णन है। इस वर्णन का आधार पौराणिक उपाख्यान है। पुस्तक आदि से अंत तक बहुत ही हृदयाकर्षक है। कविवर नरोत्तमदासजी ने अपनी कवित्वमयी प्रतिभा के द्वारा ब्राह्मणोचित आत्मसम्मान, संतोष, दरिद्रता की प्रताड़ना, पत्नी की प्रेरणा एवं सुदामा-कृष्ण के मिलन आदि का वर्णन करते हुए जिस करुणा और प्रेम का सजीव चित्र उपस्थित किया है, उसे देखकर कोई भी सहृदय व्यक्ति आनंदाश्रु बहाए बिना नहीं रह सकेगा।

संपादक महोदय ने सुदामा-चरित्र के आरंभ में अत्यंत उपयोगी एक छोटी सी भूमिका लिखकर तथा दुष्प्राप्य हस्त-लिखित प्रति एवं अन्य प्रेसों में मुद्रित पुस्तकों के द्वारा पाठ की शुद्धि करते हुए इस विशुद्ध एवं सुरभित काव्य-स्तवक को बड़े सुंदर रूप में हिंदी-साहित्य-मंदिर में लाकर रक्खा है। साथ ही आपने कठिन शब्दों का अर्थ लिखकर तथा आवश्यक स्थलों पर टिप्पणी देकर पुस्तक के महत्त्व को और भी बढ़ा दिया है। फलतः 'सुदामा-चरित्र'-जैसे प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ को इस मनोमुग्धकारी रूप में हिंदी संसार के समक्ष प्रस्तुत करने के कारण हम संपादक तथा प्रकाशक दोनो को ही हार्दिक धन्यवाद देते हैं!

गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि'
(साहित्याचार्य)

× × ×

फ़िजी-दिग्दर्शन—लेखक तथा प्रकाशक, पं० रामचंद्र शर्मा, पोस्ट मंडावर, ज़िला बिजनौर; मूल्य ।।)

हमारे स्कूलों में संसार का भूगोल पढ़ाया जाता है, हमें भूगोल का यथेष्ट ज्ञान मिलता है, हम टिंबक्टू और चिली का हाल जानते हैं, परंतु संसार के उन भागों के विषय में हमारा ध्यान नहीं दिलाया जाता, जहाँ हमारे भारतीय भाई बसे हुए हैं। लेखक महोदय कई वर्ष फ़िजी-द्वीप-पुंज में

रह चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक लिखकर आपने जो हिंदी-साहित्य की सेवा की है, वह सराहनीय है। शैली में कहने सुनने की बहुत जगह है, क्योंकि शर्माजी प्रचारक रहे हैं, लेखक नहीं। परंतु इससे पुस्तक के पथ-प्रदर्शक होने का महत्त्व नहीं घटता। आशा है, फ़िजी-दिग्दर्शन के पश्चात् केनिया, टैंगेनिका, नेटाल, ब्रिटिश गायना, मारीशस इत्यादि भू-भागों और उनमें बसे हुए भारतीयों की जीवन-चर्या पर पुस्तकें प्रकाशित होंगी। यही नहीं, हम यह भी चाहते हैं कि जैसे अँगरेज़-बालकों को भूगोल-शिक्षा के सिलसिले में अँगरेज़ी-साम्राज्य का ज्ञान कराया जाता है, वैसे ही हमारे बालकों को भी इस विषय की शिक्षा के सिलसिले में प्रवासी भारतीयों की जीवन-चर्या का ज्ञान कराया जाय।

× × ×

अन्वेषण की कहानियाँ—लेखक, श्रीमदनलाल जैन ; प्रकाशक, मैकमिलन ऐंड कंपनी; मूल्य १)

लेखक महोदय भूगोल के विद्वान् हैं। आपने भूगोल पर पुस्तकें भी लिखी हैं। भूगोल का ज्ञान हमें उन सैकड़ों-हज़ारों अन्वेषकों से मिला है, जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर खोज का काम किया। भूगोल का पाठक इनका ऋणी है, और इस ऋण से थोड़ा-बहुत वह यों ही मुक्त हो सकता है कि प्रतिनिधि अन्वेषकों की जीवन-कथा पढ़े, उसका प्रचार करे, और यदि हो सके, तो स्वयं अन्वेषण का कुछ कार्य करे। प्रस्तुत पुस्तक लेखक महोदय ने इसी ऋण से उऋण होने के लिये लिखी है। आशा है, बालकों में इस पुस्तक का यथेष्ट प्रचार होगा।

कालिदास कपूर

× × ×

वीर-गाथा—लेखक, श्रीसंतराम बी० ए०; प्रकाशक, शांतिनाथ बी० ए०, स्वाध्याय-सदन, मोहनलाल-रोड, लाहौर ; पृष्ठ-संख्या १६१; मूल्य १।)

हिंदुओं की दशा बड़ी दयनीय है। उनके अंदर दुर्बलता और दीनता ऐसी समा गई है कि अनेक प्रयत्न करने पर भी उन्नति के लक्षण नहीं दिखाई देते। उनमें मुर्दनी-सी छा गई है। इसका मुख्य कारण यह है कि वे अपनी संस्कृति को, अपने इतिहास को तथा अपने गौरव को भूल बैठे हैं। किसी जाति के मिटने के ये पूर्ण लक्षण हैं। हिंदू वीर-पूजा के महत्त्व को भूलते जा रहे हैं। उनके इस दोष को दूर करने के लिये श्रीसंतरामजी ने वीर-गाथा लिखी है। इसके अंदर वीर-बैरागी तथा वीर शिवाजी के चरित्र बड़े प्रभाव-पूर्ण हैं। बैरागी की वीरता तो वास्तव में जोश पैदा करनेवाली है। प्रत्येक नवयुवक को इस पुस्तक में दिए हुए चरित्रों का अध्ययन करना चाहिए, और स्कूलों में विद्यार्थियों को तो अवश्य इनसे शिक्षा-लाभ करना चाहिए। लिखने की शैली भी ऐसी है कि उनको साहित्य-ज्ञान में भी सहायता मिलेगी। पर खेद है, आजकल के शिक्षा-विभाग के अधिकारी कहेंगे कि ये जातीय वैमनस्य फैलानेवाले हैं।

पुस्तक के अंदर लेखक ने हिंदुओं के प्राचीन गौरव का संक्षिप्त विवरण भी दिया है। यह स्कूलों में अपठित ग्रंथों की भाँति प्रयुक्त की जा सकती है।

× × ×

अभिषेक-नाटक—अनुवादक, श्रीप्रेमनिधि शास्त्री ; प्रकाशक, स्वाध्याय-सदन, मोहनलाल-रोड, लाहौर ; पृष्ठ-संख्या ६२ ; मूल्य ।।।)

प्रस्तुत ग्रंथ संस्कृत-भाषा के प्रसिद्ध नाटककार भास कवि-कृत अभिषेक-नाटक का हिंदी-अनुवाद है। एक प्राचीन ग्रंथ का अनुवाद है, यही इसका महत्त्व है। माना कि हिंदी में श्रेष्ठ नाटकों की संख्या अभी कम है, पर 'अभिषेक'-ऐसे नाटकों का समय अब नहीं है। संस्कृत में उसकी जो कुछ सरसता है भी, वह हिंदी-अनुवाद में रक्षित नहीं है

सकी। भाषा की सजीवता नष्ट हो गई है। नाटकीय दृष्टि से उसमें यत्र-तत्र त्रुटियाँ हैं।

नाटक की भूमिका अच्छे ढंग से लिखी गई है। लेखक ने उसमें नाट्य-शास्त्र का विवरण तथा कुछ शब्दों की व्याख्याएँ भी दे दी हैं।

श्री०

× × ×

ज़ेबुन्निसा के आँसू—लेखक, श्रीओम्प्रकाश भार्गव तथा श्रीइश्वरीप्रसाद माथुर ; प्रकाशक, श्रीमहेंद्र, सचालक साहित्यरत्न-भंडार, आगरा ; साइज़ छोटा ; पृष्ठ-संख्या १२४ मूल्य १)

ज़ेबुन्निसा अरसिक औरंगज़ेब के महल की रसीली बुलबुल थी। कौमार्य के एकांत व्रत की अनुयायिनी यह राजकुमारी वास्तव में प्रेम और कविता की जाग्रत् मूर्ति थी। उसका जीवन ही काव्यमय था, किंतु औरंगज़ेब की कठोर ताड़ना के कारण इस कुसुम-कली का पूर्ण विकास न हो पाया था। तो भी जो कुछ उसने कहा और लिखा, वह फ़ारसी-काव्य-कला की एक अमूल्य निधि है। इधर-उधर बिखरे हुए चुटकुलों में अभी तक इस प्रवीण कवयित्री की सूक्तियों की उपलब्धि होती थी। कोई भी संग्रह उनका न था। ग्वालियर के कवि-हृदय लेखक-द्वय को धन्यवाद है कि उन्होंने इन सूक्तियों का संग्रह पुस्तकाकार हमारे सामने रक्खा है। फ़ारसी की सूक्तियों के लेखक-कृत कवितावद्ध अनुवाद ने पुस्तक में चार चाँद लगा दिए हैं। ज़ेबुन्निसा की जीवनी से, जो पुस्तक के प्रारंभ में ही दे दी गई है, किंतु जो ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक नहीं मालूम होती, कवयित्री की कविताओं को एक उपयुक्त वातावरण और आधार-भूमि प्राप्त हो गई है। उसके कारण कविता पढ़ने में एक वैयक्तिक अनुभूति सी होने लगती है। ऐसी सुंदर पुस्तिका के लिये दोनो ही लेखकों को बधाई है!

सुधींद्र वर्मा (एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

LECIVIN
RECUPERATIVE
TONIC

लेसीवीन

एक अत्यंत गुणकारी, उत्तेजक, पुष्टिकारक और खोई हुई शक्ति को पुनः वापस लानेवाली

टॉनिक

इसमें जौ, लेसीथीन और चिरायता के सत्त और विटामिन प्राप्य हैं।

बंगाल केमिकल—कलकत्ता

हमारी डाक
संपादक सुधा
लखनऊ

समालोचना के लिये पुस्तक की दो-दो प्रतियाँ

[नीचे का पत्र-व्यवहार प्रकाशन के लिये देते हुए मुझे कुछ और कहना है। हाल में एक जगह मुझे एक लेखक का पत्र देखने को मिला था। वह अत्यंत रुग्ण हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक की दो-दो प्रतियाँ समालोचना के लिये नियमानुसार भिजवाईं, फिर भी कई जगह समालोचनाएँ नहीं निकलीं! इस बात से उन्हें चोट पहुँची है। उनकी चोट से मैं भी पीड़ित हुए विना न रह सका।

मैं मानता हूँ, सब पुस्तकों की समालोचनाएँ पत्रों में नहीं निकल सकतीं, फिर सबके लिये एक-सा नियम क्यों लागू किया जाय कि समालोचना के लिये पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ ही आनी चाहिए? इसमें प्रच्छन्न रूप से लेखकों को चुनौती है कि हमें तुम्हारी रचना के लिये कोई उत्सुकता नहीं, तुम चाहते हो, तो दो प्रतियाँ भेजो, तभी समालोचना होगी। यह अपमान-जनक है। पत्र-पत्रिकाओं का गौरव इस बात में भी है कि वे स्वतः प्रेरित होकर लेखक से उसकी कोई महत्त्व-पूर्ण कृति समालोचनार्थ चाहें। वे ऐसा करें, तो इसमें उनके संकुचित होने का कोई कारण नहीं दिखाई देता। उनकी भा के लेखक के सम्मान में उनका भी सम्मा है। हम चाहते हैं, हमारे साहित्य का सम्मा बढ़े, तब घर से ही हमें उस उदारता का प्रारं करना चाहिए। ऐसी बातें तुच्छ नहीं होतीं। इनकी तह में एक व्यापक मनोवृत्ति देखी जा सकती है

पत्र-पत्रिकाओं के अधिकारियों से मैं प्रार्थ करना चाहता हूँ कि वे समालोचना के लिये ए ही प्रति चाहने का नियम रक्खें। यदि कारण-व किसी पुस्तक की दो प्रतियों की आवश्यकता पड़े, तो पत्र लिखकर दुबारा मँगाई जा सक है। पर इस पत्र की भाषा धमकी की न हो चाहिए। आशा है, संपादकजन इस विषय उदारता पूर्वक अपने विचार प्रकट करेंगे।]

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग से साहित्य श्रीरामकुमार वर्मा का यह पत्र मुझे मिला है—

“ ‘नारी’-नामक पुस्तक प्राप्त हुई। धन्यवा

कृपया एक प्रति और भेज दें, जिससे सम्मेलन-पत्रिका में समालोचना हो सके। केवल एक प्रति आने से प्राप्ति-स्वीकार कर दी जायगी, अतः समालोचना के लिये एक प्रति और भेजें।"

उत्तर

सौर तिथि ९। ११। ९४ का ३७९-संख्यक आपका पत्र मिला। धन्यवाद। उत्तर में निवेदन है कि 'नारी' की एक और प्रति अपनी ओर से समालोचनार्थ भेजने में मैं असमर्थ हूँ। "केवल एक प्रति आने से प्राप्ति स्वीकार कर दी जावेगी"—आपके इस वाक्य से ध्वनित होता है कि किसी पुस्तक की यथोचित समालोचना प्रकाशित करने में स्वयं संपादक का कोई कर्तव्य निहित नहीं है। लेखक का 'स्वार्थ' पूरा करने के ही लिये समालोचनाएँ प्रकाशित होती हैं। मैं इसका विरोध करता हूँ।

मैं समझ नहीं पाता कि हिंदी-पत्रों में समालोचना के लिये दो प्रतियाँ चाही जाने का रहस्य क्या है। समालोचना कोरा विज्ञापन नहीं है। किसी पत्र में वह इसलिये नहीं होनी चाहिए कि उसके बहाने संपादक की निजी लाइब्रेरी भर जाय। ऐसी भावना के साथ जो समालोचनाएँ प्रकाशित होंगी, उनका मूल्य पत्र में छपे हुए विज्ञापन से अधिक न होगा।

खेद है, लेखक लोग भी अधिकांश हिंदी-समालोचना का मूल्य विज्ञापन ही समझते हैं। परंतु सम्मेलन-पत्रिका की समालोचना तो ऊँचे स्तर से की गई होनी चाहिए। लेखक को उपकृत करने का ही भाव उसमें हो, तो यह हमारे लिये लज्जा की बात होगी। अन्य लोग समालोचना के ऊपर किसी तरह का 'सुपर टैक्स' लगाते हैं, तो क्या हमारा साहित्य-सम्मेलन भी इसे उचित समझता है?

आपके पत्र में एक ओर 'अर्थ-विभाग' छपा हुआ है। मैं चाहता हूँ, हिंदी में समालोचना का कार्य अनजान में भी 'अर्थ-विभाग' से संबंधित न हो। इसी से यह पत्र-व्यवहार प्रकाशन के लिये दे रहा हूँ।

चिरगाँव
फाल्गुन-कृष्ण ११।१९९४ } सियारामशरण गुप्त

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।॥-)
२५ ,, ,, ,, ५≡) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

नए फूल

इस शीर्षक में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'गल्प-संसार-माला' (भाग १ —गल्प)—लेखक, १५ ; मूल्य ॥)

(२) 'नारी' (उपन्यास)—लेखक, श्रीसियारामशरण गुप्त ; मूल्य १॥)

(३) 'मंगल घट' (काव्य) - लेखक, श्रीमैथिलीशरण गुप्त ; मूल्य २)

(४) 'शिकार' (विविध)—लेखक, श्रीराजा पंचमसिंह ; मूल्य ॥)

(५) 'प्रेम-समाधि' (कहानी)—लेखक, डॉ० घनीराम 'प्रेम' ; मूल्य २)

(६) 'बुद्धदेव' (नाटक) - लेखक, स्व० श्रीविश्वंभरसहाय 'व्याकुल' ; मूल्य १॥)

(७) 'आधुनिक हिंदी - नाटक - साहि (साहित्य)—लेखक, श्रीवेदव्यास एम्० ए एल्-एल्० बी०; मूल्य १=)

(८) 'इनकमटैक्स - गाइड' (विविध)—लेखक, श्रीबैजनाथप्रसाद अग्रवाल और श्रीपरमेश्व लाल गुप्त ; मूल्य १)

(९) 'समाज के अंगारे' (विविध)—लेखिका, श्रीमती सरोजिनीदेवी श्रीवास्त मूल्य ।=)

(१०) 'हिंदी-शार्टहैंड' (पहला भाग - नव कोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत एल्० पी० मूल्य ॥-)

(११) 'हिंदी-शार्टहैंड' (दूसरा भाग—न कोपयोगी) - लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य १)

(१२) 'हिंदी-शार्टहैंड' (तीसरा भाग— कोपयोगी) लेखक, उपर्युक्त; मूल्य २)

स्त्रियों के लिये अपूर्व उपहार !

लवली

जीर्ण प्रदर, प्रसूत, हिस्टीरिया, गर्भाशय के दोष, मासिक धर्म की ख़राबी, ख़ून की कमी, पेट के रोग तथा सभी प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करके नया रूप, नया रंग एवं नया जीवन प्रदान करती है। ३० गोलियों की शीशी का मूल्य २॥) है। डाक-ख़र्च पृथक्

नोट—स्त्रियों के प्रत्येक रोग की औषध मिलने तथा इलाज कराने का पता—

श्रीइंदिरादेवी शास्त्रिणी, वैद्या, ए० एम्०
नारी-आरोग्य-मंदिर, गणेशगंज, लखनऊ

विश्वासार्थ सच्ची प्रतिज्ञा

जो सज्जन ईश्वर-साक्षी-पूर्वक यह लिखेंगे कि आपकी औषधि ने कुछ भी गुण नहीं किया, उन्हें दूसरी औषधि बिना मूल्य भेजेंगे।

सुंदरी-सुखजीवन

"सुंदरी-सुखजीवन" के नियम-पूर्वक सेवन करने से सब तरह के प्रदर, सोमरोग यानी सफ़ेद या सुर्ख़ी लिए हुए बदबूदार पानी का निकलते रहना, धोती पर हलका रंग-बिरंगा धब्बा आना, बिना समय जल्दी-जल्दी माहवारी का-सा ढंग होना या ज़्यादा दिन तक जारी रहना, आलस्य, मंदाग्नि, शरीर निर्बल हो जाना, चक्कर आना, इन्हीं कारणों से गर्भ न ठहरना आदि स्त्री-रोग नाश होते हैं, और शरीर सुंदर तथा बलवान हो जाता है। ११ दिन की दवा का मूल्य १।), डाक-व्यय ।।)

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

स्वादिष्ट आसव के रूप में तैयार की हुई

बालरक्षा घुटी

बालकों के ज्वर, अजीर्ण, दस्त, पेट के कीड़े, खाँसी, पसली डब्बी, निर्बलता और दाँत निकलने के विकारों का नाश कर उन्हें पुष्ट बनाने के लिये ख़ूब प्रसिद्ध है। मूल्य फी शीशी ।।), डाक-व्यय ।/), दर्जन का ४।।/), रेल-महसूल माफ़। हजारों एजेंट बन चुके हैं, आप भी लाभ उठावें। एजेंसी के नियम और रंगीन, सचित्र कैलेंडर मुफ्त भेज रहे हैं।

कामकल्याण

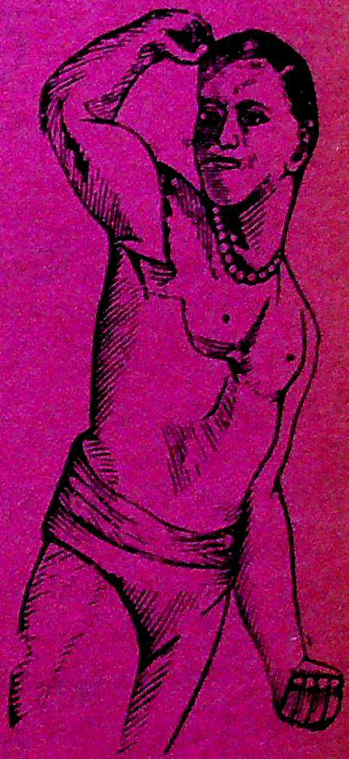

वैद्यकशास्त्र की विधि से शुद्ध शिलाजीत, सुवर्ण बंग, कस्तूरी, मोती-भस्म, असगंध, बिधारा, ब्राह्मी आदि बल-वर्द्धक औषधियों द्वारा बनाई हुई धातुपौष्टिक २६ वर्ष की अनुभूत औषधि है। इसके सेवन से २० प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्र-पतन, नपुंसकता, नसों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता, अंगों की शिथिलता और दिमाग़ी कमज़ोरी दूर होकर शुद्ध रक्त बनता है, शरीर पुष्ट होता है, और बल-वीर्य की वृद्धि होती है। २० दिन का बकस मूल्य २), डाक-व्यय ।/)

अग्निकल्पद्रुम

इस चूर्ण के सेवन से अजीर्ण, अजीर्ण के दस्त, मंदाग्नि, संग्रहणी, पेचिश, हैज़ा, अम्लपित्त, [illegible] होना, [illegible], वायुगोला, पेट में छोटे-छोटे कृमि पड़ जाना, अरुचि आदि रोग नाश होकर पाचन साफ़ होता है, भूख लगती है, और भोजन का शुद्ध रस बनकर बल बढ़ता है। मूल्य फी शीशी ।-), डाक-ख़र्च २ शीशी तक ।/)

पता—पंडित रामचंद्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्षक औषधालय नं० ३, अलीगढ़ सिटी

आगामी कांग्रेस के अवसर पर

हिंदी के सर्वश्रेष्ठ दैनिक और साप्ताहिक

लोकमान्य

का

भारतीय वाणिज्य-व्यवसाय

विशेषांक

बड़ी सजधज के साथ प्रकाशत होगा

जिसमें

भारत के विविध वाणिज्य-व्यवसायों की
पिछले ५० वर्षों की परिस्थिति का
सिंहावलोकन किया जायगा।
भारतीय वाणिज्य-व्यवसाय पर विशेषज्ञों
के खोज-पूर्ण, ज्ञातव्य लेखों का
अपूर्व संकलन

अपनी प्रति के लिये आज ही लिखिए
विज्ञापनदाता इस अवसर से लाभ उठाएँ—

मैनेजर 'लोकमान्य'
१६०, हैरिसन रोड
कलकत्ता

सम्मन वास्ते क़रारदाद उमूर तनक़ीह तलब

(आर्डर ५—क़ायदा १ व ५)

नंबर मुक़द्दमा ४०१ सन् १९२७ ई०

बअदालत मुंसिफ़ी शाहगंज ज़िला जौनपूर

रामअभिलाखसिंह साकिन अंदर रायपुर परगना अलदेमऊ ज़िला सुलतानपुर

मुद्दई

बनाम

जसदेव तिवारी वल्द मथुरा तिवारी साकिन समोधपुर परगना अंगुली ज़िला जौनपूर

मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत २००) के दायर की है, लिहाज़ा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख़ २२ माह मार्च सन् १९२८ ई० बवक़्त १० बजे दिन के असालतन या मार्फ़त वकील के, जो मुक़द्दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो, और कुल उमूरात अहम मुताल्लिक़ मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हो, और जवाबदेही दावा की करे, और आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ जुमला दस्तावेज़ पेश करे, जिन पर आप बताईद अपनी जवाबदेही के इस्तदलाल करना चाहते हों।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ १० माह फ़रवरी सन् १९२८ ई० जारी किया गया

मुंसरिम

[बदस्त बनाम ज़ोजेफ़ के लिये

नमूना नंबर १९१

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

मुक़द्दमा नं० ७ सन् १९३६ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल मुरादाबाद

१—यूनाइटेड ट्रेडिंग कंपनी लखनऊ

२—बनवारीलाल दीक्षित लखनऊ

इश्तहार
मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, [illegible] वल्द पं० भोलानाथ साकिन फ़तेहगंज लखनऊ ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० जैसा कि बरूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो बाबत मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिग्री किए हुए बिल के क़र्ज़ों के मुताल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दिए हुए हैं। और ऐसा न करने पर हर एक दावा डिग्रीशुदा या ग़ैर डिग्रीशुदा ख़िलाफ़ बाबत मज़कूर जुमला अराज़ात व मौरूसियत के लिये अज़ दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर [illegible] बेबाक मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

ख़ूबसूरती का राज़

काले गोरे हो गए

हमारा साइंस के नियम द्वारा बनाया हुआ जगत्-प्रसिद्ध 'शांका ब्यूटी लोशन' के चंद रोज़ के प्रयोग से मलीन मुख चंद्रमा के समान चमकदार और गुलाब के फूल-जैसा सुंदर निकल आता है। कील, झाइयाँ, मुँहासे, झुर्रियाँ, काले दाग़, ख़ुश्की, बदरौनक़ी दूर कर, काला रंग गोरा हो, उसमें गुलाबी छटा आ जाती है, काली, बदसूरत औरत लगावे, तो इंद्र की परी माफ़िक़ ख़ूबसूरती पावे। इसकी मधुर मोहक ख़ुशबू तबियत को मस्त कर देती है। आप अपना मुखड़ा ख़ूबसूरत बनाना चाहते हैं, तो इसके ख़रीदने में देरी न कीजिए। मूल्य केवल २), डाक-व्यय ।)

वशीकरण यंत्र

यह यंत्र हमें हिमालय-पर्वत पर जप करनेवाले एक जटाधारी संन्यासी की सेवा से मिला है, जो कि सैकड़ों बार का परीक्षित है। सूर्य देवता पूर्व को छोड़कर पश्चिम से उदय हो सकता है, पर इस यंत्र का असर टल जाय, यह असंभव है। इसको अपने पास रखकर अपने प्रेमिका का ध्यान कीजिए। कितना ही दूर तथा कट्टर दिलवाला होगा, आपसे मिलने के लिये तड़पने लगेगा, और जीवन-भर आपसे जुदा होने का साहस नहीं कर सकेगा।

इसके अलावा मुक़द्दमे में जीत, परीक्षा में कामयाबी, हाकिम को वश में करना, व्यापार में लाभ, रोज़गार बनना, शत्रुओं पर विजय, शादी, लाटरी, प्रत्येक मनोरथ पूर्ण होंगे।

यह केवल ग्रहण के समय तयार होता है। अब हमारे पास गिनती के रह गए हैं। इसलिये जल्दी मँगा लें। मूल्य प्रति यंत्र २।) ; डाक-व्यय ।)

यौवन की बहार

महिलाओं का सच्चा सौंदर्य उनके शरीर के अंगों की उत्तम बनावट पर निर्भर है। खेद है कि आजकल प्रायः महिलाओं के अंगों का सौंदर्य उनके उत्तम यौवन-काल में ही उनका साथ छोड़ देता है। जिस प्रकार मोर अपने पाँव देखकर रो देता है, वैसे ही औरत भी अपनी ढीली छाती देखकर अत्यंत दुखित होती है। हमारी 'ब्रेस्टी' का प्रयोग ढीली और लटकती हुई छातियों को सख़्त और लचकदार बनाकर स्त्रियों के यौवन और सौंदर्य को दोबाला कर देता है, और शरीर में यौवन की कांति चमक उठती है। महिला-समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। एक बार मँगाकर इस ओषधि के चामत्कारिक गुणों की परीक्षा कीजिए। मूल्य प्रति शीशी २) ; डाक-व्यय ॥)

लड़का ही होगा

यदि हमारे 'पुत्र-दाता यंत्र' को पानी में घोलकर वह पानी गर्भवती औरत को गर्भ से तीन मास के अंदर-अंदर पिलाया जाय, तो ज़रूर ही भगवान् की कृपा से चाँद-जैसा सुंदर लड़का पैदा होगा। जिन स्त्रियों को गर्भ धारण ही नहीं होता, वे इसे अपने पास रक्खें, तो जल्द गर्भ हो। फिर इसे पानी में घोलकर पी लें। यह अमूल्य कई बार का परीक्षित है। और, जिस किसी ने आज़माया, इसकी प्रशंसा की। इसलिये हम हारी दुनिया से विमुख मनुष्यों के संतोष के लिये इक़रार करते हैं कि यदि लड़की पैदा होगी, तो वापसी की शर्त। मूल्य केवल ४), डाक-व्यय ।)

पता——शांका स्टोर, रजिस्टर्ड, (S) ग्वालमंडी, लाहौर

Shanka Stores Regd.(s)Gwalmandi, Lahore

[संपादकीय विचार]

१. नवयुग-काव्य-विमर्ष

रहस्यवाद या छायावाद की कविताएँ हिंदी-भाषा में प्रायः प्रारंभ से ही होती आई हैं। इधर बीसवीं शताब्दी में जब से खड़ी बोली की कविता करने की ओर कवियों ने अधिक ध्यान दिया, पहले भाषा के परिमार्जन और विचारों की स्पष्टता का ही खास खयाल रक्खा। फिर ज्यों-ज्यों कवियों में विचारों और भावों की प्रौढ़ता आने लगी, त्यों-त्यों अनुभूति और कल्पना-प्रधान कविताएँ भी होने लगीं। यह काव्य-धारा ही इस समय रहस्यवाद या छायावाद के नाम से प्रसिद्ध हो रही है।

इसमें तो किसी को कुछ कहने की गुंजाइश ही नहीं कि रहस्यवाद या छायावाद की कविताएँ हिंदी-भाषा के लिये गौरव की वस्तु रही हैं, और खड़ी बोली का भांडार भी इनसे भरा जाना चाहिए। इस समय कई छायावादी कवि उच्च कोटि की काव्य-रचना कर रहे हैं, और भविष्य में उनके द्वारा सरस्वतीदेवी के मंदिर में और भी उच्च कोटि की भेंट उपस्थित किए जाने की आशा है। 'माधुरी' और 'सुधा' के प्रारंभ-काल से ही हमें इन उच्च कोटि के कवियों की प्रारंभिक रचनाएँ छापने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और हम सदैव प्रयत्नशील रहे हैं कि नवीन काव्य-धारा की ओर भी कविगण अग्रसर हों। हम प्राचीन और नवीन, दोनो काव्य-धाराओं के, समान रूप से, सदा समर्थक रहे हैं। कारण, हमारी तो यह राय रही है कि कविता में कुछ बात होनी चाहिए, भाषा और कहने का ढंग चाहे जो हो। अस्तु। हर्ष की बात है, खड़ी बोली की कविता की उन्नति के साथ-साथ कविगण हिंदी-भाषा की छायावादी काव्य-धारा की ओर भी तेज़ी के साथ, और सुंदरता के साथ भी, बढ़ें। और, वह दिन दूर नहीं, जब हमारा यह साहित्य-सदन भी संसार के अन्यान्य भाषा-भांडारों के समान संपन्न हो जायगा।

पर छायावाद के नाम से प्रचलित कविताओं के बारे में कई वर्ष से बड़ा भ्रम फैल रहा है। अक्सर लोग पूछ बैठते हैं, छायावाद है क्या चीज़? इस भ्रम के दूरीकरण के लिये हमारे मन में यह विचार आया कि छायावाद की सुंदर कविताओं का एक संग्रह हम निकालें। हमने अपना यह विचार अपने एक विद्वान्, काव्य-मर्मज्ञ कवि-मित्र से कहा, और अनुरोध किया कि आप गंगा-पुस्तकमाला के लिये ऐसा एक संग्रह तैयार कर दें। किंतु अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण, ५-६ वर्ष बीत जाने पर भी, इस ओर उन्होंने ध्यान न दिया। हर्ष की बात है, हमारे उपर्युक्त विचार की पूर्ति हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और आलोचक पं० ज्योतिःप्रसादजी मिश्र 'निर्मल' ने कर दी है—उन्होंने अपने इस नवीन ग्रंथ 'नवयुग-काव्य-विमर्श' में ३३ श्रेष्ठ छायावादी कवियों की जीवनियाँ, कविताओं और उनकी आलोचना के साथ दी हैं। आशा है, इस पुस्तक के पाठ से हिंदी-भाषा-भाषियों के हृदयों में छायावादी कविताओं की ओर अधिक प्रवृत्ति होगी।

इस समय हिंदी-संसार में जहाँ कहीं छायावादी कविताओं का ज़िक्र आता है, हमारा ध्यान खड़ी बोली की ओर चला जाता है। पर छायावाद या रहस्यवाद खड़ी बोली की ही कोई चीज़ नहीं। ब्रजभाषा में भी अच्छी रहस्यवादी रचनाएँ पहले हुई हैं, और अब भी हो रही हैं। (मैं 'निर्मल'जी से अनुरोध करूँगा, अपनी इस सुंदर पुस्तक के दूसरे संस्करण में वह वैसी कविताएँ भी दें।) ब्रजभाषा भारत की पुरानी राष्ट्र-भाषा है, अब भी एक प्रांत की भाषा है, ब्रजप्रांत में अब भी बोली जाती है, एवं उसका साहित्य भी भारत की वर्तमान सभी प्रचलित भाषाओं के पद्य-साहित्य से अधिक संपन्न है। यदि हम खड़ी बोली के राष्ट्र-भाषा के पद पर आसीन हो जाने पर बँगला, गुजराती, मराठी, उर्दू आदि भाषाओं में अब भी कविता होने देना अनुचित नहीं समझते, तो फिर प्राचीन राष्ट्र-भाषा, वर्तमान प्रांतीय भाषा, पुष्ट-साहित्य ब्रजभाषा में काव्य-रचना को भी हमें बुरा न समझना चाहिए। जो जिस भाषा को पसंद करे, या जिसे जिस भाषा में कविता करने में सुविधा हो, उसे उसमें कविता करने देना चाहिए। आखिर भाषा है क्या? भावों, कल्पनाओं और अनुभूतियों को काव्य-प्रेमी जनता के सामने उपस्थित करने का साधन-मात्र ही तो? ब्रजभाषा भारत की ही नहीं, शायद संसार-भर की भाषाओं में सबसे मधुर है। इसमें संक्षेप में बात कहने का गुण भी बहुत अधिक मात्रा में है। भावों को गुंफित करने के ऐसे श्रेष्ठ साधन को हमें अपनाए रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त यदि अब भी ब्रज भाषा में कविताएँ होंगी, तो पुराने काव्य-साहित्य से वर्तमान काव्य-साहित्य की शृंखला बनी रहेगी। हर्ष की बात है, कुछ खड़ी बोली-प्रिय छायावादी कवियों ने भी ब्रजभाषा में छायावादी रचनाएँ की हैं। मैं तो इस पुस्तक में वर्णित श्रेष्ठ कवियों से अनुरोध करूँगा कि इस मधुरतम भाषा में भी अपनी अनुभूतियों और कल्पनाओं को व्यक्त करने की ओर ध्यान दें। इससे खड़ी बोली और ब्रजभाषा का विरोध कम हो जायगा, और दोनो भाषाएँ पु होती रहेंगी। गीत तो ब्रजभाषा में ही अधिक मधु मालूम होते हैं, इसलिये वे तो अवश्य ही ब्रजभाषा में भी लिखे जाने चाहिए। कहना न होगा, संगीत मधुर शब्दावली की अपेक्षा करता है, और ब्रजभाषा में ही, उसकी माधुरी के कारण, अधिक संभव है। मुसलमान संगीतज्ञों के मुख से आप ब्रजभाषा-गीतों को ही अधिक सुनेंगे, मुसलमान उर्दू-फ़ारसी के कट्टर प्रेमी होते इसका कारण क्या है?

खड़ी बोली और ब्रजभाषा के प्रकाशवादी जो विद्वान् छायावाद-काव्य के विरुद्ध, समय

पर, अपनी आवाज़ बुलंद करते रहते हैं, उनकी सबसे बड़ी शिकायत रहती है ऐसी कविताओं की दुरूहता और अस्पष्टता के संबंध में। दुरूहता तो कवि के अपने लिखने की शैली या लोगों के शब्द-ज्ञान की कमी अथवा नवीन धारा से अपरिचय है, पर अस्पष्टता अधिक चिंतनीय है। वह इस बात की द्योतक है कि लिखते समय कवि के मस्तिष्क में भाव स्पष्ट न थे—उनमें सामंजस्य न था। यह सच है, छायावाद के नाम से, जैसा कि 'निर्मल'जी ने लिखा है, बहुत-सी अनर्गल कविताएँ भी लिखी जाने लगी हैं। शायद ये कविगण कुछ छायावादी शब्द एकत्र कर देने-भर को कविता मान बैठे हैं। इसमें दोष पत्रकारों का अधिक है। ऐसी रचनाओं को उन्हें अपने पत्रों में स्थान ही न देना चाहिए। प्रकाशन सुलभ न होने पर उनका लिखा जाना बहुत कुछ रुक जायगा। ऐसी कविताएँ लिखने से छायावाद का नाम तो बदनाम होता ही है, छायावाद की वास्तविक कविता की प्रगति में भी बाधा पड़ती है। इसीलिये छायावाद की कविताएँ अब भी उतनी नहीं पढ़ी जातीं, जितनी प्रकाशवाद की। यदि कविगण अपनी भाषा को कुछ सरल और स्पष्ट रखने की ओर ध्यान देंगे, तो छायावाद की कविताओं का प्रचार बढ़ेगा। मुझे तो इस ढंग की कविताओं का भी भविष्य उज्ज्वल मालूम पड़ता है। आशा है, सुंदर छायावादी कविताओं से खड़ी बोली और व्रजभाषा, दोनो का साहित्य उत्तरोत्तर बढ़ता जायगा।

'निर्मल'जी को ऐसी श्रेष्ठ पुस्तक लिखने के संबंध में हम, अंत में, साधुवाद देते और आशा करते हैं, भविष्य में और कोई सुंदर पुस्तक छायावाद तथा छायावादी कवियों के संबंध में वह लिखेंगे।

× × ×

२. गो० श्रीवालकृष्णजी महाराज*

गोस्वामी श्रीवालकृष्णजी का जन्म सं० १६०६, आश्विन-कृष्ण १३ को हुआ था। आपके पितृचरण का नाम गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी महाराज था, जो जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र एवं उनके अनंतर शुद्धाद्वैत-पुष्टि-मार्गीय वैष्णव-धर्म के आचार्य हुए।

श्रीवालकृष्णजी अपने पिता के तृतीय पुत्र थे। प्रभुचरण गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी के सात पुत्र थे। जब उन्होंने अपनी अंतिम अवस्था में अपनी संपत्ति और प्रतिष्ठापित सात-स्वरूप (मूर्तियों) को पुत्रों के लिये विभाजित किया, तब जो संपत्ति और देव-स्वरूप बालकृष्णजी को प्राप्त हुए, वे शुद्धाद्वैत-संप्रदाय का तृतीय गृह कहलाया, और यह उसके तिलकायित। इस कारण वैष्णव-संप्रदाय की तृतीय गद्दी अथवा तृतीय पीठ, इस नाम से यह परंपरा प्रख्यात हुई। श्रीद्वारकाधीश का जो स्वरूप संप्रति कांकरोली में विराजमान है, और जो देवस्थान-नाम से प्रसिद्ध है, उसके मूल-पुरुष वालकृष्णलालजी महाराज ही थे। संप्रति इस गद्दी के स्वामी विख्यात विद्याविलासी, हिंदी-भक्त गोस्वामी श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज हैं। आपकी ही संरक्षकता में, अभी हाल में, एक विराट् कवि-सम्मेलन कांकरोली में हुआ है।

आज से ४५० वर्ष पूर्व श्रीद्वारकाधीश के स्वरूप की सेवा श्रीवल्लभाचार्य द्वारा कन्नौज-निवासी संभरवाल क्षत्रिय दामोदरदास को प्राप्त हुई थी, जिनकी ८४ वैष्णवों की वार्ता में एक वार्ता है। श्रीवल्लभाचार्य तथा उनके शिष्य दामोदरदासजी के अनंतर श्रीद्वारकाधीश की सेवा गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी और उनके बाद श्रीवालकृष्णलालजी को प्राप्त हुई।

---

* इनका तिरंगा चित्र गत फ़रवरी-संख्या के आदि में जा चुका है।—संपादक

सं० १६१४ में, प्रयाग के समीप अडेल-ग्राम में, पितृचरण द्वारा बालकृष्णजी महाराज का उपनयन-संस्कार और विद्याध्ययनारंभ हुआ। इनका स्वरूप श्याम, आकृति दर्शनीय एवं सुंदर तथा नेत्र कमलाकृति थे। इन्होंने चारो वेदों और छहो शास्त्रों तथा सभी वेदांतों का अच्छा परिशीलन किया था, जिससे वास्तव में यह संप्रदाय की तीसरी गद्दी के आचार्य-रूप से विदित हुए। आगे चलकर इन्होंने संस्कृत के कई सांप्रदायिक स्तोत्र और वेदांत-संबंधी ग्रंथों का प्रणयन किया, जिसमें वेदांत-सूत्रों का 'प्रसाद-वागीश'-नामक भाष्य इनकी विद्वत्ता का निदर्शन है। यह ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित, अतएव साहित्य-जगत् को अविदित है। सौभाग्य से उसकी एक प्रति विद्या-विभाग, कांकरोली के सरस्वती-भांडार में सुरक्षित है। श्रीबालकृष्णजी ने अपने पितृचरण एवं पितामह श्रीवल्लभाचार्य-रचित कई ग्रंथों पर टीकाएँ रची हैं, जिनमें कई प्रकाशित हो चुकी हैं। आपके हस्त-लिखित कई ग्रंथ सरस्वती-भांडार में संस्थापित हैं, जिनमें श्रीमद्भागवत दर्शनीय है। इसमें इन्होंने यत्र-तत्र अपनी स्वतंत्र टिप्पणियाँ लिखी हैं।

गोस्वामी श्रीबालकृष्णजी ने भारत में अनेक वर्ष तक परिभ्रमण कर धार्मिक उपदेश तथा प्रवचनों द्वारा जनता में एक जागृति उत्पन्न की, जिससे प्रभावित होकर करोड़ों व्यक्तियों ने स्वधर्म को ही मुख्य समझा था। भारत के उस धार्मिक विप्लव के समय यदि ऐसे महापुरुषों ने जनता में स्वकीय संस्कृति का प्रचार न किया होता, तो आज जनता का अधिकांश विधर्मी होकर अपने ही प्राणप्रिय धर्म, संस्कृति एवं साहित्य को नष्ट-भ्रष्ट करने में ही सहायक हुआ होता। इनके द्वारा जो वैष्णव-धर्म अथच आर्य-जाति का उपकार हुआ है, वह वास्तव में हमारे गौरव की वस्तु है।

इन्हीं महाराज के पौत्र गो० श्रीगिरिधरजी महाराज हुए, जिनके वैदुष्य एवं आचरणशीलता से प्रभावित होकर हिंदुवाँ-सूर्य महाराणा श्रीजगतसिंहजी ने उनसे वैष्णव-धर्म की दीक्षा लेकर 'आसोटिया'-नामक ग्राम भेंट किया था। इसी समय से महाराणा का वंश इस वंश-परंपरा का कंठीबंद शिष्य होता आया है। अभी कुछ वर्ष हुए, वर्तमान महाराणा श्रीभूपालसिंहजी महोदय भी वर्तमान तिलकायित गोस्वामी श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज से वैष्णव-धर्म की दीक्षा ले चुके हैं। अस्तु।

गो० श्रीगिरिधरजी के पुत्र गो० श्रीव्रजभूषणजी ने कौटुंबिक कलह से बचने के लिये गोकुल से अपना संस्थान-पीठ उठाकर कांकरोली के पास स्थापित किया। अपनी संपत्ति तथा प्रभु श्रीद्वारकाधीश को लेकर वह तत्कालीन महाराणा श्रीरायसिंहजी के आग्रह से 'आसोटिया' में आकर बस गए। कुछ दिनों बाद इनके पुत्र श्रीगिरिधरजी को कांकरोली भेंट में मिली, और उन्होंने 'रायसागर' तालाब के किनारे कांकरोली का विशाल मंदिर बनवाया, और नगर बसाया।

उदयपुर-नरेशों की धार्मिक श्रद्धा, गुरु-भक्ति तथा इस कुल के आचार्यों के वैदुष्य एवं नीति-कौशल्य से कांकरोली के वैभव की वृद्धि होती गई, जिससे यह स्थान एक 'ठिकाने' के नाम से परिचित हो गया है। और, इसे अन्य ठिकानों के अनुसार अधिकार प्राप्त हैं। कांकरोली की इतने समय तक श्री-वृद्धि हुई, और अब उसकी साहित्य-वृद्धि का अवसर आया है। इसका उपक्रम वर्तमान महाराज गो० श्रीव्रजभूषणलालजी ने किया है। गत दिसंबर मास में विद्या-विभाग का जो दशाब्दी महोत्सव मनाया गया था, यह उसी का एक उपक्रम था।

गो० श्रीबालकृष्णलालजी महाराज के छ हुए, जिनमें से ज्येष्ठ श्रीद्वारकेशजी महाराज १६४४ में, पिता के बाद, इस गद्दी के मालि हुए। यह समर्थ विद्वान् एवं धर्माचार्य थे। इन्हों

बाद इनके पुत्र गिरिधरजी महाराज हुए, जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है* ।

× × ×

३. गांधीजी की शिक्षा-संबंधी योजना

अभी हाल में गांधीजी की शिक्षा-संबंधी योजना 'हरिजन' में प्रकाशित हुई थी। वह योजना सात वर्ष की अनिवार्य शिक्षा के संबंध में हैं। वर्धा में, महात्मा गांधी की अध्यक्षता में, एक शिक्षा-सम्मेलन हुआ था। उस सम्मेलन में देश के प्रमुख विचारक एकत्र हुए थे। यह योजना उन्हीं के विचार-विमर्श का परिणाम है। सात वर्ष की पढ़ाई की मुख्य बातें इस प्रकार हैं—

(१) प्रारंभिक दस्तकारी, जिसके भीतर सूत कातना, कपड़ा बुनना, बढ़ईगीरी, खेती, बाग़बानी और चमड़े का काम है
(२) मातृभाषा की शिक्षा
(३) सामाजिक शिक्षा
(४) साधारण विज्ञान की जानकारी
(५) ड्राइंग
(६) संगीत
(७) हिंदुस्तानी

उपर्युक्त भिन्न-भिन्न विषयों की शिक्षा के लिये इस प्रकार समय निर्धारित किया गया है—

प्रारंभिक दस्तकारी के लिये प्रतिदिन तीन घंटे बीस मिनट; संगीत, ड्राइंग और हिसाब के लिये चालीस मिनट; मातृभाषा के लिये चालीस मिनट; सामाजिक अध्ययन और साधारण विज्ञान के लिये तीस मिनट ; शारीरिक शिक्षा के लिये दस मिनट और विश्राम के लिये दस मिनट।

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि आज हमारे देश में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या अन्य देशों की अपेक्षा बिलकुल ही नगण्य है। दूसरे देशों की उन्नति का प्रधान कारण उन देशों में शिक्षा का विस्तृत प्रचार ही है। इसलिये यदि हम अपने देश को अन्य उन्नतिशील देशों के समकक्ष रखना चाहें, तो इस बात की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम अपने देश में अनिवार्य शिक्षा शीघ्र ही प्रचलित कर दें। साथ ही देश के बच्चों को ऐसी शिक्षा मिले, जिससे वे किसी नौकरी के मुहताज न रहें, और अपनी जीविका की समस्या स्वयं हल कर लें। हम मानते हैं, शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक, नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं राजनीतिक विकास ही है। ऐसा होना भी चाहिए, पर साथ ही हमें युग-धर्म के अनुसार चलकर अपने को परिस्थितियों के अनुकूल भी बनाना है। इस कारण हमें देश में ऐसी शिक्षा का, विशेषकर ऐसी अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध करना होगा, जिससे हमारा शिक्षित-समुदाय अपने नैतिक, बौद्धिक तथा अन्य विकास के साथ ही अपने जीविकोपार्जन का भी प्रबंध कर ले, और उसके सामने आज की भाँति बेकारी की दुःखद एवं दयनीय परिस्थिति न उत्पन्न हो। इन सभी दृष्टियों से गांधीजी की उपर्युक्त अनिवार्य शिक्षा-संबंधी योजना अब तक की शिक्षा-संबंधी सारी योजनाओं से अच्छी और उपयोगी है। हाँ, साथ ही हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि कहीं अर्थोपार्जन की प्रधानता में हमारे शिक्षकगण उन विद्यार्थियों की बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं अन्य प्रवृत्तियों का अवरोध न करें। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि अनिवार्य शिक्षा के शिक्षकों के लिये भी देश के भिन्न-भिन्न स्थानों में विद्यालय रहें। हर्ष की बात है, गांधीजी की योजना में इसके लिये भी प्रबंध किया गया है। शिक्षकों की शिक्षा के लिये, योजना में, तीन वर्ष का कोर्स रक्खा गया है, परंतु प्रारंभ में केवल एक वर्ष का कोर्स रखने की ही सिफ़ारिश की गई है।

---

* इस विषय का सचित्र, प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ 'कांकरोली' नाम से विद्या-विभाग द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है।

हम भारत की सभी प्रांतीय सरकारों का ध्यान—विशेषतया उन प्रांतीय सरकारों का ध्यान, जिनकी बागडोर कांग्रेस के हाथ में है—इस महत्त्व-पूर्ण योजना की ओर आकर्षित करते और आशा करते हैं, वे शीघ्र ही इसे कार्यान्वित करेंगी।

× × ×

४. बंबई-सरकार प्रगति की ओर

अभी कुछ ही दिन हुए, बंबई-सरकार ने एक शिक्षा-सुधार-समिति इसलिये नियुक्त की थी कि वह वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में उचित एवं उपयोगी परिवर्तनों के संबंध में सरकार को सलाह दे। उक्त समिति ने बंबई-सरकार को अपना वक्तव्य समर्पित कर दिया है। समिति की राय है कि शिक्षा में शारीरिक उन्नति के लिये विशेष महत्त्व और सुविधा दी जानी चाहिए। आदर्श शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि उसके द्वारा विद्यार्थी शरीर और मस्तिष्क, दोनो ही से स्वस्थ एवं पुष्ट हों, तथा उनके भीतर नागरिकता के सच्चे भाव भर दिए जायँ। विद्यार्थी भविष्य में चाहे सैनिक बनें अथवा और कुछ, पर ये गुण उनमें अवश्य आ जाने चाहिए। जिस प्रकार मातृभाषा, इतिहास, गणित आदि की शिक्षा को स्वतंत्र और बाध्य विषय माना जाता है, उसी प्रकार शारीरिक शिक्षा को भी माना जाय। उस पर होनेवाले तमाम ख़र्च को सरकार सहन करे, चाहे इस व्यय के कारण उसे शिक्षा-संस्थाओं को और सहायता न भी देनी पड़े। कम-से-कम नित्य पैंतालीस मिनट व्यायाम के लिये दिए जायँ। शिक्षकों की प्रधान योग्यता का इसे भी एक विषय माना जाय। सरकार शीघ्र ही शारीरिक शिक्षा का कॉलेज खोले, जिसका कोर्स आई० एस्-सी० के बाद तीन वर्ष तक हो। इस कॉलेज के द्वारा शारीरिक शिक्षा के अध्यापक तैयार किए जायँ, और इसमें शिक्षा पानेवाले पुरुष-शिक्षकों के बराबर ही महिला-शिक्षिकाएँ भी ली जायँ, और उनके लिये भी शारीरिक शिक्षा की ट्रेनिंग पुरुषों की ही भाँति अनिवार्य हो।

कहना न होगा, शिक्षा-सुधार-समिति की यह सलाह सर्वथा आवश्यक एवं प्रशंसनीय है। यदि बंबई-सरकार ने उपर्युक्त वक्तव्य के अनुसार शिक्षा-संबंधी सुधार-कार्य आरंभ किया, तो निश्चय ही वह एक महान् उद्देश्य में भारत की अन्य प्रांतीय सरकारों को अपने से बहुत पीछे छोड़ जायगी। हम आज की दूषित शिक्षा-प्रणाली के पूर्ण विरोधी हैं। वर्तमान शिक्षा द्वारा हमारे देश के असंख्य युवकों की जो हानि हो रही है, उसकी कोई सीमा नहीं। आज के स्कूलों और कॉलेजों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के सम्मुख न तो नागरिकता का ही ध्येय है, और न देश-सेवा, समाजोद्धार, अथवा किसी प्रकार की नैतिक, मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का ही। उनके सामने सबसे बड़ी समस्या नौकरी की है, और इसी समस्या को हल करने के निमित्त वे स्कूलों तथा कॉलेजों में भरती होते हैं। बी० ए० पास कर लेने के बाद उन्हें प्रेम होता है अँगरेज़ी-भाषा और विदेशी संस्कृति से, मातृभाषा और भारतीय संस्कृति से नहीं। मातृभाषा के श्रेष्ठ साहित्य से वे अपरिचित रहते हैं, मातृभाषा को वे हीन दृष्टि से देखते हैं। उनके ख़याल में मनुष्य योग्य और श्रेष्ठ तभी होता है, जब वह अँगरेज़ी का पंडित होता है।

इसलिये हम बंबई-सरकार तथा अन्य प्रांतीय सरकारों अथवा अन्य शिक्षा-संस्थाओं का ध्यान इस अत्यंत महत्त्व-पूर्ण समस्या पर आकर्षित करना अपना कर्तव्य समझते हैं। शिक्षा-प्रणाली में सुधार की बात सोचते समय वे इस बात को सदा स्मरण रक्खें कि हमारी शिक्षा का सबसे बड़ा ध्येय यह हो कि उसके द्वारा हम अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति जाग्रत् हों, और तदनुसार अपने आचरण करें। साथ ही हमारे नवयुवकों को ऐसी शिक्षा

मिले, जिससे वे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के अनुकूल आचरण करते हुए अपने को देश, समाज तथा संसार के लिये अधिक-से-अधिक उपयोगी बना सकें। ऐसा करने से ही वे अपने देश तथा जगत् में सत्य, शिव और सुंदर की प्राण-प्रतिष्ठा कर सकेंगे, और यह सब संभव होगा तब, जब हम मातृभाषा को ही अपनाकर अपनी शिक्षा का माध्यम बनाएँगे।

× × ×

५. मलिन और विषैला

हाल में ही कानपुर में शिया-कान्फ्रेंस के अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए महमूदाबाद के मुसलमान राजा साहब ने सांप्रदायिकता का जो गंदा वातावरण उपस्थित किया, वह सर्वथा निंदनीय है। राजा साहब ने अपने भाषण में कहा कि प्रत्येक मुसलमान को कोई चीज़ खरीदनी हो, तो मुस्लिम देशों में बनी हुई और कम-से-कम मुसलमान दूकानदारों से ही खरीदे। आपने आगे चलकर कहा कि यदि भारत में फ़ी मुसलमान रोज़ दो आने खर्च करता है, और वह ग़ैर-मुसलमान से चीज़ खरीदता है, तो रोज़ मुसलमानों का एक करोड़ रुपया दूसरों के हाथ चला जाता है। जो क़ौम रोज़ यह बड़ी रक़म खोती है, वह ज़िंदा नहीं रह सकती।

हम राजा साहब की इस मलिन प्रवृत्ति और विषैले भाषण के लिये उन्हें दोषी समझें अथवा हिंदू-समाज को, यह समझ में नहीं आता। ऐसे भी विगत दस वर्षों से सांप्रदायिक मुसलमानों के उद्योग से देश के कोने-कोने में सभी चीज़ों की दूकानें मुसलमानों द्वारा खुली हैं। कपड़े, ग़ल्ले, परचून, मिठाई, पान, खिचड़ी फ़रोश, सभी तरह की दूकान, भारत के सभी प्रांतों के सभी नगरों में, मुसलमानों ने खाली हैं, और इन सभी दूकानों की तह में सांप्रदायिक विष की ही धारा बह रही है। वह यह कि प्रत्येक मुसलमान, चाहे सस्ती अथवा महँगी, सभी चीज़ें मुस्लिम दूकानदारों से ही ले। यह एक दयनीय सत्य है, पर इससे भी बढ़कर दयनीय सत्य यह है कि आज हिंदू-समाज इतना असंगठित और छिन्न-भिन्न है कि सांप्रदायिक मुसलमानों को हिंदुओं के इस प्रकार के व्यावसायिक बहिष्कार का साहस हो रहा है, अन्यथा आज इस देश में हिंदुओं की अपेक्षा मुसलमान कारीगर ही अधिक हैं, और करोड़ों मुसलमानों की रोज़ी का सवाल इन अभागे हिंदुओं द्वारा ही हल होता है। यदि हिंदू-समाज आज संगठित रहता और हिंदुओं में आज अपनी धार्मिकता के प्रति कुछ भी आत्माभिमान होता, तो केवल व्यावसायिक बहिष्कार से ही करोड़ों सांप्रदायिक मुसलमानों के सामने इस सत्य को प्रकट करते कि सांप्रदायिकता अंत में दुःख और हानि का कारण होती है। उस समय साधारण मुस्लिम जनता जिन्ना और राजा महमूदाबाद-जैसे देश-द्रोही और 'लीडरपरस्त' मुसलमानों को इतना विष-वमन करने का अवसर न देती।

हम यह नहीं चाहते कि हिंदू और मुसलमानों में एकता न हो। हम यह भी नहीं चाहते कि किसी संप्रदाय विशेष की हानि पर दूसरा संप्रदाय मौज करे। हम हिंदू-मुस्लिम-एकता के भी पक्षपाती हैं, और साथ ही चाहते हैं कि मुस्लिम-समाज प्रत्येक उचित उपाय से अपनी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सभी प्रकार की उन्नति में अग्रसर हो। पर हम यह नहीं चाहते कि मुस्लिम-समाज और इस्लाम के नाम पर कुछ मोटे और देश-द्रोही मुसलमान अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और नेतागिरी के लिये सांप्रदायिक विष उगलकर देश और समाज का वातावरण दूषित करें। और, यदि वे ऐसा करने पर तुले ही हों, तो अन्य संप्रदायों को भी उनके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए, जैसा वे उनके साथ करते हैं। उदाहरण के लिये यदि शिया-समाज-जैसे उदार मुसल-

मानों के सम्मेलनों में भी हिंदुओं के व्यावसायिक बहिष्कार का प्रचार किया जाता है, तो हिंदुओं का भी अपने समाज के प्रति कर्तव्य हो जाता है कि वे मुसलमानों का आर्थिक बहिष्कार करें। पर ये सारी बातें तभी संभव हैं, जब हिंदू अपने को संगठित कर लें। विना संगठन के हिंदू कमज़ोर रहेंगे, और कमज़ोर होना भयानक पाप है। इसलिये नहीं कि इससे स्वयं अत्याचार सहना पड़ता है, वरन् दूसरों के हृदयों में अत्याचार करने के हौसले बढ़ते हैं।

× × ×

६. भारतीय अस्पतालों की सुधार-योजना

अभी उस दिन मदरास में अखिल भारतवर्षीय मेडिकल कान्फ्रेंस, श्रीयुत डॉक्टर विधानचंद्र राय की अध्यक्षता में, हुई। डॉक्टर विधानचंद्र देश के एक प्रमुख डॉक्टर ही नहीं, वरन् कांग्रेसी नेता भी हैं। आप देश के सिद्धहस्त डॉक्टर माने जाते हैं। हाल में ही आपने योरप का लंबा भ्रमण किया था, और उस भ्रमण में योरप की भिन्न-भिन्न प्रमुख मेडिकल संस्थाओं का अध्ययन भी। इन सभी बातों पर ध्यान देते हुए हम यही कहेंगे, कान्फ्रेंस का सभापतित्व एक अत्यंत सुयोग व्यक्ति के हाथों में ही सौंपा गया था। हमारा यह कथन निराधार नहीं। कारण, अध्यक्ष के रूप में डॉक्टर विधानचंद्र ने देश के सामने अस्पतालों के सुधार के संबंध में एक अत्यंत महत्त्व-पूर्ण बात कही है। आपने कहा, भारत के अस्पताल यद्यपि जन साधारण के पैसों से चलते हैं, परंतु इनका लाभ अधिकांश रूप में सरकारी नौकरों को ही मिलता है, और जनता उससे उतना लाभ नहीं उठा सकती, जितना उठाना चाहिए।

जिन्हें भारतीय सरकारी अस्पतालों की कटुता का अनुभव है, वे डॉक्टर विधानचंद्र की बातों का हृदय से समर्थन करेंगे। सच बात तो यह कि आज सरकारी अस्पतालों में जितनी धाँधली है, उतनी शायद सरकारी कचहरियों में भी नहीं। अस्पतालों में देश की निरीह जनता को जितनी कटुता का अनुभव करना पड़ता है, उतना कदाचित् जेल और पुलिस-विभाग के अतिरिक्त अन्य सरकारी संस्थाओं में नहीं। परंतु चूँकि अस्पतालों में वे ही लोग जाते हैं, जिन्हें जीवन ने विवश और मृत्यु के भय ने परवश कर दिया है, इसलिये मनुष्यता के नाम पर आज देश की सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि सरकारी अस्पतालों का सुधार हो। इस सुधार-संबंधी योजना के संबंध में डॉक्टर राय महोदय का कहना है कि सरकारी अस्पतालों को स्थानीय कमेटियों के अधीन कर दिया जाय। इन कमेटियों में जनता, सरकार तथा उन सरकारी संस्थाओं के सदस्य हों, जो इनके खर्च के लिये आर्थिक सहायता देते हैं। समय आ गया है, जब सरकारी अस्पतालों को सरकारी मेडिकल विभाग की अधीनता से हटाकर जनता के प्रतिनिधियों के अधीन कर दिया जाय। इसी परिवर्तन द्वारा जनता का कल्याण हो सकता है। हम उस दिन की प्रार्थनामय प्रतीक्षा करते हैं, जब भारत के सरकारी अस्पतालों के इतिहास में इस परिवर्तन के कल्याणमय अध्याय का प्रारंभ होगा।

सभापति महोदय ने अपने भाषण में एक और भी उपयोगी राय दी है। वह यह कि सरकारी अस्पतालों में आज की भाँति स्वतंत्र व्यवसाय करनेवाले डॉक्टरों के लिये रोक न हो, वरन् यदि वे चाहें, तो उनकी सेवाएँ स्वीकृत की जायँ, और उन्हें इस बात के लिये आमंत्रित किया जाय कि वे रोगियों का अनुसंधान कर अनुभव प्राप्त करें, और यदि चाहें, तो 'रिसर्च' भी करें। निश्चय इस प्रकार की सुविधा से स्वतंत्र व्यवसाय करनेवाले डॉक्टरों को ही लाभ न होगा, वरन् उनके अनुभवों से जनता भी लाभ उठावेगी।

× × ×

७. आदर्श एवं अनुकरणीय

हाल ही में बिहार-प्रांतीय हिंदू-सभा की नई कार्यकारिणी समिति ने, कुमार गंगानंदसिंह की अध्यक्षता में, अपने नए वर्ष के कार्य-क्रम में निम्नलिखित बातें सम्मिलित की हैं—

(१) समस्त प्रांत में शारीरिक उन्नति के लिये प्रचार।

(२) गीता-कथा और उसका प्रचार।

(३) हरिजन तथा संताल, कोल आदि हिंदुओं में सुधार-कार्य एवं उनका धार्मिक संरक्षण।

(४) विधवाओं और अनाथ बच्चों की रक्षा तथा इस कार्य के लिये प्रमुख-प्रमुख केंद्रों और स्थानों में कार्यकर्ता तथा स्वयंसेवकों की नियुक्ति।

(५) गोरक्षा।

(६) धार्मिक एवं दातव्य संस्थाओं की उचित व्यवस्था के लिये उपयुक्त कार्रवाई करना।

(७) सभाओं का आयोजन।

प्रतिवर्ष हिंदू-सभाएँ होती हैं—प्रांतीय और अखिल भारतवर्षीय। प्रतिवर्ष इन सभाओं में नए कार्य-क्रम बनते हैं—ओजस्वी और आकर्षक। पर हिंदू-सभाओं से जनता को एक विशेष शिकायत रही है, और वह यह कि ओजस्वी भाषणों, आकर्षक सम्मेलनों तथा उत्तेजक प्रस्तावों के अतिरिक्त वे व्यवहार-रूप में कुछ भी नहीं करतीं। सच बात तो यह है कि भारत की उन्नति का अधिकांश एवं अत्यंत महत्त्व-पूर्ण भाग हिंदुओं की उन्नति में है। हमारी सामाजिक व्यवस्था आज असाम्य एवं विशृंखलताओं से पूर्ण है। मुसलमान, ईसाई तथा अन्य धार्मिक संप्रदायों में आज वह हाहाकार नहीं है, जो हिंदुओं में है। और, इस हाहाकार का एकमात्र कारण यह है कि हम असंगठन तथा सामूहिक जीवन के अभाव में प्रतिदिन अपनी वास्तविक संस्कृति तथा आदर्श से दूर होते जा रहे हैं।

किसी जाति तथा राष्ट्र की उन्नति तभी हो सकती है, जब उस जाति अथवा राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता एवं सामाजिक जीवन की रक्षा की जाय। जातीय एवं राष्ट्रीय जीवन की वास्तविक प्रेरणा उसकी संस्कृति एवं उसके आदर्श ही हैं, और इनके अभाव में वह जाति तथा राष्ट्र धीरे-धीरे अपना अस्तित्व नष्ट करने लगता है, और असमय ही विनाश के गर्त में अंतर्हित हो जाता है। इसलिये आज देश को सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि भारत के छब्बीस करोड़ हिंदुओं का इस ढंग से संगठन किया जाय कि वे अपने नैतिक, धार्मिक और सामूहिक जीवन को ठीक करते हुए अपनी प्रत्येक सामाजिक दुर्बलता को निर्मूल करें। बिना इस प्रकार का आचरण किए वे न तो अपना राजनीतिक विकास कर सकते हैं, और न धार्मिक ही। आज अछूत कही जानेवाली हमारी करोड़ों आत्माएँ धार्मिक एवं सामाजिक वैषम्य के कारण रक्त के आँसू बहा रही हैं। हमारी विधवाओं का भयानक ह्रास हो रहा है, और हमारे सामाजिक अत्याचारों के कारण आज वे विधर्मियों की संख्या बहुत वेग से बढ़ा रही हैं। हमारे मठों और मंदिरों की व्यवस्था आज इतनी दूषित है, तथा उनके अंदर और बाहर इतना घृणित वातावरण तैयार है, जिसकी कल्पना-मात्र से हमारी आत्मा काँप उठती है। हमारी धार्मिक आय प्रतिवर्ष अरबों रुपए की है; परंतु हिंदू-जाति की इस अतुल संपत्ति का अधिकांश केवल पंडों और मठाधीशों की मौज तथा उनकी विषय-वासना में ही अर्पित हो जाता है—उन पंडों और मठाधीशों की मौज में, जो प्राचीन काल में हिंदू-समाज के नेता और आज उसके कलंक एवं घातक कीट हैं।

इस दशा में हिंदू-सभाओं का दायित्व सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में आज कांग्रेस से असंख्यगुना अधिक है। इतना ही नहीं, यदि आज

वे केवल सैद्धांतिक कल्पनाओं से आगे चलकर वास्तविक व्यावहारिकता में आवें, तो उनका कार्य-क्षेत्र इतना विस्तृत है, जिसकी कल्पना-मात्र से एक अद्भुत जीवन और जागृति की प्रेरणा मिलने लगती है। पर सबसे बड़ी बात त्याग, तपस्या और लगन की है, जिसका हिंदू-सभा के अधिकांश कार्यकर्ताओं में सर्वथा अभाव है। आज हमारी हिंदू-सभाओं के अधिकांश कार्यकर्ता ऐसे हैं, जो किसी-न-किसी व्यक्तिगत स्वार्थ तथा उद्देश से प्रेरित होकर ही हिंदू-सभा में सम्मिलित हैं। उनके हृदयों में न तो गांधीजी की निःस्पृह तपस्या ही है, और न जवाहरलाल नेहरू का उत्साह ही। और, बिना इन गुणों के जगत् में 'सत्यं शिवं सुंदरम्' की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि हिंदू-सभा के नेतागण अपने त्याग और तपस्या से हिंदू-जाति के जीर्ण दुर्ग को पुनः शक्तिशाली और उन्नत करें।

बिहार-प्रांतीय हिंदू-सभा के उपर्युक्त कार्य-क्रम का हम हृदय से स्वागत करते हैं, और चाहते हैं, वह कार्य-क्रम केवल काग़ज़ में ही लिखा न रहे, वरन् उसे कार्य-रूप में परिणत किया जाय। ऐसा करने पर ही बिहार-प्रांतीय हिंदू-सभा एक आदर्श स्थापित कर देश की अन्य सभाओं के लिये अनुकरणीय होगी। आज देश में लाखों नवयुवक बेकार हैं। यदि वे इन पवित्र उद्देशों की पूर्ति के लिये गाँवों में जायँ, और गाँवों का संगठन आरंभ कर दें, तो कम-से-कम सात लाख नवयुवकों की बेकारी की समस्या अवश्य हल हो जायगी, और देश तथा हिंदू-समाज का अमित कल्याण होगा।

× × ×

८. बिहार के प्रसिद्ध साहित्य-सेवी

कुमार गंगानंदसिंह एम्० ए०

बिहार-प्रांत की बड़ी कौंसिल में इस वर्ष श्रीकुमार गंगानंदसिंहजी के, दरभंगा-जेनरल केंद्र से, मनोनीत होकर पहुँच जाने के कारण हिंदी के हितों की पर्याप्त रक्षा हो गई है। कुमार महोदय सदा से ही प्रसिद्ध साहित्यानुरागी रहे हैं, और हिंदी-साहित्य के प्रति उनका अनुराग उत्तरोत्तर पुष्ट ही होता रहा है।

कुमार महोदय का जन्म प्रथम आश्विन शुक्ल नवमी संवत् १९५५ वि० के दिन, श्रीनगराधीश स्वर्गीय राजा कमलानंदसिंहजी 'साहित्य-सरोज' के पुत्र रूप में, राजधानी श्रीनगर, ज़िला पूर्णिया में, हुआ था। श्रीराजा कमलानंदसिंहजी स्वयं प्रसिद्ध दानी तथा सुकवि और लेखक थे, अतएव बचपन से ही कुमार महोदय में भी इन सद्गुणों का समावेश होना आवश्यक था। घर पर योग्य पिता के तत्त्वावधान में शिक्षा पाने के कारण इनमें ये सद्गुण और भी अधिक बद्धमूल हो गए थे। और, बाद में जब वह पूर्णिया-ज़िला-स्कूल, प्रेसिडेंसी-कॉलेज तथा संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता में शिक्षा पाने के लिये गए, तो उनकी ज्ञान-पिपासा की वृद्धि के साथ-ही-साथ इन गुणों का भी अत्यधिक विकास हुआ। सन् १९२१ में, एम्० ए० की परीक्षा सम्मान-सहित पास करने के बाद, वह उसी वर्ष रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़् ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंड के सदस्य निर्वाचित हुए। उसी के साथ-ही साथ, सन् १९२२ में, एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल ने भी उन्हें अपना फ़ेलो मनोनीत किया, और कलकत्ता-विश्वविद्यालय ने उन्हें तीन वर्ष के लिये अपना ऑनरेरी रिसर्च स्कॉलर नियत किया। बिहार-उड़ीसा-ओरिएटल रिसर्च सोसाइटी नें भी उन्हें अपनी सदस्यता से सन् १९२४ में सम्मानित किया।

शिक्षा तथा ज्ञान-विभूति से इस प्रकार सन्नद्ध होकर कुमार महोदय ने राजनीति और समाज-सेवा को अपनाया, तथा केंद्रीय असेंबली के वह १९२४ से १९३० तक सदस्य रहे। असेंबली में, १९२५ में, स्वराज्य-पार्टी के साथ मिलकर उन्होंने नेशनलिस्ट पार्टी को जन्म दिया, और १९२८ में असेंबली की

कांग्रेस-पार्टी के मंत्री भी निर्वाचित हुए। लंदन के एंपायर पार्लियामेंटरी एसोसिएशन के वह आजीवन सदस्य बने, और अखिल भारतीय हिंदू-महासभा की कार्यकारिणी समिति में भी उन्हें मनोनीत किया गया। सन् १९२६ से १९३५ तक वह उसके सदस्य रहे। दरभंगा-महाराज के साथ, सन् १९३०-३१ में, वह गोलमेज़ कान्फ्रेंस में भी सम्मिलित हुए, और पूरे योरप की उन्होंने यात्रा की।

कुमार महोदय बड़े विद्यानुरागी व्यक्ति हैं, और उन्होंने अनेक लेख तथा निबंध अब तक हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं में लिखे हैं। इनके अतिरिक्त 'प्राचीन तथा मध्यकालीन भारत में विदेह का स्थान', 'जांगल देश', 'नेपाल में बंगाली नाटकों का आविष्कार', 'सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के मैथिली नाटक' तथा 'क्या धमत बौद्ध धर्म का अंग है' आदि अनेक अँगरेज़ी-निबंध ओरिएंटल कान्फ्रेंस-रिपोर्ट, एशियाटिक सोसाइटी-जर्नल्स आदि में उन्होंने प्रकाशित किए हैं। कलकत्ता-विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भरौत के शिलालेखों का भी उन्होंने डॉ० बी० एम्० बरुआ के साहाय्य से संपादन किया था। सन् १९३६ में 'दरभंगा-राज्य और भूकंप'-नामक एक ग्रंथ की भी उन्होंने रचना की थी।

अपने पिताजी के देहांत के बाद से कुमार महोदय श्रीनगराधीश हुए हैं। उनसे हिंदी को बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। परमात्मा ऐसे सदाशय व्यक्ति को चिरजीवी करें, यही हमारी प्रार्थना है।

× × ×

९. समालोचनार्थ पुस्तकों की २ प्रतियाँ

कविवर बाबू सियारामशरणजी गुप्त का एक पत्र हमने 'हमारी डाक'-शीर्षक स्तंभ में छापा है। समालोचना के लिये दो-दो प्रतियाँ मँगाने का अपराध प्रारंभ में हमने ही किया था—यह सिस्टम चलाने का दोष हमारे ही सिर मढ़ा जाना चाहिए। यह तब की बात है, जब हमने 'माधुरी' निकाली थी। उस समय हिंदी-पुस्तकें बहुत काफ़ी तादाद में बिकती थीं, प्रत्येक पुस्तक की चार-पाँच हज़ार प्रतियों के संस्करण छपते थे, किंतु अब अवस्था बदल गई है। अब दो हज़ार से अधिक के संस्करण नहीं निकलते। फिर पहले जहाँ हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ उँगलियों पर गिनी जा सकती थीं, अब उनकी संख्या तिगुनी हो गई है। इसलिये अब हमारा भी यह मत है कि यदि संपादकगण समालोचना के लिये प्रत्येक पुस्तक की एक-एक प्रति ही प्रकाशकों से लिया करें, तो यह समय के अनुसार उचित ही होगा। गुप्तजी का कहना है, यदि दो प्रतियों की आवश्यकता आ पड़े, तो एक प्रति फिर मँगाई जा सकती है। हम इससे सहमत हैं। आशा है, जिन पत्रों में दो प्रतियाँ मँगाने का नियम है, उनके संपादक आगे अब एक ही प्रति मँगाने की कृपा करेंगे। भविष्य में जब पुस्तकों का सेल बढ़ जाय, तब फिर दो प्रतियाँ मँगाई जा सकती हैं। हम तो दो प्रतियाँ इसलिये मँगाते थे कि हमने विद्वान् लेखकों से—विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों से—आलोचना कराना आरंभ किया था। एक-एक प्रति उन्हें भेज देते थे, और दूसरी प्रति संपादकीय लाइब्रेरी में रखकर बाद को हिंदी-सभा की स्थानीय लाइब्रेरी को दे देते थे। अस्तु। जब तक पुस्तक का व्यापार तेज़ी से फिर न चलने लगे, तब तक प्रत्येक पुस्तक की एक-एक प्रति ही समालोचनार्थ स्वीकार करना पत्र-संपादकों के लिये समयानुकूल होगा।

× × ×

१०. जीवनी शक्ति का ह्रास

जहाँ दरिद्रता अधिक होती है, वहाँ बीमारी और मृत्यु-संख्या भी अधिक होती है। भारत इसका अपवाद नहीं। यहाँ की सरकार की तरफ़ से देश के स्वास्थ्य के संबंध में जो रिपोर्ट प्रकाशित होती है,

उसके आँकड़े देखने से पता चलता है कि एक ओर देश में जहाँ जन-संख्या की वृद्धि आवश्यकता से अधिक हो रही है, वहाँ नई-नई बीमारियाँ भी घर कर रही हैं, और मृत्यु-संख्या भी बढ़ रही है। सन् १९३५ की जो रिपोर्ट अभी प्रकाशित हुई है, उसे देखने से पता लगता है कि मरनेवालों की संख्या में नवजात शिशुओं की संख्या सबसे अधिक है, और लगभग तेंतालीस प्रतिशत बालकों ने मरने के लिये जन्म लिया। जितने बालक यहाँ जन्म लेकर पाँच साल की उम्र तक मर जाते हैं, उसका कारण उनके मा-बाप की दरिद्रता ही है। मा-बाप को पौष्टिक खाद्य पदार्थ नहीं मिलते, और उनकी जो संतान पैदा होती है, वह निर्बल तथा हतवीर्य होती है। फिर पालन-पोषण के लिये बालकों को पर्याप्त ख़ूराक नहीं मिल पाती, फलतः वे बीमार होते और मर जाते हैं। यही नहीं, बल्कि प्रसव-काल के बाद मा की शक्ति का जो क्षय होता है, उसमें उनकी जीवनी शक्ति भी नष्ट हो जाती है। रिपोर्ट में बतलाया गया है कि मरनेवाली स्त्रियों में उन्हीं की संख्या अधिक है, जिनकी उम्र १५ वर्ष से ४० वर्ष तक की है। इसका अर्थ स्पष्ट है। यही उम्र बच्चा पैदा करने की होती है, और अधिकतर स्त्रियाँ प्रसव-काल में या उसकी कमज़ोरी के कारण कुछ समय बाद मर जाती हैं। इस वर्ष (१९३५ ई०) कुल ६६,६८,७६४ बच्चे पैदा हुए, और मरनेवालों की संख्या ६५,७८,७११ है। इससे प्रकट है कि इस भयानक मृत्यु-संख्या के होते हुए भी भारत की आबादी में भयानक रूप से वृद्धि हो रही है। सन् १९३१ से अब तक भारत की जन-संख्या पाँच प्रतिशत बढ़ गई है। केवल ब्रिटिश भारत में ही, सन् १९३५ तक के प्रथम चार वर्षों में, डेढ़ करोड़ संख्या बढ़ी है। अतः सन् १९३७ की भारत की जन-संख्या का हिसाब ३७ करोड़ से कम न होगा।

एक ओर जन-संख्या में इस तेज़ी के साथ वृद्धि हो रही है, दूसरी ओर प्लेग, मलेरिया, गर्दनतोड़ बुख़ार आदि बीमारियाँ भी उग्र रूप धारण कर रही हैं। जिस वर्ष की यह रिपोर्ट है, उसमें प्लेग से ही ३२,००० आदमी मरे। मलेरिया बुख़ार की भीषणता तो प्रतिवर्ष बढ़ती ही जाती है, और मलेरिया ने अब अंतरराष्ट्रीय समस्या का रूप धारण कर लिया है, तथा इस बीमारी के संबंध में अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान भी हो रहा है। ज्वर की बीमारियों में ४४ प्रतिशत मृत्यु केवल मलेरिया बुख़ार के कारण हुई बतलाई गई। सरकार के पास इस बुख़ार के लिये कुनैन से बढ़कर अब तक कोई इलाज नहीं। रिपोर्ट में बतलाया गया है कि दो लाख पौंड कुनैन मलेरिया के लिये सरकार की तरफ़ से बाँटी जाती है, जब कि आवश्यकता साढ़े बारह लाख पौंड कुनैन की बतलाई गई है। गर्दनतोड़ बुख़ार की नई बीमारी ने शहरों में भयकर रूप धारण कर लिया है, और दिल्ली तथा कलकत्ता-जैसे शहरों में इस बुख़ार के मरीज़ क्रमशः पचास और इकसठ फ़ी-सदी काल के ग्रास बन गए। इनके अतिरिक्त मियादी बुख़ार, क्षयरोग आदि से भी काफ़ी मृत्यु होती है। देश-भर में दस लाख आदमी कोढ़ी हैं। इनमें से साढ़े तीन लाख का कुष्ठ तो ऐसा है, जो औरों के लिये भी भयानक सिद्ध हो रहा है।

पर्याप्त चिकित्सा की कमी और पौष्टिक खाद्य पदार्थों के अभाव के कारण ये बीमारियाँ और भी ज़ोर पकड़ती जा रही हैं। स्त्रियों की प्रसव-रोग से सबसे अधिक मृत्यु होती है। अब तक बड़े-बड़े शहरों को छोड़कर कहीं भी योग्य दाइयाँ रखने की व्यवस्था नहीं हुई है। इतने बड़े देश में केवल आठ सौ ऐसे केंद्र हैं, जहाँ शिशुओं की देख-भाल होती है, और उनमें केवल साढ़े

योग्य महिला-डॉक्टर और साढ़े तीन सौ शिक्षित स्वास्थ्य-निरीक्षक काम करते हैं। यह कार्य ज़िला-बोर्डों और म्युनिसिपल-बोर्डों को करना चाहिए, किंतु इस समय इनके द्वारा नहीं के बराबर हो रहा है। स्वयं रिपोर्ट में उल्लेख है कि आधे ज़िला-बोर्डों और तीन चौथाई म्युनिसिपल-बोर्डों में दाइयों की व्यवस्था का कुछ प्रबंध नहीं। देश-भर में विलायती ढंग के अस्पताल ६,७०० हैं, और उन सबमें कुल मिलाकर ७,८४,५३,१६४ बीमारों की दवा हुई। किंतु इनमें ऐसे अधिकांश बीमारों की संख्या शामिल होगी, जो एक बार ज़ुकाम के लिये एक पुड़िया दवा ले गए होंगे, या ज़ख़म पर कभी मलहम लगवा गए होंगे। सो भी यह सुविधा केवल शहरों में ही सुलभ है। देहात में तो चिकित्सा का कोई भी प्रबंध नहीं, और मलेरिया बुख़ार का सबसे अधिक प्रकोप देहात में ही होता है!

खाद्य पदार्थों में मिलावट का रोग जितना बढ़ता जा रहा है, वह लोगों की रही-सही जीवनी शक्ति को भी नष्ट कर रहा है। अनुसंधान करने पर पता लगा है कि केवल घी में मिलावट पंजाब में ४५, सीमाप्रांत में ४१, यू० पी० में १५, बिहार-उड़ीसा में ५८, बंगाल में ४५ और आसाम में ५२ प्रतिशत होती है। इसी प्रकार दूध में इस मिलावट का अनुपात सीमाप्रांत में ६४, पंजाब में ६०, यू० पी० में ७, बिहार-उड़ीसा में ५६, बंगाल में ६६ और आसाम में ४३ प्रतिशत है। इस मिलावट को दूर करने और उसके लिये कड़े नियम बनाने की आयोजना सरकार की तरफ़ से कुछ नहीं की गई है। इस प्रकार देश की जीवनी शक्ति का दिन-दिन ह्रास हो रहा है, और इसे देश के दुर्भाग्य के अलावा और क्या कह सकते हैं!

× × ×

११. मँगते और भिखारी

भारतवर्ष में मँगतों और भिखारियों की संख्या लाखों में है। इनमें यदि योगी, यती, फ़क़ीर और पीरों की भी गणना की जाय, तो यह संख्या १ करोड़ के लगभग पहुँच जाती है। यदि आर्थिक दृष्टि से इस विषय का विवेचन किया जाय, तो मानना पड़ेगा कि इतने स्त्री-पुरुष, जिनमें बहुत-से हट्टे-कट्टे और सब प्रकार तंदुरुस्त हैं, मुफ़्त में औरों के मत्थे खा रहे हैं, और देश में इतनी मनुष्य-शक्ति का दुरुपयोग हो रहा है। यदि स्वस्थ मँगते या भिखारी खाली दर-दर घूमने और जो मिल गया, वह खाने से संतुष्ट न होते, और अपना समय किसी धंधे में व्यतीत करते, तो उन्हें तो लाभ होता ही, देश की भी एक समस्या कम हो जाती। पर स्थिति ऐसी नहीं। अधिकांश भिखारी काम करने से घर-घर घूमकर भीख माँगना श्रेयस्कर समझते हैं, क्योंकि उन्हें इस प्रकार अच्छी आमदनी होती है।

हमारे बहुत-से पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि दिन-भर फटे-पुराने चीथड़ों में शरीर छिपानेवाले बहुत-से मँगते दिन-भर में दो-चार आने से लेकर एक-दो रुपए तक पैदा कर लेते हैं। और, कोई-कोई तो इस प्रकार कमाए धन को ब्याज-बट्टे द्वारा बढ़ाने का भी प्रयत्न करते हैं। कभी-कभी जब ये मँगते लावल्द और लावारिस मर जाते हैं, और पुलिस इनके सामान की तलाशी लेती है, तो उसे काफ़ी रक़म मिलती है। यह लिखने से हमारा यह तात्पर्य नहीं कि सभी मँगते माल जमा करने में समर्थ होते हैं। हाँ, यह हम अवश्य कहना चाहते हैं कि बाजे-बाजे मँगते १०-१५ रु० माहवार कमानेवाले बाबुओं से अच्छी हैसियत रखते हैं।

इधर कुछ वर्षों से भारत में भी यह आंदोलन हो रहा है कि मँगतों और भिखारियों को स्थान-स्थान पर स्वतंत्ररूपेण माँगने और घूमने न दिया जाय, वरन् माँगना एक अपराध बना दिया जाय,

और जो भी माँगता दिखाई दे, वह गिरफ़्तार कर लिया जाय। विदेशों में भीख माँगना गुनाह है। वहाँ स्थान-स्थान पर ऐसी सोसाइटियाँ बनी हैं, जो वास्तव में दया के पात्र हैं, उन्हें हर प्रकार सहायता पहुँचाती हैं, और जो झूठे ही लोगों की सहानुभूति और करुणा के सहारे अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं, उन्हें दंडित भी करवाती हैं। वहाँ लूले, अपाहिजों आदि के साथ सबकी सहानुभूति है, और उनकी देख-रेख के लिये कई दातव्य संस्थाएँ खुली हैं। भारत में भी, बहुत लोग चाहते हैं, योरप की ही भाँति ऐसे आश्रम खोले जायँ, जो अपाहिजों की ख़ूब देख-भाल करें, पर यहाँ योरप के सदृश नियम बनाने में कई कठिनाइयाँ हैं।

जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं, यहाँ योगी, यती, फ़क़ीर आदि के प्रति जनता के भाव बड़े ही उदार हैं, और वह उन्हें मँगतों की दृष्टि से नहीं देखती, यद्यपि उनमें और मँगतों में आर्थिक दृष्टि से अधिक भेद नहीं। जहाँ मँगते को १० घरों में एक पैसे की प्राप्ति होगी, वहाँ माँगने पर, बहुत संभव है; एक रमता फ़क़ीर अच्छी रक़म इकट्ठा करने में समर्थ हो! फ़क़ीर में त्याग की भावना प्रधान मानी जाती और जनता इसी भावना का आदर करती है। धर्म के नाम पर आजदिन भी लाखों रुपया मँगतों और कंगालों में बाँटा जाता है। ऐसी स्थिति में 'माँगने' पर अपराध की सज़ा देने के लिये भला कब लोग तैयार होंगे? इसीलिये इस मँगतों के प्रश्न को हल करना सरल नहीं।

यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय, तो दूसरों की कमाई में हक़ रखनेवाले मँगते, फ़क़ीर आदि के अतिरिक्त, तीन श्रेणियों में विभक्त किए जा सकते हैं—(१) सँड मुसँड, जो हर तरह तंदुरुस्त हैं, पर भीख माँगना अच्छा समझते हैं, (२) जो काम चाहते हैं, पर रोज़गार के अभाव में लाचार हो भीख माँगते हैं, और (३) अपाहिज, जो अंग-हीन और कार्य करने में असमर्थ हैं।

हम योगी, फ़क़ीर आदि की यहाँ चर्चा न करेंगे, क्योंकि इनकी स्थिति भारतीय सभ्यता की एक विशेषता है। अन्यों के बारे में हम समझते हैं कि पहले नंबरवालों को ज़बरदस्ती काम में लगाया जाय। जो जिस योग्य हो, उससे उतना काम लिया जाय, और उसके एवज़ में उसे कुछ रक़म दे दी

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र
जगत्-विख्यात
Registered "कॉनटैक्स" रजिस्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करके और अधिक संतान उत्पन्न करके अपने स्वास्थ्य और सुंदरता को मिट्टी में मिलाना और अकाल-मृत्यु के मुख में जाना नहीं चाहतीं, तथा दासों और अनाथों की संख्या बढ़ाना महापाप समझती हैं, वे कॉनटक्स के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

जाय। जो ऐसा करने से जी चुरावें, उन्हें दंडित किया जाय। दूसरे नंबरवालों के लिये भी रोज़गार ढूँढ़ा जाय, या ऐसी संस्थाएँ क़ायम की जायँ, जहाँ उन्हें नए-नए धंधों की शिक्षा दी जा सके, और शिक्षा प्राप्त करने पर, काम भली भाँति चालू होने तक, उन्हें सरकारी इमदाद मिले। तीसरे नंबरवालों से तो सभी की सहानुभूति होती है, अतः उनके लिये ऐसे आश्रम खोले जाने की आवश्यकता है, जो उनकी पूरी-पूरी देख रेख कर सकें और यदि उनकी स्थिति कुछ सुधर सकती हो, तो सुधारें भी।

इस ढंग के बिल यदि जनता के सामने रक्खें जायँ, तो आशा है, वे उसे स्वीकृत होंगे, और मँगतों का प्रश्न बहुत कुछ हल हो सकेगा। क्या हमारे कौंसिलों और असेंबलियों के मेंबर इस ओर ध्यान देंगे?

× × ×

लूटिए ! ❀ पुरस्कार ❀ लूटिए !!

कैसा ? १०००) रुपए कितना ?

किस प्रकार मिलेगा ?

प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एफ़्० सी० एस्० आदि द्वारा प्रणीत पुस्तकों की मदद से।

सैकड़ों तरह के सुगंधित साबुन बनाने की पुस्तक	१)
रंग की पुस्तक	१)
सुगंधित तेल की पुस्तक	१)
सरल रसायन (Chemistry)	१) } साथ लेने से १।।) में
हिंदी-केमिस्ट्री	१)
आरोग्य-विद्या (Hygiene)	।।)
रिसाला साबुनसाज़ी (उर्दू-संस्करण)	।।)
इत्र की पुस्तक	१)
देशी जड़ी बूटी और उनके गुण (छप रही है)	
तड़ित-प्रयोग-सूची	=)
१२६ क़िस्म की रोशनाई बनाने की पुस्तक	।।)
वार्निश और पेंट	१)
विद्युत्-शास्त्र (Electricity)	।।)
आरोग्य-विद्या द्वितीय भाग (छपनेवाला है)	
अयोध्या-गाइड	-)॥
तंतु-कला (सूत का हुनर) और माड़ी चढ़ाने की पुस्तक	१)
अनुवाद-कला (Sanskrit Teacher)	।)
हस्त-रेखा	=)
चुंबकत्व और फ़ोटोग्राफ़ी (छपनेवाली है)	

मार्च तक आधे मूल्य में

पता—प्रोफ़ेसर लक्ष्मीचंदजी एम्० ए० (इलाहाबाद), एम्० एस्-सी० टेक्० (विक्टोरिया, इँगलैंड), एफ़्० सी० ए० (लंदन), एस्० एम्० एस्० टी० (मैनचेस्टर) इत्यादि (मेडलिस्ट सिटी ऐंड गिल्ड्स ऑफ़् लंदन इंस्टिच्यूट), विज्ञान-हुनर-ऑफ़िस, शकरकंद की गली, बनारस सिटी

१२. बधाई !

पूज्यपाद रावराजा रायबहादुर पं० श्यामविहारीजी मिश्र, अभी हाल ही में, प्रयाग-विश्वविद्यालय से डॉक्टर (डी० लिट्०) की उपाधि से विभूषित हुए हैं । यह उन्हें अपनी उच्च कोटि की हिंदी-सेवा के उपलक्ष्य में मिली है । इस शुभ अवसर पर सुधा-मंडल की ओर से हम उन्हें बधाई देते हैं ! सुधा-मंडल के वह एक प्रधान स्तंभ हैं । हिंदी की ऑनरेरी डॉक्टर की डिग्री प्राप्त करनेवाले यह प्रथम साहित्यिक हैं, हमें इसका गर्व है । जो कार्य लखनऊ-विश्वविद्यालय को करना चाहिए था, उसे प्रयाग-विश्वविद्यालय ने पहले कर दिया, यह उसके लिये गौरव की बात है । आशा है, लखनऊ-विश्वविद्यालय रायबहादुर पं० शुकदेवविहारीजी मिश्र को डॉक्टर की उपाधि देकर अपने को गौरवान्वित तथा हिंदी-भाषा का मस्तक ऊँचा करेगा, क्योंकि अब समय आ गया है कि सभी जगह राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-भाषा-सेवियों का पूर्ण आदर-सत्कार होना ही चाहिए ।

× × ×

१३. लखनऊ-विश्वविद्यालय में एम्० ए० में हिंदी

प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में एम्० ए० में हिंदी पढ़ाई जाती है । केवल लखनऊ विश्वविद्यालय इससे वंचित था । हम गत कई वर्षों में इस संबंध में अनेक बार लिख चुके हैं । हर्ष की बात है, आगामी वर्ष से लखनऊ-विश्वविद्यालय में भी एम्० ए० में हिंदी पढ़ाना निश्चित किया गया है ! एक अध्यापक और रक्खे जा रहे हैं । इस पद के लिये अनेक एम्० ए० (हिंदी)-उपाधि-विभूषित महानुभाव दौड़-धूप कर रहे हैं । देखें, यह सौभाग्य किसे प्राप्त होता है । अस्तु । हम विश्वविद्यालय के कर्णधारों को इस शुभ आयोजना के लिये—हम हिंदी-प्रेमियों की इच्छा-पूर्ति के लिये—बधाई देते हैं !

सुधा
का
प्रचार
कीजिए !

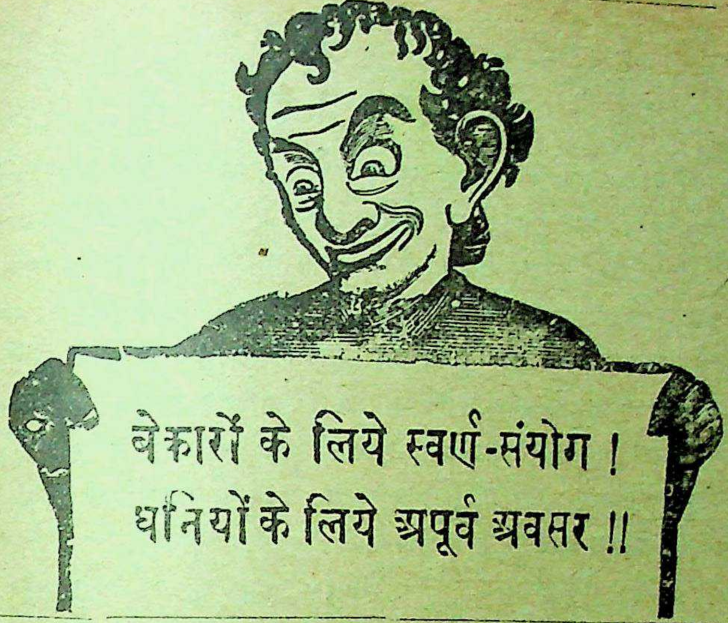
बेकारों के लिये स्वर्ण-संयोग !
धनियों के लिये अपूर्व अवसर !!

भारत-भर में एजेंसियों का आयोजन !!!

नगरों के नाम

- कलकत्ता - -
- पटना - - -
- मुज़फ़्फ़रपुर -
- बनारस - - -
- कानपुर - - -
- दिल्ली - - -
- लाहौर - - -
- अमृतसर - -
- जयपुर - - -
- ग्वालियर - -
- इंदौर - - -
- जोधपुर - -

गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकें भारत के कोने-कोने में प्रसिद्ध हैं। सुदूरवर्ती मद्रास, बलोचिस्तान, नैपाल, आसाम, ब्रह्मा, फ़िजी तथा जर्मनी तक से हमारी पुस्तकों की धड़ाधड़ माँगें आ रही हैं। इसीलिये ग्राहकों की सुविधा के विचार से भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत के प्रसिद्ध नगरों में हम अपनी एजेंसियाँ खोलना चाहते हैं। अतएव इस पृष्ठ पर इधर-उधर, दोनो ओर, लिखे हुए या अन्य नगरों में जो सज्जन २ हज़ार रुपया लगाकर दूकान खोलना चाहें, वे शीघ्र ही हमें पत्र लिखें। अधिक-से-अधिक रुपया कमाने के इस अवसर को न चूकें। नियम मँगाइए।

नगरों के नाम

- प्रयाग - - -
- आगरा - - -
- शिमला - - -
- मंसूरी - - -
- नैनीताल - -
- गोरखपुर - -
- बंबई - - - -
- देहरादून- - -
- मुरादाबाद -
- बरेली - - -
- मेरठ - - -
- काशी - - -

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

२५) लगाकर २५०) कमाइए !

आवश्यकता है

हमें भारत के प्रत्येक छोटे-बड़े क़स्बे, नगर और शहर में ऐसे प्रचारकों की, जो अपने स्थान की जन-संख्या के अनुसार हमारी नई पुस्तकों की ५ से २५ प्रतियाँ तक बेच दिया करें। हम उन्हें प्रत्येक मास ७-८ नई पुस्तकें दिया करेंगे। अपनी पुरानी सैकड़ों पुस्तकें भी उन्हें बेचने को दी जायँगी। इसके अलावा भारतवर्ष-भर की हिंदी-पुस्तकें उन्हें भेजी जा सकेंगी। कम-से-कम २५) की नक़द जमानत ज़रूरी है। सुधा और माला के प्रेमी ग्राहकों से निवेदन है कि अपने यहाँ के लिये कोई प्रचारक हमारे लिये तजवीज़ करें। हम सब जगह—भारत-भर में कोई २५० प्रचारकों का जाल बिछा देना चाहते हैं, जो निकलते ही नई पुस्तकों की ४-५ हज़ार प्रतियाँ, दो महीने में, खपा देंगे। मुख्य-मुख्य स्थानों के नाम, जहाँ प्रचारकों की ज़रूरत है, दिए जाते हैं, जो सज्जन प्रचारक बनना चाहें, हमें लिखें—

लखनऊ
बर्द्वान
भागलपुर
मुंगेर
पूर्णियाँ
पटना
गया
चंपारन
दरभंगा
मुज़फ़्फ़रपुर
सारन
हज़ारीबाग़
मानभूमि
पालामऊ
राँची
मेरठ
देहरादून
गोरखपुर
बुलंदशहर
मैनपुरी
अलीगढ़
बरेली

इलाहाबाद
बदाऊँ
मुरादाबाद
झाँसी
बलिया
अलमोड़ा
नैनीताल
हरदोई
बहराइच
प्रतापगढ़
अंबाला
जालंधर
होशियारपुर
लुधियाना
फ़ीरोज़पुर
लाहौर
अमृतसर
रावलपिंडी
स्यालकोट
गुजरात
मुल्तान
लाइलपुर

बनारस
दिल्ली
सागर
दमोह
सिवनी
मंडला
होशंगाबाद
छिंदवाड़ा
बेतूल
नीमार
अकोला
यूनमल
नागपूर
वर्धा
रायपुर
बिलासपुर
अहमदाबाद
सूरत
नासिक
पूना
कराँची
मदरास

कानपुर
अजमेर
मांडले
काश्मीर
हैदराबाद
मैसूर
बड़ौदा
ग्वालियर
इंदौर
भूपाल
रीवाँ
धार
भरतपूर
अलवर
धौलपुर
टोंक
किशनगढ़
बूँदी
कोटा
झालरापाटन
बीकानेर
श्रीनगर

नियम निम्नांकित पते से मँगाइए—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

पहेली-पूर्तिकार ध्यान दें।

सुधा के पुराने अंक

चौथाई मूल्य में !!

अक्सर देखा गया है कि पहेली भरनेवालों को पहेलियों के कूपनों के लिये सुधा के प्रत्येक अंक की तीन-तीन, चार-चार, आठ-आठ प्रतियाँ खरीदनी पड़ती हैं, पर वे पहेली भरने के बाद बेकार हो जाती हैं, क्योंकि उन सबमें एक ही लेख और चित्र रहते हैं। उनकी सहूलियत के लिये हमने सुधा के नीचे लिखे अंकों में भी यही तृतीय पहेली लगा दी है। अब जो चाहें, नवीन अंक की कई प्रतियाँ ।)-।) में न खरीदकर इस सूची में से जो पिछले अंक पसंद करें, वह =) =) आने में मँगा लें। पहेली भरनेवालों से इनका मूल्य केवल =) ही लिया जायगा, यद्यपि ।)-॥=) हैं। आशा है, ग्राहक इससे लाभ उठाएँगे, और मनमाने अंक खरीदेंगे। इस तरह गत १० वर्षों की सुधा का सुंदर सेट भी, उनके पास, उनके और उनकी स्त्री-बच्चों के लाभ के लिये, धीरे-धीरे तैयार हो जायगा। डाक-व्यय पृथक्।

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्तिकारों से	पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्तिकारों से
१	अगस्त	१९२७	॥=)	=)	२५	अगस्त	१९२९	॥=)	=)
२	सितंबर	,,	,,	,,	२६	सितंबर	,,	,,	,,
३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,	२७	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
४	नवंबर	,,	,,	,,	२८	नवंबर	,,	,,	,,
६	जनवरी	१९२८	,,	,,	३१	फरवरी	१९३०	,,	,,
७	फरवरी	,,	,,	,,	३२	मार्च	,,	,,	,,
८	मार्च	,,	,,	,,	३३	एप्रिल	,,	,,	,,
९	एप्रिल	,,	,,	,,	३४	मई	,,	,,	,,
१०	मई	,,	,,	,,	३५	जून	,,	,,	,,
११	जून	,,	,,	,,	४२	जनवरी	१९३१	,,	,,
१२	जुलाई	,,	,,	,,	४३	फरवरी	,,	,,	,,
१४	सितंबर	,,	,,	,,	४४	मार्च	,,	,,	,,
१५	ऑक्टोबर	,,	।।।)	≡)	४५	एप्रिल	,,	,,	,,
१६	नवंबर	,,	॥=)	=)	४७	जून	,,	,,	,,
१७	दिसंबर	,,	,,	,,	४८	जुलाई	,,	,,	,,
१८	जनवरी	१९२९	,,	,,	५१	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
१९	फरवरी	,,	,,	,,	५२	नवंबर	,,	,,	,,
२०	मार्च	,,	,,	,,	५३	दिसंबर	,,	,,	,,
२१	एप्रिल	,,	,,	,,	५५	फरवरी	१९३२	,,	,,
२२	मई	,,	,,	,,	५९	जून	,,	,,	,,
२३	जून	,,	,,	,,	६०	जुलाई	,,	,,	,,
२४	जुलाई	,,	,,	,,	६१	अगस्त	,,	,,	,,

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्ति-कारों से
६२	सितंबर	१९३२	‖=)	=)
६३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
६४	नवंबर	,,	,,	,,
६५	दिसंबर	,,	१‖)	‖)
६६	जनवरी	१९३३	‖=)	=)
६७	फ़रवरी	,,	,,	,,
६८	मार्च	,,	,,	,,
६९	एप्रिल	,,	,,	,,
७०	मई	,,	,,	,,
७१	जून	,,	,,	,,
७२	जुलाई	,,	,,	,,
७३	अगस्त १	,,	,,	,,
७४	अगस्त १६	,,	,,	,,
७६	सितंबर १६	,,	,,	,,
७७	ऑक्टोबर १	,,	,,	,,
७८	ऑक्टोबर १६	,,	‖), |=)	≡)
७९	नवंबर १	,,	|)	-)‖
८०	,, १६	,,	,,	,,
८१	दिसंबर १	,,	,,	,,
८२	दिसंबर १६	,,	,,	,,
८३	जनवरी १	३४	,,	,,
८४	,, १६	,,	,,	,,
८५	फ़रवरी १	,,	≡)	,,
८६	,, १६	,,	,,	,,
८७	मार्च १	,,	,,	,,
८८	,, १६	,,	,,	,,
८९	एप्रिल १	,,	,,	,,
९०	,, १६	,,	,,	,,
९१	मई १	,,	,,	,,
९२	,, १६	,,	,,	,,
९३	जून १	,,	,,	,,
९४	,, १६	,,	,,	,,
९५	जुलाई १	,,	,,	,,
९६	,, १६	,,	,,	,,
९७	अगस्त	,,	|)	,,

पूर्ण सं०	मास	सन्	असली दाम	पहली-पूर्ति-कारों से
९८	अगस्त १६	३४	|)	-)‖
९९	सितंबर १	,,	,,	,,
१००	नवंबर	,,	,,	,,
१०१	दिसंबर	,,	,,	,,
१०२	जनवरी	१९३५	,,	,,
१०३	फ़रवरी	,,	,,	,,
१०४	मार्च	,,	,,	,,
१०५	एप्रिल	,,	,,	,,
१०६	मई	,,	,,	,,
१०७	जून	,,	,,	,,
१०८	जुलाई	,,	,,	,,
१०९	अगस्त	,,	‖=)	=)
११०	सितंबर	,,	|=)	,,
१११	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
११२	नवंबर	,,	,,	,,
११३	दिसंबर	,,	,,	,,
११४	जनवरी	१९३६	‖)	,,
११५	फ़रवरी	,,	,,	,,
११६	मार्च	,,	|-)	,,
११७	एप्रिल	,,	,,	,,
११८	मई	,,	,,	,,
११९	जून	,,	,,	,,
१२०	जुलाई	,,	,,	,,
१२१	अगस्त	,,	,,	,,
१२२	सितंबर	,,	,,	,,
१२३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
१२४	नवंबर	,,	,,	,,
१२५	दिसंबर	,,	,,	,,
१२६	जनवरी	१९३७	,,	,,
१२७	फ़रवरी	,,	,,	,,
१२८	मार्च	,,	,,	,,
१३०	मई	,,	,,	,,
१३१	जून	,,	,,	,,
१३३	अगस्त	,,	२)	

मैनेजर सुधा, लखनऊ

उषा

६ सुंदर चित्रों
से सुशोभित
मनोहर
खंडकाव्य
लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त
'कुसुम'

बाण-नंदिनी उषा और कृष्णचंद्र के पौत्र अनिरुद्ध के प्रणय-परिणय की पौराणिक कथा।

तुकांतहीन
नई शैली
चारु चरित्र-चित्रण
भव्य, ओजस्वी वर्णन।

मूल्य
॥=), १=)

लतिका

लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी
'गुलाब'

चुनी हुई
उत्कृष्ट
एक
से
एक
अनूठी
मनोहर और
भाव-पूर्ण
कविताएँ।
अवश्य पढ़िए।

मूल्य
१), १॥)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला की कुछ चुनी हुई पुस्तकें

विजया

अनुवादक, 'माधुरी'-संपादक पंडित रूपनारायण पांडेय कविरत्न। पांडेयजी बँगला के कैसे सिद्धहस्त अनुवादक हैं, यह हिंदी-संसार पर भली भाँति विदित है। आपका अनुवाद मौलिकता से मंडित और स्वाभाविकता से सुमार्जित होता है। इस उपन्यास में सामाजिक चरित्र-चित्रण इतनी बारीकी और सुंदरता से किया गया है कि कहीं पढ़ते-पढ़ते करुणा और सहानुभूति से हृदय पिघल जाता है, और कहीं घटना की वास्तविकता से प्रभावान्वित होकर आठ-आठ आँसू बहाने पड़ते हैं। वर्णन का क्रम बड़ा मधुर और चित्ताकर्षक है। भाषा ललित और ओजस्विनी है। ६-७ रंगीन और सादे चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य १॥), सजिल्द २)

प्रेम-गंगा

अनुवादक, पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा भूतपूर्व 'मनोरंजन'-संपादक। वस्तुतः यह पुस्तक प्रेम की निर्मल गंगा ही है। इसमें प्रेम की ऐसी रसीली कहानियाँ हैं कि पढ़कर आप मुग्ध और चकित हो जायँगे। सौंदर्य में कैसी विचित्र आकर्षण-शक्ति है, प्रेम में कितनी तेज़ बिजली भरी हुई है, सौंदर्य-प्रेमी कितना बड़ा दुस्साहसी बन जाता है, पुरुषार्थ और वीरता से कैसी-कैसी अलभ्य वस्तुओं का उपभोग किया जा सकता है, प्रेमी और प्रेमिका के हृदय में कितनी तीव्र मिलनोत्कंठा होती है, इत्यादि बातें ऐसी मधुर, सरल, परिमार्जित और परिष्कृत भाषा में लिखी गई हैं कि पढ़ते-पढ़ते तबीयत फड़क उठती है, हृदय नाच उठता है, मन मस्त हो जाता है। कई रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित पुस्तक का मूल्य १), सुनहरी रेशमी जिल्द १।)

बुद्ध-चरित्र

अनुवादक, 'माधुरी'-संपादक पं० रूपनारायण पांडेय कविरत्न। पांडेयजी ने बँगला के अनेक विख्यात नाटकों का ऐसा भाव-पूर्ण अनुवाद किया है कि वे बिलकुल मौलिक-से मालूम होते हैं। समाज, भाव, भाषा, शैली, सब पर हिंदीपन और स्वाभाविकता की छाप लगी हुई है। राजसी सुख-भोग-लालसाओं को लात मारकर, अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये संसार के सारे सुखों को तिलांजलि देकर महात्मा बुद्धदेव किस प्रकार आत्म-चिंतन और वैराग्य में लीन हुए थे, इसका यदि चित्र देखना हो, तो यह नाटक अवश्य पढ़िए। ज्ञान, शिक्षा, उपदेश, पवित्रता और शांति तथा प्रेम से पूर्ण ऐसा मनोरंजक नाटक आपने शायद ही अब तक पढ़ा हो। ४-५ चित्रों-सहित पुस्तक का मूल्य ॥।), सुंदर रेशमी जिल्द का मूल्य १)

सब प्रकार की उत्तमोत्तम पुस्तकें मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
२०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

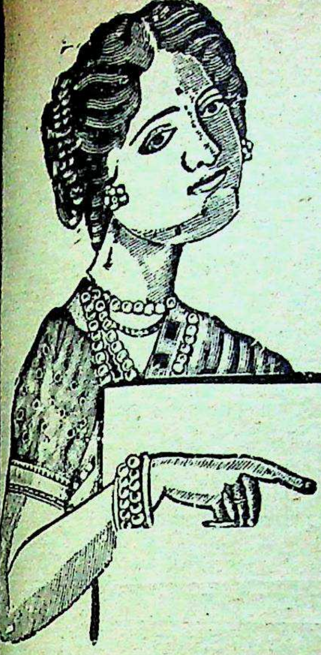

चार नए रत्न

१—फूलों की सेज

[लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०]

इस अपूर्व पुस्तक में युवक-युवतियों एवं नवविवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक और वैज्ञानिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौहृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक नई तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है। अश्लीलता का लेश-मात्र नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

२—व्रज-भारती

[लेखक, कविवर पं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०]

व्रजभाषा-साहित्य में युगांतर करनेवाला परमोत्कृष्ट ग्रंथ है। व्रजभाषा में नवीन शैली के छंदों और आधुनिक ढंग के विषयों का सुंदर समावेश करने का सुंदर साधन। इस काव्य ने यह सिद्ध कर दिया कि व्रजभाषा में जो लोच और लचक है वह आधुनिक काल की उष्णता और भार को सहन कर सकती है। जो लोग व्रजभाषा के प्रेमी हैं, वे यह प्रमाणित करने के लिये कि व्रजभाषा अब भी जीवित-जाग्रत् तथा शक्तिशाली है, लेखक के चिर-कृतज्ञ रहेंगे। मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १।)

३—अतीत के चित्र

[लेखिका, श्रीकुमारी सुशीला आगा बी० ए०]

कुमारी सुशीला आगा बी० ए० हिंदी की प्रसिद्ध कहानी-लेखिका हैं। इस पुस्तक में आपकी ९ कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर और भाव पूर्ण हैं। भाषा बड़ी ही सुंदर, सरस और हृदय-स्पर्शी है। घटना-क्रम और हृदय की आंतरिक वृत्तियों का ऐसा मार्मिक चित्रण हुआ है कि पढ़ना आरंभ करने पर समाप्त किए बिना छोड़ने को जी नहीं चाहता। नारी-सुलभ सौंदर्य एक-एक पद से विकसित हो रहा है। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

४—बिहारी-दर्शन

[लेखक, साहित्याचार्य पं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी, साहित्यरत्न]

इसमें एक सर्वथा नूतन और अत्यंत रोचक शैली से हिंदी-भाषा के पीयूषवर्षी महाकवि श्रीबिहारीलाल-जी की कविता पर प्रकाश डाला गया है। इस एक ही ग्रंथ में सरसता का सागर, पांडित्य का पीयूष, काव्य की कलित कौमुदी, भाषा की भव्यता, समालोचना का सौष्ठव, मनोभावों की मनोरमता, प्रकृति-वर्णन में पूर्ण पर्यवेक्षण, भक्ति, नीति, गणित, दर्शन, ज्योतिष, राजनीति और मनोविज्ञान की मनोहर मीमांसा का जमघट देखकर आप इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। मूल्य २), सजिल्द २॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सुधा के नियम

मूल्य

सुधा के तीन संस्करण निकलते हैं, और उनका डाक-व्यय-सहित मूल्य इस प्रकार है—

राजसंस्करण	
वार्षिक मूल्य	१२)
एक प्रति का	१)
साधारण संस्करण	
वार्षिक मूल्य	६)
एक प्रति का	॥)
सस्ता संस्करण	
वार्षिक मूल्य	४)
एक प्रति का	।)

वी० पी० से मँगाने में ।) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। वर्षारंभ अगस्त (श्रावण) से होता है, और प्रतिमास के अंत में पत्रिका प्रकाशित हो जाती है। ग्राहक चाहे जिस संख्या से ग्राहक बन सकते हैं। विदेशों के लिये भी वही मूल्य है, जो भारतवर्ष के लिये। सुधा में यह ख़ास बात है।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो १५ दिन के अंदर कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उनको उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन १५ दिन बाद सूचना मिलने से ध्यान नहीं दिया जायगा, और वह संख्या ग्राहक टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १० दिन पेश्तर उसकी सूचना हमें देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, काग़ज़ की एक संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लिखे चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक़ बड़े लेख आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के प्र करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपाद है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी और लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्र पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार या संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के अध्य रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र लेखों चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए। चित्र करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें, बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल भार्गव

कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या बद हो, तो एक महीने पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पेश जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई १५)
" १/२ " या १ " " " १०) "
" १/४ " या १/२ " " " ६) "
" १/८ " या १/४ " " " ४) "

विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलती

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लिखे मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से गु है। सबसे सस्ती, सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय प के कारण इसका प्रचार भी ख़ूब है, और उत्त रहा है।

कृपया शीघ्र ही विज्ञापन छपवाकर लाभ कम-से-कम एक बार परीक्षा तो लीजिए!

मैनेजर सुधा, लखनऊ

[काबिल फरोख्त

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इश्तहार हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदाद मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई
मुकद्दमा नं० ८२ सन् १९३७ ई०
पेशी ६—५—३८ ई०

कर्ज़दार सायलान

१—मुनीरुद्दीन
२—नसीरुद्दीन
३—अमीरुद्दीन
४—मुहम्मद यूसुफ
५—सलीमुद्दीन
६—मुख्तारअली नाबालिग नसीरुद्दीन

} पिसरान अमीरुद्दीन कौम शेख साकिन मौ० समरावाँ परगना आलमनगर तहसील शाहाबाद

बनाम

१—जवाहरसिंह वल्द इंद्रसिंह ठाकुर साकिन मौजा पलियाकोट परगना व तहसील संडीला जिला हरदोई
२—रजबअली वल्द समायतअलीखाँ कौम पठान साकिन शाहजहाँपुर मुहल्ला जलालनगरी परगना व तहसील व जिला शाहजहाँपुर
३—शहाबुद्दीन वल्द अमीरुद्दीन कौम शेख साकिन मौजा समरावाँ परगना आलमनगर व तहसील शाहाबाद
४—रामलाल वल्द सेठ बलदेवप्रसाद कौम वैश्य साकिन कसबा पिहानी परगना पंडरवा तहसील शाहाबाद जिला हरदोई

कर्ज़ख्वाह फरीकसानी

चूँकि सायलान मजकूरेबाला जिला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन १ ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्ज़ख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० मिसलकिश्तवार	जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त डिग्रिया की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतिकाल हकीयत की तसरीह	समाअत हकीयत दरख्वास्त डिग्रिया मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्त डिग्रिया की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी	कैफियत
१	हरदोई		मौजा समरावाँ मुहाल खास पट्टी बीनसिंह परगना आलमनगर तहसील शाहाबाद	काबिल वरासत काबिल इंतकाल मालिकाना	११ बिस्वा २ कच० बीनी ½ बनवासी	१२।=)	
२	हरदोई		मुहाल सदर पट्टी शिवसहाय	,,	खाता नं० ८, ५ऽ बीघा	१।=)	

...र्म नं० १

३	हरदोई	,, पट्टी सुराजुद्दीन	,,	खाता नं० १० २ बिस्वा १०बि०	१२॥ ८)
४	हरदोई	,, पट्टी रहीमुद्दीन	,,	खाता नं० २ ६॥ऽ ३ बि०	
५	हरदोई	,, पट्टी शिवसहाय व सुराजुद्दीन	,,	खाता नं० ४ मजरूआ १२ऽ११ बिस्वा खाता नं० १२ शामिलात ११ बि० खाता नं० १३ शामिलात १७ऽ६ बि० ५ बि० खाता नं० १४ शामिलात ४ बीघा १ बिस्वा	

जैसा कि फरीकसानी नं० २ ने जाहिर किया है-

६	हरदोई	मौजा समगावाँ मु० चक काबिल विरासत कोजा खाता नं० २ काबिल इंतकाल मालिकाना	,,	खाता नं० १३, १७ बीघा ६ बि० शा० ६ बि० १३ बि० ६ क० १३$\frac{1}{3}$ नन० खाता नं० २	
७	लखीमपुर	हकीयत मुर्तहनी मौजा सिकरिया प० पसगवाँ त० मुहमदी			

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद, जो बहस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्त दिहिंदा	कैफियत
१	चारपाई बाँस २	मालिकाना	
२	लोटा ४	,,	
३	डेगची ४	,,	
४	तावा १	,,	
५	दस्तपनाह १	,,	
६	पारचा पोशेदनी ८ जोड़	,,	
७	बैल १	,,	

जैसा कि फरीकसानी नं० २ ने जाहिर किया है—

१ डिग्री मुकद्दमा नं० ३२ सन् ३० मुहम्मद यूसुफ वगैरह बनाम पोहपसिंह वगैरह मुनफसिला १० सन् ३० ई० इजलासी दीवानी मुंसिफी शाहाबाद

२ दस्तावेज रेहननामा सूदी मवर्रिखे रहीमुद्दीन बहक मुहम्मद यूसुफ वगैरह

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज बतारीख ४—२—३८ ई० जारी हुआ।

[ब फिल क़रोख़्त

इत्तिलानामा बनाम अशख़ास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट
जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब मिस्टर कामतानाथ गुप्ता स्पेशल जज साहब बहादुर गोंडा दर्जा दोयम मुक़ाम गोंडा
मुक़द्दमा नंबरी नंबर २७० सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी १३—४—१९३८ ई०
गदरे वग़ैरह — क़र्ज़दार सायलान

बनाम

छेदी वग़ैरह — क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूंकि (१) गदरे वल्द महावली (२) महादेव नाबालिग़ बविलायत गदरे मालिक इलाक़ा ज़िला गोंडा की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है और चूंकि जायदाद जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि अगर जायदाद मज़कूर पर तुम कोई दावा रखते हो, तो संयुक्तप्रांतीय गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर एक दरख़्वास्त अदालत हाज़ा में असालतन या बज़रिए मुख़्तार मजाज़ पेश करो।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह
हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ अराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देहंदा की मुस्तकिल कामिल विरासत व काबिल इन्तक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बाबत हक़ीयत दरख़्वास्त देहिन्दा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्त देहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
	गोंडा	ज़मींदारी	लालपुर मलुहिया परगना सादुल्लानगर मोहाल महावली	हिस्सा २ आना २ पाई ४ किराट क़सरे आयद	२ आना २ पाई ४ किराट क़सरे आयद	३६)	
	,,	,,	लालपुर मलुहिया मोहाल कालेश्वरी परगना सादुल्लानगर	हिस्सा २ पाई २$\frac{4}{5}$ किराट	२ पाई २$\frac{4}{5}$ किराट	१७)	

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो अलावा हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ अराज़ी हस्ब दफ़ा ६०
ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है—

नं० सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बाबत हक़ीयत दरख़्वास्त दिहिंदा	कैफ़ियत
१	भैंस	१ रास	
२	पड़वा	१ रास	

बल

नमूना नं० १७०

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत स्पेशल जज दरजा दोयम बनारस
मुकद्दमा नं० ५८ सन् १९३६ ई०

हरगाह फतेहबहादुरसिंह वल्द माधोरामसिंह साकिन बदवलडीह परगना बदवल ज़िला बनारस ने दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ऐक्ट ४ जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बनाया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पे के हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतकाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा मालगुज़ारी
१	बनारस	ज़मींदारी	बदवलडीह परगना बदवल	२/५ हिस्सा गाँव में		

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की की बाबत (विचा
१	भैंस	१
२	गाय	१
३	चारपाई	३
४	दरख़्त आम	८ वाके मौज़ा बदवलडीह
५	,, महुआ	२ ,, ,, ,,
६	,, शीशम	२ ,, ,, ,,
७	,, नीम	४ ,, ,, ,,
८	,, कटहल	१ ,, ,, ,,
९	कोठी बाँस	२ ,, ,, ,,
१०	पीपल	२ ,, ,, ,,

[काबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत अडिशनल स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुक़ाम बाराबंकी

७८
मुक़द्दमा नंबरी नंबर २०८ सन् १९३६ ई०
५६३

चौ० नुसरतअलीख़ाँ वल्द चौ० ग़ज़फ़रअलीख़ाँ साकिन राजपारी परगना फतेहपुर ज़िला बाराबंकी

क़र्ज़दार सायल

बनाम

कुँवरबहादुर वग़ैरा — क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि चौ० नुसरतअलीख़ाँ वल्द चौ० ग़ज़फ़रअलीख़ाँ साकिन रायटोली ज़िला बाराबंकी ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद की, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बमूजिब हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदरजा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	बाराबंकी	मुग़ल ग़ज़फ़रअली	बछराजमऊ पर० फतेहपुर	हक़ आला	।ऽ	१३१॥ऽ)	
२	,,	,,	बरेली महाल राजा सरबजीतसिंह पर० फतेहपुर	पुख़्तेदारी	।–) मिनजुमला १)	१०)	
३	,,	,,	पचयाबाद परगना देवाँ	सीर माफ़ियुल मिलकियत	१०२ बी० २ बि० १८ बि०		
४	सीतापुर खा०	पट्टी नं०१ नं०१	सदगावाँ परगना मह्मूदाबाद	हक़ आला	।)१६ पाई	१०३)	
५	बाराबंकी	,,	अचेवा पर० फतेहपुर	,,	१)	५५१ऽ)	

फ़ार्म नं० २

६	,,	,,	गाजगांव मुहाल गजफरअली परगना फतेहपुर	,,	॥) मय नंबरान सीर	१०१३॥=)
७	,,	,,	ऊदापुर परगना फतेहपुर	,,	१)	२६२॥)
८		,,	पट्टी धरमपुर परगना गजफरअली देवाँ	,,	॥=)	३७४॥=)
९	सीतापुर	पट्टा तिमहोरी परगना महमूदाबाद मु० कनीज फातिमा		,,	२० बिस्वा का १/६	६४३॥)
१०		,,	पट्टा नं० ३ सदरावाँ परगना महमूदाबाद	,,		

$५\underset{१}{७}६$ $१\underset{२}{७}६$ २३६
४) ६) १)

२१७ २५२ २६२
१-१९)) १५)
२१३ ३१५ ३३६
११) १४) १०)
२६२ २३५ २२८
१२) ७) १०)
२३६ २४६ २३०
१०) १६) १४)
२६५ २६६ २६७
१-४) १-२) १७)
२०० २३०-३७
१७) ८) ६)
२५८ २६१ २६५
१६) १-६) २)
२६७ २६१ २७८
१०) ६) ७)
२८० २८१ २६४
२) २) १-३)

११	बाराबंकी	मुहाल धरमपुर परगना गजफर-अली देवाँ	मालहकदारी	लगान १४॥=)

$\underset{२}{१०}$ २२ १६१
१६)१८ १-११)
१-१)
२०१मा२६२ २२७
३)७ १ ब २
२६१ १६६ १-६)११
१-१२) २
१-१)१८
$\underset{५}{२०१}$ २०२ मा
२-७)२ ३-१)१२
जुमला ११-३)१६

१२ ,, ,, बीचीपुर परगना फतेहपुर सीर साकितुल मिल्कियत ४१ बी० ३ बिस्वा

११ २१ २२
१ऽ१ ४ऽ= २ऽ७
२३ ३० ३१
२ऽ१५ १५ऽ४ १७ऽ१६
३२ ३३ ३६
१- ऽ १६ऽ१७ १-२ऽ२
३७ ३८ ४५
१०ऽ५ १०ऽ १-१८ऽ
४६ ५० ५१
७ऽ।१ ८ऽ२ १६ऽ।६
५२ ५३ ५४
१८ऽ १८ऽ ५-१४ऽ
५६ ६० ६१
११ऽ१ १०ऽ८ १-१ऽ१३
६५ ६६
११ऽ।६ १०ऽ१८
६४ २-११ऽ१५
६८ ६९ ७०
१-१६ऽ ७ऽ७ १-१६
७१ ७२
१६ऽ५ ११ऽ१४
७९ मा ८०
१-०ऽ१० १-ऽ१२
$\frac{८४}{१}$ $\frac{८४}{२}$
१-७ऽ १-२ऽ
८७ $\frac{६४}{१}$ $\frac{६५}{२}$
१-१०ऽ १२ऽ ११ऽ
६५ ६६
१-६ऽ १-१ऽ
६७ ६८
१-६ऽ १-१०ऽ
१०३ १०४
१०ऽ१० ११ऽ।६
१०५ १०६
१०ऽ१० १०ऽ१५
१०८ १०९
१०ऽ १०ऽ१५
११०मा १११ मा
२ऽ८ २ऽ१३

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाफ़त हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	कड़ा तिलाई एक जोड़ ४००)		
२	तौक़ तिलाई एक अदद १० तोला ३००)		
३	ढोलना मय १२ अशरफ़ी ३० तोला ९००)		
४	गुलूबंद तिलाई एक ८ तोला २५०)		
५	ज़ंजीर तिलाई एक ६ तोला २००)		जुमला अशियाय बक़ब्ज़े विशेशर-दयाल फ़रीक़सानी ६ [illegible] ५००) बतारीख़ १ जून सन् ३१ ई० रेहन रक्खा गया था और उन्हीं के क़ब्ज़े में है।
६	चाँद तिलाई एक ६ तोला २००)		
७	बिजुली तिलाई २ तोला ६०)		
८	बाली तिलाई २ तोला ६०)		
९	कंगन तिलाई १२ तोला ३७५)		
१०	चूहेदंती तिलाई एक जोड़ा ६ तोला २००)		
११	पटरी तिलाई ६ तोला २००)	ममलूके सायल	
१२	चूड़ी तिलाई ३ तोला १००)		
१३	बाज़ून तिलाई ८ तोला २५०)		
१४	टीका जड़ाऊ तिलाई ४ तोला ६२५)		
१५	झुमके तिलाई ३ तोला १००)		
१६	बुंदे तिलाई १ तोला ३०)		
१७	अँगूठा तिलाई ३ तोला १००)		
१८	कड़ा चाँदी ३ पाव ३०)		
१९	छल्ले चाँदी ८ छटांक २०)		
२०	तोड़े चाँदी ८ छटांक २०)		
१	छागल नुक़रई ३ पाव ६०)		
२२	झाँझ चाँदी १ पाव २०)		
२३	पायजेब नुक़रई ३ पाव ६०)		
	जुमला ४५६०)		

२४—नक़द १००) मालिकाना जो शियाप्रसाद फ़रीक़सानी नं० १० के पास जमा है।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २४ नवंबर सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

मुंसि

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकम्बर्ड स्टेटस ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला सीतापुर

मुकदमा नंबर २८२ सन् १९३६ ई०

१—गयाप्रसाद } पिसरान गौरीशंकर कौम ब्राह्मण साकिन करटापारा परगना पीरनगर तहसील
२—नंदकिशोर } सिधौली जिला सीतापुर
सायलान

बनाम

१—इलाहाबाद-बैंक-ब्रांच सीतापुर बजरिए मैनेजर इलाहाबाद-बैंक सीतापुर परगना खैराबाद जिला सीतापुर
२—राधेलाल वल्द जगन्नाथप्रसाद ब्राह्मण साकिन कुसमोहा परगना पीरनगर जिला सीतापुर
३—हाजी अलीमोहम्मद उसमान मालिक फर्म याकूब कौम मुसलमान साकिन ठनपानारा गुजरात काठियावाड़
४—विजयबहादुर वल्द सरजूप्रसाद कायस्थ साकिन कुठनामऊ परगना पीरनगर जिला सीतापुर
५—मन्नीलाल वल्द लल्लूमल कौम बक्काल साकिन शहर लखनऊ मोहल्ला रकाबगंज जिला लखनऊ
६—मदनलाल बक्काल साकिन शहर सीतापुर मोहल्ला तामसेनगंज परगना खैराबाद जिला सीतापुर
७—द्वारिकासिंह ठाकुर साकिन रहौली जिला मैनपुरी
८—राधाकिशुन वल्द महादेव कौम ब्राह्मण साकिन कमलापुर परगना पीरनगर जिला सीतापुर

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह जैल दरख्वास्त कुनिंदा व कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में जाहिर की है, लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत जायदाद मुसर्रह जैल हासिल हो, अंदर मीयाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करें।

नंबर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व जिला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत हकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१	विक्रमपुर परगना पीरनगर तहसील सिधौली जिला सीतापुर	,,	दो हिस्सा मिनजुमले खाता खेवट नंबर ३ मिनजुमले १६ बिस्वांसी १२$\frac{१}{३}$ कचवांसी	आला	३८॥=)	४)
२	,,	,,	मुश्तरका खाता नंबर ६	,,		
३	,,	,,	खाता नंबर ८ मिनजुमले १६ बिस्वांसी मिनजुमले १२$\frac{१}{३}$ कचवांसी हिस्सा $\frac{६}{१५}$	,,		
४	,,	,,	खाता नंबर २१ मिनजुमले १ बिस्वा ६ बिस्वांसी १२$\frac{१}{३}$ कचवांसी	,,		

५ मकान मसकूना खाम वाके मौजा करठगापारा परगना पीरनगर तहसील सिधौली जिला सीतापुर। मुंसरिम

इत्तिलानामा बनाम ऐजान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट आयदारहाय मकरूजा संयुक्त प्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम सुलतानपुर

मुकदमा नंबरी नंबर $\frac{\text{८३ सन् ३८}}{\text{२७ सन् १९३७ ई०}}$

तारीख पेशी २९—३—३८ ई०

१—अब्दुलगफ्फारखाँ
२—अब्दुलसत्तारखाँ } पिसरान सालारखाँ साकिन लोधेपुर मौजा हसनपुर परगना मीरानपुर

कर्जदार सायलान

बनाम

१—मु० महराजीकुँवरि बेवा बद्रीसिंह
२—जैनरायनसिंह
३—राजारामसिंह पिसरान विशेशरसिंह
४—मु० किशनदेवी बेवा सनमुखसिंह साकिन रामपुर परगना मीरानपुर
५—लाला भवानीप्रसाद वल्द गोपालदास साकिन हसनपुर परगना मीरानपुर
६—रामनारायनलाल वल्द गुर[illegible] बक्काल साकिन मुहल्ला शाहगंज सदर सुलतानपुर

चूँकि अब्दुलगफ्फारखाँ वगैरह वल्द सालारखाँ साकिन लोधेपुर मौजा हसनपुर जिला सुलतानपुर की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा पेश हुई है। लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्त मुलहिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फरीकसानी ने हस्ब दफा १० सायलान मकरूजा जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुतआल्लिक कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से तीन मास के अंदर अपने इस्तिहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकर्दा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकर्दाह कर्जख्वाह हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्त प्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुतअल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल इंतकाल व नाकाबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	बसूरत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जा नंबर ५ रकबा साइल खेवट जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुजारी
१—	सुलतानपुर	हकीयत आला	मोचरा खाता खेवट नं० १	काबिल इंतकाल	रकबा हिस्सा सायलान २३२)२:१४	३११।।≡) माल० ३२) अबवाब ३४१।।।≡)
२—		हकीयत मातहती	खा० खे० नं० २८	,,	।):४	।।=)।
			३५	,,	।।):१२	
			६४	,,	१)४:५	१)
			७७	,,	१)१:२	
			११७	,,	।।)४:११	२।≡)
			१२७	,,	१)२:८	२।-)।।
			१३६	,,	।।) :३	२)।
			१७०	,,	।।) १५	
			४	,,	११)।:१६ हिस्सा सायलान =)।। मि० १६ आना के	

मेरे दस्तखत और अदालत की मुहर से आज तारीख १२ फरवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

[बदस्त अवाम फ़ायदे के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब बाबू जगदीशकिशोर टंडन साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम मुज़फ़्फ़रनगर

मुक़द्दमा नं० ७७१ सन् ३६ ई०

हरगाह सय्यद नासिरहसन पिसर व जमीलाख़ातून दुख़्तर व उम्मुलनबी बेवा सय्यद ज़हूरहसन क़ौम सय्यद, साकिनान मौ० कवाल परगना जौलीजानसठ ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा हुक्म तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० मायतान मज़कूर को जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर खेवट	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इन्तक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	मुज़फ़्फ़रनगर	मौ० कवाली	परगना जौलीजानसठ मु० ज़हूरहसन	५१ बी० १३ बि०	१०८ बी० १ बि०	२७०)
१	,,	मौ० कवाली	परगना जौलीजानसठ मु० ज़हूरहसन	१९८ बी० १६ बि०	२२२ बी० १२ बि०	२७०)
१	,,	मौ० कवाली मुहाल	परगना भावरहेड़ी वाजिदअली	हस्ब रसद	२७ बी० ३ बि०	३०)

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार
१	२	३

एक मंज़िल मकान शुमालरुया तामीरा पुख़्ता व ख़ाम वाक़े महल्ला जैन—

शर्क़ी	ग़र्बी	जनूबी	शुमाली
मकान मोहम्मद क़ासिम	रास्ता	मकान मक़बूलीबेगम	रास्ता

मुंसरिम

[बदस्त अवाम फ़रोख्त के लि

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत पं० ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड जौनपुर

तारीख पेशी ३-४—३८ ई०

मुक़द्दमा नं० १५२ सन् १९३६ ई०

दरगाह मोहम्मद उस्मान वल्द शेख मोहम्मदअली साकिन बंजारेपुर परगना सरेमू ज़िला जौन ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा हम तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िमनी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि ज आयदाद का, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की आयदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय ग में छपने की तारीख से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश क जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर तौज़ीवार व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुन्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इन्तक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का मिक़दार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की
१	२	३	४	५	६	७
१	जौनपुर	ज़मीदारी	सखैला पट्टी मोहम्मदअली	=) ८ पाई	=) ८ पाई	
२	,,	,,	बंजारेपुर	५ पाई ११ के० १ जौ	५ पाई ११ के० १ जौ	
३	आराज़ी शरह मोअय्यन					

३८७/—३० ३८८/—२५ वाक़ा दखान प्रगना सरेमू $\frac{१}{६}$ हिस्सा

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत
१	२	३

मुतफ़र्रिक दरख्तान वाक़ा सखैला व बंजारेपुर बक़दर हिस्सा मुंदरजा खेवट। मुंसि

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत सुरेंद्रविक्रम सिंह स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम लखनऊ
मुक़द्दमा नंबरी नंबर १०६ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २९ मार्च, १९३८ ई०

शेख़ मुहम्मद याक़ूब बनाम क़र्ज़दार सायल
गोपीनाथ नायक वग़ैरा क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि शेख़ मुहम्मद याक़ूब वल्द रियासतअली साकिन अतरौलिया तप्पा अजावँ परगना महोली पूरब तहसील ख़लीलाबाद ज़िला बस्ती ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुतअल्लिक़ा क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तफ़सील	बसाअत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर कलेक्टर ज़िला साहब	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा सरकारी मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	ज़मीदारी	मौज़ा अमरथल मुहाल नूरमुहम्मद परगना मलिहाबाद	हिस्सा २ आना ४ पाई १६ किरांट	हक़ आला	३५)	
२	,,	,,	भेलिया मुहाल नूरमुहम्मद प० मज़कूर	हिस्सा ३ आना २ पाई ८ किरांट	,,	४२)	
३	,,	,,	अल्लूपुर मुहाल अब्दुल ग़फ़्फ़ारख़ाँ प० मज़कूर	हिस्सा ६ पाई १२ किरांट मय सीर व बाग़ ६ बी० १७ बि० ५ बि०	,,	४।=)	
४	गोरखपुर	,,	मौज़ा बढ़ेरा पट्टी देवीचरन तप्पा लहरा तह० महराजगंज	हिस्सा ११ पाई १ धुर पट्टी देवीचरन	,,	१४)	
	,,	,,	मौज़ा मज़ूर पट्टी सुखचैनलाल	हिस्सा १ आना ७ पाई पट्टी सुखचैनलाल	,,	२१॥=)	
	,,	,,	गुपलापुर तप्पा राजधानी परगना हवेली गोरखपुर त० सदर	हिस्सा ८ आना मुसल्लम मौज़ा	,,	२७५)	
	,,	एक किता मकान सफ़ालापोश वाक़ै मु० क़ाज़ीपुर ख़ुर्द शहर गोरखपुर महदूदा पूरब अहाता क़ाज़ी मजीमुलहक़ वग़ैरह, पच्छिम सड़क, उत्तर मकान क़ाज़ी मजीमुलहक़ दक्खिन मकान मुहसनसाहब व गुलामहुसेन					

८	बस्ती	जमींदारी	पूरा सुखलाल तप्पा अजावँ पर० महोली पूरब तह० खलीलाबाद	हिसा ३ आना ६ पाई २ धुर	हक आला	३५)
९	,,	,,	अतरौलिया तप्पा मजकूर मुहाल नं० ८ खाता नं० १	हिस्सा ४ आना	,,	२५)
१०	,,	,,	धौरहरा तप्पा मजकूर खाता नं० १	हि० १ आना १० पाई	,,	१७)
११	,,	,,	कदवी तप्पा महोबरा पट्टी सरदारअली खाता नं० २	हि० १ आना व आराजी १ बी० ५ बि० १५ बिस्वांसी खाता नं० २	,,	१२॥=)
१२	,,	,,	निविया तप्पा नावडाँड पट्टी शेख यूसुफ़ खाता नं० ५	हि० ३ पाई २० दंत	,,	२)
१३	,,	,,	हरबंसपुर मुहाल दोयम पट्टी लालमुहम्मद खाता नं० २ तप्पा शिवबख्शी पर० महोली पच्छिम	हि० ९ पाई	,,	२)
१४	,,	,,	मौज़ा मज़कूर मुहाल अव्वल पट्टी भगवानदास खाता नं० १	३ पाई १० किरांट $\frac{1}{2}$ खुम्स	,,	१)
१५	,,	,,	भुतहा तप्पा मज़कूर मुहाल दोयम पट्टी मुहम्मदयाकूब खाता नं० ५	हि० ६ पाई	,,	४-)
१६	,,	निस्फ़ मकान मिनजुमला मुसल्लम मकान मौरूसी मौजा अतरौलिया परगना महो तहसील खलीलाबाद ज़ि० बस्ती महदूदा पूरब बाग़, पच्छिम मकान मुहम्मदअमीन, उत दक्खिन मकान मु० साजिदाखातून				

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिलसिलेवार		किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	
१	अ	माल अज़ किस्म चोब इमारती दूकान देवरिया ज़ि० गोरखपुर व मुहल्ला नख़ास शहर बनारस व स्टेशन पचपेड़वा बी० एन० डब्लू० आर० ज़िला गोंडा व स्टेशन कूड़ाघाट बी० एन० डब्लू० आर० ज़िला गोरखपुर		मालियती १०
	ब	कैश		
२		डिगरी ज़र नक़द व मुक़दमा इब्तिदाई नं० ३९९ सन् ३३ ई० इजलासी मुंसफ़ी गोरखपुर मुनफ़सला ९ आक्टोबर सन् ३३ ई० शेख याकूबअली बनाम नरायनदास		तख़मीनन १० ७४०) अदाई सूदी माहवारी

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख २४ जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला सीतापुर
मुकद्दमा नंबर ३९६ सन् १९३६ ई०.
तारीख पेशी सद् १९३७ ई०

१—गयाबख्शसिंह
२—गोकरनसिंह
३—बच्चूसिंह नाबालिग बविलायत गयाबख्शसिंह बिरादर हकीकी खुद
४—वीरेंद्रसिंह नाबालिग वल्द गयाबख्शसिंह बविलायत गयाबख्शसिंह पिदर खुद
} पिसरान महावीरसिंह अकवाम ठाकुर सा० मदनापुर प० व त० बिसवाँ जिला सीतापुर सायलान

बनाम

१—नंदकिशोर
२—बेनीमाधव
} पिसरान लालताप्रसाद
३—मु० कमलावती बेवा सोनासरदीन
४—बंसगोपाल वल्द किशुनदयाल
} अकवाम ब्राह्मण सा० सौंडा परगना व तहसील बिसवाँ जि० सीतापुर

५—मुन्ने वल्द नामालूम कौम मीरशिकार सा० खम्हरिया प० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर

६—दीनबंद
७—द्वारिकाप्रसाद
} पिसरान नामालूम अकवाम कुरमी सा० अगरौआ प० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर

८—बरातीलाल वल्द लालताप्रसाद कौम ब्राह्मण सा० सौंडा प० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर
९—अशरफीलाल वल्द मातादीन कौम कुरमी सा० चाँदपुर प० महमूदाबाद त० सिधौली जि० सीतापुर
१०—सालिकराम वल्द जवाहिरलाल कौम कायस्थ सा० तरीनपुर प० व त० व जि० सीतापुर

११—हरिप्रसाद वल्द जगन्नाथप्रसाद
१२—बाबू विशंभरनाथ व मानामल
} अकवाम खत्री सा० तामसेनगंज सीतापुर प० खैराबाद त० व जि० सीतापुर

१३—कृष्णविहारी वल्द मनोरथराम कौम ब्राह्मण सा० दौहापुर पं० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर
१४—रामभरोसे वल्द राधेलाल कौम खत्री सा० बिसवाँ प० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर

१५—कन्हैयालाल
१६—गजोधरप्रसाद
} पिसरान शंकरदीन अकवाम ब्राह्मण
१७—मातादीन वल्द नामालूम अकवाम ब्राह्मण
} सा० सौंडा प० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर

१८—पुत्तूलाल
१९—स्वामीदयाल
२०—जगदेवप्रसाद
} पिसरान भगवानदास अकवाम खत्री सा० महराजनगर प० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर

फरीकसानी

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह ज़ैल दरख्वास्त कुनिंदा व कर्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत कर्जा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक निस्बत जायदाद मुसर्रह ज़ैल हासिल हो, अंदर मीयाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत हकीयत	मालगुज़ारी	लोकल रेट
१	मौ० मदनापुर प० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर	थोक इश्वरीसिंह व थोक गुलाबसिंह		हकीयत जमींदारी हक भाखा मौरूसी	२४०=)।।	२३।।≡)।
२	मौ० उफरा मशमूले देवरिया कलाँ प० व त० बिसवाँ जि० सीतापुर		४$\frac{५}{६}$ बि०	,,	१८५।।)१०	१९।।) १० पा०
					मीज़ान ४२५।।≡) ४ पा०	४३।।) १ पा०

फेहरिस्त (ज)

१—गाय १ रास ५), २—भैंस १ रास १०), ३—चौकी चोबी १ अदद २), ४—गाड़ी शिकस्ता १ अदद १०), मीज़ान २७)

मुंसरिम

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐ
२५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नं० १६ सन् १९३७ ई०

तारीख पेशी १४-५-३८ ई०

भगवानसिंह वल्द सुघरसिंह कौम ठाकुर साकिन मौजा लोहकनपुर परगना शरहजनूबी जिला हरदोई

क़र्ज़दार सायल

बनाम

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चरनसिंह वगैरा

चूँकि भगवानसिंह वल्द सुघरसिंह साकिन लोहकनपुर ज़िला हरदोई ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐ जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रां गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वा पेश करे।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह ह तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

कर्जदार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराजी

नं० सिलसिलेवार	जिला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफियत
१—	हरदोई		लोहकनपुर परगना शरहजनूबी खाता खेवट नं० १	मौरूसी	१ बिस्वा १ बिस्वांसी १२ कचवांसी ६ २/३ ननवांसी	६०)	जिसमें से १ बि वांसी हकीयत श्यामरतन चुकी है। इस पर सायल सिर्फ १० बिस ११ कचवांसी ६ २/३ ननवांसी मालिक है
२—	,,		हरियावाँ परगना शरहजनूबी खाता खेवट नं० २३ पट्टी भीखमसिंह	मौरूसी	८ बिस्वांसी १४ कचवांसी ११ १/६ ननवांसी खासा खेवट नं० २३		

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क और नीलाम हो सकती है

नं० सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	लहडू १	की० २५)	
२	भैंस एक रास	की० ४०)	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १७ जनवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुकद्दमा नंबरी नंबर ३ सन् १९३७ ई०
तारीख़ पेशी ३१-५-३८ ई०

१—रामभरोसे वल्द दुर्गाप्रसाद
२—रामलाल
३—राजबहादुर
४—सच्चिदानंद नाबालिग बविलायत रामभरोसे
} पिसरान रामभरोसे
५—विशुननरायन वल्द देवीसहाय
६—भइयालाल नाबालिग बविलायत पिदर ख़ुद
७—रामगोपाल नाबालिग वल्द राजबहादुर बविलायत पिदर ख़ुद
} अक़वाम ब्राह्मण पेशा ज़मींदारी साकिनान मौज़ा नयागाँव हबीबपुर परगना गोपामऊ तहसील व ज़िला हरदोई

कर्ज़दार सायलान

बनाम

शंकरप्रसाद वग़ैरह

कर्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान मज़कूरावाला ने साकिन नयागाँव हबीबपुर ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख़ से तीन माह के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा कर्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बसाबत हक़ीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१—	हरदोई	×	दौलतयारपुर परगना मल्लावाँ मुहाल मुसम्मात मिठनी	१/६ मिनजुमला बिस्त बिस्वा	१/६ मिनजुमला बिस्त बिस्वा	१२८)	
२—	,,	×	मौज़ा धरमपुर परगना बरौन पट्टी मुसम्मात बेहसी	१/६ मिनजुमला ३ बिस्वा ६ बिस्वांसी १३ कच० ६ २/३ नन		३॥≡)	
३—	,,	×	मिरगाँवा परगना गोपामऊ पट्टी कपूरसिंह होरीसिंह	३ बिस्वा ६ बिस्वांसी १६ कच०	मिनजुमला बिस्त बिस्वा	१०६॥=)	
४—	,,	×	रामपुरखालजी परगना बरौन मुहाल [illegible]	८ बिस्वा ८ बि०	कुल	६६॥=)१ पाई	

५—हरदोई	×	मौज़ा पेमापुर परगना बरौन खाता नं० ८ पट्टी बनवारीलाल खाता नं १०	१ बिस्वा १२बि० ६ कच० १३$\frac{१}{३}$ न०	बक़दर $\frac{१}{२}$	६|||=)
			३ बिस्वा ६ बि० १३ कच० ६$\frac{२}{३}$ न० १८ बिस्वांसी ८ कच० १$\frac{५}{६}$ न०	$\frac{५}{६}$	१०)
६— ,,	×	नयागाँव हबीबपुर परगना गोपामऊ मुहाल भूप व मु० बिट्टो	२ बिस्वा	मिनजुमला बिस्त बिस्वा	७)

हर दो मुहाल

जायदाद मुंदर्जे बयान तहरीरी मदख़िले फ़रीक़सानियान नं० १ लुगाय ३ तीन व ६ लुगाय ८ व नं० १२ दरज की गई

१— ,,	×	मौज़ा दौलतयारपुर परगना मल्लाथाँ बाग	१ बिस्वा मय नंबरी ७८९	कुल

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाय	वसाअ़त हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१—	दो किता मकान मसकूना वाक़ै मौज़ा नयागाँव हबीबपुर परगना गोपामऊ	२	
२—	बैल	२ रास	
३—	बर्तन बिरंजी खानेदारी इस्तेमाली	१ मन खाम	
४—	चारपाई	४ संख्या	
५—	क़ालीन सूती	२ ,,	
६—	दरी सूती	२ ,,	
७—	गाड़ी एकमंज़िल	१ ,,	
८—	लालटेन	२ ,,	
९—	गल्ला हर क़िस्म	५० मन खाम	
१०—	साइकिल	१ संख्या	
११—	संदूक लकड़ी	२ ,,	

मेरे दस्तख़त और अदालत के मुहर से आज बतारीख़ २१—२—३८ ई० जारी हुआ।

मुंसिफ़

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इश्तिहारनामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ७७७ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १२—२—३८ ई०

१—पुत्तूलाल
२—बद्रीप्रसाद उर्फ़ सरजूप्रसाद
} पिसरान रामदयाल कौम कायस्थ साकिनान मौज़ा क़ायमपुर परगना पंडरवा ज़िला हरदोई

कर्ज़दार सायल

बनाम

मनोहरलाल वग़ैरा

कर्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि सायलान मज़कूर साकिन क़ायमपुर ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो वह इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	नाम ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुन्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	मसाहत हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	हरदोई	×	अब्दुल्लानगर मुहाल चक श्यामपुर पट्टी रामदयाल खाता खेवट नं० २	२ बिस्वा	कुल	१३=)	
२	”	×	अब्दुल्लानगर मुहाल चक श्यामपुर पट्टी रामदयाल खाता खेवट नं० ३	१ बिस्वा	”	११॥-)	
३	”	×	अब्दुल्लानगर मुहाल गोवरधनलाल पट्टी रामदयाल	३ बिस्वा १२ बिस्वांसी ६$\frac{२}{३}$ कचवांसी	”	६१॥=)	
४	”	×	बुख़ारपुर पट्टी गोवरधनलाल खाता नं० ७	१ बिस्वा	”	१८=)	
५	”	×	कायमपुर	२ बि० १० बि० १२ कचवांसी १३$\frac{१}{६}$ ननवांसी मिनजुमला २० बिस्वा	”	६४=)	

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहस्तसनाय हुकूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाअत हकीयत दरख्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१—	भैंस २ रास	कुल	
२—	बैल ४ ,,	,,	
३—	गाय २ ,,	,,	
४—	गाड़ी कलाँ १	,,	
५—	लहड़ १	,,	
६—	सायकिल १	,,	
७—	रेहननामा बिला क़ब्ज़ा नविश्ता रोहन बहक पुत्तूलाल वग़ैरा तादादी ४५०) १ बिस्वा मिनजुमला २० बिस्वा मौज़ा बुखारपुर मक़फूल है	४/९	
८—	पुरोनोट नविश्ता ख़ज़ांची बहक पुत्तूलाल तादादी ८०) बतारीख ९—७—१९३४	कुल	
९—	हक़ मुरतहनी आराज़ी मुआफ़ी नं० १६८ तादादी २।२ऽ मौज़ा गौरिया परगना ंडरवा	१/२	
१०—	दरख़्तान बाग़ मय आराजी मुआफ़ी तादादी २।१ऽ मौजा कायमपुर परगना पंडरवा	,,	
११—	हक़ मुरतहनी आराजी माफ़ी नं० २८० तादादी ॥४ऽ मौजा कायमपुर मज़कूर	,,	
१२—	दरख़्तान बाग नं० ५७ तादादी १।४ऽ मौजा कायमपुर मज़कूर	कुल	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर आज बतारीख़ ८ फ़रवरी सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

सम्मन बग़रज़ करारदाद उमूर तनक़ीहतलब

मुक़द्दमा नंबर १७, सन् १९३८ ई०

बअदालत जनाब मुंसिफ़ साहब बहादुर शुमाली सुल्तानपुर

कालीदीन

बनाम

देवतादीन वग़ैरह

बनाम गंगाप्रसाद वल्द मोहन मिश्र साकिन हिंदुआबाद परगना असदेमऊ

वाज़ेह हो कि मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत दख़लदारी के दायर की है, लिहाज़ा तुमको इ होता है कि तुम बतारीख़ ३० माह मार्च सन् १९३८ ई० वक्त १० पर असालतन या मारफ़त वकील के मुक़द्दमा के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो, और जो कुल उमूरात अहम मुताल्लिके मुक़ का जवाब दे सके, या जिसके साथ कोई और शख़्स हो जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाजिर हो जवाबदेही दावा मुद्दई मज़कूर की करो और तुमको हिदायत की जाती है कि जुमला दस्तावेज़ात की जिन तुम बताईद अपनी जवाबदेही के इस्तदलाल करना चाहते हो, पेश करो।

मुत्तिला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे, तो मुक़द्दमा तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में और फ़ैसला होगा।

आज बतारीख़ १४ माह फ़रवरी सन् १९३८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

धातुपौष्टिक योग

इसके प्रताप से हज़ारों नामर्द मर्द बन चुके हैं। यह बहुत वर्षों से प्रचलित हो रहा है, क्योंकि इस औषधालय को इस कलकत्ता महानगर में स्थापित हुए ६० वर्ष से अधिक हो गए हैं—

यह योग तीन दिन के भीतर ही अपना गुण दिखा देता है। पानी के समान पतले वीर्य को एकदम गाढ़ा कर देता है, पेशाब की समस्त बीमारियों को हटाकर दस्त साफ़ करता है, तथा गिरती हुई धातु को रोकता है। उपदंश (गर्मी). मेह, प्रमेह (गनोरिया-सूज़ाक) रोगों को यह जड़ से खो देता है, तथा शरीर को बलवान् करके स्मरण-शक्ति को बढ़ाता है। वह स्वप्नदोष, हस्तमैथुन से उत्पन्न कमज़ोरी (शिथिलता), रगों की सुस्ती, धातु-क्षीणता, स्मरण-मात्र से ही पतन (शीघ्र वीर्य का पात होना), पाख़ाना व पेशाब के साथ धातु का गिरना, अधिक विलासिता के कारण कमर में दर्द, हाथ-पैर का काँपना, चक्कर आना, आँखों के आगे चिनगारियाँ निकलना, कलेजे का धड़कना, नामर्द हो जाना इत्यादि रोगों को दूर कर रक्त शुद्ध करना है, और भूख, शक्ति तथा वज़न को बढ़ाता है। जिससे शरीर वज्र के समान मज़बूत हो जाता है। जिसमें पुरुषत्व न हो, उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त कराकर उनके वीर्य को गाढ़ा और गर्भ धारण करने के योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक पूर्ण गुणकारी १ डिब्बे की क़ीमत ५), डाक-पैकिंग-ख़र्च ।॥) यदि गुप्तेन्द्रिय की भी शिकायत होवे, तो रोग़न मदन-मस्ताना को भी इस धातुपौष्टिक योग के साथ में ही मँगाकर उपयोग (मालिश) करिए, संपूर्ण शिकायतें दूर होंगी।

जैसा इसका नाम है, वैसा ही इसका गुण है—जिस प्रकार कवियों ने लिखा है—यथानामा तथा गुण। विशेष ख़ुलासा हाल अश्लीलता के कारण नहीं लिख सकते हैं। मालिश करने में किसी प्रकार का झंझट या परहेज़ तथा तकलीफ़ नहीं होती। साधारण रीति से प्रतिदिन मालिश करना होता है। दाम ५) शीशी। विश्वास रखिए, ये दोनों दवाएँ बहुत ही शीघ्र फ़ायदा दिखानेवाली हैं।

कितने नामर्द (नपुंसक), जो निराश हो चुके थे, शर्म से मुँह छिपाए चलते थे, घर में नित्य कलह रहती थी, दवा सेवन कर अब ताल ठोंक बाज़ी मार रहे हैं। चेहरे पर हँसी है। बूढ़े तक को भी यह दवा नया वीर्य, नया ख़ून, नई ताक़त और नया जोश ला देती है। नामर्द होना पाप ही नहीं है, बल्कि संतान नहीं होने से मानव-जीवन में कलंक भी है। अतः एक बार ज़रूर लेकर देखिए।

औरतों के लिये

स्त्री-रोग-निवारक तथा गर्भदाता योग

इस योग के सेवन से औरतों की क्षीणता तथा सब तरह का प्रदर, मासिक धर्म के समय पेट या कमर में दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनों से होना, बिलकुल ही न होना, असमय में मासिक धर्म होना, ख़ून के क़तरे गिरना, गर्भाशय में दोष होने के कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल संतति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगों पर २१ दिन योग को सेवन करने से गर्भाशय तथा शरीर के सब दोष दूर होकर मासिक धर्म समय पर होगा, और गर्भपात न होकर संतति नीरोग उत्पन्न होगी, यहाँ तक कि ४० वर्ष की स्त्री को भी इसके सेवन से निश्चय ही गर्भ धारण हो जाता है। २१ दिन तक सेवन करने योग्य दवा के एक डिब्बे की क़ीमत ५), डाक-पै०-ख़र्च ।॥), ऋतु (स्त्री)-धर्म के समय पेट (गर्भाशय) साफ़ करने को ८ पुड़िया काढ़ा का देना होता है, जिसका दाम और १) देना होगा।

स्त्रियों को भी धातुक्षीण होता है, जिसके कारण बार-बार पेशाब का उतरना, जलन होना, बूँद-बूँद पेशाब का गिरना, मूत्र-नली से पानी के समान या गाढ़ा मवाद के समान दुर्गंध-युक्त स्राव निकलना आदि तुरंत इस दवा से आराम होते हैं।

इन दवाओं को स्त्री और पुरुष हर मौसम में खा सकते हैं। परहेज़ वग़ैरह कुछ भी नहीं है। संतान की इच्छावालों को ये दोनों ही दवा स्त्री और पुरुष दोनों ही को एक साथ खाने से अच्छा होगा। ये दवाएँ तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इन्हें अवश्य मँगावें।

भारत-भैषज्य-भांडार, सु १०८, तुलापट्टी, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता।

विजय

(सन् १९३८ का सर्व-श्रेष्ठ उपन्यास)

लेखक, हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० । विदा-उपन्यास लिखकर श्रीवास्तवजी ने जो ख्याति प्राप्त की है, वह अवर्णनीय है । जिसने उसे पढ़ा, वही मुग्ध हो गया ! सभी के हृदय से वाह-वाह की आवाज़ निकली ! यह नवीन उपन्यास बिलकुल अप-टु-डेट, शिक्षाप्रद, मौलिक और सामाजिक है, और विदा से भी कहीं अच्छा है । कथा-प्रसंग इतना मनोरंजक है कि एक बार पुस्तक हाथ में लेने से फिर विना समाप्त किए जी नहीं मानता, और पढ़कर भी पुनः पढ़ने की लालसा बनी रहती है । मनोभावों की व्यंजना में लेखक कितना सफल हुआ है, यह पुस्तक पढ़ने पर ही ज्ञात होगा ।

जिन ग्राहकों के पास न पहुँचा हो, वे शीघ्र ही मँगा लें । वरना दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । ऐसे उच्च कोटि के उपन्यास प्रत्येक हिंदी-प्रेमी के पास रहने चाहिए । दो भाग । मूल्य प्रत्येक भाग का २), सजिल्द २॥)

शिवाजी

(मौलिक, ऐतिहासिक नाटक)

इसके लेखक हैं हिंदी-संसार के प्रख्यातनामा समालोचक श्रीडॉक्टर श्यामविहा मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० और श्रीपं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० । यह ऐतिहासिक नाटक है, जिसमें ३ अंक एवं २८ दृश्य हैं । कई भिन्न-भिन्न प्रकार चरित्र लेकर योग्य कलाकार ने अपनी नाटकीय सामाजिक कला का प्रदर्शन किया कथानक पूरा-का-पूरा महाराष्ट्र-इतिहास पर अवलंबित है । यह पुस्तक कवित कमनीय, नाटकत्व से निर्मल, सद्भावों से सुंदर और मौलिकता से मंडित है । इस को विद्यार्थी विना किसी कठिनाई के स्टेज पर खेल सकते हैं । मूल्य १।), सजिल्द

संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

Approved by the Directors of Public Instruction U. P., C. P., Bombay, Behar & the Punjab.

वैशाख, १९९५
May, 1938

मूल्य ।।)
Price -/8/-

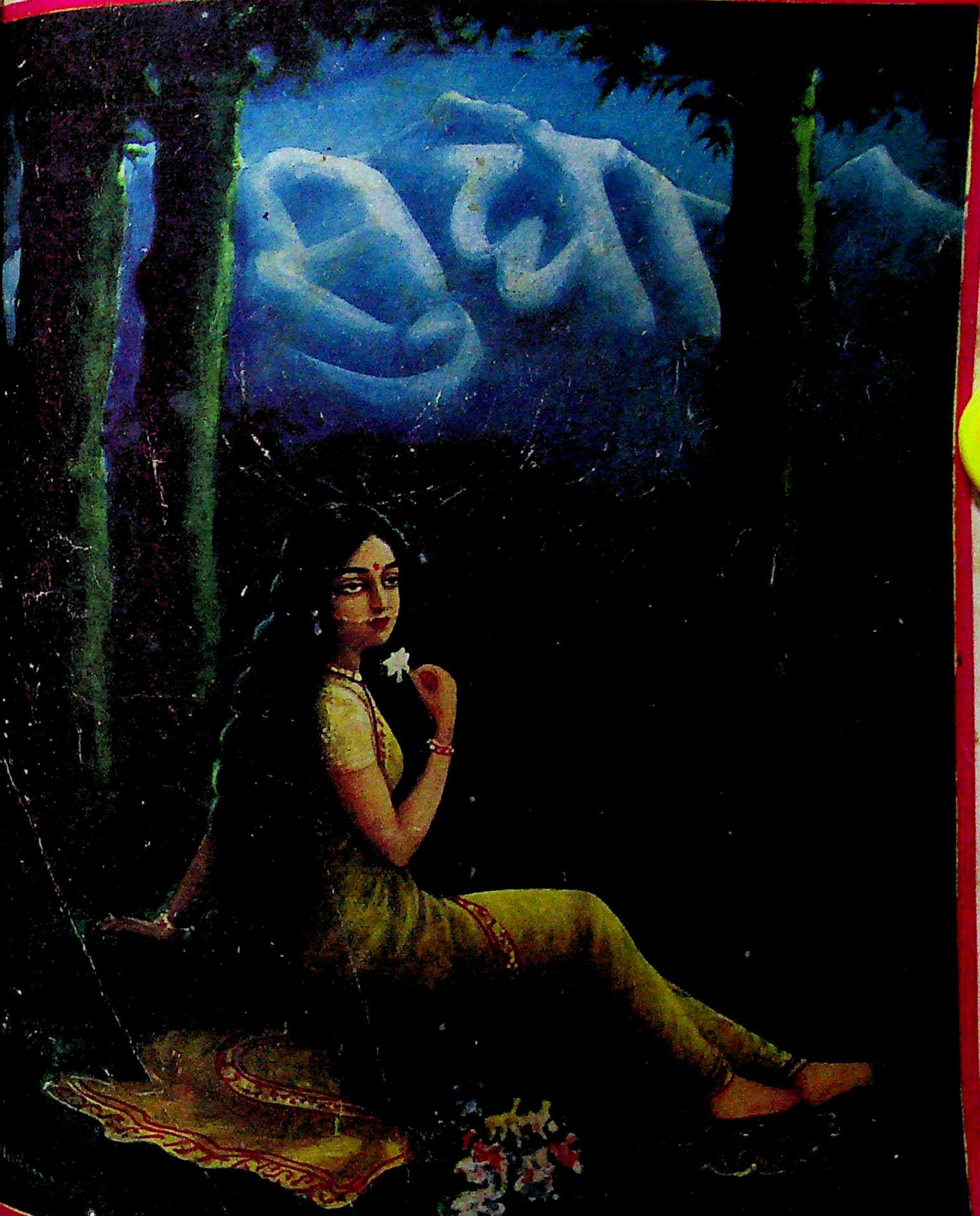

धारण संस्करण]

संपादक—श्रीदुलारेलाल भार्गव

[Ordinary Edition

केशों का अनुपम शृंगार

इसके व्यवहार से दिमाग हमेशा तरोताज़ा और चित्त प्रफुल्लित रहता है ।

इसकी प्रशंसा देश के गण्य-मान्य नेताओं ने मुक्त-कंठ से की है ।

STAR TRADE MARK (REGD.)

केशराज (REGD.)

(केश तेलों का राजा)

इसकी नई पैकिंग निहायत ही ख़ुशनुमा है ।

इसमें नाम मात्र भी ह्वाइट आयल नहीं है। इसे नित्य लगाकर स्नान करने से स्नान का आनन्द आता है तथा बाल चिकने, चमकीले, लम्बे और घुंघराले होते हैं। इसकी सुगन्ध मनोहर और टिकाऊ है।

डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰

बिभाग नं॰ ४६ पोष्ट बक्स नं॰ ५५४ कलकत्ता

सब जगह मिलता है ।

बाज़ारू ह्वाइट आयल मिले हुए तेलों से सतर्क रहिए ।

शुभ

यदि किसी को अपना मुकद्दर बनाना हो

लाभ

यदि गई हुई इज्जत और खोया हुआ धन पुनः वापस लेने की इच्छा हो, यदि धन-धान्य, स्त्री-संतान-प्राप्ति का स्वर्गीय आनंद मानने की उत्सुकता हो, और यदि ऊँचे दरबारों में इज़्ज़त हासिल कर, दुश्मन को परास्त कर, अपना शान का सिक्का जमाना हो, तो आज ही और अभी शक्तिशाली अद्भुत—

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र

मँगाइए। इसके अलौकिक गुणों की प्रशंसा बड़े-बड़े ज्योतिषी व धुरंधर पंडितों ने ही नहीं, बल्कि शास्त्र-पुराणों तक ने की है। प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने के पचास-पचास हजार प्रशंसा-पत्र इस यंत्र की सचाई के पक्के प्रमाण हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या अविश्वास की रत्ती-भर की गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर अविश्वास करता है, वह जीवन में कभी सुख को प्राप्त नहीं होता, ऐसा कृष्ण भगवान् ने स्वयं कहा है। देखो गीता १६-२३।

इस नवग्रह यंत्र से रोज़गार में लाभ, इम्तहान में पास, मुकदमे में जीत, शत्रु परास्त, राजसम्मान, नौकरी मिलना, संतान-लाभ, तनख्वाह में तरक्की, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, इच्छानुसार शादी, अचानक आफ़तों से बचना, किसी को वश करना, रेस व सट्टे में धन-प्राप्ति वगैरह-वगैरह हर काम पूरा होता है। जो पूछोगे, हर बात का जवाब स्वप्न में विधि-सहित बतलाएगा। आप जिसका ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में से बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकलकर उस कार्य को पूरा करेगा।

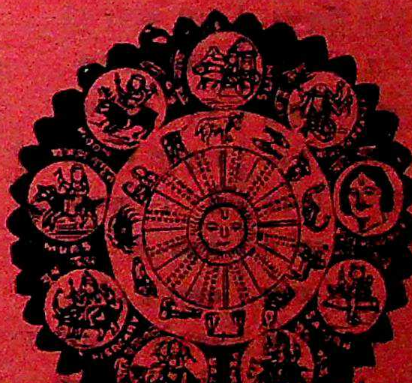

हर मनुष्य विश्वास रक्खे कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, वह इसके चमत्कार को देख वाह-वाह कर उठता है, और बार-बार मँगाता है। बहुतों ने तो छ-छ और आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह यंत्र तक मँगाए हैं। अगर विश्वास न हो, तो हजारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अब भी विश्वास न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। काम न हो, तो दाम वापस मँगाइए।

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

इतने पर भी अगर विश्वास नहीं हुआ, तो अपनी चमकनेवाली तकदीर और उदय होनेवाले भाग्य को धक्का पहुँचाने के दोषी आप ही हैं। एक बेशकीमती व तुच्छ पैसे के लालच-वश यदि चूक गए, तो जीवन-भर पछताना ही हाथ लगेगा। शास्त्र का कहना है कि—

सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्महीन नर पावत नाहीं।

जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक नवग्रह यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह यंत्र मँगावें। पुरुष के लिये तो नीलमणिय और स्त्री को तो लालमणिय से युक्त यानी कंपलीट। एक नवग्रह यंत्र का मूल्य २), एक साथ तीन यंत्र लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ११॥-)

मि० बी० अर्जुनदास बी० ए० छात्र, वेलिंगटन कॉलेज, सांगली (सतारा)— आपके यहाँ से मुझे बेहद लाभ पहुँचा। मैं इम्तहान में पास हो गया हूँ। एक यंत्र वी० पी० से और भेज दें।

मि० ए० बी० वर्मा, ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना— आपका यंत्र पहले एक मँगवाया था, उससे मेरा कार्य सिद्ध हो गया है। अब कृपया एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता S.S.L. बंबई नं० ४

विश्वासार्थ सच्ची प्रतिज्ञा

जो सज्जन ईश्वर-साक्षी-पूर्वक यह लिखेंगे कि आपकी औषधि ने कुछ भी गुण नहीं किया, उन्हें दूसरी औषधि विना मूल्य भेजेंगे।

सुंदरी-सुखजीवन

"सुंदरी-सुखजीवन" के नियम-पूर्वक सेवन करने से सब तरह के प्रदर, सोमरोग यानी सफ़ेद या सुर्ख़ी लिए हुए बदबूदार पानी का निकलते रहना, धोती पर हलका रंग-बिरंगा धब्बा आना, विना समय जल्दी-जल्दी माहवारी का-सा ढंग होना या ज़्यादा दिन तक जारी रहना, आलस्य, मंदाग्नि, शरीर निर्बल हो जाना, चक्कर आना, इन्हीं कारणों से गर्भ न ठहरना आदि स्त्री-रोग नाश होते हैं, और शरीर सुंदर तथा बलवान् हो जाता है। ११ दिन की दवा का मूल्य १।), डाक-व्यय ।।)

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

स्वादिष्ट आसव के रूप में तैयार की हुई

बालरक्षा घुटी

बालकों के ज्वर, अजीर्ण, दस्त, पेट के कीड़े, खाँसी, पसली, डबटी, निर्बलता और दाँत निकलने के विकारों का नाश कर उन्हें पुष्ट बनाने के लिये ख़ूब प्रसिद्ध है। मूल्य फ़ी शीशी ।।), डाक-व्यय ।।), दर्जन का ४।।). रेल-महसूल माफ़। हज़ारों पैकेट बन चुके हैं, आप भी लाभ उठावें। पथ्य की के नियम और रंगीन, सचित्र कैलेंडर मुफ़्त भेज रहे हैं।

कामकल्याण

वैद्यकशास्त्र की विधि से शुद्ध शिलाजीत, सुवर्ण बंग, कस्तूरी, मोती-भस्म, असगंध, विधारा, ब्राह्मी आदि बलवर्द्धक औषधियों द्वारा बताई हुई धातुपौष्टिक २६ वर्ष की अनुभूत औषधि है। इसके सेवन से २० प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्र-पतन, नपुंसकता, नसों की क ज़ोरी, शरीर की दुर्बलता, अंगों की शिथिलता और दिमाग़ी कमज़ोरी दूर होकर शुद्ध रक्त बनता शरीर पुष्ट होता है, और बल-वीर्य की वृद्धि हो है। २० दिन का बकस मूल्य २), डाक-व्यय ।)

अग्निकल्पद्रुम

इस चूर्ण के सेवन से अजीर्ण, अजीर्ण के मंदाग्नि, संग्रहणी, पेचिश, हैज़ा, अम्लपित्त, होना, अफरा, वायुगोला, पेट में छोटे-छोटे पड़ जाना, अरुचि आदि रोग नाश होकर साफ़ आता है, भूख बढ़ती है, और भोजन शुद्ध रस बनकर बल बढ़ता है। मूल्य फ़ी शीशी ।-), डाक ख़र्च २ शीशी तक ।)

पता—पंडित रामचंद्र वैद्यशास्त्री, सुधावर्द्धक औषधालय नं० ३, अलीगढ़ सिटी

लेख-सूची

पृष्ठ

१. करुणा-कंज (कविता)—[लेखक, श्रीमैथिलीशरण गुप्त २७७

२. वैभवशाली हिंदू-राष्ट्र—[लेखक, श्रीयुत बैरिस्टर विनायक-दामोदर सावरकर ... २७८

३. पश्चिम में शैतान की पूजा—[लेखक, श्रीरामनाथ 'सुमन' २८६

४. न-मालूम क्यों ? (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... २६३

५. जाति-पाँति की राक्षसी (व्यंग्य-चित्र)—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव ३००

धातुपौष्टिक व शक्तिवर्द्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, कटिचयन आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य को बढ़ाती हैं, और निर्बलता को भगाकर दांपत्य जीवन का पूरा आनंद प्राप्त कराती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का १) एक रुपया। रसिक विषयों से भरपूर 'वैद्य-विद्या' पुस्तक मुफ़्त मँगावें।

मदनमंजरी-फ़ार्मेसी, जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—निगम मेडिकल हाल

अमीनाबाद-रोड

बनारस-एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

पेलिकेन

हरदिलपसंद फ़ौंटिन पेन

Pelican

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

यह सरलता से खोला जा सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है।

कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है।

साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है।

स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—

पारदर्शक

गौथेर वागनेर हानोवर

Pelican

सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।

लोकल स्टॉकिस्ट—कोसला जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

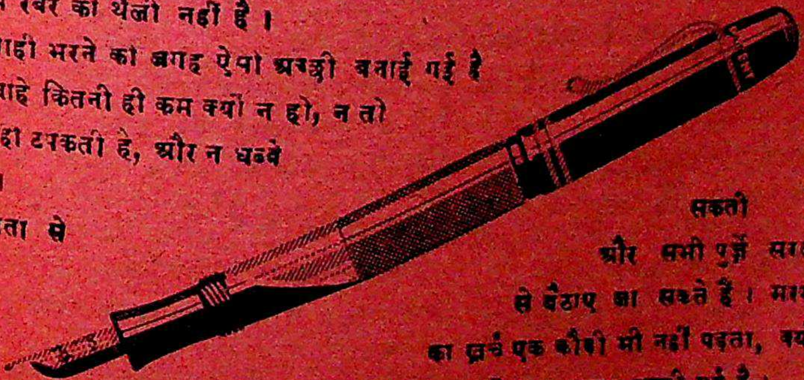

पृष्ठ

६. मिस्टर एलीफ़ैंट (प्रहसन)—[लेखक, श्रीपं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ... ३०१

७. व्यथा (कविता)—[लेखिका, कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक' ३११

८. दुबेजी के संस्मरण (हास्य)—[लेखक, श्रीयुत विजयानंद (दुबेजी) ३१२

९. अमर कलाकार शरच्चंद्र (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत भारतभूषण अग्रवाल ३१७

१०. कल्क-कथा का ऐतिहासिक तथा पौराणिक रूप—[लेखक, श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास... ... ... ३२३

११. रुधिर का चित्र (कविता)—[लेखक, श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए० (ऑनर्स) ३२७

बवासीर की दवा

चाहे जैसी ख़ूनी-बादी, नई-पुरानी बवासीर हो, 'अर्शोहर' को खाने से दर्द, सूजन एक दिन में आराम हो जाती है। यही खावें, और जल में घिसकर लगावें। धर्मार्थ मूल्य ||-), पोस्ट ऑर्डर या डाक के टिकटों से पेशगी भेजिए।

औरतों के बाँझपन की दवा ३) शीशी।

योगेंद्र-फ़ार्मेसी (Regd.)

अमृतसर

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी औषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, बच्चों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह औषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली १), डाक-महसूल ≡)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायेंगे, वीर्यपात नहीं होगा। वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भधारण करना और बार बार संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे गर्भ-निवारक के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकदम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगाकर [illegible] लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

पृष्ठ
१२. आओ, नंगे रहें !—[लेखक, श्रीपं० वंशीधर मिश्र एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, एम्० एल्० ए० ... ... ३२८
१३. काका साहब का पत्र-व्यवहार—[लेखक, श्रीधर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी ३३३
१४. सुधा-चित्रावली—[प्रतिचित्रविकार, श्रीयुत राजगोपालजी ३४१
१५. चयन—[लेखकगण, श्रीमती राजरानी चौहान, श्रीमंगलामोहन, श्रीयुत अमरनारायण अग्रवाल और श्रीसुमित्राकुमार सिनहा ३४५
१६. परीक्षा—[लेखक, श्रीयुत साहित्याचार्य गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि'... ... ३५१
१७. पाँचवीं सुधा-पहेली-प्रतियोगिता ... ३५५
१८. नए फूल ३५६
१९. सौरभ (संपादकीय विचार) ... ३६०

विवाहित आनन्द

आप समझते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और इसी भूल के कारण बीसवीं सदी की सर्वोत्तम पुस्तक के स्वाध्याय से वञ्चित हैं। सच समझिए 'विवाहित आनन्द' पांच हज़ार विवाहित पुरुषों की आप-बीतियों का निचोड़ है। क्रियात्मक उपदेशों, रहस्य की बातों और अत्यन्त लाभदायक शिक्षाओं का भण्डार है। इसके अतिरिक्त गुप्त रोगों की बिना औषधि के चिकित्सा भी लिखी गई है।

मूल्य सचित्र व सजिल्द का ॥)

सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

पता—कविराज हरनामदास बी.ए., लाहौर

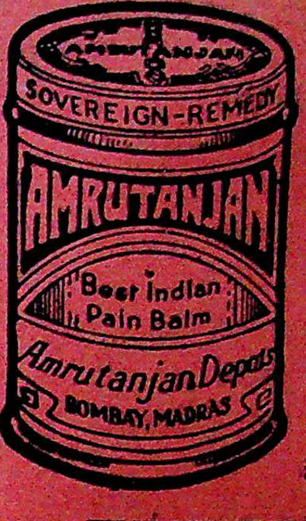

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

सुखसंचारककम्पनी मथुराकी दवाइयां

सुधासिन्धु

कफ, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार आदि की जाहिर सुप्रसिद्ध दवा की० ॥)

दद्रुगजकेसरी

दादकी सबसे अच्छी दवा. की० ।)

बालसुधा

दुबले, और कमज़ोर बच्चोंको ताक़तवर बनानेवाली मीठी दवा. की० ॥)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती है

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. अछूत—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव २०७

(ख) दुरंगे

२. मेरे वीर सुभाषचंद्र ! ३१६
३. माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ... ३१७

(ग) व्यंग्य

४. जाति-पाँति की राक्षसी—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव ३००

(घ) सादे

५. श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... २६४
६. अमर कलाकार शरच्चंद्र चटर्जी ... ३१७
७. श्रीधर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी ... ३३३
८-९. लाहौर में फलों का प्रदर्शन ३४१ और ३४३
१०. वार्षिक फूलों की प्रदर्शनी ३४२
११. तीन पैर की दौड़ ३४२

दैवी शक्तियों का साक्षात् प्रभाव
दिखलानेवाला
राजों, महाराजों तथा सिटी-मैजिस्ट्रेट साहब
बहादुर लखनऊ द्वारा परीक्षित
जगत्-विख्यात
चिंता-हरण सिद्ध यंत्र 'रजिस्टर्ड'
समस्त मनोरथों को पूरा करनेवाला, धन, धान्य, रोज़ी, पुत्र-सुख, वशीकरण, मुक़द्दमा, परीक्षा, तरक़्क़ी, तबदीली, घुड़दौड़, लाटरी आदि में उत्तीर्ण करानेवाला। केवल २) में मँगाकर लाभ उठावें।
गारंटी हम बजरंगबली को साक्षी देकर लिखते हैं, यदि हमारे लेखानुसार आपका मनोरथ पूरा न हो, तो दूना मूल्य वापस करेंगे।
पता—मैनेजर रमलाचार्य-आश्रम (सु)
पोस्ट कमलापुर, ज़िला सीतापुर [यू० पी०]

एक माह में अँगरेज़ी
आ जायगी

अगर आप हमारी हिंदी-इँगलिश-टीचर का एक सबक़ रोज़ाना याद कर लिया करें, तो आपको एक माह में अँगरेज़ी आ जायगी। अँगरेज़ी लिखना, पढ़ना, बोलना, अख़बार पढ़ना इस किताब की मदद से सब कुछ आ जाता है। क़ीमत १), डाक-ख़र्च अलग।

मिलने का पता—एम्० ए० फ़ारुक़ी ऐंड कं०, देहली

पृष्ठ

१२. कन्याओं की दौड़ ३४३
१३. तेज़ साइकिल-चालिका कुमारी मान कौशाह ३४४
१४. श्रीअमरनारायण अग्रवाल बी० कॉम० ३४७
१५. ताजिरुलमुल्क लाला रामजीदास वैश्य एफ़्० आर० एस्० ए०, एफ़्० आई० एफ़्० एस्० सी०, एम्० आर० ए० एस्० ३६८

'उग्र'
भाव-प्रधान साप्ताहिक हिंदी
काशी से प्रति रविवार को प्रकाशित
चंद चलते स्तंभ

साप्ताहिक—भविष्य
सत्संग
टाँकी—टीका

प्रेमी सम्राट् एडवर्ड अष्टम
ज़मीन किसकी है?
(उग्र-लिखित उपन्यास)
ऊटपटाँग

'उग्र' छोटे साइज़ का पॉकेट-पत्र है।
पृष्ठ ४०; वार्षिक ३); प्रति अंक १ आना
नमूना मुफ़्त! वी० पी० नहीं भेजते।
मिलने का पता
मैनेजर, 'उग्र'-कार्यालय, काशी

जरमनी पिस्तौल

देखने में यह भयंकर अस्त्र मालूम होती है, और आवाज़ में यह वीर दुष्ट को भी कँपा देगी। तथापि किसी भी प्रकार के लाइसेंस की आवश्यकता नहीं है। इसकी गर्जना असली रिवाल्वर की तरह है। इसमें एक साथ १० गोलियाँ भरी और चलाई जा सकती हैं। गोलियों-सहित एक पिस्तौल का मूल्य ३); डाक-ख़र्च अलग। गोलियों का अलग से मूल्य १) की १००।

ग्लोब ट्रेडिंग कंपनी
११६, फोर्ट स्ट्रीट, फ़ोर्ट, बंबई

कामदेव वटी

इससे हर तरह की कमज़ोरी, सुस्ती, नामर्दी, समस्त धातु-विकार दूर होकर अटूट बल तथा स्तंभन होता है; और हस्तमैथुन आदि से हुई शिकायतें शर्तिया दूर होती हैं। मू० १), स्पेशल तिला—हस्तमैथुन आदि से पैदा हुई नसों की कमज़ोरी की रामबाण दवा, मूल्य २) डाक-ख़र्च जुदा, विवरण मुफ़्त। चमत्कार पुस्तक मुफ़्त मँगाइए।

निश्चय पुत्र ही होगा

शंकर-स्पेसिफ़िक पिल—यह गर्भ-धान में दी जाती है। सौ फ़ीसदी लड़का ही होता है, बशर्ते कि गर्भ दो मास से ज़्यादा न हो। मूल्य ४), डाक-ख़र्च जुदा।

शंकर-रिसर्च (बर्थ-कंट्रोल)

इसके केवल एक ही दफ़ा खाने से सदा को या इच्छित समय तक गर्भ नहीं रहेगा। मूल्य २), डाक-ख़र्च जुदा।

पता—डॉक्टर हरिशंकर शर्मा एम्० बी० एच्० (S) चंदौसी, यू० पी०

स्वदेशी का चिट्ठा

पहला— सन् १९३४ में बना था, जब १० प्रति हज़ार गारंटी मुनाफ़ा देकर भी कंपनी को मुनाफ़ा हुआ था।

दूसरा— इसी वर्ष बनेगा। खर्च की औसत घट जाने और ब्याज की दर बढ़ जाने से कंपनी को कहीं ज़्यादा मुनाफ़ा होगा।

यह साल कंपनी के चिट्ठे का है

अतएव—

अगर आप चाहते हैं कि दूसरे चिट्ठे के मुनाफ़े में साझीदार बनें

तो—

आज ही अपना बीमा स्वदेशी में करा लीजिए।

विशेष विवरण के लिये लिखिए:—

श्रीचंद दौनेरिया मैनेजिंग डाइरेक्टर

स्वदेशी बीमा कंपनी लिमिटेड

प्रधान कार्यालय, आगरा।

यू० पी० और मध्य बिहार के चीफ़ एजेंट—

श्रीमदनसिंह नाहर ६५/११ प्यारे कलाँ, 'रामभवन', बनारस

सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक

मासिक पत्रिका

सुधा

राजसंस्करण	वार्षिक मूल्य १२)	विदेश के लिये १२)	प्रति संख्या १)
साधारण संस्करण	,, ,, ६)	,, ,, ६)	,, ॥)
सस्ता संस्करण	,, ,, ४)	,, ,, ४)	,, ।)

इस अंक के विशेष लेख

पृष्ठ
१. वैभवशाली हिंदू-राष्ट्र—बैरिस्टर विनायक दामोदर सावरकर २५८
२. अमर कलाकार शरच्चंद्र—श्रीभारतभूषण अग्रवाल ३१७
३. काका साहब का पत्र-व्यवहार—श्रीयुत प्रोफ़ेसर धर्मदेव शास्त्री ३३३
४. दुबेजी के संस्मरण—श्रीयुत विजयानंद (दुबेजी) ३१२

प्रकाशक—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

सुधा-पहेली-प्रतियोगिता

में आप

निःशुल्क भाग ले सकते हैं !

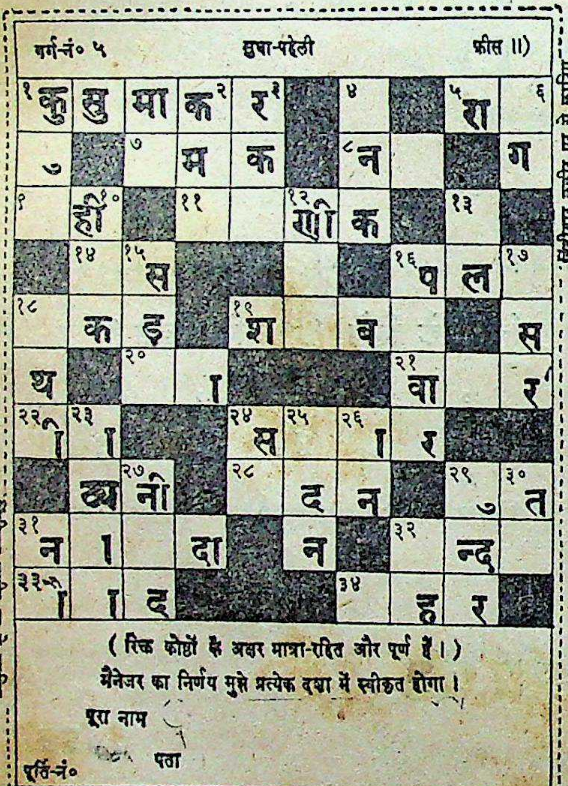

वर्ग-नं० ५				सुधा-पहेली					फ़ीस ।)
१ कु	सु	मा	क २	र ३	■	४	■	५ रा	६
ु	■	७	म	क	■	८ न		■	ग
९	१० ह्री	■	११		१२ णी	क	■	१३	■
■	१४	१५ स	■	■		■	१६ प	ल	१७
१८	क	ड	■	१९ श		व		■	स
थ	■	२०	ा	■	■	■	२१ वा		र
२२ ी	२३ ा	■	■	२४ स	२५	२६ ा	र	■	■
■	ध्य	२७ नी	■	२८	द	न	■	२९ ु	३० त
३१ न	ा		दा	■	न	■	३२	न्द	
३३ ी	ा	द	■	■	■	३४	ह	र	■

(रिक्त कोष्ठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं।)

मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।

पूरा नाम

पूर्ति-नं० पता

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

बिंदीदार लकीर पर से काटिए

सूचना—

वर्ग-पूर्तियाँ भेजते समय नीचे दिया कूपन काटकर लिफ़ाफ़े पर (पते की जगह) चिपका दीजिए।

मैनेजर 'सुधा'
(पहेली-प्रतियोगिता-विभाग)
लखनऊ

कैसे ?

एप्रिल और मई-मास की 'सुधा' में प्रका
पहेली-प्रतियोगिता-नं० ५ में जो देवी या स
(अकेले और एक ही नाम से) २ पूर्तियाँ
उनका प्रवेश-शुल्क १) नियमानुसार भेज दें
साथ में इस पृष्ठ पर दिए हुए वर्ग पर एक
निःशुल्क भेजने के भी अधिकारी होंगे।
निःशुल्क भेजी जानेवाली पूर्ति अन्य २ पू
सहित एक ही लिफ़ाफ़े में भेजनी चाहिए।

ध्यान रहे—

भिन्न-भिन्न नामों से भिन्न व्यक्तियों द्वारा (
वे एक ही परिवार के क्यों न हों) भेजी गई पू
के विषय में उपर्युक्त नियम लागू न होगा,
उनकी भेजी हुई कोई भी पूर्ति निःशुल्क स्वीका
की जायगी।

इस नियम से लाभ उठाइए। यह किसी
पत्रिका में नहीं है !

सिंधु मथैं सुर ही लही नैंकु जु सतजुग माँहि,
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समै सब काँहि।

(दुलारेलाल भार्गव) .

वर्ष ११
खंड २

वैशाख, ३१५ तुलसी-संवत् (१९९५ वि०)—
मई, १९३८

संख्या ४
पूर्ण संख्या १४२

करुणा-कंज

[श्रीमैथिलीशरण गुप्त]

मेरे करुणा - कंज ! खिलो ;
मेरे शोक - सलिल के शतदल,
तुम प्रभु - पद - तल, मुझे मिलो।
सौरभ - लाभ - हेतु ही जी लूँ,
रहूँ रेणु - रंजित, मधु पी लूँ,
रोमहर्ष - सम कंटक भी लूँ,
फूल बनें, फल - भार झिलो।
मेरे करुणा - कंज ! खिलो।

वैभवशाली हिंदू-राष्ट्र

[श्रीयुत बैरिस्टर विनायक-दामोदर सावरकर]

"There is not a petty State in Rajsthan that has not its Thermapolye and scarcely a city that has not produced its Leonidos."

—Todd's Rajsthan.

कर्नल टॉड-जैसे विदेशी अँगरेज़ लेखक ने राजस्थान के विषय में उपर्युक्त वाक्य में जो बात कही है कि राजपूताने में ऐसी कोई रियासत नहीं, जिसमें कम-से-कम एक थर्मापोली न हो, और ऐसा कोई नगर नहीं, जिसमें से एक-एक लिओनिडॉस न निकला हो। ठीक यही बात इस आसिंधु सिंधु-विस्तृत अखिल हिंदू-राष्ट्र के विषय में भी कही जा सकती है।

परंतु इस ऐतिहासिक सत्य को दृष्टि-ओट करके हिंदू-राष्ट्र के शत्रु भी जो दूषण सहसा नहीं लगाते, वे ही डॉ॰ अंबेदकर आजकल चलते-फिरते हिंदू-राष्ट्र पर लगा रहे हैं! उन्हें यदि हिंदू-राष्ट्र से कोई संबंध न रखना हो, तो ख़ुशी से न रक्खें, किंतु हम उसे तोड़ना नहीं चाहते, बल्कि उसे समता और ममता की रज्जु से यथाशक्ति अधिक दृढ़ करने का ही प्रयत्न करते आए हैं। किंतु फिर भी आज यह हिंदू-राष्ट्र इतना स्वाभिमान-शून्य या हतबल नहीं हो गया है कि वह किसी के पाँव पकड़कर इस बात के लिये खुशामद करे कि वह हिंदू राष्ट्र पर उपकार करने के लिये उस (हिंदू-राष्ट्र) की ध्वजा (झंडे) के नीचे आ जाय! और, यदि दुर्भाग्य से वह अवसर आया भी, तो ऐसे बाज़ारू लोगों की उदारता पर जीवित रहने की अपेक्षा हिंदुत्व की सम्मान-रक्षा के लिये जूझते हुए मर जाना ही प्रत्येक स्वाभिमानी हिंदू श्रेयस्कर समझेगा।

“हिंदुओं का जीवन केवल आज ही नहीं, वरन् सदा-सर्वदा से नियमित शरणागति एवं लगातार पराभव-युक्त ही रहा है। हिंदू आज भी जिस ढंग से जी रहे हैं, वह प्रत्येक हिंदू के लिये लज्जास्पद है।” ये आक्षेप डॉ॰ अंबेदकर ने पंजाब के जाति-पाँति-तोड़क मंडल के अधिवेशन में अपने अध्यक्ष-पद से दिए जानेवाले भाषण में किए थे। इनका उत्तर विद्वद्वर सावरकरजी ने अपने इस लेख में अपनी वक्तृत्व-पूर्ण शैली से दिया है।—संपादक

अंबेदकर के कुत्सित आक्षेप

“हिंदुओं का जीवन केवल आज ही नहीं, वरन् सदा-सर्वदा केवल लज्जाजनक ही रहा है। हिंदू आज भी जो जी रहे हैं, सो अपने पराक्रम से नहीं, वरन् दूसरों के पैरों तले कुचले जाने पर भी उन्हें कभी इसके लिये लज्जा तक नहीं आती, इसी वृत्ति से जी रहे हैं। समय के प्रवाह में अपने जीवित रहने और अस्तित्व बनाए रखने-विषयक हिंदुओं का अभिमान निस्सार—थोथा है। क्योंकि हिंदू समाज का जीवन सदा सर्वदा ही दासत्व-पूर्ण रहा है, निरंतर शरणागत बनकर और लगातार पराजित होकर ही वे जीते रहे हैं। जेता के रूप में जूझते हुए विपक्षी से टक्कर लेकर सिर ऊँचा रखनेवाला हिंदू कभी जीवित ही नहीं रहा।” The Hindus' life has been a life of continuous defeat. It is a mode of survival of which every Hindu will feel ashamed !"

इस आशय के और ऐसे ही कठोर शब्द-युक्त आक्षेप डॉ० अंबेदकर ने पंजाब के 'जाति-पाँति-तोड़क मंडल' के होनेवाले एक अधिवेशन के अध्यक्ष-पद से दिए जानेवाले भाषण में किए हैं। किंतु डॉ० अंबेदकर के उपर्युक्त आक्षेप सर्वथैव मिथ्या और निराधार हैं। यदि उनमें सत्य का अंश होता, तो कितने ही कटु होने पर भी हमें उनके लिये विषाद न होता। डॉक्टर महाशय ने अस्पृश्यता-रूपी वर्तमान अत्यंत अन्याय-पूर्ण एवं दुष्ट प्रथा की जो निर्भर्त्सना की है, अथवा जन्मजात जाति-भेद के घातक परिणाम की जो तीव्र आलोचना की है, उनका हम भी उतनी ही न्याय-निष्ठुर वृत्ति से घोर विरोध करते आए हैं। इसी प्रकार अपने हिंदू-राष्ट्र में समाविष्ट अन्य अनेक दोषों को खुल्लमखुल्ला प्रकट करने में भी हमें तनिक संकोच नहीं होता। इस बात को अलग से कहने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती। अपने राष्ट्रीय दोषों की भर्त्सना करने का साहस और उनके प्रतिकार की शक्ति जिस राष्ट्र में शेष नहीं होती, उसे विनाश के पथ पर लगा हुआ ही समझना चाहिए। किंतु हमें तो इस बात का पूर्ण विश्वास है कि हिंदू समाज में अभी वह साहस और शक्ति विद्यमान है, और इसी कारण हम अपने दोष प्रकट करने में भय नहीं खाते। ऐसी दशा में कोई यह नहीं कह सकता कि किसी व्यक्ति के द्वारा हमारे राष्ट्र के दोष प्रकट किए जाने से हमारी भावनाओं पर आघात पहुँचता है, और इसी कारण हम उसका निषेध-विरोध करते हैं। अर्थात् डॉक्टर अंबेदकर उपर्युक्त आक्षेप में हिंदुओं का इतिहास अखंड शरणागतिमय एवं जीवन प्रारंभ से आज तक दासत्वमय रहने के जो भाव प्रकट करते हैं, उनमें यदि ऐतिहासिक सत्य होता, तो इस लज्जास्पद आक्षेप का हम भी कभी विरोध न करते। किंतु फिर भी सच्चे, स्वाभिमानी पुरुष का कर्तव्य ऐसी दशा में क्या हो सकता है ? जिस हिंदू-राष्ट्र में, हिंदू-वंश में हम जन्मे और बड़े हुए, उसी अपने राष्ट्र का पिछला इतिहास अखंड शरणागतिमय बताना, और हमारे पूर्वजों ने आज तक कुछ भी पराक्रम नहीं किया, न हमारे वंश में कोई स्वाभिमानी पुरुष ही पाया जाता है, यह बात ध्यान में आते ही अपने जन्मदाता को ठुकराकर उनसे जन्म पाने की बात से इनकार करना, और कायर की तरह अपने पिता को पिता कहने में लज्जा अनुभव करने का रोना रोते हुए दूसरे के पिता को पिता कहने के लिये लालायित रहना, क्या यही वर्तमान पीढ़ी का कर्तव्य है ? जो बाप को बाप न कहे, वह कुपुत्र तो अपने उन नामर्द पूर्वजों से भी गया-बीता सिद्ध होता है, जो एक सिरे से अपने समस्त पूर्वजों की निरंतर शरणागति का कलंक देख सकते हैं। जिसके हृदय में स्वाभिमान की भावना है, उसका कर्तव्य अपने बाप को बाप कहना छोड़कर दूसरे को अपना बाप बनाना नहीं हो सकता; बल्कि अपने पराक्रम से अपने कुल पर लगे हुए उस अखंड शरणागति के कलंक को धोने के लिये प्रतिज्ञा-बद्ध होकर कर्तव्य-क्षेत्र में उतर पड़ना ही उसका कर्तव्य हो सकता है।

यदि मेरे पूर्वज दुर्गति में सड़ रहे होंगे, तो मैं अपने पुरुषार्थ से उनका उद्धार करूँगा। यदि मेरे वंश में किसी ने कोई पुरुषार्थ नहीं किया होगा, और इसकी मुझे लज्जा अनुभव होती होगी, तो मैं ही अपने वंश में पहला पराक्रमी बनकर अपनी धुँधली पड़ जानेवाली वंशावली को इतिहास में मोटे स्वर्णाक्षरों से अंकित करने के लिये अपने कुल-शत्रुओं को बाध्य करूँगा। मेरे पूर्वजों द्वारा किसी

को पराजित न किए जा सकने पर हँसनेवाले का—यह दिखाकर कि मुझ-जैसे पराक्रमी पुरुष को जन्म देने योग्य बीजभूत पराक्रम उसमें शेष था ही—मैं मुँह बंद कर दूँगा। यदि इतना भी न कर सका, तो कम-से-कम अपनी माता के घर में चूल्हा या दीपक जला सकने तक की चेतना न होने से चारो ओर जो अंधकार फैल रहा है, उस अंधकार में भूखी माता को छटपटाती छोड़कर, उसकी उस दुर्गति या विडंबना के लिये उसके शत्रु की 'हाँ में हाँ' मिलाते हुए उसी के घर के टुकड़े पर पेट भरने तथा उसके दीपक के प्रकाश पर जल मरनेवाले जंतु की तरह अपना जन्म न खोकर उसकी निराशा एवं दुर्दशा का अंधकार दूर करने के लिये अपने हृदय की दियासलाई सुलगाकर कम-से-कम अपने वंश-भर जो कुछ चेतना, प्रकाश या गर्मी पहुँचा सकता हूँ, मैं कभी पीछे न रहूँगा। इस प्रकार का निश्चय और प्रयत्न अपने को 'मनुष्य' कहलानेवाले को करना चाहिए।

यदि सचमुच ही हिंदुओं का जीवन निरंतर पराभव का ही होता, तो हम उस सत्य को भी न छिपाते या उसके कारण हताश न होते हुए हमने हिंदुओं तथा अगली पीढ़ी को इतना उत्साहित किया होता कि वे उस अखंड पराभव का बदला चुकाने और उस कलंक को धो डालने के लिये "हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्" का अनुसरण करने को तैयार हो जाते!

इससे यह स्पष्ट सिद्ध हो जायगा कि हम अंबेदकर के उपर्युक्त आक्षेप का जो वारंवार विरोध करते हैं, वह अत्यंत कटु होने या उसमें की गई राष्ट्र-निंदा से आत्मभावना को ठेस लगने के कारण ही नहीं, बल्कि उसके सर्वथा मिथ्या और कुचेष्टा-पूर्ण होने से ही करते हैं। डॉ॰ अंबेदकर-जैसे विद्वान् को, हिंदू-धर्म, नीति, श्रुति, स्मृति और संस्कृति पर अनेक व्याख्यान और प्रवचन देनेवाले तथा ग्रंथ लिखनेवाले एक उत्तरदायी पुरुष को, हिंदू-इतिहास का इतना ज्ञान तो अवश्य होना चाहिए कि ये विधान किस प्रकार सर्वथा मिथ्या हैं। किंतु इतने पर भी जब उन्होंने आवेश में आकर अविवेक-पूर्ण ढंग से हिंदू-राष्ट्र के सिर निराधार लांछन इतने अमर्यादित रूप में लगाया है, तो लाचार होकर हमें यह कहना पड़ता है कि उनके विधान मिथ्या ही नहीं, दुष्टता-पूर्ण भी हैं।

अपने पूर्वजों की, ममता के कारण, निरी स्तुति करते रहना चाहे मूर्खता-पूर्ण हो, पर बिलकुल ही मनुष्यता से हीन नहीं कहा जा सकता। किंतु अपने पूर्वजों की अकारण निंदा करना या किसी के द्वारा दुष्टता-पूर्वक जान-बूझकर मुँह पर ऐसी निंदा किए जाने पर उसका तीव्र प्रतिवाद न करते हुए चुपचाप सुन लेना मनुष्यता के लिये लज्जास्पद है। यद्यपि हिंदुत्व का संबंध या हिंदू-राष्ट्र का नाता डॉ॰ अंबेदकर ने तोड़ लिया है, तथापि केवल न्याय की, ऐतिहासिक सत्य की और निष्पक्षपात की दृष्टि से ही कम-से-कम उन्हें हिंदू-राष्ट्र के संबंध में इस प्रकार सर्वथा मिथ्या और दुष्टता-पूर्ण आक्षेप वारंवार हरगिज़ न करना चाहिए था। इस प्रकार की भ्रम-पूर्ण मिथ्या निंदा से हिंदू-राष्ट्र की सत्कीर्ति की अपेक्षा निंदक के नाम को ही अधिक बट्टा लगता है, यह बात डॉ॰ अंबेदकर को स्मरण रखनी चाहिए। तथापि इस बात को भूलकर यदि कोई उक्त प्रकार के कुत्सित और असत्य विधान वारंवार करता रहे, और समय-समय पर उसका सप्रमाण खंडन न किया जाय, तो अनेक बार सुनते-सुनते इस प्रकार का असत्य सहस्रावधि सामान्य एवं अल्पज्ञ लोगों को सत्यवत् प्रतीत होकर राष्ट्र के आत्मविश्वास को

धक्का पहुँचने की ही अधिक संभावना रहती है। यह भी कुछ मिथ्या नहीं। इसलिये इन असत्य विधानों का निषेध करना और ऐतिहासिक कसौटी पर कसकर उनका मिथ्यात्व प्रकट करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। कम-से-कम सत्य क्या है, इस बात को जानने के लिये ही डॉ० अंबेदकर के इस कथन को ऐतिहासिक सत्य की कसौटी पर भली भाँति कसना चाहिए।

इस ऐतिहासिक छान-बीन में किसी छोटी-बड़ी या विवादास्पद घटना पर अवलंबित न रहते हुए ऐसी ही अखंडनीय एवं प्रमुख घटनाओं को प्रमाण रूप से उपस्थित करेंगे, जिनकी सत्यता से परकीय इतिहासकार इनकार नहीं कर सकते।

जब डॉ० अंबेदकर ने अपने उपर्युक्त आक्षेप में हिंदू-राष्ट्र की किसी खास जाति या प्रांत अथवा समाज या समय-विशेष का उल्लेख न करते हुए समग्र हिंदू-राष्ट्र एवं उसके आद्यंत जीवन पर खुल्लमखुल्ला लिखा है, और "The Hindus' life has been a life of continuous defeat." इस प्रकार वह निधड़क कह रहे हैं, तो खंडन करने के लिये भी कम-से-कम इस विषय-संबंधी हिंदू-राष्ट्र के समग्र इतिहास का विहंगावलोकन करना आवश्यक है।

वैदिक और पौराणिक काल

जो राष्ट्र आज इस आसिंधु सिंधु भारतवर्ष में व्याप्त होकर हिंदू के नाम से निवास करता है, उसका मूलारंभ वैदिककालीन सप्तसिंधु नाम के विख्यात राष्ट्र से हुआ है। हमारी उस अत्यंत प्राचीन सप्तसिंधु-नामक संस्कृत-अभिधा का ही प्राकृत रूप हिंदू है। वैदिककालीन उस सप्तसिंधु-राष्ट्र के वीरों के खड्ग और नेत्रों की स्फूर्ति, वे जिस प्रज्वलित यज्ञाग्नि की आराधना करते थे, उसकी ज्वाला के समान ही देदीप्यमान और दुर्धर्ष थी। अपने समकालीन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करती हुई उनकी सेनाएँ, राज्य और संस्कृति सरस्वती से लेकर ब्रह्मावर्त एवं वहाँ से मगध, प्रयाग, काशी, मथुरा ही नहीं, प्रत्युत ठेठ द्वारका तक अर्थात् पूर्व से लेकर पश्चिम समुद्र तक किस प्रकार लगातार बढ़ती और विस्तार पाती चली गई, तथा विंध्याचल एवं सह्याद्रि को लाँघकर अंत में ठेठ दक्षिण तक कैसे जा पहुँची, बड़े-बड़े सघन वन काट-छाँटकर उन्होंने सुंदर और रम्य प्रदेश कैसे बसाए, ज़मीन जोतकर, उसमें उत्तम बीज बोकर पौष्टिक धान्य उत्पन्न किए, हज़ारों नगर और महानगर बसाए, मार्ग में उनकी जिन विभिन्न जनपदों और विपक्षी संस्कृतियों से भेंट हुई, उनमें से कुछ को अपने में सम्मिलित कर लिया, कुछ को पचा लिया, और कुछ को मिट्टी में मिला दिया, कितने ही रावणों के दसों सिर काट डाले, और सहस्रबाहुओं के हज़ारों हाथ छाँट डाले, कितने ही बली-महाबलियों को पाताल में भेज दिया, काव्य-शास्त्र, व्याकरण, कृषि, शिल्प, धर्म, योग, तत्त्व-ज्ञान आदि भौतिक और आत्मिक प्रगति का साहित्य निर्माण करने में भी वे उच्च पद पाते चले गए। इन सब बातों को आज नए सिरे से बतलाने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती, और न इनके लिये प्रमाण पेश कर सिद्ध करने की ही आवश्यकता है। डॉ० अंबेदकर खुद ही उस निबंध में इस बात को स्वीकार करते हैं—

"That the Hindu religion was once a missionary religion must be admitted. It would not have spread over the face of India if it was not a missionary religion!"

अर्थात् "हिंदू-धर्म प्रचारशील धर्म था, इस विषय में तो शंका ही नहीं है। अन्यथा वह इस प्रकार अखिल भारतवर्ष में व्याप्त हो ही नहीं सकता था।"

इस प्रकार हिंदू-राष्ट्र की धार्मिक दिग्विजय का जो एकमात्र कारण डॉ० अंबेदकर ने स्वीकार किया है, उसी को वैदिक और पौराणिक काल की सांस्कृतिक एवं राजकीय दिग्विजय के लिये निर्णायक मानना चाहिए। वैदिक सप्तसिंधु राष्ट्र पंचनद से लेकर ब्रह्मावर्त और वहाँ से आर्यावर्त तक था। अर्थात् "उत्तरं स्यात्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्; तं वर्षंभारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।" इस प्रकार समग्र भारत में अपनी संस्कृति और साम्राज्य फैलाते हुए चले जानेवाले समाज को, जिसका पुरोहित और सेनानी इंद्र था, और जिसकी सत्ता उस समय अबाधित रूप से बढ़ती जा रही थी, उस समय तक के लिये तो कम-से-कम उस राष्ट्र को पराधीनजीवी एवं निरतर पराजित जीवनवाला कहने की कौन हिम्मत कर सकता है? यदि हिंदुओं की उस दिग्विजय एवं वैदिक, रामायणिक या महाभारतीय काल का वर्णन करना हो, तो वह इन शब्दों में किया जा सकता है—

In the Vedic and Pauranic period the life of Hindus had ever been a life of one continuous triumph, of invincible Independence, astonishing progress and unchallengable superiority!

इसी प्रकार वह पौराणिक और वैदिक काल भी कुछ छोटा-मोटा नहीं था, दीर्घ विस्तृत था। उस समय की इजिप्शियन, बेबिलोनियन, खाल्डियन, असीरियन आदि संस्कृतियाँ समाप्त होकर आज वे नाम-शेष हो गई हैं!

प्राचीन ऐतिहासिक काल

ग्रीकों का आक्रमण और अंत में हिंदुओं द्वारा उनका पराजय—इतिहास-काल के आरंभ में ही सिकंदर ने ई० सन् पूर्व ३२६ में भारतवर्ष पर चढ़ाई की थी। वैदिक और पौराणिक काल के दैत्य दानव, असुर-नाग, यक्ष-राक्षसादि परकीय शत्रुओं से प्रत्यक्ष जूझकर हिंदुओं ने उनके धुर्रे उड़ा दिए। यहाँ तक कि उनमें से कुछ का नाम ही मिटा दिया। इसके बाद का समय इतिहास-काल है। इसके आरंभ में ही समग्र भूमंडल को पादाक्रांत करने के लिये निकले हुए ग्रीकों के समान बलवान् शत्रुओं का सामना करने का भारतीयों को सिकदर की चढ़ाई के समय मौक़ा मिला।

परंतु ग्रीस-देश से निकलने के बाद सीरिया, ईरान आदि देश-विदेशों को पादाक्रांत करते हुए सिकंदर की दिग्विजय की लहर इस भारतवर्ष के हिमालय-रूपी तट से टकराते ही छिन्न-भिन्न हो गई। और, भारत विजेता कहलाने की सिकंदर की उमंग पंचनद पार करते-करते ही लुप्त हो गई। उसने पौरस का पराभव किया, किंतु वह भी इतनी भयकर लड़ाई के बाद कि उसके पश्चात् मगध-साम्राज्य से टक्कर लेने का धैर्य ग्रीक-सेना में बहुत कम रह गया। यहाँ तक कि व्यास नदी को पार कर मगध-साम्राज्य से मुक़ाबिला करने के लिये ग्रीक-सेना ने साफ़ इनकार कर दिया। विद्रोह मचा, और सिकदर को वापस लौट जाने के लिये विवश होना पड़ा। इस विद्रोह के अन्य कई कारण हो सकते हैं, किंतु फिर भी यदि मगध-साम्राज्य में ईरान की तरह खुला मैदान मिल जाने की संभावना होती, तो पस्तहिम्मत हो जानेवाली सेना को लेकर भी वह एक बार मगध के राजमहल में दो-चार दावतें उड़ाए बिना कभी वापस न लौट जाता। और, वह वापस भी लौटा, तो किस बुरी तरह से कि इने गिने गणराज्यों की कूट-नीति ने उसे पनाह मँगवा दी। उनमें भी ख़ासकर क्षुद्रक और मालव के हिंदू-गणराज्यों ने सिकंदर को इतना परेशान किया कि ग्रीक-इतिहासकारों को भी उनके पराक्रम की प्रशस्ति करनी पड़ी। उस दिग्जेता सिकंदर को

हिंदू-वीरों ने एक बार तो व्यक्तिशः घेरकर घायल करके समरांगण में गिरा भी दिया था। हिंदुओं के खड्ग-प्रहार से बेसुध और खून से लथपथ हो जानेवाले अपने सम्राट् को ग्रीक-सेना ने बड़ी कठिनाई से बचाकर सुरक्षित स्थान में पहुँचा दिया। अन्यथा उसी दिन भारतवर्ष में उसकी समाधि बन जाती, और अनाथ सेना भारत से लौटने को बाध्य होती।

सिकंदर दिग्विजेता अवश्य था, किंतु वह भारत-विजेता न कहला सका। पंचनद से आगे वह पैर तक न बढ़ा पाया, और दक्षिण-समुद्र तक फैले हुए हिंदू-राष्ट्र-संघ का वह बाल तक बाँका न कर सका। दक्षिण में तो उसके आने की खबर पहुँचने से पहले ही वह सिंधु पार कर जैसा आया था, वैसा ही लौट भी गया। केवल पंजाब को (ई० सन् ३२५ में) अवश्य उसने अपने साम्राज्य में मिला लिया था, किंतु हिंदुओं ने ग्रीकों के अधिकारियों को मार पीटकर भगा दिया, और तत्काल ही (ई० सन् पूर्व ३२२ में) अपना प्रदेश वापस ले लिया। केवल चार ही वर्ष में संसार के तत्कालीन बलाढ्य शत्रु के पाँव हिंदुओं ने हिंदोस्तान में जमते-जमते ही उखाड़ दिए।

किंतु इतना करके ही रुक नहीं गए। हिंदुओं की यह विजय अप्रत्यक्ष विरोध की होते हुए भी यदि कोई वावदूक यह कहने लगे कि हिंदुओं ने इसमें यवन-सेना के सामने खड़े होकर, तलवार से तलवार भिड़ाकर कोई विजय प्राप्त नहीं की, तो उसका मुँह बंद करनेवाली घटना भी ई० सन् पूर्व ३२२ में ग्रीकों के उच्छेद के बाद ही घटित हुई है। अर्थात् ग्रीक-जैसे बलाढ्य शत्रु का सामना कर सकने के लिये उस बदली हुई परिस्थिति में आवश्यक सभी नई बातें सीखकर और पुरानी बातें छोड़कर चाणक्य की अलौकिक प्रतिभा एवं चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने अतुल पराक्रम से मगध में महान् राज्य-क्रांति कर दिखाई। हिंदोस्तान के महारथ का सूत्र हाथ में आते ही हिंदुओं ने पंजाब को तत्काल ही ग्रीकों के हाथ से छीन लिया। यह देखकर सिकंदर का प्रबल सेनापति सेल्युकस ई० सन् पूर्व ३०५ में अपनी यावनी सेना लेकर फिर पंचनद पर चढ़ आया। उस समय सम्राट् चंद्रगुप्त ने उसे समर-क्षेत्र में, अभिमुख युद्ध में, इस प्रकार पराजित किया कि वह केवल पंजाब ही नहीं, वरन् अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तान के प्रदेश विजयी हिंदू-राष्ट्र को देकर ऊपर से दहेज़ के रूप में उसने अपनी युवती कन्या भी इस हिंदू-सम्राट को अर्पण कर दी! इस प्रकार उस समय के संसार के सबसे अधिक बलवान् ग्रीकों पर हिंदुओं ने महान् विजय प्राप्त की थी। ई० सन् पूर्व ३०५ के पहले ही हिंदुओं ने ग्रीकों की जड़ खोदकर केवल बीस ही वर्ष में उन्हें धूल में मिला दिया, और ठेठ हिंदूकुश-पर्वत पर हिंदू-साम्राज्य की ध्वजा फहरा दी! इसके बाद दो सौ वर्षों तक हिंदुओं की ओर आँख उठाकर देखने की भी ग्रीकों को हिम्मत न हो सकी। यह भी स्मरण रखने की बात है। सिकंदर के जीते हुए एशिया-खंड के समस्त राष्ट्र ग्रीकों के हाथ में रहकर वहीं उनका चिरस्थायी राज्य रहा। उसके दिग्विजय के दाँत एकमात्र भारतवर्ष ने ही तोड़ गिराए।

उस समय के विश्व-साम्राज्यों में चंद्रगुप्त, बिंबिसार, अशोक आदि मौर्य-सम्राटों का हिंदू-साम्राज्य ही सर्वोपरि था या नहीं, स्वतंत्र था या नहीं, और प्रबल था या नहीं, यह सीधे उस ग्रीक-राजदूत मेगास्थिनीज़ से पूछिए, जो चंद्रगुप्त के दरबार में रहता था! इसी प्रकार 'देवानां प्रिय अशोक' के कीर्ति-स्तंभों से पूछिए। इन प्रमाणों को सामने रखते हुए हिंदुओं का जीवन 'अखंड शरणागति और निरंतर पराभव का' बताने की हिम्मत कौन 'पिशुन' कर सकेगा?

मीनांडर से युद्ध

सम्राट् चंद्रगुप्त द्वारा सेल्युकस के पराजित होकर लौटने के बाद डेढ़ सौ वर्ष तक किसी भी अहिंदू को भारतवर्ष की सीमा में पैर रखने का साहस नहीं हुआ। किंतु इसके बाद मौर्य-वंश के बौद्ध राजों को निर्बल देखकर जब एशिया के ग्रीक राजा ने फिर ज़ोरों की चढ़ाई का आयोजन किया, तब वैदिक धर्म के असीम अभिमानी सेनापति पुष्यमित्र ने उस दुर्बल बौद्ध बृहद्रथ राजा को मारकर साम्राज्य-सत्ता उसी प्रकार अपने हाथ में रक्खी, जैसे पहले नंदवंशीय दुर्बल सम्राटों को मारकर हिंदू-साम्राज्य की सत्ता चंद्रगुप्त ने अपने हाथ में ले ली थी। इधर मगध में यह राज्य-क्रांति हो ही रही थी कि तब तक उधर ग्रीक-राजा मीनांडर सिंधु को पारकर ई० सन् पूर्व १८० में पंजाब में आ घुसा। उन लोगों ने फुर्ती से आक्रमण कर साकेत (अयोध्या) ले लिया, और मथुरा तक आगे बढ़ गए। ठीक उसी समय सम्राट् पुष्यमित्र ने उसका सामना किया। उस समय कई बार हिंदू-सेना ने ग्रीकों को पराजित किया, और उन्हें पीछे खदेड़ते हुए अंत में पुष्यमित्र ने मीनांडर के ऐसे धुर्रे उड़ाए कि उसे सिंध पार करना कठिन हो गया। इस विजय की चारो ओर घोषणा करने के लिये सम्राट् पुष्यमित्र ने महान् अश्वमेध-यज्ञ आरंभ कर अपने विजयाश्व को स्वैर संचार के लिये छोड़ा। उसे कुछ ग्रीक-राजों ने रोका, और उस समय पुष्यमित्र के युवराज अग्निमित्र ने उनका पूर्ण पराभव किया। इस प्रकार हिंदुओं के अबाधित पराक्रम की दुहाई दसों दिशाओं में फेरता हुआ वह विजयाश्व जब वापस लौटा, तब सम्राट् पुष्यमित्र ने अपना अश्वमेध-यज्ञ समाप्त किया।

मीनांडर की इस चढ़ाई के विषय में भी यह बात स्मरण रखने योग्य है कि मथुरा तक का उत्तर-पश्चिम का एक प्रांत छोड़कर शेष सारे ही दक्षिण-उत्तर-भारतवर्ष पर सिकंदर की तरह उसकी भी छाया तक न पड़ सकी। इस प्रकार स्वदेशी शत्रुओं को भारत में घुसते-घुसते ही हिंदुओं ने तत्काल मार भगाया।

शक और यूचियों से युद्ध

सम्राट् पुष्यमित्र की उपर्युक्त दिग्विजय के बाद इस हिंदू-राष्ट्र पर अहिंदुओं के आक्रमण का कोई उल्लेखनीय प्रसंग लगभग सौ वर्ष तक न आ सका। किंतु इसके बाद जब समग्र एशिया को हिला देनेवाले शक और यूची लोगों की टोलियाँ उठ खड़ी हुईं तब, ईस्वी सन् की पहली शताब्दी में, हिंदू-राष्ट्र को भी उनका धक्का लगा, और हमारे प्राचीन इतिहास के लिये तात्कालिक लांछन-स्वरूप हिंदू-सेना को पराजित होना पड़ा। यद्यपि शक और यूची लोगों की टोलियों ने एशिया के प्रायः सभी बड़े-बड़े साम्राज्यों की दुर्दशा अवश्य कर दी थी, तथापि उन टोलियों के गांधार तक पहुँचने से पूर्व ही सिंधु-नदी की सीमा पर उनका ज़ोरों के साथ सामना करनेवाली हिंदू सेना ले जाकर खड़ी कर देने योग्य कोई भी संगठित हिंदू शक्ति उस समय वहाँ न पहुँच सकी, और अंतःस्थ कलह में फँस जाने से विपक्षियों की टोलियाँ ठेठ उज्जैन तक आ पहुँचीं। उस समय कोई भी शक्ति उनका प्रतिकार न कर सकी। यह ढिलाई उस समय के हिंदू-इतिहास को कलंक लगानेवाली है, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता। ग्रीक आक्रमण-कारी टोलियों को भारत में घुसते ही दस वर्षों के भीतर-भीतर चंद्रगुप्त और पुष्यमित्र ने जिस प्रकार फिर सिंधु के उस पार मार भगा दिया, वैसा इन शक और यूची टोलियों को कोई भी नहीं खदेड़ सका। बल्कि काश्मीर, पंजाब, सिंध, काठियावाड़ आदि प्रांतों में उनकी सत्ता चिरस्थायी रूप से स्थापित होकर अहिंदू राजवंशों को ठेठ उज्जयिनी तक की दो-तीन राजधानियों में दो-ढाई शताब्दी

तक राज्य करने का मौक़ा मिल सका। यह वस्तुस्थिति तत्कालीन हिंदू-राष्ट्र के लिये लज्जास्पद समझी जानी चाहिए।

परंतु इस प्रकार तात्कालिक पराभव होना और दो-चार प्रदेश शत्रु के अधिकार में चला जाना और बात है, और उस अल्पतम एवं अल्पकालिक पराभव से अखिल राष्ट्र के जीवन को ही 'निरंतर पराभव का जीवन' बतलाने का दुस्साहस करना और बात !

विष-प्रयोग के संकट में तो महा बलवान् भीमसेन भी मूर्च्छित होकर जल में डूब गए थे, और उस समय कितने ही सर्पों ने उनके शरीर से लिपटकर अपना ज़ोर आज़माया, और कितने ही मेंढक उनके सिर पर चढ़कर नाचे भी; किंतु उन सब सर्पों के विष को भी पचाकर भीमसेन उस विष-प्रयोग के षड्यंत्र से बच गए, और उन्होंने अपनी प्राण-रक्षा कर दिखाई। यही नहीं, वरन् इस विष-प्रयोग का बदला उन्होंने दुःशासन का समर में गर्व खर्व करके लिया। किंतु इन सारे पुरुषार्थों को भूलकर भीमसेन की उस तात्कालिक अचेतावस्था को ही उनका समग्र जीवन मान लिया जाय, और भीम का जीवन निरंतर अचेतावस्था का जीवन बताकर जन्म-भर उनके सिर पर मेंढक नाचने की बात बतलाते हुए कोई टर्राने लगे, तो उसे सिवा मूर्ख मेंढक के और क्या कहा जा सकता है ?

शक और यूचियों का भारत पर चढ़ आना भी ऐसी ही एक घटना है। उनकी सत्ता गुजरात तक क़ायम थी, और भारतीय सफलता-पूर्वक उनका प्रतिकार न कर सके। किंतु उस समय आंध्र प्रांत के हिंदू-सम्राटों ने अपनी शक्ति दिखाकर शक लोगों से नर्मदा पार होते ही तत्काल टक्कर ली। पहले तो उन्हें नर्मदा के पार वापस लौटाया, और इसके बाद आंध्र के प्रबल हिंदू-नृपति गौतमी-पुत्र बिलियनकुर शालिवाहन ने शकों के क़ब्ज़े से उत्तर के, एक के बाद दूसरा, प्रांत छीनते हुए अंत में शकों के प्रत्यक्ष राजा नहपान सहराट से भयंकर युद्ध किया, और उसे पराजित कर परम धाम को पहुँचा दिया। उस हिंदू-विजेता की माता गौतमी को अपने वीर पुत्र द्वारा अहिंदुओं का इस प्रकार पराभव हुआ सुनकर इतना हर्ष हुआ कि उसने कार्ला की गुफा के एक शिलालेख में उसे तत्काल खुदवाकर चिरस्थायी बना दिया। ई० सन् १०६ से १३० तक इस प्रतापी गौतमी-पुत्र ने राज्य किया; इसके बाद उसका पुत्र प्रख्यात शक-कर्ता पुलुमायी शालिवाहन गद्दी पर बैठा। उसने उज्जयिनी के पराक्रमी शकों के दूसरे राजा रुद्रदामन को पराजित किया।

इसके बाद ई० सन् ३२० के लगभग जब वैदिक धर्माभिमानी गुप्त-वंश के हाथ में उत्तर-प्रांतीय हिंदू-साम्राज्य के सूत्र आए, तब पराक्रमी सम्राट् चंद्रगुप्त ने उस दिशा में शक और यूचियों का उच्छेद करना आरंभ किया। उसके पुत्र सम्राट् समुद्रगुप्त ने, जिसे विदेशी इतिहासकार भी भारतीय नेपोलियन कहते हैं, पंचनद में प्रवेश कर दो-तीन पीढ़ियों से चलते हुए महायुद्ध में लगातार विजय प्राप्त की, और शत्रुओं को मिट्टी में मिला दिया। उसका पुत्र सम्राट् चंद्रगुप्त (द्वितीय) विक्रमादित्य था। कनिष्क से छीनी हुई शक-यूचियों की सत्ता को उसने समूल नष्ट कर दिया। उसके अंतिम शत्रु रुद्रसिंह का भी हिंदू-सेना ने पूर्ण पराभव करके उसकी राजधानी उज्जयिनी पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस प्रकार सिंधु-नदी से लेकर ठेठ पूर्व-पश्चिम एवं दक्षिण-सागर तक जहाँ-तहाँ हिंदू-राष्ट्र की विजय-दुंदुभी फिर अबाधित रूप से बजने लगी।

लगभग दो सौ वर्ष तक काश्मीर से नर्मदा तक के सिंधु-गंगा के मध्यवर्ती प्रदेश पर शक-यूचियों की सत्ता रही। किंतु हिंदू-नृपेंद्रों ने युद्ध में उन्हें

चकनाचूर कर दिया। यही नहीं, वरन् उस सामरिक विजय से बढ़कर दूसरी विजय, जो हिंदुओं ने इन लाखों शक-यूचियों पर प्राप्त की, सांस्कृतिक 'विजय' थी। असल में जब ये शक-यूची भारत में घुसे, तभी सच्चे शक-यूची थे। किंतु जब ईस्वी सन् १३० के लगभग कनिष्क ने बौद्ध-धर्म और दूसरों ने वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया, तभी यथार्थ में हिंदुओं ने उनका पूर्ण पराभव किया। इस प्रकार एक शताब्दी के भीतर ही हिंदू-संस्कृति की ध्वजा उन शक-यूचियों की राजधानियों पर फहराने लगी। उनमें के हज़ारों व्यक्तियों और सैकड़ों राजपुरुषों ने, बड़े-बड़े राजवंशों ने, वैदिक धर्म, भाषा, देश, वेष स्वीकार किया, और कुछ ने बौद्ध-धर्म ग्रहण कर लिया। हिंदू-राष्ट्र ने उनके राज्य ही नहीं छीन लिए, बल्कि उनके स्वत्व तक छीनकर इस प्रकार आत्मसात् कर लिए, जैसे अजगर अपने विशाल जबड़े में घुसे हुए सजीव हरिण को निगलकर पचा लेता है। अर्थात् उन्हें हिंदू बनाकर ही छोड़ा।

इन प्रबल पराक्रमी गुप्त सम्राटों ने हिंदू-राष्ट्र की इस अतुल विजय और प्रभाव की घोषणा करने के लिये अपना वैदिक धर्माभिमानी गरुड़ध्वज आगे करके अश्वमेध-यज्ञ का घोड़ा आसिंधु सिंधु भारतवर्ष की चतुःसीमा तक घुमाया, और उसके विना कहीं रुके हुए वापस लौटते ही बड़े समारोह के साथ विजयोत्सव के उपलक्ष में अश्वमेध-यज्ञ समाप्त किया।

हमारे इस ई० सन् ३०० से ४०० तक के समय को विदेशी अँगरेज़ इतिहासकार भी स्वर्ण-युग (Golden Age) कहते हैं। सौभाग्य-वश उसी समय चीनी यात्री फ़ाहियान भारतवर्ष में आया था। मेगास्थिनीज़ की तरह उसने भी इस काल के हिंदू-राष्ट्र के पराक्रम, उन्नतावस्था और वैभव का जो वर्णन लिख रक्खा है, वही इन कुत्सित निंदकों को बतला सकेगा कि उस समय भी हिंदुओं का जीवन पराजय और शरणागति का नहीं, वरन् शत्रुओं के दाँतों में तिनका दबवानेवाला, पराक्रम-युक्त एवं संसार में प्रबलतम साम्राज्य स्थापित करनेवाला शाली था।

हिंदुओं का साम्राज्य

हिंदुओं का यह साम्राज्य केवल भारतवर्षीय ही नहीं था, वरन् भारतवर्ष से बाहर दूर-दूर के देश-विदेशों में भी हिंदुओं की भूमि-सेना और जल-सेनाएँ जाकर बड़े-बड़े राज्य स्थापित कर चुकी थीं। सीलोन से साइबेरिया तक, ब्रह्म-देश, पेगू, स्याम, सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, फ़िलिपाइंस, हिंदू-चीन (Indo-China) प्रभृति देशों के पर्वतों पर के शिलालेख, इनके ग्रंथालयों की पोथियाँ, संग्रहालयों के ताम्रपट, भूस्तरों के प्राचीन अवशेष ही इस बात की साक्षी दे सकते हैं। केवल बौद्धपंथीय ही नहीं, वरन् शैव, शाक्त, जैन, वैष्णवादि हिंदुओं के समस्त मत-पंथों की संस्कृति और इनके राज्य साइबेरिया से फ़िलिपाइन तक फैले हुए थे, और पूर्ण वैभवशाली थे। इनकी दूरस्थ नदियों पर ब्राह्मण लोग स्नान-संध्या करते और उन सुदूर समुद्र-तटों पर सायंप्रातः अर्घ्य प्रदान करते थे। उधर के प्रत्येक सिंहासन पर हिंदू क्षत्रिय राज्य कर रहे थे। प्रत्येक देवालय में रामायण, महाभारत और भागवत के पारायण होते रहते थे। इन अनेक द्वीप-द्वीपांतरों के शिलालेख ब्राह्मी-लिपि में हैं। प्रार्थना संस्कृत में चलती थी। वहाँ के लोगों की, नगरों और राजवंशों की नामावलियाँ, उनकी उपाधियाँ, निर्बंध के शास्त्र आदि भी हिंदू-संस्कृति की परिभाषा में आज भी रूढ़ हो रहे हैं। ईस्वी सन् की सातवीं शताब्दी के अंत तक उपर्युक्त दिग्विजय की साक्षी तत्कालीन देशी और विदेशी यात्री एवं इतिहासकार रोमन,

चीन, अरब, पुर्तगीज़, डच प्रभृति भाषाओं में आज भी दे रहे हैं।

सबसे अंतिम हूणों का आक्रमण

हमारी लेखन-मर्यादा समाप्त हुआ चाहती है, इसलिये उक्त ऐतिहासिक काल के प्राचीन खंड में हिंदू-राष्ट्र को जिन अंतिम राक्षसी शत्रुओं का सामना करना पड़ा, उन हूणों के विषय में केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि जो गति शक-यूचियों की हुई, वही इन हूणों की भी हुई। इन हूणों के प्रचंड प्रलय-समीर ने योरप के रोमन-साम्राज्य की कमर ही तोड़ दी, और रशिया से चीन तक सारे संसार को उलट-पलट कर डाला था। किंतु हिंदोस्तान में ? यहाँ उनके पैर शकों के जितने भी न टिक सके। हिंदोस्तान में उनका किया हुआ उत्पात जितना भयंकर था, उतनी ही शीघ्रता से उनका उच्छेद भी हुआ। पंजाब से घुसकर उनके नेता तारेमाल ने सन् ५०० के लगभग मालव-प्रदेश तक आक्रमण किया। सन् ५०२ में उसका पुत्र मिहिरकुल गद्दी पर बैठा, और लगे हाथ हिंदू-राजों का प्रबल संघ एकत्र होकर प्रतापी सेनापति यशोवर्धन ने हूणों को युद्ध-क्षेत्र में पीटते-पीटते पंजाब तक खदेड़ दिया, और अंत में एक तुमुल संग्राम में, मुल्तान के निकट कोरूर में, उनका पूर्ण पराजय करके रणाग्नि में उनकी राजसत्ता को भस्म कर दिया। और, जो हज़ारों हूण पीछे रह गए, उनकी बर्बरता ब्राह्मणों ने यज्ञाग्नि में भस्म कर दी। उन्हें हिंदू बना लिया। हिंदुओं ने शक, यूची और हूणों के धर्म, भाषा या संस्कृति को स्वीकार नहीं किया, बल्कि इन्हीं सबको हिंदू-धर्म की भाषा और संस्कृति से दीक्षित करके दास बना लिया, और खाद्य पदार्थ की तरह पचाकर इस भक्ष्य से स्वयं ही परिपुष्ट बने। "Can this be called a life of continuous surrender or submission No, it is a life of virile triumph !"

यदि यह कहा जाय कि इतने विजेताओं ने भी हिंदुओं पर तात्कालिक विजय तो प्राप्त कर ही ली थी, तो इस पर हमें यह उत्तर देना पड़ेगा कि ग्रीस-देश के सच्चे शौर्य की कसौटी योरपीय ग्रंथकारों के मतानुसार कब हुई ? उसी समय जब कि उस पर पर्शियनों की प्रबल राजसत्ता ने आक्रमण किया। यद्यपि ग्रीस को उन्होंने लगभग हज़म ही कर लिया था, किंतु फिर भी हतोत्साह न होते हुए अंत में ग्रीकों ने उन्हें मार ही भगाया। ठीक उसी तरह इस लेख के आरंभ में उद्धृत कर्नल टॉड के वचन के अनुसार भारत में जो पद-पद पर थर्मापोली और लिओनिडॉस पाए जाते हैं, उन्हें ही भारत के पराक्रम की खरी कसौटी क्यों न समझा जाय ? ग्रीस, रोम, इँगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि के बित्ते-बित्ते (बालिश्त)-भर जीवन-काल में भी शत्रुओं के दस-दस आक्रमण हो गए। क्या उनके इतिहास में परतंत्रता की शताब्दियाँ नहीं पाई जातीं ? ऐसी दशा में केवल भारतवर्ष को ही अखंड शरणागति में जीवन बितानेवाला कहने की हिम्मत किसी को कैसे हो सकती है ? इन देशों के विषय में यह बात जो नहीं कही जा सकती, सो केवल इसी कारण कि यद्यपि उन पर शत्रुओं के आक्रमण हुए, कई राजधानियाँ भी उनकी छिन गईं, तो भी अंत में प्रत्येक राष्ट्र ने अपने शत्रुओं को पराजित कर अपनी रक्षा की। अपने आपको शत्रुओं का भक्ष्य नहीं बन जाने दिया। ऐसी दशा में उसी कसौटी पर इस भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास-काल को क्यों नहीं कसा जाता, जो एक-दो नहीं, सैकड़ों बार खरा उतर चुका है। उलटा उसके लिये "The Hindus' life has ever been a life of continuous defeats." का निर्लज्जता-पूर्ण विधान

करना सिवा ओछेपन के और क्या कहा जा सकता है ?

उसमें भी फिर यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि ग्रीक, शक, यूची अथवा हूण में से कोई भी सीमा-प्रांत से आगे विशेषकर घुस न सके, गंगा पार करने या विंध्याचल उतरने का तो उन्हें मौक़ा ही न मिला।

वेद-काल से लेकर इस ऐतिहासिक प्राचीन काल के अंत तक अर्थात् कम-से-कम ३००० वर्ष तक मगध, अंग-वंग और दक्षिण पर किसी भी अहिंदू शत्रु ने कभी विजय प्राप्त नहीं की; इनकी स्वतंत्रता ३००० वर्ष तक पूर्ण रूप से अबाधित रही। संसार के इतिहास में इस हिंदू-राष्ट्र के समान दूसरे और कितने राष्ट्र कोई दिखा सकता है ?

हूणों को नाम-शेष कर डालने के बाद काश्मीर से नेपाल तक और द्वारका से कामरूप तक एवं हिमालय से लंका तक हिंदुओं का ही साम्राज्य स्थापित होकर फिर उन्नति-शिखर पर पहुँच गया था। इसकी साक्षी भी हर्ष और पुलकेशी-नामक उत्तर-दक्षिण-भारत के दिग्गजों के समय इनकी संरक्षकता में रहनेवाले विख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआनच्वांग) का प्रसिद्ध यात्रा-वर्णन दे सकता है। सम्राट् श्रीहर्ष ईस्वी सन् ६४६ के लगभग स्वर्गवासी हुआ, और हमारे ऐतिहासिक काल की भी तभी समाप्ति हुई।

आज यदि हिमालय अथवा विंध्याचल के उच्च शिखर पर खड़े होकर कोई देवदूत यह पूछे कि "इस हिंदू-राष्ट्र के वैदिक और पौराणिक काल के वे असुर, दैत्य, दानव, राक्षस, वे समकालीन अकेडियन, असीरियन, बेबिलोनियन कहाँ हैं, अथवा इस हिंदू-राष्ट्र के ऐतिहासिक प्राचीन काल के वे ग्रीक, पार्थियन, शक, यूची, हूण कहाँ हैं ? क्या हिंदोस्तान में ? इस जगत् में उनमें से कोई बचा है ?", तो उनके धर्म, भाषा और संस्कृति के नाम पर एक भी प्रतिनिधि उठकर यह कहने के लिये खड़ा नहीं होगा कि "यह मैं यहाँ मौजूद हूँ।"

किंतु उसी शिखर पर से उसी देवदूत ने यदि पूछा कि "क्या उस वैदिक काल के सप्तसिंधु के, धर्म, राष्ट्र, भाषा, संस्कृति के उत्तराधिकार को प्राण-पण से अपनानेवाले हिंदू-राष्ट्र का कोई प्रतिनिधि, कोई हिंदू यहाँ है ?", तो आज भी हिंदोस्तान करोड़ों कंठ से प्रत्युत्तर रूप से अपने अस्तित्व की सूचना देगा।

इस लेख में वैदिक, पौराणिक और प्राचीन इतिहास के किए हुए उपर्युक्त विहंगावलोकन से यह स्पष्ट सिद्ध हो गया है कि हिंदू-राष्ट्र में सम्राट् श्रीहर्ष के समय तक वे लोग शरणागति का जीवन नहीं जिए, बल्कि जीने के लिये जिए, और शत्रुओं को मौत के घाट उतारने के लिये जिए। वे जूझते हुए जिए, और जीवन-कलह में परिस्थिति पर विजय प्राप्त करने के लिये योग्य सिद्ध होकर जिए।

श्रीहर्ष के बाद हिंदुओं के अर्वाचीन इतिहास से भी यही सिद्ध होता है; किंतु वह चर्चा स्थानाभाव के कारण इस लेख में नहीं की जा सकती।

इस प्रकार के लेख के अंत में एक चेतावनी देना आवश्यक जान पड़ता है। वह यह कि हमारे पूर्वजों की अथवा अपने राष्ट्र की अकारण निंदा और कुत्सित भाव से की हुई आलोचना को चुपचाप सुन लेना जिस प्रकार आत्मघातकता और नामर्दपन है, उसी प्रकार केवल पूर्वजों की प्रशंसा करते रहना और दूसरे की शतरंज के निर्जीव प्यादे बनकर जीते रहना भी आत्मघातक मूर्खता है। सामने आनेवाले नए संकट को यथासाध्य नए हथियार उठाकर जिस प्रकार पूर्वजों ने सामना किया, उसी प्रकार वर्तमान संकट का सामना करने के लिये आवश्यक शक्ति-युक्त साधनों की योजना कर यदि हम भी विजयी हों, तभी हम उनके वंशज और उनके पराक्रम के सच्चे उत्तराधिकारी कहला सकेंगे।

पश्चिम में शैतान की पूजा

[श्रीरामनाथ 'सुमन']

आजकल के भारतीय पठित समाज में अक्सर यह ख़याल प्रचलित है कि भूत-पिशाच और शैतान इत्यादि सिर्फ़ भारतवासियों की ही क़िस्मत में पड़े हैं, और हमें प्रकाश देने का दावा करनेवाले पश्चिम के अधिवासी इन अंध-विश्वासों से सर्वथा शून्य हैं।

पर वस्तुतः बात ऐसी नहीं। अंध-विश्वासों का योरप में कोई हिसाब नहीं। फ़र्क़ इतना है कि जहाँ हम एक तरह के अंध-विश्वास में पड़े हैं, वहाँ वे दूसरे प्रकार के अंध-विश्वास के शिकार हैं। यदि इन अंध-विश्वासों की कहानी इस समय छोड़ दें, तो भी लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि आज भी पश्चिम में शैतान की पूजा प्रचलित है, और वहाँ के बड़े-बड़े नगरों में सैकड़ों आदमी अंधकार और पाप के इस देवता के मंदिर में नित्यप्रति अपने विवेक और चरित्र की बलि चढ़ा रहे हैं।

लगभग १२ वर्ष पूर्व, जब फ़्रांस के विश्वविख्यात लूव्र-म्यूज़ियम के 'ईजिप्टोलोजिस्ट' (मिस्र की प्राचीन सभ्यता के ज्ञाता) डॉ० जॉर्ज वेनेडाइट और फ़्रांस-कॉलेज (College de France) के अध्यापक डॉ० कासानोवा की संदेह-जनक अवस्था में मृत्यु हो गई थी, तब तो योरप के बड़े-बड़े विद्वान् भी थर्रा उठे थे, और उनमें से कई ने इस घटना का संबंध रहस्यमय शैतानी शक्तियों के साथ लगाया था। ये दोनो तूतेनखामन की समाधि के अनुसंधान का कार्य कर रहे थे।

१९२६ के आरंभ की बात है। ओकलैंड, केलीफ़ोर्निया (अमेरिका) में मकेरियो टाइमन-नामक एक वृद्ध साधु अपने मकान में मरा हुआ पाया गया। उसका गला कटा पड़ा था। उसके कमरे में एक वेदी बनी थी, जिस पर बकरे की शकल अंकित थी, और दीवारों एवं छतों पर तरह-तरह के रहस्यमय चिह्न थे। एक टेबुल पर ख़ून से 'अंधकार के देवता लूसीफ़र' का उद्बोधन लिखा था। पुलिस को जाँच से मालूम हुआ कि वह शैतान की पूजा करनेवालों की जमात का सदस्य था, और उन्हीं के द्वारा शैतान को बलि चढ़ाया गया है। मालूम होता है, टाइमन शैतान की प्रतिमा के सामने बैठकर पूजा कर रहा था, तभी उसके धर्मबंधुओं ने उसकी बलि चढ़ा दी।

विसेंट कार्नियर नाम के एक विद्वान् ने इस संबंध में खोज करके लिखा था कि योरप में शैतान के पुजारियों की एक बड़ी संख्या है। बर्लिन, पेरिस, विएना और बुडापेस्ट इत्यादि बड़े-बड़े नगरों में इनके मंदिर हैं, जिनमें शैतान की पूजा की जाती है। ये मंदिर इस तरह के

होते हैं कि ऊपर से इनके विषय में मंदिर होने का अनुमान नहीं किया जा सकता। इनकी सारी कार्रवाई गुप्त होती है, और जो इनकी प्रणाली में विश्वास रखते हैं, वे ही इनमें प्रवेश पा सकते हैं। अनेक चक्करदार रास्तों से होकर इन मंदिरों में पहुँचा जाता है। प्रायः ये ज़मीन के अंदर बने होते हैं। इनमें काला फ़र्नीचर होता है, और लाल या काले परदों से दीवारें ढकी होती हैं। हॉल के बीच में एक बड़ी वेदी पर शैतान की मूर्ति होती है, जिसका सिर पुराने मिस्री देवता थोथ के समान परिंद-जैसा होता है। पाँव फोनेशिया के देवता 'बाल'-जैसे होते हैं, और मुँह उन्हीं के देवता 'मोलोक' के समान होता है, जिसे नर-बलि चढ़ाई जाती थी। कार्नियर ने लिखा है कि भक्तगण इस तरह बैठते हैं कि एक दूसरे का मुँह न देख सकें। इसके बाद तरह-तरह के डरावने बाजे बजने लगते हैं, और लोग अनेक रहस्य-पूर्ण मंत्रों का उच्चारण आरंभ कर देते हैं। इस समय रोशनी इतनी कम होती है कि साफ़-साफ़ कुछ दिखाई नहीं देता। ऊपर मुंड और धड़ उड़ते हुए-से मालूम होते हैं। तरह-तरह की चीज़ें जलाई जाती हैं, जिनसे धुआँ होता है, और एक विचित्र गंध से वातावरण भर जाता है। लोग पागल-से होकर उछलते-कूदते और नाचते हैं। इनमें जो परीक्षा में सच्चे उतरते हैं, उन्हें पंथ में दाख़िल कर लिया जाता है, और वे ही अंतरंग गोष्ठी में शामिल किए जाते हैं।

अभी पिछले साल ही लंदन के एक ऐसे शैतान-मंदिर का वर्णन एक लेखक ने पत्रों में छपवाया था। वह पता लगाने के लिये भक्त बनकर अंदर गया था। वह लिखता है—"मैं कुछ देर से पहुँचा। शायद मैं आने-वालों में अंतिम था। मुझे एक बड़े हॉल में पहुँचाया गया, जो अद्भुत रीति से सजा हुआ था। इसके पहले कि मैं वहाँ एकत्र लोगों पर भली भाँति नज़र डालूँ, मैंने देखा कि वे कमरे के अंतिम छोर पर बने दरवाज़े की ओर बढ़ रहे हैं। इनमें स्त्रियाँ भी थीं, और पुरुष भी थे। मैंने भी इन लोगों का अनुगमन किया, और कुछ ही देर में इनके साथ अपने को एक प्रकोष्ठ में पाया। यहाँ एक कोच पर बहुत-सी काली नक़ाबें और सिर ढकने की ख़ास तरह की टोपियाँ रक्खी हुई थीं। हरएक जो वहाँ से गुज़रता था, काली नक़ाब डालता और वह विचित्र टोपी पहनता जाता था। इन्हें पहनकर आदमी एक भय-जनक प्रेत-जैसा मालूम होने लगता था।

"सब बातें बड़ी शांति और व्यवस्था से हो रही थीं। जान पड़ता है, मुझे छोड़कर और सब लोग वहाँ की विधियों से पूर्णतः परिचित थे। मैंने भी उनकी नक़ल की। इसके बाद धीरे-धीरे दूसरे दरवाज़े से होते हुए, अनेक सीढ़ियाँ पार करके, हम ऐसी जगह पहुँचे, जो एक लंबा तहख़ाना मालूम पड़ता था। इस कमरे का आकार-प्रकार और सजावट ऐसी

थी कि मैं बड़ी कठिनाई से अपने मुँह से चीख़ रोक सका।

"दीवारें काले और लाल सिल्क के परदों से पूरी तरह ढकी हुई थीं, और कमरे के एक तरफ़, बीच में, कपड़े पर जाली से बुनी हुई देवता—शैतान—की एक तसवीर लटकी हुई थी, जो सबका ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित करती थी। इस तसवीर के नीचे एक वेदी थी। इस वेदी पर लंबी-लंबी, काली मोमबत्तियाँ जल रही थीं, और कुछ पात्र रक्खे थे, तथा सामने १२ शानदार कुर्सियाँ रक्खी थीं, जो सुनहले और लोहित वर्ण के वस्त्रों से आवृत थीं। कमरे में बिजली की धुँधली रोशनी थी, जो एक डरावनी मानवीय आँख की शकल के शीशे से छनकर आ रही थी। सारा वातावरण भय, रहस्य और शैतानियत से परिपूर्ण था। लंदन के ठीक बीच में यह शैतान का मंदिर! कैसे आश्चर्य की बात है!

"कमरे के दोनो तरफ़ गद्दीदार कुर्सियों की क़तार थी। बीच में वेदी तक जाने का रास्ता था। मैं भी सबके साथ-साथ जाकर एक कुर्सी पर बैठ गया। तुरंत ही पूजा शुरू हो गई, और वेदी के पीछे से ज्यों ही पुजारी और उसके सहायक सामने आए, ऐसा दृश्य उपस्थित हुआ, जिसे मैं कभी भूल न सकूँगा।

"पुजारी सफ़ेद, लंबा गाउन पहने था। उसके ११ सहायक लंबे चोग़े पहने हुए थे, जिन पर काले और लाल रंग के अनेक रहस्यपूर्ण चिह्न बने थे। उस भयंकर आँख से निकलती हुई धुँधली रोशनी में काली नक़ाबों और विचित्र टोपियों से ढकी हुई ये शकलें स्वयं शैतानों की जमात की तरह मालूम होती थीं। धीरे-धीरे पूजा का क्रम चला, और लोगों पर उसका एक विचित्र असर पड़ने लगा। यहाँ तक कि एक प्रकार के उन्माद ने भक्त-मंडली को अभिभूत कर लिया। लोग तरह-तरह के अश्लील और भयानक अभिनय करने लगे। मेरे पास बैठी हुई एक स्त्री ने सिर पीटना और रोना शुरू कर दिया। वेदी पर रक्खे रजत-पात्रों में जलनेवाला पदार्थ संपूर्ण वातावरण में एक बेहोशी-सी भर रहा था, और इस गंध का दिमाग़ पर एक उन्मादकारी प्रभाव पड़ रहा था। पता नहीं, वह कौन-सी चीज़ थी, जो इसमें जलाई जा रही थी; पर मेरी समझ से इसमें कुछ ऐसी जड़ी-बूटियाँ थीं, जिनके गंध और धुएँ से मानवीय चेतना कुंठित हो जाती है, और पाशविक इच्छाएँ एवं वासनाएँ जाग पड़ती हैं। मेरे दिमाग़ पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा था, पर चूँकि मेरे हृदय में इस पूजा के प्रति तीव्र घृणा के भाव थे, और मेरा उसमें किंचित् विश्वास नहीं था, अतः मैं अपने होश-हवास क़ायम रख सका।

"पूजा के सिलसिले में शूली पर चढ़े हुए ईसा की एक मूर्ति के टुकड़े-टुकड़े किए गए, और उसे पैरों-तले रौंदा गया। इस समय भक्त-मंडली अजीब आवाज़ में इन बातों का

समर्थन कर रही थी। सबके ऊपर भय, मूर्च्छा और उत्तेजना के भाव छा रहे थे।

"एकाएक सब प्रकार की आवाज़ बंद हो गई, और चारो ओर इतनी नीरवता छा गई कि दिल की धड़कन सुनाई देती थी, और उस असह्य वातावरण में चिल्ला उठने की इच्छा होती थी।

"अंत में एक सहायक पुजारी सींकों की बनी पेटारी उठा लाया, और उसके अंदर हाथ डालकर उसने एक बड़ी काली चिड़िया निकाली। उस पर गँड़ासा चलाया गया, और भक्त-मंडली की अनेक स्वीकृतियों एवं प्रसन्नता-सूचक ध्वनियों के बीच उसका सिर धड़ से जुदा होकर वेदी पर लोटने लगा। वेदी रक्त-रंजित हो गई, और शैतान को रक्त की बलि चढ़ा दी गई।

"इस बलि के चढ़ते ही मानो सब लोगों पर भूत चढ़ गया। कोई उछलता था, कोई रोता था, और कोई पागलों-सा नाचता था। औरतें चीख़ रही थीं। मैंने देखा, उन्माद में कई स्त्रियाँ अपने वस्त्र फाड़ रही हैं। आदमी कुत्तों की तरह भूँक रहे थे, और उनके मुँह से तरह-तरह की आवाजें निकल रही थीं। घृणा, वासना, भय की सब दबी हुई इच्छाएँ मानो इस पागलपन में व्यक्त हो रही थीं।

"तब उस तहख़ाने में एक तरफ़ का परदा हट गया, और मैंने देखा, वहाँ सब तरह के भोज्य पदार्थ तथा मद्य सजाकर रक्खे हुए हैं। वह उन्मत्त मंडली इस भोजन पर ऐसे टूट पड़ी, जैसे भूखे भेड़िए शिकार पर टूटते हों।

"इस खाने के बाद क्या हुआ होगा, यह पाठक कल्पना कर सकते हैं। उसका बयान लेखक की शक्ति के बाहर है। हर तरह की अश्लीलता, विलास, व्यभिचार और घोर पाशविक लीला का एक अकल्पनीय दृश्य था। मानो पृथ्वी पर सचमुच शैतानों की मंडली उतर आई हो।"

पर यह तो एक उदाहरण है। लोगों का अनुमान है, इस तरह के दृश्य योरप के प्रत्येक बड़े नगर में प्रतिदिन घटित होते हैं, और शैतान की पूजा करनेवालों तथा उसके पैशाचिक संप्रदाय में विश्वास रखनेवालों की संख्या लाखों तक पहुँचेगी। यह संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है। अंतर इतना ही है कि भारतीय अंध-विश्वास की पार्श्वभूमि सीधी-सादी है, जब योरपीय अंध-विश्वास विज्ञान के प्रकाश से सजी पार्श्वभूमि में, उसकी सहायता लेते हुए, फूलता फलता है।

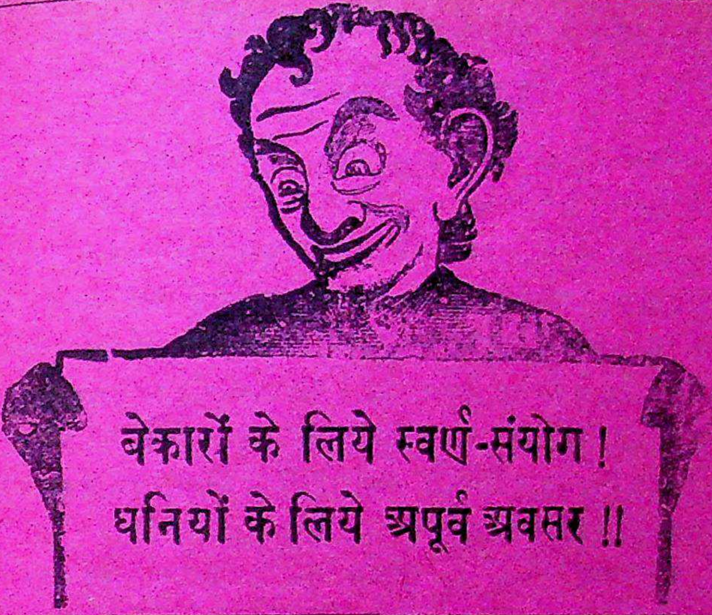
बेकारों के लिये स्वर्ण-संयोग !
धनियों के लिये अपूर्व अवसर !!

भारत-भर में एजेंसियों का आयोजन !!!

गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकें भारत के कोने-कोने में प्रसिद्ध हैं। सुदूरवर्ती मद्रास, बलोचिस्तान, नैपाल, आसाम, ब्रह्मा, फ़िजी तथा जर्मनी तक से हमारी पुस्तकों की धड़ाधड़ माँगें आ रही हैं। इसीलिये ग्राहकों की सुविधा के विचार से भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत के प्रसिद्ध नगरों में हम अपनी एजेंसियाँ खोलना चाहते हैं। अतएव इस पृष्ठ पर इधर-उधर, दोनो ओर, लिखे हुए या अन्य नगरों में जो सज्जन २ हज़ार रुपया लगाकर दूकान खोलना चाहें, वे शीघ्र ही हमें पत्र लिखें। अधिक-से-अधिक रुपया कमाने के इस अवसर को न चूकें। नियम मँगाइए।

नगरों के नाम

- कलकत्ता - -
- पटना - - -
- मुज़फ़्फ़रपुर -
- बनारस - - -
- कानपुर - - -
- दिल्ली - - -
- लाहौर - - -
- अमृतसर - -
- जयपुर - - -
- ग्वालियर - -
- इंदौर - - -
- जोधपुर - -

नगरों के नाम

- प्रयाग - - -
- आगरा - - -
- शिमला - - -
- मंसूरी - - -
- नैनीताल - -
- गोरखपुर - -
- बंबई - - - -
- देहरादून - -
- मुरादाबाद -
- बरेली - - -
- मेरठ - - -
- झाँसी - - -

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

२५) लगाकर २५०) कमाइए !

आवश्यकता है

हमें भारत के प्रत्येक छोटे-बड़े क़स्बे, नगर और शहर में ऐसे प्रचारकों की, जो अपने स्थान की जन-संख्या के अनुसार हमारी नई पुस्तकों की ५ से २५ प्रतियाँ तक बेच दिया करें। हम उन्हें प्रत्येक मास ७-८ नई पुस्तकें दिया करेंगे। अपनी पुरानी सैकड़ों पुस्तकें भी उन्हें बेचने को दी जायँगी। इसके अलावा भारतवर्ष-भर की हिंदी-पुस्तकें उन्हें भेजी जा सकेंगी। कम-से-कम २५) की नक़द जमानत ज़रूरी है। सुधा और माला के प्रेमी ग्राहकों से निवेदन है कि आप अपने यहाँ के लिये कोई प्रचारक हमारे लिये तजवीज़ करें। हम सब जगह—भारत-भर में कोई प्रचारकों का जाल बिछा देना चाहते हैं, जो निकलते ही नई पुस्तकों की ४-५ हज़ार प्रतियाँ दो महीने में, खपा देंगे। मुख्य-मुख्य स्थानों के नाम, जहाँ प्रचारकों की ज़रूरत है, दिए जाते हैं, जो सज्जन प्रचारक बनना चाहें, हमें लिखें—

लखनऊ
बर्द्धवान
भागलपुर
मुंगेर
पूर्णियाँ
पटना
गया
चंपारन
दरभंगा
मुज़फ़्फ़रपुर
सारन
हज़ारीबाग़
मानभूमि
पालामऊ
राँची
मेरठ
देहरादून
गोरखपुर
बुलंदशहर
मैनपुरी
अलीगढ़
बरेली

इलाहाबाद
बदाऊँ
मुरादाबाद
झाँसी
बलिया
अलमोड़ा
नैनीताल
हरदोई
बहराइच
प्रतापगढ़
अंबाला
जालंधर
होशियारपुर
लुधियाना
फ़ीरोज़पुर
लाहौर
अमृतसर
रावलपिंडी
स्यालकोट
गुजरात
मुलतान
लाइलपुर

बनारस
दिल्ली
सागर
दमोह
सिवनी
मंडला
होशंगाबाद
छिंदवाड़ा
बेतूल
नीमार
अकोला
यूतमल
नागपूर
वर्धा
रायपुर
बिलासपुर
अहमदाबाद
सूरत
नासिक
पूना
करांची
मदरास

कानपुर
अजमेर
मांडले
काश्मीर
हैदराबाद
मैसूर
बड़ौदा
ग्वालियर
इंदौर
भूपाल
रीवाँ
धार
भरतपुर
अलवर
धौलपुर
टोंक
किशनगढ़
बूँदी
कोटा
झालरापाटन
बीकानेर
श्रीनगर

नियम निम्नांकित पते से मँगाइए—

संचालक गंगा पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखन

न-मालूम क्यों ?

[श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

(१)

कलकत्ते की वेश्याओं के संबंध में रमाकांत बहुत कुछ सुन चुके थे, और जब वह अनायास एक दिन कलकत्ते आ गए, तो उनके देखने तथा उनके संबंध में स्वयं अनुभव करने का लोभ संवरण न कर सके। कश्मीर-हिंदू-होटल में वह ठहरे थे, जहाँ से वेश्याओं का मुहल्ला बहुत समीप था। वह रोज़ शाम को अकेले निकलते, किंतु सोनागाछी के पास पहुँचते-पहुँचते उनकी अंतरात्मा काँपने लगती। वह कुछ दूर जाकर या कभी-कभी मोड़ पर से ही घूम पड़ते। उस नारकीय जीवन को अध्ययन करने का साहस उन्हें न होता था। उन्हें ऐसा मालूम होता कि उनके वहाँ जाने से कोई भयानक कांड उपस्थित होगा।

एक दिन वह उसी प्रकार असफल होकर लौट रहे थे कि थोड़ी दूर पर उनके नगर के एक मित्र मिल गए। रमाकांत उन्हें देखकर कुछ सकपकाए, और चाहा कि बचाकर निकल जायँ, लेकिन मदनमोहन ने उन्हें देख लिया, और मुस्किराते हुए कहा—"अरे, तुम यहाँ! भाई, ख़ूब मिले! वाह, इसमें झेंपने की कौन बात है। यह ठीक है कि तुम हमारे शहर के एक माननीय नेता हो, समाज-सुधारक हो, किंतु मुझे यह भली भाँति मालूम है कि तुम भी एक मनुष्य हो। मानवोचित दुर्बलताएँ न होना मनुष्य को या तो पशु बनाता है, या देवता। चूँकि हम देवता बन नहीं सकते, इसलिये हमें मनुष्य ही रहना अधिक उचित मालूम होता है।"

यह कहते हुए वह ज़ोर से हँस पड़े, और उन्हें सस्नेह अपने हृदय से लगा लिया।

रमाकांत ने मुस्किराने की चेष्टा करते हुए कहा—"यह ठीक है, परंतु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मुझमें इतना साहस नहीं कि मैं इन गलियों के अंदर प्रवेश करूँ। रोज़ यहाँ तक घूमने आता हूँ, परंतु इस नरकपुरी के द्वार से ही वापस लौट जाता हूँ। मेरे मन में यह इच्छा कई बार जाग्रत् हुई कि समाज से परित्यक्त इन निराश्रयों की दशा निरीक्षण करूँ, परंतु भाई, साफ़ तो यह है कि मेरी हिम्मत नहीं पड़ती।"

मदनमोहन ने सप्रेम उनका हाथ दबाते हुए कहा—"कोई चिंता की बात नहीं। पहलेपहल सब कोई शरमाता है। एक मर्तबा जाने से भीरुता दूर हो जाती है। ख़ैर, चलो, मैं आज तुम्हें ले चलूँ।"

यह कहते हुए उन्होंने रमाकांत का हाथ पकड़ा, और सोनागाछी की गलियों में ले जाने लगे। रमाकांत की आत्मा बड़े वेग से सिहरकर काँपने लगी, किंतु मदनमोहन के हाथों की गर्मी उन्हें धैर्य बँधाने लगी।

(२)

मदनमोहन ने एक ज़ीने पर चढ़ते हुए कहा—"अभी तक तो तुमने बहिरंग रूप देखा, अब चलकर अंतरंग दृश्य देखो।"

रमाकांत ने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा—"भाई, मुझे माफ़ करो, मैं बहुत देख चुका। अब मैं वापस जाऊँगा।"

मदनमोहन ने उन्हें घसीटते हुए कहा—"यह क्या! बिचकने कैसे लगे। ऐसा क्या कभी हो सकता है? यदि केवल साहित्यिक भाव से ही उनका

अध्ययन करना चाहते हो, तो तुम्हें उनका घरेलू जीवन भी देखना अत्यावश्यक है।"

रमाकांत की आत्मा काँपने लगी। किसी अज्ञात आशंका से वह सचमुच थरथराने लगे।

श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

उनकी कमज़ोरी को लक्ष्य करते हुए मदनमोहन ने कहा—"वाह, तुम पुरुष होकर एक स्त्री—वेश्या—के दरवाज़े पर काँपते हो? डूब मरने की बात है!"

मदनमोहन ने उन्हें अधिक सोचने का मौक़ा नहीं दिया, वह उन्हें ठेलकर ज़ीने के ऊपर चढ़ाने लगे। रमाकांत ने कातर और कुछ विह्वल दृष्टि से उनकी ओर देखा, और उनकी प्रतिरोध शक्ति निरुपाय तथा हताश होकर पुरुषत्व के अभिमान की ओर देखने लगी। उनकी आत्मा ने धीमे, करुण स्वर में पूछा—"क्या यही पुरुषत्व है?"

मदनमोहन ने उन्हें तीसरे खंड के एक बंद द्वार के पास खड़ा करते हुए कहा—"हिम्मत न हारो, तुमसे ज़्यादा तो यहाँ की स्त्रियों में साहस है।"

रमाकांत की आत्मा ने मौन भाषा में उत्तर दिया—"ठीक है, क्योंकि शैतान उनका सहायक है।" किंतु प्रकट रूप में कुछ कहने के लिये जैसे उद्यत हुए, वैसे ही अवरुद्ध द्वार खुल गया, और भीतर के तेज़ प्रकाश ने सामने खड़ी एक अनुपम सुंदरी के सौंदर्य से द्विगुणित होकर उन्हें स्तब्ध

कर दिया। उनका विरोधी भाव दुम दबाकर आत्मा की शरण में त्राहि-त्राहि पुकारने लगा।

सुंदरी ने उन दोनो को नत-मस्तक हो अभिवादन किया।

मदनमोहन ने उन्हें भीतर ले जाते हुए कहा—"आज मैं अपने एक मित्र का परिचय कराना चाहता हूँ। आशा है, आप उनकी अभ्यर्थना मुझसे कहीं अधिक करेंगी, और उन्हें किसी प्रकार असंतुष्ट न करेंगी।"

यह कहते हुए उन्होंने संकेत-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। सुंदरी को समझने में कुछ देर न लगी कि रमाकांत एक रँगरूट हैं।

सुंदरी का नाम प्रमीला था। उसने रमाकांत का हाथ पकड़ते हुए कहा—"आइए, आज मेरा परम सौभाग्य है कि आपके दर्शन हुए, और मेरी कुटीर पवित्र हो गई।"

रमाकांत के समस्त शरीर से एक तड़ितप्रवाह निकलकर उन्हें व्याकुल करने लगा। उन्होंने अपना हाथ धीरे से छुड़ा लिया, या प्रमीला ने स्वयं छोड़ दिया, इसका निर्णय वह स्वयं न कर सके।

सबके बैठ जाने पर मदनमोहन ने कहा—"यह भी मेरे शहर—काशी—के रहनेवाले हैं, और लोहे के व्यापारी हैं। किसी ज़रूरी काम से यहाँ आए हैं। आज घुमाते-घुमाते मैं इन्हें यहाँ ले आया हूँ।"

रमाकांत ने आश्चर्य के साथ मदनमोहन की ओर देखा, क्योंकि न तो वह और न मदनमोहन ख़ुद काशी के रहनेवाले थे, और न वह लोहे के व्यापारी थे। वह तो एक साधारण स्थिति के ज़मींदार थे। बड़े दिन की छुट्टियों में, रियायती टिकट से लाभ उठाकर, कलकत्ता देखने आए थे। हाँ, उन्हें साहित्य और देश से कुछ प्रेम अवश्य था, जिससे प्रेरित होकर वह दोनो दिशाओं में कुछ-न-कुछ उद्योग करते रहते थे। मदनमोहन ने उनका हाथ दबाते हुए चुप रहने का संकेत किया। वह मन मसोसकर रह गए। उसी समय उनके हृदय में किसी ने पुकारकर कहा—"शैतानपुरी में प्रवेश करने का पहला मंत्र है—अपनी असलियत छिपाना और झूठ बोलना!"

(३)

मदनमोहन ने यह बिलकुल सत्य कहा था कि हिचकिचाहट केवल प्रथम प्रयास में हुआ करती है। और, जब कभी रमाकांत सोचते, तो उनका हृदय सचमुच धक से रह जाता, और कोई कहता कि पतन तो आस्तीन का साँप है, न-मालूम कब काट खाय।

रमाकांत की तबियत कुछ ऐसी लगी कि वह नित्यप्रति प्रमीला के यहाँ जाने लगे। मदनमोहन के साथ-साथ कुछ दिन आना-जाना लगा रहा, और फिर जब वह अपने घर—कानपुर—लौट गए, तो भी रमाकांत उसके यहाँ जाते रहे। मदनमोहन एक खिलाड़ी आदमी थे, जीवन को वह एक खेल समझते थे, और एक चतुर खिलाड़ी की भाँति ही अपने जीवन की घटनाओं से खेला करते थे। किसी वस्तु-विशेष से वह अपना दिल लगाकर उलझा लेनेवाले व्यक्तियों में न थे। उन्होंने जाते हुए कहा—"पंडितजी, अब आप खुलकर प्रमीला से खेलें, लेकिन इतना मैं कह देना चाहता हूँ कि कहीं उसकी धारा में अपने को न बहा दें, क्योंकि पुरुषत्व का सबसे कमज़ोर कोना है भावुकता। कर्मिष्ठ संसार में भावुकता का कोई स्थान नहीं। वह केवल कवियों और साहित्यिकों की बपौती है, हम-जैसे खिलाड़ियों का उसमें कोई भाग नहीं। आप एक अच्छे साहित्यिक हैं, मुझे भय है, कहीं भावुकता आपको डुबा न दे।"

रमाकांत मुस्किराए, और थोड़ी देर बाद कहा—"मेरे पतन का मार्ग तो तुमने प्रशस्त किया है! ख़ैर, मैं इस संबंध में कुछ न कहूँगा। कानपुर आकर इसका प्रतिशोध लूँगा। अब रहा भावुकता

के बारे में, सो मैं ज़रूर भावुक हूँ, और यही भावुकता मुझे प्रमीला की ओर घसीटती है। मैं उससे प्रेम करता हूँ, किसी कुभावना के वश न होकर, बल्कि मेरा प्रेम शुद्ध-सात्त्विक है, जैसा भाई का भगिनी के प्रति होता है। मैं नहीं जानता, ऐसा क्यों होता है। परंतु जहाँ मैं उसे देखता हूँ, वहाँ मेरे मन में कोई कहता है कि इस दुखिया के इस बहिरंग जीवन के आवरण में कोई सहृदय गुम-सुम होकर बैठा है, जिसका उद्धार करना मेरा कर्तव्य है।"

मदनमोहन ने ज़ोर से हँसते हुए कहा—"भाई, इसी का नाम भावुकता है। अगर इन फ़िज़ूल विचारों में उलझ जाओगे, तो याद रखना, तुम्हारा उद्धार कोई नहीं कर सकता। तुम अपने को डुबा दोगे, और पथ के भिखारी होकर लौटोगे। मैं समझता हूँ, तुम मेरे साथ कानपुर वापस चलो, तो अधिक अच्छा होगा।"

रमाकांत ने हँसते हुए कहा—"मैं इतना भोलानाथ नहीं हूँ। सांसारिक व्यवहार मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

मदनमोहन ने तीव्र कटाक्ष करते हुए कहा—"बेशक! अगर सांसारिक व्यवहार में पटु न होते, तो क्या अपने विवाह के पहले अपनी भावी पत्नी को एक मामूली हैसियत के मोटर-ड्राइवर के साथ भाग जाने देते!'

मदनमोहन के व्यंग्य ने रमाकांत के मर्मस्थल में आघात किया। सत्य की व्यंजना व्यंग्य की कटुता है। क्षण-मात्र में उनके स्मृति-पटल पर वह घटना ताज़ी हो गई, जिसने उनके जीवन की शांति नष्ट कर दी थी। आज से दस साल पहले उनका विवाह दिल्ली में, पंडित राधेलाल की पुत्री से, तय हुआ था, और तिलक आदि विवाह के पूर्व की समस्त प्रथाएँ पूर्ण होकर विवाह का दिन भी निश्चित हो गया था। किंतु बरात जाने के पहले एक दिन उनके यहाँ यह समाचार आया कि उनकी भावी वधू अपने स्कूल के मोटर-ड्राइवर के साथ भाग गई है। इससे वह इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने आजन्म विवाह न करने की प्रतिज्ञा की, और स्त्री-जाति के घोर शत्रु हो गए। समय के साथ-साथ वह शत्रुता का भाव कम होने लगा, किंतु वह स्त्री-जाति को कभी क्षमा न कर सके। अब उसी स्त्री-जाति का अध्ययन करने के लिये आकुल होकर कलकत्ते आए थे।

रमाकांत का मुख निष्प्रभ होकर विवर्ण हो गया।

मदनमोहन को अपनी ग़लती मालूम पड़ी, उन्होंने विनय-पूर्ण स्वर में कहा—"भाई, मुझे क्षमा करो। मैं मुँहफट आदमी हूँ, धोखे से निकल गया।"

रमाकांत ने अपने बिखरे भावों को एकत्र करते हुए कहा—"नहीं मित्र, तुम्हारा कथन सत्य है। पर विवाह संपन्न होने के बाद अगर मेरी स्त्री भागती, तो मैं उसके लिये उत्तरदायी होता, किंतु यह घटना तो पहले ही घट गई, जिसका प्रतिकार मैं कभी नहीं कर सकता। हाँ, फिर भी मेरे शरमाने के लिये काफ़ी है।"

यह कहकर उन्होंने दुःख के साथ अपना मुख फिरा लिया। वेदना की टीस ने किसी क़दर उच्छृंखल मदनमोहन के हृदय पर भी आघात किया।

मदनमोहन ने कुंठित होकर कहा—"अच्छा मित्र, मैं अब जाऊँगा, क्योंकि गाड़ी जाने का समय हो गया। मैं जानता हूँ, तुम अभी तक वह घटना भूल नहीं सके हो, और शायद न भूल सकोगे, इसीलिये तुम अविवाहित हो।"

रमाकांत ने कोई उत्तर नहीं दिया। मदनमोहन ने भी अधिक छेड़ना मुनासिब नहीं समझा, और चुपचाप कमरे के बाहर हो गए। रमाकांत कमरे

से खिड़की के बाहर कोलाहल देखकर अपने हृदय के प्रश्न का उत्तर खोजने लगे। वह प्रश्न था—वह क्या कभी मिलेगी? काश इस जीवन में एक बार तो मिलती—केवल एक क्षण के लिये, और कह देती कि मैं इसलिये उस मोटर-ड्राइवर के साथ भाग गई थी!"

उन्होंने एक दीर्घ निःश्वास ली, और कलरव उनका उपहास करने लगा।

(४)

उस दिन शाम को प्रमीला ने शंकित स्वर में पूछा—"क्यों रमेश बाबू, आज इतने उदास क्यों हो?"

प्रमीला रमाकांत को रमेशचंद्र के नाम से जानती थी, क्योंकि मदनमोहन ने यही नाम उसे बताया था।

रमाकांत ने मुस्किराने की चेष्टा करते हुए कहा—"नहीं, मैं उदास तो नहीं हूँ। मदनमोहन के न होने से आज कुछ उदासी छाई है।"

प्रमीला ने चकित होकर पूछा—"मदनमोहन बाबू कौन हैं?"

रमाकांत को अब अपनी भूल जान पड़ी। मदनमोहन का नाम प्रमीला के समाज में व्रजेंद्रनाथ था। उन्होंने अपनी ग़लती सुधारते हुए कहा—"मेरे एक मित्र हैं, जो अभी तक मेरे साथ रहते थे, आज ही वह भी व्रजेंद्र बाबू के साथ कानपुर ...नहीं ...काशी चले गए हैं।"

इसके बाद कमरे में फिर निस्तब्धता छा गई। उससे ऊबकर प्रमीला ने कहा—"कोई बात क्यों नहीं करते। मुझे गुम-सुम बैठना अच्छा नहीं लगता। अच्छा, कुछ पिओ, तब स्फूर्ति आ जायगी, और यह भयभीत करनेवाला सन्नाटा अपने आप भाग जायगा।"

यह कहकर बात-की-बात में वह सोडा और ह्विस्की का बोतल और दो गिलास ले आई। रमाकांत ने कहा—"मैं तो पीता नहीं, आप ही पीजिए।"

प्रमीला ने उनके समीप बैठकर खिसकते हुए कहा—"यह कैसे हो सकता है। आपको तो अवश्य पीना पड़ेगा। पीना कोई गुनाह नहीं।'

यह कहते हुए उसने सोडा मिलाया, और एक मोहन कटाक्ष से वह गिलास उठाकर उनके अधरों के समीप ले गई।

रमाकांत की अंतरात्मा ने बहुत ज़ोर मारा, मगर उत्तप्त यौवन के भयंकर वेग ने उनकी प्रतिरोध-शक्ति को क्षीण कर दिया। वह इनकार न कर सके, और दो-तीन घूँट पी गए। एक तप्त शलाका उनका हृदय जलाने लगी।

प्रमीला कुछ मुस्किराई, और फिर उसी प्याले से वह भी पीने लगी। उसने उसे खाली कर दिया। दूसरा प्याला भरते हुए उसने कहा—"यह अमृत है, सारी चिंताओं को नाश करने में रामबाण है। लीजिए, पीजिए।"

रमाकांत आपत्ति न कर सके, और इस बार वह पूरा प्याला पी गए। प्रमीला मुस्किराई, और फिर अँगड़ाई। उसकी आँखों से विजय झाँकने लगी। उसने दूसरा प्याला भरकर ख़ुद पिया। रमाकांत के शरीर में जोश का हलका ज्वार सिर की ओर चढ़ने लगा, जिसमें गुदगुदी थी, मिठास थी, और हिजाब तथा आशंका नष्ट करने की कशिश थी।

प्रमीला ने आगे बढ़कर कहा —"रमेश बाबू, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।"

'प्यार'-शब्द ने रमाकांत के चाबुक मारा। वह होश में आए, और एक भयानक दृष्टि से उसकी ओर देखा, फिर ज़ोर से हँस पड़े। उनके हास्य का व्यंग्य प्रमीला को चिढ़ाने लगा।

प्रमीला ने शंकित दृष्टि से देखते हुए कहा—"तुम्हें विश्वास नहीं होता?"

रमाकांत ने भर्राए हुए स्वर में कहा—"क्यों नहीं होता। स्त्री-जाति का विश्वास न करूँगा, तो फिर किसका करूँगा। और, जब वह स्त्री वेश्या है, तो मैं आँख बंद कर विश्वास करूँगा।"

प्रमीला के नेत्र लाल हो गए। उसका नारीत्व जाग्रत् हो गया। उसने आँखें फाड़कर उनकी ओर देखते हुए कहा—"वेश्या की भी मर्यादा है। लेकिन नारी-जाति को वेश्या-जैसा घृणित बनानेवाले तो तुम्हारे ही-जैसे पुरुष हैं। मैं जन्म से वेश्या नहीं हूँ। केवल पेट की ज्वाला शांत करने के लिये नहीं, बल्कि तुम्हारे-जैसों के तिरस्कार से बचने के लिये, और तुम्हें भी अपना-जैसा घृणित, रुग्ण, पापी, शैतान बनाने के लिये, अथवा अपना प्रतिशोध लेने के लिये वेश्या हुई हूँ। तुम समझते हो, मैं घृण्य हूँ, कोढ़ से भी अधिक घृण्य हूँ, किंतु मैं समझती हूँ, तुम लोग कोढ़ के कीड़े हो, और हमारे कोढ़ के मैल को भोजन के समान खाकर जीवित रहते हो।" कहते-कहते उसके नथुने फूलने लगे, और विषमय दृष्टि से वह उनकी ओर देखने लगी।

रमाकांत स्तब्ध होकर उसकी ओर देखने लगे। उन्होंने धीमे स्वर में कहा—"अच्छा, अगर तुम जन्म से वेश्या नहीं हो, तो तुम कौन हो?"

प्रमीला ने आवेश के साथ कहा—"मैं कौन हूँ। मैं एक भद्र कुल की ब्राह्मण-संतान हूँ। मेरे पिता एक प्रतिष्ठित वकील थे, जिन्होंने अपने बाहु-बल से बहुत रुपया कमाया था। वह पाश्चात्य विचारों को सम्मान की दृष्टि से देखते थे, और उसका अनुकरण अंधे होकर कर रहे थे। उन्होंने मुझे पढ़ने के लिये स्कूल भेजना शुरू किया, जहाँ के स्वतंत्र वायु-मंडल ने मेरे दिमाग़ में बुरी आज़ादी के विषमय कीटाणु भर दिए। नतीजा यह हुआ कि मैं ख़ूब आज़ादी से अपना जीवन आमोद-प्रमोद में व्यतीत करने लगी। मेरी शिक्षिकाएँ, जिनमें अधिकांश अविवाहित थीं, मेरा सौंदर्य देखकर ललचाने लगीं, और उन्होंने मुझे ऐसी शिक्षा देनी आरंभ की, जिससे मुझे विवाह से और उसके जीवन से घृणा हो गई। उन्होंने मुझे धीरे-धीरे अपने अंतरंग-केलि-गृह में प्रवेश किया, और मेरे द्वारा हज़ारों रुपया पैदा किया, जिसका कुछ अंश मुझे भी देती थीं। मैं तितली की तरह फुदक-फुदककर नए-नए फूलों का रस लेने लगी। अंत में जब मेरे पिता को कुछ-कुछ आभास मिला, तो उन्होंने मेरा विवाह करना चाहा। मा के मर जाने से मैं बिलकुल आज़ाद हो चुकी थी, और भाई-भौजाई की बिलकुल परवा न करती थी। मैंने एक दिन साफ़-साफ़ कह दिया कि मैं विवाह नहीं करूँगी। इसे सुनकर मेरे पिता स्तंभित रह गए, और उन्होंने बड़े वेग से विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दीं। इन्हीं दिनों मेरा प्रेम एक सुंदर जवान से हो गया था। जब कोई उपाय न देखा, तो घर से दस-पंद्रह हज़ार की पूँजी लेकर उसी के साथ निकल पड़ी। पहले वह मेरा ग़ुलाम होकर रहने की क़सम खा चुका था, लेकिन उसका और मेरा मन ऊबते देर न लगी। हम दोनो अलग हो गए, और तब से यह जीवन व्यतीत कर रही हूँ।"

रमाकांत ने भर्राए हुए कंठ से कहा—"तुम्हारे पिता का क्या नाम था?"

प्रमीला ने दूसरा गिलास ख़ाली करते हुए कहा—"पंडित राधेलाल। हम लोग दिल्ली के रहनेवाले थे, और मैं अपने स्कूल के मोटर-ड्राइवर के साथ भाग आई थी।"

रमाकांत विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखने लगे। उनकी आँखों से कौतूहल और वर्षों की वेदना सशरीर निकलकर प्रमीला को निगल जाने के लिये छटपटा रही थी।

प्रमीला तीसरा गिलास ख़ाली करते हुए हँसी

और फिर उसने कहा – "मेरे पति का भी नाम सुनोगे ? अच्छा, कहती हूँ, सुनो, उनका नाम था पंडित रमाकांत, और वह कानपुर के रहनेवाले एक शिक्षित युवक थे। उसी वर्ष उन्होंने एम्० ए० पास किया था। अखबारों में मैंने उनका नाम देखा था—नहीं, खोजा था, क्योंकि उस घटना के बाद ही मैं उन्हें प्यार करने लगी – न-मालूम क्यों !"

यह कहकर वह बड़े वेग से हँसी। रमाकांत के मुख से भी निकल पड़ा—"न - मालूम क्यों !"

वह भी दूसरे क्षण प्रमीला के स्वर से भी भयंकर स्वर में हँस पड़े। अदृष्ट के हास्य की व्यंग्यमयी कर्कशता ने भी अपनी भीषण प्रतिध्वनि में कहा—"न-मालूम क्यों !"

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये
एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने
सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—
'गोनोकिलर'
[रजिस्टर्ड]

GONO
REGD
ORIGINAL
TRADE MARK
KILLER

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट डॉक्टरों की दवा और इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा दवाओं में फ़िज़ूल पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, या सूज़ाक क्यों न हो, 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ४० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४
लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

जाति-पाँति की राक्षसी

[चित्रकार—श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव]

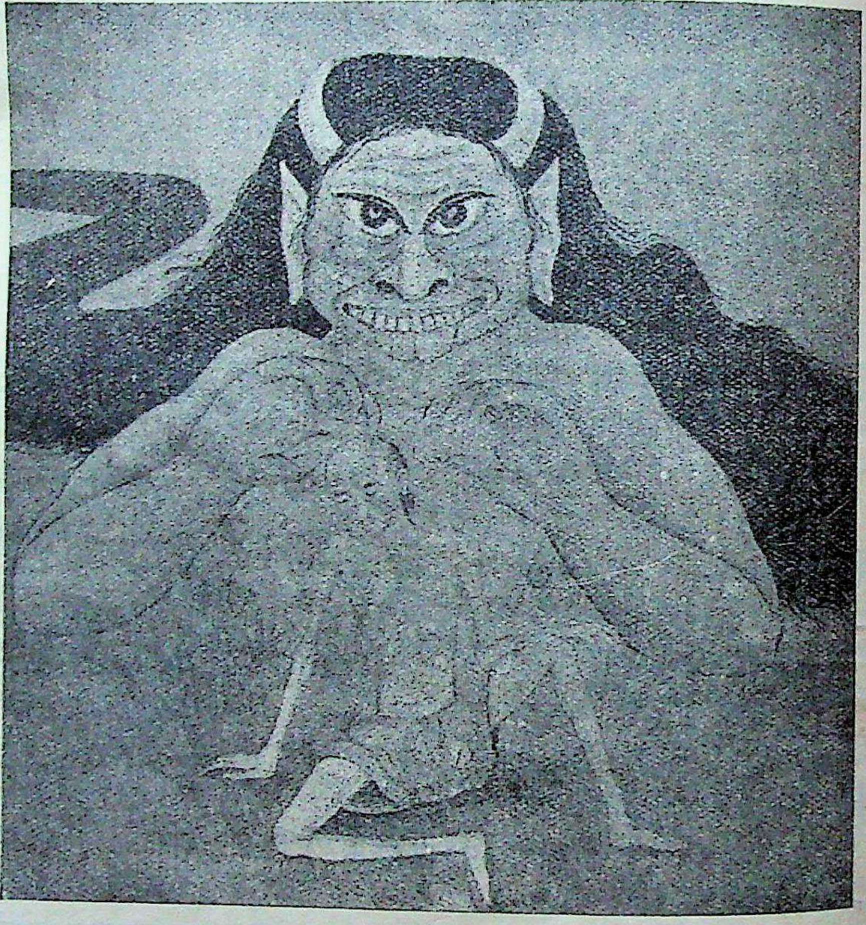

[जाति-पाँति की राक्षसी ने हिंदू-जाति का सारा रक्त चूस लिया है। वह अब प्राण-रहित देह के समान हो रही है। ब्राह्मण-कायस्थ, राजपूत-शूद्र, खत्री-बनिया के झगड़े जब तक हैं, तब तक हिंदू-जाति का संगठन नहीं हो सकता, और हिंदू-जाति के संगठन बिना स्वराज्य की प्राप्ति असंभव है। यदि भारतवर्ष में ये जातियाँ और उपजातियाँ, जो हज़ारों की तादाद में हैं, न रहें, तो स्वराज्य मिलते देर न लगे। पर ये जातियाँ और उपजातियाँ तभी मिट सकती हैं, जब हिंदू-मात्र में रोटी-बेटी-व्यवहार होने लगे। रोटी का व्यवहार तो होने लगा है, अब विवाह-संबंध भी होने लगें, तो देशोद्धार होते देर न लगे। जाति-पाँति की राक्षसी का संहार कर दीजिए, तो आपकी स्वतंत्रता निश्चित है।]

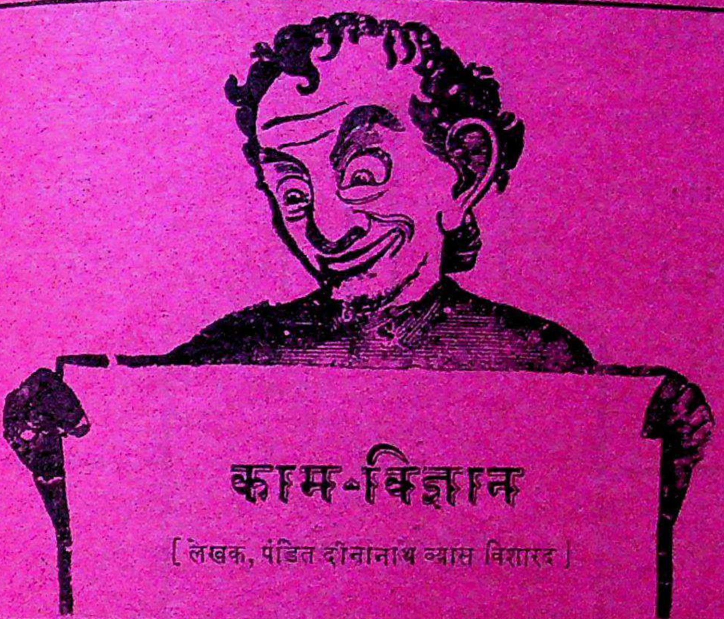

काम-विज्ञान

[लेखक, पंडित दीनानाथ व्यास विशारद]

यह नव-विवाहित नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरल भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस विषय पर हिंदी-भाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सफल वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को खरीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १।)

'काम-विज्ञान' पर

दो स्वर्गीय महान् धुरंधरों की सम्मतियाँ

१—राष्ट्रभाषा के नोबुल प्राइज—मंगलाप्रसाद-पुरस्कार—प्राप्तकर्ता, दर्शन एवं विज्ञान के प्रकांड विद्वान, विज्ञान-संपादक स्वर्गीय प्रो० रामदासजी गौड़ एम्० ए० लिखते हैं—

"प्रस्तुत पुस्तक पाश्चात्य और प्राच्य इस विषय की दोनों संस्कृतियों के साहित्य के अनुशीलन का फल है। पुस्तक विवाह करनेवाले स्त्री पुरुष, दोनों के बड़े काम की है। नव-विवाहित दांपत्य जीवन के सभी आवश्यक विषय इसमें आ गए हैं। इसके इक्कीस अध्याय बड़े उपयुक्त हैं। प्रत्येक युवक-युवती को, जो वैवाहिक जीवन में प्रविष्ट होनेवाले हैं इसकी एक प्रति खरीदकर पढ़नी ही चाहिए।

२—दर्शन एवं साहित्य के धुरंधर विद्वान एवं सुप्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय प्रिंसिपल वासुदेवकृष्ण चाटके एम्० ए० लिखते हैं—

"पुस्तक यथार्थ में आपके बृहद् ग्रंथ-परिशीलन, मौलिक रीति से वस्तोत्पादन शक्ति एवं विद्वत्ता-निदर्शन का एक नमूना है।

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गढ़-कुंडार

ऐतिहासिक उपन्यास

मूल्य २॥)

सजिल्द ३)

कुंडली-चक्र

सामाजिक उपन्यास

मूल्य १)

सजिल्द १॥)

लेखक

हिंदी के सर्वश्रेष्ठ

ऐतिहासिक उपन्यास

श्रीवृंदावनलालजी वर्मा

ऐडवोकेट

प्रेम की भेंट

सामाजिक उपन्यास

मूल्य १)

सजिल्द १॥)

विराटा की पद्मिनी

ऐतिहासिक उपन्यास

मूल्य २॥)

सजिल्द ३)

संचालक गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

भूकंप से बचिए

भूकंप

[द्वितीय संस्करण]

'भूकंप' क्या है ? वह क्यों और कैसे आता है ? जल और स्थल पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ? आदि भूकंप-संबंधी अनेक ज्ञातव्य बातें यदि आप जानना चाहें, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए।

भूकंप से
डरने की
ज़रूरत नहीं।

बचने
के
सरल उपाय।

इस पुस्तक को पढ़कर लाभ उठाइए। यदि पुस्तक आपके यहाँ रहेगी, आप इसे पढ़ेंगे, तो भूकंप के समय जन-धन-हानि से आप बहुत कुछ बच जायँगे। मूल्य ॥≈), सजिल्द १।=)—सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य।

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

कीचक नाटक

द्रौपदी-सहित पाँच पांडवों का नाम और वेश बदलकर विराट-देश के राजा के आश्रय में अज्ञातवास का समय बिताना, राजा के सेनाध्यक्ष दुराचारी, लंपट कीचक का सैरिंध्री-नामधारिणी द्रौपदी पर कुदृष्टि डालना, भीम का कीचक को यमालय पहुँचाना, कीचक की विषय-वासना और इंद्रिय-लोलुपता का ख़ासा ख़ाका, राजा का कीचक के हाथ का खिलौना होना, पागल और भिखारी प्रभृति द्वारा राज्य में अत्याचार, अन्याय और धर-पकड़ का साम्राज्य, इत्यादि बातें इस नाटक के भिन्न-भिन्न दृश्यों में बहुत सुंदरता से दिखाई गई हैं। हास्य-रस का पुट तो ग़ज़ब ही ढाता है! एक बार देखिए कि यह रंग-मंच पर भी कितनी सफलता से खेला जा सकता है।

केवल २६६ कापी बची हैं!

मूल्य
१)

सजिल्द

अन्य उत्तमोत्तम नाटकों के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए— गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क,

अमर लालसा

अनु०—श्रीगिरीशचंद्र जोशी

यह पुस्तक गुजराती-साहित्य के विख्यात लेखक श्रीरमणलाल-वसंतलाल देसाई के 'पत्र-लालसा'-नामक सामाजिक उपन्यास का जीता-जागता अनुवाद है। अनुवाद बड़ी ही रोचक व सरल भाषा में हुआ है। कथानक इतना रोचक व सरस है कि एक बार आरंभ करके बिना समाप्त किए इसे छोड़ नहीं सकते। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) मात्र।

चुंबन

ले०—पांडेय श्रीबेचन शर्मा 'उग्र'

उग्रजी की लेखनी से हिंदी-संसार काफ़ी परिचित है, यह नाटक उन्हीं की ओज-भरी लेखनी का नमूना है। नाटक तो अपने ढंग का निराला ही है, किंतु गेट-अप भी बरबस चित्त को अपनी तरफ़ खींच लेता है। बहुत ही बढ़िया काग़ज़, दो रंग की छपाई, चमकती जिल्द, अनेक चित्रों से भरी पुस्तक का मूल्य २) मात्र।

प्रेम-पत्र

ले०—श्रीगिरीशचंद्र जोशी

पुस्तक अपने ढंग की निराली है। यह हिंदी-साहित्य में अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। स्वामी ने अपनी धर्मपत्नी को तथा धर्मपत्नी ने अपने स्वामी को पत्र लिखे हैं। पत्र क्या हैं, प्रेम व हृदय के उद्गारों के जीते-जागते चित्र हैं। पढ़ते ही ज्ञात हो जाता है कि प्रेम क्या चीज़ है, कैसे किया जाता है, तथा प्रेम-पत्र कैसे लिखे जाते हैं? मूल्य सचित्र पुस्तक का १।) मात्र।

बाग़-बग़ीचा

ले०—पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय

लेखक को इस विषय का प्रैक्टिकल ज्ञान है। इस विषय की यह इनकी दूसरी पुस्तक है। इसमें फलों की खेती और क़लम करने की व्यावहारिक विधियाँ हैं। यह पुस्तक देहात तथा शहर के रहनेवाले सभी के काम की चीज़ है। मूल्य केवल १।)

आठ कहानियाँ

संपादक, श्रीएस्० डी० अवस्थी एम्० ओ० एल्०, साहित्यरत्न

यह पुस्तक हिंदी-साहित्य के प्रख्यात लेखकों की लिखी आठ कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ ऊँचे दर्जे की हैं, कथानक रोचक व भाषा सरल है। कलकत्ता-विश्वविद्यालय ने इसे पाठ्य-क्रम में नियत कर लिया है। मूल्य सजिल्द का ।)

आदर्श निबंध

इसमें ऊँचे दर्जे के निबंधों का संग्रह है। निबंध सामयिक व उपयोगी हैं। प्रवेशिका-परीक्षा के विद्यार्थियों के लिये बड़े ही उपयोगी हैं। मूल्य ।) मात्र।

मीठी-मीठी कहानियाँ

ले०—श्रीबैजनाथ केडिया

श्रीकेडियाजी की कहानियाँ बालकों के लिये कितनी उपयोगी सिद्ध हुई हैं, यह प्रायः सभी पर विदित हो गया है। प्रस्तुत पुस्तक में बालकोपयोगी सात मीठी कहानियाँ हैं। पुस्तक चित्रों से खचाखच भरी है। मूल्य केवल ।=)

मैनेजर, गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सुकवि-माधुरी-माला

गंगा पुस्तक माला
लखनऊ
कार्यालय

१. बिहारी-रत्नाकर

हिंदी-संसार के ब्रजभाषा-साहित्य में युगांतर-कारी बृहद् ग्रंथ

भाष्यकार

ब्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी विद्वान् बाबू जगन्नाथ-दास 'रत्नाकर' बी० ए०

संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

मूल्य ४)

२. मतिराम-ग्रंथावली

महाकवि मतिराम हिंदी के नवरत्नों में से हैं। उनकी यह ग्रंथावली हिंदी-संसार में अद्वितीय चीज़ है। टिप्पणियाँ, शब्दार्थ, नोट और आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका के साथ। मूल्य २।।), सजिल्द ३)

३. मिश्रबंधु-विनोद

(हिंदी-साहित्य का अप-टु-डेट इतिहास तथा कवि-कीर्तन)

हिंदी के सुप्रसिद्ध,
सिद्धहस्त और
मार्मिक लेखक

मिश्रबंधुओं

के दीर्घकालिक परिश्रम का फल।

चार भाग निकल चुके हैं।

प्रथम भाग—२।)
द्वितीय भाग—३)
तृतीय भाग—२)
चतुर्थ भाग—४)

प्रत्येक भाग में सजिल्द प्रति के दाम ।।) अधिक।

सेट सादी १०) में और सजिल्द १२)

अप्राप्य पुस्तकों के नए संस्करण

आपके बच्चों के लिये

परियों का दरबार

लेखक, श्रीबाबूलाल भार्गव बी० ए०। परियों की रोचक कहानियाँ। रंगीन मुख-पृष्ठ। मूल्य ॥), ॥=)

साहसी बालक

लेखक, श्रीगुरुराम विश्वकर्मा विशारद। सरल, रोचक, वीरता-भरी कथा। मूल्य ।), ।=)

सुघड़ चमेली

लेखक, स्व० पं० रामजीदास भार्गव। बालिकाओं को सुघड़ बनाने के लिये अनुपम पुस्तक। मूल्य -), =)

परोपकारी हातिम

लेखक, श्रीज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद। हातिम की ऐतिहासिक कथा। ६-७ सादे-रंगीन चित्र। मूल्य १), १॥)

क्यों और कैसे ?

लेखक, श्रीनारायणप्रसाद अरोड़ा बी० ए०। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान-वृद्धि। मूल्य ।), ।=)

बाल-विलास

लेखक, श्रीगुरुराम विश्वकर्मा विशारद। सरल, विनोद-पूर्ण कविताएँ। ४० से अधिक चित्र। मूल्य ।=), राजसंस्करण ॥=)

आपकी महिलाओं के लिये

देवी शकुंतला

लेखक, अध्यापक श्रीहरिप्रसाद द्विवेदी 'श्रीहरि'। सती-धर्म और विश्व-प्रेम का जीता-जागता चित्र। कई रंगीन चित्र। मूल्य ॥), रंगीन जिल्द ॥।), सजिल्द १)

मैनेजर—गंगा-ग्रंथागार

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

Public D... Kangri Collection, Haridwar

द्विवेदी-ग्रंथावली

की

चार पुस्तकें

नैषध-चरित-चर्चा

[तृतीयावृत्ति]

लेखक, हिंदी के अद्वितीय गद्य-लेखक आचार्य पं० श्रीमहावीरप्रसाद द्विवेदी। संस्कृत के नैषध-चरित की गणना महाकाव्यों में है। आचार्य द्विवेदीजी ने इसकी आलोचना बड़ी आलंकारिक भाषा में की है। काव्य का आनंद गद्य में ही मिल जाता है। प्रारंभ में हर्ष की जीवनी-विषयक कुछ बातें भी दे दी गई हैं। मूल्य ।॥), सजिल्द १।)

प्राचीन पंडित और कवि

[द्वितीय संस्करण]

इस पुस्तक में भवभूति, कविराज, फ़ारसी-कवि हाफ़िज़, बौद्धाचार्य शीलभद्र, मधुरवाणी, सुखदेव मिश्र, हरिविजय सूरि और आचार्य दिङ्नाग की रचनाओं पर आलोचनात्मक दृष्टि से लिखे गए लेखों का संग्रह है। इन आलोचनात्मक लेखों में जो-जो खोज की बातें वर्णित हैं, वे साहित्य-जगत् के लिये बड़ी ही उपयोगी और नई हैं, इन्हें पढ़कर अनेक नई खोजों का पता लगता है। मूल्य ।।।=), सजिल्द १।=)

चार !

चार !!

अद्भुत आलाप

[पंचम संस्करण]

इसमें ऐसे-ऐसे विचित्र कौतूहल-पूर्ण निबंध हैं कि शुरू करने पर बिना समाप्त किए रहा नहीं जाता। इसकी लेखन-शैली का तो कहना ही क्या! विषय इतना रोचक है कि उपदेश के साथ-साथ ख़ासा मनोरंजन भी होता है। लखनऊ-विश्वविद्यालय में बी० ए० में और सी० पी० में मैट्रिक में यह पुस्तक पढ़ाई जाती है। मूल्य ॥), सुनहरी रेशमी जिल्द का १)

वेणीसंहार-नाटक

[द्वितीय संस्करण]

पांडवों के संग वन जाते समय द्रौपदी ने अपनी वेणी खोल दी थी। पुनः राज्य-प्राप्ति पर ही उसे बाँधने की प्रतिज्ञा की थी। भीमसेन ने भी एक बार दुःखित होकर द्रौपदी से कहा था कि अपनी गदा के प्रचंड आघातों से दुर्योधन की दोनो जंघाओं को तोड़कर ख़ून से सने हुए अपने हाथों से तुम्हारे खुले हुए केश बाँधूँगा। वैसा ही हुआ भी। इसमें इसी का आख्यायिका-रूप में वर्णन है। इसके पढ़ने से आप महाभारत के युद्ध की मुख्य-मुख्य घटनाओं से परिचित हो जायँगे। मूल्य ।।=), सजिल्द १।)

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

मिस्टर एलीफ़ैंट

(प्रहसन)

[श्रीपं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल']

पहला दृश्य

स्थान—सोने का कमरा

[मिस्टर एलीफ़ैंट और मिसेज़ एलीफ़ैंटा कमरे में चारपाई पर, आमने-सामने मुँह करके, बैठे हैं। कमरा साधारण सजा हुआ है। कोने में एक छोटी मेज़ और कुर्सियाँ रक्खी हैं। सोने से पहले आपस में वार्तालाप होती है। कमरे के दो ओर तीन छोटी चारपाइयाँ बिछी हैं। उन पर छ बच्चे सो रहे हैं।]

एलीफ़ैंट—(हँसकर) ओहोहो, बड़ी सख्त गरमी पड़ रही है! पसीने से धोती तर हो रही है। (पैर से धोती ऊपर सरकाता हुआ) ईश्वर भी विचित्र है, गरमी की दुनिया में क्या ज़रूरत थी!

एलीफ़ैंटा—(पान चबाती हुई) वाह! खूब दूर की सूझी! (पंखा झलती हुई) भगवान् बड़ा समझदार है। गरमी उसने बना दी, भुगतना तुम्हारा काम। (ज़ोर से मुँह पर पंखा हाँकती है।)

एलीफ़ैंट—(आश्चर्य से) ऐं, मैं भुगतूँ, और तुम?

एलीफ़ैंटा—(पंखा हाँकती हुई भाव-भंगी से) मुझे तो तुम्हारे साथ ज़िंदगी-भर भुगतना ही है। (अन्यमनस्क होकर) क्या करूँ, परेशानी है।

एलीफ़ैंट—(खड़े होकर, नज़दीक जाकर) अरे, तुम्हारा चेहरा कैसा हो रहा है, परेशानी! परेशानी किस बात की?

एलीफ़ैंटा—(बच्चों की चारपाई की ओर देखकर) छ छोटे-छोटे बच्चे! क्या करूँ, कुछ कहा नहीं जाता। (एक बच्चा चिल्लाता है।) देखो, रात-भर जागते ही बीतता है। (जाकर थपथपाती है।)

एलीफ़ैंट—(हँसकर) बस, हो-हो-हो-हो-हो! मैंने कहा, क्या हो गया। एकाएक कौन-सी परेशानी टूट पड़ी! वाह! तुम्हारी भी परेशानी कभी-कभी बेक़ाबू हो जाती है। (चारपाई पर बैठता है। एकाएक दूसरा बच्चा रोने लगता है।)

एलीफ़ैंटा—(बच्चे को थपथपाती हुई) बस, यही हाल होता है—एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा। क्या करूँ, यह सब तुम्हारी करतूत है, समझे। (भाव-भंगी से चारपाई पर बैठती है।)

एलीफ़ैंट—(कुछ नाराज़गी का चेहरा बनाकर) हुँ, मेरी करतूत है? और तुम बड़ी भगतिन हो? परेशान कर डाला, मैं कल घर छोड़कर चला जाऊँगा।

एलीफ़ैंटा—(नाराज़ होकर) बस, तुम्हारी तो आदत है, बात मुँह से निकली नहीं कि नोच खाया! अरे, ज़रा कुछ तो शर्म करो! पड़ोसी हँसते हैं, हँसते! (पंखा झलती है।)

एलीफ़ैंट—(क्रोध में) पड़ोसी! वह कौन-सा पड़ोसी है, जो हम लोगों के बीच में दखल देता है! उसकी क्या मजाल कि हँसे! परमात्मा की देन है! बड़े-बड़े राजे-महाराजे संतान के लिये तरस रहे हैं। (दाढ़ी खुजाता हुआ) मुझे पड़ोसी मिल जाय, तो नाक काट लूँ।

एलीफ़ैंटा—(आश्चर्य से) ऐं, नाक काट लूँ ! (पास खड़ी होकर समझाती हुई) नहीं-नहीं, ऐसा न करना, फँस जाओगे, मुसीबत आ जायगी।

एलीफ़ैंट—(बड़बड़ाता हुआ) मेरे बीच में दखल देनेवाले पड़ोसी कौन होते हैं ? मैं फँस जाऊँगा, तो फँस जाऊँगा, लेकिन हमेशा के लिये मुँह बंद कर दूँगा। (मुँह फेरकर) कान पक गए सुनते-सुनते। बच्चे, बच्चे, बच्चे !

एलीफ़ैंटा—(रोकती हुई) देखो, रात का वक़्त है, ज़ोर-ज़ोर से न बड़बड़ाओ, नहीं कोई सुन लेगा। बेकार का फ़साद खड़ा हो जायगा। दीवार के भी कान होते हैं।

एलीफ़ैंट—(ज़ोर से) दीवार के कान नहीं, आँख, मुँह, हाथ, पैर सब कुछ हों, मैं तो जो कुछ कहता हूँ, सरे-आम कहता हूँ, और करता हूँ। फिर जिसे जो कुछ करना हो, कर ले। हुँ, परेशान हो गया !

एलीफ़ैंटा—(चारपाई पर बैठती हुई) न सुनो, तुम्हारी तबियत, लेकिन किसी-न-किसी दिन झगड़ा होकर रहेगा। फँसोगे, तब पता चलेगा !

एलीफ़ैंट—(खड़े होकर) बस, यही न कि मुझे सज़ा करा देंगे ? करा दें। मैं उनके लिये सज़ा भुगत आऊँगा। जेल ही होगा, फाँसी तो होगी नहीं। उठते-बैठते परेशान किए रहते हैं। (समझाते हुए) अच्छा, तुम्हीं बताओ, यदि मेरे प्रतिवर्ष बच्चे होते हैं, तो मैं क्या करूँ ? भाग जाऊँ, शहर छोड़ दूँ, फाँसी लगा लूँ, अपने को मार डालूँ या तुम्हें मार डालूँ ? क्या करूँ ?

एलीफ़ैंटा—हाँ, यह तो ठीक ही है, फिर पड़ोसवालों के मुँह कौन लगे, कौन कहे ?

एलीफ़ैंट—(बड़बड़ाता हुआ) मैं कहूँगा, मैं। और कौन कहेगा। मैं—मैं—मैं इनका जानी दुश्मन हूँ। परेशान कर डाला ! बच्चे, बच्चे, बच्चे ! (तीसरा बच्चा चिल्लाता है।) रोना तो इनका काम ही है। हँसने के दिन आवेंगे, तो हँसेंगे। कल सबेरे देख लूँगा इन पड़ोस के लौंडों को। इन लोगों ने मुझे क्या समझ रक्खा है ?

एलीफ़ैंटा—अच्छा, सो जाओ, देर बहुत हो गई है।

एलीफ़ैंट—वाह, यह कोई बात है ? मेरे बच्चों के नाम पर बावैला मचाते रहना कौन-सी अच्छी बात है ? सबेरे मैं खुद ही देखूँगा। सबेरा तो होने दो !

एलीफ़ैंटा—(भाव-भंगी से) अरे, सो भी जाओ, तुम्हें तो सनक हो जाती है। खामख़्वाह अपना दिमाग़ ख़राब कर रहे हो।

एलीफ़ैंट—हुँ, मज़ाक़ समझ रक्खा है। जो जिसके जी में आवे, कह डाले। अँगरेज़ी अमलदारी अभी बाक़ी है, शायद ये लोग इसे भूल गए। जेलख़ाने की हवा खानी पड़ेगी।

एलीफ़ैंटा—(नाराज़ होकर) तुम्हारी बकवाद में कौन सिर खपावे। कह दिया, सो जाओ। लेकिन अपनी ही बकते चले जा रहे हो। हुँ !

एलीफ़ैंट—(नाराज़ होकर) मैं ये बातें एक सेकेंड बरदाश्त नहीं कर सकता। मैं तो आज हर्गिज़ न सोऊँगा। इनके लिये एक रात जागरण ही सही। आज रात जागूँगा, विचार करूँगा, क़ानून की किताबों की धाराओं का मनन करूँगा, देखूँगा, किस धारा के शिकंजे में इन लोगों को फँसाया जा सकता है।

एली.फैंटा—अरे, चुप भी रहो, बात का बतंगड़ बना रहे हो, सोते नहीं चुपचाप। ज़रा-सी बात पर धरती सिर पर उठा ली ! अरे, सबेरा होने दो, देखा जायगा।

एलीफ़ैंट—(क्रुद्ध होकर) चुप रहो, कौन होती हो मेरे बीच में दखल देनेवाली ? मैं ज़रूर जागूँगा, मैं नहीं सोऊँगा। (कुछ सोचकर और उँगली दिखाते हुए) तुम, तुम्हीं इस फ़साद की जड़ हो !

यह सब तुम्हारी कारस्तानी है। तुम्हारी ही बदौलत आज मेरी नाक कट रही है ! बड़ी गुनवती हो। फिर भी कहती हो, सो जाओ। एक नंबर की बनी हो।

एलीफ़ैंटा—(आश्चर्य से) तुम्हारी नाक मेरी वजह से कट रही है ? (सिर पर हाथ रखकर) हे भगवान्, क्या करूँ। मेरी मौत भी नहीं आती।

एलीफ़ैंट—हाँ, तुम्हीं फ़साद की जड़ हो। न तुम्हारे इतने बच्चे होते, और न मेरी नाक कटती। न-जाने पूर्व-जन्म में क्या पाप किया था। (कुछ स्मरण करके) अरे, वह मेरा बाप नहीं था, दुश्मन था, दुश्मन, जिसने मेरी शादी तुम्हारे साथ कर दी। अगर मैं होता, तो हर्गिज़-हर्गिज़ तुम्हारे साथ शादी न करता।

एलीफ़ैंटा—(मुस्किराकर) अब तो ढोल गले पड़ ही गई, क्या करोगे ? और, यदि मैं भी यही कहूँ, जो तुम कह रहे हो, तो ?

एलीफ़ैंटा—(नाराज़ होकर) तुम क्या कह सकती हो ? समझ में नहीं आता, क्या करूँ। (पड़ोसियों को गाली देकर) नीच कहीं के, दरवाज़े पर देख पड़े, तो मुँह में कोलतार लगवा दूँगा। दुष्ट, आवारे !

एलीफ़ैंटा—(पास बैठकर, कंधे पर हाथ रखकर) अच्छा, अब सबेरा होने में कुछ ही वक़्त बाक़ी है, सो जाओ। सबेरे काम देखना है। मैं ही तो फ़साद की जड़ हूँ।

एलीफ़ैंट—(लेटता हुआ) मैं हर्गिज़ लेट नहीं सकता। दिमाग़ ख़राब कर दिया। मैं अब कल किसी की न सुनूँगा। दरवाज़े पर खड़ा न होने दूँगा।

एलीफ़ैंटा—अच्छा, सो जाओ। मुँह ढक लो, तो नींद आ जायगी।

(एलीफ़ैंट चादरे से मुँह ढक लेता है। चादरे के भीतर बड़बड़ाता है। एलीफ़ैंटा अपनी चारपाई पर सो जाती है।)

* * *

दूसरा दृश्य

स्थान—किताबों की दूकान

[मिस्टर एलीफ़ैंट ज़मीन पर गद्दी बिछाए बैठा है। सामने छोटी-सी टेबिल है। कमरे में तीन-चार आलमारियाँ, किताबों से भरी, रक्खी हैं। कमरे के एक ओर एक क्लार्क बैठा है। मिस्टर एलीफ़ैंट गुड़गुड़ी पी रहा है। क्लार्क सामने आकर खड़ा होता है।]

क्लार्क—(कुछ गिड़गिड़ाकर) बाबूजी, पुस्तकों पर क्या कमीशन देना चाहिए ?

एलीफ़ैंट—(एक कश खींचकर) एँ, कमीशन, कमीशन की क्या ज़रूरत ? कौन है, जो कमीशन माँगता है ? हर्गिज़ कमीशन मत दो।

क्लार्क—बाबूजी, बिना कमीशन के एक भी किताब न बिकेगी। आजकल व्यापार डल हो रहा है।

एलीफ़ैंट—हो जाने दो डल, देखा जायगा। किताबें चाहे आलमारी में सड़ जायँ, लेकिन इन कमीशनबाज़ों के हाथ दमड़ी भी न लगे। इन लोगों ने खालाजी का घर समझ रक्खा है !

क्लार्क—(नम्रता से) जैसी आपकी मर्ज़ी। न दीजिए, लेकिन (अपने आप) चटा डालो सारी किताबें दीमकों को, क्या होगा कमीशन देकर। (जाने लगता है।)

एलीफ़ैंट (कुछ सोचकर एकाएक) सुनो-सुनो, अच्छा, दे दो पचीस प्रतिशत कमीशन। ले जाने दो, यह भी क्या कहेंगे। (समझाकर) लेकिन इससे अगर कोई ज्यादा माँगे, तो दूकान से निकाल दो। कमीशन लेंगे, मानो हमें दाम देना ही नहीं पड़ता। हुँ !

क्लार्क—अच्छी बात है।

(एकाएक दो ग्राहकों का प्रवेश। क्लार्क से बातचीत। क्लार्क का फिर मिस्टर एलीफ़ैंट से बातचीत करना।)

क्लार्क—बाबूजी, (ग्राहकों की ओर इशारा करके) आप किताबें खरीदना चाहते हैं, और ३३ प्रतिशत कमीशन माँगते हैं। क्या हर्ज है, अगर दे दिया जाय।

एलीफ़ैंट—(प्रसन्नता से) हाँ-हाँ, कोई हर्ज नहीं। अवश्य दे दो, अपने ही भाई हैं। देना ही चाहिए। क्यों न दिया जाय। ३३ क्या, ४० प्रतिशत दे सकते हो।

(ग्राहक जाते हैं। एकाएक दो पड़ोसियों, रामेश्वर और परमेश्वर, का प्रवेश। साथ एक संन्यासी भी हैं।)

एलीफ़ैंट—(पड़ोसियों की ओर क्रुद्ध दृष्टि से) तुम लोगों की यहाँ...(संन्यासी की ओर देखकर) आइए, बैठिए, विराजिए। (सब गद्दी पर नीचे बैठते हैं।)

संन्यासी—(प्रसन्नता से) बाबूजी, आप प्रसन्न तो हैं?

एलीफ़ैंट—जी-जी-जी-जी हाँ, आपकी कृपा है। आप तो अच्छी......

संन्यासी—(बात काटकर) जी हाँ, सब आपकी कृपा है।

रामेश्वर—(परमेश्वर के कान में) जी-जी-जी-जी क्या है भाई? यहाँ कोई जीजी नहीं; हाँ, जीजा ज़रूर हैं। (मन-ही-मन हँसते हैं।)

एलीफ़ैंट—(क्रोध से देखकर) हाँ, तो महाराज कैसे पधारना हुआ? मेरे योग्य सेवा बताइए। (पड़ोसियों की ओर वक्र दृष्टि से देखता है।)

परमेश्वर—(मुस्किराकर रामेश्वर के कान में) न्योता देने आए हैं, तैयार रहिए। (धीरे-धीरे हँसता है।)

संन्यासी—(नम्रता से) मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। आशा है, आप क्षमा करेंगे।

एलीफ़ैंट—(कुछ शंकित होकर और पड़ोसियों की ओर देखकर) हाँ-हाँ, अवश्य पूछिए। आख़िर आपको क्या दरियाफ़्त करना है? (दोनो पड़ोसी मुस्किराते हैं।) पूछिए, मुझे आज बहुत काम करना है।

संन्यासी—(नम्रता से) मैं संतान-निग्रह-प्रचार-समिति का उपदेशक हूँ। मैंने सुना है,......

एली.फैंट—(पड़ोसियों की ओर वक्र दृष्टि से देखकर) उपदेशक! किस बात के उपदेशक हैं! क्या आपको उपदेश की पुस्तकें चाहिए?

संन्यासी—जी नहीं, मैं संतान-निग्रह का प्रचार करता हूँ। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि......

एलीफ़ैंट—(बात काटकर मुस्किराते हुए) हुँ-हुँ-हुँ-हुँ, मुझे संतान-वंतान न चाहिए। क्षमा कीजिए। ईश्वर की कृपा से घर भरा है। शीघ्र ही......

संन्यासी—(नम्रता से बात काटकर) शीघ्र ही फिर बच्चा होनेवाला है। मैंने आपके पड़ोसियों से सब बातें सुनी हैं। मैं इस शहर में कई दिन से आया हुआ हूँ।

एली.फैंट—(पड़ोसियों पर क्रुद्ध होकर) पड़ोसी! राम-राम! पड़ोसी किसके होते हैं? (उँगली का इशारा करके) ये दोनो तो बड़े ही नीच हैं। इन लोगों ने तो मुझे बदनाम कर दिया। भला, बताइए स्वामीजी! अगर मेरे साल-भर में एक बच्चा हो जाता है, तो मैं क्या करूँ? एँ, बताइए, भाग्य की बात है।

रामेश्वर—(मुस्किराकर साथी से धीरे से) ज़मीन ज़रखेज़ है। (दोनो धीरे-धीरे मुँह फेरकर हँसते हैं।)

संन्यासी—सुना है, आपकी पहली स्त्री का देहांत हो गया, और उनसे कई बच्चे हैं।

एलीफ़ैंट—(प्रसन्न होकर) जी हाँ, आपको य कैसे मालूम हुआ? लड़के-लड़कियाँ मिलाकर ८ हैं। (उँगली का इशारा करके) देखिए, दो पतंग उड़

रहे हैं, दो स्कूल गए हैं, और वह देखिए, (दूसरी ओर उँगली दिखाकर) दो गुल्ली-डंडा खेल रहे हैं। (दोनो पड़ोसी मुस्किराते हैं।)

संन्यासी—हाँ, तो आपकी दूसरी शादी भी हुए छ साल हो गए, और भगवान् की कृपा से उनसे भी छ बच्चे हैं, ठीक है न ?

एलीफ़ैंट—(प्रसन्न होकर) हाँ-हाँ, भला मेरी शादी क्यों न होती ? अकेला मैं कैसे रह सकता था ? (उँगली का इशारा करके) स्वामीजी, आप तो वाक़ई पूरे ज्योतिषी हैं। हुँ-हुँ-हुँ-हुँ, छ बच्चे छोटे-छोटे हैं, आपकी कृपा से सातवाँ भी आने वाला है।

संन्यासी—धन्य हैं आप ! अच्छा, तो यह बताइए, आपकी आमदनी क्या है ?

एलीफ़ैंट—आमदनी की कुछ न पूछिए। आज-कल बिक्री-बट्टा है नहीं। कोई जायदाद ख़रीदी नहीं। किताबों का ढेर लगा है। बिकीं, तो पैसा, नहीं कूड़ा के भाव। क्या किया जाय ! क्या बताऊँ, कमीशनवाले अलग परेशान किए रहते हैं, उनका पेट ही नहीं भरता।

संन्यासी—आख़िर महीने में क्या आमदनी आपकी है ?

एलीफ़ैंट—अरे, यही कि लेने-देने पर सौ-सवा सौ बच रहते हैं !

संन्यासी—आप जानते हैं, दुनिया बदल रही है, आमदनी का यह हाल है, आप निग्रह कीजिए। मुल्क तबाह हो रहा है। इन बच्चों का भविष्य भी आपने कुछ सोचा ?

रामेश्वर—(परमेश्वर के कान में) बटैलियन तैयार हो रही है। लड़ाई पर भेजे जायँगे। (दोनो धीरे-धीरे हँसते हैं।)

एलीफ़ैंट—बच्चे ! आपको मेरे बच्चों से क्या मतलब ? (पड़ोसियों की ओर देखकर) बस, ये ही दोनो बदमाश आपको लाए हैं। मैं नहीं जानता था, आप भी इन लोगों के चक्कर में पड़ जायँगे।

संन्यासी—(नम्रता से) नहीं-नहीं, आप सुनिए भी तो। मैं आपके ही लाभ……

एलीफ़ैंट—(क्रोध में) नहीं-नहीं, मैं आपके-बापके कुछ नहीं सुनना चाहता। मैंने सोचा, भला, कहाँ के उपदेशक टपक पड़े। (खड़े होकर) महाराज, क्षमा कीजिए। बस। (पड़ोसियों से) अच्छा, तुम लोग चलो यहाँ से। मैं अब सब समझ गया, यह सब षड्यंत्र है।

संन्यासी—आपसे मुझे सिर्फ़ यह कहना है कि निग्रह से रहिए। (उठकर) देश को आबादी की अब आवश्यकता नहीं।

एलीफ़ैंट—देश जाय चूल्हे में, उसे ज़रूरत नहीं, न सही ; मुझे तो ज़रूरत है। यह सब आप-ऐसे स्वामियों का काम नहीं। (चलने का इशारा करके) क्षमा कीजिए, बस।

संन्यासी—आप भूल कर रहे हैं। बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो सकता है। (संन्यासी और दोनो पड़ोसी उठकर बाहर निकलते हैं।)

एलीफ़ैंट—चलिए-चलिए, अंधकारमय हो सकता है ! आप ब्रह्मा हैं ? सबका भविष्य लेकर घूम रहे हैं। अरे, जानते हैं आप, हम जनम के साथी हैं, करम के नहीं। (दोनो पड़ोसियों से) इन शोहदों का जादू आप पर भी चल गया। बस-बस, दया कीजिए।

संन्यासी—(चलते हुए) मैंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया। आप जानें, और आपका काम।

एलीफ़ैंट—मैं तो जानूँगा ही, और जानता ही हूँ। मैंने भी अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया, कर रहा हूँ, और ईश्वर चाहेगा, तो करता रहूँगा।

रामेश्वर—(परमेश्वर से चुपके से) हाँ-हाँ, क्यों नहीं, बड़े बहादुर हो न ! ख़ूब फ़र्ज़ अदा किए जाइए।

(संन्यासी मिस्टर एलीफ़ैंट को एक नोटिस

देते हैं, और दरवाज़े के बाहर निकल जाते हैं। एलीफ़ैंट नोटिस पढ़ता है।)

एलीफ़ैंट—मुंशीजी, कल 'बर्थ-कंट्रोल' पर लेक्चर है।

मुंशीजी—कहाँ बाबूजी ?

एलीफ़ैंट—अरे टाउनहॉल में। यह स्वामी आया था उपदेश देने! (उँगली का इशारा करके) आया था मूड़ने, हुँ!

नारि मुई, घर-संपति नासी;
मूड़ मुड़ाइ भए संन्यासी।

लेक्चर पिलाने आया था। देखूँगा, कल टाउनहॉल में क्या राग अलापता है। चला है 'बर्थ कंट्रोल' का प्रचार करने!

मुंशीजी—हाँ, बाबूजी, ज़रूर जाइए।

एलीफ़ैंट—हाँ-हाँ, मैं तो जाऊँगा ही। मुँह बंद कर दूँगा, बोलने न दूँगा। सवालों की झड़ी लगा दूँगा। हुँ। (आकर गद्दी पर बैठ जाता है, और गुड़गुड़ी पीने लगता है।)

* * *

तीसरा दृश्य

स्थान—टाउनहॉल

[श्रोताओं की भीड़ जमा है। मिस्टर एलीफ़ैंट भी अपने दो-तीन मित्रों के साथ बैठे हैं। मंच पर कई गण्य-मान्य सज्जन बैठे हैं।]

एलीफ़ैंट—भाई गुलज़ार, अभी संन्यासी का पता नहीं है। (हँसकर) पड़ गए कहीं उपदेश देने में! हुँ-हुँ-हुँ-हुँ।

गुलज़ार—नहीं, यह बात नहीं। संन्यासी आपसे डर गए, नहीं तो अब तक आ जाते।

एलीफ़ैंट—हाँ-हाँ, मैंने तो उनसे साफ़-साफ़ कह दिया था कि मैं सभा में आऊँगा, और सवालातों के मारे नाक में दम कर दूँगा। (भाव-भंगी से) उन्होंने कोई ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा समझ रक्खा था!

गुलज़ार—हाँ-हाँ, यही तो मैं भी कहता हूँ। बिलकुल ठीक! ज़रूर सवालात कीजिए, तभी उनकी अक़्ल ठीक होगी।

एलीफ़ैंट—हाँ-हाँ, ज़रूर करूँगा। चाहे आज मेरी जान चली जाय, लेकिन देखूँगा, कैसे आगे बढ़ते हैं। 'बर्थ-कंट्रोल' का प्रचार करने चले हैं या पुजाने! हुँ-हुँ-हुँ-हुँ।

गुलज़ार—नहीं बाबूजी, जान जाय आपके दुश्मन की। हम लोग आपके पीछे हैं। घबराइए नहीं। (उँगली से इशारा करके) वह देखिए, संन्यासीजी आ गए। आने भी दीजिए। आज फ़ैसला हो जायगा।

एलीफ़ैंट—हूँ, आ गए! आइए, चलिए, आगे तो बढ़िए। (सँभलकर बैठता है।)

(संन्यासीजी का हॉल में प्रवेश। मंच पर प्रारंभिक कार्यवाही, मंगलाचरण आदि समाप्त हो जाने पर स्वामीजी व्याख्यान प्रारंभ करते हैं। श्रोता बड़े ध्यान से सुनते हैं।)

संन्यासी—भाइयो, आप जानते हैं कि देश बड़ा निर्धन है। चारो ओर त्राहि-त्राहि मची हुई है। किंतु हमारे देश की आबादी बढ़ती जा रही है।

एलीफ़ैंट—(खड़े होकर) संन्यासी महाराज, आपने 'भाइयो' क्यों कहा ? आपसे अधिक उम्र वाले यहाँ मौजूद हैं। सब-के-सब आपके भाई कैसे हो सकते हैं ? हुँ। (चारो ओर से 'बैठ जाइए' की आवाज़ होती है।)

संन्यासी—क्षमा कीजिए, मुझे ज़रा अपनी बात कह लेने दीजिए। बाद को शंका-समाधान होगा। (श्रोता आवाज़ लगाते हैं—"एलीफ़ैंट, बैठ जाइए।")

एलीफ़ैंट—(लोगों को संबोधित करके) भाइयो, यह तो आप लोगों का सरासर अपमान हो रहा है। मैं हर्गिज़ नहीं बैठ सकता। देश की आबादी बढ़ने और घटने का क्या संन्यासी महोदय

ने ठेका ले रक्खा है ? (इशारा करके) इनके घर में त्राहि-त्राहि मची होगी। मैं ऐसी बात हर्गिज़ नहीं सुन सकता। (बैठने के लिये फिर आवाज़ आती है।)

संन्यासी—अच्छा महाराज, मेरी भी तो कुछ सुन लीजिए। (बैठने के लिये आवाज़ आती है।)

एलीफ़ैंट—अच्छा लीजिए, मैं बैठा जाता हूँ। कहिए, देखूँ, क्या कहते हैं। (बैठता है।)

संन्यासी—भाइयो, अधिक संतान घर में निर्धनता व्याप्त करती है। आप लोगों को निग्रह से रहना चाहिए। देखिए,… …

एलीफ़ैंट—(खड़े होकर, बात काटकर) देखिए क्या ? यहाँ आप क्या दिखा रहे हैं, किसको दिखा रहे हैं ? अगर दूसरों की बढ़ती आपसे नहीं देखी जाती, तो आपके संन्यासित्व पर तुफ़् है ! संतान, संतान, हुँ। (बैठने के लिये आवाज़ आती मैं क्यों बैठ जाऊँ, हर्गिज़ नहीं बैठूँगा। यह पब्लिक है।) मीटिंग है। हरएक को बोलने का हक़ है। क्या संन्यासी कहीं के नवाब हैं, जो ज़बान पर ताला लगा लूँ ? ("चुप रहिए" की आवाज़ आती है।)

संन्यासी—ज़रा चुप रहिए, मुझे कह लेने दीजिए, तब आप कहिए।

एलीफ़ैंट—(क्रुद्ध होकर) आपको क्यों कह लेने दूँ। मैं ही क्यों न कह लूँ। मेरे बच्चों के संबंध में आपको कुछ भी कहने का क्या हक़ है, (आवाज़ आती है "आपसे कोई वास्ता नहीं") हाँ-हाँ, मैं सब जानता हूँ, जो कुछ भी कहा जा रहा है, सब मेरे ही लिये है। मैं हर्गिज़ चुप न रहूँगा।

सभापति—(लोगों को समझाकर) आप लोग खामोश बैठे रहिए। आपके बड़े काम की बात संन्यासीजी बतला रहे हैं।

एलीफ़ैंट—ये बातें हमारे किसी काम की नहीं। (लोगों को संबोधित करके) भाइयो, हमें क्या ग़रज़ पड़ी है कि बच्चों का उत्पन्न होना रोक दें। यह सब उस परमपिता भगवान् की देन है। हमारे अधिकार से बाहर की बात है। आप ही लोग सोचिए कि ये कैसी उलटी बातें बतलाई जा रही हैं। क़ुदरत के काम में भी दखल देनेवाले ये कौन होते हैं ? (आवाज़ आती है—'बैठ जाइए।") मैं हर्गिज़ बैठनेवाला नहीं। या तो मैं ही बोलूँगा, या संन्यासी महोदय ही। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। ये सब व्यर्थ की बातें हैं। (संन्यासी की ओर उँगली उठाकर) यह सब आपका जाल है। किसी की स्त्री, घर-गृहस्थी और बच्चों के मामले में आप कौन बोलनेवाले हैं ? चले हैं स्पीच झाड़ने। हुँ !

(श्रोताओं में से दो व्यक्ति उठते हैं, और मिस्टर एलीफ़ैंट को ज़बरदस्ती बैठालते हैं।)

एक व्यक्ति--बस, आप चुपचाप बैठ जाइए, नहीं अच्छा न होगा।

एलीफ़ैंट—(क्रोध में) क्यों बैठ जाऊँ। आप कौन होते हैं ? क्या आप संन्यासी महोदय के एजेंट हैं ?

दूसरा व्यक्ति--बस, आप चुपचाप बैठ जाइए।

एलीफ़ैंट—मैं तो खड़ा ही रहूँगा। मेरी इच्छा। मैं हर्गिज़ नहीं बैठनेवाला।

एक व्यक्ति—(ज़बरदस्ती बैठालता हुआ) बस, अब समझ लीजिए, बैठ जाइए।

एलीफ़ैंट—(क्रोध में) अच्छा, लो, बैठ जाता हूँ। (बैठता है।) बस। (फिर खड़ा होता है।)

दूसरा व्यक्ति—फिर खड़े हुए ! कह दिया, बैठ जाइए।

एलीफ़ैंट—(नाराज़ होकर) मैं खड़ा और बैठा दोनो रहूँगा। मैं जैसा चाहूँगा, वैसा रहूँगा। यह पब्लिक मीटिंग है। यहाँ हरएक को स्वतंत्रता है।

संन्यासी—(एलीफ़ैंट से हाथ जोड़कर)

महाराज, दया कीजिए, बैठ जाइए। अभी आपको बोलने का पूरा मौक़ा दिया जायगा।

एलीफ़ैंट—हाँ, मैं सब समझता हूँ। मेरी क्या ग़रज़ है कि बैठ जाऊँ। मैं यहाँ बैठने के लिये नहीं आया। (क्रोध में) मुझे आपसे मौक़ा लेने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं अपना मौक़ा आप ढूँढ़ लूँगा। (लोगों से) भाइयो, आप लोग व्याख्यान हर्गिज़ न सुनिए। यह सब ढोंग है। पैसा पदा करने का रोज़गार है। हमारा और आपका, सबका अपमान किया जा रहा है।

(रामेश्वर और परमेश्वर का एलीफ़ैंट के पास आना।)

रामेश्वर—(मुस्किराकर) बैठ जाइए, या चले जाइए, नहीं तो...

एलीफ़ैंट—नहीं तो क्या, मुझे फाँसी हो जायगी, मैं क्यों बैठ जाऊँ। (बड़बड़ाता हुआ) तुम लोग नीच हो। तुम्हीं लोगों ने इस साधू को बहकाया है, नहीं तो इस तरह मेरा अपमान यहाँ न होता।

परमेश्वर—(रामेश्वर से) यह अब नहीं माननेवाले हैं। इनको निकालो यहाँ से।

एलीफ़ैंट—(क्रोध में) देखता हूँ, मुझे यहाँ से कौन निकालता है। मैं तो आज यहीं रहूँगा, चाहे सारी रात बीत जाय। यह हॉल तुम लोगों के बाप का नहीं है, म्युनिसिपैलिटी का है, सरकारी है। मैं नहीं निकल सकता।

रामेश्वर—अच्छा, अपनी इज़्ज़त-आबरू लेकर यहाँ से चलते बनिए।

एलीफ़ैंट—(क्रोध में) बड़ा चला है इज़्ज़त-आबरू पर हाथ लगानेवाला! चले जाइए। जैसे यह कहीं के लाट, कलेक्टर और कोतवाल हैं। मैं हर्गिज़ नहीं जाऊँगा। (श्रोताओं में कोलाहल होता है। सारा हॉल गूँजने लगता है।)

(रामेश्वर और परमेश्वर एली.फैंट को बाहर ले चलते हैं। एली.फैंट बड़बड़ाता है, शोर मचाता है, और क्रोध में अपशब्द बकता है। बाहर से लौट-कर रामेश्वर और परमेश्वर हॉल में चले आते हैं।)

एलीफ़ैंट—(बाहर से ही) मैं बाहर शोर मचाऊँगा, ग़ुल करूँगा। तुम लोग कौन होते हो मुझे निकालनेवाले! यह सरकारी हॉल है। मैं आज संन्यासी को देख लूँगा। (पड़ोसियों को संबोधित करके) तुम दोनो घर लौटना, तब भुगत लूँगा।

चपरासी—(एली.फैंट से) जाइए महाराज, चले जाइए। बेकार खोपड़ी न खाइए।

एलीफ़ैंट—तू चपरासी है? मैं खोपड़ी खाता हूँ? देखते नहीं हो, दुष्ट मेरा अपमान कर रहे हैं। क्या हॉल इनके बाप का बनवाया हुआ है?

दूसरा चपरासी—अच्छा, जाइए, हो गया।

एली.फैंट—वाह, हो कैसे गया? अभी तो बहुत कुछ होना बाक़ी है। देखूँगा। आज इस अपमान का बदला न लिया, तो मेरा नाम एली.फैंट नहीं। इन लोगों ने मुझे समझ क्या रक्खा है!

चपरासी—अच्छा, जाइए।

एली.फैंट—(जाता हुआ) जाता तो हूँ ही। जाऊँगा नहीं, तो क्या यहाँ बैठने आया था। मैं तो यहाँ थूकने भी न आऊँगा। अब एक मिनट जो यहाँ रुके, उस पर हज़ार बार लानत है!

(बड़बड़ाता हुआ एली.फैंट जाता है। दोनों चपरासी बार-बार उसे देखकर मुस्किराते हैं।)

* * *

चौथा दृश्य

स्थान—बैठने का कमरा

[मिस्टर एलीफ़ैंट और मिसेज़ एली.फैंटा चारपाई पर आमने-सामने बैठे हैं। चार बच्चे दूसरी पड़ी हुई चारपाइयों पर लेटे हैं। दो फ़र्श पर खेल रहे हैं।]

एलीफ़ैंट—(प्रसन्न होकर) सुना नहीं, आज संन्यासी महोदय को दुरुस्त कर दिया !

एलीफ़ैंटा—(आश्चर्य से) कैसा संन्यासी ? हाँ, तो क्या हुआ ?

एलीफ़ैंट—(समझाकर) अरे, एक संन्यासी आया था, कहता था, बच्चे उत्पन्न करना अच्छा नहीं। लेक्चर झाड़ने आया था। मैंने वह गच्चा दिया कि याद करता होगा बच्चा।

एलीफ़ैंटा—ऐं, गच्चा दिया ? क्या तुमने मार-पीट कर डाली ? कहता तो ठीक ही था।

एलीफ़ैंट—क्या ठीक कहता था कि बच्चे मत पैदा करो। (समझाकर) भला बताओ न, यह तुम्हारे हाथ में है, न मेरे। विधि का विधान कौन रोक सकता है ? होने दो बच्चे ! क्या करेंगे होकर ? होना तो है ही।

एलीफ़ैंटा—हाँ-हाँ, अभी तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा है। ज़रा बड़े होने दो, तब पता चलेगा।

एलीफ़ैंट—क्या पता चलेगा ? मेरी जान लेंगे ? क्या करेंगे, मुझे मार डालेंगे न, बस !

एलीफ़ैंटा—छ-सात लड़कियाँ हैं, इनकी शादी के अवसर पर मालूम होगा ! खैर, लड़के तो कमा-खा लेंगे।

एलीफ़ैंट—वैसे ही लड़कियाँ भी कमा-खा लेंगी। शादी की मुझे क्या परवा ? शादी अगर उनके भाग्य में लिखी है, तो वर दौड़ते हुए मेरे दरवाज़े पर आवेंगे।

एलीफ़ैंटा—हाँ-हाँ, क्यों नहीं, वर रक्खे हैं, दौड़े आवेंगे। (नाक सिकोड़ती है।)

एलीफ़ैंट—हाँ, दौड़ते आवेंगे, देखना। न आवेंगे, न सही। शादी ये अपने आप कर लेंगी। इन्हें ज़रूरत होगी, तो वरों की कमी नहीं। वर तो मारे-मारे घूमते हैं।

एलीफ़ैंटा—हाँ-हाँ, क्यों नहीं मारे-मारे घूमते हैं ! एक की शादी तो मुश्किल से हो पाती है, छ-छ की कहाँ से होगी ?

एलीफ़ैंट—अजी छ-छ क्या हैं, आवश्यकता हो, तो और भी चार-छ हो लें। हमें क्या करना है। हम तो जनम के साथी हैं, करम के नहीं।

एलीफ़ैंटा—और करम का कौन साथी है ?

एलीफ़ैंट—परमपिता परमात्मा, दयानिधान, जिसने द्वापर में कंस को मार भगाया, और त्रेता में रावण को रगड़ दिया।

एलीफ़ैंटा—जैसे वह हमारे-तुम्हारे करम का साथी है !

एलीफ़ैंट—हः-हः-हः-हः ! हाँ-हाँ, इसी तरह से। समझती तुम ख़ूब हो, और चाहे जो कुछ भी हो।

एलीफ़ैंटा—अच्छा, यह तो बताओ, तुमने संन्यासीजी को कुछ कहा तो नहीं ?

एलीफ़ैंट—मैंने, मैंने संन्यासी को सब कुछ कह दिया। सब नक़दानक़द कहा, उधार एक भी नहीं। मैंने सोचा, यह भी क्या समझेगा कि किसी से पाला पड़ा था। भागते ही बना आखिर में। यही समझ लो।

एलीफ़ैंटा—यह तो बहुत ही बेजा किया ! साधू-महात्मा के साथ यह व्यवहार ठीक नहीं।

एलीफ़ैंट—अरे, जाने भी दो, ऐसे साधू-महात्मा कितने देख डाले। मैं किस महात्मा से कम हूँ ? ये सब ढोंगी हैं, ख़ुद को बच्चे मयस्सर नहीं, चले हैं आबादी कम कराने। सरकार तो इस मामले में कुछ कर ही न सकी, यह आए ये उपदेश देने ! हुँ।

एलीफ़ैंटा—तुम नहीं जानते, साधू-महात्मा का शाप बच्चों पर पड़ता है। तुम्हें क्या ?

एलीफ़ैंट—शाप कैसा ? उसके शाप से मेरे बच्चों का क्या बिगड़ सकता है ? तुम जानती नहीं हो, पत्थर की मार से भी ये मरनेवाले नहीं।

मैं मर जाऊँगा, लेकिन ये मरनेवाले नहीं। समझ लो।

एलीफ़ैंटा—ऐसी कुभाषा मुँह से न निकालो। तुम न रहोगे, तो मैं क्या करूँगी?

एलीफ़ैंट—तुम, तुम वही करना, जो हमेशा करती हो। (मुस्किराता है।)

एलीफ़ैंटा—मैं जाती हूँ। (अन्यमनस्क होकर उठती है।)

एलीफ़ैंट—अरे, तुम नाराज़ हो गईं! वाह, बस ज़रा-सी बात पर! अरे, मैं हर्गिज़ नहीं मरूँगा, अब तो ख़ुश हो। हाँ-हाँ, तुम्हें मारकर, तुम्हें साथ लेकर मरूँगा। समझीं।

एलीफ़ैंटा—अब ऐसी बातें न कीजिएगा।

एलीफ़ैंट—हरे-हरे, हर्गिज़ नहीं। हम-तुम तो एक ही रास्ते के सफ़रमैना हैं। साथ-ही-साथ सफ़र तय करना है, इसका तो अहदनामा हो चुका है। ऐं, समझती हो न। (एलीफ़ैंटा मुस्किराती है।)

एलीफ़ैंट—(हाथ पकड़कर) ज़रा ग़ौर से सुनो, कितना बढ़िया दोहा है—

तुम धनिया, हम मिरचा;
चटनी में पिसेंगे दोनो जनें। चटनी०

एलीफ़ैंटा—(भाव-भंगी से) यह क्या बकते हो वाहियात।

एलीफ़ैंट—और भी सुनो—

तुम भुतनी, हम भुतना;
पीपल पर चढ़ेंगे दोनो जनें। पीपल०

एलीफ़ैंटा—हैं, ये क्या वाहियात बातें कर रहे हो। लो, मैं जाती हूँ। (उठती है।)

एलीफ़ैंट—(हाथ पकड़कर) लो, एक और सुनती जाओ—

तुम बटली, हम बटला;
चूल्हे पर पकेंगे दोनो जनें। चूल्हे०

एलीफ़ैंटा—छोड़ दो मुझे, यही सब तो दूकान पर बैठे-बैठे सीखते हो। बूढ़े हो गए, शऊर तनिक भी नहीं। बारह लड़कों के बाप हुए, ...

एलीफ़ैंट—शऊर तो मेरे जितना है, तुम्हारे सात पुरखों के भी न रहा होगा। बारह क्या, अभी न-जाने कितनों का बाप बनूँगा। क्या समझ रक्खा है। ऐं।

एलीफ़ैंटा—(जाती हुई) बनना, देखती हूँ कितनों के बनते हो?

एलीफ़ैंट—अरे, चल-चल, मैं तो देखता ही आ रहा हूँ। आज ही देख लूँगा। मैं संन्यासी थोड़े ही हूँ। मेरा नाम है एलीफ़ैंट, यद्यपि देखने में तो अब मैं 'बैंट' हो गया हूँ।

(एलीफ़ैंटा चली जाती है। एलीफ़ैंट 'तुम धनिया, हम मिरचा' गाता हुआ पुस्तकालय जाता है।)

हिंदी के प्रसिद्ध प्रहसनकार और आलोचक
पं० ज्योतिप्रसादजी मिश्र 'निर्मल'-लिखित
नवयुग-काव्य-विमर्श
हिंदी के छायावादी कवियों के संबंध में यही एकमात्र पुस्तक है। नवयुग के ३३ कवियों की कविताएँ, आलोचनाएँ और जीवनियाँ इसमें दी गई हैं। एक महीने ही में ५०० प्रतियाँ बिक गईं। अपनी प्रति शीघ्र मँगा लें। मूल्य २।), जिल्ददार ३)
संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

व्यथा

[कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक']

इस विरह-व्यथित जीवन में
सखि, है स्मृति किसकी मन में ?
युग-युग से एकत्र किए हैं
आकुल इच्छाओं के फूल ;
एक-एक कर पिरो रही अब
आशा में अपनापन भूल।
चल दिए किधर सावन में ?
सखि, है स्मृति किसकी मन में ?
जीवन के निष्ठुर क्षण गिनते
बीत गईं कितनी रातें;
शत शूलों-सी चुभती हैं अब
प्रियतम की मीठी बातें।
छिप गए कहाँ, किस वन में ?
सखि, है स्मृति किसकी मन में ?
प्रणय-सरोवर के तट पर है
उन्हें पुकारा कितनी बार ;
पहुँच सकी पर अभी न उन तक
दुखिया की यह करुण पुकार !
है आग लगी इस तन में !
सखि, है स्मृति किसकी मन में ?

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये "संगीत-सागर"-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गी, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक़्शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≡) में दिया जा रहा है। शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर "संगीत", हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र "संगीत" का इस वर्ष २०० पृष्ठ का "भातखंडे-अंक" [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए ! गाना-बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

दुबेजी के संस्मरण

चौंपट चाचा

(३)

[श्रीयुत विजयानंद (दुबेजी)]

जनवासे पहुँचकर हम लोगों ने एक बढ़िया कमरा ताककर उस पर अपना अधिकार जमा लिया। चौंपट चाचा ने भी उसे पसंद किया, बोले—"यहाँ सब तरह की सुविधा रहेगी। पाख़ाना, ग़ुसलख़ाना निकट ही है। आगे बरामदा है, यहाँ हम अपना भोजन बनाया करेंगे।"

अपने राम बोले—"बरात में आकर अपने हाथ से भोजन बनाओगे?"

"अपने हाथ से! जे तुमन्ने खूब कही। अभी रेल में तो कहत हते कि हम खिचड़ी बनाय दश्रो करिहैं।"

अपने राम बोल उठे—"किसने? मैंने? कदापि नहीं, मुझे खिचड़ी बनानी आती ही नहीं।"

"रोटी-दाल बनाइबो आवतु है?"

"मुझे तो कुछ भी बनाना नहीं आता।"

"तब तौ तुम बेटा, ब्राह्मणन में कुलतारन पैदा भए। एक तौ ब्राह्मण, सोऊ गौड़! गौड़ ब्राह्मण-जाति तो रोटकरा-जाति है। ऐसी जाति में पैदा हैकै जो रोटी बनाइबो न जानो, तो धिक्कार है!"

अब अपने राम को कुछ क्रोध आ गया। चाचा से कहा—"वाह चाचा! यह आपने अच्छी कही। ब्राह्मणों का कार्य बस रोटी बनाना ही तो रह गया है।"

"और नहीं, तो तुम नैमिषारण्य में जायकै तपस्या करौगे? सोऊ हौल तो नायँ दिखाय परतु है।"

मुरारी बोल उठा—"चाचा, हम बना दिया करेंगे, आप घबराते क्यों हैं?"

अपने राम का रोष दूर नहीं हुआ था। अतएव अपने राम बोले—"आप भी तो उसी रोटकरा-जाति के हैं, आपको बनाना आता है?"

चाचा मुस्किराकर बोले—"अरे, कहा बातैं करतु हौ, हमारो स्वास्थ्य ठीक होतो, तो हम सारी बरात को बनाय-बनाय खवाय देते। समझे पूत! हमसे दो-चार चीजें बनाइबो सीख लेओ, तो अपनो पेटऊ भर सकौगे, और कमाइबे-खाइबे लायकऊ है जाओगे, नहीं तो एक-न-एक दिना बेधरम भए धरे हौ।"

घनश्याम बोला—"देखो चाचा, हम लोगों ने आपका बिस्तर इधर लगा दिया, ठीक है न?"

"वाह बेटा! तुम्हें कुछ सिखाना है! फ़र्स्ट क्लास!"

इसी समय बरात के अन्य लोग आने लगे। गृह-स्वामी चाचा को ढूँढ़ते हुए आए, और चाचा से बोले—"कहिए शर्माजी! आपका स्थान ठीक हो गया?"

चाचा मुस्किराकर बोले—"हमारो स्थान ठीक भए तो युग बीत गओ, तुम अपनी कहौ, औ चौरासी भ्रम रहे हौ।"

गृह-स्वामी बोले—"आपने स्थान तो बड़ा अच्छा ले लिया। लेकिन रहिएगा इन्हीं लड़कों के साथ, क्यों न?"

"इन्हीं लड़कों की बदौलत तो यह जगह मिली जनाब, वरना ईंजानिब भी आपकी तरह मारे-मारे घूमते होते।" चाचा गंभीर होकर बोले।

"ख़ैर, हमें भी कहीं-न-कहीं ठिकाना मिल ही जायगा।" यह कहकर गृह-स्वामी चले गए।

चाचा मुस्किराकर बोले—"जे जगह देखकर आँखैं फटि गईं भाई साहब की। हम तुम लोगन के साथ न होते, तो जे जगह छिन जाती। भाई साहब लहू को घूँट पी के चले गए।"

रामभरोसे बोला—"इसीलिये तो हमने आपको साथ ले लिया।"

चाचा बोले—"अच्छा भई, अब हमारी खिचड़ी बननी चाहिए। तुम लोग तो तीन-तीन बार भकोसे बैठे हो, हमारे पेट में चूहे कूद रहे हैं।"

"अभी बनाए देते हैं।"

"अच्छा, तो हम ज़रूरियात से फ़ारिग़ होते हैं, तब तक हमारी खिचड़ी बन जाय।"

"लेकिन सामान आप मँगा दीजिए। हमारे कहने से नहीं आवेगा।"

"हाँ-हाँ, यह मानी।"

चाचा गृह-स्वामी के पास गए, और पाँच मिनट पश्चात् आकर बोले—"हम कह आए हैं, सामान सब आया जाता है।" इसके पश्चात् अपने ट्रंक से लोटा निकालकर ग़ुसलखाने की ओर चले गए।

घनश्याम बोला—"यह खाना बनाने की पख़ बुरी लगी।"

अपने राम बोले—"आप लोगों ने अपने ही आप तो लगाई। इसीलिये मैं साफ़ निकल भागा। अब जैसा किया, वैसा भुगतो। इस मुरारी को बनाने दो। यही बहुत कह रहा था—'हम बना दिया करेंगे।' बनाओ बच्चा!"

मुरारी बोला—"यदि ऐसा न कहता, तो चाचा अपने लोगों के साथ न रहते। तुम देखे जाओ। आज के सिवा यदि फिर कभी चाचा बनाने को कहें, तो कहना।"

"तो क्या करोगे?"

"जो करेंगे, मालूम हो जायगा।"

अपने राम बोल उठे—"हम समझ गए, जो आप करेंगे।"

"क्या समझ गए?"

"खिचड़ी ख़राब करके धर दोगे, वह उनसे खाई न जायगी। बस, फिर आपसे कभी बनाने को न कहेंगे।"

घनश्याम बोला—"ऐसा करोगे, तो बेजा बात होगी। एक तो बेचारों ने दिन-भर कुछ खाया नहीं, ऊपर से तुम खिचड़ी ख़राब कर दो। यह बात हमें नापसंद है। ऐसा मज़ाक़ ठीक नहीं, जो उन्हें कष्ट पहुँचे।"

अपने राम बोले—"वाक़ई! अगर यह करोगे, तो हम लोग तुम्हारा भंडाफोड़ कर देंगे।"

मुरारी बोला—"भई, इरादा तो मेरा यही था कि एक तो खिचड़ी बिलकुल पानी-जैसी बनाऊँ, जो थाली में बही-बही फिरे, और दूसरे ख़ूब नमक झोंक दूँ।"

"यह बिलकुल ग़लत बात है। भूखे आदमी के साथ ऐसा विश्वासघात नहीं करना चाहिए।" घनश्याम बोला।

मुरारी लज्जित होकर बोला—"हाँ, बात तो ठीक कहते हो। फिर और कौन युक्ति की जाय?"

रामभरोसे बोल उठा—"वह युक्ति मुझसे पूछो।"

"बोलो।"

"अभी नहीं, ऐन मौक़े पर कर दूँगा।"

"बता तो दो! कहीं कुछ ऊटपटाँग कर बैठो।"

"ऊटपटाँग कुछ नहीं होगा, आप निश्‍चिंत रहिए।"

थोड़ी देर में दो आदमी सामान लेकर आए। एक के हाथ में एक बड़ी अँगीठी थी, दूसरा खिचड़ी, घी, पापड़ तथा कुछ अचार लिए हुए था। सामान रखकर उनमें से एक बोला—"बड़े पंडितजी ने कहा है, आप लोग जल्दी बना-खा लें, क्योंकि साढ़े पाँच बजे बरात उठेगी।"

घनश्याम अपनी रिस्टवाच देखकर बोला—"चार बजे हैं, केवल एक घंटा समझिए। एक घंटे में खिचड़ी तैयार हो जायगी?"

"तैयार तो आध घंटे में हो जायगी।"

"चाचा को आने दो।"

पंद्रह मिनट बाद चाचा आए। उनके आते ही एक आदमी जल-पान की तश्तरियाँ लेकर आया—एक तश्तरी फलों की, एक नमकीन की और साथ में चाय। हम लोगों ने तश्तरियाँ रखवाकर चाचा से कहा—"चाचा, साढ़े पाँच बजे बरात उठेगी, तब तक शायद ही खिचड़ी बन सके। हमारी राय तो यह है कि आप इस समय फल खा लीजिए, बरात से लौटकर फिर खिचड़ी पकाएँगे।"

चाचा फलों की तश्तरियाँ देखकर बोले—"अच्छी बात है। लेकिन एक तश्तरी में हमारा क्या होगा?"

"एक क्यों, चार हैं।"

"तुम लोग भी खाओगे?"

"नहीं, हम लोग नमकीन खा लेंगे, और चाय पी लेंगे। हमें भूख नहीं है। आप चारो तश्तरी खा लीजिए। इस समय जल्दी-जल्दी में खिचड़ी न पकाते बनेगी, न खाते। यों जैसी आपकी आज्ञा हो।"

चाचा बोले—"बात तो ठीक कहते हो। अच्छा, अभी फल खाए लेते हैं, लौटकर खिचड़ी पकेगी—निश्‍चिंतता के साथ।"

चाचा ने फलों की तीन तश्तरियाँ खाली कर दीं, और थोड़ी चाय पी ली। खा-पीकर बोले—"चलो, इस समय तो कुछ सहारा हो गया, अब फ़िलहाल कोई आवश्यकता नहीं। रात को देखा जायगा। और, यह चाय का अच्छा रवाज चला है। गरम पानी में ज़रा-सा दूध मिलाकर पिला दिया—बला टली। पहले दूध चलता था, उससे कुछ सहारा भी हो जाता था। अब इस समय आध सेर दूध मिल जाता, तो आनंद हो जाता। चाय पिलाते हैं!"

"तो दूध मँगवा दें?"

"अरे, अब दूध-वूध कुछ नहीं चाहिए। इतना ही काफ़ी है। रात को देखा जायगा।"

बरात के साथ चलने के समय चाचा ने पर-पुर्ज़े झाड़े। ऊनी अचकन, ऊनी पाजामा पहना, और ऊनी साफ़ा सिर पर बाँधा।

रामभरोसे बोला—"चाचा, यह पोशाक बढ़िया रही।"

चाचा बोले—"पहले की जेई पोशाक है। अब आजकल वह सारो दुमकटो कोट चलो है, और वह पतलून। जाके पहिरबे से अच्छो-खासो आदमी लमटंगो-जैसो दिखाय परतु है। राम-राम! जाके ग्रह-दशा बुरे आवैं, सो पहने।"

"कोट-पतलून तो बुरी पोशाक नहीं है चाचा!"

"बुरी नहीं है! अच्छाई वामें कहा है?"

"चुस्त पोशाक है, उसमें फुर्ती रहती है।"

"फुरती रहतु है, और जे कोट-पतलून नायँ पहिरतु हैं, वे तो मुर्दासंख बने पड़े रहतु हैं। फुरती जेइ रहतु है कि जहाँ कुर्सी न होय, वहाँ बैठ नायँ सकतु हैं। जब बैठिबे से लाचार है, तब तो फुरती रहोई चाहे। पतलून तो कुली-कबाड़िन की पोशाक है। जासें बैठ न सकैं, खड़ेई रहैं। खड़े रहैंगे, तो काम करैंगे—बैठ जायँगे, तो आलस होयगो, सोय जायँगे।"

"यह आप कैसे कहते हैं?"

"जैसे कह रहे हैं, वैसेई कहतु हैं। पतलून पर बैठो

बाँधी जातु है। कहो हाँ ! पेटी बाँधे से कमर कसि जातु है। कहो हाँ ! सो जब कमर कसी है, तब आराम कहाँ ! कहावतऊ है कि कमर कसे ठाढ़े हैं। 'हम कमर कसे सब वीर खड़े, ज्यों ही प्रभु-आज्ञा पावेंगे।'"

अंतिम वाक्य एक गीत का चरण था, जिसे चाचा ने गाना आरंभ किया।

इसी समय बड़े पंडितजी आए। वह चाचा को गाते देखकर बोले—"वाह शर्माजी, गाना उड़ रहा है!"

"और नहीं तो, बरात में आयके क्या रोवेंगे? बुढ़ापा ने तिहारी बुद्धि भ्रष्ट कर दीनी।"

"सो कोई चिंता की बात नहीं, आप ख़ूब गाइए। जी चाहे, तो नाचिए, मना कौन करता है।"

"तुम अपनो ब्याह करौ, तो हम नाचऊ सकत हैं।"

"भतीजे के ब्याह में नाचिए, हर्ज क्या है?"

"सो रीति तो हमारे खानदान में अभी तक रही नायँ कि भतीजे के ब्याह में चाचा नाचै। अब तुम प्रचलित करिबो चाहौ, तो करौ।"

"यदि की जाय, तो कुछ हर्ज है?"

"हर्ज काहे की है। नाम है जायगो कि फलाने ने जे रीति चलाई। और तो तुमन्ने कछु करतूत करी नायँ—जेई सही।"

पंडितजी हँसने लगे। हँसते हुए बोले—"अच्छा, चलिए, सब तैयार हैं।"

"सब तैयार हैं, तो हम कौन दुबले हैं, हम सबसे पहले तैयार हैं। तुम चलो, ज़रा ये लड़के तैयार हो जायँ, बस, हम भी आए।"

"लड़कों का साथ न छोड़िएगा?"

"लड़कों की तो सब माया ही है।"

पंडितजी चले गए।

कुछ क्षणों में हम लोग भी तैयार हो गए। आगे-आगे चाचा और पीछे-पीछे हम लोग चले।

जहाँ सब लोग एकत्र थे, वहाँ पहुँचते ही दो-चार आदमियों ने चाचा को घेर लिया। एक बोला—"आपके तो दर्शन ही दुर्लभ हो रहे हैं, पता ही नहीं लगता कि किस भट में घुमे हैं।"

"भट की याद तुम्हैं अभी नायँ भूली है। (अन्य लोगों से) जे भेड़िया की माँद में मिले हते। साल-भर के हते, तब भेड़िया इन्हैं उठाय लै गओ हतो। जब पाँच बरस के हते, तब मिले हते। छ महीना तक जीभ से पानी चाटत रहे। कपड़ा पहिराए जायँ, तो चिथरा-चिथरा उड़ाय देयँ। सो बेचारन को सोई याद आवतु है।"

चाचा की बात पर लोगों ने अट्टहास किया। वह बेचारे झेंपकर बोले—"खैर, हम तो लड़कपन में माँद में रहे, आप तो बुढ़ापे में माँदसेवी हुए हैं।"

"बुढापा में तो भगवानई माँदसेवी बनाय देतु है।"

एक दूसरे महाशय बोले—"भाई साहब, आपको समधिन पूछ रही थीं।"

"अच्छा, जे काम तुमन्ने कब से आरंभ कीनो। बेकार बैठे होउगे। तुमन्ने सोची, चलौ जेई सही। 'रोटी तो कमा खाय किसी तौर मुछंदर।'"

वह महाशय हँसते हुए बोले—"जवानी में भाई साहब का रूप-यौवन देखने क़ाबिल था। एक ही गभरू जवान थे।"

तीसरे महोदय ने कहा—"और, अब क्या कुछ कम हैं। उमर को देखते हुए अब भी आप सैकड़ों में एक हैं।"

चाचा गंभीर होकर बोले—"भई, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। अगर स्वास्थ्य ठीक रहता होता, तो देखते, अब भी हम सैकड़ों जवानों से अच्छे होते।"

"होते नहीं, हैं कहिए साहब!"

चाचा मुँह बनाकर बोले—'स्वास्थ्य गड़बड़ रहता है।"

"मुझे तो आपके स्वास्थ्य में कोई गड़बड़ी दिखाई नहीं देती।"

"हाँ, तुम्हें तो जब कोऊ खटिया पर पड़ो होय, तो स्वास्थ्य खराब दीखै। बिना खटिया नजर पड़े, तो तुम्हें स्वास्थ्य को ज्ञानई नायँ होतु है।"

इसी समय बाजे बजने लगे, और उनके शोर में वार्तालाप करना कठिन हो गया।

बरात चली। लड़कीवाले के द्वार पर पहुँची। वहाँ लड़कीवाले की ओर के कुछ आदमियों से न-जाने किसने चौंघट चाचा को बता दिया। एक आदमी, जो चाय पिला रहा था, चाचा के सामने आकर बोला—"लीजिए चौंघट चाचा, चाय पीजिए।"

चाचा उसे बड़े ग़ौर से देखकर बोले—"तुम तौ लड़किनिया के मामा हौ न—चौं बेटा ? (अन्य लोगों से) इनकी महतारी को और हमारो बड़ो दोस्तानो हतो। जे जब पाँच बरस के हते, तब वह इन्हें छोड़के मरी हती। तब से इनके घर हमारो आनो-जानो छूट गओ। तब से आज दिखाई पड़े, पर हमन्ने तुरत पहचान लओ। (उस व्यक्ति से) और बेटा, सब कुशल-मंगल ! तुम्हारे बाप परचूनी की दूकान धरे हते, सो चली जातु है ?'

इस पर इतने ज़ोर का कहकहा लगा कि वह बेचारे चुपचाप वहाँ से सटक गए। चाचा आँखें सिकोड़कर मुस्किराते हुए बोले—"कल के लड़िका हमसे मजाक करन को चले हैं। इन-जैसे लड़िका तो हम पढ़ाय के छोड़ दए, सो जो बखत में कमाय-खाय रहे हैं।"

थोड़ी देर में एक महाशय और आए। उनके साथ दो आदमी और थे, जो पानों की तश्तरियाँ लिए थे। जो महाशय साथ थे, वह तश्तरियाँ लिए हुए व्यक्तियों से बोले—"यही हैं ?"

इसके पूर्व कि वह कुछ जवाब दें, चाचा बोल उठे—"हाँ, हमी हैं ; पर जा बखत के बीच में हम कछू बात नायँ कर सकत हैं। (अन्य लोगों से) इनकी एक बिटिया है कुँवारी—सत्ताइस बरस की है गई है। सो ब्याह खातिर बिलबिलाय रहे हैं। (उस व्यक्ति से) ब्याह है जायगो, घबराओ नहीं। हमारो एक सारो है—चालीस-बयालीस बरस की उमर होयगी। बाकी चार मर चुकी हैं—आठ-नौ बच्चे हैं। वासे हम रिश्ता कराय देंगे, निश्चिंत रहो।"

लोगों ने पुनः अट्टहास किया।

वह हतबुद्धि होकर चाचा का मुँह ताकने लगे। चाचा आँखें सिकोड़कर बोले—"जाओ, काम करौ जायके, हमारे फेर में मत परौ। समझे जमादार !"

"यह जमादार हैं ?"

"हाँ, सफ़ाई के जमादार हैं।"

इस पर फिर लोग हँसे। वह महाशय भी झेंपकर आगे बढ़ गए।

थोड़ी देर में बरात वापस हुई।

(असमाप्त)

नाग-पाश से भी विशेष दृढ़ रोग के पाश से मुक्त होने का निश्चित उपाय

आतंकनिग्रह गोलियाँ

इन गोलियों के सेवन से जठराग्नि को बल मिलता है, अन्न पर रुचि होती है, रुधिर सुधरता है, और वीर्य की अति वृद्धि होती है।

क़ीमत ३२ गोलियों की डिब्बी का १)

आतंकनिग्रह औषधालय

जामनगर—काठियावाड़

लखनऊ एजेंट—इंद्रचंद ऐंड कं०, चौक

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
—हरएक घर में रहना चाहिए—

चाँदनी-जैसी शीतल

झंडु का (शिलाजीत-युक्त)

चंद्रप्रभा गुटी

मूत्र-रोग और धातु-विकार की
अद्वितीय औषध। आज ही आजमाइए!

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४
यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।
लखनऊ के „ „ —मातावदल पंसारी, अमीनाबाद।

कुछ सुंदर पुस्तकें

१. खाद (ग्रामोपयोगी)—लेखक, श्रीमुख्त्यारसिंह वकील ; मूल्य
२. भारत में कृषि-सुधार (,,)—लेखक, श्रीपं॰ दयाशंकरजी दुबे एम्॰ ए॰ ; मूल्य
३. बाग़-बगीचा (,,)—लेखक, श्रीपं॰ कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय ; मूल्य
४. घंटा (उपन्यास)—लेखक, पांडेय श्रीबेचन शर्मा 'उग्र' ; मूल्य
५. पंचप्रसून (,,)—लेखक, स्व॰ श्रीप्रेमचंदजी ; मूल्य
६. प्रेम-निकुंज (,,)—लेखक, श्रीपं॰ कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय ; मूल्य
७. कोहार का राजा (,,)—अनुवादक, श्रीपं॰ गिरीशचंद्र जोशी ; मूल्य
८. अमर लालसा (,,)— ,, ,, ,, ,, मूल्य
९. चुंबन (नाटक)—लेखक, पांडेय श्रीबेचन शर्मा 'उग्र' ; मूल्य
१०. जागृति (,,)—लेखक, श्रीपं॰ गिरीशचंद्र जोशी ; मूल्य
११. सुमनांजलि (काव्य)—संपादक, श्रीपं॰ केदारनाथ अवस्थी बी॰ ए॰, एल्-एल्॰ बी॰ ; मूल्य
१२. प्रेम-पत्र (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, श्रीपं॰ गिरीशचंद्र जोशी ; मूल्य
१३. बाल-वाटिका, तीसरा भाग (बालकोपयोगी)—संपादक, श्रीपं॰ सूर्यदेव ओझा बी॰ ए॰, एल्-एल्॰ बी॰ और श्रीपं॰ चंद्रदीपनारायण त्रिपाठी ; मूल्य
१४. लुटिया की करामात (सचित्र, बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीबैजनाथ केडिया ; मूल्य
१५. काला साहब (,, ,,)— ,, ,, ,, मूल्य
१६. भोंदूराम का भोंदापन (,, ,,) ,, ,, ,, मूल्य
१७. मिया मुछंदर (,, ,,) ,, ,, ,, मूल्य
१८. मीठी-मीठी कहानियाँ (,, ,,) ,, ,, ,, मूल्य
१९. अकड़बेग ख़ाँ आगा (,, ,,) ,, ,, ,, मूल्य
२०. पाँड़ेजी का पोथा (विनोद-पूर्ण, व्यंग्यात्मक आलोचना)—लेखक, श्रीरामाशीषसिंह ; मूल्य
२१. आधुनिक भारत (ऐतिहासिक)—लेखक, श्रीप्यारेलाल गंगा राड़े ; मूल्य
२२. अमर कीर्ति (जीवनी)—संपादक, श्रीपं॰ गंगाधर शर्मा साहित्यभूषण ; मूल्य
२३. आदर्श निबंध—संपादक, साहित्यशास्त्री श्रीपं॰ उपेंद्रशंकर द्विवेदी कविभूषण ; मूल्य

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

अमर कलाकार शरच्चंद्र

[श्रीयुत भारतभूषण अग्रवाल]

सन् १९०७ के लगभग की बात है, बँगला के सुप्रसिद्ध साहित्यिक पत्र 'भारती' में एक अपरिचित लेखक की एक कहानी प्रकाशित हुई। उसका नाम था 'बड़ी दीदी'। कहानी के रचना-सौष्ठव और लेखक की अद्वितीय प्रतिभा के कारण बँगला-साहित्य-जगत् में एक हलचल मच गई, और उस शक्तिमान् लेखक की खोज होने लगी। परंतु लेखक के प्रवास के कारण लोगों को उस समय निराश ही होना पड़ा। साहित्य-प्रेमी उसके परिचय को उत्सुक हो उठे थे।

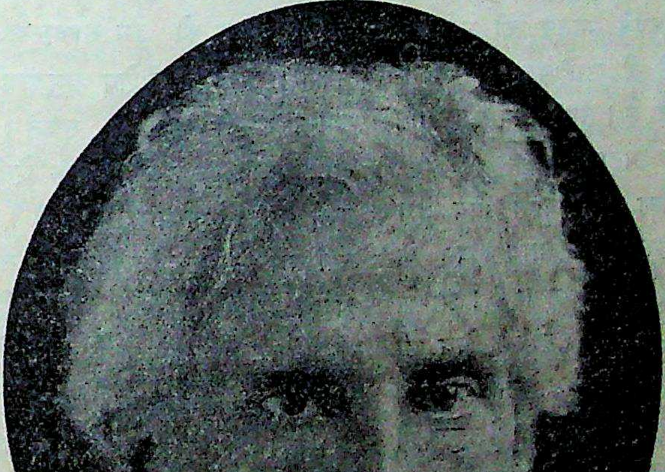

अमर कलाकार शरच्चंद्र चटर्जी

दीर्घ प्रतीक्षा के उपरांत एक दिन संध्या की धूमिल वेला में लोगों ने देखा एक दीर्घकाय जलयान से उतरते हुए एक मलीन, साधारण नवयुवक को। यह व्यक्ति और कोई नहीं, आज के विश्वविख्यात शरद बाबू ही थे।

जिस महान् कलाकार की प्रथम रचना ने ही साहित्य-संसार में एक नवीन लहर उमड़ा दी, और जिसकी अमर कृतियों ने बँगला को अत्यधिक गौरव प्रदान किया, वही साहित्य-सेवी आज हमारे मध्य में नहीं है। अल्पकाल में ही भारतवर्ष के अनेक साहित्य-सुमन अपने सौरभ से इस देश का उपवन सुवासित करते हुए मुरझाते चले गए हैं। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि शरद बाबू उन सबमें श्रेष्ठ और प्रथम उल्लेखनीय हैं। वाणी की वीणा के जिस तार ने सारे भारतवर्ष में ऐसा मनोमुग्धकारी कंपन मचा दिया था, जिसकी प्रतिध्वनि प्रत्येक हृदय में स्पंदित हो रही थी, सहसा आज वही तार मूक हो गया। भारतवर्ष

के ऐसे कलानिधि को यों अस्त हुआ देख किसे दुःख न होगा।

शरद बाबू नव-युग के बंगाल के सर्वश्रेष्ठ गल्पकार हैं। छोटे-छोटे उपन्यासों और कहानियों में उच्च कोटि की कला का समावेश करने में वह अनेक स्थानों पर रवींद्र बाबू से भी ऊँचे ठहरते हैं। ऐसी मँजी हुई लेखनी का कोई लेखक अभी तक हिंदी में तो हुआ ही नहीं। अपने विचित्र जीवन के अमूल्य अनुभवों और मानव-अध्ययन द्वारा अपने समाज के जो सुंदर चित्र उन्होंने उपस्थित किए हैं, वे युगों तक अपनी कहानी आप ही सुनाते रहेंगे। जिस मर्मस्पर्शी, सीधे-सादे, भोले ढंग से वह अपने पाठकों को अपने मानस की उद्वेलित लहरों से परिचित कराते हैं, उन्हें पढ़-पढ़कर अंग-अंग में कंपन मच उठता है। सहज सत्य की भाँति हमें उस पर विश्वास हो आता है।

शरद बाबू को ग्रामीण जीवन बहुत प्रिय है। आपका जन्म और बाल्य काल ग्राम्य जीवन के स्वच्छंद वायुमंडल में ही व्यतीत हुआ है। आपके उपन्यासों में भी हमें विशेषतः ग्रामों के चित्र ही मिलते हैं। लेकिन ग्राम्य जीवन के जिन-जिन दृश्यों का चित्र उन्होंने अंकित किया है, वे बिलकुल ही नवीन हैं। हिंदी के प्रसिद्ध लेखक प्रेमचंद भी यद्यपि ग्रामों के ही लेखक हैं, लेकिन आपकी और शरद की कथा-वस्तु में कोई समानता नहीं। हो सकता है, यह प्रांतों की विभिन्नता के कारण हो। लेकिन यह निश्चित है कि शरद के ग्रामों में आर्थिक समस्या को प्रधान स्थान प्राप्त नहीं है। 'लेन-देन' के अतिरिक्त हमें किसी उपन्यास में भी बार-बार लगान और रुपयों की याद नहीं दिलाई जाती। यहाँ तक कि 'देहाती समाज' में भी अन्य बुराइयों पर लेखक की उतनी ही दृष्टि है, जितनी आर्थिक पर। शरद को तो ग्रामीण परिवारों का चित्रण ही अत्यंत प्रिय है। उनको परिवारों के लेखक के रूप में यथेष्ट सफलता भी प्राप्त हुई है। समाज एक शक्ति के रूप में—एक इकाई के रूप में उनके सामने नहीं आता। 'देहाती समाज' की बात हम छोड़ सकते हैं। ग्राम्य जीवन के जिस अंग का आपने दिग्दर्शन कराया है, उसके लिये कितनी पैनी दृष्टि की आवश्यकता है, इसे हम उनके ग्रंथ पढ़कर ही समझ सकते हैं।

अन्य किसी विषय पर विचार करने से पहले हम शरद के पात्रों के संबंध में एक बात कह देना आवश्यक समझते हैं। शरद के प्रत्येक चरित्र में हम व्यक्तित्व का आभास पाते हैं, किसी में कम, किसी में अधिक। लेकिन शरद के किसी भी विशिष्ट पात्र को हम साधारण कहकर नहीं टाल सकते। उसे एक विशेष समुदाय का प्रतिनिधि-मात्र समझकर ही नहीं रह सकते। उनके चरित्रों में शक्ति है, अपनापन है। एक ऐसी विशेषता है, जो उन्हें महत्त्व-पूर्ण बना देती है। लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि वह समाज से उठा हुआ अलग या असत्य चित्र है। नहीं, पूर्ण सत्य और संभावित। वह समाज में साँसें लेनेवाला व्यक्ति ही है, पर कुछ अपनापन रखता है। उसमें व्यक्तित्व है। यही विशेषता या विभिन्नता शरद के नीच-से-नीच पात्र को भी गिरने नहीं देती। उससे हम शायद घृणा भी नहीं कर पाते। 'देहाती समाज' के 'जीवानंद' की नीचता पर हमें स्थान-स्थान पर क्रोध आता है, हम अपनी बेबसी पर खीझ प्रकट कर रह जाते हैं, लेकिन अंत तक पहुँचते-पहुँचते हम एक ऐसे दृश्य पर आते हैं, जहाँ से उसे हटा देने की हममें क्षमता नहीं है। 'विजया' के 'विलास-विहारी' को भी हम यही कह सकते हैं। दुःख है, हिंदी में हमें अभी ऐसे पात्र नहीं मिलते।

शरद ने पारिवारिक जीवन का अच्छा अध्ययन किया है। अपने जीवन में उन्हें इसके लिये कई अवसर प्राप्त हुए। बालकपन से ही वह अपने

मामा के यहाँ रहते थे। शिक्षा समाप्त होने पर भी वह दो-एक परिवारों में आश्रित की भाँति रहे थे, और इधर-उधर भटकते फिरे थे। निश्चय ही उन्हें अपने इन अनुभवों ने ही पारिवारिक समस्याओं पर सोचने का अवसर दिया है, और लगभग प्रत्येक उपन्यास में हम ऐसी समस्याओं और उनके विवेचनों को पाते हैं। 'मझली दीदी' में सौतेले भाई पर बहन का अत्याचार बहुत ही कुशलता-पूर्वक चित्रित है। 'चरित्र-हीन' में स्थान-स्थान पर ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। लेकिन उन सबसे अधिक प्रभावशाली पारिवारिक चित्रण उनका छोटी-छोटी गल्पों में हम पाते हैं। 'सुमति' में बालकराम और उसकी भावी का जो वात्सल्य और करुण-रस-पूर्ण चित्रण हुआ है, वह किसी भी समाज के लिये गौरव की वस्तु हो सकती है। 'काशीनाथ' में एक मामा के यहाँ आश्रित युवक का विचित्र परिस्थितियों में बड़ा सुंदर वर्णन है। इसी प्रकार 'निष्कृति' में तीन भाइयों के पारिवारिक संबंधों का बहुत ही चित्ताकर्षक विवेचन है।

परिवार के अतिरिक्त शरद बाबू समाज की कुरीतियों के प्रति उपेक्षित नहीं रहे। यथास्थान हमें उनका आभास मिलता है। 'लेन-देन' और 'पल्ली-समाज' तो इससे भरे पड़े हैं। समाज की रूढ़ियों के आधार-स्तंभ वृद्ध नर-नारियों का वर्णन शरद बाबू बड़े चाव और मनोयोग से करते हैं। ऐसे अवसरों पर आपकी भाषा में एक चटपटापन आ जाता है, जो व्यंग्य का आभास दिया करता है। इन लोगों के बात करने के ढंग, शब्दावली और विचार-क्रम का शरद को बहुत ही सुंदर और संपूर्ण अनुभव रहा होगा। इनके कपट-भरे व्यवहार और कथोपकथन शरद के उपन्यासों में भले प्रकार वर्णित हैं।

शरद बाबू के उपन्यासों के प्लाट सुलझे हुए होते हैं। अनावश्यक भरती या गर्द-गुबार को वह पसंद नहीं करते। अधिक पात्रों को भी आप अच्छा नहीं समझते। इसलिये पाठक को इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं रहती। घटनाओं का घटाटोप आपको प्रिय नहीं। 'चरित्र-हीन' के अतिरिक्त किसी उपन्यास में हम घटनाओं की पात्रों पर प्रधानता नहीं पाएँगे। घटनाएँ आपमें महत्त्व-पूर्ण नहीं—पात्र का चरित्र, उसका अपनापन उसे महत्त्व-पूर्ण कर देता है। असाधारण मृत्यु आदि अप्रयोजनीय बातों में भी आपकी रुचि नहीं। विभिन्न परिस्थितियों में अपने पात्रों की हलचलों का सूक्ष्म पर्यवेक्षण आपको बहुत प्रिय है। आपके उपन्यासों में मनोविज्ञान की सामग्री खूब बिखरी मिलती है। बिना मस्तिष्क का विश्लेषण किए ही शरद बाबू अपने पात्रों को लेखक के सम्मुख इस प्रकार उपस्थित करते हैं कि पाठक पलक मारते ही उसे समझ लेता है।

शरद बाबू के उपन्यास बहुधा छोटे होते हैं, उनमें ही उनकी प्रतिभा खूब निखरती है। 'चरित्र-हीन' और 'लेन-देन' के अतिरिक्त उनका कोई उपन्यास २०० पृष्ठों से अधिक लंबा नहीं। शरद बाबू की कहानियाँ और भी अधिक मार्मिक एवं कला-पूर्ण होती हैं। 'पथ-निर्देश' और 'काशी-नाथ' कहानियाँ होते हुए भी उपन्यासों से अधिक महत्त्व-पूर्ण हैं। उनमें उनके पात्र अनुचित रूप से बढ़ नहीं पाते—एक सीमित क्षेत्र में ही अपना अभिनय करते रहते हैं। 'चरित्र-हीन' में शरद को वह पूर्णता और स्पष्टता न मिल सकी, जो उनकी 'बाम्हन की बेटी' में है। उसका भारीपन ही शरद की कला के विरुद्ध है। 'लेन-देन' भी ऐसा ही हो जाता, यदि उसमें षोडशी का अलौकिक चित्रण आकर्षक न होता।

शरद बाबू के उपन्यास हमें बहुत प्रिय हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है उनका नारी-चरित्र-

चित्रण। शरच्चंद्र में नारियों के प्रति स्वाभाविक करुणा थी। और, यही कारण है, उनके प्रत्येक उपन्यास में हमें नारी-पात्र अत्यंत महत्त्व-पूर्ण, सधे हुए और प्रधान मिलेंगे। हमें तो कभी-कभी ऐसा लगने लग जाता है कि शरद की कला का मर्म यही है कि एक नारी के चरित्र को विभिन्न परिस्थितियों में रखकर अध्ययन किया जाय। अपने स्त्री-पात्रों पर शरद ने इतना अधिक ध्यान दिया है कि किसी भी कहानी में स्त्री ही हमारे सम्मुख प्रधान हो उठती है।

शरद बाबू के स्त्री-पात्रों में आपस में यथेष्ट समता दिखाई पड़ती है। ऐसा आभास होता है कि शरद के मस्तिष्क में दो-तीन मुख्य नारियों का चित्र था, और परिस्थितियों के अनुसार विभिन्नताएँ लिए वे ही समय-समय पर उनके उपन्यासों में सजग हो उठी हैं। इस सत्य को हम विश्लेषण करके सिद्ध कर सकते हैं। स्थितियों की विभिन्नता और विषमता के कारण यद्यपि उनका बाह्य रूप समान नहीं रह पाया है, तथापि उन सबके अंतस्तल में एक ऐसी समानता विद्यमान है, जो हमें तत्काल ही पहचान लेने में सहायक होती है।

'श्रीकांत' में चित्रित 'राजलक्ष्मी' शरद की पहली कोटि बनाती है। वह अपने में कुछ लिए है—ठोस है। जैसे उसे ठोक-पीटकर बदलने योग्य शक्ति किसी में है ही नहीं। और, हृदय में एक प्रेम है, अछूता प्रेम—बिलकुल निष्कलंक। उसका उपभोग स्वयं भी इसलिये नहीं करती कि कहीं वह कम न हो जाय। लेकिन बार-बार अवसर पर हम सदा उसे उपस्थित पाते हैं। संसार उसके विरुद्ध कैसी ही भावना क्यों न रक्खे, उसे जैसे कुछ चिंता ही नहीं। यह बात मानो इतनी नगण्य है कि ध्यान देने योग्य ही नहीं। शरद को यह कोटि कदाचित् बहुत ही प्रिय है, तभी उन्होंने अपने दो बृहत् उपन्यासों में इसका आश्रय लिया है। 'चरित्र-हीन' की 'सावित्री' इस कोटि में है।

दूसरी कोटि 'देवदास' की 'पार्वती' द्वारा बनती है। स्वाभिमान पहला गुण—प्रेम दूसरा। दुःख भोगना शायद इन दोनो वृत्तियों की उपस्थिति में आवश्यक ही है। 'पथ-निर्देश' की 'हेम-नलिनी' और 'बाम्हन की बेटी' की 'संध्या' इसी कोटि में आती हैं। किस प्रकार ये अपने स्वाभिमान के लिये अपने चारो ओर प्रबल तूफ़ानों का ढेर खड़ा कर लेती हैं, और फिर किस प्रकार अपनी वह्नि में आप ही जल-जलकर घुटती रहती हैं, इसका आभास शरद की ही लेखनी दे सकती है।

एक कोटि और हमें सर्वत्र प्राप्त होती है। वह है 'दत्ता' की प्रधान पात्री 'विजया'। प्रधान होते हुए भी इनके हृदय में एक ऐसी शक्ति का अभाव है, जो अपने अधिकारों की माँग आप कर सके। फल-फूलों से सज्जित लता की भाँति ये प्रबल वायु में स्थिर नहीं रह पातीं—वह जाना ही पड़ता है। 'गृह-दाह' की 'अचला', 'चरित्र-हीन' की 'किरणमयी' और 'पंडितजी' की 'कुसुम' इसी कोटि में आती हैं।

'लेन-देन' की 'षोड़शी' हमें बहुत अच्छी लगती है। वैसी और कोई स्त्री-पात्र हमें शरद के उपन्यासों में नहीं मिलती। 'नव-विधान' की उषा में हम कुछ-कुछ उसी की झलक देखते हैं, लेकिन परिस्थितियाँ इतनी बदली हुई हैं कि हम अपने इस कथन का भले प्रकार पोषण नहीं कर सकते।

शरद के पुरुष-पात्र इस कारण कमज़ोर हों, ऐसा नहीं है। वे अपने आपमें पूर्ण हैं। स्त्री-पात्रों को पढ़कर हम चकित-आकर्षित अवश्य हो पड़ते हैं, पर अधिकांशतः हमारी समवेदना पुरुषों के प्रति शीघ्र हो जाती है। 'पार्वती' का हृदय कहीं अधिक उज्ज्वल होते हुए भी हम 'देवदास' के

साथ ही चलते हैं— पार्वती के पास नहीं रह जाते। और फिर, उसकी मृत्यु तक आते-आते तो वह हमारी दृष्टि में अत्युग्र हो जाता है। 'चरित्र-हीन' का 'सतीश' भी कुछ ऐसा ही है। अपने निर्णय को ही प्रमुख स्थान देना इनका नियम है—वह चाहे कैसा भी हो। पश्चात्ताप न होना दूसरा गुण है।

'गृह-दाह' में 'महिम' का चरित्र कहीं-कहीं इतना उठा हुआ जान पड़ता है कि ऐसा आभास होने लगता है कि कोई शक्ति भी उन्हें अपने निर्णय से नहीं हटा सकती। उनका जीवन सिद्धांतों का प्रतिपादन है, और उन्हें छोड़ना-जैसी तो कोई घटना घट ही नहीं सकती। 'पंडितजी' का वृंदावन उन्हीं तत्त्वों का बना हुआ है। कितना ही आकर्षित वह क्यों न हो जाय, अपनी मा के अपमान का प्रतिकार किए विना वह 'कुसुम' को अपनी कहने की भूल कर ही नहीं सकता।

शरद के कोई-कोई पुरुष-पात्र बहुत साधारण हैं, उन्हें नायक कहना भी अच्छा नहीं लगता। 'परिणीता' का 'शेखर' और 'अरक्षणीया' का 'अतुल', दोनो इस संबंध में एक-से ही हैं। अपने हृदय को दबा देना इनके लिये आसान है, लेकिन विषम परिणामों को उपस्थित करना इन्हें सह्य नहीं। अवसर की बाट देखने में ही इनका समय जाता है। स्वयं अवसर उपस्थित करना जैसे कुछ बुरा या अनुचित लगता हो।

शरद बाबू के 'श्रीकांत' के विषय में हमने अभी कुछ नहीं कहा। उनका यह उपन्यास यथेष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका है, जिसका प्रमाण यही है कि भारतवर्ष की भाषाओं के अतिरिक्त यह अँगरेज़ी और फ्रेंच में भी अनूदित हो चुका है।

'श्रीकांत' अनुभव से भरी हुई कहानी है। अँगरेज़ी के adventure शब्द से उसके भ्रमण का ठीक-ठीक परिचय हो जायगा। लेकिन उसमें भी हमें घटनाएँ कम मिलेंगी, अध्ययन अधिक। इस उपन्यास में कदाचित् शरद ने विचारशील होने की चेष्टा की थी। इसमें हमें प्रकृति के वर्णन भी मिलते हैं, कुछ बालकों के चापल्य के भी दर्शन होते हैं। 'श्रीकांत' एक संपन्न, कार्य-हीन व्यक्ति है। भ्रमण उसे बहुत प्रिय है। उसका जीवन ही उसी में कटा है। सरलता उसमें अभी शेष है, और वर्णन की सिधाई इसकी पुष्टि करती है। भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुभवों का वर्णन वास्तव में अत्याकर्षक है।

'श्रीकांत' में, अन्य उपन्यासों की अपेक्षा, शरद के जीवन की छाया अधिक है। श्रीकांत का बर्मा-प्रवास इसका परिचय देता है। इन्हीं दिनों शरद बाबू का एक पत्र भी समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होंने अपने प्रकाशक से श्रीकांत के लेखक का नाम गुप्त रखने की विनय की है, क्योंकि उसमें व्यक्तिगत संबंध और सत्य घटनाओं का समावेश है। अपने हृदय को बिना किसी काट-छाँट के जितना उन्होंने श्रीकांत में प्रकाशित किया है, उतना और किसी उपन्यास में नहीं किया। कदाचित् उस नवयुवक को, जो अपना देश छोड़कर रंगून चला गया हो, अपने अनुभवों को बहुत कुछ ज्यों-का-त्यों रख देना ही अधिक अच्छा जँचा हो। कल्पना का अधिक प्रयोग शायद उस समय उन्हें उचित न जान पड़ा हो।

इस प्रकार, हम देखते हैं, शरद बाबू ने अपनी अलौकिक प्रभा, असीम अनुभव, मधुर वर्णन-शक्ति और हार्दिक कोमलताओं के अपूर्व सम्मिश्रण से साहित्य में ऐसे-ऐसे अमूल्य ग्रंथों की रचना की है, जिनसे उनकी कला सदैव अपने को प्रकाशित करती रहेगी। अपने समाज और परिवार का इतना सुंदर निरीक्षण, स्त्री-पुरुष के भिन्न-भिन्न संबंधों का ऐसा प्रभावोत्पादक वर्णन, कला की ऐसी सजीवता और किसी लेखक में नहीं मिलती। थोड़े में मर्मस्पर्शी ढंग से एक चरित्र का पूरा-पूरा चित्रण करने की ऐसी अपूर्व क्षमता बहुत कम पाई जाती है।

शरद का जीवन उन्हें लेखक बनाने की पूरी क्षमता रखता था। कहना चाहिए, उनका जीवन स्वयं एक उपन्यास था। बालकपन में मामा के यहाँ विद्योपार्जन करने के उपरांत आप भागलपुर-कॉलेज आए, लेकिन मा की मृत्यु और आर्थिक संकट के कारण मिर्ज़ापुर में, एक गृहस्थ के यहाँ, आश्रित की भाँति, रहने लगे। अनेक दिन इस प्रकार भटकने के उपरांत रंगून चले गए, जहाँ एक नौकरी के सहारे अपना पालन करते रहे। इसी बीच आप निरंतर लिखते रहे। फिर एक-एक कर आपकी रचनाएँ प्रकाश में आईं, और आप बहुत शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गए। कुछ दिन बाद आप कलकत्ते आकर स्थायी रूप से साहित्य-सेवा में व्यस्त हो लेखन-कार्य में जुट गए। संपन्न होने पर भी आपकी सरलता और दयालुता में कोई अंतर नहीं आया। ग्राम-प्रेम और करुणा आपके हृदय के स्वाभाविक गुण थे। ऐसे हृदय ने ऐसे ऐसे करुण उपन्यासों की रचना की है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं। इतने संपन्न, अनुपम और विभूतियों से युक्त होकर शरद ने जो भी किया, संभावित ही किया।

बँगला के इस महान् कलाकार के वरदान-स्वरूप ये ग्रंथ हमारे साहित्य को सदा उन्नत करते रहें, यही हमारी कामना है।

अमर कलाकर शरच्चंद्र की प्रसिद्ध रचनाएँ

अरक्षणीया	१)	नव विधान	१)
ग्रह-दाह	२॥)	पंडितजी	१॥)
चरित्र-हीन	३॥)	परिणीता	१)
चंद्रनाथ	॥)	बड़ी दीदी	१)
छुटकारा	१)	मझली दीदी	॥)
जयमाल	।=)	लेन-देन	२॥)
देवदास	२)	विजया	१॥), २)
देहाती समाज	२)	बिराज बहू	॥)

मिलने का पता—गंगा ग्रंथागार, लखनऊ

कल्क-कथा का ऐतिहासिक तथा पौराणिक रूप

[श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास]

श्वेतांबर जैन-संप्रदाय द्वारा निर्मित संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, गुजराती तथा अन्य भाषाओं के अनेक ग्रंथों में (जो संघ-संबंधी नहीं) आचार्य कालक या कालिकाचार्य के अनेक वर्णन पाए जाते हैं।

यह दंतकथा बहुधा कल्पसूत्र (पर्यूषण-कल्प) के अंत में पाई जाती है। कल्पसूत्र भद्रबंधु-विरचित कहा जाता है। आजकल यह पुस्तक जैन-साधुओं तथा गृहस्थों के सामने, पर्यूषण के समय पढ़ी जाती है, यद्यपि विक्रम-संवत् ५१० या ५२३ के पहले केवल साधुओं के आगे पढ़ी जाती थी। कल्क तथा कल्पसूत्र की कथाओं का संबंध इस कारण अधिक स्पष्ट है कि दंतकथाओं के अनुसार, कल्पसूरी की ही आज्ञा से, पर्यूषण-समाप्ति का समय भाद्रपद शुक्ल-पक्ष की पंचमी से चतुर्थी की रात्रि कर दिया गया था। कल्पसूत्र का नवम व्याख्यान कहकर भी कभी-कभी कल्क की कथा को अभिहित किया जाता है। पर्यूषण की प्रथम रात्रि को इसका पाठ भी होता है।

कल्क की कथा को महत्त्व देने का दूसरा तथा आनुषंगिक कारण यह उपदेश है कि धर्म की विजय के लिये प्रयत्न करनेवाले को अमित कीर्ति प्राप्त होती है। अंत में विवेक की यह धारणा भी बलवती होती है कि यदि अच्छे उद्देश को लेकर कुछ ऐसे भी कार्य (किसी सत्पुरुष को) करना पड़ें, जो अन्यथा गर्हित गिने जायँगे, तो भी उसके उद्देश की पवित्रता उसके चरित्र को निष्कलंक बनाएगी। तीसरा पाठ कल्क की कथा से कदाचित् लब्धि (सिद्धि) प्राप्त करने का लाभ प्रदर्शित करना है, क्योंकि इसी के द्वारा कल्क ने गर्दभिल्ल को हराया था। बहुत-से संस्करणों में कल्क को अपने गर्दभिल्ल के प्रति किए गए कृत्यों के कारण प्रायश्चित्त करना पड़ा है, क्योंकि क्रोधादि के वशीभूत होना जैन-सिद्धांत के प्रतिकूल है।

यह कहना कठिन है कि किस समय कल्क के नाम से संबंधित बिखरी हुई कथाएँ एकत्र करके एक कर ली गईं। दसवीं सदी के उत्तरार्ध से पहले की अवधि से पुरानी ये कथाएँ नहीं कही जा सकतीं। धार के वैरिसिंह (या वैरासिंह) को कल्क का पिता कहने से यह स्पष्ट हो जाता है। यह वैरासिंह कदाचित् वैरिसिंह (द्वितीय) प्रमारवंशीय मालूम होता है। इसके वंश ने मालवे पर सैकड़ों वर्ष राज्य किया। और, कहा जाता है, इसी ने धार से उज्जैन राजधानी बदल दी। संभवतः वह किसी

कल्क का पिता नहीं हो सकता। किंतु मेरे द्वारा अज्ञात किसी कारण से उसके नाम के साथ कल्क के नाम का संबंध बता दिया गया है। वैरिसिंह (द्वितीय) का समय भी अनिश्चित है। किंतु बेबलर इसे स्पष्ट कर देते हैं कि वैरिसिंह तथा उसके उत्तराधिकारी हर्ष शाक्य ने संभवतः ६२० से ६७४ (या ७५) ईस्वी तक राज्य किया। इसके बाद वाक्पति (द्वितीय) (अमोघवर्ष) गद्दी पर आया। कल्क की कथा अधिक-से-अधिक आधुनिक मानने पर तेरहवीं सदी के पूर्वार्ध के बाद की नहीं ठहरती। क्योंकि भवदेव सूरि (१२५० विक्रमीय) ने संक्षिप्त संस्करण लिखा है। लंबे संस्करण (सबसे बड़े) पर तारीख़ नहीं लिखी है, किंतु सबसे प्राचीन हस्त-लिखित प्रति, जो मैंने देखी है, विक्रम-संवत् १३३७ में नक़ल की गई थी। पाटन में दूसरी हस्त-लिखित प्रति एक और साल पुरानी है, जिसे मैंने देखा है। प्रभावककाटिका (जिसमें संक्षिप्त संस्करण सम्मिलित है) विक्रम-संवत् १३३४ (ईस्वी १२७७) में लिखी गई थी। हेमचंद्र (१०८६-११७२ ई०) अपने योगशास्त्रवर्ति ग्रंथ में कल्क का उल्लेख करता है। यह ग्रंथ इसने अपने आश्रयदाता कुमारपाल (११६६-१२२६ वि०) के कहने से लिखा था। इस ग्रंथ में कल्क-संबंधी एक घटना का वर्णन है, इसीलिये कल्क-कथा को बारहवीं शताब्दी के समय की मान सकते हैं। यदि कोई इसे अधिक पुरानी सिद्ध करने का प्रयत्न करे, तो हमें आश्चर्य न होना चाहिए। असंभव नहीं कि राजा भोज के राज्य-काल (१०१८-१०६० ई०) में ही साहित्यिक रूप में कल्क-कथा लिखी गई हो। किंतु इस धारणा का कोई प्रमाण नहीं।

कल्क-कथा के विभिन्न संस्करणों में आश्चर्य-जनक समानता है। बहुत थोड़ी आनुषंगिक बातों को छोड़कर वे उसके जीवन को चार भागों में विभाजित करते हैं। पहले भाग में कल्क का गणाकर से वार्तालाप और उसका शिष्य बन जाना तथा कल्क का उज्जयिनी के दुष्ट राजा गर्दभिल्ल के साथ शाही (सं साषीः) लोगों की सहायता से युद्ध तथा गर्दभिल्ल-पतन है। दूसरे में राजा बालमित्र और भानुमित्र की कचहरियों की घटनाएँ तथा पर्यूषण की तारीख़ बदलने का वर्णन है। तीसरे में कल्क अपने प्रशिष्य (शिष्य के शिष्य) सागरदत्त के अभिमान का खंडन करते तथा चौथे में शक्र को निगोड़ा-तत्त्व समझाते हैं। एक पुस्तक में तीसरा तथा चौथा वर्णन छोड़ दिया गया है। विभिन्न एक में पाँचवीं घटना जोड़ दी गई है। विभिन्न संस्करणों में छोटी-छोटी घटनाएँ विभिन्न प्रकार से कही गई हैं। मैंने इनका उल्लेख अलग-अलग भली भाँति किया है।

कल्क-दंतकथा की चार घटनाओं में से संभवतः पर्यूषण की तिथि बदलवानेवाली घटना अंतिम थी, क्योंकि केवल इसी के चित्र नहीं मिलते। संभवतः पर्यूषण की तारीख़ें दे में बदली जाने से ऐसा हुआ।

यह असंभव मालूम होता है कि कल्क-कथा

के सब संस्करण एक ही लिखित पुस्तक से लिए गए हों, चाहे वह पुस्तक इन्हीं संस्करणों में से एक हो, अथवा ऐसा कोई संस्करण हो, जो आजकल अप्राप्य हो। एडगरटन के पंचतंत्र के समान इसका कोई एक संस्करण निकालना कठिन मालूम होता है। प्रत्येक संस्करण की शब्दावली विभिन्न-सी है। श्वेतांबर लोगों में सुविख्यात कल्क की कहानियाँ संभवतः कई दिनों तक विना लिखी पड़ी रहीं। साधुओं ने छोटे-बड़े संस्करणों द्वारा उन्हें लिखा। बहुत अंशों में उन्होंने अपनी स्वतंत्र भाषा का प्रयोग किया। संक्षिप्त संस्करणों तथा दंतकथाओं से संभवतः उन्होंने बहुत सहायता ली। इस प्रकार इस कथा के अनेक संस्करण हो गए।

कल्क-संबंधी पुस्तकों के सिवा भी श्वेतांबर-संप्रदाय के ग्रंथों में कल्क के चरित्र की कथाएँ मिलती हैं। सागर आनंद मुनि ने दशाकर्णी से (४५ पृष्ठ हस्त-लिखित) एक अवतरण उतारा था, जो पर्यूषण का समय बदलने का कारण बतलाता था। विद्वद्वर मुनि विजयनेमि सूरि ने भी दो अवतरणों की नक़ल उतरवाई थी। उनमें से प्रथम-चतुर्थ उद्देशक (५६६ पृष्ठ) उनके ग्रंथ-संग्रह की हस्त-लिखित पुस्तक में था, उसमें कहा गया है कि कल्क-चरित्र प्रसिद्ध है। दूसरा भी चतुर्थ उद्देशक (३५५ पृष्ठ) से लिया गया है। विद्वद्वर जयंत विजय मुनि के कथनानुसार शक्र के निगोड़ा के संबंध में प्रश्न पूछने का उल्लेख जिनदास-कृत आवश्यककर्णी में है। यह जिनदास विक्रम की दसवीं शताब्दी में रहा, ऐसा कहा जाता है। देवींदथंदेहीं गाथा भाग (आवश्यक निर्युक्ति-गाथा ७७४, उत्तराध्ययन-सूत्र की टीका अध्याय २, लेखक शांति सूरि। मृत्यु-संवत् १०९६) में सगरचंद के अभिमान की घटना वर्णित है। यह घटना निम्न-लिखित ग्रंथों में भी मिलती है—

उत्तराध्ययन नियुक्ति तथा उत्तराध्ययन चूर्णि। विमलचंद्र सूरि की प्रश्नोत्तरमाला के टीकाकार देवेंद्र तथा मुनिभद्र भी २५वें छंद की टीका में कल्काचार्य-कथा का उल्लेख करते हैं। बेबलर के कथन को जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ, यह ग्रंथ विक्रम-संवत् १४२९ से प्रारंभ होता है, तथा कथित देवेंद्र उत्तराध्ययन-सूत्र का टीकाकार नहीं हो सकता। विक्रम-सं० १५०४ में बनाई हुई सोमचंद्र की कथा-कौमुदी में कल्क की कथा नहीं है।

गधे के जादू द्वारा नगर-रक्षा-प्रयत्न की एकमात्र अद्भुत घटना पालीजातक पुस्तक के समानांतर पाई जाती है। घटजातक (Page 82-83 Cambridge Translation विशेषतः पृष्ठ ५२, ५३)। यह सब कृष्ण-कथाओं का परिवर्तित रूप है। वहाँ द्वारका नगरी का रक्षक यक्ष था, जो शत्रुओं के पास आने पर गधे का रूप लेकर रेंकने लगता था। फलतः जादू के ज़ोर से नगर एक द्वीप में जा पहुँचता था। शत्रु के जाने तक वह वहीं रहता था, तथा तदनंतर वापस आ जाता था। किंतु मेरे

मत से इस विषय में अधिक ज़ोर देना व्यर्थ होगा।

कालकाचार्य ने गर्दभिल्ल राजा को शकों द्वारा परास्त करवाकर उज्जयिनी पर शक-राज्य स्थापित करवाया, जो संवत्सरी पंचमी को मनाई जाती थी, वह चतुर्थी को की, और इंद्र को 'निगोद' का स्वरूप समझाया। परंतु इन भिन्न-भिन्न समय में घटित होनेवाली घटनाओं का संबंध एक ही कालकाचार्य के साथ जुड़ाया जाना कैसे संभवित है? इसका विचार करना एक आवश्यक बात है। इस समय कोई भी अप्रामाणिक या ऐतिहासिक तथ्य-विहीन बात विद्वत्समुदाय में मानी नहीं जा सकती। 'कालकाचार्य-कथा' पर अभी कुछ विद्वानों ने काफ़ी अनुसंधान किया है। सर्वप्रथम मुनिराज विद्याविजयजी ने इस विषय पर प्रकाश डाला है। इसके अनंतर मारवाड़-प्रवासी इतिहास के प्रौढ़ पंडित मुनि कल्याणविजयजी ने बहुत विस्तार-पूर्वक कालिकाचार्य के विषय में अनुसंधान किया है। अभी-अभी अमेरिका के अनुसंधानप्रिय विद्वान् डॉ० ब्रौन ने अनेक वर्षों के श्रम के बाद 'दी स्टोरी ऑफ़् कालक'-नामक बड़ी महत्त्व पूर्ण पुस्तक प्रकाशित की है। डॉ० ब्रौन कुछ समय पूर्व भारतवर्ष में आए थे। वह उन सब जगह घूमे, जहाँ-जहाँ उन्हें उक्त विषय का साहित्य प्राप्त हो सकता था। अनेक प्राचीन पुस्तकों के फ़ोटो लिए, और बहुत श्रम करके उपर्युक्त ग्रंथ की रचना की। इस पुस्तक को ११ प्रकरणों में विभक्त किया है। इसमें पहला प्रकरण कालकाचार्य-कथा का ऐतिहासिक वर्णन है। उसमें कथा-वार्ता की दृष्टि से बहुत सुंदरता से विवेचन किया गया है। यह इतिहासज्ञों के लिये—खासकर उन लोगों के लिये, जो विक्रमादित्य के विषय में जानकारी रखते हैं—अवश्य देखने योग्य है। कालिकाचार्य-कथा का विक्रम और महावीर के काल-निर्णय से बहुत कुछ संबंध है। अतएव इस कथा का इतिहास और इतिहास-प्रिय व्यक्तियों से खास संबंध है। डॉ० ब्रौन के मतानुसार यह कथा पीछे-से-पी १२वीं शताब्दी में लिखी जानी चाहिए। संभवतः धारानगरी-पति भोज के समय में इसकी रचना हुई हो। परंतु डॉ० ब्रौन इसका पर्याप्त प्रमाण नहीं पाते। अपने मतानुसार वह इस कथा को ४ विभागों में विभक्त करते हैं—(१) गुण कर सूरि के साथ विवाद, दीक्षा और गर्दभि के साथ लड़ाई, (२) बालमित्र-भानुमित्र के साथ के बनाव और पर्यूषण-तिथि में परिवर्त (३) अपने प्रशिष्य सागरदत्त को मिथ्याभिम लिए भर्त्सना और (४) शक्र को निगो का स्वरूप बतलाना। डॉ० ब्रौन के कथना नुसार पर्यूषण की तिथि-संबंधी बात सबसे पी आई हुई है। ताड़-पत्र की प्राप्त पुस्तक में इस कोई उल्लेख नहीं। वह यह भी कहते हैं कि शायद यह कथा पहले दंतकथा के रूप अस्तित्व रखती होगी, साधुओं ने बैठ रक्खी होगी, लिखने का जब प्रसंग आया,

यथास्मृति एकत्र कर ली गई, इसलिये भिन्नताएँ हो सकती हैं। डॉ० ब्रौन की यह विचार-धारा इतिहासज्ञों को अपनी-अपनी कसौटी पर चढ़ानी चाहिए।

डॉ० ब्रौन ने हज़ारों मील दूर रहकर, भारतवर्ष की एक 'स्टोरी' को लेकर जितना श्रम, अनुशीलन और अनुसंधान किया है, और हमारे सामने एक सुंदर साहित्य संगृहीत कर दिया है, एतदर्थ उनकी जितनी प्रशंस की जाय, थोड़ी है। इस ग्रंथ के निर्माण में शिवपुरी-वीरतत्त्व-प्रकाश-मंडल के मुनियों ने बहुत सहायता की है। खासकर मुनिराज विद्याविजयजी ने, जो विद्वान् और सहृदय एवं प्रसिद्ध वक्ता मुनि हैं, इसके निर्माण में सहयोग देकर ग्वालियर का नाम ऊँचा किया है।

रुधिर का चित्र

[श्रीपं० उमाशंकरजी वाजपेयी एम्० ए० (ऑनर्स)]

वह अरुण किरण - छविवाली
कोई थी राजकुमारी।
अखिल विश्व के उसने विश्रुत चित्रकार बुलवाए;
कहा खींचने को उनसे निज चित्र नयन-सुखकारी।
सब चले दर्प कर भारी।
बना-बना वे प्रतिकृति लाए उसके शोभन तन की,
कर न सके रंजित वैसी पर मधुर अरुणिमा प्यारी।
लज्जित, मति सबकी हारी।
बोला एक इसी अवसर पर आकर तरुण भिखारी—
"लाया मैं भी तन्वि! खींचकर यह तसवीर तुम्हारी।"
सुन विस्मित सब नर-नारी!
देख चित्र निज सुललित प्रमुदित वह बोली सुकुमारी—
"कौन रंग से तूने मेरी रँगी रक्तिमा न्यारी?
मैं तन-मन से बलिहारी!"
कुछ न बोल, बस छिपा हाथ से घाव रक्तमय उर का—
शून्य-प्राण वह मौन खड़ा रह गया किशोर भिखारी।
निष्पंद सभा थी सारी।

आओ, नंगे रहें!

[श्रीपं० वंशीधर मिश्र एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, एम्० एल्० ए०]

पादरियों द्वारा वन्य मनुष्यों में वस्त्रों का ज़ोरों से प्रचार करने के हेतुओं में से एक मुख्य हेतु आर्थिक भी था। श्रीयुत मार्टन स्टैनली का नाम इँगलैंड के इतिहास में विख्यात है। इँगलैंड में स्कूल का हरएक छात्र उसके नाम से परिचित है। सन् १८७४ से १८७७ तक वह आफ़्रिका में घूमा था। इँगलैंड वापस आने पर उसने मैनचेस्टर चैंबर ऑफ़् कॉमर्स के सामने एक भाषण दिया। उसने श्रोताओं को बताया कि कांगो में कितने हब्शी हैं, और उनकी यह भयानक बात भी बताई कि वे नंगे रहते हैं। उसने उनका ध्यान इस बात की ओर भी आकर्षित किया कि ईसाई होने के नाते उनका यह धर्म है कि उन पथ-भ्रष्ट, नंगे वन्य मनुष्यों को ईसाई-धर्म और वस्त्रों के धर्म में दीक्षित किया जाय। उसने उनको यह भी दर्शाया कि जब यह शुभ कार्य बढ़ जायगा, और हब्शियों को पवित्र रविवार के दिन वस्त्र धारण करने की आवश्यकता पर पर्याप्त विश्वास हो जायगा, तो मैनचेस्टर के सूती वस्त्रों की वार्षिक खपत उन लोगों में ३२ करोड़ गज़ हो जायगी। यह सुनकर श्रोतागण प्रफुल्लित हुए, और उन्होंने करतल-ध्वनि करके वक्ता का अभिनंदन किया। वक्ता ने यह भी बताया कि एक समय आवेगा, जब ईसाई-मत का प्रभाव उन पर इतना पड़ जायगा कि वे प्रतिदिन वस्त्र धारण करने की आवश्यकता समझने लगेंगे, तो मैनचेस्टर से उनकी खरीद प्रतिवर्ष २ करोड़ ६० लाख पौंड (लगभग सवा तीन लाख मन) कपड़े की हो जायगी। अंत में उसने कहा—"कांगो के पा के उस पार ४ करोड़ मनुष्य हैं, जो मैनचेस्ट के सूत से बुने वस्त्र पहनने की प्रतीक्षा क रहे हैं। बर्मिंघम के कारख़ाने लाल धातुओं चमक रहे हैं, जो शीघ्र उनके लिये लोहे क सामान तैयार करेंगे, और क्षुद्रालंकार उन श्यामल देहों को अलंकृत करेंगे, और ईसा के सेवक असहाय, तिमिराच्छन्न लोगों को ईसाई-गोष्ठी में लाने के लिये उत्साहशील हैं।" स्टेनले का यह विख्यात भाषण मैनचेस्टर चैंबर ऑ कॉमर्स ने, सन् १८८४ में, पुस्तक-रूप में भ प्रकाशित किया था।

वस्त्रों के इस आर्थिक पहलू पर इस बात से भी प्रकाश पड़ता है कि कुछ लोग नग्नता-आंदो लन को ईसाई-धर्म और ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक भयावह वस्तु समझते हैं। एक स्त्री लेखिका ने 'दी सोशलिस्ट नेट वर्क' नाम की ए पुस्तक लिखी है। उसका कथन है कि ईसाई-धर्म ही नहीं, बल्कि उसकी सर्वोत्तम विभूति ब्रिटिश साम्राज्य भी नग्नता-आंदोलन से ख़तरे में है।

वस्त्रों के धारण करने से सबसे अधिक बुरा यह है कि मनुष्य नग्न रहने की स्वाभाविक इच्छ को खो बैठता है। पर हमें नंगे रहने की उतावली न करनी होगी। उतावली करने से अनेक का बिगड़ते देखे गए हैं। हमें नग्नता की उपयोगि की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना होगा लोगों के भयों का उन्हें समझा-बुझाकर नि करण करना होगा। लोग वस्त्रों को उतार फें से क्यों घबराते हैं? यह प्रश्न हमें अपने से करन होगा। इस प्रश्न का उत्तर हम जान चुके हैं।

लोग वस्त्र उतारकर नहीं फेकते हैं उस भय के कारण, जिसे रीति-रस्म, प्रथा और सामाजिक प्रभाव दूर कर सकते हैं—लज्जाशीलता, मर्यादा, शिष्टता के उल्लघन का भय; उस भय के कारण, जिसको विज्ञान असत्य सिद्ध करता है—शीत या ताप का शिकार होने का; और उस भय के कारण, जिससे प्रायः मनुष्य अनभिज्ञ हैं—वस्त्रों से आच्छादित होने की अपेक्षा नग्न होने से काम-संबंधी कम आकर्षक हो जाने का। समाज भूठी लज्जाशीलता, मर्यादा का मखौल उड़ाता रहे, विज्ञान नग्न मनुष्यों के शीत और ताप के शिकार होने की बात को एकदम प्रत्यक्ष असत्य सिद्ध कर दे, पर जब तक यह अज्ञात भय बना रहेगा, तब तक लोग नंगे न होंगे। यह भय लोगों को अपने वस्त्र अलग नहीं करने देगा, और जब तक इसका निराकरण नहीं हो जाता, तब तक लोग वस्त्रों से चिपके रहेंगे। हमें उस वाक्य पर एकाग्र-चित्त होना होगा, जो पोगो और वाज के निवासियों के संबंध में कहा जा चुका है—"वे अपनी स्त्रियों को किसी प्रकार के वस्त्र धारण करने की अनुमति देना अस्वीकार करते हैं, और वे अपनी इस अस्वीकृति का अपना कारण बताते हैं कि यदि स्त्रियाँ वस्त्र पहनेंगा, तो वे अधिक सुंदरी हो जायँगी, और विदेशी गाँवों के पुरुषों द्वारा उनकी चाह बढ़ जायगी।" वाजी-निवासियों में जो प्रथम गाउन (वस्त्र) प्रविष्ट हुआ था, वह चिथड़े-चिथड़े हो जाने तक पहना गया था। "पत्नियों के इच्छुक नवयुवकों के सतत व्यवहार के कारण वह गाउन चिथड़े-चिथड़े हो गया था।" हमें किसी स्त्री या पुरुष को वस्त्र धारण करने को मना न करना होगा, बल्कि अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये सूक्ष्मतर उपायों को सोचना होगा।

आफ्रिका आदि देशों में वस्त्रों के प्रचार के संबंध में आर्थिक कारण की ओर संकेत किया जा चुका है। वस्त्रों को उतार फेकने के लिये भी हमें आर्थिक हेतु ढूँढना होगा। एक अमेरिकन लेखक ने साधारण वस्त्रों के स्थान पर एक विशेष परिधान की आवश्यकता आर्थिक कारणों से बताई थी। उस अमेरिकन लेखक ने डालरों (रुपयों आनों) में उस महान् क्षय का हिसाब लगाया था, जो मनुष्य जाति अपने अपव्यय और अनावश्यक आदत के कारण करती है। उस लेखक ने नग्न रहने का प्रस्ताव नहीं किया था। उसका प्रस्ताव अरबों-खरबों रुपयों की प्रतिवर्ष बचत का था, जो वस्त्रों पर पृथ्वी पर व्यय होता है। उसकी राय थी कि ब्राउन पेपर के बने हुए एक-से सूट सब मनुष्य धारण करें। ये सूट सस्ते पड़ेंगे। मनुष्यों की आर्थिक कठिनाइयाँ नित्यप्रति कठोर होती जाती हैं। तब फिर रहन-सहन के दरजे (Standard of living) में कमी करने के स्थान पर वस्त्रों के बिलों में कमी क्यों न की जाय?

सीप्रीयन का विचार उसके समय में उत्तम था, पर आज बीसवीं शताब्दी में उसके द्वारा दिए हुए कारण लोगों को न रुचेंगे। पर सीप्रीयन और अमेरिकन लेखक की बात मान लेने से नग्नता की आधी विजय हो जाती है। वस्त्र अपने Primary unconscious काम को अब पूरा न करेंगे, इसलिये प्रमुख Conscious भय—वस्त्रों के उतार फेकने का—जाता रहेगा, और Conscious भयों का सुगमता से निराकरण किया जा सकेगा।

इधर सहस्रों वर्षों से वस्त्रों ने मनुष्य-जीवन में प्रमुख स्थान ग्रहण कर रक्खा है। हम मनुष्यों का मूल्य उनके वस्त्रों से आँकते हैं, उनके वस्त्रों से उनका निर्णय करते हैं, तथा उनके प्रेमी उनके वस्त्रों द्वारा होते हैं। हमारी जाँच के इस स्टैंडर्ड के एकाएक लोप हो जाने से हमें प्रारंभ में

कठिनाई होगी, पर हमारी मनुष्य-संबंधी जाँच अधिक ठीक हो जायगी।

प्रारंभ में नग्नता को ऐसे ही लोग अपनावेंगे, जो उसके योग्य होंगे, जो एक निश्चित मानसिक स्टैंडर्ड से नीचे न होंगे। लोगों को नग्नता का मूल्य अदा करना होगा, तभी वे उसकी क़द्र करेंगे। मनुष्य सुगमता से प्राप्त होनेवाली वस्तु की, जिसका मूल्य उसे चुकाना नहीं पड़ता, क़द्र नहीं करता।

कुछ लोग संतान-निग्रह पर पड़नेवाले नग्नता के प्रभाव से चौकन्ने होते हैं। ऐसे लोगों को जान लेना चाहिए कि इंद्रिय-दमन (Sacking) द्वारा संतान-निग्रह और आभूषणों की उर्वरता के अति निर्लज्ज उत्तेजन के बीच में नग्नता की प्राकृतिक तथा अनिंद्य स्थिति है। नग्नता से उर्वरा-शक्ति बढ़ेगी, पर सीत्रीयन के कथनानुसार कामोत्तेजन पर यह अवरोध करेगी। नग्नता प्राकृतिक बैलेंस का अपूर्व कार्य करेगी।

पाश्चात्य देशों में नग्नता के प्रसार की ओर संकेत किया जा चुका है। इँगलैंड में सफाक में एक ऐसा स्कूल है, जहाँ साधारण पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त बालक-बालिकाओं को नग्न होकर, सम्मिलित रूप में, स्नान करने और खेलने-कूदने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं की जाती, वरन् उन्हें प्रोत्साहन दिया जाता है। स्कूल के विद्वान् प्रिंसिपल का कहना है कि हम अपने बच्चों को आध्यात्मिक ढंग से रहने की शिक्षा देते हैं। हम उन्हें स्त्रीत्व और पुरुषत्व के भेद-भाव को भुलाकर समानता का पाठ पढ़ाते हैं, और यथासंभव उन बुराइयों से उन्हें बचाते हैं, जो अन्य स्कूल के छात्रों में उत्पन्न हो जाती हैं। हमारा दावा है कि इस ढंग से शिक्षण लाभदायक है, और जीवन को प्राकृतिक बनाता है। नग्नता इसलिये लज्जा की वस्तु है कि हमने उसे ऐसा बना दिया है। वस्त्र कुरूपता छिपाने के लिये भी पहने जाते हैं, न कि सुंदरता छिपाने के लिये।

फ्रांस-देश में पेरिस के निकट सीन-नदी में स्थित विलीनीज-द्वीप को नग्नता के उपासकों ने खरीद लिया है। इस द्वीप का नाम अब नंगों का द्वीप है। लोग प्रति रविवार को या छुट्टी के दिन इस द्वीप में आकर नग्नता की उपासना करते हैं। उनका कहना है, मनुष्य-मात्र को उस अवस्था में रहना चाहिए, जिसमें प्रकृति ने उन्हें उत्पन्न किया है। इस द्वीप के चारो ओर चहारदीवारी खड़ी की गई है, जिससे नग्नता के उपासक स्त्री-पुरुष स्वच्छंदता से द्वीप में विचरण कर सकें। वे लोग फल-मूल खाकर बिलकुल प्राकृतिक ढंग से रहना लाभदायक समझते हैं।

जर्मनी में नग्नता का प्रसार अन्य देशों से अधिक है। वहाँ नग्नता के अनेक उपनिवेश हैं, जहाँ स्त्री-पुरुष बिलकुल नंगे विचरते हैं। वे उपनिवेश गाँवों से दूर और नदियों के तटों पर, पार्क-रूप में, अवस्थित हैं। नग्नता के उपासक स्त्री-पुरुषों का यह विश्वास है कि शरीर एक पवित्र धरोहर है, जिसको उत्तम स्वास्थ्य में रखना परम कर्तव्य है, चाहे इस हेतु वस्त्रों का त्याग भी करना पड़े। वे लोग जहाँ कहीं जब कभी अवसर पाते हैं, शरीर को सूर्य और वायु के लिये अनावृत कर देते हैं।

जर्मनी में इस आंदोलन के नेतागण अत्यंत शिक्षित और सुसंस्कृत सज्जन हैं। वे छोटे नगरों या गाँवों में एकत्र मिलने के स्थानों का प्रबंध करते हैं। वहाँ वे खेल खेलने और लोगों के नैतिक आचरण को उच्च रखते हैं, जिससे नग्नता के उपासक स्त्री-पुरुषों को आध्यात्मिक और व्यावहारिक बल प्रदान होता है। नग्नता के वे उपासक, जो बेरोज़गार होते हैं, अपने उपनिवेशों में अपनी उन्नति के लिये बाहर

खुले में दिन-भर श्रम करते हैं। वे वृक्ष काटते हैं, झाड़ियाँ साफ़ करते हैं, भूमि को समतल बनाते और खेलों के लिये भूमि तैयार करते हैं, आदि। वे अपने काम को स्वेच्छा से करते और उसमें सुख प्राप्त करते हैं। धूप में काम करने से उनकी खाल भूरी हो जाती है, और स्नायु बली। कठिन श्रम करने से जब उनके मुखों और शरीरों से पसीना बहने लगता है, तब वे पानी में घुस जाते और तैरते हैं। उनके शरीर फिर ताज़े और स्वच्छ हो जाते हैं, और धूप में शीघ्र ही सूख जाते हैं।

नग्नता के उपासक न तंबाकू पीते हैं, न शराब। वे शाकाहारी होते हैं। उनका खर्च कम होता है, क्योंकि वे प्राकृतिक जीवन व्यतीत करते और सादा भोजन करते हैं। वे अपने उपनिवेशों में नंगे रहते, काम करते और खेलते हैं। रविवार के दिन नगरों से श्रमिक लोग बड़ी संख्या में नग्नता के उपनिवेशों में श्रम के लंबे घंटों और नगर के जनाकीर्ण वायुमंडल से विश्राम पाने के हेतु जाते हैं। उपनिवेशों में उनका व्यय थोड़ा होता है, जिससे ग़रीब-से-ग़रीब वहाँ जाकर लाभान्वित होता है। ग़रीबों का यह प्रमुख आमोद-प्रमोद होता है कि छुट्टी के दिन उपवनों में जाना, जहाँ नागरिक जीवन में किसी का कोई स्थान होने पर भी सब बराबर होते हैं, जहाँ निर्धन युवक, जिसका शरीर सुगठित होता है, उस धनी से बढ़कर माना जाता है, जिसका शरीर भद्दा और बेढंगा होता है।

ये श्रमी जब नगरों में होते हैं, तब व्यायाम-शालाओं को जाते हैं, जहाँ वे खेलते और व्यायाम करते हैं। शनिवार के दिन वे उपनिवेशों में पहुँच जाते हैं, और वहीं अपनी छुट्टी मनाते हैं, और भूमि पर कंबलों पर सोते हैं। वहाँ खाना पकाने की सुविधा नहीं होती, और उनमें से अधिकतर लोग पनीर, फल, दूध और कच्ची साग-भाजियों का भोजन करते हैं। वे लोग भी, जो इन नियमों के पालन करने में कठिनता बोध करते हैं, आनंद से अपना समय वहीं बिताते हैं। उपनिवेश के हर सदस्य के लिये एक अलग केबिन होता है, जो चारो ओर से वृक्षों से घिरा होता है। वहाँ भोजन करने के लिये बड़े कमरे होते हैं, जहाँ सदस्य भोजन करने के लिये दिन में तीन बार एकत्र होते हैं। वे लोग तड़के प्रातःकाल घंटी बजने पर अपना बिस्तरा छोड़ देते हैं। वे एक साथ मार्च करते हुए भोजन करने जाते हैं, और एक लंबी मेज़ पर बैठ जाते हैं। वे अन्न, सूखे फल, आलू, रोटी आदि खाते हैं। वे भोजन पर से एक साथ उठते हैं, और फिर पार्क में मार्च करते हुए एक साथ जाते हैं, जहाँ वे गाना गाते, कविता-पाठ करते और दर्शन, साहित्य तथा राजनीति पर परस्पर वाद-विवाद करते हैं।

प्रातःकाल कलेवा के पूर्व एक घंटे के लिये नग्नता-उपनिवेश के नए सदस्यों को व्यायामशाला में जाना होता है। वहाँ उन्हें व्यायाम करना सिखाया जाता है। प्राणायाम (deep breathing) और वाद्य के रव के साथ शरीर का संचरण एवं शिथिलीकरण बताया जाता है। विद्यार्थियों को दौड़ना, कूदना, हाथ-पैरों को झुलाना, पीठ को झुकाना तथा दीर्घकाल से अनभ्यस्त स्नायुओं को विस्तीर्ण करना होता है। २०-३० मिनट के सपरिश्रम व्यायाम के बाद विद्यार्थियों को ठंडे पानी के कुंड में कूदना पड़ता है। प्रातः-कालीन वायु फेफड़ों को लाभप्रद होती है, और शरीर पर वायु एवं सूर्य-रश्मियों का स्पर्श होते हुए प्रातःकाल कूदना-फाँदना-नाचना उत्फुल्ल करने-वाला होता है। एक सप्ताह या पक्ष के बाद ही मनुष्य अपने में आनंद-प्रद परिवर्तन बोध करने लगता है। कूदने-फाँदने, टहलने का सादा व्यायाम

ही खुले में नग्न होकर करने से हर्ष-प्रद सिद्ध होता है।

जो लोग इन उपनिवेशों में नहीं गए हैं, वे पूछ बैठते हैं कि वहाँ लोग काम-विकार में ही अपना अधिक समय तो नहीं बिताते हैं। नग्नता के उपासकों का उत्तर है—नहीं। उनका कहना है, जब कोई दिन-भर नित्यप्रति नग्न स्त्री-पुरुषों से मिलता है, तो कामेंद्रियाँ दूसरों की टुहनियों और कोहनियों से अधिक महत्त्व की नहीं रह जातीं। लोग अल्प समय में ही नग्न स्त्री-पुरुषों की कामेंद्रियों से एकदम पूर्णतया उदासीन हो जाते हैं।

जर्मनी में अदोल्फ काश नग्नता-आंदोलन के सबसे प्रमुख नेता हैं। वह परिश्रांत श्रमियों को, जो थकानेवाली दास्य-वृत्ति में दिन-भर अपना समय बिताते हैं, वीर सैनिकों में परिवर्तित कर देते हैं। वे पियानो पर बैठ जाते और साधारण ग्राम्य-गीत या बच्चों के गीत गाते हैं। योरपियन महायुद्ध के बाद वह बर्लिन में एक माडर्न स्कूल में व्यायाम-शिक्षक थे। उन्होंने बालकों के अभिभावकों की सम्मति से बालकों को नग्न करके व्यायाम कराना प्रारंभ किया था। इसकी तीव्र आलोचना हुई, और वह स्कूल से निकाल दिए गए। पर बाद को उन्हें फिर स्कूल में स्थान दिया गया, और उनका कृत्य उचित ठहराया गया था।

इसी बीच में उन्होंने व्यायाम की रात्रि-पाठशाला स्थापित की थी, जहाँ वह बालकों को ही नहीं, वरन् उनके अभिभावकों को भी नंगे रखकर व्यायाम की शिक्षा देते थे। जिस समय स्कूल में उनकी पुनर्नियुक्ति की आज्ञा आई, उसी समय उनकी पाठशाला इतनी सफल हो गई थी कि लोगों को आश्चर्य था। उनकी पाठशाला में कोई फ़ीस न पड़ती थी। प्रत्येक मनुष्य अपनी आय का एक अंश स्वेच्छा से पाठशाला को प्रदान करता था। आज उनकी पाठशाला में हज़ारों छात्र व्यायाम की शिक्षा पा रहे हैं।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

SREE SITHARAGHAVA VAIDYASALA

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।॥-)
२५ ,, ,, ,, ५≡)
} श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

पहेली-पूर्तिकार ध्यान दें !

सुधा के पुराने अंक

चौथाई मूल्य में !!

अक्सर देखा गया है कि पहेली भरनेवालों को पहेलियों के कूपनों के लिये सुधा के प्रत्येक अंक की तीन-तीन, चार-चार, आठ-आठ प्रतियाँ खरीदनी पड़ती हैं, पर वे पहेली भरने के बाद बेकार हो जाती हैं, क्योंकि उन सबमें एक ही लेख और चित्र रहते हैं। उनको सहूलियत के लिये हमने सुधा के नीचे-लिखे अंकों में भी नई पहेली लगा दी है। अब जो चाहें, नवीन अंक की कई प्रतियाँ ।)-।) में न खरीदकर इस सूची में से जो पिछले अंक पसंद करें, वह =)-≈) में मँगा लें। पहेली भरनेवालों इनका मूल्य केवल =) ही लिया जायगा, यद्यपि ।)-॥=) है। आशा है, ग्राहक इससे लाभ उठाएँगे, और मनमाने अंक खरीदेंगे। इस तरह गत १० वर्षों की सुधा का सुंदर सेट भी, उनके पास, उनके और उनके स्त्री-बच्चों के लाभ के लिये, धीरे-धीरे तैयार हो जायगा। डाक-व्यय पृथक्।

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्ति-कारों से	पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्ति-कारों से
१	अगस्त	१९२७	॥=)	=)	२५	अगस्त	१९२९	॥=)	=)
२	सितंबर	,,	,,	,,	२६	सितंबर	,,	,,	,,
३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,	२७	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
४	नवंबर	,,	,,	,,	२८	नवंबर	,,	,,	,,
६	जनवरी	१९२८	,,	,,	३१	फरवरी	१९३०	,,	,,
७	फरवरी	,,	,,	,,	३२	मार्च	,,	,,	,,
८	मार्च	,,	,,	,,	३३	एप्रिल	,,	,,	,,
९	एप्रिल	,,	,,	,,	३४	मई	,,	,,	,,
१०	मई	,,	,,	,,	३५	जून	,,	,,	,,
११	जून	,,	,,	,,	४२	जनवरी	१९३१	,,	,,
१२	जुलाई	,,	,,	,,	४३	फरवरी	,,	,,	,,
१४	सितंबर	,,	॥।)	≡)	४४	मार्च	,,	,,	,,
१५	ऑक्टोबर	,,	॥=)	=)	४५	एप्रिल	,,	,,	,,
१६	नवंबर	,,	,,	,,	४७	जून	,,	,,	,,
१७	दिसंबर	,,	,,	,,	४८	जुलाई	,,	,,	,,
१८	जनवरी	१९२९	,,	,,	५१	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
१९	फरवरी	,,	,,	,,	५२	नवंबर	,,	,,	,,
२०	मार्च	,,	,,	,,	५३	दिसंबर	,,	,,	,,
२१	एप्रिल	,,	,,	,,	५४	फरवरी	१९३२	,,	,,
२२	मई	,,	,,	,,	५९	जून	,,	,,	,,
२३	जून	,,	,,	,,	६०	जुलाई	,,	,,	,,
२४	जुलाई	,,	,,	,,	६१	अगस्त	,,	,,	,,

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम	पहेली-पूर्तकारों से
६२	सितंबर	१९३२	।।=)	=)
६३	ऑक्टोबर	,,	,,	,,
६४	नवंबर	,,	,,	,,
६५	दिसंबर	,,	१।।)	।।)
६६	जनवरी	१९३३	।।=)	=)
६७	फ़रवरी	,,	,,	,,
६८	मार्च	,,	,,	,,
६९	एप्रिल	,,	,,	,,
७०	मई	,,	,,	,,
७१	जून	,,	,,	,,
७२	जुलाई	,,	,,	,,
७३	अगस्त १	,,	,,	,,
७४	अगस्त १६	,,	,,	,,
७६	सितंबर १६	,,	,,	,,
७७	ऑक्टोबर १	,,	,,	,,
७८	ऑक्टोबर १६	,, ।।),	।=)	≡)
७९	नवंबर १	,,	।)	−)।।
८०	,, १६	,,	,,	,,
८१	दिसंबर १	,,	,,	,,
८२	दिसंबर १६	,,	,,	,,
८३	जनवरी १	३४	,,	,,
८४	,, १६	,,	,,	,,
८५	फ़रवरी १	,,	≡)	,,
८६	,, १६	,,	,,	,,
८७	मार्च १	,,	,,	,,
८८	,, १६	,,	,,	,,
८९	एप्रिल १	,,	,,	,,
९०	,, १६	,,	,,	,,
९१	मई १	,,	,,	,,
९२	,, १६	,,	,,	,,
९३	जून १	,,	,,	,,
९४	,, १६	,,	,,	,,
९५	जुलाई १	,,	,,	,,
९६	,, १६	,,	,,	,,
९७	अगस्त	,,	।)	,,

पूर्ण संख्या	मास	सन्	असली दाम
९८	अगस्त	१६ ३४	।)
९९	सितंबर १	,,	,,
१००	नवंबर	,,	,,
१०१	दिसंबर	,,	,,
१०२	जनवरी	१९३५	,,
१०३	फ़रवरी	,,	,,
१०४	मार्च	,,	,,
१०५	एप्रिल	,,	,,
१०६	मई	,,	,,
१०७	जून	,,	,,
१०८	जुलाई	,,	,,
१०९	अगस्त	,,	।।=)
११०	सितंबर	,,	।=)
१११	ऑक्टोबर	,,	,,
११२	नवंबर	,,	,,
११३	दिसंबर	,,	,,
११४	जनवरी	१९३६	।।)
११५	फ़रवरी	,,	,,
११६	मार्च	,,	।−)
११७	एप्रिल	,,	,,
११८	मई	,,	,,
११९	जून	,,	,,
१२०	जुलाई	,,	,,
१२१	अगस्त	,,	,,
१२२	सितंबर	,,	,,
१२३	ऑक्टोबर	,,	,,
१२४	नवंबर	,,	,,
१२५	दिसंबर	,,	,,
१२६	जनवरी	१९३७	,,
१२७	फ़रवरी	,,	,,
१२८	मार्च	,,	,,
१३०	मई	,,	,,
१३१	जून	,,	,,
१३२	अगस्त	,,	२)

मैनेजर सुधा, लखनऊ

काका साहब का पत्र-व्यवहार

[श्रीधर्मदेव शास्त्री दर्शनकेसरी]

ता० ४।५।३६ को मैंने श्रीकाका कालेलकरजी को निम्न-लिखित आशय का पत्र लिखा था—

“आप नागरी-लिपि में आवश्यक सुधार करके उसे अधिक व्यापक और ग्राह्य बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं, वह स्तुत्य है। परंतु मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि इसमें आप शीघ्रता न करें। उदाहरण के लिये आप उर्दू-फ़ारसी से भी जो कुछ ले सकते हों, वह भी लें। यथा उर्दू में संयुक्ताक्षर के लिये शद (شّ) का प्रयोग होता है, जिसका स्वरूप *w* इस प्रकार है। यदि हिंदी की नवीन लिपि में इसका भी समावेश कर दिया जाय, तो इसको जहाँ मुद्रणादि की दृष्टि से लाभ रहे, वहाँ हमारी नवीन लिपि की ग्राह्यता उर्दू-भाषियों की दृष्टि में भी अधिक होने की संभावना है। इस प्रकार शद का प्रयोग करने पर चक्की शब्द चँकी यों लिखा जायगा। इस प्रकार और भी कुछ योजनाएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं। यह तो मैंने उदाहरण के लिये लिखा है। आशा है, आप इस पर विचार करेंगे।”

श्रीधर्मदेव शास्त्री

इसके उत्तर में श्रीकाका साहब का १०।५।३६ को बंबई से लिखा पत्र मिला, जो इस प्रकार है—

“प्रिय धर्मदेवजी शास्त्री!

आपका ४।५।३६ का कृपा-पत्र मुझे आज यहाँ पर मिला। संयुक्ताक्षर में जहाँ द्वित्व हो, वहाँ पर उर्दू के-जैसा चिह्न बहुत काम का है। उर्दू का *w* चिह्न अक्षर के सिर पर आता है। हम लोगों का विचार सब-की-सब मात्राएँ अक्षर के उपरांत लगानी चाहिए, ऐसा है। इसलिये उर्दू का ही चिह्न थोड़े फेर-फार के साथ लेने का मेरा विचार है। आप और भी लिपि के संबंध में जो कुछ ऐसी बातें ध्यान में आवें, मुझे अवश्य बताते रहें। उर्दू-फ़ारसी से हम जो कुछ ले सकें, अवश्य लेंगे।

भवदीय
काका कालेलकर”

इस पत्र के उत्तर में मैंने १५।५।३६ को, श्रीकाका साहब को, निम्न-लिखित पत्र लिखा। इस पत्र में नागरी-लिपि-सुधार समिति की दूसरी बैठक

(जो इलाहाबाद में ता० ४ और ५ एप्रिल, १९३६ को हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के कार्यालय में हुई थी) के मुद्रित योजनात्मक प्रस्तावों के संबंध में अपने विचार लिखे थे । यह ६ पृष्ठ की पुस्तिका श्रीदुलारेलाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ से श्रीकाका साहब ने ही प्रकाशित कराई है । इसकी एक प्रति उन्हीं ने मेरे पास भेजी थी—

"श्रीमान्य काका साहब, सादर वंदे ।

आपके ता० १० । ५ । ३६ के कृपा-पत्र के अनुसार अपने विचार लिपि के संबंध में लिखने लगा हूँ ।

१. मैंने संयुक्ताक्षरों में द्वित्व के स्थान पर उर्दू के 'ّ' चिह्न के प्रयोग करने की बात आपको लिखी थी, आपने उत्तर में लिखा है—

'उर्दू का ّ चिह्न अक्षर के सर पर आता है । हम लोगों का विचार मात्राएँ अक्षर के उपरांत लगानी चाहिए, ऐसा है । इसलिये उर्दू का ही चिह्न थोड़े फेरफार के साथ लेने का मेरा विचार है ।'

इस संबंध में इतना ही निवेदन है कि यह ठीक है । मात्राएँ उच्चारण-क्रम से ही लिपि में रक्खी जायँ, इसी में लिपि की वैज्ञानिकता है, परंतु मेरा निवेदन है कि ω चिह्न मात्रा नहीं, यह तो द्वित्व का द्योतक-मात्र है । इसलिये यदि इसे द्वित्वाक्षर के सर पर रक्खा जाय, तो कोई हानि नहीं, उल्टा इसे तो उस अक्षर के मात्रा-चिह्न से प्रथम ही लिखा जाना चाहिए, क्योंकि वह जिस द्वित्व अक्षर का द्योतक व प्रतिनिधि है, उसको लिपि में मात्रा से पूर्व ही लिखा जाता है । जिस प्रकार—च क् क् ई (चक्की) ।

२. इसी सिद्धांत के आधार पर आपकी समिति द्वारा निश्चित और मुद्रित प्रस्तावों में प्रस्ताव नं० २ के 'घ' भाग—'अनुस्वार-अनुनासिक के चिह्न भी अक्षर के बाद ऊपर लिखे जायँ', इससे मुझे असहमति है । क्योंकि अनुस्वार और अनुनासिक पृथक् मात्रा नहीं । पतंजलि ने व्याकरण महाभाष्य में इन्हें अयोगवाहों में गिना है, और आवश्यकतानुसार 'अट्' तथा 'शर्' प्रत्याहारों में समझा जाने को कहा है । इनका नाम ही अयोगवाह इसलिये है कि 'यदयुक्ताश्च वहन्ति, अनुपदिष्टाश्च श्रूयन्ते ।' (महाभाष्य) इसलिये इन्हें मात्रा नहीं समझा जा सकता । लिपि में किन्हीं विशेष स्थलों पर इनका रूप व्यंजनात्मक तथा कहीं-कहीं अव्यंजनात्मक रहता है । उच्चारण के अनुसार 'कंगला' इस पद में अनुस्वार अच् से पृथक् प्रतीत नहीं होता । इसीलिये संस्कृत-व्याकरण में अकारादि के अनेक भेदों में ही सानुनासिक को भी गिन लिया गया है । वर्तमान काल में भी 'अं, अः' को अचों में ही पढ़ा जाता है । इनके संबंध में भट्टोजि दीक्षित ने लिखा है--

'अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गौ ।'

इस प्रकार मेरा विचार है कि मात्रा समझकर अथवा वर्णोच्चारण-क्रम से भी अनुस्वार और अनुनासिक को अक्षर के बाद में न लिखकर अक्षर के ऊपर ही रखना चाहिए, क्योंकि इन्हें अक्षर से पृथक् नहीं किया जा सकता, और न इन्हें पृथक् बोला ही जा सकता है । ये तो मात्रा के विशेष भेद हैं, पृथक् वर्ण नहीं ।

३. प्रस्ताव नं० ४—'दक्षिण की लिपियों के स्वरों में ह्रस्व 'ए' और ह्रस्व 'ओ' के स्वरूप आते हैं, उनके लिये मात्रा इस प्रकार ऽ लगाई जाय ।'

इस पर मुझे इतना ही वक्तव्य है कि ऐसी ध्वनि को ह्रस्व 'ए' तथा ह्रस्व 'ओ' न कहकर 'अर्ध एकार' तथा 'अर्ध ओकार' ही कहना चाहिए । इनकी पृथक् ध्वनि का प्रश्न महाभाष्यकार ने उठाकर इसे 'पार्षदकृति' 'उच्चारण के भेद-मात्र' कहकर टाल दिया है । परंतु है तो यह आवश्यक । परंतु इसका द्योतक जो चिह्न दक्षिण

की भाषाओं से आपने लिया है, उसकी अपेक्षा यह चिह्न ✓ जो इस समय हिंदी-लिपि में व्यवहृत भी हो रहा है, अच्छा रहेगा। यदि प्रचलित रूप में कोई अशुद्धि अथवा हानि विशेष नहीं, तो उसे क्यों छोड़ा जाय। और, फिर अपने अब प्रस्ताव नं० ५ के अनुसार अनुनासिक का चिह्न भी '·' मात्रा निश्चित किया है, इसलिये इसमें कुछ असमंजस नहीं होगा।

४. प्रस्ताव नं० ७—'विराम-चिह्न आजकल सब भाषाओं में जैसे प्रचलित हैं, वे ही क़ायम रक्खे जायँ। पूर्ण विराम का चिह्न पाई रहे।' इसमें विराम-चिह्नों के अतिरिक्त हर्ष-शोकादि-सूचक चिह्नों का भी समावेश कर देना चाहिए, तथा स्वर-विज्ञान के आधार पर कुछ चिह्नों का निर्माण भी करना चाहिए। इससे हमारी लिपि समृद्ध होगी। क्या वैदिक भाषा के उदात्तादि चिह्नों से इस संबंध में सहायता ली जा सकती है?

५. प्रस्ताव नं० १२—''ज्ञ' के उच्चारण में प्रांतीय भिन्नता होने से 'ज्ञ' का रूप जैसा है, वैसा ही रक्खा जाय।

'ॐ और श्री के जो रूप प्रचलित हैं, उन्हें स्वीकृत किया जाय।' इसमें उच्चारण के अनुसार 'ज्ञ' और 'ग्य' में आपने क्या भेद निश्चित किया है? क्या 'ज्ञ' को 'ज्ञ' नहीं लिखा जा सकता? या चाहिए। और फिर 'ज्ञ' भी दो प्रकार से लिखा जाता है—

'ज्ञ' और 'ज्ञ'। इसके लिये भी आपने कोई निश्चय नहीं किया।

६. प्रस्ताव नं० १०—''अ', 'झ', 'ण' की जगह बंबई-टाइपवाले स्वरूप को स्वीकृत किया जाय, और 'ल, श' की जगह हिंदी के रूप रक्खे जायँ। 'च' का 'क्ष' रूप स्वीकार किया जाय। बीजगणितादि वैज्ञानिक साहित्य में संज्ञा रूप 'त्त' आ सकता है।' इस प्रस्ताव में आपने 'झ' के स्थान पर बंबई-टाइप के 'झ' रूप को ही स्वीकृत किया है। क्या उसके स्थान पर 'झ' रूप ही वैज्ञानिक नहीं? अथवा नागरी-लिपि के क्रमिक विकास के अनुकूल नहीं? लिखने में सुविधा की दृष्टि से भी 'भ' अक्षर के आगे) चिह्न-मात्र लगाने से काम चल सकता है। इस प्रकार सुगमता रहेगी, क्योंकि 'इ' का रूप तो नवीन लिपि में आपने बदल दिया है, जिससे दूसरे रूप के लिखने में भी सुविधा रहती।

एक और बात है—मेरा विचार है कि महाप्राण (वर्ग के द्वितीय-चतुर्थ) अक्षरों का रूप हमें बदलना चाहिए। वर्ग के प्रथम-तृतीय अक्षरों के आगे) इस प्रकार का चिह्न लगाकर इनको लिखना चाहिए, क्योंकि ये पृथक् ध्वनियाँ नहीं हैं। नागरीलिपि के कुछ रूप ही इसके प्रमाण हैं। जिस प्रकार 'प' के आगे) चिह्न लगाने से 'फ' बन गया है। 'ट' के आगे ')' चिह्न लगाने से ही 'ठ' बना है। इसी प्रकार 'ज' के आगे ')' लगाने से ही 'झ' बना है। 'ड' के आगे ')' चिह्न लगाने से ही दोनो को मिला देने पर 'ढ' रूप बना प्रतीत होता है। 'ग' के आगे उसी चिह्न को न लगाकर पाई से पूर्व ही जोड़ देने पर 'म' 'घ' रूप बना है। 'ब' के आगे उसी चिह्न को न लगाकर प्रथम ही जोड़ देने पर र्भ 'भ' बना है। 'द' के आगे ')' चिह्न को लिख देने से ढ5 'ध' रूप बना है। इसी प्रकार मैं समझता हूँ कि नागरी-लिपि के क्रमिक विकास की किसी रूप-रेखा के आगे ')' इस प्रकार का चिह्न लगा देने से महाप्राण अक्षरों का निर्माण हुआ है। इसलिये वर्ग के प्रथम-तृतीय अक्षरों के आगे ')' चिह्न लगाकर द्वितीय-चतुर्थ वर्णों का निर्माण करना चाहिए। इस प्रकार हमारी भाषा और भी वैज्ञानिक एवं सरल हो सकेगी। यदि आपकी इच्छा हुई, तो इस

प्रकार महाप्राण अक्षरों का पूरा क्रमिक रूप लिखने का भी प्रयत्न करूँगा। और फिर 'ह' अक्षर में भी तो ')' चिह्न ही मुख्य है। शेष उसका रूप तो 'ɪ' का ही है। क्या इनको स्वीकार किया जा सकता है? आपकी समिति इस पर विचार कर सकती है?

७. प्रस्ताव नं० ८—अंकों के स्वरूप इस प्रकार के रहें—०, १ (१), २, ३, ४, ५, ६, ७, <, (८), ९। इस प्रस्ताव में अंकों के जो रूप आपने निर्धारित किए हैं, उन पर भी मुझे विप्रतिपत्ति है।

'५' अंक का रूप '५' वैज्ञानिक नहीं है, उसके स्थान पर '५' इस प्रकार का चिह्न ही होना उचित है। क्योंकि पाँच अंक का मूल रूप ५ ही होगा। उसका विकसित रूप '५' ही है।

इसी प्रकार '६' का भी आपने '६' रूप निश्चित किया है। वह भी ठीक नहीं जँचता, उसके स्थान पर भी '६' ऐसा रूप ही उचित है, यही वैज्ञानिक भी है, क्योंकि छः का मूल रूप ≡ ही है।

आठ का रूप भी '८' इस प्रकार ही होना चाहिए, उपर्युक्त आधार पर ही < नहीं।

नव अंक का रूप भी '९' के स्थान पर ९ ही होना चाहिए, क्योंकि 'नव' अंक का मूल रूप ≡ है। इसका विकसित रूप '९' तो किसी प्रकार भी ठीक नहीं।

आशा है, आप इन योजनाओं पर विचार करेंगे, तथा अपनी सम्मति से शीघ्रातिशीघ्र सूचित करेंगे। आपकी आज्ञा मिलने पर ही इन विचारों पर पत्रों में कुछ लिखने का विचार भी किया जायगा। अस्तु, शेष पुनः।

भवदीय—
धर्मदेव शास्त्री"

इस पत्र की प्राप्ति-सूचना-पत्र नंदी-पर्वत से श्रीकाका साहब ने निम्न-लिखित प्रकार से २३।५।३६ को दिया।

"प्रिय पंडितजी!

आपका १५।५ का पत्र मुझे यहाँ आकर मिला। मैं यहाँ पर पूज्य गांधीजी के पास १५ जून तक रहूँगा। आपके पत्र का उत्तर एक-दो दिन के अंदर दूँगा। कृपया राह देखें।

ह० काका कालेलकर"

श्रीकाका साहब का पत्र

वर्धा म० प्रा०
२५।६।१९३६

"प्रिय धर्मदेवजी!

आपके ता० १५।५।३६ के पत्र का उत्तर आज ता० २५।६।३६ को दे रहा हूँ। पत्र का उत्तर सविस्तर देना था, इसलिये अनुकूल अवसर की राह देखता रहा। लेकिन तुरंत के काम रोज़ मेरे सिर पर इतने आते थे कि इसे हाथ में न ले सका। आपने आज तक धीरज रक्खा, इसके लिये मैं अवश्य आपका कृतज्ञ हूँ। अब आपके प्रश्नों का उत्तर यथाक्रम देता हूँ—

लिपि-सुधार में एक उद्देश्य यह है कि लिपि पठन-सुलभ और लेखन-सुलभ तथा वैज्ञानिक होने के उपरांत वह मुद्रण-सुलभ भी हो और मुद्रा-लेखन (Typewriting)-सुलभ भी हो। अब लिपि में कोई भी चिह्न अक्षर के ऊपर या नीचे आने से मुद्रण में बड़ी मुश्किल आती है। आज के नागरी-मुद्रण में े, ै, ॑, ि, ी, ँ, इतनी मात्राएँ अक्षरों के सिर पर आती हैं। ु, ू, ृ, ्, इतनी मात्राएँ अक्षरों के पैरों-तले आती हैं। और, कई संयुक्ताक्षरों में अक्षर (व्यंजन) एक दूसरे के नीचे आते हैं। इसलिये नागरी का कंपोज़िंग तीन मंज़िलों का हो जाता है। रोमन याने अँगरेज़ी-लिपि के मुद्रण में सब अक्षर एक के पीछे एक आते हैं। अक्षर एक के बाद एक आवे, यह बहुत ज़रूरी है। किसी का सिर ऊँचा जाय, किसी की टाँग या दुम

नीचे जाय, इसमें कोई आपत्ति नहीं है। अँगरेज़ी |l|e|g| यह शब्द लीजिए। इसमें 'एल्' ऊपर गया है, 'जी' नीचे गया है, तो भी तीनो के टाइप समान क़द के हैं। 'l' के नीचे खुली हुई जगह है, 'g' के ऊपर खुली हुई है, और 'e' के दोनो (ऊपर-नीचे) तरफ़ खुली जगह है। इस खुली हुई जगह को अँगरेज़ी में 'बिअर्ड' कहते हैं। नागरी-अक्षरों में ऊपर की तरफ़ 'बिअर्ड' रखनी ही पड़ती है, नहीं तो दो पंक्तियाँ एक दूसरे से सट जायँगी।

इस ऊपर की बिअर्ड में हम ह्रस्व 'इ' दीर्घ 'ई', 'ए', 'ऐ', अनुस्वार आदि सारी मात्राएँ अक्षर के बाद रखते हैं। अगर आपका द्वित्व-चिह्न '$\mathcal{W}$' अक्षर के ऊपर रखा जाय, तो फिर पहले के-जैसे दो या तीन मंज़िले का कंपोज़िंग चलाना पड़ेगा। या फिर हरएक व्यंजन के साथ द्वित्ववाली संज्ञा-वाला नया टाइप बनवाना पड़ेगा, जिससे टाइपों की संख्या एकदम दुगुनी हो जायगी। विना डिग्री के कंपोज़िंग में यही कठिनाई है, जिससे नागरी-मुद्रण कठिन और महँगा हुआ है। और, बेचारे नागरी-कंपोज़ीटरों को अँगरेज़ी के कंपोज़ीटरों से तीनगुना काम करते हुए भी ग़रीब और अप्रतिष्ठित रहना पड़ता है।

नागरी-अक्षरों के सिर पर जो बिअर्ड की जगह रहती है, उसी में घ, ख, श, थ, क्ष आदि अक्षरों का आद्य वर्तुल हम चढ़ाते हैं— घ, ख, श, थ, क्ष। ह्रस्व और दीर्घ ई की गुड़ी भी ऊपर के बिअर्ड में ही जाती है, जैसे का ी और पा ी इसमें टाइप तो एक के पीछे एक आते हैं, और 'कर्निंग' का झगड़ा नहीं रहता। अब आप समझ गए होंगे कि द्वित्व का चिह्न '$\mathcal{W}$' क्यों और कैसा मुश्किल है। हिंदी में एक शब्द बार-बार आता है, तब आप '२', का अंक ही आगे रख देते हैं। द्वित्व के लिये ऐसी कुछ तरकीब सोचनी पड़ेगी, जिसे मैं सोच रहा हूँ।

अनुस्वार कोई मात्रा नहीं है। हरएक स्वर सानुनासिक तथा निरनुनासिक बन जाते हैं। यह मैं जानता और मानता हूँ, लेकिन छापने और मुद्रा-लेखन में हरएक स्वर की मात्रा के ऐसे दो-दो टाइप तो हम नहीं बना सकते हैं। इसलिये स्वरों की मात्राओं के पहले या बाद में अनुस्वार-द्योतक चिह्न रखना आवश्यक है। कानड़ी आदि द्राविड़ भाषाओं में अनुस्वार या अननुनासिक का चिह्न अक्षरों के ऊपर नहीं आता, बाद में आता है।

दक्षिण की लिपियों में ह्रस्व 'ए' और दीर्घ 'ए' तथा ह्रस्व दीर्घ 'ओ' के रूप हैं। आप जिस चंद्र की संज्ञा की सिफ़ारिश करते हैं, वह चीज़ ही दूसरी है। वह चंद्र अँगरेज़ी में अॅ, ऑ का द्योतक है।

Cat	कॅट्	get	गॆट्	cate	केट्
Mat	मॅट्	met	मॆट्	gate	गेट्
				mate	मेट्

हिंदी में भी ए-ओ के ह्रस्व तथा दीर्घ पृथक् उच्चारण पाए जाते हैं, लेकिन हम यह भेद लिखने में नहीं बताते हैं, क्योंकि उसके विना हमारा काम चल सकता है। दक्षिणी-भाषाओं में इस उच्चारण-भेद से अर्थ-भेद होता है। अँगरेज़ी के उच्चारण बताने में भी आप mat और met तथा mate का फ़र्क़ आसानी से नहीं बतला सकते हैं। mat के लिये म्याट् लिखने से ग़लत उच्चारण बताया जायगा। और 'म्या' का ह्रस्व आप कैसे बताएँगे। ऊपर चंद्र 'ॅ' देने से उच्चारण myaw-जैसा होगा।

मेरे ध्वनि-शास्त्र के अनुसार स्वर ये हैं—अ, आ, इ, उ, अॅ, ऑ, ये छ ही हैं। ये छहों ह्रस्व हैं। पाणिनि-व्याकरण कहता है कि 'अ' का दीर्घ 'आ' है। व्याकरण की व्यवस्था की दृष्टि से यह भले ही सही हो [मैं समझता हूँ कि पाणिनि

'आ' को 'अ' की वृद्धि समझता है, दीर्घ नहीं।]। सब देशी भाषाओं में 'अ के ह्रस्व तथा दीर्घ रूप पाए जाते हैं। जैसे गुजराती में तज = त्यागकर और तॅज = दालचीनी। छहो स्वरों के दीर्घ होने चाहिए।

'अ' का और भी एक सूक्ष्म रूप है, जिसका कठोर कंपन करने से 'ऋ' होता है, और मुलायम कंपन करने से 'ऌ' होता है। इसलिये इन दोनो को भी स्वरों में लिया है, और स्वतंत्र स्थान दिया है। इनके भी ह्रस्व और दीर्घ दोनो रूप बनते ही हैं। संस्कृत में दीर्घ 'ॡ' का प्रयोग नहीं पाया जाता है। ह्रस्व 'ऌ' का भी रूप एक ही धातु 'कॢप्' में पाया गया है। बाक़ी को तो पाणिनि के 'इत्' में ही उसका स्थान है।

मेरे ध्वनि-शास्त्र के अनुसार ऊपर बताए हुए आठ स्वरों के भिन्न-भिन्न संयोगों से संयुक्त स्वरपैदा होते हैं। दो सवर्ण आने से दीर्घ होते हैं, असवर्ण आने से संयुक्त होते हैं [यहाँ मैं व्याकरण-शास्त्र का रास्ता छोड़कर केवल ध्वनि-शास्त्र का ही रास्ता लूँगा।]। व्याकरण के अनुसार अ+इ = ए, इसका अभिप्राय यह है कि जहाँ 'अ' के बाद 'इ' आता है, तब लोगों की आदत है कि दोनो स्वरों को हटाकर उनकी जगह 'ए' को रख देते हैं। यह तो सधि का नियम हुआ। ध्वनि-शास्त्र के अनुसार 'अ' के उच्चारण के बाद अगर 'इ' का उच्चारण किया जाय, तो दोनो का संयुक्त उच्चारण 'ऐ' होगा। अ + इ = ऐ ध्वनि-शास्त्र के अनुसार। इसी तरह से अ + उ = औ। यह 'औ' हिंदी का नहीं, संस्कृत का है। हिंदी का 'औ' अँगरेज़ी के 'O' ऑ-जैसा है। हिंदी का 'और' or

अब य, व, र, ल भी एक तरह से संयुक्त स्वर ही हैं—

इ + अ = य

उ + अ = व

ऋ+अ = र

ऌ + अ = ल

हिंदीवाले ऋ का शुद्ध उच्चारण कर ही नहीं सकते हैं। वे उसे 'रि' ही बोल देते हैं। शुद्ध उच्चारण दक्षिण में पाया जाता है। वहाँ भी 'ऋ' को 'र' या 'रू' बोलनेवाले पाए जाते हैं। य, व, र, ल संयुक्त स्वर होते हुए भी उनका ककहरा (बारहखड़ी) बन सकता है। इसलिये वे व्यंजन ही हैं। इसीलिये इनको अंतःस्थ कहा है। अँगरेज़ी में इन्हें सेमीवॉवल्स कहते हैं। 'ह' तो 'अ' का ही महाप्राण है। उसकी भी बारहखड़ी होने के कारण और उसका शुद्ध उच्चारण चिरजीवी होने के कारण उसे भी व्यंजन बनाकर अंतःस्थ में रख दिया है। उ+अ = व, यह शुद्ध उच्चारण अँगरेज़ी में पाया जाता है। संस्कृत का 'व' अधरोष्ठ को अंदर लेकर बोला जाता है। इसलिये उसका संयुक्त स्थान दंतोष्ठ बताया है। यह उच्चारण बाद में आया होगा। शुद्ध तो नहीं है।

भारत की सब देशी भाषाएँ जिन-जिन उच्चारणों को काम में लाती हैं, उनकी व्यवस्था करना और उनके नागरी रूप निश्चित कर देना, यही लिपि-समिति का क्षेत्र है। तो भी हमें स्थूल रूप बताकर ही संतोष मान लेना चाहिए। सूक्ष्म वैज्ञानिकता तक जनता जाने के लिये तैयार नहीं है। शायद उसकी आवश्यकता भी नहीं है।

विराम-चिह्नों के साथ उद्गार-सूचक चिह्नों का भी समावेश करना चाहिए। हमने तो केवल पूर्ण विराम अन्य भाषाओं में जो बिंदु है, उसके स्थान पर प्राचीन चरण-चिह्न (पाई) रखने की, जैसी हिंदी में है, सिफ़ारिश की है। बाक़ी के सब चिह्न पाश्चात्यों के ही लिये हैं। वैदिक अनुदात्त और

स्वरित दो चिह्न वैदिक उच्चारण दिखाने के लिये ही रक्खे जायँ। हालाँकि कोंकणी-भाषा ने दीर्घ अ बताने के लिये स्वरितचिह्न का व्यवहार शुरू कर दिया है। जैसे चेंड = अधिक। गुजराती तेज= दालचीनी भी इसी ढंग से लिखना चाहिए।

'ज्ञ' शास्त्र के अनुसार ज + ञ मिलाकर ही बनाया गया है, लेकिन प्रांत-प्रांत में उसके उच्चारण भिन्न-भिन्न और विचित्र ढंग के पाए जाते हैं। महाराष्ट्र में और द्राविड़-भाषाओं तथा गुजराती में भी 'ज्ञ' का उच्चारण द्+न्+य = द्न्य-जैसा होता है, और बताया जाता है कि यही वैदिक परंपरा का उच्चारण है। तुंगभद्रा के किनारे पर विजयनगर-साम्राज्य के समय सायणाचार्य ने वैदिक भाष्य लिखा, वहाँ पहले ही से वैदिक परंपरा चली आती थी। इसलिये वहाँ का उच्चारण शुद्धतम गिना जाता है।

अब अगर 'ज्ञ' के हिज्जे उच्चारण के अनुसार किए जायँ, तो उच्चारण के साथ स्पेलिंग की भी अनवस्था प्राप्त होगी, इस डर से 'ज्ञ' के रूढ़ रूप ही रख दिए हैं। ज्ञ, ज्ञ इन दो रूपों में शैली का भेद है, रूप का भेद नहीं है। दोनो में 'ज' को ही एक दुम लगा 'ज्ञ' बनाया गया है। 'ज' के भी तो दो रूप हैं ज, ज, ज्ञ, ज इस तरह के 'ज' के अनेक रूप हो सकते हैं। मैं तो तीसरा पसंद करता हूँ।

अगर सब व्यंजनों के अंत में पाई होती, उसके अर्द्ध रूप आसानी से बन सकते, जैसे 'स' का 'स्', 'म' का 'म्' वग़ैरह। अब नागरी में २५ अक्षरों के अंत में पाई है। नौ में आधी पाई है, जैसे ट, द, छ इत्यादि। शिरोरेखा के साथ सटनेवाले भाग को मैं अर्धपाई कहता हूँ। बाक़ी के अक्षर विना पाई के हैं। जैसे 'र' बंबइया 'ल' है तो सुंदर, लेकिन इसे हमने छोड़ दिया है। मराठी ने भी छोड़ने को स्वीकार किया है, क्योंकि हिंदी 'ल' के अंत में पूरी पाई है। अब क, फ और हिंदी झ, ये तीनो अपनी पाई पेट में रखते हैं, इसलिये इनका अर्धरूप बनाना मुश्किल-सा लगता है। 'क', 'फ' का तो कोई इलाज ही नहीं है, झ के लिये बंबइया 'झ' रूढ़ था, उसी को ले लिया। जो अक्षर क़ानून के पाबंद हैं, उन्हीं को लिपिनिष्ठ समझकर ले लेंगे, और जो क़ानून की नाफ़रमानी करते हैं, अगर हो सके, तो दूर ही रक्खेंगे।

लिपि-सुधार-समिति की स्थापना होते ही मैंने महाप्राण के स्वतंत्र अक्षर रखकर, उनके अल्पप्राणों को ')' ऐसी दुम लगाकर, महाप्राण बनाने की सूचना की थी, और फलतः हिंदी-अखबारवालों से ग़ालियाँ भी खाई थीं। अखबारवाले स्वयं विज्ञान नहीं जानते, तो क्या हुआ; मनहूस, ऊटपटाँग आदि विशेषण तो उनके पास मौजूद हैं। हिंदी-अखबारों की ऐसी समालोचना सुनकर मुझे बड़ा रंज हुआ। मुझे ऐसी भाषा के प्रयोग करने की आदत नहीं थी, अब आदी बनना पड़ा है। मैं तो घोष और अघोष का भेद भी वैज्ञानिक बना सकता हूँ। जैसे—

(प) (फ) (ब) (भ) (क) (ख) (ग) (घ)

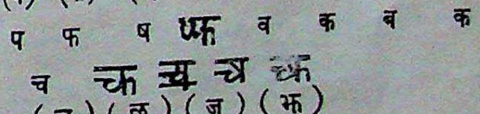

(च) (छ) (ज) (झ)

लेकिन यह सब कौन मानेगा। ष का ब बना दिया, 'व' का 'क' बना दिया, और 'क' का 'ख' कहकर मुझे कम-से-कम तीन दफ़ा फाँसी पर चढ़ाएँगे। ऊपर की योजना में एक दोष ज़रूर है, जो एक महाराष्ट्री सज्जन ने बताया था कि सब महाप्राण अक्षरों में पाई पेट में आएगी। उच्चारण के क्रम के अनुसार प्रथम वर्गीय आद्याक्षर, उसके बाद महाप्राण का चिह्न और उसके बाद अकार-द्योतक पाई आनी चाहिए। आप इस पर सोचें।

अंकों के रूप में एक बात ध्यान में रखनी चाहिए। सब अंक शून्य के विस्तार से हुए हैं— १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ इस तरह से अंकों का विस्तार हुआ है। केवल ८ ने अपना शून्य ढीला कर दिया है। क्योंकि पुराने व्यापारी आना-पै दिखाने के लिये σ इस चिह्न का उपयोग करने लगे। ४ रुपया २ आना और १ पाई लिखना हो, तो ऐसा ४ σ २ σ σ १

इसलिये शायद आठ (८) का स्वरूप बदल दिया। आपके ५, ६ और ८, ९ के रूप बदे हैं, इसलिये लिपि-समिति के हिंदी-भाषी सदस्यों ने भी सर्वानुमति से बंबइया अंक ही पसंद किए हैं, जो बहुत शीघ्रता से सब प्रांतों में प्रचलित हो रहे हैं।

आपको इससे भी अधिक विस्तार से लिखने को जी चाहता है, लेकिन अन्य काम स्थगित करके मैं इतना लिख सका। अब डाक भेजने का अंतिम क्षण आ पहुँचा है, इसलिये देहरादून आने के बारे में कल ही लिखूँगा। कृपया क्षमा करें।"

संयुक्तप्रांतीय शिक्षा-विभाग की ओर से प्रचलित

हिंदी-विशेष-योग्यता-

परीक्षा

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, महिला-विद्यापीठ, इलाहाबाद तथा पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र

जगत्-विख्यात

Registered **"कॉनटैक्स"** रजिस्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करके और अधिक संतान उत्पन्न करके अपने स्वास्थ्य और सुंदरता को मिट्टी में मिलाना और अकाल-मृत्यु के मुख में जाना नहीं चाहतीं, तथा दासों और अनाथों की संख्या बढ़ाना महापाप समझती हैं, वे कॉनटैक्स के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १।।), डाक-ख़र्च ।=)

आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

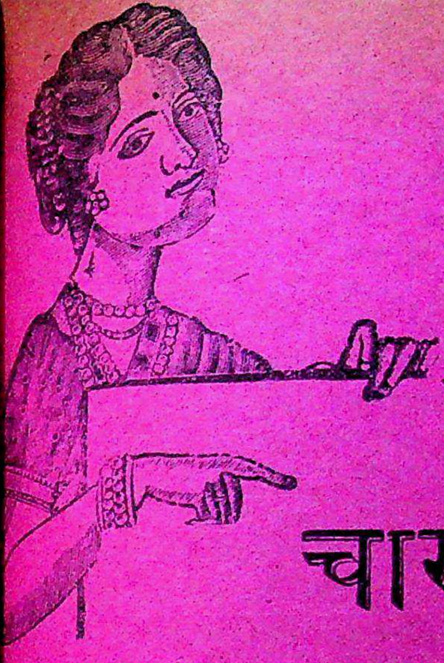

चार नए रत्न

१—फूलों की सेज

[लेखक, श्रीविजयबहादुरसिंह बी० ए०]

इस अपूर्व पुस्तक में युवक-युवतियों एवं नवविवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक और वैज्ञानिक वर्णन हुआ है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म-शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतु-बाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दोहद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक नई तरुणियों के लिये जीवन प्रदायक है। अश्लीलता का लेश-मात्र नहीं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

२—ब्रज-भारती

[लेखक, कविवर पं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए०]

ब्रजभाषा-साहित्य में युगांतर करनेवाला परमोत्कृष्ट ग्रंथ है। ब्रजभाषा में नवीन शैली के छंदों और आधुनिक ढंग के विषयों का सुंदर समावेश करने का सुंदर साधन। इस काव्य ने यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजभाषा में जो लोच और लचक है वह आधुनिक काल की आवश्यकता और भार को सहन कर सकती है। जो लोग ब्रजभाषा के प्रेमी हैं, वे यह प्रमाणित करने के लिये कि ब्रजभाषा अब भी जीवित-जाग्रत् तथा शक्तिशाली है, लेखक के चिर-कृतज्ञ रहेंगे। मूल्य सादी ।।।), सजिल्द १)

३—अतीत के चित्र

[लेखिका, श्रीकुमारी सुशीला आगा एम्० ए०]

कुमारी सुशीला आगा एम्० ए० हिंदी की प्रसिद्ध कहानी-लेखिका हैं। इस पुस्तक में आपकी ६ कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर और भाव-पूर्ण हैं। भाषा बड़ी ही सुंदर, सरस और हृदय-स्पर्शी है। घटना-क्रम और हृदय की आंतरिक वृत्तियों का ऐसा मार्मिक चित्रण हुआ है कि पढ़ना आरंभ करने पर समाप्त किए बिना छोड़ने को जी नहीं चाहता। नारी-सुलभ सौंदर्य एक-एक पद से विकसित हो रहा है। मूल्य सादी १।), सजिल्द १॥)

४—बिहारी-दर्शन

[लेखक, साहित्याचार्य पं० लोकनाथ द्विवेदी
सिलाकारी, साहित्यरत्न]

इसमें एक सर्वथा नूतन और अत्यंत रोचक शैली से हिंदी-भाषा के पीयूषवर्षी महाकवि श्रीबिहारीलाल-जी की कविता पर प्रकाश डाला गया है। इस एक ही ग्रंथ में सरसता का सागर, पांडित्य का पीयूष, [illegible] की कलित कौमुदी, भाषा की मधुरता, समास-योजना का सौरभ, मनोभावों की मनोरमता, प्रकृति-वर्णन में पूर्ण संवेदना, भक्ति, नीति, गणित, दर्शन, ज्योतिष, राजनीति और मनोविज्ञान की मनोहर मीमांसा का जमघट देखकर आप इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। मूल्य २), सजिल्द २॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सुधा के नियम

मूल्य

सुधा के तीन संस्करण निकलते हैं, और उनका डाक-व्यय-सहित मूल्य इस प्रकार है—

राजसंस्करण

वार्षिक मूल्य	१२)
एक प्रति का	१)

साधारण संस्करण

वार्षिक मूल्य	६)
एक प्रति का	॥)

सस्ता संस्करण

वार्षिक मूल्य	४)
एक प्रति का	।)

वी० पी० से मँगाने में ।) रजिस्ट्री के और देने पड़ेंगे। इसलिये ग्राहकों को मनीऑर्डर से ही चंदा भेज देना चाहिए। वर्षारंभ अगस्त (श्रावण) से होता है, और प्रतिमास के अंत में पत्रिका प्रकाशित हो जाती है। ग्राहक चाहे जिस संख्या से ग्राहक बन सकते हैं। विदेशों के लिये भी वही मूल्य है, जो भारतवर्ष के लिये। सुधा में यह ख़ास बात है।

अप्राप्त संख्या

अगर कोई संख्या किसी ग्राहक के पास न पहुँचे, तो १५ दिन के अंदर कार्यालय को सूचना मिलनी चाहिए। लेकिन हमें सूचना देने के पहले स्थानीय पोस्ट-ऑफ़िस में उसकी जाँच करके डाकख़ाने का दिया हुआ उत्तर सूचना के साथ आना चाहिए। उनको उस संख्या की दूसरी प्रति भेज दी जायगी। लेकिन १५ दिन बाद सूचना मिलने से ध्यान नहीं दिया जायगा, और वह संख्या ग्राहक टिकट भेजने पर ही पा सकेंगे।

पत्र-व्यवहार

उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिए, अन्यथा पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। पत्र के साथ ग्राहक-नंबर का भी उल्लेख होना चाहिए। मूल्य या ग्राहक होने की सूचना मैनेजर सुधा, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ के पते से आनी चाहिए।

पता

ग्राहक होते समय अपना नाम और पता बहुत साफ़ अक्षरों में लिखना चाहिए। दो-एक महीने के लिये पता बदलवाना हो, तो उसका प्रबंध डाक-घर से ही कर लेना ठीक होगा। अधिक दिन के लिये बदलवाना हो, तो संख्या निकलने के १० दिन पेश्तर उसकी सूचना हमें देनी चाहिए।

लेख आदि

लेख या कविता स्पष्ट अक्षरों में, कागज़ की संशोधन के लिये इधर-उधर जगह छोड़कर, लि चाहिए। क्रमशः प्रकाशित होने लायक बड़े ले आने चाहिए। किसी लेख अथवा कविता के करने या न करने का, उसे घटाने-बढ़ाने का लौटाने या न लौटाने का सारा अधिकार संपा है। जो नापसंद लेख संपादक लौटाना मंज़ूर टिकट भेजने पर ही वापस किए जा सकते हैं लेखक लेना स्वीकार करते हैं, तो उपयोगी औ लेखों पर पुरस्कार भी दिया जाता है। सुधा में प्र पुरस्कृत लेखों और कविताओं को पुस्तकाकार संग्रह में निकालने का अधिकार सुधा के रहेगा। अपुरस्कृत रचनाओं पर लेखकों और अध्यक्ष, दोनों का अधिकार होगा। सचित्र ले चित्रों का प्रबंध लेखकों को करना चाहिए।

करने के लिये आवश्यक ख़र्च प्रकाशक देंगे।

लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्त बदले के पत्र इस पते से भेजने चाहिए—

श्रीदुलारेलाल भार्गव
कवि-कुटीर, लखनऊ

विज्ञापन

किसी महीने में विज्ञापन बंद करना या हो, तो एक महीना पहले सूचना देनी चाहिए।

अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। छपाई पे जाती है। विज्ञापन की दर नीचे प्रकाशित है—

साधारण १ पृष्ठ या २ कालम की छपाई १५)
" १/२ " या १ " " " १०)
" १/४ " या १/२ " " " ६)
" १/८ " या १/४ " " " ३)

विज्ञापन छपानेवालों को सुधा मुफ़्त मिलत

सुधा में विज्ञापन छपाने से बड़ा लाभ कारण, इसका प्रत्येक विज्ञापन लाखों पढ़े-लि मानी और सभ्य स्त्री-पुरुषों की नज़रों से है। सबसे सस्ती, सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय के कारण इसका प्रचार भी ख़ूब है, और रहा है।

कृपया शीघ्र ही विज्ञापन छपवाकर कम-से-कम एक बार परीक्षा तो कीजिए।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

सुधा-चित्रावली

(प्रतिच्छविकार—श्रीयुत राजगोपालजी)

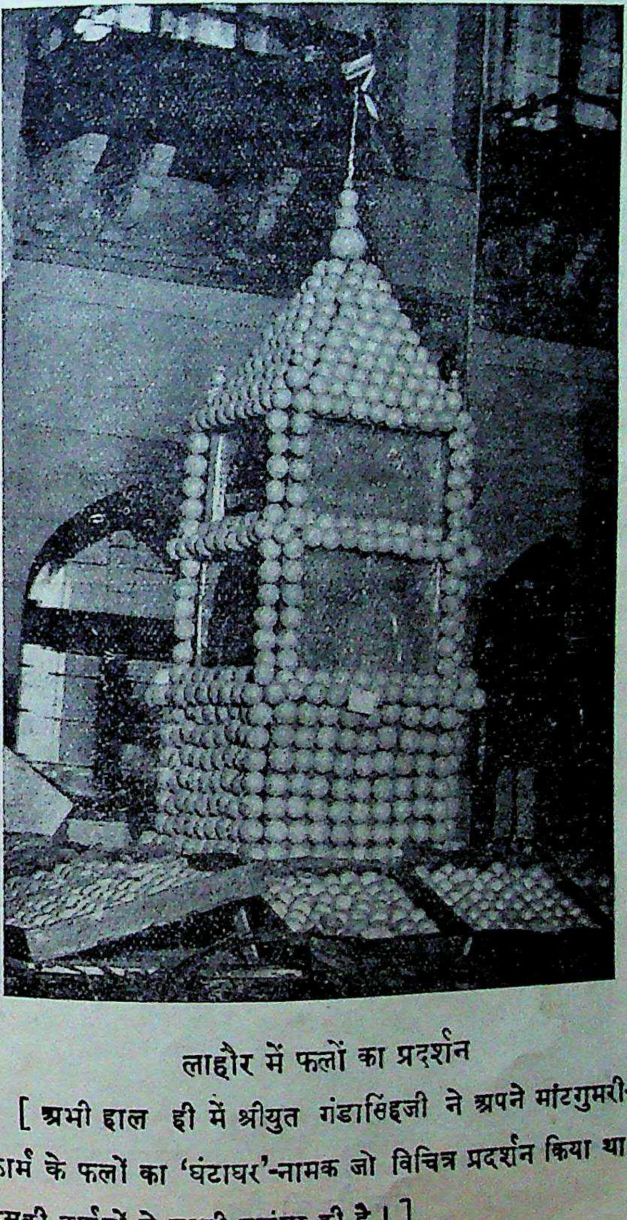

लाहौर में फलों का प्रदर्शन

[अभी हाल ही में श्रीयुत गंडासिंहजी ने अपने मांटगुमरी-फ़ार्म के फलों का 'घंटाघर'-नामक जो विचित्र प्रदर्शन किया था, उसकी दर्शकों ने काफ़ी प्रशंसा की है ।]

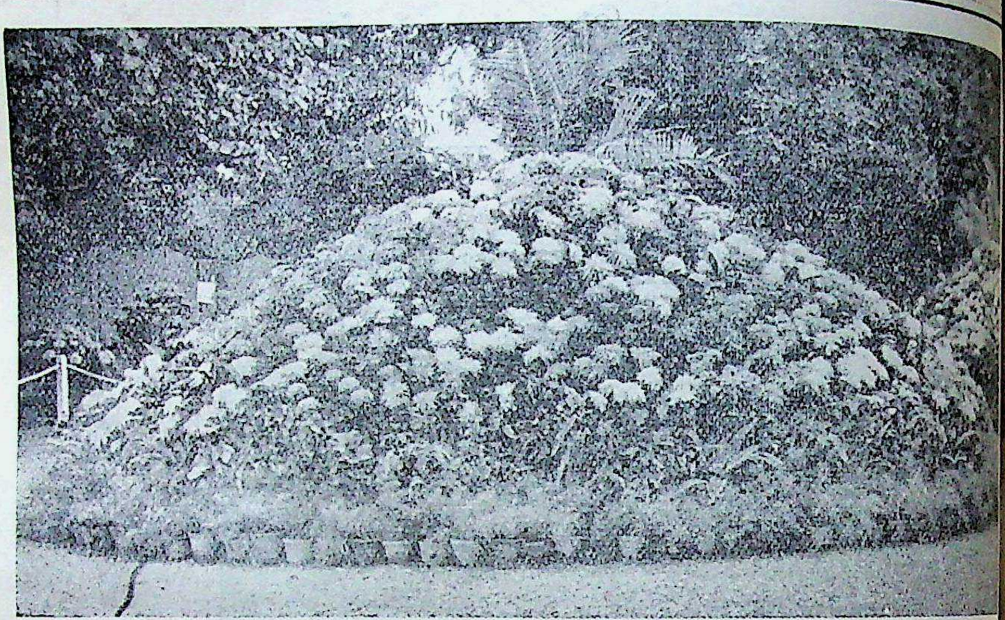

वार्षिक फूलों की प्रदर्शनी

[यह वार्षिक प्रदर्शन शाम को, लाहौर के लॉरेंस-उद्यान में, हुआ था। इस कृति में भावलपुर के प्रथम पुरस्कार-विजेता का प्रदर्शन है।]

तीन पैर की दौड़

[कुमारी सरकार और कुमारी राजदुलारी, जिन्होंने गवर्नमेंट-कॉलेज, लाहौर के वार्षिक खेलों के उत्सव पर, महिलाओं की तीन पैर की दौड़ में, विजय प्राप्त की।]

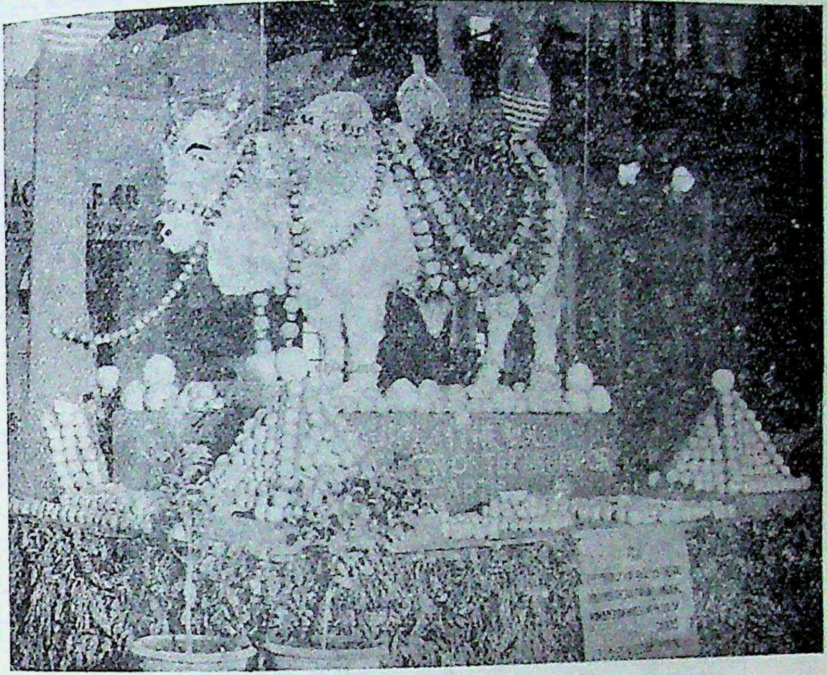

लाहौर में फलों का प्रदर्शन

[वेटीरिनरी-कॉलेज, लाहौर के श्रीमुश्ताक़अहमद साहब ने मियाँ छन्नू के अपने बाग़ के फलों द्वारा एक बैल का जो बृहत्, अपूर्व और आकर्षक प्रदर्शन किया, उस पर आपको द्वितीय पुरस्कार मिला है।]

कन्याओं की दौड़

[गवर्नमेंट-कॉलेज, लाहौर के वार्षिक खेलों में, दौड़ में, भाग लेनेवाली कुछ छात्राएँ। इसमें दाहनी ओर से चौथी कुमारी शांति ने विजय प्राप्त की।]

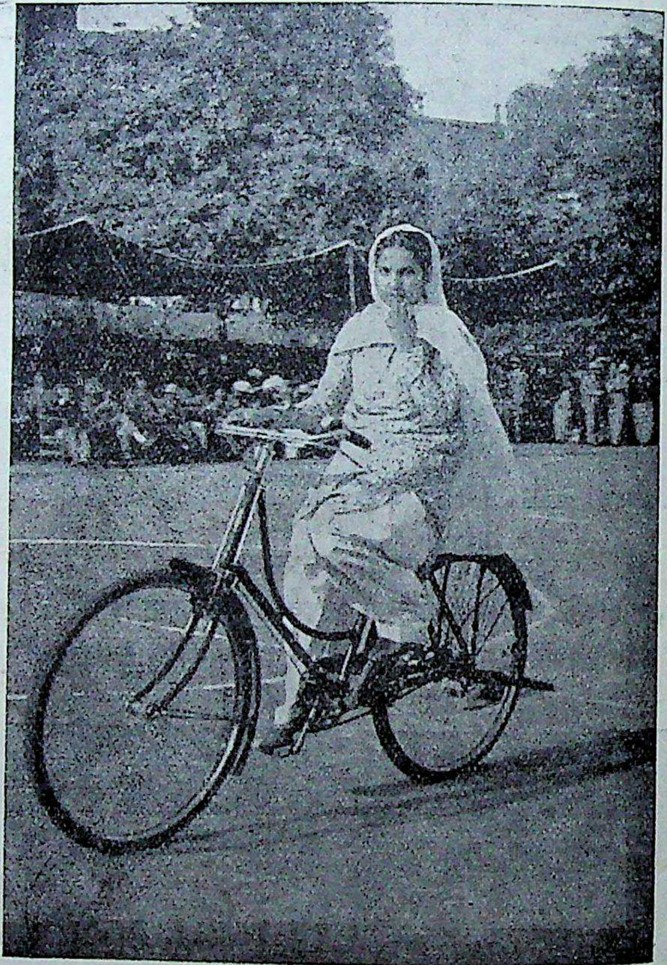

तेज़ साइकिल-चालिका

कुमारी मान कौशाह

[आपने गवर्नमेंट-कॉलेज, लाहौर के वार्षिक खेलों के उत्सव पर, साइकिल-चालिकाओं की दौड़ में, विजय प्राप्त की ।]

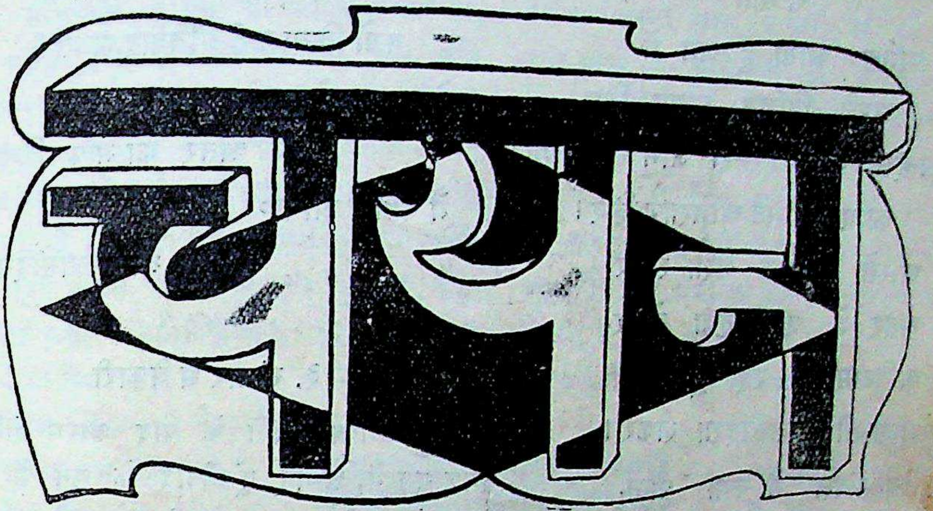

१. साधना

प्रणय-सागर में उठतीं नित्य
तरंगें भाव - भरी, उद्दाम,
उसी में आशा का जलयान
जा रहा है मेरा अविराम।

कटीं वर्षों-सी घड़ियाँ कठिन,
दिवस भी युग-से हुए व्यतीत ;
आज भी अरमानों के साथ
गा रहीं आँखें दुख के गीत।

समझती थी, पागल है विश्व,
नहीं जब तुमसे थी पहचान,
किंतु मैं सचमुच पगली हुई,
देव, जब हुआ तुम्हारा भान।

दिखाई दिए, अदेखे रहे,
न जी-भर तुम्हें विलोका आह !
रही मन में मन की अभिलाष,
न पूरी हुई आज तक चाह।

तुम्हारी पद-पूजा के लिये
अनोखे चुन रक्खे थे फूल ;
सोचती थी मन में, विधि वाम
देखिए, कब तक हो अनुकूल।

अग्रसर होना चाहा, किंतु
किया माया ने प्रबल विरोध ;
अचानक पुलक उठे ये प्राण
भूल सब अपनेपन का बोध।

हृदय - मंदिर में तब से नाथ,
तुम्हारी प्रतिमा है आसीन ;
उसी का करती पूजन, और
साधना में रहती हूँ लीन।

(श्रीमती) राजरानी चौहान

× × ×

२. गीत

मैं पागल आया हूँ जग में
अपने विक्षिप्त प्रलाप लिए,
हँस-हँस मरने, रो-रो जीने
का एक अमिट अभिशाप लिए।
आँखों में एक नशा लेकर,
अंतर में एक तृषा लेकर,
अविराम चल रहा हूँ प्रतिपल
भूली-सी एक दिशा लेकर।
पथ का संवल मैं क्या पाता,
आया युग-युग के पाप लिए।
मैं पागल आया०
इस पथ में कितना आकर्षण,
रुक उलझ-उलझ-सा रहता मन,
आगे, पीछे, सँग में मेरे
आए उल्लसित रँगीले घन!
विद्युत के तीर लिए दृग में, भ्रू में
सतरंगा चाप लिए।
मैं पागल आया०
यह राह विकट पहचानी है,
दुनिया भी शायद जानी है,
कितनी कुचली आशाओं की
जलती-सी यहाँ निशानी है।
कुछ स्मृति-सी जाग रही रह-रह
जाने कब के संताप लिए।
मैं पागल आया०
आ जग में समझा गया ग़लत,
लघु सहज दोष बन गए बृहत।
मैं मौन हृदय दिखलाऊँ क्यों,
क्यों किया करूँ प्रतिवाद सतत?
ये टुकड़े-टुकड़े घन आए
मेरे अंतर का माप लिए।
मैं पागल आया०

श्रीमंगलामोहन

× × ×

३. संसार में बेकारी

व्यावसायिक क्रांति के बाद आरंभ होनेवाले नए युग में, अर्थात् पूँजीवाद के युग में, कुछ मनुष्यों का बेकार रहना अनिवार्य-सा है। नए-नए आविष्कार, जो व्यावसायिक क्रांति में शुरू हुए, और अब तक जारी हैं, मज़दूरों के करनेवाला काम बहुत सस्ते दामों में कर देते हैं। इस कारण व्यावसायिक पुरुष मज़दूरों के बजाय इन आविष्कारों को काम में लाने लगे हैं। और, इस तरह मज़दूर बेकार हो जाते हैं। सन् १९१४ के बाद जिस व्यावसायिक और व्यापारिक शिथिलता से सामना करना पड़ा, उसके कारण लाखों मनुष्य बेकार हो गए। इतनी अधिक बेकारी से संसार का कभी पाला न पड़ा था। उसी बेकारी से हमें अभी तक छुटकारा नहीं मिला।

बेकारी की समस्या भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न रूपों में पाई जाती है, और प्रत्येक देश में बेकारी के कारण भी अलग-अलग हैं। महायुद्ध के पहले जो देश संसार के व्यवसायी देशों से पक्का माल मँगाते थे, उन्होंने महायुद्ध के बाद अपनी स्वयं व्यावसायिक उन्नति करने का बीड़ा उठाया। विदेशी प्रतियोगिता से बचने के लिये उन्होंने भारी आयात-कर लगाए। इससे संसार के व्यवसायी देशों को, खासकर ग्रेट ब्रिटेन को, काफ़ी धक्का पहुँचा। हिंदोस्तान में जापानी माल के

सामने ब्रिटिश माल का बिकना बहुत कम हो गया। साथ-साथ कांग्रेस की बॉयकाट-नीति ने, हिंदोस्तान के उन्नतिशील व्यवसायों ने और ऊँचे आयात-करों ने विलायती माल की खपत और भी कम कर दी। ब्रिटिश माल का हिंदोस्तान में न बिकना उस देश की बेकारी का एक मुख्य कारण कहा जाता है। कनाडा और आस्ट्रेलिया इत्यादि अपनी स्वयं उन्नति करने पर तुले हुए हैं, और ब्रिटेन की मर्ज़ी के मुताबिक़ काम करने को किसी दशा में भी तैयार नहीं।

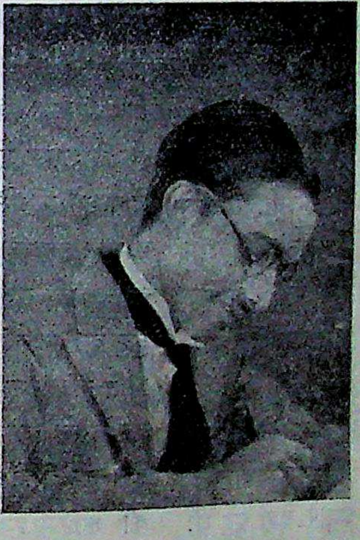

श्रीअमरनारायण अग्रवाल (बी० कॉम०)

अमेरिका में बेकारी का खास कारण उस देश की अपूर्व उत्पादक शक्ति और मशीनों की उत्तमता है। दिन-पर-दिन नई मशीनें निकलती आती हैं, जो माल की पैदाइश को कई-गुना बढ़ा देती हैं। इसके साथ-साथ वे मज़दूरों का रखना भी अनावश्यक बना देती हैं, और मज़दूर बेकार हो जाते हैं। इस तरह माल बहुत अधिक परिमाण में बनता जाता है, पर उसकी माँग कम होती जाती है, क्योंकि बेकार स्त्री-पुरुष बिना पैसे इस माल को खरीद कैसे? यह दुर्भाग्य-चक्र और आगे चलता है। माल के न बिकने के कारण व्यावसायिक पुरुष अपना क़र्ज़ टीक समय पर नहीं पटा सकते। उनका फ़र्म फ़ेल हो जाता है। जहाँ एक फ़र्म फ़ेल हुआ कि एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा फ़ेल होता चला जाता है। यह समय आर्थिक संकट का होता है। कारखाने बंद कर दिए जाते हैं। रहे-सहे मज़दूर भी बेकार हो जाते हैं। बात अचंभे की है। भूमि से इतनी अधिक पैदावार शायद आज तक कभी नहीं हुई; मनुष्य और माल के आने-जाने की सुविधाएँ इतनी उत्तम रीति से आज तक नहीं पाई गईं; संसार युद्ध और बीमारियों से इतना आज तक कभी मुक्त नहीं रहा; फिर भी आज अर्जेंटाइन के मनुष्यों को इस कारण खाना नहीं मिलता कि उनके पास गेहूँ बहुत है, और अमेरिका के मनुष्य इस कारण भूखों मर रहे हैं कि वे धन-धान्य से पूर्ण हैं!

जर्मनी में बेकारी की समस्या का कारण वहाँ की निर्धनता है, जो महायुद्ध का दंड है। दूसरा कारण है Reparation Payment का भारी बोझ।

भारतवर्ष की बेकारी-समस्या इन सब देशों से अलग है। इस समस्या को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं—

(१) कारखाने में काम करनेवाले मज़दूरों की बेकारी,

(२) किसानों की बेकारी और

(३) पढ़े-लिखे मनुष्यों की बेकारी।

मज़दूरों में बेकारी है तो अवश्य, पर पाश्चात्य देशों के मुक़ाबिले में न होने के ही बराबर है। इसका प्रत्यक्ष कारण हमारे देश में मज़दूरों की कम संख्या होना है।

किसानों की बेकारी दो कारणों से होती है—पहले तो इस कारण कि खेती का काम फ़सली (Seasonal) है। कुछ समय के लिये ही किसान खेतों पर काम कर सकते हैं। बाक़ी समय में, क़रीब ५ महीने से ६ महीने तक, उन्हें बेकार रहना पड़ता है।

अकालों का पड़ना उनकी बेकारी का दूसरा और पहले कारण से अधिक महत्त्व का कारण है।

पर पढ़े-लिखे लोगों की बेकारी ने आज इतना भीषण रूप धारण कर लिया है कि उसके सामने किसानों की बेकारी की समस्या कुछ फीकी-सी पड़ गई है, और देश के सब राजनीतिज्ञों और अर्थ-शास्त्रियों का ध्यान इस बात पर लगा हुआ है कि यह समस्या कैसे हल हो। सर विश्वेश्वरिया की गणना के मुताबिक़ हमारे देश में क़रीब १५ लाख पढ़े-लिखे मनुष्य बेकार हैं। मद्रास-बेकार-कमेटी के अनुसार पढ़े-लिखे मनुष्यों की संख्या उनकी माँग से दुगनी है। इतनी अधिक बेकारी का परिणाम बहुत बुरा हो रहा है। आर्थिक मुसीबतें, निराशा और आत्मसम्मान की हानि देश की सबसे बड़ी शारीरिक और मास्तिष्कि शक्ति को कमज़ोर बनाए दे रही हैं। फिर पढ़े-लिखे मनुष्यों का इतनी अधिक संख्या में बेकार रहना राजनीतिक मज़बूती में भी बाधक हो सकता है, खासकर हमारे ऐसे देश में, जहाँ केवल पढ़े-लिखे मनुष्यों के ही ज़बान है, और बाक़ी सब मनुष्य गूँगे हैं।

पढ़े-लिखे मनुष्यों की बेकारी के बहुत-से कारण हैं। पहला कारण यह है कि महायुद्ध के बाद विश्वव्यापी आथक संकट का हमारे देश पर भी काफ़ी असर पड़ा। युद्ध खत्म होने के बाद बहुत-से क्लर्क और फ़ौज के मनुष्यों को रुखसत दे दी गई, और उन्हें और कहीं काम नहीं मिला। कमी की कुल्हाड़ी प्रत्येक दिशा में चलाई गई। अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं और व्यापारियों ने बहुत-से आदमियों को निकाल दिया। दूसरा मुख्य कारण है हमारे देश की खराब शिक्षा-प्रणाली। शुरू से ही हमारी शिक्षा-प्रणाली का मुख्य उद्देश्य साहित्यिक शिक्षा देना और क्लर्कों को पैदा करना रहा है। स्कूल और कॉलेज से निकले हुए मनुष्यों को सरकारी नौकरी, डॉक्टरी, वकालत या व्यापारिक फ़र्मों में क्लर्की करने के सिवा और कुछ रह ही नहीं जाता। और. इन सब दिशाओं में और आदमियों को काम में लगाने की कुछ भी गुंजाइश नहीं। हमारी शिक्षा-प्रणाली में दूसरा दोष यह है कि वह विद्यार्थियों में शारीरिक कार्य और कुटुंबी पेशों से घृणा पैदा कर देती है। हमें ऐसी शिक्षा-प्रणाली की ज़रूरत है, जो बहुमुखी हो—जो हमें व्यापार, खेती, कला-कौशल और व्यवसायों की उन्नति करने में सहायता दे। बंगाल-कमेटी के शब्दों में हमारी शिक्षा-प्रणाली "एक बाँस की तरह है, जिसकी प्रत्येक परीक्षा एक जोड़ है, और जिसका व्यास जड़ से सिरे तक एक-सा ही है। इसके कोई शाखा नहीं, और इसका सिरा बहुत छोटा-सा है। ज़रूरत इस बात की है कि इस पेड़ को फैलाया जाय, और इसकी शाखाएँ जितनी दिशाओं में संभव हो, उतनी दिशाओं में निकाली जायँ।" बेकारी का तीसरा कारण हमारी सामाजिक कमज़ोरियाँ भी हैं, जैसे जाति-पाँति की प्रथा, जल्दी शादी होना, संयुक्त कुटुंब-प्रणाली और हिंदू-मुस्लिम झगड़े। जाति-पाँति के कारण पढ़े-लिखे मनुष्य उन व्यापारों को नहीं कर सकते, जो उनकी जाति* में नीचे समझे जाते हैं। जल्दी विवाह हो जाने से एक तरफ़ तो जीवन की कठिनाइयों से सामना करने के लिये काफ़ी शिक्षा नहीं मिल पाती, और दूसरी तरफ़ उनके सिर पर एक कुटुंब के पालन करने का बोझ लद जाता है। संयुक्त कुटुंब-प्रथा टुकड़खोरी उत्साहित करती है, और मनुष्यों में से उन्नतिशील होने का जोश घटाती है। पर बेकारी का सबसे मुख्य कारण हमारे देश की आर्थिक हीनता है, जिसके कारण अधिक मार्ग पढ़े-लिखों को रोटी कमाने के लिये

---

* उदाहरणार्थ ब्राह्मण और कायस्थ अपना कोई स्वतंत्र उद्योग-धंधा या व्यवसाय करना पसंद नहीं करेंगे, वरन् २-३ सौ रुपए की सरकारी नौकरी के लिये एड़ी-चोटी का पसीना एक करेंगे।—सुधा-संपादक

नहीं। ग्रेट ब्रिटेन में, फ़ौज और सिविल सर्विस को छोड़कर, १६,००० पेशे हैं, और हिंदोस्तान में ४० से भी कम! सिर्फ़ शिक्षा-प्रणाली में अधिक व्यापारिक शाखाओं को शामिल कर देना काफ़ी न होगा। साथ-साथ हमें देश की आर्थिक उन्नति इस प्रकार करनी पड़ेगी, जिससे पढ़े-लिखे लोग उन दिशाओं में, जिसमें उन्होंने शिक्षा पाई है, लग जायँ।

इस प्रकार, हम देखते हैं, ग्रेट ब्रिटेन की बेकारी का कारण है वहाँ के तैयार माल की विदेशों में कम खपत होना; अमेरिका की बेकारी का कारण है वहाँ की उत्पादन-कला का, पूँजीवाद के बंधनों में, अधिक उन्नत होना; जर्मनी की बेकारी महायुद्ध में हुए नुक़सान का नतीजा है, और भारतवर्ष की बेकारी के कारण हमारे सामाजिक और शिक्षा-पद्धति के दोष तथा आर्थिक हीनता हैं। एक लेखक इँगलैंड की बेकारी के विषय में लिखता है—

"हृदय का परिवर्तन या किसी प्रकार का व्यापारिक नीति में, श्रम-नीतियों में या राजनीति में परिवर्तन करना अत्यंत आवश्यक है। हमें व्यवसाय और सरकार के अधिकारों में हर प्रकार के परिवर्तन के लिये तैयार रहना चाहिए। हमें विचारवानों को ढूँढ़ना है, उन्हें अधिकार देने हैं, और फिर उन पर विश्वास करना है। हम अपने श्रेष्ठ मस्तिष्कों को पढ़ाने से, सिविल सर्विस* इत्यादि से व्यापार की ओर ले जाना चाहते हैं। हमें दूसरे देशों के तजुर्बे और उदाहरण से सीखना है, जैसा कि वे हमारे तजुर्बे और उदाहरण से सीखते थे। ब्रिटेन में उन्नति का स्थान अवनति ने ले लिया है, इसलिये नहीं कि हम लोग ब्रिटेन में बदल गए हैं, बल्कि इसलिये कि हम लोग एक नई परिस्थिति से सामना करने के लिये नहीं बदले हैं।"

जर्मनी में नाज़ी-पार्टी ने इस समस्या को कई तरह से हल करने की कोशिश की है। पहलेपहल तो बेकारों की संख्या कम करने के लिये मालिकों को धन से सहायता दी गई है, और कहीं-कहीं तो मालिकों को अधिक मज़दूर लगाने के लिये मजबूर भी किया गया है। इसके पश्चात् जोज़ेफ़ गोबिल, प्रचार-मंत्री, ने अपनी दान-प्रथा निकाली। धनी पुरुषों को एक बार का भोजन त्याग करना पड़ा; काम में लगे हुए मज़दूरों को एक घंटे की तनख़्वाह और बैंक में रुपया जमा करनेवालों को थोड़ा-सा रुपया प्रति महीने के हिसाब से देना पड़ा। आजकल नाज़ी लोगों का बेकारी दूर करने का मुख्य उपाय लड़ाई के हथियार और अन्य पदार्थ तैयार करना तथा पब्लिक वर्क्स इत्यादि बनाना है।

लोगों की राय थी कि इस समस्या को सुलझाने के लिये सब देशों को एक साथ मिलकर उपाय करना चाहिए। इसके लिये लंदन में एक आर्थिक सभा बुलाई गई। टेरिफ़-संधियों का प्रस्ताव रक्खा गया, व्यापारिक शर्तनामे तैयार किए गए, पर नतीजा कुछ भी न हुआ।

समाजवादी पूँजीवाद को इस आफ़त की जड़ बताते हैं, और कहते हैं कि जितनी जल्द पूँजीवाद को ख़त्म कर दिया जाय, उतनी ही जल्द इस मुसीबत से छुटकारा मिल सकता है। उदाहरण के लिये रूस को ही देख लीजिए। यद्यपि वहाँ के रहन-सहन का दर्जा बहुत ऊँचा नहीं, तो भी हरएक मनुष्य को रोटी मिलना तो निश्चय है, और वहाँ के आदमी इस बात में ख़ुश हैं कि यदि उन्हें सड़क पर पैदल चलना पड़ता है, तो उनका पड़ोसी उनके सिर पर अपने हवाई जहाज़ की परछाईं डालकर उन्हें नीचा नहीं दिखाता।

---

* इंडियन सिविल सर्विस और प्राविंशियल सिविल सर्विस आदि सरकारी नौकरियों का मोह हमें अपने होनहार युवकों से हटाना पड़ेगा। इन नौकरियों के चक्कर में भारत माता के अनेक लाड़ले लाल अपना यौवन बिताते हैं, पर सभी को तो नौकरियाँ मिल नहीं सकतीं। अंत में उन्हें निराश होना पड़ता है।—सुधा-संपादक।

हिंदोस्तान में बेकारी रोकने के लिये उपायों को ढूँढने की चेष्टा की गई है, पर उन्हें कार्य रूप में परिणत नहीं किया गया। प्रांतीय सरकारों ने मदरास, पंजाब, बंगाल और संयुक्त-प्रांत में बेकारी-कमेटियाँ बैठाईं, और उनकी रिपोर्टों ने इस विषय पर काफी प्रकाश डाला। इन रिपोर्टों के मुताबिक़ बेकारी रोकने के लिये निम्न-लिखित उपाय काम में लाने चाहिए —

(१) मदरास-कमेटी का कहना है कि हमें पढ़े-लिखे मनुष्यों का ध्यान खेती की ओर आकर्षित करना चाहिए, और उन्हें किसी-न-किसी तरह यह सिखाना चाहिए कि किसानों का काम उतना ही इज़्ज़तदार है, जितना डॉक्टरों और वकीलों का।

(२) पंजाब-कमेटी ने लिखा है कि हमें उच्च शिक्षा थोड़े-से चुने हुए और यथार्थ में योग्य विद्यार्थियों को ही देनी चाहिए। अन्य विद्यार्थियों को दर्ज़ीगीरी इत्यादि का काम सिखाना चाहिए।

(३) कहीं-कहीं यह राय ज़ाहिर की गई है कि युनिवर्सिटियों और कॉलेजों को बेकार-ब्यूरो इत्यादि खोलने चाहिए (जैसे कि मदरास-रिपोर्ट में), पर इससे बेकारों की बाढ़ रुकना असंभव है।

बेकारी दूर करने के लिये देश-परिवर्तन भी एक उपाय बताया जाता है। लेकिन वर्तमान दशा में इससे अधिक आशा नहीं की जा सकती। यदि देश के अंदर ही स्थान-परिवर्तन का प्रश्न उठाया जाय, तो भी कुछ लाभ नहीं हो सकता, क्योंकि बेकारी समस्या देश व्यापी है।

पर इन सब कारणों से बेकारी दूर नहीं हो सकती। बेकारी के कारण हैं सामाजिक कमज़ोरियाँ, आर्थिक हीनता और शिक्षा प्रणाली का दोष। आजकल केवल अंतिम कारण पर ही ज़ोर दिया जा रहा है। पर केवल इसी के सुधार से बेकारी दूर नहीं हो सकती। असल बात तो आर्थिक दशा है। जब तक देश की आर्थिक दशा में उन्नति नहीं होगी, बेकारी की समस्या सुलझ नहीं सकती।

अमरनारायण अग्रवाल (बी० कॉम०)

× × ×

४. प्यार ! प्यार !

क्यों सहसा यों उठता पुकार
हे व्यथित हृदय ! तू प्यार - प्यार ?
पा मधुर मीड़ हृद - वीणा के झंकरित हुए यदि सभी तार,
तो सुना न अखिल विश्व को तू मादक स्वर-लहरी बार-बार।
अपने श्रवणों की सीपी में यह राग-स्वाति-सीकर भरकर,
रक्षित रख इसे कृपण-धन-सा, तू खोल न इसको जीवन-भर।
क्यों सहसा यों उठता पुकार
हे व्यथित हृदय ! तू प्यार - प्यार ?
तू अपना प्रेम-पाठ पढ़ ले पुलकित तनु हो चिर-मौन साध,
छिछला बनकर मत बहक, देख यह प्रेम-जलधि है अति अगाध।
ठंडी साँसें भर-भरकर यों भड़का न प्रेम की बुझी आग,
हो चुकीं भस्म अभिलाषाएँ, दिल में कोई दे गया दाग।
क्यों सहसा यों उठता पुकार
हे व्यथित हृदय ! तू प्यार - प्यार ?

सुमित्राकुमारी सिनहा

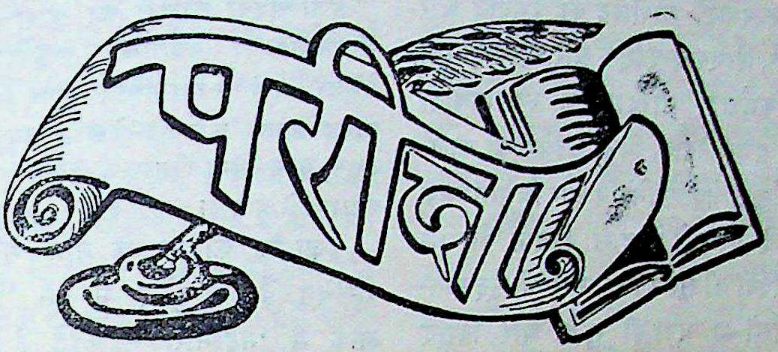

आयुर्वेद-दर्शन—लेखक तथा प्रकाशक, वैद्य श्रीमहादेव-चंद्रशेखर पाठक, ७३ जुनी कसेरा बाखल, इंदौर सिटी; पृष्ठ-संख्या २१५; साइज़ डबल, क्राउन १६पेजी; कागज़ तथा छपाई-सफ़ाई आदि उत्तम; सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) है। पुस्तक लेखक महोदय से उपरि-लिखित पते पर प्राप्त हो सकती है।

संसार के समस्त ज्ञान और विज्ञान के आदि-स्रोत वेद हैं। वेद अनादि हैं, अपौरुषेय हैं, और हैं शाश्वत। आयुर्वेद उन्हीं वेदों में से अथर्ववेद का उपांग है। आयुर्वेद के आदि-प्रवर्तक ब्रह्मा हैं। प्रजा के कल्याण के लिये उन्होंने अष्टांग आयुर्वेद का प्रकाश किया। उनके परवर्ती मुनियों तथा महर्षियों ने अपनी अपनी संहिताओं द्वारा आयुर्वेद का प्रचार किया। प्राचीन आयुर्वेद का बस इतना ही इतिहास है। अर्वाचीन आयुर्वेद 'चरक' तथा 'सुश्रुत' आदि संहिताओं का प्रतिसंस्कार ईसा की आठवीं सदी के लगभग, बुद्ध-काल में, हुआ। तब से अब तक संस्कृत-साहित्य के अन्य ग्रंथ-रत्नों की भाँति आयुर्वेद-साहित्य भी कई बार दुर्दैव-प्रज्वलित विनाश की होली में अग्नि-परीक्षा देकर जिस रूप में बच गया है, वह सर्व-साधारण सरस्वती के उपासकों के सामने है। इस बीच कितने ही विद्वानों ने अपनी नवनवोन्मेषिणी प्रतिभा द्वारा समुद्भूत ग्रंथावलि से आयुर्वेद-मंदिर सजाने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत पुस्तक 'आयुर्वेद-दर्शन' भी उसी आयुर्वेद-मंदिर का एक सुंदर अलंकार है।

'आयुर्वेद-दर्शन' अपने ढंग का अनोखा ग्रंथ है। इसकी लेखन-शैली भी अपनी है। यह कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं, प्रत्युत इसकी विचार-धारा स्वतंत्र है। इसमें आयुर्वेद के प्राचीन इतिहास पर दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रकाश डाला गया है। दर्शन-ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि प्रत्येक दर्शन का प्रतिपाद्य विषय सृष्टि विज्ञान या अध्यात्म, इन दोनो में से कोई एक अथवा प्रधान तथा गौण भेद से दोनो ही हुआ करते हैं। सृष्टि-विज्ञान-मूलक दर्शन में चराचर जगत् के उत्पादक और विनाशक द्रव्य-गुण-कर्मादि पदार्थों का तथा अध्यात्म-मूलक दर्शन में आत्मा और उसकी मोक्ष के उपायों का वर्णन हुआ करता है। न्याय-दर्शन और ब्रह्मसूत्र क्रमशः इसी प्रकार के दर्शन-ग्रंथ हैं। किंतु आयुर्वेद-दर्शन में मुख्यतः सृष्टि-विज्ञान और गौण रूप से अध्यात्म-विषय का निरूपण किया गया है। इसके विषय-प्रवेश में विद्वान् लेखक ने ऐतिहासिक शैली से उद्देश, यज्जः-पुरुषीय परिषद् का काल, दार्शनिक संप्रदाय, यज्जःपुरुषीय परिषद् तथा काशीपति वामक के मुख्य प्रश्न एवं अध्यक्ष के प्रस्ताव का निरूपण किया है। अनंतर परीक्षिमौद्गल्य का आत्मवाद,

शरलोमा का सत्यवाद, वार्योविद् का रसवाद और त्रिधातु-सिद्धांत, हिरण्याक्ष-कुशिक और षड्धातुवाद, भद्रकाप्य का कर्मवाद, भारद्वाज का स्वभाववाद, कांकायन का प्रजापतिवाद, भिक्षु आत्रेय का कालवाद एवं पुनर्वसु आत्रेय का निर्णय और त्रिभागात्मक सिद्धांत इत्यादि प्रकरणों के द्वारा विद्वान् वैद्यराज ने पूर्वोक्त महर्षियों की सृष्टि-विज्ञान-संबंधी सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावनाओं का बड़ा ही सुंदर और विशद विवेचन सरल एवं सुबोध हिंदी-भाषा में किया है। आयुर्वेद-संप्रदाय के प्रवर्तक इन महर्षियों के सृष्टि-विज्ञान-संबंधी दार्शनिक विचारों का स्वाध्याय शांत चित्त से करने के बाद पता चलता है कि आयुर्वेद कितना दुरूह है, गहन है, और है किस दार्शनिक एवं वैज्ञानिक भित्ति के ऊपर प्रतिष्ठित। 'आयुर्वेद-दर्शन' में जिन विषयों का प्रतिपादन किया गया है, वे अत्यंत गंभीर तथा उलझे हुए हैं। फिर भी लेखक महोदय ने उन कठिन तथा दार्शनिक विषयों को अपनी सरल, सुबोध एवं प्रांजल भाषा के द्वारा सर्व-साधारण आयुर्वेद-प्रेमियों को हृदयंगम कराने का पूरा प्रयत्न किया है। जो लोग आयुर्वेद को अवैज्ञानिक कहने की धृष्टता करते हैं, उन्हें हिंदी-भाषा में लिखे हुए 'आयुर्वेद-दर्शन' को पढ़कर इसकी वैज्ञानिकता की परीक्षा अवश्यमेव करनी चाहिए।

'आयुर्वेद-दर्शन' के परिशिष्ट में वात-पित्त-श्लेष्माओं के प्रकार, वायु के प्रकार, पित्त के प्रकार, श्लेष्मा के प्रकार और सत्त्व के प्रकार, इन विषयों पर तात्त्विक दृष्टि से विचार किया गया है। 'आयुर्वेद-दर्शन' के कई स्थलों पर मतभेद होते हुए भी जहाँ हम इस ग्रंथ-रत्न के लेखक की सफलता पर हार्दिक बधाइयाँ देते हैं, वहाँ प्रत्येक आयुर्वेद-प्रेमी से इस बात का साग्रह अनुरोध करते हैं कि वह 'आयुर्वेद-दर्शन' का स्वाध्याय अवश्यमेव करे।

× × ×

हैज़ा अथवा कॉलरा का काल—लेखक, कविराज श्रीप्रभाशंकरजी वैद्यशास्त्री, आयुर्वेदाचार्य; प्रकाशक, मैनेजर 'धन्वंतरि-ग्रंथमाला', सागर ; पृष्ठ-संख्या २०० ; साइज़ डबल क्राउन १६पेजी ; कागज़, छपाई आदि उत्तम; मूल्य बिना जिल्द की पुस्तक का १॥) है। पुस्तक प्रकाशक से प्राप्त हो सकता है।

हैज़ा या कॉलरा के नाम से सभी छोटे-बड़े परिचित हैं। आयुर्वेद में इसे 'विषूचिका' और लोक में 'महामारी' भी कहते हैं। जनपदविध्वंसी रोगों में इसका प्रथम स्थान है। जिस घर, गाँव या शहर में यह रोग पैदा हो जाता है, उसका सर्वनाश करके छोड़ता है। आस्तिक लोग इस रोग का कारण पाप या महाशक्ति (देवी) का प्रकोप मानते हैं। अतः कुछ समय पहले इस रोग के फैलने पर धर्मभीरु जनता उचित चिकित्सा की ओर पूरा ध्यान न देकर पूजा-पाठ, यज्ञ एवं दान आदि के द्वारा ही इस भीषण रोग की शांति का उपाय किया करती थी। किंतु अब वह बात नहीं। अब तो सभी लोग इलाज की ओर भी पूरा ध्यान देने लग गए हैं। कोई भी रोग क्यों न हो, उसका इलाज करना तर्क-संगत तथा अत्यावश्यक है। अन्यथा, जिस प्रकार तेल और बत्ती दोनों के होते हुए भी हवा के एक झोंके से दीपक बुझ जाता है, उसी प्रकार जीवन-काल रहते हुए भी, यदि किसी सांघातिक रोग की ठीक-ठीक चिकित्सा नहीं हो पाती, अकाल मृत्यु हो जाती है। अतः हैज़ा-जैसे भयंकर रोग की चिकित्सा का ज्ञान न केवल पेशेवर चिकित्सकों को ही होना आवश्यक है, प्रत्युत सर्व-साधारण शिक्षित प्रजा को भी इसके निदान और चिकित्सा की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

हैज़े के संबंध में अब तक की प्रचलित सभी चिकित्सा-पद्धतियों में थोड़ा-बहुत वर्णन पाया जाता है। आर्ष ग्रंथों में भी कहीं सूक्ष्म रूप से और कहीं विस्तार के साथ विषूचिका का निदान और

फल देनेवाली चिकित्सा-विधि पाई जाती है। साथ ही आधुनिक लेखकों ने भी हैज़े के संबंध में कई निबंध और ग्रंथ लिखे हैं। फिर भी प्रस्तुत पुस्तक 'हैज़ा अथवा कॉलरा का काल' में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सुयोग्य लेखक कविराज श्रीप्रभाशंकरजी ने आयुर्वेदिक चिकित्सा-पद्धति को प्रधानता देते हुए भी हैज़े के संबंध में जनता की ज्ञान-वृद्धि तथा लाभ को दृष्टि में रखकर यूनानी और एलोपैथिक चिकित्सा-पद्धति के अनुसार भी रोग के निदान और चिकित्सा का विशद विवेचन किया है। आरंभ में आपने आयुर्वेद की महत्ता के ऊपर कुछ विदेशी, प्रतिष्ठित विद्वानों की सम्मतियाँ देकर संक्षिप्त रूप से 'कीटाणु-वाद' के ऊपर भी विचार किया है, जो आवश्यक-सा ही प्रतीत होता है। पुस्तक की उपयोगिता उस समय और भी बढ़ जाती है, जब हम देखते हैं कि लेखक ने बड़े परिश्रम के साथ हैज़े के उपचार में आनेवाले सभी उपयोगी प्रयोगों का संग्रह एक ही स्थान पर कर रक्खा है। फलतः हैज़े से बचने के उपायों के उल्लेख के साथ-साथ आलोच्य पुस्तक में आयुर्वेदिक, यूनानी और एलोपैथिक चिकित्सा-ग्रंथों से जो भी सामग्री मिल सकती थी, उसका संग्रह करने में पूरा प्रयास किया गया है। पुस्तक सर्व-साधारण के बहुत ही काम की चीज़ है। इन सब विशेषताओं के होते हुए भी संस्कृत-श्लोकों की भद्दी अशुद्धियाँ, विचारों का पिष्टपेषण तथा कितने ही स्थानों पर प्रूफ़-संबंधिनी त्रुटियाँ बहुत अधिक खटकती हैं। सबसे भद्दी भूल आदरणीय लेखक ने इस पुस्तक में यह की है कि जिन आविष्कर्ताओं की पेटेंट दवाइयों के सच्चे अथवा कल्पित नुसखे इस पुस्तक में दिए गए हैं, उनके प्रति किसी प्रकार की भी कृतज्ञता प्रकाशित न करके डॉ० रामकृष्ण वर्मा द्वारा लिखी गई 'पेटेंट औषधें तथा भारतवर्ष' नाम की पुस्तक के आधार पर उन प्रकाशित योगों का आनुमानिक मूल्य आदि लिखते हुए अनुचित आलोचना की है। यह पुस्तक ग्रंथकर्ता महोदय ने डॉ० रामकृष्ण वर्मा की भाँति अपने सहयोगी वैद्य या डॉक्टरों की पेटेंट ओषधियों की समालोचना अथवा उनका व्यावसायिक भंडाफोड़ करने के लिये नहीं लिखी है। उन्होंने तो अपने प्रबंध-ग्रंथ में केवल उन उपयोगी, लाभकारी तथा आशु फलप्रद योगों का संग्रह किया है, जिनके द्वारा लोक का अधिक-से-अधिक कल्याण हो सके। ऐसी दशा में, उपयोगिता की दृष्टि से, अपनी पुस्तक में अपनाए हुए अपने सहयोगियों की पेटेंट ओषधियों की आलोचना इस रूप में करना कि उनके व्यवसाय और प्रतिष्ठा, दोनो में ही गहरा धक्का लगे, नितांत अनुचित है। आशा है, अगले संस्करण में विद्वान् लेखक इन त्रुटियों को इस सुंदर ग्रंथ रत्न से अवश्यमेव निकाल देंगे। संक्षेप में पुस्तक के गुण-दोषों के विवेचन के साथ-साथ हमें यह लिखते हुए अत्यंत प्रसन्नता होती है कि प्रस्तुत पुस्तक 'हैज़ा अथवा कॉलरा का काल' वैद्य, हकीम, डॉक्टर तथा सर्व-साधारण जनता, सभी के लिये अत्यंत उपयोगी है। लेखक को हम इस सफलता के लिये हार्दिक धन्यवाद देते हैं! आशा है, 'धन्वंतरि-ग्रंथमाला' के नए-नए सुंदर पुष्प इसी प्रकार सदा ही आयुर्वेदीय साहित्योद्यान को सुरभित एवं सुषमा-सम्पन्न बनाते रहेंगे।

× × ×

पार्वती-मंगल—मूल-लेखक, गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराज; संपादक, श्रीमाताप्रसादजी गुप्त एम्० ए०, एल्-एल्० बी०; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या २८; साइज़ डबल, क्राउन १६पेजी; कागज़, छपाई-सफ़ाई अत्युत्तम। पुस्तक प्रकाशक से प्राप्त हो सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक कवि-कुल-कुमुद-कलानिधि गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराज की एक छोटी-

सी सुंदर कृति या खंड काव्य है। इसमें देवी पार्वती के तप, प्रेम-परीक्षा तथा भगवान् शंकर के साथ मंगलमय परिणय का वर्णन 'सोहर' तथा 'हरिगीतिका' छंदों के द्वारा, बड़ी भाव-प्रवणता के साथ, किया गया है। यों तो गोस्वामीजी की सभी कृतियाँ माधुर्य, ओज तथा प्रसाद आदि काव्य-गुणों के कारण काव्य-जगत् में अपना सानी नहीं रखतीं, किंतु उन सबमें 'पार्वती-मंगल' अपने सुंदर और पवित्र 'काव्यवस्तु' तथा भाव-भाषा की गरिमा एवं मधुरिमा के कारण अत्यंत स्पृहणीय है।

गोस्वामीजी के इस सुंदर, भाव-पूर्ण खंड काव्य को कमनीय आकार-प्रकार में प्रकाशित करने का श्रेय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग को है। पुस्तक की भाषा को सरलता के साथ समझकर सर्व-साधारण हिंदी-भाषा-भाषी काव्य-सुधा का पान कर सकें, अतः संपादक महोदय ने न केवल प्रत्येक छंद के कठिन शब्दों का सरलार्थ टिप्पणी में दे दिया है, अपितु ६१ छंदों का भावार्थ भी परिशिष्ट में दे दिया है। किंतु यह समझ में नहीं आता कि क्रमशः ६१ छंदों का भावार्थ देकर शेष छंदों को क्यों छोड़ दिया गया ? क्या ही अच्छा होता, यदि अवशिष्ट छंदों का भी भावार्थ देकर पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ा दी जाती।

'पार्वती-मंगल' के आरंभ में, १६ पृष्ठों में, श्रीगोस्वामीजी की संक्षिप्त जीवनी तथा भूमिका लिखी गई है। जब मैं देखता हूँ कि इन १६ पृष्ठों के लेखक महोदय ने (संभवतः 'पार्वती-मंगल' के संपादकजी ही हों) अपने लिये तो सर्वत्र उत्तम पुरुष के बहुवचन का प्रयोग करके श्रीगोस्वामीजी की जीवनी में उनके लिये प्रत्येक स्थल पर बड़े भद्दे ढंग से एकवचन का प्रयोग किया है, तो हृदय बार-बार यह लिखने के लिये बाधित करता है कि क्या ही अच्छा होता, यदि 'पार्वती-मंगल'-जैसे कमनीय कौशेय वसन के साथ, भूमिका के रूप में, यह सड़ा-गला टाट का टुकड़ा अथवा गोस्वामीजी महाराज की हृदयानंददायिनी कविता-मंदाकिनी के साथ-साथ बहनेवाला 'अहम्मन्यता' का यह गंदा नाला न होता। जिन गोस्वामीजी महाराज ने हिंदी-भाषा में कविता की प्राण-प्रतिष्ठा की है, जिन्होंने रामायण आदि अपनी कृतियों के द्वारा सामाजिक शिष्टाचार का आदर्श उपस्थित किया है, एवं जिन्हें राजा-रंक आदि सभी हिंदी-भाषा-भाषी श्रद्धा-भक्ति की दृष्टि से देखते हैं, उनकी जीवनी में उनके लिये सर्वत्र अनादर सूचक एकवचन का प्रयोग देखकर किस सहृदय व्यक्ति को श्रीगोस्वामीजी की जीवनी के लेखक की शिष्टाचार-संहारिणी इस भद्दी लेखन-शैली पर तरस न आएगा ? आशा है, सम्मेलन के सूत्रधार 'पार्वती-मंगल' के अगले संस्करण में इस कलंक को दूर करने का प्रयत्न अवश्यमेव करेंगे।

अंत में मैं साहित्य-सम्मेलन को इस खंड काव्य 'पार्वती-मंगल' के प्रकाशनार्थ हार्दिक धन्यवाद देता हूँ !

(साहित्याचार्य) गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि'

आवश्यकता है

प्रेस के लिये एक ऐसे आदमी की आवश्यकता है कि प्रेस-संबंधी जो काम हो, उसे निबाह सके, और बाहर से काम ला सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा।

मैनेजर गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, २३-२५, लाटूश रोड, लखनऊ

वर्ग-नं० ५ का अंक-परिचय

बाएँ से दाहने

१. मधुर की दुलारी ऋतु।
५. ...शांति रखता, दुख हरता; सभी जनों की रक्षा करता।
७. जिस चेहरे पर...हो, उसकी आकर्षण-शक्ति का कहना ही क्या?
८. बाजार में इसके पास बड़ी भीड़ हो जाती है।
९. पृथ्वी। ११. सुंदर।
४. कविता का...मूर्ख नहीं ले सकते।
६. नेत्रों की रक्षा इसी से होती है।
८. कांग्रेस-मिनिस्टरी में बहुतों की......जाती रही है।
९. गर्मी में बड़ी तरावट देता है। २०. तंग।
१. मानव-जाति के पूर्वज। २२. बिगड़ी नारी कौन सुधारे?
४. मातहत...से सदैव भयभीत रहता है।
८. चतुर गृहिणी इसे साफ़ रखती है। २९. पुत्र।
१. ऐसी आँधी आई कि शानदार झोपड़ी तितर-बितर हो गई। ३२. इँगलैंड की राजधानी।
३. इसकी चोट से आदमी घायल न होकर भी अधमरा हो जाता है। ३४. इसकी उत्पत्ति नदी से होती है।

ऊपर से नीचे

१. खिलकर शोभाशाली होना ही तो इसका गुण है।
२. इसका वर्णन उर्दू-कविता में खूब मिलता है।
३. ब्याह-शादियों में तो इसकी जरूरत पड़ती ही है।
४. सोना।
६. ...में फूँक-फूँक पग धरना।
१०. हीरा।
१२. नीचे से देखिए, रमणी ही नजर आएगी।
१३ बिना इसके किसान का काम नहीं चलता।
१५. रास्ता।
१६. इसके बिना नाव खेना कठिन है।
१७. दृढ़-प्रतिज्ञ स्त्री-पुरुष अपनी बात पूरी करने में कोई...नहीं रखते।
२८. एक बर्तन। २३. नाटकघर। २५. दाँत।
२६. ...करो, पर कहो नहीं।
२७. बादल। २९. मनोहर।
३०. जिसका यह तंदुरुस्त नहीं, वह संसार में कुछ नहीं कर सकता।

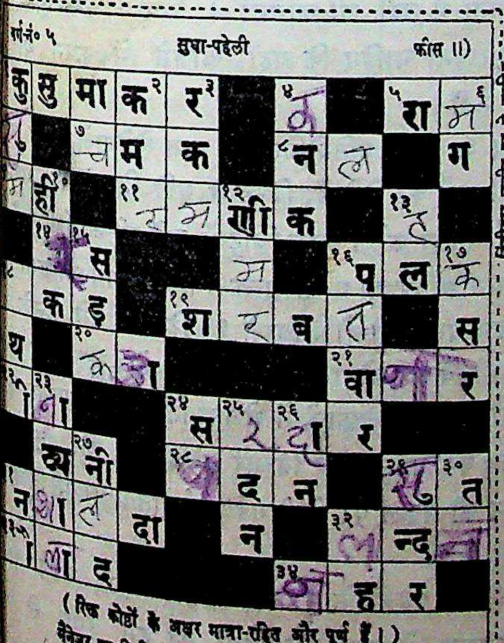

(रिक्त कोठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं।)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।
पूरा नाम
पर्ची-नं० पता

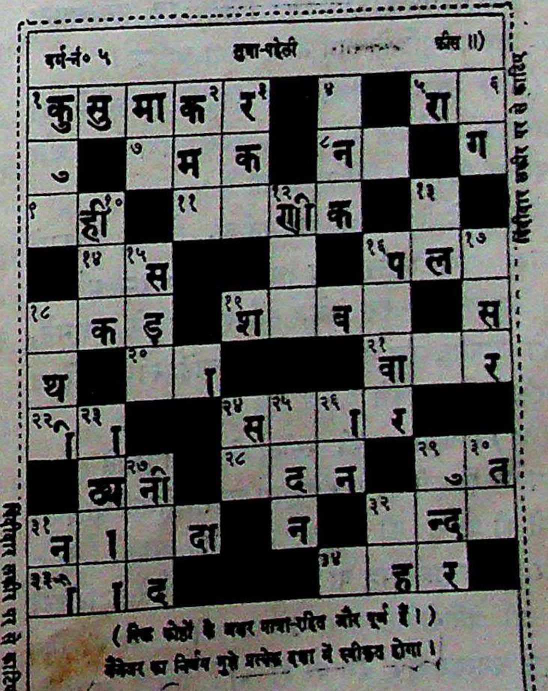

(रिक्त कोठों के अक्षर मात्रा-रहित और पूर्ण हैं।)
मैनेजर का निर्णय मुझे प्रत्येक दशा में स्वीकृत होगा।
पूरा नाम
पर्ची-नं० पता

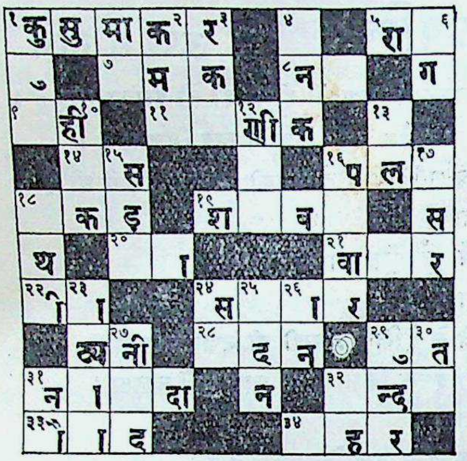

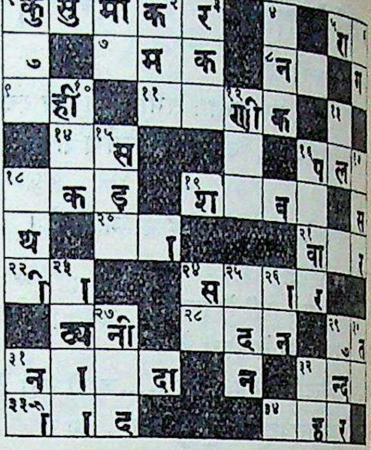

अपनी याददाश्त के लिये वर्ग-नं० ५ की पूर्तियों की प्रतिलिपि यहाँ कर लीजिए, और निर्णय प्रकाशित होने तक अपने पास रखिए।

आवश्यक सूचनाएँ

(१) प्रतियोगियों की सुविधा के लिये हमने प्रवेश-शुल्क-पत्र छाप दिए हैं, जो हमारे कार्यालय से नक़द दाम देकर खरीदे जा सकते हैं। उस पत्र पर अपना नाम लिखकर पूर्ति के साथ नत्थी करना चाहिए।

(२) स्थानीय पूर्तियाँ सुधा-प्रतियोगिता-बक्स में, जो गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस में, सामने, रक्खा गया है, ८ और ६ बजे के बीच में डाली जा सकती हैं।

(३) पहेली-नं० ५ का नतीजा, जो बंद लिफ़ाफ़े में मुहर लगाकर रख दिया गया है, ता० १८ मई को, सुधा-विभाग में, ११ बजे, सर्वसाधारण के सामने, खोला जायगा, उस समय जो सज्जन चाहें, स्वयं उपस्थित होकर उसे देख सकते हैं।

(४) मनीऑर्डर की रसीद, जो रुपया भेजते समय डाकघर से मिलती है, पूर्ति के साथ अवश्य भेजनी चाहिए। पूर्तियों की प्राप्ति की सूचना नहीं भेजी जायगी। मनीऑर्डर, प्रवेश-शुल्क-पत्र या डाकघर के दो पैसे के टिकटों द्वारा ही प्रतियोगिता-फ़ीस ली जायगी। पतली निब से साफ़ बनाकर छपे वर्ग पर ही पूर्ति भेजनी चाहिए। वर्ग को काटकर जो काग़ज़ पर चिपका देते अलग से भी लिखकर भेजते हैं, ऐसी पूर्ति योगिता में नहीं ली जायँगी। लिफ़ाफ़ों में पू ऐसे रखना चाहिए कि यहाँ खोलने में कूपन फटें नहीं।

(५) इस प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले लो ऐसी भूलें कर देते हैं, जिन्हें वे यदि नियमों को देखें, तो न करें। बैरंग चिट्ठियाँ नहीं ली जायँगी के मनीऑर्डर या प्रवेश-शुल्क-पत्र के बजाय जो के डाकघर के दो-दो पैसेवाले १६ टिकट भेजेंगे, उन पर भी विचार होगा। एक वर्ग-पूर्ति भेज चुकने पर संशोधन दूसरे लिफ़ाफ़े में भेजना टिकट का अप होगा, क्योंकि उस पर विचार न होगा। छोटे कूपन की नक़ल पर भेजी गई वर्ग-पूर्तियों पर भी होगा।

(६) पहेली के संबंध में हमें जो कुछ क उसे सुधा में छाप देंगे। पत्रों का हम पृथक् उत्तर न देंगे।

नए फूल

इस शीर्षक में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'हिटलर' (जीवनी)—लेखक, श्रीयुत बाबू हनूमानप्रसाद गोयल ; मूल्य ।)

(२) 'बुद्ध-वचन' (धार्मिक)—अनुवादक, श्रीमद्भिक्षु आनंद कौसल्यायन ; मूल्य ।=)

(३) 'बुद्ध और उनके अनुचर' (धार्मिक)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य १)

(४) 'जादू का मुल्क' (उपन्यास)—लेखक, श्रीराहुल सांकृत्यायन ; मूल्य २॥)

(५) 'सोने की ढाल' (उपन्यास)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य २॥)

(६) 'रोटी का सवाल' (कविता)—लेखक, श्रीमन्नारायण अग्रवाल एम्० ए० ; मूल्य ॥)

(७) 'हमारे किसानों का सवाल' (ग्रामोपयोगी)—लेखक, डॉक्टर ज़ैनुलआब्दीन अहमद ; मूल्य ।)

(८) 'लोरजा' (कविता)—लेखक, श्रीयुत 'मृणाल' ; मूल्य १)

(९) 'बच्चों के नाटक' (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीपं० जीवनाथ ओझा शास्त्री ; मूल्य १)

(१०) 'राजपूत-बच्चे' (बालकोपयोगी)—लेखक, आचार्य चतुरसेन शास्त्री ; मूल्य ॥)

(११) 'बताओगे' (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत रामकृष्ण ; मूल्य -)॥

(१२) 'कैलास-पथ पर' (भ्रमण)—लेखक, श्रीरामकृष्ण विद्यार्थी ; मूल्य ॥)

(१३) 'कथामाला' (उपनिषद् - रहस्य, कथा)—लेखक, श्रीनारायण स्वामी ; मूल्य ।=)

(१४) 'ब्रह्मचर्य - संदेश' (स्वास्थ्य)—लेखक, श्रीसत्यव्रत सिद्धांतालंकार ; मूल्य २)

(१५) 'संगीत-व्यायाम' (व्यायाम)—लेखक, श्रीप्रोफ़ेसर नारायणराव ; मूल्य २॥)

(१६) 'बृहदासवारिष्ट - संग्रह' (वैद्यक)—लेखक, कविराज श्रीदेवसिंहजी विट्ठल ; मूल्य २)

(१७) 'तरुण के स्वप्न' (साहित्य)—लेखक, श्रीगिरीशचंद्र जोशी ; मूल्य १॥)

(१८) 'महिला-मंडल' (उपन्यास)—लेखक, श्रीबैजनाथ केडिया ; मूल्य १।)

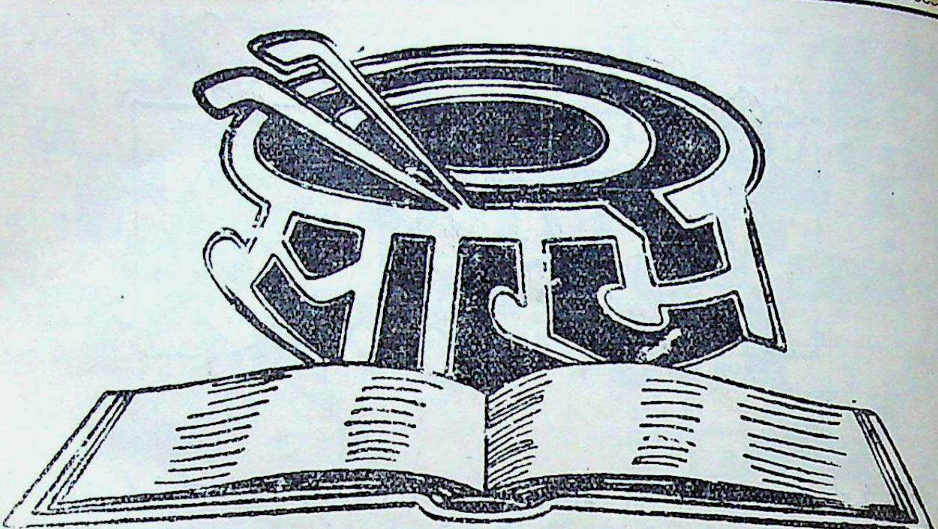

[संपादकीय विचार]

१. विश्व की नई समस्याएँ

ब्रिटिश मंत्रिमंडल की दब्बू और कायर नीति के कारण संसार की राजनीतिक परिस्थितियाँ और भी भीषण, उग्र एवं कटु हो गई हैं। समस्त योरप में एक हलचल-सी मच गई है—कहीं संतोष और सुख की, कहीं नैराश्य एवं कटुता की। इधर पिछले दिनों से ब्रिटिश मंत्रिमंडल ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के संबंध में जो नपुंसक नीति ग्रहण की थी, उससे अधीर होकर ब्रिटेन के तेजस्वी एवं अत्यंत उच्च श्रेणी के राजनीतिज्ञ मिस्टर इडेन को विदेशी मंत्रित्व का दायित्व-पूर्ण पद त्यागना पड़ा। वैसे तो विदेशी राजनीति की कई महत्त्व-पूर्ण समस्याओं पर मिस्टर इडेन का बहुत दिनों से वर्तमान मंत्रिमंडल के साथ मतभेद होता आ रहा था; पर हाल में परिस्थितियाँ ऐसी हो गईं कि स्वाभिमान एवं देश-सेवा के भावों ने मिस्टर इडेन को सहसा अपना महत्त्व-पूर्ण पद त्याग देने को ही विवश किया।

पाठकों को स्मरण होगा, अभी कुछ ही दिन हुए भारत के भूतपूर्व वायसराय लॉर्ड इरविन, जो आज विदेशी सचिव हैं, तथा जो लॉर्ड हेलिफ़ैक्स के नाम से प्रसिद्ध हैं, 'टूर' करने के बहाने जर्मनी गए हुए थे। उस समय लॉर्ड हेलिफ़ैक्स विदेशी सचिव न थे। ऐसी दशा में उनका जर्मनी जाकर जर्मन एवं ब्रिटिश सरकार के बीच राजनीतिक समझौते की बात करना एक ऐसी बात थी, जिसे मिस्टर इडेन का आत्मसम्मान नहीं सह सकता था। इतना ही नहीं, उस समझौते के अनुसार वर्तमान ब्रिटिश मंत्रिमडल ने अपने क्षणिक स्वार्थ के लिये जर्मनी तथा इटली के प्रति जो नीति ग्रहण की, वह इँगलैंड की अंतर्राष्ट्रीय नीति के लिये आगे चलकर अत्यंत घातक प्रमाणित होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। और, कम-से-कम मिस्टर इडेन तथा ब्रिटिश पार्लियामेंट के अनेकों सदस्यों का भी ऐसा ही विश्वास है। इसी विश्वास के कारण मिस्टर इडेन जर्मनी और इटली को सदा संशय और संदेह की दृष्टि से देखते थे,

तथा ब्रिटिश राजनीति को इस ढंग से मोड़ना चाहते थे, जो इन राष्ट्रों के लिये अनुचित लाभ का कारण न हो। मिस्टर चेंबरलेन के मंत्रिमंडल को यह बात असह्य थी। परिणाम-स्वरूप मिस्टर इडेन को विदेशी मंत्रित्व के पद से हटना पड़ा।

परंतु इस रहस्यमय परिस्थिति को स्पष्ट करने के लिये इस बात की आवश्यकता है कि कुछ अन्य पहलुओं पर भी प्रकाश डाला जाय। इधर पिछले कई वर्षों से हिटलर तथा अन्य प्रतिष्ठित जर्मन-राजनीतिज्ञों ने अपने भाषणों में उस उपनिवेश के पुनः प्राप्त करने की बात छेड़ी थी, जो विगत योरपीय महासमर के बाद इँगलैंड और फ़्रांस ने जर्मनी से छीनकर अपने अधीन कर लिया था। इन भाषणों का समस्त देश में प्रचार होने लगा था, तथा जर्मन-सरकार और जर्मन-पत्रों ने इस संबंध में आवाज़ बुलंद कर दी थी। जर्मनी की बढ़ती हुई सैनिक-शक्ति के साथ ही उपनिवेशों की बढ़ती हुई माँग देखकर मिस्टर चेंबरलेन का मंत्रिमंडल इतना मस्त हो गया था कि हिटलर से किसी भी शर्त पर सुलह करने के विचार से लॉर्ड हैलिफ़ैक्स को जर्मनी भेजा गया। यह सुलह ब्रिटेन तथा फ़्रांस के लिये कम महँगी न थी। जर्मनी के द्वारा बल-पूर्वक आस्ट्रिया का हड़प लिया जाना उसका एक ज्वलत उदाहरण है। अस्तु।

योरपीय राजनीति के आधुनिक इतिहास में बल-पूर्वक एक पड़ोसी राष्ट्र को कुछ घंटों में ही पराधीन कर देनेवाली घटना अपने ढंग की पहली है। इस घटना पर यदि योरप में रक्त की नदियाँ न बह सकीं, तो यह बात स्पष्ट है कि योरपीय राजनीति में इतना नैतिक अधःपतन आ गया है, जो आज नहीं, तो कल समस्त योरप और इस कारण समस्त संसार को विशृंखलता एवं अशांति में डाल देगा। ब्रिटेन अथवा फ़्रांस हिटलर और मुसोलिनी की तानाशाही से आज भले ही भागते फिरें, पर आनेवाले निकट भविष्य में उन्हें अपने इन कार्यों के लिये पश्चात्ताप करना पड़ेगा, और पश्चात्ताप की वह घड़ी उस समय आवेगी, जब संभवतः समय और परिस्थितियाँ वर्तमान की अपेक्षा अधिक जटिल, कटु और विषम हो जायँगी।

जर्मनी और हिटलर की आकांक्षाएँ यदि आस्ट्रिया तक ही सीमित रहतीं, तो कोई बात न थी। अभी जर्मनी की आँख ज़ेकोस्लोवेकिया, हंगरी और लिथुआनिया के मेमेल-प्रांत पर है। आस्ट्रिया को जर्मनी के अधीन कर लेने के बाद हिटलर की दूसरी आवश्यकता ज़ेकोस्लोवेकिया की स्वतंत्रता का अपहरण करना ही है। तात्पर्य यह कि समस्त मध्य योरप को अपने अधीन करने पर ही हिटलर की आकांक्षाएँ पूरी हो सकेंगी।

हिटलर और मुसोलिनी की मित्रता और उनके साथ ही जापान की मित्रता ने संसार की शांति के लिये वह संकट उत्पन्न कर दिया है, जिसे आज का योरप और संसार निष्पक्ष तथा विरक्त भाव से नहीं देख सकता। एक तरफ़ हिटलर की मुस्किराती हुई आँखें ज़ेकोस्लोवेकिया और उसके साथ ही समस्त मध्य योरप की ओर सतृष्ण देख रही हैं, तथा ज़ेकोस्लोवेकिया का स्वतंत्र राष्ट्र आनेवाले संकट और ब्रिटेन तथा फ़्रांस की नपुंसकता पर काँप उठा है, और दूसरी ओर फ़्रांस और रूस से ज़ेकोस्लोवेकिया की स्वतंत्रता-रक्षा के लिये तोप और बंदूकों की प्रतिध्वनियाँ निकल रही हैं। रूस अकेला भी इटली, जर्मनी और जापान का सामना करने के लिये तैयार है। फ़्रांस कहता है, वह ज़ेकोस्लोवेकिया की संधि की रक्षा करेगा, और यदि आवश्यकता पड़ी, तो उसके लिये रण में भी कूद पड़ेगा। परंतु इन दृश्यों से तटस्थ ब्रिटिश मंत्रिमंडल अपनी सैनिक-अभिवृद्धि में व्यस्त है, और साथ ही 'शांति-शांति' का नारा लगा रहा है।

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मिस्टर चेंबरलेन ने ब्रिटिश अंताराष्ट्रीय नीति का स्पष्टीकरण करते हुए अभी उसी दिन कहा था—"ब्रिटेन का सबसे बड़ा हित शांति में ही है, पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम लोग लड़ेंगे ही नहीं। हमें अपनी संधियों की रक्षा के लिये अस्त्र-शस्त्र ग्रहण करने होंगे, और साथ ही यदि ब्रिटिश साम्राज्य की सीमा तथा आमद-रफ़्त के पथ में किसी प्रकार बाधा उपस्थित की गई, तो भी हम लोग शस्त्र ग्रहण करेंगे।" कहना न होगा कि मिस्टर चेंबरलेन का भाषण उनकी ही भाँति अस्पष्ट और रहस्यमय है। आनेवाले दिनों में ब्रिटिश राजनीति इतनी अस्पष्ट एवं दयनीय हो गई है कि उस दिन मिस्टर चर्चिल-जैसे ठोस और अनुभवी राजनीतिज्ञ को कहना पड़ा—

"The day would come when at some point or other, on some issue or other, the Government would have to make a stand, and I pray to God that when that day comes, we might not find that through our unwise policy we were left to make that stand alone."

अर्थात्—'वह दिन आएगा, जब किसी बात अथवा समस्या पर सरकार को खड़ा होना पड़ेगा (युद्ध में भाग लेना पड़ेगा), और मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि जब वह दिन आए, कहीं ऐसा न हो, अपनी अज्ञान-पूर्ण नीति से हमें युद्ध में अकेला ही खड़ा होना पड़े।"

कहना न होगा कि मिस्टर चर्चिल के ये शब्द बड़े ही मार्मिक हैं, साथ ही योरपीय राजनीति की भयानकता एवं कटुता के द्योतक। आज स्वयं ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों में गहरा मतभेद है, और यह मतभेद तब तक शांत नहीं हो सकता, जब तक वर्तमान ब्रिटिश मंत्रिमंडल में एक महत्त्व-पूर्ण परिवर्तन न हो जाय। वर्तमान ब्रिटिश मंत्रि-मंडल का सबसे बड़ा अभिशाप तो यह है कि शांति के नाम पर और अपनी कायरता-पूर्ण नीति के द्वारा वह संसार-संकट को बहुत तेज़ी के साथ समीप ले आ रहा है।

× × ×

२. इंदौर-महाराज का स्तुत्य कार्य

ट्रावनकोर के बाद इंदौर के नवयुवक महाराज ने अपनी हाल की घोषणा द्वारा हिंदू-समाज एवं हिंदू-धर्म की जो सेवा की है, वह सर्वथा स्तुत्य और प्रशंसनीय है। अपनी हाल की घोषणा द्वारा इंदौर-महाराज ने राज्य के समस्त मंदिरों से हरिजनों के लिये प्रवेश-संबंधी सभी प्रतिबंध उठा दिए हैं। ऐसा कर उन्होंने भारतीय भारत में एक नए युग का आवाहन किया है। हम अपने हृदय की सारी शक्ति से महाराज के इस पुण्य प्रयत्न का स्वागत करते हैं!

महाराज की घोषणा के बाद, सुनते हैं, सनातन-धर्म के कुछ नामधारी रक्षकों ने महाराज से यह प्रार्थना की थी कि मंदिर-प्रवेश-संबंधी अपनी हाल की घोषणा महाराज पुनः वापस ले लें, परंतु महाराज ने उनकी इस अनुचित प्रार्थना को अस्वीकार कर जिस साहस और बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है, उसके लिये समस्त भारत की हिंदू-जनता उनकी आभारी रहेगी, और आनेवाले युग के लिये वह इतिहास में एक स्वर्ण-दृष्टांत छोड़ जायँगे। महाराज ने उन अक़्ल के अंधों की अनुचित प्रार्थना अस्वीकार करते हुए जो कुछ कहा, वह एक ऐसा सत्य है, जिस पर साधारणतः समस्त हिंदू जनता और विशेषकर समस्त भारतीय रजवाड़ों को गंभीरता के साथ विचार करना चाहिए। महाराज ने कहा—"मंदिर-प्रवेश-संबंधी घोषणा के पहले भी मैंने इस प्रश्न पर सभी दृष्टियों से विचार किया था, और मैं इसी परिणाम पर पहुँचा

हूँ कि कोई भी सभ्य देश तथा राष्ट्र अपनी आबादी के एक भाग को अस्पृश्यता के भार के नीचे दबा नहीं सकता, और अस्पृश्यों को उन अधिकारों से वंचित नहीं कर सकता, जो दूसरे हिंदुओं को प्राप्त हैं। जब मैं यह देखता हूँ कि मेरी प्रजा का एक भाग युग-धर्म के अनुसार चलने को तैयार नहीं, तो मुझे आंतरिक कष्ट होता है। मैं आपकी यह प्रार्थना स्वीकार करने से असमर्थ हूँ, और मैं आपसे यही कहूँगा कि अस्पृश्यता के इस कलंक को दूर करने में आप भी मेरा हाथ बँटाएँ। यह अस्पृश्यता हिंदू-धर्म के सिद्धांतों के विपरीत है।"

महाराज के इन महत्त्व-पूर्ण शब्दों की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। यदि आज अपने को सनातनी के नाम से घोषित करनेवाले हमारी रूढ़िवादी जनता इन शब्दों पर विचार करे, तो निश्चय ही हिंदू समाज का यह कोढ़ शीघ्र ही दूर हो जाय। इतना ही नहीं, हम महाराज होल्कर के इन महत्त्व-पूर्ण शब्दों के महत्त्व को समझते हैं, और आशा करते हैं कि अन्य भारतीय रजवाड़े भी अपनी-अपनी रियासतों में इंदौर और ट्रावनकोर के आदर्शों का अनुकरण करेंगे। प्रार्थना-भरे हृदय से हम उस शुभ घड़ी की कल्पना करते हैं, जब समस्त भारत में महाराज इंदौर की घोषणा की प्रतिध्वनियाँ गूँज उठेंगी, और हिंदू-जाति अपनी शताब्दियों की भूल का अनुभव कर अपने को सन्मार्ग पर ले जाने में प्रयत्नशील होगी।

× × ×

३. शहीदगंज की समस्या

लगभग तीन महीने हुए लाहौर के हाईकोर्ट की बहुमत संख्या ने शहीदगंज के मामले का निर्णय मुसलमानों के विरुद्ध और सिक्खों के पक्ष में किया। तब से अब तक शहीदगंज के सत्याग्रह में लगभग नौ सौ मुसलमान सत्याग्रहियों अथवा अधिक उचित अभिव्यक्ति में दुराग्रहियों को जेल का दंड दिया जा चुका है। साथ ही कुछ धर्मांध मुसलमानों द्वारा पंजाब के मुसलमानों में शहीदगंज की समस्या लेकर सांप्रदायिक विद्वेष की अग्नि फैलाई जा रही है। इतना ही नहीं, पंजाब-एसेंबली के सदस्य मियाँ बरकतअली ने हाल में ही एक बिल की सूचना दी थी, जो यदि पंजाब एसेंबली द्वारा पास हो जाता, तो पंजाब में ही नहीं, वरन् समस्त भारत में एक नई स्थिति और नए सिरे से सांप्रदायिक द्वेष तथा अशांति उत्पन्न कर देता। मियाँ बरकतअली के बिल के अनुसार कोई भी मसजिद, चाहे वह किसी भी ग़ैर-मुस्लिम के अधिकार तथा प्रबंध में हो, चाहे वह अच्छी अथवा भग्न अवस्था में ही क्यों न हो, सदा मुस्लिम संप्रदाय के ही अधिकार में दी जाय, तथा उसका प्रबंध मुसलमानों द्वारा ही हो। कहते हैं, मियाँ बरकतअली के इस बिल की सूचना पर पंजाब के गवर्नर ने वहाँ के प्रधान मंत्री सर सिकंदर हयातखाँ से राय ली थी, और सर सिकंदर ने यही राय दी कि गवर्नर इस बिल के उपस्थित किए जाने के संबंध में अपनी अनुमति न दें। गवर्नर ने ऐसा ही किया।

अभी उस दिन पंजाब-एसेंबली में सर सिकंदर ने इस बिल के संबंध में एक बड़ा ही महत्त्व-पूर्ण वक्तव्य दिया। कहना न होगा कि सर सिकंदर का वह वक्तव्य दूरदर्शिता-पूर्ण है। सर सिकंदर ने अपने वक्तव्य में कई अत्यंत महत्त्व-पूर्ण बातें कहीं, जो संक्षेप में इस प्रकार हैं—

यदि मलिक साहब का बिल पंजाब-एसेंबली द्वारा पास हो जाय, तो उसके द्वारा पंजाब-प्रांत की अल्पसंख्यक जातियों के उन अधिकारों पर व्याघात पड़ेगा, जो उन्हें स्थायी क़ानून द्वारा प्राप्त हैं, और साथ ही पंजाब-सरकार उन अल्पसंख्यक जातियों के इसी प्रकार के धार्मिक बिल को किस भाँति अस्वीकार कर सकती है, जो उनके उन धार्मिक स्थानों से संबंध रखता है, जो आज

मुसलमानों के अधिकार में हैं। आगे चलकर सर सिकंदर ने उन प्रांतों की चर्चा करते हुए, जहाँ की एसेंबलियों में हिंदू-बहुमत है, कहा कि यदि उन प्रांतों के हिंदू क़ानून द्वारा उन स्थानों तथा मसजिदों पर अधिकार करें, जो पहले हिंदू-मंदिर थे, अथवा जो हिंदू-मंदिरों के सामान से बनाए गए हैं, तो वहाँ के मुसलमान अपने अधिकार में आई हुई बहुत-सी मसजिदों की रक्षा किस भाँति कर सकेंगे? इस प्रकार सर सिकंदर हयात ने उस दिन के अपने वक्तव्य और सार-गर्भित भाषण द्वारा पंजाब-एसेंबली तथा उसके बाहर के कठमुल्लाओं को यह बात समझाने का यत्न किया कि एक शहीदगंज के लिये काशी, अयोध्या, मथुरा और न जाने भारत के कितने स्थानों की मसजिदें मुस मानों को खोनी पड़ेंगी। उनके लिये सबसे अ बात यही है कि हाईकोर्ट के निर्णय के अनुस वे शहीदगंज के मामले से हाथ धो लें।

निश्चय ही हम सर सिकंदर की इस सूझ और दूरदर्शिता के कारण उन्हें बधाई देते हैं, और आश करते हैं, वह पंजाब-प्रांत के बहुसंख्यक मुसलमानों की जिहालत और धर्मांधता को दूर करने में सदै सचेष्ट होंगे। कम-से-कम इसी कारण से ही हि उनकी धर्मांधताओं की प्रतिध्वनियाँ भारत के अन् प्रांतों में भी गूँज उठेंगी, और ऐसा होने से भारत क सांप्रदायिक वातावरण शुद्ध एवं शांत न रह सकेगा।

× × ×

पंपा

सफ़ेद जैसे बर्फ़

Pampa
Bengal Chemical & Pharmaceutical Works Ld. Calcutta
Pampa
Pampa

बढ़िया साबुनों में अंतिम बात
खुशनुमा, सुगंधित तथा लाभदायक

बेंगाल केमिकल : : कलकत्ता, बंबई

४. हिंदू-मुस्लिम दंगे !

मुहर्रम के अवसर पर काशी, प्रयाग और जबलपुर में एक साथ ही, बृहद्रूप से, हिंदू-मुस्लिम-दंगा इस बात का द्योतक है कि ये दंगे अचानक और परिस्थितियों के कारण ही न हुए थे, प्रत्युत इनके भीतर संगठित तैयारियाँ थी ; कम-से-कम मुसलमानों की ओर से। आज तो ये दंगे काशी, प्रयाग तथा जबलपुर तक ही सीमित रहे, परंतु आगे चलकर ये उन अन्य प्रांतो में भी फैलें, जहाँ कांग्रेस-सरकार है, तो हमें आश्चर्य न होगा।

कांग्रेस-सरकार के विरुद्ध हमें कुछ कहना नहीं, और न हम उस पर व्यर्थ टीका-टिप्पणी कर उसकी उलझी हुई परिस्थितियों को और भी उलझाना चाहते हैं। पर एक बात कहे विना हम नहीं रह सकते, और वह भी देश के कल्याण तथा सांप्रदायिक सद्भाव के नाम पर। वह यह कि क़ानून और शांति की रक्षा के लिये आवश्यक है कि वह उन संस्थाओं पर नियंत्रण रक्खे, जो सांप्रदायिक विद्वेष एवं कलह को, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से, उत्तेजित एवं प्रोत्साहित करती हैं। प्रायः सभी परिस्थितियों में मुसलमानों को प्रसन्न करनेवाली कांग्रेस की दब्बू एवं कायर नीति के कारण, जिसके लिये वह हिंदुओं में पर्याप्त रूप से बदनाम है, कांग्रेसी प्रांतों के मुसलमानों को अनुचित प्रोत्साहन मिल रहा है; और वे मुस्लिम लीग तथा ऐसी अन्य-अन्य मुस्लिम सभाओं में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सांप्रदायिक विद्वेष की अग्नि फैला रहे हैं।

हम कांग्रेस सरकार तथा कांग्रेस-मंत्रियों की ज़िम्मेदारियों और उनकी विपरीत परिस्थितियों का अनुभव करते हैं। हम इस बात का भी अनुभव करते हैं कि न्याय एवं व्यवस्था के उचित पालन में भी उन्हें मुस्लिम संप्रदाय में पर्याप्त रूप से बदनाम करने का प्रयत्न किया जायगा ; पर आज ही क्या हो रहा है ! क्या देश-भर में मुस्लिम लीग की सभाएँ उनके विरुद्ध आज विष वमन नहीं कर रहीं ? इसलिये उन्हें यश-अपयश की भ्रांत धारणाओं का परित्याग कर देश तथा प्रांत में न्याय और व्यवस्था का समुचित प्रबंध करना चाहिए। साथ ही इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनकी सीमा के भीतर काशी, प्रयाग तथा जबलपुर की प्रतिध्वनियाँ पुनः जाग्रत् न हों।

एक बात हमें देश के हिंदुओं और मुसलमानों से भी कहनी है। वह यह कि वे इस बात पर ठंडे दिल से सोचें कि इन दंगों का परिणाम क्या हुआ, तथा इनके मूल में कौन-सी बातें थीं। कुछ जानें गईं, वे जानें संभवतः देश तथा समाज के लिये पर्याप्त रूप से उपयोगी हो सकती थीं। कुछ लोग घायल हुए, उनमें अधिकांश निर्दोष रहे होंगे, और सांप्रदायिक घृणा का उन्हें अचानक ही शिकार होना पड़ा होगा। पर क्या इन घायलों और मरनेवालों के कष्टों तथा आँसुओं के बाद भी हम यह बात समझ सकेंगे कि इनका परिणाम विपत्तियों के अतिरिक्त और कुछ भी न हुआ। कम-से-कम हिंदुओं और मुसलमानों ने इन दंगों के कारण कोई धार्मिक विजय नहीं प्राप्त की, और न उन्हें किसी प्रकार का धार्मिक एवं सांसारिक लाभ ही हुआ। इतना ही नहीं, उन्हें इन दंगों को बहुत महँगा खरीदना पड़ा है — कितनी महँगी जानों को खोकर और कितने बेगुनाहों तथा निर्दोषों के रक्त बहाकर। क्या यह बात उनके लिये लज्जा और घृणा की नहीं !

इस अवसर पर हम हिंदुओं से भी एक बात कहे विना न रहेंगे। वह यह कि उन्हें अपना उचित सामाजिक संगठन कर इतना दृढ़ हो जाना चाहिए कि गुंडों को उन पर आक्रमण करने का साहस न हो, और वे उन पर आक्रमण करने के पहले उस आक्रमण के भयावह परिणाम पर खूब गंभीरता-पूर्वक सोच लें। सामाजिक दुर्बलता एक

महान् पाप है, इसीलिये नहीं कि उसके कारण समाज को कष्ट सहना पड़ता है, वरन् इसलिये भी कि उस दुर्बलता के कारण दूसरों को उस पर अत्याचार एवं अन्याय करने का प्रलोभन और प्रोत्साहन मिलता है। इस सामाजिक दुर्बलता को दूर किया जा सकता है संगठन से, और संगठन तभी हो सकता है, जब हिंदू-मात्र एक हो जायँ, और उनमें जाति-पाँति का भेद-भाव न रहे।

× × ×

५. जापान की उलझनें

इधर पिछले कई सप्ताह से चीन और जापान के संबंध में जो समाचार भारत में आ रहे हैं, वे सर्वथा आश्चर्य-जनक हैं। शांटुंग-युद्ध-क्षेत्र में चीनियों ने जापानियों को इतनी करारी हार दी, जिसकी आशा संसार को न थी—स्वयं जापान को भी नहीं। विगत जुलाई में जापान ने चीन-राष्ट्र-मंडल को हड़प लेने की इच्छा से उस पर जो अन्याय-पूर्ण आक्रमण किया था, उससे इटली और जर्मनी-जैसे पतित, फ़ासिस्ट देशों के अतिरिक्त समस्त संसार में सहसा क्षोभ की एक धारा बह चली थी, और उस धारा का प्रवाह भारत में अन्य देशों की अपेक्षा कहीं अधिक था। उस जुलाई से आज तक जापानी सेना चीनी सेना द्वारा इतनी बुरी तरह पराजित न हुई थी।

परंतु इसके पहले कि जापानी पराजय की गंभीरता तथा उसके द्वारा प्रभावित परिणामों की चर्चा की जाय, यह आवश्यक जान पड़ता है कि उस युद्ध के संबंध में 'सुधा' के पाठकों के सामने कुछ शब्द निवेदन किए जायँ। विगत १६वीं मार्च को रूटर तथा अन्य समाचार-एजेंसियों ने संसार को शांटुंग-युद्ध-क्षेत्र के पहले मोर्चे के संबंध में सूचित किया। इस युद्ध-क्षेत्र में प्रत्येक दल के कम-से-कम डेढ़ लाख सैनिक भाग ले रहे थे, तथा दोनो ओर से नित्य सहस्रों नए सैनिक युद्ध-क्षेत्र में सम्मिलित होने के लिये बाहर से आते। अ राष्ट्रीय युद्ध-विशारदों का अनुमान था कि कुछ दिनों में अन्य युद्ध-क्षेत्रों की भाँति चीनी से अत्यंत उच्च कोटि के वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रों सुसज्जित जापानी सेना द्वारा पीछे हटा दी जा तथा युद्ध की सुविधा और सैनिक-दृष्टिकोण चीन का अत्यंत महत्त्व-पूर्ण सुचाऊफ़ू-नगर जापा सेना के हाथ एक या दो सप्ताह के भीतर ही जायगा।

३०वीं मार्च को यह ख़बर सुन पड़ी कि जा नियों को युद्ध के आरंभ से लेकर उस समय त चीनियों के सबसे शक्तिशाली विरोध का मुक़ाबि करना पड़ा। हांकाऊ में यद्यपि जापान के नि महत्त्व-पूर्ण सैनिक विजय हुई, पर शांटुंग-युद्ध- के संबंध में जापानी अधिकारियों ने मौन- ग्रहण की। उसके बाद यह ख़बर उड़ी कि ची सेना के पास हर प्रकार की और अच्छी से-अच्छ युद्ध-सामग्री—यहाँ तक कि बम बरसानेवाले हवा जहाज़ भी—मौजूद है। दूसरे दिन के युद्ध-स चार से यह ज्ञात हुआ कि जापानी सेना उत्त ओर भाग रही है, और चीनी सेना बहुत बुरी त उसका पीछा कर रही है। पाँचवीं एप्रिल जापानी अधिकारियों ने गर्व से इस बात की घो की कि कई दिनों के भयानक युद्ध के बाद जाप सेना ने चीनियों को बहुत बुरी तरह हराया, अब सुचाऊफ़ू-नगर की ओर बढ़ रही है। पाँच दिन बाद पुनः जापानियों की भयानक की सूचना मिली, और साथ ही यह ख़बर कि जापानी सेना में भगदड़ मच गई है, तथा ची १५० मील तक आगे बढ़ गए हैं।

दूसरे युद्ध-क्षेत्रों में भी जापानी सेना की अव नाज़ुक हो रही है। सूइयूआन-प्रांत तथा शं दक्षिण-पश्चिम हैंगचाऊ के समीप भी ची की महत्त्व-पूर्ण विजय हुई है। सूइयूआन-

पेकिंग के पश्चिम सूखी पहाड़ी का एक इलाक़ा है। उस इलाक़े को जापानियों ने पूर्णतया अपने अधिकार में कर लिया था, और बाह्य मंगोलिया, जो सोवियट रूस का एक सुरक्षित राज्य है, का लगभग सीमा तक उन्होंने अपने अधिकार में कर ली थी। परंतु आज जापानी सेना बाह्य मंगोलिया की सीमा से दो सौ मील पीछे हट गई है। हानचाऊ और वूहू के बीच में लुक-छिपकर लड़नेवाली सेना ने शंघाई के जापानी अधिकारियों के छक्के छुड़ा दिए हैं। दूसरी एप्रिल को जहाँ यह खबर थी कि चीनी सेना शंघाई से ६० मील दक्षिण-पश्चिम पर जापानियों से लड़ रही है, वहाँ एक सप्ताह बाद यह खबर मिली कि चीनी फ़ौज शंघाई से केवल ५० मील पर ही युद्ध कर रही है। दो दिन बाद खबर मिली कि चीनी सेना शंघाई से केवल २५ मील की दूरी पर ही लड़ रही है। शांसी-प्रांत में भी जापानी सेना लुक-छिपकर लड़नेवाली चीनी सेना से बहुत तंग आ गई है। ख़बर है, मंचूरिया का वातावरण भी शांत नहीं।

तात्पर्य यह कि जापान आज केवल चीन की भूमि में ही विपरीत परिस्थितियों में नहीं है, वरन् उसकी आनेवाली उलझनें भी उसे चिंतित बना रही हैं। अमेरिका की सामरिक तैयारियाँ तथा प्रशांत महासागर में अत्यंत शीघ्रता के साथ उसका सैनिक-संगठन और अपने हितों एवं अधिकारों की सुव्यवस्था के प्रयत्न देखकर जापान की सैनिक-प्रधान सरकार अपने को शांत वातावरण में नहीं रख सकती। पिछले नौ महीनों की घरेलू उलझनों में यद्यपि सोवियट रूस आवश्यकता से अधिक संलग्न है, तो भी यह बात नहीं कही जा सकती कि चीन-जापान-युद्ध में उसका हाथ नहीं। अभी उस दिन संसार के पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि बाह्य मंगोलिया ने, सोवियट रूस की सहायता से, ५० हज़ार पैदल सेना अपनी सीमा पर इकट्ठा की है, और समस्त वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रों तथा साधनों से संपन्न रूस की एक बहुत बड़ी सेना उरजा में केंद्रीभूत है। इन समाचारों के अतिरिक्त हाल में ही मास्को के जापानी राजदूत ने रूस के विदेशी सचिव से जापान-सरकार के विरोधों की चर्चा करते हुए कहा था कि चीनी युद्ध क्षेत्र में गिराया गया बम बरसानेवाला एक वायुयान रूसी था, तथा उसका संचालक सोवियट रूस का नागरिक और सोवियट सेना का एक सदस्य। जापानी राजदूत के उत्तर में जापानी सरकार के विरोध को अस्वीकार करते हुए सोवियट रूस के वैदेशिक सचिव ने वायुयान तथा उसके संचालक के संबंध में अपना अज्ञान प्रकट करते हुए कहा कि यदि यह बात सच भी हो, तो उनकी सरकार किसी भी अंताराष्ट्रीय क़ानून अथवा नीति द्वारा अपने को इसलिये बाध्य नहीं समझती। कारण, चीन-जापान में पारस्परिक युद्ध संबंध नहीं है।

सोवियट रूस के वैदेशिक सचिव का उक्त उत्तर जापानी सरकार की आनेवाली उलझनों की वृद्धि कर देता है, तथा वह अपने चीनी आक्रमण को सदा और सब काल के लिये निरापद् नहीं समझ सकती। साथ ही यदि चीनी सेना लुक-छिपकर युद्ध करनेवाली अपनी नीति से—जिसमें वह निपुण है—युद्ध की अवधि बढ़ाने में समर्थ हो सकी तो जापान की आर्थिक कठिनाइयाँ उसकी सैनिक-शक्ति की रीढ़ तोड़ देंगी, और वह तीसरी श्रेणी की शक्ति हो जायगी। इतना ही नहीं, उस दशा में चीन की भूमि से जापान को पराजय और अपमान लेकर पुनः वापस जाना पड़ेगा। समय और राजनीति की स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं में उस समय वह मंचूरिया का चीनी प्रदेश अपने अधिकार में रख सकेगा या नहीं, इसका उत्तर उस समय की अंताराष्ट्रीय राजनीतिक प्रवृत्तियाँ ही दे सकेंगी।

जब से चीन-जापान-युद्ध प्रारंभ हुआ, जर्मनी के चीन-प्रदेशीय व्यवसाय में एक बहुत ज़बरदस्त धक्का लगा है। और, नाज़ी जर्मनी की पहले से ही खराब आर्थिक समस्याएँ और भी जटिल हो गई हैं। इस दशा में जर्मनी भले ही जापान का मित्र-राष्ट्र हो; परंतु समय-समय पर उसने वर्तमान चीनी-जापानी युद्ध पर अपने असंतोष के चिह्न प्रकट किए हैं, तथा आज भी चीनी सरकार के जर्मन सलाहकारों को हिटलर की नाज़ी सरकार वापस नहीं बुला सकी है। अब रही जापान के अंतिम मित्र इटली की बात। अभी हाल की ऐंग्लो-इटालियन संधि का जापान और इटली की पारस्परिक मित्रता पर कैसा प्रभाव पड़ेगा, इस बात से जापान-सरकार चिंता-रहित और शंका-हीन नहीं है।

यद्यपि जापानी सेना चीन में अपने खोए स्थानों को पाने के लिये युद्ध-क्षेत्र में अधिक-से-अधिक प्रयत्नशील है, और संभव है, चीन की अपेक्षा अपने अत्यंत प्रबल वैज्ञानिक साधनों द्वारा वह उन्हें पुनः अपने अधिकारों में कर भी ले, तथापि युद्ध-क्षेत्र में व्यतीत होनेवाला प्रत्येक दिन जापान-सरकार की उलझनों को गंभीर, संकटों को भीषण तथा उसकी अंतराष्ट्रीय को जटिल बना रहा है!

× × ×

ताजिरुलमुल्क लाला रामजीदास वैश्य
एफ़्० आर० एस्० ए०, एफ़्० आई० एफ़्० एस्० सी०,
एम्० आर० ए० एस्० (लंदन)

६. लाला रामजीदास वैश्य

हमारे मान्य मित्र श्रीयुत रामजीदास वैश्य के प्रसिद्ध लेखक हैं। बहुत दिनों से आप सेवा कर रहे हैं। उनका हिंदी प्रेम और

सेवा के प्रति उत्साह सराहनीय है । वह सदा हिंदी-उन्नति के कार्यों में तन-मन-धन से योग देते रहते हैं । अभी हाल में आपने 'सुघर गँवारिन'-नामक उपन्यास लिखा है । हिंदी-संसार में उसका अच्छा स्वागत हुआ है । ईश्वर करे, वह भविष्य में और भी उत्तमोत्तम पुस्तकें लिखें ।

× × ×

७. बिहटा-रेल-दुर्घटना की जाँच

'सुधा' के पाठकों को स्मरण होगा कि पिछले वर्ष के जुलाई-मास में, बिहार-प्रांत के बिहटा-नामक स्थान में, एक भीषण रेल-दुर्घटना हो गई थी, जिसमें १०७ प्राणियों के प्राण गए, तथा ११७ व्यक्ति आहत हुए ! उक्त दुर्घटना की उचित जाँच के लिये भारत-सरकार ने इलाहाबाद-हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस सर जॉन टॉम को नियुक्त किया था । अभी हाल में ही भारत-सरकार ने सर जॉन टॉम की जाँच-संबंधी रिपोर्ट प्रकाशित की है ।

सर जॉन की रिपोर्ट को आद्योपांत पढ़ जाने से कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति इस परिणाम पर पहुँचे बिना नहीं रह सकता कि उसकी तैयारी में ऊँचे दर्जे की न्यायप्रियता एवं निष्पक्षता और साथ ही घोर परिश्रम का आश्रय लेना पड़ा होगा । हमें संदेह है, आज से पूर्व भारत-सरकार द्वारा नियुक्त किसी भी जाँच-समिति तथा जाँच करनेवाले व्यक्ति ने अपने निर्णय में इस प्रकार के साहस और न्याय का परिचय दिया होगा । अस्तु ।

सर जॉन की जाँच पढ़ने से जहाँ उनके प्रति सहसा श्रद्धा और आदर की भावनाएँ प्रकट होती हैं, वहाँ रेलवे-अधिकारियों के विरुद्ध सहज ही घृणा एवं असंतोष से हृदय भर जाता है । सर जॉन ने अपनी रिपोर्ट में रेलवे-कंपनी का दोषी ठहराते हुए कहा है कि (१) १८ डाउन एक्सप्रेस के गिरने का कारण उसके एंजिन का ज़्यादा ज़ोर से चलना तथा चाल में खराबी आने से लाइन का टूटना था । (२) रेलवे-कंपनी की असावधानी ही इस दुर्घटना का मुख्य कारण है; इस कारण जो मरे, उनके परिवार को तथा जो घायल हुए, उनको हर्जाना देने के लिये रेलवे-कंपनी उत्तरदायी है । सर जॉन का कहना है कि साधारण सावधानी रखने में रेलवे-कंपनी का जो कर्तव्य है, उसके पालन करने में भी उसने त्रुटि की । उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कुछ रेलवे-अधिकारियों की दायित्व-हीनता की कटु आलोचना करते हुए एक और भी महत्त्व-पूर्ण बात कही है । उनका कहना है कि एक्स-बी० एजिन खराब होते हैं, यह बात सप्रमाण सिद्ध है, इसलिये, लोक-हित की दृष्टि से, इस बात की पूरी जाँच कराई जाय कि रेलवे-कंपनी द्वारा इस प्रकार के एजिन का क्रय कहाँ तक निरापद है ।

कहना न होगा कि आदर्श न्यायाधीश सर जॉन की जाँच की रिपोर्ट पर रेलवे-कंपनी के विरुद्ध हृदय में क्षोभ, दुःख और आश्चर्य होता है, तथा यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है कि अपने कर्तव्य-पालन में रेलवे-कंपनी तथा उसके अधिकारियों ने जिस अमानुषिक प्रमाद, घृणित तथा नीच दायित्व-हीनता और कर्तव्य के प्रति अपना कुत्सित मनोवृत्ति का परिचय दिया, वह सदा ही निंद्य और लोम-हर्षक है । हम रेलवे-अधिकारियों का ध्यान शीघ्र-से-शीघ्र इस महत्त्व-पूर्ण एवं न्याय-संगत बात की ओर आकर्षित करते हैं कि वे दुर्घटना में मरे हुए व्यक्तियों के परिवारवालों तथा घायलों को पूरा और उचित हर्जाना दें, तथा अपने दायित्व एवं कर्तव्य के पालन में ऐसी तत्परता दिखलावें, जिससे बिहटा-जैसे भीषण कांडों की पुनरावृत्तियाँ आगे न हो सकें । साथ ही हम रेलवे-कंपनी का ध्यान एक्स-बी० एंजिन की त्रुटियों की ओर आकर्षित करते हैं, और चाहते हैं कि कंपनी उसे बेकार क़रार देकर अपने प्रयोग से बाहर कर दे ।

× × ×

८. मुस्लिम लीग ज़िंदाबाद !

इधर मुस्लिम लीग के सर्वेसर्वा मि० जिन्ना भारत में इस्लाम-शासन के मीठे-मीठे स्वप्न देखने लगे हैं। और, आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि वह समझते हैं, बिना उनके तथा उनकी पालतू मुस्लिम लीग के सहयोग के कांग्रेस एक ऐसी पंगु संस्था है, जो देश की स्वाधीनता के विकट पथ को पार नहीं कर सकती। जब से कांग्रेस के सीधे-सादे अथवा यों कहिए, भोले-भाले नेताओं ने उन्हें हिंदू-मुस्लिम-समस्या निबटाने के लिये निमंत्रित किया है, तब से उनके प्रमाद की सीमा नहीं दिखाई पड़ती, और उनकी बातें, उनके भाषण इतने विषैले होते हैं कि कांग्रेस-नेताओं की इस बालू से तेल निकालनेवाली नीति पर दया आती है।

हमारा तात्पर्य यह नहीं कि हम हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य के पक्षपाती नहीं। हमारे हृदय में तो हिंदू-मुस्लिम-एकता के लिये प्रार्थनामय प्रतीक्षा है। हम उस स्वर्ण युग की कल्पना कर आनंद-विभोर हो जाते हैं, जब भारतीय स्वाधीनता का पथ भारत के सभी संप्रदाय तथा सभी जातियाँ सम्मिलित रूप से तय करेंगी। परंतु साथ ही इसका यह अर्थ नहीं कि सांप्रदायिक एकता के प्रयत्नों की खिल्लियाँ उड़ें, और मिस्टर जिन्ना तथा उनके दलवाले उससे अनुचित लाभ उठावें। अभी हाल में ही महात्मा गांधी तथा प० जवाहरलाल नेहरू ने मिस्टर जिन्ना को हिंदू-मुस्लिम-समझौते के संबंध में लिखा था। हमारी दृष्टि में उनका ऐसा करना ही एक बहुत बड़ी राजनीतिक भूल थी। कारण, कांग्रेस भारत के सभी संप्रदायों की संस्था है, और उसकी दृष्टि में सभी संप्रदाय बराबर हैं। इसलिये जब वह हिंदू-मुस्लिम-एकता का प्रश्न उठाती है, और उसके लिये मुस्लिम लीग-जैसी विषैली और सांप्रदायिक संस्था से कुछ बातें निर्णय करना चाहती है, तो उचित यह था कि इसी संबंध में वह हिंदू-महासभा को भी निमंत्रित करे। कारण, न्यायतः उसे हिंदुओं के हितों और दृष्टिकोण को उपस्थित करने तथा उनका प्रतिनिधित्व करने का तब तक कोई अधिकार नहीं, जब तक वह मुस्लिम-संप्रदाय को अपने से भिन्न समझकर सांप्रदायिक समस्या पर उनके दरवाज़े खटखटाती है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि मि० जिन्ना सातवें आसमान पर चढ़ गए हैं, और कांग्रेस को हिंदुओं की संस्था पुकारकर उसे भिन्न-भिन्न प्रकार से जली-कटी सुनाने लगे हैं। अभी उसी दिन कलकत्ते के अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के सम्मेलन में उन्होंने जो भाषण दिया था, वह इस बात का द्योतक है कि उनकी बुद्धि कितनी भ्रष्ट और उनका राजनीतिक दृष्टिकोण कितना प्रमाद-पूर्ण हो गया है। महात्मा गांधी और प० जवाहरलालजी-जैसे नेताओं के सतत और साधु प्रयत्न पर ऐसी अनर्गल और बेहूदी बातें करना मिस्टर जिन्ना के लिये भले ही लज्जा-जनक न हो, कारण, वह इन बेहूदगियों के आदी हो गए हैं, परंतु इतने पर भी यदि कांग्रेस तथा उसके नेता अपने निष्फल प्रयास को न समझ सकें, तो कम-से-कम उनकी बुद्धि पर हमें लज्जा और दया आती है।

अपनी चौदह शर्तों के लिये विख्यात मिस्टर जिन्ना से संभवतः कांग्रेस के नेताओं ने यह आशा की थी कि वह अब आकाश से पृथ्वी पर उतरकर बातें करेंगे; परंतु अब की बार उन्होंने उन चौदह शर्तों के अतिरिक्त सात और भी नवीन शर्तें लगाई हैं। वे ये हैं—(१) कांग्रेस मुस्लिम लीग का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार कर ले, और सदा के लिये उसे अपना प्रतिद्वंद्वी माने। (२) मुसलमान जनता के भीतर कांग्रेस अपना प्रचार-कार्य छोड़ दे। (३) सांप्रदायिक मामलों में मुस्लिम लीग का ही निर्णय मान्य हो। (४) ज़िला-म्युनिसिपल तथा लोकल बोर्डों में संयुक्त निर्वा

न हो। (५) राष्ट्रीय झंडे के साथ ही मुस्लिम लीग का भी झंडा उड़ा करे। (६) वंदे मातरम् का राष्ट्रीय गान कांग्रेस सदा के लिये बंद कर दे। (७) हिंदी का प्रचार रोक दे।

हमें मि० जिन्ना की इन शर्तों के संबंध में कुछ भी नहीं कहना। वे स्पष्ट हैं, तथा उस पतित राजनीति की पूर्ण द्योतक हैं, जिसे मिस्टर जिन्ना तथा उनकी मुस्लिम लीग ने अपनाया है। हम तो कांग्रेस और उसके महान् नेताओं से पूछते हैं कि मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिये क्या आप भी यह कटु पथ तय करने के लिये तैयार हैं? मिस्टर जिन्ना से हमें केवल एक ही बात कहनी है, और वह यह कि एक अत्यंत महत्त्व पूर्ण शर्त उनसे छूट गई, और वह यह कि भारत के चौबीस करोड़ 'काफ़िर हिंदू' मुसलमान हो जायँ। मुस्लिम लीग ज़िंदाबाद!

× × ×

९. नारी-समस्या

अभी उस दिन लखनऊ में रेडियो पर भाषण देते हुए संयुक्तप्रांतीय सरकार की मंत्रिणी माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने कुछ सही और कुछ खरी बातें कहीं। आपने अपना भाषण देते हुए कहा —

"Human history from earlist times has been a tragedy of the subjection of women."

अर्थात् "प्रारंभ-काल से मानव-इतिहास नारी-जीवन की पराधीनता का एक दुःखांत-अभिनय है।"

यद्यपि श्रीमती पंडित के ये शब्द सत्य का केवल एक अंश हैं, तथापि हम यह अस्वीकार नहीं कर सकते कि आज के नारी-जीवन के विकास में सुधार के लिये पर्याप्त परिश्रम की आवश्यकता है। श्रीमती पंडित ने कहा कि भारतीय महिलाएँ सदियों से पुरुषों द्वारा बनाए हुए नियमों की गुलामी के कारण अपने मालिकों की दुर्बलता की प्रतीक बन गई हैं।

कहना न होगा कि श्रीमती पंडित ने अपने इस भाषण में अपने व्यक्तित्व और दृष्टिकोण को 'नारीत्व' में ही सीमित रक्खा। नारी और पुरुष के पारस्परिक सहयोग तथा नारी और पुरुष-जीवन की पारस्परिक अभिन्नता के संबंध में हमें आज तक श्रीमती पंडित के जो विचार प्राप्त होते थे, उन विचारों से उस दिन के भाषण में व्यक्त किए हुए विचार बहुत भिन्न हैं। हम भी नारी-जीवन का विकास, उसकी उन्नति तथा उसकी स्वतंत्रता चाहते हैं। हम यह नहीं चाहते कि वे पुरुषों की कठपुतलियाँ, उनकी बंदिनियाँ हों; पर इस परम पवित्र उद्देश्य के लिये आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज का पुनर्निर्माण हो। वह पुनर्निर्माण न तो 'नारीत्व' की दृष्टि से और न 'पुरुषत्व' के दृष्टिकोण से हो, वरन् उसके लिये नारी और पुरुष के व्यक्तित्व से ऊपर उठकर हम मानवीय दृष्टिकोण से सारी बातें समझें, और तदनुसार समाज के पुनर्निर्माण का मंगल उद्देश पूरा करें। आज नारी की स्वतंत्रता और पुरुषों की दासता का प्रश्न नहीं है। आज तो प्रश्न यह है कि अपने व्यक्तित्व को पृथक् रखते हुए भी नारी पुरुष की और पुरुष नारी की पारस्परिक उपासना में अपने को इतना तन्मय कर दें, जिससे संसार स्वर्ग हो जाय, और इसके भीतर दुःख, शोक तथा विषाद की तनिक छाया भी शेष न रहे।

× × ×

१०. किसान-रक्षक क़ानून

संयुक्तप्रांत की कांग्रेस सरकार ने किसानों के लिये जिस नए क़ानून की रचना की है, वह प्रस्तावित रूप में सामने आ चुका है। उसकी मुख्य-मुख्य धाराएँ इस प्रकार हैं—

मौरूसी अधिकार—जो काश्तकार अब तक

क़ानूनी काश्तकार कहे जाते थे, उन्हें अपनी ज़मीन पर मौरूसी हक़ प्राप्त हो जायगा। जो मौरूसी काश्तकार हैं, उन्हें एक प्रकार से ज़मीन का मालिक बना दिया जायगा, और उन्हें अधिकृत भूमि में पेड़ लगाने, कुआँ बनवाने, ज़मीन को शिकमी काश्तकारों को उठा देने के हक़ प्राप्त हो जायँगे। ज़मींदार को काश्तकार से ज़बरदस्ती ज़मीन छीन लेने का हक़ न होगा। काश्तकार अगर ग़ैरवाजिबी तौर पर बेदख़ल किया गया होगा, तो तीन साल तक अपनी ज़मीन वापस लेने का उसे अधिकार रहेगा।

सीर — सीर की भूमि पर उसके जोतनेवाले का हक़ होगा, किंतु यदि ज़मींदार खुद काश्त करेगा, तो एक साल का नोटिस देकर वह काश्तकार से ज़मीन ले सकेगा। और अगर ज़मींदार बिना कारण काश्तकार से ज़मीन ले लेगा, और खुद उसे न जोतेगा, या दूसरे को उठा देगा, तो ज़मीन काश्तकार को फिर वापस दिलाई जायगी।

लगान—सन् १८६६ और १६०५ ई० के बीच की लगान की शरह तब से फ़सल की क़िस्म और पैदावार और चीज़ों के निर्ख़ में होनेवाले परिवर्तनों को, खेती और किसान के गुज़ारे का खर्च देखकर नियत होगी। लगान पैदावार के मूल्य के पाँचवें हिस्से से अधिक नहीं लिया जायगा। लगान में फ़सल ख़राब होने पर छूट भी मिला करेगी। बक़ाया लगान में किसान की गिरफ़्तारी न होगी। क़ुर्क़ी में फ़सल के चौथाई हिस्से से अधिक का नीलाम न होगा।

बक़ाया की माफ़ी — रबी सन् १३४४ फ़सली से पहले का लगान माफ़ कर दिया जायगा, अगर काश्तकार अगले दो वर्ष तक प्रत्येक फ़सल पर अपना लगान अदा करता रहेगा।

बहुत संक्षेप में यह किसानों के नए क़ानून का मसौदा है। इसमें किसानों के अधिकारों को जहाँ विशेष स्वीकार किया गया है, वहाँ ज़मींदार-वर्ग को भी हानि पहुँचने की संभावना नहीं। वर्तमान स्थिति में इससे अधिक की आशा न किसान ही कर सकते हैं, और न ज़मींदारों से ही इससे कम क़ुरबानी की उम्मेद रखनी चाहिए। कुल मिलाकर यह क़ानून समय की गति के अनुकूल किसानों के लिये अत्यंत उपयोगी होगा, और छोटे-छोटे ज़मींदार भी उससे बराबर लाभ उठाएँगे। बड़े ज़मींदारों को प्रत्यक्ष में तो इस क़ानून से हानि होती दिखाई देती है, पर ज़माना जैसा बदल रहा है, उसके अनुसार स्वयं ज़मींदार भी अपने काश्तकारों को हक़ देने के लिये तैयार हैं। ऐसी हालत में हम इस नए क़ानून का स्वागत करते हैं, और जिन करोड़ों किसानों की आँखें उसकी ओर लगी हुई थीं, उनकी जिज्ञासा की पूर्ति हुई समझ उन्हें बधाई देते हैं।

सुसमाचार

हिंदोस्तान-भर की समस्त हिंदी-पुस्तकें हमसे मँगाइए, इधर-उधर न भटकिए। आपके समय तथा रुपए, दोनो की बचत होगी। सूचीपत्र मुफ़्त मँगाएँ।

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

उषा

६ सुंदर चित्रों
से सुशोभित
मनोहर
खंडकाव्य

लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त
'कुसुम'

बाण-नंदिनी उषा और कृष्णचंद्र के पौत्र अनिरुद्ध के प्रणय-परिणय की पौराणिक कथा।

तुकांत-हीन
नई शैली
चारु चरित्र-चित्रण
भव्य, ओजस्वी वर्णन।

मूल्य
॥=), १-)

लतिका

लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी
'गुलाब'

चुनी हुई
उत्कृष्ट
एक से एक
अनूठी
मनोहर और
भाव-पूर्ण
कविताएँ।

अवश्य पढ़िए।

मूल्य
१), १॥)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला की छ नई पुस्तकें

[संपादक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव]

१. नवयुग-काव्य-विमर्ष

(आलोचना)

आलोचना-साहित्य का अपूर्व ग्रंथ, हिंदी के वर्तमान रहस्यवादी कवियों के काव्य का
ग्रंथ। रचयिता, हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, लेखक और संपादक पं० ज्योतिःप्रसाद
भूतपूव संपादक 'मनोरमा', 'भारत' आदि। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

२. विजय

(उपन्यास—दो भाग)

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०। विदा-उपन्यास लिखकर
ने जो ख्याति प्राप्त की है, वह अवर्णनीय है। जिसने उसे पढ़ा, वही मुग्ध हो गया।
वाह-वाह की आवाज़ निकली। यह नवीन उपन्यास बिलकुल अप-टु-डेट, शिक्षाप्रद,
सामाजिक है। कथा-प्रसंग इतना मनोरंजक है कि एक बार पुस्तक हाथ में लेने से फिर
किए जी नहीं मानता, और पढ़कर भी पुनः पढ़ने की लालसा बनी रहती है। मनोभावों
लेखक कितना सफल हुआ है, यह पुस्तक पढ़ने पर ही ज्ञात होगा। मूल्य प्रत्येक भाग
सजिल्द २॥) ; दोनो भाग ४), सजिल्द ५)

३. शिवाजी

(मौलिक, ऐतिहासिक नाटक)

इसके लेखक हैं हिंदी-संसार के प्रख्यातनामा समालोचक श्रीरावराजा डॉक्टर
एम्० ए०, डी० लिट्० और रायबहादुर श्रीपं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०। यह एक
नाटक है, जिसमें ३ अंक एवं २८ दृश्य हैं। कई भिन्न-भिन्न प्रकार के चरित्र लेकर योग्य
अपनी नाटकीय कला का प्रदर्शन किया है। कथानक पूरा-का-पूरा महाराष्ट्र-इतिहास पर
यह पुस्तक कवित्व से कमनीय, नाटकत्व से निर्मल, सद्भावों से सुंदर और मौलिकता से
नाटक को विद्यार्थी बिना किसी कठिनाई के स्टेज पर खेल सकते हैं। मूल्य १), सजिल्द

४. ग्राम-सुधार

(ग्रामोपयोगी)

लेखक, श्रीपं० अश्विनीकुमार शुक्ल बी० ए०, एल्-एल० बी०, मेंबर कौंसिल,
पुस्तक देहातियों और ग्राम-सेवकों के लिये परमोपयोगी है। इसमें लेखक ने ग्राम-
आवश्यक और ज्ञातव्य बातें, बड़ी खूबी तथा खोज के साथ, सरल भाषा में बतलाई हैं।
भाषा सरल, मुहाविरेदार और दिलचस्प है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

५. निरंकुशता-निदर्शन

(आलोचना)

लेखक, हास्य-रसावतार श्रीपं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी (लाहौर के अखिल भारतीय
सम्मेलन के सभापति)। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'कालिदास की निरंकुशता'-शीर्षक
'सरस्वती' में लिखा था, उसका मुँहतोड़ जवाब लेखक ने मनसाराम के नाम से 'भारत
था। यह उन्हीं दोनो लेखों का संग्रह है। यदि दो साहित्यिक महारथियों की पैंतरेबाज़ी
इसे अवश्य पढ़िए। सारांश यह कि पुस्तक पढ़ने से ज्ञानोपार्जन के साथ-साथ मनोरंजन भी
मूल्य ॥।), सजिल्द १।)

६. विचित्र जीव-जंतु

(बालकोपयोगी)

लेखक, श्रीकन्हैयालाल दीक्षित। इस पुस्तक में उन अजीब जानवरों का परिचय सचित्र
रंजक भाषा में दिया गया है कि बच्चे एक बार हाथ में लेने पर बिना खत्म किए न छोड़ेंगे।
सजिल्द ॥।)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,

[शामिल फ़रोक्त

इत्तिलानामा बनाम अशख़ास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदाद-हाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब मिस्टर कामतानाथ गुप्ता स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुक़ाम गोंडा

मुक़द्दमा नंबरी नबर २२२ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी २०—७—१९३८ ई०

१—काज़ी मोहम्मद बसीरुलहक वल्द काज़ी मोहम्मद ज़हीरुलहक़		अक़वाम शेख़ साकिनान होलापुर काज़ी परगना नवाबगंज तहसील तरबगंज ज़िला गोंडा क़र्ज़दार सायल
२—काज़ी मोहम्मद अमानउलहक़	पिसरान काज़ी मोहम्मद नज़ीरउलहक़	
३—काज़ी मोहम्मद यासीनुलहक़		

बनाम

जगदत्त वग़ैरह — क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानियान

चूँकि काज़ी मोहम्मद बसीरुलहक़ वग़ैरह साकिन होलापुर काज़ी ज़िला गोंडा की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है और चूँकि जायदाद जिसकी तफ़सील फ़िहरिस्त-हाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदिहिंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ (१) ऐक्ट मज़कूर तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर जायदाद मज़कूर पर तुम कोई दावा रखते हो, तो संयुक्तप्रांतीय गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर एक दरख़्वास्त अदालत हाज़ा में असालतन या बज़रिए मुख़्तार मजाज़ पेश करो।

फ़िहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदिहिंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बसामत हक़ीयत दरख़्वास्तदिहिंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदिहिंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	गोंडा	जमींदारी	होलापुर काज़ी मोहाल फ़ज़लहक़ परगना नवाबगंज	हक़ आला	=)८	१२-)४	अर्ज़ी सायलान नंबर १ लगायत ३
२	,,	,,	चौबेपुर मोहाल शमशुलहक़ परगना नवाबगंज	हक़ आला	।)	२४)	
३	,,	,,	शाहपुर मोहाल शमशुलहक़ परगना नावबगंज	हक़ आला	।)	(१)	
४	,,	,,	सवरी पारा तहसील उतरौला	हक़ आला	८ पाई	१॥-)	अर्ज़ी सायलान नंबर २ व ३

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

मदख़ले सायलान हस्ब दफ़ा ८ बयान तहरीरी

लोटा फूल टोंटीदार एक अदद, पतीली ताँबा एक अदद, चारपाई एक अदद

मुंसरिम

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकंबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला सीतापूर

मुक़द्दमा नं० ३९१ सन् १९३६ ई०

सूरजबख़्शसिंह वग़ैरह

बनाम

मुनेश्वरबख़्शसिंह वग़ैरह

महाजनात

हरगाह कि जायदाद मुसर्रह ज़ैल दरख़्वास्तकुनिंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व सराहत क़र्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुसर्रह ज़ैल हासिल अंदर मीयाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

नंबर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नवइयत हकीयत मालगुज़ारी
१.	कौंदी प० व तह० बिसवाँ ज़ि० सीतापूर		ए० डि० २ आना २—१७	३६)।
२.	दरयाना ,,		१ आना	८)।।
३.	तिलाईगाँव ,,		१० ४/५ पाई मिन० १६ आना	१५)
४.	भुटेला कलाँ ,,		एक आना ६ पाई	
५.	पट्टी मक़्हगवाँ कलाँ ज़िला सीतापूर		३/५ पाई	
६.	बजेहरा नसीरपुर ,,		एक आना ६ पाई	
७.	सराय ,,		२ आना	
८.	सरबाहनपुर	थोक तुलसीसिंह	एक आना ४ २/५ पाई	

सायलान १—२

चारपाई बाँस ४ गाय १ मकान मसकूना बजेहरा नसीरपुर

सायलान ३—४

चारपाई बाँस ४ गाय १ भैंस १ मकान मसकूना बजेहरा

सायलान ५—८

चारपाई ८ गाय १ भैंस १ मकान मसकूना कौंदी

मुंसरिम

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुक़ाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नंबर ५३ सन् १९३७ ई०
तारीख़ पेशी १३ जुलाई सन् १९३८ ई०
मु० जैदेवी उर्फ़ बड़कुन्ना ज़ौजा ठाकुर मातादीनसिंह क़ौम ठाकुर सा० भैसारा परगना गोपामऊ त० हरदोई
क़र्ज़दार सायल

बनाम

झाऊलाल वग़ैरह क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँ कि मु० जैदेवी उर्फ़ बड़कुन्ना साकिन भैसारा ज़िला हरदोई ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदाद-य मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद ी, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदिहिंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त-ीय गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अर्ज़ी रख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्तदिहिंदा व मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व काबिल इंतक़ाल हकीयत की तसरीह	बसाअत हकीयत दरख़्वास्तदिहिंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदिहिंदा की हकीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
	हरदोई	हकीयत ज़मींदारी	डेही मोहाल छत्तरसिंह	१० बिस्वा मिनजुमला बिस्त बिस्वा	२५॥/४ ८ बिस्वांसी	१२१≡)	बमूजिब बयान सायल
	,,	,,	कुईयाँ	८ बिस्वा ६$\frac{२}{३}$ कचवांसी	३१॥/४ १०$\frac{०}{५}$ बिस्वांसी	६॥)	

(नोट) बमूजिब बयान फ़रीक़सानी नं० १ जायदाद नंबरी (१) में आराज़ी नंबरी २३८ मालिक २०१ व तादादी ॥)१ पुख़्ता का मालिक फ़रीक़सानी नं० १ है।

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी न १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है—

१ निस्फ़ हिस्सा मकान मसकूना वाक़े मौज़ा वही परगना गोपामऊ
२ एक क़िता बाग़ वाक़े मौज़ा वही परगना गोपामऊ

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ४ एप्रिल सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[क़ाबिल फ़रोख

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पं० ब्रजनाथ साहब जुतशी स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम लखीमपु
मुक़द्दमा नंबरी नंबर १ सन् १९३७ ई०
तारीख़ पेशी २—६—३८ ई०

१—शंकरदयाल } पिसरान माखनलाल
२—रघुवरदयाल }
३—राधेश्याम वल्द शंकरदयाल
४—हरद्वारीलाल } नाबालिग़ान बविलायत रघुबर-
५—मथुराप्रसाद } दयाल पिदर ख़ुद
क़ौम खत्री साकिन कस्बा खीरी
व ज़िला खीरी

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

१—जगतनरायन वल्द रामनरायनलाल कौम कायस्थ साकिन कस्बा खीरी टाउन व परगना व ज़िला

२—मुन्नालाल व कन्हैयालाल व फ़तेहचंद पिसरान गटरूमल कौम खत्री साकिन लखीमपुर ज़िला खीरी मालिकान फ़र्म गटरूमल व देवीचरन

३—संकटाप्रसाद वल्द श्यामसुंदरलाल कौम खत्री साकिन लखीमपुर मुत्तसिल मकान रघुवरदयाल मुतवफ़्फ़ी परगना व ज़िला खीरी मालिक फ़र्म श्यामसुंदरलाल संकटाप्रसाद

४—छंगामल वल्द छुन्मूलाल कौम खत्री साकिन कानपुर मुहल्ला भितरी गली बगीचा मनीराम मालिक फ़र्म छुन्मूलाल छंगामल खत्री

५—गयाप्रसाद खत्री साकिन लखीमपुर परगना व ज़िला खीरी मालिक फ़र्म गयाप्रसाद नंदकिशोर

६—सेठ प्यारेलाल वल्द जगन्नाथ कौम खत्री साकिन लखीमपुर परगना व ज़िला खीरी मालिक लाल जगन्नाथ

७—महादेवप्रसाद वल्द तुलसीराम कौम खत्री साकिन पलिया कलाँ वारिदहाल बेलरायाँ परगना ज़िला खीरी

८—दुरगालाल खत्री साकिन छतपालगढ़ ज़िला इलाहाबाद

९—अयोध्याप्रसाद खत्री साकिन मऊ अइमा ज़िला इलाहाबाद

१०—रघुवरदयाल वल्द माखनलाल कौम खत्री साकिन कस्बा खीरी परगना व ज़िला खीरी

११—जगन्नाथ वल्द मूलचंद्र कौम खत्री साकिन अपौर्ली ज़िला सुलतानपुर

१२—हरनरायनलाल वल्द बिंद्राबन कौम कायस्थ साकिन लखीमपुर परगना व ज़िला खीरी

क़र्ज़ख़्वाहान फ़रीक़सानियान

चूँकि एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् ई०) जिसकी तरमीम अज़रूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, शंकरदयाल व रघुवरदयाल वल्द माखनलाल वग़ैरा साकिन कस्बा खीरी ज़िला खीरी ने इस गरज से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा के उस पर लगाए जावें।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् ई०, जिसकी तरमीम अज़रूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, इत्तिला दी जाती है कि जुमला शंकरदयाल वग़ैरः मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा क़र्ज़ाजात के मुताल्लिक़ दावा रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से ३ माह अपने दावों के मुताल्लिक़ तहरीरी बयानात से उस हाकिम के रूबरू पेश करें, जिसके दस्तख़त वरना अदम तामील में हरएक दावा उसके ख़िलाफ़ ख़्वाह डिगरीशुदा हो या ग़ैरडिगरीशुदा अग़राज़ और मौकों के लिये इस ऐक्ट की दफ़ा १३ की रू से बाज़ाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २५—१—१९३८ ई० जारी हुआ।

स्पेशल ज

[काबिल फ़रोख्त

इत्तिलानामा बनाम अशखास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब मिस्टर कामतानाथ गुप्ता स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम मुक़ाम गोंडा

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३४२ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी १५—७—१९३८ ई०

क़र्ज़दार सायल

अब्दुलखबेग वग़ैरह

बनाम

क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़ सानी

कुंजी वग़ैरह

बनाम चूँकि हर खास व आम

१—अब्दुलखबेग } पिसरान मुहम्मद जमाबेग
२—अब्दुल मुजीदबेग }

३—इस्लामबेग नाबालिग़ वल्द अब्दुलहकीमबेग साकिन बढ़िया परगना बूढ़ापार तहसील उतरौला ज़िला गोंडा ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है और चूँकि जायदाद जिसकी तफ़सील फ़िहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदिहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ (१) ऐक्ट मज़कूर तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर जायदाद मज़कूर पर तुम कोई दावा रखते हो, तो संयुक्तप्रांतीय गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख से ३ मास के अंदर एक दरख्वास्त अदालत हाज़ा में असालतन या बज़रिए मुख्तार मजाज़ पेश करो।

फ़िहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तफ़सील	बपाबत हकीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त देहंदा की हकीयत पर मौजूदा [illegible] मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	गोंडा	म० बूढ़ापार त० उतरौला बढ़िया मुहाल हसनपुर पट्टी मुहम्मद जमाबेग	हक आला	६ पाई	१२)६	
२	,,	बढ़िया मुहाल मेहदीबेग	,,	१ पाई १० कौट	१६॥)	
३	,,	बढ़िया मुहाल इरशादबेग	,,	५ पाई ११⅔ ,,	२॥=)५ पाई	
४	,,	सेमासाथा	,,	१ आना १ पाई	१०॥=)१	
५				१० कौट	२०)६	
६	,,	पचावलपुर	,,	६ पाई	२।=)२	
	,,	मगना सादुल्लानगर	हक अदना	६ पाई		
	,,	तहसील उतरौला रानीपुर				

फ़ेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद जो बइस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुतालिक आराज़ी हस्ब दफ़ा १० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	किस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहदा		कैफियत
१	बल गाड़ी	१	२)	
२	बैल गाड़ी के	२	४०)	
३	कुर्सी	४	१०)	
४	तख़्त	४	१०)	
५	बेंच	१	२)	
६	मेज़	१	४)	

मुंसरिम

[काबिल फ़रोख

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्त-प्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई

मुकद्दमा नम्बरी नं० १३ सन् १९३७ ई०

पेशी ८—७—१९३८ ई०

१—गंगासिंह
२—हरिबख़्शसिंह
३—साँवलसिंह } पिसरान मक्कासिंह
४—नन्हासिंह वल्द साधोसिंह
५—जैसिंह वल्द नन्हासिंह
६—शंकरसिंह
७—गंगासिंह
८—हरदेवबख़्शसिंह } पिसरान प्रतापसिंह
९—भगवानबख़्शसिंह
१०—रनवीरसिंह
११—रघुवरसिंह } नाबालिगान पिसरान शंकरसिंह बरिफाकत शंकरसिंह पिदर खुद
१२—शिवमंगलसिंह नाबालिग वल्द गंगासिंह
१३—रघुराजसिंह नाबालिग वल्द हरदेवबख़्शसिंह बरिफाकत हरदेव-बख़्शसिंह पिदर खुद
१४—गुरुबख़्शसिंह वल्द गंगासिंह
१५—शिवराजसिंह
१६—केशवसिंह
१७—नरायनसिंह } पिसरान गुरुबख़्शसिंह
१८—दीपसिंह वल्द गजराजसिंह
१९—चेतरामसिंह
२०—देशराजसिंह } नाबालिगान वल्द पिसरान भोलासिंह बरिफाकत गुरुबख़्शसिंह बाबा हकीकी खुद
२१—कामतासिंह
२२—रघुराजसिंह } नाबालिगान पिसरान शिवराजसिंह बरिफाकत शिवराजसिंह पिदर खुद
२३—चंद्रपालसिंह नाबालिग वल्द केशवसिंह बरिफाकत केशवसिंह पिदर खुद

} अकवाम ठाकुर साकि
मौज़ा सर्रा परगना
तहसील व ज़िला

सायलान

बनाम

फ़रीक़सानि

बद्री वग़ैरह

चूँकि सायलान मज़कूरा बाला ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की

दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्ताय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ व फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़िहरिस्तहाय जायदाद पेशकर्दा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा
दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नं० बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त दिहिंदा की मुत्तफ़िक़ क़ाबिज़ विरासत व क़ाबिज़ इन्तक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्त-दिहिंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्तदिहिंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
हरदोई	…	सर्रा मुहाल खंजनसिंह	मालिकाना	१ बिस्वा २ बिस्वा० ४ ४/६ कचवांसी	२१।।।=)	२ पाई ममलूका गंगा सायल नं० १
,,	…	रिखनापुर हिस्सा खंजनसिंह	,,	११ कचवांसी १७ ३/६ ननवांसी	।=)	
,,	…	गौरा हिस्सा खंजनसिंहवाला	,,	१ बिस्वांसी ० कचवांसी ३ १/६ ननवांसी	१।।=)	
,,	…	सर्रा मुहाल खंजनसिंह	,,	५ बिस्वा	११२।।≡)	ममलूका शंकरसिंह व गंगासिंह व हरदेवसिंह
,,	…	रिखनापुर	,,	१० बिस्वांसी	७)।।	
,,	…	गौरा	,,	२ बिस्वांसी ८ कच० ८ ५/६ नन०	३।)	
,,	…	सर्रा मुहाल खंजनसिंह	,,	७ बिस्वा ४ बिस्वांसी ८ ६/६ कचवांसी	१६।।।-)	ममलूका ६ पाई गुरुबख़्शसिंह सायल नं० १९ देशराजसिंह चेतरामसिंह सायलान
,,	…	रिखनापुर	,,	१२ कचवांसी ८ ३/६ ननवांसी	।≡)।।	
,,	…	गौरा	,,	२ बिस्वांसी ६ कचवांसी १७ ननवांसी	२।)	

जायदाद खंजनसिंहवाली जिस के मुताल्लिक़ बिल एवज़ दरख़्वास्त दी गई है।

तफसील जायदाद मिनजानिब फरीकसानियान नं० १ ता १७

१	हरदोई	,,	जूरा खाता नं० १	मालिकाना	१२७ बीघा ८ बि० १७ बि० सा १०	९८।≡)
२	,,	,,	जूरा खाता नं० $\frac{६}{२}$	,,	५ बीघा १० बिस्वा १८ कचवांसी	
३	,,	,,	जूरा खाता नं० १०	,,	२० बीघा १६ बिस्वा १२ बिस्वांसी	३९।।≡)
४	,,	,,	जूरा खाता नं० ११	,,	५० बीघा ९ बि०	२८=)
५	,,	,,	जूरा खाता नं० १४	,,	४१ बीघा १८ बि०	२८=)
६	,,	,,	जूरा खाता नं० ९	,,	९ बीघा १६ बि०१०	४।।-)
७	,,	,,	रिखनापुर खाता नं० ३	,,	१ बि० १७ कच० २ ननवांसी	।।)
८	,,	,,	सर्रा मुहाल प्रतापसिंह खाता नं० ३	,,	१५ बिस्वांसी ११ कचवांसी १२$\frac{५}{६}$ नन०	३११।।≡) १० पा
९	,,	,,	सर्रा मुहाल लेखासिंह खाता नं० १	,,	६ बिस्वा १८ बि० १८ कच० १३$\frac{१}{३}$ ननवांसी	१६५।) ७ पा
१०	,,	,,	सर्रा मुहाल दूलासिंह खाता नं० १,२,४,८, १०	,,	४ बिस्वा ५ बि० १०क०१०$\frac{१}{२}$न०	१०८।।)२पाई
११	,,	,,	अजमतनगर मु० सीसाला गुरुबख्शसिंह खाता नं० $\frac{९}{१}$	,,	६ बिस्वा ३ बिस्वां० १४ कचवांसी	२९।≡)
१२	,,	,,	अजमतनगर सीसाला हजारीसिंह खाता नं० १	,,	२० बिस्वा	१६।)
१३	,,	,,	अजमत नगर पंचसाला गुरुबख्शसिंह खाता नं०	,,	९ बिस्वा ८ बिस्वां० १५ कचवांसी ९ नन० कसरे ज़ायद	१०)
१४	,,	,,	अजमतनगर पंचसाला हजारीसिंह खाता नं०१	,,	२० बिस्वा	१८२)

तफसील जायदाद जो ठकुरी साह ने दिखलाई है—

१ हरदोई सर्रा आराज़ी नं० ६०२ २ बीघा ९ बिस्वा १६ बि०, नं० ९०१ २ बीघा १७ बि०, ६१३ १८ बिस्वा नं० ७४८ १ बीघा ४ बिस्वा नं० $\frac{८९६}{१}$ २ बीघा १६ बिस्वा, नं० १०३८ १ बीघा ८ बि नं०१०१७ व १०१८ ३ बीघा १ बिस्वा १०, नं० ४८१ २ बीघा १५ बिस्वा, नं० ९९५ २ बीघा नं० १०१६ ३ बीघा ६ बिस्वा ८, नं० ७५२ १ बीघा १० बिस्वा १०, नं० ८३८ व ८३९ २ बीघा नं० ८९६ १ बीघा १० बिस्वा १०, नं० ६६८ व ६६९ २ बीघा १८ बिस्वा नं० ५१९ व ५०० २ बीघा ९ बिस्वांसी, $\frac{८०६}{१}$ २ बीघा ११ बिस्वा, नं० १०५३ २ बीघा ४ बिस्वा ५, मीज़ान ३८ बीघा १५

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहैसियतनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी इस दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

तफसील जायदाद मिनजानिब फरीकसानियान नं० १ ता १७

१—सथरा परगना बंगर मुहाल नाज़िरसिंह खाता नं० १ तादादी १२ बिस्वा २ बिस्वांसी ननवांसी १५ कचवांसी मालगुज़ारी १३-)

२—मौज़ा पींग परगना बंगर मुहाल पश्चिम पट्टी घुरईसिंह खाता नं० १ तादादी ३ बिस्वा १२ बिस्वांसी १ कचवांसी १३ ननवांसी मालगुज़ारी ३०२॥=)

३—मौज़ा पींग परगना बंगर मुहाल पश्चिम पट्टी चित्तासिंह खाता नं० २ तादादी १३ बिस्वांसी १ कचवांसी १० ननवांसी मालगुज़ारी २०)

४—हक़ीयत मुतफ़र्रिक़ा पींग परगना बंगर खाता नं० १० तादादी ७१ बीघा ४ बिस्वा मालगुज़ारी १८=)

५—हक़ीयत मुतफ़र्रिक़ा पींग परगना बंगर खाता नं० ६ तादादी ७४ बीघा का बटवारा ; मालगुज़ारी १८=)

६—मौज़ा पींग परगना बंगर मुहाल पूरब खाता नं० ४ तादादी ७ बिस्वा १४ कचवांसी मालगुज़ारी १०१।)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २३-२ सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[बदस्त प्रधान फ़रोख़्त के लिये

नमूना नंबर १६६

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत जनाब बाबू कृष्णचंद्र श्रीवास्तव स्पेशल जज दर्जा दोयम बनारस
मुक़द्दमा नंबर २७२ सन् १९३६ ई०

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बज़रिये ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है,
राय राजकुमारलाल वल्द राय बलदेवबख़्श साकिन दारानगर ज़िला बनारस
ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई०, जैसा कि बज़रिये ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है, इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो साइल मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ डिग्री किए हुए और बिना डिग्री किए हुए जिन के क़र्ज़ों के मुतअल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने दावों के मुतअल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे किए हुए हैं। और, ऐसा न करने पर हरएक दावा डिगरीशुदा या ग़ैरडिगरीशुदा ख़िलाफ़ साइल मज़कूर [illegible] के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

[बदस्त प्रधान फ़रोख़्त के लिये

नमूना नंबर १६७

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
बअदालत जनाब बाबू गिरिजाचरन अग्रवाल साहब स्पेशल जज दर्जा दोयम बस्ती
मुक़द्दमा नंबर १२५ सन् १९३७ ई०

इश्तिहार

मुतफ़र्रिक़ा

हरगाह एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०), जैसा कि बज़रिये ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० में तर्मीम हुआ है, [illegible] चौधरी [illegible] साकिन मगाया त० उजीयार प० मगहर पूरब ज़िला बस्ती ने इस ग़रज़ से पेश की है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत के अहकाम उस पर लगाए जायँ।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् १९३४ ई०, जैसा कि बज़रिये ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० तर्मीम हुआ है इत्तिला दी जाती है कि सब लोग जो साइल मज़कूर की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ डिग्री किए हुए और बिना डिग्री किए हुए जिन के क़र्ज़ों के मुतअल्लिक़ दावे रखते हों, वे गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने दावों के मुतअल्लिक़ तहरीरी बयानात उस हाकिम के सामने पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे किए हुए हैं। और, ऐसा न करने पर हरएक दावा डिग्रीशुदा या ग़ैरडिग्रीशुदा ख़िलाफ़ साइल मज़कूर [illegible] के लिये ज़ेर दफ़ा १३ ऐक्ट मज़कूर बाज़ाब्ता बेबाक़ मुतसव्विर होगा।

मुंसरिम

[कानिस प्रोसे

इत्तिलानामा बगरज ऐलान व इशाअत हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुकाम हरदोई
मुकद्दमा नंबरी नंबर ७४८ सन् १९३६ ई०
तारीख पेशी १४ जुलाई सन् १९३८ ई०

१—खड़ासिंह वल्द तेजासिंह	ठाकुरान साकिनान	कर्जदार साय
२—लाकनसिंह वल्द शिवबख्शसिंह	मौजा हरिहरपुर	
३—ठाकनसिंह वल्द लाकनसिंह	परगना पिहानी जिला हरदोई	

बनाम

मूलचंद वगैरह कर्जख्वाह फरीकसानी

चूंकि खड़ासिंह वगैरा साकिनान हरिहरपुर जिला हरदोई ने एक दरख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जाय मकरूजा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफा ११ जिमन (१) ऐक्ट मजकूर इत्तिला दी जाती है कि उस जाय जिसकी तफसील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त देहंदा ने हस्ब दफा ८ या फरीकसानी ने हस् १० सायलान मजकूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मजकूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयु गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहकाक के बारे में अदालत हाजा में अपनी दर पेश करें।

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा कर्जदार हस्ब तफसील मुंदर्जा दफा ८ व पेशकरदह कर्जख्वा तफसील मुंदर्जा दफा १० ऐक्ट जायदादहाय मकरूजा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ)

कर्जदार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी

नं० सिलसिलेवार	जिला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त दिहिंदा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तशरीह	तमादात हकीयत दरख्वास्त दिहंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर जिला	दरख्वास्तदिहिंदा की हकीयत पर माजूदा सरकारी मालगुजारी
१	हरदोई		हरिहरपुर	१५ बिस्वांसी १२ कचवांसी कसरे जायद	कुल	
२	खीरी		ऊदैपुर	१ बिस्वा १२ बिस्वांसी कसरे जायद		
३	हरदोई		हरिहरपुर	१०½ बिस्वांसी	कुल ममलूका सायलान नं० २	
४	खीरी		उदैपुर	२¾ बिस्वांसी		
			जायदाद मुताबिक बयान तहरीरी फरीकसानी नं० १			
१	हरदोई		हरिहरपुर	१० बिस्वांसा १२ क० ६¾ नं०	कुल	मुन्तकिला फरीकसानी नं० १

फेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बह हैसियत हुक़ूक़ मालिकाना मुताबिक़ धारा हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	बयान अगर हक़ीयत दरख़्वास्तदिहिंदा	कैफ़ियत
१	भैंसा २ रास	कुल	
२	बैलगाड़ी १		
३	लोटा ४		
४	थाली २		
५	चारपाई ४		
६	कटोरा २		

मुंसरिम

इत्तिला तारीख़ बग़रज़ तसफ़िया मज़ामीन इश्तिहार नीलाम

(हस्ब आर्डर ५ नं० २० ज़ाब्ता दीवानी)

बअदालत जनाब मुंसिफ़ साहब बहादुर शर्क़ी मुक़ाम लखनऊ

मुक़द्दमा इजराइ नंबर २६५७ सन् १९२४ ई०

मुक़द्दमा इजराय डिगरी नंबर ५४ सन् १९२८ ई०

पन्नालाल व जुगुलकिशोर पिसरान गोवर्धनदास सकनाए रस्तोगी साकिनान रस्तोगी टोला, लखनऊ डिग्रीदार

बनाम

छोटे बक़र अब्दुल्ला क़ौम शेख़ साकिन सदर बाज़ार नई बस्ती शहर लखनऊ मदियून डिगरी

हरगाह कि मुक़द्दमा मुंदर्जे बाला में डिगरीदार ने नीलाम जायदाद की दरख़्वास्त की है। तुमको इस इत्तिलानामा के ज़रिए मुत्तिला किया जाता है कि तारीख़ २१ माह एप्रिल सन् १९२८ ई० वास्ते तय करने मज़ामीन इश्तिहार नीलाम के मुक़र्रर की गई है।

आज बतारीख़ १२ माह एप्रिल सन् १९२८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

(ऐक्ट २५ सन् १९२४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबर नंबर ६५३ सन् १९२६ ई०

ता० पेशी १५ जुलाई सन् १९२८ ई०

१—सैयद सुल्तानहसन
२—सैयद तयब हसन
३—सैयद आज़मअली

पिसरान सैयद हाशिमअली सैयद साकिनान क़स्बा संडीला मुहल्ला मख़दूमाना परगना व तहसील संडीला ज़िला हरदोई

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

[illegible] वग़ैरह मुतफ़र्रिक़ेवाला

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़मुख़ालिफ़ान

चूँकि सैयद सुल्तानहसन सायलान मुतज़किरेबाला साकिन संडीला मुहल्ला मख़दूमाना ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उन जायदाद की, जिनकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहिंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है। अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर [illegible] कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय

गज़ट में छपने की तारीख़ से २ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपना
पेश करें।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकर्दा कर्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकर्दा
हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

कर्ज़दार के हुक़ूक़ मालिकाना मुतअल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौजा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुत्तअल्लिक़ काबिल विरासत व काबिल इनकाल हकीयत की तसरीह	बमाअत हकीयत दरख्वास्त देहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी
१	हरदोई	०	भदेना मुहाल थंदे- हसन परगना व तहसील संडीला खाता नं० ४ पट्टी हालिमअली	५ बिस्वांसी १८ कचवांसी १८⅔ ननवांसी	मालिकाना	११=)
२	"	०	तरफ़ मालिकाना परगना संडीला	आराज़ी तादादी १ बीघा नवरी ४१०	मातहतदारी चौपाला	बिला लगानी
३	"	०	मख़दूमपुर परगना संडीला खाता-खेवट नंबर ४	हकीयत तादादी २॥।/४ हिस्सा सैयद आजमअली व मुलतानहसन ४ १/६ बहिस्सा बराबर	मालिकाना	लगान मय १२०)

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुतअल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता
दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिलसिलेवार	किस्म जायदाद	बमाअत हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा	कैफ़ियत
१	डेगची पुरानी मिसी	२ अदद मालिकाना	
२	रकाबी मिसी	३ " "	
३	गिलास मिसी	१ " "	
४	लोटा मिसी	१ " "	
५	तवा	१ " "	
६	दस्तपनाह	१ " "	
७	पलँग बाँस	२ " "	
८	पारचा पोशीदा	२ जोड़	
९	बिस्तर	१ "	

१०—मकान मसकूना वाक़े क़स्बा संडीला मुहल्ला मालिकाना सायबान हुदूद अरबा हस्ब ज़ैल है—

पूरब	पश्चिम	दक्खिन	उत्तर
मकान ख़ैरात अली	मकान अशफ़ाक़हुसेन	रास्ता	मकान मुस्तफ़ा

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १० जनवरी १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसिफ़

[काबिल फरद

इत्तिलानामा बगरज़ ऐलान व इत्तलाअ हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

अदालत जनाब ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम लखनऊ

मुक़दमा नंबरी नम्बर ६५ सन् १९३६ ई० पेशी ३—४—३८ ई०

बंशीधर वल्द राधेनरायन कौम खत्री सा० सोंधीटोला लखनऊ क़र्ज़दार सायल

बनाम

केदारनाथ वग़ैरह क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि बंशीधर वल्द राधेनरायन साकिन सोंधीटोला ज़िला लखनऊ ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि जायदाद का, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहिंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नं० बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदिहिंदा की मुश्तहिरा काबिल निगहदाश्त व काबिल इंतकाल हक़ीयत की तसरीह	तमाम हक़ीयत दरख्वास्तदिहिंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदिहिंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	लखनऊ	ज़मींदारी	मौज़ा उतरावाँ मुहाल नन्हीबीबी परगना व त० मोहनलालगंज ज़ि० लखनऊ	काबिल निगहदाश्त व काबिल इंतकाल	मुहाल नन्हीबीबी १५)	११४)	बक़ाया ०१)
२	लखनऊ	ज़मींदारी	मौज़ा महब्बतमऊ मुहाल नन्हीबीबी २ आना ८ पाई परगना व त० व ज़ि० लखनऊ	,, ,, ,,	,, ॥)८ पाई	१८०)	४०)
३	लखनऊ	मकान	एक किता मकान पुख्ता सेहमंज़िला वाके मुहल्ला सोंधीटोला थाना चौक लखनऊ	,, ,, ,,	मुकम्मल	कीमत तख़मीनी	२०००

फ़ेहरिस्त (बे) क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहैसियत हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा १० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

नं० सिल-सिलेवार	किस्म जायदाद	बताबत हक़ीयत दरख्वास्तदिहिंदा	कैफ़ियत
१	डिगरी	११००)	बमुक़दमा मु० [illegible] बीबी बनाम रघुनाथदयाल वग़ैरह इजराय हाकिम मह० [illegible] लखनऊ फ़ैसला १६ अप्रैल, १९२१ नं० [illegible]
१	डिगरी	११२०४)॥	बमु० मु० [illegible] बनाम रघुनन्दन वग़ैरह इजराय [illegible] लखनऊ फ़ैसला २० अप्रैल १९२१ नं० [illegible]

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज तारीख ११ अप्रैल सन् १९३८ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

[बदस्त अवाम फ़रोख्त के

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा मुमालिक मुतहद्दा

नमूना नंबर १७०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम शाहजहाँपुर
बइजलासे मुंशी रूपचंद साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम शाहजहाँपुर
मुक़द्दमा नंबर ११६ सन् १९३६ ई० तारीख़ पेशी २६ मई सन् १९३८ ई०
मुंशी हरसहाय वग़ैरह

बनाम

चिरौंजीलाल वग़ैरह

हरगाह मु० हरसहाय वल्द मुंशी बिंद्राबन व बनवारीलाल, चरनबिहारीलाल व जानकीप्रसाद व जासरे नाबालिग़ बविलायत मुंशी हरसहाय पिदर खुद पिसरान मुंशी हरसहाय पिदर खुद पिसरान हरसहाय व प्रकाशचंद्र व कैलाशचंद्र पिसरान नाबालिग़ान चरनबिहारीलाल नाबालिग़ान मज़कूर बविलायत चरनबिहारीलाल मज़कूर पिदर खुद व महेशचंद्र पिसर नाबालिग़ बनवारीलाल बविलायत बनवारीलाल क़ौम कायस्थ साकिनान मौज़ा खुदागंज परगना जलालपुर ज़िला शाहजहाँपुर सायलान की जानिब से हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसकी तफ़सील ज़मीमाहाय मुंसलिका में दरख़्वास्तदेहन्दा ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दार ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो तारीख़ इशाअत नोटिस गज़ट में इश्तिहार के गज़ट मुमालिक मुतहद्दा में शाया होने की तारीख़ है, तीन माह के अंदर अपने दस्तख़त में इस हाकिम के रूबरू अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके दस्तख़त ज़ैल में सब्त हैं।

ज़मीमा (अलिफ़)

क़र्ज़दार के इस्तहक़ाक़ मालिकाना मुताल्लिक़े आराज़ी जायदाद वाक़े ज़िला शाहजहाँपुर

नंबर शुमार	नाम ताल्लुक़ा	नाम मौज़ा	नाम मुहाल	नाम थोक पट्टी	नंबर खाता-खेवट	तादाद कुल हक़ीयत	रक़बा कुल	मालगुज़ारी	[illegible]
१	जला-लपुर	पप्पा	दोयम	—	१	२०बि०	६७-८४	२२०)	कुल
२	,,	फ़तेह-पुर	,,	पट्टी फूलचंद्र	३	५ बि०	७७-३३	५१।)	कुल पाँच एक भाग
३	,,	खुदा-गंज	बाँगर	,, मु० महताबो	२७	१ बि०	५०-१३	१७॥।)	कुल
	,,	,,	,,	शामिलात पट्टी ,,	२८	—	१६-३५	—	शामिलात काना इस
	,,	,,	खादर	पट्टी मु० ,,	२०	१ बि०	२०-३	१२॥।≡)	कुल शामिलात
	,,	,,	,,	,, ,, ,,	२१	—	६०-३७	—	बिस्वाँ
४	,,	मगौ-लीपुर	सोयम	पट्टी त्रिवेनीसहाय	७	१ बि०	७२-५	७॥।≡)	कुल
	,,	,,	,,	शामिलात पट्टी ,, ५ बि०	८	—	३-८	—	शामिलात सहाय इस
	,,	,,	,,	शामिलात ६ बि०	४	—	८२-१०२	—	शामिलात हक़

,,	भाऊपुर	बांगर	पट्टी त्रिवेनीसहाय	८	—	१६—७	२०।≡)	शामिलात हिस्सा मालिकाना
,,	,,	,,	शामिल पट्टी त्रिवेनीसहाय	८	—	१२—०	—	पट्टी त्रिवेनीसहाय हस्ब इंद्राज कुल
,,	,,	,,	,, मुहाल	१०	—	२७—१२	—	शामिलात मुहाल हस्ब इंद्राज कुल
,,	,,	खादर	पट्टी त्रिवेनीसहाय	७	१ बि०	२३—०	२।)	शामिलात जुमला मालिकान पट्टी त्रिवेनी-
,,	,,	,,	,,	८	—	२७—५	—	सहाय हस्ब इंद्राज
,,	विक्रमपुर	बिंद्रावन	...	२	१ बि०	८५-१०	१२≡)४ पा०	कुल
,,	जलालपुर	नहुम	फूलचंद	०	—	६६-१	१७।≡) ११७-)०पा०	कुल २४० हिस्सा के ४८ हिस्सा रेहन बाकी

ज़मीमा (ब)

कर्ज़दार की जायदाद, जो बइस्तसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

१—एक रास गाय रंग सुर्ख़ मायल सींग टूटे एक आगे को झुका हुआ, दुम स्याह उम्र बुड्ढी क़ीमती तख़मीनन ५)

२— ,, ,, ,, ,, सींग खड़े दुम स्याह उम्र बाली क़ीमती तख़मीनन १०)

३—एक रास बछड़ा रंग सफ़ेद दुम स्याह उम्र ८ माह क़ीमती तख़मीनन २)

४—एक क़िता बाग़ वाक़े मौज़ा थप्पा परगना जलालपुर तादादी २० बीघा आम क़ीमती तख़मीनन २००)

महदूदा मज़कूर

उत्तर	दक्षिण	पूरब	पश्चिम
खेत छुन्ना मुराऊ	खेत बलदेव चमार	रास्ता	बाग़ नंदकिशोर वग़ैरह
रास्ता	खेत रामभजनलाल वग़ैरह	रास्ता	खेत शीतलाचरन वग़ैरह मुंसरिम

[बदस्त मुलाज़िम कोर्ट के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़फ़ूला संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल मुरादाबाद

नं० मुक़दमा १२ सन् १९३७ ई०

मसरूरअलीख़ाँ बनाम ख़ुरशेदअलीख़ाँ वग़ैरह

हरगाह चौधरी मसरूरअलीख़ाँ वल्द एज़ाज़अलीख़ाँ क़ौम राजपूत साकिन मौज़ा चौधरी सराय ज़िला रादाबाद ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़फ़ूला पेश की है। लिहाज़ा इस तहरीर के ज़ हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि इस जायदाद को, जिसका ब्योरा नीचे ए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ के इज़हारों में हस्ब दफ़ा १० मज़कूर की जायदाद ताया है। अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो वह इस इत्तिलानामे के संयुक्तप्रांतीय गज़ट पने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने हक़ों के संबंध में इस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश , जिसके हस्ताक्षर नीचे किए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुतल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल मुंतक़ाल हक़ीयत का ब्यौरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलक्टर में दर्ज है
१	मुरादाबाद	सहराई	बदायूँ दरवाज़ा प० संभल मुहाल सालिम	मिल्कियत मुंज़ब्ता खाता खेवट नं० ४	६८४ हिस्से मि० १४१६ हि० बराबर $\frac{६३}{१६}$ बाबत $\frac{१६२}{१६०}$ श० क़िता ६ एकड़ ८० डि०
२	,,	,,	पंचम मा० प० संभल मुहाल बूमज़ाफ़ाँ	हक़ीयत ज़मींदारी पट्टी रंग गूंगिया नं० खाता $\frac{१}{२}$	$\frac{१२}{४८}$ हि० बराबर $\frac{२}{१४}$ हि० मि० ४८ हि० $\frac{१}{६}$ श० मि० $\frac{१४}{२४}$ श० बराबर १४ श० मि० ४८ श० व $\frac{१२}{४८}$ हि० बराबर $\frac{२}{६}$ श० व १४ श० मि० १४ श० मि० ४८ श० मि० $\frac{१४}{४८}$ हि० व $\frac{१३}{२}$ हि० बराबर २ बिस्वा १६ बि० ५ क० १० न० रक़बा १४० एकड़
३	,,	,,	तरमफ़रहा प० संभल मुहाल बूमज़ाफ़ा०	मिल्कियत ज़मींदारी ख़ारिजा $\frac{१}{२}$	निस्फ़ मि० ६ बि० ६ क० १० त० २ न० व निस्फ़ मि० १ बि० ५ बि० १६ क० ८ त० ८ नं० ८ त० ८ न० मज़कूरा व १ श० मि० ६ श० बराबर $\frac{१४}{२४}$ श० बराबर निस्फ़ मि० १ बि० ५ बि० १६ क० ८ त० ८ नं० मज़कूरा व $\frac{१२}{४८}$ हि० व $\frac{१}{६}$ श० अज़ कुमला $\frac{१४}{२४}$ श० बराबर निस्फ़ मि० १ बि० ५ बि० १६ क० ८ त० ८ नं०

,,	,,	क्रीयत ज़मींदारी ख़ारिजा खे० $\frac{१}{२}$	$\frac{४५००}{७६२०}$ हि० व $\frac{३५}{४१}$ हि० मि० १३ बि० १३ क० ६ त० १२ नं० ९० ११ पृ० ४६ हि०	२५) ९)	२१) ≡)॥
		सायबान विरत विरता नं० ७ मिल्कियत	बक़ाया हि० रक़बा १ पृ० $\frac{८४००}{११६२००}$ ग० हिस्सा १२ पृ० २३ हि०	१२)	२१)
		मुंतक़ता नं० $\frac{६}{१}$,, नं० १०	२६६२ $\frac{३}{१६}$ ग० मि० ६६४०० ग० रक़बा २६ हि०		
		,, नं० १५	$\frac{१४}{४८}$ हि० बराबर $\frac{२४०२}{२१०४०}$ व निस्फ़ मि० ७ हि० मय शुमला ८ हि० $\frac{२४००}{२३०४०}$ ग० व $\frac{५४०}{३१७१}$ बराबर $\frac{१४}{४८}$ मि० $\frac{२४००}{२३०४०}$ ग० हिस्सा १ पृ० १२ हि०	५)	)॥
		मिल्क० मुंतक़्ता नं० ६०	$\frac{१२}{४८}$ हि० मि० $\frac{२}{१}$ हि० $\frac{०}{१६}$ ग० हिस्सा २४ हि०	२)	१)
		,, नं० १००	$\frac{१२}{४८}$ हि० मि० १४ बि० १० बि० रक़बा ३१ बीघा ० बि० ६० ४ पृ० ६ हि०	१)	१)॥
		,, नं० $\frac{११६}{२}$	१०$\frac{१}{२}$ ग० व १ ग० मि० १२ हि० हिस्सा ६० २० पृ० २८ हि०	२१)	२०)
		मिल्कियत ख़ाक़ाशिकस्ता नं० ११३	१४ हि० मि० ४८ हि० बाबत २०६ ग० मि० २८८० हिस्सा १४ पृ० ६२ हि० ख़ाक़ाशिकस्ता व १४ ग० व ०$\frac{१}{२}$ ग० मि० ७८२	×	२)
		,, नं० १६२	१४ हि० मि० ४८ हि० बाबत १६ ग० मि० ४० ग० हिस्सा ६२ बीघा ४ बि० बराबर ६ पृ० ६६ हि०	×	१)
		,, नं० १६६	१०$\frac{१}{२}$ हि० व १ ग० व १४ हि० मि० १६ ग० मअशुमला ८ ग०	×	॥)

				,, नं० १३४	४० १/४ श० व ५४० श० मि० ७५० श० किता ८७ डि०	X
				,, नं० १५४	१४ श० मि० ४८ श० किता २ एकड़ ५८ डि०	X
५	,,	,,	सैयदपुर कोली मुज़र्द	हकीयत ज़मींदारी १/४	३ बि० ८ बि० १२ कच० ६ त० ८ १/६ न० व हक़ हकूक़ मि० ४ बि० ५ क० १२ १/२ न० मि० १५ बि० १७ बि० ६ कच० १६ त० १६ १/३ न० र० ५८७ ए० ८७ डि०	
				मिलकियत मुंक़त्ता	२ डि० मि० ३ हि० बराबर ७ श० मि० ३८ श० व ३ १/२ हि० मि० १४ हि० बराबर १ हि० मि० ३ हि० बराबर ७ श० मि० ३८ श० व १२ हि० मि० ३६ हि० बराबर ३ श० मि० ८ श० व ८ ३/४ श० मि० १४ श० अज़ जुमला ३८ श० किता ६ ए० ६३ डि०	
६	,,	,,	शेरखाँ सराय मुहाल बूपलीखाँ	हकीयत ज़मींदारी खाता नं० १/७	५४५२४ श० मि० ७०८४८ श० बराबर २ बि० ३ बि० १४ क० ३ त० ६ २/३ न० ६० ७ एकड़ ८७ डि०	
७	,,	,,	सायार नगला मुहाल सुखे	मिलकियत लाखिराज खाता नं० २०	६०३८० हि० मि० ११६८०२ हि० बराबर ५७६ श० मिन० २८८० श० किता ३ एकड़ ६३ डिसमिल	X
८	,,	,,	अज़ीज़पुर सैयद-पुर मु० सव्म	,, ,, ,, ८६ ३	१ हि० मि० ६ हि० अज़ जुमला १४ श० मि० २४ श० अज़ जुमला १६८ श० व १२ हि० मि० ४८ हि० अज़ जुमला २ हि० मि० ६ हि० अज़ जुमला १४ श० मि० २४ श० अज़ जुमला १६८ श० मज़कूर व १२ हि० मि० ४८ हि० मि० ३ हि० अज़ जुमला १४ श० मि० १६८ श० व १६८ श० मि० ४६२ श० व ४६२ श० मि० ४६२ श० किता ६४ श०	

९	,,	,,	आलमनगराय मुहाल अमादबख्शखाँ	इकीयत जमींदारा नं० १	१४२१३ श० मि० ८२२४४ श० बाबत १ बि० ६ क० ६ त० ५ न० मि० २० बि० २० २१ पु० १० हि०	११०) ११)
	,,	,,	अब्दुलपुर मुहाल सालिम	,, ,, नं० ३	१ बि० ११ बि० १० क० ११ त० १½ न० मि० २ बि० ८ बि० ६ क० १३ त० ७ न० रकबा १० पुख्ता ७१ हि०	४२-) ४≡)
११	,,	,,	कमालपुर मुहाल सकृत	,, ,, नं० १	१४ श० बराबर ½ श० व ११/४८ हि० मि० ½ श० व ११/४८ बराबर ३/२४ श० व ९/४८ श० बराबर २० बिस्वा १० ११७ पु० ५३ हि०	२२५) २२७)
१२	,,	,,	केवलपुरसराय मुहाल सालिम	मिलकियत मुंजला नं० १५	११/४८ हि० मि० १३/५१० मिनाय मज जुमला १०३८ श० किता २ पुख्ता ७० हि०	१३) २॥।
१३	,,	,,	गंधीपुर मुहाल सालिम	,, नं० ८	८५५/१२६६ हि० बराबर ३४५० श० मि० ७२००० श० बाबत ½ किता २० बीघा ३ बिस्वा	१०) १)
१४	,,	,,	मुजफ्फरपुर मुहाल बसंती	,, नं० ½	६ बि० ३ बि० ३ क० ५ त० ५½ न० व ११/४८ हि० बराबर १ बि० ० बि० १६ क० ४ त० १२½ न० मि० ११ बि० ४ बि० १ क० १ त० ३/२४ न० रकबा ७८ पु० ८५ हि०	१०४) १०।≡)॥
				,, नं० ½	१½ श० व १२ हि० व १०½ श० मि० ६६½ श० रकबा २१ हि०	११≡) ≡)॥
				,, नं० ३/२	१२ हि० व १ श० व १२ हि० व १० ½ श० मि० ६६½ श० रकबा ३ पु० ७२ हि०	× २।)
				,, नं० ४/२	१२ हि० व १० ½ श० व १२ हि० मि० ६१ ½ श० किता ३५ हि०	× ॥)
१५	,,	,,	धनोपुर मुहाल अब्बासखाँ पट्टी बांका	हकीयत जमींदारी नं० १/२	२ बि० ८ बि० ६ क० १४ त० १६ ५/२४ न० मि० ७ बि० १७ बि० ४ क० १६ त० २½ न० १० २८ पु० ७६ हि०	७६॥) ७॥≡)
१६	,,	,,	पहटी मुहाल नीमा पट्टी साम-	,, ,, नं० १/४	हक हकूक १० बि० १० बि० १० न० रकबा २५१ बीघा ६६ हि०	६०॥'≡) ६॥।)

मिलकियत हक़ हक़ूक़ ४४ १/२ श० बिस्वा १०
” लाख़िराज नं० २/४ बीघा १७ बि०

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दी १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हकीयत का वसाहत (विस्तार)	पूरब	पश्चिम	दक्खिन
१	मकान पुख़्ता	दरवाज़ा सदर पूरब रुख़ा	मकान ख़ुरशेद अलीख़ाँ व सड़क	मकान अब्दुलसमद ख़ाँ	मकान ज़हूरअलीख़ाँ
२	मकान ज़नाना व मरदाना मशहूर अल्लादादख़ाँ व ला	दरवाज़ा सदर सदर पूरब रुख़ा	रास्ता	मकान ख़ुरशेदअली ख़ाँ व मसरूर अलीख़ाँ	मकान ख़ुरशेदअली ख़ाँ
३	मकान पुख़्ता व ख़ाम	कुल मकान तामीर कर्दा मसरूरअली-ख़ाँ व सदर दरवाज़ा पच्छिम रुख़ा	मकान मसरूरअली-ख़ाँ	रास्ता व आराज़ी मस-रूरअलीख़ाँ	मकान ख़ुरशेदअली-ख़ाँ वग़ैरह
४	मकान ख़ाम	मशहूर ख़ैरात वाला हक़ हक़ूक़	रयाया	मकान शेरअलीख़ाँ व रयाया मसरूरअली-ख़ाँ	अब्दुलग़फ़ार ख़ाँ
५	मकान	हक़ हक़ूक़ मशहूर बाग़ीचा व सदर दरवाज़ा उत्तर रुख़ा	ख़ाया	मस्जिद व आराज़ी अब्दुलमजीद-ख़ाँ	रास्ता

सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १, ५)

अदालत जनाब मुंसिफ़ साहब बहादुर बस्ती
बइजलास जनाब बाबू गिरिवरचरन अग्रवाल साहब बहादुर मुंसिफ़ बस्ती
मुक़द्दमा नंबर २५ सन् १९३८ ई०
कालीप्रसाद वल्द सोहित साकिन मड़सन कपरी महोन पोस्ट महोली पश्चिम ज़िला बस्ती

बनाम

त्रिनकू तिवारी वल्द बिशुन साकिन मड़सन तप्पा कपरी परगना महोली पश्चिम ज़िला बस्ती
गोला रामकिशुन डाकख़ाना कोननगर ज़िला हुगली, बंगाल

हरगाह मुद्दई ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत दावा दिला पाने के दायर की है, लिहाज़ा
होता है कि तुम बतारीख़ ६ माह मई सन् १९३८ ई० बवक़्त १०½ बजे असालतन या मार्फ़त
मुक़द्दमे के हाल से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो, और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़े
जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो, जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो

देही दावै मुद्दई मज़कूर की करो और हरगाह वही तारीख़, जो तुम्हारे इज़हार के लिये मुकर्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमे के तजवीज़ हुई है, पस तुमको लाज़िम है कि अपने जवाब दावा की ताईद में जिन दस्तावेज़ात पर तुम इस्तदलाल करना चाहते हो, उसी रोज़ उनको पेश करो।

मुत्तला रहो कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा—

आज बतारीख़ २५ माह एप्रिल सन् १९३८ ई० मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

सम्मन बिनाबर तनक़ीह तलब

(ऑर्डर ५ क़ायदा १, ५)

बअदालत जनाब ठाकुर विजयपालसिंह साहब बहादुर मुंसिफ़ ज़िला फ़र्रुख़ाबाद

मुक़द्दमा नंबर २७५ सन् १९३७ ई०

रामरक्षपालसिंह वग़ैरह वल्द सेठ नंदलाल ब्राह्मण साकिन मौज़ा ब्यूँरा परगना शम्साबाद एवं ज़िला फ़०

मुद्दई

बनाम

यादवेंद्रसिंह वल्द अंगदसिंह क़ौम ठाकुर परगना मछरेटा ज़िला सीतापुर मुलाज़िम क्लर्क इनकमटैक्स डिस्ट्रिक्टबोर्ड ऑफ़िस।

हरगाह के मुद्दईगान ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत रहननामा डिग्री के दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम बतारीख़ १८ माह मई सन् १९३८ ई० बवक़्त १० बजे दिन बमुक़ाम अदालत असालतन या मारफ़त वकील के, जो मुक़द्दमे के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और कुल उमूरात अहम मुताल्लिक़ मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स, जो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हो। जवाबदेही दावे की करो। और तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ कुल दस्तावेज़ात पेश करो, जिन पर तुम बताईद अपनी जवाबदेही के इस्तदलाल करना चाहते हो। तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर हाज़िर न होगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारे मसमू और फ़ैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत आज बतारीख़ १२ एप्रिल सन् १९३८ ई० जारी किया गया।

मुंसरिम

पहनिए नहीं, खाइए।

जवाहिरात पहनने में जानोमाल का ख़तरा है।

मगर

जवाहिरात से विधि-पूर्वक बना हुआ

—जवाहर-मोहरा—

निर्बलों को बलवान् और बूढ़ों को जवान बनाता है। बदन, दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी दूर करता है। किसी भी अवस्था में गिरी हुई नब्ज़ को उभारता है। जहाँ अन्य औषधियाँ निष्फल होती हैं, वहाँ भी यह चमत्कार दिखाता है। १० ख़ुराक की १ शीशी २॥), फ़ी तोला २०) रुपए।

सब प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों और बहुमूल्य रत्नों के मिलने का पुराना और विश्वास-योग्य स्थान—

वैद्यराज हकीम बनारसीदास वैद्यशास्त्री, आयुर्वेदाचार्य

शारदा-फ़ार्मेसी

लाठीमोहाल, कानपुर

गाढ़ी कमाई के पैसे बचाइए

देश-विदेश के ताज़े-से-ताज़े समाचार और विद्वत्ता-पूर्ण लेखों तथा व्यापारिक रिपोर्टों से परिपूर्ण ८ पृष्ठ का

दैनिक लोकमान्य

वार्षिक मूल्य १०) पढ़िए छमाही ५॥)

एक प्रति सर्वत्र १ पैसा

१२ पृष्ठ का

साप्ताहिक लोकमान्य

वार्षिक मूल्य २) एक प्रति दो पैसे

सार्वजनिक संस्थाओं और पुस्तकालयों को

ख़ास रियायत

केवल ८) में दैनिक १ साल तक दिया जायगा

नमूने के लिये आज ही लिखिए

मैनेजर **लोकमान्य**
१६०, हरिसन रोड, कलकत्ता

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

लेखक, हिंदी के सर्वश्रेष्ठ नाटककार कविवर पं० गोविंदवल्लभ पंत। नाटककार के रूप में पंतजी का नाम कितना प्रसिद्ध हुआ है, यह आप सभी हिंदी-प्रेमियों पर प्रकट है। पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है।

सुंदर, सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २), सादी का १॥)

प्रत्येक अध्याय विचित्र रहस्य प्रकट करता है।

पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। पाठक पढ़कर ही इसका असली आनंद प्राप्त कर सकेंगे। १२ रेखा-चित्रों-सहित। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ को आज ही पत्र लिखिए

चित्ताकर्षक

उपन्यास

मा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, पं० विश्वंभरनाथजी शर्मा 'कौशिक'। एक ओर तो आप देखेंगे कि अनुचित लाड़-प्यार से बच्चे कैसे बिगड़ जाते हैं, और दूसरी ओर देखेंगे कि एक दृढ़-चित्त माता के उपदेशों से ग़रीबी में भी पला हुआ बालक कैसा सच्चरित्र निकला है!

मूल्य ३), सजिल्द ३॥)

विदा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव। इस पुस्तक का पहला संस्करण शीघ्र ही बिक गया। दूसरा संस्करण बहुत थोड़ा रह गया है। अपनी कापी शीघ्र मँगवा लीजिए, नहीं तो बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मूल्य २॥), सजिल्द ३)

सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य!

संसार-रहस्य

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे, और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २७४; मूल्य १॥), सजिल्द २)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

धातुपौष्टिक योग

इसके प्रताप से हज़ारों नामर्द मर्द बन चुके हैं। यह बहुत वर्षों से प्रचलित हो रहा है,
क्योंकि इस औषधालय को इस कलकत्ता महानगर में स्थापित हुए
६० वर्ष से अधिक हो गए हैं—

यह योग तीन दिन के भीतर ही अपना गुण दिखा देता है। पानी के समान पतले वीर्य को एकदम गाढ़ा कर देता है, पेशाब की समस्त बीमारियों को हटाकर दस्त साफ़ करता है, तथा गिरती हुई धातु को रोकता है। उपदंश (गर्मी), मेह, प्रमेह (गनोरिया-सूज़ाक) रोगों को यह जड़ से खो देता है, तथा शरीर को बलवान् करके स्मरण-शक्ति को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, हस्तमैथुन से उत्पन्न कमज़ोरी (शिथिलता), रगों की सुस्ती, धातु-क्षीणता, स्मरण-मात्र से ही पतन (शीघ्र वीर्य का पात होना), पाख़ाना व पेशाब के साथ धातु का गिरना, अधिक विलासिता के कारण कमर में दर्द, हाथ-पैर का काँपना, चक्कर आना, आँखों के आगे चिनगारियाँ निकलना, कलेजे का धड़कना, नामर्द हो जाना इत्यादि रोगों को दूर कर रक्त शुद्ध करता है, और भूख, शक्ति तथा वज़न को बढ़ाता है। जिससे शरीर वज्र के समान मज़बूत हो जाता है। जिनमें पुरुषत्व न हो, उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त कराकर उनके वीर्य को गाढ़ा और गर्भ धारण करने के योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक़ पूर्ण गुणकारी १ डिब्बे की क़ीमत २), डाक-पैकिंग-ख़र्च ।॥); यदि गुप्तेंद्रिय की भी शिकायत होवे, तो रोग़न मदन-मस्तान को भी इस धातुपौष्टिक योग के साथ में ही मँगाकर उपयोग (मालिश) करिए, संपूर्ण शिकायतें दूर होंगी।

जैसा इसका नाम है, वैसा ही इसका गुण है—जिस प्रकार कवियों ने लिखा है—यथानामा तथा गुणः। विशेष ख़ुलासा हाल अश्लीलता के कारण नहीं लिख सकते हैं। मालिश करने में किसी प्रकार का झंझट या परहेज़ तथा तकलीफ़ नहीं होती। साधारण रीति से प्रतिदिन मालिश करना होता है। दाम २) शीशी। विश्वास रखिए, ये दोनों दवाएं बहुत ही शीघ्र फ़ायदा दिखानेवाली हैं।

कितने नामर्द (नपुंसक), जो निराश हो चुके थे, शर्म से मुँह छिपाए चलते थे, घर में नित्य कलह रहता थी, दवा सेवन कर अब ताल ठोंक बाज़ी मार रहे हैं। चेहरे पर हँसी है। बूढ़े तक को भी यह दवा नया वीर्य, नया ख़ून, नई ताक़त और नया जोश ला देती है। नामर्द होना पाप ही नहीं है, बल्कि संतान नहीं होने से मानव-जीवन में कलंक भी है। अतः एक बार ज़रूर लेकर देखिए।

औरतों के लिये

स्त्री-रोग-निवारक तथा गर्भदाता योग

इस योग के सेवन से औरतों की क्षीणता तथा सब तरह का प्रदर, मासिक धर्म के समय पेट या कमर में दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनों से होना, बिलकुल ही न होना, असमय में मासिक धर्म होना, ख़ून के कतरे गिरना, गर्भाशय में दोष होने के कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल संतति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगों पर २१ दिन योग को सेवन करने से गर्भाशय तथा शरीर के सब दोष दूर होकर मासिक धर्म समय पर होगा, और गर्भपात न होकर संतति नीरोग उत्पन्न होगी, यहाँ तक कि ४० वर्ष की स्त्री को भी इसके सेवन से निश्चय ही गर्भ धारण हो जाता है। २१ दिन तक सेवन करने योग्य दवा के एक डिब्बे की क़ीमत २), डाक-पै०-ख़र्च ।॥), ऋतु(स्त्री)-धर्म के समय पेट (गर्भाशय) साफ़ करने को ८ पुड़िया काढ़ा का देना होता है, जिसका दाम और १) देना होगा।

स्त्रियों को भी धातुक्षीण होता है, जिसके कारण बार-बार पेशाब का उतरना, जलन होना, बूँद-बूँद पेशाब का गिरना, मूत्र-नली से पानी के समान या गाढ़ा मवाद के समान दुर्गंध-युक्त स्राव निकलना आदि तुरंत इस दवा से आराम होते हैं।

इन दवाओं को स्त्री और पुरुष हर मौसम में खा सकते हैं। परहेज़ वग़ैरह कुछ भी नहीं है। संतान की इच्छावालों को ये दोनों ही दवा स्त्री और पुरुष दोनों ही को एक साथ खाने से अच्छा होगा। ये दवाएं तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इन्हें अवश्य मँगावें।

भारत-भैषज्य-भांडार, सु १०८, तुलापट्टी, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता।

Registered No. A.

अच्छी आदत डालती है

वह वास्तव में बुद्धिमती माता है ! आप भी इसी
अपने बच्चों को बचपन से ही, चाय पीना सिखा
उनमें स्वस्थ और प्रसन्न रहने की आदत डाल दे
हैं । चाय एकदम शुद्ध सुरक्षित और हानि
होती है ।

एकमात्र पारिवारिक पेय

भारतीय चाय

चाय तैयार करने तरीका

ताज़ा पानी खौलाइ
साफ़ बर्तन ज़रा गर्म
लीजिये । उसमें
के लिये एक और
चम्मच अधिक
भारतीय चाय
पानी खौल जाते
चाय पर ढाल दीजि
पाँच मिनिटों तक
को सीझने दीजिये।
बाद प्यालों में
दूध और चीनी मिला

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

गु. पुस्तकालय

सुधा

August 1938

हिंदी और हिंदुस्थान में
बालक-बालिकाओं के लिये सर्वश्रेष्ठ सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)] **बालक** [नमूने का अंक

संपादक—श्रीरामलोचनशरण 'बिहारी'

☞ यह पत्र बारह बरसों से लगातार निकल रहा है। बिहार, उड़ीसा, युक्तप्रांत, मध्यप्रदेश और बंबई की सरकारों द्वारा स्वीकृत है। प्रत्येक अंक सुसंपादित और सुसज्जित निकलता है।

हमारे सर्वप्रशंसित साहित्यिक प्रकाशन पर एक अमूल्य सम्मति

"बिहार-प्रांत में हिंदी-पुस्तकों को खूब अच्छे ढंग से प्रकाशित करनेवाली संस्था एक है।"—'सरस्वती', प्रयाग

कुछ चुनी हुई साहित्यिक पुस्तकें

१. विद्यापति की पदावली (सटिप्पण, सजिल्द)—टीकाकार और संपादक, श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी और कुमार गंगानंदसिंह एम॰ ए॰
२. गोविंद-गीतावली (सटिप्पण, सजिल्द)—संपादक, श्रीमथुराप्रसाद दीक्षित
३. अशोक (सजिल्द ऐतिहासिक नाटक)—श्रीलक्ष्मीनारायण मिश्र बी॰ ए॰
४. कामना (सजिल्द, नाटक)—स्व॰ श्रीजयशंकर 'प्रसाद'
५. प्रेमिका (मेरी कॉरेली के 'थेल्मा'-उपन्यास का अनुवाद)—अनु॰, स्व॰ पं॰ ईश्वरीप्रसाद शर्मा
६. विमाता (मौलिक, सामाजिक, कारुणिक उपन्यास, सजिल्द, चतुर्थ संस्करण)—श्रीअवधनारायणलाल
७ देहाती दुनिया (औपन्यासिक ग्रामीण चित्र)—श्रीशिवपूजनसहाय
८. विभूति (१६ मौलिक, ललित कहानियों का अनूठा संग्रह, सजिल्द)—श्रीशिवपूजनसहाय
९. किसलय (सजिल्द, कहानी-संग्रह)—श्रीजनार्दनप्रसाद झा 'द्विज' एम॰ ए॰
१०. वाग्विलास—(मार्मिक, विद्वत्ता-पूर्ण, समालोचनात्मक)—आचार्य द्विवेदीजी
११. कैलास-दर्शन (सचित्र, सजिल्द, यात्रा-विवरण)—श्रीशिवनंदनसहाय बी॰ ए॰
१२. उत्तरा खंड के पथ पर—(सचित्र, सजिल्द, यात्रा-विवरण)—प्रोफ़ेसर मनोरंजन एम॰ ए॰
१३. बड़ों का बचपन (सचित्र, सजिल्द)—श्रीजगदीशनारायण
१४. आदर्श राघव (सचित्र, भगवान् रामचंद्र का आलोचनात्मक चरित्र)—स्व॰ उदितनाराय दास बी॰ ए॰
१५. बिहार का साहित्य (सचित्र, सजिल्द)
१६. 'तीर्थ-रेणु' और 'मकरंद-बिंदु'—श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़शी बी॰ ए॰

☞ बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पता—**पुस्तक-भंडार, लहेरिया सराय** (बिहार-प्रांत)

प्रत्येक मनुष्य इस बात को गाँठ बाँध ले !

शुभ

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अर्बों-खर्बों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्व इच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, खुशक़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

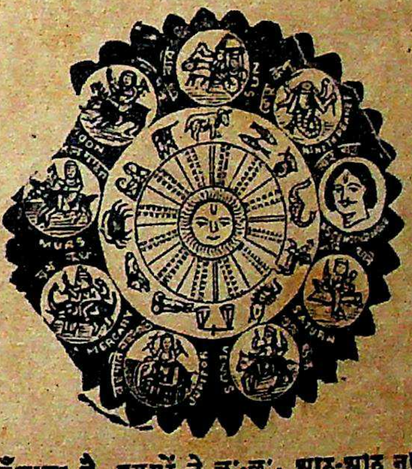

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में खुशकिस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने खुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रहयंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोजगार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, खराब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेस-लाटरी में धन की प्राप्ति वगैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छः-छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, मगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं। कर्म-हीन नर पावत नाहीं॥ जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणियुक्त कंठ्लीट एक नवग्रहयंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ४॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ४॥≡)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें मूल्य ६॥≈)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ४ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रहयंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की कड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रहयंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रहयंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

बी० अर्जुनदास बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बजार बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे रेस में लाल किया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० एडवोकेट हाईकोर्ट पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो

सचित्र ! सजिल्द !! सर्वांग-पूर्ण कामशास्त्र !!!

आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी-लिखित भूमिका-सहित

गर्भाधान-रहस्य

[ले०—डॉ० रामनारायण वैद्यशास्त्री एल्० एम्० एस्०]

"जनन-विज्ञान-संबंधी कोई भी ऐसी बात नहीं है, जिस पर योग्य लेखक ने प्रकाश न डाला हो।"

—भारत

"जितनी पुस्तकें इस विषय पर लिखी गई हैं, उनमें यह सबसे उत्तम है।"

—डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, प्रयाग-विश्वविद्यालय

"विषय गोपनीय होते हुए भी ऐसे ढंग से लिखी गई है कि इसे पिता अपनी पुत्री को और भाई अपनी बहन को निःसंकोच भाव से दे सकता है।"

—प्रो० विश्वनाथप्रसाद एम्० ए०

"प्रत्येक नवयुवक और नवयुवती को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।"

—डॉ० त्रिलोकीनाथ वर्मा बी० एस्-सी०, एम्० बी० बी० एस्०, एफ़्० आर० सी० एस्०

"इस विषय पर इससे अच्छा ग्रंथ हिंदी में तो क्या और समृद्ध भाषाओं में भी कठिनता से मिलेगा।"

—ज्वालादत्त शर्मा

"विद्वान्-से-विद्वान् पाठक भी इसमें नई बातें पावेगा।"

—प्रताप

"इस विषय की पूर्व और पश्चिम में जितनी शोध हुई है, सबका सार इसमें है।"

—संतराम बी० ए०

"योग्य लेखक ने २०-२५ वर्ष के अनुभव का सार बड़ी ख़ूबी के साथ प्रकट किया है।"

—महावीरप्रसाद श्रीवास्तव बी० ए०

"The author has brought out a remarkably exhaustive book on the science pertaining to sex. It deals with very varied yet associated subjects like sexual physiology, problems of sex, morality as well as birth control, of wise parenthood and radient motherhood, of physical culture as well as beauty culture………".

—P. M. L. Varma, M. A., B. Sc. LL. B. (Advocate High Court)

४० चित्रों से सुसज्जित ग्रंथ, दोनो भागों का मूल्य ४॥)

नोट—शेष सम्मतियाँ पत्र-व्यवहार से जानिए। पुस्तक यदि नापसंद हो, तो दूसरे दिन भेज दें। डाकख़र्च कम करके हम शेष मूल्य लौटा देंगे।

पता—संतति-रहस्य-ऑफ़िस, बनिया मनीराम, कानपुर।

लेख-सूची

पृष्ठ

१. प्रियतम की स्मृति (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव १

२. चयन (कविता)—[लेखक, श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त २

३. हम गुलाम क्यों हैं ?—[लेखक, श्रीयुत जयचंद्र विद्यालंकार ३

४. इँगलिस्तानी या खिचड़ी बोली—[लेखक, डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी० १८

५. आयुर्भोग (कहानी)—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ... २६

६. तुलसीदास का पुनर्युग और उसके कुछ गुण-दोष—[लेखक, श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ३५

७. दुराशा ! (व्यंग्य-चित्र)—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ४१

८. आज सुखी मैं कितनी, प्यारे ! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'बच्चन'जी ४२

SOVEREIGN-REMEDY
AMRUTANJAN
Best Indian Pain Balm
Amrutanjan Depots
BOMBAY, MADRAS

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध । सिर-दर्द, बदन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है ।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

❀ स्त्री-रोग की अक्सीर दवा ❀

मासिक धर्म के हरएक दोषों को दूर करने में रामबाण है । मासिक धर्म के समय कमर में पीड़ा, सिर में दर्द, आँखों में जलन, हाथ-पैर के तलवों में लहर, मासिक धर्म मात्रा से अधिक या थोड़ा होना, गर्भ न रहना, गर्भपात या अल्पायु संतान का होना या होकर मर जाना इत्यादि समस्त दोष दूर कर गर्भ धारण की शक्ति लाकर संतान पैदा करने योग्य बनाती है, मूल्य २) (प्रशंसा-पत्र) मिसेज़ बाबू किशोरीमोहनलालजी श्रीवास्तव दौलतगंज पो० लश्कर (ग्वालियर) से लिखती हैं कि मुझे आपकी दवा से बहुत लाभ हो रहा है । कृपा कर १ शीशी और वी० पी० द्वारा शीघ्र भेजने का प्रबंध करें ।

❀ जीवन-शक्ति ❀

इसके सेवन करते ही बदन में वह शक्ति आती है, जो चढ़ती जवानी में भी नसीब नहीं होती । पानी के समान पतले धातु को पुष्ट करने में रामबाण है । सुस्ती, नामर्दी, धातु-क्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, मूत्र के साथ या पाखाने के आगे-पीछे धातु का निकलना, बहुमूत्र-रोग (डायबिटीज़) इत्यादि दूर कर शरीर में नया वीर्य उत्पन्न कर अपूर्व शक्ति लाती है । मूल्य १॥)

❀ खाँसी की फाँसी ❀

खाँसी-रोग भयानक है । यदि तत्काल इलाज न किया जाय, तो पीछे दमा हो जाता है । किंतु इसके थोड़े ही दिन के सेवन से सब प्रकार की खाँसी (सूखी या कफदार) क्यों न हो, शीघ्र दूर हो जाती है । मूल्य ॥)

❀ दाद-नाशक मरहम ❀

बिना जलन और तकलीफ़ के सब प्रकार के दाद को शर्तिया आराम करता है । एक बार अवश्य परीक्षा कर देखें । मूल्य ।)

पता—श्रीकृष्ण-केमिकल वर्क्स, नं० ५४, पो० कतरी सराय (गया)

पृष्ठ

९. योरप में भारतीय—[लेखक, डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्० (पेरिस) ४३

१०. विजय-तिलक (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ४७

११. एक जाति, एक भाषा, एक लिपि (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ५४

१२. पशु - पालन —[लेखक, श्रीयुत श्रीराम शर्मा ५५

१३. युग-शासन (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ५९

१४. लुगानो (स्वीट्ज़रलैंड) (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ६०

१५. विष्णु-कांते ! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी० ६६

१६. एडिटर कितना सच बोलता है ?—[लेखक, मिस्टर जंगबहादुरसिंह, असिस्टेंट एडिटर 'दि ट्रिब्यून', लाहौर ६७

पाँच हज़ार का पाँच रुपया में द्वितीय सं

भृगु-संहिता

(योगसागरफलित खंड भाषा-टीका)

गत ७२ वर्षों का जिनका जन्म है व १० में होगा, संसार - भर के सभी देशों के की जन्म-कुंडलियों का भूत, भविष्य, वर्तमान जन्म का हाल, स्त्री, पुत्र, द्रव्य, सुख, दुख, हानि, किस संवत् तक आयु, फिर कहाँ जन्म इत्यादि साधारण पढ़े-लिखे भी फल कह सके फल सुनते ही लोग कहते हैं कि कर्णपिशाचि सिद्ध है। कई ज्योतिषी सिद्ध बन गए। समा पत्रों ने समालोचना की और सार्टीफ़िकेट आए चार मास के लिये रियायती मूल्य ५), पो० फिर सौ रुपए को भी न मिलेगी।

भृगु-संहिता कुंडली-खंड

सं० ११२० से २००० तक सौ वर्षों के भर के मनुष्यों की जन्म-कुंडली इसमें मिलेगी। जन्म-पत्री बना लो। मूल्य २) रु०; पो० ॥)

मूक प्रश्न-भास्कर—गुप्त प्रश्न बताने का ग्रंथ; मूल्य २)

पता—ज्योतिषरत्न पं० अयोध्याप्रसाद मिश्र
ज्योतिषी, झाँसी नं० २६, JHANSI

अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के लिये चालीस हज़ार
शब्दों की पूर्ति करनेवाला, हज़ारों नवीन
शब्दों तथा नियमों से परिपूर्ण
हिंदी का उत्कृष्ट

"हिंदी-रत्न-कोष"

मूल्य १।), ग्लेज़ पेपर का १।=), चार पुस्तकें एक साथ लेनेवालों को २५% कमीशन। बड़ी विशेषता यह है कि आधुनिक कवियों तथा साहित्यिकों के ग्रंथों एवं प्रचलित पत्र-पत्रिकाओं में प्रयुक्त होनेवाले हज़ारों नवीन शब्दों का इसमें समावेश किया गया है।

इसके अतिरिक्त "हिंदी-विश्वविद्यालय", "महिला-विद्यापीठ" तथा "विशेष योग्यता" के कोर्स की पुस्तकें किफ़ायत से मिलती हैं। सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

पता—विश्वविद्यालय-परीक्षा बुकडिपो, पान-दरीबा, इलाहाबाद

पृष्ठ
१७. कवि की खोपड़ी (व्यंग्य-चित्र)—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ... ७२
१८. बदला—[लेखक, श्रीयुत परिपूर्णानंदजी वर्मा ७३
१९. उपमा और असम—[लेखक, श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी ७८
२०. अर्पण (कविता)—[लेखक, श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स) ८२
२१. परदेशी प्रियतम (कविता)—[लेखिका, कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक' ८३
२२. भामती (कहानी)—[लेखक, अध्यापक श्रीशंकरदेव विद्यालंकार ८४
२३. अंत:करण-चिकित्सा—[लेखक, डॉ० दुर्गाशंकर नागर 'कल्पवृक्ष'-संपादक ८७
२४. हिम-हास (गद्य काव्य)—[लेखक, श्रीप्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए० ... ९०
२५. हिंदोस्तानी - एकेडेमी, संयुक्तप्रांत (प्रयाग) (सचित्र)—[लेखक, श्री-भारतीय एम्० ए० ... ... ९१

विवाहित आनन्द

आप समझते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और इसी भूल के कारण बीसवीं सदी की सर्वोत्तम पुस्तक के स्वाध्याय से वञ्चित हैं। सच समझिए 'विवाहित आनन्द' पांच हज़ार विवाहित पुरुषों की आप-बीतियों का निचोड़ है। क्रियात्मक उपदेशों, रहस्य की बातों और अत्यन्त लाभदायक शिक्षाओं का भण्डार है। इसके अतिरिक्त गुप्त रोगों की बिना औषधि के चिकित्सा भी लिखी गई है।

मूल्य सचित्र व सजिल्द का ।।।)

सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

पता—कविराज हरनामदास बी.ए., लाहौर

लड़कों, लड़कियों और स्त्रियों के लिये

मध्य-प्रांत और बरार के शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत

बाल-विनोद

सुंदर, सचित्र मासिक पत्र—वार्षिक २॥) रु०

—:०:—

आजकल बड़ी सज-धज से निकल रहा है। सरल, सहज भाषा; शिक्षाप्रद, दिलचस्प कहानियाँ, गल्प, कविताएँ, मनोरंजक चुटकुले, प्रश्न-पहेलियाँ और इनामात। आज ही २॥) भेजकर ग्राहक बन जाइए। प्रतिवर्ष सुंदर कलेंडर और बढ़िया विशेषांक भी मिलता है।

मैनेजर बाल-विनोद, मुरादाबाद

पृष्ठ
२६. प्रपात (कविता)—[लेखक, श्रीयुत पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' १०२
२७. चातुर्वर्ण्य वेद-मूलक नहीं—[लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ... १०३
२८. जाति-पाँति की जोंक (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ... ११२
२६. विरह-वेदना (कविता)—[लेखक, पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न ... ११३
३०. घसियारा (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंह ११४

❀ख़िज़ाब को छोड़ो❀

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो ॥), इससे अधिक पका हो, तो ४) या कुल पका हो, तो ६) का तेल मँगवा लें।

पता—बाल काला डीपो नं० १०१
पो० कतरी सराय (गया)

विचित्र पुस्तकें

आजकल हिंदी-संसार में अपना-अपना पेट पालना तो सभी जानते हैं, परंतु बेचारे ग़रीब, अपाहिज बेकारी से तड़पनेवालों का कोई भी सहारा नहीं। हमने अपने यहाँ से बेकारों के हितार्थ कुछ अनोखी पुस्तकों का प्रकाशन शुरू कर दिया है। हमारा दावा है कि आप निम्न-लिखित पुस्तकों में से कोई भी पुस्तक मँगाकर, घर बैठे धन कमाकर अपना तथा अपने भावी कुटुंब का पालन करिए। दिन-प्रतिदिन माँग बढ़ रही है।

देशी बटन-मेकर	१॥)	करघा-कला	१॥
घड़ीसाज़ी	१)	ख़ज़ाने की कुंजी यानी व्यापार करने का तरीक़ा	१॥)
साबुनसाज़ी (शिक्षक)	२)	सुगंधित तेल बनाना	२)
		व्यापार-शिक्षा	१॥)

नोट—हमारी उपर्युक्त कुल पुस्तकें मँगानेवालों को ﹣) प्रति रुपया कमीशन भी दिया जावेगा, और व्यापार करने का भले प्रकार तरीक़ा भी बतलाया जावेगा, और जो मदद हो सकेगी, वह भी की जावेगी।

पता—वर्मा-निर्बल-सहायक कार्यालय, शिकोहाबाद सिटी

❀ श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों ❀

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी), चरक सबको ३ दिन में पूरा लाभ। यदि अनेक दवा लगाकर निराश हो चुके हैं, तो एक बार इसे लगाकर नीरोग होवें। बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस। जिन्हें विश्वास न हो, ﹣) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १॥)

❀ गर्भ-निरोधक (बर्थ-कंट्रोल) ❀

इसको प्रति माह १ बार के सेवन से उस मास में गर्भ नहीं रह सकता। यदि आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो औषध का सेवन कराना बंद करा दें। गर्भ धारण हो जायगा। इससे स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती। मूल्य १ वर्ष का १।)

दूसरी दवा, जो सर्वदा के लिये वंध्या बना देती है। मूल्य २)

❀ स्तंभक वटी ❀

१ गोली शाम को खा लें, तो इसका अद्भुत चमत्कार देखें। दो घंटे तक बंधेज करके आनंद देती है। मूल्य १६ गोली का १)

❀ बिच्छू की अद्भुत जड़ी ❀

इसे सिर्फ़ छुलाने-मात्र से भयानक-से-भयानक बिच्छू का विष शीघ्र दूर हो जाता है। हज़ारों को आराम कीजिए। सैकड़ों वर्ष पड़ा रहे, गुण में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं होता। मूल्य प्रति जड़ी ॥≈), ३ जड़ी का १॥=), ६ जड़ी का ३), १२ जड़ी का ५), डाक म० १ से १२ जड़ी तक ।।)

पता—राजवैद्य परमेश्वरदयालजी, नं० १०२, पो० कतरी सराय (गया)

पृष्ठ

३१. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत वसंतकुमार, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण-दीनदयाल अवस्थी, श्रीयुत कुँवर सोमेश्वरसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत शिवदत्त चतुर्वेदी बी० ए०, श्रीयुत ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु', श्रीमती विद्या ठाकुर, श्रीचंद्रभूषण-देव, श्रीयुत रमेश वर्मा, कुमारी व्रजकुमारी और श्रीयुत गिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश' ११९

३२. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल-एल्० बी०, 'श्री०' और श्रीयुत 'उमेश' .. १३१

३३. कुसुम १३७

३४. धारा (सचित्र, संपादकीय विचार) ... १३८

३५. सुधा-चित्रावली १६३

३६. गाँव—[लेखक, श्रीयुत रामचंद्र त्रिवेदी १६७

आवश्यकता—है ऐसे स्त्री-पुरुष उम्मेदवारों की, जो सिनेमा व चित्रपटों के लिये भिन्न-भिन्न कार्य जैसे ऐक्टर व मशीनमैन का काम सीखकर कंपनी में २ वर्ष तक अच्छे वेतन पर काम करने को तैयार हों। होस्टेल में रहने का स्थान तथा अन्य सुविधाएँ मुफ़्त। चित्रमय छपा हुआ प्रास्पेक्टस ।-) के टिकट भेजकर मँगाइए।

प्रभात मूवीटोन-कॉलेज,
१२४, मेन रोड, दादर
बंबई

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक़्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह ओषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।≡)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खाएँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ूब तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगाकर लगाना लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) तिरंगा

१. प्रियतम की स्मृति—[चित्रकार, श्रीयुत कमलाशंकरसिंह १
२. स्वीस-स्वर्ग लुगानो ५६

(ख) दुरंगे

३. विद्वद्वर पं० प्रजापतिजी मिश्र ... ३४
४. विद्वद्वर पं० गिरीशजी तिवारी ... ३४
५. राष्ट्र-गौरव माननीय डॉक्टर सैयद महमूद ३५
६. कुँवर सरदारीलाल चोपड़ा(नववधू-सहित) ६६
७. प्रो० गनपतराय एम्० ए० तथा श्रीमती गोपालदेवी ६७
८. श्रीयुत कर्णसिंहजी केन ८२
९. कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक' ... ८३

सुखसंचारक कम्पनी मथुरा की दवाइयाँ
सुधासिन्धु
कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार आदि की स्वादिष्ट सुगंधित दवा की० ॥)
दद्रुगजकेसरी
दाद की सबसे अच्छी दवा. की० ।)
बालसुधा
दुबले, और कमज़ोर बच्चों को ताक़तवर बनानेवाली मीठी दवा. की० ।॥)
सब दवा बेचने वालों के पास मिलती है

ईमानदारी का सौदा
(दोनो तरफ़ सच्चा और फ़ायदेमंद होता है)

संतान-निरोध—७ दिन के सेवन से ज़िंदगी-भर के लिये संतान-जन्य वेध होता है। स्त्री के स्वा और बहुत क़िस्म की झंझटों से बचने के लिये संतान-निरोध ज़रूर होना चाहिए। दवा सब तरह से निर्दोष है। क़ीमत ५)

कैंसल—इस दवा के खाने से १ वर्ष तक गर्भ नहीं होता है। संपूर्ण निर्दोष है। क़ीमत २॥)

फ़ीमेल फ्रेंड—(सर्व स्त्री-रोग) श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, मासिक धर्म का दोष, कमज़ोरी, हाथ-पैर-कमर का दर्द, हिस्टीरिया, मूर्च्छा आदि स्त्री-संबंधी सब रोगों की अचूक दवा है। क़ीमत ४)

पुत्रदा रसायन—गर्भस्राव और बंध्यात्व की परीक्षित दवा है। निश्चय गर्भ रहता है और पु होता है। क़ीमत ५)

फ़्लोमेंस—(रजनि:सारक) ज़रूरत पड़ने पर २-३ महीने का रुका हुआ ऋतु खुल जाता है। कोई तकलीफ़ नहीं होता है। क़ीमत १॥)

फ्रेंच-यूथ-पिल—सब प्रकार की धातुक्षीणता, नपुंसकता, कमज़ोरी, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, दिल की धड़कन, सुस्ती, भूख न लगना, मानसिक दौर्बल्य आदि धातु-संबंधी सैकड़ों और ख़ून-संबंधी रोगों की रामबाण, देश की दवा है। क़ीमत ७॥)

शेर की चर्बी (शुद्ध)—नपुंसकता, सुस्ती, लिंग का पतला, छोटा और टेढ़ापन और सुस्त होने की सर्व-मान्य दवा है। ५ तोले में पूरा फल। क़ीमत ४); एक तोला १)

गर्मी की दवा—सब तरह की गर्मी समूल अच्छी होती है। क़ीमत ८)

सूज़ाक की दवा—नई-पुरानी सूज़ाक ज़रूर अच्छा होती है। क़ीमत ४)

बवासीर की दवा—सब प्रकार की नई-पुरानी बवासीर अच्छी होती है। मसे झड़ जाते हैं, ख़ून बंद हो जाता है, भूख लगती है, अन्न हज़म होता है। क़ीमत ४॥)

सब तरह की दवा मिलने का पता—
डॉक्टर एस्० सी० भादुरी एम्० बी० (घीयामंडी), मथुरा, यू० पी०

पृष्ठ
१०. बालक ईसा मसीह और उनकी माता—[चित्रकर्त्री, श्रीमती कलावतीदेवी 'बच्ची' ६०
११. श्रीमान् सेठ रामगोपालजी मोहता ... ६१
१२. कुमारी व्रजकुमारीजी १३०
१३. श्रीयुत कैलासचंद्रजी बी० एस्-सी० और श्रीमती कौशल्यादेवी १३१

(ग) व्यंग्य

१४. दुराशा !—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ४१
१५. कवि की खोपड़ी—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ७२

(घ) सादे

१६. डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी० ... १८
१७. आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ... ३०
१८. श्रीयुत 'बच्चन'जी ४२
१९. डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्० (अध्यक्ष हिंदी - विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय) ४३

दैवी शक्तियों का साक्षात् प्रभाव
दिखलानेवाला
राजों, महाराजों तथा सिटी-मैजिस्ट्रेट साहब
बहादुर, लखनऊ द्वारा परीक्षित
जगत्-विख्यात
चिंता-हरण सिद्ध यंत्र 'रजिस्टर्ड'

समस्त मनोरथों को पूरा करनेवाला, धन, भाग्य, रोज़ी, पुत्र-सुख, वशीकरण, मुक़द्दमा, परीक्षा, तरक़्क़ी, तबदीली, घुड़दौड़, लाटरी आदि में उत्तीर्ण करानेवाला। केवल २) में मँगाकर लाभ उठावें।

गारंटी हम बजरंगबली की साक्षी देकर लिखते हैं, यदि हमारे लेखानुसार आपका मनोरथ पूरा न हो, तो दूना मूल्य वापस करेंगे।

पता—मैनेजर रमलाचार्य-आश्रम (सु)
पोस्ट कमलापुर, जिला सीतापुर [यू० पी०]

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

हम 'जीवन-सुधार' नाम की बहुमूल्य पुस्तिका मुफ़्त बाँट रहे हैं। एक पोस्टकार्ड भेजकर मँगवा लीजिए।

रामकृष्ण औषधालय, जबलपुर

पवित्रात्मा से बातचीत कीजिए—और अपनी कठिनाइयाँ उनके द्वारा दूर कीजिए। भूले हुए आदमी या भूली हुई वस्तु, लाटरी (बाज़ी) जीतने की संख्या या सट्टा, गड़ा धन या ख़ज़ाना, प्रेम-संबंधी, विवाह-संबंधी, व्यापार-संबंधी, स्वामी की कृपा इत्यादि बातें इस नवीन पुस्तक 'मेडिया डी स्पिरिटाइज़्म अमेरिकन' के द्वारा सभी आसानी से सिद्ध की जा सकती हैं।

मूल्य २) ; डाक-व्यय अलग।

सोल एजेंट— पो० बाक्स नं० १५१
लाहौर

पृष्ठ
२०. श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ४८
२१-२६. लुगानो (स्विट्ज़रलैंड) - संबंधी ६ चित्र ६१-६४
२७. श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ६३
२८. श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी० ६६
२९. मिस्टर जंगबहादुरसिंह, असिस्टेंट एडिटर 'दि ट्रिब्यून', लाहौर ६७
३०. श्रीयुत परिपूर्णानंदजी वर्मा ... ७४
३१. श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी ... ७८
३२. डॉ० दुर्गाशंकर नागर ८७
३३. श्रीप्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए० ... ९०
३४. श्रीडॉक्टर राय राजेश्वरबली (संस्थापक हिंदोस्तानी-एकेडेमी) ९२
३५. महा० रायब० पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा ९५
३६. सर तेजबहादुर सप्रू ९६
३७. रावराजा रायबहादुर डॉ० श्यामबिहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० ... ९९
३८. श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ...
३९. श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंह ...
४०. पं० ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु' ...
४१. श्रीचंद्रभूषणदेव ... ...
४२. श्रीकपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्' ...
४३. स्व० सर विश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव ..
४४. श्रीयुत बाबू शिवप्रसादजी गुप्त ...
४५. श्रीदरबारीलाल 'सत्य-भक्त' ... ...
४६. स्व० चाँदरानीजी ... ...
४७. स्व० बाबू भैरवप्रसादजी ... ...
४८. आलइंडिया रेडियो (लाहौर) में 'हनेरा'-खेल ... ...
४९. श्रीमान् रामेश्वरदयालजी मंत्री तथा श्रीमती धर्मदारानी मंत्री हिंदीरत्न ...
५०. जाति-पाँति-तोड़क दंपति ... ...
५१. लेफ़्टिनेंट श्रीरत्ननारायण मुल्ला (लखनऊ) तथा श्रीमती लीलादेवी हूण (कानपुर) ... ...
५२. कुमारी विमलादेवी ... ...

केवल प्रचार के लिये 'सुधा' के पाठकों को भारी रियायत—

लूटिए ! "हमारे दो नए रत्न" लूटिए !!

(१) भयंकर पतन (नाटक)—में हिंदुओं का भीषण ह्रास, भयंकर पतन, आपस की फूट, हिंदुओं पर किए जानेवाले अन्यायों और अत्याचारों का नग्न चित्र, विधर्मियों के गुप्त भयानक षड्यंत्रों का भंडाफोड़, हिंदू-संगठन का सच्चा स्वरूप इत्यादि दृश्य देखिए ।

(२) ख़ूनी कटार (नाटक)—में हिंदू-जाति की प्रसिद्ध संकोर्णता, मिथ्या आडंबर, स्त्री-जाति पर अन्यायों और अत्याचारों का प्रत्यक्ष प्रमाण और उनका भयंकर पतन, गुंडों के उन पर कपट-जाल-पूर्ण आक्रमण तथा सती विधवा का दो विधर्मी और विश्वासघाती गुंडों को अपनी कटार से मौत के घाट उतारना । यह निर्बल स्त्री-जाति को वीर और निर्भीक बनानेवाला है । दोनो नाटकों में ५-५ चित्र हैं, मूल्य हरएक का १-१ रुपया है । नापसंदगी पर वापसी की शर्त है । दोनो के ख़रीदार को दो बढ़िया नाटक मुफ़्त और मिलेंगे ।

प्रियतम-पुस्तक-भंडार, पिलानी

प्रवेशांक

	वार्षिक मूल्य	प्रवेशांक
राजसंस्करण	१२)	२)
साधारण संस्करण	६)	१)
सस्ता संस्करण	४)	॥)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

सुधा

वर्ष १२ | खंड १
श्रावण, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९५ वि०)— | अगस्त, १९३८
संख्या १ | पूर्ण संख्या १४५

प्रियतम की स्मृति

[श्रीदुलारेलाल भार्गव]

जन - बिछुरन - छन - कन भए
मन कौं मन - मन - ढेरि ;
अँसुवन - कन मनकन रही
प्रीति - सुमिरनी फेरि ।

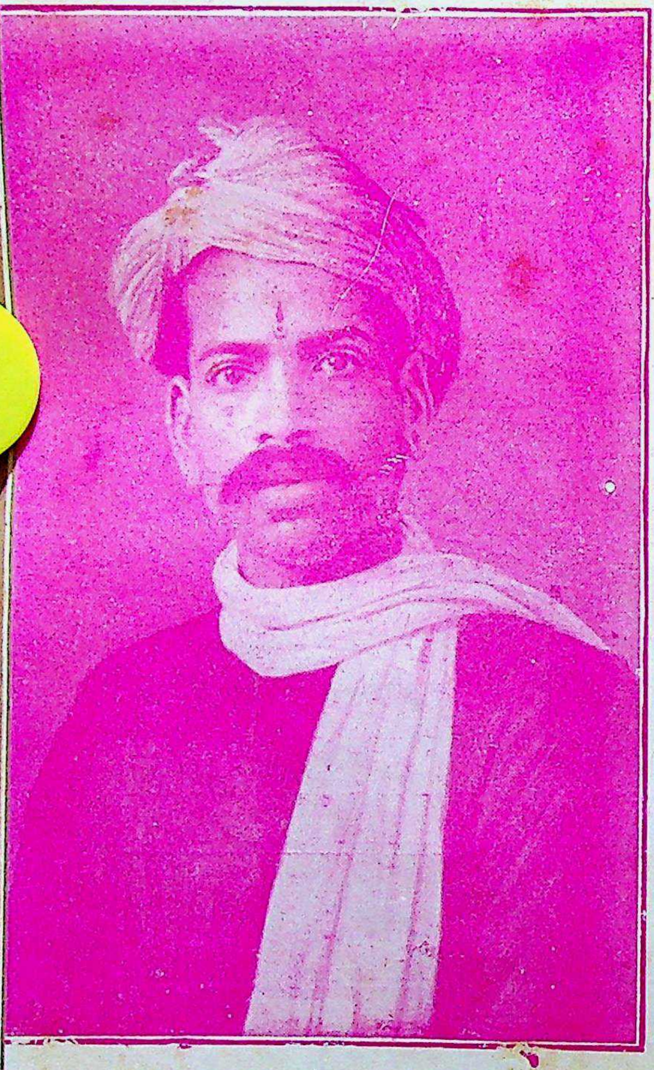

श्रीयुत बाबू मैथिलीशरण गुप्त

चयन

[श्रीयुत बाबू मैथिलाशरण गुप्त]

चुन ले चला हमारे फूल।
माली, छोड़ दिए क्यों तूने ये कंटक, ये शूल?

तू है चतुर, मृदुस्पर्शी है;
फिर भी हाय! विषमदर्शी है।
जो फूलों का, वही नहीं क्या काँटों का भी मूल?
चुन ले चला हमारे फूल।

तू जिसका वेतन-भागी है,
जान लिया, वह भी रागी है।
उड़े न उसके हाथों में पड़ अभागियों की धूल।
चुन ले चला हमारे फूल।

जा फिर भी तू सफल-मनोरथ,
हमें देखने दे उसका पथ,
पहनेगा कंटक-किरीट जो अमृत-पुत्र अनुकूल।
चुन ले चला हमारे फूल।

सिलक की साड़ियाँ

सोने और चाँदी के किनारे लगी हुई फ़ैंसी साड़ियाँ, मूल्य ४०), बढ़िया कपड़ा, देखने में सुंदर, टिकाऊ तथा नए फ़ैशन की हैं। नीली, बैंगनी, नारंगी के रंग की मिलेंगी। सभी श्रेणी की स्त्रियों के द्वारा पसंद की गई हैं। विवाह और त्यौहार इत्यादि सभी शुभावसरों पर उपहार देने योग्य हैं।

साइज़ (नाप) ५ गज़ ×४५ इंच, एक गज़ उसी रंग के साथ ब्लाउज़ के लिये। मूल्य ७॥)—पैकिंग और पोस्टेज मुफ़्त। नापसंद होने पर दाम वापस।

गिरसन-निटिंग वर्क्स डिपार्टमेंट, १०८, लुधियाना

हम ग़ुलाम क्यों हैं ?

[श्रीयुत जयचंद्र विद्यालंकार]

बाबू जयचंद्रजी विद्यालंकार हिंदी-संसार के प्रसिद्ध ऐतिहासिक और पुरातत्त्ववेत्ता हैं। 'हम ग़ुलाम क्यों हैं ?' इस प्रश्न की विवेचना के लिये आपने अपने इतिहास की छान-बीन करने के बाद इस लेख में भविष्य का रास्ता भी, इतिहास की ज्योति में, दिखाया है। विद्वान् लेखक का कहना है कि अपनी शिक्षा को विचारपूर्वक संघटित करना हमारे उद्धार का प्रमुख उपाय है। कांग्रेसी सरकारों को उस दिशा में तुरंत पग बढ़ाना चाहिए, और मातृभाषा को उच्चतम शिक्षा का माध्यम तुरंत बना देना चाहिए। आपने यह लेख बिहारप्रादेशिक हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के १५वें अधिवेशन में होनेवाली इतिहास-परिषद् के सभापति के पद से पढ़ा था।—सुधा-संपादक

बिहार और पंजाब का सहयोग

समूचे बिहार के साहित्यिकों की इस संगत में एक सरहदी को यह आसन देकर अपनी पुरानी परंपरा की रक्षा की गई है। ज्ञान और वाङ्मय के क्षेत्र में हमारे सरहदी पंजाब और आपके बिहार का परस्पर सहयोग इतिहास-प्रसिद्ध है। बहुत पुरानी बात है, हमारे एक पुरखा पाणिनि को आपके राजा नंद ने पटना की सभा में बुलाकर सम्मानित किया था। फिर दूसरे युग में आपके यहाँ का एक युवक, चंद्रगुप्त, भटकते-भटकते हमारी तक्षशिला में पहुँचा, और वहाँ से वह हमारे एक विद्वान्, चाणक्य, को अपने साथ ले आया। उन दोनो के सहयोग के परिणाम से आप सब परिचित हैं। अगला युग आया। जब आपका पटना का साम्राज्य टूटकर हमारे पेशावर में साम्राज्य स्थापित हुआ, तब आपके अश्वघोष को सम्राट् कनिष्क पेशावर ले गया, और वहाँ बैठकर उसने वे रचनाएँ कीं, जो आज भी तोकियो से कोलंबो तक पढ़ी जाती हैं। फिर युग-परिवर्तन हुआ, और अयोध्या के गुप्त राजों ने आपके मगध में साम्राज्य स्थापित किया। गुप्त सम्राट् विक्रमादित्य ने तब हमारे दार्शनिक वसुबंधु को अपना गुरु बनाकर पेशावर से बुलाया। एक और ज़माना बीता, और आपके मगध में राजा गोपाल का वंश राज्य करने लगा। गोपाल के पोते देवपाल ने फिर हमारे पड़ोस के सरहदी अफ़ग़ान वीरदेव को आपके नालंदा-महाविहार का आचार्य नियत किया। अपने को उन महापुरुषों की पंक्ति में गिनना गुस्ताख़ी तो है, पर उस गुस्ताख़ी के द्वारा भी यदि पूर्वजों के स्मरण और कीर्तन का पुण्य कमाने का अवसर मिलता है, तो उसे क्यों हाथ से जाने दूँ ? इसीलिये मैं यह सोचता हूँ कि मेरा बरसों तक जायसवालजी का अंतेवासिक रहना और आपका मुझे इस आसन पर बैठाना क्या बिहारियों और सरहदियों के उस पुराने सहयोग के ही सिलसिले में नहीं ?

स्व० जायसवालजी

किंतु इस सिलसिले की अंतिम कड़ी की याद

हमारे दिलों को मुरझा देती है। जायसवालजी के बिना आज यह सभा सूनी है, और आपका बिहार सूना है। किस प्रकार एकाएक अपने काम को अधूरा छोड़कर, समय से पहले ही हमें छोड़कर वह चल दिए! उनके उठ जाने से जो स्थान खाली हुआ है, वह कैसे पूरा होगा? यह कहना कि वह पूरा न होगा, उनकी कीर्ति का अपमान करना है, क्योंकि उनका यह दृढ़ विश्वास था कि हमारी जाति ज़िंदा है।

तो भी, व्यावहारिक दृष्टि से सोचते हैं, तो, एक बात स्पष्ट दिखाई देती है, और उसे छिपाने में कोई लाभ नहीं। दूसरे प्रांतों के विद्वानों के सम्मिलित उद्योग से जायसवालजी का रिक्त स्थान भले ही पूरा हो जाय, पर आपके प्रांत में यह अभाव काफ़ी वक़्त तक बना रहेगा। यहाँ तक कि एक अखिल भारतीय ऐतिहासिक परिषद् में बिहार का कौन प्रतिनिधि बुलाया जाय, यह खोजने लगते हैं, तो एक भी नाम हमारे सामने नहीं आता। जो प्रांत आज से पाँच मास पहले ऐतिहासिक अध्ययन में देश का अगुआ जान पड़ता था, आज एक भारतीय परिषद् में उसका प्रतिनिधित्व करनेवाला भी कोई नहीं, क्योंकि उसके एक विद्वान् स्वर्ग को चल दिए, दूसरे रूस को! यह अवस्था चिंतनीय है। मौलिक विचार का एक प्रबल सोता बीस बरस तक आपके प्रांत को सींचता रहा, और उसके एकाएक बंद हो जाने से आज यह दशा है कि आपकी ज़मीन पर ज़रा भी हरियाली नहीं दिखाई देती। क्या इसका यह अर्थ नहीं कि हमारा शिक्षा-संघटन जड़ से बोदा और निकम्मा है?

हमारी दिमाग़ी ग़ुलामी

किसी वस्तुतः जीवित राष्ट्र में यदि ऐसे एक विद्वान् ने अपने राष्ट्रीय इतिहास के लिये इस प्रकार जीवन-भर कार्य किया होता, तो उसके आँख मूँदने से पहले उसकी कोड़ियों शिष्य-संतानें उसका स्थान लेने को तैयार दिखाई देतीं। फलतः हमारा राष्ट्र यदि जीवित है भी, तो या तो उसकी जीवन-धारा अत्यंत क्षीण है, और या उसके शिक्षण-संस्थान में कोई ऐसे पर्दे आ फँसे हैं, जो मौलिक विचार का संतत-निरोध करने में निन्नानवे फ़ीसदी कामयाब होते हैं। सच कहें, तो क्षीणता भी है और पर्दा भी।

पर्दा है विदेशी भाषा, विदेशी प्रमाणपत्रों, और उपाधियों के मोह का। क्षीणता है विदेशी ठप्पे के बिना अपने ऊपर भरोसा न कर सकने की, स्वयं अपनी आँख से न देख सकने की। इस क्षीणता का ही दूसरा नाम है दिमाग़ी ग़ुलामी। और, सच पूछिए, तो यही हमारी राजनीतिक और आर्थिक ग़ुलामी की जड़ है।

हमारी राजनीतिक ग़ुलामी और उसके प्रकट कारण

हमारी ग़ुलामी का प्रश्न हमारे जीवन-मरण का प्रश्न है, इसलिये वह हमारे इतिहास-अध्ययन का ध्रुव लक्ष्य होना चाहिए। तीस-बत्तीस करोड़ आदमी मुट्ठी-भर विदेशियों के क़ाबू में हैं, और न केवल उनके इशारे पर चलते, प्रत्युत उनके इशारे पर सोचते भी हैं। यह विश्व के इतिहास की एक अनहोनी घटना है। यह अवस्था क्यों हुई, और कैसे बनी है? आइए, इन प्रश्नों पर ज़रा विचार करें।

यह सुपरिचित बात है कि जल और स्थल-युद्ध की कला में योरपियनों से पिछड़े होने के कारण हम लोग अँगरेज़ों से हारे। किंतु समर-कला में हमसे आगे बढ़े होने पर भी योरपियन हमारे देश को जीत न सकते, यदि वे हमारे ही देश में सेना खड़ी न कर सकते। आफ़्रिका में वे आफ़्रिकन-सेना खड़ी न कर सके थे, क्योंकि एक सधी सेना के संघटन में आने के लिये जितनी सभ्यता, साधना और वीरता चाहिए, उतनी आफ़्रिका के

लोगों में न थी। भारतवासियों में एक पुरानी सभ्यता का वारिस होने के कारण वे सब थीं। इस बात को पहलेपहल अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में द्यूमा-नामक फ़्रांसीसी ने पहचाना। उसने यह भी देखा कि भारतवासियों में वह आत्माभिमान या वह ग़ैरत नहीं, जिससे उन्हें भाड़े के सिपाही बनकर अपने ही भाइयों पर गोली दागने में कोई झिझक हो। साथ ही वे जाग्रत् ज्ञान-पिपासा और महत्त्वाकांक्षा से भी इतने शून्य हैं कि उन्हें यदि योरप की नई समर-कला का थोड़ा परिचय दे दिया जायगा, तो उससे आगे बढ़कर उस ज्ञान की जड़ तक पहुँचने और उसका उस्ताद बनने की उन्हें कोई उत्सुकता न होगी। सार यह कि उनमें वे सब गुण हैं, जिनसे वे दूसरे के उपयोगी हथियार बन सकें, पर ऐसा एक भी गुण नहीं, जिससे स्वतंत्र कर्ता बन सकें। इसी कारण उन्हें थोड़ा-बहुत सिखाकर हथियार दे देने में कोई खटका नहीं। यही द्यूमा का 'भारतीय सिपाही का आविष्कार' था, और यह ऐसी बात है, जिसका हमारे स्कूलों के बालकों को भी पता होना चाहिए।

हमारी राजनीतिक निर्जीवता और सामरिक शिथिलता

हमारे अंदर राजनीतिक चैतन्य और राष्ट्रीयता का अभाव होना तथा हमारे राजनीतिक संघटन का शिथिल होना हमारी ग़ुलामी का दूसरा कारण कहा जाता है।

अब प्रश्न ये उठते हैं कि हममें राजनीतिक चैतन्य का अभाव क्यों हुआ, या है ? राजनीतिक तथा सामरिक संघटन की शिथिलता क्यों हुई, या है ? स्वतंत्र कर्तृत्व का अभाव भी क्यों हुआ, या है ? यह हमारा सनातन दोष है या युग-विशेष की कमज़ोरी ? क्या हमारे देश की भूमि या जल-वायु में कोई ऐसी बात है कि यहाँ सामूहिक संघटित जीवन का उदय हो ही नहीं सकता, और यहाँ के निवासियों में ऊँची महत्त्वाकांक्षाएँ जाग ही नहीं सकतीं, केवल दार्शनिक चिंतन की प्रवृत्ति ही प्रकट हो सकती है ? क्या हमारी नस्ल में कोई ऐसी त्रुटि है ? भूमि और नस्ल में कोई त्रुटि न रहने पर भी ऐतिहासिक अवस्थाओं का परिपाक ऐसा हुआ है कि एक विशेष युग में आकर हमारे राष्ट्र-देह में यह बीमारी उपस्थित हो गई है ?

अँगरेज़ ऐतिहासिकों का स्वार्थ

अँगरेज़ों का स्वार्थ स्पष्टतः हममें यह भाव भरने में है कि भारतीय चरित्र में त्रैकालिक दुर्बलता है। स्वर्गीय ऐतिहासिक विंसेंट स्मिथ, "जिनकी विद्वत्ता का घोड़ा" अध्यापक विनयकुमार सरकार के शब्दों में "विद्यमान सरकार की स्वार्थ की गाड़ी में जुता हुआ था"; योरपियन उत्कर्ष की डींग हाँकने का कोई मौक़ा न चूकते थे। मेरे विचार में स्मिथ की नेकनीयती पर संदेह करना उचित नहीं हुआ। कारण, तीस-बत्तीस करोड़ आदमियों का मुट्ठी-भर विदेशियों के क़ाबू में असहाय पड़े रहना ऐसी अनहोनी और समझ में न आनेवाली बात है कि उसकी कोई व्याख्या सूझ नहीं पड़ती। ऐसी दशा में कोई ऐतिहासिक यदि लालबुझक्कड़ की-सी लड़कपन की व्याख्या पेश करे, तो भी वह क्षम्य है। कैंब्रिज-विद्यापीठ से जो भारतवर्ष का इतिहास निकल रहा है, उसके लेखकों की मनोवृत्ति स्मिथ से भी बदतर है, और उनकी चेष्टा को क्षम्य कहना भी कठिन। नमूने के तौर पर सेल्युकस की चंद्रगुप्त से हार को वे स्वीकार करना नहीं चाहते, और मुझे इसीलिये उनसे यह प्रश्न करना पड़ा है कि क्या सेल्युकस का योरपियन दिमाग़ इतना सयाना था कि उसने ५०० हाथियों के बदले चार विशाल प्रांत बेच दिए थे * ?

---

* भारतीय इतिहास की रूप रेखा, पृष्ठ ५५१।

हमारी भूमि, हमारी नस्ल और हमारे प्राचीन पुरखा

अपने राष्ट्र की भूमि और नस्ल के विषय में मैंने अन्यत्र * विस्तार से विचार किया और उन्हें निर्दोष पाया है। पिछले पचीस बरस में हमारे देश के अनेक ऐतिहासिकों ने, जिनके अगुआ आपके जायसवालजी थे, अकाट्य रूप से यह सिद्ध कर दिया है कि प्राचीन भारतवासियों में सामूहिक जीवन और राजनीतिक चैतन्य उत्कट रूप से था। उनका दार्शनिक चिंतन जितना ऊँचा था, ऐहलौकिक चरित्र और कर्तृत्व भी उतना ही उज्ज्वल !

कुछ भारतीय ऐतिहासिकों की भ्रांत देश-भक्ति

भारतीय उत्कर्ष स्थापित करते-करते हमारे कुछ साथी तो यह भी भूल गए हैं कि आज भारत संसार के सब देशों से अधिक पतित और पद-दलित है। और, इस प्रकार उनकी दृष्टि उस मूल प्रश्न से, जिसे मैंने भारतीय इतिहास का ध्रुव तारा कहा था, हटकर पथ-भ्रष्ट हो गई है। 'भारतवर्ष का सांस्कृतिक दाय' (The Cultural Heritage of India) नाम से, श्रीरामकृष्ण परमहंस के स्मारक रूप में, जो तीन जिल्दें हाल में प्रकाशित हुई हैं, उनके लेखकों की दृष्टि में भारत में जितने धार्मिक पंथ या संप्रदाय आज तक प्रकट हुए हैं, वे सभी सनातन सत्य के एक या दूसरे पहलू को सूचित करते हैं, उनका कोई भी अंश दूषित, रुग्ण या सड़ा हुआ नहीं जान पड़ता। और तो और, हमारे देश के प्रमुख समाजशास्त्री प्रोफ़ेसर विनयकुमार सरकार भी, आधुनिक भारत की राजनीतिक ग़ुलामी और उसके कारणों को एकदम नज़रंदाज़ करके, बीजगणित के समीकरणों की परिभाषा में, १९३०-३५ के भारत की १८४८-१८७० के योरप-अमेरिका के साथ तुल्यता बता गए हैं ! उनका कहना है, भारतवर्ष उन्नति की दौड़ में योरप से केवल कुछ पिछड़ गया है, बस, और कुछ नहीं। हमारे सांस्कृतिक वसीयतनामे के उक्त व्याख्याकारों के मत से मध्ययुगीन सिद्धों का वज्रयान, रहस्यवाद और वामाचार, वल्लभ का पुष्टिमार्ग और चैतन्य का कीर्तनमार्ग, सभी परम लक्ष्य तक पहुँचने के विभिन्न साधन-मात्र हैं। परंतु सचाई की खोज करनेवाले इतिहास के विद्यार्थी को मध्ययुगीन भारत की रहस्याच्छादित धार्मिक प्रवृत्तियाँ इस राष्ट्र के पतन का मुख्य लक्षण जान पड़ेंगी। स्वर्गीय राखालदास बनर्जी ने स्पष्ट दिखलाया है कि चैतन्यदेव के भक्तिमार्ग का प्रभाव उड़ीसा के सुशक्त हिंदू-राज्य के पतन का सीधा कारण हुआ था। राष्ट्रीय दृष्टि से अपना इतिहास मनन करने का यह अर्थ हर्गिज़ नहीं कि हम अपने राष्ट्र की कमज़ोरियों को नज़रंदाज़ करें। उल्टा उन्हीं को समझाने के लिये हमें अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए, और हमीं उन्हें ठीक समझ सकते हैं, क्योंकि अपना इतिहास समझने के लिये जो अंतर्दृष्टि हममें हो सकती है, वह विदेशियों में नहीं हो सकती।

मध्ययुगीन हिंदुओं की कमज़ोरी

यदि भारतवर्ष की भूमि और भारतीय जाति की नस्ल में ऐसी कोई बात नहीं, जो सामूहिक जीवन और स्वतंत्र कर्तृत्व के विकास में बाधक हो, और यदि प्राचीन भारतवासियों में ये गुण उत्कट रूप से व्यक्त हुए थे, तो प्रश्न होता है कि कब, कैसे और क्यों हमारे जीवन में वह मंदता आ गई, जिसके कारण आज हम ग़ुलाम हैं ? ईसवी सन् की दसवीं शताब्दी के अंत में और फिर बारहवीं सदी के अंत से तुर्कों के जो हमले हमारे देश पर होने लगते हैं, उनमें पहलेपहल भारतवासियों की कमज़ोरी प्रकट होती है। महमूद ग़ज़नवी के समय से शिवाजी के समय तक हिंदू क्यों प्रायः सदा ही

---

* भारतभूमि और उसके निवासी, पृष्ठ ५-११।

तुर्कों से हारते रहे, इसकी अनेक व्याख्याएँ पेश की गई हैं। यह कहा जाता है कि मध्य एशिया के ठंडे जल-वायु से आनेवाले तुर्क भारत के गर्म मैदानों में रहनेवाले हिंदुओं से ज़्यादा मज़बूत थे। हर्षवर्धन के बाद से भारत में कोई बड़ा साम्राज्य स्थापित न हुआ, जो विदेशियों को रोक सकता। जो छोटे-छोटे राज्य थे, वे सदा परस्पर लड़ा करते थे, जिससे हिंदुओं में विश्वासघाती और देशद्रोही पैदा होते रहे।

इनमें से प्राय: सभी व्याख्याएँ कसौटी पर पूरी नहीं उतरतीं। राजपूत तुर्कों से शारीरिक बल में कुछ कम न थे। कश्मीर से नेपाल तक हमारे ठंडे पहाड़ी प्रांतों ने भी इस युग में राजनीतिक शक्ति प्रकट नहीं की; और एक गुजराती ढेड़ के मलिक काफ़ूर बन जाने पर यदि उसमें सामरिक पराक्रम, महत्त्वाकांक्षा और कर्तृत्व जाग उठता था, तो मध्य एशिया का जल-वायु इस्लाम की विजयों का कारण नहीं माना जा सकता। गुर्जर-प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के साम्राज्य हर्ष और पुलकेशी के साम्राज्यों से कुछ छोटे न थे, और दसवीं या बारहवीं सदी के जो प्रादेशिक राज्य थे, यदि उनमें जीवन होता, तो वे अकेले ही विदेशियों का मुक़ाबला कर सकते। तुर्क हिंदुओं से बढ़कर परस्पर लड़ा करते थे, तो भी किसी हिंदू को कभी यह न सूझा कि उनकी लड़ाइयों से लाभ उठाकर उन पर आधिपत्य स्थापित करे। विश्वासघात की बहुत-सी प्रचलित बातें तो निरी कहानियाँ हैं। और, यदि कभी सचमुच विश्वासघात हमारी हार का कारण हुआ भी है, तो वह केवल हमारी राजनीतिक निश्चेष्टता और निद्रालुता को सूचित करता है। क्योंकि राज्य के मुखिया या राजा ने विश्वासघाती को पहचानकर उसे दंड क्यों नहीं दिया, और यदि स्वयं राजा ने देश-द्रोह किया, तो प्रजा उसके ख़िलाफ़ उठ क्यों न खड़ी हुई ?

विचार करने पर स्पष्ट दिखाई देगा कि तुर्कों और हिंदुओं में इस युग में यदि कोई फ़रक़ था, तो वह उनकी मानसिक दृष्टि, उनके सामाजिक जीवन और संघटन का था। राजपूतों की जिस बहादुरी की बड़ी तारीफ़ की जाती है, वह प्राय: सदा रक्षापरक युद्धों में ही प्रकट हुई। वह अपना अंत निकट देखकर मरने-मारने पर उतारू हुए आदमी की अंतिम निराशा की वीरता होती थी। अपनी रक्षा-मात्र के लिये लड़नेवाला यदि जीत भी जाय, तो अपना घर ही बचा पाता है, और आगे बढ़कर आक्रमण करनेवाला यदि हार भी जाय, तो अपनी ज़मीन तो नहीं गँवाता। रक्षापरक वीरता केवल भौतिक वीरता है, मानसिक वीरता नहीं। उसमें वह प्रक्रम, वह हिम्मत, वह ऊँची कल्पना, वह विशाल दृष्टि नहीं रहती, जो मनुष्य को नए देश खोजने, जीतने और नई ज़िम्मेदारियाँ उठाने को प्रेरित करती है। इसीलिये महमूद, शहाबुद्दीन, अलाउद्दीन और बाबर की वीरता तथा पृथ्वीराज और सांगा की वीरता में बड़ा अंतर है। राणा सांगा-जैसे व्यक्ति को भी स्वयं पंजाब तक जीत लेने में झिझक होती है। वह दिल्ली-साम्राज्य का केवल अंतर्वेद का हिस्सा लेना चाहता है, और पंजाब लेने के लिये बाबर को बुलाता है। केवल भौतिक वीरतावाले आसानी से दूसरे का हथियार बन जाते हैं। राजस्थान, बुंदेलखंड और पहाड़ के राजपूत मुग़ल-युग में गौहाटी से कंदहार तक और बीजापुर से बलख और बदख़शाँ तक बहादुरी से लड़ते हैं; लेकिन क्या स्वयं अपनी प्रेरणा से ? नहीं; अकबर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब के संचालन में। स्वयं उनके निद्रालु मस्तिष्कों को क्या कभी यह सूझा कि ये सब देश उनके लिये सुजेय हैं ?

तुर्कों का भारतीय बनना, हिंदू-पुनर्जीवन तथा योरपियनों का आना

तुर्क शीघ्र भारतीय बन जाते हैं। भारतवर्ष से

उन्हें कैसी ममता हो जाती है, इसके कई मनोरंजक उदाहरण हैं। दारा शिकोह की साध्वी स्त्री नादिरा अपने पति के साथ, अनेक कष्ट झेलने और मारी-मारी फिरने के बाद, जब सीमांत में मरने लगती है, तब उसकी अंतिम अभिलाषा यह होती है कि मेरी लाश हिंदोस्तान ले जाकर दफ़नाना! ख़ुसरो, जायसी, रहीम आदि की कविताएँ क्या किसी विदेशी क़लम से निकल सकती थीं? इधर इस्लाम के संपर्क से हिंदुओं में भी धार्मिक संशोधन और पुनर्जीवन होता है, और शिवाजी के समय से हम हिंदुओं की मनोवृत्ति भी बदली हुई पाते हैं। अब से वे रक्षापरक नहीं रहते, आक्रांता हो जाते हैं। यहाँ तक कि अठारहवीं सदी में पासा बिलकुल पलट जाता है। तब भारतवर्ष का मुख्य भाग हिंदू-शासन में चला जाता है, और इस्लाम एक बुझा कारतूस जान पड़ता है। जो मुस्लिम सल्तनतें तब भारत में बनी रहती हैं, वे भी कुछ दिनों की मेहमान दिखाई देने लगती हैं।

पंद्रहवीं सदी ई० के अंत से योरपियनों का भारत से संपर्क नए रूप में आरंभ होता है, और अंत में योरपियनों के मुक़ाबले में हम सब पछाड़ खाते हैं। अपने इतिहास के इस पहलू पर अब हमें विचार करना है।

हमारे समुद्र पर योरपियनों का अधिकार होना तथा समर-कला में हमारा पिछड़ना

प्राचीन भारतवासी सामुद्रिक जीवन में दुनिया के दूसरे देशों से पीछे नहीं, आगे ही थे। १०० ई० पू० के क़रीब एक भारतीय जहाज़ भटककर जर्मनी जा पहुँचा था। सातवीं सदी ई० तक सामुद्रिक व्यापार में भारतवासी दूसरे राष्ट्रों के अगुआ थे। लेकिन जब पुर्तगाली भारतीय समुद्र में आते हैं, तब यहाँ का सामुद्रिक व्यापार सब मूरों के हाथ में था। मूरों में केवल अरब नहीं, दूसरे मुसलमान भी शामिल रहे होंगे। ऐसा जान पड़ता है कि मध्य काल में कुलीन हिंदुओं की धार्मिक नफ़ासतों, आडंबरों और संकीर्णता के कारण समाज के निचले दर्जों के अन्य लोगों की तरह हमारे नाविक भी सब मुसलमान हो गए, और उन्हें भी योरपियन मूर कहने लगे।

ख़ैर, जब पुर्तगालियों ने भारत आने का नया रास्ता निकाला, तब मूरों का पुराना व्यापार विच्छिन्न होने लगा। गुजराती सुलतान महमूद बेगड़ा ने तब मिस्र के सुलतान की मदद से पुर्तगालियों को भारतीय समुद्र से निकालना चाहा। पहली लड़ाई में पुर्तगाली बेड़ा हार गया, लेकिन सन् १५०६ की दूसरी लड़ाई में, दीव-बंदर के सामने, मिस्री और गुजराती बेड़े को पुर्तगालियों ने जला डाला। उसके बाद उन्होंने ढूँढ़-ढूँढ़कर मूर (मुस्लिम) जहाज़ डुबा डाले, और तब से भारतीय समुद्र पर पुर्तगालियों का अधिकार रहा। उनसे वह एकाधिकार ओलंदेज़ों (डचों) और अँगरेज़ों ने छीन लिया, लेकिन हम लोगों ने तब से कभी अपने समुद्र की सुध न ली। समुद्र से योरपियनों ने हमारी नदियों में भी प्रवेश किया। औरंगज़ेब के समय से ही अँगरेज़ हुगली में भाड़े की नावें चलाने लग गए। विदेशी जंगी जहाज़ों का हमारी गंगा और हमारे सागर की छाती को रौंदना हमें कभी नहीं अखरा।

दूसरे, सोलहवीं सदी के शुरू से ही फ़िरंगी तोपों और तोपचियों की माँग भारतीय राज्यों में बराबर रहने लगी। इसी सिलसिले में उन भाड़े के सेनापतियों ने हमारी सेनाओं की कमज़ोरी पहचान ली। बंदूक़ का प्रयोग बढ़ने पर योरप में नए ढंग की, केंद्रित आदेशवाली सभी पदाति सेनाएँ बनने लगीं। एक आदेश पर एक साथ चलने और मार करनेवाली बंदूक़ची पाँतों के मुक़ाबले में लस्टम-पस्टम रिसाले खड़े न रह सकते थे। इन नई पदाति सेनाओं में व्यक्तिशः सैनिकों का विशेष महत्त्व न रहा, उनके संगठन

और केंद्रीय संचालन में ही उनका बल था। और, इन केंद्रित आदेशवाली पदाति पाँतों तथा तोपची दलों द्वारा योरपियन राजों ने अपने उच्छृंखल सरदारों के कोटले ढहाकर राज्य की शक्ति को भी अपने हाथों में केंद्रित कर लिया। सेना के केंद्राकर्षण से योरपियन राज्यों की शक्ति भी केंद्रबद्ध और दृढ़ हो गई। भारतवर्ष में यह कुछ न हुआ। इस नई समर-कला की ओर हमने ध्यान न दिया, और उच्छृंखल सरदारों की समस्या को अंतिम समय तक भारतीय राज्य न सुलझा सके। इस दशा में द्यूमा ने 'भारतीय सिपाही का आविष्कार' किया।

हमारे कर्तृत्व और जिज्ञासा का लोप

द्यूमा ने यह पहचाना कि भारतवासी को अच्छे सैनिक के रूप में साधा जा सकता है, पर उसमें वह कर्तृत्व नहीं कि .खुद अपने को साध ले। यह ध्यान देने की बात है कि हमारे जीवन के हर पहलू में यही बात थी। हममें कारीगरी थी, सीखने की योग्यता थी, पर कला और कर्तृत्व न थे। सूरत के बंदरगाह पर उन्नीसवीं सदी के शुरू तक जो जहाज़ बनते थे, वे योरपियन जहाज़ों से ज़्यादा मज़बूत होते थे। योरपवाले उन जहाज़ों को ख़रीद ले जाते थे। लेकिन उन जहाज़ों से दुनिया के समुद्रों के रास्ते नापना और उन पर अधिकार करना योरपियनों को ही सूझता था, हमें नहीं। उधुआ नाला की लड़ाई में मीर क़ासिम की सेना ने जो बंदूक़ें बरती थीं, वे ईस्ट इंडिया कंपनी की बंदूक़ों से कहीं अच्छी पाई गई थीं। फेरू शहर की लड़ाई के बाद जो सिक्ख-तोपें अँगरेज़ों के हाथ आईं, उनकी मार और मुँह का घेरा अँगरेज़ी तोपों से ज़्यादा था, पछाड़ कम। जो जाति आरंभिक सभ्यता की दशा में हो, उसमें परिपक्व कारीगरी और साधे जाने की योग्यता नहीं होती। कारीगरी का रहना और कला-कर्तृत्व का न होना यह सूचित करता है कि हम एक परिपक्व, किंतु जीर्ण सभ्यता के वारिस हैं, जो अब बेदम हो चुकी है। इसी से हम ख़ुद कोई बड़ा काम नहीं कर पाते, दूसरों के हथियार बन सकते हैं।

मराठों और सिक्खों के अंतिम पतन के इतिहास से दो बातें स्पष्ट हैं—हम लोग समर-कला में योरपियनों से पिछड़े हुए थे, और हमारा राजनीतिक संगठन सर्वथा बोदा था। शायद हम यह सोचें कि हम उन्नति की दौड़ में केवल कुछ समय के लिये पिछड़ गए थे, और हमारे लिये केवल उस मंज़िल को पूरा कर लेने का काम है। प्रोफ़ेसर विनय सरकार का यही अभिप्राय जान पड़ता है। लेकिन, जैसा मैंने अभी कहा, यों तो हम कारीगरी में अठारहवीं सदी तक अनेक अंशों में पिछड़े न थे, पर हमारी मनोवृत्ति भिन्न थी, हममें आगे बढ़ने की प्रवृत्ति न थी, कर्तृत्व न था, ऊँची आकांक्षाएँ न थीं। अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी में योरप और भारत की भिन्नता दो जीवित सत्ताओं के जीवन की भीतरी भिन्नता है, केवल आगे-पीछे रह जाना नहीं। हम कह सकते हैं, तेरहवीं-चौदहवीं सदी के तुर्क और हिंदू में जैसे मुख्य भेद मनोवृत्ति का था, वैसे ही आधुनिक योरपियन और भारतीय का मुख्य भेद मनोवृत्ति का है।

हमारा अपनी कमी को न पहचानना

यदि हम केवल दौड़ में कुछ पिछड़ गए होते, तो अपना पिछड़ना पहचानकर हमने उस कमी को पूरा न कर लिया होता! महमूद बेगड़ा से नाना फड़नीस के समय तक हमें बराबर ऐसी ठोकरें लगती रहीं, जिनसे हम अपनी कमी पहचान सकते थे।

दीव-युद्ध की बात कह चुका हूँ। महमूद बेगड़ा के पोते बहादुरशाह गुजराती ने हुमायूँ से युद्ध होने पर पुर्तगालियों से मदद ली, और बदले में

उन्हें उत्तरी कोंकण के तट का हाशिया दे दिया। बाद में उसने उन्हें निकालना चाहा, पर विफल। अकबर ने गुजरात जीता, तब उसने भी उन्हें निकालना चाहा। अकबर अपने समय के संसार में सबसे बड़ा सम्राट् था, लेकिन समुद्र में वह इतना निःशक्त था कि पुर्तगालियों के परवाने के बिना उसके जहाज़ मक्का तक न जा सकते थे! इस सामुद्रिक कमज़ोरी के कारण ही वह उन्हें तट से न उठा सका।

जहाँगीर और शाहजहाँ के वक़्त में पुर्तगाली और मग डाकू चटगाँव के अड्डे से बंगाल की नदियों के रास्ते साल-ब-साल चढ़ाई करते, गाँवों को जलाते-उजाड़ते और प्रजा को लूटते तथा पकड़ ले जाते थे। असहाय लोगों को पकड़कर, उनके एक-एक हाथ में छेद कर और उन छेदों में एक लंबी रस्सी पिरोकर वे जानवरों की तरह उन्हें अपनी नावों में भर ले जाते और फिर ग़ुलामों की तरह काम कराते या बेच देते थे। मुग़ल नव्वारा उनके बेड़े को आता देख भाग जाता और उन्हें रोक न पाता था। इसी वक़्त भारतीय समुद्र में अँगरेज़ों और ओलंदेज़ों (डचों) ने भी डकैती शुरू की।

औरंगज़ेब के समय चटगाँव तो जीता गया, पर अँगरेज़ों और ओलंदेज़ों की डकैतियाँ बढ़ती ही गईं। यहाँ तक कि एक बार ब्रिगमैन उर्फ़ एवोरी-नामक अँगरेज़ बदमाश ने ख़ुद बादशाह के जंगी जहाज़ गंज-ए-सवाई का, जो मक्का से कई हाजी जहाज़ों को लिवाए ला रहा था, बंबई और सूरत के बीच रास्ता छेंका, और उसकी तोपों को बेकाम कर तीन दिन तक जी खोल उन जहाज़ों को लूटा, और मक्का से लौटती कुलीन सैयद स्त्रियों पर मनमाना बलात्कार किया। औरंगज़ेब के समय बराबर ऐसी घटनाएँ होती रहीं। भारतीय समुद्र के तमाम नाकों को ये डाकू छेंके रहते थे। बादशाह से जब कुछ न बनता, तो वह योरपियन व्यापारी कंपनियों पर दबाव डालता कि इन डाकुओं की रोक-थाम करें। इस प्रकार उसने उन व्यापारी कंपनियों को जंगी बेड़े रखने के लिये उत्साहित किया, और उन बेड़ों का ख़र्चा दिया। उन व्यापारियों के वंशजों ने औरंगज़ेब के वंशजों को न केवल जल, प्रत्युत स्थल की रक्षा की चिंता से भी मुक्त कर दिया!

इतनी लांछनाओं के होते भी अकबर से औरंगज़ेब तक किसी बादशाह को यह न सूझा कि स्वयं अपनी प्रजा को जल-युद्ध-कला में निष्णात कर अपना जंगी बेड़ा तैयार करे, और अपने समुद्र पर अधिकार कर ले। यदि सूझ जाता, तो औरंगज़ेब के समान दृढ़व्रती, चरित्रवान् और कर्तव्यनिष्ठ बादशाह के लंबे शासन में ही भारतवासियों की यह कमज़ोरी सदा के लिये दूर हो गई होती।

शिवाजी ने जब तामिल-तट जीता, तब उसने देखा, क़िलों को ढाने के लिये फ़िरंगी तोपें और तोपची बड़े उपयोगी हैं। उसने उन्हें अपनी सेवा में लेना चाहा, पर यह कभी न सोचा कि अपनी प्रजा को उस कला में सधा लें। बाजीराव ने जब उत्तरी कोंकण और बसई से पुर्तगीज़ों को निकाल दिया, तब बसई के डौकयार्ड सब मराठों के हाथ आए; लेकिन वे यों ही उजड़ने दिए गए। मराठों के ख़याल में यह कभी न आया कि उनमें अपने जहाज़ बनवाना शुरू करें। मराठों की आँखों के सामने गोवा में पुर्तगीज़ अपनी किताबें छापते थे, पर मराठों का ध्यान इस तरफ़ कभी न गया कि वे भी मराठी-किताबें छाप सकते हैं। महाराष्ट में भारत के दूसरे प्रांतों की तरह राष्ट्रीयता की भावना का अभाव न था। यदि उस समय महाराष्ट्र में अख़बार निकलने लगता, तो योरपियन राष्ट्रों की तरह मराठों की राष्ट्रीयता भी चमक उठती।

बालाजीराव पेशवा के समय जब डूमा, डुप्ले और दि-बुसी से मराठों ने पछाड़ खाई, तब इ

पिता का गौरव स्वस्थ परिवार

क बड़े और स्वस्थ परिवार की इच्छा हरएक विचारशील पुरुष को होती ही है। इस उद्देश्य की पूर्ति में बोर्न-भिटा से बहुत सहायता मिलती है, क्योंकि बल और जीवन-शक्ति को बढ़ाने के लिये यह एक आश्चर्यजनक वस्तु है। बलवान और शक्तिशाली मनुष्य ही अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण कर सकता है।

र्न-भिटा केवल उच्च-कोटि की शुद्ध वस्तुओं से तैयार किया जाता है। यह एक आदर्श स्वास्थ्य-दायक पेय है। ठंढा पिया जाय या गर्म, बहुत स्वादिष्ट होता है। क्या बूढ़े क्या जवान सभी इसे पसंद करते हैं।

र्न-भिटा के कारण, बिना क्लांति या क्षीणता बोध किये हुए, मैंने बड़े-से-बड़े मैच में सफलता प्राप्त की है।

के० बोस
विख्यात क्रिकेट-खिलाड़ी

Cadbury's
BOURN-VITA
कैडबरीज बोर्न-भिटा
सबके लिये उपयोगी खाद्य तथा पानीय

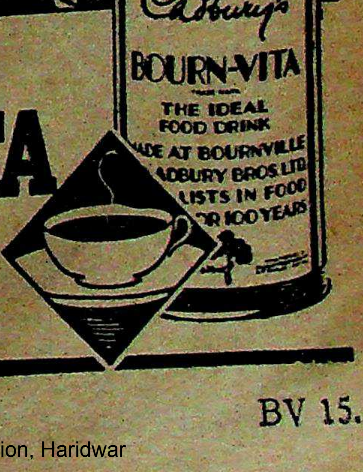
Cadbury's
BOURN-VITA
TRADE MARK
THE IDEAL FOOD DRINK
MADE AT BOURNVILLE
CADBURY BROS LTD
LISTS IN FOOD
FOR 100 YEARS

BV 15.

स्वर्गीय श्रीस्वामी कृष्णानंदजी सरस्वती का बहुमूल्य संदेश

दुःखी आत्माएँ ध्यान से पढ़ें !

समाचार-पत्रों में दवाइयों के झूठे विज्ञापन देखकर स्वर्गीय स्वामीजी को दुःख होता था, लेकिन वृद्ध-अवस्था और देखने की शक्ति कम होने के कारण स्वयं कुछ करने में असमर्थ थे, इसलिये उन्होंने दुःखी जनता के हितार्थ हमें एक अद्भुत प्राचीन संन्यासी-प्रयोग देकर आज्ञा दी थी कि इसका समाचार-पत्रों द्वारा देश में प्रचार किया जावे, ताकि जनता स्वयं इस अद्भुत प्रयोग को बनाकर लाभ उठाए, और इस तरह से झूठे विज्ञापनदाताओं की लूट से जनता को बचाया जाय। इसलिये हम इस अद्भुत प्रयोग को समाचार-पत्रों द्वारा प्रकाशित कर रहे हैं। पाठकों से सविनय निवेदन है कि वे इस शुभ कार्य में हमारा हाथ बँटाएँ।

श्रीपंडित मेघराजजी रसायन-शास्त्री इस प्रयोग का सहस्र रोगियों को सेवन करा चुके हैं, और उन्होंने सदैव लाभदायक पाया।

लाला रामचंद्रजी सारी आयु पुत्र के लिये तरसते रहे, परंतु मित्रों के आग्रह पर ओषधि को सेवन किया, जिसके बाद साठ साल की उम्र में एक लड़का उत्पन्न हुआ, और पश्चात् दूसरा पुत्र उत्पन्न हुआ।

डा० चटर्जी मिंटु फार्मेसी बर्मा से लिखते हैं कि इस ओषधि से मुझे बहुत लाभ हो रहा है, और अपूर्व बल आ रहा है।

बा० लालजीसिंह इलाहाबाद से लिखते हैं कि यह ओषधि नहीं, अमृत है।

बा० बिशनस्वरूपजी मुख़्तार हाथरस से लिखते हैं कि स्वामीजी की ओषधि से मुझे बहुत लाभ हुआ। सारी निर्बलता दूर हो गई है।

श्रीयुत पं० महादेवजी मालवीय इलाहाबाद से लिखते हैं कि स्वामीजी की ओषधि से शिथिलता और मलीनता जाती रही है, अपूर्व बल आ गया है। मेरी आयु ६८ वर्ष की है।

यह ओषधि नहीं, वरन् अमृत है, जिसके सेवन से बीसियों प्रकार के प्रमेह, दिल, दिमाग़, जिगर, हृदय और सब तरह की निर्बलता तथा वीर्य की कमी दूर होकर अपूर्व शक्ति आ जाती है। नपुंसकता के लिये अति उत्तम है। बहुमूत्र के लिये रामबाण ओषधि है। इससे स्मरण तथा पाचन-शक्ति बढ़ जाती है, नस तथा नाड़ियों में नया जीवन संचार होता है, स्त्रियों के प्रदर-रोग दूर हो जाते हैं। इसलिये हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि आप अगर किसी तरह की निर्बलता अनुभव करते हैं, तो इस प्रयोग को बनाकर ४० दिन जरूर सेवन करें, फिर आप देखेंगे कि इस ओषधि ने किस तरह आपकी काया पलट दी है। यह स्त्री तथा पुरुष, वृद्ध तथा युवक प्रत्येक के लिये लाभदायक है, और हर ऋतु में सेवन हो सकती है।

नुसखा यह है—ब्राह्मीबूटी, सतगिलोय, संखपुष्पी, बहुफला, गोंद कतीरा, फूल, मखाने की ठुडी, कमरकस, मूसली सफ़ेद, शतावर, बीजबंद, बीज उटंगन, बीज कौंच, बीज बिधारा, बीज तालमखाना, गोखरू सफेद, बीज लाजवंती, साठी, असगंध, नागोरी, इन सबको पृथक्-पृथक् कूट-छान कर एक-एक तोला लें, और इनमें स्वर्णबंग तीन माशा, लोह-भस्म (त्रिफला में बनी हुई) ३ माशे, मूँगा-भस्म तीन माशे मिला लें। इन सबको सात दिन तक आमले के रस में, तीन दिन तक सेंबल की मूसली के रस में, और तीन दिन तक बिदारीकंद के काढ़े में भावनाएँ दें। सूखने पर एक माशा चंदन का तेल मिलाकर तीन-तीन माशे की पुड़िया बना लें। एक पुड़िया प्रातः और १ सायंकाल ताजे दूध या पानी से सेवन करें। ४० दिन प्रयोग करने के बाद आप देखेंगे कि इस ओषधि ने किस तरह आपकी काया पलट दी है।

यदि समय के न मिलने या ताजी स्वच्छ ओषधियों के न मिलने से स्वयं बनाने में असमर्थ हैं, तो हमसे बनी हुई असली लागत पर मँगा लें, जो कि एक तजुर्बेकार माननीय वैद्य के सामने तैयार की जाती है, जिसकी कीमत २० दिन के लिये २॥) और ४० दिन के लिये ५) है। डाक-व्यय-सहित।

शुभचिंतक

मैनेजर, दी कृष्णानंद-सेवा-सदन, नं० २५, नया मुहल्ला, रावलपिंडी शहर

करिलक्स

(फ़्रांस में ईजाद)

धातुक्षीणता, नपुंसकता व निर्बलता को दूर करने की पेटेंट अनुपम औषधि। १५ सेकेंड ही में अपना असर दिखलाती है।

मूल्य दस रुपए, डाक-व्यय माफ़

सेवन-विधि दवा के साथ। दवा मँगाते समय कृपया अपनी उम्र अवश्य लिखिए। व्यर्थ की नक़ली दवाओं से सावधान रहें।

दी पंजाब यूनीवर्सल कंपनी (एन), लोहारी फाटक के अंदर, लाहौर

आधुनिक हिंदी-कविता की एक अपूर्व पुस्तक

मंदार

लेखक, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

गिरीशजी अपनी उत्प्रेक्षाओं के लिये काफ़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भाव मौलिक, उपमाएँ सुंदर, प्रकृति-चित्रण सजीव और सौंदर्य-वर्णन मनोहारी होता है। उनकी कविताएँ पढ़कर आप आश्चर्य-मुग्ध रह जायँगे।

प्रस्तुत संग्रह में उनकी......इंद्र-धनुष, बिंदिया, वन-बाला, तारिका, अश्रु-छवि, जल-विहार, वर्षा-विहार, स्वर-लहरी, कवि की तरंग, स्वर्ग और संसार, अनुभूति और कल्पना आदि अनेक ललित एवं भाव-पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

शीघ्र मँगाइए। मूल्य ।।) मात्र।

प्रकाशक—
गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम व पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १।) में। डाक-व्यय पृथक्

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट बॉक्स १६५, लाहौर

ख़िज़ाब छोड़ो

इस तेल से पका बाल जड़ से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। इसकी सफलता सैकड़ों प्रशंसा-पत्रों से प्रमाणित हो चुकी है। बाल कम पका है, तो ५) ; चौथाई से अधिक पका है, तो ७) रु० का तेल मँगा लें।

पता—हजरा ऐंड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

कामदेव वटी

इससे हर तरह की कमज़ोरी, सुस्ती, नामर्दी, समस्त धातु-विकार दूर होकर अटूट बल तथा स्तंभन होता है; और हस्तमैथुन आदि से हुई शिकायतें शर्तिया दूर होती हैं। मू० १)

स्पेशल तिला—हस्तमैथुन आदि से पैदा हुई नसों की कमज़ोरी की रामबाण दवा, मूल्य २), डाक ख़र्च जुदा, विवरण मुफ़्त। चमत्कार-पुस्तक मुफ़्त मँगाइए।

निश्चय पुत्र ही होगा

शंकर-स्टैमबाड पिल—यह गर्भाधान में दी जाती है। सौ फ़ीसदी लड़का ही होता है, बशर्ते कि गर्भ दो मास से ज़्यादा न हो। मूल्य ५), डाक-ख़र्च जुदा।

शंकर-रिसर्च (बर्थ-कंट्रोल)

इसके केवल एक ही दफ़ा खाने से सदा को या इच्छित समय तक गर्भ नहीं रहेगा। मासिक बदस्तूर चालू रहेगा। मूल्य २), डाक-ख़र्च जुदा।

पता—डॉक्टर हरिशंकर शर्मा एम्० बी० एच्० (S) चंदौसी, यू० पी०

उनका ध्यान योरपियन क़वायद की तरफ़ गया। अब भी उन्होंने उस कला के सिद्धांतों की तरफ़ ध्यान देने के बजाय दि-बुसी के सिखाए हुए कुछ गार्दियों को अपनी सेवा में रखकर अपने को कृतकृत्य मान लिया। पानीपत में उनकी हार का मुख्य कारण यही हुआ कि योरपियन समर-कला को अधूरा समझकर उन्होंने उसका अधकचरा प्रयोग किया।

फ़्रांसीसी दबाव हट जाने पर उन्हें अपनी सेना का संघटन बदलने की बात भी भूल गई। बीस बरस बाद फिर अँगरेज़ों का दबाव पड़ने पर उनकी पीनक टूटी, और अब महादजी शिंदे ने अनुभव किया कि उन्हें योरपियन क़वायदवाली सेना की ज़रूरत है। ज़रूरत सिर पर आ पड़ी थी, इसलिये यह सोचने की फ़ुरसत कहाँ थी कि मराठे .खुद उस कला को सीखें ; और सीखें, तो कैसे सीखें ! बस, कुछ फ़्रांसीसी अफ़सर रखकर जल्दी-जल्दी पैदल सेनाएँ तैयार कर ली गईं। सेना-संघटन के इस परिवर्तन के अनुसार शासन के संघटन में भी परिवर्तन की ज़रूरत है, सो किसी ने न सोचा-समझा। वक्त आने पर उन फ़्रांसीसी अफ़सरों ने धोखा दिया।

अँगरेज़ों के उत्कर्ष का दूसरा कारण उनका राजनीतिक संघटन था। उनकी कौंसिलों की कार्य-प्रणाली नाना फड़नीस के सामने थी, क्योंकि कलकत्ता और बंबई की कौंसिलों की गुप्ततम कार्रवाइयों की भी पूरी सूचना उसके पास फ़ौरन् आ जाती थी। पेशवा नारायणराव की हत्या के बाद महाराष्ट्र में भी एक समिति शासन करने लगी थी। लेकिन नाना फड़नीस के ध्यान में यह बात कभी न आई कि महाराष्ट्र में एक वंश का शासन हटाकर अँगरेज़ों की-सी सुव्यवस्थित शासन-पद्धति अपनाई जा सकती है।

हमारी मोह-निद्रा

हम योरपियनों की समर-कला और शासन-पद्धति को क्या समझते, हमें तो अपने देश का भी उतना पता न था, जितना अँगरेज़ों ने पा लिया था! पंजाब के सिक्खों की जागृति से यदि मराठों ने संपर्क रक्खा होता, तो पानीपत में उनकी हार न होती। दूसरे मराठा-युद्ध से पहले वेल्ज़ली ने तो सिक्खों का महत्त्व पहचान लिया, पर मराठों को पंजाब की सुध तब आई, जब जसवंतराव होल्कर को और कहीं पैर टिकाने की जगह न रही! अठारहवीं सदी का दक्खिन-भारत का मराठा-नक़्शा मौजूद है। उसी सदी के रेनल के भारत के नक़्शे से उसकी तुलना कीजिए, तो आप देख लेंगे कि हमारे देश की शकल-सूरत को भी अँगरेज़ हमसे अच्छा जान गए थे।

इन सब बातों से क्या सिद्ध होता है ! हमारे राष्ट्र के नेता मानो देखते हुए भी न देखते थे ! उनकी आँखों में मानो .खुमारी छाई थी ! वे मानो मोह-निद्रा में थे।

हमें आश्चर्य होता है कि यह हालत क्यों और कैसे थी ! लेकिन क्या आज भी हमारी वही हालत नहीं ? आज अँगरेज़ों ने हमें अपना हथियार बनाने के लिये जो कुछ सिखा दिया है, वही हमने सीख लिया है, या अपनी परिस्थिति को .खुद अपनी दृष्टि से भी देखा-समझा है ? आज कोई मराठा पंजाब या अफ़ग़ानिस्तान के बारे में या कोई पंजाबी बंगाल के बारे में जो कुछ जानता है, सब अँगरेज़ों की सुनी-सुनाई ही जानता है, या कुछ अपनी आँखों से भी देखता है ? तिब्बत, बरमा, स्याम, ईरान हमारे पड़ोसी देश हैं। उनके विषय में हमें जो पता है, सो क्या हमारा अपना ज्ञान है, या अँगरेज़ों से तोते की तरह पढ़ी हुई बातें ? आज भी तो हमारी दृष्टि वैसी ही बंद है, और हम उसी तरह दूसरों के उपकरण-मात्र बने हुए हैं। लॉर्ड कर्ज़न ने अपने अँगरेज़ भाइयों से कहा था—

"It is with Indian coolie labour

that you exploit the plantations equally of Damerara and Natal; with Indian trained officers that you irrigate Egypt and dam the Nile; with Indian forest officers that you tap the resources of Central Africa and Siam; with Indian surveyors that you explore all the hidden places of the earth."

"आप दामरेरा और नेटाल के खेतों तथा बग़ीचों से फ़ायदा उठाते हैं, तो हिंदोस्तानी क़ुली-मज़दूरों की बदौलत, मिस्र को सींचते और नील-नदी को बाँधते हैं, तो सधे हुए हिंदोस्तानी अफ़सरों की बदौलत, मध्य आफ़्रिका और स्याम की साधन-सामग्री का उपयोग कर पाते हैं, तो हिंदोस्तानी जंगल-अफ़सरों की बदौलत, और दुनिया के सब गुप्त स्थानों की खोज करते हैं, तो हिंदोस्तानी पैमाइशकारों की बदौलत।"

यह हालत क्यों थी, और आज भी क्यों है ?

हिंदू-पुनर्जीवन में पुनर्जागरण का अभाव

हमने देखा कि तेरहवीं-चौदहवीं सदी के हिंदू और तुर्क में मुख्य भेद दृष्टि का ही था। उस युग के हिंदू स्मृतिकारों—हेमाद्रि, नीलकंठ, कमलाकर भट्ट आदि—के ग्रंथों को देखिए; नैष्ठिक हिंदू के लिये बरस-भर में करने को उन्होंने क़रीब दो हज़ार व्रतों, पूजाओं और अनुष्ठानों का विधान किया है ! वैसी मनोवृत्ति के लोग एक जीवित उमंगोंवाली, तरुण जाति का मुक़ाबला कैसे कर सकते थे ? बेशक, पंद्रहवीं-सोलहवीं सदी के संशोधन और पुनर्जीवन ने इस आडंबर और ढोंग को बहुत कुछ तोड़ दिया। लेकिन वह संशोधन और पुनर्जीवन गहरा न था, और उसके साथ पुनर्जागरण तो था ही नहीं। अत्याचारी शासन से मुक्त होने की उमंग ज़रूर थी, पर मुक्त होने के बाद अपने समाज की कैसी सृष्टि करना या अपनी शक्तियों को किधर लगाना, उसके संबंध में कोई रचनात्मक आदर्श नहीं जगे थे। जागरूकता, आत्मपरीक्षण और परिस्थिति-निरीक्षण की प्रवृत्ति, सचाई की आतुर खोज, सो कुछ भी न था। ये परिणाम हैं, जिन पर मराठा विद्वान् अपने इतिहास के गहरे अध्ययन के बाद पहुँचे हैं।

पिछले पचीस-तीस बरसों के भीतर भारतीय इतिहास के क्षेत्र में जो सबसे महत्त्व-पूर्ण खोजें हुई हैं, उनमें से यह एक है। मेरे विचार में इस अरसे में तीन दिशाओं में हमारी ऐतिहासिक खोज को ऐसे परिणाम प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने हमारी दृष्टि को आमूल बदल दिया है। एक तो प्राचीन भारतीय राज्य-संस्था के विषय में शाम शास्त्री, जायसवाल आदि विद्वानों की खोज; दूसरे, बृहत्तर भारत और उपरले हिंद (Serindia) के विषय में फ़्रांसीसी, ओलंदेज़ और जर्मन विद्वानों की खोज; तीसरे, मराठा-इतिहास के विषय में राजवाड़े और सर देसाई की उक्त खोज। यह तीसरी खोज महाराष्ट्र में सुपरिचित हो चुकी है, पर दूसरे प्रांतवालों का ध्यान अभी तक इस ओर नहीं गया।

मोह-निद्रा का आरंभ कब, कैसे और क्यों ?

यह प्रश्न फिर भी बाक़ी है कि कब, कैसे और क्यों हम इस मोह-निद्रा में पड़ गए, और हमारी दृष्टि इस प्रकार शून्य हो गई ? सर देसाईजी का कहना है कि तेरहवीं सदी—हेमाद्रि के समय—के क़रीब हमारा सारा ध्यान धार्मिक और पारलौकिक बातों में उलझ गया, और तब से यह अवस्था उत्पन्न हो गई। आधुनिक इतिहास की सीमा में खड़े रहकर प्राचीन इतिहास के विषय में उनका यह निरा अंदाज़ है। प्राचीन इतिहास का जिन्होंने परिशीलन किया है, वे इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि गुप्त युग के अंत पर पहुँचकर भारतीय

इतिहास में प्रगति और प्रवाह बंद हो जाते हैं; और धारा का रुकना ही सड़ाँद का पैदा होना है; वही विचार-हीनता, कर्तृत्व-हीनता का दूसरा नाम है ।

क्यों प्रगति बंद हो गई ? इसका उत्तर यही है कि प्राकृतिक नियम के अनुसार हमारे राष्ट्र के थकान अनुभव करने से पंद्रहवीं-सोलहवीं सदी के स्पेन-पुर्तगाल में जो जीवन की आग थी, आज क्या वह बुझी राख बनने के क़रीब नहीं ? जिन्होंने कभी विश्व की परिक्रमा कर विशाल साम्राज्य खड़े किए थे, आज से दो बरस पहले तक वे बैलों की लड़ाई देखकर ही तृप्ति क्यों मानने लगे थे ? आज त्यूतनी जातियाँ दुनिया की अगुआ हैं, वे बराबर आगे बढ़ती जान पड़ती हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी प्रगति कभी रुकेगी ही नहीं । लेकिन थकान और तृप्ति के चिह्न आज उनमें भी प्रकट हो रहे हैं, और ४-५ शताब्दी तक वे भी हार मानकर खड़ी हो जायँगी, सो निश्चित ही मानना चाहिए । दुनिया बराबर आगे बढ़ रही है । पर एक जाति जहाँ थककर प्रगति की मशाल छोड़ देती है, वहाँ दूसरी उसे उठा लेती है, और यों जातियों का गिरना-उठना चलता ही रहता है ।

भविष्य का मार्ग—शिक्षा का विचार-पूर्वक संघटन

यह तो हुई पिछले इतिहास की व्याख्या । दूसरा प्रश्न यह होता है कि भविष्य में क्या होगा ? कब तक हमारी यह हालत रहेगी, और कैसे दूर होगी ? यह हमारे जीवन-मरण का एकमात्र प्रश्न है ।

आज अँगरेज़ों की ठोकरें खाकर हमारी मोह-निद्रा कुछ टूटने लगी है । क्या वह पूरी तरह टूट जायगी ? और टूटेगी, तो कैसे ?

अपने इतिहास की जो बातें अभी आपके सामने मैंने रक्खी हैं, उनका यदि हम मनन करें, तो अवश्य इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि अपने राष्ट्र के पुनर्जीवन के लिये सबसे बड़ी आवश्यकता है उसे जागरूक बनाने की, उसमें ज्ञान-पिपासा जगाने की ; और यह कार्य होगा उसकी शिक्षा को विचार-पूर्वक संघटित करने से । आश्चर्य यह है कि इसी काम की तरफ़ हमारे राष्ट्र-नेताओं की सबसे अधिक उपेक्षा दिखाई देती है । इसी से भविष्य के विषय में कभी-कभी चिंता होती है । ज़रूरत है इस बात की कि हम अपनी आँखें खोलकर अपनी परिस्थिति देखें और समझें कि फिर से सुशक्त बनने के लिये हमें किस ज्ञान की ज़रूरत है, और उस ज्ञान को हम वस्तुतः अपना लें । जापानियों ने यह मार्ग पकड़ा, और आधी शताब्दी के भीतर वे एक शक्तिशाली राष्ट्र बन गए । हम सवा चार सौ बरस से ठोकरें खा रहे हैं, पर आज भी उसी अधूरे, अधकचरे ढंग से दुनिया के नए ज्ञान के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं, जिस ढंग से बालाजी पेशवा या महादजी शिंदे के समय हमारे पुरखों ने की थी ।

हम शायद यह सोचते हैं कि आज तो देश में हज़ारों स्कूल-कॉलेज खुल रहे हैं, शिक्षा का बड़ा प्रचार हो रहा है, उससे ज्ञान की जागृति आप-से-आप हो जायगी । लेकिन कला के बिना जैसे कारीगरी हो सकती है, वैसे ही ज्ञान और बोध के बिना विद्या भी हो सकती है । और, हम ग़ुलाम मनोवृत्तिवाले लोगों का तो स्वभाव ही हो गया है निर्जीव विद्या का बोझ अपनी पीठ पर ढोने का । वह मनुष्य का ज्ञान नहीं, तोते की रट है, ग्रामोफ़ोन की चीख है । हमारे शिक्षण-यंत्र का संघटन जिन विदेशियों ने किया है, उनका लाभ इसी में है कि हम तोते बने रहें । यदि हम उन्हीं के शिक्षण-यंत्र से ज्ञान पाने की आशा में हैं, तो मृगमरीचिका के पीछे दौड़ रहे हैं ।

वास्तविक शिक्षा मातृभाषा में

पहली बात, जो हमें समझनी चाहिए, यह है

कि ज्ञान तब तक हमारा अपना नहीं बनता, जब तक हम उसे अपनी भाषा में व्यक्त नहीं कर सकते; ठीक वैसे ही, जैसे भोजन तब तक हमारे देह का अंग नहीं बनता, जब तक वह हमारे रक्त के रूप में परिवर्तित नहीं हो जाता। वास्तविक शिक्षा मातृभाषा में ही हो सकती है। लेकिन हम आज क्या कर रहे हैं? विद्यार्थी घर में हिंदी बोलता है, और अध्यापक भी घर में हिंदी बोलता है, लेकिन स्कूल की स्टेज पर जब वे आते हैं, तो मालिक की ज़बान बोलने का स्वाँग करने लगते हैं! यह शिक्षा है या नाटक? और, यह स्वाँग करने के लिये—यह फूहड़-दिमाग़ी नाच करने के लिये—आज हमने अध्यापक नाम के हज़ारों तोते पाल रक्खे हैं, जिन पर ग़रीब जनता के लाखों रुपए बहाए जा रहे हैं!

असल शिक्षा मातृभाषा में ही हो सकती है, यह सूरज की-सी स्पष्ट बात जब पहलेपहल कही गई, तब इसका काफ़ी मज़ाक़ किया जाता था। आज तो फ़ैशन बदल गया है। अब किसी की हिम्मत नहीं कि इसके ख़िलाफ़ कुछ कहे; तो भी पुराने तरीक़े पर पले हुए अधिकतर लोगों को सुविधा इसमें मालूम होती है कि मुँह से तो इसका समर्थन करते जाना, पर बर्ताव में, जहाँ तक हो सके, इसको टालते रहना। जब पहलेपहल स्वर्गीय महात्मा मुंशीरामजी ने कांगड़ी गुरुकुल में एक भारतीय भाषा में आधुनिक विज्ञान की शिक्षा दिलाना शुरू किया, तब लोग आश्चर्य करते थे कि यह कैसे होगा। सर आशुतोष मुखर्जी सर माइकेल सैडलर को यही दिखलाने के लिये गुरुकुल लाए थे, और लॉर्ड चेम्सफ़ोर्ड भी यही देखने के लिये गुरुकुल गए थे। सर आशुतोष के अभीष्ट को अनेक बरसों बाद आज उनके सुपुत्र कलकत्ता-युनिवर्सिटी में केवल मैट्रिकुलेशन दर्जे तक पूरा कर पाए हैं। जब हिंदू-युनिवर्सिटी की स्थापना हुई, तब जनता को बड़ी-बड़ी आशाएँ हुईं कि वहाँ शिक्षा का माध्यम हिंदी होगी। लेकिन १५ वर्ष बाद जाकर वहाँ केवल इंटर दर्जे तक हिंदी की पहुँच हो पाई है! यह टालमटोल का बढ़िया नमूना है।

मातृभाषा में उच्चतम शिक्षा तुरंत संभव और आवश्यक

टालमटोल करनेवालों का सबसे बड़ा बहाना यह है कि पाठ्य पुस्तकें जब तक भारतीय भाषाओं में नहीं हैं, तब तक हम उन भाषाओं में कैसे पढ़ावें। लेकिन युनिवर्सिटी के अध्यापकों का काम क्या विद्यार्थियों के सामने पाठ्य पुस्तकें बाँचकर उनके शब्दार्थ करना ही है? जब स्कूलों में भी शिक्षा का वाहन अँगरेज़ी थी, तब एक अरसे तक यही हुआ करता था। विज्ञान, इतिहास, भूअंकन, सभी विषयों का अध्यापन तब अँगरेज़ी-भाषा का अध्यापन बन जाता था। और तो और, भारतीय बच्चों को अँगरेज़ी द्वारा संस्कृत पढ़ाने का पागलपन भी होता रहा है, और ऊँचे दर्जों में आज तक होता है। धीरे-धीरे इस बात का बेहूदापन लोगों पर प्रकट होने लगा। तब से अध्यापक का काम यह समझा जाने लगा कि वह पाठ्य पुस्तकों के विस्तृत विषय का अध्ययन कर उसके संक्षिप्त 'नोट' विद्यार्थियों को दे दे। किंतु क्या अध्यापक निचोड़ निकालने की मशीन है? और उसका काम विद्यार्थी के सामने केवल पुस्तकों का निचोड़ पेश कर देना है? यदि विद्यार्थियों को मातृभाषा में पुस्तकें मिल सकें, तो यह काम तो बहुत कुछ विद्यार्थी ख़ुद ही करने लगेंगे। तब इन संक्षेपक यंत्रों की क्या ज़रूरत रह जायगी? और, आज भी उन लोगों को, जो केवल यही काम करते हैं, और राष्ट्र के ज्ञान में कोई वास्तविक वृद्धि नहीं करते, ग़रीब किसानों के ख़ून की कमाई का हज़ार-हज़ार रुपया मासिक देना दिन-दहाड़े लूट मचाना है।

विद्यापीठ के अध्यापकों का काम न तो पोथी बाँचना है, और न निचोड़ निकालना; उनका असल काम है विद्यार्थी को स्वतंत्र सोचने का अभ्यास कराना। बाक़ी सब काम तो पुस्तकें कर देती हैं। और, मातृभाषा में शिक्षा हुए विना यह आदत पड़ने की नहीं। भारतीय भाषाओं में पुस्तकें तैयार होने तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं। उलटे वैसी पुस्तकें तैयार होने के लिये यह ज़रूरी है कि आप आज ही ऊँची-से-ऊँची शिक्षा देशी भाषाओं में जारी कर दें। फ़िलहाल अँगरेज़ी को दूसरी भाषा के रूप में हमारे विद्यार्थी पढ़ते रहें, मैं तो कहता हूँ, वे फ़्रेंच, जर्मन और रूसी भाषाएँ भी पढ़ें। लेकिन उस पढ़ने का उद्देश्य यह होगा कि उन भाषाओं की पुस्तकें समझकर वे उनसे ज्ञान पा सकें; उन भाषाओं को लिखने-बोलने का अभ्यास करने की उन्हें कोई ज़रूरत नहीं। जैसा राष्ट्रीय विद्यापीठों में हो रहा है, अध्यापक और विद्यार्थी पुस्तकें भले ही योरपियन भाषाओं की पढ़ें, लेकिन कक्षाओं में वे अपनी भाषा बोलें; और परीक्षाओं में विद्यार्थी अपनी भाषा में लिखें, भले ही उस भाषा में योरपियन शब्द ५० फ़ीसदी तक भी मिले रहें।

यह सुधार तुरंत हो सकता है। और, मुझे तो अचरज होता है कि पाँच महीने के शासन में अब तक कांग्रेसी सरकारों ने इसे कर क्यों नहीं डाला। किसानों को राहत मिलने और राजनीतिक क़ैदियों के छोड़े जाने की तरह ही अपने बालकों और युवकों के दिमाग़ों को अँगरेज़ी के स्टीमरोलर के दबाव से उबारना भी तुरत ज़रूरी है।

उक्त सुधार का व्यावहारिक पहलू

ज़रा आपके ध्यान में यह लाना चाहता हूँ कि मातृभाषा को माध्यम बनाने की प्रक्रिया व्यवहार में किस प्रकार चलेगी। विद्यार्थी को वास्तविक ज्ञान पाने के लिये, विषय को ठीक-ठीक समझने के लिये, बराबर प्रश्नोत्तर और शंका-समाधान करने की ज़रूरत होती है। इसी से ख़ुद सोचने की आदत पड़ती है। पर आज आपके विद्यार्थी को अध्यापक से कुछ पूछना हो, तो वह अपने प्रश्न को अँगरेज़ी में सूचित करे। एक उत्तर से तृप्ति न हो, तो वह प्रश्न-पर-प्रश्न अँगरेज़ी में करता जा सके, तब तो अपनी शंका मिटा सके, नहीं तो चुप रहे। आपके कितने विद्यार्थी आज इस तरह खुलकर अँगरेज़ी में अपने विचार प्रकट कर सकते हैं? लेकिन ज्यों ही उन्हें अपनी भाषा में बोलने की छूट होगी, वे खुलकर पूछने लगेंगे। और, तब वे यह पाएँगे कि आज के लेक्चर या नोट तैयार करके लानेवाले अध्यापकों में से साठ-सत्तर फ़ीसदी ऐसे हैं, जो उन्हें संतुष्ट नहीं कर सकते, जिन्हें अपने विषय का ज्ञान नहीं, जो अब तक महज़ संक्षेपक यंत्र का काम करते रहे हैं। अनेक अध्यापकों को भी अँगरेज़ी का बोझ सिर से उतरने से राहत मालूम होगी, और खुलकर बोलने-सोचने का मौक़ा मिलने से उनका ज्ञान और विचार परिपक्व होने लगेगा। अल्ट्रा-वायोलेट—बिनफ़्शी से परली—किरणों के स्पर्श से जैसे सड़े-गले घाव का ख़ून साफ़ होने लगता है, वैसे ही आपका समूचा शिक्षण-संस्थान मातृभाषा की किरणें पड़ते ही सजीव हो उठेगा।

दूसरी बात, जब तक आपको अँगरेज़ी दूसरी भाषा के रूप में भी पढ़ाना है, तब तक अँगरेज़ी-अध्यापकों की भी ज़रूरत होगी, और यह काम वे ही लोग कर सकेंगे, जिन्होंने युनिवर्सिटियों या ट्रेनिंग कॉलेजों में दूसरों से कुछ विशेष अँगरेज़ी पढ़ी होगी। तो भी अँगरेज़ी-साहित्य का विशेष अध्ययन करने के लिये आज जो आपकी प्रत्येक युनिवर्सिटी में प्रबंध है, वह निरी दिमाग़ी ऐयाशी है, और उन ऐयाशी की

गद्दियों के लिये ग़रीब किसानों की कमाई में से हज़ार-हज़ार मासिक देना शर्मनाक लूट है। सुधार का पहला फावड़ा इन गद्दियों पर चलना चाहिए, और इनकी सफ़ाई से जो रुपया बचे, उसे प्राथमिक पाठशालाओं के अध्यापकों का वेतन बढ़ाने या उन शालाओं में विज्ञान-शिक्षा के उपकरण प्रस्तुत करने के लिये लगाना चाहिए।

भारतीय परिस्थिति का अध्ययन

जहाँ मैं यह कहता हूँ कि भारतीय भाषाएँ शिक्षा का माध्यम आज ही बनाई जा सकती हैं, वहाँ मैं यह भी आपके ध्यान में ले आऊँ कि उन भाषाओं में विज्ञान, इतिहास आदि की ऊँची पाठ्य पुस्तकें इतनी जल्दी तैयार नहीं हो सकतीं। जिन्होंने इस प्रश्न पर विचार नहीं किया, तजुरबा नहीं किया, वे कभी-कभी सोचते हैं कि योरपियन भाषाओं से अनुवाद कराके हम साल-छ महीने के भीतर सब पाठ्य ग्रंथ उपस्थित कर सकते हैं। लेकिन वैसा नहीं हो सकता। कारण, भारतीय परिस्थिति और भारतवर्ष का मानसिक विकास योरप से भिन्न है। सार्वभौम सत्य की भी व्याख्या आप करना चाहते हैं, तो अपनी परिस्थिति पर घटाकर ही कर सकते हैं। एक-दो नमूने लीजिए। अर्थशास्त्र में आप विचार करते हैं कि संपत्ति क्या चीज़ है, आर्थिक श्रम के रूप और प्रकार क्या-क्या हैं। आधुनिक विचार ऐतिहासिक पद्धति पर चलता है। संपत्ति क्या है, इसे समझने के लिये आप टटोलते हैं कि संपत्ति का विकास कैसे हुआ। लेकिन पाश्चात्य ग्रंथों में वह प्रक्रिया टटोली जाती है प्रधानतः योरप के इतिहास से। हिंदी, मराठी, बँगला की पाठ्य पुस्तकों में आपके लिये भारतीय परिस्थिति से उदाहरण लेना आवश्यक होगा।

शायद कोई यह कहे कि यह प्रश्न सामाजिक विज्ञान का ही है, भौतिक विज्ञान तो सार्वभौम है। लेकिन वनस्पतिशास्त्र, जंतुशास्त्र या भूगर्भशास्त्र की पुस्तक भी क्या अँगरेज़ी से यांत्रिक रूप से उलथा की जा सकती है ? अँगरेज़ी-पुस्तकों में जितने उदाहरण होंगे, उनमें से अधिकतर अँगरेज़ी या योरपियन वनस्पतियों, जंतुओं और चट्टानों आदि के होंगे। हिंदी में आप वही उदाहरण ज्यों-के-त्यों दें, और अपनी परिस्थिति की उपेक्षा करें, यह अस्वाभाविक और उपहासास्पद होगा। आज हालत यह है कि जहाँ एक तरफ़ हमारे देश में वनस्पतिशास्त्र के डॉक्टर बीरबल साहनी-जैसे आचार्य मौजूद हैं, वहाँ दूसरी तरफ़ कॉलेजों में पढ़ानेवाले अधिकतर अध्यापक ऐसे हैं, जिन्हें बरसों इस विषय को पढ़ने-पढ़ाने के बाद भी इतनी तमीज़ न होगी कि अपने अड़ोस-पड़ोस के पौधों पर उस ज्ञान को घटाकर बता सकें। इसी से कहना पड़ता है कि उन लोगों की विद्या तोतों की रट है। और, जो लोग ऐसे हैं भी कि अपनी आँखों से देख सकते और स्वयं विचार कर सकते हैं, उनमें से अधिकतर भारतीय उदाहरणों को इस कारण उपस्थित न कर सकेंगे कि उन्हें उन उदाहरणों के संग्रह का, भारतीय परिस्थिति के अध्ययन का, अवसर और सुविधाएँ नहीं मिलीं। यह काम एक संस्था द्वारा करने का है, अकेला व्यक्ति कुछ थोड़ा-सा ही कर सकता है।

एक राष्ट्रीय संस्था की आवश्यकता

फलतः यदि आप आज से दस-पंद्रह बरस बाद भी अपनी भाषाओं में वैज्ञानिक पुस्तकें देखना चाहते हैं, तो उसके लिये यह आवश्यक है कि आज ही एक ऐसी राष्ट्रीय संस्था स्थापित कर दें, जिसमें भारतीय विद्वान् और विद्यार्थी अपने देश की परिस्थिति का अध्ययन कर भारतीय भाषाओं में उसके विषय के तथ्यों का संग्रह, संकलन और समन्वय करने लगें। आपकी प्रत्येक युनिवर्सिटी ऐसी एक संस्था हो सकती थी; लेकिन

फ़िलहाल उन युनिवर्सिटियों का जैसा संघटन और जैसी प्रवृत्तियाँ हैं, उस दशा में उनसे इस काम की आशा करना वैसा ही होगा, जैसा कांग्रेसी मंत्रिमंडल स्थापित हो जाने पर पुलिस से हिंदोस्तानी सेवा-दल का काम लेने की आशा करना ! धीरे-धीरे वह भी हो सकेगा, लेकिन अभी तो एक स्वतंत्र राष्ट्रीय संस्था स्थापित करनी होगी। और, इस काम को हमें अपने राष्ट्र के पुनर्जीवित करने का पहला उपाय समझना चाहिए।

इस प्रकार की राष्ट्रीय संस्था की स्पष्ट कल्पना पहलेपहल स्वर्गीय मेजर बामनदास वसु ने की थी। मेरे मन में भी कुछ वैसा ही विचार पहले से था, जो सन् १९२७ में उनसे मिलने पर चमक उठा।

आज पौने दो बरस हुए, मैंने इस संस्था का प्रस्ताव देश के सामने रक्खा, और इसे 'भारतीय अध्ययन-मंदिर' नाम दिया था। आपके प्रांत के रत्न बाबू राजेंद्रप्रसाद ने, जो आधुनिक भारत की एक विभूति हैं, उस प्रस्ताव को सहारा दिया, और आज से एक सप्ताह के भीतर वह उस संस्था का सूत्रपात करने जा रहे हैं *। हमारे राष्ट्र ने आज पुनर्जीवित होने का दृढ़ संकल्प कर लिया है, इसीलिये मुझे विश्वास है कि समूचा राष्ट्र श्रद्धेय राजेंद्र बाबू के इस सदुद्योग में साथ देगा।

---

* ता० ३० दिसंबर, १९३७ को भारतीय इतिहास-परिषद् नाम से इस संस्था की स्थापना काशी में हो गई।

दुर्घटनाएँ
(एक्सिडेंट)
अचानक हो जाती हैं।

काम में, आराम में, पढ़ाई या खेल-कूद में, मन-बहलाव या अन्य चेष्टाओं में साधारण चोटों का आ जाना, चक्कू से घाव लग जाना, कील, शीशा लग जाना इत्यादि कष्ट प्रायः हो जाते हैं। यही नहीं, आजकल की मैशीनों, रेल, मोटरों के प्रताप से टक्कर लग जाना या अन्य दुर्घटनाओं का भी दुर्भाग्यवश हो जाना असंभव नहीं है। परंतु एक छोटी-सी शीशी

अमृतधारा

का पास रखना सब अवस्थाओं में अपनी रक्षा के लिये एक सच्चे मित्र और अंगरक्षक को पास रखना है। यह न केवल खून रोकती, दर्द बंद करता, जखम भरती, सूजन दूर करती और जख्म को विषैला होने से रोकती है, प्रत्युत मूर्च्छा और दिल डूबने की अवस्था में इसको सुँघाना और खिलाना शरीर में शक्ति का संचार कर देता है।

एक शीशी सदा पास रक्खो
मूल्य पूरी शीशी २॥), अर्द्ध १), नमूना ॥)
पता—अमृतधारा फ़ार्मेसी, लाहौर
लखनऊ-एजेंट—राज जीनत वर्क्स, ऐबट रोड, लखनऊ

इँगलिस्तानी या खिचड़ी बोली

[डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०]

श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने भाषा-संबंधी प्रसिद्ध लेख में कहा है—

"A living language is a throbbing, vital thing, ever-changing, evergrowing and mirroring the people who speak and write it."

नेहरूजी के इस वाक्य से भाषा की प्रतिक्षण परिवर्तन-शीलता भले प्रकार व्यंजित होती है। हमारी भारतीय भाषाएँ भी इस समय अपनी रूप-रेखा में बड़ी शीघ्रता से परिवर्तित होती जा रही हैं। इस समय हम एक नई बोली के निर्माण में लगे हुए हैं, अथवा यह कहिए कि हम गत पचास वर्षों के भीतर एक नई बोली का निर्माण कर ही चुके हैं। यह बोली—डायलेक्ट—अभी पूरी तरह साहित्यिक भाषा तो नहीं बन पाई, पर अब इसके साहित्यिक बनने के लक्षण अवश्य दिखलाई दे रहे हैं। और, असंभव नहीं, यदि कुछ काल में जाकर यह साहित्यिक भाषा हो जाय। इस भाषा का अभी तक कोई नाम प्रचलित नहीं हुआ, और यह मैं नहीं कह सकता कि अभी यह किस नाम से प्रसिद्ध होगी। मैंने इसके दो नाम सोचे हैं—एक इँगलिस्तानी, दूसरा इंडियन। इन दोनो में पहले नाम को अवश्य अच्छा समझूँगा; पर संभव है, दूसरा नाम अधिक प्रचलित हो जाय। इस प्रकार की नई भाषा का विकसित होना भारतीय साहित्य और संस्कृति की दृष्टि से श्रेयस्कर है, यह तो मैं नहीं मानता। मैं तो उर्दू या हिंदोस्तानी को

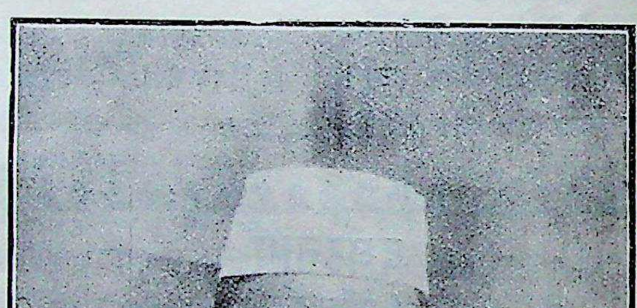

डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०

देखकर ही हृदय थामकर रह जाता और अपनी विवशता पर संताप करता हूँ। ऐसी अवस्था में इँगलिस्तानी का मैं पक्षपाती कैसे हो सकता हूँ। पर क्या किया जाय। भाषा के वर्तमान प्रश्नों और विवादों पर मैं जितना ही अधिक विचार करता जाता हूँ, मुझे इसका विश्वास होता जाता है कि शीघ्र ही इंडियन या इँगलिस्तानी नाम की भाषा का प्रचार अवश्य हो जायगा।

हिंदी क्या है ?

मुझे हिंदी-भाषा से उतना ही राग या मोह है, जितना किसी को भी अपनी वस्तु से हो सकता है। इसका नाम मुझे अधिक प्रिय नहीं; पर मुझे अपने बहुत-से आत्मीयों के भी नाम प्रिय नहीं; आत्मीय होने से ही मैं उनका स्नेह प्राप्त कर सका हूँ, और मैं भी उनसे स्नेह करता हूँ। बहुतों को सम्मान की दृष्टि से भी देखता हूँ—जैसे इक़बालबहादुर गुट्टू, घासीराम, छन्नूमल आदि। इसी दृष्टि से हिंदी नाम अधिक प्रिय नहीं, फिर भी इससे मेरी आत्मीयता है। और, अब इतनों दिन मेरा इसके साथ संबंध रहा है कि मधुर-से-मधुर काव्यमय नाम के बदले में भी इसे अब छोड़ना नहीं चाहता।

मुसलमानों के संपर्क से भारतवासियों का नाम हिंदी या हिंदवी पड़ा। लाहौर या दिल्ली के निकट बसे हुए जिन मुसलमानों ने यहाँ की आर्य-भाषा को अपनाया, उसके लिये उन्होंने हिंदी या हिंदवी नाम भी दे दिया। शुद्ध हिंदी-भाषा तो वह भाषा थी, जिसे इन मुसलमानों ने अपने आने के समय भारत में विद्यमान पाया। यह बात सात सौ वर्ष पुरानी है। इस भाषा की परिभाषा तो कदाचित् यही हो सकती है कि वह भाषा, जिसमें संस्कृत एवं प्राकृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का ही मुख्यतः समावेश हो। जिस प्रकार प्राकृत भाषाओं में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग होता है, उसी प्रकार हिंदी में न केवल संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव शब्द होंगे, प्रत्युत उसमें प्राकृत भाषाओं के भी तद्भव और तत्सम शब्द होंगे। अर्थात् इनका विकास एक श्रेणी और आगे बढ़ जायगा। पुरानी हिंदी के तत्सम और तद्भव शब्दों से आगे और भी तत्सम और तद्भव शब्द बनेंगे। यही क्रम शुद्ध वर्तमान खड़ी बोली या हिंदी-भाषा तक चला आना चाहिए। इस दृष्टि से वर्तमान शुद्ध हिंदी-भाषा तो वह भाषा है, जिसका सर्वांग ऐसे शब्दों से बना हो, जो संस्कृत, प्राकृत, पुरानी हिंदी, इसी क्रम से मूल-शाखावत् तत्सम और तद्भव हों। मैं जब कभी वर्तमान साहित्यिक खड़ी बोली की रूप-रेखा को इस कसौटी पर चढ़ाता हूँ, तो अधिकांशतः मैं उसमें वह शुद्धता पाता हूँ, जो मेरी इस परिभाषा में व्यक्त है। मेरी यह परिभाषा नैयायिक की परिभाषा नहीं, क्योंकि भाषा की परिभाषा हो ही क्या सकती है। यह परिभाषा अतिव्याप्त है, क्योंकि मैं मराठी, गुजराती या बंगाली की शुद्धता की भी यही परिभाषा करता हूँ। एक शुद्ध शब्द के कई तद्भव हो सकते हैं, और भिन्न-भिन्न प्रांतवासियों ने भिन्न-भिन्न तद्भवों को अपनाया, और इसीलिये भारत में कई भाषाओं का प्रचार हो गया।

यह तो रही शुद्ध हिंदी-भाषा की बात। उर्दू या हिंदोस्तानी इसीलिये हिंदी से भिन्न और हमारी शुद्धता की विरोधिनी है।

हिंदोस्तानी नाम कैसे पड़ा ?

उत्तर-भारतीय आर्य-भाषाओं का गत ७-८ सौ वर्षों से कोई नाम न था। स्थान या प्रांत के नाम पर ही कुछ बोलियों के नाम कभी-कभी प्रयुक्त हो जाते थे, पर इन नामों को कोई महत्त्व नहीं देता था। यह तो आजकल भाषा-विज्ञानवालों ने नामों के पृथक्करण और वर्गीकरण का ऐसा जाल बिछा दिया है कि हमें अब ब्रज, बुंदेलखंडी, बनारसी, अवधी आदि में इतना भेद अनुभव होने लगता है।

१८वीं शताब्दी तक ये सब बोलियाँ एक ही भाषा का अंग समझी जाती रहीं। हमारी सूक्ष्म दृष्टि में तो सूर, तुलसी और भूषण की भाषा में क्रमशः ब्रज, अवधी और बुंदेलखंडी हो सकती हैं, पर फिर भी इनके लेखकों की दृष्टि से उन सबकी रचनाएँ एक ही भाषा का साहित्य रही हैं। हम पंजाब से आसाम तक और दक्षिण में नागपुर तक जाते समय स्टेशनों पर बेचनेवालों और क़ुलियों, सबकी भाषाओं में थोड़ा-बहुत स्थानिक भेद तो पाते हैं, पर फिर भी सबको एक ही व्यापक भाषा का अंग समझते हैं। यही बात मेरठ-दिल्ली की भाषा, ब्रज, अवधी, बनारसी, भोजपुरी, बिहारी, मध्यप्रांतीय, बुंदेलखंडी आदि स्थानिक भाषाओं में है। मुसलमानों के आने से पूर्व भी ये ही बोलियाँ प्रथम आदि रूप में विद्यमान थीं। उस समय इन सब उत्तर-भारतीय बोलियों का कोई समष्टिगत नाम नहीं था, क्योंकि इनमें से कुछ तो साहित्यिक थीं भी नहीं। बोल-चाल के थोड़े-बहुत भेद को कोई महत्त्व भी नहीं देता था। प्रतापगढ़, प्रयाग और काशी की बोलियों में बहुत अंतर है। पर फिर भी सामान्य जनता, भिन्न-भिन्न बोलियों का प्रयोग करते हुए भी, अपने को पृथक् नहीं समझती, भाषा के पार्थक्य को इतना महत्त्व नहीं देती, जितना भाषा-विज्ञानवाले दे देते हैं। हिंदी-प्रांतीय व्यक्तियों का महाराष्ट्र, गुजरात या बंगाल के लोगों से तो सामाजिक संबंध में पार्थक्य रहा है, पर ब्रज, अवधी, मेरठी, बुंदेलखंडी, प्रतापगढ़ी, बनारसी या बलिया की बोलियों के आधार पर कभी कोई सामाजिक प्रतिबंध नहीं लगाया गया। जिस भाषा को हम आजकल हिंदी कहते हैं, उसकी रूप-रेखा तो नई है, फिर भी आज यह उसी विशद-व्यापी भाषा के अंतर्गत है, जिसके अंतर्गत ब्रज, अवधी आदि भाषाएँ थीं। हमने अपनी इस विशद-व्यापी भाषा को कभी कोई नाम नहीं दिया था। इसे हम केवल 'भाषा' कहते थे—"का भाषा, क्या संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच।"

दास की यह उक्ति इसका उदाहरण है।

जब मुसलमान लोग हमारे देश में आए, तो उन्होंने हमारे देश को हिंद नाम दिया। यह झगड़ा व्यर्थ है कि उन्होंने हमें हिंदी या हिंदू क्यों कहा? चाहे तिरस्कार या घृणा की दृष्टि से कहा हो, चाहे सिंधु-नदी के नाम पर, पर है यह नाम उन्हीं का दिया हुआ। मुसलमानों की प्राचीन रचना में ही हिंदी या हिंदवी-शब्द मिलता है, जिसकी पुष्टि डॉ॰ ताराचंद के निम्न-लिखित वाक्यों से भी होती है—

"१२२८ में मोहम्मद औफ़ी ने कुछ कवियों की कविताओं का संग्रह किया। उन कवियों में उसने ख़्वाजा मसूद सआद सलमान-नामक एक कवि का भी ज़िक्र किया है, और लिखा है कि उसने हिंदवी-भाषा में एक दीवान लिखा था। अला-उद्दीन ख़िलजी (१२९५-१३१५) के शासन-काल में फ़ख़रुद्दीन मुबारक ग़ज़नवी ने एक शब्दकोष तैयार किया, जिसमें उसने फ़ारसी के शब्दों के हिंदी-पर्यायवाची शब्दों को दिया। अमीरख़ुसरो (जिसकी मृत्यु १३६५ में हुई) ने भी हिंदी और हिंदवी नामों का प्रयोग किया। शाह मीराँजी शम्सुल उश्शाक ने, जिनका देहांत १४९५ में हुआ, अपनी रचनाओं की भाषा हिंदी बतलाई है। दक्षिण-भारत में भी हिंदी-शब्द का प्रयोग दक्खिनी के साथ आम तौर पर हुआ। नुसरती ने, जो बीजापुर के शासक अली आदिलशाह द्वितीय के दरबार में राजकवि था, अपनी हिंदी-कविताओं का ज़िक्र किया। दक्षिण में विकसित होनेवाली कविता को जब मुग़ल-दरबार में आश्रय मिला, तब दिल्ली के शायरों ने भी अपनी काव्य-भाषा के लिये हिंदी नाम का ही प्रयोग किया। शायरों में शाह हातिम से लेकर ग़ालिब तक इ

प्रयोग के अनेक उदाहरण मिल सकते हैं, और गद्य के संबंध में भी प्रारंभिक लेखकों से लेकर सर सैयद अहमदख़ाँ तक अनेक उदाहरण मिलेंगे।"

(हंस, पृष्ठ १२२२, अगस्त, १९३७)

अस्तु। यह बात स्पष्ट है कि हिंदी-शब्द का प्रयोग मुसलमानों ने ही अधिक किया, और वह भी उस भाषा के लिये, जिसे वे स्वयं अपना रहे थे। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि जब हिंदुओं ने अपनी भाषा के लिये यह हिंदी-शब्द अपनाया, तो मुसलमानों को इससे चिढ़ हो गई। वास्तविक बात तो यह है कि वर्तमान हिंदी-लेखकों के पूर्वज आचार्यों ने तो इस शब्द को कभी स्वीकार भी नहीं किया था। जिन लोगों ने बहुत पहले से यह शब्द स्वयं विना किसी दबाव के प्रयोग किया हो, वे ही आज इसके विरोधी हो रहे हैं, यह दुर्भाग्य है।

मुसलमानों का हमारे देश में आतंक रहा, और यहाँ के अधिवासी धीरे-धीरे शासक-संस्कृति और आधिपत्य के अधीन हो गए। शासकों का दिया हुआ नाम हिंदू उन्होंने स्वीकार किया, और अपनी भाषा को भी यदि वे हिंदी कहने लगे, तो आश्चर्य ही क्या? पर यह बात अवश्य है कि मुसलमानों के आने के पूर्व भी सूबे-हिंद में एक विशद-व्यापी भाषा थी, और मुसलमानों के आने के बाद भी यह भाषा रही, और अब तक है। पर उस विशद-व्यापी भाषा का नाम आज से पूर्व कभी देने की आवश्यकता नहीं पड़ी। कुछ नागरिकों, राजनीतिज्ञों और साहित्यज्ञों ने उस भाषा में फ़ारसी, अरबी और तुर्की के शब्द भी प्रविष्ट कर दिए, पर ग्राम की अधिकांश जनता में उस शुद्ध विशद-व्यापी भाषा का रूप बहुत कुछ अब भी विद्यमान है। उस शुद्ध रूप की स्थूल परिभाषा हम ऊपर दे ही चुके हैं, अर्थात् वह भाषा, जिसमें संस्कृत, प्राकृत और दोनो के तद्भव और तत्सम रूप प्रयुक्त होते हों।

हिंदुस्तानी भाषा का आरंभ

यह हम कह चुके हैं कि पश्चिमोत्तर देशों से आए हुए मुसलमानों ने अपने से इतर जिन लोगों को इस देश में पाया, उन्हें उन्होंने हिंदी या हिंदू नाम दे दिया। वे तो बाहर से आए हुए शासक और विजेता थे। बहुत समय तक तो वे अपने को हिंदी, हिंद-देशवासी या इसी प्रकार का और कुछ कहलवाना प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझते ही होंगे, यह स्वाभाविक था। उन्होंने आरंभ में तो अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं से ही काम लिया, और इस देश की भाषा को तिरस्कृत किया; पर ऐसा कब तक चल सकता था। वे यहाँ आकर बसने लगे, और धीरे-धीरे इस देश के निवासी हो गए। अब तो वे भी हिंदी हो गए। फिर भी धार्मिक भेदों और कुछ पैत्रिकता के कारण वे अपने को यहाँ के आदि निवासियों से पृथक् ही समझते रहे। वस्तुतः हिंदी और हिंदू एक ही अर्थ रखते हैं, पर मुसलमान लोग हिंदू कहलाने के लिये तैयार न हुए।

दिन परिवर्तित हुए। मुसलमानों के हाथ से राज्य-सत्ता योरपीय लोगों के हाथ में जाने लगी। इन योरपीय लोगों ने इस देश में जिन लोगों को अपने आने के समय पाया, उन्हें वे क्या कहकर पुकारें, यह एक समस्या थी। भारतवर्ष, आर्यावर्त या भरतखंड, ये नाम तो हिंदुओं के थे। मुसलमानों की भी बहुत संख्या थी, पर इस देश को इस्लामिस्तान या कोई ऐसा नाम भी नहीं दिया जा सकता था। समस्त देशवासियों का कोई तो समष्टि-सूचक नाम होना ही चाहिए। विदेशियों से भिन्नता सूचित करने के लिये ऐसे समष्टि-सूचक नामों की और भी अधिक आवश्यकता

होती है। अतः जैसे नवागत मुसलमानों ने अपने से इतर यहाँ के निवासियों को हिंदू कहा, उसी प्रकार योरपियन लोगों ने हिंदू और मुसलमान दोनो के लिये एक सामान्य शब्द हिंदुस्तानी का प्रचार किया। हम यह तो नहीं कहते कि 'हिंदुस्तानी'-शब्द का आविष्कार योरपियनों ने किया। इस शब्द का थोड़ा-बहुत प्रयोग संभवतः इस देश के निवासियों और उनकी भाषा के लिये पहले भी यदा-कदा होता रहा हो। पर यह निश्चित है कि इस शब्द का विशेष प्रचार योरपियनों ने ही किया। टैरी (१६१६) और फ़ायर (१६७५) ने 'इंडोस्तान' नाम का प्रयोग किया। अमादुज्जी ने, १७०४ में, 'लिंगुए हिंदोस्तानिका' के हस्त-लिखित शब्द-कोष का उल्लेख किया है। केटेलियर ने, १७१५ में, 'हिंदोस्तानिका' भाषा की सबसे पहली व्याकरण-पुस्तक लिखी, और इसका एक शब्द-कोष भी बनाया। गिलक्राइस्ट ने हिंदुस्तानी-शब्द का प्रयोग 'अँगरेज़ी-हिंदुस्तानी-डिक्शनरी' आदि के रूप में किया। हिंदुस्तानी के इतिहास पर गार्सेद-तासी ने पेरिस में व्याख्यान दिए।

इन लोगों की देखा-देखी कुछ भारतीयों ने भी हिंदुस्तानी-शब्द को अपनाया, जैसे मीर अम्मन (१८०१) ने बाग़ोबहार में। पर हिंदुस्तानी-शब्द का प्रचार तो योरपियनों ने ही किया, और इस देश के निवासी भी धीरे-धीरे अपने स्वाभाविक गुणों के कारण इसे स्वीकार करने लगे।

'इंडियन'-शब्द का प्रयोग

योरपियनों ने हमारे देश का नाम पहले तो हिंदोस्तान, हिंदुस्तान या इंडोस्तान रक्खा, पर इस नाम से उन्हें बहुत दिनों तक संतोष न हो सका। ज्यों-ज्यों उनका राज्य देश में दृढ़ होता गया, और अतिथियों से परिवर्तित होकर जैसे ही वे इस देश के स्वामी बनने लगे, उन्होंने एक नए शब्द की रचना प्रारंभ की। जिस समय वे इस देश में आए थे, हिंदुस्तानी-भाषा के व्यवहार करनेवालों (हिंदू-उर्दू दोनो) का प्रभुत्व था, और उनकी दृष्टि में यह भाषा ही इस देश की प्रतिनिधि भाषा थी, इसीलिये उन्होंने इस भाषा का देश-व्यापी नाम दिया। पर बाद को उनका ध्यान प्रांतीयता की ओर बढ़ा। प्रांतीय भेद-भावों को स्थिर रखना और यथाशक्ति बढ़ाना इनकी एक नीति रही भी है। इसीलिये कुछ समय बाद हिंदुस्तानी शब्द उत्तर-भारतीय हिंदी-उर्दू बोलनेवालों के लिये ही सीमित रह गया। अब जब कभी समस्त भारतीयों को एक शब्द द्वारा व्यक्त करना होता, तो ये भारतीय 'इंडियन' कहलाते। हमारे समस्त देश का नाम इंडिया रख दिया गया। योरपियनों ने 'इंडियन' भाषा को बहुवचनत्व दिया। इंडियन भाषाओं में बंगाली, हिंदी, मराठी, गुजराती, मदरासी आदि सभी भाषाएँ समाविष्ट होने लगीं। हमारा देश इंडिया हो गया। इंडिया और इंडियन शब्दों का इतिहास भी मनोरंजक है, पर उसका विस्तृत उल्लेख करने का यहाँ अवकाश नहीं। किसी स्वतंत्र लेख में देखा जायगा।

मुसलमान लोग भारतवर्ष में बसकर भारतीय हो गए, पर उन अँगरेज़ों ने, जिन्होंने यहाँ कुछ रोटी-बेटी का संबंध किया भी, अपने लिये 'ऐंग्लो-इंडियन' एक नया नाम रक्खा। ऐंग्लो-इंडियन अधिकतर 'यथा नामा तथा गुणः' के अनुसार दोग़ली संतान रही है। इनमें अधिकांश विवाहित गृहस्थी की संतानें नहीं, प्रत्युत उच्छृंखल संबंध की संतानें हैं। जो कुछ हो, योरपियनों के आने से पूर्व भारत की सीमा में रहनेवाले व्यक्तियों को इंडियन नाम दिया गया, और उनकी समस्त भाषाओं का समष्टि-सूचक नाम 'इंडियन' भाषा है दिया गया है। आज तो हम भी अपने अँगरेज़ी के लेखों में अपने को 'इंडियन' और अपने देश को

'इंडिया' कहने में गौरव समझते हैं। यह अवश्य है कि हिंदी-भाषा में लिखते समय हम भारतवासी ही कहलाना अधिक उचित समझते हैं। पर इन दो-दो नामों का भला अर्थ ही क्या है? दो क्यों, तीन नामों के बीच में हमें समझौता करना पड़ता है—हिंदोस्तानी, भारतीय और इंडियन। ऐसी विचित्र परिस्थिति तो कदाचित् ही किसी देश की हो। उर्दूवाले देशवासियों को हिंदोस्तानी कहें, हिंदीवाले भारतीय और दोनो अँगरेज़ी में लिखते समय अपने को इंडियन कहें। अभी देखिए, इतिहास में आगे क्या-क्या होना है। हम उदारतापूर्वक अपने शासकों के दिए हुए नामों को सदा अपनाए जायँगे।

इँगलिस्तानी-भाषा

देश में अँगरेज़ी-भाषा को प्रविष्ट हुए अब तो बहुत वर्ष हो चुके हैं। लगभग ७०-७५ वर्षों से यहाँ के विश्वविद्यालय अँगरेज़ी-माध्यम द्वारा लोगों को पाश्चात्य पद्धति पर शिक्षा दे रहे हैं। पढ़े-लिखे लोगों की अंतरप्रांतीय माध्यम भाषा अँगरेज़ी हो चुकी है। हमारी अँगरेज़ी-भाषा की अभिज्ञता ने बोल-चाल की भाषा को एक नए रंग में रँग दिया है। फलतः जो एक नई बोली बन रही है, उसे मैंने 'इँगलिस्तानी' नाम देने की धृष्टता की है। अब तो स्पष्ट ऐसे चिह्न दिखाई देते हैं कि यह 'इँगलिस्तानी' बोली डायलेक्ट (साहित्यिक) भाषा का रूप धारण कर लेगी। अभी तो इसके विकास का प्रारंभिक काल है, आगे जाकर इसे अधिक दृढ़ और स्थायी रूप मिलेगा। इस लेख में मैं संक्षेप से इस बोली या भाषा की थोड़ी-सी रूप-रेखा खींचना चाहता हूँ। मैं इस भाषा का पक्षपाती तो नहीं हूँ, और न मेरा उद्देश्य इसका प्रचार ही करना है, पर मैं यह अनुभव करता हूँ कि जैसे इस देश में प्राचीन संस्कृति की विरोधिनी अन्य अनेक बातों का समावेश हो रहा है, उसी तरह यह भाषा भी धीरे-धीरे हमारे रुधिर में घुल-मिल रही है।

प्रतिदिन की बोली

बिना किसी अतिशयोक्ति के मैं नीचे एक उदाहरण उस बोली का दे रहा हूँ, जिसे हम पढ़े-लिखे लोग प्रतिदिन व्यवहार में लाते हैं—

"मुझे इस बात में बिलकुल भी doubt नहीं है, rather I am sure कि इस year B. Sc. Examination के results बहुत ख़राब हुए हैं। कुछ तो examiners ने strictness की और कुछ papers भी ऐसे out-of-way आए कि students तो unexpected questions को paper में Set देखकर Hall की ceilings ही watch करते रह गए। इतना failure तो last three or four years में पहले कभी हुआ ही न था। अब की admission में भी difficulty उठानी पड़ेगी। Last year भी in spite of all our attempts, कुछ applicants के admission almost impossible हो गए थे। After a great stir, Registrar को move किया जा सका, जिससे कुछ seats का extra arrangement किया गया।"

पढ़े-लिखे लोगों में यह बोली उतनी ही प्रचलित है, जितनी प्रतापगढ़ में परतापगढ़ी बोली या बलिया में पुरबिया बोली। अतः भाषा-विज्ञान की दृष्टि से इस बोली को भी अब तो 'बोली' मानना ही पड़ेगा। इसी बोली का मैंने 'इँगलिस्तानी' नाम दिया है, यद्यपि इस बोली के लिये अब तक कोई नाम नहीं। कभी-कभी 'खिचड़ी भाषा' अवश्य कह लिया जाता है। संभव है, जिस तरह हिंदी के एक रूप का नाम 'खड़ी बोली' पड़ गया है, इस नए रूप का नाम 'खिचड़ी बोली' पड़ जाय।

मैंने इस भाषा का नाम 'इँगलिस्तानी' इसलिये

नहीं दिया कि यह इँगलिस्तान की भाषा है, प्रत्युत इसलिये कि इँगलिस्तान के लोगों की भाषा से प्रभावित भाषा है। यों तो इसे ऐंग्लो-हिंदी, ऐंग्लो-हिंदुस्तानी या इँगलिस्तानी-हिंदी भी कहा जा सकता है।

इसका व्याकरण

इँगलिस्तानी या खिचड़ी बोली के व्याकरण की रूप-रेखा का कुछ निर्देश यहाँ किया जायगा—

(१) इस भाषा या बोली के वाक्यों की गढ़न खड़ी बोली के वाक्यों की-सी होगी, और अधिकांश खड़ी बोली के नियम इसमें व्यवहृत होंगे।

(२) इस बोली में अँगरेज़ी-भाषा के शब्द कभी तत्सम और कभी तद्भव, दोनो ही रूपों में व्यवहृत होंगे। जैसे—

स्टेशन, इसटेशन, सटेशन
लालटेन, लैंटर्न
सिंगल, सिगनल

(३) अँगरेज़ी की संज्ञाओं का इसमें सबसे अधिक व्यवहार होगा।

(४) इन संज्ञाओं के बहुवचन कभी हिंदी के नियमों के अनुसार और कभी अँगरेज़ी के अनुसार बनेंगे। जैसे—

वे मोटर्स में चढ़कर आ गए।

वे मोटरों में चढ़कर आ गए।

जजों ने हमारे केसेज़ के विरुद्ध जजमेंट्स दिए।

जजेज़ ने हमारे केसों के विरुद्ध जजमेंट दिए।

विभक्ति (ने, को आदि)-रहित स्थानों पर अँगरेज़ी के बहुवचनों का विशेष प्रयोग किया जायगा।

(५) अँगरेज़ी संज्ञाओं के लिंग ध्वन्यात्मक सिद्धांत पर निर्भर रहेंगे। ये लिंग व्यंजनाओं द्वारा निश्चित किए जायँगे। लिंगों के प्रयोग में बहुधा मतभेद रहेगा। संभव है, भविष्य में इन्हें स्थायी रूप प्राप्त हो जाय। जैसे—

सायकिल आ रही है। मोटर आ रहा है। रेल जा रही है। (अकारांत शब्द पुंलिंग और स्त्रीलिंग)

बड़ी डिफ़िकल्टी हुई। मेरी ड्यूटी कड़ी है। (ईकारांत स्त्रीलिंग)

पोलो खेला, पोलो खेली। विंडो खुली है। (ओकारांत पुंलिंग और स्त्रीलिंग)

लंबे बैंबू से यह स्टिक काटी गई है। (अकारांत शब्द स्त्रीलिंग)

अँगरेज़ी की अधिकांश संज्ञाएँ अकारांत, आकारांत और ईकारांत होती हैं। अकारांत, ओकारांत तथा एकारांत शब्द अपवाद रूप से ही बहुत कम प्रयुक्त होंगे।

(६) विशेषणों का प्रयोग विशेष्य के पूर्व और विधेय रूप से भी होगा—

उसकी सक्सेस इंपॉसिबिल है। (विधेय)

इंपॉसिबिल बात क्यों कहते हो ? (विशेष्य)

(७) अँगरेज़ी क्रिया-विशेषणों का भी प्रयोग अनेक रूप से होगा—

वह बहुत स्लोली इंप्रूव कर रहा है। यह बात आलमोस्ट इंप्रॉबेबिल है।

वह लेट आया।

(८) अँगरेज़ी सर्वनाम का एकांत रूप में तो प्रयोग न होगा, पर विशेष अवस्थाओं में इसका प्रयोग इस प्रकार होगा—

थैंक यू।

ऑन माई बिहाफ़, मैं तुम्हें श्योरिटी देता हूँ।

ही हिमसेल्फ़ श्योर न था।

तात्पर्य यह कि अँगरेज़ी-पद-समूह अपनाते समय इन सर्वनामों का प्रयोग किया जायगा।

(९) प्रोपोज़ीशनों का प्रयोग अकेले नहीं किया जायगा। हिंदी-संज्ञाओं या सर्वनामों के साथ

इनका प्रयोग न होगा। पद-समूहों में इनका प्रयोग होगा। जैसे—

इन माई ओपीनियन, वह कुछ डलहेडेड है।

(१०) इँगलिस्तानी या खिचड़ी भाषा में सबसे विचित्र प्रयोग क्रियाओं का होगा। क्रियाओं का प्रयोग संज्ञाओं के रूप में किया जायगा। उन शब्दों में 'करना' या 'होना' ये भाव स्वतः होते हुए भी ऊपर से 'करना' या 'होना'-शब्द का प्रयोग और किया जायगा। जैसे—मैं ट्राई करूँगा।

ट्राई का अर्थ 'यत्न करना' है। इसके आगे 'करना' क्रिया लगाना व्यर्थ है। पर तब भी 'करूँगा' लगाया गया है। ट्राई अविकारी-रूप में प्रयुक्त हुआ है, और काल, वचन, लिंग आदि रूप 'करना' क्रिया के चलाए गए हैं। इसी प्रकार—

मैं फ़ील करता हूँ।

मैं तुम्हें एक्सपेक्ट करता था।

कर्मवाच्य में 'होना' क्रिया का प्रयोग होगा—

मैं सैटिसफ़ाई हो गया।

मैं सैटिसफ़ाइड हो गया।

(११) कुछ समुच्चय-बोधक शब्दों का भी प्रयोग होगा—

ऑलदो तुमने मुझसे कहा था, पर मुझे याद न रही।

(११) कुछ विस्मयादि-बोधक शब्दों का भी प्रयोग किया जायगा।

(१३) अँगरेज़ी के समासों और पद-समूहों का यथारूप प्रयोग भी किया जायगा, और ऐसा करते समय उन समासों और पद-समूहों में अँगरेज़ी-व्याकरण का प्रयोग होगा। जैसे—

ऑफ़कोर्स, तुम ठीक कहते हो।

इन कोर्स ऑफ़् टाइम, तुम समझ जाओगे।

अँगरेज़ी में इस समय समासों का कम प्रयोग होता है। लेटिन के प्राचीन समास प्रयुक्त होते-होते स्वतः शब्द बन चुके हैं। आउट साइड, ऑफ़कोर्स, समटाइम्ज़, इनफ़ैक्ट आदि कुछ समास-पद अब भी प्रचलित हैं।

स्थानाभाव से इँगलिस्तानी बोली के व्याकरण का यहाँ सूक्ष्मतया ही निर्देश किया गया है।

इँगलिस्तानी और उर्दू की समानता

उर्दू का विकास कैसे हुआ, और कैसे यह स्वतंत्र भाषा बन बैठी, इस बात में बहुधा विवाद उठा करता है। पर मैं तो विश्वास-पूर्वक यह कह सकता हूँ कि यदि आजकल रची जानेवाली इँगलिस्तानी बोली की रूप-रेखा को अच्छी तरह समझ लिया जाय, तो हमें निश्चय-पूर्वक ज्ञात हो जायगा कि उर्दू किस प्रकार पहले एक बोली बनी, और बाद को भाषा बन बैठी। जिन परिस्थितियों में आजकल इँगलिस्तानी का निर्माण हो रहा है, ठीक वैसी ही परिस्थितियों में उर्दू का निर्माण हुआ था। जिस प्रकार हमारे पुराने शब्दों का स्थान बोली में इस समय, एक-एक करके, अँगरेज़ी-शब्द लेते जा रहे हैं, उसी प्रकार आज से सात-आठ सौ वर्ष पूर्व से हमारे संस्कृत-शब्दों के स्थानापन्न फ़ारसी, अरबी और तुर्की-शब्द हो गए। (अँगरेज़ी-शब्दों से मेरा तात्पर्य इँगलिश, फ़्रेंच और पोर्तगीज़, तीनो के शब्दों से है, क्योंकि इन तीनो देशों के लोगों का संसर्ग गत तीन सौ वर्षों से विशेष रहा है।)

हमने दिखाया है कि किस प्रकार अँगरेज़ी-शब्दों के बहुवचन हिंदी में हिंदी-व्याकरण के अनुसार और अँगरेज़ी-व्याकरण के अनुसार—दोनो ही तरह से बनकर हिंदी में आ रहे हैं। यही बात उर्दू में फ़ारसी और अरबी के बहुवचनों की भी है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
जाहिल	जाहिलों, जुहला
तालिबइल्म	तालिबइल्मों, तुलबा
बुज़ुर्ग	बुज़ुर्गों, बुज़ुर्गान

एकवचन	बहुवचन
लफ़्ज़	लफ़्ज़ों, अलफ़ाज़
मदरसा	मदरसों, मदारिस
ज़िला	ज़िलों, अज़लाअ

लिंगों के संबंध में भी यही बात है। कहीं-कहीं हमने अपने हिंदी-पर्याय के अनुसार फ़ारसी-शब्दों के लिंग बदल डाले हैं—

अच्छा क़लम, अच्छी क़लम
बुरा हाल, बुरी हाल

(नोट—फ़ारसी में तो लिंगों का कोई विधान नहीं, क्योंकि क्रिया और विशेषणों में लिंग के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता। उर्दू वालों ने कुछ विशेष लिंग इन शब्दों के निर्धारित किए।)

जैसे अँगरेज़ी के पद-समूह और समास इँगलिस्तानी में धड़ाधड़ प्रयुक्त हो रहे हैं, उसी प्रकार किसी ज़माने में फ़ारसी और अरबी के पद-समूह यहाँ की बोली में प्रविष्ट हो गए, और आज एक नई भाषा के रूप में राष्ट्रीय कठिनाई उत्पन्न कर रहे हैं। जैसे—

इत्तुलइमकान, इत्तुलवसै, दरहक़ीक़त, फ़िलहक़ीक़त, बसरोचश्म

हमने ऊपर इँगलिस्तानी का जो उदाहरण दिया है, उसमें आप देखेंगे कि समस्त उद्धरण में हिंदी के अधिकांश शब्दों के स्थान में अँगरेज़ी के शब्द आ गए हैं। ठीक यही अवस्था उन विशुद्ध उर्दू-लेखकों की है, जो एक भी भारतीय शब्द का प्रयोग करना अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझते हैं।

विदेशी शब्दों का बाहुल्य

श्रीपं० रामनरेशजी त्रिपाठी को एक बार यह कहते मैंने सुना था कि हमारी दैनिक शब्दावली में, खाने-पकाने के बर्तनों के नाम में, फूलों इत्यादि में फ़ारसी के ही शब्दों का बाहुल्य है। विदेशी संस्कृति आने पर ऐसा हो ही जाता है। अब तो भविष्य की इस इँगलिस्तानी बोली में, जिसका प्रचार अवश्यंभावी है, न तो फ़ारसी के शब्द रहेंगे, और न संस्कृत के। आप देखिए कि विदेशी सामग्री के प्रयोग के कारण कितने शब्द हमारे यहाँ घुस रहे हैं, और ज्यों-ज्यों हम अपनी देशी चीज़ों का अपनाना छोड़ते जायँगे, हमारे देशी शब्द भी लुप्त हो जायँगे।

रेल के प्रयोग से—रेल, एंजिन, स्टीम, बॉयलर, ह्विसिल, सिगनल, ड्राइवर, गार्ड, टिकट, ट्रेन, स्टेशन, प्लैटफ़ार्म, स्टेशन-मास्टर, टिकट-कलेक्टर, शंट, गुड्सट्रेन, इंटर, थर्ड, सेकंड, फ़र्स्ट क्लास, लेट, कुली, केबिन, लाइन-क्लीयर आदि अनेक शब्द।

पोस्ट ऑफ़िस से—पोस्ट ऑफ़िस, टिकट, स्टांप, रजिस्ट्री, वी० पी०, मनीऑर्डर, पोस्टमैन, फ़ारम, एनवेलप, कार्ड, लेटर, डी० एल्० ओ०, पोस्ट-मास्टर, इंश्योर, रेप्लाई-पेड आदि अनेक शब्द।

सायकिल से—सायकिल, बाइसकिल, हैंडल, मडगार्ड, चेन, ह्वील, वाल्वट्यूब, पंप, टायर, ट्यूब, रबर, सोल्यूशन, लेड बेयरिंग, लैंप, सीट आदि अनेक शब्द।

बिजली से—एलेक्ट्रिसिटी, स्विच, प्लग, प्वाइंट, मीटर, लाइन, यूनिट, फ़्यूज़, वायर, केसिंग, होल्डर, बल्ब, फ़िलेमेंट, पावरहाउस, फ़ैन, हीटर, बेल आदि पचासों शब्द।

चाय के प्रचार से—टी, कप, हाफ़ प्लेट, क्वार्टर प्लेट, सौसर, केटेल, मिल्क, शुगर, स्पून आदि अनेक शब्द।

बाग़बानी में—फूलों में स्वीटपीज़, कोक्सकूंब, लिली, दहलिया, कोसमोस, हौलीहाक, डायंथस, कैंडीटफ़्रुट आदि पचासों फूल बँगलों के बग़ीचों में।

सड़कों के—क्लब रोड, स्टेनली रोड, थार्नहिल रोड, लाउदर रोड आदि।

हमारे यहाँ के घरेलू धंधे लुप्त होते जा रहे हैं, और उनके साथ-साथ अनेक देशी शब्द भी सदा के लिये परित्यक्त होने को हैं। गुड़ का कारख़ाना गया, चीनी फ़ैक्टरियों में बनने लगी। फ़ैक्टरियों के क़ुली भी बीसों अँगरेज़ी-शब्द बोलने और समझने लगे—मोलासेज़, बेगास, केन, क्रशिंग, पैनमेन, क्रुस्टल इत्यादि। सीमेंट की छतें बनने लगीं। इस नए आविष्कार के साथ कुछ शब्द आए—सीमेंट, गर्डर, रेलिंग, लिंटर, री-इंफोर्समेंट, फेरोकांकरीट आदि, जिन्हें अब मज़दूर और ठेकेदार दोनो समझते हैं। हाथ की सिलाई गई, सीने की मशीन आई, उसके साथ भी अनेक शब्द आ गए। कपड़ों का फ़ैशन बदला—पेटीकोट, जंपर, वास्कट, बॉडी, सूट, कैप, हैट, नाइट कैप, गाउन, कोट, पेंट, नेकर, हाफ़पेंट, टाई आदि ढेर-के-ढेर शब्द घरों में घुस गए, जिन्हें हमारे धोबी भले प्रकार समझते हैं। जूतों की चाल बदली—सैंडल, बूट, स्लीपर, हाफ़-स्लीपर, फ़ुल स्लीपर, शू, ब्रुश, पॉलिश आदि शब्द हमारे गले उतरने लगे। शृंगार का सामान परिवर्तित हुआ, फलतः सोप, सोपकेस, क्रीम, स्नो, ऑयल, परफ़्यूम, एसेंस, डस्टिंग पाउडर, स्पंज, लिपस्टिक, टूथ-पाउडर, टूथ-पेस्ट, एमलशन, हेयर-पिन आदि अनगिनती शब्द दूकानदार और घर की देवियाँ तथा देवता सभी व्यवहार में लाने लगे हैं। खेल के सामानों और खेलों में भी यही अवस्था है। टेनिस के साथ खेल की सारी शब्दावली कोर्ट, लव, गेम, सर्विस, बॉल, बॉय, प्वांइट; क्रिकेट के साथ फ़ील्डिंग, विकेट, हिट, कैच, बाउंडरी, आउट, बायलिंग, बैट; हॉकी के साथ हॉकी, स्टिक, हाफ़ साइड, गोलकीपर, लेफ़्ट, राइट, सेंटर, फ़ारवर्ड आदि कितने शब्द हमारी बोली में प्रविष्ट हो गए हैं, जिनसे अब बच्चे-बच्चे परिचित हो गए हैं। ताश, करम या अन्य इंडोर-गेमों ने भी अनेक शब्दों का प्रचार किया है। विदेशी दवाइयों के व्यवहार और डॉक्टरों द्वारा प्रचलित रोगों के अनेक नामों ने—कॉलेरा, सिफ़लिस, टायफ़ाइड, डिसेंटरी, फ़ीवर, टेंपरेचर, टिंक्चर, ऑयंटमेंट, सीरप, ग्लिसरीन, वैसलीन, पाउडर आदि अनेक शब्दों को बोली में प्रचलित कर दिया है।

अब तो अवस्था यहाँ तक आ गई है कि संकोचात्मक शब्दों के स्थान में अँगरेज़ी के शब्द निस्संकोच प्रयुक्त किए जाने लगे हैं—वाइफ़, ब्रदर-इन-लॉ, सन-इन-लॉ, फ़ादर-इन-लॉ, रेक्टम, बटक, पेनिस, ब्लैडर, सीमेन, यूटेरस, मेन्सॅज़ आदि। फ़ादर, मदर, सिस्टर, मास्टर, टीचर, कलेक्टर, डॉक्टर, क्लर्क, प्रोफ़ेसर।

मैं समझता हूँ, समस्त पेशेवर नाम अब तो अँगरेज़ी ही हो गए हैं। कहाँ तक गिनाया जाय। इस समय यह प्रश्न नहीं रह गया कि भाषा में फ़ारसी-शब्दों का प्रयोग किया जाय या संस्कृत-शब्दों का? पढ़े-लिखे और बेपढ़े, सभी अब इन दोनो के स्थान में अँगरेज़ी-शब्दों का उपयोग कर रहे हैं।

यह भला कब तक संभव है कि जिन शब्दों का उपयोग बोली में पढ़े-लिखे लोग करें, वे भाषा में प्रविष्ट होने से बच जायँ। लोग हमसे भाषा में बोल-चाल की भाषा प्रयोग करने के लिये कहते हैं। इसका तात्पर्य अब यह न होना चाहिए कि 'हिंदुस्तानी' लिखी जाय, प्रत्युत इँगलिस्तानी। नावेल और ड्रामाओं में इस भाषा के प्रयोग की कहीं-कहीं झलक आने लगी है। अप-टु-डेट, फ़ेल, पास आदि शब्दों का व्यवहार हो निकला है। अनेक शब्द साहित्यिक हो चले हैं। कविता में तीर से कब तक काम चलेगा, अब तो 'गन' लिखने का समय आनेवाला है! बाग़ में लगे हुए अँगरेज़ी फूलों के सौंदर्य की कब तक उपेक्षा की जायगी? मैंने स्वयं अपनी कविताओं में इन फूलों का वर्णन

करना चाहा—मन कब तक मारता। आँखों के सामने मनोमोहिनी शोभा थी। कुछ के हिंदी नाम रक्खे, पर कुछ तो अपने विदेशी नामों के साथ रचना में प्रविष्ट हो ही गए। लाचारी थी।

वैज्ञानिक शब्द

कौन-से शब्द पारिभाषिक हैं, और कौन-से व्यावहारिक, इसकी पहचान नहीं की जा सकती। रसायन का एक शब्द रसायनशास्त्र में पारिभाषिक होता है, पर वही शब्द डॉक्टरों द्वारा अति प्रचलित किए जाने पर व्यावहारिक हो जाता है। ज्यों-ज्यों जीवन में वैज्ञानिक वस्तुओं का उपयोग बढ़ेगा, वैज्ञानिक शब्द भी जनता की भाषा में घुल-मिल जायँगे, और उनकी पारिभाषिकता मिट जायगी। अँगरेज़ी के अनेक पारिभाषिक शब्दों का अँगरेज़ी में साहित्यिक रूप से भी व्यवहार होने लगा है। हिंदी-भाषा में सभी शब्दों का रूपांतर अब असाध्य होता जा रहा है। ऐसी अवस्था में बहुत-से शब्द ज्यों-के-त्यों लेने पड़ रहे हैं। बहुत-से लोग अनुवाद और रूपांतर के विरुद्ध हैं। प्रेमचंदजी ने लिखा है—

"हमारी समझ में तो यह आता है कि नए सिरे से पारिभाषिक शब्द लगाने की जगह कहीं अच्छा यह होगा कि अँगरेज़ी के प्रचलित पारिभाषिक शब्दों में कुछ आवश्यक परिवर्तन करके उन्हीं को ग्रहण कर लिया जाय।"

जवाहरलालजी दबे शब्दों में कहते हैं—

"Where necessary, these words should be taken from foreign languages and bodily adopted."

इन सब दृष्टियों से मेरी समझ में तो यह आता है कि जहाँ हमारी बोल-चाल की भाषा परिवर्तित हो गई है, वहाँ अब साहित्यिक भाषा भी परिवर्तित हो जायगी। हिंदी और उर्दू की समस्याएँ हिंदुस्तानी में मिलकर एक हो जायँगी।

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये "संगीत-सागर"-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गी, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक़्शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≡) में दिया जा रहा है। शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर "संगीत", हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र "संगीत" का इस वर्ष २०० पृष्ठ का "भातखंड-अंक" [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए! गाना-बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

आयुर्भोग

[आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

(१).

वसंत के एक सुरभित दिन में ब्रह्मदेव ने मानव-मूर्ति निर्माण की, और उसे सर्वांग-पूर्ण पाकर, प्रसन्न हो उसमें प्राण फूँक दिया। मानव-मूर्ति प्राण पाते ही स्पंदित हुई। उसने विनय-पूर्वक ब्रह्मदेव को प्रणाम किया। ब्रह्मदेव ने मानव के विनय से प्रसन्न होकर कहा—"आयुष्मन्, हमने तुम्हें समस्त पार्थिव विभूतियों से विभूषित कर दिया, और तुम समस्त प्राणियों के मुकुट-मणि बने रहो, इसलिये हमने तुम्हारे मस्तिष्क का पूरा विकास कर दिया है, उसमें मेधा और प्रतिभा भरपूर भर दी है। तुम्हारा शरीर सबसे कोमल, सबसे बहुमूल्य, सबसे अपूर्व रहेगा। तुम समस्त पार्थिव संपदाओं के स्वामी रहोगे। तुम्हारी प्रवचन-शक्ति सब प्राणियों से बहुत अधिक सार्थक रहेगी। तुम अपनी प्रतिभा और मेधा के कारण सब ऋद्धि-सिद्धियों को प्राप्त कर सकोगे। जाओ, मैं तुम्हें चालीस वर्ष की आयु प्रदान करता हूँ।"

मानव-मूर्ति ने झुककर ब्रह्मदेव को प्रणाम किया, और करबद्ध होकर कहा—"देवाधिदेव, आपकी कृपा का यह दास अत्यंत ऋणी है। परंतु स्वामिन्! जब मैं संसार की सब संपदाओं को भोग करूँगा, उनका स्वामी होऊँगा, तो मेरे पास बहुत-सा सामान होगा। मैं पृथ्वी पर विचरण करूँगा, तो उसे ढोकर कैसे यहाँ से वहाँ ले जाऊँगा, इसलिये महाराज, एक भारवाह भी मुझ दास को प्रदान कीजिए।"

ब्रह्मदेव हँस पड़े। उन्होंने कहा—"आयुष्मन्, तुम बड़े दूरदर्शी हो। मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। अच्छा, ठहरो।" यह कह उन्होंने विभूतियों की अलाय-बलाय इधर-उधर से उठाकर एक गधे की मूर्ति बना डाली, और उसमें प्राण फूँककर कहा—"देखो भाई गधे, तुम्हारा काम जन्म-भर इस आयुष्मान् का बोझा ढोना और घास-फूस जो मिले, वह खाना होगा। बदमाशी मत करना, वरना पीटे जाओगे। आयुष्मान् तुम्हें बाँधे रहेगा। देखो, तुम्हारे शरीर को मैंने ख़ूब मज़बूत बना दिया है। चाहे भी जितना बोझा ढोओ, और चाहे भी जैसा रद्दी चारा खाओ, तुम ख़ूब मज़बूत बने रहोगे। जाओ, मैं तुम्हें चालीस वर्ष की आयु प्रदान करता हूँ।"

ब्रह्मदेव की यह आज्ञा सुनकर गधा हेचूँ-हेचूँ करके चिल्लाने और हाय-वैला मचाने लगा। टाँगें मार-मारकर उसने ब्रह्मदेव के इधर-उधर पड़ी विभूतियों को बखेर दिया। ब्रह्मदेव ने नाराज़ होकर कहा—"अभी से बदमाशी करने लगा! शांत हो।"

गधे ने कहा—"दुहाई पितामह की! मैं चालीस वर्ष तक इसका बोझा ढोता रहूँगा, और ख़राब-से-ख़राब खाना मिलेगा। यह पाजी मुझे पीटेगा, और बाँधकर भी रक्खेगा। महाराज! मुझे इस कष्ट से बचाइए।"

ब्रह्मदेव डपटकर बोले—"बच नहीं सकते। यह आयुर्भोग है, कर्म-विपाक है।"

"तो पितामह, मेरा यह आयुर्भोग कम कर दीजिए।"

गधा रोने लगा। ब्रह्मदेव को दया आई।

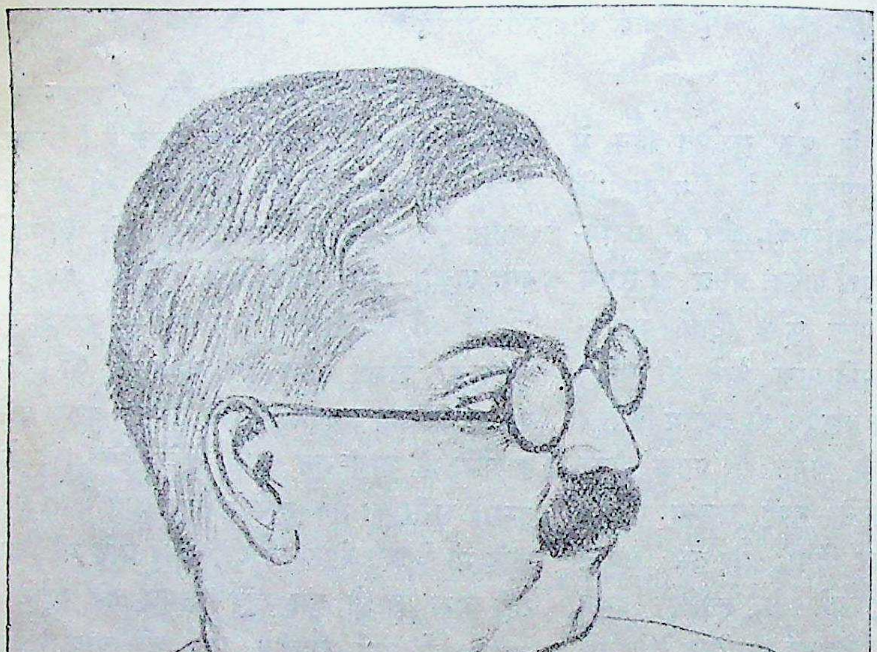

आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री

बोले—"रो मत। जा, मैंने बीस वर्ष काट दिए। केवल बीस वर्ष की आयु तुझे दी।" यह कहकर उन्होंने हीरे की भाँति दमदमाती क़ैंची से गधे की आधी आयु काटकर फेंक दी।

उस कटी हुई आयु को मानव-मूर्ति ने लपककर उठा लिया, और हाथ जोड़कर कहा—"पूज्य पितामह! यह आयु मुझे दे दीजिए। चालीस वर्ष मेरे लिये बहुत कम हैं।"

पितामह मुस्किराए। कहा—"अच्छा, अच्छा, तू इसे ले ले। अब तेरा आयु-भोग साठ वर्ष का हो गया न?"

मानव-मूर्ति बहुत प्रसन्न हुई। उसने गधे की वह कटी हुई आयु अपने शरीर में लगा ली। अब उसने फिर ब्रह्मदेव से हाथ जोड़कर कहा—"प्रभो, यह तो हुआ, परंतु अब मुझे एक चौकसी करनेवाला प्राणी भी तो चाहिए, जिसे कोई लालच देकर फुसला न सके, और जो विश्वासघाती भी न हो। आख़िर मैं समस्त पार्थिव संपदा का स्वामी हूँ न, मुझे दस ठौर जाना होगा, सोना और आराम करना होगा। सब कुछ कहाँ-कहाँ निगरानी करता रहूँगा। हाँ, वह प्राणी ऐसा हो, जिसका अधिक खर्च न हो।"

ब्रह्मदेव ने प्रशंसा की दृष्टि से मानव को देखा, और कहा—"आयुष्मन्, देखता हूँ, तुम खूब बुद्धिमान् हो। ठहरो, मैं एक ऐसा ही प्राणी बनाए देता हूँ।" यह कहकर उन्होंने इधर-उधर से विभूतियों की रद्दी कतरन बटोरकर आनन् फ़ानन् एक कुत्ते की मूर्ति बना दी, और कहा—"देख भाई कुत्ते, तुम्हारा स्वामी यह आयुष्मान् मानव है। इसके सामान की रात-दिन चौकसी रखना, मैं तुम्हें चौकन्नी नींद देता हूँ, और तुम्हारी सूँघने की शक्ति भी अमोघ बनाए देता हूँ। परंतु याद रक्खो, तुम्हें सदा इस आयुष्मान् के परिवार के जूठे टुकड़े खाने पड़ेंगे। गाली-फटकार खानी पड़ेगी। यह चाहे, तो तुम्हें बाँध भी रख सकता है। हाँ, तुम चाहो, तो गंदगी भर-पेट खा सकते हो। जाओ, मैं तुम्हें चालीस साल की आयु देता हूँ।"

कुत्ते ने दुम हिला-हिलाकर और कायँ-कायँ करके, ब्रह्मदेव की ख़ुशामद करके कहा—"पितामह! यह तो आपने जीते-जी मुझे चालीस साल तक महारौरव नरक में डाला। कर्म-विपाक में मैं क्या कह सकता हूँ, परंतु मेरी यह आयु की अवधि कम कर दीजिए प्रभो!"

ब्रह्मदेव को दया आ गई। उन्होंने गधे की भाँति उसकी आयु भी आधी काटकर फेंकते हुए कहा—"ले, सिर्फ़ बीस बरस का आयुर्भोग ले जा।"

कुत्ता ख़ुश हो गया। मानव-मूर्ति ने उछलकर वह कटी हुई आयु उठा ली, और विनयावनत होकर ब्रह्मदेव से कहा—"पितामह! यह आयुर्भोग मुझे दे दीजिए। मेरे लिये मेरा आयुर्भोग बहुत ही कम है।"

ब्रह्मदेव ने माथे में बल डालकर कहा—"आयुष्मन्, तेरी बुद्धि में संतोष बहुत कम है! ले जा इसे भी, अब तू अस्सी वर्ष का हो गया। पर ठहर, अभी तुझे एक प्राणी और दूँगा। यह तेरे सौभाग्य का चिह्न होगा, और लक्ष्मी का वाहन, तू लक्ष्मी का पति है, और यह प्रच्छन्न भाव से उसका वाहन सावधान, तू इससे घृणा करेगा, पर यदि यह जब कभी तेरे सिर पर बैठ जायगा, तू राज्य का स्वामी हो जायगा।"

मानव ने प्रसन्नता से तालियाँ बजाकर कहा—"दयालु पितामह, वह प्राणी चाहे भी जैसा घृणास्पद हो, मैं उसे सिर पर बैठाने को सदैव इच्छुक रहूँगा।"

ब्रह्मदेव ने अपने शरीर से मैल लेकर एक उल्लू की मूर्ति बनाकर कहा—"सावधान होकर सुनो। तुम्हारा नाम उल्लू है। दिन में लक्ष्मी के सौंदर्य को तुम न देख सकोगे। कहीं खँडहरों में आँखें बंद किए, लटके पड़े रहना। और, रात में इधर-उधर दौड़-धूप करके उदर-पूर्ति करना। इस आयुष्मान् के भाग्योदय की प्रतीक्षा करते रहना। तुम लक्ष्मी के वाहन बनाए गए हो। जाओ, चालीस वर्ष की आयु मैं तुम्हें देता हूँ।"

उल्लू ने ऐंठकर कहा—"पितामह, यह सरासर बेइंसाफ़ी है। मैं दिन में न देख सकूँगा, तो मेरा तो जन्म ही व्यर्थ गया!"

ब्रह्मा बोले—"अरे मूर्ख, यह प्रबंध तो इसीलिये किया है, जिससे तू लक्ष्मी पर मोहित न हो।"

उल्लू ने कहा—"तो पितामह! मेरा आयुर्भोग कुछ कम कर दीजिए।"

पितामह ने आधी आयु काटकर फेंक दी, और ग़ुस्से से कहा—"जा, भाग। तुझे बीस वर्ष की आयु दी।"

मानव-मूर्ति ने झपटकर उसे भी उठा लिया, और ब्रह्मदेव के चरणों में गिरकर कहा—"प्रभो! यह भी मुझे दे दीजिए। अब मेरा आयुर्भोग पूरे सौ वर्ष का हो गया।"

ब्रह्मदेव ने उल्लू की कटी आयु भी मानव को दे दी। और, सबको मृत्युलोक में जन्म लेने की आज्ञा दी।

(२)

दिल्ली के रायबहादुर गोपीकृष्ण के घर बड़ी धूम थी। साठ वर्ष की उम्र में चौथी पत्नी से आज एकमात्र पुत्र-रत्न का जन्म हुआ है। बधाइयाँ बज रही हैं! भेंट-तोहफ़े आ रहे हैं। दावत का बड़ा भारी सरंजाम हुआ है। गवर्नर और वाइसराय भी उसमें हाज़िर हुए हैं। मनोरंजन के भाँति-भाँति के आयोजन किए जा रहे हैं। दान पाकर स्थानीय संस्थाएँ और ब्राह्मण-देवता निहाल हो गए।

पुत्र चंद्रमा की किरण के साथ बढ़ने लगा। कैसा सुंदर और कैसा सजीला बेटा! जिसने देखा, आँखें चौंधिया गईं। घर में धन-संपत्ति चौगुनी हो गई। स्कूल की कक्षाएँ फाँदकर झटपट महाविद्वान् हो गया। ब्याह हुआ, हीरे की कनी-सी बहू आई। बहू-बेटी ने घर-बार सँभाला। रायबहादुर साहब ने अवसर पाकर आँखें मीचीं, तो आयुष्मान् ने राजा-प्रजा, सबके मन में ऐसी जगह की कि लोग रायबहादुर साहब को भूल गए। आयुष्मान् को राजाबहादुर का ख़िताब मिला। उनकी मिलनसारी, हँसमुख स्वभाव, सादगी और उदारता ने चार चाँद लगा दिए।

एक दिन राजाबहादुर जमना-स्नान कर लौट रहे थे। मार्ग में ब्रह्मदेव से भेंट हो गई। ब्रह्मदेव को देखते ही आयुष्मान् ने विनयावनत हो प्रणाम किया। ब्रह्मदेव ने हँसकर कहा—"अरे आयुष्मान्, तुम हो! कहो, कैसी कट रही है?"

आयुष्मान् ने बद्धांजलि होकर कहा—"पितामह, आपकी सब भाँति दया है। सब ओर आनंद-ही-आनंद है। मिट्टी छूता हूँ, सोना हो जाता है। राजदरबार में धाक जमी है। प्रजावर्ग का सिरमौर बना हूँ। किसकी मजाल है, जो मेरी बात टुलखे।"

ब्रह्मदेव सुनकर हँस पड़े। उन्होंने कहा—"भोगे जा आयुष्मान्, यह तेरा आयुर्भोग है।" और, वह अंतर्धान हो गए।

राजाबहादुर ख़ूब फले-फूले, पुत्र हुए, पुत्रियाँ हुईं। पौत्र-पौत्रियाँ हुईं। सब एक-से-एक बढ़कर। पुत्रों ने अत्यंत योग्य, समर्थ होते ही सब कार-बार सँभाल लिया। बराबर योग देने लगे। रोज़गार के नए तरीक़े निकाले। पुत्रों में पिता से विवाद होने लगा। पुत्रों ने कहा—"पिताजी, यह नया युग है, हमें नए ढंग से काम करने दीजिए। आप अब चालीस वर्ष के हुए। आपकी कृपा से हम पढ़-लिखकर समर्थ हुए। अब आप आनंद से घर में बैठ भगवद्भजन कीजिए। कार-बार हम सब सँभाल लेंगे।"

आयुष्मान् ने कोठी जाना छोड़ दिया। वह महल की बैठक में बैठे रहते। पौत्र-पौत्रियाँ उन्हें घेरे रहतीं। एक पौत्र ने कहा—"दादाजी, घोड़ा बनिए! मैं सवारी गाँठूँगा।" उसने दादाजी को औंधा करके सवारी गाँठी। दूसरे ने कहा—"इस घोड़े पर मैं चढ़ूँगा।" वह भी चढ़ बैठा। पोती ने रूठकर कहा—"दादाजी, हमें अभी मेला दिखाने ले चलो, वरना मैं तुमसे कभी न बोलूँगी।" आयुष्मान् आनंद-विभोर हुए। एक पोते को इस गोद में लादा, दूसरे को उस गोद में, पोती को कंधे पर बिठाया—मेला दिखाने चले। भीतर से बहूजी ने कहलाया—"दादाजी, बाज़ार जाते हैं, तो ज़रा सब्ज़ी-फल अच्छे देखकर ले आना। ये पाजी नौकर तो आधा दाम जेब में डालते हैं।" आयुष्मान् दादा ने सब्ज़ी का झोला भी हाथ में लटका लिया।

आयुष्मान् दादा तरकारी से भरा झोला बग़ल में लटकाए, दोनो पोतों को बग़ल में दबाए, पोती को कंधे पर बिठाए जब लौट रहे थे, तो मार्ग में ब्रह्माजी मिल गए। बोले—"अरे आयुष्मान्, तुम हो! कहो, कैसे कटती है?"

आयुष्मान् ने हँसकर, ब्रह्मदेव को प्रणाम करके कहा—"पितामह, देख लीजिए, यह हालत है!"

ब्रह्मदेव हँसे, और बोले—"अरे आयुष्मान्!

यह वह गधे की आयु है, जिसे तूने उठा लिया था; तेरी आयु तो चालीस पर ख़त्म हो गई थी, अब भोग इसे।" इतना कह ब्रह्माजी अंतर्धान हुए, और आयुष्मान् दादा कुछ सोच-विचार करते हुए घर लौटे।

(३)

आयुष्मान् दादा अब साठ को पार कर चले थे। पौरुष थक गया था। इंद्रियाँ शिथिल हो चुकीं थीं। इस उम्र में मस्तिष्क अधिक क्रियाशील हो जाता है, और मस्तिष्क की प्रगति के अनुसार शारीरिक प्रगति नहीं रहती। इससे मन चंचल, क्रुद्ध और उतावला रहता है। यही हाल आयुष्मान् दादा का भी था। अब पोते-पोतियों को वह ज़्यादा लाड़-प्यार नहीं करते थे, फटकार देते थे, एकाध थपकी जमा देते थे। बाहर निकलना भी कम कर दिया था। कहीं आने-जाने और मिलने-मिलाने की उत्सुकता भी कम हो गई थी। वह अधिकतर अपने कमरे में पड़े रहते थे। नींद कम हो गई थी। सुबह बहुत जल्द उठते और बेसुरे राग में अधूरे याद भजन अलापते थे। बच्चे उन्हें कौतूहल की चीज़ समझते। कभी उनकी चीज़ छिपा देते, कभी दूसरी दिल्लगी करते। आयुष्मान् दादा कभी चिढ़ जाते, और कभी ख़ुश हो जाते। खाने-पीने की चीज़ों में उनका अनुराग बढ़ चला था। वह सबसे प्रथम खाना चाहते थे। पर घर के लोग उनकी उपेक्षा करने लगे थे। नौकर-चाकर भी उनसे कतराते थे। कुछ तो उनसे धृष्टता कर बैठते थे। बहू-बेटियाँ प्रायः बाहर जातीं—ब्याह-शादी-सिनेमा आदि, तो कहतीं—"बाबाजी, यह तालियों का गुच्छा सँभालिए, और ज़रा कुत्ते-बिल्ली से होशियार रहना। हम लोग जा रहे हैं।" लाठी अब उनकी एकमात्र सखी थी। वह रात-दिन पास रहती थी। रात को ज़रा खटका हुआ, और चौंककर चौकीदार को आवाज़ दी। एक दिन आधी रात के समय ब्रह्मदेव उनके सिरहाने आ खड़े हुए। आयुष्मान् दादा ने चौंककर कहा—"कौन ?"

ब्रह्मदेव ने हँसकर कहा—"हम हैं। आयुष्मान्! कहो, कैसी कट रही है ?"

आयुष्मान् दादा ने धीमे स्वर से कहा—"देख लीजिए पितामह !"

पितामह बोले—"यह उस कुत्ते की आयु है। भोगो इसे।" और, वह अंतर्धान हो गए।

(४)

धीरे-धीरे प्राण-शक्ति कम होती गई, इंद्रियाँ जवाब देती गईं। आयुष्मान् दादा अस्सी से भी ऊपर पहुँच चुके थे। आँखों से अब दिखाई न देता था। उनमें कीचड़ भरा रहता था। स्वर बेतुका हो चुका था। कान भी बहरे हो गए थे। पेशाब की बीमारी लग गई थी, पाँच-पाँच मिनट में मूतते थे। पाख़ाने का हिसाब भी ऐसा ही था। चारपाई के निकट मल-मूत्र के पात्र रख दिए गए थे। वे समय पर साफ़ नहीं हो पाते थे। दुर्गंध और गंदगी से लोगों को उनके पास आते घृणा होती थी। वस्त्र भी गंदे रहते थे। खाँसी और कफ जी चाहे जहाँ थूक देते थे। घर की बहू-बेटियाँ परेशान रहती थीं। उनके मरने पर कारज-उत्सव करने की प्रायः चरचा हुआ करती थी। आयुष्मान् उसे सुनकर प्रायः आँसू भर लाते थे। इतने पर भी यह बात थी कि अभी उन्होंने बिल नहीं किया था, न अपने निजी ख़ज़ाने की कुंजी-ताली किसी को दी थी। बेटे-पोते और बहू-पतोहू, उनकी प्राप्ति की आशा में, मन की घृणा मन में दबाकर, उनकी सेवा करतीं, उन्हें प्रसन्न करने की कोशिश करतीं। कोई उनके घृणास्पद मैले तलुओं को सहलाती, कोई गंजी चाँद पर तेल मलती। कोई उनके बलग़म और मल-मूत्र के पात्र साफ़ करती।

एक दिन प्रातः समय ब्रह्मदेव आ हाज़िर हुए।

उन्होंने उनके कान के पास मुँह लगाकर कहा—"आयुष्मान्, कैसी कट रही है ?"

आयुष्मान् ने आँखों में आँसू भरकर, गद्गद कंठ से कहा—"आह पितामह, अब नहीं कटती, अब इसका फंद काटिए।"

पितामह हँसे नहीं। करुण दृष्टि से उनकी ओर ताककर बोले—"आयुष्मान्! यह तुम अपनी ही अतृप्ति का फल भोग रहे हो, यह तो उल्लू की आयु है, जो तुमने इतने उत्साह से उठा ली थी, अब तो भोगनी ही पड़ेगी। भोगो, अब अधिक दिन नहीं कि तुम्हारी आत्मा का इस बंधन से उद्धार होगा।"

ब्रह्माजी अंतर्धान हुए। और, एक दिन पूरे सौ वर्ष की आयु भोगकर आयुष्मान् दादा ने अपने नश्वर शरीर को त्यागा। उस दिन उस महामहिमामय महल में फिर वैसी ही धूम मची, जैसी उनके जन्म-काल में, सौ वर्ष पूर्व, मची थी। एक साधारण कमरे में आयुष्मान् का निर्जीव शरीर पड़ा था, और दूसरे कमरों में नगर के गण्य-मान्य लोगों का समारोह था। विमान बनाया जा रहा था, और दुशाले बिछाए जा रहे थे। सोने-चाँदी के फूल उसमें खोंसे गए थे। इत्र छिड़का जा रहा था। लोग भाँति-भाँति की बातें कर रहे थे। कोई कहता था—"भारी भाग्यवान् थे।" दूसरे ने कहा—"क्या कहने हैं, ऐसे पुण्यात्मा क्या घर-घर होते हैं ? कितनी उम्र पाई ! इस कलिकाल में इतनी उम्र भला किसे प्राप्त होती है !!"

कुछ लोग कह रहे थे—"पूर्व जन्म के पुण्य से ही ऐसे शरीर उत्पन्न होते हैं।"

चिता धायँ-धायँ जल रही थी, और आयुष्मान् का आयुर्भोग पूर्ण हो रहा था।

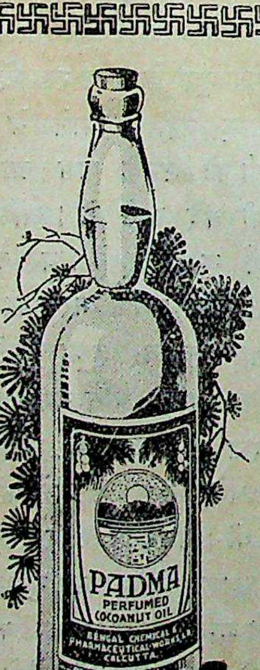

PADMA
PERFUMED
COCOANUT OIL
BENGAL CHEMICAL & PHARMACEUTICAL WORKS LTD
CALCUTTA
पद्मा
सुगंधित
गरी का तेल
चमकदार, ओजमय
ख़ूबसूरत बालों
के लिये
बंगाल केमिकल वर्क्स
कलकत्ता :: बंबई

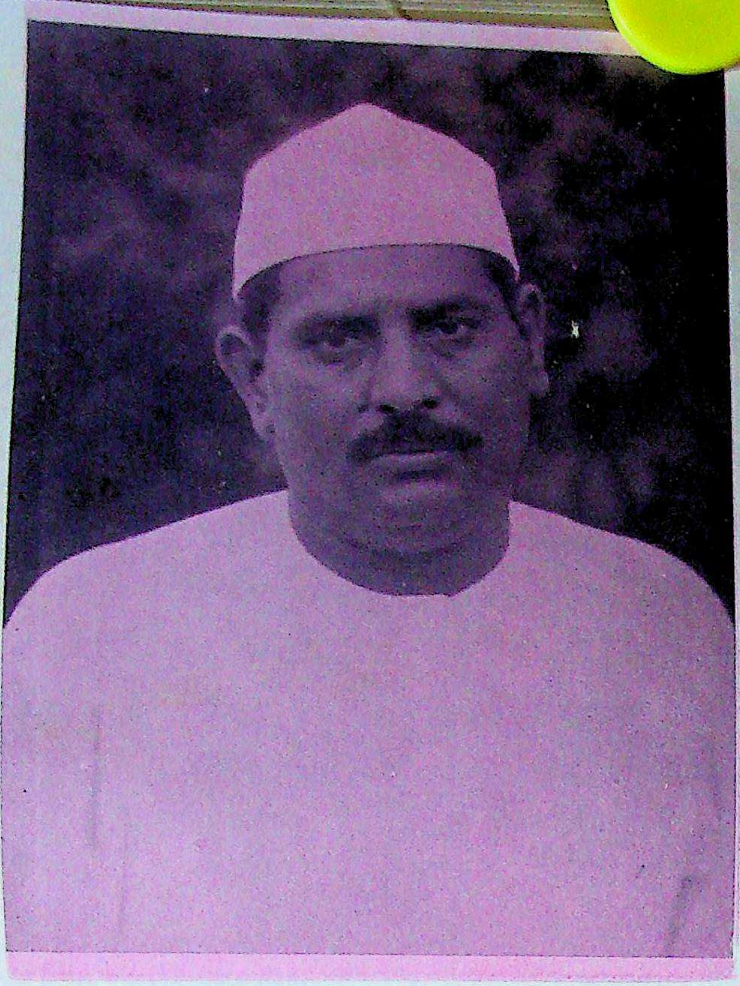

विद्वद्वर पं० प्रजापतिजी मिश्र

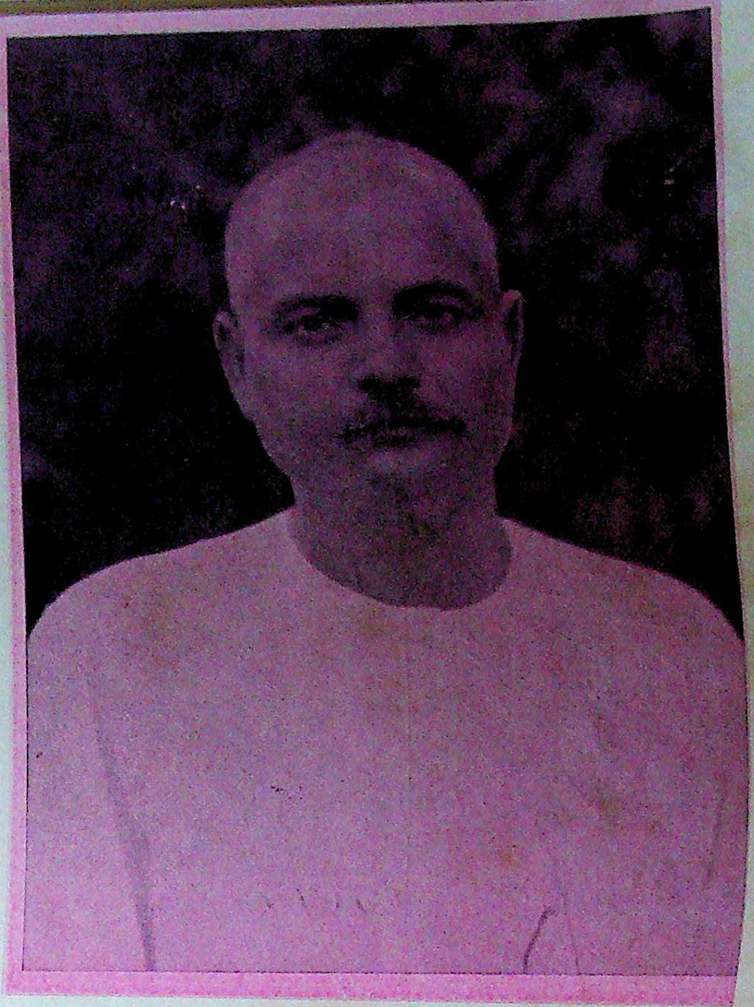

विद्वद्वर पं० गिरीशजी तिवारी

[बिहार-मंत्रिमंडल ने बिहार-रत्न श्रीपं० प्रजापतिजी मिश्र और श्रीपं० गिरीशजी तिवारी को बिहार के गाँव-सुधार का भार सौंपा है, इन्हें गाँव-सुधार-ऑफ़िसर नियुक्त किया है। आप लोग बिहार के विश्वसनीय और तपस्वी नेता हैं। आशा है, दोनो महानुभावों के कार्य-काल में गाँव-सुधार का कार्य, पूर्ण सहयोग के साथ, इतनी तेज़ी के साथ होगा, जितनी और किसी भी प्रांत में नहीं दिखलाई दे रही है।]

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

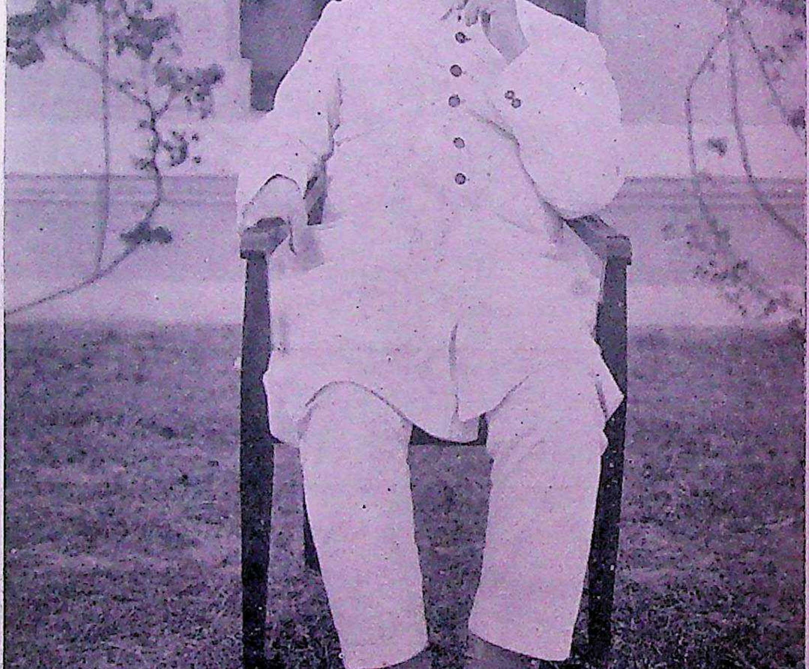

राष्ट्र-गौरव माननीय डॉक्टर सैयद महमूद

[आप बिहार के शिक्षा तथा उद्योग-विभाग के माननीय मंत्री हैं । आप साक्षरता के सबसे पहले आंदोलक हैं । बिहार के निरक्षर भाइयों को साक्षर बनाने की योजना में जिस समय आप तल्लीन थे, उसी समय का यह चित्र है । आपके हृदय में कलाकारों और पत्रकारों के लिये बहुत ऊँचा स्थान रहता है । आपकी विस्तृत जीवनी सुधा की आगामी किसी संख्या में दी जायगी ।]

तुलसीदास का पुनर्युग और उसके कुछ गुण-दोष

[श्रीराजबहादुर लमगोड़ा, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

भगवान् राम को धन्यवाद है कि आज वह समय आ गया है, जब हम हिंदी के नवीन युग को तुलसीदास का पुनर्युग कह सकते हैं। २५-३० वर्ष पहले जब हमने हिंदी-भाषा के पक्ष में आवाज़ उठाई थी, तब प्रांतीय कौंसिल तक में लोग उसे ग्रामीण भाषा कहने का साहस करते थे। मुझे तो मेरे मित्र 'तुलसी का मजनूँ' (Tulsi-enthusiast) कहकर मेरा मख़ौल उड़ाया करते थे। हाँ, इसमें संदेह नहीं कि श्रीकाशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने अपना काम बड़े उत्साह से शुरू कर दिया था, और मि० ग्राउस तथा सर जॉर्ज ग्रियर्सन-जैसे उदारमना अँगरेज़ तुलसीजी के कमाल के क़ायल हो चुके थे। परंतु दूसरी ओर हमारे ही देश में एक समूह ऐसा था, जिसके धर्म-ग्रंथ में तुलसी-कृत रामायण की गणना ऐसी पुस्तकों में हुई थी, जिनका पढ़ना मना है।

आज परिस्थिति और है। चारो ओर तुलसीदासजी की धूम है। पत्रिकाएँ तुलसी-संवत् लिखती हैं, और यदि किसी पत्रिका में बहुत दिनों तक कोई तुलसी-संबंधी लेख न निकले, तो कदाचित् उसकी प्रामाणिकता में ही संदेह होने लगेगा। आए दिन तुलसी-संबंधी पुस्तकों, आलोचनाओं और लेखों की वह भरमार है कि कुछ कहते नहीं बनता। रामायण के इतने संस्करण और इतनी टीकाएँ सामने हैं, जिनका शुमार मुमकिन नहीं। किसी हिंदी-प्रेस के पास काफ़ी काम न होने पर और न सही, तो वह कम-से-कम रामायण का एक-आध गुटका-संस्करण निकालकर ही अपना काम चला लेता है। लाला हरदयाल-जैसे क्रांतिकारी राजनीतिज्ञ भी कहते हैं कि अगर प्राचीन हिंदी-भाषा के साहित्य में कोई पुस्तक राष्ट्रीय पुस्तक कही जाने लायक़ है, तो वह तुलसी-कृत रामायण ही है। जैसा कार्लाइल ने कहा था कि हम ब्रिटिश साम्राज्य भले ही दे दें, पर हमें शेक्सपियर का देना मंज़ूर नहीं, कुछ वैसा ही विचार लालाजी ने भी तुलसी के विषय में व्यक्त किया है, और आज श्रीरामनरेशजी त्रिपाठी ने अपनी रची रामायणी टीका में वैसा ही कहा है। म० गांधी का तो प्रसिद्ध कथन ही है कि उन्हें किसी अन्य वस्तु से उतना उत्साह नहीं मिलता, जितना गीता और तुलसी-कृत रामायण के गान से। उनका यह भी कथन है कि हिंदू-धर्म की ये ही दो पुस्तकें हैं, जिन्हें वह जानते हैं। भारतीय चित्रकला के आचार्य श्रीअवनींद्रनाथ टैगोर भी रामायण का दैनिक पाठ करते और कहते हैं कि इसी एक पुस्तक ने समूचे भारत को स्वर-दान दिया है। हिंदी-भाषा के सर्वोत्तम, वयोवृद्ध आचार्य श्रीमहावीरप्रसादजी द्विवेदी अपने १३-४-३७ के कृपा-पत्र में लिखते हैं—"तुलसी-कृत रामायण और श्रीमद्भागवत मेरे जीवनाधार ग्रंथ हैं।" द्विवेदीजी का हृदय इतना स्वच्छ एवं भावुक है कि वह 'कल्याण' में प्रकाशित 'रामायण में करुण-रस'-शीर्षकवाले मेरे अंतिम लेख के बारे में लिखते हैं कि उसे पढ़ते हुए 'मैं कई जगह रोया'। स्व० गणेशशंकरजी विद्यार्थी ठीक कहा करते थे—"द्विवेदीजी अपने प्रोत्साहन द्वारा लेखक बनाया करते हैं। सन् २७ और २८ में उन्होंने मुझे भी प्रोत्साहित करनेवाले पत्र लिखे, जिनके आवश्यक

अंश कई वर्ष पूर्व 'माधुरी' में छप चुके हैं। इसके बाद उन्होंने एक बार स्वयं फ़तेहपुर आकर मुझे दर्शन देने की कृपा की, और उनके सदुपदेशों का यह परिणाम हुआ कि आज रामायण पर मेरी एक के बजाय तीन लेख-मालाएँ 'माधुरी', 'कल्याण' और 'चाँद' में प्रकाशित हो रही हैं, और चौथी लेखमाला 'रामायण में हास्य-रस'-शीर्षक लिखी जा रही है। इसके अतिरिक्त कई फुटकल लेख भी छप चुके हैं। उन्होंने उसी उत्साह-प्रद शैली में अपने उपर्युक्त पत्र में पुनः लिखने की कृपा की है—

"आप रामायण के परमोत्कृष्ट पारखी हैं, अतः धन्य हैं!"

यह तो अपने देश के विद्वानों की राय रही, अब देखिए, अन्य देश के विद्वान् क्या लिखते हैं। इँगलैंड के एक युनिवर्सिटी-प्रोफ़ेसर ने मिस मेओ के आक्षेप का उत्तर देते हुए एक लेख लिखा था, जिसका अवतरण लाला लाजपतराय-कृत 'दुःखी भारत'(Unhappy India)-नामक पुस्तक में दिया गया है। प्रोफ़ेसर साहब का कहना है कि मिस मेओ ने न-जाने कहाँ का ज़िक्र करते हुए कहा है कि वहाँ की जनता साहित्यिक तथा नाटकीय कलाओं से अनभिज्ञ है। हमें तो उत्तरी भारत में, जाड़े के शुरू में, तुलसी-कृत रामायण के दृश्य गाँव-गाँव में खेले जाते हुए दिखलाई देते हैं, और तब जनता के उत्साह की सीमा नहीं रहती। प्रोफ़ेसर साहब ने रामायण को एक असाधारण नैतिक पुस्तक (singularly moral book) बताया है। 'एक अँगरेज़ द्वारा भारत-माता की मान-रक्षा' (An Englishman defends mother India)-नामक पुस्तक के रचयिता अर्नेस्टउड महोदय लिखते हैं कि साहित्यिक तुलना में तुलसी-कृत रामायण लातीनी और यूनानी-भाषाओं के माननीय ग्रंथों से बेहतर ठहरती है*। उपर्युक्त चारो लेख-मालाओं में मैंने भी यही उद्योग किया है कि विश्व-साहित्य में तुलसीजी का स्थान दृढ़ एवं निश्चित हो जाय। मैं गुरुकुल-काँगड़ी की 'वैदिक मैगज़ीन' नाम्नी अँगरेज़ी-पत्रिका तथा उसके सुयोग्य संपादक आचार्य रामदेवजी का ऋणी हूँ कि उन्होंने मुझे यह मौक़ा दिया कि मैं ग्रियर्सन महोदय की उस धारणा का उत्तर दे सकूँ, जिसमें उन्होंने तुलसीजी को एशिया के छ बड़े लेखकों में स्थान दिया है, मानो 'एशियावासी-पृथक्करण-विधान' (Asiatic segregation act) साहित्य-संसार पर भी लागू है। परंतु शोक है कि वह पत्रिका ही बंद हो गई! उस पत्रिका की उस उदारता से एक बात और भी साबित होती है कि हमारे आर्यसमाजी भाई भी कवि के नाते तुलसीजी का आदर अवश्य करते हैं। और, अब तो आर्यसमाज के उपदेशक तथा भजनीक नीति की बातें कहते हुए तुलसी-कृत रामायण का पर्याप्त आश्रय लेते हैं। हाँ, अफ़सरों, अँगरेज़ी-पढ़े भारतीयों और अँगरेज़ी-पत्र-पत्रिकाओं की बात अब भी शोचनीय है। पूज्य पत्रकार श्रीसच्चिदानंद सिनहाजी ने मेरे रामायण-संबंधी अँगरेज़ी-लेखों को 'हिंदुस्तान रिव्यू' में छापने के लिये दो बार स्वीकृत किया, पर छपना तो दरकिनार, कितनी ही याददिहानियों के बावजूद लेख तक वापस न किए। 'लीडर' और 'कल्पतरु' ने तो वैसे लेखों को वैसे ही लौटा दिया।

जिन महानुभावों ने इस नवयुग को वापस लाने में उद्योग किया है, उनके संबंध में कुछ-न-कुछ लिखना आवश्यक है। पर यह स्मरण रहे कि मुझे स्वयं पढ़ने का अवकाश कम रहता है। अतः यदि किसी महानुभाव का नाम रह जाय, तो उसे मेरी अज्ञता ही समझनी चाहिए। फिर एक ही लेख में

---

*Weighs favourable with the classic of Latin and Greek.

सबका उल्लेख भी तो नहीं हो सकता। सबसे अधिक कठिन परिश्रम का काम मुं० शीतलासहाय ने किया है। पं० रामनरेशजी त्रिपाठी ठीक ही लिखते हैं—"मुंशीजी सबसे अधिक खोज के साथ टीका करनेवाले हैं।" मुझे अपने एक मित्र की ज़बानी मालूम हुआ कि टीका लिखते समय मुंशीजी के सामने रामायण के छपे और बेछपे १००-१५० संस्करण रहते थे। हमारा मस्तक ऐसे परिश्रम से खोज करनेवाले विद्वान् के सामने आप-ही-आप झुक जाता है, और हमें हर्ष होता है कि हमारे देश में भी ऐसे खोजी विद्वान् मौजूद हैं। इनके बाद हमारे धन्यवाद के पात्र रायबहादुर लाला श्यामसुंदरदासजी हैं, जिन्हें नागरी-प्रचारिणी सभा का प्राण कहना चाहिए। पहले-पहल इसी सभा की संरक्षकता में यह उद्योग हुआ कि तुलसीजी की प्रामाणिक प्रतियों से मुक़ाबिला करके रामायण का एक शुद्ध संस्करण निकाला जाय। मुझे लालाजी की 'तुलसीदास' नाम्नी पुस्तक का 'कला'वाला परिच्छेद बहुत पसंद आया। मतभेद होना स्वाभाविक है, जिसे मैंने कहीं-कहीं प्रकट भी किया है। परंतु केवल मतभेद के कारण ऐसे विद्वान् लेखक की खोज-भरी पुस्तक की सराहना न करना हठधर्मी होगी। श्रीचंद्रमौलिजी शुक्ल ने तो अपनी एक छोटी-सी पुस्तक में मानो गागर में सागर ही भर दिया है। पिंगल-शास्त्र के सारे रसों, भावों, अलंकारों इत्यादि की मिसालें रामायण से खोज-खोजकर लिख दी हैं। पुस्तक पढ़ने के बाद तुलसीदासजी के काव्य-चमत्कार का एक अनोखा और नया अनुभव होता है। श्रीरणबहादुरसिंहजी के परिश्रम से रायबरेली-ज़िले से एक पुस्तक प्रकाशित हुई है, जिसमें तुलसीजी-कृत दोहों-चौपाइयों के मुक़ाबिले के मंत्र-श्लोक संस्कृत-पुस्तकों से छाँट-छाँटकर लिख दिए गए हैं। परिश्रम सराहनीय है। कारण, इससे तुलसी के उस दावे की पुष्टि होती है, जो उन्होंने रामायण की 'आरती' में किया है—

> चारिउ वेद, पुरान अष्टदस,
> छहउ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।

परंतु यहाँ एक चेतावनी भी ज़रूरी है। लोग कहीं यह न समझ बैठें कि तुलसीजी का प्रत्येक पद केवल अनुवाद-मात्र है। वस्तुतः बहुधा विचार-साम्य ही है। क्या यह कमाल की बात नहीं कि एक ग्रंथ के अंदर तुलसीजी ने सारी आर्य-सभ्यता का सार रख दिया है? जहाँ अनुवाद है, वहाँ भी वैसा मालूम नहीं होता। टैगोरजी ने ठीक ही कहा है कि जब कोई अच्छा लेखक विचारों को किसी से उधार लेता है, तो उन्हें न सिर्फ़ सूद-समेत लौटा देता है, बल्कि अपने लिये भी कुछ कीर्ति कमा लेता है। इसीलिये चंद्रमौलिजी इसे तुलसी-काव्य का कमाल कहते हैं कि अनुवाद और जोड़ दिखाई नहीं पड़ता। सीधे-सादे टीकाकारों में श्रीरामेश्वरजी भट्ट का स्थान भी अपने ढंग का अनोखा ही है। उन्होंने खींच-तान या तोड़-मरोड़ से काम नहीं लिया, अतः उनकी टीका अब भी सर्वप्रिय है। यहीं रामनरेशजी त्रिपाठी की रची टीका का भी ज़िक्र कर देना ज़रूरी है। अभी कुछ ही दिन हुए, मैंने उसका पढ़ना प्रारंभ किया है, परंतु फिर भी त्रिपाठीजी के परिश्रम की सराहना किए बिना रहा नहीं जा सकता। जब मैं स्वयं राजापुर गया था, और वहाँ की प्रसिद्ध हस्त-लिखित रामायण की पोथी देखी थी, तो मुझे ज्ञात हुआ था कि खड़ी बोली के प्रेमियों ने रामायण के नवीन संस्करणों में शब्दोचारण तथा मात्राओं को बहुत कुछ बदल दिया है। तुलसीदासजी ने शब्दों को उसी रूप में रक्खा था, जिस रूप में वे उनके वक़्त में सर्वसाधारण में प्रचलित थे। बात भी यही है कि जीवित भाषा की समानता उस पहाड़ी नदी से होती है, जिसके प्रवाह में पड़कर

नुकीले, अनगढ़े पत्थर सुडौल बनते चले जाते हैं। इसीलिये मुझे तो यह अच्छा नहीं लगता कि शब्दों को उनके पुराने संस्कृत या अरबी-फ़ारसी-रूपों में खवामखवाह रक्खा जाय। मात्राओं में भी 'अवधी' की कोमलता रखनेवाले 'उ' और 'इ' की मात्राओं को खवामखवाह 'अ' की खड़ी और 'ई' की गहरी मात्रा का रूप देना ठीक नहीं। त्रिपाठीजी ने चेष्टा की है कि शब्दों को उसी रूप में रक्खें, जैसा तुलसीजी ने किया है, और यह बात सर्वथा सराहनीय है। लेख के इस अंश की समाप्ति जौनपुर-निवासी श्रीमाताप्रसादजी का नाम लिए विना नहीं की जा सकती। आपकी तुलसी-जीवनी-संबंधी आदि ऐतिहासिक खोजें सर्वथा सराहनीय हैं। मैं स्वयं इतिहास का विद्यार्थी नहीं, अतः यह तो नहीं कह सकता कि वे खोजें कहाँ तक सफल हुई हैं, पर उन्हें अपनी शैली का पथ-प्रदर्शक अवश्य कहूँगा।

इस युग के थोड़े गुण-दोषों का ज़िक्र तो ऊपर हो ही चुका, पर मैं स्वयं दार्शनिक शैली का लेखक नहीं, इसलिये पाठकों को सारे गुण-दोष एक स्थान पर, सूची-बद्ध रूप में, पाने की आशा न रख हंसवत् नीर-क्षीर-पृथक्करण का काम करना होगा। इस युग का विशेष गुण मुझे यही दिखाई देता है कि तुलसी-कृत रामायण न केवल धार्मिक तथा साहित्यिक ग्रंथ समझा जाता है, बल्कि उसके शब्दों और विचारों की ऐसी देख-रेख हो रही है कि उससे राजनीतिक, सामाजिक तथा ऐतिहासिक शिक्षा भी ली जाय। पर इसी के साथ एक दोष भी लगा हुआ है कि हर मनुष्य तुलसी के शब्दों को तोड़-मरोड़कर उनसे अपने विचारों की पुष्टि करना चाहता है। यहाँ रस्किन का कथन याद रखना चाहिए कि अध्ययन का आदर्श यही रहे कि हम लेखक के विचारों को समझें, न कि अपने विचार को लेखक के शब्दों में ठूँसने की कोशिश करें।

अब हमें शाब्दिक परख के विषय में कुछ अधिक लिखना है। कवि की उपमा एक ऐसे जौहरी से दी जा सकती है, जो शब्द-रूपी नगों को परख-परखकर जड़ाई और पच्चीकारी के कामों में लगाता है। यह बात और है कि अभ्यास या बुद्धि-चमत्कार के कारण उसे इस काम में देर न लगे। इसीलिये रस्किन-जैसे प्रसिद्ध आलोचक का कहना है कि किसी प्रामाणिक लेखक या कवि की रचना को केवल शब्दशः नहीं, प्रत्युत अक्षरशः पढ़ना चाहिए। इसीलिये अँगरेज़ी-भाषा में साहित्य के विद्वान् को 'अक्षर का मनुष्य' (man of letters) कहते हैं, 'पुस्तक का मनुष्य' (man of books) नहीं। आलोचक महोदय ने स्वयं मिल्टन के केवल १०-५ पदों की शाब्दिक व्याख्या की है, पर वैसा करते हुए पृष्ठ-के-पृष्ठ रँग दिए हैं। हकीम सुक़रात का कहना भी यही है कि शब्दों के न समझने तथा उनके दुरुपयोग से संसार में बड़ी-से-बड़ी भूलें होती हैं। इसीलिये मैं त्रिपाठीजी की इस धारणा से सहमत नहीं कि शाब्दिक व्याख्या क़ानूनी ढंग पर न की जाय। परंतु अच्छा हुआ कि त्रिपाठीजी स्वयं भी इस धारणा पर अधिक अमल नहीं करते, और उन्होंने बड़ी-बड़ी सुंदर शाब्दिक परखें की हैं। मैंने अपनी उस लेखमाला में, जिसके ५०-६० पृष्ठ श्रीकाशी-नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित तुलसी-ग्रंथावली के तीसरे भाग में उद्धृत किए गए हैं, इस बात को दिखा दिया है कि तुलसी-कृत रामायण की शाब्दिक व्याख्या से तुलसीजी का स्थान विश्व-साहित्य में कितना ऊँचा हो जाता है। वहाँ मैं बता चुका हूँ कि इस शाब्दिक परख से कविता की शब्द-शक्ति, चित्र-शक्ति और भाव-शक्ति कहाँ तक स्पष्ट हो जाती है। यदि कोई आलोचक या टीकाकार किसी प्रामाणिक लेखक या कवि के प्रत्येक शब्द की उपर्युक्त तीनो शक्तियों को सुस्पष्ट कर दे, तो हमें अप्रसन्न न होकर उसका कृतज्ञ ही होना चाहिए। हाँ,

यदि त्रिपाठीजी यह कहते कि हमें मुक़द्दमे में बहस करनेवाले वकील की तरह काम न करना चाहिए कि अपने पक्ष की पुष्टि में ख़्वामख़्वाह शब्दों की तोड़-मरोड़ करें, या शब्दार्थ में खींच-तान से काम लें, तो और बात है। इसीलिये मैंने 'सरस्वती' में प्रकाशित अपने आलोचना-संबंधी लेख में लिखा था कि हमें समालोचक बनने के लिये दृष्टि-साम्य का अभ्यस्त होना चाहिए, जिससे पक्षपात न हो, मानो हमें न्यायाधीश तथा क़ानूनी भाष्यकार बनना चाहिए।

मुझे अपने कॉलेज-जीवन की एक घटना कभी नहीं भूलती। अँगरेज़ी पढ़नेवाले लोग कविवर वर्ड्सवर्थ की उस कविता को भले प्रकार जानते हैं, जो उसने 'डैफ़ोडिल'-नामक फूलों पर लिखी है। जब मैं एम्० ए० में था, तो मेरे प्रोफ़ेसर पूज्य रेवेरेंड डरेंट साहब, जो बाद को लाहौर के लॉर्ड बिशप हो गए थे, मुझे पढ़ाया करते थे। जिस दिन उपर्युक्त कविता के पढ़ने का अवसर आया, तो संयोग-वश मैं भी उसी आलोचक की आलोचना पढ़कर पहुँचा, जिसकी आलोचना प्रोफ़ेसर साहब ने पढ़ी थी। आलोचक महोदय, जिनका नाम अब मुझे याद नहीं आता, उस समय विलायत में ज़िंदा थे। कवि ने एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया था, जो दुनिया से ऊबकर विरागी-सा हो गया था, और उस जलाशय के किनारे घूम रहा था, जहाँ वे पुष्प खिले हुए थे। पुष्प देखकर जो प्रभाव उस पर पड़ा, उसके प्रारंभिक अंश में कवि ने 'डैफ़ोडिल की भीड़ और श्रेणी' (a crowd, a host of daffodils) का ज़िक्र किया था। आलोचक महोदय ने लिखा था कि भीड़ का शब्द बहुत बुरा है, और उसने सारी कविता को बिगाड़ दिया है। प्रोफ़ेसर साहब आलोचक से सहमत थे। परंतु मैंने दोनो का विरोध किया, और अपने विचारों को नम्रता-पूर्वक पेश किया। मैंने यह बताने की चेष्टा की कि कवि ने ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया है, जिसका जी उचाट हो रहा है, और यही कारण है कि उचाट अवस्था में 'डैफ़ोडिल'-जैसे सुंदर पुष्पों का समूह भी उसे सिर्फ़ भीड़-सा दिखाई देता है। परंतु पुष्प विश्व-विमोहिनी प्रकृति-देवी के आयुध-समान हैं, जिनसे वह मानसिक संसार पर विजय प्राप्त करती है, मानो कामदेव की तरह "कुसुम-धनु-सायक लीन्हे" "सकल विश्व अपने वश" करती है। यहाँ भी उसका वार ख़ाली नहीं गया, और उस उचाट दिलवाले मनुष्य पर बिजली का-सा असर हुआ। उसने तुरंत 'भीड़'-शब्द को बदलकर 'श्रेणी'-शब्द का प्रयोग किया, मानो भीड़ की गड़बड़ के स्थान में श्रेणियों का नियमन दिखाई देने लगा। शनैः-शनैः उसका हृदय प्रफुल्लित हो उठा, जिसके संबंध में कवि ने लिखा है कि वह व्यक्ति स्वयं कुछ समय बाद उस दृश्य को याद करते हुए कहता है कि मेरा हृदय हर्ष से भर जाता और उन फूलों के साथ नाचने लगता है। मेरी इस व्याख्या से मेरे पूज्य प्रोफ़ेसरजी इतना ख़ुश हुए कि उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करते हुए यह कहा कि मैं इस व्याख्या को अपने मित्र आलोचक महोदय के पास भेज दूँगा कि आगामी संस्करण में यह दोष शेष न रहे। प्रोफ़ेसर साहब कहा करते थे कि १९वीं शताब्दी की अँगरेज़ी-कविता पर पूर्वी साहित्य का इतना असर है कि उसे बहुधा एक हिंदोस्तानी एक अँगरेज़ से ज़्यादा समझ सकता है। शाब्दिक व्याख्या की परख का यह एक सुंदर नमूना है। परंतु इसी एक बात के भरोसे यदि मैं अपने को आलोचकजी से बेहतर समझने लगूँ, या उनकी शान में कटु शब्दों का प्रयोग करूँ, तो क्या साहित्य-संसार मेरी सराहना करेगा? कदापि नहीं। इसीलिये त्रिपाठीजी से मेरा सविनय निवेदन है कि जहाँ हमारा किसी अन्य विद्वान् से मतभेद हो, वहाँ भी कटु शब्दों का प्रयोग न किया जाय। मैंने भी भट्टजी तथा बाबा

बैजनाथजी की टीकाओं से बहुत जगह मतभेद प्रकट किया है, परंतु उससे न मेरे हृदय में कभी उन विद्वानों के प्रति अनादर का भाव उत्पन्न हुआ, और न मैंने कोई अनादरवाले शब्द उनकी शान में लिखे। जो विद्वान् हमसे पहले प्रयत्न कर चुके हैं, वे हमारे पथ-प्रदर्शक हैं, और उनके ऋण को हमें कभी भूलना न चाहिए। इसी कारण उर्दू-साहित्य में 'नक़्शे-अव्वल' (पहली छाप) की क़द्र 'नक़्शे-सानी' (दूसरी छाप) से ज़्यादा होती है। ठीक भी यही है कि किसी काम को शुरू करना कठिन है, परंतु दूसरे के काम में पीछे सुधार कर लेना सरल।

त्रिपाठीजी की सुंदर शाब्दिक परखों का मैंने ऊपर उल्लेख किया है। कहीं-कहीं तो उन्होंने तुलसीजी की व्याख्या करने में संस्कृत-पदों का आश्रय लिया है। मसलन् वन-वास में भगवान् के चरणों का वर्णन करते हुए तुलसीजी ने 'कंटक कन लहे' लिखा है। 'कन' की व्याख्या करते हुए त्रिपाठीजी ने संस्कृत-मुहाविरे के सहारे पर 'कन' के मानी 'घट्टा' लिखे हैं। व्याख्या बड़ी सुंदर हो गई, और खोज सराहनीय है, यद्यपि मेरी अपनी राय अब भी यही है कि तुलसीजी शब्दों का प्रयोग प्रचलित अर्थों में ही करते थे, प्राचीन संस्कृत-अर्थों में नहीं। त्रिपाठीजी की बरसों की अथक मेहनत का नतीजा टीका-रूप में हमारे सामने है, और हम उन्हें धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकते। हाँ, एक बार हमारा उनसे फिर सविनय निवेदन है कि भूल सबसे होती है, इसलिये किसी के ख़िलाफ़ असभ्य शब्दों का प्रयोग वही कर सकता है, जिसे यह दावा हो कि मुझसे कभी भूल नहीं हो सकती। 'नसीम' लखनवी ने ठीक लिखा है—"गुड़ से जो मरे, तो ज़हर क्यों दो!" मैं सदा से वर्तमान कटाक्ष-पूर्ण, कटु शब्दोंवाली आलोचना के विरुद्ध रहा हूँ, और इस बारे में कई बार लिख भी चुका हूँ। बात यह है कि ऐसे वाद-विवाद से द्वेष बढ़ता है, क्योंकि दोनो ओर से कटु वाक्यों के प्रयोग का रूप उसी तरह बढ़ता जाता है, जैसे सुरसा और हनूमानजी का आकार, जिसके निमित्त तुलसीदासजी ने लिखा है—

जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा,
तासु द्विगुन कपि रूप दिखावा।

फिर भला निर्णय काहे को होने लगा, और हार कोई काहे को मानने लगा? कारण, वकालत की बहस की गुंजाइश तो हर जगह मौजूद रही है। सुरसा और हनूमानवाले प्रसंग में भी एक बड़े मर्म की बात विचारणीय है। हनूमानजी की विजय वहाँ भी होती है, जब वह नम्रता-पूर्वक बुद्धि का प्रयोग करते हैं। उसके निमित्त कवि कहता है—

अति लघु रूप पवन-सुत लीन्हा।

हनूमानजी इस चतुराई से सुरसा के मुँह में पैठ-कर बाहर आ जाते और उसे प्रणाम करते हैं। सुरसा को वास्तव में देवतों ने हनूमानजी की परीक्षा के लिये भेजा था। इसलिये उस परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही सुरसा ने हनूमानजी को इस बात का सार्टीफ़िकेट दिया था—

राम-काजु सब करिहहु तुम्ह बल-बुद्धि-निधान।

इसीलिये मेरी धारणा है कि सत्य के साथ शील को सदैव रखना चाहिए, और शील-पूर्ण शब्दों में ही सत्य का प्रकटीकरण होना चाहिए। और फिर पत्रिकाओं के लेखों की और बात है, और किसी प्रामाणिक ग्रंथ की टीकावाली भूमिका की और बात, जिसमें अधिक सावधानी की ज़रूरत है। यहाँ इतना और लिख देना चाहता हूँ कि त्रिपाठीजी के शब्द भी उतने कटु नहीं, जितने उनके उत्तर में लिखे गए उस लेख के शब्द, जो दिसंबर, ३६ की 'माधुरी' में 'लोचन मोरपंख जनु लेखा'-शीर्षक से लिखा गया है, और जिसमें कटुता की हद हो गई है!

(आगामी अंक में समाप्य)

दुराशा !

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

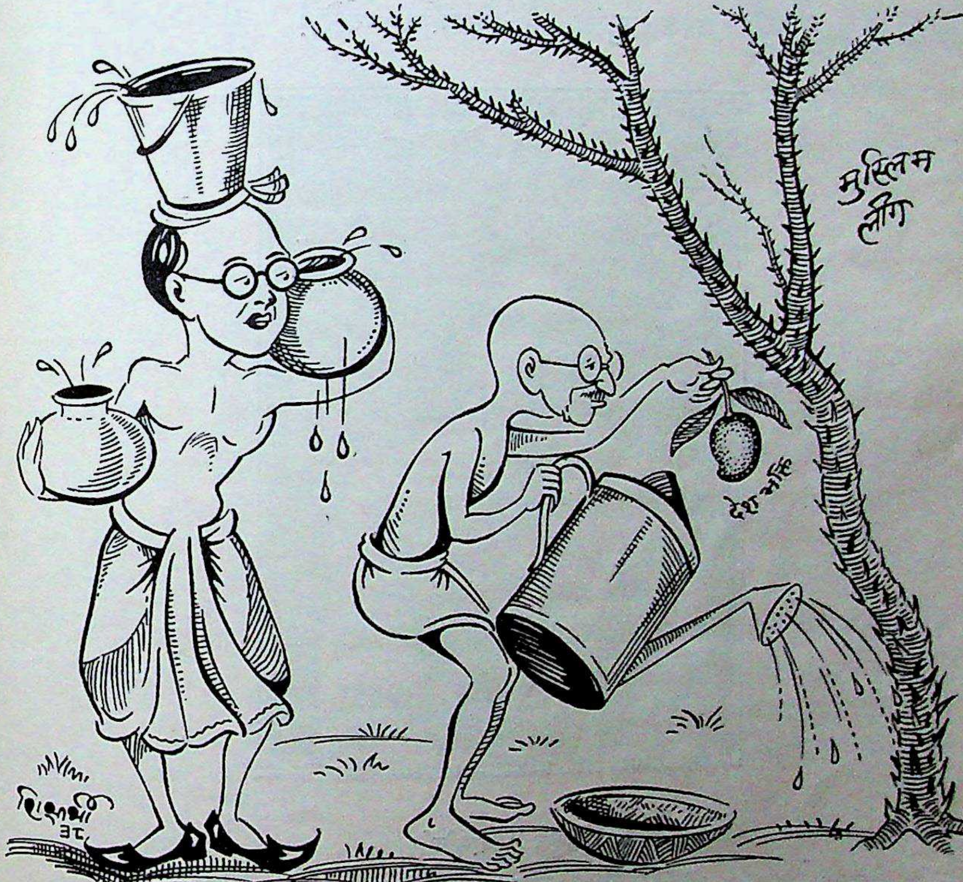
मुस्लिम लीग
देश-भक्ति
शिक्षार्थी ३८

जाति - कंटकन - जाल लग्यौ लीग-तरु, आप पै—
राष्ट्रीयता - रसाल चहत फलावन सींचि रस !
(दुलारेलाल भार्गव)

[क्या सांप्रदायिकता के काँटों से परिपूर्ण मुस्लिम-लीग के पेड़ में देश-भक्ति के आम फलेंगे ?]

आज सुखी मैं कितनी, प्यारे !*

[श्रीयुत 'बच्चन'जी]

आज सुखी मैं कितनी, प्यारे !
चिर अतीत में 'आज' समाया,
उस दिन का सब साज समाया,
किंतु प्रतिक्षण गूँज रहे हैं नभ में वे कुछ शब्द तुम्हारे !
आज सुखी मैं कितनी, प्यारे !

श्रीयुत 'बच्चन'जी

लहरों में मचला यौवन था,
तुम थीं, मैं था, जग निर्जन था,
सागर में हम कूद पड़े थे भूल जगत के कूल-किनारे !
आज सुखी मैं कितनी, प्यारे !
साँसों में अटका जीवन है,
जीवन में एकाकीपन है,
सागर की बस याद दिलाते नयनों में दो जल-कण खारे !
आज सुखी मैं कितनी, प्यारे !

---

* मेरी अगली रचना 'निशा-निमंत्रण' से ।—लेखक

श्रीगौरांग महाप्रभु ईश्वर-प्रेम-प्रचार में देश-भ्रमण को निकले थे

यह बड़ी और विचित्र दुनिया उस सर्व-शक्तिमान भगवान् का सबसे अच्छा परिचय है। जो घर के भीतर हमेशा बन्द रहता है, वह भला उसके बारे में कितना जान सकता है? घर छोड़कर देश-विदेश में भ्रमण करने से ही आपको मालूम होगा कि उसकी सृष्टि कितनी मनोहर, कितनी विचित्र है, और उसे देखकर आप मुग्ध हो जायँगे। प्रत्येक धर्मप्राण हिन्दू का कर्तव्य है कि वह तीर्थों का दर्शनकरे।

नवद्वीप—श्रीगौरांग महाप्रभु की जन्मभूमि है। कलकत्ते से ६० मील दूर, पतितपावनी गंगा के किनारे पर बसी है। वैष्णवधर्म का प्रधान तीर्थ तथा बंगाल में प्राचीन संस्कृति का उद्गम-स्थान है। प्रत्येक हिन्दू के दर्शन योग्य है।

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

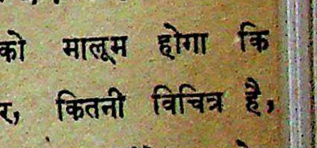

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला

—हरएक घर में रहना चाहिए—

(जूड़ी-ज्वर)

मलेरिया का महान् शत्रु

झंडु

मलेरिया-मिक्श्चर

सेवन करके
मलेरिया की जड़ को
नाबूद कर दीजिए।

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।

लखनऊ के ,, ,, —मातादयल पंसारी, अमीनाबाद।

योरप में भारतीय

[डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्०, ए०, डी० लिट्० (पेरिस)]

यों तो आजकल समस्त संसार में योरपीय सभ्यता का दौर-दौरा है। स्वतंत्र देश तक योरपीय रहन-सहन, पहनावा, भाषा, साहित्य तथा संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं। किंतु योरपीय देशों के उपनिवेशों के लिये तो उनका शासक योरपीय देश हर तरह अनुकरणीय तथा पूज्य है। इंडो-चीन के लोग फ्रांस को, आफ्रिका के कांगो-प्रदेश की जनता बेलजियम को, भारत के पढ़े-लिखे लोग इँगलैंड को बिलकुल मक्का के समान समझते हैं। संपन्न, अँगरेज़ी पढ़ा-लिखा भारतीय इँगलैंड जाने का स्वप्न देखा करता है। और, वहाँ से लौटा हुआ व्यक्ति अभी कुछ दिन पहले तक बिलकुल हाजी के समान आदरणीय समझा जाता था। आज भी परिस्थिति अधिक नहीं बदली है।

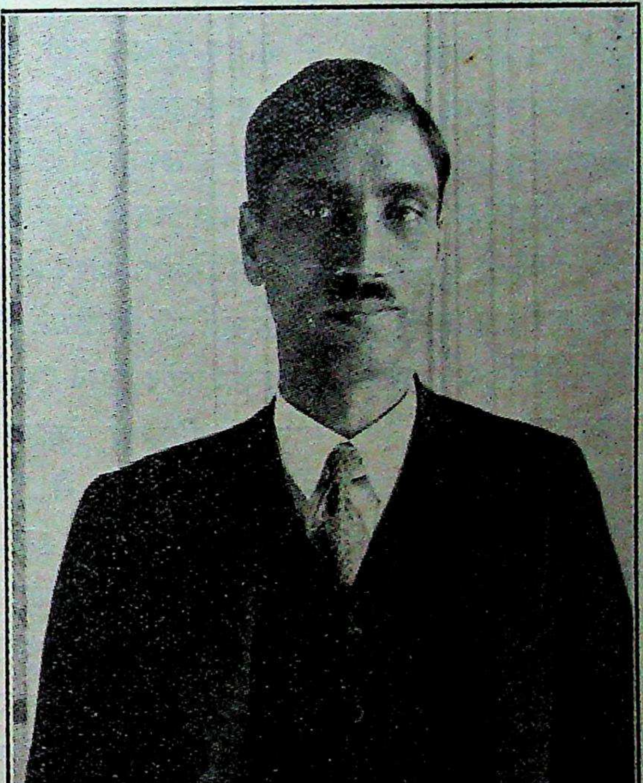

डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०
(अध्यक्ष हिंदी-विभाग, प्रयाग-विश्वविद्यालय)

योरप, विशेषतया इँगलैंड जानेवाले भारतीय कई वर्गों में विभक्त किए जा सकते हैं। सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण वर्ग तो विद्यार्थियों का है। इस वर्ग में भी दो श्रेणियाँ मिलती हैं। पहली उन कच्ची उम्र के विद्यार्थियों की श्रेणी है, जो आई० सी० एस०, बैरिस्टरी, डॉक्टरी आदि की परीक्षाओं में

बैठने के लिये, सैकड़ों की संख्या में, लंदन पहुँचते हैं। ये घर के प्रायः संपन्न होते हैं। भविष्य के संबंध में इन पर कोई विशेष उत्तरदायित्व नहीं होता। संसार के ऊँच-नीच से अनुभव-हीन होते हैं। इसके अतिरिक्त प्रायः अपनी मातृभाषा, अपने साहित्य तथा अपनी संस्कृति से विशेष परिचित न होने के कारण बेपेंदे के लोटे के समान इन्हें जिधर चाहे उधर ढुलका दीजिए। योरपीय जीवन की बाहरी चकाचौंध देखकर ये चौंधिया जाते हैं, और अपना समस्त बचा हुआ समय, जो मनमाने ढंग से बढ़ाया-घटाया जा सकता है, ये लोग प्रायः फ़ैशन, 'गर्ल फ़्रेंड्स', पिकनिक, डांसिग-हॉल्स में बिताते हैं। इनमें से कुछ खेल-कूद, घुड़दौड़, क्लब तथा कान्फ़्रेंस आदि के भी शौक़ीन होते हैं, और इनमें काफ़ी समय तथा धन व्यय करते हैं। फल यह होता है कि माता-पिता जिस निश्चित उद्देश्य से अपने इन सपूतों को इँगलैंड भेजते हैं, उसकी पूर्ति अक्सर नहीं हो पाती, या होती भी है, तो बहुत समय तथा धन व्यय करने के बाद। योरप पहुँचने पर पहले दो-तीन महीने ये विद्यार्थी घर की याद में अवश्य बेचैन रहते हैं, किंतु एक वर्ष के अंत में उनका मन घर लौटने को नहीं होता। उनकी यही इच्छा होती है कि जितने अधिक दिनों यह चैन करने को मिल सके, उतना ही अच्छा।

विद्यार्थिवर्ग में दूसरी श्रेणी उन बड़ी उम्र के अध्यापकों आदि की है, जो ऊँची डिगरियों तथा खोज आदि के निमित्त योरप पहुँचते हैं। ये प्रायः विवाहित तथा बाल-बच्चेवाले होते हैं, और अपने बचाए हुए पैसे के बल पर ही इन्हें अपना निर्वाह करना पड़ता है। संसार का अनुभव भी ये प्रायः पर्याप्त रूप में प्राप्त किए होते हैं, अतः इनका बहक सकना आसान नहीं होता। ये लोग प्रायः अपने समय का सदुपयोग करते हैं। मनोरंजन आदि में भी वाजिब ही धन और समय लगा पाते हैं। योरपीय संस्कृति के गुण-अवगुणों को ठीक-ठीक समझ सकने की शक्ति भी इनमें अधिक होती है। वास्तव में प्रायः इसी वर्ग के लोगों को शिक्षा के निमित्त योरप भेजना चाहिए। अन्य साधारण श्रेणी के विषयों की पढ़ाई का अच्छे-से-अच्छा प्रबंध अपने देश में ही होना चाहिए। साधारण विद्यार्थी जितना रुपया इँगलैंड में फूँक आते हैं, उतने से बीसों अच्छी शिक्षा-संस्थाएँ अपने देश में खुल सकती हैं। किंतु यह प्रबंध सरकार की ओर से ही हो सकता है, व्यक्तियों द्वारा नहीं। अध्यापक आदि भी यदि डिगरियों के लिये न जाकर योरपीय विद्वानों तथा संस्थाओं के संपर्क में आने के लिये प्रति पाँच-छ वर्ष बाद जा सकें, तो देश के गौरव तथा लाभ की दृष्टि से अधिक हितकर हो। लेकिन यह दृष्टिकोण स्वतंत्र देशों में ही विकसित हो सकता है। उपनिवेशों की जनता तो मानसिक गुलामी और आँख मीचकर अनुकरण करने के रोग से ग्रस्त होती है।

योरप जानेवाले भारतीयों का दूसरा प्रधान वर्ग यात्रा तथा मनोरंजन के उद्देश्य से जानेवालों का है। कुछ दिनों से राजा-महाराजा, वकील-बैरिस्टर-जज तथा बड़े ओहदेवाले भारतीयों का शिमला-मसूरी लंदन-पेरिस हो चला है। प्रतिवर्ष नहीं, तो हर तीसरे-चौथे वर्ष इस वर्ग की योरपीय यात्रा का प्रोग्राम बन जाता है। जिनके लिये संभव है, वे तो अधिकांश समय योरप में ही काटना चाहते हैं। आग़ाख़ाँ या महाराजा बड़ोदा का तो 'होम' ही योरप हो गया है। इसमें संदेह नहीं कि शरीर तथा इंद्रियों के सुख की परा काष्ठा योरप में आसानी से उपलब्ध है—केवल ख़र्च करने का सवाल है। अतः जिसे एक बार इस सुख-चैन और ऐश-आराम का चस्का लग जाता है, उसे विना जब-तब दम लगाए चैन नहीं पड़ती। स्त्री-विहीन सामाजिक जीवन, पारिवारिक तथा सामाजिक कलह, ग़रीबी और गंदगी, अव्यवस्था और अनियम के वातावरण से पूर्ण भारत में वह आनंद कहाँ, जो सहज ही छोटे-से-छोटे योरपीय नगर में प्राप्त हो सकता है। इन संपन्न भारतीय यात्रियों का वर्ग योरप में दिल खोलकर ख़र्च करता है। इसी कारण वहाँ के सर्व-साधारण की धारणा बँध गई है कि भारत अत्यंत संपन्न देश है। इधर कुछ दिनों से ऐसे भारतीय भी योरप जाने लगे हैं, जो मनोरंजन के साथ-साथ वहाँ की किसी-न-किसी संस्था के अध्ययन को भी ध्यान में रखते हैं, जिससे लौटने पर वे इस अनुभव द्वारा अपने देश को लाभ पहुँचा सकें। यह दृष्टिकोण अत्यंत सराहनीय है। अमेरिका अथवा योरप के संपन्न लोगों के अनुकरण में हम भारतीयों का केवल मनोरंजन के लिये विदेश जाना वास्तव में अनुचित है, और देश की धन-जन की शक्ति का दुरुपयोग करना है। देश के स्वतंत्र तथा संपन्न हो जाने पर ऐसा करने में कोई हानि नहीं।

प्रवासी भारतीयों का तीसरा वर्ग तिजारत तथा धनोपार्जन के लिये जानेवालों का है। इनकी संख्या अत्यंत सीमित है, क्योंकि किसी भी योरपीय देश में किसी भी भारतीय को सरकारी या किसी अन्य प्रकार की नौकरी नहीं मिल सकती। न वह वहाँ कल-कारख़ाने ही खोल सकता है। दूकान खोलकर चलाना भी आसान नहीं, क्योंकि विदेशी सामान पर वहाँ प्रायः इतना अधिक टैक्स है कि ऐसा सामान उनके देश की उपज के सामने टिक नहीं सकता। तो भी कुछ विशेष भारतीय वस्तुओं के व्यापारी योरप में मिलते हैं। मोती का थोक व्यापार करनेवाले कुछ गुजराती व्यापारी पेरिस में बस गए हैं। छपे पर्दे, क़ालीन, पीतल व हाथी-दाँत की कारीगरी के सामान आदि का व्यापार करनेवाले भी कुछ भारतीय लंदन में मिलते हैं। ये अक्सर योरप के अन्य प्रधान नगरों की भी फेरी लगा आते हैं। दो-चार भारतीय डॉक्टर भी इँगलैंड में हैं, और एक-दो जिंस तथा मसालों की भारतीय दूकानें भी मिलती हैं। लंदन में लगभग आधे दर्जन

हिंदोस्तानी भोजनालय भी चल रहे हैं, क्योंकि वहाँ कभी-कभी पूरी-तरकारी, दाल-रोटी, मिठाई-नमकीन खाने की इच्छा साहबी हिंदोस्तानी तक को हा आती है। नए आए हुए भारतीय तो कुछ दिनों देशी भोजन के लिये नित्य ही लालायित रहते हैं। कुछ यों भी माँग खानेवाले भारतीय योरप में घूमते रहते हैं, या बस गए हैं—कोई गीता और उपनिषदों पर व्याख्यान देता है, कोई योग की क्रियाएँ सिखलाता है, कोई बाजीगरी, कलाबाज़ी या नट वग़ैरा के खेलों के सहारे पेट भर लेता है, कोई भारतीय ज्योतिष के चमत्कार दिखलाकर भावुक लोगों से पैसे ऐंठता है। किंतु इस श्रेणी के लोगों की संख्या उँगलियों पर गिनी जा सकती है। वास्तव में योरप में धनोपार्जन के उपाय तथा मौक़े भारतीयों के लिये विशेष नहीं प्राप्त हैं। हाँ, गाँठ का पैसा खो आने के लिये अनगिनती सुविधाएँ वहाँ मौजूद हैं। इस वर्ग के अंतर्गत कदाचित् ऐसे भारतीयों को भी रक्खा जा सकता है, जो माँगकर या तरह-तरह से लोगों को ठगकर अपना काम चलाते हैं। ऐसे अपवाद भी मिल ही जाते हैं।

अंतिम वर्ग उन भारतीयों का बनाया जा सकता है, जो मरने के लिये योरप जाते हैं। मेरा मतलब इलाज तथा आरोग्य-लाभ के लिये योरप जानेवालों से है। प्राचीन भारत की काशी तथा बदरीनारायण आजकल विएना और स्विटज़रलैंड हो रहे हैं। जैसे भुवाली और अलमोड़ा जानेवालों में से बहुत-से वहाँ से नहीं लौट पाते, उसी तरह विएना और स्विट्ज़रलैंड जानेवालों में भी अक्सर भारतीयों की मिट्टी योरप की मिट्टी में मिलने को जाती है। संपन्न भारतीयों में यह वर्ग धीरे-धीरे बढ़ रहा है। अंतिम समय गंगा-जल के स्थान पर टेम्स या डैन्यूब-जल पान करने की इच्छा फ़ैशन में आ रही है।

योरप में पाए जानेवाले भारतीयों की इस सूची में एक वर्ग और बढ़ाया जा सकता है। यह वर्ग राजनीतिक कारणों से योरप जानेवालों का है। इसमें एक ओर तो सप्रू-जयकर तथा गांधी-जवाहरलाल को रक्खा जा सकता है, और दूसरी ओर श्यामजी कृष्ण वर्मा व हरदयाल की श्रेणी के लोगों का है। पहली श्रेणी के लोग जाते और चले आते हैं। दूसरी श्रेणी के लोग जाकर फिर नहीं लौट पाते। यह सिलसिला भी तब तक जारी रहेगा, जब तक भारत और इँगलैंड का वर्तमान गठबंधन क़ायम है। उसके बाद तो सिर ऊँचा किए हुए स्वतंत्र भारती के प्रतिनिधि योरप के प्रत्येक देश की राजधानी में रहेंगे, जिनकी नगर के इशारों और शब्दों की व्यंजना का अध्ययन योरप के बड़े - बड़े राजनीतिज्ञ किया करेंगे।

विजय-तिलक

[श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

(१)

बहुत दिनों की बात है। जब यौवन का प्रभातकाल था, और नई-नई उमंगों से हृदय परिप्लावित हो रहा था, तब मेरा उसके साथ प्रेम हुआ था। वह भी एक आकस्मिक घटना थी, जैसी उपन्यासों के पात्रों में देखने में आती है। और, वह भी प्रथम दृष्टि में हुआ था। हालाँकि हम दोनो पड़ोस में रहते थे, मगर एक दूसरे को देखने का कभी अवसर नहीं प्राप्त हुआ था। क्योंकि मैं शुरू से ही अव्वल दर्जे का खिलाड़ी था, और घर में रहना या सिवा रात्रि में और दस बजे सुबह तक मिलना मुश्किल ही नहीं, असंभव था। इस खेल की बदौलत मेरा नाम चारो ओर विख्यात था। देश में सर्वत्र ही मेरा खेल देखने के लिये लोग उत्सुक रहते थे। जिस टीम में मैं खेलता, उसकी जीत होने में कोई संदेह न रहता, और भगवान् की कृपा से यह सदैव सत्य होता आया। मैं हरएक खेल एक-सी चतुरता से खेलता था, इस कारण सभी जगह से खेल में शरीक होने के लिये मेरे पास निमंत्रण आया करते थे। मैं भी उनके लिये लालायित रहता था, और सब काम छोड़कर दीवानों की तरह उस जगह पहुँच जाता था। पिताजी को इससे आनंद मिलता था या नहीं, यह तो कहना मुश्किल है, परंतु मेरे बड़े भाई साहब, जो मैजिस्ट्रेट थे, मेरी प्रशंसा करते और सदैव प्रोत्साहन दिया करते थे। अक्सर खर्च भी वही देते रहते थे। हालाँकि मेरी भावज नाक-भौं सिकोड़कर मन-ही-मन कुढ़ती थीं, किंतु मेरे सामने उनको कुछ कहने की हिम्मत न होती थी।

यह नहीं कि मैं खेलने के सिवा कुछ पढ़ता ही न था। पढ़ने में भी मेरी गणना चतुर विद्यार्थियों में थी। यह अक्सर देखा गया है कि खिलाड़ी लड़के मेधावी होते हैं—हाँ, मेहनती नहीं होते। ठीक वही हाल मेरा था। क्लास और घर में सुबह दो घंटे मनोयोग से पढ़ लेना काफ़ी था—इतना, जितने में मैं शिक्षकों और सहपाठियों पर अपनी शान बखूबी जमा लेता था। जब से मैं कॉलेज आया, मेरी शान में कईगुना तरक़्क़ी हो गई थी। प्रोफ़ेसरों ने मेरा नाम 'Royal student' (शाही छात्र) रक्खा था। हरएक परीक्षा में मेरी अनुपस्थितियों का अनुपात बहुत अधिक होता था, मगर प्रिंसिपल और प्रोफ़ेसरों की कृपा से किसी वर्ष रुकना नहीं पड़ा, यद्यपि चेतावनियाँ वारंवार मिला करतीं। यह सब कृपा मेरे खेल की बदौलत थी।

हाँ, यह वही समय था, जब मैं बी० ए० पास कर एम्० ए० में पढ़ रहा था। एल्-एल्० बी० भी ज्वाइन किए हुए था। भाई साहब ने जब मेरे दोनो शिक्षा-क्रमों में सम्मिलित होने का समाचार सुना, तो कुछ मुस्किराए, और कहने लगे—"मुन्नू, अब तो तुम्हारा खेलना समाप्त हुआ, क्योंकि एल्-एल्० बी० क्लास तो शाम को ही लगते हैं, फिर एक ही समय में दो काम कैसे करोगे?"

मैंने सोचते हुए कहा—"यह तो ज़रूर सोचने की बात है। अगर चलाए न चलेगा, तो छोड़ दूँगा।"

आखिर हुआ भी वही। मेरे खेल के शौक़ ने

एल्-एल्० बी०-क्लास से बहुत जल्द पीछा छुड़ा दिया।

हाँ, तो जब मैं एम्० ए० में पढ़ता था, एक दिन अकस्मात् पटना से एक टीम में शामिल होने का निमंत्रण आया, और ख़र्च के लिये तार द्वारा मनीऑर्डर भी उसी दिन मिल गया। मैं तुरंत ही वहाँ जाने के लिये तैयार होने घर आ गया। दोपहर का समय था। घर में बिलकुल सन्नाटा छाया हुआ था, अम्मा और भावज खाना खाकर अपने-अपने कमरों में सोई हुई थीं। नौकर वग़ैरह भी छुट्टी मनाने के लिये चले गए थे। कहीं कोई सनकता न था। मैं वायु-वेग से उमंगों की नदी में बहता हुआ, बिलकुल बेसुधी की हालत में अपने कमरे में घुसा। उस समय मैं इतना फूला हुआ था कि मुझे अपने दाएँ-बाएँ या सामने कुछ नहीं दिखाई पड़ता था, और न देखने के लिये अवकाश ही था।

श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

ज्यों ही मैं अपने कमरे में घुसा, मेरी दृष्टि उस पर पड़ी, जो बड़ी तन्मयता और एकाग्रता से एक भूप के चित्र की ओर देख रही थी। यद्यपि मेरे आने से कुछ हल्का भूचाल ज़रूर आ गया था, जैसा हमेशा होता था, फिर भी उसकी तन्मयता दूर न हुई थी। मैं स्तब्ध होकर उसकी ओर देखने लगा। द्वार पर खड़े रह जाने से प्रकाश की धारा में कुछ रुकावट पड़ी, और चित्र कुछ

अस्पष्ट हो गया, जिससे उसने सिर घुमाकर द्वार की ओर देखा, और वहाँ मुझे देखकर, किं-कर्तव्य-विमूढ़-सी होकर भयाकुल दृष्टि से मेरी ओर देखने लगी। मैं उसकी इस अदा पर हज़ार जान से फ़िदा हो गया। मेरा सारा अल्हड़पन एक जगह एकत्र होकर अपना जोश दिखाने के लिये उतावला होने लगा। लेकिन उसकी उस भीत दृष्टि में कुछ ऐसा रोब था, जिससे मैं भी कुछ झेंपा हुआ उसकी ओर देखता रहा। क्षण-मात्र में वह दृष्टि-विनिमय बंद हुआ, और वह सचेत होकर चपला-सी बिलकुल मेरे पास से, तीर की भाँति सनसनाती हुई, निकल गई। मैंने यंत्र-चालित पुतले की भाँति अपना सिर घुमाया, परंतु अब उसके वस्त्रों की सुरभि के अतिरिक्त और कुछ शेष न था। मेरे हृदय में एक अजीब-सा दर्द उसी घड़ी से शुरू हो गया, और आज दिन तक है।

सबसे पहले मैं वहाँ गया, जहाँ खड़ी होकर वह फ़ोटो देख रही थी। यह मेरा सबसे नवीन ग्रूप था, जो 'कानवोकेशन' के समय लिया गया था। मेरा मन बारंबार यह प्रश्न करने लगा कि वह भाग्यवान् व्यक्ति कौन था, जिसकी ओर वह इस तरह तन्मयता से देख रही थी? परंतु निर्वाक़ फ़ोटो हवा के वेग से कुछ हिला, मानो वह मेरी बेवक़ूफ़ी पर मुस्किरा रहा है। मेरे दर्द की व्याकुलता किसी हद तक बढ़ गई, जिसकी तुलना करने में मैं बिलकुल असमर्थ था।

यह उसका प्रथम दर्शन था।

(२)

इसके बाद एक मुद्दत के लिये वह इस तरह ग़ायब हुई, जैसे पुच्छल तारा। यह तो मुझे मालूम ही हो गया था कि वह पड़ोस के बाबू जयकृष्णदास की पुत्री थी, और उसी वर्ष प्राइवेट मैट्रिक-परीक्षा पास कर इंटरमीजिएट के लिये तैयारी कर रही थी। वह जाति के खत्री थे, और स्थानीय एक बैंक में हेड एकाउंटेंट। वह अभी हाल में ही दिल्ली से बदलकर आए थे। जाति भिन्न होते हुए भी यद्यपि मेरे परिवार के लोगों से उनकी पूरी घनिष्ठता हो गई थी, परंतु मुझसे सिवा साहब-सलामत के और कोई विशेष परिचय न था। मेरे पास किसी से घर जाकर परिचय प्राप्त करने के लिये अवकाश ही न था, इस कारण वह जान-पहचान घनिष्ठता का रूप धारण न कर सकी। किंतु अब तो मेरा मन बारबार उसे घनिष्ठ बनाने के लिये उतावला होने लगा, और उसके लिये अवसर भी ढूँढ़ने लगा।

जब कभी घर से बाहर निकलता, तो मेरी दृष्टि स्वयमेव उनके मकान के छज्जे की ओर चली जाती, और चिक़ों से ढकी हुई छाया के अंदर देखने का प्रयास करती। जहाँ ज़रा सी चिक हिलती—चाहे वह वायु अथवा पक्षियों के बैठने से ही क्यों न हो—मेरा मन चौकड़ियाँ भरने लगता, और तुरंत ही अनुमान करने लगता कि वह उसके पीछे खड़ी हुई मेरी ओर देख रही है। आगे जाकर मैं स्वयं अपनी बेवक़ूफ़ी पर खिलखिलाकर हँसता, और कहता, यह इश्क़ का पहला सबक़ है!

इधर खेलों से भी मेरा मन ऊबने लगा। पहले की स्फूर्ति न-मालूम अब कहाँ तिरोहित हो गई थी। और, मैं यह भरसक यत्न करता कि मेरी मातमी सूरत में कुछ प्रफुल्लता आ जाय, लेकिन मैं हमेशा नाकामयाब होता। कुछ साथियों को ज़रूर शक हो गया था कि मैं किसी के प्रेम-जाल में फँस गया हूँ। वे मुझे बनाने में कुछ कोर-कसर न रखते थे, किंतु यह भेद मैंने अपने ही तक रक्खा था।

इसी तरह कई महीने बीत गए। मेरे मन की ज्वाला समय के साथ घटने के बजाय उत्तरोत्तर बढ़ती गई। आखिर एक दिन मैंने उसके घर पर बाजे बजते हुए सुने। दरियाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि उसका विवाह है। यह समाचार

मेरे हृदय में वृश्चिक-दँशन-सा लगा, और मैं अपने कमरे में छटपटाने लगा। मेरे हृदय का सारा साहस काफ़ूर हो गया, और मैं सचमुच बीमार हो गया। ज्वर की ज्वाला से मेरे मन की आकुलता और तीव्र हो गई। अम्मा और भावज भी उसके विवाह में सम्मिलित न हो पाईं।

जिस दिन उसकी बिदाई होनेवाली थी, वह सबेरे ही मेरे घर पर अम्मा और भावज से मिलने आई। उस वक़्त अम्मा बैठी हुई मेरे सिर पर यू-डी-क्लोन की पट्टी रख रही थीं, और मैं आँखें बंद किए हुए उसी के बारे में सोच रहा था। उसके गहनों की झंकार ने न-मालूम क्यों मुझे आँख खोलने के लिये विवश कर दिया। मैंने आँखें खोलकर देखा, सामने शृंगार से ओत-प्रोत वह व्याकुल दृष्टि से मेरी ओर देख रही थी। मेरा मन उछलने लगा। मैं उठकर बैठ गया। इस बार वह भागी नहीं, बल्कि मेरे और निकट आ गई। उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे, और कंठ अवरुद्ध था। उसकी यह दशा देख मुझे कुछ आश्वासन मिला।

अम्मा ने उसके पास आकर कहा—"बिटिया, मुझे सख़्त अफ़सोस है कि मन्नू की बीमारी से मैं तुम्हारे यहाँ एक दिन भी नहीं आ सकी। इसकी जान के लाले पड़े हुए थे। अभी तक कुछ ठीक नहीं कि कब क्या हो जाय। आज तो ज़रूर आती, लेकिन तुम आ गईं, यह अच्छा किया।"

उसने कुछ जवाब नहीं दिया। वह पृथ्वी की ओर नत दृष्टि से देखने लगी।

अम्मा ने जाते हुए कहा—"बिटिया, तुम ज़रा यहीं बैठो, मैं तुम्हारे जल-पान के लिये कुछ ले आऊँ। आज तुम्हारी बिदा है। तुम्हें मीठा मुँह करके ही जाना होगा।"

यह कहती हुई अम्मा चली गईं।

मैंने उसकी ओर देखा, उसकी अश्रु-प्लावित दृष्टि नत थी।

मैंने साहस एकत्र करके कुछ कहने को मुँह खोला, किंतु शब्द नहीं निकले। मैं अपनी बेबसी पर आप तड़पने लगा। मेरा कंठ शुष्क होने लगा। थोड़ी देर बाद उसने आप ही कहा—"आप कब से बीमार हैं?"

मैंने सहसा उत्तर दिया—"जब से पहलेपहल आपको इसी कमरे में देखा था।"

मैं कहने को तो कह गया, लेकिन उसका शर्माया हुआ लाल चेहरा देखकर मन-ही-मन पछताने लगा।

जैसे उसने स्वगत कहा हो, मैंने सुना—"तब तो मेरा अनुमान ग़लत न था।"

इसी समय भावज साहबा मिठाई की तश्तरी लिए हुए आ गईं। उन्होंने आते ही कहा—"क्या बिदाई हो रही है?"

सुनते ही वह चौकन्नी हो गई, और उसकी आँखें जल उठीं। परंतु उसने वह भाव दूसरे ही क्षण दमन कर लिया। मुझे उस दिन मालूम हुआ कि स्त्रियाँ भाव छिपाने में कितनी चतुर और सतर्क होती हैं!

मेरी सारी शक्ति क्षीण हो गई थी, और अब बैठे रहने का साहस न था। मैं हताश होकर बिस्तर पर गिर पड़ा, और किंचित् भावावेश से बेहोशी-सी आ गई।

उसके हाथों के स्पर्श से मेरे शरीर में एक प्रकार की प्राणदा विद्युत् दौड़ गई। चेतनता सजग होकर उस सुख-स्पर्श की अनुभूति करने लगी। वह मेरी सिर की पट्टी पर यू-डी क्लोन डालने लगी, किंतु बजाय बूँदों के गिरने के वह धार-रूप में गिर पड़ा, जिससे मेरी आँखों के उमड़ते हुए अश्रु उसमें मिश्रित होकर प्रवाहित हो गए।

भावज वेग से हँस पड़ीं, और वह शर्माकर

एक ओर खड़ी हो गई। मैं आँखें पोंछने लगा। अम्मा ने इसी समय आकर पूछा—"क्या बात है?"

भावज ने कहा—"कुछ नहीं, ननँदजी उपचार करने गई थीं, मगर विदाई का शोक ऐसा करने के लिये आज्ञा नहीं देता, जिससे हाथ काँपने लगे, और यू-डी-क्लोन की शीशी खाली हो गई।"

उनकी यह कटु टिप्पणी उसे अपदस्थ करने के लिये आवश्यकता से अधिक थी।

अम्मा ने हँसकर कहा—"अपने बाप-भाई को छोड़ते हुए सबको रंज होता है। क्या तुमको न हुआ होगा?"

उसने जवाब दिया—"नहीं, चाची जी, यह तो नाचती हुई आई होंगी।"

मैंने हँसकर उसकी बात का अनुमोदन किया।

इसी समय उसके घर से एक परिचारिका आ गई। उसने आते ही कहा—"विदा कराने के लिये वे लोग आ रहे हैं, मालकिन ने फ़ौरन् बुलाया है।"

उसने एक बड़ी मजबूरी-भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। उसके नेत्र अब भी घुचघुचाए हुए थे, जो मुझे सांत्वना देने का प्रयत्न कर रहे थे।

यह उसका द्वितीय दर्शन था।

(३)

फिर बहुत दिन बीत गए। दिन गिनते-गिनते महीने हो गए, और महीने वर्ष। मेरे जीवन की धारा भी एक दूसरी ओर बहने लगी, जिसमें निरंतर संघर्ष, अविराम अध्यवसाय और कठिन संयम था। वह था देश-सेवा का मार्ग। मेरे भाई ने तो, जो सरकारी नौकर थे, कोई आपत्ति नहीं की, किंतु पिताजी ने भरसक प्रयत्न करके मेरे कर्तव्य-मार्ग में बहुत रोड़े अटकाए, यहाँ तक कि मुझे घर से निकाल देने की धमकी दी, परंतु मैं अपने निश्चय से तिल-भर भी विचलित न हुआ।

मैंने अपना विवाह नहीं किया था, और न करने की इच्छा ही थी। अपनी उसकी जगह किसी अन्य को प्रतिष्ठित करना मुझे स्वीकार न था। वह स्थान तो उसी के लिये था। यद्यपि उस दिन के बाद से कभी उसे देखा न था, और न देखने या मिलने की आशा थी, फिर भी मैं उसकी प्रतीक्षा करता था। दुनिया की निगाहों में मेरी यह प्रतीक्षा पागलपन के अतिरिक्त और कुछ न थी, परंतु मेरे लिये वह मेरे हृदय का गौरव थी। उसके प्रति विश्वासघात करने का विचार ही न उठता था।

अम्मा ने मेरे विवाह की बहुत कोशिश की, तरह-तरह की क़समें दिलाईं, लेकिन मैं अपने निश्चय पर दृढ़ रहा। उसका भी कहीं पता न था। बाबू जयकृष्णदास का तबादला कलकत्ता हो गया था। उनके प्रस्थान करते ही मेरी सारी आशाएँ धूल में मिल गईं। मैं पागलों की भाँति तपस्या करने लगा। ऐसा क्यों किया? इसका उत्तर मुझे आज तक ढूँढ़े नहीं मिलता।

उसका किसके साथ विवाह हुआ, यह भी मुझे नहीं मालूम! सिर्फ़ इतना मालूम था कि पटना में उसकी ससुरालवाले रहते हैं। उनका पता-ठिकाना कुछ मालूम न था, और न मैंने कभी जानने का प्रयत्न ही किया। मैं उसके भूलने की बहुत कोशिश करता, किंतु उसका वह अश्रु-प्लावित मुख मेरे स्मृति-पटल से किसी प्रकार दूर न होता था। उसे भुलाने के लिये ही मैंने देश-सेवा का कठिन, दुरूह मार्ग ग्रहण किया था, जिससे मैं अनवरत परिश्रम तथा झंझटों में लगा रहूँ। किंतु मेरा सारा प्रयत्न व्यर्थ गया, और मैं उसे क्षण-भर के लिये भी भूल न सका।

मेरे परिश्रम और मेरी साधना से कांग्रेस में भी मेरा सिक्का जम गया। बहुत शीघ्र ही मैं नगर-कांग्रेस-कमेटी का सदर हो गया, और प्रांत-भर

में मेरी तूती बोलने लगी। जिस प्रकार जनता मेरा खेल देखने के लिये किसी समय समुद्र की लहरों की भाँति उमड़ पड़ती थी, उसी प्रकार मेरा लेक्चर सुनने के लिये भी लोग उत्सुक होकर उमड़ने लगे। युवकों के हृदयों पर मैंने पूर्ण प्रभाव जमा रक्खा था। साम्यवाद का प्रचार मैं निर्भीक होकर करता था। मज़दूरों की भी पूर्ण श्रद्धा और विश्वास मुझे प्राप्त था। मैं जिस वक़्त उनके घरों में जाता, वे मेरा सत्कार उसी प्रकार करते, जैसे पुजारी देवता का। मैं भी उनकी दशा सुधारने के लिये कटिबद्ध रहता था।

सत्याग्रह-संग्राम में भी मैं पूर्ण रूप से विजयी रहा। मुझे कई बार जेल जाना पड़ा, जिससे मेरी आत्मा की भीरुता और कायरता दूर हो गई थी। जेल जाने से इस लाभ के अतिरिक्त एक लाभ और हुआ, वह यह कि घर से मेरा संबंध सदा के लिये विच्छेद हो गया। माता का देहांत हो ही चुका था, और पिताजी शुद्ध राजभक्त थे। अछूतों के साथ भोजन-व्यवहार कर मैं ब्राह्मणों की पंक्ति में बैठने का अधिकार तो बहुत पहले ही खो चुका था, और अब जेल जाने का सार्टीफ़िकेट मिलने से उनका पुत्र कहलाने के अधिकार से भी वंचित हो गया। उन्होंने राजभक्त पत्रों में वह पत्र अविकल प्रकाशित करा दिया, जिसके द्वारा मुझे उनका पुत्र कहलाने के अधिकार से च्युत किया गया था। इसका परिणाम अथवा पुरस्कार यह हुआ कि वह सम्राट् के जन्मोत्सव के उपलक्ष में 'नाइट' बना दिए गए। इस अवसर पर मैंने भी बहुत डरते-डरते बधाई का तार भेजा था, मगर उन्होंने उसकी स्वीकृति भेजना भी उचित नहीं समझा।

इतना होते हुए भी मैंने भाई का प्रेम नहीं खोया था। उनके पत्र बराबर आते थे, और प्रत्येक मास की ५ तारीख़ तक दो सौ रुपए मेरे ख़र्च के लिये भी आ जाते थे। यद्यपि मैंने उनसे कई बार अनुरोध किया कि वह रुपए न भेजें, किंतु उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। केवल एक बार यह लिखा था—"भाई, मैं तुम्हें अपनी तनख़्वाह से यह रक़म नहीं भेजता, जो कुछ तुम्हारा हमारी जायदाद में, इस अवस्था में, प्राप्य है, भेज रहा हूँ। मैं इतना नीच नहीं कि तुम्हारा प्राप्य अपहरण करूँ। जिस मार्ग पर तुम जा रहे हो, दरअसल हम नवयुवकों का वही मार्ग है, और तुम्हारे-जैसे भाई को पाकर मुझे भावी संतति के सामने शर्म से सिर नत न करना पड़ेगा, क्योंकि अपने परिवार का एक होनहार रत्न माता की सेवा के लिये हम अर्पित कर चुके हैं।"

उनकी यह सहानुभूति मेरे मन में निरंतर उत्साह भरा करती थी, और मैं चारो ओर से निश्चिंत होकर अपने कर्तव्य का पालन कर रहा था। अपने जन्म-स्थान लखनऊ को भी मैं छोड़ चुका था, और इन दिनों कानपुर में रहता था। कानपुर में रहने का एक कारण यह भी था कि यहाँ मज़दूरों का केंद्र था, और मेरी साम्यवादी प्रवृत्तियों के विकास का पूर्ण अवसर प्राप्त था।

(४)

कानपुर के मज़दूरों ने हड़ताल कर रक्खी थी। उनका संगठन करने में मैं किसी क़दर सफल हुआ था, और उनकी दर्दनाक आवाज़ को ज़बरदस्ती सुनाने का उपाय केवल हड़ताल करना था। मैंने अपने कई महीने के ख़र्च की रक़म उनकी सहायता के लिये देकर और उनकी आय की थोड़ी-बहुत बचत की रक़म उस सहायक फ़ंड में शामिल कर एक छोटा-सा कोष तैयार कर रक्खा था, जो इस समय हमारी बड़ी सहायता कर रहा था।

हड़ताल जारी हुए आज दस दिन व्यतीत हो चुके थे, यह ग्यारहवाँ दिन था। हड़ताल से मिल-मालिकों पर काफ़ी आतंक जम चुका था।

वे लोग यद्यपि समझौते के लिये आकुल थे, किंतु प्रकाश रूप से झुकना नहीं चाहते थे। बड़ी कशमकश का जीवन दोनो ओर के आदमी—पूँजीपति और मज़दूर—व्यतीत कर रहे थे। देश का एक बड़ा दल हमारे साथ था, इससे हमारी सहायता के लिये अन्न-वस्त्र प्रचुर मात्रा में चारो ओर से आ रहा था, जिसके वितरण से हमारे विचारों में प्रबलता और दृढ़ता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती थी।

हाँ, जून-मास की वह २८वीं तारीख थी। आज 'नवजीवन-मिल्स' पर पिकेटिंग होनेवाली थी, जहाँ के मज़दूरों ने काम पर जाना आरंभ कर दिया था। उक्त मिल में काम करनेवाले मज़दूरों ने कल ही एक साथ मज़दूर-सभा में अपना इस्तीफ़ा पेश कर एलान कर दिया था कि वे कल से मिल में काम करना शुरू कर देंगे। हम लोग सब चकित रह गए। तमाम सोच-विचार के बाद यह तय पाया गया कि शांति-पूर्वक इसका विरोध किया जाय, और उन्हें काम पर न जाने दिया जाय।

सबसे अधिक आश्चर्य-जनक बात यह थी कि 'नवजीवन-मिल्स' की स्वामिनी एक स्त्री थी, और यह सुनने में आता था कि वह अकेली थी, उसके पति के परिवार में कोई न था। मिल का सब प्रबंध वह .खुद करती, और हरएक काम की निगरानी भी रखती थी। उसके प्रबंध से उस मिल के मज़दूर .खुशहाल थे, और उन सबकी सहानुभूति भी उसके साथ थी। उसकी प्रशंसा के गीत लोग गाया करते थे, और उनकी स्त्रियाँ भी एक स्वर से आशीर्वाद-वर्षण करती थीं। उस मिल के मज़दूर बड़ी मुश्किल से हड़ताल में सम्मिलित हुए थे, क्योंकि हमने नगर-व्यापी हड़ताल करने का निश्चय किया था। अब हमारे पास पिकेटिंग के अतिरिक्त और कोई उपाय न था।

पिकेटिंग करने के लिये जब हम मिल के दरवाज़े के पास पहुँचे, तो मिल के अंदर से मज़दूर-स्त्रियों का एक दल बाहर आया। उनमें से एक ने, जो शायद उनकी अभिनेत्री थी, मेरे पास आकर कहा—"मैं आपसे अनुरोध करूँगी कि आप यहाँ से अपने स्वयंसेवकों को हटा ले जायँ। मिल में पिकेटिंग करने का अधिकार आपको नहीं है, क्योंकि हम मज़दूरों की कोई शिकायत मिल-मालिकिन से नहीं। हमारी स्वामिनी हमारे लिये देवी हैं—उन्हें हम पूजती हैं, और उनके लिये जान देने को तैयार हैं।"

मैंने नम्रता के साथ कहा—"आप का कहना ठीक है, किंतु सामूहिकता के लिहाज़ से हमें ऐसा करना पड़ता है। हमें आपकी स्वामिनी से कोई द्वेष नहीं, उन्हें हम भी उतनी श्रद्धा से देखते हैं, जितनी श्रद्धा से आप लोग। उनका जैसा दया-पूर्ण व्यवहार मज़दूरों के प्रति है, वह हमको अच्छी तरह अवगत है, परंतु इससे अन्य मिलों में काम करनेवाले मज़दूरों की अवस्था में कुछ फ़र्क़ नहीं आ सकता। यह हड़ताल नगर-व्यापी है, अतएव यह आवश्यक है कि इस मिल का भी काम बंद रक्खा जाय। मुझे शोक के साथ कहना पड़ता है कि हम लोग आपका अनुरोध न रख सकेंगे।"

इसके उत्तर में उस रमणी ने कहा—"तब तो हमको भी अपना कर्तव्य पालन करना पड़ेगा।"

मैंने उत्सुकता के साथ पूछा—"वह क्या ?"

इसके पहले कि वह कुछ उत्तर दे, एक मोटर उस स्थान पर आकर खड़ी हो गई, और उससे श्वेत वस्त्र पहने हुए एक रमणी उतरकर हम लोगों की ओर आने लगी। उसे देखते ही वे स्त्रियाँ एक स्वर से जय-जयकार कर उसका स्वागत करने के लिये आगे बढ़ीं।

रंग-ढंग से मालूम हो गया कि 'नवजीवन-मिल्स' की यही एकमात्र स्वामिनी हैं। मैं उनको देखने

के लिये उत्सुकता से बढ़ा, किंतु वह मज़दूर-स्त्रियों से इतनी ज्यादा घिर गई थीं कि बिलकुल देख न पड़ती थीं। मैं एक अजीब सकते की हालत में खड़ा हुआ नाना प्रकार के विचारों में लीन था।

इसी समय मिल में प्रवेश करने का भोंपू बजा। मज़दूर लोग मिल में जाने के लिये उद्यत होने लगे। हम लोग भी मिल के द्वार की ओर बढ़े। इसी समय सहसा हमारे चारो ओर उन मज़दूर-स्त्रियों का दल आ गया, और उन्होंने हमें घेर लिया। क्षण-मात्र में हम घिरकर क़ैद में हो गए, और दूसरे ही क्षण वे स्त्रियाँ हमारे चारो ओर पृथ्वी पर लेट गईं। हम लोग भौचक्के होकर उनकी ओर देखने लगे।

उस निस्तब्धता को भंग करती हुई एक मधुर हास्य-ध्वनि गुंजरित हो गई। हँसनेवाली नवागंतुका 'नवजीवन-मिल्स' की स्वामिनी थीं। खद्दर की मोटी साड़ी से उनका सौंदर्य निखरा पड़ता था। मैं चकित होकर उनकी ओर देखने लगा।

उन्होंने मेरी ओर संकेत करके कहा—"कहिए, अब भी आपको क्या पिकेटिंग का हौसला है?"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

उन्होंने मेरे पास आकर कहा—"शायद आपने मुझे पहचाना नहीं। पहचान भी कैसे सकेंगे, लखनऊ छोड़े हुए कई वर्ष गुज़र गए हैं!"

सुनते ही मेरी हृत्तंत्री एकदम झंकरित हो उठी। मन बेतहाशा चिल्ला उठा कि यह वही है। मैं उसकी ओर विस्फारित नेत्रों से देखने लगा।

वह भी मुस्किराने लगी, और उसकी आँखों से हास्य फूटकर बाहर निकलने लगा।

सहसा मेरे मुख से निकल गया—"अरे, तुम हो?"

उसके नेत्र नत हो गए, और उसने कहा—"मेरे अभाग्य से माता-पिता, पति, सबका देहांत हो गया! इतनी बड़ी जायदाद को पटना से सँभालना असंभव था, इससे यहाँ आकर रहने लगी हूँ। आपकी काररवाइयों पर मेरी नज़र बराबर रही। कल सुना कि आप मेरी मिल पर भी धावा बोलनेवाले हैं, इसीलिये आपके स्वागत का यह आयोजन किया था। इस धृष्टता के लिये मैं क्षमा चाहती हूँ।"

ऊपर के शब्द उसने अँगरेज़ी में कहे थे, जिन्हें मेरे साथी या दूसरे दर्शक समझ नहीं सके, क्योंकि उनमें कोई अँगरेज़ी-शिक्षित व्यक्ति न था।

मैंने एक दीर्घ निःश्वास लेकर मुस्किराते हुए कहा—"धन्यवाद! स्वागत में पराजय देना आपका ही काम है।"

उसकी मृदु हास्य-ध्वनि से वह छोटा-सा वायु-मंडल गूँज गया!

उसने उत्तर दिया—"या यह कि शत्रुओं का स्वागत कर हम लोग 'विजय-तिलक' करती हैं!"

मैं भी मुस्किराने लगा. और वह भी।

एक जाति, एक भाषा, एक लिपि

[श्रीदुलारेलाल भार्गव]

इकै जाति, भाषा इकै, इकै जु लिपि-बिसतार—
भारत-भू मैं होय, तौ टूटैं बंधन-तार।

पशु-पालन

[श्रीयुत श्रीराम शर्मा]

किसी राष्ट्र-विशेष का साहित्य उसकी संस्कृति का सूचक होता है, बाल-बच्चों का स्वभाव उनके माता-पिता के स्वभाव का द्योतक होता है, और किसानों की आर्थिक स्थिति का बैरोमीटर होता है उनके पशुओं की दशा। पंजाब से लेकर बंगाल तक चले जाइए, और यह बात जानने के लिये कि काश्तकार की माली हालत क्या है, बस आप यह देख लें कि उसके बैलों की हालत कैसी है। यदि उसका गोधन स्वस्थ और अच्छा है, तो आप फ़ौरन् समझ जाइए कि उसे भर-पेट रोटी मिलती है, और यदि उसके बैल हाड़ के कंकाल हैं, चलती-फिरती, खाल से ढँकी अस्थियाँ हैं, तो आपको यह जानने में कोई कठिनाई न होनी चाहिए कि उस काश्तकार की हालत अच्छी नहीं। तात्पर्य यह कि किसान की उन्नति और उसके पशुओं में सीधा संबंध है। तब फिर प्रश्न उठता है कि क्या बैलों की अच्छी नस्ल हो जाने अथवा काश्तकार के पास अच्छे और स्वस्थ बैल होने से उसकी माली हालत बढ़ जायगी? इस प्रश्न का सीधा-सा उत्तर है हाँ। पर इससे कोई यह न समझे कि केवल बैलों की अच्छी नस्ल कर देने से ही काश्तकार की उन्नति हो जायगी। हाँ, हमारा तात्पर्य यह अवश्य है कि काश्तकार की अच्छी हालत होने के लिये अच्छे बैलों की नस्ल का होना भी लाज़िमी है। काश्तकारों की उन्नति-धारा में अच्छे बैलों का होना भी ऐसा है, जैसे गंगा में यमुना का मिलना। तब फिर बैलों की नस्ल कैसे अच्छी हो? यों तो पशु-पालन का प्रश्न बड़ा ही रोचक और गहन है, पर यहाँ हम कुछ बातों पर संक्षेप रूप से, सीधे-सादे शब्दों में, प्रकाश डालेंगे, ताकि लोग अच्छी तरह समझ लें कि गोधन की नस्ल कैसे अच्छी की जा सकती और फल-स्वरूप काश्तकारों की उन्नति कैसे हो सकती है।

प्रायः देखने में आया है कि जब कभी जानवरों की नस्ल अच्छी करने के लिये कोई सभा-सुसाइटी होती है, तब सब लोग एक स्वर से कहते हैं कि बैलों की नस्ल तभी अच्छी होगी, जब बढ़िया साँड़ मिलें। हमें इसमें तनिक भी एतराज़ नहीं। बिना बढ़िया साँड़ों के गाय-बैल की नस्ल अच्छी नहीं हो सकती। पर सवाल तो यह है कि क्या केवल अच्छे साँड़ों के मिलने से बैलों की नस्ल अच्छी हो जायगी? थोड़ी देर के लिये फ़र्ज़ कर लीजिए कि हमारे सूबे-भर में अच्छी नस्ल के साँड़ हो गए, क्या ऐसी हालत में बहुत जल्द युक्त-प्रांत के बैल और गाय की नस्ल तरक़्क़ी कर जायगी? इसका जवाब हम यह देंगे कि

कोरे बढ़िया साँड़ों के होने से ही हमारे उद्देश की सिद्धि न होगी। गोवंश की नस्ल अच्छी करने के लिये एक बात पर और ज़ोर देना चाहता हूँ, और वह है रद्दी साँड़ों के बधिया करने की बात। अच्छी नस्ल के लिये भी ज़रूरी है कि रद्दी और इधर-उधर फिरनेवाले साँड़ों को बधिया कर दिया जाय। पर फिर यह सवाल आता है कि रद्दी साँड़ों के बधिया कर देने और बढ़िया नस्ल के साँड़ों के देहात में होने से गोवंश की नस्ल अच्छी हो जायगी ? क्या इन दो बातों से हम नस्ल अच्छी करने में सफल होंगे ? ये दो बातें तो गोवंश-प्रासाद-निर्माण के लिये दो सीढ़ियाँमात्र हैं। हमें और भी कुछ करना होगा।

सूबे में बहुतों का यह ख़याल है कि हरियाने के साँड़ और गाएँ ही इस सूबे के लिये बढ़िया हैं। पर यह ख़याल ग़लत है। हमें तो अपने सूबे को अपनी ज़रूरियात के हिसाब से कई भागों में बाँटना है। और, बड़ी मुश्किल की बात तो यह है कि हरियाने के बढ़िया साँड़ हम सूबे-भर में बाँट सकें, उतने साँड़ों का मिलना भी संभव नहीं। इतने साँड़ हैं ही नहीं, और, हम केवल इस बात पर अड़े रहें, तो इसमें अधिक दिन लग जायँगे। ज़रूरत तो इस बात की है कि हम अपने सूबे में गाय-बैलों का वर्गीकरण कर लें कि किन-किन ज़िलों में किस प्रकार के गाय-बैल उपयुक्त होंगे। उदाहरण के लिये यू० पी० के पश्चिमी ज़िलों में, यानी आगरा-डिवीज़न, मेरठ-डिवीज़न (देहरादून-ज़िले को छोड़कर), झाँसी, इलाहाबाद और रुहेलखंड-डिवीज़न के कई ज़िलों में, पंजाब के-से गाय-बैल बड़ी आसानी से हो सकते और रह सकते हैं। प्रतापगढ़ और पूर्वीय ज़िलों में शाहीवाल-जाति के गाय-बैल उपयुक्त साबित हो सकते हैं, और एक दूसरे प्रकार के बैल भी, जो क़द में नाटे पर बड़े तेज़ होते हैं, और जिन्हें खैरीगढ़-जाति का कहते हैं।

पहला काम यह होना चाहिए कि सबका वर्गीकरण कर लिया जाय कि कहाँ किस प्रकार के गाय-बैल ठीक रहेंगे, और फिर बधिया करने के लिये ढीलेपन से काम न चलेगा। कांग्रेस-मंडल, पंचायत और सरकारी कर्मचारी मिलकर पहले बाक़ायदा ख़ूब प्रोपेगेंडा करें कि रद्दी साँड़ों को बधिया कर देने से ही लाभ है। इन पंक्तियों के लेखक का ख़याल है कि एक महीने के अंदर प्रत्येक ज़िले में तारीख़ मुक़र्रर करके रद्दी साँड़ों को बधिया किया जा सकता है, अगर ठीक प्रोपेगेंडा हो। रद्दी साँड़ों के बधिया हो जाने से ख़राब नस्ल की आशंका न रहेगी, साथ ही अच्छे साँड़ों के बटवाने की कोशिश भी करनी चाहिए।

दूसरा काम यह होना ज़रूरी है कि लोग पशु-पालन-समिति खोलें, और हरएक अच्छी नस्ल के जानवरों को रजिस्टर्ड करा लें, जैसे घुड़दौड़ के घोड़े रजिस्टर्ड करा लिए जाते हैं। ऐसा होने से हरएक जानवर का जन्मपत्र-

सा तैयार रहेगा। पहलेपहल हमें अच्छे साँड़ों की दिक़्क़त होगी, इसलिये यह ज़रूरी है कि भिन्न-भिन्न स्थानों में पशु-पालन-क्षेत्र खोलने के अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से पशु-पालन करनेवालों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। जिनके पास साँड़ बढ़िया हों, या पशु-पालन-समिति की सहायता से जिन्हें सरकार ने साँड़ दिए हों, जिनको ओसर गाय दी हो, उन्हें बाज़ार की क़ीमत से कुछ अधिक क़ीमत देकर बछड़े और बछियाँ ख़रीद लेनी और सब स्थानों में बाँट देनी चाहिए। अच्छे साँड़ों का मिलना उतना सरल नहीं, जितना पंजाबी अच्छी ओसर गाय या बछिया का। उनको देहात में पशु-पालन-समिति के हाथों, क़िस्तों पर, आसानी से बेचा जा सकता है। मान लीजिए, हम इतना काम कर भी लें, तो क्या इससे नस्ल अच्छी हो जायगी ? आज अगर किसी किसान का बीस-बाईस रुपए का बैल मर जाता है, तो वह रो-धोकर बैठ जाता है। स्मरण रहे, काश्तकार की अस्सी फ़ीसदी पूँजी उसके बैल हैं। उनकी पूँछ पकड़कर वह ग़रीबी की वैतरणी पार करने की कोशिश करता है। अगर उसके पास डेढ़ सौ रुपए के बैल हैं,और किसी प्रकार बीमारी से मर गए, तो उसका तो सर्वनाश ही समझना चाहिए।

पशु-पालन की उन्नति की तीसरी सीढ़ी है जानवरों की बीमारियों का इलाज। जब तक देहातवालों के लिये जानवरों के डॉक्टर अधिक संख्या में न होंगे, जो प्रत्येक गाँव को देख सकें, तब तक पशु-पालन की उन्नति नहीं हो सकती। दूसरे, जब कोई संक्रामक रोग जानवरों को होता है, तब सैकड़ों की तादाद में वे मर जाते हैं। बहरहाल जानवरों का एक-एक डॉक्टर हर तहसील में पाया जाता है, जो सब देहातों के लिये काफ़ी नहीं। बड़ी दिक़्क़त तो यह है कि जानवरों की डॉक्टरी सीखने के लिये कम-से-कम तीन वर्ष का कोर्स है। और, अगर सरकार चाहे कि सूबे-भर में १०० जानवरों के डॉक्टर और बढ़ा दिए जायँ, तो मुश्किल से दो दर्जन डॉक्टर भी न मिलेंगे, जो ठलुआ हों, या दूसरे सूबों से बुलाए जा सकें। हाँ, स्टाकमैन, जो कंपाउंडर का काम करते हैं, इस काम के लिये ६ महीने में तैयार हो सकते हैं। जब डॉक्टर न मिल सकें, तो इनसे ही काम लेना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह कि गाय-बैल की नस्ल अच्छी करने के लिये यह भी लाज़िमी है कि जानवरों की बीमारी का भी प्रबंध हो। इसके साथ एक काम यह भी हो सकता है कि जानवरों की बीमारी के लिये देहात की ओषधियों का उपयोग हो। जितने आज़मूदा नुस्ख़े हैं, काम-चलाऊ काम उनसे भी हो सकता है, पर बीमारी रोकने का काम बहुत ज़रूरी है। बरसात से पहले और बरसात के दिनों में देहात में कभी-कभी बीमारी का इतना दौरा होता है कि सैकड़ों जानवर मर जाते हैं, उनके इलाज के लिये कोई प्रबंध नहीं

होता। जब तक हम बीमारी रोकने का ठीक प्रबंध न करेंगे, तब तक बढ़िया नस्ल के जानवर पनप नहीं सकते। पर इसके मानी यह नहीं कि जब तक उनके इलाज का ठीक प्रबंध न हो, तब तक गाय-बैल की नस्ल बढ़िया करने की कोशिश ही न की जाय। सब काम साथ-साथ चलाने चाहिए, तभी काश्तकार का भला हो सकेगा।

चौथी बात उनके चारे-दाने की है। बड़ी नस्ल के जानवरों के लिये बहुत चारे-दाने की ज़रूरत पड़ती है। ज़मीन के ऊपर इतना भार है कि चरागाह मिट-से गए हैं, इसलिये हमें ऐसा करना चाहिए कि हमारे जानवर घर पर भी चारा खाने के आदी हों। हमें चरागाह बनाने की भी कोशिश करनी चाहिए। पशुओं की नस्ल बिगड़ने का एक कारण यह भी है कि चरागाहों की कमी हो गई है। आबादी ज़ोरों से बढ़ रही है, और बची खुची ज़मीन पर खेती हो रही है। ऐसी हालत में चरागाह बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। युक्त-प्रांत की सैकड़ों एकड़ ज़मीन ऊसर पड़ी है। जिसे हम ऊसर कहते हैं, उसमें बरसात में ख़ासी घास उग आती है। ऊसर बहुत बढ़िया चरागाह में परिवर्तित किया जा सकता है। बरसात के दिनों में चारे की अधिकता होती है। उन दिनों यह करना चाहिए कि गाँव की पंचायतें मिलकर गाँव-भर के लिये साइलेज ज़रूर तैयार करें। किसी भी योजना के बनाने में हमें यह ख़याल रखना चाहिए कि वह योजना शेख़चिल्ली की-सी न हो। लाखों-करोड़ों की योजना—आकाश-पाताल के क़ुलाबे मिलाए जाने की योजना कोई भी मूर्ख बना सकता है, पर हमें तो अपनी सीमित दिशा में और थोड़े-से रुपयों में काम चलाना है। इसलिये हमें चाहिए कि देहात की पंचायतें देहात-भर के लिये साइलेज तैयार करें। हर काश्तकार अपने खेत से ज्वार की पूली अथवा घास पंचायती साइलों* में साइलेज बनाने के लिये ले, और उसका हिसाब बाक़ायदा रजिस्टर में होना चाहिए। जाड़े या फाल्गुन के क़रीब जब चारे की ज़रूरत पड़े, तब साइलों से चारा लिया जाय। ऐसा करने से एक तो बरसात में पैदा हुए अधिक चारे का सदुपयोग हो जायगा, और दूसरे चारे की कमी के दिनों में हरा चारा साइलेज के रूप में जानवरों को मिल जाया करेगा। यह काम बहुत सरल है, और ऐसा करने से चारे की बहुत-सी कठिनाई दूर हो जायगी। इसके अलावा जब चरागाह का प्रबंध हो जायगा, तब देहात की दूसरी समस्या भी हल हो जायगी। वह समस्या है ईंधन की कमी। काश्तकार मूर्ख नहीं, वे जानते हैं कि गोबर का मूल्य सोने से आँका जा सकता है, पर वे क्या करें। वे भी आदमी हैं, उनके भी बाल-बच्चे हैं, उनको भी पेट विवाह-शादी करनी पड़ती है, उनको भी

---

* साइलो उस गढ़े को कहते हैं, जिसमें साइलेज बनाया जाता है।—लेखक

की आग बुझाने के लिये रोटी खानी पड़ती है। जब ईंधन नहीं है, तब रोटी कैसे करें? इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिये वे गोबर को ईंधन के काम में लाते हैं। किसी प्रकार ईंधन का प्रबंध हो जाय, तो गोबर खाद के काम में आने लगे। जब खाद होगी, तब ईंधन और खेती की पैदावार बढ़ेगी।

पाँचवीं बात पशु-पालन के मामले में पशुओं की बिक्री का सवाल है। इस मुल्क में गोधन की ज़रूरत हमेशा रहेगी। पर सभा-सुसाइटी का काम यह होना चाहिए कि अच्छी नस्ल के जानवरों के बेचने का प्रबंध किया जाय, और जहाँ जानवरों की कमी हो, वहाँ बढ़िया जानवर, उनका जन्मपत्र देखकर, बेचे जायँ। जानवरों के मेलों को प्रोत्साहन देना चाहिए, और इस मामले में कुछ इनाम भी रखना चाहिए। छ-सात वर्ष पहले हमने एक अमेरिकन की लिखी एक किताब पढ़ी थी। उसमें चित्र अधिक थे, लिखा हुआ मैटर कम। उसमें विशेषज्ञों ने अच्छी नस्ल की गाय की पहचान लिखी थी कि अच्छी नस्ल की गाय को सामने से देखने से क्या चीज़ें दिखाई पड़ती हैं। बग़ल से देखने से वह कैसी हो, उसका माथा कैसा होना चाहिए, उसके नथने कैसे होने चाहिए, उसकी टाँगें कैसी होनी चाहिए, उसके सींग कैसे होने चाहिए, और उसकी दूध की नसें कैसी होनी चाहिए। यही बात बैलों के लिये भी हो सकती है। इस विषय में छोटी-छोटी पुस्तकें, जिनकी क़ीमत दो-चार आने से ज्यादा न हो, हज़ारों की संख्या में बाँटी जानी चाहिए। जानवरों के मेले हर ज़िले में, हर कमिश्नरी में और फिर जाकर सूबे-भर में होने चाहिए।

एक और ज़रूरी बात इस मामले में यह है कि जो लोग गो-पालन और दूध-समितियाँ क़ायम करें, उन्हें शहर के क़रीब से, या शीघ्र ही मोटर या रेल से शहर में, दूध भेजने का प्रबंध करना चाहिए। दूध बेचनेवाले ग्वालों को म्युनिसिपैलिटी लाइसेंस दे, और जिन गायों और भैंसों का दूध दुहा जाय, उनकी डॉक्टरी भी होनी चाहिए, जिसमें दूध शुद्ध मिले *।

---

* इस लेख में पशु-पालन पर सरसरी तौर से लिखा गया है। अधिक विस्तार से लिखने में लेख का कलेवर बढ़ जाता। पर इस विषय की चर्चा समाचार-पत्रों में बहुत होनी चाहिए।—लेखक

युग-शासन

[श्रीदुलारेलाल भार्गव]

इक मियान मैं रहि सकत कहुँ जदि जुग तरवार,
तौ भारत हू सहि सकत जुग-सासन कौ मार!

लुगानो (स्विट्ज़रलैंड)

[श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास]

स्विट्ज़रलैंड समस्त योरप-खंड में निःसंदेह भू-स्वर्ग है। इस भू-स्वर्ग के किसी भी ग्राम, नगर या शून्य भू-भाग पर ही चले जाइए, प्रकृति की अभिरामता पर आपका मत्त मन - मयूर नाचने लग जायगा। समस्त 'स्वीस्' देश दो प्रकार से बसा है—कहीं समतल भू-भाग पर नगर और ग्राम बसे हैं, और कहीं निरंतर प्रवाहमयी, निर्मल-सलिला झील के दोनो ओर क्रमबद्ध चली जाने वाली शतशः छोटी-बड़ी, ऊँची-नीची पर्वत - मालिकाओं पर प्रकृति की कमनीय कुंजों में सुंदर आवासों से युक्त ग्राम और मनोहर नगर बसे हैं।

कुछ लोगों का मत है कि स्वीस्-भूमि में सबसे सुंदर स्थान 'लू-सर्न' है। यात्रीगण प्रायः इसी ख्याति-लब्ध स्थान को देखकर सारी स्वीस्-शोभा की कल्पना करके चले जाते हैं। परंतु बहुतों का मत है कि इस देश का सुंदर ग्राम 'लुगानो' है।

[व्यासजी श्रेष्ठ लेखक हैं। आप उज्जैन के सुप्रसिद्ध महामहोपाध्याय पंडित नारायणजी व्यास के ज्येष्ठ पुत्र हैं। भगवान् कृष्ण के गुरु महात्मा सांदीपन ऋषि के वंशज हैं। ज्योतिष-शास्त्र के पारंगत विद्वान् होने के कारण विदेशों में भी आपकी प्रसिद्धि है, और भारत तथा संसार के उथल-पुथल के संबंध में आपकी भविष्य-वाणियाँ सदा सत्य उतरती रही हैं। इसीलिये राजे-रईस और सेठ-साहूकार से लेकर सर्व-साधारण तक आपका आदर करते हैं। ललित कलाओं, साहित्य और भारतीय इतिहास तथा संस्कृति से आपको बहुत प्रेम है। आपने ज्योतिष की एक पाठशाला भी, ग़रीब विद्यार्थियों को छात्र-वृत्तियाँ देकर, चला रक्खी है। आप सुधा-मंडल के उत्साही सदस्य हैं। अभी हाल में विलायत गए थे। आपकी वहाँ की यात्राओं में से एक का इस लेख में उल्लेख है।—संपादक]

झूरिक्, बर्न और लूसर्न निरीक्षण के अनंतर मैंने विचार किया कि 'लुगानो' भी देखा जाय।

झूरिक् से लुगानो के लिये रेल-पथ से ८-९ घंटे का मार्ग है। मार्ग की पर्वतमाला को लाँघती हुई और उनकी दीर्घकाय उदर-दरी में घुसती हुई ट्रेन सरपट भागती चली जाती है। मार्ग का दृश्य भी अत्यंत नयनमोहक है। सैकड़ों माइल तक मार्ग के दोनो ओर अँगूर की लताएँ, हरे-भरे अँगूर के गुच्छों से लदी हुई, झूम रही हैं। उनके बीच-बीच विविध रंगों की पुष्प - लताओं से आच्छादित भवन और छोटे तालाब बड़े मनोहारी मालूम होते हैं। ज्यों-ज्यों गाड़ी स्वीस्-सीमा के मध्य में चली जा रही थी, वह पर्वत के अंचल में सर्पाकार गति से बड़ी भली लग रही थी। सहसा वह गिरि-कंदरा में वेग के साथ घुसी, अंदर विद्युत्प्रकाश से तिमिरावरण को हटाती हुई बढ़ी चली गई। परंतु यह गुफा इतनी छोटी न थी कि वह तुरंत बाहर निकल जाय। पूरी ताक़त से गर्जना करती हुई बढ़ी जाती थी, पर यह २८ माइल का अतिदीर्घ बोगदा था, आधे घंटे की लंबी तपश्चर्या

के बाद फिर वह रवि-किरणों के प्रकाश में बाहर आई। कितनी बड़ी कंदरा थी वह! बाहर अब वह

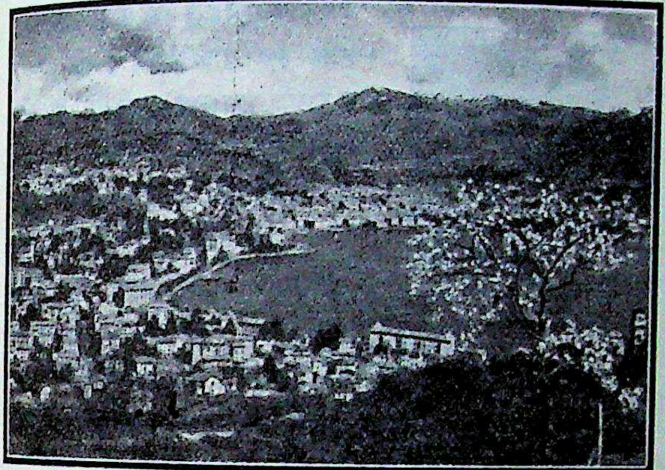

लुगानो का एक दृश्य

पुनः नागिन की तरह दूसरे पर्वत के सौध-शिखरवर्ती कटि-प्रदेश पर भागने लगी। अब जिस पर्वत के अंदर से वह निकली थी, उसकी अनुपम शोभा यहाँ से दिखाई पड़ने लगी। वह गगनस्पर्शी, महान् शैल रम्य हरीतिमा से आवृत अनेक छोटे-छोटे ग्रामों का केंद्र बना हुआ था। उस पर कई तलस्पर्शी झरने निरंतर स्वर-लहरी बहा रहे थे, और इस महान् शैल के शिखर पर अलग ट्रामें, और मोटरें तथा छोटी-छोटी रेलें भाग रही थीं। इधर हम बहुत नीचे उसके अंतस्तलगामी गह्वर से लुगानो के लिये सफ़र कर रहे थे। भय और आश्चर्य-मिश्रित विचारों का तूफ़ान मेरे मस्तक में उठ रहा था, किंतु इसे भुलाने के लिये ही चारो ओर प्रकृति का प्रचुर लावण्य दृष्टि-सीमा को केंद्रित कर रहा था। 'भय' स्थान भी कितना सुरम्य और प्रकृति-शोभा-धाम है!

इस प्रकार शोभा का निरीक्षण करता हुआ, आत्मविस्मृत हो ८-९ घंटे का समय सहज पार कर गया। पता नहीं चला कि किस प्रकार यह लंबी यात्रा इतनी शीघ्र समाप्त हो गई। ४½ बजे के लगभग लुगानो का विस्तीर्ण स्टेशन, एक उन्नत गिरि-शिखर पर, आया। गाड़ी सहसा रुकी, और लुगानो का सुंदर दृश्य सामने आ गया। यह छोटा-सा मनोहारी ग्राम गिरि-शृंग के ऊपर से नीचे ढालू ज़मीन के निम्नस्तल तक गोलाई लिए हुए अर्ध चंद्राकृति स्वीस्-झील के तट पर बसा है। यह इटली का फ्रांटियर (सीमा-प्रांत) है। ग्राम से लगी हुई, नीचे, सामने ही, दर्पण की तरह निर्मल, विस्तीर्ण झील है, मानो लुगानो पर्वत-शिखर से

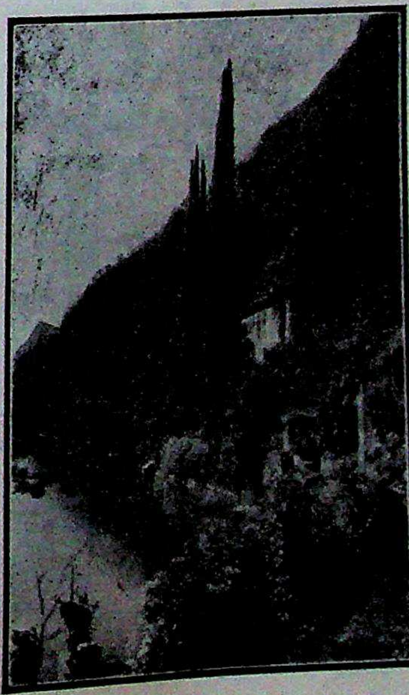

प्रकृति का जादू-भरा दृश्य

प्रकृति अपना अनुपम प्रतिबिंब निहार रही है।

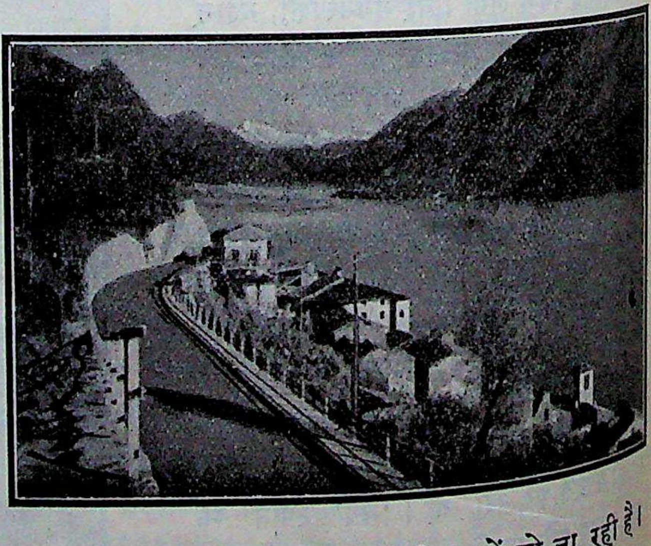

लुगानो की वह सड़क, जो इटली के ग्रामों को जा रही है।

इस दर्पण में अपना प्रतिबिंब देखने—शोभा निरखने—के लिये झाँक रहा है। सामने, झील के दोनो ओर, हिम-मुकुट-धारी अनेक गिरि-मालिकाएँ लुगानो के पड़ोस ही में हैं। आप चाहे कार द्वारा इन सुंदर-सुंदर ग्रामों की शोभा देख आइए, अथवा लुगानो से जानेवाली किसी नौका द्वारा जल-विहार करते हुए इन प्रकृति-सुंदर आवासों की झाँकी कर आइए। आप प्रकृति की शोभा देखते हुए मुग्ध हो जायँगे। ये ग्राम प्रायः इटली के हैं। कहीं छोटे-से किसी टीले पर १०-२० मकान बने हैं, तो कहीं ज़रा उससे ऊँचे सौध-शिखर पर १००-१५० मकान बने हैं। उन पर सर्वत्र लताएँ लिपटी हुई हैं, सामने, छोटी-सी, ऊँची-नीची ज़मीन पर, कला के साथ उद्यान की मनोहर रचना की गई है। साथ ही बिजली की चकाचौंध, रंग-बिरंगी प्रकाश की तरंगें उस ग्राम की शोभा को सामने की झील में एक नवीन सृष्टि बना देती हैं। उधर सामने की उसी तरह की गिरिमाला पर बसे हुए उद्यानमय ग्रामों का सीन प्रत्यक्ष और जल की लहरों में कैसा स्वर्गीय दृश्य उपस्थित करता है कि हृदय एक बार आत्मविस्मृत हो विचित्र लोक का अनुभव करने लगता है। खासकर उस यामिनी में, जब रजत चंद्रिका इस सौध रमणी का शृंगार कर देती है, हिम-मुकुट की मणिमय चकाचौंध में चाँदनी शीतल करों से उन सुंदर भवनों को नहला देती है, और विद्युल्लताएँ द्रुम-लताओं के झुरमुट से झाँक-झाँककर रंग-बिरंगे वस्त्र-परिधान पहना देती हैं, तब आप क्षण-भर के लिये, अपने कमरे में बैठे-ही-बैठे, झील में एक नज़र फेक दें, तो वह लौटकर वापस न आएगी, वहीं अटकी रह जायगी। और, यदि आप इस स्वर्गीय प्रकृति-लावण्य को अतृप्त नयनों से देखकर

जीवन की सार्थकता चाहते हैं, तो क्षण-भर के लिये सामने की झील में नौका-विहार कीजिए। वह, आपके शब्द-कोष में उस अनिंद्य सुंदरी, रूप-राशि सौध-रमणी की शोभा का वर्णन करने को कोई शब्द न मिलेगा। वह तो केवल देखते ही रहने और अनुभव-मात्र का विषय होगा। यहाँ दिन और रात दोनो ही आकर्षक होते हैं। रात को आकाश में लक्षावधि तारागण जब रजनी-रानी के अंचल को झिलमिल, जीवित, मणिमय अलंकारों से अलंकृत कर रहे हों, उस समय इन पर्वतों पर ऊपर से नीचे बसे हुए, हरे-भरे उद्यान-वाले ग्राम भी आकाश से स्पर्धा करने लगते हैं। ये भी रंग-बिरंगी रोशनी से, तारों की झिलमिल की तरह, भूमंडल पर आसमान का मानचित्र बना देते हैं। ऐसे अवसर पर वह मौन सरोवर भी जी भरकर शोभा-पान करके अपने हृदय पर सारा चित्र अंकित कर लेता है। कौन किससे बढ़कर है, और किसकी शोभा की किससे तुलना की जाय, यह निर्णय करना बुद्धि से परे का विषय हो जाता है।

श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास

दिन में ही जब प्रातःकाल रवि-रश्मि इन हिम-किरीटिनी गिरि-मालिकाओं को नहला देती है, तब इंद्र-धनुष से विविध वर्णों के अंबर धारण कर वे ग्राम शोभा के निकेतन बन जाते हैं। फिर झील अपने वक्षःस्थल पर अभिनव चित्र अंकित कर लेती है। यह भी अजीब दृश्य हो जाता है। लुगानो का एक दृश्य और भी अद्भुत होता है। जिस समय कुहरा छा जाता है, समस्त पर्वतों पर एक हलकी-सी शुभ्र चादर फैल जाती है, तब इन रंग-बिरंगे भवनों की, पर्वतों की, झील की छवि देखते ही बनती है। इस समय प्रायः प्रकाश के लिये बिजली भी खोल दी जाती है। कुहरे की इस झीनी चादर में प्रकृति-रानी "अंचल में दीप छिपाए, शशि-मुख पर घूँघट डाले" मानो अपने प्रिय की खोज करने निकली हो, ऐसा मालूम होती है। सुर-पुर की सुषमावाली यह प्रकृति-नवेली बाला लुगानो के लावण्य में चार-चाँद लगा देती है। आस-पास के ऊँचे-नीचे शिखरवाले अन्य पर्वत भी सुंदर मालूम होते हैं, मानो सौध-रमणी अपनी हमजोली सहेलियों के साथ, जो सभी सफ़ेद चादर ओढ़े, घूँघट काढ़े खड़ी हैं, प्रकृति-वधू का शृंगार निरखने आई हैं, या शोभा बढ़ाने को सजी हुई, लजीली रूप-रंभाएँ खड़ी हुई हैं। मैं चाह-भरे, अपलक नयनों से उस रूप-राशि गिरिमाला को देखा करता, और उसका एक चित्र अपने मानस-पटल पर अंकित कर लेता।

लुगानो-झील के किनारे-किनारे सड़क और

उद्यान की मालिका-सी बनी चली जाती है। नीचे

विशाल अट्टालिकाओं के बीच गलियां-वाला बाज़ार (लुगानो)

झील के तट पर खड़े होकर या नौका में जल-विहार करते समय लुगानो का एक दृश्य हृदय पर अमिट छाप लगा देता है। यहाँ भी होटलों की ही भरमार है। सैलानी लोगों का प्रायः आवागमन बना रहता है। छोटा-सा, किंतु बहुत ही सुंदरता से सजा हुआ एक बाज़ार है, जहाँ अनेक दूकानें घड़ियों की ही हैं। कुछ दूकानों पर इटली की कला-पूर्ण विविध वस्तुएँ मिलती हैं। लकड़ी और चमड़े पर काम की हुई अनेक डिज़ाइनों की बहुत-सी वस्तुएँ मिलती हैं। यहाँ की भाषा प्रायः इटली और स्त्रीस् है। सीज़न में अनेक इटैलियन अपनी दूकान चलाने यहाँ आ जाते और सीज़न ख़त्म होते ही चले जाते हैं। दिन-भर अनेक बिजली की लिफ़्टें पर्वत-शिखरस्थ आवास-भवनों के यात्रियों को नीचे लाती और ऊपर पहुँचाती हुई उतरती-चढ़ती चली जाती हैं। यह दृश्य भी दर्शनीय हो जाता है। स्कूल और गिरजे के अतिरिक्त या तो कुछ दूकानें या होटलों के भव्य प्रासाद ही दिखाई देते हैं। ये भी अपनी सुंदर सजावट से रईसों के महलों को लज्जित करनेवाली शान-शौकत के हैं। ग्राम में झील के तट पर छोटे फ़व्वारों और उनके आस-पास उद्यानों की शोभा भी अद्भुत है!

गोल्फ, स्वीमिंग बॉथ, लुगानो का कैथेड्रल और गलियोंवाला बाज़ार, ये दर्शनीय स्थान हैं। लुगानो की 'मौंटेब्री' पर फैले हुए इटैलियन प्रदेशों की भी हमने सैर की। कहीं नौका से जल-तरंगों में हृदय-तरंगें मिलाते हुए, कहीं 'कार' द्वारा नागिन की तरह बल खाती हुई सड़कों से सैर की। कुछ क्षणों में ही क्रमशः ओरिया, सोरेंजो, स्टेटो-डे-लेवेना, मोरकोटे, पोटे-डि-मेज़ीडे, मामेटटे-कास्टेलो,

सुंदर फ़व्वारा और वृक्षावृत नगर-मार्ग

गॅंड्रिया, कॅंपियानो, कार्सो, कोमो, व्हिला-डेस्टा और व्हिला-कारेलोटा आदि स्थानों की मनोमुग्धकारी यात्रा की। व्हिला-डेस्टा, व्हिला-कारेलोटा और कोमो की सैर तो जीवन-भर विस्मृत न हो सकेगी। इन (कहने को) छोटे-से ग्रामों की रचना और प्राकृतिक सुंदरता इतनी मनोहारिणी है कि हृदय वहाँ से हिलने को न चाहेगा। ये ग्राम कलामयी इटली की स्वर्गीय सुषमा से परिपूर्ण हैं। इटली का एकमात्र भव्य भवनवाला ग्राम 'व्हिला-डेस्टा' तो समस्त योरप में विख्यात है। इस एकमात्र होटल में 'चाय' की आराधना करने विश्व के अनेक अमीर, सम्राट् और सुप्रसिद्ध मानव आ चुके और आते रहते हैं। उस पुनीत, आकर्षक भूमि के दर्शन का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ है। यह समस्त प्रदेश ही प्रकृति-रम्य है।

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये
एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने
सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—
'गोनोकिलर'
[रजिस्टर्ड]

GONO KILLER
ORIGINAL
REGD TRADE MARK

नक़ली से सावधान !
खरीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्गा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा और इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में फ़िज़ूल पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च अलग।
एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४
लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

विष्णु-कांते !

[श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०]

मंजु मरकत-प्यालियों में—
कौन-सी सुरभित सुरा भरकर छिपी हो डालियों में ?
हृदय-धन की छवि छिपाकर सफल नयनों में रसीली !
रस-रहस्य बहा रही हो मुस्किराकर आलियों में।
खेलतीं लहरें जिसे पा जलधि में तरणी-सरीखी ;
मत्त हैं मधुकर, हुआ क्या पान कर इन प्यालियों में ?

श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०

अयुत श्रवणों से जिसे सुन, मुग्ध हो-हो झूमती हो,
भैरवी कैसी सुरीली है छिड़ी विहगालियों में ?
गूढ़ गुंजन-रत पतिंगे क्षिप्त होते, घेरते हैं ;
ज्योति कैसी है छिपी इन अलक-लतिका-जालियों में ?
मूल में जीवन चढ़ाते मालियों से भेद तो कह ;
होड़ किस मणि के लिये है आज अगणित व्यालियों में ?
हो रही किस भूप के आह्वान की यह योजना है ?
कुसुम-अंजलियाँ सजीं, फल सज रहे हैं डालियों में।

एडिटर कितना सच बोलता है

[मिस्टर जंगबहादुरसिंह, असिस्टेंट एडिटर 'दि ट्रिब्यून', लाहौर]

एडिटर कितना सच बोलता है ? जो साहब यह सवाल करते हैं, असल में उनकी ख्वाहिश यह जानने की होती है कि एडिटर कितना झूठ बोलता है। क्या वकील, क्या डॉक्टर, क्या व्यापारी, क्या एडिटर, थोड़ा-बहुत झूठ हर-एक बोलता है। कोई तो अपनी बात में सिर्फ़ इतना झूठ मिलाता है, जितना दाल में नमक पड़ता है, और कोई उससे ज़्यादा। सच तो यह कि अगर झूठ का इस्तेमाल बिलकुल बंद कर दिया जाय, तो यही नहीं कि ज़िंदगी बदमज़ा हो जायगी, बल्कि दुनिया का काम एकदम पट पड़ जायगा।

हिंदी के मशहूर शायर तुलसीदास ने रामायण में पक्के झूठे की तारीफ़ यों की है—झूठ ही ,उसका बिछौना होता है, झूठ ही उसका ओढ़ना और झूठ ही उसका चबेना। महाभारत में युधिष्ठिर के झूठ बोलने की एक मज़ेदार कहानी है। कहते हैं, युधिष्ठिर भूलकर भी कभी झूठ नहीं बोलते थे। लेकिन लड़ाई में फ़तह हासिल करने के लिये उन्होंने एक

बार अपने एक एलान में झूठ की पुट लगा ही दी। कौरवों की फ़ौजें पांडवों की फ़ौजों को दबाती चली आ रही थीं। उनके छक्के छूट गए थे। अश्वत्थामा की बहादुरी के आगे किसी की कुछ नहीं चल रही थी। ऐसे कठिन समय में दुश्मन की फ़ौजों का दिल तोड़ने के लिये युधिष्ठिर ने चिल्लाकर कहा कि अश्वत्थामा मारा गया, और धीरे से कहा कि पता नहीं कि वह नर था या कुंजर। नर के मानी होते हैं आदमी, और कुंजर के मानी हाथी। एक अश्वत्थामा नाम का हाथी भी लड़ाई के मैदान में मौजूद था। बड़ी चतुराई से मशकूक बात कहकर युधिष्ठिर ने अपने दिल को बहलाया; सोचा, छोटा-मोटा झूठ बोलकर काम भी बना लिया, और जन्नत भी हाथ से न गई। कौरवों की फ़ौज तितर-बितर हो गई, और जीत पांडवों के हाथ लगी। आगे क्या हुआ, किस तरह से हल्का-फुल्का झूठ बोलने की वजह से युधिष्ठिर को दोज़ख़ की सैर करनी पड़ी—इसका ज़िक्र करना फ़िज़ूल है। रामायण और महाभारत का हवाला देने से मेरा मतलब महज़ इतना है कि आप झूठों की क़िस्मों से वाक़िफ़ हो जाइए। एक झूठा ऐसा होता है, जिसकी रग-रग में झूठ कूट-कूटकर भरा होता है, और एक ऐसा, जिसके दामन में हल्का-सा झूठ का दाग़ लगा होता है। एडिटर बीच की क़िस्म का झूठा होता है। आम तौर से जो लिटरेरी भोजन वह सुबह-शाम लोगों को पेश करता है, उसमें सच और झूठ मुनासिब मिक़दार में होते हैं, ताकि क़ौमी ज़िंदगी में कोई गड़बड़ न मचे। लेकिन कभी-कभी वह दानिशमंदी को उठाकर ताक़ में रख देता है। तब झूठ का बाज़ार गरम हो जाता है, और शरीफ़ों की समझ में नहीं आता कि क्या करें।

[श्रीजंगबहादुरसिंहजी सुधा-मंडल के श्रेष्ठ लेखक हैं। लाहौर के प्रसिद्ध दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' के उप-संपादक होने की वजह से उन्हें अधिकतर अँगरेज़ी में ही लिखना पड़ता है, हिंदी लिखने का अवकाश उन्हें बहुत कम मिलता है। पर इससे यह न समझा जाय कि वह हिंदी को हीन समझते हैं। अपनी मातृभाषा से उन्हें प्रगाढ़ प्रेम है। अपना यह लेख उन्होंने बहुत दिन बाद, कहने-सुनने पर, लिखा है। इसकी भाषा न हिंदी है, न उर्दू, बल्कि हिंदोस्तानी। सरल, मुहावरेदार, पुरज़ोर भाषा लिखने में बहुत कम लेखक आपका मुक़ाबिला कर सकते हैं। आपकी भाषा में प्रवाह है, और प्रभाव भी, इसीलिये दिल पर असर करती है।—सुधा-संपादक]

क्या यह जो दस्ते-के-दस्ते सच-झूठ के सफ़ेद-स्याह रंग में रँगे हुए प्रेस से निकलते हैं, उन सबके अच्छे या बुरे असर के लिये एडिटर ज़िम्मेदार होता है? कहने के लिये तो होता है, लेकिन अस्ल में अख़बारों का पेट सैकड़ों नामा-निगार, दर्जनों लेखक और कई ख़बर इकट्ठा करनेवाले एजेंट भरते हैं—वे ज़्यादा ज़िम्मेदार होते हैं। मेरे साथ एक प्रेस में आइए, और उस हैरत-अंगेज़ मैशीनरी को देखिए, जो आपको पहाड़ की चोटियों से, जहाँ परिंदे पर नहीं मार सकते, और नार्थ और साउथ पोल से, जहाँ .ख़ून नसों में जम जाता है, ख़बरें लाकर देती है, और समुंदर-से गहरे दिलवाले स्टेट्समैनों के दिल की बातें बताती है। कितनी अजीब इसकी बनावट है। एडिटर अपने स्टाफ़ के साथ ऐसे

बैठा है, मानो क़यामत तक वहीं बैठा रहेगा, जहाँ बैठा है। मेज़ों पर कोरे काग़ज़ या खबरों से लिपे-पुते काग़ज़ पड़े हुए हैं, और उन पर क़लमें सरपट दौड़ रही हैं। नज़दीक ही ऐरावत हाथी की तरह भारी-भरकम रोटरी मैशीन खड़ी है, जो पलक मारते स्याही के हरूफ़ों को लेड के हरूफ़ों का रूप दे देती है। यह प्रेस संसार के कोने-कोने से जुड़ा हुआ है। साइंस ने आसमान में इधर-से-उधर ख़बर पहुँचाने के लिये तार और बेतार के तार का ऐसा जाल बिछाया है कि भूतल के पढ़े-लिखे बाशिंदों को चौबीस घंटे के अंदर हरएक के बारे में हरएक जानने लायक़ बातों का ज्ञान हो जाता है।

हिंदोस्तानी अखबार विदेश की खबरें रयूटर से लेते हैं, और अपने देश की ऐसोशिएटेड प्रेस और यूनाइटेड प्रेस से। इनके अलावा उन्होंने जगह-जगह पर अपने नामानिगार मुक़र्रर कर रक्खे हैं—खासकर उन सूबों में, जहाँ उनकी खासी खपत होती है। वह भी रोज़ खबरें इकट्ठा करके इनको भेजते हैं। पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन, चारो तरफ़ से खबरों की बौछार अखबार के दफ़्तर में होती है। इस बौछार में सच्ची-झूठी अफ़वाहें, ज़ीट-ज़पट और अललटप्पू बातें भी होती हैं। खबरों को काट-छाँटकर और बना-सँवारकर लोगों के सामने पेश करने के लिये सब-एडिटरों को ट्रेनें पकड़ने की जल्दी रहती है। उनके चुस्ती से छान-बीन करने के बाद भी अक्सर ऐसी चीज़ें अखबार में चली जाती हैं, जिन पर हरिश्चंद्र की औलाद—आप जानते हैं न, हरिश्चंद्र सचाई के ठेकेदार थे—एतराज़ कर सकती है। एतराज़ करनेवालों को अगर किसी अख़बार के दफ़्तर में दस-पंद्रह दिन के लिये बंद कर दिया जाय, तो ज़रूर उनकी मीन-मेख निकालने की आदत जाती रहे। जब रात-भर जागना पड़े, निंदर-वन से नींद आकर बार-बार हमला करे, ऊपर से मच्छर, भुनगे और पतिंगे चोट करें, पसीने के कारण नम बदन और गीले कपड़े चप-चप करें, और मैशीनमैन की हाहाकार चेतावनी से कि डाक रह जायगी, कान के परदे फटने लगें, तब इन हज़रात को पता चले कि किस तरह ग़लत खबरें हर तरह के एहतियात करने के बाद भी छप जाती हैं।

कहीं कोई यह न समझ बैठे कि मैं सारा दोष खबर देनेवालों के सिर मढ़ना चाहता हूँ, इसलिये उनकी मुश्किलात की भी थोड़ी-सी चर्चा किए देता हूँ। इनको 'आकाश और पाताल का चक्कर काटकर खबरें जमा करनी पड़ती हैं। अक्सर राजनीति का समुंदर मथकर सार की बातें निकालनी पड़ती हैं। हरएक सियासी गिरोह अपने मतलब की बात छपवाना चाहता है—जो खबरें वह अखबारों के नामानिगारों को देता है, उन पर अपने मन के मुताबिक़ मुलम्मा चढ़ाकर जब नुक़्ताचीनी शुरू होती है, तब वह कहता है कि नामानिगारों की शरारत है, बात इन पाजियों ने ठीक तरह से लोगों के सामने पेश नहीं की। लीडर साह-बान बयान देते हैं, फिर मुकर जाते हैं, या आयँ-बायँ-सायँ करने लगते हैं। "हमने कहा था आम, लेकिन बेईमान अखबारवालों ने उसे इमली बना दिया" बिना किसी तरह की हिचकिचाहट के वह इस तरह की ज़लील दलील का सहारा लेते हैं। जंग में, मार-पीट में, धींगा-मुश्ती में जो ज़ालिम होता है, उसकी यही कोशिश होती है कि अखबारनवीस मज़लूम को उसका जामा पहनाकर लोगों के सामने पेश करें, और उसको मज़लूम का। जो ऐसा नहीं करते, उनके काम में खलल डाला जाता है, उनके रास्ते में रोड़े अटकाए जाते हैं, और उनके मुँह पर कालिख पोतने की कोशिश की जाती है। पुलिस की चौकी पर, कौंसिलों और

एसेंबलियों में, सभा-सोसाइटियों में, सभी जगह बेचारे जर्नलिस्टों को तलवार की धार पर चलना पड़ता है। अगर ज़रा-सा भी उनका बैलंस बिगड़ जाता है, तो जो लोग ख़ार खाए बैठे रहते हैं, वे चिल्लाना शुरू करते हैं—"झूठे हैं, झूठे।"

मैंने यह सफ़ाई इसलिये पेश नहीं की कि यह साबित कर दूँ कि अखबारों में जो कुछ छपता है, वह खरा सोना होता है। मैं शुरू में ही यह कह चुका हूँ कि अगर संसार में सच का अखंड राज्य हो जाय, तो यहाँ एक मिनट भी हमारी तबियत न लगे। अखबारनवीस जानते हैं कि संसार को रंगीन बनाए रखने के लिये झूठ के प्रचार की किस हद तक ज़रूरत है—वे उसी हद तक इसका प्रचार करते हैं। कभी-कभी वे बहक जाते हैं—आख़िर इंसान हैं—और ऐसी खतरनाक बेसिर-पैर की बातें फ़ैला देते हैं, जिससे रंग में भंग हो जाता है। कुछ झूठे होते हैं पागल कुत्तों की तरह। जो पागल कुत्ते पालते हैं, उनके साथ मेरी बिलकुल हमदर्दी नहीं। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा वग़ैरह के मुताल्लिक़ जो लोग ग़लत और चिनगारी-सी भयंकर खबरें जान-बूझकर फैलाते हैं, उनको मैं प्यार करने लायक़ झूठों में कभी शामिल नहीं कर सकता। इन महाशयों को कोई जितना चाहे कोसे, इलम क़सम मैं कुछ नहीं कहूँगा।

कुछ जगहें ऐसी हैं, जहाँ सिर्फ़ झूठी खबरों की खेती होती है; वहाँ सच्ची खबरों की एक भी फ़स्ल नहीं होती—मसलन् रीगा। रीगा से जो खबरें आती हैं, सरासर मन-गढ़ंत होती हैं। रूसी आपस में कट मरे, और रूस रसातल को चला गया, यह बार-बार सुनने में आता है। सभी एडिटर जानते है कि रीगावाले ने एकदम बेपर की उड़ाई है, लेकिन वे खबरें बिना आना-कानी किए छाप देते हैं। रूस का कुछ जाता नहीं, लोगों का दिल-बहलाव हो जाता है। पंजाब में भी एक रीगा है। आप भाँप गए होंगे; नाम लेने से क्या फ़ायदा। पंजाबी गप्पी रीगावाले गप्पी से एक बात में बढ़ा-चढ़ा है; वह उससे बेहतर मख़ौल करने के आर्ट को समझता है। उसकी ख़बरें भी एडिटर यह जानते हुए कि बिलकुल बेबुनियाद हैं, बड़े चाव से छापते हैं। क्योंकि बूढ़े-बच्चे, सभी यह सुनकर ख़ुश होते हैं कि दो साँप—शायद मियाँ-बीबी—बुत से लिपटे हुए हैं, और लोगों के छेड़ने पर भी टस से मस नहीं होते। लोगों ने उनको दूध पिलाना और उनकी पूजा करना शुरू कर दिया है। यह भी सुनकर दाना और नादान बराबर प्रसन्न होते हैं कि एक मकान में भूतों ने डेरा डाल रक्खा है, और मजिस्ट्रेट ने उस मकान की तलाशी लेने के लिये पुलिस को हुक्म दिया है। अगर पंजाबी रीगा से बराबर इस तरह की ख़बरें आती रहीं, तो वह दिन दूर नहीं, जब एक औरत के छ बच्चे होनेवाली ख़बर, जो दो-तीन साल हुए दोआबा से आई थी, और तमाम अख़बारों में धूम से छपी थी, मात हो जायगी। जब लाहौर के एक रोज़ाना अख़बार का फ़ोटोग्राफ़र उस मशहूर गाँव में गया, जहाँ से वह सनसनी-खेज़ ख़बर आई थी, तब उसे पता चला कि छ बच्चे जननेवाली औरत तो दरकिनार, वहाँ ऐसी कोई कुत्ती भी नहीं, जिसने छ पिल्ले दिए हों। भूत, साँप और ज़च्चाख़ाना के मुताल्लिक़ ऐसी अटायँ-सटायँ बातों के छपने पर, जिससे पंजाब के सियासी हालात ख़राब नहीं होते, किसी को एतराज़ नहीं हो सकता। योरप में तो किसी तरह की बंदिश मालूम नहीं देती। एडिटर लोग मनमाना झूठ बोल सकते हैं। ज़िनोविफ़-लेटर की कहानी सभी जानते हैं। कहते हैं, वह चिट्ठी जाली थी। टोरी अख़बारों में वह ख़ास अंदाज़ स निकली, और उसके सहारे कंज़रवेटिव पार्टी ने ऐसी हवा बाँधी कि लेबर

पार्टी उसके सामने क़दम न जमा सकी। चुनाव में उसकी बुरी तरह से हार हुई। चुनाव के मौक़े से कहीं ज़्यादा झूठ बोला जाता है लड़ाई के मौक़े पर। एक बीस बरस पुराना शेर सुनाता हूँ—मैं छोटा-सा लड़का था, जब मैंने पहली बार उसे सुना था, लेकिन मुझे अभी तक याद है। शेर किसी होशियार, चुभती हुई बात कहनेवाले शायर ने जंगे-अज़ीम की खबरों के मुताल्लिक़ कहा था—

प्रसब्योरो की ख़बरों से नतीजा यह निकलता है—
फ़तह इँगलिश की होती है, क़दम जर्मन का बढ़ताहै।

और ख़बर देनेवाली एजेंसियों की ख़बरों से उल्टा नतीजा निकलता था। यानी यह कि "फ़तह जर्मन की होती है, क़दम इँगलिश का बढ़ता है।" हाल की लड़ाई की ख़बरों से तो अक्सर किसी बात का नतीजा ही नहीं निकला। कोई ठीक-ठीक बता सकता है कि इटली और इथोपिया की मुठभेड़ या जापान और चीन की टक्कर में पहली गोली किधर से और क्यों चली? फ़्रांस के एक सरहदी गाँव पर गोलाबारी हुई, साथ ही उल्टे-सीधे अख़बारी बयानों के तीर चल पड़े। स्पेन की रिपब्लिकन सरकार के हिमायती प्रेस ने जेनरल फ़्रैंको को ज़िम्मेदार ठहराया, और जेनरल फ़्रैंको के पिट्ठू प्रेस ने कम्यूनिस्टों को। आज़ाद डेमोक्रैटिक मुल्कों में एडिटरों को अपने मन के मुताबिक़ झूठ बोलने की आज़ादी है। वे जैसा और जिस तरह चाहें, झूठ बोल सकते हैं। लेकिन उन्हें इस बात का ज़रूर खयाल रखना पड़ता है कि ऊँची कुर्सीवाले और मोटे मसनदवाले सरमायादार नाराज़ न हो जायँ, और क़ानून के देवता की खुल्लमखुल्ला तौहीन न हो जाय। जिस बात से मतलब हल होता है, उसे वे मोटे-मोटे हरूफ़ों में छाप देते हैं, और जिससे नहीं, उसे छोटे-छोटे हरूफ़ों में। सुर्ख़ियों में राई को पहाड़ बना देते हैं, और पहाड़ को राई। कभी-कभी बात को तोड़-मरोड़कर ऐसे पेश करते हैं कि आसानी से उसके असली रूप का पता ही न चले। अक्सर बेढब, मुँहफट मज़मूनों से पिंड छुड़ाने के लिये उन्हें रद्दी की टोकरियों में डाल देते हैं। मुख़्तलिफ़ पोलीटिकल पार्टी के अख़बारों के एडीटोरियल पेज आप एक ही बैठक में पढ़ जाइए, तो आप यह देखकर दंग रह जायँगे कि लाल चीज़ पीली साबित कर दी गई है, पीली चीज़ हरी और हरी चीज़ नीली। अख़बारी दलील एक अजीब चीज़ होती है। हमारे मुल्क में—हमारा मुल्क भी तो एक आज़ाद डेमोक्रैटिक मुल्क है न—यह ज़्यादातर कम्यूनल पटरी पर चलती है (कहीं कम्यूनिस्ट पटरी न समझ बैठिएगा), लेकिन करामात उसी तरह के करती है, जैसे और जगह। जिन मुल्कों में डिक्टेटरशिप हो गई है, उनमें एडिटर अपने मन के मुताबिक़ झूठ नहीं बोल सकते। वे ख़ास क़िस्म के ही झूठ बोल सकते हैं। जर्मनी में एडिटरों को सदा स्वस्तिका के ढंग का टेढ़ा-मेढ़ा झूठ बोलना पड़ता है, और इटली में एडिटरों को सदा फ़ैसिस्ट शर्ट के रंग का काला झूठ लोगों के सामने पेश करना पड़ता है। झूठ का रूप-रंग भले ही डिक्टेटरों ने ख़राब कर दिया हो, लेकिन जब तक जगत् में एक भी लिटरेरी आदमी मौजूद है, तब तक इसकी शान में फ़र्क़ नहीं आ सकता। फ़्रायड ने कहीं कहा है कि झूठ लिटरेचर की बुनियाद है। जो लोग किताबें लिखकर अमर हो गए हैं, उनमें से बहुतों को बचपन में झूठ बोलने की लत थी। जो कुछ अख़बारों में छपता है, वह एक तरह का लिटरेचर ही होता है; फिर भला, उसकी तह में अक्सर झूठ क्यों न हो? और, जो लोग अख़बार निकालते हैं, वे एक तरह के लिटरेरी मैन ही होते हैं; फिर भला, वह एक दम झूठ बोलना कैसे बंद कर दें?

कवि की खोपड़ी

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

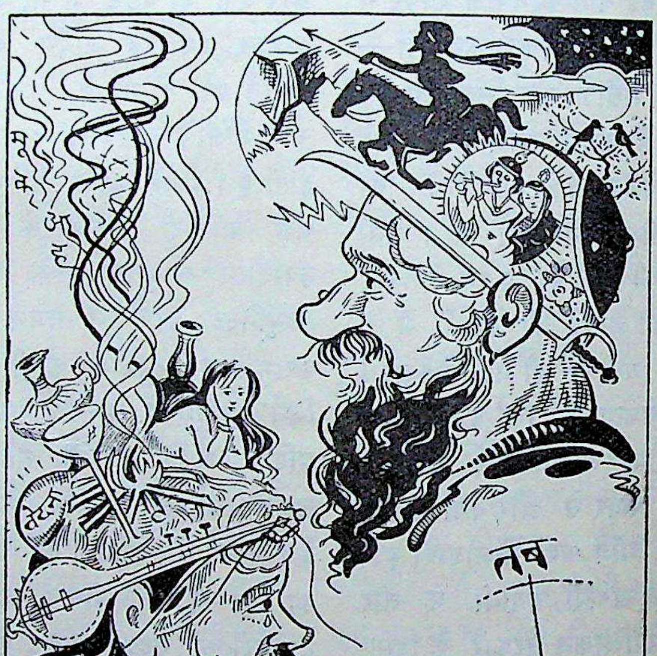

बीर - सांत - रस - मगन रहि रहे जु करत सचेत,
ते कबि अब सहि बेदना मूक आह ही लेत।
(दुलारेलाल भार्गव)

बदला

[श्रीयुत परिपूर्णानंदजी वर्मा]

(१)

जी लड़ाकर, जान लड़ाकर, अपना कलेजा निकालकर काम कीजिए, अपने पेट के लिये, अपने मालिक के लिये, अपने दीन व ईमान के लिये भी—सुबह से लेकर शाम तक मर मिटिए, फिर भी जब मालिक ख़ुश नहीं होता, काम करानेवाले का शिकायत बनी रहती है, और काम में सफलता नहीं मिलती, उस समय कैसी तबियत होती है! मन में कैसा क्षोभ होता है! जी चाहता है, सर पटक ले। मर जाय। आख़िर असफलता क्यों हुई? बेईमानी नहीं की। हाथ काला नहीं किया। फिर भी काम में सफलता क्यों न मिली? ऐसे ईमानदार, असफल व्यक्ति की चित्त-वृत्ति बड़ी चंचल होती है। उसका मनोवेग बड़ा भयंकर होता है। उसकी आत्मा कराह उठती है। वह सोचता है, संसार में नेकनीयती का कोई तरीक़ा नहीं। अच्छाई का जवाब बदी से मिलता है! इसलिये अच्छा रहने से लाभ? ऐसी दशा में उसके मन में एक भयंकर आग जल उठती है, जिसे कहते हैं "प्रतिकार—बदले की भावना।" वह सोचता है—जब तुमने हमारा दुख-दर्द न समझा, हमारी मेहनत का जवाब ज़ुल्म से, हमारी जाँफ़िशानी का मेहनताना हमारा पसा मार लेने से दिया, तो फिर हम भी क्यों न तुमको दिखला दें कि वही हाथ, जो खिला सकता है, मार भी सकता है। वही हाथ, जो पैर छूता था, गला भी उतार सकता है। आओ, हम तुम्हारा सत्यानास कर तुम्हारी बदसलूकी का जवाब देंगे।

मनुष्य पागल होकर घूमने लगता है। बदला—बदला—बदला—वह चारो ओर पागल की तरह पुकारने लगता है—बदला।

[श्रीयुत परिपूर्णानंदजी सुधा-मंडल के चुने हुए लेखकों में से हैं। आपके अनेक सुंदर लेख हम छाप चुके हैं। हास्य-रस भी आप अच्छा लिखते हैं। आपका यह लेख भी पठनीय और मननीय है। हम हृदय से आपकी उन्नति के इच्छुक हैं।—सुधा-संपादक]

(२)

एक आदमी है—आपका नौकर ही सही। आपने उसके साथ नेकी की। उसे रोटी दी। पढ़ाया, कपड़ा दिया। विद्वान् बना दिया। उसके बाद उसे अपने कारख़ाने में रख लिया। वह काम करता है, पर मेहनत से, आपके हुक्म से भागता है। आपके, आपके घरवालों के, आपके मित्रों के परिचय से लाभ उठाना चाहता है। पर आप कुछ नहीं कर सकते! उसकी नालायक़ी से हैरान हैं, पर स्नेह-वश उससे बिगड़ते नहीं। वह सर पर चढ़ता जा रहा है। उसे घमंड है—अपनी जान-पहचान का। अंत में, उसकी लापरवाही से ऊबकर, आप उस पर ज़ुर्माना करते हैं। वह उबल पड़ता है। उसकी बुद्धि यह नहीं सोच सकती कि वह भूल कर सकता है। उसका अहंभाव यह गवारा नहीं

कर सकता कि वह जुर्माना दे। अतएव वह काम छोड़ देता है, और आपका शत्रु हो जाता है। उसकी अंतरात्मा चिल्ला उठती है—बदला !

चारो ओर यही नाटक हो रहा है। जिनके साथ नेकी कीजिए, वही आपका दुश्मन है। जिसे खिलाइए, वही आपका वैरी है। जिसे पालिए, वही आपका घातक है। भाई, पुत्र, भतीजे, सब एक स्वार्थ के वश आपके साथ हैं, वरना कोई ऐसा भी है, जो आपका हो ? प्रेमोन्मत्त मित्र आपसे गले मिल रहा हो, ज़रा उससे कह तो दीजिए कि आपको एक रुपया चाहिए। उसका गला सूख जायगा, वह शायद अपनी जेब उलटकर दिखा देगा, और फिर आपके गले कभी न लिपटेगा। अतएव बुरा किससे माना जाय ? जब तक आप अपने साथी मित्र-संबंधी की टेंट गरम कर रहे हैं, आप आदमी हैं, साथी हैं, पिता हैं, पुत्र हैं, मित्र

श्रीयुत परिपूर्णानंदजी वर्मा

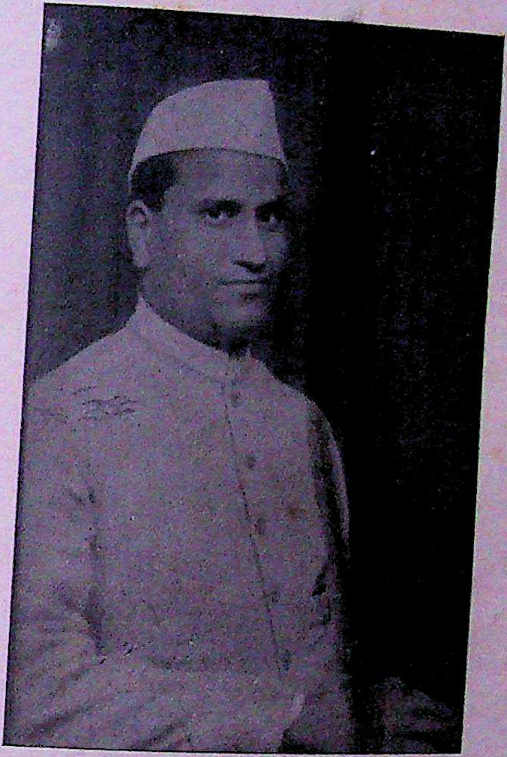

श्रीयुत कर्णसिंह केन

[आप हिंद-प्रांतीय कांग्रेस-सरकार के माननीय शिक्षा-सचिव विद्वद्वर बाबू संपूर्णानंदजी के धारासभा-मंत्री हैं। आप शिक्षा-संबंधी कार्यों में ख़ास दिलचस्पी लेते हैं। दलित जातियों और उनके प्रांतीय धारा-सभाओं में आए हुए प्रतिनिधियों में आपका विशेष प्रभाव है। उनकी उन्नति के लिये आप भरसक प्रयत्न करते रहते हैं। बिहार की तरह जब कभी हिंद-प्रांत में भी कोई मंत्री दलित जातियों के प्रतिनिधि-रूप में लिए जायँगे, तो आशा है, आपको ही वह स्थान मिलेगा। माननीय बाबू संपूर्णानंदजी और आपके उद्योग से प्रांतीय शिक्षा-विभाग में क्रांतिकारी परिवर्तन और सुधार हो रहे हैं।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक'

[आप हिंदी की उदीयमान कवयित्री हैं। आपकी 'परदेशी प्रियतम'-शीर्षक कविता ८३ पृष्ठ पर प्रकाशित है।]

है, और ज़रा-सी टेंट में ठेस लगी, आपसे बड़ा शत्रु कोई नहीं ! इसलिये बदला किससे लीजिएगा— उस व्यक्ति से या रुपए से ? इस जहन्नुमी—इस पिशाच पैसे से ?

(३)

असफलता अपराध नहीं, अंशतः स्वाभाविक वस्तु है। असफलता होने से—चाहे वह मालिक को, नौकर को, पुत्र को, स्त्री को, माता को, किसी को प्रसन्न करने से या व्यवसाय से ताल्लुक़ रखती हो—पागल होने की ज़रूरत नहीं। जो पहाड़ पर चढ़ने की चेष्टा करेगा, वही गिरेगा। जो मारने चलेगा, वही पिटेगा। बिल के भीतर शूकर की तरह जीवन बितानेवाला इस गिरने या पिटने की मौज को क्या जाने। शैतान के भी आँत होती ही होगी। उस आँत को जो न पहुँचेगा, वह शैतान की आँत नहीं बन सकता। असफल रहे—सोच लो, क्यों असफल रहे। अपना काम कर दिया, अपना कर्तव्य निभा दिया, फिर भी असफल रहे, तब हमारा-आपका क्योंकर दोष गिना जाय ?

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी-
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति ;
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।

लक्ष्मी तो उद्योग से सिद्ध होती है। भाग्य पर बैठने से काम नहीं चलता। यह तो कायरों का काम है। अतएव भाग्य का नाम लेना छोड़कर उद्योग करो। और, उद्योगशील होने पर भी यदि असफलता रही, तो ? आपने चेष्टा की, चेष्टा असफल रही। इसमें आपका दोष नहीं, किसी का दोष नहीं। नैतिक रूप से कोई दोषी नहीं। हाँ, यह अवश्य है कि आप पुनः सोचें कि जो यत्न किया था, उसमें कोई कमी तो नहीं रह गई। जिस समय आप अपनी कमी ढूँढ़ना शुरू करेंगे, आपकी आँखें खुल जायँगी। उस समय हमारे हृदय से बदले की भावना दूर हो जायगी, और उसका स्थान क्षोभ ले लेगा। हमें पश्चात्ताप होगा—स्वयं अपनी कमी और अपनी दुर्बलता पर। यदि हम दुर्बल न होते, तो ऐसा अवसर ही न आता कि असफल होते। इस असफलता की तह में कहीं हमारी कमी का छोटा-सा दीपक टिमटिमा रहा है। जो वाजिब था, वही हमें मिला।

सौभाग्य की बात

किंतु असफलता भी एक बड़े सौभाग्य की वस्तु है। यदि असफलता न हो, तो मनुष्य जीवन का वास्तव में अनुभव न प्राप्त कर सके। संभवतः मि० आर० एल० स्टिवेंसन ने कहा था—

"Thanks fortune! after all my crosses you give me somewhat to repair myself."

असफलता से आदमी नसीहत हासिल करता है। उससे वह सुर्ख़रू होता है, और बिना ठोकर खाए कोई सुर्ख़रू हो सकता है ? बिना पत्थर पर पिसे मेहँदी रंग भी तो नहीं ला सकती—

सुर्ख़रू होता है इंसाँ ठोकरें खाने के बाद ;
रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जाने के बाद।

इसलिये धन्यवाद है उस व्यक्ति को, जिसने हमें असफलता की दशा में तिरस्कार के भाव से देखा। वह हमारा उद्धारक है—फिर हमारे मन में उसके प्रति बदले की भावना क्योंकर हो।

बदले के दुर्विचार से समय नष्ट होता है, और समय का नष्ट होना कितनी भयंकर वस्तु है, इसे स्माइल्स साहब इस प्रकार समझाते हैं—

"Lost wealth may be replaced by industry, lost knowledge by study, lost health by temperance or medicine, but lost time is gone for ever."

खोया धन उद्योग से, खोया ज्ञान अध्ययन से, खोया स्वास्थ्य संयम अथवा ओषधि से प्राप्त हो

सकता है। पर खोया हुआ समय सदैव के लिये चला जाता है। अतः जो हो गया, वह हो गया, ऐसा सोचकर आगे क्यों न बढ़ा जाय।

और, यह सोचना कि हम यह थे, वह थे, हमारे साथ न्याय नहीं हुआ, मूर्खता है। डॉ० जॉन्सन का इस विषय में बड़ा सुंदर कथन है—

"All the complaints which are made of the world are unjust; I never knew a man of merit neglected; it was generally by his own fault that he failed of success."

संसार की सभी शिकायतें बेजा हैं। मैंने ऐसा आदमी ही नहीं देखा, जिसमें कोई गुण हो, और उसकी नाक़द्री हुई हो। जो असफल रहा, वह अपने ही .क़ुसूर से। जब ऐसी बात है, तब दूसरे के प्रति क्यों क्षोभ होता है? अपना दोष क्यों नहीं दिखाई देता? यदि दिखाई दिया होता, तो आदमी असफल ही क्यों होता? इसलिये ना-समझी से काम लेना बेजा है। दूसरे को दोषी समझना अपनी ग़लती है। अपनी आँख की शहतीर क्यों नहीं दिखाई पड़ती?

दुर्भाव क्यों?

आख़िर अगर कोई हमसे उलझ बैठा, या हम किसी से उलझ बैठे, तो इसमें अफ़सोस की क्या बात है? आपने किसी के साथ नेकी की, तो वह किसी मसलहत से की होगी। अगर नहीं, तो फिर उसका एवज़ क्यों चाहते हैं? किसी के साथ बदी की, तो वह भी उतनी बुरी नहीं, जितनी वापसी की उम्मीदवाली नेकी। संसार में सभी किसी-न-किसी प्रेरणा अथवा कामना के वशीभूत होकर काम कर रहे हैं। हरएक के दिल में बैठकर यह देखा नहीं जा सकता कि उसका क्या भाव है। अतएव उसे अपनी प्रेरणा लेकर, अपनी ख़्वाहिश लेकर चलने दो। बेकार उलझने से क्या लाभ? संसार स्वार्थी है, यह सत्य है, पर यदि हम उसमें अपनी ख़्वाहिश रखते हैं, तो क्या हम स्वयं स्वार्थी नहीं? मौलवी सैयद ज़ामिनअली साहब 'ज़ामिन' के शब्दों में—

दिल वही, जिसकी कि अज़मत
ला-मकाँ से कम नहीं;
अस्ल में देखो, तो बस है
इक मकाने - आरज़ू।

* * *

दफ़्तरे-आलम का तुम इक-
इक वरक़ देखो बग़ौर;
जितने क़िस्से हैं, वे सब हैं
दास्ताने - आरज़ू।

जब सब कुछ आरज़ू अथवा ख़्वाहिश की बरकत है, तो फिर किसी से शिकवा-शिकायत क्या? हरएक का अपना-अपना कर्तव्य है। कर्तव्य का अर्थ केवल न्यायोचित कार्य ही नहीं, अपितु ईश्वरीय अनुशासन तथा इच्छा भी होता है। अतएव ईश्वरीय इच्छा में दस्तंदाज़ी करने से लाभ?

जिससे हम बदला लेना चाहते हैं, या जो हमसे बदला लेना चाहते हैं, दोनो की आत्मा एक है। शरीर भिन्न है। यह तो वैसा ही है, जैसे हाथ का पैर से या पैर का हाथ से रूठना! हमारे-उसके भीतर एक .ख़ुदा बैठा हुआ है, और इसी में ज़रा-सा चूकने से वैसा ही उलट-फेर हो जाता है, जैसे उर्दू में '.ख़ुदा' लिखते समय बिंदी ऊपर से नीचे हो जाने पर 'जुदा' हो जाता है। इसलिये ज़रा-सी ग़फ़लत से इंसान .ख़ुदा से जुदा हो .जाता है!

मन तू शुदम, तू मन शुदी,
मन तन शुदम, तू जाँ शुदी;
ता कस न गोयद बाद अज़ीं—
मन दीगरम, तू दीगरी।

यह सूफ़ी-कलाम कितना सुंदर है। मैं तू हूँ,

और तू मैं है। मैं तेरा शरीर हूँ, तू मेरी आत्मा। अब किसी को यह नहीं कहना चाहिए कि तू और मैं दो हैं।

यह बात ईश्वर तथा पुरुष के लिये लागू होती है। अतएव हमारा अपमान करनेवाला, हमें असफलता दिलानेवाला, हमसे बदला लेनेवाला दूसरा कोई नहीं। अपने सुख-दुःख के दाता हमीं हैं। दूसरा कोई भी हमारे सुख-दुःख का कारण नहीं। यह तो अपने किए का फल भोगना है, अतएव दूसरे से विरोध, ईर्ष्या, जलन, राग, विराग क्यों? गरुड़-पुराण में लिखा है—

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा;
स्वयं कृतं स्वेन फलेन युज्यते
शरीर हे निस्तर यत्त्वया कृतम्।

अतएव हमारे लिये अपना मनोभाव बदलना ज़रूरी है। इसे न बदलने से इस बड़ी दुनिया में, इस छोटे-से जीवन में हम रोज़ आपत्ति, विरोध, वैर तथा संकट का पहाड़ अपने सर पर लादते चले जा रहे हैं। जीवन कटुतम होता चला जा रहा है। यदि हम चाहते हैं कि दूसरे के स्नेह-भाजन बनें, दूसरे का प्रेम प्राप्त करें, तो हमारे लिये यह आवश्यक है कि गोल्डस्मिथ की इन अमर पंक्तियों को याद रक्खें—

"A man's own heart must ever be given to gain that of another."

दूसरे का हृदय प्राप्त करने के लिये अपना हृदय देना चाहिए।

ऐसा करने से जो हमसे-आपसे बदला लेना चाहता है, हम प्रेम की मार से उसी से बदला ले लेंगे। अँगरेज़ी की ये पंक्तियाँ कितनी सुंदर हैं—

The best *revenge* is love, disarm
Anger with smiles, heal wounds with balm,
Give water to thy thirsty foe;
The sandal tree as if to prove
How sweet to conquer hate by love,
Perfumes the axe, that lays it low.

सबसे अच्छा बदला प्रेम है। क्रोध को अपनी मुस्किराहट से निरस्त्र करो। घाव पर मरहम लगाओ। अपने प्यासे शत्रु को पानी पिलाओ। घृणा को प्रेम से जीतने का माधुर्य सिद्ध करने के लिये चंदन उसी कुल्हाड़ी को, जो उसे काटती है, सुगंधित कर देता है।

अतः आज हम संसार-भर से बदला लेने की प्रतिज्ञा करें—प्रेम से।

अपना नाम और पता हमारे यहाँ लिखवाकर गंगा-पुस्तकमाला के स्थायी ग्राहक बन जाइए। फिर हम हिंदी-संसार की तमाम सुंदर-सुंदर पुस्तकों की सूचना प्रति तीसरे मास आपको देते रहेंगे। स्थायी ग्राहक बनने के नियम हमसे मँगाएँ।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

उपमा और असम

[श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी]

काव्य-स्वरूप का जैसा कुछ विवेचन संस्कृत-साहित्य में हुआ है, वैसा शायद ही संसार की किसी भाषा में हुआ हो। काव्य-घटक विविध तत्त्वों की विशद मीमांसा यहाँ की गई और आगे बढ़ने के लिये कदाचित् कोई गुंजाइश ही नहीं छोड़ी गई है। अपने आचार्यों की प्रतिभा तथा श्रम-शक्ति के हम सदा क़ायल और कृतज्ञ रहेंगे। इनकी काव्य-विवेचना से हमारा सिर ऊँचा है, और सदा रहेगा।

परंतु इससे यह न समझ लेना चाहिए कि उन्होंने जो कुछ लिख दिया, वह अकाट्य और भ्रम-शून्य ही है। बड़ों से भी ग़लतियाँ होती हैं। वे भी मनुष्य ही ठहरे! इसलिये उनके ग्रंथों को भी हमें आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ना-पढ़ाना चाहिए।

यहाँ मैं साहित्य-शास्त्र के अलंकार-विषयक एक प्रश्न पर विचार करूँगा।

श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी

उपमा एक प्रधान अलंकार है। दुनिया की सभी भाषाओं और साहित्यों में इसका समान और असामान्य सम्मान है। जितने भी अन्य सादृश्य-मूलक अलंकार हैं, सब इसी के विकसित रूप हैं। उपमा-नटी ही साहित्य के रंगमंच पर रूपक आदि अनेक सादृश्य-मूलक अलंकारों के रूप में दिखाई देती है। इस उपमा के दो मुख्य भेद हैं—पूर्णा और लुप्ता। जब उपमेय, उपमान, सादृश्य-वाचक तथा साधारण धर्म, ये चारो उपमा-तत्त्व मौजूद हों, तब पूर्णा और जब इनमें से कोई लुप्त या अनुच्चरित हो, तब लुप्ता उपमा कही जाती है। परंतु इससे यह न समझना चाहिए कि पूर्णा का दर्जा लुप्ता से श्रेष्ठ है। श्रेष्ठता तो चमत्कार पर है। यदि पूर्णोपमा में चमत्कार है, तो वह अच्छी, और लुप्तोपमा में वह बात है, तो वह उत्तम।

लुप्तोपमा के अनेक भेद आचार्यों ने सूक्ष्म विवेचन करके किए हैं, जिनमें से एक

‘उपमानलुप्ता’ भी है। मतलब यह कि जहाँ उपमान का अभाव या लोप हो, वहाँ भी लुप्तोपमा होती है। संस्कृत के प्रायः सभी आचार्यों ने ऐसा ही लिखा और स्वीकार किया है। मैं उपमान-लोप पर ही विचार करूँगा।

विश्व-विश्रुत आचार्य मम्मट ने ‘काव्य-प्रकाश’ में इसका यह उदाहरण दिया है—

डुण्डुलायमानो मरिष्यसि कण्टककलितानि केतकीवनानि ;
मालतीकुसुमसदृशं भ्रमर ! भ्रमन्नपि न प्राप्स्यसि।

“अरे भ्रमर, तू काँटों से भरे हुए केतकी-वनों में भटकता हुआ मर जायगा, पर मालती-पुष्प की टक्कर का फूल न पाएगा !”

यहाँ उपमान और साधारण धर्म का लोप है। मालती-कुसुम का कोई उपमान नहीं कहा है, और न साधारण धर्म ही गृहीत है।

‘साहित्य-दर्पण’ में कविराज विश्वनाथ ने इसका यह उदाहरण दिया है—

तस्या मुखेन सदृशं रम्यं नास्ते न वा नयनतुल्यम्।

“उसके मुख के समान सुंदर कोई नहीं है, और न आँखों के समान।”

यहाँ उपमान का लोप है। मुख तथा नयनों का कोई उपमान नहीं बतलाया, बल्कि निषेध किया है।

पंडितराज जगन्नाथ के ‘रस-गंगाधर’ में उपमानलुप्ता का निम्न-लिखित उदाहरण है—

यस्य तुलामधिरोहसि लोकोत्तरवर्णपरिमलोद्गारैः ;
कुसुमतिलक चम्पक न वयं तं जातु जानीमः।

“हे सुमन-श्रेष्ठ चंपा-सुमन, जो अलौकिक रंग और परिमल-उद्गार में तेरी समता कर सके, उसे हम नहीं जानते !”

यहाँ भी उपमान का स्पष्ट निषेध है।

ध्यान देने की बात यह है कि उक्त तीनो उदाहरणों में उपमान का स्पष्ट निषेध है, केवल अनुच्चारण ही नहीं। उपमान का साधारण लक्षण सबने यही किया है कि जब सादृश्य का अभिधावृत्ति से विधान किया जाय, तब उपमा होती है। क्या उक्त तीनो उदाहरणों में सादृश्य की कुछ भी प्रतीति है ? क्या यहाँ सादृश्य का कुछ भी विधान है ? यदि नहीं, तो फिर उपमा कैसी ? जब बीज ही नहीं, तब आगे क्या ?

मेरा विचार है, उपमानलुप्ता उपमा का निरूपण करने में आचार्यों ने धोखा खाया है। साधारण धर्म आदि के लोप में तो लुप्तोपमा होती है ; पर जब उपमान का भी लोप हो, तब उपमा कैसे कही जा सकती है ? और, जब उपमान का निषेध हो, तब तो असम-अलंकार होगा, जो उपमा के बिलकुल विरुद्ध है। जब सादृश्य का विधान हो, तब उपमा और जब सादृश्य का स्पष्ट निषेध हो, तब असम-अलंकार होता है। मम्मट और विश्वनाथ के मन में तो इस असम-अलंकार की कल्पना ही नहीं आई, इसीलिये वे इसके विषय को उपमान-लुप्ता उपमा का क्षेत्र मानने की ग़लती कर बैठे ! परंतु पंडितराज जगन्नाथ को क्या कहा जाय, जिन्होंने असम-नामक अलंकार अलग मानकर भी ‘यस्य तुलामधिरोहसि’ में उपमान-

लुप्ता उपमा अलंकार लिख दिया ! आपने उपमा का लक्षण यह दिया है—

सादृश्यं सुन्दरं वाच्यार्थोपस्कारकमुपमालङ्कृतिः ।

"सुंदर सादृश्य को उपमा कहते हैं, जिससे वाच्यार्थ का उपस्कार होता हो ।"

अब आप इस लक्षण से 'यस्य तुलामधिरोहसि' उदाहरण की परीक्षा कीजिए। क्या वहाँ सुंदर 'सादृश्य' है ? हमें तो वहाँ सुंदर असादृश्य ही नज़र आता है, सादृश्य नहीं । इसलिये उसे उपमा नहीं, असम ही कहना उचित है । कारण, उसमें उपमा का नहीं, असम का ही लक्षण पूरा बैठता है । उपमा के लक्षण से तो वह बिलकुल उलटा है । असम का यह लक्षण स्वयं पंडितराज ने लिखा है—

सर्वथैवोपमानिषेधोऽसमाख्योऽलङ्कारः ।

अर्थात् जब सादृश्य का बिलकुल निषेध हो, तब असम-अलंकार होता है । देखिए, यह लक्षण उन उदाहरणों पर चुस्त बैठता है या नहीं, जो उपमानलुप्ता उपमा के बतलाए गए हैं ।

पंडितराज ने असम-अलंकार का यह उदाहरण दिया है—

भुवनत्रितयेऽपि मानवैः परिपूर्णे विबुधैश्च दानवैः ;
न भविष्यति नास्ति नाभवन्नृप ! यस्ते भजते तुलापदम् ।

"राजन्, यह दुनिया मनुष्यों, देवों और दानवों से भरी है ; पर इसमें कोई ऐसा न हुआ, न है, और न होगा, जो तुम्हारी समानता कर सके ।"

इसमें और उस 'यस्य तुलामधिरोहसि' पद्य में एक ही बात है । दोनो जगह सादृश्य-निषेध है । तब वहाँ क्यों उपमा और यहाँ क्यों असम ? इसका उत्तर पंडितराज ने यों दिया है—"जब सादृश्य का आंशिक निषेध हो, तब उपमानलुप्ता उपमा और जब उसका क़तई निषेध हो, तब असम-अलंकार होता है ।"—"आत्यन्तिकः काचित्कश्च सदृशनिषेधोऽसमोपमानलुप्तयोर्विषयः ।" परंतु ऐसा लिखते समय यह आप भूल गए कि सादृश्य के विधान में उपमा होती है, निषेध में नहीं । तब उसके काचित्क-निषेध में भी उपमा कैसे हो सकेगी ? वस्तुतः सादृश्य का निषेध-मात्र असम का विषय है, यदि वह निषेध वाच्य हो ; फिर चाहे वह काचित्क हो, और चाहे आत्यंतिक ।

काचित्क-निषेध और सर्वथा निषेध का भी विवेचन देखिए । पंडितराज का कहना है कि 'यस्य तुलामधिरोहसि' पद में सादृश्य का आंशिक निषेध है, पूर्ण नहीं । वहाँ वक्ता यही कहता है कि चंपा के फूल की समता करनेवाले को हम नहीं जानते ! मतलब यह कि कहीं कोई होगा इसकी समता करनेवाला, पर हम नहीं जानते । यही पंडितराज का काचित्क-निषेध है । आप कहते हैं—"हे चंपक, तेरे उपमान को हम नहीं जानते, होगा कहीं ।" इससे सादृश्य की प्रतीति होती है, और इसीलिये यह उपमानलुप्ता उपमा है । आपके मत से 'भुवनत्रितये' में उपमान का पूर्ण निषेध है, इसलिये वहाँ असम-अलंकार है ।

आपका यह सब विवेचन चिंतनीय है । 'यस्य तुलामधिरोहसि' में यदि वक्ता का

आशय यह मान भी लिया जाय कि 'चंपा के उपमान को हम नहीं जानते, होगा कहीं', तो भी सादृश्य में वाक्य का पर्यवसान नहीं होता। सादृश्य-विधान में तात्पर्य नहीं, निषेध में ही है। पहले तो वह आशय निकलता भी नहीं, जो पंडितराज निकाल रहे हैं। तब कैसे सादृश्य में वाक्य का पर्यवसान होगा, और कैसे वहाँ लुप्तोपमा होगी ?

एक बात और। यदि किसी तरह यह मान भी लिया जाय कि इस 'काचित्क सादृश्य-निषेध' का पर्यवसान सादृश्य-विधान में है, तो भी काम नहीं चलता। उपमा में सादृश्य 'वाच्य' होता है, प्रतीयमान नहीं। प्रतीयमान (व्यंग्य) सादृश्य अन्यान्य अलंकारों का विषय है, इसका नहीं। इसलिये वहाँ असम-अलंकार ही है, उपमा हर्गिज़ नहीं हो सकती। फलतः उपमानलुप्ता का जो निरूपण मम्मट, विश्वनाथ तथा जगन्नाथ ने किया है, सो ठीक नहीं, और इस संबंध में जो उदाहरण दिए हैं, सब ग़लत हैं; क्योंकि वह विषय असम का है।

सादृश्य के निषेध-मात्र में असम-अलंकार होता है, चाहे वह काचित्क हो, चाहे सर्वथा। निषेध-वाच्य होना चाहिए; क्योंकि प्रतीयमान उपमान-निषेध दूसरे अलंकारों का विषय है।

हिंदी में अभी अलंकार तथा रस का विषय नया ही है। सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार की पुस्तकों को छोड़कर अभी तक इस विषय की कोई भी पुस्तक सामने नहीं, जिसे सामान्यतः शुद्ध कहकर ग़नीमत समझा जाय। सबने बेसमझे क़लम चलाकर नाम और धन कमाया है। इसीलिये रस तथा अलंकार के संबंध में 'ग़लत धारणाएँ' बन रही हैं। जब चीज़ ही सामने साफ़ नहीं, तब किया क्या जाय ? इन रद्दी अलंकार-पुस्तकों को पढ़ाने की अपेक्षा तो इस विषय की पढ़ाई ही बंद कर दी जाय, तो ज्यादा अच्छा ! इनकी विवेचना-आलोचना क्या की जाय ?

हाँ, पोद्दारजी ने भी उपमानलुप्ता उपमा मानकर वैसे ही उदाहरण दिए हैं—मम्मट, विश्वनाथ तथा पंडितराज के पथ का अनुसरण करके ! मैंने इस संबंध में आपसे कहा भी था, पर आपने पूर्व-परंपरा छोड़ना स्वीकार न किया। मुझे आपकी यह 'श्रद्धा' कुछ जँची नहीं। आलोचना तो धर्मशास्त्र तक की होती है, संशोधन तथा परिष्कार भी होता है। फिर यह तो साहित्य-शास्त्र है ! तब वैसा गतानुगतिकत्व क्यों ?

ऊपर एक उदाहरण दिया है, विचारणीय सामग्री का। इसी तरह अनेक विवाद-ग्रस्त विषय हैं। इन्हें सुलझाने के लिये समय-समय पर विवाद छेड़ना अच्छा है—"वादे वादे जायते तत्त्वबोधः।" यदि हम अपनी साहित्य-संपत्ति पर विचार करना छोड़ दें, तो उसमें दमक न बढ़ेगी।

अर्पण

[श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)]

इन नभ के तारों की मैं
तेजोमय माल बनाऊँ ;
इच्छा इतनी है मेरी,
अति रुचि से तुम्हें पिन्हाऊँ।
पर आज श्रांत हो लाया वन के बीन फूल दो-चार,
इन्हीं को कर लो सखि ! स्वीकार।

उस अरुण चितेरे से मैं
सब विविध रंग ले लूँगा ;
प्रतिमा से एक तुम्हारी
सारे जग को भर दूँगा।
पर आज तुम्हारी छवि का खींचा केवल छायाकार,
इसी को कर लो अंगीकार।

सुरपुर के गायक-गण-सा
नित कुसुमित नंदन-वन में
गाऊँगा गीत तुम्हारे
हे देवि ! कभी जीवन में।

पर आज भग्न उर-वीणा का जो निकला स्वर निस्सार,
यही तब तक ले लो उपहार।

स्त्री और पुरुष
दोनो के लिये समान फ़ायदेमंद
मणितैल
इस तैल को मस्तक पर लगाने से बाल चिकने और चमकीले रहते हैं, उनमें सफ़ेदी आने नहीं पाती और जड़ें मजबूत हो जाने से बाल गिरते नहीं हैं।
क़ीमत ५ तोले की शीशी की १) रु०
आतंकनिग्रह औषधालय, जामनगर-काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड कं०, चौक

Baldev

परदेशी प्रियतम

[कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक']

(१)

आशा की जीर्ण कुटी में
प्राणों का दीप जलाए
बैठी हूँ कब से प्रियतम,
प्राणों का दाँव लगाए।

(२)

मेरी उन्मत्त दशा पर
हैं चंद्रदेव भी हँसते;
मैं सिसक-सिसक रोती हूँ,
वह हँस-हँसकर हैं छिपते।

(३)

सूनी कुटिया में अपनी
गिन-गिनकर निष्ठुर घड़ियाँ
सूनेपन में सुलझाती
जीवन की उलझी लड़ियाँ।

(४)

है विरह-ताप से झुलसा
उपवन मेरे प्राणों का;
हैं आँसू - कुसुम बरसते
पाकर आहों का झोंका!

(५)

है प्रणय-सिंधु लहराता
भावों की तीव्र तरंगें;
उठ-उठकर मिट जाती हैं
जीवन की क्षणिक उमंगें।

(६)

अब शेष रहा है केवल
विरहानल ही में तपना;
बिछुड़े प्रेमी की स्मृति में
रह-रहकर मधुर तड़पना।

(७)

पर भूल गए वह मुझको,
भूले युग जीवन-संगम;
यह आकुल उर कह उठता—
"निष्ठुर, परदेशी प्रियतम!"

भामती

(नारी के आत्मार्पण की महती गाथा)

[अध्यापक श्रीशंकरदेव विद्यालंकार]

[भाई शंकरदेवजी सुधा-मंडल के पुराने लेखक हैं। आपकी यह कहानी बहुत ही सुंदर है। कलाकार के जीवन का पूर्ण विकास क्यों न हो, जब भामती-जैसी सती-साध्वी पत्नी उसकी सेवा में तत्पर रहे। कलाकार का जीवन त्याग और तपस्या का जीवन है, और उसके अभावों की पूर्ति ऐसी ही सेवाओं द्वारा हो सकती है। जिन दिनों भारतवर्ष में भामती-जैसी भामिनियाँ होती थीं, तभी वह साहित्यिक और सामाजिक दृष्टि से बहुत ऊँचा था। पं० वाचस्पति मिश्र का जीवन-कुसुम भामती की सेवा-सुधा द्वारा सिंचता रहा, किंतु उन्हें यह बात तब मालूम हुई, जब उनका विशाल ग्रंथ तैयार हो चुका था। भामती-जैसी पति-परायणा पत्नी सौभाग्य ही से मिश्रजी को मिली थी।—सुधा-संपादक]

गाँव के एक छोटे-से घर के एक कमरे में एरंडी के तेल का दीपक जल रहा था। कमरे की भित्तियाँ गोबर से लिपी हुई, स्वच्छ और सुथरी दिखाई दे रही थीं। दूर, एक कोने में, पानी से भरे हुए दो-तीन घड़े रक्खे थे। उसके समीप ही, दूसरे कोने में, एक चौकी पर, आटा पीसने की चक्की रक्खी थी। दिए के पास चौकी रखकर पंडितजी काग़ज़ पर कुछ लिखते जा रहे थे। चौकी के निकट तीन-चार पुस्तकें पड़ी थीं, और पास ही पोथी-पत्रा बाँधने के वस्त्र-वेष्टन पड़े हुए थे।

लकड़ी की दीवट पर रक्खा हुआ दीप कुटीर को आलोकित कर रहा था। पंडितजी एकाग्र-चित्त से अपने काग़ज़ों पर लिखते ही जा रहे थे। बीच-बीच में पास रक्खी हुई पुस्तकों के पन्ने उठाकर देख लेते और विचार-मग्न हो जाते थे। कभी पत्रों को नीचे रखकर, आँखें बंद करके गहरे विचार में पड़ जाते थे, और पुनः लेखनी उठाकर लिखना प्रारंभ कर देते थे।

इसी बीच में दिए में तेल समाप्त होने को आया। बत्ती जलकर खप चुकी, और दीप की ज्योति धीमी पड़ने लगी। इतने में एक नारी हलके पैरों से आगे आई। दिए में तेल डाला, बत्ती हिलाई। उसके जले हुए कृष्ण-वर्ण अग्र-भाग को एक तीली से झटक दिया। दीप अवसन्न हो गया।

दीप बुझा ही था कि उस स्त्री ने तुरंत ही उसे सतेज कर दिया, और ठीक-ठाक करके चली गई। पंडितजी की दृष्टि उस पर पड़ी। दीपक एकाएक बुझा, और पुनः ज्योतिर्मय हो गया, इससे पंडितजी अपनी विचार-निद्रा से मानो जाग उठे। उस नारी को निहारकर, विस्मय-विमूढ़ होकर बोले—"देवि, तू कौन है?"

"आप अपना काम कीजिए। मुझसे दीपक बुझ गया, उसके लिये क्षमा कीजिए!" भामती ने विनय-भरा उत्तर दिया।

"परंतु हे बहन, तू कौन है, यह तो बता। यहाँ कहाँ से आई?" पंडितजी ने अधिक ज़ोर देते हुए पूछा।

ज़रा अधिक स्थिर चित्त से भामती ने कहा—"आप अपना कार्य चालू रखिए। कार्य में विघ्न डालने के कारण मैं आपकी अपराधिनी हूँ।"

पंडितजी ने पन्ना नीचे डाल दिया। लेखनी नीचे रख दी। आतुर नयनों से पूछना प्रारंभ किया, मानो उन्हें जीवन का कोई नवीन तत्त्व प्राप्त हुआ हो—“नहीं - नहीं, बहन, तू कौन है? मुझे बता। यह जानने के बाद ही मैं अब पन्नों को हाथ लगाऊँगा।”

भामती कुछ क्षण मौन रहकर बोली—“प्राणनाथ, मैं आपकी परिणीता स्त्री हूँ। मुझे भगिनी कहकर आप यह क्या अनर्थ कर रहे हैं?”

भामती के शब्द सुनते ही पंडितजी चौंक पड़े। बोले—“तू मेरी पत्नी? हमारा परिणय कब हुआ?”

भामती—“स्वामिन्, हमारा विवाह हुए आज पचास-साठ वर्ष बीत गए होंगे।”

पंडितजी—“इतने वर्षों से मेरे साथ ही रहती है? संपूर्ण दिवस तू क्या करती है? मुझे आज दिन तक तेरा पता भी क्यों न चला?”

भामती—“मेरे नाथ, जब से अपनी मैया का गृहप्रांगण छोड़कर आई हूँ, तब से यहीं हूँ। मुझे ठीक याद है, जब आप विवाह-मंडप में बैठे थे, तब आपने दक्षिण हाथ से मेरा कर-ग्रहण किया था, और आपके बाएँ हाथ में थे ये पत्रे। उस दिन से मैं तो यही देखती आई हूँ, ये आपके पत्रे और यह आप।”

पंडितजी—“देवि, तेरे ये पचास वर्ष कैसे व्यतीत हुए? मैं तेरा स्वामी हूँ, यह भी तूने मुझे आज ही बताया।”

भामती—“स्वामिन्, मेरे दिन आपकी सेवा में ही समाप्त हुए हैं। प्रभात में आप उठते हैं, तब से लेकर रात्रि के शयन तक आपकी सेवा में ही मेरा समय व्यतीत होता है। मुझसे जितना बन पड़ता है, उतनी सेवा करती हूँ। रात्रि को पढ़ते-पढ़ते जब आप इस गद्दी पर सो जाते हैं, तो मैं आपके ये पोथी-पत्रे एकत्र करके एक किनारे रख देती हूँ। आपके मस्तक के नीचे एक छोटा-सा तकिया लगाकर आपके चरणों को दबाते-दबाते यहीं सो जाती हूँ। प्रभात में, आपके उठने पर, यह चक्की चलाती हूँ। उठते ही आपके लिये शौच-स्नान का पानी आदि तैयार कर देती हूँ।”

पंडितजी—“मेरे शौच-स्नान का पानी तू तैयार करती है, यह मैं किसी दिन भी नहीं देख पाया!”

भामती—“आप मुझे कैसे देख सकते हैं? आपकी दृष्टि जब मुझ पर पड़ती है, उसके पीछे आपका ध्यान हो, तब न? निरे चर्म-चक्षु मुझे क्या निहारेंगे?”

पंडितजी—“तो फिर हमारा खान-पान कैसे चलता है?”

भामती—“दोपहर के समय मैं मोहल्ले की कन्याओं को सीना-पिरोना सिखाती हूँ। उन्हें गीत और कविताएँ गाना सिखाती हूँ। वे मुझे अपने यहाँ से आटा-दाल आदि दे जाती हैं। उसी से हमारी जीवन-यात्रा चलती है।”

पंडितजी से न रहा गया। वह एकदम खड़े हो गए, और बोले—“तेरा नाम क्या है?”

उत्तर मिला—“भामती।”

“भामती! भामती!” कहते हुए पंडितजी उसके चरणों में गिर पड़े, और कहने लगे—“मुझे क्षमा कर। आज पचास वर्षों तक तुझे दुःख देनेवाले और तेरी ओर न देखनेवाले इस पापी को तू क्षमा कर!”

भामतो—“मेरे स्वामिन्, यह क्या कहते हैं! ऐसा न कहें। यदि आपने मेरी तरफ़ देखा होता, तो जो कुछ आज मैं हूँ, उससे भी अधिक पशु बनी हुई होती। आपने मेरी ओर नहीं निहारा, इसी कारण मैं पशु न बनकर मनुष्य रह सकी। और, इस सबका श्रेय आपको है।”

पंडितजी—“भामती, हे भामती, तू क्या कहती है?”

भामती—"मैं ठीक कह रही हूँ। आपने अपनी सारी ज़िंदगी इस शास्त्र के पढ़ने-लिखने में खपा दी है, इसी कारण मैं आपकी सेवा कर सकी हूँ। इसी को मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ। किसी अन्य पुरुष के साथ मैंने विवाह किया होता, तो मैं संसार के व्यावहारिक जंजाल में फँसी होती। आज आपकी इस तपस्या के कारण मैं भी अधिक पवित्र बन सकी हूँ। यह सब आपका ही प्रताप है। देव, अब आप अपने काम में लग जाइए, और मुझे एक बार पुनः भूल जाइए।"

पंडितजी—"भामती, कहाँ जाती हो? खड़ी रहो, ज़रा ठहरो।"

भामती—"आप वेदांतशास्त्र को भूलकर आज मेरे मोह में कहाँ पड़ रहे हैं? मुझे आज आप गिरने से बचाइए।"

पंडितजी—"भामती, तुझे मैं पाप में नहीं गिरा रहा, मैं तो इसका विचार कर रहा हूँ कि मैं पाप में पड़ा हूँ, या ऊँचे खड़ा हूँ?"

भामती—"आप तो देव हैं। आप जो कुछ लिखेंगे, उससे समस्त विश्व का उद्धार होगा।"

पंडितजी—"देवि, सच कहूँ? महर्षि कृष्ण द्वैपायन (व्यास) ने वर्षों की तपश्चर्या के उपरांत अपनी आर्ष दृष्टि से वेदांत का यह अपूर्व ग्रंथ लिखा है। मैंने इसे पढ़ा और इस पर विचार भी किया है। परंतु हे भामती, तू सच मान कि मेरा स्वाध्याय, मेरा ज्ञान, व्यासजी का यह ग्रंथ और समस्त वेदांत तेरे जीवन की तुलना में कुछ भी नहीं! मैंने तो वेदांत बाँचा है, व्यासजी ने लिखा है, पर तूने तो वेदांत को जीवन में चरितार्थ किया है। भामती, भामती, आज मेरी आँखें खुली हैं।" यह कहकर पंडितजी फिर भामती के चरणों में गिर गए।

भामती पतिदेव को उठाकर कहने लगी—"देव क्या करते हैं? मैंने तो अपने जीवन में आपकी सेवा के सिवा और कुछ माँगा ही नहीं। आपने मुझ-जैसी क्षुद्र नारी को सेवा करने का ऐसा उत्तम अवसर प्रदान किया, यही आपका बड़ा उपकार है। आप खड़े हो जाइए। आज दिन तक आपके चरणों में निद्रा लेती रही हूँ। इसी प्रकार इन्हीं चरणों में सोते-सोते महानिद्रा को स्वीकार करूँ, यही मेरी अभिलाषा है। आप उठ जाइए।"

"देवि, सुनो, इन पन्नों को लिखने में मैंने अपना जीवन निचोड़ दिया है, पर जब मैं देखता हूँ, तूने मेरे लिये अपना ख़ून पानी कर दिया है, तब मुझे अपनी लघुता और क्षुद्रता का भान होता है। अपने इस ग्रंथ के पन्ने-पन्ने पर अब मुझे तेरे जीवन का प्रकाश दिखाई दे रहा है। अच्छा, यह ग्रंथ संसार में तेरे नाम से ही प्रख्याति प्राप्त करेगा। तूने मेरे लिये अपने को विलीन कर दिया, इसके स्मरण में इतना स्वीकार कर। हे प्रभो, इतने महान् आत्मसमर्पण के लिये मुझ-जैसे अकिंचन पुरुष को संसार सदा के लिये भूल जाय।"

"अब आप पन्ने बाँचना प्रारंभ कीजिए। लो, मैं यहाँ से चली।" कहकर भामती जाने लगी।

"जा, तुझे जहाँ जाना हो, वहाँ जा। मैं अब जीवित वेदांत को छोड़कर वेदांत के मुर्दे को नोचना नहीं चाहता।" कहकर पंडितजी ने पोथियाँ बाँधना प्रारंभ किया, और लिखने की सामग्री एक किनारे रख दी।

पंडितजी का लिखा हुआ यह विद्वत्ता-पूर्ण ग्रंथ आज 'भामती' नाम से विश्व-विश्रुत है। और यह पंडितजी हैं दर्शनशास्त्र के महान् पंडित वाचस्पति मिश्र।

अंतःकरण-चिकित्सा

[डॉ० दुर्गाशंकर नागर कल्पवृक्ष-संपादक]

प्रिय पाठक ! क्या तुमने कभी इस बात का विचार किया है कि तुम्हारे अंतःकरण में किन विचारों की प्रधानता है? अवकाश के समय निवृत्त होकर शांत चित्त से कुछ देर बैठकर सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करो कि तुम किस बात का अधिक चिंतन करते हो, और अपने अंतःकरण पर योग्य या अयोग्य कैसे संस्कार अंकित करते हो।

अंतःकरण पर दो प्रकार से संस्कार अंकित होते हैं—एक बाह्य जगत् के संबंध से और दूसरे अंतर्जगत् के संबंध से। जैसे संस्कार अंतःकरण पर अंकित होते हैं, उसी प्रकार के विचार हमारे अंतःकरण में उदय होते हैं। और, जिन विचारों का मनुष्य सबसे अधिक चिंतन करता है, क्रम-क्रम से, धीरे-धीरे उन्हीं के अनुरूप वह बन जाता है। मनुष्य अपने विचार अथवा चिंतन का ही प्रतिबिंब है।

डॉ० दुर्गाशंकर नागर

मनुष्य के भीतर एक ऐसी अगम्य सत्ता है, जिसके द्वारा मनुष्य जो कुछ भी चाहे, प्राप्त कर सकता है। इसी शक्ति के द्वारा मनुष्य उन्नति के पथ में आगे बढ़ा चला जा रहा है। इस अगम्य शक्ति को ही मानस-शास्त्र मन के नाम से पुकारता है।

अंतःकरण और मन का स्वरूप

अंतःकरण (Mind) ज्ञान, इच्छा और क्रिया-शक्ति अभिव्यक्त करनेवाली सत्ता है।

अंतःकरण बाह्य इंद्रियों द्वारा बाह्य जगत् के पदार्थों को जान सकता है, और अंतःकरण का यह व्यापार जाग्रत्-दशा में ही होता है। मन एक ही है, किंतु इसके व्यापार दो प्रकार से अनुभव में आते हैं—एक प्रकट व्यापार, जिसका हम जाग्रत्-दशा में नित्य अनुभव करते हैं, और दूसरा अप्रकट, जिसके व्यापार का हम यथार्थ भान नहीं कर सकते। प्रकट मन को बाह्य मन तथा अप्रकट को अंतर्मन कहते हैं।

अंतर्मन और बाह्य मन दोनो मिलकर अंतःकरण कहलाते हैं। अंतःकरण के दो अवयव हैं—अंतर्मन और बाह्य मन। दोनो मिलकर जब अपना नियमित और व्यवस्थित व्यापार करते हैं, तभी व्यक्ति का पूर्ण मानसिक विकास होता है।

मनुष्य का जाग्रत् या बाह्य मन जो-जो क्रियाएँ करता है, वे सब मनुष्य के अंतर्मन के भाग में स्थिर होती हैं, संस्कार अंकित करती हैं, और उनकी प्रतिक्रिया अंतर्मन करता है। अंतर्मन असंख्य क्रियाओं और संस्कारों का कोष है। अंतर्मन की क्रिया मनुष्य के जीवन के अणु-अणु पर प्रभाव डालती है।

वेदांत और योगशास्त्र अंतःकरण के त्रिविध भेद बतलाते हैं—जाग्रत्-दशा में व्यापार करनेवाला बाह्य मन, इसका स्थान मूर्धा है। स्वप्न-दशा में व्यापार करनेवाला अंतःकरण, इसका स्थान कंठ है, और सुषुप्ति के समय व्यापार करनेवाला मन, इसका स्थान हृदेश है।

अर्वाचीन मानस-शास्त्र का सुविख्यात आचार्य .फ्रुइड मन को तीन दशाओं में विभक्त करता है—(१) Concious जाग्रत् मन, (२) Sub-Concious अंतर्मन और (३) Unconcious अज्ञात मन।

बाह्य मन इंद्रिय-सापेक्ष है, किंतु अंतर्मन इंद्रियों से निरपेक्ष। बाह्य जगत् में पंच ज्ञानेंद्रियों द्वारा बहिर्मन व्यापार करता है, किंतु अंतर्मन को इन इंद्रियों की अपेक्षा नहीं रहती। बाह्य मन की बहिर्मुख दशा है, और अंतर्मन की अंतर्मुख। योगशास्त्र में बाह्य मन को विक्षिप्त और अंतर्मन को निरुद्ध कहते हैं।

बाह्य मन का व्यापार तर्क-वितर्क और अनुमान आदि करना है, तथा अंतर्मन का व्यापार अंतर्बुद्धि, अंतःस्फुरणा, प्रतिभा, स्मृति आदि है। बाह्य मन का स्थान मस्तिष्क है, और अंतर्मन का स्थान नियंत्रित नहीं।

मनुष्य के अंतर्मन पर जिन-जिन बातों के संस्कार अंकित होते हैं, वे मनुष्य के प्रकृति-रूप हो जाते हैं। जिस प्रकार के संस्कार अंकित होते हैं, उसी प्रकार मनुष्यों का स्वभाव, विचार, व्यवहार और लक्षण प्रकट होते हैं।

हमारे बाह्य जीवन में ऐसी कोई प्रतिकूलता नहीं कि हम अंतर्मन अथवा अंतःकरण पर योग्य संस्कार अंकित करके दूर न कर सकें, अर्थात् समग्र दुःख, दोष, दुर्गुण, रोग, दरिद्रता, अनिष्ट परिस्थिति को दूर कर सकते हैं।

अंतःकरण में पड़े हुए अयोग्य संस्कारों को दूर करने के लिये उनका सामना करने से कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। 'क्रोध या रोष से दूर हट जाओ, दूर हट जाओ' कहने से भी अंतःकरण से वे दूर नहीं होते।

इन अयोग्य संस्कारों को नष्ट करने के लिये एकमात्र उपाय यह है कि शुद्ध संस्कारों को अंकित करो, अयोग्य संस्कार अपने आप दूर हो जायँगे।

जो विचार अंतर्मन पर अंकित किया जाता

है, उसे ग्रहण करके वह स्वीकार करता और तदनुसार व्यवहार करता है। यह विचार तुम आज्ञा या तीव्र इच्छा करके अंकित करो, चाहे एकाग्रता-पूर्वक विचार करके। साधारण रीति से की हुई आज्ञा अंतर्मन पर अंकित नहीं होती।

दृढ़ विचार के संस्कार ही अंकित होते और अंतर्मन के गहरे प्रदेश में प्रवेश करते तथा अंतर्मन की महत्ता बाहर प्रकट करते हैं।

जिन सुखद वस्तुओं को अपने जीवन में प्रत्यक्ष अनुभव कर देखना हो, उनका ही मन में विचार रक्खो, और अपने अंतःकरण के गहरे भाग में अच्छे प्रकार शुद्ध विचार के संस्कार अंकित करो, तब प्रत्येक अयोग्य संस्कार, प्रत्येक दुर्गुण, विकार, दोष और रोग के कारण का विनाश हो जायगा।

जिन गुणों या जिन सुखद स्थितियों को प्राप्त करने की तुम तीव्र इच्छा करते हो, उन गुणों या स्थितियों को उत्पन्न करने के लिये अंतर्मन को सूचना करो, प्रेरणा करो, अर्थात् उनका निरंतर चिंतन करो, उनका ही ध्यान करो; वे संस्कार तुम्हारे अंतःकरण पर अंकित होंगे, उनका आविर्भाव तुममें होगा।

जो कुछ भी तुम बनना चाहते हो, वैसे बनने के लिये तुम सर्वसमर्थ हो। तुम्हारी अंतरात्मा में अनंत सामर्थ्य है।

प्राणिमात्र के अंतर् में एक गुप्त देव निवास करते हैं, किंतु यह निद्रित दशा में हैं। प्रत्येक मनुष्य को इन्हें जाग्रत् करना है, अर्थात् अंतर्मन का भांडार अखूट है, और इस पर योग्य संस्कार अंकित करने से असाधारण मनोबल, बुद्धि-बल, ज्ञान-बल तथा आत्मबल प्राप्त करने में मनुष्य समर्थ हो सकता है।

"यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।"

जैसा तुम अपने को मानते हो, वैसे ही बनते हो।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम २०० गोलियों की बोतल का ।)

डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का ११)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।।-)
२५ ,, ,, ,, ५≡)
} श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

हिम-हास

[श्रीप्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए०]

प्रिये ! मैंने तुम्हें देखा है !

जब डल-झील में सद्यः-प्रस्फुटित कमलों के बीच से मेरा शिकारा जा रहा था, तब उनकी मनोहर पंक्तियों को हाथ से छूकर मैंने केशर से रँगे तुम्हारे गौर-वर्ण, सुकोमल हाथों के स्पर्श का सुख पाया था।

जब मानसबल के पवित्र जल में मैंने नीचे की मछलियों को—नीचे की ओर तैरती मछलियों को—देखा था, तो तुम्हारे श्वेत दुकूल के कोने से लज्जा के बोझ से झुकी हुई आँखें दिखलाई पड़ी थीं।

जब वुलर-लेक के अपरिमित विस्तार में मैंने जल-राशि के ऊपर, सिंघाड़ों की बेल में, हरीतिमा के दर्शन किए थे, तो ज्ञात हुआ था कि यह तुम्हारे हरे उत्तरीय का भाग है, जिसके नीचे सेवार की भाँति तुम्हारी कुंतल-राशि है।

प्रिये ! मैंने काश्मीर की झीलों के सहारे तुमसे इतनी दूर रहकर भी, तुम्हारे दर्शन कर लिए।

श्री प्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए०

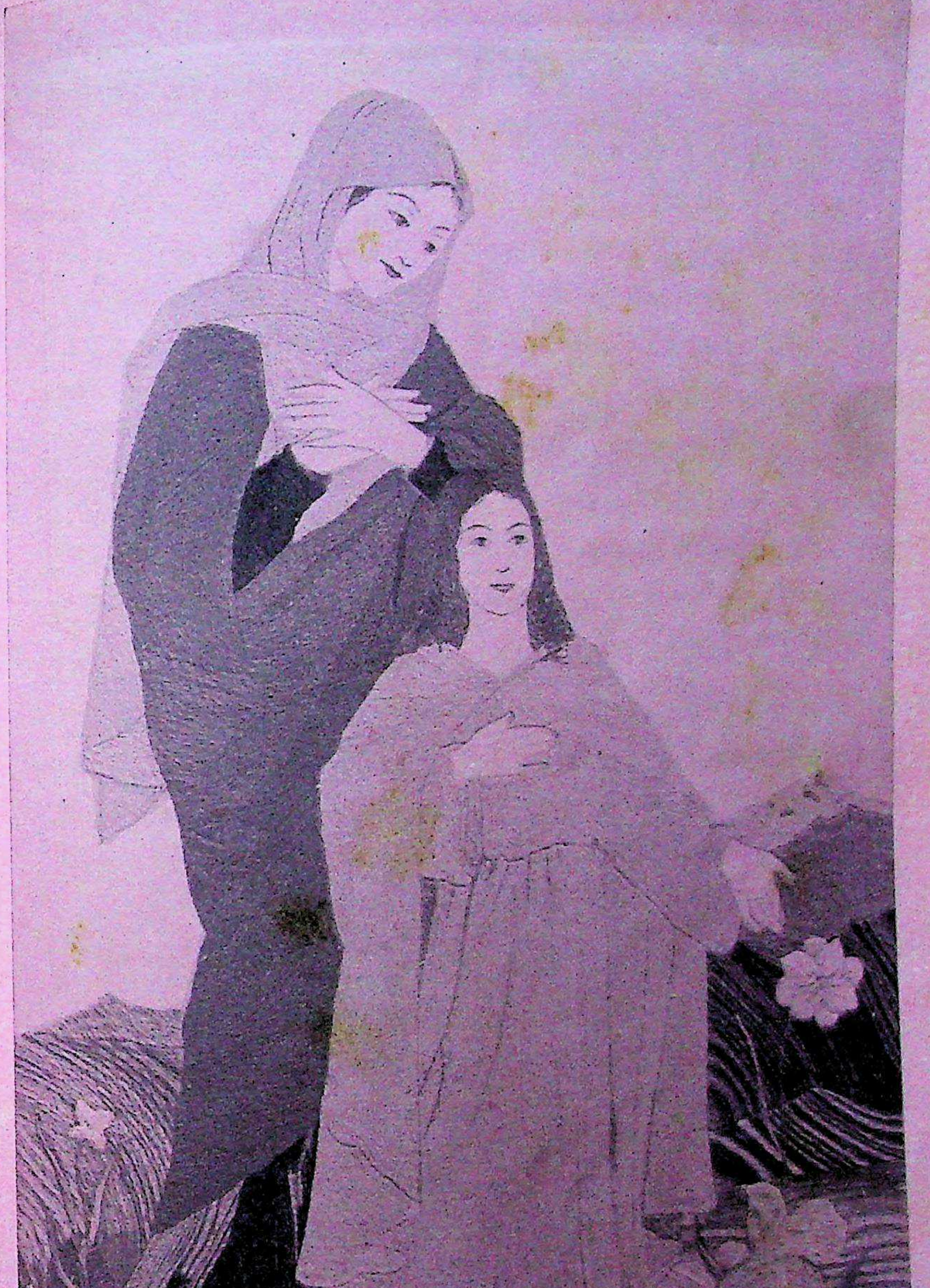

बालक ईसा मसीह और उनकी माता

(यह चित्र रेशमी कपड़े पर सुई-तागे से काढ़ा गया है)

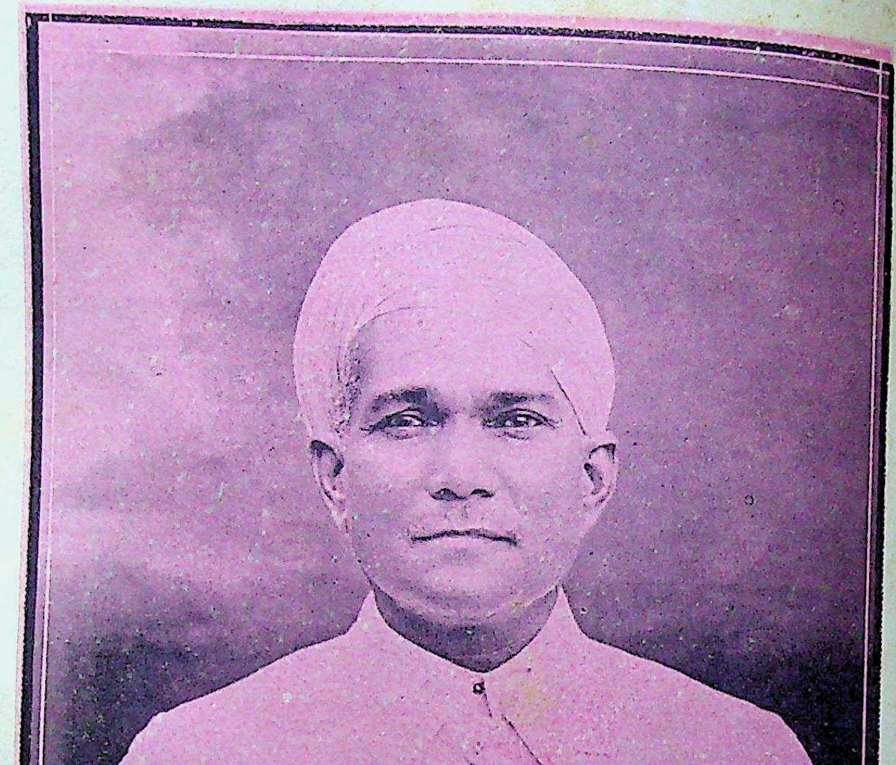

दानवीर

श्रीमान् सेठ रामगोपालजी मोहता

[आप राजस्थान के सुप्रसिद्ध समाज-सुधारक, स्वतंत्र विचारक एवं विद्वान् लेखक हैं। आपने अभी हाल ही में सतत चिंतन, मनन एवं व्यावहारिक अनुभव से श्रीमद्भगवद्गीता पर एक विस्तृत टीका 'गीता का व्यवहार-दर्शन' नाम से लिखकर उसे प्रकाशित किया और मुफ़्त बाँटा है। उसी का संक्षिप्त निचोड़ 'गीता-विज्ञान' नाम की एक छोटी पुस्तक में, संवादात्मक रूप में, प्रकाशित किया है। आप हिंदी के प्रसिद्ध प्रेमी हैं, और उसकी उन्नति में तन-मन-धन से योग देते हैं।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

हिंदोस्तानी एकेडेमी, संयुक्त प्रांत (प्रयाग)

[श्रीभारतीय एम्० ए०]

इतिहास

हिंदोस्तानी एकेडेमी-जैसी संस्था की आवश्यकता का अनुभव इस प्रांत का शिक्षित-वर्ग बहुत दिनों से कर रहा था। यद्यपि इस प्रांत में अनेक हिंदी-उर्दू की साहित्यिक संस्थाएँ पहले से वर्तमान थीं, परंतु शिक्षित-समुदाय की यह धारणा दृढ़ हो रही थी कि हिंदी-उर्दू के साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिये सरकार की संस्था अत्यंत अपेक्ष्य है। इस विचार को सर्वप्रथम पंडित यज्ञनारायण उपाध्याय एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ने, सन् १९२५ में, प्रांतीय धारा-सभा में, एक प्रस्ताव के रूप में, उपस्थित किया था। आपका प्रस्ताव था कि सरकार एक 'अनुवाद-विभाग' स्थापित करे, जिसके द्वारा हिंदी और उर्दू में पुस्तकें अनुवादित कराई जायँ। उपाध्यायजी के प्रस्ताव के उत्तर में तत्कालीन शिक्षा-मंत्री डॉक्टर श्रीराय राजेश्वरबली साहब ने यह आश्वासन दिया था कि हिंदी-उर्दू-साहित्य की प्रगति को प्रोत्साहन देने के निमित्त एक संस्था के निर्माण का विचार उनके मन में आ चुका है, और इस हेतु उन्होंने प्रांतीय विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों से, गत ग्रीष्म में, विचार-विनिमय भी किया था। गत शरद्-ऋतु में जब उन्होंने प्रयाग की यात्रा की, उस समय भी उन्होंने स्थानीय विद्वानों और साहित्य-प्रेमियों से इसकी चर्चा की, और भारतीय (प्राचीन) साहित्य के प्रोत्साहन के निमित्त एक संस्था के निर्माण का विचार दृढ़ किया।

स्वर्गीय ख़ानबहादुर हाफ़िज़ हिदायतहुसैन ने जब एप्रिल, १९२६ की ७वीं तारीख़ में प्रांतीय धारा-सभा के सामने अपना निम्न-लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया, उस समय शिक्षा-मंत्री डॉक्टर श्रीराय राजेश्वरबली साहब ने खानबहादुर के प्रस्ताव का स्वागत करते हुए प्रसन्नता-पूर्वक इसकी सूचना दी कि प्रांतीय सरकार ने इस प्रकार की एक संस्था के हेतु अपने बजट में २५ हज़ार की रक़म अलग रख दी है।

ख़ानबहादुर साहब का प्रस्ताव था—

"प्रांतीय धारा-सभा सरकार से इस बात की सिफ़ारिश करती है कि वह हिंदोस्तानी एकेडेमी नाम की एक संस्था का निर्माण करे, जिसका उद्देश्य हिंदी-उर्दू-साहित्य को प्रोत्साहन देना हो, और इस हेतु सरकार प्रतिवर्ष दो लाख की रक़म नियत करने की व्यवस्था करे।"

इस प्रकार हिंदोस्तानी एकेडेमी का जन्म हुआ। इस संस्था की स्थापना का श्रेय तत्कालीन शिक्षा-मंत्री डॉक्टर श्रीराय राजेश्वरबली साहब को है। आपने अपने अल्प कार्य-काल में साहित्य और कला की उन्नति के लिये महत्त्व-पूर्ण प्रयत्न किया, जिसके फल-स्वरूप दो संस्थाओं का जन्म हुआ—एक म्यूज़िक-कालेज (संगीत-विद्यालय), दूसरी हिंदोस्तानी एकेडेमी।

हिंदोस्तानी एकेडेमी का उद्घाटन १९ मार्च, १९२७ में, तत्कालीन गवर्नर सर विलियम मैरिस महोदय के हाथों, लखनऊ में, हुआ। इस अवसर पर प्रांत के प्रतिष्ठित विद्वान्, विद्या-प्रेमी और साहित्य-हितैषी उपस्थित थे। एकेडेमी के भावी कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए गवर्नर महोदय ने कहा—

"मैं आशा करता हूँ, एकेडेमी अपनी शक्तियाँ इस

बात की ओर केंद्रीभूत करेगी कि मौलिक ग्रंथों का निर्माण हो—ऐसे ग्रंथ, जो वस्तुतः भारतीय और प्रथमतः प्रांतीय विचारों से ओत-प्रोत हों। मेरे विचार से एकेडेमी का मुख्य ध्येय भाषा का शृंगार या विज्ञान-विषयक ज्ञान का प्रचार उतना न होना चाहिए, जितना साहित्य को प्रोत्साहन देना। और, यदि उस साहित्य को सजीव और उपयोगी वस्तु बनाना है, तो उसे दूसरे का आधार न लेना चाहिए, वरन् उसका अपना स्वतंत्र विकास होना चाहिए।"

इस प्रकार स्थापित होकर एकेडेमी ने निम्न-लिखित उद्देश्यों को लेकर सन् १९२७ में अपना कार्य आरंभ किया—

हिंदोस्तानी एकेडेमी का प्रधान उद्देश्य हिंदी-उर्दू-साहित्य का संरक्षण, प्रोत्साहन और उन्नति करना होगा। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये एकेडेमी निम्न-लिखित उपायों का आश्रय लेगी—

(१) अनेक विषयों की पुस्तकों पर पारितोषिक देना।

(२) हिंदी-उर्दू-भाषाओं में विदेशी भाषा की सुंदर पुस्तकों का अनुवाद कराना और उन्हें प्रकाशित करना।

(३) मौलिक ग्रंथों तथा प्रामाणिक अनुवादों के निर्माण को प्रोत्साहन देना।

(४) प्रसिद्ध विद्वानों तथा लेखकों को एकेडेमी का 'फ़ेलो' चुनना।

(५) हितैषियों को एकेडेमी का सम्मानित सदस्य या हितैषी चुनना।

(६) विद्वानों को व्याख्यान देने के निमित्त निमंत्रण देना।

(७) पुस्तकालय की स्थापना करना।

(८) अपनी उद्देश्य-सिद्धि के निमित्त अन्य उपायों का, जो उपयुक्त समझे जायँ, आश्रय लेना।

श्रीराय राजेश्वरबली
(संस्थापक हिंदोस्तानी एकेडेमी)

संगठन

हिंदोस्तानी एकेडेमी की रजिस्ट्री सन् १९२७ में, १८६१ ऐक्ट २१ के अनुसार, हुई। इसका संगठन इस प्रकार है—एकेडेमी में एक कौंसिल (सभा) और दूसरी परिषद् है। पहली में ५० सदस्य हैं, दूसरी में ६। एकेडेमी की कौंसिल का संगठन इस प्रकार है—

१. सभापति—१
२. उप-सभापति—१
३. 'एक्स-ऑफ़िशियो' (पदाधिकारी) सदस्य—आठ
४. मंत्री—१
५. परिषद् के सदस्य—४

६. सरकार द्वारा नामज़द सदस्य—३०
७. कौंसिल द्वारा चुने सदस्य—६

कौंसिल ही एकेडेमी की नीति का निर्णय करती और उसके उद्देश्यों को ध्यान में रखकर साहित्य तथा भाषा-संबंधी नीति स्थापित करती है। इस कौंसिल में हिंदी-उर्दू के चुने हुए विद्वान् सरकार द्वारा नियुक्त होते हैं।

परिषद् में सभापति, उप-सभापति, मंत्री के अतिरिक्त सरकार द्वारा नियुक्त चार सदस्य और कौंसिल द्वारा निर्वाचित दो सदस्य होते हैं। परिषद् या कार्यकारिणी समिति का धर्म एकेडेमी की कौंसिल द्वारा पास किए हुए प्रस्तावों पर आचरण करना तथा एकेडेमी के प्रबंध और संचालन की व्यवस्था करना है।

एकेडेमी की स्थापना १९२७ के ग्रीष्म में हुई थी। अपनी शैशवावस्था के इन ११ वर्षों में एकेडेमी ने जो कार्य संपादन किया है, उसका संक्षेप में हम सिंहावलोकन कराना चाहते हैं। एकेडेमी के समस्त साहित्यिक प्रयत्नों को हम सात विभागों में बाँट सकते हैं—

१. प्रकाशन
२. व्याख्यानों का प्रबंध
३. पारितोषिक-वितरण
४. पुस्तकालय-संग्रह
५. साहित्यिक कार्य (ग्रंथ-निर्माण)
६. पत्रिका-प्रकाशन
७. साहित्यिक अधिवेशन

प्रकाशन

एकेडेमी के उद्देश्यों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस संस्था का प्रधान कार्य मौलिक तथा प्रामाणिक ग्रंथों का निर्माण कर साहित्य की महान् क्षति की पूर्ति करना है। इस प्रधान उद्देश्य को सामने रखकर एकेडेमी ने २७ हिंदी और २३ उर्दू-ग्रंथों का प्रकाशन किया है! इन ग्रंथों में से प्रायः सभी विशेषज्ञों द्वारा प्रणीत हुए हैं, और वे अपने ढंग की अनूठी और महत्त्व-पूर्ण रचनाएँ हैं, जिनका अस्तित्व किसी भी साहित्य को गौरव प्रदान कर सकता है। हिंदी की पुस्तकों में दो को १२००) का मंगलाप्रसाद - पारितोषिक और एक को २००) का पदक - पुरस्कार पाने का सम्मान मिल चुका है। इसका कारण यही है कि इस संस्था ने ग्रंथों की उपयोगिता, मौलिकता और प्रामाणिकता को प्रधानता दी है, और इसका ध्यान साहित्य-भांडार को ऐसी रचनाओं से परिपूर्ण करने की ओर अधिक था, जिनकी ओर अन्य साहित्यिक संस्था या प्रकाशक किसी - न-किसी कारण कम ध्यान दे पाते हैं। इन ग्रंथों के प्रणयन में एकेडेमी को विशेषज्ञों को उचित पुरस्कार देना और उसके प्रकाशन में यथेष्ट व्यय करना पड़ा है। एकेडेमी के प्रकाशन द्वारा साहित्य की जो कमी पूरी हुई है, वह सस्ती, सामयिक पुस्तकों के प्रकाशन से कभी पूरी न हो सकती थी।

एकेडेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची नीचे दी जाती है—

हिंदी-पुस्तकों की सूची

नाम	लेखक
१. कवि-रहस्य—	डॉ० गंगनाथ झा एम्० ए०, डी० लिट्०
२. हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता	डॉ० बेनीप्रसाद डी० एस्-सी०
३. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति	रायबहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा
४. मध्यकालीन भारत की सामाजिक और आर्थिक अवस्था	अल्लामा अब्दुल्लाह यूसुफ़अली सी० बी० ई०
५. अरब और भारत के संबंध—	अनुवादक, बाबू रामचंद्र वर्मा

नाम लेखक

६. सौर परिवार—डॉ० गोरखप्रसाद डी० एस्-सी०, एफ़्० आर० ए० एस्०

७. जंतु-जगत्—श्रीव्रजेशबहादुर बी० ए०

८. गोस्वामी तुलसीदास—रायबहादुर बाबू श्यामसुंदरदास और डॉ० पीतांबरदत्त बड्थ्वाल

९. अयोध्या का इतिहास—स्व० रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए०

१०. घाघ और भड्डरी—पं० रामनरेश त्रिपाठी

११. चंद्रगुप्त विक्रमादित्य—श्रीगंगाप्रसाद मेहता एम्० ए०

१२. भोजराज—श्रीविश्वेश्वरनाथ रेउ

१३. हिंदी-भाषा का इतिहास—डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०

१४. ग्रामीण अर्थशास्त्र—श्रीव्रजगोपाल भटनागर एम्० ए०

१५. भारतीय इतिहास की रूप-रेखा (दो भाग) — श्रीजयचंद्र विद्यालंकार

१६. भारतीय चित्रकला—श्रीएन्० सी० मेहता आई० सी० एस्०

१७. औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल — प्रो० शंकरसहाय सक्सेना

१८. हिंदी-उर्दू या हिंदोस्तानी—स्व० पं० पद्मसिंह शर्मा

१९. वेलि क्रिसन रुक्मणी री—ठा० रामसिंह एम्० ए० और सूर्यकरण पारीक एम्० ए०

२०. सतसई - सप्तक—बा० श्यामसुंदरदास बी० ए०

२१. हिंदी-सर्वे-कमेटी की रिपोर्ट—स्व० रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए०

२२. चर्म बनाने के सिद्धांत—बाबू देवीदत्त अरोड़ा बी० एस्-सी०

२३. प्रेम-दीपिका—स्व० रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए०

नाम लेखक

२४. भारतेंदु हरिश्चंद्र—श्रीव्रजरत्नदास बी० ए०

२५. हिंदी-भाषा और लिपि—डॉ० धीरेंद्र वर्मा

२६. प्रयाग-प्रदीप—बा० शालग्राम श्रीवास्तव्य

२७. विद्यापति ठाकुर—डॉ० उमेश मिश्र डी० लिट्०

२८. विज्ञान-हस्तामलक—स्व० प्रो० रामदास गौड़ एम्० ए०

२९. राजस्व—श्रीभगवानदास केला

३०. संत तुकाराम—श्रीहरिरामचंद्र दुगवेकर

३१. मीना—डॉ० मंगलदेव शास्त्री

३२. हिंदी के कवि और काव्य—श्रीगणेशप्रसाद द्विवेदी एम्० ए०

३३. न्याय—अनुवादक, स्व० श्रीप्रेमचंद

३४. हड़ताल—अनुवादक, स्व० श्रीप्रेमचंद

३५. धोखाधड़ी—अनुवादक, श्रीललिताप्रसाद शुक्ल एम्० ए०

३६. चाँदी की डिबिया—अनुवादक, स्व० श्रीप्रेमचंद

३७. नातन—अनुवादक, मिर्ज़ा अबुलफ़ज़ल

उर्दू-पुस्तकों की सूची

१. अजमने-बस्ता में हिंदुस्तान के माशरती हालात—अल्लामा अब्दुल्ला यूसुफ़अली

२. उर्दू-सर्वे-कमेटी की रिपोर्ट—मौलवी मु० ज़ामिनअली

३. अरब और हिंद के ताल्लुक़ात—मौ० सै० सुलेमान नदवी

४. फ़रेबे-अमल—अनुवादक, बाबू जगत-मोहनलाल 'रवाँ'

५. नातन—अनुवादक, मु० नईमुररहमान

६. कबीर साहब—पं० मनोहरलाल जुतशी

७. क़ुरून बस्ता का हिंदुस्तानी तमद्दुन—पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा

८. हिंदी-शायरी—डॉ० आज़म कुरेशी

९. तरक़्क़ी ज़राअत—मौलवी अब्दुलक़यूम खाँ

नाम लेखक

१०. आलमे - हैवानी—बाबू व्रजेशबहादुर बी० ए०, एल्-एल्० बी०

११. माशियात—डॉ० ज़ाकिरहुसैन

१२. फ़िलसफ़ए-नफ़्स—सैयद ज़ामिनहुसैन नक़वी

१३. महाराजा रणजीतसिंह—प्रो० सीताराम कोहिली

१४. जवाहरे-सख़ुन—मौ० कैफ़ी चिरैयाकोटी

१५. इल्म बाग़बानी—मि० वसीउल्लाहख़ाँ

१६. इनक़लाबे-रूस—बाबू किशनप्रसाद कौल

१७. चंद दक्खिनी पहेलियाँ — मु० नईमुररहमान

१८. फ़िलसफ़ए-सियासियात — मु० मुजीब

१९. अँगरेज़ी अहद में हिंदोस्तान के तमद्दन की तारीख़—अब्दुल्लाह यूसुफ़अली

२०. फ़िलसफ़ए - जमाल — रियाज़ुलहसन साहब

२१. दीवान बेदार—ज़लीलअहमद क़िदवई

२२. नफ़सियात फ़ासिदा-मोतक़िद वसीउल-रहमान

२३. मु० शाहबिन तुग़लक़—प्रो० आग़ा मेंहँदीहुसैन

महा० रायब० पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा

व्याख्यान

सन् १९२७ में एकेडेमी ने यह निश्चय किया कि एकेडेमी के तत्त्वावधान में दो विद्वानों को किसी महत्त्व-पूर्ण विषय पर व्याख्यान देने के लिये निमंत्रित किया जाय। एकेडेमी की परिषद् ने इस हेतु १०००) का पुरस्कार निश्चित किया। एकेडेमी के सभापति माननीय डॉ० सर तेजबहादुर सप्रू ने इस हेतु उदारता-पूर्वक अपनी ओर से १०००) देने का वचन दिया था। इस प्रकार आरंभ में श्री अब्दुल्लाह यूसुफ़अली और महामहोपाध्याय रायबहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा महोदय व्याख्यान देने के हेतु आमंत्रित हुए। व्याख्यानों का यह प्रबंध १९३४ तक रहा। इस बीच १२ व्याख्यानों का प्रबंध एकेडेमी ने किया, जिस के लिये १२,०००) व्यय हुआ। इन व्याख्यानों के व्यय के लिये सभापति महोदय सर तेजबहादुर सप्रू ने एकेडेमी को अपनी ओर से २०००) की सहायता प्रदान की। व्याख्यानों का ब्योरा इस प्रकार है—

व्याख्यानदाता	विषय
१. अब्दुल्लाह यूसुफ़अली साहब	मध्यकालीन भारत की सामाजिक और आर्थिक अवस्था

२. रायबहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा—मध्यकालीन भारतीय संस्कृति

३. महामहोपाध्याय डॉ० गंगानाथ झा—कवि-रहस्य

४. मौ० सैयद सुलेमान नदवी—अरब और हिंद के ताल्लुक़ात

५. मु० अमीनअब्बासी—मुसलिम सभ्यता पर हिंदू-सभ्यता का विचार

६. डॉ० ताराचंद—हिंदू-सभ्यता पर मुसलिम सभ्यता का विचार

७. डॉ० भगवानदास—दर्शन

८. मौलाना अब्दुल-हक़—दक्षिण में उर्दू का विकास

९. डॉ० ए० सिद्दीक़ी—भाषा-विज्ञान

१०. डॉ० ज़ाकिर-हुसैन—अर्थ-शास्त्र

११. पं० पद्मसिंह शर्मा—हिंदी, उर्दू या हिंदुस्तानी

१२. मि० एन्० सी० मेहता—भारतीय चित्र-कला

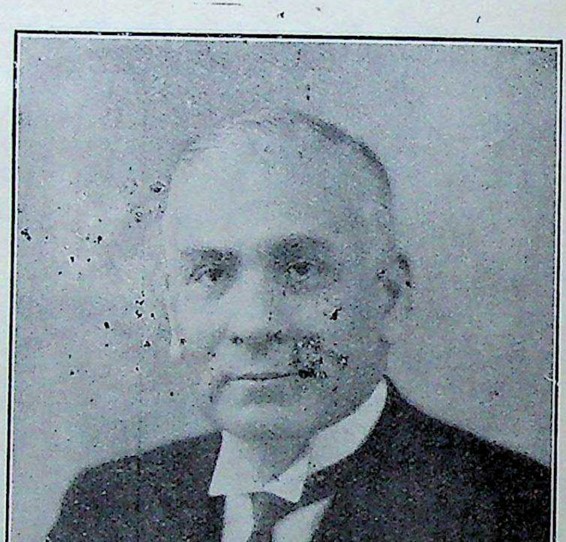

सर तेजबहादुर सप्रू
(सभापति)

पारितोषिक

मौलिक ग्रंथों के निर्माण-कार्य को प्रोत्साहन देने के लिये लेखक को पुरस्कार (पारितोषिक) देना अत्यंत आवश्यक है। विदेश के स्वतंत्र राज्यों में राष्ट्र तथा साहित्यिक संस्थाओं की ओर से लेखकों को ख़ूब प्रोत्साहन दिया जाता है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि उनके साहित्य में सुंदर-सुंदर रचनाओं की संख्या बढ़ती ही चली जा रही है। हिंदी-उर्दू के लेखकों को यदि उचित प्रोत्साहन न दिया गया, तो हमारे प्रांतीय साहित्य की उन्नति बहुत ही मंद गति से होगी, और उसमें वह उत्साह न आ सकेगा, जिसका होना जीवित साहित्य के लिये सर्वथा वांछनीय है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर एकेडेमी ने पुस्तकों पर पारितोषिक प्रदान करने की व्यवस्था की है।

एकेडेमी द्वारा अब तक १८ लेखकों को पुरस्कार मिल चुका है। लेखकों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के छात्रों में साहित्यिक कार्य को उत्तेजित करने के निमित्त एकेडेमी ने उनकी अप्रकाशित रचनाओं पर भी पुरस्कार दिया है। यदि एकेडेमी को अकस्मात् धनाभाव का आघात न पहुँचता, तो अब तक वह साहित्य की अनेक उपेक्षित क्षति की पूर्ति के निमित्त भी पारितोषिक की व्यवस्था करती। एकेडेमी का विचार था कि स्त्रियों तथा बच्चों के लिये सर्वोत्तम हिंदी और उर्दू-पुस्तकों पर भी पारितोषिक प्रदान किया जाय। इस प्रकार एकेडेमी का विचार था कि पारितोषिक देने की घोषणा करके साहित्य की अनेक अंगों की ओर लेखकों का ध्यान आकर्षित किया जाय, और उन क्षतियों की पूर्ति के निमित्त उन्हें उत्साहित

किया जाय। हिंदी-उर्दू-साहित्य की वर्तमान दशा से जो परिचित हैं, उन्हें ज्ञात होगा कि अभी तक इन भाषाओं में साहित्य-कार्य केवल सेवा के रूप में है। ऐसी दशा में स्वांतःसुखाय लेखकों के भरोसे साहित्य की उन्नति की गति अनिश्चित ही रहेगी। इस बात को देखते हुए यह सर्वथा उपयुक्त है कि साहित्य की महत्त्व-पूर्ण सेवा करनेवालों की आर्थिक सहायता की जाय, जिसमें वे जीवन-संग्राम के बखेड़ों से मुक्त होकर 'सत्यं, शिवं, सुंदरम्' साहित्य की सृष्टि में दत्तचित्त हो सकें। एकेडेमी ने जिन लेखकों और रचनाओं को पुरस्कार-योग्य समझा, उन्हें देखकर उसकी नीति का अच्छा ज्ञान हो सकता है। एकेडेमी के पुरस्कारों के विषय में यह दृढ़ता-पूर्वक कहा जा सकता है कि पुरस्कृत रचनाओं की योग्यता ही सर्व-प्रधान परख समझी गई है। एकेडेमी द्वारा पुरस्कृत लेखकों में ऐसे अनेक लेखक मिलेंगे, जिनकी ओर उनकी उदासीनता के कारण किसी ने ध्यान भी नहीं दिया था। एकेडेमी ने रचनाओं की ओर अधिक ध्यान दिया, लेखकों के व्यक्तित्व की ओर कम। एकेडेमी का उद्देश्य साहित्य को प्रोत्साहन देना-मात्र था। एकेडेमी द्वारा पुरस्कृत रचनाओं और लेखकों का ब्योरा नीचे दिया जाता है। इस मद में एकेडेमी अभी तक १०,८००) व्यय कर चुकी है।

१६२८-१६२६

१. रंगभूमि	स्व० श्रीप्रेमचंदजी
२. गंगावतरण	स्व० बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
३. बक़ेर-हयात	स्व० मु० इकरामुल्लाखाँ
४. तनज़ीमुलहयात	मु० सैयद अलीनक़ी सफ़ी

१६२६-१६३०

१. तर्कशास्त्र	बाबू गुलाबराय एम्० ए०
२. मानव-शरीर-रहस्य	डॉ० मुकुंदस्वरूप वर्मा
३. स्वप्न	पं० रामनरेश त्रिपाठी
४. स्कंदगुप्त	पं० जयशंकर'प्रसाद'
५. नफ़सियात तरग़ीब	मो० सै० बहाउद्दीन-अहमद
६. सदाये-वर्क़	मु० आफ़ताब उमर
७. मीराज स.खुन	मो० सै० .खुरशेदअहमद
८. अलमोबीन	मो० मु० सुलेमान अशरफ़

१६३०-१६३१

१. हिंदी-साहित्य का इतिहास	पं० रामचंद्र शुक्ल

१६३१-१६३२

१. परख	पं० जैनेंद्रकुमार
२. रफ़ीक़ तेनहाई	मु० सैयदअली अब्बासहुसैनी

१६३२-१६३३

१. साकेत	बाबू मैथिलीशरण गुप्त

१६३५-१६३६

१. खैयाम	मो० सैयद सुलेमान नदवी
२. तुलसी के चार दल	पं० सद्गुरुशरण अवस्थी

निबंधों पर

१६३०-१६३१

१. विनय-पत्रिका के स्वरूप-निरूपण के संबंध में कुछ विचार	बाबू माताप्रसाद गुप्त (प्रयाग-वि० वि०)
२. अर्जुन की उग्र साधना	पं० उमाशंकर बाजपेयी (लखनऊ-वि० वि०)
३. कर्तव्य	पं० तुलसीराम शर्मा (प्रयाग-वि० वि०)
४. इक़बाल का फ़िलसफ़े-मौत	मु० अज़ीमुलहक़ (चर्च कॉलेज, कान०)
५. शहीदे-मग़रिब	मु० मक़बूलहुसैनखाँ (प्रयाग-वि० वि०)

१६३२-१६३३

१. रामचरित-मानस का कथामूल का मूल—पं० रामकिशोर मालवीय (प्रयाग-वि० वि०)

२. कहानी—बाबू गनपतप्रसाद वर्मा (एस० डी० कॉ०, कान०)

३. मौ० नज़ीरअहमद देहलवी—मि० ओवैस अहमद (प्रयाग-वि० वि०)

पुस्तकालय

एकेडेमी का उद्घाटन करते समय माननीय गवर्नर महोदय सर विलियम मैरिस ने कहा था—"मैं चाहूँगा कि इसकी व्यवस्था हो, और यदि आवश्यकता समझी जाय, तो क़ानूनन् इसका प्रबंध किया जाय कि इस प्रांत में प्रकाशित होनेवाली प्रांतीय भाषाओं की समस्त पुस्तकों की एक-एक प्रति एकेडेमी को मिला करे। और, एकेडेमी इसका प्रबंध करे कि उसके पुस्तकालय में भारतीय भाषाओं की सभी उत्तम पुस्तकें वर्तमान हों। मैं तो प्रस्ताव करूँगा कि भविष्य में एकेडेमी ही वार्षिक प्रकाशन की आलोचना किया करे। यह कार्य अभी तक सरकार के द्वारा होता रहा है, परंतु हाल में, संभवतः अर्थाभाव के कारण, उसे यह कार्य छोड़ना पड़ा है। यदि एकेडेमी वार्षिक प्रकाशन के महत्त्व-पूर्ण ग्रंथों की निष्पक्ष आलोचना करने में समर्थ हो सकी, तो वह जनता की आँखों में सम्मान की अधिकारिणी हो सकेगी।"

एकेडेमी ने अपने पुस्तकालय की स्थापना इसी दृष्टि से आरंभ की थी। उसका विचार था कि एकेडेमी के पास प्रकाशित पुस्तकों का सर्व-संपन्न संग्रह हो, और यदि संभव हो, तो अप्रकाशित प्राचीन ग्रंथों की प्रतियाँ भी रहें। उद्देश्य यह था कि इस प्रकार एकेडेमी साहित्य के स्वाध्यायियों और शोध-कार्य में लगे हुए विद्वानों को सुविधा प्रस्तुत कर सकेगी।

पुस्तकालय की संपूर्ण सफलता के लिये सर्वप्रथम एक ऐसी इमारत की आवश्यकता थी, जहाँ संगृहीत ग्रंथ सुरक्षित रह सकें। दूसरे, पुस्तकालय-जैसे कार्य के लिये धन की आवश्यकता पड़ती है। एकेडेमी के दुर्भाग्य से ऊपर की दोनो बातों का अभाव पूरा न हुआ। सर विलियम मैरिस महोदय की शुभ इच्छा पर, उनके चले जाने के पश्चात्, किसी ने ध्यान ही न दिया। एकेडेमी के जन्मदाता डॉक्टर श्रीराय राजेश्वरबली साहब के मंत्रिपद-त्याग के पश्चात् एकेडेमी की ओर से उसके अभिभावकों की चेष्टा कुछ उदासीन-सी रही। एकेडेमी की सालाना ग्रांट (सहायता) की रक़म आधी कर दी गई। एकेडेमी ने ऐसी दशा में इन दस वर्षों में २०,०००) रुपए व्यय कर पुस्तकों का संग्रह किया है। एकेडेमी के इस संग्रह को यदि सर विलियम मैरिस के इच्छानुसार सर्व-संपन्न बनाने का अवसर दिया गया होता, तो आज यह संग्रह इस प्रांत में अपने ढंग का अद्वितीय होता, जिसके कारण इस प्रांत को सम्मान तो मिलता ही, इस प्रांत के साहित्य के स्वाध्यायियों को न-जाने कितना लाभ पहुँचता!

साहित्यिक कार्य

एकेडेमी ने अपनी देख-रेख में साहित्यिक कार्य करने के लिये कुछ कार्यकर्ता नियुक्त किए हैं। इनमें दो स्कॉलर और दो संपादक हैं। स्कॉलरों में एक ने हिंदी और दूसरे ने उर्दू-कविताओं का बृहत् संग्रह तैयार किया है। प्रत्येक कई भागों में तैयार हुए हैं। हिंदी-काव्य-संग्रह (जिसका नाम हिंदी के कवि और काव्य है) के दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं, तीसरा प्रेस में है। चौथा भाग आवश्यक संशोधन के पश्चात् प्रेस में दिया जायगा। उर्दू-काव्य-संग्रह (जिसका नाम जवाहरे-सख़ुन है) के तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं। शेष भाग प्रेस की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इन काव्य-संग्रह के निर्माण की आवश्यकता इसलिये आवश्यक प्रतीत हुई कि इन भाषाओं के समस्त काव्य-ग्रंथों का संपूर्ण पारायण सर्वसाधारण के लिये कठिन-सा था। इस हेतु यदि दोनो भाषाओं के चुने हुए कवियों की कृतियों से संग्रह

किए जायँ, तो वे साहित्य के पाठकों के बड़े काम के होंगे। आशा की जाती है, इससे दोनो भाषाओं के साहित्य की एक बड़ी कमी की पूर्ति हो सकेगी। एकेडेमी के साहित्य-विभाग द्वारा प्रणीत अन्य ग्रंथ शीघ्र ही प्रकाशित होंगे।

रावराजा रायबहादुर श्रीपं० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्०

पत्रिका का प्रकाशन

एकेडेमी के स्थापित होने के पश्चात् यह आवश्यक समझा गया कि इस संस्था की अपनी एक पत्रिका हो, जो दोनो भाषाओं में प्रकाशित हो। इस हेतु एकेडेमी ने 'हिंदोस्तानी' नाम की त्रैमासिक पत्रिका हिंदी और उर्दू में प्रकाशित करना आरंभ किया। इस पत्रिका द्वारा एकेडेमी पाठकों के लिये उत्तमोत्तम पाठ्य वस्तु प्रस्तुत कर रही है।

एकेडेमी की इस पत्रिका का जन्म १९३१ में हुआ था। यह पत्रिका अपने आठ वर्ष के अल्प जीवन में एकाग्र चित्त होकर अपने ध्येय की प्राप्ति की ओर अग्रसर रही है। इस पत्रिका में जिन महोदयों के लेख प्रकाशित हुए हैं, उनका नाम ही इसके महत्त्व का विषय है। हिंदी-संस्करण के कुछ प्रमुख लेखक ये हैं—रावराजा रायबहादुर डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र, रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र, महापंडित श्रीराहुल सांकृत्यायन, डॉ० धीरेंद्र वर्मा, डॉ० प्राणनाथ, डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी, डॉ० बाबूराम सक्सेना, डॉ० मंगलदेव शास्त्री, डॉ० हरिरामचंद्र दुवेकर, डॉ० विश्वेश्वरप्रसाद, श्रीविश्वेश्वरनाथ रेउ, डॉ० बनारसीप्रसाद, डॉ० ताराचंद, पं० रामनरेश त्रिपाठी, बाबू व्रजरत्नदास, श्रीएन्० सी० मेहता आई० सी० एस्०, डॉ० उमेश मिश्र, डॉ० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, डॉ० आचार्य आदि-आदि।

उर्दू-संस्करण के लेखकों में ये हैं—सर तेजबहादुर सप्रू, सर अब्दुल क़ादिर, डॉ० मोहीउद्दीन क़ादरी, डॉ० ए० सिद्दीक़ी, सदरयारजंग मौलवी, मुहम्मद हबीबुररहमानख़ाँ शेरवानी, मौलवी अब्दुलमाजिद, मौलवी महेशप्रसाद, पं० कृष्णप्रसाद कौल, पंडित मनोहरलाल जुतशी, मिस्टर रशीदअहमद सिद्दीक़ी, मि० नईमुररहमान, मौलवी नसीरउद्दीन हाशमी आदि-आदि।

साहित्यिक अधिवेशन

इस प्रांत में ही क्यों, समस्त भारत में एक भी

ऐसी संस्था नहीं, जिसकी अवधानता में भारत की प्रमुख दोनो भाषाओं—हिंदी और उर्दू—के विद्वान् एकत्र होकर एक साथ साहित्य के हित की बातों पर विचार कर सकें। राष्ट्रीय दृष्टि से तो यह अत्यंत उपयोगी है ही, परंतु दो महान् जातियों के साहित्य के कल्याण के लिये भी यह परम आवश्यक है कि दोनो के विद्वान् सहानुभूति-पूर्वक एक दूसरे का साहित्य समझने की चेष्टा करें, और ऐसे उपाय सोचें, जिसमें दो साहित्यों की वृद्धि होते हुए भी एक दूसरे में प्रतिद्वंद्विता या वैमनस्य न रहे। भारत के इतिहास में यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि ऐसा अवसर केवल हिंदोस्तानी एकेडेमी ही ने प्रदान किया है। एकेडेमी के इन दस वर्षों के जीवन-काल में एक बार भी ऐसा अवसर नहीं उपस्थित हुआ, जब दोनो भाषाओं के शुभचिंतकों में कभी कोई अप्रिय भावना उत्पन्न हुई हो। एकेडेमी की अन्य सफलताओं में यह भी कुछ कम महत्त्व की सफलता नहीं मानी जा सकती।

एकेडेमी के वार्षिक अधिवेशनों में भाषा तथा साहित्य-संबंधी महत्त्व-पूर्ण प्रश्नों पर विचार हुआ है, और सबसे बड़ी बात, जो इन अधिवेशनों के द्वारा सिद्ध हो सकी है, यह है कि दोनो भाषाओं के विद्वानों और शुभचिंतकों का दृष्टिकोण उदार और राष्ट्रीय दृष्टि से कल्याणकर हुआ है। इसकी परम आवश्यकता थी। यदि इन अधिवेशनों का कार्य-क्रम बराबर चलता रहा, तो इसमें तनिक संदेह नहीं कि एक दिन हिंदी-उर्दू का झगड़ा नाम-मात्र को भी नहीं सुनाई पड़ेगा।

एकेडेमी की सफलता

एकेडेमी-जैसी महान् उद्देश्यवाली संस्था की पूरी सफलता के लिये काफ़ी समय अपेक्ष्य है। साहित्य का कार्य इतने शीघ्र नहीं हुआ करता, विशेषकर जब देश का वातावरण और समाज की गति इतनी मंद हो। एकेडेमी का उद्घाटन करते समय माननीय शिक्षा-मंत्री डॉक्टर श्रीराज राजेश्वरबली साहब ने कहा था कि एकेडेमी के प्रधान तीन कर्तव्य होंगे—

१. ऐसी भाषा को प्रोत्साहन देना, जिसे सब समझ सकें।

२. साहित्य की कमी की पूर्ति के हेतु मौलिक, उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन।

३. सर्वसाधारण के लिये साहित्य तैयार करना।

सर विलियम मैरिस महोदय ने भी अपने वक्तव्य में एकेडेमी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि एकेडेमी का प्रधान कर्तव्य हिंदी और उर्दू को प्रोत्साहन देना होगा। एकेडेमी के ११ वर्षों के कार्य को देखते हुए यह कहना सर्वथा अन्याय है कि उसने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये काफ़ी काम नहीं किया। इस अल्प काल में एकेडेमी ने भाषा-संबंधी वाद-विवाद की इतिश्री कर दी, और अब प्रायः सभी हिंदोस्तानी भी सरल भाषा में लिखने-पढ़ने के पक्ष में हो रहे हैं। हिंदी-उर्दू का पुराना झगड़ा अब उभाड़ने पर भी ज़ोर नहीं पकड़ सकता। एकेडेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें देखकर कोई नहीं कह सकता कि उसके प्रकाशन ने साहित्य की महान् कमी की पूर्ति नहीं की।

एकेडेमी द्वारा दिए गए पारितोषिक आदि से हिंदी-उर्दू-साहित्य के उत्पादन में निश्चय प्रोत्साहन मिला है।

एकेडेमी के उद्देश्य महान् हैं। इसी की प्रगति के लिये पर्याप्त धन, सहयोग और समय की आवश्यकता है। ऐसे कार्य शीघ्रता में नहीं संपादित होते। इस प्रांत की अन्य संस्थाओं को देखते हुए एकेडेमी अभी कितने दिनों की है। परंतु यदि उसके कार्यों की तुलना अन्य से की जाय, तो यह जान पड़ेगा कि एकेडेमी ने काफ़ी ठोस काम किया है।

एकेडेमी का विरोध

एकेडेमी-जैसी संस्था के लिये धन के अतिरिक्त साहित्यिकों और सर्वसाधारण की सहानुभूति तथा सहयोग अत्यंत आवश्यक है। यह दुःख की बात है कि एकेडेमी को हिंदी-उर्दू-जनता की पूर्ण सहानुभूति नहीं प्राप्त हुई। इसका प्रधान कारण देश की परिस्थिति थी। एकेडेमी की स्थापना जिस समय हुई, उस समय सरकार द्वारा किए गए समस्त कार्यों की ओर जनता संदेह की दृष्टि से देखती थी। इसका फल यह हुआ कि एकेडेमी को सरकारी संस्था समझने के कारण लोग उसकी आलोचना करने की ही ओर अधिक प्रवृत्त हुए। अब युग बदल गया है, सरकार और जनता में इतना पार्थक्य नहीं रहा। जो कल सरकार की आलोचना करते थे, वही आज उसके कर्णधार हो रहे हैं। ऐसी दशा में हम आशा करते हैं, एकेडेमी की ओर जनता स्नेह की आँखों से देखेगी, और उसकी उन्नति में सहयोग प्रदान करेगी। एकेडेमी की सफलता के लिये यह युग बहुत ही कल्याणकर प्रमाणित होगा।

भविष्य में एकेडेमी का कार्य-क्रम

एकेडेमी-जैसी संस्था द्वारा इस प्रांत के साहित्यिक जीवन में थोड़े ही वर्षों में महान् परिवर्तन किया जा सकता है। यदि एकेडेमी को सरकार और सर्वसाधारण का सहयोग मिले, तो वह बड़ी सुगमता से निम्न-लिखित कार्य कर सकती है—

१. प्रांत के प्रकाशन की वार्षिक आलोचना प्रकाशित करना।

२. वार्षिक हिंदी-उर्दू-साहित्य की उन्नति की रिपोर्ट उपस्थित करना।

३. हिंदी - उर्दू - संस्थाओं की सहायता करना और उनके बीच सामंजस्य उपस्थित करना।

४. साहित्यिकों और जनता के लिये पुस्तकें प्रकाशित करना।

५. प्रांत में साहित्यिक जाग्रति पैदा करना।

नाग-पाश से भी विशेष दृढ़ रोग के पाश से मुक्त होने का निश्चित उपाय

आतंकनिग्रह गोलियाँ

इन गोलियों के सेवन से जठराग्नि को बल मिलता है, अन्न पर रुचि होती है, रुधिर सुधरता है, और वीर्य की अति वृद्धि होती है।

क़ीमत ३२ गोलियों की डिब्बी का १)

आतंकनिग्रह औषधालय
जामनगर—काठियावाड़

लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड कं०, चौक

प्रपात

[श्रीयुत पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

निम्न गति खलती रहती है,
या पतन बहु कलपाता है;
या किसी प्रियतम का चिंतन
दृग-सलिल बन दिखलाता है ?१॥
बहु विपुल वाष्प गिरि-हृदय में
सर्वदा भरता रहता है;
वही क्या तरल तोय हो-हो
उत्स बन-बनकर बहता है ?२॥
गिरि-शिखर पर बहुधा वारिद
विहरता पाया जाता है;
स्वेद क्या उसके अंगों का
सिमिट प्रस्रवण कहाता है ?३॥
पर कटे कटे किंतु अब भी
पड़ा करता है पवि सिर पर;
इसी से सदा उत्स-मिस क्या
गिराता है आँसू गिरिवर ?४॥
उत्स है उत्स या तपन के
तापमय कर अवलोकन कर
कलेजा गिरि का द्रवता है,
पसीजा करता है पत्थर ?५॥
रुदन-रत किसी व्यथित चित के
(निज व्यथा जो यों हरता है)
गिरे हैं झर-झर आँसू, या
नीर निर्झर का झरता है ?६॥
दलित दूबों का मुक्ता-फल
छीनते हैं सहस्रकर-कर;
देख यह दशा मेरु रो-रो
बनाते हैं क्या बहु निर्झर ?७॥
परम शीतल सिर-मंडन हिम
ताप से तप जाता है गल;
प्रकट करता है क्या यह दुख
उत्स-मिस मेरु बहा दृग-जल ?८॥
नित्य होती पशु-हिंसा से
व्यथित हो हृदय कलपता है,
देख बहु करुण दृश्य क्या गिरि
उत्स के व्याज विलपता है ?९॥
कौन-सी पीड़ा होती है,
किन दुखों से वे भरते हैं;
सदा झरनों के नयनों से
किसलिये आँसू झरते हैं ?१०॥

चातुर्वर्ण्य वेद-मूलक नहीं

[श्रीयुत संतराम बी० ए०]

एप्रिल की 'सुधा' में श्रीयुत धर्मदेव-जी शास्त्री ने 'वर्ण-व्यवस्था और जाति-पाँति'-शीर्षक लेख में मई, १९३७ की 'सुधा' में प्रकाशित मेरे लेख का उत्तर देने की चेष्टा की है। उनका मत है कि चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था वैदिक और मनुष्य-समाज के लिये कल्याणकारी है। उनका लेख लंबा है, इसलिये मेरा उत्तर भी कुछ लंबा हो गया है।

वर्तमान जाति-भेद या जाति-पाँति चातुर्वर्ण्य-विभाग का अनिवार्य परिणाम अथवा कड़ुवा फल है। फूट का बीज बोकर मेल का फल खाने की आशा रखना व्यर्थ है। मैं श्रीधर्मदेवजी से स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि मैं शास्त्रों के आदर्शवाद को कुछ भी महत्त्व देने को तैयार नहीं। मैं तो उस आदर्शवाद से हिंदू-समाज का जो हानि-लाभ हुआ है, उसी को दृष्टि में रखकर वर्ण-भेद का मूल्य लगाता हूँ। गुण-कर्म-स्वभाव की वर्ण-व्यवस्था इस समय नहीं। उसे मरे, आपके मतानुसार भी, सहस्रों, वरन् लाखों वर्ष हो गए। जो चीज़ एक बार मर चुकी, लाख यत्न करने पर भी, वह फिर उसी रूप में जिलाई नहीं जा सकती। इतिहास बताता है कि जो प्रथाएँ, जो संस्थाएँ और जो रीतियाँ एक बार मर गईं, वे दुबारा जी न सकीं। दास-प्रथा, सती-प्रथा, नियोग-प्रथा को अब कौन पुनः प्रचलित करने का साहस कर सकता है? इसी प्रकार गुण-कर्म की वर्ण-व्यवस्था की मृत्यु पर रो-पीट चाहे बेशक लीजिए, परंतु अब उसे जिलाना असंभव है। आर्यसमाजी गुण-कर्म-स्वभाव की वर्ण-व्यवस्था की टूटी डफली पीटकर अज्ञानतः जन्म-मूलक वर्ण-भेद को ही दृढ़ कर रहे हैं। वे मुख से चाहे न मानें, परंतु उनके कर्म मेरे इस कथन का निर्विवाद रूप से समर्थन करते हैं। वे इधर-उधर की चिकनी-चुपड़ी बातों से दुनिया की

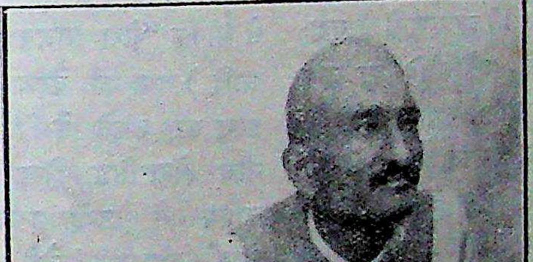

श्रीयुत संतराम बी० ए०

आँखों में धूल नहीं झोंक सकते। लोक में हमें २३ करोड़ हिंदुओं से वास्ता पड़ता है। इन २३ करोड़ में दो-चार लाख आर्यसमाजी नगण्य हैं। वर्ण-व्यवस्था का जो अर्थ सामान्य हिंदू-जनता लेती है, जो हम उसके प्रतिदिन के आचरण में देखते हैं, उसी पर हमें विचार करने की आवश्यकता है। कारण, वही हमारा समाज है, उसी के ठीक होने से हम सुखी हो सकते हैं। सनातनधर्मी अर्थात् सामान्य हिंदू प्रजा जो करती है, वही कहती है। वह जन्म से वर्ण-भेद मानती है, और उसी के अनुसार आचरण करती है। परंतु इसके विपरीत ६६·५ प्रति सैकड़ा आर्यसमाजी आचरण में जन्मना वर्ण मानते हुए भी व्याख्यानों में गुण-कर्म की दुहाई देते हैं। वे जाति-पाँति का नाम वैदिक वर्ण-व्यवस्था रखकर इसकी रक्षा कर रहे हैं।

इस छोटे-से प्राक्कथन के उपरांत अब मैं श्रीधर्मदेवजी के लेख की पड़ताल करता हूँ। मैंने लिखा था कि संस्कृत-साहित्य में शूद्र और ब्राह्मण का पद कहीं भी बराबर नहीं पाया जाता। इनमें ऊँच-नीच है। इसके उत्तर में श्रीधर्मदेवजी ने महाभारत के अनुशासन-पर्व के तीन श्लोक उद्धृत करके उनका जो अर्थ किया है, वह इस प्रकार है—

"स्वभावानुसार शुभ कर्म करनेवाला शूद्र द्विजों से श्रेष्ठ है। इस संसार में द्विज-पद केवल वृत्त से ही मिलता है। वृत्तवान् शूद्र भी ब्राह्मणत्व का नियंत्रण करता है।"

सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर उपरि-लिखित उद्धरण से भी यही ध्वनि निकलती है कि वर्ण की दृष्टि से तो शूद्र द्विज से नीचे है। हाँ, स्वभाव की दृष्टि से बेशक उससे श्रेष्ठ भी हो सकता है, जैसे इस्लाम की दृष्टि से तो गांधीजी एक तुच्छ-से-तुच्छ मुसलमान से भी नीचे हैं, हाँ, स्वभाव की दृष्टि से वह चाहे अच्छे हों। शूद्र के बाद 'भी'-शब्द का होना इस बात को स्पष्ट कर रहा है कि वर्ण की दृष्टि से शूद्र ब्राह्मण से नीचे है। जैसे कोई कहे कि कमला ने लड़की होते हुए सिंह मारा, तो इसका मतलब यही निकलता है कि सामान्यतया लड़कियाँ सिंह नहीं मार सकतीं। इसी प्रकार सामान्यतया वर्ण की दृष्टि से शूद्र ब्राह्मण से नीचे है, परंतु वृत्तवान् शूद्र ब्राह्मणत्व का नियंत्रण भी कर सकता है। शास्त्रकार वर्ण की दृष्टि से ही शूद्र को नीच ठहरा सकते थे। वृत्त की दृष्टि से कोई अच्छे मनुष्य को बुरा कहने की धृष्टता कर ही कैसे सकता है।

श्रीधर्मदेवजी द्वारा उद्धृत गीता के इस वचन से भी कि "मेरा आश्रय लेकर पापयोनि (चांडाल आदि) तथा स्त्री, वैश्य और शूद्र परम गति को प्राप्त कर सकते हैं।" वैश्य, शूद्र और स्त्री का नीच होना सिद्ध होता है, अन्यथा ब्राह्मण और क्षत्रिय से उन्हें पृथक् दिखलाने की क्या आवश्यकता थी? जैसे कोई कहे, उस मंदिर में भंगी तक जा सकते हैं, तो इससे यही सिद्ध होगा कि भंगी नीच है, न कि ब्राह्मण के बराबर।

आपने महाभारत का

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत्;
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि कर्मभिर्वर्णतां गतम्।

श्लोक उद्धृत किया है। "ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में कोई विशेषता, विषमता-भेद नहीं। क्योंकि यह सारा जगत् और सारे मनुष्य परमात्मा के पुत्र हैं।" पर इससे आपका पक्ष सिद्ध नहीं होता। ऐसे श्लोक तो उलटे इस बात के द्योतक हैं कि उस समय वर्णों में विषमता-भेद था, जिसे दूर करने के लिये ही ऐसे श्लोकों के बनाने की आवश्यकता हुई। जैसे इस समय जाति-पाँति-तोड़क मंडल कहता है कि वर्ण-भेद कोई नहीं, सब हिंदू एक वर्ण हैं, तो इससे साफ़ टपकता है कि इस समय हिंदू-समाज में वर्ण-

भेद बुरी तरह फैल रहा है, जिसे दूर करने के लिये ही मंडल को ऐसा कहना पड़ता है। यदि वर्ण-भेद न होता, तो एक वर्ण की दुहाई देने की आवश्यकता ही न होती। हिंदुओं के सारे धार्मिक इतिहास में से एक भी स्थल ऐसा बताइए, जहाँ समाज में किसी शूद्र को ब्राह्मण के समान सम्मान और प्रतिष्ठा दी गई हो। आपके उद्धृत श्लोकों से तो केवल इतना ही प्रकट होता है कि उनके निर्माण-काल में द्विज और शूद्र का भेद-भाव बहुत भयंकर रूप धारण कर चुका था, और समाज में शांति रखने या शूद्रों के आँसू पोंछने के लिये ऐसे-ऐसे श्लोक बनाए जाते थे। आजकल भी तो कह दिया जाता है—

जाति-पाँति पूछै नहिं कोय ;
हरि का भजै, सो हरि का होय।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि इस समय वर्णों में ऊँच-नीच का कोई भेद-भाव नहीं, वरन् यह तो वर्ण-भेद की विषमता कम करने के लिये ही कहा गया है।

मैंने लिखा था कि वेद में जिस प्रकार 'आर्य-वर्ण' और 'दास-वर्ण' लिखा मिलता है, उस प्रकार कहीं भी 'ब्राह्मण-वर्ण', 'क्षत्रिय-वर्ण' या 'वैश्य-वर्ण' लिखा नहीं मिलता। इसलिये वेद की दृष्टि में केवल आर्य और दास, ये दो ही वर्ण हैं। इस पर आपने लिखा है कि यजुर्वेद के पुरुष-सूक्त के

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ;
मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादावुच्येते।

मंत्र में प्रश्न किया गया है कि "जीवित समाज-रूपी शरीर के पाँव, मुँह, बाहु और ऊरु क्या है?" इसके उत्तर में अगला मंत्र "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" है। इसमें कहा गया है—"समाज-रूपी शरीर का मुख ब्राह्मण, बाहु क्षत्रिय, ऊरु वैश्य और पाँव शूद्र हैं।" इसलिये चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था वैदिक है।

इस संबंध में मेरा यही निवेदन है कि आप जो कुछ कह रहे हैं, अटकल से कह रहे हैं। मैं यह मानता हूँ कि वेद में मनुष्य-समाज को कहीं चार भागों में, कहीं पाँच में, कहीं छ में और कहीं बीसों जातियों में बाँटा गया है। परंतु वेद उन भागों को वर्ण नहीं कहता। वर्ण तो वह केवल आर्य और दास ही को कहता है। पुरुष-सूक्त के केवल किसी एक मंत्र को लेकर इसे समाज-परक नहीं कहा जा सकता। इस सूक्त के बाक़ी मंत्रों को भी समाज पर घटाकर देखिए। जब वे सब समाज-परक नहीं, वरन् भगवान् के विराट् रूप का वर्णन करते हैं, तो फिर किसी एक मंत्र को खींच-तानकर उसमें पुरुष का अर्थ समाज कर लेना और ब्राह्मण को उसका मुँह और शूद्र को पाँव बताना धींगामुश्ती नहीं, तो और क्या है? "ब्राह्मण उस(पुरुष=विराट् रूप परमेश्वर)का मुँह है, और शूद्र उस(परमेश्वर)के पाँव से पैदा हुआ।" से यह कैसे मतलब निकला कि शूद्र समाज का पैर है? जो चीज़ जिस अंग से पैदा होती है, वह वही नहीं होती। किसी भी भाष्यकार ने इन मंत्रों को समाज-परक नहीं लगाया है। वे लगाते भी कैसे, जब कि यह सूक्त ही समाज-परक नहीं। आचार्य सायण ने तो यजुर्वेद पर भाष्य किया ही नहीं, क्योंकि वह शुक्ल यजुर्वेदी थे। रहे उव्वट, महीधर और दयानंद, सो इनके भाष्य मैं आगे उद्धृत करता हूँ। इससे पता लग जायगा कि सांप्रदायिक लोग किस प्रकार वेद के और वेद के भाष्यकारों के नाम पर अपने कल्पित मतों को सिद्ध करते हैं।

उव्वट ने इन मंत्रों को समाज-परक न लगाकर यज्ञ-परक लगाया है।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ;
मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादावुच्येते।
(यजु० ३१। १०)

का अर्थ इस प्रकार करते हैं—

"यत्पुरुषं देवा इन्द्रादयस्तस्मिन् यज्ञे (अग्निष्टोमाख्ये) व्यदधुः कृतवन्तः कति प्रकारं विकल्पितवन्तः । तस्यैवं विधस्य (यज्ञोत्पन्नस्य पुरुषस्य) किं मुखं कौ बाहू कौ ऊरू पादौ उच्येते। उच्यताम् ?" (उव्वट)

अर्थात् इंद्रादि देवताओं ने अग्निष्टोम यज्ञ के अंदर जिस पुरुष को उत्पन्न किया था, उसी के विषय में यह प्रश्न है कि उस यज्ञ में उत्पन्न हुए पुरुष के मुखादि अवयव कैसे हैं ?

इसी का उत्तर अगले मंत्र में दिया गया है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः;
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत।
(यजु० ३१।११)

अर्थ—"अस्य यज्ञोत्पन्नस्य पुरुषस्य ये केचित् ब्राह्मणास्ते मुखमासीत। ये क्षत्रियास्ते बाहू कृताः। ये वैश्यास्ते अस्य ऊरू कृताः। ये शूद्रास्ते पद्भ्यामजायत इति। कल्पान्ते तस्योत्पन्नत्वादिति। एवमेतेऽवयवाः शिरप्रभृतयः पुरुषस्य विद्यन्ते नान्ये इति।" (उव्वट)

इस मंत्र में पूर्व प्रश्न-रूप मंत्र का उत्तर देते हुए उव्वट ने स्पष्ट कर दिया कि ये ब्राह्मण आदि उस यज्ञ में उत्पन्न हुए पुरुष के मुखादि अवयव हैं, और कुछ नहीं हैं। यथा 'एवमेतेऽवयवाः शिरप्रभृतयः पुरुषस्य विद्यन्ते नान्ये इति।"

इससे स्पष्ट है कि उव्वट इन ब्राह्मण आदि को किसी समाज के अवयव नहीं मानता और न वह इस कल्पित वर्ण-व्यवस्था का ही पक्षपाती है। उसके मतानुसार तो ये उसी यज्ञ-पुरुष के मुखादि अवयवों के नाम-मात्र हैं।

इसी प्रकार महीधर का भाष्य भी यज्ञ-परक ही है। उनके भाष्य में भी कहीं समाजवाद की गंध तक नहीं।

स्वामी दयानंद ने भी इन मंत्रों को समाज-परक नहीं लगाया। यह सारा सूक्त पुरुष-सूक्त के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें परमात्मा की उपासना और स्तुति है, अथवा यों कहिए कि जगन्नियंता की करोड़ों सामर्थ्यों का वर्णन है। उस विराट् स्वरूप परमेश्वर में असंख्य गुण-रूपा शक्तियाँ विद्यमान हैं। स्वामी दयानंद ने भी "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" इस मंत्र से उसी विराट् स्वरूप के गुणों का वर्णन किया है।

इस मंत्र की संगति दिखाते हुए मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि दयानंद भी इस मंत्र को समाज-परक न लगाकर "पुनस्तमेव विषयाह" अर्थात् 'फिर उसी विषय को कहते हैं', ऐसा कहते हुए विराट् विभु के गुणों का वर्णन करते हैं।

श्रीधर्मदेवजी ने "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" इस मंत्र की संगति इससे पूर्व १०वें मंत्र "यत् पुरुषं व्यदधुः" इस मंत्र से लगाई है। किंतु इस मंत्र की संगति केवल इसी मंत्र से नहीं लगती, वरन् उससे भी पूर्व मंत्रों से इसका अर्थ स्पष्ट होता है। अधिक नहीं, तो ६वें मंत्र से इस मंत्र की संगति है। यही मत स्वामी दयानंद का है। देखिए—

तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन्पुरुषं जातमग्रतः;
ते न देवा अजयन्त साध्या ऋषयश्च ये।
(यजु० ३१।६)

इस मंत्र में स्वामीजी के भाष्य के अनुसार यह बताया गया है कि जिस परमात्मा से ये अश्वादि उत्पन्न हुए, उस परमात्मदेव को विद्वान् लोग योगाभ्यास करते हुए और मंत्रार्थ जाननेवाले ज्ञानी लोग अपने हृदय में धारण करते हैं।

अब प्रश्न उठा कि जिसे ज्ञानी लोग हृदय में धारण करते हैं, उसका वस्तुतः स्वरूप क्या है! यही शंका इस मंत्र में उठाई गई है—

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्;
मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादावुच्येते।
(यजु० ३१।१०)

अर्थ—"हे विद्वांसोऽत्र संसारेऽसंख्यं सामर्थ्यमीश्वरस्यास्ति तत्र समुदाये मुखमुत्तमाङ्गं बाह्वादीनि चाङ्गानि कानि सन्ति इति ब्रूत।"

(स्वामी दयानंद)

इस मंत्र का भाष्य करते हुए स्वामीजी लिखते हैं कि हे विद्वानो! इस संसार में उस प्रभु की असंख्य सामर्थ्य (गुण - शक्तियाँ) हैं। उस परमात्मा की उन अनेक सामर्थ्यों में से जो सामर्थ्य मुख - बाहू आदि स्थानी हैं, वे कौन-सी हैं?

इसका उत्तर अगले ११वें मंत्र में दिया गया है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः;
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬं शूद्रो अजायत।

(यजु० ३१। ११)

भाष्य

"ये विद्याशमदमादिपूत्तमेषु गुणेषु मुखमिवोत्तमास्ते ब्राह्मणाः। ये अधिकवीर्या बाहुवत्कार्यसाधकास्ते क्षत्रियाः। ये व्यवहारविद्याकुशलास्ते वैश्याः। ये च सेवायां साधवो विद्याहीनाः पादाविव मूर्खत्वादिनीचगुणयुक्तास्ते शूद्राः कार्या मन्तव्याश्च।"

(स्वामी दयानंद)

इस मंत्र के संस्कृत - भाष्य में स्वामीजी ने स्पष्ट कर दिया कि उस अनंत गुणवाले ब्रह्म के वे गुण (सामर्थ्य) जो मुख के समान श्रेष्ठ हैं, उन गुणों की संज्ञा ब्राह्मण हुई। इसीलिये वे 'ब्राह्मणाः' बहुवचन से निर्दिष्ट किए गए हैं। इसी प्रकार उस ब्रह्म के जो अधिक बलवान् और ओज-पूर्ण गुण हैं, उनकी बाहुओं से तुलना करके क्षत्रिय संज्ञा और जो गुण परमात्मदेव के शीघ्रादि तथा सेवादि हैं, उनकी पेट और पैरों से उपमा देकर वैश्य और शूद्र संज्ञा ठहराई है। अतः उक्त प्रश्न को, जो १०वें मंत्र में उठाया गया था कि उस ब्रह्म की सामर्थ्य कौन-सी है, इस उत्तर मंत्र में स्पष्ट कर दिया है कि उस ब्रह्म के ये भिन्न-भिन्न गुण ही हैं, जिनको ब्राह्मण आदि नाम से पुकारा गया है। और ये ही उसकी मुख्य सामर्थ्य हैं।

अतः इन वेद-मंत्रों से तो किसी भी प्रकार चार वर्ण सिद्ध नहीं किए जा सकते।

यदि आपके मतानुसार कहा जाय कि आर्य एक वर्ण है, और ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य भी उसके अवांतर-भेद होने से 'वर्ण' कहलाएँगे, तो प्रश्न होगा कि सारस्वत, गौड़, कान्यकुब्ज, सरयूपारीण, मिश्र, जोशी इत्यादि ब्राह्मणों के अवांतर-भेद भी वर्ण क्यों न कहलाएँ? इसी प्रकार क्षत्रियों और वैश्यों के अवांतर-भेद हैं। इससे वर्णों की संख्या चार नहीं, चार हज़ार से भी अधिक माननी पड़ेगी।

यदि वेद में ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य शब्द आने से अथवा "ब्राह्मण मुँह से निकला और शूद्र पाँव से" ऐसा लिखा मिलने से ही इनको वर्ण मान लेना होगा, तो—

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय; वीरहणं पाप्मेनक्लीवमाक्रयाया अयोगूं कामाय पुंश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्।

(यजु० अध्याय ३०, मंत्र ५)

में ब्राह्मण, राजन्य, वैश्य और शूद्र के साथ जो तस्कर, वीरहण, क्लीब, पुंश्चली और मागध आदि नाम आए हैं, उन सबको भी वर्ण क्यों न माना जाय? और—

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत;
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत।

(ऋ० १०। ९०। १३)

अर्थात् उस विराट् पुरुष के मन से चंद्रमा हुआ, चक्षु से सूर्य। मुख से इंद्र तथा अग्नि हुए। प्राण से वायु हुआ।

इसके अनुसार पाँव से पैदा होनेवाले शूद्र की भाँति चंद्र, सूर्य और अग्नि आदि को भी वर्ण मानना पड़ेगा।

स्वामी दयानंदजी ने 'सत्यार्थप्रकाश' में वर्ण-व्यवस्था के प्रकरण में आपस्तंब के दो सूत्रों—

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।

अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।

का प्रमाण देकर लिखा है कि धर्माचरण से जघन्य (निकृष्ट) वर्ण अपने से उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है। ऐसी अवस्था में श्रीधर्मदेवजी मालूम नहीं कैसे कह रहे हैं कि वर्णों में ऊँच-नीच नहीं।

श्रीधर्मदेवजी कहते हैं, आर्यों के चार वर्ण हैं, और सायण, दयानंद तथा सत्यव्रत सामाश्रमी ने भी आर्य शब्द से चारो वर्णों का ग्रहण किया है। "इसीलिये वेद में 'पञ्चजनाः' शब्द का प्रयोग भी होता है। पंचजन का अर्थ निरुक्तकार यास्कमुनि ने 'चत्वारो वर्णा निषादः पंचमः' चार वर्ण और पाँचवाँ निषाद अर्थात् दस्यु (डाकू) किया है।"

इस संबंध में जहाँ तक मुझे मालूम है, सभी आचार्य 'आर्य' से 'द्विज' या 'त्रिवर्ण' का ही ग्रहण करते हैं। किसी ने भी शूद्र को आर्य नहीं माना। देखिए, स्वामी दयानंदजी अपने सत्यार्थ-प्रकाश के आठवें समुल्लास में लिखते हैं—

"आर्य नाम धार्मिक विद्वान् पुरुषों का है।…… ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विजों का नाम आर्य और शूद्र का नाम अनार्य अर्थात् अनाड़ी है।"

और, यथावश नेयति दासमार्य्यः (ऋ० ३।३४।६) का भाष्य करते हुए स्वामीजी कहते हैं—"(आर्य) ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्ण आर्य राजा यथाशक्ति (दासम्) सेवक शूद्र को प्राप्त करता है।"

इससे स्पष्ट और क्या प्रमाण हो सकता है! जो अनार्य है, वह आर्यों में कैसे गिना जा सकता है? 'शूद्रवद्बहिष्कार्यः' इत्यादि से भी शूद्र का आर्यों से बाहर होना ही प्रकट होता है।

अब रही 'पञ्चजनाः' शब्द की बात। आप कहते हैं, वेद के इस शब्द का अर्थ, निरुक्त के अनुसार, चार वर्ण और पाँचवाँ निषाद है—'चत्वारो वर्णा निषादः पञ्चमः।' इसलिये वर्ण चार हैं।

इस संबंध में मेरा निवेदन है कि निरुक्तकार यास्क वैदिक काल के बहुत देर बाद हुआ है। उसे निश्चित रूप से पता न था कि यह शब्द वैदिक काल में किन अर्थों में प्रयुक्त होता था। इसलिये उसने इस विषय में भिन्न-भिन्न प्रचलित मत दे दिए हैं। खेद है, श्रीधर्मदेवजी ने निरुक्त का पूरा पाठ न देकर अपने मतलब का छोटा-सा टुकड़ा ही उद्धृत कर दिया है। निरुक्त का पूरा पाठ इस प्रकार है—

> गन्धर्वाः पितरो देवा असुरा रक्षांसीत्येके।
> चत्वारो वर्णा निषादः पञ्चमः इत्यौपमन्यवः।
> (निरुक्त ३।८)

निरुक्तकार कहते हैं कि 'पंचजन' के संबंध में दो अनुमान हैं। बहुत-से लोग कहते हैं (इति एके) कि गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस, ये पाँच 'पंचजन' हैं। पर औपमन्यवाचार्य का मत है कि चार वर्ण और पाँचवाँ निषाद, ये पंचजन हैं। निरुक्तकार ने दो मत लिख दिए हैं, अपना मत कुछ भी प्रकट नहीं किया।

'पंचजन' किसे कहा जाता था, इस संबंध में कोई एक मत नहीं। इसका अर्थ कोई कुछ समझता है और कोई कुछ। ऐसे विभिन्न अनुमानों का वर्णन शौनकाचार्य के 'बृहद्देवता'-नामक ग्रंथ के श्लोकों ६८ से ७२ तक में यों मिलता है—

मनुष्याः पितरो देवा गंधर्वोरगराक्षसाः ;
गंधर्वाः पितरो देवा असुरा यक्षराक्षसाः ।
यास्कौपमन्यवावेतान् आहतुः पंज वै जनान् ;
निषादपंचमान् वर्णान् मन्यते शाकटायनः ।
ऋत्विजो यजमान च शाकपूर्णास्तु मन्यते ;
होताध्वर्युस्तथोद्गाता ब्रह्मा चेति वदन्ति तान् ।
चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक् च प्राणश्चेत्यात्मवादिनः ;
गंधर्वाप्सरसो देवा मनुष्याः पितरस्तथा ।
सर्पाश्च ब्राह्मणे चैव श्रूयन्ते ह्यैतरेयके ।

इसमें तो होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा और यजमान; आँख, कान, मन, वाक् और प्राण ; गंधर्व, अप्सरा, देव, मनुष्य, पितर और सर्प, इन सबको भी 'पंचजन' बताया है। ऐसी दशा में श्रीधर्मदेवजी स्वयं ही विचार करें कि बीसों दूसरे आचार्यों के मत को छोड़कर केवल औपमन्यव की अटकल को ही सत्य मानना और उस अटकल के आधार पर वेद में चार वर्ण सिद्ध करने का दुस्साहस करना कितना हास्यजनक है।

एक बात और भी विचारणीय है कि जब आप चातुर्वर्ण्य को सारे मनुष्य-समाज की स्वाभाविक या वैज्ञानिक बाँट मानते हैं, तो फिर निषाद को पाँचवाँ कहने की क्या आवश्यकता ? क्योंकि 'चातुर्वर्ण्य' शब्द की व्युत्पत्ति "चत्वार एव वर्णाः चातुर्वर्ण्यम्" है, तो क्या निषाद मनुष्य नहीं ?

श्रीधर्मदेवजी वैसे तो कहते हैं कि हम वर्ण गुण-कर्म-वृत्तानुसार मानते हैं, परंतु मन की बात प्रकट हुए विना नहीं रहती। अपने लेख में आपके "ब्राह्मण-जाति-द्वेषी" और "शूद्र भी बड़े विद्वान् और प्रतिष्ठित होते थे।" आदि वचन इस बात के द्योतक हैं कि आप शूद्र और ब्राह्मण जन्म से मानते हैं। यदि यह बात नहीं, तो ब्राह्मण-जाति के क्या अर्थ होंगे ? क्या आपने कभी किसी को अध्यापक जाति, डॉक्टर जाति या इंजीनियर जाति कहते सुना ? फिर एक बहुत "बड़े विद्वान् और प्रतिष्ठित" व्यक्ति को शूद्र कहने का क्या अर्थ ? जो विद्वान् और प्रतिष्ठित है, उसे शूद्र (स्वामी दयानंद के शब्दों में अनाड़ी और अनार्य) कहने का मतलब तो साफ़ यह है कि वर्ण जन्म से है, गुण-कर्म से नहीं।

भगवान् बुद्ध ने जिस ब्राह्मण की प्रशंसा की है, वह ब्राह्मण-जाति या ब्राह्मण-वर्ण नहीं, वरन् सदाचारी, संयमी, विद्वान् और परोपकारी व्यक्ति का संस्कृत-भाषा में नाम है। ऐसे व्यक्ति को बुरा कोई भी नहीं कह सकता। परंतु ऐसे संयमी और परोपकारी व्यक्तियों की कोई 'जाति' नहीं हो सकती। वे तो पृथक्-पृथक् व्यक्ति ही होते हैं, और वे सब देशों, सब जातियों और सब धर्मों में हैं। वे मनुस्मृति की वर्ण-व्यवस्था के ब्राह्मण नहीं, वरन् उस विश्व-धर्म के सेवक पुण्यात्मा हैं, जो देश और जाति की सीमा से परे हैं। वर्ण-व्यवस्था के ब्राह्मणों की तो बुद्ध ने वह खबर ली है कि ब्राह्मण-धर्म जड़ से हिल गया था।

मनुस्मृति को आप सबसे बड़ा धर्म-शास्त्र मानते और चाहते हैं कि ऐसे शास्त्रों पर से लोगों की श्रद्धा न हटने पावे। परंतु मनुस्मृति के दसवें अध्याय में शूद्र, चांडाल आदि के लिये जो मनुष्यता से गिरा हुआ बर्ताव करने की आज्ञा है, उस पर भी तनिक विचार किया होता। मनु कहते हैं—

शक्तेनाऽपि हि शूद्रेण न कार्यो धनसञ्चयः ;
शूद्रोऽपि धनमासाद्य ब्राह्मणानेव बाधते ।
(अ० १०, श्लोक १२८)

अर्थात् सामर्थ्य होने पर भी शूद्र द्रव्य-संचय न करे, क्योंकि शूद्र को धन मिलने से वह द्विज को बाधा पहुँचाता है।

फिर लिखा है—चांडाल, श्वपच आदि जातियों को चाहिए कि वे गाँव के बाहर रहें। अपने पास बर्तन न रक्खें। कुत्ता और गधा ही उनका धन

हो। मुर्दे के ऊपर के वस्त्र ही उनके वस्त्र हों। वे फूटे मटके में ही खावें। लोहे के गहने पहनें। इत्यादि।

यदि आप कहें कि ये श्लोक प्रक्षिप्त हैं, तो इसका क्या प्रमाण कि ये प्रक्षिप्त हैं, और अच्छे श्लोक प्रक्षिप्त नहीं? फिर "विषसम्पृक्तं अन्नं त्याज्यम्" अर्थात् 'विष-मिले अच्छे भोजन को भी त्याग देना चाहिए' के अनुसार ऐसे शास्त्रों को क्यों न त्याग दिया जाय?

श्रीधर्मदेवजी कहते हैं—"हिंदू-धर्म ने लाखों-करोड़ों वर्षों तक चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था के सामाजिक रूप को सफलता-पूर्वक चलाया है।" मेरा निवेदन है, वर्ण-व्यवस्था ने हिंदू-जाति को पंगु, निर्जीव और शक्ति-हीन बनाकर ही देश में 'शांति' (यदि इसे शांति कहा जा सकता है) रक्खी है। जैसे इस समय अँगरेज़ों ने भारत को निःशस्त्र कर रक्खा है, और जैसे वे डींग मारें कि हमने भारत में शांति स्थापित कर रक्खी है, वैसे ही वर्ण-व्यवस्था ने, फूट डालकर, शासन करने के सिद्धांत के अनुसार सारी जाति को रोटी-बेटी-व्यवहार एवं सामाजिक अधिकारों की दृष्टि से चार, वरन् चार हज़ार समूहों में बाँटकर, किसी अत्याचार के विरुद्ध इकट्ठे मिलकर सिर उठाने में असमर्थ कर दिया था।

क्षत्रिय के सिवा और कोई शस्त्र धारण न कर सकता था। शूद्र का कचूमर निकाल दिया गया था। बाहर की कोई शक्ति ऐसी न थी, जो शूद्र को सहायता देती। अतएव वह अत्याचार के विरुद्ध सिर न उठा सका, और सारा काम शांति से चलता रहा। वर्ण-व्यवस्था की सफलता या विफलता की परीक्षा उस समय हुई, जब विदेशियों के भारत पर आक्रमण हुए। जिस हिंदू-समाज को वर्ण-व्यवस्था ने अपने स्वार्थ के लिये फूट डालकर आपस में मिलने के अयोग्य बना रक्खा था, वह विदेशी शत्रु के सामने भी आपस में मिलकर एक न हो सका। परिणाम यह हुआ कि तब से हिंदू बराबर हार खाते चले आ रहे हैं—न केवल राजनीतिक तौर पर, वरन् धार्मिक तौर पर भी। मुसलमानों और ईसाइयों की संख्या दिन-पर-दिन बढ़ रही और हिंदुओं की कम हो रही है। हिंदू इस समय जिस दशा में जी रहे हैं, वह जीवन नहीं कहला सकता। सम्मान और स्वतंत्रता-पूर्वक जीना ही सच्चा जीवन है, अन्यथा जीने को तो क़ैदी और ग़ुलाम भी जीते हैं। ऐसे जीने का नाम यदि जीवन है, तो मालूम नहीं, मृत्यु किसका नाम है।

वर्ण-व्यवस्था कहती है—

"लोहार, निषाद, तमाशबीन, बाँस का काम करनेवाले, शस्त्र बेचनेवाले, कलाल, धोबी, रँगरेज़ और कुम्हार पतित हैं। द्विज इनके यहाँ भोजन न करे।" (मनु० ४।२१५)

"बढ़ई का अन्न संतति-नाश करता है, सुनार का आयु; वैद्य का अन्न पीप के समान और सूद लेनेवाले का विष्ठा के समान है।"

(मनु० ४।२१८-२१९)

क्या इस प्रकार के दमनकारी विधान बनाने-वाली या ऊँच-नीच का भेद-भाव डालनेवाली वर्ण-व्यवस्था सफल शासक कहला सकती है! ऐसी निकम्मी और बेहूदा चीज़ को 'भारतीय संस्कृति का हृदय' कहना उस संस्कृति की मिट्टी पलीद करना है।

श्रीधर्मदेवजी भारतीय संस्कृति की रक्षा के नाम पर चातुर्वर्ण्य-विभाग को पुनः प्रचलित करना चाहते हैं। मेरा नम्र निवेदन है कि जिस संस्कृति की आप रक्षा करना चाहते हैं, पहले उसका लक्षण तो कीजिए, उसका स्वरूप तो समझाइए कि वह है क्या वस्तु। दुनिया की प्रत्येक गंदी, बुरी चीज़ को हिंदू-संस्कृति के नाम पर सुरक्षित रखने की चेष्टा करना ठीक नहीं। वर्ण-व्यवस्था तो एक सामाजिक परीक्षण था,

लज्जाजनक रूप से फ़ेल हो चुका है। आप कहते हैं, वेद से लेकर पंचतंत्र तक सभी संस्कृत-ग्रंथों में चातुर्वर्ण्य का उल्लेख मिलता है, इसलिये इसका नाश करना भारतीय संभ्यता के आदर्शों का नाश करना है। आप आर्यसमाजी होकर ऐसा कहते हैं। परंतु जब सनातनधर्मी कहते हैं कि वेद से लेकर पंचतंत्र तक सब ग्रंथों में मूर्ति-पूजा और मृतक-श्राद्ध का उल्लेख है, इसलिये इनको छोड़ना भारतीय संस्कृति को छोड़ना है, तब आप क्यों उनकी बात नहीं सुनते ? इसलिये ऐसी धमकियाँ देना व्यर्थ और अनुचित है।

आप कहते हैं, वर्ण-व्यवस्था ने आर्थिक समस्या का भली भाँति समाधान कर दिया था। परंतु इतिहास आपकी बात का समर्थन नहीं करता। हम देखते हैं, सुदामा ब्राह्मण भूखों मरता था, और एक सड़े-गले चिथड़े को धोकर, उसमें चावल बाँध कृष्ण से भेंट करने गया था।

मैंने लिखा था, शंबूक शूद्र को रामचंद्र ने केवल इसलिये मार डाला कि वह शूद्र होकर भगवद्भजन कर रहा था। और, यह वर्ण-व्यवस्था का ही कड़ुवा फल था। इस पर श्रीधर्मदेवजी लिखते हैं—"शंबूक ने अपने धर्म का, कर्म का, समाज-सेवा के एक भाग का त्याग कर दिया था।" इसलिये उसे दंड दिया गया था। दूसरी जगह कहते हैं—"आध्यात्मिक उन्नति का क्षेत्र सबके लिये समान था।" ये दोनो परस्पर विरोधी बातें कैसे ? क्या शूद्र के लिये परमात्मा का भजन करना भी पाप है ? शंबूक वृद्ध था। ब्राह्मण और क्षत्रिय वृद्धावस्था में सांसारिक काम-काज छोड़कर वन में तपस्या करते थे। उन पर अपने कर्तव्य का, अपने धर्म का परित्याग करने का अपराध नहीं लगता था। परंतु बेचारे शूद्र के लिये भगवान् का नाम लेना भी अक्षम्य अपराध था। सचमुच किसी संप्रदाय की संकुचित सीमा में अपने को बंद कर लेने से मनुष्य सत्यासत्य का निर्णय करने में अशक्त हो जाता है। श्रीधर्मदेवजी भी आर्यसमाज की सिद्धांत-रक्षा के घातक चक्कर में पड़े हुए रामचंद्र या वर्ण-व्यवस्था के अमानुषिक अत्याचार को भी बुरा कहने से डर रहे हैं।

वर्ण-व्यवस्था में वृत्ति बदलने पर रुकावट लगाना भी हानिकारक और असाध्य है। मैं आज एक काम करता हूँ। उसमें मुझे सफलता नहीं होती, तो क्या मेरे लिये यह अच्छा है कि कोई दूसरा काम करके अपना पेट भर लूँ, या उसी से चिपटा रहकर भूखों मरूँ ? क्या कोई राज्य ऐसी व्यवस्था कर सकता है कि जिन लोगों को अपने व्यवसाय में सफलता न हो, उनके लिये पेंशन लगा दे, और उन्हें कोई दूसरा व्यवसाय न करने दे ? गीता के 'श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः'वाले श्लोक का मतलब यह नहीं कि मनुष्य को व्यवसाय बदलने नहीं देना चाहिए, वरन् उसका मतलब तो अपनी ड्यूटी, फ़र्ज़ या ज़िम्मेदारी को न छोड़ने से है। जिस सिपाही को जिस ड्यूटी पर लगा दिया गया है, उसे उसको पूरा करना चाहिए। परंतु यह नहीं कि उसे सिपाही का काम छोड़कर अध्यापक नहीं बनने देना चाहिए, और यदि वह अध्यापक बन जाय, तो उसका वध कर डालना चाहिए। ऐसा तो तभी संभव हो सकता है, जब विधाता भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की संख्या-वृद्धि ऐसे अनुपात से किया करे, जिससे किसी एक वर्ण की संख्या समाज की आवश्यकता से अधिक न हो जाय।

श्रीधर्मदेवजी कहते हैं, मध्य काल में वर्ण-व्यवस्था में ख़राबियाँ पैदा होने लगी थीं, और विश्वामित्र आदि के कुछ ही उदाहरण वर्ण-परिवर्तन के उपलब्ध होते हैं। मैं नहीं कह सकता कि मध्य युग से आपका क्या तात्पर्य है। मेरी राय में तो विश्वामित्र आदि के उदाहरण इस बात के

द्योतक हैं कि उस समय भी नियम से तो जन्मना वर्ण-व्यवस्था ही थी, गुण-कर्म-स्वभावानुसार वर्ण-परिवर्तन केवल अपवाद थे। आप चाहते हैं, प्राचीन काल की ऐसी समाज-व्यवस्था हो, जिसमें चार सहस्र जातियों-उपजातियों के स्थान में केवल चार वर्ण हों। परंतु मालूम नहीं कि आप स्मृतियों के चातुर्वर्ण्य-काल पर ही जाकर क्यों ठहर जाते हैं। उससे भी प्राचीन काल में जाने से क्यों डरते हैं, जब कि "एकवर्णमिदं पूर्वं विश्वमासीद्युधिष्ठिर!" आर्यों में केवल एक ही वर्ण था!

अंत में मैं अपने विद्वान् मित्र से अपील करूँगा कि आप शास्त्रों की भूलभुलैयों से निकलकर राष्ट्रीय, वरन् अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से वर्ण-भेद के हानि-लाभ पर विचार कीजिए। फिर यदि आपको पता लगे कि इससे राष्ट्र की उन्नति हो सकती है, तो बेशक इससे चिपटे रहिए। परंतु यदि आप यह अनुभव करें कि इससे हिंदू-राष्ट्र की घोर हानि हुई है, हो रही है, और संसार में दूसरे राष्ट्र वर्ण-व्यवस्था के विना भी उन्नतावस्था को पहुँच गए हैं, तो केवल इस डर से कि यह शास्त्रीय सिद्धांत है, इसका विध्वंस करने से नहीं डरना चाहिए।

जाति-पाँति की जोंक

[श्रीदुलारेलाल भार्गव]

जाति-जोंक भारत-रकत संतत चूसत जाय,
अंतरजाति-बिबाह का नोंन देहु छिरकाय।

आसामी-बंगाली तिलिस्मी राज़ से
मुक़दमा जीतने की ख़ुशी में
चिकित्साचंद्रोदय
आधी क़ीमत में

दो सौ आदमियों को ७ भाग की सेट और पाँच सौ को तीसरा भाग छोड़कर ६ भाग की सेट दे सकेंगे। ख़ूब जल्दी करें। ज़्यादा पुस्तकें नहीं हैं। ५) पेशगी भेजो। मनीआर्डर-कूपन पर पास के स्टेशन का नाम-पता साफ़ लिखो।

पता—**हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा।**

विरह-वेदना

[पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न]

(१)

गर्ज रहा घन घनन - घनन।
पर मेरा मन - मोर कर रहा चित्त - चोर घनश्याम - मनन।
गर्ज रहा घन घनन - घनन।

(२)

चारु चंचला - चंद्रहास से चंद्र - हास यह करता जाता;
धरा - धराधर को धारा से धाराधर ही स्नान कराता।
कैसा है यह सरल - चपल;
नीले नभ की नाव नवल।

(३)

दया - आर्द्रता का घर होकर यह जीवनधर मुझे जलाता;
जीवन से जीवन को सूखा जीवन-जीवन विना बनाता।
कांत कमलधर यह कोमल;
कमल - कांतिकर अमल - तरल।

(४)

सबको शीतल करनेवाला क्यों इस उर में आग लगाता;
सखी, विना घनश्याम मुझे तो कभी नहीं घन श्याम सुहाता।
पवन चल रहा सनन - सनन;
गर्ज रहा घन घनन - घनन।

घसियारा

[श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंह]

(१)

सूर्य अभी नहीं निकला था, लेकिन पृथ्वी पर प्रभा-हीन प्रकाश फैल गया था। मैं अपनी रोज़ की आदत के अनुसार प्रातः-काल की वायु और ताज़गी का मज़ा लेने के लिये उन खेतों में पहुँच गया था, जहाँ से सफ़ेद ऊन के समान दूर तक फैली गंगा की रेत और पतली धार का एक हिस्सा दिखाई पड़ता था। इन खेतों के पास, एक ऊँचे टीले पर चढ़कर मैं गंगा के गिर्द का हरीतिमा-रहित यह दृश्य प्रायः देखा करता था। इस जन-शून्य स्थान में कभी-कभी मुझे खेतों की मेड़ों पर कुछ बैठा, कुछ झुका, कुछ चलता और कुछ करता हुआ एक कृश-तन बुड्ढा दिखाई पड़ता था, जिसके संबंध में मैंने कल्पना की थी कि शायद वह घास छीलता है। परंतु आँख फाड़कर देखने पर भी मुझे वहाँ कहीं घास न दिखाई पड़ती थी। फिर भी उसके निकट से निकलने पर साल-दो साल के शिशु के उठाने लायक़ हरी-हरी घास का एक छोटा-सा ढेर दिखाई पड़ जाता था।

मैं उस बुड्ढे को पहचान गया था, और शायद वह भी मुझे। पर मेरी और उसकी कभी बात न हुई थी। मैं अपनी राह चला जाता और वह अपने काम में रत रहता। आज भी वह अपने काम में रत था, पर उसका घास छीलने का अजीब ढंग देखकर, उसके पास खड़े होकर मैं उससे दो बातें करने की इच्छा का दमन न कर सका।

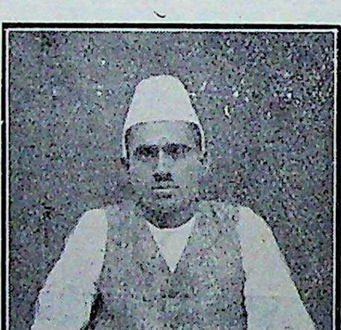

श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंह

बादामी काग़ज़ पर हरी पेंसिल से जैसे कोई बालक पास-पास दो-तीन लकीरें खींच दे, वैसे ही मुझे दूब के दो-तीन पौधे वहाँ दिखाई पड़े। चतुर बिल्ली जैसे अपनी पहुँच में आए हुए चूहे को ताककर बैठती है, वैसे ही वह घास की उन पत्तियों पर झुका था। पहले उसने अपनी नख-विहीन उँगलियों से एक पौधे के गिर्द की मिट्टी हटाई। वह हरी, पतली टहनी जड़ की एक मोटी गाँठ की गोद में वैसी ही प्रसन्न थी, जैसे किसी बूढ़े भारतीय किसान की गोद में उसका कोमल-गात पौत्र प्रसन्न होता है। घसियारा उस टहनी को गाँठ-समेत भूमि से खोद लेना चाहता था। जब उँगलियाँ अपना काम कर चुकीं, तब उसने उस गाँठ में अपने मुँह के उन

दाँतों को लगाया, जो साबुत थे, और अभी कम हिलते थे। मैंने देखा, उसने सफ़ाई से गाँठ-समेत उस हरी टहनी को सख्त भूमि से अलग कर लिया है, और उँगलियों से अपने होठों पर लगी धूल पोंछ रहा है। इससे पहले कि वह घास की दूसरी टहनी के साथ यही कृत्य करे, मैंने उससे पूछा—"बाबा! दाँत से क्यों घास खोद रहे हो?"

उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखा। प्रातःकालीन प्रकृति की हँसी के समान निखरे हुए मेरे खादी के स्वच्छ-सफ़ेद कुर्ते और गांधी-टोपी से वह भय-त्रस्त हो उठा है, ऐसा मुझे जान पड़ा। उसने काँपती हुई आवाज़ से कहा—"सरकार, मेरे दाँत बहुत ही कमज़ोर हैं। आप विश्वास रखिए, इनसे मैं किसी आदमी को नहीं काट सकता।" यह कहता हुआ वह मेरे पैरों को स्पर्श करने के लिये बढ़ा।

मैंने उसे बीच ही में पकड़कर आश्चर्य से, पर मुलायम शब्दों में पूछा—"बाबा, तुम इतने डरे हुए क्यों हो? और मुझसे तो तुम्हें बिलकुल ही न डरना चाहिए। मेरी पोशाक में ऐसी कौन-सी बात है, जो तुम्हारे लिये ग़ैर हो। मैं कांग्रेसमैन हूँ। गांधी का सिपाही हूँ।"

'ठीक है। भगवान् आपका भला करें। आप विश्वास करें, मैं इन दाँतों से किसी को काट नहीं सकता।"

मैंने उसके भय-ग्रस्त चेहरे की ओर देखा। एक विचित्र प्रकार की बेबसी और असमर्थता उस पर अंकित थी।

"तुम कौन हो?" मैंने पूछा।

"मैं!" थोड़ी देर ठहरकर, थोड़ा खाँसकर, एक दीर्घ निःश्वास लेकर उसने कहा—"मैं न हिंदू हूँ, न मुसलमान! सुनता हूँ, मा मेरी हिंदू थी, और बाप मुसलमान। पर मुझे खूब याद है, न तो मैं बाप के साथ किसी मसजिद में जाने पाया, और न मा के साथ किसी मंदिर में।"

इतना कहने के बाद वह घास की दूसरी टहनी उखाड़ने में लग गया। मुझे उसकी सब चेष्टाएँ पागलों की-सी प्रतीत हुईं। मैंने उससे कुछ और प्रश्न किए, पर उसने शंकित नेत्रों से एक विचित्र प्रकार का मुँह बनाकर मेरी ओर देखा। मैंने सोचा, इस समय इस पागल को अधिक छेड़ना ठीक नहीं। मैंने अपना रुख़ दूसरी ओर किया, और वहाँ से लौट आया।

(२)

दूसरे दिन, उसी समय, उसी निर्जन स्थान में, प्रकृति से उसी प्रकार युद्ध करते हुए, मैंने उसे फिर देखा। मैंने सोचा, इस आदमी के पास या तो खुरपा नहीं, या यह उससे काम लेना नहीं जानता। मेरी जेब में क़लम बनाने का एक छोटा-सा चाक़ू पड़ा था। वह चाक़ू उसके पास फेंकते हुए मैंने कहा—"बाबा, अगर तुमने यह प्रतिज्ञा न कर ली हो कि तुम उँगलियों और अपने हिलते हुए दाँतों से ही घास उखाड़ोगे, तो लो, मेरे इस चाक़ू से काम लो। तुम तो अनुभवी घसियारे जान पड़ते हो। तुम अपने साथ एक खुरपा क्यों नहीं रखते?"

उसने चाक़ू उठा लिया, उसे खोला, और एक करुण मुस्किराहट के साथ अपना सिर नीचा किए ही कहा—"इससे काम चल तो सकता है, पर बाबू, इसे तुम अपने पास रख लो। अगर तुम मेरी मदद करना ही चाहते हो, तो मुझे एक खुरपा दो।"

उसने अपना सिर उठाकर जल-पूर्ण नेत्रों से मेरी ओर देखा, और चाक़ू वापस देने के लिये हाथ बढ़ाते हुए कहा—"आज तक किसी से कुछ माँगा नहीं। पापी पेट जो चाहे, कराए! सरकार, तुम रोज़ इस तरफ़ टहलने आते हो। घास बेच-

कर मैं एक-एक दो-दो पैसा करके खुरपे का दाम तुम्हें दे दूँगा। उधर उत्तर की ओर देखिए। गाँव के बाहर निराले में जो आम का पेड़ है, उसी के नीचे मैं रहता हूँ।"

"नहीं-नहीं, आज इस चाक़ू को अपने पास रक्खो। कल मैं तुमको खुरपा दूँगा, तब यह चाक़ू वापस ले लूँगा। मेरे घर में एक खुरपा है। कल आऊँगा, तब उसे लेता आऊँगा।"

मैंने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया। उसका चेहरा इतना दयनीय हो रहा था कि उसकी ओर देखा न जाता था। उसने कहा—"अच्छी बात है।" फिर अपने काम में लग गया।

इत्तिफ़ाक़ से मेरे मुँह से निकल गया—"तुम्हारे पास खुरपा ज़रूर रहा होगा।"

उसका कंठ, जो अब तक रुँधा हुआ था, अब खुल गया, और वह फफक-फफककर रोने लगा। उसके-जैसे बूढ़ों को रोते मैंने कभी नहीं देखा था। छोटे बच्चों का रोना मुझे अच्छा लगता है, पर उसका रोना मुझे बहुत कुरूप जान पड़ा। मैंने उसे झिड़ककर कहा—"बच्चे रोया करते हैं। औरतों का भी रोना किसी हद तक माफ़ किया जा सकता है। पर तुम मर्द होकर रो रहे हो! ऐसे रोनेवाले पर मुझे ग़ुस्सा आता है।"

उसके रुदन का स्वर कुछ मंद पड़ा। उसने अपनी आँखें मलते हुए कहा—"बाबूजी, वह खुरपा खुरपों का राजा था। बाप की मौत मुझे इतनी नहीं अखरी। मा की मौत मैं बरदाश्त कर गया, पर जब से मेरा वह खुरपा छिना है, मुझे संसार सूना दिखाई पड़ता है। वह खुरपा मेरा सगा भाई-सा था। बीस साल से मेरे पास......"

मैंने उसकी बात काटकर पूछा—"वह खुरपा तुमसे किसने छीना?"

"पुलिस के सिपाही ने। मैं उसके पैरों पड़ा। उसके हाथ जोड़े। कोतवाली तक उसके पीछे रोता-गिड़गिड़ाता गया, पर उसने मेरी एक न सुनी। उस समय मुझे ऐसा जान पड़ा, जैसे वह मेरे प्राण निकाले लिए चला जा रहा है। कोतवाली की सीढ़ी पर घंटों बैठा बड़े-बड़े अफ़सरों से भी गिड़गिड़ाता रहा, पर लोगों ने मुझे डाट-डपटकर हटा दिया।"

मेरी समझ में बात कुछ-कुछ आई। हिंदू-मुसलिम-दंगे के कारण शहर में दफ़ा १४४ और करफ़्यू ऑर्डर लगा हुआ था। पुलिस के सिपाहियों को मैंने भी राह चलते लोगों से लाठी, डंडा, छड़ी और छाता छीनते देखा था। पर कोई पुलिस का सिपाही किसी घसियारे का खुरपा भी छीन सकता है, यह बात मुझे अजीब-सी जान पड़ी। मैंने उसकी ओर देखा। उसके शरीर की खाल गिरगिट की खाल की भाँति सूखी-सी प्रतीत हो रही थी। मांस तो जैसे उसके बदन पर था ही नहीं। उसके पेट और कमर का पता न था। ऐसा जान पड़ता था, मानो उनकी जगह ज़िंदा चमड़े से लिपटी रीढ़ की हड्डी-मात्र रह गई है। छाती की हड्डियों का ढाँचा किसी स्कूल में लड़कों को सबक़ पढ़ाने के लिये पूर्ण उपयुक्त था। चमड़े के अंदर से उभरी हुई प्रत्येक हड्डी पर यदि अध्यापक खरिया मिट्टी से सफ़ेदी कर देता, तो वह लड़कों को वास्तविक नर-कंकाल-सा प्रतीत होता। आँखें धँसी हुईं। बाल जलकर राख हुए उपले की तरह मलिन और हाथ-पाँव शक्ति-हीन प्रतीत हो रहे थे। ऐसा आदमी खुरपे से किसी पर वार नहीं कर सकता था। जिन लोगों ने उसका हथियार छीना, मुझे उन पर तरस आ रहा था। उन दिनों कोतवाली में कुछ कांग्रेसमैन भी जाकर बैठा करते थे। उनका उद्देश्य शांति स्थापित करने में पुलिस की सहायता करना था। मुझे यह बात मालूम थी। मैंने पूछा—"बाबा, तुम्हें कोतवाली में मेरे-जैसे आदमी भी मिले होंगे?"

“बीसों।”

“उन्होंने तुम्हारी मदद नहीं की?”

“मदद! उन्होंने पुलिस से और भी ज़ोर लगाकर कहा कि नहीं-नहीं, इसका खुरपा वापस मत दो! उनमें एक औरत भी थी, मानो साक्षात् लक्ष्मी हो। उसके कारण ऐसा जान पड़ता था, मानो कोतवाली में चिराग़ जल रहा हो। मुझे भरोसा था कि वह लक्ष्मी ज़रूर मेरी मदद करेगी। मैं उसे जानता भी था। एक दिन सब घसियारों को जमा करके उसने लेक्चर दिया था, और एक लाल झंडा दिखाया था, जिसमें हँसिया बना था। मुझे याद है, उस औरत ने कहा था—‘अब भारत में उन्हीं का राज होगा, जिनके हाथ में यह हँसिया होगा। और, हँसिया-खुरपा दोनो एक ही हैं। जिनके हाथ में ये औज़ार होंगे, उन्हें बड़े-बड़े अफ़सर झुककर सलाम करेंगे। वह दिन आनेवाला है।’ मैंने उससे कहा—‘रानी! तुम्हारे लाख पूत हों, मेरा खुरपा दिलवा दो।’ इस पर वह मुस्किराकर बोली—‘बुड्ढा, क्या कहता है, मेरी तो अभी शादी भी नहीं हुई।’ बाबू, मैं घबराया हुआ था। मेरे मुँह से निकल गया—‘तो तुम्हारे लाख खसम हों।’ मेरी इस बात पर वहाँ जो लोग बैठे थे, ठहाका मारकर हँस पड़े, पर वह लक्ष्मी मुझसे रुष्ट हो गई। उसने कुछ कहा तो नहीं, पर मुझे जान पड़ा कि मैं यह बात न कहता, तो शायद वह मेरा खुरपा दिलवा देती। मन में तो आया कि उस समय ज़बान काटकर फेंक दूँ, पर घबराहट में कुछ करते-धरते न बना।”

बुड्ढा फिर अपने काम में लग गया। मैंने उससे और बात करना उचित न समझा। जब मैं चलने लगा, तब उसने कहा—“बाबू, कल खुरपा ज़रूर लाना। मैं उसे घर पर रखकर घास बेचने जाऊँगा। जानता, तो उस दिन भी न ले जाता।”

“ज़रूर लाऊँगा।” कहकर मैंने उससे बिदा ली।

(३)

तीसरे दिन मैं खुरपा लेकर उस स्थान पर और दिनों की अपेक्षा कुछ जल्दी पहुँचा। मेरा खयाल था कि बुड्ढा मुझे किसी-न-किसी मेड़ पर बैठा हुआ मिलेगा। पर वह दिखाई न पड़ा। उसकी प्रतीक्षा करते-करते जब काफ़ी देर हो गई, और सूरज निकल आया, तब मैं कुछ अधीर हो उठा। मैंने उस ओर दृष्टि दौड़ाई, जिधर उसने अपना घर बताया था। वहाँ के वायुमंडल में मुझे कुछ अशांति का आभास मिला। वहाँ कुछ लोग जमा होकर इस प्रकार मंत्रणा करते-से प्रतीत हुए, जैसे कोई अघटित घटना हो गई हो। अनायास मैं उसी ओर चल पड़ा।

एकाएक मुझे ऐसा जान पड़ा, जैसे सूर्य-प्रकाश में किसी ने मठमैला रंग घोल दिया हो। मैंने पूर्व दिशा से ऊपर उठते हुए सूर्य की ओर देखा। बैंगनी और सफ़ेद सूतों से बुने गए आगरे के सस्ते क़ालीन के टुकड़े के समान एक छोटे बादल ने सूर्य को ढक लिया था। मुझे उस बादल के टुकड़े की आकृति बिलकुल उसी बूढ़े घसियारे के समान प्रतीत हुई। जान पड़ा, जैसे वह पागलों की भाँति अपने दोनो हाथों को विचित्र ढंग से फैलाए अपने बड़े-बड़े, बिड़रे दाँतों से घास का एक तिनका पकड़ने की कोशिश कर रहा है। आकाश में प्रकृति ने उस बूढ़े घसियारे की आकृति ऐसे सजीव ढंग से अंकित कर दी थी कि मेरी कल्पना में उसका सारा जीवन नाच गया। मैं बराबर रह-रहकर सोचने लगा कि उसका जीविकोपार्जन का एकमात्र आधार उसका खुरपा उससे क्यों छीन लिया गया। किसी लेखक के ऊपर यह सबसे बड़ा ज़ुल्म होगा कि उसकी क़लम छीन ली जाय। किसी लोहार के ऊपर यह सबसे बड़ा ज़ुल्म होगा कि उसका हथौड़ा छीन लिया जाय। ईमानदारी के ख़ून और परिश्रम के पसीने से

माँज-धोकर चमकाए गए खुरपे को उस बुड्ढे के हाथ से छीनकर पुलिस ने बेशक उसके साथ घोर अन्याय किया है। कोतवाली में जो कांग्रेसवादी और साम्यवादी जमा थे, और जो किसान-मज़दूर की हिमायत करते हैं, उन्होंने इस अन्याय को क्यों नहीं समझा, मुझे रह-रहकर इसी बात पर अफ़सोस हो रहा था। मैंने समाचार-पत्रों में पढ़ा था कि एक आदमी की छुरी छीन ली गई थी। पर जब वह शहर से दूसरे शहर को जाने लगा, तब, उसके रेल में सवार हो जाने पर, उसकी छुरी उसे दे दी गई थी। छुरी-ऐसा घातक औज़ार तो लौटाल दिया जाय, और ग़रीब का खुरपा उसे न लौटाया जाय, जब कि उसकी जीविका ही खुरपे पर अवलंबित है। इस बात ने मुझे यह सोचने के लिये बाध्य किया कि कांग्रेस-सरकार के होते हुए भी ग़रीब के साथ सर्वथा दूसरे क़ानूनों से बर्ता जाता है।

सहसा बुड्ढे की झोपड़ी के पास से आते हुए कोलाहल ने मेरा ध्यान भंग किया। बुड्ढे के संबंध में एक विचित्र प्रकार की आशंका से मेरा हृदय चंचल हो उठा, और जल्दी-जल्दी चलकर मैं उस स्थान पर पहुँच गया। मैंने देखा, सुअरों के रहने के लिये पासी लोग जैसे घर बनाते हैं, वैसा ही एक घर पेड़ के नीचे बना हुआ है, और उसके बाहर चिथड़ों के ऊपर एक लाश रक्खी है। मन में शंका उठी कि यह बुड्ढे की ही लाश तो नहीं। पर मुझे इस अवस्था में बहुत देर तक नहीं रहना पड़ा। दूसरे ही क्षण यह शंका विश्वास में परिणत हो गई। वह उस बुड्ढे की ही लाश थी। संसार के सुख-दुख की ओर से वह सदा के लिये आँखें बंद कर चुका था।

दरियाफ़्त करने पर मालूम हुआ, वह बेचारा भी शहर के हिंदू-मुस्लिम-दंगे की भेंट हो गया है। शाम को, जब वह घास बेचने के लिये जा रहा था, किसी ने उस पर छुरी से आक्रमण किया, और इतना घायल किया कि अस्पताल में पहुँचकर मर गया। अन्य घसियारों से पता लगाकर पुलिस ने उसकी लाश उसके द्वार पर पहुँचाई, और उसके पड़ोसियों को हिदायत की कि रातोरात इसका अंतिम संस्कार हो जाना चाहिए। पर वहाँ झगड़ा इस बात का था कि इसका अंतिम संस्कार हिंदू-ढंग से किया जाय या मुसलमान-ढंग से। उस गाँव में हिंदू भी थे, और मुसलमान भी। मैंने वहाँ जमा हुए हिंदू-मुसलमान दोनो से कहा—"यह बुड्ढा न हिंदू था, न मुसलमान। इसकी लाश को वही हाथ लगा सकता है, जो न हिंदू हो न मुसलमान।"

मेरी इस बात का उन पर असर न पड़ा। पर मैंने देखा, वे एक समझौते पर पहुँच गए हैं। वे शिक्षित शहरी नहीं, देहाती हिंदू-मुसलमान थे। एक आपसी समझौते पर उनके लिये पहुँच जाना स्वाभाविक था। बुड्ढे घसियारे की लाश उन्होंने उठा ली, और "राम नाम सत्य है" कहते हुए उसे गंगा-किनारे ले गए। वहाँ उसे स्नान कराकर वे उस गाँव के क़ब्रस्तान में ले गए, और "अल्लाहो अकबर" कहते हुए उसे दफ़ना दिया। मैंने वह खुरपा भी बुड्ढे के साथ दफ़न करने के लिये उन्हें दे दिया। मैं जानता था, इससे कोई लाभ नहीं, पर बुड्ढे के प्रति मेरी यह श्रद्धा की भेंट थी, और इससे मेरे हृदय को शांति मिली। उस दिन से फिर मैं उस ओर टहलने नहीं गया।

१. एक मित्र के प्रति

श्याम,

तुम्हारा पत्र-श्यामघन सुखमय, सरस मिला ;
हृदय हमारा हरा हुआ है, मुरझा कुसुम खिला।
कैसे कहूँ कि कैसे मैंने दीर्घ निदाघ झिला ;
जिला लिया प्रिय मित्र, तुम्हीं ने हित-रस-सुधा पिला।

वसंतकुमार

× × ×

२. टेलीविज़न

सैकड़ों - हज़ारों मील अंतर के दृश्य, सजीव प्राणी अथवा निर्जीव पदार्थ, इनकी भाग - दौड़, चलना - फिरना, उड़ना आदि सभी कृतियाँ, अपने वास्तविक स्वरूप और रंगों में, हमें एक निर्दिष्ट स्थान पर बैठे पहले यहाँ भी दिखाई देती थीं। इस अद्भुत कला को भारतीय विज्ञानाचार्य और कला-विशारद तथा जनता भले प्रकार जानती थी। इस बात के हमें प्रमाण मिलते हैं। उस समय हमारे भारत में आचार्यों और प्रकांड पंडितों की कमी न थी। प्रत्येक विषय और कला के यहाँ अद्वितीय विद्वान् थे। हमारा देश सत्ययुग, त्रेता और द्वापर में तो सारी विद्या-कलाओं का केंद्र ही बना हुआ था। अन्य देशवासी यहाँ शिक्षा - दीक्षा पाने आते थे। परंतु इसके पश्चात्, कलियुग आते ही, हमारा देश घोर अंधकार की ओर अग्रसर होता गया। फिर भी द्वापर और कलियुग के संधि-काल में, महाभारत के भीषण युद्ध के समय, यहाँ अनेकानेक विद्वान् और कला-विशारद विद्यमान थे। उन दिनों ऐसे यंत्र भी थे, जिनके द्वारा हम सैकड़ों-हज़ारों मील के चलते-फिरते और दौड़ते दृश्य आदि अपने कमरे में बैठे देख सकते थे। इन बातों की पुष्टि हमारा इतिहास करता है।

महाभारत के समय, जब कौरवों-पांडवों की अठारह अक्षौहिणी सेना मैदान में जूझ रही थी, हस्तिनापुर में लड़ाई के दृश्य यंत्र की सहायता से ज्यों-के-त्यों देखे और उनके समाचार सुने जाते थे, और वे अंधे धृतराष्ट्र को कहकर सुना दिए जाते थे। इस प्रकार कुरुक्षेत्र के मैदान में होनेवाली युद्ध की गाथा और उसके दृश्य ज्यों - के - त्यों उसी समय हस्तिनापुर पहुँच जाते थे।

महाभारत के अपूर्व और विनाशक युद्ध में हमारे अच्छे-अच्छे कला-विशारद और विद्वान् काम आ गए, यहाँ तक कि उनमें का कोई मार्ग-प्रदर्शक के रूप में भी न रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि वे सारे कला-पूर्ण यंत्र, अनोखी सामग्रियाँ और शोध हमारे लिये सदा को लोप हो गए। पूर्व-कालीन कृतियाँ हमारे लिये कल्पनाएँ और अद्भुत गाथाएँ हो गईं। ज्यों-ज्यों दिन आगे बढ़ते गए, त्यों-त्यों हम पीछे की ओर खिसकते रहे, और इसका अंतिम परिणाम यह हुआ कि हमारा भारत अंधकार के गर्त में समाता गया, और हमारी प्राचीन सभ्यता, कौशल-पूर्ण कला और विद्वत्ता आदि सभी का लोप हो गया। हमारे सामने प्राचीन सभ्यता, अनोखी कृतियों और कला-पूर्ण साधनों की जब-जब बात आती रही, तब-तब हम शंकित बनते गए। लगातार इन शंकाओं का परिणाम यह हुआ कि हम भ्रामक बन गए, और सच्ची अथवा सार्थक विद्याओं को कपोल-कल्पित मानने लगे। हमारे ग्रंथों में सारे कला-पूर्ण साधनों के नाम और उनके निर्माण करने के उपाय आदि भी यथासंभव बताए गए थे। परंतु हमारी अशिक्षा और ग्रंथों के लोप तथा उनकी नष्ट-भ्रष्टता के कारण हम कमज़ोर और असमर्थ रह गए। हमारी इस कमज़ोरी से पूरा लाभ विदेशी राष्ट्रों ने उठाया। वे हमारे ग्रंथ ले गए, और उनमें से नई-नई बातें खोजकर निकालते रहे। कई ग्रंथ नष्ट-भ्रष्ट भी कर दिए गए। ऐसी घटनाएँ यवन-काल में अनेकानेक हुईं। इन सारी बातों का परिणाम यहाँ तक हुआ कि हमें अपने धर्म-ग्रंथ वेदों को भी जर्मनी से लाना पड़ा। ये बातें हमारे लिये कितनी दुःखद और हमें घोरतम अंधकार में रखने में समर्थ हुईं। कहना न होगा कि परिणाम-स्वरूप हम अशक्त बन गए, और बनते रहे।

इसके पश्चात् उधर पश्चिमीय सभ्यता धीरे-धीरे विकास पाती रही। अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में वहाँ की जनता .खूब उन्नति की ओर बढ़ी, और बीसवीं सदी के आरंभ में वहाँ अनेकानेक कला-विशारद और विद्वान् हो गए। उन्होंने अनेकानेक शोध किए। इस कार्य में अनेकों की जानें तक चली गईं। इसकी भी उन्होंने कोई चिंता न की। उनका झुकाव उन्नति की ओर बढ़ता ही चला गया। इसका परिणाम यह हुआ कि वे सफलता प्राप्त करके आगे आते गए। इस प्रकार हम आगेवाले अपनी कायरता और अज्ञानता-वश पीछे रह गए, और पीछेवाले पश्चिमीय विद्वान् कार्य-दक्षता और सच्ची लगन से कार्य-रत रहने के कारण आगे बढ़ गए। उन्होंने ज़मीन की सैर के लिये रेल निकाली, जल-यात्रा के लिये जहाज़ चलाए, और हवाई सैर के लिये वायुयान निर्माण किए। दूर-दूर संदेश पहुँचाने और बातें करने के लिये तार और टेलीफ़ोन निकाले। एक जगह से दूसरी जगह गायन, वादन, व्याख्यान और समाचार आदि शीघ्र पहुँचाने के लिये रेडियो निर्माण हुए। इन सारे साधनों के प्रसार और प्रचार के कारण दूर-दूर के देश भी निकटतम आ गए। परस्पर देशों के भेद-भाव मिटते गए। हमारी भाषा और चाल-ढाल पर भी काफ़ी असर पड़ा। सालों और महीनों का समय, जो एक देश से दूसरे देश पहुँचने में लगता था, सप्ताहों और दिनों में सीमित हो गया। इन सारी बातों का परिणाम यह हुआ कि हम बहुत-सी बातों में एक बन गए।

बीसवीं सदी के ये आविष्कार महत्त्व-पूर्ण रहे। परंतु अभी खोजों का अंत नहीं आया। वे ज्यों-की-त्यों चलती और बढ़ती जा रही हैं। एक की पूर्ति के बाद दूसरी कमी दिखाई देती है। जब हम देश-विदेशों में शीघ्रता से पहुँच सकते हैं, उनसे बातचीत कर सकते हैं, तब इस बात की आवश्यकता हुई कि हम उनकी शक्लें भी

क्यों न देखें। हमसे बातचीत करनेवाले कौन हैं? वास्तव में शत्रु हैं या मित्र? एक नर्तक और गायिका के हम गायन तो सुन सकते हैं, परंतु उसका नृत्य नहीं देख सकते। अब विद्वानों को इस बात की कमी जान पड़ी, और विद्वान् संशोधक श्रीवार्ड का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। आखिर 'आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है।' इसी कहावत के अनुसार तन, मन और धन तथा साहस और लगन के साथ वर्षानुवर्ष परिश्रम करने के पश्चात् हम टेलीविज़न (तड़िच्चित्र-प्रदर्शक कला) के विषय में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर सके। इस कमी की पूर्ति की ओर जुटे तो अनेकानेक विद्वान् रहे, परंतु इस विद्या का सच्चा शोध और बोध करने का सारा यश श्रीजे० वार्ड-नामक अँगरेज़ वैज्ञानिक को है। आपका नाम संसार के आविष्कर्ताओं की नामावली में सदा अमर रहेगा। विज्ञान के इस नवीन अंग को प्रकट करनेवाला यह पहला आविष्कारक कहलाएगा।

श्रीवार्ड एक स्कॉटिश पादरी के पुत्र थे। आपके पिता ग़रीब व्यक्ति थे। श्रीवार्ड को विद्युत्-विज्ञान से बाल्यकाल ही से प्रेम था। ग़रीबी के कारण पृथक् लेबोरेटरी (प्रयोगशाला) कैसे उपलब्ध हो सकती थी, इसलिये आपने अपनी माता का रसोईघर, पिता की बैठक का कमरा और चर्च का कंपाउंड (आँगन) आदि सभी जगह प्रयोगशाला बना रक्खी थी। चौदह वर्ष की आयु में ही आप एक छोटे-से बिजली के तैल-एंजिन को स्वयं चलाते और अपने निवास-स्थान को रोशनी पहुँचाते थे। बाल्यकाल ही से आप बड़े महत्त्वाकांक्षी रहे। उन्हीं दिनों आकाश-मार्ग से चित्र अथवा दृश्य आदि एक जगह से दूसरी जगह पहुँचानेवाली बात के आप सपने देख रहे थे। लगन और धुन की भी आपमें कमी न थी।

अपनी इस महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिये आपने इंजीनियरिंग का अभ्यास आरंभ किया, और बहुत ही छोटी अवस्था में आप पास भी हो गए। ग्लासगो में आपने नौकरी की खोज भी की। यद्यपि आप बड़े ग़रीब थे, तथापि नौकरी करने में आपका मन नहीं लगता था। आपका ध्यान तो नई-नई शोधों की ओर था। सबसे पहले आपने बिजली के जूते बनाए, जिन्हें पहन लेने पर चाहे जितना जाड़ा पड़ता हो, परंतु पैर नहीं ठिठुरते थे। ये जूते ग़रीब मजूरों का कष्ट देखकर आपने बनाए थे, जो प्रातःकाल शीत-ऋतु में सूर्योदय से पहले उठकर दूर-दूर नौकरी के लिये जाते थे, और रात्रि को बिना ओढ़े सो रहते थे। इसका परिणाम यह होता था कि सर्दी के कारण चलना-फिरना उन्हें कठिन हो जाता था। इसीलिये ये नई क़िस्म के जूते आपने बनाए, परंतु इनका जनता ने आदर नहीं किया। आपको यह बात अच्छी न लगी। यहाँ तक कि आप बड़े दुखी हुए। अंतिम परिणाम यह हुआ कि आप बीमार पड़ गए। पास में पैसा तो था नहीं, जो दवा-दारू करते। ऐसी दशा में नौकरी भी भला कहाँ मिलनेवाली थी। परंतु फिर भी आपने अपनी लगन न छोड़ी। उस बीमारी की हालत में भी आप तीन साल तक सतत परिश्रम और खोज करते रहे। प्रातःकाल से संध्या-समय तक इसी काम में जुटे रहते। कभी-कभी तो रात के दो-दो बजे तक परिश्रम करते रहते। आपने अनेकानेक यंत्र निकाले। कई प्रयोग किए। अंत में एक दिन आपने टेलीविज़न में सफलता पाई। आपका यह यंत्र केवल सात शिलिंग छ पेंस की लागत का था। इसके द्वारा जीवित तथा निर्जीव पदार्थों और प्राणियों के चित्र, अनोखे-अनोखे दृश्य आदि सभी एक जगह से दूसरी जगह भेजे जाते हैं, और वे वहाँ प्राकृतिक रूप में दिखलाई देते हैं।

एक ग़रीब पादरी के पुत्र की इस अद्भुत खोज (टेलीविज़न) का प्रचार आज योरप और अमेरिका में ख़ूब बढ़ रहा है। फिर भी इस विद्या को और अधिक सांगोपांग बनाने के लिये सारे संसार के विद्वान् तन-मन-धन से ख़ूब परिश्रम कर रहे हैं। परंतु जितनी सफलता श्रीवार्ड को इसके आविष्कार द्वारा प्राप्त हो सकी, उतनी किसी को अब तक नहीं हुई। आज अनेकानेक वर्षों के परिश्रम के पश्चात् श्रीवार्ड महाशय की एक दूसरी खोज ने संसार को फिर चकित कर दिया। उनकी यह खोज 'जादू की आँख' है। इस आँख के द्वारा स्टीमर, हवाई जहाज़ के पायलेट, रेलगाड़ी के ड्राइवर आदि गाढ़ धुआँधार और कुहरे में भी तीस मील तक साफ़ देख सकते हैं। हाल ही में यह आँखनुमा यंत्र जाँच करने के लिये आस्ट्रेलिया भेजा गया है। वहाँ ठीक प्रमाणित हो जाने के बाद इसका उपयोग संसारव्यापी हो जायगा। इस यंत्र को आपने सर्वप्रथम टेलीविज़न के साथ लगाया था, और इसकी सहायता से एक नगर को सौ मील की दूरी से देखा था।

यह नई शोध यदि सफल हो सकी, तो फिर रेलगाड़ियाँ, वायुयान और जहाज़ आदि, जो घने कुहरे के कारण लड़ जाते हैं, न लड़ सकेंगे। अभी आपने टेलीविज़न को भी नहीं छोड़ा। उसे सांगोपांग बनाने में आज भी दिन-रात जुटे रहते हैं। सबसे बड़ा सुधार जो आपने हाल ही में किया है, वह प्रत्येक दृश्य का टेलीविज़न द्वारा नैसर्गिक रंगों में दिखलाई देना है। अब दृश्य लाल, पीले, हरे, सफ़ेद और काले आदि रंगों में ज्यों-के-त्यों दिखलाई देने लगे हैं। पहले दृश्य केवल काले और सफ़ेद रंगों में, साधारण फ़ोटो की भाँति, दिखलाई देते थे। श्रीवार्ड अपनी इस नवीन खोज को, संसार के विद्वानों को दिखाकर, सफल बना चुके हैं। वास्तव में उनकी यह नवीन खोज सराहनीय है।

आज जर्मनी में टेलीविज़न का उपयोग टेलीफ़ोन के साथ किया जाता है। केवल तीन मार्क देकर जर्मनी में कोई भी व्यक्ति अपने देश के किसी भी हिस्से के निवासी से तीन मिनट तक बातचीत कर सकता और उसे देख भी सकता है। इँगलैंड में भी इन दोनो का उपयोग बड़े ज़ोरों के साथ हो रहा है। वहाँ तो टेलीविज़न को कोई भी व्यक्ति २५-३० पौंड देकर अपने टेलीफ़ोन के साथ लगा सकता और बातचीत के साथ ही वक्ता को देख भी सकता है।

आधुनिक युग में यह खोज अपनी विशेष महत्ता रखती है। क्योंकि आज जिस देश के पास टेलीविज़न और ब्रॉडकास्टिंग के यंत्र काफ़ी मात्रा में होंगे, वही संसार को सरलता से अपने वश में कर सकता है। आज संसार की प्रत्येक सरकार इन दोनो को एक सफल साधन समझती है। अंतर-राष्ट्रीय घटना और निकट भविष्य के भार को देखते हुए सूक्ष्म-शब्द-ग्राहक यंत्र, रेडियो, माइक्रोफ़ोन, टेलीविज़न, केमरा, आकाश में उड़नेवाले विमान, विनाशक तोपें और विध्वंसक हवाई जहाज़ आदि प्रमुख साधन प्रतीत होते हैं।

लक्ष्मीनारायण-दीनदयाल अवस्थी

× × ×

३. उपालंभ

जग को मैं नहीं पहचानता हूँ,
जग ने कब है पहचाना मुझे;
मनमानी सभी करते कितनी,
कहते नित जो मनमाना मुझे।
अपराध यही है हुआ कि नहीं
स्वर में स्वर आया मिलाना मुझे;
कहता हूँ ज़माने को पागल मैं,
कह पागल जाता ज़माना मुझे।

हिंदू-मात्र के संग्रह करने योग्य

हिंदी-साहित्य की अनोखी पुस्तक

अल्प मूल्य में अनेक विद्याओं और ३५ पुस्तकों का सार

विश्वविद्या-भंडार

५ हज़ार पुस्तकें बिक गईं !

छठा संस्करण बिक रहा है !!

(Encycleopadia of the Wisdom)

अनेक शास्त्रं विदितव्यं अल्पश्चकालो बहवश्चविघ्नाः ;
यत्सारभूतं तदुपासितव्यं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ।

शास्त्र बहुत हैं, जानने योग्य भी बहुत कुछ है, किंतु समय थोड़ा है और विघ्न बहुत हैं, इसलिये मनुष्य को हंस के समान सार-रूप ज्ञान की प्राप्ति करनी चाहिए। "आर्यनीति" के इस सिद्धांत पर ही इस ग्रंथ-रत्न की सृष्टि हुई है। इसमें ऋषि-प्रोक्त अनेक विद्याओं और अनेक पुस्तकों का सार लिखा है, जिसे देखकर बड़ा आनंद आता है, और बहुदर्शिता प्राप्त होती है। यथा—धर्मशास्त्र-संग्रह—ईश्वर-स्तुति, वर्ण-धर्म, आश्रम-धर्म, कर्तव्य-कर्म, आदि। वेदशास्त्र-परिचय—वेद, उपनिषद्, षट्शास्त्र (दर्शन), स्मृति और इतिहास पुराणों का संक्षिप्त विषय-परिचय। तंत्रशास्त्र—मारण, मोहन, वशीकरण आदि के यंत्र-मंत्र-तंत्र। सामुद्रिक शास्त्र—हाथ देखकर फल कहना। स्वप्नशास्त्र—स्वप्नों का शुभ-अशुभ फल जानना। शकुनशास्त्र—छींक, बिल्ली, कुत्ता आदि के शकुन अन्न और संवत् की तेज़ी-मंदी जानना। स्वरशास्त्र—नासिका के स्वर से प्रश्नों का शुभ-अशुभ फल कहना, अपने मनोरथों को प्राप्त करना। ज्योतिषशास्त्र—जन्म-पत्र बनाना, फल कहना, मुहूर्त, प्रश्न और मृत्यु बताना। हठयोगशास्त्र—योग-विधि, प्राणायाम से त्रिकालदर्शित्व-प्राप्ति। ऐंद्रजालिक विद्या—अर्थात् सिद्ध, करामती और जादूगरी की बातें। शिल्पशास्त्र—साबुन, रबर की मुहर, पेंसिल, तांबूल-विहार, ख़िज़ाब आदि बनाना। कोकशास्त्र—स्त्री-पुरुषों के जाति-भेद, सहवास-विधि, षट्ऋतु-विहार आदि। अश्वशास्त्र—घोड़ों के जाति-भेद, बुरे-भले लक्षण और इलाज। कृषिशास्त्र—खेती से उत्तम फ़सल प्राप्त करना। नाट्यशास्त्र—नाटक खेलने की विधि। वास्तुशास्त्र—मकान बनाने के नियम। गान-विद्या—रागों के नाम, समय, स्वर-साधन, रसभरे पद, ठुमरी, ग़ज़ल आदि। रसायन-विद्या—अनेक रसायनों का वर्णन। ब्रह्मविद्या—आध्यात्मिक विषय का वर्णन। धनुर्विद्या—युद्ध-संबंधी बातें। वैद्यकशास्त्र—रोगों की चिकित्सा, तत्काल गुणकारी गुप्त नुसख़े। नीतिशास्त्र—नीति के उत्तम-उत्तम श्लोक भाषा-टीका-सहित। जलतरण-विद्या—नदी में तैरने की विधि। मैस्मरेज़िम विद्या—मरी आत्मा को बुलाकर आश्चर्यदायक बातें जानना। आदर्श चरित्र—लोकमान्य तिलक, मालवीयजी, लक्ष्मी बाई, शकुंतला आदि के जीवन-चरित्र। काव्य-संग्रह—पद्माकर आदि पुराने कवि और मैथिलीशरण आदि नवीन कवियों की रस-भरी कविताएँ। उपन्यास, गल्प, प्रहसन (हँसी दिलाने की बातें), भारत के मुख्य तीर्थों के पते और परिचय, भारत के देशी कारख़ानों के पते, पोस्ट ऑफ़िस, तार, रेलवे, चुंगी और कचेहरियों के जानने योग्य नियम। गणित के गुरु-ब्याज की जंत्री आदि, कहाँ तक लिखें, देखने पर आप स्वयं प्रशंसा करेंगे। घटाया हुआ मूल्य प्रति पुस्तक १।) सवा रुपया जो कि गुण और ३५५ पृष्ठों की संख्या के देखे न्योछावर-मात्र है। डाक-महसूल ।≈) पृथक्।

आयुर्वेदीय जगत् में खोज के साथ लिखी हुई अपूर्व पुस्तक

कायाकल्पपद्धति

(५ चित्र और रहस्यबोध हिंदी-भाषा-सहित)

देशपूज्य मालवीयजी और वैद्यराज पं० नटवरलालजी ने जब से कुटी-प्रावेशिक रसायन-सेवन (कायाकल्प) किया है, तब से देश के वैद्यवर अपनी उपेक्षित इस विधि को जानने को विशेष आकर्षित हुए हैं। इसलिये हमने बड़ी गवेषणा के साथ इसमें कल्पकुटी-निर्माण, निवास-क्रम, ढाक और आँवलों से बननेवाली "पलाशामलक रसायन" बनाने की विस्तृत विधि तथा अन्य सुगम औषधियाँ, पेय द्रव्य, पथ्यापथ्य और इस प्रयोग-विधि में आवश्यक गुप्त बातों को अपनी खोज से प्राप्त तथा दुर्लभ हस्त-लिखित ग्रंथों से लिखा है। मूल्य ।), डाक-व्यय तीन पुस्तकों तक ।)

सूचना—यदि पुस्तक विज्ञापन के माफ़िक़ न हों, तो २४ घंटे देखकर वापस कर दो, मूल्य लौटा देंगे।

पता—मैनेजर सुधावर्षक प्रेस, नं० ३०, अलीगढ़ सिटी।

क्या आपको नहीं मालूम ?

आज ही रात को सेवन करें

'कामामृतम्'

सांसारिक सुख प्रदान करनेवाली, संसार की उत्तम धातु-विषयक औषधि

कामामृतम—एक सर्वोत्तम धातु-पौष्टिक रसायन है। सब प्रकार की कमज़ोरियों को दूर में इसके समान कोई औषधि नहीं है। यह दवा यदि बराबर सेवन की जाय, यह हस्तक्रिया-संबंधी शिकायतों को, स्वप्नदोष को और अप्राकृतिक द्वारा उत्पन्न ख़राबियों को तत्काल दूर करती है। नामर्दी और प्रमेह-संबंधी शिकायतों में यह तत्क्षण अपना जादू-सा असर दिखलाती है।

यह धातु को गाढ़ा करती और धातु में वृद्धि करती है और इस प्रकार सांसारिक सुखों को करती है। धातु-क्षीणता व अन्य कमज़ोरी की यह सर्वोत्तम दवा है। दूसरे शब्दों में यह शक्ति और का अनुपम ख़ज़ाना है, और यथार्थ ही जीवन-अमृत कहा जाता है।

कामामृतम—सहवास-संबंधी कमज़ोरी के लिये, नामर्दी के लिये और साधारण कमज़ोरी लिये दैवी दवा है। यह ताज़गी देती है, स्वास्थ्य को बढ़ाती और यौवन वस्था को स्थिर रखती है। इसका असर तात्कालिक है। दर्द और घबराहट यह जादू के समान दूर करती है। इसके सेवन से मनुष्य शीघ्र ही पूर्ण ताज़गी और शक्ति को थोड़े ही समय में प्राप्त करता है।

इस विषय-संबंधी पुस्तक मुफ़्त भेजी जाती है।

बड़ी शीशी का मूल्य ३० दिन सेवन-योग्य ४।)
छोटी „ „ १५ २॥)
डाक-व्यय ॥)

ए० कनकराजू, औषधि-विशेषज्ञ, चिकाको

५००) इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेतकुष्ट [सफ़ेदी] की अद्भुत वनौषधि। तीन दिन में पूरा आराम। यदि सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा कर निराश हो चुके हों, तो इसे लगाकर आरोग्य हों। बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो, वे -) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २) रु०

गर्भ-निरोधक (बर्थ-कंट्रोल)

इसको प्रति माह तीन बार के सेवन से उस मास में गर्भ नहीं रह सकता। यदि आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो ओषधि का सेवन कराना बंद करा दें। गर्भ धारण हो जायगा। इससे स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती। मूल्य एक वर्ष का २) रु०।

दूसरी दवा, जो सर्वदा के लिये वंध्या बना देती है; मूल्य २) रु०।

(नक़लों से सावधान)

धातु-पुष्टि की अचूक दवा

इसके सेवन करते ही बदन में वह शक्ति आती है, जो पहली जवानी में भी नसीब नहीं होती। पानी के समान पतले धातु को पुष्ट करने में रामबाण है। सुस्ती, नामर्दी, धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, मूत्र के साथ पाख़ाने के आगे या पीछे धातु का निकलना, बहुमूत्र-रोग (डायबिटीज़) इत्यादि दूर कर, शरीर में नया वीर्य उत्पन्न कर अपूर्व शक्ति लाती है। मूल्य १।)

स्त्री-रोग की अक्सीर दवा

मासिक धर्म के हरेक दोषों को दूर करने में रामबाण है। मासिक धर्म के समय कमर में पीड़ा, सिर में दर्द, आँखों में जलन, हाथ-पैर के तलवों में लहर, मासिक धर्म मात्रा से अधिक या थोड़ा होना, गर्भ न रहना, गर्भपात या अल्पायु संतान का होना, या होकर मर जाना इत्यादि समस्त दोष दूर कर गर्भ-धारण की शक्ति लायक़, संतान पैदा करने योग्य बनाती है। मूल्य १)

वैद्यराज अखिलकिशोरराम (नं० १६१)
पो० कतरी सराय (गया)

बच्चों को पढ़ाइए

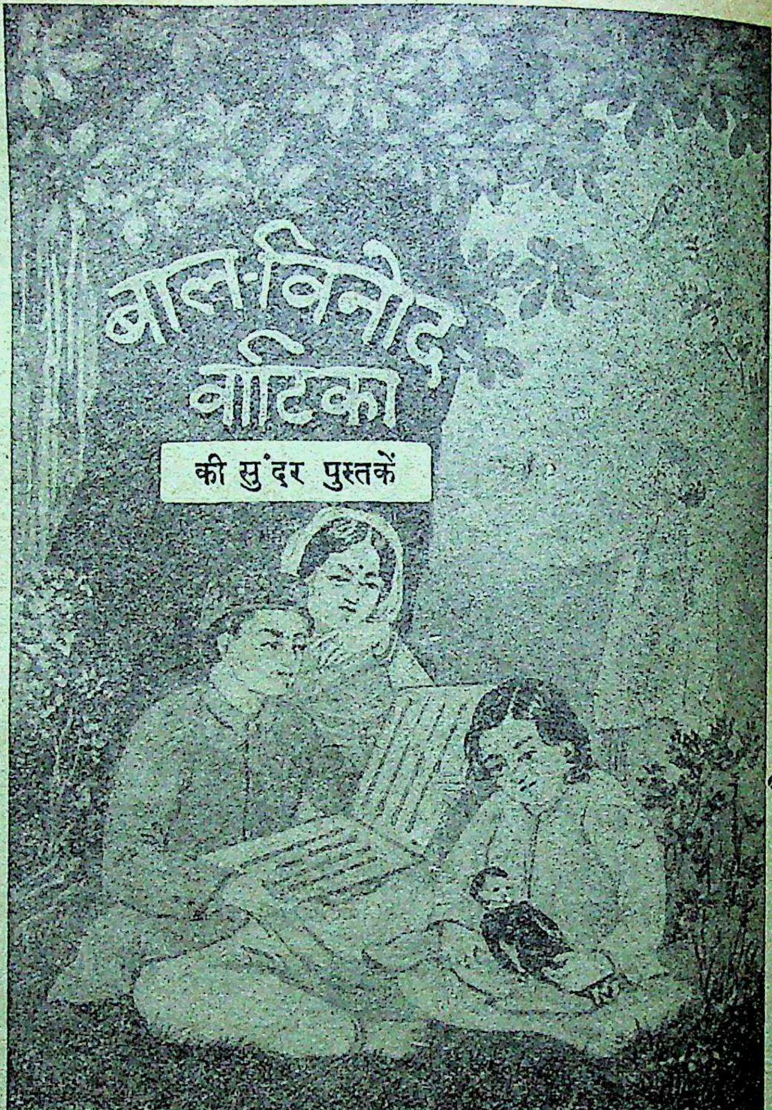

इस माला में ६ से लेकर १६ वर्ष तक के लड़की-लड़कों के लिये उपयोगी, उत्तमोत्तम और सचित्र पुस्तकें निकल रही हैं। उनकी भाषा इतनी सरल, सीधी, सुंदर और मनोरंजक रहती है कि बाल-वृंद किसी अध्यापक या कोष की सहायता के बिना उन्हें पढ़ और समझ सकते हैं। सभी पुस्तकें नयनाभिराम एकरंगे और तिरंगे चित्रों से युक्त होती हैं। पढ़ने से खासा ज्ञान होता है। कविता, कहानी, इतिहास, जीवनी आदि सभी विषयों की पुस्तकें इस माला में प्रकाशित हो चुकी हैं।

कुछ पुस्तकों के परिचय के लिये सूचीपत्र मँगाएँ !

गंगा पुस्तकमाला
लखनऊ
कार्यालय

संघर्ष-विना जीवन आलस्यमय हो जाता है
परंतु
मात्र संघर्ष के लिये संघर्ष नहीं किया जाना चाहिए

यह है नीति— सचित्र-साप्ताहिक

दरबार की

दरबार

पढ़िए और सराहिए। हमारी 'लंदन की चिट्ठी', 'महिला-पृष्ठ' तथा 'विशेष लेख।'
भारत के समस्त साप्ताहिक पत्रों में बिलकुल नया और अनूठा रूप लेकर आनेवाला पत्र

दरबार दरबार

देशी राज्यों की प्रजा
और देशी नरेशों के लिये एक नया संदेश लेकर आनेवाला राजनीतिक, साहित्यिक, साप्ताहिक
पत्र

दरबार

प्रधान संपादक — ऋषभचरण जैन

मूल्य

संयुक्त संपादक — इंद्रदेव उपाध्याय

साधारण संस्करण एक प्रति =), वार्षिक ७)
आजीवन २५१), राजसंस्करण वार्षिक २०)
आजीवन ५०१)

लिखिए—संचालक,
'सचित्र दरबार', सिविल लाइंस, देहली
टेलीफ़ोन नं० ६४५२

सुघड़ चमेली

लेखक, पंडित रामजीदास भार्गव। हिंदी एवं उर्दू-संसार भली भाँति जानता है कि आप बालोपयोगी पुस्तकें लिखने में कैसे पटु हैं। आप इस पुस्तक को अपनी लड़कियों को पढ़ाइए और फिर देखिए कि वे चमेली की तरह कैसी सुघड़ हो जाती हैं! सचित्र। मूल्य -)

भगिनी-भूषण

लेखक, स्व० गोपालनारायणसेन-सिंह बी० ए०। यह पुस्तक बच्चों को पढ़ाने-लायक है। इसमें छोटी-छोटी कहानियों के बहाने बच्चों को बहुत-सी शिक्षाएँ दी गई हैं। मूल्य -)

खेल-पचीसी

लेखक, श्रीप्रतिपालसिंहजी। इस पुस्तक में उन २५ खेलों का संग्रह किया गया है, जो लड़के साधारणतः शौक़ से खेलते थे। अँगरेज़ी-शिक्षा के फैलने से हमारे पुराने खेल दिन-दिन मिटते चले जा रहे हैं। शायद कुछ दिनों बाद उन खेलों के जानकार भी न रहेंगे। इनके साथ लड़कों की कुछ कसरत भी हो जाती है। सचित्र। मूल्य ।)

लड़कियों का खेल

लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष। पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। इस पुस्तक की रचना विशेषकर लड़कियों के लिये ही हुई है। वे इसे बड़े चाव से पढ़ेंगी, और इससे बहुत कुछ सीखेंगी। हिंदी में ऐसी बहुत कम पुस्तकें निकली हैं। मूल्य ।=)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

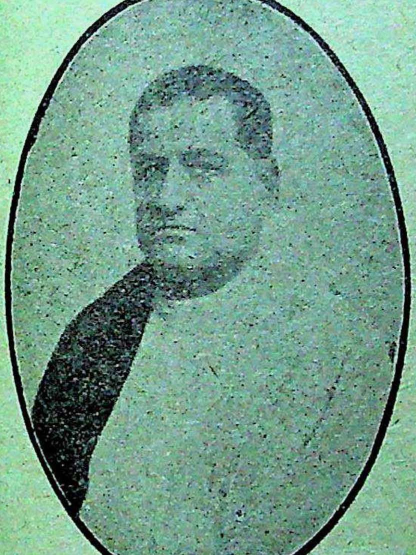

लेखक, देवता-स्वरूप
भाई परमानंदजी
एम्० ए०

मूल्य
सादी ।।।=)
सजिल्द १।=)

卐 卐 卐 卐

हिंदू-संगठन की इस उदीयमान गति में भाईजी की सेवाएँ, त्याग और योजनाएँ अपना ख़ास स्थान रखती हैं। इस पुस्तक में आपके ऐसे ही अनुभव का निचोड़ है। पुस्तक ऐतिहासिक दृष्टि से लिखी गई है। धार्मिक जड़ता के कारण हिंदू-शक्ति किस प्रकार छिन्न-भिन्न हुई, इसका इसमें अच्छा निरूपण है। साथ ही हिंदू-जीवन का महत्त्व क्या है और क्या होना चाहिए, इसकी तर्क-पूर्ण विवेचना है। प्रत्येक हिंदू को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए। इसमें हिंदू-वैभव, एकदेशीयता, जातीयता तथा सामाजिक संगठन आदि की पहेलियाँ स्वरैक्य के साथ हल की गई हैं। दार्शनिक तर्कों के साथ हिंदू-जीवन का रहस्य इतने अच्छे ढंग से अंकित किया गया है कि पाठक फड़क उठेंगे, और निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचे विना न रहेंगे। अवश्य मँगाइए।

卐 卐 卐 卐

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

इँगलैंड का इतिहास

सी० पी० और बरार के हाई-स्कूलों तथा बिहार के मिडिल और हाईस्कूलों में पढ़ाई जाने के लिये टेक्स्ट-बुक-कमेटी द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक

हिंदी में इँगलैंड-जैसे स्वतंत्रता-प्रिय देश का एक अच्छा-सा इतिहास भी अभी तक नहीं लिखा गया ! इसी अभाव की पूर्ति के लिये अँगरेज़ी की ढेरों प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुस्तकें पढ़कर और उनका अवलंब लेकर इस ग्रंथ-रत्न की रचना की गई है । यह ग्रंथ हिंदी-साहित्य का गौरव बढ़ानेवाला है । प्रत्येक लाइब्रेरी और पुस्तकालय में इसकी एक-एक प्रति रहनी चाहिए । स्कूलों के विद्यार्थियों के लिये तो यह ग्रंथ अमूल्य ही है । यह उत्कृष्ट और अपूर्व ग्रंथ हिंदी-साहित्य-सम्मेलन और सी० पी०, यू० पी०, बिहार आदि में पढ़ाया जाता है । काग़ज़ बढ़िया । छपाई मनोहारिणी ।

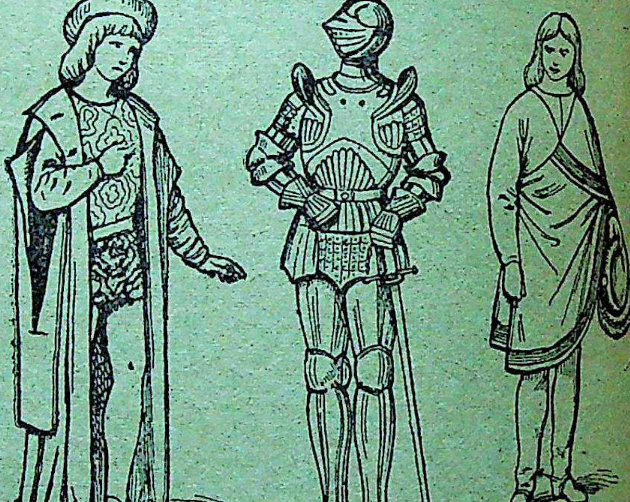

लेखक—

प्रोफ़ेसर डॉक्टर प्राणनाथजी विद्यालंकार

प्रथम खंड	सादी १।)	सजिल्द १॥)
द्वितीय ,,	,, १।)	,, १॥)
तृतीय ,,	,, १।)	,, १॥)
द्वितीय और तृतीय खंड (सजिल्द, एक में)		केवल २॥)

नोट—बिहार में तीनो भाग पढ़ाए जाते हैं, और यू० पी० और सी० पी० आदि में केवल आख़िरी दोनो भाग ही। इसीलिये उपर्युक्त ढंग से जिल्दें बँधवाई गई हैं ।

गंगा-पुस्तकमाला
लखनऊ
कार्यालय

विरले गुण देखनेवाले यहाँ,
लघु दुर्गुण भी छिप पाता नहीं;
सुख में मिल जाते हैं साथी सदा,
दुख में कोई पास भी आता नहीं।
गिरने पै उठाते सभी उँगली,
उठना भी मेरा पर भाता नहीं;
करने दो वही, जो सुहाता मुझे,
दुनिया से मेरा कोई नाता नहीं।

श्रीयुत कुँवर सोमेश्वरसिंह
(बी० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

४. कवित्व-शक्ति

कहते हैं, कविता पत्थर को पिघला सकती है। इसमें पत्थर पर भी दूब जमा देने की सामर्थ्य है। बड़े-बड़े ख़ूँख़्वार मनुष्यों के संग दिलों को यह मोम बना देती है। कविता को Spontaneous overflow of powerful emotions कहा गया है। इसके प्रभाव से मनुष्य का हृदय और का और हो जाता है। कविता हिंदोस्तान को अरब या विलायत बना सकती है, क्योंकि यह हृदय की वस्तु है, हृदय ही इसका स्वागत करता है, और हृदय पर ही यह अपना सिक्का जमा लेती है। किसी ने ठीक ही कहा है—

"What comes from heart goes to heart."

उपर्युक्त कथन केवल कथन-मात्र ही नहीं है। इसकी सत्यता या वास्तविकता व्यक्त करने के लिये इस संसार में एक नहीं, अनेकों उदाहरण पाए जाते हैं। जयपुर-नरेश अपनी नव-विवाहिता, नवोढ़ा रानी के प्रेम-पाश में आबद्ध हो चित्रसारी के बाहर की दुनिया भूल गए थे। नवेली के प्रणय-रस से लबालब भरे हुए उनके हृदय में, सुना है, प्रजा-पालन के ध्यान तक के लिये क़तई गुंजाइश न थी। ऐसे प्रेम-विजित हृदय में भी बिहारी का केवल एक ही दोहा स्थान पा गया, और उसने उस रमणी-सौंदर्य के जादू को क्षण-मात्र में हटा दिया—

नहिं पराग, नहिं मधुर मधु,
नहिं विकास यहि काल;
अली, कली ही तें बिंध्यौ,
आगे कौन हवाल?

केवल इसी अन्योक्ति ने उन्हें अपने कर्तव्य-पथ की ओर सचेत कर दिया। विश्व-विजयी प्रेम को भी विचलित कर देने की सामर्थ्य कविता में है।

इसके अतिरिक्त दूसरा उदाहरण स्वर्गीय प्रेमचंद-जी की एक कहानी में भी पढ़ा होगा। दिल्ली के ऐतिहासिक नादिरशाही क़त्ले-आम का ज़िक्र है। अगणित निरपराध आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष तलवार के घाट उतारे जा चुके थे। लाशों पर लाशें पट चुकी थीं। ख़ून की नदी बह रही थी, जिसमें क़त्ल किए गए दुधमुँहे बच्चे टेसू के फूल की तरह उतरा रहे थे! ऐसा दृश्य था, मानो स्वयं काल आज भारत की राजधानी में होली खेल रहा हो। सारे शहर में भयंकरता व्याप्त थी। भगवान् सूर्य भी इस नर-पिशाच के उस पाशविक अत्याचार पर मुँह लाल किए जल्दी-जल्दी घटना-स्थल से भागे जा रहे थे। किंतु नादिरशाही तलवार अभी बिजली की तरह चमक ही रही थी। किसी की जुर्रत थी, जो अब रुक जाने के लिये उससे कह सके! गर्मी का सताया, बौखलाया हुआ शेर जिस प्रकार पानी बरस जाने पर फुनफुनाता हुआ इधर-उधर घूमता है, उसी तरह नादिरशाह भी इस ख़ून की वर्षा का आनंद ले रहा था, किंतु चेहरे पर अब भी वही पैशाचिकता थी। दिल्ली अब तक श्मशान तो बन ही चुकी थी, अब उसकी क्या दशा करना चाहता है, यह बात समझ

में नहीं आती थी। नादिरशाही हुक्म जब तक जारी है, तब तक तलवार क्षण-मात्र को भी रुक नहीं सकती। पराजित भारत का सम्राट् भी इस क़त्ले-आम को रोकने के लिये प्रार्थना करने की हिम्मत अभी तक नहीं कर सका। प्रत्यक्ष कराल काल के सम्मुख अपने चंद हाड़-मांस के ढाँचे को कौन ले जाय ? किंतु इस बला के अवसर पर भी एक कवि उसके सामने आता है, और कहता है—

"कसे न माँद कि दीगर व तेग़े-नाज़ कुशी,
मगर कि ज़िंदा कुनी ख़ल्क रा व बाज़ कुशी।"

अर्थात् तेरी निगाहों की तलवार से कोई नहीं बचा, अब यही उपाय है कि मुर्दों को फिर से जिलाकर क़त्ल कर।

.ख़ून का प्यासा नादिर उसकी इस उक्ति पर नरम पड़ जाता है। पत्थर पर दूब जमती है, संग-दिल पिघलता है, और एक निमेष-मात्र में दिन-भर की चमकती हुई तलवार म्यान में हो जाती है। कविते ! तेरी अपार शक्ति को धन्य है !!

इसके अतिरिक्त ईसा के ४०४ वर्ष पूर्व की एक घटना से भी उक्त कथन की पुष्टि होती है। स्पार्टन योद्धा लिसैंडर महान् ने एथेंस पर हमला किया था, और नगर को चारो ओर से घेरे यह सोच रहा था कि उसे किस प्रकार विध्वंस किया जाय। एथेंस-निवासियों के ऊपर इस अवसर पर जो महान् आपत्ति की काली घटाएँ छा रही थीं, उनका अनुमान भारतीय इतिहास के पढ़नेवालों को सहज ही हो सकता है। स्पार्टन सैनिक वीर, जिनके नाम-मात्र से शत्रुओं का कलेजा सहम जाता था, जिनकी तलवार की धाक से ज़माना थर्राता था, आज एथेंस के चारो ओर .ख़ेमा लगाए हैं। न-मालूम किस समय वीर लिसैंडर भूखे बाघ की तरह नगर की प्राचीरों को खँडहर करता हुआ अचानक टूट पड़े, और समस्त एथेंस काल के गाल में पहुँच जाय ! इधर किसी भी क्षण में काल-कवलित होने की आशंका से उद्विग्न नागरिकों का ख़ून सूख रहा था, और उधर वीर लिसैंडर भोजन करता हुआ यह सोच रहा था कि शहर पर किस तरीक़े से आक्रमण किया जाय। इतने ही में अकस्मात् उसके कानों में कुछ अजीब हृदय-ग्राही मधुर रस-सा पड़ने लगा, और उस वीर-शिरोमणि की तबियत फड़क गई। एक बड़ी मधुर ध्वनि सुनाई दे रही थी, और केवल लिसैंडर ही नहीं, समस्त सेना उस पर लोट-पोट हो गई। फ़ौरन् पता चल गया कि निकट ही एक फ़ोशियन गायक 'यूरुपडीस'-रचित 'इलैक्ट्रा' काव्य की कुछ कविता पढ़ रहा है। उस कविता के एक-एक शब्द से दर्द-भरी आहें-सी निकलती मालूम देती थीं, जिनमें हृदय की वह पीड़ा छिपी थी, जिसने स्पार्टन बहादुरों के वज्र हृदय को द्रवित कर दिया, और वे कहने लगे कि हम ऐसे नगर को कदापि बरबाद नहीं कर सकते, जिसने ऐसे महान् कवि को जन्म दिया है। समर-सन्नद्ध उन वीरों ने शस्त्र धर दिए, और एथेंस-विध्वंस का विचार छोड़ दिया। इस प्रकार उस शहर की यह भीषण आपत्ति पल-भर में टल गई। दुनिया की बड़ी-से-बड़ी शक्तियाँ जिस .ख़ून-ख़राबी को सहज नहीं रोक सकतीं, एक कविता ने उस भयंकर नर-संहार को संपूर्ण रूप से टाल दिया, और अगणित मनुष्यों की हत्या होने से रुक गई। एक प्राचीन नगर तहस-नहस होने से बच गया। आँगन तक आ पहुँचा हुआ शत्रु लौट गया। धन्य ऐसी नैसर्गिक शक्ति को, और धन्य है उन प्रतिभाशाली कवियों को, जिनमें ऐसी शक्ति का बीज है ! वास्तव में ऐसी प्रभावोत्पादक कविता ही कविता है, और यही कवित्व-शक्ति है।

पाठको ! ये तो मनुष्यों के हृदय को पलटने की बातें हैं। इस कविता में तो वह शक्ति देखी गई है, जो होनी का अनहोनी कर दे, सर्वशक्ति

मान् के हृदय तक को प्रभावित कर दे । कहा जाता है, इटावे में एक परम वैष्णव भगवद्भक्त कवि महोदय निवास करते थे । उनके पत्नी थी, और केवल एकमात्र पुत्र था, जिसका मुँह देखे वे दोनो स्त्री-पुरुष जीते थे । भगवान् की इच्छा ! उनका इकलौता पुत्र अकस्मात् बीमार पड़ गया । केवल पाँच वर्ष का बालक, कई रोगों से ग्रस्त होकर, प्रतिदिन क्षीण होता जाता था । सैकड़ों दवाइयाँ कीं, वैद्य-हकीमों को दिखाया, किंतु कोई लाभ न हुआ, और रोग बढ़ते-बढ़ते अब "अंतिम काल आय नियराया ।" उन बेचारे वृद्ध माता-पिता को ऐसा प्रतीत होता, मानो कोई उनका गला घोटे दे रहा हो । प्राणों से भी अधिक प्रिय एकमात्र पुत्र आज मृत्यु-शय्या पर पड़ा जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिन रहा है, और आस-पास के सब प्रकार के चिकित्सक हताश हो उठे हैं । ऐसे कुअवसर पर बेचारे वृद्ध कवि निराश हो उठे । भगवान् का सिंहासन सामने था, पुत्र को उठाकर उसके पास पृथ्वी पर धर दिया, और उनकी हिचकियाँ बँध गईं । काव्य-कंठ भी फूट पड़ा, और ऐसे हृदय-विदारक समय पर उस नैराश्य-जनित अधीरता में भगवान् को संबोधन करके उनके मुँह से ये शब्द निकल पड़े—

"दास नरायन कौ सुत जातु,
सु राखु धराधर - राखनहारे !"

उस सच्चे, भक्त कवि-हृदय की अपील मंज़ूर हो गई, और उस सर्वशक्तिमान् की कृपा से, जिसके तनिक कृपा-कटाक्ष से राई का पर्वत हो जाता है, वह पाँच वर्ष का बच्चा सचेत हो गया, और क्रमशः अच्छा होते-होते स्वस्थ हो गया ! जय-जय कृपानिधान !

अतः यह कविता, सच्ची कविता यदि सच्चे कवि के हृदय से निकलती है, तो उसमें भगवान् के हृदय को भी हिला देने की शक्ति है, साधारण पुरुषों की तो बात ही क्या । वह कविता ही क्या, जिसमें प्रभावोत्पादकता का गुण न हो । कविवर ठाकुर ने कहा भी तो है—

"पंडित और प्रवीनतु के जोई
चित्त हरै, सो कबित्त कहावै ।"

किंतु हाँ, यदि भैंस के आगे बीन बजी, और कोई प्रभाव न हुआ, तो इसमें कविता का दोष नहीं । अस्तु ।

जिस कविता में यह शक्ति नहीं, यह गुण नहीं, तो वह निर्जीव है । जिसकी कविता में यह शक्ति नहीं, वह कवि वास्तविक कवि नहीं । कुछ इनी-गिनी पेटेंट उपमाओं से सजाकर किसी बात को कह डालनेवाले को कवि होने का दावा न करना चाहिए । इस प्रकार की तुक मिला देनेवाले तो बहुत-से कवि होंगे, पर अब ऐसे कवि कितने हैं, जो नादिर और लिसैंडर का चढ़ा हुआ तेवर उतार दें, जिनकी उक्तियाँ प्रज्वलित प्रेमाग्नि या क्रोधाग्नि को बात-की-बात में ठंडा कर सकती हों । ऐसे बालू से तेल निकाल लेनेवाले कवि कहाँ हैं ? अब तो बस, कविवर ठाकुर का कहना याद आता है—

सीखि लियौ मीन, मृग, खंजन, कमल, चंद,
सीखि लियौ जस औ' प्रताप को कहानौ है ;
सीखि लियौ कामधेनु, कल्पवृच्छ, चिंतामनि,
सीखि लियौ मेरु औ' कुबेरु उर आनौ है ।
'ठाकुर' कहत याकी बड़ी है कठिन रीति,
भूलकर नाहीं याकौ बाँधियतु बानौ है ;
ढेल सौ वनाय आप मेलत सभा के बीच,
लोगन कबित्त कीबौ खेल कर जानौ है ।

शिवदत्त चतुर्वेदी (बी० ए०)

× × ×

५. गीत

आ प्रिये ! हिंदोल झूलें।
हिरण्मयि हे ! एक प्याली
में पिएँ, संसार भूलें।

मृदुल पद-पद्मिनि, सुहासिनि !
इस तरह झूला चढ़ाएँ,
स्वर्ग-अप्सरियाँ मुदित कल
कंठ से जय-गान गाएँ।

हम अनंताकाश में
उचकान लें, अव्यक्त छू लें।
पश्चिमा प्राची क्षितिज पर
रम्य प्रभ छवियाँ निहारें,

मिलन-मालाएँ पहन
चिर-विरह की जगती बिसारें।
प्रणय-निर्झर की वहा दें
विश्व में रस-पूर्ण कूलें।

एक हो आधान पीला,
एक ही मुरली मधुर हो;
एकमय हों अधर दोनो,
एक ही मद-सिक्त स्वर हो।
प्रेम-अर्पण में नवल छवि
हृदय-सरसिज सुमन फूलें।

ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु'

× × ×

६. सखी से

सखि ! उमड़-उमड़ घन छाए,
पर निष्ठुर श्याम न आए !
उच्छ्वास बना है आँधी है, आँसू बादल बन आए;
आहों ने टकरा-टकरा जीवन में हैं बरसाए।
सखि ! उमड़-उमड़ घन छाए,
पर निष्ठुर श्याम न आए !
स्मृति ने कह रुदन-कथाएँ, वेदना-गीत ही गाए,
सुधि ली न श्याम ने मेरी, सखि ! भले कर्म-फल पाए !

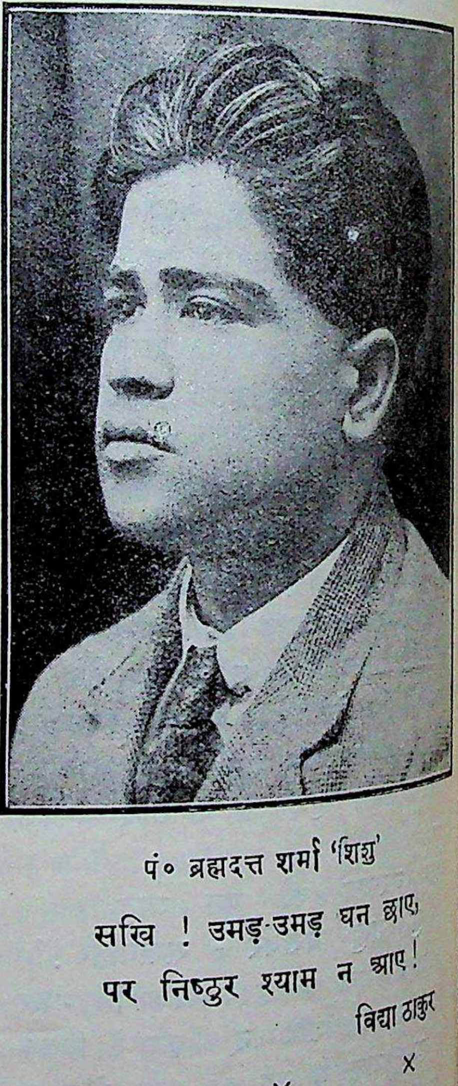

पं० ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु'

सखि ! उमड़-उमड़ घन छाए,
पर निष्ठुर श्याम न आए !

विद्या ठाकुर

× × ×

७. कविवर 'सुहृद्' की कुछ कविताएँ

कविताओं की समालोचना के समय इस वि
पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि कवि ने अ
जीवन के साथ अपनी रचनाओं का कितना साम

रक्खा है। सामंजस्य रखने का तात्पर्य उसकी समालोचना करने से नहीं है, बल्कि जीवन की परिस्थितियों को मिलाकर यह दिखलाने के लिये कि उनके साथ कवि ने अपनी रचनाओं में कितनी भावप्रवणता भरी है। समालोचना का यह ढंग मनोवैज्ञानिक शैली के अनुकूल होने के कारण बहुत ही उपयुक्त है। कविवर 'सुहृद्'जी के संबंध में भी इसी दृष्टि-कोण से एक बार विचार करना चाहिए। 'सुहृद्'जी की वीर-रस की कविताएँ लीजिए। जिन लोगों को कविताओं के अतिरिक्त उनके भावों को जानने का अवसर मिला है, वे निश्चय जानते हैं कि वह वीरतापूर्वक भावों के लिये किसी दूसरे के हृदय को लेकर अभिनय करने नहीं बैठते, वरन् अपने हृदय के भावों की सच्ची अभिव्यक्ति करते हैं—

अयि मातृमूर्ति! तू जाग! जाग!
हैं विकल आज असमर्थ प्राण,
निष्क्रियता की पीड़ा महान,
जड़ता, परवशता, दुख-निधान,
संस्फूर्ति फूँक तू मौन त्याग।
अयि मातृमूर्ति! तू जाग! जाग!
बच्चे ज्वालाओं बीच पलें,
सोएँ, शय्या हो तीव्र शूल,
असि पर चढ़कर चलना सीखें,
खेलें लेकर अंगार - फूल,
गावें प्रलयंकर ध्वंस - राग।
अयि मातृमूर्ति! तू जाग! जाग!

इसे पढ़कर केवल कवित्व पर ही मत रीझिए। इसके साथ उनके जीवन की परिस्थितियों का मिलान भी कीजिए। वह कट्टर देश-भक्त हैं, सत्याग्रही हैं।

कविवर 'सुहृद्'जी एक कवि के अतिरिक्त राजपूत भी हैं। रजपूती ख़ून उनकी नस-नस में किस प्रकार दौड़ रहा है, उनकी यह कविता देखिए—

ये बालू के कण आज जले।
रजपूती राजस्थान, जाग!

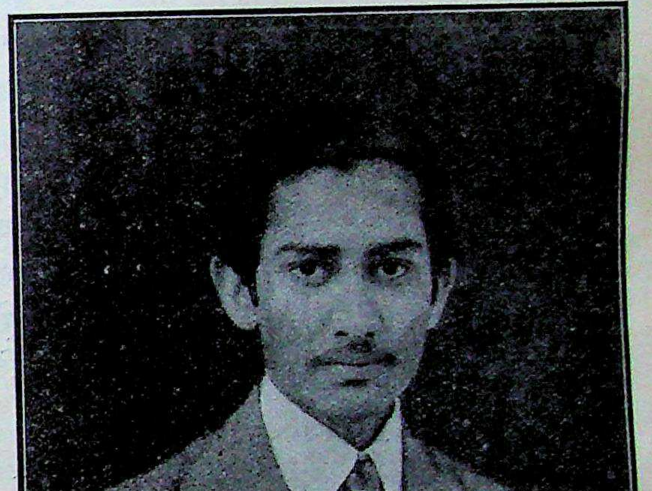

श्रीचंद्रभूषण देव

युग-युग का यह आवरण प्रबल
हट जाय, फटे यह वर्तमान;
सिकता के कण-कण पर चमकें
वैभव की मणि अति ही महान!
गूँजे जीवन का उच्च राग।
रजपूती राजस्थान, जाग!

चित्तौड़ अंग में फिर ले ले
गोरा-बादल-से विपुल बाल ;
इन शुष्क अस्थियों से भभकें
बलि की लपटें अति ही महान।
धधके धरती की कठिन आग।
रजपूती राजस्थान, जाग!

श्रीकपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्'

टूटे नभ का यह निविड़ मौन,
ज्वालामुखियाँ दें दिखा वेश ;
फिर एक बार जय-जय प्रताप
कह अँगड़ाई ले उठे देश।
निष्क्रिय प्राणों का मोह त्याग।
रजपूती राजस्थान, जाग!

वह इस कविता में भारतवर्ष को एक बार फिर से राजस्थानीय गौरव से भर देना चाहते हैं।

कविवर 'सुहृद्'जी अपने देशवासियों को तो जगाना चाहते ही हैं, साथ ही त्रिशूलधारिणी माता को भी त्रिशूल सँभालकर उठने को कहते हैं। इनकी सहायता के विना भारतवासी क्या कर सकेंगे। वह कहते हैं—

उठ, तमक तान अंबे! त्रिशूल।
जीवन की यह जड़ता कराल,
यह जगत वासना में बेहाल,
पापों की ज्वाला-बीच भीष्म
झुलसा-सा यह शुचिता-प्रवाल,
अघ-कीट सेवते विश्व-मूल।
उठ, तमक तान अंबे! त्रिशूल।
सेवाव्रतियों में त्याग नहीं,
प्रणयी में टुक अनुराग नहीं,
शूरों में लज्जा का न लेश,
यतियों में अल्प विराग नहीं,
सबका है आडंबर फ़िज़ूल।
तू जननि, आज उठ, जल्द जाग,
दे लगा सृष्टि में एक आग,
जल जाय पाप, वासना और
जागे कण-कण में प्रेम-राग।
दे पाप हृदय में तीव्र हूल।
उठ, तमक तान अंबे! त्रिशूल।

उनकी करुण-रस-पूर्ण कविताओं में भी पाठक देखेंगे, कितनी विदग्धता है। जैसे उनके हृदय में राष्ट्र को उभाड़ने की शक्ति है, वैसे ही राष्ट्र की दशा पर तरस खाकर आँसू बहाना भी जानते हैं। उनके हृदय में कितनी करुणा है, यह उनकी कविताओं से ज्ञात हो जायगा—

रोते विटप, कुसुम चू पड़ते,
रोता है वारिद अभिराम ;
क्रंदन करता नील गगन,
रोते हैं सरित, समुद्र ललाम।
निशा बहाती अश्रु, भिगोती
कोमल दूर्वादल के गाल ;

व्यथित पिघलते उपल-खंड,
रोता देखो, हिमगिरि बेहाल।
मेरी व्यथा देखकर फूटा
जग से करुणा का उच्छ्वास ;
अरे निठुर ! तेरे अधरों पर
कैसा है यह हास-विलास ?

वीरता और करुणा, दोनो ही के भावों का निर्वाह कविवर 'सुहृद्'जी की कविता में .खूब बन पड़ा है। वास्तव में ये दोनों जीवन के आवश्यक अंग हैं। इन दोनो का काव्य में सफलता से चित्रण करना कवि की कुशल लेखनी का परिचायक है। कविवर 'सुहृद्'जी ने अपनी कवित्व-शक्ति का सुंदर परिचय दिया है। आशा है, भविष्य में 'सुहृद्'जी और परिमार्जित एवं उत्कृष्ट रचनाएँ हिंदी-संसार को प्रदान करेंगे।

श्रीचंद्रभूषणदेव

× × ×

७. मैं क्या हूँ ?

मैं न कविता, मैं न कवि हूँ ;
जानता हूँ कुछ न, कवि हूँ या अ-कवि हूँ।

[१]

प्रेम की मीठी थपकियों का न कुछ आनंद लूटा ;
इस हृदय-पाषाण से न कभी सुधा का स्रोत फूटा।
किसी दुखिया के नयन से
ढुलकता, वह क्षार मैं हूँ ;
मैं न कविता, मैं न कवि हूँ।

[२]

मधुर वीणा को वजाकर शारदा ने गान गाया,
हृदय-तंत्री बज उठी, जब वायु में उन्माद छाया,
तब किसी के करुण स्वर से
टूटता, वह तार मैं हूँ ;
मैं न कविता, मैं न कवि हूँ।

[३]

कला की दुनिया न देखी, भेद छंदों का न जाना ;
कल्पना कोरी रही, अनुभूति का पहना न बाना।
क्षुधा से लिपटी किसी की
चाह का ही खेल मैं हूँ ;
मैं न कविता, मैं न कवि हूँ।

[४]

मंद हासों की किरण में झलकता मसि-बिंदु हूँ मैं ;
सामने दिनमणि दमकता देख निष्प्रभ इंदु हूँ मैं।
मैं न मैं हूँ, हाँ, पुरुष
का प्रकृति के सँग मेल मैं हूँ ;
मैं न कविता, मैं न कवि हूँ।

रमेश वर्मा

× × ×

८. आशा

मेरे नीरव स्वप्न-लोक की ज्योत्स्ना गरिमामयी अपार,
जिसके परिकर में रहता है मानव-जीवन का आधार।
अंधकारमय, दुर्गम पथ की आलोकित रेखा निःशेष ;
दलित, विनिंदित, पीड़ित प्राणी के मानस की साध विशेष।
आहों के तूफ़ान और चीत्कारों की ज्वाला के बीच—
कोलाहलमय भूमंडल की जब विग्रह-माला के बीच—

सुनता नहीं कहीं भी कोई आर्त जनों की करुण पुकार,
आश्रय देती है तब उनको तू ही मूर्तिमयी साकार।
यदि तू हो न, शून्य हो जावे निखिल सृष्टि का अखिल विकास;
जग को शाश्वत बना रहा है सखि! तेरा ही विमल प्रकाश।

(कुमारी) व्रजकुमारी

× × ×

६. चंपा

फूल उठी चंपे की डाली!
हरित पत्र हिल उठे वायु में, लगी गमकने गंध निराली।
फूल उठी चंपे की डाली!

सजल सुमन, तन गौर, सुवासित, कांति स्वर्ण-सी फूट रही है,
हरित सिंधु में तैर रही ज्यों श्वेत-पीत तारों की जाली।
फूल उठी चंपे की डाली!

सुमन-सुमन पर बरस रही हैं नील व्योम से रिमझिम बूँदें;
इन बूँदों के लिये बनी हैं मृदुल-मृदुल फूलों की प्याली।
फूल उठी चंपे की डाली!

प्रिये! तुम्हारे केश-पाश में दो चंपे के फूल लगा दूँ;
स्यात् तुम्हीं से इन फूलों ने रंग और मृदु वास चुरा ली।
फूल उठी चंपे की डाली!

गिरजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

आवश्यकता है

हिंदी या संस्कृत की प्रथमा-पास कुछ ऐसे लड़कों की, जो हिंदी का शॉर्टहैंड (त्वरा-लेखन), टाइपराइटिंग कंपोज़ीटरी सीखना चाहें। हम सिखा देंगे, और अपने ही यहाँ नौकर रख लेंगे। वेतन योग्यतानुसार। आवेदन-पत्र नीचे-लिखे पते पर भेजें—

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

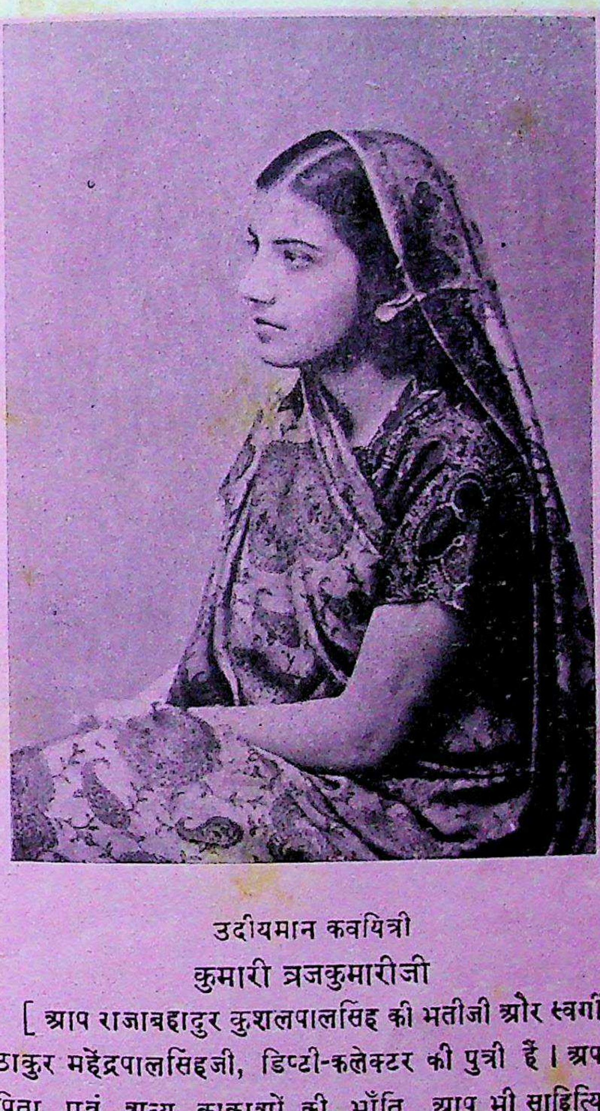

उदीयमान कवयित्री

कुमारी व्रजकुमारीजी

[आप राजाबहादुर कुशलपालसिंह की भतीजी और स्वर्गीय ठाकुर महेंद्रपालसिंहजी, डिप्टी-कलेक्टर की पुत्री हैं। अपने पिता एवं अन्य काकाओं की भाँति आप भी साहित्यिक अभिरुचि - संपन्न हैं। चयन में प्रकाशित 'आशा' - शीर्षक कविता आपकी रचनाओं में से एक है। 'सुधा' आपके सहयोग का स्वागत करती है। कुमारीजी ने इंट्रेंस की परीक्षा गत वर्ष प्रथम श्रेणी में पास की थी, और सब परीक्षार्थियों में प्रथम आई थीं। आपकी शिक्षा-दीक्षा आगरे में, घर पर ही हो रही है। हिंदी-साहित्य को आपसे बड़ी आशा है।]

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

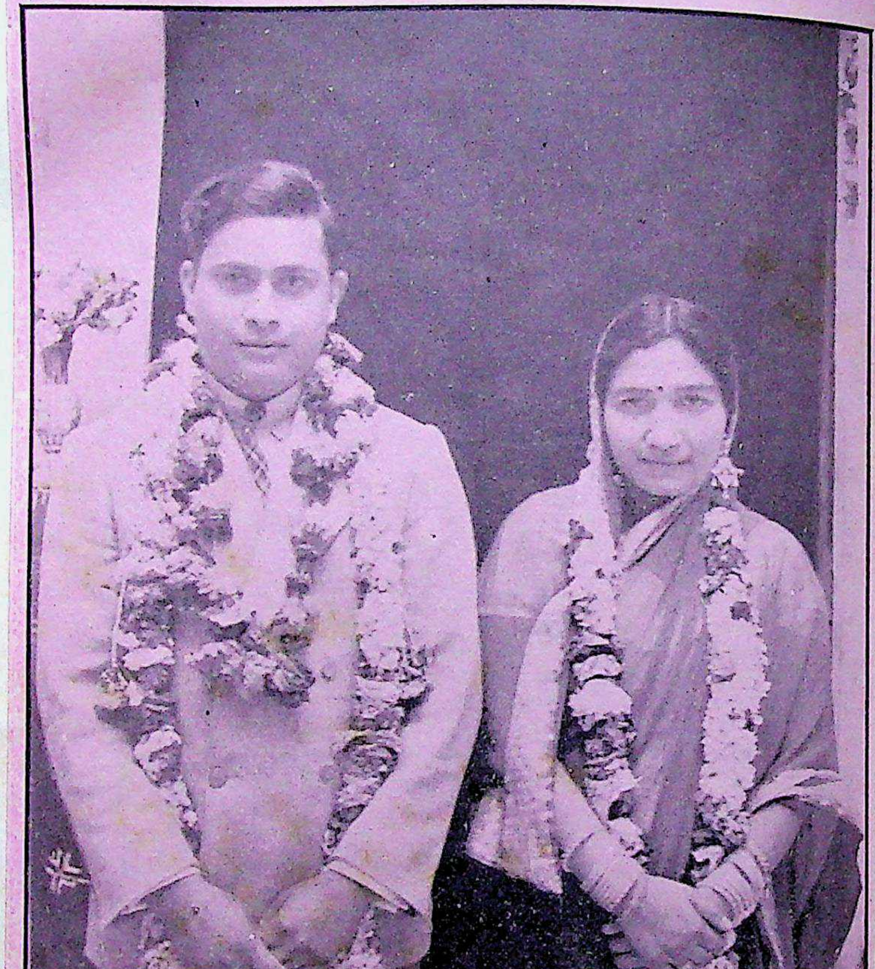

श्रीयुत कैलासचंद्रजी बी० एस्-सी० और श्रीमती कौशल्यादेवी

[श्रीयुत कैलासचंद्रजी रायसाहब श्रीयुत विराटचंद्रजी, रिटायर्ड एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के सुपुत्र हैं। आपकी शादी जाति-पाँति तोड़कर, कृष्णनगर (लाहौर)-निवासिनी श्रीमती केसरादेवी की सुपुत्री कौशल्यादेवीजी से, हुई है। कौशल्यादेवीजी संगीत की अच्छी ज्ञाता और सहृदय कलाकार हैं।]

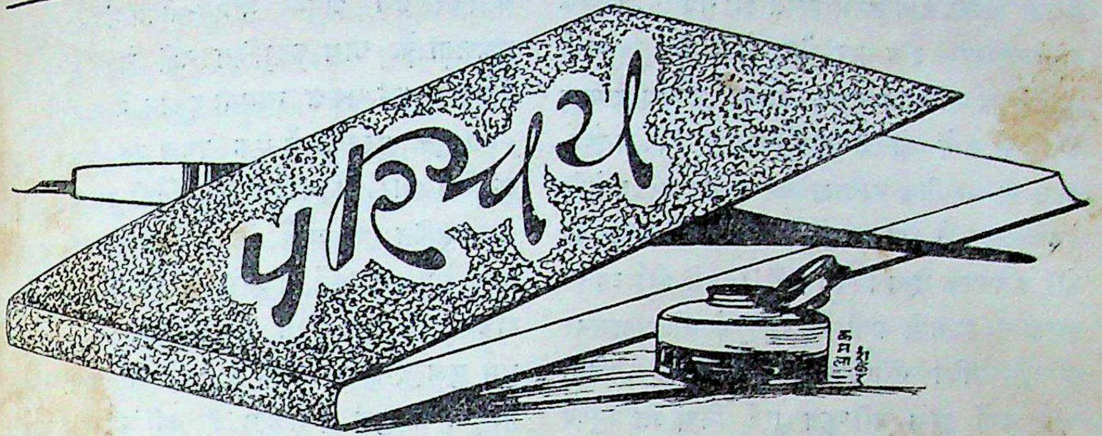

धर्म-मीमांसा (प्रथम भाग)—लेखक, साहित्यरत्न पं० दरबारीलाल न्यायतीर्थ ; प्रकाशक, सत्य-समाज-ग्रंथ-माला-कार्यालय, सत्याश्रम, वर्धा ; पृष्ठ-संख्या ८७, २०× ३०, १६पेजी ; मूल्य ।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रस्तावना एवं अनुरोध के अतिरिक्त सत्य-समाज का प्रवेश-पत्र आरंभ में तथा सत्य-संदेश-नामक पाक्षिक पत्र-विषयक ज्ञातव्य भी दिया गया है। मूल-पुस्तक सत्य-समाज-ग्रंथमाला का प्रथम पुष्प है। समस्त पुस्तक में प्रथम अध्याय के अंतर्गत विवेचनीय विषय का उल्लेख किया गया है। कदाचित् इस ग्रंथमाला के अन्य पुष्पों में शेष प्रतिपाद्य सामग्री का समावेश किया जायगा। प्रथम अध्याय में धर्म का स्वरूप (विविधता-रहस्य), धर्म का उद्देश्य, त्रिविध दुःख, पर-सुख में निज सुख, जगत्कल्याण की कसौटी, सुखी बनने की कला, धर्म-मीमांसा का उपाय, धर्म और सत्य-समाज, सत्य-समाज-संघटना (उद्देश्य), शाखाएँ, शिक्षा-नियम, व्यवस्था-नियम और शंका-समाधान, इन विषयों का लेखक ने अपनी गति-मति के अनुरूप वर्णन किया है।

लेखक महोदय सत्य-समाज-नामक संस्था के प्रवर्तक हैं, कदाचित् इसी कारण से उन्होंने अपने सत्य-समाज के प्रचारार्थ आवश्यक परिचयात्मक बातों का उल्लेख भी पुस्तक में किया है। लेखक महाशय की प्रस्तावना के प्रथम वाक्य—"यह पुस्तिका एक पुस्तक की भूमिका-मात्र है। अधूरी भी है, और पूरी भी।" से प्रतीत होता है कि उन्होंने प्रतिपाद्य मंतव्यों का विस्तार के साथ वर्णन करना चाहा है, जिसका संक्षिप्त तथा अधूरा वर्णन प्रस्तुत पुस्तिका में किया है।

धर्म-मीमांसा-विषय कितना व्यापक और जटिलताओं से परिपूर्ण है, इस मर्म को तो इस क्षेत्र में अनुसंधान करनेवाले भली भाँति जानते हैं। और, यह तत्त्व भी तत्त्वदर्शियों से अप्रकट नहीं कि सत्य एवं अहिंसा के स्वरूप, स्वभाव एवं प्रकृति-प्रदत्त मानव स्वभावान्वित मानव के लिये उनकी उपयोगिता तथा आचरणीय आदि का यथार्थ बोध होना और तद्वत् जीवन निर्माण करना कितना कठिन अथवा सरल अध्यवसाय रहा है। जर्मनी के सुप्रसिद्ध मनीषी ओसवोल्ड स्पेगलर के वचनानुसार (Truth excludes speech) "सत्य वाणी से परे है।" किंतु इसके विपरीत सत्य-समाज के प्रवर्तक महोदय की ऐसी धारणा है कि धर्म से दर्शन का कोई भी संबंध नहीं। और, इस देश तथा अन्यान्य देशों में व्याप्त समाज-भेद, जाति-भेद, धर्म-भेद, संप्रदाय-भेद, राष्ट्रीयता भेद, नर-नारी-भेद, वर्ण-भेद आदि समस्त भेदों को पूर्णतया दूर करके एक सर्व-धर्म-समभावी समाज की स्थापना, सर्वजन-कल्याणार्थ, की जाय। लेखक महोदय के मतानुसार सभी धर्मों अथवा संप्रदायों में अच्छाइयाँ विद्यमान हैं, किंतु कालांतर में परिस्थिति-

भेद से अनेक दोष इनमें उत्पन्न हो गए हैं, जिनके कारण परस्पर द्वेष-भाव पैदा होता है। आपकी सम्मति में सत्य-समाज ही, जिसका उद्देश्य समस्त प्रचलित धर्मों का समन्वय करना है, मनुष्य-जाति का अत्यधिक कल्याण कर सकता है। क्योंकि इसके अनुयायी बननेवालों के लिये किसी प्रकार का कोई प्रतिबंधक ऐसा नियम नहीं, जिससे कोई व्यक्ति इसकी सदस्यता से कभी बहिष्कृत हो सके। इतना ही नहीं, अपितु संसार के अन्यान्य धर्मों, जातियों और वर्गों द्वारा बहिष्कृत एवं निर्वासित मनुष्य सत्य-समाज का एक नैष्ठिक सदस्य बन सकता है। सत्य-समाज के सदस्य तीन प्रकार के होते हैं—(१) नैष्ठिक, (२) पाक्षिक और (३) अनुमोदक। जाति-धर्मादि समस्त प्रचलित प्रतिबंधों से मुक्त (अर्थात् एक प्रकार का व्रात्य) नैष्ठिक, अपने प्रचलित धर्म का पालन करते हुए सत्य-समाज का भी सदस्य रहनेवाला पाक्षिक और केवल सत्य-समाज के उद्देश्यों से सहानुभूति रखनेवाला अनुमोदक कहलाता है।

आचार-विचार-संबंधी उदारता या उच्छृंखलता प्रायः मानव-जीवन में उदासीनता की जननी होती है। इस तत्त्व का भी तत्त्वज्ञ आचार-शास्त्रज्ञों ने समीचीनतया अनुभव करके प्रतिपादन किया है। हमारे देश में भी दीन-इलाही, थियॉसोफ़ी, ब्राह्म-समाज आदि, सर्व-धर्म-साम्यवाद के उद्देश्य से, बड़े-बड़े प्रभावशाली महापुरुषों ने प्रवर्तित किए। वे सभी मत-प्रवर्तक हमारे सम्मान के भाजन हैं। किंतु उन मतों में आस्तिक, नास्तिक, आचारवान्, अनाचारी, उन्नत, पतित, सदाचारी, दुराचारी आदि का ऐसा अद्भुत समन्वय कदाचित् अभिलषित न था, जैसा हमको धर्म-मीमांसा में दिखाया गया है। हमारे देश में तथा अन्य देशों में पंचायती धर्मों के इतिहास ने भी हमको यही शिक्षा दी है कि एक महान् उद्देश्य को साइनबोर्ड-मात्र बनाकर हम अपनी मानव-जीवन-संबंधी दूकान सफलता के साथ कदाचित् नहीं चला सकते जब तक तदनुरूप सकल सामग्री दूकान में न हो।

प्रस्तुत पुस्तक में एक स्थल पर आता है कि सत्यदेव और अहिंसादेवी की मूर्तियाँ बनाकर मंदिर में स्थापित की जायँ, और सत्य-समाजी उनकी पूजा-उपासना करें, जिससे समस्त भेद-भाव दूर होकर सर्वधर्म-संबंधित मानव-समाज बन सके। धर्म सुख देने के लिये है। जो अधिक-से-अधिक मानवों को सुख दे सकता है, वही धर्म है। हमारी जो मर्ज़ी है, वही सत्य, अहिंसा और धर्म है, और उसी से मानव-जाति का कल्याण है, ये सब तत्त्व और तदनुरूप ही मानव-स्वभाव यदि बन जाय, अथवा सत्य-समाजी होने से बन जाता हो, तो क्या ही अच्छा है! तथापि, संभव है, आदर्शवादिता या नवीनता के एकांत पुजारियों के लिये इस पुस्तक में अनेक ग्राह्य तत्त्व प्राप्त हो सकें।

स्थानाभाव से इस पुस्तिका में प्रतिपादित अनेक धर्म-तत्त्व-संबंधी उपपत्तियों का गंभीर एवं विस्तृत विवेचन नहीं किया गया है। किसी स्वतंत्र लेख में किया जायगा। धार्मिक विषयों में अभिरुचि रखनेवाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को एक बार यह पुस्तिका गंभीरता के साथ अवश्य पढ़ने की चेष्टा करनी चाहिए।

रामदत्त शुक्ल

× × ×

ग्राम-गीतांजलि—लेखक, श्रीयुत 'चंचरीक'; प्रकाशक, सेवा-पुस्तकालय, पो० भैंसा बाज़ार, गोरखपुर; मूल्य १); पृष्ठ-संख्या २४०; काग़ज़ रफ़; कवर प सुंदर रंगीन चित्र।

इस समय इस बात की बहुत ज़रूरत है कि स्त्री-समाज में प्रचलित गीतों का सुधार और उपदेश-प्रद ग्राम्य गीतों का प्रचार किया जाय। विवाह आदि अवसरों पर जो गीत स्त्रियों द्वारा गाए जाते हैं, वे बहुत भद्दे और कोई-कोई तो

बहुत अश्लील होते हैं, जिन्हें सुनकर पुरुष-समाज लज्जित हो जाता है ! यह एक बहुत भारी त्रुटि है, जिसकी पूर्ति समालोच्य पुस्तक पूर्ण रूप से करती है । 'चंचरीक'जी का यह शुभ प्रयत्न प्रशंसनीय है ।

इस पुस्तक में विशुद्ध राष्ट्रीय तथा सामाजिक भावनाओं से पूर्ण ग्राम्य गीतों का संग्रह है । राष्ट्रीय गारी, ग्राम-सुधार की गारी, आदर्श गीत, मेले के गीत, विवाह के गीत, हिंडोले के गीत, जनेऊ के गीत, सोहर आदि २५ विषयों पर उत्तमोत्तम गीत हैं । युक्त-प्रांत के गाँवों में बोली जानेवाली भाषा में लिखे गए ये गीत स्त्रियों के लिये विशेष रूप से उपयोगी हैं । आशा है, देहातों में घर-घर इस पुस्तक का अच्छा प्रचार होगा । पुस्तक की छपाई-सफ़ाई मनोमोहक है ।

पाठकों के मनोरंजनार्थ यहाँ हम एक गीत उद्धृत करते हैं—

कब ब्रजनाथ भारत में आएँगे ?
कब अइहैं कन्हैया, कब अइहैं कन्हैया,
हमरी नगरिया में अइहैं जी ।
कब अइहैं जदुरैया, कब अइहैं जदुरैया,
गीता-सुराज कै पढ़इहैं जी ।
कब अइहैं ब्रजरैया, कब अइहैं ब्रजरैया,
बँसिया-सुराज कै बजइहैं जी ।
कब सुनिहैं अरजिया, कब सुनिहैं अरजिया,
भारत-दुख बिनसइहैं जी ।

'श्री०'

× × ×

कवितावली (तुलसी-कृत)—संपादक, श्रीयुत माताप्रसाद गुप्त एम्० ए०; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग; प्रथम संस्करण ।

कवितावली तुलसीदासजी का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है । उसकी टीकाएँ और संपादन अनेक बार हो चुका है । प्रस्तुत ग्रंथ भी उन्हीं की कोटि में सम्मिलित हो जाता है । इसमें कोई विशेषता नहीं दिखाई देती । इससे पहले कवितावली के अच्छे संस्करण निकल चुके हैं । ग्रंथ के आरंभ में महाकवि तुलसीदासजी का संक्षिप्त परिचय और कुछ पदों का काव्य-सौंदर्य दिखाया गया है । अंत में एक काम-चलाऊ कोष भी दिया गया है । यह साधारण पाठकों के लिये उपयोगी हो सकता है ।

× × ×

कबीर-पदावली—लेखक, श्रीरामकुमार वर्मा एम्० ए०; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग; प्रथम संस्करण ।

कबीर की रचनाएँ विलक्षण हैं । उनमें दार्शनिकता कूट-कूटकर भरी है । उसका समझना हर-एक की सामर्थ्य के बाहर है । विचार-धारा भी टेढ़ी है । साधारण मनुष्यों की उसमें पैठ नहीं हो सकती । श्रीरामकुमारजी ने, मालूम होता है, कबीर का अध्ययन ख़ूब किया है । कबीर-पदावली की भूमिका इसका प्रमाण है । इसके अंतर्गत कबीर का जीवन-वृत्त, महत्त्व तथा धार्मिक सिद्धांत पांडित्य-पूर्ण है । कबीर की दार्शनिकता और विचार-धारा बड़े सरल ढंग से स्पष्ट की गई है । कबीर को भली भाँति समझने के लिये यह पुस्तक एक अच्छा साधन है ।

भूमिका के बाद मूल-पुस्तक में विषयानुसार पदों का विभाजन किया गया है । इससे भावों को समझने में बड़ी सहायता मिलती है ।

अंत में एक रूपक-कोष भी है, जो पदों को और भी सुबोध बना देता है ।

× × ×

निरंकुशता-निदर्शन—लेखक, श्रीजगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी; प्रकाशक, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ; द्वितीयावृत्ति; मूल्य ।।।)

समालोचना साहित्य का एक अंग है । उसका परिपुष्ट होना साहित्य के विकास का लक्षण है । इसी भावना से प्रेरित होकर, कोई पचीस वर्ष हुए, पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ने 'सरस्वती' में अनेक समालोचनाएँ प्रकाशित कीं । उन्होंने 'कालिदास की

निरंकुशता' के नाम से अनेक लेख प्रकाशित किए, जिनमें कालिदास की कविता के गुण-दोषों पर विचार प्रकट किए गए थे। द्विवेदीजी के विचार संगत थे या असंगत, इस पर सम्मति प्रकट करने का यहाँ अवसर नहीं, पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उनकी शैली शिष्ट और परिमार्जित थी।

द्विवेदीजी के लेखों से कुछ संस्कृत-विद्वानों को कष्ट हुआ। वे कालिदास पर आक्षेप न सह सके। चतुर्वेदीजी (पं० जगन्नाथप्रसाद) मनसाराम के भेष में द्विवेदीजी से भिड़ गए। लेख-पर-लेख निकलने लगे। चतुर्वेदीजी संस्कृत के पंडित और हास्यरस के अवतार हैं ही, द्विवेदीजी को चुटकियों पर ले उड़े। प्रस्तुत ग्रंथ में उन्हीं के प्रत्यालोचनात्मक लेखों का संग्रह है। साहित्य-प्रेमियों को इसे अवश्य देखना चाहिए। उनको विदित हो जायगा कि हिंदी में कैसी आलोचना और प्रत्यालोचना होती थी। पुस्तक के अंदर मनोरंजन के लिये काफ़ी सामग्री है। हाँ, यह कह देना चाहता हूँ कि विनोद की मात्रा कहीं-कहीं अशिष्टता तक पहुँच गई है।

पाठकों की सुविधा के लिये द्विवेदीजी का लेख भी पुस्तक के अंदर दे दिया गया है। आलोचना और प्रत्यालोचना को एक साथ पढ़कर साहित्य-सेवियों को पूरा आनंद मिलेगा।

× × ×

सती कएणकी—लेखक, डॉक्टर गोपालनाथ 'दया'; प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग ; प्रथम संस्करण।

हिंदी राष्ट्र-भाषा है। इसका जितना प्रचार हो, उतना ही देश के लिये हितकर है। पर इसके पाठकों का देश के अन्य साहित्यों से परिचित होना भी आवश्यक है। इससे ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ परस्पर सहृदयता भी बढ़ेगी। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत ग्रंथ लिखा गया है। इसमें तामिल के एक प्रसिद्ध महाकाव्य शिलप्पधिकारम की कथा का भावानुवाद है। कथा पौराणिक ढंग पर लिखी हुई है, पर रोचक और शिक्षाप्रद है।

डॉ० गोपालनाथजी दक्षिण-निवासी हैं, और यह कृति उनका प्रथम प्रयास है। उन्होंने भूमिका में त्रुटियों के लिये क्षमा भी माँगी है, पर यह कहा जा सकता है कि डॉक्टर साहब के ग्रंथ में भाषा-संबंधी त्रुटियों का अभाव है। कहानी रोचक है, उसके आगे त्रुटियों की ओर ध्यान भी नहीं जाता।

× × ×

कलियुगी कुबेर—लेखक, विद्याभूषण पं० मोहन शर्मा विशारद ; प्रकाशक, चाँद-प्रेस लिमिटेड, प्रयाग ; प्रथम संस्करण ; मूल्य १।)

यह ग्रंथ संसार-प्रसिद्ध ग्यारह वैदेशिक व्यापारियों के शिक्षाप्रद जीवन-चरित्रों का संग्रह है। इसमें हेनरी फ़ोर्ड, लॉर्ड लेमर ह्युलम, लिप्टन, चार्ल्स आर० वायलग्रीन, थॉमस बाटा, लॉर्ड केबल, हेनरी डिटारडिंग, थॉमस बीचम, बर्नार्ड क्रोगार, राकफ़ेलर और डब्ल्यू० एल्० डेसनयार्स की जीवनियाँ दी गई हैं। फ़ोर्ड की मोटरें, ह्युलम का सनलाइट साबुन, लिप्टन की चाय, बाटा के जूते दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक प्रसिद्ध हैं। इनके व्यापारियों ने किस तरह अपने साधारण जीवन या अपनी थोड़ी पूँजी से संसार में ख्याति प्राप्त की, यह ध्यान देने योग्य है। विद्यार्थियों और बेकारों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। व्यापारियों के लिये भी इसमें काफ़ी मसाला है। वे देखेंगे, विदेशी व्यापारी किस तरह अपने रोज़गार को समुन्नत बनाते हैं।

लेखक ने यत्र-तत्र अपनी सम्मतियाँ भी दी हैं, जिनसे पाठकों को विषय की महत्ता समझने में सहायता मिलती है। उसकी शैली तथा भाषा भी सराहनीय है।

ग्रंथ रावराजा सर सेठ हुकुमचंदजी को समर्पित किया गया है, जो सर्वथा उचित और संगत है।

× × ×

लाला देवराज—लेखक, श्रीसत्यदेव विद्यालंकार; प्रकाशक, श्रीजगन्नाथजी वकील, मंत्री मुख्य सभा, कन्या-महाविद्यालय, जालंधर ; मूल्य १)

लाला देवराजजी पंजाब के प्रसिद्ध पुरुष थे। जालंधर का विख्यात कन्या-महाविद्यालय उनका ही स्थापित किया हुआ है। प्रस्तुत ग्रंथ उनकी ही स्मृति में लिखा गया है, इसमें कोई शक नहीं। उन्होंने देश के हित के लिये अनेक कार्य किए, जिनमें स्त्री-शिक्षा का प्रचार विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनका चरित्र आदर्श तथा अनुकरणीय है। लेखक ने लिखा भी ख़ूब है। भाषा पर उसका पूर्ण अधिकार है, और शैली सरल तथा रोचक है। देवराजजी की डायरी से उद्धृत किए गए अंश पुस्तक के अंदर जान डाल देते हैं। ऐसा मालूम होता है, देवराजजी सम्मुख ही उपस्थित हैं। लेखन-कला सर्वथा सराहनीय है।

श्री०

× × ×

वन-बाला—लेखक, श्रीनगेंद्र एम्० ए०; प्रकाशक, महेंद्र, संचालक साहित्य-रत्न-भंडार, सिविल लाइंस, आगरा; मूल्य ॥)

यह संग्रह लेखक की स्फुट १५ कविताओं का है। अंतिम कविता 'वन-बाला' है। वही इस पुस्तक का नाम भी रक्खा गया है।

नगेंद्रजी हिंदी के नवीन, सुंदर कवि हैं। उनका यह संग्रह यद्यपि छोटा है, परंतु फिर भी उसमें पूर्ण प्रतिभा के दर्शन मिलते हैं। उनकी 'वन-बाला' नाम की प्रणय-कहानी तथा अन्य कविताएँ सुंदर एवं सरस हैं। कहीं-कहीं तो उन्होंने बड़ी मार्मिक पंक्तियाँ लिखी हैं। नमूने के तौर पर यहाँ कुछ उद्धृत की जाती हैं। देखिए—

आ सखि! तुझको गीत सुनाऊँ।
इस चंदा की उजियारी में सुख के गाने गाऊँ।
निद्रा-मग्न हुई है दिन-श्री
मुख पर खींच फेन-सा अंचल;
नभ के गहन क्रोड़ में नीरव
सोई श्रांत जगत की हलचल।
तेरी स्वर्ग-समान गोद में आ मैं भी सो जाऊँ।
आ सखि! तुझको गीत सुनाऊँ।

कवि में आंतरिक करुणा भी है। वह कहता है—

ऊपर नील गगन है मेरा,
नीचे है वसुधा की धूल;
सूने में बैठा तप करता
बरसाकर आँसू के फूल।
धूल उड़ी फिरती, मच जाती नभ में मेघों की क्रीड़ा,
करती नृत्य मथित लहरों पर तब मेरी आकुल पीड़ा।

अंत में वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है—

छू सका कौन शून्य के अंग,
जा सका कौन क्षितिज के पार;
विगत की कौन कर सका खोज,
अरे निष्ठुर, असार संसार!

इस प्रकार नगेंद्रजी की रचनाओं में सर्वत्र सौंदर्य मिलेगा।

उनकी भाषा भावों के अनुरूप है। आशा है, भविष्य में नगेंद्रजी और भी मौलिक रचनाएँ लिखकर अपनी लेखनी को अधिक प्रौढ़ बनाएँगे। काव्य-प्रेमियों को उनकी इस पुस्तक का समुचित आदर करना चाहिए।

× × ×

भग्न वीणा—लेखक, श्रीरामदेनी तिवारी 'द्विजदेनी' एम्० एल्० ए०; प्रकाशक, श्रीरमानिधि चतुर्वेदी, साहित्य-सदन, फ़ीरोजाबाद, आगरा; मूल्य ॥।)

इस पुस्तक में 'द्विजदेनी'जी की छोटी-छोटी ६४ कविताओं का संग्रह है। प्रारंभ में श्रीगुलाबराय एम्० ए० ने संक्षिप्त भूमिका लिखी है। लेखक ने बाद में 'अपना निवेदन' देकर इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य प्रकट कर दिया है। वह

भावुक प्रतीत होता है। उसका हृदय दीनों, दलितों तथा पीड़ितों की दयनीय दशा से द्रवित होकर, कविता की करुण स्रोतस्विनी होकर बह निकला है। उसकी कुछ तरंगों में पाठक स्वयं मज्जन करें। देखिए, उनमें कितना आवेग है—

सुखिया के आगे दुखिया
की है क्या करुण कहानी ?
पत्थर भी कभी पिघलकर
क्या बन सकता है पानी ?

❀ ❀ ❀

है जीवन-इतिहास उसी का,
सुख से जो जीता है ;
कौन पूछता उसे, विश्व-वैभव
से जो रीता है ?

❀ ❀ ❀

सगुण रूप जल-पूर्ण घड़ा है ;
असगुण घट है ख़ाली ;
जीवन के संग्राम-क्षेत्र की
है सब छटा निराली।

और भी देखिए—

विपदाओं की करते बीता
जीवन-भर अगवानी ;
आग हृदय की बुझा रही हैं
आँखें भर-भर पानी।
चलता-फिरता एक चित्र हूँ,
जिसकी कल्पित काया।
इस प्रकार मैं बना हुआ हूँ
अपनी आप कहानी।

दुखिया के आँसुओं का भी मूल्य पाठक स्व अंकित करें—

दुखियों के दुख के आँसू का
होता है क्या दाम ?
किससे पूछूँ, कौन बतावे,
तुम्हीं कहो हे राम !

❀ ❀ ❀

दुख-दावानल-दग्ध हृदय से
द्रवित-द्रव्य-निर्झरिणी
बरसाती है मोती-बूँदें,
ले लेती है धरिणी।

अधिक उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं। आशा है, पाठक इतने ही से पुस्तक की सुंदरता समझ जायँगे। देश-प्रेमियों को यह पुस्तक अवश्य देखनी चाहिए।

'उमेश'

"……जब वह गाड़ी में उसे उतारने के लिये झुके थे, तब उनका मुख पद्मा के मुख के अत्यंत निकट आ गया था, और पद्मा उनकी साँसों को अपने कपोलों पर स्पर्श कर रही थी। यह जीवन में एक अत्यंत सुखकर अनुभव था। उसका हाथ सेठजी के हाथ में था। उसके मन में आया कि वह उठे न, और लक्ष्मीचंद उसे बल-पूर्वक उठाएँ, तथा उनकी बलिष्ठ बाँहों में इस प्रकार आबद्ध होने का मज़ा ले, पर उनकी साँस का स्पर्श होते ही उसके शरीर में रोमांच-सा हो आया……।"

फिर क्या हुआ ?

जानने के लिये क्रांतिकारी उपन्यास 'जागरण' मँगाकर पढ़िए। मूल्य २)

पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

कुसुम

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'डिक्टेटर' (नाटक)—लेखक, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ; मूल्य ।।)

(२) 'प्रसादजी की कला' (आलोचना)—लेखक, श्रीगुलाबराय एम्० ए० ; मूल्य ।।।)

(३) 'संसार-चक्र' (उपन्यास)—लेखक, श्रीदुर्गाप्रसाद खत्री ; मूल्य ।।=)

(४) 'अनंत के पथ पर' (काव्य)—लेखक, श्रीहरीकृष्ण 'प्रेमी' ; मूल्य १)

(५) 'दुविधा' (नाटक)—लेखक, श्रीपृथ्वीनाथ शर्मा ; मूल्य ।।)

(६) 'शतश्लोकी' (वेदांत)—लेखक, श्रीपं० रामावतार विद्याभास्कर ; मूल्य ।=)

(७) 'रस और अलंकार' (साहित्य)—लेखक, श्रीपं० रामबहोरी शुक्ल ; मूल्य ।।।=)

(८) 'गल्प-संसार-माला' (कहानी)—संपादक, श्रीपतराय ; मूल्य ।।)

(९) 'मानसरोवर' (३ भाग, कहानी)—लेखक, स्व० श्रीप्रेमचंद ; मूल्य २।।)

(१०) 'महकते मोती' (कहानी)—लेखक, श्रीपं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न ; मूल्य ।।)

(११) 'चरित्र-चंद्रिका' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीपं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न ; मूल्य ।।।)

(१२) 'खोज के पथ पर' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, श्रीचक्खनलाल गर्ग एम्० ए०, एल्० टी० ; मूल्य १)

(१३) 'सुभाषचंद्र बोस' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीहरिकृष्ण त्रिवेदी ; मूल्य ।।)

(१४) 'सप्तदीप' (निबंध)—लेखक, डॉ० श्रीरघुवीरसिंह डी० लिट्० ; मूल्य १।।)

(१५) 'उद्यान-शास्त्र' (कृषि)—लेखक, श्रीबैजनाथप्रसाद यादव ; मूल्य १।।=)

(१६) 'फलों तथा साग-भाजियों की खेती' (कृषि)—लेखक, श्रीबैजनाथप्रसाद यादव ; मूल्य १।)

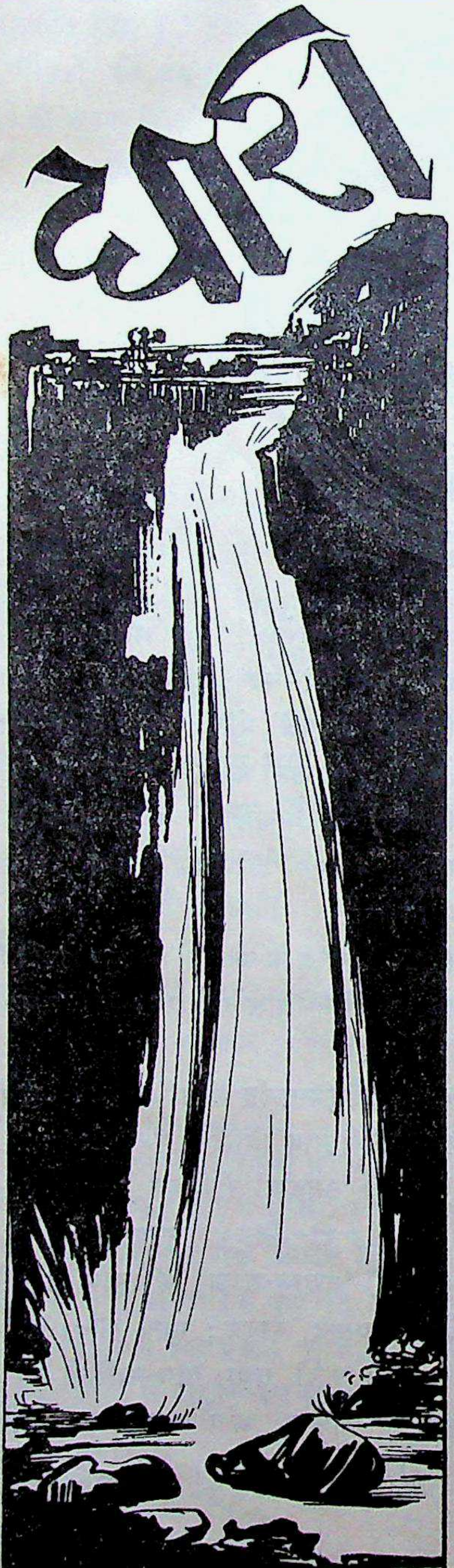

१. हमारी दासता का मूल-कारण कुछ और है

श्रीयुत जयचंद्रजी विद्यालंकार का 'हम ग़ुलाम क्यों हैं ?' शीर्षक लेख अन्यत्र छपा है। लेख महत्त्व-पूर्ण है, इसलिये हमने उसे अग्रलेख के रू में छापा है। उसमें आपने भारत की दासता के कारण बतलाने की चेष्टा की है। परंतु, हमारी सम्मति में, जिन्हें वे दासता के कारण समझते हैं, वे वास्तव में कारण नहीं, वरन् किसी दूसरे कारण के परिणाम हैं। श्रीजयचंद्रजी ने मूल-कारण तक पहुँचने का प्रयत्न नहीं किया। आप लिखते हैं—

"पर्दा है विदेशी भाषा, विदेशी प्रमाण-पत्रों और उपाधियों के मोह का। क्षीणता है विदेशी ठप्पे के बिना अपने ऊपर भरोसा न कर सकने की, स्वयं अपनी आँख से न देख सकने की। इस क्षीणता का ही दूसरा नाम है दिमाग़ी ग़ुलामी। और, सच पूछिए, तो यही हमारी राजनीतिक और आर्थिक ग़ुलामी की जड़ है।"

अब प्रश्न होता है कि विदेशी भाषा और विदेशी प्रमाण-पत्रों एवं उपाधियों के मोह का पर्दा तो अब हुआ है, परंतु हमारी राजनीतिक दासता का आरंभ तो अबुलक़ासिम के सिंध-नरेश दाहर पर आक्रमण करने के समय से ही हो जाता है। उस समय तो विदेशी भाषा और विदेशी प्रमाण-पत्रों का मोह न था। न उस समय लोग विदेशी ठप्पे के लिये लालायित थे। राजपूत वीर होते हुए भी मुसलमानों से क्यों हारते रहे ? हम सभ्यता और संस्कृति में उच्च होकर भी बर्बर मुग़लों और तातारियों को पराजित क्यों न कर सके ? उस समय तो यहाँ न फ़ारसी शिक्षा की माध्यम थी, और न अँगरेज़ी। लोग भाषा में ही सब कुछ लिखते-पढ़ते और सोचते थे। वरन् उन्हें अपने पुरखों और तत्कालीन विद्वानों की विद्या पर इतना अभिमान था

कि वे विदेशियों से अपनी योग्यता का प्रमाण-पत्र लेना तो दूर, किसी विदेशी को विद्वान् मानने को भी तैयार न थे। अलबेरूनी ने हिंदुओं के संबंध में इस बात की शिकायत भी की है। इस कारण मानना पड़ेगा कि हमारी राजनीतिक और मानसिक दासता के कारण कुछ और हैं। आप आगे लिखते हैं—

“हमारे अंदर राजनीतिक चैतन्य और राष्ट्रीयता का अभाव होना तथा हमारे राजनीतिक संघटन का शिथिल होना हमारी ग़ुलामी का दूसरा कारण कहा जाता है।”

अब राजनीतिक चैतन्य और राष्ट्रीयता का अभाव भी किसी कारण के ही परिणाम हैं, स्वयं कारण नहीं।

फिर लिखा है कि ड्यूमा-नामक फ्रांसीसी ने देखा कि—“भारतवासियों में वह आत्माभिमान या वह ग़ैरत नहीं, जिससे उन्हें भाड़े के सिपाही बनकर अपने ही भाइयों पर गोली दाग़ने में कोई झिझक हो। साथ ही वे जाग्रत् ज्ञान-पिपासा और महत्त्वाकांक्षा से भी इतने शून्य हैं कि उन्हें यदि योरप की नई समर-कला का थोड़ा परिचय दे दिया जायगा, तो उससे आगे बढ़कर उस ज्ञान की जड़ तक पहुँचने और उसका उस्ताद बनने की उन्हें कोई उत्सुकता न होगी। सार यह कि उनमें वे सब गुण हैं, जिनसे वे दूसरे के उपयोगी हथियार बन सकें, पर ऐसा एक भी गुण नहीं, जिससे स्वतंत्र कर्ता बन सकें।”

हमारे स्वतंत्र कर्ता न बन सकने का भी कारण है। और, वह विदेशी शासकों का प्रभाव नहीं कहला सकता; क्योंकि हममें यह कर्तृत्व-शक्ति तभी नष्ट हो चुकी थी, जब विदेशियों का राज्य नहीं हुआ था।

श्रीजयचंद्रजी ने दो-एक घटनाएँ लिखी हैं, जिन पर विचार करने से वह हमारी सब प्रकार की दासता के मूल-कारण पर पहुँच सकते थे, परंतु उन्होंने कदाचित् अधिक गहरे जाने का कष्ट नहीं किया। वह लिखते हैं—

१. राजपूतों की जिस वीरता की बड़ी प्रशंसा की जाती है, वह प्रायः सदा रक्षापरक युद्धों में ही प्रकट हुई। वह अपना अंत निकट देखकर मरने-मारने पर उतारू हुए मनुष्य की अंतिम निराशा की वीरता होती थी। रक्षापरक वीरता केवल भौतिक वीरता है, मानसिक वीरता नहीं। उसमें वह पराक्रम, वह हिम्मत, वह ऊँची कल्पना, वह विशाल दृष्टि नहीं रहती, जो मनुष्य को नए देश खोजने, जीतने और नई ज़िम्मेदारियाँ उठाने को प्रेरित करती है। इसीलिये महमूद, शहाबुद्दीन, अलाउद्दीन और बाबर की वीरता तथा पृथ्वीराज और साँगा की वीरता में बड़ा अंतर है।

२. जो सामरिक पराक्रम, महत्त्वाकांक्षा और कर्तृत्व बड़े-बड़े राजपूत न दिखला सके, उससे भी बढ़कर सामरिक पराक्रम गुजरात के एक हिंदू चमार (ढेड़) में, उसके मलिक काफ़ूर बन जाने पर, जाग्रत् हो उठा।

३. सूरत के बंदरगाह पर उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ तक जो जहाज़ बनते थे, वे योरपियन जहाज़ों से अधिक मज़बूत होते थे। योरपवाले उन जहाज़ों को ख़रीद ले जाते थे। लेकिन उन जहाज़ों से संसार के समुद्रों के मार्ग नापना और उन पर अधिकार करना योरपियनों को ही सूझता था, हमें नहीं।

४. तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी के नैष्ठिक हिंदू के लिये बरस-भर में करने को स्मृतिकारों ने क़रीब दो हज़ार व्रतों, पूजाओं और अनुष्ठानों का विधान किया है। वैसी मनोवृत्ति के लोग तुर्कों-जैसी एक जीवित, उमंगोंवाली, तरुण जाति का सामना कैसे कर सकते थे?

५. मध्य काल में कुलीन हिंदुओं की धार्मिक नफ़ासतों, आडंबरों और संकीर्णताओं के कारण

समाज के निचले दर्जों के अन्य लोगों की तरह हमारे नाविक भी सब मुसलमान हो गए।

उपर्युक्त सब बातों अथवा भारत की दासता का मूल-कारण एक ही है। और, वह है हिंदुओं की सदोष सामाजिक व्यवस्था। हमारी सामाजिक व्यवस्था में दोष आ जाने से ही हम पराधीन हुए हैं। हमारा वर्ण-भेद या जाति-पाँति ही हमारे पतन का मूल-कारण है। आइए, तनिक इस पर विचार करें।

जाति-भेद-रूपी राक्षस के चार पैर हैं -- रोटी-बंदी, बेटी-बंदी, व्यवसाय-बंदी और सिंधु-बंदी। हमारे नाविकों को मुसलमान होने की इसीलिये आवश्यकता थी, क्योंकि हिंदू रहते हुए वे सागर-यात्रा न कर सकते थे। इसी कारण हमारे बनाए जहाज़ों से दूसरे लोग फ़ायदा उठाते थे, पर हम आप उनका उपयोग न कर सकते थे।

जाति-भेद के कारण एक वर्ण का मनुष्य दूसरे वर्ण का काम नहीं कर सकता। चमार के घर में जन्म लेनेवाले लड़के के लिये अपना परंपरागत व्यवसाय करना—जूते बनाना और मरे ढोरों की खाल उतारना—ही आवश्यक है, चाहे उसकी रुचि और प्रवृत्ति उसमें हो, चाहे न हो। वह अपने बाप-दादे का काम छोड़कर सेना का सेनापति, कॉलेज का प्रिंसिपल या हलवाई नहीं बन सकता। अपनी रुचि और प्रवृत्ति के अनुसार काम करने का जब तक सुबीता न हो, मनुष्य की प्रतिभा और महत्त्वाकांक्षा जाग्रत् नहीं होती। इसीलिये गुजरात के हिंदू ढेड़ को मलिक काफ़ूर बनना पड़ा। हिंदू चमार रहते हुए वह कभी सेनापति या राजा न बन सकता। राजपूतों ने अपने से नीच जाति के मनुष्यों की सेना में भरती होने से इसलिये इनकार किया कि वे उच्च वर्ण के क्षत्रिय होकर नीच वर्ण के लोगों के अधीन काम करना अपना अपमान समझते थे। परंतु इन्हीं जन्माभिमानी क्षत्रियों को मुग़लों की नौकरी करने में तनिक भी लज्जा का अनुभव न हुआ।

वर्ण-भेद एक क्रमिक अछूतपन है। इसमें ब्राह्मण से लेकर भंगी तक सब एक दूसरे के लिये अछूत हैं। अंतर केवल अंश का है। कोई कम अछूत है, और कोई ज़्यादा। मालवीय ब्राह्मण केवल मालवीय ब्राह्मण के यहाँ ही रोटी-बेटी-व्यवहार कर सकता है, और ब्राह्मणों के साथ भी नहीं। किसी-किसी ब्राह्मण का क्षत्रिय के यहाँ रोटी-व्यवहार हो सकता है, पर बेटी-व्यवहार नहीं। फिर वैश्य के साथ उसका रोटी-व्यवहार भी नहीं। उसकी वह केवल पक्की रसोई ही खा सकता है, कच्ची नहीं। शूद्र की रसोई तो वह खा भी नहीं सकता, और अछूत के साथ छूने से भी वह भ्रष्ट हो जाता है। इसलिये भंगी तो अछूतपन का अंतिम सिरा है, जहाँ जाति-भेद का विष नासूर बनकर बह रहा है। इस तरह सारा हिंदू-समाज अछूत है। जिस समाज में एक दूसरे के प्रति ऐसा दुर्भाव हो, जिसमें रोटी-बेटी-व्यवहार का निषेध हो, जिसमें एक दूसरे के प्रति ऊँच-नीच का भाव हो, उसमें संगठन कैसे हो सकता है! और, जहाँ संगठन नहीं, वहाँ दासता अनिवार्य है।

भारत की मध्ययुगीन सामाजिक अवस्था पर टिप्पणी करता हुआ एक पश्चिमी विद्वान् कहता है—

"A land thus socially atomised and politically split up into many principalities was clearly predestined to fall before the first strong invader. This invader was Islam. Beginning with border raids Moslem attacks culminated in a series of great invasions.........The Moslem invaders enjoyed two notable advantages: they were fanatically united against Hindus, whom they loathed as worshippers of idols, and they made many converts among the native population. The very opposite of Hinduism, Islam, with its doctrine that all believers are brothers, could not fail to attract multitudes of low castes and out-castes, who by conversion to Islam might rise to the status of the conquerors. This is chief reason why the Mohammadans of India to-day number nearly 78,000,000"—*Clashing Tides* of *Colour* by Lothrop Stoddards, Pp. 285-286.

अर्थात् "जो देश सामाजिक रूप से इस प्रकार छिन्न-भिन्न हो रहा हो, और राजनीतिक रूप से छोटे-छोटे रजवाड़ों में बँटा पड़ा हो, उसके भाग्य में पहले ही प्रबल आक्रमणकारी के सामने पराजित हो जाना पहले से ही लिखा गया था। यह आक्रमणकारी इस्लाम था। मुसलमानों को दो फ़ायदे थे। वे हिंदुओं के विरुद्ध सब एक थे, क्योंकि उनको मूर्ति-पूजक समझकर घृणा करते थे। उन्होंने भारतवासियों में से बहुतेरों को मुसलमान बना लिया। इस्लाम, जो हिंदू-धर्म का उलटा है, और जिसका सिद्धांत ही यह है कि सब मुस्लिम भाई हैं, नीच वर्ण और अवर्ण हिंदुओं को बहुत बड़ी संख्या में खींचकर अपने में ले आया। वे समझते थे कि मुसलमान हो जाने से हमारी सामाजिक स्थिति विजेताओं के बराबर हो जायगी। मुसलमानों की संख्या के आज लगभग ७८,०००,००० हो जाने का यही कारण है।"

(लोथ्रोप स्टोडर्ड्स-रचित क्लैशिंग टाइड्ज़ ऑफ़् कलर)

वर्ण-भेद-जनित बेटी-बंदी के कारण हिंदू केवल एक छोटे-से सर्किल या क्षेत्र में ही ब्याह-शादी करते हैं, इसलिये उनमें नया रक्त नहीं मिलता। फलतः वैश्यों में जहाँ व्यापार-बुद्धि बढ़ी है, वहाँ कायरता, कुरूपता और कृपणता आदि दुर्गुण भी पुंजीभूत हो गए हैं। इसी प्रकार राजपूतों में जहाँ मृत्यु से निडरता, वीरता और शारीरिक बल बढ़ा है, वहाँ साथ ही वे उजड्ड, अदूरदर्शी और केवल लड़ने-भिड़नेवाले साँड़ बन गए हैं। ब्राह्मणों का ब्राह्मणों में ही विवाह होते रहने से जहाँ उनमें विद्या-बुद्धि और ज्ञान की वृद्धि हुई है, वहाँ वे साथ ही कायर, कट्टर-पंथी, अंध-विश्वासी और वृथाभिमानी भी हो गए हैं। रण में विजय पाने के लिये केवल निडरता और वीरता की ही आवश्यकता नहीं। इन गुणों के साथ-साथ दूरदर्शिता, गंभीरता और राजनीतिक अंतर्दृष्टि का होना भी आवश्यक है। वर्ण-भेद ने शूद्रों को आत्माभिमान से रहित कर दिया है। यदि ब्याह-शादी द्वारा ब्राह्मणों, राजपूतों और वैश्यों का रक्त-मिश्रण होता रहता, तो हमारा वैश्य कायर, हमारा ब्राह्मण कट्टर-पंथी, हमारा राजपूत अदूरदर्शी और हमारा शूद्र आत्माभिमान से शून्य न होता। दूसरे देशों के लोगों में, सब प्रकार के काम करनेवालों का आपस में रोटी-बेटी-व्यवहार है, इसलिये वहाँ के लोग हमारी तरह अपूर्ण नहीं। योरप का जुलाहा कपड़ा भी बुन सकता और समय आने पर युद्ध में सैन्य-संचालन भी कर सकता है। परंतु हमारे यहाँ वैश्य हिसाब ही कर सकता है, युद्ध का नाम सुनकर उसके प्राण सूख जाते हैं। हमारा राजपूत लड़ाई में सिर कटा सकता है, परंतु एक छोटी-सी दूकान का प्रबंध नहीं कर सकता। इस प्रकार हमारे लोगों में जिसमें शारीरिक बल था, उसमें उस बल से काम लेने की बुद्धि न थी, और जिसमें बुद्धि थी, उसमें बल न था। इसीलिये उनमें

कर्तृत्व का अभाव था। विदेशियों ने आकर अपनी बुद्धि से इन्हीं राजपूतों और जाटों से काम लिया, और भारत-विजेता बन गए। मुग़लों और अँगरेज़ों की विवेक-बुद्धि ने दूरदर्शिता से शून्य राजपूतों के शारीरिक बल के साथ मिलकर विजय प्राप्त की। हमारे ब्राह्मण यह काम राजपूतों से न ले सके, क्योंकि ब्राह्मणों में लड़ाका रक्त न था। वे युद्ध की अवस्था समझ ही न सकते थे।

वर्ण-भेद के कारण हिंदू का पालन-पोषण और रहन-सहन केवल एक संकुचित क्षेत्र में होता है। जो आज वैश्य है, हज़ार वर्ष हुए, उसके पूर्वज भी वैश्य थे, और आज से हज़ार वर्ष बाद भी उसके वंशज वैश्य ही होंगे। वह वैश्यों में रहता, जीता और मरता है। इसलिये उस पर एक ही प्रकार के संस्कार पड़ते हैं। वे उसे दब्बू बना देते हैं। यही अवस्था ब्राह्मण और क्षत्रिय की है। यदि इन लोगों की आपस में ब्याह-शादी हो, तो सबको सब प्रकार के संस्कार मिलें, जिससे वे सब प्रकार के काम कर सकें। हमारे समाज में बुद्धि अलग कटी पड़ी है, साहस दूसरी जगह सोया पड़ा है, परिश्रम का इनसे कोई संबंध ही नहीं।

एक ही संकुचित क्षेत्र में बेटी-व्यवहार होते रहने से हिंदुओं का रक्त ठंडा पड़ गया है, थक गया है, उसमें नवीन आविष्कार और उन्नति करने की शक्ति नहीं रही। यदि यह वर्ण-भेद मिट जाय, तो सब कोई अपनी रुचि के अनुसार, चाहे जहाँ, ब्याह कर लें। इससे नया रक्त आने से जाति की बुद्धि और शौर्य का विकास हो।

क्या कारण है कि इस समय गांधी, मोतीलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, लाजपतराय और सी० आर० दास तो उत्पन्न होते हैं, परंतु शिवाजी, नेपोलियन, हिटलर, मुसोलिनी नहीं पैदा होते? इसका कारण यही है कि ऊँचे वर्णों के हिंदू शारीरिक श्रम करनेवाले शूद्रों और अछूतों का रक्त अपने में नहीं मिलने देते। इससे शारीरिक बल और विवेक-बुद्धि का संयोग नहीं हो पाता, और इन दोनो गुणों के बिना कोई मनुष्य सेनापति या देश-विजेता नहीं हो सकता।

हमारी मानसिक दासता या बौद्धिक अनुर्वरता का भी यही कारण है कि हममें नया रक्त बाहर से नहीं आता। कायस्थ कायस्थों और ब्राह्मण ब्राह्मणों में ब्याह करते आ रहे हैं। इससे उस रक्त की उर्वरता समाप्त हो गई है, वह थक गया है, उसे नए रक्त की खाद देने की आवश्यकता है। इतिहास बतलाता है, जहाँ परंपरागत क्षत्रिय सदा मुसलमानों से हारते रहे, वहाँ नए योद्धा, मराठे और सिक्ख, अपना राज्य स्थापित करने में सफल हो गए। आजकल सिनेमा में भी अच्छे गायक और अभिनेता वे लोग नहीं, जिनका परंपरागत व्यवसाय गाना-बजाना था, वरन् वे लोग सफल गायक और अभिनेता हैं, जिनके बाप-दादा ने कभी यह काम न किया था। पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही व्यवसाय करते रहने से मनुष्य में उस व्यवसाय को उन्नत करने, उसमें नवीनता लाने की शक्ति नहीं रहती, उसकी बुद्धि और शरीर दोनो थक जाते हैं।

इसलिये दासता दूर करने का उपाय मातृ-भाषा में शिक्षा देना या ग्राम-सुधार करना नहीं। ये तो गौण बातें हैं, जो स्वराज्य-प्राप्ति के अनंतर ही भली भाँति की जा सकती हैं। अफ़गानिस्तान और ईरान हमसे शिक्षा में बहुत पीछे होने पर भी स्वतंत्र हैं। सबसे प्रथम आवश्यकता इस बात की है कि हम जाति-भेद का समूल नाश कर दें। इसी ने हमें ग़ुलाम बनाया है। इसे रखते हुए चाहे हम सौ प्रति सैकड़ा भी साक्षर हो जायँ, चाहे हमारे ग्राम नंदन-वन का नमूना भी बन जायँ, हम कभी स्वतंत्र न हो सकेंगे। केवल पढ़-लिख जाने से तो हम पठित ग़ुलाम हो जायँगे, स्वाधीनता-भोगी मनुष्य नहीं।

ब्राह्मण नहीं चाहते थे कि कोई दूसरा वर्ण हमारा काम सँभाल सके, इसलिये उन्होंने दो हज़ार से भी अधिक व्रत, पूजा और अनुष्ठान बनाए। कारण यह कि इन दो सहस्र व्रत-अनुष्ठानों की प्रक्रियाएँ सीखने के लिये मनुष्य की एक पूरी आयु चाहिए। जिस मनुष्य को व्यापार करना है, कारीगर बनना है, या युद्ध-कला में निपुण होना है, वह इन्हें सीखने के लिये इतना समय कहाँ निकाल सकता है? ब्राह्मण ही इन्हें सीखने के लिये इतना अधिक समय दे सकते थे, इसलिये उन्होंने इन अनुष्ठानों की सूची अनावश्यक रूप से बहुत लंबी कर दी, जिसमें हमारा धार्मिक महत्त्व कम न होने पाए। हिंदुओं की वर्ण-व्यवस्था में कौन ऊँचा है, और कौन नीचा, इस बात को लेकर ब्राह्मण और क्षत्रिय में बड़ा भारी वैमनस्य और लड़ाई-झगड़ा होता रहा है।

इसीलिये हमारा कहना है कि वर्ण-भेद ने ही हमें दास बनाया है, और जाति-भेद के उच्छेद से ही हम पुनः स्वाधीनता लाभ कर सकते हैं।

भविष्य में जो कोई भी नेता हमें स्वराज्य दिलाने में सफल होंगे, उन्हें पहले भारत-माता की दासता की बेड़ी सर्वजाति-एकीकरण के अस्त्र से ही काटनी पड़ेगी। और कोई उपाय ही नहीं है। ईश्वर वह दिन शीघ्र लावें। तेजस्वी तरुण-तरुणियों को अपने माता-पिता, बहन-भाई, बंधु-बांधव का कोप-भाजन और अकृपा-पात्र बनकर भी, माता-पिता से भी अधिक पूज्य जननी-जन्मभूमि की मुक्ति के लिये, जाति-भेद-भंजन के इस दुर्निवार्य, पर अनिवार्य कार्य में प्राण-पण से जुट जाना चाहिए—

जाति-भेद-भंजन करो, हो संगठित समाज,
विना संगठन के मिला किसको कहो स्वराज?

× × ×

२. पूज्य मिश्रजी को बधाई!

पूज्य रावराजा रायबहादुर डॉ० श्यामविहारी मिश्र सुधा-मंडल के पूज्य लेखकों में हैं। उन्हें अभी इसी वर्ष प्रयाग-विश्वविद्यालय ने हिंदी में डी० लिट्० की सर्वप्रथम उपाधि देकर उनका ही नहीं, बल्कि हिंदी का सम्मान किया है। आशा है, मिश्रजी का तथा हिंदी के अन्य प्रतिष्ठित कवि-कोविदों का अन्यान्य विश्वविद्यालय भी इसी प्रकार सम्मान करेंगे। बड़े हर्ष की बात है, मिश्रजी आज १५ अगस्त को पूरे ६५ वर्ष के हो गए। हम उनकी इस शुभ वर्ष-गाँठ के अवसर पर उन्हें हार्दिक बधाई देते और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हिंदी की बहुत वर्षों तक उसी प्रकार सेवा करते रहें, जिस प्रकार अब तक करते रहे हैं। इस वर्ष-गाँठ पर वह अपना एक बड़ा फ़ोटो अपने मित्रों को भेंट कर रहे हैं। उसी के चारो ओर उनकी जीवनी दी हुई है। उसे हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं—

१. जन्म—इटौंजा, ज़िला लखनऊ, भाद्र० कृ० ४, १९३० वि०।

२. शिक्षा—प्राइमरी स्कूल, इटौंजा, १९३७-४३, जुबिली हाईस्कूल तथा कैनिंग कॉलेज, लखनऊ, १९४३-५३ वि०। बी० ए० तथा एम्० ए० की परीक्षाएँ योग्यता-सहित संवत् १९५२ तथा १९५३ में पास कीं, और इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया।

३. विवाह १९४१ तथा गौना १९४६ वि० में। दो पुत्र (आदित्यप्रकाश मिश्र बी० कॉम०, डिप्टी-कलेक्टर तथा आबालप्रकाश मिश्र बी० ए०), ५ कन्याएँ, १९ नाती-नातिनें तथा धर्मपत्नी वर्तमान हैं।

४. संवत् १९५४ में डिप्टी-कलेक्टर हुए। कई बार अनेक विशेष कामों पर रहे। प्रायः ३ साल पुलिस के डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट तथा ३ बार अस्थायी

सुपरिंटेंडेंट रहे। २१ साल कमिश्नर आबकारी के पर्सनल असिस्टेंट तथा ४ साल ज्वायंट रजिस्ट्रार तथा रजिस्ट्रार को-ऑपरेटिव सोसायटीज़, संयुक्त प्रांत और अंत में उन्नाव में स्थायी डिप्टी-कमिश्नर रहकर संवत् १९८५ में पेंशन ली। १९६७ से ७१ तक छतरपुर तथा १९८६ से ८९ तक ओरछा-राज्य के दीवान-रियासत रहे, और तब से श्रीसवाई महेंद्र महाराजा ओरछा के पार्ट-टाइम प्रधान मंत्री हैं।

५. संवत् १९८५ में रायबहादुर की उपाधि मिली, १९९० में रावराजा की तथा १९९४ में डी० लिट्० की (प्रयाग-विश्वविद्यालय से)। प्रायः ५ वर्ष काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के, ६ वर्ष यू० पी० सिविल सर्विस एसोसिएशन के, सं० १९८८ में भारतीय कान्यकुब्ज-सम्मेलन और सं० १९९० में भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति रहे। संवत् १९८१-८५ तक कौंसिल ऑफ़् स्टेट के माननीय सदस्य रहे। कुछ काल से कान्यकुब्ज-इंटर कॉलेज, लखनऊ, की कार्यकारिणी समिति के सभापति, यू० पी० हिंदुस्तानी एकेडेमी के उप-सभापति (अब अस्थायी सभापति) तथा प्रयाग, काशी एवं लखनऊ-विश्वविद्यालयों की कोर्ट के सदस्य हैं। आप संयुक्तप्रांतीय धर्म-रक्षण-सभा, लखनऊ के भी उप-सभापति (अब अस्थायी सभापति) हैं।

६. आप हिंदी के विशेषज्ञ माने जाते हैं, और आपने अपने अनुज (रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र) के साथ, 'मिश्रबंधु' के नाम से, हिंदी-साहित्य के दो दर्जन से ऊपर ग्रंथ निर्माण किए। मिश्रबंधुओं के दो सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ 'हिंदी-नवरत्न' एवं 'मिश्रबंधु-विनोद', जिनका निर्माण इनके अग्रज स्वर्गवासी पं० गणेशविहारी मिश्र के सहयोग से हुआ था, हिंदी-जगत् में मान्य एवं ७-८ भारतीय विश्वविद्यालयों में बी० ए० तथा एम्० ए० की परीक्षाओं में पाठ्य ग्रंथ हैं। डॉक्टर मिश्र का नाम कई 'हू इज़ हू'-नामक भारतीय पुस्तकों में पाया जाता है। अवस्था (६५ वर्ष) को देखते इनका स्वास्थ्य अच्छा है।

× × ×

३. बिहार के ग्राम-सुधार-कार्य के कर्णधार

बिहार में ग्राम-सुधार का कार्य बहुत द्रुत गति से शुरू हो गया है। यह शुभ कार्य जिन लोगों के हाथों संपन्न हो रहा है, जो इसके कर्णधार हैं, उनमें राष्ट्र-गौरव माननीय डॉ० महमूद साहब का प्रमुख स्थान है। आप हिंदुस्थान में साक्षरता के सर्वप्रथम आंदोलक हैं। आपकी त्याग-तपस्या, सामयिक सूझ और विद्वत्ता के सभी क़ायल हैं। शिक्षा और ग्राम-सुधार-मंत्री होने के पहले आप हिंदू-मुस्लिम-एकता की समस्या लेकर हिंदुस्थान के प्रत्येक भाग का अनेक बार भली भाँति पर्यटन कर चुके हैं। आपके निःस्वार्थ सेवा-भाव से प्रभावित होकर हिंदुस्थान की जनता आपको पूरे राष्ट्र का मंत्री बना चुकी है, जिसका दुर्वह भार आप ख़ूबी के साथ वहन कर चुके हैं। यदि आपने मंत्रिपद न ग्रहण किया होता, तो निकट भविष्य में आप अवश्य राष्ट्रपति बनाए जाते। मंत्रिपद ग्रहण करने के दिन से आप बराबर प्रजा की भलाई के कामों में संलग्न हैं। आपके द्वारा संचालित साक्षरता-आंदोलन बिहार में ख़ूब ज़ोर पकड़ रहा है। इधर आपने इस आंदोलन के लिये एक लाख रुपया मंज़ूर किया है। आपके ही प्रयत्न से शिमले में अखिल भारतीय उद्योग-सम्मेलन होने जा रहा है। इससे देश की ग़रीबी, बेकारी और उद्योग-धंधों की समस्या बहुत कुछ हल हो सकेगी। आपके हृदय में कलाकारों और पत्रकारों के लिये बहुत श्रद्धा है। सचमुच आप-जैसे लोक-प्रिय नेता पर राष्ट्र को गर्व है। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है, आप बिहार को सोते से जगाने के अपने प्रयत्न में पूर्ण सफल होंगे।

बिहार के मंत्रिमंडल ने श्रीपं० प्रजापतिजी मिश्र तथा श्रीपं० गिरीशजी तिवारी के कंधों पर ग्राम-सुधार का भार सौंपकर जिस बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है, उसके लिये कोई भी ज़िम्मेदार व्यक्ति बिना धन्यवाद दिए नहीं रह सकता। वस्तुतः मिश्रजी और तिवारीजी-ऐसे तपस्वी नेताओं पर बिहार को गर्व है।

हमारे मिश्रजी ने सन् १९१९ से आज तक आज़ादी की लड़ाई में जो त्याग, तपस्या और बहादुरी दिखाई है, उसे वह भले ही छिपाना चाहें, पर इतिहास के पन्नों में वह सदा अमर रहेगी। आज़ादी के इस दीवाने ने, सत्य और अहिंसा की इस मूर्ति ने पुलिस की लाठियाँ खाईं, राजकीय घुड़सवारों के घोड़ों की टापें बरदाश्त कीं, पर मुँह से आह तक न निकाली। यही नहीं, अपनी प्यारी लड़ाई को ज़िंदा रखने के लिये, अपने बाल-बच्चों की परवा न कर, अपनी ज़मींदारी तक बेच डाली। वृंदावन-आश्रम स्थापित कर आपने बता दिया कि आप ग्राम-सुधार की भी असाधारण योग्यता रखते हैं।

माननीय तिवारीजी का परिचय हम किन शब्दों में दें। आपका यथार्थ परिचय वही पा सकता है, जो कुछ दिन आपके साथ रहा हो। डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड की चेयरमैनी को लात मारकर आपने सारन को बारडोली बना दिया था। शासन-भार वहन करने की जो क्षमता आपमें है, जनता की भलाई की जो लगन आपके हृदय में है, उसका अंदाज़ा आपके वाइस-चेयरमैनी के शासन-काल से अच्छी तरह लग जाता है। कोई हाकिम बनावे या स्वयंसेवक, ग्राम-सुधार का काम तो आप सन् १९२० से आज तक कुशलता-पूर्वक कर ही रहे हैं। सन् १९३४ में भूकंप-पीड़ितों की सहायता जिस तत्परता से की, १९३५ और ३६ में बाढ़-पीड़ितों की सेवा जिस खूबी के साथ की, और ताजपुर से मैरवा तक के, ४५ मील की दूरी के, गंगा के दुर्गम बाँध को—जिसे सर गणेश की मिनिस्टरी नहीं बँधवा सकी, यूनुस साहब बातें ही बनाते रह गए, डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड ने भी चुप्पी साध ली, और अंत में सरकार ने घोषणा कर दी कि ये बाँध नहीं बाँधे जा सकते, ताजपुर-फुजवरिया के निवासी अपने रहने के लिये ऊँची जगह तलाश करें—ग्रामीणों के प्राण तिवारीजी ने, डॉ० राजेंद्रप्रसाद, माननीय डॉ० सैयद महमूद, माननीय श्रीअनुग्रह-नारायणसिंहजी तथा गुट्टी बाबू से मिलकर, राजेंद्र बाबू से दस हज़ार रुपए लेकर, जिस काम का एस्टिमेट सरकार ने तीस लाख रुपए किया था, आपने चने खिलाकर ग्रामीणों द्वारा ही बँधवा दिया। 'हरिजन' और 'सर्चलाइट' में स्वयं राजेंद्र बाबू ने आपके इस महत्त्व-पूर्ण कार्य की प्रशंसा की थी।

आप पुस्तकालयों के बड़े ही समर्थक हैं। आपने गत वर्ष एक पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव के समय मंच से कहा था—"यदि मेरे पास रुपए हों, और उस समय मेरा बच्चा बीमार हो, तो मैं अपने प्यारे बच्चे के लिये दवा न ख़रीदकर पुस्तकें ख़रीदूँगा, जिनमें राष्ट्र के बच्चों के लिये उपयोगी ख़ूराक है।" आपने छपरे में अपने मित्र स्व० आनंदनप्रसाद-नारायणसिंह शर्मा की यादगार में एक राष्ट्रीय पुस्तकालय स्थापित किया है, जिसकी बिल्डिंग २५ हज़ार में तैयार हो रही है। आपकी योजना के अनुसार यह राष्ट्रीय पुस्तकालय बिहार में अद्वितीय होगा।

अंत में आशा है, मिश्रजी और तिवारीजी एक दूसरे के सुंदर सहयोग से बिहार के किसानों के पेट की धधकती ज्वाला शीघ्रातिशीघ्र शांत करेंगे, और बिहार को साक्षर तथा स्वावलंबी भी बनाएँगे। तथास्तु।

× × ×

४. योरप का दूसरा बेलजियम

बारूदखाने में एक चिनगारी पड़ने की कमी रह गई, नहीं तो आज योरप युद्ध के दावानल में जलता हुआ नज़र आता। जो हालत सन् १९१४ में प्रारंभ होनेवाले महायुद्ध में बेलजियम की हुई, वही इस बार ज़ेकोस्लोवेकिया की हो जाती। अभी हाल में जो घटना वहाँ घटित हुई, उससे योरप के राष्ट्र भावी महायुद्ध के और भी निकट पहुँच गए। यह सर्वविदित बात थी कि आस्ट्रिया को हड़प लेने के बाद हर हिटलर ज़ेकोस्लोवेकिया पर धावा करेगा, यद्यपि उसने इस बात को संदिग्ध भाषा में मना किया था। सूडन-प्रांत के जर्मन लोगों ने ज़ेक-सरकार को परेशान करने का जो आंदोलन किया, वह हिटलर की मनोवृत्ति का रूप था। हिटलर का खयाल था कि इस प्रकार का आंदोलन उठवाकर ज़ेकोस्लोवेकिया में पुनर्निर्वाचन की ऐसी स्थिति पैदा कर दें, जैसी आस्ट्रिया में हुई थी, और उसके साथ ही जर्मन सेनाओं का ज़ेकोस्लोवेकिया की सीमा पर धावा करवा दें, इससे डरकर संभव है, ज़ेक लोग भी जर्मनी को आत्म-समर्पण कर देंगे, और आस्ट्रिया के समीप का एक और सरसब्ज़ मुल्क बिना कौड़ी-दाम के उसके हाथ लग जायगा। पर अब की बार ज़ेक-सरकार की अटूट दृढ़ता के कारण उसकी आशा पूर्ण नहीं हुई। ज़ेकोस्लोवेकिया के प्रेसीडेंट मि॰ हाड्ज़ा ने एक तरफ़ म्युनिसिपल चुनावों की घोषणा की, और दूसरी तरफ़ ज़ेकोस्लोवेकिया की फ़ौजें सीमा पर जा पहुँचीं। उसके वायुयान जर्मनी की सीमा में मँडराने लगे, यहाँ तक कि दो जर्मन सिपाहियों की हत्या भी की गई। और, लोग यह कहने लग गए कि यह हत्या सन् १९१४ में सर्विया में आस्ट्रिया के राजकुमार की हत्या का रूप धारण करेगी। पर मि॰ हाड्ज़ा डॉ॰ शुशनिंग नहीं थे, जो इस भयंकर स्थिति से घबराकर, देश छोड़कर भाग जाते। उनके चुनाव भी पूरे हो गए, और ज़ेकोस्लोवेकिया की सुडेटन-पार्टी की तमाम कोशिशें भी बेकार हो गईं। उन्होंने यह स्पष्ट घोषित कर दिया कि जब तक ज़ेकोस्लोवेकिया का एक भी आदमी ज़िंदा रहेगा, तब तक वह देश की स्वतंत्रता के लिये लड़ेगा। साथ ही उन्होंने अपने देश के अंदर रहनेवाली अल्पमत की जातियों को विशेष हक़ और सुविधा देने की घोषणा भी कर दी, और उसी के आधार पर सुडेटन-पार्टी के नेता हर हेनलीन को उनसे समझौता करने के लिये जाना पड़ा।

इस घटना से हमारा ध्यान दो बातों की ओर आकर्षित होता है—एक तो वह कारण, जिससे विश्व के ऊपर से महायुद्ध की आई हुई यह बला हाल में टल गई, और दूसरे इसका असर आगे विश्व की राजनीति पर क्या होगा। पहली बात के संबंध में यह जान लेना आवश्यक है कि जर्मनी, फ़्रांस, स्पेन और इँगलैंड के जन-साधारण-वर्ग की ओर से महायुद्ध का प्रबल विरोध किया जा रहा है। जर्मनी में हिटलर की शक्ति को घुन लगना शुरू हो गया है, केवल सैनिक-शक्ति के बल पर हिटलरशाही क़ायम है। वहाँ के मज़दूर और निम्न एवं मध्यम श्रेणी के लोग फ़ेसिज़्म के कटु परिणामों से ऊब गए हैं, और क्रांतिकारी शक्तियों का आश्रय लेकर उन्होंने हिटलरशाही के विरुद्ध अपना घोर असंतोष प्रकट करना शुरू कर दिया है। इससे कहीं गत महायुद्ध के बाद की-सी परिस्थिति जर्मनी में फिर पैदा न हो जाय, यही सोचकर हिटलर ने ज़ेकोस्लोवेकिया की ओर क़दम नहीं बढ़ाए। स्पेन में तो वहाँ का जन-साधारण-वर्ग और उसकी सरकार हथियारों के बल से फ़ैसिस्ट शक्तियों का विरोध कर रही है। फ़्रांस को तो वहाँ के जन-साधारण-वर्ग की शक्ति के कारण ही ज़ेकोस्लोवेकिया को युद्ध में साथ देने की घोषणा करनी पड़ी, यद्यपि बाद में वह इँगलैंड की

लीजिए ! मँगाइए !!

मदारी

[उपन्यास]

लेखक

पं० गोविंदवल्लभ पंत

मूल्य १।।), सजिल्द २)

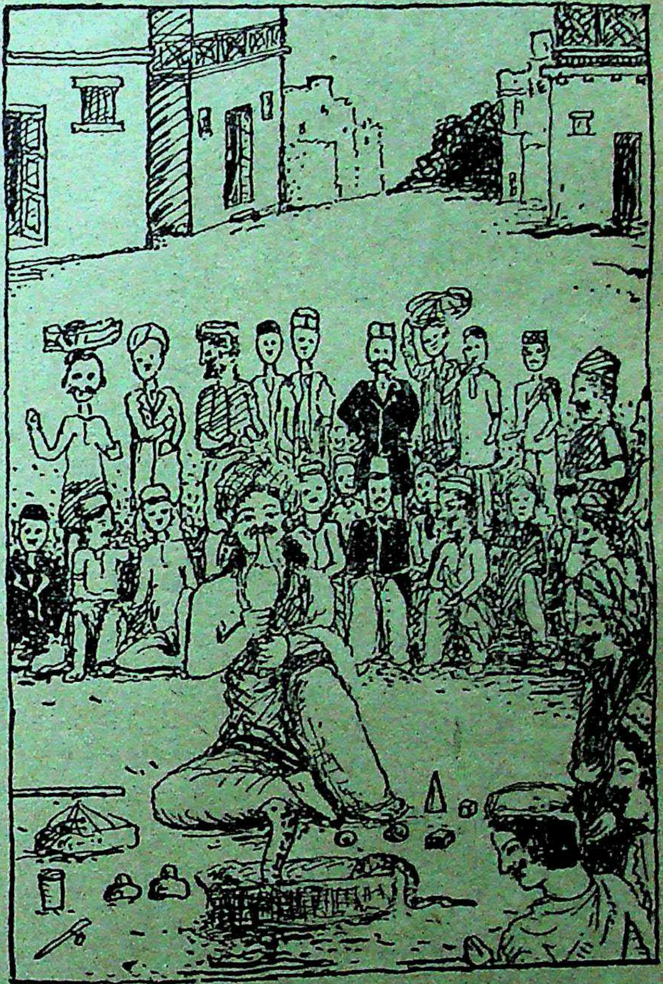

मदारी-उपन्यास का एक दृश्य

नवीन कथानक, निराले चरित्र, चटपटी भाषा, गुदगुदी पैदा करनेवाली स्थितियाँ, बीच-बीच में गीत और चित्र। शीघ्र मँगालें।

संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

निकल गया ! निकल गया !! निकल गया !!!

जाति-पाँति के पचड़े में पड़ी,

घूँघटों की ओट में मुख-चंद्र छिपाए, हृदय में निर्धूम
ज्वालामुखी दबाए और अरमानों की उजड़ी
बस्ती बसाए आज की हमारी
शिक्षित कन्याओं के सामने
क्या-क्या समस्याएँ
हैं ?

इन सबका उत्तर देगा--क्रांतिकारी उपन्यास

'प्रश्न'

कर्त्ता

श्रीसर्वदानंद वर्मा

घटनाएँ बिलकुल वास्तविक हैं, और धर्म, समाज तथा भ्रामक नियम-बंधन के आवरण में 'व्यक्ति' का गला घोंट देनेवाले ढोंगी 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' लोगों की रीति-नीति पर पूरा प्रकाश डालती हैं। हरएक बहन, बेटी, पत्नी, माता और विमाता को इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १।।), सजिल्द २)

दुलारेलाल भार्गव

मालिक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

उषा

६ सुंदर चित्रों
से सुशोभित
मनोहर
खंडकाव्य

लेखक, स्व० श्रीशिवदास गुप्त
'कुसुम'

बाण-नंदिनी उषा और कृष्णचंद्र के पौत्र अनिरुद्ध के प्रणय-परिणय की पौराणिक कथा ।

तुकांत-हीन
नई शैली,
चारु चरित्र-चित्रण,
भव्य, ओजस्वी वर्णन ।

मूल्य
॥=), सजिल्द १-)

लतिका

लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी
'गुलाब'

चुनी हुई
उत्कृष्ट
एक
से
एक
अनूठी,
मनोहर और
भाव-पूर्ण
कविताएँ ।

अवश्य पढ़िए ।

मूल्य
१), सजिल्द १॥)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार
२०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये 'साहसी
बालक' अवश्य पढ़ाएँ

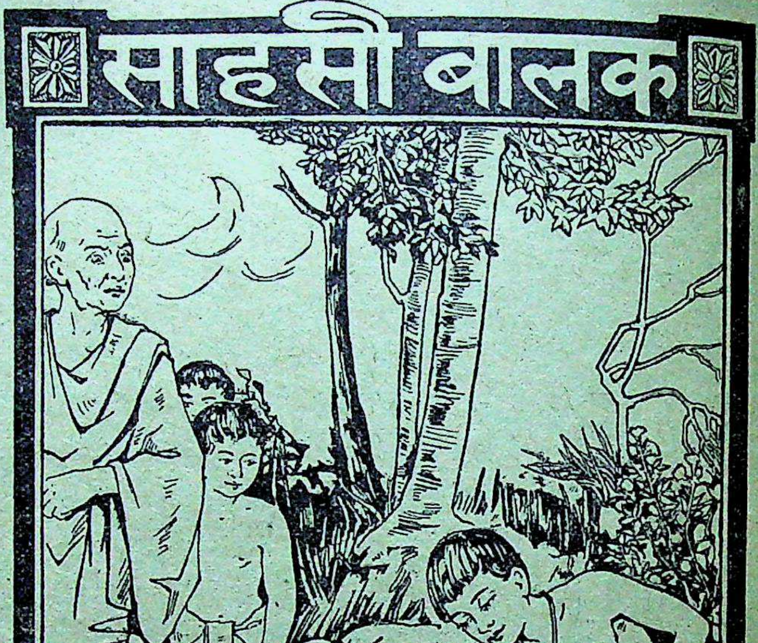

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक
आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को साहसी बना
साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही स
बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य
जिल्ददार ।=)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

महिला-माला की सर्वोत्तम पुस्तक

गुप्त संदेश

(भारतीय ललनाओं को)

लेखक, डॉ० युद्धवीरसिंह। यह पुस्तक भारतीय ललनाओं के लिये लिखी गई है, झूठी लज्जा के वश होकर न वे जननेंद्रिय-संबंधी रोगों का पूरा हाल ही जान सकती हैं, और न उनका कुछ उपाय ही कर सकती हैं, जिसके कारण संसार के अलौकिक आनंद का अनुभव करना तो दूर रहा, वे अकाल ही मृत्यु का शिकार बन जाती हैं। इस अनोखी पुस्तक में डॉक्टर साहब ने बड़ी सरल भाषा में जननेंद्रिय-संबंधी सभी ज्ञातव्य विषय लिखे हैं। पुस्तक अपने ढंग की निराली है। प्रत्येक घर में इसकी एक-एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। युवतियों, भारत की भावी माताओं, को इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठाना चाहिए। २ भाग। मूल्य प्रत्येक भाग ॥=), जिल्ददार प्रति ॥।)

हिंदी की सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

पं० गोविंदवल्लभ पंत

के रत्न

जूनिया

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी ने यह नया उपन्यास लिखकर हिंदी-साहित्य में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इसमें एक ग़रीब किसान को जाति-पाँति के पचड़ों में पड़कर किस प्रकार अपना धर्म-परिवर्तन करना पड़ा, वह विद्या और शांति की खोज में किस प्रकार अपनी सारी शक्ति लगा देता और बड़ी बड़ी मुसीबतें उठाते हुए अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से उन्नति करता है, इसका अच्छा चित्रण है। भाषा मुहाविरेदार। मूल्य १।।), सजिल्द २)

राजमुकुट

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानिक विकास। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर है, जब किसी नाटककार ने रसावेश को स्थायी रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट नहीं होने दिया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना का कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खेला जा चुका है। छठे संस्करण का मूल्य ।।।), सजिल्द १।)

वरमाला

यही प्रथम हिंदी-नाटक है, जिसे रेडियो में ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अनुवाद गुजराती और तैलगू में भी हो चुका है। चारु चित्रों से सुसज्जित। मूल्य ।।=), सजिल्द १=)

मदारी

(सचित्र उपन्यास)

प्रस्तुत पुस्तक में पहाड़ियों के जीवन की छटा और पर्वतराज हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का पूरा आभास मिलेगा। इस उपन्यास का नायक एक पहाड़ी किसान का बेटा 'नवाब' और नायिका लोहार-किसान-कन्या कुमारी तितली। नवाब धन की प्राप्ति के लिये मदारी बनता है, फिर दवाफ़रोश होकर 'ताइची'-नामक चाक़ूवाली के चक्कर में फँसकर हवालात की हवा खाता है। वह अपने जीवन के स्वप्न को सच्चा करता है। मूल्य १।।।), सजिल्द २)

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण।

मूल्य सादी १।), सजिल्द २)

संध्या-प्रदीप

इस पुस्तक में पंतजी की मौलिक कहानियाँ ऐसी परिमार्जित और सरल भाषा में लिखी गई हैं, जो अत्यंत रोचक हैं। मूल्य १), सजिल्द १।।)

अंगूर की बेटी

प्रस्तुत पुस्तक रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ।।।≈), सजिल्द १=)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३६, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

तटस्थ वृत्ति का भी समर्थन करने लगा था। लेकिन युद्ध छिड़ जाता, तो फ़्रांस को जर्मनी के विरुद्ध हथियार उठाने ही पड़ते, और रूस उसकी मदद करता। इटली के मुसोलिनी की तरफ़ से भी हाल में ज़ेकोस्लोवेकिया में युद्ध छेड़ देने का प्रोत्साहन जर्मनी को नहीं मिला, क्योंकि वह स्पेन के युद्ध का परिणाम पहले देख लेना चाहता है, और अपनी वर्तमान स्थिति में स्पेन के विद्रोही दल को सहायता देने के अतिरिक्त दूसरे युद्ध में अपनी शक्तियाँ लगाने का दम नहीं रखता। रहा इँगलैंड, सो वह दिल से फ़ैसिस्ट राष्ट्रों की मदद करना चाहता है, पर इँगलैंड का स्वतंत्र मज़दूर-दल आंदोलन करके मि० चेंबरलेन की सरकार की इस नीति का विरोध कर रहा है। इँगलैंड-सरकार ऊपर से भले ही पार्लियामेंट तक में यह घोषणा कर दे कि हमारे पास पिछले महायुद्ध से कईगुनी युद्ध-सामग्री इस वक़्त मौजूद है, पर वह इँगलैंड के जन-साधारण-वर्ग के विरोध का मुक़ाबिला करके फ़ैसिस्ट राष्ट्रों का पक्ष नहीं ले सकती। यही कारण था, जिससे महायुद्ध की बला टल गई।

किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि युद्ध की संभावना ही मिट गई। वह संभावना तो अब भी जैसी-की-तैसी मौजूद है, ज़ेकोस्लोवेकिया अब भी खतरे का स्थान (Danger Zone) बना हुआ है। जन-साधारण-वर्ग की क्रांतिकारी भावनाओं का ज़ोरों से दमन किया जा रहा है, और उनमें जहाँ इन राष्ट्रों को सफलता मिली कि फिर युद्ध के नगाड़े बज उठेंगे, और उसका स्थान होगा ज़ेकोस्लोवेकिया। इस खतरे से बचने का एक ही उपाय है। वह यह कि दुनिया के जन-साधारण-वर्ग की क्रांतिकारी भावनाओं को दबने न दिया जाय, और प्रत्येक देश में इस शक्ति का संगठन सुदृढ़ हो। जैसे हिंदुस्थान में कांग्रेस की शक्ति है, वैसे ही दूसरे देशों में भी जहाँ इस तरह की संस्थाएँ हैं, उनमें आपस में एकता-संबंध स्थापित हों, और उन सबकी ओर से महायुद्ध के विरोध में प्रबल आंदोलन हों। तभी संसार की जन-संख्या का एक बड़ा भाग रण-चंडिका के मुख में जाने से बच सकता है।

× × ×

५. भारतीय नारी-आंदोलन

हमारे देश का महिला-आंदोलन आज एक ऐसे स्थान पर पहुँच गया है, जहाँ हमें उसकी गति-विधि पर खास तौर से ध्यान रखना है। आजकल स्त्री-आंदोलन की दो मुख्य विचार-धाराएँ हैं—एक पश्चिमी, दूसरी पूर्वी। पहली विचार-धारा का मुख्य उद्देश्य स्त्रियों को पुरुषों के समान ही सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकार दिलाना, उन्हें व्यवस्थापिका सभाओं, न्याय-विभाग और सरकारी नौकरियों में सब प्रकार के पद दिलाना, पुरुष और स्त्रियों के अलग-अलग कर्तव्यों तथा अधिकारों की सीमा का व्यतिक्रमण करना, स्त्री-मताधिकार की वृद्धि करना, ब्याह-संबंध में स्त्रियों को पूर्ण स्वतंत्रता देना और वेष-भूषा, आचार-व्यवहार, भाषा आदि के लिये स्त्रियों के ऊपर देश, काल और अवस्था का बंधन न होना आदि हैं। दूसरी विचार-धारा स्त्री-शिक्षा का महत्त्व स्वीकार करते हुए उनके सामाजिक सुधार पर ज़ोर देती है, पर राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में उन्हें मर्द बना देने के खिलाफ़ है। उसका कहना है, स्त्री का सामाजिक पद पुरुष के बराबर होते हुए भी उसके कर्तव्य और अधिकार पुरुष से कुछ भिन्न हैं। इसलिये उसमें शील, लज्जा, पति-भक्ति, गृहिणी और माता बनने के स्वाभाविक गुण होने चाहिए, और बाहर की लेडी या मिसेज़ कहलाने की अपेक्षा उसे घर की रानी या बहू कहलाने में अधिक आनंद लेना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि उनको सार्वजनिक जीवन से वैराग्य धारण करना चाहिए, बल्कि अपने

कर्तव्यों को पालन करते हुए वे आवश्यकतानुसार पति, भाई या अन्य विश्वसनीय संबंधियों के साथ उन कामों में भी हाथ बटा सकती हैं, जो देश और समाज की उन्नति के लिये ज़रूरी हैं। वे साहित्य, समाज और स्वदेश की सेवा या गाँव-सुधार के कार्यों में योग दे सकती हैं, पर अकेले उनका इनमें लगना खतरे से खाली नहीं।

इन विचार-धाराओं में न अभी तक कोई संघर्ष है, और न इनमें प्रतिद्वंद्विता पैदा हुई है, क्योंकि भारत का नारी-आंदोलन अभी प्रौढ़ावस्था की सीमा को नहीं पहुँचा, और अभी तक विकास के पथ पर है। इसलिये आजकल जहाँ कहीं स्त्रियों की सभा, संस्था और अधिवेशन में हम अपने मन के अनुकूल या प्रतिकूल विचारों के भाषण या प्रस्ताव पास हुए सुनते हैं, तो उससे हमें कौतूहल और आनंद ही अधिक होता है, क्योंकि हमारी दृष्टि अभी तक नारी-जागरण तक ही जाती है, उसके अच्छे या बुरे पहलू की तरफ़ अभी तक हमने खास तौर पर ध्यान नहीं दिया है। लेकिन आगे अवस्था यह न रहेगी। अब हमें स्त्री-आंदोलन की कोई ख़ास सीमा निर्धारित करनी होगी, वरना बेलगाम के घोड़े की तरह वह हमें किसी खंदक में जा पटकेगा। अंतरजातीय विवाह में औचित्य होते हुए भी उसका इस ढंग पर निर्णय करना होगा कि उसका असर हमारे समाज पर क्या पड़ता है। इन्हीं दिनों संयुक्त प्रांत में दो संबंध इस प्रकार के हुए हैं—एक में एक संभ्रांत कुल की हिंदू-लड़की ने एक मुसलमान को अपना पति चुना है, और दूसरे में एक पढ़े-लिखे हिंदू ने, जो सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं, एक मुसलमान-लड़की के साथ संबंध किया है। इसका असर हमारे सामाजिक जीवन पर अवश्य पड़ेगा। एक ख़ास अवस्था में इस तरह का संबंध दुष्परिणाम भी पैदा कर देता है। यदि शिक्षित पुरुष या महिला इस प्रकार अपने इच्छानुसार चाहे जब शादी-संबंध करने लगे, तो उसमें इस बात का भी लिहाज़ न रहेगा कि इस संबंध से पूर्व वे विवाहित हो चुके हैं, या नहीं। एक पुरुष के गुण-कर्म-स्वभाव का मेल दूसरी स्त्री के साथ उस समय हुआ, जब वह पहले विवाह कर चुका है, और उसकी पहली पत्नी मौजूद है, तो क्या इस अवस्था में उन दोनों का विवाह-बंधन में बँध जाना ठीक होगा? इस संबंध में हमें केंद्रीय धारा-सभा की सदस्या श्रीमती राधाबाई सुब्बरायन एम्० एल्० ए० के इन शब्दों पर ध्यान देना चाहिए, जो आपने अभी कहे हैं—"दुर्भाग्य-वश शिक्षा के प्रसार ने बहु-विवाह को रोकने के बजाय इसका एक नया ढंग आरंभ कर दिया है। प्रतिष्ठित श्रेणियों की सुशिक्षित स्त्रियाँ उन पुरुषों से विवाह करने लगी हैं, जिनकी पत्नियाँ जीवित हैं, और जिनके पुनर्विवाह की बिलकुल आवश्यकता नहीं। ऐसे विवाह की हिंदू-रीति-रिवाज भी आज्ञा नहीं देते। पुराने ज़माने में बहु-विवाह करना इतनी क्रूरता-पूर्ण बात नहीं थी, क्योंकि सम्मिलित परिवार-प्रथा के कारण सब स्त्रियों को समान संरक्षण मिल जाता था। परंतु बहु-विवाह के वर्तमान रूप से पूर्व-पत्नी को नाना कष्टों और क्रूरताओं का सामना करना पड़ता है। अधिकतर उसका विवाह छोटी उम्र में होता है और वह जल्दी ही मा बन जाती है। इस कारण उसे अपने में पूर्ण युवती स्त्री के वे आकर्षक गुण विकसित करने का अवसर नहीं मिलता, जिनके द्वारा नए ज़माने की लड़की एक सीधी, सरल, भोली, शांत तथा अकृत्रिम पत्नी से उसके पति को सुगमता से छीन लेती है। नई पत्नी बहुधा अपनी जीत तब तक नहीं मानती, जब तक पति अपनी पूर्व-पत्नी का पूर्ण परित्याग न कर उसकी संतान को भी उचित अधिकारों से वंचित नहीं कर देता।"

श्रीमती सुब्बरायन के ये शब्द अक्षरशः सत्य हैं। यह हमारे नारी-आंदोलन की पश्चिमी धारा का असर है। श्रीमती सुब्बरायन केंद्रीय धारा-सभा में इसी कारण एक 'बहु-विवाह-निषेध-बिल' पेश कर रही हैं। इस बिल के द्वारा ऐसे हिंदू पतियों को, जिनकी एक पत्नी जीवित है, दूसरी के साथ शादी करने का हक़ न होगा। हम इतना और चाहेंगे कि किसी हिंदू लड़की को ऐसे व्यक्ति के साथ 'सिविल मैरिज' करने का भी अधिकार न हो, जिसकी एक पत्नी जीवित हो। साथ ही हमें इस बात पर भी ग़ौर करना है कि विश्वविद्यालय की शिक्षा स्त्रियों के लिये कहाँ तक उपयोगी हो सकती है। राष्ट्रपति श्रीसुभासचंद्र बोस ने, अभी मैमनसिंह में, स्त्रियों की एक बड़ी सभा में, ये शब्द कहे थे—"उच्च दर्जे की सामाजिक और राजनीतिक सेवा के लिये युनिवर्सिटी की उपाधि ही सार्टीफ़िकेट नहीं है। महिलाओं को यह बात हृदयंगम कर लेनी चाहिए कि अनुभव और निःस्वार्थ भाव से की गई देश-सेवा अंत में फलदायी होती है।"

हमारा तो यह विश्वास है, पुरुष-वर्ग पर पश्चिमी सभ्यता का रंग चढ़ जाय, तो वह हमारे लिये इतना खतरनाक नहीं हो सकता, जितना भारतीय नारियों को पश्चिम के रंग-ढंग सिखा देने से वे हमारे समाज के लिये भयानक चीज़ बन सकती हैं। हमें अपने नारी-समाज को, शिक्षा-विस्तार द्वारा जागृति और आंदोलन पैदा करने के साथ, भारतीयता की सीमा से आगे नहीं ले जाना है, वरना यह कार्य हमारे सामाजिक जीवन के लिये घातक चीज़ साबित होगा।

× × ×

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र

जगत्-विख्यात

Registered "कॉनटैक्स" रजिस्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करके और अधिक संतान उत्पन्न करके अपने स्वास्थ्य और सुंदरता को मिट्टी में मिलाना और अकाल-मृत्यु के मुख में जाना नहीं चाहतीं, तथा दासों और अनाथों की संख्या बढ़ाना महापाप समझती हैं, वे कॉनटैक्स के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १।/), डाक-ख़र्च।=)

आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

६. स्व० सर विश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव

बड़े खेद की बात है, अवध-चीफ़ कोर्ट के चीफ़ जज माननीय सर विश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव का देहांत गत १४ जुलाई को, बंबई में, हो गया! आप लगभग ८ महीने से बीमार और आजकल छुट्टी पर थे। इधर आप इलाज के लिये योरप गए हुए थे, और वहाँ से स्वस्थ होकर लौट रहे थे। परंतु लालसागर में आपकी तबियत पुनः खराब हो गई, और बंबई पहुँचते-पहुँचते अवस्था चिंता-जनक हो गई, तथा वहीं, नर्सिंग होम में, आपकी मृत्यु भी हो गई!

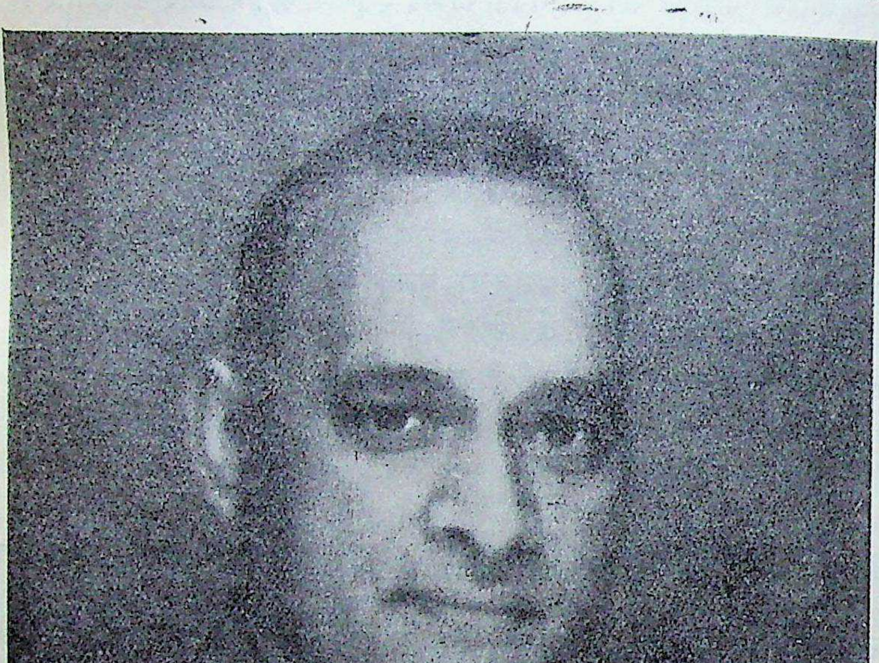

स्व० सर विश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव

स्वर्गीय विश्वेश्वरनाथजी लखनऊ के उन प्रमुख वकीलों में थे, जिन्होंने अपने साहस, प्रयत्न तथा योग्यता द्वारा काफ़ी रुपया कमाया, और साथ में प्रतिष्ठा भी प्राप्त की। इन्हीं गुणों के बल पर आप १९२७ में जज मनोनीत हुए, और गत वर्ष ही चीफ़ जज। लखनऊ के आप प्रमुख नागरिकों में से थे। लखनऊ की सभी सार्वजनिक संस्थाओं में आपका सहयोग था। आप म्युनिसिपल-बोर्ड, इंप्रूवमेंट-ट्रस्ट, महिला-विद्यालय, क्वींस-हाईस्कूल, गंगाप्रसाद-मेमोरियल आदि के चेयरमैन रह चुके थे, और बहुत सी संस्थाओं के संरक्षक

इसमें संदेह नहीं कि आपके निधन से लखनऊ को बहुत नुक़सान हुआ है, जो निकट भविष्य में पूरा नहीं हो सकता।

ईश्वर आपकी आत्मा को सद्‌गति और परिवारवालों को शांति दें।

× × ×

७. त्यागमूर्ति गुप्तजी की पत्नी का अपूर्व आत्मोत्सर्ग

त्यागमूर्ति, सुहृद्वर बाबू शिवप्रसादजी गुप्त की धर्मपत्नी का, अभी कुछ ही महीने हुए, स्वर्गवास हुआ है! इस समाचार से हिंदी-संसार को बहुत दुःख पहुँचा। सभी की सहानुभूति गुप्तजी के साथ है। श्रीमती गुप्त आदर्श पत्नी थीं। उनके निधन पर संपादकाचाय, विद्वद्वर पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर (आज-संपादक) ने जो नोट लिखा है, उसे हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं। इससे देवी के दिव्य स्वरूप का आभास मिलता है—

"श्रीशिवप्रसादजी को रक्त-संचार बढ़ने की बीमारी बहुत दिन से है, जिससे बहूजी बड़ी चिंतित रहती थीं, और उनकी कुंडली ज्योतिषियों को दिखाया करती थीं। गत मार्गशीर्ष में उन्हें पता चला कि फाल्गुन शुक्ल में गुप्तजी को भयंकर अरिष्ट है। कई ग्रह—जैसे सूर्य, शनि, बुध, शुक्र और चंद्र—मृत्यु-स्थान में एकत्र हो रहे हैं। काशी के कई प्रमुख व्यक्तियों को बहूजी ने कुंडली दिखाई। सबने एक स्वर से (शब्दों का हेर-फेर करके) यही कहा कि इस योग से गुप्तजी का बचना असंभव है।

"बहूजी का एक महात्मा से परिचय था, जो दक्षिणमार्गी सिद्ध तांत्रिक हैं। उनसे भी उन्होंने अपना कष्ट निवेदन किया, और उपाय पूछा। महात्माजी ने कहा—'एक प्रयोग मैं बता सकता हूँ, जिससे गुप्तजी तो निश्चयरूपेण बच जायँगे, पर तुम्हारे ऊपर आ बनेगी। तुम्हारे बचने में संदेह है। गुप्तजी का तो एक बाल भी न बाँका होगा, पर तुम प्रयोग समाप्त होते-होते बीमार पड़ जाओगी, फिर ईश्वर ही तुम्हारी रक्षा करे।'

"बहूजी ने महात्मा से इस प्रयोग को जानने का बड़ा हठ किया। महात्मा उन्हें बराबर चेतावनी देते गए कि इस कार्य में तुम्हें अपने लिये पूरा ख़तरा है, मत करो। पर बहूजी ने अपना हठ न छोड़ा। बहूजी ने जब बहुत बल बाँधा, यहाँ तक कहा कि मैं अपनी आयु सहर्ष पति को भेंट करना चाहती हूँ, तब महात्मा ने लाचार होकर बहूजी को प्रयोग बताया।

"अंत में वही हुआ, जैसा महात्मा ने कहा था। इस दुर्दांत अरिष्ट के समय, जब मृत्यु ही अवश्यंभावी थी, शिवप्रसादजी की एक उँगली में भी पीड़ा न हुई, और बहूजी अनुष्ठान समाप्त होने के ५-६ दिन पहले ही स बीमार पड़ गईं।

"इसके बाद फिर वह उठ नहीं सकीं। आरंभ में आयुर्वैदिक फिर एलोपैथिक और अंत में होमियोपैथिक चिकित्सा हुई, पर अवस्था दिन-पर-दिन गिरती ही गई।

"१०३-१०४ डिगरी ज्वर चढ़ा रहता था, पर वह उठकर, चारपाई से उतरकर, बैठकर, सविधि अंगन्यास, करन्यास आदि करके दोनो समय जप कर लेती थीं। जब उठने-बैठने से लाचार हो गईं, तब महात्मा ने लेटे-लेटे ही जप कर लेने की अनुमति दी। यह जप वह अपनी मृत्यु के दो दिन पूर्व तक, अर्थात् जब तक होश बना रहा, करती गईं।

"एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बहूजी की बीमारी जब बहुत बढ़ गई थी, उसके कुछ पूर्व से ही महात्मा उनसे कहते आ रहे थे कि चाहो, तो अब भी जप करना छोड़ दो। जप छोड़ते ही तुम अच्छी हो जाओगी। पर उन्होंने एक दिन भी जप नहीं छोड़ा। एक दिन इन्हीं शब्दों में उन्होंने महात्मा को उत्तर दिया—'महाराज! आपकी

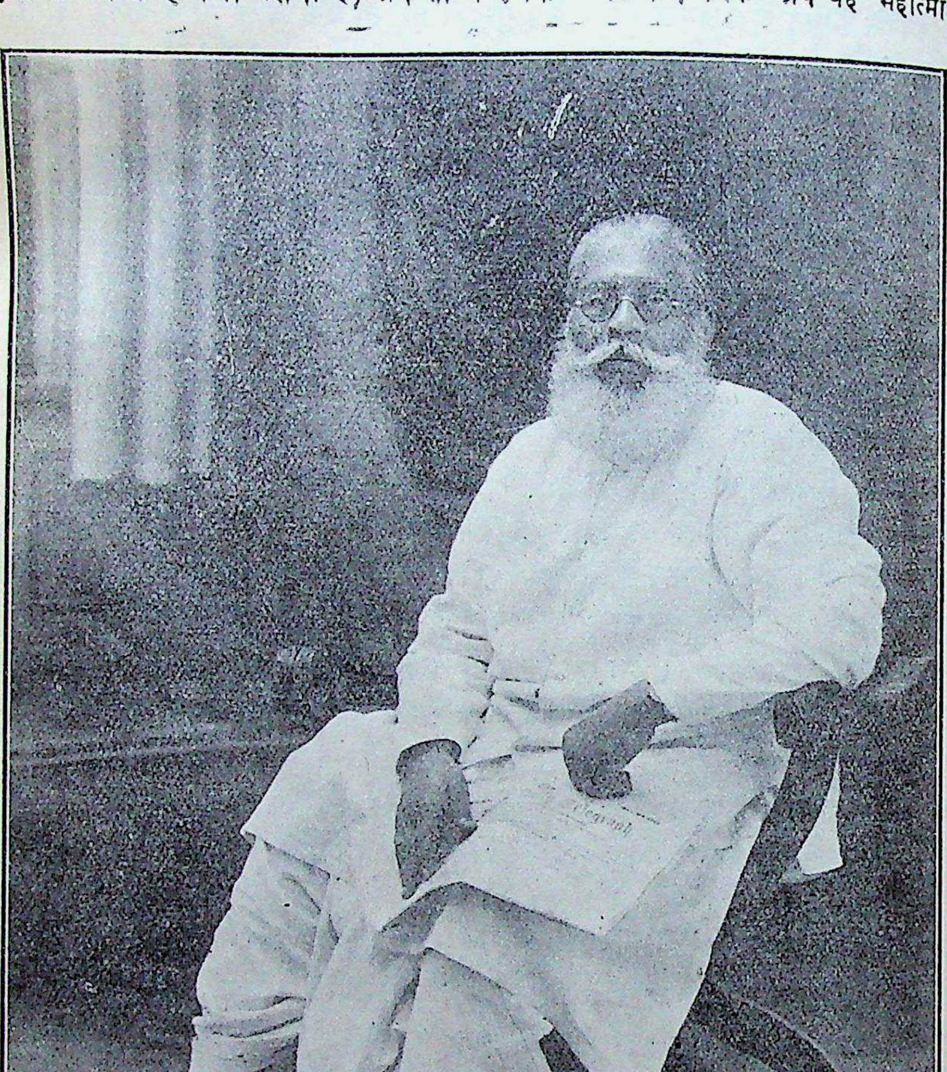

लक्ष्मी के स्वामी और सरस्वती के सेवक

श्रीयुत बाबू शिवप्रसादजी गुप्त

कृपा से मैंने उन्हें बचा लिया है, अब तो मैं उनके कंधों पर हुमचती हुई जाऊँगी।' इस 'हुमचती हुई' को याद करके अब वह महात्मा भी कभी-कभी रो पड़ते हैं।"

धन्य है वह भारतवर्ष, जहाँ ऐसी पतिपरायणा देवियाँ अब भी जन्म लेती हैं! परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति दें और गुप्तजी को धैर्य। इस पत्नी-विछोह में हमारी पूरी समवेदना गुप्तजी के साथ है।

× × ×

८. आगामी साहित्य-सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन इस वर्ष शिमले में, १७-१८ सितंबर को, हो रहा है। इसके सभापतित्व के लिये हम दानवीर बाबू शिवप्रसादजी गुप्त के नाम का समर्थन करते हैं। उन्होंने तन, मन

और धन से हिंदी का जितना उपकार किया है, उतना बहुत कम महानुभावों ने किया होगा। वह सरस्वती के सच्चे सेवक और लक्ष्मी के लाड़ले लाल हैं। यदि वह किसी कारण-वश इस पद को स्वीकार न करें, तो आज-संपादक पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर या आचार्य पं० रामचंद्रजी शुक्ल से निवेदन किया जाय कि इस पद को सुशोभित करें। बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त से निवेदन करना तो व्यर्थ ही होगा, क्योंकि वह इस पद को संकोच-वश स्वीकार न करेंगे।

स्वागत-समिति के संयुक्त प्रधान मंत्री ने लिखा है—पर्वतीय राजागण अपने-अपने राज्य में हिंदी को अपनाने में एक दूसरे से स्पर्द्धा कर रहे हैं। बुशहर, मंडी, जुब्बल, बलसन और बघाट के नरेशों ने हिंदी को अपने-अपने राज्य में राष्ट्र-भाषा घोषित कर दिया है। राष्ट्रीय एकता के लिये अब भारतवर्ष में एक ही जाति, एक ही भाषा और एक ही लिपि का हो जाना आवश्यक है।

× × ×

६. धर्म और संस्कृति

धर्म और संस्कृति में क्या संबंध है? इस प्रश्न पर लोगों के अलग-अलग मत हो सकते हैं। हमारे देश के मुसलमान अपने धर्म के साथ अपनी संस्कृति भी अलग मानते हैं, और वे मुसलमान-धर्म से मुसलमान-संस्कृति को अलग वस्तु नहीं समझते, किंतु और लोगों में ऐसी बात नहीं। भारत के ईसाई लोगों की संस्कृति अँगरेज़ों की संस्कृति से भिन्न है। आज भारत में बहुत-से ऐसे लोग हैं, जिन्होंने ईसाई-धर्म स्वीकार कर लिया है, और समाज में उनकी प्रतिष्ठा तथा पोज़ीशन बहुत ऊँची मानी जाती है; किंतु उनके नाम शुद्ध भारतीय हैं, वे अपने को भारतीय राष्ट्र का अंग समझते हैं, और भारतीय इतिहास को अपना इतिहास मानते हैं। यही हालत अन्य देशों के ईसाई-धर्म स्वीकार कर लेनेवाले लोगों की है। चीन का राष्ट्रपति जनरल च्यांग काई शेक ईसाई-मज़हब मानता है; क्या उसे चीन की संस्कृति से अँगरेज़ों की संस्कृति अधिक प्रिय है? वह चीन-राष्ट्र की रक्षा के लिये अँगरेज़ों और ईसाइयों से लड़ा है—चीन-राष्ट्र और चीन-जाति का इतिहास उसका अपना राष्ट्र और अपना इतिहास है। पर भारत के मुसलमान अरब और ईरान की संस्कृति को अपनी संस्कृति मानते हैं, जहाँ उनके धर्म का अंकुर फूटकर विकसित हुआ है। उनका इतिहास ख़लीफ़ाओं से आरंभ होकर मि० जिन्ना पर ख़त्म होता है। इतने दिन भारत में रहते हुए उनके आचार, वेश और नामों का भारतीयकरण नहीं हो पाया है। डॉ० इक़बाल-जैसे काव्य-मनीषी और प्रगाढ़ विद्वान् मुसलमान केवल मज़हब के आधार पर एक अखिल एशिया-मुसलिम-राज्य की कल्पना करते थे, और भारतीय राष्ट्र की एकता से अधिक उन्हें यह बात प्रिय थी कि पंजाब, सिंध, सीमा-प्रांत आदि प्रांतों को विशुद्ध मुसलमान-प्रांत बनाकर इनका संबंध एशिया के दक्षिणी-पश्चिमी मुसलिम राष्ट्रों के साथ कर दिया जाय। ऐसे ही विचारों के प्रभाव से मुसलमानों में अभी राष्ट्रीयता का भाव इतना जाग्रत् नहीं हो पाया है। यही कारण है कि उनका धर्म सोडा-वाटर की तरह बोतल में बंद है, जब कि ईसाई-धर्म विश्व के कोने-कोने में फैल रहा है।

किंतु यह संकीर्णता हिंदोस्तान के ही मुसलमानों में है। अन्य देशों के मुसलमान इस कट्टरता से दूर हैं। उदाहरण के लिये हम यहाँ चीन के मुसलमानों का ज़िक्र करते हैं। चीन में चार करोड़ अस्सी लाख मुसलमान रहते हैं। ये लोग अधिकतर उत्तरी-पश्चिमी चीन के कांसू, निंगसिया, सिंक्यांग आदि प्रांतों में बसे हुए हैं। चार वक़्त की नमाज़ और अपने समस्त मुसलमान-धर्म के

उसूलों का पालन करते हुए भी इनका देश, भाषा और राष्ट्रीय भाव शेष चीनियों की तरह हैं। आजकल जापान की सख़्तियों के विरोध में ये लोग चीनियों के साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर लड़ रहे हैं। ये लोग सबसे पहले अपने को चीनी कहते हैं, और बाद में और कुछ। जनरल च्यांग काई शेक के डिप्टी कमांडर का नाम पोई चुंगसी है, जो मुसलमान हैं। निंगसिया-प्रांत का जनरल हुंगवेई और चिंघाई का मालिंग दोनो मुसलमान हैं। इन लोगों की बहादुरी और युद्ध-शक्ति ने जापान की बढ़ती हुई ताक़त रोक दी। लोग कहते हैं, चीन की रक्षा के लिये वहाँ के मुसलमान चीन की नई दीवार का काम देते हैं। वे मुसलिम धर्म मानते हैं, पर उनकी संस्कृति चीनी है। जिस तरह भारत में हिंदू-संस्कृति एक है, और उसके अंदर जैन, बौद्ध, शैव, वैष्णव आदि कितने ही धार्मिक विचारों के लोग हैं, उसी प्रकार चीन और दूसरे देशों में बसनेवाले लोगों की संस्कृति का आधार वहाँ का इतिहास और राष्ट्रीय संगठन होता है, और मज़हब या धर्म वैयक्तिक चीज़ होती है। मज़हब बदल सकता है, प्रत्येक मनुष्य को चाहे जिस धर्म को ग्रहण करने का अधिकार है, लेकिन संस्कृति नहीं बदल सकती। क्या हमारे देश के मुसलमान इस उदाहरण से कोई सबक़ सीखेंगे?

× × ×

१०. किसान और मज़दूर-आंदोलन

हमारे देश में आजकल किसान और मज़दूर-आंदोलन ने नया रूप धारण किया है। अब तक उसका रूप और था, और वह इतने तक सीमित था कि जो कुछ शिकायतें और मुसीबतें हों, उन्हें दूर करने के लिये वैध आंदोलन का आश्रय लिया जाय। जहाँ उसका रूप उग्र होता था, वहाँ सरकार अपने क़ानूनी अस्त्र से उसे दबा देती थी। पर जब से देश में नए शासन का ज़माना आया, और लोगों को लिखने, बोलने तथा अपना संगठन करने की अधिक स्वतंत्रता मिली, तो लोगों की सोई हुई शक्तियाँ जाग पड़ीं। अब लोगों को दमन का डर नहीं रहा, इसीलिये किसान सजग हो उठे, तथा मज़दूरों में चेतना आ गई। उन्होंने अपने अधिकारों के लिये आंदोलन शुरू किया, और इस कारण और भी कि कांग्रेस पिछले चुनाव में उनसे वायदा कर चुकी थी। इस आंदोलन के फल-स्वरूप प्रांतीय सरकारों ने अपने-अपने यहाँ किसानों और मज़दूरों से संबंधित नए क़ानून बनाने की व्यवस्था की, और उनमें उन्होंने इन दोनो वर्गों को पहले से कुछ अधिक सुविधाएँ प्रदान कीं। इन दोनो के विरोधी वर्गों ज़मींदारों और मिल-मालिकों पर स्वाभाविक रूप से इन नए क़ानूनों का बुरा प्रभाव पड़ा, और उन्होंने इनके विरुद्ध प्रचार तथा आंदोलन करना शुरू कर दिया। इससे मज़दूर और किसान यह समझे कि अब तक पूँजीपति और नवाब-ताल्लुक़ेदार सरकार का काम चलाते थे—ख़ासकर संयुक्त प्रांत में, इसलिये उन्हें कोई शिकायत न थी, वे अपने लाभ के लिये क़ानून पास करा लेते थे, पर अब जहाँ उनके हाथ से सत्ता छिनी है, और हमें थोड़ी सुविधाएँ मिली हैं, तो ये लोग इन नए क़ानूनों का विरोध करते हैं—मतलब यह कि ये लोग किसी भी अवस्था में हम लोगों को जीवन-निर्वाह की सुविधाएँ नहीं देना चाहते। इसलिये उनमें अपना अलग श्रेणी-संगठन करने का भाव पैदा हुआ।

संयुक्त प्रांत में टेनेंसी-बिल का ज़मींदारों की ओर से, सामूहिक रूप से, विरोध हो रहा है। यही विरोध किसानों में भी श्रेणी-संगठन का भाव पैदा कर रहा है, और यह ख़तरा पैदा होता जाता है कि आज का यह श्रेणी-संगठन कल कहीं श्रेणी-युद्ध का रूप धारण न कर ले। और, उसका युद्ध-क्षेत्र होगा हमारा संयुक्त प्रांत, क्योंकि किसान-ज़मींदार की सबसे ज़्यादा पेचीदा समस्या यहीं

मौजूद है, यद्यपि वह बिहार और दूसरे प्रांतों में भी है। यह बड़ी भयानक स्थिति होगी। आजकल समाचार-पत्रों में जो घटनाएँ छपती हैं, उनसे इस स्थिति के भविष्य पर प्रकाश पड़ता है। आए-दिन ज़मींदारों द्वारा किसान की और किसानों द्वारा ज़मींदार या कारिंदों की हत्या के समाचार पढ़ने को मिलते हैं। उधर मज़दूरों के आंदोलन में भी बाढ़-सी आ गई है, जिसका उदाहरण कानपुर-नगर है। इतने मज़दूरों की इतनी लंबी मियाद तक मुकम्मिल हड़ताल रहना कम महत्त्व की बात नहीं। जिन्हें कानपुर की वास्तविक स्थिति का पता है, वे यह भी देखेंगे कि यह हड़ताल केवल मज़दूरों की मज़दूरी बढ़ाने या उनकी कुछ और माँगों को पूरा करने के लिये नहीं की गई है, बल्कि उससे मज़दूरों को श्रेणी-संगठन और श्रेणी-युद्ध की तैयारी करने का भी अवसर मिल गया है। 'पायनियर' और 'लीडर' की इस बात पर हम विश्वास न भी करें कि कानपुर के मज़दूरों की लाल सेना का संगठन रूस की लाल फ़ौज के खतरे की याद दिलाता है। पर इसमें संदेह नहीं कि मज़दूरों का आज का संगठन उन विदेशी तरीक़ों पर हो रहा है, जिनसे विदेशों में वर्ग-युद्ध (Class war) हुए हैं। इसका उत्तरदायित्व केवल मज़दूरों और उनके नेताओं पर ही नहीं है, बल्कि पूँजीपति-समाज भी इसका ज़िम्मेदार है, क्योंकि हड़ताल की नौबत हमेशा स्थानीय शिकायतों को लेकर ही होती है। यदि मिल-मालिक या पूँजीपति मज़दूरों की स्थानीय माँगें पूरी कर दें, तो हड़ताल की नौबत न आवे। जमशेदपुर की हड़ताल किस तरह जल्द खत्म हो गई। मदरास और अहमदाबाद में भी यही हुआ, और होता रहता है। हमारा मतलब यह नहीं कि हम मिल-मालिकों को अनावश्यक रूप से दोषी ठहरावें। हमारा तो कहना यही है कि इन आंदोलनों का उत्तरदायित्व दोनो वर्गों पर है। और, दोषी कहा जाय, तो दोनो ही वर्ग दोषी कहलाए जा सकते हैं। हड़तालों में दोनो का ही नुक़सान होता है, और सबसे बड़ा देश के उद्योग-व्यवसाय का नुक़सान होता है। गत वर्ष, अर्थात् सन् १९३७ में, हमारे देश में हड़ताल के कारण लोगों के ८९,८२,००० दिन बेकार गए। इनमें बंगाल, बंबई और यू० पी० का नंबर क्रमशः ६०,९०,९८३ और ८,९७,२११ तथा ७,०४,९४० है। इनमें जितने मज़दूर शामिल थे, उनकी संख्या भी पहले क्रम से ३,६५,६९९, १,०९,८८८ और ६३,३५० थी। कुल ६,४७,८०१ आदमी हड़तालों में शामिल हुए। इनमें उन हड़तालों का ज़िक्र नहीं, जो चौबीस घंटे चलकर खत्म हो गईं। इससे देश के व्यापार को कितनी हानि हुई होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। पूँजीवालों का जितना नुक़सान हुआ होगा, वह अलग, और मज़दूरों पर जो बीती होगी, वह बात भी अलग। इस तरह की परिस्थिति पैदा करने से किसी को कुछ लाभ नहीं। हम आशा करेंगे, प्रांतीय सरकारें, जो लोकमत की प्रतिनिधि हैं, इस संबंध में ऐसे नियम बनाएँगी, जिनसे आएदिन की इन हड़तालों का अंत हो जाय, और साथ ही मज़दूरों को स्थायी सुविधाएँ भी मिल जायँ। तभी हम श्रेणी-युद्ध की संभावना दूर कर सकते हैं।

× × ×

११. सत्य-समाज की माँगें

पाठकों ने जुलाई की संख्या में 'सत्य-समाज की माँगें'-शीर्षक लेख पढ़ा होगा। न पढ़ा हो, तो अब पढ़ने की कृपा करें। श्रीदरबारीलाल 'सत्य-भक्त' की यह आयोजना सुंदर, सामयिक और सत्य की ओर ले जानेवाली है। यदि भारतवर्ष इसे अपना ले, तो केवल उसी की मुक्ति न होगी, वरन् अन्य देशों को भी मुक्त करने में वह सफल हो सकेगा।

हमारा सामाजिक जीवन ढीला-ढाला हो गया है,

उसे विज्ञान, न्याय और दूरंदेशी को नज़र में रखकर सुसंगठित करना है। इस संबंध में जो उदार-हृदय लेखक-लेखिकाएँ हमारे पास लेख भेजने की कृपा करेंगी, उनके लेख, पसंद आने पर, सादर सुधा में स्थान पाएँगे।

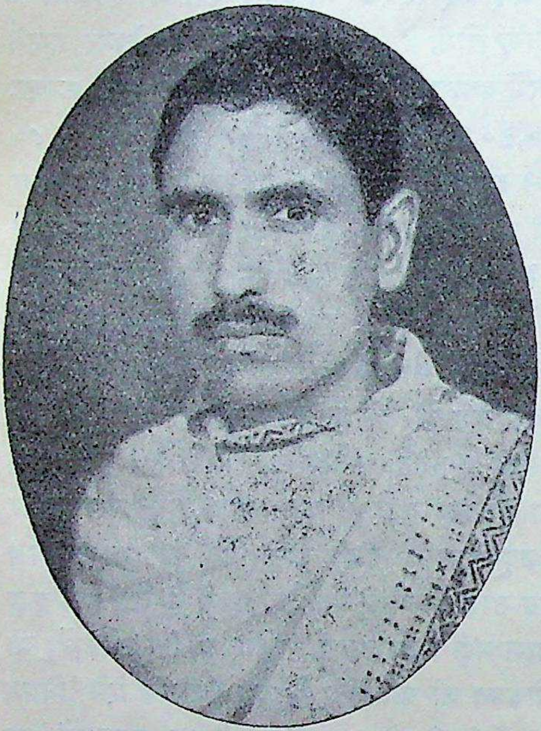

श्रीदरबारीलाल 'सत्य-भक्त' :

× × ×

१२. रेडियो-ब्रॉडकास्टिंग और हिंदी

अभी हाल ही में युक्तप्रांतीय जनता के लिये लखनऊ में रेडियो-ब्रॉडकास्टिंग-स्टेशन खुला है। यह भारतीय सरकार द्वारा स्थापित किया गया है, प्रांतीय कांग्रेस-सरकार से इससे कोई संबंध नहीं, और न इस पर उसका कुछ प्रभाव है। आजकल रेडियो का महत्त्व संसार-भर में बढ़ रहा है। इससे बढ़कर प्रचार का कोई साधन नहीं। और, इटली तथा जर्मनी के तानाशाह एवं ब्रिटेन और फ़्रांस की साम्राज्यवादी सरकारें इसी प्रचार-साधन को लेकर अन्य देशों में अपना और अपनी सभ्यता तथा नीति का प्रचार करती हैं, यहाँ तक कि एक दूसरे के विरुद्ध भी प्रचार करती हैं।

भारत में भी सरकार ने उस समय, जब कांग्रेस एक विद्रोही संस्था थी, इसी रेडियो द्वारा अपना काफ़ी प्रचार किया। परंतु इस समय सात प्रांतों में कांग्रेसी सरकार होने के कारण भारत-सरकार ने इस नीति को त्याग दिया है। इधर रेडियो का प्रचार भी इतना हो गया है कि लगभग सभी प्रांतों में उसके स्टेशन बन गए हैं। प्रांतीय कांग्रेस-सरकार भी अपने मुख्य-मुख्य गाँवों में इसे लगाना चाहती है। निकट भविष्य में इसका काफ़ी विस्तृत क्षेत्र हो जायगा, तब हमारे करोड़ों ग्रामीण भाई प्रतिदिन अपने घर बैठे-बैठे उसे सुनेंगे।

यह प्रसन्नता की बात है। परंतु हम देख रहे हैं, रेडियो-संचालकों का रुख़ हिंदी के एकदम ख़िलाफ़ है, मानो हिंदी के हितों पर कुठाराघात करने को वे कटिबद्ध होकर आए हैं। इधर कांग्रेस ने जो 'हिंदुस्तानी' का राग अलापा, तो रेडियो-संचालकों ने भी साथ देना शुरू किया। कांग्रेस की हिंदुस्तानी का नमूना तो अभी हमारे सामने आया नहीं, किंतु रेडियो की हिंदुस्तानी से हम भली भाँति परिचित हैं। उसे हम हिंदुस्तानी न कहकर अगर विशुद्ध उर्दू ही कहें, तो अधिक उपयुक्त होगा। हम यह दावे के साथ कहते हैं कि उस भाषा को, जो लखनऊ और दिल्ली के स्टेशनों से प्रचारित की जाती है, अक्सर पढ़े-लिखे हिंदीवाले भी नहीं समझ सकते, बेचारे ग्रामीणों का तो कहना ही क्या। क्या हिंदुस्तानी के यही माने हैं कि उसके पर्दे में हिंदी-भाषा और साहित्य का नाश किया जाय?

युक्तप्रांत में हिंदी बोलने और समझनेवालों की संख्या ६० प्रतिशत है, जो रेडियो की हिंदुस्तानी समझ ही नहीं सकते। क्या उनके लिये सरल हिंदी नहीं इस्तेमाल की जा सकती, अथवा क्या उनके

लिये हमारे यहाँ योग्य स्त्री-पुरुष बोलनेवाले नहीं मिल सकते ? इस गड़बड़ी की ज़िम्मेदारी भारत-सरकार के ऊपर है, जिसने लखनऊ-स्टेशन के अधिकारियों को नियत किया है। इन अधिकारियों में अधिकतर ऐसे सज्जन हैं, जिन्हें हिंदी-अक्षरों का भी ज्ञान नहीं। ये ही लोग उन लोगों को चुनते हैं, जो रेडियो पर भाषण करते हैं। हमें तो इनके चुनाव पर हँसी आती है। मीराबाई पर बोलने के लिये ये श्रीमती व्रजनारायणजी मुल्ला को और तुलसीदास पर बोलने के लिये श्रीहरगोविंददयाल को बुलाते हैं। जहाँ तक हमें मालूम है, इन दोनो का हिंदी पर कोई ख़ास अधिकार नहीं। क्या हमारे यहाँ मीराबाई पर बोलने के लिये विदुषी श्रीमती फूलवती शुक्ल, सुकवि-श्रेष्ठा श्रीमती महादेवी वर्मा एम्० ए०, सुकवयित्री श्रीसरस्वती श्रीवास्तव बी० ए०, कुमारी निवेदिता मित्रा, श्रीमती तोरनदेवी 'लली', श्रीमती शारदा मालवीय, श्रीमती प्रभावती भटनागर, कुमारी सत्यवती आदि और तुलसीदास पर बोलने के लिये समालोचक-श्रेष्ठ रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र, सम्मेलन के प्राण माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, विद्वद्वर माननीय बाबू संपूर्णानंदजी, राष्ट्र-गौरव आचार्य नरेंद्रदेवजी, संपादक-श्रेष्ठ, विद्वद्वर पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर, आचार्य पं० रामचंद्रजी शुक्ल आदि योग्य व्यक्ति न थे ? क्या विद्वद्वर पं० शुकदेवविहारी मिश्र, डॉक्टर धीरेंद्र वर्मा, श्रीयुत दीनदयाल गुप्त, प्रो० रसालजी, प्रो० रामकुमार वर्मा, महाकवि हरिऔधजी, महाकवि मैथिलीशरणजी गुप्त, प्रोफ़ेसर श्रीधरसिंहजी, प्रोफ़ेसर छुंगालालजी मालवीय, डॉक्टर बड़थ्वाल-जैसे योग्य पुरुष हिंदी-संसार में सुलभ नहीं ? क्या हिंदी-साहित्य पर भी उर्दू वाले ही बोल सकते हैं ? लखनऊ-रेडियो-अधिकारियों की इस नीति को हम हिंदीवालों के प्रति घोर अप्रतिष्ठा समझते हैं, और इसका कड़े-से-कड़े शब्दों में विरोध करना अपना कर्तव्य।

परंतु इसका उपाय क्या है ? उपाय यही है कि हम देश-भर में इस बात का आंदोलन करें कि या तो हिंदी को, उसे बोलनेवालों की संख्या के अनुसार, उपयुक्त हिस्सा मिले, अन्यथा हम लोग रेडियो का पूर्ण बहिष्कार करें। हम अपने सहयोगी पत्रकारों से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने-अपने पत्रों में इस विषय पर नोट लिखें, और कड़ी आलोचना करके उसकी एक प्रति सरकार के पास भेज दें।

इस संबंध में हमारे पास जो पत्र आएँगे, क्रमानुसार हम सुधा में प्रकाशित करेंगे। आशा है, पाठकगण इसमें हमारा सहयोग करेंगे।

× × ×

१३. खिचड़ी बोली

अन्यत्र हमने डॉ० सत्यप्रकाशजी डी० एस्-सी० का 'इँगलिस्तानी या खिचड़ी बोली' - शीर्षक लेख छापा है। इसमें उन्होंने यह सिद्ध किया है कि आगे इँगलिस्तानी भाषा देश में प्रचलित हो जायगी। ऐसी भाषा का एक दिलचस्प उदाहरण हमें फ़ैज़ाबाद के गत हिंद-प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में मिला था। हम श्रीयुत विमलादत्तरामजी वर्मा का वह पत्र उद्धृत कर रहे हैं। कहना न होगा, इसे उन्होंने हम लोगों को प्रीति-भोज में बुलाते समय मज़ाक़ में लिखा था —

"अज़ीज़ महोदय !

आप कदाचित् इस अमर से वाक़िफ़ होंगे कि हम लोगों के परम मित्र जनाब पंडित श्रीनारायणजी चतुर्वेदी साहब तीन - चार माह के लिये यहाँ से कूच करके श्रीप्रयागराज और लखनऊ शरीफ़ पधार रहे हैं।

उनके परस्थान के Eve पर मैं अपने ख़ास-ख़ास मित्रान को इंदुवार मौरख़ा १८ मास अप्रैल, १९३८ बवक़्त ८ बजे रात्री अपने ग़रीबख़ाने पर एक दावत-पोख़्ता के लिये निमंत्रित कर रहा हूँ।

कृपया उपर्युक्त तारीख़, समय और मुक़ाम पर

पधारकर माहज़र तनावल फ़रमाइए, और यह अवसर दीजिए कि हरदिल-अज़ीज़ चतुर्वेदीजी के परस्थान पर शोक मिटाने के लिये खा-पीकर अपना-अपना ग़म ग़लत करें।

Yours sincerely,
विमलादत्तराम वर्मा''

× × ×

१४. चाँदरानीजी का स्वर्गवास !

विक्रम - संवत् १९९५ की चैत्र-सुदी १५ (ता० १४ एप्रिल, १९३८) को इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् जोधपुर-निवासी पंडित विश्वेश्वरनाथजी रेउ की माता चाँदरानीजी का, ६७ वर्ष की अवस्था में, हरि-नाम स्मरण करते हुए, स्वर्गवास हो गया !

आपको हिंदी और काश्मीरी भाषाओं के अलावा संस्कृत-भाषा का भी अच्छा बोध था। आपका समय साधारणतया प्रारंभ से ही और विशेषतया वि० सं० १९९१ से—अपने पति के स्वर्गवास के बाद से—धार्मिक पुस्तकों के मनन में ही बीतता था।

स्व० चाँदरानीजी

ईश्वर आपकी आत्मा को सद्गति और आपके पुत्र-पौत्रादि कुटुंबियों को शांति प्रदान करें।

× × ×

१५. जेलों का सुधार

अपने देश की जेलें अभी दुनिया में किए गए क़ानून-विरुद्ध कामों के लिये दंड भोगने का स्थान बनी हुई हैं। उनमें सिवा इस बात के कि जो लोग अदालतों से सज़ा पाकर जाते हैं, वे जेल-अधिकारियों के कठोर नियंत्रण में रहकर भारी मेहनत, डंडा, बेड़ी, हथकड़ी, काल कोठरी और मार-पीट तथा गाली-गलौज के साथ अपनी सज़ा की मियाद पूरी करें, कोई बात उन्हें सच्चरित्र और सभ्य बनाने की नहीं सिखाई जाती। पश्चिमीय देशों में यह कार्य बड़े अच्छे ढंग से हो रहा है। वहाँ की जेलें सुधार-गृह बन गई हैं। इँगलैंड, जर्मनी, टर्की, इटली, अमेरिका, रूस आदि देशों की सरकारें अपने यहाँ की जेलों और क़ैदियों की संख्या बराबर कम करती जा रही हैं, और इस बात की कोशिश की जा रही

है कि नैतिक अपराधों में सज़ा पानेवाले लोगों की तादाद घटे। इसके लिये वे जेलों में क़ैदियों को उद्योग-धंधों की शिक्षा देती हैं, ताकि जेल से लौटकर वे फिर कोई अपराध न करें, और किसी धंधे में लगकर अपना जीवन निर्वाह करें। भारत में ऐसे क़ैदियों की तादाद अधिक है, जिनका पेशा नैतिक अपराध करने (Habituals) का हो गया है। इसीलिये यहाँ की जेलें क़ैदियों से भरी रहती हैं। उन्हें न सन्मार्ग पर लाने की शिक्षा दी जाती है, न किसी काम-धंधे के योग्य बनाया जाता है। एक ख़ास दोष, जो भारत की जेलों के प्रबंध में है, यह है कि उनमें राजनीतिक क़ैदियों का कोई स्थान नहीं, वल्कि चाहे जैसे क़ैदी को, हैसियत (Status) के विचार से, ए-बी-सी-क्लास दिए जाते हैं। प्रत्येक देश की जेलों में राजनीतिक क़ैदियों की अलग स्थिति समझी जाती है। अब नए शासन-सुधारों के अनुसार जिन प्रांतों में कांग्रेस की गवर्नमेंट है, वहाँ जेलों के सुधार के लिये एक समान योजना काम में लाई जा रही है। इस आयोजना में राजनीतिक क़ैदियों की, जेल में, अलग स्थिति रहेगी, और राजनीतिक बंदी वे लोग माने जायँगे, जिन्होंने विना किसी स्वार्थ-भाव से कोई राजनीतिक अपराध किया होगा। मज़हबी कारणों की वजह से सज़ा पानेवाले लोग राजनीतिक बंदी नहीं माने जायँगे। क़ैदियों की दो श्रेणियाँ रहेंगी—एक राजनीतिक क़ैदी, दूसरे अराजनीतिक क़ैदी। राजनीतिक क़ैदियों के संबंध में यू० पी०-जेल-सुधार-कमेटी की सिफ़ारिशें इस प्रकार हैं—

'सब राजबंदी एक ही जगह रक्खे जायँ। उन्हें आपस में मिलने-जुलने की स्वतंत्रता होगी। उन्हें एक अख़बार सरकारी ख़र्च पर और अन्य अख़बार अपने ख़र्च पर पढ़ने को दिए जायँ। प्रतिसप्ताह एक मुलाक़ात करने और एक पत्र लिखने की इजाज़त हो। खेलने, बजाने का सामान रखने और बाहर सोने की स्वतंत्रता हो। जो काम करना वे पसंद करें, वही काम उन्हें दिया जाय। उनके घर किसी के बीमार या किसी की मौत हो जाने पर बाहर जाने की छुट्टी दी जाय। स्त्री-राजनीतिक क़ैदियों को तेल, कंघी, चूड़ियाँ और हाथ का पंखा रखने की इजाज़त हो। जेल के अपराधों के लिये राजनीतिक क़ैदियों को १५ दिन की तनहाई की सज़ा दी जा सकती है। यदि उनका अपराध हिंसात्मक हो, तो एक महीने तक उनके विशेष अधिकार छीने जा सकते हैं। उनसे कोई ऐसे भारी श्रम के काम —जैसे चक्की, कोल्हू चलवाना, चूना पिसवाना, चर्स खींचना आदि—न लिए जायँ। अच्छा काम करने पर उन्हें नक़दी के रूप में इनाम दिया जाय। कोड़ा और डंडा-बेड़ी की सज़ा ख़त्म कर दी जाय। पंद्रह वर्ष की अवस्था तक के बंदियों के लिये अनिवार्य शिक्षा होगी। बैरकों में बंद होने के बाद आध घंटे तक वे गाना गा सकेंगे। भोजन में विविधता होगी। उत्सवों और त्यौहारों पर उन्हें पूड़ियाँ, मिठाई आदि मिला करेंगी। धूम्र-पान करनेवालों के लिये उसकी व्यवस्था रहेगी। कपड़े अच्छे मिला करेंगे। आदि।

इसमें संदेह नहीं कि इन सुधारों के कार्य-रूप में परिणत होते ही जहाँ तक राजनीतिक क़ैदियों का संबंध है, उनके जेल-जीवन में आशातीत सुधार हो जायगा। पर हम चाहते हैं, कुछ घटाकर ऐसी ही सुविधाएँ अन्य क़ैदियों को भी दी जानी चाहिए, विशेषकर जेलों में उद्योग-व्यापार और शिक्षा के लिये विशेष प्रबंध किया जाय। अंत में हम अपने परम श्रद्धास्पद मित्र, जेल-सचिव मिस्टर रफ़ी अहमद क़िदवई और उनके धारा-सभा-मंत्री श्रीगोपीनाथ श्रीवास्तव को इस प्रशंसनीय प्रयत्न के लिये बधाई देते हैं!

× × ×

१६. बाबू भैरवप्रसादजी का स्वर्गवास !

काल की कराल गति के सामने किसी का कोई काव्य नहीं चलता। बालक हो या किशोर, युवा हो या वृद्ध, धनी हो या निर्धन, सभी के प्रारब्ध-सूत्र-ग्रथित शरीर का, प्रारब्ध-कर्म समाप्त होते ही, विनाश अवश्यंभावी है।

स्व० बाबू भैरवप्रसादजी

आज हमें यह लिखते हुए अत्यंत शोक होता है कि लखनऊ के सुप्रसिद्ध वकील बाबू भैरवप्रसादजी का, ८६ वर्ष की अवस्था में, २ जुलाई सन् १६३८ को, यहियागंज (लखनऊ) में, संध्या के समय, गोलोकवास हो गया !

आपका जन्म सन् १८४६ में, ऑक्टोबर-महीने में, हुआ था। आप गोलागंज-निवासी पं० रघुवरदयालजी शुक्ल * के साथी थे, और आपको शुक्लजी के पिता ने ही पढ़ाया था। सन् १८७३ में आपने वकालत शुरू की, और शीघ्र ही ख्याति प्राप्त कर ली। वकालत को उच्चतम मान कर आपने जज के पद को ठुकरा दिया। आपने लगभग ६० वर्ष तक वकालत की।

आप बड़े उदार-हृदय व्यक्ति थे। आपके सौजन्य से शतशः कायस्थ-विद्यार्थी तथा अन्य धार्मिक व्यक्ति आपकी आर्थिक सहायता से उपकृत होते थे।

आप कायस्थ-स्कॉलरशिप-ट्रस्ट, सीतापुर तथा कायस्थ-पाठशाला-ट्रस्ट, इलाहाबाद के प्रमुख सदस्यों में से थे। इस समय ऐशबाग़ (लखनऊ)

---

* खेद है, शुक्लजी का भी निधन अभी ४-५ दिन हु हो गया है !

में जो रामलीला होती है, उसका श्रेय आप ही को है।

आपने सतत परिश्रम द्वारा बहुत-सी संपत्ति (मकान, गाँव आदि) संचय कर ली थी, जो आपके आदेशानुसार आपके दौहितृ बाबू लक्ष्मीनारायणजी को मिली है।

ईश्वर आपकी दिवंगत आत्मा को शांति और आपके परिवार को धैर्य प्रदान करें, यही हमारी प्रार्थना है।

× × ×

१७. स्वर्गीय आत्मारामजी अमृतसरी

खेद के साथ लिखना पड़ता है, २५ जुलाई, सोमवार को, प्रातः सवा ८ बजे, ७२ वर्ष की अवस्था में, बड़ौदा-निवासी राज्यरत्न, राज्यमित्र श्रीमान् आत्मारामजी अमृतसरी का देहावसान हो गया! आप आर्य-समाज के प्रतिष्ठित नेता और विद्वान् थे। आप बड़े ही विनोदी और मिलनसार थे। बड़ौदा का आर्य-कन्या-महाविद्यालय आप ही के सतत परिश्रम का फल है। आप उसके कुलपति थे। बड़ौदा में जितनी सामाजिक उन्नति दिखलाई पड़ती है, उसका समस्त श्रेय आप ही को है। महाराजा साहब ने आपको प्रसन्नता-पूर्वक राज्यमित्र, राज्यरत्न, रावबहादुर आदि की उपाधियों से विभूषित किया था। आप सुधा में कभी-कभी लिखा करते

डाबर अशोकारिष्ट
(Regd.)

इसके सेवन से स्त्रियों के समस्त रोग जैसे प्रदर आदि शीघ्र मिट जाते हैं, और स्वास्थ्य ठीक होता है।

ऋतु व प्रदर के दोषों को मिटाने की प्रसिद्ध आयुर्वेदीय दवा।

इसके सेवन से गर्भ पुष्ट होकर ठहर जाता है, और अकाल में नष्ट होने का भय नहीं रहता।

स्त्रियों के समस्त रोगों के लिये ऋषियों का वरदान

सब जगह मिलता है।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

विभाग नं० ४६, पोस्ट-बक्स नं० ५५४, कलकत्ता

थे। परमात्मा आपकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें, यही हमारी प्रार्थना है। आपके सुयोग्य पुत्रों—शांतिप्रियजी, आनंदप्रियजी, प्रतापजी, महेंद्रजी तथा जयदेवजी—और विदुषी पुत्री कुमारी सुशीला पंडित से उनके इस विछोह में हमारी पू सहानुभूति है।

समय पर ही सावधान रहें !

चाँद-सा बेटा उत्पन्न हुआ

आपका सुपारी-पाक वास्तव में सराहनीय है। इसके प्रयोग से मेरी मनोकामना पूर्ण हुई, और मेरे घर चाँद-सा बेटा उत्पन्न हुआ। मेरी धर्मपत्नी के समस्त रोग भी दूर हो गए। यह औषध हरएक को अपनी सराहना करने के लिये बाधित करती है। ला० जगतराम चावला, फ़ोरमैन रुड़की (सहारनपुर)

क्योंकि प्रत्येक स्त्री श्वेतप्रदर अथवा ल्युकोरिया-जैसे भयानक रोग में ग्रस्त हो जाती है। ऐसा प्रतीत होते ही स्त्री को

जगत्-विख्यात

सुपारी-पाक

(रजिस्टर्ड)

का सेवन कराएँ। यह श्वेतप्रदर अथवा ल्युकोरिया और उसके प्रति होनेवाले अन्य विकारों के लिये रामबाण है। हर ऋतु में सेवन हो सकता है।

तैयार करनेवाले } आयुर्वेदिक फ़ारमैस्युटिकल कंपनी लिमिटेड

गुमटी बाज़ार, लाहौर

लखनऊ-एजेंट—

डॉ० व्रजस्वरूप सक्सेना, नाका हिंडोला

सुंदर रेशम-उपहार

भारतीय मज़दूर व भारतीय धन से विशेषज्ञों द्वारा तैयार किया हुआ। धनी मनुष्यों से प्रशंसा-प्राप्त। कृपया व्यवहार करके संतुष्ट हों। यदि पसंद न हो, तो दाम वापस।

रेशमी क़मीज़ का कपड़ा—गुलाबी अथवा सफ़ेद बर्फ़ के रंग का, अत्यंत मुलायम और टिकाऊ। सूत का ज़रा भी मेल नहीं। धुलाई में अच्छा उतरने की गारंटी। ६ गज़ लंबा व ५४ इंच चौड़ा। ६ क़मीज़ों व ६ ब्लाउज़ों के लिये। मूल्य ५॥)

रेशमी दुपट्टा—विशेषज्ञ जुलाहों के हाथ का बुना हुआ। ३ गज लंबा व ५४ इंच चौड़ा। मू० २)

रेशमी पलँगपोश—रोज़मर्रा के इस्तेमाल के लिये। १०० फ़ीसदी पक्का रंग। सस्ता, सुंदर व आरामदेह। १०६"×५४"। ५।) का जोड़ा।

रेशमी मेज़पोश—कई तरह की डिज़ाइनों में छपा हुआ व पक्का रंग। ४५"×४५" साइज़। मूल्य ३।) के तीन।

अंडी चादर—बढ़िया मेल की। तारीफ़ की ज़रूरत नहीं। ६ गज़ लंबी व ५४ इंच चौड़ी। मूल्य ५॥) डाकख़र्च वग़ैरह माफ़

कृपया आर्डर दें—गोल्डेन इगिल (रजिस्टर्ड), रेशमी कपड़े के व्यापारी, लुधियाना

सुधा-चित्रावली

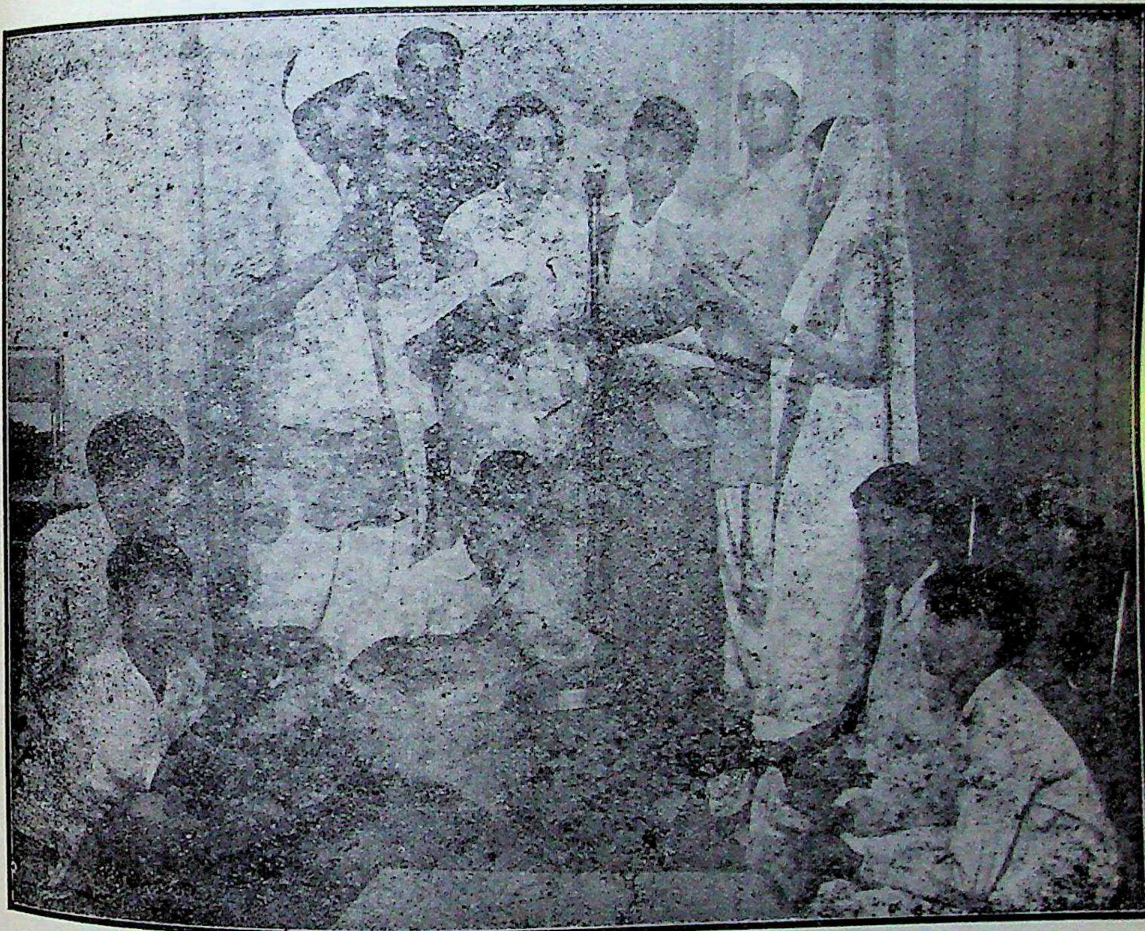

आलइंडिया रेडियो (लाहौर) में 'हनेरा'-खेल

[आलइंडिया-रेडियो, लाहौर का एक दृश्य, जिसमें ईश्वरचंद्रनंद का 'हनेरा'-नामक खेल ब्रॉडकास्ट किया जा रहा है। बीच में प्रोफ़ेसर सोमनाथ (डाइरेक्टर ऑफ़् प्रोग्राम्स, आलइंडिया-रेडियो, लाहौर) की धर्मपत्नी श्रीमती सोमनाथ तथा दाहनी ओर श्रीमती सिराजुद्दीन हैं। प्रतिच्छविकार — श्रीराजगोपालजी]

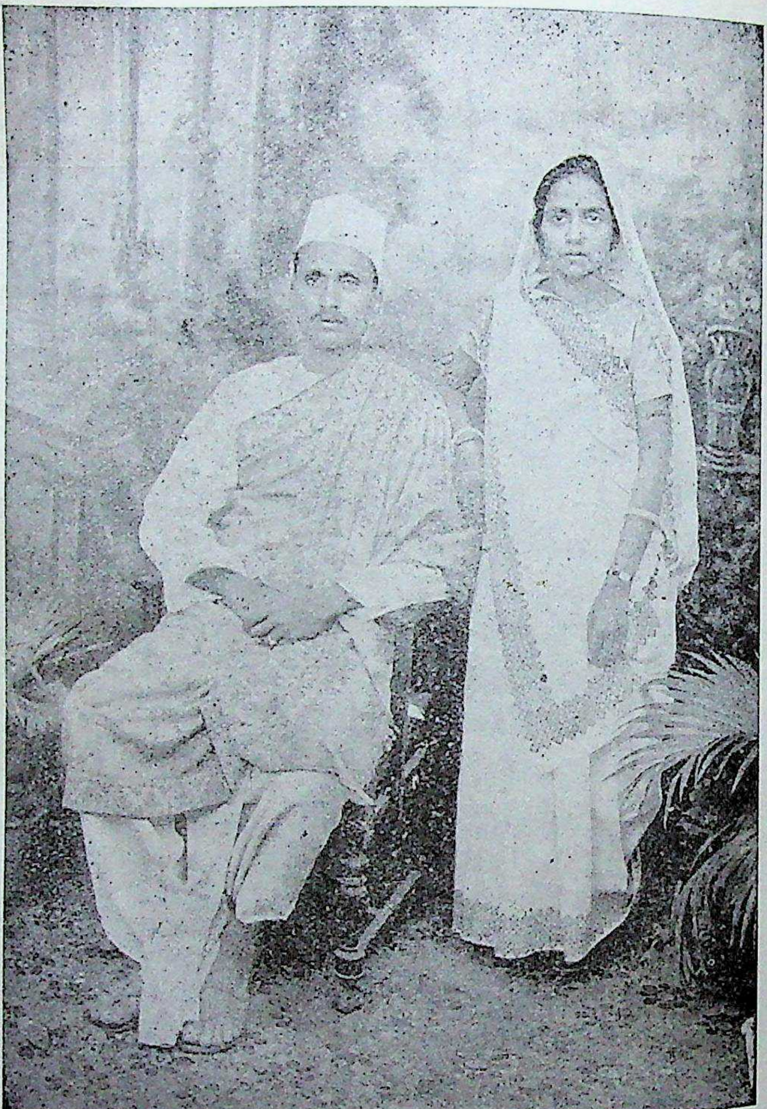

श्रीमान् रामेश्वरदयालजी मंत्री तथा श्रीमती धर्मदारानी मंत्री हिंदीरत्न

[श्रीमंत्रीजी भारत-व्यापी मारवाड़ी-समाज के लब्ध-प्रतिष्ठ, सामाजिक कार्यकर्ता तथा सुधारकों में अग्रणी हैं । आप कई वर्षों से विधुर थे । आपने समाज का पथ-प्रदर्शन करते हुए, विगत दिसंबर में, अपना पुनर्विवाह श्रीप्यारेलालजी गुप्त, रिटायर्ड गज़ेटेड ऑफ़िसर, इलाहाबाद की विधवा सुपुत्री से किया है । वह एक विदुषी तथा सुसंस्कृत महिला हैं । इस सुयोग्य दंपति से समाज को बहुत आशाएँ हैं ।]

जाति-पाँति-तोड़क दंपति

[श्रीयुत सत्यव्रत एम्० ए०, सिनेमा-डिमांस्ट्रेटर, पंजाब-ऐडवाइज़री बोर्ड फ़ॉर बुक्स, लाहौर और श्रीमती शीला (कराची), जिनका विवाह जाति-पाँति तोड़कर हुआ ।]

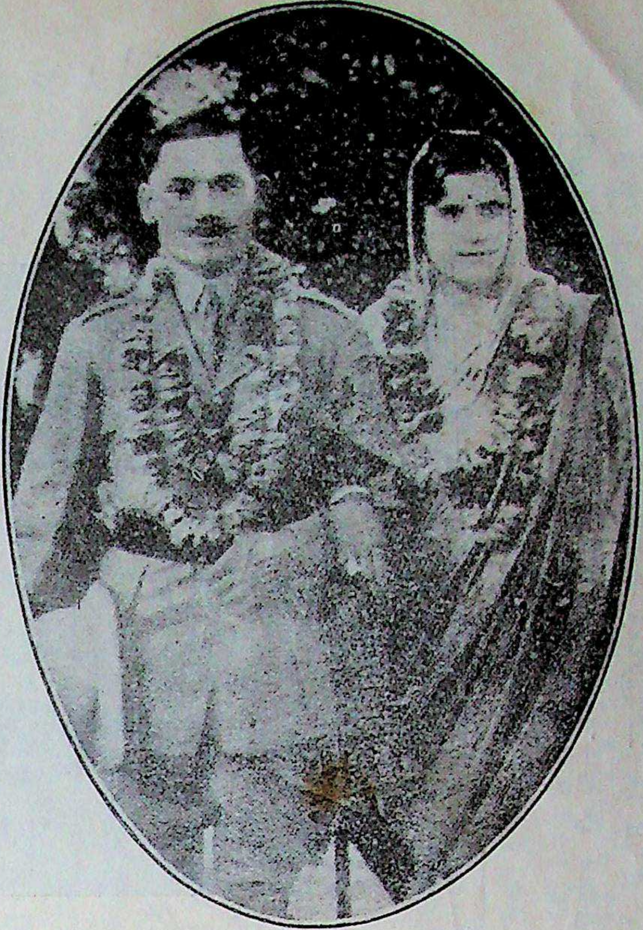

लेफ़्टिनेंट श्रीरत्ननारायण मुल्ला (लखनऊ)
तथा
श्रीमती लीलादेवी हूग्ग (कानपुर)

[आपने जाति-पाँति के अप्राकृतिक बंधनों को तोड़कर विवाह किया है ।]

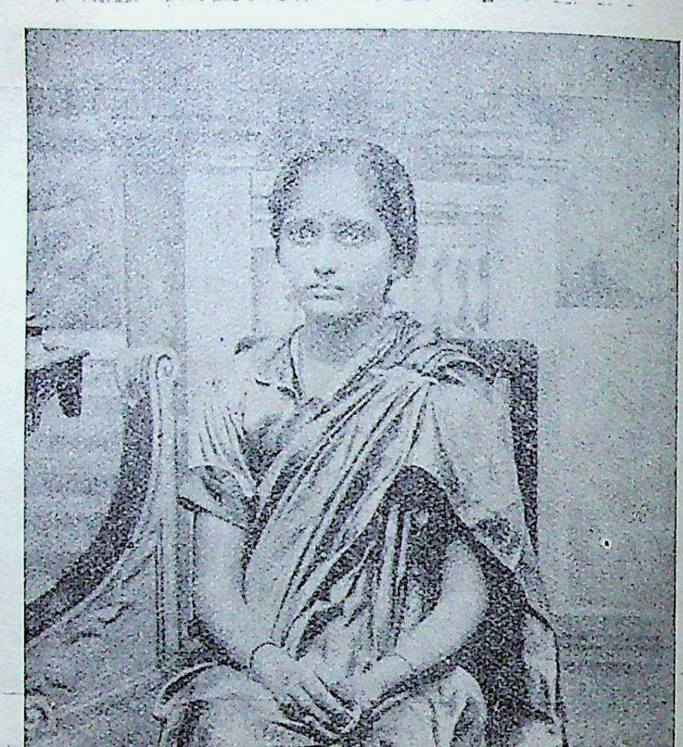

कुमारी विमलादेवी

[आप श्रीकन्हैयालालजी की पुत्री हैं, और कुर्मी-क्षत्रिय-जाति की सर्वप्रथम कन्या हैं, जिन्होंने इंद्रप्रस्थ-गर्ल्स-कॉलेज से इंटरमीजिएट की परीक्षा पास की है। आपका स्थान परीक्षार्थिनियों में चौथा रहा।]

ग्रामीण कैसे साक्षर बनें ?

हमें गाँवों की निरक्षरता भी दूर करनी है, बच्चे से लेकर बूढ़े तक को—स्त्री-पुरुष-मात्र को—शिक्षित बनाना है। जब तक हम इस समस्या को हल नहीं कर पाते, तब तक हमारे राष्ट्र का उद्धार होना कठिन ही नहीं, वरन् असंभव है। साक्षरता ने ही रूस का काया-पलट किया, इसी ने ब्रिटेन का मुख उज्ज्वल किया। आयर्लैंड को स्वराज्य दिलाया। इसी ने जापान, जर्मनी और अमेरिका के ग़रीबों के पेट की धधकती ज्वाला शांत की। अतः हमें भी साक्षरता के लिये आंदोलन करना होगा। यही हमारी सफलता की ताली है।

अब आपके सामने प्रश्न यह आता है कि जहाँ ९२ प्रतिशत निरक्षर हैं, वहाँ हम इतना जल्द सबको साक्षर कैसे बना सकते हैं ? मानव-जाति के लिये कोई काम असंभव नहीं। रूस से हमारी हालत बुरी नहीं। १९२० से पहले रूस में पाँच प्रतिशत भी साक्षर नहीं थे। परंतु दस बरस के सामूहिक जन-आंदोलन ने रूस का बदल डाला। आज रूस पर कोई देश उँगली नहीं उठा सकता। यदि हिंदुस्थान के भी शिक्षित इसमें सहयोग दें, तो पाँच वर्ष के भीतर उनका देश पूर्व-भारत हो जायगा, और फिर ढूँढ़ने पर भी एक निरक्षर न मिलेगा। भारत का भविष्य उज्ज्वल दिखाई दे रहा है। इन दिनों सात प्रांतों में जनता की सरकार है, और शेष प्रांतों में भी जल्द कांग्रेसी मंत्रिमंडल क़ायम होने की आशा नज़र आ रही है। कांग्रेसी मंत्रिमंडल गाँवों को साक्षर बनाने के लिये बेचैन हैं। वे एक बड़ी रक़म इस योजना में ख़र्च कर रहे हैं। युक्तप्रांत का मंत्रिमंडल ४ हज़ार गाँवों में वाचनालय और पुस्तकालय खोलेगा। बिहार के शिक्षा-मंत्री माननीय डॉक्टर महमूद साहब निरक्षरता का अंत करने पर तुल गए हैं। एक रोज़ आपने बिहार-एसेंबली-भवन में यहाँ तक कह डाला था कि मैं प्रधान मंत्री के साथ गाँवों में घूम-घूमकर निरक्षर भाइयों को पढ़ाऊँगा। आप अपनी बातें पूरी करने में अपनी सारी शक्ति लगा रहे हैं। आपने पटने में, ता० २६-४-३८ को, निरक्षरता दूर करने के लिये

एक सभा बुलाई थी। आपने प्रांत के विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा शिक्षितों से अपील की है कि वे छुट्टियों में गाँव-गाँव रात्रि-पाठशाला खोलकर निरक्षर भाइयों को शिक्षित बनावें। इससे सुंदर दिन भला अब देश के लिये कब आएगा? बिहार के शिक्षा-मंत्री के पवित्र देश-प्रेम का पता आप इसी से लगा सकते हैं कि चार दिन के मंत्रित्व में आपने प्रजा की भलाई के लिये क्या-क्या सोच डाला। मि० के० टी० शाह आदि विशेषज्ञों को बुलाकर शिक्षा की नई योजना तैयार कराई। मिलों के ज़ुल्मों को रोकने तथा ईख की अधिक-से-अधिक क़ीमत दिलाने के लिये शुगर-कंट्रोल-बोर्ड क़ायम किया। किसानों की दशा सुधारने के लिये एग्रीकलचर-कमेटी क़ायम की, और आज उन्हें साक्षर बनाने पर तुले हुए हैं। मैं हिंदुस्थान के प्रसिद्ध नेता डॉक्टर साहब के इस कार्य की हृदय से तारीफ़ करता हूँ, और आशा करता हूँ, पटने से डॉक्टर साहब द्वारा साक्षरता की किरण उदित होकर भारत के कोने-कोने में तुरत फैल जायगी।

जिस दिन डॉक्टर साहब की अपील पर ध्यान देकर बिहार के ही नहीं, वरन् देश के शिक्षित, नवयुवक विद्यार्थी तथा शिक्षक प्रत्येक गाँव में एक रात्रि-पाठशाला और एक वाचनालय खोल पढ़ाना शुरू कर देंगे, उसी दिन निरक्षरता हमारे यहाँ से चल बसेगी। छुट्टी के दिनों में कॉलेज तथा स्कूल के विद्यार्थी या अन्य नौकरी-पेशेवाले शिक्षित अपने घर आते हैं। उन्हें अपने-अपने गाँवों का भार ले, ग्राम-कमेटी बुला, यदि ग्राम-कमेटी क़ायम न हुई हो, तो क़ायम कर, उसी गाँव के खर्च से एक रात्रि-पाठशाला तथा एक वाचनालय खोल पढ़ाना आरंभ कर देना चाहिए। यदि नज़दीक के गाँव में प्रबंध न हो सका हो, तो वहाँ भी जाकर पाठशाला और वाचनालय खोलने का प्रबंध कर देना चाहिए। ग्राम-कमेटी, कांग्रेस-कार्यकर्ताओं तथा स्कूल के लड़कों द्वारा आठों दिन ज़ुलूस निकाल निरक्षरता भगाने का आंदोलन करना चाहिए। ज़ुलूस में निम्न-लिखित नारे लगाए जाने चाहिए—

"अपढ़ रहना भारी पाप है। रात्रि-पाठशाला में पढ़ने आओ। रात्रि-पाठशाला की मदद करो। गाँव-गाँव पाठशालाएँ और पुस्तकालय खोल दो। पढ़ने से ही मुक्ति मिलती है। पढ़े को साहूकार ठग नहीं सकते, पटवारी धोखा नहीं दे सकते। पढ़ने से ही ग़रीबी दूर होगी।"

उपर्युक्त शब्दों को सुंदर, मोटे अक्षरों में लिखकर गाँव के वाचनालय और पाठशाला के कमरे में लटका देना चाहिए। मेरे देश के लाड़लो, भारत मा के बुढ़ापे की छड़ी, राष्ट्र की थाती, समाज की पूँजी, भारत के सर्वस्व! याद रखिए, इस काम की ज़िम्मेदारी आपके ही ऊपर है। यदि आप कमर कसकर तैयार हो जायँगे, तो कोई कारण नहीं कि निरक्षरता हिंदुस्थान में रह जाय! आज ही रात्रि-पाठशाला क़ायम कर अपने गाँवों के उद्धार पर तुल जाइए। इस धर्म-कार्य में आपके प्रांत के शिक्षा-मंत्री आपको पूरी सहायता देंगे।

कांग्रेस द्वारा भी इस कार्य को सफल बनाने का उद्योग होना चाहिए। को-ऑपरेटिव सोसाइटीज़ के ऑफ़िसरों, खेती-विभाग के कर्मचारियों तथा पुलिस-ऑफ़िसरों को मंत्रिमंडल द्वारा ताकीद हो जाने पर उनकी सहायता से भी काफ़ी लाभ हो सकता है। साक्षरता-प्रचारक सभा प्रत्येक प्रांत में क़ायम करने की आवश्यकता है, और उसकी शाखा प्रत्येक ज़िले तथा थाने में क़ायम होनी चाहिए। पूरी सावधानी से कार्य करना आरंभ कर देना चाहिए।

ग्राम-कमेटी द्वारा प्रत्येक गाँव में एक-एक पाठ-शाला स्थापित कर उसी गाँव के एक पढ़े-लिखे

सदाचारी, शिक्षित व्यक्ति को पाठशाले की अध्यापकी के लिये चुन लेना और उसी स्कूल के साथ एक छोटा वाचनालय भी खोल देना चाहिए। वाचनालय में एक दैनिक पत्र तथा कुछ साप्ताहिक तथा मासिक पत्र, कुछ ग्राम-सुधार-संबंधी पुस्तकें, कुछ कृषि-उद्योग-धंधों की पुस्तकें, कुछ राजनीति की पुस्तकें तथा कुछ वीर महापुरुषों के जीवन-चरित्र आने चाहिए। गाँवों में जो अपना दालान दे सकें, उन्हीं के दालान में ये रात्रि-पाठशाला तथा वाचनालय स्थापित करने चाहिए। यदि घर मिलने में दिक़्क़त हो, तो पेड़ के नीचे ही पढ़ाई आरंभ हो जानी चाहिए। पीछे घर का प्रबंध होता रहेगा। गाँवों में ग़रीब से लेकर धनी तक से, हैसियत के अनुसार, चंदा वसूल कर रात्रि-पाठशाला के लिये तेल आदि ज़रूरी ख़र्चों का प्रबंध कर लेना चाहिए। पाठशाला तथा वाचनालय के लिये ग्राम-कमेटी के सदस्यों द्वारा प्रति सातवें दिन मुठिया आदि वसूल कर, नौकरी-पेशावाले, सहृदय व्यक्तियों से रुपया ले साक्षर-कोष में जमा करते जाना चाहिए, और ज्यों-ज्यों कोष में रुपया आता जाय, पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएँ बढ़ाते जाना चाहिए।

पाठशाला में ग्राम के सभी निरक्षर भाइयों को बुलाकर पहले अक्षर-ज्ञान कराया जाय, फिर उन्हें एक छोटी-सी पुस्तक दी जाय। पुनः अंक का ज्ञान कराया जाय, फिर मन-सेर-छटाक, रुपया-आना-पाई और धूर-कट्ठा-बीघा का ज्ञान कराया जाय। जब अक्षर का काफ़ी ज्ञान हो जाय, तो उन्हें मोटे-मोटे अक्षरों में लिखित जीवन-चरित पढ़ने के लिये दिए जायँ। तीन मास बाद रामायण दी जाय। मुझे यक़ीन है, इस तरकीब से तीन मास में सारा गाँव साक्षर बन जायगा। तीन मास बाद भी उन लोगों को पुस्तकालय में आने के लिये बाध्य करना चाहिए, और उनके पढ़ने लायक़ पुस्तकें देनी चाहिए, जिससे पढ़ी बातें भूल न जायँ।

स्कूल-कॉलेजों से लड़के लंबी-लंबी छुट्टियों में घर जाते हैं, पर वे अपने राष्ट्र के लिये क्या करते हैं? मेरे भारत के भावी कर्णधार! सभी मोर्चे आप ही को लेने पड़ेंगे, अतः अगर आप भारत को ग़ुलामी से मुक्त देखना चाहते हैं, तो सर्वप्रथम आप निरक्षरता-रूपी कोढ़ मिटा दीजिए। छुट्टियों में अब की बार जब आप गाँव में आवें, तो अपने बुज़ुर्गों से पूछें कि आपके गाँव में ग्राम्य पंचायत क़ायम हुई या नहीं? यदि हुई हो, और उसके साथ-साथ रात्रि-पाठशाला, ग्राम-पुस्तकालय तथा वाचनालय नियमित रूप से चल रहे हों, तो अच्छी बात है। ग्राम-पंचों से मिलकर उनकी कमी पूरी कीजिए। द्वार-द्वार जाकर, निरक्षरों को बुला-बुला रात्रि-पाठशाला में स्वयं पढ़ाइए, उन्हें साफ़ रहने का सदुपदेश दीजिए। और, यदि रात्रि-पाठशाला आदि न क़ायम हुई हों, तो ग्राम-कमेटी क़ायम कर, फ़ौरन् रात्रि-पाठशाला और वाचनालय खोलकर निरक्षरों को पढ़ाना आरंभ कर दीजिए। एड़ी से चोटी तक का पसीना एक कर दीजिए। अपने कामों की सूचना शिक्षा-मंत्री, मंत्री ज़िला-कांग्रेस-कमेटी तथा प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी को दिया कीजिए।

नौजवान दोस्तो! आपका परिश्रम कभी निष्फल नहीं जा सकता। आपकी प्यारी मा कातर दृष्टि से आपकी तरफ़ देख रही है। दुनिया उसे मूर्ख कह-कर पुकार रही है। यह बरदाश्त करना आपकी शक्ति से बाहर की बात है। उन भोलेभाले, निरक्षर भाइयों को क्या मालूम कि उनकी प्यारी मा पराधीन है। उन्हें अब आप साक्षर बनाकर यह रहस्य बता दो, और उनके सुंदर सहयोग से मा को बरबस मुक्त कर लो। बोलो, क्या प्रतिज्ञा करते हो कि मैं इस छुट्टी में ऊपर के कार्य-क्रम को अवश्य पूरा करूँगा? लो, प्रतिज्ञा

करो, मुझसे अब अधिक गाँवों की दुर्दशा नहीं बरदाश्त हो सकती। मैं आज ही प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस छुट्टी में अपने ग्राम के एक-एक बच्चे से लेकर बूढ़े तक को साक्षर बनाकर चैन लूँगा।

आर्थिक समस्या हल करने के लिये गाँव के सभी शिक्षितों, कांग्रेस के कुछ कार्यकर्ताओं और कुछ अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों की एक टोली गाँवों में निकलनी चाहिए, और उसे रुपए के लिये अपील करनी चाहिए। जो लोग बाहर नौकरी करते हों, गाँव में साहूकार हों, अथवा जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो, उनसे इस विषय में विशेष चंदा लेना चाहिए। इसके बाद घर-घर से मुठिया निकलवानी चाहिए, और रविवार को मुठिया तहसील कर इकट्ठा कर देनी चाहिए। उससे जो आमदनी हो, उसे इसी ग्राम-पाठशाला, पुस्तकालय तथा वाचनालय में खर्च कर चाहिए। अगर मुठिया अधिक आवे, तो उस दवा का भी प्रबंध होना चाहिए। जुलूस भी रविवार को ही निकालना चाहिए।

रात्रि-पाठशाला के जो शिक्षक रक्खे जायँ, उनके खाने का प्रबंध गाँववाले कर दिया करें। जिसके पास हल हो, अपने हल से उनके खेतों को समय पर जोत दे, जिसके पास बीज हो, बीज दे दे, धोबी मुफ़्त कपड़ा धो दे, तेली मुफ़्त तेल पेर दे, बढ़ई मुफ़्त लकड़ी का काम कर दे। इस तरह उनकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति गाँववालों द्वारा की जाय। इसी तरह आपस के सहयोग से, विना किसी खर्च के, हिंदुस्थान के सारे गाँव शिक्षित हो जायँगे।

रामचंद्र त्रिवेदी

शीतल, सुखद बयार के लिये

छोटे-बड़े सब साइज़ और वोल्ट के छत
में लटकाने और मेज़ पर रखने के
इंडिया इलेक्ट्रिक पँखे

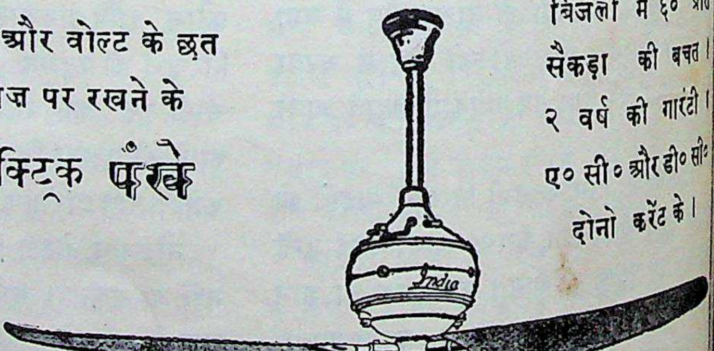

बिजली में ६० प्रति
सैकड़ा की बचत।
२ वर्ष की गारंटी।
ए० सी० और डी० सी०
दोनो करेंट के।

एक यूनिट में ४२ घंटे पहली स्पीड से
एक यूनिट में २० घंटे पूरी स्पीड से
"न तैल की जरूरत और न कोई झंझट"

निर्माता
भारत-सरकार द्वारा स्वीकृत
दी इंडिया इलेक्ट्रिक वर्क्स लिमिटेड
२५, साउथ रोड, इंटैली, कलकत्ता
तार का पता— "मैन्यूफ़ैक्टर" फ़ोन—पार्क
यू० पी० ब्रांच—मेस्टन रोड, कानपुर

श्रीः

सुधा

सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक

मासिक पत्रिका

:o:

वर्ष ११, खंड २

माघ-आषाढ़, ३१५ तुलसी-संवत् (१९९४-९५ वि०)

फ़रवरी-जुलाई, १९३८ ई०

:o:

संपादक

सर्वप्रथम देव-पुरस्कार-विजेता

श्रीदुलारेलाल भार्गव

(संपादक गंगा-पुस्तकमाला)

:o:

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

राजसंस्करण	साधारण संस्करण	सस्ता संस्करण
वार्षिक मूल्य १२)	वार्षिक मूल्य ६)	वार्षिक मूल्य ४)
एक प्रति का मूल्य १)	एक प्रति का मूल्य ॥)	एक प्रति का मूल्य ।)
विदेश के लिये वार्षिक १२)	विदेश के लिये वार्षिक ६)	विदेश के लिये वार्षिक ४)

मुद्रक तथा प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-
कार्यालय और गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

लेख-सूची

१—पद्य

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अनंत-आभास	श्रीयुत रसिकेंद्र	२३१
२.	आवाहन	श्रीपं० सुमित्रानंदन पंत	२
३.	आँखों का जल	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	८३
४.	उपहार	श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)	१
५.	करुणा	सुश्री कुमारी सरस्वती श्रीवास्तव 'सुधा'	१७९
६.	करुणा-कंज	श्रीमैथिलीशरण गुप्त	१७७
७.	कविता के प्रति	श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	१०७
८.	काले का विष	श्रीयुत 'वचनेश'	२३०
९.	कौन बँटाए उर की पीर ?	श्रीयुत नीलकंठ तिवारी 'अरुणी' बी० ए०, साहित्यरत्न	१०८
१०.	चार तारे	श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र'	४१६
११.	जाति-पाँति और स्वराज्य	श्रीदुलारेलाल भार्गव	५२३
१२.	दर्शनाभास	श्रीयुत आनंदीप्रसाद श्रीवास्तव	५३८
१३.	दोनो की दुनिया	पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न	३११
१४.	दो प्रेमी	श्रीकपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्'	५३९
१५.	धूप-छाँह	श्रीयुत रमेश वर्मा	५२४
१६.	नासमझी	श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	४७७
१७.	निर्द्वंद्व	श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत'	४४०
१८.	निशा-निमंत्रण	श्रीयुत 'बच्चन'	१८०
१९.	निशांत-संगीत	श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह	२१९
२०.	प्रेम-मिलन	श्रीयुत 'वचनेश'	१३२
२१.	बिछोह	श्रीदुलारेलाल भार्गव	३७३
२२.	भारत-गौरव-गान	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४०८
२३.	मेरे वीर सुभाषचंद्र !	श्रीयुत सोहनलाल द्विवेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	३१६
२४.	रुधिर का चित्र	श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)	३२०
२५.	वंदना	श्रीयुत 'प्रणयेश' शुक्ल	२४
२६.	वंदनीय वांछा	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४२२
२७.	व्यथा	सुश्री कुमारी निवेदिता मिश्रा 'कनक'	३११
२८.	सर्वनाश की होली	श्रीहरिकृष्ण 'प्रेमी'	१९१
२९.	होली	श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	२२४

२—गद्य

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अमर कलाकार शरच्चंद्र (सचित्र)	श्रीयुत भारतभूषण अग्रवाल	३१७
२.	आओ, नंगे रहें !	श्रीपं० वंशीधर मिश्र एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, एम्०	

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
३.	एक बिंदी पर छः सहस्र सैनिक बलिदान!	श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०	१८७
४.	अंतरराष्ट्रीय राजनीति और उसकी प्रमुख शक्तियाँ ...	श्रीयुत प्रेमनारायण माथुर एम्० ए०, बी० कॉम० ...	४०२
५.	कल्क-कथा का ऐतिहासिक तथा पौराणिक रूप	श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास	३३१
६.	काका साहब का पत्र-व्यवहार	श्रीधर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी	३३३
७.	कुसुम की कामना (गद्य काव्य)	श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी० ...	८
८.	कौन पलरा भारी है ?(व्यंग्य-चित्र)	श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव	१८६
९.	कांकरोली और विद्या-विभाग का दशाब्दी-महोत्सव (सचित्र) ...	श्रीयुत नरेंद्र वर्मा विद्यार्थी	४२६ और २३१
१०.	गुरु-दक्षिणा (८ व्यंग्य-चित्रों में)	... ...	२३१
११.	चयन (सचित्र)	श्रीकमलाकुमारी, श्रीमहेशचंद बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद, श्रीलक्ष्मीचंद्र वाजपेयी 'चंद्र', पं० राजाराम, संगीताध्यापक महिला-विद्यालय, लखनऊ, श्रीसंतराम बी० ए०, श्रीमती विद्यावती 'कोकिल', कुमारी विद्या भार्गव, श्रीभागवत शुक्ल 'पाथेय' साहित्यरत्न, आयुर्वेदशास्त्री, श्रीपं० चंद्रशेखर पांडेय 'विराट', श्रीयुत 'संतोषी', श्रीबुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०, कुमारी शांतिदेवी अरोड़ा विदुषी, विशारद, अध्यापक श्रीशंकरदेव विद्यालंकार, कुमार श्रीस्वर्णकेतु, श्रीमती राजरानी चौहान, श्रीमंगलामोहन, श्रीयुत अमरनारायण अग्रवाल, श्रीसुमित्राकुमारी सिनहा, कुमारी शकुंतला सकसेना एम्० ए०, श्रीमती लक्ष्मी वर्मा बी० ए०, श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र', श्रीपुरुषोत्तमदास गोस्वामी बी० ए०, श्रीयुत सरयूप्रसाद 'शाही', श्रीयुत लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, श्रीयुत रमावल्लभ चतुर्वेदी, श्रीयुत शिवराजनारायणदेव बी० ए०, एल्-एल्० बी० और श्रीयुत वैजनाथप्रसाद दुबे विशारद ...२७, १४७, २४२, ३४५, ४४४ और	
१२.	ज़मींदारी-प्रथा की प्राचीनता ...	श्रीयुत राजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	
१३.	जाति-पाँति की राक्षसी (व्यंग्य-चित्र)	श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव	
१४.	जीवन-संतरण-कला ...	श्रीयुत सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए० ...	
१५.	'तक्षशिला' की आलोचना ...	अध्यापक श्रीचेतराम शर्मा	
१६.	दवाई (कहानी)	श्रीयुत मुंशी ज़हूरबख्श हिंदी-कोविद ...	
१७.	दुबेजी के संस्मरण (हास्य) ...	श्रीयुत विजयानंद (दुबेजी) १०२, २२५, ३१२, ४२३ और	
१८.	दो कांग्रेसी मंत्रिमंडलों द्वारा पद-परित्याग ...	महाराजा डॉक्टर श्यामबिहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्०	

संख्या लेख लेखक पृष्ठ

१९. नए फूल ... ... ७१, १६१, २५५, ३२६, ४६४ और ५५७

२०. न-मालूम क्यों ? (कहानी) ... श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० २६३

२१. नव्य कला में मनोविज्ञान ... श्रीप्रभाकर माचवे एम्० ए०, साहित्यरत्न

२२. नागरी-लिपि में कुछ आवश्यक परिवर्तनों की वांछनीयता ३७४
श्रीयुत मोतीलाल गुट्टू ... ...

२३. नारी (आलोचना) ... श्रीयुत हेमचंद्र मोदी २३१

२४. निःशुल्क, अनिवार्य प्रारंभिक ५०३
शिक्षा-प्रचार ... ... श्रीयुत महेशचंद बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद ... १०६

२५. नंदा (कहानी) ... ... श्रीमती विद्या ठाकुर ११५

२६. पद्माकर का भाव-चित्रण ... श्रीगोपेशकुमार ओझा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ३८१

२७. परीक्षा ... ... श्रीयुत दीनानाथ व्यास विशारद, श्रीउमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स), श्रीयुत श्री०, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, साहित्याचार्य श्रीपं० गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि', श्रीकालिदास कपूर एम्० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्-एस्० सी०, श्रीमोहनलाल काश्यप बी० ए० और पं० रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ६४, १५७, २५२, ३५१, ४५६ और ५५३

२८. पश्चिम में शैतान की पूजा ... श्रीरामनाथ 'सुमन' २८६

२९. प्रेम (कहानी) ... ... श्रीयुत 'अमर' एम्० एस्-सी० ... ... २०६

३०. बलिदान (कहानी) ... श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत' ४६७

३१. बिजली की कौंध (गद्य काव्य) श्रीयुत वृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ४४४

३२. बिहार के प्रसिद्ध राष्ट्र-पुजारी मथुरा बाबू (सचित्र, जीवनी) श्रीयुत रामचंद्र त्रिवेदी ४३७

३३. बेचारा भारत (व्यंग्य-चित्र) ... श्रीयुत शिक्षार्थी ५०१

३४. भाट लोग ब्राह्मण हैं या नहीं ? रावराजा डॉक्टर श्यामबिहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० तथा रायबहादुर पं० शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए० ... ... ४०

३५. महाभारत-काल में गोवध-निषेध श्रीयुत गणेशदत्त 'इंद्र' आगर ४०६

३६. मिस्टर एलीफ़ैंट (प्रहसन) ... श्रीपं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' २०१

३७. मेरी काश्मीर-यात्रा (सचित्र, भ्रमण) श्रीबलदेवप्रसाद गुप्त १३३

३८. मैना (कहानी) ... ... श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' बी० ए० ... ... १७

३९. रैम्ज़े मैक्डानाल्ड का अंत (सचित्र, जीवनी) ... ... श्रीसतीशचंद्र काला बी० ए० ... ... १२३

४०. लखनऊ का कान्यकुब्ज-कॉलेज (सचित्र) ... ... श्रीपं० गंगानारायण द्विवेदी ६

४१. लुई पाश्चियर (जीवनी) ... श्रीपं० देवीदत्त शुक्ल ८४

४२. वर्ण-व्यवस्था और जाति-पाँति श्रीयुत प्रोफ़ेसर धर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी १६५

४३. वर्तमान काव्य-साधना

४४. विमाता (कहानी) श्रीयुत [illegible] विशारद ...

संख्या लेख — लेखक
४५. विवेचना की आवश्यकता ... श्रीयुत गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' ... ...
४६. विश्वव्यापी आर्थिक संकट और उसके कारण ... श्रीयुत महेशचंद बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद ...
४७. वैभवशाली हिंदू-राष्ट्र ... श्रीयुत बैरिस्टर विनायक-दामोदर सावरकर ... ...
४८. सच्चा भागवत-धर्म ... ... श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ...
४९. सत्य-समाज की माँगें ... श्रीयुत दरबारीलाल सत्यभक्त ... ...
५०. सामुद्रिक शक्ति ... ... श्रीयुत ऋतलालप्रसाद वर्मा ... ...
५१. सुधा-चित्रावली ... ... ५३, १४६, ३४१ और
५२. सुधा-पहेली-प्रतियोगिता ... ... ६७, १५३, २७१, ३५५ और
५३. सुनहला पक्षी (हास्य-रस) ... श्रीयुत तरंगित ... ...
५४. सेल्सबर्ग में एक सप्ताह (सचित्र, भ्रमण) ... ... श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ... ...
५५. सौरभ (सचित्र, संपादकीय विचार) ... ... ७२, १६३, २५६, ३६०, ४६५ और
५६. संतों ने हमारे लिये क्या किया ? श्रीयुत प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी एम्० ए० ... ...
५७. स्पेन और योरप के महाराष्ट्र ... श्रीरामनाथ 'सुमन' ... ...
५८. हत्यारा (कहानी) ... ... श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ... ...
५९. हमारी डाक ... ... श्रीसियारामशरण गुप्त ... ...
✓ ६०. हास्य का आरोग्य-दृष्टि से विचार ... ... श्रीपं० लक्ष्मीधरजी वाजपेयी ... ...

चित्र-सूची

क—रंगीन

(आर्ट पेपर पर)

संख्या चित्र — पृष्ठ
१. अछूत (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव २७७
२. कुमार गंगानंदसिंह एम्०ए० (दुरंगा) ... १०६
३. कांकरोली-कवि-सम्मेलन (दुरंगा) ... ५२५
४. गो० श्रीबालकृष्णजी महाराज (तिरंगा) १
५. जीवन-संध्या (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीराधेश्याम भटनागर ४७७
६. पतझड़ (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीहकीम मुहम्मदख़ाँ ८३
७. पर्वतीय आत्मा (तिरंगा)—[चित्रकार,

संख्या चित्र
८. प्रथम किरणें (दुरंगा)—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ... ...
९. प्रसिद्ध दानवीर सेठ पद्मपतिजी सिंघानिया (दुरंगा) ... ...
१०. प्रेम-पुजारिन (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीहकीम मुहम्मदख़ाँ ...
११. बिछोह (दुरंगा)—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव ... ...
१२. मस्ती (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव ... ...

चित्र ... पृष्ठ
मेरे वीर सुभाषचंद्र ! (दुरंगा) ... ३१६
राष्ट्र-रत्न और हिंदी-हितैषी माननीय बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन (दुरंगा)... ४३६
श्री'निराला'जी (दुरंगा)... ... १०७
श्रीयुत प्रतापचंद्र बी० ए० तथा उनकी नववधू श्रीसरलादेवी बी० ए० (दुरंगा) २१८
संख्या चित्र पृष्ठ
१८. सुंदर (दुरंगा)—[चित्रकार, श्रीअसित-कुमारजी हालदार २४
१९-२१. हिंद-प्रांत के शिक्षा-मंत्री माननीय बाबू संपूर्णानंदजी (३ चित्र, दुरंगे) ... ... ५०८ और ५०९
२२. होनहार, उत्साही नवयुवक चिरंजीव शुभदेव शर्मा (दुरंगा) २१६

ख—व्यंग्य

कौन पलरा भारी है ?—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव ... १८६
गुरु-दक्षिणा-संबंधी ८ चित्र—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव ... २३५-२४२
१०. जाति-पाँति की राक्षसी—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव ... ३००
११. बेचारा भारत—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ५७१

ग—सादे

अमर कलाकार शरच्चंद्र चटर्जी ... ३१७
अमृतधारा-टूर्नामेंट ४४८
कन्याओं की दौड़ ३४३
कमर और टाँग का व्यायाम ... ५६
कान्यकुब्ज-कॉलेज का छात्रावास ... १३
कान्यकुब्ज-कॉलेज-भवन १४
कान्यकुब्ज-कॉलेज-हॉल १२
कुछ बालिकाएँ ५४
कुमारी कल्याणी गुप्त ४४५
कुमारी शकुंतला सक्सेना एम्० ए० ... ४४९
कुमारी शांतिदेवी अरोड़ा २४८
कुमारी स्वतंत्रता भगवती और कुमारी सुंदर वोहरा ४४६
गो० श्रीगोविंदलालजी ५३१
गो० श्रीविट्ठलनाथजी महाराज ... ५२७
मेजुएट महिलाएँ ४४८
टेनिस की खिलाड़िनें ५३
वाणिज्यभूषण लाला रामजीदास वैश्य एफ़्० आर० एस्० ए०, एफ़्० आई० एफ़० एस० सी०, एम्० आर० ए० एस० ३६८
तीन पैर की दौड़
१९. तेज़ साइकिल-चालिका कुमारी मान कौशाह ३४४
२०. नौचौकी राजसागर (राजनगर, कांकरोली) ४२९
२१. नौचौकी (राजसागर) ४३१
२२. बिहार के प्रसिद्ध कांग्रेस-कार्यकर्ता तथा साहित्य-सेवी नवयुवक पं० रामचंद्र त्रिवेदी २६८
२३. बिहार-रत्न, राष्ट्र-पुजारी मथुरा बाबू ... ४३८
२४. महामना माननीय मदनमोहन मालवीय २५७
२५-३७. मेरी काश्मीर-यात्रा-संबंधी १३ चित्र १३४-१४१
३८. मंदिर का सिंहद्वार (कांकरोली) ... ४३३
३९. मंदिर के प्रधान द्वार का भीतरी दृश्य (कांकरोली) ४३३
४०. रावराजा डॉ० पं० श्यामविहारी मिश्र ११
४१. लाहौर की उन्नतिशील महिलाएँ ... ४४७
४२-४३. लाहौर में फलों का प्रदर्शन (२ चित्र) ... ... ३४१ और ३४३
४४. लोकमान्य तिलक ५६
४५. वार्षिक फूलों की प्रदर्शनी ... ३४२
४६. विहंगम-विहार, कांकरोली ... ४६

संख्या चित्र पृष्ठ
४८. श्रीकपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्' ... ५३९
४९. श्रीकुँवर सोमेश्वरसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... १४४
५०. श्रीजगदीशनारायणजी बख़्शी ... ५५
५१. श्रीद्वारकाधीश प्रभु (कांकरोली) ... ४३४
५२. श्रीधर्मदेव शास्त्री, दर्शनकेसरी ... ३२३
५३. श्रीपं० जटाशंकर शास्त्री और श्रीपो० कंठमणि शास्त्री ४३६
५४. श्रीपं० बालकृष्णजी पांडेय १५
५५. श्रीपं० यमुनालालजी दशोरा ... ५३२
५६. श्रीपं० श्रीनारायण चतुर्वेदी १०
५७. श्रीपं० हरिश्चंद्रजी शर्मा १४५
५८. श्रीमती चंद्रवतीदेवी ५६७
५९. श्रीमती विद्या ठाकुर ११५
६०. श्रीमान् बी० डी० देशपांडेय साहब ... १४६
६१. श्रीमान् बैरिस्टर बी० एम्० पँवार साहब १४३
६२. श्रीमान् सरदार त्र्यंबकराव पँवार साहब १४४
६३. श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र' ... ४५३
६४. श्रीयुत जगमोहन महाजन ४४७

संख्या चित्र
६५. श्रीयुत डॉ० आर० एस्० अग्रवाल ...
६६. श्रीयुत दीनानाथ व्यास विशारद ...
६७. श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल-एल्० बी० ... ...
६८. श्रीयुत बलदेवप्रसाद गुप्त ....
६९. श्रीयुत 'मस्त' दंपति तथा बीच में उनका चिरंजीव पुत्र हरि ... ...
७०. श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ... ...
७१. श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ...
७२. श्रीरमेशचंद्र और श्रीमज़हरअली ...
७३. श्रीसतीशचंद्र काला बी० ए० ...
७४. श्रीसुंदर-निवास (राजप्रासाद, कांकरोली)
७५-८४. सेल्सबर्ग-संबंधी १० चित्र
८५. स्व० जस्टिस गोकर्णनाथजी मिश्र एम्० ए०
८६. स्व० प्रो० विष्णुनारायण भातखंडे ...
८७. स्व० मि० रैम्ज़े मैकडोनाल्ड ...
८८. हिंदी-हितैषी गो० श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज ... ...

चित्ताकर्षक

उपन्यास

मा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, पं० विश्वंभरनाथजी शर्मा 'कौशिक'। एक ओर तो आप देखेंगे कि अनुचित लाड़-प्यार से बच्चे कैसे बिगड़ जाते हैं, और दूसरी ओर देखेंगे कि एक दृढ़-चित्त माता के उपदेशों से ग़रीबी में भी पला हुआ बालक कैसा सच्चरित्र निकला है!

मूल्य २), सजिल्द २।।)

बिदा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव। इस पुस्तक का पहला संस्करण शीघ्र ही बिक गया। दूसरा संस्करण बहुत थोड़ा रह गया है। अपनी कापी शीघ्र मँगवा लीजिए, नहीं तो बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मूल्य २।।,) सजिल्द ३)

सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य!

संसार-रहस्य

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे, और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २७४; मूल्य १।।), सजिल्द २)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

यदि आप अपने दुलारे बच्चों को हँसी से लोट-पोट होते देखना चाहते हैं, तो आज ही 'विचित्र वीर' की एक प्रति अवश्य मँगा लें।

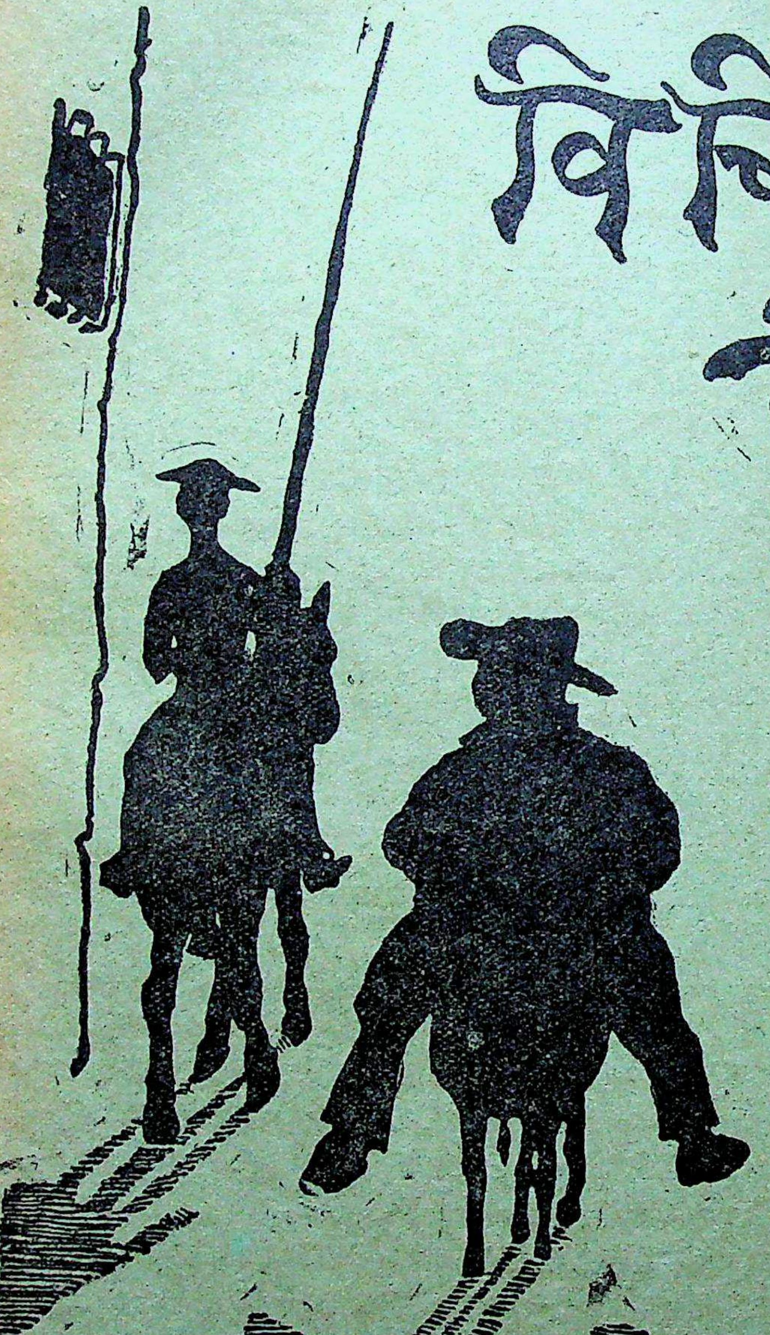

विचित्र वीर

(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, हास्यरसावतार स्वनामधन्य पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी। पुस्तक सुप्रसिद्ध अँगरेज़ी उपन्यास Don Quixote का, जो कि संसार-भर के १२ सर्वोत्तम उपन्यासों में से एक है, अनुवाद है। यू० पी० की ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल में पाठ्य पुस्तक है। अतः इसकी रोचकता के विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। पढ़ते जाइए, और हँसते-हँसते लोटते जाइए। ५ चित्र तथा १२० पृष्ठ; मूल्य ||), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

भगवतीचरण वर्मा

पढ़ते ही—

तबियत फड़क उठेगी !

पतन का प्रत्येक चरित्र स्वाभाविक है। मनुष्य में दोष और गुण दोनो विद्यमान हैं, पर दोषों के आधार पर किसी मनुष्य से घृणा करना उचित नहीं। पतन के चरित्रों को पढ़कर उन पर क्रोध नहीं होता, उनसे सहानुभूति हो जाती है। घृणित-से-घृणित मनुष्य सहानुभूति का पात्र होता है। उपन्यासकार की सफलता का अपने दूषित चरित्रों के प्रति पाठकों की सहानुभूति आकर्षित कर देने से बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है।

चरित्र-चित्रण की कुशलता, भाषा का सौंदर्य, शब्दों का लालित्य, कल्पना की मनोरमता और मनुष्य-विज्ञान का ज्ञान, सबका एक साथ सम्मिलन देखकर मुँह से वाह-वाह निकलने लगेगी ! यदि शाही लखनऊ के अंतिम नवाब वाजिदअलीशाह की काम-पिपासा, उनकी प्रेम-लीला और विलासिता का दिग्दर्शन तथा मनुष्य-चरित्र के पतन का सारा इतिहास बायस्कोप के तमाशों की तरह देखना हो, तो इस उपन्यास को अवश्य पढ़िए।

मनुष्य के चरित्र का विश्लेषण इस उपन्यास में इस कुशलता से किया गया है कि हिंदी-उपन्यास-भंडार में इसका सदा मान रहेगा। चित्रों के कारण तो आँखों का पर्दा हट जाता है। मज़ा तो पढ़ने ही में है। मूल्य १।।।), सजिल्द २।)

गंगा-पुस्तकमाला
लखनऊ
कार्यालय

सभी प्रधान मतों और देशों की उत्तमोत्तम कथाएँ

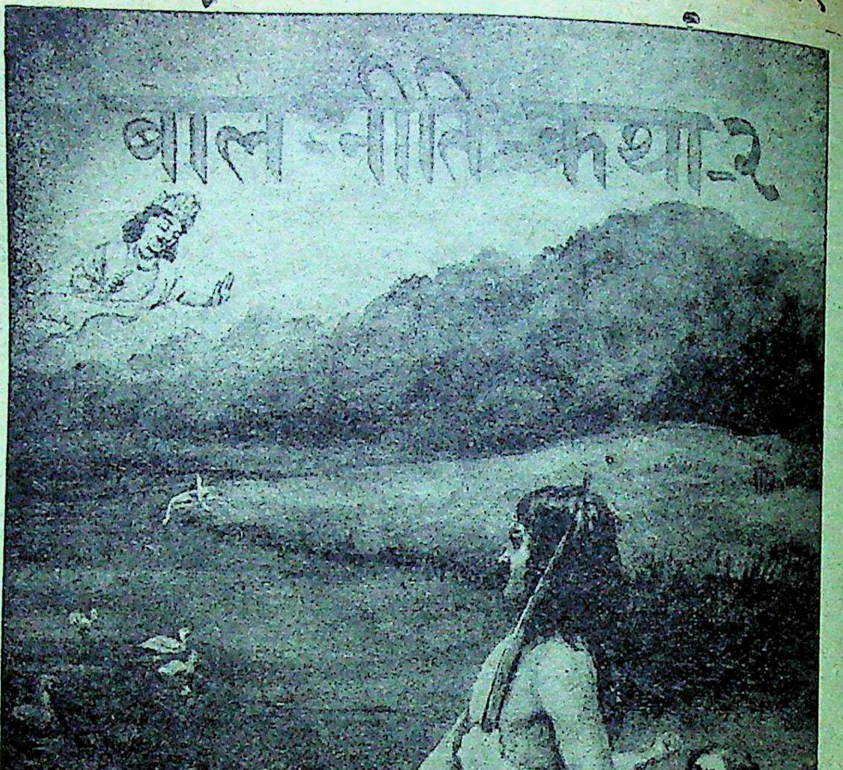

यह पुस्तक हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस-चांसलर श्रीए० बी० ध्रुव एम्० ए०, एल्-एल्० बी० की लिखी तथा स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०, अध्यापक लखनऊ-युनिवर्सिटी द्वारा अनुवादित है। पुस्तक कितनी उच्च कोटि की है, और बालकों के चरित्र पर इसका कितना अच्छा असर पड़ेगा, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि विद्वान् लेखक इस विषय के प्रकांड पंडित हैं, और चरित्र-गठन-संबंधी पुस्तकें लिखने के लिये आपसे बड़ा अधिकारी इस देश में मुश्किल से मिलेगा। आपने इस पुस्तक में सभी प्रधान मतों और देशों से उत्तम कथाएँ चुनकर संग्रह की हैं, और हरएक कथा से निकलनेवाले उपदेश भी नोट-रूप में दिए हैं, जिससे पुस्तक पाठ्य-क्रम में रक्खे जाने के लिये बहुत ही उपयुक्त हो गई है। पुस्तक दो भाग में है। प्रत्येक भाग का मूल्य १) है, दोनो का मूल्य २), सजिल्द ३)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

पं० भूपनारायण दीक्षित बी० ए०, एल० टी० लिखित

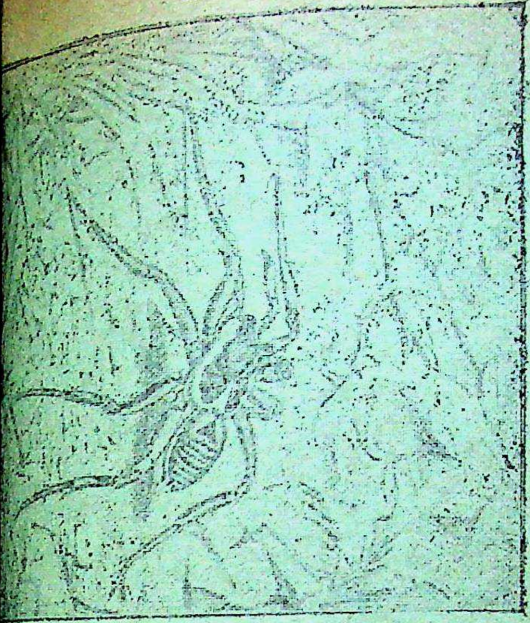

कीड़े-मकोड़े

चींटी, बर्रें, टिड्डी आदि कीड़े-मकोड़ों का ऐसा सुंदर वर्णन किया गया है कि पढ़ने में क़िस्से-कहानी से कहीं अधिक आनंद आता है। बालकों के योग्य इस विषय की अब तक कोई पुस्तक न थी। यह पुस्तक भी ६ हाफ़टोन और एक रंगीन चित्र से अलंकृत है। मूल्य ।=), सजिल्द ॥=)

गधे की कहानी

लिखकर लेखक ने ाल-साहित्य के एक ुख्य अंग की पूर्ति ी है। गधे ने अपनी कथा बड़े रोचक ढंग े कही है। भाषा ख़ूब रल और मुहाविरेदार है। गधे ने अपनी भाषा में मानव-समाज पर कैसी हास्यजनक आलोचनाएँ की हैं, यह ेखने ही योग्य है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—
ंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

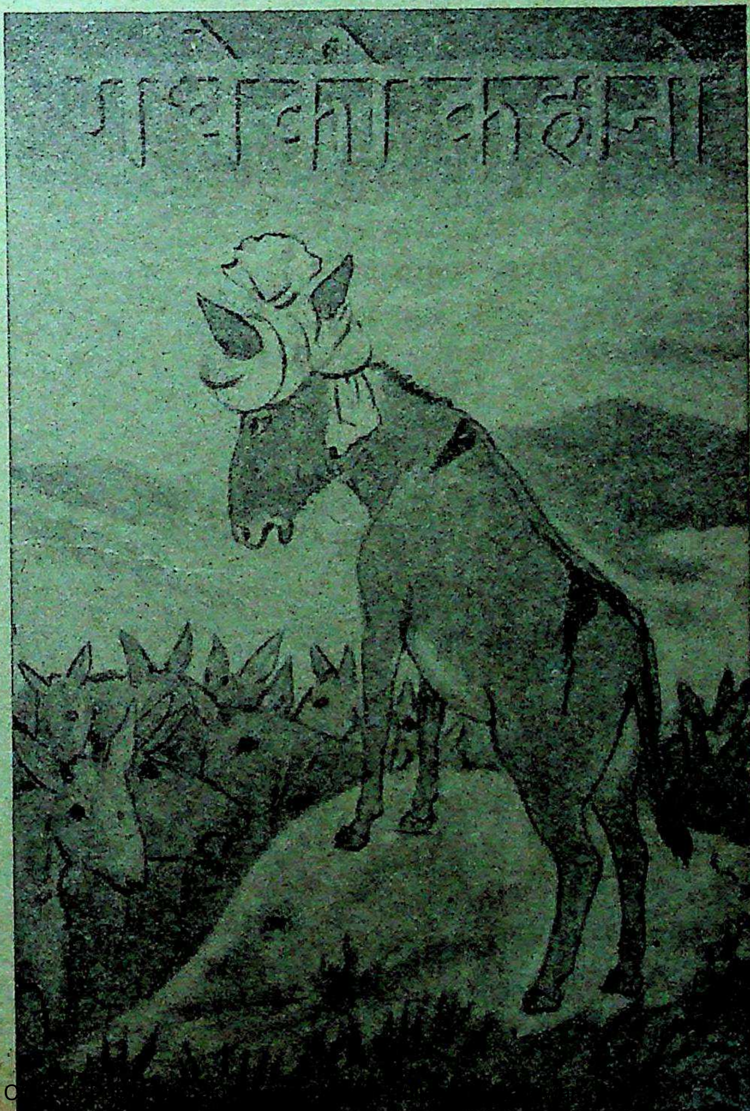

* हिंदी-उपन्यासों का शिरोमणि *

द्वितीय आवृत्ति

बहता हुआ फूल

[अनुवादक, पं० रूपनारायण पांडेय]

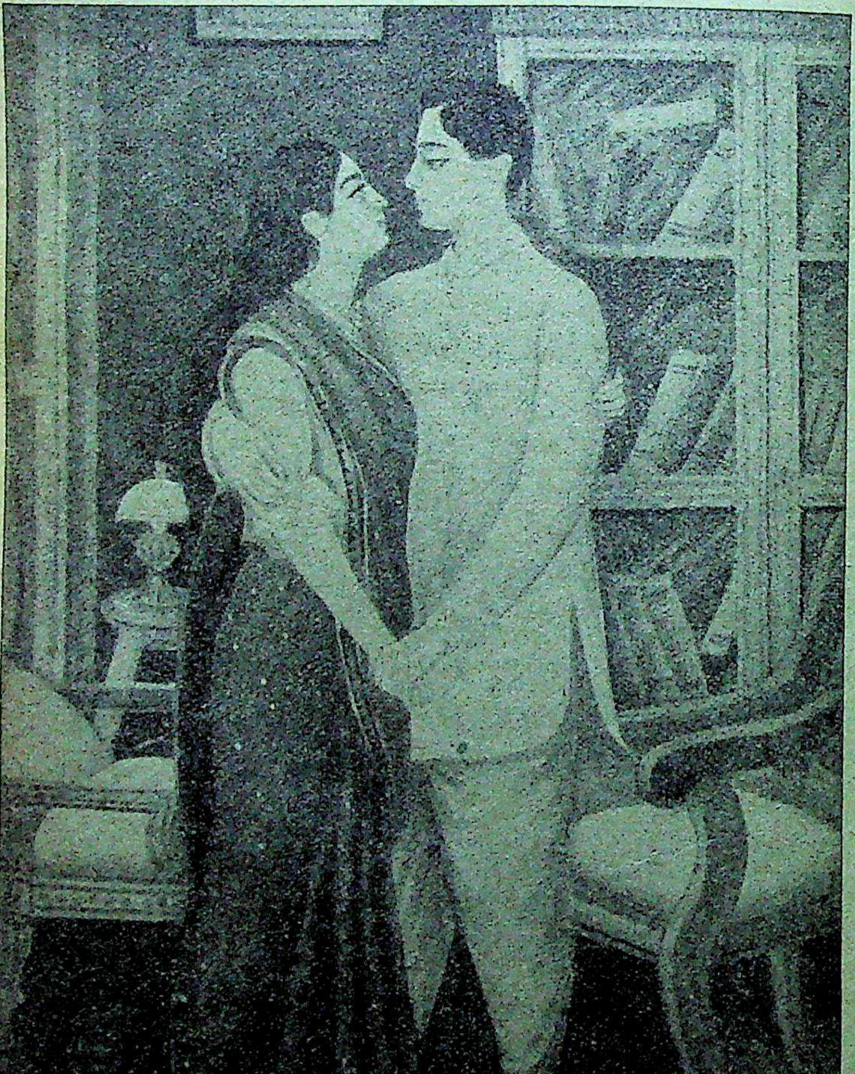

वंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारुचंद्र वंद्योपाध्याय बी० ए० का नाम ख़ूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उच्च श्रेणी के उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के 'स्रोतेर फूल' नाम के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकेंगे। अनुवाद साधारण बोलचाल की भाषा में किया गया है, अतः सर्वसाधारण इसे बिना कष्ट के समझ सकते हैं। बँगला-मुहाविरों को शुद्ध हिंदी-भाषा में परिणत करने में जो कमाल दिखलाया गया है, सोने में सुगंध का काम हो गया है। इसका पहला संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। अनेक तिरंगे चित्रों से सुसज्जित लगभग ५०० पृष्ठ के बड़े पोथे का मूल्य केवल २॥), सजिल्द ३)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

(स्त्रियों के पढ़ने योग्य)

सुघर गँवारिन

(नए ढंग का नवीन मौलिक उपन्यास)

लेखक—हिंदी के प्रसिद्ध लेखक ताजिरुलमुल्क लाला रामजीदास वैश्य (ग्वालियर)

आपने सैकड़ों अच्छे-अच्छे उपन्यास और कहानियाँ पढ़ी होंगी, पर इस पुस्तक को पढ़कर आप कल्पना-सौंदर्य की रोचकता से प्रसन्न हो जायँगे, और इसके जासूसी वर्णन आपको चकित कर देंगे। इसमें चित्रित आजकल का सामाजिक जीवन आपकी आँखों के सामने एक अबला का जीता-जागता चित्र खींचकर रख देगा। मनोरंजकता के साथ सदाचार की शिक्षाएँ भी मिलेंगी। इसमें भेड़ के रूप में भेड़ियों के चरित्रों का चित्रण बड़ी सुंदरता से दिखलाई पड़ेगा।

डॉक्टरों की लीला, ज़मींदारों और उनके कारिंदों की करतूत, दीन-दुखियों का सरल हृदय, गाँववालों का मेल-जोल, ये सब बातें इस पुस्तक में हैं।

आप इसे सामाजिक उपन्यास कह सकते हैं। आप इसे जासूसी उपन्यास भी कह सकते हैं। आप इसे कल्पना-साम्राज्य से संबंध रखनेवाला अनूठा उपन्यास भी कह सकते हैं, और सबसे अंत में आप इसे हिंदू-संस्कृति के अनुकूल आदर्श स्त्री का चरित्र सामने रखनेवाला, स्त्र्युपयोगी, शिक्षाप्रद उपन्यास भी कह सकते हैं।

आप पढ़कर ही कह सकेंगे कि कैसी उपयोगी एवं अनूठी पुस्तक है।

हिंदी के सब बड़े-बड़े पत्रों ने इसकी खूब प्रशंसा की है। मूल्य १।।), सजिल्द २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

क्या आप अपने प्रिय बच्चों को हँसी से लोट-पोट होते देखना चाहते हैं ?
यदि हाँ, तो आज ही 'नटखट पाँड़े' की एक प्रति अवश्य मँगा लें !

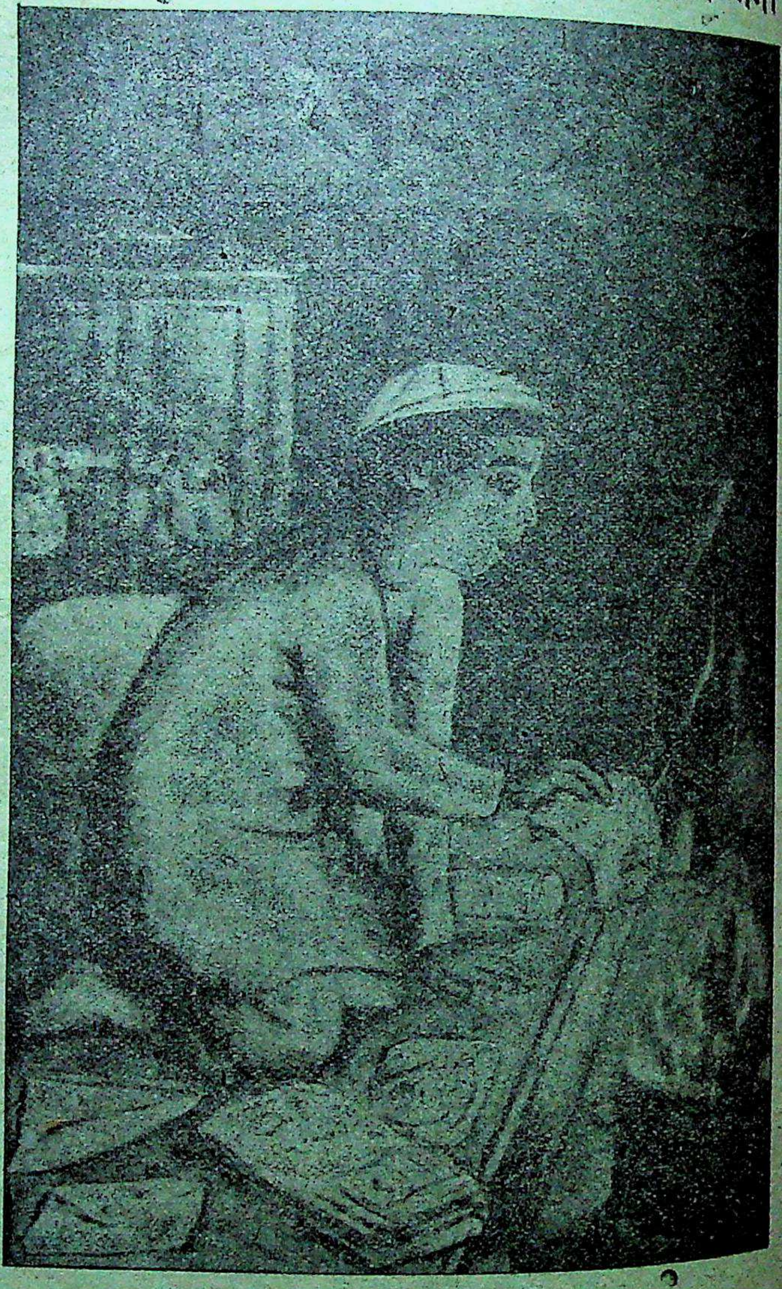

नटखट पाँड़े (द्वितीयावृत्ति)

लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी०। एक नटखट लड़के की
कथा। एक-एक शब्द में हास्य-रस भरा हुआ है। नटखट पाँड़े का विद्यारंभ, डॉक्टर
की दुर्दशा, बोर्डिंगहाउस के अध्यक्ष महोदय की दुर्गति, नटखट पाँड़े का रात को भाग
गाने की मजलिस, सारी कहानी इतनी अनूठी और दिलचस्प है कि लड़के इसे समा
बिना नहीं रह सकते। कितने ही प्रसंग तो ऐसे हैं, जहाँ मारे हँसी के पेट में बल पड़

मूल्य १), सजिल्द १।)
मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार,

بعدالت اسپیشل جج درجہ دوئم شاہجہانپور

نمونہ نمبر ۱۷۰

فارم اطلاعنامہ حسب دفعہ ۱۱ - ایکٹ جائدادہائے مقروضہ ممالک متحدہ

نمبر مقدمہ ۲۵۷ سنہ ۱۹۳۶ء

اجلاس جناب مسٹر مہاراجہ بہادر لال صاحب بہادر اسپیشل جج سکینڈ گریڈ وضلع شاہجہانپور -

مسماۃ نایاب بیگم وغیرہ - بنام بدری پرشاد وغیرہ

تاریخ پیشی ۲ جون سنہ ۱۹۳۸ء

ہرگاہ مسماۃ نایاب بیگم وغیرہ سائلان نے ایک درخواست حسب دفعہ ۴ ایک جائدادہائے مقروضہ پیش کی ہے لہذا اس تحریر کی رو سے حسب دفعہ ضمنی ۱ دفعہ ۱ ایکٹ مذکور اطلاع دی جاتی ہے کہ اس جائداد کو جس کی تفصیل ضمیمہ ہائے مذکور منسلکہ میں درج ہے درخواست دہندہ نے حسب دفعہ ۸ یا حقداران نے حسب دفعہ ۱۰ سائلا مذکور کی جائداد بتایا ہے -

اگر کوئی شخص جائداد مذکور پر کوئی دعویٰ رکھتا ہو تو تاریخ اشاعت سے جو ا اشتہار کے گزٹ ممالک متحدہ میں شائع ہونے کی تاریخ ہے - تین ماہ کے اندر اپ استحقاق کے بارہ میں اس حاکم کے رو برو اپنی عرضی پیش کرے جس کے دستخط ذیل میں ثابت ہیں۔

تفصیل جائداد جسکی اشاعت ہوچکی ہے مگر غلط اشاعت ہونیکی وجہ سے دوبار اشاعت کی جاویگی -

ضمیمہ (الف)

نمبر سلسلہ وار	ضلع	نام جائداد	موضع معہ نمبر بندوبست و محال	رقبہ	مالگذاری مال	معہ ابواب ابواب	تعداد حصہ مالکی تعداد حصہ
۱	شاہجہانپور	زمینداری	کترہ محال دوئم نمبر کھاتہ ۱۸	۲۸—۷۰	۳ ۱۳ ۶	۳ ۱ ۶	منجملہ ۵ سہام کے ۳ سہام
۲	”	”	بہتہ خاص نمبر کھاتہ ۱	۸۲—۸۱	۷۵ ۳ ۰	۷ ۸ ۰	کل کے نصف کل
۳	”	”	کھجوریا محال پنجم نمبر کھاتہ ۳	۱۲۶—۳۷	۲۲۷ ۸ ۰	۲۳ ۱۲ ۰	
۴	”	”	کھجوریا محال پنجم ترعہ رنگ سفید محال اول پرگنہ جلال پور	منجملہ ۷ بسوہ ۵ بسوانسی ۵ ک رقبہ ۱۵۱-۷۵	جمعی ۲۶۱ روپیہ ۸ آنہ پنی مرحو ہنوں بیگ کھاتہ کھیوٹ نمبر ۲		۶ بسوہ ۱ بسوانسی ۱۲ اطنوانس ۱۸ عنوانسی منقسم پر ۵ سہام ۲ سہام معہ ھاملات محال کھاتہ کھیوٹ نمبر ۲ رقبہ ۱۰ حسب رسید -

مہر۔

ت عوام فروخت کے لئے]

نمونہ نمبر ۱۷۰

فارم اطلاع نامہ حسب دفعہ ۱۱ ایکٹ جائدادہائے مقروضہ ممالک متحدہ

عدالت اسپشل جج ایٹہ

نمبر مقدمہ ۳۱۶ سنہ ۳۶ع

ہرگاہ بابورام و گنگاپرشاد خلف منشی جےلعل قوم کایستھ ساکن موضع ککرارہ پرگنہ ظمنگر ضلع ایٹہ نے ایک درخواست حسب دفعہ ۴ ایکٹ جائدادہائے مقروضہ پیش کی لہٰذا اِس تحریر کی رو سے حسب دفعہ ضمنی ۱ دفعہ ۱۱ ایکٹ مذکور اِطلاع دی جاتی ہے کہ اُس جائداد کو جسکی تفصیل ضمیمہ ہائے منسلکہ میں درج ہے درخواست دہندہ نے حسب دفعہ ۸ یا حقداران نے حسب دفعہ ۱۰ مذکور کی جائداد بتادیا ہے

اگر کوئی شخص جائداد مذکور پر کوئی دعویٰ رکھتا ہو تو اِس اِشتہار کے گزٹ ممالک متحدہ میں شائع ہونے کی تاریخ سے تین ماہ کے اندر اپنے اِستحقاق کے بارہ میں حاکم کے روبرو اپنی عرضی پیش کرے جس کے دستخط ذیل میں ثبت ہیں—

ضمیمہ (الف)

قرضدار کے اِستحقاق مالکانہ متعلقہ اراضی

ضلع	نام جائداد	موضع مع نمبر بندوبست و محال	درخواست دہندہ کی مستقل و قابل وراثت و حقیت کی انتقال تصریح	وسعت حقیت درخواست دہندہ مندرجہ رجسٹر دفتر صاحب کلکٹر ضلع	درخواست دہندہ کی حقیت پر موجودہ تشخیص مالگذاری

۱—حقیت زمینداری تعدادی ۲ بسوہ ۶ بسوانسی ۱۹ کچوانسی ۵ ننوانسی محال غیر والفلاکان کھاتہ کھیوت نمبر ۷ واقع موضع ککرارہ پرگنہ اعظمنگر ضلع ایٹہ بقدر حصہ سایلان—

۱—ایک قطعہ مکان سکونتی تعمیری خام واقعہ موضع ککرارہ پرگنہ اعظمنگر ضلع ایٹہ بقدر ۳/۴ حصہ سایلان—

ضمیمہ (ب)

قرضدار کی جائداد جو بہ استثناء حقوق مالکانہ متعلق اراضی حسب دفعہ ۶۰ ضابطہ دیوانی سنہ ۱۹۰۸ع قرق اور نیلام ہوسکتی ہے *

نمبر سلسلہوار	نوعیت جائداد	وسعت حقیت درخواست دہندہ
۱	ایک پڑیا	
۲	ایرک	
۳	ایک جوڑی بیل کاشت کیلئیے	

منصرم

[बग़रज़ प्रयाम क़रोक़्त के लिये

नमूना नं० १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुरादाबाद

नं० मुक़द्दमा १०२ सन् ३७

मौलवी अबदुस्सलाम सायल

हरगाह मौलवी अबदुस्सलाम वल्द मौलवी अबदुर्रब साकिन बछरायूँ ज़िला मुरादाबाद ने एक दरख्वास्त दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हकदारों ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो तो मुश्तहरी से जो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत गज़ट में छपने की तारीख़ है तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नं० बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और काबिल इंतकाल हक़ियत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ियत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	मुरादाबाद	सेहराई	मौज़ा गजसतल परगना अमरोहा मुहाल सब्ज़	बिस्त बिस्वा मुहाल सब्ज़		मुंदरजा रजिस्टर सरकारी
	,,	,,	मौज़ा गजसतल मुहाल सुर्ख़	एक बिस्वा ३ बिस्वांसी १२ क० १७ त० १८ न० मिनजुमला २ बिस्वा ६ बिस्वांसी १४ क० १३ तन० १० न०		,,
	,,	,,	रो० खाता १	४ सिहाम मिनजुमला ५ सिहाम		,,
	,,	,,	,, ,, ३	४ सिहाम मि० ५ सिहाम		,,
	,,	,,	,, ,, ४	३५ सिहाम मि० ४८ सिहाम		,,
	,,	,,	,, ,, ५	६५४ सिहाम मि० ८१० सिहाम		,,
		,,	मौज़ा बिहारीपुर मुहाल सब्ज़ खाता नं० १	बिस्त बिस्वा		,,
	,,	,,	कस्बा बछरायूँ मुहाल अब्बासअलीख़ाँ पट्टी ज़र्द	$\frac{५}{४}$ बीघा मि० $\frac{९३}{६}$ बी० अज़ जुमला $\frac{६६}{४}$ बी०		,,
१०	,,	,,	ऐ० पट्टी सफ़ेद	$\frac{८८}{३}$ बीघा मि० $\frac{१०८}{८}$ बि०		,,
११	,,	,,	ऐ० पट्टी रंग सब्ज़	१ बीघा क० ब० $\frac{१५}{१}$		,,
	,,	,,	ऐ० रंग सुर्ख़	१२ $\frac{१०}{१६}$,, ,, १८ बीघा		,,

१२	,,	,,	मौज़ा खरसाल कलाँ मुहाल ज़र्द	१ बिस्वा ८ बि० ४ क० १६ त० ३ न० मिनजुमला बिस्त बिस्वा
१३	,,	,,	मौजा मोहरा मुहाल ज़र्दा खा० १	बिस्त बिस्वा
१४	,,	,,	मौज़ा कांका ठेर मुहाल असली मिलक मुंज़क्ता	४ एकड़ ४९ डिसमिल
१५	,,	,,	मौज़ा बारीपुर मुहाल सालिम खाता न० १	१४ बिस्वा १५ बि० १० कचवांसी
१६	,,	,,	मौजा खादगूज़र मुहाल ज़र्द मौसूमा बहक खुदावंद करीम	बिस्त बिस्वा मुहाल ज़र्द
१७	,,	,,	मौज़ा बेरखेड़ा मुहाल ज़र्द खाता १	बिस्त बिस्वा
१८	,,	,,	मौज़ा गजस्तल मुहाल ज़र्द बवक़्फ़ अली उर०	बिस्त बिस्वा जिसमें १ बिस्वा वक़्फ़ है
१९	,,	,,	कस्बा बछरायूँ मुहाल सब्ज़ खाता नं० ५७ १७	९ बीघा मिनजुमला १८ १२ बीघा १०
२०	,,	,,	ऐ० खाता ८० १२	३० बिस्वा मिन० ५१ बीघा २ १३
२१	,,	,,	कस्बा बछरायूँ मुहाल खाता ८१ १३	१ जुज़्व मिनजुमला २ हिस्सा बाबत २ एकड़ ४१ डिसमिल
२२	,,	,,	ऐ० मुहाल सफेद खाता १०४ ९८	८४० सिहाम मिन० ३८२४ अज़ किता २ एकड़ ५०
२३	,,	,,	ऐ० खाता ७६ ९६	१४९ सिहाम ,, मि० १७६ सहाम अज किता १ एकड़ ३४ डिस०
२४	,,	,,	ऐ० खा० ६७ ४४	८ सिहाम मिन० १६ सिहाम किता १ एकड़ २६ डिसमिल
२५	,,	,,	ए० मुहाल मेहरबान-अली खाता ७८ ९३	२४२ हिस्सा मिन० २२४० बाबत ५ मिन० १९२ एकड़ ४८ डि० १८
२६	,,	,,	ऐ० खाता ३२ ११०	१८ बीघा मिन० ७९ बि० अजजुमला १२ एकड़ ४८ डि० १८ १७
२७	,,	,,	मिलक मुमफ़्ज़त मौजा भगवानपुर खादर	६ एकड़ ९७ डिसमिल
२८	,,	,,	मौज़ा मोस्तफ़ा मुस्तहक जदीद एहतमाली	२ एकड़ ८२ डि०

क़स्बा बछरायूँ मुहाल 10/8 बिस्वा मिन० 76/14 बीघा ”

” ” इबराहीमअलीखाँ 48/70

ऐ० खा० 54/76 3/4 बीघा मिन० 6/10 बीघा ”

” ” मौज़ा बारीपुर परगना १२५ बीघा आराज़ी शहर ”

” ” मुरादाबाद ख़ुद काश्त

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नं०	जायदाद की क़िस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हैसियत की वसाहत (विस्तार)
१	२	३
१	मकनाई	एकमंज़िला मकान पुख़्ता मौसूमा दारुस्सलाम व सदर दरवाज़ा शुमालरूय वाक़ै मोहल्ला मण्डी मुरादाबाद महदूदा ज़ैल शरक़ी: सराय पसयान व मकान हाफ़िज़ राहतजान गरबी: आराज़ी माहनिसारहुसैन जनूबी: सड़क पुख़्ता शुमाली: सड़क पुख़्ता
२	”	सराय मौसूमा पसयान जिसके अंदर १२ क़िता मकानात ख़ाम हैं वाक़ै मुरादाबाद मुहल्ला मण्डी मुत्तसिल मकान सायल
३	”	एकमंज़िला कोठी रिहाइश मौ० बाबाईख़ाना मतामीर पुख़्ता जिसके चारों तरफ़ बाग़ बंधा मसल है वाक़ै क़स्बा बछरायूँ परगना हसनपुर ज़ि० मुरादाबाद
४	”	एकमंज़िला कोठी पुख़्ता वास्ते रिहाइश मौज़ा बारीपुर परगना मुरादाबाद
५	”	एकमंज़िला डेरा पुख़्ता व ख़ाम वाक़ै मौज़ा गजरौला परगना अमरोहा ज़िला मुरादाबाद
६	”	एकमंज़िला डेरा ख़ाम मौज़ा मोहरा परगना अमरोहा ज़िला मुरादाबाद

मुंसरिम

سمن بغرض انفصال مقدمہ

مقدمہ نمبر ۱۰۹۹ سنہ ۱۹۳۸ ع

بعدالت پنڈت برج کسن ٹوپا صاحب جج خفیفہ مقام شہر لکھنؤ

پرشوتم داس ساکن رستوگی ٹولہ شہر لکھنؤ مدعی

بنام بابو ہرسہائے ولد منشی بلدیو سہائے قوم کایستھ ساکن محلہ گوئین تالاب تھانہ وزیر گنج شہر لکھنؤ مدعاعلیہ

ہرگاہ مدعی نے تمہارے نام ایک نالش بابت ۱۴۰ روپیہ کے دائر کی ہے لہذا آپ کو حکم ہوتا ہے کہ آپ بتاریخ ۲۸ ماہ جولائی سنہ ۱۹۳۸ ع بوقت دس بجے دن کے اصالتاً یا معرفت وکیل کے جو مقدمہ کے حال سے واقعی واقف کیا گیا ہو اور جو کل امور اہم متعلقہ مقدمہ کا جواب دے سکے یا جس کے ساتھ کوئی اور شخص ہو جو جواب ایسے سوالات کا دے سکے حاضر ہو اور جوابدہی دعویٰ مدعی مذکور کی کریں اور ہرگاہ وہی تاریخ جو آپکے حاضر کے لیئے مقرر ہے واسطے انفصال قطعی مقدمہ کے تجویز ہوئی ہے پس آپ کو لازم ہے کہ اپنے جواب دعویٰ کی تائید میں جن گواہوں کی شہادت پر یا جن دستاویزات پر آپ استدلال کرنا چاہتے ہوں اسی روز ان کو پیش کریں * اور مطلع رہو کہ اگر بروز مذکور آپ حاضر نہ ہونگے تو مقدمہ بغیر حاضری آپکی [illegible] منفصل ہوگا *

آج بتاریخ ۲۸ ماہ جولائی سنہ ۱۹۳۸ ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا

بعدالت جناب اسپیشل جج صاحب بہادر سکنڈ گریڈ مقام و ضلع شاہجہانپور

مقدمہ ۳۳۰ سنہ ۱۹۳۶ع

اجلاس جناب بابو مہاراج بہادر اسپیشل جج صاحب بہادر شاہجہانپور

تاریخ پیشی ۱۳ اگست سنہ ۱۹۳۸ع

ہری رام بالغ و پتو لال نا بالغ برفاقت ہری رام مذکور برادر حقیقی خود پسران بہاری دیال قوم ویش ساکن قصبہ جلال آباد ضلع شاہجہانپور -

پنڈت گنگا سہائے و پنڈت جمنا پرشاد پسران پتو لال و رامیشر دیال و کرشن نندن پسران نابالغان جے جے رام برہمن ساکن قصبہ جلال آباد مذکور بولایت و رفاقت پنڈت گنگا سری رام ولد لالہ شیو دیال قوم ویش ساکن قصبہ جلال آباد فریقثانیان -

ہرگاہ مسمیان ہری رام وغیرہ سائلان نے درخواست حسب دفعہ ۴ ایکٹ نمبر ۲۵ ۱۹۳۴ع عدالت ہذا میں بذریعہ جناب صاحب کلکٹر بہادر شاہجہانپور گذرانی ہے - مطالب اپنے بیان تحریری داخل کردیا ہے - لہذا جملہ اشخاص کہ جنکا قرضہ ڈگری شدہ غیر ڈگری شدہ متذکرہ بالا درخواست دہندگان کی ذات یا جائداد پر ہو اندر تین ماہ یوم شائع ہونے نوٹس و گزٹ سے بیان تحریری بنسبت اپنے قرضہ کے داخل کریں ورنہ کوئی عذر بعد میں قابل سماعت نہ ہوگا اور درخواست بعدم حاضری قرضخواہان مسموع و فیصل ہوگی -

بتاریخ ۱۲ ماہ مئی سنہ ۱۹۳۸ع دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا - منصرم

[काबिल क्रोक

इत्तिलानामा बग़रज़ एलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट नंबर २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब पंडित दाताराम स्पेशल जज साहब बहादुर दोयम दरजा दोयम मुक़ाम लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी नंबर २७ सन् १९३७ ई० इनकंबर्ड स्टेट ऐक्ट

१—शीतलाबख़्शसिंह } पिसरान सरदारसिंह अक़वाम ठाकुर साकिनान मौज़ा बानौसा परगना
२—शत्रुहनसिंह } महोना तहसील मलिहाबाद ज़िला लखनऊ क़र्ज़दार सायलान

लासादीन वग़ैरह बनाम

बनाम १—लासादीन वल्द शिवदीन क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा बहादुरपूर मज़रा मौज़ा कासानवाँ ता सीधाली ज़िला सीतापूर

२—शिवदत्त महराज वल्द नामालूम क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा गुलामपुर मजरा मौज़ा कुवरया मनवाँ तहसील व ज़िला सीतापूर

३—परागदीन वल्द शिवदीन क़ौम ब्राह्मण साकिन मौज़ा बहादुरपूर मजरा मौज़ा कसानवाँ परगना तहसील सीधाली ज़िला सीतापुर

४—जनार्दन वल्द लालताप्रसाद क़ौम ब्राह्मण साकिन मुहल्ला नरही शहर लखनऊ

चूँकि एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा सन् १९३४ ई० (ऐक्ट २५ १९३४ ई०) जिसकी तरमीम अज़रूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है मुसम्मात शीतलाबख़्शसिंह व सिंह पिसरान सरदारसिंह अक़वाम ठाकुर साकिन मौज़ा बानौसा परगना महोना तहसील मलिहाबाद की इस ग़रज़ से पेश हुई है कि ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा के अहकाम उस पर लगाए जावें।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ९ (१) ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत सन् जिसकी तरमीम अज़रूए ऐक्ट ४ सन् १९३५ ई० हुई है, इत्तिला दी जाती है कि जुमला अशख़ास को की ज़ात या जायदाद के ख़िलाफ़ हर दो डिगरीशुदा व ग़ैरडिगरीशुदा ख़ानगी क़र्ज़ाजात के मुताल्लिक हों, वह गज़ट में इस इश्तहार के छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने दावों के मुताल्लिक बयानात से उस हाकिम के रूबरू पेश करें, जिसके दस्तख़त नीचे दर्ज हैं, वरना अदम तामील उसके ख़िलाफ़ ख़्वाह डिगरीशुदा हो या ग़ैरडिगरीशुदा तरमीम अग़राज़ और मौक़ों के लिए दफ़ा १३ की रू से बाज़ाब्ता अदाशुदा समझा जायगा।

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १२ जुलाई सन् १९३८ ई० को जारी

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ पुख़ान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा।

संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

अदालत स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा अव्वल मुक़ाम बाराबंकी

मुक़द्दमा नंबरी नंबर १६६ सन् १९३६ ई०

बलरामदास
रामअनुजदास
रामविलकदास
कुमला क़र्ज़ख्वाहान

} पिसरान कृष्णबिहारी सा० सराय कायस्थान प्र० प्रतापगंज तह० नवाबगंज ज़िला बाराबंकी

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

क़र्ज़ख्वाहान फ़रीक़सानी

चूँकि बलरामदास वग़ैरह वल्द कृष्णबिहारी साकिन सराय कायस्थान ज़िला बाराबंकी की जानिब से एक ख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर ला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़िहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह

हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर पट्टी वहत व मुहाल	मुरव्वजा दिहिंदा की मुतल्लिक़ क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्त दिहिंदा मुंदर्जे रजिस्टर मुन्तक़िल साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त दिहिंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तख़मीना मालगुज़ारी	कैफ़ियत
बाराबंकी	ग़ैर मनक़ूला	शाहपुर मोहाल कृष्णबिहारी प्र० प्रतापगंज तह० नवाबगंज	हक़ीयत आला	मुसल्लम मोहाल शाहपुर मुंदर्जा खाता खेवट न० १ मुसल्लम	२०१-१०-०	
,,	,,	सराय कायस्थान मोहाल बाँकेबिहारी प्र० प्रतापगंज तह० नवाबगंज	,,	पट्टी कृष्णबिहारी खाता खेवट न० २	६२-१४-०	
,,	,,	पहरी मोहाल कृष्णबिहारी प्र० प्रतापगंज तह० नवाबगंज	,,	हिस्सा ॥-) सिनजुमला १) मुंदर्जा खाता खेवट न० १	२१६-१०-६	

फ़ेहरिस्त (बे) क़र्ज़दार की जायदाद जो बहुरितसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख्वास्तदिहिंदा	कैफ़ियत
१	जायदाद मनक़ूला	बैल—एक जोड़ गाड़ी—मंज़िल गाय—एक रास बछिया—एकरास तख़्तचोकी—१ अदद चारपाई—२ अदद	

रे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख [illegible] जारी हुआ। मुंसरिम

मँगाइए तो सही, फिर बच्चों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जायगा।

बाल-विलास

छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक और विनोद-पूर्ण कविताओं की यह अच्छी पुस्तक है। ४० से भी अधिक चित्र, काग़ज़ मोटा, टाइप बड़ा, रंगीन छपाई।

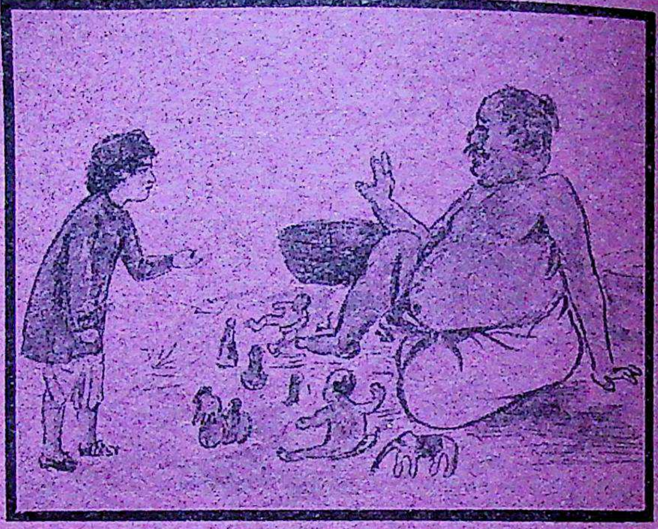

बाल-विला
इस पुं
पुस्तक के लि
छोटे-छोटे बाल
ऐसे मचल र
हैं, जैसे मि
में खिलौने के
के लिये एक ब
तोंदूमलजी
ललक रहा है।

मूल्य केवल ।≤), राजसंस्करण ॥≤)

अम्मा, अम्मा, ला दो जल्दी से--

हँसी-खेल

दद्दा ने मेरे ही लिये तो इसे मँगवाया है। इसके भीतर बहुत-सी रंग-बिरंगी तस्वीरें और मज़ेदार कहानियाँ हैं।

मूल्य सादी ॥) सजिल्द १)

मिलने का पता--गंगा-ग्रंथागार लखनऊ

سمن بغرض انفصال مقدمہ

بعدالت جناب پنڈت کشن لال کول سول جج صاحب بہادر فیض‌آباد

مقدمہ نمبر ۳۰ سنہ ۱۹۳۸ع

رمیشر تیواری ولد رام امید ساکن موضع ستی پرگنہ و تحصیل اکبرپور ضلع فیض‌آباد مدعی

بنام

چندر بلی سنگھ ولد ٹھاکر دین سنگھ ساکن موضع امان‌اللہ پور مسموہ رستم‌پور اسرب پٹی
پرگنہ و تحصیل اکبرپور ضلع فیض‌آباد مدعاعلیہ

ہرگاہ مدعی نے تمہارے نام ایک نالش بابت ۴۸۰ روپیہ کے دائر کی ہے۔ لہذا تم کو حکم ہوتا ہے کہ تم بتاریخ ۳ ماہ اگست سنہ ۱۹۳۸ع بوقت ۱۰ بجے دن اصالتاً یا معرفت وکیل کے جو مقدمہ کے حال سے قرار واقعی واقف کیا گیا ہو اور جو کل اُمور اہم متعلقہ مقدمہ کا جواب دے سکے یا جس کے ساتھ کوئی اور شخص ہو جو جواب ایسے سوالات کا دے سکے۔ حاضر ہو اور جوابدہی دعویٰ مدعی مذکور کی کرو اور ہرگاہ وہی تاریخ جو تمہارے احضار کے لیئے مقرر ہے واسطے اِنفصال قطعی مقدمہ کے تجویز ہوئی ہے پس تم کو لازم ہے کہ اپنے جواب دعویٰ کی تائید میں جن گواہوں کی شہادت پر یا جن دستاویزات پر تم اِستدلال کرنا چاہتے ہو اُسی روز اُن کو پیش کرو *

مطلع رہو کہ اگر بروز مذکور تم حاضر نہ ہوگے تو مقدمہ بغیر حاضری تمہارے مسموع اور فیصل ہوگا *

آج بتاریخ ۲۱/۲۵ ماہ جولائی سنہ ۱۹۳۸ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا *

جج

سمن بغرض قرار داد اُمور تنقیح طلب

ابتدائی مقدمہ نمبر ۹ سنہ ۱۹۳۸ع

بعدالت جناب ٹھاکر سوریندر بکرم سنگھ صاحب سول جج ملیح‌آباد مقام لکھنؤ

مسرس چندن مل اندرکمار بذریعہ رائے صاحب چندن مل ساکن نمبر ۳ بھگون کلکتہ مدعی

بنام لالہ سریکشن داس ولد نامعلوم قوم بقال ساکن محلہ سعادتگنج شہر لکھنؤ مدعاعلیہ

واضح ہو کہ مدعی نے آپ کے نام ایک نالش بابت ۷۳۳۲ روپیہ ۳ آنہ ۳ پائی کے دائر کی ہے لہذا آپکو حکم ہوتا ہے کہ آپ بتاریخ ۳۱ ماہ اگست سنہ ۱۹۳۸ع بوقت دس بجے دن کے اصالتاً یا معرفت وکیل کے جو مقدمہ کے حال سے قرار واقعی واقف کیا گیا ہو اور جو کل اُمور اہم متعلقہ مقدمہ کا جواب دے سکے یا جس کے ساتھ کوئی اور شخص ہو جو جواب ایسے سوالات کا دے سکے حاضر ہوں اور جوابدہی دعویٰ مدعی مذکور کی کریں اور آپ کو ہدایت کی جاتی ہے کہ جملہ دستاویزات کو جن پر آپ بتائید اپنی جوابدہی کے اِستدلال کرنا چاہتے ہوں پیش کریں *

مطلع رہیں کہ اگر بروز مذکور آپ حاضر نہ ہونگے تو مقدمہ آپکی غیرحاضری میں مسموع اور فیصل ہوگا *

آج بتاریخ ۲۸ ماہ جولائی سنہ ۱۹۳۸ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا *

جج

تنبیہہ—اگر بیانات تحریری کی ضرورت ہو تو لکھنا چاہئیے آپکو (یا فلاں فریق کو یعنی جیسی کہ صورت ہو) حکم دیا جاتا ہے کہ بیان تحریری بتاریخ ۲۴ ماہ اگست سنہ ۱۹۳۸ع تک گذرانو *

नमूना नं० १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म स्पेशल जज दर्जा दोयम फतेहपुर
नं० मु० ३७ सन् ३६ ई०
तारीख़ पेशी २१—१०—३८ ई०

हरगाह बादरअली वल्द अहमदअली शेख़ साकिन महोई परगना हस्वा ज़िला फतेहपुर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमा में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या ने हस्ब दफ़ा १० बादरअली मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो से जो इस इश्तिहार के संयुक्त गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नं० तौज़ी वहत व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले
१	फतेहपुर	जमीदारी	महोई मो० मानबीबी परगना हस्वा	जायदाद मौरूसहिं सायल का हक़ इंतक़ाल हासिल है	मि० ।।।≈) ४ पाई १६ कि० के एक मुरस	मि० १०) बक़दर हि मुरस
,,	,,	,,	,, मो० कमरअली	,,	।।।)१८ कि० ३औ, ४परस के १ मुरस	मि० ६०) हिस्सा
,,	,,	,,	,, मो० अहमदअली	,,	।।–) १० पाई के मुरस	मिनजुमला के मु मु'तफ़ि

२४—७—३८ को मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत के जारी किया गया।

आवश्यकता—है ऐसे उम्मेदवारों की, जो टेलीग्राफ़, स्टेशन-मास्टर, रेडियो, और बिजली-संबंधी कार्यों को सीख सकें। भत्ता २८) माहवार। पोशाक और रहने का स्थान मुफ़्त। सर्विस ज़रूरी।
नियम तथा प्रवेश-फ़ार्म ।|) भेजकर मँगाइए।
डाइरेक्टर, रॉयल टेलीग्राफ़
और रेलवे-ड्यूटीज़ कॉलेज
बंबई १४

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फार्म इत्तिलानामा हस्ब दफा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा संयुक्तप्रांत

बहुक्म जनाब मि० बानीविलास मिश्रा साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा दोयम हमीरपुर

मुकद्दमा नं० ४१ सन् ३७ ई०

रामकिशन बनाम मलखान वग़ैरह

ता० पेशी २९—१०—३८ ई०

हरगाह रामकिशुन वल्द मुरलीधर कौम ब्राह्मण साकिन ख़िरिकरी परगना राठ ज़िला हमीरपुर ने एक ख्वास्त हस्ब दफा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफा ज़िम्नी दफा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफा ८ या हकदारों ने हस्ब दफा १० मज़कूर की जायदाद ताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो से, जो इस इश्तिहार संयुक्तप्रांत के गज़ट में छपने की तारीख है, तीन माह के भीतर अपने हकों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व काबिल विरासत और काबिल इंतकाल हकीयत का ब्योरा	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत का विस्तार जो रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख्वास्त देनेवाले की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
	हमीरपुर	जमीदारी	मौजा बंगरा परगना राठ खाता नंबर १		२२७७ एकड़ ५५ डिसमल का १/१६	११८०) का १/१६

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हकों को छोड़कर हस्ब दफा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हकियत की वसाअत (विस्तार)
१	२	३
१	गाएँ ४ रास	
२	भैंसें ८ रास	
३	बैल ८ रास	

मुंसरिम

[क़ाबिल ग़ौर

इत्तिलानामा बग़रज़ एलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर हरदोई दरजा दोयम मुकाम हरदोई
मुक़द्दमा नंबरी नंबर १०१ सन् १९३८ ई०
पेशी २१ (इक्कीस) सितंबर सन् ३८ ई०

१—महीपतसिंह २—सत्यनरायनसिंह ३—देसराजसिंह ४—भोंदेसिंह	पिसरान रुद्रानसिंह	अक़वाम ठाकुर साकि मौज़ा कचौली परग बालामऊ तहसील संडी ज़िला हरदोई
५—भारथसिंह वल्द होरीसिंह		
६—दर्शनसिंह वल्द गंगाबख़्शसिंह		
७—शिवरतनसिंह नाबालिग वल्द दर्शनसिंह बविलायत पिदर खुद		
८—पुत्तूलालसिंह ९—महराजबख़्शसिंह	नाबालिग़ान पिसरान महीपतसिंह बविला-यत पिदर खुद	
१०—शारदाबख़्शसिंह नाबालिग वल्द सत्यनारायनसिंह बविलायत पिदर खुद		मुद्दइयान साकि

बनाम

ज्वालाप्रसाद वग़ैरा फ़रीक़सानियान
क़र्ज़ख्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि महीपतसिंह साकिन कचौली ज़िला हरदोई की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्त देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांत गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ माह के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख्वास्त पेश करे।

फ़िहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर, ज़िलेवार व मुहाल	दरख्वास्त देहिंदा की मुतल्लिक़ क़ाबिल निलाम व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तफ़सील	बक़ीयत हक़ीयत दरख्वास्त देहिंदा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त देहिंदा की हक़ीयत पर मौजूदा मालगुज़ारी
१—	हरदोई	मालिकाना	मौज़ा बैजुवापुर मजरा कचौली खाता खेवट नंबर १ मोहाल मूरैसिंह	२० बिस्वा	कुल	

— „	पोख्तादारी	मौज़ा कलौली खाता नं० १ मोहाल भूरेसिंह	२० बिस्वा	कुल
— „	मालिकाना आराज़ियात रेहन	मौज़ा कलौली मोहाल भूरेसिंह बैजुवापुर	११ किता	कुल
— „	„	„	४ किता	कुल

फेहरिस्त (बे)

कर्ज़दार की जायदाद, जो बहैसियतनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

र सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हक़ीयत दरख़्वास्त देहिंदा	कैफ़ियत
१—	भैंस मय पड़वा	एक रास	
२—	घोड़ी खुर्द	एक रास	
३—	गाड़ी शिकस्ता	एकमंज़िला	
४—	लहढ़ू शिकस्ता	एकमंज़िला	
५—	बकरी	एक	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २९ जुलाई सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज पुकार व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम हरदोई

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ५८१ सन् १९३६ ई०

पेशी ता० २४—९—३८

१—गजराजसिंह वल्द हिम्मासिंह ठाकुर सा० मौ० नरेंद्रपुर परगना कलियानमल तहसील संडीला ज़िला हरदोई

२—लालताबख़्शसिंह वल्द हिम्मासिंह क़ौम ठाकुर सा० नरेंद्रपुर मज़कूर हाल मुलाज़िम कांस्टेबुल नं० १२४ सिविल पुलिस लखनऊ थाना वज़ीरगंज चौकी मौलवीगंज

क़र्ज़दार सायल

बनाम

गजराजराम पाँड़े वग़ैरह

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि गजराजसिंह वग़ैरह सायलान मज़कूरउलसदर साकिन ज़िला मज़कूर की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़िहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़ख्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हुकूक़ मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्त हिस्सा की मुस्तकिल काबिल विरासत व काबिल इन्तकाल हकीयत की तसरीह	वसाअत हकीयत दरख्वास्त हिस्सा मुंदर्जे रजिस्टर दफ्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्त हिस्सा की हकीयत पर मौजूदा तशखीस मालगुज़ारी
१	हरदोई		मौ० नरेंद्रपुर मोहाल खास पट्टी भूधरसिंह खाता खेवट नं० ३/१ परगना कलियानमल		१ विस्वा ५ विस्वांसी	२५॥=)
२	हरदोई		मौ० नरेंद्रपुर मोहाल खास पट्टी भूधरसिंह खाता खेवट नं० ३/१ परगना कलियानमल		आराजी नंबरी व तादादी ३८ = १बी० १बि० १२७ = ५ ,, ३० = ३ ,, ६३ = ८ ,, १२५ = ९ ,, १२६ = ६ ,, १२७ = ,,	
३	,,		मौ० तेरिया मोहाल मु० इस्तिफ़ात-रसूल खाता खेवट नं० २ परगना कलियानमल		१ बिस्वा १२ बि० १३ कच० १२ ६६/४७ नन० का १/४	३=)
४			मौ० भैंनगाँव मो० भूधरसिंह खाता खेवट नं० १/२ परगना कलियानमल		हकीयत मुतफर्रिका ३ बीघा ५ बिस्वा २ बिस्वांसी	

फेहरिस्त (बे) क़र्ज़दार की जायदादें, जो बहस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिलसिलेवार	क़िस्म जायदाद	वसाअत हकीयत दरख्वास्त हिस्सा	कैफ़ियत
१	भैंस मय पड़वा	१ रास	
२	घोड़ी खुर्द	१ ,,	
३	गाय	२ ,,	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ११—१२ सन् १९३७ ई० जारी हुआ।

२६—७—३८

लेखक—

पं० सत्यदेव विद्यालंकार

(भूतपूर्व संपादक 'नवयुग' आदि)

परदा

भूमिका-लेखिका—

श्रीमती जानकीदेवी बजाज

(श्रीजमनालाल बजाज की धर्मपत्नी)

देश-भर में इस समय जो स्त्रियों के परदा-निवारण अर्थात् परदा दूर करने का आंदोलन ज़ोरों से चल रहा है, उसी के संबंध में यह पुस्तक बहुत छान-बीनकर लिखी गई है। सभी प्रांत और समाजों की स्त्रियों की भीतरी अवस्था का वर्णन इसमें किया गया है। परदे से स्त्रियों के स्वास्थ्य की खराबी, परदे व घूँघट का बेहूदापन, परदे में पाप और परदे के कारण उत्पन्न होनेवाली अनेक बुराइयों का वर्णन विस्तार-पूर्वक किया गया है। लगभग २० प्रतिष्ठित परिवार की महिलाओं ने इसमें अपने अनुभव देकर यह बतलाया है कि पहलेपहल उनको परदा छोड़ने में कैसी-कैसी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। इन सभी महिलाओं के चित्र भी दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त परदे के संबंध के १२ चित्र और भी हैं। लगभग १० चित्रों-सहित २१४ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥), डाक-खर्च अलग।

सद्गुणी सुशीला

इस पुस्तक में शिक्षित समाज के एक कुलीन और सभ्य परिवार की एक महिला के सुंदर और पवित्र चरित्र तथा अच्छे गुणों का वर्णन बहुत सुंदरता-पूर्वक किया गया है, जिसे पढ़कर स्त्रियों को आदर्श और सद्गृहिणी बनने की शिक्षा मिलती है। सद्गुणी सुशीला के अनेक सुंदर गुणों के वर्णन से स्त्रियों के हृदय में ज्ञान और बुद्धि का विकास होता है। पुस्तक घर में बहू-बेटियों के पढ़ने योग्य है। मूल्य सुंदर, सजिल्द और सचित्र पुस्तक का २), डाक-खर्च अलग।

पतिता नाटक

इस पुस्तक में एक ग़रीब पतिता के उद्धार का बड़ा रोमांचकारी वर्णन है। पुस्तक शिक्षा-प्रद तथा सामाजिक बुराइयों को दूर करनेवाली है। मूल्य सुंदर, सजिल्द पुस्तक का १।), डाक-खर्च अलग।

विधवा की आत्मकथा

(लेखिका—श्रीमती प्रियंवदादेवी)

हिंदू-समाज की इस बाल-विधवा ने समाज के नित्यप्रति के अत्याचारों से दुखी हो, भले-बुरे मार्ग का आश्रय ग्रहण कर अपने जीवन की बीती सच्ची घटनाओं को बड़ी ही रोचक भाषा में लिखा है। समाज के दुराचारी और पापी पुरुषों के भीतरी दोषों और बुराइयों का उल्लेख किया गया है। पुस्तक उपयोगी है, तथा विधवाओं की दुर्दशा का जीता-जागता चित्र है। मूल्य पौने तीन सौ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का २); डाक-खर्च अलग।

अबला की आत्मकथा

"इस पुस्तक में एक अबला की जीवन-बीती घटनाओं को आत्मकथा के रूप में लिखा गया है। किस प्रकार एक असहाय अबला ने समाज के पंचों तथा पुरुषों के सब तरह के अन्याय व अत्याचार, सहते हुए कामी पुरुषों के प्रलोभनों के फंदे से बचकर, अपने जीवन को पवित्रता-पूर्वक निभाया, और अंत तक अपने सतीत्व-धर्म की रक्षा की।" आदि बातें बहुत रोचक, सरल और शिष्ट भाषा में लिखी गई हैं। मूल्य लगभग ढाई सौ पृष्ठ की सुंदर, सजिल्द पुस्तक का २); डाक-खर्च अलग।

पाँच पुस्तकें एक साथ मँगानेवाले को चौथाई कमीशन दिया जायगा।

आदर्श हिंदी-पुस्तकालय, १३१, चित्तरंजन एवन्यू, कलकत्ता

कपड़ों की सिलाई व कटाई पर अनुपम पुस्तकें

दोस्त दर्ज़ियाँ

इसमें सब प्रकार के कपड़ों की सिलाई तथा कटाई ४०० से अधिक चित्रों द्वारा, सरल भाषा में, समझाई गई है। पुस्तक अति उपयोगी है। प्रत्येक स्त्री तथा दर्ज़ी के पास इसका होना आवश्यक है। पुस्तक दो भागों में विभक्त है। मूल्य १॥) प्रतिभाग; डाक-व्यय अलग।

दर्ज़ी-दर्पण

इसमें सब प्रकार के कपड़ों की सिलाई तथा कटाई की त्रुटियाँ चित्रों द्वारा दिखलाकर, उनके कारण बतकार, उन्हीं कारणों की ही सहायता से उन त्रुटियों को दूर करना चित्रों द्वारा सरल हिंदी-भाषा में समझाया गया है। मूल्य सजिल्द केवल २॥); डाक-व्यय अलग।

प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता तथा हमसे मगावें।

पता—दर्ज़ीघर, रंगमहल, लाहौर

उन तीनो बातों में

१ खर्च की औसत
२ मृत्यु-संख्या
३ ब्याज की दर

जिन पर
बीमा-कंपनियों की उन्नति निर्भर है।

स्वदेशी भारत की सभी कंपनियों से आगे है।

कहने को तो सभी कंपनियाँ यही वात कहेंगी
पर
आँकड़ों का मुक़ाविला करने पर स्वदेशी ही आगे मिलेगी।
क्यों ?

इसलिये कि १—इसका खर्च का औसत दिन-पर-दिन घट रहा है।
२—मृत्यु-संख्या वहुत कम है।
३—ब्याज की औसत सवसे ज़्यादा है।

अतएव आप अपना बीमा स्वदेशी में ही कराइए।

स्वदेशी की एक नई योजना

घातक दुर्घटना पालिसी

एक वार क़रीव २५) देकर १०००) का आजीवन बीमा कराइए!
एक व्यक्ति पाँच हज़ार रुपए तक का बीमा करा सकता है।
विशेष विवरण के लिये लिखिए—

श्रीचंद दोनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा।

अच्छी आदत डालती है

वह वास्तव में बुद्धिमती माता है ! आप भी इसी तरह अपने बच्चों को बचपन से ही, चाय पीना सिखाकर उनमें स्वस्थ और प्रसन्न रहने की आदत डाल दे सकते हैं । चाय एकदम शुद्ध सुरक्षित और हानि-रहित होती है ।

चाय तैयार करनेका
तरीका

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिये । उसमें प्रत्ये के लिये एक और ए चम्मच अधिक बढ़ि भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चा को सीझने दीजिये इसके बाद प्यालों ढालकर दूध और चीनी मिलाइये ।

एकमात्र पारिवारिक पेय

भारतीय चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

Foun

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

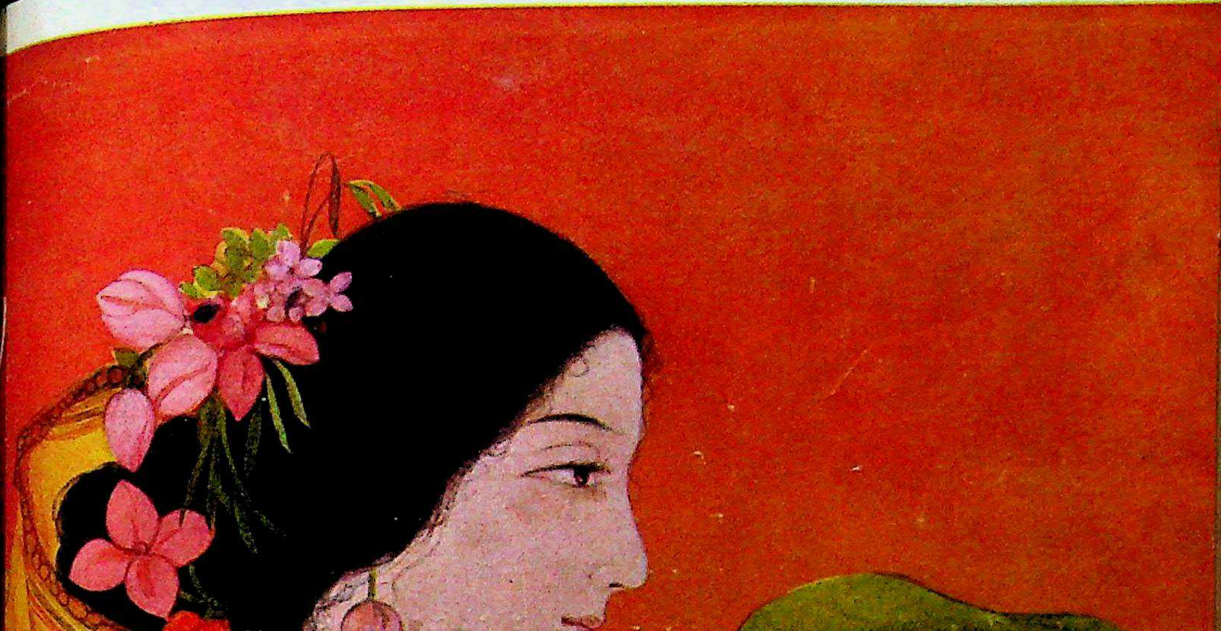

श्विन
९५

सुधा

October
1938

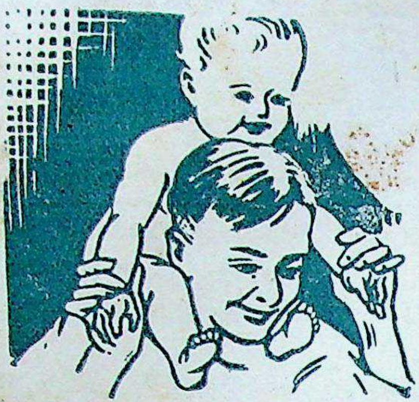

ठंडा पिया जाय
या गर्म, यह हर मौसम में और
हर समय बहुत स्वादिष्ट होता है।

स्वस्थ रहकर गृहस्थ-जीवन का आनन्द उठाइये

क्या आपने यह भी कभी सोचा है कि आपका स्वास्थ्य सचमुच ऐसा अच्छा है कि आपके बच्चे तन्दुरुस्त पैदा होंगे। सुन्दर तथा स्वस्थ बच्चों को देखकर मन प्रसन्न होता है। माता-पिता को उन पर गर्व होता है तथा देश का मान बढ़ता है। बोर्न-भिटा शक्ति एवं स्फूर्ति को बढ़ाता है तथा बनाये रखता है। इसके अतिरिक्त यह पाचन-शक्ति को भी बढ़ाता है।

शिक्षा देते समय अपने भोजन की पोषकता के विषय में निश्चित होना बहुत जरूरी है, क्योंकि शक्ति तथा स्फूर्ति बनाये रखने के लिये इसकी बड़ी आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि बोर्न-भिटा सर्वदा पीना चाहिये और शिक्षा देते समय तो ज्यादा परिमाण में पीना चाहिये।

बी० डी० चटर्जी
विख्यात शिक्षक तथा खिलाड़ी

Cadbury's
BOURN-VITA

कैडबरीज बोर्न-भिटा

सबके लिये उपयोग खाद्य तथा पानीय

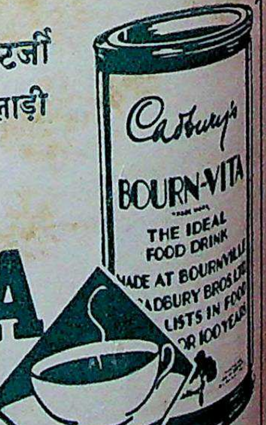
Cadbury's
BOURN-VITA
THE IDEAL
FOOD DRINK
MADE AT BOURNVILLE
CADBURY BROS LTD
LISTS IN FOOD
FOR 100 YEARS

B V

शुभ

प्रत्येक मनुष्य इस बात को गाँठ बाँध ले!

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से बड़ों-बड़ों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई. मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुण-गान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेस-लाटरी में धन की प्राप्ति वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र से बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छः-छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ५), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ५॥=)॥, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ११॥=)॥, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से २ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत लिया, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की लड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

बी० मधुर नवाब बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इब्राहीम दाऊदभाई, मिठी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे रेस में लाख दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० बी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.) बंबई नं० ४

क्या आपको नहीं मालूम ?

आज ही रात को सेवन करें

'कामामृतम्'

सांसारिक सुख प्रदान करनेवाली, संसार की उत्तम धातु-विषयक औषधि

कामामृतम्—एक सर्वोत्तम धातु-पौष्टिक रसायन है। सब प्रकार की कमज़ोरियों को करने में इसके समान कोई औषधि नहीं है। यह दवा यदि बराबर सेवन जाय, तो यह हस्तक्रिया-संबंधी शिकायतों को, स्वप्नदोष को और उपायों द्वारा उत्पन्न खराबियों को तत्काल दूर करती है। नामर्दी और संबंधी शिकायतों में यह तत्त्तण अपना जादू-सा असर दिखलाती है।

यह धातु को गाढ़ा करती और धातु में वृद्धि करती है, और इस प्रकार सांसारिक प्रदान करती है। धातु-क्षीणता व अन्य कमज़ोरी की यह सर्वोत्तम दवा है। दूसरे शब्दों में शक्ति और धातु का अनुपम खज़ाना है, और यथार्थ ही जीवन-अमृत कहा जाता है।

कामामृतम्—सहवास-संबंधी कमज़ोरी के लिये, नामर्दी के लिये और साधारण कमज़ोरी लिये दैवी दवा है। यह ताज़गी देती है, स्वास्थ्य को बढ़ाती और यौवनावस्था को स्थिर रखती है। इसका असर तात्कालिक है। दर्द और घबराहट यह जादू के समान दूर करती है। इसके सेवन से मनुष्य शीघ्र ही स्वास्थ्य, ताज़गी और शक्ति को थोड़े ही समय में प्राप्त करता है।

इस विषय-संबंधी पुस्तक मुफ्त भेजी जाती है।

बड़ी शीशी का मूल्य ३० दिन सेवन-योग्य ४।)
छोटी ,, ,, १५ ,, २।)
डाक-व्यय ।)

ए० कनकराजू, औषधि-विशेषज्ञ, चिकाकोल

लेख-सूची

पृष्ठ

१. मोतियों का व्यापार (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ... २६९

२. भिक्षुकी (कविता)—[लेखक, श्रीयुत उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए० ... २७०

३. अन्वेषण (गद्य काव्य)—[लेखिका, कुमारी सुशीला विद्यालंकृता ... २७०

४. किसानों की दिक़्क़तें—[लेखक, माननीय डॉक्टर सैयद महमूद, उद्योग और शिक्षा-मंत्री, बिहार २७१

५. मिस्टर जिन्ना (व्यंग्य-चित्र) .. २७६

६. मीराबाई तथा गो० तुलसीदास का पत्र-व्यवहार—[लेखक, श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी० २७७

७. व्याख्यान-वाचस्पति (प्रहसन)—[लेखक, श्रीपं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' २८१

८. कुंभ के अवसर पर हरद्वार में नागे साधु (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत एम्० पी० केदार २९३

पाँच हज़ार का पाँच रुपया में द्वितीय संस्करण

भृगु-संहिता

(योगसागरफलित खंड भाषा-टीका)

गत ७२ वर्षों का जिनका जन्म है व १० वर्षों में होगा, संसार-भर के सभी देशों के मनुष्यों की जन्म-कुंडलियों का भूत, भविष्य, वर्तमान तीन जन्म का हाल, स्त्री, पुत्र, द्रव्य, सुख, दुःख, लाभ, हानि, किस संवत् तक आयु, फिर कहाँ जन्म होगा इत्यादि साधारण पढ़े-लिखे भी फल कह सकते हैं। फल सुनते ही लोग कहते हैं कि कर्णपिशाचिनी सिद्ध है। कई ज्योतिषी सिद्ध बन गए। समाचार-पत्रों ने समालोचना की और सार्टीफ़िकेट आए हैं। चार मास के लिये रियायती मूल्य ५), पो० ॥) फिर सौ रुपए को भी न मिलेगी।

भृगु-संहिता, कुंडली-खंड

सं० १९२० से २००० तक सौ वर्षों के पृथ्वी-भर के मनुष्यों की जन्म-कुंडली इसमें मिलेगी। बस जन्म-पत्री बना लो। मूल्य २), पो० ॥)।

मूक प्रश्न-भास्कर—गुप्त प्रश्न बताने का अनूठा ग्रंथ; मूल्य १)

पता—ज्योतिषरत्न पं० अयोध्याप्रसाद मिश्र
ज्योतिषी, झाँसी नं० २६, JHANSI

'नेवर ओल्ड'

खाने से सफ़ेद बाल काला!

'नेवर ओल्ड' के प्रयोग के बाद अगर फ़ायदा न हो, तो वापसी क़ीमत की ठोस गारंटी है। इसलिये 'प्रताप' के जेनरल मैनेजर मि० टेकचंद ढँगरा के पास एक हज़ार रुपए का चेक बतौर ज़मानत जमा कर दिया है। क़ीमत पूरा बक्स १०), आधा बक्स ५) और चौथाई बक्स २॥)

ताज़ा सार्टिफ़िकेट देखिए—

श्रीयुत लाला काशीराम साहब पेंशनर पंजाब-पुलिस कठासमाल ज़िला सरगोधा लिखते हैं—"मैंने जो दवाई सफ़ेद बाल करने के लिये अपने लड़के के मार्फ़त मँगवाई थी, उसने आश्चर्य-जनक फ़ायदा किया है। और, अब मैं कुछ पंक्तियाँ लिखने पर विवश हूँ कि मेरे बाल जड़ से काले हो आए हैं। मैं आपकी सफलता पर हार्दिक धन्यवाद देता हूँ!"

पूर्ण विश्वास के लिये सार्टिफ़िकेट और लिट्रेचर मँगवाएँ!

सी० उमर ऐंड कंपनी, पोस्ट बॉक्स नं० १४९, लाहौर

पृष्ठ

९. जापान के किसान (सचित्र)—[लेखक, श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, बी० ए०, एल्-एल्० बी०, सहायक संपादक 'दि पायोनियर' २९७

१०. वीतराग (कविता)—[लेखक, श्रीआरसीप्रसादसिंह ३०१

११. स्वर्गीय पंडित मयाशंकर याज्ञिक—[लेखक, प्रोफ़ेसर दीनदयाल गुप्त एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, हिंदी-अध्यापक लखनऊ-विश्वविद्यालय ३०३

१२. विवाह और आधुनिक भावना—[लेखक, श्रीयुत ललिताप्रसादजी सुकुल एम्० ए०, हिंदी-अध्यापक कलकत्ता-विश्वविद्यालय ३०६

* श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों *

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चाक) सबको ३ दिन में पूरा लाभ । यदि अनेक दवा लगाकर निराश हो चुके हों, तो एक बार इसे लगाकर निरोग होवें । बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस । जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें । मूल्य १॥)

❀ गर्भ-निरोधक (बर्थ-कंट्रोल) ❀

इसको प्रति माह ३ बार के सेवन से उस मास में गर्भ नहीं रह सकता । यदि आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो दवा का सेवन कराना बंद करा दें । गर्भ धारण हो जायगा । इससे स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती । मूल्य १ वर्ष का १॥); दूसरी दवा जो सर्वदा के लिये वंध्या बना देती है, मूल्य २); पता—राजवैद्य परमेश्वर-दयालजी, नं० १०२ पो० कतरीसराय (गया)

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक़्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं ।

यह ओषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है । यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है । खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है । ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है । मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ≡)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हैं और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें । यह अत्यंत स्तंभन करती है । जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे अब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा । वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है । अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है । जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ूब तारीफ़ करेंगे । मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता । जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी । मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।≥)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है । शिथिलता वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है । कुछ दिन लगाकर आज़माना लाज़िमी है । मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

पृष्ठ

१३. बस, एकदम धावा बोल दो! (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए० ... ३१३

१४. सृष्टि-रचना में प्रयोजन (२)—[लेखक, श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ... ३१७

१५. आया-न आया (कविता)—[लेखक, पं० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न ... ३२६

१६. छंदोगति की रूप-रेखा (२)—[लेखक, श्रीयुत वचनेशजी ३२७

१७. सुधा-चित्रावली ३३७

१८. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत मंगलप्रसाद पांडेय, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद मिश्र, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद सिनहा एम्० ए०, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा', श्रीयुत महेंद्र और श्रीयुत मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट' ३४१

सुखसंचारककम्पनीमथुराकी
दवाइयां

सुधासिन्धु

कफ,खांसी,हैज़ा,दमा,शूल,संग्रहणी
अतिसार आदि की स्वादिष्ट सुगंधितदवा
की० ॥)

दद्रुगजकेसरी

दादकी सबसे अच्छी दवा. की० ।)

बालसुधा

दुबले, और कमजोर बच्चोंको ताक़त
वर बनानेवाली मीठी दवा. की० ॥)
सबदवा बेचनेवालोंके पास मिलती है

५००) रुपया इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफ़ेदी) की अद्भुत वनौषधि, तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि आप सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं की दवा कर निराश हो चुके हैं, तो इसे लगाकर आरोग्य हों, बेफ़ायदा साबित करने पर २००) इनाम। विश्वास न हो, -) का टिकट लगाकर शर्तें लिखा लें। मूल्य २)

संतति-निग्रह (बर्थ-कंट्रोल)

औषधि को प्रति माह दो-तीन बार व्यवहार करने से ही दस मास में गर्भ नहीं रह सकता। आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो औषधि व्यवहार करना बंद कर दें। गर्भ धारण हो जायगा। औषधि के व्यवहार करने से स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती। मूल्य एक वर्ष के सेवन योग्य की २), दूसरी औषधि, जो सर्वदा के लिये बंध्या बना देती है, मूल्य २) रुपया।

परीक्षित गर्भवटी

यह ख़ास वंध्या (बाँझ) को संतान पैदा कराने के लिये एकमात्र ब्रह्मास्त्र महौषधि महात्मा की सेवा से प्राप्त है, १७ वर्ष से अनुभूत है। सूर्य, चंद्रमा के समान निर्वंश-रूप अंधकार को दूर करने में समर्थ और सत्य है। अनेक धूर्त विज्ञापन से दुखी होने के कारण इस पर भी अविश्वास न करें, यह साक्षात् ब्रह्मरूप है। इसके सेवन से स्त्रियों के मासिक-संबंधी सभी दोष, महीने का घटना-बढ़ना, नहीं होना, कम होना, ज़्यादा होना, काला, पीला, नीला, दुर्गंधयुक्त होना, वायुगोला, वादीपन, पेट, सिर, कमर, कंधा इत्यादि में दर्द, चक्कर, हिस्टीरिया, चर्बी बढ़ना, शरीर का सूखना, गर्भ रहकर गिर जाना इत्यादि सभी दोषों को दूरकर ५० वर्ष के भीतर अवस्थावाली स्त्री को गर्भाधान कराकर संतान उत्पन्न कराती है। मूल्य १।) रु०

वैद्यराज अखिलकिशोरराम, नं० २८१, पो० कतरी सराय (गया)

पृष्ठ
१९. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत 'उमेश', श्रीयुत प्रेमनारायण टंडन, श्रीयुत कविराज मुरारीलाल प्राश, प्रजावैद्य, भिषग्भूषण और श्रीयुत विपिनविहारी वर्मा ... ३५१
२०. कुसुम ३५४
२१. धारा (संपादकीय विचार) ... ३५५

❀ख़िज़ाब को छोड़ो❀

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पक्का बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो) इससे अधिक पका हो, तो ४) या कुल पका हो, तो ६) का तेल मँगवा लें।

पता—बाल काला डिपो नं० १०१
पो० कतरी सराय (गया)

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम व पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १।) में। डाक-व्यय पृथक्।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट बॉक्स १६५, लाहौर

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

हम 'जीवन-सुधार' नाम की बहुमूल्य पुस्तिका मुफ़्त बाँट रहे हैं। एक पोस्टकार्ड भेजकर मँगवा लीजिए।

रामकृष्ण औषधालय, जबलपुर

ख़िज़ाब छोड़ो

इस तेल से पका बाल जड़ से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। इसकी सत्यता सैकड़ों प्रशंसा-पत्रों से प्रमाणित हो चुकी है। बाल कम पका है, तो ५) ; और से अधिक पका है, तो ७) रु० का तेल मँगा लें।

पता—हजरा ऐंड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. तांडव-नृत्य—[चित्रकार, श्रीयुत कमला-शंकरसिंह २६६

(ख) दुरंगे

२. सेठ लक्ष्मीपतिजी सिंहानिया और सेठ रामरतनजी गुप्त ३००
३. स्व० मयाशंकरजी याज्ञिक ३०१

(ग) व्यंग्य

४. मिस्टर जिन्ना—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी २७६

(घ) सादे

५. राष्ट्र-गौरव माननीय डॉक्टर सैयद महमूद २७१
६-१०. कुंभ के अवसर पर हरद्वार में नागे साधु-संबंधी ५ चित्र ... २६३-२६५
११. श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... २६७
१२. किसान २६८
१३. कलाकार २६८

विवाहित आनन्द

आप समझते हैं कि आप सब कुछ जानते हैं और इसी भूल के कारण बीसवीं सदी की सर्वोत्तम पुस्तक के स्वाध्याय से वञ्चित हैं। सच समझिए 'विवाहित आनन्द' पांच हज़ार विवाहित पुरुषों की आप-बीतियों का निचोड़ है। क्रियात्मक उपदेशों, रहस्य की बातों और अत्यन्त लाभदायक शिक्षाओं का भण्डार है। इसके अतिरिक्त गुप्त रोगों की बिना औषधि के चिकित्सा भी लिखी गई है।

मूल्य सचित्र व सजिल्द का ॥।)

सब पुस्तक विक्रेता और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

पता—कविराज हरनामदास बी.ए., लाहौर

विचित्र पुस्तकें

आजकल हिंदी-संसार में अपना-अपना पेट पालना तो सभी जानते हैं, परंतु बेचारे ग़रीब, अपाहिज, बेकारी से तड़पनेवालों का कोई भी सहारा नहीं। हमने अपने यहाँ से बेकारों के हितार्थ कुछ अनोखी पुस्तकों का प्रकाशन शुरू कर दिया है। हमारा दावा है कि आप निम्न-लिखित पुस्तकों में से कोई भी पुस्तक मँगाकर घर बैठे धन कमाकर अपना तथा अपने भावी कुटुंब का पालन करिए। दिन-प्रतिदिन माँग बढ़ रही है।

		संभोग-रहस्य	५)
देशी बटन-मेकर	१॥)	करघा-कला	१॥)
बत्तीसाज़ी	१)	ख़ज़ाने की कुंजी यानी व्यापार करने का तरीक़ा	१॥)
साबुनसाज़ी (शिक्षक)	२)	सुगंधित तेल बनाना	५)
अनंग तरंग	२)	व्यापार-शिक्षा	१॥)

नोट—हमारी उपर्युक्त कुल पुस्तकें मँगानेवालों को ≈) प्रति रुपया कमीशन भी दिया जायगा, और व्यापार करने का भले प्रकार तरीक़ा भी बतलाया जायगा, और जो मदद हो सकेगी, वह भी की जायगी।

पता—वर्मा-निर्बल-सहायक कार्यालय, शिकोहाबाद सिटी

पृष्ठ
१४. व्यापारी २६६
१५. श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए० ३१३
१६. साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथजी द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न ३३७
१७. 'दूर के ढोल' और 'अंतिम युद्ध' ... ३३८
१८. श्रीनीलकंठ बापूराव और कुमारी कमलापति वर्धन ३३६
१९. श्रीयुत राजगोपाल नायडू तथा श्रीमती नलिनी कैंकिनी ३३९
२०. श्रीमती कृष्णा तथा श्रीइत्थीसिंह (बैरिस्टर) ३४०
२१. श्रीभूतनाथजी सरकार ३६५
२२. करसियांग ३६६
२३. कालिंपोंग ३६६
२४. तीस्टा का पुल ३६७

SOVEREIGN-REMEDY
AMRUTANJAN
Best Indian Pain Balm
Amrutanjan Depots
BOMBAY, MADRAS

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ
भारतीय औषध
सिर-दर्द, जुकाम,
फोड़ा, सूजन,
घाव, वात,
कमर का दर्द,
खाँसी, कीड़ों का
आदि सभी वेदनाओं
में 'अमृतांजन'
आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

योगेंद्र कवच

(शास्त्रोक्त)

इस अद्भुत शक्तिशाली तथा दैवी शक्तिसंपन्न सिद्ध वशीकरण-यंत्र के केवल धारण करने-मात्र से ही कठिन-से-कठिन काम भी सिद्ध होता है। यंत्र के चमत्कारी प्रभाव से कोई स्त्री या पुरुष कैसा ही कठोर-हृदय, अभिमानी क्यों न हो, आपसे मिलकर शादी (प्रेम) के लिये इच्छा प्रकट करेगी। इसके द्वारा आपका दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, तरक्की, मुकदमे, जुआ, लाटरी में जीत, नवग्रहों की शांति तथा कठिन-से-कठिन रोगों का नाश होकर भाग्योदय होता है। शास्त्रोक्त नहीं है, ऐसा साबित करने पर १०१) रु० इनाम। मूल्य ताम्र २। रु०, चाँदी का ३।), असली सोने का ६) रु०

पता—श्रीमहाशक्ति-आश्रम, पो० परवलपुर (पटना)

श्वेत कुष्ठ की फ़कीरी जड़ी-बूटी

इस अद्भुत शक्तिशाली जड़ी-बूटी के केवल तीन ही दिन के लेप से कठिन-से-कठिन और पुराना-से-पुराना श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी) या चरकसा-महारोग जड़ से आराम होता है। अगर आप इनामी विज्ञापनों के धोखे में पड़कर ठगे जा चुके हैं, तो एक बार इस वनौषधि को इस्तेमाल कर आरोग्य होवें। विश्वास नहीं हो, तो एक आने का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मू०

पता—श्रीवीरेंद्रप्रसाद, नं० ५१, पो० परवलपुर (पटना)

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्य
राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १२
खंड १

आश्विन, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९५ वि०)—
ऑक्टोबर, १९३८

संख्या ३
पूर्ण संख्या १४७

मोतियों का व्यापार

[श्रीदुलारेलाल भार्गव]

करत रहत संतत नयन
मोतियन कौ ब्यौपार,
फिरि-फिरि तुव सुधि आइ इत
लेति जिन्हैं दै प्यार।

भिक्षुकी

[श्रीयुत उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए०]

कल पीपल के नीचे।

भग्न पात्र ले कर में सम्मुख,
दृष्टि लगाए पथ पर उन्मुख,
एक भिक्षुकी दीन खड़ी थी
आँसू से मुख सींचे।

सूखे कुंतल रूखे तन पर,
लिए धूप-सा यौवन दुखकर,
पहने एक फटा - सा अंबर,
अंचल उर पर खींचे।

आज उसी करुणा के स्थल पर
देखा मैंने उसको निस्स्वर,
लुप्त - प्राण वह चिर - निद्रा में
पड़ी हुई दृग मीचे।

अन्वेषण

[कुमारी सुशीला विद्यालंकृता]

मैं ने सुन रक्खा था कि तुम अंधकार में ही छिपा करते हो, इसी से निशा के निविड़ांधकार में तुम्हें खोजा। फिर पता लगा कि तुम्हारा निवास तो अत्यंत ज्योतिर्मय स्थलों में है। मैंने प्रभाकर की प्रभा में आँखें टिकाईं। पर प्रभामय ने तो तुम्हें न-जाने क्यों मुझे देखने ही न दिया। उसकी तरफ़ निहारते ही आँखें चकाचौंध से चौंधियाने लगीं। फिर तुम्हीं बताओ न कि वहाँ मैं तुम्हें कैसे पाती!

मैं फिर भी निराश न हुई। आशा का आँचल पकड़े इधर-उधर घूमती ही रही।

आख़िर किसी संत ने बताया कि तुम तो हिमालय के शुभ्र शिखर पर धूनी रमाए तपस्या किया करते हो। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी उन्हें खोजते-खोजते थक गए, पर न पा सके। बड़े-बड़े विज्ञानवेत्ता भी उसकी चोटी तक पहुँचने का प्रयास करके हार गए। फिर तू निगोड़ी वहाँ क्योंकर पहुँच सकेगी!

मैं असमंजस में पड़ गई। क्या देव इतने निष्ठुर हैं। उन्हें तो सब करुणा-वरुणालय कहा करते हैं। उनका नाम तो 'दयानिधान' था न। फिर इस निर्मम व्यवहार का क्या रहस्य? मेरा मन उद्विग्न हो उठा। अपने निष्फल प्रयास पर क्रोध आने लगा। अंतःकरण की वेदना में, मेरी इस अधीरता के समय ही, किसी की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ी—

"घूँघट का पट खोल री, तोहिं पीय मिलेंगे।"

मेरा अंतःकरण स्पंदित हो उठा! मैंने इस रहस्य को समझते ही नयनों को मूँद ध्यान लगाया, जिससे अंतरात्मा पर पड़ा हुआ अज्ञान का घूँघट, मिथ्यात्व का परदा दिखलाई पड़ा। मैंने अपनी प्रबल इच्छा-शक्ति के बल से उसे हटाया। हटाते ही मेरे प्यार-से सुंदर, शैशव-से कोमल, कला-से कमनीय, कविता-से भावुक प्रियतम! मैंने पा लिया तुम्हें, और तुम्हारी सुख-स्पर्शिनी अमृत-छाया को।

किसानों की दिक्कतें

[माननीय डॉक्टर सैयद महमूद, उद्योग और
शिक्षा-मंत्री, बिहार]

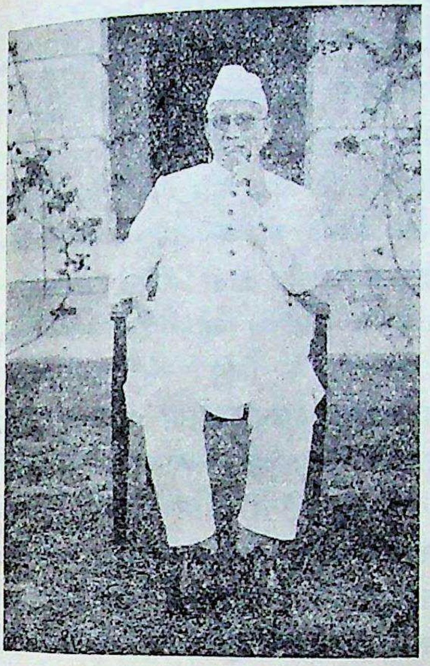

राष्ट्र-गौरव
माननीय डॉ० सैयद महमूद

यह जानी हुई बात है कि हमारे मुल्क में खेती की हालत बहुत ही खराब है। मुग़लों के ज़माने में बिहार और यू० पी० हिंदोस्तान के नाज की खान समझे जाते थे। पर सौ साल से कुछ ज़्यादा हुए, सन् १८३५ ई० में, मि० मार्टिन ने, डॉ० बुचानन हैमिल्टन की 'सर्वे ऑफ़् ईस्टर्न इंडिया' नाम की मशहूर किताब में, लिखा था—"यह बड़े ताज्जुब की बात है कि यहाँ की ज़मीन दुनिया-भर से बढ़कर उपजाऊ होते हुए भी यहाँ के रहनेवाले सबसे ज़्यादा ग़रीब हैं।" यह बात आज भी वैसी ही सच है, जैसी उन्नीसवीं सदी के शुरू में थी।

आप लोग जानते हैं, खेती ही हमारा खास रोज़गार है, और हमारे सूबे के सैकड़े पीछे ८० लोग अपनी गुज़र के लिये इसी का सहारा लेते हैं। सैकड़े पीछे सिर्फ़ ११ आदमी शहरों में रहते हैं। बहुत पुराने ज़माने से लोग गाँव में, किसी अच्छी जगह, एक साथ रहते और अपने घरों से कुछ दूर के खेतों को जोतते आए हैं। बड़ी-बड़ी खेतियाँ और मकान, जो पच्छिमी मुल्कों की देहाती ज़िंदगी की अच्छाइयाँ हैं, यहाँ नहीं हैं, और शायद वैसी खेतियाँ यहाँ कभी थीं ही नहीं। हमारे किसानों के खेत बहुत छोटे हैं, और उनके बड़े-बड़े। यहाँ खेतियाँ छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटी हुई हैं। यों वक़्त और मेहनत की जो बरबादी होती है, वही एक बहुत बड़ी बुराई है। इसकी वजह से फ़सलों की उपज बढ़ाने के तरीक़ों को काम में लाने में जो दिक़्क़तें होती हैं, उनकी बात तो अलग रही। हिंदू और मुसलमान, दोनो के विरासत के क़ानूनों में वारिसों के बीच

खेती के बटवारे का तरीक़ा होने की वजह से यह टुकड़ाबंदी की बुराई बढ़ती ही जा रही है। उम्मेद है, इन सूबों के कुछ खास हिस्सों में चकबंदी के ढंग पर खेती शुरू करने की कोशिश की जायगी। मुझे यक़ीन है, इससे उस बड़ी दिक़्क़त को दूर करने का कोई रास्ता निकल आएगा, जिसकी वजह से आज हमारे किसान दुख भोग रहे हैं।

बरसात के पानी के भरोसे रहनेवाले बिहार और यू० पी०-जैसे सूबों में बाढ़ और सूखे से अक्सर फ़सलों को नुक़सान पहुँचता है। दक्खिन-बिहार में आहरों और पैनों का जो अच्छा तरीक़ा चला हुआ है, उससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि वहाँ के लोगों ने पटावन का फ़ायदा अच्छी तरह समझा था। जिन लोगों ने बिना खर्चीले ऊपरी इंतज़ाम के पटावन का बढ़िया तरीक़ा ईजाद किया, वे फ़सलों की उपज में पटावन का फ़ायदा समझने में किसी से भी पीछे नहीं थे। आज हम लोगों के सामने इस तरीक़े को ठीक हालत में क़ायम रखने का सवाल मौजूद है। इसी तरह उत्तर-बिहार में बाढ़ का सवाल सबसे बड़ा है, और क़ाबिल अफ़सर इस सवाल पर ग़ौर कर रहे हैं।

बहुत पुराने ज़माने से गाय-बैलों से किसानों को खेती में पूरी मदद और रुपया मिलता आया है, और इस वक़्त भी उनकी ज़रूरत वैसी ही बनी हुई है। लेकिन बदक़िस्मती से आजकल जानवरों के चरने के लिये उतनी ज़मीन नहीं, जितनी पुराने ज़माने में थी। ऐसे लिखे हुए सुबूत मौजूद हैं, जिनसे मालूम होता है कि पुराने ज़माने में हरएक गाँव एक ऐसी बड़ी और बग़ैर फ़ीस की चरागाह से घिरा रहता था, जिसकी चौड़ाई कौटिल्य के ज़माने में ४०० हाथ थी, और मुग़लों के ज़माने में इतनी कि उस पार तक आदमी की आवाज़ सुनी जा सके। पीछे बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरतें खेत की उपज बढ़ाने के बदले चरागाहों को जोतकर पूरी की जाने लगीं। इस तरह गाय-बैलों के लिये चारे का सवाल मुश्किल हो गया। इस पर आप लोगों को ग़ौर करना चाहिए।

जब आबादी कम और परती ज़मीन ज़्यादा थी, तब लोगों को जलावन में गोबर जलाने की ज़रूरत नहीं होती थी। जानकारों का कहना है कि गाय का गोबर इस वक़्त भी ज़्यादा फ़सल उपजाने के लिये सबसे अच्छी खाद है। लेकिन उसका ज़्यादा हिस्सा आजकल जलावन के काम में आता है। किसान से यह कहने से कोई फ़ायदा न होगा कि उसे गोबर जलाना नहीं चाहिए। गोबर की खाद का फ़ायदा किसान से बढ़कर दूसरा कोई नहीं समझता, मगर मौजूदा हालत में वह इसका सुधार नहीं कर सकता। उसे अपना खाना बनाना ज़रूरी है, और वह जलावन ख़रीद नहीं सकता।

इसके सिवा किसानों को रुपए-पैसे की मदद पहुँचाने का सवाल सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। किसान को अपनी खेती की तरक़्क़ी के लिये कुआँ खुदवाने या अच्छे बीज या खाद ख़रीदने की ख़्वाहिश हो सकती है, मगर उसके पास उन्हें ख़रीदने के लिये रुपए नहीं। फ़सल के समय उसे अपना मोतालबा चुकाने के लिये अपनी पैदावार बेचने को दौड़-धूप करनी पड़ती है, और अक्सर किसानों की इस दौड़-धूप की वजह से एक खास वक़्त में नाज का बाज़ार-भाव बहुत गिर जाता है। मैं आप लोगों से इस घबरानेवाली बात को दूर करने की सिफ़ारिश करता हूँ।

जिन बातों से हमारे सूबे की तरक्की हो सकती है, उनमें जलावन, जानवरों के चारे, खेतों की टुकड़े-बंदी और रुपए-पैसे की इमदाद के सवाल खास हैं।

खेती की तरक़्क़ी में महकमा ज़रायत के काम

किसानों के लिये बहुत फ़ायदेमंद हो सकते हैं। इस महकमे का पहला काम है खेती के तरीक़ों में किफ़ायती सुधारों का पता लगाना, और दूसरा काम है उन सुधारों की किसानों को जानकारी कराना और उनके खेतों पर उनका इस्तेमाल करके उन्हें यक़ीन दिलाना कि ये तरीक़े जायज़ तरीक़ों से अच्छे हैं। इन सुधार के तरीक़ों को जब किसान काम में लाएँगे, तभी इस महकमे की कामयाबी हो सकती है।

इस महकमे के कामों को सब जगह फैलाने के लिये न तो काफ़ी रुपया मिलना ही मुमकिन है, और न पढ़े-लिखे आदमी ही। इससे अभी ज़ोरदार प्रचार करने के लिये हर ज़िले में एक-एक थाना लेना तय किया गया है। पहले यह खयाल किया गया था कि हर थाने में एक ओवरसियर और तीन कामदार रक्खे जायँ, और उनके काम थाने के भीतर ही रक्खे जायँ। उन्हें ये काम करने होंगे—अच्छे क़िस्मों के बीज, खाद और औज़ार बाँटना; बेकार पत्ते-पौदों को कंपोस्ट खाद बनाने के काम में लाना; गोबर की ठीक तरह से हिफ़ाज़त और फ़सलों की पैदावार बढ़ाने के लिये हरी खाद, खलियों और बनाई हुई खादों का इस्तेमाल। यह भी तय किया गया है कि इन चुने हुए थानों में, जहाँ हो सके, कुओं में बोरिंग करके और 'रहट' पंप के इस्तेमाल दिखाकर पटावन के कुओं का सुधार किया जाय। यह महकमा नारंगी, आम, अमरूद वग़ैरह के फलों का भी प्रचार करेगा, और उन्हें ठीक तरह से पैदा करने का तरीक़ा दिखाएगा। यह खेती से 'ताल्लुक़ रखनेवाले काम-धंधों—जैसे मुर्ग़ी पालना वग़ैरह—को भी तरक़्क़ी देगा, जहाँ किसान लोग ऐसे काम चाहते होंगे। इसके सिवा अच्छी नस्ल के साँड़ बाँटने का भी सवाल है।

खुले हुए कुओं और नल के कुओं में बोरिंग कराके आसानी से सिंचाई कराने में किसानों पर इस महकमे के ख़र्च का भारी बोझ पड़ता है। यह सोचा गया है कि यह ख़र्च उठा दिया जाय, जिसमें किसान पटावन की इन सहूलियतों से फ़ायदा उठा सकें।

यह ज़रूरी है कि इन सुधारों के कामों के साथ-साथ बीज, खाद और औज़ार बड़े पैमाने पर बाँटे जायँ, जिसमें थाने के अंदर के किसान उन्हें अपना लें। मगर बहुत-से किसान बीज और खादें ख़रीदने के लिये ज़रूरी रुपए पाने में मजबूर हैं। इसलिये यह बहुत ज़रूरी मालूम होता है कि उन्हें नाज के रूप में क़र्ज़ देने का कोई तरीक़ा जारी किया जाय। नल के कुएँ वग़ैरह-जैसे मुस्तक़िल सुधारों के लिये यह मुमकिन है कि ज़मीन के सुधारवाले क़र्ज़ के क़ानून या उसके मुताबिक़ बने हुए क़ायदों का सुधार करने से काम चल जाय। इन दो काम में आनेवाले क़ानूनों—यानी ज़मीन के सुधारवाले क़र्ज़ के क़ानून और किसानों के क़र्ज़ के क़ानून—के इस्तेमाली तरीक़ों की इस ख़याल से जाँच की जानी चाहिए कि वे किसानों को खेती के सुधार में ज़रूरी चीज़ों के लिये रुपए की मदद देने के काम में लाए जा सकते हैं या नहीं।

मुझे खबर मिली है कि यू० पी० और पंजाब की सरकारें बीज और खादें बाज़ार-भाव से बेचती हैं, और रेल-भाड़ा, इंतज़ाम और दूसरे खर्चों का घाटा ख़ुद सहती हैं। इधर बिहार में हम लोग न सिर्फ़ बाज़ार-भाव पर बेचते हैं, बल्कि लागत के भाव से ५ फ़ी सैकड़े ज़्यादा दाम पर बेचते हैं। पिछले साल महकमा ज़रायत को इस मद में क़रीब छ हज़ार रुपयों का मुनाफ़ा हुआ था। यह सोचने की बात है कि इसके क़ायदों में हेर-फेर करके उन्हें दूसरे सूबों के मुक़ाबले में लाना चाहिए या नहीं।

चुनी हुई जगहों में ज़ोरदार प्रचार करने के सिवा यह बहुत ज़रूरी है कि इस सूबे में नक़दी

फ़सलों की तरक़्क़ी का काम शुरू किया जाय। ऊख की ओर इतना ध्यान दिया गया है, और दिया जा रहा है, जितना हम लोग दे सकते हैं; मगर दूसरी फ़सलों, जैसे आलू, तंबाकू, मिरचा, फल, भेटमास (Soya-beans), मूँगफली और लाह (Lac) की ओर भी हमें न सिर्फ़ ध्यान देना चाहिए, बल्कि इनकी तरक़्क़ी के ज़रिए मंज़ूर करना और उनके मुताबिक़ मुस्तैदी से काम करना चाहिए। हिंदोस्तान में बिहार तंबाकू पैदा करने की ख़ास जगह है। बिहार में तंबाकू की उपज का औसत क़रीब १२ लाख मन कूता गया है, जिसमें से ५ लाख मन दूसरे सूबों में भेजा जाता है। मगर बदक़िस्मती से तंबाकू के विदेशी व्यापार में बिहार की तंबाकू की कोई जगह नहीं।

तंबाकू के बाद आलू का नंबर आता है। यह भी बिहार की एक ख़ास फ़सल है। किसानों को आलू के बीजों को हिफ़ाज़त से रखने में बड़ी कठिनाई होती है, क्योंकि उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा गुदाम में सड़ जाता है। इस वजह से हर साल लाखों रुपए का घाटा होता है। इसलिये यह ज़रूरी है कि ठंडी जगह (cold storage) में बीज रखने और बीजों की हिफ़ाज़त के दूसरे सस्ते तरीक़ों की जाँच शुरू की जाय। यह अच्छा होगा कि बिहार शरीफ़ में—जो आलू की एक ख़ास जगह है—आलू की खेती, खादों का प्रयोग, बीजों की हिफ़ाज़त और आलू को नुक़सान पहुँचानेवाले कीड़ों और रोगों की जानकारी हासिल करने के लिये एक छोटा-सा अमली फ़ार्म खोला जाय। जब बिजली के सरबराह की स्कीम (Electrification Scheme) काम में लाई जायगी, तब आलू की फ़सल और ज़्यादा तरक़्क़ी करेगी; लेकिन इसके व्यापार और बाहर भेजने का इंतज़ाम ठीक नहीं। इसलिये तिजारत के महकमे को मज़बूत करने की बड़ी ज़रूरत है।

नई फ़सलों के लिये यह अच्छा होगा कि पहाड़ी इलाक़ों में, जहाँ-जहाँ पानी की आसानी हो, बड़े पैमाने पर फलों की और ख़ासकर नारंगियों तथा जंबीरी नींबू की खेती बढ़ाई जाय। यह भी ज़रूरी है कि फलों की खेती और उनकी हिफ़ाज़त करने की तालीम पाया हुआ एक अफ़सर बहाल किया जाय। पंजाब और यू० पी० में जिस तरीक़े पर फलों की तरक़्क़ी के लिये बोर्ड क़ायम किए गए हैं, उसी तरीक़े पर बिहार में भी एक बोर्ड (Provincial Fruit Development Board) क़ायम करने की ज़रूरत की जाँच की जानी चाहिए।

ऊख की खेती की तरक़्क़ी का सवाल सबसे बड़ा है, और अब मिलों के इलाक़ों में इस काम की ओर ध्यान देने के लिये बाहरी काम करनेवाले मिल गए हैं। लेकिन बड़े पैमाने पर अच्छे बीजों और खादों के बाँटने के लिये काफ़ी रुपए नहीं मिल रहे हैं। इस ओर बहुत जल्द ध्यान देने की ज़रूरत है, और सरकार को इसके लिये काफ़ी रुपया देना चाहिए। मिलवालों को भी बीज और खादें बाँटने के लिये आगे आना चाहिए। ऊख की खेती बढ़ाने का एक और तरीक़ा यह है कि हर मिल के इलाक़े में दो या तीन अच्छे किसानों को, जिनकी ऊख की उपज सबसे अधिक हो, ठोस इनाम दिए जायँ।

बिक्री का इंतज़ाम करना भी बहुत ज़रूरी काम है। खेती की तरक़्क़ी का बाज़ार के अच्छे संगठन के साथ गहरा ताल्लुक़ है। बंबई के पिछले गवर्नर सर फ़्रेडरिक साइक्स ने अपनी गाँव-सुधार की किताब में बाज़ार के इंतज़ाम के लिये लिखा था—"बहुत तरह से यह पैदा करने की अपेक्षा भी अधिक महत्त्व का विषय है, क्योंकि खेती के तरीक़ों का सुधार करने से कोई भी लाभ न होगा, अगर किसान अपनी उपज की मुनासिब क़ीमत बाज़ार में

न पा सके। इस वक़्त बाज़ार की हालत आम तौर पर बिचवानी लोगों के लिये ही फ़ायदेमंद है। जब भाव घटता है, तब किसानों को ही अधिक घाटा सहना पड़ता है, और ख़रीदारों को किसी तरह भी गिरी हुई दर का पूरा फ़ायदा नहीं मिलता। जब भाव बढ़ता है, तब उसका पूरा फ़ायदा किसी तरह किसानों तक नहीं पहुँचता।''

इसलिये अगर बाहरी बाज़ारों में सूबों में पैदा होनेवाली चीज़ों की बिक्री को मज़बूत करना और भीतरी बाज़ारों मे ज़्यादा फ़ायदा उठाना हो, तो खेती की उपज की बिक्री का ठीक तरह से संगठन और सुधार किया जाना चाहिए। इसके लिये नीचे लिखी बातों की बड़ी ज़रूरत है—

(१) बाज़ार-दर का प्रचार—देहातों में बिना तार की तारबर्क़ी (Rural broadcasting) का इंतज़ाम करना। इसका सबसे सहल तरीक़ा है, और मुझे यह कहते ख़ुशी होती है कि इसके लिये मेरी कोशिश बहुत जल्द ही पूरी होगी।

(२) बाज़ारों की रजिस्ट्री—व्यापारियों और गोलादारों को लाइसेंसयाफ़्ता और क़ायदे-संबंधी बाज़ार मुक़र्रर करना— इसके लिये जल्द ही एक क़ानून बनाने का विचार किया जाना चाहिए।

(३) अच्छाई के नमूने और क़िस्में मुक़र्रर करना—यह बिक्री के लिये बड़ा ही ज़रूरी काम है। जब क़िस्में मुक़र्रर हो जाती हैं, तब जानी हुई और ख़ालिस चीज़ें बेची जाती हैं। यह सबको अच्छी तरह मालूम है कि बाज़ार में ख़ालिस घी मिलना बहुत मुश्किल है। कहा जाता है कि बड़े-बड़े व्यापारी और देहाती भी इसमें मिलावट करते हैं। भारत-सरकार ने खेती से पैदा होनेवाली चीज़ों की क़िस्में मुक़र्रर करके उन पर अलग-अलग निशान लगाने के लिये एक क़ानून बनाया है, और भारत-सरकार के एग्रीकलचरल मारकेटिंग ऐडवाइज़र ने घी को गुण के मुताबिक़ कई क़िस्मों में बाँटकर बड़े-बड़े घी के व्यापारियों को उसके अख़्तियारात के सार्टिफ़िकेट दिए हैं।

ये ही कई एक मसले और आगे की तरक़्क़ी के रास्ते हैं। अगर खेती और खेती से पैदा हुई चीज़ों की बिक्री का ठीक तरह से सुधार किया जाय, तो मालगुज़ारी के सवाल पर छटपटाने की कोई ज़रूरत न होगी। अगर सब मालगुज़ारी उठा भी दी जाय, तो सूबे की आबादी के हिसाब से हर आदमी को सिर्फ़ चार रुपए का सालाना फ़ायदा होगा। दूसरी तरफ़ अगर खेती और काम-धंधों की ठीक तरह से तरक़्क़ी की जाय, तो लोगों को चार रुपयों से ज़्यादा फ़ायदा होगा। रिपोर्ट से मालूम होता है कि अमेरिका के संयुक्त राज्य को सिर्फ़ तंबाकू की मुल्की मालगुज़ारी से हर साल क़रीब १५४ करोड़ रुपयों की आमदनी होती है, जो इन सूबों की कुल मालगुज़ारी की दसगुनी है। क्या साइंस के नौ-ईजाद तरीक़ों के सहारे अपनी खेती के तरीक़ों का सुधार करके अपने करोड़ों किसानों के लिये खेती के काम को आगे बढ़ाना और रैयत की समझ और धन पैदा करने की ताक़त बढ़ाने की उम्मेद करना एक महज़ ख़याली बात होगी, आइए, आज से हम लोग यही नारा लगाया करें—

"उत्तम खेती, उत्तम बान ;
सुखमय जीवन केर निदान।"

मिस्टर जिन्ना

(अपने 'ध्येय' के ढिंढोरे-सहित)

[चित्रकार – श्रीयुत शिक्षार्थी]

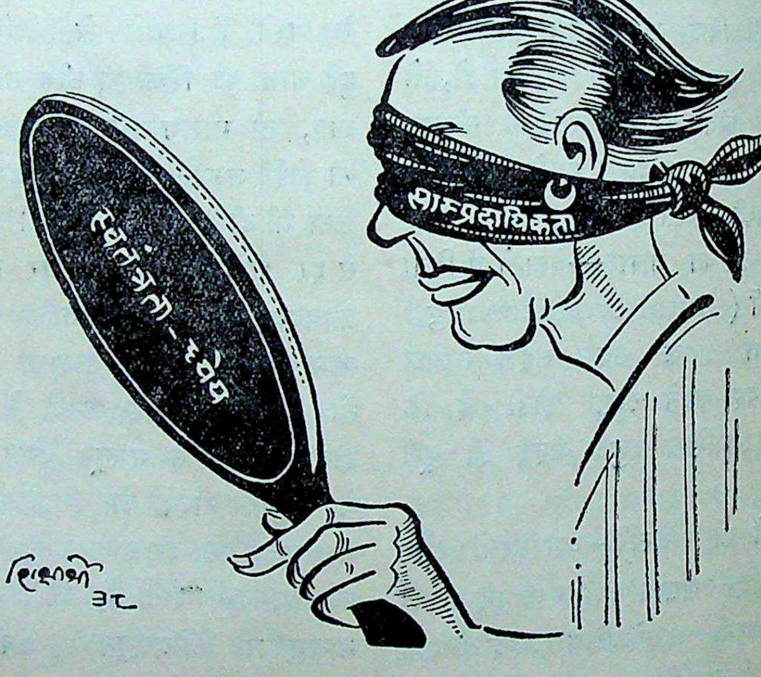
साम्प्रदायिकता
स्वतंत्रता-ध्येय
शिक्षार्थी 38

सामप्रदायिकता-सुपट श्रीजिन्ना दृग बाँधि;
मुकति-ध्येय-दरपन रखत सदा सामुहैं साधि !

संयुक्त-प्रांतीय शिक्षा-विभाग की ओर से प्रचलित

हिंदी-विशेष योग्यता-परीक्षा

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, महिला-विद्यापीठ (इलाहाबाद), तथा पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

भ्रमण से बुद्धि बढ़ती है

नये चेहरे, नई रीति-रिवाज, नया शिल्प, नये आदमी—ये सब चीज़ें आदमी को एक ऐसी शक्ति प्रदान करती हैं, जिससे वह अपने ज्ञान तथा जानकारी की थाह पा सकता है। इससे उसे अपने निकट भविष्य का थोड़ा-बहुत अनुमान हो जाता है तथा वह उसे ठीक कर लेता है—उसकी ज़िंदगी साधारण न होकर उन्नत हो जाती है। ये सब बातें सिर्फ़ भ्रमण करने से ही मिल सकती हैं।

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात-साधन

RBK. 16

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
——हरएक घर में रहना चाहिए——

(जूड़ी - ज्वर)

मलेरिया का महान् शत्रु

झंडु-

मलेरिया-मिक्श्चर

सेवन करके
मलेरिया की जड़ को
नाबूद कर दीजिए।

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबाक्स नं० ५५१३, बं० १४
यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ के „ „—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।

मीराबाई तथा गो० तुलसीदास का पत्र-व्यवहार

[श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०, ए -एल्० बी०]

यह दंत-कथा प्रसिद्ध है कि मीराबाई ने सत्संग तथा हरि-कीर्तन के कारण अपनी ससुराल में, राणा विक्रमाजीत के समय, विशेष कष्ट पाया था, और इससे संतप्त होकर उन्होंने गोस्वामी तुलसीदासजी को एक पत्र लिखकर उनसे अपना कर्तव्य पूछा था। बाबू वेणीमाधवदास-कृत मूल गोसाईं-चरित में, इस विषय में, इस प्रकार लिखा है—

तब आयो मेवाड़ ते बिप्र नाम सुखपाल ;
मीराबाई - पत्रिका लायो प्रेम प्रबाल।
पढ़ि पाती, उत्तर लिखे गीत-कबित्त बनाय ;
सब तजि हरि भजिबो भलो, कहि दिय बिप्र पठाय।

समय निश्चित करने के लिये इसके पहले का कुछ अंश नीचे दिया जाता है—

सोरह सै सोरह लगे कामद-गिरि ढिग बास ;
सुचि, एकांत प्रदेस महँ आए सूर सुदास।

लिखते हैं कि इन सूरदास को गोकुलनाथजी ने कृष्ण-प्रीति देकर भेजा था, पर गोसाईंजी ने ज़रा नज़र फेरकर चित्त की चातुरी छीन ली। सूर ने अपना सागर दिखलाया, दो पद गाकर सुनाए, गोसाईं के चरण-कमल पर सूर-सागर रखकर तथा सिर नायके कहा कि ऐसी आशीष दीजिए कि श्याम हम पर कृपा करें, और हमारी यह कीर्ति चारो ओर फैले। यह सुन गोसाईं ने 'सुदाद' दिया, और पुस्तक पैर पर से उठाकर हृदय में लगाया। सात दिन सत्संग करने के अनंतर जाते समय सूर ने फिर गोसाईंजी का चरण-कमल पकड़ा, तब उन्होंने हाथ पकड़कर, इन्हें प्रबोधन कर तथा गोकुलनाथ को पत्र देकर सूर कवि को बिदा किया। इसी के बाद सुखपालजी मेवाड़ से आए।

मीराबाई की पत्रिका इस प्रकार कही जाती है—

श्रीतुलसी सुख - निधान दुख - हरन गुसाईं ;
बारहि बार प्रनाम करूँ हरो सोक - समुदाई।
घर के स्वजन हमारे जेते, सबन्ह उपाधि बढ़ाई ;
साधु-संग अरु भजन करत मोहिं देत कलेस महाई।
बालपने ते मीरा कीन्हीं गिरधरलाल - मिताई ;
सो तो अब छूटै नहिं क्यौं हूँ, लगी लगन बरियाई।
मेरे मात-पिता के सम हौ हरि-भक्तन सुखदाई ;
हमकूँ कहा उचित करिबो है, सो लिखियो समुझाई*।

इसके उत्तर में गोसाईंजी ने यह पद लिख भेजा—

जाके प्रिय न राम-बैदेही ;
तजिए ताहि कोटि बैरी-सम-जद्यपि परम सनेही।
तज्यो पिता प्रह्लाद, बिभीषन बंधु, भरत महतारी ;
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज-बनितन, भे सब मंगलकारी।

---

* यह पत्र रीवाँ-नरेश रघुराजसिंह-कृत भक्तमाल में उद्धृत है।

नातो-नेह राम सों मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं ;
अंजन कहा, आँख जो फूटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं ।
'तुलसी' सो सब भाँति परम हित, पूज्य, प्रान ते प्यारो;
जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो *।

वेणीमाधवदास के वर्णन का ऐतिहासिक अंश इस प्रकार है कि सं० १६१६ वि० के लगते ही सँडीले से आकर कामद-गिरि के पास एकांत-प्रदेश में गोस्वामी तुलसीदासजी ठहरे। चित्रकूट-पर्वत ही कामद-गिरि कहलाता है। यहीं श्रीसूरदासजी गोस्वामीजी से मिलने के लिये गोस्वामी गोकुलनाथजी द्वारा प्रेरित होकर आए। पर दोनो महात्माओं की जो बातचीत तथा व्यवहार वेणीमाधवदास ने दिखलाया है, उससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि गोसाईंजी बहुत बड़े सिद्ध हैं, जिनके पैर पर सूर-सागर रखकर सूरदास भक्ति तथा कीर्ति की भिक्षा माँग रहे हैं, और सिद्धजी प्रदान कर रहे हैं। यह विनयशील तुलसीदासजी का माहात्म्य बढ़ाने का अत्यंत ओछा प्रयास है, या इस कथा में कोई सार नहीं। सूरदासजी की जीवनी देखने से ज्ञात होता है कि उनका जन्म-काल सं० १५४० के लगभग निश्चित है। यह श्रीमहाप्रभु वल्लभाचार्यजी के शिष्य थे, और इनका शरीर-पात सं० १६२० के लगभग हुआ था। गोसाईं-चरित के लेखक के अनुसार गोस्वामी तुलसीदासजी का जन्म सं० १५५४ में हुआ था, और इन्होंने रामचरित-मानस का आरंभ सतहत्तर वर्ष की अवस्था में, सं० १६३१ में, किया था। अब विचार कीजिए कि क्या ६२ वर्ष के तुलसीदासजी, जिन्होंने तब तक कुछ चमत्कार दिखलाने के सिवा रचनाओं के नाते प्रायः कुछ भी नहीं लिखा था, और जिनकी विनम्रता तथा विनय की अनेक कथाएँ प्रचलित हैं, ७६ वर्ष के विख्यात भक्त सूरदासजी का तथा उनके प्रसिद्ध सूर-सागर का इस प्रकार ओछेपन से सत्कार करेंगे ?

श्रीमहाप्रभु वल्लभाचार्यजी का जन्म सं० १५३५ में और निधन सं० १५८७ में हुआ था। इनके पुत्र गो० विट्ठलनाथजी का जन्म सं० १५७२ में और निधन सं० १६४२ में हुआ था। इनके सात पुत्र हुए, जिनमें से चतुर्थ गोकुलनाथजी का जन्म सं० १६०८ में और देहावसान सं० १६६० में हुआ था। सं० १६१६ में श्रीविट्ठलनाथजी गद्दी पर आप ही विद्यमान थे, और अपने पिता के समय के चार तथा अपने समय के चार उत्कृष्ट भक्त कवियों को चुनकर अष्टछाप नियत कर चुके थे। अब यदि सूरदासजी का तुलसीदासजी से मिलने के लिये चित्रकूट जाना मान भी लिया जाय,

---

* रीवाँ-नरेश रघुराजसिंह ने स्वरचित भक्तमाल में निम्नलिखित सवैया भी इस पद के बाद दिया है, और तुलसीदास के पत्र का अंश बतलाया है—

सो जननी, सो पिता, सोइ भाई, सो
भामिनि, सो सुत, सो हित मेरो ,
सोइ सगो, सो सखा - सुत - सेवक,
सो गुरु, सो सुर, साहब, चेरो ,
सो 'तुलसी' प्रिय प्राण - समान,
कहाँ लौं बनाय कहौं बहुतेरो ,
जो तजि देह को, गेह को नेह
सनेह सों राम को होय सबेरो।

तो उनका गोस्वामी विट्ठलनाथजी द्वारा प्रेरित होकर जाना माना जायगा, न कि उनके अष्ट-वर्षीय पुत्र द्वारा। इनके तीन भाई और भी बड़े थे, और सभी एक-से-एक बढ़कर विद्वान् तथा एक-एक गद्दी के स्वामी हुए थे। साथ ही छिहत्तर वर्ष के वृद्ध सूरदासजी का आँख के अभाव में वृंदावन से चित्रकूट जाना संभव नहीं, और वह भी तुलसीदासजी से केवल मिलने, जो स्वयं कुछ ही मास पहले घूमते-फिरते वृंदावन जाकर कई महीने तक वहाँ रह चुके थे। सूरदासजी की जीवनी से यह भी ज्ञात नहीं होता कि वह वृंदावन छोड़कर कभी चित्रकूट आदि स्थानों को गए थे। वह रमते राम न थे, प्रत्युत अपने इष्ट के मंदिर में नित्य कीर्तन करनेवाले भक्त थे। यदि यह कहीं जाते थे, तो गोस्वामी विट्ठलनाथजी के साथ ही जाते थे। यह दंत-कथा किसी अंध-भक्त की निर्मित हो सकती है, पर किसी का आँखों देखा विवरण कभी नहीं हो सकता।

अब मीराबाई के पत्र-व्यवहार को लीजिए। मीराबाई का विवाह प्राचीन अनिश्चित मत से राणा कुंभकर्ण के साथ और नवीन निश्चित मत से राणा साँगा के पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ था। राणा कुंभकर्ण सं० १५२५ वि० में पैंतीस वर्ष राज्य कर अपने पुत्र उदयसिंह द्वारा मारे गए थे। मृत्यु के समय इनकी अवस्था पचास वर्ष के लगभग थी, और इस प्रकार यदि मीराबाई राणा कुंभ की स्त्री रही हों, तो यह पत्र-व्यवहार असंभव ही है। अब दूसरा पक्ष लिया जाय। राणा साँगा का जन्म सं० १५३९ में हुआ, सं० १५६६ में वह गद्दी पर बैठे, और सं० १५८४ में उनकी मृत्यु हुई। इनके प्रथम पुत्र पाटवीकुमार भोजराज इनकी मृत्यु के कई वर्ष पहले ही स्वर्ग सिधारे थे, अर्थात् मीराबाई सं० १५७५ वि० के लगभग विधवा हो चुकी थीं। राणा साँगा तथा उनके पुत्र राणा रत्नसिंह के समय तक, जो सं० १५८८ वि० में मारे गए थे, इन्हें कोई कष्ट न था, पर इसके बाद जब विक्रमाजीत गद्दी पर बैठा, तब इन्हें उसने बहुत कष्ट दिया था। विक्रमाजीत सं० १५९३ में मारा गया। अब इन्हीं दो संवतों के बीच मीराबाई का तुलसीदासजी को पत्र लिखना उचित ज्ञात होता है। अन्य आधारों पर भी यह निश्चित हो चुका है कि इसी बीच यह मेड़ते गईं, और वहाँ से भी सं० १६०० वि० के लगभग विदा होकर वृंदावन पहुँच गई थीं। इसके अनंतर वह यहाँ से द्वारका चली गईं, जहाँ अंत तक रहीं। इनकी मृत्यु भी सं० १६०३ के लगभग हो चुकी थी। इस प्रकार यह कथानक कि वि० सं० १६१६ में चालीस-पैंतालीस वर्ष तक वैधव्य भोगने के अनंतर प्रायः साठ वर्ष की अवस्था में और शायद मृत्यु के बाद यह पत्र सुखपाल पंडित द्वारा मेवाड़ से, द्वारका से नहीं, भेजा गया था, अनर्गल बकवाद-मात्र है। महाराणा उदयसिंह द्वारा, जो सं० १५९५ में चित्तौड़ की गद्दी पर बैठे थे, मीराबाई को द्वारकाजी से गृह लौटाने का

विशेष प्रयास हुआ था, तब इनके समय कष्ट पाकर उनका गृह-त्याग कैसे संभव हो सकता था। उदयसिंहजी सं० १६२४ में परलोक सिधारे थे। अब यदि यह विचार किया जाय कि सं० १५८८-१५९३ के बीच या दो वर्ष का बनवीर का राज्य-काल भी ले लें, तो १५९५ तक यह पत्र-व्यवहार हो सकता था। अब तुलसीदासजी की उक्त जीवनी देखिए। उसमें लिखा है कि सं० १५८३ में तुलसीदासजी का विवाह हुआ, और पाँच वर्ष गृहस्थ रहने पर, सं० १५८९ में, 'हम तो चाखा राम-रस पत्नी के उपदेश।' इसके बाद प्रयाग होते हुए अयोध्या में चातुर्मास्य व्यतीत कर पुरी गए। वहाँ कुछ दिन व्यतीत कर, रामेश्वर होते हुए द्वारकाजी गए। वहाँ से बदरीनाथजी जाकर चारो धाम की यात्रा पूर्ण की। इसके अनंतर मानसरोवर आदि स्थानों में सत्संग करते 'चौदह बरिस मास दस सतरह दिवस बिताया।' तात्पर्य यह कि सं० १६०४ तक यह गृह-जंजाल छोड़ने पर हिमालय में भ्रमण करते रहे, और इस बीच पत्र-व्यवहार का होना संभव नहीं। अस्तु। कुल विचारों को देखते हुए यही निष्कर्ष निकलता है कि मीराबाई तथा गोस्वामीजी का पत्र-व्यवहार भंड कथा-मात्र है।

एक सज्जन लिखते हैं कि 'जिनके प्रिय न राम-बैदेही' पद का विनय-पत्रिका में होना इस कथानक को पुष्ट करता है। क्या सुंदर प्रलाप है! इस पद को तुलसी-कृत मानने में किसे इनकार है। भगतजी ने शायद इस पद को देखकर ही इस कथा की कल्पना कर ली है, और इसी प्रकार की विचार-शैलीवालों ने हाँ में हाँ मिला दी। बस, दंत-कथा चल निकली। कृपा कर मीरा के पत्र की भाषा तथा उनके पदों की भाषा को ही मिला देखते, तो कुछ समझ पड़ता। विनय-पत्रिका का रचना-काल भी सं० १६३५ के लगभग है, और उक्त पत्र-व्यवहार के समय के बीस वर्ष बाद की रचना है।

एक बात और विचारणीय है। मीराबाई के इष्टदेव श्रीकृष्ण थे, और उनकी उपासना के प्रधान प्रचारकों तथा प्रसिद्ध भक्तों की उनके समय में वृंदावन में कमी न थी, तब उन्हें क्या पड़ी थी कि चमत्कार दिखलानेवाले राम-भक्त बैरागी के पास पत्र भेजकर उपदेश माँगतीं, क्योंकि उस समय तक तुलसीदासजी मानसकार नहीं हो चुके थे। मीराबाई स्वतः वृंदावन जाकर जीव गोस्वामी से मिली भी थीं। चौरासी वैष्णवों की वार्ता से ज्ञात भी होता है कि वृंदावन से मेवाड़ पत्र आते-जाते थे।

व्याख्यान-वाचस्पति

(प्रहसन)

[श्रीपं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल']

पहला दृश्य

स्थान—सोने का कमरा

[व्याख्यान-वाचस्पति प्रातःकाल नित्य-कृत्य से निवृत्त होकर कपड़े पहन रहा है। कभी कमरे के बाहर आता और फिर भीतर जाता है। वाचस्पतिजी की धर्मपत्नी राधा कमरे के अंदर प्रवेश करती और कुछ पूछती है।]

राधा—(मुस्किराकर) अरे, आज इतनी जल्दी ! बड़ी जल्दी उठ पड़े। कहाँ की तैयारी हो रही है ?

वाचस्पति—(एकाएक नाराज़ होकर) जहन्नुम को जा रहा हूँ, और कहाँ ! सबेरे-सवेरे जब कहीं चलने लगता हूँ, झट आकर टोक देती है। एक बार नहीं, हज़ार बार समझाया। आखिर औरत की ज़ात ठहरी न। हुँ ! (नाक सिकोड़कर कुरता पहनता है)

राधा—(कुछ उच्च स्वर से) पूछ ही लिया, तो मैंने तुम्हारा क्या छीन लिया। आज इतनी जल्दी उठ गए, इसी से मैंने पूछा। आखिर शौच आदि से निवृत्त हो लिए या नहीं ?

वाचस्पति—(नाराज़ होकर) ऐसी कितनी ही छीननेवालियों को मैंने देख लिया। तूने अपने को समझ क्या रक्खा है ? मैं इतना बेवक़ूफ़ हूँ कि बिना शौच आदि हुए ही कुरता पहनने लगूँगा। जानती नहीं आज...

राधा—(बात काटकर आश्चर्य से) आज ! आज क्या ? (पास जाकर) आज क्या कोई खास बात हो गई है ? खैरियत तो है ?

वाचस्पति—(कुरता फेंककर) अच्छा, तो ले, नहीं मानती, तो अब जाऊँगा ही नहीं। (चारपाई पर बैठकर) पूछ ले, जो कुछ पूछना हो। कोई कसर न रहने पावे (हाथ का इशारा करके) मैं तेरी एक-एक बात का जवाब दूँगा ; हरगिज़ न जाऊँगा। देखता हूँ, कब तक यहाँ मैं बैठा रहता हूँ। आज मैंने प्रण कर लिया है कि न यहाँ से एक इंच टलूँगा, और न तुझे टलने दूँगा।

राधा—(नाराज़ होकर) अच्छा, लो, अगर तुम ज़रा-सी बात पर तुनक जाते हो, तो मैं अभी चली जाती हूँ। यहाँ आने का नाम तक न लूँगी। (जाना चाहती है)

वाचस्पति—(उठकर, राधा का हाथ पकड़कर) चल-चल, जाती कहाँ है, बड़ी जानेवाली ! (भाव-भंगी से) आने का नाम तक न लूँगी। चल, बैठ ! आज मैं देखता हूँ, तेरी बहस ! (राधा जाना चाहती है, किंतु वाचस्पति उसका हाथ पकड़कर खाट पर बैठाता है)

राधा—(कुछ रुआसी होकर) मैंने तो यों ही पूछ लिया। इसमें इतना नाराज़ होने की कौन-सी बात थी ?

वाचस्पति—(भाव-भंगी से) हुँ, यों ही पूछ लिया। हलुआ खाने जा रहा था न ? जानती नहीं, मैं कितने ज़रूरी काम से जा रहा था ? (बड़बड़ाता हुआ टहलने लगता है, फिर हाथ का इशारा करके) हवाखोरी के लिये नहीं, भयानक परेशानी

उठाने जा रहा हूँ ! आज दिग्गजों और भद्र पुरुषों से वाग्युद्ध करना है । लेकिन तू क्या जाने, आज मुझ पर क्या बीतनेवाली है ? (टहलता हुआ) परेशान हो गया हूँ, कुरता-टोपी पहना नहीं कि आकर सामने खड़ी ! बिना मतलब, बिना ग़रज़ टोक देती है । (इशारा करके) आख़िर तुझे मुझसे इसी वक़्त पूछने की क्या ज़रूरत थी ? क्यों तू मेरे हर काम में टाँग अड़ा देती है ? (टहलता है)

राधा—(आश्चर्य से) ऐं, परेशानी उठाने ! (खड़ी होकर नम्रता से) आख़िर मुझसे बताने में क्या हर्ज है । तुम्हें मेरी सौगंद ! बताओ, कौन-सा ऐसा काम आ पड़ा, बताओ । (वाचस्पति का हाथ पकड़ती है)

वाचस्पति—(राधा को खाट पर बैठाता हुआ और स्वयं बग़ल में बैठकर) देखो, आज आख़िरी मरतबा है, फिर समझाए देता हूँ । अब कभी चलते वक़्त न टोकना । जानती हो, यह अपशकुन है ।

राधा—(नम्रता से) हाँ, ग़लती हो गई । मैंने यों ही पूछ लिया । हाँ, तो वहाँ क्या होगा ?

वाचस्पति—(समझाकर) अब कभी 'यों ही' न पूछ लिया करो । देखो, आज मुझे 'डिबेटिंग क्लब' में व्याख्यान देने जाना है । जानती हो, व्याख्यान देना बड़े साहस का काम है । जान हथेली पर लेनी पड़ती है, पसीना छूटने और शरीर काँपने लगता है । साँस की गति तीव्र हो जाती है । यह काम मामूली आदमियों के वश का नहीं । बड़े-बड़े नेता बड़ी तैयारी के साथ व्याख्यान-मंच पर जाते हैं । (ज़रा प्रसन्न होकर) बात यह है कि तुम औरत हो, इन बातों को क्या जानो । बड़ी हिम्मत और दिलेरी का काम है ।

राधा—(आश्चर्य से) अच्छा, तब तो यह काम काफ़ी ख़तरनाक जान पड़ता है । (हाथ पकड़कर) तो ऐसे काम में क्यों हाथ डालते हो, र जाओ ।

वाचस्पति—(ओज से) वाह, मैं तो अवश्य ही जाऊँगा । एक से-एक बड़े आदमी आवेंगे । (समझाकर) देखो, आज तो मुझे अच्छी तरह भिड़ना है । जितने लोग आए होंगे, सबकी बोलती बंद कर दूँगा, समझीं ।

राधा—(कुछ व्यग्र होकर) नहीं, नहीं, तब तो आप हरगिज़ न जाइए । मुझे किसी से भिड़ना अच्छा नहीं मालूम होता । बाहर आपकी रक्षा कौन करेगा ?

वाचस्पति—न-न-न-न, अभी तुम समझीं नहीं । ह-ह-ह-ह ! भिड़ने का अर्थ तुम और ही कुछ समझ गईं । न-न-न-न, मैं किसी से वाक़ई कुश्ती लड़ने नहीं जा रहा हूँ । हाँ, कुश्ती होगी ज़बान की । ज़बानें खूब चलेंगी ।

राधा—(व्यग्र होकर) तब तो और भी ख़तरा है । तुम्हारी ज़बान क़ाबू में नहीं । ज़बान की लड़ाई में कहीं तुम्हारे हाथ-पाँव भी चलने लगे, तब ?

वाचस्पति —नहीं-नहीं, यह भी कोई बात है, चलेंगी ज़बानें, और लड़ने लगेंगे हाथ-पाँव ! भई वाह, आख़िर औरत की ज़ात ठहरी न ! क्या आसमान-ज़मीन का क़ुलाबा मिलाया है । "[illegible] बियानी है मोहबे माँ, पड़वा गिरा कलींजर जाय ।" ह-ह-ह-ह हः !

राधा—(अन्यमनस्क होकर) हाँ, औरत होना तो भाग्य में लिखा ही था । (उत्सुक होकर) अच्छा, वहाँ क्या होगा ? ज़रा मैं भी तो सुनूँ !

वाचस्पति –(समझाकर) देखो, वहाँ व्याख्यान होगा । उसके लिये विषय रक्खा गया है '[illegible] का महत्त्व' । बड़ा विकट सवाल हल करना है ।

राधा—नहीं, नहीं, सवाल कठिन नहीं है । ज़बान की लड़ाई तो है ही । मुझे पूर्ण विश

है, मौखिक युद्ध में आपके सामने कोई नहीं ठहर सकता। अच्छा, यह तो बताओ, 'भाषा' है क्या चीज़?

वाचस्पति—ह-ह-ह-ह! अरे, तुम्हें अभी यह भी नहीं मालूम? भई, यह चीज़ हलुआ, पूड़ी, कलाकंद, अमिरती, दहीबड़ा नहीं है। यह है बोलनेवाली चीज़ अर्थात् ज़बान। देखो, जैसे हिंदोस्तान में हिंदू-मुसलमानों की एकता की कोशिश हो रही है, उसी तरह हिंदी-उर्दू ज़बानों की एकता का लोग प्रयत्न कर रहे हैं। मैं भी उसी में शामिल हो गया हूँ।

राधा—(उत्सुक होकर) आप कब से इस गिरोह में शामिल हो गए?

वाचस्पति—नई बात नहीं, अर्सा दो साल का हुआ। सच पूछती हो, तो पहले मैं संस्कृत के पक्ष में था, किंतु दो-चार मित्रों के समझाने से मान गया। और अब, अब मैं संस्कृत और फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग इतनी सुंदरता से व्याख्यान देते वक़् करता हूँ कि मुझे अपनी योग्यता पर आश्चर्य होता है। न-जाने यह सम्मिलित भाषा अपने आप मुझे कैसे आ गई?

राधा—(आश्चर्य से) अच्छा, तो क्या विना गुरु के आ गई?

वाचस्पति—(हँसकर) ह-ह-ह-ह! कैसा गुरु, कैसा चेला। तुमने सुना नहीं—

करत-करत अभ्यास के जड़-मति होत सुजान;
रसरी आवत-जात ते सिल पर परत निसान।

राधा—वाह, यहाँ सिल और निशान का क्या तुक?

वाचस्पति—न-न-न-न, तुम अभी समझीं नहीं। तुक तो लगाने से लगता है। जहाँ लगाना चाहो, वहीं लगा लो। देखो, सिल है मेरी ज़बान और लोढ़ा है दंत-पंक्ति! सिल पर निशान होना यानी ज़बान का घिस जाना! ह-ह-ह-ह! भिड़ गया न तुक। (पीठ पर हाथ फेरकर) आखिर तुम औरत हो न!

राधा—देखो, जल्दी लौटना, देर न करना।

वाचस्पति—हाँ-हाँ, एक बात तो कहना ही भूल गया। क्लब में पुरुषों के सिवा स्त्रियाँ भी शामिल होंगी। इसी से मैं और भी जल्दी कर रहा हूँ। तुम तो जानती हो कि मैं ऐसी सभा सुसाइटी में कम जाता हूँ, जहाँ हमारे देश की महिलागणों का आगमन हो।

राधा—(कुछ चिंतित होकर) तुम्हें स्त्रियों से क्या मतलब?

वाचस्पति—न-न-न-न, तुम अभी समझीं नहीं। मेरे कहने का मतलब यह है कि जिस सभा में महिलागण शामिल होती हैं, वहाँ व्याख्यान देनेवाले में दुगना उत्साह उत्पन्न हो जाता है। सच बात तो यह है कि व्याख्यान देनेवाला ऐसी उड़ान भरता है कि उसे आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, अग़ल-बग़ल की सुध ही नहीं रह जाती। सच कहता हूँ, इलहाम हो जाता है इलहाम! (एकाएक खड़ा हो जाता है)

राधा—(कुछ रुष्ट होकर) तब तो जल्दी जाइए, सचमुच देर हो जाने की संभावना है।

वाचस्पति—(जल्दी-जल्दी कुरता पहनता हुआ) ओ-हो हो-हो! वाक़ई बहुत देर हो गई। खूब याद दिलाया तुमने! अब तक मैं निकल गया होता। (टोपी ढूँढ़ता हुआ) बस, ऐन मौक़े पर नदारद हो जाती है। खूँटी पर टाँग देता हूँ, फिर भी न-जाने कहाँ कूदकर पहुँच जाती है। (क्रोध में) मिल जाती, तो अभी फाड़कर फेंक देता, चाहे नंगे ही सिर जाना पड़ता। (इधर-उधर फिर ढूँढ़ता है)

राधा—(उठकर टोपी देती हुई) अरे देखो, यहाँ रक्खी थी! और नहीं, तो टोपी ही से उलझ पड़े।

वाचस्पति—(टोपी सिर पर लगाकर दबाता हुआ) अच्छा, ले जम जा अच्छी तरह। अब सोते वक्त भी न उतारूँगा। देखता हूँ, फिर कहाँ जाती है।

राधा—अच्छा, ज़रा जल्दी लौटना।

वाचस्पति—(दरवाज़े की ओर बढ़ता हुआ) बस-बस, चुप रहो, देर हो गई। मेरा इंतज़ार न करना। जाना अपने हाथ, लौटना दूसरों के।

राधा—(अपने आप) क्या बताऊँ, न-जाने कैसे होते जा रहे हैं।

(वाचस्पति घर के बाहर निकल पड़ता है। राधा बड़बड़ाती हुई बाहर का दरवाज़ा बंद कर लेती है)

दूसरा दृश्य

स्थान—घर के बाहर का मार्ग

[वाचस्पति कुरता-टोपी पहने है। हाथ में छड़ी लिए है। छड़ी घुमाता हुआ जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहा है। सामने श्यामा घड़े-सहित पानी भरने के लिये आती हुई दिखाई पड़ती है।]

वाचस्पति—(क्रुद्ध होकर अपने आप) ओ हो, हुआ तो ग़ज़ब! अब अवश्य कुछ होकर रहेगा। औरत का टोकना कभी ख़ाली नहीं जाता। (श्यामा के पास जाकर क्रोध में) क्यों री, तू इधर से क्यों निकली? क्या तुझे पानी भरने के लिये यही वक्त था?

श्यामा—(मुस्किराकर) मुझे क्या मालूम कि सरकार की सवारी आ रही है, नहीं मैं दो-चार मिनट और रुक जाती।

वाचस्पति—(हाथ मटकाकर) हाँ-हाँ, सरकार नहीं, तो और क्या? क्या मैं ऐरा-ग़ैरा नत्थू-खैरा हूँ। मैं कितने ज़रूरी काम से जा रहा था, लेकिन चट से आव न देखा ताव, हंडी लेकर निकल पड़ी। तेरी एक पैसे की हंडी ने मेरे लाखों पर पानी फेर दिया, उल्लू कहीं की।

श्यामा—(आवेश में) ज़रा ज़बान सँभाल-कर बोलिए। मैं हंडी लेकर एक बार क्या, हज़ार बार निकलूँगी। कहीं के अफ़लातून आए हैं, पानी पीना छोड़ दूँ! गले में घंटी क्यों नहीं बाँध लेते। हुँ!

वाचस्पति—अब मैं ज़रूर घंटी बाँधूँगा। देखता हूँ, तू कैसे निकल आती है। देखूँगा तेरा हज़ार बार निकलना। रास्ता चलना बंद करा दूँगा। अशुभ फैलानेवालों और गालियों का नातका बंद करा दूँगा।

श्यामा—(प्रसन्न होकर) सबसे अच्छा घंटा होगा। आवाज़ ज्यादा निकलेगी।

वाचस्पति—(नाराज़ होकर) हाँ-हाँ, घंटा, घंटा, घंटा। मैं घंटी-घंटा दोनो बाँधूँगा। मेरी इच्छा, इसमें तेरा क्या इजारा। मुझे निकलते देर नहीं कि चट से हंडी लेकर निकल पड़ी। प्यासों मरी जा रही थी। ज़रा-सा और रुकते नहीं बना।

श्यामा—अच्छा, अब ज्यादा खोपड़ी-भंजन न कीजिए, जाइए, जहाँ जा रहे हों।

वाचस्पति—(क्रोध में) जाऊँगा नहीं, तो क्या यहाँ बिस्तर लगाकर सोने आया हूँ। (इशारा करके) यह खोपड़ी-भंजन है, ज़बान में लगाम नहीं। एक तो अपशकुन कर दिया, दूसरे गाली भी है। आवारा कहीं की। (बड़बड़ाता हुआ आगे बढ़ता है)

श्यामा—(अपने आप) कहाँ आज सबेरे-सबेरे इनका मुँह देखा। ईश्वर ही बचावे। (आगे बढ़ती है)

(वाचस्पति नीचा सिर किए हुए आगे बढ़ता है। इतने में किसी ने उसे नमस्कार किया)

वाचस्पति—(ग़ौर से देखकर, एकाएक क्रुद्ध होकर) हत्तेरे की! (छड़ी तानकर) क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता, नहीं तो अभी तेरी मरम्मत कर देता। बस, अब तो हरगिज़

नहीं। दिल में आता है, तेरी दूसरी आँख भी फोड़ दूँ। नीच!

काना—वाह, मैंने तो नमस्कार किया, आप बड़बड़ाने लगे। क्या ज़माना है। लीजिए, मैं जा रहा हूँ, मुझसे आपसे क्या मतलब?

वाचस्पति—(गले में हाथ लगाकर) अरे दुष्ट! बता, तू मुझे इस वक़्त क्यों मिल गया? किस काम से इधर निकल पड़ा? तेरी कौन-सी शादी या गौना हो रहा है, जो तू पाँच मिनट भी अपने घर में न रुक सका। मेरा शकुन बिगाड़ दिया। फिर भी ऊपर से धौंस जमाता है कि मुझसे कुछ मतलब ही नहीं। तो फिर तेरा मतलब किससे है? नाम और पता बता, उसकी भी ख़बर लूँगा। वह कौन माई का लाल है, जिसने तुझे इसी वक़्त बुलाया है।

काना—आप तो बेकार की हुज्जत करते हैं। मैं अपने रास्ते जा रहा हूँ।

वाचस्पति—(क्रुद्ध होकर) हूँ, यह हुज्जत है! एक तो आँख के सामने दिखाई पड़ गया, फिर भी कहता है, मैं अपने रास्ते जा रहा हूँ। (गला पकड़कर) अच्छा बता, तुझे इधर से आने के लिये किसने कहा? तू इधर से निकला क्यों? (हाथ मलकर) ओहो, सचमुच अब ख़ैरियत नहीं।

(एकाएक एक राहगीर पास आकर खड़ा हो जाता है)

वाचस्पति—(राहगीर पर क्रुद्ध होकर) तू क्यों यहाँ आकर खड़ा हो गया? क्या यहाँ नाच हो रहा है या कठपुतली का तमाशा! अपना रास्ता पकड़।

काना—(राहगीर से) देखो न भैया, मैंने तो नमस्कार किया, और यह मेरे पीछे पड़ गए। मैं अपने रास्ते जा रहा था।

वाचस्पति—(बात काटकर) तेरे नमस्कार की ऐसी-तैसी। तेरा जो नमस्कार ले, उस पर थू है! तू अपने रास्ते जा रहा था, तो क्या मैंने रोक लिया? (गला पकड़कर) अच्छा, रोक लिया, तो ले, रोक लिया। मैं भी रुकता हूँ, तू भी रुक। देखता हूँ, कब तक रुकता है? (छोड़कर) दुष्ट कहीं का, शकुन बिगाड़ दिया!

राहगीर—(काने से) जाओ भाई, जाओ, यह तो होता ही रहता है। (वाचस्पति से) जाइए, सरकार, यह कोई नई बात नहीं। अरे, सुना नहीं, गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है—

"मूँदहु आँखि, कतउँ कोउ नाहीं।"

आप ही सँभाल के चलते। वह तो काना है ही। (काना आगे बढ़ता है। वाचस्पति उसे घूर-घूरकर बड़बड़ाता है। फिर कुछ सोचकर, आँखें मूँदकर आगे बढ़ता है)

वाचस्पति—(आप-ही-आप) हूँ, लो दुष्टो! अब दिखाई पड़ो, तब जानें! 'मूँदहु आँखि, कतउँ कोउ नाहीं।' राहगीर ने न देखने का अच्छा नुस्खा बताया। हैरान कर डाला। परेशान हो गया। (आगे बढ़ता हुआ) कितना वक़्त ख़राब हो गया। किसी के यहाँ पानी ही नहीं, कोई अपनी आँख फोड़े बैठा है। क्या बताऊँ। एक-एक करके सब एक साथ आगे आने लगे। जैसे सलाह-मसौदा करके सब-के-सब चल पड़े हों। नाक में दम कर दिया!

(एकाएक वाचस्पति रुक जाता है। वह आँखें मूँदे है। उसके कान में निम्न-लिखित बातें सुनाई पड़ती हैं)

एक स्त्री—(दूसरी से) देखो न बहन, आँख होते हुए भी दोनों आँखें मूँद रक्खी हैं।

दूसरी—हाँ, कुछ जान तो ऐसा ही पड़ता है। मालूम होता है, सनकी है, नहीं तो आँखें क्यों मूँद लेता।

तीसरी—अरे नहीं, यह बना हुआ है बना! किसी मतलब से आँखें मूँदे हुए है।

पहली—क्या कहूँ, कुछ कहा नहीं जाता। आगे कुआँ है। बढ़ा नहीं कि धड़ाम से गया।

दूसरी—अभी तो यह इधर ही से गया था, तब तो आँखें खोले था। इतनी देर में इसने आँखें क्यों बंद कर लीं।

तीसरी—अच्छा, अभी इधर से यह गया भी था ? तब तो इसके लिये दुनिया गोल है। नहीं, यहाँ कैसे आ निकलता।

पहली—अरे, यह वाचस्पति हैं। सामने के मकान में रहते हैं।

दूसरी—अरे हाँ-हाँ, वही हैं। अच्छा, चुप रहो, कौन इनके मुँह लगे। अभी झायँ-झायँ होने लगेगी।

(वाचस्पति स्त्रियों की बातें सुनकर आपे से बाहर हो जाता है, और आँखें खोल देता है। सामने स्त्रियों को कुएँ पर खड़ी देखकर आग-बबूला हो जाता है)

वाचस्पति—(स्त्रियों से) तुम लोग यहाँ क्यों पंचायत लगाए हुए हो। यह कचहरी नहीं, कुआँ है, समझीं। हुँ !

एक स्त्री—जाइए, आपको क्या करना है, हम लोग पानी भरने आई हैं।

वाचस्पति—(झपटकर) बड़ी पानी भरनेवाली ! क्या कुआँ तुम लोगों ने खुदवाया है ? और किसी कुएँ पर जगह न थी ?

दूसरी स्त्री—बस, चुप रहिए, बेकार हुज्जत न कीजिए। जाइए।

वाचस्पति—तुम लोग सब-की-सब आवारा हो। घर में मौक़ा न मिला, तो कुएँ पर ही कचहरी लगा दी। मानो आज दुनिया के सारे मुक़दमों का फ़ैसला यहीं होगा। जहाँ देखो, घंटियाँ लिए खड़ीं !

पहली—(वाचस्पति के घर की ओर इशारा करके) जाइए, आपकी श्रीमती तो अभी ढूँढ़ रही थीं।

वाचस्पति—(घर की ओर बढ़ता हुआ) आवारा कहीं की ! न-जाने किस नक्षत्र में इनका जन्म हुआ है। जहाँ देखो, पीछे पड़ी रहती है।

(वाचस्पति अपने घर के बाहर जाकर बंद दरवाज़े की कुंडी बड़े ज़ोर से खड़खड़ाता है। राधा किवाड़ खोलती है, और सामने वाचस्पति को ग़ुस्से में खड़ा हुआ पाती है)

राधा—(आश्चर्य से) अरे, बड़ी जल्दी व्याख्यान देकर लौट आए ?

वाचस्पति—(घर में घुसता हुआ) हट जाओ सामने से। लौट न आऊँ, क्या करूँ। (चारपाई पर लेटकर) अरे बाप रे, मार डाला ! दो-दो वारदातों से बच आना खेल न था। भगवान् ने रक्षा की।

राधा—(व्याकुल होकर) क्या कहीं चोट तो नहीं आई ? कहाँ वारदात हो गई ?

वाचस्पति—(क्रोध में) यह सब तुम्हारी ही करतूत है। चलते ही वक़्त टोक दिया, तो कैसे पूरा पड़े। (स्वगत) हरे राम, आज व्याख्यान भी न दे सकूँगा। भाषा के संबंध में दो साल तक की गई मेहनत अकारथ गई। हाय राम, क्या करूँ ! दुष्ट श्यामा और काने को पाता, तो नाक-कान काट लेता, चाहे फाँसी ही हो जाती।

राधा—आख़िर हुआ क्या, बताओ तो सही।

वाचस्पति—(बैठकर) अरे, चला जा रहा था कि तुम्हारी पड़ोसिन ख़ाली घड़ा लिए पानी भरने आती हुई दिखाई पड़ीं। फिर किसी तरह आगे बढ़ा, तो एक काना मिल गया। ख़ैर, फिर आँखें मूँदकर बढ़ा, तो कुएँ में गिरते-गिरते बचा, और यहाँ वापस आ गया। क्या बताऊँ, अभी पहुँचते-पहुँचते न-जाने क्या-क्या हो।

राधा—बस, इतनी ही-सी बात है। (उठकर दही और शीशा लाती है) अच्छा, दही खा लो, और शीशे में मुँह देख लो, बस, सारा अपशकुन ग़ायब !

वाचस्पति—सो कैसे ?

राधा—(प्रसन्न होकर) शकुन - विचारकों का ऐसा ही कहना है । अपशकुन को शकुन बनाने के दो उपाय हैं—दही खाना और शीशा देखना । (हँसती है)

वाचस्पति—(प्रसन्न होकर) अच्छा, शकुन के वे ही चिह्न हैं । तब तो बड़ी ख़ुशी की बात है ।

राधा—हाँ-हाँ, दही खाओ और शीशा देखो, जाओ ; नहीं व्याख्यान न दे सकोगे ।

वाचस्पति—(मुस्किराकर) तुम तो बहुत ही अच्छी हो । सब समझती हो । (वाचस्पति दही खाकर, शीशा देखकर घर के बाहर हो जाता है । राधा दरवाज़ा बंद करके भीतर चली जाती है)

तीसरा दृश्य

स्थान—डिबेटिंग-क्लब का हॉल

[हॉल में एक ओर डायस पर कुछ सज्जन बैठे हैं । नीचे श्रोताओं की मंडली बैठी है । एक ओर कॉलेज के विद्यार्थियों का गिरोह है, दूसरी ओर कई महिलाएँ भी बैठी हैं । व्याख्यान-वाचस्पति व्याख्यान दे रहा है ।]

वाचस्पति—(इशारा करके) भाइयो ! भारतवर्ष-हिंदोस्तान में मेल-इत्तफ़ाक़ की ज़रूरत-आवश्यकता है । (दोनो हाथ मिलाकर) ताली दोनो हाथों-हस्तों से बजती है । ज़मीन-धरती और गगन-आसमान का मेल-इत्तफ़ाक़ भी हो सकता है, यदि-अगर आप लोग सम्मति-राय करें । (गर्दन उठाकर) फ़ारसी का कवि-शायर फ़िरदौसी बड़ा प्रसिद्ध-मशहूर था । उसने कविता-शायरी में लिखा है—"एकुम् अंबोह, दोयम् कंबोह ।" आदि-वग़ैरह ।

एक श्रोता—(दूसरे के कान में) यह क्या ऊट-पटाँग बक रहे हैं । कहीं का ईंट, कहीं का रोड़ा !

दूसरा—(पहले के कान में) हाँ, मैं भी चौकन्ना हूँ कि भाषा के महत्त्व और अंबोह-कंबोह से क्या मतलब !

वाचस्पति—(श्रोताओं से) भाइयो-बिरादरो ! यह आपस में कानाफूसी की जगह-स्थान नहीं है । ग़ौर से सुनिए-श्रवण कीजिए । (महिलाओं की ओर रुख़ फेरकर) बहनो, हाँ-हाँ, मैं अभी-अभी मेल-इत्तफ़ाक़ की बात कर रहा था । मुझे अत्यंत-सख़्त दुःख-अफ़सोस है कि आपके पतियों-मियाओं और आप लोगों में बेमेल-नाइत्तिफ़ाक़ रहता है । यह बड़े लज्जा और शर्म की बात है । मैं चाहता हूँ, आप लोग स्वार्थ-ख़ुदग़र्ज़ी छोड़कर मेल-इत्तफ़ाक़ कर लें ; नहीं तो नरक-जहन्नुम में भी आप लोगों को जगह-स्थान न मिलेगा-प्राप्त होगा । आप लोग अपने पतियों-मियाओं से पूछें-दरियाफ़्त करें । वे प्रकट-ज़ाहिर करें कि वे किस प्रकार-तरह का इत्तफ़ाक़-मेल चाहते हैं । (एक हाथ पर उँगली बजाकर) देखो, मेल-इत्तफ़ाक़ संसार-दुनिया में मूल्यवान्-बेशक़ीमती चीज़ है । (ऊपर मुँह करके) हा-हा ! क्या ही चमत्कृत और रौनक़ बख़्शनेवाली चीज़ है । (एकाएक औरतों में कानाफूसी होती है)

एक स्त्री—(दूसरी के कान में) आखिर यह क्या बक रहा है ? पति-पत्नी का वर्णन हो रहा है या भाषा के महत्त्व का ?

दूसरी—(धीरे से) हाँ, इसे हम लोगों के पतियों की ना-इत्तिफ़ाक़ी से क्या मतलब ? कुछ अजीब खोपड़ी का व्यक्ति है ।

तीसरी—(दूसरी के कान में) कहते हैं, यह व्याख्यान-वाचस्पति है । न-जाने कहाँ से फोकट की उपाधि पा गया !

पहली—(कान में) अजी, चलो चलें, यहाँ बैठना व्यर्थ है ।

दूसरी—नहीं, नहीं, ज़रा आगे तो सुनो, अभी जाने क्या-क्या कहेगा । ठहरो, अभी चलती हैं ।

वाचस्पति—(महिलाओं से) भई, यह तो मामला गड़बड़-शड़बड़ है। न-न-न-न, शांति से बैठो। (समस्त श्रोताओं को संबोधित करके) भाइयो! यह तक़रीर-व्याख्यान देने का भवन-हॉल है। यहाँ बड़े इतमीनान से बैठना चाहिए। (दोनो हाथ पीछे करके) देखिए, ज़माना-वक़्त बड़ा नाज़ुक है। इत्तफ़ाक़-मेल की ज़रूरत-आवश्यकता है। हर साइड में, मौक़ा पर एक मार्ग-रास्ता खुला हुआ है, वह है इत्तफ़ाक़। बिना इत्तफ़ाक़-मेल से कोई काम नहीं हो सकता। आप लोग समझ लीजिए। चाहे औरत-स्त्री हो या मर्द-पुरुष। इसमें भेद से कोई वास्ता-मतलब नहीं। मैं तो जानवरों-हैवानों तक में इत्तफ़ाक़ चाहता हूँ, और अगर पेड़-पौदों में भी हो सके, तो स्वराज्य बहुत जल्द-शीघ्र हासिल-प्राप्त हो सकता है। देखिए, ...

एक श्रोता—(खड़े होकर, बात काटकर) वाचस्पतिजी, क्षमा कीजिए। आपके व्याख्यान का क्या मतलब है? आप अपने विषय से अलग बोल रहे हैं, जिसकी यहाँ क़तई ज़रूरत नहीं।

दूसरा श्रोता—(खड़े होकर) हाँ-हाँ, जितनी बातें आप बोल रहे हैं, सब बेकार हैं। अपने विषय पर बोलना हो, तो बोलिए।

एक विद्यार्थी—(खड़े होकर) आपकी सब बातें अंटसंट हैं।

दूसरा विद्यार्थी—(खड़े होकर) हाँ-हाँ, बिलकुल अललटप हैं। यह व्याख्यान भाषा के महत्त्व पर है, या मेल-इत्तफ़ाक़ के महत्त्व पर।

वाचस्पति—(चौकन्ने होकर श्रोताओं से) भाइयो-बिरादरो! शांत हो जाइए। हैं-हैं-हैं-हैं, आप लोग ठीक-सत्य कह रहे हैं। लेकिन-लेकिन अभी तो मैंने अपने व्याख्यान-तक़रीर की भूमिका-दीबाचा मात्र ही आप लोगों के सम्मुख-रूबरू रक्खी है। भाषा पर तो अब मैं आगे बोलूँगा। हैं-है-हैं-हैं, आप भाई-बहनों ने कुछ और ही समझ लिया।

(आवाज़ आती है— कहिए, कहिए, वक़्त ख़राब हो रहा है)

वाचस्पति—(जल्दी में) जी-जी-जी-जी, हाँ, मैं कहता ही हूँ।

एक विद्यार्थी—(धीरे से) जीजी को न बुलाइए साहब, कहिए, जो कुछ कहना हो। (मुस्किराता है)

वाचस्पति—(रूमाल से मुँह पोंछकर) जलसा हाज़रीन, भाइयो और सदर सभापतिजी! (आवाज़ आती है—सभापति कौन है) ख़ैर-ख़ैर, कोई बात नहीं। आप लोगों ने नख़लिस्तान का नाम सुना होगा। जिस प्रकार - तरह अफ़ग़ानिस्तान, बिलोचिस्तान, मुग़लिस्तान और हिंदुस्तान प्रसिद्ध-मशहूर हैं, उसी तरह-प्रकार नख़लिस्तान भी एक बड़ा सूबा है। वहाँ के बाशिंदे-निवासी शुद्ध संस्कृत और फ़ारसी बोलते हैं। दोनो भाषाएँ-ज़बानें जब मिलती-इकट्ठी होती हैं, तो वह नफ़ासत-माधुर्य और दिलेरी-वीरता उत्पन्न-पैदा होती है कि वाह-वाह! क्या बात है!

एक श्रोता—(खड़े होकर) क्यों साहब, नख़लिस्तान दुनिया के किस पर्दे में आबाद है?

वाचस्पति —(डाँटकर) बस, बस, बीच में मत बोलिए। ज़बान बंद कीजिए। ज़्यादा गड़बड़ कीजिएगा, तो मैं चल दूँगा। आप लोग मुझे जानते-पहचानते नहीं! (क्रोध में नाक सिकोड़ता है)

(कहिए, कहिए की आवाज़ आती है)

वाचस्पति—(ज़ोर से) हाँ-हाँ, सुनिए, मैं कहता हूँ। मैं भागनेवाला नहीं। हाँ, भाषा-ज़बान के बारे-संबंध में मुझे सिर्फ़-केवल यह कहना है कि आप लोग संस्कृत - अरबी - फ़ारसी को तो मिलाइए, लेकिन अँगरेज़ी ज़बान को भी उसी में मिला लीजिए। मेरी तो मुतलक़-निश्चित राय है

कि फ़्रेंच-भाषा-ज़बान को भी इन्हीं ज़बानों के साथ मिला लेना चाहिए, क्योंकि आजकल योरप की यही इंटरनैशनल लैंगवेज है। मैं तो बराबर इसी कोशिश-प्रयत्न में हूँ। देखिए, इत्तफ़ाक़ हो जाय, तो क्या बात है।

एक श्रोता—(खड़े होकर) मेरी समझ में हिंदी-उर्दू के मेल से भाषा का महत्त्व बढ़ सकता है। यह आप क्या कहते हैं।

वाचस्पति—(बिगड़कर) मैंने कह दिया कि बीच में कोई न बोले। फिर न-जाने क्यों बोल दिया जाता है। अफ़सोस-दुःख है। ऐसा कीजिएगा, तो मैं चला जाऊँगा।

दूसरा श्रोता—(खड़े होकर) आप जाइए नहीं, लेकिन ग़लत बात तो न बतलाइए। सचमुच बताइए, भाषा की उन्नति कैसे होगी ?

वाचस्पति—(नाराज़ होकर) उन्नति हो, चाहे न हो। मैं इसका ज़िम्मेदार नहीं। जो ठीक है, मैं तो वही कहूँगा। भाषा जो असली-मुख्य है, वह नख़लिस्तान में बोली जाती है। अच्छा, मैं आप लोगों से बहुत कुछ कह चुका। अब मैं अपनी बहनों से भी कुछ निवेदन कर दूँ।

('ज़रूर, ज़रूर' की आवाज़ आती है)

वाचस्पति—(रूमाल से मुँह पोंछकर और मूछों को सीधा करके) बहनो, मैंने अभी कुछ पहले आप लोगों को इत्तफ़ाक़ की बात बतलाई है। देखिए, भारतीय भाषाओं में इत्तफ़ाक़ हो रहा है। मैं तो ऐसा समझता हूँ, आप लोग वाक़ई-सचमुच शुद्ध भाषा-ज़बान बोलती हैं। (आँख मूँदकर, मुँह ऊपर करके भावावेश में) वाह-वाह ! बहनो ! मैं आपके इस इत्तफ़ाक़ की कितनी तारीफ़-प्रशंसा करूँ। आप लोग सचमुच देवियाँ हैं। अ-ह-ह-ह-ह ! मैं तो आप लोगों की वीरता देखकर आप लोगों पर न-जाने क्यों आशिक़ हो गया हूँ। ('चुप रहो', 'चुप रहो' की आवाज़ आती है।)

एक स्त्री—(खड़ी होकर, तेज़ी से) बस, बस, ज़बान बंद कीजिए, शर्म नहीं आती आपको दूसरों की बहू-बेटियों से ऐसी बातें करते हुए ?

दूसरी—(अन्य स्त्रियों से) चलो जी, चलें; यह तो शोहदों की मीटिंग है। अनाप-शनाप बकते हैं।

(स्त्रियाँ उठकर हॉल के बाहर चली जाती हैं। पुरुष भी ताली बजाकर उठ खड़े होते हैं, और 'शेम', 'शेम' कहते हुए हॉल के बाहर हो जाते हैं। कुछ विद्यार्थी व्याख्यान-वाचस्पति के पास खड़े रह जाते हैं)

विद्यार्थी—(हँसकर) वाचस्पतिजी, आपने यह क्या कह डाला ? सब-के-सब चले गए।

वाचस्पति—(आश्चर्य से) एँ ! मैंने क्या कह डाला ? कुछ तो नहीं कहा।

विद्यार्थी—आपने औरतों से कहा कि मैं तुम लोगों पर आशिक़ हो गया हूँ। (बड़े ज़ोर से हँसता है)

वाचस्पति—(आश्चर्य से) एँ ! आशिक़ ! क्या बेजा, प्रेमी की फ़ारसी आशिक़ है। वाह, इसमें बिगड़ने की क्या बात थी। मैंने तो ग़ैरवाजिब बात नहीं कही।

(विद्यार्थी बड़े ज़ोर से हँसते हैं। व्याख्यान-वाचस्पति उनका मुँह देखता हुआ भौचक-सा खड़ा रहता है)

विद्यार्थी—(हाथ पकड़कर) वाचस्पतिजी, जो होना था, हो ही गया। अब आप हमारे यहाँ होस्टल में चलिए। वहाँ कुछ उपदेश दीजिए।

वाचस्पति—(ठेलकर) न-न-न-न, भाई, बहुत उपदेश दे चुका, अब कान पकड़ता हूँ।

विद्यार्थी—(आग्रह-पूर्वक) नहीं, ज़रूर चलिए। (हाथ पकड़कर आगे ले चलता है, अन्य विद्यार्थी पीछे-पीछे चलते हैं)

वाचस्पति—न-न-न-न, बेकार मुझे परेशान न

करो। मैं न जाऊँगा। वहाँ भी कुछ मुँह से निकल पड़ेगा, तो आफ़त हो जायगी।

(सब विद्यार्थी 'नहीं-नहीं' कहते हुए वाचस्पतिजी को लेकर होस्टल की ओर चल देते हैं)

चौथा दृश्य

स्थान—बोर्डिंग का एक कमरा

[कमरे में दो चारपाइयाँ बिछी हैं। उन पर कई लड़के बैठे हैं। एक ओर टेबिल लगी है। एक कुर्सी भी रक्खी है। वाचस्पति कुर्सी पर बैठा है। लड़के एक दूसरे से हँसी करते और हँसते हैं। वाचस्पति भी बातें करता जाता है।]

एक विद्यार्थी—(वाचस्पति से) क्यों साहब, इस साल कांग्रेस के प्रेसिडेंट श्रीसुभाषचंद बोस का व्याख्यान कैसा रहा?

वाचस्पति—(कुछ उत्तेजित होकर) मैंने ५१ कांग्रेस के सभापतियों के भाषण पढ़े हैं, लेकिन सुभाष बाबू के समान किसी ने अब तक भाषण नहीं दिया। मैंने उनके व्याख्यान को पूर्णतया पढ़ने में बारह घंटे मुतवातिर ख़र्च किए हैं। ख़ूब स्टडी की है। वाह-वाह, ऐसा वीरता-पूर्ण व्याख्यान क्या कोई दे सकता है? (खड़े होकर) अच्छा, अब आप लोग ख़ामोश रहिए। बीच में ज़रा भी कोई न बोले। मैं आप लोगों को समझाता हूँ। सुनिए।

दूसरा विद्यार्थी—मगर लिबरल कहते हैं कि व्याख्यान अच्छा नहीं था।

वाचस्पति—(उँगली दिखाकर) कह दिया कि ज़बान बंद करो। क्यों बीच में बोले? लिबरल क्या समझ सकते हैं? उनके दिमाग़ तो चरने चले गए हैं। लिबरल कुछ नहीं जानते। मैं जानता हूँ, सुभाष बाबू का व्याख्यान कैसा था। देखो, जो सुभाष बाबू के व्याख्यान की निंदा करते हैं, वे कुछ नहीं जानते। लिबरल तो डूब गए। उन्हें कौन पूछता है।

तीसरा विद्यार्थी—वाचस्पतिजी, आप बिलकुल ठीक कहते हैं। सुभाष बाबू के मुक़ाबले किसी भी सभापति का व्याख्यान न था। मैं आपका समर्थन करता हूँ।

वाचस्पति—(क्रुद्ध होकर) क्यों बीच में बोले! तुम कुछ नहीं जानते। अब मैं कहता हूँ कि सुभाष बाबू का व्याख्यान अच्छा नहीं था। तुमने क्या पढ़ा है, कुछ भी नहीं। देखो, हमारे भाई कुछ मुसलमान नाराज़ हैं।

विद्यार्थी—हाँ-हाँ, मैं भी यही समझता हूँ। आप ठीक कहते हैं।

वाचस्पति (विद्यार्थी की ओर रुष्ट होकर) एक बार नहीं, सौ बार कह दिया, चुप रहो। क्यों बीच में बोल देते हो? तुम्हें क्या मालूम कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह ठीक ही है? मैं बिलकुल ठीक नहीं कह रहा हूँ। सुभाष बाबू का व्याख्यान बहुत ही अच्छा था। अगर मैं कहता हूँ कि अच्छा नहीं था, तो मैं बेवक़ूफ़ हूँ। मुझे कमरे से निकाल दो। मैं क्यों कह गया कि कांग्रेस-प्रेसिडेंट का व्याख्यान अच्छा नहीं था। मैं अव्वल नंबर का अहमक़ हूँ। सोचिए, आप लोग सोचिए। विचार कीजिए, मनन कीजिए। मेरे कहने पर मत जाइए।

विद्यार्थी—आप तो विचित्र आदमी हैं। एक ही बात को पहले अच्छा कहते हैं, फिर बुरा।

वाचस्पति—(नाराज़ होकर) कह दिया, बीच में दखल मत दो। दुनिया में अच्छा-बुरा दोनो चलता है। इस मामले में मैं लिबरल-पंथ को मानता हूँ। मैं कभी 'इक्स्ट्रीम' पर नहीं जाता। बिना बुराई कोई अच्छाई नहीं आती, और बिना अच्छाई के बुराई नहीं होती। कार्य-कारण-संबंध दोनो का है। मेल-इत्तफ़ाक़ यों ही होता है। मेरे लिये दुनिया में सब कुछ अच्छा है, और सभी कुछ बुरा। हमें क्या लेना-देना। कल को मर जाना है।

न यश के साथी, न अपयश से वैर। मैं तो गोस्वामीजी की इस चौपाई का फ़ालोवर हूँ—

कोउ नृप हाइ, हमें का हानी ;
चेरी छाँड़ि न होउब रानी।

विद्यार्थी—हाँ-हाँ, ठीक कहते हैं आप। अच्छा, इस मामले को छोड़िए। यह बताइए कि आजकल कविता कैसी होनी चाहिए।

वाचस्पति (कुछ प्रसन्न होकर) हाँ, यह बात तुमने माक़ूल पूछी। यह बोलना बेजा नहीं हुआ। भाई, मैं तो पुराना कवि हूँ। मैंने कई महाकाव्य लिखे, लेकिन सब-के-सब न-जाने कहाँ चले गए। कोई कहता है, चोर चुरा ले गए, कोई कहता है, जल गए, कोई कहता है, संत तुकाराम के पुण्य ग्रंथ की भाँति अंतर्धान हो गए। मैं (प्रसन्न होकर) शृंगार-रस का प्रेमी हूँ। मैं बूढ़ा हो गया हूँ, लेकिन मुझमें शृंगार-रस वैसे ही वर्तमान है, जिस प्रकार 'घट-घट व्यापक राम।' हिंदी के पुराने साहित्य में परकीया का वर्णन ख़ूब हुआ है, और होना भी चाहिए। स्वकीया का वर्णन तो घट-घटवासी है। रोज़ ही होता है। परंतु परकीया वर्णन हमारे शृंगारी कवियों का अपना मन है, अमर रुचि है।

एक विद्यार्थी—अच्छा, यह तो बताइए कि छायावाद के बारे में आपकी क्या राय है ?

वाचस्पति—(हँसकर) देखो भई, भद्दे शब्दों का प्रयोग मत करो। दुःख है, आप लोग विद्यार्थी हैं! हाँ भई, 'वाद' से मैं तो घबराता हूँ। फिर 'बादी' तो बड़ा भारी रोग है। सारा शरीर फूल जाता है। भई, छायावादी कविताएँ मेरी समझ में नहीं आतीं। सच पूछिए, तो मैं हिंदी में डिक्टेटरशिप चाहता हूँ। जैसे जर्मनी में हिटलर और इटली में मुसोलिनी! तभी यह छायावादी कविता का रास्ता साफ़ हो सकता है।

विद्यार्थी -फिर आप ही डिक्टेटर क्यों नहीं बन जाते ?

वाचस्पति—वाह, अगर यह हो जाय, तो एक ही दिन में बधिया न बैठाल दूँ, तो मेरा नाम व्याख्यान-वाचस्पति नहीं। इन लोगों ने अपने को समझ क्या रक्खा है।

विद्यार्थी—(मुस्किराकर) हाँ, आप तो राजनीति, साहित्य, सभी का नेतृत्व कर सकते हैं!

वाचस्पति—(प्रसन्न होकर) हाँ-हाँ, क्यों नहीं। मैं तो सब कुछ कर सकता हूँ, लेकिन इस देश में योग्य आदमियों की क़दर नहीं। क्या करूँ, कभी-कभी क्रांतिकारी बन जाने की इच्छा होती है, लेकिन ....

विद्यार्थी—(बात काटकर) क्या आप जेल से डरते हैं ?

वाचस्पति—नहीं-नहीं, जेल से डरने की कोई बात नहीं, लेकिन-ज़रा कुछ सोचकर काम करता हूँ। और कोई आगे बढ़ता ही नहीं, तो मैं ही बढ़ूँगा। (कुछ सोचकर) हाँ-हाँ, मैं आपसे सिर्फ़ एक बात कहूँगा, ज़रा शांत रहिए।

(आवाज़ होती है—'हाँ-हाँ, कहिए')

वाचस्पति—(मुँह ऊपर करके, आँख मूँदकर) आप लोग युवक हैं। देश का, दुनिया का यानी होल वर्ल्ड का ख़याल कीजिए। ओहो, संसार किधर जा रहा है। जर्मनी ने आस्ट्रिया को ले डाला मुस्लिम लीग हवाई घोड़े पर उछलती चली जा रही है। भाइयो, आँख खोलिए।

(विद्यार्थी आपस में कानाफूसी करके कमरे के बाहर हो जाते हैं। वाचस्पति अपने आप कहता जाता है)

युवको, अब जागो। आप लोग यहाँ बैठे हैं, क्या काम करते हैं। अपने मा-बाप का रुपया व्यर्थ उड़ा रहे हैं। राजनीति और साहित्य का उपकार कीजिए। ऐसा कीजिए कि क्रांति मच जाय। संसार

तुम्हारी तरफ़ देखने लगे। हलकंप मच जाय। बिजली गिर पड़े। बादल कड़कड़ाने लगें। (एकाएक बाहर से तालियों की ध्वनि सुनाई देती है, और 'हियर', 'हियर' का शब्द होता है। वाचस्पति आँखें खोल देता है। सामने किसी को न देखकर कमरे से बाहर बड़बड़ाता हुआ निकलता है)

वाचस्पति—(क्रोध में) नालायक़ो! विद्यार्थी हैं! विद्या पढ़ रहे हैं। अब मैं यहाँ थूकूँगा भी नहीं। (बोर्डिंग से बाहर निकलते हुए) मा-बाप का रुपया ख़राब कर रहे हैं। मुझे बेवक़ूफ़ बनाने के लिये बुलाया था। आवारो, (तालियों की ध्वनि दुबारा सुनकर) दुष्टो, अब मैं अपनी सूरत न दिखाऊँगा। अब की बार व्याख्यान तुम्हीं लोगों के ख़िलाफ़ दूँगा, चाहे जेल ही जाना पड़े। मैं हरगिज़ नहीं छोड़नेवाला। ज़रूर व्याख्यान दूँगा। यदि न दिया, तो मेरा नाम 'व्याख्यान-वाचस्पति' नहीं।

(व्याख्यान-वाचस्पति बोर्डिंग से बाहर निकलकर बड़बड़ाता हुआ घर की राह लेता है। लड़के तालियाँ बजाते हैं)

...

पारदर्शित
ग्लीसरीन
खुशनुमा साबुन
नहाने तथा टायलेट के लिये
स्थायित्व, पवित्रता तथा
सुगंधि के लिये अनुपमेय।

TRANSPARENT GLYCERINE
GLYCERINE SOAP

बेंगाल केमिकल :: कलकत्ता-बंबई

कुंभ के अवसर पर हरद्वार में नागे साधु

[श्रीयुत एम्० पी० केदार]

कुंभ के अवसर पर सनातन-धर्म-सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये मुझे हरद्वार जाना पड़ा। सम्मेलन समाप्त होने पर जब मैं लौटने लगा, तो मेरे कुछ मित्रों ने कहा—"हरद्वार आकर भी आप कुंभ का तमाशा देखे बिना ही वापस लौटे जा रहे हैं!" तमाशा-शब्द उन्होंने इसलिये प्रयोग किया कि वे जानते थे कि कुंभ के 'महातम' में मैं विश्वास नहीं रखता।

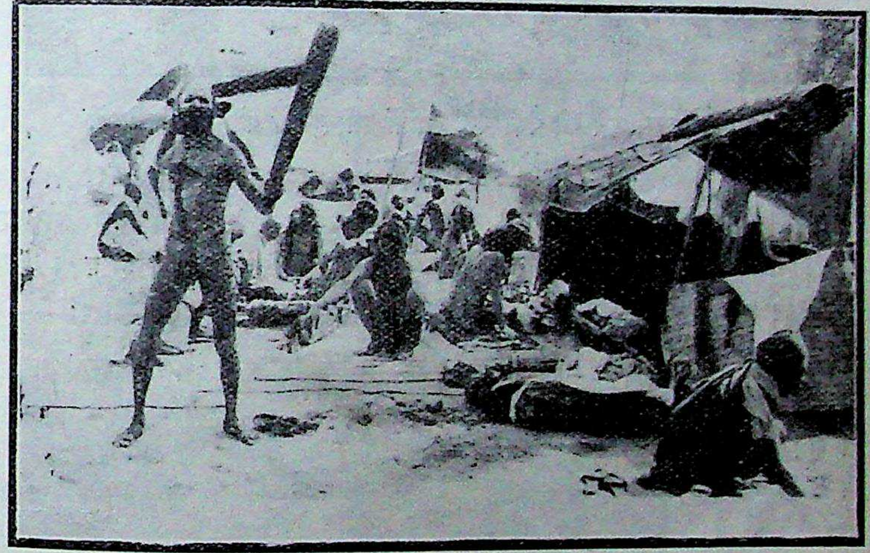

नागा लोग इसी तरह नित्य व्यायाम करते थे।

मैंने संक्षेप में कहा — "जहाँ तक हरद्वार के सुंदर प्राकृतिक दृश्यों का संबंध है, उन्हें इतने शोर, भीड़ और गंदगी की अपेक्षा अकेले में देखकर कहीं अधिक आनंद उठाया जा सकता है।" परंतु मेरे मित्रों का अनुरोध बराबर बना ही रहा, और अंत में विवश होकर मुझे कहना पड़ा—"कुंभ-जैसे धार्मिक पर्व में उन्हीं लोगों के लिये आकर्षण हो सकता है, जो उसके धार्मिक 'महातम' में विश्वास रखते हों, और किसी की धर्म-संबंधी क्रियाओं में तमाशे का खयाल केवल अनुचित ही नहीं, किसी हद तक गुस्ताख़ी में दाख़िल है।' इस पर मेरे एक मित्र सहसा बोल उठे—'वाह! हमें किसी के धर्म-कर्म से क्या प्रयोजन, हम तो इस अवसर पर नागे साधुओं की शाहियों का तमाशा देखने के लिये आए हुए हैं। कुंभ के दिन उनका सबसे बड़ा और शानदार जुलूस निकलना निश्चित हुआ है, आप भी उसे देखकर ही जायँ।"

कहना न होगा कि मेरे वह मित्र और उनकी तरह और भी बहुतेरे व्यक्ति हरद्वार में कुंभ के अवसर पर केवल तमाशबीनी करने और विशेषतया नागे साधुओं का जुलूस देखने के लिये ही गए हुए थे। मैं अपने प्रोग्राम के अनुसार चला तो आया, परंतु यह बात मेरे हृदय में चुभती-सी रही कि जो

लोग एक ओर इन साधुओं के नंगेपन को हिंदू-सभ्यता के उज्ज्वल किरीट पर एक काला धब्बा और समाज के लिये अत्यंत हानिकारक समझते हैं, वे दूसरी तरफ़ उनके उसी नंगेपन को देखने के लिये इतने इच्छुक और उत्सुक क्यों रहते हैं!

इस समय अवस्था यह है कि केवल शिक्षित-वर्ग और सुधार-प्रेमी ही इस बुराई को दूर किए जाने की आवश्यकता अनुभव नहीं करते, बल्कि कट्टर सनातन-धर्मियों में भी ऐसे बहुत-से व्यक्ति मिलेंगे, जो साधुओं के नंगेपन की घृणित प्रथा को समूल नष्ट करने के पक्ष में हैं। अतएव इस बार कुंभ के अवसर पर हरद्वार में नागे साधुओं के जुलूस के विरुद्ध सत्याग्रह करने की कुछ लोगों की तरफ़ से तैयारी भी हुई थी, परंतु वह सफल न हो सकी, और नागे साधुओं ने हज़ारों की संख्या में छाती ठोंककर कुंभ के दिन और उससे पहले अपने शानदार जुलूस निकाले। इन चित्रों में ऐसे ही दृश्य दिखाए गए हैं।

प्रश्न पैदा होता है कि यह बुराई आखिर दूर

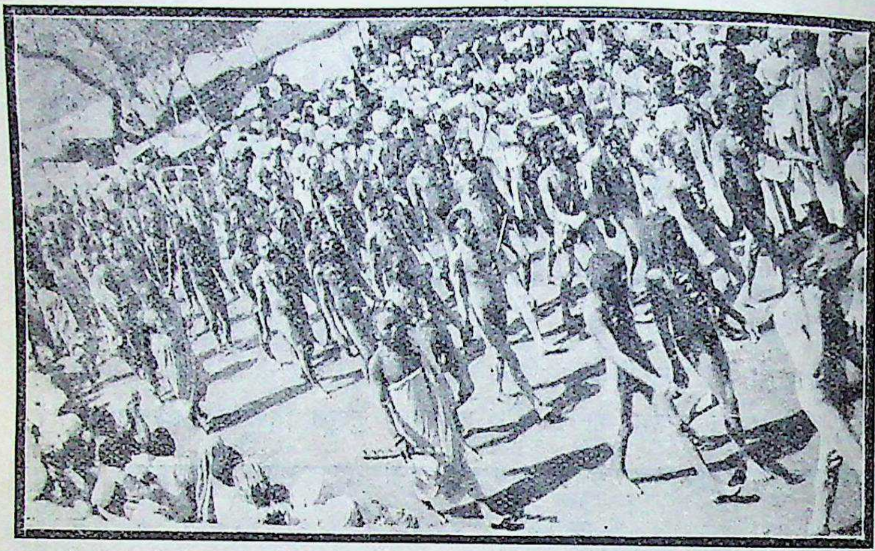

नागा साधुओं का, हरि की पैड़ी पर, लाखों स्त्री-पुरुषों की उपस्थिति में नंगे स्नान करना।

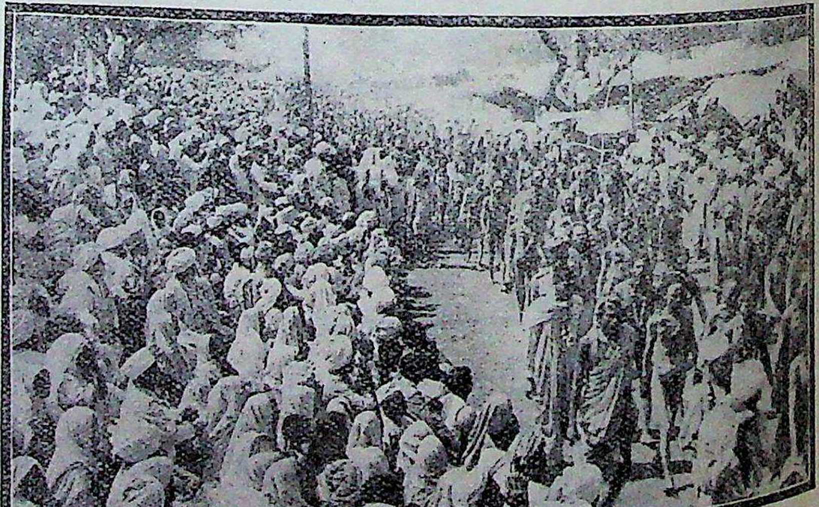

नागा साधुओं के जुलूस का दूसरा दृश्य।

क्यों नहीं होती, अथवा हो सकी ? इसका बहुत स्पष्ट और सीधा उत्तर यह है कि जब तक इन साधुओं के अगणित अंध-भक्त विद्यमान हैं, और जब तक उन्हें देखने के लिये अगणित मनुष्यों के दिलों में इच्छा और उत्सुकता मौजूद है, तब तक केवल कुछ आदमियों की ओर से सत्याग्रह की धमकियाँ न तो कुछ अर्थ ही रखती हैं, और न उनका कुछ प्रभाव हो सकता है ।

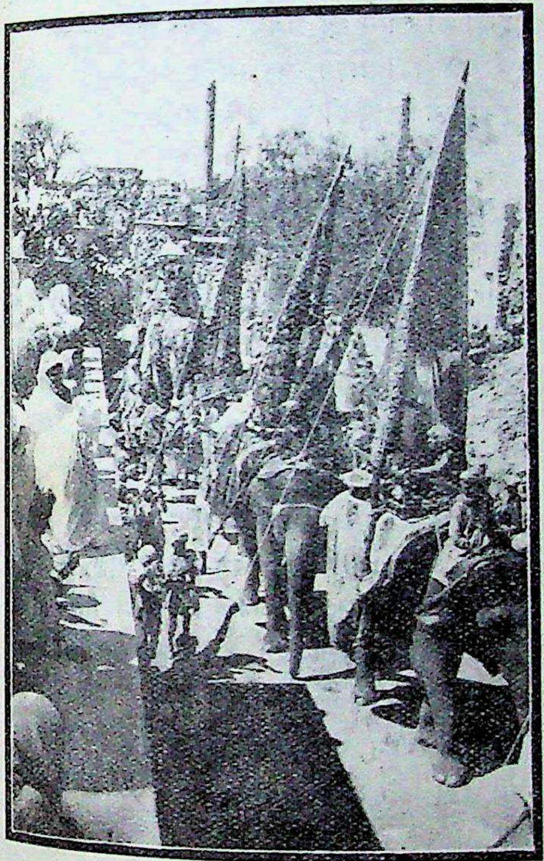

प्रतिष्ठित साधुओं और महंतों की शानदार सवारियों का जुलूस ।

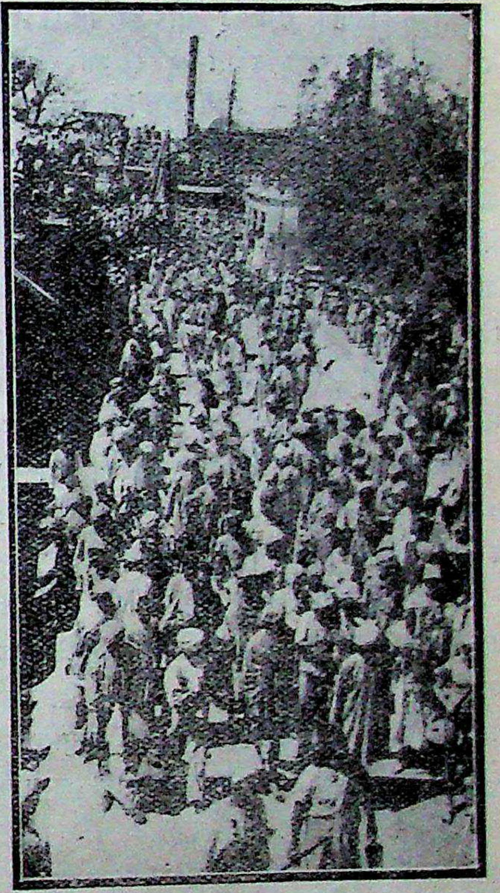

साधुओं के जुलूस का दूसरा दृश्य ।

हो भी कैसे ? उनके जुलूस की रोक-थाम के लिये कुछ इने-गिने व्यक्तियों से अधिक एकत्र नहीं हो सके । परंतु लाखों स्त्री-पुरुषों ने, जिन मार्गों से नागे साधुओं का गुज़रना हुआ, वहाँ की धूलि उठाकर सिर-माथे पर लगाई, और अपने मुख में भी डाली ! कहा जाता है, इस प्रकार मनों मिट्टी हरद्वार की सड़कों पर से उठ गई थी । यह तो ठहरी नागे साधुओं के लिये श्रद्धा और भक्ति रखनेवालों की बात, परंतु केवल तमाशबीनी करनेवालों के शौक़ का हाल भी तो कुछ कम आश्चर्य-जनक न था । कुंभ के दिन ऐसे असंख्य व्यक्तियों ने, जो इस नंगेपन की प्रथा का विरोध करते नहीं थकते, नंगे साधुओं का जुलूस देखने के लिये कई दिन पहले प्रबंध कर रक्खा था । और,

जाँच करने पर मुझे यहाँ तक पता चला कि केवल खड़े होने-भर के स्थान के लिये सौ-सौ रुपए तक दिए गए। और, मैं खुले तौर पर कह सकता हूँ कि ऐसे व्यक्तियों में बहुत-से बड़े-बड़े समाज-सुधारक, सुशिक्षित और नेता भी सम्मिलित थे। ऐसे भी थे, जो आर्यसमाजी ही नहीं, आर्य-समाजों के प्रतिष्ठित सभासद् और अधिकारी तक बने हुए थे। यही क्यों? बहुतेरे व्यक्ति अपनी स्त्रियों और बालकों के साथ नागों के जुलूस को देखते हुए भी नहीं लजाए। तनिक विचारिए, उन स्त्रियों और बच्चों के निर्दोष दिलों पर इस तरह के दृश्य का क्या प्रभाव पड़ा होगा। आश्चर्य की बात है, जिस वस्तु का विरोध किया जाता है, और जिसे बुराई कहकर दूर करने के लिये ज़ोर दिया जाता है, उसी बुराई को प्रोत्साहन देते हुए—और मैं कहूँगा, अपनाते हुए—उसकी जड़ों को सींचा भी जाता है! भला, जिस विष-वृक्ष की जड़ों को बराबर पानी मिलता रहे, उसके दो-चार पत्ते तोड़ डालने से ही क्या हो सकता है?

साधुओं में नंगेपन की ख़राबी कम होने की अपेक्षा दिन-पर-दिन बढ़ ही रही है। इसका स्पष्ट प्रमाण कुंभ के अवसर पर प्रस्तुत था। हज़ारों की संख्या में भिन्न-भिन्न संप्रदायों के नागे साधु देखने को मिलते थे। इनमें बहुत-से छोटी आयु के नवीन चेले भी थे, जिससे सिद्ध होता है कि इस प्रथा का परंपरागत विस्तार होता चला जा रहा है। धन की तो इनके पास कुछ कमी नहीं होती। बहुतों के पास सोना-चाँदी और हाथी-घोड़े तक मौजूद थे। सामाजिक क्षेत्र में इनका सिक्का यहाँ तक बैठा हुआ है कि कुंभ के पर्व पर सर्वप्रथम इन्हीं को स्नान का अवसर दिया गया।

एक बड़ा प्रश्न यह भी उठता है कि आख़िर इन नागे साधुओं के अस्तित्व से देश, जाति या मनुष्य-समाज का क्या भला हो रहा है? इसका उत्तर तो प्रत्येक व्यक्ति अब जानता और समझता है। यथार्थ में अब अनुभव किया जाने लगा है कि इनका निकम्मा जीवन समाज के ऊपर व्यर्थ का बड़ा भारी बोझ बना हुआ है। इतनी बड़ी संख्या, जो जनता के गाढ़े पसीने की कमाई पर ही पल रही है, यदि अपना सुधार करके देश और जाति के उत्थान में सहायक हो, तो कुछ ही दिनों में भारत-वर्ष की काया पलट जाय। परंतु यदि यह अपना सुधार नहीं करती, और समाज तथा राष्ट्र की किसी प्रकार की सेवा करने के लिये तैयार नहीं होती, तो उसका उत्तरदायित्व भी सारी हिंदू-जाति पर है, जो न केवल इन साधुओं का व्यर्थ में भरण-पोषण करती है, वरन् उनके असभ्यता-पूर्ण नंगेपन को भी श्रद्धा और विश्वास-भरी दृष्टि से देखती है।

आवश्यकता है

हिंदी या संस्कृत की प्रथमा-पास कुछ ऐसे लड़कों की, जो हिंदी का शॉर्टहैंड (त्वरा-लेखन), टाइपराटिंग, कंपोज़ीटरी सीखना चाहें। हम सिखा देंगे, और अपने ही यहाँ नौकर रख लेंगे। वेतन योग्यतानुसार। आवेदन-पत्र नीचे-लिखे पते पर भेजें—

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

जापान के किसान

[श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, ए०, एल् एल्० बी० सहायक संपादक, "दि पायोनियर"]

जापान में किसानों की बड़ी इज़्ज़त है। और, इज़्ज़त हो भी क्यों न? किसान अपना पसीना बहाकर नाज पैदा करते हैं, जिससे ग़रीब जापानियों का पेट भरता है, और जब किसी और मुल्क से लड़ाई छिड़ जाती है, तो हँसते हुए हज़ारों की तादाद में लड़ाई के मैदान में कूद पड़ते हैं, और अपने मुल्क के लिये अपना ख़ून भी बहाते हैं।

यों तो जापान के लोग चार हिस्सों में बँटे हैं—सिपाही, किसान, रोज़गारी और कारीगर, लेकिन सिपाहियों की भरती अक्सर किसानों में से होती है।

किसानों के पास ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़े हैं। वे अभी तक तो अपना लगान चावल और रेशम देकर चुकाते थे। लगान बहुत कम देना पड़ता था। लेन-देन के बाद उनके खाने-भर

श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, बी० ए०, एल्-एल्० बी०

को काफ़ी बच जाता था। पर चीन से लड़ाई छिड़ जाने से लगान बढ़ गया है। फिर भी उन्हें शाम-सुबह दाल-भात मिल ही जाता है। वे भूखों

किसान

नहीं मरते। देश-भक्त किसान देश के लिये तंगी सहते हैं, पर उफ़् नहीं करते।

जापान के किसान चावल की खेती और रेशम पैदा करने के लिये मशहूर हैं। उनका रहन-सहन बड़ा सादा है, लेकिन उस सादगी में भी एक अजीब मिठास है। अपनी ज़रूरत की चीज़ें—खेती-बारी के औज़ार, पहनने के लिये कपड़े वग़ैरा—किसान ख़ुद ही बना लेते हैं।

कलाकार

कारीगरों की भी कम इज़्ज़त नहीं। एक ज़माने से वे यह धंधा कर रहे हैं। सैकड़ों वर्ष पहले वे अपने राजा और रईसों के घरों को चीनी और मिट्टी की चित्रकारी और नक़्क़ाशी की हुई चीज़ों से सजाते थे, उनके लिये बढ़िया रेशमी कपड़े और ख़ून की प्यासी कटारें और तलवारें तैयार करते

थे। वे खेती के लिये लोहे के औज़ार भी बनाते थे, उनके औज़ार आजकल भी खेती के काम में आते हैं।

जापानी कारीगरों ने धीरे-धीरे इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि आज उनके हाथ की बनी चीज़ें सारी दुनिया में प्यार की नज़र से देखी जाती हैं। उनकी कारीगरी के नमूने सभी देशों के रईसों की बैठकों की शोभा बढ़ाते हैं।

जापान की आधी आबादी किसान हैं। किसान ग़रीब हैं, और क़र्ज़दार भी। लेकिन उनकी ग़रीबी ऐसी नहीं कि वे रात-दिन इसी का रोना रोया करें। वे हँसते हैं, खेलते हैं, और अपने घरवालों, गाँव और देश की तरक़्क़ी और हिफ़ाज़त के बारे में सोच-विचार भी करते हैं। वे कड़ाके के जाड़े में भी अपना फ़र्ज़ अदा करने से मुँह नहीं मोड़ते। वे अपना काम बड़ी मेहनत से और जी लगाकर करते हैं। ख़ाली वक्त में अपने घर और गाँववालों से ग़प लड़ाकर अपना मन भी बहलाते हैं। मेले-ठेलों और जलसों में भी शामिल होते हैं।

जापान के किसान किसानी के पुराने 'हथकंडों' को भूल नहीं गए हैं, फिर भी खेती की तरक़्क़ी के लिये उन्होंने पच्छिमी देशों की मालूमात और ईजादों को भी अपनाने में कसर नहीं रक्खी। नई-नई तरह की खादों और मशीनों के इस्तेमाल से उन्होंने अपनी ऊबड़-खाबड़ ज़मीनों को भी हरा-भरा बना दिया है। खेती के सिवा लकड़ी, मछली आदि का रोज़गार भी शुरू कर दिया है। आराम से रहने और मालदार बनने के लिये वे क्या कुछ नहीं कर रहे हैं?

उन्हें ज़मीन की क़ीमत पर सैकड़े पीछे चार के हिसाब से लगान देना होता है। सूखा पड़ जाने पर उनका लगान माफ़ हो जाता है। उनके ऊपर कुड़कियाँ नहीं आतीं। उनके घर नीलाम नहीं किए जाते। उन पर मार नहीं पड़ती—वे 'मुर्ग़ा' नहीं बनाए जाते। जब वे दुख में होते हैं, तो उनके मालिक उन पर तरस खाते हैं, ज़ुल्म नहीं करते। तभी तो वे ग़रीबी में भी मल्हार गाते रहते हैं।

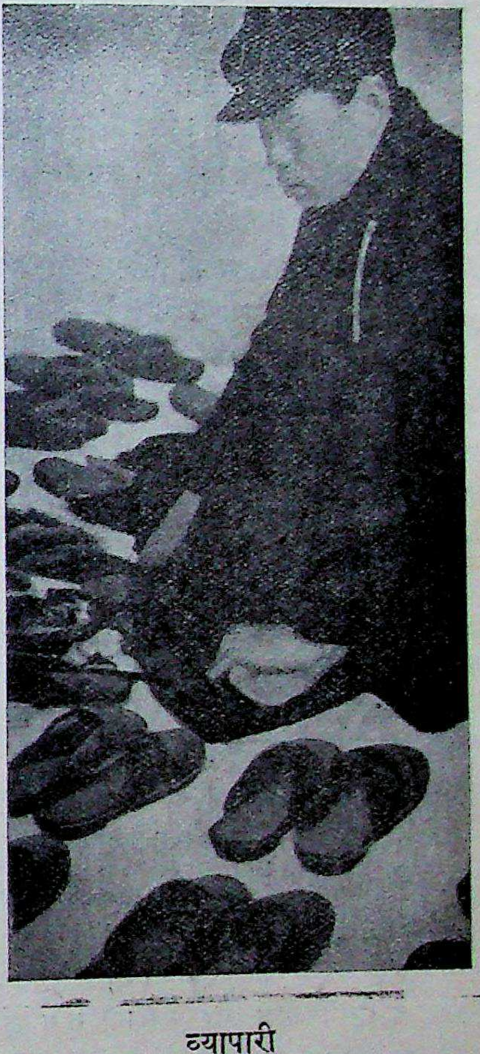

व्यापारी

मज़दूरों की हालत भी बुरी नहीं। जापान में कुल ६०,००,००० मज़दूर हैं। आधे से ज़्यादा मज़दूर छोटे-मोटे कारख़ानों में नौकर हैं। वे बड़े फुर्तीले और मेहनती होते हैं--अफ़ीमची और कामचोर नहीं। उनका काम बहुत बारीकी और

होशियारी का होता है। वे मकान बनाते हैं, गहने, बर्तन, मोमजामा की छतरियाँ, जूते वग़ैरा तैयार करते हैं, दर्ज़ी और जुलाहे का भी काम करते हैं।

बाक़ी मज़दूर बड़े-बड़े कारख़ानों में लोहे, सूत आदि का काम करते हैं। उनका काम बड़ा है, और उन्हें मज़दूरी भी ज़्यादा मिलती है। इन कारख़ानों में कुँवारी लड़कियाँ भी काम करती हैं। मेहनत-मज़दूरी करके पैसा बचाती हैं। वे अपनी कमाई का पैसा अपनी शादी में ख़र्च करती हैं, अपनी गृहस्थी सजाने में लगाती हैं।

मज़दूरों की भलाई-बुराई और सुख-दुख उनके मालिकों की मेहरबानी पर मुनहसर होता है। जापान के मज़दूरों की हालत अच्छी है। अपनी भलाई के लिये जापानी मज़दूरों ने संघ भी क़ायम किए हैं। मज़दूर-संघ और मज़दूरों के बारे में सरकार के बनाए क़ानून उनके हक़ और भलाइयों की हिफ़ाज़त करते हैं *।

---

* श्रीपृथ्वीपालसिंहजी सर्वप्रथम भारतीय पत्रकार हैं, जिन्होंने पत्रकार-कला में मिंज़ोरी-विश्वविद्यालय, कोलंबिया (अमेरिका) से एम्० ए० की डिग्री और लंदन विश्वविद्यालय से डिप्लोमा प्राप्त किया है। आप सुधा-परिवार के पुराने एवं प्रतिभाशाली लेखक हैं। आप सुंदर, सरल और मुहाविरेदार भाषा लिखते हैं। आप हाल ही में विदेश से लौटे हैं, और इस समय अँगरेज़ी दैनिक 'दि पायोनियर' में सहायक संपादक की हैसियत से काम कर रहे हैं।—संपादक

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये "संगीत-सागर"-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गा, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक़्शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≋) में दिया जा रहा है। शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर "संगीत", हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र "संगीत" का इस वर्ष २०० पृष्ठ का "भातखंड-अंक" [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए! गाना-बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

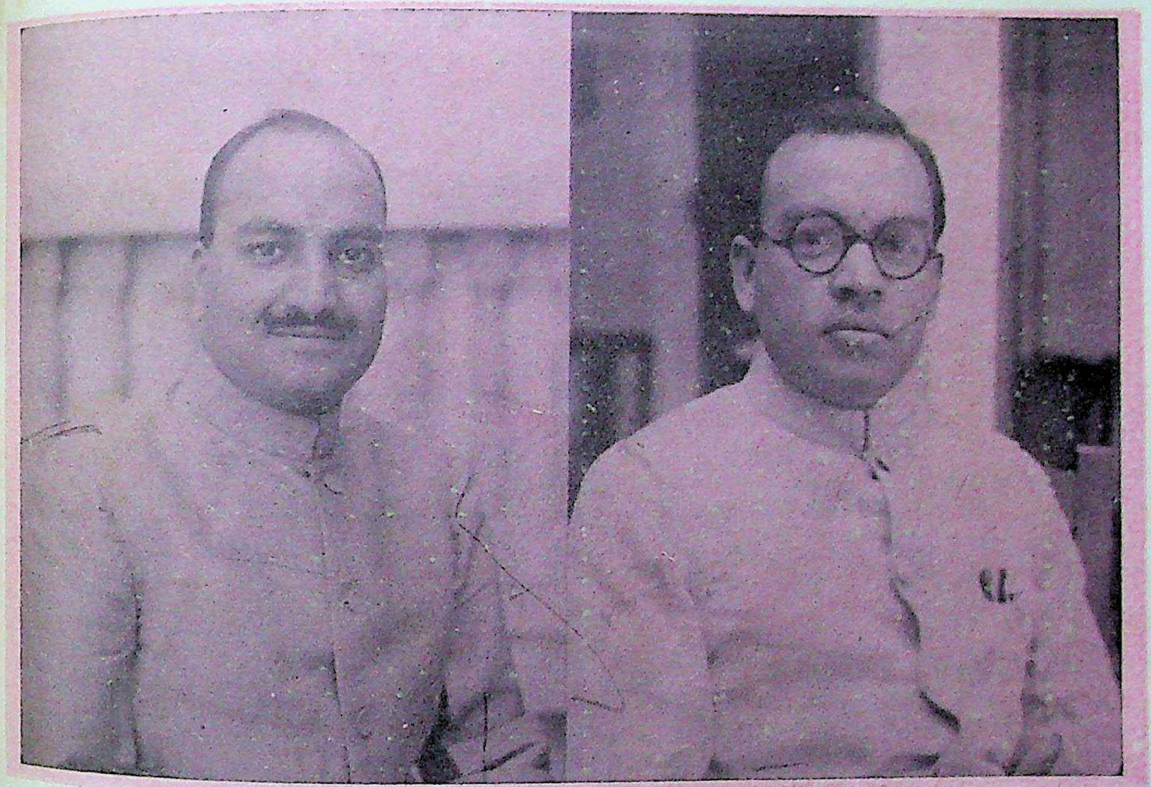

सेठ लक्ष्मीपतजी सिंहानिया सेठ रामरतनजी गुप्त

[दोनो अभिन्न-हृदय मित्र कानपुर के प्रसिद्ध नागरिक तथा मिल-मालिक हैं। लक्ष्मीपतजी उदारमना श्रीपद्मपतजी सिंहानिया के सबसे छोटे भाई हैं, और लाला रामरतनजी नगर-कांग्रेस-कमेटी के उप-प्रधान। आप दोनो सपत्नीक विलायत-यात्रा करने गए थे, और वहाँ की परिस्थिति का काफ़ी अध्ययन कर अभी वापस आए हैं। लाला रामरतनजी हवाई जहाज़ से वापस आए।]

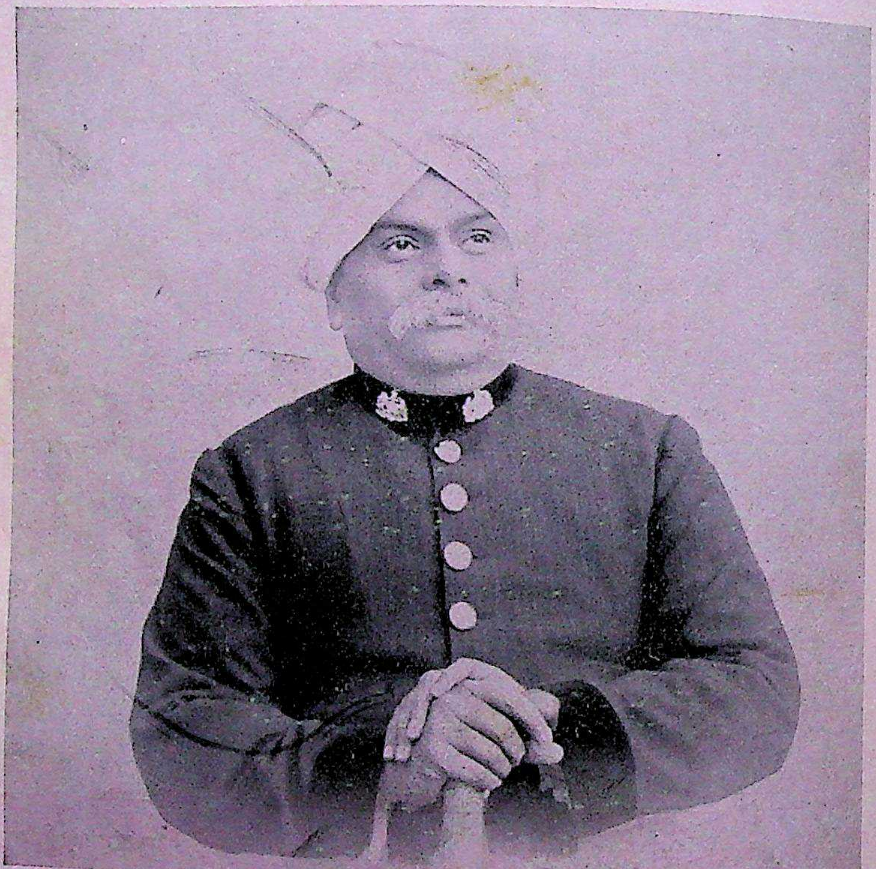

स्व० मयाशंकरजी याज्ञिक

[आप हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक और लेखक एवं व्रजभाषा के प्रकांड पंडित थे। आपकी जीवनी अन्यत्र प्रकाशित है।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

वीतराग

[श्रीआरसीप्रसादसिंह]

(१)

प्रिये, प्रिये !
मेरे एकांत तपोवन में
तू क्यों आई शृंगार किए ?
हाँ, मनमोहन शृंगार किए,
मोती से अलकों को सँवार,
चरणों में तरल महावर मल,
सज अंग-अंग में अलंकार !
उतरी नव - मेघ - परी - सी इस
शारद संध्या में छवि - रसाल ;
फेंकती उर्वशी-सी दिशि-दिशि
में वशीकरण का मोह - जाल !
उड़ती श्लथ केश - कलापों से
मंदार-मुकुल की विकल गंध ;
मधु - रूप - सुरा प्रचुरा पी - पी
बन गया चराचर मत्त-अंध !
रति, तेरे इंगित पर तत्पर
ये कोकिल, ऋतुपति औ' अनंग—
आए इस कानन में करने
किस विमल व्रती का तपोभंग ?

(२)

प्रिये, प्रिये !
वह कौन देश ? किस ओर चली ?
कह, कहाँ आज तू मुझे लिए ?
हाँ, कहाँ आज तू मुझे लिए
जा रही अनारत, अनाहूत ?
इतना आकर्षण बिखराया
क्यों इस वन में हवि-धूम-पूत ?
मैं तपोभ्रष्ट, साधना - स्खलित ;
खोजूँगा कैसे किसे अज्ञ ?
परिपूर्ण करेगा कौन सजनि,
आ इस ऋत्विज का होम-यज्ञ ?
तेरे स्मित - विकसित नयनों में
सुंदरि, यह कैसा अंधकार ?
इस महामिलन की वेला में
लाया चिर-नीरव पुलक-प्यार !
मेरे तृष्णाकुल अधरों पर
बजती विष की वंशी उदास ;
किस विरही ने भर दी ऐसी
संहारकारिणी प्रलय - प्यास ?

(३)

प्रिये, प्रिये !
मत पिला गरल, कर क्षमा, हाय !
इस नरक - लोक में कौन जिए ?
हाँ, नरक - लोक में कौन जिए ?
इस रक्त - क्षुधा से क्षिप्र प्राण !
संतप्त हृदय, विष - तिक्त कंठ,
अवरुद्ध अपरिचित व्यथा-गान !
पल - पल जलता पल्लव-पल्लव,
किसलय-किसलय में आग लगी ;
मेरे रहस्य - जीवन - पथ में
दुख - दावानल की ज्वाल जगी !

तू विधि की छलनामयी सृष्टि,
सौंदर्य - काम की स्वर्विभूति;
अनिमेष देखती किसको ? यह
कैसी तेरी सुषमानुभूति ?
यह मर्मर - वन का आराधन,
तापस-कुमार की व्यथा देख;
फिर खींच भाल पर अलि, मेरे
निर्मम भावी का अश्रु - लेख !

(४)

प्रिये, प्रिये !
जा, नाच न मेरी पर्णा में,
तू नूपुर का कल ताल दिए !
हाँ, नूपुर का कल ताल दिए
फैला मत तट पर गुंज-पुंज;
मत मुखर - कनक-कर - कंकण से
शिंजित कर तरु-तरु, कुंज-कुंज !
इस संन्यासी के प्रति तेरा
क्या विजयी हो सकता प्रयास ?
हो रहा त्याग का राग यहाँ;
इस वीतराग की कौन आस !
उर में यह पूजा-प्रतिमा जो,
अब और चाह क्या ? क्या उछाह ?
क्यारियाँ स्नेह की झुलस चुकीं;
मैं सह न सकूँगा अग्नि-दाह !
खो चुका पुरातन प्रेम-न्यास,
अब वह न कामना की उमंग;
जा, किसी विपंची में भरना
इस प्रणय-प्रपंची की तरंग !

आसामी-बंगाली तिलिस्मी राज़ से
मुक़दमा जीतने की ख़ुशी में
चिकित्साचंद्रोदय
आधी क़ीमत में
दो सौ आदमियों को ७ भाग की सेट और पाँच सौ को तीसरा भाग छोड़कर ६ भाग की सेट दे सकेंगे। ख़ूब जल्दी करें। ज़्यादा पुस्तकें नहीं हैं। ५) पेशगी भेजो। मनीऑर्डर-कूपन पर पास के स्टेशन का नाम-पता साफ़ लिखो।
पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

स्वर्गीय पंडित मयाशंकर याज्ञिक

[प्रोफ़ेसर दीनदयाल गुप्त एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, हिंदी-अध्यापक लखनऊ-विश्वविद्यालय]

पिछले दो साल के भीतर एक-एक करके हिंदी के कई अमूल्य रत्न खो गए। स्वर्गीय प्रोफ़ेसर रामदास गौड़ की मृत्यु से हिंदी का एक सर्वतोमुखी विद्वान् चला गया! हिंदी-काव्य-साहित्य के अतिरिक्त हिंदी के अन्य अंगों की पुष्टि में कितनी कमी है, यह तो सभी हिंदी-प्रेमी जानते हैं। स्वर्गीय गौड़जी की प्रतिभा का प्रसार विज्ञान, इतिहास, दर्शन-शास्त्र और काव्य, सभी ओर हुआ, और इन अंगों की पूर्ति के लिये उन्होंने महान् परिश्रम किया। वर्तमान हिंदी-साहित्य के महारथी, उपन्यास-सम्राट् प्रेमचंदजी—जिनकी साहित्यिक कृतियों ने हिंदी को वर्तमान भारतीय भाषाओं में एक उच्च स्थान दिया, जो अपने राष्ट्र, साहित्य और समाज के उत्थान में स्वार्थ त्यागकर जीवन-भर कटिबद्ध रहे—हमारे बीच से उठ गए। उनके अभाव के प्रहार से हिंदी-जगत् सँभल भी न पाया था कि दूसरी चोट पड़ी। जयशंकर 'प्रसाद' के निधन से हिंदी ने एक बड़ा नाटककार, उपन्यासकार, कहानी-लेखक और उच्च कोटि का कवि खो दिया। ४ फ़रवरी सन् ३८ को हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् और लेखक पं० मयाशंकर याज्ञिक का भी, ६५ वर्ष की अवस्था में, गोलोक-वास हो गया। उनके निधन से भी हिंदी की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असंभव है।

"जा रसना सों करी बहु बातन,
ता रसना सों चरित्र गुन्यों करें;
नैनन में जो सदा रहते,
तिनकी अब कान कहानी सुन्यों करें।"
(आलम)

के अनुसार आज वर्तमान हिंदी-जगत् भी अपने शोक-पूर्ण हृदय से इन महान् आत्माओं की जीवन-कहानी कहता और सुनता है।

जन्म

स्वर्गीय पं० मयाशंकर याज्ञिक का, जो अलीगढ़ और अपने कुटुंब में 'काकाजी' के नाम से प्रसिद्ध थे, जन्म अलीगढ़ के एक धनाढ्य, विद्या-संपन्न और ऐश्वर्यवान् गुजराती ब्राह्मण-कुल में हुआ। अलीगढ़ में पं० वेणीशंकरजी नगर के एक बड़े ज़मींदार, प्रसिद्ध बैंकर और प्रतिष्ठित सज्जन हो गए हैं। स्वर्गीय पं० मयाशंकरजी उन्हीं के तृतीय पुत्र थे। 'काकाजी' चार भाई थे—पं० दयाशंकरजी, पं० उदयशंकरजी, पं० मयाशंकरजी और पं० कमलाशंकरजी। पं० दयाशंकरजी सबसे बड़े थे। दयाशंकरजी के सबसे बड़े पुत्र हिंदी-अँगरेज़ी के विद्वान् तथा हिंदू-विश्वविद्यालय में अँगरेज़ी के प्रोफ़ेसर पं० जीवनशंकर याज्ञिक हैं। पं० रमाशंकरजी, डॉ० पं० भवानीशंकरजी और पं० रामशंकरजी, पं० दयाशंकरजी की सुयोग्य संतान हैं। पं० मयाशंकरजी के कोई संतान नहीं हुई। वह अपने भतीजों को ही अपनी संतान मानते थे। इसी प्रकार इनके भतीजे भी इनका पिता-तुल्य आदर और सेवा किया करते थे। आपकी शोक-ग्रस्ता धर्मपत्नी विधुरा अवस्था में विद्यमान हैं। काकाजी का कुटुंब अलीगढ़ में विद्वत्ता, हिंदी-अनुराग और धार्मिक निष्ठा के लिये प्रसिद्ध है।

शिक्षा और व्यवसाय

काकाजी की बुद्धि बाल्यकाल ही से प्रखर थी। अलीगढ़-गवर्नमेंट-हाईस्कूल से इन्ट्रेंस-परीक्षा पास कर अलीगढ़ के एम्० ए० ओ० कॉलेज में दाखिल हुए। वहाँ से बी० ए०-परीक्षा पास की। यह वह ज़माना था, जब बी० ए० पास कर लेना एक सिद्ध कार्य समझा जाता था। विद्यार्थी-जीवन में आपके सरल स्वभाव, कुशाग्र बुद्धि, सद्व्यवहार और संयम से स्कूल तथा कॉलेज के अध्यापक एवं सहपाठी, सभी प्रसन्न रहते थे। विद्या-व्यसन को छोड़कर और कोई व्यसन इनमें बाल्यकाल ही से न था। घर के संपत्तिमान् थे, इसलिये बी० ए० पास करने के बाद नौकरी की ओर न इन्होंने ध्यान दिया, न इनके पिता ने ही। एम्० ए० ओ० कॉलेज में ही एम्० ए०-कक्षा में पढ़ना आरंभ कर दिया। काकाजी की इच्छा वकालत करने की थी। उस समय प्रसिद्ध विद्वान् श्रीहरभामजी-रावाजी भरतपुर-रियासत के दीवान थे। काकाजी की बुद्धि की प्रशंसा उन्होंने एम्० ए० ओ० कॉलेज, अलीगढ़ के प्रिंसिपल बेक साहब से सुनी। उन्होंने प्रिंसिपल को लिखा, और उनके द्वारा इन्हें भरतपुर बुलवाया। जब काकाजी भरतपुर गए, तो दीवान साहब ने इन्हें स्कूल-इंस्पेक्टर की जगह पर नियुक्त कर दिया। इनके पिता ने नौकरी पर जाने से रोका, परंतु प्रिंसिपल के आग्रह से आपको जाना ही पड़ा। वहाँ इन्होंने ऐसे परिश्रम, सच्चाई और नेकनीयती से काम किया कि ये इंस्पेक्टर से जज के पद पर नियुक्त कर दिए गए। वहाँ काकाजी न्यायशील, विचारवान्, और कुशल प्रबंधकर्ता साबित हुए, इसलिये उत्तरोत्तर उन्नति ही करते गए। कुछ समय एकाउंटेंट जनरल और कंट्रोलर ऑफ़् एकाउंट भी रहे। इस प्रकार इन्होंने भरतपुर के राज-प्रबंधकों में बहुत बड़ा नाम पैदा कर लिया। लगभग ३० वर्ष से अधिक रियासत में कार्य करने के बाद इन्होंने वहाँ से अवकाश लिया, और अलीगढ़ में ही हिंदी-साहित्य-सेवा तथा भगवद्भजन में समय बिताने लगे। भरतपुर-इलाक़े में वल्लभ-संप्रदाय की मुख्य गद्दियों में से 'कामावाली' गद्दी भी है। काकाजी वल्लभ-संप्रदायी वैष्णव थे। कामावाली गद्दी के स्वामी श्रीश्री १०८ श्रीमहाराज वल्लभाचार्यजी आपको बहुत मानते थे। महाराज पर इनकी सच्चरित्रता और धर्मनिष्ठा का बड़ा प्रभाव पड़ा। भरतपुर से अवकाश पाने के बाद महाराज वल्लभाचार्यजी ने आपको श्रीगोकुलनाथजी के मंदिर में मुख्य प्रबंधकर्ता का कार्य करने को बुलाया। काकाजी भगवद्भजन में समय बिताना चाहते थे। कुछ तो महाराज का आग्रह और कुछ श्रीगोकुलनाथजी का प्रेम आपको गोकुल खींच ले गया, और तब से मृत्यु पर्यंत वहाँ मंदिर के प्रबंध की देख-रेख करते रहे।

विद्वत्ता और हिंदी-साहित्य-सेवा

पीछे कहा जा चुका है कि काकाजी ग्रेजुएट थे। बी० ए० तक आपने संस्कृत पढ़ी थी। अँगरेज़ी की उनमें विशेष योग्यता थी। हिंदी और गुजराती के पूर्ण विद्वान् थे। इनकी सानी का व्रजभाषा का पंडित मिलना कठिन है। व्रजभाषा-साहित्य का इन्होंने ख़ूब अवगाहन किया था। व्रजभाषा के कवियों पर जिस अधिकार और विद्वत्ता के साथ यह बातें करते थे, उस प्रकार की बातें करते मैंने किसी विद्वान् को नहीं देखा। व्रजभाषा के पुराने गौरव के संरक्षक थे, और साहित्य के इस खड़ी बोली के युग में भी उसे खड़ी बोली के समकक्ष रख उसका पक्ष लिया करते थे। प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकों की खोज का जितना महत्त्व-पूर्ण कार्य इन्होंने किया है, उतना नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी को छोड़ अन्य किसी संस्था अथवा व्यक्ति ने शायद ही किया हो। अपने अथक परिश्रम से इन्होंने प्राचीन

ग्रंथों का बहुत बड़ा संग्रह किया है। अनेक विद्वत्ता-पूर्ण आलोचनात्मक लेख लिखे हैं, जो समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। 'रहीम-रत्नावली' का आपने संपादन किया है। रहीम की रचनाओं का यह बहुत शुद्ध और सुंदर संस्करण निकला है। गंग, बीरबल, रसखान, सेनापति, नंददास, सुंदर, देव आदि अनेक प्राचीन कवियों की कविताओं का इन्होंने अलभ्य संग्रह किया है। काकाजी 'रहीम-रत्नावली' की तरह इन कवियों की कविताओं के संस्करण भी निकालनेवाले थे। नवीन-कृत 'प्रबोध-रस-सुधा-सागर', गंग, बीरबल के छंद और रसखान के सवैयों के संग्रह तो उनके पास छपने को तैयार ही थे। 'प्रबोध-रस-सुधा-सागर' के संबंध में एक लेख काकाजी ने परिचय-रूप में 'समालोचक' में भी निकलवाया था। उनके साथ कुछ व्रजभाषा के कवियों की रचनाएँ अध्ययन करने का सुअवसर मुझे कई बार अलीगढ़ में प्राप्त हुआ। वह कहा करते थे—मैं व्रजभाषा का एक बृहत् कोश और व्याकरण तैयार करने की बात सोच रहा हूँ। पिछली गर्मी की छुट्टियों में मैं स्वर्गीय याज्ञिकजी के संग्रहालय में गया। मैंने वहाँ लगभग ३५० प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकें देखीं। पं० शिवशंकर याज्ञिक की सहायता से उन ग्रंथों की मैंने स्वयं एक सूची तैयार की, जिसकी एक प्रति मेरे पास है। इन संगृहीत ग्रंथों की विशेष जानकारी डॉ० भवानीशंकरजी याज्ञिक तथा प्रो० जीवनशंकरजी याज्ञिक को है।

याज्ञिकजी का पांडित्य बहुमुखी था। व्रजभाषा के कवियों की रचनाओं की अर्थ-कठिनाइयों को सुलझाने के लिये बहुत-से लोग इनके पास आया-जाया करते थे। जब कभी मुझे इनके पास जाने का अवसर होता था, मैं हमेशा इन्हें पुरानी पुस्तकों के बेठनों से घिरा कुछ-न-कुछ लिखते या पढ़ते ही पाता था। इनका पांडित्य व्यापक और अध्ययन गंभीर था। स्वयं साहित्यिक कार्य करने की लगन तो इनमें थी ही, दूसरों में प्रोत्साहन और साहित्यानुराग भरने की भी अपूर्व शक्ति थी। अलीगढ़ के नवयुवकों को, हिंदी से प्रेम बढ़ाने के लिये सदा बढ़ावा दिया करते थे। हिंदी-साहित्य के अतिरिक्त गुजराती-साहित्य भी इन्होंने खूब पढ़ा था। धार्मिक ग्रंथों का आप नित्य अवलोकन किया करते थे। भागवत और रामायण में इनकी पूर्ण पैठ थी। वल्लभ-संप्रदाय के सिद्धांत-ग्रंथों का भी इनको अच्छा ज्ञान था। व्रजभूमि और व्रजभाषा-अनुराग से सदैव इनका हृदय प्लावित रहा करता था। व्रजभाषा के साथ-साथ इनको अवधी-भाषा का भी ज्ञान था। महात्मा तुलसीदासजी के संपूर्ण ग्रंथ इन्होंने पढ़े थे, और रामचरित-मानस की चौपाइयों की व्याख्या तो बड़ी विद्वत्ता से किया करते थे। कई जगह तुलसी-जयंती के अवसरों पर आप सभापति भी बनाए गए थे। अँगरेज़ी, संस्कृत, व्रजभाषा, अवधी, खड़ी बोली हिंदी, गुजराती आदि भाषाओं के ज्ञान के अतिरिक्त काकाजी उर्दू भी अच्छी तरह जानते थे। पुरानी लिपियों के आप विशेष ज्ञाता थे। इस प्रकार इनका एक रूप पुरातत्त्ववेत्ता का भी था। पुरानी, हाथ की लिखी पुस्तकें बड़ी आसानी से पढ़ते थे। नागरी-लिपि के पुराने भिन्न-भिन्न रूपों से पूर्ण परिचित थे, जिन्हें केवल वर्तमान नागरी-अक्षरों को जाननेवाला व्यक्ति आसानी से नहीं पढ़ सकता।

हिंदी-प्रचार का कार्य भी काकाजी ने बहुत बड़ा किया है। जिस समय आप भरतपुर-रियासत में राज-कर्मचारी होकर गए, उस समय रियासत की राज-भाषा उर्दू थी, और जनता भी विशेष रूप से उर्दू ही पढ़ा करती थी। काकाजी ने उर्दू के स्थान पर हिंदी कराने का प्रयत्न किया। यह इनके ही सत्परिश्रम का फल था कि भरतपुर-महाराज उर्दू के स्थान पर हिंदी को राजभाषा बनाने के लिये बाध्य हो गए। वहाँ अब पूर्ण रूप से हिंदी का

साम्राज्य है, तथा देवनागरी-लिपि में सब राजकीय कार्य होते हैं। भरतपुर में काकाजी ने एक हिंदी-साहित्य-समिति की भी स्थापना की, जो अब हिंदी का प्रचार और साहित्यिक कार्य कर रही है। उस समिति का अपना ही एक सुंदर भवन है, और उसका पुस्तकालय भी बहुत अच्छा है। इस पुस्तकालय में जो प्राचीन ग्रंथों का अमूल्य संग्रह है, वह भी काकाजी के ही अथक परिश्रम का फल है। उक्त पुस्तकालय में एकत्र और सुरक्षित हस्त-लिखित पुस्तकों के संबंध में आपने यह क़ानून भी बनवाया था कि पुरातत्त्व-संबंधी कोई वस्तु पुस्तकालय से बाहर न ले जाई जाय, जो सज्जन उनका उपयोग करना चाहें, वे पुस्तकालय में ही करें। वहाँ आज तक इस नियम का पालन होता है।

काकाजी स्वयं कवि न थे, परंतु कविता-प्रेमी थे। हिंदी के बहुत-से प्रसिद्ध कवियों से उनका परिचय था। काकाजी ने हिंदी-सेवा की, परंतु अपने नाम के लिये कभी लालायित न हुए। इसी से वह इधर-उधर साहित्य-सम्मेलनों या कवि-सम्मेलनों में कम जाते थे। स्वर्गीय कविरत्न पं० सत्यनारायणजी से यह पुत्रवत् स्नेह करते थे। वह काकाजी के साथ बहुत दिन तक रहे थे। 'मालती-माधव' नाटक का संस्कृत से हिंदी में अनुवाद उन्होंने काकाजी के कहने से ही किया था। सत्यनारायणजी काव्य-रचना में भी काकाजी से प्रोत्साहन लिया करते थे। भरतपुर में जो हिंदी-साहित्य-सम्मेलन हुआ था, जिसमें श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर, महामना पं० मदनमोहन मालवीय आदि बड़े-बड़े विद्वान् सम्मिलित हुए थे, उसके स्वागताध्यक्ष काकाजी ही थे। आप रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्य भी थे। पं० मयाशंकर याज्ञिक छिपे हुए साहित्य-मर्मज्ञों में से थे। "पंडित सोइ, जो गाल बजावा" वाले 'कलियुगी गुनवंतों' में न थे। परंतु जो उनके संपर्क में रह चुके थे, वे उनकी विद्वत्ता जानते और समझते थे। इनके परम मित्रों में कलकत्ते के प्रसिद्ध पंडित महामहोपाध्याय श्रीहरिप्रसाद शास्त्री, परम विद्वान् पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा तथा दतिया के सर श्रीअज़ीज़उद्दीन अहमद साहब आदि बड़े विद्वान् और प्रतिष्ठित सज्जन थे। किशनगढ़ के महाराज आपका विशेष मान करते थे।

स्वभाव

पं० मयाशंकर याज्ञिक का स्वभाव इतना उदार, सरल और अकृत्रिम था कि उनके संपर्क में आनेवाला कोई भी व्यक्ति उनका बन जाता था। उनके सभी मिलनेवाले उनके प्रति श्रद्धा का भाव रखते थे। सादा लिबास और सादा रहन-सहन। उनके कमरे में दो-तीन मामूली कुर्सी और एक बड़ा तखत, बस, यही फ़रनीचर रहता था। कमरे में चारो ओर किताबें और पुरानी, हस्त-लिखित पुस्तकों के पन्ने बिखरे दिखाई दिया करते थे। शान-शौकत का नाम न था। धैर्यवान् और साहसी इतने थे कि अपने काम में असफलता आने पर भी कभी हतोत्साह नहीं हुए। हिंदी-प्रचार-कार्य में रियासत के कुछ लोग इनके विरोधी भी हो गए थे, परंतु विपत्तियों का भय न कर आप अपने संकल्प पर दृढ़ रहे। इनके निष्कपट सेवा-भाव, सचाई और स्वामिभक्ति ने विजय का सेहरा इन्हीं के सिर बाँधा, और इनके विरोधियों को नीचा देखना पड़ा। बाद में वे भी इनके गुणों की प्रशंसा करने लगे।

दान-पुण्य में इनकी बड़ी आस्था थी। दूसरों के दुःख में अपना धर्म समझकर सहायक बना करते थे। अपने कुटुंबवालों की सेवा में तो एक प्रकार से इन्होंने अपनी जान ही दे दी। अपने सिद्धांतों में अटल थे। जिस कार्य को करने का दृढ़ संकल्प कर लिया, फिर उसे पूरा करके ही छोड़ते

थे। काकाजी किसी अन्य धर्म, मत और जाति के व्यक्ति के हाथ का भोजन नहीं करते थे। अपने हाथ से भोजन बनाने में इन्हें कोई संकोच न था। इस संबंध में एक रोचक घटना भी है। एक बार काकाजी भरतपुर-महाराज के साथ वाइसराय से मिलने शिमला गए। वहाँ महाराज ने इनसे पूछा—"पंडितजी, वाइसराय साहब से किस पोशाक में मिलने चलिएगा?" इन्होंने उत्तर दिया—"सरकार, मैं तो अँगरखा-पाजामा सादे कपड़े ही पहनता हूँ, और तो मेरे पास कोई लिबास है नहीं।" महाराज ने उसी दिन शिमले में काकाजी के कपड़े सिलाने का ऑर्डर दिया। एक अँगरेज़ दर्ज़ी नाप लेने उस स्थान पर भेजा गया, जहाँ काकाजी ठहरे थे। वहाँ वह साधारण व्यक्ति की तरह कछोटा मारे रसोई बनाते थे। जब उसी साधारण वेश में वह उस अँगरेज़ के पास आए, तो उसे देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। ऐसे मामूली आदमी के प्रति भरतपुर-महाराज की ऐसी श्रद्धा! यह काकाजी के अकृत्रिम और सीधे-सच्चे स्वभाव का ही प्रभाव था।

पं० मयाशंकरजी पुष्टिमार्गीय वैष्णव थे। इनके इष्टदेव कृष्ण भगवान् थे, परंतु आस्था उनकी राम-रूप में भी थी। परंपरा के संरक्षक होते हुए भी विचारों में बड़े उदार थे। आर्य-समाज ने जब शुद्धि-आंदोलन चलाया, तो इन्होंने भरतपुर-रियासत में बहुत-से मेवाती मुसलमानों को हिंदू बनाया। इस कार्य में इन्होंने किसी के साथ ज़बरदस्ती नहीं की। मेवातियों को उनके पूर्वजों की कीर्ति की याद दिलाकर उनके रक्त में हिंदू-जाति-प्रेम और उनके प्राचीन गौरव की स्फूर्ति संचालित की। वे ख़ुशी से हिंदू होते थे। मैं यहाँ इनके इस कार्य की प्रशंसा या निंदा नहीं करता। मैं तो इनके इस गुण की प्रशंसा करता हूँ कि यह प्राचीन रूढ़ियों में संशोधन के भी पक्षपाती थे, वर्तमान समय और समाज की आवश्यकताओं को देखते हुए अपने विचारों में परिवर्तन करने की गुंजाइश रखते थे। इनके निजी कोई संतान न थी, लेकिन, जैसा पीछे कहा जा चुका है, आप अपने भतीजों को ही अपना पुत्र मानते थे। बच्चों से इन्हें विशेष प्रेम था। अपने घर और मुहल्ले के बच्चों को इकट्ठा कर नित्य दो-तीन घंटे उनके साथ खेला करते थे। यह इनका सबसे बड़ा मनोविनोद था। वैसे गंभीर विचार और स्वभाव के व्यक्ति थे। अधिक हँसोड़ और ठठोलबाज़ी करनेवाली संगति में कम बैठते थे। हिंदू-मुसलमान, सभी इनके मिलनेवाले थे, परंतु यह एकांत-प्रिय अधिक थे।

देशाटन

याज्ञिकजी धार्मिक प्रवृत्ति के आदमी थे। इसलिये देशाटन और भ्रमण इन्होंने धार्मिक उद्देश्य से ही किए थे। कृष्ण और व्रजभूमि के भक्त थे, इसलिये व्रज के गाँव-गाँव इन्होंने देखे थे। व्रज की चौरासी कोस की यात्रा कई बार कर चुके थे। हरद्वार भी इन्हें विशेष रूप से पसंद था। रियासत के काम से शिमला आदि पहाड़ों पर भी घूमे थे, परंतु वैसे मनोविनोद के लिये कभी इन स्थानों में नहीं गए। आप कलकत्ते में भी कुछ दिन रह चुके थे। अपने जीवन के अंतिम समय में तो आप कलकत्ते में ही थे, जहाँ आपका देहावसान हुआ। अपनी यात्राओं का वर्णन इन्होंने लिखा नहीं, परंतु जब कभी इन यात्राओं का मौखिक वर्णन करते थे, उनका एक सजीव चित्र सामने खिंच जाता था।

मृत्यु

याज्ञिकजी के एक भतीजे कलकत्ते में रहते हैं। पिछली जनवरी के महीने में वहाँ इनकी एक भतीजी बीमार थी। काकाजी उसे देखने कलकत्ते गए हुए थे। अपनी मृत्यु से आठ दिन पहले

भले-चंगे थे। पड़ोस के लोग इनसे धार्मिक वार्तालाप करने आते, और घंटों इनकी बातों में मंत्र-मुग्ध-से बैठे रहा करते थे। दुर्भाग्य से उस बीमार कन्या का देहांत हो गया। लड़की छोटी थी, इसलिये उसकी अंतिम क्रिया दाह-रूप में न कर जल-प्रवाह-रूप में करनी थी। जाड़े के दिन थे, परंतु प्रथानुसार शव को नंगे बदन और नंगे पैर ही ले जाना था। इस समय काकाजी की आयु ६५ वर्ष की थी। फिर भी उनमें पुरुषार्थ और साहस नवयुवकों का-सा था। इस शव को इन्होंने अपने भतीजों को नहीं ले जाने दिया। स्वयं उसे लिए नंगे पैर और नंगे बदन पाँच-छ मील गए। गंगा-तीर पहुँचते-पहुँचते रात हो गई। कड़ाके का जाड़ा था, टंडी हवा शरीर में तीर-सी लगती थी। अंत्येष्टि क्रिया कर रात में ही घर वापस आए। आकर नहाए, और कपड़े पहनकर लेट गए। उस दिन इन्हें कुछ थकान-सी मालूम हुई। बूढ़ा शरीर था, ठंडे पानी की सर्दी सहन न कर सका। दूसरे दिन इन्हें ज्वर हो आया। दो-चार दिन ज्वर का साधारण उपचार होता रहा, परंतु ज्वर न छूटा। इस सर्दी के ज्वर ने निमोनिया का रूप ले लिया, और हालत गिरती ही गई। आपके संबंधियों ने डॉक्टरों को बुलाया। एक दिन ओषधि की व्यवस्था करके जब डॉक्टर चले गए, तो काकाजी ने पूछा—"क्या डॉक्टर ने मुझे निमोनिया बताया है ?" लोगों ने कहा—"आपको सर्दी लग गई है, अच्छे हो जाइएगा।" उसी समय इन्होंने अपने सिरहाने से 'सुमिरनी' उठाई, और भगवद्भजन में लग गए। दो दिन तक इनके हाथ की माला और मुख के होठ चलते रहे, परतु उस समय से अंत समय तक मुख से कुछ नहीं बोले। कोई कुछ पूछता था, तो केवल इंगित रूप से सिर हिलाकर भाव प्रकट कर देते थे। ४ फ़रवरी सन् १९३८ को, दिन के ढाई बजे, उनका गोलोक-वास हो गया। जिस समय उन्हें ज़मीन पर लिया, उस समय भी उनकी उँगलियाँ भगवज्जप में चल रही थीं।

व्रजभाषा के ऐसे प्रकांड पंडित और हिंदी-साहित्य-सेवी के निधन से समस्त हिंदी-जगत् शोक-ग्रस्त है। सबसे अधिक खेद इस बात का है कि उनका बहुत-सा पांडित्य उनके साथ ही चला गया। हम लोगों ने—विशेषतः अलीगढ़-निवासी हिंदी-प्रेमियों ने, जिनके लिये हमेशा, हर समय उपलब्ध थे - इनकी विद्वत्ता से पूर्ण लाभ नहीं उठाया। जितना इनका अध्ययन और ज्ञान था, उतना इनका लेखन न था। वह चाहते थे कि मेरे साथ काम करनेवाले रहें। परंतु सबको अपने काम-धंधों की फ़िक्र थी। इनके साथ न कोई रहा, और न उस 'चलते-फिरते महान् व्रज-भाषा कोष' से किसी ने भले प्रकार लाभ उठाया। इनकी मृत्यु आकस्मिक हुई, और पीछे लोग पछताते ही रह गए। ईश्वर आपकी पवित्र आत्मा को शांति और आपके परिवार को सांत्वना दें।

आवश्यकता है

हमें कुछ तेज़ और ओजस्वी कंपोज़ीटरों की, जो हिंदी-कंपोज़ीटरी भली भाँति कर सकते हों। वेतन योग्यतानुसार।

मैनेजर, गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

विवाह और आधुनिक भावना

[श्रीयुत ललिताप्रसादजी सुकुल एम्० ए०]

आएदिन शारदा-ऐक्ट और 'डाइवोर्स'-बिल की आयोजना प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को बाध्य करती है कि वह इस ओर भी सोचे। जब तक व्यक्ति का समाज से संबंध है, तब तक प्रत्येक सामाजिक क़ानून व्यक्तिगत जीवन पर भी अपना कुछ-न-कुछ प्रभाव रक्खेगा ही, अतः उसकी आवश्यकता अथवा अनावश्यकता पर विचार करना न केवल आवश्यक ही, वरन् फ़र्ज़-सा हो जाता है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि हमारी भारतीय विवाह-प्रथा अन्य पाश्चात्त्य अथवा पूर्वीय देशों की विवाह-प्रथा से बिलकुल भिन्न है। प्रत्येक समाज की सभ्यता किन्हीं निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिये ही होती है। इन्हीं विविध उद्देश्यों की विभिन्नता ही सभ्यता एवं समाजों में भेद उत्पन्न कर देती है। भेदों और प्रभेदों में न पड़कर भी इतना बता देना पर्याप्त होगा कि भारतीय सभ्यता में अन्य पाश्चात्त्य देशों की भाँति 'विवाह-संबंध' समाज-निर्णीत ठेकेदारी न होकर एक पवित्र धार्मिक संस्कार है, जिसके बिना जीवन की पूर्ति ही नहीं समझी जाती। किंतु जीवन का इतना ऊँचा आदर्श हमारे सम्मुख क्या सहसा ही आ उपस्थित हो गया था, या हमें उसे प्राप्त करने के लिये बहुत-से सिरतोड़ प्रयत्न भी करने पड़े थे? 'आश्वलायन' और 'गोभिल' इत्यादि के गृह्यसूत्र हमारी इस आदर्श-सिद्धि के इतिहास हैं। हममें से जिन्हें उन्हें देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा, वे कह सकेंगे कि भारतीय आदर्श की उच्चता सहसा अथवा निष्प्रयास ही नहीं प्राप्त हो सकी थी। इन्हें भी इसके प्राप्त करने के लिये कड़ी-से-कड़ी परीक्षाएँ देनी पड़ी थीं। मानव-चरित्र स्वभाव से ही दुर्बलताओं का केंद्र है। उस पर विजय पाना यद्यपि जीवन का परम उद्देश्य है, तथापि सरल नहीं। इसका एकमात्र उपाय है आत्मसंयम। चरित्र की नींव इसी पर समझकर आर्य-सभ्यता के विधायकों ने जीवन के प्रायः सभी आवश्यक एवं उपयोगी अंगों में इसका समावेश किया था। विवाह-संस्कार की, जो सामाजिक तथा नैतिक दृष्टि से जीवन का संस्कार माना गया है, भित्ति भी इसी आत्मसंयम की नींव पर ही उठाई गई थी। आदि से अंत तक इसका कोई पार्श्व इससे ख़ाली नहीं।

अन्य सभ्य देशों में वर और कन्या ही अपने संबंध का निर्णय करते हैं, किंतु आर्य-सभ्यता इसे आदश नहीं मानती। यों तो विवाह के विविध प्रकारों में यह भी एक है,

तथापि ब्राह्म विवाह को छोड़कर अन्य आदर्श नहीं माने जाते, क्योंकि उनमें से नैतिकता अथवा अन्य उच्च आदर्शों की पूर्ति नहीं होती। एक साधारण युवक अथवा युवती का पारस्परिक निर्णय उतनी छान-बीन के साथ नहीं हो सकता, जितना उसके माता-पिता के द्वारा। इसका मुख्य कारण यही है कि एक युवक अथवा युवती उस अनुभव से शून्य होते हैं, जो सांसारिक जीवन की प्रौढ़ता के साथ प्राप्त होता है। उस समय उनकी दृष्टि 'कामरता' होने के कारण उतनी निष्पक्ष अथवा व्यापक नहीं हो सकती। यद्यपि आधुनिक युवक-समाज अनेक प्रकार से पाश्चात्त्य सभ्यता का उपासक हो रहा है, और उसी दृष्टिकोण से वह 'कोर्टशिप' की प्रथा का बड़ा समर्थक है, किंतु उसकी इस मनोवृत्ति को देखकर वृद्ध-समाज निरादर तथा कोप की भावना से पागल हो उठता है। पर क्या वह यह सोचने का कष्ट उठाता है कि इस क्रांति का मूल कहाँ है? यदि निष्पक्ष दृष्टि से विचार किया जाय, तो यह मानना पड़ेगा कि नवयुवकों की क्रांतिकारिणी भावनाओं का कारण वृद्ध जनों की अवांछनीय अवहेलना, रूढ़िग्रस्तता तथा कभी-कभी उनका स्वार्थपूर्ण अनुत्तरदायित्व ही है। शायद यह कहना बहुत उचित न होगा कि प्रायः जान-बूझकर वे ऐसा करते हैं, लेकिन इन सबके मूल में उनका घोर अज्ञान तथा उनकी दक़ियानूसी प्रवृत्तियाँ* अवश्य होती हैं। एक होनहार, यौवनोचित उमंगों से पूर्ण युवक अथवा युवती के जीवन के सुख-दुख का निबटारा केवल दो अर्ध-शिक्षित, वरन् कभी-कभी पूर्ण अशिक्षित पंडित कहलानेवाले जंतुओं की राय पर कर डालना या एक नाई की अपरिष्कृत रुचि पर छोड़ देना उत्तरदायित्व-पूर्ण नहीं कहा जा सकता। जन्मांग के कल्पित छत्तीस गुणों तथा नाड़ियों के सामने वास्तविक गुणों की अवहेलना न-जाने कितने होनहार युवकों तथा युवतियों को मिट्टी में मिला चुकी है, और न-जाने कितना अनिष्ट अभी इसके द्वारा और होना है। यह उस विश्व-विख्यात आर्य-सभ्यता के ब्राह्म विवाह का उपहास भले ही हो, परंतु उसकी वास्तविक भावना का इसमें लेश भी नहीं। यदि इसके विरुद्ध युवक-समाज विप्लव का साहस करता है, तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

यहाँ यह बताने की आवश्यकता नहीं कि जीवन का सुख और दुःख, उसकी शांति और अशांति किन अंशों तक वैवाहिक जीवन की सफलता पर निर्भर रहती है। लेकिन फिर भी इस ओर उतना ध्यान नहीं दिया जाता, जितना अन्य अनावश्यक उपकरणों पर। यदि किसी ने कभी 'गोत्र' और 'प्रवर' इत्यादि के शास्त्रोक्त बंधनों पर विचार किया होगा, तो उसे ज्ञात हुआ होगा कि प्राचीन समय में, जिसका स्मरण स्वर्ण-युग कहकर किया जाता है, विवाह-संबंध केवल एक या दो पीढ़ियों की ही नहीं, वरन् ग्यारह पीढ़ियों की समानशीलता देखकर किया जाता था। यों तो आजकल के

उच्छृंखल रीति-नीति के युग में यह सब व्यर्थ का ही झगड़ा मालूम होगा, किंतु वास्तविकता यह है कि वैवाहिक जीवन की सफलता मुख्यतः गुण और स्वभाव की पारस्परिक समानता पर ही विशेष रूप से निर्भर रहती है। इस ओर जितनी भी छान-बीन की जाय, थोड़ी है। किंतु आधुनिक समाज लेन-देन, वाह्य वैभव-प्रदर्शन तथा लौकिक शिष्टाचार के निर्वाह में ही इतना व्यस्त रहता है कि वैवाहिक संस्कार की बातों पर विचार करने का उसे अवसर ही नहीं मिलता।

अब तो विवाह के अवसर धीरे-धीरे आमोद-प्रमोद के अवसरों का ही स्थान लेते जाते हैं, जिसका ज्वलंत उदाहरण हमारी आजकल की प्रचलित सिविल मैरेज है। इसमें विवाह-कृत्य तो पाँच मिनट में ही समाप्त हो जाता है, परंतु खाने-खिलाने, नाच-रंग में चाहे जितना समय लग जाय। इसका यह आशय नहीं कि प्राचीन समय के विवाह आमोद-प्रमोद से शून्य होते थे। वरन् भेद केवल इतना ही है कि उस समय संस्कार प्रमुख तथा आमोद-प्रमोद गौण था, परंतु आज प्रथा बिलकुल विपरीत है। इसका सबसे बड़ा कुपरिणाम यह होता है कि उत्तरदायित्व की गंभीरता, जो वर और वधू को सात्त्विक भावना से रँगकर लोक-हित की कामना से धर्म-पालन की ओर प्रेरित करती थी, और आजन्म उनके जीवन को सत्पथ पर चलाती थी, अब उत्पन्न ही नहीं होने पाती, और सारा काम एक खेलवाड़-सा रह जाता है। इसकी परा काष्ठा तो उस अवसर पर होती है, जब वैवाहिक प्रतिज्ञाएँ भी, जो नैतिक एवं धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत होती हैं, तथा जो मंत्र कहलाती हैं, केवल इसीलिये कि उनमें जीवन को प्रभावित करने की अलौकिक शक्ति है, आजकल दोनो ओर के पुरोहितों द्वारा ही पढ़ दी जाती हैं। क्यों न हो! आजकल के न्यायालयों में भी जब वादी और प्रतिवादी के वकील ही दोनो ओर की बहस कर लेते हैं, तब यहीं यदि दोनो ओर के पुरोहित ही समझौता या इक़रार कर लेते हैं, तो क्या आश्चर्य है? पर हाँ, जिस प्रकार सज़ा वादी या प्रतिवादी ही भुगतता है, उसी प्रकार यहाँ भी कुपरिणाम केवल वर या वधू को ही भोगना पड़ता है।

इससे कौन इनकार कर सकता है कि आजकल का गार्हस्थ्य जीवन उतना सुखकर नहीं, और न उसमें उतनी शांति है। इन्हीं व्याधियों का इलाज 'डाइवोर्स' तथा 'स्वत्व' बिलों के द्वारा प्राप्त किए जाने की चेष्टा निरंतर की जाती है, परंतु जैसी एक साधारण कहावत है, क़ानून से अधिकार मिलता है, परंतु सुख और शांति*

---

* सुख और शांति तो तभी मिलेगी, जब विवाहों में गुण, कर्म, स्वभाव का ही विचार किया जायगा, ममता मूर्ति माता-पिता, सहृदय चाचा-चाची और प्रेम-मूर्ति भाई बहन सुयोग्य युवक-युवतियों का विवाह उनकी इच्छा से करेंगे, धन-वैभव दहेज और जाति-पाँति देखकर नहीं। इस समय तो विवाह-जैसे पवित्र संस्कार को सौदा

नहीं । वैवाहिक जीवन में उसकी प्राप्ति तो अन्य सात्त्विक नियमों के पालन से ही हो सकती है, तब क्या यह उचित न होगा कि नए नुस्ख़ों की व्यर्थ तलाश न करके हम अपने प्राचीन सिद्धांतों की ही ओर अग्रसर हों, तथा उन्हीं को जीवन में लाने की चेष्टा करें ?

बनाया जा रहा है । उसकी नींव प्रेम पर, उच्चादर्श पर, योग्यता पर नहीं है, सामाजिक संकीर्णता, पारिवारिक इच्छा और सांसारिक वैभव पर है । फिर "बोवे पेड़ बबूल कौ, आम कहाँ तें होय !"—सुधा संपादक

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये
एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने
सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—
'गोनोकिलर'
[रजिस्टर्ड]

GONO KILLER ORIGINAL REGD TRADE MARK

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ी-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए ।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता । डॉक्टरों की दवा इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में पैसा फ़िज़ूल बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए । चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है । मूल्य ४० गोली की शीशी ३) रुपया । डाक-ख़र्च आठ आना अलग ।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, (S. L.) विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४
लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

बस, एकदम धावा बोल दो !

[श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए०]

सन् १८५७ की बात है । विद्रोह की आग भारत के कोने-कोने में भली भाँति फैल चुकी थी। बड़े-बड़े अँगरेज़-अफ़सरों से लेकर अदने गोरे सिपाहियों तक को अपनी जान के लाले पड़ रहे थे । कहीं सब-के-सब देशी राज्य भी न बिगड़ उठें, यह सोचकर कूटनीति-चतुर ब्रिटिश सरकार ने प्रत्येक मुख्य-मुख्य देशी राज्य में एक-एक, दो-दो गोरा-पलटनें नियुक्त कर दी थीं। कहने को तो उन पलटनों का कार्य देशी राज्यों की रक्षा करना था, किंतु यदि विद्रोह की एक चिनगारी तक किसी राज्य में पहुँच जाती, तो क्षण-भर में ही उस राज्य के चिथड़े उड़ा दिए जाते ।

कानपुर और मेरठ में जिस दिन भारत के भोले बच्चों पर अगणित गोलियों की बौछार हो रही थी, छोटी-छोटी बालिकाएँ और स्त्रियाँ तक मशीनगनों की आग में भूनी जा रही थीं, उसी दिन, चाँदनी रात में, झिलमिलाते हुए तारों के नीचे, विलासगढ़ दुर्ग के एक सजे हुए कमरे में विलासगढ़-नरेश वारवनिताओं और मुँहलगे सभासदों के बीच में बैठे रँगरेलियाँ कर रहे थे । एक अर्ध-नग्न नर्तकी कुवासना-व्यंजक हाव-भावों द्वारा मदिरा की तरल तरंगों में बहते हुए विलासगढ़-महाराज को मुग्ध करती हुई नृत्य कर रही थी । जिस समय उसने कमर लचका - लचकाकर, आँखें मटकाते हुए गाना शुरू किया—"कमरिया नागिन-सी बल खाय ।"—महाराज मसनद पर बैठे-ही-बैठे तड़प उठे । बड़े दुलार से बोले—"नरगिस !"

श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए०

"हुज़ूर !"

"तुम्हारा गला तो ग़ज़ब ढाता है । एक प्याला और लाओ, पूरा भरकर ! और...... गजसिंह !"

"अन्नदाता !"

'तुम्हारे पायजामे का रंग बड़ा भड़कीला है। ऐसे रंग के पर्दे लगाने से हमारा आरामगाह खिल उठेगा । हा-हा-हा...! प्रधानजी !"

"क्या हुकुम है, सरकार ?"

"एक क़ैंची लाकर गजसिंह के पायजामे की म्यानी से एक छोटी-सी कतरन काटकर रख लो। कल वह नमूना बाज़ार में भेजकर पर्दे बनवा लिए जायँ ।"

"जो आज्ञा, सरकार! मगर... ..आज धावा बोला जाय, अन्नदाता !"

"धावा ?"

"हुज़ूर !"

"धावा किस पर ?"

"छावनी में जो अँगरेज़ी पलटन ठहरी हुई है, उस पर। कल मैं घोड़े पर बैठकर उधर से जा रहा था, तो शाम हो जाने की वजह से मुझे कुछ झपकी-सी आ गई। बस, हुज़ूर! वहाँ खड़े हुए दो-तीन गोरे मुझे देखकर ज़ोर से हँस पड़े। बड़े बदतमीज़ हैं, सरकार ! आपकी शान के ख़िलाफ़ भी बेहूदा बकने लगे। कहने लगे—'यहाँ का राजा पक्का शराबी है, और उसके मुसाहब भी वैसे ही हैं।'"

"क्या कहा ! यहाँ का राजा पक्का शराबी है ? उनका सिर ! हाँ......"

"तो धावा बोल दिया जाय, महाराज ?"

"हाँ, एकदम धावा कर दिया जाय। बुलाओ कमांडर को।"

एक मुसाहब कमांडर को बुला लाता है।

"क्या आज्ञा है, महाराज ?"

"बस, धावा बोल दो !"

"किस पर हुज़ूर ?"

"प्रधानजी !"

"सरकार !"

"बताओ इन्हें, किस पर धावा बोला जाय ?"

"छावनी में टिकी हुई गोरा-पलटनों पर।"

"मगर उनका क़ुसूर क्या है, अन्नदाता ! ब्रिटिश सरकार एकदम... ..."

"क़ुसूर ! क़ुसूर कुछ भी नहीं। बस, मैं जो कहता हूँ। प्रधानजी कहते हैं। एकदम धावा बोल दो। और, नरगिस, तुम ! तुम ! एक प्याला और लाओ अपने मुलायम हाथों से भरकर ! प्रधानजी ! वह गया ! धावा बोल दिया गया है न ?"

"हाँ, अन्नदाता !"

* * *

"क्या रेज़ीडेंट साहब सोता है ?"

"जी हुज़ूर !"

"बोलो, लेफ़्टिनेंट बर्नर्ड मिलना माँगता है। बड़ा अर्जेंट काम है।"

चपरासी भीतर गया। रेज़ीडेंट साहब हड़बड़ाते हुए बाहर निकल आए।

"ओ मिस्टर बर्नर्ड ! आधी रात को क्या काम आ पड़ा, भाई ?"

"ग़ज़ब हो गया मिस्टर बार्कले ! मालूम होता है, महाराज भी बाग़ी बन गया है। उसका फ़ौज हमारी छावनी की तरफ़ बढ़ रहा है। अपना सब पलटन सोया पड़ा है। सब-का-सब बीस-पचीस मिनट में ही भून डाला जायगा, तब हम क्या करेगा ?"

रेज़ीडेंट के पाँवों के नीचे से ज़मीन निकल गई। यह दुर्घटना घटित होने के बाद कल उनकी क्या दुर्दशा होगी। अपनी इस ग़फ़लत का वह क्या जवाब देंगे ? ओह ! वाक़ई ग़ज़ब हो गया ! कैसे बदमाश हैं ये हिंदोस्तानी !

रेज़ीडेंट साहब रात की पोशाक पहने हुए ही मोटर-गैरेज की ओर भागे। जल्दी से फाटक खोला, और मोटर में बैठकर क़िले की ओर उड़ चले। इस समय उनका दिल धड़क रहा था, और स्टीयरिंग ह्वील पर रक्खे हुए हाथ काँप रहे थे।

* * *

"क्या है ?"

"रेज़ीडेंट साहब आए हैं, हुज़ूर !"

"कौन ! रेज़ीडेंट ?"

"हुकुम अन्नदाता !"

"पूछो, क्या चाहता है ?"

"हुज़ूर से मिलना चाहते हैं, बड़ा ज़रूरी काम है।"

"कह दो, अभी फ़ुरसत नहीं है। कल सबेरे हाज़िर हों।"

"हुज़ूर, वह हाथ जोड़ते हैं, कहते हैं, बड़ा ज़रूरी काम है।"

"क्या हाथ जोड़ता है ?"

"हाँ, सरकार !"

"नीचे खड़ा है न ?"

"हुक्म ?"

"कहो, नीचे खड़ा होकर हाथ जोड़े । हम खिड़की से देखेंगे ।"

दरबान नीचे चला गया । महाराज ने खिड़की खोली, देखा, रेज़ीडेंट साहब ज़मीन तक झुके हुए दोनो हाथ जोड़े खड़े थे ।

"अच्छा, अब ऊपर आ सकता है । प्रधानजी ! इसे ऊपर बुला लो ।"

प्रधानजी स्वयं नीचे जाकर रेज़ीडेंट को बुला लाए । महाराज ने बैठे-ही-बैठे प्रश्न किया—"कहिए, क्या काम है ?"

"हुज़ूर ने अपनी फ़ौज को किस पर धावा बोलने का हुक्म दिया है ? हमारी पलटनें फिर यहाँ किस वास्ते रक्खी गई हैं ? आप आज्ञा दें, उसी पर धावा कर दिया जाय ।"

"प्रधानजी, बोलो, किस पर धावा किया जाय ?"

"हैं...हुज़ूर !"

"बोलो, जल्दी बोलो, रेज़ीडेंट साहब क्या पूछ रहे हैं ! किस पर धावा किया जाय ?"

"हुज़ू...र, इन दक्षिणी पहाड़ियों पर रहनेवाले भीलों ने बड़ा तंग कर रक्खा है ।"

"हाँ, तो उन पर धावा किया जाय ?"

"जी हाँ, सरकार । सारी प्रजा उनसे तंग आ गई है ।"

"अच्छा, रेज़ीडेंट साहब ! आप भीलों पर धावा कर दीजिए ।"

"बहुत अच्छा, हुज़ूर ! पर अभी तो रात है । रात में धावा करने से अपनी फ़ौज को नुक़सान पहुँचने का डर है । हुज़ूर के हुक्म के मुताबिक़ सबेरा होते ही भीलों पर हमला कर दिया जायगा ।"

"बहुत ठीक ।"

"तो हुज़ूर अपने कमांडर-इन-चीफ़ को वापस लौट आने का हुक्म लिख भेजें ।"

"प्रधानजी, रेज़ीडेंट साहब जो कुछ कहते हैं, वह फ़ौरन् लिख दो । और, नरगिस ! लाना एक प्याला और ।"

* * *

रेज़ीडेंट ने रातोंरात तार खड़खड़ा दिए । सबेरा होते ही विलासगढ़-नरेश से ब्रिटिश पलटनों पर हमला करने के लिये, दो घंटे के भीतर ही, जवाब तलब किया गया । महाराजा साहब के हाथों के तोते उड़ गए । रात का सारा नशा काफ़ूर हो गया । उन्हें अब मालूम हुआ कि शराब के नशे में वह कैसी बेवक़ूफ़ी का काम कर बैठे हैं । गवर्नमेंट को अब क्या जवाब दिया जाय । यदि सच-सच लिख भेजें कि शराब के नशे में उनसे यह ग़लती हो गई, तो क्या सरकार उन्हें क्षमा करेगी । और, अगर न करे, तो फिर क्या होगा ? उन्हें चुपचाप गद्दी से उतर जाना पड़ेगा, जैसे वह इस राज्य के कुछ थे ही नहीं । उफ़् ! कितना कष्टप्रद जीवन होगा । तो अब करें क्या ? रेज़ीडेंट के बँगले पर जायँ । शायद ख़ुशामद करने से मान जाय । पर रात को उसके साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया था । वाइसराय को तार देते समय उसने अपनी तरफ़ से दो-चार और जड़ दी होंगी । इस समय तो ख़ूब जला-भुना बैठा होगा । फिर किया क्या जाय ? यों ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से तो कुछ न होगा । दो घंटे के भीतर ही जवाब न भेजा गया, तो मामला और संगीन हो जायगा । हाँ, रेज़ीडेंट के पास जाना ही ठीक है । रुपए का लालच देने से शायद उसका क्रोध कुछ शांत हो । पर अब वह भी करेगा क्या ? मामला तो उसके हाथ के बाहर जा चुका है । ख़ैर, एक दफ़ा उससे मिलकर देखूँ तो सही । "अरे, कोई है ? जल्दी मोटर तैयार करो ।"

* * *

रेज़ीडेंट साहब फूले न समा रहे थे। क्या फाँसा है बच्चू को! अब शराब पीने का सारा मज़ा निकल जायगा। कल किस तरह अकड़-अकड़कर बातें कर रहा था। मतलब निकालने के लिये कल मुझे हाथ तो जोड़ने पड़े, पर अब उस अपमान का बदला मय सूद के वसूल न किया, तो फिर बात ही क्या रही। हज़रत को गद्दी से उतारने का हुक्म अब आता ही है। शीघ्र ही आटे-दाल का भाव मालूम हुआ जाता है।

"हुज़ूर, महाराज पधारे हैं। आपसे मिलना चाहते हैं।"

रेज़ीडेंट ने हँसकर, खिड़की से झाँककर देखा, बँगले के फाटक के सामने महाराज की रोल्स खड़ी थी। उसने जान-बूझकर ज़रा ज़ोर से कहा—"महाराज से बोलो, साहब को अभी फ़ुरसत नहीं। हम अभी नहीं मिल सकता।"

जिस प्रकार एक कुत्ता फटकारे जाने पर दुम दबाकर चुपचाप चल देता है, उसी प्रकार महाराज भी मुँह उतारकर चलते बने। रेज़ीडेंट का यह तीखा वाक्य उनके कलेजे में चुभा तो सही, किंतु भीतर तक गड़ न सका।

* * *

"प्रधानजी!"

"हुज़ूर!"

"अब क्या करें?"

"कुछ समझ ही में नहीं आता सरकार! शराब के नशे ने मामले को बहुत दूर तक बढ़ा दिया है। कल मैं भी शराब बहुत पी गया था, वरना बात यहाँ तक न पहुँच पाती। मुझे तो यह सब फ़साद गजसिंह का ही मचाया हुआ जान पड़ता है। आपके मज़ाक़ से चिढ़कर उसी ने छावनी पर धावा किए जाने की खबर रेज़ीडेंट साहब को करवा दी होगी।"

"अच्छा, ज़रा गजसिंह को बुलवाओ तो।"

दरबान थोड़ी ही देर में गजसिंह को बुला लाया।

"क्या आज्ञा है, महाराज?"

"मुझे तुमसे ऐसी नमकहरामी की स्वप्न में भी आशा न थी, गजसिंह! क्या तुम्हारी सात पुश्तों को रोटी का टुकड़ा डालने का यही नतीजा है! अपने मालिक के किए हुए मामूली-से मज़ाक़ पर चिढ़कर छावनी पर धावा करने की बात तुमने रेज़ीडेंट से जाकर जड़ दी?"

"मुझे आपका वह मामूली-सा मज़ाक़ बहुत बुरा अवश्य लगा था, महाराज! और इसीलिये मैं महफ़िल से उठ भी आया था। किंतु मैं रेज़ीडेंट के यहाँ नहीं गया था, वरन् अपने घर के एक एकांत कोने में बैठकर विलासगढ़ छोड़ देने का विचार कर रहा था। मुझे आप पर आई हुई आपत्ति का पूरा-पूरा पता लग चुका है। यदि आप चाहें, तो अब भी अपने राज्य की रक्षा कर सकते हैं। आप गवर्नमेंट को सिर्फ़ इतना ही लिख भेजें कि हमारा धावा केवल दिखावे का धावा था। हमने यह देखने के लिये छावनी की पलटनों पर हमला किया था कि वे हमेशा विद्रोहियों से हमारी रक्षा करने को तैयार रहती हैं, या नहीं।"

* * *

दूसरे ही दिन। गवर्नमेंट से संतोषप्रद उत्तर आ जाने के बाद। रात के ग्यारह बजे।

"नरगिस!"

"हुज़ूर!"

"आज की विजय की खुशी में तो प्याले-पर-प्याले उड़ने चाहिए।"

"जी हाँ, सरकार!"

"और, प्रधानजी! क्या गजसिंह चला गया! जाने दो। अपनी अकड़ में ही मरा जाता था।... गँवार *!"

---

* लेखक के अप्रकाशित कहानी-संग्रह 'धूप-छाँह' से।

सृष्टि-रचना में प्रयोजन

[श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०]

(गतांक से आगे)

स्वभाव, आकस्मिक तथा प्रयोजन के विषय में इतना आरंभिक कथन करने के पश्चात् आवश्यक जान पड़ता है कि हम वैज्ञानिकों की साक्षियाँ इस बात के लिये दें कि सृष्टि में प्रयोजनशीलता है—

(1) The body of one of the higher animals consists of many billions of living cell-units, amongst which there is a *co-ordination and regulation* that human ingenuity can never hope to imitate.

(१) उच्च जंतुओं के शरीर में लाखों जीवित कोष्ठ हैं। इनके मध्य में ऐसा सहयोग और नियंत्रण है कि मनुष्य का चातुर्य उसका अनुकरण नहीं कर सकता।

(2) Similar types of cells are aggregated together into tissues designed to perform some specific function in the body, and various tissues are united together to form organs which again have *an allotted task to perform.*

(२) समान प्रकार के कोष्ठ मिलकर तंतु बनाते हैं, जो शरीर में नियत प्रयोजन की सिद्धि करते हैं। भिन्न-भिन्न तंतुओं के मिलने से गोलक बनते हैं। इनका भी शरीर में विशेष उद्देश है।

(3) Nearly every tissue of the body secretes certain chemical substances which are carried by the blood-stream to some entirely different tissue in some other part of the body, always for a *specific purpose.*

(३) शरीर का लगभग प्रत्येक तंतु कुछ रासायनिक द्रव्यों को निकालता है, और इन द्रव्यों को रक्त-नाड़ियाँ शरीर के अन्य भाग के तंतुओं में ले जाती हैं, जिससे एक निश्चित प्रयोजन की सिद्धि हो सके।

(4) How this remarkable provision is to be reconciled with the view that *life is merely a fortuitous concourse of chemical* and physical activities, all resulting exclusively from natural selection, *it is difficult to see.*

(४) इस विचित्र प्रबंध को दृष्टि में रखते हुए उस पक्ष से सहमत होना बहुत कठिन है, जो कहता है कि जीवन केवल भौतिक या रासायनिक क्रियाओं का केवल एक आकस्मिक संयोग है, जो प्राकृतिक निर्वाचन के कारण ही हुआ है।

(5) So far, no life has been known to make its appearance on the earth's surface except from antecedent life.

(५) अब तक भूमंडल पर कोई जीवन विना पहले जीवन के उत्पन्न हुआ पाया नहीं गया।

(6) Many attempts have been made to generate life anew by packing together suitable materials and subjecting them to a suitable temperature, but if the germs of pre-existing life have been rigorously excluded the attempts hitherto have been a failure.

(६) उपयुक्त वस्तुओं को मिलाकर और उनको उपयुक्त ताप में रखकर जीवन को उत्पन्न करने के बहुत-से प्रयास हो चुके हैं। परंतु जहाँ कहीं पूर्व-विद्यमान जीवन-कीटाणुओं को सर्वथा बहिष्कृत कर दिया गया, वहाँ सफलता नहीं मिल सकी।

(7) It is true that Charlton Bastian claimed to have obtained the evolution of living organisms from inorganic sources. He made a solution of sodium silicate and per-nitrate of iron in distilled water, and sterilised the medium at 110% to 115% in a hermetically sealed tube; and after the solution has been left to itself for some months, micro-organisms of many types are said to have appeared.

(७) यह सच है कि चार्लटन बैस्टियन ने जीवन-शून्य वस्तुओं से जीवन-कोष्ठों को विकसित करने का दावा किया था।

(8) No other observer has succeeded in repeating the experiment, and it *seems probable that the* mixture used *was imperfectly sterilised.*

(८) कोई अन्य वैज्ञानिक इस प्रयोग में सफलता प्राप्त नहीं कर सका। ऐसी शंका होती है कि जो घोल तैयार किया गया, वह पूर्णतया जीव-शून्य न हो सका।

(9) Pasteur claimed to have proved conclusively that a perfectly sterilised culture would, in the absence of added germs from without, remain sterile for years. (P. 215)

(९) पास्टर ने तो भली भाँति सिद्ध कर दिया कि यदि किसी घोल को पूर्णतया जीव-शून्य कर दिया जाय, और उसमें बाहर से जीव न आ सकें, तो वह घोल वर्षों जीव-शून्य रहेगा, अर्थात् उसमें कृमि उत्पन्न न हो सकेंगे।

(10) Suppose that chemists some day bring about spontaneous generation in the laboratory. Presumably they would be reproducing a process that must at some past age have occurred on the earth. But *that would not prove that the earth generated life.*

(१०) कल्पना करो कि रसायनज्ञ किसी दिन प्रयोगशाला में स्वतंत्रतया (विना जीव की विद्यमानता के) जीवन उत्पन्न कर सकें, तो वस्तुतः वे एक ऐसी क्रिया को दुहराएँगे, जो भूमि पर पहले हो चुकी है। परंतु इससे यह तो सिद्ध नहीं होता कि पृथिवी स्वयं जीवन को उत्पन्न कर देती है।

(11) Quite concernably life may be something not only ultra-terrestrial but even immaterial, as real as matter and energy but different, and utilising them for its own purpose.

(११) संभव है, जीवन न केवल पृथिवी के ही बाहर की चीज़ हो, किंतु अभौतिक भी हो। वह इतना ही वास्तविक हो, जैसा महाभूत या शक्ति, और वह इन दोनो को अपने कार्य का साधन-मात्र बनाता हो।

(12) It certainly seems as if life is something which possesses the power of displaying itself amidst terrestrial surroundings by utilising for a time the energies of the complex molecular aggregates which come into existence on this planet, and then it seems to disappear whence it came. *It is perpetually arriving and perpetually disappearing.*

(१२) जीवन कोई ऐसी संज्ञा प्रतीत होती है, जिसमें पार्थिव पदार्थों के मध्य में अपने को प्रकट करने की शक्ति है। पृथिवी पर जो जटिल अणु-समूह उत्पन्न होते हैं, उनको यह संज्ञा अपने काम में लाती है। फिर वहीं चली जाती है, जहाँ से आई थी। यह निरंतर आती और निरंतन जाती रहती है।

(13) Despite the success of the chemist in manufacturing artificially certain organic substances, he *has not yet succeeded in manufacturing protein*; and even so there is an immense gap between making organic matter and making an organism.

(१३) यद्यपि रसायनज्ञों ने कुछ आर्गनिक वस्तुएँ (वे वस्तुएँ, जो जीवित शरीर में ही बन सकती हैं) बनाने में सफलता प्राप्त की है, परंतु वे प्रोटीन नहीं बना सके। फिर दूसरी बात यह है कि आर्गनिक वस्तुएँ बनाने और जीवन में तो अभी बहुत दूरी है।

(14) What life is, how and whence it came, and why it should make use of highly complex molecular aggregates rather than of simpler forms, we have not positive knowledge whatsoever. (p. 218)

(१४) हमें अभी पता नहीं कि जीवन क्या है, कहाँ से आता है, और वह अणुओं के जटिल समूहों का ही क्यों प्रयोग करता है, साधारण का क्यों नहीं।

(15) In fact, all the activities of the organism, including an almost inconceivable number of the most intricate and delicately adjusted cell activities, are co-ordinated, each occurring just at the right time. What is the *explanation of such wonderful co-ordination*? (p. 219)

(१५) वस्तुतः जीवन की समस्त क्रियाएँ, जिनमें असंख्य जटिल और अति सूक्ष्म कोष्ठों की क्रियाएँ भी शामिल हैं, सहयोग प्रकट करती हैं। ये ठीक उसी समय होती हैं, जब आवश्यकता होती है। इस आश्चर्य जनक सहयोग की व्याख्या कैसे हो सकेगी?

(16) All physiological activity is, it is true, *apparently* dependent on definite physical and chemical causes, but the physiologist usually calls the cause a 'stimulus', and the materialist, *without logical justification*, *identifies stimulus and response with physical and chemical cause and effect.* (p. 220)

(१६) यह सच है कि समस्त शारीरिक क्रियाएँ भौतिक और रासायनिक क्रियाओं के कारण होती हुई प्रतीत होती हैं । परंतु शरीर-विज्ञान-वेत्ता कारण को 'प्रेरणा' कहता है, और भौतिकवादी बिना किसी युक्ति के प्रेरणा और प्रतिक्रिया को भौतिक तथा रासायनिक कारण - कार्य कह बैठता है ।

(17) We have no means of tracing the stream of matter or of energy through a living organism, and inferences drawn from the supposition that such a tracing is possible are necessarily invalid. (p. 220)

(१७) किसी जीवित शरीर में प्रकृति या शक्ति की धारा के प्रवाह को देखने का हमारे पास कोई साधन नहीं । और, इन साधनों की कल्पना करके जो अनुमान निकाला जाता है, वह सर्वथा अनुचित है ।

(18) The vitalistic hypothesis is that the co-ordination is effected by the presence of some kind of internal vital impetus or entelechy.…… This impetus or entelechy does not seem to be a physical factor, but some sort of persisting originating impulse, expressing itself blindly and unconsciously. (p. 221)

(१८) जीवनवादियों* की धारणा है कि इस सहयोग का कारण एक प्रकार की आंतरिक जीवन-प्रेरणा है ।……उसकी यह प्रेरणा भौतिक नहीं है । किंतु कोई विशेष प्रकार की स्थायी स्फूर्ति उत्पन्न हो जाती है, जो अंधेपन से बिना ज्ञान के प्रकट होती है ।

(19) In order to guide effectively the excessively complex physical and chemical processes occurring in the living organism, the vital impetus would *apparently require a superhuman knowledge of these processes.* Yet the vital impetus, the entelechy, is assumed to act blindly and unconsciously. Indeed the materialistic hypothesis is less unintelligible than the vitalistic. (p. 221—'Science and Theology' by F. W. Westaway)

(१९) शरीर के भीतर जो अत्यंत जटिल भौतिक तथा रासायनिक कार्य होते रहते हैं, उनके करने के लिये इस जीवन-स्फूर्ति को मनुष्यातीत जानकारी की आवश्यकता होगी । फिर भी न-जाने क्यों मान लिया गया है कि यह जीवन-स्फूर्ति अंधेपन से और बिना जाने कार्य करती है । बात यह है कि जीवनवादियों की धारणाएँ भौतिकवादियों की धारणाओं से भी अधिक अविश्वसनीय हैं ।

(वेस्टावे की साइंस और थिऑलॉजी)

(1) What the exact limits of natural selection are is a question for biological enquiry. But it has always one condition; it postulates an organic tendency to maintain and perpetuate life. (p. 413)

---

* जीवन-वाद एक विशेष वाद है, जो चेतन आत्मा को तो नहीं मानता, किंतु विशेष जीवन-स्फूर्ति मानता है, जो ज्ञान-शून्य है । इसे अँगरेज़ी में वाइटालिज़्म कहते हैं ।

(१) प्राकृतिक निर्वचन की ठीक सीमाएँ क्या है, यह जीवन-शास्त्र के लिये मीमांसनीय समस्या है। परंतु एक बात निश्चित है। इसके अनुकूल शरीर का स्वभाव है कि जीवन को स्थायी और नैरंतर्यशील रक्खा जाय।

(2) Natural selection only begins to operate when life with its characteristic selective activities is already present. (p. 413)

(२) प्राकृतिक निर्वचन नहीं होता है, जहाँ जीवन अपने निर्वचनशील स्वभाव के साथ पहले ही उपस्थित हो जाता है।

(3) This may be taken as the view of unconscious purpose, or immanent will, as the determining force of the world's progress. (p. 413)

(३) ऐसा माना जा सकता है कि संसार की उन्नति का मुख्य कारण एक ज्ञान-शून्य प्रयोजन या व्यापक इच्छा है।

(4) But it is hard to understand. There must be some ground or reason determining the life-impulse to take one direction rather than another. (p. 413)

(४) परंतु ऐसा मानना कठिन है। जीवन-स्फूर्ति एक प्रकार से ही क्यों कार्य करे, और दूसरे प्रकार से क्यों न करे, इसके लिये भी तो कोई हेतु होना चाहिए।

(5) How are we to describe that force, or impulse, or will which fills the world with its myriad forms? Can we identify its unconscious purpose with the direction that it has taken? To do so would be to ignore the influence of the environment which, operating through the process of natural selection, digs the channels along which the river of life must flow and blocks its course in other directions. (p. 414)

(५) उस शक्ति, स्फूर्ति या इच्छा की कैसे व्याख्या की जाय, जो संसार में असंख्य रूपों में विद्यमान है। क्या हम समझें कि ज्ञान-शून्य प्रयोजन और कार्य करने की रीति दोनो एक हैं? यदि ऐसा मानें, तो हम उस परिस्थिति की उपेक्षा करेंगे, जिसके कारण प्राकृतिक निर्वाचन द्वारा वे मार्ग बनते हैं, जिनमें जीवन का प्रवाह बहता है, और जिनके बाहर नहीं जा सकता।

(6) We may suppose that the tendency is towards consciousness. ……But how are we to understand an unconscious determination towards consciousness? It must be internal, something belonging not to structure but to life. (p. 415)

(६) हम मान सकते हैं कि यह ज्ञान-शून्य प्रवृत्ति ही ज्ञान उत्पन्न कर देती है।… . परंतु ज्ञान-शून्य प्रवृत्ति से ज्ञान कैसे उत्पन्न हो सकता है? इसके लिये तो कोई अशारीरिक जीवन-संबंधी कारण होना चाहिए।

(7) The purpose of which alone we have immediate experience arises in our own minds and is

carried out by our own actions. (p. 415—'Moral Value of Idea of God' by Sorley)

(७) हमारा अनुभव है कि प्रयोजन हमारे मन में उत्पन्न होता और हमारे कार्यों द्वारा सिद्ध होता है। (सोरले का 'ईश्वरीय भाव का सदाचार-संबंधी मूल्य')

(1) Physical sciences, together with astronomy and chemistry and minerology, are all based on the strict and universal validity of the principle of causality. (p. 147)

(१) सब भौतिक शास्त्र, जैसे ज्योतिष, रसायन, खनिज, कारण-कार्य के अटल और व्यापक नियम का प्रतिपादन करते हैं।

(2) Biology is approaching more and more to the explicit assumption of the universal validity of causal relations.……When an exception occurs in the application of these empirically established rules, this is not attributed to any skip of failure in the causal relation but rather to a want of knowledge and skill in the way that the rule is applied. (p. 147)

(२) जीवन-शास्त्र कारण-कार्य-संबंध के अटल और व्यापक नियम की ओर आ रहा है।……जहाँ कहीं इस नियम का अपवाद पाया जाता है, वहाँ इसे नियम का उल्लंघन नहीं, प्रत्युत अपने ज्ञान की अल्पता कहते हैं। अर्थात् हमें पूर्ण ज्ञान न होने के कारण अपवाद प्रतीत होता है।

(3) If we could study the acts of the human beings at very close a intimate quarters, we should find that they can be accounted for through causes which lie in the character or in the momentary emotional tension or in the specific external environment……If we can not find any motive as an explanation, we must attribute this not actually to the absence of motive butr ather to the unsatisfactory nature of our knowledge of the peculiarities of the situation. (p. 153-154)

(३) यदि हम मानवीय कार्यों का ध्यान-पूर्वक अवलोकन करें, तो पता चलेगा कि उनके इन तीन में से कोई कारण हैं—आंतरिक योग्यता, क्षणिक उत्तेजना या विशेष बाह्य परिस्थिति।…… यदि हमें कोई प्रयोजन न जान पड़े, तो यह नहीं समझना चाहिए कि प्रयोजन है ही नहीं। बात यह है कि हमारे पास उसके जानने के साधन नहीं।

(4) Present-day scientific procedure in psychology is founded practically exclusively on the principle of causal inter-relations and the assumption of an active law of causality which permits no exceptions. (p. 155)

(४) आजकल के मनोवैज्ञानिक अन्वेषण सब इसी नियम के आधार पर किए जाते हैं कि कारण-कार्य का नियम अटल है, और बिना किसी अपवाद के कार्य कर रहा है।

(5) The principal of causality must be held to extend even to the highest achievements of the human soul. We must admit that the mind of each one of our greatest geniuses—Aristotle, Kant, or Leonardo, Goethe or Beethoven, Dante or Shakespear—even at the moment of its highest flights of thought or in the most profound inner workings of the soul, was subject to the causal fiat and was an instrument in the hands of an almighty law which governs the world. (p. 156)

(५) मनुष्य की उच्चतम सिद्धियों में भी कारण-कार्य का नियम पाया जाता है। हमें मानना पड़ता है कि हमारे महान् पुरुष अरस्तू, कांट, ल्योनार्डो, गेटे, बीथोवेन, डांट या शेक्सपियर अपने उच्चतम विचारों या आंतरिक आत्मिक उल्लासों में भी उस कारण-कार्य के अटल और अपवाद-रहित नियम के बाहर न थे, जो सृष्टि पर शासन कर रहा है।

(6) The last goal of every science is the full and complete application of the causal principle to the object of research. (p. 158)

(६) प्रत्येक साइंस (विज्ञान) का अंतिम उद्देश्य यह है कि अन्वेषणीय विषय में कारण-कार्य का नियम पूर्णतया लागू हो।

(7) Amid the all-round causal sequence in natural phenomena is there still room for the free and responsible act of the will of the individual? (p. 159—'Where is Science going?' by Max Planck)

(७) प्राकृतिक दृश्यों में सर्वतंत्र कारण-कार्य-नियम के होते हुए भी व्यक्तिगत स्वतंत्र और उत्तरदायित्व-पूर्ण इच्छा-शक्ति के प्रदर्शन के लिये पर्याप्त स्थान है।

(मैक्स प्लांक का 'विज्ञान किधर जा रहा है?')

(1) It is easy to make too much of the cruder forms of the struggle and existence, of nature red in tooth and claw with rapine, of the Hobbesian warfare—each for himself and extinction take the hindmost; but more accurate Biology discloses not only the large proportion of time and energy involved in parental care and mutual aid among kindred, but the great rewards that have gone to those animals that show other-regarding endeavours and what amounts to self-subordination. (p. 224)

(१) जीवन-संग्राम के निकृष्टतम रूपों के विषय में अत्युक्ति करना आसान है। जैसे लोग कहा करते हैं कि प्रकृति निर्दयता-पूर्ण है। इसमें मार-काट और अत्याचार मचा ही रहता है, और नाश ही इसका उद्देश्य है। परंतु सच्चे जीवन-शास्त्र के अध्ययन से पता चलता है कि पैत्रिक स्नेह और भ्रातृसहानुभूति में अधिक-से-अधिक शक्ति और समय व्यतीत होता है। और, जो प्राणी परोपकार और आत्मत्याग में अधिक भाग लेते हैं, उन्हें अंत में अच्छा फल मिलता है।

(2) It is not suggested that animals are ethical agents, for there is no warrant for crediting them with general ideas, but the point is

that there has been a long evolution of the incipient virtues, in raw material, of good conduct, such as courage, affection, control and sympathy, and many animals are morally admirable, along certain lines at least. But besides the occurrence of the primary virtues among animals, we must recognise that they have been rewarded in the course of Organic Evolution with survival and with success. *There is an evolution of ethics*, but *there is also an ethics of evolution* (p. 224)

(२) हमारा यह तात्पर्य नहीं कि पशु अपने आचार के लिये उत्तरदाता हैं, क्योंकि उनमें तर्क-शक्ति मानने के लिये कोई प्रमाण नहीं। परंतु कहना यह है कि उनमें सदाचार के बीज का विकास होता आया है। यह वह कच्ची धातु है, जिससे सदाचार का निर्माण होता है, जैसे साहस, स्नेह, संयम तथा सहानुभूति। कुछ पशु तो, एक अंश में, सदाचार के मार्ग में प्रशंसनीय हैं। हमें यह भी मानना पड़ेगा कि जहाँ पशुओं में आरंभिक आचार विद्यमान है वहाँ उन्हें इसका इनाम यह भी मिला है कि उनकी संतति स्थित है, और वे सफल हैं। जहाँ आचार-शास्त्र का विकास है, वहाँ विकास का भी आचार-शास्त्र है।

(3) From the amoeba, engaged in hunting a smaller amoeba, upto the chimpanzee, engaged in joining two bamboo lengths together to make a rod long enough to reach a coveted fruit, there is evidence of mentality; and when it does not take the form of experiment, imaging, or ideation, it may be expressed in joy and in the bent bow of purpose. (p. 235—'Biology and Human Progress' by I. Arthur Thomson)

(३) एक अमीवा (क्षुद्र जंतु) से लेकर, जो अपने से छोटे अमीवा को पकड़ना चाहता है, उस चिंपैंज़ी बंदर तक, जो दो बाँस के टुकड़ों को जोड़कर फल तोड़ने के लिये एक लंबी लाठी बनाना चाहता है, सभी पशुओं में बुद्धि के चिह्न हैं। जब यह बुद्धि प्रयोग, कल्पना या विचार का रूप नहीं रखती, तो हर्ष और प्रयोजनशीलता के रूप में प्रकट होती है।

('जीवन-शास्त्र तथा मानवीय उन्नति'—आर्थर टाम्सन)

इतना देखने के पश्चात् यह प्रश्न होता है कि यदि सृष्टि प्रयोजनशील है, तो इसका प्रयोजन है क्या ? जो लोग वाइटालिस्ट या जीवन-संप्रदाय के समान ज्ञान-शून्य प्रयोजन (unconscious purpose) के पक्ष में है, वे तो वस्तुतः प्रयोजन का अर्थ भी नहीं समझते। प्रयोजन के लिये ज्ञान आवश्यक है, और प्रयोजन की सिद्धि के लिये पूर्ण ज्ञान। सृष्टि का प्रयोजन क्या हो सकता है ? जिस मेज़ पर बैठकर मैं लिख रहा हूँ, उसका क्या प्रयोजन है ? क्या उसका कोई अपना प्रयोजन है ? वस्तुतः मेज़ जड़ है। उसका अपना कोई प्रयोजन हो नहीं सकता।

मैंने अभी ऊपर लिखा है कि प्रयोजन के लिये ज्ञान की आवश्यकता है, और उसकी सिद्धि के लिये पूर्ण ज्ञान की। संभव है, पाठक मेरे आशय को न समझे हों। इसलिये इन दो शब्दों की

मीमांसा कर दी जाय। बच्चा रोटी माँगता है। उसकी इस माँग का विशेष प्रयोजन है। उसकी यह माँग व्यर्थ नहीं। उसका कुछ अर्थ है, और इस अर्थ का उसे ज्ञान है। परंतु घर में रक्खे हुए कच्चे आटे से रोटी कैसे बनेगी? इसकी सिद्धि माता के पूर्ण ज्ञान से ही हो सकती है। माता जानती है, किस प्रकार आटा गूधूँगी, कैसे आग जलाऊँगी, और किस प्रकार अंत में, पचासों छोटी-बड़ी क्रियाओं के पश्चात्, रोटी तैयार होगी। रोटी के दो अर्थ हैं – एक बच्चे के लिये, दूसरा माता के लिये। उस घड़े के लिये, जिसमें आटा रक्खा है, न आटे का कुछ अर्थ है, न रोटी का। उस चूल्हे के लिये, जिसमें रोटी पकती है, न आग का कुछ अर्थ है, न रोटी का। जिस थाली में रोटी रक्खी जाती है, उसके लिये रोटी एक निरर्थक वस्तु है। जिसके कारण वस्तु अर्थवाली होती है, जिसके कारण उसका मूल्य निश्चित होता है, उसका तो इन जड़ पदार्थों में सर्वथा अभाव है। अतः उनकी अपेक्षा से तो सभी संसार निरर्थक, निष्प्रयोजन तथा मूल्य-शून्य प्रतीत होगा। यदि आप अधिक गहराई में जाइए, तो ये वस्तुएँ स्वयं न कोई अर्थ रखती हैं, न प्रयोजन और न मूल्य। इन्हें अर्थ तो कोई और देता है। इन्हें प्रयोजनशील या मूल्यवान् बनाना किसी अन्य संज्ञा का काम है। वैज्ञानिक संसार को यह जगत् क्यों प्रयोजन-शून्य प्रतीत हुआ? इसका एक कारण था। वह जिन जड़ पदार्थों के अन्वेषण में लगे हुए थे, उनका मूल्य वह उन्हीं की अपेक्षा से लगाना चाहते थे। यह उनका एकमात्र दुष्प्रयास था। और, तमाशा तो यह कि वह इस प्रयास में अपने को भी भूल गए। ड्रमंड महाशय ने क्या अच्छा कहा है—

"The whole mistake of naturalism has been to interpret Nature from the standpoint of the atom—to study the machinery which drives this great moving world simply as machinery, forgetting that the ship has any passengers, or the passengers any captain or the captain any course." (p. 12—The Ascent of Man)

अर्थात् भौतिक साइंस की सबसे बड़ी भूल यह थी कि समस्त सृष्टि की परमाणु के दृष्टिकोण से व्याख्या की गई। जो यंत्र इस बड़े भारी ब्रह्मांड को चला रहा है, उसे केवल यंत्र ही मान लिया गया। यह लोग भूल गए कि जहाज़ में यात्री भी हैं, और यात्रियों में कप्तान भी है, और कप्तान को किसी मार्ग पर जहाज़ चलाना है।

(ड्रमंड की 'मनुष्य-उत्तरण')

(क्रमशः)

स्त्री और पुरुष
दोनो के लिये समान फ़ायदेमंद
मणितैल
इस तैल को मस्तक पर लगाने से बाल चिकने और चमकीले रहते हैं, उनमें सफ़ेदी आने नहीं पाती, और जड़ें मजबूत हो जाने से बाल गिरते नहीं हैं।
क़ीमत ५ तोले की शीशी की १) रु०
आतंकनिग्रह औषधालय, जामनगर-काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड कं०, चौक

आया-न आया*

[पु० श्रीप्रतापनारायण 'कविरत्न']

मीन मरे पीछे रत्नाकर फिर आया, तो क्या आया।
शाखी सूखे पीछे ऋतुवर फिर आया, तो क्या आया॥ टेर॥
विना नीर पी, पर पी-पी कर मरा पपीहा तड़फ-तड़फ।
उमड़-घुमड़ करके धाराधर फिर आया, तो क्या आया॥ १॥
प्राण-पखेरू स्वयं उड़ गए मुग्ध पद्मिनी के सर में।
गगनांगण पर दिव्य दिवाकर फिर आया, तो क्या आया॥ २॥
भ्रमरी मरी बिलखकर, अपने मन की मन में बात छिपा।
कांत कमल पर यौवन सुंदर फिर आया, तो क्या आया॥ ३॥
चारु चकोर चित्त में जलकर भू पर भस्मीभूत हुआ।
सुधा छिड़कता हुआ सुधाधर फिर आया, तो क्या आया॥ ४॥
अपने पर बलिदान देखकर लघु पतंग का, दीपक को—
सत्यासत्य प्रेम का अंतर फिर आया, तो क्या आया॥ ५॥
कोकिल-वाणी वीणा टूटी, तार-तार सब तार हुए।
रूप मंजरी-सहित आम पर फिर आया, तो क्या आया॥ ६॥
हंसा† उड़ गया राजहंस का देख हंस को अस्त हुआ।
चुगा चुगाने मुक्ता-सागर फिर आया, तो क्या आया॥ ७॥
चिड़ीमार या बने शिकारी अबल जीव-हिंसा करके।
दया-धर्म-दर्पण नयनों पर फिर आया, तो क्या आया॥ ८॥
भीषणतम भूकंप हो गया धरा धरा में धसक गई।
भूला-भटका शाम हुए घर फिर आया, तो क्या आया॥ ९॥
हाथ-पैर कट गए, हो गए बलधारी ही अधिकारी।
दाँव ध्यान में निज वैरीहर फिर आया, तो क्या आया॥ १०॥
छूँमंतर हिंदुत्व हो गया पैंट-कोट-बूटों में मिल।
भारत को स्वराज्य का मंतर फिर आया, तो क्या आया॥ ११॥

---

* कवि की अति शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पाँचवीं पुस्तक 'नवनिकुंज' से। पुरोहित प्रतापनारायणजी की यह कविता बहुत सुंदर बनी है।—सुधा-संपादक † आत्मा, हंस और सूर्य।

छंदोगति की रूप-रेखा

[श्रीयुत वचनेशजी]

(गतांक से आगे)

त्रिविपर्ययी लीला व मोहगति

गीता छंद—
१२३२ विषम विश्व-गति,
न पल एक थिति।
द्व्यावृत गीता वा गोमोहित छंद—
१२, ६२३२ निशा, अश्रु
बहा,ती, जा रही,
उषा, राग-रँगी, मुस,का रही,
१२४४३२ हुआ,दुख सुख,-मय जब, प्रात ही,
रहे, द्वंद्व न, क्यों दिन, रात ही।

त्र्यावृत —
भगे, वीर निशा,चर, वृंद तकीं, गिरि, कंदरा;
जगे, द्विजगण, विजित स्व, चित्त विजय,सा,हस भरा।
गही, रवि स्वराट, ने, क्रांति मिटा, अं,धेर है;
अहो, पतनोन्नति,-कर, एक समय, का, फेर है।

चतुरावृत—
जहाँ, अगणित, गृह न,क्षत्र थे,
व,हाँ, भासमान, रवि, एक है;
जहाँ, आलस, था भय, भ्रांति थी,
व,हाँ, उद्यम, ज्ञान वि,वेक है।
यही, दृश्य-भाव, का, उलट-फेर,
जब, निशिदिन, का व्यव,हार है;
करें, किसका, क्या, वि,श्वास जब
प,टल, नाटक, का सं,सार है।

उपर्युक्त सप्त अष्टमात्रिक मूल-पादों की भाँति अन्य नवदशादि मात्राओं के मूल-पादों के भी चतुरावृति तक के छंद-पाद बनते हैं। नीचे उनके कुछ दो आवृति तक के और कुछ चतुरावृत तक के उदाहरण दिए जाते हैं। अन्य आवृतियों के रूप पाठक स्वयं बनाकर मनन करें।

नवमात्रिक कोकांगगति

नव मात्रा का जाति छंद नहीं होता, शाब्दांशिक छंद बनता है। ताल मत्त (द्रुत) कोकांग छंद—
२, १, २, १, १, २, तीन - तीन त्रिकल;
ए,क, स,त्य, अ,चल।

द्व्यावृत—
छल, प्रमानि प्रबल सर्व विश्व विकल।

(इसके एक, पाँच और आठ मात्रा के विपर्ययी रूप क्लिष्टगति होने से छोड़ दिए।)

द्विविपर्ययी कोकांग

दुःखहा छंद—
२२१२११ दो दो त्रिकल यु,ग;
तम,मय, अ,सत, म,ग।

द्व्यावृत —
सू,झत, द,गन. न,हि, डग,मग, प,रत, प,ग।

त्रिविपर्ययी कोकांग

यजु छंद—
१२२१२१ तुम्हीं हो किसान,
तपस्वी महान।

द्व्यावृत यजु—
लगे भूख-प्यास, लगे शीत-घाम;
न तजते कदापि स्वकर्तव्य काम।
विरत - हर्ष, सोच-निरत, एक ध्यान,
तुम्हीं हो किसान तपस्वी महान।

त्र्यावृत यजु—

निरंतर प्रयास, सुदृढ़ दैव-आस, स्वसर्वस्व दान,
किसी ने किया न करेगा हि कोई तुम्हारे समान।

चतुरावृत यजु—

स्वयं रह दरिद्र, दुखी, दीन-हीन,
किए दानपात्र धनी सेठ भूप;
सताते सदैव तुम्हें, पर न कोप
अहो! शांति-क्षांति तुम्हारी अनूप।
तुम्हारी इसी सुतपस्या-प्रभाव
डमाडोल भूमि, हिला आसमान;
जगा क्रांति-तेज, तपा देवलोक,
'वरं ब्रूहि' ब्रह्म पुकारा स,मान।

चतुर्विपर्ययी कोकांग

आयोग छंद—

११२२१२ वि,तिकल दो तिकल;
य',च,पल,दे,ह, बल।

द्वयावृत—

न, वि,ना, आ,त्म,शक्ति, थि,रै, ए,क, पल।

षड्विपर्ययी कोकांग

खगांक छंद—

२११२२१ तीन तिकल तीन;
व्य,र्थ, ब,नत, दी,न।

द्वयावृत—

क्यों, न, उ,ठत वी,र, वि,श्व, त,वा,धी,न।

सप्तविपर्ययी कोकांग

जय छंद—

१२११२२ दिवा,कर, छा,या,
नि,रख, लल,चा,या।

द्वयावृत जय—

ल,गा, नि,त, पी,छे, र,हा, क,र,ता, है;
प,सा,र, क,रों, को, ह,हा, क,र,ता, है।

त्र्यावृत जय—

सराग कभी ताप-तप्त कभी पीत हो फिरता है,
तरंग-तरी-सा कभी उठता है, कभी गिरता है।

चतुरावृत जय—

पटंबर बहु-रंग दे-दे लुभाता,
न हाथ लजीली किसी विधि आती;
लता, तरु, गिरि, खोह, भीति, भवन में
जहाँ मिलती, ओट जा छिप जाती।
प्रभा बनके चंद्र-रंगमहल में
प्रिया-प्रणयी नित्य कंठ लगाता;
सनेह सखी के सनी सजनी को
हृदय लगने में संकोच न आता।

दशमात्रिक

इसमें पंचकल (२१२) की आवृति विपर्यय से शाब्दांशिक छंद और पंचकल के दीर्घाकार (४२४) से जाति-छंद बनते हैं।

पंचकल की आवृत तंतुगति। झपताल

तंतु छंद—

२१२२१२ पंचकल पंचकल।
पत्र तरु से खसे;
देख पल्लव हँसे।

द्वयावृत—

पर न सोचा कि ये भी कभी थे हँसे*।

दो विपर्ययी तंतुगति

दधि छंद—

२२१२२१ दो तीन दो तीन
शं,कट, अ,कू,पार†;
सो,त्सा,ह, कर, पार।

द्वयावृत—

उस पार आनंद का है खुला द्वार।

त्रिविपर्ययी तंतुगति

याम्य छंद—

१२२१२२ निकल दो तिकल दो
गगन त्याग पत्रो,
धरा ओर देखो।

---

* पाठांतर—लसे। † अकूपार—समुद्र

द्वयावृत—

गड़ी भूमि जाती बना मूल तुमको।

चतुर्विपर्ययी तंतु क्लिष्ट होने से छोड़ दिया गया।

पंचकल (२१२) का दीर्घाकार जाति-छंद वीर-गति। ताल सूर

वीर छंद—

४२४ चौकल, दो, चौकल।
वारिद, नभ, सरसत ;
श्यामल, छवि, दरसत।

द्वयावृत—

स्वागत, हित, मो मन, मोरन, सँग, हरसत ;
पुनि गुनि, कछु, कबहू, चातक, सँग, तरसत।

एकविपर्ययी वीर

श्रवनि छंद—

१४२३ वि चौकल दो तीन।
नि,रखि, दा,मिन, भास ;
स,मुझि, पिय,रे, बास।

द्वयावृत्त—

हृ,दय, उम,गत, जानि स,जन, आवत, पास ;
ब,हुरि सुनि, धुनि, घोर, स,त्रै, छूटति, आस।

द्विविपर्ययी वीर

सुभास छंद—

२४२२ दो चौकल दो दो।
महि बात, उ,मस, है ;
हिय, साँस गु,मस, है।

उत, बरस प,रे, घन इत, दृग झरि, ला,ए ;
बर,षाऽरु वि,रह, जनु द्वउ, होर ल, गा,ए।

त्रिविपर्ययी वीरगति

गोलीन छंद—

१२४३ च,लो, हेरें, श्याम ;
त,जो, जपना, नाम।

द्वयावृत गोलीन—

य,हाँ, श्रीपति, प्रभु का, है, कंचन,-धाम;
ब,ने, पाहन, होंगे, क्या, अपना, काम।

त्र्यावृत गोलीन—

य,हाँ, तर्क प्र,धान, क्रि,या, ज्ञान-वि,धान
न, वह, होंगे, दृश्य ;
ल,खो, यत्र वि,भीषण, शव,री से, दीन
दु,खी, औ, अस्,पृश्य।

चतुरावृत गोलीन—

व,हाँ, उनके, अश्रु-भ,रे, नयनों,-बीच
तु,म्हें, दर्शित, होगा, नि,र्मय, तन, श्याम ;
उ,न्हें, हृदय ल,गाओ, तज, निज, अभि,मान,
त,भी हाथ ल,गेगा, वह, प्रिय अभि,राम।

चतुर्विपर्ययी वीरगति

लीलांश छंद—

४४२ तेरी, मानव,ता,
मानव, ! दानव,ता।

द्वयावृत लीलांश—

पाकर, ज्ञान न,हीं, तूने, साम्य दि,या,
निर्बल, जीवों, को, अपना, दास कि,या।
तेरे, धर्म सु,कृत, तेरी, पोषक,ता,
सबमें, स्वार्थ भ,रा, सबमें, शोषक,ता।

त्र्यावृत लीलांश—

माना पशुओं ने अपना भाग्य कि जब
तुझको जन्म दिया ;
तूने हाय ! उन्हीं का ले मांस रुधिर
उनका श्राद्ध किया।
तेरी बुद्धि कला कोई घोर बला
भयदा सुंदरता ;
तेरा मेल छलन तेरा खेल दलन
विद्या घात-रता।

चतुरावृत लीलांश—

ये दुर्भाव बढ़ा तेरा इतना अब,
जिसका भार अहो ! तुझसे न सम्हलता;
हो मदमत्त महा यादव - वंश - सदृश
अपनी जाति स्वयं अपने कर दलता।

इस गति के पंचविपर्ययी अरुद्ध (१४४१),

सप्तविपर्ययी गोलोक (१२४२१) और नवविपर्ययी युद्ध (१२२४१) तीनो छंद एकविपर्ययी अवनि और त्रिविपर्ययी गोलीन छंदों में किंचित् छांदिक यति और ताल-भेद से गा लिए जाते हैं। इसी तरह षड्विपर्ययी सरलांश (२४४२) और अष्टविपर्ययी चरेश (२२४२) छंद द्विविपर्ययी सुभास और चतुर्विपर्ययी वीरगति में कुछ यति-भेद से गेय हैं। इस कारण उनके उदाहरण नहीं दिए गए।

एकादशमात्रिक गति

यह शाब्दांशिक छंद है, जो हनुमान ताल में गेय है। इस ताल की गति २११२११११ है, जो अब लुप्तप्राय है, क्योंकि संगीतज्ञों ने मृदंग के साथ-साथ इसको भी त्याग दिया है।

द्वादशमात्रिक मर्मगति

इसका द्वयावृत रूप पुष्प (३३३३) दादरा ताल में और दीर्घरूप लीलाशशि (४४२२) चौताल में गेय है। गायक दोनो रूपों को दोनो तालों में गा लेते हैं।

मर्म छंद (६६) वा लीलाशशि (४४२२)

बरसत घन घहरि - घहरि ;
पवन बहत हहरि - हहरि।

द्वयावृत—

ऐसेहि मन ! क्यों न तुहू
लावत रट हरि-हरि-हरि ;
जीवन - दुति जगत छनिक
छनदा कह छहरि-छहरि।

एकविपर्ययी मर्म वा लीलाशशि-गति

अमृत वा अलोलांक छंद—

१६५ रसा रस मय अंकुरित ;
वा हृदय हुलसित ह्वै हरित।
१४४२१ तुहू पुलकि-पुलकि अंग ;
रँगै क्यों नहिं हरि-रंग।

द्वयावृत—

कियो शीतल सब विश्व
ताप हरि घन श्याम ;
तुही अरक - जवास बन्यो,
कैसो तव काम ;

(इसी रूप के अंतर्गत तीन-पाँच आदि अयुक्-संख्यक मात्राओं के विपर्ययी रूप भी जाति-छंद में गा लिए जाते हैं, यद्यपि उनमें ताल वा विराम-भेद होता है।)

द्विविपर्ययी मर्मगति वा लीलाशशिगति

सुमाला वा सुलालसा छंद—

२६४ मत छीन सुमन माली,
२४४२ गहि वसन कहै डाली।

द्वयावृत—

यह, जीवन - धन पाए
चिर पूजि अंशुमाली ;
तनि रहन दे रमानी
मम गोद न कर खाली।

(इसी रूप में षट् और दस मात्राओं के विपर्ययी रूप भी जाति-छंद में गाए जाते हैं, यद्यपि उनमें ताल-विराम-भेद होता है।)

चतुर्विपर्ययो मर्मगति वा लीलाशशिगति

लोमस वा शशिलीला—

४६२ फूलन, डार हँसावति ;
२२४४ लीन्हे, गोद झुलावति।

द्वयावृत—

तितली नाचि दिखावति,
मधुपी वेणु सुनावति ;
माली ! छीनि लियो तोको,
तनि दया न आवति।

(इसी रूप में छ और दस मात्राओं के विपर्ययी रूप भी गा लिए जाते हैं।)

पुष्पगति—ताल दादरा

पुष्प छंद—

३३,३३ नंद-नँदन, प्रेम - सदन ;
रूप-रासि, मदन-मदन।

द्व्यावृत—

गुण - निधान, रसिक - प्राण,
पूर्ण - काम, मानकदन ;
हृदय - रमन, ताप - समन,
सुधा - रसन, चंद्र - वदन ।

(इसकी एक विपर्ययी उत्पत्ति (१३३३२) और दो विपर्ययी दानसिंह (२३३३१) दो गतियाँ और होती हैं ।)

इनके अतिरिक्त त्रयोदश मात्रा की न तो कोई ताल प्रचलित है, और न कोई छंद की गति ही है। चतुर्दश मात्रा की आड़ा चौताल में लीलालास (४४४२) गति है, जो रेणुगति (२२२१) का दीर्घाकार-मात्र है । पंचदश मात्रा की गजझंपा ताल में लीलानर (४४३४) गति है । सप्तदश मात्रा की शिखर ताल में मर्मासेन (६६२३) गति है । और, अष्टादश मात्रा की मत्त ताल में बिंबसार (४२४२२४) गति है, जो उक्त द्रुत मत्त (२१२११२) का दीर्घाकार-मात्र है । इस प्रकार वर्णित गतियों के दीर्घाकार में और भी गतियाँ बनती जाती हैं, परंतु इतनी लंबी गतियों को गाने की श्वासा-शक्ति वर्तमान समय के मनुष्यों में बहुत कम है । इसी से वे कम गाई जाती हैं । यदि कोई सज्जन उन पर छंद रचना चाहें, या उन्हें जानना चाहें, तो उक्त आंकिक रूपों के पाठ्य नाम (वि. दो, तीन आदि) कहकर छंद का ठाठ जान सकते या उस पर छंद बना सकते हैं ।

उक्त सब गतियों की आवृति और एकादि विपर्यय से जो छंद बनते हैं, वे पूर्ण छंद हैं, अर्थात् उनके पढ़ते या गाते समय एक मात्रा-काल तक भी पादांत में या कहीं पर रुकने का अवकाश नहीं । इन्हीं पूर्ण छंदों के अंतिम शब्दांशों को न्यून करके अपूर्ण छंद-पाद बनते हैं, जिनके गाते समय पादांत में उतनी मात्राओं तक रुककर या अंतिम स्वर को बढ़ाकर पाद-पूर्ति करनी पड़ती है । वस्तुतः यह मात्रात्रुटि गाने में सुननेवाले को रोचक और गानेवाले को साँस लेने का अवकाश मिलने से सुखकर ज्ञात होती है । इन अपूर्ण छंदों के लाक्षणिक नाम भी रख लेना चाहिए । यथा —

द्व्यावृत रेणु (पूर्ण) छंद

४ ३ ४ ३
चौकल, तीन, चौकल, तीन ।
नेकु नि,हारि, दे मुसु,काय,
विकसै चित्त, प्रतिभा, पाय ।

एकोनद्व्यावृत रेणु वा रत्नभा छंद

४ ३ ४ २ (१)
चौकल, तीन, चौकल, दो ।
नेक नि,हार, दे मुस,का (अ)
विकसे, चित्त, प्रतिभा, पा (अ)

द्विविपर्ययी द्व्यावृत रेणु (पूर्ण) छंद

नलनील छंद—

३ ४ ३ ४
तीन, चौकल, तीन, चौकल ।
उर ब,से जो, प्राण,-धन हो ;
तो ब,सो बस, एक, मन हो ।

द्व्यून नलनील छंद वा नलांत छद

३ ४ ३ २ (२)
तीन चौकल तीन दो ।
उर बसे जो प्राण-धन,
तो बसो हो एक मन ।

इस न्यूनीकरण प्रक्रिया में एक बात का ध्यान रखना आवश्यक है । पादांत की उतनी ही मात्राओं या शब्दांशों को न्यून करे, जितने से गति का ठाठ न बिगड़े । इस प्रकार किसी द्व्यावृत का लगभग डेढ़ अंश तो रह ही जाना चाहिए, और अंतिम स्वर खींचने की अपनी शक्ति भी होनी चाहिए ।

शब्दांशिक और वृत्त छंद

जाति-छंद के अंतर्गत प्रति शब्दांश के स्थान-

नियमन-पूर्वक शाब्दांशिक छंद बनते हैं। इसलिये जाति-छंद के तीन चौकल आदि गणों के अंतर्गत जो शाब्दांशिक यतियाँ आती हैं, शाब्दांशिक छंदों में उनकी वे ही छांदिक यतियाँ मानी जायँगी। इस प्रकार एक शाब्दांशिक पाद में जिस क्रम से शब्दांश आवेंगे, ठीक उसी क्रम से दूसरे पाद में भी रहेंगे। एक-एक जाति छंद में कई-कई शाब्दांशिक छंद होते हैं। यथा—

जाति छंद	शाब्दांशिक छंद		नाम
लीला --			
४४	२२,२२	दो दो, दो दो	चर्चा
३१४	२१,१२,२	तीन त्रिकल दो	काया
	१२,१२,२	त्रिकल-त्रिकल दो	गंगेश
४३१	२२,२१,१	चौकल तीन वि	चर्कहा
३१,१३१	२१,१,२१,१	तीन जगाल वि	किंजिह्वा
अरुण—			
१४३	१२२२१	त्रिकल दो तीन	गदा
१३१३	१२११२१	जगाल जगाल	झंझा
सोम—			
२४२	२,२२,२	दो चौकल दो	सचीश
२११२	२ २१,१२	दो तीन त्रिकल	सुखांग

इसी प्रकार संपूर्ण जाति छंदों के शाब्दांशिक रूप बनेंगे। एक जाति-गति के जितने शाब्दांशिक रूप बने हैं, वे अलग-अलग छंद होंगे। और, परस्पर मिलकर उस जाति-गति के द्वयावृत रूप के अंतर्गत सब पृथक् पृथक् रूप होंगे। जैसे लीला (४४) के अंतर्गत पाँच शाब्दांशिक छंद बने हैं। लीला के द्वयावृत रूप (४४४४) में ये पाँचो परस्पर मिलकर पचीस (५ × ५) छंद होंगे। इसी प्रकार प्रत्येक गति की आवृति और विपर्यय तथा पादांत के न्यूनीकरण से जितने छंद सिद्ध होते हैं, उनकी संख्या लाखों में होगी। इन शाब्दांशिक छंदों के एक से लेकर संपूर्ण द्विकल शब्दांशों के स्थान में द्विलघु या गुरु वर्ण को रखकर वृत्त या वार्णिक छंद बनेंगे, जिनकी संख्या कोटियों में होगी। ये सब छंद गेय होंगे, क्योंकि जाति-गति सबमें विद्यमान रहेगी। इन सब छंदों में से आज तक जितने छंद विश्व में बने हैं, उनका परिमाण कदाचित् एक घड़ा जल में बिंदु के समान है।

मुक्तक छंद

पहले कहा गया है कि जाति छंद-रचना के जो योगावृत्ति विपर्यय आदि के नियम हैं, उन्हीं से उन्हीं गतियों में मुक्तक छंद बनते हैं। अंतर केवल इतना है कि जाति छंद मात्राओं की गणना पर निर्भर हैं, मुक्तक वर्णों की गणना पर। वर्ण चाहे लघु हों या दीर्घ, मुक्तक छंद में कोई बाधा नहीं पड़ती। वस्तुतः छोटे-बड़े वर्ण के विवेक से मुक्त होने ही से इनका नाम मुक्तक रक्खा गया है। कारण यह कि मुक्तक छंद में लघु-दीर्घ दोनो प्रकार के वर्ण समकाल में पढ़े जाते हैं, अर्थात् पाठक जितना समय एक दीर्घ वर्ण के उच्चारण में लगाता है, उतना ही लघु वर्ण के उच्चारण में। ऐसा न करने से गति-भंग होती है। छंद के इतिहास में सबसे पहले मुक्तक छंदों का विकास हुआ है। हमारा तो संपूर्ण प्राचीन वेद-शास्त्र इन्हीं मुक्तक छंदों ही में पाया जाता है। तालों के मात्रा-समय-निर्धारण से भी यही प्रकट होता है कि वे मुक्तक छंदों ही को प्रधान मानकर बनाई गई थीं।

नीचे जाति-गण-परक मुक्तक गणों के रूप दिए जाते हैं, जिससे जाति-गणानुसार मुक्तक छंद रचने में पाठकों को सुबीता हो। स्मरण रखना चाहिए कि यद्यपि मुक्तक गणों में लघु-गुरु वर्ण का विभेद नहीं माना जाता, तथापि इकट्ठे अधिक गुरु वर्णों के लाने से छंदोच्चारण में क्लिष्टता आती है, अतः कुछ स्थानों में लघु-गुरु वर्ण का नियम रखना ही पड़ता है। इसे वैसा ही समझिए, जैसा मुक्त पुरुष यद्यपि वर्ण-विभेद नहीं मानता, तथापि

सांसारिक व्यवहार में उसे कुछ विवेक रखना ही पड़ता है।

मुक्तक गण

आंकिक वार्णिक रूप और उदाहरण

१— । , स
ऽ ओं, श्री

२ ।।, हरि, बिभु, प्रभु, जय
ऽ।, राम, श्याम, ईश, धीश
ऽऽ, धाता, प्यारा
।ऽ, सखा, (यह रूप कुछ क्लिष्टता से आता है)

२१— ।।।, अचल, अमल
ऽ।।, निश्चल, निर्मल, माधव
।।ऽ, सविता
ऽ।ऽ, श्यामला
ऽऽऽ, विश्वात्मा

१२— ।।।, अचल, अमल
।ऽ।, अपार, अनादि
।ऽऽ, स्वयंभू

(त्रिवर्ण में ऽऽ। का ग्रहण नहीं होता)

२२—२; के चारो वार्णिक रूपों के परस्पर योग से सोलह रूप।

३१—२१ के पाँचो वार्णिक रूपों के अंत में यति देकर एक लघु वर्ण रखने से, जो बाद के किसी शब्द के आदि में हो, पाँच रूप बनते हैं।

३२—२१ के किसी भी वार्णिक रूप के बाद २, का कोई भी वार्णिक रूप रखने से

२३—२, के किसी वार्णिक रूप के बाद २१ का कोई वार्णिक रूप रखने से

३१,२—२१ के किसी भी वार्णिक रूप के बाद १२ का कोई भी वार्णिक रूप रखने से।

२२,२—२ के विभिन्न वार्णिक रूपों के परस्पर तीन बार योग से

नीचे उदाहरण-स्वरूप कुछ सप्त और अष्ट-मात्रिक मुक्तक छंद दिए जाते हैं। उसी प्रकार पर अन्य गतियों के छंद भी जाति रूपों का अनुकरण करके बनाना चाहिए।

एक विपर्ययी रेणुगति

उल्लास छंद—

१४२ स,जन अब, आओ;
न, हमको खि,झाओ।

द्व्यावृत—

छि,पे ही रह,ना तो, हृ,दय मत, आओ;
ध,रणि तप,ने दो, न, वारि बर,साओ।

त्र्यावृत—

न, चंद्र-रूप, होके, स्व,छवि छल,काके
चकोर, लल,चाओ;
न, भानु बन, आके, स्व,राग झल,काके
क,मल विक,साओ।

चतुरावृत—

तुम्हारा है य' प्यार, कपट-व्यवहार,
दिखाके बार-बार, जले को न जलाओ;
भला है अंधकार, हमारा सहकार,
सुलाए सुखनींद, न सिर सहलाओ।

त्रिविपर्ययी रेणुगति

नल छंद (मु०)—

३४ मेरी तू, प्यारी पीर;
दुःख की, साथी वीर।

द्व्यावृत या नल-नील छंद (मु०)—

कंत-वि,योग मुझे, देखके, दिलगीर;
खींच के, दिखलाती, प्यारे की, तसवीर।

त्र्यावृत—

मोहन, के वियोग, ताप से, जब-जब,
होती हूँ, मैं अधीर;
तत्क्षण, उठ-उठ, तू ही जु,ड़ाती उर,
सींच दृ,गों से नीर।

चतुरावृत—

जाऊँ मैं बलिहारी ! आली, तू मेरी इन
आहों पै हो सवार जा री निर्मोही तीर;

ऐसे ही उनके भी मानस में प्रविष्ट
होकर खींच दे री मेरी भी तसवीर।

पंचविपर्ययी रेणुगति – ताल दीपचंदी आदि

देश छंद—

२३२ देखा दर्पण मैंने।

द्व्यावृत—

किया, रूप प्र,भा का, जब, दर्शन, मैंने ;
होके, मोहित, आपा, किया, अर्पण, मैंने।

त्र्यावृत—

यह मैं हूँ नहीं है प्रतिरूप ही मेरा,
रक्खा ध्यान न मैंने ;
उसे, मान नि,जत्व, किया, ज्ञान गु,रुत्व,
सब, तर्पण, मैंने।

अष्टवार्णिक मोक्षगति—ताल तिताल

मोक्ष वा लीला छंद (मु०)—

४४ जागता जगत रह ;

वा

६२ मोह से विरत रह।

द्व्यावृत—

व्योम पट, पर व्यक्त, चित्र-छाया,वत रह ;
रूप-मान,व्यर्थ है स्व,ज्योति में निरत, रह।

त्र्यावृत—

जीवन यही है, तब, होता क्षण, विकसित,
होता क्षण, छत रह ;
भाव-वच, कर्म ये किसी के, अनु,गत हैं
उसी के अनुमत रह।

चतुरावृत—

कुछ भी नहीं है, कुछ है तो सब कुछ तू ही
स्वीय अभिनय में अचेत कभी मत रह ;
नित्य अभिनेता का सिनेमा 'वचनेश' यह
नित्यानित्य-संधि में निरत अविरत रह।

एकविपर्ययी मोक्षगति

अरुण छंद—

१४३ म,रण सत्य, जीवन ;

वा

१३१३ म,रण है, सँ,जीवन।

द्व्यावृत –

म,रण जिसे, करती मनुष्य बुद्धि, व्यंजन ;
म,रण नहीं नट का प,टल परिवर्तन।

त्र्यावृत—

उ, सी के हेतु, करता सलिल, है स,रित हो
स,मुद्र में प्र,वेशन ;
म,नुज कर्म, ज्ञान औ उ,पासना त्रि,पथ में
नि,रत काल, यापन।

चतुरावृत—

वही है वह अमृत, प्रलोभ-वश जिसके
सभी हैं नित्य करते जगत-सिंधु,मंथन ;
विषय-विष-वासना-सुरा की वास लेकर
प्रमोद से प्रमत्त हैं सुस्वाद कर कल्पन।

पंचावृत—

बतावे कौन किसको सुरस उस रस का,
पिया है जिस जिसने हुआ व, रस उसका,
बिसार अपनापन ;
विकल्प मय वाद है विवाद 'वचनेश' य'
विदित विश्व इतना रहस्य बस उसका
परम प्रियालिंगन।

(इसी प्रकार पंच वृत रूप जाति आदि छंदों में भी हो सकते हैं।)

द्विविपर्ययी मोक्षगति मुक्तक

सोम वा सुरस छंद—

२४२ तुम, कौन हो वि,चित्र ;

वा

२६ तुम्हें, हेरता है, मित्र।

द्व्यावृत—

दिवा, दीप्त ले अ,पार, कर, कोटिक प,सार ;
अणु, अणु भुव,नों को, लौट, पौट बार, बार।
खींच नित्य ही निरंतर निहारता है चित्र ;
तुम कौन हो कहाँ हो, तुम्हें हेरता है मित्र*।

---

* मित्र=सूर्य।

त्र्यावृत—
सोच, फिरती त्तपा है, छिपी, छिपी होन, श्याम,
कहीं, इसी ने छिपाया ;
प्रति,ग्रह उपग्रह, प्रति, नेत्र प्रति रत्न,
निज, ज्योति से जगाया।

चतुरावृत—
कर, ज्ञान भास,मान, देखा, भीतरी जहान,
तो भी, तुमको न, पाया, कुछ, ऐसे हो विचित्र।
(तुम कौन०)

वह, विरह ज्वलंत, निज, स्वासों से सदैव,
सर,-सरित-समुद्र,-जल, भाप है बनाता ;
प्रति कण को रसायनिक रीति से परख
जान नीरस तुम्हारे बिन धूल-सा बहाता।

पंचावृत—
यह बेरुख़ी कहाँ औ' कहाँ कारुणीक नाम,
यह शून्यता कहाँ औ' कहाँ विभुता अभूत,
यह कैसा है चरित्र ;
तुम 'हो' में या 'नहीं' में कहीं हो तो बतलाओ,
सच क्या हो 'वचनेश' कोई चरम अछूत
या कि परम पवित्र।
(तुम कौन०)

इन्हीं उदाहरणों के प्रकार पर जाति छंदों में वर्णित संपूर्ण गतियों पर मुक्तक छंद और उन सबके विपर्यय से विपर्ययी छंद बनते हैं।

मुक्तक छंदों में भी मात्रिक छंदों की तरह पादांत्य वर्णों को न्यून करने से अपूर्ण छंद बन जाते हैं, और वे पढ़ने में रोचक होते हैं, जैसे लीलागति की चतुरावृत रूपघनात्तरी पूर्ण छंद और उसका एकोन होकर घनात्तरी अपूर्ण छंद है।

विषम छंद

जिन छंदों के पादों में मात्रा या वर्ण सम संख्या में न हो, उन्हें विषम कहते हैं। ये छंद एक ही गति के विभिन्न मात्रा या वर्णसंख्यक पूर्ण या अपूर्ण छंदपादों को एकत्र करके बनाए जाते हैं। इनकी रचना करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पूर्व पाद के अंत से जितनी मात्राएँ या वर्ण कम किए गए हों, उत्तर पाद के आदि में विपर्यय द्वारा उनसे अधिक मात्रा या वर्ण न जोड़े जायँ। उत्तर पाद में अधिक मात्रा या वर्ण होने से बढ़े हुए मात्रा-वर्ण गति-भंग करेंगे। कम होने में कोई त्ति नहीं, क्योंकि गति पूर्व पाद के अंतिम स्वर को खींचकर या उतने समय तक रुककर पूरी कर ली जाती है।

बस, संक्षिप्त रूप में छंदोगति की रूप-रेखा इतनी है। इसके अंतर्गत आज तक विभिन्न देशों में जितने छंद बने हैं, चाहे वे कितनी ही मात्रा या वर्णों के किसी भी प्रस्तारित रूप से बने हों, गाए जा सकते हैं। छंद ही नहीं, किसी भी गद्य-वाक्य को गति पर बिठाकर कोई-न-कोई छंद-पाद सिद्ध किया जा सकता है। गद्य और पद्य में अंतर यह है कि इस प्रकार पद्य सिद्ध किए वाक्यों की गति परस्पर मिलती नहीं, अर्थात् एक पाद जिस गति का सिद्ध होता है, दूसरा पाद उससे विभिन्न गति का बनता है। पद्य का कारण किसी गति की आवृति ही है। बल्कि यहाँ तक हो सकता है कि गति एक ही रखकर मात्रिक (जाति, शाब्दांशिक या वृत) और वार्णिक (मुक्तक) छंदों के पाद एकत्र कर दिए जायँ।

विशेष निवेदन

छंदोगति पर एक विस्तृत ग्रंथ लिखने का मेरा विचार है, और चाहता हूँ, उससे सिद्ध हुए छंदों के उदाहरण भी दिए जायँ। उनमें से जो छंद आज तक संस्कृत, हिंदी, फ़ारसी में बन चुके हैं, वे उदाहरण में दिए जा सकते हैं, परंतु जो छंद आज तक निर्मित नहीं हुए हैं, उनके उदाहरण बनाने होंगे। वे यदि दल (द्विपाद) रूप में ही बनाए जायँ, तो भी उनका बना लेना मुझ वृद्ध के

जीवन-समय और शक्ति से बाहर है। इस परिस्थिति में मुझे अपने युवक कवियों की सहायता आवश्यक है। यदि वे चाहें, तो थोड़ी-थोड़ी सहायता देकर मुझसे इस गिरि-गोवर्द्धन को उठवा सकते हैं। अस्तु। इस लेख के प्रकाशित करने का मेरा मुख्य प्रयोजन यही है कि इसे उनके समक्ष उपस्थित करके उन्हें उत्साहित करूँ, और उनसे सहारा लेने के लिये प्रार्थना करूँ। इसके साथ ही मुझे अपने अनुभवी साहित्य-मर्मज्ञों की सहायता भी परम वांछनीय है। मैं चाहता हूँ, इस ग्रंथ के प्रकाशित होने के पहले इसकी त्रुटियाँ मालूम कर लूँ, जिससे छंदोगति को ग्रंथ-रूप देने के पहले मैं उन्हें दूर करने का उद्योग करूँ। आशा है, हिंदी के नवयुग के मर्मज्ञ आचार्य और उत्साही कविजन मेरी सहायता करेंगे।

(समाप्त)

दुर्घटनाएँ

(एक्सिडेंट)

अचानक हो जाती है,

काम में, आराम में, पढ़ाई या खेल-कूद में, मन-बहलाव या अन्य चेष्टाओं में साधारण चोटों का आ जाना, चाक़ू से घाव लग जाना, कील-शीशा लग जाना इत्यादि कष्ट प्रायः हो जाते हैं। यही नहीं, आजकल की मशीनों, रेल, मोटरों के प्रताप से टक्कर लग जाना, या अन्य दुर्घटनाओं का भी दुर्भाग्यवश हो जाना असंभव नहीं। परंतु एक छोटी शीशी

अमृतधारा

का पास रखना सब अवस्थाओं में अपनी रक्षा के लिये एक सच्चे मित्र और अंग-रक्षक को पास रखना है। यह न केवल ख़ून रोकती, दर्द बंद करती, ज़ख़म भरती, सूजन दूर करती और ज़ख़म को विषैला होने से रोकती है, प्रत्युत मूर्च्छा और दिल डूबने की अवस्था में इसको सुँघाना और खिलाना शरीर में शक्ति का संचार कर देता है।

एक शीशी सदा पास रक्खो

मूल्य पूरी शीशी २॥/), अर्द्ध १।), नमूना ॥)

लखनऊ एजेंट:—एच० बी० काम हिंदू-तंबाकू कं०

पता—अमृतधारा फ़ार्मेसी, लाहौर

सुधा-चित्रावली

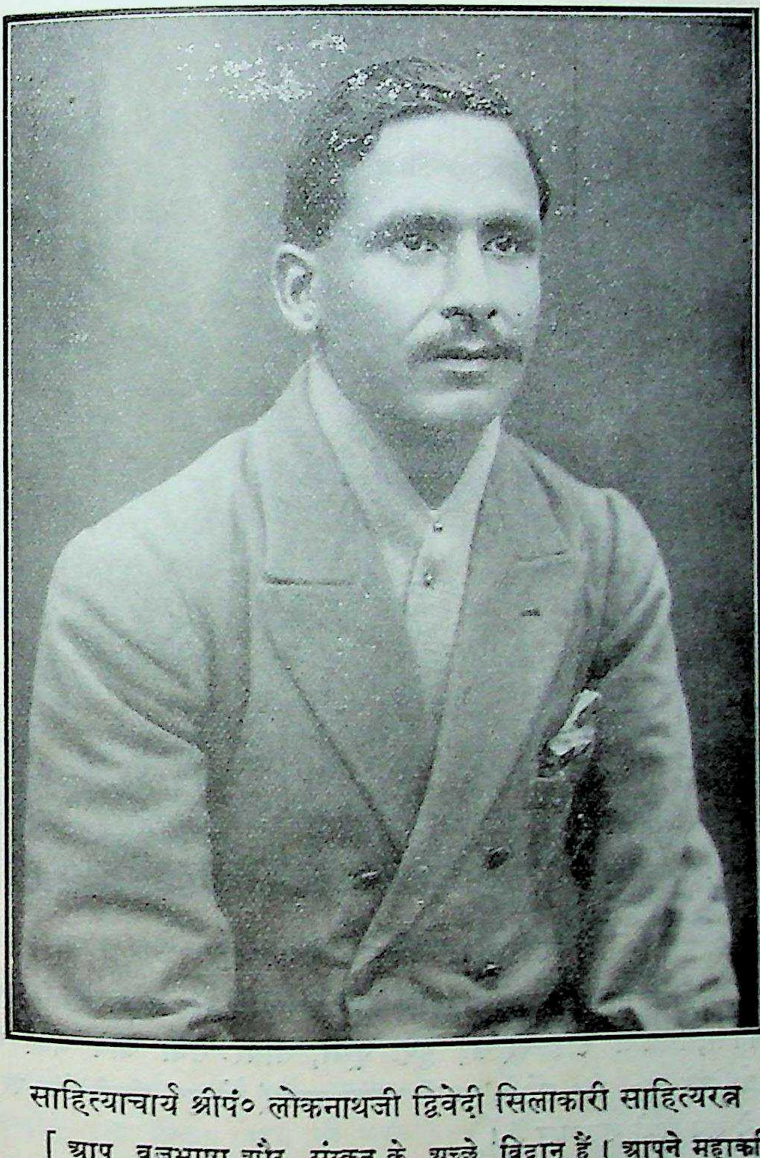

साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथजी द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न

[आप बृजभाषा और संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं। आपने महाकवि विहारी और महाकवि सूरदास का अच्छा अध्ययन किया है। इस संबंध में आपने अनेक ग्रंथ लिखे हैं। आपके लिखे 'विहारी-दर्शन'-नामक ग्रंथ पर (जो गंगा-पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित हुआ है) इस वर्ष आपको २००) का 'चक्रधर' पुरस्कार मिला है। इस शुभ अवसर पर हम आपको बधाई देते हैं !]

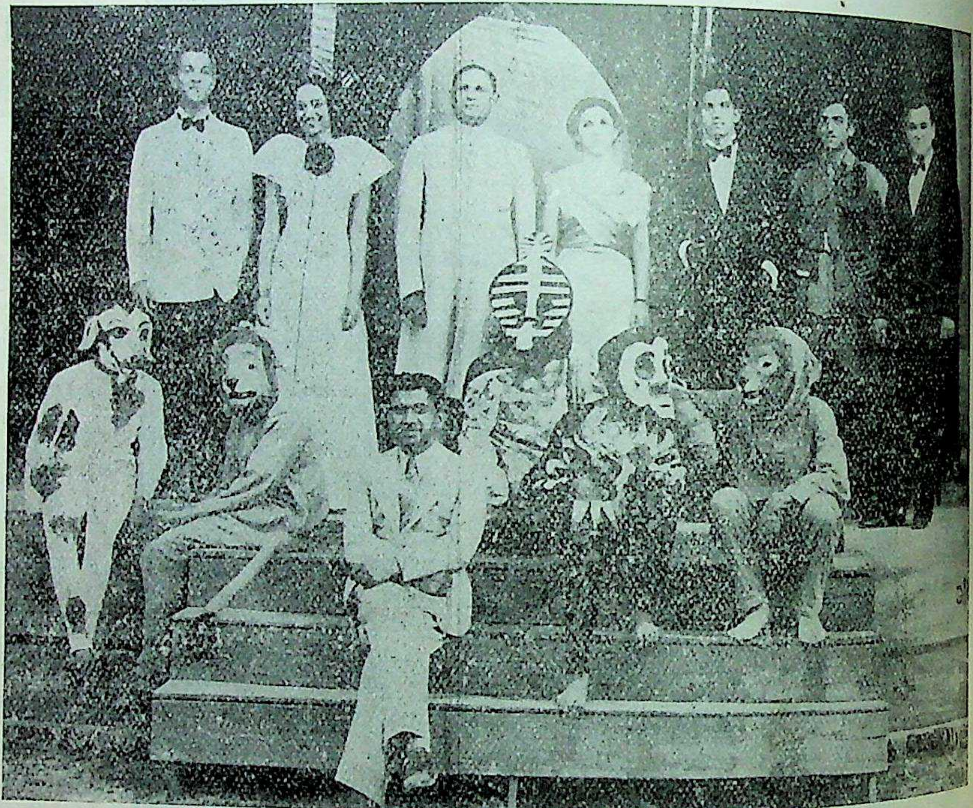

'दूर के ढोल' और 'अंतिम युद्ध'

[ये दोनो अँगरेज़ी के एकांकी नाटक गवर्नमेंट-कॉलेज, लाहौर की नाट्य-समिति द्वारा खेले गए थे। इनके अभिनेता, चित्र में, ये हैं—(खड़े हुए, दूसरे, तीसरे तथा चौथे नंबर पर) कुमारी कल्याणी गुप्ता, प्रोफ़ेसर जी० डी० सोंधी, कुमारी भरुचा तथा (बैठे हुए, तीसरे नंबर पर) श्रीबल्दून धींगरा आदि। ये सब अच्छे कलाकार हैं।]

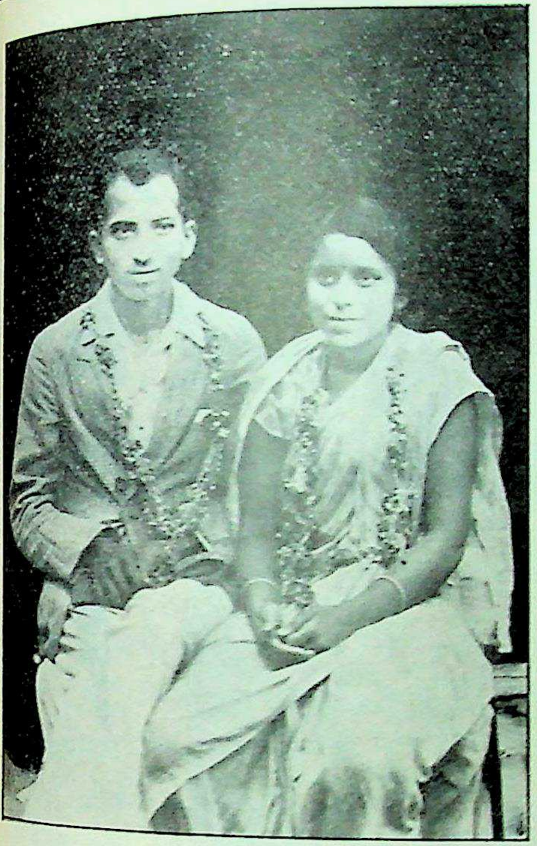

श्रीनीलकंठ-बापूराव और कुमारी कमलापति वर्धन

[आपका ब्याह जाति-पाँति तोड़कर, हाल ही में, हुआ है ।]

* * *

श्रीयुत राजगोपाल नायडू तथा श्रीमती नलिनी कैकिनी

[इनका विवाह जाति-पाँति की अस्वाभाविक चहारदीवारी के बाहर हुआ । वर और वधू उच्च शिक्षा-प्राप्त हैं, और उनके कुटुंबी जन रूढ़ि-ग्रस्त नहीं, सहृदय और उदार हैं कि उन्होंने इन्हें विवाह करने की अनुमति दे दी ।]

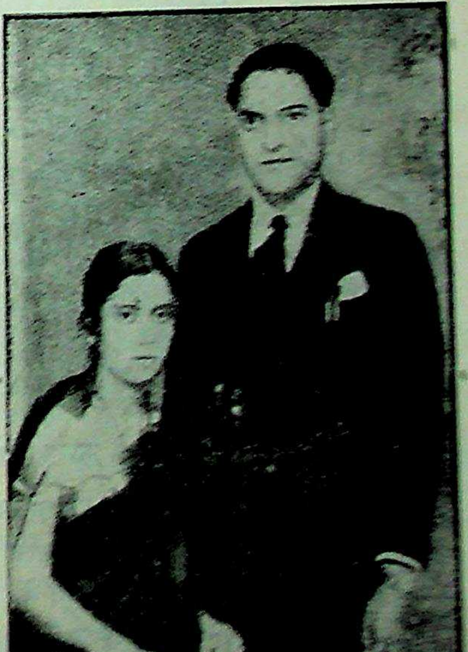

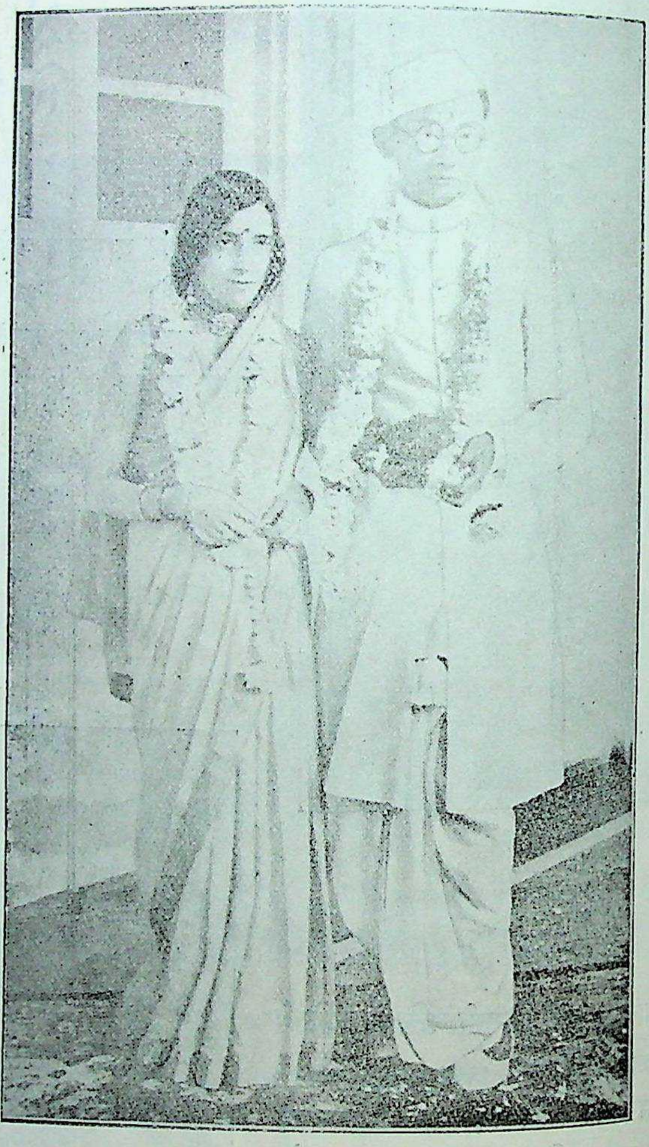

श्रीमती कृष्णा तथा श्रीहत्थीसिंह (बैरिस्टर)

[कृष्णाजी राष्ट्र-गौरव पं० जवाहरलालजी नेहरू की छोटी बहन हैं। आपके साथ आपके पति श्रीहत्थीसिंहजी खड़े हैं। इस सुयोग्य दंपति ने अपना गठ-बंधन जाति-पाँति के व्यर्थ बंधन को तोड़कर किया था।]

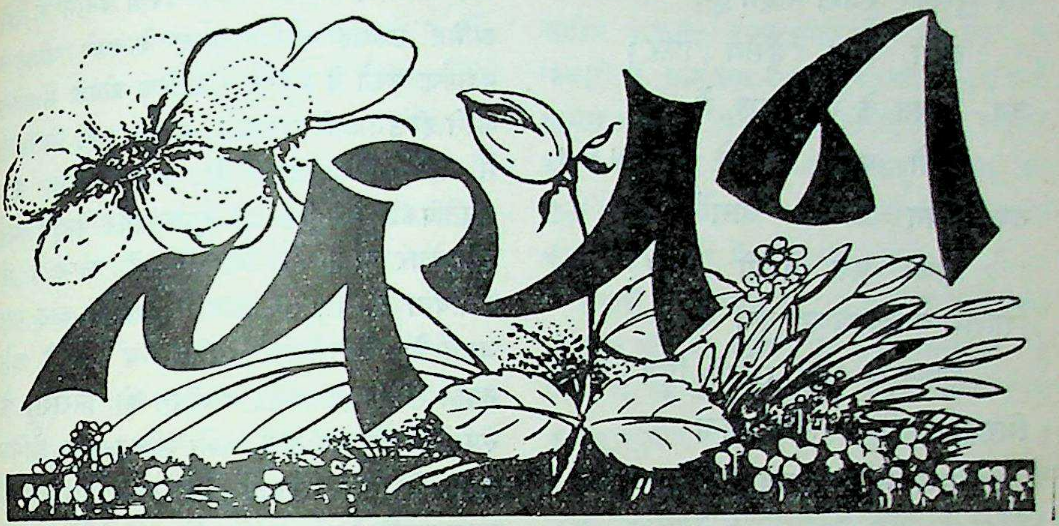

१. कलिका

प्रथम चरण है यौवन का अलि !
यहाँ पराग, न मंजुल हास ;
नव-कोपल के साहचर्य से
जीवन का है नवल विकास ॥ १ ॥
अभी सुप्त सौंदर्य छिपा है
इन अलसाती पलकों में ;
कभी करवटें ले लेता है
यह अनजानी अलकों में ॥ २ ॥
छेड़ो मत, खिलने दो इसको,
मधुर महँक कुछ आने दो ;
मलयानिल के साथ सदा ही
चहक - चहककर गाने दो ॥ ३ ॥
अभी चहकना सीखा है अलि !
इधर बहकना दूर करो ;
रहने दो गाना तुम अपना,
उचित समय तक धैर्य धरो ॥ ४ ॥

रूप - माधुरी की मोहकता
अभी और कुछ बढ़ने दो ;
यौवन की लोनी लतिका पर
पानी तो कुछ चढ़ने दो ॥ ५ ॥

स्नेह-सुधा की सुखद धार में
कुछ दिन तो यों बहने दो ;
अपने सूने अंतस्तल से
सूनी बातें कहने दो ॥ ६ ॥

हृदय-यंत्र के मधुर वाद्य को
थोड़ा - सा बज जाने दो ;
उसके स्वर्गिक मधुर राग में
अपना राग मिलाने दो ॥ ७ ॥

शीतल शशि के शुभ्र हास में
अपना हास मिलाने दो ;
ओस-कणों के शीतल जल में
एक बार मुसकाने दो ॥ ८ ॥

उस सुखकर रजनी में हम-तुम
दोनो साथ हँसेंगे फिर;
जग - जीवन के समरांगण में
दोनो कमर कसेंगे फिर ॥ ९ ॥
तब जीवन की दो धाराएँ
होकर एक बहेंगी प्रिय!
शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा के
सुख-दुख साथ सहेंगी प्रिय! १०॥
गिरकर मिट्टी में मिल जाना
मुझे न तब कुछ अखरेगा;
आलिंगनमय मधुर नाश में
यह दारुण दुख बिसरेगा ॥११॥

मंगलप्रसाद पांडेय

× × ×

२. विवाह के पूर्व और पश्चात्

हमारे जीवन में ऐसी बहुत-सी घटनाएँ घटित हो जाया करती हैं, जिनके फल-स्वरूप हमें बहुत समय तक अथवा जीवन-पर्यंत दुख भोगना और पछताना पड़ता है। परंतु 'फिर पछताए क्या हुआ, जब चिड़िया चुग गई खेत।' अतः अगर हम इन प्रलयकारी घटनाओं के मूल तक पहुँचने की कोशिश करें, तो हमें मालूम होगा कि इनका वास्तविक कारण हमारी केवल थोड़ी-सी अनभिज्ञता तथा असावधानी ही है। जीवन के अन्य पहलुओं पर विचार न करके इस समय मैं केवल विवाह-संबंधी दो-एक बातों पर विचार करना उपयुक्त समझता हूँ।

हमारे शिक्षित युवक और युवतियाँ अपने कॉलेज के शिक्षा-काल में, विभिन्न तरह की पुस्तकों के अध्ययन और संगत के कारण, कल्पना के सुखद, स्वर्गोपम चित्र चित्रित कर भावना के भवन खड़े करने लगते और उन्हें सफल बनाने के लिये अमित उत्साह और उल्लास के साथ जीवन में पदार्पण करते हैं। परंतु वास्तविक जीवन में प्रवेश करते ही उनके विस्तृत अंबर-प्रासाद उन्हें निराधार-से प्रतीत होने लगते हैं। उन्हें कल्पना और वास्तविकता के बीच एक दुर्गम और विस्तृत खाई दृष्टिगोचर होती है, जिसकी उन्हें स्वप्न में भी संभावना न थी। बस, उनकी बुद्धि को काठ मार जाता है; जीवन-प्रवाह शिथिल पड़ जाता है, और नवीन उत्साह शीतल। वे जीवन को निराशा के रूप में देखने लगते हैं, और जीवन-पर्यंत विभिन्न परिस्थितियों के शिकार होते रहते हैं। इसलिये युवक-युवतियों को चाहिए कि अपने शिक्षा-काल में ही वास्तविकता के सन्निकट रहने की कोशिश करें, न कि कल्पना के कल्पित चित्र बनाने में ही दत्तचित्त रहें, जिससे जीवन में प्रवेश करने पर वह उन्हें दुर्गम और दुर्भेद्य न प्रतीत हो।

बात यह है कि विवाह के इच्छुक युवक-युवतियों को चाहिए कि विवाह के पूर्व वे अपनी ज़िम्मेदारी समझ लें। शिक्षा के पश्चात् कुछ काल अविवाहित रहकर वे समाज की वास्तविक स्थिति, अपनी योग्यता तथा समाज में अपने स्थान से पूर्णतः परिचित हो जायँ। इसके पश्चात् अगर वे लोग अपने को वैवाहिक ज़िम्मेदारियों को सँभालने के योग्य समझें, तब तो विवाह-पथ में क़दम बढ़ाएँ, अन्यथा तब तक विवाह स्थगित रक्खें, जब तक वैवाहिक जीवन की कठिनाइयों को वहन करने की उनमें क्षमता नहीं।

जब उन्हें अपनी योग्यता पर पूर्ण विश्वास हो जाय, तब सवाल यह उठता है कि उन्हें अपना जीवन-संगी किस तरह का चुनना चाहिए! यौवन की उत्ताल तरंगों से प्रभावित होनेवाले युवक और युवतियाँ चेहरे की ख़ूबसूरती ही को वास्तविक सौंदर्य समझकर मृग-मरीचिका की तरह उसकी

और, क्षणावेश में आकर, आकृष्ट हो जाती हैं। परंतु अगर वे वास्तविकता की अवहेलना न करें, तो उन्हें प्रतीत होगा कि केवल शारीरिक सौंदर्य ही जीवन को सुखी नहीं बना सकता। ऐसे एक नहीं, अनेकों प्रमाण अहर्निश दृष्टिगोचर होते हैं, जिससे पता चलता है कि केवल यौवन की विक्षिप्त तरंगों से प्रभावित कितने लोगों ने अपने अमूल्य जीवन का बलिदान कर दिया, और उसके लिये आज वे ख़ून के आँसू बहा रहे हैं। उनके विचार एक दूसरे से नहीं मिलते। प्रेम, सेवा और त्याग की जगह कलह, अविश्वास और अशांति ने उनके हृदय में अपना स्थान बना लिया है। रूप की आसक्ति ने उन्हें उन्मत्त बना दिया था, पर अब वे पछताते हैं। 'चोर-नारि जिमि प्रगट न रोई' की तरह वे चुपचाप ख़ून के घूँट पी रहे हैं। पास-पास रहते हुए भी उनमें कल्पनातीत अंतर है, एक साथ सोते हुए भी वे कोसों दूर हैं। क्या करें, कोई चारा नहीं। समाज की अवहेलना कर नहीं सकते। उसके सामने सिर उठाने की किसकी हिम्मत !

सौंदर्य के विषय में मेरा तो यही परामर्श है कि सुसंगठित, रोग-हीन, स्वस्थ, अनुरूप शरीर होना पर्याप्त है।

रहा स्वभाव के विषय में, इसके लिये अक्सर यह बात होती है कि जिस तरह के स्वभाव और आचरण के माता-पिता होंगे, उनकी संतानें भी विशेषतः उन्हीं के अनुकूल स्वभाव और आचरण की होंगी। विवाह के विषय में स्त्री-पुरुषों को एक दूसरे के स्वभाव की ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी कर लेनी चाहिए। हाँ, माता-पिता की संरक्षणता से अलग रहनेवाली संतानों में उनके प्रतिकूल भिन्नता आ सकती है। ऐसी हालत में विशेष सावधानी से जाँच करने की आवश्यकता है। स्वयं माता-पिता या बहन-भाई को, स्वार्थ त्यागकर, युवक या युवती के जीवन को सुखमय बनाने के लिये जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। अगर युवक-युवती में एक दूसरे के विचारों में सामंजस्य पाया जाय, उनके गुण-कर्म-स्वभाव एक हों, और दोनो विवाह-संबंध स्वीकार करें, तब उनके घरवालों को विवाह स्वीकृत कर लेना चाहिए। ऐसा न करना दोनो का जीवन नष्ट करना और संसार में दुःख बढ़ाना है।

लड़कों के विषय में तो जानकारी बहुत सरलता से प्राप्त की जा सकती है, परंतु लड़कियों के विषय में यह विशेष खयाल रखना चाहिए कि उनका स्वभाव सीधा, सरल और सहनशील हो। वे चिड़चिड़ी और बात-बात में रूठ जानेवाली न हों। अन्यथा गृह में प्रवेश करते ही वे कलह और विद्वेष की अग्नि भड़कावेंगी, जिससे हमारे सुखी गृह की शांति नष्ट हो जायगी। लड़कियों में समुचित शिक्षा और गृह-संबंधी वास्तविक ज्ञान का होना भी बहुत आवश्यक है।

इसके पश्चात् जब स्त्री-पुरुष वैवाहिक जीवन के प्रांगण में, पति-पत्नी के रूप में, अवतीर्ण होते हैं, तब इस बात के लिये लालायित रहते हैं कि एक दूसरे को अपनी तरफ़ आकृष्ट कर अपने प्रेम-पाश में आबद्ध कर लें। परंतु एक दूसरे की सूक्ष्म मनोवृत्ति से परिचित न होने के कारण वे पूर्णतः असमर्थ रहते हैं। अतः जब वे आपस में मिलते हैं, तब उन्हें चाहिए कि पहले एक दूसरे की जीवनी सुनें। इस तरह की बहुत-सी बाल्यकाल की आत्मकथाएँ अनेकों विनोद-पूर्ण शैतानियों के साथ अन्य प्रकार की मनोरंजक घटनाओं से भी परिपूर्ण होंगी, जो सुनने में रुचिकर प्रतीत न होते हुए भी हमारी लक्ष्य-सिद्धि के लिये उपयुक्त साधन का काम करेंगी। इन छोटी-छोटी बातों के अंतर्गत हमें वह अमूल्य निधि दृष्टिगोचर होगी, जो हमारे भावी जीवन को सुखमय बनाने के लिये राम-बाण-सा असर

करेगी। जो जीवन में सहृदय, विचारवान्, मननशील, व्यवहार-कुशल रहा होगा, वह आगे भी, विकसित रूप में, ऐसा होगा। जिसके हृदय में प्रारंभ में प्रेम रहा होगा, उसके हृदय में वह प्रेम खिलकर बाद को भी सुंदर रूप में दृष्टिगोचर होगा। अपने जीवन-संगी के प्रगाढ़ प्रेम में वह लिप्त रहेगा, जिससे गृहस्थी की गाड़ी सुचारु रूप से चलेगी। इस तरह तथा साधारण बातचीत के द्वारा वे एक दूसरे की मनोवृत्तियों से परिचित हो जायँगे। फिर एक निर्दिष्ट लक्ष्य को सम्मुख रखकर, मध्यम मार्ग का अवलंबन कर वे शीघ्र ही 'सुखी दंपति' के रूप में परिणत हो सकेंगे।

एक दूसरे की जीवनी से पूर्णतः परिचित हो जाने के पश्चात् दोनो को चाहिए कि अपने-अपने कौटुंबिक इतिहास का परिचय एक दूसरे को करावें, और साथ ही कुटुंब के लोगों के साथ अपनी घनिष्ठता का भी उल्लेख करते चलें, जिससे एक दूसरे को भी उनके साथ उसी तरह की घनिष्ठता स्थापित करने में सरलता हो। इसी के साथ उन्हें अपने-अपने वंश का भी थोड़ा-बहुत इतिहास बता देना चाहिए। पूर्वजों की वीर-गाथाओं और सतियों के उज्ज्वल चरित्रों का उल्लेख अवश्य करना चाहिए। इससे भावनाओं को आशातीत प्रोत्साहन मिलेगा।

यह सब जान लेने के बाद शारीरिक ज्ञान की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। अगर इस विषय का ज्ञान दोनो पहले ही से प्राप्त कर चुके हैं, तब तो कोई विशेष आशंका की बात नहीं, परंतु यदि वे इन बातों से अनभिज्ञ हैं, तब दोनो को चाहिए कि पहले शरीर-संबंधी प्रत्येक अंग की बनावट, कार्य तथा रक्षा के उपाय मालूम करके ही तत्संबंधी किसी कार्य में हाथ लगावें। हमारी ज़रा-सी असावधानी के कारण आएदिन जीवन दुःखमय बन जाता है, अतः इसकी अवहेलना न करनी चाहिए।

शिशु-पालन तथा गृहस्थी-संबंधी बातों की जानकारी के पश्चात् उन्हें यह मालूम करना चाहिए कि दंपति को आपस के कामों की व्यवस्था किस तरह करनी चाहिए कि गृहस्थी सरलता-पूर्वक चल सके, और उसमें कलह होने की आशंका न रहे। गृह-संबंधी समुचित व्यवस्था करना स्त्री-पुरुषों की योग्यता पर निर्भर है। अगर दंपति शिक्षित हैं, तब तो और भी सुंदर है। उन्हें एक दूसरे के भोजन और स्वास्थ्य का खयाल रखते हुए तथा मानसिक उन्नति का मार्ग निकालते हुए व्यवस्था करनी चाहिए।

बहुत-से लोगों का आम खयाल है कि मेहनत का काम करने से स्वास्थ्य की वृद्धि होती है। मैं भी बहुत कुछ अंशों में इसका समर्थन करता हूँ, परंतु मेरे विचार से वह मेहनत मानसिक प्रकृति के ख़िलाफ़ न होनी चाहिए, अन्यथा लाभ की जगह हानि की अधिक संभावना है, और अक्सर ऐसा होता भी है। वह मेहनत, जो मानसिक प्रफुल्लता उत्पन्न करती है, स्वास्थ्य-वर्धक होती है।

अक्सर देखा जाता है कि गृह-स्वामिनी होने के नाते पुरुष स्त्री के ऊपर समस्त घर का भार छोड़कर उससे निश्चिंत हो जाता हैं। चाहे अपनी सहायता के लिये ऑफ़िस में कई क्लर्क और चपरासी रख ले, परंतु न-जाने क्यों स्त्रियों के लिये एक दाई रखने की भी उसे गुंजाइश नहीं होती। ऐसी स्थिति में बाध्य होकर स्त्री को सुबह से शाम तक घर के कामों में पिसना पड़ता है। स्त्री को पुरुष के मन-बहलाव का कोई भी साधन उपस्थित करने का समय ही नहीं मिलता। इच्छा के विरुद्ध अत्यधिक काम करने से शीघ्र ही उसका स्वास्थ्य गिर जाता है। एक दिन लाचार होकर उसे बिस्तर की शरण लेनी पड़ती है। फिर चाहे उसकी सेवा के लिये

नर्सें और डॉक्टरों की पलटन ही क्यों न तैयार रहे, सैकड़ों और हज़ारों रुपया बात-की-बात में पानी में क्यों न मिला दिया जाय, परंतु उसके किस काम का? स्वस्थ होने पर पुनः उसे वही पिसना पीसना पड़ता है, क्योंकि पतिदेव को उसके सहायतार्थ कुछ करने की सामर्थ्य ही नहीं। इन्हीं सब कठिनाइयों के कारण जीवन कंटक-पूर्ण हो जाता है। पुरुष को गृह में सुख और शांति का नाम भी नहीं मिलता। मिले कैसे, "रोपै पेड़ बबूर को, आम कहाँ से होय!" स्वार्थांधता तो इतनी है, और चाहते हैं सुख, सो कहाँ तक संभव है? बस, वे घर से अन्यमनस्क हो उठते हैं, और जार-ललनाओं के द्वार खटखटाकर सुख खोजते फिरते हैं, परंतु मृग-तृष्णा की तरह वे कभी संतुष्ट नहीं होते। खेद है, वे कभी अपनी ग़लती के ऊपर दृष्टिपात नहीं करते। पतिदेव बाहर मौजें उड़ाया करते हैं, और घर में पत्नी ख़ून के आँसू बहाती है। भला, ऐसे लोग कभी सुखी दंपति बन सकते हैं? कदापि नहीं।

अतः हम अगर बुराइयों को दूर करते हुए उपर्युक्त सम्मति ग्रहण कर उसे कार्य-रूप में परिणत करने की कोशिश करेंगे, तो संभवतः शीघ्र ही समाज को उन्नत कर सकेंगे, अन्यथा इसी में रोते-कलपते रहेंगे; क्योंकि जितनी कठिनता से हम दूसरे को दबाए रक्खेंगे, हमारी कठिनाइयाँ भी उतनी ही बढ़ती जायँगी।

रामेश्वरप्रसाद मिश्र

× × ×

३. तितली

मैं रंभा की संतान प्रिये,
मैं फूल-नगर की हूँ रानी;
ऋतुपति जब सैन्य-सहित आता,
करती उसकी हूँ अगवानी।
दो पंख इंद्र-धनु-रंगों के
परियों ने मुझको दान दिए;
कवि से सहृदयता, विद्युत से
चंचलता—ये उपहार लिए।
मैं वन-उपवन में उड़-उड़कर
सुख का संदेश लुटाती हूँ;
'सुख लूट अरे, क्षण-भर जीवन'
फूलों को गीत सुनाती हूँ।
मैं नहीं जानती विरह-व्यथा,
नैराश्य, दुःख, उलझन, चिंतन;
मैं नव गुलाब का चुंबन ले
करती कुसुमों से परिरंभण।
यौवन ही रूप व्यथा का है,
है प्रेम-व्यथा यह केवल दुख;
है प्रणय कभी बनता उलझन,
रखता है सदा तृषा सम्मुख।
चिर-सुंदर, अक्षय, यौवनमय
मादकता में भर-भर जाती;
मैं कुंज-कुंज में मतवाली
मदिरा उर की हूँ छलकाती।
मैं नहीं समझती, क्यों मानव
निशि-वासर श्रम करता रहता;
जीवन से फिर भी असंतोष,
यह तो जीवन की असफलता।
वन-उपवन में उड़ती फिरती
मैं हँसती, गाती, इठलाती;
मैं जहाँ-जहाँ जाती उपवन,
सौंदर्य-प्रभा हूँ फैलाती।

रामेश्वरप्रसाद सिनहा (एम० ए०)

× × ×

४. कविता और चित्रकला

यों तो हम विश्व की सभी वस्तुओं में विश्वकर्मा की सौंदर्य-निपुणता का आभास पाते हैं, किंतु जो सौंदर्य और आनंद ललित कलाओं द्वारा प्राप्त होता है, वह अलभ्य है। कविता और चित्रकला का घनिष्ठ संबंध है, दोनो में एक प्रकार का अनोखा सादृश्य है, दोनो का काम भिन्न-भिन्न प्रकार से दृश्यों और मनोविकारों को चित्रित करना है। जिस बात को चित्रकार चित्र द्वारा व्यक्त करता है, उसी को कवि कविता द्वारा। कविता भी एक प्रकार का चित्र है। कविता के श्रवण से आनंद आता है, और चित्र के दर्शन से। कवि और चित्रकार में किसका आसन ऊँचा है, इसका निर्णय करना कठिन है, क्योंकि किसी चित्र के भाव को कविता द्वारा व्यक्त करने से जिस प्रकार अलौकिक आनंद-वृद्धि होती है, उसी प्रकार कविता-गत किसी भाव को चित्र द्वारा स्पष्ट करने से भी होती है। चित्र देखने से नेत्र तृप्त होते हैं, कविता सुनने से कान। तो भी ललित कलाओं में सबसे ऊँचा स्थान 'काव्य कला' का समझा जाता है। इसका आधार कोई मूर्त पदार्थ नहीं होता, यह शाब्दिक संकेतों के आधार पर अपना अस्तित्व-प्रदर्शन करती है। मन को इसका ज्ञान आँखों या कानों द्वारा होता है। मस्तिष्क तक अपना प्रभाव पहुँचाने में इस कला के लिये किसी दूसरे साधन के अवलंबन की आवश्यकता नहीं होती, कानों या आँखों को शब्दों का ज्ञान सहज ही हो जाता है।

'चित्र-कला' का आधार कपड़े, लकड़ी आदि का चित्रपट है, जिस पर चित्रकार ब्रश या क़लम की सहायता से भिन्न-भिन्न पदार्थों या जीवधारियों के प्राकृतिक रूप, रंग और आकार आदि का अनुभव चित्रित करता है। वह अपने ब्रश या क़लम से समतल या सपाट सतह पर स्थूलता, लघुता, दूरी और नैकट्य आदि दिखाता है। वास्तविक पदार्थ को दर्शक जिस परिस्थिति में देखता है, उसी के अनुसार अंकन द्वारा वह अपने चित्रपट पर एक ऐसा चित्र प्रस्तुत करता है, जिसे देखकर दर्शक को चित्रगत वस्तु असली वस्तु-सी जान पड़ने लगती है। किंतु चित्रकार चित्रगत वस्तु का अभिप्राय एवं इतिहास चित्र में नहीं दिखा सकता, सिर्फ़ आँखों को ही आनंद पहुँचा सकता है। इस पर एक उदाहरण देकर इस भाव को स्पष्ट कर देना अच्छा होगा। मानिए, मेरे सामने एक करुणा-जनक घटना का चित्र उपस्थित है, जिसे एक प्रसिद्ध चित्रकार ने अंकित किया है। इस चित्र में एक सुंदर स्त्री श्वेत वस्त्र धारण किए, लट छिटकाए, अपना बायाँ हाथ कपोल से लगाए नेत्रों से अश्रु बहा रही है। चित्र से क्रम-क्रम से एक-एक अश्रु-बिंदु का गिरना भली भाँति ज्ञात हो रहा है। स्त्री के सामने लाला लाजपतराय का फ़ोटो है। यह सब मैं उस चित्र में देखता हूँ। परंतु यदि मैं इस घटना का वर्णन किसी पुस्तक में पढ़ता हूँ, तो सारी घटना का पूर्ण विवरण हृदय-पट पर अंकित हो जाता है। वह पुस्तक मुझे बताती है कि यह स्त्री, जो आँसू बहा रही है, 'भारत माता' हैं, और लालाजी का स्वर्गवास हो जाने पर विलाप कर रही हैं। साम्राज्यवादियों के अत्याचार से मेरी लाज बचानेवाले इस पुत्र का प्राणांत हुआ है। पर यह भाव, यह चित्रण तभी तक मुझे कारुणिक बनाए हुए है, जब तक मैं उस चित्र के सामने खड़ा या बैठा उसे देख रहा हूँ। वह मेरी आँखों से ओझल हुआ कि उसकी स्पष्टता का प्रभाव मेरे मन से हटने लगा। लेखक की कृति का अनुभव करने में मुझे समय तो अधिक लगाना पड़ा, परंतु मैं जब चाहूँ, तब अपनी कल्पना या स्मरण-शक्ति से उसे अपने अंतःकरण के सम्मुख उपस्थित कर सकता हूँ। अतएव साहित्य

या काव्य का प्रभाव चित्र की अपेक्षा स्थायी और पूर्ण होता है। कविता और चित्र के संबंध में इँगलैंड के प्रसिद्ध साहित्यिक बेन जॉन्सन ने अपने एक निबंध में बड़े सुंदर विचार प्रकट किए हैं। उनका कहना है—"इन दोनो कलाओं में समानता है, दोनो में अनुकरण-प्रियता है।"

कविता बोलता हुआ चित्र है, और चित्र गूँगी कविता। दोनो ही कोई-न-कोई नई बात पैदा करते हैं, और उसे प्रकृति के उपयोग और सेवा में लगाते हैं। फिर भी कूँची की अपेक्षा लेखनी अधिक उच्च है। काव्य और चित्र, इन दोनो ही के उद्देश्य लाभ और आनंद हैं, परंतु इन दोनो को निम्न श्रेणी के आनंद से बचाना चाहिए। ऐसा न करने से उनका उद्देश्य नष्ट हो जाता है। निम्न कोटि के आनंद को अपनाने से लोगों का मस्तिष्क भले ही उन्नत हो जाय, परंतु उनका चरित्र बिगड़ जाता है।

कवि और चित्रकार दोनो ही पैदाइशी कलाविद् होते हैं, बनाने से नहीं बनते। उनमें अध्ययन की अपेक्षा प्राकृतिक शक्ति अधिक होती है। बेन जॉन्सन साहब के उपर्युक्त विचारों पर यदि विस्तार के साथ विचार किया जाय, तो एक ग्रंथ तैयार हो जाय। मैंने कविता और चित्र-कला के संबंध में जो कुछ कहा है, वह केवल सूत्र-रूप में है, पर इतने ही में सब मतलब की बातें आ गई हैं। भारतीय चित्रकार और कवि जॉन्सन साहब की इन बातों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा'

× × ×

५. जीवन-बीमा-पॉलिसी पर क़र्ज़ और उसके दुष्परिणाम

यों तो व्यापारिक और व्यावहारिक दृष्टि से यह ठीक ही है कि जीवन-बीमा की पॉलिसी पर क़र्ज़ मिल सके, और सभी बीमा-कंपनियाँ अपनी पॉलिसी पर पक्की वापसी क़ीमत (Surrender Value) के अंदर ब्याज पर क़र्ज़ देती हैं, परंतु सोचने की बात तो यह है, और इस समस्या पर बीमा-कंपनियों के संचालकों का ध्यान दिलाना बहुत ज़रूरी है कि इस प्रथा से, जो अब बहुत ही प्रचलित होती जाती है, उन परिवारों को, जिनके जीविकोपार्जक का बीमा है, कितनी क्षति पहुँचती है। बहुधा कंपनियों के सालाना आँकड़े देखने से मालूम होता है कि उनकी पूँजी का एक बहुत बड़ा हिस्सा उन क़र्ज़ों में लगा दिखाई देता है, जो उनकी जारी की हुई पॉलिसियों पर पक्की वापसी क़ीमत के अंदर दिया गया है। यदि सब भारतीय कंपनियों का यह रुपया मिलाया जाय, तो लगभग ढाई करोड़ रुपए के क़र्ज़ों में पाया जाता है। यह रक़म हमारे देश के बीमे के काम को देखते हुए बहुत ज़्यादा है, और एक ऐसी चीज़ है, जिसकी तरफ़ हमारे बीमा-विशेषज्ञों, कंपनी के संचालकों और एजेंटों का ध्यान जाना चाहिए।

वैसे तो बीमा-कंपनियों के दृष्टिकोण से यह रुपए की लागत का तरीक़ा अति उत्तम है, क्योंकि और लागतों में तो यह भी संभावना होती है कि उनकी बाज़ार-दर कम हो जाने पर कंपनी को नुक़सान हो; क्योंकि जब उनकी बाज़ार-दर घटी होगी, तो उन्हें बेचने में कंपनी को नुक़सान ही होगा, लेकिन बीमे की पॉलिसियों पर दिए गए क़र्ज़ों में तो कंपनी की किसी भी तरह से धन-हानि होने का भय नहीं, क्योंकि जब कभी पॉलिसी-होल्डर की मृत्यु हो जाय, अथवा बीमे की अवधि पूरी हो जाय, तो कंपनी अपना रुपया मय सूद के बीमे की रक़म से काट सकती है। और, यदि पॉलिसी बीच में ही बंद (lapse) हो जाय, तो सबसे ज़्यादा नुक़सान बीमेदार का ही होता है, क्योंकि कंपनी ने तो उस पर इतना ही रुपया दिया था, जितना बीमेदार को पक्की वापसी क़ीमत के अंदर मिल सकता

था, जिसके कारण बीमा बंद होने पर कंपनी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा ।

हमारे कहने का यह अभिप्राय नहीं कि जो बीमेदार अपनी पॉलिसी पर क़र्ज़ लेते हैं, वे इसी इरादे से लेते हैं कि अपनी पॉलिसी लैप्स करा दें । पॉलिसी लप्स हो जाने से तो बीमेदार को ही बहुत हानि होती है, और जो इस बात की महत्ता जानते हैं, उन्हें ही पॉलिसी जारी रखने की फ़िक्र रहती है । हमारा कहने का अभिप्राय यह कि जब कभी पॉलिसी पर क़र्ज़ हो जाता है, तो उसके लैप्स होने की संभावनाएँ ज़्यादा बढ़ जाती हैं । और, अपने देश में तो बहुधा यह देखा जाता है कि जिनकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं होती, उनकी पॉलिसियाँ तो क़र्ज़ लेने के बाद ज़रूर ही लैप्स हो जाती हैं, क्योंकि जिनकी माली हालत ठीक होती है, उन्हें तो प्रायः क़र्ज़ लेने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती, और जब कभी व्यापार के वास्ते, थोड़े समय के लिये, ज़रूरत पड़ती भी है, तो वह समय गुज़र जाने के बाद अपने क़र्ज़े अदा कर देते हैं, बशर्ते व्यापार की हालत अच्छी रही हो, वरना उनकी पॉलिसियों पर भी क़र्ज़ बना ही रहता है । और, बहुधा देखा गया है कि वे लोग उसे अदा करने की कोशिश और फ़िक्र नहीं करते । नतीजा यह होता है कि ब्याज-दर ब्याज बढ़ा रहता है, और वे अपनी पॉलिसी खो बैठते हैं । यह भी देखा गया है कि ऐसे क़र्ज़ों की सहूलियतें जितनी बढ़ती जाती हैं, उतनी ही ज़्यादा क़र्ज़ लेने की संभावना बढ़ती जाती है । इसका कारण यही है कि कपनी से पॉलिसी पर क़र्ज़ लेने में कोई दिक़्क़त नहीं होती, और ज़्यादा-से-ज़्यादा दस दिन के अंदर किसी भी बीमा-कंपनी के दफ़्तर से पॉलिसी पर क़र्ज़ मिल जाना आश्चर्य-जनक नहीं होता । इसी वजह से बहुत-से लोगों को बीमा कराने का चाव होता है । वास्तव में बीमा-कंपनियाँ भी अपने क़र्ज़ों की सुविधाओं का प्रचार करती हैं. और लोग इस योजना से बहुत प्रभावित भी होते हैं ।

हर मनुष्य का बीमा कराना उपयुक्त और आवश्यक है, लेकिन इस अभिप्राय से बीमा कराना कि इस पर क़र्ज़ मिल सकेगा, इस प्रबंध के उद्देश्य को, जिसके कारण बीमा कराया जाता है, और वास्तव में कराया जाना चाहिए, निरर्थक कर देता है । पॉलिसी-होल्डर, जिसकी पॉलिसी पर क़र्ज़ है, अपने बीमे की पूरी रक़म याद रखता है, और इसे भूल जाता है कि वास्तव में उसके परिवार को उसके क़र्ज़े की रक़म काटकर कितना रुपया मिल सकेगा । इसी प्रकार कंपनियाँ जिस समय अपने सालाना चिट्ठे में अपने चालू बीमे की रक़म दिखाती हैं, तो उसमें बहुधा इसका ध्यान नहीं दिलाया जाता कि वास्तव में जब पॉलिसियों की अवधि पूरी होगी, तो बीमेदारों को कितना धन प्राप्त होगा । बीमा-विशेषज्ञों का ध्यान इस ओर दिलाया जाता है । देश की आर्थिक और व्यावसायिक दशा सुधारने के लिये यह अनिवार्य है कि हम लोग यह सोचें कि इस क़र्ज़े की प्रथा को किस प्रकार कम किया जाय, जिसके कारण हतभाग्य परिवार को, उसके जीविकोपार्जक की मृत्यु हो जाने पर, बीमे का कितना कम लाभ मिलता है ।

बीमा कराना सर्वथा निर्मूल है, यदि इस अभिप्राय से न कराया जाय, जो उसका वास्तविक लाभ है, और जिससे प्रभावित होकर ही मनुष्य-जाति ने इस उत्तम योजना का आविष्कार किया है । वह यह कि असामयिक मृत्यु हो जाने पर बीमेदार के परिवार को ज़्यादा-से-ज़्यादा आर्थिक सहायता मिल सके, और उसके बाल-बच्चों का लालन-पालन हो सके । हम जब लोगों का बीमा कराते हैं, तो इस बात के महत्त्व पर बहुत ज़ोर देते हैं, और देना भी चाहिए, और

लोग इसी से प्रभावित भी होते हैं। लेकिन उस समय यदि हम बीमा करानेवालों को यह भी बता दें कि पॉलिसी पर क़र्ज़ लेने से उन्हें बहुत हानि होगी, तो, संभव है, यह क़र्ज़ लेना कम हो जाय। लेकिन जब कंपनियाँ ही इस बात का ढोल पीटती हैं, तो एजेंट भी लोगों को ग़लत भुलावे में डाल देते हैं। बीमे का व्यापार देश के लिये तभी हितकर हो सकता है, जब एजेंट लोग और कंपनियाँ इस बात की यथासंभव कोशिश करें कि उनके कराए हुए बीमे चालू रहें, और पूरी रक़म के वास्ते चलें। एजेंटों के लिये यह ज़रूरी है कि वे अपने काम को वहीं तक न समझें, जब तक बीमा करा देते हैं, क्योंकि वास्तव में एजेंट का संबंध बीमा करानेवाले के परिवार से ऐसा हो जाता है, जो बहुत ही परोपकारी और पुनीत है। कारण, जब अभाग्य-वश पॉलिसी-होल्डर की असामयिक मृत्यु हो जाती है, तो एजेंट को बीमे का भुगतान करा देने में परिवार की मदद करना ज़रूरी है, और तभी वह अपने कार्य की पूर्ति कर सकता है। बहुधा देखा गया है, हमारे देश के बीमा करानेवालों के परिवार ज़्यादा शिक्षित नहीं होते। वे कंपनी के क़ायदे और क़ानून से अनभिज्ञ होते हैं। उन्हें केवल इतना ही ज्ञान होता है कि उनके जीविकोपार्जक का बीमा हुआ है, और बीमेदार की मृत्यु हो जाने पर परिवार का आश्रय बीमे की उस रक़म पर अवलंबित है। लेकिन उन्हें जब यह मालूम होता है कि पॉलिसी पर बीमेदार ने अपने जीवन में ही क़र्ज़ ले रक्खा था, और उन्हें अब जो रक़म मिलेगी, वह बहुत ही थोड़ी होगी (ज़्यादातर देखा गया है कि यह रक़म उस धन से भी कम होती है, जो बीमेदार ने अपने जीवन में दिया था), तो इससे बीमे के महत्त्व को बहुत क्षति पहुँचती है, और उस परिवार के लोग बीमे को नापसंद करने लगते हैं। इसलिये हमारे एजेंटों को चाहिए कि अपने बीमेदारों को पॉलिसी पर क़र्ज़ लेने से रोकें, ताकि वे परिवार के उस हक़ को न छीन लें, जिसकी वजह से बीमा कराया गया था। कंपनियों को भी चाहिए कि बीमेदारों को क़र्ज़ लेने के दुष्परिणाम का ध्यान दिला दें, और क़र्ज़ देने के बाद उसकी वसूलयाबी की भरसक चेष्टा करें।

यह लिखते हुए बहुत शोक होता है कि बहुधा कंपनियों का ध्यान इस तरह के क़र्ज़ों के वसूल करने में कम होता है, और यदि वे कोशिश करें, तो ये क़र्ज़े बहुत कम हो सकते हैं। इससे यह ज़ाहिर होता है कि कंपनियों का इसी में फ़ायदा है कि वे इसकी परवा न करें। लेकिन इस थोड़े-से फ़ायदे के लिये वे बीमे के वास्तविक महत्त्व को परदे में डाल देते हैं, जिससे देश और उसके हतभाग्य परिवारों को आर्थिक क्षति पहुँचती है।

कंपनियों, उसके संचालकों और एजेंटों को यह अपना धर्म समझना चाहिए कि बीमा करानेवालों को बतावें कि वे अपने परिवार के साथ विश्वासघात करते हैं, यदि इस प्रकार का पॉलिसी पर क़र्ज़ लेते हैं। अगर हम अपने इस कार्य में सफल हो जायँ, तो वास्तव में बीमा-व्यापार और देश की आर्थिक दुर्दशा का उद्धार कर सकते हैं।

महेंद्र

× × ×

६. चुंबन

चुंबनमय यह सारा जीवन।

माता का वह कल पार्श्व-प्रांत,
है वहाँ किलकता शिशु अक्लांत।

है निष्कलंक सौंदर्य - मूर्ति,
जग में इसकी कब, कहाँ पूर्ति ?
लुट रहा वहाँ निर्व्याज प्यार,
मृदु अंगों पर चुंबन-बहार।

चुंबन में भर हँसता क्रंदन,
चुंबनमय यह सारा जीवन।

यौवन में उर का मधुर प्यार
(उठता रह-रहकर तीव्र ज्वार),
राका-शशि लख हो सुख-विभार,
उर-सागर से उठती हिलोर।
कोमल अधरों का लघु बँधान
कब रोक सका धारा महान ?
अधरों से अधरों पर चुंबन,
चुंबनमय यह सारा जीवन।

उड़ गया समय-खग दिन-निशि पर,
यौवन का मद भी गया उतर।
कंकाल देह—बदली जगती,
कब रही यहाँ किसकी हस्ती ?
सब त्वचा सिकुड़, तन हुआ विकृत,
अपना जीवन पर से अधिकृत।
दिन अस्त—सामने चिर रजनी,
उसमें अदेह मेरी सजनी।
है वहाँ प्राण तक का चुंबन,
चुंबनमय यह सारा जीवन।

मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट'

मनमोहक शृंगार-सामग्रियों का सुंदर बक्स

इसमें चार चुनी हुई शृंगार-सामग्रियाँ केशराज, निहारिन स्नो, डाबर मस्क, लवेंडर और निहारिन पाउडर इस तरह सुसज्जित हैं कि देखते ही बनता है। बक्स भी बड़ा सुंदर बना है।

नैवेद्य
(Regd.)
उपहार में देने का सुंदर
शृंगारदान

शौक़ीनों को इसकी एक बार अवश्य परीक्षा करनी चाहिए। विवाह आदि शुभअवसरों में देने के लिये तो यह एक उत्तम उपहार है।

एक बार भेंट में इसे देकर अपने प्रियजनों की प्रसन्नता को देखिए

सब जगह मिलता है।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

विभाग नं० ४६ पोस्ट-बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

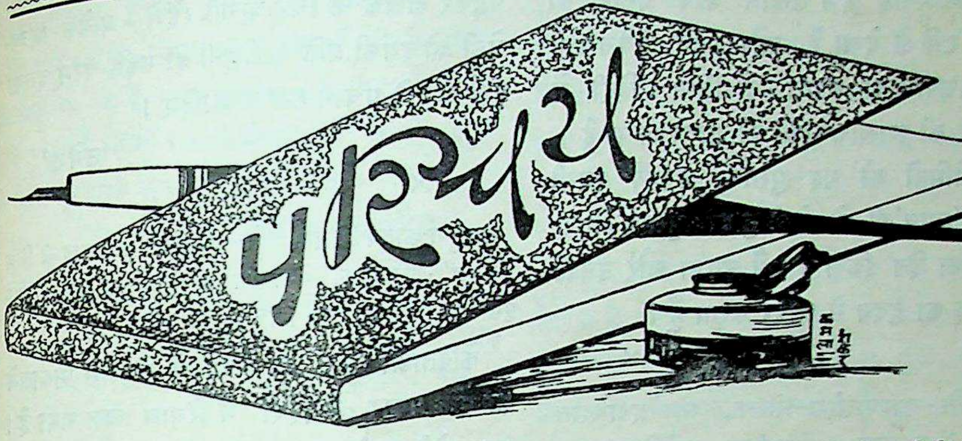

प्रिया या प्रजा—लेखक, श्री पं० गोविंददास 'विनीत' दीनकुटीर, तालबेहट, झाँसी ; मूल्य ॥)

इस पुस्तक में 'सीता-परित्याग' की कथा विविध छंदों में वर्णित है। कहीं-कहीं कुछ पंक्तियाँ अच्छी हैं। परंतु प्रायः कविताओं में व्यर्थ संस्कृत के क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग किया गया है। लेखक की परशु-लेखनी ऐसे करुणा-जनक विषय को लिखने में जिस प्रकार समर्थ हुई है, उसका नमूना पाठकों के मनोरंजनार्थ दिया जाता है—

भारतभूमि से—

निःस्वा रहे भी सु - सर्गापमाना,
जो निर्जना भी सजन्या प्रधाना ;
जो कंटकाकीर्ण भी नंदना है,
संतान को स्वर्ग की स्यंदना है।
आचार्यता है जहाँ विश्व-माण्या,
कोई न सदृश—भू यस्य गण्या ;
विज्ञान विद्युद्दिवा ध्रूमजा है,
सालोकता लोकता लोक क्या है ?

बस, इसी से पाठक इस पुस्तक के सौंदर्य को समझ लें। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।

× × ×

आंजनेय—लेखक, श्रीसुदर्शन ; प्रकाशक, 'संकीर्तन'-कार्यालय, मेरठ ; मूल्य १)

इस पुस्तक में राम-भक्त हनूमान्‌जी की जीवनी सुंदर एवं विस्तृत रूप से लिखी गई है। विशेषतः महाभारत, वाल्मीकि तथा तुलसी-कृत रामायण के आधार पर ही इस पुस्तक की रचना की गई है। महावीरजी का ऐसा सुंदर जीवन-चरित्र मैंने नहीं देखा। लेखक ने लिखकर सचमुच स्तुत्य प्रयास किया है। भक्त-संप्रदाय तो इस पुस्तक को अत्यंत आदर की दृष्टि से देखेगा ही, परंतु सामान्य पाठक-गण भी इसे पढ़कर आनंद उठाए बिना न रहेंगे। मैं लेखक को ऐसी उत्तम पुस्तक लिखने के उपलक्ष्य में बधाई देता हूँ !

× × ×

कवि 'प्रसाद' की काव्य-साधना—लेखक, श्री-रामनाथ 'सुमन' ; प्रकाशक, छात्र-हितकारी पुस्तकमाला दारागंज, प्रयाग ; मूल्य २॥)

इस पुस्तक में 'सुमन'जी ने 'प्रसाद'जी के संपूर्ण काव्यात्मक स्वरूप की विस्तृत आलोचना की है। 'सुमन'जी 'प्रसाद'जी के प्रारंभ से ही प्रशंसक थे, और 'प्रसाद'जी इस प्रशंसा के योग्य भी थे। वह बहुत बड़े कवि और ऊँचे दरजे के कलाकार थे। इस आलोचनात्मक ग्रंथ में 'प्रसाद'जी के व्यक्तित्व और परिस्थितियों का सुंदर विश्लेषण किया गया है, परंतु काव्य का विश्लेषण उतना सुंदर नहीं हो सका। 'सुमन'जी की भाषा कहीं-कहीं गंभीर नहीं, परंतु उसमें तरल

तरंगिणी का प्रवाह है। उन्होंने कवि 'प्रसाद' को विवेक की दृष्टि से देखा है, और अपने विवेचन में कहीं भी पक्षपात का सहारा नहीं लिया। हिंदी में इस प्रकार की आलोचनाओं की आवश्यकता है।

हिंदी-प्रेमियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। 'सुमन'जी ने ऐसी सुंदर पुस्तक लिखकर हिंदी का हित किया है। मैं उनका और उनकी इस पुस्तक का हृदय से आदर करता हूँ।

× × ×

विद्यापति - काव्यालोक—लेखक, श्रीनरेंद्रनाथदास विद्यालंकार ; प्रकाशक, मित्र-मंडल, लहेरिया सराय (दरभंगा) ; मूल्य सजिल्द २॥), अजिल्द २)

मैथिल-कोकिल महाकवि विद्यापति की काकली किस साहित्यिक को आनंद-निमग्न न कर देगी? उनकी पदावली की अमृतमयी सुमधुर झंकार ने विश्वकवि रवींद्र बाबू तक के हृदय को झंकृत किया है। कुछ काल पर्यंत तो बंगाल ने इस कवि को अपने प्रांत का बंगाली कवि समझने में ही गौरव समझ रक्खा था, इसी से पाठक इस कवि की विलक्षणता एवं महत्ता समझ सकते हैं। इस कवि को पाकर मिथिला ही नहीं, अपितु समस्त भारत गौरवान्वित हुआ है। दुःख है, हिंदीवाले 'नवरत्नों' के साथ इस कवि को बिठाकर अपना न सके। नवरत्न के कवियों से यह किसी प्रकार घटकर नहीं। मैथिली संस्कार में हिंदी से दूर नहीं है, इसलिये विद्यापति का काव्य हमारे प्राणों के सन्निकट है। अभी तक हिंदी में कोई भी सुंदर पुस्तक विद्यापति के काव्य-विवेचन के रूप में न थी। विद्वान् लेखक ने इस सुंदर पुस्तक में विद्यापति के काव्य की विशद समीक्षा, तुलनात्मक रूप में, बड़े अच्छे ढंग से की है। लेखक का अध्ययन गहन एवं पाठकों के मनन की वस्तु है। इसे लिखकर लेखक ने हिंदी-साहित्य की बड़ी सेवा की है। विश्वास है, पाठक पुस्तक पढ़कर लेखक के चिर-ऋणी रहेंगे। प्रत्येक काव्य-प्रेमी को इसकी प्रति ख़रीदनी ही नहीं, वरन् इसका पूर्ण रूप से प्रचार करना चाहिए।

'उमेश'

× × ×

नवयुग-काव्य-विमर्श—लेखक, श्रीज्योतिप्रसादजी मिश्र 'निर्मल' ; प्रकाशक, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ ; मूल्य २॥); पृष्ठ-संख्या ३२+३३८ ; चित्र-संख्या १३

कविताओं और कहानियों के संकलन निकालने का एक प्रकार से हिंदी में रिवाज चल गया है। यह कोई बुरी बात नहीं। विभिन्न लेखकों की कृतियों का संग्रह करने से एक लाभ तो यह है कि समय की बचत हो जाती है, और एक ही स्थान पर नई-नई, सुंदर चीज़ें पढ़ने को मिल जाती हैं। यदि संग्रह में एक ही प्रकार की रचनाएँ हुईं, तो तुलनात्मक समालोचना करने में सरलता होती है। इसके लिये बड़े परिश्रम और समय की आवश्यकता है। परंतु अधिकांश संपादक इन बातों का ध्यान नहीं रखते। हर्ष का विषय है, प्रस्तुत पुस्तक के लेखक और संपादक, किसी सीमा तक, इस दोष से बरी हैं। यद्यपि कवियों में दो-एक के नाम छूट गए हैं, और प्रसिद्ध कवयित्रियों में केवल श्रीमती महादेवी वर्मा को ही स्थान दिया गया है, तथापि लेखक ने छायावादी कविताओं का यह संग्रह परिश्रम और लगन से तैयार किया है, ऐसा जान पड़ता है। पुस्तक तीन भागों में विभाजित है—प्रथम में भाव-प्रधान, द्वितीय में कल्पना-प्रधान और तृतीय में नवोदित कवियों की रचनाओं को रखने का प्रयत्न किया गया है। कवियों की जीवनी के साथ उनकी रचनाओं की संक्षिप्त परिचयात्मक आलोचना भी दी गई है। यद्यपि ये आलोचनाएँ विशेष विवेचनात्मक नहीं, और प्रायः कवियों के अपने संग्रहों की भूमिका के आधार पर लिखी गई हैं—उदाहरण के लिये श्रीमती महादेवी की आलो-

चना—तथापि पुस्तक की उपादेयता में कोई संदेह नहीं। ऐसे संग्रह प्रायः विद्यार्थियों के लिये ही लिखे जा रहे हैं। यह पुस्तक भी विद्यार्थियों के लिये उपयोगी होगी। विश्वविद्यालयों के बी० ए० के विद्यार्थी इससे लाभ उठा सकते हैं।

प्रेमनारायण टंडन

× × ×

प्रकाशवान् चूर्ण—आविष्कर्ता, एल्० आर० गुप्त ऐंड संस, दातागंज, बदायूँ; एक पैकट का मूल्य ।।।), डाक-ख़र्च अलग; तीन पैकट का २), डाक-ख़र्च माफ़; आविष्कर्ता से प्राप्य।

आपका प्रकाशवान् चूर्ण मैंने स्वयं खाया, स्वाद में अत्युत्तम है। आशा है, लाभकारी भी अवश्य होगा, क्योंकि उसमें जिन ओषधियों का संयोग है, वे निश्चय ही समस्त प्रकार के उदर-रोगों के लिये शास्त्र-सिद्धांत से लाभकारी हैं। जनता को इससे लाभ उठाना चाहिए।

कविराज मुरारीलाल प्राज्ञ
(प्रजावैद्य, भिषग्भूषण)

× × ×

गाँव-सुधार कैसे हो?—लेखक, श्रीरामचंद्र त्रिवेदी; प्रकाशक, पटना-पब्लिशर्स, पटना; मूल्य सादी ।।=), सजिल्द १=)

'गाँव-सुधार कैसे हो?' नाम की एक छोटी-सी पुस्तिका हाल ही में पटना से प्रकाशित हुई है। पुस्तक की छपाई अच्छी है। इन दिनों देश के सामने ग्राम-सुधार का प्रश्न प्रमुख रूप में उपस्थित है। भारतवर्ष की सभी प्रांतीय सरकारें ग्राम-सुधार के प्रश्न को हल करने का उद्योग कर रही हैं। ऐसे समय में इस पुस्तक का प्रकाशित होना बहुत सामयिक कहा जायगा। मैंने शुरू से आख़ीर तक पुस्तक को देख लिया है। लेखक ने यथासाध्य सभी प्रश्नों पर प्रकाश डालने का सफल उद्योग किया है। शिक्षा, कृषि, फ़िज़ूल-ख़र्ची, ग्राम-पंचायत, स्वास्थ्य, क़र्ज़ की समस्या और मादक द्रव्य-निषेध आदि प्रश्नों पर अपने विचार प्रकट किए हैं। विचारों में कोई नवीनता नहीं, फिर भी प्राइमरी और मिडिल स्कूलों के छात्रों के हाथों में यह पुस्तक निस्संकोच दी जा सकती है। ग्राम-सुधार के कार्यकर्ताओं को भी इस पुस्तक से कुछ सहायता मिल सकती है। हम शिक्षा-विभाग के मंत्री से ख़ास तौर पर अनुरोध करेंगे कि वह इस पुस्तक को पाठ्य पुस्तकों में स्थान देने की कृपा करें। पुस्तक की भाषा सरल और आम लोगों की समझ में आने लायक़ है। निरक्षरता-निवारण के सिलसिले में भी यह पुस्तक उनके लिये कारगर सिद्ध होगी, जिन्होंने पढ़ना-लिखना सीख लिया है।

विपिनविहारी वर्मा

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।।)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।।-)
२५ ,, ,, ,, ४=)
} श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'अनुपान-विधि' (स्वास्थ्योपयोगी)—लेखक, रसायन-शास्त्री श्रीश्यामसुंदराचार्य वैश्य ; मूल्य ।=)

(२) 'अनुभूति-योग' (स्वास्थ्योपयोगी)—लेखक, उपर्युक्त ; मूल्य ॥=)

(३) 'विक्रमोर्वशीय नाटक'—अनुवादक, श्रीचंद्रकांतजी पाठक ; मूल्य ॥=)

(४) 'शैल-बाला' (उपन्यास)—अनुवादिका, श्रीसावित्रीदेवीजी ; मूल्य १।)

(५) 'जय-यात्रा' (उपन्यास)—लेखक, श्रीमन्मथनाथजी गुप्त ; मूल्य १।)

(६) 'माया' (उपन्यास)—लेखक, श्रीजगदीशजी झा 'विमल' ; मूल्य १॥)

(७) 'विस्मृति के गर्भ में' (उपन्यास)—लेखक, श्रीराहुल सांकृत्यायन ; मूल्य २)

(८) 'समाज की खोपड़ी' (उपन्यास)—लेखक, श्रीरमाकांतजी त्रिपाठी 'प्रकाश' ; मूल्य १॥)

(९) 'भोजन-शास्त्र'—लेखिका, श्रीरुक्मिणीदेवीजी ; मूल्य १॥)

(१०) 'स्त्री-भूषण' (स्त्र्युपयोगी)—लेखक, श्रीपुरुषोत्तमजी बी० ए० ; मूल्य २॥=)

(११) 'देशी शिष्टाचार'—लेखक, श्रीनरसिंहजी राय शुक्ल ; मूल्य ।॥)

(१२) 'होमियोपैथिक चिकित्सा'—लेखक, डॉ० एस्० एस्० मिश्र एच्० एम्० बी० ; मूल्य ३)

(१३) 'घरेलू सस्ती दवाएँ'—लेखक, श्रीस्वामी विश्वनाथजी शास्त्री ; मूल्य १॥)

(१४) 'वीर परशुराम' (उपन्यास)—लेखक, श्रीपं० वेणीरायजी ; मूल्य १॥)

(१५) 'मेरा जीवन-संग्रह' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीकृष्णचंद्रजी 'वेरी' ; मूल्य ३॥)

(१६) 'हिंदी-मुहावरा-कोष'—लेखक, प्रोफ़ेसर श्रीआर० जे० सरहिंदी ; मूल्य १॥)

(१७) 'मानस-प्रतिभा' (उपन्यास)—लेखक, श्रीबा० दुर्गाप्रसादजी झुनझुनूवाला बी० ए० ; मूल्य १॥)

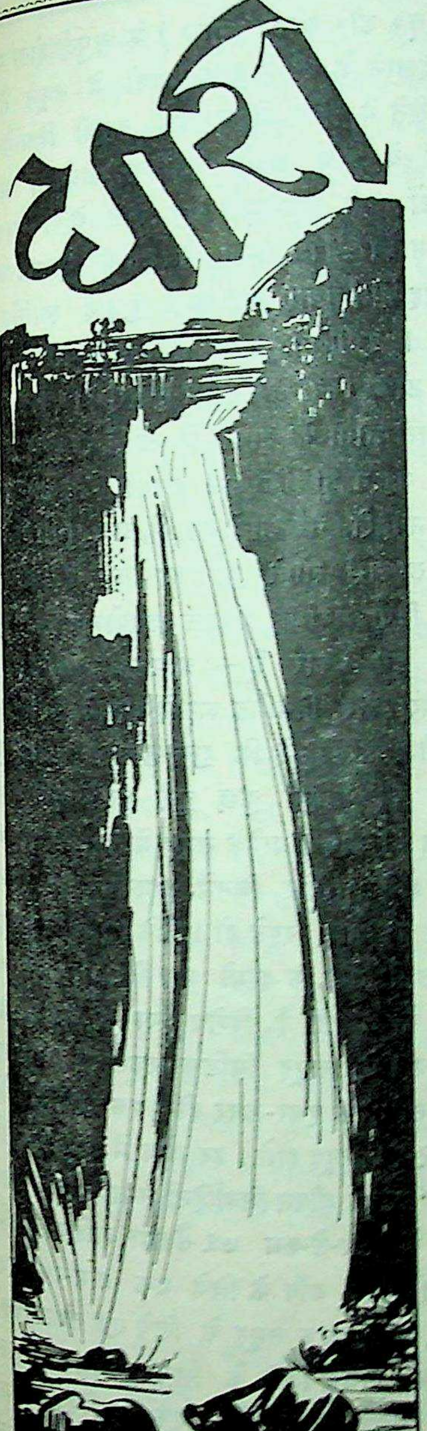

१. ग्राम-सुधार-आयोजना

ग्राम-सुधार का कार्य हमारे देश में पिछले कई वर्षों से हो रहा है, किंतु उससे गाँवों की दशा में अब तक कुछ भी परिवर्तन नज़र नहीं आया था। इसका कारण यह था कि अब तक सरकारी और ग़ैर-सरकारी तरीक़ों पर ग्राम-सुधार की जितनी आयोजनाएँ बनीं, वे सिर्फ़ काग़ज़ पर लिखी रह गईं, उनका बहुत कम अंश कार्य-रूप में परिणत हुआ। हम तो कहेंगे, महात्मा गांधी के ग्राम-उद्योग-संघ ने भी कोई कहने योग्य कार्य नहीं किया। उसका क्षेत्र बहुत सीमित रहा। हाँ, देश को उससे इतना फ़ायदा अवश्य हुआ कि लोगों की कल-कारख़ानों की तरफ़ लगी हुई मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ। लोग चीनी के स्थान में गुड़ और 'घासलेट' घी के स्थान में घानी के तेल का भी महत्त्व समझने लगे। दूसरा लाभ महात्माजी के ग्राम-सुधार-आंदोलन से यह हुआ कि भारत-सरकार भी गाँव-सुधार की आवश्यकता महसूस करने लगी, और पहले साल में उसने एक करोड़ रुपए की रक़म इस कार्य में ख़र्च होने के लिये दी। इससे प्रांतीय सरकारों का ध्यान गाँव-सुधार की ओर गया। यद्यपि सरकार का रुपया अधिकतर हाकिमों के भत्ते, लोगों के सैर-सपाटे और फ़िज़ूल के कामों में ही ख़र्च हुआ, उससे गाँव-सुधार का कार्य रुपए में दो पैसे-भर भी नहीं हुआ, पर सरकार की बाबत यह दुनिया-भर में ढोल पिट गया कि वह भारत के गाँवों का सुधार कर रही है। प्रांतीय स्वाधीनता के साथ जब कई प्रांतों में कांग्रेस-सरकारें बनीं, तो उन्होंने इस ग्राम-सुधार के कार्य को एक नया रूप देकर अलग-अलग प्रांतों में जारी किया। यू० पी० में वह एक बड़े पैमाने पर और अच्छी रक़म ख़र्च

करके शुरू किया गया। पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल को ग्राम-सुधार-ऑफ़िसर नियुक्त कर उन्हें चौदह लाख की रक़म तीन महीने में ख़र्च करने के लिये दी गई। कई जगह ग्राम-शिक्षा-केंद्र खुले, और उनमें आठ सौ ग्राम-सेवक तयार किए जाने की शिक्षा शुरू हुई। ऐसा प्रतीत होने लगा कि ग्राम-सुधार के कार्य में संयुक्त प्रांत शेष समस्त सूबों से आगे बढ़ जायगा, और अब यू० पी० के क़रीब साढ़े चार करोड़ देहाती भाइयों की दशा सुधरे बिना न रहेगी। नए वर्ष के बजट में यू० पी० की कांग्रेस-सरकार ने क़रीब एक करोड़ रुपया ग्राम-सुधार-कार्य के लिये मंज़ूर किया, इससे लोगों के हौसले और भी बढ़ गए।

हर्ष की बात है, माननीय डॉक्टर काटजू ने मिस्टर एम्० डी० चतुर्वेदी को ग्राम-सुधार-ऑफ़िसर नियुक्त किया है। वह सुलझे हुए विचारों के, अनुभवी, तीव्र-बुद्धि और कर्मशील अफ़सर हैं। इसीलिये ग्राम-सुधार की गाड़ी तीव्र गति से अपनी मंज़िल की ओर बढ़ने लगी है। आपने अपनी नई आयोजना तैयार की है, और उसके अनुसार कार्य शुरू कर दिया है। आपकी आयोजना रचनात्मक ढंग की तो है ही, कुछ हद तक क्रांतिकारी भी है। और, आजकल कोई भी रचनात्मक कार्य लोगों में तब तक आकर्षण पैदा नहीं करता, जब तक उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन की बात मौजूद न हो। एक बात इसमें और विशेष है। इस आयोजना में ग़ैर-सरकारी लोगों का दखल कम करके सरकारी लोगों को भी बराबर भाग दिया गया है। इस दूसरी बात से हम सहमत हैं, क्योंकि ग्राम-सुधार के कार्य में जब तक सरकारी लाग सहयोग और मदद न करें, तब तक उसके संचालन में कई कठिनाइयाँ हो सकती हैं, और पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल के साथ यही हुआ भी। उनसे पहले गाँव-सुधार का सारा कार्य सरकारी आदमियों (एस्० डी० ओ० वग़ैरा) के सुपुर्द होता था। वे दिखाने के लिये कुछ गाँवों में नमूने तैयार कर लेते थे, और केवल इस बाहरी दिखावे के साथ वे और उनके वैतनिक कार्यकर्ता अपनी रिपोर्टों की ख़ानापुरी कर लेते थे। सरकारी हाकिम को अपने काम से इतनी फ़ुरसत कहाँ कि वह ग्राम-सुधार का कार्य सुचारु रूप से कर सके। इसीलिये पहले ग्राम-सुधार-ऑफ़िसर ने यह ठीक किया कि ग्राम-सुधार का कार्य ग़ैर-सरकारी लोगों के हाथों में दे दिया। पर उसका अर्थ यह न था कि उसे सरकारी सहयोग बिलकुल न मिले। नई आयोजना में, ग्राम-सुधार के कार्य में, सरकारी लोगों का सहयोग भी अनिवार्य कर दिया गया है। इस आयोजना का मुख्य अंश इस प्रकार है—"ग्राम-सुधार के कार्य को विस्तीर्ण और नियमित रूप से चलाने के लिये यह तजवीज़ की गई है कि शुरू-शुरू में सारी ख़ास-ख़ास कार्यवाहियाँ कुछ चुने हुए समूहों में ही केंद्रित की जायँ। प्रत्येक समूह में २० या ३० गाँव ऐसे होने चाहिए, जिनमें लगभग १० से १५ हज़ार तक लोग रहते हों। लेकिन प्रत्येक समूह में ऐसे सभी तरह के कामों पर, जिनमें सरकार सहायता दे सकती है, विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। ऐसे समूह मिडिल स्कूल या अस्पताल-जैसी संस्था के इधर-उधर हों। एक ज़िले में औसत से १२-१५ समूह होंगे। हर गाँव में एक रजिस्ट्री की हुई 'उत्तम जीवन-निर्वाहिनी सभा' होगी, जिसमें गाँव के कम-से-कम ७५ सैकड़ा बालिग़ शामिल होंगे। हरएक गाँव के लिये एक ग्राम-पथ-प्रदर्शक होगा, और हरएक समूह के लिये एक संगठनकर्ता। इसीलिये प्रत्येक ज़िले के लिये एक ज़िला-इंस्पेक्टर और कमिश्नरी के लिये एक सुपरिंटेंडेंट होगा। सदर मुक़ाम पर ग्राम-सुधार-ऑफ़िसर और उनके सहकारी रहेंगे। गाँव-सभा बन जाने पर सभा

एक पंचायत चुनेगी, जिसमें एक सरपंच और एक मंत्री होगा। यह पंचायत गाँव की उन्नति के लिये कुछ धन गाँववालों से प्राप्त करेगी। हरएक समूह की २० या ३० 'उत्तम जीवन-निर्वाहिनी सभाएँ' अपना एक संघ बनाएँगी। इस संघ का वास्तविक प्रबंध पंचायत-संघ के हाथ में होगा। भिन्न-भिन्न सरकारी विभागों के स्थानीय ऑफ़िसर संघ के 'एक्स-ऑफ़िशियो' सदस्य होंगे। संगठन-कर्ता संघ का वैतनिक मंत्री होगा। गाँव में एक पंचायतघर भी होगा, जहाँ बालिग़ों और लड़कियों की शिक्षा के लिये प्रबंध किया जायगा।"

इस आयोजना को कार्य-रूप में परिणत करने के लिये हमें जो एक बड़ी कठिनाई नज़र आती है, वह है गाँव-सुधार के लिये गाँववालों से आर्थिक सहायता लेना। गाँव के लोगों की दशा ऐसी नहीं, जो वे ग्राम-सुधार-योजना का एक आर्थिक बोझ और अपने ऊपर ले सकें। अभी तक, जहाँ तक हमारा अपना अनुभव है, गाँव के लोग इस कार्य को अपने ऊपर आई हुई एक नई आफ़त समझते हैं। पर नई आयोजना के अनुसार कार्य होने पर, आशा है, लोगों का इस तरफ़ आकर्षण बढ़ेगा, और तब गाँवों में भी उनकी उन्नति के लिये रुपया प्राप्त किया जा सकेगा। सरकार जितना रुपया इस कार्य में ख़र्च करना चाहती है, उससे यदि वह गाँव में पूरी सफ़ाई और पानी का भी प्रबंध कर सके, तो लोगों में स्वतः यह भाव पैदा होगा कि गाँव-सुधार-योजना से उनका भला होने-वाला है।

× × ×

२. शिक्षा का माध्यम कौन-सी भाषा हो ?

हमारे लिये सचमुच यह दुर्भाग्य की बात है कि हम आज इस प्रश्न को हल करने में लगे हैं कि भारत की उच्च शिक्षा का माध्यम किस भाषा को बनाया जाय ? अन्य स्वतंत्र देशों के सामने यह प्रश्न कभी आता ही नहीं। इटली, जर्मनी या फ़्रांस के किसी आदमी से यही सवाल पूछें, तो वह हमें अजब बेवक़ूफ़ कहेगा। यही क्यों, आयर्लैंड में, जहाँ शताब्दियों तक अँगरेज़ों की हुकूमत रही, और अब भी वह ब्रिटिश साम्राज्य का एक भाग ही समझा जाता है, अँगरेज़ी-भाषा को वहाँ की शिक्षा का माध्यम बनने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। इँगलैंड और आयर्लैंड एक दूसरे से जितने निकट हैं, भारत उतना ही दूर। फिर भी यहाँ उच्च शिक्षा का माध्यम अँगरेज़ी-भाषा बनी हुई है। अब जब भारत के विभिन्न सूबों में प्रांतीय स्वाधीनता की झलक दिखाई दी है, तो राष्ट्र के शुभचिंतक, विचारशील नेताओं का ध्यान इस ओर गया है, और विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने से इस देश की जो नैतिक और सांस्कृतिक क्षति हो रही है, उसे उन्होंने भले प्रकार समझ लिया है। वर्धा की नवीन शिक्षा-योजना इसी का परिणाम है। इस योजना को कार्यान्वित होने पर हमारी मानसिक दासता एक हद तक दूर हो जायगी। किंतु देश के बहुत-से व्यक्ति और ख़ासकर वे, जो अपने विचार और भाव अँगरेज़ी-भाषा के सिवा दूसरी भाषा में भले प्रकार व्यक्त ही नहीं कर सकते, इस योजना का विरोध कर रहे हैं। इन लोगों की राय में विश्वविद्यालयों की शिक्षा जैसी अब है, क़रीब-क़रीब वैसी ही रहनी चाहिए, ख़ासकर शिक्षा का माध्यम तो अँगरेज़ी-भाषा ही रहे। विद्वद्वर्य श्रीयुत श्रीनिवास शास्त्री तक की यह राय है। इस पर महात्मा गांधी ने अपने पत्र 'हरिजन' में जो विचार प्रकट किए हैं, वे बड़े ही महत्त्व-पूर्ण हैं। आप कहते हैं—

"मेरा यह निश्चित विश्वास है कि हमारे कॉलेजों में साहित्य की जो शिक्षा दी जाती है, वह सब बिल-कुल व्यर्थ है। और, उसका परिणाम शिक्षित-वर्ग की बेकारी के रूप में हमारे सामने आया है। यही

नहीं, जिन लड़के-लड़कियों को हमारे कॉलेजों की चक्की में पिसने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है, उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी इसने चौपट कर दिया है। विदेशी भाषा के माध्यम ने, जिसके द्वारा भारत में उच्च शिक्षा दी जाती है, हमारे राष्ट्र को हद से ज़्यादा बौद्धिक और नैतिक आघात पहुँचाया है। अभी हम इस हानि का निर्णय नहीं कर सकते, और फिर ऐसी शिक्षा पानेवाले हमीं को इसका शिकार और न्यायाधीश दोनो बनना है, जो लगभग असंभव काम है।"

आगे महात्माजी ने अपनी शिक्षा के अनुभव के आधार पर बतलाया है कि अँगरेज़ी-भाषा द्वारा जिन विषयों की शिक्षा दी जाती है, उनमें से कुछ तो निरर्थक हैं, जिनका जीवन में कभी उपयोग नहीं होता, और कुछ ऐसे, जिनका समझना उपयोगी हो, तो भी अँगरेज़ी के माध्यम द्वारा विद्यार्थी उन्हें पूरी तरह हृदयंगम नहीं कर सकता, और उन विषयों में उसका ज्ञान अधूरा ही रहता है। वास्तव में एक विद्यार्थी का जितना समय और जितनी शक्ति अँगरेज़ी-भाषा सीखने में व्यय हो जाती है, उससे आगे उसे किसी विषय में पूर्ण ज्ञान और बहुज्ञता प्राप्त करने का बहुत कम अवसर रह जाता है। यह तो उस हालत में है, जब शिक्षा का उद्देश ज्ञान-लाभ करना हो। वैसे भारत में शिक्षा ज्ञान-लाभ के उद्देश से नहीं, बल्कि नौकरी मिलने और पैसा पैदा करने के लिये होती है। आजकल उससे यह उद्देश भी पूरा नहीं हो रहा। तब वह व्यर्थ और निरर्थक चीज़ हो जाती है।

इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान शिक्षा-पद्धति में आमूल परिवर्तन हो, और उसके लिये वर्धा की शिक्षा-योजना बड़ी उपयोगी है। उसका उद्देश यह नहीं कि अँगरेज़ी-भाषा से क़तई परहेज़ किया जाय। स्वयं महात्मा गांधी का कहना है—"यह हरगिज़ न समझना चाहिए कि अँगरेज़ी या उसके श्रेष्ठ साहित्य का मैं विरोधी हूँ। लेकिन उसके साहित्य की महत्ता भारतीय राष्ट्र के लिये उससे अधिक उपयोगी नहीं हो सकती, जितनी उसके लिये इँगलैंड के समशीतोष्ण जल-वायु या सुंदर दृश्यों की है। भारत को तो अपने ही जल-वायु, दृश्यों और साहित्य में तरक़्क़ी करनी होगी, फिर चाहे वे अँगरेज़ी जल-वायु, दृश्यों और साहित्य से घटिया दर्जे के ही क्यों न हों। हमें और हमारे बच्चों को तो अपनी ख़ुद की ही विरासत बनानी चाहिए। अगर हम दूसरों की विरासत लेंगे, तो अपनी नष्ट हो जायगी।"

अपनी शिक्षा-योजना के संबंध में आशावाद प्रकट करते हुए महात्माजी कहते हैं—"हमारे साहित्यिक लोग पाठ्य-क्रम बनाएँगे, और फिर उसके अनुसार पाठ्य पुस्तकें तैयार करेंगे। मेरी योजना के अंदर तो अब से अधिक और अच्छे पुस्तकालय होंगे, अधिक संख्या में और अच्छी रसायनशालाएँ तथा प्रयोगशालाएँ होंगी। उनके विशेषज्ञ विदेशी भाषा नहीं, जनता की ही भाषा बोलेंगे। ये लोग जो ज्ञान प्राप्त करेंगे, वह सबकी संयुक्त संपत्ति होगी।"

महात्माजी के इन उद्गारों में राष्ट्र-कल्याण की जो भावना छिपी है, उस पर अब अधिक कहने की गुंजाइश नहीं। भारत में अँगरेज़ी राज्य की स्थापना के समय लॉर्ड मैकाले ने इस देश को मानसिक दासता में जकड़ देने के लिये अगरेज़ी-शिक्षा-पद्धति निर्माण की थी, उसका फल इतने दिन तक हमने भोगा। महात्मा गांधी की शिक्षा-आयोजना लॉर्ड मैकाले की उस अँगरेज़ी-शिक्षा-पद्धति का जवाब है। आजकल जिन प्रांतों में कांग्रेस की सरकारें हैं, उनमें इस आयोजना को कार्य-रूप में परिणत करने का अवसर है। हम समझते हैं, देश को इससे लाभ होगा, और हमारी राष्ट्रीय मानसिक पराधीनता की बेड़ियाँ कटते-कटते हम

दासता के बंधन से भी मुक्त हो जायँगे। शिक्षा का माध्यम देशी भाषा को बनाया जाय और वह भाषा हिंदी ही हो सकती है।

× × ×

३. फ़ेडरेशन की समस्या

फ़ेडरेशन की समस्या ने इन दिनों हमारे देश की राजनीति को काफ़ी आंदोलित किया है। इस संबंध में कांग्रेस के कई नेताओं में एक प्रकार का वाद-विवाद-सा छिड़ गया, और श्रीयुत सत्यमूर्ति तथा राष्ट्रपति सुभाषचंद्र बोस के जो वक्तव्य प्रकाशित हुए, उससे विशेष राजनीतिक क्षेत्रों में यह आशंका प्रकट हो गई कि इस सवाल को लेकर कांग्रेस में फूट पड़ जायगी। राष्ट्रपति ने अपने वक्तव्य में इस बात की ओर इशारा भी किया है। पीछे श्रीभूलाभाई देसाई की राष्ट्रपति को लिखी गई चिट्ठी और उस पर राष्ट्रपति के वक्तव्य के बाद यह मामला जहाँ-का-तहाँ शांत हो गया। पर हम यह नहीं कह सकते कि आज जिस बात पर इतना वाद-विवाद छिड़ा है, कल वह चीज़ इससे अधिक विवाद-ग्रस्त रूप धारण कर हमारे सामने न आएगी। फ़ेडरेशन का मामला हमारे देश की राजनीति में सबसे पेचीदा सवाल हो गया है। कांग्रेस की नीति फ़ेडरेशन के संबंध में एक है, और वह अब तक कांग्रेस के प्लेटफ़ार्म से पास हुए प्रस्तावों से प्रकट है।

कांग्रेस न केवल फ़ेडरेशन को अस्वीकार कर चुकी है, बल्कि वह किसी भी ऐसे विधान को, जो विदेशियों द्वारा तयार किया गया हो, भारत के लिये स्वीकार करने को तैयार नहीं, और बालिग़ मताधिकार के आधार पर विधान-परिषद् द्वारा तैयार किया गया विधान ही उसे स्वीकार हो सकता है। फिर भी लोगों को आशा है कि जिस प्रकार कांग्रेस ने सन् १९३५ के इंडिया-ऐक्ट का प्रांतीय शासन-विधान-अंश जिस रूप में स्वीकार कर लिया, उस रूप में वह फ़ेडरेशन को भी स्वीकार कर लेगी। इसी बात को लेकर विलायत में इस बात का प्रचार किया गया कि सिद्धांत-रूप से कांग्रेस फ़ेडरेशन का विरोध करती हुई भी व्यवहार में वह उसे अपना लेगी। सर फ़्रेडरिक ह्वाइट नाम के एक पुराने भारतीय सरविस के अँगरेज़ ने इँगलैंड में इस बात को प्रकट रूप से कह दिया। सर फ़्रेडरिक ज़िम्मेदार अँगरेज़ हैं, इसलिये आपके वक्तव्य को वज़न दिया गया।

जिन दिनों भारतीय एसेंबली के विरोधी दल के नेता और कांग्रेस-कार्य-समिति के सदस्य श्रीभूलाभाई देसाई विलायत गए थे, तो उन्होंने सर फ़्रेडरिक से बातचीत की थी, और एक सभा में, जो सर फ़्रेडरिक की अध्यक्षता में हुई थी, श्रीभूलाभाई देसाई ने भारतीय स्थिति पर भाषण दिया था। इससे यह शक हो गया कि शायद भूलाभाई देसाई की बातचीत का ही यह परिणाम हो। आप हाल ही में दो बार इँगलैंड गए हैं, और भारत में कांग्रेस के दक्षिण पक्ष के नेताओं में गिने जाते हैं, जिनके संबंध में वाम पक्ष के नेताओं का यह ख़याल है कि वे आवश्यक सुधार किए जाने पर फ़ेडरेशन को स्वीकार कर लेने के लिये तैयार हो जायँगे। इस बात की पुष्टि श्रीयुत सत्यमूर्ति के वक्तव्य से भी होती है। आपने कहा है कि यदि फ़ेडरेशन के वर्तमान रूप में इतना परिवर्तन कर दिया जाय कि फ़ेडरल एसेंबली का चुनाव प्रत्यक्ष वोटों से हो, देशी रियासतों से जनता की राय से प्रतिनिधि चुने जायँ, बजट की स्वीकृति का अधिकार अपर हाउस से ले लिया जाय, वायसराय के अधिकारों का उपयोग गवर्नरों के विशेष अधिकारों की तरह ही हो, भारत की गोरी फ़ौज का ख़र्च इँगलैंड-सरकार की ओर से दिया जाय, और सेना तथा वैदेशिक मामलों में फ़ेडरल एसेंबली को अधिकार दिए जायँ, तो हम फ़ेड-

रेशन को स्वीकार कर लेंगे। इसका अर्थ यह है कि श्रीसत्यमूर्ति और उनके-से ही विचारों के कांग्रेस-नेता वैधानिक मार्ग से स्वराज्य प्राप्त करने की नीति में विश्वास रखते हैं। लेकिन कांग्रेस में एक दल ऐसा है, जो कांग्रेस द्वारा फ़ेडरेशन के संबंध में पास हुए मूल-प्रस्ताव से एक इंच भी पीछे नहीं हटना चाहता। राष्ट्रपति सुभाषचंद्र बोस इसी दल के व्यक्ति हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और कांग्रेस के अंदर अन्य उग्रवादी लोग भी फ़ेडरेशन का विरोध करने में राष्ट्रपति के साथ हैं।

ऐसी हालत में फ़ेडरेशन के संबंध में दो प्रकार की मनोवृत्तियाँ काम कर रही हैं। इधर कांग्रेस के जो कुछ निर्णय होते हैं, उनमें सरदार पटेल, राजेंद्र बाबू आदि कांग्रेस के वयोवृद्ध नेता और महात्मा गांधी की इच्छा की छाप होती है। उग्र विचारों के नेता उनकी नीति से सर्वथा सहमत नहीं होते। इसलिये .फेडरेशन के संबंध में भी उनका शक बढ़ गया है कि मि० सत्यमूर्ति और श्रीभूलाभाई देसाई जो कुछ कह और कर रहे हैं, वह वही बात न हो, जो .फेडरेशन के संबंध में आगे कांग्रेस द्वारा की जानेवाली है, क्योंकि अब लक्षणों से ऐसा मालूम पड़ रहा है कि ब्रिटिश सरकार .फेडरेशन के मामले में कांग्रेस को संतुष्ट करने का प्रयत्न कर रही है। विलायत के 'टाइम्स' और 'डेली टेलीग्राफ़'-जैसे टोडी पत्र भी अब सरकार को यह राय दे रहे हैं कि वह कांग्रेस को संतुष्ट करके .फेडरेशन की योजना को भारत में लागू कर दे। पिछले दिनों लॉर्ड लोथियन और लॉर्ड सैम्युअल की भारत-यात्रा भी इसी उद्देश्य से हुई थी। ये दोनो सरकारी ज़िम्मेदार अँगरेज़ कांग्रेस-नेताओं से बातचीत भी कर गए हैं। वायसराय की विलायत-यात्रा को भी इसीलिये महत्त्व-पूर्ण बतलाया जा रहा है। अब जब इँगलैंड में पं० जवाहरलाल नेहरू ने लगातार अपने भाषणों में फ़ेडरेशन को अस्वीकार करने पर ज़ोर दिया है, तो सरकार की तरफ़ से पार्लियामेंट में यह घोषित किया गया है कि वह फ़ेडरेशन-विधान में कोई परिवर्तन करने के लिये तैयार नहीं। पर वस्तुतः यह बात उसने अपनी शान क़ायम रखने के लिये ही कही है।

यह सच है कि अंदर-ही-अंदर इस बात का प्रयत्न हो रहा है कि किसी तरह कांग्रेस को संतुष्ट करके फ़ेडरेशन का भारत में लागू किया जाय। लेकिन 'कानी के ब्याह में सौ जोखों' वाली कहावत है। अभी तो यही उम्मीद नहीं कि सरकार फ़ेडरेशन विधान में उतने परिवर्तन कर देगी, जितने मि० सत्यमूर्ति चाहते हैं, क्योंकि इन संशोधनों का अर्थ तो यह होता है कि .फेडरेशन के वर्तमान विधान की काया ही पलट जायगी, जो सरकार करने के लिये तैयार न होगी। अगर सरकार उनमें से कुछ संशोधनों को मानने के लिये तैयार भी हो जाय, तो कांग्रेस का उग्रवादी दल उसे अपनाने को तैयार नहीं होगा, क्योंकि इससे विधान-परिषद्वाला प्रस्ताव एक मखौल बन जाता है। इस हालत में फ़ेडरेशन के संबंध में अभी राजनीतिक वातावरण अंधकारमय है। अगर कांग्रेस के किसी ज़िम्मेदार नेता की तरफ़ से ऐसी बातें पेश की जाती हैं, जिनके पूरा होने पर फ़ेडरेशन स्वीकार किया जा सकता है; तो यह बात कांग्रेस के प्रस्ताव के विरुद्ध तो है ही, साथ ही इससे अपनी कमज़ोरी भी ज़ाहिर होती है, और सरकार भी इससे यह अंदाज़ लगा सकती है कि जितना ये चाहते हैं, उससे कितना कम देकर हम इन्हें संतुष्ट कर सकते हैं। इस हालत में हम मि० सत्यमूर्ति के वक्तव्य का समर्थन नहीं कर सकते, और राष्ट्रपति के विचारों की ताईद करते हैं।

× × ×

४. स्पेन और चीन के युद्ध-क्षेत्र

कुछ दिन पहले अंतरराष्ट्रीय राजनीति में जिन शांति-परिषदों की चर्चा सुनी जाती थी, वे बातें अब तोप और बंदूक़ों की गड़गड़ाहट के साथ हवा हो गईं। अब न निरस्त्रीकरण का सवाल उठता है, न विश्व-शांति के स्वप्न देखे जाते हैं। इँगलैंड का, जो सब राष्ट्रों से आगे बढ़कर इस संबंध में बातें करता था, यह हाल है कि अभी आत्मरक्षा के नाम पर इँगलैंड की सरकार ने अपने बजट में जो अतिरिक्त माँग पेश की है, वह सिर्फ़ २,२९,०१,००० पौंड है, जो हवाई सेना पर खर्च होगी। इसे मिलाकर इस साल में युद्ध की तैयारी पर किया जानेवाला कुल ख़र्च १३,४४, १८,००० पौंड है। सिर्फ़ हवाई सैनिकों की संख्या १३ हज़ार से ९६ हज़ार और हवाई जहाज़ों की संख्या मार्च सन् १९४० तक २,३७० पहुँच जायगी।

भारत में युद्ध-संबंधी तैयारियाँ कैसी हो रही हैं, इसका पता जल-सेना के संबंध में इँगलैंड और भारत-सरकार के बीच में, हाल ही में, निर्धारित की गई नीति से चल जाता है। कलकत्ता और बंबई-जैसे बड़े शहरों में युद्ध-संबंधी प्रदर्शनों के उदाहरण भी यह साबित करते हैं कि अँगरेज़ी सरकार के ऊपर युद्ध का भय सवार है। इटली और अबीसीनिया के मामले में इँगलैंड की परराष्ट्र-नीति के दिवालिएपन का संसार को पता चल गया था, अब स्पेन के मामले में उसकी जो नीति है, उससे उसका रहा-सहा विश्वास भी उठता जा रहा है। उदाहरण के लिये स्पेन के रण-क्षेत्र से विदेशी सैनिकों की वापसी की नीति, जिसकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी ब्रिटेन के ऊपर है, एक बड़ी चाल दिखाई दे रही है। अबीसीनिया के मामले में भी अन्य राष्ट्रों को तटस्थ रहने का उपदेश इँगलैंड की तरफ़ से दिया गया था, जिसका परिणाम हुआ अबीसीनिया की ग़ुलामी।

अब स्पेन के मामले में तटस्थ नीति का शंख इँगलैंड की तरफ़ से फूँका गया, और इतने दिन तक सेए जाने पर इस अंडे से इँगलैंड की मुर्ग़ी ने जो बच्चा जना, उसने चोंच खोलकर कहा—अब स्पेन में इटली, जर्मनी या रूस का कोई सिपाही न रहे। पर उसका परिणाम दूसरा ही निकल रहा है। दिखलाने के लिये जर्मनी और इटली ने अपने कुछ सैनिक, जो अब तक लड़ाई लड़ते-लड़ते बेकार हो चुके हैं, वापस लेने की रज़ामंदी दे दी है। लड़ाकू सैनिकों के लिये कह दिया है कि उन्होंने स्पेन की राष्ट्रीयता स्वीकार कर ली है, और अपने नाम बदलकर भी स्पेन के नाम रख लिए हैं। इसलिये ऐसे सैनिकों पर इटली का कोई ज़ोर नहीं, और वे युद्ध में लड़ने के लिये आज़ाद हैं। इसका साफ़ मतलब यह है कि स्पेन की प्रजातंत्र सरकार को रूस आदि देशों से जो सहायता मिलती है, वह बंद कर दी जाय, और फ़ैसिस्ट राष्ट्रों की सहायता विद्रोही दल को मिलती रहे।

इँगलैंड इस नीति के खिलाफ़ कुछ नहीं कहने का। उधर चीन के युद्ध में इँगलैंड ने चीन की सरकार को राष्ट्रीय क़र्ज़ देने से इनकार कर दिया। इसका मतलब यह कि वह जापान को किसी प्रकार नाराज़ नहीं करना चाहता। आजकल जापान की, चीन के साथ, रूस से भी खटक रही है, और इँगलैंड रूस का साथ छोड़ फ़ैसिस्ट और साम्राज्यवादी राष्ट्रों का दोस्त बन रहा है। अब तक उसकी चिमगादड़ की-सी नीति रही थी, जो कभी फ़ासिस्ट-पशुओं को अपने दाँत दिखलाकर उनमें मिल जाता था, और कभी प्रजातंत्रवादी राष्ट्रों के पक्षियों को अपने पर दिखलाकर पखेरू बनने का दावा पेश कर देता था, पर अब वह निरा पशु बन गया है। स्पेन और चीन की लड़ाइयों का स्वरूप एक-सा है। दोनो जगह प्रजातंत्रवादी सरकार और साम्राज्यवादी

राष्ट्रों में युद्ध छिड़ रहा है। अभी दोनो जगह, स्पेन में युद्ध का तीसरे वर्ष का प्रारंभिक दिवस और चीन में दूसरे वर्ष का प्रारंभिक दिवस मनाया गया। दोनो जगह प्रजातंत्र सरकार की तरफ़ से एक ही प्रकार की घोषणा की गई। स्पेन-सरकार के परराष्ट्र-सचिव मि० डेलनेयो और चीन के राष्ट्रपति चियांग काई शेक के शब्दों की एक-सी ही गूँज है—

हम एक इंच भूमि और एक आदमी जीवित रहते हुए अपने देश की स्वतंत्रता के लिये लड़ेंगे, इन शब्दों में दृढ़ संकल्प और भीष्म-प्रतिज्ञा का परिचय प्रजातंत्र-पक्ष की ओर से दिया गया है, दूसरी तरफ़ फ़ैसिस्ट तथा साम्राज्यवादी फ़्रैंकों और जापान के प्रधान मंत्री ने भी एक-सी ही बात कही है, और उसका आशय प्रजातंत्रवादी शक्तियों को नष्ट कर स्पेन और चीन में अधिनायकत्व और साम्राज्यवाद की हुकूमत क़ायम करना है। आगे आनेवाले दिनों में दुनिया को यह देखना है कि इनमें से किस पक्ष की बात सही होती है। इसके साथ ही एक परीक्षण भी होना है। वह यह कि देखें, ब्रिटेन प्रजातंत्रवाद का साथ देता है, या साम्राज्यवाद का, क्योंकि साम्राज्यवादी होते हुए भी अभी तक उसका यह दावा है कि उसकी शासन-पद्धति प्रजातंत्रवाद के आधार पर बनी है, और ब्रिटेन प्रजातंत्र-शासन-पद्धति का सदैव से समर्थक रहा है।

× × ×

५. देशी राज्यों के आंदोलन

आजकल कितनी ही रियासतों में किसी-न-किसी प्रकार का आंदोलन उठ खड़ा हुआ है। इन आंदोलनों का रूप और उनके कारण अलग-अलग हैं। कहीं उसका रूप राजनीतिक है, तो कहीं बिलकुल आर्थिक। कहीं, जैसे निज़ाम हैदराबाद और भूपाल में, उसका धार्मिक रूप है। मैसूर, अलवर, त्रावनकोर, धौलपुर और अ राज्यों की घटनाएँ वहाँ की जनता के असंतोष का परिचय देती हैं। जयपुर और सीकर का मामला भी जनता का एक आंदोलन है। इन सबकी तह में एक बात सामान्य रूप से छिपी हुई है, और वह यह कि रियासतों की प्रजा अपने-अपने राज्यों के वर्तमान विधान में परिवर्तन चाहती है। पुरानी परिपाटी से वह ऊब-सी गई है। इधर उसकी सीमा से बाहर जो कुछ आंदोलन हो रहे हैं, उनका भी असर रियासती प्रजा पर पड़ रहा है। कई राज्यों में तो प्रजा की इस भावना की परख हो चुकी है, और वहाँ ऐसे उपाय भी किए जा रहे हैं, जिससे राज्य और प्रजा में स्थायी संबंध और सहयोग बना रहे।

हमारी राय यह है कि अगर हमारे राजे-महाराजे अपने-अपने यहाँ शासन-सुधार जारी कर दें, और प्रजा के प्रतिनिधियों को शासन में हाथ बँटाने का अवसर दें, तो इससे राज्यों की अशांति दूर हो जायगी। तब पूरी ज़िम्मेदारी राज्य के कुछ एक व्यक्तियों और राजकर्मचारियों पर ही न रहेगी, बल्कि प्रजा के प्रतिनिधि भी उसके ज़िम्मेदार होंगे, और किसी प्रतिकूल अवस्था को दूर करने का वे स्वयं प्रयत्न करेंगे। राज्य और प्रजा में निकट संबंध स्थापित होने से बहुत-सी ग़लतफ़हमियाँ दूर हो जायँगी, जो बाद में आंदोलन का रूप धारण कर अशांति का कारण बनती हैं। आशा है, हमारे देशी नरेश इन पंक्तियों का कुछ मूल्य समझेंगे।

× × ×

६. संयुक्त प्रांत की सरकार का सराहनीय कार्य

संयुक्त प्रांत की सरकार ने इस प्रांत के उद्योग-धंधों की वृद्धि के लिये जो कार्य किया है, वह उसकी शान के ही अनुरूप है। एक योजना में सरकार ने एक लाख रुपया शिक्षित नौजवानों

के लिये व्यवसाय-संबंधी शिक्षा प्राप्त करने के लिये मंज़ूर किया है । ये वज़ीफ़े उन शिक्षित नौजवानों को दिए जायँगे, जो किसी ख़ास उद्योग में ट्रेनिंग पा चुके होंगे, ताकि वे उन उद्योग, व्यापार और व्यवसाय का काम शुरू कर सकें । ये वज़ीफ़े उन लोगों को भी दिए जायँगे, जो इस समय कोई व्यवसाय कर रहे हैं, ताकि वे अपने व्यवसाय को तरक़्क़ी दे सकें । इसके अतिरिक्त सरकार ने पंद्रह लाख रुपए की पूँजी से एक 'प्रांतीय व्यवसाय-सहायक मंडल' नाम की संस्था खोलने का निश्चय किया है । उससे प्रांत के छोटे-छोटे उद्योग-धंधों के लिये जिस रूप में सहायता दी जायगी, उससे इस प्रांत के व्यवसाय में आशातीत उन्नति होगी । इस योजना को कार्य-रूप में परिणत करने के लिये सरकार ने जिस 'इंडस्ट्रियल फ़ाइनेंसिंग कॉरपोरेशन' की स्थापना की है, उसमें सेठ पद्मपत सिंहानिया, श्रीकृष्णचंद्र पुरी, सेठ अचलसिंह एम्० एल्० ए०, मि० सईदुद्दीन एम्० एल्० ए० तथा मि० जे० एम्० निगम आदि डाइरेक्टर हैं, जिनका व्यवसाय-संबंधी अनुभव ख़ूब बढ़ा-चढ़ा है । इस कॉरपोरेशन को अधिकार होगा कि वह ज़्यादा अरसे के लिये रक़म ले, और व्यवसायियों को कम-से-कम सूद पर क़र्ज़ दे । सरकार इस कॉरपोरेशन को प्रत्येक आर्थिक वर्ष की समाप्ति पर सहायता देगी । सरकार की सहायता का रूप इस प्रकार होगा—

(१) मुनाफ़ा और घाटे के हिसाब में सरकार कंपनी की प्राप्त पूँजी के चार फ़ीसदी के बराबर आर्थिक सहायता देगी । लेकिन यह रक़म किसी एक साल में ६० हज़ार रुपयों से अधिक न होगी । शर्त यह होगी कि जो मुनाफ़ा बाँटा न जाय, वह सुरक्षित कोष में रक्खा जायगा, और जैसे ही कंपनी लगातार पाँच साल तक अपनी प्राप्त पूँजी पर ६ प्रतिशत का लाभ बाँट चुकेगी, वैसे ही सरकारी सहायता बंद कर दी जायगी ।

(२) कंपनी के प्रबंध में जितना व्यय होगा, उसके ५० फ़ीसदी के बराबर रक़म सरकार कॉरपोरेशन की चालू पूँजी में देगी । यह रक़म तीस हज़ार रुपयों से अधिक न होगी, और ज़्यादा-से-ज़्यादा पाँच साल तक दी जायगी ।

(३) कंपनी का जितना क़र्ज़ हर साल वसूल न होगा, उसका सवा फ़ीसदी के बराबर रक़म सरकार हर साल कंपनी के सुरक्षित कोष में देगी, जो आवश्यकता न होने पर बंद भी की जा सकती है । कंपनी का जो मुनाफ़ा बाँटा नहीं गया होगा, वह भी इस कोष में जमा की हुई रक़म में शामिल हो जायगा । उपर्युक्त सभी बातों के लिये सरकारी सहायता डेढ़ लाख रुपए तक हो सकती है ।

अगर यह योजना सफल हुई (जिसकी हमें पूरी उम्मेद है), तो देखेंगे कि चंद वर्षों के अंदर ही हमारे प्रांत का व्यवसाय कितनी तरक़्क़ी करता है । इसके लिये प्रांतीय कांग्रेस-सरकार को हम पहले से ही बधाई देते हैं !

× × ×

७. भारत के वायुयान-विभाग की उन्नति

सरकारी योजना के अनुसार इस वर्ष भारत की वायुयान-यात्रा में जो परिवर्तन हुए हैं, वे बड़े ही महत्त्व के हैं । अब तक भारत और इँगलैंड तथा उत्तरीय भारत में वायुयान-संबंधी मार्ग इतना प्रशस्त नहीं था, जो मुसाफ़िरों की यात्रा के अलावा डाक ले जाने में आशातीत सुविधा पैदा कर सके । इस वर्ष से इस विभाग में इतनी उन्नति हो गई है कि कुछ वर्षों में भारत के बड़े-बड़े नगरों की डाक भारत के विभिन्न भागों तथा इँगलैंड में पहुँचने में समय की भारी बचत हो जायगी । अब से भारतीय वायुयान-विभाग 'एंपायर एयरमेल सरविस' का एक भाग होगा, जिससे न केवल

इँगलैंड की डाक, बल्कि अँगरेज़ी साम्राज्यांतर्गत अन्य उपनिवेशों की डाक आने-जाने की भी विशेष सुविधा हो जायगी। भारत के लिये पाँच सरविसें होंगी—दो ज़मीन पर उतरनेवाले वायुयानों की और तीन पानी पर उतरनेवाले वायुयानों की। अट्ठाईस वायुयान इनमें काम करेंगे, और प्रत्येक वायुयान साढ़े तीन टन डाक लेकर पौने दो सौ मील फ़ी घंटा की चाल से चलेगा। करोंची से कलकत्ता और दक्षिण में कोलंबो तक इसका क्षेत्र होगा, आगे सिंगापुर होते हुए आस्ट्रेलिया और अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों तक उसका विस्तार होगा। लंदन से करोंची तक ढाई दिन में और फिर कलकत्ते तक साढ़े तीन दिन में डाक पहुँच जायगी। इस योजना को कार्य-रूप में परिणत करने के साथ सरकार ने यह भी वादा किया है कि वह वायुयान-विभाग में भारतीयकरण करेगी। इसमें शक नहीं कि इस प्रकार निकट भविष्य में भारत के विभिन्न नगरों तथा भारत और अन्य देशों का संबंध और भी निकट हो जायगा, और इससे उद्योग-व्यवसाय, साहित्य आदि में आशातीत उन्नति होगी।

× × ×

८. शिक्षा-संगठन की क्रांतिकारी योजना

यू० पी०-सरकार ने शिक्षा के पुनः संगठन के लिये जो योजना तैयार की है, उससे वर्तमान शिक्षा-पद्धति में क्रांतिकारी परिवर्तन हो जायगा। इस योजना का रूप यह होगा कि प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का माध्यम हिंदोस्तानी होगी। अठारह वर्ष तक की उम्र के विद्यार्थी के लिये सात वर्ष का प्रारंभिक पाठ्य-क्रम तैयार किया है। इसके बाद विद्यार्थी उच्च कक्षा में प्रवेश करेगा। इस व्यवस्था के अनुसारहाई स्कूल और इंटरमीजिएट का कोई दर्जा न होगा, इनके बजाय एक समान माध्यमिक दर्जा होगा। यह माध्यमिक दर्जा १३ वर्ष की अवस्था से शुरू होगा, और ६ वर्ष में इसकी पढ़ाई समाप्त होगी। ७ से १३ वर्ष की अवस्था के विद्यार्थी के लिये अँगरेज़ी-भाषा की शिक्षा का, इस योजना में, कोई स्थान न होगा। १३ से १८ वर्ष के बीच की आयुवालों के लिये अँगरेज़ी पढ़ना अनिवार्य होगा।

माध्यमिक संस्थाएँ कॉलेज कहलाएँगी, और उनके पाठ्य विषय छ होंगे—(१) भाषाएँ और समाज-विज्ञान, (२) प्राकृतिक विज्ञान और गणित, (३) कला, (४) व्यवसाय, (५) यांत्रिक और रोज़गारी कोर्स और (६) लड़कियों के लिये गृह-विज्ञान। इसके साथ ही शारीरिक शिक्षा अनिवार्य और फ़ौजी शिक्षा ऐच्छिक विषय होगा। यह निश्चय हुआ है कि प्राथमिक शिक्षा में महिला-अध्यापिकाओं को २५ प्रतिशत स्थान दिए जायँ, और माध्यमिक शिक्षा में भी उन्हें पर्याप्त स्थान मिलें। यह योजना प्रत्येक दृष्टि से लाभकारी है। इससे विद्यार्थी आगे केवल सरकारी और ग़ैर-सरकारी दफ़्तरों के क्लर्क बनकर ही न निकलेंगे, बल्कि उनमें स्वावलंबन और व्यवसाय-बुद्धि भी प्रचुर मात्रा में होगी। वे अपने शारीरिक तथा बौद्धिक गुणों द्वारा न केवल अपने और अपने कुटुंबियों के लिये जीविका पैदा कर लेने में ही समर्थ होंगे, बल्कि समाज के लिये भी श्रेष्ठ नागरिक और उपयोगी व्यक्ति साबित होंगे।

× × ×

९. कोर्ट-नोटिस और सम्मन

सरकार की ओर से आवश्यक नोटिसों या सम्मनों को अख़बारों में छपा देने से सरकार का मतलब यह होता है कि सर्व-साधारण को उसकी जानकारी हो जाय। सर्व-साधारण की जानकारी तभी हो सकती है, जब सरकारी सूचनाएँ ऐसे अख़बारों में प्रकाशित हों, जो कम-से-कम दो-तीन हज़ार की संख्या में छपते हों, और सर्व-साधारण

जिन्हें पढ़ते हों। इसके विपरीत देखा जाता है कि आजकल कुछ ऐसे अखबार हैं, जो महज़ कोर्ट-नोटिसों के लिये ही निकाले गए हैं। ये अखबार-वाले सिफ़ारिशों के भरोसे मिल-जुलकर अपने नाम लिस्ट में दर्ज करा लेते हैं, और जब दस-पाँच सम्मन उनके पास जमा हो जाते हैं, तो एक अंक की सौ-पचास प्रतियाँ छपाकर जजों और मुंसरिमों के पास भेज देते और छपाई के बिल के दाम सही कर लेते हैं। इस तरह के गज़टों से गज़ट करानेवालों को कोई लाभ नहीं होता, और न सरकारी उद्देश्य की ही पूर्ति होती है, बल्कि जनता पर बुरा प्रभाव पड़ता है कि सरकार के यहाँ न्याय नहीं।

अतएव कांग्रेस-सरकार, माननीय जजों और मुंसरिमों का ध्यान इस ओर खींचकर यह प्रार्थना की जाती है कि वे इस ओर ध्यान दें। हमारे विचार में तो सरकारी सम्मन ऐसे किसी अखबार में छपने को न देना चाहिए, जो डेढ़-दो हज़ार भी न छपता हो। इसका सहज उपाय यह है कि सरकार उन प्रेसों से, जिनमें ये अखबार छपते हैं, बाक़ायदा दरियाफ़्त कर ले कि वे कितनी संख्या में छपते हैं। साथ ही खफ़िया तौर पर इसकी जाँच भी करा ले। ऐसा होने से दो लाभ होंगे—एक तो सरकार की बदनामी मिटेगी, दूसरे अच्छे-अच्छे अख़बारों को नोटिसें मिलने से उन्हें प्रोत्साहन भी मिलेगा। क्या कांग्रेस-सरकार हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान देने की कृपा करेगी?

× × ×

१०. श्रीभूतनाथजी सरकार

श्रीभूतनाथजी सरकार

आप बिहार के सीनियर मार्केटिंग ऑफ़िसर तथा पटना-डिवीज़न के कृषि-विभाग के डिप्टी-डाइरेक्टर हैं। आप उन इने-गिने व्यक्तियों में हैं, जो सरकारी पदों पर रहकर भी जनता की सेवा करना अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। आपके भगीरथ प्रयत्न से पटने से 'किसान' नाम का एक त्रैमासिक पत्र निकलता है। यदि गाँव-गाँव में इस पत्र का प्रचार हो, तो, विश्वास है, किसानों की वर्तमान परिस्थिति में आमूल सुधार हो जाय. आपके ही उद्योग से भिन्न-भिन्न कृषि-संबंधी विषयों पर बिहार के कृषि-विभाग से अनेक पैंफ़लेट निकलते हैं, जिससे किसानों को बहुत लाभ पहुँचता है। आपने 'सुखदा'-नामक देशी हल का आविष्कार किया है। इस हल से उतना ही काम निकलता है, जितना क़ीमती विलायती हल से। यह देहाती लोहारों द्वारा बनाया जाता है। अतः इसे काम में लाने से किसानों को इसके बनाने या खरीदने में किसी तरह की दिक़्क़त नहीं उठानी पड़ती। ग्राम-सुधार के लिये ऐसे ही सुंदर आविष्कारों की आवश्यकता है। आशा है, आप दिन-दिन किसानों की भलाई में अग्रसर रहेंगे। आपकी कार्य-दक्षता, कर्तव्य-परायणता से प्रभावित हो आपकी सफलता के लिये मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ, और आशा करता हूँ, बिहार तथा अन्य प्रांतों के उच्च कर्मचारी आपका अनुकरण करेंगे।

× × ×

करसियांग

कालिंपोंग
[इन दोनो नगरों को विश्वकवि श्रीरवींद्रनाथ ने अभी हाल ही में पवित्र किया है।]

११. मारवाड़ी सार्वजनिक पुस्तकालय, करसियांग

हिंदी-भाषा भारत की राष्ट्र-भाषा है। आजकल इसका प्रचार दिन-दिन अधिकाधिक हो रहा है। यह बात तो प्रत्यक्ष ही है कि इसके प्रचार-कार्य में पुस्तकालयों से सबसे अधिक सहायता मिलती है। हर्ष की बात है, इसी उद्देश्य से मारवाड़ी सार्वजनिक पुस्तकालय और निःशुल्क वाचनालय, करसियांग की स्थापना सन् १६३१ की श्रीविजयादशमी को हुई थी। इस संस्था का पंचम वार्षिक कार्य-विवरण हमारे सामने है। थोड़ी-सी पूँजी से स्थापित होकर इस संस्था ने इतने दिनों में हिंदी-भाषा और साहित्य के प्रचार के पुनीत कार्य में जो सफलता प्राप्त की है, वह सराहनीय है। आज इस पुस्तकालय में हिंदी-साहित्य की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध २,७०० से अधिक पुस्तकें हैं। साथ ही दो दैनिक, बारह साप्ताहिक, एक पाक्षिक, छत्तीस मासिक एवं एक त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाएँ भी आती हैं। यहाँ हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं का केंद्र भी है। उदार महानुभावों तथा प्रकाशकों द्वारा इस संस्था की अच्छी उन्नति हो रही है, किंतु आर्थिक अभाव से अभी तक इसका भवन-निर्माण नहीं हो सका है। आशा है, दानी सज्जनों द्वारा यह कार्य भी शीघ्र ही पूर्ण हो जायगा, जिससे यह संस्था हिमालय के इस पुनीत अंचल में चिरस्थायी होकर राष्ट्र-भाषा हिंदी का उत्तरोत्तर प्रचार कर सके। विवरण-पत्रिका के साथ वहाँ के कई सुंदर चित्र भी हमें इसके उत्साही मंत्री बाबू लक्ष्मीनारायणजी अग्रवाल से प्राप्त हुए हैं, जिनकी प्राकृतिक छटा अत्यंत चित्ताकर्षक

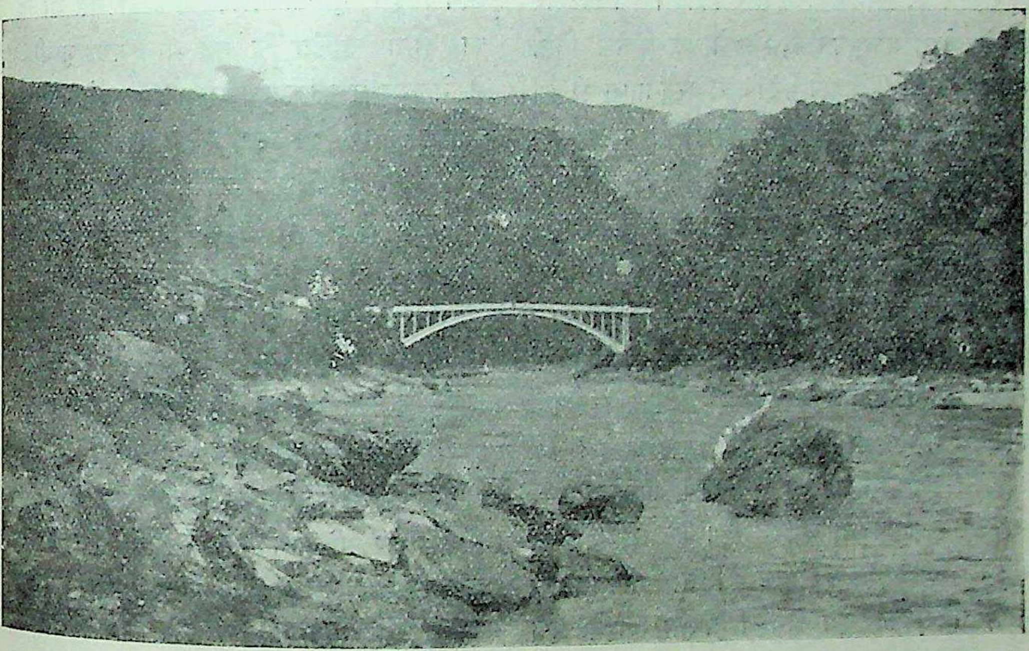

तीस्टा का पुल

[विश्वकवि श्रीरवींद्र कालिंपोंग जाते समय इसी पुल से गुज़रे थे। कितनी लुभावनी दृश्यावली है! नीचे 'तीस्टा'-नदी कल-कल ध्वनि से बह रही है, और ऊपर बीसवीं शताब्दी के तैल-रथ (मोटर) सरपट भागे जाते हैं।]

है। उन्हें भी हम प्रकाशित कर रहे हैं। अंत में हम इस संस्था के संस्थापकों को इस पुनीत कार्य के लिये हृदय से बधाई देते हैं!

× × ×

१२. मिस्टर जिन्ना और हर हिटलर

हर हिटलर इस समय संसार का मुख्य पुरुष हो रहा है। उसके एक इशारे पर संसार-व्यापी युद्ध हो सकता है, और एक इशारे पर शांति। हिटलर ही एक ऐसा महापुरुष है, जिसने अभी तक सिर्फ़ धमकी-ही-धमकी में अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त की है। उसने अपने घोर गर्जन-तर्जन द्वारा ही पहले सार-प्रांत, फिर आस्ट्रिया, पुनः सुडेटनलैंड और अब ज़ेकोस्लोवेकिया बृहत् जर्मनी में मिला लिए हैं। ब्रिटिश-सिंह और फ़्रेंच-बाघ केवल दुम हिलाकर रह गए, और फेंका हुआ टुकड़ा खाकर सर्कस का नाच दिखा गए! और, यह सब भी तब, जब उन्हें यह मालूम था कि हिटलर क्या करना चाहता है। क्या इतिहास में एक भी हिटलर का उदाहरण है?

परंतु इधर, ज्ञात होता है, मिस्टर जिन्ना हिटलर का उदाहरण बनना चाहते हैं। हिटलरशाही का स्वप्न देखते-देखते मिस्टर जिन्ना भी हिटलर नहीं, तो उसकी दुम अवश्य बनना चाहते हैं। उधर हिटलर ने एक सिद्धांत स्थापित किया कि संसार-भर के जर्मन—चाहे वे फ़्रांस में हों अथवा स्विट्ज़रलैंड में, इटली में हों अथवा पोलैंड में, अमेरिका में हों अथवा आफ़्रिका में—जर्मन-राष्ट्र में मिलकर पितृभूमि में घुल जायँ, और जिस देश अथवा भूमि पर वे रहते हों, वह जर्मन-राष्ट्र की हो जाय। वही सिद्धांत मिस्टर जिन्ना भारतवर्ष में लागू करना चाहते हैं।

सिंध के गत मुस्लिम-लीग-अधिवेशन में आपने एक प्रस्ताव पास करवाया कि भारत में हिंदू-मुस्लिम दो राष्ट्र हैं, जिनकी भाषा, संस्कृति तथा व्यवहार अलग-अलग हैं, इसलिये हिंदोस्तान के दो टुकड़े करने चाहिए—एक हिंदू-हिंदोस्तान, दूसरा मुस्लिम-हिंदोस्तान। भारत के ९ करोड़ मुसलमान मुस्लिम-हिंदोस्तान में रहें, और इसके लिये सिंध से लेकर काश्मीर तथा पंजाब का पूरा हिस्सा उन्हें दे दिया जाय, और हिंदू वहाँ से हट जायँ। इस मुस्लिम-हिंदोस्तान को यह भी अधिकार होना चाहिए कि वह अन्य मुसलमानी देशों से मिलकर एक राष्ट्र बना सके। संक्षेप में आपका इरादा है कि पाकिस्तान का दृश्य निस्संदेहात्मक रूप से इस पृथ्वी पर दिखला दें।

मिस्टर जिन्ना के पहले सर मुहम्मद इक़बाल ने भी यही स्वप्न देखा था, परंतु लोगों ने इसे पागल का प्रलाप समझा। किंतु मुस्लिम लीग के सभापति की हैसियत से दिया गया भाषण पागल का प्रलाप नहीं कहा जा सकता। मस्तिष्क की इस उपज को अगर फ़ौरन् ही न तोप दिया गया, तो व्यर्थ ही भीषण वातावरण उत्पन्न हो सकता है। मिस्टर जिन्ना जिस समय मुस्लिम-हिंदोस्तान और हिंदू-हिंदोस्तान का विचार प्रकट करते हैं, यह भूल जाते हैं कि इस देश में मुसलमानों की कोई भिन्न संस्कृति तथा भाषा नहीं। क्या बंगाल के मुसलमान अरब-निवासियों से मिलते हैं, या सीमाप्रांत-निवासियों से? क्या उनकी भाषा अलग नहीं है? और फिर भारत में हिंदू-मुस्लिम जातियाँ तो एक ही हैं—केवल धर्म अलग-अलग है। किसी काल में धर्म पर राष्ट्र स्थापित होते थे, पर इस बीसवीं सदी में नहीं। और आजकल तो धर्म का दिवाला निकल गया है, और उसका ठेका मुस्लिम लीगवालों ने ले लिया है। हम मिस्टर जिन्ना से केवल यही कहना चाहते हैं कि वह अपनी ज़बान को लगाम दें।

लीजिए ! मँगाइए !!

मदारी

[उपन्यास]

लेखक

पं० गोविंदवल्लभ पंत

मूल्य १॥), सजिल्द २)

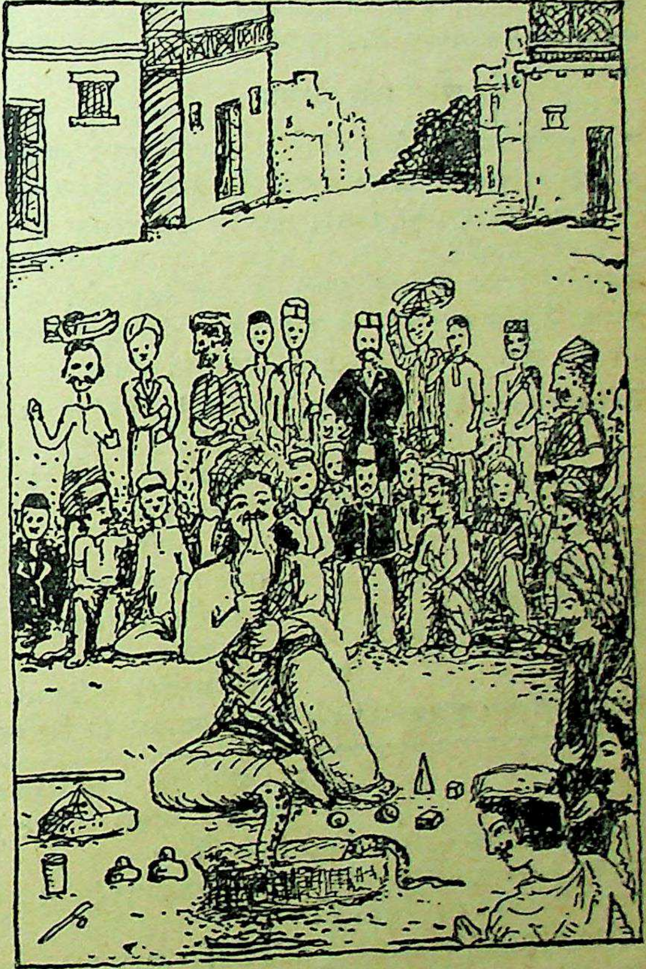

मदारी-उपन्यास का एक दृश्य

नवीन कथानक, निराले चरित्र, चटपटी भाषा, गुदगुदी पैदा करनेवाली स्थितियाँ, बीच-बीच में गीत और चित्र। शीघ्र मँगा लें।

संचालक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ एलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत (ऐक्ट १ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा अव्वल मुकाम लखनऊ

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ९० सन् १९३६ ई० पेशी २३—१२—३८ ई०

नवाब शम्शआरा बेगम ज़ौजे यूसुफ़ मिरज़ा 'साहब' साकिन अमीनउद्दौला पार्क लखनऊ

बनाम

नवाब फ़ख़रजहाँ बेगम साकिन शीशमहल लखनऊ

कमर्शियल बैंक कस्बा व ज़िला उन्नाव

लछमीनरायन }
रामदास } अशरफ़ाबाद लखनऊ

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूंकि नवाब शम्शआरा बेगम ज़ौजे पिसिकरामी यूसुफ़ अमीनाबाद पार्क लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० नवाब शम्शआरा बेगम मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्त नीलाम जायदाद

कोठी पुख़्ता शम्शमंज़िल आराज़ी नं०	५३०९	५३१०	५३११	५३१२
	ऽ१'	॥ऽ'	॥ऽ१'	।ऽ२

जमला १॥) वाक़ै उन्नाव हिस्सा ।=)

महदूदा ज़ैल हुदूदरुबा कोठी शम्शमंज़िल वाक़ै उन्नाव

शरक़ी	गरबी	शुमाली
सड़क पुख़्ता कानपुर से लखनऊ	आराज़ी मज़रूआ चौधरी माहसाहेब ताल्लुक़ेदार उन्नाव	मकान बाबू रामचरनलाल क़ानूनगो व शिवअधार बाजपेयी दस्तावेज़नवीस

जनूबी आबादी गडरियाखेरा

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ १२ सितंबर सन् १९३८ ई० जारी हुआ। मुंसरिम

[नमूना क़ाबिल फ़रोख़्त

सम्मन वास्ते क़रारदाद तनक़ीहतलब

(आर्डर ५, क़ायदा १ व ५)

बअदालत मुंसिफ़ी शाहगंज जौनपुर ज़िला जौनपुर

बइजलासी मि० मोतीलाल साहब बहादुर मुंसिफ़ शाहगंज जौनपुर

मुक़द्दमा नं० ४०४ सन् १९३७ ई०

रामनाथ कांदू वल्द जयमंगल कांदू साकिन मौज़ा थाना गद्दी परगना कराक़त ज़िला जौनपुर मुद्दई

बनाम

रजबअली शाह वल्द रोशन शाह साकिन मौज़ा थाना गद्दी परगना कराक़त ज़िला जौनपुर हालवारिद पीरियड रंग-मिल, रंगाज़ी खाना, बंबई मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत निकासी २००) के दायर की है। लिहाज़ा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख़ १५ माह नवंबर सन् १९३८ ई० बवक़्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो, और कुल उमूरात अहम मुताल्लिक़े मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो, जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हों, और जवाबदिही दावा की करें और आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ जुमला दस्तावेज़ात पेश करें, जिन पर आप बताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हों।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ [illegible] माह नवंबर सन् १९३८ ई० जारी किया गया। मुंसरिम

निकल गया ! निकल गया !! निकल गया !!!

जाति-पाँति के पचड़े में पड़ी,

घूँघटों की ओट में मुख-चंद्र छिपाए, हृदय में निर्धूम
ज्वालामुखी दबाए और अरमानों की उजड़ी
बस्ती बसाए आज की हमारी
शिक्षित कन्याओं के सामने
क्या-क्या समस्याएँ
हैं ?

इन सबका उत्तर देगा--क्रांतिकारी उपन्यास

'प्रश्न'

।

कर्ता

श्रीसर्वदानंद वर्मा

—:०:—

घटनाएँ बिलकुल वास्तविक हैं, और धर्म, समाज तथा भ्रामक नियम-बंधन के आवरण में 'व्यक्ति' का गला घोंट देनेवाले ढोंगी 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' लोगों की रीति-नीति पर पूरा प्रकाश डालती हैं। हरएक बहन, बेटी, पत्नी, माता और विमाता को इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १॥), सजिल्द २)

दुलारेलाल भार्गव

मालिक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

पं० गोविंदवल्लभ पंत

के रत्न

जूनिया

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी ने यह नया उपन्यास लिखकर हिंदी-साहित्य में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इसमें एक ग़रीब किसान को जाति-पाँति के पचड़ों में पड़कर किस प्रकार अपना धर्म-परिवर्तन करना पड़ा, वह विद्या और शांति की खोज में किस प्रकार अपनी सारी शक्ति लगा देता और बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठाते हुए अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से उन्नति करता है, इसका अच्छा चित्रण है। भाषा मुहाविरेदार। मूल्य १॥), सजिल्द २)

राजमुकुट

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानिक विकास। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर है, जब किसी नाटककार ने रसावेश को स्थायी रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट नहीं होने दिया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना का कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खेला जा चुका है। छठे संस्करण का मूल्य ॥।), सजिल्द १।)

वरमाला

यही प्रथम हिंदी-नाटक है, जिसे रेडियो में ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अनुवाद गुजराती और तैलगू में भी हो चुका है। चारु चित्रों से सुसज्जित। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

मदारी

(सचित्र उपन्यास)

प्रस्तुत पुस्तक में पहाड़ियों के जीवन की छटा और पर्वतराज हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का पूरा आभास मिलेगा। इस उपन्यास का नायक एक पहाड़ी किसान का बेटा 'नवाब' और नायिका लोहार-किसान-कन्या कुमारी तितली। नवाब धन की प्राप्ति के लिये मदारी बनता है, फिर दवाफ़रोश होकर 'ताइचो' नामक चाक़ूवाली के चक्कर में फँसकर हवालात की हवा खाता है। वह अपने जीवन के स्वप्न को सच्चा करता है। मूल्य १॥), सजिल्द २)

प्रतिमा

(सचित्र उपन्यास)

पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण।

मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

संध्या-प्रदीप

इस पुस्तक में पंतजी की मौलिक कहानियाँ ऐसी परिमार्जित और सरल भाषा में लिखी गई हैं, जो अत्यंत रोचक हैं। मूल्य १), सजिल्द १॥)

अंगूर की बेटी

प्रस्तुत पुस्तक रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ॥।≈), सजिल्द १।=)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

मँगाइए तो सही, फिर बच्चों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जायगा।

बाल-विलास

छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक और विनोद-पूर्ण कविताओं की यह अच्छी पुस्तक है। १० से भी अधिक चित्र, काग़ज़ मोटा, टाइप बड़ा, रंगीन छपाई।

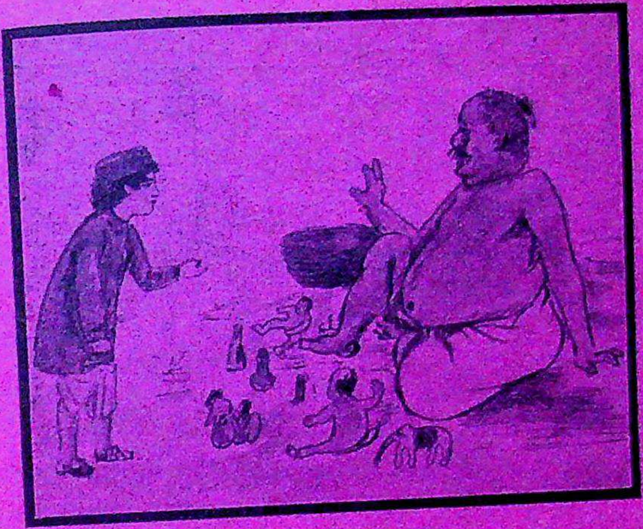

बाल-विलास

खूब सुंदर पुस्तक के लिये छोटे-छोटे बालक ऐसे मचल जाते हैं, जैसे चित्र में खिलौने लेने के लिये एक बच्चा तोंदूमलजी से उलझ रहा है।

मूल्य केवल ।≈), राजसंस्करण ॥≈)

अम्मा, अम्मा, ला दो

जल्दी से—

हँसी-खेल

दद्दा ने मेरे ही लिये तो इसे मँगवाया है। इसके भीतर बहुत-सी रंग-बिरंगी तस्वीरें और मज़ेदार कहानियाँ हैं।

मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये 'साहसी
बालक' अवश्य पढ़ाएँ

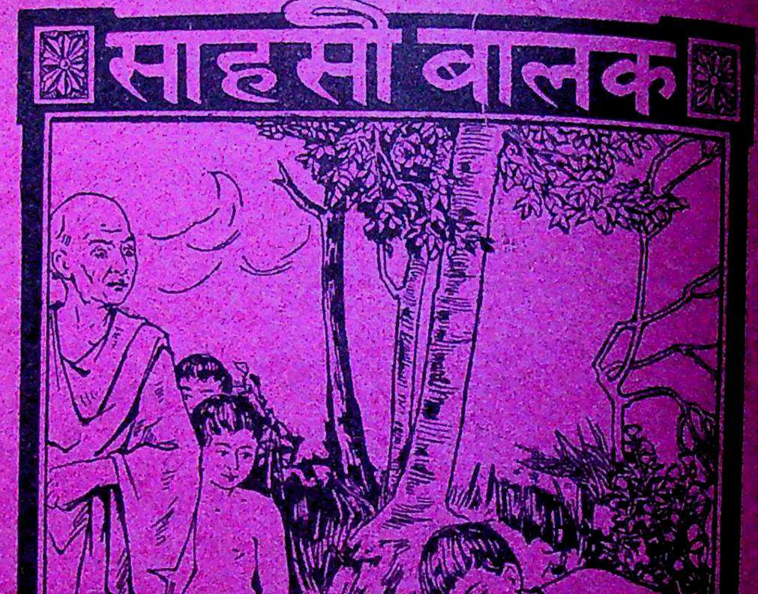

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है।
आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को
साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के
बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये
जिल्ददार ।=)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार,

(स्त्रियों के पढ़ने योग्य)

सुघर गँवारिन

(नए ढंग का नवीन मौलिक उपन्यास)

लेखक—हिंदी के प्रसिद्ध लेखक ताजिरुलमुल्क लाला रामजीदास वैश्य (ग्वालियर)

आपने सैकड़ों अच्छे-अच्छे उपन्यास और कहानियाँ पढ़ी होंगी, पर इस पुस्तक को पढ़कर आप कल्पना-सौंदर्य की रोचकता से प्रसन्न हो जायँगे, और इसके [illegible] [illegible] आपको चकित कर देंगे। इसमें चित्रित आजकल का सामाजिक जीवन आपकी आँखों के सामने एक अबला का जीता-जागता चित्र खींचकर रख देगा। [illegible] में [illegible] [illegible] की शिक्षाएँ भी मिलेंगी। इसमें भेड़ के रूप में भेड़ियों के [illegible] का [illegible] [illegible] से दिखलाई पड़ेगा।

डॉक्टरों की लीला, ज़मींदारों और उनके कारिंदों की [illegible], [illegible] [illegible] गाँववालों का मेल-जोल, ये सब बातें इस पुस्तक में हैं।

आप इसे सामाजिक उपन्यास कह सकते हैं। [illegible] इसे [illegible] [illegible] भी कह सकते हैं। आप इसे कल्पना-साम्राज्य से संबंध रखनेवाला [illegible] [illegible] भी कह सकते हैं और सबसे अंत में आप इसे हिंदू-संस्कृति के अनुकूल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सर्वोपयोगी, शिक्षाप्रद उपन्यास भी कह सकते हैं।

आप पढ़कर ही कह सकेंगे कि कैसी उपयोगी एवं [illegible] पुस्तक है।

हिंदी के सब बड़े-बड़े पत्रों ने इसकी खूब प्रशंसा की है। मूल्य [illegible] [illegible]

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

चित्ताकर्षक

उपन्यास

मा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, पं० विश्वंभरनाथजी शर्मा 'कौशिक'। एक ओर तो आप देखेंगे कि अनुचित लाड़-प्यार से बच्चे कैसे बिगड़ जाते हैं, और दूसरी ओर देखेंगे कि एक दृढ़-चित्त माता के उपदेशों से ग़रीबी में भी पला हुआ बालक कैसा सच्चरित्र निकला है !

मूल्य २), सजिल्द २।)

बिदा

[द्वितीयावृत्ति]

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव। इस पुस्तक का पहला संस्करण शीघ्र ही बिक गया। दूसरा संस्करण बहुत थोड़ा रह गया है। अपनी कापी शीघ्र मँगवा लीजिए, नहीं तो बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मूल्य २।), सजिल्द ३)

सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य !

संसार-रहस्य

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे, और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २१४ ; मूल्य १।), सजिल्द २)

पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

महिला-माला की सर्वोत्तम पुस्तक

गुप्त संदेश

(भारतीय ललनाओं को)

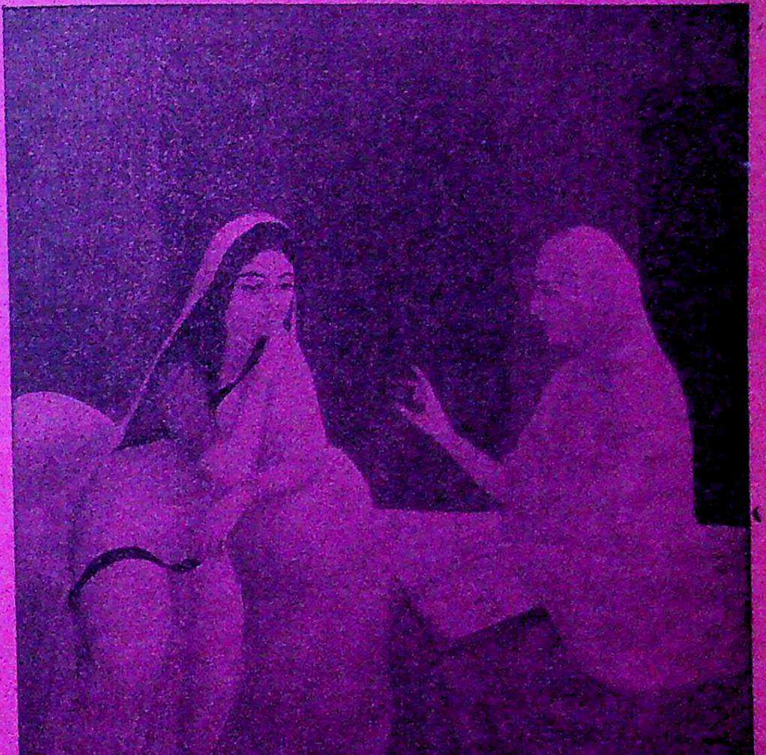

लेखक, डॉ० युद्धवीरसिंह। यह पुस्तक भारतीय ललनाओं के लिये लिखी गई है, झूठी लज्जा के वश होकर न वे जननेंद्रिय-संबंधी रोगों का पूरा हाल ही जान सकती हैं, और न उनका कुछ उपाय ही कर सकती हैं, जिसके कारण संसार के अलौकिक आनंद का अनुभव करना तो दूर रहा, वे अकाल ही मृत्यु का शिकार बन जाती हैं। इस अनोखी पुस्तक में डॉक्टर साहब ने बड़ी सरल भाषा में जननेंद्रिय-संबंधी सभी ज्ञातव्य विषय लिखे हैं। पुस्तक अपने ढंग की निराली है। प्रत्येक घर में इसकी एक-एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। युवतियों, भारत की भाव माताओं, को इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठाना चाहिए। २ भाग। मूल्य प्रत्येक भाग ।।=), जिल्ददार प्रति ।।।)

हिंदी की सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

बच्चों को पढ़ाइए

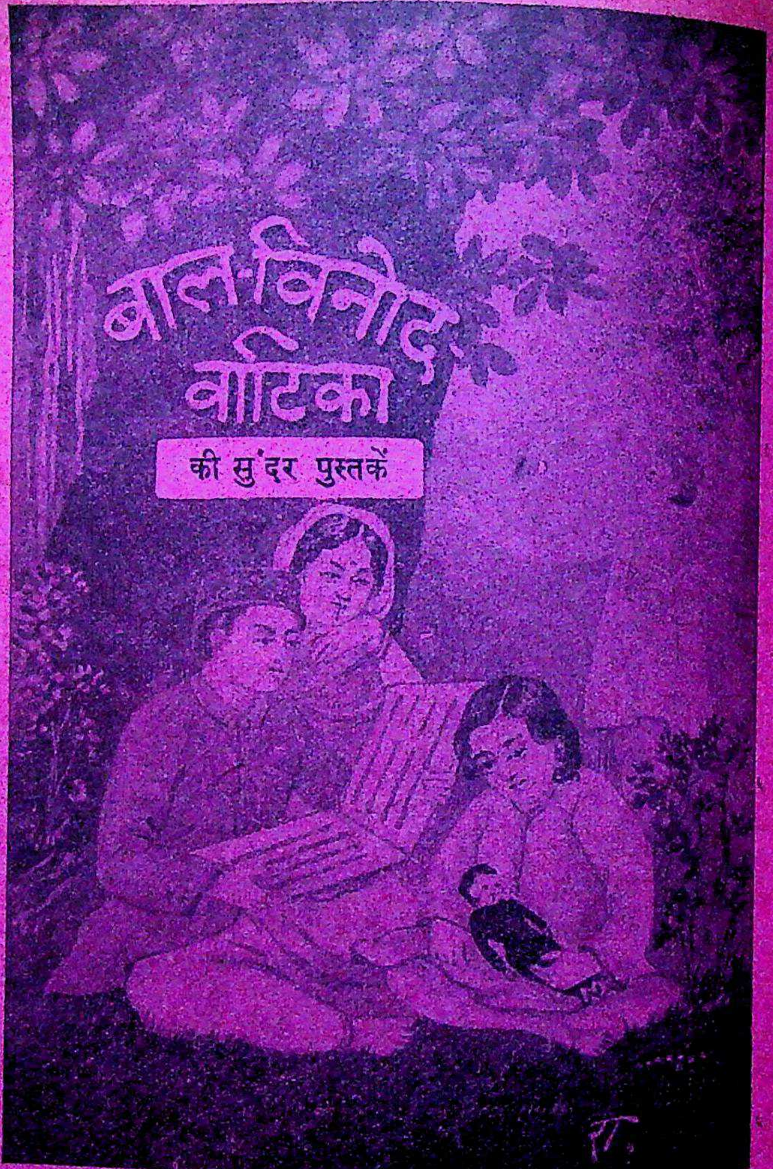

इस माला में ६ से लेकर १६ वर्ष तक के लड़की-लड़कों के लिये उपयोगी, उत्तमोत्तम और सचित्र पुस्तकें निकल रही हैं। उनकी भाषा इतनी सरल, सीधी, सुंदर और मनोरंजक रहती है कि बाल-वृंद किसी अध्यापक या कोष की सहायता के विना उन्हें पढ़ और समझ सकते हैं। सभी पुस्तकें नयनाभिराम एकरंगे और तिरंगे चित्रों से युक्त होती हैं। पढ़ने से खासा ज्ञान होता है। कविता, कहानी, इतिहास, जीवनी आदि सभी विषयों की पुस्तकें इस माला में प्रकाशित हो चुकी हैं।

कुछ पुस्तकों के परिचय के लिये सूचीपत्र मँगाएँ !

गंगा पुस्तकमाला
लखनऊ
कार्यालय

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

अदालत जनाब ठा० सुरेंद्रविक्रमसिंह साहब स्पेशल जज दरजा अव्वल मुक़ाम लखनऊ
मुक़दमा नंबरी नंबर २ सन् १९३८ ई०
पेशी ११—१२—३८
डॉ० शिवराजनरायन सकसेना वग़ैरह — क़र्ज़दार सायल

बनाम

मु० फ़ैज़ुलनिसा वग़ैरह — क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि डॉ० शिवराजनरायन वल्द विशुनप्रसाद साकिन वज़ीरगंज ज़िला लखनऊ ने एक दरख़्वास्त हस्ब ० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी ी है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० डॉ० शिवराजनराय मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांतीय में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त रे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेश करदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेश करदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)
क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देहंदा की मुस्तक़िल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बसाबत हक़ीयत दरख़्वास्त देहंदा मुंदरजा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्त देहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
लखनऊ	ज़मींदारी	फ़ाँपुर	हक़ आला	६ आ० ७पा० ७ कौट	...	मालकान का मक़बूज़ ½ हि०
,,	,,	कटवारा पट्टी भगवंतसिंह	,,	११आ. २पा. ८ ,,	मालगुज़ारी	८१॥=)
,,	,,	,, पट्टी कालिकासिंह	,,	४ आ. ८ पा. १६क.	,,	७।रु७आ२पा
,,	,,	,, अजोध्यासिंह	,,	१२आ. ६पा. ११क.	,,	२६।रु. ६आ.
,,	,,	रेठा पट्टी सांवलसिंह	,,	१आ. २पा.७क.७वि.	,,	१०८=)२
,,	,,	जाफ़पुर पट्टी रतनसिंह	,,	४ पाई १० क.	...	...
,,	मातहतदारी	हरयापुर	,,		...	...

१६ क़िता मकान वाके वज़ीरगंज थाना वज़ीरगंज लखनऊ

पूरब	पश्चिम	दक्खिन	उत्तर
मकान मंज़िल	सड़क सरकारी	जनाना मंज़िल	सड़क सरकारी

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २ दिसंबर सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इत्तिलानामा बग़रज़ एलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बा० दाताराम साहब मिश्रा स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम लखनऊ
इनकंबर्ड मुक़द्दमा नंबरी नंबर १२४ सन् १९३६ ई० पेशी ३ नवंबर, १९३८
मु० मुजीबउन्निसा बित बशीरअहमद मरहूम व चौ० खलीलअहमद व चौ० जमीलअहमद
चौ० आज़मअली सा० नगराम परगना व तहसील मोहनलालगंज लखनऊ क़र्ज़दार सायल

बनाम

(१) स० मुस्तफ़ाहुसैन वल्द स० अहमदहुसैन डि० कलेक्टर पेंशनर (२) मु० आलमाबानू (३) स० हुसैन वकील (४) स० मेहदीहुसैन (५) मु० कनीज़ाखातून बेवा अनसारहुसैन (६) मु० (७) स० आबिदहुसैन (८) जाफ़रअब्बास नाबालिग़ान बविलायत स० अमजदहुसैन वकील पिसर स० अनवरहुसैन (९) स० नासिरहुसैन (१०) सरदारहुसैन सा० नगराम (११) वल्द रामादीन (१२) सेवानंद माली (१३) फ़तहबहादुर नाबालिग़ बविलायत सेवानंद बिरादर (१४) रामअधार सा० गुंदौली (१४) रामदीन वल्द काशी (१५) भूपत (१६) दुर्गाप्रसाद पिसरान कौम कुर्मी सा० नगराम तरफ़ दक्खिन परगना व तहसील मोहनलालगंज लखनऊ क़र्ज़ख्वाह

चूँकि मु० मुजीबउन्निसा बितबशीरअहमद वल्द खलीलअहमद, आज़मअली व जमीलअहमद आज़मअली साकिन नगराम परगना मोहनलालगंज ज़िला लखनऊ की जानिब से एक दरख्वास्त हस्ब ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख्वास्तदेहंदा ने हस्ब फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख्वाह

हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्तप्रांत
फ़ेहरिस्त (अलिफ़) क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख्वास्तदेहंदा की मुस्तकिल क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	तादाद हक़ीयत दरख्वास्तदेहंदा मुंदरजे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख्वास्तदेहंदा की हक़ीयत पर मौजूदा [illegible] मालगुज़ारी
(१)	लखनऊ	ज़मींदारी	वाक़े नगराम पूरब मुहाल अब्दुलहफ़ीज़ प० व० त० मोहन-लालगंज लखनऊ पट्टी आज़मअली	क़ाबिल इंतक़ाल है बविरासत है	डि. ११पा. ११कि. १०बिस्वा व डि. १ पा० १० कि. महफ़ूज़ा रेहन तादादी १२बीघा ६ बिस्वा २ बि०	मालगुज़ारी ११६।) सिवाय ११०)
(२)	,,	,,	वाक़े मौ० नगराम दक्खिन मुहाल बशीरअहमद प० व त० मोहनलाल-गंज ज़ि० लखनऊ	,,	डि० १६ आना तादा० १४ बी० १४ बि० ९ बिस्वांसी ३ कचवांसी	मालगुज़ारी १२०) सिवाय १३)

लखनऊ	ज़मीदारी	वाके मौ० नगराम दक्खिन प० व तह० मोहनलालगंज जि० लखनऊ मुहाल आलअहमद	मालहलवारी	(अ) नं० ३३२१ १ बी० ६ बिस्वा ३३२२ १ बिस्वा जुमला १ बीघा १० बि०	लगान ६-१-७ लगान १ आना जुमला
,,	,,	वाके मौ० नगराम दक्खिन मुहाल बशीरअहमद प० मोहनलालगंज लखनऊ	,,	नं० २०३४ १ बिस्वा २०३२ १ बी० २ बि० ३३२१ १६ बिस्वा २ बि० १२ कचवांसी	६-२-० तीन किता बिला लगान
,,	,,	वाके नगराम दक्खिन परगना मोहनलालगंज लखनऊ	,,	३३१६ १ बी० २ बि० १२ बि० ३२१७ १८ बि. १७ बि.	यह जायदाद रामअधीन वल्द काशी कुर्मी सा० देह के पास रेहन है।

फेहरिस्त (बे)

दार की जायदाद जो बइस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताबिक़ धारा [illegible] दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है

	क़िस्म जायदाद	बसाअत हक़ीयत दरख़्वास्त देहंदा	कैफ़ियत
(१)	एक मकान पुख़्ता व खाम वाके नगराम परगना व तहसील मोहनलालगंज लगभग मालियत १००)		
(२)	एक खंडैल वाके नगराम मुहाल बशीरअहमद परगना मोहनलालगंज लगभग मालियत १०)		क़ाबिल नीलाम नहीं है

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज तारीख़ २० [illegible] सन् १९२८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

इश्तिहारनामा बग़रज़ एलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा
२५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब बाबू भगवतीप्रसाद साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा अव्वल मुकाम उन्नाव

मुकदमा नंबर ५ सन् १९३७ ई०

१—लालताप्रसाद
२—जानकीप्रसाद
३—रामकिशोर
} पिसरान निजानंद

४—रामेश्वर वल्द मथुराप्रसाद

५—कृष्णमोहन
६—कुँअर
७—विश्वभर
} नाबालिग़ान पिसरान जानकीप्रसाद बवलायत लालताप्रसाद चचा हकीकी

} अकवाम बरहमनान साकिनान मौज़ा
परगना मोहान जिला उन्नाव

कर्ज़दार

बनाम

सितारे हकीम वग़ैरा

कर्ज़ख्वाह फ़रीकसानी

चूँकि लालताप्रसाद वग़ैरह वल्द निजानंद साकिन जिंदापुर जिला उन्नाव की जानिब से एक दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मकरूज़ा पेश हुई है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इश्तिहार है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब या फ़रीकसानी ने हस्ब दफ़ा १० ऐक्ट मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में दरख़्वास्त पेश करे।

ज़मीमा (अ)

कर्ज़दार के हकूक मालिकाना मुताल्लिक आराज़ी

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर खेवट व मोहाल	दरख़्वास्तदेहंदा की मुताल्लिक व काबिल विरासत व काबिल इंतकाल हकीयत की तफ़सील	बयान हकीयत दरख़्वास्तदेहंदा मुताबिक रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	[illegible]
१	उन्नाव	८।।ऽ आना	अमोइया परगना असीवन रसूलाबाद	८।।ऽ	कुल	माफ़ी १४) ८०)
२		हकीयत आ० ।ऽ१- १० बि० १२ कचवांसी ६ अनवांसी ११ पनवांसी ४ तनवांसी मिनजुमला २० बि०	मौज़ा बीरूगढ़ी मोहाल लालनसिंह परगना असीवन रसूलाबाद चक कुसेहरी	हकीयत आना	,,	
२	,,	हकीयत आना २० बि०	मोहाल टीकाराम परगना मोहान	,,	,,	[illegible]

१	"	हकीयत आला ६२- १६ बि० १० कच०	मौज़ा बीकनदी मोहाब जीतसिंह पर० बसीवन रसूलाबाद	"	"	२१॥≡)॥ ३-)॥
१	"	मुसल्लम मौजा	ज़िक्रासपुर परगना मोहान	"	"	१०८४॥≡) मा० १०६) स०
१	"	हकीयत आला २ आना ८ पाई	मौजा सिधारी खुर्द पर- गना मोहान	"	"	४०) मा० ५) स०

जमीमा (ब)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बइस्तिसनाय हक़ूक़ मालिकाना मुताबिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

१	एक अदद	कीमत
	तख्त चोबी	८)
१	एक रास भैंस	२०)

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ २० सितंबर सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

मुंसरिम

[नमूना ज़ाबिता [illegible]

सम्मन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(ऑर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

अदालत ख़फ़ीफ़ा मुंसिफ़ी जौनपुर ज़िला जौनपुर
नंबर मुक़दमा २२३ सन् १९३८ ई०
सरजू साहु वग़ैरह मुद्दई

बनाम

रामनारायणसिंह वग़ैरह मुद्दाअलेह

रामनिरंजनसिंह वल्द उमरावसिंह सा० अवाहुला प० मड़ियाहूँ ज़िला जौनपुर

हरगाह मुद्दईयान ने आपके नाम एक नालिश बाबत दस्तावेज़ के दायर की है, लिहाज़ा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख़ २८ माह ऑक्टोबर सन् १९३८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात से वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदिही दावा की करें। और हरगाह वही तारीख़ जो आपके इहज़ार के लिये मुकर्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा के तजवीज़ हुई है। पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जमला गवाहों को, जिनकी शहादत पर व नीज़ तमाम दस्तावेज़ात को, जिन पर आप अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

यह सम्मन मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ १९ माह ९ सन् १९३८ ई० जारी किया गया।

मुंसरिम

* हिंदी-उपन्यासों का शिरोमणि

द्वितीय आवृत्ति

बहता हुआ फूल

[अनुवादक, पं० रूपनारायण पांडेय]

बंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारु चंद्र बंद्योपाध्याय बी० ए० का नाम ख़ूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उच्च श्रेणी के उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के 'स्रोतेर फूल' नाम के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकेंगे। अनुवाद साधारण बोलचाल की भाषा में किया गया है, अत: सर्वसाधारण इसे बिना कष्ट के समझ सकते हैं। बंगला-पुस्तकों को उस हिंदी- में परिवर्तित करने को कमाल हासिल गया है, सोने में सुगंध का काम हो गया है। इसका पहला संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। अनेक तिरंगे चित्रों से सुसज्जित लगभग १०० पृष्ठ के बड़े पोथे का मूल्य केवल २॥), सजिल्द ३)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

पढ़ते ही—

तबियत फड़क उठेगी !

[लेखक—प्रसिद्ध उपन्यास लेखक और कवि श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

पतन का प्रत्येक चरित्र स्वाभाविक है। मनुष्य में दोष और गुण दोनो विद्यमान हैं, पर दोषों के आधार पर किसी मनुष्य से घृणा करना उचित नहीं। पतन के चरित्रों को पढ़कर उन पर क्रोध नहीं होता, उनसे सहानुभूति हो जाती है। घृणित-से-घृणित मनुष्य सहानुभूति का पात्र होता है। उपन्यासकार की सफलता का अपने दूषित चरित्रों के प्रति पाठकों की सहानुभूति आकर्षित कर देने से बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है।

चरित्र-चित्रण की कुशलता, भाषा का सौंदर्य, शब्दों का लालित्य, कल्पना की मनोरमता और मनुष्य-विज्ञान का ज्ञान, सबका एक साथ सम्मिलन देखकर मुँह से वाह-वाह निकलने लगेगी ! यदि शाही लखनऊ के अंतिम नवाब वाजिदअलीशाह की काम-पिपासा, उनकी प्रेम-लीला और विलासिता का दिग्दर्शन तथा मनुष्य-चरित्र के पतन का सारा इतिहास बायस्कोप के तमाशों की तरह देखना हो, तो इस उपन्यास को अवश्य पढ़िए।

मनुष्य के चरित्र का विश्लेषण इस उपन्यास में इस कुशलता से किया गया है कि हिंदी-उपन्यास-भंडार में इसका सदा मान रहेगा। चित्रों के कारण तो आँखों का पर्दा हट जाता है, मज़ा तो पढ़ने ही में है। मूल्य १॥), सजिल्द २)

गंगा-पुस्तकमाला
लखनऊ
कार्यालय

यदि आप अपने दुलारे बच्चों को हँसी से लोट-पोट होते देखना चाहते हैं, तो आज ही 'विचित्र वीर' की एक प्रति अवश्य मँगा लें।

विचित्र वीर

(द्वितीयावृत्ति)

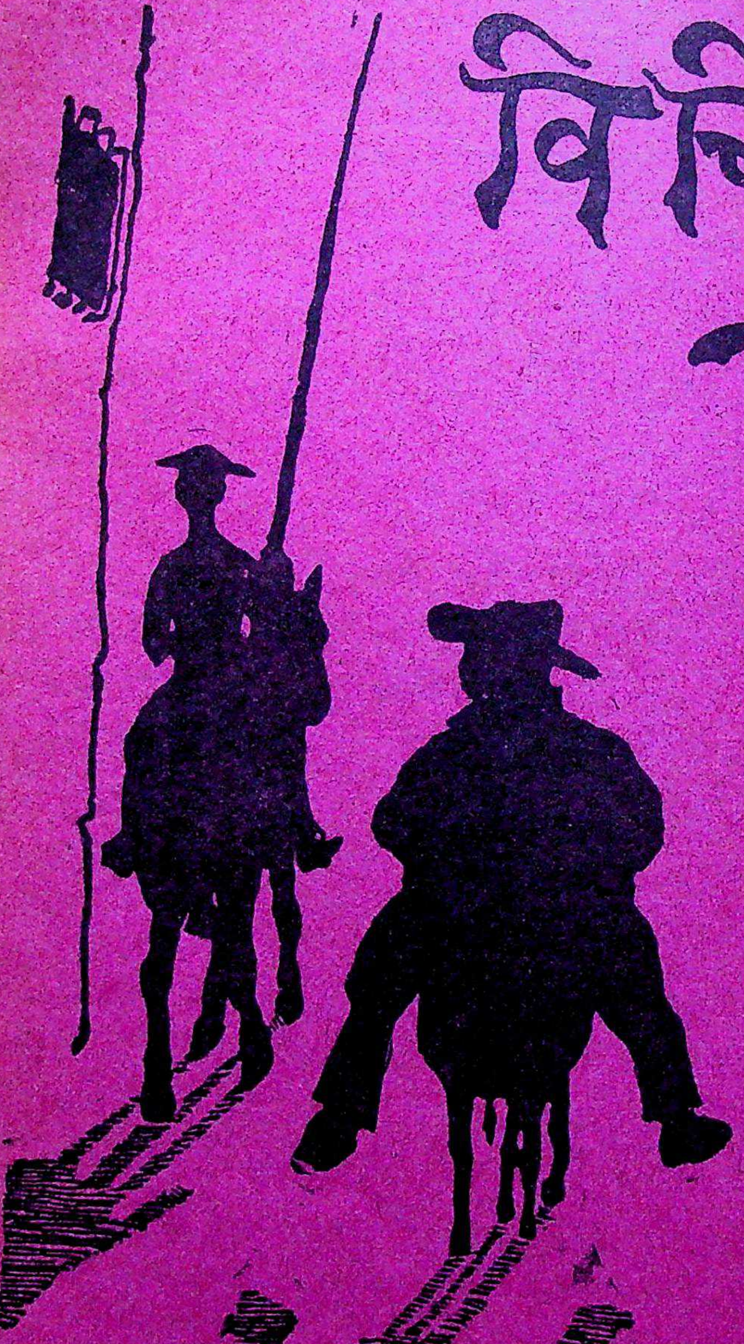

लेखक, हास्यरसावतार स्वनामधन्य पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी। पुस्तक सुप्रसिद्ध अँगरेजी उपन्यास Don Quixote का, जो संसार-भर के १२ सर्वोत्तम उपन्यासों में से एक है, अनुवाद है। यू० पी० की ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल में पाठ्य पुस्तक है। अतः इसकी रोचकता के विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। पढ़ते जाइए, और हँसते-हँसते लोटते जाइए। २ चित्र तथा १२० पृष्ठ। मूल्य ।।), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

बिलकुल नया प्रकाशन

छप रहा है ! छप रहा है !!

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में
निस्संकोच रक्खा जानेवाला
हिंदी का महान् गौरव

'विकास'

[सामाजिक उपन्यास]

लेखक
हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार
श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०
('विदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण ।
(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन ।
(३) कुली-प्रथा की आह और कराह ।
(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा ।
(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण । इत्यादि-इत्यादि ।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है ।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा ।

आजकल छपाई में खर्च अधिक आने के कारण थोड़ी ही प्रतियाँ छपा रहे हैं, इसलिये अभी से ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखाकर एक कापी रिज़र्व कराकर यह सर्वोत्तम उपन्यास पौने मूल्य ही में लीजिए । इसकी एक कापी रामायण की भाँति घर में रखना आवश्यक है ।

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों का
एकमात्र मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार
लखनऊ

शिशु-पालन

[लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार]

भारतवर्ष में आजदिन बच्चों की दशा कितनी शोचनीय है, यह किसी भी शिक्षित मनुष्य से छिपा नहीं। आपको किसी बिरली ही सौभाग्यवती माता की ऐसी गोद मिलेगी, जिसके दो-एक अमूल्य लाल बाल-अवस्था ही में काल-कवलित न हो गए हों। जब हम दूसरे देशों से अपने देश की तुलना करते हैं, तो हमें भले प्रकार ज्ञात हो जाता है कि हमारे ही देश में सबसे अधिक बच्चों की मृत्यु होती है, और जो जीते भी हैं, उनमें अधिकांश रोगी, निर्बल और कम आयुवाले होते हैं। इस शोचनीय स्थिति में भारत के जातीयता रूपी महल को सुदृढ़ बनाने के लिये यह परमावश्यक है कि उसकी नींव को सुदृढ़ बनाया जाय। प्रत्येक जाति की नींव उसके बच्चे हैं, और उन्हीं पर देश तथा समाज का भविष्य निर्भर है।

यदि किसी देश की माताएँ चतुर होंगी, गर्भाधान के समय से अपने स्वास्थ्य की रक्षा करेंगी और जन्म के बाद बालक का यथोचित लालन-पालन करेंगी, तो इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि उस देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। इसके विपरीत यदि हम अपने बच्चों की ओर से लापरवाही करेंगे, तो हमारे अधःपतन में कोई भी संदेह नहीं रहेगा। जब हम माताओं और बालकों को स्वस्थ बनाने का बिलकुल प्रयत्न नहीं करते, तो हमें सभ्य कहलाने का भी कोई अधिकार नहीं। ऐसी दशा में हमें अन्य सभ्य देशों की बराबरी करने की आशा छोड़ देनी चाहिए।

इस पुस्तक में शिशु-पालन-संबंधी समस्त ज्ञातव्य बातों का, बड़ी ही सरल भाषा में, वर्णन किया गया है, कोई बात छोड़ी नहीं गई। पुस्तक माताओं के बड़े काम की है। अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र भी हैं। मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

आधुनिक हिंदी-कविता की एक अपूर्व पुस्तक

मंदार

लेखक, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

गिरीशजी अपनी उत्प्रेक्षाओं के लिये काफ़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भाव मौलिक, उपमाएँ सुंदर, प्रकृति-चित्रण सजीव और सौंदर्य-वर्णन मनोहारी होता है। उनकी कविताएँ पढ़कर आप आश्चर्य-मुग्ध रह जायँगे।

प्रस्तुत संग्रह में उनकी इंद्र-धनुष, बिंदिया, वन-बाला, तारिका, अश्रु-छवि, जल-विहार, वर्षा-विहार, स्वर-लहरी, कवि की तरंग, स्वर्ग और संसार, अनुभूति और कल्पना आदि अनेक ललित एवं भाव-पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

शीघ्र मँगाइए। मूल्य ।।।), सजिल्द १।) मात्र।

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

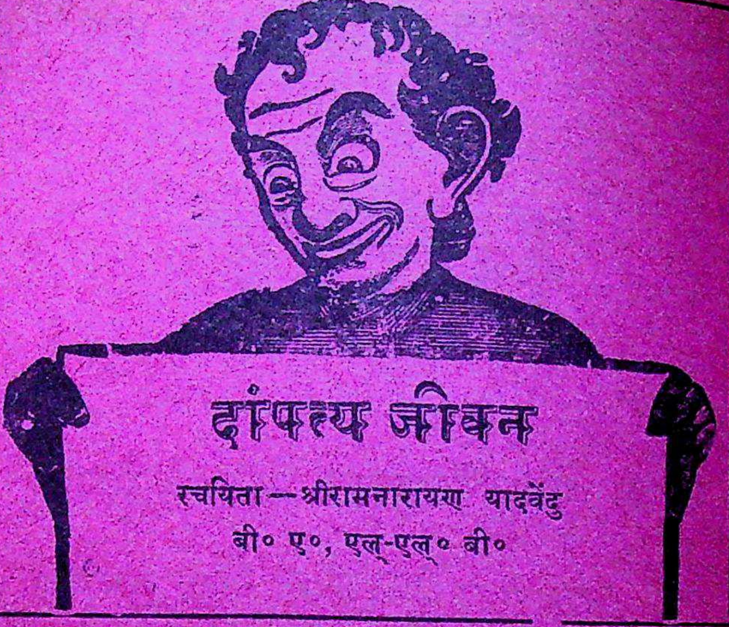

दांपत्य जीवन

रचयिता—श्रीरामनारायण यादवेंदु
बी० ए०, एल्-एल्० बी०

यह नव-विवाहित नवयुवकों और नवयुवतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय
है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस
में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें
के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही
एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली
राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में
पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को खरीदकर देखिए। प्रत्येक घर में
एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी ।।।=), जिल्ददार १।=)

मिलने का पता—**गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ**

हृदय का भार

रचयिता—पंडित दीनानाथ व्यास 'विचित्र'

कविरत्न, विशारद आदि

वर्तमान हिंदी-काव्य-धारा विशेषतया दुःखवाद की ओर ही प्रवाहित हो रही है। यह दुखवाद हमारे जीवन की संघर्षमय विकट परिस्थितियों का परिणाम है। वर्तमान काल के हिंदी-कवियों ने अपनी मुक्त एवं गेय रचनाओं में दुःखवाद के केवल एक पहलू को ही चित्रित किया है, किंतु व्यासजी ने समस्त विश्व के चेतन-अचेतन सभी पदार्थों में उसकी सत्ता स्वीकार करते हुए प्रत्येक पंक्ति में उसके मनोहर दर्शन भी कराए हैं। प्रकृति-सौंदर्य से लेकर जीवन के सुख-दुख तक में दार्शनिकता की पुट देकर तो व्यासजी ने वास्तव में सोने में सुगंध का काम किया है। वेदनाओं, व्यथाओं, अरमानों, स्मृतियों आदि के, रूपकों और उपमाओं के सहारे, इतने सुंदर चित्र चित्रित किए हैं कि वे काव्य-रसिकों को मुग्ध किए बिना रह ही नहीं सकते। विस्मय-विमुग्ध करनेवाली चमक-दमक, तड़क-भड़क, शब्दाडंबर, क्लिष्टता एवं निरर्थकता आदि—जिसके कारण वर्तमान छायावाद बदनाम हो रहा है—इस काव्य में खोजने पर भी नहीं मिलेगी। हमारे जीवन की उस विडंबना का इस काव्य में बड़े ही सुंदर ढंग से सजीव वर्णन किया गया है, जो अतृप्त आत्माओं को एक भार-सी प्रतीत होती है। हृदय-भार में कवि ने अपना हृदय ही खोलकर रख दिया है। बात तो यह है कि कविवर गोपालसिंह नेपाली के शब्दों में "यह दुख की कथा है, दर्द की कहानी है।" वास्तव में देखा जाय, तो हृदय-भार दुखी आत्माओं को सुख पहुँचानेवाली अनुपम कृति है। काव्य-प्रेमियों को इसकी एक प्रति अवश्य ही मँगाकर अवलोकन करना चाहिए। मूल्य ।।), सजिल्द १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला की नई देन

सुदामा

(राजनीतिक नाटक)

लेखक—श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी

इसमें संदेह नहीं कि अब तक के उपर्युक्त नाम से प्रकाशित सभी नाटकों में यह श्रेष्ठ है। वाजपेयीजी ने इसमें सुदामा के उन गुणों का दिग्दर्शन कराया है, जिनके द्वारा वह लोकनायक श्रीकृष्ण के अंतरंग मित्र हो चुके हैं। इसके लिये नाटककार ने कथावस्तु में कल्पना की वह आवश्यक पुट ला रक्खी है, जिससे नायक का चरित पूर्णतया चमक उठा है। गो कि सुदामा का कथानक पुराना है, किंतु इस नाटक में स्पष्टतया आप यह देखेंगे कि सुदामा हमसे दूर नहीं—इस युग के ही हैं।

इसमें विशेषता यह है कि स्त्री-पात्रों की भरमार नहीं की गई है। दो-चार जो स्त्री-पात्र हैं, वे ऐसे आदर्श हैं, जिनसे छात्रों के जीवन में पवित्रता की भावना जागेगी, न कि विलास और कामना की। अतएव स्कूल-कॉलेज के छात्रों के अभिनय-योग्य है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है। सुदामा जैसे महापुरुष के आदर्श गुण जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा सुंदर, बिलकुल बोलचाल की। मूल्य सादी ॥), जिल्ददार १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

प्रकाशित हो गया ! नई शैली का ऐतिहासिक नाटक !!

रानी भवानी

लेखक

हिंदी के क्रांतिकारी लेखक

श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा

श्रीपरिपूर्णानंदजी हिंदी के पौढ़ लेखक हैं। आपने यह नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य की वृद्धि की है। रानी भवानी का नाम प्रत्येक इतिहासज्ञ जानता है। इस नाटक में उसी सुशीला तथा आदर्श रमणी का सुंदर चरित्र-चित्रण है, जिसे पढ़कर विशेषतया स्त्रियों में सुंदर भाव पैदा हो सकता है। साथ ही इसमें मुग़ल-साम्राज्य के पतन-कालीन उनके प्रांतीय सूबेदारों की स्वच्छंदता एवं बिलासिता का अच्छा दिग्दर्शन है। मुर्शिदाबाद के बिलासी नवाब अलीवर्दीखाँ के मातहत नाटौर नाम की एक रियासत थी। वहाँ के राजा रमाकांत बड़े ऐयाश और शाहखर्च थे। रानी भवानी उन्हीं की स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की बड़ी चेष्टा की, पर फटकार के अतिरिक्त कोई लाभ न हुआ। रमाकांत के ज़ुल्म का समाचार उनके चचा दयाराम को मिला। दयारामजी नवाब के सम्मानित दरबारियों में से थे। उन्होंने रमाकांत को दंड-स्वरूप गद्दी से उतरवाकर उनके भाई देवीदास को गद्दी दिलवा दी। रमाकांत को लेकर रानी भवानी दर-दर मारी-मारी फिरीं। देवीदास को राज्य-मद इतना हो गया कि वह रमाकांत के साथ-साथ दयारामजी की भी उपेक्षा करने लगा। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकांत का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को बड़ा क्षोभ हुआ। फल-स्वरूप उन्होंने रमाकांत को फिर गद्दी पर बिठा दिया। किंतु रानी भवानी पर उनका विश्वास अधिक था, अतएव राज्य उन्हें मिला, और उन्होंने नवाब से अपने पति को साथ रखने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

नाटक बहुत छोटा, किंतु मनोरंजक है। पाठ कम हैं, ताकि रंगमंच पर आसानी से खेला भी जा सके। भाषा सरल और मुहाविरेदार। मूल्य सादी ॥=), जिल्ददार १=)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

पाँच महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ

१. हिटलर महान् अथवा जर्मनी का पुनर्निर्माण

इसमें जर्मनी के पूर्ण इतिहास के साथ-साथ हिटलर की जीवनी और जर्मनी की राजनीति का अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से विवेचन किया गया है। मूल्य ३)

२. आत्मनिर्माण अथवा विश्व-बंधुत्व और बुद्धिवाद

इसमें सभी प्रकार की विद्याओं के अध्ययन के दृष्टिकोण का वर्णन बुद्धिवाद की दृष्टि से करते हुए अंतरराष्ट्रीय जगत् के विश्व-बंधुत्व के आंदोलन का वर्णन किया गया है। मूल्य ३)

३. चरित्र-निर्माण अथवा भावी विश्व-राज्य और उसकी नागरिकता

इसमें राजनीतिक दृष्टि से मनुष्य के आचरण का वर्णन करते हुए अंतरराष्ट्रीय जगत् के भावी विश्व-राज्य के आंदोलन तथा उक्त विश्व-राज्य के नागरिकों के आचरण का वर्णन किया गया है। मूल्य ३)

४. शरीर-विज्ञान

इसमें शरीर के प्रत्येक अंग की रचना का वर्णन करते हुए उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने के उपाय बतलाए गए हैं। मूल्य ३)

५. राष्ट्र-निर्माता मुसोलिनी

इसमें इटली के संपूर्ण इतिहास के साथ-साथ मुसोलिनी का दिसंबर १९३७ तक का जीवन-चरित्र और इटली की वर्तमान राजनीति का अंतरराष्ट्रीय विवेचन किया गया है और एबीसीनिया का इतिहास, एबीसीनिया-युद्ध, परतंत्र एबीसीनिया की तड़प तथा स्पेन-युद्ध आदि सभी अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का दिसंबर, १९३७ तक का इतिहास दिया हुआ है। ऐसा ग्रंथ हिंदी में तो क्या, संसार की किसी भाषा में अभी तक नहीं लिखा गया। मूल्य ३)

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार
लखनऊ

उन तीनो बातों में

१ खर्च की औसत
२ मृत्यु-संख्या
३ ब्याज की दर

जिन पर

बीमा-कंपनियों की उन्नति निर्भर है ।

स्वदेशी भारत की सभी कंपनियों से आगे है ।

कहने को तो सभी कंपनियाँ यही बात कहेंगी

पर

आँकड़ों का मुक़ाबिला करने पर स्वदेशी ही आगे मिलेगी ।

क्यों ?

इसलिये कि १—इसका खर्च का औसत दिन-पर-दिन घट रहा है ।
२—मृत्यु-संख्या बहुत कम है ।
३—ब्याज की औसत सबसे ज़्यादा है ।

अतएव आप अपना बीमा स्वदेशी में ही कराइए ।

स्वदेशी की एक नई योजना

घातक दुर्घटना पालिसी

एक बार क़रीब २५) देकर १०००) का आजीवन बीमा कराइए !

एक व्यक्ति पाँच हजार रुपए तक का बीमा करा सकता है ।

विशेष विवरण के लिये लिखिए—

श्रीचंद दोनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा ।

Registered No. A. 1

स्त्रियाँ जब जागती हैं

तो ध्यान आकर्षित हो जाता है। आज भारत की प्रत्येक श्रेणी और समाज की स्त्रियाँ चाय को अत्यन्त उपयुक्त पारिवारिक पेय मानती हैं। किफ़ायत, आनन्द और उपयोगिता—यह सब तरह से गृहस्थी के लिये आदर्श चीज़ है। अपने परिवार-भर को चाय में सम्मिलित होना सिखाइये।

एकमात्र पारिवारिक पेय

भारतीय चाय

चाय तैयार करने का तरीक़ा

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइये।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपेन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

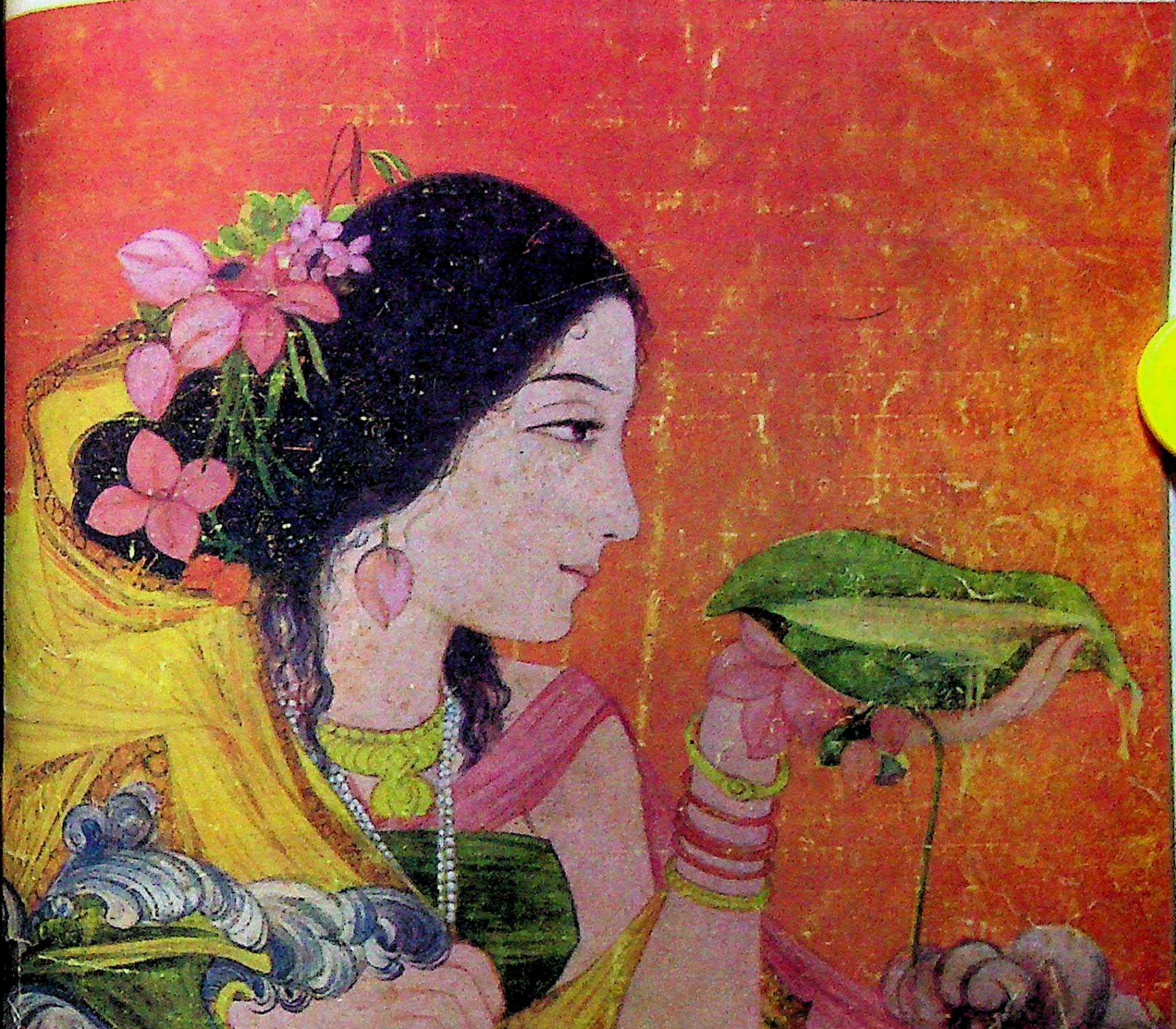

नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से ताराफ़ा

पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की ज

जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

बी० अर्जुनबाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे

फ़ायदा हुआ, इतिहास में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दि

असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा

गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं०

November
1938

इंतज़ार कीजिए ! **विशेषांक** शीघ्र प्रकाशित होगा !!

'बाल-विनोद'

[किशोर बालकों के लिये एकमात्र मासिक पत्र]

संपादक

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट

बाल-विनोद की विशेषताएँ

१. देश-विदेश पर प्रतिमास सचित्र लेख
२. हास्य की चुलबुलाती हुई सजीव कहानियाँ
३. एक बालक की लेखनीसे एक जासूसी उपन्यास
४. विशेषज्ञों द्वारा लिखे हुए माता-पिताओं को बाल-शिक्षा के लिये उपदेश
५. सुंदर छपाई तथा नयनाभिराम संयोजन
६. प्रतिमास ४८ पृष्ठ तथा वर्ष में दो विशेषांक
७. बालकों का पत्र-व्यवहार व चित्रकला

वार्षिक मूल्य २॥) प्रति अंक।)

कृपया आज ही ग्राहक बनें ! **विज्ञापन के लिये पत्र लिखें !!**

मैनेजर, 'बाल-विनोद'
३६, लाटूश रोड, लखनऊ

टर्की का मुस्तफ़ा कमाल पाशा

रचयिता, हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत शिवनारायण टंडन। इस पुस्तक में शाहों और सुलतानों के राजत्व-काल में टर्की की दुर्दशा, गत योरपीय महायुद्ध में टर्की को जर्मनी का साथ क्यों देना पड़ा, इसका रोमांचकारी वर्णन, कमाल पाशा ने अपनी मातृभूमि टर्की को घर और बाहर के शत्रुओं से कैसे बचाया, कमाल पाशा का पूरा जीवन-चरित्र, कमाल पाशा डिक्टेटर कैसे बना, उसने अकेले टर्की-से टूटे-फूटे साम्राज्य को किस तरह उठाकर एक उन्नतिशील, बलवान् राष्ट्र बना दिया, पुनर्निर्माण में वर्तमान उन्नतिशील टर्की का जीता-जागता चित्र, राष्ट्रीय भावना, आर्थिक उन्नति, सामाजिक क्रांति, पर्दे का दूर होना, शिक्षा का प्रचार, स्त्रियों को

आदि-

इस

जान

पुस्तक

चाय तैयार करने का तरीक़ा

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइये।

ी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

प्रत्येक मनुष्य इस बात को गाँठ बाँध ले !

शुभ

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अर्बों-खर्बों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुण-गान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजाइश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेस-लाटरी में धन की प्राप्ति वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छ-छ, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो ≈) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

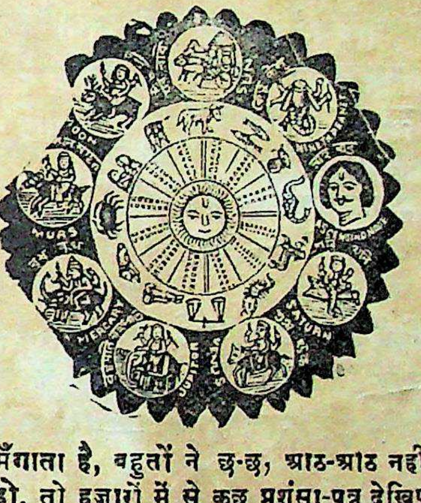

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥≈); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ४॥≡)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ६॥≡)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनवाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० [illegible]

पब्लिक सर्विस कमीशन, संयुक्त प्रांत

संयुक्तप्रांतीय सरकार की ग्राम-सुधार-योजना के संबंध में १४६ औषधालय और ५६ दवाख़ाने खोले जानेवाले हैं। उनके लिये उतने ही वैद्यों और हकीमों की आवश्यकता है। इसलिये युक्त प्रांत के स्थायी निवासियों तथा बनारस, रामपुर और टेहरी (गढ़वाल) की प्रजा से आवेदन-पत्र माँगे जा रहे हैं। ये वैद्य और हकीम पहले ३१ मार्च सन् १९३९ ई० तक अस्थायी रूप से रक्खे जायँगे, पर संभव है कि उनकी नियुक्ति का समय इसके आगे भी बढ़ा दिया जाय। वेतन ३५, ५०, ६५ रुपए प्रतिमास है और १० रुपया प्रतिमास दौरा करने का भत्ता दिया जायगा। परंतु सरकार को इस वेतन को कम करने का अधिकार है।

(अ) प्रार्थी के लिये आवश्यक है कि वह (१) या तो आयुर्वेदिक कॉलेज, हिंदू-विश्वविद्यालय, बनारस अथवा तिब्बिया कॉलेज, मुसलिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ का वैद्यक-संबंधी या हिकमत-संबंधी प्रमाण-पत्र प्राप्त किए हो या (२) संयुक्तप्रांतीय बोर्ड आफ़ इंडियन मेडिसिन का रजिस्टर्ड वैद्य या हकीम हो।

उन प्रार्थियों का विशेष रूप से विचार किया जायगा, जो उपर्युक्त आयुर्वेदिक अथवा तिब्बिया कॉलेज के प्रमाण-पत्र प्राप्त किए हुए हैं।

(ब) प्रार्थी की अवस्था प्रथम दिसंबर सन् १९३८ ई० को २० वर्ष से न्यून तथा ४५ वर्ष से अधिक न होनी चाहिए।

(स) आवेदन-पत्र ५ दिसंबर सन् १९३८ ई० के बजाय १५ दिसंबर सन् १९३८ ई० तक सेक्रेटरी, पब्लिक सर्विस कमीशन, यू० पी०, इलाहाबाद के पास पहुँचनी चाहिए।

‘नेवर ओल्ड’

खाने से सफ़ेद बाल काला !

‘नेवर ओल्ड’ के प्रयोग के बाद अगर फ़ायदा न हो, तो वापसी क़ीमत की ठोस गारंटी है। इसलिये ‘प्रताप’ के जेनरल मैनेजर मि० टेकचंद ढेंगरा के पास एक हज़ार रुपए का चेक बतौर ज़मानत जमा कर दिया है। क़ीमत पूरा बक्स १०), आधा बक्स ५) और चौथाई बक्स २॥)

ताज़ा सार्टिफ़िकेट देखिए—

श्रीयुत लाला काशीराम साहब पेंशनर पंजाब-पुलिस कठासग्राल ज़िला सरगोधा लिखते हैं— “मैंने जो दवाई सफ़ेद बाल काला करने के लिये अपने लड़के के मार्फ़त मँगवाई थी, उसने आश्चर्य-जनक फ़ायदा किया है। और, अब मैं कुछ पंक्तियाँ लिखने पर विवश हूँ कि मेरे बाल जड़ से काले उग आए हैं। मैं आपकी सफलता पर हार्दिक धन्यवाद देता हूँ !”

पूर्ण विश्वास के लिये सार्टिफ़िकेट और लिटरेचर मँगवाएँ !

सी० उमर ऐंड कंपनी, पोस्ट बॉक्स नं० १४६, लाहौर

लेख-सूची

पृष्ठ

१. प्रपात (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ... ३६६

२. सभापति का अभिभाषण—[लेखक, श्रीयुत पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर ... ३७१

३. विद्यापति का विरह-वर्णन—[लेखक, श्रीयुत व्रजकिशोर मिश्र एम्० ए० ... ३८१

४. गोमती-प्रपात (मसूरी) (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, प्रोफ़ेसर श्रीधर्मदेव शास्त्री ३८७

५. मेरा मकान (सचित्र, हास्य)—[लेखक, श्रीगुलाबराय एम्० ए० ... ३९३

६. हिंदुस्थानी (व्यंग्य-चित्र) ३९९

७. राष्ट्र-गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'रसिकेंद्र' ४००

८. जीवन के खेल (कहानी)—[लेखक, श्रीलतीफ़ुद्दीन अहमद ४०१

SOVEREIGN-REMEDY
AMRUTANJAN
Best Indian Pain Balm
Amrutanjan Depots
BOMBAY, MADRAS

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध । सिर-दर्द, बदन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है ।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

५००) रुपया इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफ़ेदी) की अद्भुत वनौषधि, तीन दिन में पूरा फ़ायदा । यदि आप सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं की दवा कर निराश हो चुके हैं, तो इसे लगाकर आरोग्य हों, बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम । विश्वास न हो, ⁻) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें । मूल्य २)

संतति-निग्रह (बर्थ-कंट्रोल)

ओषधि को प्रति माह दो-तीन बार व्यवहार करने से ही उस मास में गर्भ नहीं रह सकता । आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो ओषधि व्यवहार करना बंद कर दें । गर्भ धारण हो जायगा । ओषधि के व्यवहार करने से स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती । मूल्य एक वर्ष के सेवन योग्य की २), दूसरी ओषधि, जो सर्वदा के लिये बंध्या बना देती है । मूल्य २) रुपया ।

परीक्षित गर्भवटी

यह ख़ास बंध्या (बाँझ) को संतान पैदा कराने के लिये एकमात्र ब्रह्मास्त्र महौषधि महात्मा की सेवा से प्राप्त है, १७ वर्ष से अनुभूत है । सूर्य, चंद्रमा के समान निर्वंश-रूप अंधकार को दूर करने में समर्थ और सत्य है । अनेक धूर्त विज्ञापन से दुखी होने के कारण इसपर भी अविश्वास न करें, यह साक्षात् ब्रह्मरूप है । इसके सेवन से स्त्रियों के मासिक-संबंधी सभी दोष, महीने का घटना-बढ़ना, नहीं होना, कम होना, ज़्यादा होना, काला, पीला, नीला, दुर्गंधयुक्त होना, वायुगोला, बादीपन, पेट, सिर, कमर, कंधा इत्यादि में दर्द, चक्कर, हिस्टीरिया, चर्बी बढ़ना, शरीर का सूखना, गर्भ रहकर गिर जाना इत्यादि सभी दोषों को दूरकर ४० वर्ष के भीतर अवस्थावाली स्त्री को गर्भाधान कराकर संतान उत्पन्न कराती है । मूल्य ११) रु०

वैद्यराज अखिलकिशोरराम, नं० ३८१, पो० कतरी सराय (गया)

पृष्ठ

९. ज़मींदारी-प्रथा की प्राचीनता और शुक्लजी—[लेखक, श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ४०६

१०. सृष्टि-रचना में प्रयोजन—[लेखक, श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ४१०

११. साक़ी से (कविता)—[लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी ४१६

१२. पूज्यपाद श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी (सचित्र जीवनी)—[लेखक, श्रीयुत विद्यानंद ४१७

१३. योरप का आधुनिक वातावरण—[लेखक, पं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट ... ४२६

* श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों *

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चरक) सबको ३ दिन में पूरा लाभ । यदि अनेक दवा लगाकर निराश हो चुके हों, तो एक बार इसे लगाकर नीरोग होवें । बेफ़ायदा साबित करने पर दुना मूल्य वापस । जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें । मूल्य १॥)

❀ गर्भ-निरोधक (बर्थ-कंट्रोल) ❀

इसको प्रति माह ३ बार के सेवन से उस मास में गर्भ नहीं रह सकता । यदि आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो दवा का सेवन कराना बंद करा दें । गर्भ धारण हो जायगा । इससे स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती । मूल्य १ वर्ष का ५॥); दूसरी दवा जो सर्वदा के लिये वंध्या बना देती है, मूल्य २); पता—राजवैद्य परमेश्वर-दयालजी, नं० १०२ पो० क़तरीसराय (गया)

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी औषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक़्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं ।

यह औषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है । यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है । खोई हुई याददाश्त को पुन: लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है । ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है । मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।≡)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें । यह अत्यंत स्तंभन करती है । जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है । अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है । जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे । मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता । जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी । मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है । शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है । कुछ दिन लगाकर लगाना लाज़िमी है । मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

पृष्ठ

१४. नू स्वामी रामतीर्थ श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी) ४१६, ४२१ और ४२३ ३०

१५. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश' ४३४

१६. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत उमाशंकर तिवारी साहित्यालंकार, श्रीयुत दिलीपनारायणसिंह एम्० ए०, श्रीयुत ज्योतींद्रनाथ, कुमारी सुमित्रा पसरीचा, कुमारी नरेंद्रिनी राठौर, श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल' और कुमारी कंचनलता सब्बरवाल 'सरिता' प्रभाकर, विदुषी ४३५

१७. गाँव—[लेखक, श्रीपं० रामचंद्र त्रिवेदी ४४३

१८. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत प्रेमनारायण टंडन विशारद और श्रीयुत रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ४४६

१९. कुसुम ४५०

२०. धारा (संपादकीय विचार)... ... ४५१

खिज़ाब को छोड़ो

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो ॥) ; इससे अधिक पका हो, तो ४) या कुल पका हो, तो ६) का तेल मँगवा लें।

पता—बाल काला डिपो नं० १०१
पो० कतरीसराय (गया)

पुरुषों के लिए इलास्टिक

जांगिया

वर्तमान में हीं यह जांगियें हमें विलायतसे आए हैं। व्यायाम करने के लिए, रात को सोने के समय पहनने के लिए बहुत अच्छी वस्तु हैं। मूल्य केवल २॥)

रेडियो! रेडियो! रेडियो!

लाहौर के गाने घर बैठे सुनियें।

मूल्य दरजा अव्वल ६०)
" " दोयम ३०)

नाक ठीक करने की मशीन

आपकी नाक चाहे किसी भी तरह से कुरूप हो, इस जर्मन मशीन से कुछ ही सप्ताह में अति सुन्दर बन जायगी, इसे रात को सोते समय नाक पर लगाया जाता है, और पहनने वाले को कोई कष्ट प्रतीत नहीं होता कई एक जर्मन डाक्टरों की राय है कि नाक की विभिन्न बीमारियां भी इसके सेवन करने से कुछ समय में बिलकुल दूर हो जाती हैं, हर छोटे बड़े नाक पर बिलकुल ठीक आ जाती है। मूल्य केवल ७)

कामा को०, लाहौर रोड, अमृतसर।

आठ घड़ियां मुफ्त

एक शीशी सुन्दरता को बढ़ाने की क्रीम।

एक शीशी नपुन्सकता का तेल।

तीन शीशी इत्तर गुलाब, इत्तर चमेली व इत्तर मौलसरी जिनकी सुगन्धी साठ घण्टे तक रहती है।

एक एन्डीपेन्डेन्ट।

१९ अति सुन्दर नंगे चित्र और दूसरे पोस्ट कार्ड।

इन सब का मूल्य केवल ३।।=)

इनके साथ ३ डमी घड़ियां, १ असली जर्मन टाईम पीस गारंटी दस साल, ४ अति सुन्दर केस वाली डमी रिस्ट वाच जिसके साथ चूड़ी या तसमा बिलकुल मुफ्त भेजा जाएगा।

गारंटी—इससे सस्ता और सुन्दर माल आपको कहीं से नहीं मिलेगा स्टाक बहुत थोड़ा रह गया है अगर मंगाना चाहते हो तो जल्दी करें।

कामा को०, लाहौर रोड,
अमृतसर।

३१८ चीजें बिलकुल मुफ्त

असली और बढ़िया किसम की सनीमा मशीन—यह वही मशीन है जिसका तमाशा लोग रात को दिखा कर धनी होजाते हैं आप हर समय रात को अपने घर वालों का हृदय संतुष्ट करने के लिए इस सनीमा मशीन पर फिलम चढ़ाकर घण्टा आध घण्टा चलते फिरते चित्र कई प्रकार के दृश्य, पर्वत, पशु, सुन्दर स्त्रियों के चित्र सैना के दृश्य आदि का आनंद उठाएं, थोड़ी पूंजी से बेकार पुरुष इससे अपना पालन कर सकता है और धनी अपना हृदय संतुष्ट कर सकता है। झूठे इशतहार देने वाले धोखा बाजों से बचें। असली माल आपको केवल हमारे ही यहां मिलेगा। एक असली मशीन सहित फिलम मूल्य ५)

बिलकुल मुफ्त—हर खरीदार को सनीमा मशीन और फिल्म के साथ सिर दर्द की मशीनी टिकियां हर प्रकार के पेट दर्द की दवाई हर प्रकार के दाद की दवाई आदि इस तरह ३१८ चीजें जो हर घर में रखनी आवश्यक हैं, मुफ्त भेजी जाती हैं।

कामा को०, लाहौर रोड, अमृतसर

जर्मनी पिसतौल

जिसके साथ

एक सौ कारतूस

मूल्य केवल ३।।=)

भयानक और गर्जदार आवाज़, जिसकी आकृति बिलकुल असली पिसतौल के समान है। अन्तर केवल यह है कि उसके चलाने से जीव मर जाते हैं परन्तु इसकी आवाज़ को सुनकर जीव डर के मारे बहुत दूर तक भाग जाते हैं।

गवर्नमैंट ने हमारे पिसतौल पर अभी तक कोई लायसंस नहीं लगाया है इसलिये हर एक पुरुष स्वतन्त्रता से इसको खरीद कर अपने पास रख सकता है और आवश्यक समय पर अपने काम में ला सकता है। इसके साथ १०० कारतूस मुफ्त भेजे जाते हैं। इस के सिवाय यदि आप और कारतूस मंगवायें तो ॥=) प्रति शत से भेजे जा सकते हैं।

कामा को०, लाहौर रोड, अमृतसर।

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. खेत की ओर—[चित्रकार, श्रीयुत कमला-शंकरसिंह ३६६

(ख) दुरंगे

२. प्रांत-पति श्रीमोहनलालजी सक्सेना ४१६
३. श्रीयुत बाबूरावजी विष्णु पराड़कर ४१७

(ग) व्यंग्य

४. हिंदुस्थानी—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ३९९

(घ) सादे

५. प्रपात के कुछ यात्री साथी ३८८
६. गोमती-प्रपात (मसूरी) ३९०
७. लाइब्रेरी-बाज़ार (मसूरी)... ... ३९२
८. मकान का अग्रभाग ३९४
९. मकान का पृष्ठभाग ३९५
१०. श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ४०६

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चरक) सफ़ेद
दिन में पूरा लाभ । यदि अनेक
[illegible] निराश हो चुके हों तो

ट्रेड मार्क

मलेरिया इन्फ़्लुएंज़ा

व अन्य बुख़ारों में रामबाण

नक़ालों से सावधान !

हिक्क्स एग्यु स्पेसिफ़िक की बढ़ती हुई बिक्री और प्रसिद्धि को सफ़ाई के गवाह भी मंज़ूर करते हैं ।

एम्० एच्० डब्लू० हेवार्ड आई० सी० एस्०, हाईकोर्ट, बंबई ।

मदन संस ऐंड कंपनी,
केमिस्ट्स ऑफ़् १८७२, बंबई नं० १

विचित्र पुस्तकें

आजकल हिंदी-संसार में अपना-अपना पेट पालना तो सभी जानते हैं, परंतु बेचारे ग़रीब, अपाहिज, बेकारी से तड़पनेवालों का कोई भी सहारा नहीं । हमने अपने यहाँ से बेकारों के हितार्थ कुछ अजीब पुस्तकों का प्रकाशन शुरू कर दिया है । हमारा दावा है कि आप निम्न-लिखित पुस्तकों में से कोई भी पुस्तक मँगाकर घर बैठे धन कमाकर अपना तथा अपने भावी कुटुंब का पालन करिए । दिन-प्रति दिन माँग बढ़ रही है ।

देशी बटन-मेकर १॥)
घड़ीसाज़ी १)
साबुनसाज़ी (शिक्षक) २)
अनंग तरंग २)
संभोग-रहस्य २)
करघा-कला १॥)
ख़ज़ाने की कुंजी यानी व्यापार करने का तरीक़ा १॥)
सुगंधित तेल बनाना २)
व्यापार-शिक्षा १॥)

नोट—हमारी उपर्युक्त कुल पुस्तकें मँगानेवालों को ⌐) प्रति रुपया कमीशन भी दिया जायगा, और व्यापार करने का भले प्रकार तरीक़ा भी बतलाया जायगा, और जो मदद हो सकेगी, वह भी की जायगी ।

पता—वर्मा-निर्बल-सहायक कार्यालय, शिकोहाबाद सिटी

पृष्ठ
११. श्रीमान् स्वामी रामतीर्थजी ४१८
१२-१४. श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी (३ चित्र) ४१६, ४२१ और ४२३
१५. कुमारी कंचनलता सब्बरवाल प्रभाकर, विदुषी ४४०
पृष्ठ
१६. श्रीपं० रामचंद्र त्रिवेदी ४४४
१७. श्रीके० के० बाटलीवाला एम्० आई० एम्० ई०, ए० आई० एन्० ए० ... ४६६

क्षमा प्रार्थना

"बिना देखे, बिना पढ़े, यूं ही अब तक 'बेकार, इश्तहारी' कह कर आप की पुस्तक की हँसी उड़ाता रहा। इसके लिए मैं बहुत ही लज्जित हूँ। मैं समझता था कि 'विवाहित आनन्द' में कोकशास्त्रों की व्यर्थ बातों और गन्दी तस्वीरों के सिवाय क्या होगा। परन्तु इसे पढ़कर मुझे इतना लाभ हुआ कि कह नहीं सकता। ईश्वर के लिए मुझे क्षमा करदें। मैं अत्यन्त लज्जित हूँ कि मैंने चांद पर थूका।"

[illegible]......गली—सुक्खा......अमृतसर।

ले०—कविराज हरनाम दास बी० ए०, लाहौर।

सुखसंचारककम्पनीमथुराकी
दवाइयां
सुधासिन्धु
कफ,खांसी,हैजा,दमा,शूल,संग्रहणी
अतिसार आदि की लाभदायक सुगन्धित दवा
की० ।)
दद्रुगजकेसरी
दादकी सबसे अच्छी दवा. की० ।)
बालसुधा
दुबले और कमजोर बच्चोंको ताकत
वर बनानेवाली मीठी दवा. की० ।।)
सब दवा बेचने वालोंके पास मिलती है

आयु घट गई!
आरोग्यता चलती बनी—
बुद्धि मंद हो गई! क्यों!
यदि आप जानना चाहते हैं, तो 'जीवन - सुधार'
नामक पुस्तक केवल एक कार्ड लिखकर मुफ्त
शीघ्र मँगाइए। आज ही लिखें।
पता—रामकृष्ण-औषधालय, जबलपुर (सी० पी०)

योगेंद्र कवच

(शास्त्रोक्त)

इस अद्भुत शक्तिशाली तथा दैवी शक्तिसंपन्न सिद्ध वशीकरण-यंत्र के केवल धारण करने-मात्र से ही कठिन-से-कठिन काम भी सिद्ध होता है। यंत्र के चमत्कारी प्रभाव से कोई स्त्री या पुरुष कैसा ही कठोर-हृदय, अभिमानी क्यों न हो, आपसे मिलकर शादी (प्रेम) के लिये इच्छा प्रकट करेगी। इसके द्वारा आपका दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, तरक्क़ी, मुक़दमे, जुआ, लाटरी में जीत, नवग्रहों की शांति तथा कठिन-से-कठिन रोगों का नाश होकर भाग्योदय होता है। शास्त्रोक्त नहीं है, ऐसा साबित करने पर १००) रु० इनाम। मूल्य ताम्र २)रु०, चाँदी का ३।), असली सोने का ६) रु०

पता—श्रीमहाशक्ति-आश्रम, पो० परवलपुर (पटना)

ख़िज़ाब छोड़ो

इस तेल से पका बाल जड़ से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। इसकी सत्यता सैकड़ों प्रशंसा-पत्रों से प्रमाणित हो चुकी है। बाल कम पका है, तो ५); चौथाई से अधिक पका है, तो ७) रु० का तेल मँगा लें।

पता—हजरा एंड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम व पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १।) में। डाक-व्यय पृथक्।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट बॉक्स १६५, लाहौर

श्वेत कुष्ठ की फ़क़ीरी जड़ी-बूटी

इस अद्भुत शक्तिशाली जड़ी-बूटी के केवल तीन ही दिन के लेप से कठिन-से-कठिन और पुराना-से-पुराना श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी) या चरक-सा महारोग जड़ से आराम होता है। अगर आप इनामी विज्ञापनों के धोखे में पड़कर ठगे जा चुके हैं, तो एक बार इस वनौषधि को इस्तेमाल कर आरोग्य होवें। विश्वास नहीं हो, तो एक आने का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मू० ४।) रु०

पता—श्रीवीरेंद्रप्रसाद, नं० ५१, पो० परवलपुर (पटना)

जागरण

हिंदोस्तान के लाख-लाख किसानों के जीवन-मरण के प्रश्न पर प्रकाश डालनेवाला हिंदी का एकमात्र उपन्यास।

लेखक——श्रीनाथसिंह

किसानों के उद्धार का कौन-सा रास्ता ठीक है ? महात्मा गांधी का ग्राम-सुधार-आंदोलन ? या साम्यवादियों का सारी भूमि को स्टेट की संपत्ति बनाकर मशीन द्वारा खेती करके गाँवों को शहर बना देना ? दोनो प्रश्नों पर इस उपन्यास में आपको विचार करने की संपूर्ण सामग्री मिल जायगी। इतना ही नहीं, इन विचारों के बीच से।

एक बहुत ही सुंदर प्रेम-कहानी

आपको रम्य पर्वतावली के बीच से बहती हुई नदी के समान दौड़ती मिलेगी। इसमें साहस, सनसनी, दर्द, प्रेम का ऐसा आश्चर्यजनक मिश्रण मिलेगा कि आप इस पर बिना मुग्ध हुए न रहेंगे। चार सौ से ऊपर पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य सिर्फ़ २)

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार
लखनऊ

कुछ सुंदर पुस्तकें

रुबाइयात उमरखय्याम	३)
आयुर्वेदीय खनिज-विज्ञान २॥),	३)
विष-विज्ञान	२॥)
सूर्य-व्यायाम	।)
जल-चिकित्सा	।≤)
जल के प्रयोग और चिकित्सा	॥)
आरोग्य-सूत्रावली	।≤)
हिंदी-गीतांजलि	१॥)
मेरे जेल के अनुभव	।=)
देवी जोन	।≤)
राष्ट्रीय वीणा १ भाग	॥=)
,, ,, २	॥)
त्रिशूल-तरंग	॥=)
जर्मन जासूस की रामकहानी	।-)
युद्ध की कहानियाँ	।)
कृष्णार्जुन-युद्ध नाटक	॥=)
भीष्म-नाटक	॥)
मुक्तधारा [नाटक]	॥=)
उद्योगी पुरुष	।=)
रूस का राहु	।≤)
श्रीकृष्ण-चरित्र	।=)
चेतसिंह और काशी का विद्रोह	।=)
फ़िज़ी में भारतीय प्रतिज्ञा-बद्ध कुली-प्रथा	१)
साम्यवाद	।=)
रूस की राज्यक्रांति	२॥)
चीन की राज्यक्रांति	१॥)
एशिया-निवासियों के प्रति योरपियनों का बरताव	।≤)
महाराज नंदकुमार को फाँसी	२॥)
बलिदान (सचित्र)	२)
काला पहाड़ ,,	॥।)
सचित्र अकाली-दर्शन	॥।)
टाल्सटाय के सिद्धांत	१।)
वज्राघात (ऐ० उ०)	२॥।
घर और बाहर (रवींद्र)	१।)
सतीसारंधा (खं० का०)	॥=)
सम्राट् अशोक	१)
भारतीय संपत्तिशास्त्र सजिल्द (प्राणनाथ)	४)
संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ (चि० स०)	२॥)
सरोजिनी नायडू	।=)
छत्रपति शिवाजी	॥=)
महाराना प्रताप	॥=)
वंदे मातरम् चित्राधार	२)
व्यंग्य चित्रावली	१॥)
तिलक-चित्रावली	१)
कांग्रेस चित्रावली	॥।)
कांग्रेस का इतिहास	।-)
भारतीय इतिहास में स्वराज्य की गूँज	।=)
आयर्लैंड में होमरूल	।)
आयर्लैंड में मातृभाषा	।=)
बीसवीं सदी का महाभारत	॥।)
राजनीति-प्रवेशिका	।=)
हमारा भीषण ह्रास	।)
कुसुमांजलि (कवि०)	≡)
हिंदी-करीमा (काव्य)	।-)
कृषक-क्रंदन	≡)
दादाभाई नौरोजी	=)॥
रानाडे की जीवनी	≡)॥
चंपारन की जाँच	।-)
स्वराज्य-पर मालवीयजी	।)
स्वराज्य पर सर रवींद्र	।)
कलकत्ते में स्वराज्य की धूम	।)
शिक्षा-सुधार	॥)
राजयोग (विवेकानंद)	।≤)
भक्तियोग ,,	।≤)
फ़िज़ी-द्वीप में मेरे २१ वर्ष	॥)
मेघनाद-वध	।॥)
बहिष्कृत भारत	।)
सितार-शिक्षक	।≤)

पुस्तकें मिलने का पता--

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

केवल एक पैसे में

देश-विदेश के ताज़े-से-ताज़े समाचार और विद्वत्ता-पूर्ण लेखों तथा व्यापारिक रिपोर्टों से परिपूर्ण डबल क्राउन-आकार के ८ पृष्ठों का

दैनिक लोकमान्य

पढ़िए

वार्षिक मूल्य १२) छमाही ६॥)

सचित्र और सरस २४ पृष्ठ का

साप्ताहिक लोकमान्य

वार्षिक मूल्य २) एक प्रति का दो पैसा

सार्वजनिक संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिये

ख़ास रियायत

केवल ८) में दैनिक एक साल तक दिया जायगा

जहाँ हमारे एजेंट नहीं हैं, वहाँ के लिये उदार शर्तों पर एजेंटों को आवश्यकता है।

विशेष ब्योरे और नमूने के लिये लिखिए--

मैनेजर, लोकमान्य, १६०, हैरिसन रोड, कलकत्ता

देशी राज्यों की आठ करोड़ मूक और दुखी प्रजा के मानवोचित अधिकारों का
जोरदार वकालत और देशी राज्यों को प्रजासत्तात्मक शासन-व्यवस्था की ओर

अग्रसर करना

'सचित्र दरबार'

का मुख्य उद्देश्य है।

(संपादक—चंद्रधर)

'दरबार'

सामाजिक समस्याओं के संबंध में अत्यंत उग्र, तप्त और असहनशील है और हिंदुओं के सामाजिक अधःपतन के प्रत्येक कारण को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने के लिये तत्पर है।

'दरबार'

का प्रत्येक अंक फड़कते हुए समाचारों, अनाचार-पूर्ण राज्यों की व्यवस्था की निष्पक्ष आलोचनाओं, देश-विदेश की साप्ताहिक प्रगति तथा सामयिक लेखों से भरा रहता है।

'दरबार'

यदि आपने अभी तक नहीं देखा है, तो नमूने के अंक के लिये दो आने के टिकट भेजिए।
गत वर्ष के अंक किसी मूल्य पर भी न मिल सकेंगे।

साधारण संस्करण—एक प्रति ≈), वार्षिक ७), आजीवन २५)
राजसंस्करण—वार्षिक २०), आजीवन ५०)

विज्ञापन की दरों आदि के लिये लिखिए—

व्यवस्थापक—

'सचित्र दरबार', सिविल लाइंस, दिल्ली
टेलीफ़ोन नं० ६४५२

तार का पता—'दरबार'

क्या आप अपने प्रिय बच्चों को हँसी से लोट-पोट होते देखना चाहते हैं ?
यदि हाँ, तो आज ही 'नटखट पाँड़े' की एक प्रति अवश्य मँगा लें !

नटखट पाँड़े (द्वितीयावृत्ति)

लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी०। एक नटखट लड़के की आत्मकथा। एक-एक शब्द में हास्य-रस भरा हुआ है। नटखट पाँड़े का विद्यारंभ, डॉक्टर महोदय की दुर्दशा, बोर्डिंगहाउस के अध्यक्ष महोदय की दुर्गति, नटखट पाँड़े का रात को भाग जाना, गाने की मजलिस, सारी कहानी इतनी अनूठी और दिलचस्प है कि लड़के इसे समाप्त किए बिना नहीं रह सकते। कितने ही प्रसंग तो ऐसे हैं, जहाँ मारे हँसी के पेट में बल पड़ जायँगे।

मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

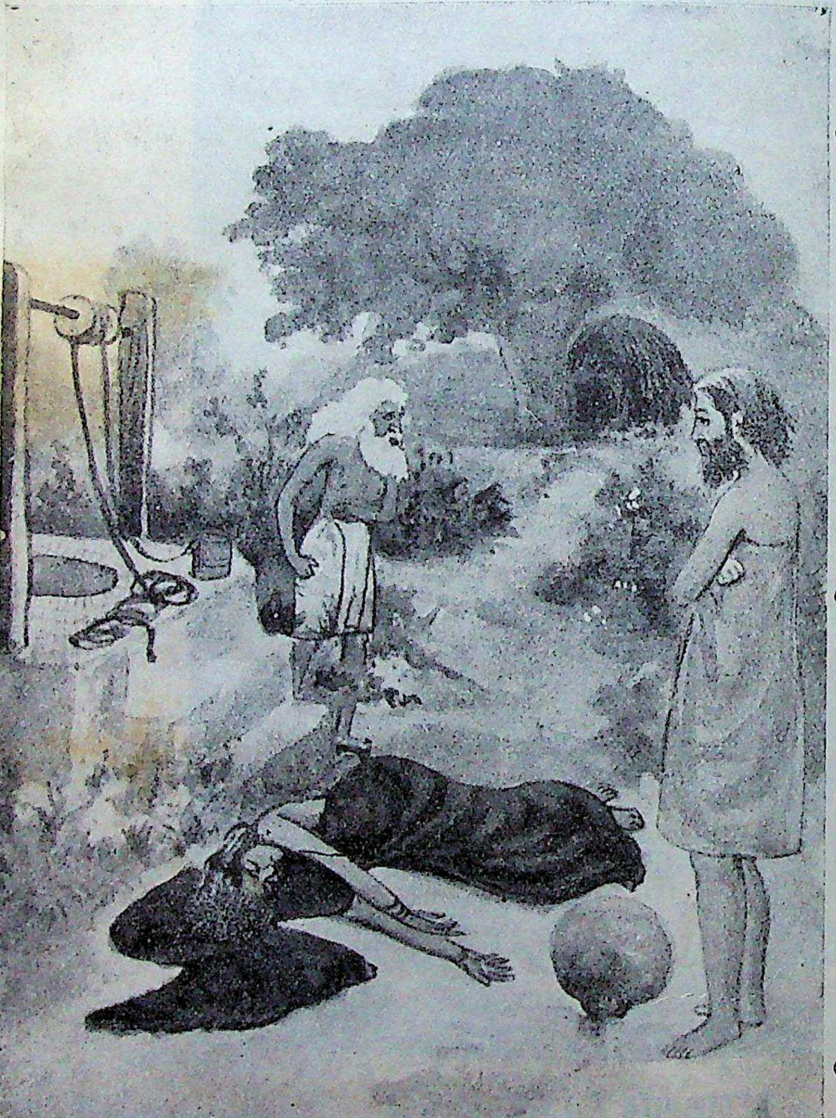

हिंदी में मौलिक उपन्यास लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्री जी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आ-चार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के कायल हैं। नव-युवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उन-की पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, पौरु की विषमता, शंका की सरलता, तज्जनित द्वेष और डाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अवि-वेक और मतिभ्रम तथा पूर्व-संस्कार के कारण अंत परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर का कंचन को छोड़कर कूड़े-करकट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं— आदि जीवन के कति-पय जटिल प्रश्नों का शास्त्री जी ने बड़ी खूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी खूबी से रचा गया है कि उपन्यास का एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और इसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केव २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

पं० गोविंदवल्लभ पंत

के रत्न

जूनिया

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी ने यह नया उपन्यास लिखकर हिंदी-साहित्य में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इसमें एक ग़रीब किसान को जाति-पाँति के पचड़ों में पड़कर किस प्रकार अपना धर्म-परिवर्तन करना पड़ा, वह विद्या और शांति की खोज में किस प्रकार अपनी सारी शक्ति लगा देता और बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठाते हुए अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से उन्नति करता है, इसका अच्छा चित्रण है। भाषा मुहाविरेदार। मूल्य १।।), सजिल्द २)

राजमुकुट

(सचित्र, मौलिक नाटक)

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानिक विकास। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर है, जब रसावेश को स्थायी रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट नहीं होने दिया गया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना का कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खेला जा चुका है। छठा संस्करण। मूल्य ।।।), सजिल्द १।)

वरमाला

(सचित्र, मौलिक नाटक)

यही प्रथम हिंदी-नाटक है, जिसे रेडियो में ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अनुवाद गुजराती और तैलगू में भी हो चुका है। चारु चित्रों से सुसज्जित। मूल्य ।।=), सजिल्द १=)

मदारी

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

प्रस्तुत पुस्तक में पहाड़ियों के जीवन की छटा और पर्वतराज हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का पूरा आभास मिलेगा। इस उपन्यास का नायक एक पहाड़ी किसान का बेटा 'नवाब' और नायिका लोहार-किसान-कन्या कुमारी तितली। नवाब धन की प्राप्ति के लिये मदारी बनता है, फिर दवाफ़रोश होकर 'ताइजो'-नामक चाक़ूवाली के चक्कर में फँसकर हवालात की हवा खाता है। वह अपने जीवन के स्वप्न को सच्चा करता है। मूल्य १।।।), सजिल्द २)

प्रतिमा

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। मूल्य सादी १।।), सजिल्द २)

संध्या-प्रदीप

(कहानियाँ)

पंतजी की ये मौलिक कहानियाँ ऐसी परिमार्जित, सरल भाषा में लिखी गई हैं कि अत्यंत रोचक हो गई हैं। मूल्य १), सजिल्द १।।)

अंगूर की बेटी

प्रस्तुत पुस्तक रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ।।।=), सजिल्द १।=)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

दुर्लभ ग्रंथ-रत्न

आरोग्य-शास्त्र

उत्तर-भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक और धुरंधर लेखक
आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री-प्रणीत

निम्न-लिखित ३१ अध्याय १२० प्रकरण। ७०० से अधिक विषय, २०० के लगभग एकरंगे और बहुरंगे मूल्यवान् चित्र और ६०० के लगभग बड़े (२०×३० = ८) पृष्ठ, उत्कृष्ट छपाई और क़ीमती मज़बूत देशी आइवरी फ़िनिश चिकना काग़ज़, पक्की सुनहरी कारीगरी की बढ़िया जिल्द। पचासों वर्ष तक ग्रंथ नष्ट नहीं हो सकेगा, न इस काग़ज़ में कीड़ा लग सकेगा।

ग्रंथ का प्रत्येक अक्षर

प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिये प्राणों से बढ़कर क़ीमती है। एक-एक बात हज़ारों बार हज़ारों रुपयों का काम देगी। सैकड़ों बार पढ़ने पर भी यह ग्रंथ सदैव आपको पढ़ते रहना पड़ेगा। ग्रंथ की भाषा बहुत सरल रक्खी गई है।

गत १०० वर्षों में

इसकी टक्कर का ग्रंथ हिंदोस्तान की किसी भाषा में नहीं निकला!

यदि आप

अधिक व्यय और समय बरबाद न करके वैद्यक के हर विषय के पंडित बनना चाहें, तो आरोग्य-शास्त्र मँगाकर पढ़ें। मूल्य १२)

अध्याय-सूची

१. स्वास्थ्य-विज्ञान
२. शरीर-विज्ञान
३. शरीर-यंत्र
४. गर्भाधान और प्रसव
५. शिशु-पालन
६. स्नान
७. भोजन
८. फलाहार
९. मक्खी, मच्छर, खटमल और रोग-कीटाणु
१०. जड़ी-बूटी
११. मुष्टि-योग
१२. प्रसिद्ध नुसख़े
१३. ख़ास नुसख़े
१४. धातुओं की भस्म
१५. आकस्मिक उपचार
१६. रोगी की सेवा
१७. पथ्यापथ्य
१८. तपेदिक़
१९. हैज़ा
२०. प्लेग
२१. कुछ महत्त्व-पूर्ण-रोग
२२. स्वाभाविक चिकित्साएँ
२३. यौवन-रक्षा
२४. व्यभिचार
२५. स्त्रियों का स्वास्थ्य
२६. व्यायाम
२७. आयु बढ़ाने की रीति
२८. सुंदरता बढ़ाने की रीति
२९. गृह-निर्माण-कला
३०. उपयोगी विद्याएँ
३१. आत्मविज्ञान

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये
'साहसी बालक' अवश्य पढ़ाएँ

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक ही आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को साहसी बनाइए। साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही साहसी बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य ।), जिल्ददार ।=)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

सुधा के ग्राहकों को पौने मूल्य में

प्रसूति-तंत्र

मूल्य २॥), सजिल्द ३)

"प्रसूति-तंत्र—हिंदी में अपने ढंग की यह निराली पुस्तक है। जच्चा-बच्चा, जननेंद्रिय-क्रिया-विज्ञान, गर्भ-विज्ञान, प्रसव-विधि, गर्भावस्था के विकार तथा डॉक्टरी क्रियाओं द्वारा बाँझपन दूर करने के उपचार तथा गर्भ से बालक निकालने की चीड़-फाड़ आदि के विषय में अभी तक इतनी विशद पुस्तक हिंदी में कोई भी नहीं थी। यद्यपि यह पुस्तक साधारण गृहस्थ को ज्ञान-मात्र ही दे सकेगी, किंतु अज्ञानता-वश मूर्ख दाइयों द्वारा अक्सर हानि उठानेवालों को सचेत अवश्य करा सकेगी, और सही बात समझने के योग्य बना सकेगी। मैंने अंतिम अध्याय (प्रसूति का शल्य-कर्म) पढ़कर यह जान लिया है कि लेखक ने बड़े परिश्रम के साथ अपनी बात समझाने की चेष्टा की है। समझदार गृहिणियों को इस पुस्तक का एक बार मनन अवश्य करना चाहिए।"

(वर्तमान, कानपुर)

प्रसूति-तंत्र
आचार्य
द्विवेदीजी का
कथन
है—
"प्रत्येक गृहस्थ
के
लिये
अनमोल है।"

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

मँगाइए तो सही, फिर बच्चों से पोथी छुड़ाना मुश्किल हो जायगा ।

बाल-विलास

छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक और विनोद-पूर्ण कविताओं की यह अच्छी पुस्तक है । ४० से भी अधिक चित्र, काग़ज़ मोटा, टाइप बड़ा, रंगीन छपाई ।

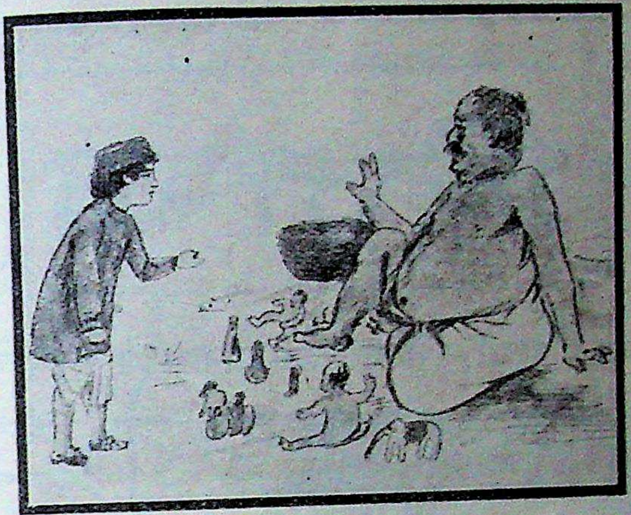

बाल-विलास

इस सुंदर पुस्तक के लिये छोटे छोटे बालक ऐसे मचल जाते हैं, जैसे चित्र में खिलौने लेने के लिये एक बच्चा तोंदूमलजी से ठनक रहा है ।

मूल्य केवल ।≈), राजसंस्करण ।।≈)

अम्मा, अम्मा, ला दो

जल्दी से—

हँसी-खेल

दद्दा ने मेरे ही लिये तो इसे मँगवाया है । इसके भीतर बहुत-सी रंग-बिरंगी तस्वीरें और मज़ेदार कहानियाँ हैं ।

मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

ऐक अत्यत्तम सामाजिक उपन्यास

विजया

[अनुवादक, 'माधुरी'-संपादक पंडित रूपनारायण पांडेय कविरत्न]

पांडेयजी बँगला के कैसे सिद्धहस्त अनुवादक हैं, यह हिंदी-संसार पर भली भाँति विदित है। आपका अनुवाद मौलिकता से मंडित और स्वाभाविकता से सुसज्जित होता है। इस उपन्यास में सामाजिक चरित्र-चित्रण इतनी बारीकी और सुंदरता से किया गया है कि कहीं पढ़ते-पढ़ते करुणा और सहानुभूति से हृदय पिघल जाता है, और कहीं घटना की वास्तविकता से प्रभावान्वित होकर आठ-आठ आँसू बहाने पड़ते हैं। वर्णन का क्रम बड़ा मधुर और चित्ताकर्षक है। भाषा ललित और ओजस्विनी है। ६-७ रंगीन और सादे चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य १।), सजिल्द २)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

सुंदर काव्य का आनंद लूटिए !

(सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य)

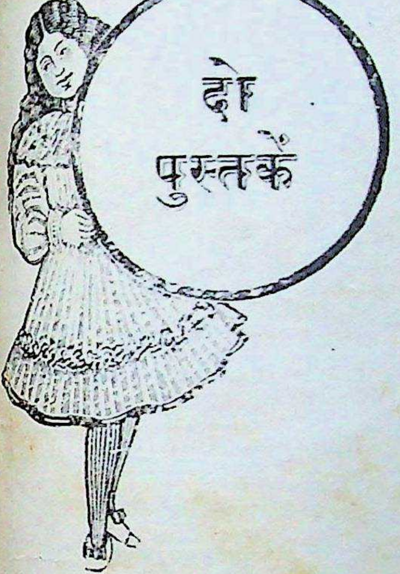

(१)
नल नरेश

(२)
पंछी

नल नरेश

कविवर पुरोहित प्रतापनारायणजी कविरत्न-रचित एक महाकाव्य । इसमें नल-दमयंती की पवित्र एवं शिक्षा-प्रद कथा का छंदोबद्ध वर्णन है । इसकी प्रत्येक पंक्ति हृदय को स्पर्श करनेवाली और काव्य की दृष्टि से सुंदर है । साहित्य में महाकाव्य की सृष्टि एक बहुत बड़े सौभाग्य की बात होती है । ४ रंगीन तथा २ सादे चित्रों-सहित, सुंदर रूप में छपी पुस्तक का मूल्य २॥), सजिल्द ३)

पंछी

(सचित्र)

लेखक, कविवर श्रीगोपालसिंह नेपाली । नेपालीजी की कविताएँ सुधा, चित्रपट, सरस्वती आदि पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं । उनके काव्य शक्ति, प्रवाह, सौंदर्य-बोध तथा चारुचित्रण आदि विशेषताएँ हैं । इस काव्य को देखकर हिंदी साहित्य के कई प्रमुख विद्वानों ने इसके रचना-चातुर्य की बड़ी प्रशंसा की है । पढ़ने ही लायक चीज़ है । कविवर निरालाजी ने भूमिका में इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है । मूल्य सादी ।≈), सजिल्द ॥।)

गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क
लखनऊ

मनोविज्ञान का एक अद्भुत उपन्यास

पवित्र पापी

सुप्रसिद्ध रूसी लेखक डॉस्टॉय फ़िस्की का एक उपन्यास

पृष्ठ-संख्या ५०० ; मूल्य केवल ३।), ३॥)

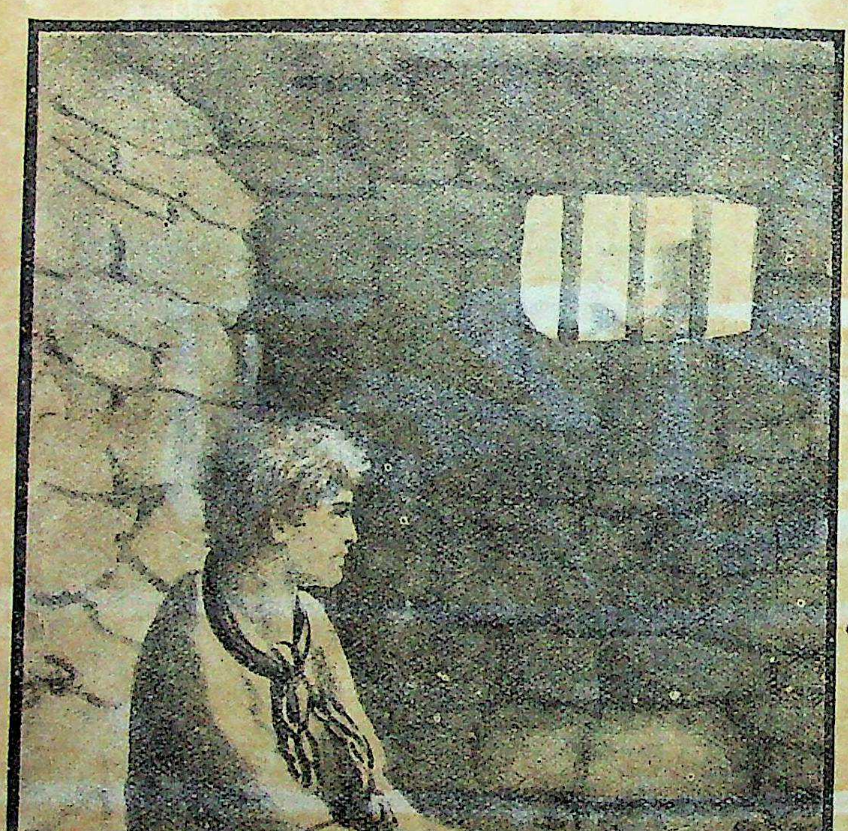

डॉस्टॉय फ़िस्की रूस के एक क्रांतिकारी उपन्यास-लेखक हैं। आप प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक टॉलस्टाय के समकक्ष हैं। सन् १८४९ ई० में आप पर यह अपराध लगाया गया कि तुम साम्यवाद के प्रवर्तकों में हो। वह पकड़े गए, और अन्य २१ अपराधियों के साथ उन्हें फाँसी की सज़ा का हुक्म दिया गया। यह ज़ारशाही के ज़माने की बात है। अस्तु। फाँसी के लिये वह चौक में खड़े कर दिए गए थे। उनकी आँखें बंद कर दी गईं, और गोली चलाने की आज्ञा भी दी ही जा चुकी थी कि इतने में एक अफ़सर ने आकर कहा कि तुम्हें साइबेरिया में देश-निकाले का दंड दिया गया है। ऐसी स्थिति में मनुष्य-मात्र के हृदय में क्या भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, उनका उन्होंने स्वयं अनुभव किया, और लेखक इसमें वही अंकित किया है। पाठक जिस प्रसंग को पढ़ता है, उस का एक पात्र अपने को समझने लगता है। रंगीन और सादे चित्र तो सोने में सुगंध का काम करते हैं।

पुस्तक मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

Kumar

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्या
राजसंस्करण	१२)	१।
साधारण संस्करण	६)	।।)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

सुधा

वर्ष १२ खंड १ — कार्त्तिक, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९५ वि०)— नवंबर, १९३८ — संख्या ४ पूर्ण संख्या १४८

प्रपात

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

किस वियोगिनी के आँसू हो,
किस दुखिया के हो दृग-जल ;
किस वेदनामयी बाला की
मर्म - वेदना के हो फल ? १ ॥

निकले हो किस व्यथित हृदय से,
हो किस द्रव मानस के रस ;
क्या वियोग की घटा गई है
आकुलतामय वारि बरस ? २ ॥

किस धुन में यों निकल पड़े हो,
जाते हो तुम कहाँ चले ;
गिरिवर है पवि-हृदय, किस तरह
उसमें तुम हो सरस पले ? ३ ॥

क्यों पछाड़ खाते रहते हो,
क्यों सिर पटका करते हो ;
क्या इस भाँति किसी बहुदग्धा
व्यथिता का दम भरते हो ? ४ ॥
या यह दिखलाते रहते हो
पड़े प्रबल दुख से पाला ;
बार-बार व्याकुल हो-हो क्या
करती है व्यथिता बाला ? ५ ॥
उठे हुए उद्गार, वाष्प जो
अंतस्तल में भरते हैं ;
धूम-पुंज-सम हृदय-गगन में
वे जिस भाँति विचरते हैं—६ ॥
उड़ा-उड़ा छींटे, बल खा-खा
क्या वह दृश्य दिखाते हो ;
मचल-मचल, गिर-गिर, उठ-उठ
क्या उनकी गति बतलाते हो ? ७ ॥
कल-विहीन हो कल-कल करते
किन ढंगों में ढलते हो ;
दृग-जल के समान छल-छल कर
उछल-उछल क्यों चलते हो ?
क्या वियोग के कितने भावों
का यों अनुभव करते हो ;
अथवा संगति के प्रभाव से
भावुकता से भरते हो ? ९ ॥
बहुत मचाते हो कोलाहल,
पर यह नहीं बताते हो—
किस वियोगिनी या व्यथिता-
बंधन में बँधे दिखाते हो ? १० ॥
ऐसी विश्वव्यापिनी किसकी
पीड़ा और व्यथाएँ हैं ;
अकथनीय किस दृग के आँसू
की दुख-भरी कथाएँ हैं ? ११ ॥
है वह कौन कामिनी, जिसका
गया सकल सुख यों कीला ;
अथवा प्रकृति-वधूटी की है
यह रहस्य-पूरित लीला ? १२ ॥

स्त्री और पुरुष
दोनो के लिये समान फ़ायदेमंद
मणितैल
इस तैल को मस्तक पर लगाने से बाल चिकने और चमकीले रहते हैं, उनमें सफ़ेदी आने नहीं पाती, और जड़ें मजबूत हो जाने से बाल गिरते नहीं हैं।
क़ीमत ५ तोले की शीशी की १) रु०
आतंकनिग्रह औषधालय, जामनगर-काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड कं०, चौक

सभापति का अभिभाषण *

[श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर]

स्वागताध्यक्ष महोदय तथा बहनो और भाइयो !

आप गुरुजनों और मित्रों ने मुझे इस स्थान पर बिठाकर मेरा आदर किया है, अथवा इस पद का गौरव घटाया है, इसके निर्णय का भार मैं आप ही पर छोड़ देता हूँ। मैं तो इस पद का ग्रहण बड़ों की आज्ञा समझकर ही करता हूँ। और, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोगों की सहायता और सहयोग से उस कर्तव्य का पालन कर सकूँगा, जो मेरी क्षुद्र शक्ति के परे है। फिर भी मन दुविधा में है। जिस पद का गौरव स्वर्गीय पूज्यपाद पंडित गोविंदनारायण मिश्र, पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'-जैसे साहित्य-महारथियों और पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, सेठ जमनालाल बजाज-जैसे सर्वमान्य नेताओं ने बढ़ाया है, उसे ग्रहण करते मैं वस्तुतः बहुत ही संकुचित हो रहा हूँ। कविवर मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पंडित अंबिकाप्रसाद वाजपेयी-जैसे विख्यात साहित्यिकों के रहते यह पद मुझे ग्रहण करना पड़ रहा है, इसे मैं राष्ट्र-भाषा हिंदी का दुर्भाग्य ही समझता हूँ। मैं भली भाँति जानता हूँ कि 'अभावे शालिचूर्णं वा' न्याय से यह भार मुझ पर पड़ा है। न मैं साहित्यिक हूँ, न नेता। सभा-समितियों से सदा दूर रहा। व्याख्यान देना जानता नहीं। एक ग़रीब पत्रकार हूँ, और पत्रकार के नाते राष्ट्र और राष्ट्र-भाषा की जो कुछ सेवा बन पड़ती है, करता रहता हूँ। साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व के लिये इतना ही गुण कदापि अलम् नहीं, यह जानकर ही पहले मैंने पद-ग्रहण करने में असमर्थता प्रकट की थी, पर फिर मित्रों और गुरुजनों के आग्रह के सामने सिर झुका देना पड़ा। अस्तु। अब आप सब गुरुजनों और भाई-बहनों से प्रार्थना है कि अपने गुणों से मेरे दोषों का मार्जन कर लें।

दिवंगत हिंदी-सेवियों के प्रति श्रद्धांजलि

और कुछ कहने के पहले मेरा यह परम पवित्र कर्तव्य है कि उन महानुभावों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पण करूँ, जो सम्मेलन के गत अधिवेशन के बाद हमें शोक-संतप्त कर परमधाम को सिधार गए हैं। सन् १९३७ ईसवी के मार्च के अंत में मद्रास में साहित्य-सम्मेलन हुआ, और उसके बाद, डेढ़-दो महीने में ही, मुंशी अजमेरीजी सारे हिंदी-संसार को रुलाकर स्वर्गवासी हुए! मुंशीजी सुकवि, सुलेखक, सुवक्ता, सुगायक और विनोद-प्रिय पुरुष थे। आप 'वैष्णव' मुसलमान थे। आपकी रग-रग में भारतीयता का ख़ून बह रहा था। कथा ऐसी सुंदर कहते थे कि श्रोता चित्रवत् सुनते ही रह जाते थे। हाज़िरजवाबी में आपका सानी न था। स्मरण-शक्ति असाधारण थी। हिंदी के सच्चे भक्त, सच्चे सेवक और सच्चे प्रचारक थे। आपकी मृत्यु से खाली हुआ स्थान आज खाली ही है, उसके शीघ्र भरने की आशा भी नहीं। उसके बाद अगस्त में डॉक्टर काशीप्रसाद जायसवाल स्वर्गवासी हुए! आप प्राच्य विद्या और पुरातत्त्व के आचार्य थे। अपनी विद्वत्ता से

---

* यह भाषण श्रद्धेय पराड़करजी ने, अभी हाल में, अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (शिमला) के २७वें अधिवेशन में, सभापति के पद से, दिया था। अत्यंत महत्त्व-पूर्ण होने के कारण हम इसे, अग्रलेख के रूप में, दे रहे हैं।—सुधा-संपादक

आपने विद्वत्समाज में आदरणीय स्थान ग्रहण किया था। आपसे हमें बहुत आशा थी, पर वह पूर्ण न हो सकी, और अल्प वयस में ही आप चल बसे। इसके बाद ही काशी के श्रीरामदास गौड़ और श्रीजयशंकर'प्रसाद' हिंदी-जननी को रुलाकर परमपिता के पास चले गए! गौड़जी का गद्य हम लोगों के लिये अनुकरणीय है। आप प्राचीनता के अभिमानी होते हुए भी राजनीतिक क्षेत्र में सदा अग्रगामी रहे। यह कहना अत्युक्ति नहीं कि रामचरित-मानस के आप मर्मज्ञ और गोसाईं तुलसीदासजी के सच्चे भक्त थे। मानस पर एक सुंदर भाष्य करने की इच्छा, हमारे दुर्भाग्य से, आपके साथ ही लुप्त हो गई। अत्यंत स्वतंत्र प्रकृति और अभिमानी होने के कारण आप किसी स्थान पर अधिक समय तक टिक न सके। अकथनीय आर्थिक कष्ट उठाया, पर कभी अपनी बात से न टले, और न कभी मुँह पर दुःख की छाया ही पड़ने दी। मृत्यु के कुछ दिन पहले मंगलाप्रसाद-पारितोषिक मिल गया था, उससे आर्थिक कष्ट तो दूर हुआ-सा मालूम होता था; पर वह सारी रक़म आपने राम-मंदिर बनाने में ख़र्च कर डाली। आज उनके परिवार की अवस्था अत्यंत दयनीय हो रही है, यह कहते मुझे बहुत ही दुःख होता है। जयशंकर'प्रसाद' के संबंध में कहना ही क्या? वह भाव की मूर्ति थे। उनके गद्य और पद्य दोनो भावमय होते थे। उनके छोटे-से वाक्य में भी गंभीर अर्थ भरा रहता था। आप सच्चे कवि थे, और कम उम्र में ही क्षय-रोग के ग्रास हो गए! आपको मृत्यु के बाद मंगलाप्रसाद-पारितोषिक मिला है! इन सब साहित्य-रथियों तथा इनके सिवा उन सबको भी, जिनके नाम मैंने नहीं लिए हैं, मैं सादर श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ।

साहित्य-सम्मेलन का यह २७वाँ अधिवेशन शिमला-शैल पर हो रहा है। इसके साथ एक नक्षत्रमाला समाप्त हो रही है। जिस अखंड ज और साधन का आरंभ भारतीय संस्कृति के केंद्र-स्वरूप हमारी काशी-नगरी में हुआ, उसकी एक लघु माला का अंत उस नगाधिराज के क्रोड़ में हो रहा है, जहाँ हमारे उस साहित्य का आविर्भाव हुआ था, जिसने मनुष्य को मनुष्य बनाया—दुनिया को सभ्यता का सबक़ पढ़ाया। हमारे ही क्यों, संसार के महान् साहित्य का जनक यही हिमाचल है। भारतभूमि और उसकी आत्मा का रक्षक यही हिमाचल है। आज हम हिंदी-साहित्य की सेवा के लिये उसकी गोद में जमा हुए हैं, यह हमारा सौभाग्य है। संभव है, यहाँ हमारी हिंदी को भी वही शक्ति, वही जीवन और वही तेज प्राप्त हो हो जाय, जो किसी दिन देववाणी को प्राप्त हुआ था, और वह भारतीय संस्कृति का झंडा सुदूर देशों में भी फहरावे, और मानव-हृदय के उन विकारों को निर्मूल कर सके, जो मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बना रहे हैं, पर-स्वापहरण-जैसे पैशाचिक कार्य को आत्मरक्षा और वीरता के नाम दे रहे हैं। हिमालय के जिस खंड पर यह सुंदर नगर बसा है, उसका भी महत्त्व कम नहीं। इसके आस-पास अनेक पर्वतीय राज्य हैं, जो हिंदी-साहित्य और नागरी-लिपि के प्रचार में हमारे सहायक होकर भारत की प्राचीन संस्कृति को नया जीवन दान कर सकते हैं। शिमला भारत के वर्तमान शासकों का ग्रीष्मकालीन निवास-स्थान है, जिनसे हमें हिंदी और नागरी के प्रति न्याय करा लेना है।

ब्रिटिश शासकों द्वारा हिंदी की उपेक्षा

हमारी भाषा और हमारी लिपि दोनो की उपेक्षा इस शासन में जैसी हुई है, वैसी मुसलमान-शासकों के समय में भी नहीं हुई थी। भारत में नागरी-लिपि पढ़नेवाले जितने लोग हैं, उनके आधे भी उसे न जाननेवाले हैं, अथवा नहीं, इसमें संदेह ही है। हमारी वस्तुतः भारत की राष्ट्र-लिपि नागरी ही है।

संस्कृति की मंजूषा संस्कृत-भाषा नागरी में ही लिखी जाती है, इसलिये हम इसे भारत की सांस्कृतिक लिपि भी कह सकते हैं। आजकल की भाषाओं में हिंदी और मराठी की लिपि भी नागरी ही है। फिर भी भारत के सिक्कों पर नागरी को स्थान नहीं दिया जाता। वर्षों से अनुनय-विनय की जा रही है, पर उसकी वही दुर्दशा हुई है, जो प्रार्थनाओं की हुआ करती है। अँगरेज़-शासकों के इस व्यवहार से भारत के प्रथम मुसलमान-शासकों के व्यवहार की तुलना कर देखिए। बिहार ऐंड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी के जर्नल (खंड २३, भाग ४) में डॉक्टर हीरानंद शास्त्री महोदय का 'देवनागरी और भारत के मुसलमान-शासक'-शीर्षक गवेषणा-पूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है, जिसका अनुवाद 'नागरी-प्रचारिणी पत्रिका' के वैशाख संवत् १९९५ वै० के अंक में प्रकाशित हुआ है। सन् १०२७ ई० में महमूदपुर या लाहौर से महमूद ग़ज़नवी ने एक चाँदी का सिक्का चलाया था, जिसके एक पृष्ठ पर नागरी-लिपि में संस्कृत-भाषा में यह वाक्य खुदा है—'अव्यक्तमेकं मुहम्मद अवतार नृपति महमूद।' दूसरे पृष्ठ पर है 'अयम् टंकम् महमूदपुर-घटिते हिजरियेन संवति ४१८।' अनेक मुस्लिम सुलतानों और बादशाहों के सोने-चाँदी के सिक्कों पर नागरी-अक्षरों में संस्कृत-हिंदी के वाक्य हैं। पर लोकमत का आदर करने के अभिमानी वर्तमान शासक तीन चौथाई प्रजाजनों की प्रार्थना को पद-दलित करने में ही अपना गौरव समझ रहे हैं। मैं तो इसे हिंदू-संस्कृति का अपमान समझता हूँ, और कठोर शब्दों में इस दुर्नीति की निंदा करना चाहता हूँ। मेरा विश्वास है, केवल हिंदू या हिंदी-भाषी नहीं, वरंच वे सब सज्जन, जिन्हें राष्ट्र का अभिमान है, और जो धर्म-परिवर्तन को संस्कृति-त्याग नहीं समझते, मेरे इस प्रतिवाद का समर्थन करेंगे।

नागरी-लिपि के गुण

प्रसंग-वश यहाँ पहले नागरी-लिपि के संबंध में अपने क्षुद्र विचार आप सज्जनों के सामने उपस्थित करने के बाद मैं राष्ट्र-भाषा हिंदी के संबंध में कुछ निवेदन करूँगा। यह सर्वमान्य बात है कि नागरी-वर्णमाला के समान सर्वांग-पूर्ण और वैज्ञानिक किसी दूसरी वर्णमाला का आविष्कार अभी तक नहीं हुआ। 'सर्वमान्य' से मेरा मतलब उन मनीषियों से है, जो निर्विकार चित्त से इस विषय पर विचार कर सकते हैं। वैसे तो अपनी-अपनी वस्तु सभी को अच्छी लगती है। पर यदि वर्णों का उद्देश्य ध्वनि का शुद्ध उच्चारण हो, तो संसार की कोई वर्णमाला नागरी का हाथ नहीं पकड़ सकती। इस वर्णमाला में प्रत्येक ध्वनि के लिये अलग वर्ण हैं, और प्रत्येक वर्ण की एक ही ध्वनि। जो लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है, और जो पढ़ा जाता है, वही लिखा हुआ होता है—यदि पढ़नेवाला नागरी के वर्णों से सुपरिचित हो। यह बात न फ़ारसी-वर्णमाला में है, न रोमन में। अवश्य ही रोमन के भक्तों ने उसमें बहुत कुछ सुधार कर लिया है, फिर भी उसमें वर्णमाला का प्रधान गुण नहीं आया है, और न आ सकता है। उसमें लिखा कुछ होता है, और पढ़ा कुछ जाता है। उसमें लिखा जायगा 'आर-ए-एम्' और पढ़ना पड़ेगा 'राम'। पर नागरी में लिखा हुआ 'रा-म' और कुछ पढ़ा ही नहीं जा सकता। हमारी ऐसी सुंदर लिपि के होते हुए भी कुछ सज्जन हमें रोमन-लिपि ग्रहण करने का उपदेश देते हैं, इससे बढ़कर आश्चर्य और खेद का विषय क्या हो सकता है! हमारे वर्तमान राष्ट्रपति सुभाषचंद्र बसु ने रोमन-लिपि की उपादेयता की ओर हमारा ध्यान यह कहकर दिलाया था कि वह लिपि प्रायः सब योरपियन भाषाओं ने अपनाई है, और कुछ पूर्वी देश भी अपना रहे हैं, अतः यदि हम भी उसे

अपना लें, तो लिपि-साम्य हो जायगा, तथा भिन्न-भिन्न भाषाओं के सीखने में सरलता होगी। लिपि-साम्य की उपयोगिता हम अस्वीकार नहीं करते, और इसीलिये हम चाहते हैं कि भारत की सब भाषाएँ नागरी-लिपि में लिखी और पढ़ी जायँ। पर इस साम्य के लिये नागरी-जैसी सर्वांग-पूर्ण और पूर्ण वैज्ञानिक लिपि का त्याग कर एक अपूर्ण और अवैज्ञानिक लिपि का ग्रहण करना सर्वथा अनुचित है। इस साम्य से होनेवाली थोड़ी सुविधा के लिये यदि हम इस लिपि को विस्मृति के गर्भ में डाल दें, तो केवल भारत ही नहीं, समस्त मानव-जाति एक ऐसी वर्णमाला से वंचित होगी, जैसी अब तक भारत के बाहर न कहीं आविष्कृत हुई है, न हो सकती है, और भावी पीढ़ियाँ हमारी इस मूर्खता पर हँसेंगी और धिक्कार देंगी।

रोमन-लिपि में जो दोष हैं, उनसे बढ़-चढ़कर अरबी-फ़ारसी-लिपियों में पाए जाते हैं। इस लिपि की अपूर्णता और सदोषता स्वर्गीय पंडित पद्मसिंह शर्मा ने अपनी 'हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी'-शीर्षक व्याख्यानमाला में बड़ी ख़ूबी के साथ दिखाई है। एक ही शब्द ज़ेर, ज़बर, पेश और नुक़्तों के भेद से कितने रूप ग्रहण करता है, इसका आपने यह उदाहरण दिया है—

मलक (सार्थक) ... ... ملک
मलिक ,, ... ملک
मुल्क ,, ... ملک
मिलक ,, ... ملک
मलुक (निरर्थक) .. .. ملک
मुल्लक ,, ... ملک
मुलिक ... ... ملک
मिलुक ... ... ملک
मिल्क ... ... ملک

लिखने या छापने के समय साधारणतया ज़ेर, ज़बर, पेश की उपेक्षा की जाती है। परिणाम यह होता है कि इस लिपि में लिखा मज़मून वही पढ़ सकता है, जो शब्दों के अर्थ की कल्पना करके उनका ठीक उच्चारण कर सके। जो शब्दों के अर्थ नहीं जानते, उनके लिये उनका उच्चारण करना संभव ही नहीं। अरबी-फ़ारसी के अच्छे विद्वानों के लिये भी उक्त लिपि में लिखे हुए प्राचीन लेख को शुद्ध पढ़ लेना कठिन हो जाता है। प्राचीन अप्रचलित शब्दों का शुद्ध उच्चारण, यदि वे इस लिपि में ही लिखे गए हों, तो, करना असंभव ही है। पंडित पद्मसिंह शर्मा अपनी उसी व्याख्यानमाला में लिखते हैं—"'कुल्लियाते वली' में हिंदी के बहुत-से ऐसे शब्द आए हैं, जिनका प्रयोग आजकल के उर्दू-कवि नहीं करते। 'कुल्लियाते वली' के संपादक जनाब मौलवी अली अहसन साहब 'अहसन' मारहरवी ने ऐसे शब्दों की एक तालिका 'फ़रहंगे-दीवाने-वली' की सुर्ख़ी से अकारादि-क्रम से दी है। उसमें उन शब्दों के अर्थ भी दिए हैं। दीवाने-वली में एक जगह 'दाड़िम'-शब्द आया है। दाड़िम शब्द संस्कृत का है, और हिंदी में भी बहुत प्रसिद्ध है। इसका अर्थ अनार है। फ़ारसी-लिपि में 'दाल' और 'वाव' की शक्ल बहुत मिलती-जुलती है, कुछ यों ही ज़रा-सा फ़र्क़ है, जो शिकस्त लिखने में मालूम नहीं पड़ता। अहसन साहब ने 'दाड़िम' को 'वाड़म' समझकर फ़रहंग में उसे 'वाव' की रदीफ़ में 'वाड़म' लिखकर अर्थ दिया है—'ग़ालिबन दक्नी ज़बान में अनार को कहते हैं।' अहसन साहब क़यास या अटकल से मानी तक तो पहुँच गए, पर शब्द के स्वरूप को न पहचान सके, और यह भी न जान सके कि 'वाड़म'-शब्द दक्नी का है या ठेठ संस्कृत वा हिंदी का। अहसन साहब उर्दू-फ़ारसी के सुप्रसिद्ध विद्वान्, सुलेखक और सुकवि हैं। ××× जब वह भी फ़ारसी-लिपि की भ्रामकता के कारण ऐसी भारी भूल कर सकते हैं,

तो साधारण उर्दू जाननेवालों का ज़िक्र ही क्या ?”

यही कारण है कि केवल उर्दू-लिपि जाननेवाले सज्जन अन्य भाषाओं के शब्दों का ठीक उच्चारण कर ही नहीं सकते—कुछ का कुछ हो जाता है। जिन भाषाओं के पढ़ने का साधन ऐसी सदोष लिपि है, उनके शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना तब असंभव हो जायगा, जब वे शब्द अप्रचलित होंगे, और उनका अर्थ विस्मृत। लिपि का प्रयोजन यदि शब्दों का उच्चारण हो, तो अरबी, फ़ारसी, रोमन-जैसी लिपियों का त्याग करना ही पड़ेगा। यही कारण है कि तुर्की ने अरबी-लिपि का त्याग करके रोमन-लिपि को स्वीकारा है। फ़ारस में भी लिपि-सुधार या लिपि-परिवर्तन की चर्चा होने लगी है। यह इसलिये नहीं कि रोमन-लिपि सर्वांग-पूर्ण या वैज्ञानिक है, बल्कि इसलिये कि सेमेटिक और चीन-जापान की लिपियों से वह अच्छी है, और छापने या टाइप करने के काम में अपना सानी नहीं रखती। एक कारण यह भी है कि रोमन जिनकी लिपि है, वे आज दिग्विजयी हैं, और जहाँ इनका झंडा नहीं गया है, वहाँ भी इनके व्यापारी पहुँच गए हैं। इसलिये रोमन-लिपि का ज्ञान प्रायः सब देशों के शिक्षित लोगों को हुआ है, और जिनकी लिपि रोमन से भी गई-गुज़री है, वे रोमन का ग्रहण कर रहे हैं। पर हमारी पराधीनता के कारण अभागिनी नागरी सर्वगुण-आगरी होने पर भी अपने ही देश में उपेक्षित हो रही है। जो राष्ट्र अपनी अधूरी लिपियों का त्याग करके रोमन-लिपि का ग्रहण कर रहे हैं, वे यदि नागरी से परिचित होते, तो संभवतः इसी को अपनाते। पूर्वी देशों के भी विद्वानों, राजनीतिज्ञों और व्यापारियों को अँगरेज़ी या फ़्रेंच-भाषा सीखनी पड़ती है, और इस प्रकार वे रोमन-लिपि से परिचित हो जाते हैं, तथा उसे अपनी लिपि से अच्छी पाकर उसका ग्रहण करते हैं। पर नागरी आज इस राजनीतिक और आर्थिक सौभाग्य से वंचित है। अतएव उसके गुणों की उपेक्षा की जाती है। पर कौन कह सकता है कि कुछ शतकों अथवा दशकों में ही पलड़ा पलट न जायगा ?

हमारा कर्तव्य

आज हमारा कर्तव्य है कि नागरी के प्रचार में कोई बात उठा न रक्खें। अत्यंत खेद की बात है कि जिन प्रांतों की भाषा हिंदी है, वहाँ की भी अदालतों में अभी तक नागरी-लिपि का प्रचार नहीं हुआ ! कई दशकों से इसके लिये प्रयत्न किया जा रहा है, पर अभी तक वह सफल नहीं हो रहा है, समन्स, नोटिसें आदि नागरी में जारी करने की आज्ञा दी जाती है, पर केवल भंग करने के लिये। उर्दू न जाननेवालों के पास भी उस लिपि में लिखे हुए समन्स पहुँच जाते हैं, और बेचारों को उन्हें पढ़ाने के लिये न-मालूम कहाँ-कहाँ की खाक छाननी पड़ती है। इसका कारण उन लोगों की उपेक्षा है, जिनकी मातृभाषा हिंदी है, और जो नागरी-लिपि द्वारा ही अपना नित्य का व्यवहार करते हैं। इसके विपरीत वे संप्रदायवादी मुसलमान भाई हैं, जो सदा उर्दू के लिये प्रयत्न करते रहते हैं। इनके यत्न का ही यह परिणाम है कि बिहार की अदालतों में भी उर्दू का प्रचार हो गया, यद्यपि वहाँ मुसलमानों की संख्या नगण्य है, और अधिकतर मुसलमान कैथी में, जो नागरी का ही एक रूपांतर है, रोज़मर्रा का काम-काज करते हैं। फिर भी अपने तीन ही महीने के शासन में बिहार के अस्थायी मंत्रिमंडल ने उस प्रांत की अदालतों में उर्दू का प्रचार कर दिया। पर संयुक्त प्रांत की अदालतों में अभी तक नागरी का प्रचार नहीं हुआ है, यद्यपि उस प्रांत में भी नागरी जाननेवालों की संख्या उर्दू-फ़ारसी जाननेवालों से पँचगुनी है, और नागरी उर्दू-लिपि की अपेक्षा कहीं अधिक सरलता के साथ पढ़ी जा सकती है। मुसलमानों

के स्वत्वों और संस्कृति की रक्षा करना प्रत्येक राष्ट्राभिमानी का प्रथम और पवित्र कर्तव्य है, इसमें संदेह नहीं। पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम मुस्लिम संप्रदायवादियों के असंतुष्ट होने के भय से, अपनी भाषा और अपनी लिपि की उपेक्षा करके, अपनी संस्कृति की जड़ खोदें। हिंदी का कोई भी अभिमानी यह नहीं चाहता कि उर्दू के भक्तों पर ज़बरदस्ती नागरी लादी जाय। यदि हमारे मुस्लिम भाई उसी लिपि के सौंदर्य पर मुग्ध हैं, तो वह उन्हें मुबारक हो। हम तो केवल यही कहते हैं कि जो अधिकार जीने का और अपनी संस्कृति की रक्षा करने का वे चाहते हैं, और उन्हें प्राप्त भी है, वे हम हिंदी-भाषियों को भी लेने दें, यह ज़िद न करें कि औरों को भी उर्दू-लिपि से ही काम चलाते रहना पड़ेगा। हम प्रांतों की कांग्रेसी और ग़ैर कांग्रेसी सरकारों से समान भाव से प्रार्थना करते हैं कि हिंदी और नागरी के साथ भी न्याय करें। हम केवल न्याय के प्रार्थी हैं, पक्षपात या पुरस्कार के नहीं। इसके लिये प्रयत्न करना इस सम्मेलन का प्रथम कर्तव्य है। इधर इस कार्य में कुछ शिथिलता आ गई है, जो खेदजनक है। इस युग में न्याय उन्हीं के साथ होता है, जो दृढ़ता और निर्भीकता के साथ अपने स्वत्वों के लिये लड़ना जानते हैं, और लड़ते हैं। इस युग में भी यदि हिंदी और नागरी के साथ न्याय न हुआ, तो आगे होना और भी कठिन हो जायगा, और आनेवाली पीढ़ियाँ इसके लिये हमें कोसेंगी। अतः हमें चाहिए कि तब तक प्रांतीय शासकों को चैन न लेने दें, जब तक वे हिंदी और नागरी के साथ न्याय न करें।

लिपि-सुधार का प्रश्न

नागरी-लिपि के प्रचार के साथ उसके सुधार के प्रश्न का गहरा संबंध है। सुधार से मेरा मतलब वर्णमाला के सुधार का नहीं, बल्कि उसके अक्षरों के रूप का सुधार है। हमारी वर्णमाला सर्वांग-पूर्ण है, और उसका क्रम भी वैज्ञानिक है। सुधार की दो दृष्टियाँ हैं—एक दृष्टि है उच्चारण-संबंधी और दूसरी छपाई के संबंध की। उच्चारण-संबंधी प्रश्न का विचार भी दो दृष्टियों से करना चाहिए— हिंदी की दृष्टि से तथा अन्य भाषाओं की दृष्टि से। मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार हिंदी की दृष्टि से विशेष सुधार की आवश्यकता नहीं। हमारी भाषा की सब ध्वनियों के प्रतीक वर्ण हमारी नागरी में हैं। उनसे अधिक की कोई आवश्यकता ही नहीं, केवल ज़, फ़ आदि दो-तीन ध्वनियाँ शिक्षित लोगों के बोलचाल में आ गई हैं, जिनके लिये ज, फ आदि व्यंजनों के नीचे बिंदी लगाई जाने लगी है, और भविष्य में भी यह क्रम जारी रक्खा जा सकता है, यद्यपि मैं इसका बहुत पक्षपाती नहीं। अन्य भाषाओं से आनेवाले शब्दों में तरह-तरह की ध्वनियाँ है, जिनको व्यक्त करनेवाले अक्षर नागरी में नहीं हैं, और न होने की आवश्यकता है। जो उच्चारण हमारे लिये अस्वाभाविक हैं, बहुत अभ्यास के बाद भी हम जिनमें सफलता प्राप्त नहीं कर सकते, उनके लिये नए-नए चिह्न गढ़ना नागरी को बिगाड़ना है। उन चिह्नों को देखकर भी हिंदी-भाषी उन शब्दों का शुद्ध उच्चारण न कर सकेंगे। ऐसा करने की आवश्यकता भी नहीं। इसका कारण भी स्पष्ट है। सजीव भाषा अन्य भाषाओं से सदा लेन-देन किया करती है। हिंदी में सैकड़ों शब्द विदेशी भाषाओं से आए हैं, पर वे हमारी भाषा में इस तरह मिल गए हैं कि कोष की सहायता के बिना अब कोई नहीं कह सकता कि वे हिंदी नहीं हैं। इसी तरह हमें और भी बहुत-से शब्द अन्य भाषाओं से लेने पड़ेंगे। पर लेकर यदि उन्हें हमने अपना न लिया, उन्हें उनके विदेशी रूप में ही रहने दिया, तो वे भाषा का गौरव न बढ़ाकर उसके अजीर्ण का

कारण होंगे। विदेशी भाषाओं से शब्द लिए गए हैं, और लेने चाहिए। जितने ही अधिक शब्द लिए जायँगे, उतनी ही हमारी शब्द-संपत्ति बढ़ेगी, और अच्छे लेखकों के हाथ में पड़कर वे भिन्न-भिन्न भाव प्रकट करने में सहायक होंगे। पर उन शब्दों का उच्चारण हमारी भाषा की प्रकृति के अनुसार हो जाना चाहिए, जैसे अँगरेज़ी Lantern से लालटेन और Lamp से लंप हो गया। आज कितने आदमी जानते हैं कि हमारे नित्य के व्यवहार की वस्तु 'गिलास' विदेश से आई है? इस प्रकार विदेशी भाषा से लिए हुए शब्दों को यदि हम अपने वाग्यंत्र में डालकर अपना-सा बना लें, तो हिंदी में विदेशी और हमारे लिये अस्वाभाविक ध्वनियों के लिये असंख्य चिह्न बनाने की आवश्यकता न होगी। और, यदि हम उन शब्दों को अपना-सा न बना सके, तो एक तो हिंदी-भाषी जनता में उनका प्रचार ही न होगा, दूसरे, उनसे हमारी भाषा को अजीर्ण-रोग हो जायगा। फिर लिपि का सुधार व्यर्थ ही है।

यह विचार हुआ हिंदी की दृष्टि से। संस्कृत की दृष्टि से तो यह वर्णमाला बनी ही है। रह गई अन्य भाषाओं की बात। हम चाहते हैं, भारत की सब भाषाएँ नागरी-लिपि में लिखी और छापी जायँ। इस कार्य के लिये अवश्य ही नागरी में अनेक अक्षर और अनेक चिह्न नए गढ़ने पड़ेंगे। जहाँ तक मैं जानता हूँ, और मेरा ज्ञान बहुत कम है, आर्य-भाषाओं की सब ध्वनियाँ नागरी में हैं। इन भाषाओं में मराठी तो नागरी में ही लिखी और छापी जाती है। गुजराती और बँगला की वर्णमालाएँ भी कुछ परिवर्तित नागरी वर्णमाला हैं, जिनके लिये शायद ही कोई नए चिह्न बनाने पड़ें। अवश्य ही द्राविड़ी भाषाओं में ऐसी ध्वनियाँ और ऐसे स्वर हैं, जिनके चिह्न नागरी में बनाने पड़ेंगे। विदेशी भाषाएँ नागरी में लिखने के लिये भी अनेक नए अक्षरों और चिह्नों की आवश्यकता होगी। भिन्न-भिन्न भाषाएँ लिखने के लिये जैसे रोमन-लिपि में अनेक चिह्न बनाए गए हैं, वैसे ही नागरी में भी बनाए जा सकते हैं। उन-उन भाषाओं के जाननेवालों की सहायता से यह कार्य करना चाहिए। रोमन-लिपि में भी यही किया गया है, और मेरा विश्वास है कि इस कार्य में रोमन जितनी सफल हुई है, उससे कहीं अधिक नागरी हो सकेगी। कार्य महत्त्व का है, तथा इस ओर भी हमें ध्यान देना चाहिए। इस संबंध में मुझे इतना ही निवेदन करना है कि जैसे केवल अँगरेज़ी सीखनेवाले बालकों को अन्य भाषाओं की ध्वनियाँ व्यक्त करने के लिये रोमन-अक्षरों में लगाए गए चिह्न सिखाए नहीं जाते, उसी प्रकार केवल हिंदी-संस्कृत सीखनेवाले बालकों के लिये सारे चिह्नों का जानना आवश्यक करके उनका बोझ बढ़ाना उचित न होगा। जो हिंदी-भाषी अन्य भाषा सीखना चाहेगा, वह उस भाषा के लिये प्रयुक्त होनेवाले नागरी के विशेष चिह्नों को अनायास या अल्पायास में ही आयत्त कर सकेगा।

यह तो हुआ उच्चारण-संबंधी विचार। अब छपाई की दृष्टि से नागरी-अक्षरों के रूप में जो सुधार आवश्यक समझे जा रहे हैं, उन पर भी एक दृष्टि डालना आवश्यक है। वस्तुतः यह सुधार उच्चारण-संबंधी सुधार की अपेक्षा अधिक महत्त्व का है। इस पर बहुत विचार हो चुका है, और कुछ सुधार कार्यान्वित भी किए जा रहे हैं। छपाई की दृष्टि से नागरी-प्रचार में सबसे बड़ी बाधा अक्षरों के ऊपर और नीचे लगनेवाली मात्राएँ हैं। प्रेस के कार्य से अभिज्ञ सज्जन जानते हैं कि इनके कारण हमें एक अक्षर के लिये तीन-तीन अक्षर बनाने पड़ते हैं। एक अक्षर ऊपर से नीचे तक तीन भागों में बाँटा जाता है। उसके बीच के स्थान में मूल अक्षर होता है, तथा ऊपर और नीचे मात्राओं के लिये स्थान

छोड़ दिए जाते हैं। जिस अक्षर में ऊपर या नीचे मात्रा लगाने की आवश्यकता नहीं होती, वह पूरा ढाला जाता है, अर्थात् ऊपर और नीचे मात्राओं के लिये छोड़ा जानेवाला स्थान भी शीशे से भर दिया जाता है। यह एक प्रकार हुआ। दूसरा प्रकार ऊपर 'करन' का है। इसमें ऊपर की मात्रा के लिये स्थान छोड़ दिया जाता है, पर नीचे की मात्रा का स्थान भरा रहता है। तीसरा प्रकार नीचे 'करन' का है। इसमें ऊपर का स्थान तो भर दिया जाता है, पर नीचे का ख़ाली रक्खा जाता है। एक प्रकार यह भी है कि सब अक्षर ऊपर-नीचे ख़ाली ही ढाले जाते हैं, और 'कंपोज़' के समय यथावश्यक मात्राएँ बैठाकर बीच के स्थान 'डिगरियों' से भरे जाते हैं। ये डिगरियाँ छोटी-मोटी के हिसाब से अनेक आकारों की होती हैं, और इन्हें यथास्थान बैठाने में बहुत अधिक समय लगता है। इस पर भी यदि कंपोज़िटर से कुछ असावधानी हो गई, और कहीं कुछ ढिलाई रह गई, तो छापने के समय अक्षर तो अक्षर, पंक्तियाँ भी टूट जाती हैं। यह प्रकार बंबई की ओर प्रचलित है। पहला प्रकार अखंड टाइप का है, और उसका आविष्कार भी बंबई में ही हुआ है। तीसरा प्रकार 'कलकतिया' कहलाता है। इसमें डिगरियों के झंझटों से बचने के लिये सारी बारहखड़ी ही अलग ढाल ली जाती है। उसके भी दो भेद और होते हैं, रेफ-युक्त, अनुस्वार-युक्त और रेफ-अनुस्वार-युक्त। इसके सिवा संयुक्ताक्षर भी अलग-अलग ढाले जाते हैं। इससे टाइपों अर्थात् छपाई के अक्षरों की संख्या एक हज़ार से भी अधिक हो जाती है। यही कारण है कि नागरी के नए-नए प्रकार के अक्षर बहुत कम बनते हैं। प्रेसवालों को भी टाइप में बहुत अधिक रुपया फँसाना पड़ता है। कंपोज़िटरों का काम अँगरेज़ी कंपोज़िटरों की तुलना में बहुत कठिन और जटिल होता है। और, यह सब इसलिये कि नागरी में कुछ स्वरों की मात्राएँ अक्षरों के नीचे-ऊपर लगाई जाती हैं। अतः मेरे मत से तो नागरी-लिपि में पहला सुधार यह होना चाहिए कि स्वरों की जो मात्राएँ ऊपर और नीचे लगाई जाती हैं, वे व्यंजनों के बाद उसी तरह लगाई जायँ, जैसे आकार और विसर्ग लगाया जाता है। बंगाक्षरों में अनुस्वार भी व्यंजन के बाद लगाया जाता है। तथा एकार और ऐकार पहले। मेरी राय है कि सब स्वर व्यंजन के बाद ही लगाए जायँ। यह सुधार यदि नागरी में हो जाय, तो छपाई के कार्य की दो तिहाई कठिनाई दूर हो जाय, और ख़र्च में भी एक चौथाई की बचत हो।

सुधार के संबंध में दूसरा विचारणीय प्रश्न संयुक्ताक्षरों का है। इसके लिये हम नागरी-अक्षरों को चार वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—(१) वे अक्षर, जिनके अंत में खड़ी पाई होती है, जैसे म, न, स आदि। (२) वे अक्षर, जिनके अंत में अधोमुख अंकुश होता है, जैसे क, झ और फ। (३) वे अक्षर, जो टेढ़े होते हैं, जैसे ङ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह। (४) र। इनमें प्रथम वर्ग सबसे सहज है। इसके अक्षरों के अंत की खड़ी पाई निकाल देने से ही वे अद्धे हो जाते हैं, और उनके बाद कोई व्यंजन रखकर संयुक्ताक्षर बनाया जाता है, जैसे म्य, न्य, स्य आदि। अंकुश वा अकुसावाले अक्षर का अद्धा अकुसे के नीचे का भाग काटकर बनाया जाता है, जैसे 'क' का 'क्' 'झ' का 'झ्' और 'फ' का 'फ्'; इन अद्धों के बाद कोई भी व्यंजन बैठाकर युक्ताक्षर बनाया जा सकता है, जैसे क्य, झ्य, फ्य। तीसरे वर्ग के टेढ़े अक्षरों का अद्धा बनाना कठिन है। मैं समझता हूँ, उनके नीचे हलंत का चिह्न देकर युक्ताक्षर बनाना चाहिए, जैसे ट्य, ठ्य, ड्य, ढ्य, द्य और ह्य। 'र' स्वयं ही एक वर्ग है, और बहुत कठिन है। यह जब दूसरे व्यंजन के पहले आता है, तो रेफ बनकर उसके सिर पर सवार

हो जाता है, जैसे 'अर्क' में 'र्क'। पर जब अन्य व्यंजन के बाद आता है, तो प्रथम और द्वितीय वर्गों के अक्षर के नीचे एक छोटी लकीर के रूप में दिखाई देता है, जैसे म्र, क्र आदि। 'द' को छोड़कर तृतीय वर्ग के बाक़ी अक्षरों के नीचे '‸' इस रूप में र दिखाई देता है, जैसे ट्र, ठ्र, ड्र, ढ्र और ह्र। इसकी इस मनमानी में बाधा डालकर उसका वह आधा रूप नागरी में ले लें, जो मराठी में प्रचलित है (ऱ्), तो व्यंजनों के पूर्व इसका व्यवहार अर्द्ध के रूप में किया जा सकता है, जैसे 'सर्व' की जगह 'सऱ्व', 'मर्म' की जगह 'मऱ्म' आदि। अन्य व्यंजनों के बाद आनेवाले रकार में कोई परिवर्तन न करके, अन्य व्यंजनों की तरह, 'र' भी यदि अपने मूल रूप में लिखा जाय, तो कोई आपत्ति नहीं हो सकती; जैसे क्र न लिखकर क्‌र, म्र की जगह म्‌र, ट्र की जगह ट्‌र अनायास लिखा जा सकता है।

सुधार की मुख्य बातें ऊपर कही गईं। अब कुछ गौण बातों पर दृष्टि डालनी चाहिए। पहला प्रश्न 'ख' का है। यह एक विचित्र रूप है, जो र और व के एक साथ लिखने से होता है। पढ़नेवालों को इससे कभी-कभी धोखा भी होता है। अतः अनेक विद्वानों का कथन है कि इसे निकाल देकर इसकी जगह गुजराती का ખ લેના चाहिए। मैं स्वयं इस प्रस्ताव का समर्थक हूँ। दूसरी बात महाप्राण अक्षरों के संबंध में है। पचीस स्पर्श वर्णों के दूसरे और चौथे अक्षर पहले और तीसरे अक्षरों के महाप्राणरूप हैं, जो पहले और तीसरे अक्षरों के साथ ही की ध्वनि मिला देने से बनते हैं। फिर पूछा जाता है कि इनके लिये बिलकुल स्वतंत्र अक्षर रखने की आवश्यकता ही क्या है। क्यों न पहले और तीसरे अक्षरों के अर्द्धों में ह लगाकर दूसरे और चौथे अक्षर बनाए जायँ। ऐसा करने से अक्षरों की संख्या में दस की कमी हो जायगी, जो उपेक्षणीय नहीं। बात सही है, पर प्राचीन वैयाकरणों और शिक्षा के लेखकों ने इन्हें स्वतंत्र अक्षर ही माना है, तथा मात्रान्यास-जैसे धार्मिक कार्यों में भी इनका प्रयोग स्वतंत्र अक्षरों के रूप में ही होता है। आज यदि हम इन्हें संयुक्ताक्षर करना चाहेंगे, तो बहुत विरोध होने की संभावना है, और वस्तुतः यह सुधार है भी क्रांतिकारी। हमें ऐसे मामलों में बहुत सोच-समझकर ही आगे पैर धरना चाहिए। प्रसंग-वश एक और सुधार का भी ज़िक्र कर देना चाहिए, जिसके प्रेरक मेरे एक आदरणीय पुरुष हैं। वह है इ, ई और उ, ऊ की जगह अि, अी और अु, अू लिखना। मैं नम्रता के साथ यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि यह सुधार मुझे साधार और सयुक्तिक नहीं मालूम होता। हमारी वर्णमाला में अ, इ, उ, ऋ और लृ ये बिलकुल स्वतंत्र स्वर हैं, एक का दूसरे से कुछ भी संबंध नहीं। अतः इनके दृश्य रूप भी बिलकुल स्वतंत्र रहें, यही उचित प्रतीत होता है। हाँ, ओ औ की तरह ए ऐ भी संयुक्त स्वर हैं। अतः उन्हीं के अनुरूप ए और ऐ की जगह अे और अै लिखा जाना अनुचित नहीं।

मैंने जिन सुधारों का उल्लेख ऊपर किया है, उनके अनुरूप चिह्न और अक्षर काशी-कटिंग मेमोरियल हाईस्कूल के ड्राइंग-टीचर श्रीभगवानदास सिडनी ने बनाए हैं। आप बहुत दिन से और बड़ी लगन के साथ नागरी-अक्षरों में सुधार का प्रयत्न कर रहे हैं। काशी के कई विद्वानों से, और मुझसे भी, सलाह करके आपने स्वरों के वे चिह्न, जो व्यंजनों के आगे बैठाए जा सकते हैं, और सब व्यंजनों के अर्द्ध तैयार किए हैं। इनके चित्र आगे दिए जा रहे हैं। यह एक कल्पना-मात्र है। विचार के लिये आपके सामने मैं इसे उपस्थित कर रहा हूँ। यदि नागरी-लिपि के विशेषज्ञ और कलाकार इस पर विचार करके इनमें सुधार करें, अथवा

नवीन तथा अधिक उपयुक्त और सुंदर चिह्न बनावें, तो लिपि-सुधार में बड़ी सहायता मिलेगी।

स्वर-वर्ण

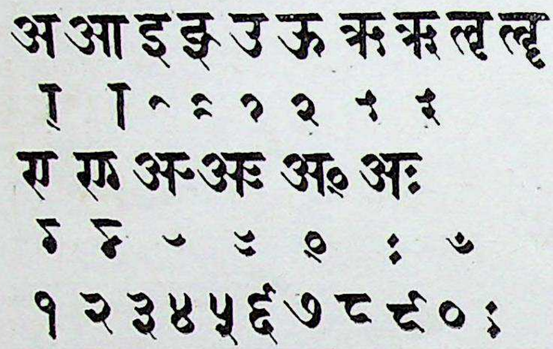
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ औ अं अः
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ० :

व्यंजन-वर्ण

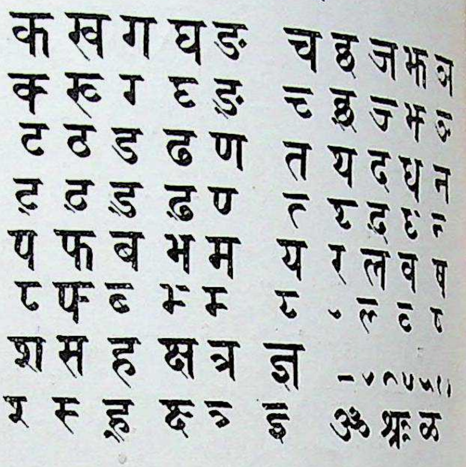
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व ष
श स ह क्ष त्र ज्ञ ॐ ऋ ळ

(आगामी संख्या में समाप्य)

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये "संगीत-सागर"-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गा, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक़्शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≡) में दिया जा रहा है। शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर "संगीत", हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र "संगीत" का इस वर्ष २०० पृष्ठ का "भातखंडे-अंक" [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए! गाना-बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

विद्यापति का विरह-वर्णन

[श्रीयुत व्रजकिशोर मिश्र एम० ए०]

पीयूषवर्षी कविवर जयदेव ने १२वीं शताब्दी में जिस राधाकृष्ण-प्रणय की रस-धारा प्रवाहित करके विद्वन्मंडली को मुग्ध कर लिया था, मैथिल-कोकिल, अभिनव-जयदेव विद्यापति ने १६वीं शताब्दी में उसे पंडित-वर्ग की संकीर्ण परिधि से निकालकर जन-साधारण के हृदय के कोने-कोने में व्याप्त कर दिया। सारा पूर्वीय भारत उनकी सुधावर्षिणी वाणी से गूँज उठा। जनता आनंद-विभोर होकर परमात्मा की उस भुवनमोहिनी रूप-सुधा का पान करने लगी। भक्त चैतन्य विद्यापति के पदों की मधुरिमा में तन्मय होकर मूर्च्छित होने लगे। एक तो गेय, दूसरे जन-साधारण की मैथिली-भाषा में वर्णित और तीसरे लीला-वपु-धारी श्रीकृष्ण के शृंगार का सरसतम चित्रण। फिर यदि जनता विद्यापति की काव्य-सुधा में निमग्न होकर अपने को भूल जाय, तो आश्चर्य ही क्या?

सूर के कृष्ण प्रधान रूप से बालक हैं। बचपन की अनेक प्रकार की क्रीड़ाओं-सहित वह हमारे हृदय पर अपनी गहरी छाप छोड़ जाते हैं। प्रणयी के रूप में हम उन्हें अपनी रंगभूमि से प्रायः अनुपस्थित पाते हैं। केवल गोपियाँ ही रो-रोकर अपनी वियोग-व्यथा व्यक्त करती रहती हैं—श्रीकृष्ण अपने राजसी ठाठ के कारण उन साधारण स्थिति के गोप-ग्वालों के वातावरण से कुछ थोड़ा-सा दूर जा पड़ते हैं। यद्यपि वह कभी-कभी, अपने आमोद-प्रमोद के बीच में भी, "ऊधो! मोहिं व्रज विसरत नाहीं।" कहकर अपने पुराने साथियों की याद कर लिया करते हैं, किंतु उसका कोई विशेष महत्त्व नहीं।

मीरा के कृष्ण उनके प्रेम की वस्तु हैं। वह उन्हें अपना स्वामी, पति करके मानती हैं, किंतु उनकी भक्ति के प्रवाह ने शृंगार को अपने में तन्मय कर लिया है। यदि वह एक स्थान पर अपने नेत्रों की शिकायत इस प्रकार करती हैं—

"आली री! मेरे नैनन बान पड़ी।
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरति, उर बिच आनि अड़ी।"

तो उसी के साथ-साथ कृष्ण की सेविका होने के लिये वह तन-मन से लालायित हैं—

"म्हाँने चाकर राखोजी,
गिरधारी लला चाकर राखोजी।"

और अपने अस्तित्व की अकिंचनता का स्पष्टीकरण करती हुई वह चरम सीमा तक पहुँच जाती हैं—

"मीरा दासी जनम-जनम की परी तिहारे पायँ।"

इत्यादि।

वास्तव में भारतीय दांपत्य प्रेम का यह आदर्श महन् है, किंतु कृष्ण इस भावना में

भी किंचिन्मात्र उच्च आसन पर देख पड़ते हैं। मीरा के हृदय में उनके प्रति प्रेम के साथ-साथ सम्मान और आदर का भाव पर्याप्त मात्रा में वर्तमान है, यद्यपि इस प्रेम में मीरा ने तन्मयता को परा काष्ठा पर पहुँचा दिया है।

विद्यापति का प्रेम संपूर्ण रूप से लौकिक है। मध्ययुग के शृंगारी कवियों की कविता का पूर्वाभास हमको इस कवि की कविता में मिलता है, जिसमें अलौकिक प्रेम का कोई विशेष महत्त्व-पूर्ण स्थान नहीं, वरन् कहीं-कहीं उसमें वासना का पुट कुछ अतिरंजित रूप में भी देख पड़ जाता है। लौकिकता के इस समावेश के कारण हम विद्यापति के श्रीकृष्ण को मनुष्य-जीवन के अधिक निकट पाते हैं। मनुष्य निर्विकार प्रेम का चाहे जितना बखान करे, किंतु वास्तव में वह जन-साधारण की वस्तु नहीं। संभवतः प्रेम का प्रारंभ वासना से ही होता है। हाँ, आगे चलकर वही प्रेम निर्विकार रूप में परिणत हो सकता है, इसलिये इस जन्म-सिद्ध मनोविकार का मानवीय चित्रण हमको कवि की कविता को अपने निकट समझने में बड़ी सहायता करता है। हाँ, सामाजिक नियमों के अनुसार हम उस प्रेम का एक आदर्श मानना उचित समझते हैं, और विद्यापति ने उस आदर्श का त्याग नहीं किया।

विद्यापति की कविता में लौकिकता के साथ-साथ संयोग-शृंगार की प्रधानता है। लौकिकता का कारण तो यह जान पड़ता है कि यह कृष्ण-भक्त न थे, और इस कारण श्रीकृष्ण-यश-गायन करते हुए भी इन्होंने उसे एक मन बहलाव की चीज़ छोड़कर और कुछ नहीं समझा। हाँ, कृपाकांक्षा इन्होंने केवल शिव से की है।

अपने आश्रयदाता (मिथिला-नरेश शिवसिंह) के यहाँ इनका बड़ा आदर था, और आमोद-प्रमोद की सभी सामग्री प्रस्तुत रहते हुए इनका संयोग-शृंगार-वर्णन की ओर झुकाव होना भी स्वाभाविक ही जान पड़ता है। यद्यपि इनकी कविता के विषय प्रायः परंपरा-गत ही हैं, किंतु फिर भी कवि ने उनका बड़ा ही स्वाभाविक तथा सत्य वर्णन किया है। साथ ही इनकी भाषा की मधुरता भी इनकी सफलता का एक कारण है। विद्यापति संयोग-शृंगार में इस प्रकार निमग्न थे कि उन्होंने वियोग का वर्णन भी प्रायः आशावादी रूप में किया है।

संकट के समय इस प्रकार का आशावाद बाबा तुलसीदास की एक विशेषता है, जिसका प्रदर्शन उन्होंने अपनी विनय-पत्रिका और गीतावली में स्थान-स्थान पर किया है।

विनय-पत्रिका का ही उदाहरण लीजिए। इस पत्री में उन्होंने रामजा से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगी है। लखनलाल की मारफ़त वह सम्राट् राम के सम्मुख पेश की जाती है। लखनलाल मौक़ा पाकर थोड़ी-सी सिफ़ारिश भी कर देते हैं—

"कलिकाल हूँ नाथ, नाम सों
प्रतीति प्रीति एक किंकर की निबही है।"

तुलसी को इस अर्ज़ी की मंज़ूरी का पूर्ण विश्वास है। वह सोच लेते हैं—

"बिहँसि राम कह्यौ, सत्य है,
सुधि मैं हू लही है;
मुदित माथ नावत, बनी तुलसी अनाथ की,
परी रघुनाथ हाथ सही है।"

अपने को अत्यंत अनधिकारी समझते हुए भी तुलसी इस बात का पूर्ण विश्वास रखते हैं कि वह निराश न होंगे। विद्यापति भी इसी प्रकार संपूर्ण विरह-वर्णन कर जाने के बाद भी शीघ्रातिशीघ्र उसकी समाप्ति की अपेक्षा करते हैं—

"के पतिआ लए जाएत के मोरा पियतम पास;
हिय नहि सहए असह दुख रे भेल साओन-मास।
एकसरि भवन पिया बिनु रे मोरा रहलो न जाय;
सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पतिआय।
मोर मन हरि हरि लए गेल रे अपनो मन गेल;
गोकुल तजि मधुपुर बस रे कत अपजस लेल।
विद्यापति कवि गाओल रे धनि, धरु पिय-आस;
आओत तोर मनभावन रे एहि कातिक-मास।"

किसी कवि के समान वह केवल नैराश्य-पूर्ण दृश्य दिखाकर और विरहिणी को दुःख-सागर में डुबोकर ही छुट्टी नहीं पा गए हैं। देखिए—

"दूरि जदुराई, 'सेनापति' सुखदाई
देखौ, आई रितु-पावस, न पाई प्रेम-पतियाँ;
धीर जलधर की सुनत धुनि धरकी,
दरकी सुहागिनि की छोह-भरी छतियाँ।
आई सुधि बर की, हिए में आनि खरकी
सुमिरि प्रानप्यारी वह प्रीतम की बतियाँ;
बीती औधि आवन की लाल मनभावन की,
डग भई बावन की सावन की रतियाँ।"

विद्यापति तो इसके साथ इतना और जोड़ देते हैं—

"भनइ विद्यापति सुनु बर जौवति,
अब नहि होइ निरासे;
से ब्रजनंदन हृदय-अनंदन
झटित मिलब तुअ पासे।"

प्रकृति और मनुष्य के बीच में दृढ़ रागात्मक संबंध है। इस संबंध के कारण मनुष्य अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार प्रकृति का स्वरूप अपने मानस-दर्पण में देखता है। विरही को प्रकृति का प्रत्येक परमाणु शून्य प्रतीत होता है, किंतु उसी पुरुष का संयोगावस्था में वही पदार्थ आनंद-युक्त दिखलाई पड़ने लगता है। कविवर जायसी ने नागमती की वियोग-दशा में उसके मुख से वर्षा का दुःखदायी वर्णन इस प्रकार करवाया है—

"चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा;
साजा बिरह दुंद दल बाजा।

* * *

खड़ग-बीजु चमके चहुँ ओरा;
बुंद-बान बरसहिं घन घोरा।"

किंतु दूसरी ओर वही वर्षा पद्मावती के लिये संयोगावस्था में बिलकुल दूसरी ही वस्तु है—

"रितु पावस बरसै, पिउ पावा;
सावन-भादौं अधिक सोहावा।

* * *

चमक बीजु, बरसे जल सोना ;
दादुर - मोर - सबद सुठि - लोना ।
रँगराती पीतम सँग जागी ;
गरजे गगन चौंकि गर लागी ।"

विद्युत् की आभा से प्रकाशित वारि-बुंद संयोगावस्था में स्वर्ण के समान जान पड़ते हैं, वे अब वियोगावस्था के विषम बाण नहीं रहे ।

विद्यापति ने भी मनुष्य और प्रकृति के बीच के इस संबंध का निर्वाह बड़ी सफलता से किया है । कामदेव की सेना ने वर्षा के रूप में इस प्रकार विरहिणी पर चढ़ाई की है—

"आवए साओन बरिख भाओन घन सोहाओन बारि ;
पचसर-सर छुटत रे, कइसे जीअए बिरहिनि नारि ।
आवए भादो, बेगर माधो काँसो कहि एहि दूख ;
निडर डर-डर डाक डाहुक छुटत मदन बनूक ।"

वर्षा की बूँदें दुखी हृदय में बाण के समान लग रही हैं । विरह में डाहुक आदि पक्षियों का शब्द बंदूक़ के समान चौंका देता है । हृदय के साथ यहाँ प्रकृति भी विरहिणी है ।

संयोग में वही वर्षा कितनी आनंददायिनी है—

"भादवमास बरिस घन घोर ;
दस दिस कुहकए दादुल-मोर ।
चओंकि-चओंकि पिया-कोर समाय ;
गुनमति सूतलि अंक लगाय ।"

हृदय का उल्लास मानो वर्षा के रूप में फूटा पड़ रहा हो ! किंतु भाद्रपद का एक भयानक दृश्य और देख लीजिए—

"सखि हे ! हमर दुखक नहिं ओर ;
इभर बादर माह भादर सून मंदिर मोर ।
झंपि घन गरजंति संतति भुवन भरि बरसंतिया ;
कंत पाहुन काम दारुन सघन खर सर हंतिया ।
मत्त दादुर डाक डाहुक फाटि जायत छातिया ;
तिमिर दिग भरि घोर जामिनि अथिर बिजुरिकपाँतिया।
बिद्यापति कह कइसे गमाओब हरि बिना दिन-रातिया।"

प्रिय के वियोग में अरक्षिता विरहिणी का हृदय उच्छृंखल प्रकृति को देखकर कितना भयभीत और निराश है, यह उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है ।

बारहमासा और वसंत आदि के प्रसंगों में भी इस संबंध का निर्वाह सुचारु रूप से हुआ है ।

हम प्रायः नित्यप्रति होनेवाली घटनाओं के प्रति विशेष आकर्षित नहीं होते, और यदि किसी कारण से हुए भी, तो उनकी उपेक्षा कर जाते हैं ; किंतु सूक्ष्मदर्शी कवि उनमें से भी अपने मतलब की बात निकाल ही लेते हैं । दो-एक ऐसी ही साधारण घटनाओं का प्रयोग विद्यापति ने अपने विरह-वर्णन में भी किया है । देखिए—

यदि आप किसी जलाशय अथवा जल-पूर्ण पात्र में एक बूँद तेल गिरा दें, तो आप देखेंगे कि वह कितनी जल्दी और कितने विस्तार से पानी की सतह पर फैलता है । साथ ही यदि आप एक जल-बिंदु किसी नदी के किनारे बालू पर डाल दें, तो आप देखेंगे कि वह गिरने के साथ ही सूख जाता है । इन्हीं दो बातों को

कवि ने अपनी कविता का ऐसा सुंदर साधन बनाया है कि उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है—

"तैल-विंदु जैसे पानि पसारिए, ऐसन मोर अनुराग ;
सिकता जल जैसे छनहि सूखए, तैसन मोर सुहाग ।"

केवल एक क्षण के दर्शन-मात्र में ही विरहिणी के हृदय में प्रेम का प्रसार हो गया था, जिसने तैल-विंदु के समान फैलकर उसके हृदय को परिपूर्ण कर दिया है, किंतु श्रीकृष्ण के उसके पास से जाते ही उसका सौभाग्य ऐसे विलीन हो गया, जैसे सिकता में जल-विंदु ! बड़ी ही सुंदर उक्ति है ।

यद्यपि, जैसा पहले कहा जा चुका है, विद्यापति का प्रेम लौकिक और कुछ-कुछ वासना-पूर्ण है, फिर भी उन्होंने भारतीय आदर्श का त्याग नहीं किया । नारी का त्याग और पति-भक्ति उनके लिये महत्त्व-पूर्ण वस्तुएँ हैं । परकीया-प्रेम का वर्णन करते हुए भी वह उपर्युक्त गुणों का वर्णन बड़ी ही मार्मिकता से करते हैं । राधा कृष्ण को सुखी देखना चाहती हैं, स्वयं अपनी चिंता उन्हें नहीं है । किसी कवि के अनुसार उनका आदर्श है—

"साथ मैं राखिए नाथ ! उन्हें,
हम हाथ मैं चाहतीं चारि चुरीये ।"

और इसी आदर्श में भारतीय नारी की संपूर्ण महत्ता अंतर्हित है । वह अपने स्वामी को कभी दोषी नहीं ठहरा सकती । प्रत्येक विरह-बाधा सहन करते हुए भी वह कहती है—

"जुग-जुग जीवथु बसथु लाख कोस ;
हमर अभाग हुनक नहि दोस ।"

प्रिय का उनके निकट रहना ही उनकी सबसे बड़ी संपत्ति है । उसकी उपस्थिति के सिवा उनको और कोई अभिलाषा नहीं । उस स्थिति में फिर कोई भी कष्ट क्यों न पड़े, वह उनको स्पर्श तक नहीं कर सकता । दरिद्रता की परा काष्ठा भी उनको विलास की सामग्री के लिये लालायित नहीं कर सकती । रहीम के शब्दों में उसे इस प्रकार देखिए—

"टूट टाट, घर टपकत, खटियौ टूटि ;
पिय की बाहँ उसिसवा, सुख की लूटि ।"

विद्यापति कहते हैं—

"हीरा-मनि-मानिक एको नहीं माँगब,
फेरि माँगब पहु तोरा ।"

हीरा, मणि और माणिक्य न माँगकर हे प्रिय, अंत में मैं तुम्हें ही माँगूँगी । और मुझे कुछ न चाहिए । वास्तव में भारत के आदर्श की यह चरम सीमा है ।

विरह के वर्णन में विद्यापति ने नायिका-पक्ष को ही प्रधानता दी है । श्रीकृष्ण को विरह-व्याकुलता का चित्रण यद्यपि किया गया है, किंतु उसका नंबर दूसरा है । हाँ, तीव्रता में वह राधा के प्रेम से कुछ कम नहीं । श्रीकृष्ण भी राधा के समान ही विह्वल हैं । उनकी दूती राधा से कहती है—

"आजु हम पेखल कालिंदी-कूले ;
तुअ बिन माधव बिलुठए धूले ।"

किंतु यह प्रेम पुरुषोचित नहीं जान पड़ता ।

इसमें संयम की कमी और कुछ स्त्रैणता की झलक है। पाश्चात्त्य देश के एक वर्तमान सामुद्रिक शास्त्र के विद्वान् के अनुसार यह प्रथम श्रेणी का प्रेम अवश्य है, किंतु उसी की राय में यह निकृष्ट श्रेणी का प्रेम है। अस्तु।

वास्तव में कविता की एक परिभाषा नियत करके उसकी व्याख्या करना कविता की असीमता को सीमित करना है; किंतु हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कविता का एक गुण मनोविकारों का यथातथ्य चित्रण करना भी है, और विद्यापति इस कला में पारंगत हैं। उनकी सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि बंगाली, बिहारी और हिंदी-प्रांत के निवासी समान रूप से उनको अपना कवि प्रमाणित करना चाहते हैं—इसमें उनकी गौरव-वृद्धि जो है।

आसामी-बंगाली तिलिस्मी राज़ से

मुक़दमा जीतने की ख़ुशी में

चिकित्साचंद्रोदय

आधी क़ीमत में

दो सौ आदमियों को ७ भाग की सेट और पाँच सौ को तीसरा भाग छोड़कर ६ भाग की सेट दे सकेंगे। ख़ूब जल्दी करें। ज़्यादा पुस्तकें नहीं हैं। ५) पेशगी भेजें। मनीऑर्डर-कूपन पर पास के स्टेशन का नाम-पता साफ़ लिखें।

पता—**हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा**

गोमती-प्रपात (मसूरी)

[प्रोफ़ेसर श्रीधर्मदेव शास्त्री]

देहरादून-शहर द्रोणाचल के सुरम्य अंक में न-जाने कब से अठखेलियाँ कर रहा है। द्रोणाचल का यह इतना लाड़ला पुत्र है कि लाखों वर्षों का होकर भी आज तक हिमालय का नन्हा बालक ही प्रतीत होता है। देहरादून के मस्तक पर द्रोणाचल का उच्च शृंग मसूरी है। रात्रि को मसूरी में जब बिजली का प्रकाश होता है, तब ऐसा प्रतीत होता है, मानो देहरादून की अट्टालिका पर दिवाली हो रही हो। बारह मील की दूरी केवल दो फ़र्लांग की दूरी प्रतीत होती है। देहरादून से मसूरी बारह मील दूर है, इतना कहने से तो कोई विश्वास न करेगा। पहलेपहल जब मुझसे कहा गया, तब मैंने भी विश्वास नहीं किया; परंतु जब राजपुर से पैदल के रास्ते मैंने मसूरी की यात्रा की, तब तो उपनिषत् की "तद्दूरे तद्वन्तिके"(वह दूर भी है और समीप भी)वाली बात याद हो आई। पहाड़ का "वह दीखता है" और मैदानों का "सामने लौकत बाटै" में आकाश-पाताल का अंतर है। जिस प्रकार ज्ञानी के लिये ब्रह्म समीपतम और अज्ञानी के लिये दूरतम है, ठीक इसी प्रकार पर्वतीय के लिये राजपुर से मसूरी थोड़ी दूर है, और मेरे-जैसे के लिये तो दूर भी है, और समीप भी। आँखों से देखने पर समीप और पाँव से देखने पर दूर है। जो दार्शनिक आँखों के दर्शन को निर्भ्रांत मानते हैं, उनको एक बार राजपुर से मसूरी की यात्रा करने का निमंत्रण देता हूँ।

गुजरात के शिक्षा-शास्त्री श्रीयुत गीजू भाई एक बार देहरादून आए, और पैदल ही मसूरी चलने का संकल्प किया। वर्धा-महिला-आश्रम के अध्यापक श्रीयुत सत्यदेव शास्त्री भी तब देहरादून में थे। हम तीनो पैदल चले। देहरादून से राजपुर तक मोटर पर जाकर जब पैदल यात्रा आरंभ की, तो गीजू भाई से चलते ही किसी आगंतुक ने पूछा—"आप कहाँ जायँगे ?" "मसूरी जाते हैं।" बड़े ज़ोर से गीजू भाई ने कहा। मालूम होता था, वह 'मसूरी पैदल चलने में कष्ट होगा', मेरे इस वचन का गर्वोक्ति से प्रतिवाद करते हों। परंतु अभी हम आध मील भी न चले थे कि गीजू भाई पग-पग पर पूछते—"क्यों जी, हम कितना चल आए होंगे ?" भाई सत्यदेवजी विनोदी जीव हैं, वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर गीजू भाई से पूछते—"क्यों भाई, कहाँ जा रहे हैं ?" मैं कहता—"मसूरी !" एक ही मील के बाद से गीजू भाई के लिये आख़िरकार हमें डाँडी का प्रबंध करना ही पड़ा। डाँडी में बैठ जाने पर हमने गीजू भाई से पूछा—"आप कहाँ जाओगे ?" "मसूरी।" ज़ोर से गीजू भाई ने कहा। इस उत्तर में और सर्वप्रथम उत्तर में अंतर स्पष्ट था।

इस प्रकार पैदल यात्रा के कष्टों और दुस्साध्यता का पता होते हुए भी मैं श्रीशांता, सुशीला, दमयंती, तीनो स्नातिकाओं और दानसिंह तथा दीपसिंह को लेकर मसूरी से गोमती-प्रपात देखने के लिये पैदल चलने को तैयार हो गया। गोमती-प्रपात को आजकल 'कैम्टीफ़ॉल' कहते हैं।

'गोमती-प्रपात' नाम मैंने कैम्टीफ़ॉल के पास गाँव में रहनेवालों से पता लगाकर लिखा है। गोमती-प्रपात भी मसूरी से उतना ही दूर है, जितना राजपुर से पैदल के रास्ते मसूरी, अर्थात्

केवल सात मील। किंतु इन सात मीलों की व्याख्या है बहुत बड़ी। मैं इस यात्रा से पूर्व भी दो-तीन बार मसूरी आ चुका था, परंतु गोमती-प्रपात देखने का अवसर नहीं मिला था। इस बार देहरादून से मसूरी तक तीनो बहनों के साथ मोटर पर ही गया था, क्योंकि इन तीनो के पैदल के रास्ते मसूरी पहुँचने की मुझे संभावना कम थी। इनमें से दो ने तो मोटर में बैठे-बैठे भी कई बार वमन किया, और बैठी-बैठी भी थक गईं। परंतु गोमती-प्रपात देखने के लिये इन्हीं तीनो ने नाक में दम कर दिया। पैदल चलने का अनुभव न होने से ही शायद इन्होंने ऐसा कहा था, क्योंकि गोमती-प्रपात से वापस आने पर तो 'नाक में दम आना' लक्ष्यार्थ न रहकर वाच्यार्थ हो गया था। कई भुक्तभोगियों ने बहुत मना किया; अनेक भय दिखाए, परंतु स्त्री-जाति जो फ़ैसला कर लेती है, उसे बदलने का विचार कम करती है। फिर भी एहतियातन् हमने एक घोड़ा कर लिया। परंतु 'घोड़े की हमें कोई ज़रूरत नहीं, आपने स्त्री-जाति को कमज़ोर, अबला समझ रक्खा है', इत्यादि डाँट सुनकर मैंने यही अच्छा समझा कि इस अश्व-देवता को वापस किया जाय, नहीं तो सारा रास्ता शंका-समाधान में बीत जाता, और मेरा तो सचमुच दिमाग़ चाट लिया जाता। आखिर एक आदमी तीन का जवाब देते-देते दम ही कहाँ लेता। परिणाम यह होता कि मैं हार जाता, जिसका अर्थ था स्त्री-जाति की विजय। इस विजय का अर्थ स्पष्ट था, अर्थात् घोड़ा वापस कर देना। मैंने इस सब ऊहा-पोह को मन-ही-मन सोचकर थोड़ी ही दूर से घोड़ा लानेवाले नौकर को घोड़े के साथ वापस कर दिया।

प्रपात के कुछ यात्री साथी

[गोमती-प्रपात के आगे ठहरकर लिया गया चित्र। बाईं ओर से—धर्मदेवजी शास्त्री, दानसिंहजी, मास्टरजी, दिलीपसिंहजी और वैद्य नरेंद्रसिंहजी। प्रपात का जल पीछे सफ़ेद चादर का काम दे रहा है।]

अब हम बड़ी तेज़ी के साथ कैम्टीफ़ॉल के मार्ग पर जा रहे हैं। मसूरी से कैम्टीफ़ॉल जाते हुए

ढलान है, इसलिंये जाते समय हमें कोई कष्ट न हुआ। हम सब मसूरी में हिमालय-क्लब में ठहरे थे। हमारे यात्रा-दल में कुल मिलाकर आठ व्यक्ति थे, जिनमें मसूरी के मेरे मित्र श्रीनरेंद्रसिंह वैद्य भी एक थे। मेरे आग्रह से अपने कैमरे से सुसज्जित होकर यात्रा में शामिल हो गए। एक नौकर को तो हमने भोजन के लिये साथ ले ही लिया था, नहीं तो सात मील चलकर इतने भूखे शेरों से कौन बच सकता था। हिमालय-क्लब से दो ही मील की दूरी पर चलनेवालों के दो दल स्पष्ट हो गए, और उनमें काफ़ी अंतर भी हो गया। सुशीला और दमयंती ने अपनी साथ चलने में अक्षमता को तब स्पष्ट कर दिया, जब वे क़रीब आध मील पिछड़ गईं। अंतर रहते हुए भी हम सब एक दूसरे को देख रहे थे। मार्ग में तेज़ी से चलने पर हमारे माथे पर स्वेद-बिंदु स्पष्ट झलकते थे। परंतु थोड़ी ही दूरी पर जब धूप से हटकर हम सघन वृक्षावली से होकर गुज़रते थे, तब सारा पसीना क्षण-भर में सूख जाता था। यदि इस प्रकार हम गर्मी से होकर इस ठंडे स्थान पर न आते, तो शायद हमें यहाँ बेहद सर्दी प्रतीत होती। थोड़ी-थोड़ी दूर पर मार्ग में आनेवाले अथवा पहाड़ के बीच में ऊपर से नीचे गिरनेवाले छोटे-बड़े स्रोतों की ध्वनि से भय, निस्तब्धता, शम, राग, वैराग्य, सब भावों की एक साथ व्यक्ति होती थी। और, होती थी बरबस इस सारी विचित्रता के जनक, आश्चर्य के आगार, विभूतिमय भगवान् की मधुर स्मृति। थोड़ी-थोड़ी देर में हृदय में न-जाने कहाँ से अदम्य उत्साह की हिलोरें उठतीं, और ऐसा लगता कि इस पहाड़ से उस पहाड़ और उससे भी आगे दिखाई देते हुए शिखरों पर कूद जाऊँ, और इस अनंत पर्वत-माला को अपनी यात्रा से शांत कर दूँ। परंतु थोड़ी देर में ध्यान आता, मैं तो देहरादून की एक छोटी-सी कुटिया का बंदा हूँ। पत्नी, माता, भाई, बहनों का ध्यान आते ही सारा उत्साह वहीं रह जाता। फिर भी जाते हुए एक अनिर्वचनीय आनंद और उत्साह की रेखा तो स्पष्ट ही दिखाई देती थी, और ऐसा मालूम होता था कि मैं उड़ा जाता हूँ। किधर? यह नहीं कहा जा सकता।

"भाई! क्यों? यह आवाज़ किस स्रोत की है?" शांता बहन ने किसी आगंतुक से पूछा।

"गोमती-प्रपात की।"

"तब तो हम आ गए।"

सब ने कहा—"नहीं, अभी तो कैम्टीफ़ॉल तीन मील से भी अधिक दूर है।"

उत्तर सुनकर पहले तो सब अवाक् हो गए। इतनी दूर! "जिस प्रपात की आवाज़ तीन मील से इतनी सुनाई दे रही है, वह कितना बड़ा होगा, यह सोचकर हमें उत्कंठा के साथ जल्दी-से-जल्दी चलना चाहिए।" शांता की इस युक्ति ने सूखते धान पर पानी डाल दिया। नहीं तो हममें से कई तो निराश हो गए थे। अब हम ऐसे स्थान पर पहुँच गए थे, जहाँ से कैम्टीफ़ॉल जाने के लिये दूसरा छोटा रास्ता मुड़ता था। अब तक हम मुख्य सड़क से चल रहे थे। इस मार्ग को शिमला-रोड कहा जाता है। इसी मार्ग से १९३० में लॉर्ड अर्विन शिमला से मसूरी होते हुए देहरादून आए थे। कैम्टीफ़ॉल की ओर जानेवाले मार्ग की मोड़ पर ही शिमला-रोड पर एक छोटा-सा गाँव है। यहाँ एक होटल भी है, जहाँ बिसकुट आदि कुछ चीज़ें दानसिंह ने ख़रीदीं। यदि वह बिसकुट भक्षण न करता, तो यात्रा में भक्षण करने की नौबत आ जाती। ऐसा उसकी बातचीत से तब मालूम हुआ, जब वह मेरे साथ दौड़कर कैम्टीफ़ॉल पर सबसे पहले पहुँचा। वास्तव में वह आज हिमालय-क्लब से, यात्रा की ख़ुशी में बिना कुछ खाए ही, प्रातः ६ बजे, सबके साथ चल दिया

था। गर्मी के दिन थे। इन दिनों वैसे ही भूख लगती है, और फिर प्रातराश करने की आदत सबके समान उसकी भी थी। होटल से कैम्टीफ़ॉल दो मील पड़ता है, परंतु वहाँ से प्रपात का पूरा दृश्य दिखाई देता है। होटल के स्थान से प्रपात एक मील नीचे खड्ड में है। यहाँ से जाते हुए तो हम खुशी-खुशी गए। कुछ तो दौड़ते गए, जिनमें से एक मैं भी था। इस दौड़ में सबसे प्रथम नंबर शांता बहन ने पाया। जब हम कैम्टी-फ़ॉल पहुँचे, तब ग्यारह बज चुके थे। पहुँचते ही हमने देखा कि वहाँ पहले से ही कई अँगरेज़ स्त्री-पुरुष-बालक खेल-कूद रहे हैं। वे लोग तो पिछली रात्रि भी वहीं ठहरे थे। अपना डेरा-डंडा आदि सब कुछ लाए हुए थे। नहाने के विशेष वस्त्र धारण करके जहाँ-तहाँ आपस में खेलते और पानी में ठहरकर एक दूसरे पर पानी फेंकते हुए उन्हें देखकर हमें बहुत आनंद आया।

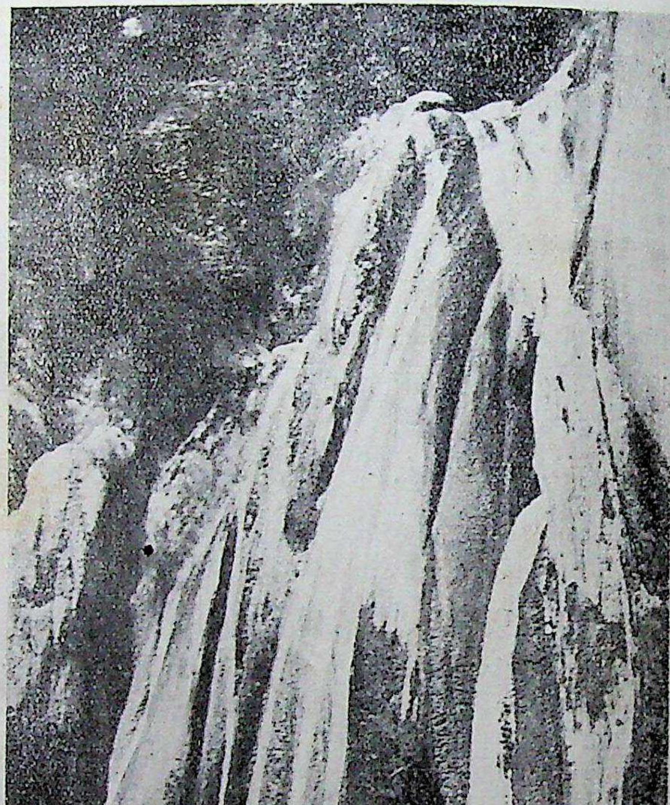

गोमती-प्रपात (मसूरी)

अब हम कैम्टीफ़ॉल की प्रथम मंज़िल पर पहुँच गए थे। यह प्रपात इतना बड़ा है कि इसकी इस प्रकार चार मंज़िलें हैं। पहली मंज़िल से दूसरी, तीसरी और चौथी मंज़िल पर जाने का मार्ग है। यह बात हमें ज्ञात न थी, इसलिये वृक्षों को पकड़-पकड़कर बड़े परिश्रम से हम दूसरी मंज़िल पर पहुँचे। प्रपात के सामने पानी में चलते हुए शांता बहन के पाँव में एक जोंक लग गई। पहले तो कुछ देर उसे मालूम ही नहीं हुआ। मालूम होने पर वह बहुत डरी, और हाथ से उसने उसे खींचकर फेंक दिया। फिर क्या था, उसकी टाँग से खून का प्रवाह-सा प्रवाहित हो उठा। बड़ी मुश्किल से धोती का कपड़ा फाड़कर, उस पर बाँधकर उसका वेग कम किया जा सका। मुझे दूसरी यात्रा में पता लगा कि जब जोंक लग जाय, तो उसका सरल उपाय यही है कि जहाँ जोंक लगी हो, वहाँ थोड़ा-

सा नमक डाल देने से जोंक आप ही उस स्थान को छोड़ देती है। ऐसे स्थानों पर यात्रा करनेवालों को नमक की एक पुड़िया अवश्य रखनी चाहिए। ऐसा एक व्यक्ति ने दूसरी बार यात्रा करते हुए कहा भी! दूसरी मंज़िल से तीसरी मंज़िल की चढ़ाई और भी भयावह थी। ऊपर चढ़ने का कोई रास्ता न था। बड़ी-बड़ी चट्टानें और वे भी सदा प्रपात से उठनेवाले तुषार-कणों से चिकनी, जिन पर पाँव रखते ही गिर पड़ने का भय सदा रहता है। और, गिरकर पानी के तेज़ प्रवाह में एक चट्टान से दूसरी-तीसरी पर गिरते-पड़ते गिरनेवाले का पता चलना भी दुश्वार! मैंने यह सब सोचकर ऊपर की यात्रा बंद करने का ऑर्डर दिया। कहना न होगा, मैं ही उस यात्रा का लीडर था। परंतु यात्रा में लीडर कैसा? मैं प्रपात की शोभा देखने में व्यस्त था कि दानसिंह और वैद्य नरेंद्रसिंह तीसरी मंज़िल पर चढ़ गए, और आवाज़ें देने लगे। अब तो सेना सेनापति की आज्ञा से बाहर हो गई। मैं डर रहा था। परंतु पत्थरों के बीच में लटकती हुई वल्लरियों की रस्सी बनाकर, एक दूसरे को हाथ का सहारा देकर सब पहुँच ही तो गए। पहुँच तो गए, और मैं तब थोड़ी देर के लिये सुखी भी हो गया, परंतु वापस जाते हुए क्या होगा, यह चिंता थी, जो मुझे खाए जाती थी। सब नहा रहे थे, और एक दूसरे पर पानी फेंक रहे थे, परंतु मैं ऊपर किसी मार्ग की तलाश में था। आखिरकार मैंने नीचे जाने का मार्ग ढूँढ़ ही निकाला। प्रपात में उठते मानसून को सबसे प्रथम मैंने गोमती-प्रपात में ही देखा। क़रीब आध मील से प्रपात हो रहा था। प्रपात के नीचे जाने पर मालूम होता था, मानो पत्थर सिर पर पड़ रहे हों। एक दूसरे को प्रपात के नीचे ले जाने की चेष्टा सब कर रहे थे। वैद्य नरेंद्रसिंहजी ने अपने अस्त्र-शस्त्र उठाए, और फ़ोटो ली। नहाकर भोजन का समय उपस्थित हुआ। जंगल के अज्ञात वृक्षों के बड़े-बड़े पत्तों में बहनों द्वारा परोसा गया वह भोजन कितना मधुर लगा, कह नहीं सकते।

देखते-देखते चार बज गए। वापस भी जाना था, और वापस जाने में पहले दो मील तो एकदम सीधी चढ़ाई थी, और फिर भी मसूरी तक धीरे-धीरे चढ़ाई पर ही जाना, यह सोचकर जब मैंने वापस चलने की कही, तब सबको बुरा लगा। मुझे स्वयं भी अखरा। वहाँ से वापस आने को जी न करता था।

"क्यों शास्त्रीजी! अभी तो हमें आए दो घंटे भी न हुए।" प्रिय दिलीप भाई ने कहा।

"अरे, अब तो चार बज गए, और यहाँ आए हमें पूरे पाँच घंटे बीत गए।"

मेरे कथन पर किसी को विश्वास न हुआ।

"घड़ी की सुई आगे कर दी होगी।" वैद्य नरेंद्रसिंह हँसकर बोले।

जिस दो मील के मार्ग को हमने दौड़कर तय किया था, उसी को पूरा करना सचमुच टेढ़ी खीर हो गई थी। पूरे दो घंटे में उसे मैं तय कर पाया। मैंने होटल में आकर देखा, शांता बहन दिलीप के साथ आध घंटा पहले पहुँच चुकी थी।

हमें देखते ही वे दोनो आगे चलने के लिये दौड़ पड़े। बहुत समझाने पर थोड़ी देर रुकने के लिये उन्हें मैं राज़ी कर सका। होटल में मैं दस मिनट ही बैठा था कि नरेंद्रसिंहजी ने दौड़कर मुझसे आकर कहा कि सुशीला और दमयंती दोनो बेहोश हो गई हैं। पानी चाहिए। मैं घबराया, और जल्दी से पानी ले गया। यद्यपि वे दोनो बेहोश न हुई थीं, परंतु यदि थोड़ी देर पानी न मिलता, तो अवश्य बेहोश हो जातीं। कपड़े की पट्टी तो दोनो ने सिर पर बाँध ही ली थी। उनके पाँव लड़खड़ा रहे थे। बड़ी मुश्किल से वे दोनो होटल

तक आई। आगे मसूरी तक चलना तो कठिन है, इस विचार से मैंने डाँडी की तलाश की, परंतु वहाँ डाँडी कहाँ? कुछ देर विश्राम कर लेने के बाद मैंने उन्हें इस आश्वासन पर चलने को कहा कि मार्ग में जहाँ भी डाँडी मिलेगी, कर ली जायगी। परंतु उन दोनो की क़िस्मत ऐसी फूटी निकली कि हिमालय-क्लब तक एक भी डाँडी खाली न मिली।

लाइब्रेरी-बाज़ार (मसूरी)

अब जब कभी शीला और दमयंती से कैम्टी-फ़ॉल चलने को कहा जाता है, तब उन दोनो के माथे पर विषाद की रेखा स्पष्ट दिखाई दे जाती है, जो वापस आते हुए माथे पर बाँधी गई कपड़े की पट्टी का स्मरण कराती है।

उस समय रात्रि के नौ बजे थे, जब हमने हिमालय-क्लब की सीढ़ियों पर पाँव रक्खे। ऊपर चढ़कर देखा, तो नीचे देहरादून अपनी बिजली के प्रकाश के साथ ऐसा प्रतीत होता था, मानो भूतल से ज्योति उद्भूत हो रही हो। ज्योति का भी एक-जैसा स्थान नहीं। यदि एक ज्योति मस्तक के ऊपर दीप-मालावत् है, तो दूसरी पादतल में। यह क्यों! मेरा जड़ शरीर एक ही दिन में पादतल की ज्योति से उठकर मस्तकतल की ज्योति से नाता जोड़ चुका है, और कितने ऊँचे स्थान पर पहुँच गया है। परंतु 'मैं' कहाँ से कहाँ जा पहुँचा, कितना ऊँचा उठा, इसके मापने का मापक क्या है? इत्यादि प्रश्नों का समाधान ही कर रहा था कि घड़ी ने टन्-टन् करके ग्यारह बजाए, और मैं भोजन के लिये उठा। मेरे मुँह से अनायास निकल पड़ा—

द्रोणाचल के उच्च शृंग पर।
नीचे देखूँ, तो खाई है;
ऊपर उड़ जाने को नहीं पर।

उस समय जून-मास केवल एक घंटे का मेहमान था।

मेरा मकान

(हानि-लाभ का लेखा-जोखा)

[श्रीगुलाबराय एम्० ए०]

मुसलमानों के यहाँ मुसव्विरी करना गुनाह समझा जाता है, क्योंकि चित्रकार एक प्रकार से ख़ुदा की बराबरी करने की स्पर्द्धा करता है। शायद इसीलिये अल्लाह ताला लेखकों से भी नाराज़ रहते हैं, क्योंकि वे भी अपने रचनात्मक कार्य द्वारा परमात्मा की होड़ करते हैं। कवियों ने अपनी रचना को एकदम परमात्मा की सृष्टि से बढ़ा हुआ बतला दिया है। 'काव्य-प्रकाश' के कर्ता मम्मटाचार्य ने कहा है कि कवि की भारती भगवान् की सृष्टि से परे और शुद्ध आह्लाद से बनी हुई है। भगवान् की सृष्टि में तो शुद्ध आह्लाद बिजली के प्रकाश में भी खोजने पर बड़ी मुश्किल से मिलता है। फिर परमात्मा लेखकों से क्यों न रूठें। यदि लेखक लोग शब्दों के महल और हवाई क़िलों के अलावा ईंट-चूने के मकान बनाने का भी साहस करें, तो 'करेले और नीम चढ़े' की बात हो जाय। ईश्वर मनुष्य की इस डबल स्पर्द्धा को सहन नहीं कर सकते।

मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। ठोक-पीटकर लोगों ने मुझे लेखक-राज बना ही दिया था, और मैं स्वयं भी अपने को पाँचवें सवारों में गिनने लग गया था। अपने को बड़ा आदमी समझने के कारण ही, छतरपुर से नौकरी छोड़ने के पश्चात्, दूसरी जगह की नौकरी न निभा सका। नौकरी करना तो टेढ़ी खीर है। उसमें बड़े आत्मसंयम की ज़रूरत है, किंतु मैं तो जैन-बोर्डिंगहाउस के लड़कों को क़ायदे के घेरे में बंद रखने का बाइज़्ज़त काम भी न सँभाल सका। अब यदि इतने पर भी संतुष्ट रहता, तो ग़नीमत थी—बाप-दादों की नहीं, अपनी ही भलमनसाहत लिए बैठा रहता, तब तक विशेष हानि न थी। और प्रोफ़ेसरों को कोठियों में रहते देखकर (मैं भी प्रोफ़ेसरों में क़रीब-क़रीब बेमुल्क का नवाब हूँ) मुझे भी कोठी बनाने का शौक़ चर्राया। उसकी थोड़ी-सी करुण कहानी* 'सुधा' के पाठकों को सुना चुका हूँ।

विश्वकर्मा की प्रतिमूर्ति ठेकेदार महोदय की शाहजहाँ और अकबर की प्रतिद्वंद्विता में एक दूसरा क़िला खड़ा करने की नीति और पड़ोस के काछियों के अनुकरण में एक झोपड़ी खड़ी करने की नीति, जिसका मैं अवलंबन करना चाहता था—दोनो परस्पर विरोधी

---

* विद्वान् लेखक का यह लेख 'सुधा' की अगस्त, १९३७ की संख्या में निकल चुका है। प्रेमी पाठक पढ़कर हास्यरस में निमग्न होने की कृपा करें।—सुधा-संपादक

नीतियों के संघर्ष के फल-स्वरूप मेरा मकान, जो अभी सामने से इकमंज़िला और गढ़े में होने के कारण पीछे से दुमंज़िला है, तैयार हो गया। मैं चाहता, तो झोपड़ी बनाता, किंतु जिस प्रकार पूर्व जन्म के संस्कारों पर विजय पाना कठिन हो जाता है, उसी प्रकार ठेकेदार की बातों में आकर नींव में चौड़ी और भारी दीवारें बनाकर झोपड़ी बनाना असंभव हो गया। प्रत्यक्ष रूप से मूर्ख कहे जाने का भार अपने ऊपर लेने को तैयार न था। जब लोग इतनी बड़ी ब्रिटिश सरकार को 'टॉप हेवी' कहने में नहीं चूकते, तो मेरे मकान को 'बॉटम हेवी' कहने से किसका मुँह बंद किया जाता। 'टॉप हेवी' के लिये तो एक बहाना भी है— 'सिर बड़ा सरदार का।' मेरे पास ऐसा कोई बहाना भी न था। मकान फूस से क्या, लकड़ी से भी नहीं पटा। उसमें डाटें लगाई गईं। उस संबंध में मेरे छोटे भाई बाबू रामचंद्र गुप्त को ठेकेदार को कई बार डाट-फटकार बताने का मौक़ा आया। अब मैं डाट का अर्थ समझ गया। डाट ईंट-चूने की उस बनावट को कहते हैं, जो सदा अपना भार लिए धूप और मेंह के साथ रण में डटी रहती है। किंतु उसे डटी रहने योग्य बनाने के लिये स्वयं धूप और मेंह की परवा न करके डटा रहना पड़ता है, और समय-समय पर ठेकेदार को भी डाट देनी पड़ती है। इस प्रकार मेरा शब्द-कोष (अर्थ कोष नहीं) बहुत बढ़ गया है। अब मैं 'कच्छ', 'होल पास', 'डाढ़ा', 'चीरा', 'हॉफ़ सेट', 'नासिक', 'चश्मा', 'ठेवी' आदि वास्तुकला के

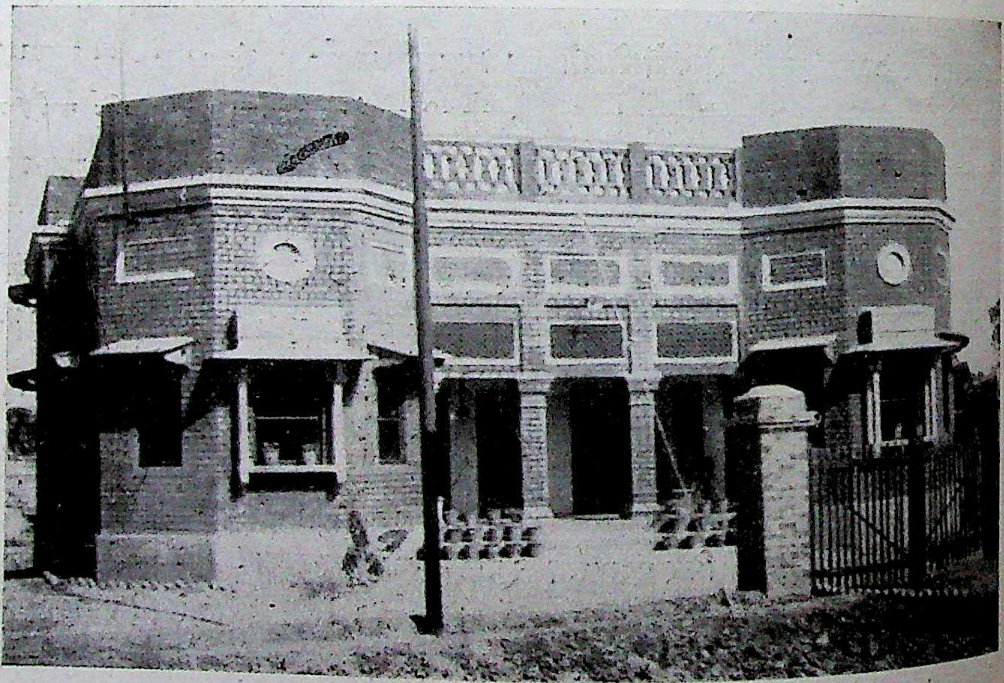

मकान का अग्रभाग

पारिभाषिक शब्दों का अर्थ समझने लगा हूँ। धन-क्षय कर क्षय लेकर शब्द-कोष की वृद्धि उचित ही न्याय है—"एवज़-मावज़ गिला नदारद"—इधर का लेखा उधर बराबर हो गया।

जिस प्रकार शुरू में जनमेजय के नाग-यज्ञ की तरह ईंट-चूने का स्वाहा होता था, पीछे धन का स्वाहा होने लगा, और मैं भी घर-फूँक तमाशा देखने का अग्रहणीय सुख अनुभव करने लगा। एक के बाद दूसरी पासबुक और फिर कैश-सार्टिफिकेटों पर नौबत आई, और पीछे रिज़र्व बैंक के शेयर वारंट भी, जो भाग्यशालियों को ही मिले थे, अछूते न रहे। वे बेचारे भी काम आए। अस्तु। यह थोड़ा लाभ नहीं। कविवर बिहारीलाल ने कहा है—

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय ;
वा खाए बौराय नर, या पाए बौराय।

अब मुझे कनक (धन)-मद न सता पाएगा, और मैं बौराया न कहलाऊँगा। दार्शनिक के नाते यदि कोई मुझे पागल कह लेता, तो मैं इसे दार्शनिक होने का प्रमाण-पत्र मानकर प्रसन्न होता, किंतु धन के मद से तो मैं वैसे ही बचना चाहता था। कांग्रेसी मंत्रिमंडल पर अनंत श्रद्धा रखता हुआ भी मैं यह कहने को तैयार हूँ कि धन के मद से तो भंग-भवानी और वारुणी-देवी का मद ही श्रेयस्कर है। इसमें अपना ही अपमान होता है, दूसरे का तो नहीं।

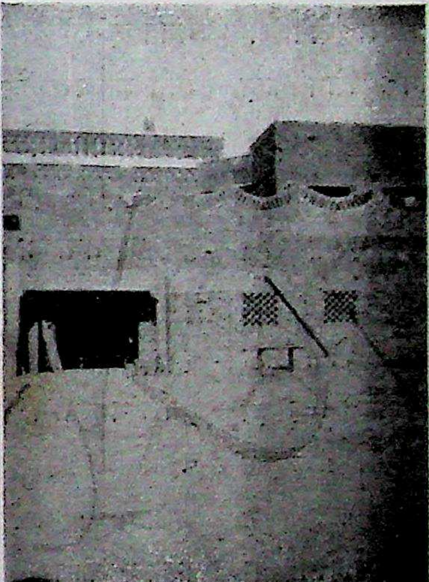

मकान का पृष्ठभाग

एक महाशय ने मेरे घर के तहखानों को देखकर कहा कि आपके घर में ठंडक तो खूब रहती होगी। मैंने उत्तर दिया, जी हाँ। जब रुपए की गर्मी न रही, तब ठंडक रहना वैज्ञानिक नियमों के अनुकूल ही है। इस पर उन्होंने तहखानों के संबंध में सेनापति का निम्न-लिखित छंद सुनाया—

'सेनापति' ऊँचे दिन
करके चलति लुवैं,
नद, नदी, कुवैं
कौंपि डारत सुखाइकै;
चलत पवन, मुरझात उपवन, बन,
लाग्यौ है तपन. डारयौ भूतलौ तचाइकै।
ग्रीषम तपत रितु, ग्रीषम सकुचि तातैं
सीरक छिपी है तहखानन मैं जाइकै;
मानौ सीत-काल सीत-लता के जमाइबेकौं
राखे हैं बिरंचि बीज धरा मैं धराइकै।

मैंने कहा, भाई साहब, वस्तु हाथ से गई,

तो छाया भी हाथ न लगे, तो पूरा अत्याचार ही ठहरा। पहले के लोगों के तहख़ाने धन से भरे रहते थे, अब छाया ही सही। यदि गेहूँ नहीं, तो भुस ही ग़नीमत है।

धन का अधिक रोना न रोऊँगा। अब और लाभ सुनिए। बाहर मकान बनाने का सबसे बड़ा प्रलोभन यह होता है कि उसमें थोड़ी-सी खेतीबारी करके अपने को वास्तव में शाकाहारी प्रमाणित किया जाय। मेरी खेती भी उन्हीं लोगों की-सी है, जिनके लिये कहा गया है—

"कर्म-हीन खेती करै, बर्ध मरै कि सूखा परै।"

जब घर बनाने के लिये डेढ़ रुपया रोज़ ख़र्च करके दूसरे के कुएँ से पैर चलवाकर हौज़ भरवा लेता था, तब तक तो खेती ख़ूब हरी-भरी दिखलाई देती थी। माली महोदय भी 'माले-मुफ़्त, दिले-बेरहम' की लोकोक्ति का अनुकरण करते हुए पानी की कंजूसी न करते। उन दिनों चाँदी की सिंचाई होती थी, फिर भी शाक-पात के दर्शन क्यों न होते? पालक के शाक की क्यारी तो कामधेनु सिद्ध हुई। जितनी काटते, उतनी ही बढ़ती। गोभी के फूल भी ख़ूब फूले। उन्हें अधिकार से खाया भी। क्योंकि श्रीमद्भगवद्गीता में फलों का ही निषेध किया गया है, पत्ती और फूल का तो नहीं। भगवान् ने कहा है—"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" किंतु जब मकान बन चुका, तब अपने ही आप पानी देने की नौबत आई। अब तो श्रीमद्भगवद्गीता का वाक्य अक्षरशः सत्य होता हुआ दिखलाई पड़ता है। दिन-रात की सिंचाई के पश्चात् भी पत्र और पुष्प ही दिखाई देते हैं। खेत सींचने में निष्काम कर्म करने का आनंद मिलता है। मेरी खेती पर मालूम नहीं, अगस्त्यजी की छाया पड़ गई है कि जल से प्लावित क्यारियों में शाम तक पानी का लेश-मात्र भी नहीं रहता, जैसे खल के हृदय में संतों का उपदेश। भगवान् की तरह मैं भी कुएँ पर खड़ा हुआ रीतों को भरा और भरों को रीता किया करता हूँ। मालूम नहीं, भगवान् इस स्पर्द्धा का क्या बदला देंगे। इतना संतोष अवश्य है कि मेरे कुएँ का पानी मीठा निकला है। इसे मैं पूर्वजों का पुण्य-प्रताप ही कहूँगा। कुएँ का जल ऐसा है कि कभी-कभी मुझे क़सम खानी पड़ती है कि यह नल का नहीं है। "तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति।" अर्थात् बाप-दादों का यह कुआँ है, ऐसा कहकर कायर पुरुष खारा पानी पीते हैं। सौभाग्य से मेरी संतान के लिये ऐसा न कहा जायगा।

मेरी खेती से सिर्फ़ इतना ही लाभ है कि मुझे पौदों की थोड़ी-बहुत पहचान हो गई है। मैं लौकी और कासीफल, करेला और टिंडे के पत्तों में विवेक कर सकता हूँ। मैं देहली-दरवाज़े रहते हुए भी देहली के उन लोगों में से नहीं, जिन्होंने अपनी उम्र में चने का पेड़ नहीं देखा। बहुत कुछ उगा लगाने पर मैं यह तो न कहूँगा कि कुछ न

जमा। जमा सिर्फ़ इतना ही कि मेरे यहाँ की भूमि वंध्या होने के दोष से बच गई। जिस प्रकार हज़रत नूह की किश्ती में सब जानवरों का एक-एक जोड़ा नमूने के तौर से बच रहा, वैसे ही मेरी खेती में विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये दो-दो नमूने हरएक चीज़ के मिल जायँगे. और उसके लिये बाबा तुलसीदासजी के शब्दों में यह कहना पड़ेगा—

ऊसर बरसे तृण नहिं जामा ;
संत - हृदय जस उपज न कामा ।

ज़मीन को क्यों दोष दूँ, मेरी खेती पर चिड़ियों की भी विशेष कृपा रहती है । वे मेरे बोए हुए बीज को ज़मीन में पड़ा नहीं देख सकतीं, और मैं भी खेत चुग लिए जाने से पूर्व सचेत नहीं होता । फिर पछताने से भी क्या ?

मैं अपनी छोटी-सी दुनिया में किसानों की 'अतिवृष्टि, अनावृष्टि, शलभाः, शुकाः' सभी ईतियों का अनुभव कर लेता हूँ । सोचा था, वर्षा के दिनों में खेती का राग अच्छा चलेगा, किंतु गढ़े में होने के कारण साधारण वृष्टि भी अतिवृष्टि का रूप धारण कर लेती है। दो रोज़ की वर्षा में ही जल-प्लावन हो गया । वृष्टि के आदिम दिनों का दृश्य याद आ गया। मुझे भी प्रभाव की चपल बालिका चिंता का सामना करना पड़ा। पसीना बहाकर सींचे हुए वृक्ष, जिन्हें बड़ी मुश्किल से ग्रीष्म के घोर आतप से बचा पाया था, जल-समाधि लेकर बिदा हो गए। जीवन ही उनके जीवन का घातक हो गया।

शहर से कुछ दूर होने के कारण मेरे नापित महोदय मेरे ऊपर अब कृपा नहीं करते। जो तृतीय श्रेणी के न्यायी ब्राह्मण लोग मुझ पर कृपा करना चाहते हैं, उन पर कृपा करने से मुझे संकोच होता है। अब मैं स्वयंशेवक (स्वयं शेव करनेवाला) बन गया हूँ, और देश के हित में टमाटर और पालक के विटैमिन-बाहुल्य से बने अपने अमूल्य रक्त के दो-चार बिंदु नित्य समर्पण करना सीख गया हूँ। शायद सर कटाने की कभी नौबत आवे, तो इतना सकोच न होगा । सर के बजाय बाल तो दो-चार महीने में और नाख़ून दो-एक सप्ताह में कटवा ही लेता हूँ। फिर भी लोग कहते हैं, बलिदान का समय नहीं रहा।

मैं अपने मकान तक पहुँचने के रास्ते के संबंध में दो-एक शब्द कहे विना इस लेख को समाप्त नहीं कर सकता। उससे मुझे जो लाभ हुआ है, वह उम्र-भर नहीं हुआ था। मैंने अपने जीवन में इस बात की कोशिश की थी कि दूसरों को धोखा न दूँ, इसलिये मुझे गालियाँ भी शायद ही मिली हों। लेकिन इस सड़क की बदौलत मुझे इक्के-ताँगेवालों से रोज़ गालियाँ सुननी पड़ती हैं। पीठ फेरते ही वे कहते हैं—"बेईमान दिल्ली-दरवाज़े की कहकर गाँव के दगड़े में खींच लाया है।" मैं भी उन गालियों का विवाह की गालियों के समान आदर करता हूँ, और चुंगी के विधायकों का स्मरण कर लेता हूँ कि—"कबहुँ तो दीनदयाल के भनक परैगी कान ?" अभी आगरे-शहर में

ताँगे बहुत हैं, इसलिये कुछ दिन ऐसी धोखाधड़ी से काम चल जायगा, आक़बत की ख़ुदा जाने। इतना ही कहूँगा, क्योंकि मेरी चैन से नहीं गुज़रती। जब कभी पैदल चलने की नौबत आती है- वह प्रायः दिन में नौ-दस बार— तो देवता और पितृ याद आ जाते हैं। गाँव की सड़कें भी इसकी प्रतिद्वंद्विता नहीं कर सकतीं। वन जाते हुए श्रीरामचंद्रजी के संबंध में तुलसीदासजी ने कहा है—"कठिन भूमि, कोमल पदगामी।" मेरे लिये शायद उन्हें कहना पड़ता—"कोमल भूमि, कठिन पदगामी।" पवित्र ब्रज-रज तथा ख़ाक-वतन से पूर्ण इस सड़क में जूते इस प्रकार समा जाते हैं, जैसे किसी साहब के ड्राइंग-रूम के कुशन में शहर के किसी मोटे आदमी का सारा शरीर। यदि कहीं जूतों को धूलि-धूसरित होने से बचाकर उनकी शान रखना चाहूँ, तो दूसरों की कोठी से टे्स पास करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं, किंतु उसमें मेरी शान जाती है। दूसरी कोठियों के लोग वाणी से तो नहीं, (कभी-कभी मधुर व्यंग्य द्वारा) मन से अवश्य विरोध करते हैं।

रात्रि को जब घर लौटता हूँ, तो कबीर के बताए हुए ईश्वर के मार्ग की कनक और कामिनी-रूपिणी बाधाओं के समान 'सूद' और 'लाल' की कोठियाँ मिलती हैं। मेरी पद-ध्वनि सुनते ही उनके श्वानदेव उन्मुक्त कंठ से मेरा स्वागत करते हैं। उनके लिये मुझे दंडधारी होकर कभी-कभी उद्दंड होना पड़ता है। अब मुझे स्वामिभक्त पशुओं के नाम भी याद हो गए हैं। एक का नाम टाइगर है, और दूसरे का कालू। नामोच्चारण करने से दंड का प्रयोग नहीं करना पड़ता। जब इन घाटियों को पार कर लेता हूँ, तभी जान में जान आती है। हमारे घरों में तो बिजली का प्रकाश है, किंतु रास्ते में तो पूर्ण अंधकार का साम्राज्य रहता है। और, मुझे उपनिषदों का वाक्य याद आ जाता है—'असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।" मालूम नहीं, उस समय के लिये कौन-से पाप का उदय हो जाता है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना करता हुआ जैसे-तसे राम-राम करके घर पहुँचता हूँ। फिर रोज़ सबेरा होता है, और उन्हीं मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।

इन सब आपतियों को सहकर भी बस इतना ही संतोष है कि उन्मुक्त वायु का सेवन कर सकता हूँ। और, बग़ीचे के होते हुए मुझे यह समस्या नहीं रहती कि क्या करूँ? जूतियाँ सीने से अधिक श्रेयस्कर काम मिल जाता है। शास्त्रकारों का कथन है—

"बेकार-मुबाश कुछ किया कर,
यदि कुछ न हो, तो जूतियाँ सिया कर।"

और कुछ नहीं, तो खुरपी लेकर क्यारियों को निराता रहता हूँ, और चतुर किसानों में अपने गिने जाने की स्पर्द्धा करता रहता हूँ—'कृषी निरावहिं चतुर किसाना।' पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने सन की गाँठ के आधार पर बाबा तुलसीदासजी को किसनई का पेशे

वाला प्रमाणित कर दिया है। इस बात से मुझे एक बड़ा संतोष हो जाता है कि और किसी बात में न सही, तो खेती के काम में ही भक्त-शिरोमणि की समानता हो जाय।

अब मेरा यह निष्कर्ष है कि मुझ-जैसे बेकार, सकल साधन-हीन आदमी को, जिसके यहाँ न कोई सवारी-शिकारी और न दो-चार नौकर-चाकर हों (वैसे तो हमारे उपनिवेश के सभी लोग स्वयं 'दासा तपस्विनः'वाले सिद्धांत के माननेवाले हैं), कोठी बनाकर न रहना चाहिए। कौआ चला हंस की चाल, अपनी भी भूल गया।

हिंदुस्थानी

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

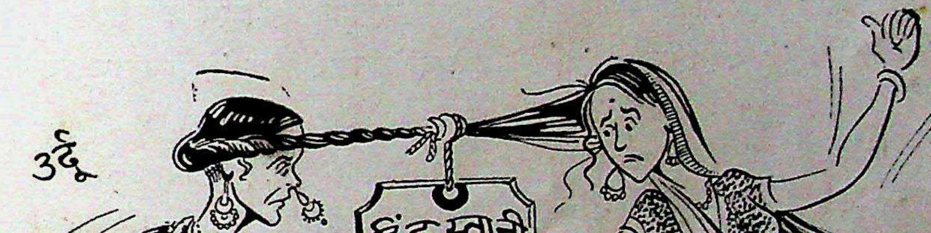

राष्ट्र-गीत

[श्रीयुत 'रसिकेंद्र']

वंदे पूज्य राष्ट्र रण-रंगी !
आन, बान, अभिमान, शान-रत
हिंदुस्तान तरंगी ! वंदे पूज्य राष्ट्र रण-रंगी !

(१)

महामान्य है जगतीतल में,
चालिस कोटि पुत्र अंचल में,
बढ़ा-चढ़ा है धन, जन, बल में,
उथल-पुथल मचती हलचल में,
विश्व प्रकंपित होता पल में
वेश देखकर जंगी । वंदे पूज्य राष्ट्र रण-रंगी ।

(२)

बुद्धि विशारद, प्रतिभा-धारी,
योग - ज्ञान - विज्ञान - विहारी,
धर्म-ध्येय-दृढ़, तप - व्रतधारी,
गुण-गौरव की गरिमा न्यारी,
सुंदर स्वर्ग - सहोदर, ईश्वर
लीला-धर का संगी । वंदे पूज्य राष्ट्र रण-रंगी !

(३)

सिर का ताज नगाधिराज है,
सृष्टि-सुंदरी रही राज है,
शक्ति - तेज-तप-बुद्धि-साज है,
सजग नारियों का समाज है,
धान्य, रत्न, मणि, स्वर्ण आदि से
मंडित अंग त्रिभंगी । वंदे पूज्य राष्ट्र रण-रंगी !

(४)

राम, कृष्ण, शंकर की जय है,
'दयानंद' 'गुरु-वाह' विजय है,
अल्लाहो-अकबर की लय है,
मोहन-मंत्र अहिंसामय है !
शांति समर की अद्भुत गति लख
होते चकित फिरंगी । वंदे-पूज्य राष्ट्र रण-रंगी !

(५)

शक्तिमयी सुखदा कमला-सी,
कांतिमयी, कमनीय कला-सी,
वीर-विभूति भरे विमला-सी,
रिपु-दल-हित सबला-प्रबला-सी,
मातृभूमि की मूर्ति विराजी,
धर दस भुज असि नंगी । वंदे पूज्य राष्ट्र रण-रंगी !

(६)

ऐक्य, स्वराज्य, प्रेम, संयम-सी,
हरित, अरुण, सित, प्रकृति-नियम-सी,
वीर जातियों के संगम-सी,
जाग्रत भारत के उद्यम-सी,
फहर रही 'रसिकेंद्र' मनोरम
धवलित ध्वजा तिरंगी । वंदे पूज्य राष्ट्र रण-रंगी !

जीवन के खेल

[लेखक—श्रीलतीफ़ुद्दीन अहमद अकबराबादी]

[कामरेड लतीफ़ुद्दीन अहमद आगरे के एक समाजवादी, राष्ट्रकर्मी मुसलमान सज्जन हैं। आप साहित्य-मर्मज्ञ और उच्च कोटि के साहित्यकार भी हैं। अहमद साहब के साहित्यिक निबंध, कहानियाँ और गद्य-गीत उर्दू-पत्र-पत्रिकाओं के लिये गर्व की वस्तु होते हैं। आधुनिक उर्दू-साहित्य-जगत् में आपका वही स्थान है, जो हिंदी में स्वर्गीय मुंशी प्रेमचंदजी का था। मुंशीजी आपकी लेखनी के बहुत प्रशंसक थे। आपकी कुछ रचनाएँ पुस्तकाकार भी संगृहीत हो चुकी हैं। उर्दू के जिन लेखकों को अब तक हिंदी-पत्रों में स्थान दिया जाता रहा है, आपका दृष्टिकोण, कल्पना और प्रवाह उनसे अधिक परिष्कृत, उच्च और व्यापक है। आप अलीगढ़ के पुरातन छात्र और दो बार खुली आँखों योरप घूमे हुए हैं। आशा है, हिंदी-जगत् आपका समुचित स्वागत करेगा। भविष्य में भी हम लतीफ़ साहब की अन्यान्य रचनाएँ अपने पाठकों की भेंट करेंगे।—सुधा-संपादक]

[एक]

चोरी को पेशा बना लेना, आप मानेंगे, साहस का काम है। यह बिलकुल ठीक है कि चोरी बुरा काम है, और समाज ने इस गर्हित कर्म को रोकने के लिये क़ानून भी बना दिए हैं, जिनका पालन समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर समुचित रूप से लागू है। यह भी सत्य है कि इन नियमों का उल्लंघन करनेवालों को दंड दिया जाता है। किंतु आप इस तथ्य को भी स्वीकार करने के लिये बाध्य हैं कि खाहमखाह सज़ा भुगतना एक अप्रियकर व्यापार है। तो फिर इस प्रश्न का उत्तर दीजिए कि अमीरा ने चोरी के कर्म को क्यों अंगीकार किया?

नितांत संभव है, आप कारण और परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त किए बिना ही और बेसोचे-समझे कह दें कि वह मेहनत-मज़दूरी न करना चाहता होगा, हरामख़ोरी की आदत होगी, बुरी सोहबतों में रहता होगा। किंतु मैं आपको पहले से ही बताए देता हूँ कि यदि आपने ऐसा विचार भी किया, तो अमीरा यथेष्ट से अधिक साक्षियों और प्रमाणों के साथ आपके द्वार पर धरना देकर बैठ जायगा। यहाँ तक कि आप मजबूर होकर उसे नौकर रख लेंगे, भले ही आपको उसकी आवश्यकता न हो।

अमीरा ने आपको बतलाया कि क़स्बे की जिनिंग् फ़ैक्टरी में वह सबसे अच्छा काम करनेवाला और अत्यंत परिश्रमी समझा जाता था। सेठ वंशीधर की फ़ैक्टरी में काम ज़ोरों पर हो रहा था, लेकिन यह देखकर कि आस-पास के शकर के कारखाने बंद हो रहे हैं, और मज़दूरों की बहुतायत है, मालिक ने मज़दूरी की दर घटा दी। मज़दूर-सभा ने हड़ताल कराई, अमीरा लीडर बना। हड़ताल तो खत्म हो गई, किंतु अमीरा को काम न दिया गया।

मज़दूर-सभा और फ़ैक्टरी-मालिक के बीच खूब द्वंद्व रहा और अंततोगत्वा दूसरी हड़ताल की आशंका से अमीरा काम पर रख लिया गया। मगर थोड़े दिनों बाद ही चोरी के इलज़ाम में छ महीने

के लिये ऊँची-ऊँची दीवारों के अंदर बंद कर दिया गया। जब वह बाहर निकला, तो प्रत्येक स्थान पर उसकी निराशा से भेंट हुई। दो दिन वह भूखा रहा, तीसरे दिन एक कारखानेदार की कोठी से हताश लौट रहा था कि फाटक पर चौकीदार की लुटिया रक्खी थी। कोई उस वक़्त मौजूद न था। अमीरा ने लुटिया में अपनी भूख की तृप्ति देखी।

इसके उपरांत, बताइए, आप क्या कहेंगे? अपराध अमीरा का था? नहीं, अपराध आपका है, मेरा है, हम सबका है। वह चूँकि बहादुर और दुस्साहसी था, आत्माभिमान-शून्य न था, इसलिये उसने पेट की लगी भीख के टुकड़ों से बुझाने के बजाय छीनकर अपना स्वत्व लेना पसंद किया। आपको उसका छीनना बुरा मालूम होता है, तो आप उसके स्वत्व का अपहरण क्यों करते हैं?

अच्छा, छोड़िए इस प्रसंग को। आप उसका हक़ न देंगे, वह चोरी न छोड़ेगा। हम तो चंदो की बीती सुनाना चाहते थे, बात निकल आई अमीरा की।

[दो]

आपको तो प्रत्येक युक्ति-संगत बात से वैर है। आप यह कब स्वीकार करनेवाले हैं कि चंदो वेश्या बनी, तो उसने कोई बलिदान किया। आप एक मिनट के लिये भी अपने मस्तिष्क को यह सोचने का कष्ट न देंगे कि आखिर ये पेशेवर औरतें विलासिता-पूर्ण जीवन त्यागकर घरों में पड़ जाना क्यों पसंद करती हैं? उनके हृदय में यह लालसा क्यों छिपी रहती है कि उन्हें किसी भले आदमी का आश्रय मिल जाय, और वे उससे निकाह कर लें? ऐश और हराम की ज़िंदगी अगर इन्हें वस्तुतः पसंद होती, तो अपनी आज़ादी क्यों तज दिया करतीं? स्वतंत्रता छोड़कर बंधन में पड़ जाने की कामना क्यों करतीं?

सुनिए। असल बात यह है कि स्त्री की तबियत ऐसे साँचे में ढल गई है कि एक सहारे की तलाश उसके लिये स्वभावगत बात बन गई है। वह किसी ऐसे के संरक्षण में पहुँच जाना चाहती है, जिस पर उसे भरोसा हो, और जो जीवन की चिंताओं को उससे ले ले, किंतु ये बातें आपको समझाना व्यर्थ है। आपकी बुद्धि आपको इसकी आज्ञा नहीं दे सकती कि पहले स्त्री-स्वभाव और फिर सामाजिक बाह्याचार का विश्लेषण कर सकें। ऐसी स्त्रियों के अतिरिक्त, जो इस गर्हित व्यापार में जीवन-यापन कर रही हैं, क्षण-भर के लिये उस युवती की दुरवस्था का अनुमान करने की कोशिश कीजिए, जो एक सौ एक प्रकारों से इस व्यापार में ढकेली जाती हैं, और वह ढकेलनेवाला मेरे-आपके सिवा और नहीं, हमारा समाज है, उसकी वर्तमान रीति-नीति है।

धैर्य-पूर्वक विचार कीजिए। ग़रीब घर की लड़की बाप के मरने पर अनाथ हो जाती है। उसका चचा, जिसने उसके मृत पिता की संपत्ति को भी समेट रक्खा है, उसे धैर्य नहीं बँधाता। पेट-पालन के लिये वह एक नातेदार के पल्ले जा पड़ती है। बीवी-बच्चोंवाला वह नातेदार उस बेकस लड़की के प्रति पाप-कामना रखता है। उस चांडाल के चंगुल से पीछा छुड़ाने के लिये वह उसके घर से निकल भागती है। यह भी आपकी मनोऽवस्था के प्रतिकूल नहीं कि आप उस लड़की को मूर्ख या इससे भी किसी बड़े विशेषण से संबोधित करें। किंतु मेरा दृढ़ मत है कि समाज को अपकीर्ति से बचाने के लिये उसने अपने आपको बलिदान कर दिया।

ख़ैर, आगे सुनिए। वह लड़की दर-दर भटकती किसी प्रकार एक बाबूजी के घर पहुँच जाती है। बबुआइन उसे ऊपरी टहल के लिये रख लेती है। एक दिन वह लड़की रात के समय ऊपर के कमरे में बाबूजी के लिये दूध लेकर जाती है,

तो वह उसका हाथ पकड़कर खींच लेते हैं। वह हाथ छुड़ाना चाहती है, लेकिन ज़ोर से चिल्ला नहीं सकती, क्योंकि सामाजिक अपयश का डर लगा हुआ है। साथ ही भरी रात में घर से निकाले जाने का खतरा भी। इस पर बाबूजी की मीठी-मीठी बातें, लंबे-चौड़े वादे, और फिर ख़ुद उसका निर्बाध यौवन-प्रवाह—अनेक प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष कारण उसे विवश कर देते हैं।

फ़रमाइए, इन परिस्थितियों और कारणों को आप उसी ग़रीब के मत्थे डालिएगा? उसी के नाम लिखिएगा? लिखने का अगर ऐसा ही शौक़ है, तो अपने या मेरे आमालनामे में दर्ज कर लीजिए—उस समाज के खाते में लिखिए, जिसकी परंपराओं ने उसे विवश होने के अतिरिक्त कुछ बनाया ही नहीं। अस्तु। बात तो अधूरी ही रही जाती है। लड़की को ऊपर कुछ देर हो जाती है, तो बबुआइन ऊपर जा धमकती हैं। बाबूजी तो एक दुहत्थड़ खाते और यह कहकर छूट जाते हैं कि "नींद में मैं तो तुम्हें समझा था।" लेकिन ग़रीब लड़की की बड़ी दुर्गति होती है। वह कहीं सिर छिपाना चाहती थी, आसरा ढूँढ़ रही थी; किंतु अमित मूल्य देने पर भी घर से निकाली जाती है। क्या आप इसे उसका आत्मत्याग न कहेंगे? ख़ैर, अब यह बताइए कि आधी रात के वक़्त एक बेकस और बेबस सयानी लड़की कहाँ जाय? और, अगर वहाँ से निकलने के बाद एक पेशेवर औरत ने उसे जगह देनी चाही, तो वह क्यों संकोच करती, और संकोच करती, तो फ़रमाइए, फिर क्या करती?

परिणामतः चंदो भी वेश्या बन गई। लेकिन खुदा-लगती कहिए, क्या वह स्वेच्छा से बनी? क्या उन परिस्थितियों और कारणों पर उसे अधिकार था, जिनके स्रष्टा आप हैं, मैं हूँ, हमारा समाज है, उस समाज के नियम हैं? और, इन निर्दय एवं निष्प्राण नियमों की वेदी पर उस निरीह बालिका ने अपने अस्तित्व को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उस व्यापार की प्रतारणा को अंगीकार किया, जिसमें मेमने को दिन-भर दूध पिलाकर शाम को भेड़िया दिखा दिया जाता है। मैं जानता हूँ, इन बातों पर आप मुझे गुमराह कह देंगे। किंतु ईश्वर के लिये यह तो बताइए कि उस चिरस्थायी प्रतारणा के अतिरिक्त, जिसके साथ-साथ आप चाँदी की चंद ठीकरियों से स्त्री का सतीत्व मोल लेते रहने के अभ्यासी हो गए हैं, क्या एक वेश्या अन्यान्य अवस्थाओं में आपकी दी हुई भर्त्सनाओं का शिकार नहीं होती, और जिनका कोई मूल्य उसे नहीं मिलता?

[तीन]

अमीरा को चंदो से मुहब्बत थी, और चंदो को अमीरा से प्रेम। प्रेमी-प्रेमिका दोनो ही दरिद्र थे। अवस्थाएँ कुछ ऐसी थीं, जो इनको निर्धन ही बनाए रखती थीं। चोरों और वेश्याओं में अधिकांश भूखे-नंगे ही मिलेंगे। इन दोनो के पास केवल एक दौलत थी, और वह थी सच्चे प्रेम की दौलत। किंतु एक दिलचस्प सवाल यह है कि क्या वे दोनो भी इससे परिचित थे? लेकिन इस प्रश्न का उत्तर देने का कष्ट आप क्यों स्वीकार करें? इसमें आपको अपनी कल्पना को दूसरे लोक की ओर जो ले जाना पड़ेगा। कल्पना की इस उड़ान में आपकी विचार-धारा शिथिल जो हो जायगी।

प्रेम-सरिता कभी निर्बाध नहीं प्रवाहित रहती। चंदो बीमार पड़ी, और ऐसी कि उसे शफ़ाखाने की शरण लेनी पड़ी। और कोई चारा न था। इस विपत्ति और बिछोह में अमीरा को अपनी प्रेम-पीड़ा का पता चला।

[चार]

आप अगर अनुभवशील हैं, तो इसी परिणाम पर पहुँचिएगा कि संसार के क़ानून मनुष्यों के बनाए हुए नहीं, मशीनों के ढाले हुए हैं, और

मनुष्यों के लिये नहीं, पशुओं के लिये समुचित हों, तो हों। अपराध का प्रतिकार प्रतिहिंसा से किया जाता है, रोगों की चिकित्सा नहीं की जाती। किंतु यदि आपको यही बात सुझाई जाय, तो सुधार करने और दंड देने के अपने जन्मजात अधिकार के पक्ष में आप अनेक सिद्धांतों और समीक्षाओं की दुहाई दे डालेंगे। किंतु इस स्वनिर्मित शब्दावली के आगे आपके पास कोई उत्तर नहीं!

इसे दैवयोग कहिए या कहिए कि सौवाँ दिन आ गया था—एक अवसर पर अमीरा का हाथ बराबरवाले की जेब के अंदर ही दबोच लिया गया। अदालत के सामने उसने हृदय खोलकर भावुकता और अधीनता के स्वर में बयान किया कि जिसे वह अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करता है, वह मर रही है; वह उसके लिये दवा और फल ले जाना चाहता था, मगर पैसा पास न था। उसकी मृत्यु का विचार उसे पागल बनाए दे रहा था। उसे होश न था कि पैसों की तलाश में उसका हाथ कहाँ पड़ रहा है।

मैजिस्ट्रेट निहायत इतमीनान से अमीरा का बयान सुनता रहा। अमीरा उसी तरह बयान देता रहा, जिस तरह कोई मूर्ति के सामने अपनी बिपता कहता या प्रार्थना करता है। लेकिन मैजिस्ट्रेट मूर्ति की भाँति ही अविचल था। मैजिस्ट्रेट ने तजवीज़ लिखी, और इस आधार पर कि अमीरा अभ्यस्त चोर है, उसे दो साल सख्त क़ैद की सज़ा ठोक दी।

वियोग और विपत्ति ने अमीरा को संतोषी और सरल बना दिया था। क़ैद की मियाद ज़रा जल्द ख़त्म हो गई। जेलख़ाने से रिहा होकर अमीरा सीधा उस कोठरी पर पहुँचा, जिसमें ये दोनो रहा करते थे। मगर अब वहाँ उस कोठरी का निशान भी शेष न था। वहाँ अब किसी पूँजीपति का भव्य भवन खड़ा था। इधर-उधर और भी कई आलीशान इमारतें बन गई थीं। कल के उजाड़ मुहल्ले में आज कंचन बरस रहा था। अमीरा के पैर टूट गए। निराश होकर वह शफ़ाख़ाने की ओर चला; किंतु वहाँ भी उसकी प्रेयसी का पता-ठिकाना जाननेवाला कोई न मिला। और, न उनमें से कोई था, जिनको अमीरा ने वहाँ देखा था। समय की भी कैसी विचित्र गति है—हममें परिवर्तन हो जाने से संसार की प्रत्येक वस्तु कितनी जल्द बदल जाती है, दुनिया कैसे रूप धार लेती और कैसी अपरिचित बन जाती है। और, यदि हम नहीं बदलते, तो यह छद्मशील संसार, प्रतिपल परिवर्तित होते रहने पर भी, वह का वही बना रहता है। इस प्रत्यक्ष सत्य को अमीरा ने अपने अंतस्तल में भली भाँति अनुभव किया।

फिर अमीरा का जी अपने शहर में न लगा। वह अपने पेशे से भी उकता गया था। वह उसी रात कलकत्ते को रवाना हो गया। उसे कोल्हूटोले के एक मुसाफ़िरख़ाने में जाना था। जब वह बड़ा बाज़ार से निकल रहा था, तो उसकी आँखों के सामने एक सैलून कार जौहरी की एक बड़ी दूकान के सामने रुकी। अमीरा भौंचक रह गया। यह शानदार मोटरकार, यह रेशम की कामदार सुनहरी साड़ी, ये हीरे-मोती और चंदो! समस्त बहुमूल्य आभूषणों-सहित इस शान-शौकत और चंदो को उसका मस्तिष्क कल्पना में भी न ला सकता था। किंतु थी वह चंदो!

अमीरा ने जिस मुस्किराहट से उसका अभिवादन किया, वह उसकी इच्छा के प्रतिकूल थी। चंदो ने एक पल-भर के लिये सोचा, और बटुए से एक नोट निकालकर उसके हाथ में रख दिया। नोट देते हुए चंदो ने "१५, सेंट्रल ऐविन्यू" भी कहा। अमीरा स्तब्ध था। चंदो के वाक्य को वह कुछ भी न समझा। जौहरी की दूकान में जाते-जाते चंदो ने जिस दृष्टि से अमीरा को देखा, वह उस

निक्षेप-प्रवाह में जैसे गुम हो गया था। इस संक्षिप्त साक्षात्कार के उपरांत चंदो क्या सोचती और क्या अनुभव करती रही, और अमीरा क्या सोचता और क्या अनुभव करता रहा, यह मेरी-आपकी कल्पना से बाहर की बात है। अमीरा ने उस नोट को तावीज़ बना लिया, और कोठी पर पहुँचकर चंदो बहुत रोईं!

[पाँच]

अमीरा के-से व्यापार अथवा जीवन में आदमी ज़रा फ़िलासफ़र हो ही जाता है। उसने सोचा और समझा कि दुनिया एक जुआघर है, जिसमें प्रत्येक मनुष्य हर घड़ी एक खेल खेलता रहता है। कोई हारता है, कोई जीतता है। कोई नीचे से ऊपर जाता है, कोई ऊपर से नीचे आता है। अमीरा का एक दिल तो कहता था कि चंदो खेल खेलकर ख़ुद उससे ऊँची क्यों हो गई, और दूसरा दिल कहता था कि तेरी खातिर वह क्यों गढ़े में पड़ी रहती? तू ही उसके बराबर ऊँचा क्यों नहीं हो जाता?

इसके बाद अमीरा ने ज़िंदगी के खेल के गुर समझे। उसने देखा, दुनिया में चोरी ही सबका पेशा है। छोटा चोर चोर है, बड़ा चोर साहूकार। उसने खेल खेलने शुरू किए, और उसके दाँव कामयाब होने लगे। अमीरा को जल्दी मालूम हो गया कि कहाँ तो कलकत्ते की लाखों की आबादी में उसका जाननेवाला एक भी न था; लेकिन जब से वह जीतने लगा है, जब से वह ऊँचा होने लगा है, लोग इस पर बहसें कर रहे हैं कि उसे ऊँचा होने का हक़ कब है, कल तो यह जूतियाँ चटकाता आया था। लेकिन जब वह कुछ और ऊँचा हुआ, तो ऐसे लोग भी पैदा हो गए, जो उसे अपने ही धरातल पर रखना चाहते थे, जो उसे नीचा करने की फ़िक्र को अपना काम समझ बैठे थे। मगर अमीरा बराबर ऊँचा हो रहा था। अब ऐसे आदमियों का बाहुल्य था, जो उसके मकान की तारीफ़ करते और उसकी मोटर को सराहते थे। इसके बाद वह इतना ऊँचा हो गया कि सामूहिक प्रतिनिधि बनने की समस्त योग्यताएँ उसमें केंद्रित हो गईं। अब हर शख्स उसकी प्रतिष्ठा को अपना कर्तव्य समझ रहा था।

चंदो निरंतर अमीरा की प्रतीक्षा में रहती थी। उसने घर से निकलना बहुत कम कर दिया था। मगर अमीरा ने तय किया था कि चंदो से मिलेगा, तो अपनी मोटर में सवार होकर। लेकिन जब उसने मोटर ख़रीद ली, तो खयाल आया कि वह चंदो को कहाँ तलाश करे? उस दिन के चंदो के वे शब्द भी उसे याद न थे, बल्कि शायद उसे यह भी स्मरण न था कि चंदो ने अपना पता बताया था।

इसे सुयोग कहिए अथवा स्वर्ण-सुयोग कि अमीरा पहली बार चौरंगी के एक सिनेमा में जा रहा था, तो चंदो बाहर निकल रही थी। आँखें जो चार हुईं, तो अब चंदो को अपनी स्मरण-शक्ति केंद्रित करने में कठिनाई हुई। अमीरा ने उसी मुस्किराहट के साथ चंदो का अभिवादन किया, किंतु अब उसमें हार्दिक उल्लास का पुट था।

[छ]

चंदो ने सक्षेप में आप-बीती कह सुनाई कि अस्पताल से निकलने के बाद एक वेश्या ने उसे अपने यहाँ स्थान दिया। वहाँ एक बड़े सेठ का लड़का आया-जाया करता था। वह उसे अपने साथ कलकत्ते ले आया। छ महीने हुए, वह दिक़ का शिकार हो गया।

पाँच साल का बिछोह अमीरा और चंदो के प्रेम को कुंठित नहीं कर पाया था। और आज, जब कि परिवर्तित और विभिन्न परिस्थितियों में वे दोनो दंपति बन गए थे, उनका पारस्परिक प्रेम उतना ही प्रगाढ़ था। अलबत्ता अमीरा कभी-कभी उससे पूछा करता—"चंदो, प्रेम के जो पाँच बरस बिसर गए, वे कैसे मिलें?"

ज़मींदारी-प्रथा की प्राचीनता और शुक्लजी

[श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल् एल्० बी०]

श्री रामदत्तजी शुक्ल बहुत नाराज़ जान पड़ते हैं, क्योंकि उन्होंने सितंबर, ३८ की 'सुधा' में मेरे लेख का उत्तर देते हुए मुझे शाब्दिक बेंतों की बड़ी कड़ी सज़ा दे डाली है। अब तो यह कोशिश हो रही है कि क़ैदियों तक को वैसी सज़ा न दी जाय, मगर हम छोटे-मोटे ज़मींदारों के लिये शायद वैसी सज़ा जायज़ है! और, वह भी इतनी, जिसकी कोई हद नहीं! सन् २९ में मेरे एक लेख पर 'इलाहाबाद-लॉ-जरनल' के सुयोग्य संपादक ने एक कड़ा नोट दिया था। तब मैंने मुफ़स्सिल के एक साधारण वकील की हैसियत से उन्हें लिखा था—"भाई, हमारी पीठें बेंतों की मार की इतनी आदी होती जाती हैं कि दो-चार कम या ज्यादा का कोई असर नहीं होता।" आज वही बात एक साधारण ज़मींदार की हैसियत से मैं शुक्लजी से भी कहना चाहता हूँ।

पाठक ख़ुद सोचें कि क़िदवई साहब के ऐतिहासिक भ्रम और नई कांग्रेसी आज़ादी की चकाचौंधवाली बातें तो प्रांतीय एसेंबली में कही जा चुकी हैं, परंतु शिष्ट भाषा में, नहीं तो एसेंबली के स्पीकर श्रीपुरुषोत्तमदास टंडन-सरीखे व्यवस्था-प्रिय व्यक्ति बोलनेवाले की ख़बर लिए बिना न रहते। अब रही श्रीजवाहरलाल नेहरू की हाँ में हाँ मिलानेवाली बात, सो उसमें भी कोई अशिष्ट शब्द नहीं। हाँ, एक दुखी ज़मींदार के दुखी दिल से निकली हुई बात ज़रूर है। नेहरूजी ने अपनी अँगरेज़ी आत्मकथा के पृष्ठ ५८ पर छोटे ज़मींदारों की बड़ी तारीफ़ की है, और बताया है कि १०००) से कम मालगुज़ारी देने-

श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०

वाले ज़मींदारों ने राष्ट्र की बड़ी सेवा की है। यह भी बताया है कि वैसे ज़मींदारों की दशा बहुधा कृषकों से भी बुरी है। उन्होंने कहा है—"उन लोगों में बड़े अच्छे पुरुष, स्त्री और बालक हैं, जो थोड़ी शिक्षा से उत्तम नागरिक बनाए जा सकते हैं।" आज जब वही नेहरूजी सबकी हाँ में हाँ मिलाते हैं, तो क्या हमारा दिल नहीं दुखता? और, क्या यह सत्य नहीं कि जहाँ देखो, वहाँ ज़मींदारों को खुली गालियों से याद किया जाता है। अब तो शिकायत महात्माजी तक पहुँच गई है, और उन्होंने लिखा भी है कि यह नागरिक स्वतंत्रता (Civil liberty) नहीं, बल्कि अपराध-जनक स्वच्छंदता (Criminal license) है, और श्रेणी-युद्ध (Class War) की सीख देना उचित नहीं।

मैंने कभी ऐतिहासिक होने का दावा नहीं किया, और न वैसा कोई दावा उस लेख में है, जिससे शुक्लजी बिगड़ उठे हैं। मैंने तो एक स्वतंत्र और निष्पक्ष लेखक की पुस्तक के हवाले, पृष्ठ-संख्याओं-सहित, दे दिए हैं। उचित यह था कि मुझे बुरा-भला कहने के बजाय उन हवालों को पढ़कर कोई ठीक उत्तर दिया जाता। मैंने लेख में यह भी बता दिया था कि शुक्रनीति आदि के संस्कृत-उद्धरण भी उसी पुस्तक के फ़ुटनोट में लिखे हैं, तो फिर मेरे संस्कृत न जानने पर यह नाख़ुशी व्यर्थ है। यह ठीक है कि मैं संस्कृत नहीं जानता, पर आचार्य रामदेव पर तो यह आक्षेप नहीं हो सकता कि वह भी शब्द एवं शब्दार्थों से अनभिज्ञ हैं। मैंने तो सिर्फ़ उनकी गवाही पेश की थी, अपनी ओर से तो थोड़ा ही लिखा था।

जब मैंने स्वयं लिख दिया था कि वैदिक काल के विषय में मुझे कोई प्रामाणिक ग्रंथ पढ़ने को नहीं मिला, तो फिर मेरी अनभिज्ञता पर अप्रसन्न होना गुरु के लिये ठीक न था। 'मुख्य'-शब्द तो अब भी 'मुखिया' के रूप में मौजूद है। क्या यह भी ग़लत है कि 'नंबरदार' और 'मुक़दम' के वही अर्थ हैं? फिर जहाँ स्पष्ट इतिहास नहीं मिलता, वहाँ आजकल उन्हीं रीतियों पर जो काम करनेवाले मिलते हैं, उनसे पदों और नामों की समानता का अनुमान कर लेना क्या अनुचित है? 'घर का मुखिया', 'गाँव का मुखिया', ये शब्द तो घर-घर में सुनाई पड़ रहे हैं।

ब्राह्मण-ग्रंथों के समय के संबंध में भी उसी पुस्तक के आधार पर लिखा गया था, अतः उचित था कि आचार्य रामदेव-कृत इतिहास पढ़कर उत्तर दिया जाता।

यह तो स्पष्ट ही है कि मनुस्मृति सबसे पुरानी स्मृति है, जो महाराज मनु के समय में बनी, और वही पहले राजा हुए, जिनके नाम से मन्वंतर चला। अब तनिक सोचिए कि 'वेद-मंत्र-संहिता' ही वैदिक साहित्य नहीं बल्कि ब्राह्मण-ग्रंथ भी अधिकतर उन्हीं की आध्यात्मिक एवं आधिदैविक और यज्ञ अथवा कर्मकांड आदि की दृष्टि

से की गई व्याख्याएँ हैं। उनमें अन्य बातों के संक्षिप्त रूप या संकेत-मात्र ही मिलेंगे। हाँ, स्मृति-ग्रंथों में सामाजिक नियमों एवं व्यवस्थाओं का ज़िक्र अवश्य है। इसी से वहाँ प्रजातंत्र आदि का स्पष्ट उल्लेख मिलेगा। मेरा तो विचार है कि मनुस्मृति में 'वेद' और 'ब्राह्मण'वाले कालों की ही बात है, और उसी काल के शासन-विधान और सभ्यता आदि का वर्णन है। हाँ, यह और बात है कि कतिपय विद्वान् वर्तमान मनुस्मृति को प्राचीन मनुस्मृति का रूपांतर ही मानते हैं। अस्तु। तो क्या 'ग्राम-पति' के मानी 'गाँव का मालिक' नहीं? क्या यहाँ भी कोई मेरा निजी कोष है? 'भूपति' में तो वैसे ही अर्थ हैं। आख़िर अब इसमें क्या शक रह जाता है कि गाँव का मालिक कोई था अवश्य? ज़मींदार-शब्द तो फ़ारसी-भाषा का है, फिर वहाँ कैसे आता? क्या मनुस्मृति में यह नहीं लिखा कि उसे अपने और अपने संबंधियों के गुज़ारे के लिये ज़मीन जोतने का हक़ है? इसी को हम आजकल 'सीर' कहते हैं।

'शुक्र-नीति' के हवाले तो और भी साफ़ थे। मैंने तो सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक की ही राय लिख दी थी कि वह बड़े ज़ोरों से यह कहता है कि उस समय जमींदारी-प्रथा थी, रैयतवारी नहीं। कम-से-कम आचार्य रामदेवजी तो 'धनिक' को बनिया नहीं समझते, बल्कि साफ़ कहते हैं कि वह 'कृषक' था, और वह भी अपने और अपने कुटुंब के लिये ज़मीन जोतने की आज़ादी रखता था।

खेद है, उत्तरवाले लेख में उस हवाले का ज़िक्र नहीं! अन्यथा पाठकों की समझ में स्वयं ही सब कुछ आ जाता। भाई! वे सरकारी नौकर, जो भूमि-कर वसूल करते थे, और धनिक अलग लोग थे, यह बात भी वहाँ स्पष्ट है। फिर अगर इसके समर्थन में मैंने श्री काशजी की भी राय पेश कर दी, तो क्या हर्ज है? कम-से-कम ऐसे सम्मानास्पद कांग्रेसी नेता ने 'धनिक' या 'ग्रामपति' को "किराए के ताँगेवाले" (क़िदवई सहब का वचन) तो नहीं कहा।

मैंने अपना संक्षिप्त लेख केवल इसीलिये लिखा था कि ये तीन ग़लतफ़हमियाँ दूर हो जायँ—(१) ज़मींदारी सिर्फ़ अँगरेज़ी राज्य से शुरू हुई, (२) ज़मींदार को अपनी ज़मीन भी जोतकर सीर करने का अधिकार नहीं और (३) ज़मींदार सिर्फ़ किराए का ताँगेवाला या ठेकेदार है।

सर जॉन शोर ने भी बड़े ग़ौर के बाद यही राय क़ायम की थी कि ज़मींदारी का सिलसिला आंग्ल शासन से पहले का है, और बहुत-से विद्वानों की भी यही राय है। फ़तेहपुर ऐसा स्थान है, जहाँ न कोई अच्छी लाइब्रेरी है, न किसी के पास अधिक पुस्तकें। इसीलिये मुझे तो बहुधा अपनी स्मृति पर ही भरोसा करना पड़ता है, और यथासमय मैं यह बात लिख भी देता हूँ

ऐसी दशा में पुस्तकों के हवाले-पर-हवाले कहाँ से लाऊँ ?

अगर मनुस्मृति और शुक्र-नीति में किसी ऐसे व्यक्ति का उल्लेख है, जो गाँव का मालिक और खेतिहर था, और जिसे सीर करने तथा लगान आदि वसूल करने का हक़ था, और जिससे, न कि असामी से, राजा का सीधा संबंध था, तो क्या यह ज़मींदारी-प्रथा नहीं ? शब्द भले ही कुछ हों।

शुक्लजी ने अपने लेख में उस उपमा का उल्लेख नहीं किया, जिसमें शुक्राचार्य ने लिखा है कि राजा को धनिक से अपना अंश इस तरह लेना चाहिए, जिस तरह माली फूल-फल तोड़ता है कि वृक्ष की हानि न हो, न कि उस कोयले के व्यापारी की तरह, जो लकड़ी को ही जला डालता है ! यह उपमा शुक्लजी या हमारे कितने ही कांग्रेसी नेताओं को पसंद न हो, परंतु अकबर के मंत्री और 'आईन-अकबरी'-जैसी सुप्रसिद्ध पुस्तक के रचयिता अबुलफ़ज़ल को तो इतनी पसंद आई थी कि उसने भी उसी का हवाला दिया है, और उसी के आधार पर अकबरी राज्य के लगान और मालगुज़ारीवाले विधान का निर्माण हुआ है। मेरे ही घर में दो-तीन सौ बरस पुराने 'फ़र्मान' और 'पर्वाने' मौजूद हैं, जिनमें 'मालगुज़ार', 'ताल्लुक़ा', 'माफ़ी' आदि शब्द अंकित हैं। किसी विद्वान् लेखक ने 'लीडर' में लिखा था कि तुलसीदासजी के टोडर-विषयक इस चरण से—"चार गाँव को ठाकुरो मन को महा महीप"—भी मालूम होता है कि उस समय ज़मींदारी-प्रथा थी। मुझे तो 'गाँव को ठाकुरो' स्मृति के 'ग्रामपति' का ही ठेठ अनुवाद-सा जान पड़ता है, जिससे साफ़ पता चलता है कि मिल्कियत का हक़ तब भी था। बारह ऑक्टोबर के 'लीडर' में श्रीमान् आर० पी० खोसलाजी, प्रधान अखिल भारतीय इतिहास, कांग्रेस (मुग़ल-विभाग) की वक्तृता का संक्षिप्त उल्लेख है, जिससे स्पष्ट है कि अँगरेज़ों ने लगान-मालगुज़ारी का विधान लगभग जैसे-का-तैसा ही मुग़ल-समय के विधान से उद्धृत किया है।

शुक्लजी का यह कहना कि मैंने अधिक विस्तृत क्यों नहीं लिखा, और भूमि-कर-संबंधी संपूर्ण विधान क्यों नहीं बताया, बिलकुल बेकार है। एक छोटे लेख में संकेतों के सिवा और हो ही क्या सकता है ? हाँ, यह कह सकता हूँ कि मैंने जान-बूझकर किसी बात को छिपाया नहीं। मेरे ऐतिहासिक न होने और बहुत जानकारी न रखने की बात कही जा सकती है, परंतु इससे क्या वास्ता ? क्योंकि मैंने अपना लेख तो आचार्य रामदेव-कृत इतिहास के आधार पर ही लिखा था।

सृष्टि-रचना में प्रयोजन

[श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०]

(गतांक से आगे)

यहाँ ड्रमंड ने दो संज्ञाओं की ओर संकेत किया है—एक जहाज़ के यात्री और दूसरा कप्तान। जहाज़ का मूल्य दोनो की अपेक्षा से है। यात्री जाना चाहते हैं, और कप्तान ले जाना चाहता है। यात्री समझते हैं, हमें कहाँ जाना है, और कप्तान समझता है, मुझे कहाँ ले जाना और किस प्रकार ले जाना है। यदि यात्री न हों, तो जहाज़ का कुछ अर्थ नहीं; और यदि कप्तान न हो, तो भी जहाज़ का कुछ अर्थ नहीं। जहाज़ को ये ही दोनो संज्ञाएँ सार्थक बनाती हैं। परंतु एक बात याद रखनी चाहिए। यद्यपि यात्रियों के लिये भी जहाज़ का अर्थ है, और कप्तान के लिये भी, परंतु उन दोनो के लिये एक अर्थ नहीं। उन दोनो के कारण जहाज़ की सार्थकता है, समानार्थकता नहीं। यात्री के लिये जहाज़ का वही अर्थ नहीं, जो कप्तान के लिये। बच्चे के लिये रोटी का वही अर्थ नहीं, जो माता के लिये।

इस विषय में वैज्ञानिकों (Scientist), वैज्ञानिक दार्शनिकों (Scientist philosophers), दार्शनिकों (Philosophers) और धार्मिक पुरुषों ने भी भूल की है, और यह भूल सहस्रों भ्रांतियों का कारण है। वस्तुतः बहुत-सा झगड़ा और झमेला इसी भूल के कारण है। प्रयोजन के इन दो भिन्न-भिन्न अर्थों पर दृष्टि रखनी पड़ेगी, यदि हम भूलभुलैयों से बचना चाहते हैं। हमारे राजमार्ग से इधर-उधर इतने छोटे-छोटे मार्ग छूटते हैं कि थोड़ी-सी ही भूल-चूक हमारे परिश्रम के लिये घातक हो सकती है, और हम बहक सकते हैं।

मैं कह रहा था, जहाज़ के दो प्रयोजन हैं—एक यात्री के लिये, दूसरा कप्तान के लिये। यात्री के लिये जाना और कप्तान के लिये ले जाना। यात्री का यात्रित्व जाने में है, कप्तान का कप्तानत्व ले जाने में। यात्री में ज्ञान है, परंतु कप्तान की अपेक्षा अत्यंत अल्प। वह न जहाज़ को समझता है, न समुद्र को। वह क्या जाने कि जहाज़ में कितनी कलें हैं? वह क्या समझे कि सामुद्रिक जंतु कैसे होते हैं, जिनसे जहाज़ का बचाना आवश्यक है? उसे क्या मालूम कि तूफ़ान किस चिड़िया का नाम है? परंतु कप्तान को इन सब बातों का पूर्ण ज्ञान है, वह पुर्ज़े-पुर्ज़े से जानकार है। वह समुद्र के स्थान-स्थान को समझता है। यही भेद है यात्री और कप्तान में। और, इसी आधार पर उनके प्रयोजनों में भेद है। आइए, इसकी कुछ खोज करें।

विज्ञान (साइंस) इस विषय में हमारी सहायता नहीं कर सकता। परंतु साइंस की हम उपेक्षा भी नहीं कर सकते। साइंस भी तो हमारे 'जहाज़' का एक अंग है। जिन्होंने साइंस की उपेक्षा की, उनकी किश्ती मानो मँझधार में ही डूब गई। प्रायः बहुत दिनों से धार्मिक क्षेत्र में साइंस को कोसने की प्रथा चल पड़ी है। धर्माध्यक्ष लोग साइंस को ठुकराकर अपना काम निकालना चाहते हैं। परंतु इस मनोवृत्ति ने उन्हें बड़े धोखे में डाल रक्खा है,

और किसी अंश में तो उन्हें धोखेबाज़ भी बना दिया है। साइंस को कोसनेवाले बहुत हैं। परंतु ऐसा कोई माई का लाल नहीं, जो साइंस की असंख्य सेवाओं से लाभ न उठाता हो। साइंस को गालियाँ देनेवाले संत, महात्मा, यती, साधु रेल में चलते और तार द्वारा संदेश भेजते हैं; मोटर में बैठकर मोटर को कोसने जाते हैं; हवाई जहाज़ पर चढ़कर उन लोगों के परिश्रम की निंदा करने जाते हैं, जिनके तप और त्याग के कारण यह अपनी इस यात्रा को इतनी शीघ्रता से पार कर सके। परंतु साइंस के मूल्य की एक सीमा है। और, आज के विषय में जो हम मीमांसा कर रहे हैं, उसमें भी एक सीमा है। केवल भौतिक शास्त्र (Physics), रसायन (Chemistry), शरीर-शास्त्र (Physiology) या जीवन-शास्त्र (Biology) हमारी सहायता नहीं कर सकते। ये विद्याएँ हमारे मार्ग की ओर इंस्थे (Signal) का काम करती हैं। ये संकेत कर सकती हैं। परंतु वास्तविक मार्ग तो आगे है। हमारी खोज त्र्यंगी (three fold) होनी चाहिए। यहाँ विज्ञान, विज्ञान-दर्शन और स्वानुभूति का समन्वय होना चाहिए। यह वह स्थल है, जहाँ साइंस, फ़िलासफ़ी, और धर्म मिल जाते हैं। यदि ये तीनो मैत्री करके सहयोग नहीं दे सकते, तो सृष्टि के प्रयोजन का पता लगाने में हम सदा विफल रहेंगे। मैक्स प्लैंक कहता है—

(1) The fact is that there is a point, one single point in the immeasurable world of mind and matter where science and therefore every causal method of research is inapplicable, not only on practical grounds but also on logical grounds, and will always remain inapplicable. This point is the individual ego. It is a small point in the universal realm of being; but in itself it is a whole world embracing our emotional life, our will and our thought. (Where is Science going? p 161)

(2) Science thus brings us to the threshold of the ego and there leaves us to ourselves. Here it resigns us to the care of other hands. (p. 167)

(3) Mankind has need of fundamental postulates for the conduct of everyday existence, and this need is far more pressing than the hunger for scientific knowledge. A single deed often has far more significance for a human being than all the wisdom of the world put together. And therefore there must be another source of guidance than mere intellectual equipment. (p. 167)

(4) The law of causation is the guiding rule of science; but the categorical Imperative—that is to say, the dictate of duty is the—guiding rule of life. (p. 167)

(5) Here intelligence has to give place to character, and scientific knowledge to religious belief. (p. 168)

(6) The religious element in his nature must be recognized and cul-

tivated if all the powers of the human sort are to act together in perfect balance and harmony. (p. 169)

(१) वस्तुतः मस्तिष्क तथा प्रकृति के अपरिमेय जगत् में एक बिंदु है, जहाँ विज्ञान तथा अन्वेषण की प्रत्येक कारण-संबंधी रीति लागू नहीं होती। न केवल व्यवहार के अनुसार, प्रत्युत तर्क के अनुसार भी। और, ये कभी लागू न हो सकेंगे। यह है 'अहंतत्त्व'। यह संज्ञा के विश्व में एक छोटा-सा बिंदु है। परंतु निज रूप से यह भी एक पूर्ण विश्व है, जिसमें हमारा भावुक जीवन, हमारी इच्छा-शक्ति तथा हमारे विचार समन्वित हैं।

(२) इस प्रकार साइंस हमको 'अहंतत्त्व' के द्वार तक ले जाता है, और वहाँ हमें अकेला छोड़ देता है। यहाँ वह हमें दूसरे के हाथों में सुपुर्द कर देता है।

(३) मनुष्य को दैनिक जीवन के संचालन के लिये मौलिक सिद्धांतों की आवश्यकता है। यह आवश्यकता विज्ञान की भूख से भी अधिक कर्कश है। मनुष्य के लिये कभी-कभी एक घटना समस्त संसार की समस्त बुद्धिमत्ता से भी अधिक मूल्य रखती है। इसलिये इसके पथ-प्रदर्शन के लिये केवल विज्ञान के अतिरिक्त अन्य साधन भी चाहिए।

(४) साइंस का सिद्धांत है कारण-वाद। परंतु जीवन का सिद्धांत है कर्तव्य-परायणता।

(५) यहाँ बुद्धि को आचार का लोहा मानना पड़ता है, और विज्ञान को धार्मिक श्रद्धा का।

(६) यदि मानवीय आत्मा की समस्त शक्तियाँ पूर्ण सहयोग तथा समन्वय के साथ काम करना चाहें, तो मानना पड़ेगा कि धर्म मनुष्य का प्राकृतिक गुण है, और इसकी संवृद्धि होनी चाहिए। (प्लैंक का 'विज्ञान किधर जा रहा है?' पृ० १६१, १६७, १६८, १६९)

यहाँ मैक्स प्लैंक-जैसे बड़े वैज्ञानिक के शब्दों में साइंस से आगे बढ़ने की ज़रूरत है। आगे है ego और आत्मा। प्राचीन ऋषि ने भी तो यही कहा था—

"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः।"

इत्यादि। क्योंकि आत्मा के लिये ही तो यह सब खेल था। उसे कैसे भुला सकते हैं। यात्री के लिये ही तो जहाज़ था, उसकी उपेक्षा कैसे की जा सकती है? प्रयोजन है आत्मा की अपेक्षा से, और आत्मा को ही देखना चाहिए।

आइए, इस विषय में कुछ वेद की भी सहायता लें। वेद में इस विषय में बहुत कुछ है। केवल एक वाक्य देना पर्याप्त होगा—

स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः। (यजुर्वेद ४०।८)

इस मंत्र में हमें पाँच शब्दों पर विशेष ध्यान देना है—(१) स्वयंभूः, (२) शाश्वतीभ्यः समाभ्यः, (३) अर्थान्, (४) याथातथ्यतः और (५) व्यदधात्।

इन पाँच शब्दों का अर्थ समझने के लिये हमें एक दृष्टांत की आवश्यकता है। और, इस काम के लिये ड्रूमंड के जहाज़ का दृष्टांत बहुत उपयुक्त होगा। जहाज़ है, यात्री हैं, कप्तान है, एक नियत स्थान है, जहाँ जहाज़ को ले जाना है।

यह सृष्टि भी एक यात्रा है। भौतिक पदार्थ जहाज़ है। एक कप्तान है, जिसे वेदों में स्वयंभू कहा है, अर्थात् वह स्वतः पूर्ण है। उसमें कोई कमी नहीं। वह यात्रियों, यात्रा और यात्रा के साधनों को भी समझता है। वह पूर्णांश है। उसमें न साधन की कमी है, न ज्ञान की और न शक्ति की।

दूसरे हैं यात्री। इन्हें वेद में "शाश्वतीभ्यः समाभ्यः" कहा गया है। 'समा' का अर्थ है 'प्रजा' या आत्माएँ, जो चेतनता की अपेक्षा से उस स्वयंभू से समता रखती हैं। वे भौतिक पदार्थों के समान जड़ नहीं। उनमें ज्ञान है। यात्री जानता है कि कहाँ जाना

है। ये आत्माएँ भी इच्छा रखती हैं। अपनी माँगों को समझती हैं। परंतु कप्तान के बराबर नहीं। ये अल्प हैं। इनका ज्ञान थोड़ा है, और इनमें अपूर्णताएँ बहुत हैं। यात्री में सबसे भारी अपूर्णता तो यह है कि वह जहाँ पहुँचना चाहता है, वहाँ नहीं है। दूसरी अपूर्णता यह है कि उसके पास साधन नहीं हैं। तीसरी अपूर्णता यह है कि पूरा ज्ञान नहीं है। कप्तान में ये तीनो बातें हैं। जहाँ यह यात्री पहुँचना चाहता है, वहाँ उसकी पूरी पहुँच है। पहले से ही वह वहाँ वर्तमान है। जहाँ से ले चलना है, जहाँ होकर ले चलना है, और जहाँ को ले चलना है, ये सब उसके अँगूठे के नीचे हैं। उसके ज्ञान में हैं। उसके पास सब साधन हैं। यही तो स्वयंभू का स्वयंभूपन है। यही तो ईश्वर का ईश्वरत्व है।

तीसरा है जहाज़ और उसके संबंधी पदार्थ। इन्हें वेद ने अर्थ बताया। अर्थात् ये ही तो यात्रा के साधन हैं। ये अर्थ न होते, तो समस्त यात्रा ही निरर्थक होती। संसार के जितने पदार्थ हैं, उनका अर्थ तो जीवों की अपेक्षा से ही लगेगा। स्वयं इनका क्या अर्थ। मेरी आँख उस समय तक आँख है, जब तक मैं उससे देखता हूँ। और, यह सूर्य उस समय तक सूर्य है, जब तक मैं इसकी सहायता से अपनी आँख द्वारा देख सकता हूँ। यदि मैं न रहूँ, तो क्या मेरी आँख का मूल्य और क्या सूर्य का? आँख को मैं अर्थवान् बनाता हूँ, सूर्य को मैं अर्थवान् बनाता हूँ। आँख मेरे लिये है, मैं आँख के लिये नहीं। सूर्य मेरे लिये है, मैं सूर्य के लिये नहीं। इस प्रकार संसार की समस्त सामग्री, तिनके से लेकर ब्रह्मांड तक, मेरे या मुझ-जैसी किसी अन्य आत्मा के लिये है। याद रखिए, वेद में स्वयंभू एक वचन है, और 'समाभ्यः' बहुवचन। ईश्वर एक है, और जीव नाना (असंख्य) हैं। ईश्वर ने इन्हीं सब जीवों के लिये सृष्टि उत्पन्न की है। अर्थात् इन्हीं की अपेक्षा से प्रत्येक वस्तु में (अर्थान् व्यदधात्) मूल्यों को स्थापित किया है। पदार्थ की पदार्थता या अर्थता इन्हीं जीवों की अपेक्षा से है। वेद के इस कथन से तीन बातें स्पष्ट हो जाती हैं—

(१) सृष्टि ईश्वर के लिये नहीं है। वह सृष्टि को बनाता है। वह उसका नियंता है। परंतु अपने लिये नहीं, उसे अपने लिये किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। वह सर्वत्र व्यापक, सर्वज्ञ और सर्वानंदमय है। अर्थात् उसमें कोई त्रुटि, कोई आवश्यकता या कोई अपूर्णता नहीं।

(२) सृष्टि जीवों के लिये है। ये जीव 'शाश्वती' अर्थात् अमर, अजर और नित्य हैं, उसी प्रकार जैसे ईश्वर। इसीलिये इनका नाम 'समा' (शाश्वतीभ्यः समाभ्यः) है। परंतु इनमें कमी है। इन्हें ज़रूरत है। इसलिये इन्हीं की ज़रूरत को पूरा करने के लिये सृष्टि रची जाती है।

(३) ये जीव अनेक हैं। ये अनेक जीव सहयोग द्वारा ही यात्रा को पार कर सकते हैं। इस सहयोग का नाम ही तो कर्तव्य या धर्म है।

यह संसार-रूपी जहाज़ माल ढोने का जहाज़ नहीं है। यदि इसमें केवल गेहूँ के बोरे, मेज़ या बाइसिकिलें ही भरी होतीं, तो कप्तान ताला डाल देता, और यात्रा के अंत में इन्हें निकाल लेता। ये यात्री हैं। इनमें चेतनता है। इनके आराम का प्रश्न है। फिर इन यात्रियों को स्वयं भी आचार-व्यवहार की स्वतंत्रता है। ये आपस में बात कर सकते हैं। ये लड़ सकते हैं, और इस प्रकार यात्रा में विघ्न डाल सकते हैं। ये एक दूसरे को घायल कर सकते हैं, और इस प्रकार कप्तान इन्हें बीच के स्टेशनों पर उतार सकता है कि वहाँ ये स्वस्थ हो सकें। ये स्वयं बीमार पड़ सकते हैं। ये कप्तान की आज्ञाओं का भंग करके अपनी यात्रा में बाधा डाल सकते हैं।

यदि एक ही यात्री होता, तो बहुत-से झमेले बच जाते। यदि यात्री ज्ञान-शून्य या जड़ होता, तो शायद यात्रा की ज़रूरत भी न पड़ती। यदि अकेला कप्तान ही होता, तो भी ज़रूरत न होती। इस समस्त यात्रा में इन सबका मेल है। और, इसी मेल का नाम सृष्टि है।

सृष्टि के दो मुख्य अंग हैं—एक में कारण-कार्य का नियम अटलता से काम कर रहा है, दूसरे में मानवीय स्वतंत्रता कार्य करती है। ईश्वर का नियंत्रण और मानवीय स्वतंत्रता दोनो में परस्पर विरोध प्रतीत होता है। अर्थात् यदि ईश्वर का नियंत्रण कारण-कार्य-नियम के अनुसार अटल है, तो सभी चीज़ों पर होगा। उन चीज़ों में मनुष्य भी शामिल है, फिर मनुष्य की स्वतंत्रता का क्या अर्थ? और, यदि मनुष्य स्वतंत्र नहीं, तो आचार-शास्त्र का क्या अर्थ? आचार-शास्त्र के न रहने से सृष्टि का एक बड़ा भाग ही व्यर्थ चला जाता है। सृष्टि की प्रयोजनता मानवीय विकास में है। विकास का मुख्य अंग स्वतंत्रता है। यह एक ऐसी गुत्थी है, जिसके सुलझाने के अनेक उपाय सोचे गए हैं।

कुछ लोगों ने, जिनमें धर्म-संस्थापक भी शामिल हैं, मनुष्य को आरंभिक स्वतंत्रता से वंचित कर दिया। अर्थात् जिस प्रकार वेद जीव को एक नित्य, स्वतंत्र संज्ञा मानते हैं, उस प्रकार वे नहीं मानते। उनका मत है कि जैसे ईश्वर समस्त सृष्टि को बनाता है, उसी प्रकार जीव को भी बनाता है। मानो जहाज़ का कप्तान जहाज़ को भी बनावे और यात्रियों को भी। उन्होंने समझा, इस प्रकार उलझन कम हो जायगी। परंतु उलझन घटने के बजाय बढ़ गई। क्योंकि यदि ईश्वर जीव को भी बनाता है, और अन्य चीज़ों को भी, तो इस प्रश्न का क्या उत्तर है कि सृष्टि के बनाने का क्या प्रयोजन है? यदि ईश्वर पूर्ण है, तो त्रुटि-हीन है। त्रुटि-हीन है, तो सृष्टि की आवश्यकता नहीं। यदि उसे सृष्टि की आवश्यकता है, तो वह पूर्ण नहीं। जीव थे नहीं, तो यह कहना कि उनके लिये सृष्टि बनाई, निरर्थक अपलाप-मात्र है। यह प्रश्न ऐसा है, जिसका उत्तर ईसाई, मुसलमान आदि इन सिद्धांतों के माननेवालों के पास है ही नहीं। उनके सामने यह शंका बहुत दिनों से आती रही। परंतु उन्होंने भूल से यह समझा कि ईश्वर को जीव का बनानेवाला न मानने से ईश्वर की हतक (अनादर) होगी। वे भूल गए कि ईश्वर की हतक इसमें है कि वह जीव को बनावे, और ऐसा त्रुटि-पूर्ण बनावे कि सदा लड़ाई-झगड़ा होता रहे। नास्तिकों का ईश्वर के ऊपर यही लांछन है कि वह बनाता भी है, तो लड़ने के लिये, दुख देने के लिये, पाप करने के लिये और फिर उन्हीं को दंड देने के लिये। एक मुसलमान फ़ारसी-शायर ने क्या अच्छा कहा है—

दरमियाने - क़अ्रे - दरिया तख़्त - बंद करदई;
बाज़ में गोई कि दामन तर मकुन, हुशियार बाश।

अर्थात् पहले तो तूने मुझे पानी में डुबो दिया, अब कहता है कि भीगे मत, सावधान रह।

एक उर्दू-कवि कहता है—

दर्दे-दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को;
वरना ताअ़त के लिये कुछ कम न थे कर्रोबियाँ।

अर्थात् मनुष्य सहानुभूति के लिये बनाया गया है। ईश्वर को मनुष्य-निर्माण अपनी सेवा के लिये इष्ट न था। उसके पास सेवार्थ तो फ़रिश्ते थे ही।

कवि आगे नहीं बढ़ता। यदि मनुष्य के निर्माण में ईश्वर का निज प्रयोजन नहीं, तो पहले मनुष्य को बनाना, फिर उसके पीछे दर्दे-दिल का पचड़ा लगाना सर्वथा अनुचित है।

कुछ लोगों का मत है कि जीव को ईश्वर ने बनाया अवश्य, परंतु उसी के हित के लिये उसे पीछे से स्वतंत्र कर दिया। जीव अनादि नहीं, परंतु अनंत अवश्य है। बना हुआ है, परंतु है स्वतंत्र।

सादि जीव को अनंत मानना एक विचित्र फ़िलासफ़ी है, जिसका कोई दृष्टांत भी नहीं मिलता। इसे कल्पना-मात्र कह सकते हैं। पहले बनाकर फिर स्वतंत्र कर देने से तो ईश्वर का लांछन दूर नहीं होता, क्योंकि स्वतंत्रता ही पाप-पुण्य और दुःख-सुख की व्यवस्था का आधार है। और, इससे सृष्टि-निर्माण में ईश्वर का प्रयोजन भी नहीं जान पड़ता।

कुछ लोगों ने इससे बचने के लिये एक उपाय सोचा था। उनका मत है कि जीव अनादि और अनत भी है, और कर्म करने में स्वतंत्र भी। परंतु सृष्टि का बनानेवाला कोई ईश्वर आदि नहीं। सृष्टि स्वभाव से चली आ रही है, और जीव उसमें अपना विकास कर रहा है। यह उपाय देखने में तो सुंदर मालूम होता है, परंतु यदि गहराई में जाइए, तो इसमें एक मुख्य अंग का सर्वथा अभाव है। जड़ प्रकृति से यह आशा रखनी कि जीव अपने प्रयोजन के लिये सृष्टि में कार्य करे, और वह उसके इस प्रयोजन के साधन में उस प्रकार सहायता दे, जिस प्रकार इस समय दे रही है, सर्वथा दुस्तर है। हम ऊपर कह चुके हैं कि प्रयोजन के लिये ज्ञान की आवश्यकता है, और प्रयोजन की सिद्धि के लिये पूर्ण ज्ञान की। जीव पूर्ण ज्ञानी तो है नहीं, अन्यथा उसमें सृष्टि की आवश्यकता न होती। अल्प ज्ञानी होने से उसे उस पूर्ण ज्ञानवाली सत्ता की आवश्यकता है। यह कैसा तमाशा है कि मेज़ के लिये तो बनानेवाले बढ़ई की भी ज़रूरत है, और प्रयोग करनेवाले के प्रयोजन की भी, परंतु सूर्य और चंद्र के लिये किसी की नहीं। यदि जड़ पदार्थ किसी प्रयोजन के लिये है, तो यह भी बताना चाहिए कि उस प्रयोजन की सिद्धि किसके नियंत्रण से होती है। यदि आटा स्वयं रोटी नहीं बन सकता, तो खेत में विद्यमान मिट्टी के कण गेहूँ कैसे बन सकते हैं? यदि स्वभाव ही समस्त सृष्टि की प्रत्येक घटना का कारण है, तो स्वभाव की शृंखला बीच में टूट क्यों जाती है! जिस स्वभाव ने रुई का अंकुर उगाया, और वृक्ष को बड़ा करके कपास के गुच्छे लटकाए, वह स्वभाव आगे स्वयं ओटने, कातने और कपड़ा बनने में क्यों सहायक नहीं होता।

(आगामी अंक में समाप्य)

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र
जगत्-विख्यात
Registered.　　रजिस्टर्ड
'कौनटैक्स'
इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता, जो स्त्रियाँ गर्भ-धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'कौनटैक्स' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं।
कौनटैक्स नं० १—जब तक इसका सेवन रहेगा, गर्भ स्थापित नहीं होगा। सेवन बंद करने पर गर्भ स्थापित हो सकता है। क़ीमत २॥), डाक-ख़र्च ।=)
कौनटैक्स नं० २—मासिक धर्म पर दवा सेवन करने से चार वर्ष तक गर्भ स्थापित नहीं होगा। क़ीमत ५), डाक-ख़र्च ।≈)
पता—आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

साक़ी से

[साहित्याचार्य पं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी]

लाना - लाना देना साक़ी, तेरी मादक है यह हाला;
प्यासे के होंठों से साग़र तू लगा बना दे मतवाला।
दल बाँध दौड़ते आए हैं कितने ही तेरी मधुशाला;
अरमान - भरे दिल लाए हैं, आए हैं पीने को हाला।
देना, मुझको ऐसी देना, सब भूलूँ अग जग के नाते;
दुनियावालों को भूल सकूँ, जो रहे तड़पते - तड़पाते।
लिखने-पढ़ने से क्या है, जब इतना भी जान न पाए हैं;
किसने भेजा जगतीतल पर ? हम कौन कहाँ से आए हैं ?
इस मदिरालय के मालिक को भूलें न ज़रा हम, याद रहे;
सुख-दुख झेलें जग खेल समझ, बरबाद न हों, दिल शाद रहे।
पंडित, मानी, आचारी भी जो कर्म-कांड में रहे लगे;
वे भी छिप-छिपकर आए हैं; देना ऐसी, दुख-द्वंद्व भगे।
हम चाह रहे उस मदिरा को तेरे हाथों, देना साक़ी!
चढ़ जाय नशा ऐसा, न रहे मैं-तू का झगड़ा ही बाक़ी।
लाली ऐसी हो आँखों में, बस रहे चतुर्दिक तू साक़ी!
दिलबर में दिल ऐसा उलझे कि रहे न दुई की बू बाक़ी।
ओछे पीनेवालों से क्या बहके हैं; इन्हें बहकने दो;
बकनेवालों से क्या निसबत, बकते हैं, इनको बकने दो।
जग निंदा करता, करने दो, है लोक-लाज का ध्यान किसे ?
वह विधि-निषेध माने क्या, हो प्रिय मिलने का अरमान जिसे ?
साक़ी, तूने औरों को ये प्याले - पर - प्याले दे डाले;
हम देख तुझे छक रहे ख़ूब, बे-पिए बन रहे मतवाले।
हाँ, प्यास बढ़ी यह पीने की, ये होंठ सूखते जाते हैं;
देना साग़र हमको भी, अब है सब्र, न हम घबराते हैं।

पूज्यपाद श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी

[श्रीयुत विद्यानंद]

परमहंस श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज के पट्ट शिष्य पूज्यपाद श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी ने, कुछ दिनों की सामान्य बीमारी के पश्चात्, शुक्रवार ३ दिसंबर, १९३७ को, ११-१५ बजे रात्रि को, लाहौर में, अपना नश्वर शरीर परित्याग कर दिया। उनका तेजोमय शरीर तथा गंभीर वाणी भूतकाल की बातें हो गई। उनके निःस्वार्थ कार्य तथा राम के संदेश का व्यावहारिक जीवन स्मृति-मात्र रह गए। स्वामीजी के देहावसान से हमारा पिता और हितैषी लोप हो गया। धार्मिक संसार में उनकी कमी पूरी नहीं हो सकती। यदि किसी ने राम के 'सफलता के रहस्य' को व्यावहारिक रूप में परिणत किया है, तो वह नारायण ही थे। निरंतर कार्य, आत्मबलिदान, सार्वभौमिक प्रेम, निर्भयता और स्वावलंबन, इन सबकी वह साक्षात् मूर्ति थे। ऐसी मूर्तियाँ संसार में बहुत कम आती हैं। और, जब वे यहाँ से प्रस्थान करती हैं, तो संसार में एक स्थान रिक्त हो जाता है, जिसकी पूर्ति असंभव हो जाती है।

स्वामीजी ने, जिनका पूर्वाश्रम का नाम लाला नारायणदास था, सन् १८७४ में, अमृतसर में, जन्म लिया था। इनके पिता, लाला ब्रजलाल सेठ, एक उच्च खत्री-वंश के नामी व्यापारी थे। इनके बड़े भाई का नाम लाला वासुदेव सेठ था, जो कुछ वर्ष हुए स्वर्गवासी हो गए। इनकी भगिनी अब भी अमृतसर में हैं। राम की भाँति यह भी अपनी माता के प्रेम से वंचित रहे, और इनके पिताजी ने ही इनकी देख-भाल की। इनके जन्म-पत्र से साफ़ प्रकट था कि यह संसार छोड़कर संन्यास ग्रहण करेंगे। इस बात से इनके पिताजी को दुःख हुआ, अतः बाल्यकाल ही में इन्हें गृहस्थी के गोरख-धंधे में फाँसने के लिये इनका जन्म-पत्र बदलवाकर विवाह कर दिया। इनकी स्त्री का नाम लक्ष्मी है। वह अभी जीवित हैं, और अपने पुत्र लाला करमचंद सेठ के साथ लाहौर में रहती हैं। इनके पिता इस जोड़ी को देखकर बड़े प्रसन्न होते थे, और दोनो को प्रेम-पूर्वक लक्ष्मी-नारायण की जोड़ी कहा करते थे। लाला नारायणदासजी ने डी० ए० वी० कॉलेज, लाहौर में शिक्षा पाई, और इनका पूरा कुटुंब, पिताजी की मृत्यु के पश्चात्, लाहौर में बस गया। इनके बड़े भाई, लाला वासुदेव, हाईकोर्ट में नौकर थे, और वहीं लाला नारायणदास भी काम करने लगे। इनके पाँच बच्चे हुए, जिनमें से अब केवल एक जीवित है। लाला नारायणदासजी अपने बड़े भाई का बड़ा आदर करते थे। परंतु, जैसा इनके पुत्र करमचंदजी द्वारा मालूम हुआ है, नारायणदासजी के संन्यासी होने के पश्चात् उनके बड़े भाई का सलूक उनकी स्त्री और छोटे-छोटे बच्चों की ओर बड़ा अनुचित रहा। लाला वासुदेव के ससुर ने इन लोगों की सहायता की। पश्चात् कुछ लोगों ने लाला करमचंदजी को चचा से जायदाद का बटवारा करने के लिये मुक़दमेबाज़ी करने को उत्तेजित किया, परंतु जब यह बात स्वामीजी से पूछी गई, तो उन्होंने इसका विरोध किया, और कहा कि जो कुछ तुम्हारे चचा तुम्हें प्रसन्नता-पूर्वक दे दें, उसी को सहर्ष स्वीकार कर लो।

लाला नारायणदासजी कट्टर आर्यसमाजी थे,

और तर्क-वितर्क में बड़े तीक्ष्ण। अपने विद्यार्थी-जीवन में भी वह समाज-सेवा के बड़े प्रेमी थे, और प्रत्येक कार्य में अग्रसर रहते थे। घर में वह बड़े सख्त थे, और यदि कोई किसी से डरता था, तो नारायण से ही। परंतु जैसे ही उनका संर्क अपने भविष्य-जीवन के नाविक स्वामी राम से हुआ, उनमें एक विद्युत् के समान तबदीली आ गई। अपने मित्र लाला हरलाल द्वारा उनको स्वामी राम के दर्शन हुए, और उन्होंने स्वामी राम का व्याख्यान लाहौर या अमृतसर में सुना। कृष्ण की वंशी की भाँति उस व्याख्यान का स्वर नारायण-दासजी के हृदय में कुछ ऐसा भरा कि अब उनका समय राम के साथ अधिकतर व्यतीत होने लगा। यह बात उनके ज्येष्ठ भ्राता को बहुत बुरी मालूम हुई, और उन्होंने राम को इस बात के लिये धमकाया। यह बात नारायण के लिये असह्य थी, और जितना ही वासुदेव ने राम को धमकाया, उतना ही अधिक नारायण घर छोड़कर स्वामी राम की सेवा में रहने लगे। स्वामी राम पर नारायणदासजी की इस भक्ति का अच्छा असर पड़ा, और राम ने एक 'अलिफ़' नाम का पत्र-प्रकाशन आरंभ किया। इसके लिये लाला हरलाल ने एक आनंद-प्रेस स्थापित किया, और कार्य का कुल भार नारायण दास जी पर था। जैसे दिन बीतते गए, राम और नारायण का पारस्परिक प्रेम बढ़ता गया। जिस समय स्वामी राम ने लाहौर से अंतिम विदा लेकर वन की ओर प्रस्थान किया, उनके साथ नारायण भी थे, और वनों में नारायण ने बड़े चाव से राम की सेवा-सुश्रूषा की*।

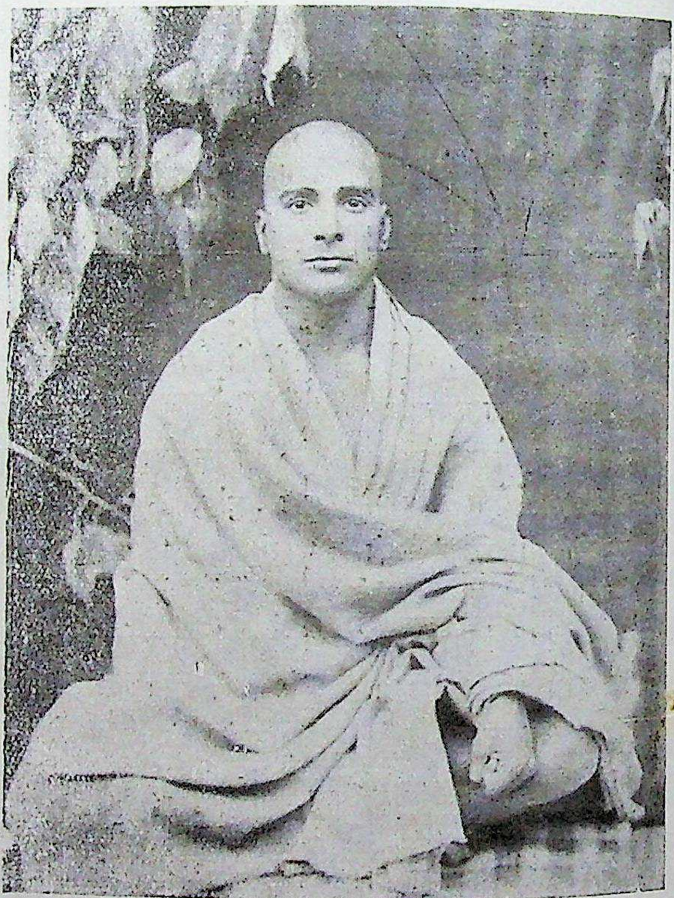

श्रीमान् स्वामी रामतीर्थजी

(१९०२ ई०)

फ़रवरी, १९०२ में शांति-प्रकाश के इच्छानुसार स्वामी राम साधारण धर्म-सभा के वार्षिक उत्सव में फ़ैज़ाबाद पधारे। उसमें राम ने नारायण-

---

* जब तक हमारे चरित्रनायक का पूर्ण जीवन-चरित्र प्राप्त नहीं होता, तब तक के लिये प्रिय पाठकों से निवेदन है कि वे पंडित ब्रजनाथ शर्मा-कृत राम-जीवनी का अध्ययन करें, जिसमें इस बात की चर्चा आई है कि स्वामीराम के साथ एकांत में रहकर स्वामी नारायण ने किस प्रकार आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की।

दासजी को एक भाषण देने की आज्ञा दी। नारायणदासजी पहले तो हिचकिचाए, पर आज्ञा-पालन अनिवार्य था। अतः उन्होंने आत्मा पर एक भाषण दिया। यह नारायणदासजी का राम के समक्ष प्रथम भाषण था, जो अभी तक शांतिप्रकाशजी के पास सुरक्षित रक्खा है, और जब नारायण की इच्छा होगी, प्रकाशित होगा। यह बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान था, जिसका असर केवल जनता पर ही नहीं, प्रत्युत राम पर भी यह हुआ कि उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब नारायणदास को नारायण स्वामी होना चाहिए, क्योंकि अब वह इस योग्य हो गया है कि स्वयं देश-पर्यटन करके वेदांत का प्रचार कर सके। जब नारायणदासजी को यह मालूम हुआ, तो मानो उनके ऊपर वज्राघात हुआ, क्योंकि स्वामी राम से पृथक् पर्यटन का विचार मृत्यु से भी अधिक भयंकर था। फ़ैज़ाबाद से लखनऊ आते समय राम ने नारायण को संन्यास-ग्रहण की महत्ता अच्छी तरह समझाई। लखनऊ में दोनो बाबू गंगाप्रसाद वर्मा के अतिथि हुए, और यहीं राम ने नारायण को संन्यास दिया। यह फ़रवरी सन् १९०२ की बात है। इसके पश्चात् नारायण को सिंध आदि प्रदेशों की यात्रा करने की आज्ञा हुई। मन से या विना मन आज्ञा पालन करना ही था। दोनो ने लखनऊ से साथ-साथ प्रस्थान किया। एक ओर गाड़ी दोनो को लिए जा रही थी, दूसरी ओर नारायण के नेत्रों से अविरल अश्रु-धारा प्रवाहित हो रही थी। इस घटना ने राम के नेत्रों को भी सजल कर दिया। अस्तु। इस समय राम ने वेदांत-संदेश कूट-कूटकर नारायण के हृदय में भर दिया। जब वह स्टेशन आया, जहाँ नारायण को गाड़ी बदलनी थी, राम स्वयं प्लैटफ़ार्म पर उतरे, और प्रिय नारायण को अच्छी तरह दूसरी गाड़ी पर बिठा दिया। वेदना के रहस्य से अनभिज्ञ गाड़ी चल दी। नारायण का हृदय इस समय जल-पूर्ण मेघों के समान भरा था। राम के आज्ञानुसार नारायण पहले सिंध गए, और फिर मुलतान, देरा इसमाइल-खाँ, पिंड दादनखाँ और कटासराज-तीर्थ की यात्रा की। कटासराज में राम का एक पत्र मिला कि

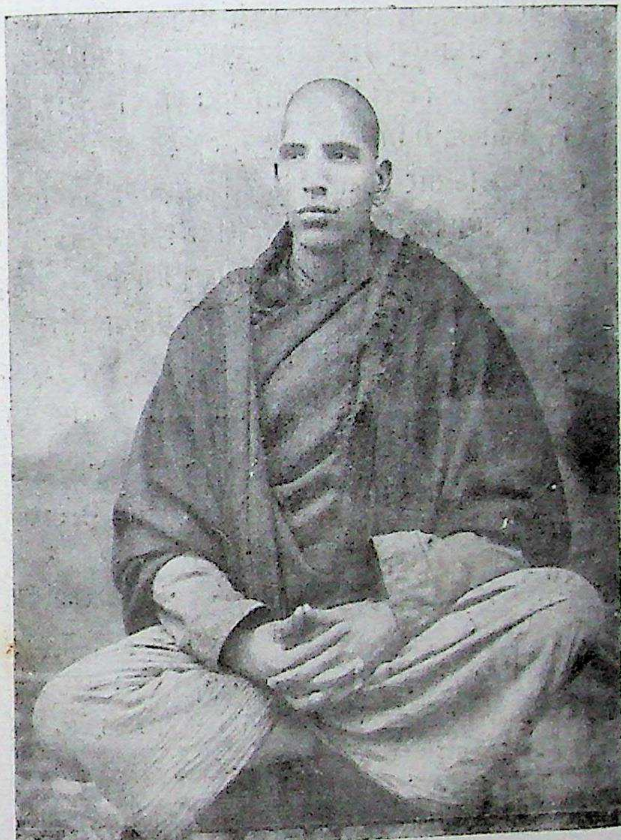

श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी
(१९०५ ई०)

चार मास समाप्त होते ही वापस आ जाओ। अतः जून, १९०२ में नारायण राम की सेवा में उपस्थित हुए। उस समय राम टिहरी में महाराजा के अतिथि थे। एक दिन महाराजा साहब एक समाचार-पत्र हाथ में लिए राम के समक्ष आए। उसमें लिखा था, जापान में एक सर्व-धर्म-सम्मेलन होनेवाला है। यह समाचार सुनाकर उन्होंने स्वामी राम से अनुरोध-पूर्वक विनय की कि वह अवश्य उसमें भारत की ओर से सम्मिलित हों। केवल यही नहीं, बल्कि उन्होंने तार द्वारा जहाज़ में सब आवश्यक बातों का प्रबंध भी कर दिया, और अब राम वहाँ जाने को तैयार हो गए। राम वहाँ अकेले ही जाना चाहते थे, जिससे उनका विश्वास ईश्वर से हटकर या कम होकर किसी व्यक्ति-विशेष पर न हो जाय। इस कारण नारायण देहरादून तक राम को पहुँचाकर टेहरी वापस आ गए। राम वहाँ से सीधे कलकत्ता रवाना हुए। राह में जितने राम-प्रेमी मिले, सबने, महाराजा टिहरी की भाँति, इस बात पर ज़ोर दिया कि वह अपने साथ नारायण को अवश्य ले जायँ। अतः राम ने नारायण को तार दिया कि २० अगस्त तक राम के साथ जापान चलने के लिये कलकत्ता पहुँच जाओ। स्वामी नारायण यह पत्र पाते ही उछल पड़े, और ७२ मील का पहाड़ी रास्ता केवल आठ घंटे में तय करके नियत तिथि से एक दिन पूर्व कलकत्ता पहुँच गए।

२८ अगस्त, १९०२ को दोनो संन्यासी जापान के लिये रवाना हुए। राह में पीनांग, हांगकांग तथा अन्य बंदरगाहों में भ्रमण करते हुए दोनो जापान पहुँचे। वहाँ कितने ही लोग राम-प्रेम में मस्त हो गए। सरदार पूर्णसिंह पर इतना असर पड़ा कि उन्होंने गेरुए वस्त्र धारण कर लिए। सर्व-धर्म-सम्मेलन एक गप्प सिद्ध हुआ। कई स्थानों पर राम के व्याख्यान हुए, जो नारायण की कृपा से जनता के कर्ण-कुहरों तक पहुँच चुके हैं। जापान से राम अमेरिका गए, और नारायण को योरप, बर्मा, लंका तथा अन्य देशों में भ्रमण करने की आज्ञा दी। राम ने यह भी कहा कि यात्रा की कठिनाइयों से घबराकर कहीं राम के पूर्व ही भारत न पहुँच जाना। राम के अमेरिका जाने के पश्चात् नारायण ने कुछ दिन तक तो जापान में ही भ्रमण किया, और पुनः हांगकांग जाकर वहाँ लगभग एक मास तक राम-संदेश का प्रचार किया। वहाँ से सिंगापुर पधारे। तत्पश्चात् पिनांग होते हुए बर्मा पहुँचे। पुनः लंका जाकर विवेकानंद-सोसाइटी में कई भाषण दिए। वहाँ से आफ़्रिका जाकर पोर्ट सईद, मिस्र, अलेक्ज़ेंड्रिया और अन्य स्थानों में वेदांत का डंका बजाया। इसके पश्चात् जिब्राल्टर की यात्रा तथा वेदांत का प्रचार करते हुए सितंबर, १९०३ में लंदन पहुँचे। परंतु वहाँ दिसंबर मास में बीमार हो गए, और इतना बीमार पड़े कि डॉक्टरों ने राय दी कि आप फ़ौरन् भारत लौट जायँ, नहीं तो जीवित न रह सकेंगे। बिना राम की आज्ञा पाए नारायण का भारत आना असंभव था। अतः वह लंदन से फ्रांस आ गए, और वहाँ से राम को तार दिया। राम की आज्ञा पाकर वह भारत वापस आ गए। इस बीमारी से स्वामी नारायण प्राकृतिक चिकित्सा के कट्टर अनुयायी हो गए, और तब से अपने जीवन में उन्होंने न कभी किसी ओषधि का प्रयोग किया, और न कभी मिर्च-मसाला खाया। वह सदा प्राकृतिक एवं सादा भोजन करते और दूसरों से भी ऐसा ही करने को कहते थे। वह तभी भोजन करते थे, जब उन्हें क्षुधा लगती थी। कई बार ऐसा हुआ कि सप्ताहों तक उन्होंने एक ग्रास भी अपने मुँह में नहीं छोड़ा। यह स्मरण रहे कि अपनी यात्रा में उनके पास एक कौड़ी भी नहीं थी। केवल विश्वनियंता ही उनका कोषाध्यक्ष था।

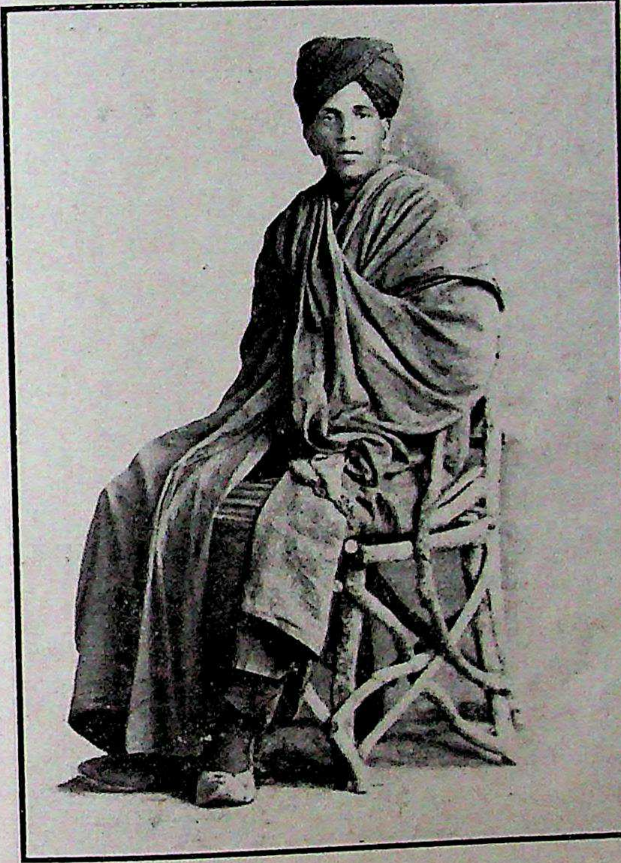

श्रीमान् आर० एस० नारायण स्वामी

(सन् १९३० ई०)

जब १९०४ में स्वामी राम भारत वापस आए, गुरु और शिष्य पुष्कर में मिले। लगभग तीन मास वहाँ रहकर दोनो ने भारत की यात्रा आरंभ की। इसके पश्चात् स्वामी राम का विचार एक ऐसी पुस्तक लिखने का था, जो उनके जीवन में उपार्जित संपूर्ण ज्ञान का भांडार हो। अतः दोनो ने हिमालय की ओर प्रस्थान किया। व्यास-आश्रम में कुछ मास वेदाध्ययन में व्यतीत हुए। वहाँ से दोनो ने ऐसी जगह जाने का विचार किया, जो अधिक शांत और जनता के लिये अगम्य हो। राम ने देवप्रयाग पसंद किया, जो भागीरथी और अलकनंदा के संगम पर है। वहाँ कुछ प्रेमियों ने राम से कहा कि वशिष्ठ-आश्रम इससे भी अधिक उत्तम एकांत स्थान है। यह टिहरी से लगभग पचास मील की दूरी पर, बारह-तेरह हज़ार फ़ीट उँचाई पर, है। दोनो संन्यासी वहाँ से टिहरी चल पड़े। वहाँ महाराजा साहब ने दोनो का बड़ा आदर-सत्कार किया। महाराजा की सुंदर वाटिका में, भृगु-गंगा के तट पर, सिमलासु-नामक कुटिया में, दोनो रहने लगे। एकांत-वास का पूर्ण लाभ उठाने के लिये राम ने कहा कि हम दोनो की कुटिया पृथक् होनी चाहिए। राम के आज्ञानुसार नारायण बमरोगी-गुफा में चले गए, जो वहाँ से तीन मील की दूरी पर थी। नंगे सिर और नंगे पैर राम नारायण के साथ चल पड़े, और एक गहरी साँस लेकर, नेत्रों से अमृत-वर्षा करते हुए नारायण से इस प्रकार कहा—"प्रिय पुत्र! राम शीघ्र मौन होगा। तुम देख रहे हो, राम का शरीर प्रतिदिन शिथिल होता जाता है। राम का मन संसार से उचट गया है, संसार में कहीं भी उसकी रुचि नहीं रही। राम को यह भान होता है कि अब वह नीचे उतरकर नहीं जायगा। कोई आश्चर्य नहीं, यदि राम का शरीर शीघ्र ही जड़ हो जाय। अब वह प्यारी गंगा के तट को कदापि न छोड़ेगा। यदि राम के पास कहीं से बुलावा आएगा, तो तुम्हीं उसके स्थान पर जाओगे। अतः तुम अपनी गुफा में जाओ, एकांत

अभ्यास करो, राम में प्रतिक्षण डुबकी लगाओ, और वेदांत-स्वरूप बनकर ही बाहर निकलो। शोक, दुःख, पीड़ा, चिंता, सब परे फेंक दो। अंदर, बाहर, सब कहीं राम का ही अनुभव करो। राम तुम्हारा शरीर है, तुम्हारा हृदय है, तुम्हारा सर्वस्व है। वह तुम्हारा आत्मा है। एकांत से राम बनकर बाहर निकलो।"

नारायण का हृदय डबडबा आया, और नेत्रों से आँसुओं की झड़ी लग गई। वह राम के पैरों पर गिर पड़े। राम ने उनको प्रेम-पूर्वक उठाकर हृदय से लगाया, और स्वयं अश्रु-रूप बन गए। कुछ समय तक दोनो अवाक् एक दूसरे को देखते खड़े रह गए। नारायण क्रूर पृथक्ता को पृथक् करने की बाट जोह रहे थे, और राम प्रेम-पूर्वक नारायण की ओर दृष्टि लगाए थे। इस अवसर पर राम ने नारायण को गुफा की ओर चलने की आज्ञा दी, और पुनः कहा —"प्रिय पुत्र! शोक न करो। एकांत अभ्यास और अध्ययन करो। तुम राम से प्रति रविवार मिल सकते हो। उसका स्थूल शरीर शीघ्र ही जड़ हो जायगा। आश्रय का अवलंबन न लो। अपने पैरों खड़े होना सीखो। वेदांत की मूर्ति बन जाओ। अपने केंद्र आत्मा में पूर्ण रूप से निवास करते हुए बाहर निकलो।" ये नारायण के प्रति राम के अंतिम शब्द थे। लटके हुए सिर और लड़खड़ाते हुए पगों से नारायण जंगलों में होते हुए बमरोगी-गुफा की ओर चल पड़े। रात-दिन नारायण के हृदय में राम एवं राम के शब्द गूँज रहे थे। रविवार को राम से, राम के आज्ञानुसार, मिलने की तिथि थी, परंतु शनिवार को सायंकाल रियासत का एक अरदली नारायण के पास आया, और निवेदन किया—"स्वामिन्! आपको टिहरी-महाराज ने स्मरण किया है।"

स्वामीजी ने इसका कारण पूछा, तो उसने पुनः कहा—"महाराज! स्वामीजी महाराज को श्रीगंगाजी बहा ले गईं। मैं आपको इस बात की सूचना देने भेजा गया हूँ।" नारायण के लिये इन शब्दों से बढ़कर और क्या आपत्ति हो सकती थी? उस समय नारायण की अवस्था वर्णनातीत थी। वेदना-पूर्ण हृदय ही इसका अनुभव कर सकता है।

कुछ समय व्यतीत होने पर नारायण और पूर्ण ने स्वामी राम के बक्सों की भली भाँति देख-रेख की, और उनके हस्त-लिखित पत्रों तथा भाषणों को विधि-पूर्वक ठीक किया। इन सब पत्रों को पूर्ण को सौंपकर नारायण हिमालय के वनों में चले गए। रुपए-पैसे का प्रबंध न होने से पूर्ण भाषणों के प्रकाशन का कार्य संपादन न कर सके, और लगभग एक वर्ष पश्चात जब नारायण की पूर्ण से अकस्मात् भेंट हुई, तो पूर्ण ने समस्त पत्र नारायण के सम्मुख डाल दिए, और कहा कि मुझसे यह कार्य न होगा। नारायण उन पत्रों को अपने साथ लेकर फिर एकांत-वास में उन पत्रों का अध्ययन एवं मनन करने चले गए, और उनके प्रकाशन का भार प्रकृति पर डाल दिया। प्रकृति का प्रबंध निराला होता है। कुछ ही काल पश्चात् मेरठ में एक वैश्यों की सभा हुई, और उसने नारायण को अपने यहाँ उपदेश देने के लिये निमंत्रित किया। उनके भाषण का यह प्रभाव पड़ा कि एक मास्टर (अमीरचंद), जो ईसाई होने जा रहे थे, नारायण-भक्त हो गए, और स्वामी राम के भाषण प्रकाशित करने के लिये १०००) भेंट किए। १६०६ में, नारायण की अध्यक्षता में, दिल्ली में, छपने का कार्य आरंभ हुआ, और प्रथम भाग की समस्त कापियाँ तीन मास के अंदर हाथोंहाथ बिक गईं। जो रुपया इस प्रकार प्राप्त हुआ, उससे शेष भाषण तीन भागों में छपाए गए। इन्हीं दिनों दिल्ली-षड्यंत्र का अभियोग चला, जिसमें मास्टर अमीरचंद पकड़े गए, उन पर अभियोग चला, और उन्हें फाँसी की सज़ा मिली। ख़ुफ़िया पुलिस ने उनके मकान

की तलाशी ली, और अन्य पत्रों के साथ राम के दो भाषण भी ज़ब्त हो गए। उनमें से एक पूँजीवाद पर था, और दूसरा राम-आगमन पर। प्रकाशन-कार्य बंद करना पड़ा, और स्वामी नारायण टिहरी चले गए। पर वहाँ भी पुलिस ने पीछा नहीं छोड़ा, और राम-मठ ख़ाली करवा लिया। वहाँ से स्वामीजी देहरादून चले आए, और वहाँ श्रीमद्भगवद्गीता पर एक बृहत् टीका लिखी। यह सन् १९१० की बात है। इसके प्रकाशनार्थ ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद) के एक प्रेमी सज्जन ने पुष्कल धन भेंट किया। इस संबंध में सन् १९१३ से १९१६ तक श्रीस्वामीजी अनेक बार लखनऊ पधारे। १९१६ में श्रीस्वामीजी लगभग स्थायी रूप से लखनऊ में रहने लगे, और गीता प्रकाशित हो गई। गीता अर्जुन के लिये ज्ञान लाई, पर हमारे लिये स्वामीजी को यहाँ ले आई। लखनऊ में रहकर श्रीस्वामीजी ने जनता की सेवा के लिये अनेक संस्थाएँ स्थापित कीं। उन्होंने नवयुवकों में सेवा का भाव भरने के लिये अवध-सेवा-समिति का निर्माण किया। इसने अनेक मेलों और बीमारियों के अवसर पर सेवा की। जिन लोगों ने श्रीस्वामीजी को कंधे से कंधा जोड़कर नवयुवकों के साथ कार्य करते देखा है, वे भली भाँति जानते हैं कि स्वामीजी कितने घोर परिश्रमी थे। इन्फ़्लुएंज़ा की महामारी में उन्होंने निर्धन ग्रामीणों के झोपड़ों में जा-जाकर दवा बाँटी, जिस समय वहाँ सभी खाट पर पड़े थे, और उन्हें जल देनेवाला भी कोई न था। उनमें सेवा का भाव कूट-कूटकर भरा था। इसी प्रकार श्रीस्वामीजी ने यू० पी०-धर्म-रक्षण-सभा की नींव डाली, जिसका अभिप्राय उन देव-स्थानों का सुधार करना था, जिनकी अवस्था शोचनीय थी, और जो अधर्म के स्थान हो गए थे। उन्हीं की प्रेरणा से यू० पी०-गवर्नमेंट ने 'हिंदू-

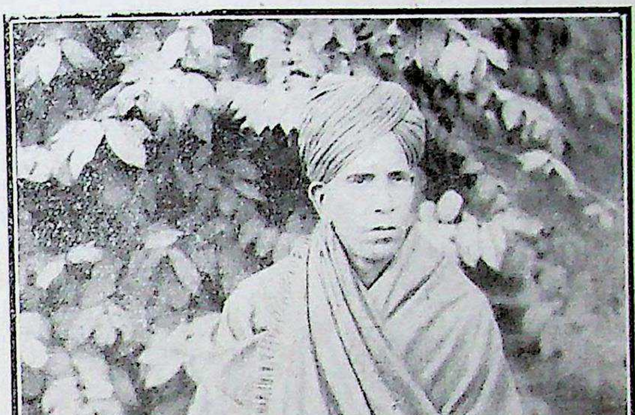

श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी

(सन् १९३३ ई०)

रिलीजस इन्डाउमेंट इन्क्वायरी कमेटी' स्थापित की, जिसके वह प्रधान सदस्य थे। इस कमेटी ने सारे यू० पी० में दौरा करके अपनी रिपोर्ट उपस्थित की, जिसे सन् १९३१ में यू० पी०-गवर्नमेंट ने प्रकाशित किया। अब वर्तमान सरकार धर्म-रक्षण-सभा द्वारा निर्मित बिल के आधार पर ही इस संबंध में कार्य करने का प्रस्ताव कर रही है। हरद्वार में निरक्षर साधुओं को शिक्षा देने के लिये श्रीस्वामीजी ने साधु-महाविद्यालय का निर्माण किया। लखनऊ-विश्वविद्यालय में उन्हीं के प्रयत्न से पुरातन संस्कृत-विभाग खोला गया। श्रीरामतीर्थ-पब्लिकेशन लीग का जन्म सन् १९१८ में हुआ। यह कहना निरर्थक है कि श्रीस्वामीजी इस संस्था के प्राण थे। यह केवल उन्हीं के अविकल परिश्रम का फल है कि राम बादशाह का अलौकिक संदेश कोने-कोने में पहुँचकर अज्ञान के अंधकार को दूर कर रहा है। इन संस्थाओं के अतिरिक्त बहुत-से अन्य विभागों में भी उनका हाथ था। और, जिन संस्थाओं में वह प्रविष्ट हुए, वे सदैव उन्नति के शिखर पर पहुँच गईं, और जब उन्होंने अपना हाथ उनसे हटा लिया, तो वे पुष्प की भाँति मुरझा गईं। लखनऊ-नगर को इस बात का सौभाग्य प्राप्त हुआ कि वह उनका केंद्र-स्थान बना, और यह नगर स्वामीजी से कदापि उऋण नहीं हो सकता।

श्रीस्वामीजी के पास निमंत्रण-पर-निमंत्रण आते रहते थे, अतः कुछ वर्षों से प्रतिवर्ष उन्होंने मई, जून और जुलाई-मास दौरे के लिये नियत कर लिए थे। तदनुसार गत वर्ष भी उन्होंने जून-मास में मध्य भारत का दौरा किया। दो मास घूमने-फिरने के पश्चात् वहीं वह बीमार पड़ गए। स्वास्थ्य-लाभ करने के पश्चात् १४ ऑक्टोबर को लखनऊ आए। कमज़ोरी की हालत में भी वह उन कार्यों में लग गए, जो उनकी प्रतीक्षा में रुके पड़े थे। यहाँ ३ नवंबर को श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज का ६५वाँ जन्मोत्सव समारोह-पूर्वक मनाया। किसको पता था कि ठीक एक मास पश्चात् श्रीस्वामीजी हमसे सदा के लिये विलग हो जायँगे। कार्य की अधिकता के कारण वह पुनः बीमार पड़ गए। अभी पूरी तरह अच्छे न हो पाए थे कि उन्होंने सिंध तथा लाहौर जाने का विचार किया, क्योंकि वहाँ से बुलावे-पर-बुलावे आ रहे थे। हम लोगों ने बहुत कहा कि अभी आपका स्वास्थ्य इस योग्य नहीं कि आप बाहर जायँ, पर उन्होंने न माना। लखनऊ से ११ नवंबर को उन्होंने सिंध के लिये प्रस्थान किया। उनके साथ लीग का चपरासी राममनोरथ था। नवंबर-मास के अंत में लाहौर से एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि श्रीस्वामीजी महाराज अस्पताल में पड़े हैं। यह पढ़कर हम सबके होश गुम हो गए, क्योंकि अपने होश में उनका अस्पताल जाना असंभव था। तुरंत डॉक्टर रामेश्वरसहाय, श्रीस्वामीजी के प्रधान सेवक और प्रिय शिष्य, १ दिसंबर को पंजाब-मेल द्वारा लाहौर के लिये रवाना हुए। वहाँ पहुँचकर क्या देखते हैं कि श्रीस्वामीजी की हालत आशा-रहित है। उन्होंने डॉक्टर रामेश्वर-सहाय की ओर देखा, और उन्हें भली भाँति पहचान लिया। उन्होंने केवल एक वाक्य कहा—"जब अनुभव होता है, इस प्रकार की तकलीफें आती हैं।" सनातन-धर्म सभा, लाहौर के कार्यकर्ता, जिनके निमंत्रण पर स्वामीजी लाहौर गए थे, अपने कर्तव्य के बड़े कच्चे साबित हुए। जिनके मकान पर श्रीस्वामीजी ठहराए गए थे, उनका व्यवहार बड़ा अमानुषिक सुनने में आया। सनातन-धर्म-सभा के लोगों ने श्रीस्वामीजी को अस्पताल में भरती करके अपने कर्तव्य की इतिश्री कर दी।

गत वर्ष वर्षों के पश्चात् श्रीस्वामीजी ने स्वामी राम के जन्म-स्थान की यात्रा की, और जो

वार्तालाप उन्होंने अपने गुरुभ्राता स्वामी गोविंदानंदजी तथा अपने शिष्य स्वामी पूर्णानंदजी से किया, वह महत्त्व-पूर्ण है। दोनो ने इस बात का भरसक प्रयत्न किया कि स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण श्रीस्वामीजी आगे यात्रा न करें, किंतु वह लाहौर-सनात-धर्म सभा को वचन दे चुके थे, अतः उनका एकमात्र उत्तर यही था—"प्राण जायँ, पर वचन न जाई।" जब सब प्रकार से वे दोनो अपनी प्रार्थनाओं में असफल रहे, तो स्वामी पूर्णानंदजी ने उनके साथ चलने की इच्छा प्रकट की, परंतु हमारे स्वामीजी ने कहा—"नहीं, राम के साथ भी एक रसोइया था, मेरे साथ भी एक रसोइया है।" (जिन महाशयों को श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज के जीवन-चरित्र पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे इस बात से भली भाँति परिचित हैं कि जिस समय स्वामी राम ने जल-समाधि ली, उनके पास केवल एक रसोइया था।) ये शब्द उसी प्रकार सार्थक हैं, जैसे स्वामी राम का मृत्यु के नाम संदेश सार्थक है।

श्रीस्वामीजी ने केवल आवागमन का ही चक्कर पूरा नहीं कर लिया, वरन् अपने जीवन के संपूर्ण कार्यों का भी चक्कर पूरा कर दिया। उन्होंने पंजाब में जन्म लिया था, और पंजाब में ही महासमाधि ली। संन्यास के पश्चात् उनका प्रथम व्याख्यान सिंध में हुआ था, और अंतिम व्याख्यान भी वहीं हुआ। उन्होंने लखनऊ में संन्यास ग्रहण किया था, और लखनऊ ही उनके समस्त कार्यों का केंद्र बना। राम के सशरीर अवस्था में उनका जीवन राम के साथ व्यतीत हुआ। राम की महासमाधि के पश्चात् राम से तन्मय होकर ही उनका जीवन व्यतीत हुआ। नारायण राम से इतने वर्षों पश्चात् मिले होंगे। वह मिलन केवल विचार-गम्य ही है।

क्या नारायण मृत्यु को प्राप्त हुआ है ? नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता। नारायण शरीर, मन, बुद्धि से परे था, और परे है। उसने आत्म-साक्षात्कार कर लिया था। क्या वह अपने प्रेमियों को भुला देगा ? नहीं, यदि हमीं उसको न भुला दें।

श्रीस्वामीजी के बहुत-से शिष्य हैं। सबसे पुराने शिष्य डॉक्टर रामेश्वरसहाय हैं। जब-जब श्रीस्वामीजी बीमार पड़े, निरंतर उनको (डॉक्टर साहब को) उनकी सेवा-सुश्रूषा का सौभाग्य प्राप्त होता रहा, और हम लोगों में से केवल उन्हीं को अंतिम झाँकी मिली। हम सबके लिये वह पिता से भी बढ़कर थे, और हम लोग उनसे बहुधा ढिठाई करते थे, परंतु वह उसमें अंतर्हित प्रेम का निरीक्षण करते हुए सदा प्रसन्न रहे। उनकी डाटें और झिड़कियाँ उस पद्य का स्मरण दिलाती हैं, जो वह बहुधा गाया करते थे—

यह सलवट डालना चेहरे पै गंगाजी से सीखा है;
है अंदर से महाशीतल, यह ऊपर से डराता है।

उनकी मधुर एवं शक्ति-पूर्ण आवाज़ अब भी हृदय में गूँज रही है। ईश्वर करे, वह सदा गूँजती रहे।

उनके तीन संन्यासी शिष्य हैं। उनमें से एक स्वामी स्वयंज्योति हैं, जिन्होंने अपना आश्रम छोटा उदयपुर, गुजरात में बनाया है, और वहीं कई वर्षों से रहते हैं। दूसरे शिष्य का नाम श्रीस्वामी रामानंद हैं, जो हिप्परज, निज़ाम की रियासत में रहते हैं। तीसरे शिष्य स्वामी पूर्णानंदजी गोविंदाश्रम, पंजाब में निवास करते हैं।

नारायण हमारी दृष्टि से ओझल हो गया है, पर कृष्ण की भाँति वह भी खिलाड़ी है, और छिपी-छिपौवल खेलता है। हम अब भी उसे ढूँढ सकते हैं। पर क्या हम इसके लिये तैयार हैं ?

योरप का आधुनिक वातावरण

[पं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट]

इधर योरप की स्थिति अति भयंकर हो उठी है। हर-एक राष्ट्र की भावना युद्ध के लिये जाग्रत् हो रही है। शांति के नाम पर शस्त्रीकरण करना प्रत्येक राष्ट्र का मुख्य ध्येय हो चुका है, और जिस तरह भी हो, देश का पैसा नए-नए हथियारों में लगाना एकांत कर्तव्य। प्रत्येक राजनीतिज्ञ के मस्तिष्क में एक दूसरे के प्रति अविश्वास व्याप्त हो रहा है। संधियों और वचनों का पालन मूर्खता और मूल्य मिट्टी समझा जा रहा है। एक-एक करके पुरानी सभी संधियाँ तोड़कर निरर्थक कर दी गई हैं।

एक क्रांतिकारी भी इन सब स्थितियों को देखकर घबरा उठता है। वह देखता है, योरप के दक्षिणी-पश्चिमी भाग (स्पेन) में गत दो वर्षों से युद्ध हो रहा है, जहाँ आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से पूरा लाभ उठाकर नगर-के-नगर विध्वंस किए जा रहे हैं। योरप को छोड़कर वह सुदूर पूर्व-चीन में भी यही दृश्य देखता है। इसके अतिरिक्त दया, शांति, स्वतंत्र जीवन, समाचार-स्वतंत्रता आदि सभ्यता के तमाम निशान मिटते जा रहे हैं, और उनके स्थान पर योरप की बलशालिनी सभ्यता के शिखर पर पहुँचे हुए राष्ट्र बेईमानी, अविश्वास, नीचता, बर्बरता आदि अपना रहे हैं। यह सब देखकर कोई भी यह कहे विना नहीं रह सकता कि स्थिति घोर चिंता-जनक अवश्य है।

परंतु ऐसे समय में ब्रिटेन संसार की शांति के लिये दो बड़े भारी कार्य कर सकता है—इस शांति के लिये, जो आठ वर्ष पहले निश्चित-सी मालूम पड़ती थी, परंतु अब चीन, पूर्वी आफ्रिका और स्पेन में नाश की जा रही है। इस शांति-नाश का कारण ढूँढ़ने में कोई अड़चन नहीं मालूम होती। संसार के तीन बलशाली राष्ट्र—जर्मनी, जापान और इटली—येन केन प्रकारेण अपना साम्राज्य बढ़ाने का दृढ़ निश्चय किए हुए हैं। वे यह काम केवल युद्ध की धमकी द्वारा ही करने के फेर में हैं, और इसी धमकी-ही-धमकी में मंचूरिया, आस्टिया और अबीसीनिया हड़प भी चुके हैं।

पीछे हटने की नीति

ऐसी स्थिति में संसार-समर बचाने की दो ही विधियाँ हैं। पहली तो यह कि योरप के तानाशाहों के सामने न पड़ा जाय, और छोटे-मोटे तथा निर्बल देशों को, उनकी मर्ज़ी पर छोड़कर, अबीसीनिया और ऑस्टिया की तरह हड़प लेने दिया जाय, और इस नीति से राष्ट-संघ एवं सब प्रकार की संधियों तथा वचनों का बलिदान कर दिया जाय। इस नीति के अनुसार आपको चाहिए कि चुपचाप जर्मनी और इटली की सेनाओं को स्पेन में मनमानी करने दें

१. "दीवाली"

चलो, दीवाली मनाएँ ।
क्लेश-आपूरित जगत में हर्ष के दो पल बिताएँ ।
कर्म-पट पर नियति - पाँसे
चल रहे हैं, दाँव ले लें ;
विश्व की इस द्यूतशाला
में सजनि, खुल आज खेलें ।
खेलते हँस-हँस रहे, जीतें कि चाहें हार जाएँ ।
अर्द्ध रजनी, प्रकृति नीरव ,
सकल संसृति हुई अलसित ;
किंतु साधक-जगत में यह
जागरण की रात निश्चित ।
साधना कर शांति में प्रिय ! मंत्र सेवा का जगाएँ ।
पथ तमिस्र, अगम्य, अटपट ,
हृदय-पट ओ खोल ले री !
स्नेह-युत दीपक जलाकर
सजग कर ले पलक-प्रहरी ।
हो न हो, सखि! आजही वे हृदय-धन इस ओर आएँ ।
प्राण ! उन्मन क्यों शिथिल
संसृति-विपंची, तार कस ले ;
हर्ष की इस मधुर वेला
में अरे गा आज हँस ले ।
कौन जाने, यही घड़ियाँ फिर कभी आएँ-न आएँ ।

निष्प्रसून उदुंबरी भी
प्रिय बनेगी आज पुष्पित ;
आज हूँ सुनती, जलाएगा
जगत घृत - दीप हर्षित ।
जागती रह, हो कहीं ऐसा न, प्रिय पथ भूल जाएँ ।

म्लान क्यों आशा - सहेली ,
शीघ्र सज ले हो मुदित मन ।
विगत वेला हो रही है
प्रणय-मंदिर की पुजारिन !
अयि ! चलें प्रिय-पद्म-पद में भेंट जीवन की चढ़ाएँ ।

उमाशंकर तिवारी (साहित्यालंकार)

× × ×

२. गीत

मेरी छोटी-सी नौका को
बेला से टकरा जाने दो;
होती चूर लहरियों-सी—
रस-कन इसको बिखरा आने दो !
सागर के उर का उद्वेलन,
लहरों का यह भैरव नर्तन,
शशि छूने को उत्थान-पतन,
मचल इसे इतरा आने दो !
आज कूल पर है आमंत्रण,
टूट गए मेरे सब बंधन,
विस्मृत तूफ़ान-भरा जीवन,
पल दुख को बिसरा आने दो !

दिलीपनारायणसिंह (एम्० ए०)

× × ×

३. रेडियो और हिंदी

प्रिय सुधा-संपादकजी,

प्रवेशांक में रेडियो और हिंदी पर आपका नोट पढ़ा। यह एक महत्त्व-पूर्ण विषय है। रेडियो-स्टेशनों पर हिंदी की जो उपेक्षा की जाती है, वह सचमुच हिंदी-भाषा-भाषियों के लिये अपमान-जनक है।

रेडियो-स्टेशन सरकार की ओर से बनता है, अतः इस पर सभी सरकारी प्रजा का समान अधिकार है, और उचित यही है कि प्रांत विशेष या देश की सारी जनता को इससे लाभ उठाने का अवसर दिया जाय।

पर यहाँ उपाय तो ऐसा किया गया है कि देश की एक बड़ी जन-संख्या के लिये रेडियो का रहना-न रहना दोनो समान है। रेडियो के राष्ट्रीय संपत्ति होते हुए भी राष्ट्र का सबसे बड़ा भाग इससे कुछ लाभ नहीं उठा सकता।

हिंदी देश की आज सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण भाषा है। बिहार की भाषा हिंदी है। युक्त प्रांत हिंदी का केंद्र है। पंजाब की चौथाई जन-संख्या (हिंदू स्त्रियाँ) हिंदी जाननेवाली हैं। मध्यप्रांत के आधे हिस्से की भाषा हिंदी है। फिर देश के कोने-कोने में फैले हुए मारवाड़ी भाइयों की साहित्यिक भाषा हिंदी है।

वर्तमान युग में विज्ञान का बहुत महत्त्व-पूर्ण स्थान है। रेडियो इसी विज्ञान का एक करिश्मा है। इसकी महत्ता बड़ी है, और इसकी उपयोगिता स आज किसी को इनकार नहीं। यह प्रचार का एक श्रेष्ठ साधन है। जनता को इसके द्वारा बहुत कुछ लाभजनक बातें बतलाई जा सकती हैं। पर इन्हीं रेडियो-स्टेशनों पर आज हिंदी का बहिष्कार हो रहा है, और हिंदी-भाषी इसके लाभ से वंचित रक्खे जा रहे हैं। यों तो उत्तर-भारत के सभी प्रधान रेडियो-स्टेशनों—लाहौर, लखनऊ, दिल्ली और कलकत्ता—में हिंदी को उचित स्थान मिलना चाहिए, क्योंकि सभी जगह हिंदी-भाषी काफ़ी संख्या में हैं, और दूसरे, हिंदी राष्ट्र-भाषा है। पर और ता और, खास हिंदी-प्रांत में भी हिंदी ग़ैर-सी हो गई है। हिंदी-वक्ताओं के लिये वहाँ स्थान नहीं, हिंदी-विद्वानों की वहाँ पूछ नहीं। यद्यपि हिंदी में ऐसे-ऐसे वक्ता हैं, जिनकी वाणी से एसेंबली-भवन गूँज उठता है, कभी-कभी जो सारे देश को चौंका देने की ताक़त रखते हैं, जिनके इशारे पर जनता की एक बड़ी संख्या खड़ी है। हिंदी में ऐसे विद्वान् हैं, जिनकी धाक देश पर है, जो अमर साहित्य की रचना कर सकते हैं, पर निम्न कोटि के वक्ताओं और लेखकों को बुलाकर लाहौर, दिल्ली तथा लखनऊ के रेडियो-स्टेशनों ने अपना स्थान इतना नीचा कर दिया है

कि एक दफ़ा उच्च कोटि के विद्वान् वहाँ जाने से हिचकेंगे। बंबई-मदरास के रेडियो-स्टेशनों से उच्च कोटि के विद्वान् बोला करते हैं, पर यहाँ उनकी पूछ नहीं।

भाषा के नाम पर यहाँ जो स्वेच्छाचारिता है, वह कल की बात नहीं। हिंदुस्तानी के नाम पर उर्दू का वहाँ जो फ़ौवारा छोड़ा जाता है, वह कभी-कभी असह्य हो जाता है। देश की भाषा के नाम पर ऐसी भाषा का वहाँ प्रयोग होता है, जिसे अधिकांश देशवासी नहीं समझ सकते।

पर क्या यह चुपचाप देखते रहने की बात है? इसमें संदेह नहीं कि सरकारी आश्रय पाकर ही रेडियो-अधिकारी इस नीति को निभा सके हैं। अगर जनता के हाथ की बात होती, तो हिंदी कभी का अपना उचित स्थान प्राप्त कर लेती।

सिनेमा का उदाहरण लीजिए। सभी हिंदी-प्रांत फ़िल्म-निर्माण की ओर से बिलकुल उदासीन हैं। फिर भी आज हिंदी-फ़िल्मों का क्षेत्र जितना विस्तृत है, हिंदी में उच्च कोटि तथा विभिन्न रुचि की फ़िल्मों की जितनी बहुलता है, उतनी किसी अन्य प्रांतीय भाषा की फ़िल्मों की नहीं। इसका कारण यह है कि यह कला जनता के हाथों फूली और यहाँ जनरुचि को ठुकराना असंभव है।

पर रेडियो की बात लीजिए। आज धीरे-धीरे हिंदी अपना स्थान वहाँ खो रही है। हिंदी के हिमायतियों के लिये यह देखते रहने की बात नहीं। ज़रूरत इस बात की है कि इसके विरुद्ध एक आंदोलन का जन्म दिया जाय। पत्रों में इस पर नोट और लेख लिखे जायँ, सभाओं में प्रस्ताव पास किया जाय। उच्च सरकारी अधिकारियों के पास डेपुटेशन भेजे जायँ, और रेडियो-स्टेशनों पर हिंदी-जनता द्वारा प्रस्तावित एक हिंदी-विद्वान् अधिकारी ऑफ़िसर रहे, इस पर हम उन्हें मजबर करें। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन इस प्रश्न को महत्त्व-पूर्ण समझकर इधर ध्यान दे। इस संबंध में एक प्रस्ताव पास करके रेडियो-अधिकारियों को सजग करना चाहिए। संपादकजी, आप भी इस कार्य में बहुत कुछ कर सकते हैं। मातृभाषा और राष्ट्र-भाषा के प्रति अपने कर्तव्यों का ध्यान कर इस ओर आपको कुछ क्रियात्मक कार्य करने की चेष्टा करनी चाहिए।

भवदीय
ता० २८।८।३८ } ज्योतीन्द्रनाथ
(हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी)

× × ×

४. 'चाह'

(१)

मैं ऊब उठी हूँ जग से रे,
अपने इस नन्हे जीवन से,
नट की इस भूलभुलैयाँ से,
पल-पल के इस परिवर्तन से।

(२)

परिवर्तन में ही है सीमित
आशा का यद्यपि महा उदधि;
मैं स्वयं बदलती जाती, जब
अरमानों की हो शेष अवधि।

(३)

तब यही चाह उठती मन में—
हो सुंदर, शांत अबाध समय;
संसृति-दंशन मिट जाय, सदा
विचरूँ जग में होकर निर्भय।

(कुमारी) सुमित्रा पसरीचा

× × ×

५. निराशा

वह प्रायः बैठी सोचा करती है—"हम दोनो बचपन के सुनहले दिन और रुपहली रातें एक साथ बिताया करते थे। भोलापन हम लोगों का शृंगार था, क्रीड़ा ही जीवन थी, और ... और हाँ, आशा की उमंगों पर कौतुक नाचा करता था। परंतु ये दिन जैसे आए थे, वैसे ही चले गए। अब हम दोनो के बीच में है नैराश्य का अथाह सागर, जिसमें व्यथा की तूफ़ानी लहरें मृत्यु का गीत गाया करती हैं, और टकरा-टकराकर दोनो किनारों के ध्वंस का खेल रचा करती हैं।"

अब वह युवक है, और वह युवती। समाज के कोष में ये दो शब्द बड़े ही विकट हैं। जीवन अब लखनऊ-युनिवर्सिटी में नहीं है, और शायद यही कारण है कि सरिता भी निर्जीव-सी रहती है। वह इलाहाबाद चला गया है—अपनी नौकरी पर, और सरिता यहाँ अकेली पड़ी दुःख के दिन काटती हुई मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही है। ठीक ही है—जिसके जीवन में आशा का प्रवेश हो ही न सके, उसके लिये तो मृत्यु ही आशा की झिलमिलाती हुई रेखा है।

हाँ, यह बतलाना तो मैं भूल ही गई थी कि उसका नाम था सरिता और उसका जीवन। संभव है, वही उसके जीवन की सरिता रही हो, और वह उस सरिता का जीवन।

जीवन की आशा-रश्मियाँ अस्त होनेवाली हैं। उसके जीवन का प्रकाश अज्ञात भविष्य के निविड़ अंधकार में परिवर्तित होने जा रहा है। उसके सामने है स्वार्थ से भरा हुआ, अथाह सागर की भाँति यह लंबा-चौड़ा दुःखमय संसार।

पहले वे दो होते हुए भी एक थे, और एक दूसरे के बल पर जीते थे। परंतु अब! अब समाज के लोलुप नर-पिशाचों के कारण—जिनका कार्य ही प्रेम के पवित्र बँधन में बंधी हुई दो आत्माओं को पृथक्-पृथक् कर देना है—एक होते हुए भी दो हैं। फिर जिस स्वार्थी समाज में किसी के पवित्र प्रेम की कोई परवा ही नहीं, जिसमें प्रेम के नाम को कलंकित करनेवालों की कमी नहीं, जिसमें हत्यारे स्वार्थ के चरण चूमनेवाले स्वार्थी जनों का ही बाहुल्य हो, उसके लिये इस पावन बंधन का मूल्य ही क्या?

सरिता ने द्वितीय श्रेणी में छठी कक्षा पास कर ली है। उसकी मा चाहती है, उसके जीवन ही में जीवन और सरिता एक हो जायँ, विवाह-सूत्र में बँध जायँ, उनके जीवन की सरिता इठलाती हुई सौख्य-सागर में जाकर मिल जाय, परंतु क्या कठोर, निर्दय समाज ऐसा देख सकेगा! शायद नहीं, और इसी विचार के कारण उसकी अंतरात्मा व्यथित हो उठती है।

जिस जीवन को वह हृदय से भी अधिक चाहती है, अपने पुत्र से भी अधिक जिसे वह मानती आई है, जिसे वह ज़रा-सा भी अव्यवस्थित देखकर व्यथा से व्याकुल हो उठती थी, उसे—हाँ, उस जीवन को—वह अपनी सरिता, जाति-भेद के कारण, नहीं सौंप सकती। क्या यह उसके लिये एक विषम परिस्थिति नहीं?

जीवन को भी यह सब मालूम है। वह अपनी इस माता के समान स्नेहमयी मूर्ति की निराशा को देख-देखकर और भी दुर्बल होता चला जा रहा है, चिंता की रेखाएँ उसके मुख पर स्पष्ट झलका करती हैं, इलाहाबाद में रहते हुए भी उसे सदैव लखनऊ का ही ध्यान बना रहता है। वह प्रायः अपनी पुस्तक बंद कर खिड़की से बाहर रेतीले मैदान में भगवती भागीरथी तथा कालिंदी की लहरों को उछल-उछलकर एक में मिलते देख सोचने लगता है—"क्या कभी

मेरा और सरिता का भी अमर मिलन होगा ? क्या कभी हम दोनो की हृदय-सरिताओं में भी इसी प्रकार प्रसन्नता की लहरें उठेंगी ?"

वायु का एक झोंका कुछ संदेश लेकर आता है। उसे सुनाई पड़ता है—"पागल ! प्रकृति से स्पर्धा ? इतनी धृष्टता ? जानता नहीं, हम लोग स्वच्छंद हैं, समाज हम लोगों का कुछ नहीं कर सकता।"

जीवन गा उठता है—व्यथित स्वरों में—"भूल जा प्रेम का राग मुसाफ़िर ! राह में छाई निराशा !'

और .. ...

और अन्यमनस्क भाव से खिड़की बंद कर देता है।

(कुमारी) नरेंद्रिनी राठौर

× × ×

६. गीत

आँसुओं के हार मेरे।
लुट गए प्रिय, लुट गए सब, आँसुओं के हार मेरे।
व्यर्थ ही दुख के अरे रे!
मेघ छाए हैं घनेरे!
अब नहीं वे कीर लेंगे यहाँ उजड़े में बसेरे।
हृदय - दुख - ज्वाला धधकती,
अश्रु होकर थी निकलती,
थे कभी, पर अब नहीं हैं, हृदय में उद्गार मेरे।
विश्व से मुझको भला क्या ?
मृत्यु से मुझको भला क्या ?
सृष्टि सब निस्सार मुझको, जब नहीं वे ही रहे रे।
कहो, क्या ले जिऊँ जग में,
लुट गया सर्वस्व मग में,
अश्रु थे, वे भी गए, जो आज तक साथी रहे रे।

गंगाप्रसाद 'कौशल'

× × ×

७. सहशिक्षा और नारीत्व

सहशिक्षा पर एक गंभीर दृष्टि डालने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि शिक्षा क्या है, मानवीय जीवन में उसका क्या स्थान है, और नारी-जाति का उसके साथ कैसा और कहाँ तक संबंध है।

शिक्षा वह वस्तु है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाती और उसके कर्तव्याकर्तव्य का यथोचित और समयानुकूल ज्ञान कराती है। और, यहीं पर शिक्षा तथा विद्या में कुछ भेद हो सकता है। एक विद्वान् पुरुष के लिये यह आवश्यक नहीं कि वह सुशिक्षित ही हो, और इसी प्रकार एक निरक्षर व्यक्ति के लिये भी यह आवश्यक नहीं कि वह अशिक्षित ही हो। अतः मुझे एक अँगरेज़ विद्वान् के शब्दों में कहना चाहिए—

"Education does not mean to know what we do not know, but it means to know what we ought to know."

अर्थात् शिक्षा का अर्थ वह सीखना नहीं, जो हम अभी तक नहीं जानते थे, प्रत्युत इसका उद्देश्य वही जानना है, जो हमें जानना चाहिए। यही शिक्षा का स्वरूप है।

जो शिक्षा हमारे हृदय की शक्ति, नेत्रों की ज्योति और मानवीय जगत् की सर्वोच्च वस्तु आत्म-गौरव को नष्ट कर देनेवाली हो, वह शिक्षा नहीं, कुशिक्षा है।

शिक्षा को समझने के लिये हमें देश और भिन्न-

भिन्न काल को ध्यान में रखते हुए हज़ारों विचार मिल सकते हैं, अतः यह समझ लेना कुछ कठिन न होगा कि ब्रह्मचर्य धारण करके सत्य पदार्थ के सत्य और जो ज्ञान हमें प्राप्त करना चाहिए, उसे प्राप्त करने का नाम शिक्षा है। अब प्रश्न है कि इस महान् शक्ति नारी-जाति का शिक्षा से कहाँ तक और कैसा संबंध है ?

नारी-जाति की ही गोद में खेलकर महाराणा प्रताप और शिवाजी-जैसे बलशाली उत्पन्न हुए थे। इसी की गोद में राम और कृष्ण ने भी सुशिक्षा पाई थी। फिर भला, यह कैसे कहा जा सकता है कि नारी-जाति के लिये शिक्षा की आवश्यकता नहीं ? अतः हमें यह मानना ही पड़ेगा कि हमारे राष्ट्र, जाति और संसार की अव्यक्त रूप से भविष्य-निर्मात्री नारी-जाति अवश्य सुशिक्षा की पूर्ण रूप से अधिकारिणी है, उसे उच्च कोटि की शिक्षा की आवश्यकता है।

कुमारी कंचनलता सब्बरवाल प्रभाकर, विदुषी

अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षा कैसे दी जानी चाहिए, बालक-बालिकाओं को पृथक्-पृथक् या सहशिक्षा के रूप में ?

स्त्री-पुरुषों की न केवल शारीरिक बनावट भिन्न है, प्रत्युत उनके गुण और स्वभाव में भी भिन्नता है। स्त्री में स्वभावतः प्रेम, श्रद्धा और कोमलता की मात्रा अधिक होती है, और पुरुष स्वभाव से ही निडर, दृढ़ और शक्तिशाली होता है। फिर भला इन दोनों को एक-सी शिक्षा देना कहाँ तक उचित है ?

सहशिक्षा के पक्ष में उसके समर्थक प्रायः यह दलील पेश करते हैं कि सहशिक्षा और विशेषतया कॉलेज की सहशिक्षा (Co-education in Colleges) युवक और युवतियों में आवश्यक ज्ञान की, व्यावहारिक और बाह्य ज्ञान की, वृद्धि करती है। जीवन में यौवन-काल ही ऐसा समय होता है, जिसमें हम अधिक-से-अधिक व्यावहारिक ज्ञान उपार्जन करके अपने आपको भावी सामाजिक जीवन के लिये उचित रूप से तैयार कर सकते हैं,

और ऐसा करने के लिये हमें इस अवस्था में आवश्यकता होती है एक समाज की, और वह समाज न तो गंभीर दुखों और सुखों का अनुभव किए हुए वृद्ध तथा प्रौढ़ लोगों का हो सकता है, और न अधकचरी उमरवाले बालकों का। अतएव हमें आवश्यकता पड़ती है समवयस्क मित्रों की, और यदि वे मित्र घर के दायरे से बाहर घूमने-फिरनेवाले और हमसे भिन्न जाति-स्वभाववाले हों, तो उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है, और यह समाज के लिये लाभदायक ही होगा। इसके लिये कॉलेज से अच्छा केंद्र शायद ही और कोई हो। वहाँ न केवल बालिकाएँ या युवतियाँ युवकों के साथ स्वच्छंदता-पूर्वक विचारों का आदान-प्रदान और ज्ञान-वृद्धि कर सकती हैं, वरन् एक दूसरे की विद्या-वृद्धि की भी परख कर सकतीं और उससे लाभ उठा सकती हैं।

किंतु अब प्रश्न यह होता है कि क्या क्रियात्मक रूप में इस प्रकार की सोसाइटी से नारी-जाति को कुछ लाभ पहुँच सकेगा? स्त्री और पुरुष का कार्य-क्षेत्र अलग-अलग है। एक मा को क्या उसी प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, जैसी एक पिता को। क्या एक नारी विज्ञान या कृषि-शास्त्र की वैसी ही सफल विद्यार्थिनी हो सकती है, जितना एक युवक? एक युवती के लिये पाक-शास्त्र अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकेगा या कृषि-शास्त्र, यह विचारणीय है। जॉन रस्किन के शब्दों में—

"His intellect is for speculation and invention, his energy for adventure, for war and for conquest. ………her intellect is for sweet ordering, arrangement and decision."

अर्थात् उसकी (पुरुष की) बुद्धि विचार, व्यापार और खोज आदि के लिये है। उसकी शक्ति साहसात्मक कार्यों के लिये है, युद्ध और विजय के लिये।……उसकी (स्त्री की) बुद्धि प्रिय आशाओं के लिये, प्रबंध करने के लिये और निश्चय करने के लिये है।

स्त्री-पुरुषों में इतना बड़ा भेद होने पर नहीं जान सकती, किस प्रकार दोनो एक ही गुरु के समीप बैठकर एक ही विद्या सीख सकते हैं। यहीं तक नहीं, आगे चलकर वह और भी अधिक भेद किए डालता है—

"It is of little consequence how many positions of cities she knows or how many dates of events, or how many names of celebrated persons…it is not the object of education to turn a woman into a dictionary;… ..she should be taught to enter with her whole personality into the history she read………"

अर्थात् महिला के संबंध में यह महत्त्व की बात नहीं कि वह इतिहास की कितनी तारीखें या कितने शहर जानती है, या कितने प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम।… . शिक्षा का उद्देश्य एक स्त्री को शब्द-कोष बना देना नहीं है;……उसे (नारी को) अपने व्यक्तित्व-सहित उस इतिहास में प्रवेश करना सिखाना चाहिए, जो वह पढ़ती है।

अब बताइए, सहशिक्षा में बालिकाओं के शिक्षण के लिये बालकों से भिन्न तरीक़ा कहाँ तक प्रयोग में लाया जा सकता है। अभी तक अलग विद्यालयों में भी बालक-बालिकाओं के पाठ्य विषय एक ही होने का फल हमें यह दिखलाई पड़ता है कि प्रायः शिक्षिता बालिका जब गृहस्थाश्रम में प्रवेश करती है, तो उसे छोटी-छोटी बातों और काम में भद्दी त्रुटियाँ करने पर ताने सुनने पड़ते हैं।

लेकिन यहीं तक होता, तो ग़नीमत थी, सहशिक्षा

की ओर पग बढ़ाना तो इससे भी कहीं अधिक हानिकारक है। सहशिक्षा द्वारा जो प्रभाव बालिकाओं पर पड़ेगा, यह होगा कि वे हर बात और हर काम में बालकों की नक़ल करना और बालकों के समान बनना चाहेंगी, और इस यत्न में, संभव है, वह अपने नारी-सुलभ भोलेपन, कोमलता और दया-भाव से भी हाथ धो बैठें। अब रही समाज की बात, तो इससे लाभ की अपेक्षा हानि की ही अधिक संभावना है। एक तो उदाहरणों द्वारा और अनुमान द्वारा भी प्रतीत होता है कि सहशिक्षा बालक-बालिकाओं को सच्चरित्र बनाने के मार्ग में यदि काँटा नहीं, तो साधन भी नहीं है, और शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य चरित्र-गठन (Character-building) होना चाहिए। इस संबंध में हमारे प्राचीन आचार्यों का मत तो आपको मनु महाराज के निम्न-लिखित श्लोक से ही ज्ञात हो जायगा—

मात्रा स्वस्त्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत् ;
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति।
(मनु०—२।२१५)

माता, बहन और पुत्री के साथ भी एकांत में न बैठना ही पुरुष के लिये उचित है, क्योंकि ये बलवती इंद्रियाँ संयमी पुरुष को भी वश में कर लेती हैं, अतः इनके दाँव से यथासंभव बचना ही उचित है।

ऐसी अवस्था में सहशिक्षा भारतीय छात्र-छात्राओं के लिये कहाँ तक अहितकारिणी सिद्ध हो सकती है, यह समझ लेना कठिन न होगा।

यह कहना कि इससे व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है, समझ में नहीं आता। जब दोनो के क्षेत्र भिन्न-भिन्न हैं, दोनो के कर्तव्य अलग-अलग, तो उनके परस्पर, स्वच्छंदता से, विचारों के आदान-प्रदान करने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं मालूम पड़ती। ऐसी अवस्था में अधिक काल तक मर्यादा के बंधन में बँधा रहना संभव-सा प्रतीत नहीं होता। जिन देशों में सहशिक्षा का प्रचार है, उन देशों ने भी अब इसकी हानियाँ समझना शुरू कर दिया है, और कुछ देशों में इसका बहिष्कार होना प्रारंभ हो गया है। तब फिर भला, भारतवर्ष को क्या आवश्यकता है कि सहशिक्षा-रूपी रोग को अपने अंदर प्रविष्ट होने दे।

भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास उठाकर देखिए, कहीं भी साधारण रूप से बालक-बालिकाओं की सहशिक्षा का प्रमाण नहीं मिलता, यद्यपि न तो उस समय पर्दा ही था, और न स्त्री-शिक्षा का विरोध ही। नारियाँ खुली सभा में पुरुषों के साथ शास्त्रार्थ कर सकती थीं, अध्यात्म विद्या पर प्रश्नोत्तर कर सकती थीं, किंतु साधारण पाठशालाओं और गुरुकुलों में प्रायः सहशिक्षा का प्रचार न था। और, शायद इसकी आवश्यकता ही न समझी गई थी। सहशिक्षा के कुपरिणामों का वर्णन करना तो व्यर्थ ही है, जब वे अब कुछ जनता की दृष्टि से अधिक दूर नहीं हैं, तथा रोज़ाना होनेवाली घटनाएँ प्रायः सभी सुनते और जानते हैं। अतः अब, जब अन्य देश भी सहशिक्षा के बुरे परिणामों को समझने लगे हैं, भारतवर्ष को इसे अपनाना कुछ लाभदायक सिद्ध न हो सकेगा। न तो यह सहशिक्षा युवक-युवतियों को सच्चरित्र ही बना सकेगी, और न अपने-अपने क्षेत्र में, और विशेषतया नारी-जगत् को उनके क्षेत्र में, पूर्णतया सफल ही कर सकेगी। अतः सहशिक्षा नारी-जाति के लिये हितकर नहीं हो सकती।

(कुमारी) कंचनलता सब्बरवाल 'हरिता'
(प्रभाकर, विदुषी)

खाद

किसी किसान से खेतों में खाद देने के लिये ज़ोर देकर कहना उतना ही फ़िज़ूल है, जितना किसी पुरोहित को पंचांग ख़रीदने का उपदेश देना। किसान खाद देने के तरीक़ों को भले ही भूल गए हों, पर खाद देने से फ़ायदा पहुँचने की बात तो शायद किसी भी लेखक, लेक्चरार तथा कृषि-विभाग के अधिकारी से ज़्यादा जानते हैं। ऐसा मेरा ख़याल है। हमारे देश में प्रांतीय सरकार द्वारा एक-एक कृषि-विभाग है। इस विभाग में सरकार द्वारा काफ़ी रुपए तो नहीं, पर हाँ, जहाँ तक संभव है, कुछ रुपए ख़र्च किए ही जाते हैं। वे रुपए इस ख़याल से ख़र्च किए जाते हैं कि ऐसा प्रबंध हो, जिससे किसानों की खेती की हालत में काफ़ी सुधार हो। पर कृषि-विभाग के हाकिम ऐसे तरीक़े अख़्तियार किए हैं, जिनसे फ़ायदे के बदले नुक़सान होने की ही ज़्यादा गुंजाइश है। फ़र्ज़ कीजिए, किसी दरिद्र मनुष्य को यक्ष्मा की बीमारी हुई, वह किसी डॉक्टर के पास दवा कराने गया। अब वह डॉक्टर यदि उसे विलायत जाकर दवा कराने की राय दे, तो फ़ायदेमंद होगा, या कोई साधारण हिंदुस्थानी, बिना दाम की जड़ी-बूटी देना? "न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेंगी।" यही हाल कृषि-विभाग के हाकिमों का है। जिस किसान के पास बीज लेने के लिये पैसे नहीं, उसे लोहे के क़ीमती हल ख़रीदने का उपदेश दिया जाता है, विलायती बैल ख़रीदने की राय दी जाती है, और नेसिफस तथा सलफ़ेट एमोनिया को खेतों में देने की बातें बताई जाती हैं। मैं सरकार से अर्ज़ करूँगा कि वह इस मोहकमे के हाकिमों से कहे कि वे किसानों को सस्ती-से-सस्ती चीज़ें, जो इसी देश में मिल सकें, इस्तेमाल करने की राय दें। किसी भी हालत में हमारे देश का एक पैसा भी बाहर के देशों में न जाना चाहिए, चाहे वह खाद के लिये जाता हो, चाहे हल-बैल के लिये।

पता लगाने से मालूम हुआ है कि खाद के सभी गुण गोबर या और तरह की देशी खाद में मिलते हैं, परंतु नेसिफस तथा सलफ़ेट एमोनिया में सभी गुण नहीं पाए जाते।

देशी खाद में गोबर की खाद सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद है, पर हमारे किसान इसे सुखाकर जला डालते हैं। किसानों के लिये जलावन की समस्या भी एक बहुत बड़ी समस्या है। खाना पकाने के लिये जलावन होना बहुत ज़रूरी है, जलावन के लिये सभी किसानों को लकड़ी मिलना मुश्किल है, ऐसी हालत में गोबर सुखाकर जलाने के सिवा उनके पास दूसरी कोई तरकीब नहीं। पर जहाँ तक हो सके, गोबर बचाकर खाद ही बनानी चाहिए। कच्चा गोबर खेत में देने से खेत ऊसर हो जाता है, उसमें दीमक लग जाती है, अतः उसे सड़ाकर खेतों में देना चाहिए। साधारणतः खाद छ महीने में सड़ती है। गोबर सड़ाने के लिये गाँव के बाहर लंबा-लंबा गढ़ा खोद देना चाहिए। गढ़े के ऊपर फूस की छत तैयार कर लेनी चाहिए, क्योंकि ज़्यादा गर्मी और ज़्यादा पानी दोनो ही खाद को नुक़सान पहुँचाते हैं। ज़्यादा धूप से खाद के गुण बरबाद हो जाते हैं, और ज़्यादा पानी से खाद का असली सार बहकर बाहर चला जाता है, अतः बरसात और गर्मी दोनो में यदि खाद मिट्टी से ढक दी जाय, तो ज़्यादा फ़ायदेमंद हो। गर्मी में सड़ानेवाली खाद में तीसरे रोज़ पानी देना चाहिए। बरसात में भी ऐसा इंतज़ाम रहे, जिससे गोबर को हमेशा पानी मिलता रहे। सितंबर का गोबर मार्च में और मार्च का सितंबर में काम में लाया जा सकता है। गोबर की खाद जौ, गेहूँ, धान, मक्का और साग-सब्ज़ी के खेत में ज़्यादा फ़ायदेमंद होती है। ईख की फ़सल के लिये भी सड़े गोबर की खाद ज़्यादा फ़ायदेमंद है।

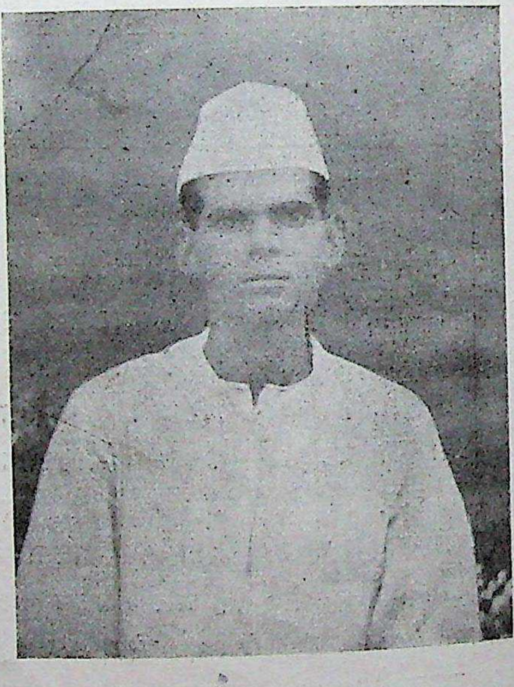

श्रीपं० रामचंद्र त्रिवेदी

अरहर के खेतों में जो पत्तियाँ गिरती हैं, उन्हें खेत में तोपकर सड़ा देने से बहुत उत्तम खाद तैयार हो जाती है। जिस खेत में अरहर की पत्तियाँ तोपकर सड़ा दी जायँगी, उसे तीन बरस तक खाद की ज़रूरत न पड़ेगी।

सबसे सस्ती खाद गढ़ों की मिट्टी है। जिन पोखरों या गढ़ों में आठ महीने तक पानी जमा रहता है, उनका पानी सूखते ही ऊपर की मिट्टी निकालकर खेतों में दे देनी चाहिए।

बरसात के दिनों में पानी के साथ कूड़ा-करकट, झाड़न-बुहारन, मछली आदि सड़कर मिट्टी में मिल जाते हैं। अतः ऊपर की मिट्टी उत्तम खाद बन जाती है। यदि गाँवों में किसान इस खाद को काम में लाने लगें, तो काफ़ी फ़ायदा पहुँच सकता है।

खाद बनाने का एक और बहुत बढ़िया तरीक़ा है। इस क़ायदे को अँगरेजी में कंपोस्ट कहते हैं। ईख की पत्तियाँ, पेड़ की पत्तियाँ, दरवाज़े का बुहारन आदि लेकर एक गढ़े में बराबर सतह पर बिछा देना चाहिए, और उसकी प्रत्येक तह में पशु का मल-मूत्र देते जाना चाहिए। जैसे दूध जमने के लिये 'जोरन'

देते हैं, उसी प्रकार ऊपर की चीज़ों को सड़ने के लिये जोरन (पशु का मल-मूत्र) देना बहुत ज़रूरी है। यह बिछाई हुई खाद दो फ़ीट से ऊँची न होनी चाहिए। उसमें गर्मी में दूसरे रोज़ और जाड़े में चौथे रोज़ पानी देना चाहिए। इस तरह जब खाद अच्छी तरह सड़ जाय, उसे काम में लाया जाय। यह खाद सबसे बढ़िया होती है।

हरी खाद भी फ़सल के लिये बहुत फ़ायदेमंद है। सनई और धनचा (Dhancha) हरी खाद में मशहूर हैं। सनई की खाद जौ, जई, गेहूँ, चना और ईख आदि के लिये बहुत फ़ायदेमंद होती है। धनचा धान के खेत के लिये फ़ायदेमंद है।

इतने तरह की देशी और सस्ती खाद के रहते क्या ज़रूरत है कि हम विदेशी खाद इस्तेमाल करने के लिये बहकाए जायँ? आजकल नेसिफ़स और सलफ़ेट ऑफ़् एमोनिया व्यवहार में लाने के लिये काफ़ी प्रचार हो रहा है। कृषि-विभाग के कर्मचारी भी घूम-फिरकर इसी पर ज़ोर देते हुए पाए जा रहे हैं। जहाँ तक हो सके, विदेशी खाद के विरोध की ज़रूरत है, क्योंकि विदेशी चीज़ें ख़रीदना अपने देश का धन दूसरे मुल्क में भेजना है।

रामचंद्र त्रिवेदी

PUMILET
PUMILET

प्यूमीलेट

ज़ायक़ेदार

खाँसी, सर्दी, पेचिश और फेफड़े-संबंधी बीमारियों में

हिमालियन पाइन और अन्य तात्कालिक लाभ-प्रद जड़ी-बूटियों का मिश्रण।

बंगाल केमिकल

कलकत्ता : : बंबई

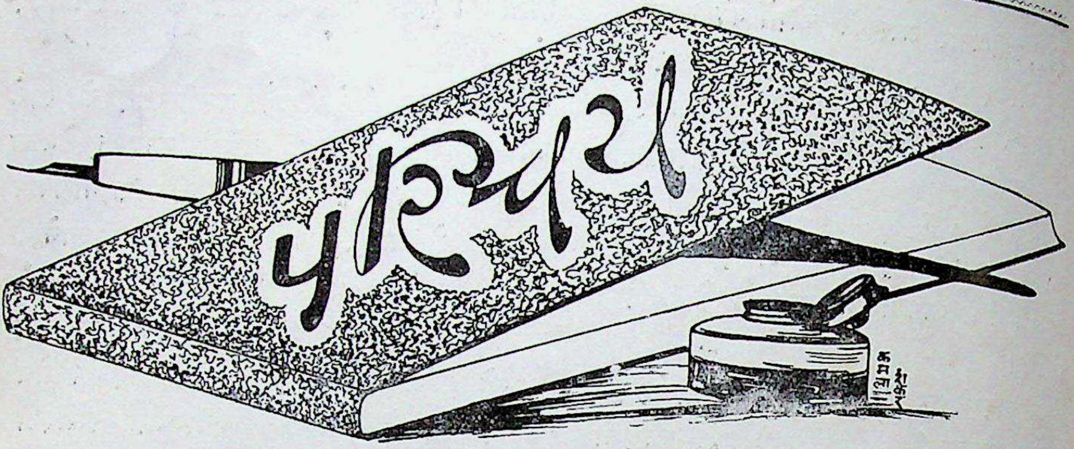

विजय (उपन्यास)—लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०; प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ ; दो भाग का मूल्य ४), जिल्ददार ५)

श्रीवास्तवजी ने इस उपन्यास में स्त्रियों के स्वतंत्रता-संबंधी उस आधुनिक आंदोलन पर प्रकाश डाला है, जिसके लिये पाश्चात्त्य ढंग की शिक्षा-प्रणाली से शिक्षित होकर और वैसे ही वातावरण में पलकर वे आज उद्योग कर रही हैं। स्व० प्रेमचंदजी के अंतिम उपन्यास 'गोदान' की एक समस्या भी ऐसी ही है, और उन्हीं के साथ श्रीवास्तवजी भी यह कहते सुनाई देते हैं कि विदेशी ढंग का यह पौधा भारत की उर्वरा और फलवती भूमि में भी नहीं पनप सकता—आधुनिक आंदोलन चाहे जितने ज़ोर-शोर से हों, भारत के प्राचीन आदर्शों के सामने इमें झुकना ही पड़ेगा। उपन्यास की समस्या, संक्षेप में, यही है। संभव है, किसी का इससे मतभेद हो।

उपन्यास का ढंग रोचक है, इसमें कोई संदेह नहीं; परंतु लेखक महाशय ने जिस श्रेणी के पात्र—बैरिस्टर, जज आदि—चुने हैं, उनसे जन-साधारण की सच्ची सहानुभूति नहीं हो सकती, यद्यपि लेखक के मत की आदर्श भावना से अधिकांश पाठक सहमत होंगे। यही कारण है कि साधारण पाठक के लिये 'विजय' के प्रायः सभी पात्र, कुसुमलता को छोड़कर, निर्जीव हैं। उनके सामने जीवन की कोई समस्या नहीं ; उनके जीवन में किसी प्रकार का संघर्ष नहीं। मनोरमा का धर्म-नाश लेखक महाशय ने चाहे मिस साहबा की नीचता दिखाने के लिये कराया हो, चाहे राजा साहब की पशुता; परंतु हम उसे एक बड़ा दोष समझते हैं। साधारण पाठक को यह परिच्छेद कई दिन तक सताता रहेगा। लेखक के मत के पोषकों और समर्थकों को कुसुमलता का चरित्र बड़ा प्यारा लगेगा। हम भी उसे बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। लेखक महाशय इसके लिये बधाई के पात्र हैं !

प्रेमनारायण टंडन (विशारद)

× × ×

वेद-गीतांजलि—प्रकाशक, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार; मुद्रक, चौधरी हुलासराय, गुरुकुल कांगड़ी-मुद्रणालय, कांगड़ी, हरद्वार ; पृष्ठ-संख्या २४८ ; काग़ज़ एवं छपाई सराहनीय; मूल्य २)

प्रस्तुत पुस्तक हिंदी-भाषा में कदाचित् अपने ढंग का एक नवीन प्रयास कहा जा सकता है। इस पुस्तक का क्रम भी नवीन है। वाम पृष्ठ पर ऋषि, देवता, छंद एवं स्वर देते हुए मंत्र तथा उसका पदार्थ दिया गया है, और दक्षिण पृष्ठ पर मंत्र की छाया या भाव लेकर स्वतंत्र

गीत की रचना की गई है। प्रकाशक महोदय के शब्दों में "वैदिक ऋषियों के उस अलौकिक गायन को भाषांतर में अवतरित करना संभव नहीं। उपस्थित गीत मंत्र की आत्मा से बहुत इधर है। फिर भी इन गीतों में कहीं-कहीं वैदिक छंद की हलकी-सी ध्वनि अवश्य सुन पड़ती है, और इतनी सफलता कुछ कम नहीं।" इस कथन से मंत्रार्थ और गीत के परस्पर स्वरूप और संबंध का संक्षेप में परिचय प्राप्त हो जाता है।

यह तो स्पष्टतया लिखा गया है कि पुस्तकस्थ गीतों के निर्माता श्रीसुमित्रानंदन पंत, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश', श्रीनानकचंद 'निश्चिंत', श्रीसंतप्रसाद वर्मा, श्रीमहावीरप्रसाद 'निरीह', स्व० पं० चमूपतिजी उपाध्याय, श्रीबागेश्वर विद्यालंकार, श्रीनिरंजनदेव, प्रियहंस, श्रीजगन्नाथप्रसाद, श्रीसत्यकाम विद्यालंकार 'परमहंस' तथा श्रीवेदव्रतजी वेदालंकार हैं, किंतु मंत्रों के पदार्थ किसने लिखे हैं, यह स्पष्ट नहीं किया गया। समस्त पुस्तक में ७२ मंत्र चुनकर रक्खे गए हैं, और उनके साथ ७२ गीत दिए गए हैं। ख्यातनामा कवियों ने यथासंभव गीतों को मनोहर बनाने में पूर्ण प्रयत्न किया है, और पुस्तक को सरस बनाने में सफलता भी प्राप्त की है। ऐसी पुस्तकें जितनी ही अधिक संख्या में प्रकाशित की जा सकें, उतना ही वैदिक भावों का सर्व-साधारण में प्रचार होना संभव है। किंतु खेद है, यत्र-तत्र मंत्रों के पदार्थ करने में आवश्यक सतर्कता एवं आर्ष शैली का अनुसरण नहीं किया गया है। इस विषय में विस्तार के साथ किसी स्वतंत्र लेख द्वारा हम अपने विचार प्रकट करेंगे। तथापि वैदिक साहित्य के स्वाध्यायशील भक्तों के लिये यह पुस्तक संग्रहणीय है।

× × ×

गीता-विज्ञान—लेखक, श्रीरामगोपाल मोहता, कराँची और बीकानेर ; मुद्रक, चंद्र-प्रिंटिंग प्रेस, श्रद्धानंद-बाज़ार, देहली; संवत् १९९५ वि० ; साइज़ १८×२२ ; पृष्ठ-संख्या ८४ ; मूल्य डाक-व्यय-सहित =)॥

गीता-साहित्य उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो रहा है। मूल-गीता, गीता-भाष्य, गीता-टीका, गीतानुवाद, स्वतंत्र निबंध-ग्रंथ, आलोचनात्मक पुस्तकें तथा अन्यान्य गद्य-पद्यात्मक छाया अथवा भावानुवाद अनेक भाषाओं में निकल चुके हैं। किंतु इतनी व्यापक लिखा-पढ़ी के उपरांत भी गीता की ग्रंथियाँ स्पष्ट हो गई हैं, या मूल-गीता के स्थान पर रखने योग्य उसका कोई नवीन काया-कल्पित रूप रखने योग्य सुलभ हो गया है, यह कहना अब भी उतना ही संदिग्ध है, जितना आज से सौ वर्ष पूर्व था।

गीता-साहित्यविदों को भली भाँति विदित है कि संप्रदाय-प्रचारकों ने अपने-अपने संकुचित विचारों के अनुसार गीता को कर्म, भक्ति अथवा ज्ञान-प्रधान प्रतिपादित करने की चेष्टा की है। संप्रदाय-बाहुल्य के कारण ही गीतार्थ की मौलिकता हृदयंगम करने में भी अनेक प्रकार की असुविधाएँ होती हैं।

गीता की सरसता यथापूर्व सनातन-महत्त्व-पूर्ण अक्षुण्ण बनी है। और, जितना ही उसे पढ़ा जाय, उतना ही रहस्यार्थ उसमें उपलब्ध होगा।

प्रस्तुत पुस्तक पिता-पुत्र के संवाद-रूप में लिखी गई है। पूर्ण पुस्तक में ५३ पाठ हैं, और इनके द्वारा सरल भाषा में गीता-प्रतिपादित प्रायः समस्त विषयों का समावेश किया है। गूढ़ विषयों को रोचक विधि से सरल भाषा में समझाने का ढंग तो अवश्य श्लाघ्य है, किंतु यत्र-तत्र लेखक ने अपनी निजी अद्वैत धारणाओं को भी गीता के द्वारा प्रकट किया है, जिनके विषय में मतभेद होना संभव है। तथापि इस पुस्तक की आठ हज़ार प्रतियाँ कुंभ के अवसर पर निकल गईं, और प्रस्तुत संस्करण

दस सहस्र का पुनः प्रकाशित हुआ है। गीता-साहित्य-कानन में प्रवेश करनेवाले विद्यार्थियों को एक बार यह पुस्तक पढ़नी चाहिए। पुस्तक लेखक से प्राप्त हो सकती है।

× × ×

विश्व की पहेली [ईश्वर, जीव, प्रकृति (त्रैत-वाद)]—लेखक, बाबू पूर्णचंद्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट, पूर्व प्रधान आर्य-प्रतिनिधि-सभा, संयुक्त प्रांत ; प्रकाशक, आर्य-साहित्य-मंडल लिमिटेड, अजमेर ; साइज़ २०+३०, १६पेजी ; पृष्ठ-संख्या १९५ ; कागज़ तथा छपाई साधारण।

प्रस्तुत पुस्तक की भूमिका में लेखक महोदय ने स्पष्ट किया है कि इस पुस्तक को उन्होंने श्रीप्रधान आर्य-प्रतिनिधि-सभा, संयुक्त प्रांत की प्रेरणा से गत दिसंबर-मास में होनेवाले प्रांतीय आर्य-प्रतिनिधि-सभा-संबंधी स्वर्ण-जयंती (मेरठ) के उपलक्ष्य में शीघ्रता के साथ लिखा है। इस पुस्तक के लिखने का प्रयोजन यह बतलाया है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति-जैसे अत्यंत दुरूह विषयों पर पाँच दिन तक लगातार होनेवाले सुप्रसिद्ध विद्वानों के गंभीर व्याख्यानों को सुविधानुसार हृदयंगम करने के लिये इस पुस्तक का निर्माण किया गया है।

समस्त पुस्तक तीन भागों में विभाजित है। पृष्ठ १ से ६६ तक ईश्वर-विषय, ६७ से १२३ तक जीवात्मा और १२५ से १९५ तक प्रकृति-विषय का प्रतिपादन किया गया है। लेखक महोदय ने आर्य-समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती-प्रतिपादित वैदिक सिद्धांतों को, उनके ग्रंथों के आधार पर, इस पुस्तक में प्रतिध्वनित करने का प्रयत्न किया है। साथ ही यथासंभव पाश्चात्त्य वैज्ञानिकों और दार्शनिकों के मतों, वादों और धारणाओं का भी उल्लेख एवं समीक्षण किया है। "जिस समय जैसे कर्म प्रचलित होते हैं, उसके अनुसार विचार बन जाते हैं, और जैसे विचार बन जाते हैं, उनसे कर्म प्रभावित होते रहते हैं।" लेखक महोदय अपने इस वाक्य के अनुसार स्वयं भी परिस्थिति-जनित वातावरण से प्रभावित हुए प्रतीत होते हैं, अन्यथा जिन व्यापक एवं रहस्य-पूर्ण अर्थों में ईश्वर, जीव, प्रकृति-जैसे अत्यंत गहन विषयों का यथार्थ ज्ञान साक्षात्कृतधर्मा महर्षियों ने अध्यात्म प्रसाद और योग-समाधि, साधना के आधार पर किया, और अपने अनुभवों को आर्ष दर्शनों में अंकित किया, उनकी पुष्टि के लिये भौतिकता-प्रधान पाश्चात्त्य विद्वानों के उद्धरणों का सहारा लेना देश-काल-जनित प्रगति का अनुयायी बनना है।

तथापि विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक को शीघ्रता में, किंतु बड़े परिश्रम के साथ लिखा है। अनेक कार्यों में सतत संलग्न रहनेवाले व्यक्ति के लिये ऐसी पुस्तक लिखना कदाचित् कठिन है, किंतु बाबू पूर्णचंद्र का प्रयास सर्वथा सराहनीय है।

शीघ्रता के साथ प्रकाशित होने के कारण इस पुस्तक में जो त्रुटियाँ हमको प्रतीत हुईं, उनमें से मुख्य दो का हम इस प्रसंग में उल्लेख कर देना इसलिये अपना कर्तव्य समझते हैं कि उनकी पूर्ति आगामी संस्करण में की जा सकेगी। पुस्तक पढ़ने से पहले हमने यह आशा की थी कि उद्दिष्ट विषय-प्रतिपादन में विद्वान् लेखक ने स्वामी दयानंद सरस्वती-प्रदत्त युक्ति-प्रमाणों को देते हुए अन्यान्य अनेक युक्ति-प्रमाणों का उल्लेख अवश्य किया होगा। विशेषतः ऐसे अनेक श्रौत प्रमाण दिए होंगे, जो अब तक साधारणतया देखने में नहीं आए, किंतु ऐसा प्रयास नहीं किया गया प्रतीत होता है। दूसरी त्रुटि हमको यह प्रतीत हुई कि पाश्चात्त्य विद्वानों के मतों का प्रदर्शन करते समय कदाचित् इस बात की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया कि सन् १९३७ के अंत में प्रकाशित होनेवाली पुस्तक को सर्वथा अप-टु-डेट

बनाने के लिये यह अनिवार्य है कि अब तक पाश्चात्य विद्वानों ने इन विषयों पर कहाँ तक गवेषणा की है, यह दिखलाया जाय। ऐसा न होने से विज्ञों को अधूरापन प्रकट हो सकता है।

ईश्वर, जीव, प्रकृति-जैसे गंभीर विषयों में रुचि रखनेवाले साधारणतया प्रत्येक स्वाध्यायशील व्यक्ति से तथा विशेषतया प्रत्येक मननशील आर्यसमाजी से हम अनुरोध करते हैं कि एक बार इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

रामदत्त शुक्ल (एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—

'गोनोकिलर'

[रजिस्टर्ड]

GONO ORIGINAL KILLER REGD TRADE MARK

नक़ली से सावधान !
खरीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में पैसा फ़िज़ूल बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ४० गोलों की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, (S. L.) विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'रक्त-रंजित स्पेन' (इतिहास)—लेखक, श्रीशिवदानसिंहजी चौहान बी० ए० ; मूल्य १)

(२) 'काव्य और संगीत' (आलोचना)—लेखक, श्रीलक्ष्मीधरजी वाजपेयी ; मूल्य ।=)

(३) 'भावी महाभारत संवत् २०००' (राजनीति)—लेखक, श्रीभारतीय योगी ; मूल्य १।)

(४) 'हिंदी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास'—लेखक, श्रीरामकुमारजी वर्मा ; मूल्य ४।।)

(५) 'श्रीराजराजेश्वरी-ग्रंथावली' (काव्य)—लेखक, श्रीराजराजेश्वरीप्रसादसिंहजी ; मूल्य ५)

(६) 'समाज और साहित्य' (प्रथम भाग)—लेखक, श्रीआनंदकुमारजी ; मूल्य ।।।)

(७) 'पुष्पबाण' (काव्य-संग्रह)—लेखक, श्रीआनंदकुमारजी ; मूल्य ।।)

(८) 'पेखन' (नाटक)—लेखक, श्रीपं० रामनरेशजी त्रिपाठी ; मूल्य ।)

(९) 'कबड्डी' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीपं० मुनीश्वरप्रसादजी ; मूल्य ।)

(१०) 'खोजो, खोज निकालो' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीपं० रामनरेशजी त्रिपाठी ; मूल्य ।)

(११) 'नेता-बुझौवल' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीपं० रामनरेशजी त्रिपाठी ; मूल्य ।)

(१२) 'हाथी का ब्याह' (कविता)—लेखक, श्रीरामगोपालजी पांडेय ; मूल्य ।=)

(१३) 'कला'—लेखक, श्रीहंसकुमारजी तिवारी ; मूल्य १।)

(१४) 'विनाश की ओर' (उपन्यास)—लेखक, श्रीविश्वनाथ रायजी एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १)

(१५) 'वीर-गाथा' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीसंतरामजी बी० ए० ; मूल्य १।)

(१६) 'अभिषेक' (नाटक)—लेखक, श्रीप्रेमनिधिजी शास्त्री ; मूल्य ।।।)

(१७) 'बच्चों की पहेलियाँ' (कविता)—लेखक, श्रीसत्यानंदजी ; मूल्य ≡)

(१८) 'घिनक-घिना' (कविता)—लेखक, श्रीशिक्षार्थीजी ; मूल्य ।-)

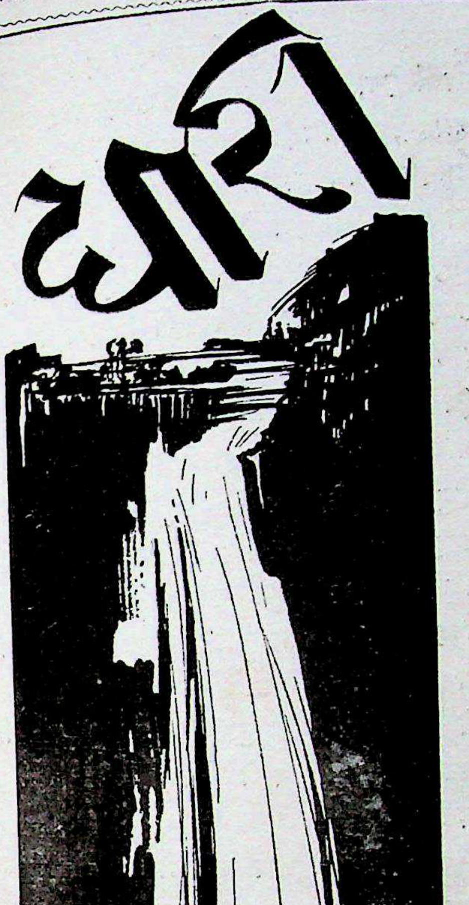

१. राष्ट्र-भाषा का स्वरूप क्या हो ?

अभी गत मास ही माननीय श्रीसंपूर्णानंदजी ने, बनारस में, इसी संबंध में एक व्याख्यान दिया है, जिसे लेकर कुछ उर्दू-पत्रों में और मुसलिम-लीग के प्लेटफ़ार्म पर काफ़ी विरोध हुआ है। कुछ मुसलमानों ने तो इस संबंध में कांग्रेस के महान् नेता महात्मा गांधी तक को लिख मारा, और श्रीसंपूर्णानंद के त्याग-पत्र की माँग की। इधर मुसलमानों की मनोवृत्ति कुछ अजीब-सी हो गई है। वे हिंदी एवं कांग्रेस-शासित प्रांतों में तो हिंदुस्थानी (वह हिंदुस्थानी, जो विशुद्ध उर्दू हो) की माँग करते हैं, परंतु उर्दू-प्रांतों में इसका नाम भी नहीं लेते। हमने यह आज तक नहीं सुना कि पंजाब में, जहाँ हिंदुओं की जन-संख्या कम है, सर सिकंदरहयातख़ाँ से किसी भी मुसलमान ने हिंदी को स्थान देने की प्रार्थना की हो। इसके विरुद्ध वहाँ हिंदी की माँग को ठुकरा दिया गया, और प्रांत की भाषा को पंजाबी, गुरुमुखी और विशेषकर उर्दू माना गया। वही सिंध का हाल है। इधर उर्दू-पत्र, जो अभी तक सरल उर्दू लिखते आए हैं, फ़ारसी-अरबी के शब्द अधिकतर व्यवहार करने पर तुले हुए हैं, चाहे वे अधिकांश मुसलिम-जनता द्वारा समझे जायँ या नहीं।

पर इस मनोवृत्ति को जाने दीजिए, हमें तो यहाँ राष्ट्रीय भाषा के असली स्वरूप पर विचार करना है। इस संबंध में हम माननीय श्रीसंपूर्णानंदजी को बधाई देते हैं कि उन्होंने महात्मा गांधी को पत्र लिखकर यथेष्ट दृढ़ता का परिचय दिया है। आवश्यक समझकर हम यहाँ उनका पत्र और साथ ही महात्मा गांधीजी का उत्तर अविकल रूप में दे रहे हैं—

लखनऊ

४ सितंबर, १९३८

प्रिय महादेव भाई, नमस्कार ।

मैं इस पत्र को संकोच के साथ लिख रहा हूँ, क्योंकि महात्माजी इस समय मौन धारण किए हुए हैं, और उनके सामने कई बड़े प्रश्न हैं। फिर भी मैं जो बात लिख रहा हूँ, उसका विशेष महत्त्व है, इसलिये मेरी प्रार्थना है कि आप कृपया यह पत्र उन्हें सुना दें, और वह जो आदेश दें, उससे मुझे सूचित कर दें ।

इधर मैं बनारस गया था । वहाँ काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से मुझे एक अभिनंदन-पत्र दिया गया । उसके उत्तर में मैंने जो भाषण दिया, उस पर उर्दू-पत्रों में बड़ी टीका-टिप्पणी हो रही है । कई पत्र, जो कांग्रेस के घोर शत्रु हैं, आज कांग्रेस के प्रस्तावों की दुहाई दे रहे हैं, और उनको मेरी बातों में सांप्रदायिकता की दुर्गंध आती है । मेरे कहने का तात्पर्य यह था कि कोई भाषा हो, उसका स्वरूप उसके क्रियापदों पर, जो भाषा के मूल-स्तंभ (Bases) हैं, निर्भर है । भाषा में अन्य भाषाओं से चाहे जितने शब्द लिए जायँ, उसका मूल-स्वरूप और नाम यही रहता है । मराठी, गुजराती, बँगला में फ़ारसी-शब्द हैं । अँगरेज़ी में लैटिन, ग्रीक, फ़्रेंच इत्यादि के शब्द हैं । ईरानी में फ़ारसी-अरबी के शब्द हैं । फिर भी इनके नाम नहीं बदले । इस तरह तो हमारी भाषा का नाम, चाहे उसमें फ़ारसी-अरबी के कितने ही शब्द आए हों, हिंदी होना चाहिए था । पुराने मुसलमान-कवियों ने भी इसे हमेशा हिंदी-ज़बान कहा है । परंतु बीच में यह प्रथा चल पड़ी कि इसके उस रूप को, जिसमें संस्कृत के तद्भव और तत्सम शब्द अधिक हों, हिंदी और जिसमें फ़ारसी और अरबी के शब्द हों, उसे उर्दू कहा जाय । अब हिंदुस्थानी-शब्द चलाया जा रहा है । इसमें किसी को आपत्ति न होनी चाहिए । पर इसका स्वरूप समझ लेना चाहिए । हिंदुस्थानी में तो संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के शब्द हठात् न ठूँसे जाने चाहिए, न प्रचलित शब्द उसमें से निकाले जाने चाहिए । अँगरेज़ी में एक ही अर्थ में कई शब्द हैं, जो भिन्न-भिन्न मार्गों से उसमें आए हैं । वही हिंदुस्थानी में होना चाहिए । इससे भाषा का शब्द-भांडार भरा रहता है । साहित्य में सुगमता होती है, और क्रमशः shades of meaning (किंचित् अर्थ-भिन्नता) उत्पन्न हो जाते हैं । आजकल ख़राबी यही है कि कुछ लोग हिंदुस्थानी के नाम से उर्दू का प्रचार करना चाहते हैं । दिल्ली और लखनऊ के रेडियो-स्टेशन गेहूँ न कहकर गंदुम कहते हैं । पंच-जैसे सीधे शब्द को न बोलकर 'सालिस' कहते हैं । पुस्तकों की समालोचना करते समय उर्दू की पुस्तकों को तो हिंदुस्थानी पुस्तकें कहते हैं, पर हिंदी-पुस्तकों को हिंदी रहने देते हैं । इससे बुरा असर पड़ता है ।

एक बात मैंने और कही थी । अँगरेज़ों ने अपनी भाषा ज़बरदस्ती चला दी, पर युक्त प्रांतवाले तो सारे भारत में अपनी भाषा ज़बरदस्ती नहीं चला सकते । हमको भाषा के स्वरूप का निश्चय करते समय यह देखना होगा कि राष्ट्र-भाषा होने के कारण उसे महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल और मदरास आदि के लोगों को भी व्यवहार में लाना है । इन लोगों के ख़याल से हमको संस्कृत से निकले शब्दों को पर्याप्त संख्या में रखना होगा । लिपियाँ तो दोनो ही अभी रहेंगी ।

मेरा विश्वास है, इसमें कोई बात ऐसी नहीं, जो कांग्रेस के किसी सिद्धांत या मंतव्य के विरुद्ध या देश की राजनीतिक, साहित्यिक या सांस्कृतिक प्रगति के लिये हानिकर हो । यदि हमने ईरान या तुर्की की भाँति अपनी भाषा से संस्कृत या फ़ारसी-अरबी के शब्दों को निकालना शुरू

किया, तो बड़ा अंधेर होगा। फिर संस्कृत-शब्दों का तो यहाँ की जनसंख्या के बहुत बड़े अंश के जीवन से ऐसा घना संबंध है कि उनके बहिष्कार से जो भाषा बनेगी, कृत्रिम होगी।

यदि आप इस संबंध में अवसर देखकर महात्मा-जी से परामर्श करके मुझे सूचित कर सकें, तो मैं ऋणी हूँगा।

आपका—
संपूर्णानंद

पुनश्च—

मेरी राय बहैसियत एक भारतीय, एक साधारण हिंदी-सेवी और एक कांग्रेसमैन के है। पर इस समय मैं कांग्रेस का मिनिस्टर भी हूँ। मेरा विश्वास है, मैं जो राय रखता हूँ, वह इस पद के दायित्व के प्रतिकूल नहीं, पर महात्माजी की सम्मति मुझे अपनी स्थिति समझने में मदद देगी। यदि मैं देखूँगा कि मेरी भाषा-संबंधी इस राय का मेरे सरकारी पद के साथ सामंजस्य नहीं, तो मैं इस प्रश्न पर अपने कर्तव्य को निश्चय करने का यत्न करूँगा।

सेगाँव, वर्धा
८। ६। ३८

भाई संपूर्णानंद,

आपने लिखा है, वह सब मुझे मान्य है। कांग्रेस ने भाषा का नाम-संस्करण किया, और कोई क़ैद रखा नहीं है। जो सच्चे हैं, वे तो किसी शब्द का हिंदू या मुसलिम होने के कारण बहिष्कार नहीं करेंगे। औरों का क्या कहना। और आज तो फ़ैशन बन गई है कि कांग्रेस या कांग्रेसी जो कुछ करें, उसका विरोध ही करना। इस बारे में मेरा अभिप्राय ही चाहते हैं कि और कुछ? क्योंकि मैंने इस बारे में काफ़ी कहा और लिखा भी है।

आपका—
मो० क० गांधी

यह बहुत अच्छा हुआ कि ऐसे समय में, जब मुसलिम-लीग और उर्दू-पत्रकार इस सवाल को अत्यंत महत्त्व देकर हिंदू-मुसलिम-प्रश्न बना रहे थे, माननीय श्रीसंपूर्णानंद ने इस पर अपनी समुचित सम्मति प्रकट कर दी और महात्माजी ने भी उस पर अपनी छाप लगा दी है। मदरास-प्रांत में चली हुई, डॉक्टर ज़ाकिरहुसैन द्वारा लिखी गई रीडरों से हमको संदेह हो गया था कि वर्धा-शिक्षा-योजना के अंतर्गत उर्दू ही का, हिंदी-लिपि में, प्रचार किया जायगा। ऐसा ही अधिकतर कांग्रेस-सदस्य समझते भी थे, और इसीलिये कदाचित् उन्होंने मदरास की रीडरों का विरोध नहीं किया। हमारे विचार से तो अब वर्धा-शिक्षा-योजना के मेंबरों को तथा प्रत्येक कांग्रेस-सरकार को माननीय श्रीसंपूर्णानंदजी की सम्मति मान्य होनी चाहिए, और उसी पर अमल करना चाहिए। बंबई-प्रांत में भी हिंदी के अनिवार्य रूप से पढ़ाए जाने का निश्चय हो चुका है। क्या वहाँ के शिक्षा-मंत्री हमारी इस टिप्पणी पर ध्यान देंगे?

अंत में माननीय श्रीसंपूर्णानंदजी से भी हमारी एक प्रार्थना है कि अपने ही प्रांत में वह इस नीति को चलाएँ, और आगामी हिंदुस्थानी रीडरों, सरकारी पत्रों, गज़टों और अन्य कांग्रेस-कार्यों में संस्कृत के प्रचलित शब्दों का व्यवहार निषेध न करके उनका व्यवहार करवाएँ।

× × ×

२. नाज़ी जर्मनी और यहूदी

यहूदी-जाति बहुत पुरानी है। यह जाति उस समय संसार में थी, जब इसलाम और क्रिश्चियन-धर्म का नामोनिशान न था। क्रिश्चियन-धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह और उनके पैग़ंबर मूसा इसी जाति के हैं। यह धर्म स्वयं कोई ४,००० वर्ष का पुराना है। इसका उद्गम-स्थान आजकल का जेरूसलम है। यहूदियों की अपनी एक संस्कृति

थी, और है। यह संस्कृति एक उच्च उत्कर्ष को प्राप्त हो चुकी थी, जब संपूर्ण योरप अंधकार में पड़ा हुआ था। इस अंधकार से योरप को उठाने का श्रेय इन्हीं यहूदियों को है।

परंतु क्रिश्चियन-क़ौमों और राष्ट्रों के पैदा होने पर यहूदी एक बार भारत के द्राविड़ों की तरह एक गड्ढे में गिर गए। क्रिश्चियन-जातियों ने इनके साथ बर्बरता का व्यवहार किया, और सदियों तक यह प्रयत्न करती रहीं कि इस जाति को संसार से सर्वथा मेट दिया जाय। पर इसमें सफलता असंभव थी, और अंत में यहूदी रह ही गए। इधर उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभ में, धार्मिक असहिष्णुता कम होने पर, यहूदियों को कुछ विश्राम मिला, जिसका परिणाम यह हुआ कि संसार-भर का अधिकांश वाणिज्य, व्यवसाय, कला, विज्ञान, संगीत, दर्शन आदि उन्होंने अपनी बपौती बना ली। इस समय संसार के किसी भी कोने में किसी भी कला-व्यापार का आप मनन करें, तो वहाँ किसी-न-किसी यहूदी का उस पर स्थायी प्रभाव दिखाई पड़ेगा।

गत महायुद्ध के समय यहूदी लोग संसार के बड़े-बड़े राष्ट्रों—अमेरिका, इँगलैंड, जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली—में अपना काफ़ी प्रभाव रक्खे थे। इन देशों की वैदेशिक राजनीति में सदैव उनका हाथ रहता था, और महायुद्ध का एक सबसे बड़ा कारण यह भी था कि यहूदी लोग जेरूसलम में अपने लिये स्थायी रूप से पुनः अपना देश और स्थान बनाना चाहते थे। इसी आशा के बल पर जर्मनी के यहूदियों ने, देश-द्रोह की घृणित नीति का अवलंबन करके, अमेरिकन और ब्रिटिश यहूदियों से मिलकर मित्र राष्ट्रों का साथ दिया। समस्त संसार के यहूदियों ने अपने धन-बल से जर्मनी को मित्र राज्यों द्वारा पराजित करा दिया। परिणाम यह हुआ कि युद्ध समाप्त होते ही ब्रिटेन के तत्कालीन वैदेशिक मंत्री लॉर्ड बालफ़ोर ने घोषणा की कि जेरूसलम यहूदियों का घर मान लिया जाय, और उन्हें वहाँ बसने की सुविधाएँ दी जायँ। और, थोड़े ही वर्षों में वहाँ कोई पाँच लाख यहूदी बस गए।

किंतु जर्मनी यहूदियों के देश-द्रोह को न भूला। जर्मनी के राजनीतिक आकाश में हर हिटलर के उदय होते ही उनसे बदला लेने की नाज़ियों ने ठान ली। कोई चार वर्ष तक यहूदियों ने हिटलर की एक न चलने दी, और कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता था कि हिटलर उदय होते ही यहूदियों द्वारा अस्त हो जायगा। वह कई बार यहूदी-षड्यंत्रों से मरते-मरते बचा। पर भावी प्रबल है, और यहूदियों का कट्टर शत्रु हिटलर जर्मनी का एकच्छत्र तानाशाह हो गया। शासन की बागडोर नाज़ियों के हाथ में आते ही यहूदियों के विरुद्ध बदले की भावना प्रबल हो उठी, और घृणा की लहर में यहूदियों के सभी कर्म हो गए। उनका पढ़ना-लिखना, उठना-बैठना, सब हराम कर दिया गया। हज़ारों की तादाद में मारे गए, जायदाद लूट ली गई, और हज़ारों की संख्या में उन्होंने आत्महत्याएँ कीं। आस्ट्रिया के जर्मनी में मिलने पर वहाँ भी यहूदियों की यही दर्दनाक हालत हुई, यहाँ तक कि संसार-विख्यात यहूदी वैज्ञानिक, प्रोफ़ेसर, डॉक्टर, कलाकार देशांतर कर दिए गए।

इधर गत मास एक सत्रह वर्ष के उग्र यहूदी बालक ने, जो पोलैंड का रहनेवाला था, पेरिस के जर्मन राजदूतावास में प्रवेश कर जर्मन-सेक्रेटरी हर वॉनराथ की हत्या कर दी। घटना साधारण थी, पर रूप इसका बड़ा ही भयंकर हो उठा। जैसे ही हर वॉनराथ की मृत्यु की ख़बर जर्मनी पहुँची, जर्मनों ने यहूदियों पर आक्रमण कर दिया। यहूदियों को उनकी दूकानों से ज़बरदस्ती घसीटकर सड़क पर बर्बरता से क़त्ल कर दिया। दूकानों को लूटकर तहस-नहस कर दिया। हज़ारों दूकानों और

मकानों में आग लगा दी। यहूदियों के गिरजाघर और अस्पताल तक नष्ट कर दिए गए, और रोगियों तक को बुरी तरह पीटा। हज़ारों यहूदी गिरफ़्तार करके जेल भेज दिए, और उनके ख़र्च का भार—लगभग १०० करोड़ मार्क—इन्हीं बेचारे यहूदियों पर टैक्स-रूप में लाद दिया गया। उनकी करोड़ों पौंड की संपत्ति नष्ट कर दी गई। राष्ट्रपति सुभाष बाबू के शब्दों में—"जातिगत साम्य के प्रश्न पर हम भारतवासी हमेशा सजग हैं, और एक अस्थिर-चित्त यहूदी-युवक के अपराध का परिशोध लेने के लिये जर्मनों द्वारा समस्त यहूदी-जाति पर किए गए बर्बरता-पूर्ण अत्याचार से, समस्त सभ्य संसार के साथ, हम भी क्षुब्ध हैं। म्यूनिक में शक्तिशाली राष्ट्रों के निर्लज्ज आत्मसमर्पण का यह परिणाम है कि आज जर्मनी जनमत के प्रति मर्मांतक उपेक्षा का प्रदर्शन कर रहा है।"

× × ×

३. किसानों की माँगें

आजकल सर्वत्र गाँव-सुधार की—किसानों की दशा में सुधार किए जाने की—चर्चा है। प्रत्येक नई प्रांतीय सरकार ने किसानों के लिये नए क़ानून बनाए हैं, जिनमें किसानों को ज़मीन पर पहले सं अधिक हक़ दिए गए हैं, और उनके लगान तथा क़र्ज़ के भार को कम करने की योजनाएँ तैयार की हैं। एक ओर जहाँ यह हो रहा है, दूसरी ओर किसानों की माँगों को लेकर एक व्यापक किसान-आंदोलन भी देश में हलचल पैदा कर रहा है। इस आंदोलन का स्थान आगे भारतीय राजनीति में क्या होगा, और देश के अन्य वर्गों के लिये वह कितना हितकर एवं अहितकर होगा, इसका अनुमान आज ही नहीं लगाया जा सकता। साथ ही हम उन लोगों की शंकाओं को भी निर्मूल नहीं कहते, जो आज के किसान-मज़दूर-आंदोलन को भविष्य के लिये एक ख़तरे की चीज़ समझ रहे हैं। किसी भी चीज़ का भला-बुरा होना सामयिक परिस्थितियों पर निर्भर होता है। इस बात के लिये तो आज दो राएँ हो ही नहीं सकतीं कि भारत का किसान आज जिस हालत में है, उसमें से निकालकर उसे मानव-जीवन की सामान्य सतह पर खड़ा करना है। हमारी राय है कि अगर किसान-समाज की वर्तमान कठिनाइयाँ हल हो जायँ, और उसकी तात्कालिक माँगों को पूरा कर दिया जाय, तो फिर किसान-आंदोलन से जिस आतंक की आशंका की जाती है, वह न रहेगा। किसान का मनोविज्ञान मज़दूर के मनोविज्ञान से भिन्न चीज़ है। किसान अपनी वैयक्तिक संपत्ति, अपने परिवार की ख़ुशहाली और देहात के सुख-शांतिमय जीवन में संतुष्ट रहता है। इससे अधिक वह चाहता भी नहीं। उसे तो देहात का तपस्वी और त्यागी कहना चाहिए। पश्चिम के देशों में साम्य-वाद के नाम से जितनी क्रांतियाँ हुईं, उनमें मज़दूरों का भाग था। मज़दूरों का उस पैमाने पर संगठन हो सकता है, पर भारत में उनकी तादाद इतनी अधिक नहीं। यह देश तो अभी तक खेतिहर देश है, जहाँ किसानों की ही सबसे बड़ी आबादी है। जब किसान को अपने स्वच्छंद देहाती वायुमंडल में सुख-शांति से रहने का अवकाश मिले, तो वह 'मज़दूर-डिक्टेटरशिप'-जैसी वस्तु की कामना नहीं करता। अतः किसान लोगों को उग्रवादियों के प्रभाव में आने से बचाना है, तो उसका केवल यही मार्ग है कि किसानों की तात्कालिक माँगें स्वीकार कर ली जायँ। यहाँ हम किसानों की ऐसी माँगों की एक सूची पेश करते हैं, जो आजकल की दशा में मंज़ूर की जा सकती हैं। वे इस प्रकार हैं—

(१) अब तक का बक़ाया लगान और माल-गुज़ारी का जितना बोझ उन पर है, उससे उन्हें सदैव के लिये मुक्त कर दिया जाय।

(२) जिस ज़मीन की पैदावार इतनी कम है

कि उससे किसान को लाभ नहीं होता, उसका लगान या मालगुज़ारी वसूल न की जाय।

(३) वर्तमान लगान, मालगुज़ारी और आबपाशी की शरह में पचास सैकड़े तक कमी कर दी जाय।

(४) किसानों को अपनी ज़मीन पर स्थायी रूप से खेती करने का अधिकार प्राप्त हो।

(५) आगे बंदोबस्ती इलाक़े बंद किए जायँ, और फ़सल का नुक़सान होने पर किसानों को छूट दी जाय। ज़मीन की क़िस्म की जाँच होकर उसके हिसाब से कम-बढ़ लगान लिया जाया करे।

(६) हरी, बेगार और किसानों से ग़ैरक़ानूनी वसूलयाबी एकदम बंद की जाय, और जो लोग इसके विरुद्ध आचरण करें, उन्हें दंड दिया जाय।

(७) क़र्ज़ के संबंध में नया क़ानून बनाया जाय। किसानों पर जो क़र्ज़ है, उसकी जाँच हो। अनुचित क़र्ज़ माफ़ कर दिया जाय; जो उचित हो, उसकी वसूलयाबी किसान की हैसियत देखकर क़िस्तों द्वारा हो। सरकार ऐसे बैंकों की व्यवस्था करे, जो कम सूद पर किसानों को क़र्ज़ दें।

(८) क़र्ज़ और लगान वसूल न होने पर किसान की गिरफ़्तारी न हो, और न उसे जेल का दंड मिले।

(९) दीवानी की डिगरियों तथा लगान-मालगुज़ारी की वसूलयाबी में किसानों की कम-से-कम ज़मीन, खेती के पशु, रहने का मकान और गृहस्थी की आवश्यक वस्तुएँ कुर्क़ न की जायँ।

(१०) साहूकारों द्वारा दिए जानेवाले क़र्ज़ की शरह मुक़र्रर कर दी जाय, उससे अधिक व्याज लेना दंड क़रार दिया जाय। साहूकारों को लाइसेंस लेना अनिवार्य हो।

(११) किसान को अपनी पैदावार बाज़ार में जाकर बेचने की सब सुविधाएँ हों, जिससे वह फ़सल का पूरा लाभ उठा सके। यातायात के साधन—सड़क, नहर आदि का—विस्तार हो। रेलवे का, तीसरे दर्जे का, भाड़ा कम कर दिया जाय।

(१२) नमक, मिट्टी का तेल, शक्कर, तंबाकू, दियासलाई आदि पर से टैक्स उठा दिया जाय, जिसमें किसान को इन चीज़ों के ख़रीदने में अधिक क़ीमत न चुकानी पड़े, और आजकल जो पाँच रुपए सालाना से अधिक टैक्स वह अप्रत्यक्ष रूप से इन चीज़ों के लिये देता है, उससे वह मुक्त हो जाय।

(१३) पोस्ट कार्ड की क़ीमत एक पैसा और लिफ़ाफ़े की दो पैसे से अधिक न हो।

(१४) विनिमय की वर्तमान दर बदल दी जाय, जिसमें किसान को अपनी पैदावार का अधिक मूल्य मिल सके।

(१५) किसानों के पशुओं के लिये चरागाहें हों। जंगलों से उन्हें अपने उपयोग के लिये लकड़ी काटने का अधिकार हो। नदियों, तालाबों और नहरों के पानी पर, जो पशुओं के लिये ज़रूरी हो, उनसे कोई टैक्स न लिया जाय।

(१६) खेती और पशुओं की रक्षा के लिये किसानों को बंदूक़ आदि हथियार रखने का अधिकार हो।

(१७) पंचायती ज़मीन और गोचर-भूमि पर ग्राम-पंचायत का अधिकार हो। प्रत्येक गाँव में पंचायत हो, जिसका चुनाव उस गाँव का प्रत्येक बालिग़ व्यक्ति अपना वोट देकर करे। उस पंचायत को देहातवालों के मामूली मुक़दमे फ़ैसल करने का अधिकार हो, जिसमें किसान अदालत के ख़र्च से बरी हो सकें।

(१८) कम-से-कम मज़दूरी की दर नियत कर दी जाय। खेती के मज़दूरों को उचित मज़दूरी मिला करे।

(१९) अकाल की मार से किसानों की रक्षा

करने के लिये भूमि की सिंचाई का विस्तार किया जाय। नहर, ट्यूब-वेल अथवा पानी जमा रखने के हौज़ या तालाबों की व्यवस्था की जाय।

(२०) बीमे की व्यवस्था की जाय।

(२१) सरकारी कर्मचारियों की रिशवत रोकने के लिये पंचायतों को अधिकार दिया जाय कि वे ऐसे कर्मचारियों का चालान करा सकें।

(२२) लड़के-लड़कियों की शिक्षा निःशुल्क कर दी जाय।

(२३) अस्पताल और दवाख़ानों की पर्याप्त व्यवस्था की जाय।

(२४) प्रत्येक गाँव में स्वास्थ्य-शाला स्थापित की जाय, जिसमें वायु, पानी, भोजन, निवास-स्थान, व्यायाम आदि के बारे में ग्रामीण स्त्री-पुरुषों की स्थिति और आवश्यकता के अनुसार आवश्यक ज्ञान कराने की व्यवस्था रहे।

इन माँगों में कुछ तो ऐसी हैं, जो प्रांतीय सरकारों द्वारा तुरंत मंज़ूर की जा सकती हैं। कुछ माँगों के लिये आंदोलन करने की ज़रूरत पड़ेगी, जिनका संबंध केंद्रीय सरकार से है। पर इनमें एक भी माँग ऐसी नहीं, जिसका स्वीकार किया जाना ना-मुमकिन हो। साथ ही जब तक किसानों की उपर्युक्त माँगें पूरी नहीं की जातीं, तब तक उनका असंतोष भी दूर नहीं हो सकता। अतः राज्य और प्रजा में सुख-शांति पैदा करने के लिये इन माँगों को मंज़ूर कर लेना नितांत आवश्यक है।

× × ×

४. हिंद-प्रांतीय सरकार की शिक्षा-योजना

संयुक्त प्रांत की सरकार ने प्रांत में शिक्षा का विस्तार करने के लिये जो योजना तैयार की है, वह अब तक अन्य प्रांतों में इस दिशा में किए गए प्रयत्नों में सबसे आगे है। इस योजना की दो बड़ी खूबियाँ हैं—एक तो प्रांत की निरक्षरता मिटाना, दूसरे हाईस्कूल और इंटरमीजियट कॉलेज के छात्रों के लिये सैनिक-शिक्षा अनिवार्य कर देना। पहली योजना का उद्देश्य दो साल में प्रांत के सोलह वर्ष से लेकर चालीस वर्ष तक की उम्र के सब बालिग़ लोगों को अक्षर-ज्ञान करा देना है। इसके लिये प्रत्येक ज़िले में ज़िला-बोर्ड के अध्यापकों से काम लिया जायगा। ज़िले-भर में बीस हलक़े होंगे। प्रत्येक हलक़े में पाँच से लेकर दस गाँव होंगे, और एक हलक़े में एक अध्यापक रक्खा जायगा, जो एक गाँव से अपना शिक्षा-कार्य आरंभ करेगा। बोर्ड के अध्यापकों को कुछ अलाउंस भी मिलेगा, पर उनका काम विशेषतः जन-सेवा के अर्थ में होगा, और उसके लिये चुने हुए ही व्यक्ति या वैतनिक कार्यकर्ता लिए जायँगे। ग्राम-सुधार-विभाग भी इस कार्य में मदद करेगा। केवल निरक्षरता ही दूर करना नहीं, बल्कि साथ-साथ देश की भौगोलिक अवस्था और अन्य बातें भी बतलाई जायँगी, जिनका अच्छा उपयोग लोगों के जीवन में हो सके। इस कार्य के लिये सरकार दो लाख से अधिक रुपया व्यय करेगी। जल्दी-से-जल्दी ही इस योजना को कार्य-रूप में परिणत करने का उद्योग हो रहा है।

अनिवार्य सैनिक-शिक्षा की पूरी स्कीम तैयार करने के लिये भी सरकार ने, शिक्षा-विभाग के सुयोग्य पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी श्रीकर्णसिंह केन की अध्यक्षता में, एक कमेटी नियुक्त की है, और यह कार्य भी शीघ्र ही शुरू होनेवाला है। कहने की आवश्यकता नहीं कि शिक्षा-पद्धति में शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य कर देने से हमारे विद्यार्थिसमुदाय का कितना हित-साधन होगा। आजकल कॉलेज की शिक्षा समाप्त करने के साथ ही विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या अपनी शारीरिक शक्ति भी समाप्त कर देती है। और, यह तो तय ही है कि हिंदी-मिडिल तक पढ़ लेने के बाद एक किसान का लड़का भी फिर किसान का कार्य करने लायक़ नहीं

रहता। वर्तमान शिक्षा-पद्धति का यह सबसे बड़ा दोष है। इसे दूर करने और विद्यार्थियों में जीवन, शक्ति तथा सामर्थ्य की क्षमता पैदा करने के लिये उन्हें शारीरिक शिक्षा की ओर प्रेरित करना कितना आवश्यक है। हम इस उपयोगी और शुभ योजना के लिये अपने प्रांत के शिक्षा-सचिव, हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, माननीय बाबू संपूर्णानंदजी को हार्दिक बधाई देते हैं!

× × ×

५. फ़िलस्तीन का विद्रोह

फ़िलस्तीन में अरब लोगों के विद्रोह की जो चर्चा समाचार-पत्रों में आ रही है, वह वास्तव में वहाँ के निवासियों का ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पंजे से मुक्त होने का आंदोलन है। योरप के गत महासमर में मि० लॉयड जॉर्ज की सरकार ने जिन उपनिवेशों से वायदों पर धन और धन की माँग करके अपने साम्राज्य की रक्षा की, फ़िलस्तीन भी उन्हीं में से एक है। इस देश का कुल रक़बा १० हज़ार वर्गमील और आबादी १३,६७,००० है। जिसमें ८,६३,००० मुसलमान, ३,८४,००० यहूदी, १,०९,००० ईसाई और ११,००० अन्य लोग हैं। क्षेत्रफल और आबादी के लिहाज़ से यह बहुत ही छोटा देश है, किंतु ब्रिटिश साम्राज्य के लिये उसका बहुत बड़ा महत्त्व है। वह ब्रिटेन के सुदूर पूर्वी साम्राज्य-विभाग तथा भूमध्य सागर के हितों के संरक्षण का एक नाका है। इसीलिये भारत की तरह अरब लोगों ने गत महासमर में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिये अपने ख़ून की जो आहुतियाँ दीं, उसका फल भी उन्हें वही दिया गया, जो भारत को मिला। अर्थात् ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने युद्ध समाप्त होने पर फ़िलस्तीन के ऊपर अपने शासन का पंजा कसकर जमाया। यहूदी लोगों की हित-रक्षा का बहाना करके बाहर से उन्हें ला-लाकर फ़िलस्तीन में बसाया। वैसे फ़िलस्तीन यहूदी लोगों का भी पवित्र स्थान है, पर वहाँ वे हमेशा से अल्पमत में रहे हैं। उनकी तादाद बढ़ाने से ब्रिटिश साम्राज्य के धर्मी-मानी लोगों का यह आशय था कि अरब लोगों को अल्पमत में करके या उनके मुक़ाबिले की एक शक्ति खड़ी करके उनमें परस्पर झगड़े पैदा कर दें, और इस तरह फ़िलस्तीन में अँगरेज़ी शासन की जड़ें मज़बूती के साथ जमी रहें। अरब लोगों ने इस चाल को समझ लिया, और उन्होंने यहूदी लोगों के फ़िलस्तीन में बसने का विरोध किया। तभी से अरब और यहूदी लोगों में झगड़े की बुनियाद पड़ी। अँगरेज़ी हुकूमत का उद्देश्य पूरा हुआ। देश के लोगों को आपस में लड़ाओ, और अपना शासन जमाओ (Divide and Rule), साम्राज्यवाद का तो यह मूल-मंत्र ही है। अरब लोग इँगलैंड-सरकार की वायदाख़िलाफ़ी से ही खीझे हुए थे, जब उन्होंने साम्राज्यपंथियों की नई चालों को समझा, तो उन्होंने फ़िलस्तीन की ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। उनकी यह लड़ाई सन् १९२९ से ही जारी है। सन् १९३३, १९३६ और इसके बाद तो लगातार अरब लोगों की स्वतंत्रता की लड़ाई जारी रही है। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को जब इटली के मुसोलिनी का डर हुआ, और यह भी पता चला कि इटली अरब लोगों की सहायता कर रहा है, एवं मिस्र धीरे-धीरे ब्रिटिश साम्राज्य के चंगुल से निकल जाने की चेष्टा कर रहा है, तब उनकी आँखें खुलीं, और एक कमीशन फ़िलस्तीन की समस्या हल करने के लिये नियुक्त किया। इस कमीशन की सिफ़ारिशों ने अरब लोगों के असंतोष को और भी उभार दिया। वे अपने देश को दो टुकड़ों में—अरब-फ़िलस्तीन और यहूदी-फ़िलस्तीन—देखना नहीं चाहते थे। इसके बाद अरब लोगों ने जो लड़ाई

लड़ी, उसमें उन्होंने यहूदी लोगों से अधिक ब्रिटिश-शाही पर ही आक्रमण किया। विद्रोहियों की तादाद को स्वयं सरकार ने चार सौ से अधिक नहीं बतलाया, लेकिन इन चार सौ के दमन के लिये वहाँ पचीस हज़ार फ़ौजी जवान भेजे गए हैं। इसी से अरब लोगों की स्वतंत्रता प्राप्त करने की बलवती भावना का परिचय मिलता है। बल्कि उन्होंने कई जगह ब्रिटिश हुकूमत को हटाकर अरबों की स्वतंत्र सत्ता क़ायम कर ली। ब्रिटिश उपनिवेश-विभाग के सचिव, स्वर्गीय श्रीरामज़े मेकडानल्ड के पुत्र श्रीमल्कम मेकडानल्ड ने हाल में एक नया पासा और फेका है, और वह हमारी राय में फ़िलस्तीन पर ब्रिटिश सत्ता क़ायम रखने का अंतिम अस्त्र है। यह समझकर कि भारी-से-भारी दमन करके और देश का शासन-सूत्र फ़ौज के हाथों में सुपुर्द करके भी फ़िलस्तीन के अरब लोगों की स्वतंत्रता की आग ठंडी नहीं की जा सकती, ब्रिटिश हुकूमत राज़ीनामा करने के लिये तैयार हो गई है। उस राज़ीनामे के लिये सरकार ने अपनी तरफ़ से ही पहले शर्तें पेश कर दी हैं। इससे यह प्रकट होता है कि किसी जन-आंदोलन और स्वतंत्रता के लिये लड़े जानेवाले युद्ध का मुक़ाबिला करने की शक्ति अब 'जॉन बुल' में नहीं है। इसीलिये दमन के अस्त्र बेकार हो जाने पर उसे उपनिवेशों की जनता के साथ शांति-प्रिय ढंग से समझौता करने की सूझती है। हम भारत-वासी आजकल की अपनी अवस्था में इससे अच्छा सबक़ ले सकते हैं। पर फ़िलस्तीन के अरब और यहूदी लोगों को यह न भूलना चाहिए कि जब तक उन्हें अपने देश की पूर्ण स्वतंत्रता की गारंटी नहीं दे दी जाती, तब तक महज़ क़ैदियों को रिहा कर देने और फ़िलस्तीन के बटवारे की रिपोर्ट को रद्दी में फेक देने की रिआयतों से उनका भला नहीं होने का। इस तरह के चक्कर में लोगों को डालना साम्राज्यवादियों के आएदिन के खेल हैं। अरब लोगों की तरफ़ से तो यही एक शर्त पेश होनी चाहिए कि वे अपने देश में ब्रिटिश साम्राज्यवाद से सर्वथा मुक्त होकर स्वतंत्र सत्ता क़ायम करना चाहते हैं, जिसमें अरब और यहूदी मिलकर प्रजातंत्रवाद के उसूलों पर अपनी सरकार क़ायम करेंगे, और तभी उनके देश में शांति स्थापित हो सकेगी।

× × ×

६. मुसलिम-लीग विनाश-पथ पर!

इसे देश का दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि आज जब देश की शक्तियाँ भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की फ़ेडरेशन-योजना को विफल बनाने के लिये संयुक्त मोर्चा बना रही हैं, तब मुसलमानों का एक दल, मि० मुहम्मदअली जिन्ना के नेतृत्व, में साम्राज्य-वाद की शक्तियों को बलवान् बनाने में लगा हुआ है। कहाँ लखनऊ में, मुसलिम-लीग के अधिवेशन में, पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास करना, और कहाँ केंद्रीय एसेंबली में मि० जिन्ना की लीग-पार्टी का फ़ौजी भरती-क़ानून के पक्ष में वोट देना! बात यहीं तक चलकर ख़त्म नहीं हो गई। सिंध में मुसलिम-लीग के जलसे में जो कुछ हुआ, वह तो ख़तरनाक चीज़ है। आसाम में मुसलिम-लीग के मंत्रिमंडल की नाकामयाबी और कांग्रेस-मिश्रित मंत्रिमंडल से वहाँ के मुसलमान मेंबरों का सहयोग करना, सिंध में मुसलिम-लीग का मंत्रिमंडल बनाने में मि० जिन्ना का असफल होना तथा बंगाल में मि० हक़ के मंत्रिमंडल की डावाँडोल स्थिति, इस निराशा और नाराज़गी ने मि० जिन्ना और मुसलिम-लीग के अन्य नेताओं को इतना हक्का-बक्का कर दिया है कि गंभीरता-पूर्वक किसी बात को सोचने की शक्ति उनके दिमाग़ में नहीं रही। मि० जिन्ना की परेशानी इस बात से और बढ़ गई है कि उनके इतना चिल्लाने और हर जगह शोर-गुल मचवाने के

बावजूद भी कांग्रेस का कारवाँ अपनी मंज़िल की ओर उसी रफ़्तार से बढ़ता चला जा रहा है, और मुसलिम-लीग के दो क़िले उसके हाथ से और निकल गए ।

इस परेशानी की तसवीर हमें सिंधप्रांतीय मुसलिम-लीग के अधिवेशन के दर्पण में दिखाई देती है, जब मि० जिन्ना ऐंड को० की तरफ़ से यह आवाज़ बुलंद की जाती है कि वे भारत के सूडेटन लोग हैं । जिस प्रकार ज़ेकोस्लोवेकिया में अल्पसंख्यक सूडेटन लोगों ने भयंकर स्थिति पैदा कर दी, वही हालत भारत में मुसलिम-लीग भी पैदा कर देगी, और हिंदू-हिंदुस्तान से अलग एक मुसलमान-हिंदुस्तान बनाकर रहेगी । इसके साथ-साथ हम इतना और जोड़ दें कि यह स्वप्न मि० जिन्ना के जीवन में ही पूरा हो जाय, ताकि एक बार वह मुसलिम-भारत के प्रेसिडेंट या ख़लीफ़ा बनने का मज़ा तो लूट सकें । स्वर्गीय सर इक़बाल ने भी अपने जीवन में यह स्वप्न देखा था, और वह अपनी इस इच्छा को लिए हुए ही क़ब्र में जा सोए । मि० जिन्ना की बुढ़ौती के ये दिन हैं ! आप हिंदुस्तान में एक मुसलिम सूडेटन-प्रदेश क़ायम करना चाहते हैं, पर क्या उन्हें यह मालूम नहीं कि ज़ेकोस्लोवेकिया के लिये सूडेटन-जर्मन विदेशी लोग थे । पिछले महासमर के बाद विजयी राष्ट्रों ने जर्मनी की काट-छाँट करके सूडेटन-प्रांत को ज़ेकोस्लोवेकिया में मिला दिया था । पर भारत के मुसलमान तो यहीं के निवासी हैं । वे समस्त भारत में फैले हुए हैं । क्या बंगाल के ५१ फ़ीसदी मुसलमानों की हिज़रत की जोखों मि० जिन्ना अपने ऊपर लेने के लिये तैयार हैं ? फिर उन्हें पंजाब और सीमाप्रांत में बसाना चाहें, तो ज़रा पंजाब के सिक्खों से तो पूछिए, वे उनके लिये अपनी पंजाब-भूमि छोड़ने को तैयार होंगे ? अगर सिक्खों के पुराने इतिहास को भी मि० जिन्ना भूल जायँ, तो क्या शहीदगंज का मामला उनके सामने ताज़ी मिसाल नहीं ? किस राष्ट्र के अंदर अल्पसंख्यक जातियाँ नहीं होतीं ? और कहाँ-कहाँ अब तक अल्पसंख्यक जातियों को अलग-अलग प्रदेशों में बसाया गया है ? ज़रा फ़िलस्तीन के अरब लोगों से ही, जिनके लिये मिस्टर जिन्ना को ख़ुद हमदर्दी है, पूछिए कि ब्रिटिश सरकार के फ़िलस्तीन का बटवारा करने की आयोजना तैयार करने पर उन्होंने उसका किस रूप में विरोध किया ! मुसलिम-लीग के लीडरों के लिये क्या कहा जाय ? जिस सूडेटन की वे चर्चा करते हैं, वे सूडेटन-जर्मन चूँ तक नहीं करते, और वे ज़ेकोस्लोवेकिया-राष्ट्र के अल्पसंख्यक बनकर अब तक शांति से रहते आए थे, पर उन्हें तो हिटलर ने अपने उद्देश्य का साधन बनाया । सूडेटन-मुसलिम-लीगवाले भारत के बाहर के मुसलमान-राष्ट्रों को अपना जर्मनी समझ लें, तो उनका हिटलर कौन होगा ? क्या टर्की का नया विधाता या ईरान का रज़ाशाह पहलवी या अरब का इब्नसऊद ? अच्छा होता, हमारे मुसलिम-लीगी दोस्त पहले इन राष्ट्रों से सलाह करके तब ऐसा राग अलापते । ये सब तो भारत के मुसलमानों से इसलिये घृणा करते हैं कि वे अब तक अँगरेज़ों के ग़ुलाम हैं । हम मि० जिन्ना को सलाह देते हैं कि वह एक बार हज कर लें, और आब-ए-जमजम में ग़ोता लगावें, ताकि उनके अंदर की गर्मी शांत हो जाय, और तब वह अपनी विवेक की निगाह से देखें कि आजकल वह कहाँ खड़े हैं ?

× × ×

७. नागरिक स्वाधीनता का अर्थ

नागरिक स्वाधीनता की कोई निश्चित परिभाषा नहीं । साधारणतः जिस व्यवस्था में लोगों को लिखने, पढ़ने, बोलने और घूमने-फिरने की आज़ादी

हो, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी वैयक्तिक स्वाधीनता का पूरा उपयोग कर सके, वही नागरिक स्वाधीनता है। प्रत्येक जनतंत्रवादी आंदोलन की मुख्य माँग यह रहती है कि लोगों को अपने नागरिक अधिकारों के उपयोग का पूरा-पूरा अवसर मिले। भारत में राष्ट्रीय महासभा ने प्रारंभ से ही यह माँग रक्खी है, और उसके लिये अब तक बराबर आंदोलन हुए हैं। अब चूँकि देश का अधिकांश भाग कांग्रेस-शासन के अंतर्गत है, अतः कांग्रेस ने जिस नागरिक स्वाधीनता की घोषणा की है, उसका पूरा उपयोग कांग्रेसी प्रांतों में होना चाहिए। पर वस्तुस्थिति कुछ ऐसी है कि लोगों को कांग्रेसी सरकारों से शिकायत करने का अवसर मिल ही गया है। मदरास में क्रिमिनल लॉ एमेंडमेंट का प्रयोग होना, सी० पी० में अख़बारों से ज़मानत लिया जाना, बंबई में भी इसका अनुकरण होना तथा यू० पी० में साम्यवादी साहित्य पाए जाने के सिलसिले में दो विद्यार्थियों को अब तक जेल में पड़े रहने देना आदि बातें ऐसी हैं, जिन्हें देखकर हमारे कुछ बंधु यह कहते हैं कि कांग्रेस के शासन में भी लोगों की नागरिक स्वाधीनता पर प्रतिबंध लगा हुआ है, जिसकी उम्मेद न थी।

यह कथन सही है, पर इसके साथ अन्य पहलुओं पर विचार कर लेना भी आवश्यक है। नागरिक स्वाधीनता का अर्थ हर प्रकार के लोगों को इतनी स्वतंत्रता दे देना नहीं कि वे उन क़ानूनों की सीमा का भी उल्लंघन कर जायँ, जिनके आधार पर नागरिक स्वाधीनता का निर्माण होता है। शांति और व्यवस्था क़ायम रखने के लिये राज्य ने जो नियम बनाए हैं, वे हर व्यक्ति पर अथवा हर समय लागू होने के लिये नहीं। पर जहाँ विशाल जन-समूह की शांति भंग करने अथवा लोकोपयोगी कार्यों के मार्ग में बाधा डालने के लिये कुछ लोग प्रपंच खड़े करें, वहाँ राज्य का कर्तव्य है कि वह ऐसे व्यक्तियों के कार्यों पर प्रतिबंध लगाए। ऐसा कहने से हमारा तात्पर्य यह नहीं कि हम प्रत्येक ऐसे कार्य का समर्थन करते हैं, अथवा आजकल कांग्रेस द्वारा शासित प्रांतों के संबंध में हमारे कुछ भाइयों को जो शिकायतें हैं, वे सर्वथा ग़लत ही हैं; हो सकता है, उनमें से दो-एक बात के विरोधी हम भी हों। पर जहाँ लोग कांग्रेसी सरकारों पर यह दोष लगाते हैं कि उनके शासन से लोगों को नागरिकता के पूरे अधिकार प्राप्त नहीं, वहाँ उन्हें इतना ख़याल और करना चाहिए कि कुछ बातें तो ऐसी हैं, जिनके संबंध में स्वयं कांग्रेसी सरकारों को पूरा अधिकार प्राप्त नहीं, और कुछ बातों के लिये परिस्थिति से मजबूर होकर उन्हें प्रतिबंधों का आश्रय लेना पड़ता है। प्रत्येक बात का, उसकी प्रकृति और सामयिक परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए, अलग-अलग निरीक्षण करना चाहिए। हम हिंदी-प्रचार के ज़बरदस्त हिमायती हैं, पर केवल इसीलिये हम मदरास में हिंदी-प्रचार के विरोध में खड़े किए गए आंदोलन को दबाने के लिये श्रीराजगोपालाचार्य के क़ानूनी दंड का समर्थन नहीं करते हैं। वस्तुतः वहाँ की स्थिति कुछ और ही है। यह हिंदी-विरोधी आंदोलन इस इरादे से नहीं किया जा रहा है कि मदरास में हिंदी का प्रचार न हो (मदरास में पहले से ही हिंदी-प्रचार हो रहा और वहाँ की जनता हिंदी से काफ़ी प्रेम करती है। अब तक इस प्रचार में काफ़ी सफलता भी मिली है।), पर असल बात यह है कि वहाँ कांग्रेस की अटल और अक्षुण्ण सत्ता के कारण कांग्रेस-विरोधी दल बेहद परेशान है, और कांग्रेसी सरकार को बदनाम कराने का उसे यही एक साधन मिल गया है। राजनीति के खिलाड़ियों को जनता के कुछ लोगों से अपने अनुकूल काम

करा डालने में सफलता मिल ही जाती है। मदरास के हिंदी-विरोधी आंदोलन में वहाँ की जस्टिस-पार्टी और मुसलिम-लीग का हाथ है, और कुछ नासमझ कट्टरपंथी, जो हर जगह पाए जाते हैं, इस बहकावे में आ गए हैं।

यह तो मदरास-प्रांत की बात है। अन्य कांग्रेसी प्रांतों के संबंध में भी हमें इस तरह की परिस्थितियों को नहीं भूलना चाहिए। रूस में लोगों को पूर्ण नागरिक स्वाधीनता प्राप्त है, पर वहाँ राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र करने के अपराध में ऐसे लोगों को भी फाँसी दे दी जाती है, जो नवीन रूस के निर्माण-कर्ताओं में से थे। अन्य देशों में रूस की सरकार को इसके लिये ख़ूब बदनाम किया गया। पर ख़ास रूस में इन बड़े-बड़े आदमियों की फाँसी पर न कहीं जनता में उपद्रव खड़ा हुआ, न इतने बड़े रूस-राष्ट्र के एक कोने में भी शांति भंग हुई। इसका कारण यह था कि रूस का प्रबल लोकमत सरकार के निर्णय के साथ था। जहाँ जनता की ही सरकार हो, वहाँ तो फिर राज्य के प्रत्येक क़ानून का पालन कराने में लोकमत साथ देता है। फिर कुछ लोगों को प्रबल लोकमत के सामने राज्य-व्यवस्था के विरुद्ध जाने का साहस ही नहीं होता। और, तब राज्य को न ऐसे क़ानूनों के प्रयोग की आवश्यकता होती है, जिसे लोग नागरिक स्वाधीनता पर आघात किया जाना कहें।

भारत में अभी वह स्थिति नहीं। और, वह तब तक नहीं आ सकती, जब तक यहाँ का शासन-विधान एक ऐसी लोक-परिषद् (Constituent Assembly) द्वारा नहीं बनाया जाता, जिसका चुनाव बालिग़ मताधिकार के बल पर किया गया हो। जब राज्य (State) जनता का होगा, और राज्य के क़ानून लोकमत के प्रतीत होंगे, तब कुछ व्यक्ति या व्यक्ति-समूह को राज्य-क़ानून का उल्लंघन कर यह शिकायत करने का अवसर न मिलेगा कि वहाँ लोगों को नागरिक स्वाधीनता प्राप्त नहीं। हम माननीय पं० गोविंदवल्लभ पंत के इन शब्दों से पूर्णतः सहमत हैं कि जो लोग सांप्रदायिकता का विष फैलाकर आम जनता और अल्पसंख्यक जातियों की शांति नष्ट करते हैं, उनकी ऐसी हरकतें अधिक बरदाश्त नहीं की जायँगी। आजकल मुसलिम-लीगवालों की तरफ़ से जिस तरह का ज़हरीला प्रचार किया जा रहा है, और उसके कारण जगह-जगह दंगा-फ़साद हुए हैं, उसी को लक्ष्य करके श्रीपंतजी ने उपर्युक्त शब्द कहे हैं। अवश्य ही मुसलिम-लीगवाले इस पर यह दुहाई देंगे कि उनकी नागरिक स्वाधीनता पर कुठाराघात करने की यह चेतावनी दी गई है, जैसा मौलाना शौकतअली अभी कह चुके हैं, पर आम जनता की शांति भंग करके जो नागरिक स्वाधीनता का दावा करते हैं, उनकी शांति भंग करने की हरकतों का दमन करके ही नागरिक शांति और स्वाधीनता की रक्षा हो सकती है। नागरिक स्वाधीनता का यही अर्थ हमें अभीष्ट है।

× × ×

८. लखनऊ की 'सोशल सर्विस लीग'

लखनऊ-निवासिनी प्रत्येक प्रतिष्ठित और शिक्षित बहन को यह तो मालूम ही है कि इस नगर में गत ८-६ वर्षों से एक संस्था स्थापित है, जिसका नाम पहले 'ज़नाना-पार्क-लीग' था, परंतु इधर कुछ दिनों से बदलकर 'सोशल सर्विस लीग' रख दिया गया है। कारण, इस थोड़े समय में ही इसके द्वारा नगर तथा देहात की अनेक सेवाएँ हो चुकी हैं।

संस्था का उद्देश्य है स्त्रियों में सहयोग, सेवा, स्नेह, शिशु-पालन के भाव जगाकर तथा उन्हें वास्तविक कर्तव्य और नागरिकता के अधिकार बतलाकर जागृति उत्पन्न करना। इसकी ओर से गाँवों में रोगियों को दवा बाँटने का स्थायी प्रबंध किया जा

रहा है। और, स्थायी केंद्र हो जाने पर अन्य सुधार-कार्य भी ग्रामीण बहनों के लिये किए जायँगे। लीग में बच्चों का एक स्कूल भी है, जहाँ दूसरे दर्जे तक की पढ़ाई होती है। वहाँ से फिर बच्चों को दूसरे अच्छे स्कूलों में भिजवा दिया जाता है। शिक्षा का प्रबंध सुयोग्य अध्यापिकाओं के हाथ में है। यदि चाहें, तो स्त्रियाँ भी वहाँ जाकर पढ़ना और दस्तकारी इत्यादि सीख सकती हैं। जो बहनें इस संस्था को देखना चाहें, वे अमीनुद्दौला-पार्क के सामने ज़नाना-पार्क में संस्था के साप्ताहिक अधिवेशन में, जो प्रति बृहस्पतिवार को होता है, जाकर देख सकती हैं।

अब संस्था का विचार एक बड़ा भवन निर्माण करने का है, जहाँ सब बातों का प्रबंध सुचारु रूप से हो। उद्देश्य निम्न-लिखित हैं—

(१) स्त्रियों के लिये एक टाउन-हॉल स्टेज-सहित बनाना, जहाँ नाटक, सभा, अधिवेशन, कान्फ़्रेंस, भाषण इत्यादि हो सकें। यहाँ परदे का भी प्रबंध रहेगा। ज़रूरत पड़ने पर यह हॉल किराए पर भी दिया जा सकेगा।

(२) स्त्रियों की सामाजिक सेवा का यह सबसे बड़ा केंद्र होगा। यहाँ सभी श्रेणियों की स्त्रियाँ इकट्ठी होकर अपनी उन्नति के कार्य सीख सकेंगी। इन स्त्रियों में भी अधिकतर वे होंगी, जो निराश्रय, विधवा तथा निर्धन हैं, और जिनके सामने अपना जीवन व्यतीत करने का कोई सहारा या ध्येय नहीं रह जाता। ये स्त्रियाँ जब तरह-तरह के सुधार-कार्य सीखकर जनता की सेवाएँ करेंगी, तो वे समाज का एक ज़रूरी और उपयोगी अंग समझी जाने लगेंगी, और उन्हें अपने जीवन-निर्वाह का उचित मार्ग मिल जायगा।

(३) स्त्रियों के लिये एक बड़ा और शिक्षाप्रद पुस्तकालय स्थापित किया जायगा, जिससे वे अपने घर ले जाकर पुस्तकें पढ़ें, और जहाँ बैठकर साप्ताहिक तथा मासिक पत्र वग़ैरा देख सकें।

(४) हमारे देश में स्त्रियों के लिये व्यायाम भी कितना ज़रूरी है, इस पर स्त्रियों का ध्यान बिलकुल नहीं। वे दिन-ब-दिन भद्दी, बेडौल और आलसी होती जाती हैं। अतः यहाँ स्त्रियोपयोगी एक व्यायामशाला भी बनाई जायगी।

(५) जो ग़रीब स्त्रियाँ और बच्चे अस्पतालों से छूटकर इस योग्य नहीं होते कि अपना कार्य कर सकें, और यदि वे कार्य करने लगते हैं, तो फिर और अधिक बीमार हो जाते हैं, उन्हें यहाँ सहायता मिलेगी, और उनकी देख-रेख का उत्तम प्रबंध रहेगा।

(६) जो लड़कियाँ और नर्सें बाहर से आती हैं, उन्हें थोड़े दिन ठहरने के लिये भी कोई निरापद् स्थान नहीं मिलता। उनके लिये यहाँ कुछ अलग कमरे रहेंगे, जहाँ उनकी सुविधा का प्रबंध रहेगा। और

(७) गर्ल्स-गाइड और इसी प्रकार की दूसरी बातों के लिये ऑफ़िस इत्यादि विभाग स्थापित किए जायँगे।

भारत की स्त्रियों के लिये सुशिक्षा की बहुत ज़रूरत है। जो लड़कियाँ पाठशालाओं में शिक्षा पा रही हैं, वे और ऊँचे दर्जे की पढ़ी-लिखी, धनी स्त्रियाँ क्लब, एसोसिएशन आदि में अपना समय व्यतीत कर देती हैं। उनके मनोरंजन का वहाँ यथेष्ट साधन रहता है। परंतु उन हज़ारों स्त्रियों के लिये, जो शहर की घनी और गंदी बस्ती में रहती हैं, कोई ऐसा रास्ता नहीं, जहाँ वे भी जायँ, और अपना जी बहलाएँ तथा यह जानें कि उनके जीवन और संसार में आने का क्या उद्देश्य है। वे घरों में पैदा हुईं, और वहीं अपनी अंतिम साँस पूर्ण कर देंगी। उन्हें नहीं मालूम कि यदि वे अपने

को पहचान लें, तो उनके लिये संसार स्वर्ग हो सकता है। संसार कर्मशील है। देश की स्वतंत्रता बहुत कुछ स्त्रियों पर ही निर्भर है। हमारी कुछ पढ़ी-लिखी, समाजसेविका स्त्रियाँ, जिन्होंने अपनी भोली बहनों को अज्ञान तथा भ्रम से निकालना अपना जीवन-ध्येय बना लिया है, इस कार्य के लिये तैयार हैं कि वे सबमें अच्छे विचारों का प्रचार करें। इस भवन में इन सभी बातों का प्रबंध रहेगा। किसी प्रकार भवन की नींव डाल दी गई है, परंतु उसका पूरा होना जनता की कृपा पर निर्भर है। हम हर अमीर-ग़रीब स्त्री-पुरुष, सरकारी-ग़ैर-सरकारी सज्जनों से अपील करते हैं कि इस पुण्य कार्य में सहायता करें, और लीग के 'भवन-निर्माण-फ़ंड' में दान देकर उदारता का परिचय दें। ५००) या अधिक देनेवाले सज्जनों का नाम भवन में पत्थर पर सम्मान-सहित अंकित किया जायगा।

सरकार ने कृपा करके 'राजा नवाबअली-रोड' पर एक बड़ा भूमिखंड इस संस्था को बनाने के लिये दान दिया है। इमारत के ख़र्च का अनुमान ८०,०००) है। इस विषय में और अधिक जानने के लिये स्वयं मिलकर या पत्र द्वारा निम्न-लिखित देवियों से ज्ञात किया जा सकता है। चंदा देनेवाले महानुभाव भी इन पतों पर चंदा भेज सकते हैं—

(१) प्रभावती भटनागर (सेक्रेटरी)
आनंद-निकेतन, बाँसमंडी,
लाटूश रोड, लखनऊ

(२) मिसेज़ एच्० एस्० गुप्त एम्० एल्० सी०
(चीफ़ सेक्रेटरी)
२३, ऐबट रोड, लखनऊ

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

SREE SITHARAGHAVA
MYSORE
VAIDYASALA

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी।

दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-)
२५ ,, ,, ,, ५≡)
} श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

'सोशल सर्विस-लीग' की कर्णधार महिलाओं से हमें भी कुछ निवेदन करना है। एक तो यह कि राष्ट्रभाषा के उत्थान और प्रचार के इस ज़माने में आपको अपनी संस्था का नाम अँगरेज़ी में न रखना चाहिए था। समाज-सेवा-संघ या ऐसा ही कोई नाम रख लेना ठीक होगा। स्त्री-सेवा-संघ नाम बहुत ही मौज़ूँ होता! दूसरी बात यह कि जिन उद्देश्यों को सामने रखकर आपने इस सुंदर संस्था का संस्थापन किया है, उनमें से दूसरे और तीसरे उद्देश्य ऐसे हैं, जो बहुत ही थोड़ी रक़म से शुरू किए जा सकते हैं। सामाजिक सुधार के कार्य तो फ़ौरन् ही शुरू कर देने चाहिए। पुस्तकालय भी २००) या १०००) की रक़म से प्रारंभ किया जा सकता है। चौथे उद्देश्य में स्त्रियों के व्यायाम की आवश्यकता बतलाई गई है, इसकी हम भी ताईद करते हैं। हमारी स्त्रियाँ शारीरिक स्वास्थ्य, संगठन और सौंदर्य की दृष्टि से पाश्चात्य रमणियों का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं। इसका कारण यह है कि जहाँ उन्होंने चक्की-चूल्हा छोड़ दिया है, वहाँ देह को पुष्ट करनेवाले पूर्वीय और पाश्चात्य व्यायामों से भी अपने को वंचित रक्खा है। इसलिये या तो वे अत्यंत कृश-तन हो रही हैं, या अत्यंत स्थूलकाय। क्या चीज़ खानी चाहिए और क्या नहीं, इधर भी उनका ध्यान नहीं। खान-पान के ज्ञान के संबंध में संसार जब बहुत आगे बढ़ गया है, तब हमारी महिलाएँ अपनी पुरानी, दक़ियानूसी और अनावश्यक भोजन-सामग्री को ही अपनाए हैं। उन्हें चाहिए कि जिस और जिस प्रकार की भोजन-सामग्री से स्वास्थ्य की वृद्धि हो सके, उसे अपनाएँ। संसार में शरीर-संपत्ति से बढ़कर और कोई वस्तु नहीं। तन के स्वास्थ्य पर मन का स्वास्थ्य निर्भर है। स्वस्थ-शरीर नर-नारी ही जगत् में कुछ कर सकते हैं, अपना लोक-परलोक सुधार सकते हैं—

सबै सुखन कौ सोत,
　　सतत निरोग सरीर है;
जगत - जलधि कौ पोत,
　　परमारथ-पथ-रथ यहै।

× × ×

९. मौलाना फ़ज़लुलहक़

पहली ऑक्टोबर, १९३८ को, बिहार-मुसलिम-विद्यार्थी-कांफ्रेंस के अध्यक्ष-पद से, पटने में, माननीय श्रीफ़ज़लुलहक़ साहब का जैसा बेढंगा भाषण हुआ, वैसे की हम किसी भी ज़िम्मेदार आदमी से आशा नहीं कर सकते। मौलाना हक़ साहब फ़रमाते हैं—"मुसलिम विद्यार्थियो! तुम लोग लाठी पर विश्वास रक्खो—एकमात्र लाठी ही तुम्हारी रक्षा कर सकती है।" नेतागिरी और प्राइम मिनिस्ट्री के लालच में हिंसा की आग भड़कानेवाले—हिंदू-मुसलिम भाइयों को आपस में लड़कर कट मरने के लिये ललकारनेवाले हक़ साहब की इस नीति का सारा देश एक स्वर से विरोध कर रहा है। हम हक़ साहब को बता देना चाहते हैं कि यदि बिहार में कहीं भी हिंदू-मुसलिम झगड़ा हुआ, तो उसकी सारी ज़िम्मेदारी उन पर ही आवेगी।

× × ×

१०. स्वदेशी बीमा-कंपनी

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा की छठी वार्षिक रिपोर्ट हमारे पास समालोचना के लिये आई है। इसे देखने से मालूम होता है, कंपनी उन्नति-पथ पर अग्रसर है। कंपनी का लाइफ़-फ़ंड, जो पिछले साल १,६४,९४७ रु० ८ आ० ३ पा० था, इस साल बढ़कर २,०७,२६३ रु० १२ आ० ४ पा० हो गया है। इस कंपनी को जो ब्याज मिला है, वह ७ रु० ८ आ० प्रतिशत है। इन आँकड़ों के देखने से प्रतीत होता है कि कंपनी उन्नति में अद्वितीय रही।

कंपनी के चेयरमैन बाबू मथुराप्रसाद कक्कड़ ने मैनेजिंग एजेंट बाबू श्रीचंदजी दौनेरिया और श्रीअवधविहारीलालजी गुप्त की कार्य-कुशलता की प्रशंसा की है। इस वर्ष से मैनेजिंग एजेंसी में भी परिवर्तन हो गया है, जिसमें श्रीदौनेरियाजी मैनेजिंग डाइरेक्टर और श्रीगुप्तजी जनरल मैनेजर नियुक्त हुए हैं। इसका शर्तनामा आदर्श है।

एक बार ही क़िस्त देनेवाली आकस्मिक दुर्घटना-विभाग में भी इस कंपनी का कार्य सफलता पर रहा है। यह योजना तो अपूर्व है।

हम इस कंपनी की उत्तरोत्तर उन्नति चाहते और आशा करते हैं, अधिकारिगण इस कंपनी को और ऊँचा उठावेंगे।

११. श्रीके० के० बाटलीवाला की नियुक्ति

श्रीके० के० बाटलीवाला एम्० आई० एम्० ई०, ए० आई० एन्० ए०

बाटलीवालाजी अभी हाल ही में संयुक्तप्रांतीय सरकार के अंतर्गत फ़ैक्टरी और ब्वॉइलर के चीफ़ इंस्पेक्टर नियुक्त हुए हैं। यह सर्व-प्रथम भारतीय हैं, जिन्हें यह उच्च पद प्राप्त हुआ है। इन्होंने अपनी शिक्षा इँगलैंड में पाई है। विलायत के सर्व-विख्यात कारख़ाने—मेसर्स विलियम डक्सफ़ोर्ड-कंपनी—में इंजीनियर रह चुके हैं। आपने सामुद्रिक अनुभव प्राप्त करने के हेतु मेसर्स हाल्डेन ऐंड फ़िलिप्स-कंपनी में 'बिबीलाइन'-नामक समुद्र-पथ—लिवरपूल से लंदन और योरप होकर बर्मा—पर भी काम किया है। श्रीबाटलीवाला सर्व-प्रथम भारतीय हैं, जिन्हें दोनो—फ़र्स्ट क्लास स्टीम और फ़र्स्ट क्लास डीसिल—एंजिनबोर्ड ऑफ़् ट्रेड सार्टीफ़िकेट मिले हैं।

× × ×

संसार-रहस्य

लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। वैसे तो हिंदी में अनेकों उपन्यास हैं, और नित्य नए-नए प्रकाशित भी होते हैं; पर यह उपन्यास हिंदी में एक नए ही ढंग का है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक जगत् का चित्र खींचा गया है। गार्हस्थ्य, ऐतिहासिक, जासूसी और तिलिस्मी उपन्यास तो बहुतेरे लेखकों ने लिखे, और प्रकाशकों ने प्रकाशित भी किए, पर आध्यात्मिक विषय पर हिंदी में अभी तक इने-गिने लेखकों ने ही लिखने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में लेखक ने संसार के द्वंद्व—पुण्य-पाप, उचित-अनुचित, यह-वह, मैं भला और तू बुरा, मैं बुद्धिमान् और तू मूर्ख—आदि ऐसे ही प्रश्नों को सुलझाकर यथातथ्य प्रकाश डाला है। पृष्ठ-संख्या २६४ ; मूल्य १।), सजिल्द २)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए ।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
—हरएक घर में रहना चाहिए—

सच्ची शक्ति का संग्रह के लिये

झंडु की सुवर्ण मिश्रित

मकरध्वज गुटी

शक्ति की सर्वोत्तम दवा
फ़ौरन व्यवहार कीजिए

झंडु-फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबाक्स नं० ५५१३, बं० १४
यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली ।
लखनऊ के ,, ,,—मातावदल पंसारी, अमीनाबाद ।
इलाहाबाद एजेंटः—एल० एम० छोलकीया ब्रादर्स, जौतसूनगंज ।

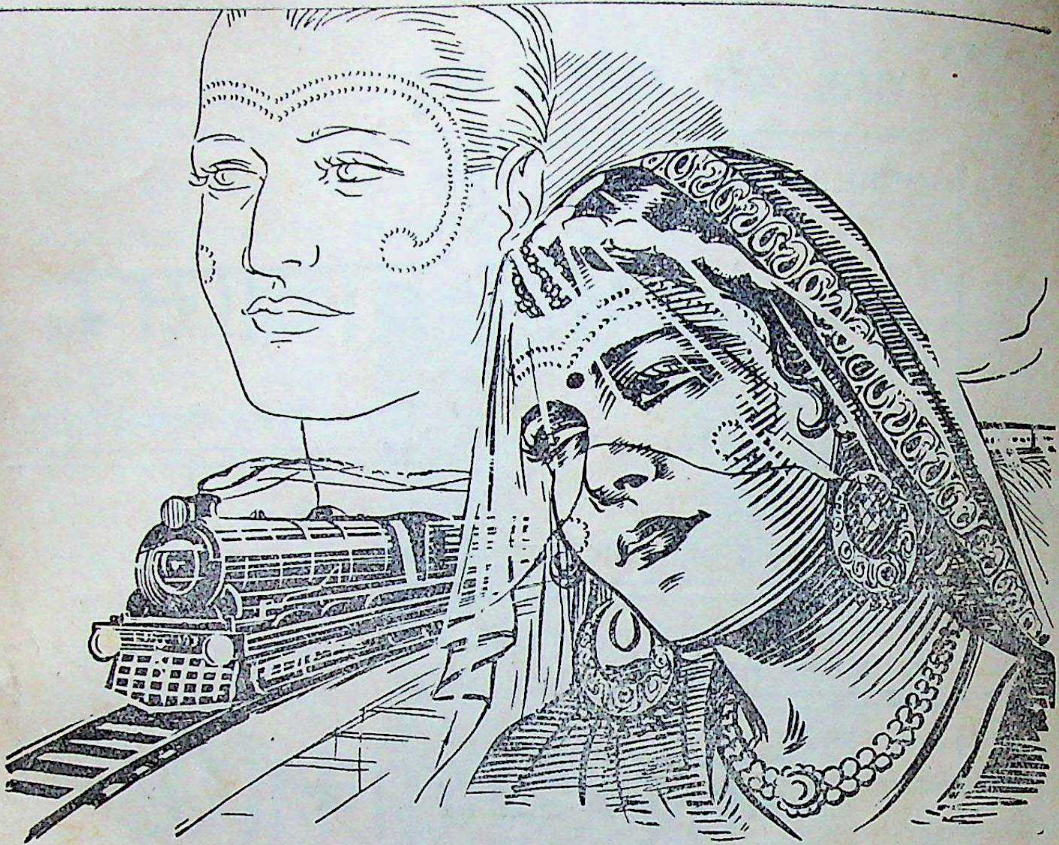

शुभ कामों में

रेलवे का सफ़र सस्ता और तेज़ है

जब विवाह पक्का हो जानेका शुभ-समाचार चारो ओर फैलता है, तब उस सुखी जोड़े के सगे संबंधी तथा मित्रवर्ग का हृदय उस विवाह के हँसी-मज़ाक और खाने-पीने में शामिल होने के लिये उछलने लगता है, जो कि ब्याह-शादी के मौक़े पर अनिवार्य है। रेलवेज आने-जाने का आदर्श मार्ग है—सस्ता, निर्भरयोग्य और आरामदायक।

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

RBK. 9

बिलकुल नया प्रकाशन

छप गया !　　　　छप गया !!

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में निस्संकोच रक्खा जानेवाला

हिंदी का महान् गौरव

'विकास'

[मौलिक, सामाजिक उपन्यास]

लेखक

हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

('बिदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।
(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।
(३) कुली-प्रथा की आह और कराह।
(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा।
(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

आजकल छपाई में खर्च अधिक आने के कारण थोड़ी ही प्रतियाँ छपाई हैं, इसलिये फ़ौरन एक कापी मँगाकर यह सर्वोत्तम उपन्यास पौने मूल्य ही में लीजिए। सजीव, परिमार्जित भाषा। इसकी एक कापी रामायण की भाँति घर में रखनी आवश्यक है।

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों का
एकमात्र मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार
लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला की नई देन

सुदामा

(राजनीतिक नाटक)

लेखक—श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी

इसमें संदेह नहीं कि अब तक के उपर्युक्त नाम से प्रकाशित सभी नाटकों में यह श्रेष्ठ है। वाजपेयीजी ने इसमें सुदामा के उन गुणों का दिग्दर्शन कराया है, जिनके द्वारा वह लोकनायक श्रीकृष्ण के अंतरंग मित्र हो चुके हैं। इसके लिये नाटककार ने कथावस्तु में कल्पना की वह आवश्यक पुट ला रक्खी है, जिससे नायक का चरित पूर्णतया चमक उठा है। गो कि सुदामा का कथानक पुराना है, किंतु इस नाटक में स्पष्टतया आप यह देखेंगे कि सुदामा हमसे दूर नहीं—इस युग के ही हैं।

इसमें विशेषता यह है कि स्त्री-पात्रों की भरमार नहीं की गई है। दो-चार जो स्त्री-पात्र हैं, वे ऐसे आदर्श हैं, जिनसे छात्रों के जीवन में पवित्रता की भावना जागेगी, न कि विलास और कामना की। अतएव स्कूल-कॉलेज के छात्रों के अभिनय-योग्य है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है। सुदामा-जैसे महापुरुष के आदर्श गुण जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा सुंदर, बिलकुल बोलचाल की। मूल्य सादी ॥/, जिल्ददार १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

हाथों हाथ बिक रहा है !

जाति-पाँति के पचड़े में पड़ी,

घूँघटों की ओट में मुख-चंद्र छिपाए, हृदय में निर्धूम
ज्वालामुखी दबाए और अरमानों की उजड़ी
बस्ती बसाए आज की हमारी
शिक्षित कन्याओं के सामने
क्या-क्या समस्याएँ
हैं ?

इन सबका उत्तर देगा—क्रांतिकारी उपन्यास

'प्रश्न'

कर्ता

श्रीसर्वदानंद वर्मा

—:०:—

घटनाएँ बिलकुल वास्तविक हैं, और धर्म, समाज तथा भ्रामक नियम-बंधन के आवरण में 'व्यक्ति' का गला घोंट देनेवाले ढोंगी 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' लोगों को रीति-नीति पर पूरा प्रकाश डालती हैं। हरएक बहन, बेटी, पत्नी, माता और विमाता को इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १॥), सजिल्द २)

दुलारेलाल भार्गव

मालिक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

शिशु-पालन

[लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार]

भारतवर्ष में आजदिन बच्चों की दशा कितनी शोचनीय है, यह किसी भी शिक्षित मनुष्य से छिपा नहीं। आपको किसी बिरली ही सौभाग्यवती माता की ऐसी गोद मिलेगी, जिसके दो-एक अमूल्य लाल बाल-अवस्था ही में काल-कवलित न हो गए हों। जब हम दूसरे देशों से अपने देश की तुलना करते हैं, तो हमें भले प्रकार ज्ञात हो जाता है कि हमारे ही देश में सबसे अधिक बच्चों की मृत्यु होती है, और जो जीते भी हैं, उनमें अधिकांश रोगी, निर्बल और कम आयुवाले होते हैं। इस शोचनीय स्थिति में भारत के जातीयता-रूपी महल को सुदृढ़ बनाने के लिये यह परमावश्यक है कि उसकी नींव को सुदृढ़ बनाया जाय। प्रत्येक जाति की नींव उसके बच्चे हैं, और उन्हीं पर देश तथा समाज का भविष्य निर्भर है।

यदि किसी देश की माताएँ चतुर होंगी, गर्भाधान के समय से अपने स्वास्थ्य की रक्षा करेंगी, और जन्म के बाद बालक का यथोचित लालन-पालन करेंगी, तो इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि उस देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। इसके विपरीत यदि हम अपने बच्चों की ओर से लापरवाही करेंगे, तो हमारे अधःपतन में कोई भी संदेह नहीं रहेगा। जब हम माताओं और बालकों को अच्छा बनाने का बिलकुल प्रयत्न नहीं करते, तो हमें सभ्य कहलाने का भी कोई अधिकार नहीं। ऐसी दशा में हमें अन्य सभ्य देशों की बराबरी करने की आशा छोड़ देनी चाहिए।

इस पुस्तक में शिशु-पालन-संबंधी समस्त ज्ञातव्य बातों का, बड़ी ही सरल भाषा में, वर्णन किया गया है, कोई बात छोड़ी नहीं गई। पुस्तक माताओं के बड़े काम की है। अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र भी हैं। मूल्य २), सजिल्द २।)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

आधुनिक हिंदी-कविता की एक अपूर्व पुस्तक

मंदार

लेखक, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

गिरीशजी अपनी उत्प्रेक्षाओं के लिये काफ़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भाव मौलिक, उपमाएँ सुंदर, प्रकृति-चित्रण सजीव और सौंदर्य-वर्णन मनोहारी होता है। उनकी कविताएँ पढ़कर आप आश्चर्य-मुग्ध रह जायँगे।

प्रस्तुत संग्रह में उनकी इंद्र-धनुष, बिंदिया, वन-बाला, तारिका, अश्रु-छवि, जल-विहार, वर्षा-विहार, स्वर-लहरी, कवि की तरंग, स्वर्ग और संसार, अनुभूति और कल्पना आदि अनेक ललित एवं भाव-पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

शीघ्र मँगाइए। मूल्य १), सजिल्द १।।) मात्र।

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

प्रकाशित हो गया ! **नई शैली का ऐतिहासिक नाटक !!**

रानी भवानी

लेखक
हिंदी के क्रांतिकारी लेखक
श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा

श्रीपरिपूर्णानंदजी हिंदी के प्रौढ़ लेखक हैं। आपने यह नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य की वृद्धि की है। रानी भवानी का नाम प्रत्येक इतिहासज्ञ जानता है। इस नाटक में उसी सुशीला तथा आदर्श रमणी का सुंदर चरित्र-चित्रण है, जिसे पढ़कर विशेषतया स्त्रियों में सुंदर भाव पैदा हो सकता है। साथ ही इसमें मुग़ल-साम्राज्य के पतन-कालीन उनके प्रांतीय सूबेदारों की स्वच्छंदता एवं विलासिता का अच्छा दिग्दर्शन है। मुर्शिदाबाद के विलासी नवाब अलीवर्दीख़ाँ के मातहत नाटौर नाम की एक रियासत थी। वहाँ के राजा रमाकांत बड़े ऐयाश और शाहख़र्च थे। रानी भवानी उन्हीं की स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की बड़ी चेष्टा की, पर फटकार के अतिरिक्त कोई लाभ न हुआ। रमाकांत के ज़ुल्म का समाचार उनके चचा दयाराम को मिला। दयारामजी नवाब के सम्मानित दरबारियों में से थे। उन्होंने रमाकांत को दंड-स्वरूप गद्दी से उतरवाकर उनके भाई देवीदास को गद्दी दिलवा दी। रमाकांत को लेकर रानी भवानी दर-दर मारी-मारी फिरीं। देवीदास को राज्य-मद इतना हो गया कि वह रमाकांत के साथ-साथ दयारामजी की भी उपेक्षा करने लगा। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकांत का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को बड़ा क्षोभ हुआ। फल-स्वरूप उन्होंने रमाकांत को फिर गद्दी पर बिठा दिया। किंतु रानी भवानी पर उनका विश्वास अधिक था, अतएव राज्य उन्हें मिला, और उन्होंने नवाब से अपने पति को साथ रखने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

नाटक बहुत छोटा, किंतु मनोरंजक है। पात्र कम हैं, ताकि रंगमंच पर आसानी से खेला भी जा सके। भाषा सरल और मुहाविरेदार। मूल्य सादी ॥=), जिल्ददार १=)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

हृदय का भार

रचयिता—पंडित दीनानाथ व्यास 'विचित्र'

कविरत्न, विशारद आदि

वर्तमान हिंदी-काव्य-धारा विशेषतया दुःखवाद की ओर ही प्रवाहित हो रही है। यह दुःखवाद हमारे जीवन की संघर्षमय विकट परिस्थितियों का परिणाम है। वर्तमान काल के हिंदी-कवियों ने अपनी मुक्त एवं गेय रचनाओं में दुःखवाद के केवल एक पहलू को ही चित्रित किया है, किंतु व्यासजी ने समस्त विश्व के चेतन-अचेतन सभी पदार्थों में उसकी सत्ता स्वीकार करते हुए प्रत्येक पंक्ति में उसके मनोहर दर्शन भी कराए हैं। प्रकृति-सौंदर्य से लेकर जीवन के सुख-दुख तक में दार्शनिकता की पुट देकर तो व्यासजी ने वास्तव में सोने में सुगंध का काम किया है। वेदनाओं, व्यथाओं, अरमानों, स्मृतियों आदि के, रूपकों और उपमाओं के सहारे, इतने सुंदर चित्र चित्रित किए हैं कि वे काव्य-रसिकों को मुग्ध किए बिना रह ही नहीं सकते। विस्मय-विमुग्ध करनेवाली चमक-दमक, तड़क-भड़क, शब्दाडंबर, क्लिष्टता एवं निरर्थकता आदि—जिसके कारण वर्तमान छायावाद बदनाम हो रहा है—इस काव्य में खोजने पर भी नहीं मिलेगी। हमारे जीवन की उस विडंबना का इस काव्य में बड़े ही सुंदर ढंग से सजीव वर्णन किया गया है, जो अतृप्त आत्माओं को एक भार-सी प्रतीत होती है। हृदय-भार में कवि ने अपना हृदय ही खोलकर रख दिया है। बात तो यह है कि कविवर गोपालसिंह नैपाली के शब्दों में "यह दुख की कथा है, दर्द की कहानी है।" वास्तव में देखा जाय, तो हृदय-भार दुखी आत्माओं को सुख पहुँचानेवाली अनुपम कृति है। काव्य-प्रेमियों को इसकी एक प्रति अवश्य ही मँगाकर अवलोकन करना चाहिए। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

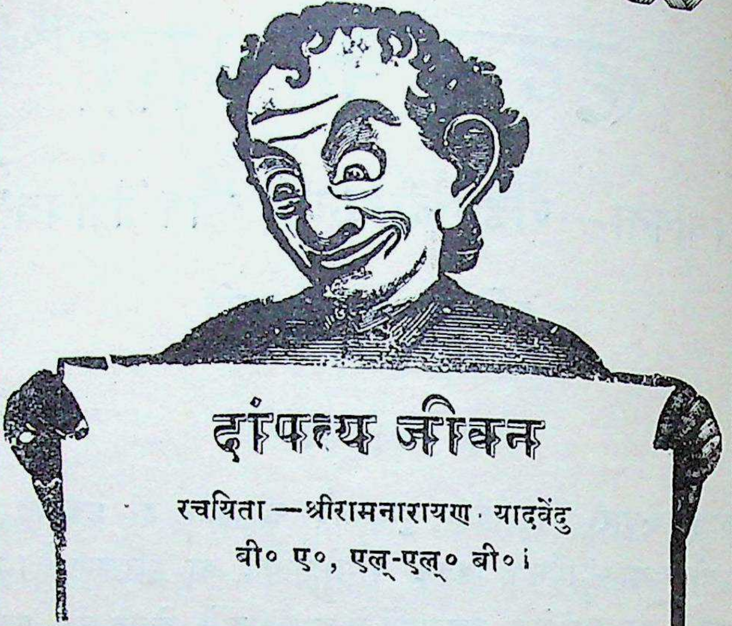

दांपत्य जीवन

रचयिता—श्रीरामनारायण यादवेंदु
बी० ए०, एल्-एल्० बी०।

यह नव-विवाहित और शीघ्र विवाहित होनेवाले नवयुवकों और नवयुवतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषामें, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को खरीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

मिलने का पता—**गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ**

बअदालत स्पेशल जजी दर्जा अव्वल ज़िला मैनपुरी [बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये

नमूना नंबर १७०

मुक़द्दमा नंबर २२ सन् १९३९

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रान्त

हरगाह जगन्नाथप्रसाद वल्द गयाप्रसाद व गंगाप्रसाद व जमुनाप्रसाद व श्रीकृष्णकुमार व नैनकुमार व वीरेंद्रकुमार नाबालिग़ान पिसरान जगन्नाथप्रसाद बविलायत जगन्नाथप्रसाद क़ौम कायस्थ साकिन क़स्बा कुराउली परगना कुराउली ज़िला मैनपुरी ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुतअल्लिक़ जिसको सायलान ने दिखलाया है

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व महाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुतअल्लिक़ा व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ियत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	मैनपुरी	ज़मींदारी	मौज़ा अकबरपुर-झाला परगना कुराउली तहसील मैनपुरी	५ बिस्वा	५ बिस्वा	८८)
२	,,	,,	मौज़ा खिरयापीपर परगना कुराउली तहसील मैनपुरी मुहाल लछमीसहाय	बिस्त बिस्वा	बिस्त बिस्वा	६५)
३	,,	,,	मौज़ा खिरना परगना कुराउली तहसील मैनपुरी पट्टी नं० २	कुल पट्टी	कुल पट्टी	७७।≡)
४	,,	,,	,, पट्टी नं० ३	पाँचवाँ हिस्सा मय शामिलात पट्टी नं० ४ व ६	पाँचवाँ हिस्सा मय शामिलात पट्टी ४ व ६	७।=)
५	,,	,,	मौज़ा गंगपुर मुहम्मदपुर परगना तहसील कुराउली मैनपुरी पट्टी नं० १	मिनजुमला ४ व ५ हिस्सा के ६३वाँ हिस्सा	मिनजुमला ४ व ५ हिस्सा के ६३वाँ हिस्सा	२८।।।)
६	,,	,,	,, पट्टी नं० ३	कुल पट्टी	कुल पटी	१५)
७	,,	,,	मौज़ा किशनपुर परगना कुराउली तहसील मैनपुरी	१/६ हिस्सा	१/६ हिस्सा	१६।।)

८	,,	,,	मौज़ा कूकामई परगना कुराउली तहसील मैनपुरी पट्टी नं० ५	२ बिस्वा ११ बिस्वांसी ८ कचवांसी ११ ननवांसी १८ तनवांसी ११ अनवांसी	२ बिस्वा ११ बिस्वांसी ८ कचवांसी ११ ननवांसी १८ तनवांसी ११ अनवांसी
९	,,	,,	मौजा गंगापुर मुहम्मदपुर परगना कुराउली तहसील मैनपुरी	बाग	बाग

कर्जदार के इस्तहक़ाक मालकाना मुतअल्लिका आराज़ी जिसको सायलान ने नहीं दिखलाया है और जिसको वालेवर व लल्लूसिंह व करनसिंह व लाजतसिंह क्लाइमेंट्स ने दिखलाया है

१	मैनपुरी	जमींदारी	मौजा गोकुलपुर मुहाल लक्ष्मीसहाय परगना कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी	७$\frac{१}{२}$ बिस्वा	७$\frac{१}{२}$ बिस्वा
२	मैनपुरी	ज़मींदारी	मौजा कूका मई परगना कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी	२$\frac{१}{२}$ बिस्वा पट्टी नं० ५ खरीदकरदा खुद $\frac{१}{५}$ हिस्सा २$\frac{१}{२}$ बिस्वा में जो कि मौरूसी है	२$\frac{१}{२}$ बिस्वा पट्टी नं० ५ खरीदकरदा खुद $\frac{१}{५}$ हिस्सा २$\frac{१}{२}$ बिस्वा में जो कि मौरूसी है

तफ़सील जायदाद ज़ाहिरकरदा चौधरी प्रतापसिंह व चौधरी मुंशीसिंह व चौधरी हिम्मतसिंह व लाला चंद्रसेन कर्जख्वाहान

नं० १	मैनपुरी	हक़ियत ज़मींदारी	मौजा गोकुलपुर परगना कुराउली मुहाल लक्ष्मीसहाय	मालिक कामिल	२० बिस्वा
नं० २	मैनपुरी	हक़ियत जमींदारी	मौजा ब्रजनाथपूर परगना कुरावली	मालिक कामिल	२।। बिस्वा

तफ़सील जायदाद ज़ाहिरकरदा पं० प्यारेलाल व दुर्गाप्रसाद क़र्ज़ख्वाहान

(१)	मैनपुरी	एक किता बाग़	मौजा गंगापुर मुहम्मदपुर परगना कुरावली तहसील मैनपुरी गंगारामवाला	बाग़	बाग़
(२)	मैनपुरी	एक किता बाग़	मौजा गंगापुर मुहम्मदपुर परगना कुरावली तहसील मैनपुरी बसंतीवाला	बाग़	बाग़

तफ़सील जायदाद ज़ाहिरकरदा लाला बिलासराय व लाला रामदयाल कर्ज़ख्वाहान

१	मैनपुरी	ज़मींदारी	मौजा गोकुलपुर मुहाल लक्ष्मीसहाय	बिस्त बिस्वा ज़मींदारी कि जो जगन्नथप्रसाद सायल को	२० बिस्वा ज़मींदारी मुहाल लक्ष्मीसहाय

विरासतन अपनी वालिदा मु० नरायनी कुँवर दुख़्तर मु० लक्ष्मीसहाय से हासिल हुई थी और जिसे जगन्नाथप्रसाद सायल ने अपनी ज़ौजे के नाम हरफतन बतारीख़ ३०-४-३६ व नाम निहाद हिबानामा कर दी है

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद जो बइस्तसनाय नाथ हकूक मालिकाना मुतल्लिक आराज़ी हस्ब दफा ६० जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ईस्वी कुर्क और नीलाम हो सकती है और जिसको मायज़ान ने नहीं दिखलाया और जिसको ताबेदार लल्लूसिंह व करनसिंह व लालतासिंह क्लाइमेंट्स ने दिखलाया है

१ इमारत मकान जिसमें कन्या-पाठशाला है महदूदा जैल वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी पूर्व रास्ता पुख्ता टाउनएरिया पश्चिम मकान शंकरसहाय वगैरह उत्तर मकान जगन्नाथप्रसाद दक्खिन रास्ता टाउनएरिया

२ मकान जगन्नाथप्रसाद महदूदेह ज़ैल वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी पूर्व रास्ता टाउनएरिया पश्चिम मकान शंकरसहाय ब्राह्मण व मकान लालतासिंह उत्तर मकान मुंशी हरदयाल दक्खिन मकान जगन्नाथप्रसाद।

३ दो दूकानात जगन्नाथप्रसाद महदूदा जैल वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी पूर्व चबूतरा बाजार लछमनगंज पश्चिम दूकान कुँवर कल्यान उत्तर दूकान पं० बद्रीप्रसाद दक्खिन दूकान कुञ्जबिहारीलाल जैन

४ हवेली पुरानी जगन्नाथप्रसाद महदूदा जैल वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी पूर्व मकान मुंशी दयाप्रसाद पश्चिम रास्ता पुख्ता टाउनएरिया उत्तर मकान मुंशी भवानीसहाय वगैरह दक्खिन रास्ता टाउनएरिया

५ मकान फाटक जगन्नाथप्रसाद महदूदाजैल वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी पूर्व रास्ता पुख्ता टाउनएरिया पश्चिम मकान बिहारी अहीर उत्तर टाल जगन्नाथप्रसाद दक्खिन मकान दयाप्रसाद

६ दूकान टाल जगन्नाथप्रसाद महदूदा जैल वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी पूर्व रास्ता पुख्ता टाउनएरिया पश्चिम रास्ता पुख्ता टाउनएरिया उत्तर रास्ता पुख्ता टाउनएरिया दक्खिन मकान बिहारी अहीर

७ अलावा जायदाद गैरमनकूला के ज़ेवर, बरतन कपड़ा व मवेशी कीमती तख्मीनन १०००)

तफ़सील जायदाद जाहिरकर्दा चौधरी प्रतापसिंह व चौधरी मुंशीसिंह व चौधरी हिम्मतसिंह व लाला चंद्रसेन कर्ज़ख्वाहान

१	एक किता हाता वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी	उत्तर सड़क सरकारी दक्खिन मकान बिहारी वगैरह पूर्व सरकारी खरंजा पश्चिम दूकानात जगन्नाथप्रसाद वादहू खरंजा व उफ्तादा आराज़ी
२	एक किता मकान वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी	उत्तर उफ्तादा आराज़ी मुतल्लिक मकान मजकूर वादहू सड़क दक्खिन मंदिर ठाकुरजी पूर्व सरकारी खरंजा पश्चिम मकान मायासहाय
३	एक किता मकान वाके कस्बा कुरावली तहसील व जिला मैनपुरी	उत्तर मकान बाबू अमरसिंह दक्खिन घेरा जगन्नाथप्रसाद जिसमें पाठशाला है पूरब दरवाजा व चबूतरा मुतल्लिक मकान मजकूर वादहू सरकारी खरंजा पश्चिम मकान मुंशी दयाशंकर व केदारनाथ

४	एक किता हाता वाक़े क़स्बा कुरावली तहसील व ज़िला मैनपुरी	उत्तर मकान जगन्नाथप्रसाद दक्खिन सड़की खरंजा पूरब दरवाज़ा हाता बादहू खरंजा पच्छिम मकान शंकरसहाय
५	एक क़िता दूकान वाक़े मंडी लक्ष्मीगंज क़स्बा कुरावली तहसील व ज़िला मैनपुरी	उत्तर दूकान जगन्नाथप्रसाद दक्खिन दूकान फूलचंद-गुलजारीलाल पूरब चबूतरा दरवाज़ा मुल्हिक़ दूकान मज़कूर बादहू रास्ता पच्छिम मकान लल्लाजी पिसर कुँअर कल्यान
६	एक किता दूकान वाक़े मंडी लक्ष्मीगंज क़स्बा कुरावली तहसील व ज़िला मैनपुरी	उत्तर दूकान बद्रीप्रसाद वगैरह दक्खिन दूकान जगन्नाथप्रसाद पूरब चबूतरा दरवाज़ा मुल्हिक़ दूकान मज़कूर बादहू रास्ता पच्छिम मकान लल्लाजी पिसर कुँअर कल्यान

तफ़सील जायदाद ज़ाहिरकरदा पं० प्यारेलाल व दुर्गाप्रसाद क़र्ज़ख्वाहान

		हदूद अरबा
१	एक क़िता मकान वाक़े कुरावली तहसील व ज़िला मैनपुरी	पूरब खरंजा पच्छिम मकान दयाशंकर उत्तर मकान अमरसिंह दक्खिन मदरसा निस्वाँ
२	एक क़िता मकान मदरसा निस्वाँ वाक़े कुरावली तहसील व ज़िला मैनपुरी	पूरब खरंजा पच्छिम मकान शंकरसहाय उत्तर मकान जगन्नाथप्रशाद दक्खिन खरंजा
३	एक किता मकान मुत्तसिल मंदिर वाक़े कुरावली तहसील व ज़िला मैनपुरी	पूरब खरंजा पच्छिम मकान बालासहाय उत्तर रास्ता दक्खिन मंदिर
४	ढाल आराज़ी बग़ीचा	पूरब रास्ता पच्छिम रास्ता उत्तर रस्ता दक्खिन मकान बिहारीलाल
५	दो किता दूकानात मुलहक़ वाक़े कुरावली बाज़ार लछिमनगंज	पूरब फड़ पच्छिम मकान कुँवर कल्यान मौसूफा गरीबामाली उत्तर दूकान बद्रीप्रसाद दक्खिन दूकान ज़ोजे मिहीलाल किरायेदार बंसीधर
६	आराज़ी उफ़्तादा वाक़े कुरावली	पूरब कोठा रामसहाय मुत्तसिल मंदिर पच्छिम ताल पटरी उत्तर सड़क दक्खिन रास्ता
७	फिरक १ ताँगा १ गाय १ घोड़ी मय बच्चा १ फ़र्श दरी ३ कालीन २ पालकी १ साइकिल १ बाजा फोनोग्राफ १ लालटैन गैस १ मेज़ २ कुरसी ४ कुछ रुपया सेविंगबैंक में जमा है, जिसकी सही तादाद नहीं मालूम है।	

तफ़सील जायदाद ज़ाहिरकरदा लाला विलासराय व लाला रामदयाल क़र्ज़ख्वाहान

१	एक क़िता मकान वाक़े क़स्बा कुरावली मुहल्ला कानूनगोयान	पूरब रास्ता पुख़्ता टाउन एरिया पच्छिम मकान पं० शंकरसहाय वगैरह उत्तर मकान जगन्नाथप्रसाद दक्खिन रास्ता पुख़्ता टाउन एरिया
२	एक क़िता मकान वाक़े क़स्बा कुरावली मज़कूर मुहल्ला कानूनगोयान	पूरब रास्ता पुख़्ता टाउनएरिया पच्छिम मकान शंकरसहाय वगैरह व लालतासिंह उत्तर मकान प्रेम-चंद दक्खिन मकान जगन्नाथप्रसाद

राजबिहारीलाल
मुंसरिम

[नमूना क़ाबिल

समन बिनाबर इनफ़िसाल मुक़द्दमा

(आर्डर ५ क़ायदा १ व ५)

मुद्दआ

नंबर मुक़द्दमा २८० सन् १३६८

ब-अदालत ख़फ़ीफ़ा मुंसफ़ी जौनपुर ज़िला जौनपुर

म० काज़िमाबीबी ज़ौजा अब्दुलहसन सा० मो० मदरसा परगना हवेली ज़ि० जौनपुर

बनाम

शिवमूरतसिंह वल्द रुस्तमसिंह सा० मौ० रामपूर तालुका गोनका प० मड़ियाहू जिला जौनपूर मुद्दाअलेह

हरगाह मुद्दइया ने आपके नाम एक नालिश बाबत् ६६।) के दायर की है, लिहाज़ा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख २५ माह ११ सन् १९३८ ई० बवक्त १० बजे दिन के असालतन या मारफ़त वकील के जो मुक़द्दमे के हालात वाक़ई वाक़िफ़ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतअल्लिक़े मुक़द्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख़्स हो कि जो जवाब ऐसे सवालात का दे सके, हाज़िर हों और जवाबदेही दावा का करें। और हरगाह वही तारीख़, जो आपके इज़हार के लिये मुक़र्रर है, वास्ते इनफ़िसाल क़तई मुक़द्दमा तजवीज़ के हुई है। पस आपको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुमला गवाहों को, जिनकी शहादत पर वो नीज़ तमाम दस्तावेज़ात को जिन पर आप अपनी जवाबदेही के ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हों, पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर आप हाज़िर न होंगे, तो मुक़द्दमा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमू और फ़ैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज बतारीख़ २१ माह १० सन् १९३८ ई० जारी किया गया।

जज

بدست عوام فروخت کے لیئے]

نوٹس نسبت دکھانے وجہ کے (عام طور پر)

بحکم جناب منصف صاحب بہادر باندہ
بعدالت منصفی مقام باندہ ضلع کانپور
مقدمہ نمبر ۱۷ بابت سنہ ۱۹۳۷ع

منشی شیو ناتھ سہاے ولد منشی لال قوم کایستھ ساکن پیلانی تحصیل و ضلع باندہ
بنام سندر وغیرہ

بنام (۱) جے نراین نا بالغ ولد منشی برج راج کشور قوم کایستھ سربراھی پدر (۲) کنجبہاری لال (۳) رادھکا بہاری (۴) اکھل بہاري (۵) ساکیت بہاري نابالغ پسران منشی شیام کیشور اقوام کایستھ سربراھی پدر (۶) للت موہن نابالغ ولد کنجبہاری لال قوم کایستھ سربراھی کنجبہاری لال پدر (۷) الکھہ نرائن ولد منشي جگناتھ پرشاد قوم کایستھ (۸) رامیشر (۹) چھوٹو نابالغ پسران نند کشور سربراھی اقوام برھمن سربراھی رامیسر برادر (۱۰) گوپال نابالغ عرف پراگ نراین ولد سندرنراین سربراھی سندرنراین مذکور قوم برھمن ساکنان موضع ترھٹی معافی تحصیل و ضلع باندہ (۱۱) لچھمی نراین ولد شیوبہاری قوم برھمن ساکن محلہ پٹکاپور ضلع کانپور۔

چونکہ
نے درخواست اس عدالت میں گذرانی ھے کہ

لہذا آپ کو اطلاع دی جاتی ھے کہ آپ اصالتاً یا معرفت کسی وکیل کے جو حالات مقدمہ سے بخوبی واقف ھو بتاریخ
بوقت ۱۰ بجے دن قبل دوپہر اس عدالت میں حاضر ھوکر درخواست کے خلاف وجہ دکھاویں اگر ایسا نہ کرینگے تو درخواست مذکور آپ کی غیر حاضری میں یکطرفہ سماعت ھوگی اور یہ قیاس کیا جائگا کہ آپ اس مقدمہ میں ولی مقرر کئے جانے پر رضامند ھیں۔

آج بتاریخ ۱۹ ماہ ۱۰ اکتوبر سنہ ۱۹۳۸ع میرے دستخط اور مہر عدالت سے جاری کیا گیا

منصرم

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत

बइजलास पंडित ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड मुक़ाम जौनपुर ज़िला जौनपुर

मुकद्दमा नं० १४१ सन् १९३६ तारीख मुकर्ररह २३ दिसंबर सन् १९३८ ई०

हरगाह रामनाथ व मेवालाल पिसरान [illegible] व कन्हैयालाल व प्यारेलाल व मोहनलाल व लालचं व श्रीराम व बाबूराम पिसरान रामनाथ व तुलसीदास व बलदेवप्रसाद नाबालिग़ बविलायत तुलसीदास पिसरा कामताप्रसाद साकिनान बाजार अलीगंज शहर जौनपुर ने एक दरख्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िमनी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे किए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुतालिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर तौज़ी-वार व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुतक़िलव क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ियत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत पर मौजूदा मालगुज़ारी
१	जौनपुर	ज़मींदारी	मौज़ा गदनअर जानी	७ आना	-) आना	११)४
२	,,	,,	कणजा खुर्द	११ पाई १६ करांट	११ पाई १६ करांट	३)८
३	,,	,,	मुल्लपुर	-) आना १६ ,,	-) आना १६ ,,	११।-)४
४	,,	,,	समीपुर	-) आना १६ ,,	-) आना १६ ,,	३।=)४

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा १० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

	जायदाद की क़िस्म	दरख्वास्त देनेवाले की बसाअत का विस्तार
५	अराज़ी शरह मुअइयन	१४ १६ १७ १८ २० २६ ३३ ७८ वाक़ा मौज़ा गदनअरजानी २७ १८ २८ १९ १८ ३ ३४ २४
६	,, ,, ,,	६४१ ६३७ ६३८ ६८५ ६८८ ६३९ ६९१ ७०५ ७०९ १४१ ८ २४ ८८ ३८ ३६ ३४ ६३ ११ ७४६ ७४९ ७७४ ७७८ ७७९ ७८० ७७३ ८८४ १०१० १६ ५३ ९२ ८२ ४८ ३९ २८ २३ १८ १४७८ वाके मौज़ा सैदपुर गढ़उरा ६३
७	,, ,,	४ वाके मौज़ा रौजे अरजन नं० ४ ११०८ २१० ६ २०
८	सीर	पाँच बीघा वाके मौज़े सैदपुर गढ़उरा १५८९ २-१६ १-८७ १७३ १७२ पाँच गाठा ३-३८ ७७ १५

तीन बीघा ५५१ ५६६
९ खुदकाश्त १-२० ७०

१० शरह मुअइयन वाका मौज़ा सैदपुर गढ़उरा २३३ २३५ २३७ ४५७ ४६६ ११६३ ११६४ ११७४
२ ६० १३ १६ ६ ३ ३३ ५
११७५ १३१० १३३१ १३३२ १३५६ १३५० १४०२
१० ४५ १३ १२ ७ ९ ५९
१४१० १४११ १४१२ १४१३ १४१६ १४१७ १४१९
३७ ११ १५ ५० -२ १२ १०
१४२० १४२१ १४२२ १४२३ १४२४ १४२५ १४४५
३ १२ १२ ६ १० २ १२
१४४६ १४४७ १४४८ १४४९ १४४५ १४५३ ११६२
५ २१ १५ २ १२ ७ १७४४
—१०

नं० २१४ नं० २९८ नं० ७२२
१३ बि० ७ धूर ११ बि० २ धूर १३ बि० ८ धूर
नं० ३०० नं० ७२१
१२ बि० ७ धूर १२ बि० ९ धूर

११ एक बाग अंबा मय कोठी बाँस वाक़ै मौज़ा सैदपुर गढ़उरा
१२ एक बाग मेवा व बाग अंबा वाक़ै मौज़ा जमीलपुर १ हिस्सा
१२

	पूरब	पच्छिम	उत्तर	दक्खिन
१३ एक किता मकान महदूदा ज़ैल वाक़ै मौजे गढ़नअरज़ानी	सड़क	गली	मकान बुद्धू तेली	रामदास तेली
१४ एक किता मकान मय हाता	,,	,,	मकान खतरानी व गली बैजनाथ	रामऔतार व राजन तेलिन
१५ एक किता खँडहर वाक़ै मौजे रौजे अरजन	खेत मउजुल	सड़क सरकारी	मकान बैजनाथ	मुहम्मद अकबर
१६ एक किता खडँहर वाक़ै मौजे रौजे अरजन	,,	,,	,,	गनेश तेली
१७ एक मकान कच्चा वाक़ै मौज़ा धन्नूपुर शकरमंडी	सड़क सरकारी	मकान मु० चौरा तेलिन	मकान रघुनाथ तेली	मकान रघुनाथ तेली
१८ एक मकान वाक़ै मौज़ा रौज़ा अरज़न	खेत मउजुल मियाँ बगडही	सड़क पक्की	गली	मकान बैजनाथ
१९ एक गोदाम वाक़ै मौज़ा रौज़ा अरज़न	बाग झिंगुरी साह	,,	रामनरायन	बाग का रास्ता
२० कच्चा मकान रौज़ा अरजन में	,,	,,	रास्ता बाग़	रास्ता गली
२१ मकान रौज़ा अरजन में	खेत रामदास	,,	मकान बैजनाथ	मकान झिंगुरी साह
२२ मकान रौज़ा अरज़न में	रामअवतार	,,	क़ब्र सईद	चबूतरा रामअवतार
२३ एक मकान सैदपुर गढ़उरा में				
२४ एक कारखाना तेल वाक़ै मौज़ा रौज़ा अरज़न	बाग़ रामनाथ	सड़क पक्की	मंदिर रामनाथ	मकान रामदास

२५ मंदिर मय चबूतरा वाक़ै बाज़ार अलीगंज
२६ अराज़ी शरह मुअइयन मुहाल बच्ची कुँअरि मिनजुमला १—३४ के निस्फ मौज़ा सैदपुर गढ़उरा।
२७ अराज़ी शरह मुअइयन इस्म फरज़ी १८५ १८६ १८८ १९० १९० १९१ १९३ १९६
—२ -१२ -३५ १ २ -१२ -२१ -२०
—६ मुहाल बच्ची कुँअरि

२०२ २०३ २०४
१ २ —१५ मुहाल रामलाल
—१६ —२
१८७ १८८ १९४ १९५ मुहाल नन्हकूलाल वाका मौज़ा
—१२ —११ —१४ —१: सैदपुर गड़उरा

२८ आराज़ी शरह मुअइयन वाके मौजा रज्जीपुर १६ विस्वा नं० ३२

२९ १ हिस्सा धर्म कंपनी वाके मु० बाज़ार अलीगंज जौनपुर
५

३० ६ क़िता डिगरी बहक़ सायलान अदालत माल

३१ तीन किता रेहननामा बहक़ सायलान

३२ इक्कीस क़िता पुरोनोट बहक़ सायलान

३३ मुतफ़र्रिक़ दरख़्तान २५ वाके मौजा सैदपुर गड़उरा में दो कोठी बाँस नक़ाबला

३४ मुतफ़र्रिक दरख़्तान १६ व बग़ीचा वाक बाज़ार अलीगंज जौनपुर

३५ मुतफ़र्रिक दरख़्तान मौजा रौजा अरजन तादादी ३९ मय तकियासानी

३६ मुतफ़र्रिक दरख़्तान तादादी १२६ में ८ कोठी बाँस मौजा गदन अरज़ानी नं० ६ नं० ७ नं० ८ नं० १०

३७ सात किता तमस्सुक नविश्ता दीगर अश-
खास मौसूमा सायलान

३८ आराजी वाके मौजा क़यामपट्टी शहर पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन
जौनपुर नं० साबिक़ २४ तादादी १३ बि० खेत धुरवील परती गड़ही रानी क़ाश्त फ़ज़ल
बख़्दारी धुरवीन चौधरी चौधरी सागर

३९ आराज़ी वाके मौजा सैदपुर गड़उरा नं० १६००
४ वि०

४० मुतफ़र्रिक दरख़्तान मौजा जमालपुर तादादी १५

४१ आराजी शरह मोअइयन वाके मौजा २१७ २४८ ७२२
सैदपुर गड़उरा परगना हवेली जौनपुर नं० १८ वि० ७ धुर ११ वि० २ धुर १३ वि० ८ धुर

४२ हक़ियत मुतफ़र्रिक़ा सैदपुर गड़उरा ५ बीघा नं० १५८३ १५८४ १५८५
१५ वि० २ १ बी० ५ वि० ३ १ बी० १७ वि०
५ गाड़ा

४३ एक किता बाँस वाके मौजा सैदपुर १५८६ १५८७
गड़उरा के मेड़ पर १ बी० ७ धुर ४ बिस्वा ३ धुर

४४ एक किता मकान वाके मौजा गदन अरजानी उर्फ़ बाजार अलीगंज शहर जौनपुर

पूरब	पच्छिम	उत्तर	दक्खिन
सड़क पोख़्ता	गली	मकान रामनरायन वग़ैरह व जमीन परती	बचऊ तेली व व मु० कौशिल्या मुंसिम

[बवक़्त अवाम फ़रोख़्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत

बअदालत पं० ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकंड ग्रेड जौनपूर
मु० नं० ३४ सन् ३७
ता० २९—११—३८

हरगाह शंभूनरायन वल्द मुं० महेशप्रसाद साहब (२) प्रह्लाद नरायन (३) प्रकाशनरायन नाबालिग़ान शंभूनरायनलाल साकिन मोहल्ला बलंदगंज ज़िला जौनपूर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा जायदादहायमक़रूज़ा पेश की है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि जायदाद को जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो तो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांत के छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

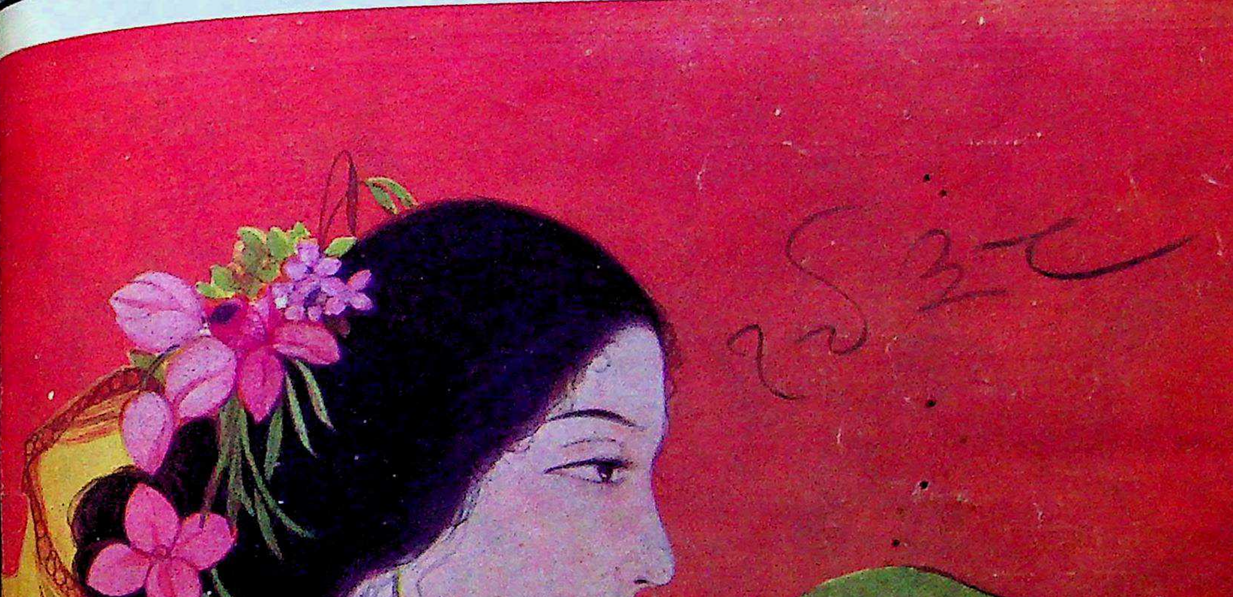

मार्गशीर्ष
१९९५

सुधा

December
1938

सामयिक सूचना

आधुनिक जीवन में अक्सर लोगों से उन विधवाओं व अनाथ बच्चों से भेंट होती है, जो अपने को जीवित रखने के लिये घोर प्रयत्न कर रहे हैं; क्योंकि उन लोगों ने, जिनके ऊपर वे आश्रित थे, अपने उस काल के लिये प्रबंध नहीं किया—जिसको कहते हैं—मृत्यु ।

क्या आपने निश्चय कर लिया है कि आपके बाद आपके आश्रित अपने को जीवित रख सकेंगे? यदि नहीं, तो समय न खोइए, और अभी ओरियंटल में बीमा करा लें, और इस तरह अपने प्रिय जनों की आर्थिक स्वतंत्रता निश्चित कर दें।

कभी-न-कभी मनुष्य बीमा के लायक़ नहीं रहता। यह कोई नहीं कह सकता कि कब!

देरी न करें—ओरियंटल में फ़ौरन् बीमा कराएँ, जहाँ पर प्रतिवर्ष ज्ञान अनुभवी जनता अपना जीवन बीमा कराती है।

लगभग

रु० २००००००००)

अभी तक ओरियंटल कंपनी द्वारा बीमा-कर्ताओं के हज़ारों कृतज्ञ उत्तराधिकारियों को उनकी आवश्यकता के समय दिया जा चुका है

चालू बीमा

रु० ७३००००००००)

के ऊपर

सुरक्षित रक़म ३१ दिसंबर १९३७ को

रु० २१००००००००)

के ऊपर

लाइफ़ एश्योरेन्स कम्पनी लि०

गवर्नमेंट सिक्यूरिटी ओरियंटल

प्रधान कार्यालय:— ओरियंटल बिल्डिंग, बबंई।

समूचे विवरण के लिये लिखें—आर० जे० पीमेन्टा

ब्रांच सेक्रेटरी, ओरियंटल बिल्डिंग, हज़रतगंज, लखनऊ

ए० सी० गुप्ता
ऐक्टिंग सब-ब्रांच-सेक्रेटरी
ओरियंटल लाइफ़ ऑफ़िस
२५, कैनिग रोड, इलाहाबाद

ए० आर० मेहता
ऐक्टिंग सब-ब्रांच-सेक्रेटरी
ओरियंटल लाइफ़ ऑफ़िस
११०, सिविल लाइन्स, बरेली

एच० सी० खन्ना
इंस्पेक्टर, ओरियंटल लाइफ़ ऑफ़िस
११।१४५ शांति-भवन
साउटरगंज, कानपुर

के० सी० पंत
ऐक्टिंग इंस्पेक्टर
ओरियंटल लाइफ़ ऑफ़ि
हैडनली काटेज, नैनी

शुभ

प्रत्येक मनुष्य इस बात को गाँठ बाँध ले !

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अर्बों-खर्बों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुण-गान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजाइश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेस-लाटरी में धन की प्राप्ति वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छ-छ, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

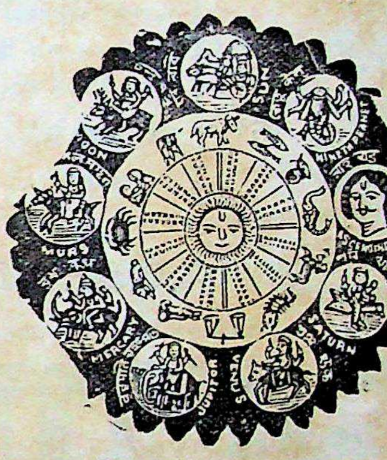

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्महीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ५॥≡)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ३॥≡)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनवार बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इब्राहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S S I)

लेख-सूची

पृष्ठ

१. भाग्य जागे (कविता)—[लेखक, श्रीयुत पद्मकांत मालवीय ... ४६७
२. उद्यान (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ... ४६८
३. जवाब (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए० ... ... ४६९
४. अध्यापक का सुधार—[लेखक, श्रीयुत कृष्णविनायक फड़के एम्० ए० ... ४७८
५. सभापति का अभिभाषण—[लेखक, श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर ... ४८१
६. अरे बाप रे! (व्यंग्य-चित्र) ... ४८६
७. दो गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत श्रीनिधि द्विवेदी ४९०

* श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों *

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चरक) सादों ३ दिन में पूरा लाभ। यदि अनेक दवा लगाकर निराश हो चुके हों, तो एक बार इसे लगा-कर नीरोग होवें। बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस। जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १।)

❀ गर्भ-निरोधक (बर्थ-कंट्रोल) ❀

इसको प्रति माह ३ बार के सेवन से उस मास में गर्भ नहीं रह सकता। यदि आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो दवा का सेवन कराना बंद करा दें। गर्भ धारण हो जायगा। इससे स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती। मूल्य १ वर्ष का १।); दूसरी दवा, जो सर्वदा के लिये वंध्या बना देती है, मूल्य २); पता—राजवैद्य परमेश्वर-दयालजी, नं० १०२ पो० क़तरीसराय (गया)

कोकशास्त्र

जिसमें पद्मिनी, चित्रिणी, संखिनी और हस्तिनी चारो प्रकार की स्त्री व पुरुषों की पहचान व स्त्री पुरुषों के ८४ रंगीन तस्वीरें तथा ८४ आसनों का मनोहर (दिलचस्प) हाल, गर्भ में पुत्र और पुत्री की पहचान, बाँझ स्त्रियों का इलाज, अपनी स्त्री तथा अपने आपको आयु-भर सुंदर, तंदुरुस्त और नौजवान बनाए रखना, तमाम क़िस्म की स्त्री व पुरुषों की गुप्त बीमारियाँ और इलाज, वशीकरण मंत्र और बहुत-सी ऐसी बातें हैं, जिनका यहाँ लिखना उचित नहीं, एक प्रति मँगाकर परीक्षा करें। क़ीमत डाक-व्यय-सहित २) । डाक-ख़र्च ।≡)

मिस्र का जादू

[मिस्र-देश के प्रचलित-जादू विद्या की एक हस्त-लिखित पुस्तक का अनुवाद]

अपनी छाया सूर्य, चंद्र, मंगल, शनि आदि ग्रहों को सिद्ध करना।

[मूसा फरऊन के समय की विचित्र बातें आप करके देख लो]

(१) वशीकरण (२) सूर्य-वशीकरण (३) चंद्र-वशीकरण और इसके सिवा कई चीज़ों के वशीकरण दर्ज किए हैं। इसके सिवा हर तरह के साधन रोगों पर दम करना चाहे, कोई रोग हो, और ओषधि से लाभ न होता हो, घर बैठे कुछ देशों की सैर करना, पवन में उड़ते फिरना, जिसको चाहना वश कर लेना अदूर-दराज़ की वस्तु मँगवा लेना, देव, परी, जिन्नों को अपने अधिकार में करना, यदि यह पुस्तक लिखे अनुसार न हो, तो वापस कर दो। क़ीमत केवल २), डाक-व्यय, ।≡)

ला० बेनीराम अग्रवाल, नं० ४१, लुधियाना

पृष्ठ

८. दौलतपुर की यात्रा (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, अध्यापक विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए०, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी ... ४९१

९. 'क्रौंटे-रोसों' में दशहरा (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ... ५०३

१०. श्रीरामकुमारजी वर्मा के एकांकी नाटक (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत सत्यप्रसाद थपलियाल ५०७

११. सृष्टि-रचना में प्रयोजन—[लेखक, श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ५१४

१२. पावन प्रेमासव (कविता)—[लेखक, पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न ... ५२१

१३. श्रीयुत विपिनविहारीजी वर्मा (सचित्र, जीवनी)—[लेखक, श्रीयुत भुवनेश्वरप्रसाद झा बी० ए०, बी० एल्० ५२३

१४. जो मैं ऐसा जानती (कहानी)—[लेखक, श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी ५३०

क्षमा प्रार्थना

"बिना देखे, बिना पढ़े, यूं ही अब तक 'बेकार, इश्तहारी' कह कर आप की पुस्तक की हँसी उड़ाता रहा। इसके लिए मैं बहुत ही लज्जित हूँ। मैं समझता था कि 'विवाहित आनन्द' में कोकशास्त्रों की व्यर्थ बातों और गन्दी तस्वीरों के सिवाय क्या होगा। परन्तु इसे पढ़कर मुझे इतना लाभ हुआ कि कह नहीं सकता। ईश्वर के लिए मुझे क्षमा करदें। मैं अत्यन्त लज्जित हूँ कि मैंने चांद पर थूका।"

शेख......अली—मुहल्ला......अमृतसर।

ले०—कविराज हरनाम दास बी. ए., लाहौर।

५००) रुपया इनाम

महात्मा-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी) की अद्भुत वनौषधि, तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि आप सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं की दवा कर निराश हो चुके हैं, तो इसे लगाकर आरोग्य हों, बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम। विश्वास न हो, ≈) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २)

संतति-निग्रह (बर्थ-कंट्रोल)

औषधि को प्रति माह दो-तीन बार व्यवहार करने से ही उस मास में गर्भ नहीं रह सकता। आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो औषधि व्यवहार करना बंद कर दें। गर्भ धारण हो जायगा। औषधि के व्यवहार करने से स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती। मूल्य एक वर्ष के सेवन योग्य की २), दूसरी औषधि, जो सर्वदा के लिये वंध्या बना देती है। मूल्य २) रुपया।

परीक्षित गर्भवटी

यह ख़ास वंध्या (बाँझ) को संतान पैदा कराने के लिये एकमात्र ब्रह्मास्त्र महौषधि महात्मा की सेवा से प्राप्त है, १७ वर्ष से अनुभूत है। सूर्य, चंद्रमा के समान निर्वंश-रूप अंधकार को दूर करने में समर्थ और सत्य है। अनेक धूर्त विज्ञापन से दुखी होने के कारण इस पर भी अविश्वास न करें, यह साक्षात् ब्रह्मरूप है। इसके सेवन से स्त्रियों के मासिक-संबंधी सभी दोष, महीने का घटना-बढ़ना, नहीं होना, कम होना, ज़्यादा होना, काला, पीला, नीला, दुर्गंधयुक्त होना, वायुगोला, बादीपन, पेट, सिर, कमर, कंधा इत्यादि में दर्द चक्कर, हिस्टीरिया, चर्बी बढ़ना, शरीर का सूखना, गर्भ रहकर गिर जाना इत्यादि सभी दोषों को दूर कर ५० वर्ष के भीतर अवस्थावाली स्त्री को गर्भाधान कराकर संतान उत्पन्न कराती है। मूल्य ११) रु०

वैद्यराज अखिलकिशोरराम, नं० ३८१, पो० कतरी सराय (गया)

१५. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत चंद्रकुँवर वर्तवाल, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०, श्रीमती लज्जावती जैन, श्रीमती कमलादेवी जैन, श्रीयुत उमाशंकरसिंह, श्रीयुत सुरेंद्रदेव मिश्र 'कुसुम', श्रीयुत 'किशोर' और श्रीयुत हरिमोहनलाल वर्मा 'मोहन' ... ५३६

१६. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत श्रीधर-सिंह एम्० ए०, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए० और श्रीयुत श्री० ... ... ५४६

१७. कुसुम ५५२

१८. धारा (संपादकीय विचार) ... ५५३

SOVEREIGN-REMEDY
AMRUTANJAN
Best Indian Pain Balm
Amrutanjan Depots
BOMBAY, MADRAS

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक
भारतीय महौषध।
सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, फटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड
बंबई, कलकत्ता, मदरास
पो० बॉक्स नं० ६८२५

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी औषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह औषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुन: लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।≡)

कामिनी-वशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।≡)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी-औषधालय, अलीगढ़

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. नवदंपति—[चित्रकार, श्रीयुत कमला-शंकरसिंह ४६७

(ख) दुरंगे

२. देश-रत्न ऑनरेबुल डॉक्टर कैलासनाथ काटजू ४६०

३. ग्राम-सुधार-संबंधी एक सभा में ... ४६१

खिज़ाब को छोड़ो

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो ॥); इससे अधिक पका हो, तो ५) या कुल पका हो, तो ६) का तेल मँगवा लें।

पता—बाल काला डिपो नं० १०१
पो० कतरीसराय (गया)

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम व पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १।) में। डाक-व्यय पृथक्।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

'नेवर ओल्ड'

खाने से सफ़ेद बाल काला!

'नेवर ओल्ड' के प्रयोग के बाद अगर फ़ायदा न हो, तो वापसी क़ीमत की ठोस गारंटी है। इसलिये 'प्रताप' के जेनरल मैनेजर मि० टेकचंद ढेंगरा के पास एक हज़ार रुपए का चेक बतौर जमानत जमा कर दिया है। क़ीमत पूरा बक्स १०), आधा बक्स ५) और चौथाई बक्स २॥)

ताज़ा सार्टिफ़िकेट देखिए—

श्रीयुत लाला काशीराम साहब पेंशनर पंजाब-पुलिस कठासग्राल ज़िला सरगोधा लिखते हैं—"मैंने जो दवाई सफ़ेद बाल काला करने के लिये अपने लड़के के मार्फ़त मँगवाई थी, उसने आश्चर्य-जनक फ़ायदा किया है। और, अब मैं कुछ पंक्तियाँ लिखने पर विवश हूँ कि मेरे बाल जड़ से काले उग आए हैं। मैं आपकी सफलता पर हार्दिक धन्यवाद देता हूँ!"

पूर्ण विश्वास के लिये सार्टिफ़िकेट और लिटरेचर मँगवाएँ!

सी० उमर ऐंड कंपनी, पोस्ट-बॉक्स नं० १४६, लाहौर

पृष्ठ

४. कुमारी लज्जा महाजन ५२२

५. लखनऊ-ज़नाना-पार्क की कुछ सदस्याएं ५२३

(ग) व्यंग्य

६. अरे बाप रे!—[चित्रकार, श्रीयुत शित्तार्थी ४८६

(घ) सादे

७. अध्यापक विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए० ४९२

८. सुप्रसिद्ध कलाविद् राय कृष्णदासजी ... ४९३

९. महाकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त ... ४९३

१०. श्रीमुरारीलाल केडिया ... [illegible]

११-१८. सरस्वती-संपादक स्व० आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ... [illegible]

१९-२१. 'कौंटे-रोसो' में दशहरा-संबंधी चित्र ... [illegible]

२२. श्रीयुत विपिनविहारीजी वर्मा ... [illegible]

२३. श्रीमती लज्जावती जैन ... ... [illegible]

२४. श्रीमती कमलादेवी जैन ... ... [illegible]

२५. महात्मा हंसराज ... ... [illegible]

२६. स्व० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ... [illegible]

पेलिकेन

Pelican

हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

यह सरलता से खोली जा सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है। कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है। साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है। स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—

गौथेर वागनेर हानोवर

फारदर्गक

Pelican

सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।

लोकल स्टॉकिस्ट—कौशला जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

अब कोई बेकार न रहेगा

(१) यदि आप धनवान् हैं, किंतु आपके सामने कोई लाभदायक व्यापार नहीं है। (२) यदि आप मध्यम श्रेणी के व्यक्ति हैं, और थोड़ी पूँजी से किसी काम को शुरू करने की स्कीम नहीं जानते। (३) यदि आपके पास पूँजी बिलकुल नहीं है और सर्वथा बेकार हैं, तो भी हमारी इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़ें। इससे उपर्युक्त तीनो श्रेणी के आदमी अपनी बेकारी मिटा सकते हैं। यह गारंटी है। पुस्तक की संक्षिप्त विषय-सूची निम्न-लिखित है—

(१) अमेरिका के बेकार आदमी केवल क़लम-दावात लेकर व्यापार द्वारा केवल डाक की सहायता से किस प्रकार मालामाल बन जाते हैं। उनके क्रियात्मक अनुभव एवं सुगम उपाय, (२) अपनी वस्तु बेचने का अनुपम उपाय, (३) ग्राहकों को अपनी तरफ़ खींचने का रहस्य, (४) अत्यधिक नफ़े के व्यापार, (५) डाक द्वारा व्यापार करने के गुप्त रहस्य, (६) योरप के भिन्न-भिन्न फ़र्मों के पते, जो नई-नई वस्तुओं के नमूने मुफ़्त भेजती रहती हैं, (७) अमेरिका की प्रसिद्ध फ़र्म का पता, जो केवल टिकट भेजने पर संसार-भर की प्रत्येक चीज़ का आपको पता बता देगी, (८) ५०) से ५००) तक की पूँजी तक के कारख़ाने लगाने का विवरण, जिनसे ६०) से २००) मासिक तक कमाया जा सकता है, (९) फ़्रांस की नई-नई चीज़ें प्राप्त करने और उनकी एजेंसी लेने के लिये वहाँ की भिन्न-भिन्न फ़र्मों के पते, (१०) जर्मन, जापान, और अमेरिका की ताज़ी मालूमात और घर बैठे एजेंसी लेने के तरीक़े, इस पुस्तक में सविस्तर छापे गए हैं। इसके अतिरिक्त छ पैसे सेर साबुन बनाना, जादू का रंग, कारटूायल, बर्फ़ का पौडर, हर प्रकार के जर्मनी ख़िज़ाब, जादू का साँप, बूट-पालिश, मुख देखने के दर्पण बनाना, कानपुरवाले-जैसा पान का मसाला, ख़िज़ाब, साबुन, फ़ोटोग्राफ़ी के प्लेट और पेपर बनाना। नक़ली शहद, हींग, कपूर, पिपरमेंट क्रिस्टल, फ़िनायल, भाँति-भाँति के सुगंधित तेल और शर्बत बनाना, भारतवर्ष के कच्चे माल से रुपया कमाना, तैल सफ़ेद करना, क्लोरीन गैस बनाना, जिससे कपड़े बगले के पर के समान सफ़ेद निकल आते हैं, नक़ली रबर, अचार, मुरब्बे और चटनियाँ, वनस्पति-घृत बनाना, एक सेर दूध से पाव-भर मक्खन निकालना। इनके अतिरिक्त अनेक विलायती चीज़ों को स्वदेशी तैयार करना इस पुस्तक में सिखाया गया है, और ऐसे-ऐसे प्रयोग लिखे गए हैं, जो आज तक सुनने में नहीं आए। २२५ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल १।) रु०, डाक-व्यय ।-)

सौ गुणा नफ़ का व्यापार

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेंट ओषधियों का है। इससे सौगुणा नफ़ा कमाया जा सकता है। एक पैसा लागत की दवा के दो-दो रुपए मिलते देखे हैं। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने एक-एक पेटेंट दवा के नुसख़े से लाखों रुपया कमाया है! विलायती फ़र्में एक-एक पेटेंट दवा से करोड़ों रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, जर्मनी, इँगलैंड, अमरीका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की बिकनेवाली पेटेंट ओषधियों के नुसख़े बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीखकर साधारण पूँजी से प्रायः सभी प्रचलित पेटेंट ओषधियों को स्वयं तैयार करके विज्ञापन द्वारा मुक़ाबले में कम क़ीमत में बेचकर सैकड़ों रुपए मासिक की स्थायी आमदनी पैदा करना चाहते हैं, तो आज ही 'पेटेंट ओषधियाँ और भारतवर्ष'-नामक पुस्तक की १ प्रति मँगाकर कारोबार शुरू कर दें, संभव है, फिर आपको यह पुस्तक किसी मूल्य पर न मिल सके। मूल्य ।॥), पोस्टेज ।-)

पता—रसायन-कार्यालय (अ) पोस्ट-बक्स नं० १२५, देहली

ख़िज़ाब छोड़ो

इस तेल से पका बाल जड़ से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। इसकी सत्यता सैकड़ों प्रशंसा-पत्रों से प्रमाणित हो चुकी है। बाल कम पका है, तो ५) ; चौथाई से अधिक पका है, तो ७) रु० का तेल मँगा लें।

पता—हजरा ऐंड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

योगेंद्र कवच

(शास्त्रोक्त)

इस अद्भुत शक्तिशाली तथा दैवी शक्तिसंपन्न सिद्ध वशीकरण-यंत्र के केवल धारण करने-मात्र से ही कठिन-से-कठिन काम भी सिद्ध होता है। यंत्र के चमत्कारी प्रभाव से कोई स्त्री या पुरुष कैसा ही कठोर-हृदय, अभिमानी क्यों न हो, आपसे मिलकर शादी (प्रेम) के लिये इच्छा प्रकट करेगी। इसके द्वारा आपका दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, तरक़्क़ी, मुक़दमे, जुआ, लाटरी में जीत, नवग्रहों की शांति तथा कठिन-से-कठिन रोगों का नाश होकर भाग्योदय होता है। शास्त्रोक्त नहीं है, ऐसा साबित करने पर १००) रु० इनाम। मूल्य ताम्र २)रु०, चाँदी का ३।), असली सोने का ६) रु०

पता—श्रीमहाशक्ति-आश्रम, पो० परवलपुर (पटना)

श्वेत कुष्ठ की फ़क़ीरी जड़ी-बूटी

इस अद्भुत शक्तिशाली जड़ी-बूटी के केवल तीन ही दिन के लेप से कठिन-से-कठिन और पुराना-से-पुराना श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी) या चरक-सा महारोग जड़ से आराम होता है। अगर आप इनामी विज्ञापनों के धोखे में पड़कर ठगे जा चुके हैं, तो एक बार इस वनौषधि को इस्तेमाल कर आरोग्य होवें। विश्वास नहीं हो, तो एक आने का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मू० १।।) रु०

पता—श्रीवीरेंद्रप्रसाद, नं० ५१, पो० परवलपुर (पटना)

आयु घट गई!

आरोग्यता चलती बनी—

बुद्धि मंद हो गई! क्यों?

यदि आप जानना चाहते हैं, तो 'जीवन - सुधार'-
नामक पुस्तक केवल एक कार्ड लिखकर मुफ़्त
शीघ्र मँगाइए। आज ही लिखें।

पता—रामकृष्ण-औषधालय, जबलपुर (सी० पी०)

ईस्टर्न बंगाल रेलवे और किलबर्न कं०

गंगासागर में मकर-स्नान

तीर्थराज गंगासागर जाने में आजकल कोई असुविधा नहीं है। रेल से डायमंड हारबर जाने और वहाँ से किलबर्न-कंपनी के जहाज़ से गंगासागर जाने-आने मे प्रायः २) और प्रायः १०-१२ घंटा समय बच जाता है।

इस वर्ष ईस्टर्न बंगाल, आसाम-बंगाल, ईस्ट इंडियन रेलवे और बंगाल-नागपुर रेलवे तथा स्टीमर-कंपनी के बड़े-बड़े स्टेशनों से कलकत्ता आकर सियालदह से रेल द्वारा डायमंड हारबर और वहाँ से 'किलबर्न-कंपनी' के जहाज़ से गंगासागर तक का एक ही टिकट विभिन्न स्थानों की दूरी के अनुसार आगामी २० पौष (५ जनवरी) से २८ पौष (१३ जनवरी) तक मिलेगा।

इस टिकट की मियाद २० जनवरी तक है। इस टिकट को लेकर आने-जाने के रास्ते में किसी भी स्टेशन पर यात्रा भंग की जा सकती है। किंतु १२ और १३ जनवरी को डायमंड हारबर से एवं १४ जनवरी को गंगासागर से किलबर्न-कंपनी के जहाज़ छूटने के समय यात्रियों को ठीक समय पर उपस्थित हो जहाज़ को पकड़ना पड़ेगा।

यात्रियों की सुविधा के लिये डायमंड हारबर में गंगा के घाट तक बहुत-से अतिरिक्त स्पेशल ट्रेनें जायँगी, और साधारण गाड़ियों में बहुतों को घाट तक ले जाया जायगा। गाड़ी से उतरते ही यात्रियों को सामने की जेटी के ऊपर से किलबर्न-कंपनी के जहाज़ पर चढ़ना होगा। इस बार किलबर्न-कंपनी के बहुत-से जहाज़ डायमंड हारबर और सागर-द्वीप के बीच आया-जाया करेंगे।

गंगासागर के तीर्थयात्रियों के लिये ऐसी सुविधा-जनक व्यवस्था पहले कभी नहीं थी।

एल० डब्ल्यू० वानसोमरन,
ट्राफ़िक मैनेजर।

No T/332/38

उन्हें राज्य की
परवाह न थी
सत्य की खोज थी

राजमहल सिद्धार्थ के लिये नहीं बने थे। राज्य त्यागकर वे संसार में निकल पड़े—सत्य की खोज में। सत्य को उन्होंने खोजा तो उसे पाया भी। संसार में भगवान बुद्ध के नाम से विख्यात हुए। आप जितनी ही यात्रा करेंगे, जितना मनुष्यों और स्थानों के बारे में जानेंगे; सत्य के उतने ही समीप होते जायँगे। रेलवे ने भ्रमण को इतना सहज और सस्ता बना दिया है कि आपकी धर्म-लालसा बहुत जल्द पूरी हो सकती है।

गया से कुछ ही मील दूर, बुद्ध गया का पवित्र मंदिर है, जहाँ भगवान् बुद्ध ने बोधिसत्व प्राप्त किया था। यह तीर्थ प्रत्येक हिंदू के दर्शन व पूजन योग्य है।

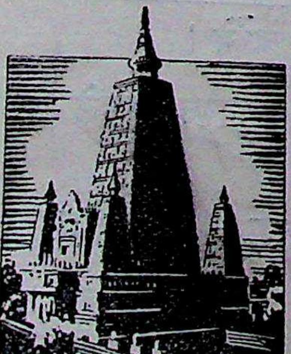

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

RBK. 8

प्रकाशित हो गया ! **नई शैली का ऐतिहासिक नाटक !!**

रानी भवानी

लेखक
हिंदी के क्रांतिकारी लेखक
श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा

श्रीपरिपूर्णानंदजी हिंदी के प्रौढ़ लेखक हैं। आपने यह नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य की वृद्धि की है। रानी भवानी का नाम प्रत्येक इतिहासज्ञ जानता है। इस नाटक में उसी सुशीला तथा आदर्श रमणी का सुंदर चरित्र-चित्रण है, जिसे पढ़कर विशेषतया स्त्रियों में सुंदर भाव पैदा हो सकता है। साथ ही इसमें मुग़ल-साम्राज्य के पतन-कालीन उनके प्रांतीय सूबेदारों की स्वच्छंदता एवं विलासिता का अच्छा दिग्दर्शन है। मुर्शिदाबाद के विलासी नवाब अलीवर्दीख़ाँ के मातहत नाटौर नाम की एक रियासत थी। वहाँ के राजा रमाकांत बड़े ऐयाश और शाहखर्च थे। रानी भवानी उन्हीं की स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की बड़ी चेष्टा की, पर फटकार के अतिरिक्त कोई लाभ न हुआ। रमाकांत के ज़ुल्म का समाचार उनके चचा दयाराम को मिला। दयारामजी नवाब के सम्मानित दरबारियों में से थे। उन्होंने रमाकांत को दंड-स्वरूप गद्दी से उतरवाकर उनके भाई देवीदास को गद्दी दिलवा दी। रमाकांत को लेकर रानी भवानी दर-दर मारी-मारी फिरीं। देवीदास को राज्य-मद इतना हो गया कि वह रमाकांत के साथ-साथ दयारामजी की भी उपेक्षा करने लगा। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकांत का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को बड़ा क्षोभ हुआ। फल-स्वरूप उन्होंने रमाकांत को फिर गद्दी पर बिठा दिया। किंतु रानी भवानी पर उनका विश्वास अधिक था, अतएव राज्य उन्हें मिला, और उन्होंने नवाब से अपने पति को साथ रखने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

नाटक बहुत छोटा, किंतु मनोरंजक है। पात्र कम हैं, ताकि रंगमंच पर आसानी से खेला भी जा सके। भाषा सरल और मुहाविरेदार। मूल्य सादी ।।=), जिल्ददार १=)

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

शिशु-पालन

[लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार]

भारतवर्ष में आजदिन बच्चों की दशा कितनी शोचनीय है, यह किसी भी शिक्षित मनुष्य से छिपा नहीं। आपको किसी बिरली ही सौभाग्यवती माता की ऐसी गोद मिलेगी, जिसके दो-एक अमूल्य लाल बाल-अवस्था ही में काल-कवलित न हो गए हों। जब हम दूसरे देशों से अपने देश की तुलना करते हैं, तो हमें भले प्रकार ज्ञात हो जाता है कि हमारे ही देश में सबसे अधिक बच्चों की मृत्यु होती है, और जो जीते भी हैं, उनमें अधिकांश रोगी, निर्बल और कम आयुवाले होते हैं। इस शोचनीय स्थिति में भारत के जातीयता-रूपी महल को सुदृढ़ बनाने के लिये यह परमावश्यक है कि उसकी नींव को सुदृढ़ बनाया जाय। प्रत्येक जाति की नींव उसके बच्चे हैं, और उन्हीं पर देश तथा समाज का भविष्य निर्भर है।

यदि किसी देश की माताएँ चतुर होंगी, गर्भाधान के समय से अपने स्वास्थ्य की रक्षा करेंगी, और जन्म के बाद बालक का यथोचित लालन-पालन करेंगी, तो इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि उस देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। इसके विपरीत यदि हम अपने बच्चों की ओर से लापरवाही करेंगे, तो हमारे अधःपतन में कोई भी संदेह नहीं रहेगा। जब हम माताओं और बालकों को अच्छा बनाने का बिलकुल प्रयत्न नहीं करते, तो हमें सभ्य कहलाने का भी कोई अधिकार नहीं। ऐसी दशा में हमें अन्य सभ्य देशों की बराबरी करने की आशा छोड़ देनी चाहिए।

इस पुस्तक में शिशु-पालन-संबंधी समस्त ज्ञातव्य बातों का, बड़ी ही सरल भाषा में, वर्णन किया गया है, कोई बात छोड़ी नहीं गई। पुस्तक माताओं के बड़े काम की है। अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र भी हैं। मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

मन की मौज

[राष्ट्रीयता से भरा काव्य]

लेखक, पींजरे कौ पंछी। प्रस्तुत पुस्तिका लेखक ने पटना-जेल में लिखी थी। रचना व्रजभाषा में की गई है। कालिदासजी ने मेघ को संबोधन कर अपना काव्य लिखा था, यह रेलगाड़ी को संबोधित कर लिखा गया है। काव्य-प्रेमियों को इस पुस्तिका को अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ।)

* * *

इस पुस्तक के संबंध में विद्वद्वर कन्हैयालालजी पोद्दार लिखते हैं—

चतुर्वेदीजी की 'मन की मौज' पाठकों के भी मन की मौज बढ़ानेवाली है। 'रेलदूत'-शीर्षक कविता में सत्याग्रह के समय का स्वदेश-भक्त युवकों का बड़ा ही हृदयग्राही, भाव-पूर्ण, किंतु यथार्थ चित्र अंकित किया गया है। भारतमाता का पूर्वकालीन आदर्श पूर्ण गौरव एवं विदेशी शासकों के क्रूर शासन का ऐतिहासिक दिग्दर्शन बहुत ही चित्ताकर्षक किया गया है। अंत के वर्णन में रेल द्वारा कारुणिक संदेश-प्रेषण में 'रेलदूत' के नाम की सार्थकता का जो निर्वाह किया गया है, वह भी अत्यंत उपयुक्त है। काव्य की दृष्टि से भी देखा जाय, तो प्रायः बहुत-से वर्णन बड़े विचित्र और चमत्कारक हैं, जैसे—

"करुण कहानी सुनि उठी तेरे हिय में हूक ;
गरम उसाँसैं लेति का ताई सों तू कूक ?"

इसमें नवीन उत्प्रेक्षा का चमत्कार बड़ा सुंदर है। भाषा की दृष्टि से भी व्रजभाषा पर लेखक का अधिकार प्रमाणित होता है। पुस्तक बहुत ही सुंदर, समयोपयोगी है। नवयुवकों के स्वदेश-प्रेम के उत्साह-वर्धन के लिये ऐसी पुस्तकों की इस समय परमावश्यकता है। मैं इसकी रचना के लिये पं० श्रीरमावल्लभ चतुर्वेदी को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

—कन्हैयालाल पोद्दार

मिलने का पता—**गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ**

[क़ाबिल क़ोल

इत्तिलानामा बग़रज़ ऐलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत
(ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर खीरी दरजा दोम मुक़ाम लखीमपुर
मुक़द्दमा नंबरी नंबर १२१ सन् १९३६ ई०

१—दरबारीसिंह बालिग़
२—हरनामसिंह नाबालिग़ बविलायत मु० मोहनी मादर .खुद } पिसरान ज्वालासिंह कौम अहीर साकिन मैगलगंज प० औरंगाबाद ज़िला खीरी क़र्ज़दार सायलान

बनाम

१—सैयद मुज़फ़्फ़रहुसैन वल्द सैयद क़ाज़िम हुसैन कौम सैयद सा० औरंगाबाद
२—गिरिजादयाल वल्द हज़ारीलाल कौम अहीर सा० मैगलगंज
३—रामचरनलाल वल्द भाऊलाल कौम अहीर सा० मैगलगंज
४—बच्चूलाल वल्द प्रेमसुख कौम ब्रह्मण साकिन चौगानपुर
५—ब्रह्मापसाद वल्द जैदयाल पिसरान हज़ारीलाल कौम वैश्य सा० मैगलगंज } क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानि

चूँकि दरबारीसिंह व हरनामसिंह वल्द ज्वालासिंह साकिन मैगलगंज ज़िला खीरी ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ८ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की है, लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्त देहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ व फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुताल्लिक़ कोई दावा रखता हो तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गजट में छपने की तारीख से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदा क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा संयुक्तप्रांत

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त हिस्सा की मुताल्लिक़ क़ाबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	बसाअत हक़ीयत दरख़्वास्त हिस्सा मुंदर्जा रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्त हिस्सा की हक़ीयत पर मौजूदा सरकारी मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	खीरी	हक़ीयत	मैगलगंज मोहाल दीवानपुर	हक़ीयत ज़मीदारी सात बिस्वा १० बिस्वांसी		४९)	

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद, जो बहैसियतमजमूई हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ आराज़ी हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है

१	बैल २ रास
२	भैंस १ रास
३	पड़िया १ रास
४	गाय १ रास

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख १७ नवंबर सन १९३८ ई० जारी हुआ।

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत
बइजलास पं० ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकंड ग्रेड जौनपुर
मु० नं० ३० सन् १९३६
ता० मुक़र्ररा ११ जनवरी सन् ३९

हरगाह १—रघुनंदनसिंह वल्द भवानीप्रसादसिंह २—समरबहादुरसिंह पिसर नाबालिग़ रघुनंदनसिंह बरिफ़ाक़त पिदर ख़ुद सा० मौ० समोधपुर प० उगली ज़ि० जौनपुर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो   से, जो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ियत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	जौनपुर	जमींदारी	१६ आना मौ० समोधपुर मोहाल विंदेश्वरी-सिंह प० उगली ½ हिस्सा	मय सीर व सायर कुल्हुम हक़ूक़ व हबूब जमींदारी	१६ आना मुसल्लम	
२	,,	,,	१६ आना मौ० समोधपुर मोहाल शिवबहालसिंह प० उगली	,,	,,	
३	,,	,,	९ गंडा २ कौड़ी ८ दंत मवालियात जफ्मी पट्टी मिश्र-सेनपुर मोहम्मदपुर कोटला प० उगली ½ हिस्सा खास ¼ हिस्सा जूरिया बैजनाथ मोहाल विंदेश्वरीसिंह इस तौर पर ½ हिस्सा	,,	,,	

४	,,	,,	२ गंडा १ १/९ कौड़ी ,, २ दंत मौ० बिखल प० उगली	,, ७ गंडा ३ कौड़ी
५	,,	,,	४ गंडा ३ कौड़ी ४ ,, दंत मौ० बिखल प० उगली जि० जौनपुर	

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद, जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत की वसाअत (विस्तार)			
१	बाग़ मोहाल जिवबहाल-सिह	१२३६/२ —२८	२४४५/२ —१७	२४५२/२ —२७	२४५१/३०६८/२ मुसहम —१२
२	बाग़ मोहाल बिदेशरी सिंह	१२३६/३ —२८	२४४५/३ —१६	२४५२/३ —२७	२४५३/३०६८/३ —१२
३	तमस्सुक तादादी २५०) नविश्ता इलाही व बैजू मौसूमा सायलान बपवज़ सूद सायलान क़ाबिज़ है				

स्पेशल जज

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्या
राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	।।)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

सुधा

वर्ष १२
खंड १

मार्गशीर्ष, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९५ वि०)—
दिसंबर, १९३८

संख्या ५
पूर्ण संख्या १४६

भाग्य जागे

[श्रीयुत पद्मकांत मालवीय]

(भैरवी)

आज मेरे भाग्य जागे।
ज्योति के आधार रवि के उदय पर कुल तिमिर भागे।
लालिमा-रंजित हुआ तन,
हो गया विकसित जलज-मन ;
जगमगा फिर से उठा अब
आज जीवन-राशि-कन-कन।
चकित-से उठकर खड़े हैं सुप्त निज आलस्य त्यागे। आज०।
प्रकृति नव परिधान सजकर,
कोकिलाएँ मान तजकर
गा रही हैं गान मंगल,
मुक्त-बंधन सजल निर्भर—
चल पड़े रसमय बनाते, मिल गया जो उन्हें आगे। आज०।

उद्यान

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

(शार्दूलविक्रीड़ित)

माली के उर की अपार ममता, उन्मत्तता भृंग की,
पेड़ों की छवि-पुंजता, रुचिरता छायामयी कुंज की,
पुष्पों की कमनीयता, विकचता, उत्फुल्लता बेलि की,
देती है खग-वृंद की मुखरता उद्यान को मंजुता ॥ १ ॥
कांता कंज-दृगी, सरोज-वदना, भृंगावली-कुंतला,
सुश्री, कोकिल-कंठिनी, भुजलता-लालित्य-आंदोलिता,
पुष्पाभूषण - भूषिता, सुरभिता, आरक्त - बिंबाधरा,
दूर्वा - श्यामल - साटिका - विलसिता है वाटिका-सुंदरी ॥ २ ॥

(द्रुत विलंबित)

सहज-सुंदर भूति-निकेत क्यों
बन सके नर-निर्मित वाटिका;
विपिन में दृग हैं अवलोकते
प्रकृति की कृति की कमनीयता ॥ ३ ॥

(शार्दूलविक्रीड़ित)

कोई पा बहु रंग की विविधता आधार पुष्पावली,
कोई है ले लाल फूल लसिता शृंगारिता रंजिता;
क्या हैं सुंदर नारियाँ विलसतीं पैन्हे रँगी साड़ियाँ,
या हैं कांत प्रसून-पुंज-कलिता उद्यान की क्यारियाँ ॥ ४ ॥
पा आभा दिन में दिनेश-कर से, हो दिव्य आभामयी,
ले-ले कांति सुधांशु-कांत-कर से, हो-हो सिता से सिता;
पाके वारिद-वृंद से सरसता, वृंदारकों से छटा,
होती है रस-सिंचिता, विलसिता, उल्लासिता वाटिका ॥ ५ ॥
हो आभामय मंद-मंद हँस के फूली लता व्याज से,
मुक्ता-से लसिता तृणावलि मिले हो दिव्य नीलांबरा;
आँखों को अनुराग-सिक्त, मन को है मुग्ध देती बना,
पैन्हे मंजुल मालिका सुमन की उद्यान की मेदिनी ॥ ६ ॥

जवाब

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

[एक]

पिछले साल की बात है । उन दिनों, पूना में, मैं एक फ़िल्म-कंपनी में डाइरेक्टर था । शहर से बाहर, एक छोटे-से बँगले का ऊपरी भाग मैंने भाड़े पर ले रक्खा था । वहाँ मैं रहा करता था ।

नवंबर का महीना और जाड़े का आरंभ—कुछ-कुछ ठंड बढ़ना शुरू हो गई थी । यों तो पूना की स्थिति ही पहाड़ों के बीच में है ।

मेरे बँगले के ठीक सामने एक दूसरी कोठी बहुत दिनों से ख़ाली पड़ी हुई थी । उसका 'किराए के लिये ख़ाली' का बोर्ड रोज़ाना आते-जाते मेरी नज़रों के सामने पड़ता रहता था ।

वहाँ मैं अकेला ही रहता था । प्रवास के उन दिनों का सूनापन भी कौतुक और जिज्ञासा से ख़ाली न था । अन्य प्रांत में अन्य भाष-भाषियों का संपर्क कुछ नए अनुभवों का परिचायक बन रहा था । हाँ, कभी-कभी अपने सूनेपन का यथार्थ ज्ञान मन को व्याकुल कर देता था, परंतु उसके साथ ही जब अंधकार से आच्छादित उस सामनेवाली कोठी की ओर नज़र उठ जाती, तब मन को थोड़ा संतोष होता था ।

उस अँधेरी कोठी में दीपक का प्रकाश एक स्वप्न था । उसी भाँति मेरे हृदय में एक अभाव, एक शून्यता, एक निराशा का अंधकार था, जिसे अभिशाप के रूप में मैंने स्वयं ही अंगीकार कर रक्खा था ।

वह मेरे जीवन की पहेली और अपनेपन की बात थी, जो अब भी ज्यों-की-त्यों ही है—कब तक उसे अपनाकर संचित रख सकूँगा, नहीं कह सकता ।

उस दिन शाम को कोई सात बजा होगा । दिन-भर स्टूडियो में काम करने के बाद बहुत ही थका हुआ मैं वापस लौटा । ड्राइवर ने गाड़ी से उतरते ही पूछा—"आज आप घूमने न जायँगे ?"

मेरा जी अच्छा न था । मैंने कहा—"नहीं ।"

ड्राइवर ने गाड़ी गैरेज में बंद कर तालियाँ मुझे दे दीं, और सलाम करके चल दिया । मैंने मुड़कर देखा, सामनेवाली कोठी का किराएवाला बोर्ड आज ग़ायब था, और ऊपर के कमरे में रोशनी हो रही थी । मैंने समझा, कोई किराएदार आ गया । मैं ज़ीना चढ़कर, ऊपर ताला खोलकर अपने कमरे में आया, और कपड़े उतारने लगा । सामनेवाली कोठी में ग्रामोफ़ोन बज रहा था—"तेरे दिल की लगी कोई क्या जाने ?" मैं सुनने लगा ।

[दो]

चाय का प्याला होठों से लगाए मैं सबेरे कमरे के सामने, बरामदे में, टहल रहा था । नई आबाद हुई कोठी के ऊपरी मंज़िल की खिड़कियाँ एक-एक कर खुल गईं । कोई नौकरानी खिड़कियों के काँच कपड़े से साफ़ कर रही थी । मैं प्याले की चाय समाप्त कर कमरे में आ गया ।

सिर में हलका-सा दर्द रात-भर रहा था, इसलिये उस दिन स्टूडियो न जा सका । क़रीब दस बजे गैरेज से गाड़ी निकालकर मैं सड़क पर लाया । भोजन करने होटल की तरफ़ जाने का इरादा था । मैंने गाड़ी स्टार्ट की । मुझे ऐसा जान पड़ा कि सामनेवाली कोठी से कोई जल्दी-जल्दी बाहर

आ रहा था। मैंने घूमकर देखा, एक युवती सफ़ेद रंग की रेशमी साड़ी पहने, बाल खुले हुए, पैरों में सुनहले चप्पल, दौड़ती हुई बाहर आई। मेरी मोटर चल चुकी थी। उसने आवाज़ दी—"सुनिए!"

मैं ठहर गया। मेरी गाड़ी के पास आकर उसने कहा—"नमस्ते।"

"नमस्ते।"

बहुत दिनों बाद अपने प्रांत की भाषा सुनी। मैं उसकी ओर देखने लगा—शैशव का अल्हड़पन जवानी के ख़ुमार में बदल रहा था।

वह कुछ असाधारण सुंदरी न थी, परंतु उसकी बोली और चाल-ढाल में एक आकर्षण अवश्य था। मैं मुस्किराकर बोला—"कहिए?"

उसने कुछ लजाकर कहा—"मैं—मैं यह पूछ रही थी—"

उसकी बात पूरी न हो सकी, वह चुप हो गई।

मैंने पूछा—"क्या?" मैंने गाड़ी का एंजिन बंद कर दिया।

वह बोली—"आप इस कोठी में रहते हैं?"

"हाँ।"

"भला, मेरी कोठी का नंबर क्या है? मुझे पत्र लिखना है, और अपना ही पता मुझे नहीं मालूम—कल ही तो आई हूँ।"

उसकी बातों में एक अजीब भोलापन था। मुझे हँसी आ गई। मैं बोला—"ख़ूब! मकान-मालिक से ही दरियाफ़्त किया होता।"

उसने सरलता से पूछा—"आप तो शायद यहाँ बहुत दिनों से रहते हैं? आपको मालूम होगा, इस ख़याल से मैंने आपसे—"

"आपकी कोठी का नंबर है दो सौ अस्सी; प्लाट-नंबर अट्ठारह।"

वह बोली—"धन्यवाद!"

मैंने गाड़ी स्टार्ट कर दी। परिचय की वे दो घड़ियाँ—मैं सोचने लगा—कैसी थीं? मन ने मेरे प्रश्न का उत्तर न दिया।

[तीन]

कई दिन बीत गए। पिछली घटनाओं को भूल चला था। अचानक रविवार आया। शाम को साढ़े चार बजे होंगे कि मेरे नौकर ने आकर मुझे नीले रंग का एक लिफ़ाफ़ा दिया। मैंने पूछा—"किसने दिया?"

उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया—"सामनेवाली कोठी से नौकरानी आकर दे गई है कि बाबूजी को दे देना।"

मैंने लिफ़ाफ़ा खोला। उसमें एक पत्र था। लिखा था—

श्रीमान् जी! नमस्ते।

यदि आपको कष्ट न हो, और अनुचित न समझें, तो इस समय मेरे यहाँ चाय पीने चले आएँ।

भवदीया
शैवलिनी वर्मा

पत्र पढ़कर कुछ देर मैं सोचता रहा, फिर नौकर को बुलाकर मैंने कहा—"पांडु! सामनेवाली कोठी में जाकर बाई से कह दे कि बाबूजी काम से बाहर जा रहे हैं। इस वक़्त न आ सकेंगे।"

पांडु चला गया।

कोठीवाली बाई का नाम 'शैवलिनी वर्मा!' मैंने सोचा—आज तो नाम भी मालूम हो गया, लेकिन आख़िर यह है कौन? घर में सिर्फ़ एक नौकरानी के सिवा और कोई नहीं दिखाई देता। रहती भी शान से है! फिर अपनी कल्पना के अनधिकार प्रवाह पर मुझे थोड़ी ग्लानि हुई। मैंने उधर से ध्यान ही हटा लिया।

मेज़ पर अँगरेज़ी का एक उपन्यास पड़ा था। मैं उसे उठाकर उसके पन्ने उलटने लगा। पिछली रात को वह उपन्यास थोड़ा पढ़ा था, और पृष्ठ बाद रक्खा था, लेकिन इस समय भूल गया। लाल

कोशिश करने पर भी वह पृष्ठ, जहाँ से पढ़ना छोड़ा था, मुझे न मिल सका। लाचार पुस्तक बंद कर मैंने फिर मेज़ पर रख दी।

घड़ी ने टन्-टन् करके पाँच बजाए। साथ ही एक मोटर आकर मेरे बँगले के सामने रुकी। किसी ने हॉर्न बजाया। हॉर्न की आवाज़ पहचानी हुई थी। मैं उठकर बरामदे में आया। मेरा नौकर नीचे खड़ा था। धीमी आवाज़ में किसी ने मराठी-भाषा में पूछा—"साहब घर में हैं?"

मैंने ऊपर से ही उत्तर दिया—"हाँ-हाँ, पधारिए।"

उषा कुछ शर्मा-सी गई। उसने मोटर से उतरकर मुझे प्रणाम किया, और ज़ीना चढ़कर कमरे में आ गई। फिर मुझे बरामदे में खड़ा देखकर मेरे पास आकर बोली—"हवाख़ोरी हो रही है क्या?"

उषा मेरी कंपनी में प्रधान अभिनेत्री की हैसियत से काम करती थी, और प्रायः मेरे घर आया करती थी। उसके पिता मेरे घनिष्ठ मित्रों में से थे, और मुझे बहुत चाहते थे।

उषा का प्रश्न मुझे कौतूहल से ख़ाली न जान पड़ा। मैंने उत्तर दिया—"बैठे-ठाले काम ही क्या? छुट्टी का दिन—"

तब तक उषा की चंचल आँखें सामनेवाली कोठी पर जा पड़ीं। वह ठठाकर हँस पड़ी, और बोली—"हाँ-हाँ, छुट्टी का दिन और बरामदे में खड़े-खड़े—ज़रा उधर देखिए।"

उसने मेरे दोनो हाथ पकड़कर मुझे पीछे देखने का संकेत किया। मैंने देखा, शैवलिनी अपने कमरे में कुर्सी पर बैठी हुई कोई पुस्तक पढ़ रही थी।

नटखट उषा ने कान के पास अपना मुँह लाकर कहा—"अब तो चोरी पकड़ी गई भाई साहब! रिश्वत दिलाइए, नहीं तो—"

मैं थोड़ा खीझकर उसकी तरफ़ घूम पड़ा। मेरी आँखों का रंग बदलता देखकर उषा सिटपिटाकर चुप हो गई, और सिर नीचा करके बोली—"नाराज़ काहे को होते हैं भाई? मैं तो—मैं तो—"

मैं उसका हाथ पकड़कर कमरे में ले आया, और उसे कुर्सी पर बिठाकर, उसके हाथ-पाँव ठीक से सीधे कर, उसका मुँह सामने घुमाकर, मैं भी एक कुर्सी पर बैठकर बोला—"हाँ, क्या कह रही थी तू?"

वह बोली—"कुछ नहीं। आप नाराज़ हो गए भाई?"

"नहीं।"

"ईश्वर का धन्यवाद!" उसने एक ठंडी साँस ली। मेरी भावुकता से वह भली भाँति परिचित होने के कारण मुझसे डरती थी।

उसके चुप होते ही मुझे जाने क्यों उस मातृहीना लड़की पर तरस आया। मैंने कहा—"उषा बहन! तुम्हारा भाई वैसा नहीं, जैसा तुम समझती होगी।"

मैंने देखा, उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में आँसू आ गए थे। मैंने कहा—"चलो, थोड़ा घूम आएँ।"

मंत्र-मुग्ध-सी वह उठ खड़ी हुई, और बोली—"भाई! मुझे क्षमा कीजिएगा।"

"धुत् पगली कहीं की!"

उस शाम को हम दोनो सिनेमा देखने चले गए। जाते-जाते मैंने देखा, शैवलिनी नीचे की तरफ़ हमें देख रही थी।

[चार]

कुछ दिन और बीते। स्टूडियो के प्रबंधकों से मेरा कुछ मतभेद हो जाने के कारण मैं थोड़ा चिंतित-सा, शाम को पैदल ही टहलता हुआ, घर की तरफ़ आ रहा था। मन में तरह-तरह के विचार टक्कर मार रहे थे। सामने से किसी ने कहा—"नमस्ते महाशय!"

स्वर परिचित-सा जान पड़ा। मैंने देखा, शैवलिनी! मैंने उत्तर दिया—"नमस्ते।"

मैं आगे बढ़ गया। वह भी जाते-जाते लौट पड़ी, और मेरे साथ चलते-चलते बोली—"आज पैदल कैसे? गाड़ी कहाँ?"

मैंने उत्तर दिया—"यों ही—जो में आया—पैदल चल पड़ा। गाड़ी वापस भेज दी थी।"

"क्या—किसी मेहमान के लिये?"

शैवलिनी का संकेत मैं समझ गया। मैं कुछ न बोला। उसे इस प्रश्न से क्या प्रयोजन? मैं सोचने लगा। उसने पूछा—"आपको मैंने उस दिन चाय पर आमंत्रित किया था, आप न आए। हाँ, ग़रीबों का नसीब!"

मैंने उत्तर दिया—"उस दिन मेरा जी अच्छा न था, और मुझे बाहर जाना था, वरना ग़रीब-अमीर का भेद दुनियावालों के लिये हुआ करता है।"

"अच्छा, समझी, आप इस दुनिया से निराले हैं? क्यों महाशय! मेरी ढिठाई माफ़ कीजिएगा।"

मैंने किंचित् रोष से उत्तर दिया—"बाई! आपको ऐसी आलोचना का—"

मेरी बात काटकर वह बोली—"अधिकार नहीं है, यही आप कहना चाहते हैं न?"

उसने एक ठंडी साँस ली। उसके सिर से साड़ी खिसककर कंधे पर आ गई थी। वह चुपचाप चलने लगी। हम दोनो घर के पास आ गए। उसने कहा—"क्या मैं आपके यहाँ आ सकती हूँ?"

मैंने क्षण-भर ठहरकर उत्तर दिया—"मैंने आपको मना तो नहीं किया?"

"लेकिन बुलाया भी तो नहीं?"

"आपकी इच्छा विना जाने ही—थोड़े-से परिचय के बाद—मैं क्योंकर ऐसा साहस कर लेता?"

"पर मैंने तो साहस किया, और बदले में मुझे निराश होना पड़ा! आप तो यू० पी० के ही रहने-वाले हैं?"

"जी हाँ।"

शैवलिनी ने मेरे साथ ही मेरे कमरे में प्रवेश किया, और इधर-उधर चारो तरफ़ घूमकर उसका निरीक्षण किया। फिर दीवार पर लगी हुई मेरी धर्मपत्नी के चित्र की ओर देखती हुई बोली—"पूना में अकेले ही रहते हैं?"

मैंने कहा—"हाँ।"

"और कुटुंब के लोग?"

"लखनऊ।"

वह आकर सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। थोड़ी देर मेज़ पर रक्खी हुई पेंसिल से खेलती रही, फिर नीची निगाह करके बोली—"आप विवाहित हैं न?"

"मैंने अपनी धर्मपत्नी के चित्र की ओर आँखें उठाकर धीरे से कहा—"हाँ।"

"कहाँ हैं आपकी श्रीमतीजी?"

मेरे हृदय के तारों को मानो किसी ने छू दिया। कुछ दुखी होकर मैंने उत्तर दिया—"भगवान् के यहाँ!"

शैवलिनी का दीर्घ निःश्वास मुझसे छिपा न रहा। मैंने पूछा—"क्यों, क्या हुआ?"

उसने मेरी बात सुनी-अनसुनी करके पूछा—"यह चित्र उन्हीं का है?"

मैंने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

मेरा नौकर चाय की ट्रे और दो प्याले मेज़ पर रखकर चला गया। मैंने शैवलिनी से कहा—"चाय पीजिए।"

शैवलिनी ने किंचित् हास्य से कहा—"अगर मैं इनकार करूँ?"

मैंने सहज ही उत्तर दिया—"आपका बदला और मेरा अपमान होगा।"

"हूँ, तो आप बदले से डरते हैं, या अपमान से?"

मैं सोचने लगा—कैसी चतुर है यह लड़की! मैंने कुछ उत्तर दिए विना ही फिर कहा—"पीजिए, चाय ठंडी हो जायगी!"

शैवलिनी ने दोनो प्यालों में चाय बनाई, और एक प्याला मुझे देकर दूसरे से वह ख़ुद पीने लगी। पीते-पीते बोली—"आपके मेहमान तो बड़े अच्छे-अच्छे लोग बनते हैं! उस दिन—"

मैं समझ गया स्त्री-हृदय के भावों की संकीर्णता।

मैंने तुरंत ही उत्तर दिया—"जी हाँ, उस दिन मेरी कंपनी की अभिनेत्री उषा आई थी। उसके पिता से मेरी बड़ी घनिष्ठता है।"

"समझी। शाम को आप और वह घूमने गए थे?"

"हाँ, सिनेमा गया था।"

चाय समाप्त हो गई थी। शैवलिनी बोली—"कोई अच्छा खेल आए, तो मुझे भी सूचना दीजिएगा। यों तो मुझे शौक़ नहीं, कभी-कभी तबियत में आया, तो चली जाती हूँ।"

मैं कुछ न बोला।

उसने फिर कहा—"और दूसरे, मेरे तो आपके-से मित्र भी नहीं, जिनके साथ जाऊँ। अच्छा, नमस्ते। अब देर होगी।"

मैंने नमस्ते किया। शैवलिनी चली गई। थोड़ी ही देर बाद उसके कमरे में ग्रामोफ़ोन बज रहा था—वही रिकार्ड—"तेरे दिल की लगी कोई क्या जाने?"

[पाँच]

शैवलिनी मेरे लिये एक विचित्र पहेली बन गई। अपने बारे में सब कुछ उसे बताकर भी मैंने उसके विषय में कुछ भी जानने की चेष्टा न की।

परोक्ष रूप में मैंने उसे अपने जीवन के प्रवाह में आते देखा, और मैं सशंकित हुआ!

वह जब-कब मेरे घर आने लगी, लेकिन मैं उससे अपने को घनिष्ठ नहीं बना सका। उससे बहुत कम बोलता। जो कुछ पूछती, उसी का उत्तर देने के सिवा और कोई बात न करता।

एक दिन शैवलिनी के अनुरोध से मैं एक नाटक देखने गया। नाटक के दो अंक समाप्त हो चुके थे। विश्रांति का समय था। शैवलिनी बोली—"पुरुष-जाति की कुटिलता का कैसा सच्चा चित्रण है इस नाटक में—देखा आपने?"

मैंने कहा—"हूँ।"

वह मेरे चेहरे के भावों को मानो पढ़ते-पढ़ते बोली—"मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि सभी ऐसे उच्छृंखल होते हैं, परंतु अधिकांश में! आपकी क्या राय है?"

मैंने कहा—"ठीक कहती हैं आप।"

मैंने समझा, बात समाप्त हो गई। नाटक फिर शुरू हुआ, और शैवलिनी देखने में तन्मय हो गई।

मैं सोफ़े के सहारे ऊँघने लगा। एक झपकी आ गई। एकाएक शैवलिनी ने ज़ोर से मेरा कंधा पकड़कर हिलाया। मैं जग पड़ा। उसने पूछा—"नाटक देख रहे थे, या सो रहे थे?"

मैंने कहा—"दोनो।"

वह हँस दी। मुझे भी हँसी आ गई।

नाटक समाप्त होने पर हम लोग चल दिए। मैं ख़ुद ही मोटर चला रहा था। शैवलिनी मेरी सीट के बराबरवाली सीट पर बैठी थी। थोड़ी दूर आने पर उसने पूछा—"घर चल रहे हैं?"

मैंने कहा—"हाँ।"

"थोड़ा घूमते।"

"चलिए।" कहकर मैंने गाड़ी दाहने हाथ को मोड़ दी। नदी के किनारे ठंडी हवा चल रही थी; चारो ओर पूर्णिमा की चाँदनी—बड़ा सुहावना समय था। मोटर मंद गति से सीधी सड़क पर चली जा रही थी। हम दोनो चुप बैठे थे। इतने में शैवलिनी ने कहा—"आपने मेरे लिये इतना कष्ट उठाया!"

मैंने उत्तर दिया—"तो ?"

"मैं आपके लिये तो अभी तक अपरिचित ही हूँ ! मैत्री, स्नेह, सौजन्य और परिचय का अधिकार आपने दिया ही नहीं मुझे अब तक ।"

"अपरिचित रहना ही अच्छा है शैवलिनी ! परिचय के संसार की विषमता से मृत्यु भली ।"

नदी का घाट आ गया था । नीचे कोई राह चलनेवाला गाता जा रहा था—

"याद न कर दिलेहज़ीं गुज़री हुई कहानियाँ !"

मेरी आँखों में आँसू आ गए । जेब से रूमाल निकालकर मैं उन्हें पोछने की चेष्टा करने लगा । शैवलिनी ने देख लिया । मेरे हाथ से रूमाल छीनकर बोली—"छिः-छिः ! रोते हैं आप ?"

उसने अपने हाथों से मेरी आँखों के आँसू पोछ डाले । वह बोली—"लौट चलिए घर ।"

मैंने गाड़ी मोड़ दी, और घर की ओर चला । मैंने देखा, शैवलिनी की आँखें डबडबा आई थीं ! उसने मुझे अपनी ओर देखते हुए जान लिया । मेरे कंधे के सहारे उसने अपना सिर झुका दिया, और आँखें बंद कर लीं ।

मैं तेज़ स्पीड से गाड़ी चला रहा था ।

[छ]

सबेरे के पाँच बज रहे थे । मेरे कमरे में कुर्सी पर बैठे-बैठे शैवलिनी ने सारी रात बिता दी थी ! मैंने कहा—"आपका जीवन भी एक समस्या है ।"

वह बोली—"शायद इसी संभावना के भय से आप उसे जानने की चेष्टा नहीं करते थे ?"

मैंने उत्तर दिया—"हाँ, बात कुछ ऐसी ही थी । इतने दिनों से हम लोग मिलते-जुलते हैं, परंतु मैंने आपसे कभी न पूछा था । मेरा अनुमान, मेरी कल्पना ऐसी ही थी—"

"जिसे सत्य के रूप में आपने सुन लिया है आज । एक अध्यापिका का जीवन कैसा होगा, जिसका संसार में कोई नहीं—किसी को वह अपना कहकर नहीं पुकार सकती ।"

शैवलिनी का हृदय धड़क रहा था, और वह अपने को सँभालने की चेष्टा कर रही थी । मैंने पूछा—"कुमुद को कितने दिनों से नहीं देखा आपने ?"

उसने उत्तर दिया—"चार वर्ष हो गए । मेरी बच्ची, मेरे कलेजे का टुकड़ा, मा की ममता की भिखारिनी होगी वह !"

शैवलिनी रोने लगी ।

मैंने कहा—"उस दुख की व्यापकता में इतनी उद्विग्न न हों आप । आप अपना कर्तव्य-पालन करती रहें ।"

वह रोते-रोते बोली—"किसके लिये ? कर्तव्य की परिभाषा सभी समझाने लगते हैं, लेकिन उसका बंधन कितना कठोर होता है, इसे कोई नहीं जानता ।"

मैं चुप हो गया । वह फिर बोली—"अगर मेरी कुमुद मेरे पास होती—कोई उसे ला देता ! समाज ने उसे मुझसे छुड़ा लिया ! मेरा जीवन नष्ट हो चुका है । पति-परित्यक्ता नारी का संसार में कोई स्थान नहीं !"

मैंने एक ठंडी साँस ली । हिंदू-समाज की रूढ़ियों का ध्यान आया । अपनी बात सोचने लगा—मैं किससे कहूँ ? फिर शैवलिनी तो अभी इस प्रथम आघात में ही इतनी निराश हो चुकी है !

मैं मुँह फेरकर कुछ सोचने लगा । वह बोली—"मुझे माफ़ करिएगा, आपकी सहानुभूति से ही सहारा पाकर मैं आज न-जाने क्या-क्या कह गई ।"

मैं उठ बैठा । शैवलिनी की ओर देखा—उसके आँसू अभी तक रुके न थे ! मैंने उससे कहा—"आपका एकाकी जीवन भी आपकी अशांति का एक कारण है ।"

वह बोली—“लेकिन वह अशांति तो अब अमर हो चुकी है। जो कुछ खो दिया, वह अब न मिलेगा, कभी न मिलेगा, जब तक श्वासों की अंतिम धारा अनंत के प्रवाह में लीन न हो जायगी!”

उसने मेरी स्वर्गीया पत्नी के चित्र की ओर देखा। मेरी आँखें भी उधर ही उठ गईं। मैंने सोचा, शैवलिनी सत्य कह रही है। एक ही मार्ग के दो पथिक कहाँ पर आ मिले थे। अपनी साड़ी के छोर से शैवलिनी ने अपने आँसू पोंछ डाले। मैं उसकी ओर एकटक देख रहा था—विषाद का वह रूप, सूखते हुए यौवन की छाया, अवहेलना का अभिशाप, सजीव निराशा!

उसने मेरी ओर देखा, और उठी। मैं उसके पास जा खड़ा हुआ। मैंने कहा—“शैवलिनी! एक बात कहूँ?”

उसने धीरे से अपनी गीली आँखें मेरी ओर उठाईं। मैं बोला—“अपने जीवन की इस पहेली को अधिक सोचने की ज़रूरत नहीं।”

वह मुस्किराई। बोली—“क्यों?”

मैं उसके इस प्रश्न का उत्तर देने में उस समय असमर्थ हो गया। मैं टहलता हुआ बरामदे में आ खड़ा हुआ।

[सात]

उस दिन के बाद मेरा व्यवहार शैवलिनी के साथ एकदम बदल गया। मैं उसे अपने अत्यंत निकट अनुभव करने लगा, उसका स्नेह एक आत्मीय के स्नेह की तरह दिन-दिन बढ़ता जा रहा था।

कभी-कभी मैं उसे दुखी देखकर बहुत चिंतित हो जाता, और सोचता कि शैवलिनी का सुख क्या हो सकता है? वह मेरे मन की बात थी। शैवलिनी से एक दिन मैं पूछ बैठा—“यदि मैं तुम्हारी कुमुद को ले आऊँ, और सदा के लिये वह तुम्हारे पास रहने लगे?”

उसने कहा—“ऐसा हो ही नहीं सकता। बाबूजी, मेरे पिता, कभी न भेजेंगे।”

“वह है कहाँ?”

“आगरे में। मेरे बाबूजी वहीं वकालत करते हैं। हरिनारायण वर्मा उनका नाम है।”

मैंने कहा—“शैवलिनी! आज मैं तुमसे एक बात और पूछूँगा?”

उसने कहा—“पूछिए।”

“क्या कुमुद को पाकर तुम सचमुच सुखी होगी?”

“हाँ, लेकिन उसके साथ ही मेरा एक प्रश्न और है।”

“वह क्या?”

मेरे चेहरे की ओर देखकर उसने गंभीर भाव से कहा—“फिर बता दूँगी।”

“अभी कहो न।”

“आप नाराज़ हो जायँगे।”

“क्यों?”

“बात ही ऐसी है।”

“मैं नहीं नाराज़ हूँगा।”

“वादा कीजिए।”

“वादा करता हूँ।”

“मेरे प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर देंगे अभी?”

“दूँगा।”

“बिलकुल ठीक-ठीक?”

“हाँ, कहो न।”

वह मेरी आँखों में अपनी आँखें डालकर मेरे हृदय का भाव जानने की चेष्टा कर रही थी। मैं और भी गंभीर हो गया।

उसने कहा—“मुझे अपनी दासी बनाने में आपको कोई आपत्ति है?”

उसकी बात सुनकर मैं क्षण-भर के लिये व्याकुल हो उठा। उसके प्रश्न की भयंकरता अब समझ में आई। मैं चुप रह गया। कुछ

न बोल सका। उसने पूछा—"क्या नाराज़ हो गए ?"

मैं फिर भी चुप था। बँगले के बाहर हरियाली में हम लोग टहल रहे थे। मैं ठहर गया। मैंने कहा—"शैवलिनी !"

उसने नीची दृष्टि किए हुए धीरे से कहा—"हाँ।"

"तुमने अपने प्रश्न को ख़ूब सोच लिया है ?"

"हाँ।"

"और मेरी स्थिति भी जानती हो ?"

"जानती हूँ।"

"मैं तुम्हारा शुभाकांक्षी हूँ शैवलिनी !"

"इतना विश्वास होने पर ही मैंने आपसे प्रश्न किया है।"

"फिर ? तुम्हारा प्रश्न उचित है या अनुचित, इसका निर्णय मेरी ओर से तुम्हीं कर लो, उत्तर मिल जायगा।"

शैवलिनी किंचित् निराशा से बोली—"इतनी बुद्धि मुझमें नहीं। आपको अपना करके माना है, अब आप ही उत्तर दे लें।"

मैंने एक दीर्घ निःश्वास लेकर कहा—"शैवलिनी! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देना इतना सरल नहीं, जितना तुम सोचती होगी। मुझे अवसर दो, मैं भी उसका निर्णय कर सकूँ।"

"आशा है ?"

"केवल आशा ही, विश्वास नहीं। मैं परिचय का मूल्य चुकाने का प्रयत्न करूँगा।"

मैं चला आया। शैवलिनी अपनी कोठी में चली गई। उस रात मुझे नींद न आई। रात-भर सोचता रहा—वही शैवलिनी का प्रश्न !

[आठ]

अगले सप्ताह में पूना की कंपनी में मेरे कार्य करने की अवधि समाप्त हो गई। अपने कंट्रैक्ट का बाक़ी पैसा लेकर मैं घर लौटा। आगे का सारा प्रोग्राम निश्चित कर चुका था। शैवलिनी से मैंने कुछ न कहा। अपने ड्राइवर को सब बात समझाकर, रात को सारा सामान बँधवाकर मोटर पर रखवाया, और सबेरे चार बजे मैं मोटर पर आगरे के लिये रवाना हो गया। रास्ते की ख़राबी के कारण चार-पाँच दिन लग गए। छठे दिन सबेरे मैं आगरे पहुँचा। हरिनारायण वकील के मकान का पता लगाया। जाने पर देखा, वहाँ ताला बंद था !

पड़ोसियों से पता लगाने पर मालूम हुआ कि वह काशी जाकर रहने लगे हैं, और वकालत छोड़ दी है। कुमुद के बारे में सुना, उसे किसी अनाथालय में दाख़िल करा दिया था, और उसके ख़र्च को रुपया भेजा करते हैं।

मैंने दिन-भर शहर का चक्कर लगाया—सभी अनाथालयों में जाकर पूछा। कहीं भी कुमुद का पता न चला। मैं निराश होकर लौटने ही वाला था कि एक धर्मशाले के पुजारीजी से भेंट हो गई, जो सौभाग्य-वश वहीं आ पड़े। उन्होंने बताया, एक सेवाश्रम के मंत्रीजी पास में ही रहते हैं। उनका सेवाश्रम तो टूट गया है, लेकिन चार-पाँच अनाथ बच्चे उनके साथ ही घर पर रहते हैं। मैं मंत्रीजी के घर पहुँचकर उनसे मिला। पहले तो वह कुमुद का पता देने में आनाकानी करने लगे, लेकिन जब मैंने बाबू हरिनारायण के पास से आने की बात बताई, तब उन्होंने कुमुद को बुलवा लिया। मैंने देखा, पाँच वर्ष की वह छोटी-सी बच्ची मज़दूरों के बच्चों-जैसे फटे, मैले कपड़े पहने कुछ भयभीत-सी आ खड़ी हुई।

मैंने मंत्रीजी से कहा—"कुमुद को लेने आया हूँ।" वह थोड़ा चकराए। फिर जब मैंने जेब से सौ-सौ रुपए के दो नोट निकालकर उनकी मुट्ठी में रख दिए, तब वह कुछ न बोले। मैं कुमुद को लेकर चल दिया। बाज़ार में आकर उसके लिये

कुछ कपड़े ख़रीदे, नहलाया-धुलाया, और खिला-पिलाकर मैं तुरंत ही मोटर से पूना की ओर वापस लौट पड़ा ।

कुमुद मुझसे थोड़ा डरती थी, लेकिन धीरे-धीरे मेरा-उसका परिचय दो-तीन दिन की यात्रा में बढ़ चला ।

कुमुद से मैंने कौतूहल-वश पूछा—"बेटी ! तुम्हारी मा कहाँ हैं ?"

उस भोलीभाली बालिका ने ऊपर की ओर उँगली उठाकर कहा—"मा मल गईं !"

मेरी आँखों में आँसू आ गए । मैं समझ गया, इस नन्ही-सी बच्ची को शैवलिनी के पिता ने ऐसा ही सिखा दिया होगा ।

अपने समाज की संकीर्ण मनोवृत्तियों का प्रतिफल मेरी आँखों के सामने था !

मैंने कुमुद को छाती से लगाकर प्यार करते हुए कहा—"नहीं-नहीं कुमुद ! तुम्हारी मा पूना में हैं । मैं तुम्हारी मा के पास तुम्हें ले चलूँगा । चलोगी ?"

कुमुद ने सिर हिला दिया ।

मेरी मोटर तीव्र गति से पहाड़ियों की चढ़ाई पार कर रही थी ।

पूना वापस आने पर मैं उषा के मकान पर पहुँचा ।

उसने कुमुद को देखकर कहा—"भाई ! किसे ले आए ?"

मैंने कहा—"पहचानो ?"

"मैं तो नहीं जानती—क्या आपकी—?"

"हाँ-हाँ, फ़िलहाल ऐसा ही समझ लो ।"

उषा के यहाँ मैंने और कुमुद ने चाय पी—जल-पान किया, फिर मैं शैवलिनी के घर की ओर चला । साढ़े नौ से कुछ अधिक समय हो गया था । शैवलिनी स्कूल जाने की तैयारी में थी । ताँगा बाहर उसके आने की राह देख रहा था । मेरी मोटर का हॉर्न सुनकर वह भागती हुई जल्दी से नीचे आई, और बोली—"कहाँ ग़ायब हो गए थे आप ? आज हफ़्ते-भर से घर में ताला लगा है !"

मैंने बिना कुछ कहे हुए कुमुद को मोटर से उतारकर उसकी गोद में देते हुए कहा—"पहले इसे लो – तुम्हारी कुमुद तुम्हें सौंप रहा हूँ !"

माता का हृदय एकाएक स्नेह से उमड़ पड़ा । मेरी बेटी ! मेरी बच्ची ! कहकर वह कुमुद को छाती से लगाए प्यार कर रही थी !

मैं धीरे से आकर फिर मोटर में बैठ गया । शैवलिनी ने पूछा—"अभी आए, अभी चल दिए ?"

मैंने रुकते-रुकते कहा—"हाँ, आज का दिन—"

मैं आगे कुछ न कह सका ।

शैवलिनी बोली—"मेरे दूसरे प्रश्न का ध्यान है आपको ?"

"हाँ ।"

"फिर उसका जवाब ?"

मैंने एक बार उसकी ओर देखा, फिर आँखें नीची कर मैंने कहा—"शैवलिनी ! उसका जवाब—कुछ नहीं !"

ड्राइवर ने मेरा संकेत पाकर मोटर स्टार्ट कर दी । शैवलिनी अवाक् होकर देखती रह गई । मैं अपने को भूला हुआ-सा मोटर की पिछली सीट के सहारे लेट गया । ड्राइवर ने पूछा—"किधर ?"

मैंने उत्तर दिया—"लखनऊ ।"

अध्यापक का सुधार

[श्रीयुत कृष्णविनायक फड़के एम्० ए०]

हम लोग अभी तक चतुर अध्यापक का तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से समझते हैं, जो मनोविज्ञान की विभिन्न पद्धतियों के आधार पर दिए हुए विषय को छात्र के मस्तिष्क में पैठा देने में पूर्णतया समर्थ हो। इसमें संदेह नहीं कि अपना विषय रोचक बनाकर विद्यार्थी को हृदयंगम कराने की कला अध्यापक के लिये अनिवार्य है, पर साथ ही मानना पड़ेगा कि केवल इतना ही उसके लिये पर्याप्त न होगा। अध्यापन-कला तो एक दूसरे उच्चतर ध्येय की साधन-मात्र है। यदि अध्यापक के समस्त कार्य-कलाप के फल-स्वरूप उसका छात्र राष्ट्र का योग्य नागरिक न बन सका, राष्ट्र-निर्माण में हाथ बँटाने की उच्च महत्त्वाकांक्षाओं से प्रभावान्वित न हुआ, और लोक-हित-साधन के लिये आत्मसमर्पण करने की भावना उसके हृदय में प्रादुर्भूत न हो सकी, तो परीक्षा में केवल प्रथम उत्तीर्ण होने से क्या लाभ ?

केवल व्यवहार-गणित, भिन्न अथवा ब्याज के कुल प्रश्न हल कर लेने से ही कोई जीवन की महान् समस्याओं को सुलझा नहीं सकता। थोड़ी-सी भौगोलिक परिभाषाएँ कंठस्थ कर लेना विश्व-व्यापी सामाजिक जीवन समझने में सहायक नहीं हो सकता, और न किसी इतिहास-प्रवेशिका की दस-पाँच पंक्तियाँ रट लेने से किसी को संस्कृतियों के उत्थान-पतन का क्रम समझ में आ सकता है, न उससे बोध ग्रहण किया जा सकता है।

संप्रति स्वतंत्रता-प्राप्ति एवं राष्ट्रीय जीवन का विकास, ये दो महान् लक्ष्य हमारे देश के समक्ष मौजूद हैं, और हम उनकी ओर अग्रसर होते हुए उन्हें शीघ्र उपलब्ध करने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में यह बड़े दुःख की बात है कि हमारे स्कूल और कॉलेज इन महान् राष्ट्रीय लक्ष्यों एवं उनकी प्राप्ति के लिये किए गए भगीरथ प्रयत्नों से निर्लिप्त रहें। हम अक्सर अफ़सोस करते हैं कि वर्तमान युग में स्कूल और कॉलेज से बाहरवाले कांग्रेस-नेताओं का नैतिक प्रभाव अध्यापकों की अपेक्षा हमारे नवयुवकों पर अधिक होता है। पर अध्यापकों को इसका उत्तर देना पड़ेगा कि जिस अवस्था में हमारे नव-युवक आत्मोत्कर्ष एवं राष्ट्रोत्कर्ष के उच्च विचारों और भावनाओं के भूखे रहते हैं, उस अवस्था में हम उनकी इस बुभुक्षा-तृप्ति के लिये क्या करते हैं। हमारे विद्यार्थी बाहर सुने हुए व्याख्यानों से प्रभावित होकर नए-नए विचारों, कल्पनाओं और राष्ट्रीय महत्त्वाकांक्षाओं से अपनी आदर्श पिपासा तृप्त कर लेते हैं। पर अध्यापकगण उन्हें परीक्षा के नोटों के सिवा क्या देते हैं ? हम लोग इतिहास भी पढ़ाते हैं, तो यह बताने के लिये कि प्रश्न-पत्र में क्या आनेवाला है, क्या इंपार्टेंट है; यह शिक्षा देने के लिये नहीं कि इतिहास हमें राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य करने के लिये क्या सिखाता है !

परीक्षा के बाद सड़कों पर परचों की चख-चख करते हुए विद्यार्थियों की बातें सुनकर कभी-कभी बड़ा क्लेश होता है। कोई परचा कड़ा होने की शिकायत करता है, तो कहीं किसी छात्र-विशेष को

परचा आउट हो जाने पर आश्चर्य-युक्त उपालंभ होता है। कहीं इस बात पर खेद प्रकट किया जाता है कि किसी विद्यार्थी-विशेष का अध्यापक-विशेष के प्राइवेट ट्यूशन के कारण ही दर्जे में अच्छा स्थान आ सकेगा, तो कहीं मास्टर साहब के किसी पाठ में इंपार्टेंट स्थल अंकित न कराने पर असंतोष प्रकट किया जाता है। परीक्षा-फल घोषित हो जाने पर कम-से-कम दस-पंद्रह दिन नंबरों की चर्चा करते बीत जाते हैं। ऊपर कहा गया है कि इन बातों से बड़ा मानसिक क्लेश होता है। क्लेश इस बात का कि शिवाजी, राणा प्रताप, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और पं० जवाहरलाल नेहरू-जैसे राष्ट्र-रचयिताओं की जीवनी की ख़ूबियों पर अथवा राष्ट्र की ध्येय-प्राप्ति में छात्र-समुदाय कहाँ तक सहायक हो सकता है, इस विषय पर चर्चा करने में विद्यार्थियों की जो मानसिक शक्ति व्यय होनी चाहिए, वह केवल परचों और नंबरों के संबंध में बातें करने में बरबाद हो जाती है। जिस उम्र में बालक को हृदय की महती उमंगों से ओत-प्रोत होना चाहिए, उस उम्र में वह एक साधारण परीक्षा के लिये सिर धुनता और अपने साथियों के प्रति ईर्षा से जलता हुआ दिखाई देता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जब तक परीक्षा का भूत हमारे नवयुवकों के हृदयों पर अपना आतंक जमाए हुए है, तब तक परीक्षा की फ़िज़ूल बातों में यह समय का अपव्यय टलना संभव नहीं, फिर भी अध्यापकों के दृष्टिकोण-परिवर्तन से छात्रों के दृष्टिकोण में परिवर्तन होना अवश्यंभावी है।

बात असल में यह है कि हमारे अध्यापकगण स्वयं एक बेजा ढर्रे के वातावरण में पलकर बड़े हुए हैं। जिन ट्रेनिंग कॉलेजों ने उन्हें शिक्षा का विशेषज्ञ बनाया है, वहाँ भी उन्हें उलटा ही पाठ पढ़ने को मिला है। वहाँ उन्हें राष्ट्र और समाज की समस्याओं से भरसक दूर रखने का प्रयत्न किया जाता है। ऐसी अवस्था में यह आशा कैसे की जा सकती है कि वे संसार के हाहाकार के भीतर पैठकर उसकी गुत्थियाँ सुलझाने का प्रयत्न करेंगे, या अपने विद्यार्थियों के मस्तिष्क को उस ओर विचार करने के लिये सन्नद्ध करेंगे। स्वयं आधुनिक संसार का अध्ययन कर विद्यार्थी का उससे समुचित परिचय कराना शिक्षक अपना धर्म नहीं समझता। वह तो संसार से स्वयं विमुख होकर, पिछले प्रश्न-पत्रों की छान-बीन करके उन्हीं की परिधि के भीतर, परीक्षा के दासत्व-निर्वाह में अपनी सारी योग्यता का प्रदर्शन करता है।

स्वर्गीया डॉक्टर बेसेंट ने, सन् १९०३ ई० में, बंबई में, एक व्याख्यान देते हुए हमारे शिक्षकों और शिक्षण-प्रणाली की हीनावस्था के संबंध में जो बातें कही थीं, उनकी सत्यता का अनुभव हम आज कर सकते हैं। उन्होंने कहा था—"शिक्षा कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसे केवल विशेषज्ञ ही समझ पावें, और जिसके नेतृत्व एवं संचालन की क्षमता केवल अध्यापकों तक ही सीमित हो। अधिक समय तक अध्यापन-कार्य करते रहनेवाला मनुष्य एक संकुचित परिधि के भीतर ही ज्ञान वितरण कर सकता है। उसका ध्यान निर्धारित विषयों की बारीकियों तक ही दौड़ सकेगा। शिक्षा के मूल-सिद्धांतों और चरम ध्येय तक उसकी पहुँच न हो सकेगी। वह परीक्षा-प्रश्नों तक ही सोचता रह जायगा। वह उस वास्तविक शिक्षा पर कम ध्यान देगा, जिसका उद्देश्य आधुनिक संसार की बहुमुखी आवश्यकताओं का सामना करने के लिये समर्थ और तत्पर व्यक्तियों को तैयार करना है।"

उसी व्याख्यान के सिलसिले में स्वयं अपने अनुभव की दलील देते हुए डॉक्टर बेसेंट ने कहा—"लंदन-स्कूल - बोर्ड के एक सदस्य की हैसियत से मुझे सैकड़ों स्कूलों की देख-भाल करने, शिक्षा-

संबंधिनी विविध समस्याओं पर विचार-विनिमय करने तथा अध्यापन-कार्य करके उत्तम परीक्षा-फल दिखाने का पर्याप्त अनुभव है। पर मैं यह समझती हूँ कि यद्यपि यह अनुभव महत्त्व-पूर्ण है, फिर भी जो अनुभव मैंने राष्ट्रीय जीवन और राष्ट्र की भिन्न-भिन्न समस्याओं द्वारा प्राप्त किया है, उसकी तुलना में मेरा अध्यापन-कला-विषयक अनुभव किसी काम का नहीं।"

यदि हम छात्रों में सच्ची नागरिकता की भावना के प्रचार के अभिलाषी हैं, तो सबसे पहले हमें अध्यापकों को राष्ट्रीय समस्याओं का समुचित ज्ञान प्राप्त कराना पड़ेगा, और उस ज्ञान द्वारा छात्रों को प्रभावित करने की क्षमता उन्हें प्राप्त करनी पड़ेगी।

शिक्षा की नई-नई योजनाएँ बनाकर केवल दरजा इधर-से-उधर खिसकाने से शिक्षा का सुधार नहीं हो सकता। यदि हम सचमुच शिक्षा का सुधार चाहते हैं, तो हमें सबसे पहले शिक्षक के दृष्टिकोण में युगांतरकारी परिवर्तन करना पड़ेगा। इसके लिये हमें अपने ट्रेनिंग कॉलेजों का रंग-ढंग सँभालना होगा, उनके पाठ्य-क्रम का नए सिरे से संगठन करना होगा। उनमें समकालीन भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक स्थितियों के अध्ययन का अच्छा प्रबंध करना पड़ेगा। भावी शिक्षकों को अपने-अपने समय की देशव्यापिनी सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं का पूरा ज्ञान प्राप्त कराने के पूरे उपकरण जुटाने होंगे। ट्रेनिंग कॉलेजों में समय-समय पर बड़े-बड़े राष्ट्रीय नेताओं एवं विद्वानों के व्याख्यान होने चाहिए, जिससे उनकी राष्ट्रीयता की भावना सदैव जाग्रत् रहे, उनका दृष्टिकोण व्यापक और उदार बना रहे। ट्रेनिंग कॉलेजों में निःस्वार्थ लोक-सेवा का वातावरण होना चाहिए, जिसके संस्कार आजीवन विद्यमान रहें। जहाँ हमारा ध्यान शिक्षा की अन्य आवश्यकताओं पर गया है, वहाँ हमें यह बात भली भाँति हृदयंगम कर लेनी चाहिए—

"सबसे बड़ा शिक्षा-सुधार अध्यापक का सुधार है।"

स्त्री और पुरुष
दोनो के लिये समान फ़ायदेमंद
मणितैल
इस तैल को मस्तक पर लगाने से बाल चिकने और चमकीले रहते हैं, उनमें सफ़ेदी आने नहीं पाती, और जड़ें मज़बूत हो जाने से बाल गिरते नहीं हैं।
क़ीमत ५ तोले की शीशी की १) रु०
आतंकनिग्रह औषधालय, जामनगर-काठियावाड़
लखनऊ-एजेंट—इंदरचंद ऐंड कं०, चौक

सभापति का अभिभाषण

[श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर]

(गतांक से आगे)

राष्ट्रभाषा हिंदी

यह राष्ट्रीयता का युग है—वह राष्ट्रीयता, जिसके बिना कोई देश, कोई जाति, कोई क़ौम अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपना उचित पद पा ही नहीं सकती। राष्ट्रीयता की एक शर्त यह है कि उसकी एक भाषा हो। यह आवश्यक नहीं कि राष्ट्रभाषा सबकी मातृभाषा हो। राष्ट्र के अवयवभूत लोगों में बहुजन उसे समझें, और उसके द्वारा शासन, व्यापार आदि कार्य करें, तो वह राष्ट्रभाषा हो सकती है। मातृभाषा भी राष्ट्रभाषा होती है, पर वह राष्ट्र छोटे होते हैं, तथा उसके अवयवभूत सब लोग वही भाषा घर में भी बोलते हैं। भारत अति विशाल देश है, तथा इसमें संस्कृत से संबद्ध अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। इनके सिवा अनेक अनार्य-भाषाएँ भी बहुसंख्यक लोगों की मातृभाषाएँ हैं। अतः यहाँ की राष्ट्रभाषा किसी एक समूह की मातृभाषा नहीं हो सकती, बल्कि वही भाषा राष्ट्रभाषा का पद ग्रहण कर सकती है, जो हिमाचल से कन्याकुमारी तक सर्वत्र अल्पाधिक परिमाण में बोली या समझी जाती और अल्प-आयास में सीखी जा सकती हो। वह भाषा हिंदी ही है, और हिंदी ही हो सकती है। मैं हिंदी-उर्दू के मूल-संबंधी झगड़े में यहाँ पड़ना नहीं चाहता, पर इतना कहूँगा कि उर्दू के भी आधारभूत (बेसिक) शब्द जिस भाषा के हैं, वह भाषा हिंदी है। हिंदी-नाम उस भाषा का तब था, जब उर्दू-नाम की कल्पना भी नहीं हुई थी। हिंदुस्तानी-नाम तो हाल का है, और इसका प्रयोग संकुचित अर्थ में ही किया जाता रहा है। स्वर्गीय पंडित पद्मसिंह शर्मा कहते हैं—"उन लोगों का मतलब हिंदुस्तानी से उस ज़बान से था, जिसे उत्तर भारत के युक्तप्रदेश और अंतर्वेद (दोआब) के लोग और दिल्ली, मेरठ, आगरा आदि के रहनेवाले मुसलमान बोलते थे, और जो दक्षिण के मुसलमानों में भी प्रचलित हो गई थी। जो मतलब इस समय आम तौर से उर्दू का समझा जाता है, वही मुराद इस हिंदुस्तानी से थी—अर्थात् हिंदी-भाषा का वह रूप, जिसमें विदेशी भाषाओं के शब्द अधिक हों।"* आजकल भी हिंदुस्तानी से हमारे उर्दू-प्रेमी भाई उर्दू ही समझते हैं, और इसमें से चुन-चुनकर संस्कृत तत्सम शब्द और अधिक-से-अधिक तद्भव शब्द भी निकाल डालने पर तुले हुए हैं। यह प्रवृत्ति यदि केवल हिंदी-द्वेषियों और अरबी-फ़ारसी के प्रेमियों में ही पाई जाती, तो हम इसका विरोध न करते, पर अत्यंत खेद के साथ कहना पड़ता है कि सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के प्रमाण-पत्र के साथ जिस भाषा का प्रचार राष्ट्रभाषा के रूप में किया जाने लगा है, उसमें से भी हिंदी के प्रचलित शब्द निकाले जाने और अरबी के चलाए जाने लगे हैं। हाल में दक्षिण-भारत-हिंदी-प्रचार-

---

* 'हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी', हिंदुस्तानी-एकेडेमी, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित ; पृष्ठ २९-३०।

सभा द्वारा मद्रास में 'हिंदुस्तानी की पहली किताब' प्रकाशित हुई है। पुस्तक के आरंभ में मद्रास-प्रांत के प्रधान मंत्री के नाम लिखा हुआ मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का अँगरेज़ी-पत्र छपा है, जिसमें आप फ़र्माते हैं कि इस पुस्तक में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है, वह वास्तव में उस भाषा का नमूना है, जिसे सर्वप्रांतीय भाषा बनने का स्वाभाविक अधिकार है। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद जिसे सर्वप्रांतीय या राष्ट्रीय भाषा बनने की अधिकारिणी समझते हैं, वही यदि 'हिंदुस्तानी' है, तो मैं निःसंदिग्ध चित्त से साहित्य-सम्मेलन को सलाह दूँगा कि निर्भीकता के साथ स्पष्ट शब्दों में वह इसका विरोध करे। 'नागरी-प्रचारिणी पत्रिका' के वैशाख संवत् १९९५ के अंक में मेरे मित्र श्रीरामचंद्र वर्मा ने बड़ी योग्यता के साथ इसकी समीक्षा की है, और मैं इसका समर्थन करता हूँ। वर्माजी कहते हैं—"इस पुस्तक में हिंदी-भाषा के शब्द अपेक्षाकृत बहुत ही कम हैं, और अरबी-फ़ारसी-शब्दों की भरमार है। उदाहरणार्थ, पुस्तक के सातवें पृष्ठ पर अकरम, ज़मज़म, अग़मत आदि अरबी के ऐसे विकट शब्द आए हैं, जिनका मतलब शायद मद्रास के बड़े-बड़े मुल्ला भी न समझते होंगे। और इसी तरह के शब्दों से युक्त हिंदुस्तानी-भाषा के संबंध में, पुस्तक के आरंभ में, 'बच्चों से' कहा गया है—'यह हमारे देश के करोड़ों आदमियों की ज़बान है, और थोड़े दिनों में देश के सारे लोग इसे समझेंगे।.........इससे आपस का मेल-जोल और बढ़ेगा।' अरबी और फ़ारसी के मुश्किल-से-मुश्किल शब्द तो इसमें बिलकुल शुद्ध रूप में रक्खे गए हैं, लेकिन संस्कृत के सीधे-सादे 'अमृत'-शब्द के भी हाथ-पैर तोड़कर उसे 'अमरत' बना दिया गया है। पृष्ठ ३७ में आया है—'रामदास ने भी दादी से कहा—दादी-बी, नमस्ते।' यह है भाषा के नाम पर संस्कृति की हत्या।" केवल शब्द ही नहीं, इस पुस्तक के वाक्यों की रचना भी उर्दू है, हिंदी नहीं, और इसे प्रकाशित किया है दक्षिण-भारत-हिंदी-प्रचार-सभा ने! मेरा ख़याल है, सभा इस मामले में राजनीतिक दबाव में पड़ गई है। हिंदुस्तानी नाम की जिस भाषा का प्रचार मद्रास-सरकार अपने स्कूलों में करने जा रही है, उसके संबंध में उर्दू के अभिमानियों को संतुष्ट रखना ही प्रचारकों का मुख्य उद्देश्य मालूम होता है। एक क्षुद्र कांग्रेस-जन के ही नाते मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि कांग्रेस में यह प्रवृत्ति बहुत बढ़ गई है, और इसका परिणाम बुरा हो रहा है। जिनके लिये भाषा के साथ-साथ, श्रीरामचंद्र वर्मा के कथनानुसार, संस्कृति की भी हत्या की जा रही है, वे तो कांग्रेस की ओर आते ही नहीं, उलटे उनके हृदय को चोट पहुँचने लगी है, जिनके कारण कांग्रेस का कांग्रेसत्व है। साहित्य-सम्मेलन को चाहिए कि कांग्रेस के कर्णधारों का ध्यान इस ओर दिलाकर राष्ट्रभाषा के नाम होनेवाले इस अकांड-तांडव को समय रहते रोकने की प्रार्थना नम्रता, पर दृढ़ता के साथ करे।

हिंदुस्तानी के नाम पर यह जो अनर्थ हो रहा है, उससे केवल हिंदी की ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की रक्षा करने के लिये भी मैं कहता हूँ कि हमारी राष्ट्रभाषा का नाम हिंदी होना चाहिए, और उसकी प्रवृत्ति भी हिंदी यानी हिंद की होनी चाहिए। शब्दों के संबंध में मुझे कोई आपत्ति नहीं। संस्कृत तथा विदेशों की प्राचीन और अर्वाचीन भाषाओं से जितने अधिक शब्द हिंदी में आवेंगे, उतनी ही उसकी संपत्ति बढ़ेगी, और भिन्न-भिन्न भावों के प्रकट करने में उतनी ही अधिक सरलता होगी। जिस भाव या वस्तु का द्योतक शब्द हिंदी में है, उसी के पर्यायवाची अन्य शब्दों के लेने में भी कोई आपत्ति न होनी चाहिए, क्योंकि प्रथम-प्रथम जो शब्द केवल पर्यायवाची होते हैं,

वे ही अच्छे लेखकों के हाथ में पड़कर एक ही भाव के कई सूक्ष्म भेदों के व्यंजक हो जाते हैं, और इनसे भाषा का सौंदर्य और बल बढ़ाते हैं। पर इनका प्रयोग सावधानी के साथ करना चाहिए। संस्कृत तत्सम संज्ञा का विशेषण अरबी तत्सम शब्द हो, तो वह कर्ण-कटु होता है, भाषा साहित्य से कोसों दूर भाग जाती है। उदाहरणार्थ, 'अनुकरणीय वफ़ादारी' ही लीजिए। कितना कर्ण-कटु लगता है! इसका अर्थ यह नहीं कि भिन्न-भिन्न भाषाओं के शब्द एक साथ आने से ही भाषा कर्ण-कटु हो जाती है। अच्छे कवि और माली कहाँ-कहाँ से शब्द और फूल लाकर सुंदर गुलदस्ता बना देते हैं, जो देखते ही बनता है। उदाहरणार्थ, उर्दू के आदि-कवि वली के शेर लीजिए—

तुझ इश्क़ में जल-जल कर सब तनको किया काजल;
यह रोशनी-अफ़ज़ा है, अँखियनको लगाती जा।
तुझ इश्क़ में दिल चलकर जोगी का लिया सूरत;
एक बार अरे मोहन, छाती सों लगाती जा।
तुझ घर के तरफ़ सुंदर आता है 'वली' दायम;
मुश्ताक़ है दर्शन का, टुक दरस दिखाती जा।

इन शेरों में संस्कृत और अरबी तत्सम और तद्भव शब्दों का कैसा सुंदर मेल है। यह उस समय की भाषा है, जब भारतीय और विदेशी शब्द एक दूसरे से मिलकर हमारी मातृभाषा का भंडार और सौंदर्य बढ़ाने लगे थे। यदि उर्दू के कवि और ख़ासकर मुसलमान कवि केवल शब्द बाहर से लाकर ही संतुष्ट होकर भारतीय भावों की रचा करते होते, तो निश्चय ही वे ऐसी भाषा तैयार करने में समर्थ होते, जो वास्तविक अर्थ में राष्ट्रभाषा बन जाती, और उत्तर-भारत में साहित्य की एक ही भाषा रहती। पर पहले तो मुसलमान कवियों के फ़ारसी-लिपि का ग्रहण करने से उनकी हिंदुस्तानी या उर्दू अपनी आधारभूत हिंदी से दूर-दूर जाने लगी। इस पर उन्होंने जब अपने लिये व्याकरण और छंद भी विदेश से मँगाए, और उपमान भी अरब-फ़ारस से आने लगे, तब इन दोनो के बीच का अंतर धीरे-धीरे बढ़ने लगा, यहाँ तक कि अब हिंदी और उर्दू बिलकुल भिन्न भाषाएँ समझी जाने लगी हैं। हमारे मुसलिम कवियों को भारत की कोकिल न भाई, फ़ारस के चमनिस्तान से बुलबुल लाकर हमारे-आपके वृक्षों पर बैठा दिया। उन्हें उपमा के लिये इस देश के अगाध साहित्य में उपमान न मिले। यद्यपि दोनो ग़ैर-मुसलिम थे, पर उन्हें सुक़रात और अफ़लातून का अभिमान हुआ, कपिल और व्यास की ओर से मुँह मोड़ लिया। परिणाम जो होना था, वही हुआ। क्या शब्दों में और क्या भावों में उर्दू-साहित्य बहिर्मुखी हो गया। यद्यपि कुछ मुसलिम कवियों ने भारतीय बनने का यत्न किया, और आज यह प्रवृत्ति यत्र-तत्र बढ़ती दिखाई देती है, फिर भी मुझे अपने उर्दूदाँ मित्रों से यही मालूम हुआ है कि उर्दू का प्रवाह केवल बहिर्मुख ही नहीं, उसका उद्गम भी अब विदेशी मालूम हो रहा है। जिसके साहित्य की आत्मा और दृष्टि ही अपनी न हो, वह कैसे राष्ट्रभाषा बन सकेगी, इसका विचार आप विद्वजन ही करें।

अन्य भाषाओं से शब्द लेने में कोई आपत्ति नहीं, वरंच लेना चाहिए। पर इसके साथ एक शर्त है। शब्द मूलतः चाहे जिस भाषा के हों, पर जब हम लें, तो उन्हें अपना-सा बनाकर लें। अर्थात् उनकी ध्वनि हमारी भाषा की ध्वनि से मिलती-जुलती हो। मूल-ध्वनि की रचा करने का यत्न केवल व्यर्थ ही नहीं, हानिकारक भी है। यह बात केवल अरबी-फ़ारसी के ही नहीं, संस्कृत के शब्दों में भी है। हाँ, संस्कृत-शब्दों के उच्चारण हिंदी-भाषा बोलनेवालों के वाग्यंत्र के लिये प्रायः स्वाभाविक होने के कारण उनमें हिंदी हो जाने पर भी अधिक परिवर्तन नहीं होता, और अरबी-

फ़ारसी के शब्दों में होता है । पर यह अनिवार्य है । आगत शब्दों का उच्चारण मूल में जैसा है, वैसा ही बनाए रखने का यत्न करने से वे कभी हमारे न होंगे । भाषा उन्हें हज़म न कर सकेगी, भाषा को उनसे बदहज़मी हो जायगी । इन्हीं शब्दों के संबंध में दूसरी शर्त यह है कि ये हमारे व्याकरण के शासन में आ जायँ । हम शब्द अन्य भाषाओं से ले सकते हैं, और लेते हैं, पर उनके लिंग और वचन-संबंधी रूपांतर हमें उस भाषा के व्याकरण के नियमानुसार न बनाने चाहिए, जिससे वे आए हों । शब्दों के भाषांतरित होने के साथ-साथ व्याकरणांतरित भी होना ही चाहिए । अँगरेज़ी में हिंदी से अनेक शब्द गए हैं, जैसे जंगल, पंडित आदि । इनके बहुवचन अँगरेज़ी-भाषा के नियमों के अनुसार जंगल्स, पंडित्स आदि होते हैं । हिंदी-संस्कृत के नियम लागू नहीं होते । हिंदी में भी हम संस्कृत से शब्द लेते हैं, पर उनके रूपांतर अपने ढंग से बना लेते हैं । उदाहरणार्थ, 'पुस्तक'-शब्द संस्कृत है, और वहाँ उसका बहुवचन पुस्तकानि होता है । पर उसके हिंदी हो जाने पर बहुवचन हिंदी-व्याकरण के अनुसार पुस्तकें होता है, न कि पुस्तकानि । यह नियम अँगरेज़ी, अरबी-फ़ारसी के शब्दों को भी लागू होना चाहिए । उदाहरणार्थ, हमने 'फ़ुट'-शब्द को अँगरेज़ी से लिया है । इसकी आवश्यकता भी थी । पर इसका बहुवचन भी वहाँ से लेने की कोई आवश्यकता नहीं । अपने व्याकरण के नियमानुसार प्रथमा में फ़ुट का बहुवचन फ़ुट ही होता है, और हमें दो फ़ुट, तीन फ़ुट आदि ही लिखना चाहिए, न कि दो फ़ीट, तीन फ़ीट आदि । स्कूलों में पढ़ाई जानेवाली गणित की पुस्तकों में 'फ़ीट' देखकर मुझे तो 'फ़िट' आता है । 'साहब' हमने अरबी से लिया है, और यह नित्य की बोल-चाल में भी आता है । पर इसका बहुवचन 'असहाब' करना उसे हिंदी न होने देना और हिंदी को संग्रहणी का शिकार बनाना है । 'स्टेशन' 'इस्टेशन' बनकर अथवा अपने मूल-रूप में, हिंदी-उर्दू में आया है । पर इसका बहुवचन 'स्टेशन्स' हमने नहीं लिया है । हम कहते हैं, 'राह में हमने कई बड़े-बड़े स्टेशन देखे', न कि 'स्टेशन्स' देखे । इतने उदाहरण काफ़ी हैं । तात्पर्य कहने का इतना ही है कि बाहर से शब्द मँगाइए, पर उन्हें अपना लीजिए—अपने व्याकरण के शासन में लाइए।

बाहर के सब शब्दों का स्वागत करनेवाली हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है, और स्वभावतः है । हिंदी का अर्थ है हिंद की भाषा । 'हिंदुई' या 'हिंदवी' किसी ज़माने में हिंदू की भाषा समझी जाती रही होगी, पर आज हमारी हिंदी हिंद की भाषा है । इसका कोई प्रांतीय नाम नहीं है, यही इस बात का प्रमाण है कि वह सारे देश की—हिंद की भाषा है । मराठी, गुजराती, बँगला, तामिल, तेलुगू आदि भाषाएँ प्रांतीय भाषाएँ हैं, जो उनके नाम से ही ध्वनित होता है । पर हिंदी देश की भाषा है । इसका आधुनिक साहित्य अनेक प्रांतीय भाषाओं की तुलना में छोटा होने पर भी वह राष्ट्र की छोटी-सी, पर बहुमूल्य संपत्ति है, उसकी अपनी भाषा है । इसमें प्रांतीय अभिमान बिलकुल नहीं, जो बात अन्य भाषाओं के संबंध में नहीं कही जा सकती । प्रांतीय अभिमान के अभाव के साथ-साथ इसमें अन्य प्रांतों के संबंध में अवज्ञा-सूचक कोई शब्द भी नहीं है, यह भी इसकी राष्ट्रीयता का एक प्रमाण है । इसके लेखकों का लक्ष्य हिंद होता है, कोई प्रांत-विशेष नहीं। बंगाली 'बंग आमार, जननी आमार, धात्री आमार देश' गा सकते हैं, 'महाराष्ट्र देश अमुचा' कहकर महाराष्ट्र-वासी फूले अंग नहीं समा सकते हैं, पर हिंदी जिनकी मातृभाषा है, उनके लिये तो 'भारत हमारा देश है' और 'सारे जहाँ से

अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा' ही है। हिंदी राष्ट्र के लिये, राष्ट्र के मुँह से बोलती है, क्योंकि वह राष्ट्र की भाषा है, और हमारी मातृभाषा भी।

राष्ट्रभाषा और मातृभाषा में भेद

राष्ट्रभाषा और मातृभाषा में भेद है। जैसा मैं पहले कह चुका हूँ। मातृभाषा भी राष्ट्रभाषा हो सकती है, पर यह ज़रूरी नहीं कि राष्ट्रभाषा मातृभाषा ही हो। हिंदी के राष्ट्रभाषा बनने का यह अर्थ नहीं है, जैसा कुछ लोग समझते हैं कि अन्य भाषा-भाषी सज्जन अपनी-अपनी मातृभाषाओं का त्याग करके हिंदी को अपनावें। राष्ट्रीयता का अनुरोध तो केवल इतना ही है कि सारे राष्ट्र की एक भाषा हो, जिसके द्वारा भिन्न-भिन्न प्रांतों के सज्जन परस्पर संबंध-स्थापन करें, विचारों का आदान-प्रदान करें, तथा सब सर्वप्रांतीय कार्य इसी के द्वारा करें। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाना कांग्रेस ने इसीलिये स्वीकार किया है कि सारे राष्ट्र की एक सामान्य भाषा हुए बिना राष्ट्र फूलने-फलने नहीं पाता, स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकता, मानव-उन्नति के कार्य में वह भाग नहीं ले सकता, जो उसका अपना कर्तव्य है। अतः यदि हम एकराष्ट्र होना चाहते हैं, संसार में अपना गौरव-मंडित पद ग्रहण करना चाहते हैं, तो हमारा—भारत-संतान-मात्र का—कर्तव्य है कि वह हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में यथाशक्ति सहयोग करे। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का तो इस संबंध में अधिकतर महत्त्व-पूर्ण कर्तव्य है। जहाँ उसे यह देखना है कि राष्ट्रभाषा के नाम हिंदी की और हिंदी-संस्कृति की हत्या न की जाय, वहाँ उसे हिंदी का साहित्य-भंडार उत्तमोत्तम रत्नों से भरने का यत्न भी करना है। अपनी परीक्षाओं से सम्मेलन ने हिंदी-साहित्य के पठन-पाठन में कितनी सहायता की है, तथा इसके कारण आज कितने 'विशारद' और 'साहित्य-रत्न' देश में हो गए हैं, इसका परिचय आप लोगों को देने की आवश्यकता नहीं। इन परीक्षाओं के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से सम्मेलन ने साहित्य को भी उत्तेजन दिया है। अब आवश्यकता इस बात की है कि सम्मेलन के स्नातकों की योग्यता प्रांतीय सरकारें स्वीकार करें, तथा वे सरकारी युनिवर्सिटियों के ग्रेजुएटों के समान समझे जायँ। इसके लिये यत्न हो रहा है, पर इधर अधिक ज़ोर देने की आवश्यकता है।

मद्रास-प्रांत में आज हिंदी का प्रचार जितना हुआ है, उसकी कल्पना करना भी दो दशक पूर्व असंभव था। इस सफलता का श्रेय महात्मा गांधी को सबसे अधिक है। यदि इस कार्य को उनके महान् व्यक्तित्व का सहारा न मिला होता, तो यह इतना सफल कदापि न होता। फिर भी सम्मेलन के लिये यह कम गौरव की बात नहीं कि प्रारंभ में प्रचार-कार्य उसी ने किया, जिसका भार पीछे दक्षिण-भारत-हिंदी-प्रचार-सभा ने उठा लिया। सम्मेलन और सभा के प्रयत्न तथा महात्मा गांधी के व्यक्तित्व का ही यह परिणाम है कि आज मद्रास के स्कूलों में अनिवार्य रूप से हिंदी सिखाने का भार वहाँ की कांग्रेसी सरकार ने उठाया है। यदि वह सरकार 'हिंदुस्तानी की पहली किताब'-जैसी ही पुस्तकें लिखाकर बेचारी हिंदी का और उसके साथ भारतीय संस्कृति का भी वारा-न्यारा न कर डाले, तो मद्रास से हमारी राष्ट्र-भाषा को वह सहायता मिलेगी, जिसकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इस सत्कार्य के लिये हम माननीय श्रीराजगोपालाचारी को हृदय से धन्यवाद देते हैं। यहाँ प्रसंग-वश उस आंदोलन का भी उल्लेख कर देना चाहिए, जो उस प्रांत में हिंदी के विरुद्ध किया जा रहा है। सच तो यह है कि यह आंदोलन हिंदी के विरुद्ध नहीं, कांग्रेस और कांग्रेसी सरकार के विरुद्ध है। कांग्रेस की महत्ता और विजय के कारण जो लोग अब

शासन-कार्य से अलग हो गए हैं, उन्हीं में से कुछ लोग यह आंदोलन करके कांग्रेसी सरकार को जनता में बदनाम करने का यत्न कर रहे हैं। स्कूलों में हिंदी की अनिवार्य शिक्षा दी जायगी, तो उनकी मातृभाषा की विशेष रूप से हानि होगी, यह निराधार भ्रम उत्पन्न करके उन्होंने कुछ विचार-हीन युवकों को उत्तेजित कर दिया है, और कुछ लोगों को पैसे देकर तथाकथित सत्याग्रह पर वस्तुतः दुराग्रह करा रहे हैं। पर श्रीराजगोपालाचारी की दृढ़ता से उनकी पोल खुल गई है, और आंदोलन दिन-दिन अधिकाधिक निर्बल होता जा रहा है। वह दिन दूर नहीं, जब यह आंदोलन स्वाभाविक मृत्यु का आलिंगन करेगा।

हिंदी-प्रचार में सहायता देने के कारण हमने मद्रास-सरकार को बधाई दी, पर चिराग़-तले अँधेरा ही रह गया। हमें पहले संयुक्त प्रांत की एसेंबली के अध्यक्ष माननीय श्रीपुरुषोत्तमदासजी टंडन और प्रांत के शिक्षा-मंत्री माननीय श्रीसंपूर्णानंदजी का स्मरण करना चाहिए था। पर उक्त दोनो महाशय हमारे इतने निकट हैं कि कुछ काल के लिये उनकी विस्मृति हो जाना मेरे लिये अस्वाभाविक नहीं था, यह बात आप सब सज्जन स्वीकार करेंगे। दोनो महानुभाव इस सम्मेलन में उपस्थित हैं। दोनो राष्ट्रभाषा हिंदी के पूर्ण भक्त और सेवक हैं। टंडनजी का तो कहना ही क्या है? आप इस सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन से ही इसके आधार-स्तंभ बने हुए हैं। सम्मेलन आपका चिर-ऋणी रहेगा। संयुक्त प्रांत की एसेंबली के स्पीकर यानी अध्यक्ष के नाते एसेंबली की काररवाई देशी भाषाओं में की जाने की आपने जो अनुमति दी है, उससे हमारी प्रांतीय एसेंबली को वस्तुतः राष्ट्रीय या भारतीय रूप मिल गया है। क़ानून और नियमों का भाष्य करने में अपनी अतुलनीय कुशलता का परिचय देते हुए आपने 'प्रांतीय व्यवस्थापक सभा की काररवाई प्रांत की भाषाओं में की जा सकती है' इस आशय की राय दी है। ऐसा करते हुए अध्यक्ष ने केवल वक्ताओं की ही सुविधा का ध्यान नहीं रक्खा है, बल्कि उन सुननेवाले सदस्यों के अधिकार की भी रक्षा की है, जो अँगरेज़ी नहीं जानते, पर एसेंबली में क्या हो रहा है, इसे जानने और समझने का अधिकार जिन्हें स्वभावतः और भारत-शासन-विधान के उद्देश्य से भी प्राप्त है। क़ानून का यदि यही मंशा होता कि अँगरेज़ीदाँ सदस्य अँगरेज़ी में ही भाषण करें, तो वह अँगरेज़ी न जाननेवालों को सदस्य होने का अवसर ही न देता। यह साधारण समझ की बात है। इसे अध्यक्ष के निर्णय का महत्त्व देकर माननीय श्रीपुरुषोत्तमदासजी टंडन ने प्रांतीय स्वतंत्रता के क्षेत्र में संयुक्त प्रांत को अन्य सब प्रांतों से आगे बढ़ा दिया है। किसी अन्य प्रांत की एसेंबली के अध्यक्ष ने अब तक भाषा-संबंधी यह स्वतंत्रता सदस्यों को नहीं दी है, यद्यपि अब धीरे-धीरे अन्य प्रांत भी टंडनजी की राय को अपनाने लगे हैं, पर अभी वे इस मामले में संयुक्त प्रांत से बहुत पीछे हैं। टंडनजी ने लोकमत और देश तथा प्रांत की आवश्यकता के अनुरूप क़ानून का भाष्य करके वह काम किया है, जिसे करने के लिये क़ानून में परिवर्तन होने की राह अन्य प्रांतों के अध्यक्ष देख रहे हैं! इस कार्य के लिये मैं आपको हृदय से बधाई देता हूँ!

संयुक्त प्रांत के शिक्षा-मंत्री माननीय श्रीसंपूर्णानंदजी को इस वर्ष उनकी 'समाजवाद'-नामक पुस्तक पर 'मुरारका' पारितोषिक देने का निर्णय किया गया है। वस्तुतः 'समाजवाद' अपूर्व पुस्तक है। समाजवाद को एक दार्शनिक भित्ति पर खड़ा करने का यत्न, जहाँ तक मैं जानता हूँ, पहलेपहल संपूर्णानंदजी ने ही किया है। पर हिंदी अपने इस सुयोग्य पुत्र के केवल इसी काम से प्रफुल्ल नहीं हो रही है। शिक्षा-मंत्री की हैसियत से उक्त कार्य-भार

ग्रहण करने के बाद ही आपने घोषणा कर दी कि प्राथमिक से लेकर इंटरमीज़िएट तक सारी शिक्षा मातृभाषा द्वारा दी जायगी। संयुक्त प्रांत की सरकार के इस निर्णय से हिंदी-साहित्य को कितना उत्तेजन मिलेगा, इसकी कल्पना ही की जा सकती है। इंटरमीजिएट तक पढ़ाए जानेवाले सब विषयों की पाठ्य पुस्तकें तो हिंदी में बनेंगी ही, साथ ही बालकों और युवकों को अपनी मातृभाषा द्वारा सब विषयों पर विचार करने का अभ्यास हो जाने से अगली पीढ़ी में निर्मल और मौलिक हिंदी-साहित्य की धारा भी प्रांत में बहने लगेगी। सब देशों में वस्तुतः यही होता है। इससे शिक्षित समाज के ज्ञान का लाभ अशिक्षित और अल्पशिक्षित समाज को होता है, और देश धीरे-धीरे उन्नत होता जाता है। इस लाभ से अब तक भारतवर्ष वंचित रहा। आशा की जा सकती है कि यह 'वंचना' अब अधिक दिन न चलेगी, और समाज अपने बालकों और युवकों की शिक्षा पर जो धन-राशि ख़र्च करता है, उसका प्रतिफल उसे मिलने लगेगा। यह कांग्रेसी सरकार और विशेषकर शिक्षा-मंत्री माननीय श्री-संपूर्णानंदजी की संयुक्त प्रांत को पहली देन है, और मैं आशा करता हूँ कि सम्मेलन इसके लिये आपका हृदय से अभिनंदन करेगा—प्रयाग में उसकी स्थायी समिति कर भी चुकी है।

हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि उपेक्षणीय नहीं

इसी सिलसिले में आधुनिक हिंदी-साहित्य का प्रश्न उपस्थित होता है। इस विषय पर निश्चित मत देने का मैं अधिकारी नहीं, पर इतना तो अवश्य कहूँगा कि हिंदी-साहित्य के संबंध में जो निराशा-जनक उद्गार प्रायशः सुने जाते हैं, उनसे मैं सहमत नहीं। एक पत्रकार के नाते गत बत्तीस वर्षों से मैं हिंदी-साहित्य के संपर्क में हूँ, और इस अवधि में हमारे साहित्य में जो वृद्धि हुई है, वह नितांत उपेक्षणीय नहीं। अच्छे-अच्छे दैनिक, साप्ताहिक और मासिक—त्रैमासिक पत्र प्रकाशित हो रहे हैं, तथा इनके बाह्य और अंतरंग में नित्य नए सुधार भी होते ही चले जा रहे हैं। साहित्य-सम्मेलन, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा, हिंदुस्तानी-एकेडेमी (प्रयाग) आदि संस्थाओं, ज्ञानमंडल (काशी), सस्ता साहित्य-मंडल (दिल्ली), साहित्य-भवन (प्रयाग) तथा अन्य अनेक प्रकाशकों और व्यक्तियों के यत्न से हमारा साहित्योद्यान नित्य नए फल-पुष्पों से परिपूर्ण और सुशोभित हो रहा है। गौरीशंकर-हीराचंद ओझा, गुलेरीजी, प्रेमचंद, जयशंकर'प्रसाद', रामदास गौड़-जैसे साहित्य-रथियों के प्रयत्नों का लाभ हिंदी को प्राप्त हो चुका है। रायबहादुर श्यामसुंदरदास, मिश्रबंधु, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, कविवर अयोध्या-प्रसादसिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, जयचंद्र विद्यालंकार आदि लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् आज भी हमारे सौभाग्य से साहित्य-सेवा कर रहे हैं। सर्वोपरि आचार्य महावीरप्रसादजी द्विवेदी का आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य अभी तक हमें प्राप्त है। इन महानुभावों तथा अन्य अनेक साहित्यिकों ने हिंदी-साहित्य की जो श्री-वृद्धि की है, उसे देखते हुए हम नहीं कह सकते कि हमारा साहित्य अब भी बहुत पिछड़ा हुआ है, और उसका भविष्य उज्ज्वल नहीं। शास्त्रीय तथा वैज्ञानिक विषयों पर भी कई अच्छी-अच्छी पुस्तकें प्रकाशित हुईं और हो रही हैं। शुद्ध साहित्य की दृष्टि से कहा जा सकता है कि यह परिवर्तन-युग है, और उसके अनुरूप ही भाव और शैली की उच्छृंखलता दिखाई दे रही है। पर इसी उच्छृंखलता में से सुशृंखला निकलेगी, इस अनियम में से ही नियम की उत्पत्ति होगी। आज जो दशा राष्ट्र की है, वही राष्ट्रभाषा के साहित्य की भी है। मैं दोनो का भविष्य उज्ज्वल ही देखता हूँ।

इस भाषण को समाप्त करने के पहले मैं एक

और महत्त्व के विषय की ओर आप विद्वानों का ध्यान दिलाना चाहता हूँ। वह है हिंदी-शब्दों के लिंगों की गड़बड़। मैं जानता हूँ, इन बातों पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता। 'प्रयोगशरणा वैयाकरणाः' यह हमारे प्राचीन विद्वानों का मत है और सच है। फिर भी इधर ध्यान देने की आवश्यकता इसलिये उत्पन्न होती है कि हिंदी-भाषा केवल उसे बोलनेवालों की संपत्ति नहीं है। यह राष्ट्र-भाषा है, और राष्ट्र के हित के लिये इसे यथासाध्य सुलभ करना हमारा कर्तव्य है। इस ओर सम्मेलन ध्यान दे भी चुका है। दिल्ली-सम्मेलन में "हिंदी-भाषा की राष्ट्रीयता तथा उसके प्रचार की दृष्टि से हिंदी-शब्दों के लिंग-भेद का यथासंभव नियंत्रण करने के हेतु उचित मार्ग उपस्थित करने के लिये" एक समिति नियुक्त की गई, और नागपुर-सम्मेलन में इसमें दो सज्जनों के नाम और जोड़ दिए गए, और श्रीपुरुषोत्तमदासजी टंडन इसके संयोजक बनाए गए। समिति की ओर से संयोजक श्रीपुरुषोत्तमदास टंडन ने गत वर्ष अपनी रिपोर्ट स्थायी समिति में उपस्थित की। उस समिति ने यह प्रस्ताव गत वर्ष सम्मेलन में उपस्थित किया कि—'अस्थायी रूप से ये तीन सिद्धांत माने जायँ—(क) जीवधारियों के लिये प्रयुक्त जिन शब्दों से लिंग स्पष्ट है, उन शब्दों का लिंग अर्थ के अनुसार हो। (ख) निर्जीव पदार्थों तथा छोटे पशु-पक्षियों और कीड़ों के संबंध में शब्दों की आकृति पर लिंग-निर्णय किया जाय, और इसके लिये भाषा के वर्तमान स्वरूप का ध्यान रखकर निश्चित नियम बनाए जायँ। (ग) फुटकर शब्दों के लिये अपवाद न रक्खे जायँ; किसी नियम का अपवाद भी कोई नियम ही हो, जो सामूहिक रीति से कुछ शब्दों में लागू हो।' इस पर निश्चय हुआ कि 'सम्मेलन स्थायी समिति की सिफ़ारिशों को अस्थायी रूप से स्वीकार करता है, और स्थायी समिति को अधिकार देता है कि वह लिंग के विषय में सम्मेलन की ओर से अंतिम निर्णय करे।' मुझे इस संबंध में यही निवेदन करना है कि यह प्रयत्न स्तुत्य है। इसकी सफलता पर राष्ट्रभाषा का प्रचार बहुत कुछ निर्भर है। साधारणतया, जहाँ जाति से लिंग स्पष्ट नहीं होता, शब्दों के अंत्य और उपांत्य स्वरों और प्रत्ययों से लिंग निर्द्धारित होता है। कुछ अपवाद अवश्य हैं, पर यदि वे सामूहिक न हों और किसी उपनियम में न आ सकते हों, तो उनका लिंग साधारण नियम के अनुसार निर्द्धारित करना अथवा उन्हें उभयलिंगी मान लेना अनुचित न होगा। ऐसा करने से अन्यभाषा-भाषी लोगों के लिये हिंदी सीखना सहज हो जायगा। अवश्य ही इस संबंध में धीरे-धीरे अग्रसर होना चाहिए, क्योंकि जीवित भाषा बहती नदी है, जिसकी धारा नित्य एक ही मार्ग से प्रवाहित नहीं होती।

सज्जनो, मैंने आपका बहुत समय लिया। इतना अधिक कहना नहीं चाहता था, पर प्रसंग-वश जो बातें सामने आती गईं, उनकी उपेक्षा भी न कर सका और भाषण बढ़ गया। अब आप लोगों के धैर्य और सहिष्णुता के लिये पुनः धन्यवाद देकर यह भाषण समाप्त करता हूँ।

(समाप्त)

अरे बाप रे !

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

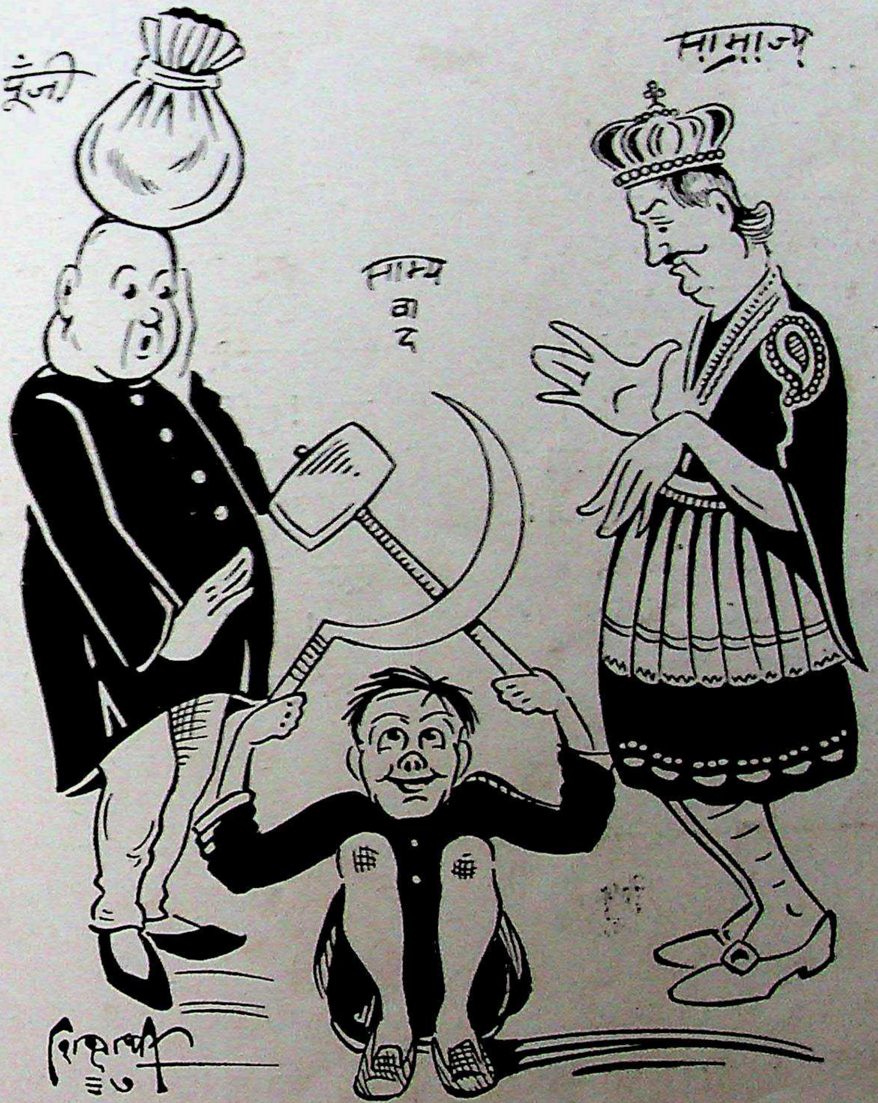
पूँजी
साम्राज्य
साम्य वाद

दो गीत

[श्रीयुत श्रीनिधि द्विवेदी]

(१)

आज स्वप्न में देखा तुमको।
मिले युगल हृदयों के स्पंदन,
जी-भर अपनी कह ली-सुन ली,
कितना स्नेह, मधुर अभिनंदन !
कहो, कौन कह सकता किससे
इतने दिन अनदेखा तुमको ?
एक अतृप्त मधुरता चाही,
दो ने भर नयनों के दोने
मिलनोल्लास प्रचुरता चाही,
सौम्य, देखते और दिखाते
देखा जीवन-रेखा तुमको।
टूटा स्वप्न, खुल गईं पलकें,
देखा, चारो ओर स्वयं के
बिखरीं अंधकार की अलकें।
अखर गया यह साथ-साथ ही
निर्दय विधि का लेखा तुमको।
आज स्वप्न में देखा तुमको।

(२)

आज तुम्हें सपने में देखा।
उन अरमानों को उर लाते,
सुखमा के शिशु को दुलराते,
इस भिक्षुक ने ओ त्रिभुवन के
राज ! तुम्हें सपने में देखा।
सचमुच तुम कितने दुर्लभ हो,
मैं रज का कण हूँ, तुम नभ हो,
सूरज, चाँद और तारों के
ताज ! तुम्हें सपने में देखा,
आज तुम्हें सपने में देखा।

संयुक्त-प्रांतीय शिक्षा-विभाग की ओर से प्रचलित
हिंदी-विशेष योग्यता-परीक्षा
हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, महिला-विद्यापीठ (इलाहाबाद), तथा पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

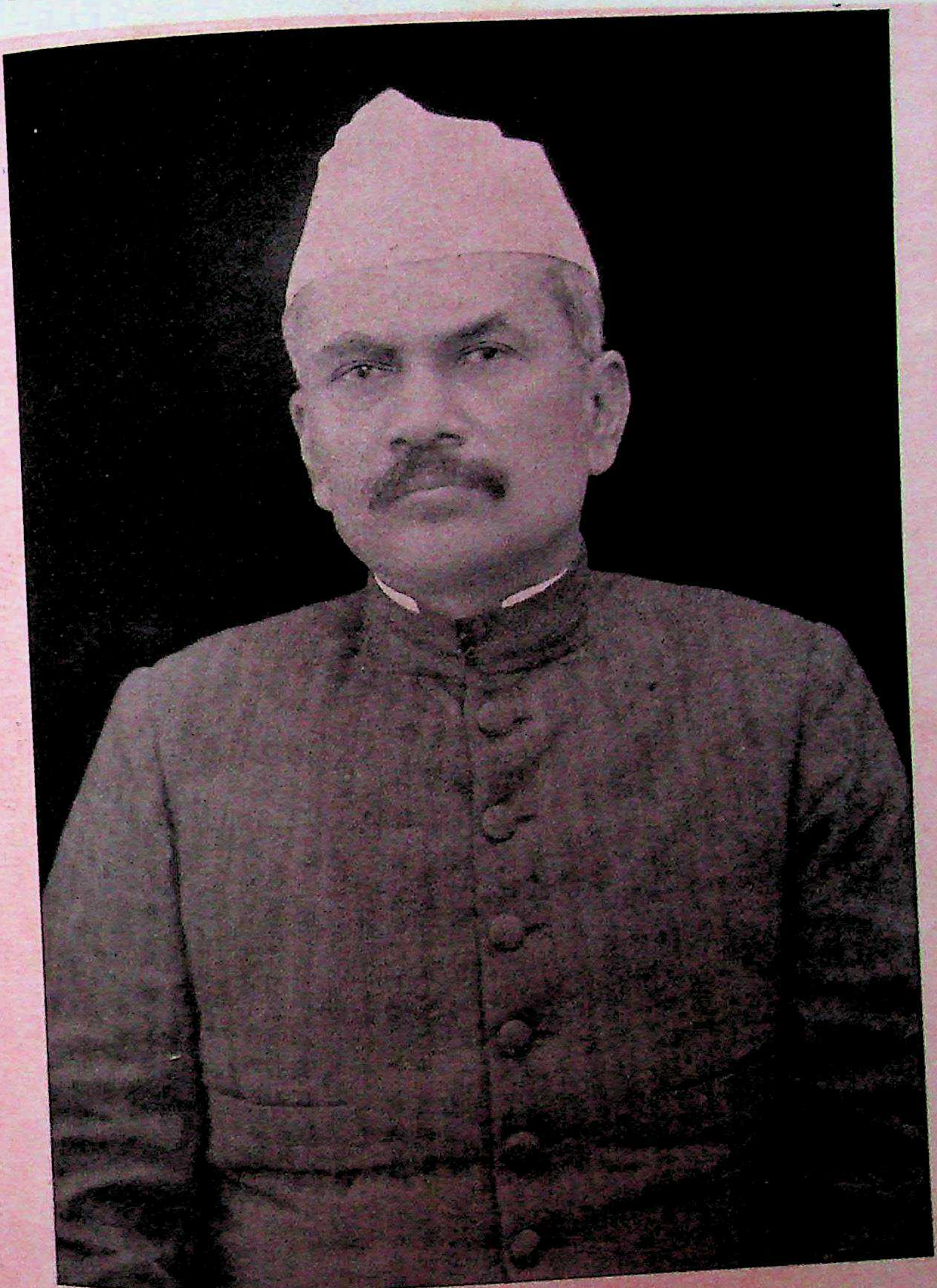

देश-रत्न ऑनरेबुल डॉक्टर कैलासनाथजी काटजू

[ऑनरेबुल डॉक्टर कैलासनाथजी काटजू हिंदोस्तान के मशहूर क़ानूनदाँओं में से हैं। जब से आपने यू॰ पी॰-सरकार के गाँव-सुधार, क़ानून, काम-धंधे वग़ैरा के महकमों की बागडोर अपने हाथ में ली है, तब से सूबे की तरक़्क़ी तेज़ी के साथ हो रही है।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

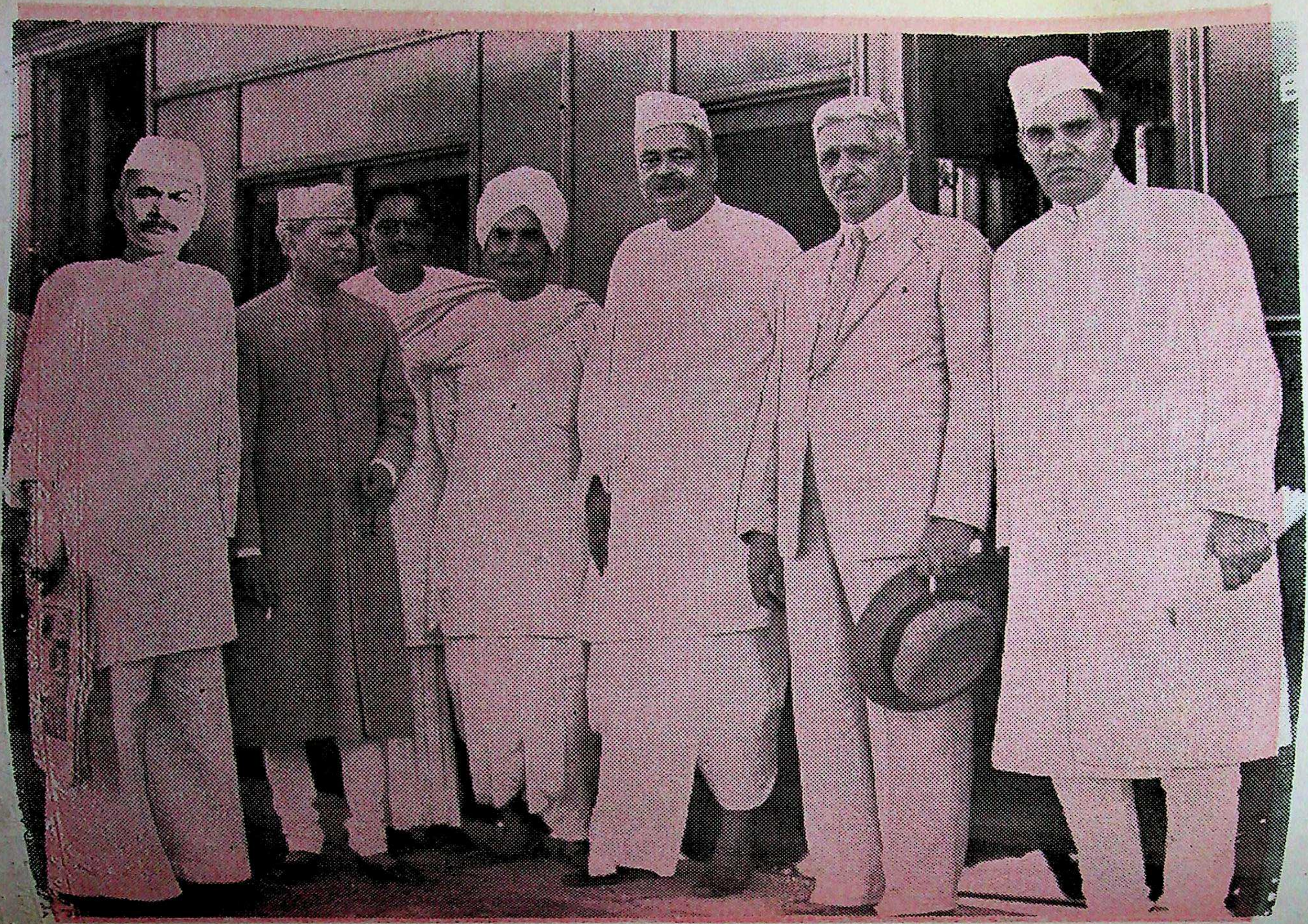

ग्राम-सुधार-संबंधी एक सभा में

[बाईं ओर—माननीय डॉ० कैलासनाथ काटजू ; बीच में—माननीय पं० गोविंदवल्लभ पंत ; दाहनी ओर—श्रीएम्० डी० चतुर्वेदी (ग्राम-सुधार-विभाग के सर्वोच्च पदाधिकारी)]

दौलतपुर की यात्रा

[अध्यापक विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए०, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी]

कार्तिक महीने के कृष्ण-पक्ष में किसी दिन पूज्यपाद पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी का एक पत्र काशी के प्रसिद्ध कलाविद् राय कृष्णदासजी के यहाँ आया, जिससे पता चला कि द्विवेदीजी की तबियत इधर कुछ ख़राब रहा करती है, आँखों से भी कम दिखाई पड़ता है। उन दिनों राष्ट्रीय कवि बाबू मैथिलीशरणजी भी यहीं थे। उन लोगों ने द्विवेदीजी के यहाँ जाने की उत्कट इच्छा काशी के उत्साही नवयुवक सहृदय मुरारीलालजी केडिया* के समक्ष प्रकट की। निश्चय हुआ, तीनो व्यक्ति चलें। पर मुरारीलालजी व्यापारी व्यक्ति हैं। धनतेरस आनेवाली थी, कोठी में उन्हें 'नया बसना' करना था, इसलिये वह कई दिनों का समय नहीं दे सकते थे। गुप्तजी ने द्विवेदीजी के स्थान (दौलतपुर) जाने का सीधा मार्ग रायबरेली होकर ठीक किया था। वहाँ से तकिया होकर दौलतपुर जाने का रास्ता कुछ सीधा पड़ता है; नदी पार करने का झमेला नहीं। पर उस रास्ते से जाने में कम-से-कम तीन दिन लगते थे। केडियाजी चाहते थे, चौबीस या अड़तालीस घंटे में यदि आने-जाने का कोई रास्ता निकल आए, तो अच्छा हो। ज़ुकाम हो जाने के कारण राय साहब को दो दिन के लिये यात्रा टालनी पड़ी। गुप्तजी किसी विशेष काम से लखनऊ चले गए थे। धनतेरस को लौट आना आवश्यक था। कॉलेज से मुझे छुट्टी थी। नवमी बृहस्पतिवार को शाम के समय में किसी ज़रूरी काम से (संभवतः काशी-हिंदी-साहित्य-विद्यालय के संबंध में) केडियाजी से मिलने गया, क्योंकि केडियाजी विद्यालय के मंत्री थे। उन्होंने मुझसे जब बहुत आग्रह किया, तो मैंने उनसे कहा—"चलता तो मैं भी, पर मुझे 'पाली'वाल बनने की लगी है। हाँ, समय का निकास अवश्य बता सकता हूँ।"

मैंने छूटते ही टाइम-टेबुल हाथ में ले लिया। पंद्रह-बीस मिनट तक मैं उसके पृष्ठ खोलकर आँखें गड़ाता और फिर ध्यान की मुद्रा में कुछ गिनने का अभ्यास-सा करता रहा। अंत में मैंने कहा—"रास्ता निकल आया, सिर्फ़ चौबीस घंटे लगेंगे। बिंदकी-रोड से होकर जाना चाहिए।"

केडियाजी उछल पड़े। उसी दिन रात में एक

---

* केडियाजी काशी के धनी एवं उत्साही नवयुवक हैं। आपने अपने पिताजी के नाम पर 'श्रीरामरत्न-पुस्तक-भवन' नाम का एक पुस्तकालय स्थापित कर रक्खा है, जिसमें चुनी हुई हिंदी, अँगरेज़ी, संस्कृत आदि भाषाओं की चार-पाँच हज़ार पुस्तकें हैं। हिंदी-पुस्तकों का दूसरा अच्छा संग्रह काशी में, नागरी-प्रचारिणी के आर्य-भाषा-पुस्तकालय के बाद, यही है। इसमें पुरातत्त्व-विभाग भी है, जिसमें प्राचीन मूर्तियों, सिक्कों, चित्रों आदि का भी अच्छा संग्रह है। आप नागरी-प्रचारिणी सभा के अर्थ-मंत्री भी रह चुके हैं। हिंदी की कुछ पुस्तकें भी आपने प्रकाशित की हैं। आपके पुस्तकालय की पुस्तकों के व्यवहार के लिये कोई शुल्क नहीं लगता। हिंदी के नाम पर आप बहुत कुछ किया करते हैं, और हिंदी पढ़ने के लिये आनेवाले दक्षिणी विद्यार्थियों की सहायता भी करते हैं।—लेखक

बजे काशी से चलकर दूसरे दिन दस बजे रात तक लौट आने का प्रोग्राम बन गया। उन्होंने मुझे ज़ोर से पकड़कर झकझोर दिया, और कहा—"पंडितजी, अब तो आपको भी चलना होगा, यह हो नहीं सकता। आप जब पढ़ रहे थे, तब द्विवेदीजी की छात्रवृत्ति आपको मिली थी, वह अपने पत्र में आपका बराबर स्मरण करते हैं। आपको देखकर वह अत्यंत प्रसन्न होंगे।"

कोई घंटे-भर तक मान-मनौवल होती रही, अंत में मुझे केडियाजी का मन रखना ही पड़ा, महर्षि-दर्शन की लालसा ने मुझे भी विवश कर दिया। केडियाजी से बिदा होकर मैं कोई नौ बजे रात को घर लौटा। उधर केडियाजी ने यह समाचार जब 'उधर' सुनाया, तो उन्हें भी पासपोर्ट मिल गया। रात में एक बजे जब मोटर की प्रतीक्षा में घूमते हुए केडियाजी को और मुझे राय साहब ने देखा, तो बड़े आश्चर्य में पड़े। उन्होंने नमस्कार के बाद छूटते ही कहा—"आप भी आ गए! बड़ा अच्छा हुआ।" उस रात के सन्नाटे में मोटर अपने ड्राइवर के साथ सो गई थी। देर देखकर इक्कों को वाहन बनाना पड़ा। पर थोड़ी दू जाते ही सकपकाकर उठी हुई और आँखें फाड़ हम लोगों को खोजती हुई-सी वह दौड़ती आती दिखाई पड़ी। सब लोग उस पर जा बैठे। ट्रे हो रही थी, इसलिये सामान लोगों ने अपनी गोद में रक्खा, सिर पर रक्खा, छाती से लगाया। भुजबंध में बँधे हुए बिस्तरे को लिए हुए राय साहब ने पूछने पर उत्तर दिया—"बड़ा आराम है!"

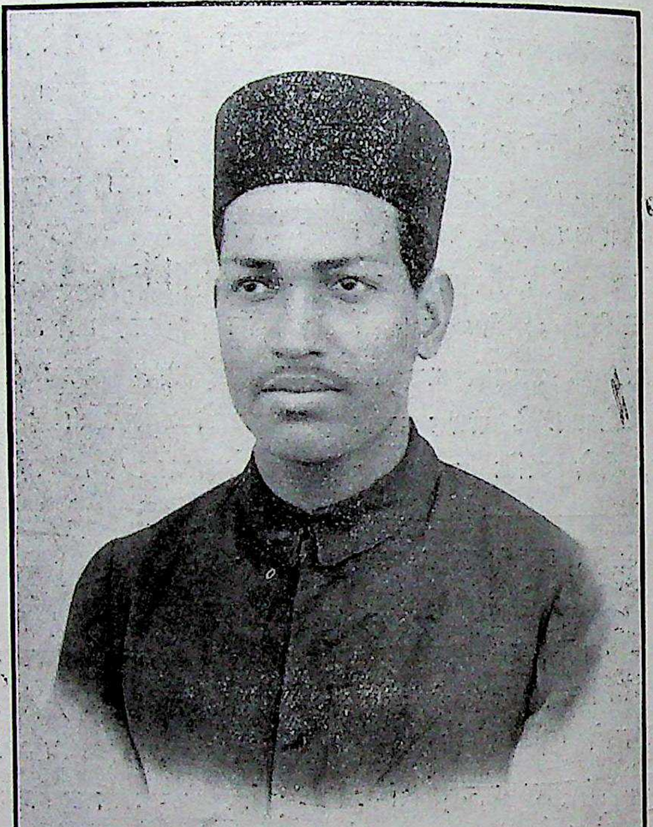

अध्यापक विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम० ए०

जब हम लोग मुग़लसराय पहुँचे, तो तूफ़ान-मेल पैंतालीस मिनट लेट था। केडियाजी की उत्सुकता और उत्कंठा उस समय देखने ही योग्य थी। पूर्व की ओर से कोई एंजिन भी आता दिखाई पड़ता, तो चौंककर कहने लगते—"गाड़ी आ गई!" उनकी मेघ-ध्वनि ने मुसाफ़िरों से कई बार उठा-बैठी की कसरत उस शीत में अनायास ही करा ली। राम-राम करते जब गाड़ी आई, तो तिल रखने की कौन कहे, राई रखने की भी जगह न थी। मैं लपककर खिड़की में घुसा, तो मेरी धोती दबकर चीं बोल गई। किसी प्रकार सामान ठूँसा गया, और सब लोग पिल पड़े। रास्ते में बिस्तर के मोढ़े पर

सुप्रसिद्ध कलाविद् राय कृष्णदासजी

महाकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त

केडियाजी बैठे। राय साहब ने अपनी कला की बदौलत जगह बना ही ली। अंत में केडियाजी को भी हम लोगों ने 'छ्वै छिगुनी पहुँचो गिलत' की नीति से अपने बीच, हृदय की भाँति ही, सुरक्षित कर लिया।

सबेरे जब गाड़ी फ़तेहपुर पहुँची, तो राय साहब ने वहाँ फूले हुए जलेबे देखे। पता नहीं, ब्राह्मी के अक्षरों की-सी बनावट देखकर या ज़ुकाम के कारण कम भोजन करने की वजह से पेट की प्रार्थना पर उन्होंने बड़ी प्रशंसा करते हुए ख़रीदने का उपक्रम कर ही तो लिया। उन्होंने फ़रमाया—"काशी में जलेबी ठीक नहीं उठाते (फुलाते), यहाँ उठती ख़ूब हैं।" यह कहने के साथ ही ख़ोंचे से सचमुच जलेबे उठ चुके थे। वहाँ हम लोग सटल में सवार हुए। ज्यों ही सटल कंसपुर-गुगौली पहुँचा, स्टेशन पर एक खिचड़ी दाढ़ीवाला चेहरा पगड़ी बाँधे और दूसरा चिकनी मिट्टी के करारे की फिसलन-सा, टोपी पहने दिखाई पड़ा। हम लोगों को यह गुमान ही न था कि गुप्तजी कंसपुर-गुगौली आ जायँगे, और उनके साथ युग-प्रवर्तक श्रीदुलारेलालजी भार्गव भी होंगे। राय साहब ने गुप्तजी को एक पत्र लिख दिया था कि हम लोग बिंदकी-रोड शुक्रवार के सबेरे पहुँचेंगे। हम उनकी संभावना उसी स्टेशन पर कर रहे थे। यहाँ उन्हें देखकर हम लोगों ने कहा, यहीं उतरना चाहिए। पर जब वे दोनो व्यक्ति हमारे डब्बे में स्वयं घुस आए, और कहा कि बड़े लोगों की अगवानी करने हम यहाँ तक चले आए हैं, तो एक बार अट्टहास से डब्बा हिल उठा।

हिंदी-प्रेमी
श्रीमुरारीलाल केडिया

बिंदकी-रोड उतरने पर पता चला कि गुप्तजी ने दो बैलगाड़ियाँ पहले से ही ठीक कर रक्खी हैं। एक बैलगाड़ी पर राय साहब, गुप्तजी और केडियाजी बैठे, दूसरी पर मैं और दुलारेलालजी। राय साहब का नौकर धनेश भी हमीं लोगों की गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी पर बैठते ही मैंने तो अपना बनारसी फ़ैशन निकाला। कुर्ता, टोपी और सदरी एक अँगौछे में लपेटकर रख दी, और एक अँगौछा ओढ़ लिया। मेरे शरीर पर सिर्फ़ खद्दर की एक गंजी थी। पर और लोग उसी पोशाक में डटे रहे। मुझे क्या मालूम था कि ये लोग द्विवेदीजी के यहाँ पहलेपहल जा रहे हैं। कम-से-कम गुप्तजी के संबंध में मेरा कुछ दृढ़ निश्चय था कि वह पहले कभी वहाँ अवश्य गए होंगे, और बैल-गाड़ी की धूल उन्हें फाँकनी पड़ी होगी। रास्ते में पता चला कि महावीर-आश्रम के सभी यात्री पहले-पहल ही दौलतपुर जा रहे हैं। धूप हलकी थी, कुछ बादल भी थे, रास्ते में सुरख़ाब, जल-कुक्कुट तथा वन-विहंगों के गान और झूलों पर मुग्ध होते हुए हम लोग चले जा रहे थे कि एकाएक एक संकरे रास्ते में अगली बैलगाड़ी का एक बैल छटककर बाहर हो गया। उसे एक लड़का हाँक रहा था।

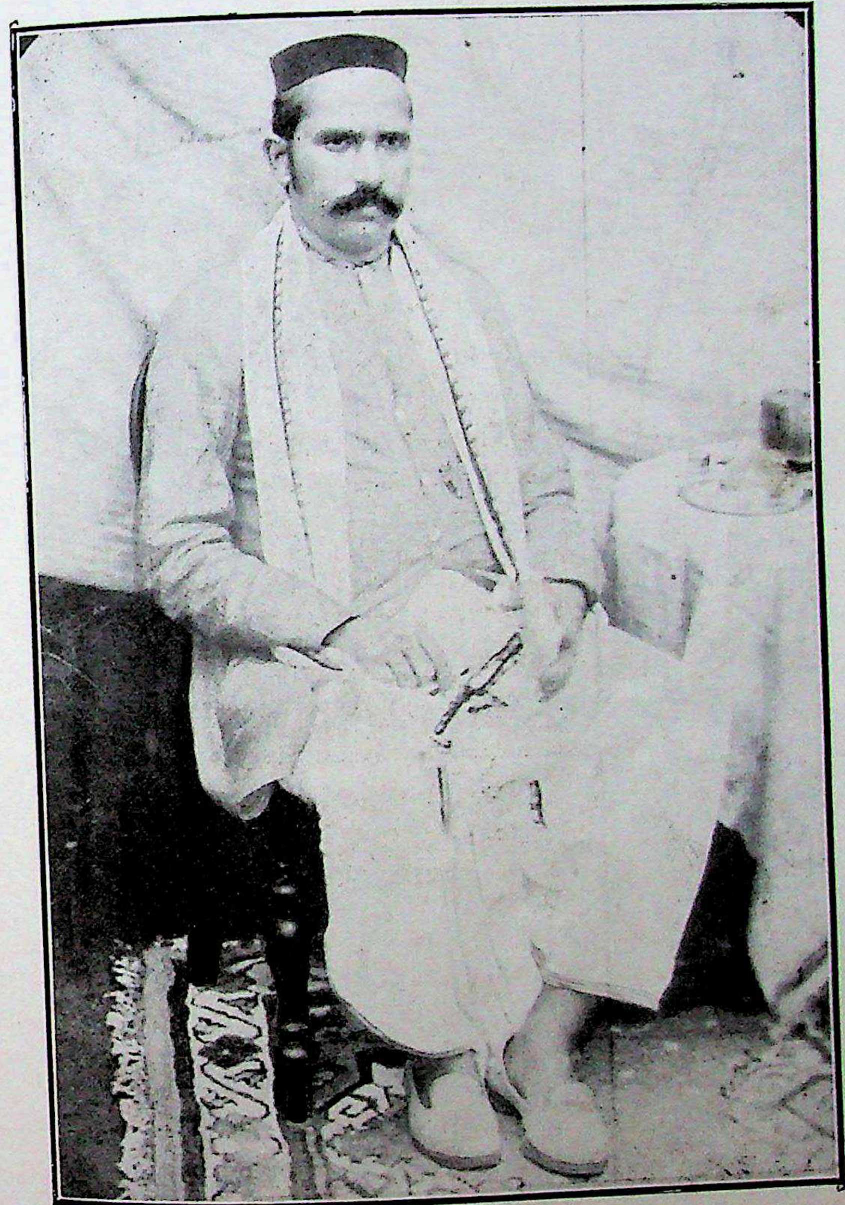

'सरस्वती'-संपादक
पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी
(संवत् १९६२—सन् १९०५)

पिछली गाड़ी पर गुप्तजी आदि थे। उसका सारथि जब उसे ठीक करने के लिये अगली गाड़ी हाँकने लगा, तब हमारे राष्ट्रीय कवि पिछली गाड़ी के सारथि बन बैठे। उनकी पगड़ी, दाढ़ी और मूछों पर धूल लोट रही थी। उन्होंने एक हाथ में पगही ली, और दूसरे में औगी। उस समय कैमरा न

होने से सबके हृदय में एक कसक हुई। यदि गुप्तजी के उस चित्र को हम लोग अपने हृदय में ही न रखकर लोगों के सामने या राय साहब अथवा केडियाजी के संग्रहालय में कहीं टाँगने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते, तो भारतीय कवि-पुंगव के उस दृश्य से न-जाने कितने दिनों तक, समय-समय पर, वह मोहक स्मृति जगती रहती। उनके हृदय की कोमलता, सरलता और वेश:की सादगी सामने

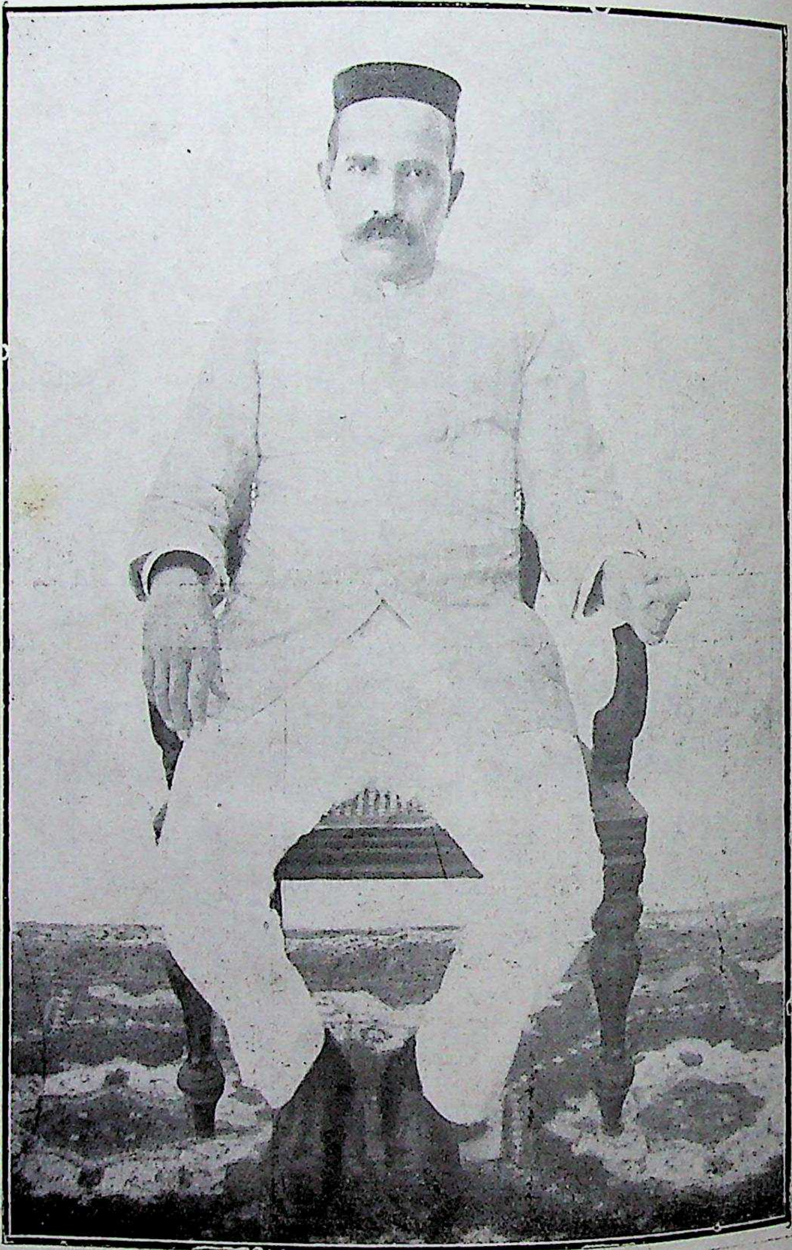

पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी
(सं० १९६४—सन् १९०७)

आते ही हमारे हृदय को और भी निर्मल, भावप्रवण बनाती रहती । पर करते क्या !

पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी
(सं० १९६७—सन् १९१०)

दोपहर ढलते-ढलते हम लोग चार कोस का रास्ता तय करके बक्सर-घाट पहुँचे । पार उतरकर शौच, स्नान, भोजन आदि से छुट्टी मिली । पता चला, कमलाकिशोरजी (द्विवेदीजी के भांजे) कल से ही परेशान हैं, और अभी-अभी लहँगी-घाट की ओर गए हैं । यह घाट द्विवेदीजी के

गाँव की सीध में पड़ता है, और कंसपुर-गुगौली से सीधे आने पर सबसे क़रीब रास्ता इसी घाट से

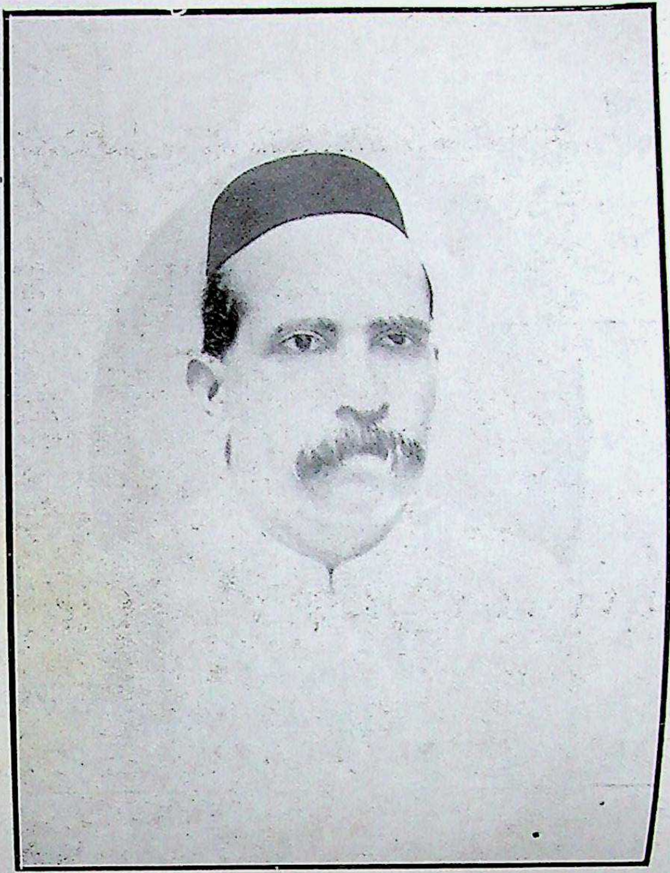

पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी
(सं० १९६५—सन् १९०८)

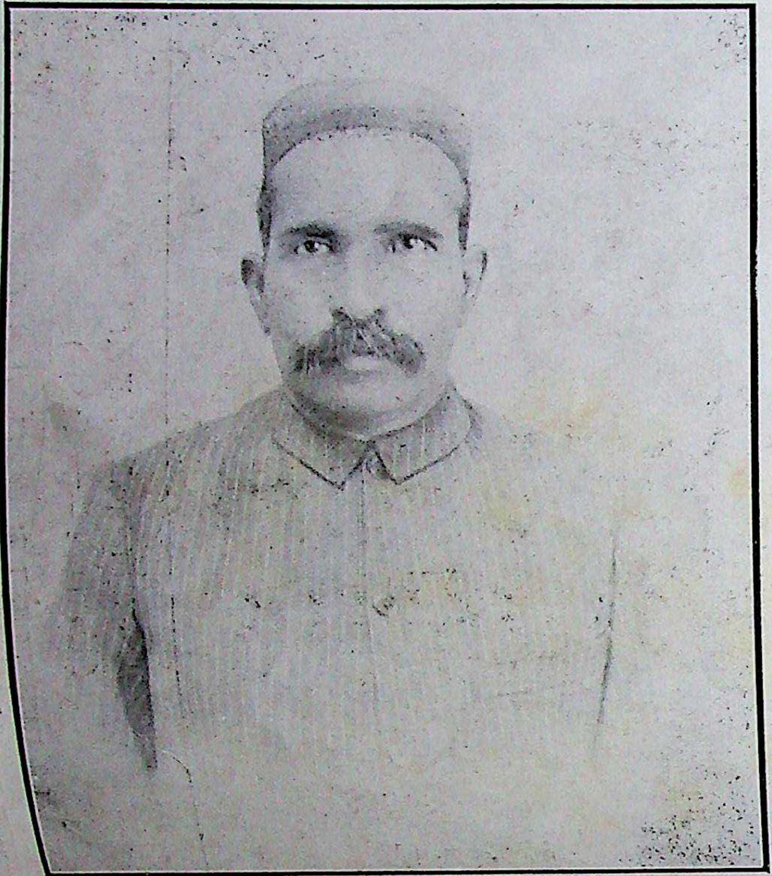

पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी
(सं० १९७१—सन् १९१४)

होकर है । अंत में दो बैलगाड़ियों में हम लोग लदे। दुलारेलालजी ने चबेना करना आरंभकिया।

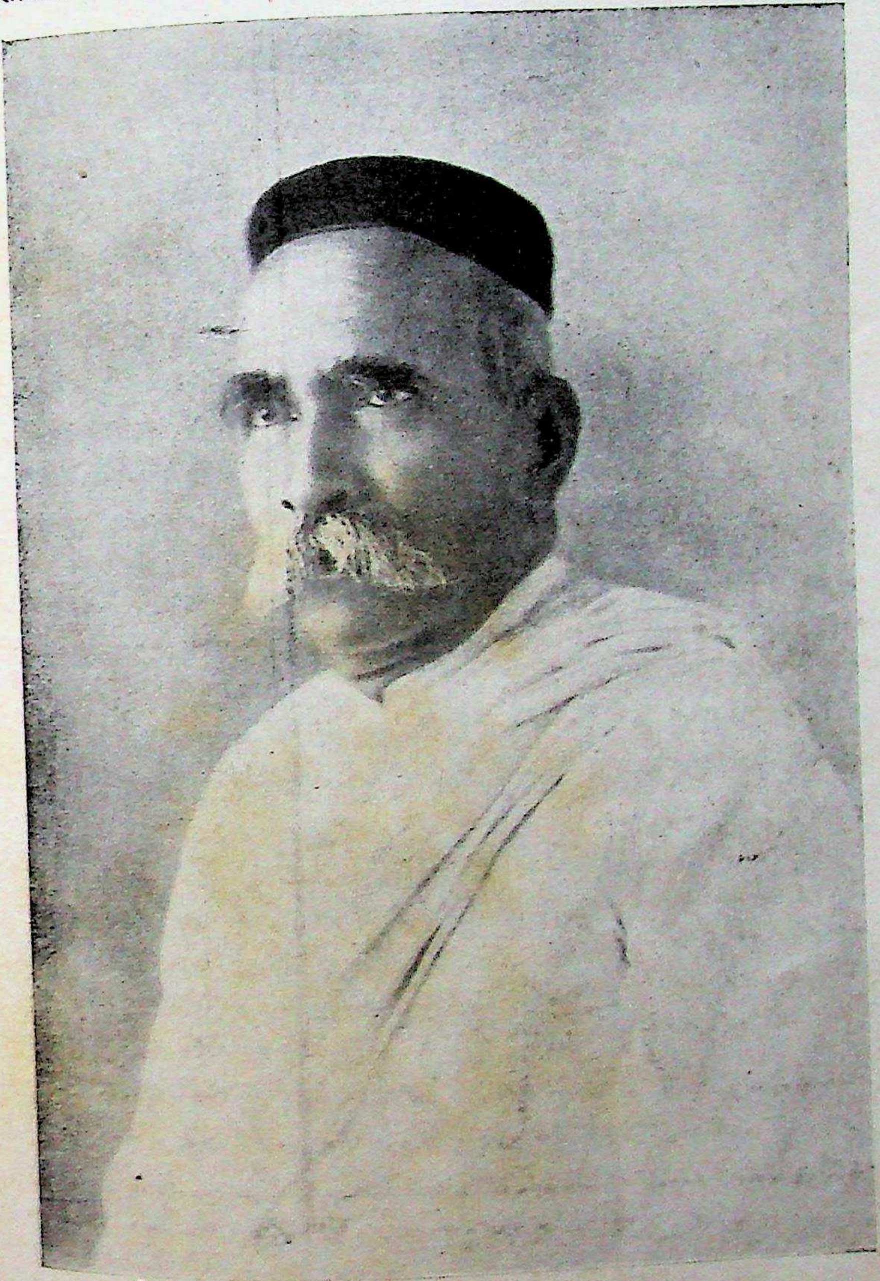

आचाय पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी

(संवत् १९७९—सन् १९२२)

जब हम लोग गाँव के निकट पहुँचे, तो एक सामानवाली बैलगाड़ी तो लीक-लीक भेज दी गई, और हम लोग लीक छोड़कर पैदल चले। हम लोग गाँव में पहुँचे ही थे कि वह गाड़ी भी आ

आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी

गई, पर केडियाजी के 'थरमस' की टोपी न-जाने कहाँ रास्ते में गिर गई। जिस थरमस ने गरम पूरियों और तरकारी से लोगों को उस सफ़र में ताज़ी का स्वाद दिया था, उसका शिरस्त्राण ही ग़ायब ! ख़ैर, दरवाज़े पर हम लोग चारपाइयों पर जा बैठे। द्विवेदीजी को ख़बर की गई। थोड़ी ही देर में उनके कमरे का दरवाज़ा खुला, और वह विशाल विभूति हम लोगों के दृष्टिपथ में थी। देखते ही उन्होंने "स्वागतं ते महाभाग !" का मधुरालाप किया। सबने झुककर चरण छुए। बाहर चौकी पर द्विवेदीजी अपनी सिंहठवनि से आ बैठे।

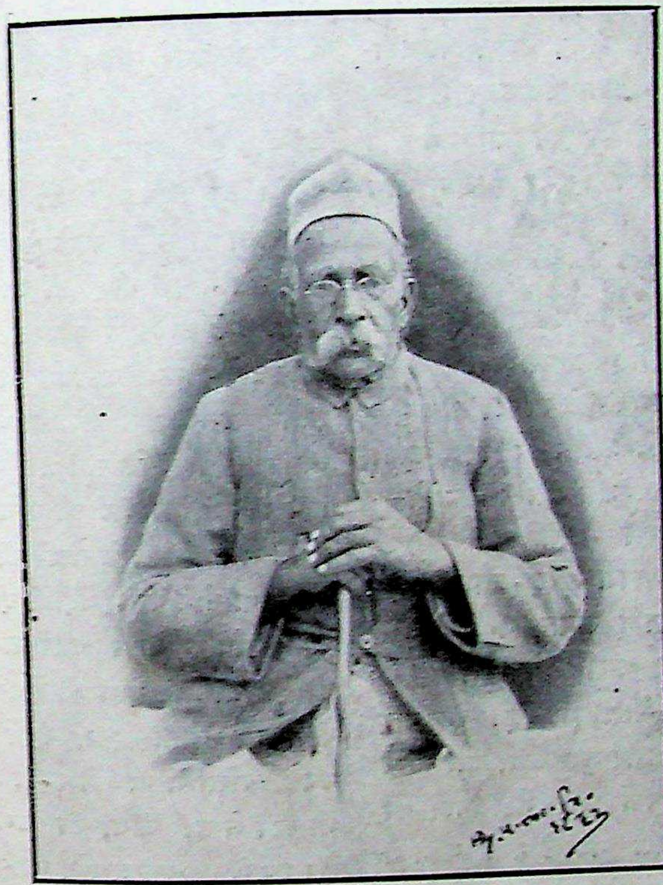

आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी
(संवत् १९८९—सन् १९३२)

भेंट-सामग्री उनके सामने रक्खी गई। और लोगों ने मिठाई तथा फलों की भेंट की, पर मैंने 'पत्र' ही से आरंभ किया—अपनी दो पुस्तकें दीं। सबसे पहले मेरा परिचय पूछा गया, और प्रश्नोत्तर भी प्रारंभ हो गए। द्विवेदीजी ने पूछा—"तुमने 'पद्माकर-पंचामृत' निकाला है, सुनाओ तो पद्माकर की कोई कविता।" मैं बड़े असमंजस में पड़ा। पद्माकर शृंगार के श्रेष्ठ कवियों में से हैं, और उनकी शृंगार की कविता सुनाई जाय, तो बड़ों के समक्ष प्रगल्भता प्रकट हो। द्विवेदीजी की चित्त-वृत्ति और अवस्था पर दृष्टि गई, तो मुझे 'प्रबोध-पचासा' के कवित्त याद आए। मैंने 'उकुति अनेक ही पै एकहूँ कही न परै' कवित्त पढ़ सुनाया। द्विवेदीजी भाव-धारा में मग्न हो गए, आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। पर प्रकृतिस्थ होते ही उन्होंने कहा—"'एक ही सेज पै सोवत हैं 'पदमाकर' दोऊ महा सुख मानें' पर तुमने पद्माकर के कान नहीं ऐंठे ?" अब मैं क्या कहता—"हाँ, भूमिका में दबी ज़बान इस पर भी कुछ लिखने की धृष्टता की है।" कहकर छुट्टी पाई। अब दुलारेलालजी की पारी थी। द्विवेदीजी ने उनके बारे में पूछा, और उनका नाम सुनते ही बोले—"दुलारेलालजी, जिनका डंका बजता है !" इतना कहते-कहते द्विवेदीजी को अपने संपादक-जीवन का स्मरण हो

आया। उन्होंने कहा—"क्या कहें, संपादकों की दुर्दशा का समाचार पढ़ता हूँ, तो रोने लगता हूँ। संपादकाचार्य रुद्रदत्तजी भूखों मर गए! मेरा तो कलेजा फट जाता है।" कुछ क्षणों तक फिर द्विवेदीजी की आँखें बरसती रहीं। पुनः प्रकृतिस्थ होने पर उन्होंने राय साहब से पूछा—"क्यों, चले हो टंडनजी* की वकालत करने। अच्छा, करो वकालत।" राय साहब ने नम्रता-पूर्वक उत्तर दिया—"हम लोग आ रहे थे, तो उन्होंने यह कार्य सौंप दिया है, आपकी अवस्था देखते हुए हम लोग क्या कह सकते हैं।"

अब नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी की चर्चा छिड़ी। सभावालों की नीति और उदासीनता पर द्विवेदीजी केवल अपनी व्यथा-भर व्यक्त करके रह गए। उन्होंने कहा—"अब मुझे क्या! लोग मुझे दोष देते हैं कि मैं सबकी प्रशंसा कर दिया करता हूँ। पर मेरा वह समय निकल गया। अब तो—

'उपजे राम - चरन - रत,
बिगत - काम - मद - क्रोध;
निज प्रभुमय देखहिं जगत,
कासन करहिं बिरोध?'"

क्षण-भर इसी भाव-धारा में बहने के बाद द्विवेदीजी ने गुप्तजी की ओर मुख फेरा, और व्यंग्य किया—"क्यों, महाकवियों और महाजनों को यात्रा करने का फल मिल गया? मना करते थे कि हमारा गाँव जंगल में है, बड़ा कष्ट मिलेगा; पर मानता कौन है।" गुप्तजी ने "बन बिषम न लागा" कहकर नम्रता प्रकट की।

अंधकार की चढ़ाई हो चली थी, इसलिये हम लोगों ने द्विवेदीजी से आराम करने का आग्रह किया, पर जो अतिथि-सत्कार में सदा से उदार-हृदय का परिचय देता आया हो, वह वृद्धावस्था में उसके संस्कार के कारण भला अपनी शारीरिक चिंता की परवा क्यों करने लगा। द्विवेदीजी फिर भी बैठे ही रहे। अब उनके स्वास्थ्य के संबंध में प्रश्न आरंभ हुए। उत्तरों का सारांश यह है कि द्विवेदीजी की स्मृति पहले से कुछ क्षीण हो गई है। रात में पूरी नींद नहीं आती। सामान्य चिंता से भी उन्हें उन्निद्रता का कष्ट भोगना पड़ता है। अगर उन्हें पता चल जाय कि आज घर में आटा पिसा हुआ तैयार नहीं, तो उसकी चिंता ही उन्हें इतना व्यग्र कर देती है कि रात-भर नींद नहीं आती। हाथ काँपता है। पीठ की धन्वा कुछ झुक गई है। चलते समय किसी के सहारे की ज़रूरत पड़ती है। पर इतना होने पर द्विवेदीजी दो वक़्त, सुबह और शाम, गाँव के बाहर चक्कर लगा आते हैं। खेतों को देख आते हैं, वृक्षों की देख-भाल कर लेते हैं। खेतों का कोना-कोना, वृक्षों की डाली-डाली उनकी आँखों में नाचती रहती है। अगर एक पत्ता भी कहीं से हट जाय, तो उन्हें पता लग जाता है। घर के एक-एक प्राणी, एक-एक जीव की चिंता उन्हें रहती है। घूमकर लौटते समय सुग्गे के लिये भुट्टा लाना नहीं भूलते, क्योंकि चना खाने की अपेक्षा वह भुट्टा बड़े प्रेम, स्वाद और तल्लीनता से खाता है।

(आगामी अंक में समाप्य)

---

* तात्पर्य माननीय बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन से था। श्रद्धेय टंडनजी की आज्ञा थी कि पूज्य द्विवेदीजी से सम्मेलन का सभापतित्व स्वीकार कर लेने के संबंध में प्रार्थना की जाय।—सुधा-संपादक

‘कौंटे-रोसो’ में दशहरा

[श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास]

हमारी गत वर्ष (सन् १९३७) की विजया दशमी ‘कौंटे-रोसो’ में हुई थी। अपने-अपने घर पहुँचने की उमंग-भरे हुए यात्रियों ने बड़े उत्साह से अपना यह पवित्र त्योहार मनाने का आयोजन किया था।

सर्व-प्रथम फ़र्स्ट क्लास के यात्रियों में इस बात का ज़िक्र छिड़ा कि कल दशहरा है, जहाज़ में, सागर की उछलती हुई उन्मादमयी लहरों पर, यह मिलन-त्योहार अवश्य मनाया जाय।

इस जहाज़ में अधिकतर भारतीय यात्री थे—सर पुरुषोत्तमदास-ठाकुरदास, श्रीघनश्यामदासजी बिड़ला, श्रीकस्तूरभाई-लालभाई और बंबई की मर्सीडिज़ कार-कंपनी के प्रमुख सेठ मुकुंदराव राणे, बैरिस्टर वैलिणकर इत्यादि। जहाँ तक पता चला, श्रीदेशपांडे-नामक सज्जन ने, जो बड़े ही उत्साही ज्ञात होते थे, इस चर्चा को उठाया था, और सर पुरुषोत्तमदास-ठाकुरदास इसमें अगुआ हो गए। उन्होंने स्नेह के साथ सभी यात्रियों से मेल-जोल स्थापित किया, और कल का उत्सव मनाने को प्रेरित भी किया। जहाज़ में एक हरिकीर्तनकार दक्षिणी सज्जन भी थे। यह प्रेतात्मवाद-प्रवर्तक श्रीवी० डी० ऋषि के संगी-साथी थे। सूरत-शकल से तो कोई विशेषता विदित न होती थी, किंतु सभी यात्रियों के लिये वह आकर्षण का विषय अवश्य थे। वह मुणेरी साफ़ा बाँधे और अँगरखा पहने रहते, इसलिये उनकी ओर सभी की दृष्टि अवश्य रहती। और, वे अँगरेज़-युवतियाँ, जो खिलाड़ी-मिज़ाज की थीं, इनकी झाँकी करती रहतीं। कुछ तो फ़ोटो खींचतीं। हरिदास बुआ इन बातों में बड़ा रस लेते। कुछ दिन बीत जाने पर उन अँगरेज़-युवतियों ने ‘कथाकरी’ सज्जन की मनोवृत्ति पहचान ली। वे कभी इनके सिर पर से साफ़ा या मुणेरी पगड़ी और डुपट्टा (जब यह पहन लेते) उतारकर अपने सिर पर रख लेतीं। पंडितजी के गले में बाहें डाले फ़ोटो खिचवाती रहतीं। जहाज़ के यात्री इनका यह रंग देखते रहते, और तरह-तरह की टीकाएँ करते जाते। दशहरे के रोज़ श्रीदेशपांडेजी ने हरिदास बुआ से कीर्तन के लिये कहा। भला, इस सुअवसर को यह कब छोड़ते? इन्होंने यह स्वीकार कर लिया। सर पुरुषोत्तमदास-ठाकुरदास जितने धन-मान-प्रतिष्ठा के नाते बड़े हैं, उतने ही सरल और सहृदय भी। ‘लंच’ से निवृत्त हो हम लोग अपने-अपने केबिन की

और जा रहे थे। मुझे सहसा हाथ पकड़कर रोक दिया। कहने लगे—"कल का उत्सव ठीक हो जायगा। अच्छा हुआ, कीर्तनकार भी मिल गए हैं !"

मैंने कहा—"कीर्तनकार का तो अजीब रंग-ढंग है, क्या कहेंगे वह ?"

वह बोले—"राम-कथा सुना दें, तो बस है। और, कुछ भी हो, आप शामिल ज़रूर होइए।"

जहाज़ में श्रीबिड़लाजी और सर पुरुषोत्तमदास-ठाकुरदास बैठे हैं। कथा हो रही है।

मैंने कहा—"मेरा विश्वास नहीं कि वह राम-कथा भी कह सकेंगे, क्योंकि एक राज़ मुझे राह चलते एक सज्जन ने उनके शास्त्री होने की बात कहकर परिचय दिया था। मैंने उनसे संस्कृत में बातें शुरू कीं, पर वह तो मौन-स्तब्ध हो मेरा मुँह ताकते रहे, बोल ही न सके। फिर हिंदी में पूछा, तो भी समाधान-कारक उत्तर न दे सके, इसलिये मुझे तो भम है।"

सर पुरुषोत्तमदास-जैसे भावुक प्राणी ने शंका नहीं की। वह अपनी गुजराती-हिंदी-मिश्रित भाषा में बोले—"उत्सव मन जाएँ, चलों, हो गएँ।"

दूसरे रोज़ शाम के समय जहाज़ के एक सुसज्जित हॉल के सुंदर स्थान में जहाज़ के कैप्टेन महोदय ने बैठक की व्यवस्था करवा दी। श्रीदेशपांडेजी और उनके स्नेही सज्जनों के उद्योग से वह हॉल भी भारतीय मंदिर में परिवर्तित हो गया था। धूप की सुरभि से वायुमंडल व्याप्त हो गया था। ठीक समय पर यात्रीगण अपनी भारतीय वेश-भूषा में सज-सजकर आने लगे। देवियाँ भी उपस्थित हो गईं। अब पंडितजी की बारी थी। उन्हें जब एक व्यक्ति बुलाने गया, तब वह ज़रीन डुपट्टा और मुरेठी पगड़ी धारण कर सभा में आए। आरंभ ही में उन्होंने एक अशुद्ध श्लोक से मंगलाचरण किया। इसके

उच्चारण से ही श्रीघनश्यामदासजी बिड़ला ने भविष्य की कल्पना कर ली। बिड़लाजी उच्च कोटि के धनिक और दानवीर ही नहीं, प्रत्युत बहुत सुसंस्कृत भी हैं। उनका विभिन्न विषयों का गहरा अध्ययन है। संस्कृत-साहित्य के भी वह सुलझे हुए जानकार हैं। इतने पर भी कितने निरभिमान, सरल और सज्जन हैं कि उनके प्रति हृदय में उच्च भावना उदय हुए विना नहीं रह सकती। (उनके विषय में मुझे समय मिलने पर काफ़ी लिखना है।) हाँ, तो कीर्तनकार ने कथा आरंभ की। आरंभ ही में वह बहकने लगे, कथा का विषय छोड़ भारतीय जनों की टीका-टिप्पणी करने लगे। देवताओं पर भी असम्मान उत्पन्न होने-जैसी टीकाएँ आरंभ कीं। इससे सहृदय बिड़लाजी धीरे-धीरे बहुत असंतुष्ट हो रहे थे। वह बार-बार श्रीदेशपांडेजी को बुला रहे थे, और कह रहे थे—"विषय पर बोलने को कहिए। अब रोक दीजिए, कथाकरी बुआ को 'स्लिप्' दी गई।" पर वह क्यों परवा करने लगे? उनकी स्थिति के लोगों के लिये 'स्लिप्' का क्या महत्त्व? परंतु वह तो बार-बार रोके जाने पर भी, मानापमान का ख़याल न कर, अंट-संट कहे ही जा रहे थे। तब तो बिड़लाजी को असह्य हो उठा। वह सभा छोड़कर जाने को तैयार हो उठे। तब कहीं पंडितजी लज्जा की हँसी हँसते हुए, मानो कोई घटना ही न हुई हो, इस तरह सानंद यथास्थान आ बैठे। इस घटना से कोई आनंद नहीं आया, बल्कि एक उदासीनता का वातावरण बन गया। तुरंत ही श्रीदेशपांडेजी ने 'मीरा' का एक मनोहारी गीत हार्मोनियम पर छेड़ दिया। उनकी वह सुमधुर चीज़ आनंदांबुधि में निमग्न कर देने को पर्याप्त थी। सभी आनंद-विभोर हो गए। अर्से के बाद भारतीय मधुर संगीत सुनने का अवसर आया था, वहीं भी श्रीदेशपांडेजी के कोमल कंठ से। सदस्य के आग्रह से एक और भजन कहलाकर विजया दशमी का त्योहार मनाया गया।

दूसरी ओर देवियाँ कथा सुन रही हैं।

आज के उत्सव की मान-रक्षा श्रीदेशपांडेजी ने ही की। सर पुरुषोत्तमदासजी ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"व्यासजी ने पहले ही 'कथाकरी' का वर्णन किया था, वह ठीक ही था।" परंतु बिड़लाजी को तो भारतीय अपमानकारक कथा से एक प्रकार की खिन्नता ही थी।

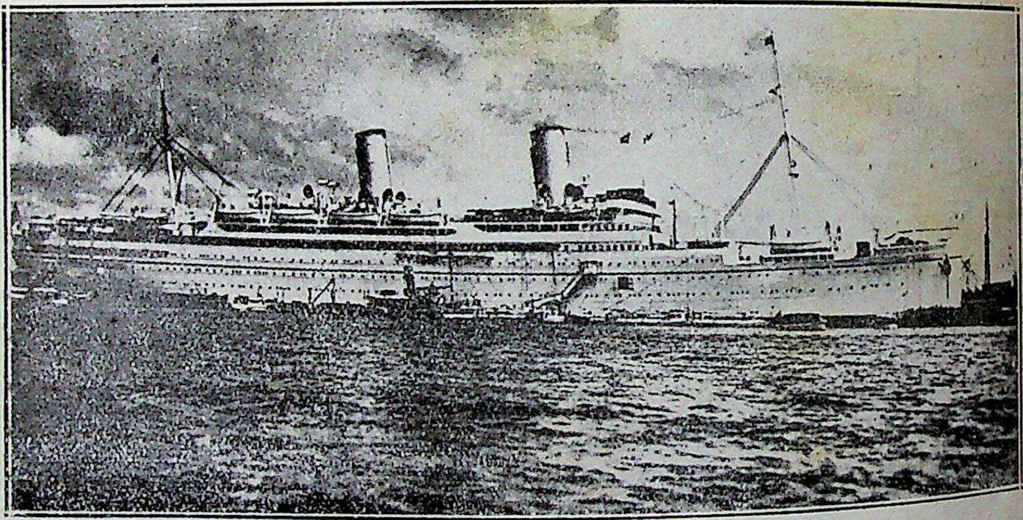

जहाज़

दूसरे रोज़ सेकंड क्लासवाले समस्त यात्रियों ने मिलकर फिर एक आयोजन कर डाला। आज सर पुरुषोत्तमदास सभापति थे। कल की घटना से सावधान होने के कारण आज का प्रोग्राम बड़ा सुंदर था। इसमें एक बंगाली वृद्धा देवी और एक गुर्जर सज्जन का बहुत हाथ था। मिस पद्मा-नामक पंजाबी महिला और एक बंगाली सज्जन का संगीत होने पर कुछ लोगों के अध्ययन-पूर्ण भाषण हुए। एक मदरासी अय्यर और मजूमदार तथा घोष बाबू के भाषण एवं काव्य-गान हुए। एक वृद्ध सज्जन ने ब्रजभाष की दो कविताएँ भी कहीं। प्रोग्राम के अंत में आज एक दूसरे से भेंट कर रहे थे, गले लगकर मिल रहे थे। इस मधुर मिलन का दृश्य बहुत ही भावना-पूर्ण हो रहा था। इधर समुद्र की उत्ताल तरंगें एक दूसरी से उछल-उछलकर मिल रही थीं। इधर सागर-हृदय में, वीचि-वल्लरियों पर, प्रवाही पोत में, मानवों का मिलना कितना स्वाभाविक और भावमय था। दशहरे के दो दिन जहाज़ में अपने घर की याद दिला रहे थे। आनंद और उल्लास से भरे हुए हृदयों का पवित्र दशहरा 'कौंटे-रोसो' की मधुर स्मृति बना रहेगा। यह इटैलियन जहाज़ था, इस कारण इतनी सुव्यवस्था के साथ उत्सव मनाया जा सका, और कैप्टेन महाशय की सहृदयता-पूर्ण सहानुभूति रही। वह स्वयं उत्सव में सम्मिलित हो गए थे।

श्रीरामकुमारजी वर्मा के एकांकी नाटक*

[श्रीयुत सत्यप्रसाद थपलियाल]

अपनेपन और पक्षपात का अन्योन्याश्रय संबंध है। इसी धारणा से अभिभूत होने के कारण कुमारजी की कृतियों की आलोचना करने का मुझे आज तक साहस नहीं हुआ था। गत चार वर्षों से कुमारजी के साथ निकटतम संपर्क रहने के कारण उनसे मैं पूर्णतया परिचित हूँ। ऐसे तो उनकी रचनाओं को मैं कभी से आदर-पूर्ण दृष्टि से देखता आ रहा था, किंतु गत वर्ष हिंदी और हिंदू-संस्कृति के प्रेमी और मेरे मित्र मोशिए मेल ने मेरी श्रद्धा को और भी उकसाया। मैंने कुमारजी की कुछ कविताएँ उन्हें समझाईं। कविताओं के भावों पर मुग्ध होकर वह उछल पड़े। उन्होंने कहा—"ये कविताएँ फ्रेंच कविताओं की टक्कर की हैं, परंतु प्रकृति के अंतर्दर्शन की दृष्टि से उनसे भी कहीं बढ़कर हैं।" इस कथन में कहाँ तक सत्यता है, फ्रेंच कविता से अपरिचित व्यक्ति नहीं बतला सकता।

मैं तो सौंदर्य के निरीक्षण, उसके पृथक्करण तथा उसके अभिव्यंजन को ही सच्ची समालोचना का प्रधान तत्त्व समझता हूँ†। आधुनिक हिंदी-कविता में वेदना-संबंधी कविताओं का प्रमुख स्थान है, और कुमारजी ने हिंदी-कविता की इस धारा को पूर्ण करने में प्रचुर योग दिया है। वह अनंत विश्व का पुनीत प्रतीक अपनी विधुर आत्मा में खोज सके हैं। आत्मानुभूति की प्रेरणा का स्फुट स्वरूप देखने में वह सर्वथा सफल हुए हैं—

क्या शरीर है ? शुष्क
धूल का थोड़ा-सा छवि-जाल ;
उस छवि में ही छिपा
हुआ है यह भीषण कंकाल।

उन्होंने "काले भावों की रजनी में आशा का अभिसार" कई बार छिपकर देखा, और इस परिणाम पर पहुँचे कि "जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति करुणा की लेखनी से अधिक सफलता-पूर्वक लिखी जा सकती है। केवल कविता के क्षेत्र में ही नहीं, नाटकों के क्षेत्र में भी मेरा यही अनुभव है।"

यहाँ मुझे उनकी कविता की व्याख्या नहीं करनी है। उनके एकांकी नाटकों को समझने के लिये उनके जीवन-संबंधी सिद्धांतों का ज्ञान आवश्यक समझकर ही ये पंक्तियाँ लिखी गई हैं। एकांकी नाटकों में पात्रों के मनोवेगों और उनकी रागात्मक प्रवृत्तियों का ही विश्लेषण होता है। इसीलिये वे कविता की श्रेणी में गिने जा सकते हैं।

कुमारजी कविता-क्षेत्र से नाटक-क्षेत्र में क्यों आए ? वह कहते हैं—"कविता के साथ एकांकी नाटकों की रचना भी होती रही, किंतु उसी समय, जब मेरी इच्छा किसी ऐसे चरित्र के निर्माण करने की हुई, जिसे मैं अपनी अभिनयात्मक कविता में भी प्रदर्शित नहीं कर सकता था।" उनका सबसे पहला नाटक 'बादल की मृत्यु' इस कथन की पुष्टि करता है। यह नाटक उन्हें कविता-क्षेत्र से अधिक दूर नहीं ले जाता। वह अभिनयात्मक कविता है। बादल संध्या को अपनी बनाने का प्रयत्न करता है,

---

* 'पृथ्वीराज की आँखें'—प्रकाशक, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ ; मूल्य ॥।), सजिल्द १) ; छपाई सुंदर।

† "To peep beauty, to detact beauty and to express beauty is true criticism."

किंतु वायु (प्रभंजन) उसके अरमानों के साथ उसे भी चूर कर देता है । इसमें संकेत है—मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति आशावाद का प्रत्याश्रय लेती है, किंतु नियति को यह रुचिकर नहीं प्रतीत होता । नाटक के रूप में कवि के मनोवेग अधिक सजीव हो गए हैं, अधिक तीव्र हो गए हैं। उनमें स्फूर्ति-पूर्ण जीवन का संचार हो गया है ।

कुमारजी नाटक की परिधि को 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' से बहुत दूर तक खींचना चाहते हैं। वह 'रूपक' नाम को पूर्ण नहीं समझते, क्योंकि उसमें वस्तुओं का स्थित रूप ही समाविष्ट रहता है। वस्तुओं के रूप में परिवर्तन होता है। अतीत और वर्तमान की अनुभूति के आधार पर सत्यता के भावी रूप को चित्रित करने में ही वह कला की चरम अभिव्यक्ति समझते हैं। स्थिरता, अनुकूलन और परिवर्तन से ही स्थायी वस्तु का स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है। प्रकृति की सभी वस्तुओं की स्थिति के मूल में 'संघर्ष' सन्निहित रहता है। मानव-प्रकृति और बाह्य प्रकृति में बिंब-प्रतिबिंब का संबंध है, इसलिये मानव-प्रकृति भी संघर्षमय है। नाटक में इसी संघर्ष का चित्र उपस्थित करना अभिप्रेत होता है। नाटककार कभी अंतःप्रकृति का बाह्य प्रकृति के साथ संघर्ष दिखाता है, कभी अंतःप्रकृति की विभिन्न परिस्थितियों का पारस्परिक संघर्ष और कभी बाह्य प्रकृति के विभिन्नांगों का संघर्ष। कुमारजी के नाटकों में आंतरिक संघर्ष को ही प्राधान्य दिया गया है। वह बाह्य संघर्ष को विनोद समझते हैं । अँगरेज़ उपन्यासकार जॉर्ज मेयरडिथ उपन्यास को (और यही साधारण साहित्य पर भी लागू होता है) वास्तविक जीवन का सूक्ष्म रूप मानते थे। वह उसमें मानव-जीवन के आंतरिक और बाह्य, दोनो रूप देखना चाहते थे, किंतु प्रधानता आंतरिक रूप को ही देते थे, क्योंकि उसी के चित्रण में गंभीर तत्त्वों का विवेचन हो सकता है *। नाटक में अनुकरण प्रधान होता है, किंतु भावनाओं के आवागमन का ही। इसी के बल पर नाट्यकार दर्शकों और पाठकों को अपने अभिप्रेत का अनुभव कराने में सफल होता है। यही माध्यम है, जिससे ग्राहक विधायक की रचना में अपनत्व की झलक पाता है—झलक ही नहीं, साक्षात् मूर्ति पाकर मुग्ध हो सकता है।

एकांकी नाटक गल्प की भाँति ही हिंदी-साहित्य को अँगरेज़ी-साहित्य की देन है। कविता-क्षेत्र में प्रबंध-काव्य के साथ गीत-काव्य मिलता है, कथा-क्षेत्र में उपन्यास के साथ कहानी मिलती है, और दृश्य-काव्य में नाटक के साथ एकांकी नाटक। संस्कृत-रूपकों में महानाटक के साथ-साथ व्यायोम, नाटिका आदि छोटे-छोटे रूपक भी मिलते हैं; किंतु हिंदी के एकांकी नाटकों पर संस्कृत के इन एकांकी नाटकों का कुछ भी प्रभाव नहीं। अँगरेज़ी-साहित्य में इँगलैंड की सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप (कम समय में अधिक आनंद-प्राप्ति की प्रवृत्ति के परिणाम-स्वरूप) एकांकी नाटकों का प्रचार हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में तो इनकी रचना अधिक नहीं हुई, किंतु बीसवीं शताब्दी में इनकी एक तरह से बाढ़-सी आ गई ।

हिंदी में एकांकी नाटक बहुत ही कम लिखे गए हैं। 'प्रसाद'जी की 'एक घूँट' साहित्यिक नाटकों की कोटि की है। प्रसादजी की गंभीर अनुभूतियों का ही चित्रण उसमें मिलता है। पं० गणेशप्रसाद द्विवेदी के एकांकी नाटकों में गुदगुदी उत्पन्न करने की शक्ति है। उनमें कौतूहल है, रोमैंस है, किंतु उनमें

---

* "The fiction which is the summary of actual life, the within and without of us, is, prose or verse, plodding or soaring, philosophy's elect hand-maiden."

(Diana of the crossways.)

जीवन अवतरित नहीं होता* । 'कारवाँ' नाम से एक नौसिखे नवयुवक (श्रीभुवनेश्वरप्रसाद) के एकांकी नाटकों का संग्रह लीडर-प्रेस से प्रकाशित हुआ है। पर लेखक को तो एकांकी नाटक का स्वरूप ही नहीं मालूम है । एक अंक में एक से अधिक दृश्यों का होना बुरा नहीं, किंतु दृश्यों के बीच में एक सप्ताह का अंतर अजीब-सी बात है। दूसरी बात, दृश्य के बीच में पाँच मिनट तक सन्नाटा किसी भी दर्शक को बेचैन कर सकता है। इन नाटकों में जो सौंदर्य है, वह चोरी का है, और जो चीज़ लेखक की अपनी है, वह सस्ती भावुकता, सनसनीख़ेज़ और ऊलजलूलपन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। पं० गोविंदवल्लभ पंत ने इस दिशा में सफलता-पूर्वक पग बढ़ाया है, किंतु एकांकी नाटक में उन्होंने व्यंग्य और हास्य को ही प्राधान्य दिया है। 'पर्दा-तोड़क क्लब'† और 'ख़ूनी लोटा'† इसके उज्ज्वल दृष्टांत हैं। जैनेंद्रजी ने अपनी कहानी 'परदेशी'† को नाटक के रूप में रखने का प्रयत्न किया है, और उसमें वह कुछ हद तक सफल भी हुए हैं। 'विशाल भारत' द्वारा श्रीललिताचरण गोस्वामी—एक उदीयमान लेखक का परिचय मिला है। देखें, इनकी कला किस रूप में विकसित होती है। कुछ और भी प्रयत्न इस ओर हुए हैं, और होते जा रहे हैं।

ऐसी परिस्थिति में यदि कहें कि रामकुमारजी ही इस पथ के अगुवा हैं, तो अत्युक्ति न होगी। उन्होंने एकांकी नाटक की यह कसौटी रक्खी है—

"एकांकी नाटक में अन्य प्रकार के नाटकों से विशेषता होती है। उसमें एक ही घटना होती है, और वह घटना नाटकीय कौशल से ही कौतूहल का संचय करते हुए चरम सीमा तक पहुँचती है। उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। एक-एक वाक्य और एक-एक शब्द प्राण की तरह आवश्यक रहते हैं। पात्र चार या पाँच ही होते हैं, जिनका संबंध नाटक की घटना से संपूर्णतया संबद्ध रहता है। वहाँ केवल मनोरंजन के लिये अनावश्यक पात्र की गुंजाइश नहीं। प्रत्येक व्यक्ति की रूप-रेखा पत्थर पर खिंची हुई रेखा की भाँति स्पष्ट और गहरी होती है। विस्तार के अभाव में प्रत्येक घटना कली की भाँति खिलकर पुष्प की भाँति विकसित हो उठती है। उसमें लता के समान फैलने की उच्छृंखलता नहीं। घटना के प्रत्येक भाग का संबंध मनुष्य-शरीर के हाथ-पैरों के समान है, जिसमें अनुपात-विशेष से रचना होकर सौंदर्य की सृष्टि होती है। कथा-वस्तु भी स्पष्ट और कौतूहल-युक्त रहती है, और उसमें वर्णनात्मक की अपेक्षा अभिनयात्मक तत्त्व की प्रधानता रहती है। इस प्रकार एकांकी नाटक की रचना साधारण नाटक की रचना से कठिन है। उसमें विस्तार के लिये अवकाश ही नहीं। अतएव स्वाभाविकता के साथ नाटकीय कथा-वस्तु का प्रारंभ, विकास, चरम सीमा और अंत बिना किसी शैथिल्य के हो जाना चाहिए। जिस प्रकार कहानी उपन्यास से भिन्न है, उसी प्रकार एकांकी नाटक साधारण नाटक से।"*

यह संक्षेप में एकांकी नाटक की संपूर्ण समालोचना है। 'पृथ्वीराज की आँखें' के सभी नाटक इन्हीं विचारों के आधार पर लिखे गए हैं। प्रतिभा, अध्ययन, अभ्यास और रचना-कौशल का पुंजीभूत रूप कुमारजी के नाटकों में मिलता है, इसमें कोई संदेह नहीं।

सभी नाटकों में हमें लेखक के 'अंतर्द्वंद्वों की कहानी' मिलती है। चराचर की विषमता दूर करने का प्रयत्न, अपना सुख त्याग दूसरों को सुख पहुँचाने की भावना, अनजाने ग़लती कर, जीवन को पश्चात्ताप की कसौटी पर कसकर

---

* 'सोहाग की डिबिया' नाम से उनके एकांकी नाटकों का संग्रह इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ है।

† ये 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए हैं।

* पूर्वरंग, पृष्ठ १३-१४।

संसार को आह्लाद प्रदान करना, दूसरों के अपराधों को अपनाकर अपूर्व बलिदान का परिचय देना और मरते दम तक स्वाभिमान की रक्षा करते हुए आत्मीय जनों की चिंता रखना लेखक के आदर्श हैं। इन्हीं आदर्शों का प्रस्फुरण इन नाटकों में सजीवता के साथ हुआ है।

कुमारजी का हृदय कवि-हृदय है। इसलिये नाटकों में जहाँ कहीं सुकुमार भावनाओं का समावेश आरंभ होता है, वहीं उनका कवि प्रबल हो जाता है। वह वस्तु-जगत् की सीमा पार कर निःसीम प्रकृति के प्रांगण में क्रीड़ा-रत हो जाता है। किंतु यह प्रवृत्ति नाटक में शिथिलता नहीं लाती।

जीवन में वेदना का प्राधान्य माननेवाले कुमारजी ने नाटकों को दुःखांत ही रक्खा है। इनका दुःखांत प्राचीन भारतीय कर्मवाद या भाग्यवाद के आश्रय नहीं। परिस्थितियों के स्वाभाविक क्रम को रखते हुए ही इन्होंने अपने नाटकों को दुःखांत किया है। इनका नाटक अरस्तू या शेक्सपियर के सिद्धांतों के अनुरूप चरित्र की दुर्बलता के कारण दुःखांत नहीं होता। न मेटरलिंक के सिद्धांत के अनुरूप इनके पात्र विचारों में डूबे हुए, आत्मा के एकाकीपन पर आँसू बहाते हुए दुःखांत की सृष्टि करते हैं, और न किसी अन्य योरपीय सिद्धांत की छाया ही इनके नाटकों को प्रभावित किए हुए है। हिगेल के सिद्धांत से इनके सिद्धांत कहीं-कहीं मिलते हैं। इनके सभी नायक आदर्श व्यक्ति हैं। सामाजिक परिस्थिति, नियति के क्रूर चक्र या अपनी आदर्शवादिता के कारण ही इनका अंत दुःखमय होता है। आज अपने जीवन को एक वेदना-पूर्ण दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति व्याप्त है। मनुष्य समाज की लौह दीवारों को सिर पटक-पटककर तोड़ना चाहते हैं, किंतु जैसे पक्षी पिंजरे को अपनी चोंच के आघातों से तोड़ने में असफल होकर मन मसोस रह जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी समाज के बंधनों से मुक्त नहीं हो पाता। उसका हृदय भर आता है। आहें भरने और रोने के अतिरिक्त सांत्वना का कोई उपाय उसके पास नहीं रह जाता। आज के समाज की संस्कृति अनेक विकृतियों की समष्टि है। ऐसी परिस्थिति में सुकुमार हृदय को आत्मरुदन के संगीत में आनंद होता है। यह संगीत उसे अर्थ से दूर ले जाता है। उसकी लय जग-विषमता की मानसिक समता के दिग्दर्शन कराती है।

कुमारजी के नाटकों में कार्यों और विचारों की एकता का सर्वत्र ध्यान रक्खा गया है। उन्होंने सभी नाटकों की घटनाओं को कार्य-कारण की शृंखला में बाँध रक्खा है। चरित्र-चित्रण घटनाओं के स्वाभाविक विकास के आधार पर हुआ है। उनके सभी पात्र अपना ख़ास व्यक्तित्व रखते हैं। नाटक में सभी अपना पार्ट अच्छी तरह अदा करते हैं। वे घटनाओं के घात-प्रतिघात में अस्वाभाविक गति नहीं अपनाते। अंतर्द्वंद्व-विश्लेषण को जिस प्रवृत्ति का श्रीगणेश योरप में इब्सन ने किया था, वही रामकुमारजी के नाटकों की विशेषता है। हमारे राष्ट्रीय जीवन के अनुरूप ही उनके नाटकों में भूत, वर्तमान और भविष्य को एकत्र कर अग्रसर होने की प्रवृत्ति मिलती है। उनके पात्र अतीत को वर्तमान में संजीवित कर उसे भविष्य की ओर ढकेलते दृष्टिगत होते हैं। उनके आदर्शवाद की संक्षिप्त व्याख्या यही है।

आज के समाज में एक ओर भोग-लालसा शतजिह्वा हो अपना कराल रूप दिखा रही है, और दूसरी ओर साहित्यिकों की सौंदर्य-वृत्ति समाज-बोध और आध्यात्म-बोध का मिश्रण कर रही है। उसमें सामाजिक और राष्ट्रीय तत्त्व के साथ-साथ वैज्ञानिक और आध्यात्मिक तत्त्व भी अंगीभूत हो रहे हैं। "इन लोगों की प्रतिभा बिहारी के समान रमणी के क्षण-विभ्रंशि सुवर्ण

में न फँसकर उसकी अंतस्तली में घुसती है, और वहाँ पार्थिव प्रेम के उत्थान और पतन का चुभता हुआ नाटक खेलकर असीम तथा अपरिमित लोकोत्तर सौंदर्य का चमत्कार देखती है। इसीलिये जहाँ बिहारी आदि प्राचीन कवियों का रमणी-चित्रण मन में विषयैषणा की गुदगुदी उठाता है, वहाँ कुमार का प्रेम-चित्रण विषयैषणा पर हिमजल बरसा चेतन कणों की धूमायमान अग्नि को शांत कर देता है।"*

प्रस्तुत संग्रह में छ एकांकी नाटक संगृहीत हैं—चंपक, ऐक्ट्रेस, नहीं का रहस्य, बादल की मृत्यु, दस मिनट और पृथ्वीराज की आँखें। प्रत्येक का संक्षिप्त विश्लेषण कर इस लेख को समाप्त करना उपयुक्त होगा।

१. चंपक

किशोर नवयुवक परदुखापेक्षी कवि है। वह सड़क के किनारे पड़े हुए मृतप्राय कुत्ते को पाकर अत्यंत दुखी होता है, और अपनी प्रेम-हिलोरों से उसे स्निग्ध बना देता है। दुखियों की सेवा में बाधा पहुँचती देखकर वह इस प्रिय कुत्ते (चंपक) को एक संभ्रांत युवती शकुंतला के पास बेच देता है। कुत्ते के वियोग में उसकी सात वर्ष की छोटी बहन दुखी होती है, किंतु वह अपने भ्रातृप्रेम से उसे संतुष्ट कर लेता है। वह भी बेचैन होता है। इतने में एक वृद्ध भिखारी रोटी माँगता हुआ आता है, और किशोर का प्रीति-भाजन बन जाता है। बातों के सिलसिले में किशोर को मालूम होता है कि इसी वृद्ध ने उसके चंपक को कष्ट पहुँचाया था, क्योंकि चंपक को दूध-पूड़ी मिलती थी, और वृद्ध को सूखी रोटी भी नहीं। किशोर ग्लानि और दया के भँवर में फँस जाता है। वृद्ध भी आत्मग्लानि से विह्वल होकर बिना खाए ही चला जाता है।

इस नाटक में लेखक का दृष्टिकोण स्पष्ट हो गया है। वह विश्व की विभूति के मूक भाग में भी अपना-सा जीवन खोजते हैं। किशोर के चरित्र में लेखक का चरित्र निखर आया है। किशोर कहता है—"मैं केवल उसी को प्यार करना चाहता हूँ, जिसका साथ देने में सबको आपत्ति है।...जिसकी साँस में हवा के स्थान में वेदना है, उसी के समीप रहकर मैं उसकी सेवा करना चाहता हूँ।"* वह फिर कहता है—"दूसरों की वेदना मैं अपने जीवन में रखकर उसे सुखी कर देना चाहता हूँ। लोग कहते हैं, मेरा जीवन एक करुण गान है, पर उस करुण गान का सबसे मीठा स्वर है यह चंपक। इसे भी अब दूर कर किसी दूसरे मीठे स्वर की खोज करूँगा।"†

मानव-जीवन का उद्देश्य ही विश्वबंधुत्व है। प्राणि-मात्र को समदृष्टि से देखने में ही कला की चरम अभिव्यक्ति संभाव्य होती है। म० टॉल्स्टॉय ने कलाकार के समक्ष यही कसौटी रक्खी है। कलाकार को स्वार्थ-भरा जीवन व्यतीत नहीं करना चाहिए। अहंकार और लिप्सा के दूषित वातावरण से उठकर, समस्त चराचर के साथ तादात्म्य स्थापित कर आध्यात्मिक संपत्ति के लिये हृदय विस्तृत करना चाहिए।

इस नाटक में किशोर के जीवन-चरित्र का यह एक पहलू कुतूहल-पूर्ण रचना-सौष्ठव के साथ चित्रित किया गया है। वृद्ध भिखारी के आवेश-पूर्ण उद्गारों में विश्व-व्यापी साम्यवाद की लहरों के मृदुल छींटे हैं। वृद्ध अधिक भावुक हो गया है, किंतु उसकी भावुकता क्षम्य है। उसका हृदय दहल रहा था। उससे चिनगारियाँ फूट-फूटकर बिखर रही थीं। किशोर के आर्द्र हृदय के संपर्क में आकर उसके हृदय की ज्वाला शांत हो जाती है, और वह भावुक हो उठता है।

२. ऐक्ट्रेस

प्रभा पच्चीसवर्षीया सुंदर अभिनेत्री "अपनी भूमिका में अपने प्राणों को डालकर अपने को

---

* श्रीसूर्यकांत शास्त्री—हिंदी-साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, पृष्ठ ५१३।

* पृष्ठ १०। † पृष्ठ ११।

भूल जाना चाहती है।" उसके अभिनय में "जीवन जैसे झरने की तरह फूट पड़ता है।" पत्र-जगत् उसकी प्रशंसा के गीत गाता है। 'चारु चित्र' का संपादक अनंगकुमार अपनी पत्नी कमलकुमारी के साथ उसके पास जाता है—उसका पूर्ण परिचय प्राप्त करने। वह अपना परिचय नहीं देती—उसने किसी को भी नहीं दिया था। संपादक डाइरेक्टर के पास परिचय के लिये जाता है। कमलकुमारी और प्रभा एक दूसरे पर मुग्ध हो जाती हैं। कमलकुमारी बातों-बातों में ही प्रभा का परिचय प्राप्त कर लेती है। प्रभा अनंगकुमार की लज्जाशील पत्नी थी। अनंगकुमार उसे अपनी उच्छृंखलता में बहाना चाहता था। वह नहीं मानी। निकाल दी गई। दोनो 'बहनें' रोती हैं। कमल उसे वापस होने के लिये बाध्य करती है। प्रभा उसके सुख को अखंड बनाए रखने के लिये नदी में डूबकर मर जाती है।

प्रभा और अनंगकुमार के अंतर्द्वंद्वों का इस नाटक में बहुत ही हृदय-द्रावक चित्रण हुआ है। प्रतिक्रिया ने दोनो के जीवनों को संघर्षमय बना दिया था। अनंगकुमार उच्छृंखलता और वासना से संयमी पुरुष बन गया था, और प्रभा लज्जाशील स्त्री से चतुर अभिनेत्री। लेखक ने प्रभा के चरित्र की महत्ता को अक्षुण्ण रक्खा है। वह प्रेम-अभिनय करती थी, किंतु चुंबन और आलिंगन उसके अभिनय-क्षेत्र के बाहर की वस्तुएँ थीं। वह संसार के दुखों को दुख नहीं समझती थी। ब्राउनिंग की भाँति उसकी भी एक कामना थी—"हमारे सुख बारह आने दुख हों।"* कमलकुमारी आदर्श सौत है। प्रभा को अपनी सौत समझकर भी उसे वह अपने पति को देना चाहती है। प्रभा प्रेमचंदजी की ऐक्ट्रेस तारा के समान ही उत्सर्ग को जीवन की सबसे बड़ी विभूति समझती थी। कुमारजी की रचनाओं में यह नाटक एक नवोन्मेषिणी प्रतिभा का द्योतक है।

३. नहीं का रहस्य

हरिनारायण युनिवर्सिटी-प्रोफ़ेसर हैं। अध्ययन और प्रेम उनके जीवन के साथी हैं। हरिनारायण के मित्र ब्रजकिशोर के पुत्र विष्णुकुमार अपने विवाह का निमंत्रण लेकर आते हैं। हरिनारायण व्यथा-पूर्ण प्रसन्नता प्रकट करते हैं। विष्णु उनसे उनके अविवाहित रहने का कारण पूछता है। वह संकोच-वश बतलाते हैं कि उनके पिताजी द्वारा उनके विवाह के प्रस्ताव पर उन्होंने 'नहीं' कह दिया था, यद्यपि वह दिल से उस लड़की को प्यार करते थे। नियति के इस फेर ने उन्हें चिरंतन विधुर बना दिया। अब वह समस्त संसार को अपना समझते हैं। उनके स्नेह की व्यापकता का परिचय देने के लिये लेखक ने मनमोहिनी और राधारानी दो छात्राओं का परिचय दिया है। ये प्रोफ़ेसर साहब को अपना पिता समझती थीं। राधा की सोलहवीं वर्षगाँठ के उत्सव में प्रोफ़ेसर साहब को आमंत्रित करने आई थीं। वे विष्णु को भी आमंत्रित करती हैं। यहाँ लेखक ने युवक-हृदयों की चहल-पहल का परिचय भी दिया है। इस नाटक में प्रो० हरिनारायण का मानसिक चित्र बड़ी कुशलता से दिखाया गया है।

४. बादल की मृत्यु

इसका परिचय लेख के आरंभिक अंश में दिया गया है। इसमें बादल के मनोवेगों का अभिनयात्मक रूप में चित्रण किया गया है।

५. दस मिनट

यह नाटक प्रयाग-विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा, सन् १९३४ ई० में, अभिनीत हुआ था। इसमें १८५७ की ग़दर के बाद का (जब पुलिस अपने कार्य में पूर्ण सतर्क नहीं थी) दृश्य चित्रित किया गया है। अपनी बहन वासंती पर मैली दृष्टि डालने-वाले केशव की हत्या कर बलदेव अपने मित्र महादेव के घर आता है, और अपनी बहादुरी का

---

* "Be our joys three parts pain."

परिचय देता है। पुलिस को इस हत्या का पता लग जाता है। वह हत्यारे की तलाश में निकलती है। महादेव बलदेव को वापस घर भेज देता है, और स्वयं उसके ख़ून से रँगे कपड़े पहनकर अपने को पुलिस के हवाले कर देता है।

महादेव का अपूर्व त्याग दिखाने के साथ-साथ इस नाटक में लेखक ने अभिनयात्मक पहलू को भी बहुत ही आकर्षक और प्रभावोत्पादक शैली में चित्रित किया है। स्टेज पर इसका अभिनय देख दर्शकों के रोंगटे खड़े हो सकते हैं। इसका अभिनय बड़ी सफलता के साथ हुआ भी था।

६. पृथ्वीराज की आँखें

यह पृथ्वीराज-रासो के आधार पर पृथ्वीराज के अंतिम दिनों का एक हृदय-द्रावक चित्र है। ग़ोर के क़िले में क़ैदी पृथ्वीराज की आँखें फोड़ दी जाती हैं। इस नाटक में वह अपनी मनोव्यथा अपने परम मित्र चंद के समक्ष आवेश-पूर्ण शब्दों में प्रकट करता है। प्रताप और ऐश्वर्य के वातावरण से एकदम शत्रु का खिलौना बनने पर भी पृथ्वीराज अपने आत्मसमान से हाथ नहीं धोता। उसके चरित्र में दृढ़ता है। वह ग़ोरी का क़ैदी है। फिर भी उसे नीच ही समझता है। दुःख में सुखी दिनों की याद और भी दुःखदायक होती है। पृथ्वीराज संयोगिता के साथवाली संयोग-घड़ियों की स्मृति से विह्वल होकर रो पड़ता है। इस प्रकार पृथ्वीराज के चरित्र के सभी पहलुओं का बहुत ही संश्लिष्ट चित्रण किया गया है। चंद भी मित्रता निबाहने का पूर्ण प्रयत्न करता है। आत्मघात करने में उसे बिलकुल संकोच नहीं होता। कार्य में तीव्रता लाने के लिये इसी समय ग़ोरी का प्रवेश दिखाया गया है। इससे दर्शक को एक धक्का-सा लगता है, किंतु ट्रेजेडी का प्रभाव बढ़ जाता है। जैसे बिल्ली चूहे को खिला-खिलाकर मारती है, उसी प्रकार ग़ोरी पृथ्वीराज को अनेक यातनाएँ देता है। इससे खल पात्र के प्रति घृणा और सत्पात्र के प्रति श्रद्धा, संवेदना और सहानुभूति जाग्रत् होती है। चरित्र-चित्रण की सफलता इसी में है।

सभी नाटकों को पढ़ने पर रामकुमारजी की कला पर मुग्ध हुए बिना नहीं रहा जाता। भाषा पर तो उन्हें पूर्ण अधिकार है ही, हास्य और विनोद के छींटे भी यदा-कदा उन्होंने डाले हैं। एकांकी नाटकों में हास्य-रस का विशेष स्थान होता है, किंतु कुमारजी का उद्देश्य ही और था। वह अपने उद्देश्य में सफल हुए, इसी हर्षातिरेक में यह कमी खटकती नहीं। उनके ये सभी नाटक रंगमंच के सर्वथा उपयुक्त हैं। उनके कथनोपकथनों में सरसता है, ध्वनि है, और दर्शकों को मुग्ध करने की शक्ति है। दृश्यों में काल, स्थान, कार्य-कारण का समुचित ध्यान रक्खा गया है।

हमारा हिंदी-नाटक-साहित्य अभी बहुत अधूरा है। रंगमंच के लिये तो नाटक मिलते ही नहीं। श्रीलक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में कुछ अच्छे लक्षण दिखाई देते हैं। आशा है, निकटतम भविष्य में वह अपनी कला को काफ़ी आगे बढ़ा ले जायँगे। साथ ही नए लेखकों के अवतरण की भी आशा है।

बर्नार्ड शॉ नाटक को वही स्थान देता है, जो मध्ययुग में चर्च का था। हिंदी में भी ऐसे ही उपासकों की आवश्यकता है। हिंदी के रंगमंच पर जीवन का अवतरित होना नितांत आवश्यक है। नाटक हमें जीवन का सच्चा रूप दिखाने में तभी समर्थ होगा, जब उसमें लेखकों की जीवन-अनुभूतियों का समावेश हो जाय। कुमारजी के नाटक इस दिशा में पथ-प्रदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

कवि, आचार्य, आलोचक और अध्यापक के रूप में कुमारजी सहृदय, कुशल व्यक्ति हैं। हमें पूर्ण आशा है, नाटक-क्षेत्र में भी वह अपनी प्रतिभा की विलक्षणता का और अधिक परिचय देंगे। हिंदी-संसार उत्सुक दृष्टि से उनका मुखापेक्षी है।

सृष्टि-रचना में प्रयोजन

[श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०]

(गतांक से आगे)

दार्शनिकों के लिये कारण-कार्य-नियम और मानवीय स्वतंत्रता बहुत बड़ी उलझन है। जी नहीं चाहता, हम अपने आपको स्वतंत्रता से वंचित कर दें। स्वतंत्रता-हीन स्वर्ग भी मनुष्य को प्रिय नहीं। और, आशा तो यह है कि किसी आदमी को यह स्वीकार नहीं। इसलिये निज स्वतंत्रता के प्यारे कुछ दार्शनिकों ने ईश्वर की पूर्णता पर संदेह किया है। वे कहते हैं—

(1) Associations of oriental monarchy naturally found their way into the God conception, and in that conception the intolerable pretensions of the old world potentates and the flatteries of their debased subjects have in consequence been perpetuated. The Deity thus came to be regarded as a sort of mighty King, even more arrogant and vindictive than the Kings we know. (F. W. Westaway's Theology and Religion, p. 359)

(१) परमात्मा के स्वरूप में पूर्व साम्राटों के स्वरूप का भाव स्वभावतः शामिल हो गया। अर्थात् जैसे प्राचीन काल के सम्राट् अत्याचारी और उनकी प्रजा ख़ुशामदी होती थी, ऐसा ही ईश्वर का स्वरूप हुआ। राजे इतने अत्याचारी और बदला लेनेवाले नहीं होते, जितना ईश्वर को मान लिया गया।

(2) It is not possible to attribute to God infinite power even in the ordinary sense, for otherwise how are we to explain the existence of suffering and wickedness. (p. 360)

(२) ईश्वर को अनंत शक्तिवाला मानना किसी अर्थ में भी ठीक नहीं। अन्यथा दुःख और पाप की क्या व्याख्या होगी?

(3) Is the human reason satisfied by the statement that God is the cause of all things, and that it is part of His purpose to allow evil as well as good, though His reasons are unknown to us? (p. 360)

(३) क्या मनुष्य की बुद्धि मान सकती है कि ईश्वर सब चीज़ों का कारण है, और पाप तथा पुण्य दोनो उसके प्रयोजन के भाग हैं, चाहे उसकी युक्तियाँ हमें ज्ञात न हों?

(4) It is impossible to reconcile in a creator of such a world as ours infinite benevolence and justice with infinite power. (p. 360)

(४) हमारे-जैसे संसार के बनानेवाले में अनंत शक्ति अनंत दया और न्याय के साथ-साथ मानना कठिन है।

(5) If, however, we suppose limitation of power, there is nothing to contradict the supposition of absolute benevolence and absolute wisdom. (p. 360)

(५) परंतु यदि शक्ति की सीमा स्वीकार कर लें, तो पूर्ण दया और पूर्ण न्याय के मानने में कोई कठिनाई नहीं प्रतीत होती।

(6) But nothing obliges us to suppose that the knowledge, any more than the power, is infinite, though both the knowledge and the power must be so vast an order as to be beyond human conception. (p. 360)

(६) ऐसी तो कोई बात नहीं, जो हमें इस बात के मानने के लिये बाधित कर सके कि ज्ञान और शक्ति दोनो अनंत हैं। यह दूसरी बात है कि ज्ञान और शक्ति दोनो इतनी अधिक हो कि मनुष्य के विचार से परे हैं।

(7) If the existence of a Supreme Being is granted, the phenomena can be accounted for by the hypethesis of limiting conditions of some kind: either that the action of the Supreme Being is thwarted by the refractory nature of the material in which the *divine purpose* seeks realisation, or that the Being is struggling with some intractable force or with some maleficent essence which he is slowly subjugating and subduing to His Will and thus to final good. (p. 360)

(७) यदि ईश्वर के अस्तित्व को माना जाय, तो उसकी कुछ-न-कुछ सीमा तो माननी ही पड़ेगी। या तो यह मानो कि ईश्वर जिस उपादान से अपने प्रयोजन की सिद्धि करना चाहता है, उसके भीतर ईश्वर की आज्ञा भंग करने की शक्ति है, या ईश्वर किसी ऐसी दुष्ट शक्ति अथवा विरोधी तत्त्व से लड़ाई कर रहा है, जिसे वह शनैः-शनैः वश में ला रहा हो।

(8) We refuse instinctively to sacrifice the Deity's attribute of benevolence to that of power. (p. 360)

(८) हमारा जी नहीं चाहता कि ईश्वर की दयालुता छोड़कर उसकी शक्ति पर विश्वास करें।

(9) When we remember that a newly-born child, a child that did not ask to be born, is, from the moment of inhaling its first breath of air, by an irrevocable sentence irremediably condemned to evils which will in a few years drag it to the grave, we are appalled at the merciless tyranny which we should have to ascribe to the Ruler of the Universe if that Ruler were all-powerful. (p. 361)

(९) हम देखते हैं, नवजात बालक आरंभ से ही ऐसी बुराइयों में फँस जाता है कि शीघ्र ही उसे मृत्यु का दुःख भोगना पड़ता है। यदि ईश्वर को सर्वशक्तिमान् माना जाय, तो इस समस्त क्रूरता को ईश्वर से ही संबद्ध करना पड़ेगा।

(10) But on the hypothesis that His power is limited, our difficulty disappears. (p. 361)

(१०) परंतु यदि उसकी शक्ति सीमित मानी जाय, तो यह कठिनाई नहीं रहती।

(11) To all realities and therefore to God, the epithet infinity seems to be totally unmeaning. (p. 361)

(११) ईश्वर हो या कोई और तत्त्व, अनंत मानना किसी का भी ठीक नहीं।

(12) No evidence can prove an infinite cause of the universe. (p. 361)

(१२) संसार के कारण को अनंत मानने के लिये कोई प्रमाण नहीं।

(13) If God is all-powerful, everything is exactly what it should be, from God's point of view, otherwise He would instantly alter it. If, then, evil things exist, it must be because God wills to have it so, that is because God is, from our point of view, evil. Or, conversely, if God is good, He must put up with the continuence of evil, because He can not remove it.

(१३) यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान् हो, तो प्रत्येक वस्तु वैसी ही होनी चाहिए, जैसी ईश्वर चाहता हो। अन्यथा वह उसे झट से बदल देगा अब यदि बुरी चीज़ें हैं, तो केवल इसलिये कि ईश्वर चाहता है। ऐसा करने से वह हमारे विचार से बुरा सिद्ध होगा। यदि इसके विपरीत ईश्वर को अच्छा माना जाय, तो यह भी मानना पड़ेगा कि ईश्वर बुरा का सहन करता है, क्योंकि वह उसे दूर नहीं कर सकता।

(14) If we or the devil are permitted to do evil, while God is able to prevent or destroy us, the responsibility rests with God.

(१४) यदि ईश्वर बुराई दूर करने में समर्थ होता हुआ भी हमें या शैतान को बुराई करने देता है, तो यह समस्त उत्तरदायित्व उसी के ऊपर है।

(15) The inevitable conclusion of the doctrine of omnipotence is that God is the author of evil as well as of good. We see around us the success of evil and the defeat of good. If, therefore, God is omnipotent, what hope have we that the future He has in store for us, will be better than the present? (p. 361)

(१५) सर्वशक्तिमान् के सिद्धांत का आवश्यक अर्थ यह है कि ईश्वर बुराई का भी कर्ता है, और भलाई का भी। हम देखते हैं कि बुराई फलीभूत होती है, और भलाई विफल। इसलिये यदि ईश्वर को सर्वशक्तिमान् माना जाय, तो क्या आशा हो सकती है कि हमारा भविष्य वर्तमान की अपेक्षा अच्छा होगा ?

(वेस्टावे की थियोलॉजी और रिलीज़न)

इस प्रकार के विचारों का मूल-कारण यह है कि हमने जीवों को अनित्य और ईश्वर द्वारा उत्पन्न माना है। यदि वेद के अनुसार ईश्वर को स्वयंभू और जीव को भी नित्य माना जाय, और जीव की कर्म करने में स्वतंत्रता और फल पाने में परतंत्रता पर विश्वास किया जाय, तो पाप और दुःख के लांछन ईश्वर के सिर नहीं मढ़े जा सकते।

हम ऊपर कह चुके हैं कि सृष्टि का प्रयोजन है। सृष्टि की छोटी-से-छोटी घटना प्रयोजन-शून्य नहीं। उसका बनानेवाला भी ईश्वर है। ईश्वर का सृष्टि बनाने में प्रयोजन है। परंतु प्रयोजन के दो

अर्थ हैं — सृष्टि का प्रयोजन जीवों के लिये तो यह है कि जीव अपना विकास कर सकें। और, ईश्वर के लिये यह कि वह ऐसी सृष्टि बनावे, जिसमें जीव का विकास हो सके। इसमें ईश्वर के लिये क्या लांछन। यदि ईश्वर ऐसी सृष्टि बनाता, जिसमें जीव की स्वतंत्रता छिन जाती, तो चाहे दुःख और पाप का अभाव भी होता, तो भी जीव का विकास न हो सकता। जीव के विकास के लिये ऐसे क्षेत्र की आवश्यकता है, जहाँ वह अपनी स्वतंत्रता का पूरा प्रयोग कर सके। 'कर्तुं, अकर्तुं, अन्यथा कर्तुम्।' करना, न करना, अन्यथा करना, तीनो उसके लिये संभव हों। सृष्टि इसी प्रकार की है। इसीलिये पाप तथा पुण्य है। और, इसीलिये सुख-दुख है।

कुछ लोगों का आक्षेप है कि यदि सृष्टि बनाने में ईश्वर का कोई प्रयोजन है, तो ईश्वर विकारी होगा। वेदांत-दर्शन में इसकी मीमांसा की गई है। वहाँ पूर्वपक्ष कहते हैं—

"न प्रयोजनवत्त्वात्।" (२।१।३२)

तात्पर्य यह कि यदि ईश्वर को जीवों की चिंता है, और उस चिंता के कारण वह सृष्टि बनाता है, तो वह उसी प्रकार चिंतित होता होगा, जैसे साधारण मनुष्य होते हैं। इसका उत्तर देते हैं—

"लोकवत्तु लीला कैवल्यम्।" (२।१।३३)

अर्थात् जिस प्रकार लोक में लीला करते हुए कोई चिंतित नहीं होता, उसी प्रकार ईश्वर भी स्वभावतः ही सृष्टि रच देता है। उसे जीवों का हित तो है, परंतु चिंता नहीं। चिंता उस समय होती है, जब इष्ट कार्यों के संपादन के लिये सामग्री न हो, या अपने कार्य में विघ्न की आशंका हो। ऐसा होने के लिये कोई कारण नहीं।

आगे एक प्रश्न उठाकर एक ही सूत्र में उसका उत्तर दिया है—

"वैषम्यनैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात् तथाहि दर्शयति।" (२।१।३४)

अर्थात् ईश्वर न्यायकारी है, तो जीवों के साथ भेद-भाव क्यों रखता है? किसी को सुखी, किसी को दुखी, किसी को धनाढ्य और किसी को दरिद्र क्यों बनाता है? यह विषमता और निर्दयता क्यों? इसका उत्तर दिया है कि कर्मों की अपेक्षा से विषमता है। ईश्वर की ओर से भेद-भाव के कारण नहीं। यदि कोई परीक्षक किसी परीक्षार्थी को भिन्न-भिन्न अंक देता है, तो इससे भेद-भाव नहीं प्रकट होता, किंतु परीक्षार्थियों की योग्यता की विभिन्नता प्रकट होती है। उपनिषद् में भी तो कहा है—

"पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति पापः पापेन।"

(बृहदारण्यक, ३।२।१३)

फिर प्रश्न उठाया है कि सबसे पहले कर्म की अपेक्षा कैसी? कर्म तो जीव उत्पत्ति के पीछे ही करेगा। पहले कैसे? आरंभिक विषमता का क्या कारण है? इसका उत्तर है—

"न कर्माविभागादिति चेन्नानादित्वात्।"

(वेदांत, २।१।३५)

जीव तो अनादि है। अनादि जीव के लिये आरंभ का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि जीव सादि वस्तु होता, तो अवश्य यह प्रश्न उठता। जिस प्रकार किसी चक्र का आदि और अंत नहीं, इसी प्रकार संसार-चक्र का भी न आदि है, न अंत। बीज और अंकुर के समान कर्म से विषमता और विषमता से कर्म होते रहेंगे।

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है। प्रयोजन के लिये कामना, इच्छा तथा तप चाहिए। जहाँ इन तीनो का अभाव हो, वहाँ प्रयोजन नहीं हो सकता। वेदांत का सूत्र कहता है कि सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय ईश्वर के लिये लीला-मात्र है। यह उसकी स्वाभाविक लीला है, जिसे वह नित्य किया करता है। इसके लिये उसे कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता। स्वभाव और प्रयोजन

में पहले भेद दिखाया जा चुका है, फिर सृष्टि को प्रयोजन का फल माना जाय, या स्वभाव का ?

इस विषय में हम यहाँ इतना कहना चाहते हैं कि कामना, ईक्षण और तप जीवों के प्रयोजन बताते हैं, और उसी भाषा का प्रयोग कहीं-कहीं ईश्वर के लिये भी किया गया है। परंतु यह एक आलंकारिक भाषा है। वस्तुतः ईश्वर उसी प्रकार कामना नहीं करता, जैसे हम करते हैं। हमारी कामना अपनी त्रुटि के अधीन है। ईश्वर की कोई अपनी त्रुटि नहीं। हमारा तप हमें थकाता है, ईश्वर का नहीं। हमें साधन जुटाने पड़ते हैं, ईश्वर को नहीं। ईश्वर का अटल नियम त्रिकालातीत है, और यही उसका स्वभाव है। जैसे हम साँस लेने में परिश्रम नहीं करते, उसी प्रकार ईश्वर सृष्टि-रचना में परिश्रम नहीं करता। हम ऊपर लिख चुके हैं कि सृष्टि-रचना का प्रयोजन हम हैं, न कि ईश्वर। सृष्टि हमारे विकास के लिये है, ईश्वर के विकास के लिये नहीं।

सृष्टि के विषय में भिन्न-भिन्न लोगों के भिन्न-भिन्न मत हैं। इसीलिये उसका प्रयोजन समझने में भूल हो जाती है।

कुछ लोग सृष्टि को स्वप्न-मात्र समझते हैं। जो सो रहे हैं, उन्हें तो स्वप्न ही दीख सकता है। इनके विषय में क्या कहा जाय। यदि सृष्टि स्वप्न है, तो प्रयोजन का प्रश्न ही नहीं उठता। परंतु याद रखना चाहिए कि सृष्टि स्वप्न नहीं। हाँ, स्वप्न सृष्टि का एक छोटा-सा अंग अवश्य है। जो मनुष्य जाग्रत् अवस्था में भरसक कार्य करते हैं, वे सुषुप्ति में आनंद उठाते हैं। यह सुषुप्ति उनकी क्षीण शक्तियों को पूरा करके फिर जाग्रत् अवस्था में कार्य करने योग्य बना देती है। वे सुषुप्ति में इसलिये नहीं जाते कि सदा आनंद ही भोगते रहें। सुषुप्ति का आनंद पुनः जागृति में काम करने के लिये है। यही कार्य तो उनकी उत्तरोत्तर उन्नति का साधन होगा। परंतु जिसने जागृति में कार्य नहीं किया, जो तप द्वारा थका नहीं, उसे सुषुप्ति का आनंद नहीं हो सकता। वह तो स्वप्न ही देखा करेगा। इसलिये सृष्टि को स्वप्न समझना उन आलसी लोगों का काम है, जो कार्य-क्षेत्र से भागकर अपने आलस को स्वप्न के परदे में छिपाना चाहते हैं।

कुछ लोग सृष्टि को जल के ऊपर का बुलबुला समझते हैं, जो वायु द्वारा उत्पन्न होकर तुरंत ही नष्ट हो जाता है। यह केवल आलंकारिक भाषा है। बुलबुले का दृष्टांत शायद सृष्टि की अनित्यता देखकर दिया गया है। परंतु सृष्टि अनित्य होते हुए भी इतनी क्षणिक नहीं, जिसकी उपेक्षा की जाय। सृष्टि की घटनाएँ अनित्य होते हुए भी उनका मूल्य है। हम जीव तो अनित्य हैं नहीं, हमारा और सृष्टि का संबंध अनित्य है। परंतु ये अनित्य संबंध हमारे विकास के लिये हैं। इसी के यथार्थ उपयोग से हम अपने कर्तृत्व, भोक्तृत्व और ज्ञातृत्व को विकसित कर सकते हैं। सभा-मंडप अनित्य है। आपके उसके साथ संबंध अनित्य हैं। परंतु यह अनित्य मंडप प्रयोजन-शून्य नहीं। इसे व्यर्थ ही नहीं बनाया गया। न आप व्यर्थ ही इसके साथ संबंध जोड़ने आए हैं। अनित्य होते हुए भी इसका प्रयोजन है, और आप इस समय बैठे हुए उसका उपयोग कर रहे हैं। इसलिये अनित्य सृष्टि की अनित्यता के कारण उपेक्षा करना कर्मठ लोगों को आलसी और निकम्मा बनाना है।

कुछ लोगों का विचार है कि सृष्टि एक जेलख़ाना है, जहाँ हम पिछले कुकर्मों का दंड पाने के लिये डाल दिए गए हैं। जेल में दुख होता है, सृष्टि में भी दुख है। जेल में पापी आते हैं, हम भी पापी हैं। जेल नरक का नमूना होता है, सृष्टि भी नरक का नमूना है। मैं तो इस दृष्टांत का भी विरोधी हूँ।

इन एकांगी दृष्टांतों ने लोगों में बहुत-सी भ्रांतियाँ फैलाई हैं। सृष्टि जेलख़ाना नहीं, और न केवल दंड पाने का स्थान है। यह नरक भी नहीं। कल्याणकारी प्रभु की कृति कल्याणकारी ही हो सकती है। ऋषि दयानंद 'सत्यार्थ-प्रकाश' के आठवें समुल्लास में लिखते हैं कि सृष्टि में दुख की अपेक्षा सुख अधिक है, और दुख है भी उन्हीं के लिये, जो अपनी निर्बलताओं के कारण सुख ग्रहण नहीं कर सकते। दुखने आई हुई आँख के लिये सूर्य का प्रकाश दुखदायी ही होगा। परंतु इसमें सूर्य का दोष नहीं। सृष्टि वही है, परंतु इसमें कोई सुखी है, कोई दुखी। वस्तुएँ वे ही हैं, परंतु अपने योग्यतानुसार कोई उनसे सुख लेता है, कोई दुख।

आप शायद मुझसे पूछें कि तुम सृष्टि को क्या समझते हो? मेरे विचार से तो सृष्टि एक विद्यालय है, और हम विद्यार्थी के रूप में हैं। परमात्मा ने हमारी शिक्षा का ऐसा अच्छा प्रबंध किया है कि शिक्षा के सभी साधन उपस्थित हैं। हमारी योग्यतानुसार भिन्न-भिन्न कक्षाएँ हैं। और, सृष्टि की सभी रचनाएँ, जिन्हें हम अच्छी या बुरी कहते हैं, हमारी त्रुटियाँ दूर करने और अपनी गुप्त शक्तियाँ विकसित करने के लिये हैं। छोटे-से जंतु से लेकर मनुष्य तक और जंगली मनुष्य से लेकर एक सभ्य पुरुष तक, सभी को अपने कक्षानुसार शिक्षा मिल रही है। ईश्वर ने सृष्टि ऐसी बनाई है, जिसमें हम अपनी कार्य-कुशलता का परिचय दे सकें। इस दृष्टि से सृष्टि सर्वथा त्रुटि-हीन है। इसी को ठीक प्रयोजन न समझने के कारण अधूरी और त्रुटि-युक्त कहते हैं। यदि ईश्वर ऐसी सृष्टि बनाता, जिसमें कोई काम अधूरा न होता, तो हम क्या करते। यदि सूर्य सदा चमकता रहता, तो मिट्टी के दीपक से लेकर विद्युत्प्रकाश तक, जो उन्नति मनुष्य ने की है, वह कैसे हो सकती? सोचिए, मनुष्य की ऊहापोह को, जिसके द्वारा मनुष्य ने इतने आविष्कार किए। क्या यह संभव था, यदि मनुष्य को सभी चीज़ें पकी-पकाई मिल जातीं? कल्पना कीजिए एक अध्यापक की, जो अपने शिष्य का काम भी स्वयं कर देता है, और उसे करने के लिये कुछ नहीं छोड़ता। क्या ऐसे अध्यापक के शिष्य सुशिक्षित हो सकते हैं? कदापि नहीं। अच्छा अध्यापक तो विद्यार्थी की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आत्मिक, सभी गुप्त शक्तियों को काम में लाने के लिये अवसर देता है। बच्चों के दैनिक लड़ाई-झगड़े भी इस अपेक्षा से एक मूल्य रखते हैं। बच्चों की भूलें भी मूल्य से शून्य नहीं। एक ऐसा स्कूल, जिसमें सभी विद्यार्थी पूर्ण पुरुष हों, स्कूल नहीं, किंतु सत्पुरुषों की प्रदर्शनी है। जीवन-संग्राम ही योद्धाओं को उत्पन्न करता है। जीवन के राग-द्वेष ही सत्पुरुषों को बनाते हैं।

कुछ लोग कहते हैं, ईश्वर यदि सर्वशक्तिमान् था, तो जीव के विकास के लिये ऐसा स्कूल क्यों नहीं बनाया, जिसमें कलह, युद्ध, वैर या अत्याचार होता ही नहीं। परंतु यह लोग भूल जाते हैं कि यदि ऐसा कोई स्कूल होता, तो उसमें लड़के क्या करते। आज यदि सृष्टि इस प्रकार की होती कि मैं झूठ बोल ही न सकता होता, तो सत्य-प्रियता और सदाचार का क्या अर्थ होता?

ऋषि दयानंद ने सृष्टि के प्रयोजन के विषय में हमारा दृष्टिकोण सर्वथा बदल दिया है। उनका सिद्धांत यह है—

(१) जीव अज, अमर और अजर है।

(२) जीव कर्म करने में स्वतंत्र है।

(३) सृष्टि जीव के लिये कर्म-क्षेत्र है। यह न तो क़ैद है, न दंडालय, न अत्याचार का केंद्र।

(४) जीव न तो ईश्वर के हाथ में खिलौना है, और न भौतिक पदार्थों के।

(५) ईश्वर ने जीव या अन्य किसी पदार्थ

को अपने लिये नहीं बनाया। न तो अपनी किसी कमी को पूर्ण करने के लिये, और न अपनी क़ुदरत या शक्ति के प्रदर्शन के लिये।

(६) ईश्वर के अटल नियम जीव की स्वतंत्रता स्थित रखते हुए उसकी उन्नति में सहायक होते हैं, और उसे सन्मार्ग पर चलने, न चलने या उलटा चलने का निर्वचन करने की पूरी स्वतंत्रता देते हैं।

(७) जो जीव इस सामग्री का व्यष्टि या समष्टि-रूप से पूर्ण उपयोग करते हैं, वे उन्नत होते हैं। सृष्टि उनके लिये एक स्वामिभक्त सेविका का काम करती है, और ईश्वर द्रष्टा-रूप से उन्हें अपने महान् आनंद का अनुभव कराता है। जो पुरुष बहती हुई धारा के ऊपर तिनके के समान अपने को क़िस्मत या तक़दीर के हवाले कर देते हैं, उनकी स्वतंत्रता छिन जाती है, और वे ईश्वरीय आनंद का अनुभव नहीं कर सकते।

(८) जीव ईश्वर का अंश या खंड नहीं। वह स्वयं सत् है। परंतु अल्प है। ईश्वर का संसर्ग उसे अपनी अल्पता के कम करने और पूर्णता की ओर जाने में सहायक होता है।

(९) जीव एक नहीं, असंख्य हैं। उनमें भ्रातृत्व का संबंध है। एक दूसरे की सहानुभूति उन्हें उन्नत करती है। सृष्टि के नियम तथा उदाहरण उन्हें स्वार्थ नहीं, किंतु परमार्थ सिखाते हैं।

(१०) सृष्टि स्वार्थ की सफलता और परमार्थ की विफलता का उदाहरण पेश नहीं करती, किंतु इसके विपरीत परोपकार की ही शिक्षा देती है। क्षुद्र प्राणियों में स्वार्थ और अवनति के उदाहरण मिलते हैं। परंतु ज्यों-ज्यों उच्च होते जाइए, परोपकार का भाव अधिक परिष्कृत रूप में दृष्टिगोचर होता है।

(समाप्त)

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, जुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी।

दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥-)
२५ " " " ५≡)

} श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

पावन प्रेमासव

[पं० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न]

ख़ूब मिली उस मस्ताने को वह मस्तानी - मतवाली* ;
दोनो पीते प्रेमासव को भर-भर प्याली - पर - प्याली ।
अंधकार सब ओर, किंतु दो हृदय ज्योति से हीन नहीं ;
जीर्ण-शीर्ण, निर्मल तनुओं में प्राण अपावन—क्षीण नहीं ।
दीन-अधीन-हीन ऐसे हैं, फटी हुई कोपीन नहीं ;
दुनिया हँसती है, हँसने दो, उनका मन तो दीन नहीं ।
अरुण - अरुण पंकज को रँगती उनकी आँखों की लाली ;
ख़ूब मिली उस मस्ताने को वह मस्तानी - मतवाली ॥ १ ॥
हार गए, पर हार बनाती उनके हित तारक - माला ;
सत्य - ढाल को नहीं भेदता बदनामी का भी भाला ।
दोनो कौन, यहाँ क्या करते, क्यों यह डेरा है डाला ?
इन बातों को वे न बताते, है उनके मुँह पर ताला ।
कल चमकेगी लक्ष्मी - बिजली, आज घटा कोरी काली ;
ख़ूब मिली उस मस्ताने को वह मस्तानी - मतवाली ॥ २ ॥
जो संसार नहीं है उनका, जो सच्चा आगार नहीं ;
क्यों विचार वे उसका रक्खें, जिसमें कुछ भी सार नहीं ।
उन्हें हृदय में रखते हैं वे, जिनका कुछ आधार नहीं ;
फिर आकार - वस्तु ही क्या है, जो वे हैं साकार नहीं ।
पत्ता - पत्ता फूल चढ़ाता देख जिन्हें डाली - डाली ;
ख़ूब मिली उस मस्ताने को वह मस्तानी - मतवाली ॥ ३ ॥
क्या नारंगी-रंग चढ़ेगा, उनकी तो कमली काली ;
भक्षक कौन विजन वन में तब, रक्षक हैं जब वनमाली ।
उसकी क्या परवाह करें, जो दुनिया है देखी - भाली ;
वे हैं साथ, नाचते सारे सुन करके जिनकी ताली ।

---

* नर-नारी-रूप में माया-ब्रह्म ।

नशा नहीं उतरेगा, होगी कभी नहीं प्याली ख़ाली;
ख़ूब मिली उस मस्ताने को वह मस्तानी - मतवाली ॥ ४ ॥
उसके अधर - कपोलों पर वह लिखता अमर कहानी को,
जिसका भेद वेद में मिलता सच्चे ज्ञानी - ध्यानी को।
जग - जगमग - मग में पग रखना नहीं चाहिए प्राणी को;
इंद्र - धनुष - सा जो दिखता है ले मोती के पानी को।
उनने प्रेमासव - प्रताप से ऋद्धि - सिद्धियाँ हैं पाली;
ख़ूब मिली उस मस्ताने को वह मस्तानी - मतवाली* ॥ ५ ॥

---

* शीघ्र प्रकाशित होनेवाली 'नव-निकुंज' से उद्धृत।

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये "संगीत-सागर"-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गा, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक़शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देचकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≡) में दिया जा रहा है। शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर "संगीत", हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र "संगीत" का इस वर्ष २०० पृष्ठ का "भातखंडे-अंक" [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए ! गाना बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

सुधा

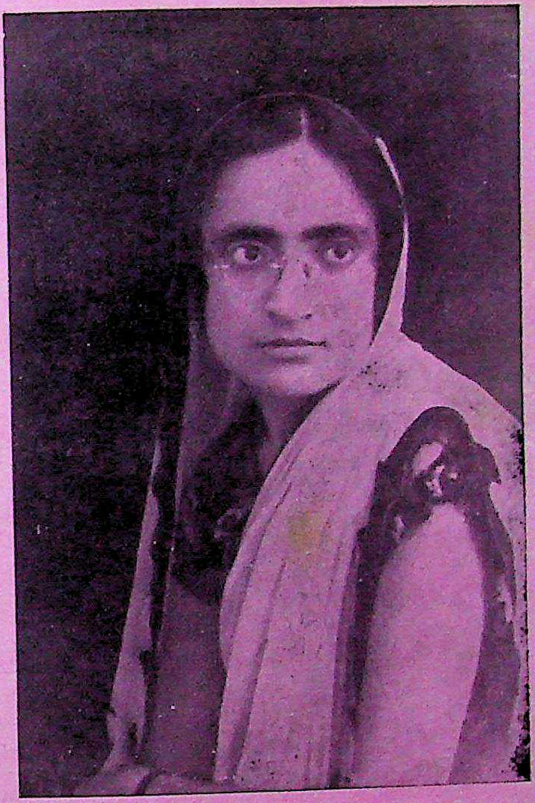

कुमारी लज्जा महाजन

[आप स्यालकोट के लाला हेमराज महाजन ऐडवोकेट की सुपुत्री हैं। आपने इस वर्ष बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण छात्राओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

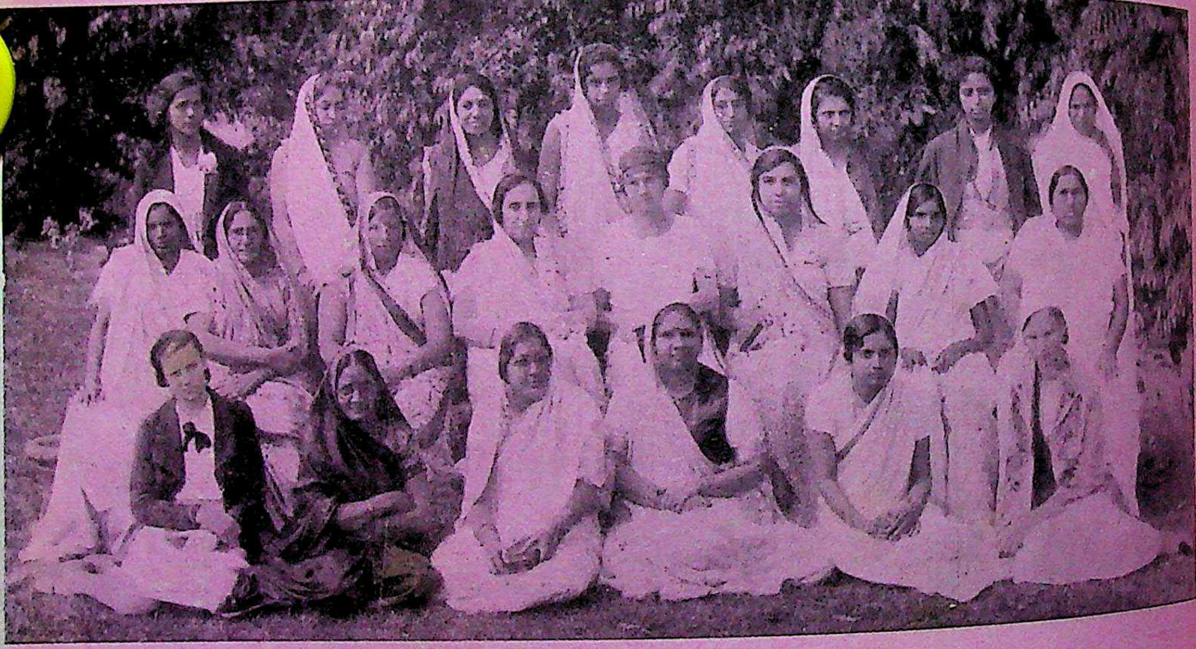

लखनऊ-ज़नाना-पार्क की कुछ सदस्याएँ

मीन पर बैठी (बाईं ओर से)—(१) मिस वैलेंस, (२) मिसेज़ प्यारेलाल भार्गव, (३) मिसेज़ घोष, (४) मिसेज़ एच्० एस्० गुप्ता, (५) मिसेज़ अब्बास रज़ा और (६) मिसेज़ वैलेंस

र्सी पर बैठी (बाईं ओर से)—(१) मिसेज़ रनजीतसिंह, (२) मिसेज़ हुकुमसिंह, (३) मिसेज़ पुरी, (४) मिसेज़ पोचकनवाला, (५) मिस वैलेंस, (६) मिसेज़ चब्स, (७) मिसेज़ डुग्गल और (८) मिसेज़ ज्ञानचंद

[इस संस्था के संबंध में नवंबर की सुधा में एक अपील हमने पृष्ठ ४६२ पर छापी है।]

श्रीयुत विपिनविहारीजी वर्मा

[श्रीयुत भुवनेश्वरप्रसाद झा बी० ए०, बी० एल्०]

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ;
स जातो येन जातेन याति देशः समुन्नतिम्।

भर्तृहरि का उपर्युक्त कथन कितनी सचाई से भरा हुआ है। संसार में मनुष्यों की कमी नहीं। प्रतिदिन लाखों की संख्या में मनुष्य जन्म लेते और काल के गाल में पतित होते हैं, परंतु वस्तुतः वही पुरुष धन्य है, जिसमें परोपकार की भावना हो। देश अथवा जन-समुदाय की उन्नति वही कर सकता है, जिसमें स्वार्थ-साधन की लिप्सा लुप्त हो गई हो, और जिसके हृदय में "कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्त्तिनाशनम्" की धारणा बलवती हो। ऐसे पुरुषों को अपने सुखों की चिंता नहीं रहती। करुणा-मंदाकिनी की पवित्र धारा उनके हृदयों में हमेशा बहा करती है। जिस कुल में ऐसे पुरुष का जन्म हो, वह सर्वथा धन्य है। ऐसे ही पुरुषों का जन्म सार्थक है। नीतिकार ने उपर्युक्त श्लोक में यही बात प्रौढ़ भाषा में व्यक्त की है।

स्वार्थ-साधकों की संख्या इस संसार में अपरिमित है। परोपकार-व्रतियों की तादाद नहीं के बराबर है। इस स्वार्थमय संसार में भाग्य से ही आपको स्वयंभू नेताओं की कमी न थी, परंतु इधर बीस वर्षों की राजनीतिक परिस्थिति ने खरे-खोटे की पहचान अच्छी तरह करा दी है। आज देश में तपाए हुए सोने की भाँति अनेक पुरुष-पुंगव वर्तमान हैं, जो अपने आदर्श चरित्र से स्वार्थ-लिप्त संसार को सच्चरित्रता, देश-प्रेम और अलौकिक त्याग की शिक्षा दे रहे हैं। इनके चरित्र से लाभ उठाना हमारा परमधर्म है।

बहुत दिनों से इच्छा थी कि चंपारन के प्रकाशमान रत्न बाबू विपिनविहारी वर्मा के संबंध में अपने हृदयोद्गार पाठकों के समक्ष रक्खूँ। इच्छा रहते हुए भी इसे कार्य-रूप देने का अवसर न प्राप्त हो सका। आज जगन्नियंता की दया से उक्त सुअवसर प्राप्त हुआ है।

मैं आपको बहुत दिनों से जानता हूँ। मैंने आपको उस समय भी देखा है, जब आप स्कूल में अध्ययन करते थे। वे दिन भी मुझे स्मरण हैं, जब आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये विलायत गए। आज आपका त्यागमय जीवन भी आँखों के सामने है। आप बराबर उन्नति-पथ पर अग्रसर होते जा रहे हैं। देश के लिये सर्वस्व निछावर करनेवालों में विपिन बाबू का स्थान बहुत ऊँचा है। ऐश्वर्य और वैभव की गोद में पले हुए होने पर भी आपने लोकोत्तर त्याग का आदर्श हमारे सामने रक्खा है। आज बीस वर्षों से आप जिस लगन, प्रेम, श्रद्धा, धैर्य, निर्भीकता और सहृदयता से देश-प्रेम के कंटकाकीर्ण पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, उसे देखकर यही कहना पड़ता है कि आपका देश-प्रेम अनुकरणीय और प्रशंसनीय है। ऐसे आदर्श त्यागी के जीवन-वृत्त से हमारे पाठकों का पूरा मनोरंजन और कल्याण होगा।

आपका जन्म सन् १८९२ ई० में, चंपारन-ज़िले के शिकारपुर-नामक बस्ती में, हुआ था। शिकारपुर बी० एन्० डब्ल्यू० रेलवे लाइन के नरकटियागंज-स्टेशन से तीन मील उत्तर-पूर्व के कोने में है। जिस कुल में आपका जन्म हुआ है, वह सर्वदा से धन-जन-संपन्न रहा है। आपके पितृव्य बहुत वर्षों तक रामनगर-राज्य के दीवान के दायित्व-पूर्ण पद पर विराजमान रहे। आपका

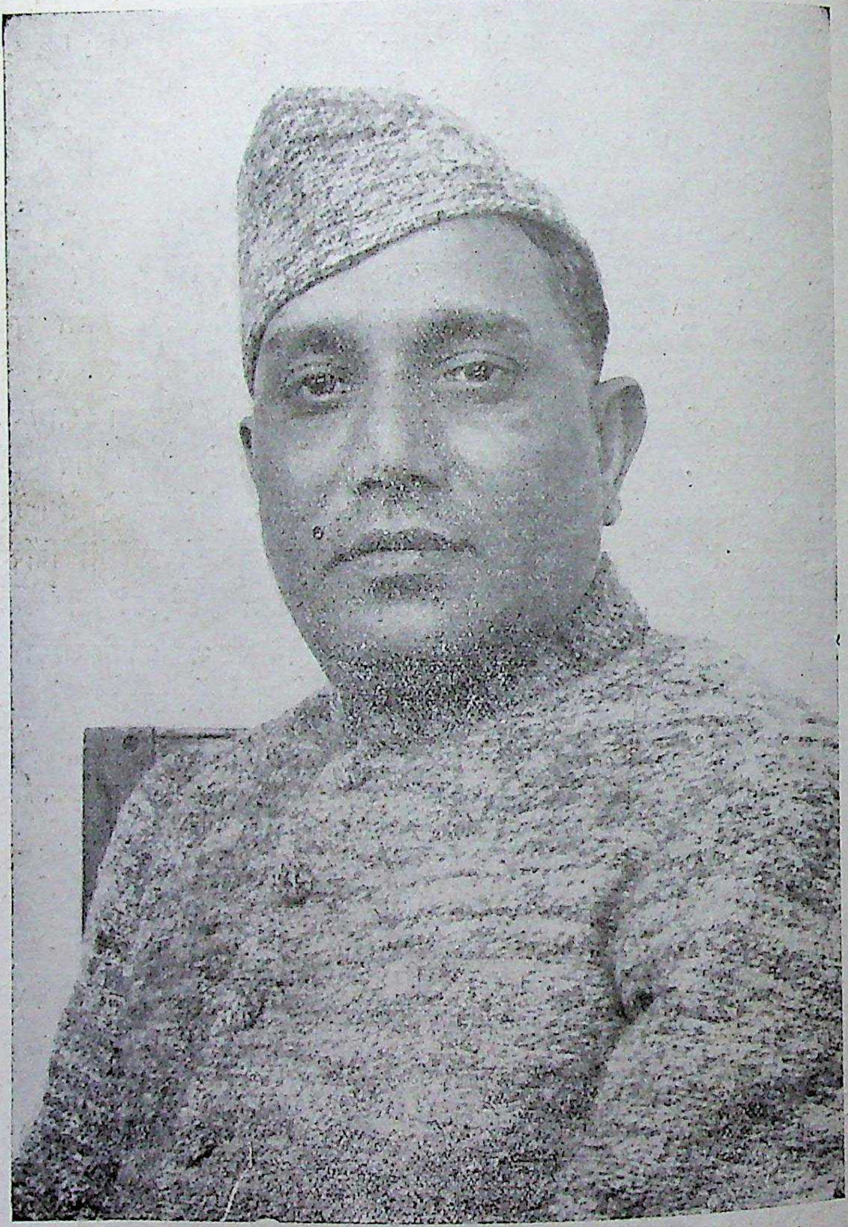

श्रीयुत विपिनविहारीजी वर्मा

कुल श्रीवास्तव कायस्थों में प्रतिष्ठित गिना जाता है । बिहार के प्रायः सभी उच्च कायस्थ-घरानों से इस कुल का संबंध है । आपका बाल्यकाल बड़े सुख से बीता । यथासमय आपका अक्षरारंभ कराया गया । स्थानीय पाठशाला की शिक्षा समाप्त कर आप बेतिया-राज्य-स्कूल में पढ़ने लगे ।

आपके परिवार के प्रायः सभी व्यक्ति शिक्षा-संपन्न हैं । आपके चचेरे भाई पांडिया जगन्नाथप्रसाद एम्० ए०, बी० एल्०, काव्यतीर्थ, दर्शन-केसरी संस्कृत के प्रकांड विद्वान् थे । कहने की आवश्यकता नहीं कि संस्कृत-साहित्य, दर्शन और व्याकरण आदि विषयों में आपकी बराबरी करनेवाले विद्वान् कम थे । कुछ वर्षों तक आपने पटना-कॉलेज में संस्कृत के सीनियर प्रोफ़ेसर के पद पर काम किया था । हिंदी-भाषा पर आपका प्रगाढ़ प्रेम था । दुःख है, आपका स्वर्गवास १९२४ ई० में, चवालीस वर्ष की अवस्था में, प्रयाग में, हो गया !

आपका परिवार सदा से सनातन-धर्मानुयायी रहा है । विपिन बाबू जिस समय हाईस्कूल के दूसरे (दसवें) दर्जे में पढ़ रहे थे, उसी समय आपको विलायत जाकर शिक्षा प्राप्त करने की धुन सवार हुई । विलायत से लौटे हुए दो-एक मित्रों की सहायता प्राप्त कर, १९१० ई० में, घरवालों की विना अनुमति के, आप विलायत के लिये रवाना हो गए । इस समय आपकी अवस्था अठारह वर्ष की थी । समस्त

परिवारवालों के घोर विरोध का थोड़ा भी असर आपके ऊपर न पड़ा। अठारह वर्ष के युवक में इस प्रकार की दृढ़ता गंभीर प्रकृति की परिचायिका है। सच है, महत्पुरुषों के ये ही लक्षण हैं।

डब्लिन-युनिवर्सिटी के 'किंग्स इन' में नाम लिखाकर आपने पढ़ना शुरू किया। वहाँ की मैट्रिक्युलेशन-परीक्षा योग्यता-पूर्वक पास की। १९१५ ई० में बैरिस्टरी की परीक्षा भी योग्यता-पूर्वक पास कर ली। जिस समय आप विलायत में पढ़ रहे थे, उस समय की एक घटना लिखने योग्य है। इससे विपिन बाबू की दृढ़ता और निर्भीकता का अच्छा प्रमाण मिलता है।

१९१४ ई० की बात है। इसी वर्ष जर्मन-युद्ध शुरू हुआ था। साम्राज्य के समक्ष जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित था। उस समय साम्राज्य से असहयोग करने का सवाल नहीं था। स्वयं महात्मा गांधी-जैसे नेता ने भी उस समय ब्रिटिश साम्राज्य को अपनी सेवाएँ अर्पित की थीं। हमारे विपिन बाबू का महात्मा गांधी से प्रथम साक्षात्कार यहीं हुआ। 'रेड क्रॉस'-नामक संस्था युद्ध के समय स्वयंसेवकों का संगठन कर लड़ाई में सहायता पहुँचा रही थी। इसी संस्था के अधीन महात्मा गांधी ने भी भारतीय छात्रों का एक स्वयंसेवक-दल संगठित किया था। विलायत से शिक्षा प्राप्त करनेवाले अनेक छात्र इस दल में सम्मिलित हुए थे। स्वयंसेवक बनने की पहली शर्त थी पढ़ाई स्थगित करना। विपिन बाबू अपना पढ़ना स्थगित कर सहर्ष इस स्वयंसेवक-दल में सम्मिलित हुए। स्वयंसेवकों का काम था घायलों की सुश्रूषा करना। नेटले के अस्पताल में आपने बड़ी मुस्तैदी से घायलों की सेवा का कार्य किया। आपके अफ़सर आपके कार्य से अत्यंत संतुष्ट हुए। यह घटना आपके ज्वलंत देश-प्रेम का परिचय देती है। अठारह महीने तक आपने यह सेवा-कार्य किया।

१९१६ ई० में आप विलायत से हिंदोस्तान वापस आए। १९१७ ई० में आपने पटना-हाईकोर्ट में बैरिस्टरी शुरू की। आपका अब तक का जीवन बड़ा सुखमय था। आप बड़े ठाठ-बाट से रहते थे।

चंपारन के इतिहास में १९१७ ई० का समय अत्यंत प्रसिद्ध है। चंपारन के निलहों के अत्याचार से यहाँ की जनता बहुत वर्षों से पीड़ित थी। बिहार के एकाध नेता दबी ज़बान से इस अत्याचार के विरुद्ध कौंसिलों में कभी-कभी अपनी आवाज़ ज़रूर उठा दिया करते थे, परंतु इस संगठित अत्याचार का मूलोच्छेद करने के लिये एक ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी, जिसमें भगीरथ की दृढ़ता, वशिष्ठ का तपोबल, देवर्षि नारद का भगवत्प्रेम और सर्वोपरि भगवान् कृष्ण की संगठन-शक्ति हो। चंपारन की अत्याचार-पीड़ित जनता के सौभाग्य से इसी समय एक महापुरुष गांधी के रूप में अवतीर्ण हुआ। आपके लोकोत्तर गुणों ने शिक्षित, सहृदय बिहारियों के हृदय में विप्लव मचा दिया। महात्मा गांधी के इस यज्ञ में प्रायः अनेक गण्य-मान्य बिहारियों ने अपनी-अपनी सेवाएँ अर्पित कीं।

विपिन बाबू भी इस यज्ञ में अपनी सेवाएँ अर्पित करने को लालायित हो उठे। आप भी किसी से पीछे रहनेवाले न थे। महात्माजी से आपकी पहली भेंट, विलायत में, किस तरह हुई थी, इसका वर्णन पहले आ चुका है। श्रीमान् राजेंद्र बाबू के साथ आपने मोतिहारी में महात्माजी से भेंट की। अभी तक आपका लिबास साहबी था। आपने अपनी इच्छा उनसे प्रकट की। महात्माजी ने कहा, अभी आवश्यकता नहीं; अवसर उपस्थित होने पर आप बुला लिए जायँगे। ईश्वर को

यह बात अभी मंज़ूर न थी कि आप देश-कार्य में लगें।

आप १९२० ई० तक अपने व्यवसाय में लगे रहे। १९२० ई० में, कलकत्ते में, कांग्रेस का विशेष अधिवेशन था। आप अपने मित्रों के साथ कांग्रेस में सम्मिलित हुए। कांग्रेस ने सरकार से असहयोग करने का सिद्धांत स्वीकार कर लिया। समस्या बड़ी विकट थी। इधर आपको बैरिस्टरी से अच्छी आय होने लगी थी। घरवालों की अप्रसन्नता का भय था। पिताजी के प्रचंड और उग्र विरोध की आशंका अलग थी। परंतु आप हतोत्साह होनेवाले जीव नहीं थे। आपके हृदय में विप्लव मचा हुआ था। देश के लिये सर्वस्व अर्पण करने की भावना प्रबल हो उठी। आपने कलकत्ते में ही बैरिस्टरी स्थगित कर देने का निश्चय कर लिया। सच है, महापुरुषों को विघ्न-बाधाओं की परवा नहीं होती। नीतिकार ने ठीक ही कहा है—

"विकारहेतौ सति विक्रियन्ते
येषां न चेतांसि त एव धीराः।"

कलकत्ते से लौटने पर आप सीधे घर चले आए। सुखैश्वर्य के सब सामान बाँधकर रख दिए गए। जिन विलास की सामग्रियों में आपका इतना प्रेम था, उनसे आपको विरक्ति हो गई। आपने सदा के लिये खद्दर अपना लिया। आपके दृष्टिकोण में विचित्र परिवर्तन हो गया।

१९२१ ई० के असहयोग-संग्राम में आपने अभूतपूर्व उत्साह से काम किया। ज़िला-कांग्रेस-कमेटी के आप सभापति चुने गए। उस दिन से लेकर आज तक आप इस पद पर सुशोभित हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी के आप सदस्य हैं। कांग्रेस को तन, मन और धन से मदद पहुँचाने लगे। चंपारन में कांग्रेस का झंडा बराबर ऊँचा रहा है। इन अठारह वर्षों के अंदर चंपारन-ज़िला-कांग्रेस-कमेटी का कार्य जितनी सफलता से हुआ, उसका कुल श्रेय आपको ही है। आपके उत्साह में आज लेश-मात्र भी कमी नहीं होने पाई।

बेतिया-म्युनिसिपैलिटी के चुनाव में, कांग्रेस-कमेटी की आज्ञा मानकर, आपने भाग लिया। आप बहुत अधिक वोट से म्युनिसिपल-कमिश्नर चुने गए। वह समय आज का-सा न था। बेतिया-राज्य और नौकरशाही की सारी शक्ति कांग्रेस को नीचा दिखाने में एक ओर काम कर रही थी। उस समय सफलता की आशा करना ज़रा टेढ़ी खीर थी, परंतु आपके व्यक्तित्व का प्रभाव लोगों पर इतना अधिक था कि प्रतिद्वंद्वियों के सभी हथकंडे समाप्त हुए। इसके पहले बेतिया-म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन बराबर सरकारी आदमी ही हुआ करते थे। चेयरमैन के चुनाव को लेकर बड़ी सरगरमी दिखलाई गई। नौकरशाही अपने क़िले में किसी ऐसे व्यक्ति को घुसने नहीं देना चाहती थी, जिसके द्वारा उसका निरंकुश शासन ख़तरे में पड़े। म्युनिसिपैलिटी में कांग्रेस-कर्मियों की तादाद इतनी न थी कि आसानी से चेयरमैन के चुनाव में सफलता की आशा की जा सकती। बेतिया-राज्य के मैनेजर मि० जे० ई० रदरफ़ोर्ड चेयरमैन के लिये दूसरे उम्मेदवार थे। एक उम्मेदवार स्वयं विपिन बाबू थे। सहायकों की संख्या दोनो व्यक्तियों के लिये बराबर थी। बाबू बालगोविंद भगत (वर्तमान एम्० एल्० ए०) के हाथ में कांग्रेस की प्रतिष्ठा थी। आप हरिजनों के प्रतिनिधि थे। आपको बेतिया-राज्य की ओर से अनेक प्रलोभन दिए गए, परंतु उस समय जिस लोकोत्तर त्याग का परिचय आपने दिया, वह चंपारन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा। आपने अपना मत विपिन बाबू के पक्ष में देकर इस बात को सदा के लिये सिद्ध कर दिया कि हमारे हरिजन भाई भी स्वतंत्रता-संग्राम में निःसंकोच अपना सर्वस्व निछावर कर सकते हैं। चंपारन में नौकरशाही के ऊपर

कांग्रेस की यह पहली विजय थी। इसी विजय ने आगे के लिये रास्ता साफ़ कर दिया।

हमारे विपिन बाबू ने चेयरमैन की हैसियत से अपनी शासन-चातुरी का सिक्का सभी के हृदय पर जमा दिया। अधिकारिवर्ग भी आपके लोक-हितकर कार्यों की दिल खोलकर प्रशंसा करने लगे। अब क्या था! आगे के सभी चुनावों में आप विजयी होते रहे। म्युनिसिपैलिटी के दूसरे चुनाव में भी आप फिर चेयरमैन चुने गए। इसके बाद ही चंपारन-डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के चुनाव में कांग्रेस की विजय हुई, और आप निर्विरोध इसके चेयरमैन चुने गए। जवाबदेही का भार अधिक बढ़ जाने के कारण आपने म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन के पद से इस्तीफ़ा दे दिया, और पूरी तन्मयता से बोर्ड द्वारा चंपारन की सेवा में लग गए। पूरे छ साल तक आप ज़िला-बोर्ड के चेयरमैन रहे। सभी ने मुक्त कंठ से आपको निष्पक्ष शासक क़रार दिया।

जिन दिनों आप बेतिया-म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन थे, उस समय की एक घटना का उल्लेख करना पाठकों के लिये अरुचिकर न होगा। आज़ादी की लड़ाई में आपके सहकर्मी पंडित प्रजापति मिश्र को कौन नहीं जानता। मिश्रजी की लोकहितैषणा, देश के लिये सर्वस्व निछावर करने की साध शायद ही अन्यत्र देखने को मिले। बेतिया-राज्य के मैनेजर साहब म्युनिसिपैलिटी में अपनी अप्रत्याशित हार से तिलमिला उठे थे। बाद की एक घटना ने आपकी क्रोधाग्नि ऐसी भड़काई कि आप आपे से बाहर हो गए। बेतिया में मीना-बाज़ार नाम का एक राज्य का सुंदर बाज़ार है। एक दिन हमारे मिश्रजी वहाँ के दूकानदारों को महात्माजी की पेटवाली बीमारी के लिये ईश-प्रार्थना करने की जो सभा होती थी, उसमें भाग लेने के लिये दूकान बंद करने का संदेशा दे रहे थे। राज्य के एक सिपाही ने आपको ऐसा करने से रोका। जबरन् मीना-बाज़ार से मिश्रजी को बाहर करना चाहा। इस पर इतना क्षोभ और असंतोष फैला कि मीना-बाज़ार में वर्षों के लिये ताले पड़ गए। राज्य की अपार क्षति हुई। विरोध में एक दूसरा बाज़ार ही बस गया, जो अब तक 'गांधी-बाज़ार' के नाम से मशहूर है। राज्य के मैनेजर साहब यह चोट बरदाश्त न कर सके। आपके इशारे से हमारे मिश्रजी पर अकेले में ऐसी नीचता-पूर्ण मार पड़ी कि आप महीनों तक शय्या-शायी रहे। ईश्वर की दया और विपिन बाबू की सेवा-सुश्रूषा से आप किसी तरह बच गए। कांग्रेस के ऊपर बेतिया-राज्य की कैसी शनैश्चर की दृष्टि थी, इसका अंदाज़ा इसी विकट परिस्थिति से चल सकता है। जैसा आघात मिश्रजी पर किया गया था, वैसा ही विपिन बाबू पर भी करने के लिये राज्य की ओर से प्रबंध था, पर संयोग से वह बच गए, और राज्य के मैनेजर को निराश होना पड़ा। इसी विकट परिस्थिति में हमारे विपिन बाबू को बेतिया में वर्षों रहकर काम करना पड़ा था।

१९२३ ई० में कांग्रेस का अधिवेशन गया में हुआ। विपिन बाबू ही स्वराज्यपुरी के निरीक्षक थे। वहाँ रहकर आपने जिस मुस्तैदी और ख़ूबसूरती से अपना कर्तव्य पालन किया, उसे सभी जानते हैं। सारांश यह कि आपकी शासन करने की क्षमता लोकोत्तर है। दो बार आप ज़िला-बोर्ड के चेयरमैन चुने गए। छ वर्षों तक बड़ी सफलता से ज़िला-बोर्ड का शासन किया। आपका व्यवहार सौम्य और मधुर है। जहाँ आपमें एक शासक की दृढ़ता है, वहाँ सहृदयता की मात्रा भी कूट-कूटकर भरी हुई है। सब पार्टियों को प्रसन्न रखने की आपमें अपूर्व क्षमता है। चंपारन के अपढ़ किसान भाइयों को स्वराज्य-जैसे कठिन विषय को हृदयंगम करा

देने की अद्भुत शक्ति है। आपका व्यक्तित्व प्रभावोत्पादक है।

१९२९ ई० के दिसंबर में कांग्रेस की बैठक लाहौर में हुई। वहाँ कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास किया। सत्याग्रह-संग्राम छेड़ने का निश्चय हुआ। १९३० ई० की छठी मार्च को समुद्र-तट पर, डंडी-नामक स्थान में, नमक-क़ानून तोड़ने के लिये महात्मा गांधी का इतिहास-प्रसिद्ध प्रस्थान हुआ। १३ एप्रिल को पहलेपहल उस महापुरुष ने नमक-क़ानून भंग कर भारतवर्ष में अहिंसात्मक संग्राम छेड़ देने का शंख-नाद किया। अब क्या था, भारतवर्ष के कोने-कोने में युद्ध-भेरी बज उठी। वीर-बाँकुरे अपने-अपने सैनिक लेकर रणांगन में कूद पड़े। संसार के इतिहास में अहिंसात्मक युद्ध का यह दृश्य बिलकुल अभिनव था। विपिन बाबू ने भी सैनिकों का एक छोटा-सा दल खड़ा किया। इस दल में दस सैनिक थे। सरदार स्वयं विपिन बाबू थे। यों इस टुकड़ी में ग्यारह आदमी थे। सभी वर्णों के लोग इस दल में शामिल थे। ब्राह्मण और चमार तिरंगा झंडा लेकर एक साथ चल रहे थे—पड़ाव पड़ने पर एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते थे। जाति-पाँति का भेद-भाव ज़रा भी न था। बेतिया-सब-डिवीज़न के योगापट्टी-थाने में पिपरहिया एक छोटी-सी बस्ती है। अड़तालीस मील की दूरी पर, मोतिहारी से पश्चिमोत्तर कोने में, यह गाँव वर्तमान है। ४ एप्रिल, १९३१ को आपका सैन्यदल पैदल रवाना हुआ। क्या ही अपूर्व दृश्य था! स्वराज्य-संग्राम में अपने को अर्पित कर देनेवाले ग्यारह सैनिकों का यह दल जिस समय चला, उस समय इसके ऊपर पुष्प-वर्षा हो रही थी। सैकड़ों जगह इन लोगों की आरती उतारी गई। युद्ध-क्षेत्र में जाने के समय प्राचीन भारत में सैनिकों का जैसा आदर किया जाता था, वैसा ही दृश्य आँखों के सामने था। आपका दल जहाँ-जहाँ गया, वहीं उसका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। नौ दिन में आप लोग पिपरहिया पहुँचे। बेतिया-नगरी ने आप लोगों का जैसा हार्दिक अभिनंदन किया, वह सर्वथा अनुपम था। पिपरहिया में स्वागत के लिये जो भीड़ इकट्ठी हुई थी, वह वर्णनातीत है। चंपारन के इतिहास में यह युद्ध-यात्रा अपने ढंग की निराली थी। पंद्रहवीं एप्रिल को आपने नमक बनाकर क़ानून भंग किया। दो सैनिकों के साथ आप गिरफ़्तार कर लिए गए। न्याय का नाटक खेलने के लिये नौकरशाही पहले से ही तैयार थी। वहीं पास के एक ख़ीमे में मैजिस्ट्रेट साहब सदल-बल उपस्थित थे। आप उक्त मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित किए गए। सच्चे कांग्रेसवादी की हैसियत से आपने मुक़दमे में किसी प्रकार का भाग नहीं लिया। आपको एक वर्ष की सादी क़ैद की सज़ा दे दी गई। आप 'ए' क्लास में रक्खे गए। आपके दोनो सैनिकों को भी छ-छ माह की सादी सज़ा मिली।

पंद्रह मिनट में यह नाटक समाप्त कर दिया गया। वहाँ से आप मोतिहारी-जेल पहुँचाए गए। मोतिहारी से आप हज़ारीबाग़-जेल चले गए। कृष्ण-जन्मस्थान में जाने का आपका यह पहला अवसर था। २६ फ़रवरी, १९३१ ई० को आप जेल से बाहर निकले। देश में इस समय क्षणिक संधि-स्थापन की चर्चा चल रही थी। सभी जगह गोलमेज़-सभा की चर्चा थी। आपको इन बातों से कोई प्रयोजन न था। आप सच्चे सैनिक की हैसियत से रचनात्मक कार्य में लग गए थे।

जेल से निकलने के कुछ ही महीने बाद आप एक बहुत भयंकर रोग के चंगुल में फँस गए। गरदन के पासवाली हड्डी में क्षय के कीड़ों ने

घर कर लिया। आपको इस बीमारी में बहुत मुसीबतें उठानी पड़ीं। १९३४ ई० के मध्य तक आप इस उलझन में पड़े रहे। इस बीमारी में ही, १९३३ में, स्थानीय नरकटियागंज-मिल खुला। मिल-अधिकारियों ने रैयतों को काफ़ी तंग करना—ईख के दाम में कम देना—शुरू किया। ग़रीब रैयतों की यह हालत देख आपसे रहा न गया। रोग-शय्या पर पड़े-पड़े ही आपने उनका संगठन करना शुरू कर दिया। मिल-अधिकारी घबरा गए। अंत में उन लोगों ने आपकी बातें मानकर रैयतों की माँगें पूरी कर दीं।

१९३४ ई० में भूकंप हुआ। ज़िले की काफ़ी बरबादी हुई। यद्यपि डॉक्टरों ने आपको मोटर पर घूमने—सफ़र करने से मना किया था, तथापि आपने जान हथेली पर रख भूकंप-पीड़ितों की सेवा की, और कई महीने मोतिहारी में रहकर आप उन पीड़ितों की सहायता करते रहे।

उसी वर्ष केंद्रीय एसेंबली की सदस्यता के चुनाव में मुज़फ़्फ़रपुर - चंपारन - ज़िले से कांग्रेस ने अपना उम्मेदवार खड़ा किया। शुरू में विरोध बहुत प्रबल प्रतीत हुआ, परंतु अंत में आप बहुत अधिक वोटों से मेंबर चुन लिए गए। एसेंबली में रहकर आपने तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों और रेलवे-कर्मचारियों के लिये काफ़ी आंदोलन किया, और समय-समय पर बहुत ही सार-गर्भित व्याख्यान देकर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। बिहार-सरकार ने आपको चीनी-सम्मेलन में रैयतों की ओर से प्रतिनिधि चुना था। १९३४ ई० में जो सुगरकेन-ऐक्ट बना, उसका श्रेय आपको ही है। ईख से रैयतों को कैसे पैसे मिलें, इसकी चिंता आपको बराबर बनी रही, और अब भी है। यही कारण है कि यू० पी० और बिहार की रैयतों की ओर से सरकार ने आपको सुगर-कंट्रोल-बोर्ड और गवर्नमेंट ऑफ़् इंडिया के बोर्ड में भी प्रतिनिधि चुना।

इधर इस साल, मिनिस्ट्री स्वीकार करने पर, बिहार-प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी ने आपको ही मिनिस्ट्री तथा कांग्रेस का कार्य चलाने योग्य समझकर दूसरी बार प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी का प्रधान मंत्री चुना है। आप इस समय जिस मुस्तैदी से इस काम को चला रहे हैं, उसका हर ज़िला मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहा है।

कांग्रेस के अलावा आप और कामों में भी दिलचस्पी लिया करते हैं। परसाल आपको ई० आई० आर० के कर्मचारियों के सम्मेलन में सभापति का आसन ग्रहण करना पड़ा था। आपने उन कर्मचारियों के लिये काफ़ी आंदोलन किया।

बिहार-उड़ीसा-पोस्टल और रेलवे-मेल-सर्विस के यूनियन के आप स्थायी सभापति भी हैं।

इतना झंझट होने पर भी आप प्रांत का काम बड़ी मुस्तैदी से चला रहे हैं। आजकल सारा भार आपके ही ऊपर है।

मैंने आपको बहुत नज़दीक से देखा है। राजनीतिक नेताओं में दूसरे के विचारों के प्रति असहिष्णुता का भाव बहुत अधिक देखने में आता है, समान विचार रखनेवाले लोगों से ही उनकी पटती है। परंतु विपिन बाबू सब तरह से इसके अपवाद हैं। सामाजिक विषयों में आप राजनीतिक मत-विभिन्नता के कारण किसी से द्वेष नहीं रखते। यह आपके चरित्र की सबसे बड़ी ख़ूबी है। दया-भाव आपमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। असहाय व्यक्तियों की यथाशक्ति सहायता करना आपके जीवन का व्रत है। सभी दलवाले आपके सदय व्यवहार और सौम्य स्वभाव के कारण आपसे प्रसन्न रहते हैं। आपसे चंपारन का मस्तक ऊँचा हुआ है, और आप पर हमें गर्व है।

जो मैं ऐसा जानती

[श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी]

[१]

कई दिन से प्रभाकर एक होटल में ठहरा हुआ है। दिन-भर अपने कमरे में चुपचाप लेटा रहता है। जी ऊब उठता है, तो बरांडे में टहलने लगता है। कुछ पुस्तकें भी उसके साथ हैं। कभी-कभी वह उनमें से किसी एक के पृष्ठ भी उलटने लगता है। हाँ, रात को अलबत्ता कुछ घंटों के लिये बाहर निकलता है। सरदी के दिन ठहरे, कोट-पैंट के ऊपर एक लंबा कोट भी वह पहन लेता है। कई महीने से उसने ठुड्ढी पर ख़ुशनुमा दाढ़ी बढ़ा रक्खी है। चश्मा उसका एकदम नए फ़ैशन का है। उसके लेंसेज़ गोल न होकर थोड़े त्रिकोण हैं; एकदम श्वेत न होकर थोड़े डार्क। एक नाइट-कैप भी उसके केश-गुच्छ पर मंडित रहती है।

जब उसने होटल में प्रवेश किया था, तब मैनेजर से, वार्तालाप के सिलसिले में, कहा था—"मुझे सिर्फ़ तीन दिन ठहरना है।" लेकिन तीसरे दिन उसने आप ही मैनेजर से जाकर कह दिया था—"अभी मुझे शायद दो-चार दिन और ठहरना पड़े।" बहुत प्रसन्नता से उसने यह बात की थी; उसकी मुद्रा पर उसका पुलकित मन जैसे झलमला उठा था।

मैनेजर के पास इन प्रवासियों के आवागमन का एक रजिस्टर भी रहता है। अन्य बातों के साथ उसमें आगत व्यक्तियों का पूरा पता और पेशा भी लिखा जाता है। प्रभाकर ने बतलाया था—वह कलकत्ते के 'क्राइसिस'-पत्र का प्रतिनिधि है। नाम उसका है रजनीकांत दास।

इधर कई दिन से इस होटल की दैनिक आय में आश्चर्य-जनक वृद्धि हो रही है। किंतु इस आय-वृद्धि का प्रत्यक्ष संबंध प्रवासी लोगों से न होकर उसके रेस्टोराँ से है। अनेक सभ्य नागरिकों की टोली-की-टोली आकर उसके कक्षों में भर जाती है। तभी खाद्य तथा पेय पदार्थों की माँग बहुत बढ़ गई है।

इन व्यक्तियों में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिन्होंने इस होटल में, कुछ दिनों के लिये, एक कमरा लेकर रहने की इच्छा प्रकट की है। एक-आध बार वे अंदर जाकर ख़ाली और भरे कमरों को देख भी आए हैं। उनका कहना है, ठहरने के चार्जेज़ कुछ कम कर दिए जायँ, तो हम लोग आ जायँ। वे इस होटल के भोजन से बहुत संतुष्ट हैं।

इन व्यक्तियों में से एक (राधाकांत) ने कल पूछा था—"आपके यहाँ प्रभाकर नाम के कोई महाशय तो नहीं ठहरे हुए हैं? वह हमारे बड़े घनिष्ठ मित्र हैं। लंबा शरीर है, गौर वर्ण। अधिकतर क्लीन शेव्ड रहते हैं।"

मैनेजर ने इतमीनान के साथ कह दिया था—"नहीं, मेरे यहाँ इस तरह के कोई महाशय नहीं आए।"

पर भोजन करके, बिल चुकाने के बाद, आज राधाकांत ने कह दिया—"कल प्रातःक़ाल ही मैं नंबर २७ के कमरे में आ जाऊँगा।"

और, मैनेजर ने उत्तर में मुस्किराते हुए कहा था—"गुडलक।"

[२]

प्रभाकर लौट रहा था। सेविन-अप ट्रेन तेज़ी के साथ चली जा रही थी। सेकंड क्लास के एक डब्बे

में, गद्देदार वर्थ पर, लापरवाही के साथ लेटा हुआ प्रभाकर अपने अतीत के स्वप्न देख रहा था।

"मुझे अपना नाम क़तई पसंद नहीं मिस्टर पी। सच!"

उसके कथन के प्रकार में एक बाँकपन था, एक मस्ती।

वह मुस्किराई थी। उसकी वाम भृकुटि-भंगिमा उस क्षण कैसी विमोहक थी! मन में आया था—प्रभा मृगछौनी है। उसे चाहिए हरा-भरा वन, नदी का किनारा और लुका-छिपी के लिये भू-लुंठित छाया-तरु।

उसने पूछा था—"आख़िर क्यों? तुम्हारा नाम मुझे तो बहुत पसंद आता है।"

"आता होगा पसंद। कौन जाने? और, तुम्हारा नाम तो मुझे और भी पंसद नहीं आता!"

बात कहकर वह खिलखिलाकर हँसी थी। हँसते-हँसते उसकी देह-यष्टि कुंचित हो-होकर कैसी विलसित हो उठी थी! उसके मन में आया था—प्रभा एक नन्ही-सी चिड़िया है। फुदकना उसका जीवन है; लक्षण—स्वरूप।

उसने तब कहा था—"हाँ प्रभा, सचमुच, अपना यह नाम मुझे भी पसंद नहीं। नाम के गुण-रूप को लेकर मैं अपवाद जो हूँ।"

इस पर वह गंभीर हो उठी थी। उसने कहा था—"तुम नाराज़ हो गए। इतना पढ़-लिखकर भी माडर्न कल्चर (आधुनिक सभ्यता) ग्रहण नहीं कर सके। मैं तो हँस रही थी!"

ट्रेन बनारस-कैंट में खड़ी थी। प्लेटफ़ार्म पर 'चाय गरेम', 'मीठा-गरम दूध चहिए', 'पान-सिगरेट' (धीरे से) 'हुज़ूर, पुलाव-ज़रदा?' तथा 'पूड़ी-मिठाई' की आवाज़ों ने प्रभाकर को सावधान कर दिया। तब कंबल से उसने अपना सिर ढक लिया।

थोड़ी देर में, जब ट्रेन स्टार्ट होने को थी, दूसरी ओर, पूर्व की वर्थ पर, एक और महाशय आ डटे। प्रभाकर फिर अपने स्वप्नों के हिंडोले पर जा पहुँचा।

कुछ ठीक है, कितने दिनों से वह देखने को नहीं मिली! तिस पर वह इन दिनों उसके नगर में भी जा पहुँचा था। न बाज़ार में देख पड़ी, न गंगा-तट पर। रेस्टोराँ और होटल में न सही, पर सिनेमा-हाउस में तो उसे मिलना ही चाहिए था।

माना, वह हिंदू-रमणी है। अपने स्वामी को पाकर उसने अपनी एक दुनिया बना रक्खी है। उसकी गोद में दो-एक बच्चे भी खेलते हैं। किंतु...न, यह किंतु कोई चीज़ नहीं प्रभाकर। प्रभा पति-प्राणा नारी है। वह तुझे भूल गई है। और, यही उसके लिये श्रेयस्कर भी है।

"वह तुझे भूल गई है" बार-बार मानो ये ही शब्द उसके कानों में आ रहे थे।

उसने करवँट बदल ली। एक आग-सी उसके भीतर दहकने लगी। तब वह उठकर बैठ गया। यह विश्व उसके लिये कुछ नहीं। चारो ओर से उसके लिये वह केवल एक शून्य है। क्यों वह छिपा-छिपा—भागा—फिरता है? स्वदेश की समस्याओं को लेकर?—हँ-हँ, जीवन से परे भी कोई स्वदेश है?—भूलते हो प्रभाकर। व्यक्ति के स्वार्थ के आगे समाज और राष्ट्र के हितों को हमें अधिक महत्त्व देना ही पड़ेगा।

मानता हूँ, व्यक्ति समाज के आगे नगण्य है; किंतु व्यक्ति अपने जीवन को खोकर किसका बन सका है? प्रभा की एक-एक साँस में मेरा जीवन है। उसके पत्र रक्खे हैं। उसके एक-एक शब्द में जिस आत्मा का निवास है, वह मेरी है—केवल मेरी। स्वामी और बच्चे भी उसके नहीं। शरीर से परे जो हृदय है, और हृदय से परे जो प्राण; उन प्राणों से भी परे अगर उसका कोई है, तो वह मैं हूँ—मैं, प्रभाकर।

वह उमँग उठा । उसका लोम-लोम सिहरने लगा ।

अरे, तीन बज गए, और वह सोया नहीं ! तब उसे अपनी स्थिति का बोध हो आया । वह सोचने लगा—फ़रार की रातें हैं । जीवन के प्रकृत उपभोग को जला-जलाकर व्यतीत होती हैं, चिता की भाँति धीरे-धीरे भस्मसात् ।

[३]

शहर-भर में कई दिन तक अनेक जगह तलाशियाँ हुई थीं । किसी तरह पुलिस को पता चल गया था, प्रभाकर आजकल यहीं आया हुआ है । उस होटल में भी तलाशी हुई, जहाँ प्रभाकर ठहरा था । इधर से उधर अनेक तार खटके थे । फ़ोन पर भी बातें हुई थीं ; नगर और विशेषकर सी० आई० डी० के केंद्रों में एक हलचल मची हुई थी ।

एक दिन था, प्रभा समझती थी—प्रभाकर उसी का है । आज भी वह मन-ही-मन, कभी-कभी, समझ लेती है—प्रभाकर उसी का है । किंतु प्रश्न यह है कि प्रभा किसकी है ?—हाँ, प्रभा किसकी है ?

अभी प्रभा सोचती थी—प्रभाकर उसका है । किंतु अब उससे कोई कह उठता है—तुझे अधिकार क्या है कि तू कह सके—प्रभाकर मेरा है ।

प्रभा का जैसे सब कुछ खो गया हो !

कौन कहता है, प्रभाकर उसका है ? झूठ—एकदम झूठ । प्रभा हिंदू-नारी है । पति-प्राणा, सती । प्रभाकर उसका कोई नहीं । भले ही कभी वह उसका कोई रहा हो । जीवन के साथ संबंध होते हैं, संबंधों के साथ घसिटता हुआ जीवन नहीं चला करता । मनुष्य स्थितिशील प्राणी है, और स्थितियाँ प्रगतिशील होती हैं । आज प्रभाकर उसका कोई नहीं ।

वाह, यह अच्छा तर्क रहा ! अभी जो थोड़ी देर में कोई कह उठे—स्वामी ही तेरा कौन है, तो ?

ठीक तो है । स्वामी भी उसका कौन हो सकता है ? अगर वह उसका है, तो प्रभाकर भी तो है । वही उसका मन का साथी है, प्राणों का, स्वप्नों का । और, स्वामी-कर्तव्यों से आवृत स्थूल जगत् का—नियति से विजड़ित इस पिंजर-बद्ध जीवन का । उसके साथ संबंध है समाज का ; दूसरे के साथ उन कल्पनाओं का, जो समाज को लेकर बंदिनी नहीं बन सकतीं । जिनके पर होते हैं, जो खुले अंबर में विचरण करती हैं । समाज और उसकी सीमाओं का कलुष एवं कर्दम जिन्हें छू नहीं पाता ।

उसी दिन भोजन करते-करते स्वामी ने कहा—"लाहौर जाना है । एक केस में सरकार की ओर से मुझे पैरवी करनी है । प्रश्न पैसे का उतना नहीं, जितना ख्याति का है । तुम अकेली बनी रहोगी ?"

"क्यों, बनी रहने को क्या है ? इस बार यह ऐसी कोई नई बात तो है नहीं ।"

"मैंने पूछा इसलिये कि पीछे तुमको कोई शिकायत न हो । एक बात मेरे मन में यह भी आई कि शायद तुम भी इस केस की पैरवी देखना चाहो ।"

तरंगित प्रभा बोली—"अच्छी बात है । मैं भी चलूँगी ।"

उसके भीतर खलभली मच गई । उसका प्रभाकर भी तो राजद्रोही है—उसका प्रभाकर । ओह ! कितने दिनों से उसने उसे नहीं देखा ! उसकी आँखें सजल हो उठीं । स्वामी के सामने से हटकर वह अन्यत्र चली गई ।

[४]

होटल छोड़कर प्रभाकर शहर से भागकर सीधा चला नहीं गया । वह अपने पुराने प्रोफ़ेसर मिस्टर विभूतिभूषण मुखोपाध्याय के यहाँ ठहर गया था । विभूति बाबू उसके विद्यार्थिजीवन के अन्यतम सहायक और प्रशंसक थे । वह चाहते थे, प्रभाकर आई० सी० एस्० बने । किंतु जब वह दूसरे पथ का पथिक बन गया, तब उनकी सारी आशाओं

पर जैसे पानी फिर गया। उन्हीं विभूति बाबू के बँगले पर जब दो-तीन दिन वह रहा, तो वह आनंद से पुलकित हो उठे।

शहर में दमन का दौर उस समय पूरे ज़ोर पर था। प्रभाकर ने ऐसे समय भागना उचित नहीं समझा। जब शहर में पूर्ण रूप से शांति स्थापित हो गई, सी० आई० डी० ने समझ लिया—वह यहाँ नहीं है; तब, कई दिन बाद, वह वहाँ से टला था।

* * *

इलाहाबाद-स्टेशन पर जान पड़ा, उस डब्बे की अवशिष्ट बेंचों पर और भी एक कुटुंब आ डटा है, अर्ध-निद्रित अवस्था में प्रभाकर को केवल इतना ज्ञात हुआ था। सिर से कंबल हटाकर उसने कुछ देखना उचित नहीं समझा था। अनेक प्रकार की भावनाएँ उसके मानस में आ-जा रही थीं। अनेक प्रकार के स्वप्न बनते और नष्ट हो जाते थे।

एक गाँव है। नदी का तट, आम्र-वन। एक झोपड़े में वह रहता है, प्रभा को लेकर। वह खाना बना रही है, और प्रभाकर निकट के गाँवों में घूमकर लौटा है। दोपहर के बारह बज गए हैं। उसे बड़ी भूख लग रही है। वह डॉक्टर है। कई गाँवों में मलेरिया का बड़ा प्रकोप है। उसने साइकिल से उतरते ही घंटी बजा दी, जिसमें प्रभा को मालूम हो जाय कि वह आ गया है।

वह कमरे के अंदर गया है। हैट उतारकर उसने एक खूँटी पर टाँग दी है। कपड़े बदलकर अब उसने केवल एक लुंगी पहन ली है। शाक तो बन गया है। सिर्फ़ रोटियाँ—कुछ थोड़ी-सी—और बनाने को हैं। तब वह चौके में चला गया। बोला—"उठो, उठो। अब तुम विश्राम करो। अब मेरी बारी है। देखना, मैं शर्त लगाकर कहता हूँ—मेरी पकाई हुई चपातियाँ तुम्हारी पकाई चपातियों की अपेक्षा देखने में ख़ूबसूरत और खाने में कहीं ज़्यादा स्वादिष्ट होंगी।"

प्रभा कहती है—"इन बातों में क्या रक्खा है? तुम्हें तो केवल बातें बनानी आती हैं। जब गिनती की दो रोटियाँ सेकने को रह गईं, तब मुझ पर शान जमाने चले हो! बैठो, मैं खाना परोसती हूँ। बैठो, तुम बैठो तो। अजी, कहा मानो।"

* * *

एकाएक सचेत हो पड़ा। उसे किसी का मीठा स्वर सुनाई पड़ा, कुछ परिचित-सा। उसे संदेह हुआ, प्रभा तो नहीं है!

पागल! प्रभा से भेंट होने को होती, तो वहीं न हो जाती। फिर स्वरों को लेकर तू उसे खोजेगा? विश्व कितना विस्तृत है। ज़रा अपने होश की दवा कर!

ख़ैर, न हो प्रभा। कोई चिंता नहीं। मैं अपना स्वप्न क्यों अधूरा रक्खूँ?

हाँ, तो वह माना नहीं। बाक़ी चपातियाँ उसी ने सेकीं। फिर खाना परोसा गया। दोनो खाने बैठे। प्रभा ने अनुभव किया, सचमुच प्रभाकर की सेकी चपातियों का स्वाद ही कुछ और है। वह बिहँस रही है। कहती है—"बाज़ी मेरे हाथ रही। तुम्हारी सेकी चपातियाँ मुलायम नहीं।"

अन्य गुणों की चर्चा न करके वह प्रकट करती है केवल उनका अवगुण। और, वह इसको लक्ष करके कहता है—"तुम्हारी शैतानी मैं ख़ूब समझता हूँ। मैंने कब कहा था, मेरी सेकी चपातियाँ मुलायम होंगी। कोमलता की सृष्टि करना मेरा गुण नहीं, उसका प्रतिनिधित्व मैं स्वीकार भी न करूँगा, किंतु कहो क़सम से कि मेरी बनाई चपातियाँ कुरमुरी नहीं—सोंधी नहीं।"

और प्रभा मुस्किराकर कह उठती है—"और जली नहीं हैं?"

* * *

फ़तेहपुर-स्टेशन आ गया है। डब्बे में दिन का

प्रकाश फैला हुआ है। प्लेटफ़ार्म से आवाज़ें आ रही हैं—'हुज़ूर, टी चाहिए।'—'तुम्हारे पास आज का 'नेशन बिल्डर्स' है?'—'चाय गरेम'—'लाओ, पैसे निकालो, यह रुपया देना है। जल्दी!' 'ज़रा देखके चलिए साहब, मैं खाना खा रहा हूँ!'—'हज़ूर, एक ही आना! मेहनत भी देखी होती!'

गाड़ी ने सीटी दी। फक, फाक, फक्-फक्, फक्.....

प्रभाकर उठ बैठा। चश्मा अब भी उसकी आँखों पर चढ़ा हुआ था। उसने देखा, सचमुच प्रभा है अपने परिवार के साथ। उसका जी चाहा, वह उससे दो बातें करे। किंतु वह बोला नहीं। बनारस-कैंट पर जो साहब पश्चिमीय बेंच पर आ डटे थे, वह उठकर उसे ध्यान से देख रहे थे।

वह उठा। सिगार निकालकर उसे होठों से लगाया। दियासलाई से जलाकर दो कश लिए। फिर उस घूरनेवाले आदमी के निकट जाकर उससे पूछा (स्वर बदलकर, वंग-भाषा-मिश्रित शब्दों में)—"मोशाय, तोमार दौलतखाना?"

वह एकाएक जैसे ख़िटपिटा गया। बड़ी कठिनता से अपने को सँभालकर बोला—"मैं, मैं आरा, पटना हाँ, पटना से आ रहा हूँ।"

एक सिगार उसकी ओर बढ़ा दिया।

उसने अस्वीकार करते हुए कहा—"एक्सक्यूज़ मी सर (माफ़ कीजिए महाशय)।" तदनंतर प्रभाकर लैट्रिन में घुस गया।

उस व्यक्ति ने लक्ष किया—उसकी जेब में कोई कड़ी चीज़ है। खिड़की से छूकर 'कट'-से बोली है।

प्रभाकर जब से उठा है, प्रभा भी बहुत सतर्कता से उसे देख रही है। बार-बार उसके मन में आता है—हो-न-हो, यह प्रभाकर है। वैसा ही लंबा शरीर, वही वर्ण, वैसी ही भाषा।

प्रभाकर को लैट्रिन में बड़ी देर लगी। उस व्यक्ति ने इस पर भी ध्यान दिया।

इस बार ज्यों ही प्रभाकर अपने बिस्तर पर आया, प्रभा कुतूहल से उसकी ओर देखने लगी। किंतु प्रभाकर ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

[५]

आँधियाँ आ-जा रही हैं। क्षण-क्षण पर स्थिर भावनाएँ बदलती जाती हैं, उड़ती जाती हैं। कर्तव्य की कठोरता से जकड़ा, बँधा हुआ मनुष्य एक ओर है; उद्देश्य की सिद्धि के पथ में जो अपने जीवन तक का उत्सर्ग किसी भी क्षण कर सकता है। दूसरी ओर एक पिपासाकुल प्राणी। वर्षों से प्रभा जिसके स्वप्निल पंखों पर ही उड़ी-उड़ी फिरती रही है। साक्षात्कार तक जिसका उसके लिये दुर्लभ रहा है, वही प्रभा उसके सामने है; परंतु वह उससे बोल तक नहीं सकता, प्रकट तक नहीं हो सकता! कभी उसके मन में आता है, वह इस बंधन को त्याग दे। खुलकर दो बातें उससे कर ले। उसके स्वामी के सामने ही वह एक बार प्रभा की प्रकृति का परिचय देकर खिल-खिलाकर हँस पड़े, और कहे—ह-ह-ह-ह! तुमको मैंने कैसे धोखे में डाल दिया! तुम मुझे पहचान तक न सकीं!!

किंतु दूसरे ही क्षण वह सोचने लगता है—किंतु जीवन के इस ज़रा-से मोह, इस क्षणिक आनंद के लिये वह अपनी इतनी साधना—तपस्या—को व्यर्थ कर डाले, यह नहीं हो सकता। हाँ, नहीं हो सकता।

और, एक बार प्रभा के मन में आता है—निश्चय यह प्रभाकर ही है। मुझसे बोलना नहीं चाहता, क्योंकि मैंने उसके साथ विश्वासघात किया है। भीतर-ही-भीतर व्यथा से उसका हृदय छलने लगता है। तभी तो वह राजद्रोही बना है! उसे अपने जीवन के प्रति कोई मोह नहीं रह गया। उसे हथेली पर लेकर वह चल रहा है। किसी भी क्षण उसका उत्सर्ग कर सकता है। तब उसे क्यों

मेरी अपेक्षा हो ! वह प्रभाकर है—उस पार रहता है। बीच में रहना उसने सीखा नहीं। उसके जीवन में कहीं कोई द्विधा नहीं—रंध्र नहीं। वह अकेला है, अद्वैत है।

प्रभा ने चाहा, वह उसके चरणों पर अपना मस्तक टेक दे, और तर कर दे उन्हें अश्रु-धार से। किंतु इतनी दूर चला आया हुआ उसका नारीत्व, उसका दांपत्य और यह सलोना मातृत्व ! फिर, वह किसी को एक बार धोखा दे सकती है—नहीं; साफ़ शब्दों में—दे ही चुकी है। तब क्या यह उचित होगा कि वह अपने स्वामी को भी धोखा दे, और इन अबोध बच्चों को ! छिः !!

कानपुर-स्टेशन आ रहा है। कानपुर, युक्तप्रांत का सर्वश्रेष्ठ व्यापारिक केंद्र, अमर शहीद गणेश भाई का क्रीड़ा-क्षेत्र, तीर्थवर, तुम्हें प्रणाम है।

प्रभाकर कुछ अस्त-व्यस्त हो उठा है। वह प्रभा की ओर देखना नहीं चाहता, तो भी देख ही लेता है। उसके कपोल आज भी वैसे ही अरुणारे हैं, उसकी आँखें आज भी वैसी ही नुकीली। कहीं कुछ भी नहीं बदला है प्रभाकर ! किंतु कानपुर जो आ गया है। उसे ब्रेकफ़ास्ट करना है, और पुल के नीचे खड़े दिलीप से मिलना है। उसे कुछ सूचनाएँ देनी हैं।

गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर लगती है।

"थोड़ी देर से तुम इतनी गंभीर क्यों हो रही हो प्रभा ?" उसके स्वामी ने पूछा—"किसी का ख़याल आ गया क्या ?"

ट्रेन खड़ी हो गई है। उतरनेवाले लोग उठकर खड़े हो गए हैं। आनेवाले आने की चेष्टा में हैं। इस आवागमन में धैर्य, शांति, स्थिरता और संतोष की कहीं गति नहीं, देर होने पर आने-जानेवाला रह भी सकता है। और, प्रभाकर चट से डब्बे से बाहर हो जाता है। पीछे से और बहुतेरे व्यक्ति चले जाते हैं।

बीच में प्रभा कहने लगती है—"हाँ, कुछ इसी प्रकार की बातों के सोच में पड़ गई थी। यहाँ जो महाशय बैठे हुए थे, यह बिस्तर छोड़कर जो अभी बाहर गए हैं, जानते हो, कौन थे ?"

"कौन थे ?" स्वामी ने अधीर उत्सुकता से पूछा।

"वह थे......केस के अभियुक्त श्रीप्रभाकर।" प्रभा ने इधर-उधर देखते हुए कहा।

"तुम कहती क्या हो प्रभा !" उसके स्वामी ने अत्यंत विस्मय से पूछा—"तुम उसे पहचानती हो ?"

अधीर, व्याकुल और मर्माहत प्रभा बोली—"पहचानती हूँ।"

किंतु अवसर आने पर प्रभाकर के सामने वही प्रभा भीतर से पछताती, हाथ मलती, ऊपर से दृढ़ और स्वाभाविक रूप से कहती है—"मैं नहीं जानती कि यह कौन हैं, कहाँ रहते और क्या करते हैं। मैंने इनको कभी देखा तक नहीं।"

यद्यपि वह जानती है, अब उसके इस कथन का कोई मूल्य नहीं। प्रभाकर को मुक्त कराना उसकी सामर्थ्य के बाहर है।

प्रभाकर मूर्तिवत् स्थिर है। विषाद और हर्ष, वेदना और उसका माधुर्य उसके लिये एक समान है—शून्य। किंतु बार-बार प्रभा के मन में आता है........।

१. शिशिर-गीत

(१)

अस्ताचल की ओर दौड़ता शिशिर-प्रपीड़ित दिनकर ;
संध्या आती उषा-अजिर में घन-केशों में छिपकर।
बादल के विमान से उतरी आती पतझड़-छाया ;
चुनती पत्र हिला साँसों से तन्वी लतिका काया।

(२)

मुरझी तीक्ष्ण तुषार-हास से शरद-हासिनी नलिनी ;
पद रखते ही रोती पल्लव-दल-परिपूरित धरणी।
लटकीं लतिकाएँ खोई-सी शशधर की बाँहों पर ;
काँप आ गया गिरि के कर पर यह हिल्लोलित अंबर।

(३)

उड़ा दृगों का इंद्र-चाप मिट गए झुके मद-बादल ;
अधर-कौमुदी कुम्हलाई, गिर पड़े कुंद के मृदु दल।
उड़ा आह सौरभ कपूर-सा ! उड़ा कहीं जीवन-खग ;
च्युत पत्रों के सागर में हा ! समा गया सारा जग।

(४)

पद पर लोट रहे वैभव में पले हुए मृदु किसलय;
पर समाधि से अचल खड़े हैं रज-पालित तरु निर्भय।
मेरी कोकिल, उजड़ा वह वातास-विकंपित मधुवन;
हे विदेशिनी, चुभता उर म क्षीण रुदन का कंपन।

(५)

अब तो क्या निष्ठुर-समाधि पर शेष रहा है रोना;
करुणा के इस निर्मल जल से निज पापों को धोना।
इस ध्वंसावशिष्ट के सम्मुख आज रुदन कर जी-भर—
गुंजित कर दूँ लोक-लोक में निज मधुवन का मर्मर।

चंद्रकुँवर वर्तवाल

× × ×

२. बगल

कुछ मनुष्यों की बगलों से प्रायः इतनी दुर्गंधि आती है कि उनके पास बैठने को जी नहीं चाहता। स्त्रियों के लिये तो यह बड़ा भारी दोष है। ऐसी स्त्री का पति—यदि वह सफ़ाई-पसंद और नाज़ुक-मिज़ाज है—उससे प्रेमालाप और हास्य-विलास करना तो दूर, कभी पास बैठना-उठना भी पसंद न करेगा। अतः सुंदरी महिला की बगल यदि सुगंधि-युक्त न हो, तो कम-से-कम दुर्गंधि-युक्त तो कदापि न होनी चाहिए।

सफ़ाई

बगल में दुर्गंधि आने का कारण प्रायः यही होता है कि उसकी सफ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान नहीं दिया जाता। हमारी स्त्रियों का स्नान ही कुछ अजब बेढंगे ढंग का होता है। हमारी समझ में बहुत कम महिलाएँ स्नान करते समय बगल-सरीखे आवश्यक अंग की समुचित सफ़ाई का ध्यान रखती हैं। चाहिए तो यह कि स्नान करते समय बगल को खूब मल-मलकर धोया जाय। कभी-कभी साबुन और उबटन भी लगा देना चाहिए, और नहाने के पश्चात् सूखे तौलिए से अच्छी तरह पोंछ डालना चाहिए। गीला छोड़ देना भी अनुचित है। साबुन लगाने के बाद धोकर तेल भी लगा देना चाहिए, किंतु अधिक नहीं।

दुर्गंधि

अधिकतर रक्त-विकार से बगल आदि अंगों में दुर्गंधि आने लगती है। ऐसी दशा में रक्त-शोधक ओषधियों का सेवन करना चाहिए। जिनके पसीने में बू आती है, उनकी बगल भी प्रायः अधिक बू करती है। एक वैद्य की राय है कि बू मारना नाग-दवन (एक प्रकार की बूटी) नित्य सेवन करने से दुर्गंधि दूर हो सकती है। किंतु, हमारी राय में, इसके साथ बाह्य उपचारों की भी आवश्यकता है। कुछ बाह्य उपचार निम्न-लिखित हैं—

(१) सफ़ेद चंदन, और एक नींबू का रस गुलाब-जल में डालकर उससे एक सप्ताह बगल धोने से दुर्गंधि जाती रहेगी।

(२) बेल-वृक्ष की जड़ और छोटी हर्र का

में पीसकर उबटन की भाँति लगाने से भी दुर्गंधि दूर होती है।

(३) बालछड़, मुरदासंग, हलेला, मोथा सम भाग पानी में पीसकर मलें। इससे शरीर या पसीने की दुर्गंधि दूर होती है।

(४) नींबू के पत्तों का लेप या पानी में पीसकर अधजली हल्दी का लेप भी उपयोगी है।

(५) नागकेशर, सिरस का बक्कल, पठानी लोध, ख़स, हड़ की छाल, सबको पीसकर उबटने की भाँति लगाने से दुर्गंधि दूर होती है।

(६) मुरदासंग ३ माशा, काफ़ूर ३ माशा, सफ़ेद चंदन ६ माशा अर्क़ गुलाब में पीसकर लेप करे, दुर्गंधि दूर होगी।

किंतु इन प्रयोगों को लगातार कुछ दिनों करना चाहिए। एक ही दो बार के लगाने से विशेष लाभ की संभावना नहीं।

बाल

युवावस्था में अन्य स्थानों की भाँति बग़ल में भी बाल उगते हैं। स्त्रियाँ भी इस प्राकृतिक नियम से मुक्त नहीं। हाँ, पुरुषों की अपेक्षा किन्हीं-किन्हीं स्त्रियों के बाल प्रायः थोड़े, नरम और छोटे होते हैं। किसी सुंदरी रमणी की बग़ल में अधिक बड़े और कड़े बालों का होना निस्संदेह भद्दा मालूम होता है। ऐसी दशा में बालों को छोटा करने के लिये यदा-कदा क़ैंची का प्रयोग किया जा सकता है। जड़ से साफ़ करने के लिये सेफ़्टी रेज़र और बाल-सफ़ा पाउडर भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं। किंतु इन प्रयोगों से अंत में बाल कड़े निकलते हैं, और उस्तरा लगाने से तो फैल भी जाते हैं। एक अँगरेज़ लिखता है—

"The longer the hair, the softer it is; the shorter the hair, the stiffer it is.............If she wants it to remain soft, she had better let it alone, or simply trim the long ends off with a pair of scissors."

अर्थात् बाल जितने लंबे होंगे, उतने ही मुलायम और जितने छोटे होंगे, उतने ही कड़े। यदि स्त्री उन्हें मुलायम रखना चाहती है, तो उसे चाहिए कि उन्हें यों ही रहने दे, या क़ैंची से केवल ऊपरी भाग तराश दिया करे। अस्तु।

बाल-सफ़ा पाउडर सभी अच्छे नहीं होते, किन्हीं-किन्हीं से तो त्वचा जलकर बिलकुल काली और कड़ी हो जाती है। किसी भी बाल-सफ़ा का प्रयोग करके, तुरंत उस भाग को साबुन से धोकर वैस्लीन या तेल लगा देना चाहिए। इससे जलन नहीं पड़ती और त्वचा मुलायम बनी रहती है।

(१) शुद्ध शंख-भस्म और हरताल-चूर्ण केले के रस में पीसकर लेई-सी बना ली जाय। बालों की जड़ों में लगाने से थोड़ी ही देर में बाल बिलकुल साफ़ हो जाते हैं।

(२) बैरियम सल्फ़ाइट स्याह एक औंस, गेहूँ की मैदा दो औंस, यूकेलिप्ट्स दो ड्राम मिलाकर बंद शीशी या डिब्बी में रख छोड़ें। गाढ़ा लेप कर देने से दो ही तीन मिनट में बाल साफ़ हो जाते हैं। वीटक्रीम आदि कतिपय विलायती चीज़ें भी इस्तेमाल की जाती हैं, किंतु ये बहुत महँगी पड़ती हैं *।

बुद्धिसागर वर्मा

(विशारद, बी० ए०, एल्० टी०)

× × ×

३. मोटापा और उसे दूर करने के उपाय

शरीर का सुडौल होना सुंदरता का मुख्य अंग है। जिस स्त्री का शरीर न भारी और न दुबला-पतला हो, वह कैसी प्रिय लगती है। शरीर में अधिक चर्बी बढ़ जाने से सुंदरता नष्ट होने लग

---

* 'स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य'-नामक अप्रकाशित पुस्तक से।—लेखक

जाती और स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगता है। शरीर को मोटापे से बचाने के लिये अनेक प्रयत्न किए जाते हैं। पश्चिमीय देशों में तो इसके लिये बहुत-से अस्पताल खुले हुए हैं, जिनमें अनेक प्रयोगों द्वारा मोटापा दूर किया जाता है। भारतवर्ष में भी बंबई और कलकत्ते में ऐसे सेंटर्स खुले हैं। वज़न घटाने के लिये अधिकतर पाँच उपाय काम में लाए जाते हैं—

१—व्यायाम, दौड़ना और परिश्रम से काम करना।

२—भोजन और व्रत-उपवास।

३—ओषधि-सेवन।

४—पानी का इलाज।

५—पहनने के वस्त्र।

(१) व्यायाम करने से शरीर के प्रत्येक भाग में हरकत होती है, ख़ून साफ़ होता है, और पसीने के ज़रिए दूषित पदार्थ बाहर निकल जाते हैं। इसलिये वायु द्वारा जो मोटापा शरीर में प्रवेश कर जाता है, वह नहीं होने पाता। अधिक परिश्रम करने से भी कुछ व्यायाम हो जाता है। गाँव की स्त्रियाँ, जो अधिक परिश्रम करती हैं, शहरों की स्त्रियों की अपेक्षा बहुत कम मोटी होती हैं। अतएव मोटापे से बचने के लिये परिश्रम करते रहना बहुत आवश्यक है।

श्रीमती लज्जावती जैन

(२) भोजन का प्रभाव शरीर की स्थूलता पर बहुत अधिक पड़ता है। यदि ऐसे भोजन किए जायँ, जो कम चर्बी बढ़ाते हैं, जैसे फल, रोटी आदि, और थोड़े समय के लिये चर्बी बढ़ानेवाले पदार्थ जैसे घी, दूध आदि बंद कर दिए जायँ, तो शरीर में मोटापा कम हो सकता है। और, जो वस्तु खाई जाय, बहुत चबाकर खाई जाय। कभी-कभी अनशन भी किया जाय, और अनशन करने के बाद बहुत हलकी चीज़ खाई जाय।

(३) ओषधि-सेवन से भी मोटापा कम हो जाता है। ओषधियाँ बहुत-सी हैं, परंतु वे नुक़सान भी कर सकती हैं। प्रातःकाल यदि एक गिलास ताज़ा जल पी लिया जाय, तो यह भी एक ओषधि का काम देता है, किंतु बिस्तर से उठने पर, शौचादि से पहले, पिया जाय। क्रूसन साल्ट भी उपयोगी ओषधि है। इसके सेवन से दूषित पदार्थ पाख़ाने के रास्ते निकल जाते हैं। यह प्रत्येक बड़े डॉक्टर की दूकान पर मिल सकता है। सेवन करने की विधि साथ होती है।

(४) पानी का इलाज मोटापे के लिये बहुत उपयोगी है। इसे प्राकृतिक चिकित्सा भी कहते

हैं। पानी का इलाज टब में बैठकर किया जाता है, जो चार प्रकार का होता है—एक हिप-बाथ, दूसरा स्टिज़-बाथ, तीसरा स्टीम-बाथ और चौथा सन-बाथ कहलाता है।

(५) पहनने के कपड़े शरीर को बेढंगा होने से थोड़ा-बहुत रोकते हैं, जैसे कारसेट और चोली। कारसेट पश्चिमीय देशों में बहुत काम में लाई जाती है। यह एक प्रकार के मोटे और रबड़ के धागे मिले हुए कपड़े की होती है, जिसे अंडरवियर के तौर पर पहना जाता है। इससे शरीर तना रहता है, और पेट आगे नहीं निकलता। परंतु इससे स्वास्थ्य को कुछ हानि पहुँचती है। चोली का प्रयोग बहुत लाभदायक है। इससे शरीर में फुर्ती आती है, और स्तन नहीं गिरते *।

(श्रीमती) लज्जावती जैन

× × ×

४. हे कुमति !

(१)

तू आती नित लेकर विनाश।
मानव - मनोपवन में जब
आती है तू सज-धजकर,
तेरे इंगित पर चलता
जन साथ सुमति का तजकर।
फिरती तू जन के आस-पास;
तू आती नित लेकर विनाश।

(२)

देती है सुमति - सुमन सब
झुलसा तेरी ही ज्वाला—
कर भस्मीभूत बनाती
मन का उपवन अति काला।
करती उसमें अपना निवास।
तू आती नित लेकर विनाश।

(३)

दिखता मनोज्ञ जो अंबर
उपवन पर, शुभ्र मनोहर,
होता प्रधूम से काला
अपनो प्रतिभा को खोकर।
तम लाती क्षय करके प्रकाश।
तू आती नित लेकर विनाश।

श्रीमती कमलादेवी जैन

---

* लेखिका की 'स्वास्थ्य और सौंदर्य' पुस्तक से उद्धृत।

(४)

फिर ले खनित्र तू कर्कश,
कर गर्त अगाध मही में
करती त्रिशूल आरोपण
उस जली हुई पृथ्वी में,
करके उपवन का सर्वनाश।
तू आती नित लेकर विनाश।

(५)

सुंदर, सुरभित उपवन में
करती निवास तू जब तक,
मनचाही करतूतों से
करती विनाश है भरसक।
रहता जन तेरा नित्य दास।
तू आती नित लेकर विनाश।

(श्रीमती) कमलादेवी जैन

× × ×

५. लखनऊ की 'सोशल-सर्विस-लीग'

अगस्त सन् १९३७ की बात है, मैंने 'कला-मंदिर' (Girls' school of Arts) के लिये एक स्कीम तैयार करके हर एक्सेलेंसी लेडी हेग और श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित आदि को दिखाई थी। आप लोगों ने उसे पसंद किया था, और श्रीमती हेग ने तो स्कीम के चालू हो जाने पर पूर्ण सहयोग का वचन भी दिया था। बाद में वही स्कीम मैंने 'ज़नाना-लीग' की सर्वेसर्वा श्रीमती मिसेज़ गुप्ता एम्० एल्० सी० के सामने भी रक्खी। उन्होंने भी बहुत पसंद की और श्रीमती ई० असीरवाथन को भी दिखाई। १५ अगस्त, १९३७ ई० का श्रीमती असीरवाथन का पत्र मुझे मिला, जिसमें आपने मेरी स्कीम पसंद करते हुए 'ज़नाना-लीग' के शिक्षा-विभाग की मीटिंग १७ अगस्त को होगी, यह सूचना दी थी, और मेरे वहाँ उपस्थित होने की इच्छा प्रकट की थी। मैं १७ ता० को मीटिंग में गया। वहाँ स्कीम की एक-एक बात पर बहस वग़ैरह और कुछ अदल-बदल के बाद तय हुआ कि स्कीम अच्छी है, और इसे चालू किया जाय।

हाँ, श्रीमती गुप्ता ने एक शर्त यह भी रक्खी कि 'कला-मंदिर' 'ज़नाना-लीग' की अध्यक्षता में रहेगा। मुझे तो स्कीम की सफलता देखनी थी। मैं इसे भी मान गया। अंत में मैंने कहा—"इस स्कीम को चालू करने में काफ़ी दौड़-धूप और मेहनत की ज़रूरत होगी। कृपया आप लोग यह बतावें कि आपमें कौन-कौन साहबा इसमें मेहनत से काम करने के लिये तैयार हैं?"

मिसेज़ गुप्ता ने फ़ौरन् जवाब दिया था, जो आज तक कानों में गूँज रहा है—"भाई, इसी का तो रोना है। अगर काम ही करनेवाली कोई होती, तो 'ज़नाना-लीग' का स्कूल, जिसका कुल ख़र्च सत्तर-पचहत्तर रुपए महीना है, न चलाए चलता?"

उधर 'कला-मंदिर' 'ज़नाना-लीग' के अधीन रहे, इधर 'म्याऊँ का ठौर' पकड़ने के लिये कोई तैयार नहीं, यह देखकर मैंने सबको श्रद्धा से प्रणाम किया, और चलता बना।

उसी 'ज़नाना-लीग' और मिसेज़ गुप्ता को 'सोशल-सर्विस-लीग' के नाम से 'सुधा' आदि पत्रों द्वारा अपील करते देख मुझे आश्चर्य हुआ था, लेकिन अंत में यह देखकर कि अभी तो भवन-निर्माण के लिये केवल ८०,०००) का तक़ाज़ा है, संतुष्ट हो गया। "आगे-आगे देखिए होता है क्या!" मगर एक बात सोचकर ख़ुशी हुई कि कदाचित् अब 'ज़नाना-लीग' में कुछ काम करनेवाली आ गई हैं, और वे भी बिलकुल अप-टु-डेट, जो लीग का हिंदोस्तानी में नामकरण करना भी शान के ख़िलाफ़ समझती हैं। इस लीग के उद्देश्यों

पर अलग-अलग विचार करने पर तो पूरा पोथा तैयार होगा, संक्षेप में केवल इतना ही कहना काफ़ी होगा कि इसमें केवल नं० ३ और ४ ही ऐसे हैं, जिनसे हमारी बहनें कुछ लाभ उठा सकती हैं; और वह भी तब, जब कुछ स्त्रियाँ ऐसी हों, जो इसमें काम करने के लिये तन-मन से प्रस्तुत हों। अपने उद्देश्यों के अंत में आप लिखती हैं—"......जो लड़कियाँ पाठशालाओं में शिक्षा पा रही हैं वे, और ऊँचे दर्जे की पढ़ी-लिखी, धनी स्त्रियाँ क्लब, एसोसिएशन आदि में अपना समय व्यतीत कर देती हैं। उनके मनोरंजन का वहाँ यथेष्ट साधन रहता है। पर उन हज़ारों स्त्रियों के लिये, जो शहर की घनी और गंदी बस्ती में रहती हैं, कोई ऐसा स्थान नहीं, जहाँ वे भी जायँ, और अपना जी बहलाएँ, तथा यह जानें कि उनके जीवन और संसार में आने का क्या उद्देश्य है।" आदि।

यहाँ लीग की संचालिकाओं को मैं बता देना चाहता हूँ कि उच्च शिक्षा-प्राप्त तथा धनी घरों की स्त्रियाँ क्लब-घरों में जाकर और एसोसिएशन आदि में अपना समय बिताकर जिस प्रकार अपने 'जीवन और संसार में आने के उद्देश्य' को सफल बनाती हैं, वह हिंदोस्तानी दिमाग़ रखनेवालों को ज़रा अच्छा नहीं लग रहा है। इसलिये शहर की घनी और गंदी बस्ती में रहनेवाली स्त्रियों को भी यह 'लीग' यदि उसी साँचे में ढालना चाहती हो, तब तो मैं इसकी संचालिकाओं से यही प्रार्थना करूँगा कि बस, आप लोग इन पर केवल अपनी कृपा बनाए रक्खें, जिससे इनके पेट का काम चालू रहे। कदाचित् इन संचालिकाओं को यह पता नहीं कि इन गंदी बस्ती में रहनेवाली स्त्रियों के पास बावर्ची नहीं, जो इनका खाना पका सके; कहारिन नहीं, जो चौका-चूल्हा सँभाल सके; आया नहीं, जो इनके बच्चों की देख-भाल कर सके, और तिस पर साया भी नहीं, जिसे झिलमिलाती साड़ी के नीचे पहनकर तथा तितलियों की तरह रंग बदलती हुई ये लीग की शोभा बढ़ा सकेंगी। रही मनोरंजन की बात, सो संचालिकाएँ इतमीनान रक्खें, इन ग़रीब बहनों का मनोरंजन इनके पतियों और बच्चों से ही काफ़ी हो जाता है। ये मनोरंजन नहीं चाहतीं, फिर भी कुछ चाहती हैं। ये चाहती हैं कुछ ऐसे हुनर, जिन्हें सीखकर अपने पेट की ज्वाला शांत कर सकें; कुछ ऐसा आत्मबल, जिससे ये अपने पैरों पर खड़ी होने का साहस कर सकें; कुछ ऐसी शिक्षा, जिससे ये स्वतंत्रता-संग्राम में आगे बढ़ सकें; कुछ ऐसा ज्ञान, जिससे समाज की कुरीतियों को दूर भगाकर अपना कोई स्थान बना सकें।

इन सब बातों के लिये ८०,०००) के भवन की आवश्यकता नहीं। हाँ, क्लब-घर, डांसिंग-हॉल, स्टेज आदि के लिये भवन चाहिए ही; लेकिन ये हमारी बहनों को कहाँ तक लाभदायक होंगे, यह विचारणीय है। अतः लीग की संचालिकाओं से मैं यही कहूँगा कि इस प्रकार जनता के धन का दुरुपयोग न कर अपनी उन असंख्य निर्धन बहनों का कुछ ख़याल करें, जिन्हें चौबीस घंटे में एक बार भी भोजन मिलना कठिन है। रुपया तो लीग के पास आएगा ही, क्योंकि लीग में स्वयं धनी-मानी श्रीमतियों का हाथ है, और धनी के पास ही धन आता है, यह मानी-जानी बात है। आशा है, संचालिकाएँ इस रुपए के सदुपयोग पर ध्यान देंगी।

उमाशंकरसिंह
(प्रकाशक 'कला', लखनऊ)

× × ×

६. देश या बच्चा ?

बेचारा, ग़रीब, दुबला-पतला, हड्डियों का एक ढाँचा-सा फ़ूचंग पीपिंग-मैंको-रेलवे के एक छोटे-से स्टेशन पर नया ही सिगनलर आया था—अभी

हाल ही में रेलवे के प्रारंभिक स्कूल की निःशुल्क शिक्षा समाप्त करके। रेलवे-स्टेशन से लगभग दो मील पर, एक टूटे-फूटे सरकारी मकान में, वह पड़ा रहता, और गाड़ी आने के समय अपने दुबले-पतले हाथों से सिगनल देता—नित्य उसी समय, मशीन की तरह। इस काम में न कभी गड़बड़ी होती, और न थोड़ी-सी भूल ही। कठिन शीत में भी, जब मंगोलिया की बर्फ़ीली हवाएँ मनुष्य के चर्म-आवरण को 'एक्स-रे' के समान पार कर हड्डियों तक अपना कटु संदेश ज़बरदस्ती पहुँचाकर ही मानतीं, फ़ूचंग अपनी नीरव कुटी से अपना सरकारी ऊनी ओवरकोट पहने निकलता, और गाड़ी पास होने के लिये सिगनल देता। शिक्षा के नाम पर उसने वर्णमाला के मूक वर्णों से ही थोड़ा-बहुत परिचय कर पाया था, पर था बड़ा बुद्धिमान्, कर्तव्य-परायण, परिश्रमी तथा हँसमुख।

उसकी स्त्री मिंग जू भी उसी के समान चपल, हँसमुख, कर्तव्यशील तथा पति-परायणा थी। एक था छोटा-सा बालक सू। बस, इतना ही छोटा-सा था फ़ूचंग का परिवार। तमाम घर का काम समेटकर मिंग जू पति का हाथ बँटाती। बालक सू उस जन-शून्य, नीरव स्थान में रेलवे-लाइन के आस-पास पड़े गोल पत्थरों को ही अपना साथी मानकर खेला करता। इसी प्रकार नित्य इस छोटे-से, सरल, निरीह परिवार का जीवन बीतता। मिंग जू ने अपने पति का काम सीख लिया था। रेलों के आने-जाने के टाइम उसे भली भाँति याद हो गए थे। पति के बीमार हो जाने पर वही उसका सब काम करती—सरकार को उसके स्थान पर किसी दूसरे को भेजने की आवश्यकता न होती।

स्वस्थ होने पर फ़ूचंग रात की आठ बजे की अंतिम गाड़ी निकालकर आता, तो मिंग जू उसके लिये थाली परोसे उसकी प्रतीक्षा में बैठी मिलती, और बालक सू फटे गुदड़ों में लिपटा, निद्रादेवी की श्रमहारिणी गोद में सुख से सोता हुआ।

चीन के क्षितिज पर आज युद्ध के बादल मँडरा रहे हैं—जापान के जंगी जहाज़ों के रूप में, जिनसे विनाशकारी बम-वर्षा हो रही है, मृत्यु बरस रही है। जापानी सैनिक आधुनिक विज्ञान-प्रदत्त समस्त ध्वंसकारी उपकरणों से सुसज्जित होकर, उन्मत्त बैल के समान, चीन की हरी-भरी खेती को ध्वंस करने में लगे हैं। इधर चीनी सैनिक भी प्राण-पण से अपने पुराने हथियारों से स्वतंत्रता देवी की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं।

धीरे-धीरे फ़ूचंग ने भी सुना, जापानी सैनिक उसके प्यारे नगर की स्वतंत्रता का अपहरण कर रहे हैं! पीपिंग पर भी जापान का अधिकार हो गया है।

प्रातःकाल का समय था। नित्य के समान आज भी भगवान् दिनकर प्राची से यथासमय उदय हुए, नित्य के समान ही उन्होंने फ़ूचंग के शांति-निकेतन को निहारा। प्राची ख़ून से लाल थी। शायद वहाँ भी दिवस के आधिपत्य के लिये निशा तथा दिवाकर में अभी-अभी महाभारत मचा होगा, दोनो ओर से कितने ही योद्धा हताहत हुए होंगे, उन्हीं का रक्त तो बिखरा पड़ा है प्राची के गगनांगण में। फ़ूचंग शायद इन्हीं विचारों में व्यस्त हो अनमने भाव से सूर्य का रक्त-रंजित पथ देख रहा था। आज चीन की भूमि भी तो इसी लाल रंग से रँगी हुई है। न-मालूम कितनी देर से बैठा फ़ूचंग इन्हीं विचारों की माला पिरो रहा था—

"तो क्या सचमुच ही पीपिंग पर जापान का अधिकार हो गया? अभी कल ही तो रेल का गार्ड कह रहा था। इतना पढ़ा-लिखा आदमी काहे को ग़प हाँकेगा। ये लोग तो रोज़ अख़बार पढ़ते हैं, इन्हें सब कुछ मालूम रहता है। यदि इस ओर

आक्रमण हुआ, तो......" किसी अज्ञात आशंका ने उसके चिंताकुल मुख पर स्याही पोत दी।

"सुना है, वे ऐसे-ऐसे गोले फेंकते हैं कि बस, एक ही गोले में शहर-का-शहर बरबाद हो जाय। ऐसी हवा चलाते हैं कि बस, आदमी का अपने आप दम घुटने लग जाय, तमाम बदन पर छाले पड़ जायँ। राम-राम, आदमी काहे को, पूरे दैत्य हैं, दैत्य—वे जो चाहें, कर सकते हैं।" विषैली गैस और बम की अनुरंजित कल्पना ने उसे सचमुच ही भयाकुल कर दिया।

सहसा बड़े ज़ोर से गड़गड़ाहट होने लगी, चारो ओर एक प्रलयंकरी गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी। .फूचंग चौंक पड़ा, मानो अमावस्या की अर्धरात्रि में सोते हुए कोई भयंकर स्वप्न देखा हो। बालक सू कौतूहल-वश दौड़कर आकाश की ओर देखने लगा—दो हवाई जहाज़ों को मँड़राते, जिन पर था जापान का निशान। सू उन अद्भुत वस्तुओं को देखकर नाचने लगा, पर .फूचंग किसी भयंकर, अज्ञात आशंका से चिल्ला पड़ा। गड्-ड्-ड्-ड्-धम—गड्-ड्-ड्-ड्-धम-धम...। चारो ओर बम-वर्षा होने लगी। एक बम ने दोनो को घायल कर दिया।

मिंग जू ने आकर देखा, उसका पति मरा पड़ा है, और उसका पुत्र लोहू-लुहान हुआ महायात्रा की अंतिम घड़ियाँ गिन रहा है। ऊपर से गड़गड़ाते हुए पत्थर बरस रहे हैं। उसने दौड़कर अपने पुत्र को उठा लिया, और कोठरी में ले जाकर पट्टियाँ बाँधनी आरंभ कीं।

मा और पत्नी का हृदय भट्ठी के समान धधक रहा था, नेत्रों से वेदना साकार हो, चीन की बरसाती हांग-हो के समान, उमड़ रही थी। हाथ काँपते हुए अपना काम कर रहे थे।

ट्रन्-न-न-न—टन्-न्-न्-टन...।

टेलीफ़ोन की घंटी बजी। टेलीग्राम के तार पहले ही नष्ट किए जा चुके थे, टेलीफ़ोन के तार ही अब तक अवशेष थे। मिंग जू ने झट चोंगा उठा लिया—

"कौन बोल रहा है?"

"यह तो मैं हूँ, .फूचंग की स्त्री।"

"क्या मिंग जू बोल रही है?"

"हाँ, मेरे पति अब इस संसार में नहीं हैं। हवाई जहाज़ आए थे, सब बरबाद करके चले गए, लड़का भी घायल पड़ा है।"

"बड़े दुःख की बात है, मिंग जू! मुझे तुम्हारे दुःख से बड़ी सहानुभूति है, पर देखो, मिंग जू, तुम अपनी ड्यूटी बजाना। क्या लाइन सुरक्षित है?"

"सिर्फ़ एक लाइन टूटी है।"

"अच्छा, हम लोग ट्रेनों से आ रहे हैं—हर एक में ५-५ हज़ार सैनिक हैं। ज़रा सिगनल देना, जिससे हम निकल जायँ।"

"किंतु बच्चे को छोड़कर कैसे निकलूँ, वह मर जायगा!"

"संभव है, तुम्हारा बच्चा जीवित न रहे, पर मिंग जू, चीन को तो जीवित रखना है। अगर ये १०,००० सैनिक बच रहे, तो देश की रक्षा के लिये दूसरी लड़ाई में काम आएँगे।"

"अच्छा।" रुँधे कंठ से उत्तर देकर मिंग जू ने चोंगा रख दिया।

"चीन को जीवित रखना है" अब भी उसके कान में गूँज रहा था। एक बार उसके मातृहृदय ने मरणासन्न पुत्र की ओर देखा—उसका हृदय रो रहा था, प्राणों में हाहाकार मचा हुआ था। उसका इकलौता पुत्र मृत्यु-शय्या पर......! दूसरे ही क्षण उसके कान में किसी ने कहा—"चीन को जीवित रखना है, मिंग जू!" इतने ही में दूर पर उसे गड़गड़ाहट सुन पड़ी। वह दौड़ पड़ी, सिगनल के पास। तूफ़ान के समान दो गाड़ियाँ उसके सामने से निकल गईं।

थोड़ी देर पश्चात् उसे फिर गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी। उसने आश्चर्य से देखा, एक गाड़ी आँधी की तरह दौड़ी आ रही है—उस पर था जापान का निशान। पल-भर में ही वह सब कुछ समझ गई। कुछ क्षण बाद ही यह ट्रेन चीनी गाड़ी को पकड़ लेगी। जापानी सैनिक अल्पास्त्र १० सहस्र चीनी सैनिकों पर अग्नि-वर्षा करेंगे। क्षण-भर में सब काम तमाम हो जायगा।

“चीन को जीवित रखना है, मिंग जू!” उसका हृदय काँप उठा—वह क्या करे ?

इतने ही में जापान का निशान स्पष्ट दिखाई देने लगा। गाड़ी निकट आ गई। मिंग जू ने झट दौड़कर ‘लिवर’ खींच लिया। पूरी रफ़्तार से गड़गड़ाती हुई गाड़ी टूटी पटरी पर दौड़ने लगी।

मिंग जू दौड़कर अपने लाल के ठंडे, सुन्न शरीर से लिपट गई।

दूसरे ही दिन जापानी अख़बारों ने छापा—“अमुक स्थान पर दो गाड़ियों में भागते हुए १० सहस्र चीनी सैनिकों का पीछा करती हुई एक ससैन्य जापानी गाड़ी को उलटने के अपराध में एक चीनी स्त्री को गोलियों से उड़ा दिया गया *।”

सुरेंद्रदेव मिश्र ‘कुसुम’

× × ×

७. जीवन-कुसुम

देवि ! उपवन से कुछ सुकुमार
चुने थे जो पाटल दो-चार,
सजाया उनसे था अपना
यहाँ पर मैंने जीवन-हार।
उन्हीं मृदु पुष्पों का उल्लास
बना मेरे प्राणों का हास ;
उन्हीं के सौरभ से सीखा
लुटाना उर का संचित प्यार।
उन्हीं के सजल दलों में ही
मिला मुझको क्षण-भर विश्वास;
उन्हीं की मादकता से ही
लिखा नश्वरता का इतिहास।
किंतु तुम समझाती थीं प्रिये !
लगेंगे कोमल तन में शूल ;
उन्हीं शूलों से विंधकर आज
पा सका सखि ! ये कोमल फूल।

‘किशोर’

× × ×

८. आधुनिक जीवन में विद्युत् का उपयोग

वैज्ञानिक आविष्कारों में विद्युत् का मनुष्य-जाति के हित से सीधा संबंध है, जो मनुष्य को देश और काल पर विजय दिलाने का अच्छा साधन सिद्ध हुआ है। विद्युत् एक शक्ति है। वह साधारण भार-युक्त पदार्थों के समान कोई जड़ वस्तु नहीं, क्योंकि आविष्ट वस्तु का भार विद्युत्-रहित वस्तु की अपेक्षा तनिक भी अधिक नहीं होता। अपनी इस कुशलता के कारण यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर सरलता से ले जाई जाती है। इसका ताप, प्रकाश तथा शब्द से घनिष्ठ संबंध है, और यह प्रत्येक में अवस्था अथवा स्थिति के अनुसार संचरित हो सकती है। अतएव इसकी महत्ता बहुत बढ़ गई है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम इसकी उपादेयता का प्रत्यक्ष प्रमाण पाते हैं।

इस अनोखी शक्ति ने एक प्रकार का कल्पवृक्ष

---

* चीन-जापान-युद्ध की एक रोमांचकारी, सच्ची घटना के आधार पर। पात्रों तथा स्थानों आदि के नाम यथार्थ हैं, कल्पित नहीं। —लेखक

स्वर्ग से लाकर मर्त्यलोक में उपस्थित कर दिया है। वैसे तो वाष्प के समान विद्युत् भी सृष्टि के आदि-काल से यहाँ निवास करती आई है, किंतु लोगों को इसकी उपस्थिति का पता अभी थोड़े ही काल से चला है। मानव-शरीर में हृदय की गति (Nervous System) से इसका अच्छा संबंध बताया जाता है।

वास्तव में वर्षा ऋतु के मेघाच्छन्न आकाश में जो बिजली चमकती है, उसमें तथा घर्षण द्वारा उत्पन्न की जानेवाली बिजली में कोई अंतर नहीं। आकाश की बिजली, जिसे साधारण लोग (जिन्हें विज्ञान का ज्ञान नहीं) गिरना कहते हैं, वस्तुतः गिरती नहीं। कभी-कभी बादलों में रगड़ होने के कारण वह पृथ्वी के मकानों, वृक्षों इत्यादि के इतना निकट पहुँच जाती है कि उनके ऊपरी भाग में असमान विद्युत् उत्पादित करके मध्यवर्ती वायु को विदीर्ण करती हुई बादलों से जा मिलती है। इस धक्के में प्रायः मकान फट जाते हैं। मकानों की इस उपद्रव से रक्षा करने का एक बहुत सरल उपाय तड़िच्चालक (Lightning Conductor) के रूप में आविष्कृत हुआ है।

यह विद्युत् की ही शक्ति है, जो संपूर्ण नगर को विशुद्ध, निर्मल ज्योत्स्ना में निमग्न करके 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना को कम-से-कम भौतिक रूप में स्वीकृत होने का अवसर देती है। जाड़े में गरम और गरमियों में शीतल वायु का सेवन इसके द्वारा किया जाता है। विशेषता यह कि वातावरण भी किसी प्रकार दूषित नहीं होता।

नगर को ज्योतिर्मय करने और पवन-देव को मनुष्य के इच्छानुवर्ती बनाने के अतिरिक्त विद्युत् का रासायनिक उपयोग भी है, जो कम महत्त्व का नहीं। इसकी सहायता से चीज़ों पर मुलम्मा (Electro Plating) किया जाता है। यह प्राचीन विधियों की अपेक्षा कहीं अधिक सरलता एवं शीघ्रता से संपादित होता है। अच्छा और टिकाऊ होने के साथ ही यह सस्ता भी पड़ता है।

मज्जागत रोगों के निदान में भी विद्युत् की महत्ता स्वीकृत हो चुकी है। एक्स-किरणों की सहायता से जिन हड्डियों या जिन तंतुओं को यों नहीं देखा जा सकता, उनका भी भेद खुल जाता है। यदि कोई हड्डी टूटी या अपने स्थान से हटी है, अथवा हमारे शरीर में कहीं कोई विषैला पदार्थ घुस गया है, तो इन किरणों की सहायता से उसका यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके उचित उपचार किया जाता है। क्षय इत्यादि रोगों में भी इनसे सहायता मिलती है। इन किरणों का भीतरी अवयवों के छाया-चित्र उपस्थित करने का काम देखते ही बनता है। किंतु इतनी लाभदायक होने पर भी इन किरणों में एक बड़ा दोष यह है कि शरीर पर देर तक पड़ने से ये बुरा प्रभाव डालती हैं। अत्यंत प्रखर होने के कारण ये चमड़ी जला देती और ऐसे घाव कर देती हैं, जिनका फिर अच्छा होना कठिन ही नहीं, प्रायः असंभव हो जाता है। अतः इन्हें काम में लाने में बड़ी सावधानी और सतर्कता की आवश्यकता है।

एक विलक्षण बात तो यह है कि इनका यह भयंकर दोष भी हमारे लिये बड़े काम का है। अपनी इसी क्षमता के कारण ये रोग के कारण, जीवाणुओं को नष्ट कर सकने में समर्थ हुई हैं। इसी हेतु चर्म-रोगों की चिकित्सा में इनका प्रयोग किया जाता है।

यही नहीं, विद्युत् की सहायता से चीरा-फाड़ी (Electric-Surgery) भी की जाती है। डॉक्टर के चाक़ू का इतना विश्वास नहीं कि वह प्रत्येक दशा में और प्रत्येक समय उचित स्थान पर

ही चीरा देगा। तनिक भी चाक़ू विचलित हुआ, तो जान पर ही बन आई। यह भी संभव नहीं कि प्रत्येक स्थान पर चीरा दिया जा सके। विना रक्त-स्राव और कुछ कष्ट के विद्युत् द्वारा दूषित मांस आप गला दिया जाता है।

यह विद्युत् की ही शक्ति है, जो मनुष्य की बात एक क्षण में दूर देशों में पहुँचाकर मनोजव अथवा मारुत-तुल्य वेगवाली उक्ति को चरितार्थ करती है। सचमुच संदेश ले जाने का विद्युत् का यह कार्य मनुष्य-जाति के लिये एक बड़ा आशीर्वाद सिद्ध हुआ है, जिसने समय और दूरी की उपेक्षा करके मनुष्य की विजय का झंडा सदा, सब काल के लिये फहरा दिया है। टेलीफ़ोन और टेलीग्राफ़ द्वारा संवाद एक स्थान से दूसरे स्थान पर सरलता से, शीघ्रता से और सस्ते दामों में ले जाए जाते हैं। थल पर टेलीग्राफ़ और जल में केबिलग्राफ़ मनुष्य की सेवा के लिये सदा तत्पर हैं। टेलीफ़ोन द्वारा तो उसी प्रकार बातें की जाती हैं, जैसे बातें करनेवाला पास ही के कमरे में हो। आधुनिक जीवन संसार से घनिष्ठ संपर्क का है। इसमें सफलता प्राप्त करने के लिये यह अनिवार्य हो गया है कि हम संसार से संबंध रखनेवाली बातें अधिक-से-अधिक परिमाण में जानें। विद्युत्-देवी के ये सेवक हमारी इस आवश्यकता की पूर्ति करते हैं।

परंतु टेलीफ़ोन द्वारा बातचीत करने अथवा टेलीग्राफ़ द्वारा समाचार भेजने के लिये यह आवश्यक है कि जिन दो स्थानों में बातचीत करना हो, उनके बीच में विद्युत्-धारा के लिये धातु का तार लगा हो। इस तार के लगाने में बहुत धन व्यय होता है; समुद्र में केबिलग्राफ़ के लिये मोटी नलियाँ तो कष्टसाध्य भी हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रीस (१८८४) और मारकोनी (१८९६) ने इस संबंध में अच्छा कार्य किया, और अंत में तार की आवश्यकता मिटाकर बेतार का तार (Wireless) चला दिया। अब रेडियो द्वारा सात समुद्र पार लंदन और पेरिस के गाने सुने जाते हैं। केवल आमोद-प्रमोद ही नहीं, वरन् राजनीतिक भाषण, महत्त्व-पूर्ण समाचार तथा देश-विदेश के बाज़ार-भाव भी इस यंत्र की सहायता से घर बैठे सुने जाते हैं।

चल-चित्रों ने मनुष्य के आमोद-प्रमोद और सामाजिक जीवन में बहुत सहायता दी है। इसके अतिरिक्त सिनेमा शिक्षा का भी साधन बन गया है। अब तो विद्युत्-तरंगों द्वारा चित्र भी भेजे जाने लगे हैं। पाताल-लोक (अमेरिका) में होनेवाली घटना का चित्र संसार-भर के समाचार-पत्रों में, दूसरे ही दिन, छप सकता है। नाच-तमाशे भी अब थिएटर में जाकर देखने की आवश्यकता न रहेगी। घर पर ही यह सब दृश्य दिखाई देगा। यह दूरस्थ-दर्शन-यंत्र अभी इस रूप में नहीं बना है कि हम उसे अपने घर में आसानी से लगा लें, किंतु अब उसके प्रचार मे अधिक देर भी नहीं।

तार भेजने के पश्चात् विद्युत् का दूसरा महत्त्व-पूर्ण उपयोग उसकी मोटर-शक्ति के रूप में आता है। संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में इसने अपने को अब तक की समस्त संचालक वस्तुओं में सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित कर दिया है, जिससे यह दिन-प्रतिदिन बढ़नेवाले वेग के साथ भाप का स्थान ग्रहण करती जा रही है। साथ ही यह सस्ती भी पड़ती है। बड़े-बड़े झरनों से बिजली संचय करने के हेतु स्विट्ज़रलैंड आदि देशों में क्षेत्र बना दिए गए हैं। अमेरिका का नियाग्रा-प्रपात सर्वप्रसिद्ध है। अतएव रेलगाड़ियाँ, ट्रामवे और मोटरें, सब विद्युत् की सहायता से चलने लगी हैं।

विद्युत्-तरंगों द्वारा कल-कारख़ाने भी चलते हैं। बिजली की घंटी, बिजली के चूल्हे और बिजली की फाँसी अब साधारण बातें हैं। अमेरिका के

गगन-चुंबी भवनों में ऊपर जाना आदि घरेलू कामों में बिजली ने स्थान पा लिया है। अब तो सोने के कमरे के लिये ऐसी घंटियाँ बन गई हैं कि कोई भी कमरे में प्रवेश करता है, तो वे बज उठती हैं, और स्वामी को सतर्क कर देती हैं।

अब तक मिनट-मिनट पर जन्म पानेवाले मनुष्य के मनोगत भावों को बतला सकने की क्षमता परमेश्वर में ही समझी जाती थी, किंतु आज का विज्ञान कहता है कि हथेली पर प्रयोग किए जाने पर विद्युत् अपराधी के कथन की सत्यता अथवा असत्यता का माप बता सकती है। सचमुच मनुष्य ईश्वर के अधिकार निरंतर बाँट रहा है।

विद्युत् का महत्त्व सार्वभौम है; आधुनिक जीवन के जिस क्षेत्र में इसे स्थान मिला है, यह उसी क्षेत्र में अद्वितीय सिद्ध हुई है। इसकी अनंत संभावनाएँ हैं, जो क्रमशः वास्तविक होती जा रही हैं। किंतु इसका उपयोग करने में तनिक भी चूक होती है, तो भारी हानि की संभावना रहती है—यद्यपि इसके द्वारा होनेवाले उपद्रवों से बचने के लिये भी आविष्कार हुए हैं।

विद्युत् की विलक्षण विशेषताओं पर संसार रीझा हुआ है, किंतु भारतवर्ष अभी इस क्षेत्र में बहुत दूर है—बात यह नहीं कि हमारा देश विद्युत् संचय कर सकने में किसी से कम है। कहना अत्युक्ति न होगा कि आज का मनुष्य बिजली का मनुष्य है; जीवन के प्रत्येक छोटे-बड़े क्षेत्र में विद्युत् का उपयोग करके ही वह संतुष्ट होता है।

हरिमोहनलाल वर्मा 'मोहन'

बच्चों के स्वास्थ्य पर हमेशा ध्यान रखिये

इसके पीने से बच्चों का स्वास्थ्य ठीक होकर उनका ख़ून और मांस बढ़ता है तथा हड्डी मज़बूत होती है और वे खेल-कूद में थकते नहीं। बच्चों को ताक़तवर बनाने की यह प्रसिद्ध दवा है।

लाल-शर
(Regd.)
(लाल शरबत)

पीने में यह मीठा तथा स्वादिष्ट है, जिससे बच्चे बड़े चाव से पीते हैं। अपने बच्चों को इसे पिलाकर देखिए, उनका स्वास्थ्य कितना शीघ्र बढ़ता है।

सब जगह मिलता है।

डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰

विभाग नं॰ ४६, पोस्ट बक्स नं॰ ५५४ कलकत्ता।

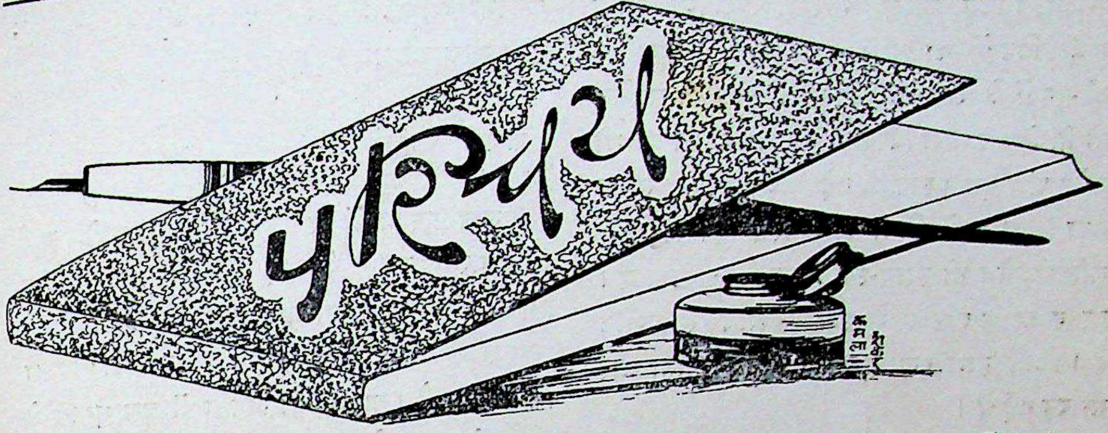

काव्य-कलना—लेखक, पं० गंगाप्रसाद पांडेय; प्रकाशक, छात्र-हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग; मूल्य १)

प्रस्तुत पुस्तक लेखक के बारह आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह है, जिनमें पहले, दूसरे तथा चौथे निबंध के विषय क्रमशः ये हैं—कवि का आदर्श, आलोचना तथा प्रगतिशील हिंदी-कविता। तीसरा निबंध 'हमारा साहित्य और साम्यवाद' विशाल भारत में प्रकाशित 'भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता'-नामक लेख का प्रत्युत्तर है, जिसमें लेखक ने साहित्य को राजनीति से अलग रखने की सलाह दी है। पुस्तक के अंतिम आठ लेखों में पांडेयजी ने आधुनिक युग के आठ प्रमुख कवियों की कृतियों पर अपने विचार प्रकट किए हैं। किसी उर्दू-लेखक का कहना है कि 'सख़ुनसंज से सख़ुनफ़हम बेहतर हुआ करते हैं।' योग्य लेखक ने अपने गंभीर तथा विचार-पूर्ण लेखों द्वारा इस कथन को सिद्ध कर दिया है। हिंदी-साहित्य के विवेक-पूर्ण अध्ययन के लिये ऐसी ही पुस्तकों की आवश्यकता है। आशा है, जनता द्वारा इसका समुचित आदर होगा।

× × ×

हमारी परिस्थिति—लेखक, सैयद क़ासिमअली साहित्यालंकार; प्रकाशक, बाबू बैजनाथप्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाज़ा, बनारस; मूल्य १)

सैयद क़ासिमअली साहब से हिंदी-संसार अपरिचित नहीं। आप इसके पहले भी हिंदी-साहित्य को कई पुस्तकें भेंट कर चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक आपकी कहानियों का संग्रह है। इसमें कुल बीस कहानियाँ हैं, जो प्रायः सभी शिक्षा-प्रद हैं। इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता इनकी भाषा है, जो ठेठ हिंदोस्तानी है। मेरे विचार से इस दृष्टि से यह आदर्श पुस्तक कही जा सकती है। किंतु भाषा की सरलता जटिल एवं गंभीर भावों के प्रकाशन में बाधक नहीं हुई है। कहानियों के विषय-विस्तार तथा भाव-विभिन्नता को देखकर यह सहज ही भास होता है कि कोई भी व्यक्ति, अपनी परिस्थिति के अनुसार, इसमें से मनोरंजन तथा शिक्षा की सामग्री प्राप्त कर सकता है।

श्रीधरसिंह (एम्० ए०)

× × ×

गुप्त रोग-चिकित्सा—लेखक, वैद्यभूषण श्रीयुत श्यामलाल 'सुहृद्'; प्रकाशक, भारत-राष्ट्रीय कार्यालय, अलीगढ़; मूल्य २)

उक्त पुस्तक का दूसरा संस्करण हमारे सामने है। कहना न होगा कि आयुर्वेद-संबंधी ग्रंथों का सार रूप ऐसी सुंदर पुस्तक हिंदी-साहित्य में कठिनता से देखने में आती है। स्त्री-पुरुषों के गुप्त रोगों की

परीक्षा, नियम, कारण, निदान, पथ्यापथ्य आदि सभी विषयों का इसमें समावेश है। विवाहित स्त्री-पुरुषों के लिये यह पुस्तक बड़े काम की साबित होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। काम-शास्त्र का भी यथेष्ट अंश इस पुस्तक में बड़े अच्छे ढंग से लाया गया है, और ओषधियों का विवरण एवं अनुपान-सहित प्रयोग भी स्थान-स्थान पर दिया गया है। पुस्तक प्रत्येक दृष्टि से गृहस्थों के लिये संग्रहणीय है। चित्रों द्वारा इस पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

× × ×

काम-कला—लेखक, प्रोफ़ेसर दयाशंकर पाठक एम्० पी० एच्०; प्रकाशक, सारस्वत ग्रंथमाला; मुद्रक, जयपुर-प्रिंटिंग वर्क्स, जयपुर; मूल्य ३); सुधा के ग्राहकों को २) में मिलेगी।

यह पुस्तक जयपुर की सारस्वत ग्रंथमाला का चौथा पुष्प है। काम-शास्त्र पर लिखे गए कतिपय संस्कृत-ग्रंथों के आधार पर यह पुस्तक तैयार की गई है। परंतु लेखक ने विना अच्छी तरह समझे हुए अनुवाद के रूप में बहुत-सी बातें लिख दी हैं, जिनकी त्रुटियों के कारण पाठक पुस्तक-विषय के ज्ञान से वंचित रह जाता है। पुस्तक में बहुत-से तिरंगे और एकरंगे चित्र भी दिए हैं, जो, कुछ को छोड़, अधिकांश अप्रासंगिक-से जान पड़ते हैं। काम-शास्त्र के विद्यार्थियों का इससे थोड़ा-बहुत मनोरंजन अवश्य हो सकता है।

× × ×

पर्णिका—रचयिता, श्रीगंगाप्रसाद पांडेय; प्रकाशक, प्रमोद-पुस्तकमाला कटरा, प्रयाग; मूल्य ।)

प्रस्तुत पुस्तक हिंदी के उदीयमान कवि श्रीगंगाप्रसाद पांडेय की रचनाओं का संग्रह है। कविताएँ छायावाद-विषयक हैं, परंतु अत्यंत सरल और भावपूर्ण ज्ञात हुईं। विषय-निर्वाह का कवि ने अच्छा ध्यान रक्खा है। आशा है, भविष्य में कवि की कल्पना अधिक प्रौढ़ रूप धारण करेगी। ८० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य १) कुछ अधिक ज्ञात होता है।

× × ×

लक्ष्मी-पति कैसे बनें ?—लेखक, श्रीपारसमल सराफ़ 'निपुण'; प्रकाशक, ज्ञान-भंडार, जोधपुर; मूल्य ।)

प्रस्तुत पुस्तक में साबुन, तेल, स्याही, चूर्ण आदि वस्तुएँ बनाने के कई उपयोगी नुसख़े दिए हुए हैं, और औद्योगिक उन्नति एवं व्यापार-संबंधी परामर्श के विषय में बहुत कुछ लिखने का प्रयास किया गया है। आशा है, जनता में इस पुस्तक के प्रचार से लाभ होगा।

× × ×

साबुन-सुगंध-विज्ञान—संकलनकर्ता, मास्टर यादराम गुप्त; प्रकाशक, भारत-राष्ट्रीय कार्यालय, अलीगढ़; मूल्य ॥)

भारत में साबुन और सुगंधित तेलों का व्यवसाय बहुत बढ़ रहा है, परंतु उससे लाभ उठानेवाले विदेशी व्यवसायी ही हैं। इस पुस्तक में स्नान के लिये, कपड़े धोने के लिये, चर्म-रोग के लिये भाँति-भाँति के सुंदर साबुन घर में तैयार करने की विधि लिखी हुई है, जिसके द्वारा यदि व्यापार किया जाय, तो अच्छा नफ़ा हो सकता है। अनेक प्रकार के उपयोगी तेल बनाने के नुसख़े भी दिए गए हैं। पुस्तक व्यापारियों के बड़े काम की है, और गृहस्थ लोग भी इससे लाभ उठाकर पैसे की पर्याप्त बचत कर सकते हैं।

'अरुण' बी० ए०

× × ×

गौ-सेवा—लेखक तथा प्रकाशक, श्रीयुत काशीनाथ 'उदागिर', श्रीगोपाल-गोशाला, सनावद (होल्कर स्टेट); पृष्ठ-संख्या ६८; मूल्य =)

कृषि-प्रधान भारत देश गोवंश पर ही निर्भर है। गोधन गँवाकर भारत कभी हरा-भरा नहीं रह सकता। अतः गोरक्षा के लिये हमें तन-मन-धन से प्रयत्न करना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये देश में गोशालाएँ स्थापित की जाती हैं।

यह पुस्तिका श्रीगोपाल-गोशाला, सनावद (होलकर-स्टेट) की ओर से प्रकाशित हुई है। इसमें गाय के गुणों का अच्छा दिग्दर्शन कराते हुए लेखक महोदय ने उसकी रक्षा की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया है। साथ ही दूध, दही, घी, मक्खन आदि का अन्य चीज़ों के साथ प्रयोग बतलाकर बहुत-से घरेलू नुसख़े भी बतलाए हैं, जिससे गोमाता की रक्षा का महत्त्व और भी स्पष्ट हो जाता है। पुस्तक छोटी, किंतु उपयोगी है। ऐसी पुस्तकें विना मूल्य वितरण की जानी चाहिए।

श्री०

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये
एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने
सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—
'गोनोकिलर'
[रजिस्टर्ड]

GONO KILLER
REGD
ORIGINAL
TRADE MARK

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसा आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में पैसा फ़िज़ूल बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ४० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, (S. L.) विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४
लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'हाथी का ब्याह' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीरामगोपाल पांडेय ; मूल्य ।=)

(२) 'वे चारो' (उपन्यास)—लेखक, श्रीपुरुषोत्तमदास गौड़ ; मूल्य ॥।)

(३) 'महाराणा प्रताप' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीपुरुषोत्तमदास गौड़ ; मूल्य १)

(४) 'आज का सवाल' (कहानी)—लेखक, श्रीचंद्रमाराय वर्मा ; मूल्य ॥=)

(५) 'फलों का गुच्छा' (कहानी)—लेखक, श्रीरामवृत्त बेनीपुरी ; मूल्य ॥।)

(६) 'रुदन' (कविता)—लेखक, श्रीश्यामधारीप्रसाद ; मूल्य ॥)

(७) 'जान हथेली पर' (कहानी)—लेखक, श्रीरामवृत्त बेनीपुरी ; मूल्य ॥।)

(८) 'पद-चिह्न' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीरामवृत्त बेनीपुरी ; मूल्य ।≡)

(९) 'विचार-विनिमय' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीशचींद्रनाथ सान्याल ; मूल्य १)

(१०) 'आवारे की योरप-यात्रा' (भ्रमण)—लेखक, डॉ० श्रीसत्यनारायण पी-एच्० डी० ; मूल्य २॥)

(११) 'विरक्ति' (काव्य)—लेखक, श्रीरामनंदनसिंह 'नंदन' ; मूल्य ।)

(१२) 'बापू' (काव्य)—लेखक, श्रीसियारामशरण गुप्त ; मूल्य ॥)

(१३) 'गृहस्थ-गीता' (काव्य)—लेखक, श्रीमैथिलीशरण गुप्त ; मूल्य ≡)

(१४) 'संगीत-सागर' (संगीत)—संपादक, श्रीप्रभुलाल गर्ग ; मूल्य ४)

(१५) 'नीलम देश की राजकन्या और अन्य कहानियाँ' (कहानी)—लेखक, श्रीजैनेंद्रकुमार ; मूल्य १॥।)

(१६) 'नारी-जीवन की कहानियाँ' (कहानी)—लेखक, स्व० श्रीप्रेमचंद ; मूल्य १॥)

(१७) 'हिंदी-नाट्य-साहित्य' (समालोचना)—लेखक, श्रीब्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १॥।)

१. माननीय पंतजी की शुभाशा

लखनऊ में, प्रेस-सलाहकार-कमेटी की बैठक में, संयुक्त प्रांत के प्रधान मंत्री माननीय पं० गोविंदवल्लभ पंत ने अख़बारों के उद्देश्य, उनकी सेवा और आदर्श के संबंध में अपने जो उद्गार प्रकट किए, वे प्रत्येक पत्रकार के लिये मनन करने की चीज़ हैं। समाचार-पत्रों का महत्त्व बतलाते हुए आपने कहा—"सार्वजनिक मामलों में समाचार-पत्रों और पत्रकारों का बहुत ही महत्त्व-पूर्ण स्थान है। सारे समाज के उत्थान और पतन में समाचार-पत्रों का ज़बरदस्त हाथ रहता है। समाचार-पत्र सचमुच एक बड़ी ताक़त है। प्रचार पर ही लोक-तंत्रवाद फलता फूलता है। जिस उत्साह, जोश, निर्भीकता, गंभीरता तथा न्यायप्रियता से पत्रकार अपने कर्तव्य का पालन करते हैं, उससे जनता की विचार-धारा पर बहुत ज़्यादा प्रभाव पड़ता है।"

पत्रकारों के संबंध में अपनी सरकार की उदार नीति का उल्लेख करते हुए माननीय पंतजी ने कहा—"समाचार-पत्रों को हम अपना सहायक समझते हैं। हम यह उम्मेद करते हैं कि पत्रकारों की सहायता से हम अपना कार्य अधिक सुगमता से कर सकेंगे। हम पत्रकारों से इसलिये सहयोग चाहते हैं कि हम लोकतंत्रवाद की इज़्ज़त करना चाहते हैं, और समाज तथा व्यक्ति-विशेष की नागरिक स्वतंत्रता को क़ायम रखना चाहते हैं। मंत्रिपद ग्रहण करते ही हमने प्रेस के ऊपर से सब तरह की रोक हटा ली। अख़बारों से माँगी गई ज़मानतें वापस लौटा दीं। कुछ प्रांतों में यह कोशिश हो रही है कि समाचार-पत्रों की स्वाधीनता पर कुछ रोक लगा दी जाय, परंतु हमें अपने प्रांत की अनेक जटिल समस्याओं को सुलझाना है।"

कुछ ऐसे पत्रों की मनोवृत्ति पर खेद प्रकट करते हुए, जो सांप्रदायिक भावनाओं को उत्तेजित करते हैं, श्रीपंतजी ने कहा—"अब तक हमने भी किसी भी मामले में प्रेस-ऐक्ट का प्रयोग नहीं किया। हमने धारा १२४ (अ) के अंदर भी कोई कार्य-वाही नहीं की। और, अब तक बावजूद इसके कि हम पर व्यक्तिगत आक्षेप किए गए, हमने मान-हानि का कोई दावा नहीं किया। हम अपनी नीति पर सदा क़ायम रहना चाहते हैं। हमारे पास मौजूदा हालत में जो अधिकार हैं, उन्हीं पर अमल करते हुए हम भविष्य के लिये एक ऐसी परंपरा क़ायम करना चाहते हैं, जो स्वस्थ और अनुकरणीय हो। यदि हम आज समाचार-पत्रों की स्वतंत्रता पर कुठाराघात करना शुरू कर दें, तो सारी व्यवस्था ही उलट जाय।"

प्रेस की स्वतंत्रता का ज़िक्र करते हुए आपने कहा—"मैं यह नहीं चाहता कि आप किसी की आलोचना न करें। यदि आपसे यही अधिकार छीन लिया जाय, तो आपके पास रह क्या जायगा? आपका तो यह कर्तव्य है कि आप दूसरों की ग़लती बतलाकर उन्हें ठीक रास्ते पर लगाएँ। पर आपको निष्पक्ष होकर आलोचना करनी चाहिए। आपको उन लोगों की रक्षा करनी चाहिए, जिन्हें आप इसके योग्य समझते हैं। आपको उन लोगों में भी विश्वास रखना चाहिए, जिन्हें बड़ी-बड़ी ज़िम्मेदारी के काम करने पड़ते हैं, और इसके साथ ही उन लोगों के लिये ख़याल रखना चाहिए, जो कमज़ोर और पद-दलित हैं। आपको सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि हम चाहे पत्रकार हों, या सार्वजनिक कार्यकर्ता या राज-नीतिक, सभी हालत में मानवता हमारा एकमात्र आधार है।"

आगे आपने पत्रकारों के संगठन और उनमें तथा अन्य व्यक्तियों में पारस्परिक सद्भाव, मैत्री और प्रेम-पूर्ण व्यवहार स्थापित होने की अपील की। आपका यह भाषण पत्रकारों के लिये बड़ा ही उपयोगी, सामयिक और सब प्रकार से लाभ-दायक है। आशा है, हमारे पत्रकार बंधु उस सम्मान और गौरव का यथोचित उपयोग करेंगे, जो यू० पी० के प्रधान मंत्री ने उन्हें दिया है।

× × ×

२. ग्राम-पुस्तकालयों का संगठन

गाँवों में शिक्षा का प्रसार और ग्रामीण जनों में नए भाव तथा विचार पैदा करने के उद्देश्य से प्रांतीय सरकारों ने ग्रामीण पुस्तकालयों की जो आयोजना की है, वह बड़े ही महत्त्व की चीज़ है। इसके द्वारा कुछ वर्षों में ही देहात के जीवन में एक नवीन स्फूर्ति और जागृति पैदा होगी। हम पहले भी कह चुके हैं कि इस कार्य के लिये ग्रामीण अध्यापक बड़े सहायक सिद्ध होंगे। पुस्तकालयों के संगठन, वाचनालयों की व्यवस्था और पुस्तकों तथा समाचार-पत्रों के वितरण तथा पठन-पाठन की सुविधा देने में प्राइमरी और टाउन-स्कूलों के अध्यापकों से सेवा-कार्य लेना चाहिए। उनके पास इस बात की रिपोर्ट रहे कि सप्ताह या महीने-भर में कितने ग्रामीण लोगों ने इस प्रयोग से लाभ उठाया। इसके लिये हमारी एक सलाह और है। प्रत्येक गाँव में दो-एक अच्छे और कुछ साधारण पढ़े-लिखे व्यक्ति होते हैं। इन साधारण पढ़े-लिखे व्यक्तियों में वे लोग हैं, जिन्होंने वहीं के प्राइमरी स्कूलों में शिक्षा पाई है। इनमें कुछ तो केवल अक्षर-ज्ञान प्राप्त करके ही रह जाते हैं, कुछ दूसरी-तीसरी कक्षा तक पढ़कर स्कूल छोड़ देते हैं, और कुछ प्राइमरी स्कूल का सार्टीफ़िकेट प्राप्त कर लेने पर, आगे पढ़ाई जारी रखने में असमर्थ होकर, घरू कार्यों में लग जाते हैं। इसके अतिरिक्त हिंदी-मिडिल-पास व्यक्तियों की भी अब गाँवों में काफ़ी तादाद हो गई है, और वे

बेकारी की दशा में गाँवों में ही रहकर जीवन बिताते हैं। ग्राम-पुस्तकालयों की वृद्धि के साथ ही यदि इन पढ़े, कुछ पढ़े और नाम-मात्र के पढ़े-लिखे लोगों का भी संगठन किया जाय, और उनमें समाचार और पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ाई जाय, तो पुस्तकालयों और वाचनालयों का कार्य बड़ी सहूलियत के साथ चलेगा, और इस दशा में उनका अच्छे-से-अच्छा उपयोग भी होगा। जो लोग अक्षर-ज्ञान तक पढ़े हैं, उन्हें सरकार की प्रौढ़-शिक्षा-योजना से लाभ पहुँचेगा, और कुछ ही समय में वे पुस्तकें और समाचार-पत्र पढ़ने योग्य हो सकते हैं। अब तक यह होता रहा है कि गाँवों के जो बालक प्राइमरी स्कूलों में भरती होते और बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़ देते हैं, वे कुछ समय बाद ही अपनी पढ़ाई-लिखाई भूल जाते हैं। केवल प्राइमरी शिक्षा का सार्टीफ़िकेट प्राप्त कर लेनेवाले बालक ही थोड़ा-बहुत लिखा-पढ़ी का काम करने योग्य रहते हैं; वे भी उतना काम नहीं कर पाते, जितने की ग्रामीण लोगों को ज़रूरत होती है। चिट्ठियाँ, अर्ज़ी, रसीद आदि लिखने का काम अब तक प्रायः ग्रामीण अध्यापक ही करते हैं। आगे पढ़ने-लिखने का कोई शौक़ न होने से इस प्रकार ग्रामीण स्कूलों में पढ़नेवाले लोगों की पढ़ाई बेकार चली जाती है। उसका अच्छा उपयोग इस समय ग्रामीण पुस्तकालयों और वाचनालयों की वृद्धि के साथ हो सकता है। जिस हलक़े में पुस्तकालय हों, उससे संबंधित सभी गाँवों के पढ़े-लिखे लोगों की सूची, उनकी योग्यता के साथ, पुस्तकालय के प्रबंधक के पास होनी चाहिए। ऐसे सभी लोगों का संगठन किया जाय, और समय-समय पर एक-एक गाँव में जाकर ऐसे लोगों की मीटिंग में उन्हें पुस्तकें और समाचार-पत्र पढ़ने के लाभ बतलाए जायँ, ग्राम-कमेटी क़ायम की जाय, और उसकी ज़िम्मेदारी पर पुस्तकालय से पढ़ने के लिये पुस्तकें दी जायँ। स्वयं पुस्तकालय के प्रबंधक, उनके सहायकों और पुस्तकालय-प्रबंध-समिति के सदस्यों को गाँवों में जाकर समाचार-पत्र अथवा किसी पुस्तक के महत्त्व-पूर्ण भागों को पढ़कर सुनाना चाहिए। इससे पढ़े-लिखे और बेपढ़े लोगों में पुस्तकों के प्रति प्रेम-भाव बढ़ेगा, उनमें नवीन जागृति फैलेगी, और उस उद्देश्य की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त होगा, जिसके लिये कांग्रेसी सरकारें प्रयत्न कर रही हैं।

× × ×

३. हिंदी-पत्र-कला का भविष्य

शिमला में, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर, हिंदी-पत्रकारों का भी सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में हिंदी के पत्रकारों के संगठन के लिये एक आयोजना तैयार की गई। ख़ुशी की बात है, उस आयोजना को कार्य-रूप में परिणत किए जाने का भी अनुष्ठान हो रहा है। वैसे तो कई बार पहले भी इस बात की आवश्यकता प्रकट की गई थी, और हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के साथ प्रत्येक पत्रकार-सम्मेलन में इस आशय के प्रस्ताव भी पास हुए, पर हिंदी-पत्रकारों का अभी तक कोई संगठन नहीं हो पाया। अभी पत्रकार-संघ की कार्य-समिति ने दिल्ली में, अपनी बैठक में, एक विधान तैयार किया है, और उसमें संघ के संगठन और उसके उद्देश्य बतलाए हैं। संगठन के नियम इस प्रकार हैं—(अ) संघ के सदस्य वे सभी प्रकार के हिंदी-पत्रों में, संपादकीय विभाग में, काम करनेवाले लोग हो सकेंगे, जिनका कम-से-कम छ महीने का अनुभव हो, (ब) हिंदी-समाचार-पत्रों के संवाददाता, (स) पत्रों के लिये स्वतंत्र रूप से लिखनेवाले लेखक और (द) जो पत्रकार-कला में ख़ास दिलचस्पी रखते हों। संघ में सम्मिलित होने का प्रत्येक सदस्य का वार्षिक चंदा पाँच रुपए है। उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(अ) समाचार-पत्रों के आदर्श और परंपरा

की रक्षा करना तथा पत्रकार-कला एवं पत्रकारों को समुन्नत बनाना।

(ब) पत्रकारों के आर्थिक हित, अधिकार और सुविधाओं की रक्षा करना।

(स) पत्रकारों में परस्पर सहयोग-भाव पैदा करना और एक दूसरे के साथ सहानुभूति-पूर्ण व्यवहार रखना।

(द) सामाजिक एवं बौद्धिक उपायों द्वारा हिंदी-पत्रकारों का मान बढ़ाना।

(इ) पत्रकारों में हानिजनक प्रतिस्पर्धा को रोकना।

(ई) पत्रकारों और संचालकों में सहयोग एवं सद्भाव बढ़ाना।

(फ) पत्रकार-कला-शिक्षा की व्यवस्था करना।

(ह) अन्य कार्य, जो पत्रकारों और पत्रों के किसी उद्देश्य को बढ़ा सकें।

कार्य-समिति ने विभिन्न प्रांतों के पत्रकारों का संगठन करने के लिये अलग-अलग अस्थायी समितियों का निर्माण किया है। संघ की क्रियाशीलता का परिचय इस बात से मिलता है कि उसकी तरफ़ से समाचार-पत्रों के लिये पाई-पोस्टेज की व्यवस्था कराने का उद्योग होने लगा है, और सरकार से पत्रकार-संघ की इस माँग को स्वीकार किए जाने का प्रयत्न हो रहा है। यदि इस संघ को इस कार्य में सफलता मिल गई, तो उसकी उपयोगिता का महत्त्व स्वतः बढ़ जायगा। हम इस संघ की उन्नति चाहते हैं, और इसके भविष्य के लिये शुभ आशा प्रकट करते हैं।

× × ×

४. हैदराबाद में कांग्रेस और हिंदुओं के साथ ज़्यादती

हम हैदराबाद को उन्नतिशील रियासत समझते थे। परंतु वहाँ कांग्रेस और हिंदुओं के साथ जो ज़्यादतियाँ हो रही हैं, उन्हें देखकर हमें बड़ा आश्चर्य हो रहा है। हाल ही में वहाँ की सरकार ने स्टेट-कांग्रेस को ग़ैर-क़ानूनी घोषित कर दिया है। इसके अलावा आम शिकायत है कि वहाँ हिंदुओं के साथ अच्छा बर्ताव नहीं होता।

हैदराबाद-राज्य में हिंदुओं की संख्या ८९ प्रतिशत, मुसलमानों की १० प्रतिशत और ईसाई आदि की १ प्रतिशत है। किंतु वहाँ की सरकारी नौकरियों में मुसलमानों की संख्या ही अधिक है। बड़े-बड़े ओहदे मुसलमानों के ही हाथ में हैं। राज्य की सारी नौकरियों में हिंदुओं और ईसाइयों आदि की संख्या मुश्किल से ५ प्रतिशत होगी।

हिंदुओं के धार्मिक कार्यों और उपासना आदि में ऐसे प्रतिबंध हैं कि यज्ञ की वेदी बनाने के लिये भी राज्य की आज्ञा लेनी पड़ती है। राज्य की आज्ञा के बिना कोई नया मंदिर नहीं बनवा सकता! मुसलमानों के संबंध में ऐसी कोई रोक नहीं।

आर्य-समाज के प्रति वहाँ की सरकार का विशेष रोष जान पड़ता है, क्योंकि उनके ऊपर कई तरह के बंधन निज़ाम-सरकार ने लगा रक्खे हैं। फल-स्वरूप वहाँ के आर्य नेताओं ने निज़ाम-सरकार की इस अन्याय-पूर्ण नीति के विरुद्ध सत्याग्रह आरंभ कर दिया है। हैदराबाद में चल रही सत्याग्रह की इस लड़ाई को मज़बूत बनाने के लिये सारे देश के आर्य-समाजी उद्यत हो गए हैं, और वहाँ धड़ाधड़ गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं।

हैदराबाद-जैसी प्रगतिशील रियासत भी यदि इस बीसवीं शताब्दी में, जब कि महायुद्ध के बाद से सारे देशों में प्रजातंत्र का विकास होकर एक नग्न तंत्र-शासन का रहना असंभव हो रहा है, सत्य की ओर से आँख मूँदे रहे, और प्रजा पर मनमाने ज़ुल्म करे, तो समझना चाहिए कि देशी रियासतों का अंत अब समीप है।

× ×

५. देशी रियासतों के आंदोलन

देशी राज्यों में प्रजा के आंदोलन जिस तीव्र गति से बढ़ रहे हैं, उसका परिणाम आगे चलकर क्या होगा, इसका निदर्शन महात्मा गांधी ने, हाल ही में, अपने 'हरिजन' पत्र में, एक लेख लिखकर किया है। महात्मा गांधी कहते हैं—"विभिन्न रियासतों में एक साथ जागृति राष्ट्र के स्वतंत्रता-संग्राम में एक महत्त्व-पूर्ण घटना है। यह सोचना ग़लत होगा कि ऐसी जागृति किसी एक व्यक्ति या संस्था के बरग़लाने का फल है। यह संभव है कि कांग्रेस के हरिपुरा-प्रस्ताव ने रियासतों में प्रजा को अपने पाँवों पर खड़ा होने को बाध्य किया हो, और अब उन्होंने अनुभव कर लिया हो कि उनकी मुक्ति उनके अपने परिश्रम पर ही निर्भर है। लेकिन सबसे बड़ी बात तो समय का परिवर्तन है, जिसके कारण यह जागृति हुई है। आशा है, राजा लोग और उनके सलाहकार इस बात को समझ जायँगे, और प्रजा की उचित आकांक्षाओं को पूरा कर देंगे ; क्योंकि अब दो ही बातें हो सकती हैं--या तो रियासतों का एकदम ख़ात्मा हो जाय, या राजा लोग अपनी प्रजा को उत्तरदायी शासन देकर प्रजा के ट्रस्टी बन जायँ, और अपनी मेहनत के कमीशन के तौर पर कुछ वेतन ले लिया करें। इन दोनो के सिवा और कोई विकल्प नहीं।"

इस प्रकार महात्माजी ने देशी राज्यों के अंदर उठनेवाले आंदोलनों के कारणों और उनके परिणामों से राजा और प्रजा दोनो को अवगत कर दिया है। हम समझते हैं, महात्माजी की यह चेतावनी जितनी सामयिक है, उतनी ही देशी राज्यों के लिये लाभदायक भी। महात्माजी देशी राज्यों के अस्तित्व की रक्षा चाहते हैं, इसलिये वह उन्हें अपनी सलाह देते हुए कहते हैं कि समय की गति के अनुसार राजों की नीति में भी परिवर्तन होना चाहिए। हाल में त्रावनकोर, ढेनकानाल, राजकोट तथा हैदराबाद आदि राज्यों में जो घटनाएँ हुई हैं, वे भयंकर स्थिति की सूचना हैं। अब यह आंदोलन सभी राज्यों में व्यापक रूप पकड़ गया है। इधर देशी नरेशों की बंबई में अभी जो बैठक हुई है, उसमें उन्होंने भी संगठित रूप से इस आंदोलन का मुक़ाबिला करने का निश्चय किया है। यह उस ख़तरे की घंटी है, जिसकी ओर महात्माजी ने अपने लेख में संकेत किया है। प्रजा का आंदोलन दमन से नहीं दबाया जा सकता, इसका हाल का सबूत उक्त राज्यों में चलनेवाले आंदोलनों से ही मिल जाता है। अगर राजों ने संगठित रूप से प्रजा की संगठित शक्ति से मोर्चा लिया, तो अवस्था अब से कहीं अधिक भयंकर हो जायगी। बड़े राज्यों में, मुमकिन है, फ़ौजी शक्ति और दमन के साधन अधिक होने के कारण राजा लोग अपनी क्षणिक विजय प्राप्त कर लें, पर छोटी-छोटी रियासतों के जीवन के लिये वे एक ख़तरा पैदा कर देंगे। देश में उग्रवादी लोगों का दल जिस तरह बढ़ रहा है, उसने रियासतों के अस्तित्व के संबंध में प्रश्न खड़ा कर दिया है। अभी फ़तेहपुर-सीकरी में 'उत्तरी भारत-देशी राज्य-लोक-सम्मेलन' के सभापति-पद से भाषण देते हुए कॉमरेड एम्० एन्० राय ने देशी राज्यों का ख़ात्मा कर देने की बात कही। इसके बाद इस संबंध में वह और भी आगे बढ़कर कार्य करने की घोषणा कर चुके हैं। पटियाला में देशी राज्य-प्रजा-परिषद् का अधिवेशन पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में होने जा रहा है। वहाँ यही प्रश्न उठाया जायगा। और, कांग्रेस की देशी राज्यों के संबंध में अब तक जो नीति रही है, उसमें भी, संभव है, परिवर्त्तन हो जाय। कांग्रेस ने अब तक देशी राज्यों के मामलों में अपनी तटस्थ नीति

रक्खी है, पर अब स्वयं महात्मा गांधी ने अपने वक्तव्य में कहा है कि "मेरी ज़िम्मेदारी पर कांग्रेस ने देशी राज्यों के मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति स्वीकार कर ली है, लेकिन मैं भी प्रजा पर देशी शासकों के इतने भीषण अत्याचारों को देखकर अब देर तक इस नीति का हिमायती नहीं रह सकता। अगर कांग्रेस यह अनुभव करेगी कि उसके हस्तक्षेप से प्रजा का भला हो सकता है, तो, प्रजा की पुकार होने पर, उसे अवश्य देशी राज्यों के मामलों में हस्तक्षेप करना पड़ेगा।"

इसलिये देशी राज्यों के शासकों से यह अपील की गई है कि वे प्रजा के वैध अधिकारों को स्वीकार कर लें, और प्रजा को उत्तर-दायी शासन के अधिकार दे दें, जैसे हमारे कई उन्नतमना देशी राज्यों के शासक आजकल इस नीति का अवलंबन कर भी चुके हैं।

× × ×

६. महात्मा हंसराज

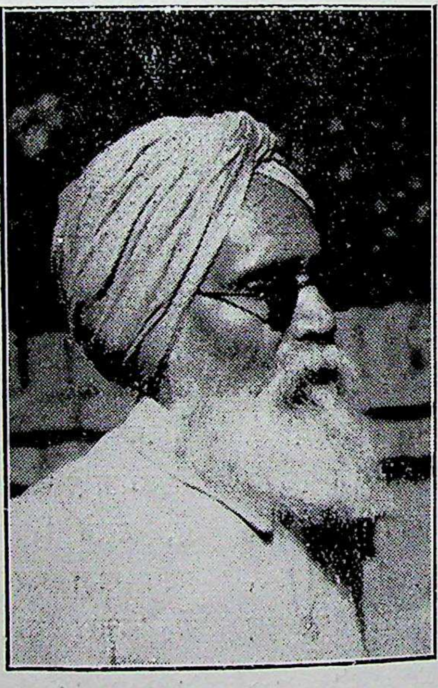

महात्मा हंसराज

यह सचमुच बड़े दुःख की बात है कि इस देश के महापुरुष एक-एक करके हमारे बीच से उठते जा रहे हैं! हाल ही में आर्य-समाज के प्रसिद्ध नेता, समाज-सुधारक एवं शिक्षा-प्रचारक महात्मा हंसराज का देहांत हो गया! उनके देहांत से आर्य-समाज की जो भारी क्षति हुई है, उसकी कमी पूरी न होगी। परंतु भारत की राष्ट्रीय जागृति में भी उनका बहुत हाथ था। विशेषकर पंजाब की सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के साथ उनके जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा संबद्ध था।

जिस समय वह नवयुवक थे, और स्नातक बनकर संसार-क्षेत्र में पदार्पण करनेवाले थे, पंजाब के आर्य-समाजियों ने महर्षि स्वामी दयानंद की स्मृति में अँगरेज़ी का एक छोटा-सा स्कूल लाहौर में स्थापित किया। महात्मा हंसराजजी ने सरकारी नौकरी का प्रलोभन छोड़कर इसी छोटे-से स्कूल का प्रधानाध्यापक होना पसंद किया। यह छोटा-सा स्कूल उनके अदम्य उत्साह एवं उद्योग से आज भारतवर्ष के बड़े-बड़े शिक्षा-केंद्रों में गिना जाने योग्य हो गया है।

महात्माजी केवल शिक्षक ही न थे, बल्कि उच्च कोटि के विद्वान्, समाज-सेवक एवं शिक्षा-प्रचारक भी थे। उनका जीवन बड़ा सरल एवं अनुकरणीय था। आर्य-धर्म के वह पक्के प्रचारक थे। स्वामी दयानंद के बाद जिन लोगों ने आर्य-समाज की सेवा के लिये आजीवन अपने को अर्पित किया, महात्मा हंसराज उनमें से अन्यतम थे। ७५ वर्ष की लंबी आयु तक वह नवयुवकों की भाँति अथक परिश्रम एवं उत्साह से प्रचार का कार्य करते हुए इस जगत् से बिदा हुए!

परम शांति को प्राप्त हुए इस महापुरुष के प्रति हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

× × ×

७. पद-पद पर ख़तरा!

मुसलिम लीगी मुसलमानों की तरफ़ से 'इस्लाम ख़तरे में है' की आवाज़ ज़ोरों से बुलंद की जा रही है। उन्हें एक बात में नहीं,

कांग्रेस की प्रत्येक बात में ख़तरे की सूचना मिलती है। अब तक 'वंदे मातरम्' गीत में उन्हें इस्लाम के लिये ख़तरा मालूम हुआ। उसका असर यह हुआ कि कांग्रेसी प्रांतों की एसेंबली में अब 'वंदे मातरम्' गीत गाया जाना प्रायः बंद हो चुका है। मुसलिम लीग की तरफ़ से जैसा कुछ प्रचार कांग्रेस और कांग्रेसी मंत्रिमंडलों को बदनाम करने के लिये हो रहा है, वह अलग बात है, पर कांग्रेसी प्रांतों की सरकारें जो कार्य सार्वजनिक हित और सर्व-साधारण की नैतिक एवं बौद्धिक उन्नति के लिये कर रही हैं, उसमें भी उन्हें ख़तरे की घंटी की आवाज़ सुनाई देती है। उदाहरण के लिये सी० पी०-प्रांत की सरकार ने शिक्षा की जो नई आयोजना रक्खी है, उसका नाम 'विद्या-मंदिर'-योजना रक्खा गया है। सिवा इस बात के कि इस योजना का नाम 'विद्या-मंदिर' है, उसके अंदर कोई भी ऐसी बात नहीं, जो हिंदू-मुसलमानों की सामूहिक बौद्धिक उन्नति के लिये समान रूप से हितकर न हो। स्वयं मुसलमानों को इस आयोजना के तत्त्व और उसूलों से कोई ख़ास मत-भेद नहीं, फिर भी 'विद्या-मंदिर' नाम पर उन्हें इतना सख़्त एतराज़ है कि उसमें उन्हें 'इस्लाम ख़तरे में है' की ध्वनि सुनाई देती है। मामला यहाँ तक बढ़ा दिया गया है कि सी० पी० की मुसलिम लीग इस आयोजना का विरोध सत्याग्रह के साथ करना चाहती है। अखिल भारतीय मुसलिम लीग की कौंसिल ने दिल्ली में, अपनी बैठक में, एक कमेटी इसी के लिये बनाई है, जो

गुलाबों की ठंढी क्रीम

भद्दी त्वचा और फटे हुए हाथों के

लिये

शारीरिक और मुख की सुंदरता की कुंजी

छोटे-छोटे ट्यूबों में प्राप्त

बंगाल केमिकल ऐंड फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड

कलकत्ता बंबई

सी० पी०-प्रांतीय मुसलिम लीग को सत्याग्रह के मामले में उचित परामर्श देगी। कांग्रेस जितनी उदार बनकर सांप्रदायिक मुसलमानों की माँगों के आगे झुकती जायगी, उनकी माँगें भी उसी प्रकार बढ़ती जायँगी। यह ज़हर पहले कुछ विषाक्त मस्तिष्कों से पैदा होता है, और फिर सर्व-साधारण में फैलकर सारे वातावरण को दूषित कर देता है। 'वंदे मातरम्' के विरोध का यह असर हुआ है कि आज हैदराबाद-मुसलमान-राज्य में छात्रों को 'वंदे मातरम्' गायन पर सज़ाएँ दी जाती हैं, और उन्हें स्कूलों से अलग कर दिया गया है। मदरास में हिंदी-विरोधी जो आंदोलन चल रहा है, उसमें मुसलिम लीग का सहयोग है। अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिये पुकार मचानेवाले व्यक्ति दूसरी संस्कृति और सभ्यता के लिये क्यों इतना संकुचित दृष्टिकोण रखते हैं? इसका कारण मज़हबी पागलपन के सिवा और कुछ नहीं हो सकता। मुसलिम लीग का यह उफान कुछ काल में ठंडा पड़ जायगा, यह तो एक ऐतिहासिक सत्य है; क्योंकि फ़तवे, मुल्लापंथी और मज़हबी कट्टरता इस राष्ट्रवाद के युग में जड़ नहीं पकड़ सकती। उसका उन उत्तरी-पश्चिमी देशों में ख़ात्मा हो चुका है, जिनकी ओर हमारे मुसलिम लीगी मित्र आँखें लगाए हुए हैं। कांग्रेस और कांग्रेसी सरकारों को कदापि इन अनुचित दावों को स्वीकार न करना चाहिए, क्योंकि इससे सांप्रदायिकता को और उत्तेजना मिलती है। फिर नए ख़ुराफ़ात ढूँढ़ने के लिये वे फिर नए स्वाँग खड़े करेंगे। इसलिये कांग्रेस के हाथी को अपनी मस्त चाल से अपने निश्चित मार्ग पर चलते रहना चाहिए, भले ही

सचित्र तुलसी-कृत

मूल्य २५)

रामायण

मूल्य २५)

[बीस खंडों में]

यह रामायण २० खंडों में प्रकाशित हो रही है। प्रत्येक खंड में ८० पृष्ठ, अनेक सादे और ६-७ रंगीन चित्र रहते हैं। साइज़ सुधा का-सा भव्य है। मूल्य प्रतिखंड १।), कुल रामायण २५) की होगी। कारण, इसमें १६०० से अधिक पृष्ठ और सैकड़ों रंगीन और सादे चित्र होंगे।

संस्थापक-ग्राहकों को विशेष सुविधा

१. प्रथम चार खंडों का मूल्य ५) ही लिया जायगा। किंतु ये ५) एक साथ, आरंभ में ही, भेजने होंगे। डाक-व्यय माफ़ रहेगा।

२. पूरे २० खंडों का रियायती मूल्य २०) होगा। डाक-व्यय कुछ भी न लिया जायगा। २०) पेशगी देने होंगे।

पहला खंड समाप्तप्राय है। दूसरा खंड भी निकल गया है!! तीसरा छप रहा है!!! कृपा कर ग्राहक बनें, और अपने इष्ट-मित्रों से भी अनुरोध करें। इस सहायता से हमारे जीवन की योजना पूर्ण हो जायगी, और आपके हाथों में एक अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा।

कुछ जीव उसे देखकर उसकी ओर आवाज़ फेंकते रहें।

× × ×

८. लेखकों की शिकायत

नवीन लेखकों की बहुधा हमसे भी शिकायत रहती है कि हम उनकी रचनाओं को छापकर उन्हें प्रोत्साहित नहीं करते। यह उनकी भूल है। नवीन लेखकों को प्रोत्साहित करना और उनकी रचनाओं को उचित स्थान देकर उन्हें आगे बढ़ाना 'सुधा' की एक मुख्य नीति रही है। हमारा तो यह भी विश्वास है कि 'सुधा' ने जितने नए लेखकों को हिंदी में जन्म दिया है, और किसी पत्र ने उतने लेखकों को पैदा नहीं किया। यह हमारा अहंभाव हो सकता है, परंतु बात ठीक है। इसके अतिरिक्त हम अपने कृपालु नए लेखकों से एक बात और कहना चाहते हैं। यदि हम उनकी कोई रचना प्रकाशित करने में असमर्थ रहें, तो उन्हें एकदम ही हमें अभिमानी, घमंडी आदि की उपाधियों से विभूषित करने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। ऐसा करते समय हमारे ये लेखकगण प्रायः भूल जाते हैं कि अंधा जैसे दो आँखें चाहता है, संपादक भी वैसे ही अपने अख़बार के लिये अच्छे मैटर के लिये भूखा बैल रहता है। रचना में यदि थोड़ी भी विशेषता हो, उसमें यदि प्रतिभा के थोड़े भी स्फुलिंग हों, तो वह प्रायः प्रकाशित हो जाती है। अतएव इस विषय में संपादकों को व्यर्थ कोसना और उन्हें बुरा-भला कहना कहाँ तक उचित है, लेखकगण स्वयं ही विचार कर लें।

× × ×

पब्लिक सर्विस कमीशन, संयुक्त प्रांत

नं० ६९३६।२४३-३८

संशोधन

कमीशन के गत ता० १२ नवंबर सन् १९३८ ई० के संशोधित विज्ञापन में, जिसमें वैद्यों तथा हकीमों को नियुक्ति के लिये आवेदन-पत्र आमंत्रित किए गप थे, निम्न-लिखित अन्य संशोधन किए जाते हैं—

१. उन प्रार्थियों का विशेष रूप से विचार किया जायगा, जो शस्त्र-चिकित्सा की शिक्षा पाए हुए हैं, और जो आयुर्वैदिक कॉलेज, हिंदू-विश्वविद्यालय, बनारस, ऋषिकुल आयुर्वैदिक कॉलेज, हरिद्वार, तिबिया-कॉलेज, मुसलिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ या तिबिया यूनानी स्कूल, लखनऊ में वैद्यक या हिकमत-संबंधी शिक्षा पाए हुए हैं।

२. सेक्रेटरी, पब्लिक सर्विस कमीशन, संयुक्त प्रांत के पास आवेदन-पत्र पहुँचने की तिथि १५ दिसंबर सन् १९३८ से ५ जनवरी सन् १९३९ कर दी गई है। ता० १६-१२-३८

सेक्रेटरी, पब्लिक सर्विस कमीशन, संयुक्त प्रांत

६. फ़ैसिज्म या सोशलिज्म

कुछ दिन पहले लोग यह कहते थे कि अब क़रीब-क़रीब सारी दुनिया सोशलिज़्म के सिद्धांतों को अपना चुकी है, और उसका आधा भाग सोशलिज़्म के अंदर डूब चुका है। पर इधर, सन् १९३४ से, योरप में, फ़ैसिज़्म का जो ज़ोर बढ़ा, और हिटलर तथा मुसोलिनी-रूपी राहु-केतु सोशलिज़्म-रूपी सूर्य को ग्रसने के लिये आगे बढ़े, तो संसार ने एक और करवट बदली। अब लोग कहने लगे हैं कि सोशलिज़्म का प्रतिद्वंद्वी फ़ैसिज़्म है, और आजकल तो योरप में उसी की तूती बोलती है। इसलिये अब यह भविष्यवाणी करने में लोग असमर्थ हैं कि इन दो शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता में मैदान किसके हाथ रहेगा। इन दो लोह और पाहन के संघर्ष में बेचारा प्रजातंत्रवाद या पार्लियामेंटेरियन शासन-पद्धति की रुई जली जाती है। योरप में जो जिसे प्रतिनिधि-तंत्र (Democracy) कहा जाता है, उसका दिवाला निकल गया है। प्रत्येक राष्ट्र हिटलर-मुसोलिनी या सोवियट सरकार, इन दोनो में से किसी एक के प्रभाव में या उसके साथ है। फ़ैसिज़्म की शक्ति जिस द्रुत गति से बढ़ रही है, उसके आगे इँगलैंड और फ़्रांस-जैसे प्रजातंत्रवादी राष्ट्रों ने अपना सिर झुका दिया है। हिटलर के मंसूबे और हौसले बढ़ रहे हैं। अभी पता लगा है कि हिटलर की आयोजना में न केवल मध्य योरप के राष्ट्रों को अपने राज्य में मिला लेने का ही संकल्प किया गया है, बल्कि फ़्रांस और इँगलैंड में भी वह अपने ढंग की फ़ैसिस्ट सरकारें क़ायम करना चाहता है। और, मज़े की बात यह कि आज जो फ़्रांस और इँगलैंड उसके साथी बनकर हिटलर की शक्ति बढ़ा रहे हैं, वह पहले उन्हीं से निबटकर इसके बाद रूस पर चढ़ाई करने का इरादा रखता है। इस बात में सचाई का अंश नहीं है, यह बात नहीं। हिटलर देखता है, आज मि० चैंबरलेन और मो० दालिदियर उसके हाथ में हैं, इसलिये वह इन देशों की 'डेमोक्रेसी' को ख़त्म करना आसान काम समझता है। वह समझता है, उसकी शक्ति चाहे जितनी बड़ी हो, लेकिन सोशलिज़्म की चट्टान से टकराना अभी सहल काम नहीं। योरप का प्रजातंत्रवाद अब पुरानी चीज़ हो गई। उसके अंदर कितनी ही कमज़ोरियाँ हैं, इसलिये उसका जीतना आसान होगा। इससे हिटलर की शक्ति बहुत बढ़ जायगी, तब वह बड़े भैया मुसोलिनी को साथ लेकर सोशलिज़्म की भी जड़ उखाड़ने को तैयार होगा।

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र
जगत्-विख्यात
Registered. रजिस्टर्ड
'कौनटैक्स'

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता, जो स्त्रियाँ गर्भ-धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'कौनटैक्स' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं।

कौनटैक्स नं० १—जब तक इसका सेवन रहेगा, गर्भ स्थापित नहीं होगा। सेवन बंद करने पर गर्भ स्थापित हो सकता है। क़ीमत १॥), डाक-ख़र्च ।≤)

कौनटैक्स नं० २—मासिक धर्म पर दवा सेवन करने से चार वर्ष तक गर्भ स्थापित नहीं होगा। क़ीमत ५), डाक-ख़र्च ॥≡)

पता—आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

किंतु रूस इससे बेख़बर नहीं। अभी उसने यह घोषणा कर दी है कि उसके पूर्व और पश्चिम के दोनो शत्रु—जापान और फ़ैसिस्ट राष्ट्र—चाहें, तो उसके साथ ताक़त-आज़माई कर लें। वह दोनो के साथ लोहा लेने को तैयार हैं। इससे उन लोगों की आँखें खुल गई हैं, जो स्पेन, ज़ेकोस्लोवेकिया और मंचूरिया के मामलों में रूस की कमज़ोरी का ढिंढोरा पीट चुके थे। वास्तव में रूस कमज़ोर नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मामलों में उसकी नीति हमेशा युद्ध के विरुद्ध रही है। यह सोवियट रूस के गत अठारह वर्षों के शासन-काल से प्रकट है। इन दिनों रूस ने किसी मुल्क पर चढ़ाई करने का इरादा नहीं किया, और उसके प्रतिनिधि सदैव युद्ध-विरोधिनी परिषदों में शामिल होते रहे। दूसरे देशों में समाजवाद का प्रचार करने या समाजवाद के ढंग की शासन-व्यवस्था क़ायम करने में फ़ौजी शक्ति का उपयोग करना उसके सिद्धांत के ख़िलाफ़ है। उसका कहना है, अगर किसी देश में समाजवाद के ढंग की शासन-व्यवस्था क़ायम होगी, तो वह उसी देश के लोगों द्वारा क़ायम हो सकती है, न कि रूस की लाल फ़ौज की संगीनों की नोक पर। इसीलिये रूस किसी राष्ट्र के दूसरे राष्ट्र पर चढ़ाई करने का सख़्त विरोध करता है। उसको जो कुछ सैनिक-शक्ति है, वह रूस की अन्य देशों की चढ़ाई से रक्षा करने के लिये है। उसे पता है कि जर्मनी और इटली में जो शक्ति पैदा हो गई है, वह किसी भी वक़्त उसके ऊपर हमला कर सकती है। इसलिये वह काफ़ी सजग है, और उसने अपनी सैनिक-शक्ति इतनी संगठित की है कि वह न केवल हिटलर और मुसोलिनी की संयुक्त शक्ति का, बल्कि अन्य बड़े-बड़े राष्ट्र भी इनकी मदद करें, तो सबका डटकर मुक़ाबला करेगा।

म्यूनिक-समझौते के बाद स्थिति में जो परिवर्तन हुआ है, उससे रूस की युद्ध-संबंधी तैयारियाँ और बढ़ गई हैं। हिटलर इस समय एक गहरी चाल चल रहा है। हो सकता है, उसने इन दिनों अपने उपनिवेशों को वापस लेने की जो आवाज़ उठाई है, वह मि० चैंबरलेन और उसके फ़्रांसीसी साथी के इशारे पर ही उठाई हो। क्योंकि उनके म्यूनिक-समझौते का फ़्रांस और इँगलैंड में भारी विरोध हुआ है। इससे ये लोग फ़ैसिस्टों को जो और सहायता देना चाहते हैं, वह अब नहीं दे सकते। तब ये लोग हिटलर से कहलवा रहे हैं कि जर्मनी के युद्ध में छीने गए उपनिवेश उसे वापस दे दिए जायँ। उसका अर्थ यह होगा कि एक तरफ़ हिटलर की यह माँग बढ़ेगी, और दूसरी तरफ़ वह रूस पर चढ़ाई करने की तैयारी भी करेगा। इस अवसर पर मि० चैंबरलेन को इँगलैंड के लोगों से यह कहने का मौक़ा मिल जायगा कि अगर रूस के साथ लड़ने में इँगलैंड जर्मनी की मदद करे, तो हिटलर अपनी उपनिवेशों की माँग वापस ले लेगा। इस तरह इँगलैंड और फ़्रांस दोनो ही रूस और फ़ैसिस्ट देशों की लड़ाई में फ़ैसिस्टों के साथी हो जायँगे। इस तरह की चालें चली जा रही हैं। हिटलर के मुँह से मानो चैंबरलेन ही यह कह रहे हैं कि जर्मनी के उपनिवेश वापस दिए जायँ। हिटलर सब कुछ समझकर ही अपने मुहरे बदलता है। उसकी बाबत यह कोई नहीं कह सकता कि कल वह क्या करेगा। पर एक बात निर्विवाद सिद्ध है। हिटलर की फ़ैसिज़्म और रूस की सोशलिज़्म की एक बड़ी टक्कर होकर रहेगी। यों अब तक कितनी ही बार और कई देशों में तो रोज़ ही इन दोनो में मुठभेड़ होती रही है, पर स्पेन और चीन की लड़ाइयों का अंत हो जाने पर भी फ़ैसिज़्म और सोशलिज़्म की एक सबसे बड़ी टक्कर फिर भी बाक़ी रहेगी। और, वह टक्कर ऐसी होगी, जिसमें इन दोनो ताक़तों में से एक का ही अस्तित्व रहेगा।

एक ही जंगल में जिस तरह दो शेर नहीं रह सकते, इसी तरह फ़ैसिज़्म और सोशलिज़्म दोनो साथ-साथ नहीं चल सकते। समाजवाद के समर्थकों का कहना है कि सोशलिज़्म शाश्वत सिद्धांत है—वैदिक भाषा में वह 'तत्त्वमसि' है। इसके साथ फ़ैसिज़्म हिंसा, प्रतिहिंसा और केवल फ़ौजी शक्ति का प्रदर्शन-मात्र है। प्रजातंत्रवाद इन दोनो में से किसी एक का पल्ला पकड़कर अपने जीवन की रक्षा करना चाहता है, पर ये दोनो उसे अपने-अपने स्वरूप में लय कर लेना चाहते हैं। ऐसे समय में अमेरिका के राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने ठीक समय पर प्रजातंत्रवाद के समर्थन की घोषणा की है। रूज़वेल्ट समझता है कि अगर योरप का प्रजातंत्र फ़ैसिज़्म या सोशलिज़्म के प्रवाह में डूबा, तो अमेरिका का प्रजातंत्र भी उसके असर से न बचेगा। रूज़वेल्ट ने अपने भाषण में समाजवाद की चर्चा न करते हुए सभ्य ढंग से फ़ैसिज़्म की निंदा की है। इससे पता चलता है कि अमेरिका इँगलैंड और फ़्रांस के फ़ैसिस्ट-प्रेम को पसंद नहीं करता। आगे क्या होनेवाला है, इसके लिये सन् १९३९ में होनेवाली घटनाओं की लोग उत्सुकता-पूर्वक प्रतीक्षा करेंगे। सन् १९३९ का नया वर्ष उन घटनाओं के साथ आरंभ होता है, जिनका परिणाम फ़ैसिज़्म और सोशलिज़्म, इन दो बड़ी शक्तियों के भाग्य का निर्णय करेगा।

× × ×

१०. मौलाना शौकतअली

मौलाना शौकतअली अब इस दुनिया में नहीं हैं, ये पंक्तियाँ लिखते हुए हमें दुःख हो रहा है! दिल्ली में, अपने करौल-बाग़ के निवास-स्थान में, हृदय की गति रुक जाने की वजह से, एकाएक उनकी मृत्यु हो गई। 'सुधा' के पाठकों ने समाचार-पत्रों में यह शोकजनक समाचार पढ़ा होगा।

मौलाना की मृत्यु से इस्लाम की ही नहीं, वरन् सारे हिंदुस्थान की कहीं अधिक हानि हुई है। सन् २० के असहयोग-आंदोलन के वह अन्यतम स्तंभ थे। उनके बाद राष्ट्रीयता की आँधी में यद्यपि वह फिसल गए, परंतु फिर भी वह सच्चे सिपाही थे, महान् हिंदुस्थानी थे। सच्चे और ईमानदार मुसलमान थे। परंतु सबसे बड़ी बात यह है कि देश के राजनीतिक अखाड़े में वह हमारे एक बहादुर प्रतिद्वंद्वी थे। राजनीतिक आंदोलन के समय दलों की प्रतिद्वंद्विता कार्य-सिद्धि के लिये बाधक की अपेक्षा साधक ही अधिक बनती है। अतएव, हम मानते हैं, मौलाना-जैसे सच्चे और बहादुर सिपाही की असामयिक मृत्यु से स्वराज्य-प्राप्ति के दिन टल अधिक गए हैं। जिनके साथ उनका कट्टर राजनीतिक मतभेद रहा है, वे भी सदैव उन्हें सम्मान एवं प्रेम की दृष्टि से देखते रहे हैं। उनकी महत्ता का यह एक सबसे बड़ा प्रमाण है।

भगवान् उन्हें शांति दें।

× × ×

११. आचार्य द्विवेदीजी का स्वर्गवास!

यों तो संसार में नित्यप्रति मनुष्य जन्म लेते और मरते हैं, किंतु जन्म लेना उसी का सफल और सार्थक है, जिसके द्वारा साहित्य, समाज और स्वदेश का कुछ उपकार हुआ हो, जिसे आदर्श मानकर जनता सत्पथगामिनी बने, जिससे समाज उपकृत हो। ऐसे पुरुष-रत्न समय-समय पर उत्पन्न होकर देश और समाज का हित-साधन किया करते हैं। और, वस्तुतः ऐसे ही नर-पुंगव धन्यम्मन्य हैं। किंतु कठोर काल कुछ विचार नहीं करता। दानी, धनी, शूर-वीर, विद्वान्, कोई भी हो, यह सभी को अपनी उदर-दरी में पचाकर भी तृप्त नहीं होता—"कालो जगद्भक्षकः।" ऐसे नर-रत्न जब काल-कवलित हो जाते हैं, तो उनकी पवित्र स्मृति के साथ उनका चिर-वियोग-जन्य दुःख भी जनता के मानस-पटल पर सदैव के लिये अंकित हो जाता है। अस्तु।

आज हमें यह लिखते हुए हार्दिक दुःख होता है कि वर्तमान हिंदी के सुप्रसिद्ध, वयोवृद्ध साहित्य-सेवी आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी का देहावसान गत २१ दिसंबर को हो गया! आपकी आयु ७५ वर्ष की थी। हाल में आप जलंधर - रोग से पीड़ित थे।

द्विवेदीजी कुशल कवि, आलोचक और संपादक ही नहीं, प्रत्युत हिंदी के उन पुराने आचार्यों में थे, जिन्होंने हिंदी की वर्तमान शैली का श्रीगणेश किया, और जिनके चरणों में बैठकर हिंदी के अनेक लेखकों ने लिखना सीखा। आपने 'सरस्वती' द्वारा हिंदी की जो सेवा की, वह सर्वजन-विदित है, और उसके द्वारा आपकी कीर्ति अमर हो गई। आपके निधन से हिंदी-भाषा का एक महारथी उठ गया! इस अनभ्र वज्रपात से हिंदी की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। "दैवी विचित्रा गतिः!" इस अवसर पर हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह द्विवेदीजी के शोक-संतप्त परिवार को शांति और उनकी आत्मा को सद्गति एवं हिंदी-संसार को उनके चिर-वियोग का दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

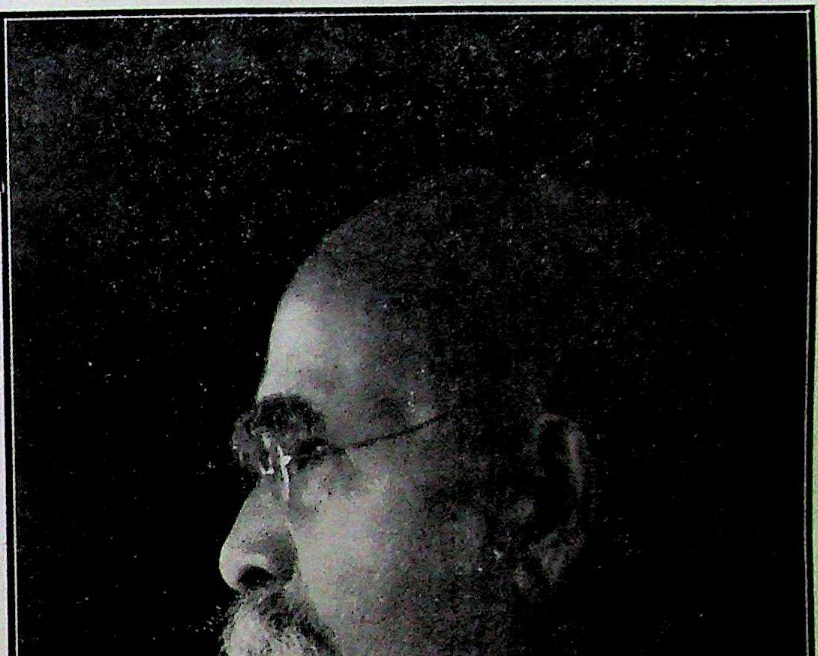

स्व० महावीरप्रसादजी द्विवेदी

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
—हरएक घर में रहना चाहिए—

सच्ची शक्ति का संग्रह के लिये

झंडु की सुवर्ण मिश्रित

मकरध्वज गुटी

शक्ति की सर्वोत्तम दवा
शक्ति की सर्वोत्तम दवा फ़ौरन व्यवहार कीजिए

झंडु-फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ के ,, ,,—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जौतस्टनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्टः—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स

बिलकुल नया प्रकाशन

छप गया ! छप गया !!

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में
निस्संकोच रक्खा जानेवाला
हिंदी का महान् गौरव

'विकास'

[मौलिक, सामाजिक उपन्यास]

लेखक
हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार
श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०
('विदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।
(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।
(३) कुली-प्रथा की आह और कराह।
(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा।
(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

आजकल छपाई में खर्च अधिक आने के कारण थोड़ी ही प्रतियाँ छपाई हैं, इसलिये फ़ौरन् एक कापी मँगाकर यह सर्वोत्तम उपन्यास पौने मूल्य ही में लीजिए। सजीव, परिमार्जित भाषा। इसकी एक कापी रामायण की भाँति घर में रखनी आवश्यक है।

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों का
एकमात्र मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार
लखनऊ

आधुनिक हिंदी-कविता की एक अपूर्व पुस्तक

मंदार

लेखक, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

गिरीशजी अपनी उत्प्रेक्षाओं के लिये काफ़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भाव मौलिक, उपमाएँ सुंदर, प्रकृति-चित्रण सजीव और सौंदर्य-वर्णन मनोहारी होता है। उनकी कविताएँ पढ़कर आप आश्चर्य-मुग्ध रह जायँगे।

प्रस्तुत संग्रह में उनकी इंद्र-धनुष, बिंदिया, वन-बाला, तारिका, अश्रु-छवि, जल-विहार, वर्षा-विहार, स्वर-लहरी, कवि की तरंग, स्वर्ग और संसार, अनुभूति और कल्पना आदि अनेक ललित एवं भाव-पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

शीघ्र मँगाइए। मूल्य १), सजिल्द १।।) मात्र।

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

दांपत्य जीवन

रचयिता—श्रीरामनारायण 'यादवेंदु'
बी॰ ए॰, एल्-एल्॰ बी॰

यह नव-विवाहित और शीघ्र विवाहित होनेवाले नवयुवकों और नवयुवतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को खरीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

हृदय का भार

रचयिता—पंडित दीनानाथ व्यास 'विचित्र'

कविरत्न, विशारद आदि

वर्तमान हिंदी-काव्य-धारा विशेषतया दुःखवाद की ओर ही प्रवाहित हो रही है। यह दुःखवाद हमारे जीवन की संघर्षमय विकट परिस्थितियों का परिणाम है। वर्तमान काल के हिंदी-कवियों ने अपनी मुक्त एवं गेय रचनाओं में दुःखवाद के केवल एक पहलू को ही चित्रित किया है, किंतु व्यासजी ने समस्त विश्व के चेतन-अचेतन सभी पदार्थों में उसकी सत्ता स्वीकार करते हुए प्रत्येक पंक्ति में उसके मनोहर दर्शन भी कराए हैं। प्रकृति-सौंदर्य से लेकर जीवन के सुख-दुख तक में दार्शनिकता की पुट देकर तो व्यासजी ने वास्तव में सोने में सुगंध का काम किया है। वेदनाओं, व्यथाओं, अरमानों, स्मृतियों आदि के, रूपकों और उपमाओं के सहारे, इतने सुंदर चित्र चित्रित किए हैं कि वे काव्य-रसिकों को मुग्ध किए विना रह ही नहीं सकते। विस्मय-विमुग्ध करनेवाली चमक-दमक, तड़क-भड़क, शब्दाडंबर, क्लिष्टता एवं निरर्थकता आदि—जिसके कारण वर्तमान छायावाद बदनाम हो रहा है—इस काव्य में खोजने पर भी नहीं मिलेगी। हमारे जीवन की उस विडंबना का इस काव्य में बड़े ही सुंदर ढंग से सजीव वर्णन किया गया है, जो अतृप्त आत्माओं को एक भार-सी प्रतीत होती है। इस पुस्तक में कवि ने अपना हृदय ही खोलकर रख दिया है। बात तो यह है कि कविवर गोपालसिंह नैपाली के शब्दों में "यह दुख की कथा है, दर्द की कहानी है।" वास्तव में देखा जाय, तो यह दुखी आत्माओं को सुख पहुँचानेवाली अनुपम कृति है। काव्य-प्रेमियों को इसकी एक प्रति अवश्य ही मँगाकर अवलोकन करना चाहिए। मूल्य ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला की नई देन

सुदामा

(राजनीतिक नाटक)

लेखक—श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी

इसमें संदेह नहीं कि अब तक के उपर्युक्त नाम से प्रकाशित सभी नाटकों में यह श्रेष्ठ है। वाजपेयीजी ने इसमें सुदामा के उन गुणों का दिग्दर्शन कराया है, जिनके द्वारा वह लोकनायक श्रीकृष्ण के अंतरंग मित्र हो चुके हैं। इसके लिये नाटककार ने कथावस्तु में कल्पना की वह आवश्यक पुट ला रक्खी है, जिससे नायक का चरित पूर्णतया चमक उठा है। गो कि सुदामा का कथानक पुराना है, किंतु इस नाटक में स्पष्टतया आप यह देखेंगे कि सुदामा हमसे दूर नहीं—इस युग के ही हैं।

इसमें विशेषता यह है कि स्त्री-पात्रों की भरमार नहीं की गई है। दो-चार जो स्त्री-पात्र हैं, वे ऐसे आदर्श हैं, जिनसे छात्रों के जीवन में पवित्रता की भावना जागेगी, न कि विसाल और कामना की। अतएव स्कूल-कॉलेज के छात्रों के अभिनय-योग्य है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है। सुदामा-जैसे महापुरुष के आदर्श गुण जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा सुंदर, बिलकुल बोलचाल की। मूल्य सादी ॥), जिल्ददार १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

हाथों हाथ बिक रहा है !

जाति-पाँति के पचड़े में पड़ी,

घूँघटों की ओट में मुख-चंद्र छिपाए, हृदय में निर्धूम
ज्वालामुखी दबाए और अरमानों की उजड़ी
बस्ती बसाए आज की हमारी
शिक्षित कन्याओं के सामने
क्या-क्या समस्याएँ
हैं ?

इन सबका उत्तर देगा क्रातिकारी उपन्यास

प्रश्न

कर्ता

श्री सर्वदानंद वर्मा

——:o:——

घटनाएँ बिलकुल वास्तविक हैं, और धर्म, समाज तथा भ्रामक नियम-बंधन के आवरण में 'व्यक्ति' का गला घोंट देनेवाले ढोंगी 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' लोगों की रीति-नीति पर पूरा प्रकाश डालती हैं। हरएक बहन, बेटी, पत्नी, माता और विमाता को इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १॥), सजिल्द २)

दुलारेलाल भार्गव

मालिक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

मँगाइए तो सही, फिर बच्चों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जायगा !

बाल-विलास

छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक और विनोद-पूर्ण कविताओं की यह अच्छी पुस्तक है। ४० से भी अधिक चित्र, काग़ज़ मोटा, टाइप बड़ा, रंगीन छपाई।

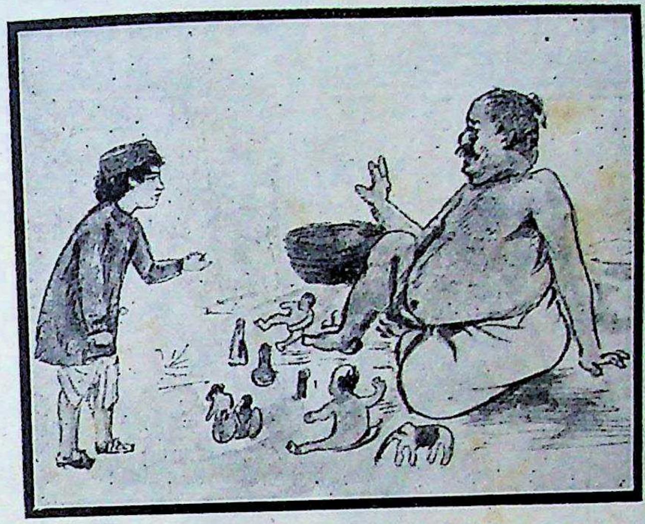

बाल-विलास

इस सुंदर पुस्तक के लिये छोटे-छोटे बालक ऐसे मचल जाते हैं, जैसे चित्र में खिलौने लेने के लिये एक बच्चा तोंदूमलजी से ललक रहा है।

मूल्य केवल ।≈), राजसंस्करण ।।।≈)

अम्मा, अम्मा, ला दो

जल्दी से—

हँसी-खेल

दद्दा ने मेरे ही लिये तो इसे मँगवाया है। इसके भीतर बहुत-सी रंग-बिरंगी तस्वीरें और मज़ेदार कहानियाँ हैं।

मूल्य सादी ।।।), सजिल्द १)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये
'साहसी बालक' अवश्य पढ़ाएँ

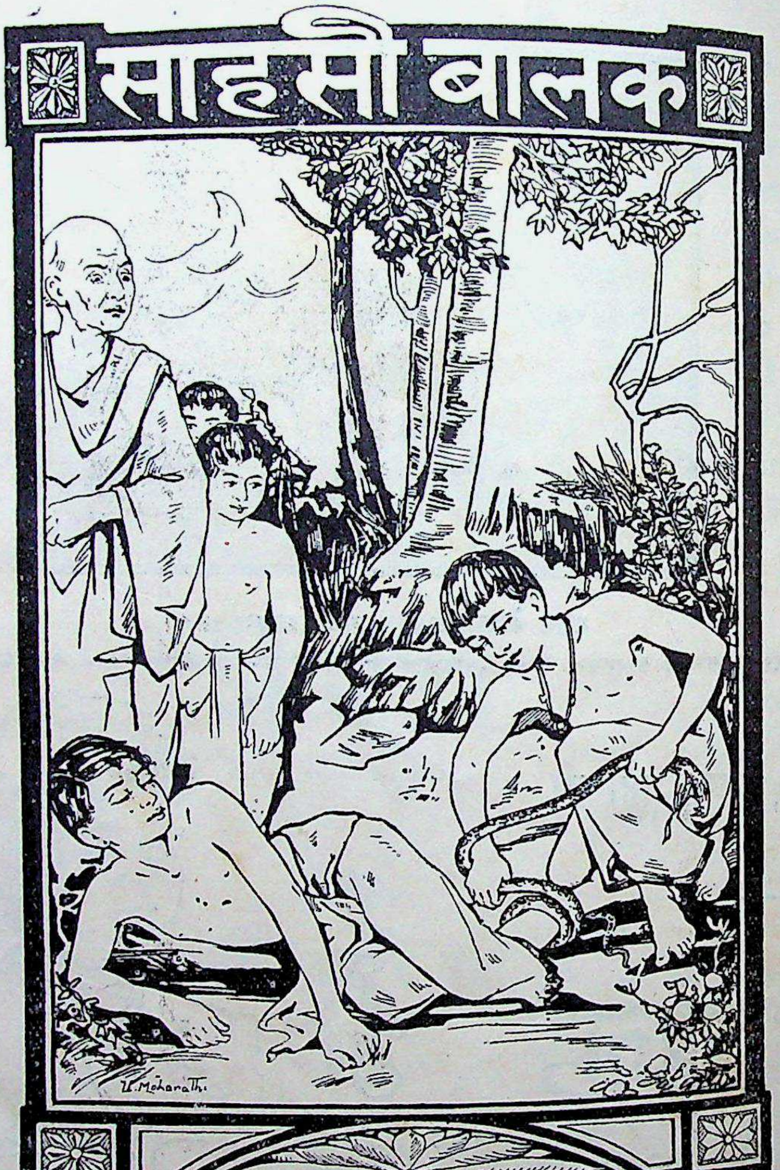

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक ही आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को साहसी बनाइए। साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही साहसी बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य ।), जिल्ददार ।=)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

दुर्लभ ग्रंथ-रत्न

आरोग्य-शास्त्र

उत्तर-भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक और धुरंधर लेखक

आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री-प्रणीत

निम्न-लिखित ३१ अध्याय, १२० प्रकरण। ७०० से अधिक विषय, ३०० के लगभग एकरंगे और बहुरंगे मूल्यवान् चित्र और ६०० के लगभग बड़े (२०×३० = ८) पृष्ठ, उत्कृष्ट छपाई और क़ीमती, मज़बूत देशी आइवरी फ़िनिश चिकना काग़ज़, पक्की सुनहरी कारीगरी की बढ़िया जिल्द। पचासों वर्ष तक ग्रंथ नष्ट नहीं हो सकेगा, न इस काग़ज़ में कीड़ा लग सकेगा।

ग्रंथ का प्रत्येक अक्षर

प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिये प्राणों से बढ़कर क़ीमती है। एक-एक बात हज़ारों बार हज़ारों रुपयों का काम देगी। सैकड़ों बार पढ़ने पर भी यह ग्रंथ सदैव आपको पढ़ते रहना पड़ेगा। ग्रंथ की भाषा बहुत सरल रक्खी गई है।

गत १०० वर्षों में

इसकी टक्कर का ग्रंथ हिंदोस्तान की किसी भाषा में नहीं निकला!

यदि आप

अधिक व्यय और समय बरबाद न करके वैद्यक के हर विषय के पंडित बनना चाहें, तो आरोग्य-शास्त्र मँगाकर पढ़ें। मूल्य १२)

अध्याय-सूची

१. स्वास्थ्य-विज्ञान
२. शरीर-विज्ञान
३. शरीर-यंत्र
४. गर्भाधान और प्रसव
५. शिशु-पालन
६. स्नान
७ भोजन
८. फलाहार
९. मक्खी, मच्छर, खटमल और रोग-कीटाणु
१०. जड़ी बूटी
११. मुष्टि-योग
१२. प्रसिद्ध नुसख़े
१३. ख़ास नुसख़े
१४. धातुओं की भस्म
१५. आकस्मिक उपचार
१६. रोगी की सेवा
१७. पथ्यापथ्य
१८. तपेदिक़
१९. हैज़ा
२०. प्लेग
२१. कुछ महत्त्व-पूर्ण रोग
२२. स्वाभाविक चिकित्साएँ
२३. यौवन-रक्षा
२४. व्यभिचार
२५. स्त्रियों का स्वास्थ्य
२६. व्यायाम
२७. आयु बढ़ाने की रीति
२८. सुंदरता बढ़ाने की रीति
२९. गृह-निर्माण-कला
३०. उपयोगी विद्याएँ
३१. आत्मविज्ञान

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

क्या आप अपने प्रिय बच्चों को हँसी से लोट-पोट होते देखना चाहते हैं ?
यदि हाँ, तो आज ही 'नटखट पाँड़े' की एक प्रति अवश्य मँगा लें !

नटखट पाँड़े (द्वितीयावृत्ति)

लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० । एक नटखट लड़के की आत्म-कथा । एक-एक शब्द में हास्य-रस भरा हुआ है । नटखट पाँड़े का विद्यारंभ, डॉक्टर महोदय की दुर्दशा, बोर्डिंगहाउस के अध्यक्ष महोदय की दुर्गति, नटखट पाँड़े का रात को भाग जाना, गाने की मजलिस, सारी कहानी इतनी अनूठी और दिलचस्प है कि लड़के इसे समाप्त किए विना नहीं रह सकते । कितने ही प्रसंग तो ऐसे हैं, जहाँ मारे हँसी के पेट में बल पड़ जायँगे ।

मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

सुंदर काव्य का आनंद लूटिए !

(सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य)

(१)
नल नरेश

(२)
पंछी

नल नरेश

कविवर पुरोहित प्रतापनारायणजी कविरत्न-रचित एक महाकाव्य। इसमें नल-दमयंती की पवित्र एवं शिक्षा-प्रद कथा का छंदोबद्ध वर्णन है। इसकी प्रत्येक पंक्ति हृदय को स्पर्श करनेवाली और काव्य की दृष्टि से सुंदर है। साहित्य में महाकाव्य की सृष्टि एक बहुत बड़े सौभाग्य की बात होती है। ४ रंगीन तथा २ सादे चित्रों-सहित, सुंदर रूप में छपी पुस्तक का मूल्य २॥), सजिल्द ३)

पंछी

(सचित्र)

लेखक, कविवर श्रीगोपालसिंह नैपाली। नैपाली-जी की कविताएँ सुधा, चित्रपट, सरस्वती आदि पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। उनकी काव्य-शक्ति, प्रवाह, सौंदर्य-बोध तथा चारुचित्रण आदि विशेषताएँ हैं। इस काव्य को देखकर हिंदी-साहित्य के कई प्रमुख विद्वानों ने इसके रचना-चातुर्य की बड़ी प्रशंसा की है। पढ़ने ही लायक चीज़ है। कविवर निरालाजी ने भूमिका में इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मूल्य सादी ।≈), सजिल्द ॥।)

गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क
लखनऊ

सुधा के ग्राहकों को पौने मूल्य में

प्रसूति-तंत्र

मूल्य २॥), सजिल्द ३)

"प्रसूति-तंत्र—हिंदी में अपने ढंग की यह निराली पुस्तक है। जच्चा-बच्चा, जननेंद्रिय-क्रिया-विज्ञान, गर्भ-विज्ञान, प्रसव-विधि, गर्भावस्था के विकार तथा डॉक्टरी क्रियाओं द्वारा बाँझपन दूर करने के उपचार तथा गर्भ से बालक निकालने की चीड़-फाड़ आदि के विषय में अभी तक इतनी विशद पुस्तक हिंदी में कोई भी नहीं थी। यद्यपि यह पुस्तक साधारण गृहस्थ को ज्ञान-मात्र ही दे सकेगी, किंतु अज्ञानता-वश मूर्ख दाइयों द्वारा अक्सर हानि उठानेवालों को सचेत अवश्य करा सकेगी, और सही बात समझने के योग्य बना सकेगी। मैंने अंतिम अध्याय (प्रसूति का शल्य-कर्म) पढ़कर यह जान लिया है कि लेखक ने बड़े परिश्रम के साथ अपनी बात समझाने की चेष्टा की है। समझदार गृहिणियों को इस पुस्तक का एक बार मनन अवश्य करना चाहिए।"

(वर्तमान, कानपुर)

प्रसूति-तंत्र

आचार्य द्विवेदी जी का कथन है—

"प्रत्येक गृहस्थ के लिये **अनमोल है।**"

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

मनोविज्ञान का एक अद्भुत उपन्यास

पवित्र पापी

सुप्रसिद्ध रूसी लेखक डॉस्टॉय फ़िस्की का एक उपन्यास
पृष्ठ-संख्या ५०० ; मूल्य केवल ३), सजिल्द ३॥)

डॉस्टॉय फ़िस्की रूस के एक क्रांतिकारी उपन्यास-लेखक हैं। आप प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक टॉल्स्टॉय के समकक्ष हैं। सन् १८४६ ई० में आप पर यह अपराध लगाया गया कि तुम साम्यवाद के प्रवर्तकों में हो। वह पकड़े गए, और अन्य २१ अपराधियों के साथ उन्हें फाँसी की सज़ा का हुक्म दिया गया। यह ज़ार-शाही के ज़माने की बात है। अस्तु। फाँसी के लिये वह चौक में खड़े कर दिए गए थे। उनकी आँखें बंद कर दी गईं, और गोली चलाने की आज्ञा भी दी ही जा चुकी थी कि इतने में एक अफ़सर ने आकर कहा कि तुम्हें साइबेरिया में देश-निकाले का दंड दिया गया है। ऐसी स्थिति में मनुष्य-मात्र के हृदय में क्या भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, उनका उन्होंने स्वयं अनुभव किया, और लौटकर इसमें वही अंकित किया है। पाठक जिस प्रसंग को पढ़ता है, उसी का एक पात्र अपने को समझने लगता है। रंगीन और सादे चित्र तो सोने में सुगंध का काम करते हैं।

पुस्तक मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

पं० गोविंदवल्लभ पंत

के रत्न

जूनिया

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी ने यह उपन्यास लिखकर हिंदी-साहित्य में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इसमें एक ग़रीब किसान को जाति-पाँति के पचड़ों में पड़कर किस प्रकार अपना धर्म-परिवर्तन करना पड़ा, वह विद्या और शांति की खोज में किस प्रकार अपनी सारी शक्ति लगा देता और बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठाते हुए अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से उन्नति करता है, इसका अच्छा चित्रण है। भाषा मुहाविरेदार। मूल्य १।।), सजिल्द २)

राजमुकुट

(सचित्र, मौलिक नाटक)

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानिक विकास। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर है, जब रसावेश को स्थायी रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट नहीं होने दिया गया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना का कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खेला जा चुका है। छठा संस्करण। मूल्य ।।), सजिल्द १।)

वरमाला

(सचित्र, मौलिक नाटक)

यही प्रथम हिंदी नाटक है, जिसे रेडियो में ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अनुवाद गुजराती और तैलगू में भी हो चुका है। चारु चित्रों से सुसज्जित। मूल्य ।।=), सजिल्द १=)

मदारी

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

प्रस्तुत पुस्तक में पहाड़ियों के जीवन की छटा और पर्वतराज हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का पूरा आभास मिलेगा। इस उपन्यास का नायक एक पहाड़ी किसान का बेटा 'नवाब' और नायिका लोहार-किसान-कन्या कुमारी तितली। नवाब धन की प्राप्ति के लिये मदारी बनता है, फिर दवाफ़रोश होकर 'ताइजो'-नामक चाक़ूवाली के चक्कर में फँसकर हवालात की हवा खाता है। वह अपने जीवन के स्वप्न को सच्चा करता है। मूल्य १।।), सजिल्द २)

प्रतिमा

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों में मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। मूल्य सादी १।।), सजिल्द [illegible])

संध्या-प्रदीप

(कहानियाँ)

पंतजी की ये मौलिक कहानियाँ ऐसी परिमार्जित, सरल भाषा में लिखी गई है कि अत्यंत रोचक हो गई है। मूल्य १), सजिल्द १।)

अंगूर की बेटी

प्रस्तुत पुस्तक रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ।।=) सजिल्द १।=)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के कायल हैं। नवयुवकों के लिये तो वह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की सत्यता, तज्जनित द्वेष और डाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व-संस्कार के कारण कर्तव्य-परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ने ही बनता है, गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं—आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी खूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी खूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और उसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल २), सजिल्द २।।)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

एक अत्युत्तम सामाजिक उपन्यास

विजया

पुस्तकालय
112580
विश्वविद्यालय

[अनुवादक, 'माधुरी'-संपादक पंडित रूपनारायण पांडेय कविरत्न]

पांडेयजी बँगला के कैसे सिद्धहस्त अनुवादक हैं, यह हिंदी-संसार पर भली भाँति विदित है। आपका अनुवाद मौलिकता से मंडित और स्वाभाविकता से सुसज्जित होता है। इस उपन्यास में सामाजिक चरित्र-चित्रण इतनी बारीकी और सुंदरता से किया गया है कि कहीं पढ़ते-पढ़ते करुणा और सहानुभूति से हृदय पिघल जाता है, और कहीं घटना की वास्तविकता से प्रभावान्वित होकर आठ-आठ आँसू बहाने पड़ते हैं। वर्णन का क्रम बड़ा मधुर और चित्ताकर्षक है। भाषा ललित और ओजस्विनी है। ६-७ रंगीन और सादे चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

उन तीनो बातों में

1 खर्च की औसत
२ मृत्यु-संख्या
३ ब्याज की दर

जिन पर

बीमा-कंपनियों की उन्नति निर्भर है।

स्वदेशी भारत की सभी कंपनियों से आगे है।

कहने को तो सभी कंपनियाँ यही बात कहेंगी

पर

आँकड़ों का मुक़ाबिला करने पर स्वदेशी ही आगे मिलेगी।

क्यों ?

इसलिये कि १—इसका खर्च का औसत दिन-पर-दिन घट रहा है।
२—मृत्यु-संख्या बहुत कम है।
३—ब्याज की औसत सबसे ज़्यादा है।

अतएव आप अपना बीमा स्वदेशी में ही कराइए।

स्वदेशी की एक नई योजना

घातक दुर्घटना-पालिसी

एक बार क़रीब २५) देकर १०००) का आजीवन बीमा कराइए !

एक व्यक्ति पाँच हज़ार रुपए तक का बीमा करा सकता है।

विशेष विवरण के लिये लिखिए—

श्रीचंद दोनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा

अच्छी आदत डालती

वह वास्तव में बुद्धिमती माता है ! आप भी इसी त
अपने बच्चों को बचपन से ही चाय पीना सिखा
उनमें स्वस्थ और प्रसन्न रहने की आदत डाल दे सकते
हैं । चाय एकदम शुद्ध, सुरक्षित और हानि-रहि
होती है ।

चाय तैयार करने
तरीका

ताज़ा पानी खौलाइ
साफ़ बर्तन ज़रा गर्म
लीजिये । उसमें प्र
के लिये एक और
चम्मच अधिक व
भारतीय चाय रखि
पानी खौल जाते
चाय पर ढाल दीजि
पाँच मिनिटों तक
को सीझने दीजि
इसके बाद प्यालों
ढालकर दूध और ची
मिलाइये ।

एकमात्र पारिवारिक पेय

भारतीय चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

न प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

Compiled
1999-2000

112580